प्रकाशकका निवेदन ।

जैन समाजमें पद्मपुराणजीकी कितनी ख्याति और महत्ता है वह वतलानेकी कोई आवश्यकता नहीं है । यह ग्रन्थ प्रत्येक मंदिरमें मौजूद है और प्रायः जैनीका बच्चा २ इसके कथानकको जानता है । इसमें शीलका अपूर्व महत्व दिखलाया गया है । परस्त्री गमन करनेकी इच्छामात्र करनेवालेकी खासी मट्टी-पलीदकी गई है और पूर्व कृत शुभ-अशुभ कर्मोंका फल तो साक्षात् दिखलाया गया है जिसके पढ़नेसे दुश्चरित्रसे दुश्चरित्र मनुष्य अपनी दुर्वासनाको तिलांजलि दे सदाचारी बन सकता है । इसमें केवल लोकापवाद मिटाने केलिये आगमें कूद पडनेवाली सीताका ही अनुपम साहस और धार्मिकश्रद्धान वर्णित नहीं हुआ है, उसके साथ २ अनेक रोमांचकारी, धर्म प्रेमका अंकुर उगा देनेवाले हनुमान, अंजना, सुग्रीव, सुतारा, विशल्या आदिके चरित्रोंका चित्रण किया गया है । भिन्न धर्मावलम्बी जो रामचन्द्र, रावण, इन्द्रजीत आदिके विषयमें अनेक तरहकी अनुमान तकमें न आने वाली बातें कहा करते हैं उनकी जगह इसमें सीधी सच्ची सर्व सामान्यकी समझमें आजाने वाली बातोंका उल्लेख किया गया है और खूबी तो यह है कि व्यक्तिगत बुराई न कर उसके अवगुणोंकी बुराई की गई है जिससे लोगोंकी घृणाका पात्र वह जीवविशेष न होकर उसका अवगुण ही हुआ है ।

इस अनुपम ग्रन्थके रचयिता विद्वद्वर्य श्रीमान् रविषेणाचार्य हैं जिनकी स्तुति बडे २ आचार्योंने अपने ग्रन्थोंमें की है । ये यद्यपि काष्ठासंघके आचार्य हैं और मूलसंघके ग्रन्थोंसे कथानकमें कुछ २ अन्तर है तथापि बहुत समयसे जैन समाजके दोनोंही संघानुयायी व्यक्ति इस ग्रन्थका श्रद्धाके साथ स्वाध्याय करते आते हैं यही कारण है कि हजारों हस्त लिखित प्रति होने पर भी एकबार देववंदमें छपकर यह पूर्ण हो चुका और अब अधिक आवश्यकता समझ हमने छपाया है । पहिले छपते समय इसकी पुरानी हिंदीमें बहुतसा हेर फेर कर दिया गया था परन्तु उसको ठीक न समझ हमने फिर जैसीकी तैसी पुरानी हिंदी कर छपाया है । संशोधन हस्तलिखित प्रति परसे किया गया है तो भी दृष्टि दोष आदिके कारण अशुद्धि रह जाना संभव है पाठकगण सुधार कर पढ़ें ।

रक्षाबंधन सं० १९७३.
कलकत्ता ।

विनीत—
दुलीचंद पन्नालाल जैन परवार ।
देवरी (सागर) निवासी ।

ओंनमः सिद्धेभ्यः ।

ओंकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः । कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ॥ १ ॥

अविरलशब्दघनौघप्रक्षालितसकलभूतलकलंका । मुनिभिरुपासिततीर्था सरस्वती हरतु नो दुरितम् ॥

अज्ञानतिमिरांधानां ज्ञानांजनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३ ॥

परमगुरुवे नमः परम्पराचार्य्यश्रीगुरुवे नमः ।

सकलकलुषविध्वंसकं श्रेयसां परिवर्द्धकं धर्मसंवन्धकं भव्यजीवमनःप्रतिबोधकारकमिदं शास्त्रं श्रीपद्मपुराणनामधेयं, एतन्मूलग्रन्थकर्त्तारः श्रीसर्वज्ञदेवास्तदुत्तरग्रंथकर्त्तारः श्रीगणधरदेवास्तेषां वचोनुसारतामासाद्य श्रीरविषेणाचार्य्येण विरचितम् ।

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी । मंगलं कुंदकुंदाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥

वक्तारः श्रोतारश्च सावधानतया शृण्वन्तु ॥

Printed by—Shrilal Jain Jain siddhant prakashak press,
9 Viswakosha, Lane, Baghbazar, CALCUTTA.

श्रीपद्मपुराणजीकी विषय सूची।

इति विषय सूची समाप्त।

ॐ

श्रीवीतरागाय नमः ।

अथ पद्मपुराण भाषा वचनिका ।

स्वर्गीय विद्वद्वर्य पण्डित दौलतरामजी कृत ।

मंगलाचरण दोहा ।

चिदानंद चैतन्यके, गुण अनंत उरधार । भाषा पद्मपुराणकी, भाषूं श्रुति अनुसार ॥ १ ॥
पंच परमपद पद प्रणमि, प्रणमि जिनेश्वर बानि । नमि जिन प्रतिमा जिन भवन, जिनमारग उरआनि ॥२॥
ऋषभ अजित संभव प्रणमि, नमि अभिनन्दन देव । सुमति जु पद्म सुपार्श्व नमि, करि चन्दाप्रभुसेव ॥३॥
पुष्पदंत शीतल प्रणमि, श्रीश्रेयांसको ध्याय । वासपूज्य विमलेश नमि, नमि अनंतके पाय ॥ ४ ॥
धर्म शांति जिन कुन्थु नमि, और मल्लि यश गाय। मुनिसुव्रत नमि नेमि नमि, नमि पारसके पाय ॥५॥
वर्द्धमान वरवीर नमि, सुगुरुवर मुनि वंद । सकल जिनंद मुनिंद नमि, जैनधर्म अभिनन्द ॥ ६ ॥
निर्वाणादि अतीत जिन, नमो नाथ चौबीस । महापद्म परमुख प्रभू, चौबीसों जगदीश ॥ ७ ॥
होंगे तिनको वंदिकर, द्वादशांग उरलाय । सीमंधर आदिक नमूं, दश दूने जिनराय ॥ ८ ॥
विहरमान भगवान ये, क्षेत्र विदेह मझारि । पूजें जिनको सुरपती, नागपती निरधार ॥ ९ ॥

द्वीप अढाईके विषै, भये जिनेन्द्र अनंत। होंगे केवलज्ञानमय, नाथ अनन्तानंत ॥ १० ॥
सबको वंदन कर सदा, गणधर मुनिवर ध्याय। केवली श्रुतिकेवली, नमूं आचार्य उवज्झाय ॥ ११ ॥
वंदूं शुद्ध स्वभावको घर सिद्धनको ध्यान। संतनको परणाम कर, नमि दृग व्रत निज ज्ञान ॥ १२ ॥
शिवपुरदायक सुगुरु नमि, सिद्धलोक यश गाय। केवलदर्शन ज्ञानको पूजूं मन वच काय ॥ १३ ॥
यथाख्यात चारित्र अरु, क्षपक श्रेणि गुण ध्याय। धर्म शुक्ल निज ध्यानको, वंदूं भाव लगाय ॥ १४ ॥
उपशम वेदक क्षायका, सम्यग्दर्शन सार। कर वंदन समभावको, पूजूं पंचाचार ॥ १५ ॥
मूलोत्तर गुण मुनिनके, पंच महाव्रत आदि। पंच सुमति और गुप्तित्रय, ये शिवमूल अनादि ॥ १६ ॥
अनित्य आदिक भावना, सेऊं चित्त लगाय। अध्यातम आगम नमूं, शांतिभाव उरलाय ॥ १७ ॥
अनुप्रेक्षा द्वादश महा, चिंतवें श्रीजिनराय। तिन स्तुति करि भावसों, षोडश कारण ध्याय ॥ १८ ॥
दश लक्षणमय धर्मकी, धर सरधा मन मांहि। जीवदया सत शील तप, जिनकर पाप नसांहिं ॥ १९ ॥
तीर्थंकर भगवानके पूजूं पंच कल्याण। और केवलिनको नमूं केवल अरु निर्वाण ॥ २० ॥
श्रीजिनतीरथ क्षेत्र नमि, प्रणमि उभय विधि धर्म। श्रुतिकर चहुं विधि संघकी, तजकर मिथ्या भर्म ॥२१॥
वंदूं गौतम स्वामिके, चरण कमल सुखदाय। वंदूं धर्म मुनीन्द्रको, जम्बूकेवलि ध्याय ॥ २२ ॥
भद्रबाहुको कर प्रणति, भद्रभाव उरलाय। वंदि समाधि सुतंत्रको, ज्ञानतने गुणगाय ॥ २३ ॥
महा धवल अरु जयधवल, तथा धवल जिनग्रंथ। वंदूं तन मन वचन कर, जे शिवपुरके पंथ ॥ २४ ॥
षट पाहुड नाटक त्रय, तत्त्वारथ सूत्रादि। तिनको वंदूं भाव कर, हरें दोष रागादि ॥ २५ ॥
गोमटसार अगाधि श्रुत, लब्धिसार जगसार। क्षपणसार भवतार है, योगसार रस धार ॥ २६ ॥
ज्ञानार्णव है ज्ञानमय, नमूं ध्यानका मूल। पद्मनंद पचीसिका, करे कर्म उन्मूल ॥ २७ ॥

यत्याचार विचार नमि, नमूं श्रावकाचार । द्रव्य संग्रह नयचक्र फुनि, नमूं शांति रसधार ॥ २८ ॥
आदिपुराणादिक सबै, जैन पुराण बखान । बंदूं मन वच काय कर दायक पद निर्वाण ॥ २९ ॥
तत्त्वसार आराधना,—सार महारस धार । परमातम परकाशको, पूजूं बारम्बार ॥ ३० ॥
बंदूं विशखाचारिजे, अनुभवके गुण गाय । कुन्दकुन्द पद धोक दे, कहूं कथा सुखदाय ॥ ३१ ॥
कुमुदचंद अकलंक नमि, नेमिचंद्र गुण ध्याय । पात्रकेशरीको प्रणमि, समंतभद्र यशगाय ॥ ३२ ॥
अमृतचंद्र यतिचंद्रको, उमास्वामिको बंद । पूज्यपादको कर प्रणति, पूजादिक अभिनंद ॥ ३३ ॥
ब्रह्मचर्यव्रत बंदिके, दानादिक उरलाय । श्रीयोगीन्द्र मुनींद्रको, बंदूं मन वच काय ॥ ३४ ॥
बंदूं मुनि शुभचंद्रको, देवसेनको पूज । करि बंदन जिनसेनको, जिनके सम नहिं दूज ॥ ३५ ॥
पद्मपुराण निधानको, हाथ जोडि सिरनाय । ताकी भाषा वचनिका, भाषूं सब सुखदाय ॥ ३६ ॥
पद्म नाम बलभद्रका, रामचंद्र बलभद्र । भये आठवें धार नर, धारक श्रीजिनमुद्र ॥ ३७ ॥
पीछे मुनिसुव्रतके, प्रगटे अति गुण धाम । सुरनरबंदित धर्ममय, दशरथके सुत राम ॥ ३८ ॥
शिवगामी नामी महा,—ज्ञानी करुणावंत । न्यायवंत बलवंत अति, कर्म हरण जयवंत ॥ ३९ ॥
जिनके लक्ष्मण वीर हरि, महाबली गुणवंत । भ्रातभक्त अनुरक्त अति जैनधर्म यशवंत ॥ ४० ॥
चंद्र सूर्यसे वीर ये, हरें सदा पर पीर । कथा तिनोंकी शुभ महा, भाषी गौतम धीर ॥ ४१ ॥
सुनी सबै श्रेणिक नृपति, धर सरधा मन मांहि । सो भाषी रविषेणने, यामें संशय नाहिं ॥ ४२ ॥
महा सती सीता शुभा, रामचंद्रकी नारि । भरत शत्रुघन अनुज हैं, यही वात उरधारि ॥ ४३ ॥
तदभव शिवगामी भरत, अरु लवअंकुश पूत । मुक्त भये मुनिवरत धरि, नमैं तिने पुरहूत ॥ ४४ ॥
रामचंद्रको करि प्रणति, नमि रविषेण ऋषीश । रामकथा भाषूं यथा, नमि जिन श्रुति मुनिईश ॥४५॥

सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमम् । प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनम् ॥ १ ॥
सुरेन्द्रमुकुटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेसरम् । प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमंगलम् ॥ २ ॥

अर्थ—सिद्ध कहिए कृतकृत्य हैं. और सम्पूर्ण भए हैं सर्व सुंदर अर्थ जिनके अथवा जो भव्य जीवोंके सर्व अर्थ पूर्ण करते हैं, आप उत्तम अर्थात् मुक्त हैं औरोंको मुक्तिके कारण हैं। प्रशंसा योग्य दर्शन ज्ञान और चारित्रके प्रकाशनहारे हैं। और सुरेंद्रके मुकुटकर पूज्य जो किरणरूप केसर ताको धरें चरणकमल जिनके, ऐसे भगवान महावीर, जो तीन लोकके प्राणियोंको मंगलरूप हैं तिनको नमस्कार करूं हूं।

भावार्थ—सिद्ध कहिए मुक्ति अर्थात् सर्व बाधारहित उपमारहित अनुपम अविनाशी जो सुख ताकी प्राप्तिके कारण श्रीमहावीर स्वामी जो काम, क्रोध, मान, मद, माया, मत्सर, लोभ, अहंकार, पाखण्ड, दुर्जनता, क्षुधा, व्याधि, वेदना, जरा, भय, राग, शोक, हर्ष, जन्म, मरणादि रहित हैं। शिव अर्थात् अविनश्वर हैं। द्रव्यार्थिकनयसे जिनका आदि भी नाहीं और अंत भी नाहीं, अछेद्य अभेद्य क्लेशरहित, शोकरहित, सर्वव्यापी, सर्वसम्मुख, सर्वविद्याके ईश्वर हैं। यह उपमा औरोंको नाहीं बने है। जो मीमांसक, सांख्य, नैयायिक, वैशेषिक, बौद्धादिक मत हैं तिनके कर्ता जो मुनि जैमिनि, कपिल, अक्षपाद, कणाद बुद्ध हैं वे मुक्तिके कारण नाहीं। जटा मृगछाला वस्त्र शस्त्र स्त्री रुद्राक्ष कपाल मालाके धारक हैं और जीवोंके दहन घातन छेदनविषे प्रवृत्ते हैं। विरुद्ध अर्थ कथन करनेवाले हैं। मीमांसा तो धर्मका अहिंसा लक्षण बताय हिंसाविषे प्रवृत्ते है और सांख्य जो है सो आत्माको अकर्ता और निर्गुण भोक्ता माने है और प्रकृति हीको कर्त्ता माने है। और नैयायिक वैशेषिक आत्माको ज्ञानरहित जड माने हैं और

जगतकर्त्ता ईश्वर माने हैं। और बौद्ध क्षण भंगुर माने हैं। शून्यवादी शून्य माने हैं। और वेदांतवादी एक ही आत्मा त्रैलोक्यव्यापी नर नारक देव तिर्यंच मोक्ष सुख दुःखादि अवस्था विषे माने हैं इसलिये ये सर्व ही मुक्तिके कारण नाहीं। मोक्षका कारण एक जिन शासन ही है जो सर्व जीवमात्रका मित्र है। और सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रका, प्रकट करनेवाला है ऐसे जिन शासनको श्रीवीतराग देव प्रकटकर दिखावें है। वह सिद्ध अर्थात् जीवनमुक्त हैं और सर्व अर्थकर पूर्ण हैं मुक्तिके कारण हैं सर्वोत्तम हैं और सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्रके प्रकाश करनेवाले हैं इंद्रोंके मुकुटोंकर स्पर्शे गये हैं चरणारविंद जिनके ऐसे श्रीमहावीर वर्द्धमान सन्मतिनाथ अंतिम तीर्थंकर तीनलोकके सर्व प्राणियोंको महामंगल रूप हैं महा योगीश्वर हैं मोह मल्लके जीतनेवाले हैं अनंत बलके धारक हैं संसार समुद्रविषे डूब रहे जे प्राणी तिनके उद्धारके करनहारे हैं शिव, विष्णु, दामोदर, त्र्यम्बक, चतुर्मुख, बुद्ध, ब्रह्मा, हरि, शंकर, रुद्र, नारायण, हरभास्कर, परममूर्त्ति इत्यादि जिनके अनेक नाम हैं तिनको शास्त्रकी आदिविषे महा मंगलके अर्थ सर्व विघ्नके विनाशवे निमित्त मन वचन कायकर नमस्कार करूं हूं। इस अवसर्पिणी कालमें प्रथम ही भगवान श्रीऋषभदेव भए सर्व योगीश्वरोंके नाथ सर्व विद्याके निधान स्वयम्भू तिनको हमारा नमस्कार होहु। जिनके प्रसाद कर अनेक भव्य जीव भवसागरसे तिरे। फिर श्रीअजितनाथ स्वामी जीते हैं बाह्य अभ्यंतर शत्रु जिन्होंने हमको रागादिक रहित करहु। तीजे संभवनाथ, जिनकरि जीवनको सुख होय और चौथे श्रीअभिनंदन स्वामी आनंदके करनहारे हैं और पांचवें सुमतिके देनहारे सुमतिनाथ मिथ्यात्वके नाशक हैं, और छठे श्रीपद्मप्रभु ऊगते सूर्यकी किरणों कर प्रफुल्लित कमलके समान है प्रभा जिनकी। सातवें श्रीसुपार्श्वनाथ स्वामी सर्वके वेत्ता सर्वज्ञ सबनके निकटवर्त्ती ही हैं और शरदकी पूर्णमासीके चंद्रमा समान है प्रभा जिनकी ऐसे आठवें श्रीचंद्र

प्रभु ते हमारे भवताप हरो। और प्रफुल्लित कुंदके पुष्प समान उज्ज्वल हैं दंत जिनके ऐसे नवमे श्रीपुष्पदंत जगतके कंत हैं और दशवें श्रीशीतलनाथ शुक्ल ध्यानके दाता परम इष्ट ते हमारे क्रोधादिक अनिष्ट हरो। और जीवोंको सकल कल्याणके कर्त्ता धर्मके उपदेशक ग्यारहवें श्रेयांसनाथ स्वामी ते हमको परम आनंद करो और देवों कर पूज्य संतोंके ईश्वर कर्म शत्रुओंके जीतनेहारे वारहवें श्रीवासुपूज्य स्वामी ते हमको निज वास देवो और संसारके मूल जो रागादि मल तिनसे अत्यंत दूर ऐसे तेरहवें श्रीविमलनाथ देव ते हमारे कलंक हरो और अनंत ज्ञानके घरनहारे, सुंदर है दर्शन जिनका ऐसे चौदहवें श्रीअनन्तनाथ देवाधिदेव हमको अनंत ज्ञानकी प्राप्ति करो। और धर्मकी धुराके धारक पंद्रहवें श्रीधर्मनाथ स्वामी हमारे अधर्मको हरकर परम धर्मकी प्राप्ति करो और जीते हैं ज्ञानावरणादिक शत्रु जिन्होंने ऐसे श्रीशांतिनाथ परम शांत हमको शांतभावकी प्राप्ति करो। और कुंथु आदि सर्व जीवोंके हितकारी सतरहवें श्रीकुंथुनाथ स्वामी हमको भ्रमरहित करो। समस्त क्लेशसे रहित मोक्षके मूल अनन्त सुखके भण्डार अठारहवें श्रीअरनाथ स्वामी कर्मरजरहित करो। संसारके तारक मोह मल्लके जीतनहारे वाह्याभ्यन्तर मलरहित ऐसे उन्नीसवें श्रीमल्लिनाथ स्वामी ते अनन्त वीर्यकी प्राप्ति करो और भले व्रतोंके उपदेशक समस्त दोषोंके विदारक वीसवें श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनके तीर्थविषै श्रीरामचन्द्रका शुभचरित्र प्रगट भया ते हमारे अव्रत मेट महाव्रतकी प्राप्ति करो। और नम्रीभूत भये हैं सुर नर असुरोंके इन्द्र जिनको ऐसे इकीसवें श्रीनमिनाथ प्रभु ते हमकों निर्वाणकी प्राप्ति करो। और समस्त अशुभकर्म तेई भये अरिष्ट तिनके काटिवेकूं चक्रकी धारा समान वाईसवें श्रीअरिष्ट नेमि भगवान् हरिवंशके तिलक श्रीनेमिनाथ स्वामी ते हमको यम नियमादि अष्टांग योगकी सिद्धि करो और तेईसवें श्रीपार्श्वनाथ देवाधिदेव इन्द्र नागेन्द्र चन्द्र सूर्य्यादिक कर पूजित हमारे भव

सन्ताप हरो । और चौबीसवें श्रीमहावीर स्वामी जो चतुर्थकालके अन्तमें भये हैं ते हमारे महा मंगल करो । और भी जो गणधरादिक महामुनि तिनको मन, वचन, काय कर बारम्बार नमस्कार कर श्री रामचन्द्रके चरित्रका व्याख्यान करूं हूं। कैसे हैं श्रीराम लक्ष्मीकर आलिंगित है हृदय जिनका और प्रफुल्लित है मुखरूपी कमल जिनका महापुण्याधिकारी हैं, महाबुद्धिमान् हैं, गुणनके मंदिर उदार है चरित्र जिनका, जिनका चारित्र केवलज्ञानके ही गम्य है ऐसे जो श्रीरामचन्द्र उनका चारित्र श्रीगणधरदेव ही किंचित् मात्र कहनेको समर्थ हैं। यह बडा आश्चर्य है कि—जो हम सारिखे अल्पबुद्धि पुरुष भी उनके चरित्रको कहें हैं यद्यापि हम सारिखे इस चरित्रको कहनेको समर्थ नहीं तथापि परंपरासे महामुनि जिस प्रकार कहते आए हैं उनके कहे अनुसार कुछइक संक्षेपता कर कहे हैं जैसे जिस मार्गविषै मदमाते हाथी चालें तिस मार्ग विषै मृग भी गमन करे हैं और जैसे युद्धविषै महा सुभट आगे होय कर शस्त्रपात करे हैं तिनके पीछैं और भी पुरुष रणविषै जाय हैं अर सूर्य करि प्रकाशित जे पदार्थ तिनकूं नेत्रवारे लोक सुखसू देखै हैं अर जैसे बज्रसूचीके मुख कर भेदी जो मणि उस विषै सूत्र भी प्रवेश करे हैं तैसै ज्ञानीनकी पंकतिकर भाषा हुआ चला आया जो रामसम्बन्धी चरित्र ताके कहनेको भक्ति कर प्रेरी जो हमारी अल्प बुद्धि सो भी उद्यमवती भई है। बडे पुरुषके चिंतवन कर उपजा जो पुण्य ताके प्रसाद कर हमारी शक्ति प्रकट भई है । महा पुरुषनके यशकीर्त्तनसे बुद्धिकी वृद्धि होय है और यश अत्यन्त निर्मल होय है और पाप दूर जाय है। यह प्राणीनका शरीर अनेक रोगोंकर भरा है इसकी स्थिति अल्प काल है और सत्पुरुषनकी कथा कर उपजाया जो यश सो जब तक चांद सूर्य्य हैं तब तक रहे है इसलिए जो आत्मवेदी पुरुष हैं वे सर्व यत्नकर महापुरुषनके यश कीर्तनसे अपना यश स्थित करे हैं। जिसने सज्जनोंको आनंदकी देनहारी जो सत्पुरुषनकी रमणीक कथा उसका आरम्भ किया उसने दोनों

लोकका फल लिया। जो कान सत्पुरुषनकी कथा श्रवण विषै प्रवृत्ते हैं वे ही कान उत्तम हैं और जे कुकथाके सुननहारे कान हैं वे कान नाहीं वृथा आकार धरे हैं और जे मस्तक सत्पुरुषनकी चेष्टाके वर्णन विषै घूमे हैं ते ही मस्तक धन्य हैं और जे शेष मस्तक हैं वे थोथे नारियल समान जानने। सत्पुरुषनके यश कीर्तन विषै प्रवृत्ते जे होंठ ते ही श्रेष्ठ हैं और जे शेष होंठ हैं ते जोककी पीठ समान विफल जानने। जे पुरुष सत्पुरुषनकी कथाके प्रसंग विषै अनुरागको प्राप्त भये उनहीका जन्म सफल है। और मुख वे ही हैं जो मुख्य पुरुषनकी कथाविषै रत भये। शेष मुख दांतरूपी कीडानका भरा हुआ बिल समान हैं और जे सत्पुरुषनकी कथाके वक्ता हैं अथवा श्रोता हैं सो ही पुरुष प्रशंसायोग्य हैं और शेष पुरुष चित्राम समान जानने। गुण और दोषनके संग्रहविषै जे उत्तम पुरुष हैं ते गुणन ही को ग्रहण करे हैं जैसे दुग्ध और पानीके मिलापविषै हंस दुग्ध ही को ग्रहण करे है और गुण दोषनके मिलापविषै जे नीच पुरुष हैं ते दोषहीको ग्रहण करे हैं जैसे गजके मस्तकविषै मोती मांस दोऊ हैं तिनविषै काग मोतीको तज मांसहीको ग्रहण करे हैं। जो दुष्ट हैं ते निर्दोष रचनाको भी दोष रूप देखे हैं जैसे उल्लू सूर्यके बिम्बको तमाल वृक्षके पत्र समान स्याम देखे है, जे दुर्जन हैं ते सरोवरमें जल आनेका जाली समान हैं जैसे जाली जलको तज तृण पत्रादि कंटकादिकका ग्रहण करे है तैसे दुर्जन गुणको तज दोषनहीको धारें हैं इसलिये सज्जन और दुर्जनका ऐसा स्वभाव जानकर जो साधु पुरुष हैं वे अपने कल्याणनिमित्त सत्पुरुषनकी कथाके प्रबंध विषैही प्रवृत्ते हैं सत्पुरुषनकी कथाके श्रवणसे मनुष्योंको परम सुख होय है। जे विवेकी पुरुष हैं उनको धर्म कथा पुण्यके उपजावनेका कारण है सो जैसा कथन श्रीवर्द्धमान जिनेंद्रकी दिव्य ध्वनिमें खिरा तिसका अर्थ गौतम गणधर धारते भए। और गौतमसे सुधर्माचार्य धारते भए ता पीछे जम्बूस्वामी प्रकाशते भए जम्बूस्वामीके पीछे पांच श्रुत केवली और भए वे भी उसी भांति कथन करते भये इसी

प्रकार महा पुरुषनकी परम्पराकर कथन चला आया उसके अनुसार रविषेणाचार्य व्याख्यान करते भये। यह सर्व रामचन्द्रका चरित्र सज्जन पुरुष सावधान होकर सुनो। यह चरित्र सिद्ध पदरूप मंदिरकी प्राप्तिका कारण है और सर्वप्रकारके सुखका देनहारा है। और जे मनुष्य श्रीरामचन्द्रकों आदि दे जे महापुरुष तिनको चिंतवन करें हैं वे अतिशयकर भावनके समूहकर नम्रीभूत होय प्रमोदकों धरे हैं तिनका अनेक जन्मोंका संचित किया जो पाप सो नाशको प्राप्त होय है और जे सम्पूर्ण पुराणका श्रवण करें तिनका पाप दूर अवश्य ही होय यामें संदेह नाहीं, कैसा है पुराण ? चन्द्रमा समान उज्ज्वल है इसलिये जे विवेकी चतुर पुरुष हैं ते इस चरित्रका सेवन करें। यह चारित्र बडे पुरुषनिकर सेवन योग्य है। इस ग्रन्थ विषै ६ महा अधिकार हैं तिन विषै अवांतर अधिकार बहुत हैं। मूल अधिकारनिके नाम कहे हैं। प्रथम ही १ लोकस्थिति, बहुरि २ वंशनिकी उत्पत्ति, पीछे ३ वनविहार अर संग्राम, तथा ४ लवणांकुशकी उत्पत्ति, बहुरि ५ भवनिरूपण अर ६ रामचंद्रका निर्वाण। श्रीवर्धमान देवाादिदेव सर्व कथनके वक्ता हैं, जिनको अति-वीर कहिये वा महावीर कहिये है। रामचरित्रके कारण श्रीमहावीर स्वामी हैं तातैं प्रथम ही तिनका कथन कीजिये है। विपुलाचल पर्वतके शिखर पर समोसरणविषै श्रीवर्द्धमान स्वामी विराजे। तहां श्रेणिकराजा गौतमस्वामीसों प्रश्न करते भये। कैसे हैं गौतमस्वामी, भगवानके मुरुय गणधर हैं, महा महंत हैं, जिनका इंद्रभूति भी नाम है। आगे श्रीगौतम स्वामी कहे हैं तहां प्रश्न विषै प्रथम ही युगनिका कथन है। बहुरि कुलकरनिकी उत्पत्ति, अकस्मात् चंद्र सूर्यके अवलोकनतैं जुगलियानिकूं भयका उपजना, सो प्रथम कुलकर प्रतिश्रुतके उपदेशतैं भयका दूर होना, बहुरि नाभिराजा अन्तके कुलकर तिनके घर श्रीऋषभदेवका जन्म, सुमेरु पर्वतविषै इंद्रादिक देवनिकरि जन्माभिषेक, बहुरि बाललीला अर राज्याभिषेक, कल्प वृक्षनिके वियोग करि उपज्या प्रजानिकूं दुःख, सो कर्मभूमिकी विधि

के बतावने करि दूर होना बहुरि भगवानका वैराग्य, केवलोत्पत्ति समोसरनकी रचना, जीवनिकूं धर्मोपदेश बहुरि भगवानका निर्वाणगमन, भरत चक्रवर्ती अर बाहुबलिके परस्पर युद्ध, बहुरि विप्रनिकी उत्पत्ति, इक्ष्वाकु आदि वंशनिका कथन, विद्याधरनिका वर्णन, तिनके वंश विषै राजा विद्युद्दंष्ट्रका जन्म संजयंत स्वामीकूं विद्युद्दंष्ट्रने उपसर्ग कीया सो उपसर्ग सहि करि अंतकृत केवली होइ करि निर्वाण गये विद्युद्दंष्ट्रने उपसर्ग कीया यह जानि धरणेंद्रने तासूं कोप कीया, ताकी विद्या छेद करी बहुरि श्रीअजितनाथ स्वामीका जन्म, पूर्णमेघ विद्याधर भगवानके सरणे आया। राक्षस द्वीपका स्वामी व्यन्तर देव, तानै प्रसन्न होइ पूर्णमेघकूं राक्षस द्वीप दिया। बहुरि सगर चक्रवर्तीकी उत्पत्तिका कथन, पुत्रनिके दुःखकरि दीक्षा ग्रहण अर मोक्ष प्राप्ति, पूर्णमेघके वंशविषै महारक्षका जन्म, अर वानरवंशी विद्याधरनिकी उत्पत्तिका कथन, बहुरि विद्युत्केश विद्याधरका चारित्र, बहुरि उदधिविक्रम अर अमरविक्रम विद्याधरका कथन, वानरवंशीनिके किष्किंधापुरका निवास अर अंधक विद्याधरका कथन, श्रीमाला विद्याधरी का संयम, विजयसंघके मरणतैं अशनिवेगके क्रोधका उपजना और सुकेशीके पुत्रनिका लंका आवने का निरूपण, निर्घात विद्याधरके बधतैं माली नाम विद्याधर रावणके दादेका बडा भाई, ताके संपदाकी प्राप्तिका कथन, अर विजयार्धकी दक्षिणकी श्रेणीविषै रथनूपुर नगरमें इंद्रनामा विद्याधरका जन्म, इंद्र सर्व विद्याधरनिका अधिपति है। इंद्रके अर मालीके युद्धविषै मालीका मरण अर लंकाविषै इंद्रका राज्य अर वैश्रवण नामा विद्याधरका थाणे रहना अर सुमालीके पुत्र रत्नश्रवाका पुष्पांतक नामा नगर वसावना अर केकसीका परणना अर केकसीके शुभस्वप्नका अवलोकन, रावणका जन्म अर विद्यानिका साधन, विद्यानिके साधनविषै अनावृत देव आय विघ्न कीया तहां रावणका अचल रहना बहुरि विद्या सिद्ध होना अर अनावृत देवका वश होना, अपने नगर आय माता पितासूं मिलना, बहुरि

अपने पिताका पिता जो सुमाली, ताकूं बहुत आदरसों बुलावना, बहुरि मंदोदरीका रावणसों विवाह और बहुत राजानिकी कन्याका व्याहना, कुम्भकरणका चरित्र, वैश्रवणका कोप, यक्ष राक्षस कहावैं ऐसे विद्याधर तिनका बडा संग्राम, वैश्रवणका भागना बहुरि तप धरणा, अर रावणका लंकामें कुटुम्ब सहित आवना अर सर्व राक्षसनिकूं धीरज बंधावना अर ठौर ठौर जिनमंदिरका निर्मापण करना अर जिनधर्मका उद्योत करना, और श्रीहरिषेण चक्रवर्तीका चरित्र राजा सुमालीने रावणकूं कह्या सो भावसहित सुनना। कैसा है हरिषेण चक्रवर्तीका चरित्र पापानिका नाश करण हारा, बहुरि तिलोकमण्डन हाथीका वश करना, अर राजा इंद्रका लोकपाल यमनामा विद्याधर, ताने वानरवंशीके राजा सूर्यरजकूं पकरि बंदी-खाने डारया सो रावण समेदाशिखरकी यात्रा करि डेरा आये थे सो सूर्यरजके समाचार सुनि ताही समै गमन करना अर जाय यमकूं जीतना। यमके थाने उठावना अर याका भाजना, राजा सूर्यरजकू बंदीतैं छुडावना अर किहकंधापुरका राज्य देना। बहुरि रावणकी बहिन सूर्पनखा, ताकूं खरदूषण हरि लेगया सो वाहीकूं परिणाय देना अर ताहि पाताल लंकाका राज देना, सो खरदूषणका पाताल लंका जाना अर चंद्रोदरकौं युद्धविषै हनना, अर चंद्रोदरकी रानी अनुराधाकूं पतिके वियोगतैं महादुःख का होना, अर चंद्रोदरके पुत्र विराधितका राज्यभ्रष्ट होइ कहूंका कहूं रहना अर बाल्यका वैराग्य होना, सुग्रीवकूं राज्यकी प्राप्ति अर कैलास पर्वतविषै बाल्यका विराजना, रावणका वाल्यसूं कोप करि कैलास उठावना, अर चैत्यालयनिकी भक्तिके निमित्त बाल्य पगका अंगुष्ठ दाब्या तब रावणका रोवना, अर रानीनिकी विनतीतैं बालीका अंगुष्ठका ढीला करना।

अर बाल्यके भाई सुग्रीवका तारासूं विवाह अर साहसगति विद्याधरकें ताराकी अभिलाषा हुती सो अलाभतें संतापका होना अर राजा अनारण्य अर सहस्रकिरणका वैराग्य होना, अर रावणने यज्ञ

नाश किया ताका वर्णन, अर राजा मधुके पूर्व भवका व्याख्यान, अर रावणकी पुत्री उपरंभाका मधुसों विवाह, अर रावणका इंद्रपर जाना, इंद्र विद्याधरकों युद्धकरि जीतना पकरिकरि लंकामें ल्यावना बहुरि छोडना, अर ताका वैराग्य लेय निर्वाण होना अर रावणका प्रताप अर सुमेरु पर्वत गमन बहुरि पा छा आवना, अर अनंतवीर्य मुनिकूं केवलज्ञानकी प्राप्ति, रावणका नेम ग्रहण—जो परस्त्री मोहि न अभिलाषै ताहि मैं न सेवूं। बहुरि हनुमानकी उत्पत्ति, कैसे हैं हनुमान ? बानरवंशीनिविषै महात्मा हैं अर कैलाश पर्वतविषै अंजनीका पिता जो राजा महेन्द्र ताने पवनंजयका पिता जो राजा प्रल्हाद तासों सम्भाषण कीया—जो हमारी पुत्रीका तुम्हारे पुत्रसूं सम्बन्ध करहु। सो राजा प्रल्हादने प्रमाण कीया। अंजनीका पवनंजयसूं विवाह होना बहुरि पवनंजयका अंजनीसों कोप, अर चकवा चकवीके वियोगका वृत्तांत देखि अंजनीसूं प्रसन्न होना, अंजनीके गर्भका रहना। अर हनुमानके पूर्व जन्म वनमें अंजनीकूं मुनिने कहे। अर हनुमानका जीवका गुफाविषै जन्म बहुरि अनुरुद्ध द्वीपमें वृद्धि प्रतिसूर्य मामेने अंजनीकूं बहुत आदरसों राखी बहुरि पवनंजयका भूताटवीविषै प्रवेश अर पवनंजयके हाथीकूं देखि प्रतिसूर्यका तहां आवना, पवनंजयकूं अंजनीके मिलापका परम उत्साह होना, पुत्रका मिलाप होना अर पवनंजयका रावणके निकट जाना। अर रावणकी आज्ञातैं बरुणसूं युद्धकरि ताहि जीतना। रावणके बडे राज्यका वर्णन, तीर्थंकरकी आयुका अंतरालका वर्णन, बलिभद्र, नारायण, प्रतिनारायण, चक्रवर्तीनिके सकल चरित्रका वर्णन। अर राजा दशरथकी उत्पत्ति, अर केकईकूं वरदानका देना, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नका जन्म, सीताकी उत्पत्ति, भामंडलका हरण, अर ताकी माताकूं शोकका होना। अर नारदने सीताका चित्रपट भामण्डलकूं दिखाया सो देखकर मोहित होना। बहुरि जनकके स्वयंवर मंडपका वृत्तांत अर धनुष रतनका स्वयम्बर मंडपमें धरना, श्रीरामचन्द्रका आवना, धनुषका चढावना

अर सीताकूं विवाहना अर सर्वभूतशरण्यमुनिके निकट दशरथका दीक्षा लेना अर भामण्डलकों पूर्व जन्मका ज्ञान होना अर सीताका दर्शन । बहुरि केकयीके वरतैं भरतका राज्य, अर राम लक्ष्मण सीता का दक्षिण दिशाकूं गमन करना । वज्रकिरणका चरित्र, लक्ष्मणकूं कल्याणमालाका लाभ अर रुद्रभूत-कों वश करना अर बालखिल्यका छुडावना अर अरुणग्रामविषै श्रीराम आए तहां वनमें देवतानिने नगर वसाये तहां चौमासे रहना । लक्ष्मणके वनमालाका संगम, अतिवीर्यका वैराग्य बहुरि लक्ष्मणके पद्माकी प्राप्ति, अर कुलभूषण देशभूषण मुनिका चरित्र । अर श्रीरामने वंशस्थल पर्वतविषै भगवानके मंदिर कराए तिनका वर्णन, अर जटायु पक्षीकूं नेमकी प्राप्ति, पात्रदानके फलकी महिमा, संबूकका मरण, सूर्यनारायणका विलाप, खरदूषण लक्ष्मणका युद्ध, सीताका हरण, सीताकूं रामके वियोगका अत्यन्त शोक, अर रामकूं सीताके वियोगका अत्यन्त शोक, बहुरि विराधितविद्याधरका आगमन अर खरदूषण का मरण, अर रतनजटीकैं रावणकरि विद्याका छेद, अर सुग्रीवका रामके निकट आवना, बहुरि सुग्रीव के कारण श्रीरामने साहसगतिकों मारा अर सीताका वृत्तांत रतनजटीने श्रीरामसूं कह्या । श्रीरामका लंका ऊपरि गमन । राम रावणके युद्ध । राम लक्ष्मणकूं सिंहवाहिनी गरुडवाहिनी विद्याकी प्राप्ति । लक्ष्मणके रावणकी शक्तिका लगना अर विशल्याके प्रसादतैं शक्ति दूर होना, रावणका शांतिनाथके मंदिर विषै बहुरूपिणी विद्याका साधना अर रामके कटकके विद्याधर कुमारनिका लंकाविषै प्रवेश, अर रावणके चित्तके डिगावनेका उपाय, पूर्णभद्र माणिभद्रके प्रभावतैं विद्याधर कुमारनिका पाछा कटक में आवना । रावणकूं विद्याकी सिद्धि, बहुरि राम रावणके युद्ध, रावणके चक्र लक्ष्मणके हाथ आवना । अर रावणका परलोक गमन, रावणकी स्त्रीनिका विलाप । बहुरि केवलीका लंकाके वनविषै आगमन । इंद्रजीत आदिका दीक्षा ग्रहण । अर रावणकी स्त्रीनिका दीक्षा ग्रहण । अर श्रीरामका सीतासूं मिलाप विभीषणके भोजन, कैइक दिन लंकाविषै निवास, बहुरि नारदका रामके निकट आवना । रामका अयो

ध्यागमन, भरतके अर त्रिलोकमंडन हाथीके पूर्व भवका वर्णन। भरतका वैराग्य, राम लक्ष्मणका राज्य अर रणविषै मधुका अर लवणका मरण। मथुराविषै शत्रुघ्नका राज्य, मथुराविषै अर सकलदेशविषै धरणींद्रके कोपतैं रोगानिकी उत्पत्ति। बहुरि सप्तऋषिनिके प्रभावतैं रोगानिकी निवृत्ति। अर लोकापवादतैं सीताका वनविषै त्यजन, अर वज्रजंघ राजाका वनविषै आगमन, सीताकूं बहुत आदरतें ले जाना। तहां लवणांकुशका जन्म। अर लवणांकुश बडे होइ अनेक राजानिकूं जीति वज्रजंघके राज्यका विस्तार कीया। बहुरि अयोध्या जाय श्रीरामसूं युद्ध कीया। अर सर्वभूषण मुनिकूं केवलज्ञानकी प्राप्ति, देवनिका आगमन। सीताके धीजके अग्निकुण्डका सीतल होना। अर विभीषणके पूर्व भवका वर्णन। कृतांतवक्रका तप लेना। स्वयम्बर मण्डपविषै रामके पुत्रानितैं लक्ष्मणके पुत्रानिका विरोध। बहुरि लक्ष्मणके पुत्रानिका वैराग्य। अर विद्युत्पाततैं भामण्डलका मरण। हनुमानका वैराग्य। लक्ष्मणकी मृत्यु। रामके पुत्रानिका तप। श्रीरामकूं लक्ष्मणके वियोगतैं अत्यंत शोक, अर देवतानिके प्रतिबोधतैं मुनिव्रतका अंगीकार, केवल ज्ञानकी प्राप्ति। निर्वाण गमन।

यह सर्व रामचन्द्रका चारित्र सज्जन पुरुष मनकूं समाधान करिकै सुनहु। यह चारित्र सिद्ध पदरूप मंदिरका प्राप्तिका सिवाण है अर सर्वप्रकार सुखनिका दायक है। श्रीरामचन्द्रकों आदि दे जे महामुनि तिनका जे मनुष्य चिंतवन करैं हैं अर अतिशयपणेकरि भावानिके समूहकरि नम्रीभूत होइ प्रमोदकूं धरै हैं तिनका अनेक जन्मनिका संचित जो पाप सो नाश होइ है। सम्पूर्ण पुराण जे श्रवण करैं तिनका पाप दूर होय ही होय। तामें संदेह कहा? कैसा है पुराण? चंद्रमा समान उज्ज्वल है। तातैं जो विवेकी चतुर पुरुष हैं ते या चरित्रका सेवन करहु। कैसा है चारित्र? बडे पुरुषनिकरि सेइवा योग्य है। जैसे सूर्यकरि प्रकास्या जो मार्ग ताविषै भले नेत्रानिका धारक पुरुष काहेको डिगै?

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित पद्मपुराण संस्कृत ग्रंथकी भाषा वचनिकाविषै पीठ बंध विधाननामा प्रथम पर्व पूर्ण भया ॥ १ ॥

अथ लोकस्थिति महा अधिकार।

मगध देशके राजगृह नगरमें श्रीमहावीरस्वामीके समोसरणका आना और राजा श्रेणिकका श्रीरामचंद्रजीकी कथाका पूछना।

जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें मगध देश अति सुंदर है, जहां पुण्याधिकारी बसे हैं इन्द्रके लोक समान सदा भोगोपभोग करे हैं जहां योग्य व्यवहारसे लोक पूर्ण मर्यादारूप प्रवृत्ते हैं और जहां सरोवरमें कमल फूल रहे हैं और भूमिमें अमृत समान मीठे सांठनेके बाडे शोभायमान हैं और जहां नाना प्रकारके अन्नोंके समूहके पर्वत समान ढेर होय रहे हैं अरहटकी घडीसे सींचे जीराके घणाके खेत हरित होय रहे हैं. जहां भूमि अत्यंत श्रेष्ठ है सर्व वस्तु निपजे हैं। चांवलोंके खेत शोभायमान और मूंग मोठ ठौर ठौर फूल रहे हैं गेहूं आदि अन्नको किसी भांति विघ्न नहीं और जहां भैंसकी पीठपर चढे ग्वाला गावे हैं गऊओंके समूह अनेक वर्णके हैं जिनके गलेमें घण्टा बाजे हैं और दुग्ध झरती अत्यंत शोभे हैं, जहां, दूधमयी धरती हो रही है, अत्यंत स्वादु रसके भरे तृण तिनको चरकर गाय भैंस पुष्ट होय रही हैं, और श्याम सुंदर हिरण हजारों विचरे हैं मानो इंद्रके हजारों नेत्र ही हैं. जहां जीवनको कोई बाधा नहीं जिन धर्मियोंका राज्य है और बनके प्रदेश केतकीके फूलोंसे धवल हो रहे हैं, गंगाके जलके समान उज्वल बहुत शोभायमान हैं और जहां केसरकी क्यारी अति मनोहर हैं और जहां ठौर ठौर नारियलके वृक्ष हैं और अनेक प्रकारके शाक पत्रसे खेत हरित हो रहे हैं और वनपाल नर मेवादिकका आस्वादन करे हैं, और जहां दाडमके बहुत

वृक्ष हैं जहां सूवादि अनेक पक्षी बहुत प्रकारके फल भक्षण करे हैं, जहां बन्दर अनेक प्रकार किलोल करे हैं, विजौराके वृक्ष फल रहे हैं बहुत स्वादरूप अनेक जातिके फल तिनका रस पीकर पक्षी सुखसों सोय रहे हैं. और दाखके मण्डप छाय रहे हैं. जहां वन विषै देव विहार करे हैं जहां खजूरको पथिक भक्षण करे हैं केलाके वन फल रहे हैं। ऊंचे ऊंचे अरजुन वृक्षोंके वन सोहे हैं और नदीके तट गोकुलके शब्दसे रमणीक हैं, नदियोंमें पक्षीके समूह किलोल करे हैं तरंग उठे हैं मानो नदी नृत्य ही करे हैं और हंसनके मधुर शब्दों कर मानो नदी गान ही करे हैं, जहां सरोवरके तीरपर सारस क्रीडा करे हैं और वस्त्र आभरण सुगंधादि सहित मनुष्योंके समूह तिष्ठे हैं, कमलोंके समूह फूल रहे हैं और अनेक जीव क्रीडा करे हैं, जहां हंसोंके समूह उत्तम मनुष्योंके गुणों समान उज्ज्वल सुन्दर शब्द सुंदर चालवाले तिनकर वन धवल होय रहा है। जहां कोकिलोंका रमणीक शब्द और भंवरोंका गुंजार मोरोंके मनोहर शब्द संगीतकी ध्वनि बीन मृदंगोंका बजना इनकर दशों दिशा रमणीक हो रही हैं और वह देश गुणवन्त पुरुषोंसे भरा है, जहां दयावान् क्षमावान् शीलवान उदारचित्त तपस्वी त्यागी विवेकी आचारी लोग वसे हैं, मुनि विचरे हैं, आर्यिका विहार करे हैं उत्तम श्रावक, श्राविका वसे हैं शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है चित्तकी वृत्ति जिनकी मुक्ताफल समान उज्वल है आनन्दके देनेहारे हैं; और वह देश बडे बडे गृहस्थीन कर मनोहर है कैसे हैं गृहस्थी कल्पवृक्ष समान हैं तृप्त कीये हैं अनेक पथिक जिन्होंने जहां अनेक शुभ ग्राम हैं जिनमें भले भले किसान बसे हैं और उस देश विषै कस्तूरी कपूरादि सुगन्ध द्रव्य बहुत हैं और भांति भांतिके वस्त्र आभूषणों कर माण्डित नर नारी विचरे हैं मानो देव देवी ही हैं, जहां जैन वचन रूपी अंजन (सुरमा) से मिथ्यात्व रूपी दृष्टि विकार दूर होवे है और महा मुनियोंके तप रूपी अग्निसे पाप रूपी बन भस्म होय है ऐसा धर्म रूपी महा मनोहर मगध देश बसे है॥

मगधदेशमें राजगृह नामा नगर महा मनोहर पुष्पोंकी बासकर महा सुगंधित अनेक सम्पदा कर भरचा है मानो तीन भवनका जोवन ही है और वह नगर इंद्रके नगर समान मनका मोहनेवाला है। इंद्रके नगरमें तो इंद्राणी कुंकुम कर लिप्त शरीर विचरे हैं और इस नगरमें राजाकी रानी सुगन्ध कर लिप्त विचरे हैं, महिषी ऐसा नाम रानीका है और भैंसका भी है सो जहां भैंस भी केसरकी क्यारीमें लोटकर केसरसों लिप्त भई फिरे हैं और सुंदर उज्ज्वल घरोंकी पंक्ति और टांचीनके घडे हुए सफेद पाषाण तिन से मकान बने हैं मानो चंद्रकांति मणिनका नगर बना है मुनियोंको तो वह नगर तपोवन भासे है, (मालूम होता है) वेश्याको काम मंदिर, नृत्यकारनीको नृत्यका मंदिर और वैरीको यमपुर है, सुभट-को वीरका स्थान, याचकको चिंतामणि, विद्यार्थीको गुरुगृह, गीत शास्त्रके पाठीको गंधर्व नगर, चतुरकों सर्व कला (चतुराई) सीखनेका स्थान, और ठगको धूर्त्तका मंदिर भासे है। संतनको साधुओंका संगम, व्यापारीको लाभभूमि, शरणागतको बज्रपिंजर, नीतिके वेत्ताको नीतिका मंदिर, कौतुकी (खिलारियों) को कौतुकका निवास, कामिनिको अप्सरोंका नगर, सुखीयाको आनंदका निवास भासे है। जहां गज-गामिनी शीलवंती ब्रतवंती रूपवंती अनेक स्त्री हैं जिनके शरीरकी पद्मरागमणिकीसी प्रभा है और चंद्रकांति मणि जैसा बदन है सुकुमार अंग है पतिव्रता हैं व्यभिचारीको अगम्य हैं महा सौन्दर्ययुक्त हैं मिष्ट वचनकी बोलनेहारी हैं और सदा हर्षरूप मनोहर हैं मुख जिनके और प्रमादरहित हैं चेष्टा जिनकी सामायिक प्रोषध प्रतिक्रमणकी करनहारी हैं व्रत नेमादि विषै सावधान हैं अन्नका शोधन जल का छानना यतिनको भक्तिसे दान देना और दुखित भुखित जीवको दयाकर दान देना इत्यादि शुभ क्रियामें सावधान हैं जहां महामनोहर जिनमंदिर हैं जिनेश्वरकी और सिद्धांतकी चरचा ठौर ठौर है। ऐसा राजगृह नगर बसा है जिसकी उपमा कथनमें न आवे, स्वर्ग लोक तो केवल भोगहीका विलास

है और यह नगर भोग और योग दोनों हीका निवास है जहां पर्वत समान तो ऊंचा कोट है और महागम्भीर खाई है जिसमें वैरी प्रवेश नहीं कर सकते ऐसा देवलोक समान शोभायमान राजगृह नगर बसे है ॥

राजगृह नगरमें राजा श्रेणिक राज्य करे है जो इंद्र समान विख्यात है । बडा योद्धा कल्याणरूप है प्रकृति जिसकी, कल्याण ऐसा नाम स्वर्णका भी है और मंगलका भी है सुमेरु तो सुवर्ण रूप है और राजा कल्याण रूप है, वह राजा समुद्र समान गम्भीर है मर्यादा उलंघनका है भय जिसको कलाके ग्रहणमें चंद्रमाके समान है, प्रतापमें सूर्य समान है, धन सम्पदामें कुवेरके समान है, शूरवीरपनेमें प्रसिद्ध है लोकका रक्षक है महा न्यायवंत है लक्ष्मीका पूर्ण है, गर्वसे दूषित नहीं सर्व शत्रुओंका विजय कर बैठा है तथापि शस्त्र (हथियार) का अभ्यास रखता है और जे आपसे नम्रीभूत भये हैं तिनके मानका बढावनहारा है जे आपते कठोर हैं तिनके मानका छेदनहारा है और आपदा विषै उद्वेग चित्त नहीं सम्पदाविषै मदोन्मत्त नहीं जिसकी साधुओंमें निर्मल रत्न बुद्धि है और रत्नके विषै पाषाणबुद्धि है जो दानयुक्त क्रियामें वडा सावधान है और ऐसा सामन्त है कि मदोन्मत्त हाथीको कीट समान जाने है और दीन पर दयालु है जिसकी जिन शासनमें परम प्रीति है धन और जीतव्यमें जीर्ण तृण समान बुद्धि है दशों दिशा वश करी हैं प्रजाके प्रतिपालनमें सावधान है और स्त्रियोंको चर्मकी पुतलीके समान देखे है धनको रज समान गिने है गुणनकर नम्रीभूत जो धनुष ताहीको अपना सहाई जाने है चतुरंग सेनाको केवल शोभारूप माने है (भावार्थ) अपने बल पराक्रमसे राज करे है जिसके राजमें पवन भी वस्त्रादिकका हरण नहीं करे तो ठग चोरोंकी क्या बात जिसके राजमें क्रूर पशु भी हिंसा न करते भये तो मनुष्य हिंसा कैसे करे, यद्यपि राजा श्रेणिकसे वासुदेव बडे होते हैं परंतु उन्होंने वृष कहिए वृषासुर

का पराभव किया है और यह राजा श्रेणिक वृष कहिए धर्म ताका प्रतिपालक है इसलिए उनसे श्रेष्ठ है और पिनाकी अर्थात् शंकर उसने राजा दक्षके गर्वको आताप किया और यह राजा श्रेणिक दक्ष अर्थात् चतुर पुरुषोंको आनन्दकारी है इसलिये शंकरसे भी अधिक है और इंद्रके वंश नहीं यह वंश कर विस्तीर्ण है और दक्षिण दिशाका दिग्पाल जो यम सो कठोर है राजा कोमल चित्त है और पश्चिम दिशाका दिग्पाल जो वरुण सो दुष्ट जलचरोंका अधिपति है इसके दुष्टोंका आधिकार ही नाहीं और उत्तर दिशाका अधिपति जो कुबेर, वह धनका रक्षक है यह धनका त्यागी है और बौद्धके समान क्षणिक-मती नहीं चन्द्रमाकी न्याई कलंकी नहीं । राजा श्रेणिक सर्वोत्कृष्ट है जिसके त्यागका अर्थी पार न पावें जिसकी बुद्धिका पार पण्डित न पावते भए शूरवीर जिसके साहसका पार न पावते भये जिसकी कीर्ति दशों दिशामें विस्तरी है जिसके गुणनकी संख्या नहीं सम्पदाका क्षय नहीं सेना बहुत, बडे बडे सामंत सेवा करे हैं हाथी घोडे रथ पयादे सब ही राजाका ठाठ सबसे अधिक है और पृथ्वीविषै प्राणीका चित्त जिससे अतिअनुरागी होता भया जिसके प्रतापका शत्रु पार न पावते भये सर्व कलाविषै प्रवीण है इसलिए हम सारखे पुरुष वाके गुण कैसे गा सकें जिसके क्षायक सम्यक्त्वकी महिमा इंद्र अपनी सभा विषै सदा ही करे है वह राजा मुनिराज़के समूहमें वेतकी लताके समान नम्रीभूत है और उद्धत वैरीको वज्र दण्डसे वश करनेवाला है जिसने अपनी भुजाओंसे पृथ्वीकी रक्षा करी है कोट खाई तो नगरकी शोभामात्र हैं । जिनचैत्यालयोंका करानेवाला जिन पूजाका करानेवाला जिसके चेलना नामा रानी महा पतिव्रता शीलवंती गुणवन्ती रूपवंती कुलवंती शुद्ध सम्यग्दर्शनकी धरनेवाली श्रावकके व्रत पालने-वाली सर्व कलामें निपुण उसका वर्णन कहां लग कहैं ऐसा उपमा कररहित राजा श्रेणिक गुणोंका समूह राजगृह नगरमें राज करे है ॥

आगैं अंतिम तीर्थंकरका समवशरणका आगमन जानि श्रेणिक उछाहसहित भए, ताका वर्णन करिए हैं—

एक समय राजगृह नगरके समीप विपुलाचल पर्वतके ऊपर भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर समोशरण सहित आय विराजे तब भगवानके आगमनका वृत्तांत बनपालने आनकर राजासे कहा और छहों ऋतुओंके फल फूल लाकर आगे धरे तब राजाने सिंहासनसे उठकर सात पैंड पर्वतके सम्मुख जाय भगवान्को अष्टांग नमस्कार किया और बनपालको अपने सर्व आभरण उतारकर पारितोषिकमें देकर भगवानके दर्शनोंको चलनेकी तैयारी करता भया।

श्रीवर्द्धमान भगवानके चरणकमल सुर नर असुरोंसे नमस्कार करने योग्य हैं गर्भ कल्याणविषै छप्पन कुमारियोंने शोधा जो माताका उदर उसमें तीन ज्ञान संयुक्त अच्युत स्वर्गसे आय विराजे हैं। और इंद्रके आदेशसे धनपतिने गर्भमें आवनेसे छह मास पहिलेसे रत्नवृष्टि करके जिनके पिताका घर पूरा है और जन्म कल्याणकमें सुमेर पर्वतके मस्तकपर इंद्रादि देवोंने क्षीरसागरके जल कर जिनका जन्माभिषेक किया है और धरा है महावीर नाम जिनका और बाल अवस्थामें इंद्रने जो देवकुमार रखे तिन सहित जिन्होंने क्रीडा करी है और जिनके जन्ममें माता पिताको तथा अन्य समस्त परिवारको और प्रजाको और तीन लोकके जीवोंको परम आनंद हुवा नारकियोंका भी त्रास एक मुहूरतके वास्ते मिट गया जिनके प्रभावसे पिताके बहुत दिनोंके विरोधी जो राजा थे वह स्वयमेव ही आय नम्रीभूत भये और हाथी घोडे रथ रत्नादिक अनेक प्रकारके भेट किये और छत्र चमर बाहनादिक तज दीन हो हाथ जोड कर पावोंमें पडे, और नाना देशोंकी प्रजा आयकर निवास करती भई। जिन भगवानका चित्त भोगोंमें रत न हुआ जैसे सरोवरमें कमल जलसे निर्लेप रहे तैसे भगवान् जगतकी मायासे अलिप्त रहे। वह भगवान स्वयंबुद्ध विजलीके चमत्कारवत् जगतकी मायाको चंचल जान वैरागी भये, और किया है

लौकांतिक देवोंने स्तवन जिनका मुनिव्रतको धारणकर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रका आराधनाकर घातिया कर्मोंका नाशकर केवलज्ञानको प्राप्त भये। वह केवलज्ञान समस्त लोकालोकका प्रकाशक है, ऐसे केवलज्ञानके धारक भगवानने जगतके भव्य जीवोंके उपकारके निमित्त धर्म तीर्थ प्रगट किया, वह श्रीभगवान मलरहित पसेवसे रहित हैं जिनका रुधिर क्षीर (दूध) समान है और सुगंधित शरीर शुभ लक्षण अतुलबल मिष्ट वचन महा सुंदर स्वरूप समचतुरस्रसंस्थान वज्रवृषभनाराच संहननके धारक हैं जिनके विहारमें चारों ही दिशाओंमें दुर्भिक्ष नहीं रहता, सकल ईति भीतिका अभाव रहे है, और सर्व विद्याके परमेश्वर जिनका शरीर निर्मल स्फटिक समान है और आंखोंकी पलक नहीं लगती है और नख केश नहीं बढते हैं, समस्त जीवोंमें मैत्री भाव रहता है और शीतल मंद सुगंध पवन पीछे लगी आवे है, छह ऋतुके फल फूल फले हैं और धरती दर्पण समान निर्मल हो जाती है और पवनकुमार देव एक योजन पर्यंत भूमि तृण पाषाण कण्टकादि रहित करे हैं और मेघकुमार देव गंधोदककी सुवृष्टि महा उत्साहसे करे हैं, और प्रभुके विहारमें देव चरणकमलके तले स्वर्णमयी कमल रचे हैं चरणोंको भूमि का स्पर्श नहीं होता है, आकाशमें ही गमन करे हैं, धरतीपर छह ऋतुके सर्व धान्य फले हैं, शरदके सरोवरके समान आकाश निर्मल होय है और दश दिशा धूम्रादिरहित निर्मल होय है, सूर्यकी कांतिको हरणेवाला सहस्र धारोंसे युक्त धर्मचक्र भगवानके आगे आगे चले है, इस भांति आर्यखण्डमें विहार कर श्रीमहावीर स्वामी विपुलाचल पर्वत ऊपर आय विराजे हैं, उस पर्वतपर नाना प्रकारके जलके निरझरने झरे हैं उनका शब्द मनका हरणहारा है, जहां बेलि और वृक्ष शोभायमान हैं। और जहां जातिविरोधी जीवोंने भी वैर छोड दिया है, पक्षी बोल रहे हैं उनके शब्दोंसे मानो पहाड गुंजार ही करे हैं, और भ्रमरोंके नादसे मानो पहाड गान ही कर रहा है, सघन वृक्षोंके तले हाथियोंके समूह बैठे हैं,

गुफाओंके मध्य सिंह तिष्ठे हैं, जैसे कैलाश पर्वतपर भगवान ऋषभ देव विराजे थे तैसे विपुलाचलपर श्रीवर्द्धमान स्वामी विराजे हैं ॥

जब श्रीभगवान समोसरणमें केवल ज्ञान संयुक्त विराजमान भये तब इंद्रका आसन कम्पायमान भया, इंद्रने जाना कि भगवान केवलज्ञानसंयुक्त विराजे हैं मैं जाकर वंदना करूं, इंद्र ऐरावत हाथी पर चढकर आए वह हाथी शरदके बादल समान उज्ज्वल है मानो कैलास पर्वत ही है सुवर्णकी सांकलनसे संयुक्त है, जिसका कुम्भस्थल भ्रमरोंकी पंक्तिसे मण्डित है, जिसने दशों दिशा सुगंधसे व्याप्त करी हैं महा मदोन्मत्त है, जिसके नख साचिकण हैं जिसके रोम कठोर हैं जिसका मस्तक भले शिष्यके समान बहुत विनयवान और कोमल है, जिसका अंग दृढ है और दीर्घ काय है, जिसका स्कंध छोटा है मद झरे है और नारद समान कलहप्रिय है, जैसे गरुड नागको जीते तैसे यह नाग अर्थात् हाथियोंको जीते है जैसे रात्रि नक्षत्रोंकी माला कहिये पंकति ताकरि शोभे है तैसे यह नक्षत्रमाला जो आभरण उससे शोभे है। सिंदूर कर अरुण (लाल) ऊंचा जो कुम्भस्थल उससे देव मनुष्योंके मनको हरे है, ऐसे ऐरावत गजपर चढ कर सुरपति आए और भी देव अपने अपने वाहनोंपर चढकर इंद्रके संग आए। जिनके मुख कमल जिनेंद्रके दर्शनके उत्साहसे फूल रहे हैं, सोलह ही स्वर्गोंके समस्त देव और भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी सर्व ही आये और कमलायुध आदि अखिल विद्याधर अपनी स्त्रियोंसहित आए, वे विद्याधर रूप और विभवमें देवोंके समान हैं ॥

तहां समोसरणविषै इन्द्र भगवान्की ऐसे स्तुति करते भये। हे नाथ! महामोहरूपी निद्रामें सोता यह जगत् तुमने ज्ञानरूप सूर्यके उदयसे जगाया। हे सर्वज्ञ वीतराग! तुमको नमस्कार होहु, तुम परमात्मा पुरुषोत्तम हो, संसार समुद्रके पार तिष्ठो हो, तुम बडे सार्थवाही हो, भव्य जीव चेतनरूपी धनके व्यापारी

तुमारे संग निर्वाण द्वीपको जायेंगे तो मार्गमें दोषरूपी चोरोंसे नाहीं लुटेंगे, तुमने मोक्षाभिलाषियोंको निर्मल मोक्षका पंथ दिखाया और घ्यानरूपी अग्नि कर कर्म ईंधनको भस्म किये हैं। जिनके कोई बांधव नाहीं, नाथ नाहीं, दुःख रूपी अग्निके ताप कर सन्तापित जगतके प्राणी तिनके तुम भाई हो और नाथ हो परम प्रताप रूप प्रगट भये हो, हम तुमारे गुण कैसे वर्णन कर सकें। तुमारे गुण उपमारहित अनन्त हैं, सो केवलज्ञानगोचर हैं इस भांति इन्द्र भगवान्की स्तुति कर अष्टांग नमस्कार करते भये सभोशरणकी विभूति देख बहुत आश्चर्यको प्राप्त भये सो संक्षेपकरि वर्णन करिए है–

वह समोशरण नाना वर्णके अनेक महारत्न और स्वर्णसे रचा हुवा जिसमें प्रथमही रत्नकी धूलिका धूलिसाल कोट है और उसके ऊपर तीन कोट हैं एक एक कोटके चार चार द्वार हैं द्वारे २ अष्ट मंगल द्रव्य हैं और जहां रमणीक वापी हैं सरोवर अद्भुत शोभा धरे हैं तहां स्फटिक मणिकी भीति (दिवार) करि बारह कोठे प्रदक्षिण रूप बने हैं एक कोठेमें मुनिराज हैं दूसरेमें कल्पवासी देवोंकी देवांगना हैं तीसरेमें आर्यिका हैं चौथेमें जोतिषी देवोंकी देवी हैं पांचवेमें व्यन्तर देवी हैं छठेमें भवन वासिनी देवी हैं, सातवेंमें जोतिषी देव हैं, आठवेंमें व्यंतर देव हैं, नवमेमें भवनवासी, दशवेंमें कल्पवासी, ग्यारवेंमें मनुष्य, बारवेंमें तिर्यंच ॥ सर्व जीव परस्पर बैरभाव रहित तिष्ठे हैं। भगवान् अशोक वृक्षके समीप सिंहासनपर विराजे हैं, वह अशोक वृक्ष प्राणियोंके शोकको दूर करे है, और सिंहासन नाना प्रकारके रत्नोंके उद्योतसे इंद्र धनुषके समान अनेक रंगोंको धरे है, इंद्रके मुकुटमें जो रत्न लगे हैं, उनकी कांतिके समूहको जीते है, तीन लोककी ईश्वरताके चिन्ह जो तीन छत्र उनसे श्रीभगवान शोभायमान हैं और देव पुष्पोंकी वर्षा करे हैं, चौसठ चमर सिरपर ढुरे हैं दुंदुभी बाजे बजे हैं उनकी अत्यंत सुंदर ध्वनि होय रही है।

राजगृह नगरसे राजा श्रेणिक आवते भये। अपना मन्त्री तथा परिवार और नगरनिवासियों सहित समोशरणके पास पहुंच समोशरणको देख दूरहीसे छत्र चमर वाहनादिक तज कर स्तुतिपूर्वक नमस्कार करते भये पीछे आयकर मनुष्योंके कोठेमें बैठे अक्रूर, वारिषेण, अभयकुमार, विजयवाहु इत्यादिक राजपुत्र भी नमस्कार कर आय बैठे। जहां भगवानकी दिव्य ध्वनि खिरे है, देव मनुष्य तिर्यंच सबही अपनी अपनी भाषामें समझे हैं वह ध्वनि मेघके शब्दको जीते है, देव और सूर्यकी कांतिको जीतनेवाला भामण्डल शोभे है, सिंहासन पर जो कमल है उसपर आप अलिप्त विराजे हैं। गणधर प्रश्न करे हैं और दिव्यध्वनि विषै सर्वका उत्तर होय है॥

गणधर देवने प्रश्न किया कि हे प्रभो! तत्त्वके स्वरूपका व्याख्यान करो तब भगवान् तत्त्वका निरूपण करते भये। तत्त्व दो प्रकारके हैं एक जीव दूसरा अजीव, जीवोंके दो भेद हैं सिद्ध और संसारी॥ संसारीके दो भेद हैं एक भव्य दूसरा अभव्य। मुक्त होने योग्यको भव्य कहिये और कोरडू (कुडकू) मूंग समान जो कभी भी न सीझे तिसको अभव्य कहिये, भगवान्के भाषे तत्त्वोंका श्रद्धान भव्य जीवोंके ही होय अभव्यको न होय, और संसारी जीवोंके एकेंद्रिय आदि भेद और गति काय आदि चौदह मार्गणाका स्वरूप कहा और उपशम क्षायक श्रेणी दोनोंका स्वरूप कहा और संसारी जीव दुःख रूप कहे, मूढोंको दुःख रूप अवस्था सुखरूप भासे है, चारों ही गति दुख रूप हैं नारकियोंको तो आंखके पलकमात्र भी सुख नाहीं, मारण, ताडन, छेदन, शूलारोपणादिक अनेक प्रकारके दुःख निरंतर हैं, और तिर्यंचोंको ताडन, मारण, लादन, शीत उष्ण भूख प्यास आदिक अनेक दुःख हैं और मनुष्योंको इष्टवियोग और अनिष्टसंयोग आदि अनेक दुख हैं और देवोंको बडे देवोंकी विभूति देखकर संताप उपजे है और दूसरे देवोंका मरण देख बहुत दुःख उपजे है तथा अपनी देवां-

गनाओंका मरण देख वियोग उपजे है और जब अपना मरण निकट आवे तब अत्यन्त विलापकर झुरे हैं, इसी भांति महा दुःख कर संयुक्त चतुर्गतिमें जीव भ्रमण करे हैं, कर्म भूमिमें मनुष्य जन्म पाकर जो सुकृत (पुण्य) नहीं करे हैं उनके हस्तमें प्राप्त हुआ अमृत जाता रहे है, संसारमें अनेक योनियोंमें भ्रमण करता हुआ यह जीव अनन्त कालमें कभी ही मनुष्य जन्म पावे है तब भीलादिक नीच कुलमें उपजा तो क्या हुआ और म्लेच्छ खण्डोंमें उपजा तो क्या हुआ और कदाचित् आर्य खण्डमें उत्तम कुलमें उपजा और अंगहीन हुआ तो क्या और सुंदररूप हुआ और रोगसंयुक्त हुआ तो क्या और सर्व ही सामग्री योग्य भी मिली परंतु विषयाभिलाषी होकर धर्ममें अनुरागी न भया तो कुछ भी नहीं, इसलिए धर्मकी प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है, कई एक तो पराये किंकर होकर अत्यंत दुःखसे पेट भरे हैं, कई एक संग्राममें प्रवेश करे हैं। संग्राम शस्त्रके पातसे भयानक है और रुधिरके कर्दम (कीचड) से महा ग्लानि रूप है. और कई एक किसाण वृत्तिकर क्लेशसे कुटुम्बका भरण पोषण करें हैं, जिसमें अनेक जीवोंकी बाधा करनी पडती है। इस भांति अनेक उद्यम प्राणी करें हैं उनमें दुःख क्लेश ही भोगे हैं, संसारी जीव विषय सुखके अत्यंत अभिलाषी हैं, कई एक तो दरिद्रतासे महादुःखी हैं, कई एक धन पायकर चोर वा अग्नि वा जल वा राजादिकके भयसे सदा आकुलतारूप रहे हैं, और कई एक द्रव्यको भोगते हैं परंतु तृष्णा रूप अग्निके बढनेसे जले हैं, कै एकको धर्मकी रुचि उपजे है परन्तु उनको दुष्ट जीव संसार ही के मार्गमें डारे हैं, परिग्रहधारियोंके चित्तकी निर्मलता कहांसे होय, और चित्तकी निर्मलता विना धर्मका सेवन कैसे होय, जब तक परिग्रहकी आसक्तता है तब तक जीव हिंसा विषे प्रवृत्ते है, और हिंसासे नरक निगोद आदि कुयोनिमें महा दुःख भोगै है, संसार भ्रमणका मूल हिंसा ही है, और जीव दया मोक्षका मूल है. परिग्रहके संयोगसे राग द्वेष उपजे हैं सो राग द्वेष ही संसा-

रमें दुःखके कारण हैं, कई एक जीव दर्शनमोहके अभावसे सम्यक् दर्शनको भी पावे हैं परंतु चरित्र मोहके उदयसे चारित्रको नहीं धरि सके हैं और कै एक चारित्रको भी धारकर बाईस परीषहोंसे पीडित होकर चारित्रमे भ्रष्ट होय हैं, कै एक अणुव्रत ही धारे हैं और के एक अणुव्रत भी धार नहीं सके हैं केवल अव्रत सम्यक्ती ही होय हैं, और संसारके अनंत जीव सम्यक्तसे रहित मिथ्यादृष्टि ही हैं, जो मिथ्या दृष्टि हैं वे बार बार जन्म मरण करे हैं, दुःख रूप अग्निसे तप्तायमान भव संकटमें पडे हैं, मिथ्यादृष्टि जीव जीभके लोलुपी हैं और कामकलंकसे मलीन हैं क्रोध मान माया लोभमें प्रवृत्ते हैं, और जो पुण्याधिकारी जीव संसार शरीर भोगनसे विरक्त होइकरि शीघ्र ही चारित्रको धारे हैं और निवाहे हैं और संयममें प्रवृत्ते हैं, वे महाधीर परम समाधिसे शरीर छोडकर स्वर्गमें वडे देव होकर अद्भुत सुख भोगे हैं, वहांसे चयकर उत्तम मनुष्य होकर मोक्ष पावे हैं, कई एक मुनि तपकर अनुत्तर विमानमें अहमिन्द्र होय हैं तहांतै चयकर तीर्थंकर पद पावे हैं, कई एक चक्रवर्ती बलदेव कामदेव पद पावे हैं, कई एक मुनि महातप कर निदान बांध स्वर्गमें जाय वहांसे चयकर वासुदेव होय हैं वे भोगको नाहीं तज सके हैं इस प्रकार श्रीवर्द्धमान स्वामीके मुखसे धर्मोपदेश श्रवणकर देव मनुष्य तिर्यंच अनेक जीव ज्ञानको प्राप्त भये कई एक उत्तम पुरुष मुनि भए कई एक श्रावक भए कई एक तिर्यंच भी श्रावक भए। देव व्रत नहीं धारण कर सके हैं तातैं अव्रत सम्यक्तको ही प्राप्त भए, अपनी अपनी शक्ति अनुसार अनेक जीव धर्ममें प्रवर्ते पाप कर्मके उपार्जनसे विरक्त भए, धर्म श्रवणकर भगवानको नमस्कारकर अपने अपने स्थान गए। श्रेणिक महाराज भी जिनवचन श्रवणकर हर्षित होय अपने नगरको गए।

अथानंतर सन्ध्यासमय सूर्य अस्त होनेको सम्मुख भया अस्ताचलके निकट आया अत्यन्त आरक्तता (सुरखी) को प्राप्त भया किरण मंद भई सो यह वात उचित ही है जब सूर्यका अस्त होय तब

किरण मंद होय ही होंय जैसे अपने स्वामीको आपदा परे तब किसके तेजकी बुद्धि रहे । चकवीनके अश्रुपात सहित जे नेत्र तिनको देख मानो दयाकर सूर्य अस्त भया, भगवानके समवशरणविषै तो सदा प्रकाश ही रहे है, रात्रि दिनका विचार नाहीं अर सर्वपृथ्वीविषै रात्रि पड़ी सन्ध्यासमय दिशा लाल भई सो मानो धर्म श्रवणकर प्राणियोंके चित्तसे नष्ट भया जो राग सो सन्ध्याके छलकर दशों दिशानिमें प्रवेश करता भया (भावार्थ) रागका स्वरूप भी लाल होय है अर दिशाविषै भी ललाई भई अर सूर्यके अस्त होनेसे लोगोंके नेत्र देखनेसे रहित भए क्योंकि सूर्यके उदयसे जो देखनेकी शक्ति प्रगट भई थी सो अस्त होनेसे नष्ट भई अर कमल संकुचित भए जैसे बडे राजाओंके अस्त भये चोरादिक दुर्जन जगतविषै पर-धन हरणादिक कुचेष्टा करें तैसे सूर्यके अस्त होनेसे पृथ्वीविषै अन्धकार फैल गया रात्री समय घर घर चम्पेकी कलीके समान जो दीपक तिनका प्रकाश भया, वह दीपक मानो रात्रिरूप स्त्रीके आभूषण ही हैं । कमलके रससे तृप्त होकर राजहंस शयन करते भये अर रात्रिसम्बन्धी शीतल मंद सुगंध पवन चलती भई मानो निशा (रात) का स्वास ही है अर भ्रमरोंके समूह कमलोंमें विश्राम करते भये अर जैसे भगवानके वचनोंकर तीन लोकके प्राणी धर्मका साधनकर शोभायमान होय हैं तैसे मनोज्ञ तारोंके समूहसे आकाश शोभायमान भया अर जैसे जिनेन्द्रके उपदेशसे एकांतवादियोंका संशय विलाय जाय तैसे चन्द्रमाकी किरणोंसे अन्धकार विलाय गया लोगोंके नेत्रोंको आनंदका करनहारा चंद्रमा उद्योत समय कम्पायमान भया । मानो अन्धकारपर अत्यंत कोप भया (भावार्थ) क्रोध समय प्राणी कम्पायमान होय हैं अंधकारकर जे लोक खेदको प्राप्त भए थे वे चंद्रमाके उद्योतकर हर्षको प्राप्त भए अर चंद्रमाकी किरणको स्पर्शकर कुमुद प्रफुल्लित भए। इस भांति रात्रिका समय लोकोंको विश्रामका देनहारा प्रगट भया। राजा श्रेणिकको सन्ध्यासमय सामायिकपाठ करते जिनेन्द्रकी कथा करते करते घनी रात्रि गई, सोनेको

उद्यमी भया कैसा है रात्रिका समय, जिसमें स्त्री पुरुषोंके हितकी वृद्धि होय है राजाके शयनका महल गंगाके पुलिन (किनारों) समान उज्ज्वल है अर रत्नोंकी ज्योतिसे अति उद्योत रूप है अर फूलोंकी सुगंधि जहां झरोखोंके द्वारा आवे है अर महलके समीप सुंदर स्त्री मनोहर गीत गाय रही हैं अर महलके चौगिरद सावधान सामंतोंकी चौकी है अर अति शोभा बन रही है सेजपर अति कोमल बिछौने बिछ रहे हैं वह राजा भगवानके पवित्र चरण अपने मस्तकपर धारे है अर स्वप्नमें भी बारंबार भगवानहीका दर्शन करे है अर स्वप्नमें गणधर देवसे भी प्रश्न करे है इस भांति सुखसे रात्रि पूर्ण भई पीछे मेघकी ध्वनि समान प्रभातके वादित्र बाजते भए। उनके नादसे राजा निद्रासे रहित भया।

प्रभात समय देह क्रिया करि राजा श्रेणिक अपने मनमें विचार करता भया कि भगवानकी दिव्यध्वनिमें तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिकके जो चारित्र कहे गये वह मैंने सावधान होकर सुने। अब श्रीरामचन्द्रके चारित्र सुननेमें मेरी अभिलाषा है लौकिक ग्रन्थोंमें रावणादिकको मांसभक्षी राक्षस कहा है परन्तु वे विद्याधर महाकुलवंत कैसे मद्य मांस रुधिरादिकका भक्षण करें। अर रावणके भाई कुम्भकरणको कहे हैं कि वह छै महीनेकी निद्रा लेता था अर उसके ऊपर हाथी फेरते अर ताते तेलसे कान पूरते तो भी छह महीनासे पहले नहीं जागता अर जब जागता तब ऐसी भूख प्यास लगती कि अनेक हस्ती महिषी (भैंसा) आदि तिर्यंच, अर मनुष्योंको भक्षण कर जाता था अर राधि रुधिरका पान करता तो भी तृप्ति नहीं होती थी अर सुग्रीव हनूमानादिकको बानर कहे हैं परंतु वे तो बडे राजा विद्याधर थे बडे पुरुषको विपरीत कहनेमें महा पापका बंध होय है जैसे अग्निके संयोगसे शीतलता न होय अर तुषार (बर्फ) के संयोगसे उष्णता (गरमी) न होय जलके मथनसे घीकी प्राप्ति न होय अर बालूरेतके पेलनेसे तेलकी प्राप्ति न होय तैसे महापुरुषोंके चरित्र विरुद्ध सुननेसे पुण्य न होय अर लोक ऐसा कहे हैं

कि देवोंके स्वामी इन्द्रको रावणने जीता परंतु यह बात न बनै, कहां वह देवोंका इन्द्र अर कहां यह मनुष्य जो इंद्रके कोपमात्रसे ही भस्म हो जाय, जाके ऐरावत हस्ती, वज्रसा आयुध, जिसकी ऐसी सामर्थ कि सर्व पृथिवीको वश कर ले, सो ऐसे स्वर्गके स्वामी इंद्रको यह अल्प शक्तिका धनी मनुष्य विद्याधर कैसे लाकर बंदीमें डारै, मृगसे सिंहको कैसे बाधा होय? तिलसे शिलाको पीसना अर गिडोएसे सांपका मारना अर श्वानसे गजेंद्रका हनना कैसे होय, अर लोक कहे हैं कि श्रीरामचन्द्र मृगादिककी हिंसा करते थे सो यह बात न बने, वे व्रती विवेकी दयावान् महापुरुष कैसे जीवोंकी हिंसा करें अर कैसे अभक्ष्यका भक्षण करैं, अर सुग्रीवका बडा भाई वालीको कहे हैं कि उसने सुग्रीवकी स्त्री अंगीकार करी सो बडा भाई जो बाप समान है कैसे छोटे भाईकी स्त्री अंगीकार करे, सो यह सर्व बात सम्भवे नाहीं इसलिये गणधर देवको पूछकर श्रीरामचंद्रकी यथार्थ कथा श्रवण करूं, ऐसा विचार श्रेणिक महाराजने किया बहुरि मनमें विचारे है कि नित्य गुरुनके दर्शन किये धर्मके प्रश्न किए तत्त्व निश्चय किएसे परम सुख होय है ये आनंदके कारण हैं ऐसा विचार कर राजा सेजसे उठे अर रानी अपने स्थान गई, कैसी है रानी जिसकी कांति लक्ष्मी समान है, महा पतिव्रता अर पतिकी बहुत विनयवान है, अर कैसा है राजा जिसका चित्त अत्यंत धर्म्मानुरागमें निष्कम्प है दोनों प्रभात क्रियाका साधन करते भये अर जैसे सूर्य्य शरदके बादलोंसे बाहिर आवे तैसे राजा सुफेद कमल समान उज्ज्वल सुगन्ध महलसे बाहिर आवते भए, उस सुगन्ध महलमें भंवर गुंजार करे हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराणकी भाषाटीकाविषै श्रेणिकने रामचन्द्र रावणके चारित्र सुननेके अर्थ प्रश्न करनेका विचार कीया ऐसा द्वितीय अधिकार संपूर्ण भया ॥ २ ॥

आगे राजा सभामें आय सर्व आभरण सहित सिंहासन विराजे ताकी शोभा कहिए है, हे भव्य ! एकाग्र चित्तकरि सुणि।

राजा सभामें आकर विराजे अर प्रभात समय जो वडे बडे सामन्त आए उनको द्वारपालने राजा का दर्शन कराया, सामंतोंके वस्त्र आभूषण सुंदर हैं उन समेत राजा हाथी पर चढ कर नगरसे समोशरणको चाले। आगे बन्दीजन विरद बखानते जाय हैं, राजा समोशरणके पास पहुंचे। कैसा है समोशरण जहां अनंत महिमाके निवास महावीर स्वामी विराजे हैं, उनके समीप गौतम गणधर तिष्ठे हैं तत्त्वोंके व्याख्यानमें तत्पर अर कांतिमें चंद्रमाके तुल्य, प्रकाशमें सूर्य्यके समान, जिनके कर वा चरण वा नेत्ररूपी कमल अशोक वृक्षके पल्लव (पत्र) समान लाल हैं अर अपनी शांततासे जगतको शांति करै हैं, मुनियोंके समूहके स्वामी हैं। राजा दूरसे ही समोशरणको देख करि हाथीसे उतर कर समोशरणमें गए, हर्ष कर फूल रहे हैं मुख कमल जिनके सो भगवानकी तीन प्रदक्षिणा दे हाथ जोड नमस्कार कर मनुष्योंकी सभामें बैठे॥

प्रथम ही राजा श्रेणिकने श्रीगणधरदेवको 'नमोस्तु' कहकर समाधान (कुशल) पूछ प्रश्न किया भगवन् ! मैं रामचरित्र सुननेकी इच्छा करूं हूं यह कथा जगतमें लोगोंने और भांति प्ररूपी है इसलिए हे प्रभो ! कृपाकर संदेहरूप कीचडसे जीवनिको काढो।

राजाश्रेणिकका प्रश्न सुन श्रीगणधरदेव अपने दांतोंकी किरणसे जगतको उज्ज्वल करते गम्भीर मेघकी ध्वनि समान भगवान्की दिव्य ध्वनिके अनुसार व्याख्यान करते भए, हे राजा ! तू सुन, मैं जिन आज्ञा प्रमाण कहूं हूं, जिन वचन तत्त्वके कथनमें तत्पर हैं, तू यह निश्चय कर कि रावण राक्षस नहीं, मनुष्य है, मांसका आहारी नहीं, विद्याधरोंका अधिपति है; राजा विनमिके वंशमें उपजा है, अर

सुग्रीवादिक बन्दर नहीं, यह बडे राजा मनुष्य हैं, विद्याधर हैं। जैसे नींव विना मंदिरका चिणना न होय तैसे जिनवचन रूपी मूल विना कथाकी प्रमाणता नहीं होय है इसलिए प्रथम ही क्षेत्र कालादिक का वर्णन सुन अर फिर महा पुरुषोंका चारित्र जो पापका विनाशन हारा है सो सुन।

लोकालोक,कालचक्र, कुलकर,नाभि राजा, और श्री ऋषभदेव और भरतका वर्णन।

गौतम स्वामी कहे हैं कि हे राजा श्रेणिक! अनन्त प्रदेशी जो अलोकाकाश उसके मध्य तीन वात वलयसे वेष्टित तीनलोक तिष्ठे हैं। तीनलोकके मध्य यह मध्य लोक है इसमें असंख्यातद्वीप और समुद्र हैं उनके बीच लवण समुद्र कर वेढ़ा लक्ष योजन प्रमाण यह जम्बूद्वीप है, उसके मध्य सुमेरु पर्वत है वह मूलमें बज्रमणिमयी है अर ऊपर समस्त सुवर्णमयी है अनेक रत्नोंसे संयुक्त है संध्यासमय रक्तताको धरे है, मेघोंके समूहके समान स्वर्ग ऊंचा शिखर है। शिखरके और सौधर्म्म स्वर्गके बीचमें एक बालकी अणीका अन्तर है सुमेरु पर्वत निन्यानवे हजार योजन ऊंचा है अर एक हजार योजन स्कन्द है। अर पृथ्वीविषै तो दश हजार योजन चौडा है अर शिखर पर एक हजार योजन चौडा है मानो मध्यलोक के नापनेका दण्ड ही है। जम्बूद्वीपमें एक देवकुरु एक उत्तरकुरु है अर भरत आदि सप्त क्षेत्र हैं षट्कुलाचलोंसे जिनका विभाग है। जम्बू अर शालमली यह दोय वृक्ष हैं जम्बूद्वीपमें चोंतीस विजयार्ध पर्वत हैं। एक एक विजयार्धमें एकसौ दश विद्याधरोंकी नगरी हैं एक एक नगरीको कोटि २ ग्राम लगे हैं, अर जम्बूद्वीपमें बत्तीस विदेह एक भरत एक ऐरावत यह चौंतीस क्षेत्र हैं एक एक क्षेत्रमें एक एक राजधानी है, अर जम्बूद्वीपमें गंगा आदिक १४ महानदी हैं अर छह भोगभूमि हैं। एक एक विजयार्धपर्वतमें दोय दोय गुफा हैं सो चौंतीस विजियार्धके अडसठ गुफा हैं। षट्कुलाचलोंमें अर विजयार्ध पर्वतोंमें तथा बक्षार पर्वतोंमें सर्वत्र भगवानके अकृत्रिम चैत्यालय हैं अर जम्बूवृक्ष अर

शाल्मली वृक्षमें भगवान्के अकृत्रिम चैत्यालय हैं जो रत्नोंकी ज्योतिसे शोभायमान हैं जम्बूद्वीपकी दक्षिण दिशाकी ओर राक्षसद्वीप है अर ऐरावत क्षेत्रकी उत्तर दिशामें गन्धर्व नामा द्वीप है अर पूर्व विदेहकी पूर्व दिशामें वरुण द्वीप है अर पश्चिम विदेहकी पश्चिम दिशामें किन्नर द्वीप है वे चारोंही द्वीप जिन मन्दिरोंसे मण्डित हैं ॥

जैसे एक मासमें शुक्लपक्ष अर कृष्णपक्ष यह दो पक्ष होते हैं तैसेही एक कल्पमें अवसर्पणी अर उत्सर्पणी दोनो काल प्रवृत्ते हैं, अवसर्पणी कालमें प्रथम ही सुखमा सुखमा कालकी प्रवृत्ति होय है, फिर दूसरा सुखमा, तीसरा सुखमा दुखमा, चौथा दुखमासुखमा, पांचवां दुखमा अर छठा दुखमदुखमा प्रवर्ते है, तिसके पीछे उत्सर्पणी काल प्रवृते है उसकी आदिमें प्रथम ही छठा काल दुखमादुखमा प्रवृते है फिर पांचवां दुखमा फिर चौथा दुखमासुखमा फिर तीसरा सुखमा दुखमा फिर दूसरा सुखमा फिर पहला सुखमासुखमा। इसी प्रकार अरहटकी घडी समान अवसर्पणीके पीछे उत्सर्पणी अर उत्सर्पणीके पीछे अवसर्पणी है, सदा यह काल चक्र इसी प्रकार फिरता रहता है, परन्तु इस कालका पलटना केवल भरत अर ऐरावत क्षेत्रमें ही है, तातैं इनमें ही आयु कायादिककी हानि वृद्धि होय है, अर महा विदेह क्षेत्रादिमें तथा स्वर्ग पातालमें अर भोगभूमि आदिकमें तथा सर्व द्वीप समुद्रादिकमें कालचक्र नाहीं फिरता इसलिये उनमें रीति पलटै नाहीं, एक ही रीति रहे है। देवलोकविषै तो सुखमासुखमा जो पहला काल है सदा उसकी ही रीति रहे है अर उत्कृष्ट भोगभूमिमें भी सुखमासुखमा कालकी रीति रहे है अर मध्य भोगभूमिमें सुखमा अर्थात् दूजे कालकी रीति रहे है अर जघन्य भोगभूमिमें सुखमा दुखमा जो तीसरा काल है उसकी रीति रहे हैं, अर महा विदेह क्षेत्रोंमें दुखमासुखमा जो चौथा काल है उसकी रीति रहे है, अर अढाई द्वीपके परे अन्तके आधे स्वयम्भू रमण द्वीप पर्यन्त बीचके असंख्यात द्वीप

समुद्रमें तथा चारों कोणमें दुखमा अर्थात् पंचम कालकी रीति सदा रहे है अर नरकमें दुखमादुखमा जो छठा काल उसकी रीति रहे है अर भरत ऐरावत क्षेत्रोंमें छहों काल प्रवृत्ते हैं। जब पहला सुखमा-सुखमा काल ही प्रवृत्ते है तब यहां देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमिकी रचना होय है कल्पवृक्षोंसे मंडित भूमि सुखमयी शोभे है अर ऊगते सूर्य समान मनुष्यकी कांति होय है, सर्व लक्षणपूर्ण लोक शोभे है, स्त्री पुरुष युगल ही उपजे हैं अर साथ ही मरे हैं, स्त्री पुरुषोंमें अत्यन्त प्रीति होय है, मरकर देव गति पावे हैं, भूमि कालके प्रभावसे रत्न सुवर्णमयी है अर कल्पवृक्ष दश जातिके सर्व ही मनवांछित पूर्ण करे हैं जहां चार चार अंगुलके महा सुगंध महामिष्ट अत्यन्त कोमल तृणोंसे भूमि आच्छादित है सर्व ऋतुके फल फूलोंसे वृक्ष शोभे हैं अर जहां हाथी घोडे गाय भैंस आदि अनेक जातिके पशु सुखसे रहे हैं. अर कल्प वृक्षकरि उत्पन्न महामनोहर आहार मनुष्य करे हैं, जहां सिंहादिक भी हिंसक नहीं मांसका आहार नहीं, योग्य आहार करे हैं, अर जहां वापी सुवर्ण अर रत्नकी पैडियों संयुक्त कमलोंसे शोभित दुग्ध दही घी मिष्टान्नकी भरी अत्यन्त शोभाको धरे हैं, अर पहाड अत्यंत ऊंचे नाना प्रकार रत्नकी किरणोंसे मनोज्ञ सर्व प्राणियोंको सुखके देनेवाले पांच प्रकारके वर्णको धरे हैं, अर जहां नदी जलचरादि जन्तुरहित महारमणीक दुग्ध-(दूध) घी मिष्टान्न जलकी भरी अत्यंत स्वादसंयुक्त प्रवाहरूप बहे हैं, जिनके तट रत्ननिकी ज्योतिसे शोभायमान हैं। जहां वेइंद्री तेइंद्री चौइंद्री असैनी पंचेंद्री तथा जलचरादि जीव नहीं हैं, जहां थलचर, नभचर, गर्भज तिर्यंच हैं, वहां तिर्यंच भी युगल ही उपजे हैं, वहां शीत उष्ण वर्षा नाहीं, तीव्र पवन नाहीं, शीतल मंद सुगंध पवन चले हैं अर किसी भी प्रकारका भय नहीं, सदा अद्भुत उत्साह ही प्रवर्ते हैं अर ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्षोंकी ज्योतिसे चांद सूर्य नजर नहीं आते हैं, दश ही जातिके कल्पवृक्ष सर्व ही इंद्रियोंके सुख स्वादके देनेवाले शोभे हैं, जहां खाना, पीना,

सोना, बैठना, वस्त्र आभूषण, सुगंधादिक सर्व ही कल्प वृक्षोंसे उपजे हैं अर भाजन (वर्तन) तथा वादित्रादि (बाजे) महा मनोहर सर्व ही कल्पवृक्षोंसे उपजे हैं यह कल्पवृक्ष वनस्पति काय नहीं अर देवाधिष्ठित भी नहीं केवल पृथ्वीकाय रूप सार वस्तु हैं, तहां मनुष्यों के युगल ऐसे रमें हैं जैसे स्वर्ग लोकमें देव। या भांति गणधर देवने भोगभूमिका वर्णन किया।

आगे राजा श्रेणिक भोगभूमिमें उपजनेका कारण पूछते भए सो गणधर देव कहे हैं कि—जैसे भले खेतमें बोया बीज बहुतगुणा होकर फले है अर इक्षुमें प्राप्त हुआ जल मिष्ट होय है अर गायने पिया जो जल सो दूध होय परिणमे है तैसे व्रतकरमंडित परिग्रहरहित मुनिको दिया जो दान सो महा फल को फले है, जे सरलचित्त साधुओंको आहारादिक दान दे हैं ते भोगभूमिमें मनुष्य होय हैं अर जैसे निरस क्षेत्रमें बोया बीज अल्प फलको प्राप्त होय अर नींबमें गया जल कटुक होय है तैसे ही भोग तृष्णासे जे कुदान करै हैं ते भोगभूमिमें पशु जन्म पावें हैं॥ भावार्थ—दान चार प्रकारका है एक आहार दान, दूजा औषधदान, तीजा शास्त्रदान चौथा अभयदान। तिसमें मुनि आर्यिका उत्कृष्ट श्रावकोंको भक्तिकर देना पात्रदान है अर गुणों कर आप समान साधर्मीजनोंको देना समदान है अर दुखित जीवको दया भावकर देना करुणादान है अर सर्व त्याग करके मुनिव्रत लेना सकलदान है ये दानके भेद कहे।

जब तीजे कालमें पल्यका आठवां भाग बाकी रहा तब कुलकर उपजे प्रथम कुलकर प्रतिश्रुति भये तिनके वचन सुनकर लोक आनंदको प्राप्त भये वह कुलकर अपने तीन जन्मको जाने हैं अर उनकी चेष्टा सुंदर है अर वह कर्म भूमिके व्यवहारके उपदेशक हैं अर तिनके पीछे सहस्र कोडि असंख्यात वर्ष गये दूजा कुलकर सन्मति भया तिनके पीछे तीसरा कुलकर क्षेमंकर चौथा क्षेमंधर पांचवां सीमंकर छठा सीमंधर सातवां विमलवाहन आठवां चक्षुष्मान् नवां यशस्वी दशवां अभिचंद्र ग्यारवां चंद्राभ बारहवां

मरुदेव तेरहवां प्रसेनाजित चौदहवां नाभि राजा यह चौदह कुलकर प्रजाके पिता समान महा बुद्धिमान शुभ कर्मसे उत्पन्न भये। जब ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्षोंकी ज्योति मंद भई अर चांदसूर्य नजर आए तिनको देखकर लोग भयभीत भए। कुलकरोंको पूछते भये—हे नाथ! यह आकाशमें क्या दीखे है तब कुलकरने कहा कि अब भोगभूमि समाप्त हुई कर्म भूमिका आगमन है। ज्योतिरांग जातिके कल्पवृक्षोंकी ज्योति मंद भई है इसलिये चांदसूर्य नजर आए हैं देव चार प्रकारके हैं कल्पवासी भवनवासी व्यंतर अर ज्योतिषी। तिनमें चांद सूर्य ज्योतिषियोंके इंद्र प्रतींद्र हैं चन्द्रमा तो शीतकिरण है अर सूर्य उष्णकिरण है। जब सूर्य अस्त होय है तब चंद्रमा कांतिको धरे है अर आकाशविषै नक्षत्रोंके समूह प्रगट होय हैं सूर्यकी कांतिसे नक्षत्रादि नहीं भासे हैं इसी प्रकार पहिले कल्पवृक्षोंकी ज्योतिसे चंद्रमा सूर्यादिक नहीं भासते थे अब कल्पवृक्षोंकी ज्योति मंद भई इसलिये भासे हैं। यह कालका स्वभाव जानकर तुम भयको तजो यह कुलकरका वचन सुनिकर तिनका भय निवृत्त भया॥

अथानंतर चौदहवें कुलकर श्रीनाभि राजा जगत् पूज्य तिनके समयमें सब ही कल्पवृक्षोंका अभाव भया अर युगल उत्पत्ति मिटी अकेले ही उत्पन्न होने लगे तिनके मरुदेवी राणी मनको हरणहारी उत्तम पतिव्रता जैसे चंद्रमाके रोहिणी, समुद्रके गंगा, राजहंसके हंसिनी तैसे यह नाभि राजाके होती भई, वह राणी राजाके मनमें बसे है उसकी हंसिनी कैसी चाल अर कोयल कैसे वचन हैं जैसे चकवीकी चकवेसों प्रीति होय है तैसे राणीकी राजासों प्रीति होती भई राणीकूं क्या उपमा दी जाय जो उपमा दी जाय वह पदार्थ राणीसे न्यून दीखे है, सर्व लोकपूज्य मरुदेवी जैसे धर्मके दया होय तैसे त्रैलोक्य पूज्य जो नाभि राजा उसके परमप्रिय होती भई, मानो यह राणी आतापकी हरणहारी चंद्रकला ही कर निरमापी (बनाई) है, आत्मस्वरूपकी जाननहारी सिद्ध पदका है ध्यान जिसको त्रैलोक्यकी माता पुण्याधिकारणी मानो

जिनवाणी ही है अर अमृतका स्वरूप तृष्णाकी हरणहारी मानो रत्नवृष्टि ही है सखियोंको आनंदकी उपजावनहारी महा रूपवती कामकी स्त्री जो रति उससे भी अति सुंदरी है, महा आनंदरूप माता जिनका शरीर ही सर्व आभूषण है जिसके नेत्रोंके समान नील कमल भी नाहीं अर जाके केश भ्रमरोंसे भी अधिक श्याम, वह केश ही ललाटका शृंगार हैं यद्यपि इनको आभूषणोंकी अभिलाषा नहीं तथापि पतिकी आज्ञा प्रमाण कर कर्ण फूलादिक आभूषण पहिरे हैं जिनके मुखका हास्य ही सुगंधित चूर्ण है उन समान कपूरकी रज कहा अर जिनकी वाणी वीणाके स्वरको जीते है उनके शरीरके रंगके आगे स्वर्ण कुंकुमादिकका रंग कहा ? जिनके चरणारविन्द पर भ्रमर गुंजार करे हैं, नाभिराजा करि सहित मरुदेवी राणीके यशका वर्णन सैकडों ग्रंथोंमें भी न हो सके तो थोडेसे श्लोकोंमें कैसे होय ?

जब मरुदेवी के गर्भ में भगवान् के आगमन के छह महिना बाकी रहे तब इन्द्रकी आज्ञासे छप्पन कुमारिका हर्षकी भरी माताकी सेवा करती भई अर १ श्री २ ही ३ धृति ४ कीर्ति ५ बुद्धि ६ लक्ष्मी यह षट् (६) कुमारिका स्तुति करती भई हे-मात ! तुम आनन्दरूप हो हमको आज्ञा करो तुमारी आयु दीर्घ होवे उस भांति मनोहर शब्द कहती भई अर नाना प्रकारकी सेवा करती भई, कई एक वीण बजाय महा सुंदर गान कर माताको रिझावती भई अर कई एक आसन बिछावती भई अर कई एक कोमल हाथोंसे माताके पांव पलोटती भई, कई एक देवी माताको तांबूल (पान) देती भई, कै एक खड्ग हाथमें धारण कर माताकी चोकी देती भई, कैएक बाहरले द्वारमें सुवर्णके आसे लिये खडी होती भई अर कैएक चवर ढोरती भई, कई एक आभूषण पहरावती भई, कई एक सेज बिछावती भई, कैएक स्नान करावती भई, कई एक आंगन बहारती भई, कैएक फूलोंके हार गूथती भई, कई एक सुगन्ध लगावती भई, कई एक खाने पीनेकी विधिमें सावधान होती भई, कई एक जिसको बुलावे

उसको बुलावती भई इस भांति सर्व कार्य्य देवी करतीं भई, माताकूं काहु प्रकारकी भी चिन्ता न रहती भई ।

एक दिन माता कोमल सेज पर शयन करती हुई, उसने रात्रीके पिछले पहर अत्यन्त कल्याणकारी सोलह स्वप्न देखे १ पहले स्वप्नमें ऐसा चन्द्र समान उज्ज्वल मद झरता गाजता हाथी देखा जिसपर भ्रमर गुंजार करे हैं। २ दूजे स्वप्नमें शरदके मेघ समान उज्ज्वल धवल दहाडता हुआ बैल देखा जिसके बडे बडे कन्धे हैं। ३ तीसरे स्वप्नमें चंद्रमाकी किरण समान सफेद केशोंवाला विराजमान सिंह देखा ४ चौथे स्वप्नमें लक्ष्मीको हाथी सुवर्णके कलशोंसे स्नान करावते देखे, वह लक्ष्मी प्रफुल्लित कमलपर निश्चल तिष्ठ है। ५ पांचवें स्वप्नमें दो पुष्पोंकी माला आकाशमें लटकती हुई देखीं जिनपर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। ६ छठे स्वप्नमें उदयाचल पर्वतके शिखरपर तिमिरके हरणहारे मेघपटलरहित सूर्यकूं देखा। ७ सातवें स्वप्नमें कुमुदिनीको प्रफुल्लित करणहारा रात्रिका आभूषण जिसने किरणोंसे दशोंदिशा उज्ज्वल करी हैं ऐसा तारोंका पति चंद्रमा देखा। ८ आठवें स्वप्नमें निर्मल जलमें कलोल करते अत्यन्त प्रेमके भरे हुवे महा मनोहर मीन युगल (दो मच्छ) देखे। ९ नवमें स्वप्नमें जिनके गलेमें मोतियोंके हार अर पुष्पोंकी माला शोभायमान हैं ऐसे पंच प्रकारके रत्नोंकर पूर्ण स्वर्णके कलश देखे अर १० दशवें स्वप्नमें नाना प्रकारके पक्षियोंसे संयुक्त कमलोंकर मंडित सुन्दर सिवाण (पौडी) कर शोभित निर्मल जलकर भरा महा सरोवर देखा। ११ ग्यारहवें स्वप्नमें आकाशके तुल्य निर्मल समुद्र देखा जिसमें अनेक प्रकारके जलचर केलि करें हैं अर उतंग लहरें उठे हैं। १२ बारहवें स्वप्नमें अत्यंत ऊंचा नाना प्रकारके रत्नोंकर जडित स्वर्णका सिंहासन देखा। १३ तेरहवें स्वप्नमें देवताओंके विमान आवते देखे जो सुमेरुके शिखर समान अर रत्नोंकर मंडित चामरादिकसे शोभित हैं। अर १४ चौदहवें स्वप्ने घरणींद्रका भवन देखा कैसा

है भवन ? जाके अनेक खण (मंजिल) हैं अर मोतियोंकी मालाकर मंडित रत्नोंकी ज्योतिकर उद्योत मानो कल्पवृक्षकर शोभित है। १५ पंद्रहवे स्वप्ने पंच वर्णके महा रत्ननिकी राशि अत्यंत ऊंची देखी जहां परस्पर रत्नोंकी किरणोंके उद्योतसे इंद्रधनुप चढ रहा है। १६ सोलहवें स्वप्ने, निर्धूम अग्नि ज्वालाके समूहकरि प्रज्वलित देखी। अथानंतर सुंदर है दर्शन जिनिका ऐसे सोलह स्वप्न देखकर मंगल शब्दनिके श्रवणकरि माता प्रबोधकूं प्राप्त भई। जिन मंगल शब्दनिका कथन सुनहु।

सखी जन कहे हैं—हे देवी ! तेरे मुखरूप चंद्रमाकी कांतिसे लज्जावान हुआ जो यह निशाकर (चंद्रमा) सो मानो कांतिकर रहित हुआ है अर उदयाचल पर्वतके मस्तकपर सूर्य उदय होनेको संमुख भया है मानो मंगलके अर्थ सिंदूरसे लिप्त स्वर्णका कलश ही है अर तुम्हारे मुखकी ज्योतिसे अर शरीरकी प्रभासे तिमिरका क्षय हुआ मानो इससे अपना उद्योत वृथा जान दीपक मंद ज्योति भये हैं अर ये पक्षियोंके समूह मनोहर शब्द करें हैं मानो तिहारे अर्थ मंगल पढे हैं अर जो यह मंदिरमें बाग है तिनके वृक्षोंके पत्र प्रभातकी शीतल मंद सुगंध पवनसे हालें हैं अर मंदिरकी वापिकामें सूर्यके बिम्बके विलोकनसे चकवी हर्षित भई मिष्ट शब्द करती संती चकवेको बुलावे हैं अर यह हंस तेरी चाल देखकर अतिअभिलाषावान हर्षित होय महामनोहर शब्द करे हैं अर सारसोंके समूहका सुंदर शब्द होय रहा है। इसलिए हे देवी ! अब रात्रि पूर्ण भई तुम निद्राको तजो। यह शब्द सुनकर माता सेजसे उठी कैसी है सेज ? बिखर रहे हैं कल्प वृक्षके फूल अर मोती जाविषै, मानो तारानिकरि संयुक्त आकाश ही है।

मरुदेवी माता सुगन्ध महलसे बाहिर आई अर सकल प्रभातकी क्रियाकर जैसे सूर्यकी प्रभा सूर्यके समीप जाय तैसे नाभिराजाके समीप गई, राजा देखकर सिंहासनसे उठे राणी बराबर आय बैठी, हाथ जोडकर स्वप्नानिके समाचार कहे तब राजाने कहा—हे कल्याणरूपिणी ! तेरे त्रैलोक्यका नाथ

श्रीआदीश्वर स्वामी प्रगट होइगा यह शब्द सुनकर कमलनयनी चन्द्रवदनी परमहर्षको प्राप्त भई अर इद्रकी आज्ञासे कुवेर पंद्रह महीनातक रत्नोंकी वर्षा करते भए। जिनके गर्भमें आए छै मास पहिलेसे ही रत्नोंकी वरषा भई इसलिए इंद्रादिक देव इनका हिरण्यगर्भ ऐसा नाम कहि स्तुति करते भए अर तीन ज्ञानकर संयुक्त भगवान माताके गर्भमें आय विराजे, माताको किसी प्रकारकी भी पीडा न भई।

जैसे निर्मल स्फटिकके महलसे बाहिर निकसिये तैसे नवमे महीने ऋषभदेव स्वामी गर्भसे बाहिर आए तब नाभिराजाने पुत्रके जन्मका महान उत्सव किया, त्रैलोक्यके प्राणी अति हर्षित भए, इन्द्रके आसन कम्पायमान भए अर भवनवासी देवके बिना बजाए शंख बजे अर व्यन्तरोंके स्वयमेव ही ढोल बजे अर ज्योतिषी देवोंके अकस्मात् सिंहनाद बाजे अर कल्पवासियोंके बिना बजाये घंटा बाजे, या भांति शुभ चेष्टायों सहित तीर्थंकर देवका जन्म जान इन्द्रादिक देवता नाभिराजाके घर आये, वह इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढे हैं अर नाना प्रकारके आभूषण पहरे हैं, अनेक प्रकारके देव नृत्य करते भये देवोंके शब्दसे दशो दिशा गुंजार करती भई, अयोध्यापुरीकी तीन प्रदक्षिणा देय कर राजाके आंगनमें आए, कैसी है अयोध्या? धनपतिने रची है, पर्वत समान ऊंचे कोटसे मंडित है जिसकी गम्भीर खाई है अर जहां नाना प्रकारके रत्नोंके उद्योतसे थर ज्योति रूप होय रहे हैं। तब इन्द्रने इन्द्राणीकूं भगवान् के लावेनकों माताके पास भेजी, इन्द्राणी जाय नमस्कार कर मायामई बालक माताके पास रखकर भगवान्कों लाइ इन्द्रके हाथमें दिया भगवानका रूप त्रैलोक्यके रूपको जीतने वाला है॥ इन्द्रने हजार नेत्रसे भगवानके रूपको देखा तो भी तृप्त न भया। बहुरि भगवानकूं सौधर्म इन्द्र गोदमें लेय हस्ती पर चढे, ईशान इन्द्रने छत्र धरे, अर सनत्कुमार महेन्द्र चमर ढोरते भए, अर सकल इन्द्र अर देव जय जयकार शब्द उचारते भए फिर सुमेरु पर्वतके शिखर पर पांडुक शिलापर सिंहासन ऊपर पधारे। अनेक

बाजोंका शब्द होता भया जैसा समुद्र गरजे अर यक्ष किन्नर गंधर्व तुंबरु नारद अपनी स्त्रियोंसहित गान करते भए, कैसा है वह गान मन अर श्रोत्र (कान) का हरण हारा है, जहां वीन आदि अनेक वादित्र बाजते भए, अप्सरा हाव भावकर नृत्य करती भई अर इंद्र स्नानके अर्थ क्षीरसागरके जलसे स्वर्णकलश भर अभिषेक करनेको उद्यमी भए, कैसे हैं कलश, जिनका मुख एक योजनका है अर चार योजनका उदर है आठ योजन ऊंडे अर कमल तथा पल्लवसे ढके हैं ऐसे कलशोंसे इंद्रने अभिषेक कराया, विक्रिया ऋद्धिकी समर्थतासे इंद्रने अपने अनेक रूप किए अर इंद्रोंके लोकपाल सोम वरुण यम कुवेर सर्व ही अभिषेक करावते भए, इंद्राणी आदि देवी अपने हाथोंसे भगवानके शरीरपर सुगंध का लेपन करती भई। कैसी है इन्द्राणी, पल्लव (पत्र) समान हैं, कर जाके महागिरि समान जो भगवान तिनको मेघ समान कलशसे अभिषेक कराया, गहना पहरावनेका उद्यम किया, चांद सूर्य समान दोय कुण्डल कानोंमें पहराये अर पद्मराग मणिके आभूषण मस्तकविषै पहराए, जिनकी कांति दशों दिशाविषै प्रगट होती भई अर अर्धचन्द्राकार ललाट (माथा) विषै चंदनका तिलक किया अर दोनों भुजानिविषै रत्नोंके बाजूवंद पहराए अर श्रीवत्सलक्षण कर युक्त जो हृदय उस पर नक्षत्र माला समान मोतियोंका सत्ताईस लडीका हार पहराया अर अनेक लक्षणके धारक भगवानको महा मणिमई कडे पहराये अर रत्नमयी कटिसूत्रसे नितम्ब शोभायमान भया जैसा पहाडका तट सांझकी बिजली कर शोभे अर सर्व अंगुरियोंविषै रत्न जडित मुद्रिका पहराई।

इस भांति भक्तिकरि देवियोंने सर्व आभूषण पहराए सो त्रैलोक्यके आभूषण जो श्रीभगवान तिनके शरीर की ज्योतिसे आभूषण अत्यंत ज्योतिको धारते भए, अर आभूषणोंकी आपके शरीरको कहा शोभा होय, अर कल्पवृक्षके फूलोंसे युक्त जो उत्तरासन सो भी दिया, जैसे तारानिसे आकाश

शोभे है तैसे पुष्पन कर यह उत्तरासन शोभै है बहुरि पारिजात सन्तानकादिक जे कल्पवृक्ष तिनके पुष्पनिकरि सेहरा रचा सिर पर पधराया जापर भ्रमर गुंजार करे हैं॥ इस भांति त्रैलोक्य भूषणको आभूषण पहराय इन्द्रादिक देव स्तुति करते भए, हे देव कालके प्रभावकरि नष्ट हो गया है धर्म जाविषै ऐसा यह जगत् महा अज्ञान अन्धकार करि भऱ्या है इस जगतमें भ्रमण करते भव्य जीवोंके मोह तिमिरके हरणेको तुम सूर्य ऊगे हो। हे जिनचंद्र तुम्हारे वचनरूप किरणोंसे भव्य जीवरूपी कुमुदनीकी पंक्ति प्रफुल्लित होगी, भव्योंको तत्त्वके दिखावनके अर्थ इस जगतरूप घरमें तुम केवलज्ञानमयी दीपक प्रकट भये हो अर पापरूप शत्रुओंके नाशनेके लिये मानो तुम तीक्ष्ण बाण ही हो अर तुम ध्यानाग्नि कर भव अटवी (जंगल) को भस्म करणेवाले हो अर दुष्ट इन्द्रियरूप जो सर्प तिनके वशीकरणके अर्थ तुम गरुडरूप ही हो अर संदेहरूप जे मेघ उनके उडावनको महा प्रबल पवन ही हो, हे नाथ ! भव्य जीवरूपी पपैए तिहारे धर्मामृत रूप बचनके तिसाए तुमहीको महा मेघ ज्ञानकर सन्मुख भए देखे हैं तुम्हारी अत्यन्त निर्मल कीर्ति तीनलोकमें गाई जाती है, तुम्हारे ताईं नमस्कार हो, तुम कल्पवृक्ष हो गुणरूप पुष्पोंसे मण्डित मन वांछित फलके देनहारे हो, कर्मरूप काष्ठके काटनेकों तीक्षण धारके धारणहारे महा कुठार रूप हो तातैं हे भगवन् ! तुमारे अर्थ हमारा बार बार नमस्कार होहु। अर मोहरूप पर्वतके भांजिवेको महा वज्ररूप ही हो अर दुःखरूप आग्निके बुझावनेकों जल रूप ही हो, बारम्बार तुमको नमस्कार करूं हूं। हे निर्मल स्वरूप ! तुम कर्मरूप रजके संगसे रहित केवल आकाशस्वरूप ही हो। इस भांति इन्द्रादिक देव भगवान्की स्तुति कर बारम्बार नमस्कार कर, ऐरावत गज पर चढाय अयोध्यामें लावनेको सन्मुख भए। अयोध्या आय इन्द्र माताकी गोदविषै भगवानको मेलि (स्थापन कर) परम आनन्दित हो तांडव नृत्य करते भए इस भांति जन्मोत्सव कर देव अपने अपने स्थानकको गए

माता पिता भगवानको देखकर बहुत हर्षित भये। कैसे हैं श्रीभगवान ? अद्भुत आभूषणसे विभूषित हैं अर परम सुगन्धके लेपसे चरचित हैं अर सुन्दर चारित्र हैं जिनके शरीरकी कांतिसे दशों दिशा प्रकाशित हो रही हैं महा कोमल शरीर हैं। माता भगवानको देखकर महा हर्षको प्राप्त भई अर कहनेमें न आवे सुख जिसका ऐसे परमानन्द सागरमें मग्न भई। वह माता भगवानको गोदमें लिये ऐसी शोभती भई जैसे ऊगते सूर्यसे पूर्व दिशा शोभै। त्रैलोक्यके ईश्वरको देख नाभिराजा आपको कृतार्थ मानते भए, पुत्रके गात्रको स्पर्श कर नेत्र हर्षित भए, मन आनंदित भया समस्त जगविषै मुख्य ऐसे जे जिनराज तिनका ऋषभ नाम धर माता पिता सेवा करते भए। हाथके अंगुष्ठमें इंद्रने अमृत रस मेला उसको पान कर शरीरवृद्धिको प्राप्त भये। प्रभुकी वय (उमर) प्रमाण इंद्रने देवकुमार रक्खे उन सहित निःपाप क्रीडा (खेल) करते भये कैसी है वह क्रीडा ? माता पिताको अति सुखकी देनहारी है॥

अथानंतर भगवानके आसन शयन सवारी वस्त्र आभूषण अशन पान सुगधादि विलेपन गीत नृत्य वादित्रादि सर्व सामग्री देवोपनीत होती भई। थोडे ही कालमें अनेक गुणोंकी वृद्धि होती भई। रूप उनका अत्यंत सुंदर जो वर्णनमें न आवे, मेरुकी भीति समान महा उन्नत महा दृढ वक्षस्थल शोभता भया अर दिग्गजके थंभ समान बाहु होती भई, कैसी है वह बाहु जगतके अर्थ पूर्ण करनेको कल्प वृक्ष ही है अर दोऊ जंघा त्रैलोक्य घरके थांभवेको थंभ ही हैं अर मुख महा सुंदर मनोहर जिसने अपनी कांतिसे चंद्रमाको जीता है अर दीप्तिसे जीता है सूर्य जिसने अर दोऊ हाथ कोपलसे भी अति कोमल अर लाल हथेली अर केश महासुंदर सघन दीर्घ वक्र पतले चीकने श्याम हैं मानो सुमेरुके शिखरपर नीलाचल ही विराजे है अर रूप महा अद्भुत अनुपम सर्वलोकके लोचनको प्रिय जिसपर अनेक कामदेव वारे जावैं, सर्व उपमाको उलंघै सर्वका मन अर नेत्र हरै इस भांति भगवान कुमार अवस्थामें भी

जगतको सुखदायक होते भए। उस समय कल्पवृक्ष सर्वथा नष्ट भये अर विना वाहे धान अपने आप ही उगे उनसे पृथिवी शोभती भई अर लोक निपट भोले षट कर्मसे अनजान उन्होंने प्रथम इक्षु रसका आहार किया वह आहार कांतिके वीर्यादिकके करनेको समर्थ है। कै एक दिन पीछे लोगोंको क्षुधा वधी जो इक्षुरससे तृप्ति न भई तब लोक नाभिराजाके निकट आए अर नमस्कारकर विनती करते भये कि हे नाथ! कल्पवृक्ष समस्त क्षय हो गये अर हम क्षुधा तृषाकर पीडित हैं तुमारे शरण आए हैं तुम रक्षा करो, यह कितनेक फलयुक्त वृक्ष पृथ्वीपर प्रगट भये हैं इनकी विधि हम जानते नहीं हैं, इनमें कौन भक्ष्य है कौन अभक्ष्य है, अर गाय भैंसके थनोंसे कुछ झिरे है पर वह क्या है अर यह व्याघ्र सिंहादिक पहले सरल थे अब वक्रतारूप दीखे हैं अर यह महामनोहर स्थलपर अर जलमें पुष्प दीखे हैं सो क्या है, हे प्रभु! तुमारे प्रसादकर आजीवकाका उपाय जानें तो हम सुखसों जीवें। यह वचन प्रजाके सुनकर नाभिराजाको दया उपजी, नाभिराजा महाधीर तिनसों कहते भये कि इस संसारमें ऋषभदेव समान अर कोई भी नाहीं जिनकी उत्पत्तिमें रत्नोंकी वृष्टि अर इंद्रादिक देवोंका आगमन भया, लोकोंको हर्ष उपजा, वह भगवान महा अतिशय संयुक्त हैं तिनके निकट जायकर हम तुम आजीवकाका उपाय पूछें, भगवानका ज्ञान मोह तिमिरसे अंत तिष्ठा है। प्रजासहित नाभिराजा भगवानके समीप गये अर समस्त प्रजा नमस्कार कर भगवानकी स्तुति करती भई, हे देव! तुम्हारा शरीर सर्वलोकको उलंघकर तेजोमय भासै है सर्व लक्षण सम्पूर्ण महाशोभायमान है अर तुम्हारे अत्यंत निर्मल गुण सर्व जगतमें व्याप रहे हैं वे गुण चन्द्रमाकी किरण समान उज्वल महा आनन्दके करणहारे हैं। हे प्रभु! हम कार्यके अर्थ तुम्हारे पिताके पास आए थे सो यह तुम्हारे निकट लाये हैं। तुम महापुरुष महा बुद्धिमान् महा अतिशयकर मंडित हो जो ऐसे बडे पुरुष भी तुमको सेवें हैं इसालिये तुम दयालु हो हमारी रक्षा करो। क्षुधा,

तृषा हरनेका उपाय कहो अर जिसमें सिंहादिक क्रूर जीवोंका भी भय मिटे सो उपाय बताओ। तब भगवान कृपानिधि कोमल है हृदय जिनका इन्द्रको कर्म भूमिकी रीति प्रगट करनेकी आज्ञा करते भए। प्रथम नगर ग्राम गृहादिककी रचना भई अर जे मनुष्य शूरवीर जाने तिनको क्षत्री वर्ण ठहराए अर उनको यह आज्ञा भई कि तुम दीन अनाथोंकी रक्षा करो। के एकनको वाणिज्यादिक कर्म बताकर वैश्य ठहराए अर जो सेवादिक अनेक कर्मके करनेवाले उनको शूद्र ठहराए, इस भांति भगवानने किया जो यह कर्मभूमि रूप युग उसको प्रजा कृतयुग (सत्ययुग) कहते भए अर परम हर्षको प्राप्त भए। श्रीऋषभदेवके सुनन्दा अर नंदा यह दो राणी भईं, बडी राणीके भरतादिक सौ पुत्र अर एक ब्राह्मी पुत्री भई अर दूसरी राणीके बाहुबल एक पुत्र अर सुंदरी एक पुत्री भईं इसप्रकार भगवानने त्रेसठ लाख पूर्वकाल राज किया अर पहलै बीस लाख पूर्व कुमार रहे इस भांति तिरासी लाख पूर्व गृहमें रहे।

एक दिन नीलांजना अप्सरा नृत्य करती करती विलाय (मर) गई उसको देखकर भगवानकी बुद्धि वैराग्यमें तत्पर भई। वह विचारने लगे कि यह संसारके प्राणी वृथा ही इंद्रियोंको रिझाकर उन्मत्त चरित्रोंकी विडंबना करे हैं, अपने शरीरको खेदका कारण जो जगतकी चेष्टा उससे जगत जीव सुख माने हैं इस जगतमें कई एक तो पराधीन चाकर होय रहे हैं कई एक आपको स्वामी मान तिनपर आज्ञा करे हैं जिनके वचन गर्वसे भरे हैं। धिकार है इस संसारको, जिसमें जीव दुःख ही भोगे हैं अर दुख हीको सुख मान रहे हैं तातैं मैं जगतके विषै सुखोंको तजकर तप संयमादि शुभ चेष्टा कर मोक्ष सुखकी प्राप्तिके अर्थ यत्न करूं। यह विषयसुख क्षणभंगुर है अर कर्मके उदयसे उपजे है इसलिए कृत्रिम (बनावटी) है इस भांति श्रीऋषभदेवका मन वैराग्य चिन्तवनमें प्रवरता तब ही लौकांतिक देव आय स्तुति करते भए कि हे नाथ! तुमने भली विचारी। त्रैलोक्यमें कल्याणका कारण यह ही है, भरतक्षेत्रमें

मोक्षका मार्ग विच्छेद भया था सो आपके प्रसादसे प्रवरतेगा, यह जीव तुम्हारे दिखाए मार्गसे लोक-शिखर अर्थात् निर्वाणको प्राप्त होंगे, इस भांति लौकांतिक देव स्तुतिकर अपने धाम गये अर इंद्रादिक देव आयकर तप कल्याणका समय साधते भए । रत्नजडित सुदर्शन नामा पालिकीमें भगवानको चढाया । कैसी है वह पालकी, कल्प वृक्षके फूलोंकी मालासे महा सुगंधित है, अर मोतिनके हारोंसे शोभायमान है, भगवान उसपर चढकर घरसे वनको चले, नाना प्रकारके वादित्रोंके शब्द अर देवोंके नृत्यसे दशों दिशा शब्दरूप भईं । इसप्रकार महा विभूति संयुक्त तिलकनामा उद्यानमें गए माता पितादिक सर्व कुटुंबसे क्षमा भाव कराकर अर सिद्धोंको नमस्कारकर मुनिपद अंगिकार किया, समस्त वस्त्र आभूषण तजे अर केशोंका लौंच किया । वह केश इंद्रने रत्नोंके पिटारेमें रखकर क्षीरसागरमें डारे । भगवान जब मुनिराज भए, तब चौदह हजार राजा मुनिपदको न जानते हुवे केवल स्वामीकी भक्तिके कारण नग्नरूप भए । भगवानने छः महीने पर्यंत निश्चल कायोत्सर्ग धरा अर्थात् सुमेरु पर्वत समान निश्चल होय तिष्ठे अर मन अर इंद्रियोंका निरोध किया ।

अथानन्तर कच्छ महाकच्छादिक राजा जो नग्न रूप धार दीक्षित भए हुते वह सर्व ही क्षुधा तृषादि परीषहनिकरि चलायमान भए, कई एक तो परीषहरूप पवनके मारे भूमिपर गिर पडे, कई एक जो महा बलवान हुते वे भूमिपर तो न पडे परंतु बैठ गये, कई एक कायोत्सर्गको तज क्षुधा तृषासे पीडित फलादिकके आहारको गये, अर कई एक गरमीसे तपतायमान होकर शीतल जलमें प्रवेश करते भए, उनकी यह चेष्टा देखकर आकाशमें देववाणी भई कि मुनिरूप धारकर तुम ऐसा काम मत करो, यह रूप धार तुमको ऐसा कार्य करना नरकादिक दुखनिका कारण है, तब वे नग्न मुद्रा तजकर बकल धारते भए, कई एक चरमादि धारते (पहनते) भये, कै एक दर्भ (कुशादिक) धारते भए अर

फलादिसे क्षुधाको, शीतल जलसे तृषाको निवारते भये, इसप्रकार यह लोग चारित्र भ्रष्ट होकर अर स्वेच्छाचारी बनकर भगवानके मतसे पराङ्मुख होय शरीरका पोषण करते भए। किसीने पूछा कि तुम यह कार्य भगवानकी आज्ञासे करो हो वा मन हीसे करोहो, तब तिन्होंने कहा कि भगवान तो मौन रूप हैं, कुछ कहते नाहीं, हम क्षुधा तृषा शीत उष्णसे पीडित होइकर यह कार्य करे हैं, बहुरि कई एक परस्पर (आपसमें) कहते भए कि आओ गृहमें जायकर पुत्र दारादिकका अवलोकन करें तब उनमेंसे किसीने कहा जो हम घरमें जावेंगे तो भरत घरमेंसे निकासि देइगें अर तीव्र दण्ड देंगे इसलिये घर नहीं जायें, तब वन हीमें रहे, इन सबमें महामानी मारीच भरतका पुत्र भगवानका पोता भगवे वस्त्र पहन कर परिव्राजिक (सन्यासी) मार्ग प्रगट करता भया।

अथानन्तर कच्छ महाकच्छके पुत्र नमि विनमि आयकर भगवानके चरणोंमें पडे अर कहने लगे कि हे प्रभु! तुमने सबको राज दिया हमको भी दीजे इस भांति याचना करते भए। तब धरणीन्द्रका आसन कंपायमान भया। धरणीन्द्रने आयकर इनको विजयार्धका राज दिया। कैसा है वह विजयार्ध पर्वत भोगभूमिके समान है, पृथिवी तलसे पचीस योजन ऊंचा है अर सवा छै योजनका केन्द्र है अर भूमिपर पचास योजन चौडा है अर भूमितैं दश योजन ऊंचे उठिये तहां दोय श्रेणी हैं एक दक्षिणश्रेणी एक उत्तरश्रेणी। इन दोनों श्रेणियोंमें विद्याधर बसे हैं दक्षिणश्रेणीकी नगरी पचास अर उत्तरश्रेणीकी साठ एक एक नगरीको कोटि कोटि ग्राम लगे हैं अर दश योजनसे बहुरि ऊपर दश योजन जाइए तहां गंधर्वकिन्नर देवोंके निवास हैं अर पांच योजन ऊपर जाइए तहां नव शिखर हैं उनमें प्रथम सिद्धकूट उसमें भगवानके अकृत्रिम चैत्यालय हैं अर देवोंके स्थान हैं, सिद्धकूटपर चारण मुनि आयकर ध्यान धरे हैं विद्याधरोंकी दक्षिणश्रेणीकी जो पचास नगरी हैं उनमें रत्नपुर मुख्य है अर उत्तरश्रेणीकी जो साठ

नगरी हैं उनमें अलकावती नगरी मुख्य है। कैसा है वह विद्याधरनिका लोक स्वर्ग लोक समान है सुख जहां सदा उत्साह ही प्रवृत्ते है, नगरीके बडे बडे दरवाजे, अर कपाट युगल, अर सुवर्णके कोट, गंभीर खाई, अर वन उपवन वापी कूप सरोवरादिसे महा शोभायमान हैं। जहां सर्व ऋतुके धान अर सर्व ऋतुके फल फूल सदा पाइए है जहां सर्व औषधि सदा पाइये है जहां सर्व कामका साधन है, सरोवर कमलोंसे भरे जिनमें हंस क्रीडा करे हैं, अर जहां दधि दुग्ध घृत मिष्टान्नोंके झरने वहै हैं। कैसी हैं वापी जिनके मणि सुवर्णके सिवान (पैंडी) हैं अर कमलके मकरंदोंसे शोभायमान हैं, जहां कामधेनु समान गाय हैं अर पर्वत समान अनाजके ढेर हैं अर मार्ग धूल कंटकादि रहित हैं, मोटे वृक्षोंकी छाया है महामनोहर जलके निवाण हैं। चौमासेमें मेघ मनवांछित बरसे हैं अर मेघोंकी आनंदकारी ध्वनि होय है, शीत कालमें शीतकी विशेष बाधा नाहीं अर ग्रीष्म ऋतुमें विशेष आताप नहीं, जहां छै ऋतुके विलास हैं, जहां स्त्री आभूषण मंडित कोमल अंगवाली हैं अर सर्व कलानिमें प्रवीण पद्कुमारिका समान प्रभावाली हैं। कैसी हैं वह विद्याधरी, कई एक तो कमलके गर्भ समान प्रभाको धरे हैं, कई एक श्यामसुन्दर नीलकमलकी प्रभाको धरे हैं, कई एक सिझनाके फूल समान रंगकूं धरे हैं, कई एक विद्युत समान ज्योतिको धरे हैं, यह विद्याधरी महा सुगंधित शरीरवाली हैं मानो नंदन वनकी पवन ही से बनाई हैं, सुंदर फूलोंके गहने पहरे हैं मानो बसंतकी पुत्री ही हैं, चंद्रमा समान कांति है मानो अपनी ज्योतिरूप सरोवरमें तिरे ही हैं, अर श्याम श्वेत सुरंग तीन वर्णके नेत्रकी शोभाको धरणहारी, मृग समान हैं नेत्र जिनके, हंसनी समान है चाल जिनकी, वे विद्याधरी देवांगना समान शोभे हैं, अर पुरुष विद्याधर महा सुन्दर शूर वीर सिंह समान पराक्रमी हैं। महाबाहु महापराक्रमी आकाश गमनमें समर्थ भले लक्षण भली क्रियाके धरणहारे न्यायमार्गी, देवोंके समान है प्रभा जिनकी, अपनी स्त्रियोंसहित विमानमें बैठे

अढाई द्वीपमें जहां इच्छा होय तहां ही गमन करे हैं, इस भांति दोनों श्रेणियोंमें वे विद्याधर देवतुल्य इष्ट भोग भोगते महा विद्याओंको धरे हैं, कामदेव समान है रूप जिनका अर चंद्रमा समान है वदन जिनका। धर्मके प्रसादसे प्राणी सुख सम्पत्ति पावें हैं तातैं एक धर्म ही में यत्न करो अर ज्ञानरूप सूर्यसे अज्ञानरूप तिमिरको हरो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराणकी भाषाटीकाविषै विद्याधर लोकका कथन जाविषै है ऐसा तीसरा अधिकार संपूर्ण भया ॥ ३ ॥

अथानन्तर वे भगवान ऋषभदेव महाध्यानी सुवर्ण समान प्रभाके धरणहारे प्रभु जगतके हित करने निमित्त छै मास पीछे आहार लेनेको प्रवृत्ते, लोक मुनिके आहारकी विधि जाने नहीं अनेक नगर ग्रामविषै विहार किया मानो अद्भुत सूर्य ही विहार करे हैं जिन्होंने अपने देहकी कांतिसे पृथ्वी मंडल पर प्रकाश कर दिया है जिनके कांधे सुमेरुके शिखर समान देदीप्यमान हैं अर परम समाधानरूप अधो-दृष्टि देखते जीव दया पालते विहार करे हैं पुर ग्रामादिमें लोक अज्ञानी नाना प्रकारके वस्त्र रत्न हाथी घोडे रथ कन्यादिक भेट करें सो प्रभुके कुछ भी प्रयोजन नाहीं इस कारण प्रभु फिर बनको चले जावें इस भांति छै महीने तक विधिपूर्वक आहारकी प्राप्ति न भई (अर्थात् दीक्षा समयसे एक वर्ष विना आहार बीता।) पीछे विहार करते हुए हस्तिनापुर आए सर्व ही लोक पुरुषोत्तम भगवानको देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए, राजा सोमप्रभ अर तिनके लघु भ्राता श्रेयांस दोनों ही भाई उठकर सम्मुख चाले, श्रेयांसको भगवानके देखनेसे पूर्व भवका स्मरण भया, अर मुनिके आहारकी विधि जानी। वह नृप भगवानकी प्रदक्षिणा देते ऐसे शोभे हैं मानो सुमेरुकी प्रदक्षिणा सूर्य ही दे रहा है, अर बारंबार नमस्कार कर रत्नपात्रसे अर्घ देय चरणारविन्द धोए अर अपने शिरके केशसे पोंछ आनन्दके अश्रुपात आए

अर गद गद वाणी भई। श्रेयांसने जिसका चित्त भगवानके गुणोंमें अनुरागी भया है महा पवित्र रत्ननके कलशोंमें रखकर महा शीतल मिष्ट इक्षुरसका आहार दिया, परम श्रद्धा अर नवधा भक्तिसे दान दिया वर्षोपवास पारणा भया उसके आतिशयसे देव हर्षित होय पांच आश्चर्य करते भए। १ रत्नानिकी वर्षा भई। २ कल्पवृक्षोंके पंच प्रकारके पुष्प वरसे। ३ शीतल मंद सुगंध पवन चली। ४ अनेक प्रकार दुन्दुभी बाजे बाजे। ५ यह देववाणी भई कि धन्य यह पात्र अर धन्य यह दान अर धन्य दानका देनहारा श्रेयांस। ऐसे शब्द देवताओंके आकाशमें भए, श्रेयांसकी कीर्ति देखकर दानकी रीति प्रगट भई, देवतानिकरि श्रेयांस प्रशंसा योग्य भए अर भरतने अयोध्यासे आयकर बहुत स्तुति करी अति प्रीति जनाई। भगवान आहार लेकर वनमें गये।

अथानंतर भगवान्‌ने एक हजार वर्षपर्यंत महातप किया अर शुक्लध्यानसे मोहका नाशकर केवल ज्ञान उपजाया। कैसा है वह केवलज्ञान? लोकालोकका अवलोकन है जाविषे। जब भगवान् केवलज्ञानको प्राप्त भए तब अष्ट प्रातिहार्य प्रगटे प्रथम तो आपके शरीरकी कांतिका ऐसा मण्डल हुआ जिससे चंद्र सूर्यादिकका प्रकाश मन्द नजर आवे, रात्रि दिवसका भेद नजर न आवे अर अशोक वृक्ष रत्नमई पुष्पोंसे शोभित रक्त हैं पल्लव जाके अर आकाशसे देवोंने फूलोंकी वर्षा करी जिनकी सुगन्धसे भ्रमर गुंजार करैं, महा दुन्दुभी बाजोंकी ध्वनि होती भई जो समुद्रके शब्दसे भी अधिक देवोंने बाजे बजाए उनका शरीर मायामई नहीं दीखता है जैसा शरीर देवोंका है तैसा ही दीखे है, अर चन्द्रमाकी किरणसे भी अधिक उज्ज्वल चमर इन्द्रादिक ढोरते भए अर सुमेरुके शिखर तुल्य पृथिवीका मुकुट सिंहासन आपके विराजनेको प्रगट भया, कैसा है सिंहासन? अपनी ज्योति कर जीती है सूर्यादिककी ज्योति जिसने अर तीन लोककी प्रभुताके चिन्ह मोतियोंकी झालरसे शोभायमान तीन छत्र अति शोभे हैं

मानों भगवानके निर्मल यश ही हैं अर समोशरणमें भगवान सिंहासनपर विराजे सो समोशरणकी शोभा कहनेकूं केवली ही समर्थ हैं और नाहीं। चतुरनिकायके देव सर्व ही बन्दना करनेको आए, भगवानके मुख्य गणधर वृषभसेन भये आपके द्वितीय पुत्र अर अन्य भी बहुत जे मुनि भए थे वह महा वैराग्यके धारणहारे मुनि आदि बारह सभाके प्राणी अपने अपने स्थानकविषै बैठे।

अथानन्तर भगवानकी दिव्य ध्वनि होती भई जो अपने नादकर दुन्दुभी बाजोंकी ध्वनिको जीते है, भगवान जीवोंके कल्याण निमित्त तत्त्वार्थका कथन करते भये कि तीन लोकमें जीवोंको धर्म ही परम शरण है इसहीसे परम सुख होय है, सुखके अर्थ सभी चेष्टा करे हैं अर सुख धर्मके निमित्तसे ही होय है ऐसा जानकर धर्मका यत्न करहु। जैसे मेघ विना वर्षा नहीं, वीज विना धान्य नहीं तैसे जीवानिके धर्म विना सुख नाहीं, जैसे कोई उपंग (लंगडा) पुरुष चलनेकी इच्छा करे अर गूंगा बोलनेकी इच्छा करे अर अन्धा देखनेकी इच्छा करे तैसे मूढ प्राणी धर्म विना सुखकी इच्छा करे है, जैसे परमाणुसे अर कोई अल्प (सूक्ष्म) नहीं अर आकाशसे कोई महान् (बडा) नहीं तैसे धर्म समान जीवोंका अन्य कोई मित्र नहीं अर दया समान कोई धर्म नहीं। मनुष्यके भोग अर स्वर्गके भोग सब परमसुख धर्महीसे होय हैं इसलिये धर्म विना और उद्यमकर कहा? जे पण्डित जीव दयाकर निर्मल धर्मको सेवे हैं उनहीका ऊर्ध्व (ऊपर) गमन है दूसरे अधो (नीचे) गति जाय हैं, यद्यपि द्रव्यलिंगी मुनि तपकी शक्तिसे स्वर्गलोकमें जाय हैं तथापि बडे देवोंके किंकर होयकर तिनकी सेवा करे हैं देवलोकमें नीच देव होना देव दुर्गति है सो देवदुर्गतिके दुःखको भोगकर तिर्यंच गतिके दुखको भोगे हैं, अर जे सम्यग्दृष्टि जिन शासनके अभ्यासी तप संयमके धारणहारे देवलोकमें जाय हैं ते इन्द्रादिक बडे देव होयकर बहुत काल सुख भोग देवलोकतें चय मनुष्य होय मोक्ष पावे हैं सो धर्म दोय प्रकारका है एक यतिधर्म, दूसरा

श्रावकधर्म, तीजा धर्म जो माने हैं वे मोह अग्निसे दग्ध हैं, पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत यह श्रावकका धर्म है, श्रावक मरण समय सर्व आरम्भ तज शरीरसे भी निर्ममत्व होकर समाधि मरण कर उत्तमगतिको जाय है, अर यतीका धर्म पंच महाव्रत पंच सुमति तीन गुप्ति यह तेरह प्रकारका चारित्र है।। दशों दिशा ही यतिके वस्त्र हैं, जो पुरुष यतिका धर्म धारे हैं वे शुद्धोपयोगके प्रसादकरि निर्वाण पावे हैं, अर जिनके शुभोपयोगकी मुख्यता है वे स्वर्ग पावे हैं परम्पराय मोक्ष जाय हैं। अर जे भावोंसे मुनियोंकी स्तुति करे हैं ते हू धर्मको प्राप्त होय हैं, कैसे हैं मुनि, परम ब्रह्मचर्य्यके धारण हारे हैं यह प्राणी धर्मके प्रभावतें सर्व पापसे छूटे हैं अर ज्ञानकूं पावे है, इत्यादिक धर्मका कथन देवाधिदेवने किया सो सुन कर देव मनुष्य सर्व ही परम हर्षकूं प्राप्त भए, कै एक तो सम्यक्तको धारण करते भए, कैएक सम्यक्त सहित श्रावकके व्रतकूं धारते भए, कैएक मुनिव्रत धारते भए, बहुरि सुर असुर मनुष्य धर्म श्रवण कर अपने अपने धाम गए, भगवानने जिन जिन देशोंमें गमन किया उन उन देशोंमें धर्म का उद्योत भया। आप जहां जहां विराजे तहां तहां सौ सौ योजन तक दुर्भिक्षादिक सर्व बाधा मिटी, प्रभुके चौरासी गणधर भए अर चौरासी हजार साधु भए, इन करि मण्डित सर्व उत्तम देशनिविषै विहार किया ॥

अथानंतर भरत चक्रवर्ती पदकूं प्राप्त भए अर भरतके भाई सब ही मुनिव्रत धार परमपदकों प्राप्त भए, भरतने कुछ काल छै खण्डका राज्य किया, अयोध्या राजधानी, नवनिधि चौदह रत्न प्रत्येककी हजार हजार देव सेवा करें, तीन कोटि गाय एक कोटि हल चौरासी लाख हाथी इतने ही रथ अठारा कोटी घोडे बत्तीस हजार मुकुटबन्द राजा अर इतने ही देश महासम्पदाके भरे, छियानबे हजार रानी देवांगना समान, इत्यादिक चक्रवर्तिके विभवका कहां तक वर्णन करिए। पोदनापुरमें दूसरी माताका

पुत्र बाहुबली, सो भरतकी आज्ञा न मानते भए, कि हम भी ऋषभदेवके पुत्र हैं किसकी आज्ञा मानें, तब भरत बाहुबलि पर चढे, सेनायुद्ध न ठहरा, दोऊ भाई परस्पर युद्ध करें यह ठहरा, तीन युद्ध थापे १ दृष्टियुद्ध, २ जलयुद्ध, अर ३ मल्लयुद्ध। तीनों ही युद्धोंमें बाहुबली जीते अर भरत हारे, तब भरतने बाहुबली पर चक्र चलाया, वह उनके चरम शरीर पर घात न कर सका, लौटकर भरतके हाथ पर आया, भरत लज्जित भए, बाहुबली सर्व भोग त्याग कर वैरागी भए, एक वर्ष पर्यंत कायोत्सर्ग धर निश्चल तिष्ठे, शरीर बेलोंसे वेष्टित भया, सांपोंने बिल किए, एक वर्ष पीछे केवलज्ञान उपजा, भरतचक्रवर्तिने आय कर केवलीकी पूजा करी, बाहुबली केवली कुछ कालमें निर्वाणको प्राप्त भए, अवसर्पणीकालमें प्रथम मोक्षको गमन किया, भरत चक्रवर्तिने निष्कंटक छे खंडका राज किया जिसके राज्यमें विद्याधरोंके समान सर्व सम्पदाके भरे अर देव लोक समान नगर महा विभूति कर मंडित हैं जिनमें देवों समान मनुष्य नाना प्रकारके वस्त्राभरण करि शोभायमान अनेक प्रकारकी शुभ चेष्टा कर रमते हैं, लोक भोगभूमि समान सुखी अर लोकपाल समान राजा अर मदनके निवासकी भूमि अप्सरा समान नारियां जैसे स्वर्गविषै इन्द्र राज करे तैसे भरतने एक छत्र पृथिवीविषै राज किया, भरतके सुभद्रा राणी इंद्राणी समान भई जिसकी हजार देव सेवा करें, चक्रीके अनेक पुत्र भए तिनकों पृथिवीका राज दिया इसप्रकार गौतम स्वामीने भरतका चरित्र श्रेणिक राजासे कहा॥

अथानंतर श्रेणिकने पूछा—'हे प्रभो! तीन वर्णकी उत्पत्ति तुमने कही सो मैंने सुनी अब विप्रोंकी उत्पत्ति सुना चाहे हूं सो कृपाकर कहो। गणधर देव जिनका हृदय जीव दयाकर कोमल है अर मद मत्सरकर रहित है, वे कहते भए कि एक दिन भरतने अयोध्याके समीप भगवानका आगमन जान समोशरणमें जाय बन्दना कर मुनिके आहारकी विधि पूछी। तब भगवानकी आज्ञा भई कि मुनि तृष्णाकर रहित

जितेन्द्री अनेक मासोपवास करें तो पराए घर निर्दोष आहार लें, अंतराय पडे तो भोजन न करें, प्राण-रक्षा निमित्त निर्दोष आहार करें, अर धर्मके हेतु प्राणको राखें, अर मोक्षके हेतु उस धर्मको आचरें जिसमें किसी भी प्राणीको बाधा नाहीं, यह मुनिका धर्म सुन कर चक्रवर्ती विचारे है–'अहो ! यह जैनका व्रत महा दुर्धर है, मुनि शरीरसे भी निःस्पृह (निर्ममत्व) तिष्ठे हैं तो अन्य वस्तुमें तो उनकी वांछा कैसे होय ? मुनि महा निर्ग्रन्थ निर्लोभी सर्व जीवोंकी दयाविषै तत्पर हैं, मेरे विभूति बहुत है, मैं अणुव्रती श्रावककों भक्ति कर दूं अर दीन लोकोंको दया कर दूं यह श्रावक भी मुनिके लघु भ्राता हैं ऐसा विचार कर लोकोंको भोजनको बुलाए अर व्रतियोंकी परीक्षा निमित्त आंगणमें जो धान उर्द मूंगादि बोए तिनके अंकुर उगे सो अविवेकी लोक तो हरितकायको खूंदते आए अर जे विवेकी थे वे अंकुर जान खडे होय रहे तिनको भरतने अंकुररहित जो मार्ग उसपर बुलाया अर व्रती जान बहुत आदर किया अर यज्ञोपवीत (जनेऊ) कंठमें डाला, आदरसे भोजन कराया वस्त्राभरण दिये अर मनवांछित दान दिये अर जो अंकुरको दल मलते आए थे तिनकों अव्रती जान उनका आदर न किया अर व्रतियोंको ब्राह्मण ठहराए, चक्रवर्तीके माननेसे कैएक तो गर्वको प्राप्त भये अर कैएक लोभकी अधिकतासे धनवान् लोकोंको देख कर याचनाको प्रवर्ते ॥

तब मतिसमुद्र मंत्रीने भरतसे कहा कि समोशरणमें मैंने भगवानके मुखसे ऐसा सुना है कि जो तुमने विप्र धर्माधिकारी जानकर माने हैं वे पंचम कालमें महा मदोन्मत्त होवेंगे अर हिंसामें धर्म जान कर जीवोंको हनेंगे अर महा कषायसंयुक्त सदा पाप क्रियामें प्रवर्तेंगे अर हिंसाके प्ररूपक ग्रंथोंको कृत्रिम मान कर समस्त प्रजाको लोभ उपजावेंगे। महा आरम्भविषे आसक्त परिग्रहमें तत्पर जिनभाषित जो मार्ग उसकी सदा निंदा करेंगे। निर्ग्रन्थ मुनिको देख महा क्रोध करेंगे, यह वचन सुन भरत इन पर

क्रोधायमान भए, तब यह भगवानके शरण गए। भगवानने भरतको कहा—हे भरत ! जो कलिकालविषै ऐसा ही होना है तुम कषाय मत करो इस भांति विप्रोंकी प्रवृत्ति भई अर जो भगवानके साथ वैराग्यको निकले ते चारित्रभ्रष्ट भए । तिनमें कच्छादिक तो कैएक सुलटे अर मारीचादिक नहीं सुलटे तिनके शिष्य प्रतिशिष्यादिक सांख्य योगमें प्रवर्ते, कोपीन (लंगोटी) पहरी वल्कलादि धारे । यह विप्रनिकी अर परिव्राजक कहिये दंडीनिकी प्रवृत्ति कही ।

अथानन्तर अनेक जीवनकों भवसागरसे तारकर भगवान ऋषभ कैलाशके शिखरसे लोकाशिखर जो निर्वाण उसको प्राप्त भए अर भरत भी कुछ काल राज्यकर जीर्ण तृणवत् राज्यको छोडकर वैराग्यको प्राप्त भये अंतर्मुहूर्तमें केवल उपजा पीछे आयु पूर्णकर निर्वाणको प्राप्त भए ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराणकी भाषाटीकाविषै श्रीऋषभका कथन जा विषै है ऐसा चौथा अधिकार संपूर्ण भया ॥ ४ ॥

अथ वंशोत्पत्ति नामा महाधिकार ॥ २ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे वंशोंकी उत्पत्ति कहते भए कि हे श्रेणिक ! इस जगतविषै महावंश जो चार तिनके अनेक भेद हैं ।

१ प्रथम इक्ष्वाकुवंश । यह लोकका आभूषण है इसमेंसे सूर्य वंश प्रवर्ता है । २ दूसरा सोम (चंद्र) वंश चंद्रमाकी किरण समान निर्मल है । ३ तीसरा विद्याधरोंका वंश अत्यन्त मनोहर है । ४ चौथा हरिवंश जगतविषै प्रसिद्ध है । अब इनका भिन्न २ विस्तार कहे हैं—

इक्ष्वाकुवंशमें भगवान ऋषभदेव उपजे तिनके पुत्र भरत भए, भरतके पुत्र अर्ककीर्ति भए, राजा अर्ककीर्ति महा तेजस्वी राजा हुए। इनके नामसे सूर्यवंश प्रवृत्ता है अर्क नाम सूर्यका है इसलिये अर्ककीर्तिका वंश सूर्यवंश कहलाता है इस सूर्यवंशमें राजा अर्ककीर्तिके सतयश नामा पुत्र भये इनके बलांक तिनके सुबल तिनके महाबल महाबलके अतिबल तिनके अमृत, अमृतके सुभद्र तिनके सागर तिनके भद्र तिनके रवितेज तिनके शशी तिनके प्रभूततेज तिनके तेजस्वी तिनके तपबल महा प्रतापी तिनके अतिवीर्य तिनके सुवीर्य तिनके उदितपराक्रम तिनके सूर्य तिनके इन्द्रद्युमणि तिनके महेन्द्रजित तिनके प्रभु तिनके विभु तिनके अविध्वंस तिनके वीतभी तिनके वृषभध्वज तिनके गरुडांक तिनके मृगांक, इस भांति सूर्यवंशविषे अनेक राजा भए ते संसारके भ्रमणतें भयभीत पुत्रोंको राज देय मुनिव्रतके धारक भए, महा निग्रन्थ शरीरसे भी निस्पृही यह सूर्यवंशकी उत्पत्ति तुझे कही अब सोमवंशकी उत्पत्ति तुझे कहिए है सो सुन।

ऋषभदेवकी दूसरी राणीके बाहुबली तिनके सोमयश तिनके सौम्य तिनके महाबल तिनके सुबल तिनके भुजबली इत्यादि अनेक राजा भये, निर्मल है चेष्टा जिनकी मुनिव्रत धार परम धामको प्राप्त भए कई एक देव होय मनुष्य जन्म लेकर सिद्ध भए, यह सोमवंशकी उत्पत्ति कही। अब विद्याधरनके वंशकी उत्पत्ति सुनहु।

नमि रत्नमाली तिनके रत्नवज्र तिनके रत्नरथ तिनके रत्नचित्र तिनके चन्द्ररथ तिनके वज्रजंघ तिनके वज्रसेन तिनके वज्रदंष्ट्र तिनके वज्रध्रुज तिनके वज्रध्वज तिनके वज्र तिनके सुवज्र तिनके वज्रभृत् तिनके वज्राभ तिनके वज्रबाहु तिनके वज्रांक तिनके वज्रसुंदर तिनके वज्रास्य तिनके वज्रपाणि तिनके वज्रभानु तिनके वज्रवान तिनके विद्युन्मुख तिनके सुवक्र तिनके विद्युदंष्ट्र अर उनके पुत्र विद्युत

अर विद्युदाभ अर विद्युद्वेग, अर विद्युत इत्यादि विद्याधरोंके वंशमें अनेक राजा भए अपने पुत्रको राज देय जिन दीक्षा धर राग द्वेषका नाशकर सिद्ध पदको प्राप्त भए । कई एक देवलोक मोहपाशसे बंधे राजविषे मरकर कुगतिको गए ।

अब संजयति मुनिके उपसर्गका कारण कहे हैं कि विद्युद्दंष्ट्र नामा राजा दोऊ श्रेणीका अधिपति विद्याबलसे उद्धत विमानमें बैठा विदेहक्षेत्रमें गया तहां संजयंति स्वामीको ध्यानारूढ देखा जिनका शरीर पर्वत समान निश्चल है उस पापीने मुनिको देखकर पूर्व जन्मके विरोधसे उनको उठाकर पंचगिरि पर्वतपर धरे अर लोकोंको कहा कि इसे मारो, पापी जीवोंने लष्टि मुष्टि पाषाणादि अनेक प्रकारसे उनको मारा मुनिको शमभावके प्रसादसे रंचमात्र भी क्लेश न उपजा दुस्सह उपसर्गको जीत लोकालोकका प्रकाशक केवल ज्ञान उपजा, सर्व देव वंदनाको आए, धरणींद्र भी आए, वह धरणींद्र पूर्व भवमें मुनिके भाई थे इस लिए क्रोधकर सब विद्याधरोंको नाग फांससे बांधे, तब सबनने विनती करी कि यह अपराध विद्युद्दंष्ट्रका है, तब अरको छोडा अन्य विद्युद्दंष्ट्रको न छोडा, मारणेको उद्यमी भए तब देवोंने प्रार्थना करके छुडाया, छोडा तो परंतु विद्या हर ली, तब इसने प्रार्थना करी कि हे प्रभो ! मुझे विद्या कैसे सिद्ध होयगी, धरणींद्रने कहा कि संजयंति स्वामीकी प्रतिमाके समीप तप क्लेश करनेसे तुमको विद्या सिद्ध होयगी परंतु चैत्यालयके उलंघनसे तथा मुनियोंके उलंघनसे विद्याका नाश होवेगा इसालिये तुमको तिनकी वंदना करके आगे गमन करना योग्य है । तब धरणींद्रने संजयति स्वामीको पूछा कि हे प्रभो ! विद्युद्दंष्ट्रने आपको उपसर्ग क्यों किया, भगवान संजयति स्वामीने कहा कि मैं चतुर्गतिविषे भ्रमण करता सकट नामा ग्राममें दयावान प्रियवादी हितकार नामा महाजन भया, निष्कपट स्वभाव साधु सेवा में तत्पर सो समाधि मरणकर कुमुदावती नगरीमें न्यायमार्गी श्रीवर्धन नामा राजा हुवा, उस ग्राममें एक

ब्राह्मण जो अज्ञान तपकर कुदेव हुआ था वहांसे चयकर राजा श्रीवर्धनके वह्निशिख नामा पुरोहित भया, वह महा दुष्ट अकार्यका करणेवाला आपको सत्यघोष कहावे परंतु महा झूठा अर परद्रव्यका हरण· हारा, उसके कुकर्मको कोई न जाने, जगतमें सत्यवादी कहावे, एक नेमिदत्त सेठके रत्न हरे, राणी रामदत्ताने जूवामें पुरोहितकी अंगूठी जीती अर दासीके हाथ पुरोहितके घर भेजकर रत्न मंगाए अर सेठको दिये, राजाने पुरोहितको तीव्र दंड दिया, वह पुरोहित मरकर एक भवके पश्चात् यह विद्याधरोंका अधिपति भया अर राजा मुनिव्रत धारकर देव भये, कई एक भवके पश्चात् यह हम संजयंति भए सो इसने पूर्वभवके प्रसंगसे हमको उपसर्ग किया। यह कथा सुन नागेन्द्र अपने स्थानको गये ॥

अथानन्तर उस विद्याधरके दृढरथ भए उसके अश्वधर्मा पुत्र भए उसके अश्वाय उसके अश्वध्वज उसके पद्मनाभि उसके पद्ममाली उसके पद्मरथ उसके सिंहजाति उसके मृगधर्मा उसके मेघास्त्र उसके सिंहप्रभु उसके सिंहकेतु उसके शशांक उसके चन्द्रांह उसके चन्द्रशेखर उसके इन्द्ररथ उसके चक्रधर्मा उसके चक्रायुध उसके चक्रध्वज उसके मणिग्रीव उसके मण्यंक उसके मणिभासुर उसके माणिरथ उसके मन्यास उसके विम्बोष्ठ उसके लंबिताधर उसके रक्तोष्ठ उसके हरिचन्द्र उसके पूर्णचन्द्र उसके बालेन्द्र उसके चंद्रमा उसके चूड उसके व्योमचंद्र उसके उडपानन उसके एकचूड उसके द्विचूड उसके त्रिचूड उसके वज्रचूड उसके भूरिचूड उसके अर्कचूड उसके वन्हिजटी उसके वान्हितेज इस भांति अनेक राजा भए। तिनमें कई एक पुत्रको राज देय मुनि होय मोक्ष गये। कई एक स्वर्ग गये कई एक भोगासक्त होय वैरागी न भए ते नारकी तिर्यंच भए इस भांति विद्याधरका वंश कहा। आगे द्वितीय तीर्थंकर जो आजितनाथ स्वामी उनकी उत्पत्ति कहे हैं ॥

जब ऋषभदेवको मुक्ति गये पचास लाख कोटि सागर गये, चतुर्थकाल आधा व्यतीत भया, जीवोंकी

आयु पराक्रम घटते गये जगतमें काम लोभादिककी प्रवृत्ति बढती भई तब इक्ष्वाकु कुलमें ऋषभ-देव ही के वंशमें अयोध्या नगरमें राजा धरणीधर भये उनके पुत्र त्रिदशजय देवोंके जीतनेवाले उनके इंदुरेखा राणी उसके जितशत्रु पुत्र भया, सो पोदनापुरके राजा भव्यानंद उनके अम्भोदमाला राणी उसकी पुत्री विजया वह जितशत्रुने परणी । जितशत्रुको राज देयकर राजा त्रिदशजय कैलाश पर्वतपर निर्वाणको प्राप्त भए, राजा जितशत्रुकी राणी विजयादेवीके श्रीआजितनाथ स्वामी भए उनका जन्मा-भिषेकादिकका वर्णन ऋषभदेववत् जानना जिनके जन्म होते ही राजा जितशत्रुने सर्व राजा जीते इस लिये भगवानका अजित नाम धरा। अजितनाथके सुनया नन्दा आदिक स्त्री भईं, जिनके रूपकी समानता इंद्राणी भी न कर सके । एक दिन भगवान आजितनाथ राजलोक सहित प्रभात समयमें ही वनक्रीडाको गये, कमलोंका वन फूला हुआ देखा अर सूर्यास्त समय उस ही वनको सकुचा हुआ देखा सो लक्ष्मीकी इस भांति अनित्यता मानकर परम वैराग्यको प्राप्त भए, माता पितादि सर्व कुटुंबसे क्षमाभावकर ऋषभ-देवकी भांति दीक्षा धरी, दश हजार राजा साथ निकसे, भगवानने वेल्ला पारणा अंगीकार करा ब्रह्मदत्त राजाके घर आहार लिया चौदह वर्ष तप करके केवलज्ञान उपजाया । चौंतीस अतिशय तथा आठ प्रातिहार्य प्रकट भए, भगवानके नव्वे गणधर भए अर लाख मुनि भए ॥

अजितनाथके पुत्र विजयसागर जिनकी ज्योति सूर्य समान है उनकी राणी सुमंगला उनके पुत्र सगर द्वितीय चक्रवर्ती भए । नवनिधि चौदह रत्न आदि इनकी विभूति भरत चक्रवर्तीके समान जाननी । तिनके समयमें एक वृत्तान्त भया सो हे श्रेणिक ! तुम सुनो । भरत क्षेत्रके विजयार्धकी दक्षिण श्रेणीमें चक्रवाल नगर तहां राजा पूर्णघन विद्याधरोंके अधिपति महा प्रभाव मंडित विद्याबलकर अधिक तिनने विहायतिलक नगरके राजा सुलोचनकी कन्या उत्पलमती विवाहके वास्ते मांगी । राजा सुलो-

वननें निमित्त ज्ञानीके कहनेसे उसको न दी अर सगर चक्रवर्तीको देनी विचारी, तब पूर्णघन सुलोचन पर चढ आए सुलोचनके पुत्र सहस्रनयन अपनी बाहिनको लेकर भागे अर बनमें छिप रहे। पूर्णघनने युद्धमें सुलोचनको मार नगरमें जाय कन्या ढूंढी परन्तु न पाई तब अपने नगरको चले गये, सहस्रनयन बापका बध सुन पूर्णमेघ पर क्रोधायमान भए परंतु कछु कर नाहीं सके, गहरे बनमें घुसे रहे कैसा है वह वन, सिंह व्याघ्र अष्टापदादिसे भरा है। पश्चात् चक्रवर्तीको एक मायामई अश्व लेय उडा सो जिस बनमें सहस्रनयन हुते तहां आये। उत्पलमतीने चक्रवर्तीको देखकर भाईको कहा कि चक्रवर्ती आप ही यहां पधारे हैं। तब भाईने प्रसन्न होयकर चक्रवर्तीकों बाहिन परणाई यह उत्पलमती चक्रवर्तीकी पटराणी स्त्रीरत्न भई अर चक्रवर्तीने कृपा कर सहस्रनयनको दोनों श्रेणीका आधिपति किया। सहस्रनयनने पूर्णघन पर चढकर युद्धमें पूर्णघनको मारा अर बापका बैर लिया। चक्रवर्ती छह खण्ड पृथ्वीका राज करे अर सहस्रनयन चक्रवर्तीका साला विद्याधरकी दोऊ श्रेणीका राज करे। अर पूर्णमेघका बेटा मेघवाहन भयकर भागा सहस्रनयनके योधा मारनेकों लारें (साथ) दौडे सो मेघवाहन समोशरणमें श्रीअजितनाथकी शरण आया इंद्रने भयका कारण पूछा तब मेघवाहनने कहा—'हमारे बापने सुलोचनको मारा था सो सुलोचनके पुत्र सहस्रनयनने चक्रवर्तीका बल पाकर हमारे पिताको मारा अर हमारे बंधु क्षय किये अर मेरे मारनेके उद्यममें है सो मैं मंदिरमेंसे हसोंके साथ उडकर श्रीभगवानकी शरण आया हूं।' ऐसा कहकर मनुष्योंके कोठेमें बैठा। जो सहस्रनयनके योधा इसके मारणेको आये हुते ते इसको समोशरणमें आया जान पीछे हट गए अर सहस्रनयनको सकल वृत्तान्त कहा तब वह भी समोशरणमें आया भगवानके चरणारविंदके प्रसादसे दोनों निर्वैर होय तिष्ठे। तब गणधरने भगवानसे इनके पिताका चरित्र पूछा। भगवान कहे हैं कि—"जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रमें सद्राति नामा नगर वहां भावन नामा वाणिक उसके आत-

की नामा स्त्री अर हरिदास नामा पुत्र, सो भावन चार कोटि द्रव्यका धनी हुता तो भी लोभ कर व्यापार निमित्त देशांतरको चला। चलते समय पुत्रको सब धन सौंपा अर द्यूतादिक कुव्यसन न सेवनेकी शिक्षा दीनी। हे पुत्र! यह द्यूतादि (जूवा) कुव्यसन सर्व दोषका कारण है इनको सर्वथा तजने इत्यादि शिक्षा देकर आप धनतृष्णाके कारण जहाजके द्वारा द्वीपांतरको गया। पिताके गए पीछे पुत्रने सर्व धन वेश्या जूआ अर सुरापान इत्यादिक कुव्यसनमें खोया। जब सर्व धन जाता रहा अर जुआरीनका देनदार हो गया तब द्रव्यके अर्थ सुरंग लगाय राजाके महलमें चोरीको गया। सो राजाके महलमेंसे द्रव्य लावे अर कुव्यसन सेवे। कई एक दिनोंमें भावन परदेशसे आया। घरमें पुत्रको न देखा तब स्त्रीको पूछा। स्त्रीने कही "इस सुरंगमें होयकर राजाके महिलमें चोरीको गया है।" तब यह पिता पुत्रके मरण की शंका कर उसके लावनेको सुरंगमें गया। सो यह तो जावे था अर पुत्र आवे था पुत्रने जाना यह कोई वैरी आवे है सो उसने वैरी जान खड्गसे मारा पीछे स्पर्शकर जाना यह तो मेरा बाप है तब महा-दुखी होय डरकर भागा अर अनेक देश भ्रमण कर मरा। पिता पुत्र दोनों कुत्ते भए, फिर गीदड फिर मार्जार भए, फेर रीछे भये, फिर न्योला भये, फेर भैंसे भये, फिर बलद भये, सो इतने जन्मोंमें परस्पर घातकर मरे, फिर विदेह क्षेत्रमें पुष्कलावती देशमें मनुष्य भये, उग्र तपकर एकादश स्वर्गमें उत्तर अनुत्तर नामा देव भए, वहांतें आयकर जो भावन नामा पिता हुता वह तो पूर्णमेघ विद्याधर भया अर हरिदास नामा पुत्र जो हुता सो सुलोचन नामा विद्याधर भया इस वैरसे पूर्णमेघने सुलोचनको मारा।

तब गणधर देवने सहस्रनयनको अर मेघवाहनको कहा तुम अपने पिताओंका इस भांति चरित्र जान संसारका वैर तजकर समताभाव धरो अर सगर चक्रवर्तीने गणधरदेवको पूछा कि 'हे महाराज! मेघवाहन अर सहस्रनयनका वैर क्यों भया' तब भगवानकी दिव्य ध्वनिमें आज्ञा भई कि 'जम्बूद्वीपके

भरतक्षेत्रमें पद्मक नामा नगर है तहां आरम्भ नामा गणित शास्त्रका पाठी महा धनवंत ताके दो शिष्य एक चंद्र एक आवली भये, इन दोनोंमें मित्रता हुती अर दोनों धनवान गुणवान विख्यात हुए सो इन के गुरु आरम्भने जो अनेक नयचक्रमें अति विचक्षण हुता मनमें विचारा कि कदाचित् यह दोनों मेरा पद भंग करें। ऐसा जानकर इन दोनोंके चित्त जुदे कर डारे। एक दिन चंद्र गायकों बेचने गोपालके घर गया सो गाय बेचकर वह तो घर आता हुता अर आवलीको उसी गायको गोपालसे खरीदकर लावता देखा इस कारण मार्गमें चन्द्रने आवलीको मारा। सो म्लेच्छ भया अर चंद्र मरकर बलध भया। म्लेच्छने बलधको भखा। म्लेच्छ नरक तिर्यंच योनिमें भ्रमणकर मूसा भया अर चंद्रका जीव मार्जार भया, मार्जारने मूसा भखा फिर ये दोऊ पाप कर्मके योगसे अनेक योनिमें भ्रमणकर काशीमें संभ्रमदेव की दासीके पुत्र दोऊ भाई भए, एकका नाम कूट अर एकका नाम कार्पटिक। इन दोनोंको संभ्रमदेवने चैत्यालयकी टहलको राखा। सो मरकर पुण्यके योगसे रूपानंद अर स्वरूपानंद व्यंतर भए। रूपानंद तो चंद्रका जीव अर स्वरूपानंद आवलीका जीव। रूपानंद तो चयकर कलूंबीका पुत्र कलंधर भया अर स्वरूपानंद पुरोहितका पुत्र पुष्पभूत भया, यह दोनों परस्पर मित्र एक हालीके अर्थ वैरको प्राप्त भए अर कुलंधर पुष्पभूतके मारणेको प्रवृत्ता। एक वृक्षके तले साधु विराजते हुते तिनसे धर्म श्रवणकर कुलंधर शांत भया। राजाने इसको सामंत जान बहुत बढाया। पुष्पभूत कुलंधरको जिनधर्मके प्रसादसे संपत्तिवान देखकर जैनी भया, व्रतधर तीसरे स्वर्ग गया अर कुलंधर भी तीसरे स्वर्ग गया। स्वर्गसे चय कर दोनों धातकी खण्डके विदेहमें अरिंजय पिता अर जयावती माताके पुत्र भए एकका नाम अमर-श्रुत दूसरेका नाम धनश्रुत यह दोनों भाई बडे योधा सहस्रशिरसके एतबारी चाकर जगतमें प्रसिद्ध हुवे। एक दिन राजा सहस्रशिरस हाथी पकडनेको वनमें गया। दोनों भाई साथ गये वनमें भगवान केवली

विराजे हुते तिनके प्रतापसे सिंह मृगादिक जातिविरोधी जीवोंको एक ठौर बैठे देख राजा आश्चर्यको प्राप्त भया, आगे जाकर केवलीका दर्शन किया राजा, तो मुनि होय निर्वाण गये अर यह दोनों भाई मुनि होय ग्यारहवें स्वर्ग गए। वहांसे चयकर चंद्रका जीव अमरश्रुत तो मेघवाहन भया अर आवलीका जीव घनश्रुत सहस्रनयन भया यह इन दोनोंके बैरका वृत्तांत है। फिर सगर चक्रवर्तीने भगवानसे पूछा कि हे प्रभो! सहस्रनयनसों मेरा जो अतिहित है सो इसमें क्या कारण है तब भगवानने कहा कि वह आरम्भ नामा गणितशास्त्रका पाठी मुनियोंको आहारदान देकर देवकुरु भोगभूमि गया। वहांसे प्रथम स्वर्गका देव होकर पीछे चंद्रपुरमें राजा हरि राणी धरादेवीके प्यारा पुत्र व्रतकीर्तन भया, मुनि पद धार स्वर्ग गया, अर विदेह क्षेत्रमें रत्नसंचयपुरमें महाघोष पिता चंद्राणी माताके पयोबल नामा पुत्र होय मुनिव्रत धार चौथवें स्वर्ग गया। तहांसे चयकर भरतक्षेत्रमें पृथिवीपुर नगरमें यशोधर राजा अर राणी जयाके घर जयकीर्त नामा पुत्र भया सो पिताके निकट जिन दीक्षा लेकर विजय विमान गया वहांसे चयकर तू सगर चक्रवर्ती भया अर आरम्भके भवमें आवली शिष्यके साथ तेरा स्नेह हुता सो अब आवलीका जीव सहस्रनयन तासों तेरा अधिक स्नेह है। यह कथा सुन चक्रवर्तीको विशेष धर्मरुचि हुई अर मेघबाहन तथा सहस्रनयन दोनों अपने पिताके अर अपने पूर्व भव श्रवणकर निर्वैर भए परस्पर मित्र भए अर इनकी धर्मविषै अतिरुचि उपजी, पूर्व भव दोनोंको याद आए महा श्रद्धावंत होय भगवानकी स्तुति करते भए, कि हे नाथ! आप अनाथनके नाथ हैं यह संसारके प्राणी महादुखी हैं, उनको धर्मोपदेश देकर उपकार करो हो तुम्हारा किसीसे भी कुछ प्रयोजन नाहीं तुम निःकारण जगतके बंधु हो तुम्हारा रूप उपमारहित है अर अप्रमाण बलके धारणहारे हो, इस जगतमें तुम समान और नहीं है तुम पूर्ण परमानंद हो कृतकृत्य हो, सदा सर्वदर्शी सर्वके वल्लभ हो किसीके चिंतवनमें नहीं आते

हो, जाने हैं सर्व पदार्थ जिनने सबके अन्तर्यामी सर्वज्ञ जगतके हितु हो, हे जिनेन्द्र ! संसाररूप अंधकूपमें पडे यह प्राणी इनको धर्मोपदेशरूप हस्तावलम्बन ही हो इत्यादिक बहुत स्तुति करी अर यह दोनों मेघवाहन अर सहस्रनयन गदगद बाणी होय अश्रुपातकर भीग गए हैं नेत्र जिनके परम हर्षको प्राप्त भए अर विधिपूर्वक नमस्कारकर तिष्ठे, सिंहवीर्यादिक मुनि इंद्रादिक देव सगरादिक राजा परम आश्चर्यको प्राप्त भए ॥

अथानन्तर भगवानके समोशरणमें राक्षसोंका इंद्र भीम अर सुभीम मेघवाहनसे प्रसन्न भए अर कहते भए कि हे विद्याधरके बालक मेघवाहन, तू धन्य है जो भगवान अजितनाथकी शरणमें आया, हम तेरेपर अति प्रसन्न भए हैं हम तेरी स्थिरताका कारण कहे हैं तू सुन, इस लवणसमुद्रमें अत्यन्त विषम महारमणीक हजारों अन्तर द्वीप हैं लवणसमुद्रमें मगर मच्छादिकके समूह बहुत हैं अर तिन अन्तर द्वीपोंमें कहीं तो गंधर्व क्रीडा करे हैं कहीं किन्नरोंके समूह रमे हैं कहीं यक्षोंके समूह कोलाहल करे हैं कहीं किंपुरुष जातिके देव कोलि करे हैं उनके मध्यमें राक्षस द्वीप है जो सात सौ योजन चौडा अर सात सौ योजन लम्बा है उसके मध्यमें त्रिकूटाचल पर्वत है जो अत्यन्त दुष्प्रवेश है, शरणकी ठौर है, पर्वतके शिखर सुमेरुके शिखर समान मनोहर हैं, अर पर्वत नव योजन ऊंचा पचास योजन चौडा है नाना प्रकारकी रत्नोंकी ज्योतिके समूहकर जडित है सुवर्णमयी सुन्दर तट है नाना प्रकारकी बेलोंकर मंडित कल्प वृक्षोंकर पूर्ण है उसके तले तीस योजन प्रमाण लंका नामा नगरी है रत्न अर सुवर्णके महलोंकर अत्यन्त शोभे है जहां मनोहर उद्यान हैं कमलोंसे मंडित सरोवर हैं बडे बडे चैत्यालय हैं वह नगरी इंद्रपुरी समान है दक्षिण दिशाका मण्डन (भूषण) है, हे विद्याधर ! तुम समस्त बांधववर्गकर सहित वहां बसकर सुखसे रहो ऐसा कहकर भीम नामा राक्षसोंका इंद्र उसको रत्नमई हार देता भया।

वह हार अपनी किरणोंसे महा उद्योत करे है तथा धरतीके बीचमें पाताल लंका जिसमें अलंकारोदय नगर छे योजन ओंडा अर एकसो साढे इकतीस योजन अर डेढकला चोडा यह भी दीया उस नगरमें वैरियोंका मन भी प्रवेश न कर सके स्वर्ग समान महामनोहर है। राक्षसोंके इंद्रने कहा—'कदाचित् तुम्हे परचक्रका भय हो तो इस पाताल लंकामें सकल वंशसहित सुखसों रहियो, लंका तो राजधानी अर पाताललंका भय निवारणका स्थान है, इस भांति भीम सुभीमने पूर्णघनके पुत्र मेघवाहनको कहा।

तब मेघवाहन परम हर्षको प्राप्त भया, भगवानको नमस्कार करके उठा, तब राक्षसोंके इन्द्रने राक्षस विद्या दी सो आकाशमार्गसे विमानमें चढकर लंकाको चले, तब सर्व भाइयोंने सुना कि मेघवाहनको राक्षसोंके इंद्रने आति प्रसन्न हो कर लंका दी है सो समस्त ही बंधु वर्गोंके मन प्रफुलित भए जैसे सूर्यके उदयसे समस्त ही कमल प्रफुलित होंय तैसे सर्व ही विद्याधर मेघवाहन पै आए, उनसे मण्डित मेघवाहन चले। के एक तो राजाके आगे जाय हैं, के एक दाहिने, के एक बांये, के एक हाथियों पर चढे, के एक तुरंग (घोडों) पर चढे, के एक रथों पर चढे जाय हैं के एक पालकी पर चढे जाय हैं अर अनेक पियादे ही जाय हैं, जय जय शब्द हो रहा है दुन्दुभी बाजे बाजे हैं राजा पर छत्र फिरे है अर चमर ढुरे हैं, अनेक निशान (झंडे) चले जाय हैं, अनेक विद्याधर शीस निवावे हैं, इस भांति राजा चलते चलते लवणसमुद्र ऊपर आए, वह समुद्र आकाश समान विस्तीर्ण अर पाताल समान ऊंडा तमाल वन समान श्याम है तरंगोंके समूहसे भरा है अनेक मगरमच्छ जिसमें कलोल करे हैं उस समुद्रको देख राजा हर्षित भए, पर्वतके अधोभागमें कोट अर दरवाजे अर खाइयों कर संयुक्त लंका नामा महा पुरी है तहां प्रवेश किया, लंकापुरीमें रत्नोंकी ज्योतिसे आकाश सन्ध्या समान अरुण (लाल) हो रहा है कुन्दके पुष्प समान उज्ज्वल ऊंचे भगवानके चैत्यालयोंसे मण्डित पुरी शोभे है चैत्यालयोंपर ध्वजा फहरा रहे हैं

चैत्यालयोंकी बन्दना कर राजाने महलमें प्रवेश किया और भी यथायोग्य घरोंमें तिष्ठे रत्नोंकी शोभा से उसके मन अर नेत्र हर गए।

अथानन्तर किन्नरगीत नामा नगरमें रतिमयूख राजा अर राणी अनुमती तिनके सुप्रभा नामा कन्या, नेत्र अर मनको चुरानेवाली, कामका निवास, लक्ष्मी रूप, कुमुदनीके प्रफुल्लित करनेको चन्द्रमाकी चांदनी, लावण्यरूप जलकी सरोवरी, आभूषणोंका आभूषण, इन्द्रियोंको प्रमोदकी करणहारी, सो राजा मेघवाहनने उसको महा उत्साह कर परणा, उसके महारक्षनामा पुत्र भया, जैसे स्वर्गमें इन्द्र इन्द्राणी सहित तिष्ठे तैसे राजा मेघवाहनने राणी सुप्रभा सहित लंकामें बहुत काल राज किया।

एक दिन राजा मेघवाहन अजितनाथ वंदनाके लिये समोशरणमें गए वहां जब और कथा हो चुकी तब सगरने भगवानको नमस्कार कर पूछा कि हे प्रभो! इस अवसर्पणी कालमें धर्म चक्रके स्वामी तुम सारिखे जिनेश्वर कितने भए अर कितने होवेंगे, तुम तीनलोकके सुखके देनेवाले हो, तुम सारिषे पुरुषोंकी उत्पत्ति लोकमें आश्चर्यकारिणी है, अर चक्र रत्नके स्वामी कितने होवेंगे तथा वासुदेव बलभद्र कितने होवेंगे, इसभांति सगरने प्रश्न किये। तब भगवान अपनी ध्वनिसे देव दुंदुभीकी ध्वनिको निराकरण करते हुये व्याख्यान करते भए। अर्धमागधी भाषाके भाषणहारे भगवान उनके होंठ न हालैं यह बडा आश्चर्य है। कैसी है दिव्य ध्वनि उपजाया है श्रोताओंके कानोंको उत्साह जाने। उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रत्येक कालमें चौवीस तीर्थंकर होय हैं, जिस समय मोहरूप अंधकारसे समस्त जगत् आच्छादित हुवा धर्मका विचार नाहीं और कोई भी राजा नाहीं, ता समय भगवान ऋषभदेव उपजे, तिनने कर्म भूमिकी रचना करी तबसे कृतयुग कहाया भगवानने क्रियाके भेदसे तीन वर्ण थापे अर उनके पुत्र भरतने विप्र वर्ण थापे, भरतका तेज भी ऋषभ समान है भगवान ऋषभदेवने जिन दीक्षा धरी अर

भव तापकर पीडित भव्यजीवोंको शमभावरूप जलसे शान्त किया श्रावकके धर्म अर यतीके धर्म दोऊ प्रकट किये। जिनके गुणनिकी उपमाकूं जगतविषै कोऊ पदार्थ नाहीं। कैलाशके शिखरसे आप निर्वाण को पधारे। ऋषभदेवकी शरण पाय अनेक साधु सिद्ध भए कई एक स्वर्गके सुखको प्राप्त भए कई एक भद्र परिणामी मनुष्य भवको प्राप्त भए, अर कई एक मारीचादि मिथ्यात्वके रागकरि संयुक्त अत्यन्त उज्ज्वल भगवानके मार्गको अवलोकन न करते भए, जैसे घुग्घू (उल्लू) सूर्यके प्रकाशको न जाने तैसे कुधर्मको अंगीकारकर कुदेव भए बहुरि नरक तिर्यंच गतिको प्राप्त भए भगवान ऋषभदेवको मुक्ति गए पचास लाख कोटि सागर गए तब सर्वार्थसिद्धिसे चय द्वितीय तीर्थंकर हम अजितनाथ भए जब धर्मकी ग्लानि होय अर मिथ्यादृष्टियोंका अधिकार होय आचारका अभाव होय तब भगवान तीर्थंकर प्रकट होयकर धर्मका उद्योत करें हैं अर भव्य जीव धर्मको पाय सिद्ध स्थानको प्राप्त होय हैं अब हमको मोक्ष गए पीछे बाईस तीर्थंकर और होंगे, तीन लोकमें उद्योत करनेवाले वे सर्व मुझ सरीखे कांति वीर्य विभूतिके धनी त्रैलोक्यपूज्य ज्ञान दर्शनरूप होंगे, तिनमें तीन तीर्थंकर १ शांति २ कुंथु ३ अर चक्रवर्ती पदके भी धारक होवेंगे। सो चौबीसोंके नाम सुन—ऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, पुष्पदंत ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनंत १४, धर्म १५, शांति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्वनाथ २३, महावीर २४, यह सर्व ही देवाधिदेव जिन मार्गके धुरंधर होवेंगे, अर सर्वके गर्भावतारमें रत्नोंकी वर्षा होगी, सर्वके जन्मकल्याणक सुमेरु पर्वतपर क्षीर सागरके जलसे होवेंगे, उपमारहित हैं तेज रूप सुख अर बल जिनके ऐसे सर्व ही कर्म शत्रुके नाश करणहारे होवेंगे अर महावीर स्वामीरूपी सूर्यके अस्त भए पीछे पाखण्डरूप अज्ञानी चमत्कार करेंगे वह पाखण्डी संसाररूप कूपमें आप पडेंगे

अर औरोंको गेरेंगे चक्रवर्त्तियोंमें प्रथम तो भरत भए, दूसरा तू सगर भया, अर तीसरा मघवा, चौथा सनत्कुमार अर पांचवां शांति, छठा कुंथु, सातवां अर, आठवां सुभूम, नवा महापद्म, दशवां हरिषेण, ग्यारहवां जयसेन, बारहवां ब्रह्मदत्त, यह बारह चक्रवर्त्ती अर वासुदेव नव अर प्रतिवासुदेव ९ बलभद्र नव होवेंगे इनका धर्ममें सावधान चित्त होगा यह अवसर्पणीके महापुरुष कहे । इसी भांति उत्सर्पणीमें भरत ऐरावतमें जानने। इस भांति महापुरुषोंकी विभूति अर कालकी प्रवृत्ति अर कर्मके वशसे संसार-का भ्रमण अर कर्म रहितोंको मुक्तिका निरुपमसुख यह सर्वकथन मेघवाहनने सुना, यह विचक्षण चित्त में विचारता भया कि हाय ! हाय !! जिन कर्मोंसे यह जीव आतापको प्राप्त होय है तिन्हीं कर्मोंको मोह मदिरासे उन्मत्त हुआ यह जीव बांधे है। यह विषय विषवत् प्राणोंके हरणहारे कल्पनामात्र मनोज्ञ हैं। दुःखके उपजावनहारे हैं इनमें राति कहां, इस जीवने धन स्त्री कुटुम्बादिमें अनेक भव राग किया परंतु वे पदार्थ इसके नहीं हुये यह सदा अकेला संसारमें परिभ्रमण करे है। यह सर्व कुटुंबादिक तब तक ही स्नेह करे हैं जबतक दानकर उनका सन्मान करे हैं जैसे श्वानके बालकको जब लग टूक डारिए तोलग अपना है, अन्तकालमें पुत्र कलत्र बान्धव मित्र धनादिकके साथ कौन गया अर यह किसके साथ गए यह भोग काले सर्पके फण समान भयानक हैं, नरकके कारण हैं। इनमें कौन बुद्धिमान संग करे, अहो यह बडा आश्चर्य है। लक्ष्मी ठगनी अपने आश्रितोंको ठगे है इसके समान अर दुष्टता कहां ! जैसे स्वप्नमें किसी वस्तुका समागम होय है तैसे कुटुंबका समागम जानना अर जैसे इंद्रधनुष क्षणभंगुर है तैसे परिवारका सुख क्षणभंगुर जानना। यह शरीर जलके बुदबुदेवत् असार है अर यह जीतव्य विज-लीके चमत्कारवत् असार चंचल है तातैं सबको तजकर एक धर्म ही का सहाय अंगीकार करूं, धर्म कैसा है सदा कल्याणकारी ही है कदापि विघ्नकारी नहीं अर संसार शरीर भोगादिक चतुरगातिके भ्रमण-

के कारण हैं महा दुखरूप हैं ऐसा जानकर उस राजा मेघवाहनने जिसके वकतर महा वैराग्य ही है महारक्ष नामा पुत्रको राज्य देकर भगवान श्रीअजितनाथके निकट दीक्षा धारी, राजाके साथ एकसो दश हजार वैराग्य पाय घररूप वंदीखानेसे निकसे ॥

अथानन्तर मेघवाहनका पुत्र महारक्ष राजपर बैठा सो चंद्रमा समान दानरूपी किरणनके समूहसे कुटुंबरूपी समुद्रको पूर्ण करता संता लंकारूपी आकाशमें प्रकाश करता भया, वडे २ विद्याधरोंके राजा स्वप्नमें भी उसकी आज्ञाको पाकर आदरसे प्रतिबोध होयकर हाथ जोड नमस्कार करते भए। उस महारक्षके विमलप्रभा राणी होती भई, प्राण समान प्यारी सो सदा राजाकी आज्ञा प्रमाण करती भई। वह राणी मानो छायासमान पतिकी अनुगामिनी है। उसके अमररक्ष उदधिरक्ष भानुरक्ष ये तीन पुत्र भए। वह पुत्र नाना प्रकारके शुभकर्मकर पूर्ण जिनका वडा विस्तार, अति ऊंचे जगतमें प्रसिद्ध, मानो तीन लोक ही हैं ॥

अथानन्तर अजितनाथ स्वामी अनेक भव्य जीवोंको निस्तारकर सम्मेदशिखरसे सिद्धपदको प्राप्त भए सगरके छाणवें हजार राणी इंद्राणीतुल्य अर साठ हजार पुत्र ते कदाचित् वंदनाके अर्थ कैलाश पर्वतपर आए। भगवानके चैत्यालयोंकी बंदनाकर दंडरत्नसे कैलाशके चौगिरद खाई खोदते भए। सो तिनको क्रोधकी दृष्टिसे नागेन्द्रने देखा अर ये सब भस्म हो गए। उनमेंसे दो आयु कर्मके योगसे बचे एक भीमरथ अर दूसरा भगीरथ। तब सबने विचारा जो अचानक यह समाचार चक्रवर्तीको कहेंगे तो चक्रवर्ती तत्काल प्राण तजेंगे, ऐसा जान इनको मिलनेसे अर कहनेसे पंडित लोकोंने मना किए, सर्व राजा अर मंत्री जिस विधि आए थे, उसी विधिसे आए। विनयकर अपने अपने स्थानक चक्रवर्तीके पास बैठे। तब एक वृद्ध कहता भया कि हे सगर! देख, इस संसारकी अनित्यता, जिसको देखकर

भव्य जीवोंका मन संसारमें नहीं प्रवृत्ते है आगे तुह्मारे समान पराक्रमी राजा भरत भए, जिसने छै खण्ड पृथ्वी दासी समान वश करी उसके अर्ककीर्ति पुत्र भये महा पराक्रमी जिनके नामसे सूर्य वंश प्रवृता इस भांति जे अनेक राजा भये ते सर्व कालवश भये अर राजाओंकी वात तो दूर ही रहो जे स्वर्ग लोकके इंद्र महा विभवयुक्त हैं ते भी क्षणमें विलाय जाय हैं अर जे भगवान तीर्थंकर तीनों लोकके आनन्द करणहारे हैं वे भी आयुके अन्त होनेपर शरीरको तज निर्वाण पधारे हैं। जैसे पक्षी वृक्षपर रात्रिको आय बसे हैं प्रभात अनेक दिशाको गमन करे हैं, तैसे यह प्राणी कुटुंबरूपी वृक्षमें आय बसे हैं। स्थिति पूरीकर अपने कर्मवश चतुर्गतिमें गमन करे हैं। सबसे बलवान महाबली यह काल है, जिसने बडे २ बलवान निर्बल किए अहो! बडा आश्चर्य है। बडे पुरुषोंका विनाश देखकर हमारा हृदय नहीं फट जाय है। इन जीवोंके शरीर सम्पदा अर इष्टका संयोग सर्व इंद्रधनुष, वा स्वप्न, वा बिजली, वा झागा, वा बुदबुदा समान जानना। इस जगतमें ऐसा कोई नहीं, जो कालसे बचे। एक सिद्ध ही अविनाशी हैं अर जो पुरुष पहाडको हाथसे चूर्णकर डारें अर समुद्रको शोष जावें, ते भी काल के बदनमें प्राप्त होय हैं। मृत्यु अलंघ्य है। यह त्रैलोक्य मृत्युके वश है, केवल महामुनि ही जिनधर्मके प्रसादसे मृत्युको जीते हैं। जैसे अनेक राजा कालवश भए तैसे हमहू कालवश होवेंगे। तीन लोकका यही मार्ग है। ऐसा जानकर ज्ञानी पुरुष शोक न करें, शोक संसारका कारण है, इस भांति वृद्ध पुरुषने कही अर इस भांति सर्व सभाके लोगोंने कही ताही समय चक्रवर्तीने दोऊ बालक देखे। तब मनमें विचारी कि सदा ये साठ हजार भेले होय मेरे पास आवते हुते नमस्कार करते अर आज ये दोनों ही दीनबदन दीखे हैं इसलिए जानिये है कि अर सब कालवश भए अर ये सब राजा मुझे अन्योक्तिकर समझावे हैं। मेरा दुःख देखनेको असमर्थ हैं, ऐसा जान राजा शोकरूप सर्पका डंसा हुआ भी प्राणोंको

न तजता भया, मंत्रियोंके वचनसे शोकको दबाकर संसारको कदली (केला) के गर्भवत् असार जान इन्द्रियोंके सुख छोड भगीरथको राज देकर जिन दीक्षा आदरी, यह सम्पूर्ण छे खण्ड पृथ्वी जीर्ण तृण समान जान तजी, भीमरथसहित श्रीअजितनाथके निकट मुनि होय केवलज्ञान उपाय सिद्ध पदको प्राप्त भए ॥

अथानन्तर एक समय सगरके पुत्र भगीरथ श्रुतसागर मुनिको पूछते भए कि हे प्रभो ! जो हमारे भाई एकही साथ मरणको प्राप्त भए उनमें मैं बचा सो किस कारणसे बचा । तब मुनि बोले कि 'एक समय चतुर्विध संघ बन्दना निमित्त संमेद शिखरको जाते हुते । सो चलते २ अंतिक ग्राममें आय निकसे तिनको देखकर अंतिम ग्रामके लोक दुर्वचन बोलते भए, हंसते भये, तहां एक कुम्भारने उनको मने करा अर मुनियोंकी स्तुति करी तदनंतर उस ग्रामके एक मनुष्यने चोरी करी । राजाने सर्व ग्राम जला दिया उस दिन वह कुम्भार किसी ग्रामको गया हुता वह ही बचा वह कुम्भार मरकर बणिक भया अर अन्य जे ग्रामके मरे थे द्विइंद्री कौडी भये कुम्भारके जीव महाजनने सर्व कौडी खरीदे बहुरि वह महाजन मर कर राजा भया, अर कौडी मरकर गिजाई भई, सो हाथीके पगके तल चूरी गई । राजा मुनि होय कर देव भये, देवसे तू भागीरथ भया अर ग्रामके लोक कैएक भव लेय सगरके पुत्र भये । सो मुनिके संघकी निंदाके पापसे जन्म जन्ममें कुगति पाई अर तू स्तुति करनेसे ऐसा भया । यह पूर्वभव सुनकर भगीरथ प्रतिबोधको पायकर मुनिराजका व्रतधर परम पदको प्राप्त भये ।

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—'हे श्रेणिक ! यह सगरका चरित्र तो तुझे कहा, आगे लंकाकी कथा कहिये है सो सुन । महारिक्ष नामा विद्याधर बडा सम्पदा कर पूर्ण लंकाका निःकंटक राज करै सो एक दिन प्रमद नामा उद्यानमें राजा राजलोक सहित क्रीडाको गये, कैसा है

वह प्रमद नामा उद्यान ? ऊंचे पर्वतोंसे महारमणीक है अर सुगन्धि पुष्पोंसे फूल रहे वृक्षोंके समूहसे मंडित अर मिष्ट शब्दोंके बोलनहारे पक्षियोंके समूहसे अति सुंदर है, जहां रत्नोंकी राशि हैं अर अति सघन पत्र पल्लवन कर मंडित लताओं (वेलों)के मंडपसे छा रहा है ऐसे वनमें राजा राजलोकों सहित नाना प्रकारकी क्रीडा कर रतिके सागरमें मग्न हुआ जैसे नंदन वनमें इंद्र क्रीडा करे तैसे क्रीडा करी।

अथानन्तर सूर्यके अस्त भये पीछे कमल संकोचको प्राप्त भये। तिनमें भ्रमरको दबकर मूवा देख राजाके जीमें चिंता उपजी। उस राजाके मोहकी मंदता हो गई अर भवसागरसे पार होनेकी इच्छा उपजी। राजा विचारे है कि देखो मकरंदके रसमें आसक्त यह मूढ भौंरा गंधसे तृप्त न भया तातैं मृत्युकूं प्राप्त भया। धिक्कार होहु या इच्छाकूं जैसे यह कमलके रसका आसक्त मधुकर मूवा, तैसे मैं स्त्रियोंके मुखरूप कमलका भ्रमर हुआ मरकर कुगतिको प्राप्त होऊंगा। जो यह एक नासिका इंद्रियका लोभी नाशको प्राप्त भया तो मैं तो पंच इंद्रियोंका लोभी हूं मेरी क्या बात ? अथवा यह चौइंद्री जीव अज्ञानी भूलै तो भूलै, मैं ज्ञानसंपन्न विषयोंके वश क्यों हुआ ? शहतकी लपेटी खड्गकी धाराके चाटनेसे सुख कहा ? जीभहीके खंड होय हैं तैसे विषय सेवनमें सुख कहा ? अनन्त दुःखोंका उपार्जन ही होय है। विषफल तुल्य विषय हैं उनसे पराङ्मुख हैं तिनको मैं मन वच कायसे नमस्कार करूं हूं। हाय! हाय!! यह बडा कष्ट है जो मैं पापी घने दिन तक इन दुष्ट विषयनिकरि ठगाया गया। इन विषयोंका प्रसंग विषम है। विष तो एक भव प्राण हरे है विषय अनन्त भव प्राण हरे है। यह विचार राजाने किया। उस-समय श्रुतसागर मुनि बनमें आये वह मुनि अपने रूपसे चन्द्रमाकी कांतिको जीते हैं अर दीप्तिसे सूर्यको जीते हैं स्थिरतामें सुमेरुसे अधिक हैं जिनका मन एक धर्म ध्यानमें ही आसक्त है अर जीते हैं राग द्वेष दोय जिन्होंने और तजे हैं मन वचन कायके अपराध जिन्होंने चार कषायोंके जीतनेहारे पांच

इंद्रियोंके वश करणहारे छै कायके जीवके दयालु अर सप्त भय वर्जित आठ मद रहित नव नयके वेत्ता शीलके नववाडिके धारक दशलक्षण धर्मके स्वरूप परम तपके धरणहारे साधुवोंके समूह सहित स्वामी पधारे सो जीव जंतुरहित पवित्र स्थान देख वनमें तिष्ठे जिनके शरीरकी ज्योतिका दशों दिशामें उद्योत हो गया ॥

अथानन्तर बनपालके मुखसें स्वामीको आया सुन राजा महारिक्ष विद्याधर वनमें आये कैसे हैं राजा ? भक्ति भावसे विनयरूप है मन जिनका, राजा आकर मुनिके पांव पडे मुनिका मुख अति प्रसन्न है अर कल्याणके देनहारे हैं चरण कमल जिनके । राजा समस्त संघको नमस्कार कर समाधान (कुशल) पूछ क्षण एक बैठ भक्तिभावसे धर्मका स्वरूप पूछते भये मुनिके हृदयमें शांति भावरूपी चंद्रमा प्रकाश कर रहा था सो वचनरूपी किरणसे उद्योत करते संते व्याख्यान करते भये कि हे राजा ! धर्मका लक्षण जीव दया भगवानने कहा है अर सत्य वचनादि सर्व धर्महीका परिवार है यह जीव कर्मके प्रभावसे जिस गतिमें जाय है उसी शरीरमें मोहित होय है इसलिये तीनलोककी सम्पदा जो कोई किसीको देय तो भी प्राणको न तजे सब जीवोंको प्राण समान अर कुछ प्यारा नाहीं सब ही जीवनेको इच्छे हैं मरनेको कोई भी न इच्छे । बहुत कहनेकर क्या ? जैसे आपको अपने प्राण प्यारे हैं तैसे ही सबको प्यारे हैं इस लिये जो मूरख परजीवोंके प्राण हरें हैं ते दुष्टकर्मी नरकमें पडे हैं उन समान कोऊ पापी नाहीं । यह जीव जीवोंके प्राण हर अनेक जन्म कुगतिमें दुःख पावे है जैसे लोहका पिण्ड पानीमें डूब जाय है तैसे हिंसक जीवनका मन भवसागरमें डूबे है । जे वचनकर मीठे बोल बोले हैं अर हृदयमें विषके भरे हैं इंद्रियोंके वश होकर मलीन हैं भले आचारसे रहित स्वेच्छाचारी कामके सेवनहारे हैं ते नरक तिर्यंच गतिमें भ्रमण करे हैं । प्रथम तो इस संसारमें जीवोंको मनुष्य देह दुर्लभ है। फिर उत्तम कुल आर्यक्षेत्र

सुन्दरता धनकर पूर्णता विद्याका समागम तत्वका जानना धर्मका आचरण यह अति दुर्लभ है धर्मके प्रसादतें के एक तो सिद्ध पद पावे हैं के एक स्वर्ग लोकमें सुख पाकर परम्पराय मोक्षको जाय हैं अर कई एक मिथ्यादृष्टि अज्ञान तप कर देव होय स्थावर योनिमें आय पडे हैं । कई एक पशु होय हैं कई एक मनुष्य जन्ममें आवे हैं । माताका गर्भ मल मूत्रकर भरा है । कृमियोंके समूहकर पूर्ण है । महा दुर्गंध अत्यन्त दुस्सह उसमें पित्त श्लेष्मके मध्य चर्मके जालमें ढके यह प्राणी जननीके आहारका जो रस ताहि चाटें हैं। जिनके सर्व अंग सकुच रहे हैं । दुःखके भार कर पीडे नव महीना उदरमें बसकर योनिके द्वारसें निकसे हैं। मनुष्य देह पाय पापी धर्मको भूले है। मनुष्य देह सर्व योनियोंमें उत्तम है। मिथ्यादृष्टि नेम धर्म आचारवर्जित पापी विषयोंको सेवे हैं । जे ज्ञानरहित कामके वश पडे स्त्रीके वशी होय हैं ते महा दुःख भोगते हुये संसार समुद्रमें डूबे हैं इसलिये विषय कषाय न सेवने । हिंसाका वचन जिसमें पर जीवको पीडा होय सो न बोलना । हिंसा ही संसारका कारण है। चोरी न करना, सांच बोलना, स्त्रीकी संगति न करनी, धनकी वांछा न रखनी, सर्व पापारम्भ तजने, परोपकार करना, पर पीडा न करनी। यह मुनिकी आज्ञा सुनकर धर्मका स्वरूप जान राजा वैराग्यको प्राप्त भये । मुनिको नमस्कार कर अपने पूर्व भव पूछे। चार ज्ञानके धारक मुनि श्रुतिसागर संक्षेपताकर पूर्व भव कहते भये। कि हे राजन् ! पोदनापुरमें हित नामा एक मनुष्य उसके माधवी नामा स्त्री उसके प्रीतमनामा तू पुत्र था अर उसी नगरमें राजा उदयाचल राणी अर्हश्री उसका पुत्र हेमरथ राज करे सो एक दिन जिनमंदिरमें महापूजा कराई वह पूजा आनन्दकी करणहारी है । सो उसके जयजय कार शब्द सुनकर तैने भी जयजयकार शब्द किया सो पुण्य उपार्जा । काल पाय मुवा अर यक्षोंमें महायक्ष हुवा। एक दिन विदेहक्षेत्रमें कांचनपुर नगरके वनमें मुनियोंको पूर्व भवके शत्रुने उपसर्ग किया। यक्षने उसको डराकर

भगा दिया अर मुनियोंकी रक्षा करी सो अति पुण्यकी राशि उपार्जी । के एक दिनमें आयु पूरी कर यक्ष तडिदंगद नामा विद्याधरकी श्रीप्रभा स्त्रीके उदित नामा पुत्र भया । अमरविक्रम विद्याधरोंके ईश बंदनाके निमित्त मुनिके निकट आए थे उनको देखकर निदान किया । महा तपकर दूसरे स्वर्ग जाय वहांसे चयकर तू मेघबाहनके पुत्र हुवा । हे राजा ! तूने सूर्यके रथकी न्याई संसारमें भ्रमण किया । जिह्वाका लोलुपी स्त्रियोंके वशवर्ती होय अनन्त भव धरे । तेरे शरीर इस संसारमें एते व्यतीत भये जो उनको एकत्र करिये तो तीनलोकमें न समावें अर सागरोंकी आयु स्वर्गमें तेरी भई । जब स्वर्गहीके भोगसे तू तृप्त न भया तो विद्याधरोंके अल्प भोगसे तू कहा तृप्त होयगा अर तेरा आयु भी अब आठ दिनका बाकी हे इसलिये स्वप्न इन्द्रजाल समान जे भोग उनसे निवृत्त हो। ऐसा सुन अपना मरण जाना तो भी विषादको न प्राप्त भये। प्रथम तो जिन चैत्यालयमें बडी पूजा कराई पीछे अनन्त संसारके भ्रमणसे भयभीत होकर अपने बडे पुत्र अमररक्षको राज देय अर लघु पुत्र भानुरक्षको युवराज पद देय आप परिग्रहको त्याग कर तत्वज्ञानमें मग्न भये पाषाणके थंभ तुल्य निश्चल होय ध्यानमें तिष्ठे अर लोभकर रहित भये । खान पानका त्याग कर शत्रु मित्रमें समान बुद्धिधार निश्चल कर मौनव्रतके धारक समाधि मरणकर स्वर्गविषे उत्तम देव भये ।

अथानन्तर किन्नरनादनामा नगरीमें श्रीधर नामा विद्याधर राजा उसके विद्यानामा राणी उसके आरिजयानामा कन्या सो अमररक्षने परणी अर गंधर्वगीत नगरमें सुरसन्निभ राजा उसके राणी गंधारी की पुत्री गंधर्वा सो भानुरक्षने परणी । बडे भाई अमररक्षके दश पुत्र अर देवांगना समान छह पुत्री भई जिनके आभूषण गुण ही हे अर लघु भाई भानुरक्षके दश पुत्र अर छह पुत्री भई सो उन पुत्रोंने अपने अपने नामसे नगर वसाए। वे पुत्र शत्रुओंके जीतनेहारे पृथ्वीके रक्षक हैं उन नगरोंके नाम सुनो ।

सन्ध्याकार १ सुदेव २ मनोह्लाद ३ मनोहर ४ हंसद्वीप ५ हरि ६ जोध ७ समुद्र ८ कांचन ९ अर्धस्वर्ग १० ए दश नगर तो अमररक्षके पुत्रोंने बसाये अर आवर्त नगर १ विघट २ अम्भोद ३ उतकट ४ स्फुट ५ रतुग्रह ६ तघ ७ तोय ८ आवली ९ रत्नद्वीप १० यह दश नगर भानुरक्षके पुत्रोंने बसाए। कैसे हैं वे नगर? जिनमें नाना प्रकारके रत्नोंसे उद्योत हो रहा है सुवर्णकी भींति तिनसे देदीप्यमान वे नगर क्रीडा के अर्थी राक्षसोंके निवास होते भए, बडे बडे विद्याधर देशान्तरोंके बासी वहां आय महा उत्साहकर निवास करते भए॥

अथानन्तर पुत्रोंको राज देय अमररक्ष भानुरक्ष यह दोनों भाई मुनि होय महा तपकर मोक्ष पदको प्राप्त भए, इस भांति राजा मेघवाहनके वंशमें बडे २ राजा भए। ते न्यायवन्त प्रजापालनकर सकल वस्तुसे विरक्त होय मुनिके व्रत धार कई एक मोक्षको गए, कई एक स्वर्गमें देवता भए, उस वंशमें एक राजा रक्ष भए उनकी राणी मनोवेगा उसके पुत्र राक्षस नामा राजा भए तिनके नामसे राक्षस वंश कहाया। यह विद्याधर मनुष्य हैं, राक्षस योनि नहीं, राजा राक्षसके राणी सुप्रभा उसके दो पुत्र भए। आदित्यगति नामा बडा पुत्र अर छोटा बृहत्कीर्ति, यह दोनों चन्द्र सूर्य समान अन्यायरूप अंधकारको दूर करते भए, तिन पुत्रोंको राज देय राजा राक्षस मुनि होय देवलोक गये, राजा आदित्यगति राज्य करै अर छोटा भाई युवराज हुवा बडे भाईकी स्त्री सदनपद्मा अर छोटे भाईकी स्त्री पुष्पनखा भई आदित्यगतिका पुत्र भीमप्रभ भया। ताके हजार राणी देवांगना समान अर एकसौ आठ पुत्र भए जो पृथ्वीके स्तम्भ होते भए। उनमें बडे पुत्रको राज्य देय राजा भीमप्रभ वैराग्यको प्राप्त होय परमपदको प्राप्त भए। पूर्व राक्षसोंके इंद्र भीम सुभीमने कृपाकर मेघवाहनको राक्षस द्वीप दिया सो मेघवाहनके वंशमें वडे बडे राजा राक्षस द्वीपके रक्षक भए, भीमप्रभका बडा पुत्र पूजाई सो अपने पुत्र जितभास्कर

को राज्य देय मुनि भए अर जितभास्कर संपरकीर्ति नामा पुत्रको राज्य देय मुनि भए अर संपरकीर्ति सुग्रीव नामा पुत्रको राज्य देय मुनि भए। सुग्रीव हरिग्रीवको राज्य देय उग्रतपकर देवलोक गया अर हरिग्रीव श्रीग्रीवको राज्य देय वैराग्यको प्राप्त भए अर श्रीग्रीव सुमुख नामा पुत्रको राज्य देय मुनि भए। अपने बडों ही का मार्ग अंगीकार किया अर सुमुख भी सुव्यक्तको राज देय आप परम ऋषि भए अर सुव्यक्त अमृतवेगको राज देय वैरागी भए अर अमृतवेग भानुगतको राज देय यति भए अर वे ह्रिचिंतागतको राज देकर निश्चिन्त भए अर चिन्तागति भी इंद्रको राज देय मुनींद्र भए इस भांति राक्षस बंशमें अनेक राजा भए तथा राजा इंद्रके इंद्रप्रभु ताके मेघ, ताके मृगीदमन, ताके पवि, ताके इंद्रजीत, ताके भानुवर्मा, ताके भानु, सूर्य समान तेजस्वी, ताके मुरारी, ताके त्रिजित, ताके भीम, ताके मोहन, ताके उद्धारक, ताके रवि, ताके चाकार, ताके वज्रमध्य, ताके प्रमोद, ताके सिंहविक्रम, ताके चामुण्ड, ताके मारण, ताके भीष्म, ताके द्रुपवाह, ताके अरिमर्दन, ताके निर्वाणभक्ति, ताके उग्रश्री, ताके अर्हद्भक्त, ताके अनुत्तर, ताके गतभ्रम, ताके आनि, ताके चंड, ताके लंक, ताके मयूरवाहन, ताके महाबाहु, ताके मनोहर्म्य, ताके भास्करप्रभ, ताके वृहद्गति, ताके वृहदांकत अर ताके अरिसंत्रास, ताके चंद्रावर्त, ताके महारव, ताके मेघध्वान, ताके ग्रहक्षोभ, ताके नक्षत्रदमन इस भांति कोटिक राजा भए। बडे विद्याधर महाबलमंडित महाकांतिके धारी पराक्रमी परदाराके त्यागी निज स्त्रीमें है संतोष जिनके, लंकाके स्वामी, महासुंदर, अस्त्र शस्त्रके धारक, स्वर्ग लोकके आए अनेक राजा भए। ते अपने पुत्रोंको राज देय जगतसे उदास होय जिन दीक्षा धारि कई एक तो कर्म काट निर्वाणको गए, जो तीन लोकका शिखर है अर कई एक राजा पुण्यके प्रभावसे प्रथम स्वर्गको आदि देय सर्वार्थसिद्धितक प्राप्त भए। इस भांति अनेक राजा व्यतीत भए लंकाका अधिपति घनप्रभ उसकी राणी पद्माका पुत्र कीर्ति-

धवल प्रसिद्ध भया। अनेक विद्याधर जिसके आज्ञाकारी जैसे स्वर्गमें इंद्र राज करै तैसे लंकामें कीर्ति-धवल राज करता भया इस भांति पूर्व भवमें किया जो तप उसके बलसे यह जीव देवगतिके तथा मनुष्य गतिके सुख भोगे है अर सर्व त्याग कर महा व्रत धर आठ कर्म भस्म कर सिद्ध होय है अर जे पापी जीव खोटे कर्ममें आसक्त हैं ते इसी ही भवमें लोकानिन्द्य होय मरकर कुयोनिमें जाय हैं अर अनेक प्रकार दुःख भोगवे हैं ऐसा जान पापरूप अन्धकारके हरणेको सूर्य समान जो शुद्धोपयोग उसको भजो।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराणकी भाषाटीकाविषै राक्षसवंशका कथन जाविषै है ऐसा पांचवां पर्व संपूर्ण भया ॥ ५ ॥

अथानन्तर गोतम स्वामी कहे हैं—हे राजा श्रेणिक! यह राक्षसवंश अर विद्याधरोंके वंशका वृत्तांत तो तुमसे कहा अब वानरवंशियोंका कथन सुन। स्वर्ग समान जो विजयार्धगिरि उसकी दक्षिण श्रेणीमें मेघपुर नामा नगर ऊंचे महलोंसे शोभित है, वहां विद्याधरोंका राजा अतीन्द्र पृथ्वीपर प्रसिद्ध भोग सम्पदामें इंद्र तुल्य ताके श्रीमती नामा राणी लक्ष्मी समान हुई। जिसके मुखकी चांदनीसे सदा पूर्णमासी समान प्रकाश होय, तिनके श्रीकण्ठ नामा पुत्र भया जो शास्त्रमें प्रवीण जिसके नामको सुन कर विचक्षण पुरुष हर्षको प्राप्त होंय उसके छोटी बहिन महामनोहर देवी नामा हुई जिसके नेत्र कामके बाण ही हैं॥

अथानन्तर रत्नपुर नामा नगर अति सुंदर तहां पुष्पोत्तर नाम राजा विद्याधर महाबलवान उसके पद्माभा नाम पुत्री देवांगना समान अर पद्मोत्तर नामा पुत्र महा गुणवान जिसके देखनेसे अति आनंद होय सो राजा पुष्पोत्तर अपने पुत्रके निमित्त राजा अतींद्रकी पुत्री देवीको बहुत बार याचना करी तो

भी श्रीकंठ भाईने अपनी बाहिन लंकाके धनी कीर्तिधवलको दीनी अर पद्मोत्तरको न दीनी । यह वात सुन राजा पुष्पोत्तरने अति कोप किया अर कहा कि देखो हममें कुछ दोष नाहीं दारिद्र दोष नहीं, मेरा पुत्र कुरूप नहीं अर हमारे उनके कुछ वैर भी नहीं तथापि मेरे पुत्रको श्रीकण्ठने अपनी बाहिन न परणाई यह क्या युक्त किया ॥

एक दिन श्रीकण्ठ चैत्यालयोंके बन्दनाके निमित्त सुमेरु पर्वत पर विमानमें बैठ कर गए विमान पवन समान वेग वाला अर अति मनोहर है। सो बन्दना कर आवते हुते मार्गमें पुष्पोत्तरकी पुत्री पद्माभाका राग, सुन मन मोहित भया गुरु समीप संगीतगृहमें वीण बजावती पद्माभा देखी उसके रूपसमुद्रमें उसका मन मग्न होगया मनके काढिवेको असमर्थ भया उसकी ओर देखता रहा अर यह भी अति रूपवान, सो इसके देखनेसे वहभी मोहित भई। यह दोनो परस्पर प्रेमसूत कर बन्धे सो उसका मन जान श्रीकण्ठ उसको आकाशमें लेचला तब परिवारके लागोंने राजा पुष्पोत्तर पै पुकार करी कि तुम्हारी पुत्रीको श्रीकण्ठ ले गया सो राजा पुष्पोत्तरके पुत्रको श्रीकण्ठने अपनी बाहिन न परणाई, ताकरि वह क्रोधरूप था ही। अब अपनी पुत्रीके हरणेसे अत्यन्त कोपित होकर सर्व सेना लेय श्रीकण्ठके मारणेको पीछे लगा। दांतोंसे होंठोंको पीसता क्रोधसे जिसके नेत्र लाल होरहे हैं ऐसे महाबलीको आवते देख श्रीकण्ठ डरा अर भाज कर अपने बहनेऊ लंकाके धनी कीर्तिधवलकी शरण आया सो समय पाय बडोंके शरण जाणा जायही है। राजा कीर्तिधवल श्रीकण्ठको देख अपना साला जान बहुत स्नेहसे मिला छातीसों लगाया, बहुत सन्मान किया इनमें आपसमें कुशल वार्ता होरही थी कि पुष्पोत्तर सेना सहित आकाशमें आए। कीर्तिधवलने उनको दूरसे देखा राजा पुष्पोत्तरके संग अनेक विद्याधरोंके समूह महा तेजवान हैं खड्ग सेल धनुष बाण इत्यादि शस्त्रोंके समूहसे आकाशमें तेज होय

रहा है ऐसे मायामई तुरंग जिनका वायुके समान तेज है अर काली घटा समान मायामई गज चलाय-मान है घण्टा अर सूंड जिनकी, मायामई सिंह अर बडे २ विमान उनकर मंडित आकाश देखा उत्तर दिशाकी ओर सेनाके समूह देख राजा कीर्तिधवलने क्रोध सहित हँसकर मंत्रियोंको युद्ध करनेकी आज्ञा दीनी तब श्रीकण्ठ लज्जासे नीचे होगए अर श्रीकण्ठने कीर्तिधवलसे कही—जो मेरी स्त्री अर मेरे कुटुम्बकी तो रक्षा आप करो अर मैं आपके प्रतापसे युद्धमें शत्रुओंको जीत आऊंगा। तब कीर्तिधवल कहते भए कि यह बात तुमको कहना अयुक्त है। तुम सुखसे तिष्ठो, युद्ध करनेको हम बहुत हैं जो यह दुर्जन नरमीसे शान्त होय तो भला ही है, नहीं तो इनको मृत्युके मुखमें देखोगे ऐसा कह अपने स्त्री के भाईको सुखसे अपने महलमें राख पुष्पोत्तरके निकट बडी बुद्धि अर बडे वय (उमर) के धीरक दूत भेजे। ते दूत जाय पुष्पोत्तरसों कहते भए जो हमारे मुखसे तुमको राजा कीर्तिधवल बहुत आदरसे कहै है कि तुम बडे कुलमें उपजे हो, तुम्हारी चेष्टा निर्मल है, तुम सर्व शास्त्रके वेत्ता हो, जगतमें प्रसिद्ध हो अर सबमें वयकर बड़े हो। तुमने जो मर्यादाकी रीति देखी है सो किसीने कानोंसे सुनी नही यह श्रीकण्ठ चन्द्रमाकी किरण समान निर्मल कुलमें उपजा है. अर धनवान है, विनयवान है, सुन्दर है, सर्व कलामें निपुण है, यह कन्या ऐसे ही बरको देने योग्य है, कन्याके अर इसके रूप अर कुल समान हैं इसलिये तुम्हारी सेनाका क्षय कौन अर्थ करावना, यह तो कन्याओंका स्वभाव ही है कि जो पराए गृहका सेवन करैं। दूत जब तक यह बात कह ही रहे थे कि पद्माभाकी भेजी सखी पुष्पोत्तरके निकट आई अर कहती भई कि तुम्हारी पुत्रीने तुम्हारे चरणारविन्दको नमस्कार कर वीनती करी है जो मैं तो लज्जासे तुम्हारे समीप कहनेको नहीं आई तातैं सखीको पठाई है हे पिता! इस श्रीकण्ठका अल्प भी अपराध नहीं, मैं कर्मानुभव कर इसके संग आई हूं। जो बडे कुलमें उपजी स्त्री हैं, तिनके एक ही बर

होय है तातैं या टालि (इसके सिवाय) मेरे अन्य पुरुषका त्याग है। इसप्रकार सखीने विनती करी तब राजा सचिंत होय रहे, मनमें विचारी कि मैं सर्व बातोंमें समर्थ हूं, युद्धमें लंकाके धनीको जीत श्रीकण्ठको बांधकर लेजाऊं परन्तु मेरी कन्या हीने इसको बरा तो मैं इसमें क्या करूं? ऐसा जान युद्ध न किया अर जो कीर्तिधवलके दूत आये हुते तिनको सन्मान कर विदा किया, अर जो पुत्रीकी सखी आई थी उसको भी सन्मानकर विदा दीनी। वे हर्षकर भरे लंका आये अर राजा पुष्पोत्तर सर्व अर्थके वेत्ता पुत्रीकी तीसे श्रीकण्ठसे क्रोध तज अपने स्थानको गए।

अथानन्तर मार्गशिर सुदी पडवाके दिन श्रीकण्ठ अर पद्माभाका विवाह भया अर कीर्तिधवलने श्रीकण्ठसों कहा जो 'तुम्हारे वैरी विजयार्धमें बहुत हैं तातैं तुम यहां ही समुद्रके मध्यमें जो द्वीप है तहां तिष्ठो' तुम्हारे मनको जो स्थानक रुचे सो लेवो, मेरा मन तुमको छोड नहीं सकै है अर तुम भी मेरी प्रीतिका बन्धन तुडाय कैसे जावोगे ऐसे श्रीकण्ठसों कहकर अपने आनन्द नामा मन्त्रीसे कही 'जो तुम महाबुद्धिमान हो अर हमारे दादेके मुह आगिले हो, तुमसे सार असार कुछ छाना नाहीं है, श्रीकण्ठ योग्य जो स्थानक होय सो बताओ। तब आनन्द कहते भए कि महाराज आपके सब ही स्थानक मनोहर हैं तथापि आप ही देखकर जो दृष्टिमें रुचे सो लें। समुद्रके मध्यमें बहुत द्वीप हैं कल्प वृक्ष समान वृक्षोंसे मंडित जहां नाना प्रकारके रत्नोंकर शोभित बडे बडे पहाड हैं। जहां देव क्रीडा करे हैं तिन द्वीपोंमें महारमणीक नगर हैं जहां स्वर्ण रत्नोंके महल हैं सो उनके नाम सुनो। संध्याकार सुवेल कांचन हरिपुर जोधन जलधिध्वान हंसद्वीप भरक्षम अर्धस्वर्ग कूटावर्त विघट रोधन अमलकांत स्फुटतट रत्नद्वीप तोयावली सर अलंघन नभोभा क्षेम इत्यादि मनोज्ञ स्थानक हैं। जहां देव भी उपद्रव न कर सकें। यहांसे उत्तर भाग तीनसौ योजन समुद्रके मध्य वानरद्वीप है जो पृथ्वीमें प्रसिद्ध है जहां

अवांतरद्वीप बहुत रमणीक हैं, कई एक तो सूर्य कांति मणियोंकी ज्योतिसे देदीप्यमान हैं अर कई एक हरित मणियोंकी कांतिसे ऐसे शोभे हैं मानो उगते हरे तृणोंसे भूमि व्याप्त होय रही है अर कई एक श्याम इंद्र नीलमणिकी कांतिके समूहसे ऐसें शोभे हैं मानो सूर्यके भयसे अन्धकार वहां शरण आकर रहा है अर कहीं लाल पद्म राग मणियोंके समूहसे मानो रक्त कमलोंका बन ही शोभे है जहां ऐसी सुगंध पवन चले है कि आकाशमें उडते पक्षी भी सुगंधसे मग्न हो जाय हैं अर वहां वृक्षोंपर आय बैठे हैं अर स्फटिक मणिके मध्यमें जो पद्मराग मणि मिला है उनसे सरोवरमें पंक ही कमल जाने जाय हैं उन मणियोंकी ज्योतिसे कमलके रंग न जाने जाय हैं जहां फूलोंकी बाससे पक्षी उन्मत्त भए ऐसे उन्मत्त शब्द करे हैं मानो समीपके द्वीपसे अनुराग भरी वातें करे हैं। जहां औषधियोंकी प्रभाके समूहसे अन्धकार दूर होय है सो अंधेर पक्षमें भी उद्योत ही रहे है जहां फल पुष्पोंसे मंडित वृक्षोंका आकार छत्र समान है। जिन के बडे २ डाले हैं उनपर पक्षी मिष्ट शब्द कर रहे हैं जहां विना बाहे धान आपसे ही उगे हैं वह धान वीर्य अर कांतिको विस्तीरणेवाले हैं मंद पवनसे हिलते हुए शोभे हैं। उनसे पृथ्वी मानो कंचुक (चोला) पहरे है। जहां नीलकमल फूल रहे हैं जिनपर भ्रमरोंके समूह गुंजार करे हैं मानो सरोवर ही नेत्रोंसे पृथ्वीका विलास देखे हैं। नीलकमल तो सरोवरनीके नेत्र भए अर भ्रमर भौंहें भए जहां पौढे अर सांठों की विस्तीर्ण वाडी हैं। सो पवनके हालनेसे शब्द करे हैं ऐसा सुंदर बानरद्वीप है उसके मध्यमें किहकुंदा नामा पर्वत है। वह पर्वत रत्न अर स्वर्णकी शिलाके समूहसे शोभायमान है जैसा यह त्रिकूटाचल मनोज्ञ है तैसा ही किहकुन्द पर्वत मनोज्ञ हैं। अपने शिखरोंसे दिशारूपी कान्ताको स्पर्श करे है। आनन्द मंत्री के ऐसे वचन सुनकर राजा कीर्तिधवल बहुत आनन्दरूप भए। बानरद्वीप श्रीकंठको दिया। तब चैत्रके प्रथम दिन श्रीकंठ परिवारसहित बानरद्वीपमें गए। मार्गमें पृथ्वीकी शोभा देखते चले जाय हैं वह पृथ्वी

नीलमणिकी ज्योतिसे आकाश समान शोभे है अर महाग्रहोंके समूहसे संयुक्त समुद्रको देख आश्चर्यको प्राप्त भए वानरद्वीप जाय पहुंचे। वानरद्वीप मानो दूसरा स्वर्ग ही है, अपने नीझरनोंके शब्दसे मानों राजा श्रीकंठको बुलावे ही है। नीझरनेके छांटे आकाशको उछले हैं सो मानों राजाके आनेपर अति हर्षको प्राप्त भए आनन्दकर हंसे हैं। नाना प्रकारकी मणियोंसे उपजा जो कांतिका सुंदर समूह उससे मानों तोरणके समूह ऊंचे चढ रहे हैं। राजा वानरद्वीपमें उतरे अर सर्व ओर चौगिरद अपनी नील कमल समान दृष्टि सर्वत्र विस्तारी। छुहारे आंवले कैथ अगरचन्दन पीपरली सहींजणां अर कदम्ब आंवला रोली केला दाडिम सुपारी इलायची लवंग मौलश्री अर सर्व जातिके मेवोंसे युक्त नाना प्रकार के वृक्षोंसे द्वीप शोभायमान देखा ऐसी मनोहर भूमि देखी जिसके देखते हुए और ठौर दृष्टि न जाय। जहां वृक्ष सरल अर विस्तीर्ण ऊपर छतसे बन रहे हैं सघन सुंदर पलव अर शाखा फूलनके समूहसे शोभे हैं अर महा रसीले स्वादिष्ट मिष्ट फलोंसे नम्रीभूत होय रहे हैं अर वृक्ष अति ऊंचे भी नहीं अति नीचे भी नहीं मानों कल्पवृक्षके समान शोभे हैं जहां बेलनिपर फूलोंके गुच्छे लग रहे हैं जिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानों यह बेल तो स्त्री है, उनके जो पलव हैं सो हाथोंकी हथेली हैं अर फूलोंके गुच्छे कुच हैं अर भ्रमर नेत्र हैं, वृक्षोंसे लग रहे हैं अर ऐसे ही तो सुंदर पक्षी बोले हैं अर ऐसे ही मनोहर भ्रमर गुंजार करे हैं मानों परस्पर आलाप करे हैं। जहां कई एक देश तो स्वर्ण समान कांतिको धरे हैं, कई एक कमल समान, कई एक वैडूर्य मणि समान हैं। ते देश नाना प्रकारके वृक्षोंसे मंडित हैं जिनको देख कर स्वर्ग भूमि भी नहीं रुचे है, जहां देव क्रीडा करे हैं, जहां हंस सारिस, सूवा, मैना, कबूतर, कमेरी इत्यादि अनेक जातिके पक्षी क्रीडा करे हैं। जहां जीवोंको किसी प्रकारकी बाधा नाहीं, नाना प्रकारके वृक्षों की छायाके मंडप रत्न स्वर्णके अनेक निवास पुष्पोंकी अति सुगंधी ऐसे उपवनमें सुंदर शिलाके ऊपर

राजा जाय विराजे अर सेना भी सकल वनमें उतरी। हंसों, सारिसों, मयूरोंके नाना प्रकारके शब्द सुने अर फल फूलोंकी शोभा देखी, सरोवरोंमें मीन केल करते देखे वृक्षोंके फूल गिरे हैं अर पक्षियोंके शब्द होय रहे हैं सो मानों वह बन राजाके आवनेसे फूलोंकी वर्षा करें हैं अर जयजयकार शब्द करें हैं। नाना प्रकारके रत्नोंसे मंडित पृथ्वी मण्डलकी शोभा देख २ विद्याधरोंका चित्त बहुत सुखी हुआ अर नन्दनवन सारिखा वह बन उसमें राजा श्रीकंठने क्रीडा करते बहुत बानर देखे। जिनकी अनेक प्रकारकी चेष्टा हैं राजा देखकर मनमें चिंतवने लगा कि तिर्यंच योनिके यह प्राणी मनुष्य समान लीला करे हैं। जिनके हाथ पग सर्व आकार मनुष्यकासा हैं सो इनकी चेष्टा देख राजा चकित होय रहे। निकटवर्ती पुरुषोंसें कहा जो 'इनको मेरे समीप लाओ' सो राजाकी आज्ञासे कई एक बानरोंको लाए राजाने उनको बहुत प्रीतिसों राखे अर नृत्य करणा सिखाया अर उनके सफेद दांत दाडिमके फूलोंसों रंग रंग तमाशा देखे अर उनके मुखमें सोनेके तार लगाय लगाय कौतूहल करें। वे आपसमें परस्पर जूं काढें तिनके तमाशे देखे अर वे आपसमें स्नेह करें वा कलह करें तिनके तमाशे देखे। राजाने ते कपि पुरुषोंको रक्षा निमित्त सोंपे अर मीठे मीठे भोजनसे उनको पोखे। उन बानरोंको साथ लेकर किहकुंद पर्वत पर चढे। राजाका चित्त सुंदर वृक्ष सुंदर बोलि पानीके नीझरणोंसे हरा गया। तहां पर्वतके ऊपर विषमतारहित विस्तीर्ण भूमि देखी। वहां किहकुंद नामा नगर बसाया। जिसमें बैरियोंका मन भी न प्रवेश कर सके चौदह योजन लम्बा अर चौदह योजन चौडा अर जो परिक्रमा करिए तो बियालीस योजन कछु इक अधिक होय जाके मणियोंके कोट रत्नोंके दरवाजे वा रत्नोंके महल रत्नोंका कोट इतना ऊंचा है कि अपने शिखरसे मानो आकाशसे ही लग रहा है अर दरवाजे ऊंचे मणियोंसे ऐसे शोभे हैं मानों यह अपनी ज्योतिसे श्रीभूत होय रहे हैं घरोंकी देहली पद्मराग मणिकी है सो अत्यन्त लाल हैं मानों

यह नगरी नारी स्वरूप है सो तांबूलकर अपने अधर (होंठ) लाल कर रही है अर दरवाजे मोतियों-की मालाकर युक्त हैं सो मानों समस्त लोककी सम्पदाको हंसे हैं अर महलोंके शिखरोंपर चंद्रकांत मणि लग रहे हैं जिससे रात्रिमें ऐसा भासे है मानों अन्धेरी रात्रिमें चंद्र उग रहा है अर नाना प्रकारके रत्नों की प्रभाकी पंक्तिकरि मानों ऊंचे तोरण चढ रहे हैं वहां घरोंकी पंक्ति विद्याधरोंकी बनाई हुई बहुत शोभे हैं घरोंके चौक मणियोंके हैं अर नगरके राजमार्ग बाजार बहुत सीधे हैं उनमें वक्रता नाहीं, अति विस्तीर्ण हैं मानो रत्नोंके सागर ही हैं। सागर जलरूप है यह स्थलरूप है अर मंदिरोंके ऊपर लोगोंने कबूतरोंके निवास निमित्त नील मणियोंके स्थान कर राखे हैं सो कैसे शोभे हैं मानो रत्नोंके तेजने अंध-कार नगरीसे काढ दिया है सो शरण आयकर समीप पडा है इत्यादि नगरका वर्णन कहां तक करिए इंद्रके नगर समान वह नगर जिसमें राजा श्रीकंठ पद्माभा राणीसहित जैसे स्वर्गविषै शचीसहित सुरेश रमे है तैसे बहुत काल रमते भए। जे वस्तु भद्रशाल वनमें तथा सौमनस वनमें तथा नन्दनमें न पाइए वह राजाके वनमें पाई जावें। एक दिन राजा महल ऊपर विराज रहे थे सो अष्टानिकाके दिनोंमें इंद्र चतुरनिकायके देवतावोंसहित नंदीश्वर द्वीपको जाते देखे अर देवोंके मुकुटोंकी प्रभाके समूहसे आका-शको अनेक रंग रूप ज्योति सहित देखा अर बाजा बजानेवालोंके समूहसे दशों दिशा शब्दरूप देखीं, किसीको किसीका शब्द सुनाई न देवे, कई एक देवमायामई हंसोंपर तथा तुरंगोंपर तथा हाथियोंपर अर अनेक प्रकार वाहनोंपर चढे जाते देख देवोंके शरीरकी सुगंधतासे दशो दिशा व्याप्त होय गई तब राजा यह अद्भुत चरित्र देख मनमें विचारा कि नंदीश्वर द्वीपको देवता जाय हैं। यह राजा भी अपने विद्याधरों सहित नंदीश्वर द्वीपको जानेकी इच्छा करते भए, विना विवेक विमानपर चढकर राणीसहित आकाशके पथसे चले परन्तु मानुषोत्तरके आगे इनका विमान न चल सका देवता चले गए। यह अटके

रहे तब राजाने बहुत विलाप किया मनका उत्साह भंग हो गया कांति और ही हो गई मनमे विचारे है कि हाय ! बडा कष्ट है हम हीन शक्तिके धनी विद्याधर मनुष्य अभिमानको धरें सो धिक्कार है हमको । मेरे मनमें यह थी कि नंदीश्वर द्वीपमें भगवानके अकृत्रिम चैत्यालय हैं उनका मैं भावसहित दर्शन करूंगा अर महामनोहर नाना प्रकारके पुष्प, धूप, गंध इत्यादि अष्टद्रव्योंसे पूजा करूंगा, बारम्बार धरतीपर मस्तक लगाय नमस्कार करूंगा इत्यादि मनोरथ किए हुए थे वे पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मसे मेरे मंदभागी के भाग्यमें न भए । मैंने आगे अनेक बार यह वात सुनी थी कि मानुषोत्तर पर्वतको उलंघकर मनुष्य आगे न जाय है तथापि अत्यन्त भक्ति रागकर यह वात भूल गया । अब ऐसे कर्म करूं जो अन्य जन्ममें नंदीश्वर द्वीप जानेकी मेरी शक्ति हो, यह निश्चयकर वज्रकंठ नामा पुत्रको राज्य देय सर्व परिग्रहको त्यागकर राजा श्रीकंठ मुनि भए । एक दिन बज्रकंठने अपने पिताके पूर्वभव पूछनेको अभिलाष किया तब वृद्ध पुरुष बज्रकंठको कहते भए कि हमको मुनियोंने उनके पूर्व भव ऐसे कहे हुते जो पूर्व भवमें दो भाई वणिक थे उनमें प्रीति बहुत थी, स्त्रियोंने वे जुदे किए, उनमें छोटा भाई दरिद्री अर बडा धनवान था । सो बडा भाई सेठकी संगतिसे श्रावक भया अर छोटा भाई कुव्यसनी दुखसों दिन पूरे करे । बडे भाईने छोटे भाईकी यह दशा देख बहुत धन दिया अर भाईको उपदेश देय व्रत लिवाए अर आप स्त्रीको त्यागकर मुनि होय समाधि मरणकर इंद्र भए अर छोटा भाई शांतपरिणामी होय शरीर छोड देव हुआ । देवसे चयकर श्रीकंठ भया बडे भाईका जीव इंद्र भया था सो छोटे भाईके स्नेहसे अपना स्वरूप दिखावता संता नंदीश्वर द्वीप गया सो इंद्रको देख राजा श्रीकंठको जाति स्मरण हुआ वह वैरागी भए यह अपने पिताका व्याख्यान सुन राजा बज्रकण्ठ इन्द्रायुधप्रभ पुत्रको राज देय मुनि भए अर इन्द्रायुधप्रभ भी इन्द्रमति पुत्रको राज्य देय मुनि भए तिनके मेरु, मेरुके मंदिर, तिनके समी-

रणगति, तिनके रविप्रभ, तिनके अमरप्रभ पुत्र हुआ, उसने लंकाके धनीकी बेटी गुणवती परणी, गुणवती राजा अमरप्रभके महलमें अनेक भांतिके चरित्राम देखती भई। कहीं तो शुभ सरोवर देखे जिनमें कमल फूल रहे हैं अर भ्रमर गुंजार करे हैं कहीं नील कमल फूल रहे हैं हंसके युगल क्रीडा कर रहे हैं जिनकी चोंचमें कमलके तंतु हैं अर क्रौंच सारस इत्यादि अनेक पक्षियोंके चित्राम देखे सो प्रसन्न भई अर एक ठौर पंच प्रकारके रत्नोंके चूर्णसे वानरोंके स्वरूप देखे वे विद्याधरोंने चितेरे हैं सो राणी वानरोंके चित्राम देख भयभीत होय कांपने लगी, रोमांच होय आए, पसेवकी बूंदोंसे माथेका तिलक बिगड गया, अर आंखोंके तारे फिरने लगे राजा अमरप्रभ यह वृत्तांत देखा घरके चाकरोंसे बहुत खिझे कि मेरे विवाहमें ये चित्राम किसने कराए। मेरी प्यारी राणी इनको देख डरी। तब बडे लोगोंने अरज करी कि महाराज! इसमें किसीका भी अपराध नहीं, आपने कही जो यह चित्राम कराणेहारेने हमको विपरीत भाव दिखाया सो ऐसा कौन है जो आपकी आज्ञा सिवाय काम करे? सबके जीवनमूल आप हो, आप प्रसन्न होयकर हमारी विनती सुनो। आगे तुम्हारे वंशमें पृथ्वीपर प्रसिद्ध राजा श्रीकंठ भए। जिनने यह स्वर्ग समान नगर बसाया अर नाना प्रकारके कौतूहलका धारणेवाला जो यह देश उसके वह मूलकारण ऐसे होते भए जैसे कर्मोंका मूलकारण रागादिक प्रपंच, बनके मध्य लतागृहमें सुखसों तिष्ठी हुई किन्नरी जिनके गुण गावें हैं अर किन्नर गावें हैं, इन्द्र समान जिनकी शक्ति थी ऐसे वे राजा इन्होंने अपनी स्थिर प्रकृतिसे लक्ष्मीकी चंचलतासें उपजा जो अपयश सो दूर किया। सो राजा श्रीकण्ठ इन वानरोंको देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए अर इन सहित रमें मीठे २ भोजन इनको दिये अर इनके चित्राम कढाए। पीछे उनके वंशमें जो राजा भए उनने मंगलीक कार्योंमें इनके चित्राम बढाए अर वानरोंसे बहुत प्रीति राखी इसलिये पूर्व रीति प्रमाण अब भी लिखे हैं ऐसा कहा। तब राजा क्रोध तज प्रसन्न

होय आज्ञा करते भए जो हमारे बडोंने मंगल कार्यमें इनके चित्राम लिखाए तो अब भूमिमें मत डारो जहां मनुष्यके पाव लगे, मैं इनको मुकुटपर राखूंगा अर ध्वजावोंमें इनके चिन्ह कराओ अर महलोंके शिखर तथा छत्रोंके शिखरपर इनके चिन्ह कराओ यह आज्ञा मंत्रियोंको करी सो मंत्रियोंने उस ही भांति किया, राजाने गुणवती राणीसहित परम सुख भोगते विजयार्धकी दोऊ श्रेणीके जीतनेका मन किया बडी चतुरंग सेना लेकर विजयार्ध गए, राजाकी ध्वजाओंमें अर मुकुटोंमें कपियोंके चिह्न हैं। राजाने विजयार्ध जायकर दोऊ श्रेणी जीतकर सब राजा वश किए। सर्व देश अपनी आज्ञामें किए, किसीका भी धन न लिया, जो बडे पुरुष हैं तिनका यह व्रत है जो राजाओंको नवावें, अपनी आज्ञामें करें, किसीका धन न हरें। सो राजा सब विद्याधरोंको आज्ञामें कर पीछे किहकूपुर आए। विजयार्धके बडे २ राजा लार आए, सर्व विद्याधरोंका अधिपति होकर घने दिनतक राज्य किया लक्ष्मी चंचल थी सो नीतिकी वेडी डाल निश्चल करी। तिनके पुत्र कपिकेतु भए जिनके श्रीप्रभा राणी बहुत गुणकी धारणेहारी ते राजा कपिकेतु अपने पुत्र विक्रमसम्पन्नको राज्य देय वैरागी भए अर विक्रमसम्पन्न प्रतिवल पुत्रको राज्य देय वैरागी भए, यह राज्य लक्ष्मी विषकी वेलके समान जानो। बडे पुरुषोंके पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावकर यह लक्ष्मी विना ही यत्न मिले है परंतु उनके लक्ष्मीमें विशेष प्रीति नहीं, लक्ष्मीको तजते खेद नहीं होय है। किसी पुण्यके प्रभाव राज्य लक्ष्मी पाय देवोंके सुख भोग फिर वैराग्यको प्राप्त होयकर परमपदको प्राप्त होय है। मोक्षका अविनाशी सुख उपकरणादि सामग्रीके आधीन नहीं, निरंतर आत्माधीन है, वह महासुख अंतररहित है अविनश्वर है। ऐसे सुखको कौन न बांछे। राजा प्रतिबलके गगनानंद पुत्र भए, उसके खेचरानन्द, उसके गिरिनंद इस भांति वानर वंशियोंके वंशमें अनेक राजा भए। वे राज्य तज वैराग्य धर स्वर्ग मोक्षको प्राप्त भए। इस बंशके समस्त राजाओंके नाम

अर पराक्रम कौन कह सके। जिसका जैसा लक्षण होय सो तैसा ही कहावे, सेवा करे सो सेवक कहावे, धनुषधारे सो धनुषधारी कहावे, परकी पीडा टाले सो शरणागति प्रतिपाल होय क्षत्री कहावे ब्रह्मचर्य पाले सो ब्राह्मण कहावे, जो राजा राज्य तजकर मुनि होय सो मुनि कहावे। श्रम कहिये तप धारे सो श्रमण कहावे। यह बात प्रगट ही है लाठी राखे सो लाठीवाला कहावे। तैसे यह विद्याधर ध्वजावों पर वानरोंके चिन्ह राखते भए इसलिये वानरवंशी कहाए (क्योंकि संस्कृतमें वंश बांसको कहते हैं अर कुलको भी कहते हैं परन्तु यहां वंश शब्द बांसका वाचक है। वानरोंके चिन्हकर युक्त बंस बांस वाला जो ध्वजा सो भई वानरवंश उस ध्वजावाले यह राजा वानरवंशी कहलाए) भागवान श्रीवासुपूज्यके समय राजा अमरप्रभ भए उनने वानरोंके चिन्ह मुकुट ध्वजामें कराए तब इनके कुलमें यह रीति चली आई इस भांति संक्षेपसे वानरवंशीयोंकी उत्पत्ति कही।

अथानन्तर इसकुलमें महोदधि नामा राजा भए तिनके विद्युतप्रकाशा नामा राणी भई, वह राणी पतिव्रता स्त्रियोंके गुणकी निधान है जिसने अपने विनय अर अंगसे पतिका मन प्रसन्न किया है, राजा के सुन्दर सैंकडों रानी है तिनकी यह राणी शिरोभाग्य है महा सौभाग्यवती रूपवती ज्ञानवती है उस राजाके महा पराक्रमी एकसो आठ पुत्र भए तिनको राज्यका भार दे राजा महासुख भोगते भए। मुनि सुव्रतनाथके समयमें वानरवंशीयोंमें यह राजा महोदधि भये अर लंकामें विद्युतकेशके अर महोदधि के परम प्रीति भई ये दोऊ सकल प्राणियोंके प्यारे अर आपसमें एकचित्त, देह न्यारी भई तो कहा, सो विद्युतकेश मुनि भये, यह वृत्तान्त सुन महोदधि भी वैरागी भए, यह कथा सुन राजा श्रेणिकने गौतम स्वामी से पूछा—"हे स्वामी! राजा विद्युतकेश किसकारणसे वैरागी भए, तब गौतम स्वामीने कहा कि एक दिन विद्युतकेश प्रमद नामा उद्यानमें क्रीडा करनेको गये। जहां क्रीडाके निवास अति सुंदर हैं, निर्मल

जलके भरे सरोवर तिनमें कमल फूल रहे हैं अर सरोवरमें नावें डार राखी हैं, बनमें ठौर ठौर हिंडोले हैं सुंदर वृक्ष सुंदर वेल अर क्रीडा करनेके लिये सुवर्णके पर्वत, जिनके रत्नोंके सिवाण, वृक्ष मनोज्ञ फल फूलोंसे मंडित, जिनके पल्लवमें लता अति शोभें हैं अर लताओंसे लपटि रहे हैं ऐसे बनमें राजा विद्यु-तकेश राणियोंके समूहमें क्रीडा करते हुते। वह राणी मनकी हरणहारी पुष्पादिकके चूटनेमें आसक्त हैं जिनके पल्लव समान कोमल सुगंध हस्त, मुखकी सुगंधसे भ्रमर जिनपर भ्रमे हैं, क्रीडाके समय राणी श्रीचन्द्राके कुच एक बानरने नखोंसे विदारे तब राणी खेद खिन्न भई, रुधिर आय गया। राजाने राणीको दिलासा देय कर अज्ञान भावसे बानरको बाणसे बींधा सो बानर घायल होय एक गगनचारण महा-मुनिके पास जाय पडा। वे दयालु बानरको कांपता देख दयाकर पंच नमोकार मन्त्र देते भए सो बानर मरकर उदधिकुमार जातिका भवनवासी देव उपजा यहां बनमें बानरके मरण पीछे राजाके लोक अर बानरोंको मार रहे थे सो उदधिकुमारने अवधिसे विचारकर बानरोंको मारते जान मायामई बानरोंकी सेना बनाई वह बानर ऐसे बने जिनकी दाढ बिकराल बदन बिकराल भौंह विकराल सिंदूर सारिखा लाल मुखसों डराने शब्दको कहते हुवे आये। कैएक हाथमें पर्वत धरें, कैएक मूलसे उपारे वृक्षोंको धरें, कैएक हाथसे धरतीको कूटते हुवे, कईएक आकाशमें उछलते हुवे, क्रोधके भारकर रौद्र है अंग जिनका उन्होंने राजाको घेरा, कहते भए अरे दुराचारी सम्हार तेरी मृत्यु आई है तू बानरोंको मारकर अब किसकी शरण जायगा ?

तब विद्युतकेश डरा अर जाना कि यह बानरोंका बल नाहीं, देवमाया है तब देहकी आशा छोड महामिष्ट वाणी करके बिनती करता भया कि—"महाराज! आज्ञा करो, आप कौन हो, महादेदीप्यमान प्रचंड शरीर जिनके यह बानरोंकी शक्ति नाहीं। आप देव हैं।" तब राजाको अति विनयवान देख

महोदधि कुमार बोले "हे राजा ! बानर पशु जाति जिनका स्वभाव ही चंचल है उनको तैंने स्त्रीके अप-राधसे हते सो मैं साधुके प्रसादसे देव भया। मेरी विभूति तू देख।" राजा कांपने लगा हृदयविषै भय उपजा, रोमांच होय आए तब महोदधि कुमारने कही—"तू मत डर।" तब इसने कहा कि "जो आप आज्ञा करो सो करूं।" तब देव इसको गुरुके निकट ले गया। वह देव अर राजा यह दोनों मुनिकी प्रदक्षिणा देय नमस्कार कर जाय बैठे। देवने मुनिसे कही कि—"मैं बानर था सो आपके प्रसादसे देवता भया अर राजा विद्युतकेशने मुनिसों पूछा कि मुझे क्या कर्तव्य है मेरा कल्याण किस तरह होय? तब मुनि चार ज्ञानके धारक तपोधन कहते भए कि हमारे गुरु निकट ही हैं उनके समीप चलो। अनादि कालका यही धर्म है कि गुरुओंके निकट जाय धर्म सुनिये। आचार्यके होते सन्ते जो उनके निकट न जाय अर शिष्य ही धर्मोपदेश देय तो वह शिष्य नहीं कुमार्गी है, आचारसे भ्रष्ट है ऐसा तपोधनने कहा तब देव अर विद्याधर चित्तमें चिंतवते भये कि ऐसे महा पुरुष हैं वे भी गुरु आज्ञा बिना उपदेश नहीं करे हैं। अहो! तपका माहात्म्य अति अधिक है। मुनिकी आज्ञासे वह देव अर विद्याधर मुनिके लार मुनिके गुरुपै गये। वहां जायकर तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर गुरुके निकट बैठे। महा मुनिकी मूर्ति देख देव अर विद्याधर आश्चर्यको प्राप्त भये। महा मुनिकी मूर्ति तपकी राशिकर उपजी जो दीप्ति उस कर देदीप्यमान है। देखकर नेत्र कमल फूल गये। महा विनयवान होय देव अर विद्याधर धर्मका स्वरूप पूछते भये॥

मुनि जिनका मन प्राणियोंके हितमें सावधान है अर रागादिक जो संसारके कारण हैं उनके प्रसं-गसे दूर है जैसे मेघ गम्भीर ध्वनिकर गर्जे अर बरसे तैसे महागंभीर ध्वनिसे जगतके कल्याणके निमित्त परम धर्मरूप अमृत बरसाते भए। जब मुनि ज्ञानका व्याख्यान करने लगे तब मेघ जैसा नाद जान

लताओंके मंडपमें जो मयूर तिष्ठे थे वे नृत्य करते भए। मुनि कहते भए—अहो देव विद्याधरो! तुम चित्त लगाय सुनो, तीन भवनको आनन्द करणहारे श्रीजिनराजने जो धर्मका स्वरूप कहा है, सो मैं तुमको कहूहूं। कई एक जो प्राणी नीचबुद्धि हैं विचाररहित जडचित्त हैं ते अधर्म ही को धर्म जान सेवते हैं जो मार्गको न जानें सो घने कालमें भी मनवांछित स्थानकको न पहुंचे। मंदमति मिथ्यादृष्टि विषयाभिलाषी जीव हिंसासे उपजा जो अधर्म उसको धर्म जान सेवे हैं, ते नरक निगोदके दुख भोगे हैं जे अज्ञानी खोटे दृष्टान्तोंके समूहसे भरे महापापके पुंज मिथ्या ग्रंथोंके अर्थ तिनकर धर्म जान प्राणिघात करे हैं वे अनन्त संसार भ्रमण करे हैं। जो अधर्म चर्चा करके वृथा बकवाद करे हैं ते दंडोंसे आकाशको कूटे हैं सो कैसे कूटा जाय जो कदाचित् मिथ्यादृष्टियोंके काय क्लेशादि तप होय अर शब्द ज्ञान भी होय तो भी मुक्तिका कारण नहीं सम्यकदर्शन विना जो जानपना है सो ज्ञान नहीं है अर जो आचरण है सो कुचारित्र है मिथ्यादृष्टियोंका जो तप व्रत है सो पाषाण बराबर है अर ज्ञानी पुरुषोंके जो तप है सो सूर्य मणि समान है। धर्मका मूल जीव दया है अर दयाका मूल कोमल परिणाम है, कोमल परिणाम दुष्टोंके कैसें होय अर परिग्रहधारी पुरुषोंको आरम्भ करनेसे हिंसा अवश्य होय है इसालिए दयाके निमित्त परिग्रहका आरम्भ तजना चाहिए तथा सत्य वचन धर्म है परंतु जिस सत्यसे परजीवोंको पीडा होय सो सत्य नहीं झूठ ही है अर चोरीका त्याग करना परनारी तजनी परिग्रहका प्रमाण करना संतोष व्रत धरना इंद्रियोंके विषय निवारन कषाय क्षीण करने देव गुरु धर्मका विनय करना निरंतर ज्ञानका उपयोग राखना यह सम्यग्दृष्टि श्रावकोंके व्रत तुझे कहे। अब घरके त्यागी मुनियोंके धर्म सुनो, सर्व आरम्भका परित्याग दशलक्षण धर्मका धारण सम्यग्दर्शनकर युक्त महाज्ञान वैराग्यरूप यतिका मार्ग है महा मुनि पंच महाव्रतरूप हाथीके कांधे चढे हैं अर तीन गुप्तिरूप दृढ वकतर पहरे हैं अर पांच सम-

तिरूप पयादोंसे संयुक्त हैं नाना प्रकार तपरूप तीक्ष्ण शस्त्रोंसे मंडित हैं अर चित्तके आनन्द करणहारे हैं ऐसे दिगम्बर मुनिराज कालरूप वैरीको जीते हैं वह कालरूप वैरी मोहरूप मस्त हाथीपर चढा है अर कषायरूप सामंतोंसे मंडित है। यतीका धर्म परमनिर्वाणका कारण है महामंगलरूप है उत्तम पुरुषोंके सेवने योग्य है अर श्रावकका धर्म तो साक्षात् स्वर्गका कारण है अर परंपराय मोक्षका कारण है स्वर्गमें देवोंके समूहके मध्य तिष्ठता मनबांछित इंद्रियोंके सुखको भोगे है अर मुनिके धर्मसे कर्म काट मोक्षके अतींद्रिय सुखको पावे है अतीन्द्रिय सुख सर्व बाधारहित अनुपम है जिसका अन्त नहीं, अविनाशी है अर श्रावकके व्रतसे स्वर्ग जाय तहांसे चय मनुष्य होय मुनिराजके व्रत धर परमपदको पावै है अर मिथ्यादृष्टि जीव कदाचित् तपकर स्वर्ग जाय तो चयकर एकेन्द्रियादिक योनिविषै आय प्राप्त होय है अनन्त संसार भ्रमण करे है इसालिये जैन ही परम धर्म है अर जैन ही परम तप है जैन ही उत्कृष्ट मत है। जिनराजके वचन ही सार हैं। जिनशासनके मार्गसे जो जीव मोक्ष प्राप्त होनेको उद्यमी हुआ उसको जो भव धरने पडें तो देव विद्याधर राजाके भव तो विना चाहे सहज ही होय हैं जैसे खेतीके करणहारेका उद्यम धान्य उपजानेका है घास कवाड पराल इत्यादि सहज ही होय हैं अर जैसे कोऊ पुरुष नगरको चला उसको मार्गमें वृक्षादिकका संगम खेदका निवारण है तैसे ही शिवपुरीको उद्यमी भए जे महामुनि तिनको इंद्रादिक पद शुभोपयोगके कारणसे होय हैं मुनिका मन तिनमें नहीं, शुद्धोपयोगके प्रभावसे सिद्ध होनेका उपाय है अर श्रावक अर जैनके धर्मसे जो विपरीत मार्ग है सो अधर्म जानना। जिससे यह जीव नाना प्रकार कुगतिमें दुःख भोगे है तिर्यंच योनिमें मारण, ताडन, छेदन, भेदन, शीत, ऊष्ण, भूख, प्यास इत्यादि नाना प्रकारके दुःख भोगे है अर सदा अन्धकारसे भरे नरक अत्यन्त ऊष्ण शीत महा विकराल पवन जहां अग्निके कण बरसै हैं नाना प्रकारके भयंकर शब्द जहां

नारकियोंको घानीमें पेले हैं करोंतेसे चीरे हैं जहां भयकारी शाल्मली वृक्षोंके पत्र चक्र खड्ग सेलसमान हैं उनसे तिनके तन खण्ड खण्ड होय हैं। जहां तांबा शीशा गालकर मदराके पीवनहारे पापियोंको प्यावें हैं अर मांसभक्षियोंको तिन ही के मांस काट काट उनके मुखमें देवें हैं अर लोहके तप्त गोले सिंडासीसे मुख फाड फाड जोरावरीसे मुखमें देवें हैं अर परदारासंगम करनहारे पापियोंको ताती लोहे की पुतलियोंसे चिपटावें हैं जहां मायामई सिंह, व्याघ्र, स्याल इत्यादि अनेक प्रकार बाधा करे हैं अर जहां मायामयी दुष्ट पक्षी तीक्ष्ण चोंचसे चूटें हैं। नारकी सागरोंकी आयु पर्यंत नाना प्रकारके दुख त्रास मार भोगे हैं मारते मरे नाहीं आयु पूर्ण कर ही मरें हैं परस्पर अनेक बाधा करें हैं अर जहां मायामयी मक्षिका अर मायामयी कृमि सूई समान तीक्ष्ण मुखसे चूटे हैं यह सर्व मायामयी जानने अर पशु पक्षी तथा विकलत्रय तहां नाहीं, नारकी जीव ही हैं तथा पंच प्रकारके स्थावर सर्वत्र ही हैं नरकमें जो दुःख जीव भोगे हैं उसके कहनेको कौन समर्थ है? तुम दोऊ कुगतिमें बहुत भ्रमे हो ऐसा मुनिने कहा तब यह दोऊ अपना पूर्व भव पूछते भए संयमी मुनि कहे हैं कि तुम मन लगाकर सुनो, यह दुःखदाई संसार इसमें तुम मोहसे उन्मत्त होकर परस्पर द्वेष धरते आपसमें मरण मारण करते अनेक योनिमें प्राप्त भए तिनमें एक तो काशी नामा देशमें पारधी भया, दूजा श्रावस्ती नामा नगरीमें राजाका सूर्यदत्त नामा मंत्री भया सो गृह त्यागकर मुनि भया, महा तपकर युक्त अतिरूपवान पृथिवीमें विहार करे सो एक दिन काशीके वनमें जीव जंतुरहित पवित्र स्थानकमें मुनि विराजे हुते अर श्रावक श्राविका अनेक दर्शनको आए हुते सो वह पापी पारधी मुनिको देख तीक्ष्ण वचनरूप शस्त्रसे मुनिको बींधता भया यह विचारकर कि यह निर्लज्ज मार्गभ्रष्ट स्नानरहित मलीन मुझको शिकारमें जानेको अमंगलरूप भया है यह वचन पारधीने कहे तब मुनिको ध्यानका विघ्नकरणहारा संक्लेश भाव उपजा फिर मनमें विचारी

कि मैं मुनि भया सो मोकूं कर्त्तव्य नाहीं ऐसा क्रोध उपजै है जो एक मुष्टि प्रहारकर इस पापी पारधी-को चूर्ण कर डारूं। मुनिके अष्टम स्वर्ग जायवेको पुण्य उपजा था सो कषायके योगतें क्षीण पुण्य होय मरकर ज्योतिषी देव भया तहांते चयकर तू विद्युत्केश विद्याधर भया अर वह पारधी बहुत संसार भ्रमणकर लंकाके प्रमदनामा उद्यानमें वानर भया सो तुमने स्त्रीके अर्थ वाण कर मारा सो बहुत अयोग्य किया। पशुका अपराध सामंतोंको लेना योग्य नाहीं। वह वानर नवकार मंत्रके प्रभावसे उदधिकुमार देव भया।

ऐसा जानकर हे विद्याधरो! तुम वैरका त्याग करो जिससे इस संसारमें तुम्हारा भ्रमण होय रहा है जो तुम सिद्धोंके सुख चाहो हो तो राग द्वेष मत करो सिद्धोंके सुखोंका मनुष्य अर देवोंसे वरणन न हो सके अनन्त अपार सुख हैं जो तुम मोक्षाभिलाषी हो अर भले आचारकर युक्त हो तो श्रीमुनि सुव्रतना-थकी शरण लेवो परम भक्तिसे युक्त इन्द्रादिक देव भी तिनको नमस्कार करे हैं इन्द्र अहमिन्द्र लोक-पाल सर्व उनके दासोंके दास हैं वे त्रिलोकनाथ तिनकी तुम शरण लेय कर परम कल्याणको प्राप्त होवोगे वे भगवान् ईश्वर कहिये समर्थ हैं सर्व अर्थ पूर्ण हैं कृतकृत्य हैं यह जो मुनिके वचन वेई भये सूर्यकी किरण तिनकर विद्युतकेश विद्याधरका मन कमलवत् फूलगया सुकेश नामा पुत्रको राज्य देय मुनिके शिष्य भए राजा महाधीर हैं सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रका आराधन कर उत्तम देव भए किहकुपुरके स्वामी राजा महोदधि विद्याधर बानरवंशीयोंके अधिपति चन्द्रकांत मणियोंके महल ऊपर विराजे हुते अमृतरूप सुन्दर चर्चाकर इन्द्र समान सुख भोगते थे तिनपै एक विद्याधर श्वेत वस्त्र पहरे शीघ्र जाय नमस्कार कर कहता भया कि हे प्रभो! राजा विद्युतकेश मुनि होय स्वर्ग सिधारे यह सुनकर राजा महोदधिने भी भोग भावसे विरक्त होय जैन दीक्षामें बुद्धि धरी अर ये वचन कहे कि मैं

भी तपोवनको जाऊंगा, ये वचन सुनकर राजलोक मंदिरमें विलाप करते भये सो विलापकर महल गूंजि उठा। कैसे हैं राजलोक? वीण बांसुरी मृदंगकी ध्वनि समान हैं शब्द जिनके अर युवराज भी आयकर राजासे विनती करते भये कि राजा विदुतकेशका अर अपना एक व्यवहार है राजाने बालक पुत्र सुकेशको राज जो दीया है सो तिहारे भरोसे दिया है सुकेशके राज्यकी दृढता तुमको राखनी उचित है जैसा उनका पुत्र तैसा तिहारा इसलिये कैएक दिन आप बैराग्य न धारें, आप नवयौवन हो इन्द्र कैसे भोगोंसे यह निकंटक राज्य भोगो इस भांति युवराजने बीनती करी अर अश्रुपातकी वर्षा करी तौ भी राजाके मनमें न आई अर मन्त्री महा नयके वेत्ताने भी अति दीन होय बीनती करी कि हे नाथ हम अनाथ हैं जैसे बेल वृक्षोंसे लग रहै तैसे तुम्हारे चरणसे लगि रहे हैं तुम्हारे मनमें हमारा मन तिष्ठे है सो हमको छोडिकर जाना योग्य नहीं इस भांति बहुत बीनती करी तौ भी राजाने न मानी अर राणीने बहुत बीनती करी चरणोंमें लोट गई बहुत अश्रुपात डारे। राणी गुणके समूहसे राजाकी प्यारी थी सो विरक्त भावसे राजाने नीरस देखी। तब राणी कहे है कि हे नाथ! हम तुम्हारे गुणोंकर बहुत दिनकी बंधी अर तुमने हमको बहुत लढ़ाई महालक्ष्मी समान हमको राखी अब स्नेह पाश तोड कहां जावो हो इत्यादि अनेक बात करी सो राजाने चित्तमें न धरी अर राजाके बडे २ सामंतोंने भी बीनती करी कि हे देव! इस नवयौवनमें राज छोड कहां जावो सबको मोहसे तजा इत्यादि अनेक स्नेहके बचन कहे राजाने किसीकी न सुनी स्नेह पाश तोड सर्व परिग्रहका त्यागकर प्रतिचंद पुत्रको राज्य देय आप अपने शरीर से भी उदास होय दिगंबरी दीक्षा आदरी राजा पूर्ण बुद्धिवान महा धीर बीर पृथ्वी पर चन्द्रमा समान उज्ज्वल है कीर्ति जाकी, सो ध्यान रूप गजपर चढकर तपरूपी तीक्ष्णशस्त्रसे कर्मरूप शत्रुको काट सिद्ध पदको प्राप्त भए। प्रतिचन्द्र भी कैएक दिन राज कर अपने पुत्र किहकंधको राज्य देय अर छोटे

पुत्र अधिक रूढको युवराज पद देय आप दिगम्बर होय शुक्लध्यानके प्रभावसे सिद्धस्थानको प्राप्त भए।

अथानंतर राजा किहकन्ध अर अधिकरूढ दोऊ भाई चांद सूर्य समान औरोंके तेजको दावकर पृथ्वी पर प्रकाश करते भये उस समय विजयार्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें रथनूपुर नामा नगर सुरपुर समान, वहां राजा अशनिवेग महा पराक्रमी दोऊ श्रेणीके स्वामी जिनकी कीर्ति शत्रुनिके मानको हरनहारी तिनके पुत्र विजयसिंह महारूपवान, ते आदित्यपुरके राजा विद्यामन्दिर विद्याधर, ताकी राणी वेगवती ताकी पुत्री श्रीमाला, ताके विवाह निमित्त जो स्वयंबर मंडप रचाहुता अर अनेक विद्याधर आएहुते तहां अशनिवेगके पुत्र विजयसिंह भी पधारे कैसी है श्रीमाला जाकी कांतिसे आकाशमें प्रकाश होय रहा है, सकल विद्याधर सिंहासनपर बैठे हैं, बडे २ राजाओंके कुंवर थोडे २ साथसे तिष्ठे हैं, सबानिकी दृष्टि सोई भई नीलकमलनिकी पंक्ति सो श्रीमालाके ऊपर पडी। श्रीमालाको किसीसे भी रागद्वेष नहीं, मध्यस्थ परिणाम है। वे विद्याधर कुमार मदनसे तप्त हैं चित्त जिनका अनेक सविकार चेष्टा करते भये। कैएक तो माथेका मुकट निकंप था तो भी उसको सुन्दर हाथोंसे ठीक करते भए, कैएक खंजर पास धरा था तो भी करके अग्रभागसे हिलावते भए, कटाक्षकर करी है दृष्टि जिन्होंने अर कैएकके किनारे मनुष्य चमर ढोरते हुते अर वीजना करते हुते तोभी लीला सहित महा सुन्दर रूप रूमालसे अपने मुखको वयार करते भये अर कैएक वामचरणपर दाहिना पांव मेलते भये, कैसे हैं राजाओंके पुत्र! सुन्दर रूपवान हैं नवयौवन हैं कामकलामें निपुण हैं। दृष्टि तो कन्याकी ओर अर पगके अंगुष्ठसे सिंहासनपर कछु लिखते भये अर कैएक महामणियोंके समूहसे युक्त जो सूत्र कटिमें गाढा बंधा ही था तौभी उसे संवार गाढा बांधते भये अर कैएक चंचल हैं नेत्र जिनके निकटवर्तीयोंसे कोलि-कथा करते भए, कैएक अपने सुंदर कुटिल केशोंको संभारते भए, कैएक जापर भ्रमर गुंजार करे हैं

ऐसे कमलको दाहिने हाथसे फिरावते भए मकरन्दकी रज विस्तारते भए इत्यादि अनेक चेष्टा राजाओंके पुत्र स्वयम्वरमंडपमें करते भए। कैसा है स्वयम्बरमंडप, जाविषै बीन बांसुरी मृदंग नगारे इत्यादि अनेक बाजे बज रहे हैं अर अनेक मंगलाचरण होय रहे हैं, बन्दीजनोंके समूह सत्पुरुषोंके अनेक चरित्र वरणन करे हैं, उस स्वयम्बर मंडपमें सुमंगला नामा धाय जिसके एक हाथमें स्वर्णकी छडी एक हाथमें बेंतकी छडी कन्याको हाथ जोड महाविनय कर कहती भई। कन्या नाना प्रकारके मणि भूषणों कर साक्षात् कल्पवेल समान है। हे पुत्री ! यह मार्तंडकुण्डल नामा कुंवर नभास्तिलकके राजा चन्द्रकुण्डल राणी विमला तिनका पुत्र है अपनी कांतिसे सूर्यको भी जीतनेहारा अति रमणीक है अर गुणोंका मण्डन है इसके सहित रमणेकी इच्छा है तो वर, यह शस्त्र शास्त्रमें निपुण है। तब यह कन्या इसको देख यौवनसे कछु इक चिगा जान आगे चली। फिर धाय बोली—हे कन्या ! यह रत्नपुरके राजा विद्यांग राणी लक्ष्मी तिनका पुत्र विद्यासमुद्रघात नामा बहुत विद्याधरोंका अधिपति, इसका नाम सुन बैरी ऐसा कांपे जैसे पीपलका पत्र पवनसे कांपे। महामनोहर हारोंसे युक्त इसका सुंदर वक्षस्थल जिसमें लक्ष्मी निवास करे है तेरी इच्छा होय तो इसको वर। तब इसको सरल दृष्टिकर देख आगे चली। फिर वह धाय जो कन्याके अभिप्रायके जाननेहारी है, बोली—हे सुते ! यह इंद्र सारिखा राजा वज्रशीलका कुंवर खेचरभानु वज्रपंजर नगरका अधिपति है इसकी दोऊ भुजाओंमें राज्यलक्ष्मी चंचल है तो हू निश्चल तिष्ठे है इसे देखकर अन्य विद्याधर आगिया समान भासे हैं यह सूर्य समान भासे है एक तो मानकर इसका माथा ऊंचा है ही अर रत्नोंके मुकुटसे अति ही शोभे है तेरी इच्छा है तो इसके कंठमें माला डार ! तब यह कन्या कुमुदनी समान खेचरभानुको देख सकुच गई। आगे चली, तब धाय बोली हे कुमारी ! यह राजा चन्द्रानन चंद्रपुरका धनी राजा चित्रांगद राणी पद्मश्रीका पुत्र इसका वक्षस्थल

महा सुन्दर चंदनसे चर्चित जैसे कैलाशका तट चंद्रकिरणसे शोभे तैसे शोभे है। उछले हैं किरणोंके समूह जिसके ऐसा मोतियोंका हार इसके उरमें शोभे है जैसे कैलाश पर्वत उछलते हुए नीझरनोंके समूहसे शोभे है इसके नामके अक्षरकरि वैरियोंका मन भी परम आनन्दको प्राप्त होय है अर दुख आताप करि रहित होय है। धाय श्रीमालासे कहे है—हे सौम्यदर्शने! कहिए सुखकारी है दर्शन जिसका ऐसी जो तू, तेरा चित्त इसमें प्रसन्न होय तो जैसे रात्रि चंद्रमासे संयुक्त होय प्रकाश करे है तैसे इसके संगमकर आल्हादको प्राप्त हो। तब इसमें इसका मन प्रीतिको न प्राप्त भया जैसे चंद्रमा नेत्रोंको आनन्दकारी है तथापि कमलोंको उसमें प्रसन्नता नहीं। फिर धाय बोली—हे कन्ये! मन्दरकुंज नगरका स्वामी राजा मेरुकान्त राणी श्रीरम्भाका पुत्र पुरंदर मानों पृथ्वीपर इन्द्र ही अवतरा है मेघ समान है ध्वनि जिसकी अर संग्रामाविषै जिसकी दृष्टि शत्रु सहारवे समर्थ नहीं तो ताके बाणकी चोट कौन सहारे? देव भी यासों युद्ध करणेको समर्थ नहीं तो मनुष्योंकी तो क्या बात? अति उन्नत इसका सिर सो तू पायनपर डार, ऐसा कहा। तोभी वह इसके मनमें न आया क्योंकि चित्तकी प्रवृत्ति विचित्र है।

बहुरि धाय कहती भई—हे पुत्री! नाकार्धपुरका रक्षक राजा मनोजव राणी वेगिनी तिनका पुत्र महाबल सभारूप सरोवरमें कमल समान फूल रहा है इसके गुण बहुत हैं गिननेमें आवें नहीं, यह ऐसा बलवान है जो अपनी भौंह टेढ़ी करणेसेही पृथ्वीमंडलको वश करे है अर विद्या बलसे आकाशमें नगर बसावे अर सर्व ग्रह नक्षत्रादिकको पृथ्वी तलपर दिखावे। चाहे तो एक लोक नवा और बसावे, इच्छा करे तो सूर्यको चन्द्रमा समान शीतल करे, पर्वतको चूर कर डारे, पवनको थंभे, जलका स्थलकर डारे, स्थलका जल कर डारे इत्यादि इसके विद्याबल वर्णन किये तथापि इसका मन इसमें अनुरागी न

भया अर भी अनेक विद्याधर घायने दिखाए सो कन्याने दृष्टिमें न धरे तिनको उलंघि आगे चली जैसे चन्द्रमाकी किरण पर्वतको उलंघे वह पर्वत श्याम होय जाय तैसे जिन विद्याधरोंको उलंघ यह आगे गई तिनका मुख श्याम हो गया। सब विद्याधरोंको उलंघकर इसकी दृष्टि किहकंध कुमार पर गई ताके कंठमें बरमाला डारी तब विजयसिंह विद्याधरकी दृष्टि क्रोधकी भरी किहकंध अर अंध्रक दोऊ भाइयों पर गई। कैसा है विजयसिंह ? विद्याबलसे गर्वित है सो किहकंध अर अंधूकको कहता भया कि यह विद्याधरोंका समाज तहां तुम बानर किसलिये आए? विरूप है दर्शन तुम्हारा क्षुद्र कहिये तुच्छ हो विनयरहित हो इस अस्थानकमें फलोंसे नम्रीभूत जे वृक्ष उनसे संयुक्त कोई रमणीक बन नहीं अर गिरि-योंकी सुन्दर गुफा नीझरणोंकी धरणहारी जहां बानरोंके समूह क्रीड़ा करें सो नहीं, लाल मुखके बानरो! तुमको यहां किसने बुलाया जो नीच तुम्हारे बुलावनेको गया उसका निपात करूं, अपने चाक-रोंको कही, इनको यहांसे निकाल देवो यह वृथाही विद्याधर कहावें हैं।

यह शब्द सुनकर किहकंद अंधूक दोनों भाई बानरध्वज महाक्रोधको प्राप्त भए जैसे हाथियोंपर सिंह कोप करै, अर इनकी समस्त सेनाके लोक अपने स्वामियोंका अपवाद सुन विशेष क्रोधको प्राप्त भए, कई एक सामन्त अपने दाहिने हाथसे बावीं भुजाको स्पर्श करते भए अर कैयक क्रोधके आवेशसे लाल भए हैं नेत्र जिनके सो मानो प्रलयकालके उल्कापात ही हैं महाकोपको प्राप्त भए, कई एक पृथ्वी-विषै दृढ बांधी है जड जिनकी ऐसे वृक्षोंको उखाडते भए, वृक्ष फल अर पल्लवको धारे हैं। कैयक थंभ उखाडते भए अर कैयक सामंतोंके अगले घाव भी क्रोधसे फट गए तिनमेंसे रुधिरकी धारा निकसती भई, मानो उत्पातके मेघ ही बरसे हैं, के एक गाजते भए सो दशों दिशा शब्दकर पूरित भई अर कई एक योधा सिरके केश विकरालते भए, मानो रात्रि ही होय गई, इत्यादि अपूर्व चेष्टावोंसे बानरवंशी

विद्याधरोंकी सेना समस्त विद्याधरोंके मारनेको उद्यमी भई, हाथियोंसे हाथी, घोडोंसे घोडे, रथोंसे रथ युद्ध करते भए दोनों सेनामें महायुद्ध प्रवरता, आकाशमें देव कौतुक देखते भए। यह युद्धकी वार्ता सुनकर राक्षसवंशी विद्याधरोंके अधिपति राजा सुकेश लंकाके धनी वानरवंशियोंकी सहायताको आए, राजा सुकेश किहकंध अर अन्धूकके परम मित्र हैं मानो इनके मनोरथ पूर्ण करनेको ही आए हैं जैसे भरत चक्रवर्तीके समय राजा अकम्पनकी पुत्री सुलोचनाके निमित्त अर्ककीर्ति जयकुमारका युद्ध भया तैसा यह युद्ध भया, यह स्त्री ही युद्धका मूल कारण है। विजयसिंहके अर राक्षसवंशी वानरवंशियोंके महायुद्ध भया, तासमय किहकंध कन्याको ले गया अर छोटे भाई अंधूकने खड्गसे विजयसिंहका सिर काटा, एक विजयसिंहके विना उसकी सर्व सेना विखर गई जैसे एक आत्मा विना सर्व इंद्रियोंके समूह विघटि जांहि, तब राजा अशनिवेग विजयसिंहका पिता अपने पुत्रका मरण सुनकर मूर्छाको प्राप्त भया, अपनी स्त्रियोंके नेत्रके जलसे सींचा है वक्षस्थल जिसका सो धनी बेरमें मूर्छासे प्रबोधको प्राप्त भया पुत्रके वैरसे शत्रुओंपर भयानक आकार किया, उस समय उसका आकार लोक देख न सके मानों प्रलयकालके उत्पातका सूर्य उसके आकारको धरे है। सर्व विद्याधरोंको लार लेजाकर किहकन्धको घेरा। नगरका घेरा जान दोनों भाई वानरध्वज सुकेश सहित अशनिवेगसे युद्ध करनेको निकसे। परस्पर महा युद्ध भया, गदाओंसे शक्तियोंसे, बाणोंसे, पाशोंसे, खड्गोंसे, महा युद्ध भया तहां पुत्रके वधसे उपजी जो क्रोधरूप अग्निकी ज्वाला उससे प्रज्वलित जो अशनिवेग सो अन्धूकके सनमुख भया तब बडे भाई किहकन्धने विचारी कि मेरा भाई अन्धूक तो नवयौवन है अर यह पापी अशनिवेग महा बलवान है है सो मैं भाईकी मदद करूं। तब किहकन्ध आया अर अशनिवेगका पुत्र विद्युद्वाहन किहकन्धके संमुख आया सो किहकन्धके अर विद्युद्वाहनके महायुद्ध प्रवरता उस समय अशनिवेगने अन्धूकको मारा सो

अन्धूक पृथ्वी पर पडा जैसा प्रभातका चन्द्रमा कांतिरहित होय तैसा अन्धूकका शरीर कांतिरहित होय गया अर किहकन्धने विद्युद्वाहनके वक्षस्थल पर शिला चलाई सो वह मूर्च्छित होय गिरा पुनः सचेत होय उसने वही शिला किहकंध पर चलाई सो किहकंध मूर्छा खाय घूमने लगा सो लंकाके धनीने सचेत किया अर किहकंधको किहकुम्पुर ले आए तब किहकंधने दृष्टि उघाड देखा तो भाई नहीं, तब निकटवर्तीयोंको पूछने लगा।

मेरा भाई कहां है ? तब लोक नीचे होय रहे अर राजलोकमें अंधूकके मरणका विलाप हुवा सो विलाप सुन किहकंध भी विलाप करने लगा। शोकरूप अग्निसे तप्तायमान हुवा है चित्त जिसका बहुत देर तक भाईके गुणका चितवन करता संता शोकरूप समुद्रमें मग्न भया। हाय भाई मेरे होते संते तू मरणको प्राप्त भया मेरी दक्षिण भुजा भंग भई जो मैं एकक्षण तुझे न देखता तो महाव्याकुल होता सो अब तुम बिन प्राणको कैसे राखूंगा अथवा मेरा चित्त वज्रका है जो तेरा मरण सुनकर भी शरीरको नहीं तजे है। हे बाल ! तेरा वह मुलकना अर छोटी अवस्थामें महावीर चेष्टा चितार चितार मुझको महा दुःख उपजे है इत्यादि महा विलापकर भाईके स्नेहसे किहकंध खेद खिन्न भया तब लंकाके धनी सुकेशने तथा अर बडे २ पुरुषोंने किहकन्धको बहुत समझाया जो धीर पुरुषोंको यह रंज चेष्टा योग्य नहीं, यह क्षत्रियोंका वीरकुल है सो महा साहसरूप है अर इस शोकको पंडितोंने बडा पिशाच कहा है, कर्मोंके उदयसे भाइयोंको वियोग होय है, यह शोक निरर्थक है यदि शोक कीए फिर आगम होय तो शोक करिये यह शोक शरीरको शोखे है अर पापोंका बंध करे है महा मोहका मूल है तातैं इस वैरी शोकको तजकर प्रसन्न होय कार्यमें बुद्धि धारो यह अशनिवेग विद्याधर अति प्रबल वैरी है अपना पीछा छोडता नहीं नाशका उपाय चितवे है इसलिये अब जो कर्तव्य होय सो विचारो वैरी बलवान होय तब

प्रच्छन्न (गुप्त) स्थानमें कालक्षेप करिये तो शत्रुसे अपमानको न पाईये फिर कैएक दिनमें वैरीका बल घटे तब वैरीको दबाईये, विभूति सदा एक ठौर नहीं रही है । तातें अपना पाताल लंका जो बडोंसे आसरेकी जगा है सो कुछ काल वहां रहिये जो अपने कुलमें वडे हैं वे उस स्थानककी बहुत प्रशंसा करे हैं जिसको देखे स्वर्गलोकमें भी मन न लगे है तातें उठो वह जगा वैरियोंसे अगम्य है इस भांति राजा किहकंधको राजा सुकेशीने बहुत समझाया तो भी शोक न छाडै, तब राणी श्रीमाला को दिखाई उसके देखनेसे शोक निवृत्त भया तब राजा सुकेशी अर किहकंध समस्त परिवारसहित पाताल लंकाको चले अर अशनिवेगका पुत्र विद्युद्वाहन इनके पीछे लगा अपने भाई विजयसिंहके वैर से महा क्रोधवंत शत्रुके समूल नाश करनेको उद्यमी भया तब नीति शास्त्रके पाठियोंने जो शुद्ध बुद्धिके पुरुष हैं समझाया जो क्षत्री भागे तो उसके पीछे न लगे अर राजा अशनिवेगने भी विद्युद्वाहनसों कही जो अन्ध्रकने तुम्हारा भाई हता, सो तो मैं अन्ध्रकको रणमें मारा तातें हे पुत्र ! इस हठसे निवृत्त होवो, दुःखीपर दया ही करनी उचित है, जिस कायरने अपनी पीठ दिखाई सो जीवत ही मृतक है उसका पीछा क्या करना, इस भांति अशनिवेगने विद्युद्वाहनको समझाया, इतनेमें राक्षसवंशी अर वानरवंशी पाताल लंका जाय पहुंचे । कैसा है नगर रत्नोंके प्रकाशसे शोभायमान है तहां शोक अर हर्ष धरते दोऊ निर्भय रहैं । एक समय अशनिवेग शरदमें मेघपटल देख अर उनको विलय होते देख विषयोंसे विरक्त भए । चित्त-विषैं विचारा—यह राज सम्पदा क्षणभंगुर है मनुष्य जन्म अतिदुर्लभ है सो मैं मुनिव्रत धर अन्तिम कल्याण करूं ऐसा विचार सहस्रार पुत्रको राज देय आप विद्युद्वाहन सहित मुनि भए अर लंकाविषै पहले अ-शनिवेगने निर्घातनामा विद्याधर थाने राखा हुता सो अब सहस्रारकी आज्ञा प्रमाण लंकाविषै थाने रहे। एक समय निर्घात दिग्विजयको निकसा सो सम्पूर्ण राक्षसद्वीपमें राक्षसोंका संचार न देखा सबही घुस

रहे हैं सो निर्भ्रांत निर्भय लंकामें रहे। एक समय राजा किहकन्ध राणी श्रीमाला सहित सुमेरुपर्वतसे दर्शन कर आवे था, मार्गमें दक्षिण समुद्रके तटपर देवगुरु भोगभूमि समान पृथ्वीमें करनतटनामा बन देखा, देखकर प्रसन्न भए अर श्रीमाला राणीसे कहते भए। राणीके सुंदर वचन वीणाके स्वर समान हैं देवी! तुम यह रमणीक वन देखो। जहां वृक्ष फूलोंसे संयुक्त हैं निर्मल नदी बहे है अर मेघके आकार समान धरणीमाली नामा पर्वत शोभे है पर्वतके शिखर ऊंचे हैं अर कुंदके पुष्प समान उज्ज्वल जलके नीझरने झरे हैं सो मानो यह पर्वत हंसे ही है अर वृक्षोंकी शाखासे पुष्प पडे हैं सो मानों हमको पुष्पांजली ही देवे हैं अर पुष्पोंकी सुगन्धसे पूर्ण पवनसे हालते जो वृक्ष उनसे मानों यह वन हमको उठकर ताजिम ही करे है अर वृक्ष फलनिकरि नम्रीभूत होय रहे हैं सो मानो हमको नमस्कार ही करे हैं जैसे गमन करते पुरुषोंको स्त्री अपने गुणोंसे मोहितकर आगे जाने न दे है, खडा करे है तैसे यह बन अर पर्वतकी शोभा हमको मोहितकर राखे है आगे जान न देहै। मैं भी इस पर्वतको उलंघ आगे नहीं जाय सकूं इसलिये यहां ही नगर बसाऊंगा। जहां भूमिगोचारियोंका गमन नहीं पाताल लंकाकी जगह ऊंढी है वहां मेरा मन खेद खिन्न भया है सो अब यहां रहिनेसे मन प्रसन्न होयगा इस भांति राणी श्रीमालासों कहकर आप पहाडसे उतरे। वहां पहाड ऊपर स्वर्ग समान नगर बसाया नगरका किहकंधपुर नाम धरा वहां आप सर्व कुटुम्ब सहित निवास किया। राजा किहकन्ध सम्यग्दर्शन संयुक्त है अर भगवानकी पूजामें सावधान है सो राजा किहकंधके राणी श्रीमालाके योगसे सूर्यरज अर रक्षरज दो पुत्र भए अर सूर्यकमला पुत्री भई जिसकी शोभासे सर्व विद्याधर मोहित हुए।

अथानंतर मेघपुरका राजा मेरु उसकी राणी मघा पुत्र मृगारिदमन उसने किहकंधकी पुत्री सूर्यकमला देखी सो आसक्त भया कि रात दिवस चैन नहीं तब उसके अर्थ याके कुटुम्बके लोगोंने

सूर्यकमला याची सो राजा किहकंधने राणी श्रीमालासे मन्त्रकर अपनी पुत्री सूर्यकमला मृगारिदमनको परणाई सो परणकर जावे था मार्गमें कर्णपर्वतमें वर्णकुण्डल नगर बसाया।

अर लंकापुर कहिए पाताल लंका उसमें सुकेश राजा इन्द्राणी नामा राणी उसके तीन पुत्र भये माली सुमाली अर माल्यवान्। बडे ज्ञानी गुण ही हैं आभूषण जिनके अपनी क्रीडाओंसे माता पिताका मन हरते भए देवों समान हैं क्रीडा तिनकी तीनों पुत्र बडे भए महा बलवान सिद्ध भई हैं सर्व विद्या जिनको। एक दिन माता पिताने इनको कहा कि तुम क्रीडा करनेको किहकंधपुरकी तरफ जावो तो दक्षिणके समुद्रकी ओर मत जाओ तब ये नमस्कारकर माता पिताको कारण पूछते भए तब पिताने कही हे पुत्रो! यह बात कहिवेकी नहीं। तब पुत्रोंने बहुत हठकर पूछी तब पिताने कही कि लंकापुरी अपने कुल क्रमसे चली आवे है श्रीअजितनाथ स्वामी दूसरे तीर्थंकरके समयसे लगाय कर अपना इस खंडमें राज है आगे अशनिवेगके अर अपने युद्ध भया सो परस्पर बहुत मरे लंका अपनेसे छूटी। अशनिवेगने निर्घात विद्याधर थाने राखा सो महा बलवान है अर क्रूर है ताने देश देशमें हलकारे राखे हैं अर हमारा छिद्र हेरे है यह पिताके दुखकी वार्ता सुनकर माली निश्वास नाखता भया अर आंखोंसे आंसू निकसे, क्रोधसे भर गया है चित्त जिसका अपनी भुजाओंका बल देखकर पितासों कहता भया कि हे तात! एते दिनों तक यह बात हमसे क्यों न कही तुमने स्नेहकर हमको ठगे, जे शक्तिवंत होयकर बिना काम किये निरर्थक गाजें हैं वह लोकमें लघुताको पावे हैं सो हमको निर्घातपर आज्ञा देवो हमारे यह प्रतिज्ञा है लंकाको लेकर और काम करें तब माता पिताने महा धीर बीर जान इनको स्नेह दृष्टिसे आज्ञा दी तब यह पाताल लंकासे ऐसे निकसे मानों पाताल लोकसे भवनवासी निकसे हैं बैरी ऊपर अति उत्साहसे चले तीनों भाई शस्त्रकलामें महा प्रवीण हैं समस्त राक्षसोंकी सेना इनके लार चली

त्रिकूटाचल पर्वत दूरसे देखा, देखकर जान लिया कि लंका नीचे बसे है सो मानों लंका लेही ली मार्गमें निर्घातके कुटंबी जो दैत्य कहावें ऐसे विद्याधर मिले सो युद्ध करके बहुत मरे। के एक पायन परे के एक स्थान छोड भाग गये कैएक बैरी कटकमें शरण आए पृथ्वीमें इनकी बडी कीर्ति विस्तरी। निर्घात इनका आगमन सुन लंकासे बाहिर निकसा निर्घात युद्धमें महा शूर वीर है छत्रकी छायासे आच्छादित किया है सूर्य जिसने। तब दोऊ सेनामें महायुद्ध भया मायामई हाथियोंसे घोडोंसे विमानोंसे रथोंसे परस्पर युद्ध प्रवरता हाथियोंके मद झरनेसे आकाश जलरूप हो गया अर हाथियोंके कान वह ही भए ताडके वीजने उनकी पवनसे आकाश मानों पवनरूप हो गया परस्पर शस्त्रोंके घातसे प्रगटी जो अग्नि उससे मानों आकाश अग्नि रूप ही होगया इस भांति बहुत युद्ध भया तब मालीने बिचारी कि दीनोंके मारणेसे कहा होय ? निर्घात हीको मारिये यह बिचार निर्घात पर आए ऐसे शब्द कहते भये कहां वह पापी निर्घात है ? सो निर्घातको देखकर प्रथम तो तीक्ष्ण बाणोंसे रथसे नीचे डारा फेर वह उठा महायुद्ध किया तब मालीने खडगसे निर्घातको मारा सो ताकूं मारचा जानकर ताके वंशके भागकर विजयार्धमें अपने २ स्थानको गये अर कैएक कायर होय मालीहीकी शरण आए। माली आदि तीनों भाइयोंने लंकामें प्रवेश किया कैसी है लंका ? महामंगल रूप है माता पिता आदि समस्त परिवारको लंकामें बुलाया बहुरि हेमपुरका राजा क्षेम विद्याधर राणी भोगवती तिनकी पुत्री चंद्रमती सो मालीने परणी। कैसी है चंद्रमती ? मनकी आनन्द करणहारी है अर प्रीतिकूट नगरका राजा प्रीतिकांत राणी प्रीतिमती तिनकी पुत्री प्रीतिसंज्ञका सो सुमालीने परणी अर कनकांत नगरका राजा कनक राणी कनकश्री तिनकी पुत्री कनकावली सो माल्यवानने परणी इनके यह पहली राणी भई अर प्रत्येकके हजार २ राणी कछु इक अधिक होती भई मालीने अपने पराक्रमसे विजयार्धकी दोऊ श्रेणी बश करीं सर्व

विद्याधर इनकी आज्ञा आशीर्वादकी न्याईं माथे चढावते भए कैएक दिनोंमे इनके पिता राजा सुकेश मालीको राज देय महा मुनि भए अर राजा किहकंध अपने पुत्र सूर्यरजको राज देय वैरागी भए। ये दोऊ परम मित्र राजा सुकेश अर किहकंध समस्त इंद्रियोंके सुखको त्यागकर अनेक भवके पापोंका हरणहारा जो जिनधर्म उसको पायकर सिद्ध स्थानके निवासी भए। हे श्रेणिक ! इस भांति अनेक राजा प्रथम अवस्थामें अनेक विलास कर फिर राज तजकर आत्मध्यानके योगसे समस्त पापोंको भस्म कर अविनाशी धामको प्राप्त भए ऐसा जानकर हे राजा ! मोहको नाश कर शांति दशाको प्राप्त होउ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै वानरवंशीनिका निरूपण है जाविषै ऐसा छठा पर्व पूर्ण भया ॥ ६ ॥

अथानन्तर रथनूपुर नगरमें राजा सहस्रार राज्य करै उसके राणी मानसुंदरी रूप अर गुणोंमें अति सुंदर सो गर्भिणी भई अत्यन्त कृश भया है शरीर जिसका शिथिल होय गए हैं सर्व आभूषण जिसके तव भरतारने बहुत आदरसों पूछी कि हे प्रिये ! तेरे अंग काहेसे क्षीण भए हैं, तेरे क्या अभिलाषा है जो अभिलाषा होय सो मैं अबार ही समस्त पूर्ण करूं, हे देवी ! तू मेरे प्राणोंसे भी अधिक प्यारी है इस भांति राजाने कही तब राणी बहुत विनयकर पतिसे विनती करती भई कि हे देव ! जिस दिनसे बालक मेरे गर्भमें आया है उस दिनसे यह मेरी वांछा है कि इंद्रकीसी सम्पदा भोगू सो मैंने लाज तज आपके अनुग्रहसे आपसों अपना मनोरथ कहा है, नातर स्त्रीकी लज्जा प्रधान है सो मनकी वात कहिवेमें न आवे तब राजा सहस्रारने जो महा विद्या बलकर पूर्ण हुता सो क्षणमात्रमें इसके मनोरथ पूर्ण किए तब यह राणी महा आनन्दरूप भई सर्व अभिलाषा पूर्ण भई अत्यन्त प्रताप अर कांतिको

धरती भई सूर्य ऊपर होय निसरे सो भी उसका तेज न सहार सके सर्व दिशाओंके राजाओंपर आज्ञा चलाया चाहे नव महीने पूर्ण भए पुत्रका जन्म भया, कैसा है पुत्र ? समस्त बान्धवोंको परम सम्पदाका कारण है तब राजा सहस्रारने हर्षित होय पुत्रके जन्मका महान उत्सव किया अनेक बाजाके शब्दसे दशों दिशा शब्दरूप भई अर अनेक स्त्री नृत्य करती भई। राजा याचकोंको इच्छा पूर्ण दान दिया ऐसा विचार न किया जो यह देना यह न देना, सर्व ही दिया। हाथी गरजते हुए ऊंची सूंडसे नृत्य करते भए। राजा सहस्रारने पुत्रका इंद्र नाम धरा जिस दिन इंद्रका जन्म भया उस दिन समस्त वैरियों के घरमें अनेक उत्पात भए। अपशकुन भए अर भाइयोंके तथा मित्रोंके घरमें महा कल्याणके करण-हारे शुभ शकुन भए, इंद्र कुंवरकी बालक्रीडा तरुण पुरुषोंकी शक्तिको जीतनेहारी सुन्दर कर्मकी करण-हारी वैरियोंका गर्व छेदती भई। अनुक्रमकर कुंवर यौवनको प्राप्त भया। कैसा है कुंवर ? अपने तेजकर जीता है सूर्यका तेज जिसने अर कांतिसे जीता है चन्द्रमा अर स्थिरतासे जीता है पर्वत अर विस्तीर्ण है वक्षस्थल जिसका दिग्गजके कुम्भस्थल समान ऊंचे हैं कांधे जिसके अर अति दृढ सुंदर हैं भुजा दश दिशाकी दाबनहारी अर दोऊ जंघा जिसकी महा सुन्दर यौवनरूप महलके थांभनेको थंभे समान होती भई। विजयार्ध पर्वतविषे सर्व विद्याधर जिसने सेवक किये जो यह आज्ञा करे सो सर्व करें यह महा विद्याधर बलकर मंडित इसने अपने यहां सब इंद्र कैसी रचना करी। अपना महल इन्द्रके महल समान बनाया, अडतालीस हजार विवाह किये। पटरानीका नाम शची धरया, छबीस हजार नट नृत्य करैं, सदा इन्द्र कैसा अखाडा रहे महा मनोहर अनेक इन्द्र कैसे हाथी घोडे अर चन्द्रमा समान महा उज्ज्वल ऊंचा आकाश के आंगनमें गमन करनेवाला, किसीसे निवारा न जाय, महा बलवान अष्टदंतन कर शोभित गजराज जिसका महा सुन्दर सूंड सो पाठ हाथी उसका नाम ऐरावत धरा, चतुरनिकायके देव थापे अर परम

शक्तियुक्त चार लोकपाल थापे, सोम १ वरुण २ कुबेर ३ यम ४ अर सभाका नाम सुधर्मा बज्र आयुध तीन सभा अर उर्वशी मेनका रम्भा इत्यादि हजारां नृत्य कारिणी तिनकी अप्सरा संज्ञा ठहराई सेनापतिका नाम हिरण्यकेशी अर आठ बसु थापे अर अपने लोकोंको सामानिक त्रायस्त्रिंशतादि दश भेद देवसंज्ञा धरी। गाने वालोंका नाम नारद १ तुम्बुरु २ विश्वासु ३ यह संज्ञा धरी। मंत्रीका नाम वृहस्पति इत्यादि सर्व रीति इन्द्र समान थापी सो यह राजा इन्द्र समान सब विद्याधरोंका स्वामी पुण्यके उदयसे इन्द्र कैसी सम्पदाका धरनहारा होता भया। उस समय लंकामें माली राज करे सो महा मानी जैसे आग सर्व विद्याधरों पर अमल करे था तैसा ही अबहू करे, इंद्रकी शंका न राखे विजयार्धके समस्त पुरोंमें अपनी आज्ञा राखे सर्व विद्याधर राजावोंके राजमें महारत्न सुंदर हाथी घोडे मनोहर कन्या मनोहर बस्त्राभरण दोनों श्रेणियोंमें जो सार वस्तु होय सो मंगाय लेय ठौर २ हलकारे फिरा करें अपने भाइयों के गर्वसे महा गर्ववान पृथ्वी पर एक आपहीको बलवान जाने।

अब इंद्रके बलसे विद्याधर मालीकी आज्ञा भंग करने लगे सो यह समाचार मालीने सुना तब अपने सर्व भाई अर पुत्र अर कुटुम्ब समस्त राक्षसबंशी अर किहकंधके पुत्रादि समस्त बानरबंशी उनको लार लेय विजयार्ध पर्वतके विद्याधरोंपर गमन किया। के एक विद्याधर अति ऊंचे विमानों पर चढे हैं, कैएक चालते महल समान सुवर्णके रथोंपर चढे हैं, कैएक काली घटा समान हाथियों पर चढे हैं, कैएक मन समान शीघ्रगामी घोडों पर चढे, कैएक शार्दूलोंपर चढे, कैएक चीतोंपर चढे, कैएक ऊंटोंपर, कैएक खचरोंपर, कैएक भैंसोंपर, कैएक हंसोंपर, कैएक स्यालोंपर इत्यादि अनेक मायामई वाहनोंपर चढे आकाशका आंगन आछादते हुवे। महा देदीप्यमान शरीर धरकर मालीकी लार चढे। प्रथम पयाणमें अपशकुन भए तब मालीसे छोटा भाई सुमाली कहता भया बडे भाईमें है अनुराग

जिसका, हे देव ! यहां ही मुकाम करिये आगे गमन न करिये अथवा लंकामें उलटा चलिये आज अपशकुन बहुत भए हैं सूके वृक्षकी डालीपर एक पगको संकोचे काग तिष्ठा है अत्यंत आकुलित है चित्त जिसका बारबार पंख हलावे है सूका काठ चोंचमें लिये सूर्यकी ओर देखे है अर क्रूर शब्द बोले है अर्थात् हमारा गमन मने करे है अर दाहिनी ओर रौद्र स्यालिनी रोमांच धरती हुई भयानक शब्द करे है अर सूर्यके बिम्बके मध्य जलेरीमें रुधिर झरता देखिये है अर मस्तकरहित धड नजर आवे हैं अर महा भयानक वज्रपात होय है। कैसा है वज्रपात ? कम्पाया है समस्त पर्वत जिसने अर आकाशमें विखरि रहे हैं केश जिसके ऐसी मायामई स्त्री नजर आवे है अर गर्दभ (गधा) आकाशकी तरफ ऊंचा मुखकर खुरके अग्रभागसे धरतीको खोदता हुवा कठोर शब्द करे है इत्यादि अपशकुन होय हैं। तब राजा माली सुमालीसे हंसकर कहते भए। कैसा है राजा माली ? अपनी भुजाओंके बलसे शत्रुओंको गिनते नहीं। अहो वीर ! बैरियोंको जीतना मनमें विचार विजय हस्तीपर चढे महा पुरुष धीरताको धरते कैसे पीछें वाहुडें, जो शूरवीर दांतोंसे डसे हैं अधर जिन्होंने अर टेढी करी है भौंह जिन्होंने अर विकराल है मुख जिनका अर वैरीको डरानेवाली है आंख जिन्होंकी, तीक्ष्ण बाणोंसे पूर्ण अर बाजे हैं अनेक वाजे जिनके अर मद झरते हाथियोंपर चढे हैं अथवा तुरंगनपर चढे हैं महावीर रसके स्वरूप आश्चर्यकी दृष्टिसे देवोंने देखे जो सामंत वे कैसे पाछें बाहुडें ? मैंने इस जन्ममें अनेक लीला विलास किये। सुमेरु पर्वतकी गुफा तहां नन्दन वन आदि मनोहर बन तिनमें देवांगना समान अनेक राणी नाना प्रकारकी क्रीडा करी अर आकाशमें लग रहे हैं शिखर जिनके ऐसे रत्नोंके चैत्यालय देवके कराए विधिपूर्वक भाव सहित जिनेंद्रदेवकी पूजा करी अर अर्थी जो याचे सो दिया ऐसे दान दिये इस मनुष्य लोकमें देवों कैसे भोग भोगे अर अपने यशसे पृथ्वीपर वंश उत्पन्न

किया, इसलिये इस जन्ममें तौ हम सब बातोंमें इच्छा पूर्ण हैं अब जो महा संग्राममें प्राणोंको तजें तो यह शूरवीरोंकी रीति ही हैं परंतु क्या हम लोकोंसे यह कहावें कि माली कायर हो कर पीछे हट गया अथवा वहां ही मुकाम किया यह निंदाके लोकोंके शब्द धीरबीर कैसे सुनें ? धीर बीरोंका चित्त क्षत्रिय व्रतमें सावधान है भाईको इसभांति कह आप वैताडके ऊपर सेना सहित क्षणमात्रमें गये सब विद्याधरों पर आज्ञापत्र भेजे सो कैएक विद्याधरनने न माने उनके पुर ग्राम उजाडे अर उद्यानके वृक्ष उपार डारे, जैसे कमलके बनको मस्त हाथी उखाडै तैसे राक्षस जातिके विद्याधर महा क्रोधको प्राप्त भए तब प्रजाके लोग मालीके कटकसे डरकर कांपते संते रथनूपुर नगरमें राजा सहस्रारके शरणे गये। चरणोंको नमस्कार कर दीन वचन कहते भए कि हे प्रभो ! सुकेशका पुत्र माली राक्षसकुली समस्त विजयार्धमें आज्ञा चलावे है हमको पीडा करे है। आप हमारी रक्षा करो। तब सहस्रारने आज्ञा करी कि हे विद्याधरो ! मेरा पुत्र इंद्र है उसके शरण जाय बीनती करो वह तुम्हारी रक्षा करनेको समर्थ है जैसे इन्द्र स्वर्गलोककी रक्षा करे है तैसे यह इन्द्र समस्त विद्याधरोंका रक्षक है।

तब समस्त विद्याधर इंद्रपै गए हाथ जोड नमस्कारकर सर्व वृत्तान्त कहा। तब इन्द्र माली ऊपर क्रोधायमान होय गर्वकर मुलकते संते सर्वलोकोंसे कहते भए। कैसे हैं इंद्र ? पास धरा जो बज्रायुध उसकी ओर देख लाल भए हैं नेत्र जिनके मैं लोकपाल लोककी रक्षा करूं जो लोकका कण्टक होय ताहि हेरकर मारूं अर वह आप ही लडनेको आया तो इस समान और क्या ? रणके नगारे बजाए। वे वादित्र जिनके श्रवणसे मत्त हाथी गज बंधनको उखाडैं समस्त विद्याधर युद्धका साजकर इंद्रपै आए, बकतर पहरे हाथमें अनेक प्रकारके आयुध महा हर्षसे धरते संते कई एक रथोंपर कई एक घोडोंपर चढे तथा हस्ती ऊंट सिंह व्याघ्र स्याली तथा मृग हंस छेला बलद मींडा इत्यादि मायामयी अनेक वाहनोंपर बैठि

आए, कैएक विमानमें बैठे, कैएक मयूरोंपर चढे, कई एक खच्चरोंपर चढे अनेक आए। इंद्रने जो लोकपाल थापे हैं, ते अपने अपने वर्गसहित नाना प्रकारके हथियारोंकर युक्त भौंह टेढी किए आए भयानक हैं मुख जिनके पाठ हस्तीका नाम ऐरावत उसपर इंद्र चढे, वकतर पहिरे शिरपर छत्र फिरते हुए, रथनूपुरसे बाहिर निकसे सैनाके विद्याधर जो देव कहावैं इनके अर लंकाके राक्षसोंके महायुद्ध प्रवरता। हे श्रेणिक! ये देव अर राक्षस समस्त विद्याधर मनुष्य हैं, नमि विनमिके वंशके हैं ऐसा युद्ध प्रवरता जो कायर जीवोंसे देखा न जाय, हाथियोंसे हाथी घोडोंसे घोडे पयादोंसे पयादे लडे, सेल मुद्गर सामान्य चक्र खड्ग गौफण मूसल गदा कनक पाश इत्यादि अनेक आयुधोंसे युद्ध भया। सो देवोंकी सैनाने कछु एक राक्षसोंका बल घटाया तब बानरवंशी राजा सूर्यरज रक्षरज राक्षसवंशियोंके परम मित्र राक्षसोंकी सेनाको दबा देख युद्धको उद्यमी भए सो इनके युद्धसे समस्त इंद्रकी सेनाके लोकदेव जातिके विद्याधर पीछे हटे इनका बल राक्षसकुली विद्याधर लंकाके लोक देवोंसे महायुद्ध करते भए। शस्त्रोंके समूहसे आकाशमें अंधेरा कर डारा राक्षस अर बानरवंशियोंसे देवोंका बल हरा देख इंद्र आप युद्ध करणेको उद्यमी भए समस्त राक्षसवंशी अर बानरवंशी मेघरूप होकर इंद्ररूप पर्वतपर गाजते हुए शस्त्रकी वर्षा करते भए। सो इंद्र महायोधा कुछ भी विषाद न करता भया। किसीका बाण आपको लगने न दिया सबके बाण काट डारे अर अपने बाणसे कपि अर राक्षसोंको दबाए तब राजा माली लंकाके धनी अपनी सेनाको इंद्रके बलसे व्याकुल देख इंद्रसे युद्ध करणेको आय उद्यमी भए। कैसे हैं राजा माली? क्रोधसे उपजा जो तेज उससे समस्त आकाशमें किया है उद्योत जिन्होंने। इंद्रके अर मालीके परस्पर महायुद्ध प्रवरता। मालीके ललाटपर इंद्रने बाण लगाया सो मालीने उस बाणकी वेदना न गिनी अर इंद्रके ललाटपर शक्ती लगाई सो इंद्रके रुधिर झरने लगा अर माली उछलकर इंद्रपै आया

तब इंद्रने महाक्रोधसे सूर्यके बिम्ब समान चक्रसे मालीका सिर काटा, माली भूमिमें पडा तब सुमाली मालीको मुआ जान अर इंद्रको महाबलवान जान सर्वपरिवारसहित भागा मालीको भाईका अत्यन्त दुःख हुवा जब यह राक्षसवंशी अर वानरवंशी भागे तब इंद्र इनके पीछे लगा तब सौम नामा लोकपालने जो स्वामीकी भक्तिमें तत्पर है इंद्रसे विनती करी कि हे प्रभो ! जब मुझसा सेवक शत्रुओंके मारणेको समर्थ है तब आप इनपर क्यों गमन करें सो मुझे आज्ञा देवो शत्रुओंको निर्मूल करूं, तब इंद्रने आज्ञा करी, यह आज्ञाप्रमाण इनके पीछे लगा अर बाणोंके पुंज शत्रुओंपर चलाए कपि अर राक्षसोंकी सेना बाणोंसे बेधी गई जैसे मेघकी धारासे गायके समूह व्याकुल होंवे तैसे इनकी सर्व सेना व्याकुल भई ॥

अथानन्तर अपनी सेनाको व्याकुल देख सुमालीका छोटा भाई माल्यवान् बाहुडकर सौमपर आया अर सौमकी छातीमें भिण्डिपाल नामा हथियार मारा वह मूर्छित हो गया सो जब लग वह सावधान होय तब लग राक्षसवंशी अर वानरवंशी पाताल लंका जा पहुंचे मानो नया जन्म भया, सिंहके मुखसे निकले, सौमने सावधान होकर सर्व दिशा शत्रुओंसे शून्य देखी, तब लोकनिकरि गाइए है जस जाके बहुत प्रसन्न होय इंद्रके निकट गया अर इंद्र विजय पाय ऐरावत हस्तीपर चढा लोकपालोंसे मंडित शिरपर छत्र फिरते चवर ढुरते आगे अप्सरा नृत्य करती बडे उत्साहसे महा विभूति सहित रथनूपुरमें आए । कैसा है रथनूपुर ? रत्नमयी वस्त्रोंकी ध्वजाओंसे शोभे है ठौर ठौर तोरणोंसे शोभायमान है जहां फूलनके ढेर होय रहे हैं अनेक प्रकार सुगंधसे देवलोक समान है, सुंदर नारियां झरोखोंमें बैठी इंद्रकी शोभा देखें हैं इंद्र राजमहलमें आए अतिविनयसे माता पिताके पायन पडे, माता पिताने माथे हाथ धरा अर इसके गात स्पर्शे आशीस दीनी इंद्र वैरियोंको जीत अति आनन्दको प्राप्त भया प्रजाके पालनेमें तत्पर

इन्द्रके समान भोग भोगे विजयार्ध पर्वत तो स्वर्ग समान अर राजा इंद्र लोकमें इंद्र समान प्रसिद्ध भया।

गोतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—कि हे श्रेणिक ! अब लोकपालोंकी उत्पत्ति सुनो। ये लोक स्वर्गसे चयकर विद्याधर भए हैं राजा मकरध्वज राणी आदिति उसका पुत्र सोम नामा लोकपाल महा कांतिधारी सो इंद्रने ज्योतिपुर नगरमें थापा अर पूर्व दिशाका लोकपाल किया अर राजा मेघरथ राणी वरुणा उनका पुत्र वरुण उसको इन्द्रने मेघपुर नगरमें थापा अर पश्चिम दिशाका लोकपाल किया जिस के पास पाश नामा आयुध जिसका नाम सुनकर शत्रु अति डरें अर राजा किहकंध सूर्य राणी कनका वली उसका पुत्र कुबेर महा विभूतिवान उसको इंद्रने कांचनपुरमें थापा अर उत्तर दिशाका लोकपाल किया अर राजा बालाग्नि विद्याधर राणी श्रीप्रभा उसका पुत्र यम नामा महा तेजस्वी उसको किहकंध-पुरमें थापा अर दक्षिण दिशाका लोकपाल किया अर असुर नामा नगर ताके निवासी विद्याधर वे असुर ठहराए अर यक्षकीर्ति नामा नगरके विद्याधर यक्ष ठहराए अर किन्नर नगरके किन्नर, गंधर्व नगरके गंधर्व इत्यादिक विद्याधरोंकी देव संज्ञा धरी। इंद्रकी प्रजा देव जैसी क्रीडा करे यह राजा इंद्र मनुष्य योनिमें लक्ष्मीका विस्तार पाय लोगोंसे प्रशंसा पाय आपको इंद्र ही मनता भया अर कोई स्वर्ग लोक है इंद्र है देव हैं यह सर्व वात भूल गया अर आप ही को इंद्र जाना, विजयार्धगिरिको स्वर्ग जाना, अपने थापे लोकपाल जाने अर विद्याधरोंको देव जाने, इस भांति गर्वको प्राप्त भया कि मोतैं अधिक पृथ्वीपर और कोई नहीं, मैं ही सर्वकी रक्षा करूं यह दोनों श्रेणिका आधिपति होय ऐसा गर्वा कि मैं ही इंद्र हूं।

अथानन्तर कौतुकमंगल नगरका राजा व्योमाविंदु पृथ्वीपर प्रसिद्ध उसके राणी मंदवती उसके दो पुत्री भई बडी कौशिकी छोटी केकसी। सो कौशिकी राजा विश्रवको परणाई जे यक्षपुर नगरके धनी,

तिनके वैश्रवण पुत्र भया अति शुभ लक्षणका धारणहारा कमल सारिषे नेत्र जाके उसको इंद्रने बुलाकर बहुत सन्मान किया अर लंकाके थाने राखा अर कहा मेरे आगे चार लोकपाल हैं तैसे तू पांचवां महा बलवान है तब वैश्रवणने विनती करी कि—"प्रभो जो आज्ञा करो सो ही मैं करूं" ऐसा कह इंद्रको प्रणाम कर लंकाको चला सो इंद्रकी आज्ञा प्रमाण लंकाके थाने रहै जाको राक्षसोंकी शंका नहीं जिसकी आज्ञा विद्याधरोंके समूह अपने सिरपर धरें हैं ॥

पाताल लंकाविषै सुमालीके रत्नश्रवा नामा पुत्र भया महा शूर बीर दातार जगत्का प्यारा उदारचित्त मित्रोंके उपकार निमित्त है जीवन जिसका, अर सेवकोंके उपकार निमित्त है प्रभुत्व जिसका, पंडितोंके उपकार निमित्त है प्रवीणपणा जिसका, भाइयोंके उपकार निमित्त है लक्ष्मीका पालन जिसके, दरिद्रियोंके उपकार निमित्त है ऐश्वर्य जिसका, साधुओंकी सेवा निमित्त है शरीर जिसका, जीवनके कल्याण निमित्त है वचन जिसका, सुकृतके स्मरण निमित्त है मन जिसका, धर्मके अर्थ है आयु जिसका, शूरवीरताका मूल है स्वभाव जिसका, सो पिता समान सब जीवोंका दयालु, जिसके परस्त्री माता समान, पर द्रव्य तृण समान, पराया शरीर अपने शरीर समान, महा गुणवान, जो गुणवंतोंकी गिनती करें तहां इसको प्रथम गिणे अर दोषवन्तोंकी गिणतीविषै नहीं आवे उसका शरीर अद्भुत परमाणुवों कर रचा है जैसी शोभा इसमें पाइये तैसी और ठौर दुर्लभ है, संभाषणमें मानों अमृतही सींचे है, अर्थियोंको महादान देता भया, धर्म अर्थ काममें बुद्धिमान, धर्मका अत्यंत प्रिय, निरंतर धर्महीका यत्न करे, जन्मांतर से धर्मको लिये आया है, जिसके बडा आभूषण यश ही है अर गुण ही कुटुम्ब है सो धीर बीर बैरियोंका भय तजकर विद्या साधनेके अर्थ पुष्पक नामा बनमें गया। कैसा है वह बन, भूत पिशाचादिकके शब्दसे महाभयानक है यह तो वहां विद्या साधे है अर राजा व्योमविंदुने अपनी पुत्री केकसी इसकी

सेवा करणेको इसके ढिग भेजी सो सेवा करे हाथ जोडे रहे आज्ञाकी है अभिलाषा जिसके, कैएक दिनोंमें रत्नश्रवाका नियम समाप्त भया, सिद्धोंको नमस्कार कर मौन छोडा। केकसीको अकेली देखी। कैसी है केकसी? सरल हैं नेत्र जिसके नीलकमल समान सुन्दर अर लाल कमल समान है मुख जिसका कुंदके पुष्प समान हैं दन्त अर पुष्पोंकी माला समान है कोमल सुन्दर भुजा अर मूंगा समान है कोमल मनोहर अधर, मौलश्रीके पुष्पोंकी सुगन्ध समान है निश्वास जिसके, चंपेकी कली समान है रंग जिसका, अथवा उस समान चंपक कहां अर स्वर्ण कहां? मानो लक्ष्मी रत्नश्रवाके रूपमें वश हुई कमलोंके निवासको तज सेवा करनेको आई है। चरणारविंदकी ओर हैं नेत्र जिसके, लज्जासे नम्रीभूत है शरीर जिसका, अपने रूप वा लावण्यसे कूंपलोंकी शोभाको उलंघती हुई स्वासनकी सुगंधतासे जिसके मुखपर भ्रमर गुंजार करे हैं। अति सुकुमार है तनु जिसका, अर यौवन आवतासा है मानों इसकी अति सुकुमारता के भयसे यौवन भी स्पर्शता शंके है मानो समस्त स्त्रियोंका रूप एकत्रकर बनाई है, अद्भुत है सुन्दरता जिसकी, मानों साक्षात् विद्या ही शरीर धार कर रत्नश्रवाके तपमे वशी होकर महा कांतिकी धारणहारी आई है। तब रत्नश्रवा जिनका स्वभावही दयावान है केकसीको पूछते भए कि तू कौनकी पुत्री है अर कौन अर्थ अकेली यूथसे विछुरी मृगी समान महा बनमें रहे है अर तेरा क्या नाम है तब यह अत्यन्त माधुर्यता रूप गद गद बाणीसे कहती भई–'हे देव! राजा व्योमविंदु राणी नन्दवती तिनकी मैं केकसी नामा पुत्री आपकी सेवा करणेको पिताने राखी है। ताही समय रत्नश्रवाको मानसस्तम्भिनी विद्या सिद्ध भई सो विद्याके प्रभावसे उसी बनमें पुष्पांतक नामा नगर बसाया अर केकसीको विधिपूर्वक परणा अर उसी नगरमें रहकर मन वांछित भोग भोगते भए, प्रिया प्रीतममें अद्भुत प्रीति होती भई, एक क्षण भी आपसमें वियोग सहार न सके। यह केकसी रत्नश्रवाके चित्तका बंधन होती भई दोनों

अत्यन्त रूपवान नव योवन महा धनवान इनके धर्मके प्रभावसे किसी भी वस्तुकी कमी नहीं। यह राणी पतिव्रता पतिकी छाया समान अनुगामिनी होती भई॥

एक समय यह राणी रत्नके महलमें सुंदर सेजपर पडी हुती। कैसी है सेज? क्षीर समुद्रकी तरंग समान उज्ज्वल है वस्त्र जहां अर महा कोमल है अनेक सुगंधकर मंडित है रत्नोंका उद्योत होय रहा है राणीके शरीरकी सुगंधसे भ्रमर गुंजार करे हैं अपने मनका मोहनहारा जो अपना पति उसके गुणोंको चिंतवती हुई अर पुत्रकी उत्पत्तिको वांछती हुई पडी हुती सो रात्रीके पिछले पहर महा आश्चर्यके करणहारे शुभ स्वप्ने देखे वहुरि प्रभातविषै अनेक वाजे वाजे शंखोंका शब्द भया मागध वंदीजन विरद वखानते भए तब राणी सेजसे उठकर प्रभात क्रियाकर महामंगलरूप आभूषण पहर सखियोंकर मण्डित पतिके ढिग आई, राजा राणीको देख उठे वहुत आदर किया। दोऊ एक सिंहासनपर विराजे, राणी हाथ जोड राजासे विनती करती भई—"हे नाथ! आज रात्रीके चतुर्थ पहरमें मैंने तीन शुभ स्वप्न देखे हैं एक महावली सिंह गाजता अनेक गजेन्द्रोंके कुम्भस्थल विदारता हुआ परम तेजस्वी आकाशसे पृथ्वीपर आय मेरे मुखमें होकर कुक्षिमें आया अर सूर्य अपनी किरणोंसे तिमिरका निवारण करता मेरी गोदमें आय तिष्ठा अर चंद्रमा अखण्ड है मण्डल जिसका सो कुमुदनको प्रफुल्लित करता अर तिमिरको हरता हुआ मैंने अपने आगे देखा। यह अद्भुत स्वप्न मैंने देखे सो इनके फल क्या हैं? तुम सर्व जानने योग्य हो स्त्रियोंको पतिकी आज्ञा ही प्रमाण है। तब यह वात सुन राजा स्वप्नके फलका व्याख्यान करते भए। राजा अष्टांग निमित्तके जाननहारे जिनमार्गमें प्रवीण हैं। हे प्रिये! तेरे तीन पुत्र होंगे जिनकी कीर्ति तीन जगतमें विस्तरैगी वडे पराक्रमी कुलके वृद्धि करणहारे पूर्वोपार्जित पुण्यसे महासम्पदाके भोगनेहारे देवों समान अपनी कांतिसे जीता है चंद्रमा, अपनी दीप्तिसे जीता है सूर्य,

अपनी गम्भीरतासे जीता है समुद्र अर अपनी स्थिरतासे जीता है पर्वत जिन्होंने, स्वर्गके अत्यन्त सुख भोग मनुष्य देह धरेंगे महाबलवान जिनको देव भी न जीत सकें, मनवांछित दानके देनेहारे, कल्पवृक्षके समान अर चक्रवर्ती समान ऋद्धि जिनकी अपने रूपसे सुंदर स्त्रियोंके मन हरणहारे अनेक शुभ लक्षणोंकर मण्डित उतंग है वक्षस्थल जिनका, जिनका नाम ही श्रवणमात्रसे महा बलवान वैरी भय मानेंगे तिनमें प्रथम पुत्र आठवां प्रतिवासुदेव होयगा महासाहसी शत्रुओंके मुखरूप कमल मुद्रित करणेको चंद्रमा समान तीनों भाई ऐसे योद्धा होंगे कि युद्धका नाम सुनकर जिनके हर्षके रोमांच होंवे, बडा भाई कछु इक भयंकर होयगा जिस वस्तुकी हठ पकडेगा सो न छोडेगा। जिसको इंद्र भी समझानेको समर्थ नहीं। ऐसा पतिका वचन सुनकर राणी परम हर्षको प्राप्त होय विनयसहित भरतारको कहती भई। हे नाथ! हम दोऊ जिनमार्गरूप अमृतके स्वादी कोमलचित्त हमारे पुत्र क्रूरकर्मा कैसे होय। हमारे तो जिन वचनमें तत्पर कोमल परिणामी होना चाहिए। अमृतकी बेलपर विषपुष्प कैसे लागे। तब राजा कहते भए कि हे वरानने! सुंदर है मुख जाका ऐसी तू हमारे वचन सुन। यह प्राणी अपने अपने कर्मके अनुसार शरीर धरे हैं इसलिए कर्म ही मूल कारण है हम मूल कारण नहीं, हम निमित्त कारण हैं तेरा बडा पुत्र जिनधर्मी तो होयगा परंतु कुछ इक क्रूरपरिणामी होयगा अर उसके दो लघु वीर महाधीर जिनमार्गमें प्रवीण गुणमें पूर्ण भली चेष्टाके धारणहारे शीलके सागर होवेंगे। संसार भ्रमणका है भय जिनको धर्ममें अति दृढ महा दयावान सत्य वचनके अनुरागी होवेंगे। तिन दोउनिके ऐसा ही सौम्यकर्मका उदय है, हे कोमलभाषिणी! हे दयावती! प्राणी जैसा कर्म करै है तैसा ही शरीर धरे है ऐसा कहकर वे दोनों राजा अर राणी जिनेंद्रकी महा पूजाविषे प्रवरते। कैसे हैं ते दोनों? रात दिवस नियम धर्ममें सावधान हैं॥

अथानन्तर प्रथम ही गर्भमें रावण आए तब माताकी चेष्टा कुछ क्रूर होती भई यह वांछा भई कि वैरियोंके सिरपर पांव धरूं। राजा इंद्रके ऊपर आज्ञा चलाऊं, विना कारण भोंहें टेढी करणी, कठोर वाणी बोलना, यह चेष्टा होनी भई। शरीरमें खेद नहीं, दर्पण विद्यमान हैं तो भी खड्गमें मुख देखना. सखीजनसे खिझ उठना, किसीकी शंका न राखनी ऐसी उद्धत चेष्टा होनी भई, नवमे महीने रावणका जन्म भया जिस समय पुत्र जन्मा उस समय वैरियोंके आसन कम्पायमान भए सूर्य समान है ज्योति जिसकी ऐसा बालक उसको देखकर परिवारके लोकोंके नेत्र थकित होय रहे। देव दुन्दुभी बाजे बजाने लगे वैरियोंके घरमें अनेक उत्पात होने लगे, माता पिताने पुत्रके जन्मका अति हर्ष किया प्रजाके सर्व भय मिटे पृथ्वीका पालक उत्पन्न भया सेजपर सूधा पडे अपनी लीलाकर देवोंके समान है दर्शन जिसका राजा रत्नश्रवाने बहुत दान दिया। आगे इनके बडे जो राजा मेघवाहन भए उनको राक्षसोंके इंद्र भीमने हार दिया था जिसकी हजार नागकुमार देव रक्षा करें वह हार पास धरा था सो प्रथम दिवस हीके बालकने खैंच लिया बालककी मुट्ठीमें हार देख माता आश्चर्यको प्राप्त भई अर महा स्नेहसे बालकको छातीसे लगाय लिया अर सिर चूंबा अर पिताने भी हारसहित बालकको देख मनमें विचारी कि यह कोई महापुरुष है, हजार नागकुमार जिसकी सेवा करें ऐसे हारसे क्रीडा करता है। यह सामान्य पुरुष नाहीं याकी शक्ति ऐसी होयगी जो सर्व मनुष्योंको उलंघे। आगे चारण मुनिने मुझे कहा हुता कि तेरे पदवीधर पुत्र उत्पन्न होवेंगे सो आप प्रतिवासुदेव शलाका पुरुष प्रकट भए हैं। हारके योगसे दश बदन पिताको नजर आए तब उसका दशानन नाम धरा, बहुरि कुछ कालमें कुम्भकर्ण भए सो सूर्य समान है तेज जिसका, बहुरि कुछ इक कालमें पूर्णमासीके चंद्रमा समान है वदन जिसका ऐसी चन्द्रनखा बहिन भई, बहुरि विभीषण भए महा सौम्य धर्मात्मा पाप कर्मरहित मानों साक्षात् धर्म ही

देहधारी अवतरा है। अद्यापि जिनके गुणोंकी कीर्ति जगतविषे गाइए है ऐसे दशाननकी बालक्रीडा दुष्टोंको भयरूप होती भई। अर दोनों भाइयोंकी क्रीडा सौम्यरूप होती भई। कुम्भकर्ण अर विभीषण दोनोंके मध्य चन्द्रनखा चांद सूर्यके मध्य सन्ध्या समान शोभती भई। रावण बाल अवस्थाको उलंघकर कुमार अवस्थामें आया।

एक दिन रावण अपनी माताकी गोदमें तिष्ठे था, अपने दांतोंकी कांतिसे दशों दिशामें उद्योत करता हुआ जिसके सिरपर चूडामणि रत्न धरा है उस समय वैश्रवण आकाश मार्गसे जाय था सो रावणके ऊपर होय निकला अपनी कांतिसे प्रकाश करता हुआ विद्याधरोंके समूहसे युक्त महा बलवान विभूतिका धनी मेघ समान अनेक हाथियोंकी घटा मदकी धारा बरसते जिनके विजली समान सांकल चमके महा शब्द करते आकाश मार्गसे निकसे सो दशों दिशा शब्दायमान होय गई। आकाश सेनासे व्याप्त हो गया। सो रावणने ऊंची दृष्टिकर देखा तो बडा आडंबर देखकर माताको पूछा "यह कौन है? अर अपने मानसे जगतको तृण समान गिनता महा सेनासहित कहां जाय है?" तब माता कहती भई "तेरी मौसीका बेटा है, सर्व विद्या इसको सिद्ध हैं, महा लक्ष्मीवान है, शत्रुओंके भय उपजावता हुआ पृथ्वीविषे विचरे है, महा तेजवान है, मानो दूसरा सूर्य ही है। राजा इन्द्रका लोकपाल है। इन्द्रने तुम्हारे दादाका बडा भाई माली युद्धमें हराथा अर तुम्हारे कुलमें चली आई जो लंकापुरी वहांसे तुम्हारे दादेको निकालकर इसको रखा है। यह लंकाके लिये तेरा पिता निरंतर अनेक मनोरथ करै है रात दिन चैन नहीं पडे है अर मैं भी इस चिंतामें सूखगई हूं। हे पुत्र! स्थानभ्रष्ट होनेतें मरण भला? ऐसा दिन कब होय जो तू अपने कुलकी भूमिको प्राप्त होय अर तेरी लक्ष्मी हम देखें, तेरी विभूति देखकर तेरे पिताका अर मेरा मन आनन्दको प्राप्त होय ऐसा दिन कब होयगा जब तेरे यह

दोनों भाइयोंको विभूति सहित तेरी लार इस पृथ्वीपर प्रतापयुक्त हम देखेंगे। तुम्हारे कंटक न रहेंगे।"
यह माताके दीन वचन सुन अर अश्रुपात डारती देखकर विभीषण बोले, कैसे हैं विभीषण? प्रगट भया है
क्रोधरूप विषका अंकूर जिनके, हे माता! कहां यह रंक वैश्रणव विद्याधर, जो देव होय तो भी हमारी
दृष्टिमें न आवे। तुमने इसका इतना प्रभाव वरणन किया। सो कहा? तू वीरप्रसवनी अर्थात् योधावोंकी
माता है, महा धीर है, अर जिनमार्गमें प्रवीण है यह संसारकी क्षणभंगुर माया तेरेसे छानी नहीं, काहे
को ऐसे दीन वचन कायर स्त्रियोंके समान तू कहे है? क्या तुझे इस रावणकी खबर नहीं है यह श्रीवत्स-
लक्षणकरमण्डित अद्भुत पराक्रमका धरणहारा महाबली, अपार है चेष्टा जिसकी, भस्मसे जैसे अग्नि
दबी रहे तैसे मौन गह रहा है। यह समस्त शत्रुवर्गनिके भस्म करणेको समर्थ है, तेरे मन विषै अबतक
नहीं आया है, यह रावण अपनी चालसे चित्तको भी जीते है अर हाथकी चपेटसे पर्वतोंको चूर डारे है।
इसकी दोनों भुजा त्रिभुवनरूप मंदिरके स्तंभ हैं अर प्रतापको राजमार्ग है। क्षत्रवतीरूप वृक्षके अंकुर हैं
सो तैंने क्या नहीं जाने? इस भांति विभीषणने रावणके गुण वर्णन करे। तब रावण मातासे कहता भया
"हे माता! गर्वके वचन कहने योग्य नहीं परन्तु तेरे सन्देहके निवारने अर्थ मैं सत्य वचन कहहूं सो
सुन। जो यह सकल विद्याधर अनेक प्रकार विद्यासे गर्वित दोनों श्रेणियोंके एकत्र होयकर मेरेसे युद्ध
करें तो भी मैं सर्वको एक भुजासे जीतूं।

तथापि हमारे विद्याधरोंके कुलमें विद्याका साधन उचित है सो करते लाज नहीं जैसे मुनिराज
तपका आराधन करें तैसे विद्याधर विद्याका आराधन करें सो हमको करणा योग्य है। ऐसा कहकर
दोनों भाइयोंके सहित माता पिताको नमस्कारकर नवकार मन्त्रका उच्चारणकर रावण विद्या साधनेको
चले। माता पिताने मस्तक चूमा अर असीस दीनी, पाया है मंगल संस्कार जिन्होंने, स्थिर भूत है चित्त

जिनका, घरसे निकसकर हर्षरूप होय भीम नामा महावनमें प्रवेश किया। कैसा है वन? जहां सिंहादि क्रूर जीव नाद कर रहे हैं, विकराल हैं दाढ अर बदन जिनके अर सूते जे अजगर तिनके निश्वाससे कंपायमान हैं बडे २ वृक्ष जहां अर नाचे हैं व्यन्तरोंके समूह जहां, जिनके पायनसे कंपायमान है पृथ्वीतल जहां, अर महा गंभीर गुफाओंमें अन्धकारका समूह फैल रहा है, मनुष्योंकी तो कहा बात? जहां देव भी गमन न कर सकै हैं जिसकी भयंकरता पृथ्वीमें प्रसिद्ध है जहां पर्वत दुर्गम महा अन्धकारको धरे गुफा अर कंटकरूप वृक्ष हैं मनुष्योंका संचार नहीं। वहां ये तीनों भाई उज्ज्वल धोती दुपट्टा धारे शांति भावको ग्रहणकर सर्व आशा निवृत्तकर विद्याके अर्थ तप करवेको उद्यत भए। कैसे हैं ते भाई? निशंक है चित्त जिनका, पूर्ण चंद्रमा समान है बदन जिनका, विद्याधरोंके शिरोमणि, जुदे २ बनमें विराजे। डेढ दिनमें अष्टाक्षर मंत्रके लक्ष जाप किये सो सर्वकामप्रदा विद्या तीनों भाईयोंको सिद्ध भई सो मनवांछित अन्न इनको विद्या पहुंचावे क्षुधाकी बाधा इनको न होती भई। बहुरि यह स्थिरचित्त होय सहस्रकोटि षोडशाक्षरमन्त्र जपते भए। उस समय जम्बूद्वीपका अधिपति अनावृति नामा यक्ष, स्त्रियों सहित क्रीडा करता आय प्राप्त हुवा। सो उसकी देवांगना इन तीनों भाइयोंको महा रूपवान अर नव यौवन तपमें सावधान देख कौतुक कर इनके समीप आईं, कमल समान हैं मुख जिनके, भ्रमर समान हैं श्याम सुन्दर केश जिनके कैएक आपसमें बोलीं—"अहो! यह राजकुमार अतिकोमलशरीर कांतिधारी बस्त्राभरणसहित कौन अर्थ तप करे हैं? इनके शरीरकी कांति भोगों बिना न सोहे, कहां इनकी नवयौवन वय अर कहां यह भयानक बनमें तप करना।" बहुरि इनके तपके डिगावनेके अर्थ कहती भई—"अहो अल्पबुद्धि! तुम्हारा सुन्दर रूपवान शरीर भोगका साधन है, योगका साधन नहीं, तातैं काहेको तपका खेद करो हो, उठो घर चलो, अब भी कुछ नहीं गया" इत्यादि अनेक बचन कहे परन्तु इनके

मनमें एकहु न आई। जैसे जलकी बून्द कमलके पत्रपर न ठहरे। तब वे आपसमें कहती भई हे सखी ये काष्ठमई हैं सर्व अंग इनके निश्चल दीखे हैं ऐसा कहकर क्रोधायमान होय तत्काल समीप आई। इनके निस्तीर्ण हृदयपर कुंडल मारा तौ भी ये चलायमान न भये। स्थिरीभूत है चित्त जिनका, कायर पुरुष होय सोई प्रतिज्ञासे डिगे, देविनिके कहते अनावृत यक्षने हंसकर कहा—भो सत्पुरुषो काहेको दुर्धर तप करो हो अर किस देवको आराधो हो ऐसा कहा तौ भी ये नहीं बोले। चित्रामसे होय रहे तब अनावृतने क्रोध किया कि जम्बूद्वीपका देव तो मैं हूं मुझको छोडकर किसको ध्यावें हैं। ये मन्दबुद्धि हैं इनको उपद्रव करणेके अर्थ अपने किंकरोंको आज्ञा करी। किंकर स्वभावहीसे क्रूर हुते अर स्वामी के कहेसे उन्होंने और भी अधिक अनेक उपद्रव किए के एक तो पर्वत उठाय उठाय लाए अर इनके समीप पटके तिनके भयंकर शब्द भये, कैएक सर्प होय सर्व शरीरसे लिपट गए, कैएक नाहर होय मुख फाडकर आये अर कैएक शब्द कानमें ऐसे करते भए जिनको सुनकर लोक वहिरे होय जांय, तथा मायामई डांसे बहुत किये सो इनके शरीरमें आय लागे अर मायामई हस्ती दिखाये, असराल पवन चलाई, मायामई दावानल लगाई, इस भांति अनेक उपद्रव किये, तो भी यह ध्यानसे न डिगे। निश्चल है अन्तःकरण जिनका। तब देवोंने मायामई भीलोंकी सेना बनाई। अंधकार समान विकराल आयुधों को धरे इनको ऐसी माया दिखाई कि पुष्पांतक नगरमें महा युद्धमें रत्नश्रवाको कुटुम्ब सहित बंधा हुआ दिखाया अर यह दिखाया कि माता केकसी विलाप करे है कि हे पुत्रो! इन चाण्डाल भीलों ने तुम्हारे पिताके साथ महा उपद्रव किया है अर यह चांडाल मुझे मारे हैं, पावोंमें वेढी डारी है माथेके केश खींचे हैं, हे पुत्रो! तुम्हारे आगे मुझे यह म्लेच्छ भील पल्लीमें लिये जाय हैं, तुम कहते हुते जो समस्त विद्याधर एकत्र होय मुझसे लडें तौ भी न जीता जाऊं सो यह वार्ता तुम मिथ्या ही कहते।

अब तुमारे आगे म्लेच्छ चांडाल मुझे केश पकडे खींचे लिये जाय हैं, तुम तीनों ही भाई इन म्लेच्छों से युद्ध करने समर्थ नहीं, मंद पराक्रमी हो। हे दशग्रीव ! तेरा स्तोत्र बिभीषण वृथा ही करे था तू तो एक ग्रीवा भी नहीं, जो माताकी रक्षा न करे अर यह कुंभकर्ण हमारी पुकार कानोंसे नहीं सुने है अर यह बिभीषण कहावे है सो वृथा है एक भीलसे लडने समर्थ भी नहीं अर यह म्लेच्छ तुमारी बहिन चंद्रनखाको लिये जाय है सो तुमको लज्जा नाहीं। विद्या जो साधिए है सो मातापिताकी सेवा अर्थ, सो विद्या किस काम आवेगी ? मायामई देवोंने इस प्रकार चेष्टा दिखाई तो भी यह ध्यानसे न डिगे। तब देवोंने एक भयानक माया दिखाई अर्थात् रावणके निकट रत्नश्रवाका सिर कटा दिखाया अर रावणके निकट भाइयोंके सिर काटे दिखाए अर भाइयोंके निकट रावणका भी सिर कटा दिखाया परंतु रावण तो सुमेरु पर्वत समान अति निश्चल ही रहे जो ऐसा ध्यान महा मुनि करै, तो अष्ट कर्म-कोषको छेदे परंतु कुंभकर्ण बिभीषणके कछु इक व्याकुलता भई परंतु कुछ विशेष नाहीं।

सो रावणको तो अनेक सहस्र विद्या सिद्धि भई जेते मंत्र जपनेके नेम किये थे वह पूर्ण होनेसे पहिले ही विद्या सिद्ध भई। धर्मके निश्चयसे क्या न होय अर ऐसा दृढ निश्चय भी पूर्वोपार्जित उज्ज्वल कर्मसे होय है, कर्म ही संसारका मूल कारण है, कर्मानुसार यह जीव सुख दुख भोगे है, समयविषे उत्तम पात्रोंको विधिसे दान देना अर दयाभावसे सदा सबको देना अर अन्त समय समाधिमरण करना अर सम्यक्ज्ञानकी प्राप्ति किसी उत्तम जीवहीको होय है। कै एकोंके तो विद्या दस वर्षोंमें सिद्ध होय है, कै एकको एक मासमें, कैएकको क्षणमात्रमें, यह सब कर्मोंका प्रभाव जानो। रातदिन धरतीपर भ्रमण करो अथवा जलमें प्रवेश करो तथा पर्वतके मस्तकसे परो अनेक शरीरके कष्ट करो तथापि पुण्यके उदयके बिना कार्य सिद्धि नहीं होय। जे उत्तम कर्म नहीं करे हैं वे वृथा शरीर खोवे हैं तातें सर्व आदरसे

आचार्योंकी सेवा करके पुरुषोंको सदा पुण्य ही करना योग्य है । पुण्य बिना कहांसे सिद्धि होय ? हे श्रेणिक ! थोडे ही दिनोंमें अर मंत्र विधि पूर्ण होनेसे पहिले ही रावणको महा विद्या सिद्धि भई ! जे जे विद्या सिद्धि भई तिनके संक्षेपतासे नाम सुनो । नभःसंचारिणी कामदायिनी कामगामिनी दुर्निवारा जगतकंपा प्रगुप्ति भानुमालिनी अणिमा लघिमा क्षोभ्या मनस्तंभकारिणी संबाहिनी सुरध्वंसी कौमारी बध्यकारणी सुविधाना तमोरूपा दहना विपुलोदरी शुभप्रदा रजोरूपा दिनरात्रिविधायिनी वज्रोदरी समाकृष्टि अदर्शिनी अजरा अमरा अनवस्तंभिनी तोयस्तंभिनी गिरिदारिणी अवलोकिनी ध्वंसी धीरा घोरा भुजंगिनी वीरिनी एकभुवना अवध्या दारुणा मदनासिनी भास्करी भयसंभूति ऐशानी विजिया जया बंधिनी मोचनी वाराही कुटिलाकृति चित्तोद्भवकरी शांति कौबेरी वशकारिणी योगेश्वरी बलोत्साही चंडा भीतिप्रवर्षिणी इत्यादि अनेक महा विद्या रावणको थोडे ही दिनोंमें सिद्ध भई तथा कुम्भकरणको पांच विद्या सिद्ध भई उनके नाम सर्वहारिणी अतिसंवर्धिनी ज्रंभिनी व्योमगामिनी निद्रानी तथा विभीषणको चार विद्या सिद्ध भई सिद्धार्था शत्रुदमनी व्याघाता आकाशगामिनी यह तीनों ही भाई विद्याके ईश्वर होते भये अर देवोंके उपद्रवसे मानों नए जन्ममें आए । तब यक्षोंका पति अनावृत जम्बूद्वीपका स्वामी इनको विद्यायुक्त देखकर बहुत अस्तुति करता भया अर दिव्य आभूषण पहराए रावणने विद्याके प्रभावसे स्वयंप्रभनगर वसाया । वह नगर पर्वतके शिखर समान ऊंचे महलोंकी पंक्तिसे शोभायमान है अर रत्नमई चैत्यालयोंसे अति प्रभावको धरे है । जहां मोतियोंकी जालीसे ऊंचे झरोखे शोभे हैं, पद्मराग मणियोंके स्तंभ हैं, नानाप्रकारके रत्नोंके रंगके समूहसे जहां इंद्र धनुष होय रहा है, रावण भाइयों सहित उस नगरमें विराजे । कैसे हैं राजमहल आकाशमें लगरहे हैं, शिखर जाके विद्यावलकर मण्डित रावण सुखसे तिष्ठे ।

जम्बूद्वीपका अधिपति अनावृत देव रावणसों कहता भया—"हे महामते ! तेरे धीर्यसे मैं बहुत प्रसन्न भया अर मैं सर्व जम्बूद्वीपका अधिपति हूं, तू यथेष्ट वैरियोंको जीतता हुआ सर्वत्र विहार कर। हे पुत्र ! मैं बहुत प्रसन्न भया अर तेरे स्मरणमात्रसे निकट आऊंगा। तब तुझे कोई भी न जीत सकेगा अर बहुत काल भाइयोंसहित सुखसों राज कर, तेरे विभूति बहुत होऊ" इस भांति आशीर्वाद देय बारम्बार इसकी स्तुतिकर यक्ष परिवार सहित अपने स्थानको गया। समस्त राक्षसवंशी विद्याधरोंने सुनी जो रत्नश्रवाका पुत्र रावण महा विद्यासंयुक्त भया सो सबको आनन्द भया। सर्व ही राक्षस बडे उत्साह सहित रावणके पास आए। कैएक राक्षस नृत्य करें हैं, कैएक गान करें हैं, कैएक शत्रु पक्षको भयकारी गाजें हैं, कैएक ऐसे आनन्दसे भर गए हैं कि आनंद अंगमें न समावे है, कैएक हंसें, कैएक केलि कर रहे हैं, सुमाली रावणका दादा अर उसका छोटा भाई माल्यवान तथा सूर्यरज रक्षरज राजा बानरबंशी सब ही सुजन आनन्दसहित रावणपै चले, अनेक बाहनोंपर चढे हर्षसे आवे हैं, रत्नश्रवा रावणके पिता पुत्रके स्नेहसे भर गया है मन जिसका ध्वजावोंसे आकाशको शोभित करता हुवा परम विभूति सहित महा मंदिर समान रत्ननके रथपर चढ आया। बंदीजन विरद बखाने हैं, सर्व इकट्ठे होयकर पंचसंगम नामा पर्वतपर आए। रावण सम्मुख गया, दादा पिता अर सूर्यरज रक्षरज बडे हैं सो इनको प्रणामकर पायन लगा अर भाइयोंको बगलगीरिकर मिला अर सेवक लोगोंको स्नेहकी नजरसे देखा अर अपने दादा पिता अर सूर्यरज रक्षरजसे बहुत विनयकर कुशल क्षेम पूछी। बहुरि उन्होंने रावणसे पूछी, रावणको देख गुरुजन ऐसे खुशी जो कहनेमें न आवे। बारम्बार रावणसे सुख-वार्ता पूछें अर स्वयंप्रभ नगरको देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए। देवलोक समान यह नगर उसको देख कर राक्षसबंशी अर बानरवंशी सब ही अति प्रसन्न भए अर पिता रत्नश्रवा अर माता केकसी, पुत्रके

गातको स्पर्शते हुए अर इसको बारंबार प्रणाम करता हुआ देखकर बहुत आनन्दको प्राप्त भए। दुपहरके समय रावणने बडोंको स्नान करावनेका उद्यम किया तब सुमाली आदि रत्नोंके सिंहासनपर स्नानके अर्थ विराजे। सिंहासनपर इनके चरण पल्लव सारिखे कोमल अर लाल ऐसे शोभते भए जैसे उदयाचल पर्वतपर सूर्य शोभे। बहुरि स्वर्ण रत्नोंके कलशोंसे स्नान कराया। कलश कमलके पत्रोंसे आच्छादित हैं अर मोतियोंकी मालासे शोभे हैं अर महा कांतिको धरे हैं अर सुगन्ध जलसे भरे हैं, जिनकी सुगंधसे दशों दिशा सुगंधमयी होय रही हैं अर जिनपर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। स्नान करावते जब कलशोंका जल डारिए है तब मेघ सारिखे गाजे हैं, पहले सुगंध द्रव्योंसे उबटना लगाय पीछे स्नान कराया। स्नानके समय अनेक प्रकारके वादित्र बजे, स्नान कराकर दिव्य वस्त्राभूषण पहराए अर कुलवन्तनी राणियोंने अनेक मंगलाचरण कीए। रावणादि तीनों भाई देवकुमार सारिखे गुरुओंका अति विनयकर चरणोंकी बंदना करते भए तब बडोंने बहुत आशीर्वाद दिये 'हे पुत्रो! तुम बहुत काल जीवो अर महा संपदा भोगो, तुम्हारीसी विद्या औरमें नहीं। सुमाली माल्यवान सूर्यरज रक्षरज अर रत्नश्रवा इन्होंने स्नेहसे रावण कुम्भकरण विभीषणको उरसे लगाया। बहुरि समस्त भाई अर समस्त सेवक लोग भली विधिसों भोजन करते भए। रावणने बडोंकी बहुत सेवा करी अर सेवक लोगोंका बहुत सन्मान किया, सबको वस्त्राभूषण दिये। सुमाली आदि सर्व ही गुरुजन फूल गए हैं नेत्र जिनके रावणसे अति प्रसन्न होय पूछते भए। 'हे पुत्रो! तुम बहुत सुखसे हो, तब नमस्कारकर यह कहते भए—हे प्रभो! हम आपके प्रसादसे सदा कुशलरूप हैं बहुरि बाबा मालीकी वात चली सो सुमाली शोकके भारसे मूर्छा खाय गिरा, तब रावणने शीतोपचारसे सचेत किए अर समस्त शत्रुओंके समूहके घातरूप सामन्तताके वचन कहकर दादाको बहुत आनन्दरूप किया। सुमाली कमलनेत्र रावणको देखकर अति आनन्दरूप भए। सुमाली

रावणको कहते भए—'अहो पुत्र ! तेरा उदार पराक्रम जिसे देख देवता प्रसन्न होंय । अहो कांति तेरी सूर्यको जीतनेहारी, गंभीरता तेरी समुद्रसे अधिक, पराक्रम तेरा सर्व सामंतोंको उलंघे, अहो वत्स ! हमारे राक्षस कुलका तू तिलक प्रगट भया है जैसे जम्बूद्वीपका आभूषण सुमेरु है अर आकाशके आभूषण चांद सूर्य हैं; तैसे हे पुत्र रावण ! अब हमारे कुलका तू मण्डन है । महा आश्चर्यकी करणहारी चेष्टा तेरी, सकल मित्रोंको आनन्द उपजावे है, जब तू प्रगट भया तब हमको क्या चिंता है। आगे अपने वंशमें राजा मेघवाहन आदि बडे २ राजा भए वे लंकापुरीका राज करके पुत्रोंको राज देय मुनि होय मोक्ष गए अब हमारे पुण्यसे तू भया । सर्व राक्षसोंके कष्टका हरणहारा शत्रुवर्गका जीतनेहारा तू महा साहसी हम एक मुखसे तेरी प्रशंसा कहांलों करें तेरे गुण देव भी न कह सकें । यह राक्षसवंशी विद्याधर जीवनेकी आशा छोड बैठे हुते सो अब सबकी आशा बंधी । तू महाधीर प्रगट भया है । एक दिन हम कैलाश पर्वत गए हुते वहां अवधिज्ञानी मुनिको हमने पूछा कि—'हे प्रभो ! लंकामें हमारा प्रवेश होयगा के नहीं ?' तब मुनिने कही कि—'तुम्हारे पुत्रका पुत्र होयगा उसके प्रभावकर तुम्हारा लंकामें प्रवेश होयगा । वह पुरुषोंमें उत्तम होयगा । तुम्हारा पुत्र रत्नश्रवा राजा व्योमबिन्दुकी पुत्री केकसीको परणेगा । उसकी कुक्षिमें वह पुरुषोत्तम प्रगट होयगा सो भरतक्षेत्रके तीन खण्डका भोक्ता होगा । महा बलवान, विनयवान, जिसकी कीर्ति दशों दिशामें विस्तरेगी । वह बैरियोंसे अपना बास छुडावेगा अर बैरियोंके वास दावेगा सो इसमें आश्चर्य नहीं सो तू महाउत्सवरूप कुलका मण्डन प्रकटा है, तेरासा रूप जगतमें अर किसीका नहीं, तू अपने अनुपमरूपसे सबके नेत्र अर मनको हरे है' इत्यादिक शुभ वचनोंसे सुमालीने रावणकी स्तुति करी । तब रावण हाथ जोड नमस्कारकर सुमालीसे कहता भया—हे प्रभो ! तुम्हारे प्रसादसे ऐसा ही होऊं । ऐसे कहकर नमोकार मंत्र जप पंच परमेष्ठियोंको नमस्कार किया सिद्धोंका स्मरण किया, जिससे सर्व सिद्ध होय ।

आगे गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहै हैं—हे श्रेणिक ! उस बालकके प्रभावसे बंधुवर्ग सर्व राक्षसवंशी अर वानरवंशी अपने अपने स्थानक आय बसे, वैरियोंका भय न किया। या भांति पूर्व भवके पुण्यसे पुरुष लक्ष्मीको प्राप्त होय है। अपनी कीर्तिसे व्याप्त करी है दशों दिशा जिसने, इस पृथ्वीमें बडी उमरका अर्थात् बूढा होना तेजस्विताका कारण नहीं है जैसे अग्निका कण छोटा ही बडे वनको भस्म करे है अर सिंहका बालक छोटा ही माते हाथियोंके कुम्भस्थल विदारे है अर चंद्रमा उगता ही कुमुदोंको प्रफुल्लित करे है अर जगतका संताप दूर करे है अर सूर्य उगता ही काली घटा समान अन्धकारको दूर करे है।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणका जन्म और विद्यासाधन कहनेवाला सातवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७ ॥

अथानन्तर दक्षिणश्रेणीमें असुरसंगीत नामा नगर तहां राजामय विद्याधर बडे योधा विद्याधरोंमें दैत्य कहावें जैसे रावणके बडे राक्षस कहावें, इंद्रके कुलके देव कहावें। ये सब विद्याधर मनुष्य हैं। राजा मयकी रानी हैमवती पुत्री मंदोदरी, जिसके सर्व अगोपांग सुंदर, बिशाल नेत्र, रूप अर लावण्यता रूपी जलकी सरोवरी इसको नवयौवनपूर्ण देख पिताको परणावनेकी चिंता भई। तब अपनी राणी हैमवती से पूछा 'हे प्रिये ! अपनी पुत्री मंदोदरी तरुण अवस्थाको प्राप्त भई सो हमको बडी चिंता है। पुत्रियोंके यौवनके आरम्भसे जो संताप रूप अग्नि उपजे उसमें माता पिता कुटुम्ब सहित ईंधनके भावको प्राप्त होय हैं इसलिये तुम कहो, यह कन्या किसको परणावें ? गुण कुलमें कांतिमें इसके समान होय उसको देनी। तब राणी कहती भई हे देव ! हम पुत्रीके जनने अर पालनेमें हैं। परणावना तुम्हारे आश्रय है।

जहां तुम्हारा चित्त प्रसन्न होय तहां देवो। जो उत्तम कुलकी बालिका हैं ते भरतारके अनुसार चाले हैं जब राणीने यह कहा, तब राजाने मंत्रियोंसे पूछा। तब किसीने कोई बताया, किसीने इंद्र बताया कि वह सब विद्याधरोंका पति है उसकी आज्ञा लोपते सर्व विद्याधर डरे हैं। तब राजामयने कही मेरी रुचि यह है जो यह कन्या रावणको देनी क्योंकि उसको थोडे ही दिनोंमें सर्व विद्या सिद्ध भई हैं इसलिये यह कोई बडा पुरुष है जगतको आश्चर्यका कारण है तब राजाके वचन मारीच आदि सर्व मंत्रियोंने प्रमाण किये। मंत्री राजाके साथ कार्यमें प्रवीण हैं। तब भले ग्रह लग्न देख क्रूर ग्रह टार मारीचको साथ लेय राजा मय कन्याके परणावनेको कन्याको रावण पै लेचले रावण भीम नामा बनमें चन्द्रहास खड्ग साध-नेको आए हुते अर चंद्रहासकी सिद्धिकर सुमेरुपर्वतके चैत्यालयोंकी बंदनाको गये हुते सो राजा मय हलकारोंके कहनेसे भीम नामा बनमें आए। कैसा है वह बन ? मानों काली घटाका समूह ही है जहां अति सघन अर ऊंचे वृक्ष हैं, बनके मध्य एक ऊंचा महल देखा मानों अपने शिखरसे स्वर्गको स्पर्शे है। रावणने जो स्वयंप्रभ नामा नवा नगर बसाया है ताके समीप ही यह नगर है राजामयने विमानसे उतर कर महलके समीप डेरा किया अर वादित्रादि सर्व आडम्बर छोडकर कैयक निकटवर्ती लोकों सहित मन्दोदरीको लेय महल पर चढे। सातवें खणमें गए वहां रावणकी बहिन चन्द्रनखा बैठी हुती चन्द्र-नखा मानों साक्षात् बन देवी ही मूर्तिवंती है। चन्द्रनखाने राजामयको अर उसकी पुत्री मंदोदरीको देखकर बहुत आदर किया सो बडे कुलके बालकोंके यह लक्षण ही हैं। बहुत विनयसंयुक्त इनके निकट बैठी। तब राजामय चन्द्रनखाको पूछते भए "हे पुत्री ! तू कौन है? किस कारण बनमें अकेली बसे है ?" तब चन्द्रनखा बहुत विनयसे बोली—'मेरा भाई रावण है, बेला करके उसने चन्द्रहास खड्गको सिद्ध किया है अर अब मुझे खड्गकी रक्षा सौंप सुमेरुपर्वतके चैत्यालयोंकी बंदनाको गए हैं। मैं भगवान

चंद्रप्रभुके चैत्यालयमें तिष्ठूं हूं तुम बडे हितू सम्बंधी हो जो तुम रावणसे मिलने आए हो तो क्षणइक यहां विराजो।" इस भांति इनके बात होय ही रही थीं कि रावण आकाश मार्गसे आए। तेजका समूह नजर आया। तब चन्द्रनखाने कही 'अपने तेजसे सूर्यके तेजको हरता हुआ यह रावण आया है।' रावणको देख राजामय बहुत आदरसे खडे हुए अर रावणसे मिले अर सिंहासनपर विराजे तब राजामयके मंत्री मारीच तथा बज्रमध्य अर बज्रनेत्र अर नभस्ताडित उग्रनक्र मरुध्वज मेधावी सारणशुक ये सब ही रावणको देख बहुत प्रसन्न भए अर राजामयसे कहते भए। 'हे दैत्येश! आपकी बुद्धि अति प्रवीण है, जो मनुष्योंमें महा पदार्थ था सो तुम्हारे मनमें बसा' इस भांति मयसे कहकर ये मयके मंत्री रावणसे कहते भए–'दशग्रीव! हे महाभाग्य! आपका अद्भुत रूप अर महा पराक्रम है अर तुम आति विनयवान अतिशयके धारी अनुपम वस्तु हो। यह राजामय दैत्योंका अधिपति दक्षिणश्रेणीमें असुरसंगीत नामा नगरका राजा है, पृथ्वीविषे प्रसिद्ध है। हे कुमार! तुम्हारे निर्मल गुणोंविषे अनुरागी हुआ आया है।'

तब रावणने इनका बहुत श्रेष्ठाचार किया अर पाहुण गति करी अर बहुत मिष्ट वचन कहे। सो यह बडे पुरुषोंके घरकी रीति ही है कि जो अपने द्वार आवे उसका आदर करें। रावणने मयके मंत्रियोंसे कही कि दैत्यनाथने मुझे अपना जान बडा अनुग्रह किया है। तब मयने कही कि हे कुमार! तुमको यही योग्य है जो तुम सारिखे साधु पुरुष हैं उनको सज्जनता ही मुख्य है बहुरि रावण श्रीजिनेश्वरदेवकी पूजा करनेको जिनमंदिरमें गए। राजा मयको अर इसके मंत्रियोंको भी ले गए। रावणने बहुत भावसे पूजा करी, खूब भगवानके आगे स्तोत्र पढे, बारम्बार हाथ जोड नमस्कार किए, रोमांच होय आए, अष्टांग दण्डवतकर जिन मंदिरसे बाहिर आए। कैसे हैं रावण? आविक उदय है जिनका

अर महा सुंदर है चेष्टा जिनकी चूडामणिसे शोभे है शिर जिनका, चैत्यालयोंसे बाहिर आय राजामय सहित आप सिंहासनपर विराजे। राजासे वेताडके विद्याधरोंकी बात पूछी अर मंदोदरीकी ओर दृष्टि गई तो देखकर मन मोहित भया। कैसी है मंदोदरी? सुंदर लक्षणोंकर पूर्ण सौभाग्यरूप रत्नोंकी भूमि कमल समान हैं चरण जिसके, स्निग्ध है तनु जिसका लावण्यतारूपी जलकी प्रवाह ही है, महा लज्जाके योगसे नीची हैं दृष्टि जिसकी, सुवर्णके कुंभ तुल्य हैं स्तन जाके, पुष्पोंसे अधिक है सुगंधता अर सुकुमारता जिसकी अर कोमल हैं दोऊ भुजलता जिसकी अर शंखके कंठ समान है ग्रीवा (गरदन) जिसकी, पूर्णमाके चंद्रमा समान है मुख जाका, शुक (तोता) हू तैं अति सुंदर है नासिका जाकी, मानो दोऊ नेत्रोंकी कांतिरूपी नदीका यह सेतुबंध ही है। मूंगा अर पल्लवसे अधिक लाल हैं अधर (होठ) जिसके, अर महाज्योतिको धरे अति मनोहर है कपोल जिसका, अर वीणाका नाद भ्रमरका गुंजार अर उन्मत्त कोयलका शब्दसे अति सुंदर है शब्द जिसका, अर कामकी दूती समान सुंदर है दृष्टि जिसकी, नीलकमल अर रक्त कमल अर कुमुदको भी जीते ऐसी श्यामता आरक्तता शुक्लताको धरे मानों दशों दिशामें तीन रंगके कमलोंके समूह ही विस्तार राखे हैं अर अष्टमीके चंद्रमा समान मनोहर है ललाट जिसका अर लंबे बांके काले सुगंध सघन सचिक्कण हैं केश जिसके, कमल समान हैं हाथ अर पांव जिसके अर हंसनीको अर हस्तनीको जीते ऐसी है चाल जिसकी अर सिंहनीसे भी अति क्षीण है कटि जिसकी, मानों साक्षात् लक्ष्मी ही कमलके निवासको तजकर रावणके निकट ईर्षाको धरती हुई आई है क्योंकि मेरे होते हुए रावणके शरीरको विद्या क्यों स्पर्शे ऐसे अद्भुत रूपको धरणहारी मंदोदरी रावणके मन अर नेत्रोंको हरती भई। सकल रूपवती स्त्रियोंका रूप लावण्य एकत्रकर इसका शरीर शुभ कर्मके उदयसे बना है, अंग अंगमें अद्भुत आभूषण पहरे, महा मनोज्ञ मंदोदरीको अवलोकनकर

रावणका हृदय काम बाणसे बींधा गया, महा मधुरताकर युक्त जो रावणकी दृष्टि उसपर गयी थी वह हटकर पीछे आई परंतु मधुकर मक्षकी नाईं घूमने लग गई। रावण चित्तमें सोचै कि यह उत्तम नारी कौन है? श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी सरस्वती इनमें यह कौन है? परणी है वा कुमारी है? समस्त श्रेष्ठ स्त्रियोंकी यह शिरोभाग्य है, यह मन इंद्रियोंको हरणहारी जो मैं परणूं तो मेरा नवयौवन सुफल है, नहीं तो तृणवत् वृथा है ऐसा चिंतवन रावणने किया तब राजामय मंदोदरीके पिता बडे प्रवीण इसका अभिप्राय जान मंदोदरीको निकट बुलाय रावणसे कही—"याके तुम पति हो" यह वचन सुन रावण अति प्रसन्न भया मानों अमृतसे गात सींचा गया, हर्षके अंकुर समान रोमांच होय आए। सर्व वस्तुकी इनके सामग्री हुती ही, ताही दिन मंदोदरीका विवाह भया; रावण मंदोदरीको परणकर अति प्रसन्न होय स्वयंप्रभ नगरमें गए। राजा मय भी पुत्रीको परणाय निश्चिन्त भए। पुत्रीके विछोडेसे शोक सहित अपने देशको गए। रावणने हजारों राणी परणीं उन सबकी शिरोमणी मंदोदरी होती भई। मंदोदरी भरतारके गुणोंमें हरा गया है मन जिसका, पतिकी आज्ञाकारणी होती भई, रावण उस सहित जैसे इंद्र इंद्राणी सहित रमै तैसे सुमेरुके नन्दन वनादि रमणीक स्थानमें रमते भए, कैसी है मंदोदरी? सर्व चेष्टा मनोज्ञ हैं जाकी अनेक विद्या जो रावणने सिद्ध करी हैं उनकी अनेक चेष्टा दिखावते भए, एक रावण अनेक रूप धर अनेक स्त्रियोंके महलोंमें कौतूहल करे, कभी सूर्यकी नाईं तपे, कभी चंद्रमाकी नाईं चांदनी विस्तारे, कभी अग्निकी नाईं ज्वाला वरषे, कभी मेघकी नाईं जल धारा श्रवे, कभी पवनकी नाईं पहाडोंको चलावे, कभी इंद्रकी सी लीला करे, कभी वह समुद्रकीसी तरंग धरे, कभी वह पर्वत समान अचल दशा गहै, कभी माते हाथी समान चेष्टा करे, कभी पवनसे अधिक वेगवाला अश्व बन जाय, क्षणमें नजीक क्षणमें अदृश्य क्षणमें सूक्ष्म क्षणमें स्थूल क्षणमें भयानक क्षणमें मनोहर इस भांति रमता भया।

एक दिवस रावण मेघवर पर्वतपर गया वहां एक वापिका देखी। निर्मल है जल जिसका अनेक जातिके कमलोंसे रमणीक है अर क्रौंच हंस चकवा सारिस इत्यादि अनेक पक्षियोंके शब्द होय रहे हैं। अर मनोहर हैं तट जिसके, सुंदर सिवाणोंसे शोभित हैं, जिसके समीप अर्जुन आदि बडे बडे वृक्षोंकी छाया होय रही है, जहां चंचल मीनकी कलोलसे जलके छींटे उछल रहे हैं, तहां रावण अति सुन्दर छै हजार राजकन्या क्रीडा करती देखीं, कैएक तो जल केलिमें छींटे उछाले हैं, कैएक कमलोंके वनमें घुसी हुई कमलबदनी कमलोंकी शोभाको जीते हैं। भ्रमर कमलोंकी शोभाको छोडकरि इनके मुखपर गुंजार करे हैं, कैएक मृदंग बजावै हैं, कैएक बीण बजावै हैं, यह समस्त कन्या रावणको देखकर जल क्रीडाको तज खडी होय रहीं। रावण भी उनके वीच जाय जल क्रीडा करने लगे। तब वे भी जल क्रीडा करने लगीं। वे सर्व रावणका रूप देख काम बाणकर बींधी गई। सबकी दृष्टि इसको ऐसी लगी जो अन्यत्र न जाय। इसके अर उनके राग भाव भया। प्रथम मिलापकी लज्जा अर मदनका प्रगट होना सो तिनका मन हिंडोलेमें झूलता भया। तिन कन्याओंमें जो मुख्य हैं उनका नाम सुनो, राजा सुरसुन्दर राणी सर्वश्रीकी पुत्री पद्मावती नीलकमल सारिखे हैं नेत्र जिसके, राजा बुध राणी मनोवेगा ताकी कन्या अशोकलता मानो साक्षात् अशोककी लता ही है अर राजा कनक राणी संन्ध्याकी पुत्री विद्युत्प्रभा जो अपनी प्रभाकर विजुलीकी प्रभाको लज्जावंत करे है, सुन्दर है दर्शन जिसका, बडे कुलकी बेटी, सब ही अनेक कलाकर प्रवीण उनमें ये मुख्य हैं मानो तीन लोककी सुंदरता ही मूर्ति धरकर विभूति सहित आई हैं सो रावणने छैः हजार कन्या गंधर्व विवाहकर परणी। ते भी रावणसहित नाना प्रकारकी क्रीडा करती भई।

तब इनकी लार जे खोजे वा सहेली हुतीं ते इनके माता पिताओंसे सकल वृत्तांत जाकर कहती

भई तब उन राजाओंने रावणके मारिवेको क्रूर सामन्त भेजे, ते भ्रकुटी चढाए होठ डसते आए नाना-प्रकारके शस्त्रोंकी वर्षा करते भए, ते सकल अकेले रावणने क्षणमात्रमें जीत लिये। वह भागकर कांपते राजा सुरसुन्दर पै गए, जायकर हथियार डार दिए अर वीनती करते भए 'हे नाथ! हमारी आजीविकाको दूर करो अथवा घर लूट लेवो अथवा हाथ पांव छेदो तथा प्राण हरो, हम रत्नश्रवाका पुत्र जो रावण उससे लडनेको समर्थ नहीं, ते समस्त छे हजार राजकन्या उसने परणीं अर उनके मध्य क्रीडा करै है, इंद्र सारिखा सुन्दर चन्द्रमा समान कांतिधारी, जिसकी क्रूर दृष्टि देव भी न सहार सकें, उसके सामने हम रंक कौन? हमने घने ही देखे, रथनूपुरका धनी राजा इंद्र आदि इसकी तुल्य कोऊ नहीं। यह परम सुन्दर महा शूरवीर है।' ऐसे वचन सुन राजा सुरसुन्दर महा क्रोधायमान होय राजा बुध अर कनक सहित वडी सेना लेय निकसे अर भी अनेक राजा इनके संग भए सो आकाशमें शस्त्रोंकी कांतिसे उद्योत करते आए। इन सब राजावोंको देख कर ये समस्त कन्या भयकर व्याकुल भई अर हाथ जोड कर रावणसे कहती भई कि हे नाथ! हमारे कारण तुम अत्यन्त संशयको प्राप्त भए, हम पुण्यहीन हैं अब आप उठकर कहीं शरण लेवो क्योंकि ये प्राण दुर्लभ हैं तिनकी रक्षा करो। यह निकट ही श्रीभगवानका मन्दिर है तहां छिप रहो, यह क्रूर वैरी तुमको न देख आप ही उठ जावेंगे। ऐसे दीन वचन स्त्रियोंके सुन अर शत्रुका कटक निकट आया देख रावणने लाल नेत्र कीये अर इनसे कहते भए, 'तुम मेरा पराक्रम नहीं जानो हो तातें ऐसे कहो हो, काक अनेक भेले भए तो कहा गरुडको जीतेंगे? एक सिंहका बालक अनेक मदोनमत्त हाथियोंके मदकूं दूर करे है।' ऐसे रावणके वचन सुन स्त्री हर्षित भई अर बीनती करी "हे प्रभो! हमारे पिता अर भाई अर कुटुम्बकी रक्षा करो।" तब रावण कहते भये—'हे प्यारी हो! ऐसे ही होयगा। तुम भय मत करो, धीरता गहो।' यह बात परस्पर होय है।

इतनेमें राजाओंके कटक आए तब रावण विद्याके रचे विमानमें बैठ क्रोधसे उनके सन्मुख भया, ते सकल राजा उनके योधाओंके समूह जैसे पर्वतपर मोटी धारा मेघकी बरसे तैसे बाणोंकी वर्षा करते भए । वह रावण विद्याओंके सागरने शिलाओंसे सर्व शस्त्र निवारे अर कैयकको शिलासे ही भयको प्राप्त कीए बहुरि मनमें बिचारी कि इन रंकोंके मारणेसे क्या ? इनमें जो मुख्य राजा हैं तिनहीको पकड लेवो । तब इन राजावोंको तामस शस्त्रोंसे मूर्छितकर नागपाशसे बांधलिया । तब इन छे हजार स्त्रियोंने बीनती कर छुडाए । तब रावणने तिन राजाओंकी बहुत सुश्रूषा करी । तुम हमारे परमहितु सम्बन्धी हो, तब वे रावणका शूरत्वगुण देख महा विनयवान रूपवान देख बहुत प्रसन्न भए । अपनी अपनी पुत्रियोंका पाणिग्रहण कराया । तीन दिन तक महा उत्सव प्रवरता । ते राजा रावण की आज्ञा लेय अपने अपने अस्थानको गए । रावण मन्दोदरीके गुणोंकर मोहित है चित्त जिसका, स्वयंप्रभ नगरमें आए तब इसको स्त्रियोंसहित आया सुनकर कुम्भकरण बिभीषण भी सन्मुख गए । रावण बहुत उत्साहसे स्वयंप्रभनगरमें आए अर सुरराजवत् रमते भए ।

अथानंतर कुंभपुरका राजा मन्दोदर ताके राणी स्वरूपा ताकी पुत्री तडिन्माला सो कुंभकर्ण जिसका प्रथम नाम भानुकर्ण था, उसने परणी । कैसे हैं कुंभकर्ण ? धर्मविषे आसक्त है बुद्धि जिनकी अर महा योधा हैं अनेक कला गुणमें प्रवीण हैं । हे श्रेणिक ! अन्यमती लोक जो इनकी कीर्ति और भांति कहे हैं कि मांस अर लोहूका भक्षण करते हुते, छे महीनाकी निद्रा लेते सो नहीं । इनका आहार बहुत पवित्र स्वाद रूप सुगंध था, प्रथम मुनियोंको आहार देय अर आर्यादिकको आहार देय दुखित भूखित जीवको आहार देय कुटुंब सहित योग्य आहार करते हुते मांसादिककी प्रवृत्ति नहीं थी अर निद्रा इन को अर्धरात्रि पीछे अलप थी, सदा काल धर्ममें लवलीन था चित्त जिनका । चर्म शरीर जो बडे पुरुषोंको झूठा कलंक लगावे हैं ते महा पापका बंध करे हैं ऐसा करना योग्य नहीं ।

अथानन्तर दक्षिणश्रेणीमें ज्योतिप्रभ नामा नगर वहां राजा विशुद्धकमल राजा मयका बडा मित्र उसके राणी नंदनमाला पुत्री राजीवसरसी सो विभीषणने परणी, अति सुंदर उस राणी सहित बिभीषण अति कोतूहल करते भए, अनेक चेष्टा करते जिनको रतिकेलि करते तृप्ति नहीं। कैसे हैं बिभीषण? देवन समान परम सुंदर है आकार जिनका अर कैसी है राणी? लक्ष्मीसे भी अधिक सुंदर है। लक्ष्मी तो पद्म कहिए कमल उसकी निवासिनी है अर यह राणी पद्मराग माणिके महलकी निवासिनी है।

अथानन्तर रावणकी राणी मंदोदरी गर्भवती भई सो इसको माता पिताके घर ले गए वहां इंद्रजीतका जन्म भया। इंद्रजीतका नाम समस्त पृथ्वीविषै प्रसिद्ध हुआ। अपने नानाके घर वृद्धिको प्राप्त भया। सिंहके बालककी नाईं साहसरूप उन्मत्त क्रीडा करता भया। रावणने पुत्रसहित मंदोदरी अपने निकट बुलाई सो आज्ञा प्रमाण आई। मंदोदरीके माता पिताको इनके विछोडेका अति दुख भया। रावण पुत्रका मुख देखकर परम आनंदको प्राप्त भया सुपुत्र समान और प्रीतिका स्थान नहीं, फिर मंदोदरीको गर्भ रहा तब माता पिताके घर फिर ले गए तहां मेघनादका जन्म भया। फिर भरतारके पास आई भोगके सागरमें मग्न भई है मंदोदरीने अपने गुणोंसे पतिका चित्त वश किया। अब ये दोनों बालक इंद्रजीत अर मेघनाद सज्जनोंको आनंदके करनहारे सुंदर चारित्रवान तरुण अवस्थाको प्राप्त भए। विस्तीर्ण हैं नेत्र जिनके, जो वृषभ समान पृथ्वीका भार चलावनहारे हैं॥

अथानन्तर वैश्रवण जिन जिन पुरोंमें राज करे उन हजारों पुरोंमें कुम्भकर्ण धावे करते भए जहां इंद्रका अर वैश्रवणका माल होय सो छीनकर अपने स्वयंप्रभ नगरीमें ले आवे इस वातसे वैश्रवण बहुत क्रोधायमान भए बालकोंकी चेष्टा जान सुमाली रावणके दादाके निकट दूत भेजे, कैसा है वैश्रवण? इंद्रके जोरसे अति गर्वित है। सो वैश्रवणका दूत द्वारपालसे मिल सभामें आया अर सुमालीसे कहता

भया। हे महाराज! वैश्रवण नरेंद्रने जो कहा है सो तुम चित्त देय सुनो। वैश्रवणने यह कहा है कि तुम पंडित हो, कुलीन हो, लोक रीतिके ज्ञायक हो, बडे हो, अकार्यके संगसे भयभीत हो, औरोंको भले मार्गके उपदेशक हो, ऐसे जो तुम सो तुम्हारे आगे यह बालक चपलता करे तो क्या तुम अपने पोतावोंको मने न करो। तिर्यंच अर मनुष्यमें यही भेद है कि मनुष्य तो योग्य अयोग्यको जाने है अर तिर्यंच न जाने है यही विवेककी रीति है। करने योग्य कार्य करिए, न करने योग्य न करिए। जो दृढ चित्त हैं वे पूर्व वृत्तांतको नहीं भूले हैं अर विजुली समान क्षणभंगुर विभूतिके होते हुवे भी गर्वको नहीं धरे हैं। आगे क्या राजा मालीके मरणेसे तुम्हारे कुलकी कुशल भई है अब यह क्या स्यानक है जो कुलके मूलनाशका उपाय करते हो। ऐसा जगतमें कोई नहीं, जो अपने कुलके मूलनाशको आदरे। तुम क्या इंद्रका प्रताप भूल गए जो ऐसे अनुचित काम करो हो, कैसे हैं इंद्र? विध्वंस किये हैं वैरी जिसने समुद्र समान अथाह हैं सो तुम मीडकके समान सर्पके मुखमें क्रीडा करो हो। कैसा है सर्पका मुख? दाढरूपी कंटकसे भरा है अर विषरूपी अग्निके कण जिसमेंसे निकसै हैं अपने पोते पडोतोंको जो तुम शिक्षा देनेको समर्थ नहीं हो तो मेरे सोंपो मैं इनको तुरंत सीधे करूं अर ऐसा न करोगे तो समस्त पुत्र पौत्रादि कुटुंबको बेडियोंसे बंधा मलिन स्थानमें रुका देखोगे, अनेक भांतिकी पीडा इनको होगी। पाताल लंकातें नीरि (जरा जरा) बाहिर निकसे हो अब फिर तहां ही प्रवेश किया चाहो हो। इस प्रकार दूतके कठोर वचनरूपी पवनसे स्पर्शा है मनरूपी जल जिसका ऐसा रावणरूपी समुद्र अति क्षोभको प्राप्त भया। क्रोधसे शरीरमें पसेव आ गया अर आंखोंकी आरक्ततासे समस्त आकाश लाल हो गया अर क्रोधरूपी स्वरके उच्चारणसे सर्व दिशा बधिर करते हुवे अर हाथियोंका मद निवारते हुवे गाज कर ऐसा बोल्या "कौन है वैश्रवण अर कौन है इंद्र? जो हमारे गोत्रकी परिपाटीसे चली आई जो लंका,

धनुष बाण धारे, इन्द्र धनुषसमान अनेक रंगका बकतर पहिरे, शिरपर मुकुट धरे, नाना प्रकारके रत्नों के आभूषण संयुक्त, अपनी दीप्तिसे आकाशमें उद्योत करता आया रावणको देखकर यक्ष जातिके विद्याधर क्षणमात्र विलषे, तेजदूर होगया, रणकी अभिलाषा छोड पराङ्मुख भए, त्राससे आकुलित भया है चित्त जिनका, भ्रमरकी न्याई भ्रमते भए। तब यक्षोंके अधिपति बडे २ योधा एकट्ठे होकर रावणके सन्मुख आए रावण सबके छेदनेको प्रवरता जैसे सिंह उछलकर माते हाथियोंके कुम्भस्थल विदारे तैसे रावण कोपरूपी पवनके प्रेरे अग्नि स्वरूप होकर शत्रुसेनारूपी वनको दाह उपजावते भए। सो पुरुष नहीं, सो रथ नहीं, सो अश्व नहीं, सो विमान नहीं, जो रावणके बाणोंसे न बींधा गया। तब रावणको रणमें देख वैश्रवण भाईपनेका स्नेह जनावता भया अर अपने मनमें पछताया जैसे बाहूबल भरतसे लडाई कर पछताए हुते तैसे वैश्रवण रावणसे विरोध कर पछताया। हाय! यह संसार दुःखका भाजन है जहां यह प्राणी नाना योनियोंविषे भ्रमण करे है। देखो! मैं मूर्ख ऐश्वर्यसे गर्भित होकर भाईके विध्वंश करनेमें प्रवरता। यह विचार कर वैश्रवण रावणसे कहता भया—'हे दशानन! यह राजलक्ष्मी क्षणभंगुर है, इसके निमित्त तू कहा पाप करे। मैं तेरी बडी मौसीका पुत्र हूं तातें भाईयोंसे अयोग्य व्यवहार करना योग्य नहीं अर यह जीव प्राणियोंकी हिंसा करके महा भयानक नरकको प्राप्त होय है, नरक महा दुखसे भरा है। जगतके जीव विषयोंकी अभिलाषामें फंसे हैं आंखोंकी पलकमात्र क्षण जीवना क्या तू न जाने है। भोगोंके कारण पाप कर्म काहेको करे है। तब रावणने कहा—'हे वैश्रवण! यह धर्म श्रवणका समय नहीं जो माते हाथियोंपर चढै अर खड्ग हाथमें धरे सो शत्रुवोंको मारे तथा आप मरे बहुत कहनेसे क्या? तू तलवारके मार्गविषे तिष्ठ अथवा मेरे हाथ पांव पड। यदि तू धनपाल है तो हमारा भण्डारी हो अपना कर्म करते पुरुष लज्जा न करे। तब वैश्रवण बोले—'हे रावण! तेरी आयु अल्प है

तातें ऐसे क्रूर बचन कहे है। शक्ति प्रमाण हमारे ऊपर शस्त्रका प्रहार कर । तब रावणने कही—तुम वडे हो प्रथमबार तुम करो। तब रावणके ऊपर वैश्रवणने बाण चलाये जैसे पहाडके ऊपर सूर्य किरण डारे। वैश्रवणके बाण रावणने अपने बाणोंसे काट डारे अर अपने बाणोंसे शर मण्डप कर डारा। बहुरि वैश्रवणने अर्धचंद्र बाणोंसे रावणका धनुष छेदा अर रथसे रहित किया तब रावणने मेघनादनामा रथपर चढकर वैश्रवणसे युद्ध किया उल्कापात समान बज्र दंडोंसे वैश्रवणका बख्तर चूर डारा । अर वैश्रवणके सुकोमल हृदयमें भिण्डिपाल मारी, वह मूर्छाको प्राप्त भया। तब ताकी सेनाविषै अत्यन्त शोक भया अर राक्षसोंके कटकविषै बहुत हर्ष भया। वैश्रवणके लोक वैश्रवणको उठाकर यक्षपुर लेगए अर रावण शत्रुवोंको जीतकर रणसे निवृत्ते। सुभटका शत्रुके जीतनेहीका प्रयोजन है, धनादिकका प्रयोजन नहीं।

अथानंतर वैश्रवणका वैद्योंने यतन किया सो अच्छा हुवा तब अपने चित्तमें विचारे है जैसे पुष्प रहित वृक्ष, सींग टूटा बैल, कमल विना सरोवर न सोहै तैसे मैं शूरवीरता बिना न सोहूं। जो सामन्त हैं अर क्षत्री वृत्तीका विरद धारे हैं तिनका जीतव्य सुभटत्वहीसे शोभे है अर तिनको संसारमें पराक्रम ही से सुख है सो मेरे अब नहीं रहा तातें अब संसारका त्याग कर मुक्तिका यत्न करूं । यह संसार असार है. क्षणभंगुर हैं, इसहीसे सत्पुरुष विषय सुखको नहीं चाहे हैं। यह अंतराय सहित हैं अर अल्प हैं दुखी हैं ये प्राणी पूर्व भवमें जो अपराध करे हैं उसका फल इस भवमें पराभव होय है सुख दुःखका मूल कारण कर्म ही हैं अर प्राणी निमित्तमात्र हैं तातें ज्ञानी तिनसे कोप न करै। कैसा है ज्ञानी? संसारके स्वरूपको भली भांति जानै है। यह केकसीका पुत्र रावण मेरे कल्याणका निमित्त हुवा है जिसने मुझे गृहवास रूप महा फांसीसे छुडाया अर कुम्भकरण मेरा परम मित्र है जिसने यह संग्रामका कारण मेरे

ज्ञानका निमित्त बनाया ऐसा विचार कर वैश्रवणने दिगम्बरी दीक्षा आदरी। परम तपको आराध कर परम धाम पधारे, संसार भ्रमणसे रहित भए।

अथानंतर रावण अपने कुलका अपमानरूप मैल धोकर सुख अवस्थाको प्राप्त भया, समस्त भाइयोंने उसको राक्षसोंका शिखर जाना। वैश्रवणकी असवारीका पुष्पक नामा विमान महा मनोग्य है, रत्नोंकी ज्योतिके अंकुरे छुट रहे हैं झरोखे ही हैं नेत्र जिसके, निर्मल कांतिके धारणहारे, महा मुक्ताफलकी झालरोंसे मानों अपने स्वामीके वियोगसे अश्रुपात्र ही डारे है अर पद्मरागमणियोंकी प्रभासे आरक्तताको धारे है मानो यह वैश्रवणका हृदय ही रावणके किये घावसे लाल हो रहा है अर इंद्र नील मणियोंकी प्रभा कैसे अतिश्याम सुन्दरताको धरे है मानो स्वामीके शोकसे सांउला होय रहा है, चैत्यालय बन बापी सरोवर अनेक मन्दिरोंसे मण्डित मानो नगरका आकार ही है। रावणके हाथके नाना प्रकारके घावसे मानों घायल हो रहा है, रावणके मन्दिर समान ऊंचा जो वह विमान उसको रावणके सेवक रावणके समीप लाए। वह विमान आकाशका मंडन है। इस विमानको बैरीके भंगका चिह्न जान रावणने आदरा अर किसीका कुछ भी न लिया। रावणके किसी वस्तुकी कमी नहीं। विद्यामई अनेक विमान हैं तथापि पुष्पक विमानमें विशेष अनुरागसे चढे। रत्नश्रवा तथा केकसी माता अर समस्त प्रधान सेनापति तथा भाई बेटों सहित आप पुष्पक विमानमें आरूढ भया अर पुरजन नाना प्रकारके बाहनों पर आरूढ भए पुष्पकके मध्य महा कमलवन है तहां आप मन्दोदरी आदि समस्त राजलोकों सहित आप विराजे। कैसे हैं रावण? अखंड है गति जिनकी अपनी इच्छासे आश्चर्यकारी आभूषण पहरे है अर श्रेष्ठ विद्याधरी चमर ढोरे हैं मलयागिरिके चन्दनादि अनेक सुगंध अंगपर लगी हैं, चंद्रमाकी कांति समान उज्ज्वल छत्र फिरे हैं मानो शत्रुओंके भंगसे जो यश विस्तारा है उस यशसे शोभा-

यमान है। धनुष त्रिशूल खड्ग सेल पाश इत्यादि अनेक हथियार जिनके हाथमें ऐसे जो सेवक तिनकर संयुक्त है। महा भक्ति युक्त हैं अर अद्भुत कर्मके करणहारे हैं तथा बडे बडे विद्याधर राजा सामन्त शत्रुओंके समूहके क्षय करणहारे अपने गुणनिकरि स्वामीके मनके मोहनहारे महा विभवसे शोभित तिनसे दशमुख मण्डित है. परम उदार सूर्यकासा तेज धारता पूर्वोपार्जित पुण्यका फल भोगता हुआ, दक्षिणके समुद्रकी तरफ जहां लंका है इसी ओर इंद्रकी सी विभूतिसे चला। कुम्भकरण भाई हस्तीपर चढे, विभीषण रथपर चढे, अपने लोगों सहित महा विभूतिसे मण्डित रावणके पीछे चले। राजामय मन्दोदरीके पिता दैत्यजातिके विद्याधरोंके अधिपति भाइयों सहित अनेक सामंतोंसे युक्त तथा मारीच अंवर विद्युतवज्र बज्रोदर बुधवज्राक्षक्रूर क्रूरनक्र सारन सुनय शुक इत्यादि मंत्रियों सहित महा विभूतिकर मंडित अनेक विद्याधरोंके राजा रावणके संग चले। केएक सिंहोंके रथ चढे, केएक अष्टापदोंके रथपर चढकर बन पर्वत समुद्रकी शोभा देखते पृथ्वी पर विहार किया अर समस्त दक्षिण दिशा वश करी।

अथानन्तर एक दिन रावणने अपने दादा सुमालीसे पूछा—'हे प्रभो! हे पूज्य! इस पर्वतके मस्तक पर सरोवर नहीं सो कमलोंका बन कैसे फूल रहा है। यह आश्चर्य है अर कमलोंका वन चंचल होता है यह निश्चल है।' इस भांति सुमालीसे पूछा। कैसा है रावण? विनयकर नम्रीभूत है शरीर जिसका तब सुमाली 'नमः सिद्धेभ्यः' मंत्र पढकर कहते भए—हे पुत्र! यह कमलोंके वन नहीं, इस पर्वतके शिखरपर पद्मरागमणिमयी हरिषेण चक्रवर्तीके कराए चैत्यालय हैं। जिनपर निर्मल ध्वजा फरहरे हैं। अर नाना प्रकारके तोरणोंसे शोभे है। हरिषेण महा सज्जन पुरुषोत्तम थे जिनके गुण कहनेमें न आवें हे पुत्र! तू उतरकर पवित्र मन होकर नमस्कार कर। तब रावणने बहुत विनयसे जिन मंदिरोंको नम-

स्कार किया अर बहुत आश्चर्यको प्राप्त भया अर सुमालीसे हरिषेण चक्रवर्तीकी कथा पूछी । 'हे देव ! आपने जिसके गुण वर्णन किए ताकी कथा कहो ।' यह विनती करी । कैसा है रावण ? वैश्रवणका जीतनहारा बडेनिविषै है अति विनय जाकी । तब सुमाली कहै है—'हे दशानन ! तैं भली पूछी । पापका नाश करणहारा हरिषेणका चारित्र सो सुन । कंपिल्यानगरमें राजा सिंहध्वज उनके राणी वप्रा जो महा गुणवती सौभाग्यवती राजाके अनेक राणी थीं परंतु राणी वप्रा उनमें तिलक थी । उसके हरिषेण चक्रवर्ती पुत्र भए । चौसठ शुभ लक्षणोंसे युक्त; पाप कर्मके नाशनहारे ते इनकी माता वप्रा महा धर्मवती सदा अष्टानिकाके उत्सवमें रथयात्रा किया करै इसकी सौकन राणी महालक्ष्मी सौभाग्यके मदसे कहती भई कि पहिले हमारा ब्रह्मरथ नगरमें भ्रमण हुआ करैगा पीछे तुम्हारा । यह बात सुन राणी वप्रा हृदयमें खेद भिन्न भई मानों वज्रपातसे पीडी गई । उसने ऐसी प्रतिज्ञा करी कि हमारे वीतरागका रथ अठाइयोंमें पहिले निकसे तो हमको आहार करना अन्यथा नहीं, ऐसा कहकर सर्व काज छोड दिया, शोकसे मुख मुरझाय गया, अश्रुपातकी बूंद आंखोंसे डालती हुई । माताको देखकर हरिषेणने कहा—'हे माता ! अब तक तुमने स्वप्नमात्रमें भी रुदन न किया, अब यह अमंगल कार्य क्यों करो हो ।' तब माताने सर्व वृत्तांत कहा । सुनकर हरिषेणने मनमें सोची कि क्या करूं ? एक ओर पिता एक ओर माता । मैं संकटमें पडा हूं अर मैं माताके अश्रुपात देखनेको समर्थ नहीं हूं सो उदास हो घरसे निकस वनको गए तहां मिष्ट फलोंके भक्षण करते अर सरोवरोंका निर्मल जल पीते निर्भय विहार किया । इनका सुंदर रूप देखकर निर्दयी पशु भी शांत हो गए । ऐसे भव्य जीव किसको प्यारे न हों तहां वनमें भी माताका रुदन याद आवै तब इनको ऐसी बाधा उपजे कि वनकी रमणीकताका सुख भूल जावै सो हरिषेण वनमें विहार करते शतमन्यु नामा तापसके आश्रममें गए । कैसा है आश्रम ? जीवोंका आश्रय है जहां ।

अथानन्तर कालकल्प नामा राजा अति प्रबल जिसका बडा तेज अर बडी फौज उसने आनकर चंपा नगरी घेरी सो तहां राजा जनमेजय सो जनमेजय अर कालकल्पमें युद्ध भया । आगे जनमेजयने महलमें सुरंग बना राखी थीं सो उस मार्ग होकर जनमेजयकी माता नागमती अपनी पुत्री मदनावली सहित निकसी अर शतमन्यु तापसके आश्रममें आई। सो नागमतीकी पुत्री हरिषेणका रूप देखकर कामके बाणोंसे बींधी गई। कैसे हैं कामके बाण? शरीरमें विकलताके करणहारे हैं। यह वात नागमती कहती भई—हे पुत्री! तू विनयवान होकर सुन कि मुनिनें पहिले ही कहा था कि यह कन्या चक्रवर्तीकी स्त्रीरत्न होयगी सो यह चक्रवर्ती तेरे बर हैं। यह सुनकर अति आसक्त भई तब तापसीने हरिषेणको निकास दिया क्योंकि उसनें विचारी कि कदाचित् इनके संसर्ग होय तो इस वातसे हमारी अकीर्ति होयगी । सो चक्रवर्ती इनके आश्रमसे और ठौर गए अर तापसीको दीन जान युद्ध न किया परंतु चित्तमें वह कन्या बसी रही सो इनको भोजनमें अर शयनमें किसी प्रकार स्थिरता नहीं । जैसे भ्रामरी विद्यासे कोऊ भ्रमै तैसे ये पृथ्वीमें भ्रमण करते भए । ग्राम नगर वन उपवन लताओंके मंडपमें इनको कहीं भी चैन नहीं, कमलोंके वन दावानल समान दीखै अर चंद्रमाकी किरण वज्रकी सूई समान दीखै अर केतकी बरछीकी अणी समान दीखै, पुष्पोंकी सुगंध मनको न हरै, चित्तमें ऐसा चिंतवते भए जो मैं यह स्त्रीरत्न बरूं तो मैं जायकर माताका भी शोक संताप दूर करूं। नदियोंके तटपर अर वनमें ग्राममें नगरमें पर्वतपर भगवानके चैत्यालय कराऊं। यह चिंतवन करते हुवे अनेक देश भ्रमते सिंधुनंदन नगरके समीप आए । कैसे हैं हरिषेण? महा बलवान अति तेजस्वी हैं वहां नगरके बाहिर अनेक स्त्री क्रीडाको आई हुतीं एक अंजनगिरि समान हाथी मद झरता स्त्रियोंके समीप आया । महावतने हेला मारकर स्त्रियोंसे कही 'जो यह हाथी मेरे वश नहीं, तुम शीघ्र ही भागो । तब वह स्त्रियां हरिषेणके शरणे आई । हरिषेण परमदयालु हैं

महायोधा हैं। वह स्त्रियोंको पीछे करके आप हाथीके सम्मुख भए अर मनमें विचारी जो वहां तो वे तापस दीन थे तातें उनसे मैंने युद्ध न किया वे मृग समान थे परंतु यहां यह दुष्ट हस्ती मेरे देखते स्त्री बालादिकको हने अर मैं सहाय न करूं सो यह क्षत्री वृत्ति नहीं, यह हस्ती इन बालादिक दीन जनको पीडा देनेको समर्थ है जैसे बैल सींगोंसे बंमईको खोदे परंतु पर्वतके खोदनेको समर्थ नहीं, अर कोई बाणसे केलेके वृक्षको छेदे परंतु शिलाको न छेद सके तैसे ही यह हाथी योधावोंको उडायवे समर्थ नहीं, तब आप महावतको कठोर वचनसे कही कि हस्तीको यहांसे दूर कर, तब महावतने कही तू भी बडा ढीठ है हाथीको मनुष्य जाने है, हाथी आप ही मस्त होय रहा है तेरी मौत आई है अथवा दुष्ट ग्रह लगा है। तू यहांसे वेग भाग, तब आप हंसे अर स्त्रियोंको तो पीछे कर दिया अर आप ऊपरको उछल हाथीके दांतोंपर पग देय कुम्भस्थलपर चढे अर हाथीसे बहुत क्रीडा करी। कैसे हैं हरिषेण ? कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके अर उदार है वक्षस्थल जिनका अर दिग्गजोंके कुम्भस्थल समान हैं कांधे जिनके अर स्तम्भ समान हैं जांघ जिनकी। तब यह वृत्तांत सुन सब नगरके लोग देखनेको आए। राजा महल ऊपर चढा देख रहा था सो आश्चर्यको प्राप्त भया। अपने परिवारके लोग भेज इनको बुलाया। यह हाथीपर चढे नगरमें आए। नगरके नर नारी समस्त इनको देख २ मोहित होय रहे, क्षणमात्रमें हाथीको निर्मद किया। यह अपने रूपसे समस्तका मन हरते नगरमें आए। राजाकी सौ कन्या परणी, सर्व लोकमें हरिषेणकी कथा भई राजासे अधिकार सम्मान पाय सर्व वातोंसे सुखी है तो भी तपसियोंके वन में जो स्त्री देखी थी उस विना एक रात्रि वर्ष समान बीते। मनमें चिंतवते भये जो मुझ विना वह मृगनयनी उस विषम वनमें मृगी समान परम आकुलताको प्राप्त होयगी तातें मैं उसके निकट शीघ्र ही जाऊं यह विचारते रात्रीविषे निद्रा न आती, जो कदाचित् अल्प निद्रा आई तो भी स्वप्नमें उसहीको देखा। कैसी है वह, कमल सारिखे हैं नेत्र जिसके मानों इनके मनहीमें बस रही है।

अथानन्तर विद्याधर राजा शक्रधनु उसकी पुत्री जयचन्द्रा उसकी सखी वेगवती वह हरिषेणको रात्रिविषे उठायकर आकाशमें ले चली। निद्राके क्षय होनेपर आपको आकाशमें जाता देख कोपकर उससे कहते भए—'हे पापिनी! हमको कहां ले जाय है। यद्यपि यह विद्याबलकर पूर्ण है तो भी इनको क्रोधरूपी मुष्टि बांधे होठ डसते देखकर डरकर इनसे कहती भई हे प्रभु जैसे कोई मनुष्य जिस वृक्षकी शाखापर बैठा होय उसहीको काटे तो क्या यह सयानपना है? तैसे मैं तुम्हारी हितकारिणी अर तुम मुझे हतो यह उचित नहीं, मैं तुमको उसके पास ले जाऊं हूं जो निरंतर तुम्हारे मिलापकी अभिलाषिनी है। तब यह मनमें विचारते भए कि यह मिष्टभाषिणी परपीडाकारिणी नहीं है इसकी आकृति मनोहर दीखे है अर आज मेरी दाहिनी आंख भी फडके है इसलिए यह हमारी प्रियाकी संगमकारिणी है फिर इसको पूछा—'हे भद्रे! तू अपने आवनेका कारण कह।' तब वह कहै है—'सूर्योदय नगरमें राजा शक्रधनु राणी धी अर पुत्री जयचन्द्रा वह गुण रूपके मदसे महा उन्मत्त है कोई पुरुष उसकी दृष्टिमें न आवे पिता जहां परणाया चाहे सो यह माने नहीं। मैंने जिस जिस राजपुत्रोंके रूप चित्रपटपर लिखे दिखाए उनमें कोई भी उसके चित्तमें न रुचे। तब मैंने तुम्हारे रूपका चित्राम दिखाया तब वह मोहित भई अर मुझको ऐसा कहती भई कि मेरा इस नरसे संयोग न होय तो मैं मृत्युकूं प्राप्त होऊंगी अर अधम नरसे सम्बन्ध न करूंगी तब मैंने उसको धीर्य बन्धाया अर ऐसी प्रतिज्ञा करी—जहां तेरी रुचि है मैं उसे न लाऊं तो अग्निमें प्रवेश करूंगी। अति शोकवंत देख मैंने यह प्रतिज्ञा करी। उसके गुणसे मेरा चित्त हरा गया है सो पुण्यके प्रभावसे आप मिले, मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण भई ऐसा कह सूर्योदय नगरमें ले गई। राजा शक्रधनुसे व्योरा कहा सो राजाने अपनी पुत्रीका इनसे पाणिग्रहण कराया अर वेगवतीका बहुत यश माना इनका विवाह देख परिजन अर पुरजन हर्षित भए। कैसे हैं ये वर कन्या? अद्भुत रूपके

निधान हैं इनके विवाहकी वार्त्ता सुन कन्याके मामाके पुत्र गंगाधर महीधर क्रोधायमान भए जो कन्याने हमको तजकर भूमिगोचरी वरा। यह विचारकर युद्धको उद्यमी भए। तब राजा शक्रधनु हरिषेणसे कहता भया कि मैं युद्धमें जाऊं, आप नगरमें तिष्ठो। वे दुराचारी विद्याधर युद्ध करनेको आए हैं। तब हरिषेण ससुरसे कहते भए कि जो पराए कार्यको उद्यमी होय वह अपने कार्यको कैसे उद्यम न करे। तातैं हे पूज्य! मोहि आज्ञा करो मैं युद्ध करूंगा। तब ससुरने अनेक प्रकार निवारण किया पर यह न रहे। नाना प्रकार हथियारोंसे पूर्ण ऐसे रथपर चढे जिसमें पवनगामी अश्व जुरे अर सूर्यवीर्य सारथी हांके इनके पीछे चडे २ विद्याधर चले। कई हाथियोंपर चढे, कई अश्वोंपर चढे, कई रथोंपर चढे, परस्पर युद्ध भया। कछुयक शक्रधनुकी फौज हटी तब आप हरिषेण युद्ध करनेको उद्यमी भए। सो जिस ओर रथ चलाया उस ओर घोडा हस्ती मनुष्य रथ कोऊ टिकै नहीं। सब बाणोंकर बींधे गए। सब कांपते युद्धसे भागे। महा भयभीत कहते भए 'गंगाधर महीधरने बुरा किया जो ऐसे पुरुषोत्तमसे युद्ध किया। यह साक्षात् सूर्य समान है, जैसे सूर्य अपनी किरण पसारैं, तैसे यह बाणोंकी वर्षा करै है।' अपनी फौज हटी देख गंगाधर महीधर भी भाजे, तब इनके क्षणमात्रमें रत्न भी उत्पन्न भए दशवां चक्रवर्ती महा प्रतापको धरे पृथ्वीपर प्रगट भया। यद्यपि चक्रवर्तीकी विभूति पाई परंतु अपनी स्त्री रत्न जो मदनावली उसके परणवेकी इच्छासे द्वादश योजन परिमाण कटक साथ ले राजाओंको निवारते तपस्वियोंके वनके समीप आए। तपस्वी वनफल लेकर आय मिले पहिले इनका निरादर किया हुता इससे शंकावान थे सो इनको अति विवेकी पुण्याधिकारी देख हर्षित भए। शतमन्युका पुत्र जो जनमेजय अर मदनावलीकी माता नागमती उन्होंने मदनावलीको चक्रवर्तीको विधिपूर्वक परणाई तब आप चक्रवर्ती विभूतिसहित कम्पिल्या नगरमें आए बत्तीस हजार मुकुटबंध राजाओंने संग आकर माताके चरणारविंदको हाथ

जोड नमस्कार किया, माता वप्रा ऐसे पुत्रको देख ऐसी हर्षित भई जो गातमें न समावे, हर्षके अश्रुपात कर व्याप्त भए हैं लोचन जिसके तब चक्रवर्तीने जब अष्टानिका आई तो भगवानका रथ सूर्यसे भी महा मनोज्ञ काढा, अष्टानिकाकी यात्रा करी। मुनि श्रावकोंको परम आनन्द भया बहुत जीव जिन धर्मको अंगीकार करते भए। सो यह कथा सुमालीने रावणसों कही। हे पुत्र! उस चक्रवर्तीने भगवानके मंदिर पृथ्वीपर सर्वत्र पुर ग्रामादिमें तथा पर्वतोंपर तथा नदियोंके तटपर अनेक चैत्यालय रत्नमई स्वर्णमयी कराए। वे महापुरुष बहुत काल चक्रवर्तीकी संपदा भोग मुनि होय महा तपकर लोक शिखर सिधारे यह हरिषेणका चरित्र रावण सुनकर हर्षित भया। सुमालीकी बारम्बार स्तुति करी अर जिन मंदिरोंका दर्शनकर रावण डेरेमें आया, डेरा सम्मेदशिखरके समीप भया।

अथानन्तर रावणको दिग्विजयमें उद्यमी देख मानों सूर्य भी भयसे दृष्टिगोचर अस्त भया, संध्याकी ललाई समस्त भूमण्डलमें व्याप्त भई मानों रावणके अनुरागसे जगत हर्षित भया फिर संध्या मिटकर रात्रिका अन्धकार फैला मानों अंधकार प्रकाशके भयसे दशमुखके शरण आया बहुरि रात्रि व्यतीत भई अर प्रभात भया रावण प्रभातकी क्रियाकर सिंहासनपर विराजे अकस्मात् एक ध्वनि सुनी मानों वर्षाकालका मेघ ही गाजा जिससे सकल सेना भयभीत भई, कटकके हाथी जिन वृक्षोंसे बंधे थे उनको भंग करते भए, कनसेरे ऊंचेकर तुरंग हींसते भए, तब रावण बोले—'यह क्या है? यह मरणेको हमारे ऊपर कौन आया? यह वैश्रवण आया अथवा इंद्रका प्रेरा सोम आया अथवा हमको निश्चल तिष्ठे देख कोई और शत्रु आया!' तब रावणकी आज्ञा पाय प्रहस्त सेनापति उस ओर देखनेकों गया अर पर्वतके आकार मदोन्मत्त अनेक लीला करता हाथी देखा।

तब आयकर रावणसे विनती करी कि हे प्रभो! मेघकी घटा समान हाथी है इसको इंद्र भी पकडने

को समर्थ न भया। तब रावण हंसकर बोले—हे प्रहस्त! अपनी प्रशंसा करणी योग्य नहीं, मैं इस हाथी को एक क्षणमात्रमें वश करूंगा। यह कहकर पुष्पक विमानमें चढकर हाथी देखा, भले २ लक्षणोंसे मंडित इन्द्रनीलमणि समान अति सुन्दर जिसका शरीर है, कमल समान आरक्त तालुवा है, अर महा मनोहर उज्ज्वल दीर्घगोल दांत हैं नेत्र कछु इक पीत हैं, पीठ सुन्दर है, अगला अंग उतंग है, अर लम्बी पूछ है, अर बडी सूंड है, अत्यन्त स्निग्ध सुन्दर नख हैं, गोल कठोर महा सुन्दर कुम्भस्थल है, प्रबल चरण हैं माधुर्यताकोलिए महावीर गम्भीर है गर्जना जिसकी, अर क्षरते हुवे मदकी सुगन्धतासे गुंजार करे हैं भ्रमर जापर दुदुम्भी बाजोंकी ध्वनि समान गम्भीर है नाद जाका अर ताड वृक्षके पत्र समान कर्ण उनको हलावता, मन अर नेत्रोंको हरनहारी सुन्दर लीलाको करता, रावणने देखा। देखकर बहुत प्रसन्न भया, हर्षकर रोमांच होय आए। तब पुष्पक नामा विमानसे उतर गाढी कमर बांधकर उसके आगे जाय शंख पूरा। जिसके शब्दसे दशोंदिशा शब्द रूप भई। तब शंखका शब्द सुन चित्तमें क्षोभको पाय हाथी गरजा अर दशमुखके सम्मुख आया। बलकर गर्भित रावणने अपने उत्तरासनका गेंद बनाय शीघ्र ही हाथीकी ओर फेंका। रावण गजकेलिमें प्रवीण है सो हाथी तो गेंदके सूंघनेको लगा अर रावणने झटसे ऊपर उछल कर भ्रमरोंकी ध्वनिसे शोभित गजके कुम्भस्थल पर हस्ततल मारा, हाथी सूंडसे पकडनेका उद्यम करने लगा। तब रावण अति शीघ्रताकर दोऊ दांतके बीच होय निकस गए, हाथीसे अनेक क्रीडा करी, दशमुख हाथीकी पीठपर चढ बैठे, हाथी विनयवान शिष्यकी न्याईं खडा होय रहा, तब आकाशसे रावण पर पुष्पोंकी वर्षा भई अर देवोंने जयजयकार शब्द किये। अर रावणकी सेना बहुत हर्षित भई, रावणने हाथीका त्रैलोक्य मंडन नाम धरा, इसको पाय रावण बहुत हर्षित भया। रावणने हाथीके लाभका बहुत उत्सव किया अर सम्मेद शिखर पर्वतपर जाय यात्रा करी। विद्याधरोंने

नृत्य किया। वह रात्रि वहां ही रहे। प्रभात हुवा, सूर्य उगा, सो मानों दिवसने मंगलका कलश रावणको दिखाया। कैसा है दिवस ? सेवाकी विधिमें प्रवीण है। तब रावण डेरामें आय सिंहासनपर विराजे। हाथीकी कथा सभामें कहते भए।

ता समय एक विद्याधर आकाशके मार्ग रावणके निकट आया, अत्यन्त कम्पायमान जिसके पसेवकी बूंद झरे हैं, घायल हुआ बहुत खेदखिन्न अश्रुपात डारता, जर्जरा तनु जाका, हाथ जोड नमस्कार कर बिनती करता भया। हे देव ! आज दशवां दिन है राजा सूर्यरज अर रक्षरज वानरवंशी विद्याधर तुम्हारे बलसेही है बल जिनमें सो आपका प्रताप जान अपनी किहकू नगरी लेनेके अर्थ अलंक नगर जो पाताललंका वहांसे उत्साहसे निकसे। दोनों भाई तुम्हारे बलसे महाअभिमान युक्त जगतको तृण समान माने हैं सो उन्होंने किहकूपुर जाय घेरा। वहां इन्द्रका यम नामा दिग्पाल सो उसके योधा युद्ध करनेको निकसे हाथमें हैं आयुध जनके, वानरवंशियोंके अर यमके लोकोंमें महायुद्ध भया। परस्पर बहुत लोक मारे गए, तब युद्धका कलकलाट सुन यम आप निकसा, कैसा है यम ? महा क्रोधकर पूर्ण अतिभयंकर, न सहा जाय है तेज जाका, सो यमके आवते ही वानरवंशियोंका बल भागा। अनेक आयुधोंसे घायल भए। यह कथा कहता कहता वह विद्याधर मूर्छाको प्राप्त हो गया। तब रावणने शीतोपचारकर सावधान किया अर पूछा—'आगे क्या भया ? तब वह विश्राम पाय हाथ जोड फिर कहता भया—'हे नाथ ! सूर्यरजका छोटा भाई रक्षरज अपने दलको व्याकुल देख आप युद्ध करने लगे। सो यमके साथ बहुत देरतक युद्ध किया। यम अतिबली उसने रक्षरजको पकड लिया तब सूर्यरज युद्ध करने लगे, बहुत युद्ध भया यमने आयुधका प्रहार किया सो राजा घायल होय मूर्छित भए तब अपने पक्षके सामंतोंने राजाको उठाय मेघला वनमें ले जाय शीतोपचार कर सावधान किये। यम महापापीने अपना

यमपना सत्य करता संता एक बंदी गृह बनाया है उसका नरक नाम धरा है, तहां वैतरनी आदि सर्व विधि बनाई हैं जो जो उसने जीते अर पकडे वे सर्व उस नरकमें बंद किए हैं सो उस नरकमें कैयक तो मर गए, कैयक दुख भोगे हैं, वहां उस नरकमें सूर्यरज अर रक्षरज ये भी दोनों भाई हैं। यह वृत्तांत मैं देखकर बहुत व्याकुल होय आपके निकट आया हूं। आप उनके रक्षक हो अर जीवनमूल हो। उनके आप ही विश्राम हैं अर मेरा नाम शाखावली है, मेरा पिता रणदक्ष, माता सुश्रोणी, मैं रक्षरजका प्यारा चाकर, सो आपको यह वृत्तान्त कहनेको आया हूं मैं तो आपको जताय देय निश्चिन्त भया अपने पक्षको दुःख अवस्थामें जान आपको जो कर्त्तव्य होय सो करो।

तब रावणने उसे दिलासा दिया अर उसके घावका यत्न कराया अब ततकाल सूर्यरज रक्षरजके छुडावनेको महाक्रोधकर यमपर चले अर मुसकराय कर कहते भए—कहा यम रंक हमसे युद्ध कर सके, जो मनुष्य उसने वैतरणी आदि क्लेशके सागरमें डार राखे हैं, मैं आज ही उनको छुडाऊंगा अर उस पापीने जो नरक बना राखा है उसे विध्वस करूंगा। देखो दुर्जनकी दुष्टता ! जीवोंको ऐसे संताप देहै। यह विचारकर आप ही चले। प्रहस्त सेनापति आदि अनेक राजा बडी सेनासे आगे दौडे। नानाप्रकारके बाहनोंपर चढे शस्त्रोंके तेजसे आकाशमें उद्योत करते अनेक बादित्रोंके नाद होते महा उत्साहसे चले, विद्याधरोंके अधिपति किहकूंपुरके समीप गए। सो दूरसे नगरके घरोंकी शोभा देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए, किहकूंपुरकी दक्षिण दिशामें यम विद्याधरका बनाया हुवा नरक देखा जहां एक ऊंचा खाडा खोद राखा है अर नरककी नकल बनाय राखी है। अनेक नरोंके समूह नरकमें राखे हैं। तब रावणने उस नरकके रखवारे जे यमके किंकर हुते कूटकर काढ दिये अर सर्व प्राणी सूर्यरज रक्षरज आदि दुख सागरसे निकासे। कैसे हैं रावण ? दीननके बंधु दुष्टोंको दंड देनहारे हैं। वह सर्व नरक स्थान ही दूर

किया। यह वृत्तांत परचक्रके आवनेका सुन यम बडे आडंबरसे सर्व सेनासहित युद्ध करनेको आया। मानो समुद्र ही क्षोभको प्राप्त भया। पर्वत सारिखे अनेक गज मदधारा झरते भयानक शब्द करते, अनेक आभूषणयुक्त, उनपर महा योधा चढे अर तुरंग पवन सारिखे चंचल जिनकी पूंछ चमर समान हालती अनेक आभूषण पहिरे, उनकी पीठ पर महाबाहू सुभट चढे अर सूर्यके रथ समान अनेक ध्वजाओंकी पंक्तिसे शोभायमान, जिनमें बडे बडे सामंत बगतर पहरे, शस्त्रोंके समूह धारें बैठे, इत्यादि महा सेना सहित यम आया। तब बिभीषणने यमकी सर्व सेना अपने बाणोंसे हटाई। कैसे हैं बिभीषण? रणविषै प्रवीण रथ पर आरूढ हैं। विभीषणके बाणोंसे यम किंकर पुकारते हुये भागे। यम, किंकरोंके भागने अर नारकियोंके छुडानेसे महा क्रूर होकर बिभीषण पर रथ चढा धनुषको धारे आया। ऊंची है ध्वजा जाकी, काले सर्प समान कुटिल केश जाके, भ्रकुटी चढाए लाल हैं नेत्र जाके, जगत रूप ईंधनके भस्म करणेको अग्नि समान आप तुल्य जो बडे बडे सामंत उन कर मंडित युद्ध करणेको अपने तेजसे आकाशमें उद्योत करता हुआ आया। तब रावण यमको देख बिभीषणको निवार आप रण संग्राममें उद्यमी भए। यमके प्रतापसे सर्व राक्षस सेना भयभीत होय रावणके पीछे आय गई। कैसा है यम? अनेक आडम्बर डारे है, भयानक है मुख जाका, रावण भी रथपर आरूढ होकर यमके सनमुख भए। अपने बाणोंके समूह यमपर चलाए। इन दोनोंके बाणोंसे आकाश आच्छादित भया, कैसे हैं बाण? भयानक है शब्द जिनका, जैसे मेघोंके समूहसे आकाश व्याप्त होय, तैसे बाणोंसे आच्छादित होगया। रावणने यमके सारथीको प्रहार किया सो सारथी भूमिमें पडा अर एक बाण यमको लगाया सो यम भी रथसे गिरपडा। तब यम रावणको महा बलवान देख दक्षिण दिशाका दिग्पालपणा छोड भागा। कुटुम्बको लेकर परिजन पुरजन सहित रथुनूपुरमें गया। इंद्रसे नमस्कार कर बीनती करता भया।

"हे देव ! आप कृपा करो, अथवा कोप करो, आजीविका राखो तथा हरो। तुम्हारी जो वांछा होय सो करो। यह यमपणा मुझसे न होय। मालीके भाई सुमालीका पोता दशानन महा योधा, जिसने पहिले तो वैश्रवण जीता वह तो मुनि होगया अर मुझे भी उसने जीता सो मैं भागकर तुम्हारे निकट आया हूं। उसका शरीर वीर रससे बना है। वह महात्मा हैं, वह जेष्ठके मध्यान्हका सूर्य समान कभी भी न देखा जाय है।" यह वार्ता सुन कर रथनूपुरका राजा इंद्र संग्रामको उद्यमी भया तब मांत्रियोंके समूहने मने कीया. कैसे हैं मन्त्री ? वस्तुका यथार्थ स्वरूप जाननेहारे हैं। तब इंद्र समझकर बैठ रहा। इंद्र यमका जमाई है, उसने यमको दिलासा दिया कि तुम बडे योधा हो, तुम्हारे योधापनेमें कमी नहीं। परंतु रावण प्रचंड पराक्रमी है यातें तुम चिंता न करो। यहां ही सुखसे तिष्ठो ऐसा कहकर इनका बहुत सन्मानकर राजा इंद्र राजलोकमें गए अर काम भोगके समुद्रमें मग्न भए। कैसा है इंद्र? बडा है विभूतिका मद जाको रावणके चरित्रके जो जो वृत्तान्त यमने कहे हुते वैश्रवणका वैराग्य लेना, अर अपना भागना वह इंद्रको ऐश्वर्यके मदमें भूल गए जैसे अभ्यास विना विद्या भूल जाय अर यम भी इंद्रका सत्कार पाय अर असुर संगीत नगरका राज पाय मान भंगका दुःख भूल गया। मनमें विचारने लगा कि—मेरी पुत्री महा रूपवन्ती सो तो इंद्रके प्राणोंसे भी प्यारी है अर मेरा अर इंद्रका बडा सम्बन्ध है सो मेरे क्या कमी है ?

अथानंतर रावणने किहकंधपुर तो सूर्यरजको दीया अर किहकुपुर रक्षरजको दीया। दोनोंको सदाके हितु जान बहुत आदर किया। रावणके प्रसादसे बानरबंशी सुखसे तिष्ठे। रावण सब राजों का राजा महा लक्ष्मी अर कीर्तिकों धरे दिग्विजय करे। बडे २ राजा दिनप्रति आय आय मिलें सो रावणका कटकरूप समुद्र अनेक राजावोंकी सेनारूपी नदीसे पूरित होता भया अर दिन दिन विभव अधिक होता भया जैसे शुक्लपक्षका चन्द्रमा दिन दिन कलाकर बढ़ता जाय तैसे रावण दिन

दिन वढता जाय। पुष्पक नामा विमानपर आरूढ होय त्रिकूटाचलके शिखर पर आग तिष्ठा। केसा है। विमान ? रत्नोंकी मालासे मण्डित है अर ऊंचे शिखरोंकी पंक्तिसे विराजे है जो शीघ्र जहां चाहे वहां जाय ऐसे विमानका स्वामी रावण महा धीर्यता कर मण्डित पुण्यके फलका है उदय जाके। जब रावण त्रिकूटाचलके शिखर सिधारे सब बातोंमें प्रवीण तब राक्षसोंके समूह नाना प्रकरके वस्त्राभूषणकर मण्डित परमहर्षकूं प्राप्त भये। सर्व राक्षस रावणको ऐसे मंगल वचन गम्भीर शब्द कहते भये "हे देव! तुम जयवन्त होवो, आनन्दको प्राप्त होवो, चिरकाल जीवो, वृद्धिको प्राप्त होवो, उदयको प्राप्त होवो" निरन्तर ऐसे मंगल वचन गम्भीर शब्द कर कहते भए। कई एक सिंह शारदूलोंपर चढे, कई एक हाथी घोडों पर चढे, कई एक हंसों पर चढे, प्रमोदकर फूल रहे हैं नेत्र जिनके, देवों केसा आकार धरे, जिनका तेज आकाश विषै फैल रहा है बन पर्वत अन्तरद्वीपके विद्याधर राक्षस आए समुद्रको देखकर विस्मयको प्राप्त भए। केसा है समुद्र ? नहीं दीखे है पार जिसका, अति गम्भीर है महामत्स्यादि जलचरों कर भरा है, तमाल बन समान श्याम है पर्वत समान ऊंची ऊंची उठे हैं लहरके समूह जिसविषै, पाताल समान ओंडा, अनेक नाग नागनिकरि भयानक नाना प्रकारके रत्नोंकेसमूह कर शोभायमान नाना प्रकारकी अद्भुत चेष्टाको धारे।

अर लंकापुरी अति सुन्दर हुती ही अर रावणके आनेसे अधिक समारी गई है। अति देदीप्यमान रत्नोंका कोट है, गम्भीर खाईसे मण्डित है, कुंदके पुष्प समान अति उज्ज्वल स्फटिक माणिके महल हैं जिनमें। इंद्र नीलमणियोंकी जाली शोभे हैं अर कहूं इक पद्मराग मणियोंके अरुण महिल हैं, इत्यादि अनेक मणियोंके मन्दिरोंसे लंका स्वर्गपुरी समान है। नगरी तो सदा ही रमणीक है परन्तु धनीके आनेसे अधिक बनी है रावणने अतिहर्षसे लंकामें प्रवेश किया। केसा है रावण ? जाकों काहूकी

शंका नहीं, पहाड समान हाथी तिनकी अधिक शोभा बनी है अर मन्दिर समान रत्नमई रथ बहुत समारे गए हैं, अश्वोंके समूह हींसते चलायमान चमर समान हैं पूछ जिनकी अर विमान अनेक प्रभाको धरें इत्यादि महा विभूतिसे रावण आया। चन्द्रमाके समान उज्वल सिरपर छत्र फिरते अनेक ध्वजा पताका फहरती बंदीजनके समूह विरद बखानते महामंगल शब्द होते बीण बांसुरी शंख इत्यादि अनेक वादित्र बाजते दशोंदिशा अर आकाश शब्दायमान हो रहा है इस विधि लंकामें पधारे। तब लंकाके लोग अपने स्वामीका आगमन देख दर्शनके लालसी हाथमें अर्घ लीए पत्र फल पुष्प रत्न लीए अनेक सुन्दर वस्त्र आभूषण पहरे राग रंग सहित रावणके समीप आए, वृद्धोंको आगे कर तिनके पीछे जाय नमस्कार कर कहते भए 'हे नाथ! लंकाके लोग अजितनाथके समयसे आपके घरके शुभ चिन्तक हैं सो स्वामीको अति प्रबल देख अति प्रसन्न भए हैं भांति भांतिकी आसीस दीनी तब रावणने बहुत दिलासा देकर सीख दीनी तब रावणके गुण गावते अपने २ घरको गये॥

अथानन्तर रावणके महलमें कौतुकयुक्त नगरकी नरनारी अनेक आभूषण पहिरें रावणके देखने की इच्छासे सर्व घरके कार्य छोड २ पृथ्वीनाथके देखनेको आई। रावण वैश्रवणके जीतनेहारे तथा यम विद्याधरके जीतनेहारे अपने महलमें राजलोकसहित सुखसों तिष्ठे, कैसा है महल? चूडामणि समान मनोहर है और भी विद्याधरोंके अधिपति यथायोग्य स्थानकविषै आनन्दसे तिष्ठे देवन समान हैं चरित्र जिनके॥

अथानन्तर गोतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे श्रेणिक! जो उज्ज्वल कर्मके करणहारे हैं तिनका निर्मल यश पृथ्वीविषै होय है, नाना प्रकारके रत्नादिक सम्पदाका समागम होय है अर प्रबल शत्रुओंका निर्मूल होय है। सकल त्रैलोकविषै गुण विस्तरे हैं, या जीवके प्रचण्ड वैरी पांच इंद्रियोंके

विषय हैं, जो जीवकी बुद्धि हरें हैं, अर पापोंको बन्ध करें हैं। यह इंद्रियोंके विषय धर्मके प्रसादसे वशीभूत होय हैं अर राजाओंके बाहिरले बैरी प्रजाके बाधक ते भी आय पावोंविषे पडे हैं ऐसा मानकर जो धर्मके विरोधी विषयरूप बैरी हैं वे विवेकियोंको वश करने योग्य हैं। तिनका सेवन सर्वथा न करना। जैसे सूर्यकी किरणोंसे उद्योत होते हुवे भली दृष्टिवाले पुरुष अन्धकारसे व्याप्त औंडे खाडेविषे नहीं पडे हैं तैसे जे भगवानके मार्गविषे प्रवर्त्ते हैं तिनके पापबुद्धिकी प्रवृत्ति नहीं होय है।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै दशग्रीवका निरूपण करनेवाला आठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८ ॥

अथानन्तर किहकन्धपुरमें राजा सूर्यरज बानरबंशी तिनकी राणी चन्द्रमालिनी अनेक गुणोंमें पूर्ण ताके बाली नामा पुत्र भए। कैसे हैं वाली ? सदा उपकरी शीलवान पंडित प्रवीण धीर लक्ष्मीवान शूरवीर ज्ञानी अनेक कला संयुक्त सम्यकदृष्टि महाबली राजनीतिविषै प्रवीण धीर्यवान दयाकर भीगा है चित्त जिनका, विद्याके समूह कर मण्डित कांतिवंत तेजवंत हैं।

ऐसे पुरुष संसारमें विरले ही हैं वह समस्त अढाई द्वीपोंके जिनमंदिरोंके दर्शनमें उद्यमी है। जिनमंदिर अति उत्कृष्ट प्रभासे मंडित हैं बाली तीनों काल अति श्रेष्ठ भक्तियुक्त संशयरहित श्रद्धावंत जम्बूद्वीपके सर्व चैत्यालयोंके दर्शन कर आवै महा पराक्रमी शत्रुपक्षका जीतनेहारा नगरके लोगोंके नेत्ररूपी कुमुदके प्रफुल्लित करनेको चंद्रमा समान जिसको किसीकी शंका नहीं, किहकंधपुरमें देवोंकी न्याई रमै। किहकंधपुर महारमणीक नाना प्रकारके रत्नमयी मंदिरोंसे मंडित गज तुरंग रथादिसे पूर्ण जहां नाना प्रकारका व्यापार है अर अनेक सुंदर हाटोंकी पंक्तियोंसे युक्त है जहां जैसे स्वर्गविषै इन्द्र रमै तैसे रमै है। अनुक्रमसे जिसके छोटा भाई सुग्रीव भया वह भी महा धीर वीर मनोज्ञ रूप कर युक्त

महा नीतिवान विनयवान है ये दोनों ही वीर कुलके आभूषण होते भए। जिनका आभूषण बडोंका विनय है। सुग्रीवके पीछे श्रीप्रभा बहिन भई जो साक्षात् लक्ष्मी, रूपमें अतुल्य है अर किहकंधपुरमें सूर्यरजका छोटा भाई रक्षरज उसकी राणी हरिकांता उसके पुत्र नल अर नील होते भए सुजनोंको आनंदके उपजानेहारे महासामंत रिपुकी शंकारहित मानों किहकंधपुरके मंडन ही हैं। इन दोनों भाइयोंके दो दो पुत्र महागुणवंत भए। राजा सूर्यरज अपने पुत्रोंको यौवनवंत देख मर्यादाके पालनहारे जान आप विषयोंको विष मिश्रित अन्न समान जान संसारसे विरक्त भए। राजा सूर्यरज महाज्ञानवान हैं बालीको पृथ्वीके पालने निमित्त राज दिया अर सुग्रीवको युवराजपद दिया अपने स्वजन परजन समान जाने अर यह चतुरगतिरूप जगत महा दुःखकर पीडित देख विहतमोह नामा मुनिके शिष्य भए जैसा भगवानने भाषा तैसा चारित्र धारा। मुनि सूर्यरजको शरीरसे ममत्व नहीं है आकाश सारिखा निर्मल अंतःकरण है समस्त परिग्रहरहित पवनकी नाईं पृथ्वीविषै विहार करते भए। विषय कषायरहित मुक्तिके अभिलाषी भए।

अथानन्तर बालीके ध्रुवा नामा स्त्री महा पतिव्रता गुणोंके उदयसे सैकडों राणियोंमें मुख्य उस सहित ऐश्वर्यको धरै राजा बाली बानरवंशियोंके मुकुट विद्याधरोंके अधिपति सुन्दर चरित्रवान देवोंके ऐसे सुख भोगते हुए किहकंधपुरमें राज करें।

रावणकी बहिन चन्द्रनखा जिसके सर्व गात मनोहर राजा मेघप्रभका पुत्र खरदूषणने जिस दिनसे इसको देखा उस दिनसे कामबाणकर पीडित भया याको हरा चाहे। सो एक दिन रावण राजा प्रवर राणी आवली उनकी पुत्री तनूदरी उसके अर्थ एक दिन रावण गए सो खरदूषणने लंका रावण विना खाली देख चिन्तारहित होय चन्द्रनखा हरी। कैसा है खरदूषण? अनेक विद्याका धारक माया-

चारमें प्रवीण है बुद्धि जाकी, दोनों भाई कुम्भकरण अर विभीषण बडे शूर वीर हैं परन्तु छिद्र पाकर मायाचारसे यह कन्याको हर ले गया तब वे क्या करें ताके पीछे सेना दौडने लगी तब कुम्भकर्ण विभीषणने यह विचारकर मनह करी कि खरदूषण पकडा नहीं जायगा अर मारणा योग्य नहीं । बहुरि रावण आए तब यह वार्ता सुनकर अति क्रोध किया यद्यपि मार्गके खेदसे शरीरपर पसेव आया हुता तथापि तत्काल खरदूषणपर जानेको उद्यमी भए । कैसा है रावण ? महामानी है, एक खड्गहीका सहाय लिया अर सेना भी लार न लीनी यह विचारा कि जो महावीर्यवान पराक्रमी हैं तिनके एक खड्गहीका सहारा है तब मंदोदरीने हाथ जोड विनती करी–'हे प्रभु ! आप प्रकट लौकिक स्थितिके ज्ञाता हो, अपने घरकी कन्या औरको देनी अर औरोंकी आप लेनी इन कन्याओंकी उत्पत्ति ऐसी ही है अर खरदूषण चौदह हजार विद्याधरोंका स्वामी है, जो विद्याधर कभी युद्धसे पीछे न हटें, बडे बलवान हैं अर इस खरदूषणको अनेक सहस्रविद्या सिद्ध हैं महागर्ववंत है आप समान शूरवीर है यह वार्ता लोकोंसे क्या आपने नहीं सुनी है, आपके अर उसके भयानक युद्ध प्रवरते तब भी हार जीतका सन्देह ही है अर वह कन्या हर लेगया है तब हरणेके कारण वह कन्या दूषित भई है औरकूं जो न देने आवे, सो खरदूषणके मारनेसे वह विधवा होय है अर सूर्यरजको मुक्ति गए पीछे चन्द्रोदर विद्याधर पाताल लंकामें थाने हुता उसे काढकर यह खरदूषण तुम्हारी बहिनसहित पाताललंकामें तिष्ठै है तुम्हारा सम्बन्धी है ।' तब रावण बोले हे प्रिये मैं युद्धसे कभी नहीं डरूं परन्तु तुम्हारे वचन नहीं उलंघने अर बहिन विधवा नहीं करणी सो हमने क्षमा करी तब मंदोदरी प्रसन्न भई ।

अथानन्तर कर्मके नियोगसे चंद्रोदर विद्याधर कालकूं प्राप्त भया तब ताकी स्त्री अनुराधा गर्भिणी विचारी भयानक वनमें हिरणीकी नाईं भ्रमे सो मणिकांत पर्वतपर सुंदर पुत्र जना । शिला ऊपर पुत्र

का जन्म भया, शिला कोमल पल्लव अर पुष्पोंके समूहसे संयुक्त है, अनुक्रमसे बालक वृद्धिको प्राप्त भया। यह वनवासिनी माता उदास चित्त पुत्रकी आशासे पुत्रको पाले जब यह पुत्र गर्भमें आया तब हीसे इनके माता पिताको वैरियोंसे विराधना उपजी तातें इसका नाम विराधित धरा। यह विराधित राजसम्पदावर्जित जहां २ राजाओंके पास जाय वहां वहां इसका आदर न होय सो जैसे सिरका केश स्थानकसे छूटा आदर न पावे तैसे जो निज स्थानकसे रहित होय उसका सन्मान कहांते होय सो यह राजाका पुत्र खरदूषणको जीतिबे समर्थ नहीं सो चित्तविषे खरदूषणका उपाय चितवता हुआ सावधान रहै अर अनेक देशोंमें भ्रमण करै, षट् कुलाचलपर अर सुमेरु पर्वतपर तथा रमणीक वनोंमें जो अतिशय स्थानक हैं जहां देवोंका आगमन है तहां यह विहार करै अर संग्राममें योद्धा लड़ें तिनके चरित्र आकाशमें देवोंके साथ देखै, संग्राम गज अश्व रथादिककर पूर्ण है अर ध्वजा छत्रादिककर शोभित है या भांति विराधित काल क्षेप करै अर लंकाविषे रावण इंद्रकी नाई सुखसे तिष्ठै।

अथानन्तर सूर्यरजका पुत्र बाली रावणकी आज्ञासे विमुख भया। कैसा है बाली? अद्भुत कर्मोंकी करणहारी विद्यासे मण्डित है अर महाबली है तब रावणने बालीपै दूत भेजा। सो महा बुद्धिमान दूत किहकंधपुरमें जायकर बालीसे कहता भया—'हे बानराधीश! दशमुखने तुमकूं आज्ञा करी है सो सुनो। कैसे हैं दशमुख! महाबली महा तेजस्वी महालक्ष्मीवान महा नीतिवान महा सेनायुक्त प्रचंडनको दंड देनेहारा महा उदयवान है जिस समान भरतक्षेत्रमें दूजा नहीं, पृथ्वीके देव अर शत्रुवोंका मान मर्दन करनेहारा है यह आज्ञा करी है जो तुम्हारे पिता सूर्यरजको मैंने राजा यम वैरीको काढकर किहकंधपुरमें थापा अर तुम सदाके हमारे मित्र हो परन्तु आप अब उपकार भूलकर हमसों पराङ्मुख हो गए हो, यह योग्य नहीं है, मैं तुम्हारे पितासे भी अधिक प्रीति तुमसे करूंगा, अब तुम शीघ्र ही हमारे निकट

आवो, प्रणाम करो अर अपनी बाहिन श्रीप्रभा हमको परणावो, हमारे संबंधसे तुमको सर्व सुख होयगा। दूतने कही—यह रावणकी आज्ञा प्रमाण करो। सो बालीके मनमें और वात तो आई परन्तु एक प्रणाम की न आई, काहेतैं? जों याकैं देव गुरु शास्त्र विना औरको नमस्कार नहीं करै यह प्रतिज्ञा है। तब दूत ने फिर कही हे कपिध्वज! अधिक कहनेसे कहा? मेरे वचन तुम निश्चय करो अल्प लक्ष्मी पाकर गर्व मत करो, या तो दोनों हाथ जोड प्रणाम करो या आयुध पकडो। या तो सेवक होयकर स्वामीपर चंवर ढौरो या भागकर दशों दिशामें विचरो या सिर नवावो या खैंचिके घनुष निवावो या रावणकी आज्ञाको कर्णका आभूषण करो या धनुषका पिणच खैंचकर कानोंतक लावो, या तो मेरे चरणारविंदकी रज माथे चढावो या रण संग्राममें सिरपर टोप धरो, या तो बाण छोडो या धरती छोडो, या तो हाथमें वेत्र दंड लेकर सेवा करो या बरछी हाथमें पकडो, या तो अंजली जोडो या सेना जोडो। या तो मेरे चरणोंके नखमें मुख देखो या खड्गरूप दर्पणमें मुख देखो। ये कठोर वचन रावणके दूतने बालीसे कहे। तब बालीका व्याघ्रविलंबी नामा सुभट कहता भया। रे कुदूत! नीच पुरुष! तू ऐसे अविवेकके वचन कहे है सो तू खोटे ग्रहकर ग्रहा है समस्त पृथिवीपर प्रसिद्ध है पराक्रम अर गुण जिसका, ऐसा बाली देव तूने अबतक कर्णगोचर नहीं किया। ऐसा कहकर सुभटने महा क्रोधायमान होकर दूतके मारणेकूं खड्गपर हाथ धरा तब बालीने मने किया जो इस रंकके मारणेसे कहा? यह तो अपने नाथके कहे प्रमाण वचन बोले है अर रावण ऐसे वचन कहावै है सो उसीकी आयु अल्प है तब दूत डरकर शिताव रावणपै गया रावणको सकल वृत्तांत कहा रावण महाक्रोधको प्राप्त भया दुस्सह तेजवान रावणने बडी सेनाकर मंडित बखतर पहन शीघ्र ही कूच किया। रावणका शरीर तेजोमय परमाणुवोंसे रचा गया है रावण किहकंध-पुर पहुंचे। बालीने परदलका महा भयानक शब्द सुनकर युद्धके अर्थ बाहिर निकसनेका उद्यम किया

तब महा बुद्धिमान नीतिवान जे सागर वृद्धादिक मंत्री उन्होंने वचनरूपी जलसे शांत किया कि हे देव! निष्कारण युद्ध करनेसे कहा ? क्षमा करो आगे अनेक योधा मान करके क्षय भए रण था प्रिय जिनको अष्टचन्द्र विद्याधर अर्ककीर्तिके भुजके आधार जिनके देव सहाई तौ भी मेघेश्वर जयकुमारके बाणोंकर क्षय भए रावणकी बडी सैना है जिसकी ओर कोई देख सके नहीं, खड्ग गदा सेल बाण इत्यादि अनेक आयुधोंकर भरी है अतुल्य है। तातैं आप संदेहकी तुला जो संग्राम उसके अर्थ न चढो। तब बालीने कही अहो मंत्री हो अपनी प्रशंसा करनी योग्य नहीं तथापि में तुमको यथार्थ कहूहूं कि इस रावणको सेनासहित एक क्षणमात्रमें बावें हाथकी हथेलीसे चूर डारनेको समर्थ हूं परन्तु यह भोग क्षणविनश्वर हैं इनके अर्थ ऐसा निर्दय कर्म कौन करै जब क्रोधरूपी अग्निसे मन प्रज्वालित होय तब निर्दय कर्म होय है। यह जगतके भोग केलेके थंभ समान असार हैं तिनको पाकर मोहवंत जीव नरकमें पडे हैं। नरक महा दुःखोंसे भरा है, सर्व जीवोंको जीतव्य वल्लभ है सो जीवोंके समूहको हतकर इंद्रियोंके भोग सुख पाइए है ऐसे भोगोंमें गुण कहां। इंद्रिय सुख साक्षात् दुःख ही है ये प्राणी संसाररूपी महाकूपमें अरहटकी घडीके यंत्र समान रीती भरी करते रहते हैं। यह जीव विकल्प जालसे अत्यन्त दुःखी हैं श्रीजिनेंद्र देवके चरण युगल संसारसे तारणेके कारण हैं उनको नमस्कारकर औरकूं कैसे नमस्कार करूं ? मैंने पहिलेसे ऐसी प्रतिज्ञा करी है कि देव गुरु शास्त्रके सिवाय औरको प्रणाम न करूं तातें मैं अपनी प्रतिज्ञा भंग भी न करूं अर युद्धविषै अनेक प्राणियोंका प्रलय भी न करूं बल्कि मुक्तिकी देनहारी सर्व संगरहित दिगम्बरी दीक्षा धरूं मेरे जो हाथ श्रीजिनराजकी पूजामें प्रवरतें, दानविषै प्रवरतें अर पृथ्वीकी रक्षाविषै प्रवरतें वे मेरे हाथ कैसे किसीको प्रणाम करें अर जो हस्त कमल जोडकर पराया किंकर होवे उसका कहा ऐश्वर्य ? अर कहा जीतव्य वह तो दीन है ऐसा कहकर सुग्रीवको बुलाय आज्ञा करते भये कि–'हे बालक! सुनो

तुम रावणको नमस्कार करो वा न करो अपनी बहिन उसे देवो अथवा मत देवो मेरे कछु प्रयोजन नहीं मैं संसारके मार्गसे निवृत्त भया, तुमको रुचै सो करो। ऐसा कहकर सुग्रीवको राज्य देय आप गुणन कर गरिष्ठ श्रीगगनचन्द्र मुनिपै परमेश्वरी दीक्षा आदरी। परमार्थमें लगाया है चित्त जिनने अर पाया है परम उदय जिनने वे बाली योधा परम ऋषि होय एक चिद्रूप भावमें रत भए। सम्यग्दर्शन है निर्मल जिनके सम्यक्ज्ञान कर युक्त है आतमा जिनका, सम्यक्चारित्रमें तत्पर बारा अनुप्रेक्षाओंका निरन्तर विचार करते भए। आत्मानुभवमें मग्न मोह जालरहित स्वगुणरूपी भूमिपर विहार करते भए वह गुण भूमि निर्मल आचारी जे मुनि तिनकर सेवनीक है। बाली मुनि पिताकी नाईं सर्व जीवोंपर दयालु वाह्याभ्यन्तर तपसे कर्मकी निर्जरा करते भए। वे शांतबुद्धि तपोनिधि महाऋद्धिके निवास होते भए सुन्दर है दर्शन जिनका ऊंचे २ गुणस्थानरूपी जे सिवाण तिनके चढनेमें उद्यमी भए। भेदी है अंतरंग मिथ्या भावरूपी ग्रंथि (गांठ) जिनने वाह्याभ्यंतर परिग्रहरहित जिन सूत्रके द्वारा कृत्य अकृत्य सब जानते भए। महागुणवान महासंवरकरमंडित कर्मोंके समूहको खिपावते भए, प्राणोंकी रक्षामात्र सूत्र-प्रमाण आहार लेय हैं अर प्राणोंको धर्मके निमित्त धारै हैं अर धर्मको मोक्षके अर्थ उपारजे हैं भव्य लोकोंको आनन्दके करनहारे उत्तम हैं आचरण जिनके ऐसे बाली मुनि और मुनियोंको उपमा योग्य होते भए अर सुग्रीव रावणको अपनी बहिन परणायकर रावणकी आज्ञा प्रमाण किहकन्धपुरका राज्य करता भया।

पृथ्वीविषै जो जो विद्याधरोंकी कन्या रूपवती थीं रावणने वे समस्त अपने पराक्रमसे परणी नित्यालोक नगरमें राजा नित्यालोक राणी श्रीदेवी तिनकी रत्नावली नामा पुत्री उसको परणकर रावण लंकाको आवते थे सो कैलाश पर्वत ऊपर आय निकसे तहांके जिनमंदिरोंके अर बाली मुनिके प्रभावसे

पुष्पक विमान आगे न चल सका विमान मनके वेग समान चंचल है जैसे सुमेरुके तटको पायकर वायु मंडल थंभे तैसे विमान थंभा। तब घंटादिकका शब्दरहित भया मानों विलषा होय मौनको प्राप्त भया तब रावण विमानको अटका देख मारीच मंत्रीसे पूछते भए कि यह विमान कौन कारणसे अटका तब मारीच सर्व वृत्तांतमें प्रवीण कहता भया हे देव ! सुनो यह कैलाश पर्वत है यहां कोई मुनि कायोत्सर्ग करि तिष्ठे है शिलाके ऊपर रत्नके थंभ समान सूर्यके सम्मुख ग्रीष्ममें आतापन योग धर तिष्ठे है अपनी कांतिसे सूर्यकी कांतिको जीतता हुआ विराजै है यह महामुनि धीरवीर है महाघोर वीर तपको धरै है शीघ्र ही मुक्तिको प्राप्त हुआ चाहे है इसलिए उतरकर दर्शन करि आगे चलो या विमान पीछे फेर कैलाशको छोडकर और मार्ग होय चलो जो कदाचित् हठकर कैलाशके ऊपर होय चलोगे तो विमान खंड खण्ड हो जायगा यह मारीचके वचन सुनकर राजा यमका जीतनेहारा रावण अपने पराक्रमसे गर्वित होकर कैलाश पर्वतको देखता भया पर्वत मानों व्याकरण ही है क्योंकि नाना प्रकारके धातुवोंसे भरा है अर सहस्रों गुणोंसे युक्त नाना प्रकारके सुवर्णकी रचनासे रमणीक पद पंक्तियुक्त नाना प्रकारके स्वरों कर पूर्ण है। ऊंचे तीखे शिखरोंके समूहकर शोभायमान है आकाशसे लगा है निसरते उछलते जे जलके नीझरने तिनकर प्रकट हंसे ही है कमल आदि अनेक पुष्पोंकी सुगंध सोई भई सुरा ताकरि मत्त जे भ्रमर तिनकी गुंजारसे अति सुंदर है नाना प्रकारके वृक्षोंकर भरया है, बडे २ शालके जे वृक्ष तिनकर मंडित जहां छहों ऋतुओंके फल फूल शोभें हैं, अनेक जातिके जीव विचरे हैं, जहां ऐसी २ औषध हैं जिनके त्रासतें सर्पोंके समूह दूर रहे हैं। मनोहर सुगंधसे मानों वह पर्वत सदा नवयौवनहीको धरै है अर मानों वह पर्वत पूर्व पुरुष समान ही है। विस्तीर्ण जे शिला वे ही हैं हृदय जिसका अर शाल वृक्ष वे ही महा भुजा अर गंभीर गुफा सो ही बदन अर वह पर्वत शरद ऋतुके मेघ समान निर्मल तटसे

सुंदर मानों दुग्ध समान अपनी कांतिसे दशों दिशाको स्नान ही करावे है । कहीं इक गुफावोंमें सूते जे सिंह तिनकर भयानक है, कहीं इक सूते जे अजगर तिनके स्वासरूपी पवनसे हाले हैं वृक्ष जहां, कहीं इक भ्रमते क्रीडा करते जे हिरणोंके समूह तिनकर शोभे है, कहीं इक माते हाथियोंके समूहसे मंडित है वन जहां, कहीं इक फलोंके समूहसे मानो रोमांच होय रहा है अर कहीं इक वनकी सघनतासे भयानक है, कहीं इक कमलोंके वनसे शोभित हैं सरोवर जहां, कहीं बानरोंके समूह वृक्षोंकी शाखोंपर केलि कर रहे हैं अर कहीं गैडानके पगकर छेदे गए हैं जे चंदनादि सुगंध वृक्ष तिनकर सुगंध होय रहा है, कहीं विजलीके उद्योतसे मिला जो मेघमण्डल उस समान शोभाको धरे है, कहीं दिवाकर समान जे ज्योतिरूप शिखर तिनकर उद्योतरूप किया है आकाश जिसने ऐसा कैलाश पर्वत देख रावण विमानसे उतरा। तहां ध्यानरूपी समुद्रविषै मग्न अपने शरीरके तेजसे प्रकाश किया है दशों दिशा जिनने, ऐसे बाली महामुनि देखे । दिग्गजकी सूण्ड समान दोऊ भुजा लम्बाए कायोत्सर्ग धर खडे, लिपटि रहे हैं शरीरसे सर्प जिनके, मानो चंदनके वृक्ष ही हैं, आतापनि शिलापर निश्चल खडे प्राणियोंको ऐसे दीखें मानों पाषाणका थंभ ही है । रावण बाली मुनिको देखकर पूर्व बैर चितार पापी क्रोधरूपी अग्निसे प्रज्वलित भया । भृकुटि चढाय होंठ डसता कठोर शब्द मुनिको कहता भया—"अहो यह कहा तप तेरा, जो अब भी अभिमान न छूटा । मेरा विमान चलता थांभा । कहां उत्तम क्षमारूप वीतरागका धर्म अर कहां पाप रूप क्रोध कहां, तू वृथा खेद करै है । अमृत अर विषको एक किया चाहे है तातैं मैं तेरा गर्व दूर करूंगा, तुझ सहित कैलाश पर्वतको उखाड समुद्रमें डार दूंगा ।" ऐसे कठोर वचन कहकर रावणने विकराल रूप किया । सर्व विद्या जे साधी हैं तिनकी अधिष्ठाता देवी चिंतवनमात्रसे आय ठाढी भई, सो विद्याबलकर रावणने महारूप किया, धरतीको भेद पातालमें पैठा, महा पापविषै उद्यमी है प्रचण्ड क्रोधकर लाल हैं

वंदनाको प्रवेश किया, चंद्रहास खड्गको पृथ्वीपर रखकर अपनी राणियोंकर मंडित जिनवरका अर्चन करता भया। भुजामेंसे नस रूप तांत काढकर बीण समान बजाता भया। भक्तिमें पूर्ण है भाव जाका स्तुतिकर जिनेंद्रके गुणानुवाद गावता भया। हे देवाधिदेव ! लोकालोकके देखनेहारे नमस्कार हो तुमको। कैसे हो ? लोकको उलंघे ऐसा है तेज तिहारा। हे कृतार्थ महात्मा नमस्कार हो। कैसे हो ? तीन लोककर करी है पूजा जिनकी, नष्ट किया है मोहका वेग जिन्होंने, वचनसे अगोचर गुणोंके समूहके धरनेहारे, महा ऐश्वर्यकर माण्डित मोक्ष मार्गके उपदेशक सुखकी उत्कृष्टतामें पूर्ण, समस्त कुमार्गसे दूर, जीवनको भुक्ति अर मुक्तिके कारण, महाकल्याणके मूल, सर्व कर्मके साक्षी, ध्यानकर भस्म किए हैं पाप जिन्होंने, जन्म मरणके दूर करनेहारे, समस्तके गुरु आपके कोई गुरु नहीं, आप किसीको नवें नहीं अर सबकर नमस्कार करने योग्य आदि अन्तरहित समस्त परमार्थके जाननेहारे, आपको केवली विना अन्य न जान सके, सर्व रागादिक उपाधिसे शून्य, सर्वके उपदेशक, द्रव्यार्थिक नयसे सब नित्य हैं अर पर्यायार्थिक नयसे सब अनित्य हैं ऐसा कथन करनेहारे, किसी एक नयसे द्रव्य गुणका भेद, किसी एक नयसे द्रव्य गुणका अभेद, ऐसा अनेकांत दिखावनेहारे, जिनेश्वर सर्व रूप एकरूप चिद्रूप अरूप जीवनको मुक्तिके देनेहारे ऐसे जो तुम तिनको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

श्रीऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस वासुपूज्यके ताईं बारम्बार नमस्कार हो। पाया है आत्मप्रकाश जिन्होंने विमल अनन्त धर्म शांतिके ताईं नमस्कार हो, निरंतर सुखोंके मूल सबको शांतिके करता कुन्थु जिनेन्द्रके ताईं नमस्कार हो, अर नाथके ताईं नमस्कार हो, मल्लि महेश्वरके ताईं नमस्कार हो, मुनिसुव्रतनाथके ताईं जो महाव्रतोंके देनेहारे अर अब जो होवेंगे नमि नेम पार्श्व वर्द्धमान तिनके ताईं नमस्कार हो, अर जो पद्मनाभादिक

अनागत होवेंगे तिनको नमस्कार हो, अर जे निर्वाणादिक अतीत जिन भए तिनको नमस्कार हो। सदा सर्वदा साधुओंको नमस्कार हो, अर सर्व सिद्धोंको निरंतर नमस्कार हो। कैसे हैं सिद्ध ? केवल ज्ञानरूप केवल दर्शनरूप क्षायक सम्यक्त्वरूप इत्यादि अनन्त गुणरूप हैं।" यह पवित्र अक्षर लंकाके स्वामी ने गाए।

रावण द्वारा जिनेन्द्रदेवकी महा स्तुति करनेसे धरणेन्द्रका आसन कम्पायमान भया। तब अवधि ज्ञानसे रावणका वृत्तान्त जान हर्षसे फूले हैं नेत्र जिनके, सुन्दर है मुख जिनका, देदीप्यमान मणियोंके ऊपर जे मणि उनकी कांतिसे दूर किया है अन्धकारका समूह जिनने, पातालसे शीघ्र ही नागोंके राजा कैलाश पर आए। जिनेन्द्रको नमस्कारकर विधिपूर्वक समस्त मनोज्ञ द्रव्योंसे भगवानकी पूजा कर रावणसे कहते भए—'हे भव्य ! तैंने भगवानकी स्तुति बहुत करी अर जिन भक्तिके बहुत सुंदर गीत गाए। सो हमको बहुत हर्ष उपजा, हर्षकरके हमारा शरीर आनन्दरूप भया। हे राक्षसेश्वर धन्य है तू जो जिनराजकी स्तुति करे है। तेरे भावकरि अबार हमारा आगमन भया है। मैं तेरेसे संतुष्ट भया तू वर मांग। जो मन वांछित वस्तु तू मांगे सो दूं। जो वस्तु मनुष्योंको दुर्लभ है सो तुम्हें दूं।' तब रावण कहते भए—'हे नागराज ! जिन बंदनातुल्य अर कहा शुभ वस्तु है, सो मैं आपसे मांगूं। आप सर्व बात समर्थ मनवांछित देनेलायक हैं।' तब नागपति बोले—'हे रावण ! जिनेंद्रकी बंदनाके तुल्य अर कल्याण नहीं। यह जिन भक्ति आराधी हुई मुक्तिके सुख देवे है तातैं या तुल्य अर कोई पदार्थ न हुआ न होयगा।' तब रावणने कही—'हे महामते ! जो इससे अधिक अर वस्तु नहीं तो मैं कहा याचूं ?' तब नागपति बोले—'तैंने जो कहा सो सब सत्य है जिनभक्तिसे सब कुछ सिद्धि होय है याको कुछ दुर्लभ नहीं तुम सारिखे मुझ सारिखे अर इंद्र सारिखे अनेक पद सर्व जिनभक्तिसे ही होय हैं अर यह तो संसार

के सुख अल्प हैं विनाशिक हैं इनकी क्या बात मोक्षके अविनाशी जो अतेन्द्री सुख वे भी जिनभक्ति करि प्राप्त होय हैं। हे रावण! तुम यद्यपि अत्यंत त्यागी हो महाविनयवान बलवान हो महाऐश्वर्यवान हो गुणकर शोभित हो तथापि मेरा दर्शन तुमको वृथा मत होय, मैं तेरेसे प्रार्थना करूं हूं तू कुछ मांग यह मैं जानूं हूं कि तू याचक नहीं परंतु मैं अमोघ विजियानामा शक्ति विद्या तुझे दूंहू सो हे लंकेश! तू ले हमारा स्नेह खण्डन मतकर। हे रावण! किसीकी दशा एकसी कभी नहीं रहती, सम्पत्तिके अनंतर विपत्ति अर विपत्तिके अनंतर सम्पत्ति होती है, जो कदाचित् मनुष्य शरीर है अर तुझपर विपत्ति पडे तो यह शक्ति तेरे शत्रुकी नाशनेहारी अर तेरी रक्षाकी करनेहारी होयगी। मनुष्योंकी क्या बात इससे देव भी डरें हैं यह शक्ति अग्नि ज्वालाकर मण्डित विस्तीर्ण शक्तिकी धारनेहारी है। तब रावण धरणेन्द्रकी आज्ञा लोपनेकों असमर्थ होता हुआ शक्तिको ग्रहण करता भया क्योंकि किसीसे कुछ लेना अत्यंत लघुता है सो इस बातसे रावण प्रसन्न नहीं भया। रावण अति उदारचित्त है। तब धरणेंद्रसे रावणने हाथ जोड नमस्कार किया। धरणेंद्र आप अपने स्थानक गए। कैसे हैं धरणेंद्र? प्रगटा है हर्ष जिनके, रावण एक मास कैलाशपर रहकर भगवानके चैत्यालयोंकी महाभक्तिसे पूजाकर अर वाली मुनिकी स्तुतिकर अपने स्थानक गए।

वाली मुनिने जो कछुइक मनके क्षोभसे पाप कर्म उपार्जा हुता सो गुरुवोंके निकट जाय प्रायश्चित्त लिया शल्य दूरकर परम सुखी भए। जैसे विष्णुकुमार मुनिने मुनियोंकी रक्षानिमित्त बालीका पराभव किया हुता अर गुरुसे प्रायश्चित्त लेय परमसुखी भए थे तैसे वाली मुनिने चैत्यालयोंकी अर अनेक जीवोंकी रक्षा निमित्त रावणका पराभव किया, कैलाश थांभा फिर गुरुपै प्रायश्चित लेय शल्य मेट परम सुखी भए। चारित्रसे गुप्तिसे धर्ममे अनुप्रेक्षासे समितिसे परीषहोंके सहनेसे महासंवरको पाय कर्मोंकी नि-

जेराकरि बाली मुनि केवलज्ञानको प्राप्त भए अष्टकर्मसे रहित होय तीन लोकके शिखर अविनाशी स्थान में अविनाशी अनुपम सुखको प्राप्त भए अर रावणने मनमें विचारा कि जो इन्द्रियोंको जीते तिनको मैं जीतिवे समर्थ नहीं तातें राजाओंको साधुओंकी सेवाही करना योग्य है ऐसा जान साधुओंकी सेवा में तत्पर होता भया सम्यकदर्शनसे मण्डित जिनेश्वरमें दृढ है भक्ति जिसकी काम भोगमें अतृप्त यथेष्ट सुखसे तिष्ठता भया।

यह बालीका चरित्र पुण्याधिकारी जीव, भावविषै तत्पर है बुद्धि जाकी भली भांति सुनै सो कब ही अपमानकूं प्राप्त न होइ अर सूर्य समान प्रतापकूं प्राप्त होय॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै बाली मुनिका निरूपण करनेवाला नववां पर्व पूर्ण भया॥ ९॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं—हे श्रेणिक! यह बालीका वृत्तांत तोकूं कह्या अब सुग्रीव अर सुतारा राणीका वृत्तांत सुन। ज्योतिपुर नामा नगर तहां राजा अग्निशिख राणी ह्री उनकी पुत्री सुतारा जो संपूर्ण स्त्री गुणोंसे पूर्ण सर्व पृथ्वीमें रूप गुणकी शोभासे प्रसिद्ध मानों कमलों-का निवास तज साक्षात् लक्ष्मी ही आई है अर राजा चक्रांक उसकी राणी अनुमति तिनका पुत्र साहस-गति महादुष्ट एक दिन अपनी इच्छासे भ्रमण करै था सो ताने सुतारा देखी। देखकर काम शल्यसे अत्यंत दुखी होकर निरंतर सुताराको मनमें धरता भया। दशा जिसकी उन्मत्त है ऐसा दूत भेज सुतारा को याचता भया अर सुग्रीव भी बारम्बार याचता भया। कैसी है वह सुतारा? महामनोहर है। तब राजा अग्निशिख सुताराका पिता दुविधामें पड गया कि कन्या किसको देनी तब महाज्ञानी मुनिको

पूछी। मुनीन्द्रने कहा कि साहसगतिकी अल्प आयु है अर सुग्रीवकी दीर्घ आयु है तब अमृत समान मुनिके बचन सुनकर राजा अग्निशिख सुग्रीवको दीर्घ आयुवाला जानकर अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण कराया। सुग्रीवका पुण्य विशेष है जो सुताराकी प्राप्ति भई तदनंतर सुग्रीव अर सुताराके अंग अर अंगद दोय पुत्र भए अर वह पापी साहसगति निर्लज्ज सुताराकी आशा छोडे नहीं। धिकार है काम चेष्टाको, वह कामाग्निकर दग्ध चित्तविषे ऐसा चिंतवै कि वह सुखदायिनी कैसे पाऊं? कब उसका मुख चंद्रमासे अधिक मैं निरखूं कब उससहित नंदन वनविषे क्रीडा करूं ऐसा मिथ्या चिंतवन करता संता रूपपरवार्तिनी शेमुषी नामा विद्याके आराधनेको हिमवंत नामा पर्वतपर जायकर अत्यन्त विषम गुफाविषे तिष्ठकर विद्याके आराधनेको आरम्भ करने लगा। जैसे दुखी जीव प्यारे मित्रको चितारै तैसे विद्याको चितारता भया।

अथानन्तर रावण दिग्विजय करनेको निकसा बन पर्वतादिकर शोभित पृथ्वी देखता अर समस्त विद्याधरोंके अधिपति अंतर द्वीपोंके वासियोंको अपने वश करता भया। अर तिनको आज्ञाकारी कर तिनहीके देशोंमें थापता भया। कैसा है रावण ? अखण्ड है आज्ञा जाकी, अर विद्याधरोंमें सिंह समान बडे बडे राजा महापराक्रमी रावणने वश किये तिनको पुत्र समान जान बहुत प्रीति करता भया। महन्त पुरुषोंका यही धर्म है कि नम्रतामात्रसे ही प्रसन्न होवें। राक्षसोंके वंशमें अथवा कपिवंशमें जे प्रचण्ड राजा हुते वे सर्व बश किये बडी सेनाकर संयुक्त आकाशके मार्ग गमन करता जो दशमुख पवन समान है वेग जिसका, उसका तेज, विद्याधर सहिवेको असमर्थ भए। संध्याकार सुवेल हेमा पूर्ण सुयोधन हंसद्वीप बारिहल्लादि इत्यादि द्वीपोंके राजा विद्याधर नमस्कारकर भेंट ले आय मिले सो रावणने मधुर बचन कह बहुत संतोषे अर बहुत सम्पदाके स्वामी किये। जे विद्याधर बडे २ गढोंके निवासी हुते वे

रावणके चरणारविंदको नम्रीभूत होय आय मिले जो सार वस्तु थी सो भेंट करी । हे श्रेणिक ! समस्त वलोंविषे पूर्वोपार्जित पुण्यका बल प्रबल है उसके उदयकर कौन वश न होय, सबही वश होय हैं ।

अथानन्तर रथनूपुरका राजा जो इंद्र उसके जीतिवेको रावण गमनको प्रवरता सो जहां पाताल लंकाविषे खरदूषण वहणेऊ है, वहां जाय डेरा किया । पाताल लंकाके समीप डेरा भया रात्रिका समय था खरदूषण शयन करै था सो चंद्रनखा रावणकी बहिनने जगाया, पाताललंकासे निकसकर रावणके निकट आया, रत्नोंके अर्घ देय महा भक्तिसे परम उत्साहकर रावणकी पूजा करी । रावणने भी बहणेऊपनाके स्नेहकर खरदूषणका बहुत सत्कार किया । जगतविषै बाहिन बहणेऊ समान अर कोई स्नेहका पात्र नहीं । खरदूषणने चौदह हजार विद्याधर मनबांछित नाना रूपके धारनहारे रावणको दिखाए । रावण खरदूषणकी सेना देख बहुत प्रसन्न भए । आप समान सेनापति किया, कैसा है खरदूषण महा शूरवीर है उसने अपने गुणोंसे सर्व सामन्तोंका चित्त वश किया है । हिडम्ब, हेहिडिम्ब, विकट, त्रिजट, हयमाकोट, सुजट, टंक, किहकन्धाधिपति, सुग्रीव, तथा त्रिपुर, मलय, हेमपाल, कोल, वसुंदर इत्यादिक अनेक राजा नाना प्रकारके बाहनों पर चढे नाना प्रकार शस्त्र विद्याविषै प्रवीण अनेक शस्त्रनके अभ्यासी तिनकर युक्त पाताल लंकासे खरदूषण रावणके कटकविषै आया जैसे पाताल लोकसे असुर कुमारोंके समूहकर युक्त चमरेन्द्र आवे इस भांति अनेक विद्याधर राजाओंके समूहकर रावणका कटक पूर्ण होता भया जैसे बिजली अर इंद्रधनुषकर युक्त मेघमालाओंके समूह तिनकर श्रावणमास पूर्ण होय ऐसे एक हजार ऊपर अधिक अक्षोहिणी दल रावणके होय चुका दिन दिन बढता जाय है अर हजार हजार देवोंकर सेवा योग्य रत्न नानाप्रकार गुणोंके समूहके धारणहारे उनकर युक्त अर चन्द्रकिरण समान उज्ज्वल चमर जिसपर ढुरे हैं, उज्ज्वल छत्र सिरपर फिरे हैं, जिसका रूप सुन्दर है,

महाबाहु महाबली पुष्पक नामा विमानपर चढा सुमेरु समान स्थिर सूर्यसमान ज्योति अपने विमानादि बाहन सम्पदकर सूर्यमण्डलको आच्छादित करता हुवा इन्द्रका विध्वंस मनमें विचारकर रावणने प्रयाण किया। कैसा है रावण, प्रबल है पराक्रम जिसका, मानों आकाशको समुद्र समान करता भया, देदीप्यमान जे शस्त्र सोई भई कलोल अर हाथी घोडे प्यादे ये ही भए जलचर जीव अर छत्र भम्वर भए अर चमर तुरंग भए नानाप्रकारके रत्नोंकी ज्योति फैल रही है अर चमरोंके दण्ड मीन भए–'हे श्रेणिक! रावणकी विस्तीर्ण सेनाका वरणन कहांलग करिये, जिसको देखकर देव डरें तो मनुष्योंकी बात क्या, इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकर्ण विभीषण खरदूषण निकुम्भ कुंभ इत्यादि बहुत सुजन रणमें प्रवीण सिद्ध हैं विद्या जिनको महाप्रकाशवन्त शस्त्र शास्त्र विद्यामें प्रवीण हैं जिनकी कीर्ति बडी है महासेनाकर युक्त देवताओंकी शोभाको जीतते हुए रावणके संग चले। विंध्याचल पर्वतके समीप सूर्य अस्त भया मानों रावणके तेजकर विलषा होय तेज रहित भया वहां सेनाका निवास भया मानों विंध्याचलने सेना सिरपर धारी है विद्याके बलसे नानाप्रकारके आश्रयकर लिये।

फिर अपनी किरणों कर अन्धकार के समूहको दूर करता हुआ चन्द्रमा उदय भया मानों रावणके भयकर रात्री रत्नका दीपक लाई है और मानों निशा स्त्री भई चांदनी कर निर्मल जो आकाश सोई वस्त्र उसको धरे ताराओंके जे समूह तेई सिरविषै फूल गूंथे हैं चन्द्रमा ही है बदन जाका नाना प्राकारकी कथाकर तथा निद्राकर सेनाके लोकोंने रात्री पूर्ण करी फिर प्रभातके वादित्र बाजे मंगल पाठ कर रावण जागे। प्रभात क्रिया करी, सूर्यका उदय भया मानों सूर्य भुवनविषै भ्रमणकर किसी ठौर शरण न पाया तब रावणहीके शरण अया।

पुनः रावण नर्मदाके तट आए। कैसी है नर्मदा? शुद्ध स्फटिक मणि समान है जल जाका अर

उसके तीर अनेक वनके हाथी रहे हैं सो जलमें कोलि करै हैं उसकर शोभायमान है अर नाना प्रकारके पक्षियोंके समूह मधुर गान करै हैं सो मानों परस्पर संभाषण ही करै हैं। फेन कहिए झागके पटल उनकर मंडित है तरंगरूप जे भौंह उनके विलासकर पूर्ण है। भंवर ही हैं नाभि जाके अर चंचल जे मीन तेई हैं नेत्र जाके अर सुंदर जे पुलिन तेई हैं कटि जाके, नाना प्रकारके पुष्पोंकर संयुक्त निर्मल जल ही है वस्त्र जाका, मानों साक्षात् सुंदर स्त्री ही है उसे देखकर रावण बहुत प्रसन्न भए। प्रबल जे जलचर उनके समूहकर मण्डित है, गंभीर है, कहूं एक वेगरूप बहै है, कहूं एक मंदरूप बहै है, कहूं एक कुण्डलाकार बहै है, नाना चेष्टाकर पूर्ण ऐसी नर्मदाको देखकर कौतुकरूप हुआ है मन जाका सो रावण नदीके तीर उतरा नदी भयानक भी है अर सुन्दर भी है।

अथानन्तर माहिष्मती नगरीका राजा सहस्ररश्मि पृथ्वीविषै महाबलवान मानों सहस्ररश्मि कहिए सूर्य ही है उसके हजारों स्त्री सो नर्मदाविषै रावणके कटकके ऊपर सहस्ररश्मिने जल यंत्रकर नदीका जल थांभा अर नदीके पुलिनविषै नाना प्रकारकी क्रीडा करी। कोई स्त्री मानकर रही थी उसको बहुत शुश्रूषाकर प्रसन्न करा, दर्शन स्पर्शन मान फिर मान मानमोचन प्रणाम परस्पर जल केलि हास्य नाना प्रकार पुष्पोंके भूषणोंके शृंगार इत्यादि अनेक स्वरूप क्रीडा करी। मनोहर है रूप जाका जैसे देवियोंसहित इंद्र क्रीडा करै तैसे राजा सहस्ररश्मिने क्रीडा करी। जे पुलिनके बालू रेताविषै रत्नके मोतियोंके आभूषण टूटकर पडे सो न उठाए जैसे मुरझाई पुष्पोंकी मालाको कोई न उठावै, कैयक राणी चंदनके लेपकर संयुक्त जलविषै केलि करती भई सो जल धवल हो गया, कैयक केसरके कीचकर जलको गाले हुए सुवर्णके समान पीत करती भई, कई एक ताम्बूलके रंगकर लाल जे अधर तिनके प्रक्षालनकर नीरको अरुण करती भई, कैयक आंखोंके अंजन धोवनेकर श्याम करती भई सो क्रीडा करती जे स्त्री उनके आभूषणोंके सुन्दर शब्द

अर तीरविषे जे पक्षी उनके सुन्दर शब्द राजाके मनको मोहित करते भए अर नदीके निवासकी ओर रावणका कटक था सो रावण स्नानकर पवित्र वस्त्र पहिर नाना प्रकारके आभूषणोंसे युक्त नदीके रमणीक पुलिनमें बालूका चौंतरा बंधाय उसके ऊपर वैडूर्य मणियोंके हैं दंड जिसके ऐसा मोतियोंकी झालरी संयुक्त चंदोवा ताण श्रीभगवान अरहंत देवकी नाना प्रकार पूजा करै था, बहुत भक्तिसे पवित्र स्तोत्रों कर स्तुति करै था सो उपरासका जलका प्रवाह आया सो पूजामें विघ्न भया, नाना प्रकारकी कलुषता सहित प्रवाह वेग दे आया तब रावण प्रतिमाजीको लेय खडे भए अर क्रोधकर कहते भए—जो यह क्या है ? सो सेवकने खबर दीनी कि हे नाथ ! यह कोई महाक्रीडावंत पुरुष सुन्दर स्त्रियोंके वीच परम उदय को धरे नाना प्रकारकी लीला करै है अर सामन्त लोक शस्त्रोंको धरे दूर २ खडे हैं, नाना प्रकार जलके यंत्र बांधे उनसे यह चेष्टा भई है, अन्य राजाओंके सैना चाहिए तातें उसके सेना तो शोभामात्र है अर उसके पुरुषार्थ ऐसा है जो और ठौर दुर्लभ है, बडे २ सामंतोंसे उसका तेज न सहा जाय अर स्वर्गविषे इंद्र है परन्तु यह तो प्रत्यक्ष ही इंद्र देखा । यह वार्ता सुनकर रावण क्रोधको प्राप्त भए, भौंह चढ गई, आंख लाल हो गई, ढोल बाजने लगे, बीररसका राग होने लगा, नाना प्रकारके शब्द होय हैं, घोडे हींसे हैं, गज गाजे हैं, रावणने अनेक राजावोंको आज्ञा करी कि यह सहस्ररश्मि दुष्टात्मा है इसे पकड लावो । ऐसी आज्ञाकर आप नदीके तटपर पूजा करने लगे । रत्न सुवर्णके जे पुष्प उनको आदि देय अनेक सुंदर जे द्रव्य उनसे पूजा करी अर अनेक विद्याधरोंके राजा रावणकी आज्ञा आशिषाकी नाई माथे चढाय युद्धको चले, राजा सहस्ररश्मिने परदलको आवता देख स्त्रियोंको कहा कि तुम डरो मत, धीर्य बंधाय आप जलसे निकसे, कलकलाट शब्द सुन परदल आया जान माहिष्मती नगरीके योधा सजकर हाथी घोडे रथोंपर चढे । नाना प्रकारके आयुध धरे स्वामी धर्मके अत्यंत अनुरागसे राजाके

ढिंग आए, जैसे सम्मेदशिखर पर्वतका एक ही काल छहों ऋतु आश्रय करे तैसे समस्त योधा तत्काल राजापै आए, विद्याधरोंकी फौज आवती देखकर सहस्रराश्मिके सामंत जीतव्यकी आशा छोडकर घन-व्यूह रचकर धनीकी आज्ञा विना ही लडनेको उद्यमी भए। जब रावणके योधा युद्ध करने लगे तब आकाशमें देवनकी वाणी भई कि अहो (यह बडी अनीति है ये भूमिगोचरी अल्पबली विद्याबलकर रहित माया युद्धको कहां जाने इनसे विद्याधर मायायुद्ध करैं यह कहा योग्य है) अर विद्याधर घने यह थोडे ऐसे आकाशविषै देवनके शब्द सुनकर जे विद्याधर सत्पुरुष थे वह लज्जावान होय भूमिमें उतरे, दोनों सेनामें परस्पर युद्ध भया। रथोंके, हाथियोंके, घोडोंके, असवार तथा पियादे तलवार, बाण, गदा, सेल इत्यादि आयुधोंकर परस्पर युद्ध करने लगे सो बहुत युद्ध भया। परस्पर अनेक मारे गए न्याय युद्ध भया शस्त्रोंके प्रहारकर अग्नि उठी सहस्रराश्मिकी सेना रावणकी सेनाकर कछु इक हटी तब सहस्र-रश्मि रथपर चढकर युद्धको उद्यमी भए। माथे मुकुट धरे बखतर पहरे धनुषको धारे अति तेजको धरे विद्याधरोंके बलको देखकर तुच्छमात्र भी भय न किया तब स्वामीको तेजवंत देख सेनाके लोग जे हटे थे वे आगे आयकर युद्ध करने लगे, दैदीप्यमान हैं शस्त्र जिनके अर जे भूल गए हैं घावोंकी वेदना ये रणधीर भूमिगोचरी राक्षसोंकी सेनामें ऐसे पडे जैसे माते हाथी समुद्रमें प्रवेश करें अर सहस्रराश्मि अति क्रोधको करते हुए बाणोंके समूहसे जैसे पवन मेघको हटावै तैसे शत्रुओंको हटावते भए, तब द्वारपाल रावणसे कही हे देव ! देखो इसने तुम्हारी सेना हटाई है यह धनुषका धारी रथपर चढा जगतको तृण-वत् देखै है इसके बाणोंकर तुम्हारी सेना एक योजन पीछे हटी है तब रावण सहस्ररश्मिको देख आप त्रैलोक्यमण्डन हाथीपर सवार भए रावणको देखकर शत्रु भी डरें वह बाणोंकी वर्षा करते भए सहस्र-राश्मिको रथसे रहित किया तब सहस्ररश्मि हाथीपर चढकर रावणके सम्मुख आए अर बाण छोडे सो

रावणके वक्तरको भेद अंगविषै चुभे तब रावणने बाण देहसे काढ डारे सहस्ररश्मिने हंसकर रावणसे कहा—अहो रावण ! तू बडा धनुषधारी कहावे है ऐसी विद्या कहांसे सीखी, तुझे कौन गुरु मिला, पहिले धनुष विद्या सीख फिर हमसे युद्ध करियो ऐसे कठोर शब्दोंसे रावण क्रोधको प्राप्त भए। सहस्ररश्मिके केशनिमें सेलकी दीनी तब सहस्ररश्मिके रुधिरकी धारा चली जिससे नेत्र घूमने लगे पहिले अचेत हो गया पीछे सचेत होय आयुध पकडने लगा तब रावण उछलकर सहस्ररश्मिपर आय पडे अर जीवता पकड लिया बांधकर अपने स्थान ले आए तब सब विद्याधर आश्चर्यको प्राप्त भए कि सहस्ररश्मि जैसे योधाको रावण पकडे। कैसे हैं रावण ? धनपति यक्षके जीतनेहारे यमके मानमर्दन करनेहारे, कैलाशके कंपावनेहारे, सहस्ररश्मिका यह वृत्तांत देख सहस्रराश्मि जो सूर्य सो भी मानों भयकर अस्ताचलको प्राप्त भया, अन्धकार फैल गया। भावार्थ—रात्रिका समय भया। भला बुरा दृष्टिमें न आवे तब चंद्रमाका विम्ब उदय भया सो अंधकारके हरणेको प्रवीण मानों रावणका निर्मल यश ही प्रगटा है युद्धविषै जे योधा घायल भए थे तिनका वैद्योंसे यत्न कराया अर जो मूवे थे तिनको अपने अपने बन्धुवर्ग रणखेतसे ले आए तिनकी क्रिया करी। रात्रि व्यतीत भई, प्रभातके वादित्र बाजने लगे फिर सूर्य रावणकी वार्ता जाननेके अर्थ राग काहिए ललाईको धारता हुआ कम्पायमान उदय भया। सहस्ररश्मिका पिता राजा शतबाहु जो मुनिराज भए थे जिनको जंघाचरण ऋद्धि थी वे महातपस्वी चंद्रमाके समान कांत सूर्य समान दीप्तिमान मेरु समान स्थिर समुद्र सारिखे गंभीर सहस्ररश्मिको पकडा सुनकर जीवनकी दयाके करणेहारे परम दयालु शांतचित्त जिनधर्मी जान रावणपै आए। रावण मुनिको आवते देख उठ सामने जाय पायन पडे, भूमिमें लग गया है मस्तक तिनका, मुनिको काष्ठके सिंहासनपर विराजमानकर रावण हाथ जोड नम्रीभूत होय भूमिविषै बैठे। अति विनयवान होय मुनिसे कहते भए—हे भग-

वन् ! कृपानिधान ! तुम कृतकृत्य तुम्हारा दर्शन इंद्रादिक देवोंको दुर्लभ है, तुम्हारा आगमन मेरे पवित्र होनेके अर्थ है । तब मुनि इसको शलाका पुरुष जान प्रशंसाकर कहते भए । हे दशमुख ! तू बडा कुलवान बलवान विभूतिवान देव गुरु धर्मविषे भक्तिभाव युक्त है । हे दीर्घायु शूरवीर क्षत्रियोंकी यही रीति है जो आपसे लडे उसका पराभव कर उसे वश करें । सो तुम महाबाहु परम क्षत्री हो तुमसे लडनेको कौन समर्थ है अब दयाकर सहस्त्ररश्मिको छोडो । तब रावण मंत्रियोंसहित मुनिको नमस्कारकर कहते भए । हे नाथ ! मैं विद्याधर राजाके वश करनेको उद्यमी भया हूं, लक्ष्मीकर उन्मत्त रथनूपुरका राजा इंद्र उसने मेरे दादेका बडा भाई राजा माली युद्धमें मारा है तासूं हमारा द्वेष है सो मैं इन्द्र ऊपर जाऊं था मार्गमें रेवा कहिए नर्मदा उसपर डेरा भया सो पुलिनपर बालूके चौतरेपर पूजा करूं था सोई इसने उपरासकी अर जल यंत्रोंकी केलि करी सो जलका वेग निवासको आया । सो मेरी पूजामें विघ्न भया तातैं यह कार्य किया है, विना अपराध मैं द्वेष न करूं अर मैं इनके ऊपर गया तब भी इनने क्षमा न कराई कि प्रमादकर विना जाने मैंने यह कार्य किया है तुम क्षमा करो उलटा मानके उदयकर मेरेसे युद्ध करने लगा अर कुवचन कहे इसलिए ऐसा हुआ जो मैं भूमिगोचरी मनुष्योंको जीतने समर्थ न भया तो विद्याधरोंको कैसे जीतूंगा । कैसे हैं विद्याधर ? नाना प्रकारकी विद्याकर महापराक्रमवन्त हैं । तातैं जो भूमिगोचरी मानी है तिनको प्रथम वश करूं पीछे विद्याधरोंको वश करूं । अनुक्रमसे जैसे सिवान चढ मंदिरमें जाइए है तातैं इनको वश किया अब छोडना न्याय ही है फिर आपकी आज्ञा समान और क्या ? कैसे हो आप महापुण्यके उदयसे होवे है दर्शन जिनका । ऐसे वचन रावणके सुन इंद्रजीतने कही हे नाथ ! आपने बहुत योग्य वचन कहे । ऐसे वचन आप विना कौन कहे । तब रावणने मारीच मंत्रीको आज्ञा करी कि सहस्त्ररश्मिको छुडाय महाराजके निकट लावो । तब मारीचने अधि-

कारीको आज्ञा करी। सो आज्ञा प्रमाण जो नांगी तलवारके हवाले था सो ले आए। सहस्त्ररश्मि अपने पिता जो मुनि तिनको नमस्कारकर आय बैठा। रावणने सहस्रराश्मिका बहुत सत्कारकर बहुत प्रसन्न होय कहा हे महाबल! जैसे हम तीनों भाई तैसे चौथा तू। तेरे सहायकर रथनूपुरका राजा, इंद्र भ्रमतें कहावे है ताहि जीतूंगा अर मेरी राणी मंदोदरी उसकी लहुरी बहिन स्वयंप्रभा सो तुझे परणाऊंगा। तब सहस्ररश्मि बोले धिकार है इस राज्यको यह इंद्रधनुष समान क्षणभंगुर है अर इन विषयोंको धिकार है ये देखनेमात्र मनोज्ञ हैं महादुखरूप हैं अर स्वर्गको धिकार, अव्रत असंयमरूप है। अर मरणके भाजन इस देहको भी धिक्कार अर मोकों धिक्कार जो ऐते काल विषयासक्त होय इतने काल कामादिक वैरियोंसे ठगाया। अब मैं ऐसा करूं जाकरि बहुरि संसार वनविषै भ्रमण न करूं। अत्यंत दुःखरूप जो चार गति तिनमें भ्रमण करता बहुत थका। अब भवसागरमें जिससे पतन न होय सो करूंगा तब रावण कहते भए यह मुनिका धर्म वृद्धोंको शोभै है। हे भव्य! तू तो नवयौवन है तब सहस्ररश्मि ने कहा—कालके यह विवेचना नहीं, जो वृद्धहीको ग्रसै तरुणको न ग्रसै। काल सर्वभक्षी है बाल वृद्ध युवा सबहीको ग्रसै है जैसे शरदका मेघ क्षणमात्रमें विला जाय तैसे यह देह तत्काल विनसै है हे रावण! जो इन भोगोंहीके विषै सार होय तो महापुरुष काहेको तजैं, उत्तम है बुद्धि जिनकी ऐसे मेरे यह पिता इन्होंने भोग छोड योग आदरा सो योग ही सार है। यह कहकर अपने पुत्रको राज्य देय रावणसे क्षमा कराय पिताके निकट जिनदीक्षा आदरी अर राजा अरण्य अयोध्याका धनी सहस्रराश्मिका परममित्र है सो उनसे पूर्व वचन था जो हम पाहिले दीक्षा धरेंगे तो तुम्हें खबर करेंगे अर उनने कही हुती हम दीक्षा धरेंगे तो तुम्हें खबर करेंगे सो उनपै वैराग्यके समाचार भेजे। भले मनुष्योंने राजा सहस्रराश्मिका वैराग्य होनेका वृत्तांत राजा अरण्यसे कहा सो सुनकर पाहिले तो सहस्रराश्मिका गुण स्मरणकर आंसू

भर विलाप किया फिर विषादको बंदकर अपने समीप लोगोंसे महाबुद्धिमान कहते भए जो रावण वैरी का भेषकर उनका परम मित्र भया जो ऐश्वर्यके पिंजरेमें राजा रुक रहे थे विषयोंकर मोहित था चित्त जिनका सो पिंजरेसे छुडाया। यह मनुष्यरूप पक्षी माया जालरूप पिंजरेमें पडा है सो परम हितू ही छुडावें हैं। माहिष्मती नगरीका धनी राजा सहस्ररश्मि धन्य है जो रावण रूप जहाजको पायकर संसार रूप समुद्रको तिरेगा। कृतार्थ भया अत्यंत दुखका देनहारा जो राजकाज महापाप ताहि तजकर जिन-राजका व्रत लेनेका उद्यमी भया। या भांति मित्रकी प्रशंसाकर आप भी लघु पुत्रको राज देय बडे पुत्र सहित अरण्य मुनि भए। हे श्रेणिक! कोई एक उत्कृष्ट पुण्यका उदय आवे तब शत्रुका तथा मित्रका कारण पाय जीवको कल्याणकी बुद्धि उपजै अर पापकर्मके उदयकर दुर्बुद्धि उपजै जो कोई प्राणीको धर्मके मार्गमें लगावे सोई परममित्र है अर जो भोग सामग्रीमें प्रेरे सो परम वैरी है अस्पृश्य है। हे श्रेणिक! जो भव्य जीव यह राजा सहस्ररश्मिकी कथा भावधर सुनै सो मुनिव्रतरूप संपदाको प्राप्त होकर परम निर्मल होय, जैसा सूर्यके प्रकाशकर तिमिर जाय तैसे जिनवाणीके प्रकाशकर मोह तिमिर जाय॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै सहस्ररश्मि अरअरण्यके वैराग्य निरूपण करनेवाला दसवां पर्व पूर्ण भया॥ १०॥

अथानन्तर रावणने जे जे पृथ्वीविषै मानी राजा सुने ते ते सर्व नवाए, अपने वश किए अर जो आप मिले तिनपर बहुत कृपा करी अनेक राजाओंसे मण्डित सुभूम चक्रवर्तीकी न्याईं पृथ्वीविषै विहार किया। नाना देशके उपजे नाना भेषके धारणहारे नाना प्रकार आभूषणके पहरनेहारे नाना प्रकारकी भाषाके बोलनहारे, नाना प्रकारके वाहनोंपर चढे नाना प्रकारके मनुष्योंकर मंडित अनेक राजा उन सहित दिग्विजय करता भया ठौर २ रत्नमई सुवर्णमई अनेक जिनमंदिर कराये अर जीर्ण चैत्यालयों

का जीर्णोद्धार कराया, देवाधिदेव जिनेंद्रदेवकी भावसहित पूजा करी ठौर २ पूजा कराई, जो जैनधर्म के द्वेषी दुष्ट मनुष्य हिंसक थे तिनको शिक्षा दीनी अर दरिद्रियोंको दयाकर धनसे पूर्ण किया अर सम्यक्‌दृष्टि श्रावकोंका बहुत आदर किया, साधर्मियोंपर है वात्सल्यभाव जाका, अर जहां मुनि सुने वहां जाय भक्तिकर प्रणाम करै जे सम्यक्त्व रहित द्रव्यलिंगी मुनि अर श्रावक हुते तिनकी भी शुश्रूषा करी, जैनी मात्रका अनुरागी उत्तरदिशाको दुस्सह प्रताप प्रगट करता विहार करता भया जैसे उत्तरायणके सूर्यका अधिक प्रताप होय तैसे पुण्यकर्मके प्रभावसे रावणका दिन दिन अधिक तेज होता भया।

अथानंतर रावणने सुनी कि राजपुरका राजा बहुत बलवान है अतिअभिमानको धरता हुवा किसीको प्रमाण नहीं करै है अर जन्मसे ही दुष्टचित्त है मिथ्या मार्गकर मोहित है अर जीवहिंसा रूप यज्ञ मार्गविषे प्रवर्ता है। तब यज्ञका कथन सुन राजा श्रेणिकने गौतम स्वामीसे कहा—हे प्रभो! रावणका कथन तो पीछे कहिये पहले यज्ञकी उत्पत्ति कहो यह कौन वृत्तांत है जिसमें प्राणी जीव घातरूप घोर कर्ममें प्रवरते हैं॥ तब गणधरने कही—'हे श्रेणिक! अयोध्याविषे इक्ष्वाकुवंशी राजा ययाति उसकी राणी सुरकांता अर पुत्र वसु था सो जब पढने योग्य भया तब क्षीरकदम्ब ब्राह्मणपै पढनेको सौंपा, क्षीरकदम्बकी वह स्वास्तिमती अर एक नारद ब्राह्मण देशान्तरी धर्मात्मा सो क्षीरकदम्बपै पढै अर क्षीरकदम्बका पुत्र पर्वत महापापी सो भी पढै। क्षीरकदम्ब अति धर्मात्मा सर्व शास्त्रोंमें प्रवीण शिष्यों को सिद्धांत तथा क्रियारूप ग्रंथ तथा मंत्रशास्त्र काव्य व्याकरणादि अनेक ग्रंथ पढावे। एक दिन नारद वसु अर पर्वत इन तीनों सहित क्षीरकदम्ब बनविषे गए। वहां चारण मुनि शिष्यों सहित विराजे हुते सो एक मुनिने कहा—ये चार जीव हैं,—एक गुरु तीन शिष्य। तिनमें एक गुरु एक शिष्य यह दो सुबुद्धि

हैं अर दो शिष्य कुबुद्धी हैं ऐसे शब्द सुनकर क्षीरकदम्ब संसारसे अत्यन्त भयभीत भए शिष्योंको तो सीख दीनी सो अपने २ घर गए मानों गायके बछडे बंधनसे छुटे अर क्षीरकदम्बने मुनिपै दीक्षा धरी। जब शिष्य घर आए तब क्षीरकदम्बकी स्त्री स्वास्तिमती पर्वतको पूछती भई तेरा पिता कहां तू अकेले ही घर क्यों आया? तब पर्वतने कही हमको तो सीख दीनी अर कहा हम पीछेसे आवे हैं यह वचन सुन स्वास्तिमती महाशोकवती होय पृथ्वीपर पडी अर रात्रिविषे चकवीकी नाई दुखकर पीडित विलाप करती भई हाय हाय! मैं मंदभागिनी प्राणनाथ विना हती गई। किसी पापीने उनको मारा अथवा किसी कारणकर देशांतरको उठ गए अथवा सर्वशास्त्रविषे प्रवीण थे सो सर्वपरिग्रहको त्यागकर वैराग्य पाय मुनि होगए इस भांति विलाप करते रात्रि पूर्ण भई जब प्रभात भया तब पर्वत पिताको ढूंढने गया। उद्यानमें नदी के तटपर मुनियोंके संघसहित श्रीगुरु विराजे हुते तिनके समीप विनयसहित पिता बैठा देखा तब पीछे जायकर मातासे कही कि हे मात! हमारा पिता मुनियोंने मोहा है सो नग्न हो गया है। तब स्वस्तिमती निश्चय जानकर पतिके वियोगसे अति दुखी भई। हाथोंकर उरस्थलको कूटती भई अर पुकारकर रोवती भई सो नारद महाधर्मात्मा यह वृत्तांत सुनकर स्वस्तिमतीपै शोकका भरा आया उसे देखकर अत्यन्त रोवने लगी अर सिर कूटती भई, शोकविषे अपनेको देखकर शोक अतीव बढै है तब नारदने कही—हे माता! काहेको वृथा शोक करो हो, वे धर्मात्मा जीव पुण्याधिकारी सुंदर है चेष्टा जिनकी, जीतव्यको अस्थिर जान तप करनेको उद्यमी भए हैं सो निर्मल है बुद्धि जिनकी, अब शोक किएसे पीछे घर न आवें या भांति नारदने सम्बोधी तब किंचित् शोक मंद भया, घरमें तिष्ठी, महा दुःखित भरतारकी स्तुति भी करे अर निंदा भी करे। यह क्षीरकदम्बके वैराग्यका वृत्तांत सुन राजा ययाति तत्त्वके वेत्ता वसु पुत्रको राज देय महामुनि भए वसुका राज्य पृथ्वीविषे प्रसिद्ध भया आकाशतुल्य स्फटिक

मणि उसके सिंहासनके पाये बनाए उस सिंहासनपर तिष्ठे सो लोक जाने कि राजा सत्यके प्रतापकरि आकाशविषै निराधार तिष्ठे है।

अथानन्तर हे श्रेणिक ! एक दिन नारदके अर पर्वतके चर्चा भई तब नारदने कही कि भगवान वीतराग देवनें धर्म दोय प्रकार प्ररूपा है एक मुनिका दूसरा गृहस्थीका। मुनिका महाव्रतरूप है गृहस्थी का अणुव्रतरूप है जीवहिंसा, असत्य, चोरी, कुशील, परिग्रह इनका सर्वथा त्याग सो पंच महाव्रत तिनकी पच्चीस भावना यह मुनिका धर्म है अर इन हिंसादिक पापोंका किंचित् त्याग सो श्रावकका व्रत है। श्रावकके व्रतोंमें पूजा दान शास्त्रविषै मुख्य कहा है पूजाका नाम यज्ञ है (अजैर्यष्टव्यं) इस शब्दका अर्थ मुनियोंने इस भांति कहा है जो बोनेसे न उगें जिनमें अंकुर शक्ति नहीं ऐसे शालिय तिनका विवाहादिक क्रिया विषै होम करिए यह भी आरम्भी श्रावककी रीति है ऐसे नारदके वचन सुन पापी पर्वत बोला अज कहिये छेला (बकरा) तिनका आलम्भन कहिये हिंसन उसका नाम यज्ञ है। तब नारद कोपकर पर्वत दुष्टसे कहते भये हे पर्वत ! ऐसें मत कहै, महा भयंकर वेदना जिसविषै ऐसे नरकमें तू पडेगा। दया ही धर्म है, हिंसा पाप है। तब पर्वत कहने लगा मेरा तेरा न्याय राजा वसुपै होयगा जो झूठा होयगा उसकी जिह्वा छेदी जायगी इस भांति कहकर पर्वत मातापै गया नारदके अर याके जो विवाद भया सो सर्व वृत्तान्त मातासे कहा तब माताने कहा कि तू झूठा है तेरा पिता हमने व्याख्यान करता अनेक वार सुना है जो अज बोई हुई न उगे ऐसी पुरानी शालिय तथा पुराने यव तिनका नाम है छेलेका नहीं, जीवोंका भी कभी होम किया जाय है। तू देशान्तर जाय मांसभक्षणका लोलुपी भया है तैं मानके उदयसे झूठ कहा सो तुझे दुःखका कारण होयगा। हे पुत्र ! निश्चयसेती तेरी जिह्वा छेदी जायगी। मैं पुण्यहीन अभागिनी पति अर पुत्ररहित क्या करूंगी इसभांति पुत्रसे कहकर वह पापिनी चितारती

भई कि राजा वसुके गुरु दक्षिणा हमारी धरोर है ऐसा जान अति आकुल भई। वसुके समीप गई। राजाने स्वस्तिमतीको देख बहुत विनय किया। सुखासन बैठाई हाथ जोड पूछता भया—हे माता! तुम आज दुखित दीखो हो जो तुम आज्ञा करो सोही करूं? तब स्वस्तिमती कहती भई हे पुत्र! मैं महा-दुःखिनी हूं जो स्त्री अपने पतिसे रहित होय उसको काहेका सुख, संसारमें पुत्र दो भांतिके हैं एक पेटका जाया एक शास्त्रका पढाया। सो इनमें पढाया विशेष है एक समल है दूसरा निर्मल है। मेरे धनीके तुम शिष्य हो, तुम पुत्रसे अधिक हो, तुम्हारी लक्ष्मी देखकर मैं धीर्य धरूं हूं। तुम कही थी माता दक्षिणा लेवो, मैं कही समय पाय लूंगी वह वचन याद करो। जे राजा पृथिवीके पालनमें उद्यमी हैं ते सत्य ही कहे हैं अर जे ऋषि जीव दयाके पालनेमें तिष्ठे हैं ते भी सत्य ही कहे हैं तू सत्यकर प्रसिद्ध है मोको दक्षिणा देवो इस भांति स्वस्तिमतीने कहा तब राजा विनयकर नम्रीभूत होय कहते भये—हे माता! तुम्हारी आज्ञासे जो न करने योग्य काम है सो भी मैं करूं जो तुम्हारे चित्तमें होय सो कहो। तब पापिनी ब्राह्मणीने नारद अर पर्वतके विवादका सर्व वृत्तांत कहा अर कहा मेरा पुत्र सर्वथा झूठा है परन्तु याके झूठको तुम सत्य करो मेरे कारण उसका मान भंग न होय तब राजाने यह अयोग्य जानते हुए भी ताकी बात दुर्गतिका कारण प्रमाण करी तब वह राजाको आशीर्वाद देय घर आई, बहुत हर्षित भई। दूजे दिन प्रभात ही नारद पर्वत राजाके समीप आए, अनेक लोक कौतूहल देखनेको आए, सामन्त मन्त्री देशके लोग बहुत आय भेले भए। तब सभाके मध्य नारद पर्वत दोनोंमें बहुत विवाद भया, नारद तो कहै अज शब्दका अर्थ अंकुरशक्तिरहित शालिय है अर पर्वत कहै पशु है तब राजा वसुको पूछा तुम सत्यवादियोंमें प्रसिद्ध हो जो क्षीरकदम्ब अध्यापक कहते हुते सो कहो। तब राजा कुगतिको जानेवाला कहता भया जो पर्वत कहै है सोई क्षीरकदम्ब कहते थे। ऐसा कहते ही सिंहासनके स्फटिकके

पाए टूट गये, सिंहासन भूमिमें गिर पडा। तब नारदने कहा हे वसु! असत्यके प्रभावसे तेरा सिंहासन डिगा अब भी तुझे सांच कहना योग्य है। तब मोहके मदकर उन्मत्त भया यह ही कहता भया जो पर्वत कहे सो सत्य है तब महा पापके भारकर हिंसामार्गके प्रवरतनसे तत्काल सिंहासन समेत धरतीमें गढगया। राजा मरकर सातवें नरक गया। कैसा है नरक? अत्यंत भयानक है वेदना जहां, तब राजा वसुको मूवा देख सभाके लोग वसू अर पर्वतको धिक्कार धिक्कार कहते भये अर महा कलकलाट शब्द भया, दया धर्मके उपदेशसे नारदकी बहुत प्रशंसा भई अर सर्व कहते भये (यतो धर्मस्ततो जयः) पापी पर्वत हिंसाके उपदेशसे धिक्कार दंडको प्राप्त भया, पापी पर्वत देशान्तरोंमें भ्रमण करता संता हिंसामई शास्त्रकी प्रवृत्ति करता भया, आप पढे औरोंको पढावें जैसे पतंग दीपकमें पडे तैसे कईएक बहिरमुख जीव कुमार्गमें पडे अभक्ष्यका भक्षण अर न करने योग्य काम करना ऐसा लोकनको उपदेश दिया अर कहता भया कि यज्ञहीके अर्थ ये पशु बनाये हैं, यज्ञ स्वर्गका कारण है तातैं जो यज्ञमें हिंसा सो हिंसा नहीं अर सौत्रामणि नाम यज्ञके विधान कर सुरापान (शराब पीने) का भी दूषण नहीं अर गो शब्द नाम यज्ञमें अगम्यागम्य (परस्त्री सेवन) करे है ऐसा पर्वतने लोकोंको हिंसादि मार्गका उपदेश दीया। आसुरी मायाकर जीव स्वर्ग जाते दिखाये केएक क्रूर जीव कुकर्ममें प्रवर्त कुगतिके अधिकारी भये। हे श्रेणिक! यह हिंसायज्ञकी उत्पत्तिका कारण कहा। अब रावणका वृत्तांत सुनो।

रावण राजपुर गए जहां राजा मरुत हिंसा कर्ममें प्रवीण यज्ञशालाविषे तिष्ठे था संवर्त नामा ब्राह्मण यज्ञ करावे था तहां पुत्र दारादि सहित अनेक विप्र धनके अर्थी आये हुते और अनेक पशु होम निमित्त लाये उससमय अष्टम नारद पदवीधर बडे पुरुष आकाश मार्ग आय निकसे, बहुत लोकनका समूह देख आश्चर्य पाय चित्तमें चिंतवते भए कि यह नगर किसका है और यह दूर सेना किसकी पडी है अर

नगरके समीप एते लोग किस कारण एकत्र भए हैं ऐसा मनमें विचार आकाशसे भूमि पर उतरे ॥

अथानन्तर यह बात सुन राजा श्रेणिक गोतमस्वामीसे पूछते भए हे भगवान ! यह नारद कोन है याभे केसे केसे गुण अर याकी उत्पत्ति किस भांति है तब गणधरदेव कहते भए हे श्रेणिक ! एक ब्रह्मरुचि नामा ब्राह्मण था ताके कुरमी नामा स्त्री सो ब्राह्मण तापसके व्रत धर वनमें जाय कन्दमूल फल भक्षण करे ब्राह्मणी भी संग रहे उसको गर्भ रहा वहां एक दिन मार्गके वशसे कुछ संयमी महामुनि आए क्षण एक विराजे ब्राह्मणी अर ब्राह्मण समीप आय बेठे। ब्राह्मणी गर्भिणी पांडुर है शरीर जिसका गर्भके भारकर दुखित स्वास लेती मानों सर्पणी ही है, उसको देखकर मुनिको दया उपजी। तिनमेंसे बडे मुनि बोले देखो यह प्राणी कर्मके वशकर जगतविषै भ्रमे है धर्मकी बुद्धिकर कुटुंबको तजकर संसार सागरके तरणे के अर्थ तो वनविषै आया सो हे तापस ! तेने क्या दुष्ट कर्म किया ? स्त्री गर्भवती करी। तेरेमें अर गृहस्थीमें कहा भेद है। जैसे वमन किया जो आहार उसे मनुष्य न भखै तैसे विवेकी पुरुष तजे कामादिकोंको फिर न आदरे जो कोई भेषधरे अर स्त्रीका सेवन करे सो भयानक वनमें स्याली होय अनेक कुजन्म पावे नरक निगोदमें पडे है, जो कोई कुशील सेवता सर्व आरम्भोंमें प्रवरता मदोन्मत्त आपको तापसी माने है सो अत्यन्त अज्ञानी है। यह कामसेवन ताकर दग्ध दुष्ट चित्त जो दुरात्मा आरम्भविषै प्रवर्तें उसके तप काहेका ? कुदृष्टिकर गर्वित भेषधारी विषियाभिलाषी जो कहे मैं तपसी हूं सो मिथ्यावादी है, काहेका व्रती। सुखसों बेठना सुखसूं, सोवना, सुखसूं आहार सुखसूं विहार ओढना विछावना अर आपको साधु माने सो मूर्ख आपको ठगे है बलता जो घर तहांतें निकसै फिर उसमें कैसे प्रवेश करे अर जैसे छिद्र पाय पिंजरेसे निकसा पक्षी भी फिर आपको कैसे पिंजरेविषै डारे तैसे विरक्त होय फिर कोन इंद्रियोंके वश परे जो इंद्रियोंके वश होय सो लोकविषै निंदा योग्य है आत्मकल्याणको न पावे है सर्व

परिग्रहके त्यागी मुनियोंको एकाग्रचित्त कर एक आत्मा ही ध्याने योग्य है सो तुम सारिखे आरंभी तिन कर आत्मा कैसे ध्याया जाय ? प्राणियोंके परिग्रहके प्रसंगकर राग द्वेष उपजे है, रागसे काम उपजे है, द्वेषसे जीवहिंसा होय है, काम क्रोधकर पीडित जो जीव उसके मनको मोहे पीडे है, मूर्खके कृत्य अकृत्य में विवेकरूप बुद्धि न होय जो अविवेकसे अशुभ कर्म उपारजे है सो घोर संसार सागरमें भ्रमे है यह संसर्गके दोष जानकर जे पंडित हैं वे शीघ्र ही वैरागी होय हैं आपकरि आपको जान विषय वासनासे निवृत्त होय परमधामको पावे हैं। इस भांति परमार्थरूप उपदेशोंके वचनोंसे महामुनिने संबोधा। तब ब्राह्मण ब्रह्मरुचि निरमोही होय मुनि भया, कुरमी नामा स्त्रीका त्यागकर गुरुके संग ही विहार किया। गुरुमें है धर्मराग जिसके अर वह ब्राह्मणी कुरमी शुद्ध है बुद्धि जिसकी, पापकर्मसे निवृत्त होय श्रावकके व्रत आदरे। जाना है रागादिकके वशसे संसारका परिभ्रमण जिसने कुमार्गका संग छोडा जिनराजकी भक्ति में तत्पर होय भरताररहित अकेली महासती सिंहनीकी नाईं महावनविषे भ्रमे, दसवें महीने पुत्रका जन्म हुआ तब इसको देखकर वह महासती ज्ञान क्रियाकी धरणहारी चित्तविषे चिंतवती भई यह पुत्र परिवारका संबंध महा अनर्थका मूल मुनिराजने कहा था सो सत्य है इसलिए मैं अब पुत्रका प्रसंगका परित्यागकर आत्मकल्याण करूं अर यह पुत्र महा भाग्यवान है इसके रक्षक देव हैं इसने जे कर्म उपारजे हैं तिनका फल अवश्य भोगेगा वनमें तथा समुद्रविषे अथवा वैरियोंके वशविषे पडा जो प्राणी उसके पूर्वोपार्जित कर्म ही रक्षा करे हैं अर कोऊ नहीं अर जिसकी आयु क्षीण होय है सो माताकी गोदविषे बैठा ही मृत्युके वश होय है ये सर्व संसारी जीव कर्मोंके आधीन हैं भगवान सिद्ध परमात्मा कर्मकलंकरहित हैं ऐसा जाना है तत्त्वज्ञान जिसने महानिर्मल बुद्धिकर बालकको वनविषे तजकर यह ब्राह्मणी विकल्परूप जो जडता उसकर रहित अलोकनगरविषे आई जहां इन्द्रमालिनी नामा आर्या अनेक आर्याओंकी गुरुनी थी तिनके समीप आर्या भई, सुन्दर है चेष्टा जिसकी।

अथानन्तर आकाशके मार्ग ज्रंभनामा देव जाते थे सो पुण्याधिकारी रुदनादिरहित उन्होंने वह बालक देखा, दयावान होय उठा लिया, बहुत आदरसे पाला, अनेक आगम अध्यात्मशास्त्र पढाए, सिद्धान्तका रहस्य जानने लगा, महापंडित भया, आकाशगामिनी विद्या सिद्ध भई, यौवनकों प्राप्त भया, श्रावकके व्रत धारे, शीलव्रतविषै अत्यन्त दृढ अपने माता पिता जे आर्यिका मुनि भए थे तिनकी वंदना करै, कैसा है नारद ? सम्यग्दर्शनविषै तत्पर ग्यारमी प्रतिमाके क्षुल्लक श्रावकके व्रत लेय विहार किया परन्तु कर्मके उदयसे तीव्र वैराग्य नहीं, न गृहस्थी न संयमी, धर्म प्रिय है अर कलह भी प्रिय है, वाचालपनेमें प्रीति है गायन विद्यामें प्रवीण अर राग सुननेमें विशेष अनुरागवाला है मन जाका महा प्रभावकरयुक्त राजाओंकर पूजित जिसकी आज्ञा कोई लोप न सकै, पुरुष स्त्रियोंमें सदा जिसका अति सन्मान है, अढाई द्वीपविषै मुनि जिन चैत्यालयोंका दर्शन करै, सदा धरती आकाशविषै भ्रमता ही रहै, कौतूहलमें लगी है दृष्टि जिसकी, देवनकर वृद्धि पाई अर देवन समान है महिमा जिसकी, पृथ्वीविषै देव ऋषि कहावै सदा सर्वत्र प्रसिद्ध विद्याके प्रभाणकरि किया है अद्भुत उद्योत जिसने।

सो नारद विहार करते संते कदाचित् मरुतके यज्ञकी भूमि ऊपर आय निकसे सो बहुत लोकनकी भीड देखी अर पशु बंधे देखे तब दया भावकर संयुक्त होय यज्ञ भूमिमें उतरे, तहां जायकर मरुतसे कहने लगे—'हे राजा ! जीवनकी हिंसा दुर्गतिका ही द्वार है, तैंने यह महापापका कार्य क्यों रचा है ?' तब मरुत कहता भया—'यह सम्वर्त ब्राह्मण सर्व शास्त्रोंके अर्थविषै प्रवीण यज्ञका अधिकारी है यह सर्व जाने है इससे धर्मचर्चा करो। यज्ञकर उत्तम फल पाइए है।' तब नारद यज्ञ करावनवारेसे कहते भए—'अहो मानव ! तैंने यह क्या कर्म आरम्भा है, यह कर्म सर्वज्ञ जो वीतराग हैं तिन्होंने दुःखका कारण कहा है। तब संवर्त ब्राह्मण कोपकर कहता भया अहो अत्यन्त मूढता तेरी, तू सर्वथा अमिलती वात

कहै है। तैंने कोई सर्वज्ञ रागवर्जित वीतराग कहा सो जो सर्वज्ञ वीतराग होय सो वक्ता नहीं अर जो वक्ता है सो सर्वज्ञ वीतराग नहीं अर अशुद्ध मलिन जे जीव उनका कहा वचन प्रमाण नहीं अर जो अनुपम सर्वज्ञ है सो कोई देखनेमें नहीं आवे इसलिए वेद अकृत्रिम है वेदोक्त मार्ग प्रमाण है वेदविषै शूद्र विना तीन वर्णोंको यज्ञ कहा है, यह यज्ञ अपूर्व धर्म है स्वर्गके अनुपम सुख देवे है, वेदीके मध्य पशुवोंका बध पापका कारण नहीं, शास्त्रोंमें कहा जो मार्ग सो कल्याण हीका कारण है अर यह पशुओंकी सृष्टि विधाताने यज्ञ हीके अर्थ रची है तातैं यज्ञमें पशुके बधका दोष नहीं। ऐसे संवर्त ब्राह्मणके विपरीत वचन सुन नारद कहते भए—हे विप्र! तैंने यह सर्व अयोग्यरूप ही कहा है। कैसा है तू? हिंसा मार्गकर दूषित है आत्मा याका। अब तू ग्रन्थार्थका यथार्थ भेद सुन। तू कहै है सर्वज्ञ नहीं, सो यदि सर्वथा सर्वज्ञ न होय तो शब्द सर्वज्ञ अर्थसर्वज्ञ बुद्धिसर्वज्ञ यह तीन भेद काहेको कहे। जो सर्वज्ञ पदार्थ है तो कहने में आवे है जैसे सिंह है तो चित्राममें लिखिए है तातैं सर्वका देखनेहारा सर्वका जाननेहारा सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ न होय तो अमूर्तिक अतेंद्रिय पदार्थको कौन जाने तातैं सर्वज्ञका वचन प्रमाण है अर तैंने कहा जो यज्ञमें पशुका बध दोषकारी नहीं सो पशुको बध समय दुःख होय है कि नहीं, जो दुःख होय है तो पापहू होय है जैसे पारधी हिंसा करै है सो जीवनको दुःख होय है अर उसको पाप होय है अर तैंने कही विधाता सर्वलोकका कर्त्ता है अर यह पशु यज्ञके अर्थ बनाए हैं सो यह कथन प्रमाण नहीं, भगवान कृतार्थ उनको सृष्टि बनानेसे क्या प्रयोजन अर कहोगे ऐसी क्रीडा है सो क्रीडा तो कृतार्थ नहीं, बालक समान जानिए अर जो सृष्टि रचै तो आप सारखी रचै। वह सुखपिण्ड अर यह सृष्टि दुःखरूप है, जो कृतार्थ होय सो कर्त्ता नहीं अर कर्त्ता है सो कृतार्थ नहीं। जिसके कछु इच्छा है सो करै, जिनके इच्छा है ते ईश्वर नहीं अर ईश्वर विना समर्थ नहीं, तातैं यह निश्चय भया जिसके इच्छा है सो करने समर्थ

नहीं अर जो करने समर्थ है ताके इच्छा नहीं इसालिए जिसको तुम विधाता कर्त्ता मानो हो सो कर्मकर पराधीन तुम सारखा ही है अर ईश्वर है सो अमूर्तिक है, जिसके शरीर नहीं सो शरीर विना केसे सृष्टि रचे। अर यज्ञके निमित्त पशु बनाए सो बाहनादि कर्मविषे क्यों प्रवर्ते तातैं यह निश्चय भया कि इस भवसागरमें अनादिकालसे इन जीवोंने रागादि भावकर कर्म उपार्जे हैं तिनकर नाना योनिमें भ्रमण करे हैं यह जगत अनादि निधन है, किसीका किया नहीं, संसारी जीव कर्माधीन हैं अर जो तुम यह कहोगे कि कर्म पहले हैं या शरीर पहिले हैं ? सो जैसे बीज अर वृक्ष तैसे कर्म अर शरीर जानने। बीज से वृक्ष है अर वृक्षसे बीज है, जिनके कर्मरूप बीज दग्ध भया तिनके शरीररूप वृक्ष नहीं अर शरीर वृक्ष विना सुख दुखादि फल नहीं इसालिए यह आत्मा मोक्ष अवस्थामें कर्मरहित मन इंद्रियोंसे अगोचर अद्भुत परम आनन्दको भोगे है निराकार स्वरूप अविनाशी है सो वह अविनाशी पद दया धर्मसे पाइए है। तू कोई पुण्यके उदयकर मनुष्य हुवा ब्राह्मणका कुल पाया तातें पारधियोंके कर्मसे निवृत्त हो अर जो जीवहिंसासे यह मानव स्वर्ग पावै है तो हिंसाके अनुमोदनसे राजा वसु नरकमें क्यों पडे ? जो कोई चूनका पशु बनायकर घात करे है सो भी नरकका अधिकारी होय है तो साक्षात् पशुघातकी क्या वात ? अब भी यज्ञके करणहारे ऐसा शब्द कहे हैं—हो वसु ! उठ स्वर्गविषे जावो। यह कहकर अग्निमें आहुति डारे हैं। इससे सिद्ध हुआ कि वसु नरकमें गया अर स्वर्ग न गया तातें हे संवर्त ! यज्ञ करयाणसे कछु प्रयोजन नहीं अर जो तू यज्ञ ही करै तो जैसे हम कहें सो कर। यह चिदानन्द आत्मा सो तो जजमान नाम कहिए यज्ञका करणहारा अर यह शरीर है सो विनयकुण्ड कहिए होमकुण्ड अर संतोष है सो पुरोडास कहिए यज्ञकी सामग्री अर जो सर्व परिग्रह सो हवि कहिए होमने योग्य वस्तु अर माधुर्य कहिए केश वेई दर्भ कहिए डाभ तिनका उपारना लोंच करना अर जो सर्व जीवोंकी दया सोई दक्षिणा अर जिसका फल

सिद्धपद ऐसा जो शुक्लध्यान सोई प्राणायाम अर जो सत्यमहाव्रत सोई यूप कहिए यज्ञविषै काष्ठका स्थंभ जिससे पशुको बांधे हैं अर यह चंचल मन सोई पशु अर तपरूप अग्नि अर पांच इंद्रिय वेई समाधि कहिए ईंधन यह यज्ञ धर्मयज्ञ कहिए है अर तुम कहोहो कि यज्ञकर देवोंकी तृप्ति कीजिये है सो देवनके तो मनसा आहार है तिनका शरीर सुगन्ध है अन्नादिक हीका आहार नहीं तो मांसादिककी कहा बात ? कैसा है मांस महा दुर्गंधि जो देखा न जाय, पिताका वीर्य माताका लहू उसकर उपजा कृमीकी है उत्पत्ति जिसमें, महा अभक्ष सो मांस देव कैसे भखैं अर तीन अग्नि या शरीरविषै हैं एक ज्ञानाग्नि दूसरी दर्शनाग्नि तीसरी उदराग्नि सो इन्हींको आचार्य दक्षिणाग्नि गार्हपत्य आहवनीय कहै हैं अर स्वर्गलोकके निवासी देव हाड मांसका भक्षण करैं तो देव काहेके ? जैसे स्वान स्याल काक तैसे वे भी भए। ये वचन नारदने कहे।

कैसे हैं नारद ? देवऋषि हैं अनेकांतरूप जिनमार्गके प्रकाशिवेको सूर्यसमान महा तेजस्वी देदीप्यमान है शरीर जिनका, शास्त्रार्थ ज्ञानके निधान तिनको मन्दबुद्धि संवर्त कहा जीते। सो पराभवको प्राप्त भया तब निर्दई क्रोधके भारकर कम्पायमान आशीविष सर्पसमान लाल हैं नेत्र जिसके महा कलकलाट कर अनेक विप्र भेले होय लडनेको काछकछ हस्तपादादिकर नारदके मारनेको उद्यमी भए। जैसे दिनमें काक घूघू पर आवें सो नारद भी कैयकोंको मुकासे, कैयकोंको मुगदरसे, कैयकोंको कोहनीसे मारते हुये भ्रमण करते हुए अपने शरीररूप शस्त्रकर अनेकोंको हता बहुत युद्ध भया। निदान यह बहुत अर नारद अकेले सो सर्व गात्रमें अत्यन्त आकुलताको प्राप्त भये। पक्षीकी न्याई बधकोंने घेरा, आकाशमें उडनेको असमर्थ भए, प्राण संदेहको प्राप्त भए तासमय रावणका दूत राजा मरुतपै आया हुता सो नारदको घेरा देख पीछे जाय रावणसे कही—हे महाराज ! जिसके निकट मुझे भेजा हुता सो महा दुर्जन है

उसके देखते द्विजोंने अकेले नारदको घेरा है अर मारे हैं जैसे कीडीदल सर्पको घेरे सो मैं यह बात देख न सका सो आपको कहिनेको आया हूं। यह वृतान्त सुन क्रोधको प्राप्त भया, पवनसे भी शीघ्रगामी जे वाहन उनपर चढ चलनेको उद्यमी भया अर नंगी तलवारोंके धारक जे सामन्त वे अगाऊ दौडाए सो एक पलकमें यज्ञशालामें जा पहुंचे सो तत्काल नारदको शत्रुवोंके घेरेसे छुडाया अर निरदई मनुष्य जो पशुओंको घेर रहे थे सो सकल पशु तत्काल छुडाये। यज्ञके यूप कहिये स्तंभ तोड डारे अर यज्ञके करावनहारे विप्र बहुत कूटे, यज्ञशाला बखेर डारी, राजाको भी पकड लिया, रावणने द्विजोंसे बहुत कोप किया जो मेरे राजमें जीवघात करें यह क्या बात ? सो ऐसे कूटे जो अचेत होय धरती पर गिर पडे तब सुभटलोक इनको कहते भये अहो जैसा दुख तुमको बुरा लगे है अर सुख भला लगे है तैसा पशुवोंको भी जानो अर जैसा जीतव्य तुमको वल्लभ है तैसा सकल जीवोंको जानो, तुमको कूटते कष्ट होय है तो पशुवोंको विनाशनेसे क्यों न होय ? तुम पापका फल सहोगे नरकमें दुख भोगोगे सो घोडों आदिके सवार तथा खेचर भूचर सब ही पुरुष हिंसकोंको मारने लगे। तब वे विलाप करने लगे, हमको छोडो फिर ऐसा काम न करेंगे ऐसे दीन वचन कह विलाप करते भये अर रावणका तिनपर अत्यन्त क्रोध सो छोडे नहीं, तब नारद महा दयावान रावणसे कहने लगे हे राजन् ! तेरा कल्याण होवे, तैंने इन दुष्टोंसे मुझे छुडाया अब इनकी भी दयाकर, जिनशासनमें काहूको पीडा देनी लिखी नहीं। सर्व जीवोंको जीतव्य प्रिय है। तैंने सिद्धांतमें क्या यह बात न सुनी है कि जो हुंडावसर्पणी कालविषै पाखण्डियोंकी प्रवृत्ति होय है जबके चौथेकालके आदिमें भगवान ऋषभ प्रगटे तीन जगत्में उच्च जिनको जन्मते ही देव सुमेरु पर्वत पर ले गये, क्षीर सागरके जलसे स्नान कराया, वे महाकांतिके धारी ऋषभ जिनका दिव्य चारित्र पापोंका नाश करनेहारा तीनलोकमें प्रसिद्ध है सो तैंने क्या न सुना, वे भगवान जीवोंके दयालु जिनके

गुण इंद्र भी कहनेको समर्थ नहीं, ते वीतराग निर्वाणके अधिकारी इस पृथिवीरूप स्त्रीको तजकर जगत् के कल्याण निमित्त मुनिपदको आदरते भये। कैसे हैं प्रभु? निर्मल है आत्मा जिनका, कैसी है पृथिवी-रूप स्त्री ? जो विन्ध्याचल पर्वत अर हिमाचल पर्वत तेई हैं उतंग कुच जिसके और आर्यक्षेत्र है मुख जिसका, सुन्दर नगर वेई चूडे तिनकर युक्त है अर समुद्र है कटिमेखला जिसकी अर जे नीलवन तेई हैं सिरके केश जिसके नाना प्रकारके जे रत्न तेई आभूषण हैं। ऋषभदेवने मुनि होकर हजारवर्ष तक महातप किया, अचल है योग जिनका, लंबायमान हैं बाहु जिनकी, स्वामीके अनुरागकर कच्छादि चार हजार राजावोंने मुनिके धर्म जाने विना दीक्षा धरी। सो परीषह सह न सके तब फलादिकका भक्षण बक्कलादिकका धारणकर तापसी भए, ऋषभदेवने हजार वर्ष तक तपकर बटवृक्षके तले केवलज्ञान उप-जाया तब इंद्रादिक देवोंने केवलज्ञान कल्याण किया समोशरणकी रचना भई भगवानकी दिव्यध्वनिकर अनेक जीव कृतार्थ भए। जे कच्छादिक राजा चारित्र भ्रष्ट हुए थे ते धर्ममें दृढ हो गए, मारीचके दीर्घ संसारके योगसे मिथ्या भाव न छूटा अर जिस स्थानकमें भगवानको केवल ज्ञान उपजा उस स्थानकमें देवोंकर चैत्यालयोंकी स्थापना भई। ऋषभदेवकी प्रतिमा पधराई अर भरत चक्रवर्तीने विप्रवर्ण थापा सो वह जलविषै तेलकी बून्दवत् विस्तारको प्राप्त भया। उन्होंने यह जगत मिथ्याचारकर मोहित किया, लोक अति कुकर्मविषै प्रवर्ते, सुकृतका प्रकाश नष्ट हो गया। जीव साधुओंके अनादरमें तत्पर भए। आगे सुभूम चक्रवर्तीने नाशको प्राप्त किए थे तौ भी इनका अभाव न हुआ। हे दशानन! तो तुझकर कैसे अभावको प्राप्त होवेंगे तातें तू प्राणियोंकी हिंसासे निवृत्त होहु। काहूकी कभी भी हिंसा कर्त्तव्य नहीं अर जब भगवानके उपदेशसे जगत मिथ्या मार्गसे रहित न होय, कोई एक जीव सुलटें तो हम सारिखे तुम सारिखोंकर सकल जगतका मिथ्यात्व कैसे जाय? कैसे हैं भगवान? सर्वके देखनेहारे सर्वके

जाननेहारे । या भांति देवर्षि जे नारद तिनके वचन सुनकर केकसी माताकी कुक्षमें उपजा जो रावण सो पुराण कथा सुनकर अति प्रसन्न भया अर बारम्बार जिनेश्वरदेवको नमस्कार किया, नारद अर रावण महा पुरुषनकी मनोज्ञ जे कथा उनके कथनकर क्षण एक सुखसे तिष्ठे, महापुरुषोंकी कथामें नाना प्रकारका रस भरा है।

अथानन्तर राजा मरुत हाथ जोड़ धरतीसे मस्तक लगाय रावणको नमस्कारकर बिनती करता भया—हे देव हे लंकेश ! मैं आपका सेवक हूं आप प्रसन्न होउ मैं अज्ञानी अज्ञानियोंके उपदेश कर हिंसा मार्ग रूप खोटी चेष्टा करी सो क्षमा करो। जीवोंसे अज्ञानकर खोटी चेष्टा होय है, अब मुझे धर्मके मार्गमें लेवो अर मेरी पुत्री कनकप्रभा आप परणो जे संसारमें उत्तम पदार्थ हैं तिनके आपही पात्र हो । तब रावण प्रसन्न भए। कैसे हैं रावण ? जो नम्रीभूत होय उसमें दयावान हैं, तब रावणने पुत्री परणी अर ताहि अपनी किथो । सो रावणको अतिवल्लभा भई । मरुतने रावणके सामंतलोक बहुत पूजे नानाप्रकारके वस्त्राभूषण हाथी घोड़े रथ दिये, कनकप्रभा सहित रावण रमता भया उसके एक वर्ष बाद कृतचित्रनामा पुत्री भई, सो देखनेहारे लोकनको रूपकर आश्चर्यकी उपजावनहारी मानों मूर्तिवंत शोभा ही है । रावणके सामंतमहाशूरवीर तेजस्वी जीतकर उपजा है उत्साह जिनके संपूर्ण पृथ्वीतलमें भ्रमते भए तीन खंडमें जो राजा प्रसिद्ध हुता अर बलवान हुता सो रावणके योधाओंके आगे दीनताकों प्राप्त भया, सबही राजा वश भए, कैसे हैं राजा ? राज्यके भंगका है भय जिनको, विद्याधर लोक भरतक्षेत्रका मध्य भाग देख आश्चर्यको प्राप्त भए। मनोज्ञ नदी मनोज्ञ पहाड़ मनोज्ञ बन तिनको देख लोक कहते भए अहो स्वर्ग भी यातें अधिक रमणीक नहीं, चित्तमें ऐसे उपजे है यहां ही बास करिये । समुद्र समान विस्तीर्ण सेना जिसकी ऐसा रावण जिससमान और नहीं अहो अद्भुत धीर्य अद्भुत उदारता इस रावणकी यह समस्त विद्याधरोंमें श्रेष्ठ नजर आवे है या भांति स-

मस्त लोक प्रशंसा करे हैं जिस देशमें रावण गया तहां तहां लोक सनमुख आय मिलते भए जे जे पृथ्वी में राजाओंकी सुन्दर पुत्री हुतीं ते रावणने परणी। जिस नगरके समीप रावण जाय निकसे ताही नगरके नर नारी देखकर आश्चर्य प्राप्त होवें। स्त्री सकल काम छोड़ देखनेको दौड़ी, कैयक झरोखों में बैठ ऊपरसे असीस देय फूल डारें। कैसा है रावण? मेघसमान श्याम सुन्दर कन्दूरी समान लाल हैं अधर जाके अर मुकुटविषै नाना प्रकारकी जे माणि उनकर शोभै है सीस जिसका, मुक्ताफलोंकी ज्योति सोई भया जल ताकर पखारा है चंद्रमा समान बदन जिसका, इंद्रनील माणि समान श्याम सघन जे केश अर सहस्र पत्र कमल समान नेत्र तत्काल खैंचा नम्रीभूत हुआ जो धनुष उसके समान वक्र स्याम चिकने भौंह युगल जिसकर शोभित शंख समान ग्रीवा (गरदन) जिसकी अर वृषभ समान कन्ध जिसके, पुष्ट विस्तीर्ण वक्षस्थल जाके, दिग्गजकी सूंड समान भुजा जिसके, केहरी समान कटि जिसकी, अर कदलीके समान सुंदर जंघा जिसकी, कमल समान चरण समचतुरस्रसंस्थानकको धरैं, महामनोहर शरीर जिसका, न अधिक लंबा न अधिक छोटा, न कृश न स्थूल, श्रीवत्स लक्षणको आदि देय तीस लक्षणोंकर युक्त अर अनेक प्रकार रत्नोंकी किरणोंकर देदीप्यमान है मुकुट जिसका अर नाना प्रकारकी मणियोंकर मण्डित मनोहर है कुंडल जिसके, बाजूबंदकी दीप्तिकर देदीप्यमान हैं भुजा जिसकी अर मोतियोंके हारसे शोभै है उर जिसका, अर्ध चक्रवर्तीकी विभूतिका भोगनहारा। उसे देख प्रजाके लोक बहुत प्रसन्न भए। परस्पर वात करैं हैं कि यह दशमुख महाबलवान जीता है वैश्रवण जिसने अर जीता है राजा मय जिसने, कैलाशके उठानेका उद्यमी हुआ अर प्राप्त किया है राजा सहस्ररश्मिका वैराग्य जिसने, मरुतके यज्ञका विध्वंस करणहारा, महा शूरवीर साहसका धारी हमारे सुकृतके उदयकर इस दिशाको आया। यह केकसी माताका पुत्र इसके रूपका गुण कौन वर्णन कर सके, इसका दर्शन लोकोंको परम उत्सवका

कारण है, वह स्त्री पुण्यवती धन्य है जिसके गर्भसे यह उत्पन्न हुआ अर वह पिता धन्य है जिससे इसने जन्म पाया अर वे बंधु लोक धन्य हैं जिनके कुलमें यह प्रगटा अर जे स्त्री इनकी राणी भई तिनके भाग्य कौन कहे। इस भांति स्त्री झरोखावोंमें बैठी वात करे हैं अर रावणकी असवारी चली जाय है जब रावण आय निकसे तब एक मुहूर्त गांवकी राणी चित्रामकीसी होय रहैं, उसके रूप सौभाग्यकर हरा गया है चित्त जिनका स्त्रियोंको अर पुरुषोंको रावणकी कथाके सिवाय और कथा न रही, देशोंमें तथा नगर ग्राम तथा गांवके वाडे तिनमें जे प्रधान पुरुष हैं वे नाना प्रकारकी भेंट लेकर आय मिले अर हाथ जोड नमस्कारकर विनती करते भए–हे देव ! महा विभवके पात्र तुम, तुम्हारे घरमें सकल वस्तु विद्यमान हैं हे राजावोंके राजा ! नंदनादि वनमें जे मनोज्ञ वस्तु पाइए हैं वे भी सकल वस्तु चिन्तवन-मात्रसे ही तुमको सुलभ हैं ऐसी अपूर्व वस्तु क्या है जो तुम्हारी भेंट करें तथापि यह न्याय है कि रीते हाथोंसे राजाओंसे न मिलिये तातैं कछु हम अपनी माफिक भेंट करैं हैं जैसे भगवान जिनेंद्रदेवकी देव सुवर्णके कमलोंकर पूजा करे हैं तिनको क्या मनुष्य आप योग्य सामग्रीकर न पूजे हैं या भांति नाना प्रकारके देशोंके सामन्त बडी ऋद्धिके धारी रावणको पूजते भए। रावण तिनका मिष्ट वचन सुनकर बहुत सन्मान करता भया। रावण पृथ्वीको बहुत सुखी देख प्रसन्न भया जैसे कोई अपनी स्त्रीको नाना प्रकारके रत्न आभूषणकर मंडित देख सुखी होय जहां रावण मार्गके वश जाय निकसे उस देशमें विना बाहे धान स्वयमेव उत्पन्न भए, पृथ्वी अति शोभायमान भई प्रजाके लोक परम आनन्दको धरते संते अनुरागरूपी जलकर इसकी कीर्त्तिरूपी बेलको सींचते भए। कैसी है कीर्त्ति ? निर्मल है स्वरूप जिसका, किसान लोग ऐसे कहते भए कि बडे भाग्य हमारे, जो हमारे देशमें रत्नश्रवाका पुत्र रावण आया। हम रंक लोग कृषिकर्ममें आसक्त रूखे अंग खोटे वस्त्र हाथ पग करकश क्लेशसे हमारा सुख स्वादरहित एता

काल गया अब इसके प्रभावसे हम सम्पदाँदिकर पूर्ण भए। पुण्यका उदय आया सर्व दुखोंको दूर करणहारा रावण आया। जिन जिन देशोंमें यह कल्याणका भरा विचरै वे देश सर्व सम्पदाकर पूर्ण होंवे दशमुख दलिद्रियोंका दलिद्र देख न सकै, जिनको दुःख मेटनेकी शक्ति नहीं तिन भाइयोंकर कहा सिद्धि होय है यह तो सर्व प्राणियोंका बडा भाई होता भया। यह रावण अपने गुणोंकर लोगोंका अनुराग बढावता भया जिसके राजमें शीत अर उष्ण भी प्रजाको बाधा न कर सकें तो चोर चुगल बटमार तथा सिंह गजादिकोंकी बाधा कहांसे होय जिसके राज्यविषै पवन पानी अग्निकी भी प्रजाको बाधा न होय सर्व बात सुखदायी ही होती भई।

अथानन्तर रावणकी दिग्विजयविषै वर्षा ऋतु आई मानों रावणसे आय मिली मानों इंद्रने श्याम घटारूपी गज भेंट भेजी। कैसे हैं काले मेघ? महा नीलाचल समान विजुरी रूप स्वर्णकी सांकल धरैं अर बुगुलोंकी पंक्ति भई ध्वजा, तिनकर शोभित हैं शरीर जिनके, इंद्रधनुषरूप आभूषण पहरे जब वर्षाऋतु आई तब दशों दिशामें अन्धकार हो गया, रात्रि दिवसका भेद जान न पडै सो यह युक्त ही है श्याम होय सो श्यामता ही प्रगट करै। मेघ भी श्याम अर अन्धकार भी श्याम, पृथ्वीविषै मेघकी मोटी धारा अखण्ड वरसती भई जो माननी नायकाके मनविषै मानका भार था सो मेघके गर्जनकर क्षणमात्रविषै विलय गया अर मेघकी ध्वनिकर भयको पायी जे भामिनी वे स्वयमेव ही भरतारसे स्नेह करती भईं। जे शीतल कोमल मेघकी धारा वे पंथीनको बाण भावको प्राप्त भईं, मर्मकी विदारणहारी धाराओंके समूहकर भेदा गया है हृदय जिनका, ऐसे पंथी महाव्याकुल भए मानों तीक्ष्ण चक्रकर विदारे गए हैं। नवीन जो वर्षाका जल उसकर जडताको प्राप्त भए पंथी क्षणमात्रमें चित्राम कैसे हो गए अर जानिए कि क्षीरसागरके भरे मेघ सो गायनके उदरविषै बैठे हैं तातैं निरन्तर ही दुग्धधारा वर्षै है। वर्षा

के समय किसान कृषिकर्मको प्रवर्तें हैं। रावणके प्रभावकर महा धनके धनी होते भए । रावण सब ही प्राणियोंको महा उत्साहका कारण होता भया।

गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे श्रेणिक ! जे पुण्याधिकारी हैं तिनके सौभाग्यका वर्णन कहां तक करिये। इंदीवर कमल सारिखा श्याम रावण स्त्रियोंके चित्तको अभिलाषी करता संता मानों साक्षात् वर्षा कालका स्वरूप ही है गम्भीर है ध्वनि जिसकी जैसा मेघ गाजे तैसा रावण गाजे सो रावण की आज्ञासे सर्व नरेंद्र आय मिले, हाथ जोड़ नमस्कार करते भये। जो राजावोंकी कन्या महा मनोहर थीं सो रावणको स्वयमेव वरती भई। वे रावणको वरकर अत्यन्त क्रीडा करती भईं। जैसे वर्षा पहाड को पायकर अति वरसे। कैसी है वर्षा ? पयोधर जे मेघ तिनके समूहकर संयुक्त है अर कैसी है स्त्री पयोधर जे कुच तिनकर मण्डित हैं। कैसा है रावण पृथ्वीके पालनको समर्थ है। वैश्रवण यक्षका मान-मर्दन करनहारा दिग्विजयको चढा समस्त पृथ्वीको जीते सो उसे देखकर मानों सूर्य लज्जा अर भयकर व्याकुल होय दब गया। भावार्थ—वर्षाकालविषै सूर्य मेघ पटल कर आच्छादित हुआ अर रावणके मुख समान चन्द्रमा भी नाहीं सो मानों लज्जा कर चन्द्रमा भी दब गया क्योंकि वर्षाकालमें चन्द्रमा भी मेघ-मालाकर आच्छादित होय है अर तारे भी नजर नहीं आवै हैं सो मानों अपना पति जो चन्द्रमा उसे रावणके मुखकर जीता जान भागगए अर रावणकी हथेली अर पगथली अत्यन्त लाल अर रावणकी स्त्रियोंको अत्यन्त लाल जानकर लज्जावान होय कमलोंके समूह भी छिप गए मानों यह वर्षा ऋतु स्त्री समान है विजुरी तेई कटिमेखला जो इंद्र धनुष वह वस्त्राभूषण पयोधर जे मेघ वेही पयोधर कहिये कुच अर रावण महा मनोहर केतकी वास तथा पद्मनी स्त्रियोंके शरीरकी सुगन्ध इत्यादि सर्व सुगन्ध अपने शरीरकी सुगन्धता कर जीतता भया जिसके सुगन्ध श्वासरूप पवनके खैंचे भ्रमरोंके समूह गुञ्जार करते

भए। गंगाका तट जो अतिमनोहर है वहां डेरा कर वर्षाऋतु पूर्ण करी। कैसा है गंगाका तट जहां हरित तृण शोभै हैं नाना प्रकारके पुष्पोंकी सुगन्धता फैल रही है। बडे बडे वृक्ष शोभै हैं। कैसा है रावण? जगत्का बन्धु कहिये हितु है। अति सुखसे चातुरमास्य पूर्ण किया। हे श्रेणिक! जे पुण्याधिकारी मनुष्य हैं तिनका नाम श्रवणकर सर्वलोक नमस्कार करे हैं। अर सुंदर स्त्रियोंके समूह स्वयमेव आय वरें हैं अर ऐश्वर्यके निवास परम प्रगट होय हैं। उनके तेजकर सूर्य भी शीतल होय है। ऐसा जानकर आज्ञामान संशय छोड पुण्यके प्रबन्धमें यत्न करो।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मरुतके यज्ञका विध्वंस अर रावणके दिग्विजयका वर्णन करनेवाला ग्यारहवां पर्व पूर्ण भया॥ ११ ॥

अथानन्तर रावण मंत्रियोंसे विचार करता भया एकान्तविषै। अहो मंत्रियो! यह अपनी कन्या कृतचित्रा कौनको परनावें। इन्द्रसे संग्राममें जीतनेका निश्चय नहीं तातैं पुत्रीका पाणिग्रहण मंगल कार्य प्रथम करना योग्य है। तब रावणको पुत्रीके विवाहकी चिन्ताविषै तत्पर जान कर राजा हरिवाहन ने अपना पुत्र निकट बुलाया सो हरिवाहनके पुत्रको अति सुन्दराकार विनयवान् देख कर पुत्रीके परणायवेका मनोरथ किया। रावण अपने मनमें चितवता भया कि सर्व नीतिशास्त्रविषै प्रवीण अहो मथुरा नगरीका नाथ राजा हरिवाहन निरन्तर हमारे गुणकी कीर्तिविषै आसक्त है मन जाका, इसको प्राणोंसे भी प्यारा मधु नामा पुत्र प्रशंसा योग्य है। महाविनयवान् प्रीतिपात्र महारूपवान् अति गुणवान् मेरे निकट आया। तब रावणसे कहते भए—'हे देव! यह मधु कुमार महापराक्रमी इसके गुण वर्णनमें न आवें तथापि कछुयक कहें हैं इसके शरीरविषै अत्यन्त सुगन्धता है जो सर्वलोकके मनको हरे ऐसा है

रूप जिसका, इसका मधु नाम यथार्थ है मधुनाम मिष्टान्नका है सो यह मिष्टवादी है अर मधुनाम मकरन्दका है सो यह मकरंदसे भी अतिसुगंध है अर इसके एते ही गुण आप मत जानों असुरनका इंद्र जो चमरेंद्र ताने इसको महा गुणरूप त्रिशूलरत्न दिया है। वह त्रिशूलरत्न वैरियोंपर डारा वृथा न जावै अत्यंत देदीप्यमान है। आप इसके करतूत कर इसके गुण जानोहीगे वचनोंसे कहांलग कहैं तातैं–'हे देव! यासे सम्बंध करनेकी बुद्धि करो। यह आपसे सम्बंध कर कृतार्थ होयगा, ऐसा जब मंत्रियोंने कहा तब रावणने इसको अपना जमाई निश्चय किया अर जमाई योग्य जो सामिग्री सो उसको दीनी। बडी विभूतिसे रावणने अपनी पुत्री परणाई सर्वलोक हर्षित भए। यह रावणकी पुत्री साक्षात् लक्ष्मी महा सुंदर शरीर पतिके मन अर नेत्रोंकी हरनहारी जगत्में ऐसा सुगंध नहीं ऐसे सुगंध शरीरकी धारनहारी इसको पायकर मधु अति प्रसन्न भया॥

अथानंतर राजा श्रेणिक जिनको कौतूहल उपजा वह गौतम स्वामीसे पूछते भए–हे नाथ! असुरेन्द्रने मधुको कौन कारण त्रिशूल रत्न दिया दुर्लभ है संगम जिसका। तब गौतमस्वामी जिनधर्मियोंसे है वात्सल्य जिनके, त्रिशूल रत्नकी प्राप्तिका कारण कहते भए। हे श्रेणिक! धातकीखण्ड नामा द्वीप तहां ऐरावत् क्षेत्र शतद्वारा नगर वहां दो मित्र होते भए। महा प्रेमका है बन्ध जिनके एकका नाम सुमित्र दूसरेका नाम प्रभव। सो यह दोनों एक चटशालामें पढकर पंडित भए। कईएक दिनोंमें सुमित्र राजा भया, सर्व सामन्तोंकर सेवित पूर्वोपार्जित पुण्य कर्मके प्रभावसे परम उदयको प्राप्त भया अर दूजा मित्र प्रभव सो दलिद्र कुलमें उपजा, महादालिद्री। सो सुमित्रने महास्नेहसे अपनी बराबर कर लिया। एक दिन राजा सुमित्रको दुष्ट घोडा हरकर वनमें लेगया। वहां दुरितदृष्टिनाम भीलोंका राजा सो इसको अपने घर लेगया उसको वनमाला पुत्री परणाई सो वह वनमाला साक्षात् वनलक्ष्मी, उसको पाय

राजा सुमित्र अति प्रसन्न हुवा। एक मास वहां रहा। वहुरि भीलोंकी सेना लेकर स्त्री सहित शतद्वार नगरमें आवे था अर प्रभव ढूंढनेको निकसा सो मार्गमें स्त्री सहित मित्रको देखा। कैसी है वह स्त्री मानों कामकी पताका ही है। सो देखकर यह पापी प्रभव मित्रकी भार्याविषै मोहित भया, अशुभ कर्मके उदय से नष्ट भई है कृत्य अकृत्यकी बुद्धि जिसके, प्रभव कामके बाणों कर वीधा हुवा अति आकुलताको प्राप्त भया आहार निद्रादिक सर्वसे विस्मरण भया, संसारमें जेती व्याधी हैं तिनमें मदन बडा व्याधि है जिस कर परम दुःख पाइये है जैसे सर्व देवनमें सूर्य प्रधान है तैसे समस्त रोगोंके मध्य मदन प्रधान है तब सुमित्र प्रभवको खेद खिन्न देख पूछते भए—हे मित्र ! तू खेदखिन्न क्यों है? तब यह मित्रको कहने लगा जो तुम वनमाला परणी ताको देख कर चित्त व्याकुल भया है। यह बात सुन कर राजा सुमित्र मित्रमें है अति स्नेह जिसका, अपने श्रीप्राण समान मित्रको अपनी स्त्रीके निमित्त दुखी जान स्त्रीको मित्रके घर पठावता भया। अर आप आपा छिपाय मित्रके झरोखेमें जाय बैठा अर देखे कि यह क्या करे जो मेरी स्त्री याकी आज्ञा प्रमाण न करे, तो मैं स्त्रीका निग्रह करूं अर जो इसकी आज्ञा प्रमाण करे तो सहस्र ग्राम दूं। वनमाला रात्रिके समय प्रभवके समीप जाय बैठी। तब प्रभव पूछता भया हे भद्रे ! तू कौन है। तब इसने विवाह पर्यंत सर्व वृत्तान्त कहा। सुन कर प्रभव प्रभारहित हो गया, चित्तविषै अति उदास भया। विचारे है—हाय ! हाय ! मैं यह क्या अशुभ भावना करी, मित्रकी स्त्री माता समान कौन वांछे है, मेरी बुद्धि भ्रष्ट भई, इस पापसे मैं कब छुटूं। बनै तो अपना सिर काट डारूं, कलंकयुक्त जीने कर क्या? ऐसा विचार मस्तक काटनेके अर्थ म्यानसे खड्ग काढ्या खड्गकी कांति कर दशों दिशाविषै प्रकाश हो गया तब तलवारको कण्ठके समीप लाया अर सुमित्र झरोखेमें बैठा हुता सो कूद कर आय हाथ पकड लिया, मरतेको बचाय लीया, छातीसे लगाय कर कहने लगा—हे मित्र ! आत्मघातका दोष तू न जाने

है जे अपने शरीरका आवीधैसे निपात करे हैं ते शूद्र मर कर नरकमें जाय पडे हैं । अनेक भव अल्प आयुके धारक होय हैं। यह आत्मघात निगोदका कारण है । या भांति कहकर मित्रके हाथसे खड्ग छीन लीना अर मनोहर वचनकर बहुत सन्तोषा अर कहने लगा कि हे मित्र ! अब आपसमें परस्पर परममित्रता है सो यह मित्रता परभवमें रहे कि न रहे। यह संसार असार है । यह जीव अपने कर्मके उदय कर भिन्न भिन्न गतिको प्राप्त होय है, या संसारमें कौन किसका मित्र अर कौन किसका शत्रु है सदा एक दशा न रहे है। यह कहकर दूसरे दिन राजा सुमित्र महामुनि भए, पर्याय पूर्णकर दूजे स्वर्ग ईशान इंद्र भए तहांसे चय कर मथुरापुरीमें राजा हरिवाहन जिसके राणी माधवी तिनके मधु नामा पुत्र भए हरिवंश रूप आकाशविषै चन्द्रमा समान भए अर प्रभव सम्यक्त विना अनेक योनियोंमें भ्रमणकर विश्ववसुकी ज्योतिषमती जो स्त्री ताके शिखी नामा पुत्र भया, सो द्रव्यलिंगी मुनि होय महा तपकर निदानके योगसे असुरोंके आधिपति चमरेंद्र भए । तब अवधिज्ञानकर अपने पूर्वभव विचार सुमित्र नामा मित्रके गुण अति निर्मल अपने मनविषै धारे, सुमित्र राजाका अतिमनोज्ञ चरित्र चितारकर असुरेंद्रका हृदय प्रीतिकर मोहित भया, मनविषै विचारा कि राजा सुमित्र महागुणवान मेरा परम मित्र हुता सर्व कार्योंमें सहाई था, उस सहित मैं चटशालाविषै विद्या पढा, मैं दरिद्री था उसने आप समान विभूतिवान किया अर मैं पापी दुष्टचित्तने उसकी स्त्रीविषै खोटे भाव किए तौ हू उसने द्वेष न किया, स्त्री मेरे घर पठाई, मैं मित्रकी स्त्रीको माता समान जान अति उदास होय अपना शिर खड्गसे काटने लगा तब उस हीने थांभ लिया अर मैंने जिनशासनकी श्रद्धा विना मरकर अनेक दुख भोगे अर जे मोक्षमार्गके प्रवरतनहारे साधु पुरुष तिनकी निंदा करी सो कुयोनिविषै दुःख भोगे अर वह मित्र मुनिव्रत अंगीकारकर दूजे स्वर्ग इंद्र भया। तहांसे चयकर मथुरापुरीविषै राजा हरिवाहनका पुत्र मधुवाहन हुआ है

अर मैं विश्वावसुका पुत्र शिखीनाम द्रव्यलिंगी मुनि होय असुरेंद्र भया। यह विचार उपकारका खेंचा परम प्रेमकर भीगा है मन जाका अपने भवनसे निकसकर मध्यलोकविषे आया। मधुवाहन मित्रसे मिला महारत्नोंसे मित्रका पुजन किया, सहस्रांत नामा त्रिशूल रत्न दिया, मधुवाहन चमरेंद्रको देख बहुत प्रसन्न भया फिर चमरेंद्र अपने स्थानकको गया। हे श्रेणिक! शस्त्र विद्याका अधिपति सिंहोंका है बाहन जिसके, ऐसा मधुकुंवर हरिवंशका तिलक रावण है श्वसुर जिसका सुखसों तिष्ठै। यह मधुका चरित्र जो पुरुष पढै सुनै सो कांतिको प्राप्त होय अर ताके सर्व अर्थ सिद्ध होंय।

अथानन्तर मरुतके यज्ञका नाश करणहारे जो रावण सो लोकविषै अपना प्रभाव विस्तारता हुवा शत्रुवों को वश करता हुवा अठारहवर्ष विहार कर जैसे स्वर्गमें इन्द्र हर्ष उपजावे तैसे उपजावता भया पृथिवीका पति कैलाश पर्वतके समीप आय प्राप्त भये, तहां निर्मल है जल जिसका ऐसी मन्दाकिनी कहिये गंगा समुद्रकी पटराणी कमलनके मकरन्द कर पीत है जल जिसका, ऐसी गंगाके तीर कटकके डेरे कराए और आप कैलाशके कच्छमें क्रीड़ा करता भया। गंगाका स्फटिक समान जल निर्मल उसमें खेचर भूचर जलचर क्रीडा करते भये, जे घोड़े रजमें लोटकर मलिन शरीर भए हुते ते गंगामें निहलाय जलपान कराय फिर ठिकाने लाय बांधे, हाथी सपराए। रावण बालीका वृत्तान्त चितार चैत्यालयोंको नमस्कार कर धर्मरूप चेष्टा करता तिष्ठा।

अथानन्तर इंद्र दुलंघिपुर नामा नगरमें नलकूवर नामा लोकपाल थापा हुता सो रावणको हलकारों के मुखतैं नजीक आया जान इन्द्रके निकट शीघ्रगामी सेवक भेजे और सर्व वृत्तान्त लिखा जो रावण जगतको जीतता समुद्ररूप सेनाको लिए हमारी जगह जीतनेके अर्थ निकट आय पडा है या ओरके सर्वलोक कम्पायमान भए हैं सो यह समाचार लेकर नलकूवरके इतवारी मनुष्य इंद्रके निकट आए, इंद्र

भगवानके चैत्यालयोंकी वंदनाको जाते हुते सो मार्गविषे इंद्रको पत्र दिया। इंद्रने बांचकर सर्व रहस्य जानकर पीछे जबाब लिखा जो मैं पांडुवनके चैत्यालयोंकी वंदनाकर आऊं हूं इतने तुम बहुत यत्नसे रहना, अमोघास्त्र कहिए खाली न पडे ऐसा जो शस्त्र उसके धारक हो अर मैं भी शीघ्र ही आऊं हूं ऐसी लिखकर वंदनाविषे आसक्त है मन जाका वैरियोंकी सेनाको न गिनता हुआ पांडुकवन गया अर नलकूवर लोकपालने अपने निज वर्गसे मंत्रकर नगरकी रक्षामें तत्पर विद्यामय सौ योजन ऊंचा वज्रशाल नामा कोट बनाया, प्रदक्षिणाकर तिगुणा। रावणने नलकूवरका नगर जाननेके अर्थ प्रहस्त नामा सेनापति भेजा सो जायकर पीछे आय रावणसे कहता भया—हे देव! मायामई कोटकर मंडित वह नगर है सो लिया न जाय। देखो प्रत्यक्ष दीखे है सर्व दिशाओंमें भयानक विकराल दाढको धरे सर्प समान शिखर जिसके अर बलता जो सघन बांसनका वन उस समान देखी न जाय ऐसी ज्वालाके समूहकर संयुक्त उठे हैं स्फुलिंगोंकी राशि जिसमें अर याके यंत्र बेतालका रूप धरैं विकराल हैं दाढ जिनकी, एक योजनके मध्य जो मनुष्य आवे ताको निगले हैं, तिन यंत्रविषे प्राप्त भए जे प्राणियोंके समूह तिनका यह शरीर न रहे जन्मांतरमें और शरीर धरे। ऐसा जानकर आप दीर्घदर्शी हो, सो या नगरके लेनेका उपाय विचारो। तब रावण मंत्रियोंमे उपाय पूछने लगे सो मंत्री मायामई कोटके दूर करनेका उपाय चिंतवते भए। कैसे हैं मन्त्री? नीति शास्त्रविषे अति प्रवीण हैं।

अथानन्तर नलकूवरकी स्त्री उपरम्भा इंद्रकी अप्सरा जो रम्भा ता समान है गुण अर रूप जाका पृथ्वीविषे प्रसिद्ध, सो रावणको निकट आया सुन अति अभिलाषा करती भई। आगे रावणके रूप गुण श्रवणकर अनुरागवती थी ही, सो रात्रिविषे अपनी सखी विचित्रमालाको एकांतमें ऐसे कहती भई—हे सुंदरी! मेरे तू प्राण समान सखी है, तुझ समान और नहीं। अपना अर जिसका एक मन होय उस

को सखी कहिए, मेरेमें अर तेरेमें भेद नहीं, तातैं हे चतुरे ! निश्चयसे मेरे कार्यका साधन तू करै तो तुझे अपनी जीकी वात कहूं। जे सखी हैं ते निश्चयसेती जीतव्यका अवलम्बन होय हैं। जब ऐसे रानी उपरम्भाने कहा। तब सखी विचित्रमाला कहती भई—हे देवी ! एती वात क्या कहो ? हम तो तिहारे आज्ञाकारी जो मनवांछित कार्य कहो सोही करैं। मैं अपने मुखसे अपनी स्तुति क्या करूं, अपनी स्तुति करना लोकविषै निंद्य है, वहुत क्या कहूं। मोहि तुम मूर्त्तिवती साक्षात् कार्यकी सिद्धि जानो। मेरा विश्वासकर तुम्हारे मनविषै जो होय सो कहो। हे स्वामिनी हमारे होते तोहि खेद कहा, तब उपरम्भा निश्वास लेकर कपोलविषै कर धर मुखमेंसे न निकसते जो वचन उसे वारम्वार प्रेरणाकर वाहिर निकासती भई। हे सखी ! वालपने हीसे लेकर मेरा मन रावणविषै अनुरागी है, मैं लोकविषै प्रसिद्ध महा सुंदर ताके गुण अनेक वार सुने हैं सो मैं अन्तरायके उदयकर अवतक रावणके संगमको प्राप्त न भई, चित्तविषै परम प्रीति धरूं हूं अर अप्राप्तिका मेरे निरंतर पछतावा रहै है। हे रूपिणी ! मैं जानूं हूं यह कार्य प्रशंसा योग्य नाहीं, नारी दूजे नरके संयोगसे नरकविषै पडे है, तथापि मैं मरणको सहिवे समर्थ नहीं तातैं हे मिष्ट-भाषिणी ! मेरा उपाय शीघ्र कर अब वह मेरे मनका हरणहारा निकट आया है। किसी भांति प्रसन्न होय मेरा उससे संयोग कर दे मैं तेरे पायन पड़ूं हूं। ऐसा कहकर वह भामिनी पाय परने लगी, तब सखीने सिर थांभ लिया अर यह कही कि हे स्वामिनी तुम्हारा कार्य क्षणमात्रविषै सिद्ध करूं। यह कह कर दूती घरसे निकसी, जानै है सकल इन वातनकी रीति, अति सूक्ष्म श्याम वस्त्र पहरकर आकाशके मार्ग रावणके डेरेविषै आई, राजलोकमें गई, द्वारपालोंतें अपने आगमनका वृत्तान्त कहकर रावणके निकट जाय प्रणाम किया, आज्ञा पाय बैठकर विनती करती भई—हे देव ! दोषके प्रसंगतें रहित तिहारे सकल गुणोंकर यह सकल लोक व्याप्त हो रहा है, तुमको यही योग्य है अति उदार है विभव तिहारा,

या पृथ्वीविषे सब हीको तृप्त करो हो, तुम सबके आनन्द निमित्त प्रगट भए हो। तिहारा आकार देख कर यह मनविषे जानिए है कि तुम काहुकी प्रार्थना भंग न करो हो, तुम वडे दातार सबके अर्थ पूर्ण करो हो, तुम सारिखे महंत पुरुषोंकी जो विभूति है सो परोपकार हीके अर्थ है सो आप सबको विदा देकर एक क्षण एकांत विराजकर चित्त लगाय मेरी वात सुनो तो मैं कहूं। तब रावणने ऐसा ही किया तब याने उपरम्भाका सकल वृत्तांत कानविषे कहा।

तब रावण दोनों हाथ कानन पर धर सिर धुनि नेत्र संकोच केकसी माताके पुत्र पुरुषोंविषे उत्तम सदा आचारपरायण कहते भए। हे भद्रे! क्या कही? यह काम पापके बंधका कारण कैसे करनेमें आवै मैं परनारियोंको अंगदान करनेविषे दरिद्री हूं ऐसे कर्मोको धिक्कार होवे। तैंने अभिमान तजकर यह वात कही परंतु जिनशासनकी यह आज्ञा है कि विधवा अथवा धनीकी राणी अथवा कुवारी तथा वेश्या सर्व ही परनारी सदा काल सर्वथा तजनी। परनारी रूपवती है तो क्या, यह कार्य इस लोक अर पर-लोकका विरोधी विवेकी न करें, जो दोनों लोक भ्रष्ट करे सो काहेका मनुष्य, हे भद्रे! परपुरुषकर जाका अंग मर्दित भया ऐसी जो परदारा सो उच्छिष्ट भोजन समान है ताहि कौन नर अंगीकार करे? यह वात सुन बिभीषण महामंत्री सकल नयके जाननेहारे राजविद्याविषे श्रेष्ठ है बुद्धि जिनकी, रावणको एकांतविषे कहते भए—हे देव! राजाओंके अनेक चरित्र हैं काहू समय काहू प्रयोजनके अर्थ किंचित-मात्र अलीक भी प्रतिपादन करे हैं तातैं आप यासूं अत्यंत रूखी वात मत कहो। वह उपरम्भा वश भई संती कछु गढके लेनेका उपाय कहेगी ऐसे वचन विभीषणके सुनकर रावण राजविद्यामें निपुण माया-चारी विचित्रमाला सखीसे कहते भए, हे भद्रे वह मेरेमें मन राखे है अर मेरे विना अत्यन्त दुखी है तातैं वाके प्राणोंकी रक्षा मुझकूं करनी योग्य है सो प्राणोंसे न छूटे याप्रकार पहले उसको लेआवो, जीवोंके

प्राणोंकी रक्षा यही धर्म है ऐसा कहकर सखीको सीख दीनी सो जायकर उपरम्भाको तत्काल ले आई, रावणने याका बहुत सन्मान किया। तब वह मदन सेवनकी प्रार्थना करती भई रावणने कही—हे देवी! दुर्लंघ नगरविषै मेरी रमणेकी इच्छा है यहां उद्यानविषै कहा सुख? ऐसा करो जो नगरविषै तुम सहित रमूं। तब वह कामातुर उसकी कुटिलताको न जानकर स्त्रियोंका मूढ स्वभाव होय है, ताने नगरके मायामई कोट भंजनका उपाय आसालका नाम विद्या दीनी। अर बहुत आदरसे नाना प्रकारके दिव्य शस्त्र दिए। देवोंकर करिए है रक्षा जिनकी, तब विद्याके लाभसे तत्काल मायामई कोट जाता रहा जो सदाका कोट था सोही रह गया तब रावण बडी सेनाकर नगरके निकट गया अर नगरके कोलाहल शब्द सुनकर राजा नलकूवर क्षोभको प्राप्त भया मायामई कोटको न देखकर विषादमन भया अर जाना कि रावणने नगर लिया तथापि महापुरुषार्थको धरता हुआ युद्ध करनेको बाहिर निकसा, अनेक सामंतों सहित परस्पर शस्त्रनके समूहसे महासंग्राम प्रवरता जहां सूर्यके किरण भी नजर न आवे, क्रूर हैं शब्द जहां। विभीषणने शीघ्र ही लातकी दे नलकूवरका रथ तोड डाला अर नलकूवरको पकड लिया जैसे रावणने सहस्रकिरणको पकडा था तैसे विभीषणने नलकूवरको पकडा रावणकी आयुधशालाविषै सुदर्शनचक्र उपजा। उपरम्भाको रावणने एकांतविषै कही जो तुम विद्यादानसे मेरे राणी हो अर तुमको यह योग्य नहीं जो अपने पतिको छोड दूजा पुरुष सेवो अर मुझे भी अन्याय मार्ग सेवना योग्य नहीं या भांति याकों दिलासा करी। नलकूवरको इसके अर्थ छोडा। कैसा है नलकूवर? शस्त्रोंसे विदारा गया है बखतर जिसका, नहीं लगा है शरीरके घाव जिसके, रावणने उपरम्भासे कही इस भरतारसहित मनवांछित भोग कर। काम सेवनविषै पुरुषोंमें क्या भेद है अर अयोग्य कार्य करनेसे तेरी अकीर्ति होय अर मैं ऐसे करूं तो और लोग भी इस मार्गविषै प्रवर्तें। पृथ्वीविषै अन्यायकी प्रवृत्ति होय अर तू राजा

आकाशध्वजकी बेटी तेरी माता मृदुकांता सो तू विमलकुलविषै उपजी शीलके राखने योग्य है। या भांति रावणने कही तब उपरम्भा लज्जामान भई अपने भरतारविषै संतोष किया अर नलकूवर भी स्त्री का व्यभिचार न जान स्त्रीसहित रमता भया अर रावणसे बहुत सन्मान पाया । रावणकी यही रीति है कि जो आज्ञा न मानै ताका पराभव करे अर जो आज्ञा मानै उसका सन्मान करे अर युद्धविषै मारा जाय सो मारा जावो अर पकडा आवै ताकों छोड दे। रावणने संग्रामविषै शत्रुओंके जीतनेसे बडा यश पाया बडी है लक्ष्मी जिसके महासेनाकरसंयुक्त वैताड पर्वतके समीप जाय पडा।

तब राजा इंद्र रावणको समीप आया सुन कर अपने उमराव जे विद्याधर देव कहावैं तिन समस्त ही से कहता भया हो विश्वसी आदि देव हो युद्धकी तैय्यारी करो, कहा विश्राम कर रहे हो। राक्षसोंका अधिपति आया । यह कह कर इंद्र अपने पिता जो श्रीसहस्रार तिनके समीप सलाह करनेको गया। नमस्कारकर बहुत विनयसंयुक्त पृथिवी पर बैठ बापसे पूछी हे देव ! बैरी प्रबल अनेक शत्रुवोंका जीतनहारा निकट आया है सो क्या कर्तव्य है। हे तात ! मैंने काम बहुत विरुद्ध किया जो यह वैरी होता ही प्रलयको न प्राप्त किया, कांटा उगता ही होठनसे टूटे अर कठोर परे पीछे चुभे, रोग होता ही मेटे तो सुख उपजे अर रोगकी जड बधे तो कटना कठिन है तैसे क्षत्री शत्रुकी वृद्धि होने न दे मैं इसके निपात का अनेक बेर उद्यम किया परंतु आपने वृथा मने किया तब मैं क्षमा करी । हे प्रभो ! मैं राजनीतिके मार्गसे विनती करूं हूं। याके मारने में असमर्थ नहीं हूं। ऐसे गर्भ अर क्रोधके भरे पुत्रके वचन सुनकर सहस्रारने कही—हे पुत्र ! तू शीघ्रता मत कर, अपने जेष्ठ मंत्री हैं तिनसे मंत्र विचार जे विना विचारे कार्य करे हैं तिनके कार्य विफल होय हैं अर्थकी सिद्धिका निमित्त केवल पुरुषार्थ नहीं है। जैसे कृषिकर्म का है प्रयोजन जिसके ऐसा जो किसान उसके मेघकी वृष्टि विना क्या कार्य सिद्ध होय ? अर जैसे चट-

शालामें शिष्य पढे हैं सब ही विद्याको चाहे हैं परंतु कर्मके वशतैं काहूके विद्या सिद्धि होय है काहूको सिद्धि न होय तातैं केवल पुरुषार्थसे ही सिद्धि न होय । अब भी रावणसे मिलाप कर जब वह अपना भया तब तू पृथिवीका निःकंट राज्य करेगा अर अपनी पुत्री रूपवती नामा महा रूपवती रावणको परणाय इसमें दोष नहीं । यह राजावोंकी रीति ही है पवित्र है बुद्धि जिनकी ऐसे पिताने इंद्रको न्याय रूप वार्त्ता कही परंतु इंद्रके मनमें न आई । क्षणमात्रमें रोसकर लाल नेत्र हो गये, क्रोधकर पसेव आय गया, महा क्रोधरूप वाणी कहता भया—हे तात ! मारने योग्य वह शत्रु उसे कन्या कैसे दीजे, ज्यों ज्यों उमर अधिक होय त्यों त्यों बुद्धि क्षय होय है तातैं तुम योग्य बात न कही । कहो मैं किससे घाट हूं, मेरे कौन वस्तुकी कमी है जिससे तुमने ऐसे कायर वचन कहे, जिस सुमेरुके पायन चांद सूर्य लग रहे सो उतंग सुमेरु कैसे औरकूं नवे । जो वह रावण पुरुषार्थकर अधिक है तो मैं भी उससे अत्यंत अधिक हूं अर दैव उसके अनुकूल है तो यह बात निश्चय तुम कैसे जानी अर जो कहोगे उसने बहुत वैरी जीते हैं तो अनेक मृगनको हतनेहारा जो सिंह उसे क्या अष्टापद न हने । हे पिता ! शस्त्रनके सम्पात कर उपजा है अग्निका समूह जहां ऐसे संग्राममें प्राण त्यागना भला है परंतु काहूसे नम्रीभूत होना बडे पुरुषोंको योग्य नाहीं । पृथिवी पर मेरी हास्य होय कि यह इंद्र रावणसे नम्रीभूत हुवा पुत्री देकर मिला सो तुमने यह तो विचारा ही नहीं अर विद्याधरपनेकर हम अर वह बराबर हैं परंतु बुद्धि पराक्रममें वह मेरी बराबर नहीं जैसे सिंह अर स्याल दोऊ वनके निवासी हैं परंतु पराक्रममें सिंह तुल्य स्याल नाहीं, ऐसे पितासे गर्वके वचन कहे । पिताकी बात मानी नहीं पितासे विदा होयकर आयुधशालामें गये क्षत्रियोंको हथियार बांटे अर बक्तर बांटे अर सिंधूराग होने लगे, अनेक प्रकारके वादित्र बाजने लगे अर सेनामें यह शब्द हुवा कि हाथियोंको सजावो, घोडोंके पलान कसो, रथोंके घोडे जोडो, खड्ग बांधो, बक्तर पहरो,

धनुष बाण लो, सिर टोप धरो, शीघ्र ही खंजर लावो इत्यादि शब्द देवजातिके विद्याधरोंके होते भये।

अथानन्तर योधा कोपको प्राप्त भये, ढोल बाजने लगे, हाथी गाजने लगे घोडे हींसन लगे और धनुषके टंकार होनेलगे योधाओंके गुञ्जार होनेलगे और बन्दीजन बिरद बखानने लगे जगत शब्दमई होयगया सर्वदिशा तरवार तथा तोमर जातिके शस्त्र तथा पांसिन कर ध्वजावोंकर शस्त्रोंकर और धनुषोंकर आच्छादित भई और सूर्य भी आच्छादित होयगया। राजा इन्द्रकी सेनाके जे विद्याधर देव कहावें थे समस्त रथनूपुरसे निकसे। सर्वसामग्री धरें युद्धके अनुरागी दरवाजे आय भेले भये परस्पर कहे हैं रथ आगे कर, माता हाथी आया है। हे महावत हाथी इस स्थानसे परेकर। हो घोडेके सवार ! कहां खडा होरहा है घोडे को आगे लेआ, या भांति के वचनालाप होते हुवे शीघ्रही देव बाहिर निकसे गाजते आये तामें शामिल भये और राक्षसोंके सन्मुख आय रावणके और इन्द्रके युद्ध होने लगा। देवोंने राक्षसोंकी सेना कछु हटाई, शस्त्रोंके जे समूह तिनके प्रहारकर आकाश आच्छादित होगया तब रावणके योधा वज्रवेग, हस्त प्रहस्त, मारीच, उद्भव, वज्र, वक्र शुक्र घोर, सारन, गंगनोज्वल, महाजठर, मध्याभ्रक्रूर इत्यादि विद्याधर बडे योधा राक्षसवंशी नाना प्रकारके बाहनोंपर चढ अनेक आयुधोंके धारक देवोंसे लडने लगे तिनके प्रभावसे क्षणमात्रमें देवोंकी सेना हटी। तब इन्द्रके बडे योधा कोपकर भरे युद्धको सनमुख भए तिनके नाम मेघमाली, तडसंग, ज्वलिताक्ष, अरि, संचर, पावकसिंदन इत्यादि बडे बडे देवोंने शस्त्रोंके समूह चलावते हुए राक्षसोंको दबाया सो कछु इक राक्षसोंकी सेना हटी ज्यों समुद्रमें भंवर भ्रमै त्यों राक्षसलोक अपनी सेनाविषै भ्रमते भए। कछु इक शिथिल हो गए तब और बडे २ राक्षस इनको धीर्य बंधावते भए। महासामंत राक्षसवंशी विद्याधर प्राण तजते भए परंतु शस्त्र न डारते भए राजा महेन्द्रसेन बानरवंशी राक्षसोंके बडे मित्र उनका पुत्र प्रसन्नकीर्त्ति ताने बाणोंके प्रहारकर देवनकी सेना हटाई राक्षसोंके बलको

बडा धीर्य बंधा तब अनेकदेव प्रसन्नकीर्त्तिपर आए सो प्रसन्नकीर्त्तिने अपने बाणोंसे विदारे जैसे खोटे तपस्वियोंका मन मन्मथ (काम) विदारे तब और बडे २ देव आए कपि राक्षस अर देवोंके खड्ग कनक गदा शक्ति धनुष मुद्गर इनकर अति युद्ध भया तब माल्यवानका बेटा श्रीमाली रावणका काका महा प्रसिद्ध पुरुष अपनी सेनाकी मददके अर्थ देवोंपर आया। सूर्य समान है कांति जिसकी सो उसके बाणों की वर्षामे देवोंकी सेना हट गई जैसे महाग्राह समुद्रको झकोलै तैसे देवनकी सेना श्रीमालीने झकोली तब इंद्रके योधा अपने बलकी रक्षा निमित्त महाक्रोधके भरे अनेक आयुधोंके धारक शिखि केसर दंडाग्र कनक प्रवर इत्यादि इंद्रके भानजे बाण वर्षाकर आकाशको आच्छादते हुए श्रीमालीपर आए सो श्री-मालीने अर्धचन्द्र बाणसे उनके शिररूप कमलोंकर पृथ्वी आच्छादित करी तब इंद्रने विचारा कि यह श्रीमाली मनुष्योंविषै महायोधा राक्षसवंशियोंका अधिपति माल्यवानका पुत्र है उसने बडे २ देव मारे हैं अर ये मेरे भानजे मारे या राक्षसके सम्मुख मेरे देवोंमें कौन आवै यह अतिवीर्यवान महातेजस्वी देखा न जाय तातैं मैं युद्धकर याहि मारूं नातर यह मेरे अनेक देवोंको हतैगा ऐसा विचार अपने जे देवजातिके विद्याधर श्रीमालीसे कम्पायमान भए हुते तिनको धीर्य बंधाय आप युद्ध करनेको उद्यमी भया।

तब इंद्रका पुत्र जयंत बापके पायनपर विनती करने लगा हे देवेंद्र! मेरे होते संते आप युद्ध करो तब हमारा जन्म निरर्थक है। हमको आपने बाल अवस्थाविषै अति लडाए अब तुम्हारेढिंग शत्रुवोंको युद्धकर हटाऊं यह पुत्रका धर्म है आप निराकुल विराजिए जो अंकुर नखसे छेदा जाय उसपर फरसी उठावना क्या, ऐसा कहकर पिताकी आज्ञा लेय मानों अपने शरीरकर आकाशको ग्रसेगा ऐसा क्रोधा-यमान होय युद्धके अर्थ श्रीमालीपर आया श्रीमाली इसको युद्ध योग्य जान खुशी भया इसके सम्मुख

गए ये दोनों ही कुमार परस्पर युद्ध करने लगे धनुष खैंच बाण चलावते भए इन दोनों कुमारोंका बडा युद्ध भया दोनों ही सेनाके लोक इनका युद्ध देखते भए सो इनका युद्ध देख आश्चर्यको प्राप्त भए श्रीमालीने कनक नामा हथियारकर जयंतका रथ तोडा अर उसको घायल किया सो मूर्छा खाय पडा फिर सचेत होय लडने लगा। श्रीमालीके भिंडमालकी दीनी रथ तोडा अर मूर्छित किया तब देवोंकी सेनाविषे अति हर्ष भया अर राक्षसोंको शोच भया फिर श्रीमाली सचेत भया, जयंतके सम्मुख भया, दोनों में महायुद्ध भया, दोनों सुभट राजकुमार युद्ध करते शोभते भए मानों सिंहके बालक ही हैं बडी देरमें इंद्रके पुत्र जयंतने माल्यवानका पुत्र जो श्रीमाली उसके गदाकी छातीविषे दीनी सो पृथ्वीपर पडा, वदनकर रुधिर पडने लगा तत्काल सूर्य अस्त हो जाय तैसे प्राणांत हो गया। श्रीमालीको मारकर इंद्रका पुत्र जयंत शंखनाद करता भया तब राक्षसोंकी सेना भयभीत भई अर पीछे हटी माल्यवानके पुत्र श्रीमालीको प्राणरहित देख अर जयंतको उद्यत देख रावणके पुत्र इंद्रजीतने अपनी सेनाको धीर्य बंधाया अर कोपकर जयंतके सम्मुख आया सो इंद्रजीतने जयंतका बखतर तोड डाला अर अपने बाणोंकर जयंतको जर्जरा किया तब इंद्र जयंतको घायल देख छेदा गया है बखतर जिसका, रुधिरकर लाल हो गया है शरीर जिसका ऐसा देखकर आप युद्धको उद्यमी भया, आकाशको अपने आयुधोंकर आच्छादित करता संता अपने पुत्रकी मददके अर्थ रावणके पुत्रपर आया तब रावणको सुमति नामा सारथीने कहा हे देव, यह इंद्र आया ऐरावत हाथीपर चढा लोकपालोंकर मंडित हाथविषे चक्र धरे मुकुटके रत्नोंकी प्रभाकर उद्योत करता हुवा उज्ज्वल छत्रकर सूर्यको आच्छादित करता संता क्षोभको प्राप्त भया ऐसा जो समुद्र उस समान सेनाकर संयुक्त यह इंद्र महाबलवान है इंद्रजीत कुमार यासूं युद्ध करने समर्थ नहीं तातैं आप उद्यमी होयकर अहंकारयुक्त जो यह शत्रु इसे निराकरण करो तब रावण

इंद्रको सम्मुख आया देख आगे मालीका मरण यादकर अर हाल श्रीमालीके बधकर महाक्रोधरूप भया अर शत्रुओंकर अपने पुत्रको बेढा देख आप दौडा, पवन समान है वेग जिसका ऐसे रथविषै चढा दोनों सेनाके योधाओंविषै परस्पर विषम युद्ध होता भया, सुभटोंके रोमांच होय आए, परस्पर शस्त्रोंके निपातकर अंधकार हो गया, रुधिरकी नदी बहने लगी, योधा परस्पर पिछानें न परें केवल ऊंचे शब्द कर पिछाने परें, अपने अपने स्वामीके प्रेरे योद्धा अति युद्ध करते भए गदा शक्ति बरछी मूसल खड्ग बाण परिघ जातिके शस्त्र कनक जातिके शस्त्र चक्र कहिए सामान्य चक्र बरछी तथा त्रिशूल पाश मुसण्डी जातिके शस्त्र कुहाडा मुद्गर वज्र पाषाण हल दंड कोण जातिके शस्त्र बांसनके बाण अर नाना प्रकारके शस्त्र तिनकर परस्पर अति युद्ध भया। परस्पर उनके शस्त्र उनने काटे उनके उनोंने काटे, अति विकराल युद्ध होते परस्पर शस्त्रोंके घातसे अग्नि प्रज्वलित भई, रणविषै नाना प्रकारके शब्द होय रहे हैं, कहीं मार लो मार लो यह शब्द होय रहे हैं कहीं एक रण २ कहीं किण २ त्रम २ दम दम छम छम पट पट छस छस दृढ दृढ तथा तट तट चट चट घघ घघ इत्यादि शस्त्रोंकर उपजे अनेक प्रकारके जे शब्द उनसे रणमण्डल शब्दरूप हो गया हाथियोंकर हाथी मारे गए, घोडोंकर घोडे मारे गए, रथोंकर रथ तोडे गए, पियादयोंकर पियादे हते गए, हाथियोंकी सूंडकर उछले जे जलके छांटे तिनकर शस्त्र सम्पात कर उपजी थी जो अग्नि सो शांत भई परस्पर गज युद्धकर हाथियोंके दांत टूट पडे, गजमोती बिखर गए, योधावोंमें परस्पर यह आलाप भए—हो शूरवीर शस्त्र चला कहा कायर होय रहा है। हे भटसिंह, हमारे खड्गका प्रहार सम्हार, हमारेसे युद्ध कर यह मूवा तू अब कहां जाय है अर कोई कोईसूं कहे है तू यह युद्धकला कहां सीखा, तरवारका भी सम्हारना न जाने है अर कोई कहै है तू इस रणतें जा अपनी रक्षा कर तू क्या युद्ध करना जाने, तेरा शस्त्र मेरे लगा सो मेरी खाज भी न मिटी, तैं वृथा ही धनीकी आजीविका

अब तक खाई, अबतक तैं युद्ध कहीं देखा नहीं, कोई ऐसे कहे हैं तू क्यों कांपे है, तू थिरता भज मुष्टि दृढ राख तेरे हाथसे खड्ग गिरेगा इत्यादि योधावोंमें परस्पर आलाप होते भए। कैसे हैं योधा महा उत्साहरूप हैं जिनको मरनेका भय नहीं, अपने अपने स्वामीके आगे सुभट भले दिखाए, किसीकी एक भुजा शत्रु की गदाके प्रहारकर टूट गई तो भी एक ही हाथसे युद्ध कर रहा है किसीका सिर टूट पडा तो धड ही लडे है योधावोंके बाणोंसे वक्षस्थल विदारे गए परन्तु मन न चिगे सामंतोंके सिर पडे परंतु मान न छोडा शूरवीरोंके युद्धमें मरण प्रिय है टरकर जीवना प्रिय नहीं, वे चतुर महा धीर वीर महा पराक्रमी महासुभट यशकी रक्षा करते हुए शस्त्रोंके धारक प्राण त्याग करते भए परंतु कायर होकर अपयश न लिया कोई इक सुभट मरता हुआ भी वैरीके मारनेकी अभिलाषाकर क्रोधका भरा वैरीके ऊपर जाय पडा, उसको मार आप मरा। किसीके हाथसे शस्त्र शत्रुके शस्त्रघातकर निपात भए तब वह सामन्त मुष्टिरूप जो मुद्गर उसके घातकर शत्रुको प्राणरहित करता भया कोई एक महाभट शत्रुओंको भुजा-ओंसे मित्रवत् आलिंगनकर मसल डारता भया, कोई एक सामंत परचक्रके योधाओंकी पंक्तिको हणता हुआ अपने पक्षके योधावोंका मार्ग शुद्ध करता भया, कोई एक जो रणभूमिविषै परते संते भी वैरियों-को पीठ न दिखावते भए सूधे पडे। रावण अर इंद्रके युद्धमें हाथी घोडे रथ योधा हजारों पडे, पहिले जो रज उठी थी सो मदोन्मत्त हाथियोंके मद झरनेकर तथा सामंतोंके रुधिर प्रवाहकर दब गई, सामंतोंके आभूषणोंकर रत्नोंकी ज्योतिकर आकाशविषै इंद्रधनुष हो गया। कोई एक योधा बायें हाथकर अपनी आंतां थांभकर खड्ग काढ वैरी ऊपर गया महा भयंकर कोई एक योधा अपनी आंत ही कर गाढी कमर बांधि होंठ डसता शत्रु ऊपर गया, कोई एक आयुधरहित होय गया तौ भी रुधिरका रंगा रोसविषै तत्पर वैरीके माथेमें हस्तका प्रहार करता भया, कोई एक रणधीर महाशूरवीर युद्धका अभिलाषी पाशकर

वेरीको बांधकर छोड देता भया, रणकर उपजा है हर्ष जिसके कोई एक न्याय संग्रामविषे तत्पर वैरीको आयुधरहित देखकर आप भी आयुध डार खडे होय रहे, कोई एक अन्त समय सन्यास धार नमोकार मंत्रका उच्चारणकर स्वर्ग प्राप्त भए, कोई एक योधा आशीविष सर्प समान भयंकर पडता २ भी प्रतिपक्षीको मारकर मरा, कोई एक अर्ध सिर छेदा गया उसे वामें हाथविषै दाब महापराक्रमी दौडकर शत्रुका सिर फाडा, कोई एक सुभट पृथ्वीकी आगल समान जो अपनी भुजा तिन ही कर युद्ध करते भए, कोई एक परम क्षत्रिय धर्मज्ञ शत्रुको मूर्छित भया देख आप पवन झोल सचेत करते भए या भांति कायरोंको भयका उपजावनहारा अर योधावोंको आनन्दका उपजावनहारा महासंग्राम प्रवरता। अनेक गज अनेक तुरंग अनेक योधा शस्त्रोंकर हते गए, अनेक रथ चूर्ण होगए, अनेक हाथियोंकी सूंड कट गई, घोडावोंके पांव टूट गए पूछ कट गई पियादे काम आय गए रुधिरके प्रवाहकर सर्व दिशा आरक्त हो गई, एता रण भया सो रावण किंचित्मात्र भी न गिना, रणविषै है कौतूहल जिसके ऐसे सुभट भावका धारक रावण सुमति नामा सारथीको कहता भया—हे सारथी! इस इंद्रके सम्मुख रथ चलाय अर सामान्य मनुष्योंके मारणेकर कहा ये तृण समान सामान्य मनुष्य तिनपर मेरा शस्त्र न चले, मेरा मन महा योधावोंके ग्रहणविषैं तत्पर है, यह क्षुद्र मनुष्य अभिमानसे इंद्र कहावे है इसे आज मारूं अथवा पकडूं यह विडम्बनाका करणहारा पाखण्ड कर रहा है सो तत्काल दूर करूं देखो इसकी ढीठता आपको इंद्र कहावे है अर कल्पनाकर लोकपाल थापे हैं अर इन मनुष्योंने विद्याधरोंकी देव संज्ञा धरी है देखो अल्पसी विभूति पाय मूढमती भया है, लोक हास्यका भय नहीं जैसे नट सांग धरे तैसे सांग धरा है, दुर्बुद्धि आपको भूल गया। पिताके वीर्य माताके रुधिरकर मांस हाडमई शरीर माताके उदरसे उपजा वृथा आपको देवेंद्र माने है, विद्याके बलकर इसने यह कल्पना करी है जैसे काग आपको गरुड कहावे

है तैसे यह इंद्र कहावे है याभांति जब रावणने कहा तब सुमति सारथीने रावणका रथ इंद्रके सम्मुख किया रावणको देख इंद्रके सब सुभट भागे रावणसे युद्ध करनेको कोई समर्थ नहीं रावण सर्वको दयालु दृष्टिकर कीट समान देखे रावणके सम्मुख यह इंद्र ही टिका अर सब कृत्रिम देव इसका छत्र देख भाज गए जैसे चंद्रमाके उदयसे अंधकार जाता रहै, कैसा है रावण ? बैरियोंकर झेला न जाय जैसे जलका प्रभाव ढाहेकर थांभा न जाय अर जैसे क्रोधसहित चित्तका वेग मिथ्यादृष्टि तापसियोंकर थांभा न जाय तैसे सामंतोंकर रावण थांभा न जाय इंद्र भी कैलाश पर्वत समान हाथीपर चढा धनुषको धरै तरकशसे तीर काढता रावणके सम्मुख आया, कानतक धनुषको खैंच रावणपर बाण चलाये जैसे पहाडपर मेघ मोटी धारा वर्षावै तैसे रावणपर इंद्रने बाणोंकी वर्षा करी। रावणने इंद्रके बाण आवते आवते काट डारे अर अपने बाणोंकर शर मण्डप किया सूर्यकी किरण बाणोंसे दृष्टि न आवैं ऐसा युद्ध देख नारद आकाशमें नृत्य करता भया, कलह देख उपजै है हर्ष जिसको। जब इंद्रने जाना कि यह रावण सामान्य शस्त्रकर असाध्य है तब इंद्रने अग्नि बाण रावणपर चलाया उससे रावणकी सेनाविषै आकुलता उपजी जैसे बांसोंका वन जलै अर इसकी तडतडात ध्वनि होय, अग्निकी ज्वाला उठै तैसे अग्निबाण प्रज्वलित आया तब रावणने अपनी सेनाको व्याकुल देख तत्काल जलबाण चलाया सो मेघमाला उठी, पर्वत समान जलकी मोटी धारा बरसने लगी क्षणमात्रमें अग्नि बाण बुझ गया। तब इंद्रने रावणपर तामस बाण चलाया उसकर दशों दिशामें अंधकार हो गया, रावणके कटकविषै किसीको कुछ भी न सूझै तब रावणने प्रभास्त्र कहिए प्रकाश बाण चलाया उसकर क्षणमात्रमें सकल अंधकार विलय होगया जैसे जिनशासनके प्रभावकर मिथ्यात्वका मार्ग विलय जाय फिर रावणने कोपकर इंद्रपै नाग बाण चलाया सो महा काले नाग चलाए मानों भयंकर है जिह्वा जिनकी, इंद्रके अर सकल सेनाकै लिपट गए

सर्पोंकर बेढा इंद्र अति व्याकुल भया जैसे भवसागरविषे जीव कर्म जालकर बेढा व्याकुल होय है तब इंद्रने गरुडबाण चितारा सो सुवर्ण समान पीत पंखोंके समूहकर आकाश पीत हो गया अर पंखोंकी पवनकर रावणका कटक हालने लगा मानों हिंडोलेमें झूले हैं, गरुडके प्रभावकर नाग ऐसे विलाय गए जैसे शुक्लध्यानके प्रभावकर कर्मोंके बंध विलय हो जांय, जब इंद्र नागबाणसे छूटकर जेठके सूर्य समान अति दारुण तप तपता भया तब रावणने त्रैलोक्य मण्डन हाथीको इंद्रके ऐरावत हाथीपर प्रेरा। कैसा है त्रैलोक्यमण्डन ? सदा मद झरै है अर बैरियोंको जीतनहारा है इंद्रने भी ऐरावतको त्रैलोक्यमण्डन पर धकाया दोनों गज महा गर्वके भरे लडने लगे, झरै है मद जिनके, क्रूर हैं नेत्र जिनके, हाले हैं कर्ण जिनके, देदीप्यमान है विजुरी समान स्वर्णकी सांकल जिनके हाथी शरदके मेघ समान अति गाजते परस्पर अति भयंकर जो दांत तिनके घातोंकर पृथ्वीको शब्दायमान करते चपल है शरीर जिनका, परस्पर सूंडोंसे अद्भुत संग्राम करते भए।

तब रावणने उछलकर इंद्रके हाथीके मस्तकपर पग धर अति शीघ्रताकर गज सारथीको पाद प्रहारतें डारा अर इंद्रको वस्त्रसे बांधा अर बहुत दिलासा देकर पकड अपने गजपर ले आया अर रावणके पुत्र इंद्रजीतने इंद्रका पुत्र जयंत पकडा अपने सुभटोंको सौंपा अर आप इंद्रके सुभटोंपर दौडा तब रावणने मने किया—हे पुत्र ! अब रणसे निवृत्त होवो क्योंकि समस्त विजयार्धके जे निवासी विद्याधर तिनका सिर पकड लिया है अब समस्त अपने अपने स्थानक जावो सुखसे जीवो शालिसे चावल लिया तब परालका कहा काम ? जब रावणने ऐसा कहा तब इंद्रजीत पिताकी आज्ञासे पीछे बाहुडा अर सर्व देवों की सेना शरदके मेघसमान भाग गई जैसे पवनकर शरदके मेघ विलय जांय, रावणकी सेनामें जीतके वादित्र बाजे, ढोल नगारे शंख झांझ इत्यादि अनेक वादित्रोंका शब्द भया, इंद्रको पकडा देख रावणकी

सेना अति हर्षित भई। रावण लंकामें चलनेको उद्यमी भया, सूर्यके रथ समान रथ ध्वजावोंसे शोभित अर चंचल तुरंग नृत्य करते भए । अर मद झरते हुए नाद करते हाथी तिन पर भ्रमर गुंजार करे हैं इत्यादि महासेनासे मंडित राक्षसोंका अधिपति रावण लंकाके समीप आया तब समस्त बन्धु जन अर नगरके रक्षक तथा पुरजन सब ही दर्शनके अभिलाषी भेट ले ले सन्मुख आए अर रावणकी पूजा करते भए, जे बडे हैं तिनकी रावणने पूजा करी, रावणको सकल नमस्कार करते भए अर बडोंको रावण नमस्कार करता भया। कैयकोंको कृपादृष्टिसे, कैयकोंको मंदहास्यसे, कैयकोंको वचनोंसे रावण प्रसन्न करता भया। बुद्धिके बलसे जाना है सबका अभिप्राय जिसने लंका तो सदा ही मनोहर है परंतु रावण बडी विजय कर आया तातैं अधिक समारी है, ऊंचे रत्नोंके तोरण निरमापे, मंद मंद पवन कर अनेक वर्णकी ध्वजा फर हरे हैं, कुंकुमादि सुगंध मनोज्ञ जल कर सींचा है, समस्त पृथिवीतल जहां और सब ऋतुके फूलोंसे पूरित है राजमार्ग जहां अर पंच वर्ण रत्नोंके चूर्ण कर रचे हैं मंगलके मंडन जहां अर दरवाजों पर थांभे हैं पूर्ण कलश कमलोंके पत्र अर पल्लवसे ढके, संपूर्ण नगरी वस्त्राभरण कर शोभित है जैसे देवोंसे मंडित इंद्र अमरावतीमें आवै तैसे विद्याधरों कर वेढा रावण लंकामें आया पुष्पक विमानमें बैठ, देदीप्यमान है मुकट जाका, महारत्नोंके बाजूबंद पहिरे निर्मल प्रभाकर युक्त मोतियोंका हार वक्षस्थल पर धारे, अनेक पुष्पोंके समूह कर विराजित, मानों वसंतहीका रूप है सो उसको हर्षसे पूर्ण नगरके नर नारी देखते देखते तृप्त न भए असीस देय हैं नाना प्रकारके वादित्रोंके शब्द हो रहे हैं जय जयकार शब्द होय है आनंदसे नृत्यकारिणी नृत्य करे हैं इत्यादि हर्षसंयुक्त रावणने लंकामें प्रवेश किया, महा उत्साहकी भरी लंका उसे देख रावण प्रसन्न भए बंधुजन सेवकजन सब ही आनंदको प्राप्त भए रावण राजमहलमें आए। देखो भव्य जीव हो कि रथनूपुरके धनी राजा इंद्रने पूर्व पुण्यके उदयसे समस्त

वैरियोंके समूह जीतकर सर्व सामग्री पूर्ण तिनको तृणवत् जान सर्वको जीतकर दोनों श्रेणीका राज बहुत वर्ष किया अर इंद्रके तुल्य विभूतिको प्राप्त भया अर जब पुण्य क्षीण भया तब सकल विभूति विलय हो गई रावण उसको पकडकर लंकामें ले आया तातें मनुष्यके चपल सुखको धिकार होहु यद्यपि स्वर्गलोकके देवोंका विनाशीक सुख है तथापि आयु पर्यंत और रूप न होय अर जब दूसरी पर्याय पावै तब और रूप होय अर मनुष्य तो एक ही पर्यायमें अनेक दशा भोगे तातें मनुष्य होय जे मायाका गर्व करे हैं ते मूर्ख हैं अर यह रावण पूर्व पुण्यसे प्रबल वैरियोंको जीत कर अति वृद्धिको प्राप्त भया। यह जानकर भव्यजीव सकल पाप कर्मका त्याग कर शुभ कर्म ही को अंगीकार करें।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै इंद्रका पराभव नाम बारहवां पर्व पूर्ण भया॥ १२ ॥

अथानन्तर इंद्रके सामन्त घनीके दुःखसे व्याकुल भए तब इंद्रका पिता सहस्रार जो उदासीन श्रावक है तासों बीनती कर इंद्रके छुडावनेके अर्थ सहस्रारको लेकर लंकामें रावणके समीप गये द्वारपालसे बीनती कर इंद्रके सकल वृत्तान्त कहकर रावणके ढिंग गए, रावणने सहस्रारको उदासीन श्रावक जानकर बहुत विनय किया, इनको आसन दिया, आप सिंहासनसे उतर बैठे, सहस्रार रावणको विवेकी जान कहता भया हे दशानन ! तुम जगजीत हो सो इंद्रको भी जीता तुम्हारी भुजाओंकी सामर्थ्य सब ने देखी, जे बडे राजा हैं ते गर्ववंतोंका गर्व दूरकर फिर कृपा करें, तातें अब इंद्रको छोडो यह सहस्रारने कही अर जे चारों लोकपाल तिनके मुंहसे भी यही शब्द निकसा मानों सहस्रारका प्रतिशब्द ही कहते भए तब रावण सहस्रारको तो हाथ जोड यही कही जो आप कहो सोई होगा अर लोकपालोंसे हंस कर क्रीडारूप कही तुम चारो लोकपाल नगरीमें बुहारी देवो, कमलोंका मकरंद अर तृण कंटकरहित

पुरी करो अर इंद्र सुगंध जलकर पृथ्वीको सींचे अर पांच वर्णके सुगंध मनोहर जो पुष्प तिनसे नगरी को शोभित करो यह वात जब रावणने कही तब लोकपाल तो लज्जावान होय नीचे हो गए अर सहस्रार अमृतरूप वचन बोले हे धीर ! तुम जिसको जो आज्ञा करो सो ही वह करै, तुम्हारी आज्ञा सर्वोपरि है यदि तुम सारिखे गुरुजन पृथ्वीके शिक्षादायक न हों तो पृथ्वीके लोक अन्यायमार्गविषै प्रवर्तें, यह वचन सुनकर रावण अति प्रसन्न भए अर कही हे पूज्य ! तुम हमारे तात तुल्य हो अर इंद्र मेरा चौथा भाई इसको पायकर मैं सकल पृथ्वी कंटकरहित करूंगा इसको इंद्रपद वैसा ही है अर यह लोकपाल ज्योंके त्यों ही हैं अर दोनों श्रेणीके राज्यसे अर अधिक चाहो सो लेहू मोमें अर इसमें कछु भेद नहीं अर आप बडे हो गुरुजन हो जैसे इंद्रको शिक्षा देवो तैसे मुझे देवो तुम्हारी शिक्षा अलंकाररूप है अर आप रथनूपुरविषै विराजो अथवा यहां विराजो दोऊ आप हीकी भूमि हैं ऐसे प्रिय वचनोंसे सहस्रारका मन बहुत संतोषा तब सहस्रार कहने लगा हे भव्य ! तुम सारिखे सज्जन पुरुषोंकी उत्पत्ति सर्व लोकको आनन्दकारणी है। हे चिरंजीव ! तुम्हारे शूरवीरपनेका आभूषण यह उत्तम विनय समस्त पृथ्वीमें प्रशंसा को प्राप्त भया है तिहारे देखनेसे हमारे नेत्र सुफल भए। धन्य तुम्हारे माता पिता जिनसे तुम्हारी उत्पत्ति भई कुन्दके पुष्प समान उज्ज्वल तुम्हारी कीर्ति तुम समर्थ अर क्षमावान दातार अर निर्गर्व ज्ञानी अर गुणप्रिय तुम जिनशासनके अधिकारी हो तुमने हमको जो कही यह तुम्हारा घर है अर जैसे इंद्र पुत्र तैसे मैं, सो तुम इन वातोंके लायक हो, तुम्हारे मुखसे ऐसे ही वचन झरैं, तुम महाबाहु दिग्गजकी सूंड समान भुजा तिहारी तुम सारिखे पुरुष इस संसारविषै विरले हैं परन्तु जन्मभूमि माता समान है सो छांडी न जाय, जन्मभूमिका वियोग चित्तको आकुल करै है, तुम सर्व पृथ्वीके पति हो परन्तु तुमको भी लंका प्रिय है मित्र बान्धव अर समस्त प्रजा हमारे देखनेके अभिलाषी आवनेका मार्ग देखै हैं तातैं हम रथनूपुर ही

जायेंगे अर चित्त सदा तुम्हारे समीप ही है। हे देवनके प्यारे ! तुम बहुत काल पृथ्वीकी निर्विघ्न रक्षा करो। तब रावणने उसही समय इन्द्रको बुलाया और सहस्रारके लार किया अर आप रावण कितनीक दूर तक सहस्रारको पहुंचाने गये और बहुत विनयकर सीख दीनी, सहस्रार इन्द्रको लेकर लोकपाल सहित विजयार्धगिरि में आए सर्व राज ज्योंका त्योंही है लोकपाल आयकर अपने २ स्थानक बैठे परन्तु मान भंगसे असाता को प्राप्त भए,ज्यों२ विजयार्धके लोक इन्द्रके लोकपालोंको और देवोंको देखें त्यों २ यह लज्जा कर नीचे होजांय अर इन्द्रके भी न तो रथनूपुरमें प्रीति न राणियोंमें प्रीति, न उपवनादिमें प्रीति न लोकपालोंमें प्रीति, न कमलोंके मकरंदसे पीत होरहा है जल जिनका ऐसे मनोहर सरोवर तिनमें प्रीति और न किसी क्रीडाविषै प्रीति, यहांतक कि अपने शरीरसे भी प्रीति नहीं, लज्जाकर पूर्ण है चित्त जाका सो उसको उदास जान लोक अनेक विधिकर प्रसन्न किया चाहें और कथाके प्रसंगसे वह बात भुलाया चाहें परन्तु यह भूले नहीं सर्व लीला बिलास तजे अपने राजमहलके मध्य गंधमादन पर्वतके शिखर समान ऊंचा जो जिनमंदिर उसके एक थंभके माथेविषै रहे कांतिरहित हो गया है शरीर जिसका, पंडितोंकर मण्डित यह विचार करै है कि धिकार है इस विद्याधर पदके ऐश्वर्यको जो एक क्षणमात्रविषै विलाय गया जैसे शरद ऋतुके मेघोंके समूह अत्यन्त ऊंचे होवें परन्तु क्षणमात्रविषै विलय जांय तैसे वे शस्त्र वे हाथी वे योधा वे तुरंग समस्त तृण समान हो गए, पूर्वै अनेक बेर अद्भुत कार्यके करणहारे। अथवा कर्मोंकी यह विचित्रता है कौन पुरुष अन्यथा करनेको समर्थ है तातैं जगतमें कर्म प्रबल हैं मैं पूर्व नानाविधि भोग सामग्रियोंके निपजावनहारे कर्म उपार्जे थे सो अपना फल देकर खिरि गए जिससे यह दशा वरते है रण संग्रामविषै शूरवीर सामंतोंका मरण होय तो भला जिसकर पृथ्वीविषै अपयश न होय मैं जन्मसे लेकर शत्रुओंके सिरपर चरण देकर जिया सो मैं इंद्र शत्रुका अनुचर होयकर कैसे राज्य

लक्ष्मी भोगूं तातैं अब संसारके इंद्रियजनित सुखोंकी अभिलाषा तजकर मोक्षपदकी प्राप्तिके कारण जे मुनिव्रत तिनको अंगीकार करूं रावण शत्रुका भेष धर मेरा महामित्र आया जिसने मुझे प्रतिबोध दिया मैं असार सुखके आस्वादविषै आसक्त था ऐसा विचार इंद्रने किया उस ही समय निर्वाणसंगम नामा चारण मुनि विहार करते हुए आकाश मार्गसे जाते थे सो चैत्यालयोंके प्रभावकर उनका आगे गमन न हो सका तब वह चैत्यालय जान नीचे उतरे, भगवानके प्रतिबिंबका दर्शन किया मुनि चार ज्ञानके धारक थे सो उनको राजा इंद्रने उठकर नमस्कार किया मुनिके समीप जा बैठा बहुत देरतक अपनी निंदा करी, सर्व संसारका वृत्तांत जाननेहारे मुनिने परम अमृतरूप वचनोंसे इंद्रको समाधान किया कि हे इंद्र ! जैसे अरहटकी घड़ी भरी रीती होय है अर रीती भरी होय है तैसे यह संसारकी माया क्षणभंगुर है इसके और प्रकार होनेका आश्चर्य नहीं, मुनिके मुखसे धर्मोपदेश सुन इंद्रने अपने पूर्वभव पूछे तब मुनि कहे हैं कैसे हैं मुनि ? अनेक गुणोंके समूहसे शोभायमान हैं हे राजा ! अनादिकालका यह जीव चतुरगतिविषै भ्रमण करे है जो अनन्तभव धरे सो केवलज्ञानगम्य हैं। कैयक भव कहिए हैं सो सुन, शिखापद नामा नगरमें एक मानुषी महा दलिद्रनी जिसका नाम कुलवंती सो चीपड़ी अमनोज्ञ नेत्र नाक चिपटी अनेक व्याधिकी भरी पापकर्मके उदयसे लोगोंकी जूठ खायकर जीवै खोटे वस्त्र अभागिनी फाटा अंग महा रूक्ष खोटे केश जहां जाय वहां लोक अनादरैं हैं जिसको कहीं सुख नहीं। अन्तकालविषै शुभमति होय एक मुहूर्तका अनशन लिया प्राण त्यागकर किंपुरुष देवके शीलधरा नामा किंन्नरी भई तहांसे चयकर रत्न नगरविषै गोमुखनामा कलुंबी उसके धरिनी नामा स्त्री उसके सहस्रभाग नामा पुत्र भया सो परम सम्यक्तको पायकर श्रावकके व्रत आदरे, शुक्रनामा नवमा स्वर्ग तहां उत्तम देव भया तहांसे चयकर महा विदेह क्षेत्रके रत्नसंचय नगरमें मणिनामा मंत्री उसके गुणावली नामा स्त्री उसके सामन्तवर्धन

नामा पुत्र भया सो पिताके साथ वैराग्य अंगीकार किया अति तीव्र तप किए तत्वार्थविषे लगा है चित्त जिसका, निर्मल सम्यक्तका धारी, कषायरहित बाईस परीषह सहकर शरीर त्याग नवग्रीवक गया, अहमिंद्रके बहुत काल सुख भोगकर राजा सहस्रार विद्याधरके रानी हृदयसुंदरी उनके तू इन्द्र नामा पुत्र भया। रथनूपुर नगरविषे जन्म लिया। पूर्वके अभ्यासकर इंद्रके सुखमें मन आसक्त भया सो तू विद्याधरोंका अधिपति इंद्र कहाया अब तू वृथा मनविषे खेद करे है जो मैं विद्याविषे अधिक था सो शत्रुवोंसे जीता गया सो हे इंद्र कोई निर्बुद्धि कद्दू बोयकर वृथा शालिकी प्रार्थना करे है ये प्राणी जैसे कर्म करें हैं तैसे फल भोगे हैं तैंने भोगका साधन शुभकर्म पूर्वे किया था सो क्षीण भया, कारण विना कार्यकी उत्पत्ति न होय है इस वातका आश्चर्य कहा ? तूने इसी जन्मविषै अशुभ कर्म किए तिनसे यह अपमान रूप फल पाया अर रावण तो निमित्तमात्र है। तैंने जो अज्ञान चेष्टा करी सो कहा नहीं जाने है तू ऐश्वर्य मदकर भ्रष्ट भया बहुत दिन भए तातैं तुझे याद नहीं आवे है। एकाग्रचित्त कर सुन। अरिंजयपुरमें वह्निवेग नामा विद्याधर राजा उसकी रानी वेगवती पुत्री अहिल्या उसका स्वयम्बर मण्डप रचा था तहां दोनों श्रेणीके विद्याधर अति अभिलाषी होय विभवसे शोभायमान गए अर तू भी बडी सम्पदासहित गया अर एक चन्द्रावर्त नामा नगरका धनी राजा आनन्दमाल सो भी तहां आया। अहिल्याने सबको तजकर उसके कण्ठविषे बरमाला डाली। कैसी है अहिल्या ? सुन्दर है सर्व अंग जिसका सो आनन्दमाला अहिल्याको परणकर जैसे इंद्र इंद्राणीसहित स्वर्गलोकमें सुख भोगे तैसे मनवांछित भोग भोगता भया सो जा दिनसे वह अहिल्या परणाया ता दिनसे तेरे इससे ईर्षा बढी तेने उसको अपना बडा बैरी जाना केएक दिन वह घरविषे रहा फिर उसको ऐसी बुद्धि उपजी कि यह देह विनाशीक है इससे मुझे कछु प्रयोजन नहीं, अब मैं तप करूं जिसकर संसारका दुःख दूर होय। ये

दान करै हैं वे घोर वेदनायुक्त जो नरक ताविषै पडे हैं और जे हिंसाके उपकरण शस्त्रादिक तथा जे बन्धनके उपाय पांसी इत्यादि तिनका दान करै हैं तथा पंचेंद्रिय पशुओंका दान करै हैं और जे इन दानोंको निरूपण करे हैं ते सर्वथा निंद्य हैं जो कोई पशुका दान करै और वह पशु बांधने कर मारने कर ताडनेकर दुःखी होय तो देनहारेको दोष लागे और भूमिदान भी हिंसाका कारण है जहां हिंसा वहां धर्म नहीं श्रीचैत्यालयके निमित्त भूमिका देना युक्त है और प्रकार नहीं जो जीव घातकर पुण्य चाहे हैं सो पाषाणसे दुग्ध चाहे हैं तातैं एकेन्द्री आदि पंचेंद्री पर्यंत सर्व जीवोंको अभय दान देना और विवेकियोंको ज्ञान दान देना पुस्तकादि देना और औषध अन्न जल वस्त्रादि सबको देना पशुओंको सूखे तृण देना और जैसे समुद्रविषै सीप मेघका जल पिया सो मोती होय परणवै है तैसे संसारविषै द्रव्यके योगसे सुपात्रोंको यव आदि अन्न भी दिये महा फलको फले हैं अर जो धनवान होय सुपात्रोंको श्रेष्ठ वस्तुका दान नहीं करै हैं सो निंद्य हैं दान बडा धर्म है सो विधिपूर्वक करना पुण्य पापविषै भाव ही प्रधान है जो बिना भाव दान करै हैं सो गिरिके सिरपर बरसे जल समान हैं सो कार्यकारी नहीं क्षेत्रविषै बरसे है सो कार्यकारी है जो कोई सर्वज्ञ वीतरागको ध्यावे है और सदा विधिपूर्वक दान करै है उसके फलको कौन कह सकै, तातैं भगवानके प्रतिबिम्ब तथा जिनमन्दिर जिन पूजा जिन प्रतिष्ठा सिद्ध क्षेत्रोंकी यात्रा चतुरविध संघकी भक्ति शास्त्रोंका सर्व देशोंविषै प्रचार करना यह धन खर्चनेके सप्त महा क्षेत्र हैं। तिनविषै जो धन लगावे सो सफल है । तथा करुणादान परोपकारविषै लगे सो सफल है ।

जे आयुधका ग्रहण करै हैं ते द्वेष संयुक्त जानने जिनके राग द्वेष है तिनके मोह भी है अर जे कामिनीके संगसे आभूषणोंको धारण करै हैं ते रागी जानने अर मोह विना राग द्वेष होय नहीं, सकल

नामा पुत्र भया सो पिताके साथ वैराग्य अंगीकार किया अति तीव्र तप किए तत्वार्थविषे लगा है चित्त जिसका, निर्मल सम्यक्तका धारी, कषायरहित बाईस परीषह सहकर शरीर त्याग नवग्रीवक गया, अहमिंद्रके बहुत काल सुख भोगकर राजा सहस्रार विद्याधरके रानी हृदयसुंदरी उनके तू इन्द्र नामा पुत्र भया। रथनूपुर नगरविषे जन्म लिया। पूर्वके अभ्यासकर इंद्रके सुखमें मन आसक्त भया सो तू विद्याधरोंका आधिपति इंद्र कहाया अब तू वृथा मनविषे खेद करे है जो मैं विद्याविषे अधिक था सो शत्रुवोंसे जीता गया सो हे इंद्र कोई निर्बुद्धि कद्दू वोयकर वृथा शालिकी प्रार्थना करे है ये प्राणी जैसे कर्म करैं हैं तैसे फल भोगे हैं तैंने भोगका साधन शुभकर्म पूर्वे किया था सो क्षीण भया, कारण विना कार्यकी उत्पत्ति न होय है इस वातका आश्चर्य कहा? तूने इसी जन्मविषे अशुभ कर्म किए तिनसे यह अपमान रूप फल पाया अर रावण तो निमित्तमात्र है। तैंने जो अज्ञान चेष्टा करी सो कहा नहीं जानै है तू ऐश्वर्य मदकर भ्रष्ट भया वहुत दिन भए तातैं तुझे याद नहीं आवै है। एकाग्रचित्त कर सुन। अरिंजयपुरमें वह्निवेग नामा विद्याधर राजा उसकी रानी वेगवती पुत्री अहिल्या उसका स्वयम्वर मण्डप रचा था तहां दोनों श्रेणिके विद्याधर अति अभिलाषी होय विभवसे शोभायमान गए अर तू भी बडी सम्पदासहित गया अर एक चन्द्रावर्त नामा नगरका धनी राजा आनन्दमाल सो भी तहां आया। अहिल्याने सबको तजकर उसके कण्ठविषे बरमाला डाली। कैसी है अहिल्या? सुन्दर है सर्व अंग जिसका सो आनन्दमाला अहिल्याको परणकर जैसे इंद्र इंद्राणीसहित स्वर्गलोकमें सुख भोगे तैसे मनवांछित भोग भोगता भया सो जा दिनसे वह अहिल्या परणाया ता दिनसे तेरे इससे ईर्षा बढी तेने उसको अपना बडा बैरी जाना केएक दिन वह घरविषे रहा फिर उसको ऐसी बुद्धि उपजी कि यह देह विनाशीक है इससे मुझे कछु प्रयोजन नहीं, अब मैं तप करूं जिसकर संसारका दुःख दूर होय। ये

दुख भोगे हैं तीक्षण हैं चौंच जिनकी ऐसे मायामई पक्षी ते तन विदारें हैं तथा मायामई सिंह व्याघ्र स्वान सर्प अष्टापद ल्याली वीछू तथा और प्राणियोंसे नानाप्रकारके दुख पावै हैं नरकके दुःखको कहां लग बरणन करिए अर जे मायाचारी प्रपंची विषियाभिलाषी हैं वे प्राणी तिर्यंचगतिको प्राप्त होय हैं तहां परस्पर बध अर नानाप्रकारके शस्त्रनकी घातसे महा दुःख पावै हैं तथा वाहन तथा आति भारका लादना शीत उष्ण क्षुधा तृषादिकर अनेक दुख भोगवे हैं यह जीव भव संकटविषे भ्रमता स्थलविषे जलविषे गिरिविषे तरुविषे और गहनवनाविषे अनेक ठौर सूता एकेंद्री वेइंद्री तेइंद्री चौइंद्री अनेक पर्यायमें अनेक जन्म मरण किये। जीव अनादि निधन है इसका आदि अन्त नहीं, तिलमात्र भी लोकाकाशविषे प्रदेश नहीं जहां संसार भ्रमणविषे इस जीवने जन्ममरण न किए हों अर जे प्राणी निगर्व हैं कपटरहित स्वभाव ही कर संतोषी हैं ते मनुष्य देहको पावे हैं सो यह नरदेह परम निर्वाण सुखका कारण उसे पायकर भी जे मोहमदकर उन्मत्त कल्याण मार्गको तजकर क्षणमात्रमें सुखके अर्थ पाप करै हैं ते मूर्ख हैं मनुष्य भी पूर्व कर्मके उदयसे कोई आर्यखंड विषे उपजे हैं, कोई म्लेक्षखण्ड विषे उपजे हैं तथा कोई धनाढ्य कोई अत्यन्त दरिद्री होय हैं कोई कर्मके प्रेरे अनेक मनोरथ पूर्ण करे हैं, कोई कष्टसे पराए घरोंमें प्राण पोषण करे हैं, केई कुरूप केई रूपवान केई दीर्घ आयु केई अल्प आयु केई लोकोंको वल्लभ केई अभावने केई सभाग केई अभाग केई औरोंको आज्ञा देवें केई औरनके आज्ञाकारी केई यशस्वी केई अपयशी केई शूर केई कायर केई जलविषे प्रवेश करें केई रणमें प्रवेश करें केई देशांतरमें गमन करें केई कृषि कर्म करें केई व्यापार करें, केई सेवा करें। या भांति मनुष्य गतिमें भी सुख दुःखकी विचित्रता है, निश्चय विचारिये तो सर्वगतिमें दुखही है, दुःखहीको कल्पना कर सुख माने हैं अर मुनिव्रत तथा श्रावकके व्रतोंसे तथा अव्रत सम्यक्त्वसे तथा अकाम निर्जरासे, तथा अज्ञान तपसे देवगति पावै हैं तिनमें केई बडी ऋद्धिके धारी

केई अल्प ऋद्धिके धारी आयु कांति प्रभाव बुद्धि सुख लेश्याकर ऊपरले देव चढते अर शरीर अभिमान अर परिग्रहसे घटते देवगतिमें भी हर्ष विषाद कर कर्मका संग्रह करै हैं। चतुरगतिमें यह जीव सदा अरहटकी घडीके यंत्र समान भ्रमण करै हैं अशुभ संकल्पसे दुःखको पावे हैं। अर शुभसंकल्पसे सुखको पावे हैं, अर दानके प्रभावसे भोग भूमि विषै भोगोंको पावे हैं, जे सर्व परिग्रह रहित मुनिव्रतके धारक हैं सो उत्तम पात्र कहिये अर जे अणुव्रतके धारक श्रावक हैं, तथा श्राविका, तथा आर्यिका सो मध्य पात्र कहिये हैं अर व्रतरहित सम्यक्दृष्टि हैं सो जघन्यपात्र कहिये हैं इन पात्रोंको विनय भक्तिकर आहार देना सो पात्रका दान कहिये अर बाल वृद्ध अंध पंगु रोगी दुर्बल दुःखित भुखित इनको करुणा कर अन्न जल औषधि वस्त्रादिक दीजिए सो करुणादान कहिये, पात्रके दान कर उत्कृष्ट भोगभूमि अर मध्य पात्रके दान कर मध्य भोगभूमि अर जघन्य पात्रके दान कर जघन्य भोग भूमि होय है, जो नरक निगोदादि दुःखसे रक्षा करै सो पात्र कहिये। सो सम्यक्दृष्टि मुनिराज हैं ते जीवोंकी रक्षा करे हैं जे सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र कर निर्मल हैं ते परमपात्र कहिये जिनके मान अपमान सुख दुःख तृण कांचन दोनों बराबर हैं तिनको उत्तम पात्र कहिए जिनके राग द्वेष नहीं जे सर्व परिग्रहरहित महा तपस्वी आत्मध्यानमें तत्पर ते मुनि उत्तम पात्र कहिये, तिनको भाव कर अपनी शक्ति प्रमाण अन्न जल औषध देनी तथा वनमें तिनके रहनेके निमित्त वस्तिका करावनी तथा आर्यावोंको अन्न जल वस्त्र औषधी देनी श्रावक श्राविका सम्यक्दृष्टियोंको अन्न जल वस्त्र औषधि इत्यादि सर्व सामग्री देनी बहुत विनयसे सो पात्र दानकी विधि है, दीन अंधादि दुःखित जीवोंको अन्न वस्त्रादि देना, बंदीसे छुडावना यह करुणादानकी रीति है।

यद्यपि यह पात्रदान तुल्य नहीं तथापि योग्य है, पुण्यका कारण है पर उपकार सो ही पुण्य है

अर जैसे भले क्षेत्रमें बोया वीज बहुत गुणा होय फलै है तैसे शुद्ध चित्त कर पात्रोंको दिया दान अधिक फलको फलै है, अर जे पापी मिथ्यादृष्टि रागद्वेषादि युक्त व्रत क्रियारहित महामानी ते पात्र नहीं अर दीन भी नहीं तिनको देना निष्फल है नरकादिकका कारण है जैसे ऊसर (कल्लर) खेतविषै बोया बीज वृथा जाय है और जैसे एक कूपका जल ईखविषै प्राप्त हुआ मधुरताको लहै है अर नींबविषै गया कटुकताको भजै है तथा एक सरोवरका जल गायने पिया सो दूध रूप होय परणवै है अर सर्पने पिया विष होय परणवै है तैसे सम्यक्दृष्टि पात्रोंको भक्ति कर दिया जो दान सो शुभ फलको फलै है अर पापी पाखंडी मिथ्यादृष्टि अभिमानी परिग्रही तिनको भक्तिसे दिया दान अशुभ फलको फलै है जे मांस आहारी मद्यपानी कुशील आपको पूज्य मानै तिनका सत्कार न करना जिनधर्मियोंकी सेवा करनी दुःखियोंको देख दया करनी अर विपरीतियोंसे मध्यस्थ रहना, दया सर्व जीवों पर राखनी, किसीको क्लेश न उपजावना अर जे जिनधर्मसे पराङ्मुख हैं परवादी हैं ते भी धर्मको करना ऐसा कहे हैं परन्तु धर्मका स्वरूप जाने नहीं तातैं जे विवेकी हैं ते परखकर अंगीकार करै हैं। कैसे हैं ? विवेकी शुभोपयोग रूप है चित्त जिनका, वे ऐसा विचार करै हैं जे गृहस्थ स्त्री संयुक्त आरम्भी परिग्रही हिंसक काम क्रोधादि कर संयुक्त गर्भवन्त धनाढ्य अर आपको पूज्य मानै उनको भक्तिसे बहुत धन देना उसविषै कहा फल है अर उनसे आप कहा ज्ञान पावें ? अहो यह बडा अज्ञान है कुमारगसे ठगे जीव उसे पात्रदान कहे हैं और दुःखी जीवोंको करुणादान न करै हैं। दुष्ट धनाढ्योंको सर्व अवस्थामें धन देय हैं सो वृथा धनका नाश करै हैं धनवन्तोंको देनेसे कहा प्रयोजन, दुखियोंको देना कार्यकारी है धिक्कार है उन दुष्टोंको जे लोभके उदयसे खोटे ग्रन्थ बनाय मूढ जीवोंको ठगे हैं जे मृषावादके प्रभावसे मांसहूंका भक्षण ठहरावें हैं पापी पाखण्डी मांसका भी त्याग न करें तो और कहा करेंगे। जे क्रूर मांसका भक्षण करै हैं तथा जो मांसका

दान करे हैं वे घोर वेदनायुक्त जो नरक ताविषै पडे हैं और जे हिंसाके उपकरण शस्त्रादिक तथा जे बन्धनके उपाय पांसी इत्यादि तिनका दान करे हैं तथा पंचेंद्रिय पशुओंका दान करे हैं और जे इन दानोंको निरूपण करे हैं ते सर्वथा निंद्य हैं जो कोई पशुका दान करै और वह पशु बांधने कर मारने कर ताडनेकर दुःखी होय तो देनहारेको दोष लागे और भूमिदान भी हिंसाका कारण है जहां हिंसा वहां धर्म नहीं श्रीचैत्यालयके निमित्त भूमिका देना युक्त है और प्रकार नहीं जो जीव घातकर पुण्य चाहै हैं सो पाषाणसे दुग्ध चाहै हैं तातैं एकेन्द्री आदि पंचेंद्री पर्यंत सर्व जीवोंको अभय दान देना और विवेकियोंको ज्ञान दान देना पुस्तकादि देना और औषध अन्न जल वस्त्रादि सबको देना पशुओंको सूखे तृण देना और जैसे समुद्रविषै सीप मेघका जल पिया सो मोती होय परणवे है तैसे संसारविषै द्रव्यके योगसे सुपात्रोंको यव आदि अन्न भी दिये महा फलको फलै हैं अर जो धनवान होय सुपात्रोंको श्रेष्ठ वस्तुका दान नहीं करै हैं सो निंद्य हैं दान बडा धर्म है सो विधिपूर्वक करना पुण्य पापविषै भाव ही प्रधान है जो बिना भाव दान करै हैं सो गिरिके सिरपर बरसे जल समान हैं सो कार्यकारी नहीं क्षेत्रविषै बरसे है सो कार्यकारी है जो कोई सर्वज्ञ वीतरागको ध्यावे है और सदा विधिपूर्वक दान करै है उसके फलको कौन कह सकै, तातैं भगवानके प्रतिबिम्ब तथा जिनमन्दिर जिन पूजा जिन प्रतिष्ठा सिद्ध क्षेत्रोंकी यात्रा चतुरविध संघकी भक्ति शास्त्रोंका सर्व देशोंविषै प्रचार करना यह धन खर्चनेके सप्त महा क्षेत्र हैं। तिनविषै जो धन लगावे सो सफल है। तथा करुणादान परोपकारविषै लगै सो सफल है।

जे आयुधका ग्रहण करै हैं ते द्वेष संयुक्त जानने जिनके राग द्वेष है तिनके मोह भी है अर जे कामिनीके संगसे आभूषणोंको धारण करै हैं ते रागी जानने अर मोह विना राग द्वेष होय नहीं, सकल

कर्मकर आच्छादित है ज्ञान जिसका अतिदुर्लभ मनुष्यदेह पाई तो भी आत्महितको नहीं जानै है रसना का लोलुपी स्पर्श इंद्रीका विषयी पांच हू इंद्रियोंके वश भया अति निंद्य पापकर्मकर नरकविषे पडे हैं जैसे पाषाण पानीमें डूबे है। कैसा है नरक? अनेक प्रकारकर उपजे जे महा दुख तिनका सागर है महा दुखकारी है जे पापी क्रूरकर्मा धनके लोभी मातापिता भाई पुत्र स्त्री मित्र इत्यादि सुजन तिनको हनै हैं जगतमें निंद्य है चित्त जिनका ते नरकमें पडे हैं तथा जे गर्भ पात करें हैं तथा बालक हत्या करें हैं वृद्ध को हणे हैं अबला (स्त्रियों) की हत्या करे हैं मनुष्योंको पकडे हैं रोके हैं बांधे हैं मारे हैं पक्षी तथा मृगनको हनै हैं जे कुबुद्धि स्थलचर जलचर जीवोंकी हिंसा करै हैं धर्मरहित हैं परिणाम जिनका ते महा वेदना रूप जो नरक उसविषे पडे हैं अर जे पापी शहदके अर्थ मधु माखियोंका छाता तोडै हैं तथा मांस आहारी मद्यपानी शहदके भक्षण करनेहारे वनके भस्म करनेहारे तथा ग्रामोंके बालनहारे बन्दीके करणहारे गायनके घेरनहारे पशुघाती महा हिंसक भील अहेडी वागरा पारधी इत्यादि पापी महा नरकमें पडे हैं अर जे मिथ्यावादी परदोषके भाषणहारे अभक्षके भक्षण करनेहारे परधनके हरनहारे परदाराके रमनेहारे वेश्यायोंके मित्र हैं वे घोर नरकमें पडे हैं जहां किसीकी शरण नहीं, जे पापी मांसका भक्षण करें हैं ते नरकमें प्राप्त होय हैं तहां तिनहीका शरीर काट काट तिनके मुखविषे दीजिये है अर ताते लोहेके गोले तिनके मुखमें दीजिये है अर मद्यपान करनेवालोंके मुखमें सीसा गाल गाल ढारिए है अर परदारा लंपटियोंको ताती लोहेकी पूतलियोंसे आलिंगन करावे हैं जे महापरिग्रहके धारी महा आरम्भी क्रूर है चित्त जिनका प्रचंड कर्मके करनहारे हैं ते सागरां पर्यंत नरकमें बसै हैं साधुओंके द्वेषी पापी मिथ्यादृष्टि कुटिल कुबुद्धि रौद्रध्यानी मरकर नरकमें प्राप्त होय हैं जहां विक्रियामई कुहाडे तथा खड्ग चक्र करोंत अर नानाप्रकारके विक्रियामई शस्त्र तिनसे खण्ड खण्ड कीजिए है फिर शरीर मिल जाय है आयु पर्यंत

दान करे हैं वे घोर वेदनायुक्त जो नरक ताविषै पडे हैं और जे हिंसाके उपकरण शस्त्रादिक तथा जे बन्धनके उपाय पांसी इत्यादि तिनका दान करे हैं तथा पंचेंद्रिय पशुओंका दान करे हैं और जे इन दानोंको निरूपण करे हैं ते सर्वथा निंद्य हैं जो कोई पशुका दान करै और वह पशु बांधने कर मारने कर ताडनेकर दुःखी होय तो देनहारेको दोष लागे और भूमिदान भी हिंसाका कारण है जहां हिंसा वहां धर्म नहीं श्रीचैत्यालयके निमित्त भूमिका देना युक्त है और प्रकार नहीं जो जीव घातकर पुण्य चाहै हैं सो पाषाणसे दुग्ध चाहै हैं तातैं एकेन्द्री आदि पंचेंद्री पर्यंत सर्व जीवोंको अभय दान देना और विवेकियोंको ज्ञान दान देना पुस्तकादि देना और औषध अन्न जल वस्त्रादि सबको देना पशुओंको सूखे तृण देना और जैसे समुद्रविषै सीप मेघका जल पिया सो मोती होय परणवे है तैसे संसारविषै द्रव्यके योगसे सुपात्रोंका यव आदि अन्न भी दिये महा फलको फले हैं अर जो धनवान होय सुपात्रोंको श्रेष्ठ वस्तुका दान नहीं करै हैं सो निंद्य हैं दान बडा धर्म है सो विधिपूर्वक करना पुण्य पापविषै भाव ही प्रधान है जो बिना भाव दान करै हैं सो गिरिके सिरपर बरसे जल समान हैं सो कार्यकारी नहीं क्षेत्रविषै बरसे है सो कार्यकारी है जो कोई सर्वज्ञ वीतरागको ध्यावे है और सदा विधिपूर्वक दान करै है उसके फलको कौन कह सकै, तातैं भगवानके प्रतिबिम्ब तथा जिनमन्दिर जिन पूजा जिन प्रतिष्ठा सिद्ध क्षेत्रोंकी यात्रा चतुरविध संघकी भक्ति शास्त्रोंका सर्व देशोंविषै प्रचार करना यह धन खर्चनेके सप्त महा क्षेत्र हैं। तिनविषै जो धन लगावे सो सफल है । तथा करुणादान परोपकारविषै लगै सो सफल है।

जे आयुधका ग्रहण करै हैं ते द्वेष संयुक्त जानने जिनके राग द्वेष है तिनके मोह भी है अर जे कामिनीके संगसे आभूषणोंको धारण करै हैं ते रागी जानने अर मोह विना राग द्वेष होय नहीं, सकल

इंद्रियोंके भोग महाठग तिनविषैं सुखकी आशा कहां ? ऐसा मनमें विचारकर वह ज्ञानी अन्तरआत्मा सर्व परिग्रहको तजकर परम तप आचरता भया । एक दिन हंसावली नदीके तीर कायोत्सर्ग धर तिष्ठे था सो तैंने देखा ताके देखनेमात्र रूप इंधनकर बढी है क्रोधरूप अग्नि जाके सो तैं मूर्खने गर्वकर हांसी करी अहो आनन्दमाल ! तू काम भोगविषै अति आसक्त था अहिल्याका रमण अब कहा विरक्त होय पहाड सारिखा निश्चल तिष्ठा है । तत्त्वार्थके चिंतवनविषै लगा है अत्यन्त स्थिर मन जाका । याभांति परम मुनिकी तैंने अवज्ञा करी सो वह तो आत्मसुखविषै मग्न तेरी बात कुछ हृदयविषै न धरी । उनके निकट उनका भाई कल्याण नामा मुनि तिष्ठै था ताने तुझे कही यह महामुनि निरपराध तैंने इनकी हांसी करी सो तेरा भी पराभव होगा तब तेरी स्त्री सर्वश्री सम्यग्दृष्टि साधुवोंकी पूजा करनहारी ताने नमस्कारकर कल्याणस्वामीको उपशांत किया जो वह शांत न करती तो तू तत्काल साधुओंकी कोपाग्निसे भस्म हो जाता । तीन लोकमें तप समान कोई बलवान नहीं जैसी साधुओंकी शक्ति है तैसी इंद्रादिक देवोंकी शक्ति भी नाहीं । जो पुरुष साधु लोगोंका निरादर करै हैं ते इस भवमें अत्यन्त दुख पाय नरक निगोद विषै पडै हैं मनकर भी साधुओंका अपमान न करिए जे मुनि जनका अपमान करै हैं सो इस भव अर परभवमें दुखी होय हैं । क्रूरचित्त मुनियोंको मारैं अथवा पीडा करैं हैं सो अनंतकाल दुःख भोगै हैं मुनि अवज्ञा समान और पाप नहीं । मन वचन कायकर यह प्राणी जैसे कर्म करै हैं तैसे ही फल पावै हैं या भांति पुण्य पाप कर्मोंके फल भले बुरे जीव भोगै हैं ऐसा जानकर धर्मविषै बुद्धिकर अपने आत्माको संसारके दुःखसे निवृत्त करो। महामुनिके मुखसे राजा इंद्र पूर्व भव सुन आश्चर्यको प्राप्त भया । नमस्कारकर मुनिसे कहता भया—हे भगवान ! तुम्हारे प्रसादसे मैंने उत्तम ज्ञान पाया, अब सकल पाप क्षणमात्रविषै विलय गए, साधुवोंके संगसे जगतविषै कुछ दुर्लभ नहीं, तिनके प्रसादकर अनन्त जन्मविषै

न पाया जो आत्मज्ञान सो पाइए है यह कहकर मुनिको वारम्वार वंदना करी मुनि आकाशमार्ग विहार कर गए। इंद्र गृहस्थाश्रमसे परम वैराग्यको प्राप्त भया। जलके बुदबुदा समान शरीरको असार जान धर्ममें निश्चय बुद्धिकर अपनी अज्ञान चेष्टाको निंदता हुआ वह महापुरुष अपनी राजविभूति पुत्रको देकर अपने बहुत पुत्रोंसहित अर लोकपालों सहित तथा अनेक राजाओंसहित सर्वकर्मका नाश करन-हारी जिनेश्वर दीक्षा आदरी सर्व परिग्रहका त्याग किया। निर्मल है चित्त जिसका, प्रथम अवस्थाविषै जैसा शरीर भोगोंमें लगाया था तैसा ही तपके समूहमें लगाया अैसा तप औरोंसे न बन पडे, पुरुषों की बडी शक्ति है जैसी भोगोंमें प्रवरतैं तैसे विशुद्धभावविषै प्रवरतैं है। राजा इंद्र बहुत काल तपकर शुक्लध्यानके प्रतापसे कर्मोंका क्षय कर निर्वाण पधारे, गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहै हैं—देखो! बडे पुरुषोंके चारित्र आश्चर्यकारी हैं प्रबल पराक्रमके धारक बहुत काल भोगकर वैराग्य लेय अविनाशी सुखको भोगवै हैं इसमें कुछ आश्चर्य नहीं समस्त परिग्रहका त्यागकर क्षणमात्रविषै ध्यानके बलसे मोटे पापोंका क्षय करै हैं जैसे बहुत कालसे ईंधनकी राशि संचय करी सो क्षणमात्रमें अग्निके संयोगसे भस्म होय है अैसा जानकर हे प्राणी! आत्मकल्याणका यत्न करो, अन्तःकरण विशुद्ध करो, मृत्युके दिनका कुछ निश्चय नहीं, ज्ञानरूप सूर्यके प्रतापसे अज्ञान तिमिरको हरो।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै इंद्रका निर्वाण गमन नामा तेरहवां पर्व पूर्ण भया॥ १३ ॥

अथानन्तर रावण विभव और देवन्द्र समान भोगोंकर मूढ है मन जिसका मनवांछित अनेक लीला विलास करता भया यह राजा इन्द्रका पकडनहारा एकदिन सुमेरुपर्वतके चैत्यालयोंकी बन्दनाकर

पीछे आवता था, सप्त क्षेत्र, षट् कुलाचल तिनकी शोभा देखता नाना प्रकारके वृक्ष नदी सरोवर स्फ-टिकमणि हूं से निर्मल महा मनोहर अवलोकन करता हुवा सूर्य के भवन समान विमानमें विराजमान महा विभूतिसे संयुक्त लंकाविषै आवनेका है मन जिसका तत्काल महा मनोहर उतंगनाद सुनता भया तब महा हर्षवान होय मारीच मंत्रीको पूछता भया हे मारीच ! यह सुन्दर महानाद किसका है और दशोंदिशा काहेसे लाल होरही हैं। तब मारीचने कहा—हे देव यह केवलीकी गंधकुटी है और अनेक देव दर्शनको आवे हैं तिनके मनोहर शब्द होय रहे हैं और देवोंके मुकटादि किरणोंकर यह दशोंदिशा रंग रूप होयरही हैं इस स्वर्ण पर्वतविषै अनंतवीर्य मुनि तिनको केवलज्ञान उपजा है ये वचन सुनकर रावण बहुत आनंदको प्राप्त भया। सम्यक् दर्शनकर संयुक्त है और इन्द्रका वश करणहारा है महाकांतिका धारी आकाशसे केवलीकी बंदना के अर्थ पृथ्वी पर उतरा, बंदनाकर स्तुति करी, इन्द्रादिक अनेक देव केवली के समीप बैठे थे, रावण भी हाथ जोड नमस्कारकर अनेक विद्याधर सहित उचित स्थानकमें तिष्ठा।

चतुरनिकायके देव तथा तिर्यंच अर अनेक मनुष्य केवलीके समीप तिष्ठे हुते तासमय किसी शिष्यने पूछा हे देव हे प्रभो ! अनेक प्राणी धर्म अर अधर्मके स्वरूप जाननेकी तथा तिनके फल जाननेकी अभि-लाषा राखे हैं अर मुक्तिके कारण जानना चाहें हैं सो तुम ही कहने योग्य हो सो कृपाकर कहो तब भग-वान केवलज्ञानी अनन्तवीर्य मर्याद रूप अक्षर जिनमें विस्तीर्ण अर्थ अति निपुण शुद्ध संदेहरहित सर्वके हितकारी प्रिय वचन कहते भए अहो भव्य जीव हो ! यह जीव चेतनालक्षण अनादिकालका निरंतर अष्ट कर्मोंकर बंधा आच्छादित है आत्मशक्ति जिसकी सो चतुरगतिमें भ्रमण करै है चौरासी लक्ष योनि-योंमें नानाप्रकार इंद्रियोंकर उपजी जो वेदना ताहि भोगता हुवा सदाकाल दुःखी होय रागी द्वेषी मोही आ कर्मोंके तीव्र मंद मध्य विपाकसे कुम्हारके चक्रवत् पाया है चतुरगतिका भ्रमण जानै ज्ञानावरणी

कर्मकर आच्छादित है ज्ञान जिसका अतिदुर्लभ मनुष्यदेह पाई तो भी आत्महितको नहीं जानै है रसना का लोलुपी स्पर्श इंद्रीका विषयी पांच हू इंद्रियोंके वश भया अति निंद्य पापकर्मकर नरकविषै पडे है जैसे पाषाण पानीमें डूबे है। कैसा है नरक ? अनेक प्रकारकर उपजे जे महा दुख तिनका सागर है महा दुखकारी है जे पापी क्रूरकर्मा धनके लोभी मातापिता भाई पुत्र स्त्री मित्र इत्यादि सुजन तिनको हनै हैं जगतमें निंद्य है चित्त जिनका ते नरकमें पडे हैं तथा जे गर्भ पात करें हैं तथा बालक हत्या करें हैं वृद्ध को हणे हैं अबला (स्त्रियों) की हत्या करे हैं मनुष्योंको पकडे हैं रोकै हैं बांधे हैं मारे हैं पक्षी तथा मृग-नको हनै हैं जे कुबुद्धि स्थलचर जलचर जीवोंकी हिंसा करे हैं धर्मरहित हैं परिणाम जिनका ते महा वेदना रूप जो नरक उसविषै पडे हैं अर जे पापी शहदके अर्थ मधु माखियोंका छाता तोडे हैं तथा मांस आहारी मद्यपानी शहदके भक्षण करनेहारे वनके भस्म करनेहारे तथा ग्रामोंके बालनहारे बन्दीके कर-णहारे गायनके घेरनहारे पशुघाती महा हिंसक भील अहेडी बागरा पारधी इत्यादि पापी महा नरकमें पडे हैं अर जे मिथ्यावादी परदोषके भाषणहारे अभक्षके भक्षण करनेहारे परधनके हरनहारे परदाराके रमनेहारे वेश्यायोंके मित्र हैं वे घोर नरकमें पडे हैं जहां किसीकी शरण नहीं, जे पापी मांसका भक्षण करें हैं ते नरकमें प्राप्त होय हैं तहां तिनहीका शरीर काट काट तिनके मुखविषै दीजिये है अर ताते लोहेके गोले तिनके मुखमें दीजियै है अर मद्यपान करनेवालोंके मुखमें सीसा गाल गाल ढारिए है अर परदारा लंपटियोंको ताती लोहेकी पूतलियोंसे आलिंगन करावे हैं जे महापरिग्रहके धारी महा आरम्भी क्रूर है चित्त जिनका प्रचंड कर्मके करनहारे हैं ते सागरां पर्यंत नरकमें बसै हैं साधुओंके द्वेषी पापी मिथ्यादृष्टि कुटिल कुबुद्धि रौद्रध्यानी मरकर नरकमें प्राप्त होय हैं जहां विक्रियामई कुहाडे तथा खड्ग चक्र करोंत अर नानाप्रकारके विक्रियामई शस्त्र तिनसे खण्ड खण्ड कीजिए है फिर शरीर मिल जाय है आयु पर्यंत

दोषोंका मोह कारण है, जिनके रागादि कलंक हैं ते संसारी जीव हैं जिनके ये नहीं वे भगवान हैं जे देश काल कामादिके सेवनहारे हैं ते मनुष्य तुल्य हैं तिनमें देवत्व नहीं तिनकी सेवा शिवपुरका कारण नहीं अर काहूके पूर्व पुण्यके उदयसे शुभ मनोहर फल होय है सो कुदेव सेवाका फल नहीं, कुदेवनकी सेवातैं सांसारिक सुख भी न होय तो शिवसुख कहांसे होय तातैं कुदेवोंको सेवना बालूको पेल तेलका काढना है अर अग्निके सेवनतैं तृषाका बुझावना है जैसे कोई पंगुको पंगु देशांतर न ले जाय सकै तैसे कुदेवोंके आराधनसे परम पदकी प्राप्ति कदाचित् न होय। भगवान विना और देवोंके सेवनका क्लेश करै सो वृथा है, कुदेवनमें देवत्व नाहीं अर जे कुदेवोंके भक्त हैं ते पात्र नहीं, लोभकर प्रेरे प्राणी हिंसा-कर्मविषै प्रवरतैं हैं हिंसाका भय नहीं, अनेक उपायकर लोकोंसे धन लेय हैं संसारी लोक भी लोभी सो लोभियोंपै ठगावैं हैं तातैं सर्व दोषरहित जिन आज्ञा प्रमाण जो महा दान करै सो महाफल पावै, वाणिज्य समान धर्म है, कभी किसी वाणिज्यविषै अधिक नफा होय, कभी अल्प होय, कदापि टोटा होय, कदे मूल ही जाता रहै, अल्पसे बहुत फल हो जाय, बहुतसे अल्प हो जाय अर जैसे विषका कण सरोवरीमें प्राप्त भया सरोवरीको विषरूप न करै तैसे चैत्यालयादि निमित्त अल्प हिंसा सो धर्मका विघ्न न करै तातैं गृहस्थी भगवानके मंदिर करावैं। कैसे हैं गृहस्थी ? जिनेन्द्रकी भक्तिविषै तत्पर हैं अर व्रत क्रियामें प्रवीण हैं अपनी विभूति प्रमाण जिनमंदिरकर जल चंदन धूप दीपादिकर पूजा करनी। जे जिनमंदिरादिमें धन खरचैं ते स्वर्गलोकमें तथा मनुष्यलोकविषै अत्यन्त ऊंचे भोग भोगि परम पद पावै हैं अर जे चतुरविध संघको भक्तिपूर्वक दान करै हैं ते गुणानिके भाजन हैं, इंद्रादि पदके भोगोंको पावै हैं तातैं जे अपनी शक्ति प्रमाण सम्यग्दृष्टि पात्रोंको भक्तिसे दान करै हैं तथा दुखियोंको दयाभावकर दान करै हैं सो धन सफल है अर कुमारगमें लगा जो धन सो चोरोंसे लूटा जानो अर आत्मध्यानके

योगसे केवलज्ञानकी प्राप्ति होय है जिनको केवलज्ञान उपजा तिनको निर्वाण पद है सिद्ध सर्व लोकके शिखर तिष्ठै हैं सर्व बाधारहित अष्टकर्मसे रहित अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतसुख अनंतवीर्यसे संयुक्त शरीरसे रहित अमूर्तिक पुरुषाकार जन्म मरणसे रहित अविचल विराजै हैं जिनका संसारविषै आगमन नाहीं; मन इंद्रीसे अगोचर हैं यह सिद्धपद धर्मात्मा जीव पावै हैं अर पापी जीव लोभरूप पवनसे वृद्धिको प्राप्त भई जो दुखरूप अग्नि उसमें बलते सुकृतरूप जल विना सदा क्लेशको पावै हैं, पापरूप अन्धकारके मध्य तिष्ठे मिथ्यादर्शनके वशीभूत हैं। कोई एक भव्यजीव धर्मरूप सूर्यकी किरणोंसे पाप तिमिरको हर केवलज्ञानको पावै है अर ये जीव अशुभरूप लोहके पिंजरेमें पडे आशारूप पाशकर बेढे धर्मरूप बांधव कर छूटे हैं व्याकरणहूतैं धर्म शब्दका यही अर्थ हुआ है जो धर्म आचरता हुआ दुर्गतिविषै पडते प्राणियोंको थांभै सो धर्म कहिए। ता धर्मका जो लाभ सो लाभ कहिए। जिनशासनविषै जो धर्मका स्वरूप कहा है सो संक्षेपसे तुमको कहै हैं। धर्मके भेद अर धर्मके फलके भेद एकाग्रमन कर सुनो। हिंसासे असत्यसे चोरीसे कुशीलसे धन अर परिग्रहके संग्रहसे विरक्त होना इन पापोंका त्याग करना सो महाव्रत कहिए। विवेकियोंको उसका धारण करना अर भूमि निरखकर चलना हित मित संदेहरहित बोलना निर्दोष आहार लेना यत्नसे पुस्तकादि उठावना मेलना निर्जंतुभूमिविषै शरीरका मल डारना ये पांच समिति कहिए। तिनका पालना यत्नकर अर मन वचन कायकी जो वृत्ति ताका अभाव ताका नाम तीन गुप्ति कहिए सो परम आदरतैं साधुओंको अंगीकार करनी। क्रोध मान माया लोभ ये कषाय जीवके महाशत्रु हैं सो क्षमासे क्रोधको जीतना अर मार्दव कहिए निगर्व परिणाम तिनकरि मानको जीतना अर आर्जव कहिए सरल परिणाम निकट भाव ताकरि मायाचारको जीतना अर संतोषसे लोभको जीतना, शास्त्रोक्त धर्मके करनहारे जे मुनि तिनको कषायोंका निग्रह करना योग्य है। ये पंच महाव्रत पंच समिति

तीन गुप्ति कषायनिग्रह मुनिराजका धर्म है अर मुनिका मुख्य धर्म त्याग है। जो सर्व त्यागी होय सो ही मुनि है अर रसना स्पर्शन घ्राण चक्षुः श्रोत्र ये प्रसिद्ध पांच इंद्री तिनका वश करना सो धर्म है अर अनशन कहिए उपवास, अवमोदर्य कहिए अल्प आहार, व्रत परिसंख्या कहिए विषम प्रतिज्ञाका धारणा अटपटी वात विचारनी इस विधि आहार मिलेगा तो लेवेंगे, नातर नहीं अर रसपरित्याग कहिए रसोंका त्याग, विविक्त शय्यासन कहिए एकांत वनविषै रहना, स्त्री तथा बालक तथा नपुंसक तथा ग्राम्यपशु इनकी संगति साधुवोंको न करनी तथा और भी संसारी जीवोंकी संगति न करनी, मुनिको मुनिहीकी संगति करनी अर काय क्लेश कहिए ग्रीष्ममें गिरि शिखर शीतविषै नदीके तीर वर्षामें वृक्षके तले तीनों कालके तप करने तथा विषमभूमिविषै रहना, मासोपवासादि अनेक तप करना ये षट् बाह्य तप कहे अर आभ्यन्तर षट् तप सुनो—प्रायश्चित कहिए जो कोई मनसे तथा वचनसे तथा कायसे दोष लगा सो सरल परिणामकर श्रीगुरुसे प्रकाशकर तपादि दंड लेना बहुरि विनय कहिए देव गुरु शास्त्र साधर्मियोंको विनय करना तथा दर्शन ज्ञान चारित्रका आचरण सो ही इनका विनय अर इनके जे धारक तिनका आदर करना आपसे जो गुणाधिक होइ ताहि देखकर उठ खडा होना सम्मुख जाना आप नीचे बैठना उनको ऊंचे बिठाना मिष्ट वचन बोलने दुख पीडा मेटनी अर वैयाव्रत कहिए जे तपसे तप्तायमान हैं रोगकरि युक्त है गात्र जिनका वृद्ध हैं अथवा नव वयके जे बालक हैं तिनका नाना प्रकार यत्न करना औषध पथ्य देना उपसर्ग मेटना अर स्वाध्याय कहिए जिनशासनका बाचना पूछना आम्नाय कहिए परिपाटी अनुप्रेक्षा कहिए बारम्बार चितारना, धर्मोपदेश कहिए धर्मका उपदेश देना अर व्युत्सर्ग कहिए शरीरका ममत्व तजना तथा एक दिवस आदि वर्ष पर्यंत कायोत्सर्ग धरना अर ध्यान कहिए आर्तरौद्र ध्यानका त्यागकर धर्मध्यान शुक्लध्यानका ध्यावना ये छह प्रकारके आभ्यन्तर तप कहे ये

बाह्याभ्यन्तर द्वादश तप सब ही धर्म हैं इस धर्मके प्रभावसे भव्यजीव कर्मका नाश करैं हैं अर तपके प्रभावसे अद्‌भुत शक्ति होय है सर्व मनुष्य अर देवोंको जीतनेकूं समर्थ होय है। विक्रिया शक्तिकर जो चाहै सो करै विक्रियाके अष्ट भेद हैं अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व। सो महामुनि तपोनिधि परम शांत हैं, सकल इच्छातैं रहित हैं अर ऐसी सामर्थ्य है चाहैं तो सूर्यका आताप निवारैं, चंद्रमाकी शीतलता निवारैं, चाहैं तो जलवृष्टिकर क्षणमात्रविषै जगतको पूर्ण करैं, चाहैं तो भस्म करैं, क्रूर दृष्टिकर देखैं तो प्राण हरैं कृपा दृष्टिकर देखैं तो रंकसे राजा करैं, चाहैं तो रत्न स्वर्णकी वर्षा करैं, चाहैं तो पाषाणकी वर्षा करैं इत्यादि सामर्थ्य है परन्तु करै नाहीं। करैं तो चारित्रका नाश होय। तिन मुनियोंके चरणरजकर सर्व रोग जांय, मनुष्योंको अद्‌भुत विभवके कारण तिनके चरण कमल हैं जीव धर्मकर अनन्त शक्तिको प्राप्त होय हैं धर्म कर कर्मनको हरै हैं अर कदाचित् कोऊ जन्म लेय तो सौधर्म स्वर्ग आदि सर्वार्थ सिद्धि पर्यंत जाय स्वर्गविषै इंद्रपद पावै तथा इंद्र समान विभूति के धारक देव होंय जिनके अनेक स्वणके मंदिर, स्वर्णके, स्फटिक मणिके, वैडूर्य मणिके थंभ अर रत्नमई भींति देदीप्यमान अर सुंदर झरोखोंसे शोभायमान पद्मरागमणि आदि नाना प्रकारकी मणिके शिखर हैं जिनके अर मोतियोंकी झालरोंसे शोभित अर जिनमहलोंमें अनेक चित्राम सिंहोंके गजोंके हंसोंके स्वाणोंके हिरणोंके मयूर कोकिलादिकोंके दोनों भींतविषै रत्नमई चित्राम शोभायमान हैं। चंद्रशालादिकरि युक्त, ध्वजावोंकी पंक्तिकर शोभित, अत्यन्त मनके हरणहारे, मंदिर सजे हैं। आसनादिसे संयुक्त जहां नाना प्रकारके वादित्र बाजै हैं, आज्ञाकारी सेवक देव अर महामनोहर देवांगना, अद्‌भुत देव लोकके सुख महा सुन्दर सरोवर कमलादिकरसंयुक्त, कल्पवृक्षोंके वन विमान आदि विभूतियें यह सभी जीव धर्मके प्रभावकर पावै हैं अर कैसे हैं स्वर्गनिवासी देव? अपनी कांतिकर अर दीप्तिकर चांद सूर्य

को जीते हैं स्वर्गलोकविषै रात्रि अर दिवस नाहीं, षट्ऋतु नाहीं, निद्रा नाहीं अर देवोंका शरीर माता पितासे उत्पन्न नाहीं होता जब अगला देव खिर जाय तब नया देव उत्पादिक शय्याविषै उपजै है जैसे कोई सूता मनुष्य सेजतें जाग उठै तैसे क्षणमात्रमें देव उत्पादिक शय्याविषै प्रकट होय हैं नवयौवनको प्राप्त भया कैसा है तिनका शरीर ? सात उपधातु रहित, निर्मल रज पसेव अर रोगोंतें रहित सुगन्ध पवित्र कोमल परम शोभायुक्त नेत्रोंको प्यारा ऐसा उत्पादिक शुभ वैक्रियक देवोंका शरीर होय सो ये प्राणी धर्मकरि पावै हैं जिनके आभूषण महा देदीप्यमान तिनकी कांतिके समूहकर दशोंदिशामें उद्योत हो रहा है अर तिन देवनके देवांगना महासुंदर हैं कमलोंके पत्र समान सुंदर हैं चरण जिनके अर केले के थंभ समान है जंघा जिनकी कांचीदाम (तागडी) कर शोभित सुंदर कटि अर नितंब जिनके जैसे गजोंके घंटीका शब्द होय तैसे कांचीदामकी क्षुद्र घंटिकाका शब्द होय है उगते चंद्रमासे अधिक कांति धरै हैं मनोहर हैं स्तनमण्डल जिनका, रत्नोंके समूहसे ज्योतिको जीते अर चांदनीको जीते ऐसी है प्रभा जिनकी, मालतीकी जो माला ताहूतैं अति कोमल भुजलता है जिनकी, महा अमोलिक बाचाल मणिमई चूडे उनकर शोभित हैं हाथ जिनके, अर अशोकवृक्षकी कोंपल समान कोमल अरुण हैं हथेली जिनकी, अति सुंदर करकी अंगुली शंख समान ग्रीवा कोकिलहूतैं अति मनोहर है कंठ अति लाल अति सुंदर रसके भरे अधर तिनकर आच्छादित कुन्दके पुष्प समान दंत अर निर्मल दर्पण समान सुंदर हैं कपाल जिनके, लावण्यताकर लिप्त भई हैं सर्वादिशा अर अति सुंदर तीक्ष्ण कामके बाण समान नेत्र सो नेत्रोंकी कटाक्ष कर्ण पर्यंत प्राप्त भई हैं सोई मानों कर्णाभरण भए अर पद्मराग मणि आदि अनेक मणियोंके आभूषण अर मोतियोंके हार उनसे मंडित अर भ्रमर समान श्याम अति सूक्ष्म अति निर्मल अति चिकने अति सघन वक्रता धरैं लम्बे केश कोमल शरीर अति मधुर स्वर अत्यन्त चतुर

सर्व उपचारकी जाननहारी महा सौभाग्यवती रूपवती गुणवती मनोहर क्रीडाकी करणहारी नंदनादि वनोंसे उपजी जो सुगंध ताहूतैं अति सुगंध है श्वास जिनके पराए मनका अभिप्राय चेष्टामें जान जांय ऐसी प्रवीण पंचेंद्रियोंके सुखकी उपजावनहारी मनबांछित रूपकी धरणहारी ऐसी स्वर्गमें जो अप्सरा वह धर्मके फलसे पाइए है अर जो इच्छा करैं सो चितवतमात्र सर्व सिद्धि होंय, इच्छा करैं सो ही उपकरण प्राप्त होय, जो चाहें सो सदा संग ही हैं, देवांगनावोंकर देव मनबांछित सुख भोगे हैं। जो देवलोकमें सुख हैं तथा मनुष्य लोकविषै चक्रवर्त्यादिकके सुख हैं सो सर्व धर्मका फल जिनेश्वर देवने कहा है, अर तीन लोकमें जो सुख ऐसा नाम धरावै हैं सो सर्व धर्मकरि उत्पन्न होय है जे तीर्थंकर तथा चक्रवर्ती बलभद्र कामदेवादि दाता भोक्ता मर्यादाके कर्त्ता निरंतर हजारों राजावों तथा देवोंकर सेइए हैं सो सर्व धर्मका फल है। अर जो इंद्र स्वर्गलोकका राज्य हजारों जे देव मनोहर आभूषणके धरणहारे तिनका प्रभुत्व धरै हैं सो सर्व धर्मका फल है, यह तो सकल शुभोपयोगरूप व्यवहार धर्मके फल कहे अर जे महामुनि निश्चयसे रत्नत्रयके धरणहारे मोहरिपुका नाशकर सिद्धपद पावै हैं सो शुद्धोपयोगरूप आत्मीक धर्मका फल है सो मुनिका धर्म मनुष्य जन्म विना नहीं पाइए हैं, तातैं मनुष्य देह सर्व जन्माविषै श्रेष्ठ है, जैसे मृग कहिए वनके जीव तिनमें सिंह अर पक्षियोंविषै गरुड अर मनुष्योंविषै राजा, देवोंविषै इंद्र, तृणोंविषै शालि, वृक्षोंविषै चंदन अर पाषाणोंविषै रत्न श्रेष्ठ है, तैसे सकल योनिविषैं मनुष्य जन्म श्रेष्ठ हैं, तीन लोकविषै धर्म सार है अर धर्मविषै मुनिका धर्म सार है। सो मुनिका धर्म मनुष्य देहसे ही होय है तातैं मनुष्य समान और नहीं। अनन्त काल यह जीव परिभ्रमण करै है तामैं मनुष्य जन्म कब ही पावै है यह देह महादुर्लभ है। ऐसे दुर्लभ मनुष्य देहको पाय जो मूढ प्राणी समस्त क्लेशसे रहित करणहारा जो मुनिका धर्म अथवा श्रावकका नहीं करै है सो बारम्बार दुर्गतिविषै भ्रमण करै है। जैसे समुद्रविषै

गिरा महागुणोंका धरणहारा रत्न बहुरि हाथ आवना दुर्लभ है तैसे भव समुद्रविषै नष्ट हुआ नर देह बहुरि पावना दुर्लभ है इस मनुष्य देहविषै शास्त्रोक्त धर्मका साधनकर कोई मुनिव्रत धर सिद्ध होय हैं अर कोई स्वर्गनिवासी देव तथा अहमिंद्र पद पावैं, परम्परा मोक्ष पावै हैं, याभांति धर्म अधर्मके फल केवलीके मुखतैं सुनकर सब ही सुखको प्राप्त भए। ता समय कमल सारिखे हैं नेत्र जाके ऐसा कुम्भकरण हाथ जोड नमस्कारकर पूछता भया उपजा है अति आनन्द जाकैं। हे भगवान ! मेरे अब भी तृप्ति न भई तातैं विस्तार कर धर्मका व्याख्यान विधिपूर्वक मोहि कहो। तब भगवान अनंतवीर्य कहते भए–'हे भव्य ! धर्मका विशेष वर्णन सुनो–जाकरि यह प्राणी संसारके बंधनानितैं छूटै सो धर्म दो प्रकारका है–एक महाव्रतरूप दूजा अणुव्रतरूप। सो महाव्रतरूप यतिका धर्म है, अणुव्रतरूप श्रावकका धर्म है। यति घरके त्यागी हैं श्रावक गृहवासी हैं। तुम प्रथम ही सर्व पापोंका नाश करण हारा सर्व परिग्रह के त्यागी जे महामुनि तिनका धर्म सुनो।

या अवसर्पणी कालमें अब तक ऋषभदेवतैं मुनिसुव्रत पर्यंत बीस तीर्थंकर हो चुके हैं अब चार और होंयगे या भांति अनन्त भए अर अनन्त होवेंगे सो सबका एक मत है यह श्रीमुनिसुव्रतनाथका समय है। सो अनेक महापुरुष जन्म मरणके दुःखकरि महा भयभीत भए या शरीरको एरण्डकी लकड़ी समान असार जान सर्व परिग्रहका त्याग कर मुनिव्रतको प्राप्त भए। ते साधु अहिंसा, असत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, परिग्रहत्यागरूप पंचमहाव्रत तिनविषै रत तत्त्वज्ञानविषै तत्पर पंचसमितिके पालनहारे, तीन गुप्तिके धरनहारे, निर्मलचित्त महापुरुष परमदयालु निजदेहविषै भी निर्ममत्व रागभावरहित जहां सूर्य अस्त होय तहां ही बैठ रहें, आश्रय कोई नहीं, तिनके कहा परिग्रह होय, पापका उपजावनहारा जो परिग्रह सो तिनके वालके अग्रभाग मात्र हू नाहीं, वे महाधीर महामुनि सिंह समान साहसी, समस्त प्रबंध रहित,

जीवनके मारनेके उपकरण तथा जे जाल रस्सा इत्यादि बन्धनके उपाय तिनका व्यापार अर श्वान मार्जार चीतादिकका पालना अर कुश्रुतिश्रवण कहिये कुशास्त्रका श्रवण, प्रमादचर्या कहिये प्रमादसे वृथा छै कायके जीवोंकी बाधा करनी ये पांचप्रकारके अनर्थ दण्ड तजने अर भोग कहिये आहारादिक उपभोग कहिये स्त्रीवस्त्राभूषणादिक तिनका प्रमाण करना अर्थात् यह विचार जे अभक्ष्य भक्षणादि परदारा सेवनादि अयोग्य विषय हैं तिनका तो सर्वथा त्याग अर जे योग्याहार तथा स्वदारसेवनादि तिनका नियमरूप प्रमाण यह भोगोपभोग परिसंख्यावूत कहिये। ये तीन गुणव्रत कहे अर सामायिक कहिये समताभाव पंचपरमेष्ठी अर जिनधर्म जिनवचन जिनप्रतिमा जिनमान्दिर तिनका स्तवन अर सर्व जीवोंसे क्षमाभाव सो प्रभात मध्यान्ह सायंकाल छै छै घडी तथा चार २ घडी तथा दो दो घडी अवश्य करना अर प्रोषधोपवास कहिये दो आठें दो चोदस एक मासमें चार उपवास षोडश पहरके पोसे संयुक्त अवश्य करने सोलह पहरतक संसारके कार्यका त्याग करना आत्मचिंतवन तथा जिन भजन करना अर अतिथि संविभाग कहिए अतिथि जे परिग्रहरहित मुनि जिनके तिथि वार का विचार नहीं सो आहारके निमित्त आवें महागुणोंके धारक तिनका विधिपूर्वक अपने वृत्तानुसार बहुत आदरसे योग्य आहार देना अर आयुके अंतविषै अनशन व्रतधर समाधिमरण करना सो संलेखनाव्रत कहिए। ये चार शिक्षाव्रत कहे पांच अणुवूत तीन गुणवूत चार शिक्षावूत ये बारहवूत जानने। जे जिनधर्मी हैं तिनके मद्य मांस मधु माषण उदवंरादि अयोग्य फल रात्री भोजन बींधा अन्न अनछाना जल परदारा तथा दासी वेश्यासंगम इत्यादि अयोग्य क्रियाका सर्वथा त्याग है। यह श्रावकके धर्म पालकर समाधिमरणकर उत्तम देव होय फिर उत्तम मनुष्य होय सिद्धपद पावै है अर जे शास्त्रोक्त आचरण करनेको असमर्थ हैं न श्रावकके वूत पालें न यातिके परंतु जिनभाषितकी दृढ श्रद्धा है ते भी

निकट संसारी हैं सम्यक्तके प्रसादसे व्रतको धारणकर शिवपुरको प्राप्त होय हैं। सर्व लाभमें श्रेष्ठ जो सम्यग्दर्शनका लाभ ताकरि ये जीव दुर्गतिके त्रासते छूटे हैं जो प्राणी भावसे श्रीजिनेन्द्रदेवको नमस्कार करे हैं सो पुण्याधिकारी पापोंके क्लेशसे निवृत्त होय हैं अर जो प्राणी भावकर सर्वज्ञदेवको सुमरे है ता भव्यजीवके अशुभकर्म कोट भवके उपारजे तत्काल क्षय होय हैं अर जो महाभाग्य त्रैलोक्यविषै सार जो अरिहंत देव तिनको हृदयविषै धारे हैं सो भवकूपविषै नहीं परे हैं । ताके निरन्तर सर्व भाव प्रशस्त हैं अर ताको अशुभ स्वप्न न आवें शुभ स्वप्न ही आवें अर शुभ शकुन ही होय हैं अर जो उत्तम जन "अर्हते नमः" यह वचन भावतें कहे हैं ताके शीघ्र ही मलिन कर्मका नाश होय है याविषै सन्देह नाहीं। मुक्ति योग्य प्राणीका चित्त रूप कुमुद परम निर्मल वीतराग जिनचन्द्रकी कथारूप जो किरण तिनके प्रसंगतें प्रफुल्लित होय है अर जो विवेकी अरिहंत सिद्ध साधुवोंके ताईं नमस्कार करै है सो सर्व जिनधर्मियोंका प्यारा है ताहि अल्प संसारी जानना अर जो उदाराचित्त श्रीभगवानके चैत्यालय करावै जिनबिंब पधरावै है जिनपूजा करै है जिनस्तुति करै है ताके इस जगतविषै कछु दुर्लभ नाहीं। नरनाथ कहिए राजा होहु अथवा कुटुंबी कहिए किसान होहु, धनाढ्य होहु तथा दलिद्री होहु जो मनुष्य धर्मसे युक्त है सो सर्व त्रैलोक्यमें पूज्य है। जे नर महाविनयवान हैं अर कृत्य अकृत्यके विचारविषै प्रवीण हैं जो यह कार्य करना यह न करना ऐसा विवेक धरै हैं ते विवेकी धर्मके संयोगतें गृहस्थिनिविषै मुख्य हैं। जे जन मधु मांस मद्य आदि अभक्ष्यका संसर्ग नहीं करै हैं तिन हीका जीवन सफल है। अर शंका कहिए जिन वचनोंमें सन्देह, कांक्षा कहिए इस भवविषै अर परभवविषै भोगोंकी बांछा, विचिकित्सा कहिए रोगी वा दुखीको देख घृणा करणी आदर नहीं करना अर आत्मज्ञानसे दूर जे परदृष्टि कहिए जिनधर्मसे पराङ्मुख मिथ्यामार्गी तिनकी प्रशंसा करनी अर अन्य-

शासन कहिए हिंसामार्ग ताके सेवनहारे जे निर्दयी मिथ्यादृष्टि उनके निकट जाय स्तुति करनी ये पंच सम्यक् दर्शनके अतीचार हैं। तिनके त्यागी जे जंतु कहिए प्राणी ते गृहास्थिनिविषै मुख्य हैं अर जो प्रियदर्शन कहिए प्यारा है दर्शन जाका, सुंदर वस्त्राभरण पहिरे, सुगंध शरीर पयादा धरतीको देखता निर्विकार जिनमंदिरमें जाय है, शुभ कार्योंविषै उद्यमी ताके पुण्यका पार नाहीं अर जो पराए द्रव्यको तृण समान देखै हैं अर पर जीवको आप समान देखै हैं अर परनारीको माता समान देखै हैं सो धन्य हैं अर जाके ये भाव हैं ऐसा दिन कब होयगा जो मैं जिनेंद्री दीक्षा लेकर महामुनि होय पृथ्वीविषै निर्द्वन्द्व विहार करूंगा, ये कर्म शत्रु अनादिके लगे हैं तिनका क्षयकर कब सिद्ध पद प्राप्त करूं या भांति निरंतर ध्यानकर निर्मल भया है चित्त जाका ताके कर्म कैसे रहैं, भयकर भाग जांय। कैयक विवेकी सात आठ भवमें मुक्ति जाय हैं, कैयक दो तीन भवविषै संसार समुद्रके पार होय हैं, कैयक चरमशरीरी उग्र तपकर शुद्धोपयोगके प्रसादतैं तद्भव मोक्ष होय हैं जैसे कोई मार्गका जाननहारा पुरुष शीघ्र चलै तो शीघ्र ही स्थानकको जाय पहुंचै अर कोई धीरे २ चलै तो घने दिनमें जाय पहुंचै परन्तु मार्ग चलै सो पहुंचै ही अर जो मार्ग ही न जानै अर सौ सौ योजन चलै तो भी भ्रमता ही रहै स्थानकको न पहुंचै तैसे मिथ्यादृष्टि उग्र तप करें तो भी जन्म मरण वार्जित जो अविनाशी पद ताहि न प्राप्त होय, संसार वन ही विषै भ्रमै, नहीं पाया है मुक्तिका मार्ग तिनने। कैसा है संसारवन ? मोहरूप अंधकारकर आच्छादित है अर कषायरूप सर्पोंकर भरा है। जिस जीवके शील नाहीं, व्रत नाहीं, सम्यक्त नाहीं, त्याग नाहीं, वैराग्य नाहीं, सो संसार समुद्रको कैसे तिरे। जैसे विन्ध्याचल पर्वततैं चला जो नदीका प्रवाह ताकरि पर्वत समान ऊंचे हाथी बह जांय तहां एक शसा क्यों न बहे तैसे जन्म जरा मरणरूप भ्रमणको धरे संसाररूप जो प्रवाह ताविषै जे कुतीर्थी कहिए मिथ्यामार्गी अज्ञान तापस हैं तेई डूबे हैं

फिर उनके भक्तोंका कहा कहना ? जैसे शिला जलविषै तिरणे शक्त नहीं तैसे परिग्रहके धारी कुदृष्टि शरणागतोंको तारणे समर्थ नाहीं अर जे तत्त्वज्ञानी तपकर पापोंके भस्म करणहारे हलके हो गए हैं कर्म जिनके, ते उपदेश थकी प्राणियोंको तारने समर्थ हैं यह संसार सागर महाभयानक है यामें यह मनुष्य क्षेत्र रत्नद्वीप समान है सो महा कष्टसे पाइए है तातैं बुद्धिवंतनको इस रत्नदीपविषै नेमरूप रत्न ग्रहणे अवश्य योग्य हैं। यह प्राणी या देहको तजकरि परभवविषै जायगा अर जैसे कोई मूर्ख तागाके अर्थ महामणिको चूर्ण करै तैसे यह जडबुद्धि विषयके अर्थ धर्मरत्नको चूर्ण करै है अर ज्ञानी जीवोंको सदा द्वादश अनुप्रेक्षाका चिंतवन करना ये शरीरादि सर्व अनित्य हैं, आत्मा नित्य है या संसारविषै कोई शरण नहीं, आपको आप ही शरण है तथा पंच परमेष्ठीका शरण है अर संसार महा दुखरूप है चतुर्गतिविषै काहू ठौर सुख नहीं, एक सुखका धाम सिद्धपद है यह जीव सदा अकेला है याका कोई संगी नहीं अर सर्व द्रव्य जुदे जुदे हैं कोई काहूसे मिलै नहीं अर यह शरीर महा अशुचि है, मल मूत्र का भरा भाजन है, आत्मा निर्मल है अर मिथ्यात्व अव्रत कषाय योग प्रमादनिकर कर्मका आश्रव होय है अर व्रत समिति गुप्ति दशलक्षण धर्म अनुप्रेक्षा चिंतवन परीषहजय चारित्रकरि संवर होय है आश्रव का रोकना सो संवर अर तपकर पूर्वोपार्जित कर्मकी निर्जरा होय है अर यह लोक षट्द्रव्यात्मक अनादि अकृत्रिम शाश्वत है, लोकके शिखर सिद्ध लोक है। लोकालोकका ज्ञायक आत्मा है अर जो आत्मस्वभाव सो ही धर्म है, जीवदया धर्म है अर जगतविषै शुद्धोपयोग दुर्लभ है सोई निर्वाणका कारण है। द्वादश अनुप्रेक्षा विवेकी सदा चिंतवै या भांति मुनि अर श्रावकके धर्म कहे। अपनी शक्ति प्रमाण जो धर्म सेवै उत्कृष्ट मध्यम तथा जघन्य सो सुरलोकादिविषै तैसा ही फल पावै। या भांति केवली कही तब भानुकर्ण कहिए कुम्भकर्णने केवलीसे पूछी—हे नाथ! भेदसहित नियमका स्वरूप जानना चाहूं हूं।

तब भगवानने कही–हे कुम्भकर्ण ! नियममें अर तपमें भेद नहीं, नियमकर युक्त जो प्राणी सो तपस्वी कहिए तातैं बुद्धिमान नियमविषै सर्वथा यत्न करै जेता अधिक नियम करै सो ही भला अर जो बहुत न बनै तो अल्प ही नियम करना परन्तु नियम विना न रहना जैसे बनै सुकृतका उपार्जन करना, जैसे मेघकी बूंद परे हैं तिन बूंदनिकरि महानदीका प्रवाह होय जाय है सो समुद्रविषै जाय मिलै है तैसे जो पुरुष दिनविषै एक मुहूर्तमात्र भी आहारका त्याग करै सो एक मासमें एक उपवासके फलको प्राप्त होय ताकर स्वर्गविषै बहुत काल सुख भोग, मनवांछित भोग प्राप्त होय, जो कोई जिनमार्गकी श्रद्धा करता संता यथाशक्ति तप नियम करै तो महात्माके दीर्घ काल स्वर्गविषै सुख होय बहुरि स्वर्गतैं चयकर मनुष्यभवविषै उत्तम भोग पावै है एक अज्ञान तापसीकी पुत्री वनविषै रहे सो महादुखवंती बदरीफूल (बेर) आदि कर आजीविका पूर्ण करै ताने सत्संगतैं एक मुहूर्तमात्र भोजनका नियम लिया ताके प्रभावतैं एक दिन राजाने देखी, आदरतैं परणी, बहुत संपदा पाई अर धर्ममें बहुत सावधान भई, अनेक नियम आदरे सो जो प्राणी कपटरहित होय जिनवचनको धारण करै सो निरंतर सुखी होय परलोकमें उत्तम गति पावै अर जो दो मुहूर्त दिवस प्रति भोजनका त्याग करै ताके एक मासविषै दो उपवासका फल होय तीस मुहूर्तका एक अहोरात्र गिनो अर तीन मुहूर्त प्रति दिन अन्न जलका त्याग करै तो एक मासविषै तीन उपवासका फल होय। या भांति जेता अधिक नियम तेता ही अधिक फल। नियमके प्रसादकरि ये प्राणी स्वर्गविषै अद्भुत सुख भोगै हैं अर स्वर्गतैं चयकर अद्भुत चेष्टाके धरणहारे मनुष्य होय हैं महा कुलवंती महारूपवंती महागुणवंती महालावण्यकर लिप्त मोतियोंके हार पहरे अर मनके हरनहारे जे हाव भाव विलास विभ्रम तिनको धरैं जे शीलवंती स्त्री तिनके पति होय हैं अर स्त्री स्वर्गतैं चयकर बडे कुलविषै उपज बडे राजाओंकी रानी होय हैं, लक्ष्मी समान है स्वरूप जिनका अर जो

प्राणी रात्रि भोजनका त्याग करै हैं अर जलमात्र नाहीं ग्रहै हैं ताके अति पुण्य उपजै है, पुण्यकर अधिक प्रताप होय है अर जो सम्यक्दृष्टि व्रत धारै ताके फलका कहा कहना? विशेष फल पावै स्वर्गविषै रत्नमई विमान तहां अप्सरावोंके समूहके मध्यमें बहुत काल धर्मके प्रभावकर तिष्ठै है बहुरि दुर्लभ मनुष्यदेही पावै तातैं सदा धर्मरूप रहना अर सदा जिनराजकी उपासना करनी जे धर्मपरायण हैं तिनको जिनेंद्रका आराधन ही परम श्रेष्ठ है। कैसे हैं जिनेद्रदेव? जिनके समोसरणकी भूमि रत्न कंचन कर निरमापित देव मनुष्य तिर्यंचनिकर बंदनीक है। जिनेंद्र देव आठ प्रातिहार्य चौंतीस अतिशय महा अद्भुत हजारों सूर्य समान तेज महासुन्दर रूप नेत्रोंको सुखदाता हैं, जो भव्यजीव भगवानको भावकर प्रणाम करै सो विचक्षण थोडे ही कालविषै संसार समुद्रको तिरै।

श्रीवीतरागदेवके सिवाय कोई दूसरा जीवोंको कल्याणकी प्राप्तिका उपाय और नाहीं तातैं जिनेंद्रचंद्रहीका सेवन योग्य है अर अन्य हजारों मिथ्यामार्ग उबट मार्ग हैं तिनविषै प्रमादी जीव भूल रहे हैं, तिन कुतीर्थनिके सम्यक्त नाहीं अर मद्य मांसादिकके सेवनतैं दया नाहीं अर जैनविषै परम दया है रंचमात्र भी दोषकी प्ररूपणा नाहीं अर अज्ञानी जीवोंके यह बडी जडता है जो दिवसमें आहारका त्याग करैं अर रात्रिमें भोजन कर पाप उपाजैं, चार पहर दिन अनशन व्रत किया ताका फल रात्रि भोजनतैं जाता रहै, महा पापका बन्ध होय, रात्रीका भोजन महा अधर्म जिन पापियोंने धर्म कह कल्पा, कठोर है चित्त जिनका तिनको प्रतिबोधना बहुत कठिन है। जब सूर्य अस्त होय जीव जन्तु दृष्टि न आवै तब जो पापी विषयोंका लालची भोजन करै है सो दुर्गतिके दुःखको प्राप्त होय है योग्य अयोग्यको नहीं जानै है। जो अविवेकी पाप बुद्धि अन्धकारके पटल कर आच्छादित भए हैं नेत्र जाके रात्रीको भोजन करै हैं सो माक्षिका कीट केशादिकका भक्षण करै हैं जो रात्री भोजन करै हैं सो डाकानि राक्षस स्वान

मार्जार मूसा आदिक मलिन प्राणियोंका उच्छिष्ट आहार करै हैं। अथवा बहुत प्रपंच कर कहा? सर्वथा यह व्याख्यान है कि जो रात्रीको भोजन करे है सो सर्व अशुचिका भोजन करै है, सूर्यके अस्त भए पीछे कछु दृष्टि न आवै तातैं दोय मुहूर्त दिवस बाकी रहे तबसे लेकर दो मुहूर्त दिन चढे तक विवेकियोंको चौविधि आहार न करना। अशन पान खाद स्वाद ये चार प्रकारके आहार तजने। जे रात्री भोजन करे हैं ते मनुष्य नहीं पशु हैं जो जिनशासनतैं विमुख व्रत नियमसे रहित रात्री दिवस भखवे ही करै हैं सो परलोकमें कैसे सुखी होंय? जो दयारहित जीव जिनेन्द्रकी जिन धर्मकी अर धर्मात्मावोंकी निंदा करै हैं सो परभवमें महा नरकमें जाय हैं अर नरकतैं निकस कर तिर्यंच तथा मनुष्य होय सो दुरगन्धमुख होय हैं मांस मद्य मधु निशिभोजन चोरी अर परनारी जो सेवै हैं सो दोनों जन्म खोवे हैं जो रात्री भोजन करै हैं सो अल्प आयु हीन व्याधिपीडित सुखरहित महा दुखी होय हैं। रात्री भोजनके पापतैं बहुतकाल जन्म मरणके दुख पावै हैं, गर्भवासविषे बसे हैं, रात्रीभोजी, अनाचारी, शूकर, कूकर, गरदभ, मार्जार, काग, बन, नरकनिगोद स्थावर त्रस अनेक योनियोंमें बहुतकाल भ्रमण करै हैं। हजारों अवसर्पणीकाल अर हजारों उत्सर्पणी काल योनिनिविषे दुःख भोगै हैं जो कुबुद्धि निशि भोजन करै हैं सो निशाचर कहिये राक्षस समान हैं अर जो भव्यजीव जिनधर्मको पायकर नियमविषे तिष्ठै हैं सो समस्त पापोंको भस्मकर मोक्षपदको पावै हैं जो व्रत लेइकरि भंग करै सो दुःखी हो हैं जे अणुव्रतोंमें परायण रत्नत्रयके धारक श्रावक हैं ते दिवसविषे ही भोजन करें, दोषरहित योग्य आहार करें, जे दयावान रात्रीभोजन न करें ते स्वर्गविषे सुख भोगकर तहांते चयकर चक्रवर्त्यादिकके सुख भोगै हैं शुभ है चेष्टा जिनकी उत्तम व्रत नियम चेष्टाके धरनहारे सौधर्मादि स्वर्गविषे ऐसे भोग पावैं जो मनुष्योंको दुरलभ हैं अर देवोंसे मनुष्य होय सिद्ध पद पावें हैं। कैसे मनुष्य होंय? चक्रवर्ति, कामदेव, बलदेव, महामण्डलीक, मंडलीक, महाराजा

राजाधिराज महा विभूतिके धनी, महागुणवान उदारचित्त दीरघआयु सुंदररूप जिनधर्मके मर्मी जगतके हितु अनेक नगर ग्रामादिकोंके अधिपति नाना प्रकारके बाहनोंकर मण्डित सर्व लोकके वल्लभ अनेक सामन्तोंके स्वामी दुस्सह तेजके धारनहारे ऐसे राजा होय हैं अथवा राजावोंके मन्त्री पुरोहित सेनापति राजश्रेष्ठी तथा श्रेष्ठी बडे उमराव महा सामंत मनुष्योंमें यह पद रात्री भोजनके त्यागी पावै हैं। देवनिके इन्द्र भवनवासियोंके इन्द्र चक्रके धनी मनुष्योंके इन्द्र महालक्षणों कर सम्पूर्ण दिनभोजनतैं होय हैं। सूर्य्य सारिखे प्रतापी चन्द्रमा सारिखे सौम्यदर्शन, अस्तको प्राप्त न होय प्रताप जिनका, देवनि समान हैं भोग जिनके ऐसे तेई होंइ जे सूर्य अस्त भए पीछे भोजन न करें अर स्त्री रात्री भोजनके पापसे माता पिता भाई कुटुम्ब रहित अनाथ कहिये पतिरहित अभागिनी शोक दलिद्र कर पूर्ण रूक्ष फटे अधर हस्त पादादि सूका शरीर चिपटी नासिका जो देखे सो ग्लानि करे दुष्ट लक्षण बुरी, मांजरी, आंधी, लूली, गूंगी, बहरी, बावरी, कानी, चीपडी, दुरगन्ध, स्थूल अधर खोटे कर्ण भूरे ऊंचे बुरे सिरके केश तूंबडीके बीज समान दांत कुवरण कुलक्षण कांतिरहित कठोर अंग अनेक रोगोंकी भरी मलिन फटे वस्त्र उच्छिष्टकी भक्षणहारी पराई मंजूरी करणहारी नारी होय है। रात्रि भोजनकी करणहारी नारी जो पति पावै तो कुरूप कुशील कोढी बुरे कान बुरी नाक बुरी आंखें चिंतावान धन कुटुम्बरहित ऐसा पावै। रात्री भोजनतें विधवा बालविधवा महादुखवन्ती जल काष्ठादिक भारके बहनहारी दुख कर भरै है उदर जाका सर्व लोग करे हैं अपमान जाका, वचनरूप बसूलोंकर छीला है चित्त जाका अनेक फोडा फुनसीकी धरणहारी ऐसी नारी होय हैं अर जे नारी शीलवन्ती शान्त है चित्त जिनका दयावन्ती रात्रि भोजनका त्याग करै हैं वे स्वर्गमें मनवांछित भोग पावै हैं। तिनकी आज्ञा अनेक देव देवी सिरपर धारै हैं हाथ जोड सिर निवाय सेवा करै हैं।

स्वर्गमें मनवांछित भोग कर और महा लक्ष्मीवान ऊंचकुलमें जन्म पावैं हैं, शुभ लक्षण सम्पूरण सर्व गुण मंडित सर्वकलाप्रवीण देखनहारोंके मन और नेत्रोंको हरणहारी अमृत समान वचन बोलें आनन्दकी उपजावनहारी जिनके परिणवेकी आभिलाषा चक्रवर्त्ती बलदेव बासुदेव तथा विद्याधरोंके अधिपति राखें, विजुरी समान है कांति जिनकी, कमल समान है बदन जिनका, सुन्दर कुंडल आदि आभूषणकी धारणहारी, सुन्दर वस्त्रोंकी पहरनहारी नरेंद्रकी राणी दिन भोजनतैं होय हैं जिनके मनबांछित अन्न धन होय हैं और अनेक सेवक नाना प्रकारकी सेवा करें जे दयावंती रात्रिविषै भोजन न करें श्रीकांता सुप्रभा सुभद्रा लक्ष्मी तुल्य होवें तातैं नर अथवा नारी नियमविषै है चित्त जिनका ते निशिभोजनका त्याग करें। यह रात्रिभोजन अनेक कष्टका देनहारा है, रात्रिभोजनके त्यागविषै अति अल्प कष्ट है परंतु याके फलकरि सुख अति उत्कृष्ट होय है तातैं विवेकी यह व्रत आदरें, अपने कल्याणको कौन न बांछे, धर्म तो सुखकी उत्पत्तिका मूल है और अधर्म दुखका मूल है ऐसा जानकर धर्मको भजो, अधर्मको तजो। यह वार्ता लोकविषै समस्त बालगोपाल जानै हैं जो धर्मसे सुख होय है अर अधर्मकरि दुःख होय है। धर्मका माहात्म्य देखो जाकरि देवलोकके चए उत्तम मनुष्य होय हैं, जलस्थलके उपजे जे रत्न तिनके स्वामी अर जगतकी मायासे उदास परन्तु कैएक दिनतक महाविभूतिके धनी होय गृहवास भोगै हैं जिनके स्वर्ण रत्न वस्त्र धान्यानिके अनेक भण्डार हैं जिनके विभवकी बडे २ सामन्त नानाप्रकारके आयुधोंके धारक रक्षा करें तिनके बहुत हाथी घोडे रथ पयादे बहुत गाय भैंस अनेक देश ग्राम नगर मनके हरनहारे पांच इंद्रियोंके विषय अर हंसनीकीसी चाल चलें अति सुंदर शुभ लक्षण मधुर शब्द नेत्रोंको प्रिय मनोहर चेष्टाकी धरणहारी नानाप्रकार आभूषणकी धरणहारी स्त्री होय हैं। सकल सुखका मूल जो धर्म है ताहि कैयक मूर्ख जाने ही नाहीं तातैं तिनके धर्मका यत्न

नहीं अर कैएक मनुष्य सुनकर जानै हैं जो धर्म भला है परन्तु पापकर्मके बशतैं अकार्यविषै प्रवरतैं हैं, सुखका उपाय जो धर्म ताहि नाहीं सेवे हैं अर कैएक अशुभ कर्मके उपशान्त होते उत्तम चेष्टाके धरणहारे श्रीगुरुके निकट जाय धर्मका स्वरूप उद्यमी होय पूछे हैं । वे श्रीगुरुके वचन प्रभावतैं वस्तुका रहस्य जानकर श्रेष्ठ आचरणको आचरै हैं यह नियम जे धर्मात्मा बुद्धिमान पापक्रियातैं रहित होयकर करे हैं ते महा गुणवन्त स्वर्गविषै अद्भुत सुख भोगै हैं परम्पराय मोक्ष पावै हैं । जे मुनिराजोंको निरंतर आहार देय हैं अर जिनके ऐसा नियम है कि मुनिके आहारका समय टार भोजन करैं, पहिले न करैं वे धन्य हैं, तिनके दर्शनकी अभिलाषा देव राखै हैं, दानके प्रभाव करि मनुष्य इंद्रका पद पावै अथवा मनवांछित सुखका भोक्ता इंद्रके बराबरके देव होय हैं जैसे बटका बीज अल्प है सो बडा वृक्ष होय परणवै है तैसे दान तप अल्प भी महा फलके दाता हैं सहस्रभट सुभटने यह व्रत लिया हुता कि मुनिके आहारकी बेला उलंघकर भोजन करूंगा सो एक दिन ऋद्धिके धारी मुनि आहारको आए सो निरन्तराय आहार भया तब रत्नवृष्टि आदि पंचाश्चर्य सुभटके घर भए। वह सहस्रभट धर्मके प्रसादतैं कुवेरकान्त सेठ भया । सबके नेत्रोंको प्रिय, धर्मविषै जाकी बुद्धि सदा आसक्त है, पृथ्वीविषै विख्यात है नाम जाका, उदार पराक्रमी महा धनवान जाके अनेक सेवक जैसे पूर्णमासीका चंद्रमा तैसा कांतिधारी परम भोगोंका भोक्ता सर्व शास्त्र प्रवीण पूर्व धर्मके प्रभावतैं ऐसा भया बहुरि संसारसे विरक्त होय जिन दीक्षा आदरी संसारको पार भया तातैं जे साधुके आहारके समयसे पहिले आहार न करनेका नियम धारैं ते हरिषेण चक्रवर्तीकी न्याईं महा उत्सवको प्राप्त होय हैं, हरिषेण चक्रवर्ती याही व्रतके प्रभावकरि महा पुण्यको उपार्जन कर अत्यंत लक्ष्मीका नाथ भया ऐसे ही जे सम्यक्दृष्टि समाधानके धारी भव्य जीव मुनिके निकट जायकर एकबार भोजनका नियम करै हैं ते एक भुक्तिके प्रभावकर

स्वर्ग विमानविषै उपजै हैं जहां सदा प्रकाश है अर रात्रि दिवस नाहीं, निद्रा नाहीं, वहां सागरांपर्यंत अप्सरावोंके मध्य रमै हैं मोतिनिके हार रत्नोंके कडे कटिसूत्र मुकुट वाजूबन्द इत्यादि आभूषण पहरें, जिनपर छत्र फिरें चमर ढुरें ऐसे देवलोकके सुख भोग चक्रवर्त्यादि पद पावै हैं, उत्तमव्रतोंविषै आसक्त जे अणुव्रतके धारक श्रावक शरीरको विनाशीक जानकर शांत भया है हृदय जिनका अष्टमी चतुर्दशी का उपवास मन शुद्ध होय प्रोषध संयुक्त धारैं हैं वे सौधर्मादि सोलहवें स्वर्गविषै उपजे हैं, वहुरि मनुष्य होय भववनको तजे हैं, मुनिव्रतके प्रभावकरि अहमिंद्रपद तथा मुक्तिपद पावै हैं। जे व्रत गुणशील तप कर मण्डित हैं ते साधु जिनशासनके प्रसादकरि सर्व कर्म रहित होय सिद्धोंका पद पावै हैं। जे तीनों कालविषै जिनेंद्रदेवकी स्तुति कर मन वचन काय कर नमस्कार करै हैं अर सुमेरु पर्वत सारिखे अचल मिथ्या-स्वरूप पवनकर नहीं चले हैं गुण रूप गहने पहरें शीलरूप सुगंध लगाए हैं सो कईएक भव उत्तमदेव उत्तम मनुष्यके सुख भोगकर परम स्थानको प्राप्त होय हैं। ये इंद्रियनिके विषय जीवने जगतमें अनन्तकाल भोगे तिन निषयोंसे मोहित भया विरक्त भावको नहीं भजे है यह बडा आश्चर्य है। जो इन विषयोंको विषमिश्रित अन्न समान जानकर पुरुषोत्तम कहिये चक्रवर्ती आदि उत्तम पुरुष भी सेवै हैं संसारमें भ्रमते हुवे इस जीवके जो सम्यक्त्व उपजे और एक भी नियम व्रत साधे तो यह मुक्तिका बीज है और जिन प्राणधारियोंके एक भी नियम नहीं वे पशु हैं अथवा फूटे कलश हैं गुणरहित हैं। अर जे भव्य जीव संसार समुद्रको तिरा चाहे हैं ते प्रमादरहित होय गुण अर व्रतनिकरि पूर्ण सदा नियमरूप रहैं, जे मनुष्य कुबुद्धि खोटे कर्म नहीं तजे हैं अर व्रत नियमको नहीं भजे हैं वे जन्मके अन्धेकी न्याई अनन्तकाल भववनविषै भटकै हैं या भांति जे श्रीअनन्तवीर्य केवली वेई भए तीनलोकके चन्द्रमा तिनके वचनरूप किरणके प्रभावतैं देव विद्याधर भूमिगोचरी मनुष्य तथा तिर्यंच सर्व ही आनन्दको प्राप्त भए। कई एक

उत्तम मानव मुनि भए तथा श्रावक भए सम्यक्तको प्राप्त भए और कई एक उत्तम तिर्यंच भी सम्यक्-दृष्टि श्रावक अणुव्रत धारी भए अर चतुरनिकायके देवोंमें कई एक सम्यक्दृष्टि भए क्योंकि देवनिके व्रत नाहीं ।

अथानन्तर एक धर्मरथ नामा मुनि रावणको कहते भए—'हे भद्र कहिये भव्यजीव तू भी अपनी शक्ति प्रमाण कछु नियम धारण कर, यह धर्मरत्नका द्वीप है अर भगवान केवली महा महेश्वर हैं या रत्न द्वीपतैं कछु नियम नामा रत्न ग्रहण कर काहेतैं चिंताके भारके वश होय रहा है, महापुरुषनिके त्याग खेदका कारण नाहीं। जैसे कोई रत्न द्वीपमें प्रवेश करै अर वाका मन भ्रमै जो मैं कैसा रत्न लूं तैसे इसका मन आकुलित भया जो मैं कैसा व्रत लूं। यह रावण भोगासक्त सो याके चित्तमें यह चिंता उपजी जो मेरे खान पान तो सहज ही पवित्र हैं सुगंध मनोहर पौष्टिक शुभ स्वाद मांसादि मलिन वस्तुके प्रसंगतें रहित आहार है अर अहिंसा व्रत आदि श्रावकका एक हू व्रत करिबे समर्थ नहीं मैं अणुव्रत हू धारवे समर्थ नहीं तो महाव्रत कैसे धारूं, माते हाथी समान चित्त मेरा सर्व वस्तुविषे भ्रमता फिरै है, मैं आतमभाव रूप अंकुशसे याकों वश करवे समर्थ नाहीं । जे निर्ग्रंथका व्रत धरै हैं ते अग्निकी ज्वाला पीवे हैं अर पवनको वस्त्रमें बांधै हैं अर पहाडको उठावै हैं । मैं महा शूरवीर भी तप व्रत धरने समर्थ नहीं अहो धन्य हैं वे नरोत्तम ! जो मुनिव्रत धारै हैं, मैं एक यह नियम धरूं जो परस्त्री अत्यन्त रूपवती भी होय तो ताहि बलात्कार करि न इच्छूं अथवा सर्वलोकमें ऐसी कौन रूपवती नारी है जो मोहि देखकर मनमथ की पीडी बिकल न होय अथवा ऐसी कौन परस्त्री है जो विवेकी जीवोंके मनको वश करै। कैसी है परस्त्री, परपुरुषके संयोगकरि दूषित है अंग जाका स्वभावही करि दुर्गंध बिष्टाकी राशि ताविषै कहा राग उपजै ऐसा मनमें विचार भावसहित अनन्तवीर्य केवलीकों प्रणाम कर देव मनुष्य असुरोंकी साक्षितामें प्रगट

ऐसा वचन कहता भया, हे भगवान ! इच्छारहित जो परनारी ताहि मैं न सेवूं । यह मेरे नियम है । अर कुम्भकर्ण अर्हंत सिद्ध साधु केवलीभाषित धर्मका शरण अंगीकार कर सुमेरु पर्वत सारिखा है अचल चित्त जाका सो यह नियम करता भया जो मैं प्रात ही उठकर प्रति दिन जिनेंद्रकी अभिषेक पूजा स्तुति कर मुनिको विधिपूर्वक आहार देकर आहार करूंगा अन्यथा नहीं मुनिके आहारकी बेला पहिले सर्वथा भोजन न करूंगा अर सर्वसाधुओंको नमस्कार कर और भी घने नियम लिये अर देव कहिये कल्पवासी असुर कहिये भवनत्रिक अर विद्याधर मनुष्य हर्षसे प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके, सर्व केवलीको नमस्कार कर अपने अपने स्थानक गए । रावण भी इंद्रकीसी लीला धरैं प्रबल पराक्रमी लंकाकी ओर पयान करता भया अर आकाशके मार्ग शीघ्र ही लंकामें प्रवेश किया । कैसा है रावण ? समस्त नरनारियोंके समूहने किया है गुण वरणन जिसका अर कैसी है लंका वस्त्रादि कर बहुत समारी है । राजमहलमें प्रवेश कर सुखसे तिष्ठते भए । राजमंदिर सर्व सुखका भरा है । पुण्याधिकारी जीवनिके जब शुभकर्मका उदय होय है तब नानाप्रकारकी सामग्रीका विस्तार होय है गुरुके मुखतें धर्मका उपदेश पाय परमपदके अधिकारी होय हैं ऐसा जान कर जिनश्रुतिमें उद्यमी है मन जिनका ते बारंबार निजपरका विचारकर धर्मका सेवन करें विनयकर जिन शास्त्र सुननेवालोंके जो ज्ञान है सो रविसमान प्रकाशको धरै है, मोहतिमिरका नाश करै है ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अनंतवीर्यकेवलीके धर्मोपदेशका वर्णन करनेवाला चौदहवां पर्व पूर्ण भया ॥ १४ ॥

अथानन्तर ताही केवलीके निकट हनुमान्‌ने श्रावकके व्रत लिए अर विभीषणने भी व्रत लिए भाव शुद्ध होय व्रत नियम आदरे जैसा सुमेरु पर्वतका स्थिरपना होय ताहूतैं अधिक हनूमान्‌का शील अर सम्यक्त परम निश्चल प्रशंसा योग्य है जब गौतम स्वामीने हनुमान्‌का अत्यन्त सौभाग्य आदि वर्णन किया तब मगध देशके राजा श्रेणिक हर्षित होय गौतम स्वामीसे पूछते भए। हे गणाधीश ! हनुमान् कैसे लक्षणोंका धरणहारा कौनका पुत्र कहां उपजा ? मैं निश्चयकर ताका चरित्र सुनना चाहूं हूं तब सत्पुरुषोंकी कथासे उपजा है प्रमोद जाको ऐसे इंद्रभुत कहिए गौतम स्वामी आह्लादकारी वचन कहते भए–'हे नृप ! विजयार्ध पर्वतकी दक्षिणश्रेणी पृथ्वीसे दश योजन ऊंची तहां आदित्यपुर नामा मनोहर नगर तहां राजा प्रह्लाद रानी केतुमती तिनके पुत्र वायुकुमार ताका विस्तीर्ण वक्षस्थल लक्ष्मीका निवास सो वायुकुमारको संपूर्ण यौवन धरे देखकर पिताके मनविषै इनके विवाहकी चिन्ता उपजी। कैसा है पिता ? परंपराय संतानके बढावनेकी है बांछा जाके। अब जहां यह वायुकुमार परणेगा सो कहिए है। भरतक्षेत्रमें समुद्रतें पूर्व दक्षिण दिशाके मध्य दंतीनामा पर्वत जाके ऊंचे शिखर आकाश लगि रहे हैं नाना प्रकार वृक्ष औषधि तिन संयुक्त अर जलके निझरने झरै हैं जहां, इंद्र तुल्य राजा महेंद्र विद्याधर ताने महेंद्रपुर नगर बसाया राजाके हृदयवेगा रानी ताके अरिंदमादि सौ पुत्र महागुणवान अर अंजनी सुंदरी पुत्री सो मानों त्रैलोक्यकी सुंदरी जे स्त्री तिनके रूप एकत्रकर बनाई है नील कमल सारिखे हैं नेत्र जाके कामके बाण समान तीक्ष्ण दूरदर्शी कर्णान्तक कटाक्ष अर प्रशंसा योग्य कर पल्लव रक्तकमल समान चरण हस्तीके कुम्भस्थल समान कुच अर केहरी समान कटि सुन्दर नितम्ब कदलीस्तंभ समान कोमल जंघा शुभ लक्षण प्रफुल्लित मालती समान मृदु बाहुयुगल गंधर्वादि सर्व कलाकी जाननहारी मानों साक्षात् सरस्वती ही है अर रूपकर लक्ष्मी समान सर्वगुणमण्डित एक दिवस

नव यौवनमें कंदुक क्रीडा करती भ्रमण करती सखियोंसहित रमती पिताने देखी सो जैसे सुलोचनाको देखकर राजा अकंपनको चिंता उपजी हुती तैसे अंजनीको देख राजा महेंद्रको चिंता उपजी तब इसके वर ढूंढनेविषै उद्यमी हुए। संसारविषै माता पिताको कन्या दुखका कारण है जे बडे कुलके पुरुष हैं तिनको कन्याकी ऐसी चिंता रहै है यह मेरी कन्या प्रशंसा योग्य पतिको प्राप्त होय अर बहुत काल इसका सौभाग्य रहे अर कन्या निर्दोष रहे। राजा महेंद्रने अपने मंत्रियोंसे कहा—जो तुम सर्व वस्तुविषै प्रवीण हो कन्यायोग्य श्रेष्ठ वर मुझे बतावो। तब अमरसागर मंत्रीने कही—यह कन्या राक्षसोंका अधीश जो रावण ताहि देवो, सर्व विद्याधरोंका अधिपति ताका सम्बंध पाय तुम्हारा प्रभाव समुद्रांत पृथ्वीपर होगा अथवा इंद्रजीत तथा मेघनादको देवो अर यह भी तुम्हारे मनविषै न आवै तो कन्याका स्वयम्वर रचो ऐसा कहकर अमरसागर मंत्री चुप रहा तब सुमतिनामा मंत्री महापंडित बोला—रावणके तो स्त्री अनेक अर महा अहंकारी इसे परणावें तो भी अपने अधिक प्रीति न होय अर कन्याकी वय छोटी अर रावणकी वय अधिक सो बनै नहीं. इंद्रजीत तथा मेघनादको परणावें तो उन दोनोंमें परस्पर विरोध होय, आगै राजा श्रीषेणके पुत्रोंविषै विरोध भया तातैं यह न करना तब ताराधन्य मंत्री कहता भया—दक्षिण श्रेणीविषै कनकपुर नामा नगर है तहां राजा हिरण्यप्रभ ताके रानी सुमना पुत्र सौदामिनीप्रभ सो महा यशवंत कीर्तिधारी नवयौवन नववय अति सुंदर रूप सर्व विद्या कलाका पारगामी लोकनिके नेत्रोंको आनन्दकारी अनुपम गुण अपनी चेष्टासे हर्षित किया है सकल मण्डल जाने अर ऐसा पराक्रमी है जो सर्व विद्याधर एकत्र होंय तासें लडें तो भी उसे न जीतें मानों शक्तिके समूहसे निरमाया है। सो यह कन्या उसे दो। जैसी कन्या तैसा वर, योग्य सम्बन्ध है यह वार्ता सुनकर संदेहपराग नामा मंत्री माथा धुनें, आंख मीचकर कहता भया वह सौदामिनीप्रभ महा भव्य है ताके निरन्तर यह विचार है कि यह

संसार अनित्य है सो संसारका स्वरूप जान बरस अठारहमें वैराग्य धारेगा विषियाभिलाषी नहीं, भोग रूप गज बंधन तुडाय गृहस्थीका त्याग करेगा, बाह्याभ्यन्तर परिग्रह परिहारकर केवलज्ञानको पाय मोक्ष जायगा सो याहि परणावें तो कन्या पति विना शोभा न पावै जैसे चंद्रमा विना रात्री नीकी न दीखै। कैसा है चंद्रमा ? जगतमें प्रकाश करणहारा है तातैं तुम इंद्रके नगर समान आदित्यपुर नगर है रत्नों-कर सूर्य समान देदीप्यमान है। तहां राजा प्रल्हाद महाभोगी पुरुष चंद्रमा समान कांतिका धारी ताके राणी केतुमती कामकी ध्वजा उनके वायुकुमार कहिए पवनंजय नामा पुत्र पराक्रमका समूह रूपवान शीलवान गुणनिधान सर्व कलाका पारगामी शुभ शरीर महावीर खोटी चेष्टासे रहित ताके समस्त गुण सर्व लोकोंके चित्तविषै व्याप रहे हैं हम सौ वर्षमेंहू न कह सकें तातैं आप ही वाहि देख लेहु। पवनंजयके ऐसे गुण सुन सर्व ही हर्षको प्राप्त भए। कैसा है पवनंजय ? देवानिके समान है द्युति जाकी जैसे निशाकर की किरणोंकर कुमुदनी प्रफुल्लित होय तैसे कन्या भी यह वार्ता सुनकर प्रफुल्लित भई।

अथानन्तर बसंत ऋतु आई, स्त्रियोंके मुख कमलकी लावण्यताकी हरणहारी शीतऋतु गई कम-लिनी प्रफुल्लित भई, नवीन कमलोंके समूहकी सुगंधताकरि दशों दिशा सुगंध भई कमलोंपर भ्रमर गुंजार करते भए। कैसे हैं भ्रमर ? मकरंद कहिए पुष्पकी सुगंध रज ताके अभिलाषी हैं वृक्षानिके पल्लव पत्र पुष्पादि नवीन प्रकट भए। मानों बसंतके लक्ष्मीके मिलापसे हर्षके अंकुर उपजे हैं अर आम मौल आए तिनपर भ्रमर भ्रमैं हैं लोकोंके मनको कामबाण बींधते भए, कोकिलावोंके शब्द मानिनी नायिका-वोंके मानका मोचन करते भए। बसंत समय परस्पर नर नारियोंके स्नेह बढता भया। हिरण जो है सो दूबके अंकुर उखाड हिरणीके मुखमें देता भया सो ताको अमृत समान लगै अधिक प्रीति होती भई अर बेल वृक्षोंसे लपटी, कैसी हैं बेल ? भ्रमर ही हैं नेत्र जिनके, दक्षिण दिशाकी पवन चली सो सब ही

को सुहावनी लगी। पवनके प्रसंगकरि केसरके समूह पडे सो मानों बसंतरूपी सिंहके केशोंके समूह ही हैं, महा सघन कौरवे जातिके जे वृक्ष तिनपर भ्रमरोंके समूह शब्द करै हैं मानों वियोगिनी नायिकाओंके मनको खेद उपजावनेको बसंतने प्रेरे हैं, अर अशोक जातिके वृक्षोंकी नवीन कोंपल लहलहाट करै हैं सो मानों सौभाग्यवती स्त्रियोंके रागकी राशि ही शोभे हैं। अर वनोंमें टेसू अत्यन्त फूल रहे हैं सो मानो वियोगनी नायिकाके मनके दाह उपजावनेको अग्नि समान हैं दशों दिशाविषै फूलोंकी सुगंध रज जिसको मकरंद कहिए सो परागकर ऐसी फैल रही हैं मानो बसंत जो है सो पटवास कहिए सुगंध चूर्ण अबीर ताकरि महोत्सव करे है। एक दिन भी स्त्री पुरुष परस्पर वियोगको नहीं सहार सके हैं। ता ऋतुविषै विदेश गमन कैसे रुचै ऐसी रागरूप वसंत ऋतु प्रगट भई ता समय फागुण सुदि अष्टमीसे लेकर पूर्णमासी तक अष्टान्हिकाके दिन महामंगलरूप हैं, सो इंद्रादिक देव शची आदि देवी पूजाके अर्थ नंदीश्वर द्वीप गए अर विद्याधर पूजाकी सामग्री लेकर कैलाश गए। श्रीऋषभदेवके निर्वाण कल्याणकसे वह पर्वत पूजनीक है सो समस्त परिवार सहित अंजनीके पिता राजा महेंद्र भी गए। तहां भगवानकी पूजाकर स्तुतिकर अर भावसहित नमस्कारकर सुवर्णकी शिलापर सुखसे विराजे अर राजा प्रल्हाद पवनंजयके पिता तेहू भरत चक्रवर्तीके कराए जे जिनमंदिर तिनकी बंदनाके अर्थ कैलाश पर्वतपर गए सो बंदनाकर पर्वतपर विहार करते राजा महेंद्रकी दृष्टिविषै आए। सो महेंद्रको देखकर प्रीतिरूप है चित्त जिनका प्रफुल्लित भए हैं नेत्र जिनके ऐसे जे प्रल्हाद ते निकट आए तब महेंद्र उठकर सम्मुख आयकर मिले एक मनोज्ञ शिलापर दोनों हितसे तिष्ठे, परस्पर शरीरादि कुशल पूछते भए तब राजा महेंद्रने कही हे मित्र ! मेरे कुशल काहेकी ? कन्या वरभोग्य भई सो ताके परणावनेकी चिंताकरि चित्त व्याकुल है जैसी कन्या है तैसा वर चाहिए अर बडा घर चाहिए कौनको दें यह मन भ्रमै है। रावणको

परणाइए तो ताके स्त्री बहुत हैं अर आयु अधिक है अर जो उसके पुत्रोंविषै देइ तो तिनमें परस्पर विरोध होय अर हेमपुरका राजा कनकद्युति ताका पुत्र सौदामिनीप्रभ कहिए विद्युत्प्रभ सो थोडे ही दिनविषै मुक्तिको प्राप्त होयगा यह वार्ता सर्व पृथ्वीपर प्रसिद्ध है ज्ञानी मुनिने कहा है। हमने भी अपने मंत्रियोंके मुखतैं सुना है अब हमारे यह निश्चय भया है कि आपका पुत्र पवनंजय कन्याके बरिवे योग्य है यही मनोरथकर हम यहां आए हैं सो आपके दर्शनकर अतिआनंद भया जाकरि कछु विकल्प मिटा। तब प्रल्हाद बोले मेरे भी चिंता पुत्रके परणावनेकी है तातैं मैं भी आपका दर्शनकर अर वचन सुन वचनसे अगोचर सुखको प्राप्त भया जो आप आज्ञा करो सो ही प्रमाण। मेरे पुत्रका बडा भाग्य जो आपने कृपा करी वर कन्याका विवाह मानसरोवरके तटपर ठहरा। दोनों सेनामें आनंदके शब्द भए ज्योतिषियोंने तीन दिनका लग्न थापा।

अथानन्तर पवनंजयकुमार अंजनीके रूपकी अद्भुतता सुनकर तत्काल देखनेको उद्यमी भया तीन दिन रह न सका, संगमकी अभिलाषाकर यह कुमार कामके वश हुआ वेगोंकर पूरित भया प्रथम विषयकी चिंताकरि व्याकुल भया अर दूजे वेग देखनेकी अभिलाषा उपजी, तीजे वेग दीर्घ उच्छवास नाखने लगा चौथे वेग कामज्वर उपजा मानों चंदनके अग्नि लगा, पांचवें वेग अंग खेदरूप भया, सुगंध पुष्पादिसे अरुची उपजी, छठे वेग भोजन विष समान बुरा लगी, सातवें वेग उसकी कथाकी आसक्तताकर विलाप उपजा, आठवें वेग उन्मत्त हुआ विभ्रमरूप सर्पकर डसा गीत नृत्यादि अनेक चेष्टा करने लगा नवमें वेग महामूर्च्छा उपजी। दशवें वेग दुःखके भारसे पीडित भया। यद्यपि यह पवनंजय विवेकी था तथापि कामके प्रभावकर विह्वल भया। सो कामको धिक्कार हो, कैसा है काम? मोक्षमार्गका विरोधी है, कामके वेगकर पवनंजय धीरजराहित भया, कपोलनिके कर लगाय शोकवान बैठा,

पसेवसे टपके हैं कपोल जाके, उष्ण निश्वासकर मुरझाए हैं होंठ जाके अर शरीर कम्पायमान भया बारंबार जंभाई लेने लगा अर अत्यन्त अभिलाषारूप शल्यसे चिंतावान भया, स्त्रीके ध्यानतें इंद्रिय व्याकुल भए मनोज्ञ स्थान भी याको अरुचिकारी भासे, चित्त शून्यता धारता भया, तजी है समस्त शृंगारादि क्रिया जाने, क्षणमात्रविषै तो आभूषण पहिरै, क्षणमात्रविषै खोल डारै, लज्जारहित भया, क्षीण होगया है समस्त अंग जाका, ऐसी चिंता धारता भया कि वह समय कब होय जो मैं उस सुंदरीको अपने पास बैठी देखूं अर वाके कमल तुल्य गात्रको स्पर्श करूं वा कामनीके रसकी वार्ता करूं। वाकी वात ही सुन कर मेरी यह दशा भई है, न जानिए और क्या होय, वह कल्याणरूपिणी जिस हृदयमें बसै है ता हृदयमें दुःखरूप अग्निका दाह क्यों होइ, स्त्री तो निश्चय सेती स्वभावसे ही कोमलचित्त होय है मुझे दुख देने अर्थ चित्त कठोर क्यों भया ? यह काम पृथ्वीविषै अनंग कहावै है जाके अंग नहीं सो अंग विना ही मुझे अंगरहित करै है, मार डारै है ! जो याके अंग होय तो न जाने क्या करै, मेरी देहविषै घाव नहीं परंतु वेदना बहुत है मैं एक जगह बैठा हूं अर मन अनेक जगह भ्रमै है ये तीन दिन उसे देखै विना मुझे कुशलसे न जाय तातैं ताके देखनेका उपाय करूं जाकरि मेरे शांति होय अथवा सब कार्योंमें मित्र समान जगतविषै और आनन्दका कारण कोई नहीं, मित्रतैं सब कार्य सिद्ध होय ऐसा विचार अपना जो प्रहस्त नामा मित्र सर्व विश्वासका भाजन तासों पवनंजय गदगद वाणीकर कहता भया। कैसा है मित्र ? कनारे हो बैठा है छायाकी मूर्ति ही है अपना ही शरीर मानों विक्रियाकर दूजा हो रहा है ताहि या भांति कही हे मित्र ! तू मेरा सर्व अभिप्राय जाने है तोहि कहा कहूं ? परंतु यह मेरी दुःख अवस्था मोहि बाचाल करै है हे सखे ! तुम विना यह वात कौनसे कही जाय ? तू समस्त जगतकी रीति जानै है जैसे किसान अपना दुःख राजासे कहै अर शिष्य गुरुसे कहै अर स्त्री पतिसों कहै अर रोगी वैद्यसों

कहै बालक मातासों कहै तो दुख छूटै तैसे बुद्धिमान अपने मित्रसे कहै तातैं मैं तोहि कहूं हूं । वह राजा महेंद्रकी पुत्री ताके श्रवण ही कर कामबाणकर मेरी विकल दशा भई है जो ताके देखै विना मैं तीन दिन निबाहिवे समर्थ नहीं तातैं कोई ऐसा यत्न कर जो मैं वाहि देखूं, ताहि देखे विना मेरे स्थिरता न आवै अर मेरी स्थिरतासे तोहि प्रसन्नता होय प्राणियोंको सर्व कार्यसे जीतव्य वल्लभ है क्योंकि जीतव्य के होते संते आत्मलाभ होय है । या भांति पवनंजयने कही तब प्रहस्त मित्र हंसे, मानों मित्रके मनका अभिप्राय पायकर कार्य सिद्धिका उपाय करते भए । हे मित्र बहुत कहनेकर कहा ? अपने मांही भेद नाहीं जो करना हो ताकरि ढील मत करो या भांति उन दोनोंके वचनालाप होय हैं एते ही सूर्य मानों इनके उपकार निमित्त अस्त भया तब सूर्यके वियोगसे दिशा काली पड गई अंधकार फैल गया क्षणमात्रमें नीलवस्त्र पहिरे निशा प्रकट भई तब रात्रिके समयोत्साह सहित मित्रको पवनंजय कहते भए । हे मित्र ! उठो आवो वहां चलें जहां वह मनकी हरणहारी प्राणवल्लभा तिष्ठै है, तब ये दोनों मित्र विमानमें बैठ आकाशके मार्ग चले, मानों आकाशरूप समुद्रके मच्छ ही हैं क्षणमात्रविषै जाय अंजनीके सतखणे महलपर चढ झरोखोंमें मोतियोंकी झालरोंके आश्रय छिपकर बैठे, अंजनी सुंदरीको पवनंजय कुमारने देखा कि पूर्णमासीके चंद्रमाके समान है मुख जाका, मुखकी ज्योतिसे दीपक मंद ज्योति होय रहे हैं अर श्याम श्वेत अरुण त्रिविध रंगको लिए नेत्र महा सुंदर हैं मानों कामके बाण ही हैं अर कुच ऊंचे महा मनोहर शृंगाररसके भरे कलश ही हैं, नवीन कोंपल समान लाल सुंदर सुलक्षण हैं हस्त अर पांव जाके अर नखोंकी कांतिकर मानों लावण्यताको प्रकट करती शोभै है अर शरीर महासुंदर है अति नाजुक क्षीण कटि कुचोंके भारनितैं मति कदाचित् भग्न हो जाय ऐसी शंकाकरि मानों त्रिबलीरूप डोरीसे प्रतिबद्ध है । अर जिसकी जंघा लावण्यताको धरै हैं सो केलहुतैं अति कोमल मानों कामके मंदिरके

स्तंभ ही हैं। सो मानों वह कन्या चांदनी रात ही है। मुक्ताफलरूप नक्षत्रोंसे युक्त इंदीवर कमल समान है रूप जाका। सो पवनंजय कुमार एकाग्र लगे हैं नेत्र जाके अंजनीको भले प्रकार देख सुखकी भूमि को प्राप्त भया। ताही समय बसंततिलका सखी महाबुद्धिवंती अंजना सुंदरीतें कहती भई—हे सुरूपे! तू धन्य हैं जो तेरे पिताने तुझे वायुकुमारको दीनी, ते वायुकुमार महा प्रतापी हैं तिनके गुण चंद्रमाकी किरण समान उज्ज्वल हैं तिनसे समस्त जगत व्याप्त होय रहा है जिनके गुण सुन अन्य पुरुषोंके गुण मंद भासे हैं जैसे समुद्रमें लहर तिष्ठै तैसे तू वा योधाके अंगविषै तिष्ठेगी कैसी है तू? महा मिष्टभाषिणी चंद्रकांति रत्नोंकी प्रभाको जीते ऐसी कांति तेरी, तू रत्नकी धरा रत्नाचल पर्वतके तटविषै पडी तुम्हारा सम्बन्ध प्रशंसाके योग्य भया याकरि सर्व ही कुटुंबके जन प्रसन्न भए या भांति जब पतिके गुण सखीने गाए तब वह लाजकी भरी चरणोंके नखकी ओर नीचे देखती भई आनन्दरूप जलकर हृदय भर गया अर पवनंजयकुमार हू हर्षसे फूल गए हैं नेत्र कमल जाके, हर्षित भया है वदन जाका।

ता समय एक मिश्रकेशी नामा दूजी सखी होंठ दाबकर चोटी हलायकर बोली अहो परम अज्ञान तेरा यह कहा पवनंजयका सम्बन्ध सराहा जो विद्युतप्रभ कुंवरसे सम्बन्ध होता तो अति श्रेष्ठ था जो पुण्यके योगतें कन्याका विद्युतप्रभ पति होता तो याका जन्म सफल होता। हे बसंतमाला विद्युतप्रभ और पवनंजयमें इतना भेद है जितना समुद्र अर गोष्पदमें भेद है। विद्युतप्रभकी कथा बडे बडे पुरुषोंके मुखसे सुनी है जैसे मेघके वून्दकी संख्या नहीं तैसे ताके गुणोंका पार नहीं। वह नवयौवन है। महा-सौम्य, विनयवान, देदीप्यमान, प्रतापवान् रूपवान् गुणवान् विद्यावान् बुद्धिवान् बलवान् सर्व जगत चाहे दर्शन याका सब यही कहैं हैं कि यह कन्या वाहि देनी थी सो कन्याके बापने सुनी—वह थोडे ही वर्षमें मुनि होयगा तातैं सम्बंध न किया सो भला न किया, विद्युतप्रभका संयोग एक क्षणमात्र ही भला अर

क्षुद्र पुरुषका संयोग बहुत काल भी किस अर्थ? यह वार्ता सुनकर पवनंजय क्रोधरूप अग्नि कर प्रज्वलित भए क्षणमात्रमें और ही छाया हो गई रससे विरस आगए लाल आंखें हो गईं होंठ डसकर तलवार म्यानसे काढी अर प्रहस्त मित्रसों कहते भए याहि हमारी निन्दा सुहावै है अर यह दासी ऐसे निंद्य वचन कहै अर यह सुने सो इन दोनोंका सिर काट डारूं विद्युत्प्रभ इनके हृदयका प्यारा है सो कैसे सहाय करेगा यह वचन पवनंजयके सुन प्रहस्तामित्र रोषकर कहता भया—हे सखे हे मित्र! ऐसे अयोग्य वचन कहनेकर कहा? तुम्हारी तलवार बडे सामंतोंके सीसपर पडे स्त्री अबला अवध्य है तापर कैसे पडै यह दुष्ट दासी इनके अभिप्राय बिना ऐसे कहे है तुम आज्ञा करो तो या दासीको एकदंडकी चोटसे मार डालूं परंतु स्त्रीहत्या बालहत्या पशुहत्या दुर्बल मनुष्यकी हत्या इत्यादि शास्त्रमें बर्जनीय कही है ये वचन मित्रके सुनकर पवनंजय क्रोधको भूल गये अर मित्रको दासीपर क्रूर देखकर कहते भए। हे मित्र! तुम अनेक संग्रामके जीतनहारे यशके अधिकारी माते हाथियोंके कुंभस्थल बिदारनेहारे तुमको दीनपर दया ही करनी योग्य है अर सामान्य पुरुष भी स्त्रीहत्या न करें तो तुम कैसे करो जे बडे कुलमें उपजे पुरुष हैं अर गुणोंकरि प्रसिद्ध हैं शूरवीर हैं तिनका यश अयोग्य क्रियासे मलिन होय है तातैं उठो जा मार्ग आए ताही मार्ग चलो जैसे छाने आए थे तैसे ही चले। पवनंजयके मनमें भ्रांति पडी कि या कन्याको विद्युत्प्रभ ही प्रिय है तातैं वाकी प्रशंसा सुनै है हमारी निंदा सुनै है जो याहि न भावै तो दासी काहेको कहै यह रोस धर अपने कहे स्थानक पहुंचे पवनंजयकुमार अंजनीसे अति फीके पड गए चित्तमें ऐसे चिंतवते भए कि दूजे पुरुषका है अनुराग जाको ऐसी जो अंगना सो विकराल नदीकी न्याईं दूरहीतैं तजनी। कैसी है वह अंगनारूप नदी? संदेहरूप जे विषम भ्रमण तिनको धरै है अर खोटे भावरूप जे ग्राह तिनसे भरी है अर वह नारी वनी समान है अज्ञानरूप अंधकारसे भरी इंद्रियरूप जे सर्प तिनको धरै है

पंडितोंको कदाचित् न सेवना। खोटे राजाकी सेवा और शत्रुके आश्रय जाना और शिथिल मित्र और अनासक्त स्त्री इनसे सुख कहां? देखो जे विवेकी हैं ते इष्टबंधु तथा सुपुत्र अर पतिव्रता नारी इनका भी त्यागकर महाव्रत धारे हैं और शूद्र पुरुष कुसंग भी नहीं तजे हैं मद्यपायी वैद्य और शिक्षा रहित हाथी अर निःकारण वैरी क्रूरजन अर हिंसारूप धर्म अर मूर्खनितैं चर्चा अर मर्यादाका उलंघना निर्दयी देश बालक राजा स्त्री परपुरुष अनुरागिनी इनको विवेकी तजें। या भांति चिंतवन करता पवनंजयकुमार ताके जैसे दुलहिनसे प्रीति गई तैसे रात्रि गई अर पूर्व दिशामें संध्या प्रकट भई मानों पवनंजयने अंजनीका राग छोडा सो भ्रमता फिरै है। (भावार्थ) रागका स्वरूप लाल है अर इनतैं जो राग मिटा सो ताने संध्याके मिसकर पूर्व दिशामें प्रवेश किया है अर सूर्य ऐसा आरक्त उगा जैसा स्त्रीके कोपतैं पवनंजयकुमार कोपा। कैसा है सूर्य? तरुण बिम्बको धरै है बहुरि जगतकी चेष्टाका कारण है तब पवनंजयकुमार प्रहस्त मित्रको कहते भए अत्यंत अरुचिको धरें अंजनीसे विमुख है मन जाका हे मित्र! यहां अपने डेरे हैं सो यहांतैं वाका स्थानक समीप है सो यहां सर्वथा न रहना ताको स्पर्शकर पवन आवै सो मोहि न सुहावै तातैं उठो अपने नगर चलें, ढील करनी उचित नहीं। तब मित्र कुमारकी आज्ञा प्रमाण सेनाके लोगोंको पयानेकी आज्ञा करता भया, समुद्रसमान सेना रथ घोडे हाथी पयादे इनका बहुत शब्द भया कन्याका निवास नजीक ही है सो सेनाके पयानके शब्द कन्याके कानमें पडे तब कुमारका कूच जानकर कन्या अति दुखित भई। वे शब्द कानको ऐसे बुरे लगे जेसे बज्रकी शिला कानमें प्रवेश करै अर ऊपरसे मुद्गरकी घात पडै। मनमें विचारती भई। हाय हाय! मोहि पूर्वोपार्जित कर्मने महानिधान दिया था सो छिनाय लिया कहा करूं अब कहा होय मेरे मनोरथ हुता जो इस नरेंद्रके साथ क्रीडा करूंगी सो और ही भांति दृष्टि आवै है तो अपराध कछु न जान पडै है परंतु यह मेरी वैरिन

मिश्रकेशी ताने निंद्य वचन कहे हुते सो कदाचित् कुमारको यह खबर पहुंची होय अर मोविषै कुमाया करी होय यह विवेकरहित पापिनी कटुभाषिणी धिकार इसे, जानें मेरा प्राणवल्लभ मोतैं कृपारहित किया अब जो मेरे भाग्य होय अर मेरा पिता मुझपर कृपाकर प्राणनाथको पीछा बहोडे अर उनकी सुदृष्टि होय तो मेरा जीतव्य है अर जो नाथ मेरा परित्याग करै तो मैं आहारको त्याग कर शरीरको तजूंगी ऐसा चिंतवन करती वह सती मूर्छा खाय धरतीपर पडी जैसे बेलिकी जड उपाडी जाय अर वह आश्रय-तैं रहित होय कुमलाय जाय तैसे कुमलाय गई तब सर्व सखीजन यह कहा भया ऐसे कहकर अति संभ्रमको प्राप्त भई शीतल क्रियासे इसे सचेत किया तब यासूं मूर्छाका कारण पूछा सो यह लज्जासे कह न सकै निश्चल लोचन होय रही।

अथानंतर पवनंजयकी सेनाके लोक मनमें आकुल भए अर विचार करते भए जो निःकारण कूच काहेका? यह कुमार विवाह करने आया सो दुलाहिनको परण कर क्यों न चलै, याके कोप काहेसे भया इसको कौनने कहा, सर्व वस्तुकी सामग्री है काहू वस्तुकी कमी नाहीं याका सुसरा बडा राजा कन्या अतिसुंदरी यह पराङ्मुख क्यों भया तब कैयक हासि करि कहते भए याका नाम पवनंजय है सो अपनी चंचलतातैं पवनहूंको जीतै है अर कैयक कहते भए अभी स्त्रीका सुख नहीं जानै है तातैं ऐसी कन्याको छोड कर जानेको उद्यमी भया है, जो याके रतिकालका राग होय तो जैसे वनहस्ती प्रेमके बंधनसे बंधे हैं तैसे यह बंध जाय, या भांति सेनाके सामंत कहै हैं अर पवनंजय शीघ्रगामी वाहनपर चढ चलनेको उद्यमी भए तब कन्याका पिता राजा महेंद्र कुमारका कूच सुन कर अति आकुल भया समस्त भाईयों सहित राजा प्रल्हादपै आया। प्रल्हाद अर महेंद्र दोनों आय कुमारको कहते भए हे कल्याणरूप हमको शोकका करणहारा यह कूच काहेको करिये है अहो कौनने आपको क्या कहा है शोभायमान तुम कौनको

अप्रिय हो जो तुमको न रुचै सो सबहीको न रुचै तुम्हारे पिताका अर हमारा वचन जो सदोष होय तो भी तुमको मानना योग्य है सो तो हम समस्त दोषरहित कहे हैं तुमको अवश्य धारना योग्य है हे शूरवीर कूचसे पीछे फिरो हमारे दोनोंके मनबांछित सिद्ध करो । हम तुम्हारे गुरु जन हैं सो तुम सारिखे सत् पुरुषोंको गुरुजनोंकी आज्ञा आनंदका कारण है ऐसा जब राजा महेंद्रने अर प्रल्हादने कहा तब यह कुमार धीर वीर विनयकर नम्रीभूत भया है मस्तक जाका जब तातने अर ससुरने बहुत आदरसे हाथ पकडे तब यह कुमार गुरुजनोंकी जो गुरुता सो उलंघनेको असमर्थ भया। उनकी आज्ञासे पाछा बाहुडा अर मनमें विचारी कि याहि परणकर तजदूंगा ताकि दुःखसे जन्म पूरा करै अर परका भी याहि संयोग न होय सके।

अथानन्तर कन्या प्राणवल्लभको पाछा आया सुनकर हर्षित भई रोमांच होय आए लग्नके समय इनका विवाहमंगल भया जब दुलहिनका करग्रहण कराया सो अशोकके पल्लव समान आरक्त अति कोमल कन्याके कर सो इस विरक्त चित्तके अग्निकी ज्वाला समान लागे विना इच्छा कुमारकी दृष्टि कन्याके तनुपर काहू भांति गई सो क्षणमात्र भी न सह सका जैसे कोई विद्युत्पातको न सह सकै। कन्याके प्रीति वरके अप्रीति यह इसके भावको न जानै ऐसा जान मानों अग्नि हंसती भई और शब्द करती भई, बडे विधानसे इनका विवाह कर सर्वबंधु जन आनन्दको प्राप्त भए मानसरोवरके तट विवाह भया नानाप्रकार वृक्षलता फल पुष्प विराजित जो सुंदर वन तहां परम उत्सवकर एक मास रहे परस्पर दोनों समधियोंने अति हितके वचन आलाप कहे परस्पर स्तुति महिमा करी सन्मान किए पुत्रके पिताने बहुत दान दिया अपने अपने स्थानको गए।

हे श्रेणिक जे वस्तुका स्वरूप नहीं जानै हैं अर विना समझे पराये दोष ग्रहै हैं ते मूर्ख हैं अर पराए दोष कर आप ऊपर दोष आय पडे है सो सब पाप कर्मका फल है पाप आतापकारी है।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै अंजना पवनंजयका विवाह वर्णन करनेवाला पंद्रहवां पर्व पूर्ण भया ॥ १५ ॥

अथानन्तर पवनंजयकुमारने अंजनी सुन्दरीको परण कर ऐसी तजी जो कबहूं बात न बूझै सो वह सुन्दरी पतीके असंभाषणसे अर कृपादृष्टि कर न देखनेतैं परम दुःख करती भई रात्रीमें भी निद्रा न लेय निरन्तर अश्रुपात ही झरा करें शरीर मलिन होय गया पतिसे अति स्नेह धनीका नाम अति सुहावै पवन जावै सो भी अति प्रिय लागे पतिका रूप तो विवाहकी वेदीमें अवलोकन किया था ताका मनमें ध्यान करवो करै अर निश्चल लोचन सर्व चेष्टारहित बैठी रहै अन्तरंग ध्यानमें पतिका रूप निरूपणकर वाह्य भी दर्शन किया चाहे सो न हो तब शोक कर बैठ रहे, चित्रपटमें पतिका चित्राम लिखनेका उद्यम करै तब हाथ कांप कर कलम गिर पडै, दुरबल होय गया है समस्त अंग जाका ढीले होय कर गिर पडे हैं सर्व आभूषण जाके, दीर्घ उष्ण जे उच्छ्वास उनकर मुरझाय गये हैं कपोल जाके अंगमें वस्त्रके भी भारकर खेदको धरती संती अपने अशुभ कर्मको निंदती माता पिताको बारंबार याद करती संती, शून्य भया है हृदय जाका दुःखकर क्षीण शरीर मूर्छा आजाय चेष्टारहित होय जाय, अश्रुपातसे रुक गया है कण्ठ जाका, दुखकर निकसे हैं वचन जाके, विह्वल भई संती दैव कहिये पूर्वोपार्जित कर्म ताहि उलाहना देय चन्द्रमाकी किरण हू करि जाका अतिदाह उपजै अर मन्दिरमें गमन करती मूर्छा खाय गिर पडै अर विकल्पकी मारी ऐसे विचार कर अपने मनहीमें पतिसे वतलावे। हे नाथ! तिहारे मनोज्ञ

अंग मेरे हृदयमें निरन्तर तिष्ठे मुझे आताप क्यों करें हैं अर मैं आपका कछु अपराध नहीं किया, निःकारण मेरे पर कोप क्यों करो, अब प्रसन्न होवो मैं तिहारी भक्त हूं मेरे चित्तके विषादको हरो जैसे अंतरंग दर्शन देवो हो तैसे वहिरंग देवो । यह मैं हाथ जोड वीनती करूं हूं जैसे सूर्य विना दिनकी शोभा नहीं और चन्द्रमा विना रात्रीकी शोभा नहीं और दया क्षमा शील संतोषादि गुण विना विद्या शोभै नहीं तैसे तिहारी कृपा विना मेरी शोभा नाहीं । या भांति चित्तविषै वसे जो पति उसे उलाहना देय अर बडे मोतियों समान नेत्रोंसे आंसुवोंकी बूंद झरै महा कोमल सेज अर अनेक सामग्री सखीजन करें परंतु याहि कछु न सुहावै, चक्रारूढ समान मनमें उपजा है वियोगसे भ्रम जाको, स्नानादि संस्कार-रहित कभी भी केश समारे गूथे नहीं, केश भी रूखे पडगये सर्व क्रियामें जड मानों पृथिवीहीका रूप हो रही है अर निरंतर आंसुवोंके प्रवाहतैं मानो जलरूप ही होय रही है हृदयके दाहके योगतैं मानो अग्निरूप ही होय रही है अर निश्चल चित्तके योगतैं मानो वायु रूप ही हो रही है अर शून्यताके योगतैं मानो गगन रूप ही होय रही है मोहके योगतैं आच्छादित होय रहा है ज्ञान जाका भूमिपर डार दिये हैं सर्व अंग जाने बैठ न सकै अर तिष्ठे तो उठ न सकै अर उठै तो देहीको थांभ न सकै सो सखी जनका हाथ पकड विहार करै सो पग डिग जाय अर चतुर जे सखीजन तिनसों बोलनेकी इच्छा करे परंतु बोल न सकै अर हंसनी कबूतरी आदि गृहपक्षी तिनसों क्रीडा किया चाहे पर कर न सकै । यह विचारी सबोंसे न्यारी वैठी रहे पतिमें लग रहा है मन अर नेत्र जाका निःकारण पतितें अपमान पाया सो एक दिन बरस बराबर जाय यह याकी अवस्था देख सकल परिवार व्याकुल भया सब ही चिंतवते भए कि इता दुख याको विना कारण क्यों भया है यह कोई पूर्वोपार्जित पाप कर्मका उदय है पिछले जन्ममें याने किसीके सुखविषै अंतराय किया है सो याके भी सुखका अंतराय भया । वायुकुमार तो निमित्त

मात्र है। यह बारी भोरी निर्दोष याहि परणकर क्यों तजी, ऐसी दुलहिन सहित देवों समान भोग क्यों न करे याने पिताके घर कभी रंचमात्र हू दुख न देखा सो यह कर्मानुभव कर दुखके भारको प्राप्त भई याकी सखीजन विचारै हैं कि क्या उपाय करें हम भाग्यरहित हमारे यत्नसाध्य यह कार्य नाहीं कोई अशुभकर्मकी चाल है अब ऐसा दिन कब होयगा वह शुभ मुहूर्त शुभ बेला कब होयगी जो वह प्रीतम या प्रियाको समीप ले बैठेगा अर कृपादृष्टिकर देखेगा मिष्ट वचन बोलेगा यह सबके अभिलाषा लग रही है।

अथानन्तर राजा बरुण ताके रावणसे विरोध पडा, बरुण महा गर्ववान रावणकी सेवा न करै सो रावणने दूत भेजा दूत जाय बरुणसे कहता भया दूत घनीकी शक्तिकर महाकांतिको धरै है। अहो विद्याधराधिपते बरुण! सर्वका स्वामी जो रावण ताने यह आज्ञा करी है जो आप मुझे प्रणाम करो अथवा युद्धकी तैयारी करो। तब बरुणने हंसकर कही हो दूत! कौन है रावण कहां रहै है जो मुझे दबावै है सो मैं इंद्र नहीं हूं वह वृथा गर्वित लोकनिंद्य था मैं वैश्रवण नहीं, मैं यम नहीं, मैं सहस्ररश्मि नहीं, मैं मरुत नहीं, रावणके देवाधिष्ठित रत्नोंसे महा गर्व उपजा है वाकी सामर्थ्य है तो आवो मैं उसे गर्वरहित करूंगा अर तेरी मृत्यु नजीक है जो हमसे ऐसी वात कहै है। तब दूतने जायकर रावणसे वृत्तांत कहा रावणने कोपकर समुद्र तुल्य सेनासहित जाय बरुणका नगर घेरा अर यह प्रतिज्ञा करी जो मैं याहि देवाधिष्ठित रत्नों विना ही वश करूंगा, मारूं अथवा बांधूं। तब बरुणके पुत्र राजीव पुण्डरादिक क्रोधायमान होय रावणके कटकपर आए। रावणकी सेनाके अर इनके बडा युद्ध भया, परस्पर शस्त्रोंके समूह छेद डारे, हाथी हाथियोंसे घोडे घोडोंसे रथ रथोंसे भट भटोंसे महायुद्ध करते भए, बडे २ सामंत होंठ डस डसकर लाल नेत्र हैं जिनके वे महाभयानक शब्द करते भए। बडी बेरतक संग्राम भया। सो

वरुणकी सेना रावणकी सेनासे कछु इक पीछे हटी तब अपनी सेनाको हटी देख वरुण राक्षसोंकी सेना पर आप चला आया कालाग्नि समान भयानक तब रावण वरुणको दुर्निवारण भूमिविषै सम्मुख आवता देखकर आप युद्ध करनेको उद्यमी भए वरुणके रावणके आपसविषै युद्ध होने लगा अर वरुणके पुत्र खरदूषणसे युद्ध करते भए। कैसे हैं वरुणके पुत्र महाभटोंके प्रलय करनहारे अर अनेक माते हाथियोंके कुम्भस्थल विदारनहारे सो रावण क्रोधकर दीप्त है मन जाका महाक्रूर जो भृकुटि तिनकरि भयानक है मुख जाका, कुटिल हैं केश जाके जब लग धनुषके वाण तान वरुणपर चलावै तब लग वरुणके पुत्रोंने रावणके बहनेऊ खरदूषणको पकड लिया तब रावणने मनमें विचारी जो हम वरुणसे युद्ध करें अर खर-दूषणका मरण होय तो उचित नहीं तातैं संग्राम मने किया, जे बुद्धिमान हैं ते मंत्रविषै चूकै नहीं, तब मंत्रियोंने मंत्रकर सब देशोंके राजा बुलाए शीघ्रगामी पुरुष भेजे सबनको लिखा बडी सेनासहित शीघ्र ही आवो अर राजा प्रल्हादपर भी पत्र लेय मनुष्य आया सो राजा प्रल्हादने स्वामीकी भक्तिकर रावणके सेवकका बहुत सन्मान किया अर उठकर बहुत आदरसे पत्र माथे चढाया अर बांचा सो पत्रविषै या भांति लिखा था कि पातालपुरके समीप कल्याणरूप स्थानकमें तिष्ठता महाक्षेमरूप विद्याधरोंके आधि-पतियोंका पति सुमालीका पुत्र जो रत्नश्रवा ताका पुत्र राक्षसवंशरूप आकाशमें चंद्रमा ऐसा जो रावण सो आदित्य नगरके राजा प्रल्हादको आज्ञा करै है। कैसा है प्रल्हाद ? कल्याणरूप है, न्यायका वेत्ता है, देश काल विधानका ज्ञायक है, हमारा बहुत वल्लभ है, प्रथम तो तुम्हारे शरीरकी कुशल पूछे है बहुरि यह समाचार है कि हमको सर्व खेचर भूचर प्रणाम करै हैं हाथोंकी अंगुली तिनके नखकी ज्योतिकर ज्योतिरूप किए हैं निज शिरके केश जिनने अर एक अति दुर्बुद्धि वरुण पाताल नगरमें निवास करै है सो आज्ञासे पराङ्मुख होय लडनेको उद्यमी भया है हृदयको व्यथाकारी विद्याधरोंके समूहसे

युक्त है समुद्रके मध्य द्वीपको पायकर वह दुरात्मा गर्वको प्राप्त भया है सो हम ताके ऊपर चढकर आए हैं बडा युद्ध भया वरुणके पुत्रोंने खरदूषणको जीवता पकडा है सो मंत्रियोंने मंत्रकर खरदूषणके मरणकी शंकातें युद्ध मनै किया है तातैं खरदूषणका छुडावना अर वरुणको जीतना सो तुम अवश्य आइयो ढील करो मत, तुम सारिखे पुरुष कर्तव्यमें न चूकें अब सब विचार तुम्हारे आवनेपर है यद्यपि सूर्य तेजका पुंज है तथापि अरुण सारिखा सारथी चाहिए। तब राजा प्रल्हाद पत्रके समाचार जान मंत्रियोंसों मंत्र कर रावणके समीप चलनेको उद्यमी भए तब प्रल्हादको चलता सुनकर पवनंजयकुमारने हाथ जोड गोडों से धरती स्पर्श नमस्कारकर विनती करी। हे नाथ ! मुझ पुत्रके होते संते तुमको गमन युक्त नहीं, पिता जो पुत्रको पाले है सो पुत्रका यही धर्म है कि पिताकी सेवा करे जो सेवा न करे तो जानिए पुत्र भया ही नाहीं तातैं आप कूच न करें मोहि आज्ञा करें, तब पिता कहते भये हे पुत्र ! तुम कुमार हो अबतक तुमने कोई खेत देखा नहीं तातैं तुम यहां रहो मैं जाऊंगा। तब पवनंजयकुमार कनकाचलके तट समान जो वक्षस्थल उसे ऊंचाकर तेजके धरणहारे वचन कहते भए—हे तात ! मेरी शक्तिका लक्षण तुमने देखा नहीं, जगतके दाहमें अग्निके स्फुलिंगेका क्या वीर्य परखना। तुम्हारी आज्ञारूप आशिषाकर पवित्र भया है मस्तक मेरा ऐसा जो मैं इंद्रको भी जीतनेको समर्थ हूं यामें संदेह नहीं। ऐसा कहकर पिताको नमस्कारकर महाहर्ष संयुक्त उठकर स्नान भोजनादि शरीरकी क्रिया करी, अर आदरसाहित जे कुल में वृद्ध हैं तिन्होंने असीस दीनी, भावसहित अरिहंत सिद्धको नमस्कारकर परम कांतिको धरता हुआ महा मंगलरूप पितासे विदा होने आया सो पिताने अर माताने मंगलके भयसे आंसू न काढे, आशीर्वाद दिया हे पुत्र ! तेरी विजय होय छातीसे लगाय मस्तक चूंबा। पवनंजयकुमार श्रीभगवानका ध्यान धर माता पिताको प्रणामकर जे परिवारके लोग पायन पडे तिनको बहुत धीर्य बंधाय सबसे अतिस्नेह

कर विदा भए पहले अपना दाहना पांव आगे धर चले। फुरके है दाहिनी भुजा जिनकी अर पूर्ण कलश जिनके मुखपर लाल पल्लव तिनपर प्रथम ही दृष्टि पडी अर थम्भसे लगी हुई द्वारे खडी जो अंजनी सुंदरी आंसुवोंसे भीज रहे हैं नेत्र जाके ताम्बूलादिरहित धूसरे होय रहे हैं अधर जाके मानों थम्भाविषै उकेरी पुतली ही है कुमारकी दृष्टि सुंदरीपर पडी सो क्षणमात्रविषै दृष्टि संकोच कोपकर बोले। हे दुरीक्षणे कहिए दुःखकारी है दर्शन जाका इस स्थानकतैं जावो, तेरी दृष्टि उल्कापात समान है सो मैं सहार न सकूं। अहो वडे कुलकी पुत्री कुलवंती! तिनमें यह ढीठपणा कि मने किए भी निर्लज्ज ऊभी रहैं ये पतिके अतिक्रूर वचन सुने तो भी याहि अति प्रिय लगें जैसे घने दिनके तिसाए पपैयेको मेघकी बूंद प्यारी लगै सो पतिके वचन मनकर अमृत समान पीवती भई हाथ जोड चरणारविंदकी ओर दृष्टि धर गदगद बाणीकर डिगते डिगते वचन नीठि २ कहती भई—हे नाथ ! जब तुम यहां विराजते हुते तब भी मैं वियोगिनी ही हुती परंतु आप निकट हैं सो इस आशाकर प्राण कष्टसे टिक रहे हैं अब आप दूर पधारै हैं मैं कैसे जीऊंगी। मैं तिहारे वचनरूप अमृतके आस्वादनेकी अति आतुर तुम परदेशके गमन करते स्नेहसे दयालु चित्त होयकर वस्तीके पशु पक्षियोंको भी दिलासा करी, मनुष्योंकी तो कहा बात ? सबसे अमृत समान वचन कहे मेरा चित्त तुमारे चरणारविंदविषै है, मैं तुम्हारी अप्राप्तिकर अति दुखी औरोंकी श्रीमुखसे एती दिलासा करी मेरी औरोंके मुखसे ही दिलासा कराई होती। जब मुझे आपने तजी तब जगतमें शरण नहीं, मरण ही है। तब कुमारने मुख संकोचकर कोपसे कही, मर ! तब यह सती खेद खिन्न होय धरतीपर गिर पडी, पवनकुमार इससे कुमाया हीविषै चले बडी ऋद्धिसहित हाथी पर असवार होय सामंतोंसहित पयान किया पहले ही दिनविषै मानसरोवर जाय डेरे भए, पुष्ट हैं वाहन जिनके सो विद्याधरोंकी सेना देवोंकी सेना समान आकाशसे उतरती हुई अति शोभायमान दीखती

तहांसे चयकर या भरतक्षेत्रमें विजयार्ध गिरिपर अहनपुर नगरमें राजा सुकण्ठ रानी कनकोदरी ताके सिंहवाहन नाम पुत्र भए। अपने गुणनिकरि खैंचा है समस्त प्राणियोंका मन जाने, तहां देवों कैसे भोग भोगे, अप्सरा समान स्त्री तिनके मनके चोर। भावार्थ—अति रूपवान अतिगुणवान सो बहुत दिन राज्य किया। श्रीविमलनाथजीके समोशरणमें उपजा है आत्मज्ञान अर संसारसे वैराग्य जिनको सो लक्ष्मीवाहन नामा पुत्रको राज्य देय संसारको असार जान लक्ष्मीतिलक मुनिके शिष्य भए। श्रीवीतराग देवका भाषा महाव्रतरूप यतिका धर्म अंगीकार किया। अनित्यादि द्वादश अनुप्रेक्षाका चिंतवनकरि ज्ञान चेतनारूप भए। जो तप काहू पुरुषसे न बनै सो तप किया, रत्नत्रयरूप अपने निज भावनिविषै निश्चल भए तत्त्व ज्ञानरूप आत्माके अनुभवविषै मग्न भए तपके प्रभावतैं अनेक ऋद्धि उपजी सर्व वात समर्थ जिनके शरीरको स्पर्श पवन आवै सो प्राणियोंके अनेक रोग दुःख हरै परन्तु आप कर्म निर्जरा के कारण बाईस परीषह सहते भए बहुरि आयु पूर्णकर धर्म ध्यानके प्रसादसे ज्योतिष चक्रको उलंघ सातवां लांतव नामा जो स्वर्ग तहां बडी ऋद्धिके धारी देव भए चाहें जैसा रूप करें चाहें जहां जाय, जो वचनकरि कहनेमें न आवै ऐसे अद्भुत सुख भोगे परन्तु स्वर्गके सुखमें मग्न न भए। परम धामकी है इच्छा जिनको तहांतें चयकर या अंजनीकी कुक्षिविषै आए हैं सो महा परम सुखके भाजन हैं बहुरि देह न धारेंगे अविनाशी सुखको प्राप्त होवेंगें, चरम शरीरी हैं। यह तो पुत्रके गर्भमें आवनेका वृत्तांत कहा। अब हे कल्याणचेष्टिनी! याने जिस कारणसे पतिका विरह अर कुटुम्बसे निरादर पाया सो वृत्तांत सुन। इस अंजनी सुंदरीने पूर्व भवमें देवाधिदेव श्रीजिनेंद्रदेवकी प्रतिमा पटराणी पदके अभिमानकरि सौकन के ऊपर क्रोधकर मंदिरसे बाहिर निकासी, ताही समय एक समयश्री आर्यिका याके घर आहारको आई हुती, तपकर पृथ्वीपर प्रसिद्ध थी सो याके श्रीजीकी मूर्तिका अविनय देख पारणा न किया पीछै

कर विदा भए पहले अपना दाहना पांव आगे घर चले। फुरके है दाहिनी भुजा जिनकी अर पूर्ण कलश जिनके मुखपर लाल पल्लव तिनपर प्रथम ही दृष्टि पडी अर थम्भसे लगी हुई द्वारे खडी जो अंजनी सुंदरी आंसुवोंसे भीज रहे हैं नेत्र जाके ताम्बूलादिरहित धूसरे होय रहे हैं अधर जाके मानों थम्भाविषै उकेरी पुतली ही है कुमारकी दृष्टि सुंदरीपर पडी सो क्षणमात्रविषै दृष्टि संकोच कोपकर बोले। हे दुरीक्षणे कहिए दुःखकारी है दर्शन जाका इस स्थानकतैं जावो, तेरी दृष्टि उल्कापात समान है सो मैं महार न सकूं। अहो बडे कुलकी पुत्री कुलवंती! तिनमें यह ढीठपणा कि मने किए भी निर्लज्ज ऊभी रहैं ये पतिके अतिक्रूर वचन सुने तौ भी याहि अति प्रिय लगें जैसे घने दिनके तिसाए पपैयेको मेघकी बूंद प्यारी लगै सो पतिके वचन मनकर अमृत समान पीवती भई हाथ जोड चरणारविंदकी ओर दृष्टि धर गदगद बाणीकर डिगते डिगते वचन नीठि २ कहती भई—हे नाथ ! जब तुम यहां विराजते हुते तब भी मैं वियोगिनी ही हुती परंतु आप निकट हैं सो इस आशाकर प्राण कष्टसे टिक रहै हैं अब आप दूर पधारै हैं मैं कैसे जीऊंगी। मैं तिहारे वचनरूप अमृतके आस्वादनेकी अति आतुर तुम परदेशके गमन करते स्नेहसे दयालु चित्त होयकर वस्तीके पशु पक्षियोंको भी दिलासा करी, मनुष्योंकी तो कहा वात ? सबसे अमृत समान वचन कहे मेरा चित्त तुमारे चरणारविंदविषै है, मैं तुम्हारी अप्राप्तिकर अति दुखी औरोंकी श्रीमुखसे एती दिलासा करी मेरी औरोंके मुखसे ही दिलासा कराई होती। जब मुझे आपने तजी तब जगतमें शरण नहीं, मरण ही है। तब कुमारने मुख संकोचकर कोपसे कही, मर। तब यह सती खेद खिन्न होय धरतीपर गिर पडी, पवनकुमार इससे कुमाया हीविषै चले बडी ऋद्धिसहित हाथी पर असवार होय सामंतोंसहित पयान किया पहले ही दिनविषै मानसरोवर जाय डेरे भए, पुष्ट हैं वाहन जिनके सो विद्याधरोंकी सेना देवोंकी सेना समान आकाशसे उतरती हुई अति शोभायमान दीखती

भई। कैसी है सेना? नाना प्रकारके जे वाहन अर शस्त्र तेई हैं आभूषण जाके अपने २ वाहनोंके यथायोग्य यत्न कराए स्नान कराए खानपानका यत्न कराया।

अथानन्तर विद्याके प्रभावतैं मनोहर एक बहुखणा महल बनाया चौडा अर ऊंचा सो आप मित्र सहित महल ऊपर विराजे। संग्रामका उपजा है अति हर्ष जिनके, झरोखावोंकी जालीके छिद्रोंसे सरोवरके तटके वृक्षोंको देखते थे, शीतल मंद सुगंध पवनमे वृक्ष मंद मंद हालते हुते अर सरोवरविषै लहर उठती हुती सरोवरके जीव कछुवा, मीन, मगर अर अनेक प्रकारके जलचर गर्वके धरणहारे तिनकी भुजानिकरि किलोल होय रही हैं उज्ज्वल स्फटिक मणि समान निर्मल जल है जामें नाना प्रकारके कमल फूल रहे हैं हंस, कारंड, क्रौंच, सारस इत्यादि पक्षी सुंदर शब्द कर रहे हैं जिनके सुननेसे मन अर कर्ण हर्ष पावै अर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं तहां एक चकवी चकवे विना अकेली वियोगरूप अग्नितैं तप्तायमान अति आकुल नाना प्रकार चेष्टाकी करणहारी अस्ताचलकी ओर सूर्य गया सो वा तरफ लग रहे हैं नेत्र जाके अर कमलिनीके पत्रोंके छिद्रोंविषै बारम्बार देखै है, पांखोंको हलावती उठे है अर पडे है अर मृणाल कहिए कमलकी नाल ताका तार ताका स्वाद विषसमान लगै है, अपना प्रतिविम्ब जल विषै देखकर जानै है कि यह मेरा पीतम है सो उसे बुलावै है सो प्रतिविम्ब कहा आवै तब अप्राप्तितैं परम शोकको प्राप्त भई है कटक आय उतरा है सो नाना देशोंके मनुष्योंके शब्द अर हाथी घोडा आदि नाना प्रकारके पशुओंके शब्द सुनकर अपने वल्लभ चकवाकी आशाकर भ्रमै है चित्त जाका अश्रुपात सहित हैं लोचन जाके, तटके वृक्षपर चढकर दशोंदिशाकी ओर देखै है, पीतमको न देखकर अति शीघ्र ही भूमिपर आय पडै है, पांव हलाय हलाय कमलिनीकी जो रज शरीरके लगी है सो दूर करै है सो पवनकुमारने घनी बेर तक दृष्टि धर चकवीकी दशा देखी, दयाकर भीज गया है चित्त जाका चित्तमें

ऐसा विचारा कि पीतमके वियोगकर यह शोकरूप अग्निविषै बलै है यह मनोज्ञ मानसरोवर अर चंद्रमा की चांदनी चंदन समान शीतल सो इस वियोगेनी चकवीको दावानल समान है, पति विना इसको कोमल पल्लव भी खड्ग समान भासै हैं चंद्रमाकी किरण भी वज्र समान भासै है, स्वर्ग भी नरकरूप होय आचरै है। ऐसा चिंतवनकर याका मन प्रियाविषै गया अर या मानसरोवरपर ही विवाह भया था सो वे विवाहके स्थानक दृष्टिमें पडे सो याको अति शोकके कारण भए, मर्मके भेदनहारे दुःसह करौंत समान लगे। चित्तविषै विचारता भया—हाय ! हाय ! मैं क्रूरचित्त पापी, वह निर्दोष वृथा तजी, एक रात्रिका वियोग चकवी न सहार सकै तो बाईस वर्षका वियोग वह महासुंदरी कैसे सहारे, कटुक वचन वाकी सखीने कहे हुते वाने तो न कहे हुते मैं पराए दोषसे काहेको ताका परित्याग किया। धिक्कार है मो सारिखे मूर्खको जो विना विचारे काम करै ऐसे निष्कपट प्राणीको निकारण दुख अवस्था करी मैं पापचित्त हूं वज्र समान है हृदय मेरा जो मैंने एते वर्ष ऐसी प्राणवल्लभाको वियोग दिया अब क्या करूं पितासे विदा होकर घरसे निकसा हूं कैसे पीछे जाऊं बडा संकट पडा जो मैं वासे मिले विना संग्राम मैं जाऊं तो वह जीवे नहीं अर वाके अभाव भए मेरा भी अभाव होगा जगतविषै जीतव्य समान कोई पदार्थ नहीं तातैं सर्व संदेहका निवारणहारा मेरा परम मित्र प्रहस्त विद्यमान है ताहि सर्व भेद पूछूं वह सर्व प्रीतिकी रीतिमें प्रवीण है जे विचारकर कार्य करै हैं ते प्राणी सुख पावै हैं ऐसा पवनकुमारको विचार उपजा सो प्रहस्त मित्र ताके सुखविषै सुखी दुखविषै दुखी याको चिंतावान देख पूछता भया कि हे मित्र ! तुम रावणकी मदद करनेको वरुण सारिखे योधासे लडनेको जावो हो सो अति प्रसन्नता चाहिए तब कार्यकी सिद्धि होय आज तुम्हारा वदनरूप कमल क्यों मुरझाया दीखै है, लज्जाको तजकर मुझे कहो, तुमको चिन्तावान देखकर मेरा व्याकुल भाव भया है तब पवनंजयने कही हे—मित्र ! यह वार्ता

काहूसों कहनी नहीं परन्तु तू मेरे सर्व रहस्यका भाजन है तोसूं अंतर नाहीं, यह वात कहते परम लज्जा उपजै है। तब प्रहस्त कहते भए जो तिहारे चित्तविषै हो सो कहो, जो तुम आज्ञा करोगे सो वात और कोई न जानेगा, जैसे ताते लोहपर पडी जलकी बूंद विलाय जाय प्रगट न दीखै तैसे मोहि कही वात प्रगट न होय। तब पवनकुमार बोले हे मित्र! सुनो—मैं कदापि अंजनी सुंदरीसे प्रीति न करी सो अब मेरा मन अति व्याकुल है, मेरी क्रूरता देखो एते वर्ष परणे भए सो अबतक वियोग रहा, निःकारण अप्रीति भई सदा वह शोककी भरी रही अश्रुपात झरते रहे अर चलते समय द्वारे खडी विरहरूप दाह से मुरझाया गया है मुखरूप कमल जाका सर्व लावण्य संपदारहित मैंने देखी अब ताके दीर्घ नेत्र नील-कमल समान मेरे हृदयको बाणवत् भेदै हैं तातैं ऐसा उपाय कर जाकरि मेरा वासों मिलाप होय। हे सज्जन! जो मिलाप न होयगा तो हम दोनों हीका मरण होगा। तब प्रहस्त क्षण एक विचारकर बोले तुम माता पितासे आज्ञा मांग शत्रुके जीतवेको निकसे हो तातैं पीछे चलना उचित नाहीं, अर अबतक कदापि अंजनी सुंदरी याद करी नाहीं अर यहां बुलावैं तो लज्जा उपजै है तातैं गोप्य चलना अर गोप्य ही आवना वहां रहना नहीं उनका अवलोकनकर सुख सम्भाषणकर आनन्दरूप शीघ्र ही आवना तब आपका चित्त निश्चल होगा परम उत्साहरूप चलना शत्रुके जीतनेका निश्चय यही उपाय है तब मुद्गर नामा सेनापतिको कटक रक्षा सौंपकर मेरुकी बंदनाका मिसकर प्रहस्त मित्रसहित गुप्त ही सुगंधादि सामग्री लेकर आकाशके मार्गसे चले। सूर्य भी अस्त हो गया अर सांझका प्रकाश भी हो गया, निशा प्रकट भई अंजनी सुंदरीके महलपर जाय पहुंचे पवनकुमार तो बाहिर खडे रहे प्रहस्त खबर देनेको भीतर गए, दीपका मंद प्रकाश था अंजनी कहती भई—कौन है? बसंतमाला निकट ही सोती हुती सो जगाई, वह सब वातोंविषै निपुण उठकर अंजनीका भय निवारण करती भई, प्रहस्तने नमस्कारकर जब

पवनंजयके आगमनका वृत्तान्त कहा, तब सुंदरीने प्राणनाथका समागम स्वप्न समान जाना, प्रहस्तको गद्गद वाणीकर कहती भई—हे प्रहस्त ! मैं पुण्यहीन पतिकी कृपाकर वर्जित मेरे ऐसा ही पाप कर्मका उदय आया तू हमसे क्या हंसी है, पतिने जिसका निरादर होय वाकी कौन अवज्ञा न करै मैं अभागिनी दुःख अवस्थाको प्राप्त भई कहांतें सुख अवस्था होय। तब प्रहस्तने हाथ जोड नमस्कारकर विनती करी—हे कल्याणरूपिणी ! हे पतिव्रते ! हमारा अपराध क्षमा करो अब सब अशुभ कर्म गए तुम्हारे प्रेमरूप गुणका प्रेरा तेरा प्राणनाथ आया तुमसे अति प्रसन्न भया तिनकी प्रसन्नताकर क्यों क्या आनंद न होय, जैसे चंद्रमाके योगकर रात्रिकी अति मनोज्ञता होय। तब अंजनी सुंदरी क्षण एक नीची होय रही अर बसन्तमालाने प्रहस्तसों कही हे भद्र ! मेघ वरसै जब ही भला तातैं प्राणनाथ इनके महल पधारे सो इनका बडा भाग्य अर हमारा पुण्यरूप वृक्ष फला यह वात होय रही थी, आनन्दके अश्रुपातोंकर व्याप्त हो गए हैं नेत्र जिनके मो कुमार पधारे हो मानों करुणारूप सखी ही पीतमको प्रियाके ढिग ले आई, तब भयभीत हिरणीके नेत्र समान सुंदर हैं नेत्र जाके ऐसी प्रिया पतिको देख सम्मुख जाय हाथ जोड सीस निवाय पायन पडी, तब प्राणवल्लभने अपने करसे सीस उठाया खडी करी, अमृत समान वचन कहे कि हे देवी ! क्लेशका सकल खेद निवृत्त होवै, सुंदरी हाथ जोड पतिके निकट खड़ी थी। पतिने अपने करसे कर पकडकर सेजपर बैठाई, तब नमस्कारकर प्रहस्त तो वाहिर गए अर वसन्तमाला भी अपने स्थानक जाय बैठी। पवनंजयकुमारने अपने अज्ञानसे लज्जावान हो सुंदरीसे बारम्बार कुशल पूछी अर कही हे प्रिए ! मैंने अशुभ कर्मके उदयतैं जो तुम्हारा वृथा निरादर किया सो क्षमा करो तब सुंदरी नीचा मुखकर मन्द मन्द वचन कहती भई हे नाथ ! आपने पराभव कछु न किया कर्मका ऐसा ही उदय हुता अब आपने कृपा करी अति स्नेह जनाया सो मेरे सर्व मनोरथ सिद्ध किए आपके ध्यान

कर संयुक्त हृदय मेरा सो आप सदा हृदय हीविषे विराजते आपका अनादर भी आदर समान भासा।

या भांति अंजना सुन्दरीने कहा तब पवनंजयकुमार हाथ जोड कहते भए कि हे प्राणप्रिये ! मैं वृथा अपराध किया, पराए दोषसे तुमको दोष दिया सो तुम सब अपराध हमारा विस्मरण करो, मैं अपना अपराध क्षमावने निमित्त तुम्हारे पायन परूंहूं तुम हमपर अति प्रसन्न होवो ऐसा कहकर पवनंजयकुमारने अधिक स्नेह जनाया तब अंजना सुन्दरी महासती पतिका एता स्नेह देखकर बहुत प्रसन्न भई अर पतिको प्रियवचन कहती भई हे नाथ मैं अति प्रसन्न भई हम तुम्हारे चरणारविंदकी रज हैं हमारा इतना विनय तुमको उचित नहीं ऐसा कहकर सुखसे सेजपर विराजमान किये, प्राणनाथकी कृपासे प्रियाका मन अति प्रसन्न भया अर शरीर अतिकांतिको धरता भया, दोनों परस्पर अतिस्नेहके भरे एक चित्त भये। सुख रूप जाग्रत रहे निद्रा न लीनी पिछले पहिर अल्पनिद्रा आई प्रभातका समय हो आया तब यह पतिव्रता सेजसे उतर पतिके पाय पलोटने लगी, रात्रि व्यतीत भई सो सुखमें जानी नाहीं, प्रातः समय चन्द्रमाकी किरण फीकी पड गई कुमार आनन्दके भारमें भर गए अर स्वामीकी आज्ञा भूल गए, तब मित्र प्रहस्तने कुमारके हितविषै है चित्त जाका ऊंचा शब्द कर वसंतमालाको जगाकर भीतर पठाई अर मन्द मन्द आप भी सुगन्ध महलमें मित्रके समीप गए अर कहते भए हे सुन्दर ! उठो कहा सोवो हो ? अब चन्द्रमा भी तुम्हारे मुखकी कांतिरहित होगया है यह वचन सुन कर पवनंजय प्रबोध को प्राप्त भए, शिथिल है शरीर जिनका, जंभाई लेते, निद्राके आवेश कर लाल हैं नेत्र जिनके, कानों को बांए हाथकी तर्जनी अंगुलीसे खुजावते, खुले हैं नेत्र जिनके दाहिनी भुजा संकोचकर अरिहंतका नाम लेकर सेजसे उठे, प्राणप्यारी आपके जगनसे पहिले ही सेजसे उठ उतर कर भूमिविषै विराजती थी लज्जाकर नम्रीभूत हैं नेत्र जाके उठते ही पीतमकी दृष्टि प्रिया पर पडी बहुरि प्रहस्तको देख कर, आवो

मित्र ऐसा शब्द कहकर सेजसे उठे प्रहस्तने मित्रसे रात्रिकी कुशल पूछी निकट बैठे, मित्र नीतिशास्त्रके वेत्ता कुमारसे कहते भए हे मित्र ! अब उठो प्रियाजीका सन्मान बहुरि आयकर करियो कोई न जाने या भांति कटकमें जाय पहुंचें अन्यथा लज्जा है । रथनूपुरका धनी किन्नरगीतनगरका धनी रावणके निकट गया चाहै है सो तुम्हारी ओर देखे है जो वे आगे आवें तो हम मिलकर चलें अर रावण निरंतर मंत्रियोंसे पूछे है जो पवनंजयकुमारके डेरे कहां हैं अर कब आवेंगे तातैं अब आप शीघ्र ही रावणके निकट पधारो प्रियाजीसे विदा मांगो, तुमको पिताकी अर रावणकी आज्ञा अवश्य करनी है, कुशल क्षेमसे कार्य कर शिताब ही आवेंगे तब प्राणप्रियासे अधिक प्रीति करियो तब पवनंजयने कही हे मित्र ! ऐसे ही करना । ऐसा कहकर मित्रको तो बाहिर पठाया अर आप प्राणवल्लभासे अतिस्नेहकर उरसों लगाय कहते भए हे प्रिये ! अब हम जाय हैं तुम उद्वेग मत करियो थोडे ही दिनोंमें स्वामीका कामकर हम आवेंगे तुम आनन्दसे रहियो । तब अंजना सुन्दरी हाथ जोडकर कहती भई हे महाराजकुमार ! मेरा ऋतुसमय है सो गर्भ मोहि अवश्य रहेगा अर अब तक आपकी कृपा नहीं हुती यह सर्व जाने है सो माता पितासों मेरे कल्याणके निमित्त गर्भका वृत्तान्त कह जावो । तुम दीर्घदर्शी सब प्राणियोंमें प्रसिद्ध हो ऐसे जब प्रियने कहा तब प्राणवल्लभाको कहते भए । हे प्यारी ! मैं माता पितासे विदा होय निकसा सो अब उनके निकट जाना बने नाहीं, लज्जा उपजे है लोक मेरी चेष्टा जान हंसेगे तातैं जब तक तुम्हारा गर्भ प्रकाश न पावे ताके पहिलेही मैं आवूं हूं तुम चित्त प्रसन्न राखो अर कोई कहे तो ये मेरे नामकी मुद्रिका राखो, हाथोंके कडे राखो तुमको सब शांति होयगी ऐसा कहकर मुद्रिका दई अर बसंतमालाको आज्ञा दई इनकी सेवा बहुत नीके करियो आप सेजसे उठे प्रियाविषै लगरहा है प्रेम जिनका । कैसी है सेज संयोगके योगसे बिखर रहे हैं हारके मुक्ताफल जहां अर पुष्पोंकी सुगंध मकरंदसे भ्रमे हैं

भ्रमर जहां क्षीरसागरकी तरंग समान अति उज्ज्वल बिछे हैं पट जहां, आप उठ कर मित्रके सहित विमानपर बैठ आकाशके मार्गसे चले। अंजना सुन्दरीने अमंगलके कारण आंसू न काढे। हे श्रेणिक! कदाचित् यालोकविषै उत्तम वस्तुके संयोगतें किंचित् सुख होय है सो क्षणभंगुर है अर देह धारियोंके पापके उदयतें दुख होय है, सुख दुख दोनों विनश्वर हैं तातें हर्ष विषाद न करना। हो प्राणी हो, जीवों को निरन्तर सुखका देनेहारा दुःखरूप अन्धकारका दूर करणहारा जिनवर भाषित धर्म सोई भया सूर्य ताके प्रतापकर मोह तिमिर हरो।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै पवनंजय अजनाका संयोग वर्णन करनेवाला सोलहवां पर्व पूर्ण भया॥ १६॥

अथानन्तर कैयक दिनोंविषै महेंद्रकी पुत्री जो अंजना ताके गर्भके चिन्ह प्रगट भए कछुइक मुख पांडुवर्ण हो गया मानों हनुमान गर्भमें आए सो उनका यश ही प्रगट भया है मंद चाल चलने लगी जैसा मदोन्मत्त दिग्गज विचरै, स्तन युगल अति उन्नतिको प्राप्त भए, श्यामलीभूत हैं अग्रभाग जिनके, आलस से वचन मंद २ निसरैं भौंहोंका कंप होता भया इन लक्षणोंकर उसे सासू गर्भिणी जानकर पूछती भई। तैंने यह कर्म किससे किया तब यह हाथ जोड़ प्रणामकर पतिके आवनेका समस्त वृत्तान्त कहती भई तब केतुमती सासू क्रोधायमान भई। महा निठुर वाणीरूप पाषाणकर पीडती भई हे पापिनी! मेरा पुत्र तेरेसे अति विरक्त तेरा आकार भी न देखा चाहै तेरे शब्दको श्रवणविषै धारै नहीं माता पितासे विदा होयकर रण संग्रामको बाहिर निकसा, वह धीर कैसे तेरे मंदिरमें आवै, हे निर्लज्जे! धिकार है तुझ पापिनीको। चंद्रमाकी किरण समान उज्ज्वल वंशको दूषण लगावनहारी यह दोनों लोकमें निंद्य अशुभ क्रिया

तैंने आचरी अर तेरी यह सखी बसन्तमाला याने तुझे ऐसी बुद्धि दीनी कुलटाके पास वैश्या रहै तब काहेकी कुशल। मुद्रिका अर कडे दिखए तो भी ताने न मानी अत्यन्त कोप किया एक क्रूर नामा किंकर बुलाया वह नमस्कारकर आय ठाढा, तब क्रोधकर केतुमतीने लाल नेत्रकर कहा हे क्रूर ! सखी सहित याहि गाड़ीमें बैठाय महेंद्रके नगरके निकट छोड आ। तब वह क्रूर केतुमतीकी आज्ञातें सखी-सहित अंजनीको गाड़ीमें बैठायकर महेंद्रके नगरकी ओर ले चला। कैसी है अंजनी सुंदरी ? अति कांपे है शरीर जाका महा पवनकर उपडी जो बेल ता समान निराश्रय अति आकुल कांतिरहित दुःखरूप अग्निकर जल गया है हृदय जाका, भयकर सासूको कछु उत्तर न दिया। सखीकी ओर धरे हैं नेत्र जिसने मनकर अपने अशुभ कर्मको बारंबार निंदती अश्रुधारा नाखती निश्चल नहीं है चित्त जिसका। क्रूर इनको ले चला वह क्रूर कर्मविषै अति प्रवीण है दिनके अंतमें महेंद्रनगरके समीप पहुंचायकर नमस्कारकर मधुर वचन कहता भया। हे देवी ! मैं अपनी स्वामिनीकी आज्ञातें तुमको दुखका कारण कार्य किया सो क्षमा करो ऐसा कहकर सखीसहित सुंदरीकूं गाडीतैं उतार विदा होय गाड़ी लेय स्वामिनीपै गया। जाय विनती करी—आपकी आज्ञा प्रमाण तिनकूं वहां पहुंचाय आया हूं।

अथानन्तर महा उत्तम महापतिव्रता जो अंजना सुंदरी ताहि दुखके भारतैं पीडित देख सूर्य भी मानों चिंताकर मंद हो गई है प्रभा जाकी, अस्त हो गया अर रुदनकर अत्यन्त लाल हो गए हैं नेत्र जाके ऐसी अंजनी सो मानों याके नेत्रकी अरुणताकर पश्चिम दिशा रक्त हो गई, अंधकार फैल गया, रात्रि भई, अंजनाके दुःखतैं निकसैं जो आंसू तेई भए मेघ तिनकर मानों दशों दिशा श्याम होय गई अर पंछी कोलाहल शब्द करते भए सो मानों अंजनीके दुःखसे दुखी भए पुकारे हैं। वह अंजनी अपवादरूप महा दुःखका जो सागर तामें डूबी क्षुधादिक दुख भूल गई, अत्यंत भयभीत अश्रुपात नाखे

रुदन करै, सो बसंतमाला सखी धीर्य बंधावे रात्रीको पल्लवका साथरा बिछाय दिया सो याको निद्रा रंच भी न आई निरंतर उष्ण अश्रुपात पडैं सो मानों दाहके भय निद्रा भाग गई, बसंतमाला पांव दाबै, खेद दूर किया दिलासा करी, दुःखके योगकर एक रात्री वर्ष बराबर बीती, प्रभातमें साथरेको तजकर शंका कर अति विह्वल पिताके घरकी ओर चली। सखी छाया समान संग चाली। पिताके मन्दिरके द्वार जाय पहुंची। भीतर प्रवेश करती द्वारपालने रोकी। दुःखके योगतैं और ही रूप होगया सो जानी न पडी तब सखीने सर्व वृत्तांत कहा सो जानकर शिलाकवाट नामा द्वारपालने एक और मनुष्यको द्वारै मेल आप राजाके निकट जाय नमस्कार करि विनती करी। पुत्रीके आगमनका वृत्तांत कह्या। तब राजाके निकट प्रसन्नकीर्त्ति नामा पुत्र बैठा था सो राजाने पुत्रकों आज्ञा करी—तुम सन्मुख जाय उसका शीघ्र ही प्रवेश करावो अर नगरकी शोभा करावो तुम तो पाहिले जावो अर हमारी असवारी तयार करावो हम भी पीछेसे आवैं हैं तब द्वारपालने हाथ जोड नमस्कार कर यथार्थ विनती करी। तब राजा महेंद्र लज्जाका कारण सुन कर महा कोपवान भए अर पुत्रकों आज्ञा करी कि पापिनीकूं नगरमेंतैं काढ देवो जाकी वार्ता सुनकर मेरे कान मानो वज्रकर हते गए हैं। तब एक महोत्साह नामा बडा सामन्त राजाका अति वल्लभ, सो कहता भया—हे नाथ ! ऐसी आज्ञा करनी उचित नहीं, बसंतमालासे सब ठीक पाडलेवो, सासू केतुमती अति क्रूर है अर जिनधर्मसे पराङ्मुख है, लौकिक सूत्र जो नास्तिक मत ताविषै प्रवीण है तातैं विना विचारें झूठा दोष लगाया यह धर्मात्मा श्रावकके व्रतकी धारणहारी, कल्याण आचार विषै तत्पर पापिनी सासूने निकासी है अर तुम भी निकासौ तो कौनके शरणे जाय, जैसे व्याघ्रकी दृष्टिसे मृगी त्रासकों प्राप्त भई सन्ती महागहन वनका शरण लेय, तैसे यह भोली निःकपट सासूसे शंकित भई तुम्हारे शरण आई है मानो जेठके सूर्यकी किरणके संतापतैं दुखित भई महावृक्षरूप जो तुम सो तिहारे

आश्रय आई है यह गरीबिनी विह्वल है आत्मा जाका अपवादरूप जो आताप ताकर पीडित तिहारे आश्रय भी साता न पावै तो कहां पावै मानो स्वर्गतैं लक्ष्मी ही आई है। द्वारपालने रोकी सो अत्यन्त लज्जाकों प्राप्त भई विलखि माथा ढाक द्वारे खडी है आपके स्नेहकर सदा लाडली है सो तुम दया कर यहु निर्दोष है मंदिरमांहि प्रवेश करावो अर केतुमतीकी क्रूरता पृथिवीविषै प्रसिद्ध है ऐसे न्याय रूप वचन महोत्साह सामंतने कहे सो राजाने कान न धरे जैसे कमलोंके पत्रनिविषै जलकी बूंद न ठहरै तैसे राजाके चित्तमें यह बात न ठहरी। राजा सामंतसे कहते भए यह सखी बसंतमाला सदा याके पास रहै अर याहीके स्नेहके योगतैं कदाचित् सत्य न कहै तो हमको निश्चय कैसे आवै यातैं याके शीलविषै संदेह है सो याको नगरतैं निकास देहु जब यह बात प्रसिद्ध होयगी तो हमारे निर्मल कुलविषै कलंक आवैगा जे बडे कुलकी बालिका निर्मल हैं अर महा विनयवंती उत्तम चेष्टाकी धारणहारी हैं ते पीहर सासरे सर्वत्र स्तुति करने योग्य हैं जे पुण्याधिकारी बडे पुरुष जन्महीतैं निर्मल शील पालैं हैं ब्रह्मचर्यको धारण करै हैं अर सर्व दोषका मूल जो स्त्री तिनकों अंगीकार नहीं करैं हैं वे धन्य हैं ब्रह्मचर्यसमान अर कोई व्रत नहीं अर स्त्रीके अंगीकारमें यह फल होय है जो कुपूत बेटा बेटी होय अर उनके अवगुण पृथिवी विषै प्रसिद्ध होंय तो पिता कर धरतीमें गड जाना होय है सब ही कुलकों लज्जा उपजै है मेरा मन आज अति दुःखित होय गया है मैं यह बात पूर्व अनेकवार सुनी हुती जो यह भरतारके अप्रिय है अर वह याहि आंखतें नाहीं देखै है सो ताकर गर्भकी उत्पत्ति कैसे भई तातैं यह निश्चयसेती सदोष है जो कोई याहि मेरे राज्यमें राखैगा सो मेरा शत्रु है ऐसे वचन कहकर राजाने कोपकर जैसे कोई जाने नहीं या भांति याकों द्वारसे निकाल दीनी। सखी सहित दुखकी भरी अंजनी राजाके निजवर्गके जहां जहां आश्रयके अर्थ गई सो आने न दीनी, कपाट दिए, जहां बाप ही क्रोधायमान होय निराकरण करै तहां

कुटुम्बकी कैसी आशा, वे तो सब राजाके आधीन हैं ऐसा निश्चयकर सबसे उदास होय सखीसे कहती भई आंसूवोंके समूह कर भीज गया है अंग जाका, हे प्रिये ! यहां सर्व पाषाणचित्त हैं यहां कैसा बास? तातैं वनमें चलें, अपमानसे तो मरना भला ऐसा कहकर सखीसहित बनको चाली, मानो मृगराजसे भयभीत मृगी ही है, शीत उष्ण अर वातके खेदसे महा दुखकर पीड़ित वनमें बैठ महा रुदन करती भई। हाय हाय ! मैं मन्दभागिनी दुखदाई जो पूर्वोपार्जित कर्म ताकरि महा कष्टकों प्राप्त भई कौनके शरणे जाऊं कौन मेरी रक्षा करै, मैं दुर्भाग्यसागरके मध्य कौन कर्मसे पडी। नाथ ! मेरा अशुभ कर्मका प्रेरा कहांसे आया काहेको गर्भ रहा, मेरा दोनों ही ठौर निरादर भया। माताने भी मेरी रक्षा न करी सो वह क्या करै अपने धनीकी आज्ञाकारिणी पतिव्रतावोंका यही धर्म है अर नाथ मेरा यह वचन कहगया था कि तेरे गर्भकी वृद्धिसे पहिले मैं आऊंगा सो हाय नाथ दयावान होय वह वचन क्यों भूले अर सासूने विना परखे मेरा त्याग क्यों किया। जिनके शीलमें संदेह होय तिनके परखनेके अनेक उपाय हैं अर पिताको मैं बाल अवस्थामें अति लाडिली हुती निरंतर गोदमें खिलावते हुते सो विना परखे मेरा निरादर किया उनकी ऐसी बुद्धि उपजी अर माताने मुझे गर्भमें धारी, प्रतिपालन किया अब एक बात भी मुखसे न निकाली कि इसके गुण दोषका निश्चयकर लेवें अर भाई जो एक माताके उदरसे उत्पन्न भया हुता, सोहू मो दुखिनीको न राख सका, सब ही कठोरचित्त हो गये, जहां माता पिता भ्राताहीकी यह दशा, तहां काका बाबाके दूर भाई तथा प्रधान सामंत कहा करैं अथवा उन सबका कहा दोष ? मेरा जो कर्मरूप वृक्ष फला सो अवश्य भोगना। या भांति अंजनी विलाप करै सो सखी भी याके लार विलाप करै मनसे धीर्य जाता रहा अत्यंत दीन मन होय यह ऊंचे स्वर रुदन करै सो मृगी भी याकी दशा देख आंसू डालने लगी बहुत देरतक रोनेसे लाल होय गए हैं नेत्र जाके। तब सखी बसंतमाला महाविचक्षण याहि छातीसूं

लगाय कहती भई—हे स्वामिनी ! बहुत रोनेसे क्या ? जो कर्म तैंने उपार्जा है सो अवश्य भोगना है, सब ही जीवनिके कर्म आगे पीछे लग रहे हैं सो कर्मके उदयविषै शोक कहा ? हे देवी ! जे स्वर्गलोकके देव सैकडों अप्सरावोंके नेत्रनिकर निरंतर अवलोकिये है तेहू सुकृतके अंत होते परम दुःख पावै हैं मनमें चिंतिये कछू और होय जाय कछु अर जगतके लोक उद्यममें प्रवरतै हैं तिनको पूर्वोपार्जित कर्मका उदय ही कारण है जो हितकारी वस्तु आय प्राप्त भई सो अशुभकर्मके उदयसे विघट जाय अर जो वस्तु मनसे अगोचर है सो आय मिले कर्मनिकी गति विचित्र है तातैं बाई ! तू गर्भके खेद करि पीडित है वृथा क्लेश मत कर तू अपना मन दृढ कर। जो तैंने पूर्व जन्ममें कर्म उपारजे हैं तिनके फल टारे न टरैं अर तू तो महा बुद्धिमती है तोहि कहा सिखावूं जो तू न जानती होय तो मैं कहूं ऐसा कहकर याके नेत्रानेके वस्त्रसे आंसू पोछे बहुरि कहती भई—हे देवी ! यह स्थानक आश्रयरहित है तातैं उठो आगे चलें या पहाडके निकट कोई गुफा होय जहां दुष्ट जीवानिका प्रवेश न होय, तेरे प्रसूतिका समय आया है सो कै एक दिन यत्नसूं रहना तब यह गर्भके भारतैं आकाशके मार्ग चलनेमें असमर्थ है भूमिपर सखीके संग गमन करती महा कष्टकरि पांव धरती भई। कैसी है वनी ? अनेक अजगरानितैं भरी दुष्ट जीवनिके नाद करि अत्यंत भयानक अति सघन नानाप्रकारके वृक्षानिकरि सूर्यकी किरणका भी संचार नाहीं. जहां सूईके अग्रभाग समान डाभकी अणी अतितीक्ष्ण जहां कंकर बहुत अर माते हाथियोंके समूह अर भीलोंके समूह बहुत हैं अर वनीका नाम मातंगमालिनी है जहां मनकी भी गम्यता नाहीं तो मनुष्यकी कहा गम्यता ? सखी आकाशमार्गसे जायवेको समर्थ अर यह गर्भके भारकरि समर्थ नाहीं तातैं सखी याके प्रेमके बंधनसे बंधी शरीरकी छाया समान लार लार चले है। अंजनी वनीको अतिभयानक देखकर कांपै है दिशा भूल गई, तब बसंतमाला याको अति व्याकुल जानकर हाथ पकडकर कहती भई हे स्वामिनी ! तू डरै मत, मेरे पीछे पीछे चली आ।

तब यह सखीके कांधेपर हाथ रख चली जाय, ज्यों २ डाभकी अणी चुभें त्यों २ आति खेद खिन्न विलाप करती देहको कष्टसे धारती जलके नीझरने जे आति तीव्र वेगसंयुक्त बहैं तिनको आति कष्टसे उतरती अपने जे सब स्वजन अति निर्दई तिनको आति चितारती अपने अशुभ कर्मको बारंबार निंदती बेलोंको पकड भयभीत हिरणी कैसे हैं नेत्र जाके, अंगविषै पसेवको धारती कांटोंसे वस्त्र लग २ जांय सो छुडावती, लहूसे लाल हो गए हैं चरण जाके, शोकरूप अग्निके दाहकरि श्यामताको धरती, पत्र भी हाले ता त्रासको प्राप्त होती, चलायमान है शरीर जाका, बारम्बार विश्राम लेती, ताहि सखी निरंतर प्रियवाक्य कर धीर्य बंधावै सो धीरे २ अंजनी पहाडकी तलहटीतक आई, तहां आंसू भर बैठ गई। सखीसे कहती भई अब मुझमें एक पग धरनेकी शक्ति नाहिं, यहां ही रहूंगी, मरण होय तो होय। तब सखी अत्यन्त प्रेमकी भरी महा प्रवीण मनोहर वचननिकरि याको शांति उपजाय नमस्कारकर कहती भई—हे देवी ! देख यह गुफा नजदीक ही है कृपाकर यहांतें उठकर वहां सुखसे तिष्ठो, यहां क्रूर जीव विचरें हैं तोकों गर्भकी रक्षा करनी है तातैं हठ मति कर। ऐसा कहा तब वह आतापकी भरी सखीके वचननिकरि अर सघन वनके भयकरि चलवेको उठी तब सखी हस्तावलम्बन देकर याको विषम भूमितैं निकासकर गुफाके द्वारपर ले गई। विना विचारे गुफामें बैठनेका भय होय सो ये दोनों बाहिर खडी विषम पाषाणके उलंघवेकर उपजा है खेद जिनको, तातैं बैठ गई। वहां दृष्टि धर देखा, कैसी है दृष्टि ? श्याम श्वेत आरक्त कमल समान प्रभाको धरै सो एक पवित्र शिलापर विराजे चारण मुनि देखे। जो पल्यंकासन धरें अनेक ऋद्धि संयुक्त निश्चल हैं श्वासोच्छ्वास जिनके नासिकाके अग्रभागपर धरी है दृष्टि जिनने, शरीर स्तम्भ समान निश्चल है गोदपर धरा है जो बामा हाथ ताके ऊपर दाहना हाथ समुद्र समान गंभीर अनेक उपमावोंसे विराजमान आत्मस्वरूपका जो पर्याय स्वभाव जैसा जिनशासनविषै

गाया है तैसा ध्यान करते, समस्त परिग्रहरहित, पवन जैसे असंगी, आकाश जैसे निर्मल, मानों पहाड के शिखर ही हैं सो इन दोनोंने देखे। कैसे हैं वे साधु? महापराक्रमके धारी महाशांति ज्योतिरूप है शरीर जिनका। ये दोनों मुनिके समीप गई, सर्व दुख विस्मरण भया, तीन प्रदाक्षिणा देय हाथ जोड नमस्कार किया, मुनि परम बांधव पाए, फूल गए हैं नेत्र जिनके, जा समय जो प्राप्ति होनी होय सो होय तब ये दोनों हाथ जोड विनती करती भई। मुनिके चरणारविंदकी ओर धरे हैं अश्रुपातरहित स्थिर नेत्र जिनने। हे भगवान! हे कल्याणरूप! हे उत्तम चेष्टाके धरणहारे! तिहारे शरीरमें कुशल है, कैसा है तिहारा देह? सर्व तपव्रत आदि साधनोंका मूल कारण है, हे गुणके सागर ऊपरां ऊपर तपकी है वृद्धि जिनकी, हे महाक्षमावान, शांति भावके धारी, मन इंद्रियोंके जीतनहारे, तिहारा जो विहार है सो जीवनके कल्याण निमित्त है, तुम सारिखे पुरुष सकल पुरुषोंको कुशलके कारण हैं सो तिहारा कुशल कहा पूछना परन्तु यह पूछनेका आचार है तातैं पूछी है ऐसा कहि विनयसे नम्रीभूत भया है शरीर जिनका सो चुप होय रहीं अर मुनिके दर्शनसे सर्व भयरहित भई॥

अथानन्तर मुनि अमृततुल्य परम शांति वचन कहते भए—हे कल्याणरूपिणी! हे पुत्री! हमारे कर्मानुसार सब कुशल है ये सर्व ही जीव अपने अपने कर्मोंका फल भोगे हैं। देखो कर्मनिकी विचित्रता, यह राजा महेंद्रकी पुत्री अपराधरहित कुटुम्बके लोगानिने काढी है। सो मुनि बडे ज्ञानी विना कहे सर्व वृत्तांतके जाननहारे तिनको नमस्कारकर बसन्तमाला पूछती भई—हे नाथ! कौन कारणसे भरतार इससे बहुत दिन उदास रहे बहुरि कौन कारण अनुरागी भए अर यह महासुख योग्य वनविषै कौन कारणसे दुखको प्राप्त भई। कौन मंदभागी याके गर्भमें आया जिससे इसको जीवनेका संशय भया तब स्वामी अमितगति तीन ज्ञानके धारक सर्व वृत्तांत यथार्थ कहते भए, यही महापुरुषोंकी वृत्ति है जो

पराया उपकार करें। मुनि बसन्तमालासे कहै हैं—हे पुत्री ! याके गर्भविषै उत्तम पुरुष आया है सो प्रथम तो ताके भव सुनि बहुरि जा कारणतैं यह अंजनी ऐसे दुःखको प्राप्त भई जो पूर्व भवमें पापका आचरण किया सो सुन। जम्बूद्वीपमें भरत नामा क्षेत्र तहां मंदिर नामा नगर तहां प्रियनंदी नामा गृहस्थी ताके जाया नाम स्त्री अर दमयंत नाम पुत्र था सो महा सौभाग्य संयुक्त कल्याणरूप जे दया क्षमा शील संतोषादि गुण तेई हैं आभूषण जाके एक समय बसन्तऋतुमें नन्दनवन तुल्य जो वन तहां नगरके लोग क्रीडाको गए। दमयन्तने भी अपने मित्रोंसहित बहुत क्रीडा करी, अबीरादि सुगन्धोंसे सुगन्धित है शरीर जाका अर कुण्डलादि आभूषणनिकरि शोभायमान सो ताने ताही समयविषै महामुनि देखे, कैसे हैं मुनि ? अम्बर कहिए आकाश, सोई है अम्बर कहिए वस्त्र जिनके, तप ही है धन जिनका अर ध्यान स्वाध्याय आदि जे क्रिया तिनमें उद्यमी सो यह दमयन्त महा देदीप्यमान क्रीडा करते जे अपने मित्र तिनको छोड मुनियोंकी मंडलीमें गया। बंदनाकर धर्मका व्याख्यान सुन सम्यक्‌दर्शन ग्रहण किया। श्रावकके व्रत धारे, नाना प्रकारके नियम अंगीकार किए एक दिन जे सप्त गुण दाताके अर नवधा भक्ति तिन संयुक्त होय साधुवोंको आहार दिया, कैयक दिनविषै समाधि मरणकर स्वर्ग लोकको प्राप्त भया, नियमके अर दानके प्रभावतैं अद्‌भुत भोग भोगता भया, सैकडों देवांगनाके नेत्रोंकी कांति ही भई नील कमल तिनकी मालासे अर्चित चिरकाल स्वर्गके सुख भोगे बहुरि स्वर्गतैं चयकर जम्बूद्वीपमें मृगांकनामा नगरमें हरिचन्द नाम राजा ताकी प्रियंगुलक्ष्मी राणी, याके सिंहचन्द नामा पुत्र भए। अनेक कला गुणोंविषै प्रवीण अनेक विवेकियोंके हृदयमें बसै, तहां भी देवों कैसे भोग किए, साधुवोंकी सेवा करी बहुरि समाधि मरणकर देवलोक गए तहां मनवांछित अति उत्कृष्ट सुख पाए। कैसा है वह ? देव देवियोंके जे वदन तेई भए कमल तिनके जो वन तिनके प्रफुल्लित करनेको सूर्य समान है बहुरि

तहांसे चयकर या भरतक्षेत्रमें विजयार्ध गिरिपर अहनपुर नगरमें राजा सुकण्ठ रानी कनकोदरी ताके सिंहवाहन नाम पुत्र भए। अपने गुणनिकरि खैंचा है समस्त प्राणियोंका मन जाने, तहां देवों कैसे भोग भोगे, अप्सरा समान स्त्री तिनके मनके चोर। भावार्थ—अति रूपवान अतिगुणवान सो बहुत दिन राज्य किया। श्रीविमलनाथजीके समोशरणमें उपजा है आत्मज्ञान अर संसारसे वैराग्य जिनको सो लक्ष्मी-बाहन नामा पुत्रको राज्य देय संसारको असार जान लक्ष्मीतिलक मुनिके शिष्य भए। श्रीवीतराग देवका भाषा महाव्रतरूप यतिका धर्म अंगीकार किया। अनित्यादि द्वादश अनुप्रेक्षाका चिंतवनकरि ज्ञान चेतनारूप भए। जो तप काहू पुरुषसे न बनै सो तप किया, रत्नत्रयरूप अपने निज भावनिविषै निश्चल भए तत्त्व ज्ञानरूप आत्माके अनुभवविषै मग्न भए तपके प्रभावतैं अनेक ऋद्धि उपजी सर्व वात समर्थ जिनके शरीरको स्पर्श पवन आवै सो प्राणियोंके अनेक रोग दुःख हरै परन्तु आप कर्म निर्जरा के कारण बाईस परीषह सहते भए बहुरि आयु पूर्णकर धर्म ध्यानके प्रसादसे ज्योतिष चक्रको उलंघ सातवां लांतव नामा जो स्वर्ग तहां बडी ऋद्धिके धारी देव भए चाहैं जैसा रूप करैं चाहैं जहां जाय, जो वचनकरि कहनेमें न आवै ऐसे अद्भुत सुख भोगे परन्तु स्वर्गके सुखमें मग्न न भए। परम धामकी है इच्छा जिनको तहांतैं चयकर या अंजनीकी कुक्षिविषै आए हैं सो महा परम सुखके भाजन हैं बहुरि देह न धारेंगे अविनाशी सुखको प्राप्त होवेंगे, चरम शरीरी हैं। यह तो पुत्रके गर्भमें आवनेका वृत्तांत कहा। अब हे कल्याणचेष्टिनी! याने जिस कारणसे पतिका विरह अर कुटुम्बसे निरादर पाया सो वृत्तांत सुन। इस अंजनी सुंदरीने पूर्व भवमें देवाधिदेव श्रीजिनेंद्रदेवकी प्रतिमा पटराणी पदके अभिमानकरि सौकन के ऊपर क्रोधकर मंदिरसे बाहिर निकासी, ताही समय एक समयश्री आर्यिका याके घर आहारको आई हुती, तपकर पृथ्वीपर प्रसिद्ध थी सो याके श्रीजीकी मूर्तिका अविनय देख पारणा न किया पीछै

चली अर याको अज्ञानरूप जान महादयावती होय उपदेश देती भई जे साधु जन हैं ते सबका भला ही चाहै हैं जीवानिके समझावनेके निमित्त विना पूछे ही साधु जन श्रीगुरुकी आज्ञातैं धर्मोपदेश देनेको प्रवरतै हैं ऐसा जानकर वह संयमश्री शील संयम रूप आभूषणकी धरणहारी पटराणीको महामाधुर्य अनुपम वचन कहती भई, हे भोरी ! सुन । तू राजाकी पटराणी है अर महारूपवती है, राजाका बहुत सन्मान है, भोगोंका स्थानक है शरीर तेरा सो पूर्वोपार्जित पुण्यका फल है, या चतुर्गतिविषै जीव भ्रमै है, महादुख भोगै है, कबहूक अनन्तकालविषै पुण्यके योगतैं मनुष्य देह पावै है। हे शोभने ! मनुष्य देह काहू पुण्यके योगतैं पाई है तातैं यह निंद्य आचार तू मत कर, योग्य क्रिया करनेके योग्य है । यह मनुष्य देह पाय जो सुकृत न करै है सो हाथसे रत्न खोवै है मन तथा वचन तथा कायसे जो शुभ क्रिया का साधन है सोई श्रेष्ठ है अर अशुभ क्रियाका साधन है सो दुःखका मूल है जे अपने कल्याणके अर्थ सुकृतविषै प्रवरतै हैं तेई उत्तम हैं, यह लोक महानिंद्य अनाचारका भरा है जे संत संसार सागरतैं आप तिरै हैं औरोंको तारै हैं, भव्य जीवोंको धर्मका उपदेश देय हैं तिन समान और उत्तम नाहीं, ते कृतार्थ हैं तिन मुनियोंके नाथ सर्व जगतके नाथ धर्म चक्री श्रीअरिहंत देव तिनके प्रतिबिम्बका जे अविनय करै हैं वे अज्ञानी अनेक भवमें कुगतिके महादुःख पावै हैं सो वे दुःख कौन वर्णन कर सकै, यद्यपि श्री-वीतराग देव राग द्वेषरहित हैं जे सेवा करैं तिनतैं प्रसन्न नहीं, अर जे निंदा करैं तिनसे द्वेष नाहीं, महा मध्यम भावको धारै हैं परंतु जे जीव सेवा करें ते स्वर्ग मोक्ष पावै हैं जे निंदा करें ते नरक निगोद पावें काहेतैं, जीवोंके शुभ अशुभ परणामनितैं सुख दुःखकी उत्पत्ति होय है जैसे अग्निके सेवनसे शीतका निवारण होय है अर खान पानसे क्षुधा तृषाकी पीडा मिटै है तैसे जिनराजके अर्चनसे स्वयमेव ही सुख होय है अर अविनयसे परम दुख होय है, हे शोभने ! जे संसारविषै दुख दीखै हैं वे सब पापके फल हैं

अर जे सुख हैं ते धर्मके फल हैं। सो तू पूर्व पुण्यके प्रभावतैं महाराजकी पटराणी भई अर महासंपत्ति-
वती भई अर अद्भुत कार्यका करणहारा तेरा पुत्र है अब तू ऐसा कर जो फिर सुख पावै अपना
कल्याण कर, मेरे वचनसे। हे भव्ये! सूर्यके अर नेत्रके होते संते तू कूपमें मत पडै जो ऐसे कर्म करेगी
तो घोर नरकमें पडेगी, देव गुरु शास्त्रका अविनय करना अनन्त दुःखका कारण है अर ऐसे दोष देख
जो मैं तोहि न संबोधूं तो मोहि प्रमादका दोष लागै है, तातैं तेरे कल्याण निमित्त धर्मोपदेश दिया है
जब श्रीआर्यिकाजीने ऐसा कहा तब यह नरकके दुःखसे डरी, सम्यक्दर्शन धारण किया, श्राविकाके
व्रत आदरे, श्रीजीकी प्रतिमा मंदिरमें पधराई, बहुत विधानसे अष्ट प्रकारकी पूजा कराई, या भांति
राणी कनकोदरीको आर्यिका धर्मका उपदेश देय अपने स्थानकको गई अर वह कनकोदरी श्रीसर्वज्ञ
देवका धर्म आराधकर समाधिमरणकर स्वर्ग लोकमें गई, तहां महासुख भोग, स्वर्गतैं चयकर राजा
महेन्द्रकी राणी जो मनोवेगा ताके अंजना सुंदरी नामा तू पुत्री भई सो पुण्यके प्रभावतैं राजकुलविषै
उपजी, उत्तम वर पाया अर जो जिनेंद्रदेवकी प्रतिमाको एक क्षण मंदिरके बाहिर रखा था ताके पाप
करि धनीका वियोग अर कुटुंबतैं पराभव पाया। विवाहके तीन दिन पहिले पवनंजय प्रछन्नरूप आए
रात्रिमें तिहारे झरोखेविषै प्रहस्त मित्रके सहित बैठे हुते सो ता समय मिश्रकेशी सखीने विद्युत्प्रभकी
स्तुति करी, अर पवनंजयकी निंदा करी ता कारण पवनंजय द्वेषको प्राप्त भए। बहुरि युद्धके अर्थ घरतैं
चले मानसरोवरपर डेरा किया वहां चकवीका विरह देखकर करुणा उपजी सो करुणा ही मानों सखी
का रूप होय कुमारको सुंदरीके समीप लाई तब ताकरि गर्भ रहा बहुरि कुमार प्रछन्न ही पिताकी आज्ञा
के साधिवेके अर्थ रावणके निकट गए ऐसा कहकर फिर मुनि अंजनीसे कहते भए, महाकरुणाभावकर
अमृतरूप वचन गिरते भए, हे बालिके! तू कर्मके उदयकरि ऐसे दुखको प्राप्त भई तातैं बहुरि ऐसा निंद्य

कर्म मत करना। संसार समुद्रके तारणहारे जे जिनेंद्रदेव तिनकी भक्ति कर। या पृथ्वीविषै जे सुख हैं ते सर्व जिनभक्तिके प्रतापतैं होय हैं। अैसैं अपने भव सुनकर अंजनी विस्मयको प्राप्त भई अर अपने किए जे कर्म तिनको निंद्यती अति पश्चाताप करती भई। तब मुनिने कही हे पुत्री! अब तू अपनी शक्ति प्रमाण नियम ले अर जिनधर्मका सेवन कर, यति व्रतियोंकी उपासना कर। तैंने अैसे कर्म किए थे जो अधोगतिको जाती परंतु संयमश्री आर्याने कृपाकर धर्मका उपदेश दिया सो हस्तावलम्बन दे कुगतिके पतनसे तू परम सुख पावेगी, तेरा पुत्र अखण्डवीर्य है, देवनिकरि जीता न जाय। अब थोडे ही दिनमें तेरा तेरे भरतारतैं मिलाप होयगा तातैं हे भव्ये! तू अपने चित्तमें खेद मत करै, प्रमादरहित जो शुभ क्रिया तामें उद्यमी हो। ये मुनिके वचन सुन अंजनी अर वसन्तमाला बहुत प्रसन्न भईं अर बारम्बार मुनिको नमस्कार किया, फूल गए हैं नेत्र कमल जिनके। मुनिराजने इनको धर्मोपदेश देय आकाश-मार्ग विहार किया, सो निर्मल है चित्त जिनका ऐसे संयमियोंको यही उचित है कि जो निर्जन स्थानक हो तहां निवास करैं सो भी अल्प ही रहैं या प्रकार निज भव सुन अंजनी पाप कर्मतैं अति डरी अर धर्मविषै सावधान भई। वह गुफा मुनिके विराजवेसे पवित्र भई सो तहां अंजनी वसन्तमालासहित पुत्र की प्रसूति समय देखकर रही।

गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं—हे श्रेणिक! अब वह महेंद्रकी पुत्री गुफामें रहै, बसंतमाला विद्याबलकरि पूर्ण विद्याके प्रभावकरि खान पान आदि याके मनवांछित सर्व सामग्री करै, अथानन्तर अंजना पतिव्रता पियारहित वनविषै अकेली सो मानों सूर्य याका दुःख देख न सका सो अस्त होने लगा मानो याके दुःखतैं सूर्यहूकी किरण मंद हो गई, सूर्य अस्त हो गया, पहाडके शिखर अर वृक्षोंके अग्रभागमें जो किरणोंका उद्योत रहा था सो भी संकोच लिया सन्ध्याकर क्षण एक आकाश मण्डल

लाल हो गया सो मानों अब क्रोधका भरा सिंह आवेगा, ताके लाल नेत्रनिकी ललाई फैली है बहुरि होनहार जो उपसर्ग ताकी प्रेरी शीघ्र ही अन्धकारका स्वरूप रात्रि प्रगट भई मानों राक्षासिनी ही रसातलसे निसरी है, पक्षी सन्ध्या समय चिगचगाटकर गहन वनमें शब्दरहित वृक्षनिके अग्रभागपर तिष्ठे मानों रात्रिको श्याम स्वरूप डरावनी देख भयकर चुप होय रहे। शिवा कहिए स्यालिनी तिनके भयानक शब्द प्रवरते सो मानों होनहार उपसर्गके ढोल ही बाजे हैं।

अथानन्तर गुफाके मुख सिंह आया, कैसा है सिंह? विदारे हैं हाथियोंके जे कुम्भस्थल, तिनके रुधिरकर लाल हो रहे हैं केश जाके अर काल समान क्रूर भृकुटीको धरै अर महा विषम शब्द करता जिसके शब्दकर वन गुंजार रहा है अर प्रलय कालकी अग्निकी ज्वाला समान जीभको मुखरूप गुफासे काढता, कैसी है जीभ? महाकुटिल है अनेक प्राणियोंकी नाश करनहारी बहुरि जीवानिके खैंचनेको जाकी अंकुश समान तीक्ष्ण दाढ महा कुटिल है रौद्र सबको भयंकर है अर जाके नेत्र अतित्रासके कारण उगता जो प्रलयकालका सूर्य ता समान तेजको धरैं दिशाओंके समूहको रंग रूपकर वह सिंह पूंछकी अणीको मस्तक ऊपर धरे नखकी अणीसे विदारी है धरती जाने पहाडके तट समान उरस्थल अर प्रबल है जांघ जाकी, मानों वह सिंह मृत्युका स्वरूप दैत्य समान अनेक प्राणियोंका क्षय करणहारा अन्तकको भी अन्तक समान अग्निसे भी अधिक प्रज्वलित, ऐसे डरावने सिंहको देखकर वनके सब जीव डरे। ताके नादकर सब गुफा गाज उठी सो मानों भयकर पहाड रोवने लगा अर याका निठुर शब्द वनके जीवोंके कानोंको ऐसा बुरा लगा मानों भयानक मुद्गरका घात ही है जाके चिरम समान लाल नेत्र सो ताके भयकरि हिरण चित्राम कैसे हो रहे अर मदोन्मत्त हाथियोंका मद जाता रहा, सब ही पशुगण अपने अपने ताईं बचावनेके लिए भयकर कंपायमान वृक्षोंके आसरे होय रहे नाहरकी ध्वनि सुन अंजनी

सन्ते मेरे निकट सर्व कुटुम्ब है अर यह वन ही तेरे प्रसादतैं नगर है जो या प्राणीको आपदामें सहाय करै है सो ही बांधव है अर जो बांधव दुःख दाता है सो ही परम शत्रु है या भांति परस्पर मिष्ट संभाषण करती ये दोनों गुफामें रहैं श्रीमुनिसुब्रतनाथकी प्रतिमाका पूजन करैं विद्याके प्रभावसे बसंतमाला खान पान आदि भली विधिसेती सब सामग्री करै वह गंधर्वदेव सर्व प्रकार इनकी दुष्ट जीवोंसे रक्षा करै अर निरंतर भक्तिसे भगवानके अनेक गुण नानाप्रकारके राग रचनासे गावै।

अथानन्तर अंजनीके प्रसूतिका समय आया तब बसंतमालाको कहती भई हे सखी आज मेरे कछु व्याकुलता है तब बसंतमाला बोली—हे शोभने! तेरे प्रसूतिका समय है तू आनन्दको प्राप्त हो तब याके लिये कोमल पल्लवोंकी सेज रची उस पर इसके पुत्रका जन्म भया जैसे पूर्व दिशा सूर्यको प्रकट करे तैसे यह हनूमानको प्रगट करती भई। पुत्रके जन्मसे गुफाका अंधकार जाता रहा, प्रकाशरूप होय गई मानों सुवर्णमई ही भई। तब अंजनी पुत्रको उरसे लगाय दीनताके वचन कहती भई कि हे पुत्र! तू गहन वनमें उत्पन्न भया तेरे जन्मका उत्सव कैसे करूं जो तेरा दादेके तथा नानाके घर जन्म होता तो जन्म का बडा उत्सव होता, तेरा मुखरूप चंद्रमा देख कौनको आनन्द न होय मैं क्या करूं मंदभागिनी सर्व वस्तुरहित हूं दैव कहिए पूर्वोपार्जित कर्मने मोहि दुःखदायिनी दशाको प्राप्त करी जो मैं कछु करनेको समर्थ नहीं हूं परंतु प्राणियोंको सर्व वस्तुसे दीर्घायु होना दुर्लभ है सो हे पुत्र! तू चिरंजीव हो, तू है तो मेरे सर्व है यह प्राणोंको हरणहारा महा गहन वन है इसमें जो मैं जीवूं हूं सो तो तेरे ही पुण्यके प्रभावतैं, ऐसे दीनताके वचन अंजनीके मुखतें सुनकर बसन्तमाला कहती भई कि हे देवी तू! कल्याणपूर्ण है ऐसा पुत्र पाया यह सुंदर लक्षण शुभरूप दीखै है बडी ऋद्धिका धारी होगा तेरे पुत्रके उत्सवसे मानों यह वेलरूप वनिता नृत्य करै हैं चलायमान हैं कोमल पल्लव जिनके अर जो भ्रमर गुंजार करै हैं सो मानों

लाल हो गया सो मानों अब क्रोधका भरा सिंह आवेगा, ताके लाल नेत्रनिकी ललाई फैली है वहुरि होनहार जो उपसर्ग ताकी प्रेरी शीघ्र ही अन्धकारका स्वरूप रात्रि प्रगट भई मानों राक्षसिनी ही रसातलसे निसरी है, पक्षी सन्ध्या समय चिगचगाटकर गहन वनमें शब्दरहित वृक्षनिके अग्रभागपर तिष्ठे मानों रात्रिको श्याम स्वरूप डरावनी देख भयकर चुप होय रहे। शिवा कहिए स्यालिनी तिनके भयानक शब्द प्रवरते सो मानों होनहार उपसर्गके ढोल ही बाजे हैं।

अथानन्तर गुफाके मुख सिंह आया, कैसा है सिंह ? विदारे हैं हाथियोंके जे कुम्भस्थल, तिनके रुधिरकर लाल हो रहे हैं केश जाके अर काल समान क्रूर भृकुटीको धरे अर महा विषम शब्द करता जिसके शब्दकर वन गुंजार रहा है अर प्रलय कालकी अग्निकी ज्वाला समान जीभको मुखरूप गुफासे काढता, कैसी है जीभ ? महाकुटिल है अनेक प्राणियोंकी नाश करनहारी वहुरि जीवानिके खैंचनेको जाकी अंकुश समान तीक्ष्ण दाढ महा कुटिल है रौद्र सबको भयंकर है अर जाके नेत्र आतित्रासके कारण उगता जो प्रलयकालका सूर्य ता समान तेजको धरैं दिशाओंके समूहको रंग रूपकर वह सिंह पूंछकी अणीको मस्तक ऊपर धरे नखकी अणीसे विदारी है धरती जाने पहाडके तट समान उरस्थल अर प्रबल है जांघ जाकी, मानों वह सिंह मृत्युका स्वरूप दैत्य समान अनेक प्राणियोंका क्षय करणहारा अन्तकको भी अन्तक समान अग्निसे भी अधिक प्रज्वलित, ऐसे डरावने सिंहको देखकर वनके सब जीव डरे। ताके नादकर सब गुफा गाज उठी सो मानों भयकर पहाड रोवने लगा अर याका निठुर शब्द वनके जीवोंके कानोंको ऐसा बुरा लगा मानों भयानक मुद्गरका घात ही है जाके चिरम समान लाल नेत्र सो ताके भयकरि हिरण चित्राम कैसे हो रहे अर मदोन्मत्त हाथियोंका मद जाता रहा, सब ही पशुगण अपने अपने ताईं बचावनेके लिए भयकर कंपायमान वृक्षोंके आसरे होय रहे नाहरकी ध्वनि सुन अंजनी

ने ऐसी प्रतिज्ञा करी जो उपसर्गसे मेरा शरीर जाय तो मेरे अनशनव्रत है उपसर्ग टरे भोजन लेना अर सखी बसन्तमाला खड्ग है हाथमें जाके कबहूं तो आकाशविषै जाय, कबहूं भूमिपर आवै अतिव्याकुल भई पक्षिनिकी नाईं भ्रमै ये दोनों महा भयवान कंपायमान है हृदय जिनका तब गुफाका निवासी जो मणिचूल नामा गंधर्वदेव तासूं ताकी रत्नचूल नामा स्त्री महादयावंती कहती भई हे देव ! देखो ये दोनों स्त्री सिंहसे महाभयभीत हैं अर अति विह्वल हैं, तुम इनकी रक्षा करो तब गंधर्वदेवको दया उपजी तत्काल विक्रियाकर अष्टापदका स्वरूप रचा सो सिंहका अर अष्टापदका महा भयंकर शब्द होता भया सो अंजनी हृदयमें भगवानका ध्यान धरती भई अर बसन्तमाला सारसकी नाईं विलाप करै हाय अंजना ! पहिले तो तू धनीके दुर्भागिनी भई बहुरि काहू इक प्रकार धनीका आगमन भया सो तातैं तोकों गर्भ रहा सो सासने विना समझे घरतैं निकासी बहुरि माता पिताने भी न राखी सो महा भयानक वनविषै आई तहां पुण्यके योगतैं मुनिका दर्शन भया, मुनिने धीर्य वंधाय पूर्व भव कहे, धर्मोपदेश देय आकाशके मार्ग गए अर तू प्रसूतिके अर्थ गुफाविषै रही सो अब या सिंहके मुखमें प्रवेश करेगी । हाय ! हाय ! राजपुत्री निर्जन वनविषै मरणकों प्राप्त होय है, अब या वनके देवता दयाकर रक्षा करो । मुनिने कही थी कि तेरा सकल दुःख गया सो कहा मुनिहूके वचन अन्यथा होय हैं याभांति विलाप करती बसन्तमाला हिंडोले झूलनेकी नाईं एक स्थल न रहै क्षणविषै सुंदरीके समीप आवै, क्षणविषै बाहिर जावै ।

अथानंतर वह गुफाका गंधर्वदेव जो अष्टापदका स्वरूप धर आया हुता ताने सिंहके पंजोंकी दीनी तब सिंह भागा अर अष्टापद भी सिंहको भगाय कर निजस्थानकको गया यह स्वप्नसमान सिंह और अष्टापदके युद्धका चरित्र देख बसंतमाला गुफामें अंजनी सुन्दरीके समीप आई, पल्लवोंसे भी अति कोमल जो हाथ तिनसे विश्वासती भई, मानों नवा जन्म पाया, हितका संभाषण करती भई सो एक वर्ष बराबर

जाय है रात्री जिनको ऐसी यह दोनों कभी तो कुटुम्बके निर्दईपनेकी कथा करें, कभी धर्म कथा करें अष्टापदने सिंहको ऐसे भगाया जैसे हाथीको सिंह भगावै अर सर्पको गरुड भगावै बहुरि वह गंधर्वदेव बहुत आन्दरूप होय गावने लगा सो ऐसा गावता भया जो देवोंके भी मनको मोहै तो मनुष्योंकी कहा बात? अर्धरात्रीके समय शब्दरहित होय गए, तब यह गावता भया अर बारंबार वीणको अतिरागतैं बजावता भया अर भी सारवाजे बजावता भया अर मंजीरादिक बजावता भया, मृदंगादिक बजावता भया, बांसुरी आदिक फूकके बाजे बजावता भया अर सप्त स्वरोंमें गाया तिनके नाम निषाद १, ऋषभ २, गांधार ३, षडज ४, मध्यम ५, धैवत ६, पंचम ७, इन सप्त स्वरोंके तीन ग्राम शीघ्र मध्य विलंबित अर इकीस मूर्छना हैं सो गंधर्वोंमें जे बडे देव हैं तिनके समान गान किया या गानविद्यामें गंधर्वदेव प्रसिद्ध हैं उनंचास स्थानक रागके हैं सो सब ही गंधर्वदेव जानै हैं भगवान श्रीजिनेंद्रदेवके गुण सुन्दर अक्षरोंमें गाए कि मैं श्रीअरिहंत देवको भक्ति कर बंदूं हूं कैसे हैं भगवान? देव अर दैत्योंकर पूजनीक हैं। देवकहिये स्वर्गवासी दैत्यकहिए ज्योतिषी विंतर अर भवनवासी ये चतुरनिकायके देव हैं सो भगवान सब देवोंके देव हैं, जिनको सुरनर विद्याधर अष्ट द्रव्यसे पूजै हैं बहुरि कैसे हैं तीन भुवनमें अति प्रवीन हैं अर पवित्र हैं अतिशय जिनके ऐसे जे श्रीमुनिसुव्रतनाथ तिनके चरण युगलमें भक्तिपूर्वक नमस्कार करूं हूं। जिनके चरणारविंदके नखोंकी कांति इंद्रके मुकुटकी रत्नोंकी ज्योतिको प्रकाश करै है, ऐसे गान गंधर्वदेवने गाए सो बसंतमाला अतिप्रसन्न भई ऐसे राग कभी सुने नहीं थे सो विस्मयकर व्याप्त भया है मन जाका उस गीतकी अतिप्रशंसा करती भई, धन्य यह गीत, काहूने अतिमनोहर गाए, मेरा हृदय अमृतकर आच्छादित किया अंजनीको बसंतमाला कहती भई यह कोई दयावान् देव है जाने अष्टापदका रूपकर सिंहको भगाया अर हमारी रक्षा करी अर यह मनोहर राग याहीने अपने आनन्दके अर्थ

गाए हैं। हे देवी ! हे शोभने, हे शीलवंती ! तेरी दया सब ही करें। जे भव्य जीव हैं तिनके महाभयंकर वनमें देव मित्र होय हैं या उपसर्गके विनाशसे निश्चय तेरा पतिसे मिलाप होयगा अर तेरे पुत्र अद्भुत पराक्रमी होयगा, मुनिके वचन अन्यथा न होंय, सो मुनिके ध्यानकर जो पवित्र गुफा ताविषै श्रीमुनि-सुव्रतनाथकी प्रतिमा पधराय दोनों सुगंध द्रव्यनितैं पूजा करती भई। दोनोंके चित्तमें यह विचार कि प्रसूति सुखसे होय। बसंतमाला नानाभांति अंजनीके चित्तको प्रसन्न करै अर कहती भई कि हे देवी ! मानो यह वन अर गिरि तिहारे पधारनेसे परम हर्षको प्राप्त भया है सो नीझरनेके प्रवाहकर यह पर्वत मानो हंसै ही है, अर यह वनके वृक्ष फलोंके भारसे नम्रीभूत लहलहाट करै हैं कोमल हैं पल्लव जिनके, विखर रहे हैं फूल जिनके, सो मानो हर्षको प्राप्त भए हैं अर जे मयूर सूवा मैना कोकिलादिक मिष्ट शब्द कर रहे हैं सो मानो वन पहाडसे वचनालाप करै है पर्वत नानाप्रकारकी जे धातु तिनकी है खान जहां अर सघनवृक्षोंके जे समूह सोई इस पर्वतरूप राजाके सुन्दर वस्त्र हैं अर यहां नानाप्रकारके रत्न हैं सोई इस गिरिके आभूषण भए अर इस पर्वतमें भली भली गुफा हैं अर यहां अनेक जातिके सुगन्ध पुष्प हैं अर या पर्वत ऊपर बडे बडे सरोवर हैं तिनमें सुगन्ध कमल फूल रहे हैं तेरा मुख महासुन्दर अनुपम सो चन्द्रमाकी और कमलकी उपमाको जीतै है। हे कल्याणरूपणी ! चिंताके वश मत हो, धीर्यधर या वनमें सर्व कल्याण होयगा, देव सेवा करेंगे। हे पुण्याधिकारी तेरा शरीर निःपाप है, हर्षसे पक्षी शब्द करै हैं सो मानों तेरी प्रशंसा करै हैं यह वृक्ष शीतल मंद सुगंधके प्रेरे पत्रोंके लहलहाटसे मानों तेरे विराजनेसे महाहर्षको प्राप्त भए नृत्य ही करै हैं अब प्रभातका समय भया है पहिले तो आरक्त सन्ध्या भई सो मानों सूर्यने तेरी सेवा निमित्त पठाई अर अब सूर्य भी तेरा दर्शन करनेके अर्थ मानों उदय होनेको उद्यमी भया है यह प्रसन्न करनेकी बात बसंतमालाने जब कही तब अंजनी सुंदरी कहती भई हे सखी तेरे होते

सन्ते मेरे निकट सर्व कुटुम्ब है अर यह वन ही तेरे प्रसादतैं नगर है जो या प्राणीको आपदामें सहाय करै है सो ही बांधव है अर जो बांधव दुःख दाता है सो ही परम शत्रु है या भांति परस्पर मिष्ट संभाषण करती ये दोनों गुफामें रहें श्रीमुनिसुव्रतनाथकी प्रतिमाका पूजन करैं विद्याके प्रभावसे बसंतमाला खान पान आदि भली विधिसेती सब सामग्री करै वह गंधर्वदेव सर्व प्रकार इनकी दुष्ट जीवोंसे रक्षा करै अर निरंतर भक्तिसे भगवानके अनेक गुण नानाप्रकारके राग रचनासे गावै।

अथानन्तर अंजनीके प्रसूतिका समय आया तब बसंतमालाको कहती भई हे सखी आज मेरे कछु व्याकुलता है तब बसंतमाला बोली—हे शोभने! तेरे प्रसूतिका समय है तू आनन्दको प्राप्त हो तब याके लिये कोमल पल्लवोंकी सेज रची उस पर इसके पुत्रका जन्म भया जैसे पूर्व दिशा सूर्यको प्रकट करे तैसे यह हनूमानको प्रगट करती भई। पुत्रके जन्मसे गुफाका अंधकार जाता रहा, प्रकाशरूप होय गई मानों सुवर्णमई ही भई। तब अंजनी पुत्रको उरसे लगाय दीनताके वचन कहती भई कि हे पुत्र! तू गहन वनमें उत्पन्न भया तेरे जन्मका उत्सव कैसे करूं जो तेरा दादेके तथा नानाके घर जन्म होता तो जन्म का बडा उत्सव होता, तेरा मुखरूप चंद्रमा देख कौनको आनन्द न होय मैं क्या करूं मंदभागिनी सर्व वस्तुरहित हूं दैव कहिए पूर्वोपार्जित कर्मने मोहि दुःखदायिनी दशाको प्राप्त करी जो मैं कछु करनेको समर्थ नहीं हूं परंतु प्राणियोंको सर्व वस्तुसे दीर्घायु होना दुर्लभ है सो हे पुत्र! तू चिरंजीव हो, तू है तो मेरे सर्व है यह प्राणोंको हरणहारा महा गहन वन है इसमें जो मैं जीवूं हूं सो तो तेरे ही पुण्यके प्रभावतैं, ऐसे दीनताके वचन अंजनीके मुखतैं सुनकर बसन्तमाला कहती भई कि हे देवी तू! कल्याणपूर्ण है ऐसा पुत्र पाया यह सुंदर लक्षण शुभरूप दीखै है बडी ऋद्धिका धारी होगा तेरे पुत्रके उत्सवसे मानों यह वेलरूप वनिता नृत्य करै हैं चलायमान हैं कोमल पल्लव जिनके अर जो भ्रमर गुंजार करै हैं सो मानों

संगीत करै हैं यह बालक पूर्ण तेज है सो इसके प्रभावसे तेरे सकल कल्याण होगा । तू वृथा चिंतावंती मत हो इस भांति इन दोनोंके वचनालाप होते भए।

अथानन्तर बसंतमालाने आकाशमें सूर्यके तेज समान प्रकाशरूप एक ऊंचा विमान देखा सो देख कर स्वामिनीसे कहा तब वह शंकाकर विलाप करती भई यह कोई निःकारण वैरी मेरे पुत्रको लेजाय अथवा मेरा कोई भाई है। तिनके विलाप सुन विद्याधरने विमान थांभा दयासंयुक्त आकाशसे उतरा गुफाके द्वार पर विमानको थांभ महा नीतिवान महा विनयवान शंकाको धरता हुवा स्त्री सहित भीतर प्रवेश किया तब बसंतमालाने देखकर आदर किया यह शुभ मन विनयसे बैठा और क्षणएक बैठ कर महामिष्ट अर गम्भीरवाणी कहकर बसंतमालाको पूछता भया ऐसे गम्भीर वचन कहता भया मानो मयूरोंको हर्षित करता मेघ ही गरजा है सुमर्यादा कहिये मर्यादाकी धरणहारी यह बाई किसकी बेटी किससे परणी किसकारणसे महावनमें रहे है यह बडे घरकी पुत्री है किसकारणसे सर्व कुटुम्बसे रहित भई है अथवा इस लोकमें रागद्वेष रहित जे उत्तम जीव हैं तिनके पूर्व कर्मोंके प्रेरे निःकारण बैरी होय हैं तब बसंतमाला दुःखके भारसे रुक गया है कण्ठ जिसका आंसू डारती नीची है दृष्टि जिसकी कष्टकर वचन कहती भई—महानुभाव तुम्हारे वचनहीसे तुम्हारे मनकी शुद्धता जानी जाय है जैसे दाहके नाशका मूल जो चन्दनका वृक्ष उसकी छाया भी सुन्दर लगे है तुम सारिखे जे गुणवान पुरुष हैं सो शुद्धभाव प्रकट करनेके स्थानक हैं आप बडे ही दयालु हो यदि तुम्हारे इसके दुःख सुननेकी इच्छा है तो सुनो मै कहूं हूं तुम सारिखे बडे पुरुषोंसे कहा हुवा दुःख निवृत्त होय है तुम दुःखहारी पुरुष हो तुम्हारा यह स्वभाव ही है कि आपदाविषें सहाय करो सो सुनो यह अंजनी सुंदरी राजा महेंद्रकी पुत्री है वह राजा पृथिवीपर प्रसिद्ध महा यशवान नीतिवान निर्मल स्वभाव है और राजा प्रल्हादका पुत्र पवनंजय गुणोंका सागर

उसकी प्राणहूसे प्यारी यह स्त्री है सो पवनंजय एक समय बापकी आज्ञासे आप तो रावणके निकट वरुणसे युद्धके अर्थ विदा होय चले थे सो मानसरोवरसे रात्रिको इसके महलमें आए अर इसको गर्भ रहा सो इसकी सासूका क्रूर स्वभाव दयारहित महामूर्ख था ही उसके चित्तमें गर्भका भर्म उपजा तब उसने इसको पिताके घर पठाई यह सर्व दोषरहित महासती शीलवंती निर्विकार है सो पिताने भी अकीर्तिके भयसे न राखी जे सज्जन पुरुष हैं वे झूठे भी दोषसे डरें हैं यह बडे कुलकी बालिका सर्व आलंबनरहित इस वनमें मृगीसमान रहे है मैं इसकी सेवा करूं हूं। इनके कुल क्रमसे हम आज्ञाकारी सेवक हैं इतवारी हैं अर कृपापात्र हैं सो यह आज इस वनमें प्रसूति भई है यह वन नाना उपसर्गका निवास है न जानिए कैसे इसको सुख होयगा। हे राजन्! यह इसका वृत्तांत संक्षेपसे तुमसे कहा अर संपूर्ण दुःख कहांतक कहूं इस भांति स्नेहसे पूरित जो बसंतमालाके हृदयका राग सो अंजनीके तापरूप अग्निसे पिगला अर अंगमें न समाया सो मानों बसंतमालाके वचन द्वारकर बाहिर निकसा तब वह राजा प्रतिसूर्य हनूरुहनाम द्वीपका स्वामी बसंतमालासूं कहता भया—हे भव्ये! मैं राजा चित्रभानु अर राणी सुंदरमालिनीका पुत्र हूं, यह अंजनी मेरी भानजी है मैंने बहुत दिनमें देखी सो पिछानी नहीं ऐसा कहकर अंजनीको बालावस्थासे लेकर सकल वृत्तांत कहकर गद्गद् वाणीकर वचनालापकर आंसू डालता भया तब पूर्ण वृत्तांत कहनेतैं अंजनीने इसको मामा जान गले लग बहुत रुदन किया सो मानों सकल दुःख रुदनसहित निकस गया। यह जगतकी रीति है, हितुके देखे अश्रुपात पडें हैं वह राजा भी रुदन करने लगा अर ताकी रानी भी रोवने लगी वसंतमालाने भी अति रुदन किया इन सबके रुदनसे गुफा गुंजार करती भई सो मानों पर्वतने भी रुदन किया। जलके जे नीझरने तेई भए अश्रुपात उनसे सब वन शब्दमई होयगया वनके जीव जे मृगादि सो भी रुदन करते भए तब राजा प्रतिसूर्यने जलसे अंजनीका मुख

प्रक्षालन कराया अर आप भी जलसे मुख प्रक्षाला । वन भी शब्दरहित हो गया मानों इनकी वार्ता सुनना चाहे है । अंजनी प्रतिसूर्यकी स्त्रीतैं सम्भाषण करती भई सो बडोंकी यह रीति है जो दुःखविषे हू कर्तव्यतैं न चूकें बहुरि अंजनी मामासे कहती भई हे पूज्य ! पुत्रका समस्त शुभाशुभ वृत्तांत ज्योतिषियोंसे पूछो तब सांवत्सरनामा ज्योतिषी लार था ताको पूछा तब ज्योतिषी बोला बालकके जन्मकी वेला बतावो तब बसंतमालाने कही आज अर्धरात्रि गए जन्म भया है तब लग्न थाप कर बालकके शुभ लक्षण जान ज्योतिषी कहता भया कि यह बालक मुक्तिका भाजन है बहुरि जन्म न धरेगा जो तिहारे मनमें संदेह है तो मैं संक्षेपतासे कहूं हूं सो सुनो (१) चैत्रवदी अष्टमीकी तिथि है अर श्रवण नक्षत्र है अर सूर्य मेषका उच्चस्थानकविषे बैठा है अर चन्द्रमा वृषका है अर मकरका मंगल है अर बुध मीनका है अर वृहस्पति कर्कका है सो उच्च है शुक्र तथा शनैश्चर दोनों मीनके हैं सूर्य पूर्ण दृष्टिकर शनिको देखै है अर मंगल दश विश्वा सूर्यको देखै है अर वृहस्पति पन्द्रह विश्वा सूर्यको देखै है अर सूर्य दश विश्वा वृहस्पतिको देखै है अर चन्द्रमाको पूर्ण दृष्टि वृहस्पति देखै है अर वृहस्पतिको चन्द्रमा देखै है अर वृहस्पति शनिश्चरको पन्द्रह विश्वा देखै है अर शनिश्चर वृहस्पतिको दस विश्वा देखै है अर वृहस्पति शुक्रको पन्द्रह विश्वा देखै है अर शुक्र वृपस्पतिको पन्द्रह विश्वा देखै है याकै सब ही ग्रह बलवान बैठे हैं सूर्य और मंगल दोनों याका अद्भुत राज्य निरूपण करै हैं अर वृहस्पति अर शनि मुक्तिका देनहारा जो योगीन्द्र पद निर्णय करै हैं जो एक वृहस्पति ही उच्चस्थान बैठा होय तो सर्व कल्याणके प्राप्ति

(१) नोट-मूलग्रन्थमें नक्षत्रादि दूसरी प्रकार वर्णन किए हैं परन्तु हम नहीं समझ सक्ते कि यह ग्रह ठीक हैं या मूल ग्रंथके ठीक हैं इस कारण हमने भाषाग्रंथके मूजब ही रक्खा है, मूल ग्रथके माफिक ग्रहादिकको भी ग्रन्थके अन्तमें हम लिखेंगे, बुद्धिमान विचार लेवे।

का कारण है अर ब्रह्मनामा योग है अर मुहूर्त शुभ है सो अविनाशी सुखका समागम याके होयगा या भांति सब ही ग्रह अतिबलवान बैठे हैं सो सर्व दोषरहित यह होयगा ऐसा ज्योतिषीने जब कहा तब प्रतिसूर्यने ताको बहुत दान दिया अर भानजीको अतिहर्ष उपजाया अर कही कि हे वत्से ! अब हम सब हनूरुह द्वीपको चलें तहां बालकका जन्मोत्सव भली भांति होयगा, तब अंजना भगवान्की वंदना कर पुत्रको गोदीमें लेय गुफाका अधिपति जो वह गंधर्वदेव तासे बारंबार क्षमा कराय प्रतिसूर्यके परिवारसहित गुफातें निकली अर विमानके पास आई, उभी रही मानों साक्षात् वनलक्ष्मी ही है । कैसा है विमान ? मोतिनिके जे हार सोई मानों नीझरने हैं अर पवनकी प्रेरी क्षुद्रघण्टिका बाज रही हैं अर लहलहाट करती जे रत्नोंकी झालरी तिनसे शोभायमान अर केलिके वनोंसे शोभायमान है, सूर्यके किरणके स्पर्श कर ज्योतिरूप होय रहा है अर नानाप्रकारके रत्नोंकी प्रभाकर ज्योतिका मंडल पड रहा है सो मानों इंद्रधनुष ही चढा रहा है अर नानाप्रकारके वर्णोंकी सैकडों ध्वजा फर हरे हैं अर वह विमान कल्पवृक्ष समान मनोहर नानाप्रकारके रत्ननिकरि निर्मापित नाना रूपको धरे मानो स्वर्गलोकसे आया है, सो वा विमानमें पुत्रसहित अंजना बसंतमाला तथा राजा प्रतिसूर्यका परिवार सकल बैठकर आकाशके मार्ग चले, सो बालक कौतुककर मुलकता संता माताकी गोदमेंते उछलकर पर्वत ऊपर जा पडा माता हाहाकार करती भई अर सर्व लोक राजा प्रतिसूर्यके हाहाकार करते भए अर राजा प्रतिसूर्य बालकके ढूंढनेको आकाशसे पृथिवी पर आया, अंजना अतिदीन भई विलाप करै है । ऐसे विलाप करै है जाको सुन कर तिर्यंचोंका मन भी करुणा कर कोमल होय गया । हाय पुत्र ! कहा भया दैव कहिए पूर्वोपार्जित कर्मने कहा किया मोहि रत्न सम्पूर्ण निधान दिखायकर बहुरि हरलिया वियोगके दुःखसे व्याकुल जो मैं सो मेरे जीवनका अवलम्बन जो बालक भया हुता सो भी पूर्वोपार्जित कर्मने छिनाय लिया ।

सो माता तो यह विलाप करै है अर पुत्र पत्थरपर पडा सो पत्थरके हजारों खंड हो गए अर महा शब्द भया प्रतिसूर्य देखै तो बालक एक शिला ऊपर सुखसे विराजै है, अपने अंगूठे आप ही चूसै है क्रीडा करै है अर मुलकै है अतिशोभायमान सूधे पडे हैं लहलहाट करै हैं कर चरण कमल जिनके, सुंदर है शरीर जिनका वे कामदेव पदके धारक उनको कौनकी उपमा दीजै मंद मन्द जो पवन ताकरि लहलहाट करता जो रक्त कमलोंका वन ता समान है प्रभा जिनकी, अपने तेजकरि पहाडके खण्ड खण्ड किए ऐसे बालकको दूरसे देखकर राजा प्रतिसूर्य अति आश्चर्यको प्राप्त भया। कैसा है बालक ? निष्पाप है शरीर जाका धर्मका स्वरूप तेजका पुंज ऐसे पुत्रको देख माता बहुत विस्मयको प्राप्त भई उठाय सिर चूमा अर छातीसे लगा लिया तब प्रतिसूर्य अंजनीतैं कहता भया हे बालिके ! यह बालक तेरा समचतुरस्रसंस्थान वज्र वृषभ नाराच संहननका धरणहारा महा वज्रका स्वरूप है जिसके पडनेकर पहाड चूर्ण होय गया। जब या बालककी ही देवनितैं अधिक अद्भुत शक्ति है तो यौवन अवस्थाकी शक्तिका कहा कहना ? यह निश्चय सेती चरमशरीरी है तद्भव मोक्षगामी है फिर देह न धारैगा याकी यही पर्याय सिद्ध पदका कारण है ऐसा जानकर तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड सिर नवाय अपनी स्त्रियोंके समूह सहित बालकको नमस्कार करता भया। यह बालक, ताकी जे स्त्री तिनके जे नेत्र तेई भए श्याम श्वेत अरुण कमल तिनकी जे माला तिनसे पूजनीक अति रमणीक मन्द मन्द मुलकनका करणहारा सब ही नर नारियोंका मन हरै, राजा प्रतिसूर्य पुत्रसहित अंजनी भानजीको विमानमें बैठाय अपने स्थानमें ले आया। कैसा है नगर ? ध्वजा तोरणोंतैं शोभायमान है राजाको आया सुन सर्व नगरके लोक नाना प्रकारके मंगल द्रव्योंसहित सम्मुख आए। राजा प्रतिसूर्यने राजमहलमें प्रवेश किया, वादित्रोंके नादतैं शब्द भए हैं दशों दिशा जहां बालकके जन्मका बडा उत्सव विद्याधरने किया। जैसा स्वर्गलोकविषै इंद्र

की उत्पत्तिका उत्सव देव करै हैं पर्वतविषै जन्म पाया अर विमानतैं पडकर पर्वतको चूर्ण किया तातैं बालकका नाम माता अर बालकके मामा प्रतिसूर्यने श्रीशैल ठहराया अर हनूरुहद्वीपविषै जन्मोत्सव भया तातैं हनूमान यह नाम पृथ्वीविषै प्रसिद्ध भया। वह श्रीशैल (हनूमान) हनूरुहद्वीपविषै रमै। कैसा है कुमार ? देवनि समान है प्रभा जाकी, महाकांतिवान सबको महा उत्सवरूप है शरीरकी क्रिया जाकी, सर्व लोकके मन अर नेत्रोंको हरनहारा प्रतिसूर्यके पुरविषै विराजै है।

अथानन्तर गणधरदेव राजा श्रेणिकतैं कहै हैं हे नृप ! प्राणियोंके पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावतैं गिरिनिका चूरण करनहारा महाकठोर जो वज्र सो भी पुष्प समान कोमल होय परणवै है अर महा आताप की करणहारी जो अग्नि सो भी चंद्रमाकी किरण समान तथा विस्तीर्ण कमलनीके वन समान शीतल होय है अर महा तीक्ष्ण खड्गकी धारा सो महामनोहर कोमल लता समान होय है ऐसा जानकर जे विवेकी जीव हैं ते पापतैं विरक्त होय हैं कैसा है पाप ? महा दुख देनेविषै प्रवीण है। तुम जिनराजके चरित्रविषै अनुरागी होवो। कैसा है जिनराजका चरित्र ? सारभूत जो मोक्षका सुख ताके देनेविषै चतुर है, यह समस्त जगत निरन्तर जन्म जरा मरणरूप सूर्यके आतापसे तप्तायमान है तामें हजारों जे व्याधि हैं सोई किरणोंका समूह है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै हनुमानकी जन्म कथाका वर्णन करनेवाला सत्रहवा पर्व पूर्ण भया॥ १७॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं हे मगधदेशके मण्डन ! यह श्रीहनुमानजीके जन्मका वृत्तांत तो तुझे कहा अब हनुमानके पिता पवनंजयका वृत्तांत सुन। पवनंजय पवनकी न्याईं शीघ्रही रावणपै गया अर रावणसे आज्ञा पाय वरुणसे युद्ध करता भया सो बहुत देरतक नाना प्रकारके शस्त्रोंसे वरुणके अर पवनंजयके युद्ध भया सो युद्ध विषै वरुणको बांध लिया ताने जो खरदूषणको बांधा हुता सो छुडाया अर वरुणको रावणके समीप लाया, वरुणने रावणकी सेवा अंगीकार करी रावण पवनंजयसे अति प्रसन्न भए तब पवनंजय रावणसे विदा होय अंजनीके स्नेहसे शीघ्रही घरको चले राजा प्रल्हादने सुनी कि पुत्र विजय कर आया तब ध्वजा तोरण मालादिकोंसे नगर शोभित किया तब सब ही परिजन लोग सम्मुख आय नगरके सर्व नर नारी इनके कर्तव्यकी प्रशंसा करें राजमहल द्वारे अर्घादिककर बहुत सम्मानकर भीतर प्रवेश कराया सारभूत मंगलीक वचनोंसे कुवरकी सबहीने प्रशंसा करी कुंवर माता पिताको प्रणाम कर सबका मुजरा लेय क्षण एक सभाविषै सबनकी शुश्रूषा कर आप अंजनीके महल पधारे, प्रहस्त मित्र लार सो वह महल जैसा जीवरहित शरीर सुंदर न लागै तैसे अंजनी विना मनोहर न लागे तब मन अप्रसन्न होय गया। प्रहस्तसे कहते भए हे मित्र यहां वह प्राणप्रिया कमलनयनी नहीं दीखै है सो कहां है यह मन्दिर उस विना मुझे उद्यान समान भासै है अथवा आकाश समान शून्य भासै है तातैं तुम वार्ता पूछो वह कहां है ? तब प्रहस्त बाहिरले लोगोंसे निश्चय कर सकल वृत्तांत कहता भया, तब याके हृदयको क्षोभ उपजा माता पितासे विना पूछे मित्र सहित महेन्द्रके नगरमें गए, चित्तमे उदास जब राजा महेन्द्रके नगरके समीप जाय पहुंचे तब मनमें ऐसा जाना जो आज प्रियाका मिलाप होयगा तब मित्रसे प्रसन्न होय कहते भए कि हे मित्र देखो यह नगर मनोहर दिखै है जहां वह सुन्दर कटाक्षकी धरनहारी सुन्दरी विराजै है, जैसे कैलाश

पर्वतके शिखर शोभायमान दीखे है तैसे ये महलके शिखर रमणीक दीखे हैं अर वनके वृक्ष ऐसे सुंदर हैं मानों वर्षा कालकी सघन घटा ही है ऐसी वार्ता मित्रसे करते संते नगरके पास जाय पहुंचे । मित्र भी बहुत प्रसन्न करता आया राजा महेंद्रने सुनी कि पवनंजयकुमार विजयकर पितासों मिल यहां आए हैं तब नगरकी बडी शोभा कराई अर आप अर्घादिक उपचार लेय सम्मुख आया, बहुत आदरतें कुंवरको नगरमें लाए नगरके लोगोंने बहुत आदरतें गुण वर्णन किए । कुंवर राजमंदिरमें आए एक मुहूर्त ससुर के निकट विराजे, सब हीका सन्मान किया अर यथायोग्य वार्ता करी बहुरि राजातैं आज्ञा लेकर सासू का मुजरा करा बहुरि प्रियाके महल पधारे । कैसे हैं कुमार? कांताके देखनेकी है अभिलाषा जिनकी, तहां भी स्त्रीको न देखा तब अति विरहातुर होय काहूको पूछा—हे बालिके ! हमारी प्रिया कहां है ? तब वह बोली हे देव ! यहां तिहारी प्रिया नाहीं तब वाके वचनरूप वज्रकर हृदय चूर्ण हो गया अर कान मानों ताते खारे पानीसे सींचे गए जैसा जीवरहित मृतक शरीर होय तैसा होय गया, शोकरूप दाहकर मुरझाया गया है मुख कमल जाका, यह ससुरारके नगरसे निकसकर पृथ्वीविषै स्त्रीकी वार्ताके निमित्त भ्रमता भया, मानों वायुकुमारको वायु लगी तब प्रहस्त मित्र याको अति आतुर देखकर याके दुःखतें अति दुखी भया अर यासे कहता भया हे मित्र ! कहा खेद खिन्न होय है ? अपना चित्त निराकुल कर। यह पृथ्वी केतीक है जहां होयगी वहां ठीककर लेवेंगे, तब कुमारने मित्रसों कही तुम आदित्यपुर मेरे पितापै जावो अर सकल वृत्तांत कहो जो मुझे प्रियाकी प्राप्ति न होयगी तो मेरा जीवना नहीं होयगा मैं सकल पृथ्वीपर भ्रमण करूं हूं अर तुम भी ठीक करो। तब मित्र यह वृत्तांत कहनेको आदित्यपुर नगरविषै आया पिताको सर्व वृत्तांत कहा अर पवनकुमार अम्बरगोचर हाथीपर चढकर पृथ्वीविषै विचरता भया अर मनविषै यह चिंता करी कि वह सुंदरी कमल समान कोमल शरीर शोकके आतापसे

संतापको प्राप्त भई कहां गई, मेरा ही है हृदयविषै ध्यान जाके वह गरीबिनी विरहरूप अग्नितैं प्रज्वलित विषमवनमें कौन दिशाको गई ? वह सत्यवादिनी निःकपट धर्मकी धरनहारी गर्भका है भार जाके मत कदापि बसन्तमालासे रहित होय गई होय। वह पतिव्रता श्रावकके व्रत पालनहारी राजकुमारी शोककर अन्ध हो गए हैं दोनों नेत्र जाके, अर विकटवन विहार करती क्षुधासे पीडित अजगरकरयुक्त जो अन्ध कूप तामें ही पडी हो अथवा वह गर्भवती दुष्ट पशुवोंके भयंकर शब्द सुन प्राणरहित ही होय गई होय, वह प्राणोंतें भी अधिक प्यारी इस भयंकर अरण्यविषै जल विना प्यासकर सूख गए हैं कंठ तालु जाके सो प्राणोंसे रहित होय गई होय, वह भोरी कदाचित् गंगाविषै उतरी होय तहां नाना प्रकारके ग्राह सो पानीमें बह गई हो, अथवा वह अति कोमल तनु डाभकी अणीकर विदारे गए होंय चरण जाके सो एक पैंड भी पग धरनेकी शक्ति नाहीं सो न जानिए कहा दशा भई अथवा दुःखतें गर्भपात भया होय अर कदाचित् वह जिन धर्मकी सेवनहारी महाविरक्त भाव होय आर्या भई। ऐसा चिंतवन करते पवनंजयकुमारने पृथ्वीविषै भ्रमण किया सो वह प्राणवल्लभा न देखी तब विरहकर पीडित सर्वजगतको शून्य देखता भया, मरणका निश्चय किया, न पर्वतविषै, न मनोहर वृक्षनिविषै, न नदीके तटपर काहू ठौर ही प्राणप्रिया विना इसका मन न रमता भया, ऐसा विवेकवर्जित भया जो सुंदरीकी वार्ता वृक्षोंको पूछै भ्रमता २ भूतरुवर नामा वनमें आया तहां हाथीतैं उतरा अर जैसे मुनि आत्माका ध्यान करें तैसे प्रियाका ध्यान करै बहुरि हथियार अर बखतर पृथ्वीपर डार दिए अर गजेंद्रतैं कहते भए–हे गजराज! अब तुम वनस्वच्छन्द विहारी होवो, हाथी विनयकर निकट खडा है आप कहै हैं हे गजेंद्र! नदीके तीर में शल्लकी वन है ताके जो पल्लव सो चरते विचरो अर यहां हथिनियोंके समूह हैं सो तुम नायक होय विचरो। कुंवरने ऐसा कहा परंतु वह कृतज्ञ धनीके स्नेहविषै प्रवीण कुंवरका संग नहीं छोडता भया जैसे

भला भाई भाईका संग न छौंडे कुंवर अतिशोकवंत ऐसे विकल्प करै कि अति मनोहर जो वह स्त्री ताहि यदि न पाऊं तो या वनविषै प्राण त्याग करूं, प्रियाविषै लगा है मन जाका ऐसा जो पवनंजय ताहि वन विषै रात्रि भई सो रात्रिके चार पहर चार वर्ष समान बीते नानाप्रकारके विकल्प कर व्याकुल भया। यहां की तो यह कथा अर मित्र पितापै गया सो पिताको सर्व वृत्तांत कहा। पिता सुनकर परम शोकको प्राप्त भया सबको शोक उपजा अर केतुमती माता पुत्रके शोकसे अति पीडित होय रोवती संती प्रहस्तसूं कहती भई कि जो तू मेरे पुत्रको अकेला छोड आया सो भला न किया तब प्रहस्तने कही मोहि अति आग्रहकर तिहारे निकट भेजा सो आया अब तहां जाऊंगा सो माताने कही—वह कहां है ? तब प्रहस्त ने कही जहां अंजनी है तहां होयगा तब याने कही अंजनी कहां है, ताने कही मैं न जानूं। हे माता ! जो विना विचारे शीघ्र ही काम करैं तिनको पश्चाताप होय। तिहारे पुत्रने ऐसा निश्चय किया कि जो मैं प्रियाको न देखूं तो प्राणत्याग करूं यह सुनकर माता अति विलाप करती भई अन्तःपुरकी सकल स्त्री रुदन करती भई, माता विलाप करै है हाय मो पापिनीने कहा किया ? जो महासतीको कलंक लगाया जाकरि मेरा पुत्र जीवनेके संशयको प्राप्त भया। मैं क्रूर भावकी धरणहारी महावक्र मन्द भागिनीने विना विचारे काम किया यह नगर यह कुल अर विजयार्ध पर्वत अर रावणका कटक पवनंजय विना शोभै नहीं, मेरे पुत्र समान अर कौन, जाने वरुण जो रावणहूतें असाध्य ताहि रणविषै क्षणमात्रमें बांध लिया। हाय वत्स ! विनयके आधार गुरु पूजनमें तत्पर, जगतसुंदर विख्यातगुण तू कहां गया ? तेरे दुखरूप अग्निकरि तप्तायमान जो मैं, सो हे पुत्र ! मातासे वचनालाप कर, मेरा शोक निवार, ऐसे विलाप करती अपना उरस्थल अर सिर कूटती जो केतुमती सो ताने सब कुटुंब शोकरूप किया। प्रल्हाद भी आंसू डारते भए सर्व परिवारको साथ ले प्रहस्तको अगवानी कर अपने नगरसे पुत्रको ढूंढने चले दोनों

श्रेणियोंके सर्व विद्याधर प्रीतिसों बुलाये सो परिवारसहित आए। सब ही आकाशके मार्ग कुंवरको ढूंढे हैं पृथिवीमें देखै हैं अर गम्भीर वन और लतावोंमें देखै हैं पर्वतोंमें देखै हैं अर प्रतिसूर्यके पास भी प्रल्हादका दूत गया सो सुनकर महा शोकवान भया अर अंजनासूं कहा सो अंजना प्रथम दुःखतैं भी अधिक दुःखको प्राप्त भई अश्रुधारासे वदन पखालती रुदन करती भई कि हाय नाथ मेरे प्राणोंके आधार मुझमें बांधा है मन जिन्होंने सो मोहि जन्मदुखारीको छोडकर कहां गए ? कहा मुझसे कोप न छोडो हो जो सर्व विद्याधरोंसे अदृश्य होय रहे हो। एकवार एक भी अमृत समान वचन यासे बोलो एतेदिन ये प्राण तिहारे दर्शनकी वांछाकर राखे हैं अब जो तुम न दीखो तो ये प्राण मेरे किस कामके हैं, मेरे यह मनोरथ हुता कि पतिका समागम होगा सो दैवने मनोरथ भग्न किया। मुझ मंद भागिनीके अर्थ आप कष्ट अवस्थाको प्राप्त भए तिहारे कष्टकी दशा सुनकर मेरे प्राण पापी क्यों न विनश जांय ऐसे विलाप करती अंजनाको देखकर बसंतमाला कहती भई–'हे देवी ! ऐसे अमंगल वचन मत कहो तिहारे धनीसे अवश्य मिलाप होयगा अर प्रतिसूर्य बहुत दिलासा करता भया कि तेरे पतिको शीघ्र ही लावै हैं ऐसा कह कर राजा प्रतिसूर्यने मनसे भी उतावला जो विमान ताविषै चढकर आकाशतैं उतरकर पृथिवी विषै ढूंढा प्रतिसूर्यके लार दोनों श्रेणियोंके विद्याधर अर लंकाके लोग यत्नकर ढूंढे हैं देखते देखते भूतरवर नामा अटवी विषै आए तहां अम्बरगोचर नामा हाथी देखा, वर्षाकालके सघन मेघ समान है आकार जाका तब हाथीको देखकर सर्व विद्याधर प्रसन्न भए कि जहां यह हाथी है तहां पवनंजय है पूर्वे हमने यह हाथी अनेक वार देखा है यह हाथी अंजनगिरि समान है रंग जाका अर कुंदके फूल समान श्वेत हैं दांत जाके अर जैसी चाहिये तैसी सुन्दर है सूंड जाकी। जब हाथीके समीप विद्याधर आए तब वाहि निरंकुश देख डरे अर हाथी विद्याधरोंके कटकका शब्द सुन महाक्षोभको प्राप्त भया, हाथी महाभयंकर दुर्निवार शीघ्र

हैं वेग जाका मदकर भीज रहे हैं कपोल जाके अर हालै हैं अर गाजै हैं कान जाके जिस दिशाको हाथी दौडे ताही दिशासे विद्याधर हट जावें, यह हाथी लोगोंका समूह देख स्वामीकी रक्षाविषै तत्पर सूंडसे बंधी है तलवार जाके महाभयंकर पवनंजयका समीप न तजै सो विद्याधर त्रासपाय याके समीप न आवें तब विद्याधरोंने हथिनियोंके समूहसे इसे वश किया क्योंकि जेते वशीकरणके उपाय हैं, तिनमें स्त्री समान और कोई उपाय नहीं । तब ये आगे आय पवनकुमारको देखते भए मानो काठका है मौनसे बैठा है, वे यथायोग्य याका उपचार करते भए पर यह चिंतामें लीन काहूसों न बोले जैसे ध्यानारूढ मुनि काहूसों न बोलें तब पवनंजयके माता पिता आंसू डारते याके मस्तकको चूमते भए अर छातीसे लगावते भए अर कहते भए कि हे पुत्र ! तू ऐसा विनयवान हमको छोडकर कहां आया, महाकोमल सेजपर सोवनहारा तेरा शरीर या भीम वनविषै कैसे रात्री व्यतीत करी ऐसे वचन कहे तो भी न बोलै तब इसे नम्रीभूत और मौनव्रत धरे, मरणका है निश्चय जाके ऐसा जानकर समस्त विद्याधर शोकको प्राप्त भए पिता सहित सब विलाप करते भए।

तब प्रतिसूर्य अंजनीका मामा सब विद्याधरोंसे कहता भया कि मैं वायुकुमारसे वचनालाप करूंगा तब वह पवनंजयको छातीसे लगायकर कहता भया हे कुमार ! मैं समस्त वृत्तांत कहूंहूं सो सुनो एक महा रमणीक संध्याभ्रनामा पर्वत तहां अनंगवीचि नामा मुनिको केवल ज्ञान उपजा था सो इन्द्रादिकदेव दर्शनको आए हुते अर मैं भी गया हुता सो बन्दनाकर आवता था सो मार्गमें एक पर्वतकी गुफा ता उपर मेरा विमान आया सो मैंने स्त्रीके रुदनकी ध्वनि सुनी मानो वीन बाजै है तब मैं वहां गया, गुफा विषै अंजनी देखी मैंने वनके निवासका कारण पूछा तब बसंतमालाने सर्व वृत्तांत कहा अंजनी शोक कर विह्वल रुदन करै सो मैं धीर्य बंधाया अर गुफामें ताके पुत्रका जन्म भया सो

गुफा पुत्रके शरीरकी कांतिकर प्रकाश रूप होगई मानो सुवर्णकी रची है यह वार्ता सुनकर पवनंजय परम हर्षको प्राप्त भए अर प्रतिसूर्यको पूछते भए बालक सुखसे तिष्ठे है? तब प्रतिसूर्यने कहा बालकको मैं विमानमें थापकर हनूरुहद्वीपको जाऊं था सो मार्गमें बालक एक पर्वतपर पडा सो पर्वतके पडनेका नाम सुनकर पवनंजयने हाय हाय ऐसा शब्द कहा तब प्रतिसूर्यने कहा सोच मत करो जो वृत्तांत भया सो सुनो जा करि सर्व दुखसे निवृत्ति होय, बालकको पडा देख मैं विमानसे नीचे उतरा तब क्या देखा पर्वतके खंड खंड हो गए अर एक शिलापर बालक पडा है अर ताकी ज्योति कर दशों दिशा प्रकाश रूप होय रही हैं तब मैंने तीन प्रदाक्षिणा देय नमस्कार कर बालकको उठाय लिया अर माताको सौंपा सो माता अति विस्मयको प्राप्त भई पुत्रका श्रीशैल नाम धरा। बसंतमाला अर पुत्र-सहित अंजनीको हनुरुहद्वीप ले गया वहां पुत्रका जन्मोत्सव भया सो बालकका दूजा नाम हनुमान् भी है यह तुमको मैंने सकल वृत्तांत कहा। हमारे नगरमें वह पतिव्रता पुत्रसहित आनन्दसे तिष्ठे है यह विरतांत सुनकर पवनंजय तत्काल अंजनीके अवलोकनके अभिलाषी हनुरुहद्वीपको चले अर सर्व विद्याधर भी इनके संग चले हनूरुहद्वीपमें गए सो दोय महीना सबको प्रतिसूर्यने बहुत आदरसे राखा बहुरि सब प्रसन्न होय अपने अपने स्थानकको गए। बहुत दिनोंमें पाया है स्त्रीका संयोग जाने सो ऐसा पवनंजय यहां ही रहे। कैसा है पवनंजय? सुंदर है चेष्टा जाकी और पुत्रकी चेष्टासे अति अनन्द रूप हनूरुहद्वीपमें देवनकी न्यांई रमते भए। हनूमान नव यौवनको प्राप्त भए मेरुके शिखर समान सुन्दर है सीस जिनका सर्व जीवोंके मनके हरणहारे होते भए, सिद्ध भई हैं अनेक विद्या जिनको अर महाप्रभाव रूप विनयवान् बुद्धिमान् महाबली सर्व शास्त्रके अर्थविषै प्रवीण परोपकार करनेको चतुर पूर्वभव स्वर्गमें सुख भोग आए अब यहां हनुरुहद्वीपविषै देवोंकी न्यांई रमें हैं।

हे श्रेणिक ! गुरु पूजामें तत्पर श्रीहनूमानके जन्मका वर्णन अर पवनंजयका अंजनीसे मिलाप यह अद्भुत कथा नाना रसकी भरी है, जे प्राणी भावधर यह कथा पढें पढावें सुने सुनावें उनकी अशुभ कर्ममें प्रवृत्ति न होय शुभक्रियाके उद्यमी होंय अर जो यह कथा भावधर पढें पढावें उनकी परभवमें शुभगति दीर्घ आयु होय, शरीर निरोग सुंदर होय महापराक्रमी होंय अर उनकी बुद्धि करने योग्य कार्यके पारको प्राप्त होय अर चन्द्रमा समान निर्मलकीर्ति होय अर जासे स्वर्ग मुक्तिके सुख पाइये ऐसे धर्मकी बढवारी होय जो लोकमें दुर्लभ वस्तु हैं सो सब सुलभ होंय सूर्य समान प्रतापके धारक होंय ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचितं महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै पवनंजय अंजनाका मिलाप वर्णन करनेवाला अठारहवा पर्व पूर्ण भया ॥ १८ ॥

अथानंतर राजा वरुण बहुरि आज्ञालोप भया तब कोप कर तापर रावण फेर चढे सर्व भूमि गोचरी विद्याधरोंको अपने समीप बुलवाया, सबके निकट आज्ञा पत्र लेय दूत गए । कैसा है रावण ? राज्य-कार्यविषै निपुण है, किहकंधापुरके धनी अर लंकाके धनी रथनूपुर अर चक्रवालपुरके धनी तथा वैताड्य की दोनों श्रेणीके विद्याधर तथा भूमिगोचरी सब ही आज्ञा प्रमाण रावणके समीप आए हनूरुह द्वीपमें भी प्रतिसूर्य तथा पवनंजयके नाम आज्ञा पत्र लेय दूत आए सो ये दोनों आज्ञा पत्रको माथे चढाय दूत का बहुत सन्मान कर आज्ञा प्रमाण गमनके उद्यमी भए । तब हनुमानको राज्याभिषेक देने लगे । बादि-त्रादिकके समूह बाजने लगे अर कलश हैं जिनके हाथमें ऐसे मनुष्य आगे आय ठाढे भए तब हनुमानने प्रतिसूर्य अर पवनंजयको पूछा यह कहा है ? तब उन्होंने कही—हे वत्स ! हनुरूहद्वीपका प्रतिपालन कर, हम दोनोंको रावण बुलावे है सो जांय हैं, रावणकी मददके अर्थ । रावण वरुण पर जाय है वरुणने बहुरि

माथा उठाया है महासामंत है ताके बडी सेना है पुत्र वलवान हैं। अर गढका बल है तब हनुमान विनय कर कहते भए कि मेरे होते तुमको जाना उचित नाहीं, तुम मेरे गुरुजन हो तब उन्होंने कही हे वत्स! तू बालक है अबतक रण देखा नाहीं तब हनुमान बोले अनादि कालतैं जीव चतुर्गतिविषै भ्रमण करै हैं पंचमगति जो मुक्ति सो जब तक अज्ञानका उदय है तब तक जीवने पाई नाहीं परंतु भव्य जीव पावे ही हैं तैंसे हमने अब तक युद्ध किया नाहीं परंतु अब युद्धकर वरुणको जीतेहींगे अर विजय कर तिहारे पास आवें सो जब पिता आदि कुटुम्बके जन उनने राखनेका घना ही यत्न किया परंतु ये न रहते जाने तब उन्होंने आज्ञा दई। यह स्नान भोजन कर पहिले पहिल मंगलीक द्रव्यों कर भगवान्‌की पूजा कर अरिहंत सिद्धको नमस्कार कर माता पिता अर मामाकी आज्ञा लेय बडोंका विनयकर यथायोग्य संभाषण कर सूर्य तुल्य उद्योतरूप जो विमान तामें चढकर शस्त्रके समूह कर संयुक्त जे सामंत उन सहित दशों दिशामें व्याप्त रहा है यश जाका लंकाकी ओर चला सो त्रिकूटाचलके सन्मुख विमानमें बैठा जाता ऐसा शोभता जैसा मंदराचलके सन्मुख जाता, ईशान इंद्र शौभै है तब बीचीनामा पर्वत पर सूर्य अस्त भया। कैसा है पर्वत? समुद्रकी लहरोंके समूहकर शीतल हैं तट जाके, तहां रात्रि सुखसे पूर्ण करी अर करी है महा योधावोंसे वीररसकी कथा जाने महा उत्साहकर नाना प्रकारके देश द्वीप पर्वतोंको उलंघता समुद्रके तरंगोंसे शीतल जे स्थानक तिनको अवलोकन करता समुद्रविषै बडे बडे जलचर जीवनिको देखता रावणके कटकमें पोंहचा हनूमानकी सेना देखकर बडे बडे राक्षस विद्याधर विस्मयको प्राप्त भए, परस्पर वार्ता करै हैं यह वली श्रीशैल हनूमान् भव्य जीवोंविषै उत्तम जाने बाल अवस्थामें गिरिको चूर्ण किया। ऐसे अपने यश श्रवण करता हनूमान् रावणके निकट गया, रावण हनूमानको देखकर सिंहासनसे उठे अर विनय किया। कैसा है सिंहासन? पारिजातादिक कहिये कल्प वृक्षोंके फूलोंसे पूरित है, जाकी

सुगंधकरि भ्रमर गुंजार करे हैं जाके रत्नोंकी ज्योतिकर आकाशविषे उद्योत होय रहा है जाके चारों ही तरफ बडे सामंत हैं ऐसे सिंहासनतें उठकर रावणने हनूमानको उरसे लगाया। कैसा है हनूमान ? रावण के विनयसे नम्रीभूत हो गया है शरीर जाका, रावण हनूमानको निकट ले बैठा, प्रीतिकर प्रसन्न है मुख जाका, परस्पर कुशल पूछी अर परस्पर रूप सम्पदा देख हर्षित भए, दोनों महाभाग्य ऐसे मिले मानों दोय इंद्र मिले, रावण अति स्नेहकरि पूर्ण है मन जाका सो कहता भया पवनकुमारने हमसे बहुत स्नेह बढाया जो ऐसा गुणोंका सागर पुत्र हमपर पठाया ऐसे महाबलीको पायकर मेरे सर्व मनोरथ सिद्ध होवेंगे ऐसा रूपवान ऐसा तेजस्वी और नहीं जैसा यह योधा सुना तैसा ही है यामें सन्देह नाहीं यह अनेक शुभ लक्षणोंका भरा है याके शरीरका आकार ही गुणोंको प्रगट करै है। रावणने जब हनूमानके गुण वर्णन किए तब हनूमान नीचा होय रहा, लज्जावंत पुरुषकी नाईं नम्रीभूत है शरीर जाका सो संतों की यह रीति है। अब रावणका वरुणसे संग्राम होयगा सो मानों सूर्य भयकर अस्त होनेको उद्यमी भया मन्द हो गई हैं किरण जाकी सूर्यके अस्त भए पीछे संध्या प्रगट भई, बहुरि गई सो मानों प्राणनाथकी विनयवंती पतिव्रता स्त्री ही है अर चंद्रमारूप तिलकको धरे रात्रीरूप स्त्री शोभती भई बहुरि प्रभात भया सूर्यकी किरणोंसे पृथ्वीविषे प्रकाश भया, तब रावण समस्त सेनाको लेय युद्धको उद्यमी भया, हनूमान विद्याकर समुद्रको भेद वरुणके नगरविषे गया, वरुणपर जाता हनूमान ऐसी कांतिको धरता भया जैसा सुभूम चक्रवर्ती परशुरामके ऊपर जाता शोभै, रावणको कटकसहित आया जानकर वरुणकी प्रजा भयभीत भई, पाताल पुंडरीक नगरका वह धनी सो नगरमें योधावोंके महाशब्द होते भए, योधा नगरसे निकसे, मानों वह योधा असुरकुमार देवोंके समान हैं अर वरुण चमरेंद्र तुल्य है, महाशूरवीरपनेविषे गर्वित अर वरुणके सौ पुत्र महा उद्धत युद्ध करनेको आए, नाना प्रकारके शस्त्रोंके समूहकरि

माणि हो सो भूमिका प्रतिपालन करो। हे उदारकीर्ति! हमारे स्वामी आप ही हो, हमारे अपराध क्षमा करो। हे नाथ! आप जैसी उत्तम क्षमा कहूं न देखी तातैं आप सारिखे उदार चित्त पुरुषसे सम्बन्धकर मैं कृतार्थ होऊंगा तातैं मेरी सत्यवती नामा पुत्री आप परणो याके परिणवे योग्य आप ही हो याभांति बिनतीकर अति उत्साहतें पुत्री परणाई। कैसी है वह सत्यवती? सर्वरूपवंतियोंका तिलक है, कमल समान है मुख जाका, वरुणने रावणका बहुत सत्कार किया अर कई एक प्रयाण रावणके लार गया, रावणने अति स्नेहतें सीख दीनी, तब [illegible] अपनी राजधानीमें आया, पुत्रीके वियोगतें व्याकुल है चित्त जाका, कैलाशकंप जो रावण ताने हनूमानका अतिसन्मानकर अपनी बहिन जो चंद्रनखा ताकी पुत्री अनंगकुसुमा महारूपवती सो हनूमानको परणाई सो हनूमानको परणाकर अतिप्रसन्न भए। कैसी है अनङ्गकुसुमा? सर्वलोकविषै जो प्रसिद्ध गुण तिनकी राजधानी है कैसी है कामके आयुध हैं नेत्र जाके, अर अति सम्पदा दीनी अर कर्णकुण्डलपुरका राज्य दिया अभिषेक कराया ता नगरमें हनूमान सुखसे विराजे जैसे स्वर्गलोकमें इंद्र विराजें तथा किहकूंपुर नगरका राजा नल ताकी पुत्री हरमालिनी नामा रूप सम्पदाकर लक्ष्मीको जीतनेहारी सो महाविभूतितैं हनूमानको परणाई तथा किन्नरगीत नगरविषै जे किन्नरजातिके विद्याधर तिनकी सौ पुत्री परणी या भांति एक सहस्त्रानी परणी पृथ्वीविषै हनुमान का श्रीशैल नाम प्रसिद्ध भया काहेतें पर्वतकी गुफामें जन्म भया था। सो पहाडपर हनुमान आय निकसे सो देख अति प्रसन्न भए रमणीक है तलहटी जाकी वह पर्वत भी पृथ्वीविषै प्रसिद्ध भया ॥

अथानन्तर किहकंध नगरविषै राजा सुग्रीव ताके रानी सुतारा चंद्र समान कांतिको धरे है मुख जाका, अर रति समान है रूप जाका तिनके पुत्री पद्मरागा नवीन कमल समान है रंग जाका अर अनेक गुणोंसे मंडित पृथ्वीपर प्रसिद्ध लक्ष्मी समान सुंदर हैं नेत्र जाके, ज्योतिके मण्डलसे मंडित है मुख

तिनके रोकनेसे रावण राहुका रूप धारता भया। वरुणको कुम्भकरणके हवाले किया अर आप डेरा भवनोन्माद नाम वनमें किया। कैसा है वह वन ? समुद्रकी शीतल पवनसे महाशीतल है सो उसके निवासकर सेनाको रणजनित खेद रहित किया अर वरुणको पकडा सुन उसकी सेना भाजी, पुण्डरीकपुर में जाय प्रवेश किया। देखो पुण्यका प्रभाव जो एक नायकके हारनेतें सब ही हारे अर एक नायकके जीतनेतें सब ही जीते। कुम्भकरणने कोपकर वरुणके नगर लूटनेका विचार किया तब रावणने मने किया, यह राजाओंका धर्म नहीं। कैसे हैं रावण ? वरुणपर कोमल है चित्त जाका, सो कुंभकरणसे कहते भए— हे बालक ! तैंने यह क्या दुराचारकी वात कही ? जो अपराध था सो तो वरुणका था प्रजाका कहा अपराध ? दुर्बलको दुख देना दुरगतिका कारण है अर महाअन्याय है ऐसा कहकर कुंभकरणको प्रशांत किया अर वरुणको बुलाया। कैसा है वरुण ? नीचा है मुख जाका, तब रावण वरुणको कहते भए हे प्रवीण ! तुम शोक मत करो जो मैं युद्धविषै पकडा गया, योधावोंकी दोय ही रीति हैं, मारे जांय अथवा पकडे जांय अर रणसे भागना यह कायरका काम है तातैं तुम हमसे क्षमा करो अर अपने स्थानक जाय कर मित्र बान्धवसहित सकल उपद्रवरहित अपना राज्य सुखतें करहु। ऐसे मिष्ट वचन रावणके सुन कर वरुण हाथ जोड रावणसूं कहता भया—हे वीराधिवीर ! हे महाधीर ! तुम इस लोकमें महापुण्याधिकारी हो, तुमसे जो वैर भाव करै सो मूर्ख है, अहो स्वामिन्, यह तिहारा परम धीर्य हजारों स्तोत्रोंसे स्तुति करने योग्य है, तुमने देवाधिष्ठित रत्न विना मुझे सामान्य शस्त्रोंसे जीता, कैसे हो तुम ? अद्भुत है प्रताप जिनका अर इस पवनके पुत्र हनूमानके अद्भुत प्रभावकी कहा महिमा कहूं ? तिहारे पुण्यके प्रभावतें ऐसे ऐसे सत्पुरुष तिहारी सेवा करै हैं। हे प्रभो ! यह पृथ्वी काहूके गोत्रमें अनुक्रमकर नहीं चली आई है यह केवल पराक्रमके वश है। शूरवीर ही याके भोक्ता हैं सो आप सर्व योधावोंके शिरो-

मणि हो सो भूमिका प्रतिपालन करो। हे उदारकीर्ति! हमारे स्वामी आप ही हो, हमारे अपराध क्षमा करो। हे नाथ! आप जैसी उत्तम क्षमा कहूं न देखी तातैं आप सारिखे उदार चित्त पुरुषसे सम्बन्धकर मैं कृतार्थ होऊंगा तातैं मेरी सत्यवती नामा पुत्री आप परणो याके परिणवे योग्य आप ही हो याभांति विनतीकर अति उत्साहतैं पुत्री परणाई। कैसी है वह सत्यवती? सर्वरूपवंतियोंका तिलक है, कमल समान है मुख जाका, वरुणने रावणका बहुत सत्कार किया अर कई एक प्रयाण रावणके लार गया, रावणने अति स्नेहतैं सीख दीनी, तब [illegible] अपनी राजधानीमें आया, पुत्रीके वियोगतैं व्याकुल है चित्त जाका, कैलाशकंप जो रावण ताने हनूमानका अतिसन्मानकर अपनी बहिन जो चंद्रनखा ताकी पुत्री अनंगकुसुमा महारूपवती सो हनूमानको परणाई सो हनूमानको परणाकर अतिप्रसन्न भए। कैसी है अनङ्गकुसुमा? सर्वलोकविषै जो प्रसिद्ध गुण तिनकी राजधानी है कैसी है कामके आयुध हैं नेत्र जाके, अर अति सम्पदा दीनी अर कर्णकुण्डलपुरका राज्य दिया अभिषेक कराया ता नगरमें हनूमान सुखसे विराजे जैसे स्वर्गलोकमें इंद्र विराजै तथा किहकूंपुर नगरका राजा नल ताकी पुत्री हरमालिनी नामा रूप सम्पदाकर लक्ष्मीको जीतनेहारी सो महाविभूतितैं हनूमानको परणाई तथा किन्नरगीत नगरविषै जे किन्नरजातिके विद्याधर तिनकी सौ पुत्री परणी या भांति एक सहस्रानी परणी पृथ्वीविषै हनुमान का श्रीशैल नाम प्रसिद्ध भया काहेतैं पर्वतकी गुफामें जन्म भया था। सो पहाडपर हनुमान आय निकसे सो देख अति प्रसन्न भए रमणीक है तलहटी जाकी वह पर्वत भी पृथ्वीविषै प्रसिद्ध भया ॥

अथानन्तर किहकंध नगरविषै राजा सुग्रीव ताके रानी सुतारा चंद्र समान कांतिको धरै है मुख जाका, अर रति समान है रूप जाका तिनके पुत्री पद्मरागा नवीन कमल समान है रंग जाका अर अनेक गुणोंसे मंडित पृथ्वीपर प्रसिद्ध लक्ष्मी समान सुंदर हैं नेत्र जाके, ज्योतिके मण्डलसे मंडित है मुख

कमल जांका अर महा गजराजके कुम्भस्थल समान ऊंचे कठोर हैं स्तन जाके अर सिंह समान है कटि जाकी, महा विस्तीर्ण अर लावण्यता रूप सरोवरमें मग्न है मूर्ति जाकी, जाहि देख चित्त प्रसन्न होय शोभायमान है चेष्टा जाकी, ऐसी पुत्रीको नवयौवन देख माता पिताको याके परणायवेकी चिंता भई या योग्य वर चाहिए सो माता पिताको रात दिन निद्रा न आवे अर दिनमें भोजनकी रुचि गई चिंता रूप है चित्त जिनका। तब रावणके पुत्र इंद्रजीत आदि अनेक राजकुमार कुलवान शीलवान तिनके चित्रपट लिखे, रूप लिखाय सखियोंके हाथ पुत्रीको दिखाए, सुंदर है कांति जिनकी सो कन्याकी दृष्टि में कोई न आया, अपनी दृष्टि संकोच लीनी बहुरि हनुमानका चित्रपट देखा ताहि देखकर शोषण, संतापन, उच्चाटन, मोहन, वशीकरण कामके यह पंचबाणोंने वेधी गई तब ताहि हनूमानविषे अनुरागिनी जान सखीजन ताके गुण वर्णन करती भई।

हे कन्या! यह पवनंजयका पुत्र जो हनुमान ताके अपारगुण कहां लो कहें अर रूप सौभाग्य तो याके चित्रपटमें तैंने देखे तातैं याको वर, माता पिताकी चिंता निवार, कन्या तो चित्रपटको देख मोहित भई हुती और सखी जनोंने गुण वरणन किया ही है तब लज्जाकर नीची हो गई अर हाथमें क्रीडा करने का कमल था ताकी चित्रपटमें दी। तब सबने जाना कि यह हनुमानसे प्रीतिवंती भई तब याके पिता सुग्रीवने याका चित्रपट लिखाय भले मनुष्यके हाथ वायुपुत्र पै भेजा सो सुग्रीवका सेवक श्रीनगरमें गया अर कन्याका चित्रपट हनुमानको दिखाया सो अंजनीका पुत्र सुताराकी पुत्रीके रूपका चित्रपट देख मोहित भया यह बात सत्य है कै कामके पांच ही वाण हैं परंतु कन्याके भेरे पवनपुत्रके मानो सौ वाण होय लगे चित्तमें चिंतवता भया मैं सहस्र विवाह किए अर बडी बडी ठौर परणा खरदूषणकी पुत्री रावणकी भाणजी परणी तथापि जबलग यह पद्मरागा न परणूं तौलग परणा ही नहीं ऐसा विचार महाक्र-

द्धिसंयुक्त एक क्षणमें सुग्रीवके पुरमें गया सुग्रीवने सुना जो हनुमान पधारे तब सुग्रीव अतिहर्षित होय सन्मुख आए बडे उत्साहसे नगरमें ले गए सो राजमहलकी स्त्री झरोखोंकी जालीसे इनका अद्भुत रूप देख सकल चेष्टा तज आश्चर्य रूप होय गई अर सुग्रीवकी पुत्री पद्मरागा इनके रूपको देखकर थकित हो गई। कैसी है कन्या? अति सकुमार है शरीर जाका, बडी विभूतिसे पवनपुत्रसे पद्मरागाका विवाह भया, जैसा बर तैसी दुलहन सो दोनों अतिहर्षको प्राप्त भए स्त्रीसहित हनुमान अपने नगरमें आए राजा सुग्रीव और राणी तारा पुत्रीके वियोगतैं कैएक दिन शोकसहित रहे अर हनुमान महालक्ष्मीवान् समस्त पृथिवी पर प्रसिद्ध है कीर्ति जाकी सो ऐसे पुत्रको देख पवनंजय अर अंजना महासुखरूप समुद्रमें मग्न भए। रावण तीन खण्डका नाथ अर सुग्रीव जैसे पराक्रमी हनुमान सारिखे महाभट विद्याधरोंके अधिपति तिनका नायक लंका नगरीमें सुखसे रमै समस्त लोकको सुखदाई जैसे स्वर्गलोकविषै इंद्र रमै विस्तीर्ण है कांति जाकी, महा सुन्दर अठारह हजार राणी तिनके मुखकमल तिनका भ्रमर भया, आयु व्यतीत होती न जानी, जाके एक स्त्री कुरूप और आज्ञा रहित होय सो पुरुष उन्मत्त होय रहे है जाके अष्टादश सहस्र पद्मनी पतिव्रता आज्ञा कारणी लक्ष्मी समान होंय ताके प्रभावका कहा कहना, तीन खण्डका अधिपति अनुपम है कांति जाकी समस्त विद्याधर अर भूमिगोचरी सिर पर धारे हैं आज्ञा जाकी सो सर्व राजाओंने अर्धचक्री पदका अभिषेक कराया और अपना स्वामी जाना, विद्याधरोंके अधिपति तिन करि पूजनीक हैं चरण कमल जाके, लक्ष्मी कीर्ति कांति परिवार जा समान और के नाहीं मनोज्ञ है देह जाका, वह दशमुख राजा चन्द्रमा समान बडे बडे पुरुषरूप जे ग्रह तिनसे माण्डित आल्हादका उपजावन हारा कौनके चित्तको न हरे? जाके सुदर्शन चक्र सर्व कार्यकी सिद्धि करणहारा देवाधिष्ठित मध्यान्हके सूर्यकी किरणोंके समान है किरणोंका समूह जाविषै, जब जे उद्धत प्रचंड नृपवर्ग

आज्ञा न मानैं तिनका विध्वंसक अति देदीप्यमान नानाप्रकारके रत्नोंकर मण्डित शोभता भया और दंडरत्न दुष्ट जीवोंको कालसमान भयंकर देदीप्यमान है उग्र तेज जाका मानों उल्कापातका समूह ही है सो प्रचंड जाकी आयुध शालाविषै प्रकाश करता भया सो रावण आठमा प्रतिवासुदेव सुन्दर है कीर्ति जाकी, पूर्वोपार्जित कर्मके वशतैं कुलकी परिपाटी कर चली आई जो लंकापुरी ताविषै संसारके अद्भुत सुख भोगता भया। कैसा है रावण? राक्षस कहावैं ऐसे जे विद्याधर तिनके कुलका तिलक है अर कैसी है लंका, किसीप्रकारका प्रजाको नहीं है दुख जहां, मुनिसुव्रतनाथके मुक्ति गए पीछे और नमिनाथके उपजनेसे पहिले रावण भया सो बहुत पुरुष जे परमार्थरहित मूढ लोक तिन्होंने उनका कथन औरसे और किया मांसभक्षी ठहराया सो वे मांसाहारी नहीं थे, अन्नके आहारी थे, एक सीताके हरणका अपराधी बना उसकर मारे गये और परलोकविषै कष्ट पाया। कैसा है श्रीमुनिसुव्रतनाथका समय? सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्रकी उत्पत्तिका कारण है सो वह समय वीते बहुत वर्ष भए तातैं तत्वज्ञानरहित विषयी जीवोंने बडे पुरुषोंका वर्णन औरसे और किया पापाचारी शीलव्रत रहित जे मनुष्य सो तिनकी कल्पना जाल रूप फांसीकर अविवेकी मन्दभाग्य जे मनुष्य तेई भए मृग सो बांधे। गौतमस्वामी कहे हैं ऐसा जान कर हे श्रेणिक! इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादि कर वंदनीक जो जिनराजका शास्त्र सोई रतन भया ताहि अंगीकार कर। कैसा है जिनराजका शास्त्र? सूर्यसे अधिक है तेज जाका और कैसा है तू? जिन शास्त्रके श्रवणकर जाना है वस्तुका स्वरूप जाने और धोया है मिथ्यात्वरूप कर्दमका कलंक जाने।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणका चक्रराज्याभिषेक वर्णन करनेवाला उन्नीसवां पर्व पूर्ण भया॥ १९॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक महा विनयवान् निर्मल है बुद्धि जाकी सो विद्याधरोंका सकल वृत्तांत सुन कर गौतम गणधरके चरणारविंदको नमस्कार कर आश्चर्यको प्राप्त होता संता कहता भया—हे नाथ! तिहारे प्रसादतें आठवां प्रतिनारायण जो रावण ताकी उत्पत्ति और सकल वृत्तांत मैंने जाना, तथा राक्षसवंशी और बानरवंशी जे विद्याधर तिनके कुलका भेद भलीभांति जाना। अब मैं तीर्थंकरोंके पूर्व भव सहित सकल चरित्र सुना चाहूंहूं? कैसा है तिनका चरित्र? बुद्धिकी निर्मलता का कारण है अर आठवें बलभद्र जे श्रीरामचन्द्र, सकल पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो कौन बंश विषै उपजे तिनका चरित्र कहो अर तीर्थंकरोंके नाम अर उनके माता पिताके नाम सब सुनने की इच्छा है सो तुम कहने योग्य हो। या भांति जब श्रेणिकने प्रार्थना करी तब गौतम गणधर भगवत चारित्रके प्रश्न कर बहुत हर्षित भए! कैसे हैं गणधर महा बुद्धिमान परमार्थविषै प्रवीण। ते कहे हैं कि हे श्रेणिक! चौबीस तीर्थंकरोंके पूर्व भवका कथन पापके विध्वंसका कारण इन्द्रादिक कर नमस्कार करने योग्य तू सुन ऋषभ १ अजित २ संभव ३ अभिनन्दन ४ सुमति ५ पद्मप्रभ ६ सुपार्श्व ७ चन्द्रप्रभ ८ पुष्पदन्त (दूजा नाम सुविधिनाथ हूए) ९ शीतल १० श्रेयांस ११ वासुपूज्य १२ विमल १३ अनन्त १४ धर्म १५ शान्ति १६ कुंथु १७ अर १८ मल्लि १९ मुनिसुव्रत २० नमि २१ नेमि २२ पार्श्व २३ महावीर २४ जिनका अब शासन प्रवरते है ये चौवीस तीर्थंकरोंके नाम कहे। अब इनकी पूर्व भवकी नगरियोंके नाम सुनो। पुण्डरीकनी १ सुसीमा २ क्षेमा ३ रत्नसंचयपुर ४ ऋषभदेव आदि तीन तीन एक एक नगरीविषै अनुक्रमतैं वासुपूज्य पर्यंतकी ये चार नगरी पूर्व भवके निवासकी जाननी अर महानगर १३ अरिष्टपुर १४ सुभद्रिका १५ पुण्डरीकनी १६ सुसीमा १७ क्षेमा १८ वीतशोका १९ चम्पा २० कौशांबी २१ नागपुर २२ साकेता २३ छत्राकार २४ ये चौवीस तीर्थंकरोंकी या भवके पहिले जो देवलोक ता भव

पहिले जो मनुष्य भव ताकी स्वर्गपुरी समान राजधानी कही। अब ता भवके नाम सुनो—वज्रनाभि १ विमलवाहन २ बिपुलख्याति ३ बिपुलवाहन ४ महाबल ५ अतिबल ६ अपराजित ७ नंदिषेण ८ पद्म ९ महापद्म १० पद्मोत्तर ११ पंकजगुल्म १२ कमल समान है मुख जिसका ऐसा नलिनगुल्म १३ पद्मासन १४ पद्मरथ १५ दृढरथ १६ मेघरथ १७ सिंहरथ १८ वैश्रवण १९ श्रीधर्मा २० सुरश्रेष्ठ २१ सिद्धार्थ २२ आनन्द २३ सुनंद २४ ये तीर्थंकरोंके या भव पाहिले तीजे भवके नाम कहे। अब इनके पूर्वभवके पितावोंके नाम सुनो; वज्रसेन १ महातेज २ रिपुदम ३ स्वयंप्रभ ४ विमलवाहन ५ सीमंधर ६ पिहिताश्रव ७ अरिंदम ८ युगंधर ९ सर्वजनान्द १० अभयानन्द ११ वज्रदंत १२ वज्रनाभि १३ सर्वगुप्ति १४ गुप्तिमान् १५ चिंतारक्ष १६ विमलवाहन १७ घनरव १८ धीर १९ संवर २० त्रिलोकीरवि २१ सुनंद २२ वीतशोक २३ प्रोष्ठिल २४ ये पूर्व भवके पितावोंके नाम कहे। अब चौवीसो तीर्थंकर जिस जिस देवलोकसे आए तिन देव लोकोंके नाम सुनो। सर्वार्थसिद्धि १ वैजयन्त २ ग्रैवेयक ३ वैजयन्त ४ ऊर्ध्वग्रैवेयक ५ वैजयन्त ६ मध्यग्रैवेयक ७ वैजयन्त ८ अपराजित ९ आरणस्वर्ग १० पुष्पोत्तर विमान ११ कापिष्ठस्वर्ग १२ शुक्रस्वर्ग १३ सहस्रारस्वर्ग १४ पुष्पोत्तर १५ पुष्पोत्तर १६ पुष्पोत्तर १७ सर्वार्थसिद्धि १८ विजय १९ अपराजित २० प्राणत २१ वैजयन्त २२ आनत २३ पुष्पोत्तर २४ ये चौवीस तीर्थंकरोंके आवनेके स्वर्ग कहे।

अब आगे चौवीस तीर्थंकरों का जन्म पुरियें जन्म नक्षत्र माता पिता अर वैराग्यके वृक्ष अर मोक्ष के स्थान मैं कहूंहू सो सुनो। अयोध्यानगरी पिता नाभि राजा माता मरुदेवी राणी उत्तराषाढ नक्षत्र बटवृक्ष कैलाश पर्वत प्रथम जिन, हे मगध दशके भूपति! तुझे अतीन्द्रीय सुखकी प्राप्ति करें॥ १॥ अयोध्यानगरी जितशत्रु पिता विजया माता रोहिणी नक्षत्र सप्तछद वृक्ष सम्मेद शिखर अजितनाथ हे

श्रेणिक तुझे मंगलके कारण होवें ॥२॥ श्रावस्ती नगरी जितारि पिता सैना माता पूर्वाषाढ नक्षत्र शाल वृक्ष सम्मेद शिखर संभवनाथ तेरे भवबन्धन हरें ॥३॥ अयोध्यापुरी नगरी संवर पिता, सिद्धार्था माता पुनर्वसु नक्षत्र सालवृक्ष सम्मेद शिखर अभिनन्दन तुझें कल्याणके कारण होवें ॥ ४ ॥ अयोध्यापुरी नगरी मेघप्रभ पिता सुमंगला माता मघा नक्षत्र प्रियंगुवृक्ष सम्मेदशिखर सुमतिनाथ जगतमें महामंगल रूप तेरे सर्व विघ्न हरें ॥ ५ ॥ कौशांबी नगरी धारण पिता सुसीमा माता, चित्रा नक्षत्र प्रियंगुवृक्ष सम्मेद-शिखर पद्मप्रभ तेरे काम क्रोधादि अमंगल हरें॥ ६ ॥ काशीपुरी नगरी सुप्रतिष्ठ पिता पृथिवी माता विशाखा नक्षत्र शिरीषवृक्ष सम्मेदशिखर सुपार्श्वनाथ, हे राजन्! तेरे जन्म जरा मृत्यु हरें ॥ ७ ॥ चंद्र-पुरी नगरी महासेन पिता लक्ष्मणा माता अनुराधा नक्षत्र नागवृक्ष सम्मेदशिखर चन्द्रप्रभ तुझे शांति भावके दाता होहु ॥ ८ ॥ काकन्दी नगरी सुग्रीव पिता रामा माता मूल नक्षत्र शाल वृक्ष सम्मेदशिखर पुष्पदंत तेरे चित्तको पवित्र करें ॥ ९ ॥ भद्रिकापुरी नगरी दृढरथ पिता सुनंदा माता पूर्वाषाढ नक्षत्र प्लक्षवृक्ष सम्मेदशिखर शीतलनाथ तेरे त्रिविधताप हरें ॥ १० ॥ सिंहपुरी नगरी विष्णु पिता विष्णुश्री देवी माता श्रवण नक्षत्र तिंदुकवृक्ष सम्मेदशिखर श्रेयांसनाथ तेरे विषय कषाय हरें ॥ ११ ॥ चंपापुरी नगरी वासुपूज्य पिता विजया माता शतभिषा नक्षत्र पाटलवृक्ष निर्वाणक्षेत्र चंपापुरीका वन श्रीवासुपूज्य तोहि निर्वाण प्राप्त करें ॥ १२ ॥ कंपिला नगरी कृतवर्मा पिता सुरम्या माता उत्तराषाढ नक्षत्र जम्बूवृक्ष सम्मेद-शिखर विमलनाथ तुझे रागादि मलरहित करें ॥ १३ ॥ अयोध्या नगरी सिंहसेन पिता सर्वयशा माता रेवती नक्षत्र पीपलवृक्ष सम्मेदशिखर अनन्तनाथ तुझे अन्तरहित करें ॥ १४ ॥ रत्नपुरी नगरी भानु पिता सुव्रता माता पुष्य नक्षत्र दधिपर्ण वृक्ष सम्मेदशिखर धर्मनाथ तुझे धर्मरूप करें ॥ १५ ॥ हस्तनाग-पुर नगर विश्वसेन पिता ऐरा माता भरणी नक्षत्र नंदीवृक्ष सम्मेदशिखर शांतिनाथ तुझे सदा शान्ति

करें ॥ १६ ॥ हस्तनागपुर नगर सूर्य पिता श्रीदेवी माता कृत्तिका नक्षत्र तिलकवृक्ष सम्मेदशिखर कुंथु-नाथ हे राजेंद्र ! तेरे पापहरणके कारण होंवे ॥ १७ ॥ हस्तनागपुर नगर सुदर्शन पिता मित्रा माता-रोहिणी नक्षत्र आम्रवृक्ष सम्मेदशिखर अरनाथ हे श्रेणिक ! तेरे कर्मरज हरें ॥१८॥ मिथिलापुरी नगरी कुंभ पिता रक्षता माता अश्वनी नक्षत्र अशोकवृक्ष सम्मेदशिखर मल्लिनाथ हे राजा ! तुझे मन शोक-रहित करें ॥ १९ ॥ कुशाग्र नगर सुमित्र पिता पद्मावती माता श्रवण नक्षत्र चम्पकवृक्ष सम्मेदशिखर मुनिसुव्रतनाथ सदा तेरे मनविषै बसैं ॥२०॥ मिथिलापुरी नगरी विजय पिता वप्रा माता अश्वनी नक्षत्र मौलश्री वृक्ष सम्मेदशिखर नमिनाथ तुझे धर्मका समागम करें ॥ २१ ॥ सौरीपुर नगर समुद्रविजय पिता शिवादेवी माता चित्रा नक्षत्र मेषशृंग वृक्ष गिरनार पर्वत नेमिनाथ तुझे शिवसुखदाता होंवे ॥ २२ ॥ काशीपुरी नगरी अश्वसेन पिता वामा माता विशाखा नक्षत्र धवल वृक्ष सम्मेदशिखर पार्श्वनाथ तेरे मनको धीर्य देंवे ॥ २३ ॥ कुण्डलपुरनगर सिद्धार्थ पिता प्रियकारिणी माता हस्त नक्षत्र शालवृक्ष पावा-पुर महावीर तुझे परम मंगल करें आप समान करें ॥ २४ ॥ आगै चौवीस तीर्थंकरानिके निर्वाण क्षेत्र कहिए है—ऋषभदेवका निर्वाण कल्याण कैलाश १ वासुपूज्यका चंपापुर २ नेमिनाथका गिरिनार ३ महा-वीरका पावापुर ४ औरोंका सम्मेदशिखर है शांति कुंथु अर ये तीन तीर्थंकर चक्रवर्त्ती भी भए अर काम-देव भी भए राज्य छोड वैराग्य लिया अर वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ अर महावीर ये पांच तीर्थंकर कुमार अवस्थामें वैरागी भए राज भी न किया अर विवाह भी न किया। अन्य तीर्थंकर महा-मंडलीक राजा भए राज्य छोड वैराग्य लिया अर चंद्रप्रभ पुष्पदंत ये दोय श्वेतवर्ण भए अर श्रीसुपार्श्व-नाथ प्रियंगु मंजरीके रंग समान हरित वर्ण भए अर पार्श्वनाथका वर्ण कच्ची शालि समान हरित भया, पद्मप्रभका वर्ण कमल समान आरक्त अर वासुपूज्यका वर्ण टेसूके फूल समान आरक्त अर मुनिसुव्रत-

नाथका वर्ण अंजनगिरि समान श्याम अर नेमिनाथका वर्ण मोरके कंठसमान श्याम अर सोलह तीर्थंकर ताया सोनेके समान वर्णके धारक भए। ये सब ही तीर्थंकर इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादिकोंसे पूजनें योग्य अर स्तुति करने योग्य भए हैं अर सब हीका सुमेरुके शिखर पांडुकाशिलापर जन्माभिषेक भया सबहीके पंचकल्याणक प्रकट भए सम्पूर्ण कल्याणकी प्राप्तिका कारण है सेवा जिनकी, ते जिनेन्द्र तेरी अविद्या हरें। या भांति गणधर देवने वर्णन किया।

तब राजा श्रेणिक नमस्कारकर विनती करते भए कि हे प्रभू! छहों कालविषे आयुका प्रमाण कहो अर पापकी निवृत्तिका कारण परम तत्त्व जो आतमस्वरूप ताका वर्णन बारंबार करो अर जिस जिनेंद्रके अन्तरालमें श्रीरामचन्द्र प्रकट भए सो आपके प्रसादसे मैं सर्व वर्णन सुना चाहूं हूं ऐसा जब श्रेणिकने प्रश्न किया तब गणधरदेव कृपाकरि कहते भए। कैसे हैं गणधरदेव? क्षीरसागरके जल समान निर्मल है चित्त जिनका, हे श्रेणिक! काल नामा द्रव्य है सो अनन्त समय है ताकी आदि अन्त नाहीं ताकी संख्या कल्पनारूप दृष्टांतसे पल्य सागरादि रूप महामुनि कहे हैं। एक योजन प्रमाण लंबा चौडा ऊंढा गोल गर्त (गढा) उत्कृष्ट भोगभूमिका तत्कालका जन्म हुआ भेडका बच्चा ताके रोमके अग्रभागसे भरिए सो गर्त घना गाढा भरिए अर सौ वर्ष गए एक रोम काढे वाके वीते जो काल लागे ताके समस्तकी संख्याका प्रमाण होइ सो व्योहार पल्य कहिए। सो यह कल्पना दृष्टांतमात्र है किसीने ऐसा किया नाहीं। यासे असंख्यातगुणा उद्धार पल्य है यातैं असंख्यातगुणी अद्धापल्य है ऐसी दश कोटाकोटी पल्य जांय तब एक सागर कहिए अर दश कोटाकोटी सागर जांय तब एक अवसर्पिणी कहिये अर दस कोटाकोटी सागरकी एक उत्सर्पिणी अर बीस कोटाकोटी सागरका कल्पकाल कहिये जैसे एक मासमें शुक्लपक्ष अर कृष्णपक्ष ये दोय वर्तैं तैसे एक कल्पकालविषे एक अवसर्पिणी अर एक उत्सर्पणी ये दोय

वर्तें। इनके प्रत्येक प्रत्येक छह छह काल हैं तिनमें प्रथम सुखमासुखमा काल चार कोटाकोटी सागरका है दूजा सुखमाकाल तीन कोटाकोटी सागरका है तीजा सुखमा दुखमा दो कोटाकोटी सागरका है अर चौथा दुखमासुखमा काल बयालीस हजार वर्ष घाट एक कोटाकोटी सागरका है पांचमा दुखमा काल इकीस हजार वर्षका है छठा दुःखमा दुःखमा काल सो भी इकीस हजार वर्षका है यह अवसर्पणी काल की रीति कही। प्रथम कालसे लेय छठे काल पर्यंत आयु आदि सर्व घटती भई अर यासे उलटी जो उत्सर्पणी तामें फिर छठेसे लेकर पहिले पर्यंत आयु काय बल पराक्रम बढते गए । यह कालचक्रकी रचना जाननी ॥

सो जब तीजेकाल में पल्यका आठवां भाग वाकी रहा तब चौदह कुलकर भए तिनका कथन पूर्व कर आये हैं चौंदहवें नाभिराजा तिनके आदि तीर्थंकर ऋषभ देव पुत्र भए तिनके मोक्ष गये पीछे पचास लाख कोटि सागर गये श्रीअजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर भए ताके पीछे तीसलाख कोटि सागर गये श्री संभवनाथ भये ताके पीछे दसलाख कोटि सागर गये श्रीअभिनंदन भए ताके पीछे नव लाख कोटि सागर गये श्रीसुमतिनाथ भए ताके पीछे नव्वे हजार कोटि सागर गए श्रीपद्मप्रभ भए ताके पीछे नव हजार कोटि सागर गए श्रीसुपार्श्वनाथ भए ताके पीछें नौसा कोटि सागर गए श्रीचंद्रप्रभ भए ताके पीछे नव्वे कोटि सागर गए श्रीपुष्पदंत भए ताके पीछे नव कोटि सागर गए श्रीशीतलनाथ भए ताके पीछे सौसागर घाट कोटिसागर गए श्रेयांसनाथ भए ताके पीछे चव्वन सागर गए श्रीवासुपूज्य भए ताके पीछे तीस सागर गए श्रीविमलनाथ भए ताके पीछे नव सागर गए श्रीअनंतनाथ भए ताके पीछे चार सागर गए श्रीधर्मनाथ भए ताके पीछे पौन पल्य घाट तीन सागर गए श्रीशांतिनाथ भए ताके पीछे आध पल्य गए श्रीकुंथुनाथ भए ताके पीछे छै हजार कोटि वर्ष घाट पाव पल्य गए श्रीअरनाथ

भए ताके पीछे पैंसठलाख चौरासी हजार बर्ष घाट हजार कोटि वर्ष गए श्रीमल्लिनाथ भए ताके पीछे चौवन लाख वर्ष गए श्रीमुनिसुव्रतनाथ भए ताके पीछे छह लाख वर्ष गए श्रीनमिनाथ भए ताके पीछे पांच लाख वर्ष गए श्रीनेमिनाथ भए, ताके पीछे पौने चौरासी हजार वर्ष गए श्रीपार्श्वनाथ भए ताके अढाई सौ वर्ष गए श्रीवर्द्धमान भए। जब बर्द्धमान स्वामी मोक्षको प्राप्त होवेंगे तब चौथे कालके तीन वर्ष साढे आठ महीना बाकी रहेंगे अर इतने ही तीजे कालके बाकी रहे थे तब श्रीऋषभ देव मुक्ति पधारे हुते ॥

हे श्रेणिक ! धर्मचक्रके अधिपति श्रीवर्द्धमान इंद्रके मुकुटके रत्नोंकी जो ज्योति सोई भया जल ताकरि धोए हैं चरण युगल जिनके सो तिनको मोक्ष पधारे पीछे पांचवां काल लगेगा जामें देवोंका आगमन नाहीं अर अतिशयके धारक मुनि नाहीं, केवलज्ञानकी उत्पत्ति नाहीं, चक्रवर्ती बलभद्र अर नारायणकी उत्पत्ति नहीं, तुम सारिखे न्यायवान राजा नाहीं अनीतिकारी राजा होवेंगे अर प्रजाके लोक दुष्ट महाढीठ परधन हरनेको उद्यमी होवेंगे, शीलरहित व्रतरहित महाक्लेश व्याधिके भरे मिथ्यादृष्टि घोरकर्मी होवेंगे अर अतिवृष्टि अनावृष्टि टिड्डी सूवा मूषक अपनी सेना अर पराई सेना ये जो सप्त ईतियें तिनका भय सदा ही होयगा। मोहरूप मदिराके माते रागद्वेषके भरे भौंहको टेढी करणहारी क्रूर-दृष्टि पापी महामानी कुटिल जीव होवेंगे कुवचनके बोलनहारे क्रूरजीव धनके लोभी पृथ्वीपर ऐसे विचरेंगे जैसे रात्रिविषै घूघू विचरें अर जैसे आगिया (पट बीजना) चमत्कार करै तैसे थोडे ही दिन चमत्कार करेंगे वे मूर्ख दुर्जन जिनधर्मसे पराङ्मुख कुधर्मविषै आप प्रवरतेंगे औरोंको प्रवरतावेंगे परोपकार रहित पराए कार्योंमें निरुद्यमी आप डूबेंगे औरोंको डुबावेंगे। ते दुर्गतिगामी आपको महन्त मानेंगे ते क्रूर कर्म मदोन्मत्त अनर्थकर माना है हर्ष जिन्होंने, मोहरूप अंधकारसे अंधे कलिकालके प्रभावसे हिंसा

रूप जे कुशास्त्र तेई भए कुठार तिनसे अज्ञानी जीवरूप वृक्षोंको काटेंगे, पंचम कालके आदिमें मनुष्यों का सात हाथका शरीर ऊंचा होयगा अर एक सौ बीस वर्षकी उत्कृष्ट आयु होयगी फिर पंचम कालके अंत दोय हाथका शरीर अर बीस वर्षकी आयु उत्कृष्ट रहेगी बहुरि छठेके अन्त एक हाथका शरीर उत्कृष्ट सोला वर्षकी आयु होगी। ते छठे कालके मनुष्य महाविरूप मांसाहारी महादुखी पाप क्रियारत महारोगी तिर्यंच समान अज्ञानी होवेंगे न कोई सम्बन्ध न कोई व्यवहार न कोई ठाकुर न कोई चाकर न राजा न प्रजा न धन न घर न सुख महादुखी होवेंगे अन्याय कामके सेवनहारे धर्मके आचारसे शून्य महा पापके स्वरूप होवेंगे जैसे कृष्णपक्षमें चंद्रमाकी कला घटे अर शुक्लपक्षमें बढे तैसे अवसर्पणी कालमें घटे उत्सर्पणीमें बढे अर जैसे दक्षिणायनमें दिन घटे अर उत्तरायनविषै बढे तैसे अवसर्पणी उत्सर्पणी दोनोंमें हानि वृद्धि जाननी। यह तीर्थंकरनिका अंतराल कहा ॥

अथानन्तर हे श्रेणिक! अब तू तीर्थंकरोंके शरीरकी ऊंचाईका कथन सुन—प्रथम तीर्थंकरका शरीर पांचसौ धनुष ५००, दूजेका साढे चार सौ धनुष ४५०, तीजेका चार सौ धनुष ४००, चौथेका साढे तीन सौ धनुष ३५०, पांचवेंका तीनसै धनुष ३००, छठेका ढाईसौ धनुष २५०, सातवेंका दो सो धनुष २००, आठवेंका डेढसौ धनुष १५०, नौवेंका सौ धनुष १००, दसवेंका नव्वे धनुष ९०, ग्यारहवेंका अस्सी धनुष ८०, बारहवेंका सत्तर धनुष ७०, तेरहवेंका साठ धनुष ६०, चौदहवेंका पचास धनुष ५०, पंद्रहवेंका पैंतालीस धनुष ४५, सोलवेंका चालीस धनुष ४०, सत्रवेंका पैंतीस धनुष ३५, अठारहवेंका तीस धनुष ३०, उन्नीसवेंका पच्चीस धनुष २५, बीसवेंका बीस धनुष २०, इकीसवेंका पन्द्रह धनुष १५, बाईसवेंका दश धनुष १०, तेइसवेंका नौ हाथ ९, चौबीसवेंका सात हाथ ७। अब आगै इन चौबीस तीर्थंकरोंकी आयु का प्रमाण कहिए है,— प्रथमका चौरासी लाख पूर्व, सो पूर्व कहा कहिए—चौरासी लाख वर्षका एक

पूर्वांग अर चौरासी लाख पूर्वांगका एक पूर्व होय है। अर दूजेका बहत्तर लाख पूर्व, तीजेका साठ लाख पूर्व, चौथेका पचास लाख पूर्व, पांचवेंका चालीस लाख पूर्व, छठेका तीस लाख पूर्व, सातवेंका बीस लाख पूर्व, आठवेंका दश लाख पूर्व, नवमेंका दोय लाख पूर्व, दशवेंका लाख पूर्व, ग्यारहवेंका चौरासी लाख वर्ष, बारवेंका बहत्तर लाख वर्ष, तेरवेंका साठ लाख वर्ष, चौदवेंका तीस लाख वर्ष, पंद्रवें का दश लाख वर्ष, सोलवेंका लाख वर्ष, सत्रवेंका पचानवे हजार वर्ष, अठारवेंका चौरासी हजार वर्ष, उन्नीसवेंका पचावन ५५ हजार वर्ष, बीसवेंका तीस हजार वर्ष, इकीसवेंका दश हजार वर्ष, बाईसवेंका हजार वर्ष, तेईसवेंका सौ वर्ष, चौबीसवेंका बहत्तर वर्षका आयु प्रमाण जानना ॥

अर ऋषभदेवके पहिले जे चौदह कुलकर भए तिनके आयुका वर्णन करिए है—प्रथम कुलकर की काय अठारहसौ धनुष, दूसरेकी तेरासौ धनुष, तीसरेकी आठसो धनुष, चौथेकी सातसो पिचत्तर धनुष, पांचवेंकी साढे सातसो धनुष, छठेकी सवासातसौ धनुष, सातवेंकी सातसो धनुष, आठवेंकी पौने सातसो धनुष, नवमेंकी साढे छैसो धनुष, दसवेंकी सवा छैसो धनुष, ग्यारवेंकी छैसो धनुष, बारवेंकी पौने छैसो धनुष, तेरवेंकी साढे पांचसौ धनुष, चौदहवेंकी सवा पांचसौ धनुष। अब इन कुलकरोंकी आयुका वर्णन करें हैं—पहिलेकी आयु पल्यका दसमा भाग, दूजेकी पल्यका सौवां भाग, तीजेकी पल्यका हजारवां भाग, चोथेकी पल्यका दस हजारवां भाग, पांचमेंकी पल्यका लाखवां भाग, छठेकी पल्यका दसलाखवां भाग, सातवेंकी पल्यका कोडवां भाग, आठवेंकी पल्यका दस कोडवां भाग, नौमेंकी पल्यका सोकोडवां भाग, दसवेंकी पल्यका हजार कोडवां भाग, ग्यारवेंकी पल्यका दस हजार कोडवां भाग, बारवेंकी पल्य का लाख कोडवां भाग, तेरवेंकी पल्यका दस लाख कोडवां भाग, चौदहवेंकी कोटि पूर्वकी आयु भई।

आगें बारह चक्रवर्तीके भवांतर कहे हैं—प्रथम चक्रवर्ती भरत श्रीऋषभदेवके यशोवती राणी ताको

नंदा हू कहे हैं ताके पुत्र भया भरतक्षेत्रका अधिपति, पूर्वभवविषे पुंडरीकनी नगरीविषे पीठ नाम राजकुमार थे। ते कुशसेन स्वामीके शिष्य होय मुनिव्रत धर सर्वार्थसिद्धि गए तहांसे चयकर षट् खण्डका राज्य कर फिर मुनि होय अंतर्मुहूर्तमें केवलज्ञान उपजाय निर्वाणको प्राप्त भए बहुरि पृथिवीपुर नामा नगरविषे राजा विजय ते यशोधर नामा मुनिके निकट जिनदीक्षा धर विजयनाम विमान गए, तहांते चयकर अयोध्याविषे राजा विजय राणी सुमंगला तिनके पुत्र सगर द्वितीय चक्रवर्ती भए, ते महाभोगकर इन्द्र समान देव विद्याधरोंसे धारीये है आज्ञा जिनकी। वे पुत्रोंके शोकसे राज्यका त्यागकर आजितनाथके समोशरणमें मुनि होय केवल उपजाय सिद्ध भए बहुरि पुंडरीकनी नामा नगरीविषे एक राजा शशिप्रभ ते विमल स्वामीका शिष्य होय ग्रैवेयक गये तहांसे चयकर श्रावस्ती नगरीमें राजा सुमित्र राणी भद्रवती तिनके पुत्र मघवा नाम तृतीय चक्रवर्ती भए। लक्ष्मीरूप बेलके लिपटनेका वृक्ष ते श्रीधर्मनाथ स्वामीके पीछे शांतिनाथके उपजनेसे पहिले भए समाधानरूप जिनमुद्रा धार सौधर्म स्वर्ग गए बहुरि चौथे चक्रवर्ती जे श्रीसनत्कुमार भए तिनकी गौतम स्वामीने बहुत बडाई करी तब राजा श्रेणिक पूछते भए। हे प्रभो! कौन पुण्यकरि ऐसे रूपवान भए तब उनका चारित्र संक्षेपताकर गणधर कहते भए कैसा है सनत्कुमारका चारित्र? जो सौ वर्षविषे भी कोऊ कहनेको समर्थ नाहीं यह जीव जब लग जैनधर्मको नहीं प्राप्त होय है तब लग तिर्यंच नारकी कुमानुष कुदेव गतिविषे दुःख भोगे है जीवोंने अनन्त भव किए सो कहां लग कहिए परन्तु कैएक भव कहिए हैं। एक गोवर्धन नामा ग्राम जहां भले भले मनुष्य बसैं तहां एक जिनदत्त नामा श्रावक बडा गृहस्थी जैसे सर्वजल स्थानकोंसे सागर शिरोमणि है अर सर्व गिरोंमें सुमेरु अर सर्व ग्रहोंविषे सूर्य, तृणोंविषे इक्षु, बेलोंविषे नागरवेल, वृक्षोंविषे हरिचन्दन प्रशंसा योग्य है तैसे कुलोंमें श्रावकका कुल सर्वोत्कृष्ट आचारकर पूजनीक है सुगतिका कारण है. सो जिनदत्त नाम

श्रावक गुण रूप आभूषणोंकर मंडित श्रावकके व्रत पाल उत्तम गतिको गया अर ताकी स्त्री विनयवती महापतिव्रता श्रावकके व्रत पालनहारी सो अपने घरकी जगहमें भगवानका चैत्यालय बनाया सकल द्रव्य तहां लगाय आर्या होय महातपकर स्वर्गमें प्राप्त भई अर ताही ग्राममें एक और हेमबाहु नामा गृहस्थ आस्तिक दुराचारसे रहित सो विनयवतीका कराया जो जिनमंदिर ताकी भक्तिकरि यक्षदेव भया सो चतुर्विधि संघकी सेवामें सावधान सम्यक्दृष्टि जिनवन्दनामें तत्पर, सो चयकर मनुष्य भया बहुरि देव बहुरि मनुष्य। या भांति भव धर महापुरी नगरीमें सुप्रभ नामा राजा ताके तिलकसुन्दरी रानी गुणरूप आभूषणकी मंजूषा ताके धर्मरुचि नामा पुत्र भया, सो राज्य तज सुप्रभ नामा पिता जो मुनि ताका शिष्य होय मुनिव्रत अंगीकार करता भया। पंच महाव्रत पंच समिति तीन गुप्तिका प्रतिपालक आत्मध्यानी गुरुसेवामें अत्यन्त तत्पर, अपनी देहविषै अत्यन्त निस्पृह, जीव दयाका धारक, मन इंद्रियोंका जीतनहारा, शीलका सुमेरु, शंका आदि जे दोष तिनसे अति दूर, साधुवोंका वैयाव्रत करनहारा, सो समाधिमरणकर चौथे देवलोकविषै गया तहां सुख भोगता भया तहांसे चयकर नागपुरमें राजा विजय राणी सहदेवी तिनके सनत्कुमार नामा पुत्र चौथा चक्रवर्ती भया। छह खण्ड पृथ्वीमें जाकी आज्ञा प्रवरती सो महारूपवान, एक दिवस सौधर्म इंद्रने इनके रूपकी अति प्रशंसा करी सो रूप देखनेको देव आए सो प्रछन्न आयकर चक्रवर्तीका रूप देखा ता समय चक्रवर्तीने कुस्तीका अभ्यास किया था सो शरीर रजकर धूसरा होय रहा था अर सुगंध उबटना लगा था अर स्नानकी एक धोती ही पहने नाना प्रकारके जे सुगंध जल तिनसे पूर्ण नानाप्रकार रत्नोंके कलश तिनके मध्य स्नानके आसनपर विराजे हुते सो देव रूपको देख आश्चर्यको प्राप्त भए परस्पर कहते भए जैसा इंद्रने वर्णन किया तैसा ही है यह मनुष्यका रूप देवोंके चित्तको मोहित करणहारा है। बहुरि चक्रवर्ती स्नानकर वस्त्राभरण पहर सिंहासन

पर आय विराजे रत्नाचलके शिखर समान है ज्योति जाकी अर वह देव प्रकट होकर द्वारे आय ठाढे रहे अर द्वारपालसे हाथ जोड चक्रवर्तीको कहलाया जो स्वर्ग लोकके देव तिहारा रूप देखने आए हैं तब चक्रवर्ती अद्भुत शृंगार किए विराजे हुते ही तब देवोंके आनेकर विशेष शोभा करी तिनको बुलाया ते आय चक्रवर्तीका रूप देख माथा धुनते भए अर कहते भए एक क्षण पहिले हमने स्नानके समय जैसा देखा था तैसा अब नहीं, मनुष्योंके शरीरकी शोभा क्षणभंगुर है, धिकार है इस असार जगतकी माया को। प्रथम दर्शनमें जो रूप यौवनकी अद्भुतता थी सो क्षणमात्रमें ऐसे विलाय गई जैसे विजुली चमत्कार कर क्षणमात्रमें विलाय जाय है ये देवोंके वचन सनत्कुमार सुन रूप अर लक्ष्मीको क्षणभंगुर जान वीतराग भावधर महामुनि होय महातप करते भए। महाऋद्धि उपजी पुनि कर्मनिर्जरा निमित्त महारोगकी परीषह सहते भए महा ध्यानारूढ होय समाधिमरणकर सनत्कुमार स्वर्ग सिधारे। वे शांतिनाथके पहिले अर मघवा तीजा चक्रवर्ती ताके पीछे भए अर पुण्डरीकनी नगरीमें राजा मेघरथ वह अपने पिता घनरथके शिष्य मुनि होय सर्वार्थसिद्धिको पधारे तहांतें चयकर हस्तनागपुरमें राजा विश्वसेन राणी ऐरा तिनके शांतिनाथ नामा सोलवें तीर्थंकर अर पंचम चक्रवर्ती भए। जगतको शांतिके करणहारे जिनका जन्म कल्याणक सुमेरु पर्वतपर इंद्रने किया बहुरि षट्खण्डके भोक्ता भए तृण समान राज्यको जान तजा मुनिव्रत धर मोक्ष गए। बहुरि कुंथुनाथ छठे चक्रवर्ती सातवें तीर्थंकर अरनाथ सतरवें चक्रवर्ती अठारवें तीर्थंकर ते मुनि होय निर्वाण पधारे सो तिनका वर्णन तीर्थंकरोंके कथनमें पहिले कहा ही है अर ध्यानपुर नगरमें राजा कनकप्रभ सो विचित्रगुप्त स्वामीके शिष्य मुनि होय स्वर्ग गए तहांतें चयकर अयोध्या नगरीमें राजा कीर्त्तिवीर्य राणी तारा तिनके सुभूमि नामा अष्टम चक्रवर्ती भए जाकरि यह भूमि शोभायमान भई तिनके पिताका मारणहारा जो परशुराम ताने क्षत्री मारे हुते अर तिनके सिर थंभनविषै

विनाए थे सो सुभूमि आतिथिका भेषकर परशुरामके भोजनको आए। परशुरामने निमित्तज्ञानीके वचन से दांतपात्रमें मेल सुभूमिको दिखाए तब दांत क्षीरका रूप होय परणये अर भोजनका पात्र चक्र होय गया ताकरि परशुरामको मारा। परशुरामने क्षत्री मार पृथ्वी निक्षत्री करी हुती सो सुभूमि परशुरामको मार द्विज वर्गसे द्वेष किया। पृथ्वी अब्राह्मण करी जैसे परशुरामके राज्यमें क्षत्रीकुल छिपाय रहे हुते तैसे याके राज्यमें विप्र अपने कुल छिपाये रहे सो स्वामी अरनाथके मुक्ति गए पीछे अर मल्लिनाथके होयवे पहिले सुभूमि भए अतिभोगासक्त निर्दयपरिणामी अब्रती मरकर सातवें नरक गए अर वीत-शोका नगरीमें राजा चित् सो सुप्रभ स्वामीके शिष्य मुनि होय ब्रह्मस्वर्ग गए तहांतें चयकर हस्तिनागपुर विषै राजा पद्मरथ राणी मयूरी तिनके महापद्म नामा नौमे चक्रवर्ती भए। षट्खण्ड पृथ्वीके भोक्ता तिन के आठ पुत्री महारूपवंती सो रूपके आतिशयसे गर्वित तिनके विवाहकी इच्छा नहीं सो विद्याधर तिन को हर ले गये सो चक्रवर्तीने छुडाय मंगाई। ये आठों ही कन्या आर्यिकाके ब्रतधर समाधिमरणकर देव लोकमें प्राप्त भई अर जे विद्याधर इनको ले गए हुते ते भी विरक्त होय मुनिब्रत धर आत्मकल्याण करते भए। यह वृत्तांत देख महापद्म चक्रवर्ती पद्म नामा पुत्रको राज्य देय विष्णु नामा पुत्रसहित वैरागी भए महातपकर केवल उपजाय मोक्षको प्राप्त भए। यह अरनाथ स्वामीके मुक्ति गए पीछे अर मल्लिनाथके उपजनेसे पहिले सुभूमिके पीछे भए अर विजय नामा नगरविषै राजा महेन्द्रदत्त, ते आभिनन्दन स्वामी के शिष्य मुनि होय महेंद्र स्वर्गको गए तहांसे चयकर कपिल नगरमें राजा हरिकेतु ताकी राणी वप्रा तिनके हरिषेण नामा दसवें चक्रवर्ती भये तिनने सर्व भरतक्षेत्रकी पृथ्वी चैत्यालयोंकर मंडित करी अर मुनिसुव्रतनाथ स्वामीके तीर्थमें मुनि होय सिद्धपदको प्राप्त भए अर राजपुर नामा नगरमें राजा जो असीकांत थे वह सुधर्ममित्र स्वामीके शिष्य मुनि होय ब्रह्मस्वर्ग गये तहांसे चयकर राजा विजय राणी

यशोवती तिनके जयसेन नामा ग्यारवें चक्रवर्ती भए। ते राज्य तज दिगम्बरी दीक्षा धर रत्नत्रयका आराधनकर सिद्ध पदको प्राप्त भए। यह श्रीमुनिसुव्रतनाथ स्वामीके मुक्ति गए पीछे नमिनाथ स्वामी के अन्तरालमें भये अर काशीपुरीमें राजा सम्भूत, ते स्वतन्त्रलिङ्ग स्वामीके शिष्य मुनि होय पद्मयुगल नामा विमानविषै देव भए तहांतें चयकर कांपिल नगरमें राजा ब्रह्मरथ राणी चूला तिनके ब्रह्मदत्त नामा बारवें चक्रवर्ती भए ते छै खण्ड पृथ्वीका राज्यकर मुनिव्रत विना रौद्रध्यानकर सातवें नरक गये। यह श्रीनेमिनाथ स्वामीको मुक्ति गये पीछे पार्श्वनाथ स्वामीके अन्तरालमें भए ये बारह चक्रवर्ती बडे पुरुष हैं, छै खण्ड पृथिवीके नाथ जिनकी आज्ञा देव विद्याधर सब ही मानै हैं। हे श्रेणिक! तोहि पुण्य पाप का फल प्रत्यक्ष कहा सो यह कथन सुनकर योग्य कार्य करना अयोग्य काम न करना जैसे बटसारी विना कोई मार्गमें चले तो सुखसे स्थानक नहीं पहुंचे तैसे सुकृत विना परलोकमें सुख न पावै कैलाशके शिखर समान जे ऊंचे महल तिनमें जो निवास करै है सो सर्व पुण्यरूप वृक्षका फल है अर जहां शीत उष्ण पवन पानीकी बाधा ऐसी कुटियोंमें बसे हैं दलिद्ररूप कीचमें फंसे हैं सो सर्व अधर्मरूप वृक्षका फल है। विन्ध्याचल पर्वतके शिखर समान ऊंचे जे गजराज उनपर चढकर सेनासहित चले हैं चंवर ढुरे हैं सो सर्व पुण्यरूप वृक्षका फल है जे महा तुरंगोंपर चमर ढुरते अर अनेक असवार पियादे जिनके चौगिर्द चले हैं सो सब पुण्यरूप राजाका चरित्र है अर देवोंके विमान समान मनोज्ञ जे रथ तिनपर चढकर जे मनुष्य गमन करै हैं सो पुण्यरूप पर्वतके मीठे नीझरने हैं अर जो फटे पग अर फाटे मैले कपडे अर पियादे फिरै हैं सो सब पापरूप वृक्षका फल है अर जो अमृत सारिखा अन्न स्वर्णके पात्रमें भोजन करै हैं सो सब धर्म रसायनका फल मुनियोंने कहा है अर जो देवोंका अधिपति इंद्र अर मनुष्योंका अधिपति चक्रवर्ती तिनका पद भव्यजीव पावै हैं सो सब जीवदयारूप बेलका फल है। कैसे हैं भव्य-

जीव ? कर्मरूप कुंजरको शार्दूल समान हैं अर राम कहिए बलभद्र केशव कहिए नारायण तिनके पद जो भव्यजीव पावै हैं सो सब धर्मका फल है॥

हे श्रेणिक ! आगे वासुदेवोंका वर्णन करिये है सो सुनि—या अवसर्पणीकालके भरतक्षेत्रके नव वासुदेव हैं प्रथम ही इनके पूर्वभवकी नगरियोंके नाम सुनो—हस्तिनागपुर १ अयोध्या २ श्रावस्ती ३ कौशांबी ४ पोदनापुर ५ शैलनगर ६ सिंहपुर ७ कौशांबी ८ हस्तनागपुर ९। ये नव ही नगर कैसे हैं ? सर्व ही द्रव्यके भरे हैं अर ईतिभीतिरहित हैं। अब वासुदेवोंके पूर्वभवके नाम सुनो—विश्वानन्दी १ पर्वत २ धनमित्र ३ सागरदत्त ४ विकट ५ प्रियमित्र ६ मानचेष्टित ७ पुनर्वसु ८ गंगदेव जिसे निर्णामिक भी कहे हैं ९। ये नव ही वासुदेवोंके जीव पूर्वभवविषै विरूप दौर्भाग्य राज्यभ्रष्ट होय हैं बहुरि मुनि होय महातप करे हैं बहुरि निदानके योगतैं स्वर्गविषै देव होय तहांसे चयकर बलभद्रके लघुभ्राता वासुदेव होय हैं तातैं तपसे निदान करना ज्ञानियोंको वार्जित है। निदान नाम भोगाभिलाषका है सो महा भयानक दुख देनेको प्रवीण है। आगे वासुदेवोंके पूर्वभवके गुरुवोंके नाम सुनो, जिनपै इन्होंने मुनिव्रत आदरे संभूत १ सुभद्र २ वसुदर्शन ३ श्रेयांस ४ भूतिसंग ५ वसुभूति ६ घोषसेन ७ परांभोधि ८ द्रुमसेन ९। अब जिस जिस स्वर्गसे आय वासुदेव भए तिनके नाम सुनो, महाशुक्र १ प्राणत २ लांतव ३ सहस्रार ४ ब्रह्म ५ महेंद्र ६ सौधर्म ७ सनत्कुमार ८ महाशुक्र ९। आगे वासुदेवोंकी जन्मपुरियोंके नाम सुनो, पोदनापुर १ द्वापुर २ हस्तनागपुर ३ बहुरि हस्तनागपुर ४ चक्रपुर ५ कुशाग्रपुर ६ मिथिलापुर ७ अयोध्या ८ मथुरा ९ ये वासुदेवोंके उत्पत्तिके नगर हैं। कैसे नगर हैं ? समस्त धन धान्य कर पूर्ण महाउत्सवके भरे हैं। आगे वासुदेवोंके पिताके नाम सुनो, प्रजापति १ ब्रह्मभूत २ रौद्रनंद ३ सौम ४ प्रख्यात ५ शिवाकर ७ दशरथ ८ वासुदेव ९ बहुरि इन नव वासुदेवोंकी मातावोंके नाम सुनो—मृगावती १ माधवी २ पृथिवी ३ सीता ४

अंबिका ५ लक्ष्मी ६ केशिनी ७ सुमित्रा ८ देवकी ९। ये नव ही वासुदेवोंकी नव माता कैसी हैं अति-रूपगुणोंकर मण्डित महा सौभाग्यवती जिनमती हैं। आगे नव वासुदेवोंके नाम सुनो—त्रिपृष्ठ १ द्विपृष्ट २ स्वयंभू ३ पुरुषोत्तम ४ पुरुषसिंह ५ पुंडरीक ६ दत्त ७ लक्ष्मण ८ कृष्ण ९। आगे नव ही वासुदेवोंकी पटराणियोंके नाम सुनो—सुप्रभा १ रूपिणी २ प्रभवा ३ मनोहरा ४ सुनेत्रा ५ विमलसुंदरी ६ आनंदवती ७ प्रभावती ८ रुक्मणी ९ ये वासुदेवोंकी मुख्य पटराणी कैसी हैं? महागुण कलानिपुण धर्मवती व्रतवती हैं।

अथानन्तर नव बलभद्रोंका वर्णन सुनो सो पाहिले नव ही बलभद्रोंकी पूर्वजन्मकी पुरियोंके नाम कहे हैं—पुंडरीकनी १ पृथिवी २ आनन्दपुरी ३ नन्दपुरी ४ वीतशोका ५ विजयपुर ६ सुसीमा ७ क्षेमा ८ हस्तनागपुर ९ और बलभद्रोंके नाम सुनो—बाल १ मारुतदेव २ नंदिमित्र ३ महाबल ४ पुरुषर्षभ ५ सुदर्शन ६ वसुधर ७ श्रीचन्द्र ८ शंख ९। अब इनके पूर्व भवके गुरुवोंके नाम सुनो जिनपै इन्होंने जिनदीक्षा आदरी। अमृतार १ महासुव्रत २ सुव्रत ३ वृषभ ४ प्रजापाल ५ दम्बर ६ सुधर्म ७ आर्णव ८ विद्रुम ९। बहुरि नव वलदेव जिन जिन देवलोकोंसे आए तिनके नाम सुनो—तीन बलभद्र तो अनुत्तर-विमानतैं आए अर तीन सहस्रार स्वर्गतैं आए दो ब्रह्मस्वर्गतैं आए एक महाशुक्रतैं आया। अब इन नव बलभद्रोंकी मातानिके नाम सुनो—क्योंकि पिता तो इन बलभद्रोंके और नारायणोंके एक ही होय हैं भद्रांभोजा १ सुभद्रा २ सुवेषा ३ सुदर्शना ४ सुप्रभा ५ विजया ६ वैजयंती ७ अपराजिता जाहि कौशिल्या भी कहे हैं ८ रोहिणी ९। नव वलभद्र नव नारायण तिनमें पांच बलभद्र पांच नारायण तो श्रेयांसनाथ स्वामीके समय आदि धर्मनाथ स्वामीके समय पर्यंत भए और छठे और सातवें अरनाथ स्वामीको मुक्ति गए मल्लिनाथ स्वामीके पाहिले भए और अष्टम बलभद्र वासुदेव मुनिसुव्रतनाथस्वामीको मुक्ति गये नेमिनाथ स्वामीके समय पाहिले भये। अर नवमे श्रीनेमिनाथके काकाके बेटे भाई महाजिन-

भक्त अद्भुत क्रियाके धारणहारे भए। अब इनके नाम सुनो—१ अचल २ विजय ३ भद्र ४ सुप्रभ ५ सुदर्शन ६ नंदिमित्र (आनंद) ७ नंदिषेण (नंदन) ८ रामचन्द्र ९ पद्म। आगे जिन महामुनियोंपै बलभद्रोंने दीक्षा धरी तिनके नाम कहिये हैं सुवर्णकुम्भ १ सत्यकीर्ति २ सुधर्म ३ मृगांक ४ श्रुतिकीर्ति ५ सुमित्र ६ भवनश्रुत ७ सुव्रत ८ सिद्धार्थ ९। यह बलभद्रोंके गुरुवोंके नाम कहे महातपके भार कर कर्मनिर्जराके करणहारे तीन लोकमें प्रकट है कीर्ति जिनकी नव बलभद्रोंके आठ तो कर्मरूप बनको भस्म कर मोक्ष प्राप्त भए। कैसा है संसार वन ? आकुलताको प्राप्त भए हैं नाना प्रकारकी व्याधि कर पीडित प्राणी जहां बहुरि वह वन काल रूप जो व्याघ्र ताकरि अति भयानक है अर कैसा है यह वन ? अनंत जन्मरूप जे कंटक वृक्ष तिनका है समूह जहां विजय बलभद्र आदि श्रीरामचन्द्र पर्यंत आठ तो सिद्ध भए और पद्मनामा जो नवमां बलभद्र वह ब्रह्मस्वर्गमें महाऋद्धिका धारी देव भया।

अब नारायणोंके शत्रु जे प्रतिनारायण तिनके नाम सुनो—अश्वग्रीव १ तारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बालि ६ प्रल्हाद ७ रावण ७ जरासिंध ९ अब इन प्रतिनारायणोंकी राजधानियोंके नाम सुनो, अलका १ विजयपुर २ नन्दनपुर ३ पृथ्वीपुर ४ हरिपुर ५ सूर्यपुर ६ सिंहपुर ७ लंका ८ राजगृही ९ ये नौ ही नगर कैसे हैं महा रत्न जडित अति देदीप्यमान स्वर्ग लोक समान है ॥

हे श्रेणिक ! प्रथम ही श्री जिनेंद्रदेवका चरित्र तुझे कहा बहुरि भरत आदि चक्रवर्तियोंका कथन कहा और नारायण बलभद्र तिनका कथन कहा इनके पूर्व जन्म सकल वृत्तांत कहे अर नव ही प्रतिनारायण तिनके नाम कहे। ये त्रैसठ शलाकाके पुरुष हैं तिनमें कैयक पुरुष तो जिन भाषित तपसे ताही भवमें मोक्षको प्राप्त होय हैं, कैयक स्वर्ग प्राप्त होय हैं पीछे मोक्ष पावै हैं अर कैयक जे वैराग्य नहीं धरे हैं चक्री तथा हरि प्रतिहरि ते कैयक भवधर फिर तपकर मोक्षको प्राप्त होय हैं ये संसारके प्राणी नानाप्रकारके

जे पाप तिनकरि मलीन मोहरूप सागरके भ्रमणमें मग्न महा दुःखरूप चार गति तिनमें भ्रमणकर तप्तायमान सदा व्याकुल होय हैं ऐसा जानकर जे निकट संसारी भव्य जीव हैं ते संसारका भ्रमण नहीं चाहै हैं मोह तिमिरका अंतकर सूर्य समान केवलज्ञानका प्रकाश करै हैं ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै चौदह कुलकर, चौवीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नव नारायण, नव प्रतिनारायण, नव बलभद्र, ग्यारह रुद्र, इनके माता पिता पूर्व भव नगरीनिके नाम पूर्व गुरु कथन नाम वर्णन करनेवाला बीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २० ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी कहै हैं—हे मगधाधिपति ! आगैं बलभद्र जो श्रीरामचन्द्र, तिनका सम्बन्ध कहिये हैं सो सुनहु—अर राजानिके वंश अर महा पुरुषनिकी उत्पत्ति, तिनका कथन कहिये हैं सो उरमें धारहु । भगवान दशम तीर्थंकर जे श्रीशीतलनाथ स्वामी तिनको मोक्ष गए पीछे कौशांबी नगरीमें एक राजा सुमुख भया अर ताही नगरमें एक श्रेष्ठी वीर ताकी स्त्री बनमाला सो अज्ञानके उदयतैं राजा सुमुखने घरमें राखी फिर विवेकको प्राप्त होय मुनियोंको दान दिया सो मरकर विद्याधर और वह बनमाला विद्याधरी भई सो ता विद्याधरने परणी एक दिवस ये दोनों क्रीडा करनेको हरिक्षेत्र गए अर वह श्रेष्ठी वीर बनमालाका पति विरहरूप अग्निकर दग्धायमान सो तपकर देवलोकको प्राप्त भया एक दिवस अवधिकर वह देव अपने बैरी सुमुखके जीवको हरिक्षेत्रमें क्रीडा करता जान क्रोधकर तहांसे भार्यासहित उठाय लाया सो या क्षेत्रमें हरि नामकरि प्रसिद्ध भया जाही कारणसे याका कुल हरिवंश कहलाया ता हरिके महागिरि नाम पुत्र भया ताके हिमगिरि ताके वसुगिरि ताके इंद्रगिरि ताके रत्नमाल ताके संभूत ताके भूतदेव इत्यादि सैकडों राजा हरिवंशविषै भए ॥

ताही हरिवंशमें कुशाग्र नामा नगरविषे एक राजा सुमित्र जगतविषे प्रसिद्ध भया। कैसा है राजा सुमित्र ? भोगोंकर इंद्र समान, कांतिकरि जीता है चंद्रमा जाने अर दीप्तिकर जीता है सूर्य अर प्रताप कर नवाए हैं शत्रु जाने। ताके राणी पद्मावती कमल सारिखे हैं नेत्र जाके, शुभ लक्षणोंसे संपूर्ण अर पूर्ण भए हैं सकल मनोरथ जाके सो रात्रिविषे मनोहर महलमें सुखरूप सेजपर सूती हुती सो पिछले पहर सोलह स्वप्न देखे—गजराज १, वृषभ २, सिंह ३, लक्ष्मी स्नान करती ४, दोय पुष्पमाला ५, चंद्रमा ६, सूर्य ७, मच्छ जलमें केलि करते ८, जलका भरा कलश, कमल समूहसे मुंह ढका ९, सरोवर कमल पूर्ण १०, समुद्र ११, सिंहासन रत्नजडित १२, स्वर्गलोकके विमान आकाशतें आवते देखे १३, अर नागकुमारके विमान पातालसे निकसते देखे १४, रत्नोंकी राशि १५, निर्धूम अग्नि १६। तब राणी पद्मावती सुबुद्धिवंती जागकर आश्चर्यरूप भया है चित्त जाका, प्रभात क्रियाकर विनयरूप भरतारके निकट आई, पतिके सिंहासनपर विराजी, फूल रहा है मुख कमल जाका, महान्यायकी वेत्ता, पतिव्रता हाथ जोड नमस्कारकर पतिसे स्वप्नोंका फल पूछती भई, तब राजा सुमित्र स्वप्नोंका फल यथार्थ कहते भए। तब ही रत्नोंकी वर्षा आकाशसे वरसती भई। साढे तीन कोटि रत्न एक सन्ध्यामें वरसे सो त्रि-काल संध्या वर्षा होती भई। पन्द्रह महीनों लग राजाके घरमें रत्नधारा वर्षी अर जे षट् कुमारिका ते समस्त परिवारसहित माताकी सेवा करती भई अर जन्म होते ही भगवानको क्षीरसागरके जलकरि इंद्र लोकपालोंसहित सुमेरु पर्वतपर स्नान करावते भए अर इन्द्रने भक्तिसे पूजा अर स्तुतिकर नमस्कार करी फिर सुमेरुसे ल्याय माताकी गोदमें पधराए। जबसे भगवान माताके गर्भमें आए तब हीतें लोक अणुव्रतरूप महाव्रतमें विशेष प्रवरते अर माता व्रतरूप होती भई तातें पृथ्वीविषे मुनिसुव्रत कहाए। अंजनगिरि समान है वर्ण जिनका, परन्तु शरीरके तेजसे सूर्यको जीतते भए अर कांतिकरि चंद्रमाको

जीतते भए सर्व भोग सामग्री इंद्रलोकतैं कुवेर लावे अर जैसा आपको मनुष्य भवमें सुख है तैसा अह-मिंद्रोंको नाहीं अर हाहा हूहू तुंवर नारद विश्वावसु इत्यादि गंधर्वोंकी जाति हैं सो सदा निकट गान करा ही करैं अर किन्नरी जातिकी देवांगना तथा स्वर्गकी अप्सरा नृत्य किया ही करैं अर वीणा वासुरी मृदंग आदि वादित्र नाना विधिके देव बजाया ही करैं अर इन्द्र सदा सेवा करैं अर आप महासुंदर यौवन अवस्थाविषै विवाह भी करते भए सो जिनके राणी अद्भुत आवती भई, अनेक गुण कला चातुर्यताकर पूर्ण हाव भाव विलास विभ्रमकी धरणहारी, सो कैयक वर्ष आप राज्य किया, मनवांछित भोग भोगे। एक दिवस शरदके मेघ विलय होते देख आप प्रतिबोधको प्राप्त भए। तब लौकांतिक देवनेंने आय स्तुति करी तब सुव्रत नाम पुत्रको राज्य देय वैरागी भए। कैसे हैं भगवान ? नहीं है काहू वस्तुकी वांछा जिनके, आप वीतराग भाव धर दिव्य स्त्रीरूप जो कमलोंका वन तहांतैं निकसे। कैसा है वह सुंदर स्त्रीरूप कमलनिका वन ? सुगंधकरि व्याप्त किया है दशों दिशाका समूह जाने, बहुरि महादिव्य जे सुगंधादिक तेई हैं मकरंद जामें और सुगंधताकर भ्रमै हैं भ्रमरोंके समूह जामैं अर हरित मणिकी जे प्रभा तिनके जो पुंज सोई हैं पत्रानिका समूह जाविषै अर दांतोंकी जो पंक्ति तिनकी जो उज्ज्वल प्रभा सोई है कमल तंतु जाविषै अर नानाप्रकार आभूषणोंके जे नाद तेई भए पक्षी उनके शब्दकरि पूरित है अर स्तनरूप जे चकवे तिनकर शोभित है अर उज्ज्वल कीर्तिरूप जे राजहंस तिनकरि मंडित है सो ऐसे अद्भुत विलास तजकर वैराग्यके अर्थ देवों पुनीत पालिकीमें चढकर विपुल नाम उद्यानविषै गए। कैसे हैं भगवान मुनिसुव्रत ? सर्व राजनिके मुकुटमाणि हैं सो वनमें पालकीतैं उतरकर अनेक राजावोंसहित जिनेश्वरी दीक्षा धरते भए। वेले पारणा करना यह प्रतिज्ञा आदरी। राजगृह नगरमें वृषभदत्त महाभक्तिकर श्रेष्ठ अन्नकर पारणा करावता भया। आप भगवान महाशक्तिकरि पूर्ण कुछ क्षुधाकी बाधासे पीडित

नाहीं परन्तु आचारांग सूत्रकी आज्ञा प्रमाण अन्तरायरहित भोजन करते भए । वृषभदत्त भगवानको आहार देय कृतार्थ भया । भगवान कैयक महीना तपकर चम्पाके वृक्षके तले शुक्लध्यानके प्रतापतें घातिया कर्मोंका नाशकर केवलज्ञानको प्राप्त भए तब इन्द्रसहित देव आयकर प्रणाम अर स्तुतिकर धर्मश्रवण करते भए । आपने यति श्रावकका धर्म विधिपूर्वक वर्णन किया । धर्म श्रवणकर कई मनुष्य मुनि भए, कई मनुष्य श्रावक भए, कई तिर्यंच श्रावकके व्रत धरते भये अर देवोंको व्रत नाहीं सो कई देव सम्यक्त्वको प्राप्त होते भए । श्रीमुनिसुव्रतनाथ धर्मतीर्थका प्रवर्तनकर सुर असुर मनुष्योंसे स्तुति करने योग्य अनेक साधुओंसहित पृथ्वीपर विहार करते भए । सम्मेदशिखर पर्वतसे लोकशिखरको प्राप्त भये । यह श्रीमुनिसुव्रतनाथका चरित्र जे प्राणी भावधर सुनें तिनके समस्त पाप नाशको प्राप्त होंय अर ज्ञान सहित तपसे परम स्थानको पावें जहांतें फेर आगमन न होय ॥

अथानन्तर मुनिसुव्रतनाथके पुत्र राजा सुव्रत बहुत काल राज्यकर दक्ष पुत्रको राज्य देय जिनदीक्षा धर मोक्षको प्राप्त भए अर दक्षके एलावर्धन पुत्र भया, ताके श्रीवृक्ष, ताके संजयंत, ताके कुणिम, ताके महारथ, ताके पुलोमई इत्यादि अनेक राजा हरिवंश कुलमें भये तिनमें कैयक मुक्तिको गए, कई एक स्वर्गलोक गये । या भांति अनेक राजा भये बहुरि याही कुलविषै एक राजा वासवकेतु भया मिथिला नगरीका पति ताके विपुला नामा पटराणी, सुंदर हैं नेत्र जाके, सो वह रानी परम लक्ष्मीका स्वरूप ताके जनक नामा पुत्र होते भये । समस्त नयोंमें प्रवीण वे राज्य पाय प्रजाको ऐसे पालते भए जैसे पिता पुत्रको पालै । गौतमस्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक ! यह जनककी उत्पत्ति तुझे कही, जनक हरिवंशी हैं ।

अब ऋषभदेवके कुलमें राजा दशरथ भए तिनका वर्णन सुन—इक्ष्वाकुवंशमें श्रीऋषभदेव निर्वाण पधारे बहुरि तिनके पुत्र भरत भी निर्वाण पधारे सो ऋषभदेवके समयसे लेकर मुनिसुव्रतनाथके समय

पर्यंत बहुत काल बीता, तामें असंख्य राजा भए। कैयक तो महादुर्द्धर तपकर निर्वाणको प्राप्त भए कैइ एक अहमिंद्र भए, कैयक इंद्रादिक बडी ऋद्धिके धारी देव भए, कैयक पापके उदयकर नरकमें गए, हे श्रेणिक! या संसारमें अज्ञानी जीव चक्रकी नाईं भ्रमण करै हैं, कबहू स्वर्गादिक भोग पावै हैं तिनविषै मग्न होय क्रीडा करै हैं, कैयक पापी जीव नरक निगोदमें क्लेश भोगै हैं। ये प्राणी पुण्य पापके उदयतें अनादि कालके भ्रमण करै हैं। कबहूं कष्ट, कबहूं उत्सव। यदि विचार करके देखिये तो दुःख मेरुसमान सुख राई समान है। कैयक द्रव्यरहित क्लेश भोगवै हैं, कैयक बाल अवस्थामें मरण करै हैं, कैयक शोक करै हैं, कैयक रुदन करै हैं, कैयक विवाद करै हैं, कैयक पढै हैं, कैयक पराई रक्षा करै हैं, कैयक पापी बाधा करै हैं, कैयक गरजै हैं, कैयक गान करै हैं, कैयक पराई सेवा करै हैं, कैयक भार वहै हैं, कैयक शयन करै हैं, कैयक पराई निंदा करै हैं, कैयक केलि करै हैं, कैयक युद्धकरि शत्रुओंको जीतै हैं, कैयक शत्रुको पकड छोड देय हैं, कैयक कायर युद्धको देख भागै हैं, कैयक शूरवीर पृथ्वीका राज्य करै हैं, विलास करै हैं बहुरि राज्य तज वैराग्य धारै हैं, कैयक पापी हिंसा करै हैं, परद्रव्यकी बांछा करै हैं, परद्रव्यको हरै हैं, दौडै हैं, कूट कपट करै हैं, ते नरकमें पडै हैं अर जे कैयक लज्जा धारै हैं, शील पालै हैं, करुणाभाव धरै हैं, परद्रव्य तजै हैं, वीतरागताको भजै हैं, संतोष धारै हैं, प्राणियोंको साता उपजावै हैं, ते स्वर्ग पाय परंपराय मोक्ष पावै हैं, जे दान करै हैं, तप करै हैं, अशुभ क्रियाका त्याग करै हैं, जिनेन्द्रकी अर्चा करै हैं, जैनशास्त्रकी चर्चा करै हैं, सब जीवोंसे मित्रता करै हैं, विवेकियोंका विनय करै हैं ते उत्तम पद पावै हैं, कैयक क्रोध करै हैं, काम सेवै हैं, राग द्वेष मोहके वशीभूत हैं, परजीवोंको ठगै हैं, ते भवसागरमें डूबै हैं, नाना विध नाचै हैं, जगतमें राचै हैं, खेद खिन्न हैं, दीर्घ शोक करै हैं, झगडा करे हैं, संताप करै हैं, असि मसि कृषि वाणिज्यादि व्यापार करै हैं, ज्योतिष वैद्यक यंत्र मंत्रादिक करै हैं, शृंगा-

रादि शास्त्र रचे हैं ते वृथा पच पचकर मरे हैं इत्यादि शुभाशुभ कर्मसे आत्मधर्मको भूल रहे हैं। संसारी जीव चतुर्गतिमें भ्रमण करै हैं। या अवसर्पणी कालविषै आयु काय घटती जाय है, श्रीमल्लिनाथके मुक्ति गए पीछे मुनिसुव्रतनाथके अंतरालमें या क्षेत्रमें अयोध्या नगरीविषै एक विजय नामा राजा भया, महा शूरवीर प्रतापकरि संयुक्त, प्रजा पालनमें प्रवीण, जीते हैं समस्त शत्रु जाने, ताके हेमचूलनी नामा पटराणी, ताके महागुणवान सुरेन्द्रमन्यु नामा पुत्र भया, ताके कीर्तिसमा नामा राणी, ताके दोय पुत्र भए एक वज्रबाहु दूजा पुरंदर, चंद्र सूर्य समान है कांति जिनकी महागुणवान अर्थसंयुक्त है नाम जिनके, ते दोनों भाई पृथ्वीपर सुखसों रमते भए। ये तो कथन यहां रह्या॥

अथानन्तर हस्तिनागपुरमें एक राजा इन्द्रवाहन ताके राणी चूडामणी, ताके पुत्री मनोदया अतिसुंदरी सो वज्रबाहु कुमारने परणी सो कन्याका भाई उदयसुन्दर बाहिनको लेनेको आया सो बज्रबाहु कुमारका स्त्रीसे अति प्रेम हुता, स्त्री अति सुंदरी सो कुमार स्त्रीके लार सासरे चले। मार्गमें बसंतका समय था अर बसंतागिरि पर्वतके समीप आय निकसे ज्यों ज्यों वह पहाड निकट आवै त्यों त्यों ताकी परम शोभा देख कुमार अति हर्षको प्राप्त भए, पुष्पोंकी जो मकरन्दता उससे मिली सुगंध पवन सो कुमारके शरीरसूं सपरसी, ताकरि ऐसा सुख भया जैसे बहुत दिनके बिछुरे मित्रसों मिले सुख होय। कोकिलानिके मिष्ट शब्दकरि हर्षित भया है जैसे जीत शब्द सुने हर्ष होय। पवनकरि हाले हैं वृक्षानिके अग्रभाग, सो मानों पर्वत वज्रबाहुका सन्मान ही करै है। अर भ्रमर गुंजार करै हैं सो मानों वीनका नाद ही होय है। वज्रबाहुका मन प्रसन्न भया। बज्रबाहु पहाडकी शोभा देखै है—यह आम्रवृक्ष, यह कर्णिकारजानिका वृक्ष, यह रौद्र जातिका वृक्ष, फूलनिकरि मंडित यह प्रवालवृक्ष, यह पलासका वृक्ष, अग्नि समान देदीप्यमान हैं पुष्प जाके।

वृक्षनिकी शोभा देखते देखते राजकुमारकी दृष्टि मुनिराज पर परी। देखि कर विचारता भया। यह थंभ है अथवा पर्वतका शिखर है अथवा मुनि है। कायोत्सर्ग धरि खडे जो मुनि, तिनीविषै वज्रवाहुके ऐसा विचार भया। कैसे हैं मुनि? जिनकूं ठूठ जानिकरि जिनके शरीरतैं मृग खाज ही खुजावैं हैं। जब निपट निकट गया तब निश्चय भया जो ये महायोगीश्वर देव या अवस्थाकों धरैं हैं, कायोत्सर्ग ध्यान धरें स्थिररूप खडे हैं। सूर्य किरणकरि सपरस्या है मुखकमल जिनका अर महासर्पके समान देदीप्यमान भुजा, तिनकों लम्बाए ऊभे हैं। सुमेरुका तट समान सुंदर है वक्षस्थल जिनका, अर दिग्गजनिके बांधिवेके थंभ, तिन समान अचल हैं जंघा जिनकी, तपकरि क्षीण शरीर हैं परंतु कांतिकर पुष्ट दीखैं हैं। नासिकाके अग्रभाग पर लगाये हैं निश्चल सौम्य नेत्र जिनने, आत्माको एकाग्र ध्यावे हैं। ऐसा मुनिको देख कर राजकुमार चिंतवता भया—अहो! धन्य हैं ये मुनि, महा शांतभावके धारक जो समस्त परिग्रहको तजकर मोक्षाभिलाषी हो तप करैं हैं। इनकूं निर्वाण निकट है। कल्याणविषै बुद्धि जिनकी, परजीवनिकूं पीडा देवेतैं निर्वृत्त भया है आत्मा जिनका, अर मुनि पदकी क्रियाकरि मंडित हैं, जिनके शत्रु मित्र समान, अर रत्न तृण समान, मान मत्सरतैं रहित है मन जिनका, वश किये हैं पांच इंद्रिय जाने, निश्चल पर्वत समान, वीतराग भाव, जिनकूं देखैं जीवनिका कल्याण होइ, या मनुष्य देहका फल इन ही पाया। ये विषय कषायनिकरि न डिगाये। कैसे हैं विषय कषाय? महाक्रूर हैं, अर मलिनताके कारण है। मैं पापी कर्मपाशकरि निरंतर वेढ्या, जैसे चंदनका वृक्ष सर्पनिकरि वेष्टित होय, मैं पापी, असावधानचित्त अचेतनसम होय रह्या हों। धिक्कार मोकों मैं भोगादिरूप जो महापर्वत, ताके शिखरपर निद्रा करूं हूं सो नीचा परूंहूंगा। जो या निर्ग्रंथ कैसी अवस्था धरूं तो मेरा जन्म कृतार्थ हो। ऐसा चिंतवन करते वज्रवाहुकी दृष्टि मुनिनाथविषै अत्यंत निश्चल भई। मानो थंभतैं बांधा। तब याका उदयसुंदर साला

याकूं निश्चल दृष्टि देख मुलकता संता सुहास्यके वचन कहता भया–मुनिकी ओर अत्यंत निश्चल होय निरखो हो सो दिगम्बरी दीक्षा धरोगे ? तब वज्रवाहु बोले–जो हमारा भाव था सो तुम प्रगट कीया। अब तुम्हारे भावकी वार्ता कहो। तब वह याकूं रागी जान हास्यरूप बोल्या तुम दीक्षा धरोगे तो मैं भी धरोंगा। परंतु दीक्षातैं तुम अत्यंत उदास होउगे। तब वज्रबाहु बोले–यह तौ ऐसे ही भई। यह कह करि विवाहके आभूषण उतारे अर हाथीतैं उतरे। तब मृगनैनी स्त्री रोवने लगी, अथल मोती समान अश्रूपात डारती भई। तब उदयसुन्दर आंसू डारि कहता भया–हे देव! यह हास्यमें कहा विपरीत करो हो ? तब वज्रबाहु अतिमधुर वचनकरि ताकों शांतता उपजावते संते कहते भये–हे कल्याणरूप! तुम समान उपकारी को है। मैं कूपमें पड्या था सो तुम राख्या। तुम समान मेरे तीन लोकमें मित्र नाहीं। हे उदयसुन्दर! जो जनम्या है सो अवश्य मरेगा अर मुवा है सो अवश्य जन्मेगा। ये जन्म अर मरण अरहटकी घडी समान हैं। तिनमें संसारी जीव निरंतर भ्रमें हैं। यह जीतव्य विजुलीके चमत्कार समान तथा जलकी तरंग समान तथा दुष्ट सर्पकी जिह्वा समान चंचल है। ये जगतके जीव दुख सागरमें डूब रहे हैं। ये संसारके भोग असार हैं। जलके बूंद समान यह काया है। सांझके रंग समान यह जगतका स्नेह है। अर यह यौवन फूल समान कुम्हलाय जाय है। यह तुम्हारा हंसना भी हमकूं अमृत समान कल्याणरूप भया। कहा हास्यकरि? जो औषधिकूं पीवै तो रोगको हरै, अवश्य हरै है। तुम हमको मोक्षमार्गके उद्यमके सहायी भये। तुम समान और हमारे हितू नाहीं। मैं संसारके आचारविषै आसक्त होय रह्या था वीतरागभावको प्राप्त भया। अब मैं जिनदीक्षा धरूं हूं। तुम्हारी इच्छा होय सो करहु। ऐसा कहि करि सर्व परिवारसों क्षमाकरि गुणसागर नामा मुनि, तप ही है धरम जिनके, तिनके निकट जाय, चरणारविंदको नमस्कार करि विनयवान होय कहता भया–हे स्वामी तिहारे प्रसादकरि मन मेरा पवित्र

भया अब मैं संसाररूप कीचतैं निकस्या चाहूं हूं। तब याके वचन सुनि गुरु आज्ञा दई। तुमको भवसागर पार करणहारी यह भगवती दीक्षा है। कैसे हैं गुरु? सप्तम गुणस्थानतैं छठे गुणस्थान आए हैं। यह गुरुकी आज्ञा उरमें धारी। वस्त्र आभूषणका त्यागकरि पल्यंकासनधारि पल्लव समान अपने कर तिनकरि केशनिका लोंच करता भया। या देहकूं विनश्वर जानि देहसूं नेह ताजि राजपुत्रीको अर राग अवस्थाको ताजि मोक्षकी देनहारी जिनदीक्षा अंगीकार करता भया अर उदयसुन्दरको आदि देय छब्बीस राजकुमार जिनदीक्षा धरते भए। कैसे हैं वे कुमार? कामदेवकासा है रूप जिनका, तजे हैं राग, द्वेष, मद, मत्सर जिनने, उपजा है वैराग्यका अनुराग जिनके, परम उत्साहके भरे, नग्नमुद्रा धरते भए। अर यह वृत्तांत देख वज्रबाहुकी स्त्री मनोदया पतिके अर भाईके स्नेहकरि मोहित हुती सो मोह ताजि आर्यिकाके व्रत धरती भई। सर्व वस्त्र भूषण ताजि एक सुफेद साडी धरती भई। महातप व्रत आदरे। यह वज्रबाहुकी कथा, याका दादा जो राजा विजय ताने सुनी, सभाके मध्य बैठा हुता, शोककरि पीडित होय विचारता भया मो सारिखा मूर्ख विषयका लोलुपी वृद्ध अवस्थाविषै भी भोगनिको न तजता भया। सो कुमारनें कैसे तजे? अथवा वह महा भोग जो भोगनिकूं तृणवत् तजकर मोक्षके निमित्त शांत भाव विषैं तिष्ठा। मैं मंद भाग्य जराकर पीडित इन पापी विषयानिने मोहि चिरकाल ठग्या। कैसे हैं ये विषय? देखते सुंदर अर फल इनके अति कटुक। मेरे इंद्र नीलमणि श्याम केशनिका समूह हुता सो कफकी राशि समान श्वेत हो गए। जो यौवन अवस्थाविषै मेरे नेत्र श्यामता श्वेतता अरुणता लिए अति मनोहर हुते, ते अब ठंढे परि गए। अर मेरा शरीर अतिदेदीप्यमान, शोभायमान, महाबलवान, स्वरूप था सो अब वृद्ध अवस्थाविषै वर्षाकरि हन्या जो चित्राम ता समान होइ गया। धर्म अर्थ काम तरुण अवस्थाविषै भली सधै सो जराकरि मंडित जे प्राणी तिनकरि सधना विषम है। धिकार! मो पापी दुराचारी प्रमादी

कूं, जो मैं चेतनथका अचेतना दासी आदरी। यह झूंठा घर झूंठी माया, ये झूंठे बांधव झूंठा परिवार तिनके स्नेहकरि भवसागरके भंवरमें भ्रम्या। ऐसा कहिकरि सर्वपरिवारसों क्षमाकर छोटा पोता जो पुरंदर, ताहि राज्य दे अपने पुत्र सुरेन्द्रमन्युसहित राजा विजय वृद्ध अवस्थाविषै निर्वाणबोध स्वामीके समीप जिनदीक्षा आदरी। कैसा है राजा पुरंदर ? उदार है मन जाका।

अथानन्तर राजा पुरंदरके गुणानिका राज्यका वर्णन करै हैं, वैराग्यका कारण कहै हैं। सो गुणनिका सागर पृथ्वीविषै विख्यात, अनुक्रमकरि बहुविनयवान यौवनको प्राप्त भया। सर्व कुटुम्बको आनंद बढावता संता, अपनी सुंदर चेष्टाकरि सबानिको प्रिय भया। तब राजा पुरंदर अपने पुत्रको राजा कौशलकी पुत्री परणाई अर याको राज्य देय राजा पुरंदर गुण ही है आभूषण जाके, क्षेमंकर मुनिके समीप मुनिव्रत धरे, कर्म निर्जराके कारण महातप आरम्भ्या। अथानन्तर राजा कीर्तिधरके वैराग्यका कारण कहै हैं—

देवानि समान उत्तम भोग भोगवता रमता भया। एक दिवस राजा कीर्तिधर प्रजाका बंधु, जे प्रजाके बाधक शत्रु तिनको भयंकर, सिंहासन विराजे हुते, जैसे इंद्र विराजे तैसे। सो सूर्यग्रहण देखि चित्तमें चिंतवते भए—देखो ! यह सूर्य ज्योतिका मण्डल, राहुके विमानके योगकरि श्याम होय गया। सो यह सूर्य प्रतापका स्वामी, अंधकारको मेंट प्रकाश करै है। अर जाके प्रतापकरि चंद्रमाका बिम्ब कांतिरहित भासै है। अर कमलनिके वनको प्रफुल्लित करै है। सो राहुके विमानकरि मंदकांति भासै है। उदय होता ही सूर्य ज्योतिरूपरहित होय गया। तातैं संसारकी दशा अनित्य है, ये जगतके जीव विषयाभिलाषी, रंक समान मोहपाशतैं बंधे अवश्य कालके मुख परेंगे। ऐसा विचारकर यह महाभाग्य संसारकी अवस्था क्षणभंगुर जान, मंत्री, पुरोहित, सामंतनिसूं कहता भया—यह समुद्र पर्यंत पृथ्वीका

राज्य तुम भली भांति रक्षा करियो। मैं मुनिके व्रत धरूं हूं, तब सब ही विनती करते भए। हे प्रभो! तुम विना यह पृथ्वी हमतें दबै नाहीं, तुम शत्रुनिके जीतनहारे हो। लोकनिके रक्षक हो। तुम्हारी वय भी नवयौवन है। तातैं यह इंद्र तुल्य राज्य कैयक दिन करहु। या राज्यके आद्वितीय पति तुम ही हो। यह पृथ्वी तुम हीतैं शोभायमान है। तब राजा बोले—यह संसार अटवी आति दीर्घ है, याहि देखि मोहि अति भय उपजा है कैसी है यह भवरूप अटवी? अनेक दुख तेई हैं फल जिनके ऐसे कर्मरूप वृक्ष, तिन करि भरी है। अर जन्म जरा मरण रोग शोक रति अर इष्टवियोग अनिष्ट संयोगरूप अग्निकर प्रज्वलित है। तब मंत्रीनिने राजाके परिणाम विरक्त जान बुझे अंगारानिके समूह आय धरे। जब वे कोयला नीकित लागे तब मंत्रीनिने राजासों विनती करी—हे देव! जैसे ये काष्ठके कोयला अग्नि विना न शोभैं तैसे तुम विना सब ही न शोभैं। हे नाथ! तुम विना ये प्रजाके लोक, अनाथ मारे जायेंगे। अर लूटे जांइगे अर प्रजाके नष्ट होते धर्मका अभाव होइगा। तातैं जैसे तिहारा पिता तुमको राज्य देय मुनि भया तैसे तुमहू अपने पुत्रको राज्य देय जिनदीक्षा धरहु। या भांति प्रधान पुरुषनिने विनती करी। तब राजा यह नियम किया जो मैं पुत्रका जन्म सुनूं ताही दिन मुनिव्रत धरूं। यह प्रतिज्ञाकरि इंद्र समान भोग भोगता प्रजाको साता उपजावता राज्य किया। जाके राज्यमें काहू भांति भी प्रजाको भय न उपजा। कैसा है राजा? समाधानरूप है चित्त जाका। एक समय राणी सहदेवी राजासहित शयन करती हुती, सो ताको गर्भ रह्या। कैसा है पुत्र गर्भमें आया? संपूर्ण गुणनिका पात्र अर पृथ्वीके प्रतिपालनेकूं समर्थ सो पुत्रका जन्म भया। तब राणी पतिके वैराग्य होनेके भयतें पुत्रका जन्म प्रकट न किया। कैयक दिवस वार्ता गोप्य राखी। सो सूर्यके उदयको कोऊ छिपाय न सकै। तैसे राजाके पुत्रका जन्म कैसे छिपै। कोऊ मनुष्य दरिद्री ताने द्रव्यके लोभके अर्थ राजासों प्रकट किया। तब राजा ताको मुकुट आदि सर्व

आभूषण अंगतैं उतार दिए। अर घोषशाखा नाम नगर महारमणीक अति धनकी उत्पत्तिका स्थान सो गांवनिसहित दिया। अर पुत्र पन्द्रह दिनका माताकी गोदमें तिष्ठै था सो राजातिलककरि ताको राज पद दिया। जातैं नगरी अयोध्या अति रमणीक होती भई। अर अयोध्याका नाम कोशला भी है तातैं वाका सुकोशल नाम प्रसिद्ध भया। कैसा है सुकोशल? सुंदर है चेष्टा जाकी। सुकोशलको राज्य देय राजा कीर्तिधर घररूप बंदीगृहतैं निकासिकरि तपोवनको गए। मुनिव्रत आदरे। तपकरि उपजा जो तेज ताकरि राजा कैसे शोभते भए, जैसे मेघमण्डलतैं रहित सूर्य शोभै॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राजा कीर्तिधरका दीक्षाग्रहण अर सुकोशल पुत्रको राज्याभिषेक वर्णन करनेवाला इकीसवा पर्व पूर्ण भया॥ २१॥

अथानंतर दूर भया है मान मत्सर जिनका अर उदार है चित्त जिनका, तपकरि सोष्या है सर्व अंग अर लोच ही है सर्व आभूषण जिनका प्रालंबित है महाबाहु अर जूड प्रमाण धरती देख अधोदृष्टि गमन करै हैं। जैसे मत्त गजेंद्र मंद मंद करै तैसे जीव दयाके अर्थि धीरा धीरा गमन करै हैं सर्व विकाररहित, महासावधानी ज्ञानी महाविनयवान लोभरहित पंचाचार पालनहारे जीवदयाकारि विमल है चित्त जिनका, सनेहरूप कर्दमतैं रहित, स्नानादि शरीर संस्कारतैं रहित मुनिपदकी शोभाकरि मंडित सो आहारके निमित्त बहुत दिननिके उपवास, नगरमें प्रवेश करते भये। तिनको देखकरि पापिनी सहदेवी मनमें विचारती भई—मानो इनको देख मेरा पुत्र वैराग्य प्राप्त होइ। तब महाक्रोधकरि लाल होय गया है मुख जाका, दुष्टचित्त द्वारपालसों कहती भई—यह जन नगन महामलिन घरका खोड है। याहि नगरतैं निकास देहु। बहुरि नगरमें न आवने पावै। मेरा पुत्र सुकुमार है, भोरा है, कोमलचित्त है। सो याहि

देखवे न पावै। या सिवा और हू यति हमारे द्वार आवने न पावैं। रे द्वारपाल! या वातमें चुप करी तो मैं तिहारा निग्रह करूंगी यह दयारहित बालक पुत्रकूं तजकरि गया। तबतैं या भेषका मेरे आदर नाहीं। यह राज्यलक्ष्मी निंदै है। अर लोगनिको वैराग्य प्राप्त करै है। भोग छोडाय जोग सिखावै है। ऐसे वचन कहे तब वे क्रूर द्वारपाल, वेंतकी छडी है जिनके हाथमें, मुनिकों मुखतैं दुर्वचन कहि नगरतैं निकासि दिये। अर आहारकूं और हू साधु नगरमें आये हुते तेहू निकासि दिये। मति कदाचित् मेरा पुत्र धर्म श्रवण करै। या भांति अविनय देखि राजा सुकोशलकी धाय महाशोककरि रुदन करती भई। तब राजा सुकोशल धायको रोवती देख कहते भए 'हे मात! तेरा अपमान करै ऐसा कौन? माता तो मेरे गर्भधारणमात्र है। अर तेरे दुग्धकरि मेरा शरीर वृद्धिको प्राप्त भया। मेरे तो माताहूतें अधिक है। मृत्युके मुखमें प्रवेश कीया चाहे सो तोहि दुःख देवै है। जो मेरी माताहूने तेरा अनादर कीया होय तो मैं वाहीका अविनय करूं, औरनिकी कहा वात? तब वसंतमाला धाय कहती भई—हे राजन्! तेरा पिता तोहि बाल्य अवस्थामें राज्य देय संसाररूप कष्टके पींजरेतैं भयभीत होइ तपोवनकूं गये। आज या नगरमें आहारकों आवते हुते सो तिहारी माताने द्वारपालनिसों आज्ञा करि नगरतैं काढे। हे पुत्र! वे हमारे सवनिके स्वामी उनका अविनय न देख सकी। तातैं मैं रुदन करूं हूं। अर तिहारी कृपातैं मेरा अपमान कौन करै। अर साधुनिकों देख मति मेरा पुत्र ज्ञानकों प्राप्त होय ऐसा जानि मुनिनिका प्रवेश नगरतैं निवारथा सो तिहारे गोत्रविषै यह धर्म परंपरायसे चला आया है—जो पुत्रको राज्य देय पिता वैराग्य होय। अर तिहारे घरसे आहार विना कभी भी साधु पाछे न गए। यह वृत्तांत सुन राजा सुकोशल मुनिके दर्शनको महलसे उतरि चमर छत्र बाहन इत्यादि राजचिह्न तज कर कमलहूतैं अति कोमल जो चरण सो उवाणे ही मुनिके दर्शनको दौडे अर लोकोंको पूछते जावें तुमने मुनि देखे तुमने मुनि देखे

या भांति परम अभिलाषासंयुक्त अपने पिता जो कीर्तिधर मुनि तिनके समीप गये अर इनके पीछे छत्र चमर वारे सब दौडे ही गए, महामुनि उद्यानविषै शिला पर विराजे हुते सो राजा सुकौशल अश्रुपात कर पूर्ण हैं नेत्र जाके शुभ है भावना जाकी, हाथ जोड नमस्कार कर बहुत विनयसे मुनिके आगे खडे द्वारपालनिने द्वारसे निकासे थे सो ताकर अतिलज्जावंत होय महामुनिसों विनती करते भए—हे नाथ ! जैसे कोई पुरुष अग्नि प्रज्वलित घरमें सूता होवै ताहि कोऊ मेघके नाद समान ऊंचा शब्द कर जगावे तैसे संसाररूप गृहजन्म मृत्युरूप अग्निसे प्रज्वलित ता विषै मैं मोहनिद्राकरि युक्त शयन करूं था सो मोहि आपने जगाया । अब कृपाकर यह तिहारी दिगम्बरी दीक्षा मोहि देहु यह कष्टका सागर संसार तासे मोहि उबारहु जब ऐसे वचन मुनिसे राजा सुकौशलने कहे तब ही समस्त सामन्त लोक आए और राणी विचित्रमाला गर्भवती हुती सो हू अति कष्ट विषादसहित समस्त राजलोकसहित आई । इनको दीक्षाकेलिये उद्यमी सुन सब ही अन्तःपुरके अर प्रजाके शोक उपजा तब राजा सुकौशल कहते भये या राणी विचित्रमालाके गर्भविषै पुत्र है ताहि मैं राज्य दिया ऐसा कहकर निस्पृह भए आशा रूप फांसीको छेद स्नेहरूप जो पींजरा ताहि तोड स्त्रीरूप बंधनसे छूट जीर्ण तृणवत् राज्यको जान तजा और वस्त्राभूषण सब ही तज वाह्याभ्यंतर परिग्रहका त्याग करके केशनिका लोंच किया अर पद्मासनधार तिष्ठे । कीर्तिधर मुनींद्र इनके पिता तिनके निकट जिनदीक्षा धरी पंचमहाव्रत पांच समिति तीन गुप्ति अंगीकार कर सुकौशलमुनिके गुरुके संग विहार किया । कमल समान आरक्त जो चरण तिनकरि पृथिवीको शोभायमान करते संते विहार करते भए अर इनकी माता सहदेवी आर्तध्यानकर मरके तिर्यंच योनिमें नाहरी भई अर ए पिता पुत्र दोनों मुनि महाविरक्त जिनको एक स्थानक रहना पिछले पहर दिनसूं निर्जन प्रासुक स्थान देख बैठ रहें अर चातुर्मासिकमें साधुवोंको विहार न करना सो चातुर्मासिक

जान एक स्थान बैठ रहे । दशों दिशाको श्याम करता संता चातुरमासिक पृथिवीविषै प्रवर्ता, आकाश मेघमालाके समूहकरि ऐसा शोभै मानों काजलसे लिपा है अर कहूं एक बगुलावोंकी पंक्ति उडती ऐसी सोहै मानों कुमुद फूल रहे हैं अर ठौर ठौर कमल फूल रहे हैं जिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानों वर्षा कालरूप राजाके यश ही गावे हैं अंजनागिरि समान महानील जो अंधकार ताकरि जगत् व्याप्त हो गया, मेघके गाजनेसे मानों चांद सूर्य डर कर छिप गए, अखण्ड जलकी धारासे पृथिवी सजल हो गई और तृण ऊग उठे सो मानों पृथिवी हर्षके अंकुर धरें है अर जलके प्रवाहकरि पृथ्वीमें नीचा ऊंचा स्थल नजर न आवे अर पृथ्वीविषै जलके समूह गाजे हैं अर आकाशविषै मेघ गाजे हैं सो मानों ज्येष्ठका समय जो वैरी ताहि जीतकर गाज रहे हैं अर धरती नीझरनोंसे शोभित भई भांति भांतिकी बनस्पति पृथ्वीविषै उगी सो ताकरि पृथिवी ऐसी शोभै है मानों हरित मणिके बिछोना कर राखे हैं, पृथिवीविषै सर्वत्र जल ही जल हो रहा है मानों मेघ ही जलके भारसे टूट पडे हैं अर ठौर ठौर इन्द्रगोप अर्थात् वीरवहूटी दीखै हैं सो मानों वैराग्य रूप वज्रसे चूर्ण भए रागके खण्ड ही पृथिवीविषै फैल रहे हैं अर विजलीका तेज सर्व दिशा विषै विचरै है सो मानों मेघ नेत्रकर जलपूरित तथा अपूरित स्थानकको देखै है और नानाप्रकारके रंगको धरे जो इन्द्रधनुष ताकरि मण्डित आकाश ऐसा शोभता भया मानों अति ऊंचे तोरणों कर युक्त है अर दोनों पालि ढाहती महा भयानक भ्रमणको धरैं अतिवेगकर युक्त कलुषतासंयुक्त नदी बहै हैं सो मानों मर्यादारहित स्वछन्द स्त्रीके स्वरूपको आचरे हैं अर मेघके शब्दकर त्रासको प्राप्त भई जे मृगनयनी विरहिणी ते स्तम्भनसूं स्पर्श करे हैं अर महाविह्वल हैं पतिके आवनेकी आशाविषै लगाए हैं नेत्र जिनने । ऐसे वर्षाकालविषै जीवदयाके पालनहारे महाशांत अनेक निर्ग्रंथ मुनि प्रासुक स्थानक विषै चौमासा लेय तिष्ठे अर जे गृहस्थी श्रावक साधु सेवाविषै तत्पर ते भी चार महीना गमनका त्याग

कर नानाप्रकारके नियम धर तिष्ठे । ऐसे मेघकर व्याप्त वर्षाकालविषै वे पिता पुत्र यथार्थ आचारके आचरनहारे प्रेतवन कहिये श्मसान ताविषै चार महीना उपवास धर वृक्षके तले विराजे कभी पद्मासन कभी कायोत्सर्ग कभी बीरासन आदि अनेक आसन धर चातुर्मास पूर्ण किया । कैसा है वह प्रेतवन ? वृक्षोंके अन्धकार कर महागहन है अर सिंह व्याघ्र रीछ स्याल सर्प इत्यादि अनेक दुष्ट जीवनिसे भरा है, भयंकर जीवोंको भी भयकारी महा विषम है गीध सिचाना चील इत्यादि जीवोंकर पूर्ण हो रहा है अर्धदग्ध मृतकोंका स्थानक महा भयानक विषम भूमि मनुष्योंके सिरके कपालके समूहकर जहां पृथिवी श्वेत हो रही है और दुष्ट शब्द करते पिशाचोंके समूह विचरै हैं अर जहां तृणजाल कंटक बहुत हैं सो ये पिता पुत्र दोनों धीरवीर पवित्र मन चार महीना तहां पूर्ण करते भए ।

अथानन्तर वर्षाऋतु गई शरद ऋतु आई सो मानों रात्रि पूर्ण भई प्रभात भया कैसा है प्रभात ? जगतके प्रकाश करनेमें प्रवीण है शरदके समय आकाशमें बादल श्वेत प्रगट भए अर सूर्य मेघ पटल रहित कांतिसे प्रकाशमान भया जैसे उत्सर्पणी कालका जो दुःखमा काल ताके अन्तमें दुखमा सुखमाके आदि ही श्रीजिनेंद्रदेव प्रकट होंय अर चंद्रमा रात्रिविषै ताराओंके समूहके मध्य शोभता भया जैसे सरोवरके मध्य तरुण राजहंस शोभै अर रात्रिमें चंद्रमाकी चांदनीकर पृथ्वी उज्ज्वल भई सो मानों क्षीर-सागर ही पृथ्वीमें विस्तर रहा है अर नदी निर्मल भई कुरचि सारस चकवा आदि पक्षी सुंदर शब्द करने लगे अर सरोवरमें कमल फूले जिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर उडे हैं सो मानों भव्यजीवोंने मिथ्यात्व परिणाम तजे हैं सो उडते फिरे हैं (भावार्थ) मिथ्यात्वका स्वरूप श्याम अर भ्रमरका भी स्वरूप श्याम। अनेक प्रकार सुगन्धका है प्रचार जहां ऐसे जे ऊंचे महल तिनके निवासमें रात्रिके समय लोक निज प्रियावोंसहित क्रीडा करे हैं शरद ऋतुमें मनुष्योंके समूह महाउत्सवकर प्रवरते हैं, सन्मान किया है मित्र

बान्धवोंका। जहां अर जो स्त्री पीहर गई तिनका सासरे आगमन होय है, ॥ कार्तिक सुदी पूर्णमासीके व्यतीत भए पीछे तपोधन जे मुनि ते तीर्थोंमें विहार करते भए तब ये पिता अर पुत्र कीर्तिधर सुकौशल मुनि समाप्त भया है नियम जिनका, शास्त्रोक्त ईर्या समितिसहित पारणाके निमित्त नगरकी ओर विहार करते भए अर वह सहदेवी सुकौशलकी माता मरकर नाहरी भई हुती सो पापिनी महाक्रोधकी भरी लोहूकर लाल हैं केशोंके समूह जाके, विकराल है वदन जाका, तीक्ष्ण हैं दांत जाके, कषायरूप पीत हैं नेत्र जाके सिरपर धरी है पूंछ जाने, नखोंकर विदारे हैं अनेक जीव जाने अर किए हैं भयंकर शब्द जाने मानों मरी ही शरीर धर आई है, लहलहाट करे है लाल जीभका अग्रभाग जाका, मध्यान्हके सूर्य समान आतापकारी सो पापिनी सुकौशल स्वामीको देखकर महावेगसे उछलकर आई, ताहि आवती देख वे दोनों मुनि सुंदर हैं चारित्र जिनके सर्व आलम्बरहित कायोत्सर्ग धर तिष्ठे सो पापिनी सिंहनी सुकौशल स्वामीका शरीर नखोंकर विदारती भई। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहे हैं—हे राजन्! देख संसारका चरित्र ? जहां माता पुत्रके शरीरके भक्षणका उद्यम करे है या उपरान्त और कष्ट कहा ? जन्मान्तरके स्नेही बांधव कर्मके उदयसे बैरी होय परिणमें तब सुमेरुसे भी अधिक स्थिर सुकौशल मुनि शुक्ल ध्यानके धरणहारे तिनको केवलज्ञान उपजा, अन्तकृत् केवली भए तब इंद्रादिक देवोंने आय इनके देहकी कल्पवृक्षादिक पुष्पोंसे अर्चा करी, चतुरनिकायके सब ही देव आए अर नाहरीको कीर्तिधर मुनि धर्मोपदेश वचनोंसे सम्बोधते भए—हे पापिनी! तू सुकौशलकी माता सहदेवी हुती अर पुत्रसे तेरा अधिक स्नेह हुता ताका शरीर तैंने नखोंसे विदारा, तब वह जाति स्मरण होय श्रावकके व्रतधर सन्यास धारणकर शरीर तज स्वर्गलोकमें गई बहुरि कीर्तिधर मुनिको भी केवलज्ञान उपजा तब इनके केवलकी सुर असुर पूजाकर अपने अपने स्थानको गए यह सुकौशल मुनिका माहात्म्य जो कोई पुरुष पढे सुने सो सर्व उपसर्गतैं रहित होय सुखसे चिरकाल जीवै ॥

अथानन्तर सुकौशलकी राणी विचित्रमाला ताके सम्पूर्ण समयपर सुंदर लक्षणकरि मंडित पुत्र होता भया जब पुत्र गर्भमें आया तब हीतें माता सुवर्णकी कांतिको धरती भई तातें पुत्रका नाम हिरण्यगर्भ पृथिवीपर प्रसिद्ध भया सो हिरण्यगर्भ ऐसा राजा भया मानों अपने गुणोंकर बहुरि ऋषभदेव का समय प्रगट किया सो राजा हारिकी पुत्री अमृतवती महामनोहर ताहि ताने परणी राजा अपने मित्र बांधवनिकरि संयुक्त पूर्ण द्रव्यके स्वामी मानों स्वर्णके पर्वत ही हैं सर्व शास्त्रके पारगामी देवानि समान उत्कृष्ट भोग भोगते भए, एक समय राजा उदार है चित्त जिनका दर्पणमें मुख देखते हुते सो भ्रमर समान श्याम केशोंके मध्य एक सुफेद केश देखा, तब चित्तमें विचारते भए कि यह कालका दूत आया बलात्कार यह जरा शक्ति कांतिकी नाश करणहारी, ताकरि मेरे अंगोपांग शिथिल होवेंगे यह चन्दनके वृक्ष समान मेरी काया अब जरारूप अग्निसे, जलकर अंगारतुल्य होयगी यह जरा छिद्र हेरे ही है सो समय पाय पिशाचनीकी नाई मेरे शरीरमें प्रवेशकर, बाधा करेगी अर कालरूप सिंह चिरकाल से मेरे भक्षणका अभिलाषी हुता सो अब मेरे देहको बलात्कारसे भषेगा, धन्य हैं वह पुरुष जो कर्म भूमि को पायकर तरुण अवस्थामें व्रतरूप जहाजविषे चढकर भवसागरको तिरें, ऐसा चिंतवनकर राणी अमृतवतीका पुत्र जो नघोष ताहि राजविषै थापकर विमल मुनिके निकट दिगंबरी दीक्षा धरी । यह नघोष जबसे माताके गर्भमें आया तब हीसे कोई पापका वचन न कहै तातें नघोष कहाए । पृथ्वीपर प्रसिद्ध हैं गुण जिनके, तिन गुणोंके पुंज तिनके सिंहिका नाम राणी ताहि अयोध्याविषै राख उत्तर दिशाके सामंतोंको जीतने चढे, तब राजाको दूर गया जान दक्षिण दिशाके राजा बडी सेनाके स्वामी अयोध्या लेनेको आए, तब राणी सिंहिका महाप्रतापिनी बडी फौजसे चढी । सो सर्व बैरियोंको रणमें जीतकर अयोध्या दृढ थाना राख आप अपने सामंतोंको ले दक्षिण दिशा जीतनेको गई । कैसी है राणी ? शस्त्र

विद्याका किया है अभ्यास जाने, प्रतापकर दक्षिण दिशाके सामंतोंको जीतकर जय शब्दकर पूरित पाछे अयोध्या आई, अर राजा नघोष उत्तर दिशाको जीतकर आए सो स्त्रीका पराक्रम सुन कोपको प्राप्त भए, मनमें विचारी जे कुलवंती स्त्री अखण्डित शीलकी पालनहारी हैं तिनमें एती धीठता न चाहिए, ऐसा निश्चयकर राणी सिंहिकासे उदासचित्त भए, यह पतिव्रता महाशीलवंती पवित्र है चेष्टा जाकी पटराणीके पदसे दूर करी सो महादरिद्रताको प्राप्त भई ॥

अथानन्तर राजाके महादाहज्वरका विकार उपजा सो सर्व वैद्य यत्न करें पर तिनकी औषधि न लागे तब राणी सिंहिका राजाको रोगग्रस्त जानकर व्याकुलचित्त भई अर अपनी शुद्धताके अर्थ यह पतिव्रता पुरोहित मंत्री सामंत सबनको बुलायकर पुरोहितके हाथ अपने हाथका जल दिया, अर कही कि यदि मैं मन वचन कायकर पतिव्रता हूं तो या जलकरि सींचा राजा दाहज्वरकररहित होवै तब जल करि सींचते ही राजाका ज्वर मिट गया अर हिमविषै मग्न जैसा शीतल होय गया, मुखसे ऐसे मनोहर शब्द कहता भया जैसे वीणाके शब्द होवें अर आकाशमें यह शब्द होते भए कि यह राणी सिंहिका पतिव्रता महाशीलवंती धन्य है धन्य है अर आकाशतें पुष्प वर्षा भई तब राजाने राणीको महाशीलवंती जान बहुरि पटराणीका पद दिया अर बहुत दिन निष्कण्टक राज किया बहुरि अपने बडोंके चारित्र चित्तविषै धरि संसारकी मायातें निस्पृह होय सिंहिका राणीका पुत्र जो सौदास ताहि राज देय आप धीर वीर मुनिव्रत धरे, जो कार्य परम्पराय इनके बडे करते आए हैं सो किया। सौदास राज करै सो पापी मांस आहारी भया इनके वंशमें किसीने यह आहार न किया यह दुराचारी अष्टान्हकाके दिवसमें भी अभक्ष्य आहार न तजता भया एक दिन रसोईदारसे कहता भया कि मेरे मांस भक्षणका अभिलाष उपजा है, तब तिसने कही—हे महाराज ! ये अष्टान्हिकाके दिन हैं सर्व लोक भगवानकी पूजा अर व्रत

नियमविषै तत्पर हैं पृथिवीपर धर्मका उद्योत होय रहा है इन दिनोंमें यह वस्तु अलभ्य है। तब राजाने कही या वस्तु विना मेरा मन रहै नाहीं, तातैं जा उपाय कर यह वस्तु मिलै सो कर। तब रसोईदार यह राजाकी दशा देख नगरके बाहिर गया एक मूवा हूवा बालक देखा ताही दिन वह मूआ था सो ताहि वस्त्रमें लपेट वह पापी ले आया स्वादु वस्तुओंसे उसे मिलाय पकाय राजाको भोजन दिया सो राजा महादुराचारी अभक्ष्यका भक्षण कर प्रसन्न भया अर रसोईदारतैं एकान्तमें पूछता भया कि हे भद्र! यह मांस तू कहांसे लाया अब तक ऐसा मांस मैंने भक्षण नहीं किया हुता तब रसोईदार अभय-दान मांग यथावत् कहता भया तब राजा कहता भया ऐसा ही मांस सदा लाया कर तब यह रसोईदार बालकोंको लाडू बांटता भया, तिन लाडुवोंके लालचवश बालक निरन्तर आवें सो बालक लाडू लेकर जावें तब जो पीछे रह जाय ताहि यह रसोईदार मार राजाको भक्षण करावे निरन्तर बालक नगरविषै छीजने लगे तब यह वृत्तांत लोकोंने जान रसोईदारसहित राजाको देशतैं निकाल दिया अर याकी राणी कनकप्रभा ताका पुत्र सिंहरथ ताहि राज्य दिया तब यह पापी सर्वत्र निरादर हुआ महादुखी पृथिवीपर भ्रमण किया करै जे मृतक बालक मसानविषै लोक डार आवें तिनको भखै जैसे सिंह मनुष्यों का भक्षण करै तैसे यह भक्षण करै तातैं याका नाम सिंहसौदास पृथिवीविषै प्रसिद्ध भया बहुरि यह दक्षिण दिशाको गया तहां मुनिका दर्शनकर धर्म श्रवणकर श्रावकके व्रत धरता भया बहुरि एक महा-पुर नगर तहांका राजा मूवा ताके पुत्र नहीं था तब सबने यह विचार किया कि जिस पाटबन्ध हस्ती जाय कांधे चढाय लावै सो राजा होवै तब याहि कांधे चढाय हस्ती ले गया तब याको राज दिया यह न्यायसंयुक्त राज्य करे अर पुत्रके निकट दूत भेजा कि तू मेरी आज्ञा मान, तब याने लिखा तू महा निन्द्य है मैं तोहि नमस्कार न करूं तब यह पुत्रपर चढकर गया इसे आवता सुन लोग भागने लगे कि

यह मनुष्योंको खायगा पुत्र अर याके महायुद्ध भया सो पुत्रको युद्धमें जीत दोनों ठौरका राज्य पुत्रको देकर आप महावैराग्यको प्राप्त होय तपके अर्थ वनमें गया ॥

अथानन्तर याके पुत्र सिंहरथके ब्रह्मरथ पुत्र भया ताके चतुर्मुख, ताके हेमरथ, ताके सत्यरथ, ताके पृथूरथ, ताके पयोरथ, ताके दृढरथ, ताके सूर्यरथ, ताके मानधाता, ताके वीरसेन, ताके पृथ्वीमन्यु. ताके कमलबन्धु दीप्तिसे मानों सूर्य ही है समस्त मर्यादामें प्रवीण, ताके रविमन्यु, ताके वसन्ततिलक, ताके कुवेरदत्त, ताके कुंथुभक्त सो महाकीर्तिका धारी, ताके शतरथ, ताके द्विरथ, ताके सिंहदमन, ताके हिरण्यकाशिपु, ताके पुंजस्थल, ताके ककुस्थल, ताके रघु, महापराक्रमी। यह इक्ष्वाकुवंश श्रीऋषभदेवतैं प्रवरता सो वंशकी महिमा हे श्रेणिक ! तोहि कही। ऋषभदेवके वंशमें श्रीराम पर्यंत अनेक वडे वडे राजा भए ते मुनिव्रत धार मोक्ष गए। कैयक अहमिंद्र भए, कैयक स्वर्गमें प्राप्त भए या वंशविषै पापी विरले भए ॥

बहुरि अयोध्या नगरविषै राजा रघुके अरण्य पुत्र भया जाके प्रतापकरि उद्यानमें वस्ती होती भई, ताके पृथिवीमती राणी महागुणवंती महाकांतिकी धरणहारी महारूपवती महापातिव्रता ताके दो पुत्र होते भए महा शुभलक्षण एक अनन्तरथ दूसरा दशरथ सो राजा सहस्त्ररश्मि माहिष्मती नगरीका पति ताकी अर राजा अरण्यकी परम मित्रता होती भई मानों ये दोनों सौधर्म अर ईशानइंद्र ही हैं जब रावण ने युद्धमें सहस्त्ररश्मिको जीता अर ताने मुनिव्रत धरे सो सहस्त्ररश्मिके अर अरण्यके यह वचन हुता कि जो तुम वैराग्य धारो तब मोहि जतावना अर मैं वैराग्य धारूंगा तो तुम्हें जताऊंगा सो वाने जब वैराग्य धारा तब अरण्यको जतावा दिया तब राजा अरण्यने सहस्त्ररश्मिको मुनि हुआ जानकर दशरथ पुत्रको राज्य देय आप अनन्तरथ पुत्रसहित अभयसेन मुनिके समीप जिन दीक्षा धारी, महातपकरि कर्मोंका

नाशकर मोक्षको प्राप्त भए अर अनन्तरथ मुनि सर्व परिग्रहरहित पृथ्वीपर विहार करते भए । बाईस परीषहके सहनहारे किसी प्रकार उद्वेगको न प्राप्त भए तब इनका अनन्तवीर्य नाम पृथ्वीपर प्रसिद्ध भया अर राजा दशरथ राज्य करै सो महासुंदर शरीर नवयौवनविषै अतिशोभायमान होता भया अनेक प्रकार पुष्पनिकरि शोभित मानों पर्वतका उतंग शिखर ही है ॥

अथानन्तर दर्भस्थल नगरका राजा कौशल प्रशंसायोग्य गुणोंका धारणहारा ताके राणी अमृतप्रभाकी पुत्री कौशल्या, ताहि अपराजिता भी कहै हैं, काहेसे कि यह स्त्रीके गुणोंसे शोभायमान कामकी स्त्री रति समान महासुंदर किसीसे न जीती जाय महारूपवंती सो राजा दशरथने परणी । बहुरि एक कमलसंकुल नामा बडा नगर तहांका राजा सुबन्धुतिलक ताके राणी मित्रा ताके पुत्री सुमित्रा सर्व गुणोंसे मंडित महारूपवती जाहि नेत्ररूप कमलोंसे देखे मन हर्षित होय पृथ्वीपर प्रसिद्ध सो भी दशरथने परणी बहुरि एक और महाराज नाम राजा ताकी पुत्री सुप्रभा रूप लावण्यकी खान जाहि लखे लक्ष्मी लज्जावान् होय सोहू राजा दशरथने परणी अर राजा दशरथ सम्यग्दर्शनको प्राप्त होते भए अर राज्यका परम उदय पाय सो सम्यक्दर्शनको रत्नों समान जानते भए अर राज्यको तृण समान मानते भए कि जो राज्य न तजै तो यह जीव नरकमें प्राप्त होय, राज्य तजै तो स्वर्ग मुक्ति पावै अर सम्यक्दर्शनके योगतैं निसन्देह ऊर्ध्वगति ही है सो ऐसा जान राजाके सम्यग्दर्शनकी दृढता होती भई अर जे भगवानके चैत्यालय प्रशंसा योग्य आगे भरत चक्रवर्त्यादिकने कराए हुते तिनमें कैयक ठौर कैयक भंग भावको प्राप्त भए हुते सो राजा दशरथने तिनको मरम्मत कराय ऐसे किए मानों नवीन ही हैं अर इंद्रोंसे नमस्कार करने योग्य महारमणीक जे तीर्थंकरोंके कल्याणक स्थानक तिनकी रत्नोंके समूहसे यह राजा पूजा करता भया । गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहै हैं—हे भव्यजीव ! दशरथ सारिखे जीव परभवमें महा

धर्मको उपार्जनकर अति मनोज्ञ देवलोककी लक्ष्मी पायकर या लोकमें नरेंद्र भए हैं, महाराज ऋद्धिके भोक्ता सूर्य समान दशों दिशाविषे है प्रकाश जिनका ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राजा सुकौशलका महात्म्य अर तिनके वंशविषै राजा दशरथकी उत्पत्तिका कथन वर्णन करनेवाला बाईसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २२ ॥

अथानन्तर एक दिन राजा दशरथ महा तेज प्रताप संयुक्त सभामें विराजते थे । कैसे हैं राजा ? जिनेंद्रकी कथामें आसक्त है मन जिनका और सुरेन्द्र समान है विभव जिनका तासमय अपने शरीरके तेजकरि आकाशविषे उद्योत करते नारद आए । तब दूरहीसे नारदको देखकर राजा उठ कर सनमुख गए । बडे आदरसे नारदको ल्याय सिंहासन पर विराजमान किये, राजाने नारदकी कुशल पूछी, नारदने कही जिनेंद्रदेवके प्रसादकर कुशल है बहुरि नारदने राजाकी कुशल पूछी राजाने कही देव गुरु धर्मके प्रसादकरि कुशल है । बहुरि राजाने पूछी—हे प्रभो ! आप कौन स्थानकसे आए, इन दिनोंमें कहां कहां विहार किया, क्या देखा ? क्या सुना ? तुमसे अढाई द्वीपमें कोई स्थानक अगोचर नहीं । तब नारद कहते भए कैसे हैं नारद ? जिनेंद्रचन्द्रके चरित्र देख कर उपजा है परमहर्ष जिनके, हे राजन् ! मैं महा विदेह क्षेत्रविषे गया हुता कैसा है वह क्षेत्र ? उत्तम जीवोंसे भरा है, जहां ठौर ठौर श्रीजिनराजके मंदिर अर ठौर ठौर महामुनि विराजे हैं जहां धर्मका बडा उद्योत है श्रीतीर्थंकर देव चक्रवर्ती बलदेव बासुदेव प्रति बासुदेवादि उपजे हैं तहां श्रीसीमंधर स्वामीका मैंने पुंडरीकनी नगरीमें तपकल्याणक देखा । कैसी है पुंडरीकनी नगरी ? नानाप्रकारके रत्नोंके जे महल तिनके तेजसे प्रकाशरूप है अर सीमंधर स्वामीके तप कल्याणकविषे नानाप्रकारके देवोंका आगमन भया तिनके भांति भांतिके विमान ध्वजा अर छत्रादि

से महाशोभित अर नानाप्रकारके जे बाहन तिनकरि नगरी पूर्ण देखी अर जैसा श्रीमुनिसुब्रतनाथका सुमेरुविषे जन्माभिषेकका उत्सव हम सुनें हैं तैसा श्रीसीमंधर स्वामीके जन्माभिषेकका उत्सव मैंने सुना अर तप कल्याणक तो मैंने प्रत्यक्ष ही देखा अर नानाप्रकारके रत्नोंसे जडित जिनमंदिर देखे जहां महा मनोहर भगवानके बडे बडे बिम्ब विराजे हैं अर विधिपूर्वक निरंतर पूजा होय है अर महा विदेहतें मैं सुमेरु पर्वत आया सुमेरुकी प्रदक्षिणाकर सुमेरुके वन तहां भगवानके जे अकृत्रिम चैत्यालय तिनका दर्शन किया—हे राजन्! नंदनवनके चैत्यालय नानाप्रकारके रत्नोंसे जडे अतिरमणीक मैंने देखे। जहां स्वर्णके पीत अति देदीप्यमान हैं सुन्दर हैं मोतियोंके हार अर तोरण जहां, जिनमंदिर देखते सूर्यका मन्दिर कहा? अर चैत्यालयोंकी वैडूर्य मणिमई भींति देखीं तिनमें गज सिंहादिरूप अनेक चित्राम मढे हैं अर जहां देव देवी संगीत शास्त्ररूप नृत्य कर रहे हैं अर देवारण्यवनविषै चैत्यालय तहां मैंने जिन प्रतिमाका दर्शन किया अर कुलाचलोंके शिखरविषै जिनेंद्रके चैत्यालय मैंने बंदे देखे। या भांति नारदने कही तब राजा दशरथ 'देवभ्यो नमः' ऐसा शब्द कहकर हाथ जोड सिर निवाय नमस्कार करता भया।

बहुरि नारदने राजाको सैनकरी तब राजाने दरबारको कहकर सबको हटाए अर एकांत विराजे तब नारदने कही,—हे सुकौशल देशके अधिपति चित्त लगाय सुन तेरे कल्याणकी बात कहूं हूं मैं भगवानका भक्त जहां जिनमन्दिर होंय तहां बंदना करूं हूं सो मैं लंकामें गया हुता तहां महा मनोहर श्रीशांतिनाथका चैत्यालय बंदा सो एक वार्ता विभीषणादिके मुखसे सुनी कि रावणने बुद्धिसार निमित्तज्ञानीको पूछा कि मेरी मृत्यु कौन निमित्ततें है तब निमित्तज्ञानीने कही—दशरथका पुत्र अर जनककी पुत्री इनके निमित्तसे तेरी मृत्यु है, सुनकर रावण सचिंत भया तब विभीषणने कही—आप चिंता न करें दोनोंको पुत्र पुत्री न होय ता पहिले दोऊनको मैं मारूंगा सो तिहारे ठीक करनेको विभीषणने हलकारे

पठाए थे सो वे तिहारा स्थान निरूपादि सब ठीक कर गए हैं अर मेरा विश्वास जान मुझे बिभीषणने पूछी कि क्या तुम दशरथ और जनकका स्वरूप नीके जानो हो तब मैंने कही मोहि उनको देखे बहुत दिन हुए हैं अब उनको देख तुमको कहूंगा सो उनका अभिप्राय खोटा देखकर तुमपे आया सो जबतक वह बिभीषण तिहारे मारनेका उपाय करे ता पाहिले तुम आपा छिपाय कहीं बैठ रहो । जे सम्यक्दृष्टि जिनधर्मी देव गुरु धर्मके भक्त हैं तिन सबसे मेरी प्रीति है तुम सारखोंसे विशेष है तुम योग्य होय सो करो तिहारा कल्याण होय । अब मैं राजा जनकसे यह वृत्तांत कहनेको जाऊं हूं तब राजाने उठ नारदका सत्कार किया, नारद आकाशके मार्ग होय मिथिलापुरीकी ओर गए जनकको समस्त वृत्तांत कहा नारदको भव्यजीव जिनधर्मी प्राणसे भी प्यारे हैं । नारद तो वृत्तान्त कह देशांतरको गए अर दोनों ही राजावोंको मरणकी शंका उपजी । राजा दशरथने अपने मंत्री समुद्रहृदयको बुलाय एकांतमें नारदका कहा सकल वृत्तान्त कहा । तब राजाके मुखतें मंत्री ये महाभयके समाचार सुन कर स्वामीकी भक्तिमें परायण अर मंत्र शक्तिमें महा श्रेष्ठ राजाको कहता भया—हे नाथ ! जीतव्यके अर्थ सकल करिये है जो त्रिलोकीका राज्य आवे अर जीव जाय तो कौन अर्थ ? तातैं जब लग मैं तिहारे वैरियोंका उपाय करूं तब लग तुम अपना रूप छिपाय कर पृथिवी पर विहार करो ऐसा मंत्रीने कहा । तब राजा देश भंडार नगर याकों सौंप कर नगरतें बाहिर निकसे । राजाके गए पीछे मंत्रीने राजा दशरथके रूपका पुतला बनाया एक चेतना नहीं और सब राजाहीके चिह्न बनाए, लाखादि रसके योग कर उसविषे रुधिर निरमापा अर शरीरकी कोमलता जैसी प्राणधारीके होय तैसी ही बनाई सो महिलके सातवें खणमें सिंहासनविषे विराजमान किया सो समस्त लोकोंको नीचेसे मुजरा होय, ऊपर कोई जाने न पावे, राजाके शरीरमें रोग है पृथिवी पर ऐसा प्रसिद्ध किया । एक मंत्री अर दूजा पूतला बनानेवाला यह भेद जाने, इनको

भी देख कर ऐसा भ्रम उपजे जो राजा ही है अर यही वृत्तान्त राजा जनकके भया। जो कोई पंडित हैं तिनके बुद्धि एक सी ही है। मंत्रियोंकी बुद्धि सबके ऊपर होय विचरै है। यह दोनों राजा लोकास्थितिके वेत्ता पृथिवीमें भागे फिरें, आपदाकालविषै जे रीति बताई हैं ता भांति करें जैसे वर्षाकालमें चांद सूर्य मेघके जोरसे छिपे रहैं तैंसे जनक और दशरथ दोनों छिप रहे॥

यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे मगधदेशके अधिपति! वे दोनों बडे राजा महा सुंदर हैं राजमंदिर जिनके, अर महामनोहर देवांगना सारिखी स्त्री जिनके, महामनोहर भोगोंके भोक्ता, सो पायन पियादे दलिद्री लोकनकी नाईं कोई नहीं संग जिनके अकेले भ्रमते भए, धिक्कार है संसारके स्वरूपको ऐसा निश्चयकर जो प्राणी स्थावर जंगम सर्व जीवोंको अभयदान दें सो आप भी भयसे कंपायमान न हों, इस अभयदान समान कोई दान नहीं जिसने अभयदान दिया ताने सब ही दिया अभयदानका दाता सत्पुरुषोंमें मुख्य है॥

अथानन्तर विभीषणने दशरथ अर जनकके मारनेको सुभट विदा किए अर हलकारे जिनके संग में ते सुभट, शस्त्र हैं हाथोंमें जिनके महाक्रूर छिपे छिपे रात दिन नगरीमें फिरें, राजाके महल अति ऊंचे सो प्रवेश न कर सकें इनको दिन बहुत लगे तब विभीषण स्वयमेव आय माहिलमें गीत नाद सुन महल में प्रवेश किया। राजा दशरथ अन्तःपुरके मध्य शयन करता देखा विभीषण तो दूर ठाढे रहे अर एक विद्युद्विलसित नामा विद्याधर, ताको पठाया कि याका मस्तक ले आओ सो आय मस्तक काट विभीषणको दिया सो राजलोक रोय उठे विभीषण इनका और जनकका सिर समुद्रविषै डार आप रावणके निकट गया रावणको हर्षित किया। इन दोनों राजनकी राणी विलाप करें फिर यह जानकर कि कृत्रिम पूतला था तब यह संतोषकर बैठ रहीं अर विभीषण लंका जाय अशुभकर्मके शांतिके निमित्त दान पूजा-

दि शुभ क्रिया करता भया अर विभीषणके चित्तमें ऐसा पश्चाताप उपजा जो देखो मेरे कौन कर्म उदय आया जो भाईके मोहसे वृथा भय मान वापुरे रंक भूमिगोचरी मृत्युको प्राप्त किए जो कदाचित् आशीविष (आशीविष सर्प कहिए जिसे देख विष चढे) जातिका सर्प होय तो भी क्या गरुडको प्रहार कर सके ? कहां वह अल्प ऐश्वर्यके स्वामी भूमिगोचरी अर कहां इंद्र समान शूर वीरताका धरणहारा रावण अर कहां मूसा कहां केसरी सिंह, जाके अवलोकनतैं माते गजराजोंका मद उतर जाय । कैसा है केसरी सिंह ? पवन समान है वेग जाका, अथवा जा प्राणीको जा स्थानकमें जा कारणकरि जेता दुःख अर सुख होना है सो ताको ताकर ता स्थानकविषै कर्मनिके वशकरि अवश्य होय हैं अर यह निमित्तज्ञानी जो कोई यथार्थ जानै तो अपना कल्याण ही क्यों न करे जिससे मोक्षके अविनाशी सुख पाइए निमित्तज्ञानी पराई मृत्युको निश्चय जाने तो अपनी मृत्युके निश्चयसे मृत्युके पहिले आत्मकल्याण क्यों न करे। निमित्तज्ञानीके कहनेसे मैं मूर्ख भया, खोटे मनुष्योंकी शिक्षासे जे मन्दबुद्धि हैं ते अकार्यविषै प्रवरते हैं। यह लंकापुरी पाताल है जल जिसका ऐसा जो समुद्र ताके मध्य तिष्ठै, जो देवनहूंको अगम्य तहां विचारे भूमिगोचरियोंकी कहांसे गम्य होय ? मैं यह अत्यन्त अयोग्य किया बहुरि ऐसा काम कबहूं न करूं ऐसी धारणाधार उत्तम दीप्तिसे युक्त जैसे सूर्य प्रकाशरूप विचरै तैसे मनुष्यलोकमें रमते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राजा दशरथ अर जनकको विभीषणकृत भय वर्णन करनेवाला तेईसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २३ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी कहै हैं–हे श्रेणिक ! अरण्यके पुत्र दशरथने पृथिवीपर भ्रमण करते केकईको परणा सो कथा महाआश्चर्यका कारण तू सुन। उत्तर दिशाविषै एक कौतुकमंगल नामा नगर, ताके पर्वत समान ऊंचा कोट, तहां राजा शुभमति राज करै सो वह शुभमति नाममात्र नहीं यथार्थ शुभमति ही है, ताकी राणी पृथुश्री गुण रूप आभरणोंसे मंडित ताके केकई पुत्री द्रोणमेघ पुत्र भए, जिनके गुण दशों दिशामें व्याप रहे केकई अतिसुंदर सर्व अंग मनोहर अद्भुत लक्षणोंकी धरणहारी सर्व कलावोंकी पारगामिनी अति शोभती भई। सम्यग्दर्शनसे संयुक्त श्राविकाके व्रत पालनहारी जिनशासनकी वेत्ता महाश्रद्धावंती तथा सांख्य पातंजल वैशेषिक वेदांत न्याय मीमांसा चार्वादिक परशास्त्ररहस्यकी ज्ञाता तथा लौकिक शास्त्र शृंगारादिक तिनकी रहस्य जाने, नृत्यकलामें अति निपुण, सर्व भेदोंसे मंडित जो संगीत सो भली भांति जाने, उर कंठ सिर इन तीन स्थानकसे स्वर निकसे हैं अर स्वरोंके सात भेद हैं षडज १ ऋषभ २ गांधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ सो केकईको सर्वगम्य अर तीन प्रकारका लय शीघ्र १ मध्य २ विलंबित ३ अर चार प्रकारका ताल स्थायी १ संचारी २ आरोहक ३ अवरोहक ४ अर तीन प्रकारकी भाषा संस्कृत १ प्राकृत २ शौरसेनी ३ स्थायितालके भूषण चार प्रसंगादि १ प्रसन्नान्त २ मध्यप्रसाद ३ प्रसन्नाद्यवसान ४ अर संचारीके छह भूषण निवृत्त १ प्रास्थिल २ बिंदु ३ प्रखोलित ४ तमोमंद ५ प्रसन्न ६ आरोहणका एक प्रसन्नादि भूषण अर अवरोहणके दो भूषण प्रसन्नान्त १ कुहर २ ये तेरह अलंकार अर चार प्रकार वादित्र वे ताररूप सो तांत १ चामके मढे ते आनद्ध २ अर बांसुरी आदि फूकके बाजे वे सुषिर ३ अर कांसीके बाजे वे घन ४ ये चार प्रकारके वादित्र जैसे केकई बजावे तैसे और न बजावे, गीत नृत्य वादित्र ये तीन भेद हैं सो नृत्यमें तीनों आए अर रसके भेद नव शृंगार १ हास्य २ करुणा ३ वीर ४ अद्भुत ५ भयानक ६ रौद्र ७ बीभत्स ८ शांत ९ तिनके

भेद जैसे केकई जानै तैसे और कोऊ न जानै अक्षर मात्रा अर गणितशास्त्रमें निपुण, गद्यपद्य सर्वमें प्रवीण, व्याकरण छन्द अलंकार नाममाला लक्षणशास्त्र तर्क इतिहास अर चित्रकलामें अतिप्रवीण तथा रत्नपरीक्षा अश्वपरीक्षा नरपरीक्षा शस्त्रपरीक्षा गजपरीक्षा वृक्षपरीक्षा वस्त्रपरीक्षा सुगन्धपरीक्षा सुगन्धादिक द्रव्योंका निपजावना इत्यादि सर्व वातोंमें प्रवीण, ज्योतिष विद्यामें निपुण बाल वृद्ध तरुण मनुष्य तथा घोडे हाथी इत्यादि सर्वके इलाज जानै मंत्र औषधादि सर्वमें तत्पर वैद्यविद्यानिधान सर्व कलामें सावधान महाशीलवंती महामनोहर युद्ध कलामें अतिप्रवीण शृंगारादि कलामें अति निपुण विनय ही है आभूषण जाके कला अर गुण अर रूपमें ऐसी कन्या और नाहीं। गौतम स्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक! बहुत कहनेकर कहा? केकईके गुणोंका वर्णन कहां तक करिए तब ताके पिताने विचारा कि ऐसी कन्याके योग्य वर कौन? स्वयम्बर करिए तहां यह आप ही वरै। ताने हरिवाहन आदि अनेक राजा स्वयम्बरमण्डपमें बुलाए सो विभवकर संयुक्त आए तहां भ्रमते संते जनकसहित दशरथ भी आए सो यद्यपि इनके निकट राज्यका विभव नहीं तथापि रूप अर गुणोंकर सर्व राजावोंतैं अधिक हैं, सर्व राजा सिंहासनपर बैठे अर केकईको द्वारपाली सबनके नाम ग्राम गुण कहे है सो वह विवेकिनी साधुरूपिणी मनुष्योंके लक्षण जाननेवाली प्रथम तो दशरथकी ओर नेत्ररूप नीलकमलकी माला डारी बहुरि वह सुंदर बुद्धिकी धरनहारी जैसे राजहंसनी बुगलोंके मध्य बैठे जो राजहंस उसकी ओर जाय तैसे अनेक राजावोंके मध्य बैठा जो दशरथ ताकी ओर गई सो भावमाला तो पहिले ही डारी हुती अर द्रव्य रूप जो रत्नमाला सो भी लोकाचारके अर्थ दशरथके गलेमें डारी तब कैयक नृप जे न्यायवंत बैठे हुते ते प्रसन्न भए अर कहते भए कि जैसी कन्या थी तैसा ही योग्य वर पाया अर कैयक विलषे होय अपने देश उठ गए अर कैयक जे अति धीठ थे ते क्रोधायमान होय युद्धको उद्यमी भए अर कहते भए

जे बडे २ वंशके उपजे अर महा ऋद्धिके मंडित ऐसे नृप तिनको तजकर यह कन्या नहीं जानिए कुल-शील जिसका ऐसा यह विदेशी ताहि कैसे वरै, खोटा है अभिप्राय जाका ऐसी कन्या है तातैं या विदेशी को यहांसे काढकर कन्याके केश पकड बलात्कार हर लो ऐसा कहकर वे दुष्ट कैयक युद्धको उद्यमी भए तब राजा शुभमति अति व्याकुल होय दशरथको कहता भया—हे भव्य ! मैं इन दुष्टोंको निवारूं हूं तुम इस कन्याको रथमें चढाय अन्यत्र जावो जैसा समय देखिए तैसा करिये सर्व राजनीतिमें यह वात मुख्य है या भांति जब ससुरने कही तब राजा दशरथ अत्यंत धीर बुद्धि है जिनकी, हंसकर कहते भए—हे महाराज ! आप निश्चिंत रहो । देखो ! इन सबनको दशों दिशाको भगाऊं ऐसा कहकर आप रथविषै चढे अर केकईको चढाय लीनी । कैसा है रथ ? जाके महामनोहर अश्व जुडे हैं । कैसे हैं दशरथ ? मानों रथपर चढे शरद ऋतुके सूर्य ही हैं अर केकई घोडोंकी वाघ समारती भई कैसी है केकई ? महापुरुषार्थ के स्वरूपको धरे युद्धकी मूर्ति ही है, पतिसे विनती करती भई हे नाथ ! आपकी आज्ञा होय अर जाकी मृत्यु उदय आई होय ताहीकी तरफ रथ चलाऊं । तब राजा कहते भए कि हे प्रिये ! गरीबोंके मारनेकर कहा ? जो या सर्व सेनाका अधिपति हेमप्रभ है जाके सिरपर चंद्रमा सारिखा सुफेद छत्र फिरै है ताही की तरफ रथ चला । हे रणपण्डिते ! आज मैं इस अधिपति हीको मारूंगा । जब दशरथने ऐसा कहा तब वह पतिकी आज्ञा प्रमाण वाहीकी तरफ रथ चलावती भई । कैसा है रथ ? ऊंचा है सुफेद छत्र जाके अर आरक्त रूप है महाध्वजा जाकी, रथविषै ये दोनों दम्पती देवरूप विराजे हैं इनका रथ अग्नि समान है जे था रथकी ओर आए वे हजारों पतंगकी नाईं भस्म भए, दशरथके चलाये जे बाण तिनकर अनेक राजा बींधे गए सो क्षणमात्रमें भागे तब हेमप्रभ जो सबोंका अधिपति हुता ताके प्रेरे अर लज्जवान होय दशरथसे लडनेको हाथी घोडा रथ पियादोंसे मंडित आए । किया है शूरपनेका महाशब्द जिन्होंने,

तोमर जातिके हथियार बाण चक्र कनक इत्यादि अनेक जातिके शस्त्र अकेले दशरथपर डारते भए। सो बडा आश्चर्य है दशरथ राजा एक रथका स्वामी था सो युद्ध समय मानो असंख्यात रथ हो गए अपने बाणकर समस्त बैरिनिके बाण काट डाले अर आप जे बाण चलाये ते काहूकी दृष्टि न आए अर शत्रुवोंके लगे सो राजा दशरथने हेमप्रभको क्षणमात्रमें जीत लिया ताकी ध्वजा छेदी छत्र उडाया अर रथके अश्व घायल किए रथ तोड डाला रथसे नीचे डार दिया तब वह राजा हेमप्रभ और रथपर चढ कर भयकर कंपायमान होय अपना यश कालाकर शीघ्र ही भागा। दशरथने आपको बचाया स्त्री बचाई अपने रथके अश्व बचाए वैरियोंके शस्त्र छेदे अर वैरियोंको भगाया एक दशरथ अनंतरथ जैसे काम करता भया एक दशरथ सिंह समान ताको देख सर्व योधा सर्व दिशाको हिरण समान हो भागे। अहो! धन्य शक्ति या पुरुषकी अर धन्य शक्ति या कन्याकी, ऐसा शब्द ससुरकी सेनामें अर शत्रुवोंकी सेनामें सर्वत्र भया अर बंदी जन बिरद बखानते भए राजा दशरथने महाप्रतापको धरे कौतुकमंगल नगरमें केकईसे पाणिग्रहण किया महामंगलाचार भया, राजा केकईको परणकर अयोध्या गए अर जनक भी मिथिलापुर गए बहुरि इनका जन्मोत्सव अर राज्याभिषेक विभूतिसे भया अर समस्त भयरहित इंद्र समान रमते भए॥

तहां सर्व रानीनिके मध्य राजा दशरथ केकईतें कहते भए—चन्द्रवदनी! तेरे मनमें जो वस्तुकी अभिलाषा होय सो मांग, जो तू मांगे सोई देऊं। हे प्राणप्यारी! तोसों मैं अति प्रसन्न भया हूं जो तू अति विज्ञानसे उस युद्धमें रथको न प्रेरती तो एकसाथ एते वैरी आए थे तिनको मैं कैसे जीतता। जब रात्रीका अन्धकार जगत्में व्याप्त रहा है जो अरुण सारिखा सारथी न होय तो ताहि सूर्य कैसे जीते। या भांति केकईके गुणवर्णन राजाने किए तब वह पतिव्रता लज्जाके भार कर अधोमुख हो गई राजाने बहुरि कही

तब केकईने वीनती करी—हे नाथ ! मेरा वर आपके धरोहर रहे जिससमय मेरी इच्छा होयगी ता समय लूंगी । तब राजा अति प्रसन्न होय कहते भये—हे कमलवदनी ! मृगनयनी ! श्वेतता श्यामता आरक्तता ये तीन वर्णको धरे अद्भुत हैं नेत्र जाके, अद्भुत बुद्धि तेरी हे महा नरपतिकी पुत्री अति नयकी वेत्ता सर्व कालकी पारगामिनी सर्व भोगोपभोगकी निधि तेरी प्रार्थना मैं धरोहर राखी । तू जब जो चाहे सो ही मैं दूंगा अर सब ही राजलोक केकईको देख हर्षको प्राप्त भए अर चित्तमें चिंतवते भए यह अद्भुत बुद्धि-निधान है सो कोई अपूर्व वस्तु मांगेगी अल्पवस्तु क्या मांगे ?

अथानन्तर गौतमस्वामी श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! लोकका चरित्र मैं तुझे संक्षेपताकर कहा जो पापी दुराचारी हैं ते नरक निगोदके परम दुःख पावे हैं अर जे धर्मात्मा साधु जन हैं ते स्वर्गमोक्षमें महा सुख पावे हैं । भगवानकी आज्ञाके अनुसार बडे बडे सत्पुरुषोंके चरित्र तुझे कहे अब श्रीरामचन्द्रजी की उत्पत्ति सुन । कैसे हैं श्रीरामचन्द्रजी ? उदार प्रजाके दुख हरणहारे महान्यायवंत महा धर्मवंत महा विवेकी महा शूरवीर महा ज्ञानी इक्ष्वाकु वंशका उद्योत करणहारे वडे सत्पुरुष हैं ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषै राणी केकईको राजा दशरथका वरदान कथन वर्णन करनेवाला चौबीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २४ ॥

अथानन्तर जाहि अपराजिता कहै हैं ऐसी कौशल्या सो रत्नजडित महिलविषै महासुन्दर सेज पर सूती हुती सो रात्रीके पिछले पहिर अतिशयसे अद्भुत स्वप्न देखती भई उज्ज्वल हस्ती इन्द्रके ऐरावत हस्ती समान १ और महा केसरी सिंह २ अर सूर्य ३ तथा सर्व कला पूर्ण चन्द्रमा ४ ये पुराण पुरुषोंके गर्भमें आवनेके अद्भुत स्वप्न देख आश्चर्यको प्राप्त भई बहुरि प्रभातके बादित्र अर मंगल शब्द सुन कर

सेजतैं उठी। प्रभात क्रियातैं हर्षको प्राप्त भया है मन जाका, महा विनयवंती सखी जन मण्डित भरतारके समीप जाय सिंहासन पर बैठी। कैसी है राणी ? सिंहासनको शोभित करणहारी हाथ जोड नम्रीभूत होय मनोहर स्वप्न जे देखे तिनका वृत्तान्त स्वामीसे कहती भई। तब समस्त विज्ञानके पारगामी राजा स्वप्नोंका फल कहते भए—हे कांते ! परम आश्चर्यका कारण तेरे मोक्षगामी पुत्र अंतर वाह्य शत्रुवोंका जीतनेहारा महा पराक्रमी होयगा । रागद्वेष मोहादिक अंतरंगके शत्रु कहिये और प्रजाके बाधक दुष्ट भूपति वहिरंग शत्रु कहिये या भांति राजाने कही तब राणी अति हर्षित होय अपने स्थानक गई मन्द मुलकन रूप जो केश उनसे संयुक्त है मुख कमल जाका अर राणी केकई पति सहित श्रीजिनेंद्रके जे चैत्यालय तिनमें भावसंयुक्त महा पूजा करावती भई सो भगवानकी पूजाके प्रभावतें राजाका सर्व उद्वेग मिटा चित्तमें महाशांति होती भई।

अथानन्तर राणी कौशल्याके श्रीरामका जन्म भया, राजा, दशरथने महा उत्सव किया छत्र चमर सिंहासन टार बहुत द्रव्य याचकोंको दिये, उगते सूर्य समान है वर्ण रामका कमल समान हैं नेत्र और लक्ष्मीसे आलिंगित है वक्षस्थल जाका तातैं माता पिता सर्व कुटुम्बने इनका पद्मनाम धरा बहुरि राणी सुमित्रा अति सुन्दर है रूप जाका सो महा शुभ स्वप्न अवलोकन कर आश्चर्यको प्राप्त होती भई ते स्वप्न कैसे सो सुनो—एक बडा केहरी सिंह देखा, लक्ष्मी अर कीर्ति बहुत आदरसे सुन्दर जलके भरे कलश कमलसे ढके तिनकर स्नान करावै है अर आप सुमित्रा बडे पहाडके मस्तक पर बैठी है अर समुद्र पर्यंत पृथिवीको देखै है अर देदीप्यमान हैं किरणोंके समूह जाके ऐसा जो सूर्य सो देखा अर नानाप्रकारके रत्नोंसे मंडित चक्र देखा। ये स्वप्न देख प्रभातके मंगलीक शब्द भए तब सेजतैं उठिकर प्रातक्रियाकर बहुत विनयसंयुक्त पतिके समीप जाय मिष्ट वाणीकर स्वप्नोंका वृत्तांत कहती भई तब वह कहता भया—

है वरानने ! कहिए सुंदर है वदन जाका, तेरे पृथ्वीपर प्रसिद्ध पुत्र होयगा, शत्रुवोंके समूहका नाश करनहारा महातेजस्वी आश्चर्यकारी है चेष्टा जाकी ऐसा पतिने कहा तब वह पतिव्रता हर्षसे भरा है चित्त जाका अपने स्थानकको गई, सर्व लोकोंको अपने सेवक जानती भई बहुरि याके परमज्योतिका धारी पुत्र होता भया मानो रत्नोंकी खानविषै रत्न ही उपजा सो जैसा श्रीरामके जन्मका उत्सव किया हुता तैसा ही उत्सव भया जा दिन सुमित्राके पुत्रका जन्म भया ताही दिन रावणके नगरविषै हजारों उत्पात होते भए, अर हितुवोंके नगरमें शुभ शकुन भए इंदीवर कमल समान श्यामसुन्दर अर कांति रूप जलका प्रवाह भले लक्षणोंका धरणहारा तातैं माता पिताने लक्ष्मण नाम धरा । राम लक्ष्मण ये दोऊ बालक महामनोहर रूप मूंगा समान हैं लाल होंठ जिनके अर लाल कमल समान हैं कर अर चरण जिनके माखनसे भी अति कोमल है शरीरका स्पर्श जिनका, अर महासुगंध शरीर ये दोनों भाई बाललीला करते कौनके चित्तको न हरें, चंदनकरि लिप्त है शरीर जिनका, केसरका तिलक किये अति सोहैं, मानो विजयार्धगिरि अर अंजनगिरि ही स्वर्णके रससे लिप्त हैं, अनेक जन्मका बढा जो स्नेह तातैं परम स्नेहरूप चंद्र सूर्य समान ही हैं महल मांही जावें तब तो सर्व स्त्रीजनको अतिप्रिय लगें अर बाहिर आवें तब सर्व जनोंको प्यारे लगें । जब ये वचन बोलें तब मानों जगतको अमृतकर सींचें हैं, अर नेत्रोंकर अवलोकन करें तब सबको हर्षसे पूर्ण करें सबनके दारिद्र हरणहारे सबके हितु सबके अंतःकरण पोषणहारे मानों ये दोनों हर्षकी अर शूर वीरताकी मूर्ति ही हैं, अयोध्यापुरीविषै सुखसे रमते भए। कैसे हैं दोनों कुमार ? अनेक सुभट करें हैं सेवा जिनकी, जैसे पहले बलभद्र विजय अर वासुदेव त्रिपृष्ठ होते भए तिन समान है चेष्टा जिनकी । बहुरि केकईको दिव्यरूपका धरणहारा महाभाग्य पृथिवीपर प्रसिद्ध भरत नामा पुत्र भया बहुरि सुप्रभाके सर्व लोकमें सुंदर शत्रुवोंका जीतनहारा शत्रुघन ऐसा नाम पुत्र भया, अर राम-

चंद्रका नाम पद्म तथा बलदेव अर लक्ष्मणका नाम हरि अर वासुदेव अर अर्द्धचक्री भी कहे हैं, एक दशरथकी जो चार राणी सो मानों चार दिशा ही हैं तिनके चार ही पुत्र समुद्र समान गंभीर पर्वत समान अचल जगतके प्यारे, इन चारों ही कुमारोंको पिता विद्या पढानेके अर्थ योग्य पाठकको सौंपते भए ॥

अथानन्तर कांपिल्य नामा नगर अतिसुंदर, तहां एक शिवी नामा ब्राह्मण ताकी इषुनाम स्त्री ताके अरि नामा पुत्र सो महा अविवेकी अविनई माता पिताने लडाया सो महा कुचेष्टाका धरणहारा हजारों उलहनोंका पात्र होता भया, यद्यपि द्रव्यका उपार्जन, धर्मका संग्रह, विद्याका ग्रहण, यद्यपि वा नगरमें ये सब ही वातें सुलभ हैं परन्तु याको विद्या सिद्ध न भई, तब माता पिताने विचारी विदेशमें याहि सिद्धि होय तो होय, यह विचार खेद खिन्न होय घरतैं निकास दिया, सो महादुखी होय केवल वस्त्र याके पास सो यह राजगृह नगरमें गया, तहां एक वैवस्वत नामा धनुर्वेदका पाठी महापण्डित, जाके हजारों शिष्य विद्याका अभ्यास करें, ताके निकट ये अरि यथार्थ धनुष विद्याका अभ्यास करता भया सो हजारों शिष्योंविषै यह महाप्रवीण होता भया। ता नगरका राजा कुशाग्र सो ताके पुत्र भी वैवस्वत के निकट वाणविद्या पढे सो राजाने सुनी कि एक विदेशी ब्राह्मणका पुत्र आया है जो राजपुत्रनितैं भी अधिक वाणविद्याका अभ्यासी भया सो राजा मनमें रोष किया। जब यह वात वैवस्वतने सुनी तब अरिको समझाया कि तू राजाके निकट मूर्ख हो जा, विद्या मत प्रकाशै, सो राजाने धनुष विद्याके गुरु को बुलाया जो मैं तेरे सर्व शिष्योंकी विद्या देखूंगा तव सब शिष्योंको लेकर यह गया। सब ही शिष्यों ने यथायोग्य अपनी अपनी वाणविद्या दिखाई, निशाने बींधे, ब्राह्मणका जो पुत्र अरि, ताने ऐसे वाण चलाए सो विद्यारहित जाना गया तब राजाने जानी, याकी प्रशंसा काहूने झूंठी कही तब वैवस्वतको

सर्व शिष्योंसहित सीख दीनी तब अपने घर आया वैवस्वतने अपनी पुत्री अरिको परणाय विदा किया सो रात्रि ही पयाणकर अयोध्या आया। राजा दशरथसों मिला अपनी बाणविद्या दिखाई तब राजा प्रसन्न होय अपने चारों पुत्र बाणविद्या सीखनेको याके निकट राखे। ते बाणविद्याविषै अतिप्रवीण भए जैसे निर्मल सरोवरमें चंद्रमाकी कांति विस्तारको प्राप्त होय तैसे इनमें बाणविद्या विस्तारको प्राप्त भई और २ भी अनेक विद्या गुरुसंयोगतैं तिनको सिद्ध भई जैसे किसी ठौर रत्न मिले होवें अर ढकनेसे ढके होवें सो ढकना उघाडे प्रकट होय तैसे सर्व विद्या प्रकट भई। तब राजा अपने पुत्रोंकी सर्व शास्त्रविषै अति प्रवीणता देख अर पुत्रोंका विनय उदार चेष्टा अवलोकन कर अतिप्रसन्न भया। इनके सर्वविद्या-वोंके गुरुवोंकी बहुत सन्मानता करी। राजा दशरथ गुणोंके समूहसे युक्त, महाज्ञानीने जो उनकी वांछा हुती तातैं अधिक संपदा दीनी दानविषै विख्यात है कीर्ति जाकी। केतेक जीव शास्त्रज्ञानको पायकर परम उत्कृष्टताको प्राप्त होय हैं अर कैयक जैसेके तैसे ही रहे हैं अर कैयक विषम कर्मके योगतैं मदकरि आंधे होय हैं जैसे सूर्यकी किरण स्फटिकगिरिके तटविषै अति प्रकाशको धरे है, और स्थानकाविषै यथा-स्थित प्रकाशको धरे है अर उल्लुवोंके समूहमें अतितिमिररूप होय परणवै॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषै चारि भाईनिके जन्मका कथन वर्णन करनेवाला पच्चीसवा पर्व पूर्ण भया॥ २५॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहै हैं—हे श्रेणिक! अब भामण्डल अर सीताका कथन सुनो। राजा जनककी स्त्री विदेहा ताहि गर्भ रहा सो एक देवके यह अभिलाषा हुई कि जो याके बालक होय सो मैं ले जाऊं। तब श्रेणिकने पूछा हे नाथ! वा देवके ऐसी अभिलाषा काहेतैं उपजी सो मैं सुना

चाहूं हूं तब गौतम स्वामी कहते भए हे राजन्! चक्रपुर नामा एक नगर है तहां चक्रध्वज नामा राजा ताके राणी मनस्विनी तिनके पुत्री चित्तोत्सवा सो कुंवारी चटशालामें पढे अर राजाका पुरोहित धूम्रकेश ताके स्वाहा नामा स्त्री ताका पुत्र पिंगल सो भी चटशालामें पढै। सो चित्तोत्सवाका अर पिंगलका चित्त मिल गया सो इनको विद्याकी सिद्धि न भई, जिनका मन कामबाणोंसे वेधा जाय तिनको विद्या अर धर्मकी प्राप्ति न होय है। प्रथम स्त्री पुरुषका संसर्ग होय बहुरि प्रीति उपजै, प्रीतिसे परस्पर अनुराग बढै, बहुरि विश्वास उपजै ताकरि विकार उपजै, जैसे हिंसादिक पंच पापोंसे अशुभ कर्म बन्धै तैसे स्त्री संगतैं काम उपजै है ॥

अथानन्तर वह पापी पिंगल चित्तोत्सवाको हर ले गया जैसे कीर्तिको अपयश हर ले जाय, जब वह दूर देशनिविषै हर लेगया तब सब कुटुम्बके लोकोंने जानी, अपने प्रमादके दोषकरि ताने वह हरी है जैसे अज्ञान सुगतिको हरे तैसे वह पिंगल कन्याको चुरा ले गया परन्तु धनरहित शोभै नाहीं जैसे लोभी धर्मवर्जित तृष्णासे न सोहै सो यह विदग्ध नगरमें गया तहां अन्य राजावोंकी गम्यता नहीं सो निर्धन नगरके बाहिर कुटि बनायकर रहा ता कुटिके किवाड नाहीं अर यह ज्ञान विज्ञानरहित तृण काष्ठादिकका विक्रयकर उदर भरे दारिद्रके सागरमें मग्न सो स्त्रीका अर आपका उदर महा कठिनतासे भरे। तहां राजा प्रकाशसिंह अर राणी प्रवरावलीका पुत्र जो राजा कुण्डलमण्डित सो या स्त्रीको देख शोषण संतापन उच्चाटन वशीकरण मोहन ये कामके पंच बाण इनकरि वेध्या गया ताने रात्रिको दूती पठाई सो चित्तोत्सवाको राजमंदिरमें ले गई जैसे राजा सुमुखके मंदिरविषै दूती वनमालाको लेगई हुती सो कुण्डलमण्डित सुखसे रमैं ॥

अथानन्तर वह पिंगल काष्ठका भार लेकर घर आया सो सुन्दरीको न देखकर अतिकष्टके

समुद्रमें डूबा, विरहकरि महा दुखित भया, काहू जगह सुखको न पावै चक्रविषै आरूढ समान याका चित्त व्याकुल भया, हरी गई है भार्या जाकी ऐसा जो यह दीन ब्राह्मण सो राजापै गया और कहता भया—हे राजा! मेरी स्त्री तेरे राजमें चोरी गई, जे दरिद्री आर्तिवंत भयभीत स्त्री वा पुरुष उनको राजा ही शरण हैं, तब राजा धूर्त अर ताके मंत्री भी धूर्त सो राजाने मंत्रीको बुलाय झूठमूठ कहा याकी स्त्री चोरी गई है ताहि पैदा करो, ढील मत करो तब एक सेवकने नेत्रोंकी सैन मार कर झूठ कहा। हे देव! मैं या ब्राह्मणकी स्त्री पोदनापुरके मार्गमें पथिकानिके साथ जाती देखी सो आर्यिकाओंके मध्य तप करणेको उद्यमी है तातैं हे ब्राह्मण! तू ताहि लाया चाहे तो शीघ्र ही जा, ढील काहेको करै ताका अबार दीक्षा धरनेका समय कहां, तरुण है शरीर जाका अर महाश्रेष्ठ स्त्रीके गुणोंसे पूर्ण है ऐसा जब झूठ कहा तब ब्राह्मण गाढी कमर बांध शीघ्र वाकी ओर दौडा, जैसे तेज घोडा शीघ्र दौडै सो पोदनापुरमें चैत्यालय तथा उपवनादि वनमें सर्वत्र ढूंढी, काहूं ठौर न देखी तब पाछा विदग्धनगरमें आया सो राजाकी आज्ञातैं क्रूर मनुष्योंने गलहटा देय लष्टमुष्टि प्रहार कर दूर किया, ब्राह्मण स्थानभ्रष्ट भया क्लेश भोगा, अपमान लहा, मार खाई। एते दुःख भोग कर दूर देशांतर उठ गया, सो प्रिया विना याको किसी ठौर सुख नहीं जैसे अग्निमें पडा सर्प सूसै तैसे यह रात दिन सूसता भया, विस्तीर्ण कमलोंका वन याहि दावानल समान दीखै अर सरोवर अवगाह करता विरहरूप अग्निसे बलै या भांति यह महा दुखी पृथिवीविषै भ्रमण करै एक दिन नगरसे दूर वनमें मुनि देखे। मुनिका नाम आर्यगुप्ति बडे आचार्य तिनके निकट जाय हाथ जोड नमस्कार कर धर्म श्रवण करता भया, धर्म श्रवण कर याको वैराग्य उपजा महा शांतिचित्त होय जिनेंद्रके मार्गकी प्रशंसा करता भया। मनमें विचारै है अहो यह जिनराजका मार्ग परम उत्कृष्ट है। मैं अंधकारमें पडा हुता सो यह जिनधर्मका उपदेश मेरे घटमें सूर्य समान प्रकाश करता भया

के जीव पूर्व ज़न्ममें या जीवके बान्धव भए हैं तातैं जो पापी मांसका भक्षण करे हैं ताने तो सर्व बांधव भषे जो दुष्ट निर्दई मच्छ मृग पक्षियोंको हनै हैं अर मिथ्यामार्गमें प्रवरतैं हैं सो मधु मांसके भक्षणतैं महाकुगतिमें जावे हैं। यह मांस वृक्षानितैं नाहीं उपजे है, भूमितैं नाहीं उपजै है, अर कमलकी न्याई जल से नाहीं निपजे है अथवा अनेक वस्तुवोंके योगतैं जैसे औषधि बनै है तैसे मांसकी उत्पात्ति नाहीं होय है, दुष्ट जीव निर्दयी वा गरीब बडा वल्लभ है जीतव्य जिनको ऐसे पक्षी मृग मत्स्यादिक तिनको हन कर मांस उपजावे हैं सो उत्तम जीव दयावान नहीं भषे हैं अर जिनके दुग्धकरि शरीर वृद्धिको प्राप्त होय ऐसी गाय भैंस छेली तिनके मृतक शरीरको भषे हैं अथवा मार मारकर भषे हैं तथा तिनके पुत्र पौत्रादिकको भषे हैं ते अधर्मी महानीच नरक निगोदके अधिकारी हैं जो दुराचारी मांस भषे हैं ते माता पिता पुत्र मित्र सहोदर सब ही भषे। या पृथ्वीके तले भवनवासी अर व्यन्तर देवोंके निवास हैं अर मध्य लोकमें भी हैं ते दुष्ट कर्मके करनहारे नीच देव हैं जो जीव कषाय सहित तापस होय हैं ते नीच देवोंमें निपजे हैं पातालमें प्रथम ही रत्नप्रभा पृथ्वी ताके छै भाग अर पंच भागमें तो भवनवासी अर व्यन्तर देवनिके निवास हैं अर बहल भागमें पहिला नरक ताके नीचे छह नरक और हैं। ये सातों नरक छह राजूमें हैं अर सातवें नरकके नीचे एक राजूमें निगोदादि स्थावर ही हैं, त्रस जीव नहीं हैं अर निगोदसे तीन लोक भरे हैं॥

अथानन्तर नरकका व्याख्यान सुनो—कैसे हैं नारकी जीव ? महाक्रूर, महाकुशब्द बोलनहारे, अति कठोर है स्पर्श जाका, महा दुर्गंध अन्धकाररूप नरकमें पडे हैं उपमारहित जे दुख तिनका भोगनहारा है शरीर जिनका, महाभयंकर नरक ताहि कुम्भीपाक कहिए जहां वैतरणी नदी है अर तीक्ष्ण कंटकयुक्त शाल्मलीवृक्ष जहां असिपत्रवन तीक्ष्ण खड्गकी धारा समान है पत्र जिनके अर जहां देदी-

प्यमान अग्निसे तप्तायमान तीखे लोहेके कीले निरन्तर हैं उन नरकानिमें मधु मांसके भक्षणहारे अर जीवोंके मारणहारे निरन्तर दुख भोगे हैं। जहां एक आध अंगुलमात्र भी क्षेत्र सुखका कारण नहीं अर एक पलको भी नारकियोंका विश्राम नाहीं जो चाहैं कि कहूं भाजकर छिप रहैं तो जहां जांय तहां ही नारकी मारैं अर असुरकुमार पापी देव बताय देंय। महाप्रज्वलित अंगारतुल्य जो नरककी भूमि तामें पडे ऐसे विलाप करैं जैसे अग्निमें मत्स्य व्याकुल हुआ विलाप करै अर भयसे व्याप्त काहू प्रकार निकस कर अन्य ठौर गया चाहैं तो तिनको शीतलता निमित्त और नारकी वैतरणी नदीके जलसे छांटे देय सो वैतरणी महा दुर्गंध क्षीरजलकी भरी ताकरि अधिक दाहको प्राप्त होंय बहुरि विश्रामके अर्थ असिपत्र-वनमें जांय सो असिपत्र सिरपर पडे मानो चक्र खड्ग गदादिक हैं तिनकरि विदारे जावें छिद गए हैं नासिका कर्ण कंधा जंघा आदि शरीरके अंग जिनके, नरकमें महाविकराल महादुखदाई पवन है अर रुधिरके कण वरसै हैं जहां घानीमें पेलिए हैं अर क्रूर शब्द होय हैं तीक्ष्ण शूलोंसे भेदिए हैं महा विलाप के शब्द करै हैं अर शाल्मली वृक्षोंसे घसीटिये हैं अर महामुद्गरोंके घातसे कूटिये हैं अर जब तिसाए होय हैं तब जलकी प्रार्थना करै हैं तब उन्हें तांबा गलाकर प्यावे हैं तातैं देह महा दग्धमान होय हैं ताकर महादुखी होय हैं अर कहै हैं कि हमें तृष्णा नाहीं तो पुनि बलात्कार इनको पृथिवीपर पछाडकर ऊपर पग देय संडासियोंसे मुख फाड ताता तांबा प्यावें हैं तातै कंठ भी दग्ध होय है अर हृदय भी दग्ध होय है, नारकियोंको नारकियोंका अनेक प्रकारका परस्पर दुख तथा भवनवासी देव जे असुरकुमार तिनकरि करवाया दुख सो कौन वरणन कर सकै। नरकमें मद्य मांसके भक्षणसे उपजा जो दुख ताहि जान

घमांसका भक्षण सर्वथा तजना ऐसे मुनिके वचन सुन नरकके दुखसे डरा है मन जाका, ऐसा जो सो बोला—हे नाथ! पापी जीव तो नरक हीके पात्र हैं अर जे विवेकी सम्यक्दृष्टि श्रावक

ज्योतिकर प्रकाशमान आकाशसे पडता देखा तब विचारी कि यह नक्षत्रपात भया तथा विद्युत्पात भया यह विचारकर निकट आय देखे तो बालक है तब हर्षकर बालकको उठाय लिया अर अपनी राणी पुष्पवती जो सेजमें सूती हुती ताकी जांघोंके मध्य धर दिया अर राजा कहता भया–हे राणी ! उठो उठो तिहारे बालक भया है बालक महाशोभायमान है । तब रानी सुन्दर है मुख जाका, ऐसे बालकको देख प्रसन्न भई, जाकी ज्योतिके समूहकर निद्रा जाती रही, महाविस्मयको प्राप्त होय राजाको पूछती भई–हे नाथ ! यह अद्भुत बालक कौन पुण्यवती स्त्रीने जाया । तब राजाने कही–हे प्यारी ! तैंने जना, तो समान और पुण्यवती कौन है, धन्य है भाग्य तेरा, जाके ऐसा पुत्र भया तब वह रानी कहती भई–हे देव ! मैं तो बांझ हूं मेरे पुत्र कहा एक तो मुझे पूर्वोपार्जित कर्मने ठगी बहुरि तुम कहा हास्य करो हो ? तब राजाने कही हे देवी ! तुम शंका मत करो स्त्रियोंके प्रच्छन्न (गुप्त) भी गर्भ होय है तब रानीने कही ऐसे ही हो हु परन्तु याके यह मनोहर कुंडल कहांते आए ऐसे भूमंडलमें नहीं तब राजाने कही हे रानी ! ऐसे विचारकर कहा ? यह बालक आकाशसे पडा अर मैं झेला तुझे दिया यह बडे कुलका पुत्र है याके लक्षणनिकर जानिए है यह मोटा पुरुष है अन्य स्त्री तो गर्भके भारकर खेदखिन्न भई है परन्तु हे प्रिये ! तैंने याहि सुखसे पाया अर अपनी कुक्षिमें उपजा भी बालक जो माता पिताका भक्त न होय अर विवेकी न होय शुभ काम न करे तो ताकर कहा ? कई एक पुत्र शत्रु समान होय परणवे हैं तातैं उदरके पुत्रका कहा विचार ? तेरे यह पुत्र सुपुत्र होयगा शोभनीक वस्तुमें सन्देह कहा ? अब तुम या पुत्रको लेवो अर प्रसूतिके घरमें प्रवेश कर अर लोकनिको यही जनावना जो राणीके गुप्त गर्भ हुता सो पुत्र भया तब राणी पतिकी आज्ञा प्रमाण प्रसन्न होय प्रसूतिगृहविषै गई, प्रभातविषै राजाने पुत्रके जन्मका उत्सव किया । रथनूपुरमें पुत्रके जन्मका ऐसा उत्सव भया जो सर्व कुटुम्ब अर नगरके लोग

आश्चर्यको प्राप्त भए रत्नोंके कुंडलकी किरणोंकर मंडित जो यह पुत्र सो माता पिताने याका नाम प्रभामण्डल धरा अर पोषनेके निमित्त धायको सौंपा सर्व अंतःपुरकी राणी आदि सकल स्त्री तिनके हाथ रूप कमलोंका भ्रमर होता भया भावार्थ—यह बालक सर्व लोकोंको वल्लभ, बालक सुखसों तिष्ठै है, यह तो कथा यहां ही रही।

अथानन्तर मिथिलापुरीमें राजा जनककी रानी विदेहा, पुत्रको हरा जान विलाप करती भई अति ऊंचे स्वरकर रुदन किया सर्व कुटुंबके लोक शोकसागरमें पडे रानी ऐसे पुकारे मानो शस्त्रकर मारी है हाय ! हाय पुत्र ! तुझे कौन लेगया मोको महादुखका करणहारा वह निर्दई कठोर चित्तके हाथ तेरे लेने पर कैसे पडे ? जैसे पश्चिम दिशाकी तरफ सूर्य आय अस्त हो जाय तैसे तू मेरे मंदभागिनीके आयकर अस्त होय गया। मैं भी परभवमें किसीका बालक विछोहा था सो मैं फल पाया तातैं कभी भी अशुभ कर्म न करना जो अशुभकर्म है सो दुखका बीज है जैसे बीज विना वृक्ष नहीं तैसे अशुभकर्म बिना दुख नहीं। जा पापीने मेरा पुत्र हरा सो मोकूं ही क्यों न मार गया, अधमुईकर दुःखके सागरमें काहेको डुबो गया या भांति रानी अति विलाप किया तब राजा जनक आय धीर्य बंधावता भया हे प्रिये ! तू शोक को मत प्राप्त होवे तेरा पुत्र जीवे है काहूने हरा है सो तू निश्चय सेती देखेगी वृथा काहेको रुदन करै है पूर्व कर्मके प्रभावकर गई वस्तु कोई तो देखिए कोई न देखिए तू स्थिरताको प्राप्त हो। राजा दशरथ मेरा परम मित्र है सो वाको यह वार्ता लिखूं हूं वह अर मैं तेरे पुत्रको तलाशकर लावेंगे भले २ प्रवीण मनुष्य तेरे पुत्रके ढूढिवेको पठावेंगे या भांति कहकर राजा जनकने अपनी स्त्रीको संतोष उपजाय दशरथके पास लेख भेजा सो दशरथ लेख बांच महाशोकवंत भया, राजा दशरथ अर जनक दोनोंने पृथ्वीमें बालकको तलाश किया परन्तु कहीं भी देखा नाहीं तब महाकष्टकर शोकको दाब बैठ रहे ऐसा कोई पुरुष अथवा स्त्री नहीं जो इस बालकके गए आंसुओंकर भरे नेत्र न भया होय सब ही शोकके वश होय रुदन करते भए।

अथानन्तर प्रभामण्डलके गएका शोक भुलावनेका महामनोहर जानकी बाल लीलकर सर्व बंधु-लोंकको आनन्द उपजावती भई। महाहर्षको प्राप्त भई जो स्त्रीजन तिनकी गोदमें तिष्ठती अपने शरीर की कांतिकर दशों दिशाको प्रकाशरूप करती वृद्धिको प्राप्त भई। कैसी है जानकी कमल सारिखे हैं नेत्र जाके अर महासुकंठ प्रसन्न वदन मानो पद्मद्रहके कमलके निवाससे साक्षात् श्रीदेवी ही आई है, याके शरीररूप क्षेत्रमें गुण रूप धान्य निपजते भए ज्यों २ शरीर बढा त्यों त्यों गुण बढे समस्त लोकोंको सुखदाता अत्यन्त मनोज्ञ सुन्दर लक्षणोंकर संयुक्त है अंग जाका, सीता कहिए भूमि ता समान क्षमा-की धरणहारी तातैं जगतमें सीता कहाई, बदनकर जीता है चंद्रमा जाने, पल्लव समान है कोमल आरक्त हस्त जाके, महाश्याम महासुन्दर इंद्रनील माणि समान है केशोंके समूह जाके, अर जीती है मदकी भरी हंसनीकी चाल जाने अर सुंदर है भौं जाकी अर मौलश्रीके पुष्प समान, मुखकी सुगंध, गुंजार करे हैं भ्रमर जापर, अति कोमल है पुष्पमाला समान भुजा जाकी अर केहरी समान है कटि जाकी अर महा श्रेष्ठ रसका भरा जो केलेका थंभ ता समान है जंघा जाकी, स्थल कमल समान महामनोहर हैं चरण जाके, अर अतिसुन्दर है कुचयुग्म जाका, अति शोभायमान है रूप जाका, महाश्रेष्ठ मंदिरके आंगन में महारमणीक सातसै कन्याओंके समूहमें शास्त्रोक्त क्रीडा करै, जो कदाचित् इंद्रकी पटराणी शची अथवा चक्रवर्तीकी पटराणी सुभद्रा याके अंगकी शोभाको किंचितमात्र भी धरें तो वे अतिमनोज्ञरूप भासे ऐसी यह सीता सबानितैं सुन्दर है, याको रूप गुणयुक्त देख राजा जनकने विचारा, जैसे रति काम-देव हीको योग्य है तैसे यह कन्या सर्व विज्ञानयुक्त दशरथके बडे पुत्र जो राम तिन हीके योग्य है, सूर्यकी किरणके योगसे कमलकी शोभा प्रकट होय है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सीता प्रभामण्डलका जन्म कथा नाम वर्णन करनेवाला छब्बीसवां पर्व पूर्ण भया॥ २६॥

अथानंतर राजा श्रेणिक यह कथा सुनकर गौतमस्वामीको पूछता भया हे प्रभो ! जनकने रामका कहा महात्म्य देखा जो अपनी पुत्री देनी विचारी तब गणधर चित्तको आनंदकारी वचन कहते भए। हे राजन् ! महा पुण्याधिकारी जो श्रीरामचन्द्र तिनका सुयश सुन, जा कारणतें जनक महा बुद्धिमानने रामको अपनी कन्या देनी विचारी । वैताड्यपर्वतके दक्षिण भागमें अर कैलाश पर्वतके उत्तर भागमें अनेक अंतर देश बसै हैं तिनमें एक अर्धबवर देश असंयमी जीवोंका है जहां महा मूढ जन निर्दई म्लेच्छ लोकों कर भरा ता विषै एक मयूरमाला नामा नगर कालके नगर समान महा भयानक, तहां अंतरगत नामा म्लेच्छ राज्य करे सो महा पापी दुष्टोंका नायक महा निर्दई बडी सेनासे नानाप्रकारके आयुधोंकर मण्डित सकल म्लेच्छ संग लेय आर्य देश उजाडनेको आया सो अनेक देश उजाडे । कैसे हैं म्लेच्छ ? करुणाभाव रहित प्रचंड हैं चित्त जिनके अर अत्यंत है दौड जिनकी सो जनक राजाका देश उजाडनेको उद्यमी भए जैसे टिड्डीदल आवै तैसे म्लेच्छोंके दल आए सबको उपद्रव करण लगे तब राजा जनकने अयोध्याको शीघ्र ही मनुष्य पठाए, म्लेच्छके आवनेके सब समाचार राजा दशरथको लिखे सो जनकके जन शीघ्र ही जाय सकल वृत्तांत दशरथसों कहते भए—हे देव ! जनक वीनती करी है परचक्र भीलोंका आया सो सब पृथिवी उजाडै है अनेक आर्य देश विध्वंस किये ते पापी प्रजाको एक वर्ण किया चाहे हैं सो प्रजा नष्ट भई तब हमारे जीनेकर कहा, अब हमको कहा कर्तव्य है ? उनसे लडाई करना अथवा कोई गढ पकड तिष्ठें लोगोंको गढमें राखें कालिंद्रीभागा नदीकी तरफ विषम म्लेच्छ हैं कहां जावें अथवा विपुलाचलकी तरफ जावें अथवा सर्व सेनासहित कुंजागिरिकी ओर जावें पर सेना महा भयानक आवै है साधु श्रावक सर्वलोक अति विह्वल हैं ते पापी गौ आदि सब जीवोंके भक्षक हैं सो जो आप आज्ञा देहु सो करें यह राज्य भी तिहारा और पृथिवी भी तिहारी, यहांकी प्रतिपालना सब तुमको कर्तव्य है,

प्रजाकी रक्षा किये धर्मकी रक्षा होय है, श्रावक लोक भावरहित भगवानकी पूजा करै हैं, नानाप्रकारके व्रत धरै हैं, दान करै हैं, शील पालै हैं, सामायिक करै हैं पोशा परिक्रमणा करे हैं, भगवानके बडे बडे चैत्यालयोंमें महाउत्सव होय है, विधिपूर्वक अनेक प्रकार महापूजा होय है अभिषेक होय है, विवेकी लोक प्रभावान करे हैं अर साधु दश लक्षण धर्मकर युक्त आत्मध्यानमें आरूढ मोक्षका साधन तप करे हैं सो प्रजाके नष्ट भए साधु अर श्रावकका धर्म लुपै है अर प्रजाके होते धर्म अर्थ काम मोक्ष सब सधैं हैं जो राजा परचक्रतें पृथिवीकी प्रतिपालना करै सो प्रशंसाके योग्य है, राजाके प्रजाकी रक्षातें या लोक परलोकविषै कल्याणकी सिद्धि होय है प्रजा विना राजा नहीं अर राजा बिना प्रजा नहीं, जीवदयामय धर्मका जो पालन करे सो यह लोक परलोकमें सुखी होय है । धर्म अर्थ काम मोक्षकी प्रवृत्ति लोगोंके राजाकी रक्षासे होय है, अन्यथा कैसे होय ? राजाके भुजबलकी छाया पायकर प्रजा सुखसे रहै है जाके देशमें धर्मात्मा धर्म सेवन करै हैं दान तप शील पूजादिक करै हैं सो प्रजाकी रक्षाके योगसे छठा अंश राजाको प्राप्त होय है यह सर्व वृत्तांत राजा दशरथ सुनकर आप चलनेको उद्यमी भए अर श्रीरामको बुलाय राज्य देना विचारा वादित्रोंके शब्द होते भए तब मंत्री आए अर सब सेवक आए हाथी घोडे रथ पयादे सब आय ठाढे भए जलके भरे स्वर्णमयी कलश स्नानके निमित्त सेवक लोग भरलाए अर शस्त्र बांध कर बडे बडे सामंत लोक आए अर नृत्यकारिणी नृत्य करती भई अर राजलोककी स्त्री जन नानाप्रकारके वस्त्र आभूषण पटनमें ले ले आईं। यह राजाभिषेकका आडंबर देखकर राम दशरथसे पूछते भये कि हे प्रभो ! यह कहा है तब दशरथने कही—हे पुत्र ! तुम या पृथिवीकी प्रतिपालना करो मैं प्रजाके हित निमित्त शत्रुवोंके समूहसे लडने जाऊं हूं वे शत्रु देवोंकर भी दुर्जय हैं तब कमलसारिखे नेत्र हैं जिनके ऐसे श्रीराम कहते भए—हे तात ! ऐसे रंकन पर एता परिश्रम कहा ! ते आपके जायवे लायक नहीं वे

पशुसमान दुरात्मा जिनसे संभाषण करना भी उचित नाहीं तिनके सन्मुख युद्धकी अभिलाषाकर आप कहां पधारें। उन्दरु (चूहा) के उपद्रव कर हस्ती क्रोध न करे अर रुईके भस्म करनेके अर्थ अग्नि कहा परिश्रम करै तिनपर जानेकी हमको आज्ञा करो यही उचित है। ये रामके वचन सुन दशरथ अति हर्षित भये तब रामको उरसे लगाय कर कहते भए। हे पद्म! कमलसमान हैं नेत्र जाके ऐसे तुम बालक सुकुमार अंग कैसे उन दुष्टोंको जीतोगे यह बात मेरे मनमें न आवै। तब राम कहते भये हे तात! कहा तत्कालका उपजा अग्निका कणका मात्र भी विस्तीर्ण वनको भस्म न करे, करे ही करे, छोटी बडी अवस्थापर कहा प्रयोजन अर जैसे अकेला उगता ही बाल सूर्य घोर अंधकारके समूहको हरे ही हरै तैसे हम बालक ही तिन दुष्टोंको जीतैं ही जीतैं। ये वचन रामके सुनकर राजा दशरथ अति प्रसन्न भए, रोमांच होय आए अर बालक पुत्रके भेजनेका कछु इक विषाद भी उपजा नेत्र सजल होय गए। राजा मनमें विचारै है जो महा पराक्रमी त्यागादि व्रतके धारणहारे क्षत्री तिनकी यही रीति है जो प्रजाकी रक्षाके निमित्त अपने प्राण भी तजनेका उद्यम करें अथवा आयुके क्षय विना मरण नाहीं। यद्यपि गहन रणमें जाय तो भी न मरै ऐसा चिंतवन करता जो राजा दशरथ ताके चरणकमलयुगको नमस्कारकर राम लक्ष्मण बाहिर निसरे। सर्व शास्त्र अर शस्त्र विद्यामें प्रवीण सर्व लक्षणोंकर पूर्ण सबको प्रिय है दर्शन जिनका, चतुरंग सेनाकर मण्डित, विभूतिकर पूर्ण अपने तेजकर देदीप्यमान, दोनों भाई राम लक्ष्मण रथमें आरूढ होय जनककी मदत चले सो इनके जायवे पहिले जनक अर कनक दोनों भाई, पर सेनाका दो योजन अंतर जान युद्ध करणेको चढे हुते सो जनक कनकके महारथी योधा शत्रुवोंके शब्द न सहते संते म्लेच्छोंके समूहमें जैसे मेघकी घटामें सूर्यादि ग्रह प्रवेश करें तैसे यह थे सो म्लेच्छोंके अर सामंतोंके महायुद्ध भया जाके देखे अर सुने रोमांच होय आवैं। कैसा संग्राम भया बडे शस्त्रनका है प्रहार जहां, दोनों सेनाके लोक

व्याकुल भए, कनकको म्लेच्छका दबाव भया तब जनक भाईकी मदतके निमित्त अतिक्रोधायमान होय दुर्निवार हाथियोंकी घटा प्रेरता भया सो वे बरबर देशके म्लेच्छ महा भयानक जनकको भी दबावते भये ताही समय राम लक्ष्मण जाय पहुंचे, अति अपार महागहन म्लेच्छकी सेना रामचन्द्रने देखी, सो श्रीरामचन्द्रका उज्ज्वल छत्र देख कर शत्रुवोंकी सेना कंपायमान भई, जैसे पूर्णमासीके चन्द्रमाका उदय देखकर अंधकारका समूह चलायमान होय, म्लेच्छोंके वाणोंकर जनकका वषतर टूट गया हुता और जनक खेदखिन्न भया हुता सो रामने धीर्य बंधाया जैसे संसारी जीव कर्मोंके उदय कर दुःखी होय सो धर्मके प्रभाव कर दुखोंसे छूट सुखी होंय। तैसे जनक रामके प्रभावकर सुखी भया, चंचल तुरंगनि कर युक्त जो रथ तामें आरूढ जो राघव महाउद्योत रूप है शरीर जिनका वषतर पहिरे हार अर कुंडल कर मंडित धनुष चढाए और वाण हाथमें सिंहके चिह्नकी है ध्वजा जिनके अर जिन पर चमर ढुरे हैं और महामनोहर उज्ज्वल छत्र सिर पर फिरे हैं पृथिवीके रक्षक धीर वीर है मन जिनका ऐसे श्रीराम लोकके वल्लभ प्रजाके पालक शत्रुवोंकी विस्तीर्ण सेनामें प्रवेश करते भए। सुभटनिके समूह कर संयुक्त जैसे सूर्य किरणोंके समूह कर सोहै तैसे शोभते भए जैसे माता हाथी कदलीवनमें बैठा केलोंके समूहका विध्वंस करे तैसे शत्रुवोंकी सेनाका भंग किया। जनक अर कनक दोनों भाई बचाए अर लक्ष्मण जैसे मेघ बरसें तैसे वाणोंकी वर्षा करता भया, तीक्ष्ण सामान्य चक्र अर शक्ति कनक त्रिशूल कुठार करौत इत्यादि शस्त्रोंके समूह लक्ष्मणके भुजावों कर चले, तिनकर अनेक म्लेच्छ मुवे जैसे फरसीनकर वृक्ष कटें, ते भील पारधी महाम्लेच्छ लक्ष्मणके वाणोंकर विदारे गये हैं उरस्थल जिनके, कटगई हैं भुजा अर ग्रीवा जिनकी, हजारां पृथिवीमें पडे, तब वे पृथिवीके कंटक तिनकी सेना लक्ष्मण आगे भागी, लक्ष्मण सिंहसमान दुर्निवार ताहि देखकर जे म्लेच्छोंमें शार्दूल समान हुते ते हू अतिक्षोभको प्राप्त भए, महावादित्रोंके शब्द करते

अर मुखसे भयानक शब्द बोलते अर धनुषबाण खड्ग चक्रादि अनेक शस्त्रोंको धरे अर रक्त वस्त्र पहिरे, खंजर जिनके हाथमें, नाना वर्णका है अंग जिनका, कैयक काजल समान श्याम, कैयक कर्दम समान, कैयक ताम्रवर्ण, वृक्षोंके बक्कल पहिरे अर नानाप्रकारके गेरुवादि रंग तिनकर लिप्त हैं अंग जिनके अर नानाप्रकारके वृक्षोंकी मंजरी तिनके हैं छोगा सिरपर जिनके, अर कौडी सारिखे हैं दांत जिनके अर विस्तीर्ण हैं उदर जिनके ऐसे भासैं मानों कुटक जातिके वृक्ष ही फूले हैं अर कैयक भील भयानक आयुधोंको धरे कठोर हैं जंघा जिनकी, भारी भुजावोंके धरणहारे असुरकुमार देवों सारिखे उनमत्त, महानिर्दई पशुमांसके भक्षक, महादृढ जीव हिंसाविषै उद्यमी, जन्महीसे लेकर पापोंके करणहारे, तत्काल खोटे आरम्भनके करणहारे अर सूकर भैंस व्याघ्र ल्याली इत्यादि जीवोंके चिह्न हैं जिनकी, ध्वजावोंमें नाना प्रकारके जे बाहन तिन पर चढे, पत्रोंके है छत्र जिनके नानाप्रकारके युद्धके करणहारे आति दौडके करणहारे महा प्रचंड तुरंग समान चंचल ते भील मेघमाला समान लक्ष्मणरूप पर्वतपर अपने स्वामीरूप पवनके प्रेरे बाण वृष्टि करते भए । तब लक्ष्मण तिनके निपात करनेको उद्यमी तिनपर दौडे, महाशीघ्र है वेग जिनका जैसे महा गजेंद्र वृक्षोंके समूह पर दौडे सो लक्ष्मणके तेज प्रतापकर वे पापी भागे सो परस्पर पगों कर मसले गए तब तिनका अधिपति अन्तरगत अपनी सेनाको धीर्य बंधाय सकल सेना सहित आप लक्ष्मणके सन्मुख आया महाभयंकर युद्ध किया, लक्ष्मणको रथरहित किया, तब श्रीरामचन्द्रने अपना रथ चलाया, पवन समान है वेग जाका, लक्ष्मणके समीप आए, लक्ष्मणको दूजे रथ पर चढाया अर आप जैसे अग्नि वनको भस्म करै तैसे तिनकी अपार सेनाको बाण रूप अग्नि कर भस्म करते भए कैयक तो वाणनिकरि मारे अर कैयक कनकनामा शस्त्रसे विध्वंसे कैयक तोमरनामा आयुधसे हते, कैयक सामान्य चक्रनामा शस्त्रसे निपात किए, वह म्लेच्छोंकी सेना महाभयंकर प्रत्येक दिशाको जाती रही, छत्र

चमर ध्वजा धनुष आदि शस्त्र डार डार भाजे महा पुण्याधिकारी जो राम ताने एक निमिषमें म्लेच्छोंका निराकरण किया जैसे महामुनि क्षणमात्रमें सर्व कषायोंका निपात करें तैसे उसने किया वह पापी अंतरगत अपार सेना रूप समुद्रकर आया हुता सो भयखाय दस घोडोंके असवारोंसे भागा तब श्रीरामने आज्ञा करी ये नपुंसक युद्धसे पराङ्गमुख होय भागे अब इनके मारने कर कहा ? तब लक्ष्मण भाईसहित पाछे बाहुडे। वे म्लेच्छ भयसे व्याकुल होय सह्याचल विन्ध्याचलके वनोंमें छिप गए। श्रीरामचन्द्रके भयसे पशु हिंसादिक दुष्ट कर्मको तज वन फलोंका आहार करें जैसे गरुडतैं सर्प डरै तैसे श्रीरामसे डरते भए। लक्ष्मणसहित श्रीरामने शांत है स्वरूप जिनका, राजा जनकको बहुत प्रसन्न कर विदा किया अर आप पिताके समीप अयोध्याको चले सर्व पृथिवीके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए। यह सबको परम आनंद उपजा परमहर्षवान रोमांच होय आए। रामके प्रभावसे सब पृथ्वी विभूतिसे शोभायमान भई जैसे चतुर्थकालके आदि ऋषभदेवके समय सम्पदासे शोभायमान भई हुती धर्म अर्थ कामकर युक्त जे पुरुष तिनसे जगत ऐसा भासता भया जैसे बर्फके अवरोधकर वर्जित जे नक्षत्र तिनसे आकाश शोभै। गौतमस्वामी कहे हैं हे राजा श्रेणिक ! ऐसा रामका महात्म्य देखकर जनकने अपनी पुत्री सीताको रामको देनी विचारी बहुत कहनेकरि कहा ? जीवोंके संयोग अथवा वियोगका कारण भाव एक कर्मका उदय ही है सो वह श्रीराम श्रेष्ठ पुरुष महासौभाग्यवंत अतिप्रतापी औरनमें न पाइये ऐसे गुणोंकर पृथिवीमें प्रसिद्ध होता भया जैसे किरणोंके समूहकर सूर्य महिमाको प्राप्त होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषै म्लेच्छनिकी हार, रामकी जीतका कथन वर्णन करनेवाला सताइसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २७॥

अथानन्तर ऐसे पराक्रमकर पूर्ण जो राम तिनकी कथा विना नारद एकक्षण भी न रहे सदा राम कथा करबो ही करे। कैसा है नारद रामके यश सुनकर उपजा है परम आश्चर्य जाको बहुरि नारदने सुनी जो जनकने रामको जानकी देनी विचारी कैसी है जानकी सर्व पृथिवीविषै प्रकट है महिमा जाकी नारद मनमें चिंतवता भया। एकबार सीताको देखूं जो कैसी है, कैसे लक्षणोंकर शोभायमान है जो जनकने रामको देनी करी है सो नारद शीलसंयुक्त है हृदय जाका, सीताके देखनेको सीताके घर आया सो सीता दर्पणमें मुख देखती हुती सो नारदकी जटा दर्पणमें भासी सो कन्या भयकर व्याकुल भई मन में चितवती भई हाय माता यह कौन है भयकर कम्पायमान होय महलके भीतर गई। नारद भी लारही महलमें जाने लगे तब द्वारपालीने रोका सो नारदके अर द्वारपालीके कलह हुआ कलहके शब्द सुन खड्गके अर धनुषके धारक सामंत दौडे ही गए कहते भए, पकड लो पकड लो यह कौन है। ऐसे तिन शस्त्र धारियोंके शब्द सुनकर नारद डरा, आकाशविषै गमनकर कैलाश पर्वत गया तहां, तिष्ठकर चितवता भया।

जो मैं महाकष्टको प्राप्त भया सो मुशकिलसे बचा नवां जन्म पाया जैसे पक्षी दावानलसे बाहिर निकसे तैसे मैं वहांसे निकसा। सो धीरे २ नारदकी कांपनी मिटी अर ललाटके पसेव पूंछ केश विखर गए हुते ते समारकर बांधे, कांपे हैं हाथ जिसके, ज्यों ज्यों वह वात याद आवै त्यों त्यों निश्वास नाषे महाक्रोधायमान होय मस्तक हलाएं ऐसे विचारता भया कि देखो कन्याकी दुष्टता मैं अदुष्टचित्त सरल स्वभाव रामके अनुरागते ताके देखनेको गया हुता सो मृत्यु समान अवस्थाको प्राप्त भया यम समान दुष्ट मनुष्य मोहि पकडनेको आए सो भली भई जो बचा पकडा न गया। अब वह पापिनी मो आगे कहां बचे जहां जहां जाय तहां ही उसे कष्टमें नाखूं मैं विना बजाये वादित्र नाचूं सो जब वादित्र बाजे

तब कैसे टरूं ऐसा विचारकर शीघ्र ही वैताढ्यकी दक्षिणश्रेणीविषै जो रथनूपुर नगर वहां गया महा सुन्दर जो सीताका रूप सो चित्रपटविषै लिख लेगया, कैसा है सीताका रूप ? महासुंदर है ऐसा लिखा मानो प्रत्यक्ष ही है सो उपवनविषै भामंडल चंद्रगतिका पुत्र अनेक कुमारोंसहित क्रीडा करनेको आया हुता सो चित्रपट उसके समीप डार आप छिप रहा सो भामण्डलने यह तो न जान्या कि यह मेरी बहिनका चित्रपट है चित्रपट देख मोहित चित्त भया लज्जा अर शास्त्रज्ञान अर विचार सब भूल गया लम्बे २ निश्वास नाषे होठ सूक गए गात शिथिल हो गया रात्रि अर दिवस निद्रा न आवे अनेक मनोहर उपचार कराए तो भी इसे सुख नाहीं, सुगंध पुष्प अर सुंदर आहार याहि विष समान लगें । शीतल जलसे छांटिये तौ भी संताप न जाय कबहूं मौन पकड रहे कबहूं हंसे कबहूं विकथा बके कबहुं उठ खडा रहे वृथा उठ चले बहुरि पाछा आवे ऐसी चेष्टा करे मानो याहि भूत लगा है तब बडे बडे बुद्धिमान याहि कामातुर जान परस्पर वात करते भए जो यह कन्याका रूप किसीने चित्रपटविषै लिखकर इसके ढिग आय डारा सो यह विक्षिप्त होय गया कदाचित् यह चेष्टा नारदने ही करी होय तब नारदने अपने उपाय कर कुमारको व्याकुल जान लोगनकी वात सुन कुमारके वंधूनिको दर्शन दिया तब तिनने बहुत आदर कर पूछा हे देव ! कहो यह कौनकी कन्याका रूप है । तुमने कहां देखी यह कोऊ स्वर्गविषै देवांगनाका रूप है अथवा नागकुमारीका रूप है या पृथ्वीविषै आई होवेगी सो तुमने देखी तब नारद माथा हलाय कर बोला कि एक मिथिला नामा नगरी है वहां महासुंदर राजा इंद्रकेतुका पुत्र जनक राज्य करे है ताके विदेहा राणी है सो राजाको अति प्रिय है तिनकी पुत्री सीताका यह रूप है ऐसा कहकर फिर नारद भामण्डलसे कहते भए हे कुमार ! तू विषाद मत कर तू विद्याधर राजाका पुत्र है तोहि यह कन्या दुर्लभ नाहीं सुलभ ही है । अर तू रूपमात्रहीसे क्या अनुरागी भया । यामें बहुत गुण हैं याके हाव भाव

बिलासादिक कौन वर्णन कर सके अर यही देख तेरा चित्त वशीभूत हुआ सो क्या आश्चर्य है । जिसे देखे बडे पुरुषोंका भी चित्त मोहित हो जाय । मैं तो यह आकारमात्र पटमें लिखा है ताकी लावण्यता वाहीविषै है लिखवेमें कहां आवै नवयौवन रूप जलकर भरा जो कांतिरूप समुद्र ताकी लहरोंविषै वह स्तनरूप कुंभोंकर तिरे है अर ऐसी स्त्री तोय टार और कौनको योग्य, तेरा अर वाका संगम योग्य है या भांति कहकर भामंडलको अति स्नेह उपजाया अर आप नारद आकाशविषै विहार किया भामंडल कामके बाणकर वेध्या अपने चित्तमें बिचारता भया कि यदि यह स्त्री रत्न शीघ्र ही मुझे न मिले तो मेरा जीवना नाहीं देखो यह आश्चर्य है वह सुंदरी परमकांतिकी धरणहारी मेरे हृदयमें तिष्ठती हुई अग्निकी ज्वाला समान हृदयको आताप करे है सूर्य है सो तो वाह्य शरीरको आताप करे है अर काम है सो अन्तर वाह्य दाह उपजावे है । सूर्यके आताप निवारवेको तो अनेक उपाय हैं परंतु कामके दाह निवारवेका उपाय नाहीं अब मुझे दो अवस्था आय बनी हैं कै तो वाका संयोग होय अथवा कामके बाणोंकर मेरा मरण होयगा निरन्तर ऐसा विचारकरि भामंडल विह्वल हो गया सो भोजन तथा शयन सब भूल गया, ना महलविषै ना उपवनविषै याह्वि काहू ठौर साता नहीं, यह सब वृत्तान्त कुमारके व्याकुलताका कारण नारदकृत कुमारकी माता जानकर कुमारके पितासे कहती भई—हे नाथ ! अनर्थका मूल जो नारद ताने एक अत्यन्त रूपवती स्त्रीका चित्रपट लायकर कुमारको दिखाया सो कुमार चित्रपटको देखकर अति विभ्रम चित्त हो गया सो धीर्य नहीं धरे है लज्जारहित होय गया है बारंबार चित्रपटको निरखे है अर सीता ऐसे शब्द उच्चारण करै है अर नानाप्रकारकी अज्ञान चेष्टा करे है मानो याहि वाय लगी है तातैं तुम शीघ्र ही साता उपजावनेका उपाय विचारो वह भोजनादिकते पराङ्मुख होय गया है सो वाके प्राण न छूटे ता पहिले ही यत्न करो । तब यह वार्ता चंद्रगति सुनकर अति व्याकुल

भया अपनी स्त्रीसहित आयकर पुत्रको ऐसे कहता भया हे पुत्र ! तू स्थिरचित्त हो अर भोजनादि सर्व क्रिया जैसे पूर्वे करे था तैसे कर जो कन्या तेरे मनमें बसी है सो तुझे शीघ्र ही परणाऊंगा, इस भांति कहकर पुत्रको शांतता उपजाय राजा चंद्रगति एकांतविषै हर्ष विषाद अर आश्चर्यको धरता संता अपनी स्त्रीसे कहता भया हे प्रिये ! विद्याधरोंकी कन्या अतिरूपवंती अनुपम उनको तजकर भूमिगोचरियोंका संबंध हमको कहां उचित, अर भूमिगोचरियोंके घर हम कैसे जावेंगे अर जो कदाचित् हम जाय प्रार्थना करें अर वह न दें तो हमारे मुखकी प्रभा कहां रहेगी, तातैं कोई उपायकर कन्याके पिताको यहां शीघ्र ही ल्यावें ऐसा उपाय नाहीं, तब भामंडलकी माता कहती भई हे नाथ ! युक्त अथवा अयुक्त तुम ही जानो तथापि ये तुम्हारे वचन मुझे प्रिय लागे तब एक चपलवेग नामा विद्याधर अपना सेवक आदर सहित बुलायकर राजा सकल वृत्तांत वाके कानमें कहा अर नीके समझाया सो चपलवेग राजा की आज्ञा पाय बहुत हर्षित होय शीघ्र ही मिथिला नगरीको चला, जैसे प्रसन्न भया तरुण हंस सुगंधकी भरी जो कमलनी ताकी ओर जाय, यह शीघ्र ही मिथिला नगरी जाय पहुंचा आकाशतैं उतरकर अश्व का भेष धर गौ महिषादि पशुनिको त्रास उपजावता भया, राजाके मंडलमें उपद्रव किया तब लोगोंकी पुकार आई सो राजा सुनकर नगरके बाहिर निकसा प्रमोद उद्वेग अर कौतुकका भरा राजा अश्वको देखता भया। कैसा है अश्व ? नवयौवन है अर उछलता संता अति तेजको धरे मन समान है वेग जाका, सुंदर हैं लक्षण जाके, अर प्रदक्षिणारूप महा आवर्तको धरे है मनोहर है मुख जाका, अर महाबलवान खुरोंके अग्रभागकर मानों मृदंग ही बजावै है जापर कोई चढ न सके अर नासिकाका शब्द करता संता अति शोभायमान है ऐसे अश्वको देखकर राजा हर्षित होय बारंबार लोगनिसूं कहता भया यह काहू का अश्व बंधन तुडाय आया है तब पंडितोंके समूह राजासे प्रिय वचन कहते भए—हे राजन् ! या तुरंग

के समान कोई तुरंग नाहीं, औरोंकी तो क्या वात ऐसा अश्व राजाके भी दुर्लभ, आपके भी देखनेमें ऐसा अश्व न आया होयगा। सूर्यके रथके तुरंगनिकी अधिक उपमा सुनिये है सो या समान तो ते भी न होयेंगे कोई दैवके योगते आपके निकट ऐसा अश्व आया है सो आप याहि अंगीकार करो। आप महापुण्याधिकारी हो, तब राजाने अश्वको अंगीकार किया। अश्वशालामें ल्याय सुंदर डोरीते बांधा अर भांति भांतिकी योग सामग्रीकर याके यत्न किये एक मास याको यहां हुआ एक दिन सेवकने आय राजासूं नमस्कारकर विनती कीनी। हे नाथ एक वनका मतंग गज आया है सो उपद्रव करे है तब राजा बडे गजपर असवार होय वा हाथीकी ओर गए वह सेवक जिसने हाथीका वृत्तांत आय कहा था ताके कहे मार्ग कर राजाने महावनमें प्रवेश किया सो सरोवरके तट हाथी खडा देखा अर चाकरोंसे कहा जो एक तेज तुरंग ल्यावो तब मायामई अश्वको तत्काल ले गए। सुंदर है शरीर जाका राजा उसपर चढे सो वह आकाशमें राजाको ले उडा तब सब परिजन पुरजन हाहाकार कर शोकवंत भए आश्चर्यकर व्याप्त हुवा है मन जिनका तत्काल पाछे नगरमें गए॥

अथानन्तर वह अश्वके रूपका धारक विद्याधर मन समान है वेग जाका अनेक नदी पहाड वन उपवन नगर ग्राम देश उलंघ कर राजाको रथनूपुर लेगया। जब नगर निकट रहा तब एक वृक्षके नीचे आय निकसा सो राजा जनक वृक्षकी डाली पकड लूंब रहा। वह तुरंग नगरमें आया राजा वृक्षते उतर विश्रामकर आश्चर्य सहित आगे गया तहां एक स्वर्णमई ऊंचा कोट देखा अर दरवाजा रत्नमई तोरणों कर शोभायमान अर महासुंदर उपवन देखा ताविषैं नाना जातिके वृक्ष अर बेल फल फूलनिकर संपूर्ण देखे जिनपर नानाप्रकारके पक्षी शब्द करे हैं अर जैसे सांझके बादले होवें तैसे नानारंगके अनेक महिल देखे मानों ये महिल जिनमंदिरकी सेवा ही करे हैं तब राजा खड्गको दाहिने हाथमें मेल सिंह समान अति निशंक क्षत्री

व्रतमें प्रवीण दरवाजेमें गया दरवाजेके भीतर नानाजातिके फूलनिकी बाडी अर रत्न स्वर्णके सिवाण जाके ऐसी वापिका स्फटिकमणि समान उज्ज्वल है जल जिसका अर महा सुगन्ध मनोग्य विस्तीर्ण कुंद जातिके फूलोंके मंडप देखे। चलायमान हैं पल्लवोंके समूह जिनके अर संगीत करे हैं भ्रमरोंके समूह जिन-पर अर माधवी लतानिके समूह फूले देखे महा सुन्दर अर आगे प्रसन्न नेत्रोंकर भगवानका मंदिर देखा कैसा है मन्दिर मोतिनिकी झालरीनिकर शोभित रत्ननिके झरोखनि कर संयुक्त स्वर्ण मई हजारां महा-स्तम्भ तिनकर मनोहर अर जहां नानाप्रकारके चित्राम सुमेरुके शिखर समान ऊंचे शिखर अर वज्रमणि जे हीरा तिनकर वेब्या है पीठ (फरश) जाका ऐसे जिनमंदिरको देखकर जनक विचारता भया कि यह इन्द्रका मन्दिर है अथवा अहिमिन्द्रका मन्दिर है ऊर्धलोकते आया है अथवा नागेंद्रका भवन पातालते आया है अथवा काहू कारणतें सूर्यकी किरणानिका समूह पृथिवीविषे एकत्र भया है अहो उस मित्र विद्याधर ने मेरा बडा उपकार किया जो मोहि यहां लेआया ऐसा स्थानक अबतक देखा नाहीं। भला मन्दिर देखा ऐसा चिंतवनकर महामनोहर जो जिनमंदिर तामें बैठि फूल गया है मुखकमल जाका श्रीजिनराजका दर्शन किया कैसे हैं श्रीजिनराज? स्वर्ण समान है वर्ण जिनका अर पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है सुंदर मुख जिनका अर पद्मासन विराजमान अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त कनकमई कमलोंकर पूजित अर नानाप्रकारके रत्ननिकर जडित जे छत्र ते हैं सिरपर जिनके अर ऊंचे सिंहासनपर तिष्ठे हैं तब जनक हाथ जोड सीस निवाय प्रणाम करता भया हर्षकर रोमांच होय आए भक्तिके अनुरागकर मूर्छाको प्राप्त भया क्षणएकमें सचेत होय भगवानकी स्तुति करने लगा अति विश्रामको पाय परम आश्चर्यको धरता संता जनक चैत्यालयविषे तिष्ठे है। वह चपलवेग विद्याधर जो अश्वका रूपकर इनको ले आया हुता सो अश्वका रूप दूर कर राजा चंद्रगतिके पास गया अर नमस्कार कर कहता भया। मैं जनकको ले आया मनोग्य वनमें भगवानके चैत्यालयविषे

तिष्ठे है, तब राजा सुनकर बहुत हर्षको प्राप्त भया थोडेसे समीपी लोक लार लेय राजा चन्द्रगति उज्ज्वल है मन जिसका पूजाकी सामग्री लेय मनोरथ समान रथ पर आरूढ होय चैत्यालयमें आया सो राजा जनक चन्द्रगतिकी सेनाको देख अर अनेक बादित्रोंका नाद सुनकर कछु इक शंकायमान भया। कैयक विद्याधर मायामई सिंहोंपर चढे हैं कैएक मायामई हाथीयों पर चढे हैं कैएक घोडावों पर चढे कैएक हंसो पर चढे तिनके वीच राजा चन्द्रगति है सो देख कर जनक विचारता भया जो विजयार्ध पर्वत पर विद्याधर वसे हैं ऐसी मैं सुनता सो ये विद्याधर हैं विद्याधरोंकी सेनाके मध्य यह विद्याधरोंका अधिपति कोई परम दीप्ति कर शोभे है ऐसा चिंतवन जनक करे है ताही समय वह चन्द्रगति राजा दैत्यजातिके विद्याधरोंका स्वामी चैत्यालयविषे आय प्राप्त भया। महाहर्षवंत नम्रीभूत है शरीर जाका तब जनक ताको देख कर कछुइक भयवान होय भगवानके सिंहासनके नीचे बैठ रहा, अर वह राजा चन्द्रगति भक्ति कर भगवानके चैत्यालयविषे जाय प्रणाम कर विधिपूर्वक महा उत्तम पूजा करी अर परमस्तुति करता भया बहुरि सुन्दर हैं स्वर जिसके ऐसी बीणा हाथमें लेकर महाभावना सहित भगवानके गुण गावता भया सो कैसे गावे है सो सुनो, अहो भव्य जीव हो जिनेंद्रको आराधहु कैसे हैं जिनेंद्रदेव तीनलोकके जीवोंको वर दाता अर अविनाशी है सुख जिनके अर देवनिमें श्रेष्ठ जे इन्द्रादिक तिनकर नमस्कार करने योग्य हैं। कैसे हैं वे इन्द्रादिक महा उत्कृष्ट जो पूजाका विधान ताविषे लगाया है चित्त जिन्होंने अहो उत्तम जन हो श्रीऋषभदेवको मन वचन काय कर निरंतर भजो कैसे हैं ऋषभदेव महाउत्कृष्ट हैं अर शिवदायक हैं जिनके भजेते जन्म जन्मके किए पाप समस्त विलय होय हैं अहो प्राणी हो जिनवरको नमस्कार करहु कैसे हैं जिनवर महा अतिशय धारक हैं कर्मनिके नाशक हैं अर परमगति जो निर्वाण ताको प्राप्त भए है अर सर्व सुरासुर नर विद्याधर उन कर पूजित हैं चरण कमल जिनके अर

क्रोधरूप महावैरीका भंग करनहारे हैं मैं भक्तिरूप भया जिनेंद्रको नमस्कार करूं हूं उत्तम लक्षणकर संयुक्त है देह जिनका अर विनय कर नमस्कार करे हैं सर्व मुनियोंके समूह जिनको ते भगवान नमस्कार मात्र ही से भक्तोंके भय हरे हैं अहो भव्य जीव हो जिनवरको वारंबार प्रणाम करहु वे जिनवर अनुपम गुण को धरे हैं अर अनुपम है काया जिनकी अर हते हैं संसारमई सकल कुकर्म जिनने अर रागादिक रूप जे मल तिनकर रहित महानिर्मल हैं अर ज्ञानावरणादिक रूप जो पट तिनके दूर करनहारे पारकरबेको अति प्रवीण हैं अर अत्यंत पवित्र हैं इसभांति राजा चन्द्रगतिने बीण बजाय भगवानकी स्तुति करी तब भगवानके सिंहासनके नीचेते राजा जनक भय तज कर जिनराजकी स्तुति कर निकसा महाशोभायमान तब चन्द्रगति जनकको देख हर्षित भया है मन जिसका सो पूछता भया तुम कौन हो या निर्जन स्थानकविषै भगवानके चैत्यालयविषै कहां ते आए हो तुम नागोंके पति नगेन्द्र हो अथवा विद्याधरोंके अधिपति हो हे मित्र ! तुम्हारा नाम क्या है सो कहो। तब जनक कहता भया हे विद्याधरोंके पति ! मैं मिथिला नगरीसें आया हूं अर मेरा नाम जनक है। मायामई तुरंग मोहि ले आया है जब ये समाचार जनकने कहे तब दोऊ अति प्रीतिकर मिले परस्पर कुशल पूछी एक आसन पर बैठ फिर क्षणएक तिष्ठ कर दोऊ आपसमें विश्वासकों प्राप्त भए तब चन्द्रगति और कथाकर जनकको कहते भए हे महाराज मैं बडा पुण्यवान जो मोहि मिथिला नगरीके पतिका दर्शन भया तुम्हारी पुत्री महा शुभ लक्षणनिकर माण्डित है मैं बहुत लोगनिके मुखसे सुनी है सो मेरे पुत्र भामंडलको देवो तुमसे सम्बन्ध पाय मैं अपना परम उदय मानूंगा तब जनक कहते भए हे विद्याधराधिपति तुम जो कही सो सब योग्य है परंतु मैं मेरी पुत्री राजा दशरथके बडे पुत्र जो श्रीरामचन्द्र तिनको देनी करी है। तब चन्द्रगति बोले काहेते उनको देनी करी है तब जनकने कही जो तुमको सुनिबेको कौतुक है तो सुनो। मेरी मिथिलापुरी रत्नादिक

धनकर अर गौ आदि पशुअन कर पूर्ण सो अर्धबर्वर देशके म्लेच्छ महाभयंकर उन्होंने आय मेरे देशको पीडा करी, धनके समूह लूटने लगे अर देशमें श्रावक अर यतिका धर्म मिटने लगा सो मेरे अर म्लेच्छों के महा युद्ध भया ता समय राम आय मेरी अर मेरे भाईकी सहायता करी वे म्लेच्छ जो देवोंसे भी दुर्जय सो जीते अर रामका छोटा भाई लक्ष्मण इन्द्र समान पराक्रमका धरणहारा है अर बडे भाईका सदा आज्ञाकारी है। महा विनयकर संयुक्त है। वे दोनों भाई आय कर जो म्लेच्छोंकी सेनाको न जीतते तो समस्त पृथिवी म्लेच्छमई हो जाती। वे म्लेच्छ महा अविवेकी शुभक्रियारहित लोकको पीडाकारी महा भयंकर विष समान दारुण उत्पातका स्वरूप ही हैं । सो रामके प्रसाद कर सब भाज गए । पृथिवीका अमंगल मिट गया वे दोनों राजा दशरथके पुत्र महादयालु लोकनिके हितकारी तिनको पायकर राजा दशरथ सुखसे सुरपति समान राज्य करै है । ता दशरथके राजविषै महासंपदावान लोक वसे हैं अर दशरथ महा शूरवीर है। जाके राज्यमें पवनहू काहूका कछु नहीं हर सके तो और कौन हरे। राम लक्ष्मणने मेरा ऐसा उपकार किया तब मोहि ऐसी चिंता उपजी जो मैं इनका कहा प्रति उपकार करूं। रात्रि दिवस मोहि निद्रा न आवती भई । जाने मेरे प्राण राखे, प्रजा राखी, ता राम समान मेरे कौन ? मोते कबहु कछु उनकी सेवा न बनी अर उनने बडा उपकार किया तब मैं विचारता भया।

जो अपना उपकार करे अर उसकी सेवा कछु न बने तो कहा जीतव्य, कृतघ्नका जीतव्य तृण समान है तब मैंने मेरी पुत्री सीता नवयौवन पूर्ण राम योग्य जान रामको देनी विचारी । तब मेरा सोच कछु इक मिटा। मैं चितारूप समुद्रमें डूबा हुता सो पुत्री नावरूप भई तातैं मैं सोच समुद्रते निकसा। राम महा तेजस्वी हैं। यह वचन जनकके सुन चंद्रगतिके निकटवर्ती और विद्याधर मलिन मुख होय कहते भए। अहो तुम्हारी बुद्धि शोभायमान नाहीं। तुम भूमिगोचरी अपंडित हो। कहां वे रंक म्लेच्छ अर

कहां उनके जीतवेकी बडाई यामें कहा रामका पराक्रम ? जाकी एती प्रशंसा तुमने म्लेच्छोंके जीतवेकर करी। रामका जो ऐता स्तोत्र किया सो इसमें उलटी निंदा है। अहो तुम्हारी वात सुने हांसी आवै है, जैसे बालकको विषफल ही अमृत भासे है अर दरिद्रीको बपरी (बेर) फल ही नीके लागें अर काक सूके वृक्षविषे प्रीति करे यह स्वभाव ही दुर्निवार है। अब तुम भूमिगोचरियोंका खोटा संबंध तजकर यह विद्याधरोंका इंद्र राजा चंद्रगति तासूं संबंध करो। कहां देवों समान सम्पदाके धरणहारे विद्याधर अर कहां वे रंक भूमिगोचरी सर्वथा अति दुखी, तब जनक बोले क्षीर सागर अत्यन्त विस्तीर्ण है परन्तु तृषा हरता नाहीं अर वापिका थोडे ही मिष्ट जलसे भरी है सो जीवोंकी तृषा हरे है अर अंधकार अत्यंत विस्तीर्ण है ताकर कहा अर दीपक अल्प भी है परन्तु पृथिवीमें प्रकाश करे है। पदार्थनिको प्रकट करे है अर अनेक माते हाथी जो पराक्रम न कर सके सो अकेला केसरी सिंहका बालक करे है ऐसे जब राजा जनकने कहा तब वे सर्व विद्याधर कोपवंत होय अति शब्दकर भूमिगोचरियोंकी निंदा करते भए। हो जनक ! वे भूमिगोचरी विद्याके प्रभावते रहित सदा खेदखिन्न शूरवीरतारहित आपदावान तुम कहा उनकी स्तुति करो हो। पशुनिमें अर उनमें भेद कहा ? तुममें विवेक नाहीं तातें उनकी कीर्ति करो हो। तब जनक कहते भए हाय ! हाय ! बडा कष्ट है जो मैंने पाप कर्मके उदयकर बडे पुरुषोंकी निंदा सुनी। तीन भवनमें विख्यात जे भगवान ऋषभदेव इंद्रादिक देवोंमें पूजनीक तिनका इक्ष्वाकुवंश लोकमें पवित्र सो कहा तुम्हारे श्रवणमें न आया, तीन लोकके पूज्य श्रीतीर्थंकरदेव अर चक्रवर्ती बलभद्र नारायण सो भूमिगोचरियोंमें उपजे तिनको तुम कौन भांति निंदो हो। अहो विद्याधरो ! पंच कल्याणककी प्राप्ति भूमिगोचरियोंके ही होय है विद्याधरोंमें कदाचित् किसीके तुमने देखी। इक्ष्वाकुवंशमें उपजे बडे २ राजा जो षट् खंड पृथिवीके जीतनहारे तिनके चक्रादि महा रत्न अर बडी ऋद्धिके स्वामी चक्रके धारी इंद्रा-

दिककर गाई है उदार कीर्ति जिनकी, ऐसे गुणोंके सागर कृतकृत्य पुरुष ऋषभदेवके वंशके बडे २ पृथिवीपति या भूमिमें अनेक भए। ताही वंशमें राजा अरण्य बडे राजा भए तिनके राणी सुमंगला ताके दशरथ पुत्र भए जे क्षत्री धर्ममें तत्पर लोकानिकी रक्षा निमित्त अपना प्राण त्याग करते न शंके, जिनकी आज्ञा समस्त लोक सिरपर धरें, जिनकी चार पटराणी मानों चार दिशा ही हैं। सर्व शोभाको धरें, गुणनिकर उज्ज्वल पांच सौ और राणी, मुखकर जीता है चंद्रमा जिनने, जे नाना प्रकारके शुभ चरित्रोंकर पतिका मन हरे हैं अर राजा दशरथके राम बडे पुत्र जिनको पद्म कहिए, लक्ष्मीकर मंडित है शरीर जिनका, दीप्तिकर जीता है सूर्य अर कीर्तिकर जीता है चंद्रमा, स्थिरताकर जीता है सुमेरु, शोभाकर जीता है इंद्र, शूरवीरताकर जीते हैं सर्व सुभट जिनने, सुन्दर है चारित्र जिनके, जिनका छोटा भाई लक्ष्मण जाके शरीरमें लक्ष्मीका निवास, जाके धनुषको देख शत्रु भयकर भाज जावें अर तुम विद्याधरोंको उनसे भी अधिक बतावो हो सो काक भी तो आकाशमें गमन करे हैं तिनमें कहा गुण है? अर भूमिगोचरानिमें भगवान तीर्थंकर उपजे हैं तिनको इंद्रादिक देव भूमिमें मस्तक लगाय नमस्कार करे हैं विद्याधरोंकी कहा बात? ऐसे बचन जब जनकने कहे तब वे विद्याधर एकांतमें तिष्ठकर आपसमें मंत्र कर जनकको कहते भए, हे भूमिगोचारिनिके नाथ! तुम राम लक्ष्मणका एता प्रभाव ही कहो हो अर वृथा गरज गरज वात करो हो सो हमारे उनके बल पराक्रमकी प्रतीति नाहीं तातैं हम कहें हैं सो सुनो एक वज्रावर्त दूजा सागरावर्त ये दो धनुष तिनकी देव सेवा करै हैं सो ये दोनों धनुष वे दोनों भाई चढावें तो हम उनकी शक्ति जाने। बहुत कहनेकर कहा जो बज्रावर्त धनुष राम चढावें तो तुम्हारी कन्या परणे नातर हम बलात्कार कन्याको यहां ले आवेंगे, तुम देखते ही रहोगे। तब जनकने कही यह बात प्रमाण है तब उनने दोऊ धनुष दिखाए सो जनक उन धनुषनिको आति विषम देखकर कछु इक आकुलताको

प्राप्त भया। बहुरि वे विद्याधर भाव थकी भगवानकी पूजा स्तुति कर गदा अर हलादि रत्नोंकर संयुक्त धनुषनिको ले और जनकको ले मिथिलापुरी आए अर चंद्रगाति उपवनसे रथनूपुर गया। जब राजा जनक मिथिलापुरी आए तब नगरकी महाशोभा भई मंगलाचार भए अर सब जन सम्मुख आए अर वे विद्याधर नगरके वाहिर एक आयुधशाला बनाय तहां धनुष धरे अर महागर्भको धरते संते तिष्ठे। जनक खेदसहित किंचित् भोजन खाय चिंताकर व्याकुल उत्साहरहित सेजपर पडे। तहां महा नम्रीभूत उत्तम स्त्री बहुत आदर सहित चंद्रमाकी किरण समान उज्ज्वल चमर ढारती भई। राजा अति दीर्घ निश्वास महा उष्ण अग्नि समान नाषे। तब राणी विदेहाने कहा हे नाथ! तुमने कौन स्वर्गलोककी देवांगना देखी जिसके अनुरागकर ऐसी अवस्थाको प्राप्त भए हो सो हमारे जाननेमें वह कामिनी गुणरहित निर्दई है जो तुम्हारे आतापविषै करुणा नाहीं करै है। हे नाथ! वह स्थानक हमें बतावो जहांते वाहि ले आवें। तुम्हारे दुखकर मुझे दुख अर सकल लोकानिको दुख होय है तुम ऐसे महासौभाग्यवंत ताहि कहा न रुचे। वह कोई पाषाण चित्त है। उठो राजावोंको जे उचित कार्य होंय सो करो यह तिहारा शरीर है तो सब ही मनवांछित कार्य होंगे या भांति राणी विदेहा जो प्राणहूते प्रिया हुती सो कहती भई, तब राजा बोले। हे प्रिये! हे शोभने! हे वलभे! मुझे खेद और ही है तू वृथा ऐसी वात कही, काहेको अधिक खेद उपजावै है तोहि या वृत्तांतकी गम्य नाहीं तातैं ऐसे कहै है। वह मायामई तुरंग मोहि विजयार्ध गिरिमें ले गया। तहां रथनूपुरके राजा चंद्रगातिसे मेरा मिलाप भया। सो वाने कही तुम्हारी पुत्री मेरे पुत्रको देवो। तब मैंने कही मेरी पुत्री दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रको देनी करी है। तब वाने कही जो रामचन्द्र वज्रावर्त धनुषको चढावें तो तिहारी पुत्री परणें नातर मेरा पुत्र परणेगा सो मैं तो पराए वश जाय पडा तब उनके भय थकी अर अशुभकर्मके उदय थकी यह वात प्रमाण करी सो वज्रावर्त अर

सागरावर्त दोऊ धनुष ले विद्याधर यहां आए हैं ते नगरके बाहिर तिष्ठे हैं, सो मैं ऐसे जानूं हूं ये धनुष इंद्रहूते चढाए न जावें जिनकी ज्वाला दशों दिशामें फैल रही है अर मायामई नाग फुंकारे हैं सो नेत्रों से तो देखा न जावें। धनुष विना चढाए ही स्वतः स्वभाव महाभयानक शब्द करे हैं इनको चढायवेकी कहा वात, जो कदाचित् श्रीरामचन्द्र धनुषको न चढावें तो यह विद्याधर मेरी पुत्रीको जोरावरी ले जावेंगे जैसे स्यालके समीपसे मांसकी डली खग कहिये पक्षी ले जाय सो धनुषके चढायवेका बीस दिनका करार है जो न बना तो वह कन्याको ले जावेंगे, फिर इसका देखना दुर्लभ है, हे श्रेणिक ! जब राजा जनकने इस भांति कही तब राणी विदेहाके नेत्र अश्रुपातसे भर आए अर पुत्रके हरनेका दुख भूल गई हुती सो याद आया एक तो प्राचीन दुख अर दूसरा आगामी दुःख सो महाशोककर पीडित भई महा शब्दकर पुकारने लगी ऐसा रुदन किया जो सकल परिवारके मनुष्य विह्वल हो गए राजासों राणी कहै है हे देव ! मैं ऐसा कौन पाप किया जो पहिले तो पुत्र हरा गया अर अब पुत्री हरी जाय है मेरे तो स्नेह का अवलंबन एक यह शुभ चेष्टित पुत्री ही है। मेरे तिहारे सर्व कुटुंब लोगनिके यह पुत्री ही आनन्दका कारण है सो पापिनीके एक दुःख नाहीं मिटै है अर दूजा दुख आय प्राप्त होय है। या भांति शोकके सागरमें पडी रुदन करती हुई राणीको राजा धीर्य बंधाय कहते भए हे राणी ! रुदनकर कहा जो पूर्व इस जीवने कर्म उपार्जे हैं तिनके उदय अनुसार फले हैं, संसाररूप नाटकका आचार्य जो कर्म सो समस्त प्राणियोंको नचावै है तेरा पुत्र गया सो अपने अशुभके उदयसे गया, अब शुभ कर्म उदय है तो सकल मंगल ही होवेंगे, ऐसे नाना प्रकारके सार वचनोंकर राजा जनकने राणी विदेहाको धीर्य बंधाया तब राणी शांतिको प्राप्त भई ॥

बहुरि राजा जनक नगरके बाहिर धनुषशालाके समीप जाय स्वयंबर मंडप रचा अर सकल राज-

पुत्रोंके बुलायबेको पत्र पठाए सो पत्र बांच बांच सर्व राजपुत्र आए अर अयोध्या नगरीको हू दूत भेजे सो माता पिता संयुक्त रामादिक चारो भाई आए राजा जनक बहुत आदरकर पूजे । सीता परम सुंदरी सात सौ कन्यावोंके मध्य महिलके ऊपर तिष्ठे । बडे २ सामंत रक्षा करैं अर एक महा पंडित खोजा जाने बहुत देखी बहुत सुनी है । स्वर्णरूप बेंतकी छडी जाके हाथमें, सो ऊंचे शब्दकर कहै है प्रत्येक राजकुमारको दिखावे है । हे राजपुत्री ! यह श्रीरामचन्द्र कमल लोचन राजा दशरथके पुत्र हैं तू नीके देख अर यह इनका छोटा भाई लक्ष्मीवान लक्ष्मण है, महा ज्योतिको धरै अर यह इनका भाई महाबाहु भरत है अर यह याते छोटा शत्रुघन है । यह चारों ही भाई गुणनिके सागर हैं । इन पुत्रोंकर राजा दशरथ पृथ्वीकी भली भांति रक्षा करै है जाके राज्यमें भयका अंकुर नाहीं अर यह हरिवाहन महा बुद्धिमान् काली घटा समान है प्रभा जाकी अर यह चित्ररथ महागुणवान, तेजस्वी, महासुंदर है अर यह हर्मुख नामा कुमार अतिमनोहर महातेजस्वी है । यह श्रीसंजय, यह जय, यह भानु, यह सुप्रभ, यह मंदिर, यह बुध, यह विशाल, यह श्रीधर, यह वीर, यह बंधु, यह भद्रवल, यह मयूरकुमार इत्यादि अनेक राजकुमार महापराक्रमी महासौभाग्यवान निर्मल वंशके उपजे चंद्रमा समान निर्मल है कांति जिनकी, महागुणवान भूषणोंके धरणहारे परम उत्साहरूप महाविनयवंत महाज्ञानी महाचतुर आय इकट्ठे भए हैं अर यह संकाशपुरका नाथ याके हस्ती पर्वत समान अर तुरंग महाश्रेष्ठ अर रथ महामनोज्ञ अर योधा अद्भुत पराक्रमके धारी अर यह सुरपुरका राजा, यह रंध्रपुरका राजा, यह नंदनीकपुरका राजा, यह कुंदपुरका अधिपति, यह मगध देशका राजेन्द्र यह कंपिल्य नगरका नरपति, इनमें कैयक इक्ष्वाकुवंशी अर कैयक नागवंशी अर कैयक सोमवंशी अर कैयक उग्रवंशी अर कैयक हरिवंशी अर कैयक कूरवंशी इत्यादि महागुणवन्त जे राजा सुनिए हैं ते सर्व तेरे अर्थ आए हैं । इनके मध्य जो पुरुष वज्रावर्त

धनुषको चढावे ताहि तू वर जो पुरुषोंमें श्रेष्ठ होयगा उसीसे यह कार्य होयगा या भांति खोजा कही अर राजा जनक सबनिको अनुक्रमसे धनुषकी ओर पठाए सो गए। सुंदर है रूप जिनका सो सर्व ही धनुष को देख कंपायमान होते भए। धनुषमेंसे सर्व ओर आग्निकी ज्वाला विजुली समान निकसे अर मायामई भयानक सर्प फुंकार करें तब कैयक तो कानोंपर हाथ धर भागे अर कैयक धनुषको देखकर दूर ही कीलेसे ठाढे रहे, कांपे हैं समस्त अंग जिनके, अर मुंद गए हैं नेत्र जिनके अर कैयक ज्वरसे व्याकुल भए अर कई एक धरतीपर गिर पडे अर कैयक ऐसे भए जो बोल न सके अर कैयक मूर्छाको प्राप्त भए अर कैयक धनुषके नागोंके स्वासकरि जैसे वृक्षका सूका पत्र पवनसे उडा २ फिरे तैसे उडते फिरें अर कैयक कहते भए जो अब जीवते घर जावें तो महादान करें। सकल जीवोंको अभयदान देवें अर कैयक ऐसे कहते भए, यह रूपवती कन्या है तो कहा याके निमित्त प्राण तो न देने। अर कैयक कहते भए यह कोई मायामई विद्याधर आया है सो राजावोंके पुत्रोंको बाधा उपजाई है अर कैयक महाभाग ऐसे कहते भए अब हमारे स्त्रीते प्रयोजन नाहीं, यह काम महादुखदाई है। जैसे अनेक साधु अथवा उत्कृष्ट श्रावक शीलव्रत धारे हैं तैसे हम भी शील ब्रत धारेंगे। धर्म ध्यानकर काल व्यतीत करेंगे। या भांति सर्व पराङ्मुख भए अर श्रीरामचन्द्र धनुष चढावनेको उद्यमी उठकर महा माते हाथीकी नाई मनोहर गातिसे चलते जगतको मोहते धनुषके निकट गए सो धनुष रामके प्रभावते ज्वालारहित होय गया जैसा सुंदर देवोपुनीत रत्न है तैसा सौम्य हो गया। जैसा गुरुके निकट शिष्य होय जाय, तब श्रीरामचन्द्र धनुषको हाथमें लेकरि चढायकर खैंचते भए सो महाप्रचण्ड शब्द भया, पृथिवी कंपायमान भई। कैसा है धनुष? विस्तीर्ण है प्रभा जाकी, जैसा मेघ गाजै तैसा धनुषका शब्द भया, मयूरनिके समूह मेघका आगमन जान नाचने लगे। जिसके तेजके आगे सूर्य ऐसा भासने लगा जैसा अग्निका कण भासै अर

स्वर्णमई रजसे आकाशके प्रदेश व्याप्त हो गए। यह धनुष देवाधिष्ठित है; सो आकाशमें देव धन्य २ शब्द करते भए अर पुष्पोंकी वर्षा होती भई। देव नृत्य करते भए तब श्रीराम महादयावन्त धनुषके शब्दसे लोकनिको कम्पायमान देख धनुषको उतारते भए। लोक ऐसे डरे मानों समुद्रके भ्रमरमें आ गए हैं तब सीता अपने नेत्रनिकरि श्रीरामको निरखती भई, कैसे हैं नेत्र ? पवनते चंचल जैसा कमलोंका दल होय तातें अधिक है कांति जिनकी, अर जैसा कामका बाण तीक्ष्ण होय तैसे तीक्ष्ण हैं। सीता रोमांचकर संयुक्त मनकी वृत्ति रूपमाला जो प्रथम देखते ही इनकी ओर प्रेरी हुती बहुरि लोकाचार निमित्त हाथमें रत्नमाला लेकर श्रीरामके गलेमें डारी, लज्जासे नम्रीभूत है मुख जाका, जैसे जिनधर्मके निकट जीवदया तिष्ठे, तैसे रामके निकट सीता आय तिष्ठी। श्रीराम अतिसुंदर हुते सो याके समीपते अत्यंत सुंदर भासते भए, इन दोनोंके रूपका दृष्टांत देनेमें न आवै अर लक्ष्मण दूजा धनुष सागरावर्त क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र उस समान है शब्द जिसका, उसे चढाय खैंचते भए सो पृथिवी कम्पायमान भई। आकाशमें देव जयजयकार शब्द करते भए अर पुष्पवर्षा होती भई। लक्ष्मण धनुषको चढाय खैंचकर जब बाणपर दृष्टि धरी तब सब डरे लोकनिको भयरूप देख आप धनुषकी पिणच उतार महाविनय संयुक्त रामके निकट आए जैसे ज्ञानके निकट वैराग्य आवै। लक्ष्मणका ऐसा पराक्रम देख चन्द्रगतिका पठाया जो चंद्रवर्द्धन विद्याधर आया हुता सो अतिप्रसन्न होय अष्टादश कन्या विद्याधरोंकी पुत्री लक्ष्मणको दीनी। श्रीराम लक्ष्मण दोऊ धनुष लेय महाविनयवन्त पिताके पास आए अर सीताहू आई, अर जेते विद्याधर आए हुते सो राम लक्ष्मणका प्रताप देख चन्द्रवर्द्धनकी लार रथनूपुर गए। जाय राजा चन्द्रगतिको सर्व वृत्तांत कहा सो सुनकर चिंतावान होय तिष्ठा। अर स्वयम्बर मंडपमें रामके भाई भरत हू आए हुते सो मनमें ऐसा विचारते भए कि मेरा अर राम लक्ष्मणका कुल एक अर पिता एक परन्तु

इनकासा अद्भुत पराक्रम मेरा नाहीं, यह पुण्याधिकारी हैं इनकेसे पुण्य मैंने न उपार्जे यह सीता साक्षात् लक्ष्मी कमलके भीतरे दल समान है वर्ण जिसका, राम सारिखे पुण्याधिकारी हीकी स्त्री होय, तब केकई इनकी माता सर्व कलाविषै प्रवीण भरतके चित्तका अभिप्राय जान पतिके कानविषै कहती भई हे नाथ! भरतका मन कछु इक विलषा दीखै है, ऐसा करो जो यह विरक्त न होय, इस जनकके भाई कनकके राणी सुप्रभा उसकी पुत्री लोकसुंदरी है, सो स्वयंबर मंडपकी विधि बहुरि करावो अर वह कन्या भरत के कण्ठमें वरमाला डारे तो यह प्रसन्न होय, तब दशरथ इसकी वात प्रमाणकर कनकके कान पहुंचाई तब कनक दशरथकी आज्ञा प्रमाणकर जे राजा गए हुते सो पीछे बुलाए। यथायोग्य स्थानपर तिष्ठे सब जे भूपति तेई भए नक्षत्रोंके समूह उनमें तिष्ठता जो भरतरूप चंद्रमा ताहि कनककी पुत्री लोकसुन्दरी रूप शुक्लपक्षकी रात्रि सो महाअनुरागसे वरती भई। मनकी अनुरागतारूप माला तो पाहले अवलोकन करते ही डारी हुती बहुरि लोकाचारमात्र सुमन कहिये पुष्प तिनकी वरमाला भी कण्ठमें डारी। कैसी है कनककी पुत्री? कनक समान है प्रभा जाकी, जैसे सुभद्रा भरत चक्रवर्तीको वरा था तैसे दशरथके पुत्र भरतको वरती भई। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहै हैं। हे श्रेणिक! कर्मोंकी विचित्रता देख, भरत जैसे विरक्त चित्त राजकन्यापर मोहित भए अर सब राजा विलखे होय अपने २ स्थानक गए जाने जैसा कर्म उपार्जा होय तैसा ही फल पावै है किसीके द्रव्यको दूसरा चाहनेवाला न पावै॥

अथानन्तर मिथिलापुरीमें सीता अर लोकसुन्दरीके विवाहका परम उत्साह भया कैसी है मिथिलापुरी ध्वजा अर तोरणोंके समूहसे मण्डित है अर महा सुगंध करि भरी है शंख आदि वादित्रोंके समूहसे पूरित है श्रीरामका अर भरतका विवाह महा उत्सव सहित भया। द्रव्यकरि भिक्षुक लोक पूर्ण भए जे राजा विवाहका उत्सव देखनेको रहे हुते ते दशरथ अर जनक कनक दोनों भाईसे अति सन्मान पाय

अपने अपने स्थानक गये। राजा दशरथके चारों पुत्र रामकी स्त्री सीता भरतकी स्त्री लोकसुन्दरी महा उत्सवसों अयोध्याके निकट आये। कैसे हैं दशरथके पुत्र सकल पृथिवीविषै प्रसिद्ध है कीर्ति जिनकी अर परमरूप परमगुण सोई भया समुद्र ताविषै मग्न हैं अर परम रत्ननिके आभूषण तिनकर शोभित हैं शरीर जिनके, माता पिताको उपजाया है महाहर्ष जिनने, नानाप्रकारके बाहन तिनकर पूर्ण जो सेना सोई भया सागर जहां अनेक प्रकारके वादित्र बाजे हैं जैसे जलनिधि गाजे ऐसी सेना सहित राजा मार्ग मार्ग होय महिल पधारे। मार्गमें जनक अर कनककी पुत्रीको सब ही देखे हैं सो देख देख अति हर्षित होय है अर कहे हैं इनकी तुल्य और कोई नाहीं। यह उत्तम शरीरको धरे हैं इनके देखनेको नगरके नर नारी मार्गमें आय इकट्ठे भये तिनकरि मार्ग अति संकीर्ण भया। नगरके दरवाजेसों ले राज महिल पर्यन्त मनुष्योंका पार नाहीं, किया हैं समस्त जनोंने आदर जिनका ऐसे दशरथके पुत्र इनके श्रेष्ठ गुणनिकी ज्यों ज्यों लोक स्तुति करें त्यों त्यों ये नीचे नीचे हो रहें। महासुखके भोगनहारे ये चारों ही भाई सुबुद्धि अपने अपने महिलमें आनन्दसों विराजे। यह सब शुभ कर्मका फल विवेकी जन जानकर ऐसे सुकृत करो जिससे सूर्यसे अधिक प्रभाव होय। जेते शोभायमान उत्कृष्ट फल हैं ते सर्व धर्मके प्रभावते हैं अर जे महानिंद्य कटुक फल हैं वे सब पाप कर्मके उदयते हैं तातैं सुखके अर्थ पाप क्रियाको तजो अर शुभ-क्रिया करो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणका धनुष चढावने आदि प्रताप वर्णन अर रामका सीतासों तथा भरतका लोकसुन्दरीसों विवाह वर्णन करनेवाला अठाईसवां पर्व पूर्ण भया॥ २८॥

अथानन्तर आषाढ शुक्ल अष्टमीते अष्टाह्निकाका महा उत्सव भया। राजा दशरथ जिनेंद्रकी महा उत्कृष्ट पूजा करनेको उद्यमी भया, राजा धर्मविषै अति सावधान है। राजाकी सर्व राणी पुत्र बांधव तथा सकल कुटुम्ब जिनराजके प्रतिबिम्बोंकी महा पूजा करनेको उद्यमी भए। कई बहुत आदरसे पंच वर्णके जे रत्न तिनके चूर्णका माडला मांडे हैं। अर कई नानाप्रकारके रत्ननिकी माला बनावे हैं। भक्तिविषै पाया है अधिकार जिनने अर कई एला (इलायची) कपूरादि सुगन्ध द्रव्यनिकरि जलको सुगन्ध करे हैं अर कई सुगन्ध जलसे पृथ्वीको छांटे हैं अर कई नानाप्रकारके परम सुगंध पीसे हैं अर कई जिनमंदिरोंके द्वारोंकी शोभा अति देदीप्यमान वस्त्रोंसे करावे हैं अर कई नानाप्रकारकी धातुओंके रंगोंकर चैत्यालयोंकी भीतियोंको मंडवावें हैं या भांति अयोध्यापुरीके सब ही लोक वीतराग देवकी परम भक्तिको धरते संते अत्यन्त हर्षकरि पूर्ण जिन पूजाके उत्साहसे उत्तम पुण्यको उपार्जते भए। राजा दशरथ भगवानका अति विभूतिकरि अभिषेक करावता भया। नानाप्रकारके वादित्र बाजते भए। राजा अष्ट दिनोंके उपवास किए अर जिनेंद्रकी अष्ट प्रकारके द्रव्यनिते महा पूजा करी अर नानाप्रकारके सहज पुष्प अर कृत्रिम कहिए स्वर्ण रत्नादिके रचे पुष्प तिनकरि अर्चा करी जैसे नन्दीश्वर द्वीपविषै देवनिकरि संयुक्त इंद्र जिनेंद्रकी पूजा करें तैसे राजा दशरथने अयोध्यामें करी अर राजा चारों ही पटरानियोंको गन्धोदक पठाया सो तीनके निकट तो तरुण स्त्री ले गई। सो शीघ्र ही पहुंचा। वे उठकर समस्त पापोंका दूर करनहारा जो गन्धोदक उसे मस्तक अर नेत्रनिते लगावती भई अर राणी सुप्रभाके निकट वृद्ध खोजा ले गया हुता सो शीघ्र नहीं पहुंचा तातैं राणी सुप्रभा परमकोप अर शोकको प्राप्त भई मनमें चिंतवती भई जो राजा उन तीन राणिनिको गन्धोदक भेजा अर मोहि न भेजा सो राजाका कहा दोष है मैं पूर्व जन्ममें पुण्य न उपजाया वे पुण्यवती महासौभाग्यवंती प्रशंसा योग्य हैं जिनको भगवानका गन्धो-

दक महा पवित्र राजाने पठाया अपमानकर दग्ध जो म सो मेरे हृदयका ताप और भांति न मिटे अब मुझे मरण ही शरण है। ऐसा विचार एक बिशाखनामा भण्डारीको बुलाय कहती भई। हे भाई! यह बात तू काहूसे मत कहियो मोहि विषते प्रयोजन है सो तू शीघ्र लेआ तब प्रथम तो वाने शंकावान होय लानेमें ढील करी बहुरि विचारी कि औषधि निमित्त मंगाया होगा सो लानेको गया अर राणी शिथिल गात्र मलिन चित्त वस्त्र ओढ सेजपर पडी। राजा दशरथने अन्तःपुरमें आयकर तीन राणी देखी सुप्रभा न देखी। सुप्रभाते राजाका बहुत स्नेह सो इसके महिलमें राजा आय खडे रहे ता समय जो विष लेनेको पठाया हुता सो ले आया अर कहता भया। हे देवी! यह विष लेहु यह शब्द राजाने सुना तब उसके हाथसे उठाय लिया अर आप राणीकी सेज ऊपर बैठ गए तब राणी सेजसे उतर बैठी। राजाने आग्रह कर सेज ऊपर बैठाई अर कहते भए हे बल्लभे! ऐसा क्रोध काहेते किया जाकर प्राण तजा चाहे है। सब वस्तुनिते जीतव्य प्रिय है अर सर्व दुःखोंसे मरणका बडा दुःख है ऐसा तोहि कहा दुःख है जो विष मंगाया। तू मेरे हृदयका सर्वस्व है जाने तुझे क्लेश उपजाया हो ताको मैं तत्काल तीव्र दंड दूं। हे सुंदरमुखी! तू जिनेन्द्रका सिद्धांत जाने है। शुभ अशुभ गतिके कारण जाने है जो विष तथा शस्त्र आदिसे अपघात कर मरे है वे दुर्गतिमें पडे हैं ऐसी बुद्धि तोहि क्रोधसे उपजी सो क्रोधको धिक्कार, यह क्रोध महा अंधकार है अब तू प्रसन्न हो जे पतिव्रता हैं तिनने जौलग प्रीतमके अनुरागके वचन न सुने तौलग ही क्रोधका आवेश है तब सुप्रभा कहती भई हे नाथ तुम पर कोप कहा परंतु मुझे ऐसा दुख भया जो मरण विना शांत न होय तब राजा कही। हे राणी! तोहि ऐसा कहा दुख भया तब राणीने कही भगवानका गंधोदक और राणिनिको पठाया अर मोहि न पठाया सो मेरेमें कौन कार्यकर हीनता जानी? अबलों तुम मेरा कभी भी अनादर न किया अब काहेतें अनादर किया यह बात राजासों राणी कहे है ता समय वृद्ध खोजा गंधो-

दक ले आया अर कहता भया हे देवी यह भगवानका गंधोदक नरनाथ तुमको पठाया सो लेहु अर ता समय तीनों राणी आईं अर कहती भईं हे मुग्धे पतिकी तोपर अति कृपा है तू कोपको काहे प्राप्त भई देख हमको तो गंधोदक दासी ले आई अर तेरे वृद्धखोजा ले आया पतिके तोमे प्रेममें न्यूनता नहीं जो पतिमें अपराध भी होय अर वह आप स्नेहकी बात करै तो उत्तम स्त्री प्रसन्न ही होय हैं। हे शोभने! पतिसूं क्रोध करना सुखके विघ्नका कारण है सो कोप उचित नाहीं सो तिनने जब या भांति संतोष उपजाया तब सुप्रभाने प्रसन्न होय गंधोदक सीसपर चढाया अर नेत्रोंको लगाया। राजा खोजासे कोप कर कहते भए। हे निकृष्ट! तैं ऐती ढील कहा लगाई तब वह भयकर कंपायमान होय हाथ जोड सीस निवाय कहता भया हे भक्तवत्सल हे देव हे विज्ञानभुषण! अत्यंत वृद्ध अवस्था कर हीनशक्ति जो मैं सो मेरा कहा अपराध मोपर आप क्रोध करो सो मैं क्रोधका पात्र नाहीं। प्रथम अवस्थाविषै मेरे भुज हाथीके सूंड समान हुते उरस्थल प्रबल था अर जांघ गजबंधन तुल्य हुतीं अर शरीर दृढ हुता अब कर्मनिके उदयकरि शरीर अत्यंत शिथिल होय गया। पूर्वे ऊंची नीची धरती राजहंसकी न्याईं उलंघ जाता मन बांछित स्थान जाय पहुंचता अब अस्थानकसे उठा भी नहीं जाय है। तुम्हारे पिताके प्रसाद कर मैं यह शरीर नानाप्रकार लढाया था सो अब कुमित्रकी न्याईं दुःखका कारण होय गया पूर्वे मुझे वैरीनिके विदारनेकी शक्ति हुती सो अब तो लाठीके अवलंबनकर महाकष्टसे फिरूं हूं। बलवान् पुरुषनिकरि खैंचा जो धनुष वा समान वक्र मेरी पीठ हो गई है अर मस्तकके केश अस्थिसमान श्वेत होय गए हैं अर मेरे दांतहू गिर गए मानों शरीरका आताप देख न सके, हे राजन्! मेरा समस्त उत्साह विलय गया ऐसे शरीरकर कोई दिन जीवूं हूं सो बडा आश्चर्य है। जरासे अत्यन्त जर्जर मेरा शरीर सांझ सकारे विनश जायगा, मोहि मेरी कायाकी सुध नाहीं तो और सुध कहांसे होय, पूर्वे मेरे नेत्रादिक इंद्रिय विचक्षणताको धरें हुते अब

नाममात्र रह गए हैं, पांय धरूं किसी ठौर अर परे काहू ठौर, समस्त पृथ्वी तल दृष्टिसे श्याम भासै है ऐसी अवस्था होय गई तो बहुत दिनोंसे राजद्वारकी सेवा है सो नाहीं तज सकूं हूं। पके फल समान जो मेरा तन ताहि काल शीघ्र ही भक्षण करेगा, मोहि मृत्युका ऐसा भय नाहीं जैसा चाकरी चूकनेका भय है अर मेरे आपकी आज्ञा हीका अवलंबन है, और अवलंबन नाहीं, शरीरकी अशक्तिताकर विलंब होय ताकूं मैं कहा करूं। हे नाथ ! मेरा शरीर जराके आधीन जान कोप मत करो कृपा ही करो, ऐसे वचन खोजे के राजा दशरथ सुनकर वामा हाथ कपोलके लगाय चिंतावान होय विचारता भया, अहो यह जलकी बुदबुदा समान असार शरीर क्षणभंगुर है अर यह यौवन बहुत विभ्रमको धरे सन्ध्याके प्रकाश समान अनित्य है अर अज्ञानका कारण है विजलीके चमत्कार समान शरीर अर संपदा तिनके अर्थ अत्यन्त दुःखके साधन कर्म यह प्राणी करै हैं, उन्मत्त स्त्रीके कटाक्ष समान चंचल सर्पके फण समान विषके भरे, महातापके समूहके कारण ये भोग ही जीवनको ठगै हैं, तातैं महाठग हैं, ये विषय विनाशीक इनसे प्राप्त हुआ जो दुख सो मूढोंको सुखरूप भासे है ये मूढ जीव विषयोंकी अभिलाषा करै हैं अर इनको मनवांछित विषय दुष्प्राप्य हैं विषयोंके सुख देखनेमात्र मनोज्ञ हैं अर इनके फल अति कटुक हैं ये विषय इंद्रायणके फल समान हैं, संसारी जीव इनको चाहै हैं सो वडा आश्चर्य है, जे उत्तम जन विषयोंको विषतुल्य जानकर तजे हैं अर तप करै हैं ते धन्य हैं, अनेक विवेकी जीव पुण्याधिकारी महाउत्साहके धरणहारे जिनशासनके प्रसादसे प्रबोधको प्राप्त भए हैं मैं कब इन विषयोंका त्यागकर स्नेहरूप कीचसे निकस निर्वृतिका कारण जिनेंद्रका तप आचरूंगा। मैं पृथ्वीकी बहुत सुखसे प्रतिपालना करी अर भोग भी मनवांछित भोगे अर पुत्र भी मेरे महापराक्रमी उपजे। अब भी मैं वैराग्यमें विलंब करूं तो यह बडी विपरीत है, हमारे वंशकी यही रीति है कि पुत्रको राज्यलक्ष्मी देकर वैराग्यको धारणकर महाधीर तप करनेको

वनमें प्रवेश करे ऐसा चिंतवनकर राजा भोगानितैं उदासचित्त कई एक दिन घरमें रहे। हे श्रेणिक ! जो वस्तु जा समय जा क्षेत्रमें जाकी जाको जेती प्राप्त होनी होय सो ता समय ता क्षेत्रमें तासे ताको तितनी निश्चय सेती होय ही होय ॥

गौतम स्वामी कहे हैं, हे मगध देशके भूपति ! कैयक दिनोंमें सर्व प्राणियोंके हितू सर्वभूपति नामा मुनि बडे आचार्य मनःपर्य्यय ज्ञानके धारक पृथ्वीविषे विहार करते संघसहित सरयू नदीके तीर आए। कैसे हैं मुनि ? पिता समान छह कायके जीवोंके पालक दयाविषे लगाई है मन, वचन, कायकी क्रिया जिनने, आचार्योंकी आज्ञा पाय कैयक मुनि तो गहन वनमें विराजे, कैयक पर्वतोंकी गुफावोंमें, कैयक वनके चैत्यालयोंमें, कैयक वृक्षोंके कोटरोंमें इत्यादि ध्यानके योग्य स्थानोंमें साधु तिष्ठे अर आप आचार्य महेन्द्रोदय नामा वनमें एक शिलापर जहां विकलत्रय जीवोंका संचार नाहीं अर स्त्री नपुंसक बालक ग्राम्यजन पशुनिका संसर्ग नाहीं ऐसा जो निर्दोष स्थानक वहां नागवृक्षके नीचे निवास किया। महागंभीर महाक्षमावान जिनका दर्शन दुर्लभ कर्म खिपावनेके उद्यमी महाउदार है मन जिनका, महामुनि तिनके स्वामी वर्षाकाल पूर्ण करनेको समाधि योग धर तिष्ठे, कैसा है वर्षाकाल ? विदेश गमन किया तिनको भयानक है। वर्षती जो मेघमाला अर चमकती जो विजुरी अर गरजती जो कारी घटा तिनकी भयंकर जो ध्वनि ताकरि मानों सूर्यको खिझावता संता पृथ्वीपर प्रकट भया है सूर्य ग्रीष्म ऋतुमें लोकनिको आतापकारी हुता सो अब स्थूल मेघकी धाराके अन्धकारते भय थकी भाज मेघमालामें छिपा चाहे है अर पृथ्वीतल हरे नाजकी अंकूरोंरूप कचुकिनकर मंडित है अर महानदियोंके प्रवाह वृद्धिको प्राप्त भए हैं ढाहा पहाडते बहे हैं इस ऋतुमें जे गमन करे हैं ते अतिकम्पायमान होय हैं अर तिनके चित्तमें अनेक प्रकारकी भ्रांति उपजे है, ऐसी वर्षा ऋतुमें जैनी जन खड्गकी धारा समान कठिन व्रत निरन्तर

धारे हैं। चारण मुनि अर भूमिगोचरी मुनि चातुर्मासिकमें नाना प्रकारके नियम धरते भए, हे श्रेणिक! ते मुनि तेरी रक्षाकर रागादिक परणतिसे तुझे निवृत्त करें।

अथानन्तर प्रभात समय राजा दशरथ वादित्रोंके नादसे जाग्रत भया जैसे सूर्य उदयको प्राप्त होय अर प्रात समय कूकडे बोलने लगे सारिस चकवा सरोवर तथा नदियोंके तटविषै शब्द करते भए। स्त्री पुरुष सेजसे उठे भगवानके जे चैत्यालय तिनमें भेरी मृदंग वीणा वादित्रोंके नाद होते भए। लोक निद्रा को तज जिन पूजनादिकमें प्रवरते। दीपक मंद ज्योति भए। चंद्रमाकी प्रभा मंद भई। कमल फूले कुमुद मुद्रित भए, अर जैसे जिन सिद्धान्तके ज्ञातानिके वचनोंसे मिथ्यावादी विलय जांय तैसे सूर्यकी किरणोंसे ग्रह तारा नक्षत्र छिप गए। या भांति प्रभात समय अत्यन्त निर्मल प्रकट भया तब राजा देह कृत्य क्रियाकर भगवानकी पूजाकर बारम्बार नमस्कार करता भया अर भद्र जातिकी हथिनीपर चढ देवों सारिखे जे राजा तिनके समूहोंसे सेव्यमान ठौर २ मुनियोंको अर जिनमंदिरोंको नमस्कार करता महेंद्रोदय वनमें पृथ्वीपति गया, जाकी विभूति पृथ्वीको आनन्दकी उपजावनहारी वर्षों पर्यंत व्याख्यान करिए तो भी न कह सकिए। जो मुनि गुणरूप रत्नोंका सागर जिस समय याकी नगरीके समीप आवे ताही समय याको खबर होय जो मुनि आए हैं, तब ही यह दर्शनको जाय सो सर्व भूतहित मुनिको आए सुन तिनके निकट केते समीपी लोगोंसहित गया, हथिनीसे उतर अति हर्षका भरा नमस्कारकर महाभक्ति संयुक्त सिद्धांत संबंधी कथा सुनता भया। चारों अनुयोगोंकी चर्चा धारी अर अतीत अनागत वर्तमान कालके जे महापुरुष तिनके चरित्र सुने। लोकालोकका निरूपण अर छह द्रव्यनिका स्वरूप, छह कायके जीवोंका वर्णन, छह लेश्याका व्याख्यान, अर छहों कालका कथन अर कुलकरों की उत्पत्ति अर अनेक प्रकार क्षात्रियादिकोंके वंश अर सप्त तत्त्व, नव पदार्थ पंचास्ति कायका वर्णन

आचार्यके मुखते श्रवणकर सर्व मुनियोंको बारम्बार नमस्कारकर राजा धर्मके अनुरागकरि पूर्ण नगर में आए। जिन धर्मके गुणोंकी कथा निकटवर्ती राजावों अर मंत्रियोंसे कर अर सबको विदाकर महल में प्रवेश करता भया। विस्तीर्ण है विभव जाके अर राणी लक्ष्मीतुल्य परमकांतिकर संपूर्ण चंद्रमा समान सम्पूर्ण सुंदर बदनकी धरणहारी नेत्र अर मनकी हरणहारी हाव भाव विलास विभ्रमकर मंडित महा निपुण परम विनयकी करणहारी, प्यारी तेई भई कमलोंकी पंक्ति तिनको राजा सूर्य समान प्रफुल्लित करता भया॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अष्टान्हिका आगम अर राजा दशरथका धर्म श्रवण कथा नाम वर्णन करनेवाला उनतीसवां पर्व पूर्ण भया॥ २९॥

अथानन्तर मेघके आडम्बरकर युक्त जो वर्षाकाल सो गया अर आकाश संभारे खड्गके समान निर्मल भया। पद्म महोत्पल पुंडरीक इंदीवरादि अनेक जातिके कमल प्रफुलित भए। कैसे हैं कमलादि पुष्प विषयी जीवनिको उन्मादके कारण हैं अर नदी सरोवरादिविषै जल निर्मल भया जैसा मुनिका चित्त निर्मल होय तैसा अर इंद्रधनुष जाते रहे। पृथ्वी कर्दम रहित होय गई। शरदऋतु मानों कुमुदोंके प्रफुल्लित होनेसे हंसती हुई प्रकट भई बिजुरियोंके चमत्कारकी संभावना ही गई। सूर्य तुलाराशिपर आया शरदके श्वेत बादरे कहूं कहूं दृष्टि आवें सो क्षणमात्रमें विलय जांय। निशारूप नवोढा स्त्री संध्याके प्रकाशरूप महा सुंदर लाल अधरोंको धरे चांदनीरूप निर्मल वस्त्रनिको पहिरे चंद्रमारूप है चूणामणि जिसका सो अत्यंत शोभती भई अर वापिका निर्मल जलकी भरी मनुष्यनिके मनको प्रमोद उपजावती भई। चकवा चकवीके युगल करें हैं केलि जहां अर मदोन्मत जे सारिस वे करें हैं नाद जहां, कमलनिके वनमें

धारे हैं। चारण मुनि अर भूमिगोचरी मुनि चातुर्मासिकमें नाना प्रकारके नियम धरते भए, हे श्रेणिक! ते मुनि तेरी रक्षाकर रागादिक परणतिसे तुझे निवृत्त करें।

अथानन्तर प्रभात समय राजा दशरथ वादित्रोंके नादसे जाग्रत भया जैसे सूर्य उदयको प्राप्त होय अर प्रात समय कूकडे बोलने लगे सारिस चकवा सरोवर तथा नादियोंके तटविषै शब्द करते भए। स्त्री पुरुष सेजसे उठे भगवानके जे चैत्यालय तिनमें भेरी मृदंग वीणा वादित्रोंके नाद होते भए। लोक निद्राको तज जिन पूजनादिकमें प्रवरते। दीपक मंद ज्योति भए। चंद्रमाकी प्रभा मंद भई। कमल फूले कुमुद मुद्रित भए, अर जैसे जिन सिद्धान्तके ज्ञातानिके वचनोंसे मिथ्यावादी विलय जांय तैसे सूर्यकी किरणोंसे ग्रह तारा नक्षत्र छिप गए। या भांति प्रभात समय अत्यन्त निर्मल प्रकट भया तब राजा देह कृत्य क्रियाकर भगवानकी पूजाकर वारम्वार नमस्कार करता भया अर भद्र जातिकी हथिनीपर चढ देवों सारिखे जे राजा तिनके समूहोंसे सेव्यमान ठौर २ मुनियोंको अर जिनमंदिरोंको नमस्कार करता महेंद्रोदय वनमें पृथ्वीपति गया, जाकी विभूति पृथ्वीको आनन्दकी उपजावनहारी वर्षों पर्यंत व्याख्यान करिए तो भी न कह सकिए। जो मुनि गुणरूप रत्नोंका सागर जिस समय याकी नगरीके समीप आवे ताही समय याको खबर होय जो मुनि आए हैं, तब ही यह दर्शनको जाय सो सर्व भूतहित मुनिको आए सुन तिनके निकट केते समीपी लोगोंसहित गया, हथिनीसे उतर अति हर्षका भरा नमस्कारकर महाभक्ति संयुक्त सिद्धांत संबंधी कथा सुनता भया। चारों अनुयोगोंकी चर्चा धारी अर अतीत अनागत वर्तमान कालके जे महापुरुष तिनके चरित्र सुने। लोकालोकका निरूपण अर छह द्रव्यनिका स्वरूप, छह कायके जीवोंका वर्णन, छह लेश्याका व्याख्यान, अर छहों कालका कथन अर कुलकरोंकी उत्पत्ति अर अनेक प्रकार क्षत्रियादिकोंके वंश अर सप्त तत्त्व, नव पदार्थ पंचास्ति कायका वर्णन

आचार्यके मुखते श्रवणकर सर्व मुनियोंको वारम्बार नमस्कारकर राजा धर्मके अनुरागकरि पूर्ण नगर में आए। जिन धर्मके गुणोंकी कथा निकटवर्ती राजावों अर मंत्रियोंसे कर अर सबको विदाकर महल में प्रवेश करता भया। विस्तीर्ण है विभव जाके अर राणी लक्ष्मीतुल्य परमकांतिकर संपूर्ण चंद्रमा समान सम्पूर्ण सुंदर वदनकी धरणहारी नेत्र अर मनकी हरणहारी हाव भाव विलास विभ्रमकर मंडित महा निपुण परम विनयकी करणहारी, प्यारी तेई भई कमलोंकी पंक्ति तिनको राजा सूर्य समान प्रफुल्लित करता भया॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अष्टान्हिका आगम अर राजा दशरथका धर्म श्रवण कथा नाम वर्णन करनेवाला उनतीसवां पर्व पूर्ण भया॥ २९॥

अथानन्तर मेघके आडम्बरकर युक्त जो वर्षाकाल सो गया अर आकाश संभारे खड्गके समान निर्मल भया। पद्म महोत्पल पुंडरीक इंदीवरादि अनेक जातिके कमल प्रफुल्लित भए। कैसे हैं कमलादि पुष्प विषयी जीवनिको उन्मादके कारण हैं अर नदी सरोवरादिविषै जल निर्मल भया जैसा मुनिका चित्त निर्मल होय तैसा अर इंद्रधनुष जाते रहे। पृथ्वी कर्दम रहित होय गई। शरदऋतु मानों कुमुदोंके प्रफुल्लित होनेसे हंसती हुई प्रकट भई विजुरियोंके चमत्कारकी संभावना ही गई। सूर्य तुलाराशिपर आया शरदके श्वेत बादरे कहूं कहूं दृष्टि आवें सो क्षणमात्रमें विलय जांय। निशारूप नवोढा स्त्री संध्याके प्रकाशरूप महा सुंदर लाल अधरोंको धरे चांदनीरूप निर्मल वस्त्रनिको पहिरे चंद्रमारूप है चूणामणि जिसका सो अत्यंत शोभती भई अर वापिका निर्मल जलकी भरी मनुष्यनिके मनको प्रमोद उपजावती भई। चकवा चकवीके युगल करें हैं केलि जहां अर मदोन्मत जे सारिस वे करें हैं नाद जहां, कमलानिके वनमें

भ्रमते जो राजहंस अत्यन्त शोभाको धरे हैं सो सीताकी है चिंता जाके ऐसा जो भामंडल ताहि यह ऋतु सुहावनी न लगी, अग्नि समान भासे है जगत जाको एक दिन यह भामंडल लज्जाको तजकर पिताके आगे वसंतध्वज नामा जो परममित्र उसे कहता भया कैसा है भामंडल अरतिसे पीडित है अंग जाका, मित्रसूं कहे है हे मित्र ! तू दीर्घशोची है अर परकार्यविषे उद्यमी है एता दिन होगए तोहि मेरी चिंता नाहीं व्याकुलतारूप भ्रमणको धरे जो आशारूप समुद्र तामें में डूबा हूं मोहि आलंबन कहा न देवो ऐसे आर्तध्यानकर युक्त भामंडलके वचन सुन राजसभाके सर्वलोक प्रभारहित विषाद संयुक्त होगए तब तिनको महा शोककर तप्तायमान देख भामंडल लज्जासे अधोमुख हो गया तब एक वृहत्केतुनामा विद्याधर कहता भया अब कहा छिपाव राखो कुमारसों सर्व वृत्तांत यथार्थ कहो जाकरि भ्रांति न रहे तब वे सर्व वृत्तांत भामंडलसे कहते भए । हे कुमार ! हम कन्याके पिताको यहां ले आए हुते कन्याकी वासे याचना करी सो वाने कही मैं कन्या रामको देनी करी है हमारे अर वाके वार्ता बहुत भई वह न माने तब वज्रावर्त धनुषका करार भया जो धनुष राम चढावें तो कन्याको परणे नातर हम यहां ले आवेंगे अर भामंडल विवाहेगा सो धनुष लेकर यहांसे विद्याधर मिथिलापुरी गए सो राम महा पुण्याधिकारी धनुष चढाया ही तब स्वयंवर मंडपमें जनककी पुत्री अति गुणवती महा विवेकवती पतिके हृदयकी हरणहारी व्रत नियमकी धरनहारी नव यौवन मंडित दोषोंसे अखंडित सर्व कला पूर्ण शरद ऋतुकी पूर्णमासीके चंद्रमा समान मुखकी कांतिको धरे लक्ष्मी सारषी शुभलक्षण लावण्यताकर युक्त सीता महासती श्रीरामके कंठमें बरमाला डार बल्लभा होती भई । हे कुमार वे धनुष वर्तमान कालके नाहीं गदा अर हल आदि देवों पुनीत रत्नोंसे युक्त अनेक देव जिनकी सेवा करें कोई जिनको देख न सके सो वज्रावर्त सागरावर्त दोऊ धनुष राम लक्ष्मण दोनों भाई चढावते भए । वह त्रिलोकसुन्दरी रामने परणी, अयोध्या ले गए

सो अब वह बलात्कार देवोंसे भी न हरी जाय हमारी कहा बात अर कदाचित कहोगे रामको परणाये पहले ही क्यों न हरी सो जनकका मित्र रावणका जमाई मधु है सो हम कैसे हर सकें। तातैं हे कुमार ! अब संतोष धरो निर्मलता भजो होनहार होय सो होय इन्द्रादिक भी और भांति न कर सकें। तब धनुष चढावनेका वृत्तांत अर राममे सीताका विवाह हो गया सुन भामंडल अति लज्जावान होय विषाद करि पूर्ण भया मनमें विचारे है जो मेरा यह विद्याधरका जन्म निरर्थक है। जो मैं हीन पुरुषकी न्याई ताहि न परण सका। ईर्षा अर क्रोधकर मंडित होय सभाके लोगनिको कहता भया कहा तुम्हारा विद्याधरपना, तुम भूमिगोचरिनितेहू डरो हो । मैं आप जायकर भूमिगोचरिनिको जीत ताको ले आऊंगा अर जे धनुष अधिष्ठाता उनको धनुष दे आये हैं तिनका निग्रह करूंगा ऐसा कहकर शस्त्र साज विमानविषैं चढ आकाशके मार्ग गया। अनेक ग्राम नदी नगर वन उपवन सरोवर पर्वतादि पूर्ण पृथिवी मंडल देखा तब याकी दृष्टि जो अपने पूर्व भवका स्थानक विग्दधपुर पहाडानिके बीच हुता, वहां पडी चित्तमें चितई कि यह नगर मैंने देखा है जाति स्मरण होय मूर्छा आय गई। तब मंत्री ब्याकुल होय पिताके निकट ले आए। चन्दनादि शीतलद्रव्योंसे छांटा तब प्रबोधको प्राप्त भया। राजलोककी स्त्री याहि कहती भई हे कुमार तुमको यह उचित नाहीं जो माता पिताके निकट ऐसी लज्जारहित चेष्टा करो। तुम तो बिचक्षण हो, विद्याधरोंकी कन्या देवांगनाहुते अतिसुन्दर हैं वे परणो लोकहास कहा करावो हो। तब भामंडलने लज्जा अर शोक करि मुख नीचा किया अर कहता भया धिकार है मोको मैं महामोहकरि विरुद्धकार्य चिंता जो चांडालादि अत्यंत नीचकुल हैं तिनके यह कर्म न होंय। मैं अशुभ कर्मके उदयकरि अत्यन्त मलिन परणाम किये। मैं अर सीता एक ही माताके उदरसे उपजे हैं। अब मेरे अशुभकर्म गया तो जथार्थ जानी, सो याके ऐसे वचन सुनकर अर शोककर पीडित देख याका पिता राजा चन्द्रगति गोदमें लेय मुख चूम पूछता

भया हे पुत्र यह तू कौन भांति कही तव कुमार कहता भया। हे तात मेरा चरित्र सुनो पूर्वभवविषे मैं इस ही भरतक्षेत्रमें विदग्धपुर नगर तहां कुंडलमंडित राजा हुता परमंडलका लूटनेहारा सदा विग्रहका करणहारा पृथ्वीपर प्रसिद्ध निजप्रजाका पालक महाविभवकर संयुक्त सो मैं पापीने मायाचारकर एक विप्रकी स्त्री हरी। सो वह विप्र तो अतिदुखी होय कहीं चला गया अर मैं राजा अरण्यके देशमें बाधा करी सो अरण्यका सेनापति बालचन्द्र मोहि पकडकर लेगया अर मेरी सर्व सम्पदा हर लीनी। मैं शरी-रमात्र रह गया, केएक दिनमें बंदीग्रहतें छूटा सो महादुःखित पृथ्वीपर भ्रमण करता मुनियोंके दर्शनको गया महाव्रत अणुव्रतका व्याख्यान सुना तीन लोक पूज्य जो सर्वज्ञ वीतराग देव तिनका पवित्र जो मार्ग ताकी श्रद्धा करी। जगतके बांधव जे श्रीगुरु तिनकी आज्ञाकर मैंने मद्य मांसका त्यागरूप व्रत आदरचा, मेरी शक्तिहीन हुती तातें ये विशेष व्रत न आदर सक्या, जिनशासनका अद्भुत महात्म्य जो मैं महा पापी हुता सो एते ही व्रतसे मैं दुर्गतिमें न गया। जिन धर्मके शरणकरि जनककी राणी विदेहाके गर्भमें उपजा अर सीता भी उपजी सो कन्या सहित मेरा जन्म भया अर वह पूर्वभवका विरोधी विप्र जाकी मैं स्त्री हरी हुती सो देव भया अर मोहि जन्मते ही जैसे गृद्ध पक्षी मांसकी डलीको लेजाय तैसे नक्षत्रोंसे ऊपर आकाशमें ले गया सो पहिले तो उसने विचार किया कि याको मारूं बहुरि करुणाकरि कुंडल पहराय लघुपरण विद्याकर मोहि रत्नमों डारा सो रात्रिमें आकाशविषे पडता तुमने झेला अर दयावान होय अपनी राणीको सौंपा, सो मैं तिहारे प्रसादते वृद्धिको प्राप्त भया अनेक विद्याका धारक भया। तुमने बहुत लढाया अर माताने मेरी बहुत प्रतिपालना करी। भामंडल ऐसे कहके चुप हो रहा। राजा चन्द्रगति यह वृत्तांत सुनकर परम प्रबोधको प्राप्त भया अर इंद्रियोंके विषयनिकी वासना तज महा वैराग्य अंगीकार करनेको उद्यमी भया। ग्राम धर्म कहिए स्त्रीसेवन सोई भया वृक्ष उसे सुफलोंसे रहित

जान अर संसारका बंधन जानकर अपना राज्य भामंडलको देय आप सर्व भूताहित स्वामीके समीप शीघ्र आया। वे सर्व भूताहित स्वामी पृथ्वी पर सूर्यसमान प्रसिद्ध गुणरूप किरणोंके समूहकर भव्य जीवनिको आनन्दके करनहारे सो राजा चन्द्रगति विद्याधर महेंद्रोदय उद्यानमें आय मुनिकी अर्चना करी। फिर नमस्कार स्तुतिकर सीस निवाय हाथ जोड या भांति कहता भया हे भगवन ! तुम्हारे प्रसादकर मैं जिनदीक्षा लेय तप किया चाहूं हूं मैं गृहवासते उदास भया तब मुनि कहते भए भवसागरसे पार करण हारी यह भगवती दीक्षा है सो लेओ। राजा तो वैराग्यकों उद्यमी भया अर भामंडलके राज्यका उत्सव होता भया, ऊंचे स्वर नगारे बाजे' नारी गीत गावती भई, बांसुरी आदि अनेक वादित्रानिके समूह बाजते भए । ताल मंजीरा आदि कांसरीके वादित्र बाजे 'शोभायमान जनक राजाका पुत्र जयवंत होवे' ऐसा बन्दीजनानिका शब्द होता भया सो महेंद्रोदय उद्यानमें ऐसा मनोहर शब्द रात्रिमें भया जाते अयोध्याके समस्त जन निद्रारहित होय गए। बहुरि प्रातः समय मुनिराजके मुखते महाश्रेष्ठ शब्द सुनकर जैनी जन अति हर्षको प्राप्त भए।अर सीता जनक राजाका पुत्र जयवन्त होऊ, ऐसी ध्वनि सुनकर मानों अमृतसे सींची गई, रोमांचकर संयुक्त भया है सर्व अंग जाका, अर फरकै है बांई आंख जाकी, मनमें चितवती भई।

जो यह बारम्बार ऊंचा शब्द सुनिए कि जनक राजाका पुत्र जयवंत होऊ सो मेरा हू पिता जनक है कनकका बडा भाई, अर मेरा भाई जन्मता ही हरा गया था सो वही न होय ऐसा विचारकर भाई के स्नेहरूप जलकर भीज गया है मन जाका, सो ऊंचे स्वरकर रुदन करती भई । तब राम अभिराम कहिये सुंदर है अंग जाका, महामधुर वचनकर कहते भए—हे प्रिये ! तू काहेको रुदन करै है, जो यह तेरा भाई है तो अब खबर आवै है अर जो और है तो हे पंडिते ! तू कहा सोच करै है जे विचक्षण हैं ते मुएका हरेका गएका नष्ट हुएका शोक न करें। हे वल्लभे ! जे कायर हैं अर मूर्ख हैं उनके विषाद होय

है अर जे पंडित हैं पराक्रमी हैं तिनके विषाद नाहीं होय है, या भांति रामके अर सीताके वचनालाप होवे हैं ताही समय वधाईवारे मंगल शब्द करते आए । तब राजा दशरथने महाहर्षसे बहुत आदरसे नानाप्रकारके दान करे अर पुत्र कलत्रादि सर्व कुटुम्बसहित वनमें गया सो नगरके बाहिर चारो तरफ विद्याधरोंकी सेना सैकडों सामंतोंसे पूर्ण देख आश्चर्यको प्राप्त भया, विद्याधरनिने इंद्रके नगर तुल्य सेनाका स्थानक क्षणमात्रमें बनाय राखा है, जाके ऊंचा कोट बडा दरवाजा जे पताका तोरण तिनते शोभायमान रत्ननिकरि मंडित ऐसा निवास देख राजा दशरथ जहां वनमें साधु विराजे हुते वहां गया, नमस्कारकर स्तुतिकर राजा चंद्रगतिका वैराग्य देखा । विद्याधरनिसाहित श्रीगुरुकी पूजा करी । राजा दशरथ सर्व बांधव सहित एक तरफ बैठा अर भामंडल सर्व विद्याधरनि सहित एक तरफ बैठा । विद्याधर अर भूमिगोचरी मुनिके पास यति अर श्रावकका धर्म श्रवण करते भए । भामंडल पिताके वैराग्य होयवेकर कछु इक शोकवान बैठा तब मुनि कहते भए, जो यतिका धर्म है सो शूरवीरोंका है । जिनके गृहवास नाहीं महा शान्त दशा है । आनन्दका कारण है, महादुर्लभ है, त्रैलोक्यमें सार है, कायर जीवनिको भयानक भासे है । भव्यजीव मुनिपदको पायकर अविनाशी धामको पावे हैं । अथवा इंद्र अहमिंद्र पद लहें हैं, लोकके शिखर जो सिद्धस्थानक है सो मुनिपद विना नाहीं पाइए है । कैसे हैं मुनि ? सम्यग्दर्शनकर मंडित हैं, जिनमार्गसे निर्वाणके सुखको प्राप्त होय अर चतुर्गतिके दुखते छुटे सो ही मार्ग श्रेष्ठ है सो सर्व भूतहित मुनिने मेघकी गर्जना समान है ध्वनि जिनकी सर्व जीवनिके चित्तको आनन्दकारी ऐसे वचन कहे, कैसे हैं मुनि ? समस्त तत्त्वोंके ज्ञाता. सो मुनिके वचनरूपजल संदेहरूप तापको हरता प्राणी जीवनिने कर्णरूप अंजुलियोंसे पीए । कैयक मुनि भए, कैयक श्रावक भए महा धर्मानुराग कर युक्त है चित्त जिनका, धर्मका व्याख्यान हो चुका तब दशरथ पूछता भया हे नाथ ! चंद्रगति विद्या:

धरको कौन कारण वैराग्य उपजा अर सीता अपने भाई भामण्डलका चारित्र सुननेकी इच्छा करती भई। कैसी है सीता ? महाविनयवंती है। तब मुनि कहते भए—हे दशरथ ! तुम सुनो इन जीवनिकी अपने २ उपार्जे कर्मनिकरि विचित्र गति है। यह भामण्डल पूर्वं संसारमें अनन्त भ्रमणकर अति दुखित भया, कर्म रूपी पवनका प्रेरा या भवमें आकाशसे पडता राजा चंद्रगतिको प्राप्त भया, सो चंद्रगति अपनी स्त्री पुष्पवतीको सौंपा, सो नवयौवनमें सीताका चित्रपट देख मोहित भया, तब जनकको एक विद्याधर कृत्रिम अश्व होय लेगया, करार ठहरा जो धनुष चढावे सो कन्या परणे, बहुरि जनकको मिथिलापुरी लेय आए अर धनुष लाए, सो धनुष श्रीरामने चढाया अर सीता परणी। तब भामंडल विद्याधरनिके मुखसे यह वार्ता सुन क्रोधकर विमानमें बैठ आवे था सो मार्गमें पूर्व भवका नगर देखा तब जातिस्मरण हुआ जो मैं कुंडलमंडित नामा या विदग्धपुरका राजा अधर्मी हुता। पिंगल ब्राह्मणकी स्त्री हरी बहुरि मोहि अरण्यके सेनापतिने पकडा, देशते काढ दिया, सर्वस्व लूट लिया। सो महापुरुषके आश्रय आय मधु मांसका त्याग किया, शुभ परिणामनिते मरणकर जनककी राणी विदेहाके गर्भते उपजा अर वह पिंगल ब्राह्मण जाकी स्त्री याने हरी सो वनसे काष्ठ लाय स्त्रीरहित शून्यकुटी देख अति विलाप करता भया कि हे कमल नयनी ! तेरी राणी प्रभावती सारिषी माता अर चक्रध्वज सारिखे पिता तिनको अर बडी विभूति अर बडा परिवार ताहि तज मोमे प्रीतिकर विदेश आई। रूखे आहार अर फाटे वस्त्र तैंने मेरे अर्थसे आदरे। सुंदर हैं सर्व अंग जाके, अब तू मोहि तज कहां गई। या भांति वियोगरूप अग्निसे दग्धायमान वह पिंगल विप्र पृथ्वीविषे महा दुखसहित भ्रमणकर मुनिराजके उपदेशते मुनि होय तप अंगीकार करता भया, तपके प्रभावते देव भया सो मनमें चिंतवता भया कि वह मेरी कांता सम्यक्तरहित हुती सो तिर्यंचगतिको गई अथवा मायाचाररहित सरल परिणाम हुती सो मनुष्यणी भई अथवा समाधि

मरणकर जिनराजको उरमें धर देवगतिको प्राप्त भई। पिंगल नामा विप्र या भांति विलापकरि खेदखिन्न भया ढूंढता फिरे। कोऊ कारण न जानके अवधि जोड निश्चय किया कि ताको तो कुंडलमंडित हर लेगया हुता सो कुंडलमंडितको राजा अरण्यका सेनापति बालचंद्र बांधकर अरण्यके पास लेगया अर सर्वस्व लूट लिया बहुरि राजा अरण्यने याको राज्यसे विमुखकर सर्व देशमें अपना अमल कर याको छोड दिया सो भ्रमण करता महा दुखी मुनिका दर्शनकर मधु मांसका त्याग करता भया सो प्राण त्यागकर राजा जनककी स्त्रीके गर्भमें आया अर वह मेरी स्त्री चित्तोत्सवा सो हू राणीके गर्भमें आई है सो वह तो स्त्रीकी जाति पराधीन वाका तो कुछ अपराध नाहीं अर वह पापी कुंडलमंडितका जीव या राणीके गर्भमें है सो गर्भमें दुःख दूं तो राणी दुख पावे, सो उमसे तो मेरा बैर नाहीं, ऐसी वह देव विचारकर राणी विदेहाके गर्भमें कुंडलमंडितका जीव है, उसपर हाथ मसलता निरन्तर गर्भकी चौकसी देवे सो जब बालकका जन्म भया तब बालकको हरा। अर मनमें विचारी कि याको शिलापर पटक मारूं अथवा मसल डारूं। बहुरि विचारी कि धिकार है, मोहि जो पाप चिंता, बालहत्या समान पाप नाहीं, तब देवने बालकको कुंडल पहराय लघुपरण नामा विद्या लगाय आकाशसे डारा सो चंद्रगति झेल्या अर राणी पुष्पवतीको सौंपा सो भामंडल जातिस्मरण होय सर्व वृत्तांत चंद्रगतिको कहा जो सीता मेरी बहिन है अर राणी विदेहा मेरी माता है अर पुष्पवती मेरी प्रतिपालक माता है। यह वार्ता सुन विद्याधरनिकी सर्व सभा आश्चर्यको प्राप्त भई। अर चंद्रगति भामण्डलको राज्य देय संसार शरीर अर भोगोंसे उदास होय वैराग्य अंगीकार करना विचारा अर भामंडलको कहता भया—हे पुत्र! तेरे जन्म दाता माता पिता तेरे शोकसे महादुखी तिष्ठे हैं सो अपना दर्शन देय तिनके नेत्रोंको आनन्द उपजाय सो स्वामी सर्व भूतहित मुनिराज राजा दशरथसे कहे हैं यह राजा चन्द्रगति संसारका स्वरूप असार

जान हमारे निकट आय जिन दीक्षा धरता भया, जो जन्मा है सो निश्चयते ही मरेगा अर जो मूवा है सो अवश्य नया जन्म धरेगा यह संसारकी अवस्था जान चंद्रगति भव भ्रमणते डरा। ये मुनिके वचन सुनकर भामंडल पूछता भया—हे प्रभो ! चंद्रगतिका अर पुष्पवतीका मोपर अधिक स्नेह काहे भया, तब मुनि बोले, ये पूर्व भवके तेरे माता पिता हैं सो सुन। एक दारूनामा ग्राम वहां ब्राह्मण विमुचि ताके अनुकोशा स्त्री अर अतिभूत पुत्र ताकी स्त्री सरसा, अर एक कयान नामा परदेशी ब्राह्मण सो अपनी माता ऊर्या सहित दारूग्राममें आया सो पापी अतिभूतकी स्त्री सरसाको अर इनके घरके सारभूत धन को ले भागा सो अतिभूत महादुखी होय ताके ढूंढवेको पृथ्वीपर भटका अर याका पिता कैयक दिन पहिले दक्षिणाके अर्थ देशांतर गया हुता सो घर पुरुषानि विना सूना हो गया जो घरमें थोडा बहुत धन रहा था सो भी जाता रहा अर अतिभूतकी माता अनुकोशा सो दरिद्रकरि महादुखी यह सब वृत्तांत विमुचिने सुना कि घरका धन हू गया अर पुत्रकी बहू हू गई अर पुत्र ढूंढनेको निकसा है सो न जानिये कौन तरफ गया। तब विमुचि घर आया अर अनुकोशाको आति विह्वल देख धीर्य बंधाया अर कयानकी माता ऊर्या सो हू महादुःखिनी पुत्र अन्याय कार्य किया ताकरि आति लज्जायमान सो कहके दिलासा करी जो तेरा अपराध नाहीं अर आप विमुचि पुत्रके ढूंढनेको गया सो एक सर्वारि नाम नगर ताके वनमें एक अवधिज्ञानी मुनि सो लोकनके मुखते उनकी प्रशंसा सुनी।

जो अवधिज्ञानरूप किरणों कर जगतमें प्रकाश करें हैं तब यह मुनि पै गया धन अर पुत्र वधूके जानेसे महादुखी हुता ही सो मुनिराजकी तपोऋद्धि देखकर अर संसारकी झूठी माया जान तीव्र वैराग्य पाय विमुचि ब्राह्मण मुनि भया अर विमुचिकी स्त्री अनुकोशा अर कयानकी माता ऊर्र्या ये दोनों ब्राह्मणी कमलकांता आर्यिकाके निकट आर्यिकाके व्रत धरती भई सो विमुचि मुनि अर वे दोनों आर्यिका तीनों

कहते भए हे देव ! या जानकीके तिहारो ही शरण है धन्य हैं भाग्य जाके जो तुम सारिख पति पाए ऐसे कह बहिनको छातीसे लगाया अर माता विदेहा सीताको उरसे लगायकर कहती भई हे पुत्री ! तू सासू ससुरकी अधिक सेवा करियो अर ऐसा करियो जो सर्व कुटुम्बमें तेरी प्रशंसा होय सो भामंडलने सबको बुलाया जनकका छोटा भाई जो कनक उसे मिथिलापुरीका राज्य सौंपकर जनक अर विदेहाको अपने स्थानक लेगया यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे मगधदेशके अधिपति ! तू धर्मका महात्म्य देख जो धर्मके प्रसादसे श्रीरामदेवके सीता सारिखी स्त्री भई गुणरूपकर पूर्ण जाका भामंडल सा भाई विद्याधरोंका इन्द्र अर देवाधिष्ठित वे धनुष सो रामने चढाये अर जिनके लक्ष्मणसा भाई सेवक, यह श्रीरामका चरित्र भामंडलके मिलापका वर्णन जो निर्मल चित्त होय सुनें उसे मनवांछित फलकी सिद्ध होय अर निरोग शरीर होय सूर्य समान प्रभाकूं पावें।

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं भामण्डलका मिलाप कथन वर्णन करनेवाला तीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ३० ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतमस्वामीसों पूछते भए हे प्रभो ! वे राजा दशरथ जगतके हितकारी राजा अरण्यके पुत्र बहुरि कहा करते भए अर श्रीराम लक्ष्मणका सकल वृतांत मैं सुना चाहूं हूं सो कृपा करके कहो तुम्हारा यश तीनलोकमें बिस्तर रहाहै। तब मुनियोंके स्वामी महातप तेजके धारनहारे गौतम गणधर कहते भए जैसा यथार्थ कथन श्री सर्वज्ञदेव वीतरागने भाष्या है तैसा हे भव्योत्तम ! तू सुन—

जब राजा दशरथ बहुरि मुनियोंके दर्शनोंको गए तो सर्वभूतहित स्वामीको नमस्कारकर पूछते भए हे स्वामी मैं संसारमें अनंत जन्म धरे सो कई भवकी वार्ता तिहारे प्रसादसे सुनकर संसारको तजा चाहूं हूं

तब साधु दशरथको भव सुननेका अभिलाषी जानकर कहते भए हे राजन् ! सब संसारके जीव अनादि कालसे कर्मोंके सम्बन्धसे अनन्त जन्म मरण करते दुःख ही भोगते आए हैं। इस जगत में जीवनिके कर्मों की स्थिति उत्कृष्ट मध्यम जघन्य तीन प्रकारकी है अर मोक्ष सर्वमें उत्तम है जाहि पंचमगति कहे हैं सो अनंत जीवनिमें कोई एककै होय है सबनिको नाहीं। यह पंचमगति कल्याणरूपिणी है जहां ते बहुरि आवागमन नाहीं। वह अनंत सुखका स्थानक शुद्ध सिद्धपद इंद्रिय विषयरूप रोगनिकरि पीडित मोहकर अन्ध प्राणी ना पावें । जे तत्त्वार्थ श्रद्धानकर रहित वैराग्यसे वहिर्मुख हैं अर हिंसादिकमें है प्रवृत्ति जिनकी तिनको निरन्तर चतुर्गतिका भ्रमण ही है । अभव्योंको तो सर्वथा मुक्ति नाहीं निरन्तर भव भ्रमण ही है अर भव्यनिमें कोई एकको निवृत्ति है जहां तक जीव पुद्गल धर्म अधर्म काल है सो लोकाकाश है। अर जहां अकेला आकाश ही है सो अलोकाकाश है। लोकके शिखर सिद्ध विराजे हैं। या लोकाकाशमें चेतना लक्षण जीव अनंत हैं जिनका विनाश नाहीं, संसारी जीव निरन्तर पृथ्वी काय जलकाय अग्निकाय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय ये छै काय तिनमें देह धार भ्रमण करै हैं। यह त्रैलोक्य अनादि अनन्त है यामें स्थावर जंगम जीव अपने अपने कर्मोंके समूहकर बंधे नाना योनियोंमें भ्रमण करै हैं अर जिनराजके धर्मकर अनन्त सिद्ध भए अर अनंत सिद्ध होयगे अर होय हैं। जिनमार्ग टारकर और मार्ग मोक्ष नाहीं। अर अनन्तकाल व्यतीत भया अर अनंत काल व्यतीत होयगा। काल का अन्त नाहीं जो जीव सन्देहरूप कलंककर कलंकी हैं अर पापकर पूर्ण हैं अर धर्मनिको नाहीं जाने हैं। तिनके जैनका श्रद्धान कहांते होय अर जिनके श्रद्धान नाहीं सम्यक्तरहित हैं तिनके धर्म कहांते होय अर धर्मरूप वृक्ष विना मोक्षफल कैसे पावे, अज्ञान अनन्त दुखका कारण है जे मिथ्यादृष्टि अधर्म विषे अनुरागी हैं अर अति उग्रपाप कर्मरूप कंचुकी (चोला) कर मंडित हैं । रागादि विषके भरे हैं

तिनका कल्याण कैसे होय, दुख ही भोगवे हैं। एक हस्तिनापुरविषै उपास्तनामा पुरुष, ताकी दीपनी नामा स्त्री सो मिथ्याभिमानकर पूर्ण जाके कछु नियम व्रत नाहीं श्रद्धानरहित महाक्रोधवंती अदेखसकी कषायरूप विषकी धारणहारी महादुर्भाव निरन्तर साधुनिकी निंदा करणहारी कुशब्द बोलनहारी महा कृपण कुटिल आप काहूको अन्न न देय अर जो कोई दान करे ताको मने करे धनकी धिरानी अर धर्म न जाने इत्यादिक महादोषकी भरी मिथ्यामार्गकी सेवक सो पापकर्मके प्रभावकर भवसागरविषै अनंत काल भ्रमण करती भई अर उपास्ति दानके अनुरागकर जन्द्रधुर नगरविषै भद्रनामा मनुष्य ताके धारिणी स्त्री ताके धारणनामा पुत्र भया। भाग्यवान बहुत कुटुंबी ताके नयनसुन्दरी नामा स्त्री सो धारण शुद्ध भावते मुनिनिको आहारदान देय अन्त काल शरीर तजकर धातुकी खंड द्वीपविषै उत्तरकुरु भोगभूमिमें तीन पल्य सुख भोग देव पर्याय पाय तहांते चयकर पृथुलावती नगरीविषै राजा नंदीघोष राणी बसुधा ताके नंदिवर्धन नामा पुत्र भया। एक दिन राजा नंदिघोष यशोधर नामा मुनिके निकट धर्म श्रवणकर नंदिवर्धनको राज्य देय आप मुनि भया। महातपकर स्वर्गलोक गया अर नंदिवर्धन श्रावकके व्रत धारे, पंच नमोकारके स्मरणविषै तत्पर कोटि पूर्व पर्यंत महाराज पदके सुख भोगकर अन्त काल समाधि मरणकर पंचमे देवलोक गया। तहांते चयकर पश्चिम विदेहविषै विजयार्ध पर्वत तहां शशिपुर नाम नगर तहां राजा रत्नमाली ताके राणी विद्युतलता ताके सूर्यजय नामा पुत्र भया। एक दिन रत्नमाली महाबलवान सिंहपुरका राजा वज्रलोचन तासूं युद्ध करनेको गया। अनेक दिव्य रथ हाथी घोडे पियादे महापराक्रमी सामंत लार नानाप्रकार शस्त्रनिके धारक, राजा होठ डसता धनुष चढाय वस्त्र पहिरे रथविषै आरूढ भयानक आकृतिको धरे आग्नेय विद्याधर शत्रुके स्थानकको दग्ध करवेकी है इच्छा जाके, ता समय एक देव तत्काल आयकर कहता भया—हे रत्नमाली! तैं यह कहा आरम्भा। अब तू

क्रोध तज, मैं तेरा पूर्व भवका वृत्तांत कहूं हूं सो सुन—भरतक्षेत्रविषे गांधारी नगरी तहां राजा भूति, ताके पुरोहित उपमन्यु सो राजा अर पुरोहित दोनों पापी मांसभक्षी, एक दिन राजा केवलगर्भ स्वामी के मुखते व्याख्यान सुन यह व्रत लिया, जो मैं पापका आचरण न करूं । सो व्रत उपमन्यु पुरोहितने छुडाय दिया, एक समय राजापर परशत्रुओंकी धाड आई । सो राजा अर पुरोहित दोनों मारे गए । पुरोहितका जीव हाथी भया सो हाथी युद्धमें घायल होय अन्त काल नमोकार मंत्रका श्रवणकर तहां गांधारी नगरीमें राजा भूतिकी राणी योजनगन्धा ताके अरिसूदन नामा पुत्र भया सो ताने केवलगर्भ मुनिका दर्शनकर पूर्व जन्म स्मरण किया तब महा वैराग्य उपजा सो मुनिपद आदरा, समाधि मरण कर ग्यारवें स्वर्गमें देव भया । सो मैं उपमन्यु पुरोहितका जीव अर तू राजा भूति मरकर मन्दारण्यमें मृग भया । दावानलमें जर मूवा, मरकर कलिंजनामा नीच पुरुष भया सो महापापकर दूजे नरक गया सो मैं स्नेहके योगकर नरकमें तुझे संबोधा । आयु पूर्णकर नरकसे निकस रत्नमाली विद्याधर भया सो तू वे अब नरकके दुख भूल गया । यह वार्ता सुन रत्नमाली सूर्यजय पुत्रसहित परम वैराग्यको प्राप्त भया । दुर्गतिके दुखसे डरा, तिलकसुन्दर स्वामीका शरण लेय पिता पुत्र दोनों मुनि भए । सूर्यजय तपकर दसमें देवलोक देव भया तहांतें चयकर राजा अरण्यका पुत्र दशरथ भया सो सर्व भूतहित मुनि कहे हैं अल्पमात्र भी सुकृतकर उपास्तिका जीव कैयक भवमें बडके बीजकी नाई वृद्धिको प्राप्त भया । तू राजा दशरथ उपास्तिका जीव है अर नंदिवर्धनके भवविषे तेरा पिता राजा नंदिघोष मुनि होय ग्रैवयक गया सो तहांते चयकर मैं सर्वभूतहित भया अर जो राजा भूतिका जीव रत्नमाली भया हुता सो स्वर्गसे आय कर यह जनक भया । अर उपमन्यु पुरोहितका जीव जाने रत्नमालीको संबोधा हुता सो जनकका भाई कनक भया । या संसारविषे न कोई अपना है न कोई पर है, शुभाशुभ कर्मोंकर यह जीव जन्म मरण

करे हैं यह पूर्व भवका वर्णन सुन राजा दशरथ निसंदेह होय संयमको सम्मुख भया। गुरुके चरणनिको नमस्कारकर नगरमें प्रवेश किया, निर्मल है अन्तःकरण जिनका, मनमें विचारता भया कि यह महा मंडलेश्वर पदका राज्य महा सुबुद्धि जे राम तिनको देकर मैं मुनिव्रत अंगीकार करूं। राम धर्मात्मा हैं अर महा धीर हैं धीर्यको धरे हैं, यह समुद्रांत पृथ्वीका राज्य पालवे समर्थ हैं। अर भाई भी इनके आज्ञाकारि हैं। ऐसा राजा दशरथने चिंतवन किया, कैसे हैं राजा? मोहते पराङ्मुख अर मुक्तिके उद्यमी, ता समय शरद ऋतु पूर्ण भई अर हिमऋतुका आगमन भया, कैसी है शरदऋतु? कमल ही हैं नेत्र जाके, अर चंद्रमाकी चांदनी सोही हैं उज्ज्वल वस्त्र जाके, सो मानों हिमऋतुके भयकर भाग गई॥

अथानन्तर हिमऋतु प्रकट भई, शीत पडने लगा, वृक्ष दहे अर ठंढी पवनकर लोक व्याकुल भए। जा ऋतुविषै धनरहित प्राणी जीर्ण कुटिमें दुखसे काल व्यतीत करे हैं, कैसे हैं दरिद्री? फट गए हैं अधर अर चरण जिनके, अर बाजें हैं दांत जिनके अर रूखे हैं केश जिनके अर निरन्तर अग्निका है सेवन जिनके अर कभी भी उदर भर भोजन न मिले, कठोर है चर्म जिनका। अर घरमें कुभार्याके वचनरूप शस्त्रनिकर विदारा गया है चित्त जिनका। अर काष्ठादिकके भार लायवेको कांधे कुठारादिकको धरे वन २ भटके हैं अर शाक वोरषालि आदि ऐसे आहारकर पेट भरे हैं अर जे पुण्यके उदयकर राजादिक धनाढ्य पुरुष भए हैं ते बडे महलोंमें तिष्ठै हैं अर शीतके निवारणहारे अगरके धूपकी सुगंधिताकरयुक्त सुंदर वस्त्र पहरे हैं अर सुवर्ण अर रूपादिकके पात्रोंमें षट्रस संयुक्त सुगंधित स्निग्ध भोजन करे हैं, केसर अर सुगंधादिकर लिप्त हैं अंग जाके, अर जिनके निकट धूपदानमें धूप खेइए हैं। अर परिपूर्ण धनकर चिंतारहित हैं, झरोंखोंमें बैठे लोकनको देखे हैं अर जिनके समीप गीत नृत्यादिक विनोद होयवो करे हैं, रत्नोंके आभूषण अर सुगन्धमालादिककर मंडित सुंदर कथामें उद्यमी हैं अर जिनके विनय-

वान अनेक कलाकी जाननहारी महारूपवंती पतिव्रता स्त्री हैं। पुण्यके उदयकर ये संसारी जीव देवगति मनुष्यगतिके सुख भोगे हैं अर पापके उदयकर नरक तिर्यंच तथा कुमानुष होय दुख दरिद्र भोगे हैं, ये सर्व लोक अपने अपने उपार्जित जे कर्म तिनके फल भोगे हैं। ऐसे मनमें विचारकर राजा दशरथ संसार के वाससे अत्यन्त भयको प्राप्त भया। निर्वृत्तिके पायवेकी है अभिलाषा जाके, समस्त भोग वस्तुंनसे विरक्त भया, द्वारपालको कहता भया। कैसा है द्वारपाल? भूमिमें थापा है मस्तक अर जोडे हैं हाथ जाने, नृपति ताकों आज्ञा करी।

हे भद्र! सामंत मंत्री पुरोहित सेनापति आदि सबको ल्यावो, तब वह द्वारपाल द्वारेपर आय दूजे मनुष्यको द्वारपर मेल तिनकी आज्ञा प्रमाण बुलावनेको गया, तब वे आयकर राजाको प्रणामकर यथा-योग्य स्थानमें तिष्ठे, विनतीकर कहते भए। हे नाथ! आज्ञा करो क्या कार्य है? तब राजा कही—मैं संसारका त्याग कर निश्चयसेती संयम धरूंगा, तब मंत्री कहते भए। हे प्रभो! तुमको कौन कारण वैराग्य उपजा, तब नृपति कही जो प्रत्यक्ष यह समस्त जगत् सूके तृणकी न्याई मृत्युरूप अग्निकर जरे है अर जो अभव्यनको अलभ्य अर भव्यनिको लेने योग्य ऐसा सम्यक्त सहित संयम सो भवतापका हरणहारा अर शिवसुखका देनहारा है सुर असुर नर विद्याधरों कर पूज्य प्रशंसा योग्य है, मैं आज मुनिके मुखसे जिनशासनका व्याख्यान सुना, कैसा है जिनशासन सकलपापोंका वर्जनहारा है। तीन लोकविषै प्रकट, महा सूक्ष्म है चर्चा जाविषै अतिनिर्मल उपमारहित है। सर्व वस्तुनिमें सम्यक्त परम वस्तु है ता सम्यक्तका मूल जिनशासन है श्रीगुरुओंके चरणारविंदके प्रसादकर मैं निर्वृत्तिमार्गमें प्रवृत्ता, मेरी भव भ्रांति रूप नदीकी कथा आज मैं मुनिके मुखसे सुनी अर मोहि जातिस्मरण भया। सो मेरे अंग देखो त्रास कर कांपे हैं कैसी है मेरी भवभ्रांति नदी? नानाप्रकारके जे जन्म वेही हैं भ्रमर जामें अर मोहरूप कीच कर

मलिन कुतर्करूप ग्राहनिकर पूर्ण महादुःख रूप लहर उठे हैं निरंतर जामें, मिथ्यारूप जलकर भरी, मृत्यु रूप मगरमच्छोंका है भय जामें रुदनके महाशब्दको धरे, अधर्म प्रवाह कर बहती अज्ञानरूप पर्वततें निकसी संसाररूप समुद्रमें है प्रवेश जाका सो अब मैं इस भवनदीको उलंघकर शिवपुरी जायवेका उद्यमी भया हूं। तुम मोहके प्रेरे कछु वृथा मत कहो, संसार समुद्र तर निर्वाण द्वीप जाते अन्तराय मत करो। जैसे सूर्यके उदय होते अंधकार न रहे तैसे सम्यक्ज्ञानके होते संशय तिमिर कहां रहे ताते मेरे पुत्रको राज्य देहु, अब ही पुत्रका अभिषेक करावहु मैं तपोवनमें प्रवेश करूं हूं। ये वचन सुन मंत्री सामंत राजाका वैराग्यका निश्चय जान परमशोकको प्राप्त भए। नीचे होय गए हैं मस्तक जिनके अर अश्रुपात कर भर गए हैं नेत्र जिनके अंगुरी कर भूमिको कुचरते क्षणमात्रमें प्रभारहित होय गए, मौनसे तिष्ठे अर सकल ही रणवास प्राणनाथका निर्ग्रंथ व्रतका निश्चय सुन शोकको प्राप्त भया, अनेक विनोद करते हुते सो तज कर आंसुओंसे लोचन भर लिए, अर महारुदन किया। भरत पिताका वैराग्य सुन आप भी प्रतिबोधको प्राप्त भए, चित्तमें चितवते भए अहो यह स्नेहका बंध छेदना कठिन है। हमारा पिता ज्ञानको प्राप्त भया। जिनदीक्षा लेनेको इच्छे है, अब इनके राज्यकी चिंता कहां, मोहि तो न किसीको कुछ पूछना न कुछ करना तपोवनमें प्रवेश करूंगा संयम धरूंगा। कैसा है संयम संसारके दुःखोंका क्षय करणहारा है अर मेरे इस देह करहू कहा? कैसा है यह देह व्याधिका घर है अर विनश्वर है सो यदि देहहीसे मेरा सम्बन्ध नाहीं तो बांधवनिसों कहा सम्बन्ध? यह सब अपने अपने कर्म फलके भोगता हैं, यह प्राणी मोह कर अंधा है दुःख रूप वनमें अकेला ही भटके है कैसा है दुःख रूप वन अनेक भव भय रूप वृक्षनिते भरा है॥

अथानन्तर केकई सकल कलाकी जाननहारी भरतकी यह चेष्टा जान अतिशोककूं धरती भई,

मनमें चितवे है—भरतार और पुत्र दोनों ही वैराग्य धारया चाहे हैं कौन उपाय कर इनका निवारण करूं या भांति चिंता कर व्याकुल भया है मन जाका तब राजाने जो वर दीया हुता सो याद आया अर शीघ्र ही पतिपै जाय आधे सिंहासनपर बैठी अर वीनती करती भई हे नाथ ! सर्व ही स्त्रीनिके निकट तुम मोहि कृपाकर कही हुती जो तू मांग सो मैं देउं सो अब देवो । तुम सत्यवादी हो अर दानकरि निर्मलकीर्ति तिहारी जगतविषै विस्तर रही है । तब दशरथ कहते भये हे प्रिये ! जो तेरी वांछा होय सो ही लेहु । तब राणी केकई आंसू डारती संती कहती भई—हे नाथ ! हमपै ऐसी कहा चूक भई । जो तुम कठोर चित्त किया ? हमकूं तजा चाहो हो हमारा जीव तो तिहारे आधीन है अर यह जिन दीक्षा अत्यंत दुर्धर सो लेयबेको तुम्हारी बुद्धि काहेकूं प्रवृत्ति है ? यह इंद्र समान जे भोग तिनकर लडाया जो तिहारा शरीर सो कैसे मुनिपद धारोगे ? कैसा है मुनिपद अत्यंत विषम है । या भांति जब राणी केकई ने कहा तब आप कहते भए—हे कांते ! समर्थनिकूं कहा विषम ? मैं तो निसन्देह मुनिव्रत धरूंगा, तेरी अभिलाषा होय सो मांग लेहु । राणी चिंतावान होय नीचा मुखकर कहती भई हे नाथ! मेरे पुत्रको राज्य देहु । तब दशरथ बोले यामें कहा संदेह ? तैं धरोहरि मेली हुती सो अब लेहु, तैं जो कहा सो हम प्रमाण किया, अब शोक तज, तैं मोहि ऋण रहित किया । तब राम लक्ष्मणको बुलाय दशरथ कहते भये—कैसे हैं दोऊ भाई महा विनयवान हैं, पिताके आज्ञाकारी हैं, राजा कहे है हे वत्स ! यह केकई अनेक कलाकी पारगामिनी, याने पूर्वै महा घोर संग्रामविषै मेरा सारथिपना किया, यह अतिचतुर है, मेरी जीत भई तब मैं तुष्टायमान होय याहि वर दीया जो तेरी वांछा होय सो मांग, तब याने वचन मेरे धरोहरि मेला, अब यह कहे है मेरे पुत्रको राज्य देवो सो जो याके पुत्रको राज्य न देउं तो याका पुत्र भरत संसारका त्याग करे अर यह पुत्रके शोककरि प्राण तजे अर मेरी वचन चूकनेकी अकीर्ति जगतमें विस्तरे, अर यह काम

मर्यादातैं विपरीत है जो बडे पुत्रकूं छोडकर छोटे पुत्रकूं राज्य देना अर भरतकूं सकल पृथिवीका राज्य दीए तुम लक्ष्मण सहित कहां जावो, तुम दोऊ भाई परमक्षत्री, तेजके धरनहारे हो, तातैं हे वत्स! मैं कहा करूं दोऊ ही कठिन बात आय बनी हैं। मैं अत्यन्त दुःखरूप चिंताके सागरमें पडा हूं। तब श्रीरामचन्द्र महा विनयको धरते संते कहते भए पिताके चरणारविंदकी ओर हैं नेत्र जिनके अर महा सज्जन भावको धरे हैं, हे तात! तुम अपना वचन पालो हमारी चिंता तजो जो तिहारे वचन चूकनेकी अपकीर्ति होय अर हमारे इन्द्रकी सम्पदा आवे तो कौन अर्थ? जो सुपुत्र हैं सो ऐसा ही कार्य करे जाकर माता पिताकूं रंचमात्र भी शोक न उपजे। पुत्रका यही पुत्रपना पंडित कहे हैं—जो पिताकूं पवित्र करे अर कष्टतैं रक्षा करें। पवित्र करणा यह कहावे जो उनकूं जिनधर्मके सन्मुख करे। दशरथके अर राम लक्ष्मणके यह बात होय है ताही समय भरत महिलतैं उतरा मनमें विचारी मैं कर्मनिकूं हनूं मुनिव्रत धरूं सो लोकनिके मुखतैं हाहाकार शब्द भया तब पिताने विह्वल चित्त होय भरतकूं वन जायवेतैं राखा, गोदमें ले बैठे छातीसूं लगाय लिया मुख चूमा अर कहते भए—हे पुत्र! तू प्रजाका पालन कर मैं तपके अर्थ वनमें जाऊं हूं। भरत बोले—मैं राज्य न करूं जिन दीक्षा धरूंगा। तब राजा कहते भए—हे वत्स! कई एक दिन राज्य करहु। तिहारी नवीन वय है, वृद्ध अवस्थामें तप करियो। भरत कही—हे तात! जो मृत्यु है सो बाल वृद्ध तरुणकूं नाहीं देखे है, सर्वभक्षी है, तुम मोहि वृथा काहेको मोह उपजावो हो तब राजा कही—हे पुत्र! गृहस्थाश्रमविषै भी धर्मका संग्रह होय है। कुमानुषनितैं नहीं बनै है। तब भरत कही हे नाथ! इंद्रियानेके वशतैं काम क्रोधादिक भरे गृहस्थनिकूं मुक्ति कहां? तब भूपतिने कही—हे भरत! मुनिनिहूमें सब ही तद्भव मुक्ति नाहीं होय हैं, कईएक होय हैं तातैं तू कई दिन गृहस्थ धर्म आराधि, तब भरत कही—हे देव आप जो कही सो सत्य है परंतु जो गृहस्थनिका तो यह नियम ही है जो मुक्ति न होय अर मुनिनिमें

कोई होय कोई न होय गृहस्थ धर्म तें परम्पराय मुक्ति है साक्षात नाहीं तातैं पर हीन शक्तिवारेनिका काम है मोहि यह बात न रुचै, मैं महा व्रत धरणेकाही अभिलाषी हूं। गरुड कहा पतंगानिकी रीति आचरै ? कुमानुष कामरूप अग्निकी ज्वालाकरि परम दाह कूं प्राप्त भए संते स्पर्शनइंद्रिय अर जिह्वा इन्द्रियकरि अधर्मकार्यकूं करै हैं, तिनकूं निवृत्ति कहां ? पापी जीव धर्मते विमुख विषय भोगानिकूं सेय करि निश्चय सेती महा दुःख दाता जो दुर्गति ताहि प्राप्त होय हैं, ये भोग दुर्गतिके उपजावनहारे अर राखे न रहें, क्षणभंगुर हैं तातैं त्याज्यही हैं ज्यों ज्यों कामरूप अग्नि में भोगरूप ईंधन डारिये त्यों त्यों अत्यंत तापकी करणहारी कामाग्नि प्रज्वलित होय है तातैं हे तात ! तुम मोहि आज्ञा देवो जो वनमें जाय विधिपूर्वक तप करूं, जिन भाषित तप परम निर्जराका कारण है, संसारतैं मैं अतिभयकूं प्राप्त भया हूं अर हे प्रभो ! जो घरही विषैं कल्याण होय तो तुम काहेको घर तजि मुनि हुआ चाहो हो ? तुम मेरे तात हो सो तातका यही धर्म है संसार समुद्रतें तारै, तपकी अनुमोदना करै, यह बात विचक्षण पुरुष कहें हैं शरीर स्त्री धन माता पिता भाई सकलकूं तजि यह जीव अकेला ही परलोककूं जाय है, चिरकाल देवलोक के सुख भोगे है, तो हू यह तृप्त न भया सो कैसे मनुष्योंके भोगनिकरि तृप्त होय ? पिता भरतके ये वचन सुनकर बहुत प्रसन्न भया, हर्ष थकी रोमांच होय आए, अर कहता भया हे पुत्र ! तू धन्य है, भव्यनिविषै मुख्य है, जिनशासनका रहस्य जानि प्रतिबोधको प्राप्त भया है तू जो कहे है सो प्रमाण है तथापि हे धीर ! तैं अबतक कबहु मेरी आज्ञा भंग न करी, तू विनयवान पुरुषोंमें प्रधान है, मेरी वार्ता सुनि तेरी माता केकईने युद्धविषै मेरा सारथीपना किया, वह युद्ध अति विषम हुता जामें जीवनेकी आशा नाहीं सो याके सारथीपनेकरि युद्धमें विजय पाई, तब मैं तुष्टायमान होय याको कहा जो तेरी वांछा होय सो मांग तब याने कही यह वचन भण्डार रहे, जादिन मोहि इच्छा होयगी तादिन

मांगलूंगी सो आज याने यह मांगी कि मेरे पुत्रको राज्य देहु सो मैं प्रमाण किया। अब हे गुणानिधे ! तू इन्द्रके राज्य समान यह राज्य निकंटक करि। मेरी प्रतिज्ञा भंगकी अकीर्ति जगतविषै न होय अर यह तेरी माता तेरे शोककरि तप्तायमान होय मरणको न पावे कैसी है यह निरंतर सुखकर लढाया है शरीर जाने अपत्य कहिए पुत्र ताका यही पुत्रपना है कि माता पिताको शोक समुद्रमें न डारे यह बात बुद्धि-मान कहे हैं या भांति राजा कही।

अथानन्तर श्रीराम भरतका हाथ पकड़ महामधुरबचनसे प्रेमकी भरी दृष्टिकर देखते संते कहते भए, हे भ्रात ! तातने जैसे बचन तोहि कहे ऐसे और कौन कहने समर्थ जो समुद्रसे रत्नोंकी उत्पाति होय सो सरोवरसे कहां ? अबार तेरी वय तपके योग्य नाहीं कैयक दिन राज्य कर जासे पिताकी कीर्ति बचनके पालिवेकी चन्द्रमा समान निर्मल होय अर तो सारिखे पुत्रके होते संते माता शोककर तप्ताय मान मरणको प्राप्त होय यह योग्य नाहीं अर मैं पर्वत अथवा वनविषे ऐसी जगह निवास करूंगा जो कोई न जाने तू निश्चिंत राज्यकरि। मैं सकल राजऋद्धि तज देशसे दूर रहूंगा अर पृथ्वीको पीडा काहू प्रकार न होयगी तातैं अब तू दीर्घ सांस मत डारे, कैयक दिन पिताकी आज्ञा मान राज्य करि, न्याय सहित पृथ्वीकी रक्षाकरि, हे निर्मल स्वभाव ! यह इक्ष्वाकु वंशानिका कुल ताहि तू अत्यंत शोभायमान करि जैसे चंद्रमा ग्रह नक्षत्रादिकको शोभायमान करे है। भाईका यही भाईपना पंडितानिने कहा है कि भाइनिकी रक्षा करे संताप हरे। श्रीरामचन्द्र ऐसे वचन कहिकर पिताके चरणानिको भावसहित प्रणाम कर चल पडे। तब पिताको मूर्छा आय गई, काष्ठके स्तम्भ समान शरीर होय गया, राम तर्कश बांध धनुष हाथमें लेय माताको नमस्कारकर कहते भए—हे माता ! हम अन्य देशकूं जांय हैं, तुम चिन्ता न करनी, तब माताको भी मूर्छा आय गई, बहुरि सचेत होय आंसू डारती संती कहती भई, हाय पुत्र !

तुम मोहि शोकके समुद्रमें डार कहां जावो हो, तुम उत्तम चेष्टाके धरणहारे हो, माताका पुत्र ही अवलम्बन है जैसे शाखाके मूल आधार है। माता रुदनकरि विलाप करती भई, तब श्रीराम माताकी भक्तिमें तत्पर ताहि प्रणामकर कहते भए—हे माता! तुम विषाद मत करहु। मैं दक्षिण दिशामें कोई स्थानक कर तुमको निसंदेह बुलाऊंगा। हमारे पिताने माता केकईको वर दिया हुता सो भरतको राज्य दिया। अब मैं यहां न रहूं, विंध्याचलके वनविषै अथवा मलयाचलके वनविषै तथा समुद्रके समीप स्थानक करूंगा। मैं सूर्य समान यहां रहूं तो भरत चंद्रमाकी आज्ञा ऐश्वर्यरूप कांति न विस्तरे। तब माता नम्रीभूत जो पुत्र ताहि उरसे लगाय रुदन करती संती कहती भई। हे पुत्र! मोकूं तिहारे साथ चलना उचित है, तोकूं देखे विना मैं प्राणोंके राखिवे समर्थ नाहीं, जे कुलवंती स्त्री हैं तिनके पिता अथवा पति तथा पुत्र ये ही आश्रय हैं। सो पिता तो कालवश भया अर पति जिनदीक्षा लेयबेको उद्यमी भया है। अब तो पुत्र हीका अवलंबन है, सो तुमहू छाड चाले तो मेरी कहा गति भई। तब राम बोले हे माता! मार्गमें पाषाण अर कंटक बहुत हैं, तुम कैसे पावोंसे चलोगी तातैं कोऊ सुखका स्थानकर असवारी भेज तुमको बुला लूंगा। मोहि तिहारे चरणनिकी सौगंध है तिहारे लेनेको मैं आऊंगा, तुम चिंता मत करहु। ऐसे कह माताको शांतता उपजाय सीध करी। बहुरि पिताके पास गए। पिता मूर्छित होय गए हुते सो सचेत भए। पिताको प्रणामकर दूसरी मातावोंपे गए सुमित्रा केकई सुप्रभा सबानिको प्रणामकर विदा हुए। कैसे हैं राम? न्यायविषै प्रवीण निराकुल है चित्त जिनका, तथा भाई बंधु मंत्री अनेक राजा उमराव परिवारके लोक सबानिकूं शुभवचन कह विदा भए। सबानिको बहुत दिलासाकर छातीसों लगाय उनके आंसू पूंछे। उनने घनी ही विनती करी जो यहां ही रहो सो न मानी। सामंत तथा हाथी घोडे रथ सबकी ओर कृपादृष्टिकर देखा बहुरि बडे २ सामंत हाथी घोडे भेट लाए सो रामने न राखे। सीता

अपने पतिको विदेश गमनको उद्यमी देख ससुर अर सासुनको प्रणामकर नाथके संग चली जैसे शची इंद्रके साथ चाले। अर लक्ष्मण स्नेहकर पूर्ण रामको विदेश गमनको उद्यमी देख चित्तमें क्रोधकर चितवता भया। जो हमारे पिताने स्त्रीके कहेते यह कहा अन्याय कार्य विचारा जो रामको टार औरको राज्य दिया। धिक्कार है स्त्रीनिकूं जो अनुचित काम करती शंका न करें, स्वार्थविषै आसक्त है चित्त जिनका, अर यह बडा भाई महानुभाव पुरुषोत्तम है सो ऐसे परिणाम मुनिनिके होय हैं। अर मैं ऐसा समर्थ हूं जो समस्त दुराचारिनिका पराभवकर भरतको राज्यलक्ष्मीते रहित करूं अर राज्यलक्ष्मी श्री रामके चरणनिमें लाऊं परन्तु यह वात उचित नाहीं, क्रोध महादुखदाई है जीवनिकूं अन्ध करे है। पिता तो जिनदीक्षाको उद्यमी भया अर मैं क्रोध उपजाऊं, सो योग्य नाहीं अर मोहि ऐसे विचारकर कहा? योग्य अर अयोग्य पिता जाने अथवा बडा भाई जाने जो पिताकी कीर्ति उज्ज्वल होय सो कर्तव्य है। मोहि काहूको कछु न कहना मैं मौन पकड बडे भाईके संग जाऊंगा। कैसा है यह भाई? साधु समान हैं भाव जाके, ऐसा विचारकर कोप तज धनुष बाण लेय समस्त गुरुजनोंको प्रणामकर महाविनय संपन्न राम के संग चला, दोऊ भाई जैसे देवालयते देव निकसें तैसे मंदिरते निकसे अर माता पिता सकल परिवार अर भरत शत्रुघ्नसहित इनके वियोगते अश्रुपातकरि मानों वर्षाऋतु करते संते राखवेको चले सो राम लक्ष्मण अति पिताभक्त संबोधनेको महापंडित विदेश जायवे हीका है निश्चय जिनके, सो माता पिता की बहुत स्तुतिकर बारंबार नमस्कारकर बहुत धीर्य बंधाय पीठ पीछे फेरे सो नगरमें हाहाकार भया। लोक वार्ता करे हैं। हे मात! यह कहा भया यह कौनने मत उठाया। या नगरी हीका अभाग्य है अथवा सकल पृथ्वीका अभाग्य है। हे मात, हम तो अब यहां न रहेंगे, इनके लार चालेंगे। ये महा समर्थ हैं अर देखो यह सीता नाथके संग चली है अर रामकी सेवा करणहारा लक्ष्मण भाई है, धन्य है यह जानकी

विनयरूप वस्त्र पहिरे भरतारके संग जाय है । नगरकी नारी कहै हैं हम सबको शिक्षा देनहारी यह सीता महापातिव्रता है । या समान और नारी नाही, जे महापातिव्रता होंय सो याकी उपमा पावें, पतिव्रतावोंके भरतार ही देव हैं अर देखो यह लक्ष्मण माताको रोवती छोड बडे भाईके संग जाय है । धन्य याकी भक्ति, धन्य याकी प्रीति, धन्य याकी शक्ति, धन्य याकी क्षमा, धन्य याकी विनयकी अधिकता, या समान और नाहीं अर दशरथ भरतको यह कहा आज्ञा करी जो तू राज्य लेहु अर राम लक्ष्मणको यह कहा बुद्धि उपजी जो अयोध्याको छांड चले, जा कालमें जो होनी होय सो होय है, जाके जैसा कर्म उदय होय तैसी ही होय जो भगवानके ज्ञानमें भासा है सो होय, दैवगति दुर्निवार है, यह वात बहुत अनुचित होय है यहांके देवता कहां गए । ऐसे लोगानिके मुखते ध्वनि होती भई । सब लोक इनके लार चालवेको उद्यमी भए । घरनिते निकसे नगरीका उत्साह जाता रहा, शोककर पूर्ण जो लोक तिनके अश्रुपातोंकर पृथ्वी सजल होय गई जैसे समुद्रकी लहर उठे है तैसे लोक उठे । रामके संग चाले, मने किए हू न रहें, रामको भक्तिकर लोक पूजें संभाषण करें सो राम पैंड पैंडमें विघ्न मानें इनका भाव चलने का लोक ऐसा चाहें कि लार चलें, रामका विदेश गमन मानों सूर्य देख न सका, सो अस्त होने लगा । अस्त समय सूर्यके प्रकाशने सर्व दिशा तजी जैसे भरत चक्रवर्तीने मुक्तिके निमित्त राज्य संपदा तजी हुती । सूर्यके अस्त होते परम रागको धरती संती सन्ध्या सूर्यके पीछे ही चली, जैसे सीता रामके पीछे चली अर समस्त विज्ञानका विध्वंस करणहारा अंधकार जगतमें व्याप्त भया, मानों रामके गमनसे तिमिर विस्तरा, लोग लार लागे सो रहें नाहीं, तब रामने लोकानिके टारिवेको श्रीअरनाथ तीर्थंकरके चैत्यालयमें निवास करना विचारा, संसारके तारणहारे भगवान तिनका भवन सदा शोभायमान महा सुगंध अष्ट मंगल द्रव्यनिकर मंडित, जाके तीन दरवाजे, ऊंचा तोरण सो राम लक्ष्मण सीता प्रदक्षिणा

देय चैत्यालय मांहि पैठ समस्त विधिके वेत्ता दोय दरवाजे तक तो लोक चले गए । तीसरे दरवाजेपर द्वारपालने लोकनिको रोका जैसे मोहिनीकर्म मिथ्यादृष्टियोंको शिवपुर जानेसे रोके है, राम लक्ष्मण धनुष बाण अर बखतर बाहिर मेल भीतर दर्शनको गए। कमल समान हैं नेत्र जिनके, श्रीअरनाथका प्रतिबिंब रत्नोंके सिंहासनपर विराजमान महाशोभायमान महासौम्य कायोत्सर्ग श्रीवत्सलक्षणकर देदीप्यमान है उरस्थल जिनका, प्रकट हैं समस्त लक्षण जिनके, संपूर्ण चंद्रमा समान वदन, फूले कमलसे नेत्र, कथनविषै अर चिंतवनविषै न आवै ऐसा है रूप जिनका, तिनका दर्शनकर भावसहित नमस्कारकर ये दोऊ भाई परम हर्षको प्राप्त भए, कैसे हैं दोऊ? बुद्धि पराक्रमरूप लज्जाके भरे जिनेन्द्रकी भक्तिविषै तत्पर रात्रिको चैत्यालयके समीप ही रहे, तहां इनको वसे जानकर माता कौशल्यादिक पुत्रनिविषै है वात्सल्य जिनका, आयकर आंसू डारतीं बारंबार उरसों लगावती भईं। पुत्रनिके दर्शनविषै अतृप्त विकलपरूप हिंडोलविषै झूले हैं चित्त जिनका, गौतम स्वामी कहै हैं।

हे श्रेणिक ! सर्वशुद्धतामें मनकी शुद्धता महा प्रशंसा योग्य है । स्त्री पुत्रको भी उरसे लगावे अर पतिको भी उरसे लगावे परंतु परिणामोंका अभिप्राय जुदा जुदा है । दशरथकी चारों ही राणी गुणरूप लावण्यताकर पूर्ण महामिष्टवादिनी पुत्रोंसे मिल पतिपै गईं जायकर कहती भईं कैसा है पति ? सुमेरुसमान निश्चल है भाव जाका राणी कहैं हैं हे देव ! कुलरूप जहाज शोकरूप समुद्रमें डूबे है सो थांभो । राम लक्ष्मणको पीछे लावो तब राजा कहते भए यह जगत विकाररूप मेरे आधीन नाहीं । मेरी इच्छा तो यह ही है कि सर्व जीवनिको सुख होय कोऊको भी दुःख न होय जन्म जरा मरणरूप पाराधियोंकर कोई जीव पीडा न जाय परंतु ये जीव नानाप्रकारके कर्मोंकी स्थितिको धरे हैं तातैं कौन विवेकी वृथा शोक करे । बांधवादिक इष्टपदार्थनिके दर्शनविषै प्राणिनिको तृप्ति नाहीं तथा धन अर जीतव्य इनकरि तृप्ति नाहीं ।

इंद्रियोंके सुख पूर्ण न होय सके अर आयु पूर्ण होय तब जीव देहको तज और जन्म धरे जैसे पक्षी वृक्षको तज चला जाय है तुम पुत्रनिकी माता हो पुत्रनिको ले आवो पुत्रनिके राज्यका उदय देख विश्रामको भजो। मैंने तो राज्यका अधिकार तजा पाप क्रियासे निवृत्त भया। भवभ्रमणसे भयको प्राप्त भया। अब मैं मुनिव्रत धरूंगा हे श्रेणिक ! या भांति राजा राणियोंको कहकर निर्मोहताके निश्चयको प्राप्त भया सकल विषियाभिलाषरूप दोषोंसे रहित सूर्य समान है तेज जाका सो पृथ्वीमें तप संयमका उद्योत करता भया।

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं दशरथका वैराग्य वर्णन करनेवाला इकतीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ३१ ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण क्षण एक निद्राकर अर्धरात्रिके समय जब मनुष्य सोय रहे लोकनिका शब्द मिट गया अर अंधकार फैल गया ता समय भगवानको नमस्कारकर बखतर पहिर धनुधबाण लेय सीताको बीचमें लेकर चले, घर घर दीपकनिका उद्योत होय रहा है, कामीजन अनेक चेष्टा करे हैं। ये दोऊ भाई महाप्रवीण नगरके द्वारकी खिडकीकी ओरसे निकसे, दक्षिण दिशाका पंथ लिया, रात्रिके अंतमें दौडकर सामंत लोक आय मिले राघवके संग चलनेकी है अभिलाषा जिनके, दूरते राम लक्ष्मणको देख महा विनयके भरे असवारी छोड प्यादे आए चरणारविंदको नमस्कारकरि निकट आय वचनालाप करते भए। बहुत सेना आई अर जानकीकी बहुत प्रशंसा करते भए जो याके प्रसादते हम राम लक्ष्मणको आय मिले यह न होती तो ये धीरे धीरे न चलते तो हम कैसे पहुंचते, ये दोऊ भाई पवन समान शीघ्रगामी हैं अर यह सीता महासती हमारी माता है। या समान प्रशंसा योग्य पृथ्वीविषै और नाहीं। ये दोऊ

भाई नरोत्तम सीताकी चाल प्रमाण मंद मंद दो कोस चले। खेतनिविषै नानाप्रकारके अन्न हरे होय रहे हैं अर सरोवरनिमें कमल फूल रहे हैं अर वृक्ष महारमणीक दीखे हैं। अनेक ग्राम नगरादिमें ठौर २ लोक पूजे हैं भोजनादि सामग्री करि, अर वडे वडे राजा वडी फौजसे आय मिले जैसे वर्षाकालमें गंगा जमुनाके प्रवाहविषै अनेक नदियनिके प्रवाह आय मिलें। कैइक सामंत मार्गके खेदकर इनका निश्चय जान आज्ञा पाय पीछे गए अर कैएक लज्जाकर कैएक भयकर कैएक भक्तिकर लार प्यादे चले जाय हैं सो राम लक्ष्मण क्रीडा करते परियात्रा नामा अटवीविषै पहुंचे। कैसी है अटवी नाहर अर हाथिनिके समूहनिकर भरी, महा भयानक वृक्षानिकर रात्रिसमान अंधकारकी भरी, जाके मध्य नदी है ताके तट आए जहां भीलनिका निवास है नानाप्रकारके मिष्ट फल हैं। आप तहां तिष्ठकर कैएक राजानिको विदा किया अर कैएक पीछे न फिरे रामने वहुत कहा तो भी संग ही चाले सो सकल नदीको महा भयानक देखते भए। कैसी है नदी पर्वतनिसों निकसती महानील है जल जाका प्रचंड हैं लहर जामें महाशब्दायमान अनेक जे ग्राह मगर तिनकर भरी दोऊ ढांहां विदारती कल्लोलनिके भयकर उडे हैं तीरके पक्षी जहां ऐसी नदीको देख कर सकल सामंत त्रासकर कंपायमान होय राम लक्ष्मणको कहते भए हे नाथ ! कृपाकर हमें भी पार उतारहु, हम सेवक भक्तिवंत हमसे प्रसन्न होवो, हे माता जानकी लक्ष्मणसे कहो जो हमकूं पार उतारे, या भांति आंसू डारते अनेक नरपति नाना चेष्टाके करणहारे नदीविषै पडने लगे, तव राम बोले अहो अब तुम पाछे फिरो। यह वन महा भयानक है। हमारा तुम्हारा यहांलग ही संग हुना पिताने भरतको सबका स्वामी कियाहै सो तुम भक्तिकर तिनकूं सेवो। तव वे कहते भए हे नाथ! हमारे स्वामी तुमही हो, महादयावान हो, हमपर प्रसन्न होवो, हमको मत छोडहु तुम विना यह प्रजा निराश्रय भई आकुलतारूप कहो कौनकी शरण जाय, तुम समान और कौन है व्याघ्र सिंह अर गजेन्द्र सर्पादिकका भरा भयानक, जो

यह वन तामें तुम्हारे संग रहेंगे। तुम बिना हमें स्वर्गहु सुखकारी नाहीं। तुम कहो पीछे जावो सो चित्त फिरे नाहीं कैसे जाहिं? यह चित्त सब इंद्रियनिका अधिपति याहीते कहिए है जो अद्भुत वस्तुमें अनुराग करे। हमारे भोगनिकर घरकर तथा स्त्री कुटम्बादिकर कहा। तुम नररत्न हो, तुमको छांड कहां जाहिं हे प्रभो! तुमने बालक्रीडाविषै भी हमसे घृणा न करी अब अत्यन्त निठुरताको धारो हो। हमारा अपराध कहा? तिहारे चरण रजकर परमवृद्धिको प्राप्त भए, तुम तो भृत्यवत्सल हो। अहो माता जानकी! अहो लक्ष्मण धीर! हम सीस निवाय हाथ जोड वीनती करे हैं, नाथको हमपर प्रसन्न करहु। ये वचन सवन कहे तब सीता अर लक्ष्मण रामके चरणनिकी ओर निरख रहे। राम बोले अब तुम पाछे जाहु। यही उत्तर है। सुखसों रहियो ऐसा कहकर दोनों धीर नदीके विषे प्रवेश करते भए। श्रीराम सीताका कर गह सुखसे नदीमें लेगए जैसे कमलनीको दिग्गज ले जाय। वह असराल नदी राम लक्ष्मणके प्रभावकर नाभि प्रमाण बहने लगी दोऊ भाई जल विहारविषै प्रवीण क्रीडा करत चले गए। सीता रामके हाथ गहे ऐसी शोभै मानों साक्षात् लक्ष्मी ही कमलदलमें तिष्ठी है। राम लक्ष्मण क्षणमात्रविषै नदीपार भए वृक्षनिके आश्रय आय गए। तब लोकनिकी दृष्टिते अगोचर भए, तब कई एक तो विलाप करते आंसू डारते घरनिको गए अर कईएक राम लक्ष्मणकी ओर धरी है दृष्टि जिनने सो काष्ठकेसे होय रहे अर कईएक मूर्छा खाय धरतीपर पडे अर कईएक ज्ञानको प्राप्त होय जिन दीक्षाको उद्यमी भए परस्पर कहते भए जो धिकार है या असार संसारको अर धिकार है इन क्षणभंगुर भोगनिको ये काले नागके फण समान भयानक है। ऐसे शूरवीरनिकी यह अवस्था तो हमारी कहा बात या शरीरको धिकार, जो पानीके बुदबुदा समान निस्सार जरा मरण इष्टवियोग अनिष्टसंयोग इत्यादि कष्टका भाजन, धन्य हैं वे महापुरुष भाग्यवंत उत्तम चेष्टाके धारक जे मरकट (वंदर) की भौंह समान लक्ष्मीको चंचल जान तजिकर दीक्षा

धरते भये या भांति अनेक राजा विरक्त दीक्षाको सन्मुख भए, तिनने एक पहाडकी तलहटीमें सुन्दर वन देखा अनेक वृक्षनिकरमंडित महासघन नानाप्रकारके पुष्पनिकर शोभित जहां सुगंधके लोलुपी भ्रमर गुंजार करे हैं तहां महापवित्र स्थानकमें तिष्ठते ध्यानाध्ययनविषै लीन महातपके धारक साधु देखे तिनको नमस्कारकर वे राजा जिननाथका जो चैत्यालय तहां गए। ता समय पहाडनिकी तलहटी तथा पहाड-निके शिखरविषै अथवा रमणीक वननिविषै नदीनिके तटविषै नगर ग्रामादिकविषै जिनमंदिर हुते तहां नमस्कारकरि एक समुद्र समान गम्भीर मुनिनिके गुरु सत्यकेतु आचार्य तिनके निकट गये, नमस्कार कर महाशांतरसके भरे आचार्यसे वीनती करते भये हे नाथ! हमको संसार समुद्रते पार उतारहु, तव मुनि कही तुमको भव पार उतारनहारी भगवती दीक्षा है सो अंगीकार करहु। यह मुनिकी आज्ञा पाय ये परम हर्षको प्राप्त भये। राजा विदग्धविजय मेरुक्रूर संग्रामलोलुप श्रीनागदमन धीर शत्रुदमन धर विनोद कंटक सत्यकठोर प्रियवर्धन इत्यादि निर्ग्रंथ होते भये तिनका गज तुरंग रथादि सकल साज सेवक लोक-निने जायकरि उनके पुत्रादिकनिको सौंपा तव वे बहुत चिंतावान भए। बहुरि समझकर नानाप्रकारके नियम धारते भए। कैयक सम्यकदर्शनको अंगीकारकर संतोषको प्राप्त भए, कैयक निर्मल जिनेश्वरदेवका धर्म श्रवण कर पापते परांगमुख भए। बहुत सामंत राम लक्ष्मणकी वार्ता सुन साधु भए कैयक श्राव-कके अणुव्रत धारते भए। बहुत राणी आर्यिका भई बहुत श्राविका भई कैयक सुभट रामका सर्व वृत्तांत भरत दशरथ पर जाकर कहते भए सो सुनकर दशरथ अर भरत कछुयक खेदको प्राप्त भए।

अथानंतर राजा दशरथ भरतको राज्याभिषेक कर कछुयक जो रामके वियोग कर व्याकुल भया हुता हृदय सो समतामें लाय विलाप करता जो अंतःपुर ताहि प्रतिबोधि नगरते वनको गए। सर्व भूतिहित स्वामीको प्रणामकर बहुत नृपनिसहित जिनदीक्षा आदरी। एकाकी विहारी जिनकलपी भए।

परम शुक्लध्यानकी है अभिलाषा जिनके तथापि पुत्रके शोककर कबहुक कछुइक कलुषता उपज आवे सो एक दिन ये विचक्षण विचारते भए कि संसारके दुखका मूल यह जगतका स्नेह है इसे धिक्कार हो या करि कर्म बंधे हैं। मैं अनंत जन्म धरे तिनविषै गर्भ जन्म बहुत धरे सो मेरे गर्भ जन्मके अनेक माता पिता भाई पुत्र कहां गए । अनेक बार मैं देव लोकके भोग भोगे अर अनेक वार नरकके दुख भोगे, तिर्यंचगतिविषै मेरा शरीर अनेक बार इन जीवनिने भखा इनका मैं भखा, नानारूप जे योनियें तिनविषै मैं बहुत दुख भोगे अर बहुत वार रुदन किया अर रुदनके शब्द सुने अर बहुतवार वीणवांसुरी आदि वादित्रोंके नाद सुने, गीत सुने, नृत्य देखे देवलोकविषै मनोहर अप्सरानिके भोग भोगे, अनेक वार मेरा शरीर नरकविषै कुल्हाडानि कर काटा गया, अर अनेकवार मनुष्यगतिविषै महा सुगंध महावीर्यका करणहारा षट्रस संयुक्त अन्न आहार किया अर अनेकवार नरकविषै गला सीसा अर तांवा नारकीयोंने मार मार मुझे प्याया अर अनेकवार सुर नर गतिविषै मनके हरणहारे सुन्दररूप देखे अर सुंदररूप धारे अर अनेकवार नरकविषै महाकुरूप धारे अर नानाप्रकारके त्रास देखे, कैयक वार राजपद देवपदविषै नानाप्रकारके सुगंध सूंघे तिन पर भ्रमर गुंजार करें अर कैयक वार नरककी महादुर्गंध सूंघी अर अनेक वार मनुष्य तथा देवगतिविषै महालीलाकी धरणहारी वस्त्राभरण मंडित मनकी चोरणहारी जे नारी तिन सों आलिंगन कीया अर बहुत वार नरकनिविषै कूटशाल्मलि वृक्ष तिनके तीक्षण कंटक अर प्रज्वलिती लोहकी पुतलीनिसे स्पर्श किया, या संसारविषै कर्मानिके संयोगते मैं कहा कहा न देखा, कहा कहा न सूंघा, कहा कहा न सुना, कहा कहा न भखा अर पृथिवीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकायविषै ऐसा देह नाहीं जो मैं न धारा, तीनलोकविषै ऐसा जीव नाहीं जासूं मेरे अनेक नाते न भए, ये पुत्र मेरे कईवार पिता भए माता भए, शत्रु भए, मित्र भए, ऐसा स्थानक नाहीं जहां मैं न

उपजा न मुआ, ये देह भोगादिक अनित्य या जगतविषै कोई शरण नाहीं, यह चतुर्गति रूप संसार दुःखका निवास है, मैं सदा अकेला हूं ये षट्द्रव्य परस्पर सब ही भिन्न हैं, यह काय अशुचि, मैं पवित्र, ये मिथ्यात्वादि अव्रतादिकर्म आश्रवके कारण हैं, सम्यक्त व्रत संयमादि संवरके कारण हैं। तपकर निर्जरा होय है। यह लोक नानारूप मेरे स्वरूपते भिन्न या जगतविषै आत्मज्ञान दुर्लभ है, अर वस्तुका जो स्वभाव सोई धर्म तथा जीवदया धर्म सो मैं महाभाग्यते पाया, धन्य ये मुनि जिनके उपदेशते मोक्षमार्ग पाया सो अब पुत्रनिकी कहा चिंता, ऐसा विचार कर दशरथ मुनि निर्मोहदशाको प्राप्त भए, जिन देशों में पहिले हाथी चढे चमर ढुरते छत्र फिरते हुते अर महारण संग्रामविषै उद्धत वैरिनिको जीते तिन देशनिविषैं निर्ग्रंथ दशा धरे बाईस परीषह जीतते शांतिभाव संयुक्त विहार करते भए। अर कौशल्या तथा सुमित्रा पतिके वैरागी भए अर पुत्रनिके विदेश गए महाशोकवंती भई, निरंतर अश्रुपात डारें तिनके दुःखको देख, भरत राज्य विभूतिको विषसमान मानता भया अर केकई तिनको दुखी देख उपजी है करुणा जाके पुत्रको कहती भई हे पुत्र! तू राज्य पाया, वडे वडे राजा सेवा करे हैं परंतु राम लक्ष्मण विना यह राज्य शोभे नाहीं सो वे दोऊ भाई महाविनयवान उन विना कहा राज्य अर कहा सुख अर कहा देशकी शोभा अर कहा तेरी धर्मज्ञता? वे दोऊ कुमार अर वह सीता राजपुत्री सदा सुखके भोगनहारे पाषाणादिककर पूरित जे मार्ग ताविषै वाहन विना कैसे जावेंगे अर तिन गुणसमुद्रनिकी ये दोनों माता निरंतर रुदन करे हैं सो मरणको प्राप्त होंयगी तातैं तुम शीघ्रगामी तुरंगपर चढ शितावी जावो उनको ले आवो, तिनसहित महासुखसों चिरकाल राज करियो अर मैं भी तेरे पीछे ही उनके पास आऊं हूं, यह माताकी आज्ञा सुन बहुत प्रसन्न होय ताकी प्रशंसा कर अति आतुर भरत हजार अश्व साहित रामके निकट चला अर जे रामके समीप ते वापिस आए हुते तिनको संग ले चला, आप तेज तुरंग पर

चढा उतावली चाल वनविषै आया। वह नदी असराल वहती हुती सो तामें वृक्षनिके लठे गेर बेडे बांध क्षणमात्रमें सेना सहित पार उतरे, मार्गविषै नर नारिनिसों पूछते जाय जो तुम राम लक्ष्मण कहीं देखे। वे कहे हैं यहांते निकट ही हैं सो भरत एकाग्रचित्त चले गए। सघन वनमें एक सरोवरके तटपर दोऊ भाई सीता सहित बैठे देखे। समीप धरे हैं धनुष वाण जिनके, सीताके साथ ते दोऊ भाई घने दिवसविषै आए अर भरत छह दिनमें आया, रामको दूरते देख भरत तुरंगते उतर पायपियादा जाय रामके पायन परा मूर्छित होय गया तब राम सचेत किया। भरत हाथ जोड सिर निवाय रामसूं वीनती करता भया।

जो हे नाथ! राज्यके देयवेकर मेरी कहा विडम्बना करी। तुम सर्व न्याय मार्गके जाननहारे महा प्रवीण मेरे या राज्यते कहा प्रयोजन? तुम विना जीवनेकर कहा प्रयोजन? तुम महाउत्तम चेष्टाके धरणहारे मेरे प्राणोंके आधार हो। उठो अपने नगर चलें। हे प्रभो! मोपर कृपा करहु, राज्य तुम करहु, राज्य योग तुम ही हो, मोहि सुखकी अवस्था देहु। मैं तिहारे सिरपर छत्र फेरता खडा रहूंगा अर शत्रुघन चमर ढारेगा अर लक्ष्मण मंत्री पद धारेगा, मेरी माता पश्चातापरूप अग्निकर जरे है अर तिहारी माता अर लक्ष्मणकी माता महाशोक करै हैं, यह वात भरत करे ही हैं अर ताही समय शीघ्र रथपर चढी अनेक सामंतनिसहित महाशोककी भरी केकई आई अर राम लक्ष्मणकूं उरसों लगाय बहुत रुदन करती भई। रामने धीर्य बंधाया, तब केकई कहती भई—हे पुत्र! उठो अयोध्या चलो, राज्य करहु, तुम विन मेरे सकलपुर वन समान है अर तुम महाबुद्धिवान हो, भरतसों सेवा लेवो हम स्त्री जन निकृष्ट बुद्धि हैं मेरा अपराध क्षमा करहु, तब राम कहते भए—हे मात! तुम तो सब वातनिविषै प्रवीण हो। तुम कहा न जानो हो, क्षत्रियनिका यही विरुद है जो वचन न चूकें, जो कार्य विचारा ताहि और भांति न करें। हमारे तातने जो वचन कहा सो हमको अर तुमको निवाहना, या वातविषै भरतकी अकीर्ति

न होयगी। बहुरि भरतते कहा कि हे भाई! तुम चिंता मत करहु, तू अनाचारते शंके है सो पिताकी आज्ञा अर हमारी आज्ञा पालवेते अनाचार नाहीं, ऐसा कहकर वनविषै सब राजानिके समीप भरतका श्रीरामने राज्याभिषेक किया अर केकईकूं प्रणामकर बहुत स्तुतिकर बारम्बार संभाषणकर भरतको उरसे लगाय बहुत दिलासाकर मुशाकिलते विदा किया। केकई अर भरत राम लक्ष्मण सीताके समीप ते पाछे नगरको चले, भरत रामकी आज्ञा प्रमाण प्रजाका पिता समान हुआ राज्य करे। जाके राज्य विषै सर्व प्रजाको सुख, कोई अनाचार नाहीं, यद्यपि ऐसा निःकंटक राज्य है तौ भी भरतको क्षणमात्र राग नाहीं, तीनों काल श्रीअरनाथकी बंदना करे अर मुनिनिके मुखते धर्म श्रवण करे, द्युति भट्टारक नामा जे मुनि, अनेक मुनि करे हैं सेवा जिनकी, तिनके निकट भरतने यह नियम लिया कि रामके दर्शनमात्रते ही मुनिव्रत धारूंगा॥

अथानन्तर मुनि कहते भए कि—हे भरत! कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके, ऐसे राम जब लग न आवें तब लग तुम गृहस्थके व्रत धारहु। जे महात्मा निर्ग्रंथ हैं तिनका आचरण अति विषम है सो पहिले श्रावकके व्रत पालने तासे यतिका धर्म सुखसों सधे है। जब वृद्ध अवस्था आवेगी तब तप करेंगे, यह वार्ता कहते भए अनेक जडबुद्धि मरणको प्राप्त भए। महाअमोलक रत्न समान यतिका धर्म जाकी महिमा कहनेविषै न आवे ताहि जे धारे हैं तिनकी उपमा कौनकी देहि। यतिके धर्मते उतरता श्रावकका धर्म है सो जे प्रमादरहित करे हैं ते धन्य हैं। यह अणुव्रत हू प्रबोधका दाता है जैसे रत्नद्वीपविषै कोऊ मनुष्य गया अर वह जो रत्न लेय सोई देशान्तरविषै दुर्लभ है तैसे जिनधर्म नियमरूप रत्ननिका द्वीप है। ताविषै जो नियम लेय सोई महाफलका दाता है जो अहिंसारूप रत्नको अंगीकारकर जिनवरको भक्तिकर अरचे सो सुरनरके सुख भोग मोक्षको प्राप्त होय अर जो सत्यव्रतका धारक मिथ्यात्वका परि-

हारकर भावरूप पुष्पनिकी मालाकर जिनेश्वरको पूजे है ताकी कीर्ति पृथिवीविषै विस्तरै है अर आज्ञा कोई लोप न सके अर जो परधनका त्यागी जिनेन्द्रको उरविषै धारे, बारंबार जिनेंद्रको नमस्कार करे सो नव निधि चौदह रत्नका स्वामी होय अक्षयनिधि पावे अर जो जिनराजका मार्ग अंगीकारकर पर नारीका त्याग करे सो सबके नेत्रानिको आनन्दकारी मोक्ष लक्ष्मीका वर होय अर जो परिग्रहका प्रमाण कर संतोष धर जिनपतिका ध्यान करे सो लोक पूजित अनन्त महिमाको पावे अर आहारदानके पुण्य कर महा सुखी होय ताकी सब सेवा करे अर अभयदानकर निर्भय पद पावे। सर्व उपद्रवते रहित होय अर ज्ञान दानकर केवलज्ञानी होय सर्वज्ञपद पावे अर औषधि दानके प्रभावकर रोगरहित निर्भयपद पावे अर जो रात्रीको आहारका त्याग करे सो एक वर्षविषै छह महीना उपवासका फल पावे यद्यपि गृहस्थ परके आरम्भविषै प्रवृत्ते है तो हू शुभगतिके सुख पावे जो त्रिकाल जिनदेवकी बंदना करे ताके भाव निर्मल होंय, सर्व पापका नाश करे अर जो निर्मल भावरूप पुष्पनिकर जिननाथको पूजे सो लोकविषै पूजनीक होय अर जो भोगी पुरुष कमलादि जलके पुष्प तथा केतकी मालती आदि पृथ्वीके सुगन्ध पुष्पनिकर भगवानको अरचे सो पुष्पविमानको पाय यथेष्ट क्रीडा करे अर जो जिनराजपर अगर चंदनादि धूप खेवे सो सुगंध शरीरका धारक होय अर जो गृहस्थी जिनमंदिरविषै विवेकसहित दीपोद्योत करे सो देवलोकविषै प्रभाव संयुक्त शरीर पावे अर जो जिनभवनविषै छत्र चमर झालरी पताका दर्पणादि मंगल द्रव्य चढावे अर जिनमंदिरको शोभित करे सो आश्चर्यकारी विभूति पावे अर जो जल चंदनादि ते जिन पूजा करे सो देवनिका स्वामी होय महा निर्मल सुगंध शरीर जे देवांगना तिनका वल्लभ होय अर जो नीरकर जिनेंद्रका अभिषेक करे सो देवनिकर मनुष्यनिते सेवनीक चक्रवर्ती होय, जाका राज्याभिषेक देव विद्याधर करें अर जो दुग्धकरि अरहन्तका अभिषेक करे सो क्षीरसागरके जलसमान उज्ज्वल

विमानमें परम कांति धारक देव होय बहुरि मनुष्य होय मोक्ष पावै अर जो दधिकर सर्वज्ञ वीतरागका अभिषेक करैं सो दधि समान उज्ज्वल यशको पायकर भवोदधिको तरै अर जो घृतकर जिननाथका अभिषेक करे सो स्वर्ग विमानमें महाबलवान देव होय परंपराय अनंतवीर्यको धरे अर जो ईखरसकर जिननाथका अभिषेक करे सो अमृतका आहारी सुरेश्वर होय नरेश्वर पद पाय मुनीश्वर होय अविनश्वर पद पावे। अभिषेकके प्रभावकर अनेक भव्यजीव देव अर इंद्रनिकरि अभिषेक पावते भए, तिनकी कथा पुराणनिमें प्रसिद्ध है जो भक्तिकर जिनमंदिरमें मयूर पिच्छादिककर बुहारी देय सो पापरूप रज से रहित होय परम विभूति आरोग्यता पावे अर जो गीत नृत्य वादित्रादिकर जिनमंदिरविषै उत्सव करे सो स्वर्गमें परम उत्साहको पावे अर जिनेश्वरके चैत्यालय करावे सो ताके पुण्यकी महिमा कौन कह सके, सुरमंदिरके सुख भोग परंपराय अविनाशी धाम पावे अर जो जिनेंद्रकी प्रतिमा विधिपूर्वक करावे सो सुरनरके सुख भोग परम पद पावे। व्रत विधान तप दान इत्यादि शुभ चेष्टानिकरि प्राणी जे पुण्य उपारंजे हैं सो समस्त कार्य जिन बिंब करावनेके तुल्य नाहीं, जो जिनबिम्ब करावे सो परंपराय सिद्धपद पावे अर जो भव्य जिनमंदिरके शिखर चढावे सो इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादिक सुख भोग लोकके शिखर पहुंचे अर जो जीर्ण जिनमंदिरनिकी मरम्मत करावे सो कर्मरूप अजीर्णको हर निर्भय निरोग पदको पावे अर जो नवीन चैत्यालय कराय जिनबिंब पधराय प्रतिष्ठा करै सो तीन लोकविषै प्रतिष्ठा पावै अर जो सिद्धक्षेत्रादि तीर्थोंकी यात्रा करे सो मनुष्य जन्म सफल करे अर जो जिनप्रतिमाके दर्शनका चिंतवन करे ताहि उपवासका फल होय अर दर्शनके उद्यमका अभिलाषी होय सो बेलाका फल पावै अर जो चैत्यालय जायवेका आरम्भ करे ताहि तेलाका फल होय अर गमन किए चौलाका फल होय अर कछु एक आगे गए पंच उपवासका फल होय, आधी दूर गए पक्षोपवासका फल होय अर चैत्यालयके

दर्शनते मासोपवासका फल होय अर भाव भक्तिकर महास्तुति किए अनंत फल प्राप्ति होय, जिनेंद्रकी भक्ति समान और उत्तम नाहीं अर जो जिनसूत्र लिखवाय ताका व्याख्यान करें करावें पढें पढावें सुनें सुनावें शास्त्रनिकी तथा पंडितानिकी भक्ति करें वे सर्वांगके पाठी होय केवल पद पावें। जो चतुर्विध संघ की सेवा करे सो चतुर्गतिके दुख हर पंचम गति पावें। मुनि कहै हैं—हे भरत! जिनेंद्रकी भक्तिकर कर्म क्षय होय अर कर्म क्षय भए अक्षयपद पावे ये वचन मुनिके सुन राजा भरत प्रणामकर श्रावकका व्रत अंगीकार किया। भरत बहुश्रुत अतिधर्मज्ञ महाविनयवान श्रद्धावान चतुर्विध संघको भक्तिकर अर दुखित जीवोंको दयाभावकर दान देता भया, सम्यग्दर्शन रतनको उरमें धारता भया, अर महासुन्दर श्रावकके व्रतविषै तत्पर न्याय सहित राज्य करता भया।

भरत गुणनिका समुद्र ताका प्रताप अर अनुराग समस्त पृथिवीविषै विस्तरता भया, ताके देवांगना समान ड्योढ सौ राणी तिनविषै आसक्त न भया, जलमें कमलकी न्याईं अलिप्त रहा, जाके चित्तमें निरंतर यह चिंता वरते कि कब यतिके व्रत धरूं तप करूं निर्ग्रंथ हुवा पृथिवीमें विचरूं। धन्य है वे पुरुष जे धीर सर्व परिग्रहका त्याग कर तपके बल कर समस्त कर्मको भस्मकर सारभूत जो निर्वाणका सुख सो पावे हैं, मैं पापी संसारमें मग्न प्रत्यक्ष देखूं हूं जो यह समस्त संसारका चारित्र क्षणभंगुर है। जो प्रभात देखिये सो मध्याह्नविषै नाहीं, मैं मूढ होय रहा हूं जे रंक विषयाभिलाषी संसारमें राचे हैं ते खोटी मृत्यु मरें हैं, सर्प व्याघ्र गज जल अग्नि शस्त्र विद्युत्पात शूलारोपण असाध्य रोग इत्यादि कुरीति से शरीर तजेंगे यह प्राणी अनेक सहस्रों दुख का भोगनहारा संसार विषै भ्रमण करे है बडा आश्चर्य है अल्प आयुमें प्रमादी होय रहा है जैसे कोइ मदोन्मत्त क्षीर समुद्र के तट सूता तरंगों के समूह से न डरै तैसे मैं मोहकर उन्मत्त भव भ्रमणसे नाहीं डरू हूं निर्भय होय रहा हूं, हाय हाय हिंसा आरम्भादि अनेक

जे पाप तिन कर लिप्त मैं राज्य कर कौन से घोर नरक में जाऊंगा कैसा है नरक बाण षडग चक्रके आकार तीक्ष्ण पत्र हैं जिनके ऐसे शालमलीवृक्ष जहां हैं अथवा अनेक प्रकार तिर्यञ्चगति ताविषे जावूंगा देखो जिन शास्त्र सारिखा महाज्ञानरूप शास्त्र ताहूको पाय करि मेरा मन पाप युक्त हो रहा है। निस्पृह होयकर यतिका धर्म नाहीं धारे है सो न जानिए कौन गति जाना है ऐसी कर्मानिकी नासनहारी जो धर्मरूप चिंता ताको निरन्तर प्राप्त हूआ जो राजा भरत सो जैन पुराणादि ग्रंथनिके श्रवण विषे आसक्त है सदैव साधुनकी कथाविषै अनुरागी रात्रि दिन धर्ममें उद्यमी होता भया ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं दशरथका वैराग्य रामका विदेश गमन भरतका राज्य वर्णन करनेवाला बत्तीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३२ ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण सीता जहां एक तापसी का आश्रम है तहां गए। अनेक तापस जटिल नानाप्रकारके वृक्षनिके वक्कल पहिरे अनेक प्रकारका स्वादुफल तिनकर पूर्ण हैं मठ जिनके, बन विषे वृक्षसमान वहुत मठ देखे विस्तीर्ण पत्रों कर छाए हैं मठ जिनके अथवा घासके फूलानिकर आछादित हैं निवास जिनके, बिना वाहे सहजही उगे जे धान्य ते उनके आंगनमें सूके हैं अर मृग भयरहित आंगन में वेठे जुगाले हैं अर तिनके निवास विषे सूवा मैंना पढे हैं अर तिनके मठनिके समीप अनेक गुलक्यारी लगाय राखी हैं सो तापसनिकी कन्या मिष्ट जल कर पूर्ण जे कलश ते थांवलानिमें डारें हैं। श्रीरामचन्द्रको आए जान तापस नाना प्रकारके मिष्ट फल सुगन्ध पुष्प मिष्ट जल इत्यादिक सामग्रि निकर बहुत आदरते पाहुन गति करते भए। मिष्ट बचनका संभाषणकर रहनेको कुटी मृदुपल्लवनकी

शय्या इत्यादि उपचार करते भए। ते तापस सहज ही सबानिका आदर करे हैं इनको महा रूपवान अद्भुत पुरुष जान बहुत आदर किया, रात्रिको बस कर ये प्रभात उठ चले। तब तापस इनकी लार चले, इनके रूपको देखकर पाषाण भी पिघले तो मनुष्यकी कहा बात ? ते तापस सूके पत्रोंके आहारी इनके रूपको देख अनुरागी होते भए जे वृद्धतापस हैं वे इनको कहते भए तुम यहां रहो तो यह सुखका स्थान है अर कदाचित न रहो तो या अटवीविषै सावधान रहियो यद्यपि यह वनी जल फल पुष्पादि कर भरी है तथापि विश्वास न करना, नदी वनी नारी ये विश्वास योग्य नाहीं, सो तुम तो सब बातोंमें सावधान ही हो फिर राम लक्ष्मण सीता यहांते आगे चले अनेक तापासिनी इनके देखनेकी अभिलाषाकरि बहुत विह्वल भईं संती दूर लग पत्र पुष्प फल इंधनादिक मिसकर साथ चली आईं, कई एक तापासिनी मधुर वचनकर इनको कहती भई जो तुम हमारे आश्रमविषै क्यों न रहो, हम तिहारी सब सेवा करेंगी यहांते तीन कोसपर ऐसी बनी है जहां महासघन वृक्ष हैं, मनुष्यानिका नाम नाहीं। अनेक सिंह व्याघ्र दुष्ट जीवनिकर भरी, जहां इंधन अर फल फूलके अर्थ तापस हू न आवें। डाभकी तीक्ष्ण अणीनिकर जहां संचार नाहीं। वन महाभयानक है अर चित्रकूट पर्वत अति ऊंचा दुर्लंघ्य विस्तीर्ण पडा है तुम कहा नहीं सुना है जो चले जावो हो ? तब राम कहते भए—अहो तापासिनी हो ! हम अवश्य आगे जावेंगे तुम अपने स्थानक जावो। कठिनताते तिनको पाछे फेरी, ते परस्पर इनके गुण रूपका वर्णन करतीं अपने स्थानक आईं, ये महागहन वनमें प्रवेश करते भए। कैसा है वह वन ? पर्वतके पाषाणानिके समूहकरि महाकर्कस अर बडे २ जे वृक्ष तिनपर आरूढ हैं बेलनिके समूह जहां, अर क्षुधाकर अति क्रोधायमान जे शार्दूल तिनके नखनिकर विदारे गए हैं वृक्ष जहां, अर सिंहनिकर हते गए जे गजराज तिनके रुधिरकर रक्त भए जो मोती सो ठौर २ विखर रहे हैं अर माते जे गजराज तिन

कर भग्न भए हैं तरुवर जहां, अर सिंहनिकी ध्वनि सुनकर भाग रहे हैं कुरंग जहां अर सूते जे अजगर तिनके श्वासानिकी पवनकरि पूर रही हैं गुफा जहां, शूरानिके समूहकर कर्दमरूप होय रहे हैं सरोवर जहां अर महा अरण्य भैंसे तिनके सींगनकर भग्न भए हैं ववइयानिके स्थान जहां अर फणको ऊंचे किये फिरे हैं भयानक सर्प जहां अर कांटनिकर वींधा है पूंछका अग्रभाग जिनका, ऐसी जे सुरहगाय सो खेदखिन्न भई हैं अर फैल रहे हैं कटेरी आदि अनेक प्रकारके कंटक जहां अर विष पुष्पनिकी रजकी वासनाकर घुमें हैं अनेक प्राणी जहां अर गैंडानिके नखनिकर विदारे गए हैं वृक्षनिके पींड अर भ्रमते रोझनके समूह तिनकर भग्न भए हैं पल्लवनिके समूह जहां अर नानाप्रकारके जे पक्षिनिके समूह तिनके जो क्रूर शब्द उनकर वन गुंज रहा है अर वंदरनिके समूह तिनके कूदनेकर कम्पायमान हैं वृक्षनिकी शाखा जहां अर तीव्र वेगको धरें पर्वतसे उतरती जे नदी तिनकर पृथ्वीमें पड गया है दहाना जहां अर वृक्षनिके पल्लवनिकर नाहीं दीखे है सूर्यकी किरण जहां अर नानाप्रकारके फल फूल तिनकर भरा अनेक प्रकारकी फैल रही है सुगंध जहां, नानाप्रकारकी जे औषधि तिनकरि पूर्ण अर वनके जे धान्य तिनकरि पूरित कहूं एक नील कहूं एक पीत कहूं एक रक्त कहूं एक हरित, नानाप्रकार वर्णको धरे जो वन तामें दोऊ वीर प्रवेश करते भए। चित्रकूट पर्वतके महामनोहर जे नीझरने तिनविषै क्रीडा करते वनकी अनेक सुन्दर वस्तु देखते परस्पर दोऊ भाई वात करते वनके मिष्टफल आस्वादन करते किन्नर देवनिके हू मनको हरें ऐसा मनोहर गान करते पुष्पनिके परस्पर आभूषण वनावते सुगंध द्रव्य अंगविषै लगावते, फूल रहे हैं सुन्दर नेत्र जिनके, महा स्वच्छन्द अत्यन्त शोभाके धारणहारे सुरनर नागानिके मनके हरणहारे नेत्रनिको प्यारे उपवनकी नाईं भीम वनमें रमते भए। अनेक प्रकारके सुन्दर जे लतामण्डप तिनमें विश्राम करते नानाप्रकारकी कथा करते विनोद करते रहस्यकी वातें करते जैसे नंदनवनमें देव भ्रमण करें तैसे अतिरमणीक लीलासूं वन विहार करते भए।

अथानन्तर साढे चार मासमें मालव देशविषै आए सो देश अत्यन्त सुन्दर नानाप्रकारके धान्यों-कर शोभित जहां ग्राम पट्टन घने सो केतीक दूर आयकर देखें तो वस्ती नाहीं, तब एक बटकी छायामें दोऊ भाई परस्पर बतलावते भए जो काहेते यह देश ऊजाड दीखे है? नानाप्रकारके क्षेत्र फल रहे हैं अर मनुष्य नाहीं, नानाप्रकारके वृक्ष फल फूलनकर शोभित हैं अर पौंडे सांठेके बाड बहुत हैं अर सरोवर-निमें कमल फूल रहे हैं। नानाप्रकारके पक्षी केलि करे हैं। यह देश अति विस्तीर्ण मनुष्यानिके संचार विना शोभे नाहीं जैसे जिनदीक्षाको धरे मुनि वीतराग भावरूप परम संयम विना शोभे नाहीं। ऐसी सुन्दर वार्ता राम लक्ष्मणसूं करे हैं तहां अत्यंत कोमल स्थानक देख रत्न कम्बल बिछाय श्रीराम बैठे निकट धरा है धनुष जिनके, अर सीता प्रेमरूप जलकी सरोवरी श्रीरामकेविषै आसक्त है मन जाका, सो समीप बैठी। श्रीरामने लक्ष्मणको आज्ञा करी तू बट ऊपर चढकर देख कहीं वस्ती हू है सो आज्ञा प्रमाण देखता भया अर कहता भया कि हे देव! विजयार्ध पर्वत समान ऊंचे जिनमंदिर दीखे है।जिनके शरदके बादले समान शिखर शोभे है, ध्वजा फरहरे हैं अर ग्राम हू बहुत दीखे हैं। कूप वापी सरोवरानिकरि मंडित अर विद्या-धरानिके नगर समान दीखे हैं, खेत फल रहे हैं परन्तु मनुष्य कोई नाहीं दीखे है न जानिये लोक परिवार सहित भाज गए हैं अथवा क्रूरकर्मके करणहारे म्लेच्छ बांधकर लेगए हैं। एक दरिद्री मनुष्य आवता दीखे है। मृग समान शीघ्र आवै है, रूक्ष हैं केश जाके, अर मलकर मंडित है शरीर जाका, लंबी दाढी कर आच्छादित है उरस्थल अर फाटे वस्त्र पहिरे, फाटे है चरण जाके, ढरै है पसेव जाके मानों पूर्व जन्म के पापको प्रत्यक्ष दिखावै है। तब राम आज्ञा करी जो शीघ्र जाय याको ले आव, तब लक्ष्मण बटसे उतर दलिद्रीके पास गए सो लक्ष्मणको देख आश्चर्यको प्राप्त भया जो यह इंद्र है तथा वरुण है तथा नागेन्द्र है तथा नर है किन्नर है चंद्रमा है अक सूर्य है आग्निकुमार है अक कुवेर है। यह कोऊ महा तेजका धारक है,

ऐसा विचारता संता डरकर मूर्छा खाय भूमिविषे गिर पडा तव लक्ष्मण कहते भए—हे भद्र ! भय मत करहु । उठ उठ, ऐसा कहिकरि उठाया अर बहुत दिलासाकरि श्रीरामके निकट ले आया । सो दालिद्री पुरुष क्षुधा आदि अनेक दुखनिकर पीडित हुता सो रामको देख सब दुख भूल गया । राम महासुन्दर सौम्य है मुख जिनका, कांतिके समूहते विराजमान नेत्रनिको उत्साहके करणहारे महाविनयवान, सीता समीप बैठी है, सो मनुष्य हाथ जोड सिर पृथ्वीते लगाय नमस्कार करता भया । तब आप दयाकर कहते भए तू छायाविषे जाय बैठ भय न करि, तब वह आज्ञा पाय दूर बैठा, रघुपति अमृतरूप वचनकर पूछते भए, तेरा नाम कहा अर कहांते आया अर कौन है ? तब वह हाथ जोड विनती करता भया । हे नाथ ! मैं कुटुंबी हूं मेरा नाम सिरगुप्त है दूरते आऊं हूं, तब आप बोले यह देश ऊजाड काहेते है ? तब वह कहता भया—हे देव ! उज्जयिनी नाम नगरी ताका पति राजा सिंहोदर प्रसिद्ध प्रतापकर नवाए हैं बडे २ सामंत जाने, देवनि समान है विभव जाका, अर एक दशांगपुरका पति वज्रकर्ण सो सिंहोदरका सेवक अत्यंत प्यारा सुभट जाने स्वामीके बडे २ कार्य किए सो निर्ग्रंथ मुनिको नमस्कारकर धर्म श्रवणकर ताने यह प्रतिज्ञा करी जो मैं देव गुरु शास्त्र टार औरको नमस्कार न करूं । साधुके प्रसादकर ताको सम्यग्दर्शन की प्राप्ति भई सो पृथ्वीमें प्रसिद्ध है । आपने कहा अब तक ताकी वार्ता न सुनी, तब लक्ष्मण रामके अभिप्रायते पूछते भए जो वज्रकर्णपर कौन भांति संतनकी कृपा भई । तब पंथी कहता भया—हे देवराज ! एक दिन वज्रकर्ण दसारण्य वनमें मृगयाको गया हुता, जन्म हीते पापी क्रूरकर्मका करणहारा, इंद्रिय-निका लोलुपी महामूढ शुभक्रियाते पराङ्मुख महासूक्ष्म जिनधर्मकी चर्चा सो न जाने, कामी क्रोधी लोभी ये अन्ध भोग सेवनकर उपजा जो गर्व सोई भया पिशाच ताकर पीडित, सो वनमें भ्रमण करे सो ताने ग्रीष्म समयविषे एक शिलापर तिष्ठता संता सत्पुरुषनिकर पूज्य ऐसा महामुनि देखा, चार महीना

सूर्यकी किरणका आताप सहनहारा महातपस्वी पक्षी समान निराश्रय सिंह समान निर्भय सो तप्तायमान जो शिला ता कर तप्त शरीर ऐसे दुर्जय तीव्रतापका सहनहारा सज्जन सो ऐसे तपोनिधि साधुको देख वज्रकर्ण तुरंगपर चढा बरछी हाथमें लिये, काल समान महाक्रूर पूछता भया। कैसे हैं साधु ? गुण रूप रत्ननिके सागर, परमार्थके वेत्ता, पापोंके घातक, सब जीवनिके दयालु, तपोविभूतिकर मंडित तिनको वज्रकर्ण कहता भया।

हे स्वामी ! तुम इस निर्जन वनमें कहा करो हो ? ऋषि बोले आत्म कल्याण करे हैं जो पूर्वे अनन्त भवविषै न आचरा, तब वज्रकर्ण हंसकर कहता भया। या अवस्थाकरि तुमको कहा सुख है। तुमने तप कर रूपलावण्यरहित शरीर किया। तिहारे अर्थ काम नाहीं, वस्त्राभरण नाहीं कोई सहाई नाहीं। स्नान सुगंध लेपनादि रहित हो, पराए घरनिके आहार कर जीविका पूरी करो हो, तुम सारिखे मनुष्य कहा आत्महित करें, तब याको काम भोगकर अत्यंत आर्तिवंत देख महादयावान संयमी बोले कहा तूने महा घोर नरककी भूमि न सुनी है जो तू उद्यमी होय पापनिविषै प्रीति करे है। नरककी महाभयानक सात भूमि हैं ते महा दुर्गंधमई देखी न जांय स्पर्शी न जांय सुनी न जांय, महातीक्ष्ण लोहके कांटोनिकर भरी जहां नारकियोंको घानियोंमें पेले हैं अनेक वेदना त्रास होय हैं छुरियों कर तिल तिल काटिए हैं अर ताते लोह समान ऊपरले नरकनिका पृथिवीतल अर महाशीतल नीचले नरकनिका पृथिवी तल ताकर महा पीडा उपजै है, जहां महाअंधकार महाभयानक रौरवादि गर्त आसिपत्र महादुर्गंध वैतरणी नदी जे पापी माते हाथिनिकी न्याई निरंकुश हैं ते नरकमें हजारां भांतिके दुख देखे हैं। हम तोहि पूछे हैं तो सारीखे पापारम्भी विषयातुर कहा आत्महित करे हैं। ये इंद्रायणके फल समान इंद्रियनिके सुख तू निरंतर सेय कर सुख माने है सो इनमें हित नाहीं ये दुर्गतिके कारण हैं, आत्माका हित वह करे है जो जीवनिकी

दया पाले, मुनिके व्रत धारे अथवा श्रावकके व्रत आदरे, निर्मल है चित्त जाका, जे महाव्रत तथा अणुव्रत नाहीं आचरे हैं ते मिथ्यात्व अव्रतके योगते समस्त दुखके भाजन होय हैं, तैंने पूर्व जन्ममें कोई सुकृत किया हुता ताकर मनुष्य देह पाया अब पाप करेगा तो दुर्गति जायगा, ये विचारे निर्बल निरपराध मृगादि पशु अनाथ भूमि ही है शय्या जिनके चंचल नेत्र सदा भयरूप वनके तृण अर जल कर जीवन हारे पूर्व पापकर अनेक दुखनिकर दुखी रात्रि भी निद्रा न करें, भयकर महाकायर सो भले मनुष्य ऐसे दीननिको कहा हनें, तातैं जो तू अपना हित चाहे है तो मन वचन काय कर हिंसा तज, जीव दया अंगीकार करि, ऐसे मुनिके श्रेष्ठ वचन सुनिकरि वज्रकर्ण प्रतिबोधको प्राप्त भया जेसे फला वृक्ष नवजाय तैसे साधुके चरणारविंदको नया, अश्वसे उतर निकट गया, हाथ जोड प्रणामकर अत्यंत विनयकी दृष्टि कर चित्तमें साधुकी प्रशंसा करता भया। धन्य है ये मुनि परिग्रहके त्यागी, जिनको मुक्तिकी प्राप्ति होय है अर इन वनके पक्षी अर मृगादि पशु प्रशंसा योग्य हैं जे इस समाधिरूप साधुका दर्शन करे हैं अर अति धन्य हूं मैं जो मोहि आज साधुका दर्शन भया। ये तीन जगतकर वन्दनीक हैं, अब मैं पापकर्मते निवृत्त भया। ये प्रभू ज्ञानस्वरूप नखनिकर बंधु स्नेहमई संसाररूप जो पिंजरा ताहि छेदकर सिंहकी न्याई निकसे ते साधु देखो मनरूप वैरीको वशकरि नग्न मुद्राधार शील पाले हैं। मैं अतृप्त आत्मा पूर्ण वैराग्यको प्राप्त नाहीं भया तातैं श्रावकके अणुव्रत आदरूं ऐसा विचारकर साधुके समीप श्रावकके व्रत आदरे अर अपना मन शांत रस रूप जलसे धोया अर यह नियम लिया जो देवाधिदेव परमेश्वर परमात्मा जिनेंद्रदेव अर तिनके दास महा भाग्य निर्ग्रंथमुनि अर जिनवाणी इन विना औरको नमस्कार न करूं, प्रीतिवर्धन नामा वे मुनि तिनके निकट वज्रकर्ण अणुव्रत आदरे अर उपवास धारे, मुनिने याको विस्तारकर धर्मका व्याख्यान कहा जाकी श्रद्धाकर भव्यजीव संसार पाशते छूटे। एक श्रावकका धर्म

एक यतिका धर्म इसमें श्रावकका धर्म गृहालंवन संयुक्त अर यातिका धर्म निरालम्ब निरपेक्ष, दोऊ धर्मनिका मूल सम्यक्त्वकी निर्मलता तप अर ज्ञानकर युक्त अत्यन्त श्रेष्ठ सो प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग रूपविषै जिनशासन प्रसिद्ध है। यतिका धर्म आतिकाठिन जान अणुव्रतविषै बुद्धि ठहराई अर महाव्रतकी महिमा हृदयमें धारी जैसे दरिद्रीके हाथमें निधि आवे अर वह हर्षको प्राप्त होय तैसे धर्मध्यानको धरता संता आनन्दको प्राप्त भया। यह अत्यन्त क्रूर कर्मका करणहारा एक साथ ही शांत दशाको प्राप्त भया, या बातकर मुनि भी प्रसन्न भए। राजा तादिन तो उपवास किया, दूसरे दिन पारणा कर दिगम्बरके चरणारविंदको प्रणाम कर अपने स्थान गया गुरुके चरणारविंद हृदयमें धारता संता संदेह रहित भया। अणुव्रत आराधे। चित्तमें यह चिंता उपजी जो उज्जैनीका राजा जो सिंहोदर ताका मैं सेवक हूं ताकी विनय किए विना मैं राज्य कैसे करूं तब विचारकर एक मुद्रिका बनाई जामें श्रीमुनिसुव्रतनाथजीकी प्रतिमा पधराय दक्षिणांगुष्टमें पहिरी, जब सिंहोदरके निकट जाय तब मुद्रिकामें प्रतिमा ताहि बारंबार नमस्कार करे सो याका कोऊ वैरी हुता जाने यह छिद्र हेर सिंहोदरते कही जो यह तुमको नमस्कार नाहीं करे है। जिनप्रतिमाको करे है, तब सिंहोदर पापी कोपको प्राप्त भया अर कपटकर बज्रकर्णको दशांग नगरते बुलावता भया, सम्पदाकर उन्मत्त मानी याके मारवेको उद्यमी भया। सो बज्रकर्ण सरलचित्त सो तुरंगपर चढ उज्जयिनी जावेको उद्यमी भया, ता समय एक पुरुष ज्वान पुष्ट अर उदार है शरीर जाका, दंड जाके हाथमें सो आयकर कहता भया। हे राजा! जो तू शरीरते और राज्यते रहित भया चाहे तो उज्जयनी जाहु नातर मत जाहु सिंहोदर आति क्रोधको प्राप्त भया है, तुम नमस्कार न करो हो तातैं तोहि मारा चाहे है तू भले जाने सो कर, यह वार्ता सुनकर वज्रकर्ण विचारी कि कोऊ शत्रु मोविषै अर नृपविषै भेद किया चाहे है ताने मंत्र कर यह पठाया होय फिर विचारी जो

याका रहस्य तो लेना तब एकांतविषै ताहि पूछता भया तू कौन है अर तेरा नाम कहा अर कहांते आया है अर यह गोप्य मंत्र तूने कैसे जाना ? तब वह कहता भया कुंदननगरमें महा धनवंत एक समुद्र संगम सेठ है जाके यमुना स्त्री ताके वर्षाकालमें विजुरीके चमत्कार समय मेरा जन्म भया, तातैं मेरा विद्युदंग नाम धरा सो मैं अनुक्रमसे नव यौवनको प्राप्त भया । व्यापारके अर्थ उज्जेनी गया तहां कामलता वेश्याको देख अनुराग कर व्याकुल भया । एक रात्रि तासूं संगम किया, सो वाने प्रीतिके बन्धन कर बांध लिया जैसे पारधी मृगको पांसिसे बांधे, मेरे बापने बहुत वर्षोंमें जो धन उपार्जा हुता सो मैं ऐसा कुपूत वेश्याके संग कर षटमासमें सब खोया जैसे कमलमें भ्रमर आसक्त होय तैसे तामें आसक्त भया, एक दिन वह नगरनायिका अपनी सखीके समीप अपने कुंडलनिकी निंदा करती हुती सो मैं सुनी तब तासे पूछी, ताने कही धन्य है राणी श्रीधरा महासौभाग्यवती ताके काननिमें ऐसे कुंडल हैं जैसे काहूके नाहीं, तब मैंने मनमें चितई कि यदि मैं राणीके कुंडल हर कर याकी आशा पूर्ण न करूं तो मेरे जीने कर कहा, तब कुंडल हरनेको मैं अंधेरी रात्रीमें राजमंदिरमें गया सो राजा सिंहोदर कोप हो रहा था अर राणी श्रीधरा निकट बैठी हुती सो राणी पूछा हे देव ! आज निद्रा काहेते न आवे है ? तब राजा कही हे राणी मैं बज्रकर्णको छोटेसे मोटा किया, अर मोहि सिर न नवावे सो वाहि जबतक न मारूं तब तक आकुलताके योगसे निद्रा कहां आवे एते मनुष्यनिते निद्रा दूर ही भागे अपमानसे दग्ध अर कुटुंबी निर्धन, शत्रुने आय दवाया अरु जीतने समर्थ नाहीं अर जाके चित्तमें शल्य तथा कायर अर संसारते विरक्त, इनते निद्रा दूर ही रहे है यह वार्ता राजा अर रानी करी । मैं सुनकर ऐसा होयगया मानों काहूने मेरे हृदयमें बज्रकी दीनी । सो कुंडल लेयवेकी बुद्धि तज यह रहस्य लेय तेरे निकट आया, अब तू वहां मत जाइयो कैसा है तू जिनधर्ममें उद्यमी है अर निरंतर साधुनिका सेवक है । अंजनीगिरि पर्वतसे हाथी मद

झरे तिन पर चढे योधा बक्तर पहिरे अर महातेजस्वी तुरंगानिके असवार चिलते पहिरे महाक्रूर सामन्त तेरे मारवेके अर्थ राजाकी आज्ञाते मार्ग रोके खडे हैं तातैं तू कृपाकर अब वहां मतजा। मैं तेरे पायन परूं हूं। मेरा वचन मान, अर तेरे मनमें प्रतीति नाहीं अब तो देख वह फौज आई धूरके पटल उठे हैं महा शब्द होतें आवे हैं यह विद्युदंगके वचन सुन वज्रकर्ण परचक्रको आवतो देख याको परममित्र जान लार लेय अपने गढविषै तिष्ठा। सिंहोदरके सुभट दरवाजेमें आवने न दिये तब सिंहोदर सर्वसेना लार ले चढ आया सो गाढा जान अपने कटकके लोक इनके मारनेके डरसे तत्काल गढ लेनेकी बुद्धि न करी गढके समीप डेरे कर वज्रकर्णके समीप दूत भेजा सो अत्यन्त कठोर वचन कहता भया। तू जिन-शासनके गर्वकरि मेरे ऐश्वर्यका कंटक भया, जे घरखोवा यति तिनने तोहि बहकाया, तू न्याय रहित भया, देश मेरा दिया खाय, माथा अरहंतको नवावे, तू मायाचारी है तातैं शीघ्र ही मेरे समीप आयकर मोहि प्रणाम कर, नातर मारा जायगा यह वार्ता दूतने वज्रकर्णसे कही तब वज्रकर्ण जो जबाब दिया सो दूत जाय सिंहोदरसूं कहे है हे नाथ ! वज्रकर्णकी यह वीनती है जो देश नगर भण्डार हाथी घोडे सब तिहारे हैं सो लेहु मोहि स्त्री सहित धर्म द्वार देय काढ देवो, मेरा तुमते उजर नाहीं परंतु मैं यह प्रतिज्ञा करी है कि जिनेंद्र मुनि अर जिनवाणी इन विना औरको नमस्कार न करूं, सो मेरा प्राण जाय तो भी प्रतिज्ञा भंग न करूं तुम मेरे द्रव्यके स्वामी हो आत्माके स्वामी नाहीं, यह वार्ता सुन सिंहोदर अति क्रोधको प्राप्त भया, नगरको चारों तरफसे घेरा अर देश उजाड दिया, सो दलिद्री मनुष्य श्रीरामसे कहे हैं हे देव ! देश उजाडनेका कारण मैं तुमसे कहा। अब मैं जाऊं हूं जहांते नजदीक मेरा ग्राम है। ग्राम सिंहोदरके सेवकोंने जलाया, लोगनिके विमानतुल्य घर हुते सो भस्म भए। मेरी तृण काष्ठकर रची कुटी सो भी भस्म भई, मेरे घरमें एक छाज एक माटीका घट एक हांडी यह परिग्रह हुता सो लाऊं हूं। मेरे

स्रोटी स्त्री ताने क्रूर वचन कह मोहि भेजा है अर वह वारंवार ऐसे कहे है कि सूने गांवमें घरोंके उपक-
रण बहुत मिलेंगे सो जाकर ले आवहु सो में जाऊं हूं मेरे बडे भाग्य जो आपका दर्शन भया, स्त्रीने मेरा
उपकार किया जो मोहि पठाया यह वचन सुन श्रीराम महादयावान पंथीको दुखी देख अमोलक रत्नोंका
हार दिया सो पंथी प्रसन्न होय चरणारविंदको नमस्कार कर हार ले अपने घर गया द्रव्यकर राजानिके
तुल्य भया ।

अथानंतर श्रीराम लक्ष्मणसे कहते भए कि हे भाई ! यह जेठका सूर्य अत्यंत दुस्सह जब अधिक
न चढे ताते पहिले ही चलो या नगरीके समीप निवास करें । सीता तृषाकर पीडित है सो याहि जल
पिलावें अर आहारकी विधि भी शीघ्र ही करें, ऐसा कहकर वहांते आगे गमन किया, सो दशांगनगर
के समीप जहां श्रीचन्द्रप्रभुका चैत्यालय महा उत्तम है तहां आए अर श्रीभगवानको प्रणाम कर सुखसों
तिष्ठे अर आहारकी सामग्री निमित्त लक्ष्मण गए, सिंहोदरके कटकमें प्रवेश करते भये । कटकके रक्षक
मनुष्य उनने मने किये तब लक्ष्मणने विचारी कि ये दरिद्री अर नीच कुल इनते में कहा विवाद करूं,
यह विचार नगरकी ओर आए सो नगरके दरवाजे अनेक योधा बैठे हुते अर दरवाजेके ऊपर वज्रकर्ण
तिष्ठा हुता महासावधान सो लक्ष्मणको देख लोग कहते भए, तुम कौन हो अर कहांते कौन अर्थ आए
हो? तब लक्ष्मण कही दूरते आए हैं अर आहार निमित्त नगरमें आए हैं तब वज्रकर्ण इनको अतिसुंदर
देख आश्चर्यको प्राप्त भया अर कहता भया हे नरोत्तम ! माहि प्रवेश करो, तब यह हर्षित होय गढमें
गया, वज्रकर्ण बहुत आदरसूं मिला अर कहता भया जो भोजन तय्यार है सो आप कृपाकर यहां ही
भोजन करो तब लक्ष्मणने कही मेरे गुरुजन बडे भाई और भावज श्रीचन्द्रप्रभुके चैत्यालयमें बैठे हैं
तिनको पहिले भोजन कराय में भोजन करूंगा तब वज्रकर्णने कही बहुत भलीबात, तहां ले जाइये, उन

योग्य सब सामग्री है सो ले जावो, अपने सेवकनि हाथ ताने भांति भांतिकी सामग्री पठाई सो लक्ष्मण लिवाय लाए। श्रीराम लक्ष्मण अर सीता भोजन कर बहुत प्रसन्न भए। श्रीराम कहते भए हे लक्ष्मण! देखो वज्रकर्णकी बडाई जो ऐसा भोजन कोई अपने जमाईको हू न जिमावे सो विना परखे अपने ताईं जिमाए, पीनेकी वस्तु महामनोहर अर व्यंजन महामिष्ट यह अमृत तुल्य भोजन जाकर मार्गका खेद मिटा अर जेठके आतापकी तप्त मिटी, चांदनी समान उज्ज्वल दुग्ध महा सुगंध जापर भ्रमर गुंजार करैं अर सुंदर घृत सुंदर दधि मानों कामधेनुके स्तनानिते उपजाया दुग्ध तासे निरमाया है ऐसे भोजन ऐसे रस और ठोर दुर्लभ हैं, ता पंथीने पहिले अपने ताईं कहा हुता जो यह अणुव्रतका धारी श्रावक है अर जिनेंद्र मुनिंद्र जिनसूत्र टार औरको नमस्कार नाहीं करे है सो ऐसा धरमात्मा व्रत शीलका धारक अपने आगे शत्रुकरि पीडित रहे तो अपने पुरुषार्थ कर कहा, अपना यही धर्म है जो दुखीका दुख निवारैं, साधर्मीका तो अवश्य निवारे। यह अपराध रहित साधु सेवामें सावधान महाजिनधर्मी जाके लोक जिनधर्मी ऐसे जीवको पीडा काहे उपजे। यह सिंहोदर ऐसा बलवान है जो याके उपद्रवते वज्रकर्णको भरत भी न बचाय सके ताते हे लक्ष्मण! तुम इसकी शीघ्र ही सहायता करो, सिंहोदर पै जावो अर वज्रकर्णका उपद्रव मिटे सो करो, हम तुमको कहा सिखावें जो यूं कहियो यूं कहियो तुम महा बुद्धिवान् हो, जैसे महामणि प्रभा सहित प्रकट होय है तैसे तुम महा बुद्धि पराक्रमको धरे प्रकट भए हो। या भांति श्रीरामने भाईके गुण गाए तब भाई लज्जाकर नीचे मुख होय गए। नमस्कारकर कहते भए हे प्रभो! जो आप आज्ञा करोगे सोई होयगा, महाविनयवान लक्ष्मण रामकी आज्ञा प्रमाण धनुष बाण लेय धरतीको कंपायमान करते संते शीघ्र ही सिंहोदर पै गए सिंहोदरके कटकके रखवारे पूछते भए तुम कौन हो लक्ष्मण कही मैं राजा भरतका दूत हूं, तब कटकमें पैठने दीया, अनेक डेरे उलंघ राजद्वार गया।

द्वारपाल राजासों मिलाया सो महा बलवान सिंहोदरको तृणसमान गिनता संता कहता भया। हे सिंहो-दर! अयोध्याका अधिपति भरत ताने यह आज्ञा करी है जो वृथा विरोधकर कहा वज्रकर्णसे मित्रभाव करो, तब सिंहोदर कहता भया हे दूत! तू राजा भरतको या भांति कहियो जो अपना सेवक होय अर विनयमार्गसे रहित होय ताहि स्वामी समझाय सेवामें लावे, यामें विरोध कहा? यह वज्रकर्ण दुरात्मा मानी मायाचारी कृतघ्न मित्रनिका निंदक चाकरीचूक आलसी मूढ विनयचार रहित खोटी अभिलाषाका धारक महाक्षुद्र सज्जनतारहित है सो याके दोष जब मिटें जब यह मरणको प्राप्त होय अथवा राज्य रहित करूं ताने तुम कछूमत कहो, मेरा सेवक है जो चाहुंगा सो करूंगा तब लक्ष्मण बोले—बहुत उत्तरों कर कहा यह परमाहितु है या सेवकका अपराध क्षमा करो, ऐसा जब कहा तब सिंहोदर क्रोध कर अपने बहुत सामन्तोंको देख गर्वको धरता संता उच्च स्वरसूं कहता भया

जो यह वज्रकर्ण तो महामानी है ही परन्तु याके कार्यको आया जो तू सो भी महामानी है, तेरा तन अर मन मानों पाषाणते निरमाया है रंचमात्र हू नम्रता तोमें नाहीं, तू भरतका मूढ सेवक है जानिये है जो भरतके देशमें तो सारिखे मनुष्य होवेंगे जैसे सीजती भरी हांडीमेंसे एक चावल काढकर नम्र कठोरकी परीक्षा करिए है तैसे एक तेरे देखवेकरि सबनकी बानिगी जानी जाय है, तब लक्ष्मण क्रोधकर कहते भए, मैं तेरी वांकी सूधि करावेको आया हूं तोहि नमस्कार करवेको न आया, बहुत कहनेसूं कहा? थोडे हीमें समझ जावो। वज्रकर्णसूं संधि कर ले नातर मारा जायगा, ये वचन सुन सब ही सभाके लोक क्रोधको प्राप्त भए। नानाप्रकारके दुर्वचन कहते भए अर नानाप्रकार क्रोधकी चेष्टाको प्राप्त भए। कैयक छूरी लेय कैयक कटार भाला तलवार गहकर याके मारनेको उद्यमी भए। हुंकार शब्द करते अनेक सामंत लक्ष्मणको वेढते भये, जैसे पर्वतको मछर रोंके तैसे रोकते भए, सो यह धीर वीर युद्ध क्रिया

विषे पंडित शीघ्र क्रियाके वेत्ता चरणके घातकर तिनको दूर उडा दिए। कैयक गोडोंसे मारे कैयक कूहनियोंसे पछाडे कैयक मुष्टि प्रहारकर चूर्ण कर डारे कैयकोंके केश पकड पृथ्वीपर पाडि मारे कैयकोंको परस्पर सिर भिडाय मारे, या भांति अकेले महाबली लक्ष्मणने अनेक योधा विध्वंस किये तब और बहुत सामंत हाथी घोडोंपर चढे बखतर पहिरे लक्ष्मणकी चौगिरद फिरें नानाप्रकारके शस्त्रनिके धारक, तब लक्ष्मण जैसे सिंह स्यालनिको भगावै तैसे तिनको भगावता भया। तब सिंहोदर कारी घटा समान हाथीपर चढकर अनेक सुभटनिसहित लक्ष्मणते लडनेको उद्यमी भया, अनेक योधा मेघ समान लक्ष्मण रूप चंद्रमाको ढूंढते भए सो सब योधा ऐसे भगाए जैसे पवन आकके डोडोंके जे फफूंदे तिनको उडावै ता समय महायोधानिकी कामिनी परस्पर वार्ता करे हैं, देखो यह एक महासुभट अनेक योधानिकरि बेढा है परन्तु यह सबको जीते है कोई याको जीतिवे शक्त नाहीं, धन्य याके माता पिता इत्यादि अनेक वार्ता सुभटनिकी स्त्री करे हैं अर लक्ष्मण सिंहोदरको कटकसहित चढा देख गजका थंम उपाडा अर कटकके सम्मुख गए जैसे अग्नि वनको भस्म करै तैसे कटकके बहुत सुभट विध्वंस किए अर जो दशांगनगरके योधा नगरके दरवाजे ऊपर बज्रकर्णके समीप बैठे हुते सो फूल गए हैं नेत्र जिनके, स्वामीसे कहते भए—हे नाथ! देखो यह एक पुरुष सिंहोदरके कटकतें लडे है, ध्वजा रथ छत्र भग्न कर डारे परम ज्योतिका धारी है, खड्ग समान है कांति जाकी, समस्त कटकको व्याकुलतारूप भ्रमणमें डारा है, सब तरफ सेना भागी जाय हैं जैसे सिंहते मृगानिके समूह भागें अर भागते हुए सुभट परस्पर बतलावें हैं कि बक्तर उतार धरो, हाथी घोडे छोडो, गदा खाडेमें डार देवो, ऊंचे शब्द न करो, ऊंचा शब्द सुनकर शस्त्रके धारक देख यह भयानक पुरुष आय मारेगा। अरे भाई! यहांते हाथी लेजावो कहां थांभ राखा है, गैल देऊ। अरे दुष्ट सारथी! काहे रथको थांभ राखा है। अरे घोडे आगे करो यह आया यह आया

या भांतिके वचनालाप करते महाकष्टको प्राप्त भए सुभट संग्राम तज आगे भागे जाय रहे हैं। नपुंसक समान हो गए। यह युद्धमें क्रीडाका करणहारा कोई देव है तथा विद्याधर है काल है अक वायु है यह महाप्रचण्ड सब सेनाको जीतकर सिंहोदरको हाथीसे उतार गलेमें वस्त्र डार बांध लिए जाय है जैसे बलदको बांध धनी अपने घर ले जाय यह वचन वज्रकर्णके योधा बज्रकर्णसे कहते भए तब वह कहता भया—हे सुभट हो ! बहुत चिंताकर कहा ? धर्मके प्रसादते सब शांत होयगा अर दशांग नगरकी स्त्री महलनिके ऊपर बैठी परस्पर वार्ता करे हैं, रे सखी ! देखो या सुभटकी अद्भुत चेष्टा, जो एक पुरुष अकेला नरेंद्रको बांधे लिये जाय है। अहो धन्य याका रूप ! धन्य याकी कांति, धन्य याकी शक्ति, यह कोई अतिशयका धारी पुरुषोत्तम है। धन्य हैं वे स्त्री, जिनका यह जगदीश्वर पति हुआ है तथा होयगा अर सिंहोदरकी पटराणी बाल तथा वृद्धानिसहित रोवती संती लक्ष्मणके पांवनि पडी अर कहती भई—हे देव ! याहि छोड देवो हमें भरतारकी भीख देवो। अब जो तिहारी आज्ञा होयगी सो यह करेगा, तब कहते भए यह आगे बडा वृक्ष है तासे बांध याहि लटकाऊंगा तब वाकी राणी हाथ जोड बहुत विनती करती भई—हे प्रभो ! आप रोस भए हो तो हमें मारो, याहि छांडो कृपा करो प्रीतमका दुख हमें मत दिखावो, जे तुम सारिखे पुरुषोत्तम हैं ते स्त्री अर बालक वृद्धानिपर करुणा ही करे हैं। तब आप दयाकर कहते भए—तुम चिंता न करो, आगे भगवानका चैत्यालय है तहां याहि छोडेंगे। ऐसा कह आप चैत्यालयमें गए जायकर श्रीरामते कहते भए—हे देव ! यह सिंहोदर आया है, आप कहो सो करें। तब सिंहोदर हाथ जोड कांपता श्रीरामके पायन पडा अर कहता भया—हे देव ! तुम महाकांतिके धारी परम तेजस्वी हो सुमेरु सारिखे अचल पुरुषोत्तम हो मैं आपका आज्ञाकारी; यह राज्य तिहारा, तुम चाहो जिसे देवो। मैं तिहारे चरणारविंदकी निरंतर सेवा करूंगा अर रानी नमस्कारकर पतिकी भीख मांगती भई अर

सीता सतीके पायन परी कहती भई—हे देवी ! हे शोभने ! तुम स्त्रिनिकी शिरोमणि हो हमारी करुणा करो तब श्रीराम सिंहोदरकूं कहते भए मानों मेघ गाजे।

अहो सिंहोदर! तोहि जो बज्रकर्ण कहे सो कर या बातकरि तेरा जीतव्य है और बातकर नाहीं, या भांति सिंहोदरको रामकी आज्ञा भई । ताही समय जे बज्रकर्णके हितकारी हुते तिनको भेज बज्रकर्ण को बुलाया सो परिवारसहित चैत्यालय आया, तीन प्रदक्षिणा देय, भगवानको नमस्कारकरि चंद्रप्रभु स्वामीकी अत्यन्त स्तुतिकर रोमांच होय आए। बहुरि वह विनयवान दोनों भाइनिके पास आया स्तुति कर शरीरकी आरोग्यता पूछता भया अर सीताकी कुशल पूछी । तब श्रीराम अत्यन्त मधुर ध्वनि कर बज्रकर्णकूं कहते भए—हे भव्य ! तेरी कुशलकरि हमारे कुशल है । या भांति बज्रकर्णकी अर श्रीराम की वार्ता होय है तब ही सुन्दर भेष धरे विद्युदंग आया, श्रीराम लक्ष्मणकी स्तुतिकर बज्रकर्णके समीप बैठा । सर्वसभाविषे विद्युदंगकी प्रशंसा भई जो यह बज्रकर्णका परम मित्र है । बहुरि श्रीरामचंद्र प्रसन्न होय बज्रकर्णसूं कहते भए तेरी श्रद्धा महा प्रशंसा योग्य है । कुबुद्धिनिके उत्पातकरि तेरी बुद्धि रंच मात्र भी न डिगी जैसे पवनके समूहकरि सुमेरुकी चूलिका न डिगे । मोहूकूं देख कर तेरा मस्तक न नया सो धन्य है तेरी सम्यक्तकी दृढता, जे शुद्ध तत्त्वके अनुभवी पुरुष हैं तिनकी यही रीति है जो जगतकर पूज्य जे जिनेंद्र तिनको प्रणाम करें बहुरि मस्तक कौनको नवावें ? मकरंद रसका आस्वाद करणहारा जो भ्रमर सो गर्धव (गधा) की पूंछपै कैसे गुंजार करे ? तू बुद्धिमान है धन्य है निकटभव्य है चन्द्रमा हूंतें उज्ज्वल वलकीर्ति तेरी पृथिवीमें विस्तरी है या भांति वज्रकर्णके सांचे गुण श्री रामचन्द्र ने वर्णन कीए तब वह लज्जावान् होय नीचा मुख कर रहा, श्रीरघुनाथसूं कहता भया—हे नाथ ! मोपर यह आपदा तो बहुत पडी हुती परन्तु तुम सारिखे सज्जन जगतके हितु मेरे सहाई भए । मेरे भाग्य

कारे तुम पुरुषोत्तम पधारे या भांति वज्रकर्ण ने कही तब लक्ष्मण बोले तेरी बांछा जो होय सो करें, तब वज्रकर्ण ने कही तुम सारिखे उपकारी पुरुष पायकर मोहि या जगत विषे कछु दुर्लभ नहीं मेरी यही विनती है मैं जिनधर्मी हूं, मेरे तृणमात्रको भी पीडाकी अभिलाषा नाहीं अर यह सिंहोदर तो मेरा स्वामी है तातें याहि छोडो, ये वचन जब वज्रकर्ण कहे तब सबके मुखते धन्य धन्य यह ध्वनि होती भई जो देखो यह ऐसा उत्तम पुरुष है द्वेष प्राप्ति भए भी पराया भला ही चाहै है। जे सज्जन पुरुष हैं ते दुर्जन हू का उपकार करें अर जे आपका उपकार करें तिनका तो करें ही करें। लक्ष्मणने वज्रकर्णको कही जो तुम कहोगे सो ही होयगा। सिंहोदरको छोडा अर वज्रकर्णका अर सिंहोदरका परस्पर हाथ पकडाया परम मित्र किए वज्रकर्णको आधा राज्य दिलवाया अर जो माल लूटा हुता सो हू दिवाया अर देश धन सेना आधा आधा विभाग कर दिया वज्रकर्णके प्रसादकरि विद्युदंग सेनापति भया अर वज्रकर्ण राम लक्ष्मणकी बहुत स्तुति करि अपनी आठ पुत्रीनिकी लक्ष्मण से सगाई करी। कैसी हैं वे कन्या ? महाविनयवन्ती सुन्दर भेष सुन्दर आभूषणको धरें अर राजा सिंहोदरको आदि देय राजाओं की परम कन्या तीन सौ लक्ष्मणको दई सिंहोदर अर वज्रकर्ण लक्ष्मणते कहते भए—ये कन्या आप अंगीकार करें,तब लक्ष्मण बोले—विवाह तो तब करूंगा जब अपने भुज कर राज्य स्थान जमाऊंगा अर श्रीराम तिनसूं कहते भये—जो हमारे अबतक देश नाहीं है तातने राज भरतको दिया है ताते चन्दनगिरीके समीप तथा दक्षिणके समुद्रके समीप स्थानक करेंगें तब अपनी दोनों माताओंको लेने को मैं आऊंगा अथवा लक्ष्मण आवेगा। ता समय तुम्हारी पुत्रिनिको हू परणकर ले आवेगा, अब तक हमारे स्थानक नाहीं। कैसे पाणिग्रहण करें जब या भांति कही, तब वे सब राजकन्या ऐसी होय गई जैसा जाडे का मारा कमलोंका वन होय जाय, मनमें बिचारती भई—वह दिन कब होयगा जब हमको प्रीतम के

संगम रूप रसायन की प्राप्ति होयगी अर जो कदाचित प्राण नाथका विरह भया तो हम प्राण त्याग करेंगी इन सबका मन विरहरूप अग्निकर जलता भया। यह विचारती भई एक ओर महा औंडागर्त अर एक ओर महाभयंकर सिंह, कहा करें? कहां जावें? विरहरूप व्याघ्रको पतिके संगमकी आशाते बशीभूत कर प्राणनिको राखेंगी, यह चिंतवन करती संती अपने पिताकी लार अपने स्थानक गई। सिंहोदर बज्रकर्ण आदि सब ही नरपति, रघुपतिकी आज्ञा लेय घर गए, ते राजकन्या उत्तम चेष्टाकी धरणहारी माता पितादि कुटुंबसे अत्यंत है सन्मान जिनका, अर पतिमें है चित्त जिनका, सो नाना विनोद करतीं पिताके घरमें तिष्ठती भईं अर विद्युदंगने अपने माता पिताको कुटुंबसहित बहुत विभूतिते बुलाया तिनके मिलापका परम उत्सव किया अर बज्रकर्णके अर सिंहोदरके परस्पर अतिप्रीति बढी अर श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण अर्ध रात्रिको चैत्यालयते निकलकर चल दिए। सो धीरे २ अपनी इच्छा प्रमाण गमन करे हैं अर प्रभात समय जे लोक चैत्यालयमें आए तो श्रीरामको न देख शून्यहृदय होय अति पश्चाताप करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा बचनिकाविषैं राम लक्ष्मण कृत बज्रकर्णका उपकार वर्णन करनेवाला तेतीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३३ ॥

राम लक्ष्मण जानकीको धीरे २ चलावते अर रमणीक वनमें विश्राम लेते अर महामिष्ट स्वादुफलोंका रसपान करते क्रीडा करते रसभरी वातें करते सुंदर चेष्टाके धरणहारे, चले २ नलकूवर नामा नगर आए। कैसा है नगर? नानाप्रकारके रतनानिके जे मंदिर तिनके उतंग शिखरोंकर मनोहर अर सुन्दर उपवनोंकर मंडित जिनमंदिरनिकरि शोभित स्वर्ग समान निरंतर उत्सवका भरा लक्ष्मीका निवास है।

सो श्रीराम लक्ष्मण अर सीता नलकूवर नामा नगरके परम सुंदर वनमें आय तिष्ठे, कैसा है वह बन ? फल पुष्पनिकरि शोभित जहां भ्रमर गुंजार करै हैं अर कोयल बोलै हैं। सो निकट सरोवरी तहां लक्ष्मण जलके निमित्त गए, सो ताही सरोवरीपर क्रीडाके निमित्त कल्याणमाला नाम राजपुत्री राजकुमारका भेष किए आई हुती, कैसा है राजकुमार ? महारूपवान नेत्रनिको हरणहारा सर्वको प्रिय महाविनयवान कांतिरूप निर्झरनिका पर्वत श्रेष्ठ हाथीपर चढा सुंदर प्यादे लार जो नगरका राज्य करे सो सरोवरीके तीर लक्ष्मणको देख मोहित भया। कैसा है लक्ष्मण ? नील कमल समान श्याम सुंदर लक्षणका धरणहारा सो राजकुमारने एक मनुष्यको आज्ञा करी जो इनको ले आवो, सो वह मनुष्य जायकर हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया—हे धीर ! यह राजपुत्र आपते मिला चाहै है सो पधारिए, तब लक्ष्मण राजकुमारके समीप गए। सो हाथीते उतरकर कमल तुल्य जे अपने कर तिनकर लक्ष्मणका हाथ पकड वस्त्रनिके डेरेमें ले गया, एक आसनपर दोऊ बैठे। राजकुमार पूछता भया आप कौन हो, कहांते आए हो ? तब लक्ष्मण कही मेरे बडे भाई मेरे विना एक क्षण न रहें सो उनके निमित्त अन्न पान सामग्रीकर उनकी आज्ञा लेय तुमपर आऊंगा तब सब वात कहूंगा। यह वात सुन राजकुमार कही जो रसोई यहां ही तैयार भई है सो यहां ही तुम अर वे भोजन करो। तब लक्ष्मणकी आज्ञा पाय सुन्दर भात दाल नानाविधि व्यंजन नवीन घृत कपूरादि सुगंध द्रव्यनिसहित दधि दुग्ध अर नानाप्रकार पीनेकी वस्तु मिश्रीके स्वाद जामें, ऐसे लाडू अर पूरी सांकली इत्यादि नानाप्रकार भोजनकी सामग्री अर वस्त्र आभूषण माला इत्यादि अनेक सुगंध नाना प्रकार तैयार किए अर अपने निकटवर्ती जो द्वारपाल ताहि भेजा सो जायकर सीता सहित रामको प्रणामकर कहता भया—हे देव ! या वस्त्र भवनकेविषै तिहारा भाई तिष्ठै है अर या नगरके नाथने बहुत आदरते बीनती करी है। वहां छाया शीतल है अर स्थान मनोहर सो आप कृपाकर

पधारें तो मार्गका खेद निवृत्त होवे तब आप सीतासहित पधारे जैसे चांदनीसहित चांद उद्योत करै, कैसे हैं आप ? माते हाथी समान है चाल जिनकी, लक्ष्मणसहित नगरका राजा दूर हीते देख उठकर सामने आया। सीतासहित राम सिंहासनपर विराजे, राजाने आरती उतारकर अर्घ दिए, अतिसन्मान किया, आप प्रसन्न होय स्नानकर भोजन किया सुगंध लगाई। बहुरि राजा सबको विदा किए। ए चार ही रहे एक राजा तीन ए। राजा सबको कहा जो मेरे पिताके पासते इनके हाथ समाचार आए हैं सो एकांतकी वार्ता है कोई आवने न पावै जो आवेगा ताही मैं मारूंगा। बडे २ सामंत द्वारे राख एकांतमें इनके आगे लज्जा तज कन्या जो राजाका भेष धारे हुती सो तज अपना स्त्रीपदका रूप प्रकट दिखाया। कैसी है कन्या ? लज्जाकर नम्रीभूत है मुख जाका अर रूपकर मानों स्वर्गकी देवांगना है अथवा नागकुमारी है, ताकी कांतिते समस्त मंदिर प्रकाशरूप होय गया, मानों चंद्रमाका उदय भया, चंद्रमा किरणोंते मंडित है याका मुख लज्जा अर मुलकनकर मंडित है मानों यह राजकन्या साक्षात् लक्ष्मी ही है, कमलनिके बनते आय तिष्ठी है अपनी लावण्यतारूप सागरविषै मानों मंदिरको गर्क किया है। जाकी द्युति आगे रत्न अर कंचन, द्युतिरहित भासै हैं। जाके स्तन युगलसे कांतिरूप जलकी तरंगनि समान त्रिबली शोभै है अर जैसे मेघपटलको भेद निशाकर निकसे तैसे वस्त्रको भेद अंगकी ज्योति फैल रही है अर अत्यंत चिकने सुगंध कारे वांके पतले लम्बे केश तिनकरि विराजित है प्रभारूप बदन जाका मानों कारी घटामें विजलीके समान चमके है अर महासूक्ष्म स्निग्ध जो रोमोंकी पंक्ति ताकर विराजित मानों नीलमणिकरि मंडित सुवर्णकी मूर्ति ही है। तत्काल नररूप तज नारीका रूपकर मनोहर नेत्रनिकी धरनहारी सीताके पायन लाग समीप जाय बैठी जैसे लक्ष्मी रतिके निकट जाय बैठे सो याका रूप देख लक्ष्मण कामकर बींधा गया, और ही अवस्था होय गई, नेत्र चलायमान भए। तब श्रीरामचंद्र कन्याते पूछते भए, तू कौनकी पुत्री है अर

पुरुषका भेष कौन कारण किया। तब वह महामिष्टवादिनी अपना अंग वस्त्रते ढांक कहती भई–हे देव! मेरा वृत्तांत सुनहु, या नगरका राजा बालखिल्य महासुबुद्धि सदा आचारवान श्रावकके व्रत धारक महा दयालु जिनधर्मियोंपर वात्सल्य अंगका धारणहारा, राजाके पृथ्वी रानी ताहि गर्भ रहा सो मैं गर्भविषै आई अर म्लेच्छनिका जो अधिपति तासे संग्राम भया। मेरा पिता पकडा गया सो मेरा पिता सिंहोदर का सेवक सो सिंहोदरने यह आज्ञा करी जो बालखिल्यके पुत्र होय सो राज्यका कर्त्ता होय, सो मैं पापिनी पुत्री भई। तब हमारे मंत्री सुबुद्धि ताने मनसूवाकर राज्यके अर्थ मुझे पुत्र ठहराया। सिंहोदर को वीनती लिखी कल्याणमाला मेरा नाम धरा अर बडा उत्सव किया सो मेरी माता अर मंत्री ये तो जाने हैं जो यह कन्या है और सब कुमार ही जाने हैं सो एते दिन मैं व्यतीत किए अब पुण्यके प्रभावते आपका दर्शन भया। मेरा पिता बहुत दुःखसे तिष्ठै है म्लेच्छानिकी बंदमें है। सिंहोदर हू ताहि छुडायवे समर्थ नाहीं अर जो द्रव्य देशमें उपजे है सो सब म्लेच्छके जाय है। मेरी माता वियोगरूप अग्निकरि तप्तायमान जैसे दूजके चंद्रमाकी मूर्ति क्षीण होय तैसी होय गई है ऐसा कहकर दुखके भारकर पीडित है समस्त गात जाका, सो मूर्छा खाय गई अर रुदन करती भई। तब श्रीरामचंद्रने अत्यंत मधुर वचन कहकर धीर्य बंधाया, सीता गोदमें लेय बैठी। मुख धोया अर लक्ष्मण कहते भए–हे सुंदरी! सोच तज अर पुरुषका भेषकर राज्य कर, कैयक दिननि म्लेच्छनिकूं पकड अर अपने पिताको छूटा जान, ऐसा कहकर परम हर्ष उपजाया सो इनके वचन सुनकर कन्या पिताको छूटा ही जानती भई। श्रीराम लक्ष्मण देवनिकी नाईं तीन दिन यहां बहुत आदरते रहे बहुरि रात्रिमें सीतासहित उपवनते निकसकर गोप चले गए। प्रभात समय कन्या जागी तिनको न देख व्याकुल भई अर कहती भई, वे महापुरुष मेरा मन हर ले गए, मो पापिनीको नींद आगई सो गोप चले गए। या भांति विलापकर मनको थांभ हाथीपर

चढ पुरुषके भेष नगरमें गई अर राम लक्ष्मण कल्याणमालाके विनयकर हरा गया है चित्त जिनका, अनुक्रमते मेकला नामा नदी पहुंचे। नदी उतर क्रीडा करते अनेक देशनिको उलंघ विन्ध्याटवीको प्राप्त भए, पंथमें जाते संते गुवालानिने मने किए कि यह अटवी भयानक है तिहारे जाने योग्य नाहीं, तब आप तिनकी वात न मानी चले ही गए। कैसी है वनी ? कहीं एक लताकर मंडित जे शालवृक्षादिक तिनकरि शोभित है अर नानाप्रकारके सुगंध वृक्षनिकर भरी महासुगंधरूप है अर कहीं एक दवानलकर जले वृक्ष तिनकर शोभारहित है जैसे कुपुत्रकर कलंकित गोत्र न शोभै।

अथानंतर सीता कहती भई कंटकवृक्षके ऊपर बाईं ओर काग बैठा है सो यह तो कलहकी सूचना करे है अर दूसरा एक काग क्षीरवृक्षपर बैठा है सो जीत दिखावे है ताते एक मुहूर्त स्थिरता करहु या मुहूर्तविषे चले आगे कलहके अंत जीत है मेरे चित्तमें ऐसा भासे है तब क्षण एक दोऊ भाई थंभे बहुरि चले, आगे म्लेच्छनिकी सेना दृष्टि पडी ते दोऊ भाई निर्भय धनुषवाण धारे म्लेच्छनिकी सेना पर पडे सो सेना नाना दिशनिको भाग गई तब अपनी सेनाका भंग जान अर बहुत म्लेछ वक्तर पहिर आए सो वे भी लीलामात्रमें जीते तब वे सब म्लेछ धनुष वाण डार पुकार करते पतिपे जाय सारा वृत्तांत कहते भए। तब वे सब म्लेच्छ परम क्रोधकर धनुषवाण लीए महा निर्दई वडी सेनासूं आए। शस्त्रनिके समूहकरि संयुक्त वे काकोदन जातिके म्लेछ पृथिवी पर प्रसिद्ध सर्व मांसके भक्षी राजानहूकरि दुर्जय ते कारी घटा समान उमांडि आये तब लक्ष्मणने कोपकर धनुष चढाया तब वन कम्पायमान भया, वनके जीव कांपने लग गए तब लक्ष्मणने धनुषके शर बांधा तब सब म्लेच्छ डरे वनमें दशों दिश आंधेकी न्याई भटकते भए। तब महा भयकर पूर्ण म्लेछनिका अधिपति रथसे उतर हाथ जोड प्रणामकर पायन पडा अपना सब वृत्तांत दोऊ भाइनिसूं कहता भया। हे प्रभो! कौशांवी नगरी है तहां एक विश्वानल नामा ब्राह्मण अग्नि-

होत्री ताके प्रतिसंध्यानामा स्त्री तिनके रौद्रभूतनामा पुत्र सो दूतकलामें प्रवीण बाल अवस्थाहीसे क्रूर कर्मका करणहारा सो एक दिन चोरीते पकडा गया अर सूली देनेको उद्यमी भए तब एक दयावान् पुरुषने छुडाया सो मैं कांपता देश तज यहां आया कर्मानुयोग कर काकोदन जातिके म्लेछोंका पति भया महाभ्रष्ट पशु समान व्रत क्रिया रहित तिष्टूं हूं। अब तक महासेनाके अधिपति बडे बडे राजा मेरे सन्मुख युद्ध करनेको समर्थ न भए, मेरी दृष्टिगोचर न आए सो मैं आपके दर्शन मात्रहीसे वशीभूत भया। धन्यभाग्य मेरे जो मैंने तुम पुरुषोत्तम देखे, अब मोहि जो आज्ञा देवो सो करूं। आपका किंकर आपके चरणारविंदकी चाकरी सिर पर धरूं अर यह विन्ध्याचल पर्वत अर स्थान निधिकर पूर्ण है, आप यहां राज्य करहु मैं तिहारा दास, ऐसा कहकर म्लेच्छ मूर्छा खायकर पायन पडा जैसे वृक्ष निर्मूल होय गिर पडे ताहि विह्वल देख श्रीरामचंद्र दयारूप वेलकर वेढे कल्पवृक्ष समान कहते भए, उठ उठ डरे मत वालखिल्यको छोड तत्काल यहां मंगाय अर ताका आज्ञाकारी मंत्री होयकर रह म्लेछनिकी क्रिया तज, पापकर्मते निवृत हो, देशकी रक्षा कर। या भांति कियेते तेरी कुशल है, तब याने कही हे प्रभो! ऐसा ही करूंगा यह वीनती कर आप गया अर महारथका पुत्र जो वालखिल्य ताहि छोडा, बहुत विनय संयुक्त ताके तैलादि मर्दनकर स्नान भोजन कराय आभूषण पहिराय रथपर चढाय श्रीरामचंद्रके समीप लेजानेको उद्यमी किया, तब बालखिल्य परम आश्चर्यको प्राप्त होय विचारता भया, कहां यह म्लेछ महाशत्रु कुकर्मी अत्यन्त निर्दयी अर मेरा ऐता विनय करे है सो जानिये है जो आज मोहि काहूकी भेंट देगा। अब मेरा जीवन नाहीं, यह विचार सो बालखिल्य सचिंत चला आगे राम लक्ष्मणको देख परम हर्षित भया। रथते उतर आय नमस्कार किया अर कहता भया हे नाथ! मेरे पुण्यके योगते आप पधारे, मोहि बंधनते छुडाया। आप महासुन्दर इंद्र तुल्य पुरुष हो, तब रामने आज्ञा करी तू अपने स्थानक

जाहु, कुटुंबते मिलहु तब बालखिल्य रामको प्रणाम कर रौद्रभूत सहित अपने नगर गया। श्रीराम बालखिल्यको छुडाय रौद्रभूतकूं दास करि वहांते चाले सो बालखिल्यको आया सुनकर कल्याणमाला महाविभूति सहित सन्मुख आई अर नगरमें महा उत्साह भया, राजा राजकुमारको उरसे लगाय अपनी असवारीमें चढाय नगरविषै प्रवेश किया, राणी पृथिवीके हर्षसे रोमांच होय आये, जैसा आगे शरीर सुन्दर हुता तैसा पतिके आए भया। सिंहोदरको आदि देय बालखिल्यके हितकारी सब ही प्रसन्न भए अर कल्याणमाला पुत्रीने एते दिवस पुरुषका भेष कर राज थाम्भा हुता सो या बातका सबको आश्चर्य भया, यह कथा राजा श्रेणिकसूं गौतमस्वामी कहे हैं हे नराधिप! वह रौद्रभूत परद्रव्यका हरणहारा अनेक देशनिका कंटक सो श्रीरामके प्रतापते बालखिल्यका आज्ञाकारी सेवक भया। जब रौद्रभूत वशीभूत भया अर म्लेच्छनिकी विगम भूमिमें बालखिल्यकी आज्ञा प्रवर्ती तब सिंहोदर भी शंका मानता भया। अर स्नेह सहित सन्मान करता भया, बालखिल्य रघुपतिके प्रसादते परम विभूति पाय जैसा शरद ऋतुमें सूर्य प्रकाश करे तैसा पृथिवीविषै प्रकाश करता भया। अपनी राणी सहित देवोंकी न्याई रमता भया॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै म्लेच्छनिके राजा रौद्रभूतिका वर्णन करनेवाला चौतीसवा पर्व पूर्ण भया॥ ३४॥

अथानंतर राम लक्ष्मण देवनि सारिखे मनोहर नंदन वन सारिखा वन ताविषै सुखसे विहार करते एक मनोग्य देशविषै आय निकसे जाके मध्य तापती नदी बहे, नानाप्रकारके पक्षीनिके शब्द करि सुंदर, तहां एक निर्जन वनमें सीता तृषाकर अत्यन्त खेदखिन्न भई तब पतिको कहती भई। हे नाथ! तृषासे मेरा

कंठ शोष है जैसे अनन्त भवके भ्रमणकर खेदखिन्न हुआ भव्यजीव सम्यक्दर्शनको वांछे तैसे मैं तृषासे व्याकुल शीतल जलको वांछू हूं ऐसा कहिकर एक वृक्षके नीचे बैठ गई, तब रामने कही हे देवी ! हे शुभे ! तू विषादको मत प्राप्त होय, नजीक ही यह आगे ग्राम है जहां सुन्दर मंदिर है, उठ आगे चल या ग्राममें तोहि शीतल जलकी प्राप्ति होयगी, ऐसा जब कहा तब उठकर सीता चली मंद मंद गमन करती गजगामिनी ता सहित दोऊ भाई अरुणनामा ग्राममें आए जहां महाधनवान किसान रहैं, जहां एक ब्राह्मण अग्निहोत्री कपिलनामा प्रसिद्ध ताके घरमें आय उतरे ताकी अग्निहोत्रीकी शालामें क्षण एक बैठ खेद निवारा । कपिलकी ब्राह्मणी जल लाई सो सीता पिया, तहां विराजे अर वनते ब्राह्मण बील तथा छीला वा खेजडा इत्यादि काष्ठका भार बांधे आया, दावानल समान प्रज्वलित जाका मन महा क्रोधी कालकूट विष समान वचन बोलता भया । उल्लू समान है मुख जाका अर करमें कमण्डलु चोटीमें गांठ दिए लांवी डाढी यज्ञोपवीत पहिरे उंछवृत्ति कहिये अन्नको काटकर ले गए पीछे खेतनते अन्न कण बीन लावे, या भांति है आजीविका जाकी, सो इनको बैठा देख वक्र मुखकर ब्राह्मणीको दुर्वचन कहता भया हे पापिनी ! इनको घरमें काहे प्रवेश दिया, मैं आज तोहि गायनिके मठनमें बांधूगा । देख इन निर्लज्ज ढीठ पुरुष घूरकर घूसरोंने मेरा अग्निहोत्रका स्थान मलिन किया, यह वचन सुन सीता रामते कहती भई, हे प्रभो ! या क्रोधीके घरमें न रहना वनमें चलिये जहां नानाप्रकारके पुष्प फल तिनकर मंडित वृक्ष शोभे हैं । निर्मल जलके भरे सरोवर हैं तिनमें कमल फूल रहे हैं अर मृग अपनी इच्छासे क्रीडा करते हैं यहां ऐसे दुष्ट पुरुषनिके कठोर वचन सुनिये है, यद्यपि यह देश धनसे पूर्ण है अर स्वर्ग सारिखा सुन्दर है परंतु लोग महाकठोर हैं अर ग्रामीजन विशेष कठोर ही होय हैं सो विप्रके रूखे वचन सुन ग्रामके सकल लोक आए, इन दोऊ भाइनिका देवानि समान रूप देख मोहित भए । ब्राह्मणको एकान्त

में लेजाय लोक समझावते भए । ये एक रात्रि यहां रहे हैं तेरा कहा उजाड है। ये गुणवान विनयवान रूपवान पुरुषोत्तम हैं तब द्विज सबसे लडा अर सबसे कहा, तुम मेरे घर काहे आए, परे जाहु अर मूर्ख इनपर क्रोधकर आया जैसे श्वान गजपर आवे, इनको कहता भया रे अपवित्र हो मेरे घरते निकसो इत्यादि कुवचन सुन लक्ष्मण कोप भए, ता दुर्जनकैं पांव ऊंचेकर नाडि नीचेकर भ्रमाया भूमिपर पछाडने लगा तब श्रीराम परमदयालु ताहि मने किया, हे भाई ! यह कहा ? ऐसे दीनके मारनेकरि कहा ? याहि छोड देहु याके मारनेते बडा अपयश है। जिनशासनमें शूरवीरको एते न मारने यति ब्राह्मण गाय पशु स्त्री बालक वृद्ध ये दोष संयुक्त होंय तो भी हनने योग्य नाहीं, या भांति भाईको समझाया, विप्र छुडाया अर आप लक्ष्मणको आगे कर सीतासहित कुटीते निकसे, आप जानकीसे कहे हैं हे प्रिये ! धिकार है नीच की संगतिको जिसकर क्रूर वचन सुनिये मनमें विकारका कारण महापुरुषनिकर त्याज्य महाविषम वनमें वृक्षनिके नीचे वास भला न नीचनिके साथ अर आहारादिक विना प्राण जावें तो भले परंतु दुर्जनके घर क्षणएक रहना योग्य नाहीं । नदिनिके तटविषै पर्वतनिकी कंदरानिविषै रहेंगे । बहुरि ऐसे दुष्टके घर न आवेंगे । या भांति दुष्टके संगको निंदते ग्रामसे निकसे राम वनको गए, वहां वर्षा समय आय प्राप्त भया। समस्त आकाशको श्याम करता हुवा अर अपनी गर्जना कर शब्द रूप करी है पर्वतकी गुफा जाने, ग्रह नक्षत्र तारानिके समूहको ढांककर शब्दसहित बिजुरीके उद्योतकर मानों अंबर हंसे है, मेघ पटल ग्रीष्म के तापको निवारकर पंथिनिको बिजुरीरूप अंगुरिनिकरि डरावता संता गाजे है। श्याम मेघ आकाशमें अंधकार करता संता जलकी धाराकर मानों सीताको स्नान करावे है जैसे गज लक्ष्मीको स्नान करावे। ते दोऊ वीर वनमें एक वडा वटका वृक्ष ताके डाहला घरके समान तहां विराजे, सो एक दंभकर्ण नामा यक्ष उस बटमें रहता हुता सो इनको महा तेजस्वी जानकर अपने स्वामीको नमस्कार कर कहता भया

हे नाथ! कोई स्वर्गते आए हैं, मेरे स्थानकविषै तिष्ठे हैं। जिनने अपने तेजकर मोहि स्थानते दूर किया है, वहां मैं जाय न सकूं हूं। तब यक्षके वचन सुनकर यक्षाधिपति अपने देवनिसहित वटका वृक्ष जहां राम लक्ष्मण हुते तहां आया, महाविभव संयुक्त वनक्रीडाविषै आसक्त नूतन है नाम जाका, सो दूरहीते दोऊ भाइनिको महारूपवान देख अवध कर जानता भया। जो ये बलभद्र नारायण हैं तब वह इनके प्रभाव कर अत्यन्त वात्सल्यरूप भया। क्षणमात्रमें महामनोग्य नगरी निरमापी, तहां सुखसे सोते हुए प्रभात सुन्दर गीतोंके शब्दनिकर जागे। रत्नजडित सेजपर आपको देखा अर मंदिर महामनोहर बहुत खणका अति उज्जल अर सम्पूर्ण सामग्रीकर पूर्ण अर सेवक सुन्दर बहुत आदरके करनहारे नगरमें रमणीक शब्द कोट दरवाजेनिकर शोभायमान ते पुरुषोत्तम महानुभाव तिनका चित्त ऐसे नगरको तत्काल देख आश्चर्यको न प्राप्त भया। यह क्षुद्र पुरुषनिकी चेष्टा है जो अपूर्व वस्तु देख आश्चर्यको प्राप्त होंय। समस्त वस्तु कर मंडित वह नगर तहां वे सुन्दर चेष्टाके धारक निवास करते भए, मानों ये देव ही हैं। यक्षाधिपतिने रामके अर्थ नगरी रची। तातैं पृथिवी पर रामपुरी कहाई। ता नगरीविषै सुभट मंत्री द्वारपाल नगरके लोग अयोध्या समान होते भए। राजा श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछे हैं हे प्रभो! ये तो देवकृत नगरविषै विराजे अर ब्राह्मणकी कहा बात सो कहो तब गणधर बोले—वह ब्राह्मण अन्य दिन दांतला हाथमें लेय वनमें गया, लकडी ढूंढते अकस्मात ऊंचे नेत्र किये। निकट ही सुन्दर नगर देखकर आश्चर्यको प्राप्त भया। नानाप्रकारके रंगकी ध्वजा उन कर शोभित शरदके मेघ समान सुन्दर महिल देखे अर एक राजमहिल महाउज्ज्वल मानों कैलाशका बालक है सो ऐसा देखकर मनमें विचारता भया। जो यह अटवी मृगानिते भरी जहां मैं लकडी लेने निरंतर आवता हुता सो यहां रत्नाचल समान सुंदर मंदिरानिते संयुक्त नगरी कहांसूं बसी? सरोवर जलके भरे कमलनिकरि शोभित दीखे है जो मैं अब तक

कभी न देखे, उद्यान महामनोहर जहां चतुर जन क्रीडा करते दीखे हैं अर देवालय महाध्वजनिकर संयुक्त शोभे हैं अर हाथी घोडे गाय भैंस तिनके समूह दृष्टि आवे हैं। घंटादिकके शब्द होय रहे हैं। यह नगरी स्वर्गते आई है अथवा पातालते निसरी है, कोऊ महाभाग्यके निमित्त, यह स्वप्न है अक प्रत्यक्ष है अक देवमाया है अक गन्धर्वोंका नगर है। अक मैं पित्तकर व्याकुल भया हूं याके निकटवर्ती जो मैं सो मेरे मृत्युका चिह्न दीखे है, ऐसा विचार विषादको प्राप्त भया। सो एक स्त्री नानाप्रकारके आभरण पहरे देखी ताके निकट जाय पूछता भया। हे भद्रे! यह कौनकी पुरी है तब वह कहती भई यह रामकी पुरी है तूने कहा न सुनी? जहां राम राजा जाके लक्ष्मण भाई, सीता स्त्री अर नगरके मध्य यह बडा मन्दिर है शरदके मेघ समान उज्ज्वल, जहां वह पुरुषोत्तम विराजे हैं, कैसा है पुरुषोत्तम लोकविषै दुर्लभ है दर्शन जाका सो ताने मनवांछित द्रव्यके दानकरि सब दरिद्री लोक राजानिके समान किये, तब ब्राह्मण बोला हे सुन्दरी! कौन उपाय कर याहि देखूं सो तू कह ऐसे काष्ठका भार डारकर हाथ जोड ताके पायन पडा। तब वह सुमाया नामा यक्षिनी कृपाकर कहती भई, हे विप्र! या नगरीके तीन द्वार हैं। जहां देव भी प्रवेश न करसकें, बडे बडे योधा रक्षक बैठे हैं। रात्रिमें जागे हैं जिनके मुख सिंह गज व्याघ्र तुल्य हैं तिनकरि भयको मनुष्य प्राप्त होय हैं, यह पूर्व द्वार है जाके निकट बडे बडे भगवानके मंदिर हैं। मणिके तोरणकरि मनोग्य तिनमें इंद्र कर वंदनीक अरिहंतके बिंब विराजे हैं अर जहां भव्यजीव सामायिक आदि स्तवन करे हैं अर जो नमोकारमंत्र भाव सहित पढे हैं सो भीतर प्रवेश कर सके हैं। जो पुरुष अणुव्रतका धारी गुणशीलसे शोभित है ताको राम परम प्रीतिकर वांछे हैं। यह वचन यक्षिनीके अमृत समान सुनकर ब्राह्मण परम हर्षको प्राप्त भया। धन आगमका उपाय पाया, यक्षनीकी बहुत स्तुति करी, रोमांच कर मंडित भया है सर्व अंग जाका सो चारित्रशूर नामा मुनिके निकट जाय हाथ जोड नमस्कार

कर श्रावककी क्रियाका भेद पूछता भया । तब मुनिने श्रावकका भेद इसे सुनाया, चारों अनुयोगका रहस्य बताया सो ब्राह्मण धर्मका रहस्य जान मुनिकी स्तुति करता भया । हे नाथ ! तिहारे उपदेशते मेरे ज्ञान दृष्टि भई जैसे तृषावानको शीतल जल अर ग्रीष्मके तापकर तप्तायमान पंथीको छाया अर क्षुधावानको मिष्टान्ह अर रोगीको औषधि मिले, तैसे कुमार्गमें प्रतिपन्न जो मैं सो मोहि तिहारा उपदेश रसायन मिला जैसे समुद्रके मध्य डूबतेको जहाज मिले । मैं यह जैनका मार्ग सर्व दुःखनिका दूर करणहारा तिहारे प्रसादकरि पाया जो अविवेकिनिको दुर्लभ है, तीनलोकमें मेरे तुम समान कोऊ हित नाहीं जिनकर ऐसा जिनधर्म पाया । ऐसा कहकर मुनिके चरणारविंदको नमस्कार कर ब्राह्मण अपने घर गया । अति हर्षित, फूल रहे हैं नेत्र जाके स्त्रीसूं कहता भया, हे प्रिये ! मैंने आज गुरुके निकट अद्भुत जिनधर्म सुना है जो तेरे बापने अथवा मेरे बापने अथवा पिताके पिताने भी न सुना अर हे ब्राह्मणी ! मैंने एक अद्भुत वन देखा तामें एक महामनोग्य नगरी देखी जाहि देखे आश्चर्य उपजे परंतु मेरे गुरुके उपदेशते आश्चर्य नहीं उपजे है तब ब्राह्मणीने कही, हे विप्र ! तैं कहा देखा और कहा सुना सो कहो तब ब्राह्मण कही, हे प्रिये ! मैं हर्ष थकी कहने समर्थ नाहीं, तब बहुत आदर कर ब्राह्मणीने बारम्बार पूछा तब ब्राह्मण कही हे प्रिये ! मैं काष्ठके अर्थ वनविषे गया । सो वन एक महा रमणीक रामपुरी देखी ता नगरीके समीप उद्यानविषे एक नारी सुन्दरी देखी, सो वह कोई देवता होयगी महा मिष्टवादिनी, मैंने पूछा या नगरी कोनकी है तब वाने कही यह रामपुरी है, जहां राजा राम श्रावकनिको मनवांछित धन देवे हैं । तब मैं मुनि पै जाय जैन वचन सुने सो मेरा आत्मा बहुत तृप्त भया, मिथ्यादृष्टि कर मेरा आत्मा आताप युक्त हुता सो आताप गया । जा धर्मको पायकर मुनिराज मुक्तिके अभिलाषी सर्व परिग्रह तज महा तप करे सो वह अरिहंतका धर्म त्रैलोक्यविषे एक महानिधि मैं पाया । ये वाहिर्मुख जीव

वृथा क्लेश करे हैं मुनि थकी जैसा जिनधर्मका स्वरूप सुना तैसा ब्राह्मणीको कहा, कैसा है ब्राह्मण निर्मल है चित्त जाका तब ब्राह्मणी सुनकर कहती भई मैं भी तिहारे प्रसादकरि जिनधर्मकी रुचि पाई अर जैसे कोई विष फलका अर्थी महानिधि पावे, तैसे ही तुम काष्ठादिकके अर्थी धर्म इच्छाते रहित श्रीअरिहंतका धर्म रसायन पाया अबतक तुमने धर्म न जाना। अपने आंगनविषै आए सत्पुरुष तिनका निरादार किया, उपवासादिकरि खेदखिन्न दिगम्बर तिनको कबहु आहार न दिया, इन्द्रादिक कर वन्दनीक जे अरिहंतदेव तिनको तजकर ज्योतषी व्यन्तरादिकको प्रणाम किया। जीव दयारूप जिनधर्म अमृत तज अज्ञानके योगते पापरूप विषका सेवन किया। मनुष्य देहरूप रत्नदीप पाय साधुनिको परखा, धर्मरूप रत्न तज विषयरूप कांचका खंड अंगीकार किया। जे सर्व भक्षी दिवस रात्रि आहारी, अव्रती, कुशील तिनकी सेवा करी। भोजनके समय अतिथि आवै अर जो निर्बुद्धि अपने विभव प्रमाण अन्न पानादि न दे ताके धर्म नाहीं, अतिथि पदका अर्थ तिथि कहिए उत्सवके दिन तिनविषै उत्सव तज जाके तिथि कहिए विचार नाहीं अर सर्वथा निस्पृह घररहित साधु सो अतिथि कहिये जिनके भाजन नाहीं, कर ही पात्र हैं वे निर्ग्रंथ आप तिरैं औरनिको तारें अपने शरीरमें हू निस्पृह काहू वस्तुविषै जिनका लोभ नाहीं। ते निरपरिग्रही मुक्तिके कारण जे दश लक्षण तिनकर शोभित हैं या भांति ब्राह्मणी धर्मका स्वरूप कहा अर सुशर्मा नामा ब्राह्मणी मिथ्यात्वरहित होती भई जैसे चंद्रमाके रोहिणी शोभे अर बुधके भरणी सोहे तैसे कपिलके सुशर्मा शोभती भई। ब्राह्मण ब्राह्मणीको वाही गुरुके निकट ले आया, जाके निकट आप व्रत लिये हुते सो स्त्रीको हू श्रावकके व्रत दिवाये। कपिलको जिनधर्मके विषय अनुरागी जान और हू अनेक ब्राह्मण समभाव धारते भए। मुनि सुव्रतनाथका मत पायकर अनेक सुबुद्धि श्रावक श्राविका भए अर जे कर्मनिके भारकर संयुक्त मानकर ऊंचा है मस्तक जिनका, वे प्रमादी जीव थोडे

ही आयुविषे पापकर घोर नरकविषे जाय हैं। कैयक उत्तम ब्राह्मण सर्व संगका परित्यागकर मुनि भए, वैराग्यकर पूर्ण मनविषे ऐसा विचार किया—

यह जिनेंद्रका मार्ग अबतक अन्य जन्ममें न पाया महा निर्मल अब पाया, ध्यानरूप अग्निविषै कर्मरूप सामग्री भाव घृतसहित होम करेंगे सो जिनके परम वैराग्य उदय भया। ते मुनि ही भए अर कपिल ब्राह्मण महा क्रियावान श्रावक भया, एक दिवस ब्राह्मणीको धर्मकी अभिलाषिनी जान कहता भया—हे प्रिये ! श्रीरामके देखनेको रामपुरी काहे न चालें, कैसे हैं राम महापराक्रमी निर्मल है चेष्टा जिनकी, अर कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके, सर्व जीवनिके दयालु भव्य जीवनिपर है वात्सल्य जिनका, जे प्राणी आशामें तत्पर नित्य उपायविषै है मन जिनका, दलिद्रीरूप समुद्रमें मग्न, उदर पूर्णविषै असमर्थ, तिनको दरिद्ररूप समुद्रते पार उतार परमसम्पदाको प्राप्त करे हैं, या भांति कीर्ति तिनकी पृथ्वीमें फैल रही है महा आनन्दकी करणहारी, तातें हे प्रिये ! उठ, भेट लेकर चलें अर मैं सुकुमार बालकको कांधे लूगा। ऐसे ब्राह्मणीको कह तैसे ही कर दोऊ हर्षके भरे उज्ज्वल भेषकर शोभित रामपुरीको चाले। सो उनको मार्गमें भयानक नागकुमार दृष्टि आए, बहुरि विंतर विकराल वदन हडहडांस करते दृष्टि आए। इत्यादि भयानक रूप देख ये दोऊ निकंप हृदय होयकर या भांति भगवानकी स्तुति करते भए, श्रीजिनेश्वरदेवके तांई निरंतर मन वचन कायकर नमस्कार होहु। कैसे हैं जिनेश्वर ? त्रैलोक्यकर वंदनीक हैं। संसारकीचसे पार उतारे हैं, परम कल्याणके देनहारे हैं, यह स्तुति पढते ये दोऊ चले जावें हैं। इनको जिनभक्त जान यक्ष शांत हो गए, ये दोऊ जिनालयमें गए, नमस्कार होहु जिनमंदिरको. ऐसा कह दोऊ हाथ जोड अर चैत्यालयकी प्रदक्षिणा दई अर अंदर जाय स्तोत्र पढते भए—हे नाथ ! महाकुगतिका दाता मिथ्यामार्ग ताहि तजकर बहुत दिनोंमें तिहारा शरण गहा। चौबीस तीर्थंकर अतीत कालके

अर चौबीस वर्तमान कालके अर चौवीस अनागत कालके, तिनको मैं बंदूं हूं अर पंचभरत पंच ऐरावत पंच विदेह ये पंद्रह कर्मभूमि तिनसे जे तीर्थंकर भए अर वर्ते हैं अर अब होवेंगे तिन सबको हमारा नमस्कार होहु, जो संसार समुद्रसूं तिरैं अर तारैं ऐसे श्रीमुनि सुव्रतनाथके ताईं नमस्कार होहु, तीन लोक में जिनका यश प्रकाश करै है, या भांति स्तुतिकर अष्टांग दण्डवतकरि ब्राह्मण स्त्रीसहित श्रीरामके अवलोकनको गए, मार्गमें बडे २ मंदिर महाउद्योतरूप ब्राह्मणीको दिखाए अर कहता भया—ये कुन्दके पुष्प समान उज्ज्वल सर्व कामना पूर्ण नगरीके मध्य रामके मंदिर हैं, जिनकी यह नगरी स्वर्ग समान शोभे है। या भांति वार्ता करता ब्राह्मण राजमंदिरमें गया। सो दूर हीते लक्ष्मणको देख व्याकुलताको प्राप्त भया, चित्तमें चितारे है—वह श्याम सुंदर नीलकमल समान प्रभा जाकी, मैं अज्ञानी दुष्ट वचननिकरि दुखाया सो मोहि त्रास दीनी। पापिनी जिह्वा महादुष्टिनी काननको कटुक वचन भाषे, अब कहा करूं? कहां जाऊं? पृथ्वीके छिद्रमें बैठूं अब मोहि शरण कौनका? जो मैं यह जानता अक ये यहां ही नगरी बसाए रहे हैं तो मैं देश त्यागकर उत्तर दिशाको चला जाता, या भांति विकलपरूप होय ब्राह्मणीको तज ब्राह्मण भागा सो लक्ष्मणने देखा तब हंसकर रामको कहा वह ब्राह्मण आया है अर मृगकी नाईं व्याकुल होय मोहि देख भागे है तब राम बोले, याको विश्वास उपजाय शीघ्र लावो। तब सेवकजन दौडे, दिलासा देय लाए डिगता अर कांपता आया, निकट आय भय तज दोऊ भाइनके आगे भेट मेल स्वस्ति ऐसा शब्द कहता भया अर अतिस्तवन पढता भया तब राम बोले—हे द्विज! तैं हमको अपमानकर अपने घरते काढे हुते अब काहे पूजे है। तब विप्र बोला—हे देव, तुम प्रच्छन्न महेश्वर हो, मैं अज्ञानते न जाने तातैं अनादर किया जैसे भस्मते दबी आग्नि जानी न जाय, हे जगन्नाथ! या लोक की यही रीति है, धनवानको पूजिए है। सूर्य शीतऋतुमें तापरहित होय है सो तासे कोई नाहीं शंके है,

अब मैं जाना तुम पुरुषोत्तम हो। हे पद्मलोचन! ये लोक द्रव्यको पूजे हैं, पुरुषको नाहीं पूजे हैं। जो अर्थकर युक्त होय ताहि लौकिकजन माने हैं अर परम सज्जन है अर धनरहित है तो ताहि निप्रयोजन जन जान न माने हैं। तब राम बोले, हे विप्र! जाके अर्थ ताके मित्र जाके अर्थ ताके भाई जाके अर्थ सोई पंडित, अर्थ विना न मित्र न सहोदर जो अर्थकर संयुक्त है, ताके परजन हू निज होय जाय हैं अर धन वही जो धर्मकरयुक्त अर धर्म वही जो दयाकरयुक्त अर दया वही जहां मांस भोजनका त्याग जब सब जीवनिका मांस तजा, तब अभक्ष्यका त्याग कहिए ताके और त्याग सहज ही होय, मांसके त्याग विना और त्याग शोभे नाहीं। ये वचन रामके सुन विप्र प्रसन्न भया अर कहता भया—हे देव! जो तुम सारिखे पुरुषनिको महापुरुष पूजिए हैं तिनका भी मूढ लोक अनादर करे हैं। आगे सनत्कुमार चक्रवर्ती भए। बडी ऋद्धिके धारी महारूपवान जिनका रूप देव देखने आए, सो मुनि होयकर आहारको ग्रामादिकविषै गए। महाआचार प्रवीण सो निरंतराय भिक्षाको न प्राप्त होते भए, एक दिवस विजयपुर नाम नगरविषै एक निर्धन मनुष्यके आहार लिया, याके पंच आश्चर्य भए। हे प्रभो! मैं मंदभाग्य तुम सारिखे पुरुषनिका आदर न किया सो अब मेरा मन पश्चातापरूप अग्निकरि तपे है, तुम महारूपवान तुमको देखे महाक्रोधीका क्रोध जाता रहे अर आश्चर्यको प्राप्त होय ऐसा कहकर सोचकर गृहस्थ कपिल रुदन करता भया। तब श्रीरामने शुभवचनते संतोषा अर सुशर्मा ब्राह्मणीको जानकी संतोषती भई बहुरि राघवकी आज्ञा पाय स्वर्णके कलशनिकरि सेवकानिने द्विजको स्त्रीसहित स्नान कराया अर आदरसों भोजन कराया। नानाप्रकारके वस्त्र अर रत्ननिके आभूषण दिए, बहुत धन दिया। सो लेकर कपिल अपने घर आया। मनुष्यनिको विसमयका करणहारा धन याके भया। यद्यपि याके घरविषै सब उपकार सामग्री अपूर्व है तथापि या प्रवीणका परिणाम विरक्त घरविषै आसक्त नाहीं, मनविषै विचारता भया आगेमें

काष्ठके भारका वहनहारा दरिद्री हुता, सो श्रीरामदेवने तृप्त किया । याही ग्रामविषैं मैं सोषित शरीर अभूषित हुता सो रामने कुवेर समान किया । चिंता दुखरहित किया मेरा घर जीर्ण तृणका जाके अनेक छिद्रकादि अशुचि पक्षिनिकी बीटकर लिप्त अब रामके प्रसादकरि अनेक स्वर्णके महिल भए, बहुत गोधन बहुत धन काहू वस्तुकी कमी नाहीं। हाय २ मैं दुर्बुद्धि कहा किया ? वे दोऊ भाई चंद्रमा समान बदन जिनके, कमल नेत्र मेरे घर आए हुते, ग्रीष्मके आतापकरि तप्तायमान सीतासहित, सो मैंने घरते निकासे । या वातकी मेरे हृदयविषे महाशल्य है, जब लग घरविषे बसूं हूं तब लग खेद मिटै नाहीं, तातैं गृहारम्भका परित्यागकर जिनदीक्षा आदरूं । जब यह विचारी, तब याको वैराग्यरूप जान समस्त कुटुंबके लोक अर सुशर्मा ब्राह्मणी रुदन करते भए तब कपिल सबको शोकसागरविषै मग्न देख निर्ममत्वबुद्धिकरि कहता भया। कैसा है कपिल ? शिव सुखविषै है अभिलाषा जाकी, हो प्राणी हो ! परिवारके स्नेहकरि अर नानाप्रकारके मनोरथनिकरि यह मूढ जीव भव तापकर जरे हैं, तुम कहा नाहीं जानो हो ? ऐसा कह महा विरक्त होय दुखकर मूर्छित जो स्त्री ताहि तज अर सब कुटुम्बको तज, अठारह हजार गाय अर रत्ननिकर पूर्ण घर अर घरके बालक स्त्रीको सौंप आप सर्वारम्भ तज दिगम्बर भया। स्वामी अनंतमतिका शिष्य भया । कैसे हैं अनंतमति ? जगतविषै प्रसिद्ध तपोनिधि गुण शीलके सागर यह कपिल मुनि गुरुकी आज्ञा प्रमाण महातप करता भया । सुन्दर चारित्रका भार धर परमार्थविषै लीन है मन जाका, वैराग्य विभूतिकर अर साधुपदकी शोभाकर मंडित है शरीर जाका । सो जो विवेकी यह कपिलकी कथा पढे सुने ताहि अनेक उपवासनिका फल होय सूर्य समान ताकी प्रभा होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं देवनिकर नगरका बसावन अर कपिल ब्राह्मणका वैराग्य वर्णन करनेवाला पैंतीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३५ ॥

अथानन्तर वर्षा ऋतु पूर्ण भई। कैसी है वर्षा ऋतु? श्याम घटाकरि महा अंधकाररूप जहां मेघ जल असराल बरसे अर बिजुरीनिके चमत्कारकर भयानक वर्षाऋतु व्यतीत भई, शरदऋतु प्रगट भई दशों दिशा उज्ज्वल भई तब वह यक्षाधिपति श्रीरामसूं कहता भया कैसे हैं श्रीराम ? चलवेका है मन जिनका, यक्ष कहे है हे देव हमारी सेवामें चूक होय सो क्षमा करो। तुम सारिखे पुरुषानिकी सेवा करनेको कौन समर्थ है तब राम कहते भए हे यक्षाधिपते ! तुम सब बातोंके योग्य हो अर तुम पराधीन होय हमारी सेवा करी सो क्षमा करियो। तब उनके उत्तम भाव विलोकि अति हर्षित भया नमस्कारकर स्वयंप्रभ नामा हार श्रीरामको भेट किया। महा अद्भुत अर लक्ष्मणको मणिकुण्डल चांद सूर्य सारिखे भेट किये। अर सीताको कुशल्या नामा चूडामणि महा देदीप्यमान दिया अर महामनोहर मनवांछित नादकी करनहारी देवोपुनीत वीणा दई वे अपनी इच्छाते चाले। तब यक्षराजने पुरी संकोचलई अर इनके जायवे का बहुत शोच किया अर श्री रामचन्द्र यक्षकी सेवा करि अति प्रसन्न होय आगे चले, देवों की न्याई रमते नाना प्रकारकी कथा विषै आसक्त नाना प्रकारके फलनिके रसके भोक्ता पृथिवी पर अपनी इच्छा सूं भ्रमते, मृगराज तथा गजराजनि करि भरा जो महा भयानक वन ताहि उलंघ विजय पुर नामा नगर आए ता समय सूर्य अस्त भया। अन्धकार फैला आकाश विषै नक्षत्रनिके समूह प्रकट भए, नगरते उत्तर दिशा की तरफ न अति निकट न अति दूर कायर लोगनिको भयानक जो उद्यान वहां विराजे॥

अथानन्तर नगर का राजा पृथिवीधर जाके इन्द्राणी नामा राणी स्त्रीके गुणनि करि मंडित ताके वनमाला नामा पुत्री महा सुन्दर सो बाल अवस्था हीते लक्ष्मण के गुण सुन अति आसक्त भई। बहुरि सुनी दशरथ ने दीक्षा धरी अर कैकईके वचन ते भरत को राज्य दिया, राम लक्ष्मण परदेश निकसे

हैं ऐसा विचार याके पिताने कन्याका इन्द्रनगरका राजा ताका पुत्र जो बालमित्र महा सुन्दर ताहि देनी विचारी सो यह वृत्तांत बनमाला सुना, हृदय विषे बिराजे हैं लक्ष्मण जाके, तब मन विषे बिचारी कंठफांसी लेय मरणा भला परन्तु अन्य पुरुषका सम्बन्ध शुभ नाहीं, यह विचार सूर्यसूं संभाषण करती भई हे भानो ! अब तुम अस्त होय जावो शीघ्र ही रात्रिको पठावहु अब दिनका एक क्षण मोहि वर्ष समान बीते है सो मानों याके चिंतवन कर सूर्य अस्त भया, कन्याका उपवास है, सन्ध्या समय माता पिता की आज्ञा लेय श्रेष्ठरथ विषे चढ बन यात्रा का बहाना कर रात्रि विषे तहां आई जहां राम लक्ष्मण तिष्ठ हुते सो याने आन कर ताही बन विषे जागरण किया। जब सकल लोक सो गए तब यह मन्द मन्द पैर धरती बनकी मृगी समान डेराते निकस बन विषे चली सो यह महासती पद्मिनी ताके शरीरकी सुगन्धता कर बन सुगन्धित होय गया तब लक्ष्मण बिचारता भया यह कोई राजकुमारी महा श्रेष्ठ मानों ज्योतिकी मूर्ति ही है सो महा शोकके भार कर पीडित है मन जाका यह अपघात कर मरण वांछे है सो मैं याकी चेष्टा छिपकर देखूं ऐसा विचारकर छिपकर बटके वृक्ष तले बैठा मानों कौतुक युक्त देव कल्पवृक्षके नीचे बैठे। ताही बट के तले हंसनी की सी है चाल जाकी अर चन्द्रमा समान है बदन जाका कोमल है अंग जाका ऐसी बनमाला आई जल सूं आला वस्त्रकर फांसी बनाई अर मनोहर बाणीकर कहती भई—हो या वृक्षके निवासी देवता कृपाकर मेरी बात सुनहु कदाचित बनविषे विचरता लक्ष्मण आवे तो तुम ताहि ऐसे कहियो जो तुम्हारे विरह करि महा दुःखित बनमाला तुमविषे चित्त लगाय बट के वृक्ष विषे बस्त्रकी फांसी लगाय मरण को प्राप्त भई हमने देखी अर तुमको यह सन्देशा कहा है जो या भवविषै तो तुम्हारा संयोग तोहि न मिला अब परभव विषै तुमही पति हूजियो यह बचन कह वृक्ष की शाखा सो फांसी लगाय आप फांसी लेने लगी, ताही समय लक्ष्मण कहता भया—हे मुग्धे ! मेरी

भुजाकर आलिंगन योग्य तेरा कंठ ताविषै फांसी काहेको डारे है ? हे सुंदरवदनी, परमसुंदरी ! मैं लक्ष्मण हूं जैसा तेरे श्रवणविषै आया है तैसा देख अर प्रतीत न आवै तो निश्चय कर लैहु। ऐसा कह ताके करसे फांसी हर लीनी जैसे कमलथकी झागोंके समूहको दूर करे, तब वह लज्जाकरयुक्त प्रेमकी दृष्टिकर लक्ष्मणको देख मोहित भई। कैसा है लक्ष्मण ? जगतके नेत्रानिका हरणहारा है रूप जाका, परम आश्चर्यको प्राप्त भई। चित्तविषै चिंतवै है यह कोई मोपर देवनि उपकार किया, मेरी अवस्था देख दयाको प्राप्त भए जैसा मैं सुना हुता तैसा दैव योगते यह नाथ पाया जाने मेरे प्राण बचाए ऐसा चिंतवन करती बनमाला लक्ष्मणके मिलापते अत्यंत अनुरागको प्राप्त भई ॥

अथानन्तर महासुगन्ध कोमल सांथरेपर श्रीरामचंद्र पौडे हुते सो जागकर लक्ष्मणको न देख जानकीको पूछते भए—हे देवी ! यहां लक्ष्मण नाहीं दीखे है, रात्रिके समय मेरे सोवनेको पुष्प पल्लवनिका कोमल सांथरा विछाय आप यहां ही तिष्ठता हुता सो अब नाहीं दीखे है। तब जानकीने कही—हे नाथ ! ऊंचा स्वरकर बुलाय लेवो, तब आप शब्द किया। हे भाई ! हे लक्ष्मण ! हे बालक ! कहां गया ? शीघ्र आवहु। तब भाई बोला—हे देव ! आया, बनमालासहित बडे भाईके निकट आया। आधी रात्रिका समय चंद्रमाका उदय भया, कुमुद फूले, शीतल मंद सुगंध पवन बाजने लगी। ता समय बनमाला कोपल समान कोमल कर जोड वस्त्रकर बेढा है सर्व अंग जाने, लज्जाकर नम्रीभूत है मुख जाका, जाना है समस्त कर्तव्य जाने, महाविनयको धरती श्रीराम अर सीताके चरणारविन्दको वन्दती भई। सीता लक्ष्मणको कहती भई—हे कुमार ! तैंने चंद्रमाकी तुल्यता करी। तब लक्ष्मण लज्जाकर नीचा होय गया, श्रीराम जानकीते कहते भए, तुम कैसे जानी ? तब कही—हे देव ! जा समय चंद्रमाका उद्योत भया ताही समय कन्यासहित लक्ष्मण आया तब श्रीराम सीताके वचन सुन प्रसन्न भए ॥

अथानन्तर बनमाला महाशुभ शील इनको देख आश्चर्यकी भरी प्रसन्न है मुख चंद्रमा जाका, फूल रहे हैं नेत्रकमल जाके, सीताके समीप बैठी अर ये दोऊ भाई देवनि समान महासुंदर निद्रारहित सुखते कथा वार्ता करते तिष्ठे हैं अर बनमालाकी सखी जागकर देखे तो सेज सूनी, कन्या नाहीं। तब भयकर खेदित भई अर महाव्याकुल होय रुदन करती भई ताके शब्दकर योधा जागे, आयुध लगाय तुरंग चढ दशों दिशाको दौडे अर पयादे दौडे। बरछी अर धनुष है हाथमें जिनके, दशों दिशा ढूंढी। राजाका भय अर प्रीतिकर संयुक्त है मन जाका, ऐसे दौडे मानों पवनके बालक हैं तब कैयक या तरफ दौडे आए बनमालाको बनविषै राम लक्ष्मणके समीप बैठी देख बहुत हर्षित होय जायकर राजा पृथ्वीधरको बधाई दई अर कहते भए—हे देव ! जिनके पावनेका बहुत यत्न करिये तो भी न मिलें वे सहज ही आए हैं, प्रभो, तेरे नगरमें महानिधि आई, विना बादल आकाशते वृष्टि भई, क्षेत्रविषै विना बाहे धान ऊगा। तिहारा जमाई लक्ष्मण नगरके निकट तिष्ठे है जाने बनमाला प्राण त्याग करती बचाई अर राम तिहारे परमहितु सीतासहित विराजे हैं जैसे शचीसहित इंद्र विराजे। ये वचन राजा सेवकनिके सुनकर महा हर्षित होय क्षण एक मूर्छित होय गया। बहुरि परम आनन्दको प्राप्त होय सेवकनिको बहुत धन दिया अर मनविषै विचारता भया—मेरी पुत्रीका मनोरथ सिद्ध भया। जीवनिके धनकी प्राप्ति अर इष्टका समागम और हू सुखके कारण पुण्यके योगकरि होय हैं। जो वस्तु सैकडों योजन दूर अर श्रवणमें न आवे सो हू पुण्याधिकारीके क्षणमात्रविषै प्राप्त होय है अर जे प्राणी दुखके भोक्ता पुण्यहीन हैं तिनके हाथसे इष्टवस्तु विलाय जाय है। पर्वतके मस्तकपर तथा वनविषै सागरविषै पंथविषै पुण्याधिकारनिके इष्टवस्तु का समागम होय है। ऐसा मनविषै चिंतवनकर स्त्रीते समस्त वृत्तांत कहा, स्त्री बारंबार पूछे है यह जाने मानों स्वप्न ही है, बहुरि रामके अधर समान आरक्त सूर्यका उदय भया। तब राजा प्रेमका भरा

सर्वं परिवारसहित हाथीपर चढकर परम कांतियुक्त रामसूं मिलने चला अर बनमालाकी माता आप पुत्रिनिसहित पालकीपर चढकर चली सो राजा दूर हीते श्रीरामका स्थानक देखकर फूल गए हैं नेत्र कमल जाके, हाथीते उतर समीप आया। श्रीराम अर लक्ष्मणसूं मिला अर वाकी रानी सीताके पायन लागी अर कुशल पूछती भई, बीण बांसुरी मृदंगादिकके शब्द होते भए, बंदीजन विरद बखानते भए, बडा उत्सव भया, राजाने लोकनिको बहुत दान दिया। नृत्य होता भया, दशों दिशा नादकर शब्दायमान होतीं भईं, श्रीराम लक्ष्मणको स्नान भोजन कराया। बहुरि घोडे हाथी रथ तिनपर चढे अनेक सामन्त अर हिरण समान कूदते प्यादे तिनसहित राम लक्ष्मणने हाथीपर चढे संते पुरविषै प्रवेश किया, राजाने नगर उछाला महाचतुर मागध विरद बखाने हैं, मंगल शब्द करै हैं, राम लक्ष्मणने अमोलिक वस्त्र पहरे हारकर विराजे हैं वक्षस्थल जिनका, मलियागिरिके चंदनते लिप्त है अंग जिनका, नानाप्रकारके रत्ननिकी किरणनिकरि इंद्रधनुष होय रहा है। दोऊ भाई चांद सूर्य सारिखे नाहीं वरणे जावें हैं गुण जिनके, सौधर्म ईशान सारिखे जानकीसहित लोकनिको आश्चर्य उपजावते राजमंदिर पधारे, श्रेष्ठ माला धरे सुगंधकर गुंजार करै हैं भ्रमर जापर, महाविनयवान चंद्रवदन इनको देख लोक मोहित भए। कुबेर कासा किया जो वह सुंदर नगर वहां अपनी इच्छाकरि परम भोग भोगते भए। या भांति सुकृतमें है चित्त जिनका, महागहन वनविषै प्राप्त भए हू परम विलासको अनुभवे हैं। सूर्य समान है कांति जिनकी, वे पापरूप तिमिरको हरै हैं निज पदार्थके लोभते आनन्दरूप हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै वनमाला का लाभ वर्णन करनेवाला छवीसवां पर्व पूर्ण भया॥ २६॥

अथानंतर एक दिन श्रीराम सुखसे विराजे हुते, अर पृथिवीधर भी समीप बैठा हुता, ता समय एक पुरुष दूरका चला महा खेदखिन्न आय कर नम्रीभूत होय पत्र देता भया। सो राजा पृथिवीधरने पत्र लेय कर लेखकको सौंपा लेखकने खोलकर राजाके निकट बांचा तामें या भांति लिखा हुता कि इंद्र समान है उत्कृष्ट प्रभाव जाका महालक्ष्मीवान् नमे हैं अनेक राजा जाको श्रीनन्द्यावर्त नगरका स्वामी महाप्रबल पराक्रमका धारी सुमेरुपर्वतसा अचल प्रसिद्ध शस्त्रशास्त्रविषै प्रवीण सब राजानिका राजा महाराजाधिराज प्रताप कर वश किये है शत्रु अर मोहित करी है सकल पृथिवी जाने, सूर्य समान महाबलवान् समस्त कर्तव्यविषै कुशल महानीतिवान् गुणनिकरि विराजमान श्रीमान् पृथिवीका नाथ महाराजेंद्र अति वीर्य सो विजय नगरविषै पृथिवीधरको कुशल क्षेम प्रश्न पूर्वक आज्ञा करे है कि जे पृथिवीपर सामंत हैं वे भण्डार सहित अर सर्व सेना सहित मेरे निकट प्रवरते हैं, आर्य खण्डके अर मलेच्छ खंडके चतुरंग सेना सहित नानाप्रकारके शस्त्रनिके धरणहारे मेरी आज्ञाको शिरपर धारे हैं अञ्जनिगिरि सारिखे आठसै हाथी अर पवनके पुत्रसम तीनहजार तुरंग अनेक रथ अनेक पयादे तिन सहित महापराक्रमका धारी महातेजस्वी मेरे गुणनिसे खींचा है मन जाका ऐसा राजा विजयशार्दूल आया है अर अंग देशके राजा मृगध्वज रणोर्मि कलभ केशरी यह प्रत्येक पांच पांच हजार तुरंग अर छैसो हाथी अर रथ पयादे तिन सहित आये हैं, महाउत्साहके धारी महा न्यायविषै प्रवीण है बुद्धि जिनकी अर पंचालदेशका राजा पौढ परम प्रतापको धरता न्याय शास्त्रविषै प्रवीण अनेक प्रचंड बलको उत्साह रूप करता हजार हाथी अर सातहजार तुरंगनिते अर रथ पयादनिकरि युक्त हमारे पास आया है अर मगधदेशका राजा सुकेश बडी सेनासूं आया है अनेक राजानि सहित जैसे सैकडों नदीनिके प्रवाहनिको लिये रेवाका प्रवाह समुद्र विषै आवे, तैसे ताके संग काली घटा समान आठ हजार हाथी अनेक रथ अर तुरंगानिके समूह हैं,

अर वज्रका आयुध धारे है अर म्लेच्छोंके अधिपति सुभद्र मुनिभद्र साधुभद्र नंदन इत्यादि राजा मेरे समीप आये हैं, वज्रधर समान अर नाहीं निवाराजाय पराक्रम जाका ऐसा राजा सिंहवीर्य आया है अर राजा वांम अर सिंहरथ ये दोऊ हमारे मामा महाबलवान बडी सेनासूं आए हैं अर वत्सदेशका स्वामी मारुदत्त अनेक पयादे अनेक रथ अनेक हाथी अनेक घोडनिकरि युक्त आया है अर राजा प्रौष्टल सौवीर सुमेरु सारिखे अचल प्रबल सेनाते आए हैं । ये राजा महापराक्रमी पृथिवीपर प्रसिद्ध देवनि सारिखे दस अक्षोहिणी दल सहित आए ते राजानि सहित मैं बडे कटकते अयोध्याके राजा भरत पर चढा हूं । सो तेरे आयवेकी बाट देखूं हूं तातैं आज्ञा पत्र पहुंचते प्रमाण पयानकर शीघ्र आइयो किसी कार्यकर विलम्ब न करियो जैसे किसान वर्षाकूं चाहे तैसे मैं तेरे आगमनको चाहूं हूं । या भांति पत्रके समाचार लेखकने बांचे तब पृथिवीधरने कछू कहनेका उद्यम किया । तासूं पहिले लक्ष्मण बोले अरे दूत ! भरतके अर आतिवीर्यके विरोध कौन कारणते भया । तब वह वायुगत नाम दूत कहता भया । मैं सब बातोंका मरमी हूं सब चारित्र जानूं हूं तब लक्ष्मण बोले हमारे सुननेकी इच्छा है ताने कही आपको सुननेकी इच्छा है तो सुनो एक श्रुतिवृद्ध नामा दूत हमारे राजा आतिवीर्यने भरतपर भेजा सो जायकर कहता भया । इंद्र तुल्य राजा आतिवीर्यका मैं दूत हूं प्रणाम करे हैं समस्त नरेंद्र जाको, न्यायके थापनेविषै महा बुद्धिवान सो पुरुषनिविषै सिंह समान जाके भयते अरि रूप मृग निद्रा नाहीं करे हैं । ताके यह पृथिवी बनिता समान है कैसी है पृथिवी चार तरफके समुद्र सोई है कटिमेखला जाके जैसे परणी स्त्री आज्ञाविषै होय तैसे समस्त पृथिवी आज्ञाके वश है सो पृथिवी पति महा प्रबल मेरे मुख होय तुमको आज्ञा करे है कि हे भरत ! शीघ्र आयकर मेरी सेवा करो, अथवा अयोध्या तज समुद्रके पार जावो ये वचन सुन शत्रुघन महा क्रोधरूप दावानल समान प्रज्वालित होय कहता भया । अरे दूत ? तोहि ऐसे वचन कहने

उचित नाहीं। वह भरतकी सेवा करे अक भरत ताकी सेवा करे अर भरत अयोध्याका भार मंत्रीनिको सौंप पृथिवीके वश करनेके निमित्त समुद्रके पार जाय अक और भांति जाय अर तेरा स्वामी ऐसे गर्वके वचन कहे है सो गर्दभ, मातें हाथीकी न्याई गाजे है अथवा ताकी मृत्यु निकट है तातैं ऐसे वचन कहे है अथवा वायुके वश है राजा दशरथको वैराग्यके योगते तपोवनको गए जान वह दुष्ट ऐसी बात कहे है। सो यद्यपि तातकी क्रोधरूप अग्नि मुक्तिकी अभिलाषाकर शांत भई, तथापि पिताकी अग्निसे हम स्फुलिंग समान निकसे हैं सो अति वीर्यरूप काष्ठको भस्म करने समर्थ हैं। हाथीनिके रुधिररूप कीच कर लाल भए हैं केश जाके ऐसा जो सिंह सो शांत भया, तो ताका बालक हाथिनिके निपात करने समर्थ है। ये वचन कह शत्रुघन वलता जो वांसोंका वन ता समान तडतडात कर महाक्रोधायमान भया। अर सेवकोंको आज्ञा करी जो या दूतका अपमान कर काढ देवो, तब आज्ञा प्रमाण सेवकोंने अपराधीको स्वानकी न्याई तिरस्कारकर काढ दिया, सो पुकारता नगरीके बाहिर गया। धूलिकरि धूसरा है अंग जाका दुरवचनकरि दग्ध अपने धनी पै जाय पुकारा, अर राजा भरत समुद्र समान गम्भीर परमार्थका जाननहारा अपूर्व दुर्वचन सुन कछू एक कोपको प्राप्त भया। भरत शत्रुघन दोऊ भाई नगरते सेनासहित शत्रुपर निकसे अर मिथला नगरीका धनी राजा जनक अपने भाई कनक सहित बडी सेनासूं आय भेला भया अर सिंहोदरको आदि दें अनेक राजा भरतसे आय मिले, भरत बडी सेना सहित नन्द्यावर्त पुरके धनी अतिवीर्यपर चढा, पिता समान प्रजाकी रक्षा करता संता, कैसा है भरत न्यायविषे प्रवीण है अर राजा अतिवीर्य भी दूतके वचन सुन परम क्रोधको प्राप्त भया, क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र ता समान भयानक सर्व सामंतानिकरि मंडित भरतके ऊपर जाइबेको उद्यमी भया है। यह समाचार सुन श्रीरामचन्द्र अपनी ललाट दूजके चन्द्रमा समान वक्रकर पृथिवीधरसूं कहते भए। जो अतिवीर्यको भर-

तसे ऐसा करना उचित है क्योंकि जाने पिता समान वडे भाईका अनादर किया । तब पृथिवीधरने रामसे कही वह दुष्ट है हम प्रबल जान सेवा करे हैं । तब मंत्रकर अतिवीर्यको जुवाब लिखा, कि मैं कागदके पीछे ही आऊं हूं अर दूतको विदा किया । बहुरि श्रीरामसूं कहता भया अतिवीर्य महाप्रचंड है तातैं मैं जाऊं हूं । तब श्रीरामने कही तुम तो यहां ही रहो अर मैं तिहारे पुत्रको अर तिहारे जवांई लक्ष्मणको ले अतिवीर्यके समीप जावूंगा । ऐसा कहकर रथपर चढ वडी सेना सहित पृथिवीधरके पुत्र को लार लेय सीता अर लक्ष्मण सहित नन्द्यावर्त नगरीको चले, सो शीघ्र गमनकर नगरके निकट जाय पहुंचे । वहां पृथिवीधरके पुत्रसहित स्नान भोजनकर राम लक्ष्मण अर सीता ये तीनो मंत्र करते भए । जानकी श्रीरामसूं कहती भई । हे नाथ ! यद्यपि मेरे कहिवेका अधिकार नाहीं, जैसे सूर्यके प्रकाश होते नक्षत्रका उद्योत नाहीं, तथापि हे देव ! हितकी वांछाकर मैं कछू इक कहूं हूं जैसे बांसनितैं मोती लेना तैंसे हम सारिखनिते हितकी बात लेनी काहू एक वांसके वीडेविषै मोती निपजे हैं । हे नाथ ! यह अतिवीर्य महासेनाका स्वामी क्रूरकर्मी भरतकर कैसे जीता जाय । तातैं याके जीतनेका उपाय शीघ्र चिंतवना, तुमसे अर लक्ष्मणते कोई कार्य असाध्य नाहीं तब लक्ष्मण बोले । हे देवी ! यह कहा कहो हो आज अथवा प्रभात इस अणुवीर्यको मेरे कर हता ही जानो । श्रीरामके चरणारविंदकी जो रजकर पवित्र है सिर मेरा मेरे आगे देव भी टिक नाहीं सके, मनुष्य क्षुद्रवीर्यकी तो कहा बात, जबतक सूर्य अस्त न होय तातें पहिले ही या क्षुद्रवीर्यको मूवा ही देखियो, यह लक्ष्मणके वचन सुन पृथिवीधरका पुत्र गर्जन कर ऐसे ही कहता भया । तब श्रीराम भौंह फेर ताहि मनेकर लक्ष्मणसे कहते भए । महाधीरवीर है मन जाका हे भाई ! जानकीने कही सो युक्त है यह अतिवीर्य बलकर उद्धत है रणसंग्रामविषै भरतके वश करनेका पात्र नाहीं, भरत याके दसवें भाग भी नाहीं । यह दवानल समान याका वह मतंग गज कहा करें, यह

हाथीनिकरि पूर्ण घोडनिकर पूर्ण रथ पयादोनिकर पूर्ण याको जीतने समर्थ भरत नाहीं, जैसे केसरीसिंह महाप्रबल है परंतु विंध्याचल पर्वतके ढाहिवे समर्थ नाहीं, तैसे भरत याको जीते नाहीं, सेनाका प्रलय होवेगा। जहां निःकारण संग्राम होय वहां दोनों पक्षानिके मनुष्यनिका क्षय होय अर यदि इम दुरात्मा अतिवीर्यने भरतको वश किया, तब रघुवंशीनिके कष्टका कहा कहना अर इनविषे संधि भी सूझे नाहीं, शत्रुघन अतिमानी बालक सो उद्धत वैरीसे दोष किया, यह न्यायविषे उचित नाहीं। अन्धेरी रात्रिविषे रौद्रभूत सहित शत्रुघनने दूरके दौरा जाय अतिवीर्यके कटकविषे धाडा दिया, अनेक योधा मारे बहुत हाथी घोडे काम आए अर पवन सारिखे तेजस्वी हजारों तुरंग अर सातसे अंजनगिरि समान हाथी लेगया। सो तूने कहा लोगनिके मुखते न सुनी, यह समाचार अतिवीर्य सुन महाक्रोधको प्राप्त भया अर अब महा सावधान है रणका अभिलाषी है अर भरत महामानी है सो यासों युद्ध छोड संधि न करे तातैं तू अतिवीर्यको वशकर तेरी शक्ति सूर्यको भी तिरस्कार करने समर्थ है अर यहांते भरत हु निकट है सो हमको आपा न प्रकाशना जे मित्रको न जनावें अर उपकार करे ते अद्भुत पुरुष प्रशंसा करने योग्य हैं। जैसे रात्रिका मेघ, या भांति मंत्रकर रामको अतिवीर्यके पकडनेकी बुद्धि उपजी, रात्रि तो प्रमाद रहित होय समीचीन लोगनिते कथाकर पूर्ण करी, सुखसों निशा व्यतीत भई, प्रात समय दोऊ वीर उठकर प्रात क्रिया कर एक जिनमंदिर देखा, सो ताविषै प्रवेशकर जिनेंद्रका दर्शन किया, वहां आर्यिकानिका समूह विराजता हुता तिनकी बंदना करी, अर आर्यिकानिकी जो गुरानी वरधर्मा महा शास्त्रकी वेत्ता सीताको याके समीप राखी, आप भगवानकी पूजाकर लक्ष्मण सहित नृत्यकारणी स्त्रीका भेष कर लीला सहित राजमंदिरकी तरफ चाले, इंद्रकी अप्सरा तुल्य नृत्यकारणीको देख नगरके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए। लार लागे ये महा आभूषण पहिरे सर्व लोकके मन अर नेत्र हरते राज द्वार गए,

चोवीसौ तीर्थंकरनिके गुण गाए, पुराणोंके रहस्य बताए, प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके, इनकी ध्वनि राजा सुन इनके गुणनिका खैंचा समीप आया, जैसे रस्सीका खैंचा जलकेविषै काष्ठका भार आवे, नृत्यकारणीने नृपके समीप नृत्य किया, रेचक कहिये भ्रमण अंग मोडना, मुलकना, अवलोकना, भौंहोंका फेरना, मंद मंद हंसना, जंघा वहुरि कर पल्लव तिनका हलावना, पृथिवीको स्पर्शि शीघ्र ही पगनिका उठावना, रागका दृढ करना, केशरूप फांसका प्रवर्तना, इत्यादि चेष्टारूप काम वाणनिकारि सकल लोकनिको वींधे। स्वरनिके ग्राम यथा स्थान जोडनेकरि अर वीणके वजायवेकर सवनिको मोहित किए, जहां नृत्यकी खडी रहे वहां सकल भावके नेत्र चले जांय, रूपकर सवनिके नेत्र, स्वरकर सवनिके श्रवण, गुणकर सबनिके मन, बांध लिए, गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक! जहां श्रीराम लक्ष्मण नृत्य करें, अर गावें वजावें तहां देवनिके मन हरे जांय तो मनुष्यनिकी कहा बात, श्रीऋषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरनिके यश गाय सकल सभा वश करी, राजाको संगीतकर मोहित देख शृंगार रसमे बीर रसमें आए, आंख फेर भौंहे फेर महा प्रवल तेजरूप होय अतिवीर्यको कहते भए—हे अतिवीर्य ! तैं यह कहा दुष्टता आरंभी तोहि यह मंत्र कौनने दिया, तें अपने नाशके निमित्त भरतसों विरोध उपजाया, जिया चाहे तो महाविनयकर तिनको प्रसन्नकर, दास होय तिनके निकट जावो, तेरी राणी बडे वंशकी उपजी कामक्रीडाकी भूमि विधवा न होय, तोहि मृत्युको प्राप्त भए सब आभूषण डार शोभारहित होयगी जैसे चन्द्रमा विना रात्रि शोभा रहित होय, तेरा चित्त अशुभविषें आया है सो चित्तको फेर भरतको नमस्कारकर, हे नीच ! या भांति न करेगा, तो अबार ही मारा जायगा, राजा अरण्यके पोता अर दशरथके पुत्र तिनके जीवते तू कैसे अयोध्याका राज्य चाहे है जैसे सूर्यके प्रकाश होते चन्द्रमाका प्रकाश कैसे होय ? जैसे पतंग दीपविषे पड मूवा चाहे है तैसे तू मरण चाहे है राजा भरत गरुड समान महाबली तिनते तू सर्पसमान निर्बल

बराबरी करे है यह वचन भरतकी प्रशंसाके अर अपनी निंदाके नृत्यकारणीके मुखसे सुन सकल सभा सहित अतिवीर्य क्रोधको प्राप्त भया । लाल नेत्र किए जैसे समुद्रकी लहर उठे है तैसे सामंत उठे अर राजाने खड्ग हाथमें लिया, ता समय नृत्यकारणीने उछल हाथसों खड्ग खोंस लिया अर सिरके केश पकड बांध लिया अर नृत्यकारणी अतिवीर्यके पक्षी राजा तिनसों कहती भई, जीवनेकी बांछा राखो तो अतिवीर्यका पक्ष छोड भरतपै जाहु भरतकी ही सेवा करहु, तब लोकनिके मुखते ऐसी ध्वनि निकसी महा शोभायमान गुणवान भरत भूप जयवंत होऊ । सूर्य समान है तेज जाका न्यायरूप किरणनिके मंडलकर शोभित दशरथके वंशरूप आकाशविषै चन्द्रमासमान लोकको आनन्दकारी जाका उदय थकी लक्ष्मीरूप कुमुदनी विकासको प्राप्त होय, शत्रुनिके आतापते रहित परम आश्चर्यको करता संता अहो यह बडा आश्चर्य जाकी नृत्यकारणीकी यह चेष्टा जो ऐसे नृपतिको पकड लेय, तो भरतकी शक्तिका कहा कहना ? इंद्र हूको जीते, हम इस अतिवीर्यसों आय मिले, सो भरत महाराज कोप भए होंयगे न जानिये कहा करें । अथवा वे दयावंत पुरुष हैं जाय मिलें पायन परें, कृपा ही करेंगे, ऐसा विचारि अतिवीर्यके मित्र राजा कहते भए अर श्रीराम अतिवीर्यको पकड हाथीपर चढि जिनमंदिर गए । हाथीसूं उतर जिनमंदिरविषै जाय भगवानकी पूजा करी, अर बरधर्मा आर्यिकाकी बंदना करी, बहुत स्तुति करी, रामने अतिवीर्य लक्ष्मणको सौंपा सो लक्ष्मणने केस गह दृढ बांधा तब सीता कही ।

याहि ढीला करो पीडा मत देवो शांतता भजो । कर्मके उदयते मनुष्य मति हीन होय जाय हैं आपदा मनुष्यनि में ही होय बडे पुरुषनि को सर्वथा पर की रक्षा ही करना, संतपुरुषनिको सामान्य पुरुषका हू अनादर न करना, यह तो सहस्रराजानिका शिरोमणि है ताते याहि छोड देवो तुम यह बश किया अब कृपा ही करना योग्य है । राजानिका यही धर्म है जो प्रबल शत्रुनिको पकड छोड दें यह

अनादि कालकी मर्यादा है जब या भांति सीता कही तब लक्ष्मण हाथ जोड प्रणामकर कहता भया—हे देवी! तिहारी आज्ञासे छोडबेकी कहा बात? ऐसा करूं जो देव याकी सेवा करें, लक्ष्मणका क्रोध शांत भया तब अतिवीर्य प्रतिबोधको पाय श्रीरामसों कहता भया—हे देव! तुम बहुत भला किया ऐसी निर्मल बुद्धि मेरी अबतक कबहू न भई हुती अब तिहारे प्रतापतें भई है। तब श्रीराम ताहि हार मुकटादिरहित देख विश्रामके बचन कहते भए कैसे हैं रघुवीर सौम्य है आकार जिनका, हे मित्र! दीनता तज जैसा प्राचीन अवस्थामें धैर्य हुता, तैसा ही धर बडे पुरुषानिके ही संपदा अर आपदा दोऊ होय है। अब तोहि कुछ आपदा नहीं नंद्यावर्तपुरका राज्य भरतका आज्ञाकारी होयकर कर, तब अतिवीर्य कही मेरे अब राज्यकी वांछा नाहीं, मैं राज्यका फल पाया अब मैं और ही अवस्था धरूंगा। समुद्र पर्यन्त पृथिवीका वश करणहारा महामानका धारी जो मैं सो कैसा पराया सेवक हो राज्य करूं याविषै पुरुषार्थ कहा अर यह राज्य कहा पदार्थ जिन पुरुषनि षट् खंडका राज्य किया, वे भी तृप्त न भए। तो मैं पांचग्रामोंका स्वामी कहा अल्प विभूतिकर तृप्त होऊंगा? जन्मांतरविषै किया जो कर्म ताका प्रभाव देखो, जो मोहि कांतिरहित किया जैसे राहु चन्द्रमाको कांतिरहित करे, यह मनुष्य देह सारभूत देवन हूते अधिक मैं वृथा खोई नवां जन्म धरनेको कायर सो तुमने प्रतिबोध्या, अब मैं ऐसी चेष्टा करूं जाकर मुक्ति प्राप्त होय याभांति कहकर श्रीराम लक्ष्मणको क्षमा कराय वह राजा अतिवीर्य केसरी सिंह जैसा है पराक्रम जाका, श्रुतधरनामा मुनीश्वरके समीप हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया—हे नाथ! मैं दिगंबरी दीक्षा वांछू हूं। तब आचार्य कही यही बात योग्य। या दीक्षाकर अनन्त सिद्ध भए अर होवेंगे तब अतिवीर्य वस्त्र तज केशनिको लुंच कर महाव्रतका धारी भया। आत्माके अर्थविषे मग्न, रागादि परिग्रहका त्यागी विधिपूर्वक तप करता पृथिवी पर विहार करता भया। जहां मनुष्यनिका संचार नाहीं वहां रहे। सिंहादि क्रूरजीवनिकर युक्त जो

महागहन वन अथवा गिरि शिखर गुफादि तिनविषै निर्भय निवास करै ऐसे अतिवीर्य स्वामीको नमस्कार होवे तजी है समस्त परिग्रहकी आशा जिनने अर अंगीकार किया है चारित्रका भार जिनने, महा शीलके धारक नानाप्रकार तपकर शरीरको शोषणहारे प्रशंसा योग्य महामुनि सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चारित्र रूप सुन्दर हैं आभूषण अर दशों दिशा ही वस्त्र जिनके, साधुनिके जे मूलगुण उत्तरगुण वे ही संपदा, कर्म हरिबेको उद्यमी संजमी मुक्तिके वरयोगीन्द्र तिनको नमस्कार होवे यह अतिबीर्य मुनिका चारित्र जो सुबुद्धि पढें सुने सो गुणों की वृद्धिको प्राप्त होंय भानु समान तेजस्वी होंय और संसार के कष्टसे निवृत्त होंय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै अतिवीर्यका

वैराग्य वर्णन करनेवाला सैंतीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३७ ॥

अथानन्तर श्रीरामचंद्र महा न्यायके वेत्ताने आतिवीर्यका पुत्र जो विजयरथ ताहि अभिषेक कराय पिताके पदपर थापा, ताने अपना समस्त वित्त दिखाया सो ताका ताको दिया अर ताने अपनी बहिन रत्नमाला लक्ष्मणको देनी करी सो तिनने प्रमाण करी ताके रूपको देख लक्ष्मण हर्षित भए मानों साक्षात् लक्ष्मी ही है। बहुरि श्रीराम लक्ष्मण जिनेंद्रकी पूजाकर पृथ्वीधरके विजयपुर नगरविषै वापिस गए अर भरतने सुनी जो अतिवीर्यको नृत्यकारिणीने पकडा सो विरक्त होय दीक्षा धरी, तब शत्रुघ्न हास्य करने लगा। तब ताहि मनेकर भरत कहते भए—अहो भाई! राजा अतिवीर्य धन्य है जे महादुखरूप विषयों को तज शांतिभावको प्राप्त भए वे महा स्तुति योग्य हैं तिनकी हांसी कहा? तपका प्रभाव देखो जो रिपु हू प्रणाम योग्य गुरु होय हैं, यह तप देवनिको दुर्लभ है या भांति भरतने अतिवीर्यकी स्तुति करी।

ताही समय अतिवीर्यका पुत्र विजयरथ आया अनेक सामंतनिसहित सो भरतको नमस्कारकर तिष्ठा, क्षणिक और कथाकर जो रत्नमाल लक्ष्मणको दई ताकी बडी बहिन विजयसुंदरी नानाप्रकार आभूषण की धरणहारी भरतको परणाई अर बहुत द्रव्य दिया सो भरत ताकी बहिन परण बहुत प्रसन्न भए। विजयरथते बहुत स्नेह किया, यही बडोनिकी रीति है अर भरत महा हर्ष थकी पूर्ण है मन जाका, तेज तुरंगपर चढकर अतिवीर्य मुनिके दर्शनको चला सो जा गिरिपर मुनि विराजे हुते वहां पहिले मनुष्य देख गए हुते सो लार हैं तिनको पूछते जाय हैं, कहां महामुनि ? कहां महामुनि ? वे कहे हैं आगे विराजे हैं। सो जा गिरिपर मुनि हुते वहां जाय पहुंचे, कैसा है गिरि ? विषम पाषाणनिके समूहकरि महा अगम्य अर नानाप्रकारके वृक्षनिकरि पूर्ण पुष्पनिकी सुगंधकर महासुगंधित अर सिंहादिक क्रूर जीवनिकरि भरा, सो राजा भरत अश्वते उतर महाविनयवान मुनिके निकट गए। कैसे हैं मुनि ? रागद्वेष रहित हैं। शांत भई हैं इंद्रियां जिनकी, शिलापर विराजमान निर्भय अकेले जिन कलपी अतिवीर्य मुनींद्र महातपस्वी ध्यानी मुनिपदकी शोभाकरि संयुक्त तिनको देख भरत आश्चर्यको प्राप्त भया। फूल गए हैं नेत्र कमल जाके, रोमांच होय आए। हाथ जोड नमस्कारकर साधुके चरणारविंदकी पूजाकर महा नम्रीभूत होय मुनिभक्तिविषै है प्रेम जाका, सो स्तुति करता भया—हे नाथ ! परमतत्त्वके वेत्ता तुम ही या जगतविषै शूरवीर हो, जिनने यह जैनेंद्री दीक्षा महादुर्द्धर धारी जे महंत पुरुष विशुद्ध कुलमें उत्पन्न भए हैं तिनकी यही चेष्टा है। या मनुष्य लोकको पाय जो फल बडे पुरुष बांछे हैं सो आपने पाया अर हम या जगतकी मायाकरि अत्यंत दुखी हैं। हे प्रभो ! हमारा अपराध क्षमा करहु, तुम कृतार्थ हो पूज्य पदको प्राप्त भए। तुमको बारम्बार नमस्कार होहु ऐसा कहकर तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड नमस्कार कर मुनि संबंधी कथा करता २ गिरिते उतर तुरंगपर चढ हजारों सुभटनिकर संयुक्त अयोध्या आया।

समस्त राजानिके निकट सभामें कहा कि वे नृत्यकारणी समस्त लोकानिके मनको मोहित करनी अपने जीवितविषै हू निर्लोभ प्रबल नृपनिको जीतनहारी कहां गई ? देखो आश्चर्यकी वात, अतिवीर्यके निकट मेरी स्तुति करें अर ताहि पकडें, स्त्रीवर्गविषै ऐसी शक्ति कहांते होय ? जानिए है जिनशासनकी देविनिने यह चेष्टा करी। ऐसा चिंतवन करता संता प्रसन्न चित्त भया अर शत्रुघन नानाप्रकारके धान्यकर मंडित जो धरा ताके देखनेको गया, जगतविषै व्याप्त है कीर्ति जाकी, बहुरि अयोध्या आया, परम प्रतापको धरे अर राजा भरत अतिवीर्यकी पुत्री विजयसुंदरीसहित सुख भोगता सुखसों तिष्ठे जैसे सुलोचनासहित मेघेश्वर तिष्ठा यह तो कथा यहां ही रही आगे श्रीराम लक्ष्मणका वर्णन करे हैं।

अथानन्तर राम लक्ष्मण सर्व लोकको आनन्दके कारण कैयक दिन पृथ्वीधरके पुरविषै रहे। जानकीसहित मंत्रकर आगे चलवेको उद्यमी भए, तब सुंदर लक्षणकी धरणहारी बनमाला लक्ष्मणते कहती भई, नेत्र सजल होय आए। हे नाथ ! मैं मंदभागिनी मोहि आप तज जावो हो तो पहिले मरण ते कहा बचाई, तब लक्ष्मण बोले—हे प्रिये ! तू विषाद मत करै, थोडे दिनमें तेरे लेनेको आवे हैं, हे सुन्दर-बदनी ! जो तेरे लेयवेको शीघ्र न आवें तो हमको वह गति हो जो सम्यग्दर्शनरहित मिथ्यादृष्टिकी होय है। हे वल्लभे ! जो शीघ्र ही तेरे निकट न आवें तो हमको वह पाप होय जो महामानकर दग्ध साधुनिके निंदकानिके होय। हे गजगामिनी ! हम पिताके वचन पालिवे निमित्त दक्षिणके समुद्रके तीर निसंदेह जाय हैं। मलयाचलके निकट कोई परम स्थानककर तोहि लेने आवेंगे। हे शुभमते, तू धीर्य रख, या भांति कहकर अनेक सौंगधकर अति दिलासा देय आप सुमित्राके नन्दन लक्ष्मण श्रीरामके संग चलनेको उद्यमी भए। लोकनिको सूते जान रात्रिको सीतासहित गोप्य निकसे। प्रभातविषै इनको न देखकर नगरके लोक परम शोकको प्राप्त भए। राजाको अति शोक उपजा, बनमाला लक्ष्मण विना

घर सूना जानती भई, अपना चित्त जिनशासनविषे लगाय धर्मानुरागरूप तिष्ठी। राम लक्ष्मण पृथिवी विषे विहार करते नर नारिनिको मोहते पराक्रमी पृथिवीको आश्चर्यके कारण धीरे २ लीलाते विचरै हैं। जगतके मन अर नेत्रनिको अनुराग उपजावते रमै हैं। इनको देख लोक विचारै हैं जो यह पुरुषोत्तम कौन पवित्र गोत्रविषे उपजे हैं। धन्य है वह माता जाकी कुक्षिविषे ये उपजे अर धन्य हैं वे नारी जिनको ये परणे, ऐसा रूप देवनिको दुर्लभ, यह सुन्दर कहांते आए अर कहां जाय हैं? इनके कहा वांछा है। परस्पर स्त्रीजन ऐसी वार्ता करै हैं। हे सखी! देखो दोऊ कमल नेत्र चंद्रमा सारिखे अद्भुत वदन जिनके अर एक नारी नागकुमारी समान अद्भुत देखी। न जानिये वे सुर हुते वा नर हुते। हे मुग्धे! महा पुण्य विना उनका दर्शन नाहीं। अब तो वे दूर गए पाछे फिरो, वे नेत्र अर मनके चोर जगतका मन हरते फिरै हैं इत्यादि नर नारिनिके आलाप सुनते सबको मोहित करते वे स्वेच्छा विहारी शुद्ध हैं चित्त जिनके, नाना देशनिविषे विहार करते क्षेमांजलि नामा नगरविषे आए ताके निकट कारी घटा समान सघन वनविषे सुखसे तिष्ठे जैसे सौमनस वनमें देव तिष्ठै, तहां लक्ष्मण महासुंदर अन्न अर अनेक व्यंजन तैयार किये अर दाखोंका रस सो श्रीराम सीताने लक्ष्मणसहित भोजन किया॥

अथानन्तर लक्ष्मण श्रीरामकी आज्ञा लेय क्षेमांजलि नाम पुरके देखनेको चले, महासुन्दर माला पहिरे अर पीताम्बर धारे सुंदर है रूप जिनका, नानाप्रकारकी बेल वृक्ष तिनकरि युक्त वन अर निर्मल जलकी भरी नदी अर नानाप्रकारके क्रीडागिरि अनेक धातुके भरे अर ऊंचे २ जिनमंदिर अर मनोहर जलके निर्वाण अर नानाप्रकारके लोक तिनको देख नगरविषे प्रवेश किया। कैसा है नगर? नानाप्रकारके व्यापारकर पूर्ण सो नगरके लोक इनका अद्भुत रूप देख परस्पर वार्ता करते भए, तिनके शब्द इनने सुने जो या नगरके राजाके जितपद्मानामा पुत्री है ताहि वह परणे जो राजाके हाथकी शक्तिकी चोट

को खाय जीवता बचे, सो कन्याकी कहा वात स्वर्गका राज्य देय तौ भी यह वात कोई न करे । शक्ति की चोटते प्राण ही जाय तब कन्या कौन अर्थ ? जगतविषै जीतव्य सर्व वस्तुते प्रिय है तातैं कन्याके अर्थ प्राण कौन देय, यह वचन सुनकर महाकौतुकी लक्ष्मण काहूको पूछते भए—हे भद्र ! यह जितपद्मा कौन है ? तब वह कहता भया—यह कालकन्या पंडित माननीय सर्व लोक प्रसिद्ध तुमने कहा न सुनी। या नगरका राजा शत्रुदमन जाके राणी कनकप्रभा ताके जितपद्मा पुत्री रूपवंती गुणवंती जाके बदन की कांतिकरि कमल जीता है अर गातकी शोभाकर कमलनी जीती सो तातैं जितपद्मा कहावै है। नवयौवन मंडित सर्व कला पूर्ण अद्भुत आभूषणकी धरणहारी ताहि पुरुषका नाम रुचै नाहीं, देवनिका दर्शन हू अप्रिय मनुष्यानिकी तो कहा वात ? जाके निकट कोई पुल्लिंग शब्दका उच्चारण हू न कर सके, यह कैलाशके शिखर समान जो उज्ज्वल मंदिर ताविषै कन्या तिष्ठै है। सैकडों सहेली जाकी सेवा करै हैं जो कोई कन्याके पिताके हाथकी शक्तिकी चोटतें बचे ताहि कन्या वरे, लक्ष्मण यह वार्ता सुन आश्चर्यको प्राप्त भया अर कोप हू उपजा, मनमें विचारी महागर्वित दुष्ट चेष्टासंयुक्त यह कन्या ताहि देखूं, यह चिंतवन कर राजमार्ग होय विमान समान सुन्दर घर देखता अर मदोन्मत्त हाथी कारी घटा समान अर तुरंग चंचल अवलोकता अर नृत्यशाला निरखता राजमंदिरविषै गया। कैसा है राजमंदिर ? अनेक प्रकारके झरोखानिकर शोभित नानाप्रकार ध्वजानिकरमंडित शरदके बादर समान उज्ज्वल महामनोहर रचनाकर संयुक्त ऊंचे कोटकर वेष्टित सो लक्ष्मण जाय द्वारपर ठाढा भया, इंद्रके धनुष समान अनेक वर्णका है तोरण जहां, सुभटानिके समूह अनेक देशानिके नानाप्रकार भेट लेयकर आए हैं, कोई निकसे हैं कोई जाय हैं, सामंतनिकी भीड होय रही है। लक्ष्मणको द्वारमें प्रवेश करता देख द्वारपाल सौम्य वाणीसूं कहता भया—तुम कौन हो अर कौनकी आज्ञाते आए हो ? कौन प्रयोजन राजमंदिरमें प्रवेश

करो हो ? तब कुमारने कही राजाको देखा चाहै हैं तू जाय राजासों पूछ, तब वह द्वारपाल अपनी ठौर दूजेको राख आप राजासे जाय विनती करता भया—हे महाराज ! आपके दर्शनको एक महारूपवान पुरुष आया है, द्वारे तिष्ठै है, नील कमल समान है वर्ण जाका, अर कमल लोचन महाशोभायमान सौम्य शुभ मूर्ति है । तब राजाने प्रधानकी ओर निरख आज्ञा करी आवै, तब द्वारपाल लक्ष्मणको राजाके समीप लेय गया, सो समस्त सभा याको अति सुन्दर देख हर्षकी वृद्धिको प्राप्त भई, जैसे चन्द्रमाको देख समुद्रकी शोभा वृद्धिको प्राप्त होय, राजा याको प्रणामरहित देदीप्यमान विकट स्वरूप देख कछु इक विकार को प्राप्त हो पूछता भया । तुम कौन हो, कौन अर्थ कहांते यहां आए हो ? तब लक्ष्मण वर्षाकालके मेघसमान शब्द करते भए । मैं राजा भरतका सेवक हूं पृथिवीके देखनेकी अभिलाषाकरि विचरूं हूं । तेरी पुत्रीका वृत्तांत सुन यहां आया हूं । यह तेरी पुत्री महादुष्ट मारणेवाली गाय है । नहीं भग्न भए हैं मानरूपी सींग जाके यह सर्व लोकनिको दुःखदायिनी वर्ते है तब राजा शत्रुदमनने कही मेरी शक्तिको जो सहार सके, सो जितपद्माको बरे, तब लक्ष्मण कहता भया । तेरी एक शक्तिकरि मेरे कहा होय । तू अपनी समस्त शक्तिकरि मेरे पंच शक्ति लगाय, या भांति राजाके अर लक्ष्मणके विवाद भया । ता समय झरोखाते जितपद्मा लक्ष्मणको देख मोहित भई अर हाथ जोड इशारा कर मने करती भई, जो शक्तिकी चोट मत खावो । तब आप सैन करते भए तू डरे मत या भांति समस्याविषै ही धीर्य बंधाया अर राजासूं कही काहे कायर होय रहा है, शक्ति चलाय अपनी शक्ति हमको दिखा, तब राजा कही मूवा चाहे है, तो झेल, महाकोंपकर प्रज्वलित अग्नि समान एक शक्ति चलाई, सो लक्ष्मणने दाहिने करमें ग्रही जैसे गरुड सर्पको ग्रहे अर दूसरी शक्ति दूसरे हाथते गही अर तीजी चौथी दोनों कांखविषै गही सो चारों शक्तिनिको गहे लक्ष्मण ऐसा शोभे है मानो चोदंता हस्ती है तब राजाने पांचवीं शक्ति चलाई सो दांत-

निते गही जैसे मृगराज मृगीको गहे। तब देवानिके समूह हर्षित होय पुष्पवृष्टि करते भए अर दुन्दुभी बाजे बाजते भए। लक्ष्मण राजासूं कहते भए और है तो और भी चला, तब सकल लोक भयकर कंपायमान भए। राजा लक्ष्मणका अखंडबल देख आश्चर्यको प्राप्त भया। लज्जाकर नीचा होय गया अर जितपद्मा लक्ष्मणके रूप अर चरित्र कर खैंची थकी आय ठाढी भई, वह कन्या सुन्दरवदनी मृगनयनी लक्ष्मणके समीप ऐसी शोभती भई, जैसे इंद्रके समीप शची होय। जितपद्माको देख लक्ष्मणका हृदय प्रसन्न भया। महा संग्रामविषै भी जाका चित्त स्थिर न होय, सो याके स्नेहसे वशीभूत भया, लक्ष्मण तत्काल विनयकर नम्रीभूत होय राजाको कहता भया—हे माम! हम तुम्हारे बालक हैं। हमारा अपराध क्षमा करहु, जे तुम सारिखे गम्भीर नर हैं ते बालकानिकी अज्ञान चेष्टा कर अर कुवचन कर विकारको नाहीं प्राप्त होय हैं। तब शत्रुदमन आति हर्षित होय हाथी सूंड समान अपनी भुजानिकर कुमारसे मिला अर कहता भया—हे धीर! मैं महायुद्धविषै माते हाथिनिको क्षणमात्रविषै जीतनहारा सो तूने जीता अर बनके हस्ती पर्वत समान तिनको मद रहित करनहारा जो मैं सो तुम मोहि गर्वरहित किया। धन्य तिहारा पराक्रम, धन्य तिहारा रूप, धन्य तिहारे गुण, धन्य तिहारी निगर्वता, महा विनयवान अद्भुत चरित्रके धरणहारे तुमसे तुमही हो, या भांति राजाने लक्ष्मणके गुण सभाविषै वर्णन किये। तब लक्ष्मण लज्जाकर नीचा होयगया। अर राजाकी आज्ञाकर मेघकी ध्वनि समान बादित्रानिके शब्द सेवक करते भए अर याचकानिको आतिदान देय उनकी इच्छा पूर्ण करते भए। नगरकेविषै आनन्द वर्ता, राजाने लक्ष्मणसूं कही—हे पुरुषोत्तम! मेरी पुत्रीका तुम पाणिग्रहण किया चाहो हो तो करो, लक्ष्मणने कही मेरे बडे भाई अर भावज नगरके निकट तिष्ठे हैं तिनको पूछो तिनकी आज्ञा होय सो तुमको हमको करनी उचित है। वे सर्व नीके जाने हैं। तब राजा पुत्रीको अर लक्ष्मणको रथमें चढाय सर्व कुटुम्ब सहित

रघुवीर पै चला, सो क्षोभको प्राप्त हुआ जो समुद्र ताकी गर्जना समान याकी सेनाका शब्द सुन कर अर धूलके पटल उठते देखकर सीता भयभीत होय कहती भई—हे नाथ ! लक्ष्मणने कुछ उद्धत चेष्टा करी या दिशाविषै उपद्रव दृष्टि आवे है तातैं सावधान हो, जो कुछ करना होय सो करो। तब आप जानकीको उरसे लगाय कहते भए—हे देवी ! भय मत करहु ऐसा कहकर उठे धनुष उपर दृष्टि धरी, तब ही मनुष्यनिके समूहके आगे स्त्रीजन सुंदर गान करती देखीं बहुरि निकट ही आईं, सुंदर हैं अंग जिनके, स्त्रिनिको गावती अर नृत्य करती देख श्रीरामको विश्वास उपजा, सीतासहित सुखसे विराजे। स्त्रीजन सर्व आभूषण मंडित अति मनोहर मंगल द्रव्य हाथमें लिये हर्षके भरे हैं नेत्र जिनके, रथसूं उतर कर आईं, अर राजा शत्रुदमन भी बहुत कुटुंब सहित श्रीरामके चरणारविंदको नमस्कार कर बहुत विनयसूं बैठा लक्ष्मण अर जितपद्मा एक साथ रथविषै बैठे आए हुते, सो उतर कर लक्ष्मण श्रीरामचन्द्रको अर जानकीको सीस निवाय प्रणामकर महा विनयवान दूर बैठा, सो श्रीराम राजा शत्रुदमनसे कुशल प्रश्न वार्ता करि सुखसूं विराजे। रामके आगमनकरि राजाने हर्षित होय नृत्य किया, महा भक्तिकरि नगरमें चलनेकी विनती करी, श्रीराम अर सीता अर लक्ष्मण एक रथविषै विराजे। परम उत्साहसूं राजाके महल पधारे। मानों वह राजमंदिर सरोवर ही है स्त्री रूप कमलनिते भरा लावण्यरूप जल है जाविषै शब्द करते जे आभूषण तेई हैं सुंदर पक्षी जहां, यह दोऊ वीर नवयौवन महाशोभासे पूर्ण कैयक दिन सुखसे विराजे, राजा शत्रुदमन करे है सेवा जिनकी।

अथानंतर सर्वलोकके चित्तको आनंदके करणहारे राम लक्ष्मण महाधीर वीर सीतासहित अर्धरात्रिको उठ चले, लक्ष्मणने प्रियवचनकर जैसे बनमालाको धीर्य बंधाया हुता तैसे जितपद्माको धीर्य बंधाया, बहुत दिलासाकर आप श्रीरामके लार भए, नगरके सर्व लोक अर नृपको इनके चले जानेते

आति चिंता भई, धीर्य न रहा यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं हे मगधाधिपति ! ते दोऊ भाई जन्मांतरके उपार्जे जे पुण्य तिनकरि सर्व जीवानिके बल्लभ जहां जहां गमन करें तहां तहां राजा प्रजा सर्वलोक सेवा करें अर यह चाहें कि यह न जावें तो भला । सर्व इंद्रियनिके सुख अर महा मिष्ट अन्नपानादि विना ही यत्न इनको सर्वत्र सुलभ, जे पृथिवीविषै दुर्लभ वस्तु हैं ते सब इनको प्राप्त होंय, महाभाग्य भव्य जीव सदा भोगानिते उदास हैं। ज्ञानके अर विषयानिके वैर है ज्ञानी ऐसा चिंतवन करें हैं इन भोगनिकर प्रयोजन नाहीं। ये दुष्ट नाशको प्राप्त होंय या भांति यद्यपि भोगानिकी सदा निन्दा ही करे हैं भोगानिते विरक्त ही हैं दीप्तिकरि जीता है सूर्य जिनने तथापि पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावते पहाड के शिखरविषै निवास करे हैं तहां हू नानाप्रकार सामग्रीका संयोग होय है जबलग मुनिपदका उदय नाहीं तबलग देवों समान सुख भोगवे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा बचनिकाविषै जितपद्माका व्याख्यान

वर्णन करनेवाला अडतीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ३८ ॥

अथानन्तर ये दोऊ वीर महाधीर सीता सहित वनविषै आए । कैसा है वन नानाप्रकारके वृक्षानिकर शोभित अनेक भांतिके पुष्पनिकी सुगंधिताकर महासुगंध लतानिके मंडपनिकरि युक्त तहां राम लक्ष्मण रमते रमते आए । कैसे हैं दोनों समस्त देवोपुनीत सामग्रीकर शरीरका है आधार जिनके कहूं इक मूगोंके रंग समान महा सुन्दर वृक्षानिकी कूपल लेय श्रीराम जानकीके कर्णाभरण करे हैं कहूं यक छोटा वृक्षविषै लग रही जो बेल ताकर हिंडोला बनाय दोऊ भाई झोटा देय देय जानकीको झुलावे हैं अर आनन्दकी कथा कर सीताको विनोद उपजावे हैं कभी सीता रामसों कहे है—हे देव ! यह वेलि यह

वृक्ष महामनोग्य दीखे हैं अर सीताके शरीरकी सुगंधताकर भ्रमर आय लगे हैं, सो दोनो उडावे हैं या भांति नानाप्रकारके वननिविषे धीरे धीरे विहार करते दोऊ धीर मनोग्य हैं चारित्र जिनके जैसे स्वर्गके वनविषे देव रमें तैसे रमते भए, अनेक देशनिको देखते अनुक्रमकर वंशस्थल नगर आए । ते दोनों पुण्याधिकारी तिनको सीताके कारण थोडी दूर ही आवनेविषे बहुत दिन लगे सो दीर्घकाल दुःख क्लेश का देनहारा न भया सदा सुखरूप ही रहे । नगरके निकट एक बंशधर नामा पर्वत देखा, मानो पृथिवी को भेद कर निकसा है जहां बांसनिके अति समूह तिनकरि मार्ग विषम है ऊंचे शिखरनिकी छायाकरि मानों सदा संध्याको धारे है अर निर्झरनोंकर मानों हंसे है सो नगरते राजा प्रजाको निकसते देख श्रीरामचन्द्र पूछते भए । अहो कहा भयकर नगर तजो हो ? तब कोई यह कहता भया आज तीसरा दिन है । रात्रिके समय या पहाडके शिखरविषे ऐसी ध्वनि होय है जो अबतक कबहु नाहीं सुनी, पृथिवी कंपायमान होय है अर दशों दिशा शब्दायमान होय हैं । वृक्षनिकी जड उपड जाय हैं । सरोवरनिका जल चलायमान होय है । ता भयानक शब्दकर सर्व लोकनिके कान पीडित होय हैं मानों लोहेके मुदगरों कर मारे । कोई एक दुष्ट देव जगत्का कंटक हमारे मारनेके अर्थ उद्यमी होय है या गिरिपर क्रीडा करे है ताके भयकर संध्या समय लोक भागे हैं प्रभातविषे बहुरि आवे हैं, पांच कोस परे जाय रहें हैं जहां वाकी ध्वनि न सुनिये यह वार्ता सुन सीता राम लक्ष्मणसों कहती भई, जहां यह सब लोक जाय हैं वहां अपनहु चालें, जे नीतिशास्त्रके वेत्ता हैं वे देश कालको जानकर पुरुषार्थ करे हैं ते कदाचित् आपदाको नाहीं प्राप्त होय हैं तब दोऊ धीर हंसकर कहते भए । तू भयकर बहुत कायर है सो यह लोक जहां जाय हैं तहां तू भी जाहु, प्रभात सब आवें तब तू आइयो । हम तो आज या गिरिपर रहेंगे । यह अत्यन्त भयानक कौनकी ध्वनि होय है सो देखेंगे, यही निश्चय है यह लोक रंक हैं भयकर पशु बालकनिको लेय

भागे हैं । हमको काहुका भय नाहीं, तब सीता कहती भई, तिहारे हठको कौन हरिबे समर्थ, तिहारा आग्रह दुर्निवार है । ऐसा कहकर वह पतिव्रता पतिके पीछे चली खिन्न भए हैं चरण जाके पहाडके शिखर पर ऐसी शोभे मानों निर्मल चन्द्रकांति ही है श्रीरामके पीछे अर लक्ष्मणके आगे सीता कैसी सोहै मानों चन्द्रकांति अर इंद्रनीलमणिके मध्य पुष्पराग मणि ही है ता पर्वतका आभूषण होती भई । राम लक्ष्मणको यह डर है जो कहीं यह गिरिसे गिर न पडे । तातैं याका हाथ पकड लिए जाय हैं, वे निर्भय पुरुषोत्तम विषम हैं पाषाण जाके ऐसे पर्वतको उलंघकर सीतासहित शिखरपर जाय पहुंचे । तहां देशभूषण अर कुलभूषण नामा दोय मुनि महाध्यानारूढ दोऊ भुज लुबांए कायोत्सर्ग आसन धरे खडे, परम तेजकर युक्त समुद्र सारिखे गंभीर गिरिसारिखे स्थिर शरीर अर आत्माको भिन्न भिन्न जाननहारे, मोह रहित नग्न स्वरूप यथा जातरूपके धरनहारे, कांतिके सागर नवयौवन परम सुन्दर महा संयमी श्रेष्ठ हैं आकार जिनके, जिनभाषित धर्मके आराधनहारे तिनको श्रीराम लक्ष्मण देखकर हाथ जोड नमस्कार करते भए । अर बहुत आश्चर्यको प्राप्त भए, चित्तविषै चितवते भए जो संसारके सर्व कार्य असार हैं । दुःखके कारण हैं । मित्र द्रव्य स्त्री सर्व कुटुम्ब अर इंद्रिय जनित सुख यह सब दुःख ही हैं एक धर्म ही सुखका कारण है । महा भक्तिके भरे दोऊ भाई परम हर्षको धरते विनयकरि नम्रीभूत हैं शरीर जिनके, मुनिनिके समीप बैठे । ताहीसमय असुरके आगमते महाभयानक शब्द भया । मायामई सर्प अर बिच्छु तिनकर दोनों मुनिनिका शरीर वेष्टित होय गया सर्प अति भयानक महा शब्दके करणहारे काजल समान कारे चलायमान हैं जिह्वा जिनकी अर अनेक वर्णके अतिस्थूल विच्छु तिनकरि मुनिनिके अंग बेढे देख, राम लक्ष्मण असुरपर कोपको प्राप्त भए । सीता भयकी भरी भरतारके अंगसूं लिपट गई, तब आप कहते भए तू भय मत करे, याको धीर्य बंधाय दोऊ सुभट निकट जाय सांप विच्छु मुनिनिके अंगते

दूर किये चरणारविंदकी पूजा करी अर योगीश्वरनिकी भक्ति वंदना करते भए। श्रीराम वीण लेय वजावते भए अर मधुर स्वरसे गावते भए अर लक्ष्मण गान करता भया, गानविषै ये शब्द गाये महा योगीश्वर धीर वीर मन वचन कायकर वंदनीक हैं मनोग्य है चेष्टा जिनकी देवनिहूविषै पूज्य महाभाग्यवंत जिनने अरिहंतका धर्म पाया, जो उपमा रहित अखंड महाउत्तम तीन भवनविषै प्रसिद्ध जे महामुनि जिनधर्मके धुरंधर ध्यानरूप वज्र दंडकरि महामोहरूप शिलाको चूर्ण कर डारें अर जे धर्म रहित प्राणिनिको अविवेकी जान दयाकर विवेकके मार्ग लावें। परम दयालु आप तिरें औरनिको तारें। या भांति स्तुति कर दोऊ भाई ऐसे गावें, जो वनके तिर्यंचनिके हू मन मोहित भए अर भक्तिकी प्रेरी सीता ऐसा नृत्य करती भई, जैसा सुमेरुकेविषै शची नृत्य करे। जाना है समस्त संगीत शास्त्र जाने सुंदर लक्षणको धरे अमोलकहार मालादि पहिरे परम लीलाकर युक्त दिखाई है प्रगटपणे अद्भुत नृत्यकी कला जाने सुन्दर है वाहुलता जाकी हाव भावादिविषै प्रवीण मंद मंद चरणनिको धरती महा लयको लिये गावती गीत अनुसार भावको वतावती अद्भुत नृत्य करती महा शोभायमान भासती भई अर असुर कृत उपद्रवको मानो सूर्य देख न सका, सो अस्त भया अर संध्याहू प्रकट होय जाती रही, आकाशविषै नक्षत्रनिका प्रकाश भया। दशों दिशाविषै अंधकार फैल गया। ता समय असुरकी मायाकरि महा रौद्र भूतनिके गण हड हड हंसते भये, महा भयंकर हैं मुख जिनके अर राक्षस खोटे शब्द करते भए अर माया मई स्यालनी मुखते भयानक अग्निकी ज्वाला काढती शब्द बोलती भई अर सैकडों कलेवर भयकारी नृत्य करते भये, मस्तक भुजा जंघादि अंगनिकी वृष्टि होती भई। अर दुर्गंध सहित स्थूल बूंद लोहूकी बरसती भई अर डाकिनी नग्न स्वरूप लावें हाडोंके आभरण पहिरे, क्रूर हैं शरीर जिनके, हाले हैं स्तन जिनके खड्ग है हाथमें जिनके, वे दृष्टिविषै आवती भई, अर सिंह व्याघ्रादिककेसे मुख तप्त लोह

समान लोचन हस्तविषै त्रिशूल धारे, होंठ डसते कुटिल हैं भौंह जिनकी, कठोर हैं शब्द जिनके, ऐसे अनेक पिशाच नृत्य करते भए। पर्वतकी शिला कम्पायमान भई अर भूकम्प भया इत्यादि चेष्टा असुरने करी, सो मुनि शुक्लध्यानविषै मग्न किछु न जानते भए। ये चेष्टा देख जानकी भयको प्राप्त भई, पतिके अंगसे लग गई, तब श्रीराम कहते भए—हे देवी! भय मत करहु सर्व विघ्नके हरणहारे जे मुनिके चरण तिनकी शरण गहहु, ऐसा कहकर सीताको मुनिके पांयन मेल आप लक्ष्मणसहित धनुष हाथविषै लिये महाबली मेघसमान गरजे, धनुषके चढायबेका ऐसा शब्द भया। जैसा वज्रपातका शब्द होय, तब वह अग्निप्रभ नामा असुर इन दोऊ वीरानिको बलभद्र नारायण जान भाग गया, वाकी सर्व चेष्टा विलाय गई। श्रीराम लक्ष्मणने मुनिका उपसर्ग दूर किया, तत्काल देशभूषण कुलभूषण मुनिनिको केवल उपजा चतुरनिकायके देव दर्शनको आए। विधिपूर्वक नमस्कारकर यथायोग्य बैठे। केवलज्ञानके प्रतापते केवलीके निकट रात दिनका भेद न रहे। भूमिगोचरी अर विद्याधर केवलीकी पूजा कर यथा योग्य बैठे, सुर नर विद्याधर सब ही धर्मोपदेश श्रवण करते भये। राम लक्ष्मण हर्षित चित्त, सीता सहित केवलीकी पूजाकर हाथ जोड नमस्कारकर पूछते भये।

हे भगवन्! असुरने आपकूं कौन कारण उपसर्ग किया अर तुम दोऊविषै परस्पर अति स्नेह काहेते भया। तब केवलीकी दिव्यध्वनि होती भई—पद्मनी नामा नगरीविषै राजा विजयपर्वत गुणरूप धान्यके उपजिवेका उत्तमक्षेत्र जाके धारणीनामा स्त्री अर अमृतसुर नामा दूत, सर्व शास्त्रनिविषै प्रवीण राज काजविषै निपुण लोकरीतिको जाने अर जाको गुणही प्रिय जाके उपभोग नामा स्त्री ताकी कुक्षि विषै उपजे उदित मुदित नामा दोय पुत्र व्यवहारमें प्रवीण सो अमृतसुर नामा दूतको राजाने कार्य निमित्त बाहिर भेजा सो वह स्वामी भक्त वसुभूतिमित्र सहित चला वसुभूति पापी याकी स्त्रीसूं आस-

क्त दुष्टचित्त सो रात्रिविषै अमृतसुर को खड्ग से मार नगरी में वापिस आया लोगानिते कही मोहि वापिस भेज दिया हैं अर ताकी स्त्री उपभोगसे यथार्थ वृत्तांत कहा तव वह कहती भई। मेरे दोऊ पुत्रनिको भी मारि जो हम दोऊ निश्चिन्त तिष्ठें। सो यह वार्ता उदितकी वहूने सुनी अर सर्व वृत्तान्त उदितसे कहा यह वहू सास के चरित्रको पहिले भी जानती हुती याको वसुभूति की वहूने समाचार कहे हुते जो परदाराके सेवन ते पतिसे विरक्त हूती सो उदित ने सव वातोंते सावधान होय मुदितको भी सावधान किया अर वसुभूतिका षड्ग देख पिताके मरणका निश्चयकर उदितने वसुभूति को मारा सो पापी मरकर म्लेछकी योनि को प्राप्त भया। ब्राह्मण हुता सो कुशीलके अर हिंसाके दोषते चांडालका जन्म पाया। एक समय मतिवर्धननामा आचार्य मुनिनिविषै महातेजस्वी पद्मनी नगरी आए सो बसंततिलकनामा उद्यानमें संघसहित विराजे अर आर्यिकानिकी गुरानी अनुधरा धर्म ध्यान विषै तत्पर सोहू आर्यिकादिनिके संघसहित आई सो नगरके समीप उपवनविषै तिष्ठी अर जा वनमें मुनि विराजे हुते तावनके अधिकारी आय राजासूं हाथ जोड विनती करते भए—हे देव! आगेको या पीछे को कहो संघ कौन तरफ जावे तव राजा कही जो कहा वात है ते कहते भए उद्यानविषै मुनि आए हैं जो मने करें तो डरें जो नहीं मनेकरें तो तुम कोपकरो यह हमको वडा संकट है स्वर्गके उद्यान समान यह वन है अव तक काहूको याविषै आने न दिया परंतु मुनीनिका कहा करें ते दिगम्बर देवनिकर न निवारे जावें हम सारखे कैसे निवारें, तव राजा कही तुम मत मने करो जहां साधु विराजें सो स्थानक पवित्र होय है सो राजा वडी विभूतिसूं मुनिनिके दर्शन को गया ते महाभाग्य उद्यानमें विराजे हुते वनकी रजकरि घूसरे हैं अंग जिनके, मुक्ति योग्य जो क्रिया ताकरि युक्त, प्रशांत हैं हृदय जिनके, कैयक कायोत्सर्ग धरे दोनों भुजा लुवांय खडे हैं कैयक पद्मासन धर विराजे हैं बेला तेला चौला पंच उपवास दस उपवास पक्षमा-

सादि अनेक उपवासनि करि शोषा है अंग जिनने, पठन पाठनविषे सावधान भ्रमर समान मधुर हैं शब्द जिनके शुद्ध स्वरूप विषे लगाया है चित्त जिनने सो राजा ऐसे मुनिनिको दूरसे देख गर्व रहित होय गजते उतर सावधान होय सर्व मुनिनि को नमस्कार कर आचार्यके निकट जाय तीन प्रदक्षिणा देय प्रणामकर पूछता भया हे नाथ जैसी तिहारे शरीर में दीप्ति है तैसे भोग नाहीं। तब आचार्य कहते भए यह कहां बुद्धि तेरी तू शूरबीर को स्थिर जाने है, यह बुद्धि संसारकी बढावन हारी है। जैसे हाथीके कान चपल तैसा जीतव्य चपल है यह देह कदलीके थंभसमान असार है अर ऐश्वर्य स्वप्न तुल्य है घर कुटम्ब पुत्र कलत्र बांधव सब असार है ऐसा जानकर या संसारकी माया विषे कहा प्रीति यह संसार दुःखदायक है। यह प्राणी अनेक बार गर्भवासके संकट भोगवे हैं। गर्भवास नरक तुल्य महा भयानक दुर्गन्ध कृमिजाल कर पूर्ण रक्त श्लेषमादिक का सरोवर महा अशुचि कर्दमका भरा है यह प्राणी मोहरूपअंधकार करि अन्धा भया गर्भवाससूं नाहीं डरे है। धिक्कार है या अत्यन्त अपवित्र देह को सर्व अशुभका स्थानक क्षणभंगुर, जाका कोई रक्षक नाहीं। जीव देहको पोषे वह याहि दुःख देय सो महाकृतघ्न नसा जालकर बेढा चर्मकरि ढका अनेक रोगानिका पुंज जाके आगमनकरि ग्लानिरूप ऐसे देह में जे प्राणी स्नेह करे हैं, ते ज्ञानरहित अविवेकी हैं। तिनके कल्याण कहांते होय है अर या शरीरविषे इंद्रिय चोर बसे हैं। ते बलात्कार धर्मरूप धनको हरे हैं। यह जीवरूप राजा कुबुद्धिरूप स्त्रीसूं रमे है, अर मृत्यु याको अचानक ग्रसा चाहै है। मनरूप माता हाथी विषयरूप वनविषे क्रीडा करै है। ज्ञानरूप अंकुशते याहि बशकर वैराग्यरूप थंभसूं विवेकी बांधे हैं। यह इंद्रियरूप तुरंग मोहरूप पताकाको धरे, पर स्त्रीरूप हरित तृणनिविषे महा लोभको धरते शरीररूप रथको कुमार्गमें पाडे हैं। चित्तके प्रेरे चंचलता धरे हैं तातैं चित्तको वश करना योग्य है। तुम संसार शरीर भोगनिते विरक्त होय भक्तिकर जिनराजको

नमस्कार करहु। निरंतर सुमरहु। जाकरि निश्चयते संसार समुद्रको तिरहु। तप संयमरूप वाणनिकरि मोहरूप शत्रुको हण लोकके शिखर अविनाशीपुरका अखंड राज्य करहु निर्भय निजपुरविषै निवास करहु। यह मुनिके मुखते वचन सुन कर राजा विजयपर्वत सुबुद्धि राज्य तज मुनि भया अर वे दूतके पुत्र दोऊ भाई उदित मुदित जिनवाणी सुन मुनि होय महीविषै विहार करते भए। सम्मेद शिखरकी यात्राको जाते हुते सो काहू प्रकार मार्ग भूल वनविषै जाय पडे। वह वसूभूति विप्रका जीव महारौद्र भील भया हुता ताने देखे। अति क्रोधायमान होय कुठार समान कुवचन बोल इनको खडे राखे अर मारनेको उद्यमी भया तब बडा भाई उदित मुदितसे कहता भया—

हे भ्रात! भय मत करहु। क्षमा ढालको अंगीकार करहु। यह मारवेको उद्यमी भया है सो हमने बहुत दिन तपसूं क्षमाका अभ्यास किया है सो अब दृढता राखनी। यह वचन सुन मुदित बोला, हम जिनमार्गके सरधानी हमको कहां भय, देह तो विनश्वर ही है अर यह वसुभूतिका जीव है जो पिताके वैरते मारा हुता। परस्पर दोऊ मुनि ए वार्ता कर शरीरका ममत्व तज कायोत्सर्ग धार तिष्ठे। वह मारवेको आया सो म्लेच्छ काहिए भील ताके पतिने मने किया, दोऊ मुनि बचाए। यह कथा सुन रामने केवलीसूं प्रश्न किया—हे देव वाने बचाए सो वासूं प्रीतिका कारण कहा? तब केवलीकी दिव्य ध्वनिविषै आज्ञा भई। एक यक्षस्थान नाम ग्राम तहां सुरप अर कर्षक दोऊ भाई हुते। एक पक्षीको पारधी जीवता पकड ग्राममें लाया सो इन दोऊ भाइनने द्रव्य देय छुडाया सो पक्षी मरकर म्लेच्छपति भया अर वे सुरप कर्षक दोऊ वीर उदित मुदित भए। ता परोपकारकर वाने इनको बचाए जो कोई जाते नेकी करै है सो वह भी तासे नेकी करे है अर जो काहूसूं बुरी करे है वाहूसे वह हू बुरी करे है। यह संसारी जीवानिकी रीति है तातैं सबनिका उपकार ही करहु। काहू प्राणीसूं बैर न करना। एक जीव दया ही मोक्षका मार्ग

है, दया विना ग्रंथानिके पढनेसूं कहा ? एक सुकृत ही सुखका कारण सो करना, वे उदित मुदित मुनि उपसर्गते छूट सम्मेदशिखरकी यात्राको गए अर अन्य हू अनेक तीर्थनिकी यात्रा करी । रत्नत्रयका आराधनकरि समाधिते प्राण तज स्वर्ग लोक गए अर वह वसुभूतिका जीव जो म्लेच्छ भया हुता सो अनेक कुयोनिविषै भ्रमणकर मनुष्य देह पाय तापसव्रत धर अज्ञान तपकर मर ज्योतिषी देवनिकेविषै अग्निकेतु नामा क्रूर देव भया अर भरतक्षेत्रके विषम अरिष्टपुर नगर जहां राजा प्रियव्रत महा भोगी ताके दो राणी महागुणवती एक कनकप्रभा दूजी पद्मावती सो वे उदित मुदितके जीव स्वर्गसूं चयकर पद्मावती राणीके रत्नरथ विचित्ररथ नामा पुत्र भए अर कनकप्रभाके वह ज्योतिषीदेव चयकर अनुधर नामा पुत्र भया । राजा प्रियव्रत पुत्रको राज्य देय भगवानके चैत्यालयविषै छह दिनका अनशन धार देह त्याग स्वर्ग लोक गया ।

अथानन्तर एक राजाकी पुत्री श्रीप्रभा लक्ष्मी समान सो रत्नरथने परणी ताकी अभिलाषा अनुधरके हुती सो रत्नरथते अनुधरका पूर्व जन्म तो वैर ही हुता बहुरि नया बेर उपजा सो अनुधर रत्नरथकी पृथ्वी उजाडने लगा । तब रत्नरथ अर विचित्ररथ दोऊ भाइनि अनुधरको युद्धमें जीत देशते निकास दिया । सो देशते निकासनेते अर पूर्व वैरते महाक्रोधको प्राप्त होय जटा अर बकलका धारी तापसी भया विषवृक्ष समान कषाय विषका भरा, अर रत्नरथ विचित्ररथ महातेजस्वी चिरकाल राज्यकर मुनि होय तपकर स्वर्गविषै देव भए । महासुख भोग तहांते चयकर सिद्धार्थ नगरके विषै राजा क्षेमंकर राणी विमला तिनके महासुंदर देशभूषण कुलभूषण नामा पुत्र होते भए । सो विद्या पढनेके अर्थ घरमें उचित क्रीडा करते तिष्ठे, ता समय एक सागरघोष नामा पंडित अनेक देशनिमें भ्रमण करता आया सो राजा पंडितको बहुत आदरसूं राखा अर ये दोऊ पुत्र पढनेको सौंपे, सो महाविनयकरसंयुक्त सर्वकला सीखीं,

केवल एक विद्या गुरुको जाने या विद्याको जाने और कुटुंबमें काहूको न जाने । तिनके एक विद्याभ्यास हीका कार्य विद्यागुरुते अनेक विद्या पढीं । सर्व कलाके पारगामी होय पितापै आए सो पिता इनको महाविद्वान सर्व कला निपुण देखकर प्रसन्न भया । पंडितको मनवांछित दान दिया । यह कथा केवली रामसूं कहे हैं, वे देशभूषण कुलभूषण हम हैं सो कुमार अवस्थामें हमने सुनी जो पिताने तिहारे विवाह के अर्थ राजकन्या मंगाई हैं । यह वार्ता सुनकर परमविभूति घरे तिनकी शोभा देखनेको नगर बाहिर जायवेके उद्यमी भए सो हमारी बहिन कमलोत्सवा कन्या झरोखेमें बैठी नगरीकी शोभा देखती हुती सो हम तो विद्याके अभ्यासी कबहूं काहूको न देखा न जाना हम न जाने यह हमारी बहिन है । अपनी मांग जान विकाररूप चित्त किया दोऊ भाइनिके चित्त चले, दोऊ परस्पर मनविषै विचारते भए याहि मैं परणूं दूजा भाई परणा चाहे तो ताहि मारूं सो दोऊके चितविषै विकार भाव अर निर्दई भाव भया । ताही समय बन्दी जनके मुख ऐसा शब्द निकसा कि राजा क्षेमंकर बिमला राणी सहित जयवन्त होवे जाके दोनों पुत्र देवन समान अर यह झरोके विषै बैठी कमलोत्सवा इनकी बाहिन सरस्वती समान दोऊ वीर महागुणवान अर बाहिन महागुणवंती ऐसी सन्तान पुण्याधिकारिनिके ही होय है । जब यह वार्ता हमने सुनी तब मनविषै विचारी अहो देखो मोह कर्म की दुष्टता, जो हमारे बाहिनकी अभिलाषा उपजी यह संसार असार महा दुःखका भरा, हाय जहां ऐसा भाव उपजे, पापके योग करि प्राणी नरक जांय वहां महादुःख भोगें, यह बिचारकर हमारे ज्ञान उपजा सो बैराग्यको उद्यमी भए । तब माता पिता स्नेहसूं व्याकुल भए । हमने सबसूं ममत्व तज दिगम्बरी दीक्षा आदरी, आकाश गामिनी रिद्धि सिद्ध भई । नाना प्रकारके जिन तीर्थादिविषै बिहार किया तपही है धन जिनके अर माता पिता राजा क्षेमंकर अगलेभी भवका पिता सो हमारे शोकरूप अग्निकर तप्तायमानहुवा सर्व आहार तज मरणको

प्राप्त भया सो गरुडेन्द्र भया। भवन वासी देवानिविषे गरुड कुमार जातिके देव तिनका आधिपति महा सुंदर महा पराक्रमी महालोचन नाम सो आयकर यह देवनिकी सभाविषे बैठा है अर वह अनुधर तापसी विहार करता कौमुदी नगरी गया अपने शिष्यनिके समूह करि बैठा तहां राजा सुमुख ताके राणी रतिवती परम सुन्दरी सैंकडा राणिनिविषे प्रधान अर ताके एक नृत्यकारणी मानो मदनकी पताका ही है, अति सुन्दर रूप अद्भुत चेष्टा की धरणहारी, ताने साधुदत्त मुनि के समीप सम्यक् दर्शन ग्रह्या, तबते कुगुरु कुदेव कुधर्म को तृणवत् जाने। ताके निकट एक दिन राजा कहा यह अनुधर तापसी महातपका निवास है। तब मदनाने कही हे नाथ! अज्ञानीका कहा तप, लोकविषे पाखण्ड रूप है यह सुनकर राजाने क्रोध किया। तू तपस्वी की निन्दा करे है, तब वाने कही आप कोप मत करहु, थोडे ही दिन विषे या की चेष्टा दृष्टि पडेगी ऐसा कहकर घर जाय अपनी नागदत्ता नामा पुत्रीको सिखाय तापसीके आश्रम पठाई, सो वह देवांगना समान परम चेष्टाकी धरणहारी महा विभ्रमरूप तापसीको अपना शरीर दिखावती भई, सो याके अंग उपंग महा सुन्दर निरखकर अज्ञानी तापसीका मन मोहित भया अर लोचन चलायमन भए जो अंगपर नेत्र गए वहां ही मन बन्ध गया, काम बाणनिकार तापसी पीडित भया व्याकुल होय देवांगना समान जो यह कन्या ताके समीप आय पूछता भया, तू कौन है अर यहां कहा आई है, संध्याकालविषे सब ही लघु वृद्ध अपने स्थानकविषें तिष्ठे है। तू महासुकुमार अकेली वनमें क्यों विचरे है, तब वह कन्या मधुर शब्दकर याका मन हरती सन्ती दीनताको लिये बोली, चंचल नील कमल समान हैं लोचन जाके, हे नाथ! दयावान् शरणागत प्रतिपाल आज मेरी माताने मोहि घरते निकास दई, सो अब मैं तिहारे भेषकर तिहारे स्थानक रहना चाहूं हूं, तुम मो सों कृपा करहु, रात दिन तिहारी सेवाकर मेरा यह लोक परलोक सुधरेगा। धर्म, अर्थ काम इनविषे कौनसा पदार्थ है जो तुमविषे

न पाइये। परम निधान हो। मैं पुण्यके योगते तुम पाये, या भांति कन्याने कही तब याका मन अनुरागी जान विकल तापसी कामकर प्रज्वलित बोला—हे भद्रे ! मैं कहा कृपा करूं, तू कृपाकर प्रसन्न होहु, मैं जन्मपर्यंत तेरी सेवा करूंगा। ऐसा कहकर हाथ चलावनेका उद्यम किया, तब कन्या अपने हाथसूं मने कर आदर सहित कहती भई—हे नाथ ! मैं कुमारी कन्या तुमको ऐसा करना उचित नाहीं, मेरी माताके घर जायकर पूछो घर भी निकट ही है जैसी मोपर तिहारी करुणा भई है, तैसे मेरी माको प्रसन्न करहु वह तुमको देवेगी, तब जो इच्छा होय सो करियो, यह कन्याके वचन सुन मूढतापसी व्याकुल होय तत्काल कन्याकी लार रात्रिको ताकी माताके पास आया, कामकर व्याकुल हैं सर्व इंद्रिय जाकी जैसे माता हाथी जलके सरोवरविषै पैठे तैसे नृत्यकारिणीके घरविषै प्रवेश किया। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसू कहे हैं।

हे राजन् ! कामकर ग्रसाहुवा प्राणी न स्पर्शै न स्वादे न सूंघे न देखे न सुने न जाने न डरे अर न लज्जा करे। महा मोहसे निरन्तर कष्टको प्राप्त होय है जैसे अन्धा प्राणी सर्पनिके भरे कूप में पडे तैसे कामान्ध जीव स्त्रीके विषयरूप विषमकूपमें पडे सो वह तापसी नृत्यकारिणीके चरणमें लोट अति अधीन होय कन्याको याचता भया। ताने तापसीको बांध राखा राजाको समस्या हुती सो राजाने आय कर रात्रिको तापसी बन्धा देखा। प्रभात तिरस्कारकरि निकास दिया सो अपमान कर लज्जायमान महा दुःखको धरता संता पृथिवी विषै भ्रमणकर मूवा अनेक कुयोनि विषै जन्म मरण किए वहुरि कर्मानुयोगकर दरिद्रीके घर उपजा जब यह गर्भमें आया तब ही याकी माताने याके पिताको क्रूर बचन कहकर कलह किया सो उदास होय विदेश गया अर याका जन्म भया। बालक अवस्था हुती तब भीलनि देशके मनुष्य बन्द किये सो याकी माताभी बन्दीमें गई सर्व कुटुम्ब रहित यह परम दुखी भया कई

एक दिन पीछे तापसी होय अज्ञान तप कर ज्योतिषी देवनि विर्षे अग्निप्रभ नामा देव भया अर एक समय अनन्तवीर्य केवलीको धर्म में निपुण जो शिष्य तिनने पूछा कैसे हैं केवली चतुरनिकाय के देव अर विद्याधर तथा भूमिगोचरी तिनकरि सेवित, हे नाथ ! मुनिसुव्रत नाथके मुक्ति गये पीछे तुम केवली भए अब तुम समान संसारका तारक कौन होयगा तब तिनने कही देश भूषण कुलभूषण होवेंगे। केवल ज्ञान अर केवल दर्शनके धरण हारे जगतमें सार जिनका उपदेश पायकर लोक संसार समुद्रको तिरेंगे। ये वचन अग्निप्रभने सुने सो सुनकर अपने स्थानक गया। इन दिनानिमें कुअवधि कर हमको इस पर्वतमें तिष्ठे जान 'अनन्तवीर्य केवलीका वचन मिथ्या करूं' ऐसा गर्वधर पूर्व वैरकर उपद्रव करनेको आया सो तुमको बलभद्र नारायण जान भयकर भाज गया। हे राम तुम चरम शरीरी तद्भव मोक्षगामी बलभद्र हो अर लक्षमण नारायण है उस सहित तुमने सेवा करी अर हमारे घातिया कर्मके क्षयसे केवल ज्ञान उपजा, याप्रकार प्राणीनिके वैरका कारण सर्व बैरानुबन्ध है ऐसा जानकर जीवानिके पूर्वभव श्रवणकर हे प्राणीहो रागद्वेष तज निश्चल होवो ऐसे महापवित्र केवलीके बचन सुन सुर नर असुर बारम्बार नमस्कार करतेभये अर भव दुःखतें डरे अर गरुडेन्द्र परम हर्षित होय केवलीके चरणारविन्दको नमस्कार कर महा स्नेहकी दृष्टि विस्तारता लहलहाट करे हैं मणि कुण्डल जाके, रघुवंशमें उद्योत करणहारे जे राम तिनसों कहता भया—हे भव्योत्तम ! तुम मुनिनिकी भक्ति करी सो मैं अति प्रसन्न भया। ये मेरे पूर्व भवके पुत्र हैं जो तुम मांगो सो मैं देहुं तब श्रीरघुनाथ क्षण एक विचार कर बोले तुम देवनिके स्वामीहो कभी हमपै आपदा परै तो चितारियो साधुनिको सेवाके प्रसादसे यह फल भया जो तुम सारिखोंसे मिलाप भया तब गरुडेन्द्रने कहा तुम्हारा वचन मैं प्रमाण किया जब तुमको कार्य पडेगा तब मैं तिहारे निकट ही हूं ऐसा कहा तब अनेक देव मेघकी ध्वनि समान वादित्रनिके नाद करते भये। साधुनिके पूर्वभव

सुन कईएक उत्तम मनुष्य मुनि भये कईएक श्रावकके व्रत धारते भए । वे देशभूषण कुलभूषण केवली जगत् पूज्य सर्व संसारके दुःखसे रहित नगर ग्राम पर्वतादि सर्व स्थानविषै विहारकर धर्मका उपदेश देते भये यह दोऊ केवलिनिके पूर्वभवका चारित्र जे निर्मल स्वभावके धारक भव्यजीव श्रवण करें, वे सूर्य समान तेजस्वी पापरूप तिमिरको शीघ्र ही हरें ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं देशभूषण कुलभूषण,

केवलीका व्याख्यान वर्णन करनेवाला उनतालीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३९ ॥

अथानन्तर केवलीके मुखते रामचन्द्रको चरम शरीरी कहिये तद्भव मोक्षगामी सुनकर सकल राजा जय जय शब्द कहकर प्रणाम करते भये अर वंशस्थलपुरका राजा सुरप्रभ महा निर्मल चित्त राम लक्ष्मण सीताकी भक्ति करता भया । महिलनिके शिखरकी कांतिसे उज्ज्वल भया है आकाश जहां, ऐसा जो नगर वहां चलनेकी राजाने प्रार्थना करी परन्तु रामने न मानी वंशगिरिके शिखर हिमाचल के शिखर समान सुन्दर जहां नलिनी बनमें महारमणीक विस्तीर्ण शिला वहां आप हंस समान विराजे । कैसा है वन ? नानाप्रकारके वृक्ष अर लतानि करि पूर्ण अर नानाप्रकारके पक्षी करे हैं नाद जहां, सुगन्ध पवन चले है । भांति भांतिके फल पुष्प तिनकरि शोभित अर सरोवरानिमें कमल फूल रहे हैं, स्थानक अति सुन्दर सर्व ऋतुकी शोभा जहां बन रही है, शुद्ध आरसीके तल समान मनोग्य भूमि पांच वर्णके रत्ननि करि शोभित जहां कुंद मौलसिरी मालती स्थलकमल जहां अशोक वृक्ष नाग वृक्ष इत्यादि अनेक प्रकारके सुगन्ध वृक्ष फल रहे हैं । तिनके मनोहर पल्लव लहलहाट करे हैं । तहां राजाकी आज्ञा कर महा भक्तिवन्त जे पुरुष तिनने श्रीरामको विराजनेके निमित्त वस्त्रानिके महा मनोहर

मण्डप बनाये सेवक जन महा चतुर सदा सावधान अति आदरके करणहारे मंगल रूप वाणीके बोलनहारे स्वामीकी भक्ति विषे तत्पर तिनने वहुत तरहके चौडे ऊंचे वस्त्रनिके मण्डप बनाये, नाना प्रकारके चित्राम हैं जिनमें अर जिन पर ध्वजा फर हरे हैं मोतिनिकी माला जिनके लटके हैं, क्षुद्र घंटिकानिके समूह कर युक्त अर जहां मणिनिकी झालर लूंब रही हैं महा देदीप्यमान सूर्यकी सी किरण धरें अर पृथिवी पर पूर्ण कलश थापे हैं अर छत्र चमर सिंहासनादि राज चिन्ह तथा सर्व सामग्री धरें हैं अनेक मंगल द्रव्य हैं ऐसे सुन्दर स्थल विषें सुख सों तिष्ठे हैं, जहां जहां रघुनाथ पांव धरें वहां वहां पृथिवी पर राजा अनेक सेवा करें। शय्या आसन मणि सुवर्णके नाना प्रकारके उपकरण अर इलायची लवंग ताम्बूल मेवा मिष्टान्न तथा श्रेष्ठ वस्त्र अद्भुत आभूषण अर महा सुगन्ध नाना प्रकारके भोजन दधि दुग्ध घृत भांति २ के अन्न इत्यादि अनुपम वस्तु लावें या भांति सर्व ठौर सब जन श्रीरामको पूजें वंशगिरि पर श्रीराम लक्ष्मण सीताके रहिवेको मण्डप रचे तिनमें किसी ठौर गीत कहीं नृत्य कहीं वाजित्र वाजे हैं। कहा सुकृतकी कथा होय है अर नृत्यकारिणी ऐसा नृत्य करें मानो देवांगनाही हैं। कहीं दान बटे हैं ऐसे मन्दिर बनाए जिनका कौन वर्णन करसके जहां सब सामग्री पूर्ण, जो याचक आवे सो विमुख न जांय दोनों भाई सर्व आभरणनि करि युक्त, सुन्दर वस्त्र धरें मनवांछित दानके करण हारे महा यशस माण्डत अर सीता परम सौभाग्यकी धरणहारी पापके प्रसंगसूं रहित शास्त्रोक्त रीतिकर रहे, ताकी महिमा कहांतक कहिए। अर वंश गिरि पर श्रीरामचन्द्रने जिनेश्वर देवके हजारों अद्भुत चैत्यालय महादृढ हैं स्तम्भ जिनके योग्य है लम्बाई चौडाई ऊंचाई जिनकी अर सुन्दर झरोखानि करि शोभित तोरण सहित हैं द्वार जिनके कोट अर खाई कर माण्डित सुन्दर ध्वजानिकरि शोभित, बन्दना के करण हार भव्यजीव तिनके मनोहर शब्द संयुक्त मृदंग वीण वांसुरी झालरी झांझ मंजीरा शंख भेरी

इत्यादि वादित्रनिके शब्दकर शोभायमान निरन्तर आरम्भए हैं महा उत्सव जहां ऐसे रामके रचे रमणीक जिन मन्दिर तिनकी पंक्ति शोभती भई। वहां पंच वर्णके प्रतिबिंब जिनेन्द्र सर्व लक्षणनि कर संयुक्त सर्व लोकनि करि पूज्य विराजते भये। एक दिन श्री राम कमललोचन लक्ष्मणसूं कहते भये—हे भाई! यहां अपने ताईं दिन बहुत बीते अर सुखसूं या गिरि पर रहे श्रीजिनेश्वरके चैत्यालय बनायवे कर पृथ्वीमें निर्मल कीर्ति भई अर या वंशस्थलपुरके राजाने अपनी बहुत सेवा करी अपने मन बहुत प्रसन्न किए अब यहांहीं रहें तो कार्यकी सिद्धि नाहीं अर इन भोगनि कर मेरा मन प्रसन्न नाहीं, ये भोग रोगके समान हैं ऐसाही जानता हूं तथापि ये भोगनिके समूह मोहि क्षणमात्र नाहीं छोडे हैं सो जबतक संयमका उदय नाहीं तबतक ये विना यत्न आय प्राप्त होय हैं। या भवमें जो कर्म यह प्राणी करे है ताका फल पर भवमें भोगवे है अर पूर्व उपार्जे जे कर्म तिनका फल वर्तमान काल विषे भोगे है या स्थलमें निवास करते अपने सुख संपदा है परन्तु जे दिन जाय हैं वे फेर न आवे। नदीका वेग अर आयुके दिन अर यौवन गए वे फेर न आवें ता करनारव नाम नदीके समीप दंडक वन सुनिये है वहां भूमिगोचरनिकी गम्यता नाहीं अर वहां भरतकी आज्ञाकाहू प्रवेश नाहीं वहां समुद्रके तट एक स्थान बनाय निवास करेंगे यह रामकी आज्ञा सुन लक्ष्मणने विनती करी—हे नाथ आप जो आज्ञा करोगे सोई होयगा ऐसा विचार दोऊ वीर महाधीर इन्द्रसारिखे भोग भोगि वंशगिरिते सीता सहित चाले राजा सुरप्रभ वंशस्थलपुरका पति लार चाला सो दूरतक गया। आप विदा किया सो मुश्किलसे पीछे बाहुडा महा शोकवन्त अपने नगरमें आया श्री रामका विरह कौन कौनको शोकवन्त न करे। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं हे राजन्! वह वंशगिरि बडा पर्वत जहां अनेक धातु सो रामचन्द्रने जिन मंदिरनिकी पंक्ति कर महा शोभायमान किया कैसे हैं जिन मन्दिर, दिशानिके समूहको अपनी कांति

करि प्रकाशरूप करे हैं ता गिरिपर श्रीरामने परम सुन्दर जिनमंदिर बनाए, सो वंशगिरि रामगिरि कहाया। या भांति पृथिवीपर प्रसिद्ध भया। रवि समान है प्रभा जाकी।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामगिरका वर्णन करनेवाला चालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४० ॥

अथानन्तर राजा अरण्यके पोता दशरथके पुत्र राम लक्ष्मण सीतासहित दक्षिण दिशाके समुद्रको चाले कैसे हैं दोऊ भाई? महा सुखके भोक्ता नगर ग्राम तिनकर भरे जे अनेक देश तिनको उलंघ कर महा वनविषै प्रवेश करते भए। जहां अनेक मृगनिके समूह हैं अर मार्ग सूझे नाहीं अर उत्तम पुरुषनिकी वस्ती नाहीं। जहां विषम स्थानक सो भील भी विचर न सकें, नानाप्रकारके वृक्ष अर बेल तिनकर भरा महा विषम अति अंधकार रूप जहां पर्वतनिकी गुफा गम्भीर निर्झरने झरें हैं। ता वनविषै जानकी प्रसंगते धीरे धीरे एक एक कोस रोज चाले दोऊ भाई निर्भय अनेक क्रीडाके करणहारे नरमदानदी पहुंचे। जाके तट महारमणीक प्रचुर तृणनिके समूह अर समानता धरे महाछायाकारी अनेक वृक्ष फल पुष्पादि करि शोभित अर जाके समीप पर्वत, ऐसे स्थानको देख दोऊ भाई वार्ता करते भए। यह वन अति सुंदर अर नदी सुन्दर ऐसा कह कर रमणीक वृक्षकी छायाविषै सीता सहित तिष्ठे, क्षण एक तिष्ठ कर तहांके रमणीक स्थानक निरख कर जल क्रीडा करते भए। बहुरि महामिष्ट आरोग्य पक्क फल फूलनिके आहार बनाए, सुखकी है कथा जिनके, तहां रसोईके उपकरण अर बासण माटीके अर बांसनिके नानाप्रकार तत्काल बनाए, महास्वादिष्ट सुंदर सुगंध आहार वनके धान सीताने तैय्यार किये, भोजनके समय दोऊ वीर मुनिके आयबेके अभिलाषी द्वारापेषणको खडे, ता समय दो चारण मुनि आए। सुगुप्ति अर गुप्ति

हैं नाम जिनके ज्योति पटल कर संयुक्त है शरीर जिनका अर सुन्दर है दर्शन जिनका, मति श्रुति अवधि तीन ज्ञान विराजमान महाव्रतके धारक परम तपस्वी सकल वस्तुकी अभिलाषा रहित निर्मल हैं चित्त जिनके, मासोपवासी महाधीर वीर शुभ चेष्टाके धरणहारे, नेत्रोंको आनन्दके करता, शास्त्रोक्त आचार कर संयुक्त है शरीर जिनका, सो आहारको आए। सो दूरते सीताने देखे, तब महा हर्षके भरे हैं नेत्र जाके अर रोमांचकर संयुक्त है शरीर जाका पतिसों कहती भई, हे नाथ हे नर श्रेष्ठ! देखो! देखो! तपकर दुर्बल शरीर दिगंबर कल्याणरूप चारण युगल आए। तब राम कही हे प्रिये! हे पंडिते! सुंदर मूर्ति! वे साधु कहां हैं हे रूप आभरणकी धरणहारी धन्य है भाग्य तेरे तूने निर्ग्रंथ युगल देखे, जिनके दर्शनते जन्म जन्मके पाप जाहिं; भक्तिवंत प्राणीके परम कल्याण होय, जब या भांति रामने कही तब सीता कहती भई। ये आए ये आए तब ही दोनों मुनि रामके दृष्टि परे, जीव दयाके पालक ईर्या समति सहित समाधान रूप हैं मन जिनके तब श्रीरामने सीता सहित सन्मुख जाय नमस्कारकर महाभक्ति युक्त श्रद्धा सहित मुनिनिको आहार दिया, आरणी भैंसोंका अर वनकी गायोंका दुग्ध अर छुहारे गिरी दाख नानाप्रकारके वनके धान्य सुन्दर घी मिष्टान्न इत्यादि मनोहर वस्तु विधिपूर्वक तिनते मुनिनिको पारणा करावते भए। वे मुनि भोजनके स्वादके लोलुपतासूं निरंतराय आहार करते भए। जब रामने अपनी स्त्री सहित भक्तिकर आहार दिया, तब पंचाश्चर्य भए रत्ननिकी वर्षा पुष्पवृष्टि शीतल मंद सुगंध पवन अर दुन्दुभी बाजे, जय जयकार शब्द सो जा समय रामके मुनिनिका आहार भया ता समय वनविषै एक गृध पक्षी अपनी इच्छाकर वृक्षपर तिष्ठै था सो अतिशय कर संयुक्त मुनिनिको देख अपने पूर्वभव जानता भया कि कोई एकभव पहिले मैं मनुष्य हुता प्रमादी अविवेक कर जन्म निष्फल खोया, तप संयम न किया, धिक्कार मो मूढबुद्धिको अब मैं पापके उदयकरि खोटी योनिविषै आय पड़ा, कहा उपाय

करूं, मोहि मनुष्य भवविषै पापी जीवनि भरमाया, वे कहिवेके मित्र अर महाशत्रु सो उनके संग मैं धर्म रत्न तजा अर गुरुनिके वचन उलंघ महापाप आचरा। मैं मोहकर अंध अज्ञान तिमिरकर धर्म न पहिचाना। अब अपने कर्म चितार उरविषै जलूं हूं। बहुत चिंतवनकर कहा दुखके निवारनेके अर्थ इन साधुनिका शरण गहूं ये सर्व सुखके दाता इनसूं मेरे परम अर्थकी प्राप्ति निश्चय सेती होयगी। या भांति पूर्वभवके चितारनेते प्रथम तो परम शोकको प्राप्त भया हुता। बहुरि साधुनिके दर्शनते तत्काल परम हर्षित होय अपनी दोऊ पांख हलाय आंसुनिकर भरे हैं नेत्र जाके महा विनयकर मण्डित पक्षी वृक्षके अग्रभागते भूमिविषै पडा सो महा मोटा पक्षी ताके पडनेके शब्दकरि हाथी अर सिंहादि वनके जीव भयकर भाग-गए अर सीता भी आकुलचित्त भई, ता देखो यह डीठ पक्षी मुनिनिके चरणविषै कहांसूं आय पडा, कठोर शब्दकर घनाही निवारा परंतु वह पक्षी मुनिनिके चरणनिके धोवनविषै आय पडा, चरणोदकके प्रभाव कर क्षणमात्र विषै ताका शरीर रत्नोंकी राशिसमान नाना प्रकारके तेजकर मण्डित होय गया पांख तो स्वर्णकी प्रभाको धरते भए, दोऊ पांव बैडूर्य्यमणिसमान होय गये अर देह नाना प्रकारके रत्ननिकी छवि को धरता भया अर चूंच मूगा समान आरक्त भई तब यह पक्षी आपको अर रूपको देख परम हर्षको प्राप्त भया मधुरनादकर नृत्य करनेको उद्यमी भया। देवनिके दुन्दुभी समान है नाद जाका नेत्रनिते आनं-दके अश्रुपात डारता शोभता भया जैसा मोर मेहके आगमनविषै नृत्यकरे तैसा मुनिके आगे नृत्य करता भया, महामुनि विधि पूर्वक पारणाकर बैडूर्यमणि समान शिलापर विराजे। पद्मराग मणिसमान हैं नेत्र जाके ऐसा पक्षी पांख संकोच मुनिनिके पांओंको प्रणामकर आगे तिष्ठा तब श्रीराम फूले कमल समान हैं नेत्र जिनके पक्षीको प्रकाश रूप देख आप परम आश्चर्यको प्राप्त भए साधुनिके चरणारविन्दको नमस्कारकर पूछते भए कैसे हैं साधु अठाईस मूल गुण चौरासीलाख उत्तर गुण, वेही हैं आभूषण जिनके,

बारम्बार पक्षीकी ओर निरख राम मुनिसे कहते भए हे भगवन ! यह पक्षी प्रथम अवस्थाविषै महाविरूप अंगहुता सो क्षणमात्रविषै सुवर्ण अर रत्ननिके समूहकी छवि धरता भया यह अशुचि सर्व मांसका आहारी दुष्ट गृध्रपक्षी आपके चरणनिके निकट तिष्ठकर महाशांत भया सो कौन कारण ? तब सुगुप्तिनामा मुनि कहते भए, हे राजन ! पूर्वे इस स्थलविषै दंडक नामा देश हुता जहां अनेक ग्राम नगर पट्टण संवाहण मटंब घोष खेट करबट द्रोणमुख हुते वाडिकरयुक्त, सो ग्राम कोट खाई दरवाजेनिकर मंडित सो नगर अर जहां रत्ननिकी खान सो पट्टण पर्वतके ऊपर सो संवाहन अर जाहि पांचसो ग्राम लागे सो मटंब अर गायनिके निवास गुवालनिके आवास सो घोष अर जाके आगे नदी सो खेट अर जाके पीछे पर्वत सो कर्वट अर समुद्रके समीप सो द्रोणमुख इत्यादि अनेक रचनाकर शोभित तहां कर्णकुंडल नामा नगर महामनोहर ताविषै या पक्षीका जीव दंडक नामा राजा हुता महाप्रतापी उदय धरे प्रचंड, पराक्रम संयुक्त भग्न किये हैं शत्रुरूप कंटक जाने, महामानी बडी सेनाका स्वामी सो या मूढने अधर्मकी श्रद्धाकर पाप रूप मिथ्या शास्त्र सेया जैसे कोई घृतका अर्थी जलको मथे, याकी स्त्री दंडिनिकी सेवक हुती तिनसे अतिअनुरागिणी सो वाके संगकर यह भी ताके मार्गको धरता भया। स्त्रिनिके वश हुवा पुरुष कहा २ न करे, एक दिवस यह नगरके बाहिर निकसा सो वनविषै कायोत्सर्ग धरे ध्यानारूढ मुनि देखे। तब या निर्दईने मुनिके कंठविषै मूवा सर्प डारा, कैसा हुता यह पाषाण समान कठोर हुता चित्त जाका सो मुनि ध्यान धरे मौनसो तिष्ठे अर यह प्रतिज्ञा करी, जो लग मेरे कंठते कोई सर्प दूर न करे तौलग मैं हलन चलन नाहीं करूं योगरूप ही रहूं। सो काहूने सर्प दूर न किया मुनि खडे ही रहे । बहुरि कैयक दिननिविषै राजा ताही मार्ग गया । ताही समय काहू भले मनुष्यने सांप काढा अर मुनिके पास वह बैठा हुता सो राजा वा मनुष्यसूं पूछा जो मुनिके कंठते सांप कौनने काढा अर कब काढा, तब वाने कही—हे

नरेंद्र ! काहू नरकगामीने ध्यानारूढ मुनिके कंठविषे मूवा सर्प डारा हुता, सो सर्पके संयोगते साधुका शरीर अतिखेदखिन्न भया । इनके तो कोई उपाय नाहीं, आज सर्प मैंने काढा है तब राजा मुनिको शांत स्वरूप कषायरहित जान प्रणामकर अपने स्थानक गया । ता दिनतें मुनिनिकी भक्तिविषे अनुरागी भया अर काहूको उपद्रव न करे, तब यह वृत्तांत राणीने दंडिनके मुख सुना, जो राजा जिनधर्मका अनुरागी भया । तब पापिनीने क्रोधकर मुनीनिके मारवेका उपाय किया जे दुष्ट जीव हैं ते अपने जीनेकाहू यत्न तज पराया अहित करें । सो पापिनीने अपने गुरुसों कही तुम मुनिका रूपकर मेरे महलविषे आवहु अर विकार चेष्टा करहु तब वाने या भांति करी । सो राजा यह वृत्तांत जानकर मुनिनिसूं कोप भया अर मंत्री आदि दुष्ट मिथ्यादृष्टि सदा मुनिनिकी निंदा करते, अर अन्य हू जे क्रूर कर्मी मुनिनिके अहितु हुते तिनने राजाको भरमाया सो पापी राजा मुनिनिको घानीविषे पेलिवेकी आज्ञा करता भया। आचार्य सहित सर्व मुनि घानीविषे पेले, एक साधु बहिर्भूमि गया, पीछे आवता हुता सो काहू दयावानने कही—अनेक मुनि पापी राजाने यंत्रविषे पेले हैं तुम भाग जावहु तुम्हारा शरीर धर्मका साधन है सो अपने शरीरकी रक्षा करहु । तब यह समाचार सुन संघके मरणके शोककर चुभी है दुःखरूप शिला जाके, क्षण एक वज्रके स्तंभ समान निश्चल होय रहा, फिर न सहा जाय ऐसा क्लेशरूप भया सो मुनिरूप जो पर्वत ताकी समभावरूप गुफासूं क्रोधरूप केसरीसिंह निकसा जैसा आरक्त अशोक वृक्ष होय तैसे मुनिके आरक्त नेत्र भए, तेजकर आकाश संध्याके रंगसमान होय गया । कोपकर तप्तायमान जो मुनि ताके सर्व शरीरविषे पसेवकी बूंद प्रकट भई, फिर कालाग्नि समान प्रज्वलित अग्निपूतला निकसा सो धरती आकाश अग्निरूप होय गया, लोक हाहाकार करते मरणको प्राप्त भए । जैसे बांसनिका वन बले, तैसे देश भस्म होय गया, न राजा न अंतःपुर न पुर न ग्राम न पर्वत न नदी न वन न कोई

प्राणी कछु हू देशविषै न बचा । महाज्ञान वैराग्यके योगकर बहुत दिनानिविषै मुनिने समभावरूप जो घन उपार्जा हुता सो तत्काल क्रोधरूप रिपुने हरा, दंडक देशका दंडक राजा पापके प्रभावकर प्रलय भया अर देश प्रलय भया सो अब यह दंडकबन कहावे है। कैयक दिन तो यहां तृण भी न उपजा फिर घनेकालविषै मुनिनिका विहार भया तिनके प्रभावकर वृक्षादिक भए यह वन देवनिको हू भयंकर है, विद्याधरनिकी कहा बात ? सिंह व्याघ्र अष्टापदादि अनेक जीवनिसूं भरा अर नानाप्रकारके पक्षिनिकर शब्दरूप है अर अनेक प्रकारके धान्यसे पूर्ण है वह राजा दंडक महाप्रबल शक्तिका धारक हुता सो अपराधकर नरक तिर्यंचगतिविषै बहुत काल भ्रमणकर यह गृध पक्षी भया। अब याके पापकर्मकी निवृत्ति भई, हमको देख पूर्वभव स्मरण भया ऐसा जान जिन आज्ञा मान शरीर भोगसूं विरक्त होय धर्मविषै सावधान होना परजीवानिका जो दृष्टांत है सो अपनी शांतभावकी उत्पत्तिका कारण है । या पक्षीको अपनी विपरीत चेष्टा पूर्वभवकी याद आई है सो कंपायमान है, पक्षीपर दयालु होय मुनि कहते भए—

हे भव्य ! अब तू भय मत करहु जा समयविषै जैसी होनी होथ सो होय, रुदन काहेको करे है, होनहारके मेटवे समर्थ कोऊ नाहीं। अब तू विश्रामको पाय सुखी होय पश्चाताप तज, देख कहां यह वन अर कहां सीतासहित श्रीरामका आवना अर कहां हमारा बनचर्याका अवग्रह जो वनविषै श्रावकके आहार मिलेगा तो लेवेंगे अर कहां तेरा हमको देख प्रतिबोध होना, कर्मनिकी गति विचित्र है । कर्मनिकी विचित्रताते जगतकी विचित्रता है। हमने जो अनुभया अर सुना देखा है सो कहे हैं। पक्षीके प्रतिबोधवेके अर्थ रामका अभिप्राय जान सुगुप्तिमुनि अपना अर गुप्तिमुनि दूजा दोनोंका वैराग्यका कारण कहते भए। एक वाराणसी नगरी तहां अचलनामा राजा विख्यात ताके राणी गिरदेवी गुणरूप रत्ननिकर शोभित ताके एक दिन त्रिगुप्तिनामा मुनि शुभ चेष्टाके घरनहारे आहारके अर्थ आए। सो राणीने

परम श्रद्धाकर तिनको विधिपूर्वक आहार दिया। जब निरंतराय आहार हो चुका तब राणीने मुनिको पूछा—हे नाथ! यह मेरा गृहवास सफल होयगा या नाहीं। भावार्थ—मेरे पुत्र होयगा या नाहीं, तब मुनि वचनगुप्तभेद याके संदेह निवारणेके अर्थ आज्ञा करी तेरे दोय पुत्र विवेकी होयगें सो हम दोय पुत्र त्रिगुप्ति मुनिकी आज्ञा भए पीछे भए तातैं सुगुप्ति अर गुप्ति हमारे नाम माता पिताने राखे सो हम दोनों राजकुमार लक्ष्मीकर मंडित सर्व कलाके पारगामी लोकनिके प्यारे नानाप्रकारकी क्रीडा कर रमते घरविषै तिष्ठे।

अथानन्तर एक और वृतांत भया गन्धवती नामा नगरी वहांके राजाका पुरोहित सोम ताके दोय पुत्र एक सुकेतु दूजा अग्निकेतु तिनविषै अति प्रीति सो सुकेतुका विवाह भया विवाहकर यह चिन्ता भई कि कबहूं या स्त्रीके योगकर हम दोनों भाईनिमें जुदायगी न होय वहुरि शुभकर्मके योगसे सुकेतु प्रति बोध होय अनन्तवीर्य स्वामीके समीप मुनि भया अर लहुरा भाई अग्निकेतु भाईके वियोगकर अत्यंत दुखी होय बाराणसीविषै उग्र तापस भया तब बडा भाई सुकेतु जो मुनि भया हुता सो छोटे भाईको तापस भया जान सम्बोधिबेके अर्थ आयवेका उद्यमी भया गुरुपै आज्ञा मांगी तब गुरुने कहा तू भाईको संबोधा चाहे है तो यह वृत्तान्त सुन तब याने कही हे नाथ! वृत्तान्त कहो? तब गुरु कही वह तुमसों मत पक्षका बाद करेगा अर तुम्हारे वादके समय एक कन्या गंगाके तीर तीन स्त्रिनि सहित आवेगी। गौर है वर्ण जाका नानाप्रकारके वस्त्र पहिरे दिनके पिछले पहिर आवेगी तो इन चिन्होंकर जान, तू भाई ते कहियो या कन्याके कहा शुभ अशुभ होनहार है सो कहो। तब वह विलषाहोय तोसे कहेगा मैंतो न जानूं तुम जानते हो तो कहो तब तू कहियो या पुर विषै एक प्रवर नामा श्रेष्ठी धनवन्त ताकी यह रुचिरा नामा पुत्री है सो आजसे तीसरे दिन मरणकर कम्बर ग्राममें विलास नामा कन्याके

पिताका मामा ताके छोरी होयगी ताहि ल्याला मारेगा सो मरकर गाढर होयगी वहुरि भैंस, भैंससे ताही विलासके वघरा नामा पुत्री होयगी यह वार्ता गुरुने कही तव सुकेतु सुनकर गुरुको प्रणामकर तापसिनके आश्रम आया जा भांति गुरु कही हुती ताही भांति तापससों कही अर ताही भांति भई वह विधुरा नामा विलासकी पुत्रीको प्रवरनामा श्रेष्ठी परणे लगा तव अग्निकेतु कही यह तेरी रुचिरा नामा पुत्री सो मरकर अजा गाडर भैंस होय तेरे मापाके पुत्री भई अव तू याहि परने सो उचित नाहीं अर विलासको भी सर्व वृतान्त कहा कन्याके पूर्व भव कहे सो सुनकर कन्याको जाति स्मरण भया कुटुम्बसे मोह तज सर्व सभाको कहती भई यह प्रवर मेरा पूर्वभवका पिता है सो ऐसा कह आर्यिका भई अर अग्नि केतु तापस मुनि भया यह वृत्तान्त सुनकर हम दोनों भाईनिने महा वैराग्यरूप होय अनन्तवीर्य स्वामी के निकट जैनेन्द्रव्रत अंगीकार किये मोहके उदयकर प्राणिनिके भववनके भटकावने हारे अनेक अनाचर होय हैं सद्गुरुके प्रभावकर अनाचारका परिहार होय है संसार असार है, माता पिता वांधव मित्र स्त्री संतानादिक तथा सुख दुःखही विनश्वर हैं। ऐसा सुनकर पक्षी भव दुखसे भयभीत भया धर्म ग्रहणकी वांछाकर वारम्वार शब्द करता भया तव गुरु कही हे भद्र! भय मत करहु श्रावकके व्रत लेवो जाकर वहुरि दुखकी परम्परा न पावे अव तू शांतभाव धर किसी प्राणीको पीडा मत कर। अहिंसा व्रत घर मृषा वाणी तज सत्य व्रत आदर पर वस्तुका ग्रहण तज परदारा तज तथा सर्वथा ब्रह्मचर्य भज तृष्णा तज सन्तोष भज रात्री भोजनका परिहारकर अभक्ष आहारका परित्यागकर उत्तम चेष्टाका धारक हो अर त्रिकाल संध्याविषे जिनेन्द्रका ध्यान धर हे सुबुद्धि! उपवासादि तपकर नाना प्रकारके नियम अंगीकारकर प्रमाद रहित होय इंद्रियां जीत, साधुनिकी भक्तिकर देव अरहंत गुरु निर्ग्रंथ दया धर्मविषे निश्चय कर। या भांति मुनिने आज्ञाकरी तव पक्षी वारम्वार, नमस्कार कर मुनिके निकट श्रावकके व्रत धारता

भया सीताने जानी यह उत्तम श्रावक भया तब हर्षित होय अपने हाथसे बहुत लडाया। ताहि बिश्वास उपजाय दोऊ मुनि कहते भये यह पक्षी तपस्वी शांत चित्त भया कहां जायगा गहन बनविषै अनेक क्रूर जीव हैं या सम्यग्दृष्टि पक्षीकी तुमने सदा रक्षाकरनी। यह गुरुके वचन सुन सीता पक्षीके पालिबेरूप है चित्त जाका अनुग्रहकर राखा। राजा जनककी पुत्री करकमलकर विश्वासती संती कैसी शोभती भई जैसे गरुडकी माता गरुडको पालती शोभे अर श्रीराम लक्ष्मण पक्षीको जिनधर्मी जान अतिधर्मानुराग करते भये अर मुनिनिकी स्तुतिकर नमस्कार करते भये। दोनों चारण मुनि आकाशके मार्ग गए सो जाते कैसे शोभते भये मानो धर्मरूप समुद्रकी कल्लोल ही हैं अर एक बनका हाथी मदोन्मत्त बनमें उपद्रव करता भया। ताको लक्ष्मण वशकर तापर चढ रामपै आए सो गजराज गिरिराज सारिखा ताहि देख राम प्रसन्न भए अर वह ज्ञानी पक्षी मुनिकी आज्ञा प्रमाण यथाविधि अणुव्रत पालता भया महा भाग्यके योगते राम लक्ष्मण सीताका ताने समीप पाया। इनके लार पृथिवीमें बिहारकरे यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं। हे राजन्! धर्मका माहात्म्य देखो याही जन्मविषै वह विरूप पक्षी अद्भुत रूप होय गया प्रथम अवस्थाविषै अनेक मांसका आहारी दुर्गंध निंद्यपक्षी सुगन्धके भरे कंचन कलस समान महासुगन्ध सुन्दर शरीर होय गया, कहूं इक आगिकी शिखासमान प्रकाशमान अर कहूं इक बैडूर्यमणि समान कहूं इक स्वर्ण समान कहूंइक हरितमणिकी प्रभाको धरे शोभता भया, राम लक्ष्मणके समीप वह सुन्दर पक्षी श्रावकके व्रत धार महास्वाद संयुक्त भोजन करता भया। महाभाग्य पक्षीके जो श्रीरामकी संगति पाई। रामके अनुग्रहते अनेक चर्चाधार दृढव्रती महाश्रद्धानी भया श्रीराम ताहि अति लडावें चन्दनकर चर्चित है अंग जाका स्वर्णकी किंकिणी कर मण्डित रत्नकी किरणानिकर शोभित है शरीर जाका, ताके शरीरमें रत्न हेमकर उपजी किरणनिकी जटा ताते याका नाम श्रीरामने जटायू धरा। राम

लक्ष्मण सीताको यह अति प्रिय, जीती है हंसकी चाल जाने महा सुन्दर मनोहर चेष्टाको घरे रामका मन मोहता भया, ताबनके और जे पक्षी वे देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए। यह व्रती तीनों संध्याविषे सीता केसाथ भक्तिकर नम्रीभूत हुआ अरहन्त सिद्ध साधुनिकी वन्दना करे। महा दयावान् जानकी जटायू पक्षी पर अतिकृपाकर सावधान भई सदा याकी रक्षाकरे। कैसी है जानकी जिनधर्मते है अनुराग जाका वह पक्षी महा शुद्ध अमृत समान फल अर महा पवित्र सोधा अन्न निर्मल छाना जल इत्यादि शुभ वस्तु का आहार करता भया। जब जनककी पुत्री सीता ताल बजावे अर राम लक्ष्मण दोऊ भाई तालके अनुसार तान लावें तब यह जटायू पक्षी रविसमान है कांति जाकी परम हर्षित भया ताल अर तानके अनुसार नृत्यकरे॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै जटायूका

व्याख्यान वर्णन करनेवाला इकतालीसवां पर्व पूर्ण भया॥ ४१॥

अथानंतर पात्र दानके प्रभावकर राम लक्ष्मण सीता या लोकमें रत्नहेमादि सम्पदाकर युक्त भए। एक सुवर्णमई रत्नजडित अनेक रचना कर सुन्दर ताके मनोहर स्तंभ रमणीक वाड बीच विराजवेका सुन्दर स्थानक अर जाके मोतिनिकी माला लम्बे सुन्दर झालरी सुगन्ध चन्दन कपूरादि कर मंडित जामें सेज आसन वादित्र वस्त्र सर्व सुगंध कर पूरित ऐसा एक बिमान समान अद्भुत रथ बनाया जाके चार हाथी जुडें ताविषे बैठे राम लक्ष्मण सीता जटायू सहित रमणीक वनविषे विचरें, जिनको काहूका भय नाहीं, काहूकी घात नाहीं, काहू ठौर एक दिन काहू ठौर पंद्रह दिन काहू ठौर एक मास मनवांछित क्रीडा करें। यहां निवास करें अक यहां निवास करें, ऐसी है अभिलाषा जिनके, नवीन शिष्यकी इच्छा

की न्याईं इनकी इच्छा अनेक ठौर विचरती भई। महानिर्मल जे नीझरने तिनको निरखते ऊंची नीची जायगा टार समभूमि निरखते ऊंचे वृक्षनिको उलंघकर धीरे धीरे आगे गए, अपनी स्वेच्छा कर भ्रमण करते ये धीर वीर सिंह समान निर्भय दंडकवनके मध्य जाय प्राप्त भए। कैसा है वह स्थानक कायरनिकूं भयंकर जहां पर्वत विचित्र शिखिरके धारक जहां रमणीक नीझरने झरें। जहांते नदी निकसें जिनका मोतिनिके हार समान उज्ज्वल जल जहां अनेक वृक्ष बड पीपल, बहेडा पीलू सरसी बडे बडे सरल वृक्ष धवल वृक्ष कदंब तिलक जातिके वृक्ष लोंद वृक्ष अशोक जम्बूवृक्ष पाटल आम्र आंवला आमिली चम्पा कण्डीरशालि वृक्ष ताड वृक्ष प्रियंगू सप्तच्छद, तमाल नागवृक्ष नन्दीवृक्ष अर्जुन जातिके वृक्ष पलाश वृक्ष मलियागिरि चन्दन केसरि भोजवृक्ष हिंगोट वृक्ष काला अगर अर सुफेद अगर कुन्द वृक्ष पद्माक वृक्ष कुरंज वृक्ष पारिजात वृक्ष मिजन्यां केतकी केवडा महुवा कदली खैर मदनवृक्ष नींबू खजूर छुहारे चारोली नारंगी बिजोरा दाडिम नारयल हरडें कैथ किरमाला विदारीकंद अगथिया करंज कटालीकूट अजमोद कौंच कंकोल मिर्च लवंग इलायची जायफल जावित्री चव्य चित्रक सुपारी तांबूलोंकी बेलि रक्तचन्दन बेत श्यामलता मीठासींगी हरिद्रा अरलू सहिजडा कुडा वृक्ष पद्माख पिस्ता मौलश्री बील-वृक्ष द्राक्षा बिदाम शाल्मलि इत्यादि अनेक जातिके वृक्ष तिनकर शोभित है अर स्वयमेव उपजे नाना प्रकारके धान्य अर महारसके भरे फल अर पौंडे सांठे इत्यादि अनेक वस्तुनिकर वह वन पूर्ण नाना प्रकारके वृक्ष नानाप्रकारकी बेल नाना प्रकारके फल फूल तिनकर वन अति सुन्दर मानो दूजा नन्दन वन ही है सो शीतल मन्द सुगन्ध पवन कर कोमल कपोल हालें, सो ऐसा सोहे मानों वह वन रामके आइबे कर हर्ष कर नृत्य करै है अर सुगन्ध पवन कर उठी जो पुष्पकी रज सो इनके अंगसे आय लगे सो मानों अटवी आलिंगन ही करे है अर भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानो श्रीरामके पधारने

कर प्रसन्न भया वन गान ही करे है, अर महा मनोज्ञ गिरीनिके नीझरानिके छांटोनिके उछरिवेके शब्द कर मानों हंसे ही है अर भेरुण्ड जातिके पक्षी तथा हंस सारिस कोयल मयूर सिचांड कुरुचि सूवा मैना कपोत भारद्वाज इत्यादि अनेक पक्षिनिके ऊंचे शब्द होय रहे हैं सो मानों श्रीराम लक्ष्मण सीताके आइवेका आदर ही करे हैं अर मानों वे पक्षी कोमल वाणीकर ऐसा वचन कहे हैं कि महाराज भले ही यहां आवो अर सरोवरानिविषै सफेद श्याम अरुण कमल फूल रहे हैं सो मानों श्रीरामके देखवेको कौतूहलते कमलरूप नेत्रानिकर देखनेको प्रवर्ते हैं अर फलानिके भारकर नम्रीभूत जो वृक्ष सो मानों रामको नमे हैं अर सुगन्ध पवन चाले है सो मानों वह वन रामके आयवेसे आनन्दके स्वांस लेय है, सो श्रीराम सुमेरुके सौमनस वन समान वनको देख कर जानकीसूं कहते भए—कैसी है जानकी फूले कमल समान हैं नेत्र जाके पति कहे है—हे प्रिये ! देखो यह वृक्ष बेलनिसूं लिपटे पुष्पानिके गुच्छानिकर मण्डित मानों गृहस्थ समान ही भासे हैं अर प्रियंगुकी वेल बौलसरीके वृक्षसूं लगी कैसी शोभे है जैसी जीव दया जिनधर्मसूं एकताको धरे सोहै, अर यह माधवीलता पवनकर चलायमान जे पल्लव तिन कर समीपके वृक्षनिकों स्पर्शे हैं जैसे विद्या विनयवानको स्पर्शे है अर हे पतिव्रते ! यह वनका हाथी मदकर आलसरूप हैं नेत्र जाके सो हथिनीके अनुरागका प्रेरा कमलानिके वनमें प्रवेश करे है जैसे अविद्या कहिये मिथ्यापरणति ताका प्रेरा अज्ञानी जीव विषयबासना विषै प्रवेश करे, कैसा है कमलनिका वन, विकसि रहे जे कमलदल तिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर हे दृढव्रते। यह इंद्रनीलमणि समान श्यामवर्ण सर्प विलते निकसकर मयूरको देख भाग कर पीछे विलमें धुसे है जैसे विवेकसे काम भाग भववनमें छिपे अर देखो सिंह केसरी महा सिंह साहसरूप चरित्र इस पर्वतकी गुफामें तिष्ठा हुता सो अपने रथका नाद सुन निद्रा तज गुफाके द्वार आय निर्भय तिष्ठे है अर यह बघेरा क्रूर है मुख जाका गर्वका भरा

मांजरे नेत्रनिका धारक मस्तक पर धरी है पूंछ जाने नखनिकर वृक्षकी जडको कुचरे है अर मृगानिके समूह दूबके अंकुर तिनके चरिबेको चतुर अपने बालकनिको बीचकर मृगीनि सहित गमन करे हैं सो नेत्रनिकर दूरहीसे अवलोकन करते अपने तांई दयावन्त जान निर्भय भए बिचरे हैं। यह मृग मरण सू कायर सो पापी जीवनिके भयते अति सावधान हैं तुमको देख अति प्रीतिको प्राप्त भए विस्तीर्ण नेत्र कर बारम्बार देखे हैं। तुम्हारेसे नेत्र इनके नाहीं ताते आश्चर्यको प्राप्त भए हैं अर यह बनका शूकर अपनी दांतली कर भूमिको बिदारता गर्वका भरा चला जाय है लग रहा है कर्दम जाके अर हे गज गामिनी। या बन विषै अनेक जातिके गजानिकी घटा विचरे हैं सो तुम्हारीसी चाल तिनकी नाहीं ताते तिहारी चाल देख अनुरागी भए हैं अर ये चीते विचित्र अंग अनेक वर्ण कर शोभे हैं जैसे इन्द्र धनुष अनेक बर्ण कर सोहे है। हे कलानिधे ! यह बन अनेक अष्टापदादि क्रूर जीवानि कर भरा है अर अति सघन वृक्षानि कर भरा है अर नाना प्रकारके तृणानिकर पूर्ण है कहीं एक महा सुन्दर है जहां भय रहित मृगानिके समूह विचरे हैं। कहूं यक महा भयंकर अति गहन है जैसे महाराजनिका राज्य अति सुन्दर है तथापि दुष्टानिको भयंकर है अर कहीं इक महामदोन्मत्त गजराज बृक्षनिको उखाडे है जैसे मानी पुरुष धर्मरूप वृक्षको उखाडे है। कहूं इक नवीन वृक्षानिके महासुगंध समूह पर भ्रमर गुंजार करे हैं जैसे दातानिके निकट याचक आवें काहू ठौर बन लाल होय रहा है काहु ठौर श्वेत काहू ठौर पीत काहू ठौर हरित काहू ठौर श्याम काहू ठौर चंचल काहु ठौर निश्चल काहू ठौर शब्द सहित काहू ठौर शब्दरहित काहू ठौर गहन काहु ठौर विरले वृक्ष, काहू ठौर सुभग काहु ठौर दुर्भग काहु ठौर विरस काहू ठौर सुरस काहू ठौर सम काहू ठौर विषम काहु ठौर तरुण काहू ठौर वृक्षवृद्धि या भांति नाना विधि भासे है। यह दण्डक नामा बन विचित्र गति लिये है जैसे कामनिका प्रपंच विचित्र गति लिये है, हे जनक

सुता। जो जिन धर्मको प्राप्त भए हैं तेही या कर्म प्रपंच ते निवृत्त होय निर्वाणको प्राप्त होय हैं। जीव दया समान कोऊ धर्म नाहीं जो आप समान पर जीवनिको जान सर्व जीवनिकी दया करैं, तेई भव सागर सू तिरैं। यह दण्डक नामा पर्वत जाके शिखर आकाशसों लगरहे हैं ताका नाम यह दण्डक वन कहिये है। या गिरिके ऊंचे शिखर हैं अर अनक धातुकर भरा है जहां अनेक रंगनि करि आकाश नाना रंग होय रहा है। पर्वतमें नाना प्रकारकी औषधी हैं केयक ऐसी जडी हैं जे दीपक समान प्रकाश रूप अंधकारको हरैं तिनको पवनका भय नाही पवनमें प्रज्वलित, और या गिरि ते नीझरने झरें हैं जिनका सुन्दर शब्द होय है जिनके छांटोंकी बून्द मोतिनिकी प्रभाको धरे हैं या गिरिके स्थानक केयक उज्ज्वल केयक नील कई एक आरक्त दीखे हैं अर अत्यन्त सुन्दर हैं। सूर्यकी किरण गिरिके शिखर के वृक्षनिके अग्रभाग विषे आय पडे हैं अर पत्र पवनकरि चंचल हैं सो अत्यन्त सोहे हैं हे सुबुद्धि रूपिणि! या बन विषें कहूं इक वृक्ष फलनिके भार कर नम्रीभुत होय रहे हैं अर कहूं इक नाना रंगके जे पुष्प तेई भए पट तिनकर शोभित हैं अर कहूं इक मधुर शब्द बोलनहारे पक्षी तिनकरि शोभित हैं हे प्रिये! या पर्वत ते यह क्रौंचवा नदी जगत् प्रसिद्ध निकसी हैं जैसे जिनराजके मुखते जिनवाणी निकसे, या नदीका जल ऐसा मिष्ट है जैसी तेरी चेष्टा मिष्ट है, हे सुकेशी! या नदीमें पवन करि उठे हैं लहर अर किनारेके वृक्षनिके पुष्प जलमें पडे हैं सो अति शोभित हैं कैसी है नदी हंसनिके समूह अर झागनिके पटलनि करि अति उज्ज्वल है अर ऊंचे शब्दकर युक्त है जल जाका, कहूं इक महा विकट पाषाणनिके समूह तिनकर विषम है अर हजारा ग्राह मगर तिनकरि अति भयंकर है अर कहूं इक अति वेग कर चला आवे है जलका जो प्रवाह ताकर दुर्निवार है जैसे महा मुनिनिके तपकी चेष्टा दुर्निवार है, कहूं इक शीतल बहे है कहूं इक वेगरूप बहे है, कहूं इक काली शिला, कहूं इक श्वेत

शिला तिनकी कांतिकर जल नील श्वेत दुरंग होय रहा है, मानो हलधर हरिका स्वरूप ही है, कहूं इक रक्तशिलानिके किरणकी समूहकर नदी आरक्त होय रही है जैसे सूर्यके उदयकरि पूर्व दिशा आरक्त होय, अर कहूं इक हरितपाषाणके समूह कर जलविषै हरितता भासे है, सो सिवालकी शंका कर पक्षी पीछे होय जाय रहे हैं। हे कांते ! यहां कमलनिके समूहविषै मकरंदके लोभी भ्रमर निरन्तर भ्रमण करे हैं, अर मकरंदकी सुगंधताकर जल सुगंधमय होय रहा है, अर मकरंदके रंगानिकर जल सुरंग होय रहा है, परंतु तिहारे शरीरकी सुगंधता समान मकरंदकी सुगंधि नाहीं, अर तिहारे रंग समान मकरंदका रंग नाहीं, मानो तुम कमलबदनी कहावो हो । सो तिहारे मुखकी सुगंधताहीसे कमल सुगंधित है अर ये भ्रमर कमलनिको तज तिहारे मुखकमल पर गुंजार कर रहे हैं अर या नदीका जल काहू ठौर पाताल समान गम्भीर है मानों तिहारे मनकीसी गम्भीरताको धरे है अर कहूं इक नीलकमलनिकर तिहारे नेत्रनिकी छायाको धरे है अर यहां अनेक प्रकारके पक्षिनिके समूह नानाप्रकार क्रीडा करे हैं, जैसे राजपुत्र अनेक प्रकारकी क्रीडा करें। हे प्राणप्रिये ! या नदीके पुलनिकी बालू रेत अति सुन्दर शोभित है जहां स्त्री सहित खग कहिये विद्याधर अथवा खग कहिये पक्षी आनंदकरि विचरे हैं। हे अखंडव्रते ! यह नदी अनेक विलासनिको धरे समुद्रकी ओर चली जाय है जैसे उत्तम शीलकी धरणहारी राजानिकी कन्या भरतारके परणवेको जांय कैसे हैं भरतार ? महामनोहर प्रसिद्ध गुणके समूहको धरे शुभ चेष्टा कर युक्त जगतविषै विख्यात हैं । हे दयारूपिनी ! इस नदीके किनारेके वृक्ष फल फूलानिकर युक्त नानाप्रकार पक्षिनिकर मंडित जलकी भरी कारीघटा समान सघन शोभाको धरे हैं, या भांति श्रीरामचन्द्रजी अति स्नेहके भरे वचन जनकसुतासूं कहते भए, परम विचित्र अर्थको धरे तब वह पतिव्रता अति हर्षके समूह करि भरी पतिसूं प्रसन्न भई, परम आदरसूं कहती भई ।

हे करुणानिधे ! यह नदी निर्मल है जल जाका रमणीक हैं तरंग जाविषे हंसादिक पक्षिनिके समूह कर सुन्दर है परन्तु जैसा तिहारा चित्त निर्मल है तैसा नदीका जल निर्मल नाहीं अर जैसे तुम सघन अर सुगंध हो तैसा वन नाहीं अर जैसे तुम उच्च अर स्थिर हो तैसा गिरि नाहीं अर जिनका मन तुममें अनुरागी भया है तिनका मन और ठौर जाय नाहीं, या भांति राजसुताके अनेक शुभ वचन श्रीराम भाई सहित सुनकर अतिप्रसन्न होय याकी प्रशंसा करते भए। कैसे हैं राम ? रघुवंश रूप आकाशविषे चंद्रमा समान उद्योतकारी हैं नदीके तटपर मनोहर स्थल देख हाथिनिके रथसे उतरे, लक्ष्मण प्रथम ही नानास्वादको धरे सुन्दर मिष्टफल लाया अर सुगंध पुष्प लाया बहुरि राम सहित जल क्रीडाका अनुरागी भया, कैसा है लक्ष्मण गुणनिकी खान है मन जाका, जैसी जलक्रीडा इंद्र नागेंद्र चक्रवर्ती करें, तैसी राम लक्ष्मणने करी, मानों वह नदी श्रीरामरूप कामदेवको देख रतिसमान मनोहररूप धारती भई। कैसी है नदी लहलहाट करती जे लहर तिनकी माला कहिए पंक्ति ताकरि मर्दित किये हैं श्वेत श्याम कमलनिके पत्र जाने अर उठे हैं झाग जामें भ्रमररूप हैं चूडा जाके पक्षिनिके जे शब्द तिनकर मानों मिष्ट शब्द करे है वचनालाप करे है। राम जलक्रीडाकर कमलनिके वनविषे छिप रहे बहुरि शीघ्र ही आए। जनकसुतासे जलकेलि करते भए। इनकी चेष्टा देख वनके तिर्यंच हू और तरफसे मन रोक एकाग्र चित्त होय इनकी ओर निरखते भए ! कैसे हैं दोऊ वीर कठोरतासे रहित है मन जिनका अर मनोहर है चेष्टा जिनकी सीता गान करती भई। सो गानके अनुसार रामचन्द्र ताल देते भए। मृदंगनिकरि अति सुंदर राम जलक्रीडाविषे आसक्त अर लक्ष्मण चौगिरदा फिरे कैसा है लक्ष्मण भाईके गुणनिविषे आसक्त है बुद्धि जाकी, राम अपनी इच्छा प्रमाण जलक्रीडाकर समीपके मृगनिको आनंद उपजाय जलक्रीडाते निवृत्त भए महा प्रसन्न जे वनके मिष्टफल तिनकर क्षुधा निवारण कर लतामंडपविषे तिष्ठे। जहां सूर्यका

आताप नाहीं, ये देवनि सारिखे सुन्दर नानाप्रकारकी सुन्दर कथा करते भए। सीता सहित अति आनन्दसे तिष्ठे। कैसी है सीता जटायुके मस्तकपर हाथ है जाका तहां राम; लक्ष्मणसूं कहे हैं—हे भ्रात! यह नानाप्रकारके वृक्ष स्वादु फलकर संयुक्त अर नदी निर्मल जलकी भरी अर जहां लतानिके मण्डप अर यह दंडकनामा गिरि अनेक रत्ननिसे पूर्ण यहां अनेक स्थानक क्रीडा करनेके हैं तातैं या गिरिके निकट एक सुन्दर नगर बसावें अर यह वन अत्यन्त मनोहर औरनिते अगोचर, यहां निवास हर्षका कारण है। यहां स्थानककर हे भाई! तू दोऊ मातानिके लायबेको जाहु वे अत्यन्त शोकवंती हैं सो शीघ्र ही लावहु अथवा तू यहां रह अर सीता तथा जटायु भी यहां रहें, मैं मातानिके ल्यायबेको जाऊंगा। तब लक्ष्मण हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया। जो आपकी आज्ञा होयगी सो होयगा, तब राम कहते भए। अब तो वर्षा ऋतु आई अर ग्रीषम ऋतु गई, यह वर्षाऋतु अति भयंकर है जाविषे समुद्र समान गाजते मेघघटानिके समूह विचरे हैं चालते अंजनगिरि समान, दशों दिशाविषे श्यामता होय रही है। बिजुरी चमकै है, बगुलानिकी पंक्ति विचरै है अर निरंतर वादलनिके जल वरसे हैं जैसे भगवानके जन्म कल्याणकविषे देव रत्नधारा वरसावें अर देख हे भ्राता! यह श्माम घटा तेरे रंग समान सुन्दर जलकी बूंद बरसावे हैं जैसे तू दानकी धारा बरसावे। ये वादर आकाशविषे विचरते बिजुरीके चमत्कारकर युक्त बडे बडे गिरिनिको अपनी धाराकर आछादते संते ध्वनि करते संते कैसे सोहे हैं जैसे तुम पीतवस्त्र पहिरे अनेक राजानिको आज्ञा करते पृथिवीको कृपादृष्टिरूप अमृतकी वृष्टिकरि सींचते सोहो। हे वीर! ये केयक बादर पवनके वेगसे आकाशविषे भ्रमें हैं जैसे यौवन अवस्थाविषे असंयमियोंका मन विषय बासनाविषे भ्रमे, अर यह मेघ नाजके खेत छोड वृथा पर्वतकेविषे बरसे हैं जैसे कोई द्रव्यवान पात्रदान अर करुणादान तज वेश्यादिक कुमार्गविषे धन खोवे, हे लक्ष्मण! या वर्षाऋतुविषे अतिवेगसूं नदी बहे

है अर धरती कीचसूं भर रही है अर प्रचंड पवन वाजे है भूमिविषै हरितकाय फैल रही है अर त्रसजीव विशेषतासे हैं या समयविषै विवेकिनिका विहार नाहीं। ऐसे वचन श्रीरामचन्द्रके सुनकर सुमित्राका नन्दन लक्ष्मण बोला—हे नाथ! जो आप आज्ञा करोगे सो ही मैं करूंगा। ऐसी सुन्दर कथा करते दोऊ वीर महाधीर सुन्दर स्थानकविषै सुखसे वर्षाकाल पूर्ण करते भए। कैसा है वर्षाकाल? जासमय सूर्य नाहीं दीखे है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं दंडकवनविषै निवास वर्णन करनेवाला बियालीसवा पर्व पूर्ण भया॥ ४२॥

अथानन्तर वर्षाऋतु व्यतीत भई शरदऋतुका आगमन भया मानों यह शरदऋतु चंद्रमाकी किरण रूप बांणनिकरि वर्षारूप बैरीको जीत पृथिवीविषै अपना प्रताप विस्तारती भई दिशारूप जे स्त्री सो फूल रहे हैं फूल जिनके ऐसे वृक्षनिकी सुगन्धताकर सुगन्धित भई है अर वर्षा समयविषै कारी घटानिकर जो आकाश श्याम हुता सो अब चंद्रकांतिकर उज्वल शोभता भया मानों क्षीरसागरके जल करि धोया है अर बिजलीरूप स्वर्ण सांकलकर युक्त वर्षाकालरूपी गज पृथिवीरूप लक्ष्मीको स्नान कराय कहां जाता रहा अर शरदके योगते कमल फूले तिनपर भ्रमर गुंजार करते भए, हंस क्रीडा करते भए अर नदिनिके जल निर्मल होय गए दोऊ किनारे महा सुंदर भासते भए मानों शरदकाल रूप नायिकको पाय सरितारूप कामिनी कांतिको प्राप्त भई है अर बन वर्षा अर पवनकर छूटे कैसे शोभते भए मानो निद्राकरि रहित जाग्रत दशाको प्राप्त भए हैं। सरोवरनिविषै सरोजनिनिपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर बनविषै वृक्षनिविषै पक्षी नादकरे हैं सो मानो परस्पर वार्ता ही करे हैं अर रजनीरूप नायिका नाना

प्रकारके पुष्पानिकी सुगन्धताकर सुगन्धित निर्मल आकाशरूप वस्त्र पहरे चंद्रमारूप तिलक धरें मानों शरदकालरूप नायकपै जाय है। अर कामीजनानिको काम उपजावती केतकीके पुष्पनिकी रजकर सुगन्ध पवन चले हैं या भांति शरदऋतु प्रवरती सो लक्ष्मण बडे भाईकी आज्ञा मांग सिंहसमान महा पराक्रमी वन देखनेको अकेला निकला सो आगे गए एक सुगन्धपवन आई तब लक्ष्मण बिचारते भए यह सुगन्ध काहेकी है ऐसी अद्भुत सुगन्ध वृक्षनिकी न होय अथवा मेरे शरीरकी हू ऐसी सुगन्ध नाहीं यह सीताजीके अंगकी सुगन्ध होय तथा रामजीके अंगकी सुगंध होय तथा कोऊ देव आया होय ऐसा सन्देह लक्ष्मणको उपजा सो यह कथा राजा श्रेणिक सुन गौतम स्वामी सूं पूछता भया हे प्रभो ! जो सुगन्धकर बासुदेवको आश्चर्य उपजा सो वह सुगन्ध काहेकी ? तब गौतम गणधर कहते भए कैसे हैं गौतम। संदेहरूप तिमिर दूर करनेको सूर्य हैं। सर्वलोककी चेष्टाको जाने हैं पापरूप रजके उडावनेको पवन हैं गौतम कहे हैं—हे श्रेणिक द्वितीय तीर्थंकर श्री आजितनाथ तिनके समोशरणमें मेघवाहन विद्याधर रावण का बडा, शरणे आया ताहि राक्षसनिके इंद्र महाभीमने त्रिकूटाचल पर्वतके समीप राक्षसद्वीप तहां लंका नामा नगरी सो कृपाकर दई अर यह रहस्यकी बात कही हे विद्याधर ! सुनहु भरत क्षेत्रके दक्षिणदिशाकी तरफ लवण समुद्रके उत्तरकी ओर पृथिवीके उदर विषै एक अलंकारोदय नामा नगर है सो अद्भुत स्थानक है अर नानाप्रकार रत्ननिकी किरणनिकरि मंडित है। देवनिको भी अश्चर्य उपजावे तो मनुष्यनिकी कहा बात, भूमिगोचरिनिको तो अगम्य ही है अर विद्याधरको भी आतिविषम है चितवनविषै न आवे सर्व गुणनिकरि पूर्ण है। जहां मणिनिके मंदिर हैं, परचक्रते आगोचर है सो कदाचित तुमको अथवा तेरे सन्तानके राजानिको लंकाविषै परचक्रका भय उपजे तो अलंकारोदयपुरीविषे निर्भय भए तिष्ठियो याहि पाताललंका कहे हैं ऐसा कहकर महाभीम बुद्धिमान राक्षसनिके इंद्रने अनुग्रहकर रावणके बडेनिको

लंका अर पाताललंका दई अर राक्षस द्वीप दिया सो यहां इनके बंशमें अनेक राजा भए। बडे २ विवेकी व्रतधारी भए सो रावणके बडे विद्याधर कुल विषै उपजे हैं देव नाही, विद्याधर अर देवनिविषै भेद है जैसे तिलक अर पर्वत कर्दम अर चन्दन पाषाण अर रत्ननिविषै बडा भेद, देवानिकी शक्ति बडी कांति बडी अर विद्याधर तो मनुष्य हैं क्षत्री वैश्य शूद्र यह तीन कुल हैं। गर्भवासके खेद भुगते हैं विद्या साधनकर आकाशविषै विचरे हैं सो अढाई द्वीप पर्यंत गमन करे हैं अर देव गर्भवाससे उपजे नाहीं, महासुन्दर स्वरूप पवित्र धातु उपधातुकर रहित आंखानिकी पलक लगे नहीं, सदा जाग्रत जरारोग रहित नवयौवन तेजस्वी उदार सौभाग्यवंत महासुखी स्वभावहीते विद्यावंत अवधिनेत्र, चाहें जैसा रूप करें, स्वेच्छाचारी देव विद्याधरनिका कहा सम्बंध। हे श्रेणिक! ये लंकाके विद्याधर राक्षस द्वीपविषै बसे, तातैं राक्षस कहाए। ये मनुष्य क्षत्रीवंश विद्याधर हैं देव हू नाहीं, राक्षस हू नाहीं, इनके बंशविषै लंकाविषै अजितनाथके समयते लेकर मुनिसुव्रतनाथके समय पर्यंत अनेक सहस्र राजा प्रशंसा करने योग्य भए। कई सिद्ध भए, कई सर्वार्थसिद्ध गए, कई स्वर्गविषै देव भए, कई एक पापी नरक गए, अब ता बंशविषै तीन खंडका अधिपति जो रावण सो राज्य करे है ताकी बहिन चन्द्रनखा रूपकरि अनूपम सो महा पराक्रमवंत खरदूषणने परणी, वह चौदह हजार राजानिका शिरोमणि रावणकी सेनामें मुख्य सो दिग्पाल समान अलंकारपुर जो पातालालंका वहां थाने रहे है, ताके संबूक अर सुन्दर ये दो पुत्र रावणके भानजे पृथिवीविषै अतिमान्य भए। सो गौतमस्वामी कहे हैं। हे श्रेणिक! माता पिताने संबूकको बहुत मने किया। तथापि कालका प्रेरा सूर्यहास खड्ग साधिवेके अर्थ महाभयानक वनविषै प्रवेश करता भया, शास्त्रोक्त आचारको आचरता संता सूर्यहास खड्गके साधिवेको उद्यमी भया। एक ही अन्नका आहारी, ब्रह्मचारी जितेंद्रिय विद्या साधिवेको बांसके बीडेमें यह कहकर बैठा, कि जब मेरा पूर्ण साधन होयगा, तब ही मैं

बाहिर आऊंगा, ता पहिली कोई बीडेमें आवेगा अर मेरी दृष्टि पडेगा तो ताहि मैं मारूंगा। ऐसा कह कर एकांत बैठा, सो कहां बैठा दंडक वनमें क्रोंचवा नदीके उत्तर तीर बांसके बीडेमें बैठा, बारहवर्ष साधन किया, खड्ग प्रकट भया। सो सातदिनविषै यह न लेय तो खड्ग परके हाथ जाय अर यह मारा जाय, सो चन्द्रनखा निरंतर पुत्रके निकट भोजन लेय आवती सो खड्ग देख प्रसन्न भई अर पतिसूं जाय कही कि संबुकको सूर्यहास सिद्ध भया अब मेरा पुत्र मेरुकी तीन प्रदक्षणाकर आवेगा, सो यह तो ऐसे मनोरथ करे अर ता वनविषै भ्रमता लक्ष्मण आया। हजारो देवनिकरि रक्षायोग्य खड्ग स्वभाव सुगन्ध अद्भुत रत्न सो गौतम कहे हैं। हे श्रेणिक ! वह देवोपुनीत खड्ग महासुगंध दिव्य गंधादिककर लिप्त कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी माला तिनकरि युक्त सो सूर्यहास खड्गकी सुगंध लक्ष्मणको आई, लक्ष्मण आश्चर्यको प्राप्त भया और कार्य तज सीधा शीघ्र ही बांसकी ओर आया, सिंहसमान निर्भय देखता भया। वृक्षानिकरि आछादित महाविषम स्थल जहां बेलानिके समूह अनेक जाल ऊंचे पाषाण तहां मध्यमें समभूमि सुन्दर क्षेत्र श्रीविचित्ररथमुनिका निर्वाण क्षेत्र सुवर्णके कमलनिकरि पूरित ताके मध्य एक बांसनिका बीडा ताके ऊपर खडग आय रहा है सो ताकी किरणके समूहकरि बांसनिका बीडा प्रकाशरूप होय रहा है। सो लक्ष्मणने आश्चर्यको पाय निसंक होय खड्ग लिया अर ताकी तीक्ष्णता जाननेके अर्थ बांसके बीडापर वाहिया सो संबूक सहित बांसका बीडा कट गया अर खड्गके रक्षक सहस्रों देव लक्ष्मणके हाथविषै खड्ग आया जान कहते भए तुम हमारे स्वामी हो ऐसा कह नमस्कार कर पूजते भए।

अथानन्तर लक्ष्मणको बहुत बेर लगी जान रामचन्द्र—सीतासूं कहते भए; लक्ष्मण कहां गया हे भद्र! जटायू तू उडकर देख लक्ष्मण आवे है। तब सीता बोली हे नाथ। वह लक्ष्मण आया केसरकर चरचा

है अंग जाका नाना प्रकारकी माला अर सुन्दर वस्त्र पहिरे अर एक खडग अद्भुत लिये ओवे है सो खडग सूं ऐसा सोहे है जैसा केसरी सिंहसूं पर्वत शोभे तव रामने आश्चर्यको प्राप्त भया है मन जिनका अति हर्षित होय लक्ष्मणको उठकर उर से लगाय लिया, सकल वृतान्त पूछा । तव लक्ष्मण सर्व बात कही आप भाई सहित सुखसे विराजे नाना प्रकारकी कथा करें अर संबूककी माता चन्द्रनखा प्रतिदिन एकही अन्न भोजन लावती हूती सो आगे आय कर देखें तो बांसका बीडा कटा पडा है, तब बिचारती भई जो मेरे पुत्रने भला न किया, जहां इतने दिन रहा अर विद्यासिद्धि भई ताही वीढे को काटा सो योग्य नाहीं अब अटवी छोड कहां गया इत उत देखे तो अस्त होता जो सूर्य ताके मंडल समान कुण्डल सहित सिर पडा है, देखकर ताहि मूर्छा आय गई सो मूर्छा याका परम उपकार किया नातर पुत्रके मरण करि यह कहां जावे ,बहुरि केतीक बेरमें याहि चेत भया तब हाहाकार कर उठी । पुत्रका कटा मस्तक देख शोक कर अतिविलाप किया, नेत्र आसुनि सूं भर गए, अकेली बनमें कुरचीकीन्याई पुकारती भई—हा पुत्र । बारह बर्ष अर चार दिन यहां व्यतीत भए तेसे तीन दिन और हू क्यों न निकस गए । तोहि मरण कहां ते आया हाय पापी काल तेरा मैं कहा बिगाडा जो नेत्रानेका निधि पुत्र मेरा तत्काल विनाशा, मैं पापिनी परभवमें काहुको बालक हना सो मेरा बालक हतागया, हे पुत्र ! आर्तिका मेटनहारा एक बचन तो मुखसूं कह, हे बत्स ! आ अपना मनोहर रूप मोहि दिखा ऐसा माया रूप अमंगल क्रीडा करना तोहि उचित नाहीं । अबतक तैं माताकी आज्ञा कबहू न लोपी अब निःकारण यह बिनयलोप कार्य करना तोहि योग्य नाहीं इत्यादिक विकल्पकर विचारती भई निःसंदेह मेरा पुत्र परलोकको प्राप्त भया विचारा कुछ और ही हुता अर भया कुछ और ही, यह बात विचारमें न हुती सो भई । हे पुत्र ! जो तू जीवता अर सूर्यहास खड्ग सिद्ध होता तो जैसे चन्द्रहासके धारक

रावणके सन्मुख कोऊ नाहीं आय सके हैं तैसे तेरे सन्मुख कोऊ न आय सकता. मानों चन्द्रहास मेरे भाईके हाथमें स्थानक किया सो अपना विरोधी सूर्यहास ताहि तेरे हाथमें न देख सका, भयानक वनमें अकेला निर्दोष नियमका धारी ताहि मारनेको जाके हाथ चले, सो ऐसा पापी खोटा बैरी कौन है? जा दुष्टने तोहि हत्या अब वह कहां जीवता जायगा । या भांति विलाप करती पुत्रका मस्तक गोदमें लेय चूमती भई, मूंगासमान आरक्त हैं नेत्र जाके, बहुरि शोक तज क्रोधरूप होय शत्रुके मारनेको दौडी, सो चली चली तहां आई, जहां दोऊ भाई विराजे हुते, दोऊ महारूपवान मनमोहिबेके कारण तिनको देख याका प्रबल क्रोध जाता रहा, तत्काल राग उपजा मनविषे चितवती भई, इन दोऊनिमें जो मोहि इच्छे ताहि मैं सेवूं, यह विचार तत्काल कामातुर भई, जैसे कमलनिके वनविषै हंसनी मोहित होय अर महा ह्रदविषे भैंस अनुरागिनी होय अर हरे धानके खेतविषै हरिणी अभिलाषिणी होय तैसे इनविषे यह आसक्त भई, सो एक पुन्नागवृक्षके नीचे बैठी रुदन करे अतिदीन शब्द उचारे वनकी रजकर धूसरा होय रहा है अंग जाका ताहि देखकर रामकी रमणी सीता अति दयालुचित्त ऊठकर ताके समीप आय कहती भई। तू शोक मतकर हाथ पकड ताहि शुभ वचन कह धीर्य बंधाय रामके निकट लाई, तब राम ताहि कहते भए। तू कौन है? यह दुष्ट जीवनिका भरा वन ताविषे अकेली क्यों विचरे है? तब वह कमल सरिखे हैं नेत्र जाके अर भ्रमरकी गुंजार समान हैं वचन जाके सो कहती भई—हे पुरुषोत्तम! मेरी माता तो मरणको प्राप्त भई, सो मोको गम्य नाहीं मैं बालक हुती, बहुरि ताके शोककर पिता भी परलोक गया। सो मैं पूर्वले पापते कुटुंब रहित दंडक वनविषे आई, मेरे मरणकी अभिलाषा सो या भयानक वनमें काहू दुष्ट जीवने न भखी, बहुत दिननिते या वनविषे भटक रही हूं, आज मेरे कोऊ पापकर्मका नाश भया सो आपका दर्शन भया। अब मेरे प्राण न छूटें, ता पहिले मोहि कृपाकर इच्छहु, जो कन्या कुलवंती शील-

वंती होंय ताहि कौन न इच्छे सब ही इच्छें, यह याके लज्जारहित वचन सुनकर दोऊ भाई नरोत्तम परस्पर अवलोकन कर मौनसे तिष्ठे । कैसे हैं दोऊ भाई, सर्व शास्त्रनिके अर्थका जो ज्ञान सोई भया जल ताकरि धोया है मन जिनका कृत्य अकृत्यके विवेकविषै प्रवीण, तब वह इनका चित्त निष्काम जान निश्वास नाख कहती भई, मैं जावूं तब राम लक्ष्मण बोले जो तेरी इच्छा होय सो कर, तब वह चली गई ताके गए पीछे राम लक्ष्मण सीता आश्चर्यको प्राप्त भए अर यह क्रोधायमान होय शीघ्र पतिके समीप गई अर लक्ष्मण मनमें विचारता भया जो यह कौनकी पुत्री कौन देशविषै उपजी समूहसे विछुरी मृगी समान यहां कहांसुं आई । हे श्रेणिक ! यह कार्य कर्तव्य यह न कर्तव्य याका पारिपाक शुभ वा अशुभ ऐसा विचार अविवेकी न जानें । अज्ञानरूप तिमिरकरि आछादित है बुद्धि जिनकी अर प्रवीण बुद्धि महाविवेकी अविवेकते रहित हैं सो या लोकविषै ज्ञानरूप सूर्यके प्रकाशकर योग्य अयोग्यको जान अयोग्यके त्यागी होय योग्य क्रियाविषैं प्रवृत्ते हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै शंबुका वध

वर्णन करनेवाला तेतालीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ४३ ॥

अथानन्तर जैसे ह्रदका तट फूट जाय अर जलका प्रवाह विस्तारको प्राप्त होय तैसे खरदूषणकी स्त्रीका राम लक्ष्मणसे राग उपजा हुता सो उनकी अबांछाते विध्वंस भया । तब शोकका प्रवाह प्रकट भया, अतिव्याकुल होय नानाप्रकार बिलाप करती भई, अरतिरूप अग्निकर तप्तायमान है अंग जाका, जैसे बछडे विना गाय विलाप करे, तैसे शोक करती भई झरे हैं नेत्रानिके आंसू जाके सो विलाप करती पति देखी, नष्ट भया है धीर्य जाका अर धूरकर धूसरा है अंग जाका विखर रहे हैं केशानिके समूह जाके

अर शिथिल होय रही है कटी मेखला जाकी अर नखनिकरि विदारे गये हैं वक्षस्थल कुच अर जंघा जाकी सो रुधिरसे आरक्त हैं अर आवरण रहित लावण्यता रहित अर फट गई है चोली जाकी जैसे माते हाथीने कमलनीको दलमली होय तैसी याहि देख पति धीर्य बन्धाय पूछता भया हे कांते! कौन दुष्टने तोहि ऐसी अवस्थाको प्राप्तकरी सो कहो वह कौन है जाहि आज आठवां चंद्रमा है अथवा मरण ताके निकट आया है। वह मूढ पहाडके शिखरपर चढ सोवे है, सूर्यसे क्रीडाकर अंधकूपमें पडे है। दैव तासुं रूसा है, मेरी क्रोधरूप अग्निमें पतंगकी नांई पडेगा। धिक्कार ता पापी अबिबेकीको वह पशुसमान अपवित्र अनीती यह लोक परलोक भ्रष्टे जाने तोहि दुखाई, तू बडवानलकी शिखा समान है। रुदन मत कर और स्त्रिनि सारखी तू नाहीं। बडे बंशकी पुत्री बडे घर परणी आई है। अबही ता दुराचारीको हस्त तलते हण परलोकको प्राप्त करूंगा जैसे सिंह उनमत्तहाथीको हणें या भांति जब पतिने कही तब चंद्र-नखा महा कष्ट थकी रुदन तज गद गद वाणी सूं कहती भई अलखनिकर आछादित हैं कपोल जाके, हे नाथ! मैं पुत्रके देखनेको बनविषे नित्य जाती हुती सो आज पुत्रका मस्तक कटा भूमिमें पडा देखा अर रुधिरकी धाराकर बांसोंका बीडा आरक्त देखा काहू पापीने मेरे पुत्रको मार खडग रत्न लिया कैसा है खडग देवनिकर सेवने योग्य, सो मैं अनेक दुखनिका भाजन भाग्य रहित पुत्रका मस्तक गोद-में लेय विलाप करती भई सो जा पापीने संबूकको मारा हुता ताने मोसे अनीति विचारी, भुजानिकरि पकडी, मैं कही मोहि छांड सो पापी नीचकुली छाडे नाही नखनिकरि दांतानिकरि विदारी निर्जन बन-विषै मैं अकेली वह बलवान पुरुष; मैं अबला तथापि पूर्व पुण्यसे शील बचाय महाकष्टते मैं यहां आई सर्व विद्याधरनिका स्वामी तीनखण्डका अधिपति तीनलोकविषै प्रसिद्ध रावण काहूसे न जीता जाय सो मेरा भाई अर तुम खरदूषण नामा महाराज दैत्यजातिके जे विद्याधर तिनके अधिपति मेरे भरतार तथापि

में देवयोगते या अवस्थाको प्राप्त भई। ऐसे चन्द्रनखाके बचन सुन महा क्रोधकर तत्काल जहां पुत्रका शरीर मृतक पडा हुता तहां गया सो मूवा देखकर अति खेद खिन्न भया पूर्व अवस्थाविषे पुत्र पूर्णमासी के चन्द्रमा समान हुता सो महा भयानक भासता भया। खरदूषणने अपने घर आय अपने कुटम्बसे मन्त्र किया तब कैएक मंत्री कर्कशचित्त हुते वे कहते भये हे देव! जाने खडग रत्न लिया अर पुत्र हता ताहि जो ढीला छोडोगे तो न जानिये कहा करै, सो ताका शीघ्र यत्न करहु अर कैएक विवेकी कहते भए हे नाथ! यह लघुकार्य नाही सर्व सामन्त एकत्र करहु अर रावणपै हू पत्र पठावहु जिनके हाथ सूर्यहास खडग आया ते समान पुरुष नाहीं ताते सर्व सामंत एकत्रकर जो विचार करना होय सो करहु, शीघ्रता न करो, तब रावणके निकट तो तत्काल दूत पठाया, दूत शीघ्रगामी अर तरुण सो तत्काल रावणपै गया रावणका उत्तर पीछा आवे ताके पहिले खरदूषण अपने पुत्रके मरणकर महा द्वेषका भरा सामन्तानिसूं कहता भया, वे रंक विद्यावल रहित भूमिगोचरी हमारी विद्याधरानकी सेनारूप समुद्रके तिरनेको समर्थ नाहीं। धिक्कार हमारे सूरापनको जो और का सहारा चाहें हैं हमारी भुजा हैं वही सहाई हैं अर दूजा कौन ऐसा कहकर महा अभिमानको धरे शीघ्रही मन्दिर सूं निकसा आकाश मार्ग गमन किया तेजरूप है मुख जाका सो ताहि सर्वथा युद्धको सन्मुख जान चोदह हजार राजा संग चाले, सो दण्डक वनमें आए तिनकी सेनाके वादित्रनिके शब्द समुद्रके शब्द समान सीता सुनकर भयको प्राप्त भई। हे नाथ! कहा है, कहा है, ऐसे शब्द कह पतिके अंग सूं लगी जैसे कल्प बेल कल्पवृक्ष सूं लगे तब आप कहते भए हे प्रिये! भय मतकर याहि धीर्य बंधाय विचारते भए यह दुर्धर शब्द सिंहका है अक मेघका अक समुद्र का है अक दुष्ट पक्षिनिका है अक आकाश पूरगया है? तब सीतासूं कहते भये हे प्रिये! ये दुष्टपक्षी हैं जे मनुष्य अर पशुनिको लेजाए हैं धनुषके टंकारते इनै भगाऊं हूं इतनेहीमें शत्रूकी सेना निकट आई

नाना प्रकारके आयुधनिकर युक्त सुभट दृष्टिपरे, जैसे पवनके प्रेरे मेघघटानिके समूह विचरें तेसे विद्याधर विचरते भए । तब श्रीराम विचारी ये नन्दीश्वर द्वीपको भगवानकी पूजाके अर्थ देव जाय हैं। अथवा वांसनिके बीडेमें काहू मनुष्यको हतकर लक्ष्मण खड्ग रत्न लाया अर वह कन्या वन आई हुती सो कुशील स्त्री हुती ताने ये अपने कुटंबके सामंत प्रेरे हैं । तातैं अब परसेना समीप आए निश्चिंत रहना उचित नाहीं, धनुषकी ओर दृष्टि धरी अर बक्तर पहिरनेकी तैयारी करी तब लक्ष्मण हाथ जोड सिर निवाय विनती करता भया । हे देव ! मोहि तिष्ठते आपको एता परिश्रम करना उचित नाहीं। आप राजपुत्रीकी रक्षा करहु मैं शत्रुनिके सन्मुख जाऊं हूं । सो जो कदाचित भीड पडेगी तो मैं सिंहनाद करूंगा, तब आप मेरी सहाय करियो । ऐसा काहिकर बक्तर पहर शस्त्रधार लक्ष्मण शत्रुनिके संमुख युद्धको चला सो वे विद्याधर लक्ष्मणको उत्तम आकारका धारनहारा वीराधिवीर श्रेष्ठ पुरुष देख जैसे मेघ पर्वतको बेढै तैसे बेढते भए । शक्ति मुदगर सामान्य चक्र बरछी वाण इत्यादि शस्त्रनिकी वर्षा करते भए सो अकेला लक्ष्मण सर्व विद्याधरानिके चलाए बाण अपने शस्त्रनिकरि निवारता भया अर आप विद्याधरनिकी ओर आकाशमें वज्रदंड वाण चलावता भया । यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं। हे राजन् ! अकेला लक्ष्मण विद्याधरानिकी सेनाको बाणनिकरि ऐसा रोकता भया जैसे संयमी साधु आत्मज्ञानकर विषयवासनाको रोकें, लक्ष्मणके शस्त्रनिकरि विद्याधरानिके सिर रत्ननिके आभरणकर मंडित कुंडलनिकरि शोभित आकाशसे धरतीपर परें, मानों अम्बररूप सरोवरके कमल ही हैं, योधानि सहित पर्वत समान हाथी पडे अर अश्वनि सहित सामंत पडे भयानक शब्द करते होंठ डसते ऊर्धगामी बाणनिकर वासुदेव वाहन सहित योधानिको पीडता भया ॥

अथानन्तर पुष्पकविमान विषें बैठा रावण आया सम्बूकके मारण हारे पुरुषनि पर उपजा है

महाक्रोध जाको सो मार्गमें रामके समीप सीता महा सतीको तिष्ठती देखता भया सो देखकर महा मोहको प्राप्त भया कैसी है सीता जाहि लखि रतिका रूप भी या समान न भासे मानो साक्षात् लक्ष्मीही है, चन्द्रमा समान सुन्दर वदन, निझन्धांके फूल समान अधर, केसरीकी कटि समान कटि, लहलहात करते चंचल कमलपत्र समान लोचन अर महा गजराजके कुम्भस्थलके शिखर समान कुच नवयौवन सर्व गुणनि कर पूर्ण कांतिके समूह से संयुक्त है शरीर जाका मानों कामके धनुषकी पिणच ही है अर नेत्र जाके कामके वाणही हैं मानो नाम कर्मरूप चतेरेने अपनी चपलता निवारनेके निमित्त स्थिरता कर सुख सूं जैसी चाहिये तैसी वनाई है। जाहि लखे रावणकी बुद्धि हरगई। महारूपके अतिशयको धरे जो सीता ताके अवलोकनसे संम्बूकके मारवे वारेपर जो क्रोध हुता सो जाता रहा अर सीता पर राग भाव उपजा। चित्तकी विचित्रगति है मनमें चितवता भया या बिना मेरा जीतव्य कहां अर जो विभूति मेरे घरमे है ताकरि कहा ? यह अद्भुतरूप अनुपम महासुन्दर नवयौवन, मोहि खरदूषणकी सेनामें आया कोई न जाने ता पहिले याहि हरकर घर लेजाऊं, मेरी कीर्ति चन्द्रमा समान निर्मल सकल लोकमें विस्तर रही है सो छिपकर लेजाने में मालिन न होय। हे श्रेणिक अर्थीदोषको न गिने ताते गोप्य लेजाइवेका यत्न किया। या लोकमें लोभ समान और अनर्थ नाहीं अर लोभ में परस्त्रीके लोभ समान महा अनर्थ नाहीं। रावणने अवलोकनी विद्यासे वृतान्त पूछा सो वाके कहे से इनका नाम कुल सब जाने, लक्ष्मण अनेकनिसूं लडनहारा एक युद्धमें गया अर यह राम है। यह याकी स्त्री सीता है अर जब लक्ष्मण गया तब रामसूं ऐसा कह गया। जो मोपै भीड पडेगी तब मैं सिंहनाद करूंगा तब तुम मेरी सहाय करियो सो वह सिंहनाद मैं करूं तब यह राम धनुषवाण लेय भाई पै जावेगे अर मैं सीता लेजाऊंगा जैसे पक्षी मांसकी डलीको लेजाय अर खरदूषणका पुत्र तो इनने माराही हुता अर ताकी स्त्रीका

अपमान किया सो वह शक्ति आदि शस्त्रनिकर दोऊ भाईनिको मारेहीगा जैसे महा प्रबल नदीका प्रवाह दोऊ ढाहे पाडे, नदीके प्रवाहकी शक्ति छिपी नाहीं है तैसे खरदूषणकी शक्ति काहुते छिपी नाहीं, सब कोऊ जाने है ऐसा विचार कर मूढमति कामकर पीडित रावण मरणके अर्थ सीताके हरणका उपाय करता भया। जैसे दुरबुद्धि बालक विषके लेनेका उपाय करै ॥

अथानन्तर लक्ष्मण अर कटकसहित खरदूषण दोऊमें महायुद्ध होय रहा है शस्त्रनिका प्रहार होय रहा है, अर इधर रावणने कपटकर सिंहनाद किया, तामें बारंबार राम राम यह शब्द किया, तब रामने जाना कि यह सिंहनाद लक्ष्मण किया सुनकर व्याकुल चित्त भए। जानी भाई पै भीड पडी, तब रामने जानकीको कहा—हे प्रिये ! भय मत करे क्षणएक तिष्ठ, ऐसे कह निर्मल पुष्पनिविषै छिपाई अर जटायूको कहा—हे मित्र ! यह स्त्री अबलाजाति है याकी रक्षा करियो, तुम हमारे मित्र हो, धर्मी हो, ऐसा कहकर आप धनुषबाण लेय चाले, सो अपशकुन भए। सो न गिने, महासतीको अकेली बनविषै छोड शीघ्र ही भाई पै गए। महारणमें भाईके आगे जाय ठाढे रहे, ता समय रावण सीताके उठायबेको आया। जैसा माता हाथी कमलिनीको लेने आवे, कामरूप दाहकर प्रज्वलित है मन जाका, भूल गई है समस्त धर्मकी बुद्धि जाकी, सीताको उठाय पुष्पक विमानमें धरने लगा, तब जटायु पक्षी स्वामीकी स्त्रीको हरती देख क्रोधरूप अग्निकर प्रज्वलित भया। उठकर अतिवेगते रावणपर पडा, तीक्षण नखनिकी अणी अर चूंचसे रावणका उरस्थल रुधिर संयुक्त किया अर अपनी कठोर पाखनिकरि रावणके वस्त्र फाडे, रावणका सर्व शरीर खेदाखिन्न किया, तब रावणने जानी यह सीताको छुडावेगा। झंझट करेगा इतनेसे याका धनी आन पहुंचेगा, सो याहि मनोहर वस्तुका अवरोधक जान महाक्रोधकर हाथकी चपेटसे मारा सो अति कठोर हाथकी घातसे पक्षी विह्वलहोय पुकारता संता पृथिवी में पडा मूर्छाको प्राप्त

भया तब रावण जनकसुताको पुष्पक विमान में धर अपने स्थान ले चला। हे श्रेणिक। यद्यपि रावण जाने है यह कार्य योग्य नाहीं। तथापि कामके वशीभूत हुआ सर्व विचार भूल गया। सीता महासती आपको परपुरुष कर हरी जान रामके अनुराग से भीज रहा है चित्त जाका महा शोकवन्ती होय अरति रूप विलाप करती भई, तब रावण याहि निज भरतार विषें अनुरक्त जान रुदन करती देख कछू एक उदास होय विचारता भया जो यह निरन्तर रोवे है अर बिरहकर व्याकुल है। अपने भरतारके गुण गावे है, अन्य पुरुषके संयोगका अभिलाष नाहीं, सो स्त्री अबध्य है ताते मैं मार न सकूं अर कोऊ मेरी आज्ञा उलंघे तो ताहि मारूं अर मैं साधुनिके निकट व्रत लिया हुता जो परस्त्री मोहि न इच्छे ताहि मैं न सेऊं सो मोहि व्रत दृढ राखना, याहि कोऊ उपायकर प्रसन्न करूं। उपायाकिये प्रसन्न होयगी जैसे क्रोधवन्त राजा शीघ्रही प्रसन्न न किया जाय तैसे हठवन्ती स्त्री भी वश न करी जाय जो कछु वस्तु है सो यत्नसे सिद्ध होय है मनवांछित विद्या परलोककी क्रिया अर मनभावना स्त्री ये यत्नसे सिद्ध होंय, यह विचारकर रावण सीताके प्रसन्न होनेका समय हेरै, कैसा है रावण मरण आया है निकट जाके।

अथानन्तर श्रीरामने बाणरूप जलकी धाराकर पूर्ण जो रणमंडल तामें प्रवेश किया। सो लक्ष्मण देख कर कहता भया। हाय! हाय! एते दूर आप क्यों आए—हे देव! जानकीको अकेली वनविषे मेल आए। यह वन अनेक विग्रहका भरा है तब रामने कही मैं तेरा सिंहनाद सुन शीघ्र आया। तब लक्ष्मण कही आप भली न करी, अब शीघ्र जहां जानकी है वहां जावो, तब रामने जानी वीर तो महाधीर है याहि शत्रुका भय नाहीं, तब याको कही तू परम उत्साह रूप है बलवान् वैरीको जीत, ऐसा कहकर आप सीताकी उपजी हैं शंका जिनको सो चंचलचित्त होय जानकीकी तरफ चाले, क्षणमात्रमें आय देखें तो जानकी नाहीं, तब प्रथम तो विचारी कदाचित् सुरति भंग भया हूं बहुरि निर्धारण देखें तो सीता

नाहीं, तब आप हाय सीता ! ऐसा कह मूर्छा खाय धरती पर पडे । सो धरती रामके विलापसे कैसी सोहती भई, जैसे भरतारके मिलापसे भार्य्या सोहै । बहुरि सचेत होय वृक्षनिकी ओर दृष्टि धर प्रेमके भरे अत्यंत आकुल होय कहते भए—हे देवी ! तू कहां गई, क्यो न बोलो हो, बहुत हास्यकरि कहा वृक्षनिके आश्रय बैठी होय तो शीघ्र ही आवो, कोपकर कहा मैं तो शीघ्र ही तिहारे निकट आया । हे प्राणवल्लभे ! यह तिहारा कोप हमें दुखका कारण है या भांति विलाप करते फिरे हैं । सो एक नीची भूमिमें जटायुको कंठगतप्राण देखा तब आप पक्षीको देख अत्यंत खेदखिन्न होय याके समीप बैठे, नमोकार मंत्र दिया अर दर्शन ज्ञान चारित्र तप ये चार आराधना सुनाई, अरिहंत सिद्ध साधु केवली प्रणीत धर्मका शरण लिवाया । पक्षी श्रावकके व्रतका धरणहारा श्रीरामके अनुग्रहकरि समाधि मरण कर स्वर्गविषै देव भया, परंपराय मोक्ष जायगा, पक्षीके मरणके पीछे आप यद्यपि ज्ञानरूप हैं, तथापि चारित्र मोहके वश होय महाशोक-वन्त अकेले वनमें प्रियाके वियोगके दाहकर मूर्छा खाय पडे, बहुरि सचेत होय महाव्याकुल महासती सीताको ढूंढते फिरें, निराश भए दीन वचन कहैं जैसे भूतके आवेश कर युक्त पुरुष वृथा आलाप करे । छिद्र पाय महाभीम वनमें काहू पापीने जानकी हरी, सो बहुत विपरीत करी, मोहि मारा, अब जो कोई मोहि प्रिया मिलावे अर मेरा शोक हरे, ता समान मेरा परम बांधव नाहीं । हो बनके वृक्ष हो ! तुम जनकसुता देखी ? चंपाके पुष्प समान रंग कमलदल लोचन सुकुमार चरण निर्मल स्वभाव उत्तम चाल, चित्तकी उत्सव करणहारी कमलके मकरंद समान सुगंध मुखका स्वांस स्त्रिनिके मध्य श्रेष्ठ तुमने पूर्व देखी होय तो कहो ! या भांति बनके वृक्षनिसूं पूछे हैं सो वे एकेन्द्री वृक्ष कहा उत्तर देवें । तब राम सीताके गुणनिकरि हरा है मन जिनका बहुरि मूर्छा खाय धरतीपर पडे बहुरि सचेत होय महाक्रोधायमान वज्रावर्त धनुष हाथमें लिया, फिणच चढाई टंकोर किया, सो दशों दिशा शब्दायमान भई, सिंहनिको भयका

उपजावनहारा नरसिंहने धनुषका नाद किया। सो सिंह भाग गए अर गजानिके मद उतर गए। तब धनुष उतार अत्यंत विषादको प्राप्त होय बैठकर अपनी भूलका सोच करते भए, हाय हाय मैं मिथ्या, सिंहनादके श्रवणकर विश्वास मान वृथा जाय प्रिया खोई, जैसे मूढजीव कुश्रुतका श्रवण सुन विश्वास मान अविवेकी होय शुभगतिको खोवे, सो मूढके खोयबेका आश्चर्य नाहीं परंतु मैं धर्मबुद्धि वीतरागके मार्गका श्रद्धानी असमझ होय असुरकी मायामें मोहित हुवा, यह आश्चर्यकी बात है जैसे या भव वनविषै अत्यंत दुर्लभ मनुष्यकी देह महापुण्य कर्मकर पाई, ताहि वृथा खोवे सो बहुरि कब पावे अर त्रैलोक्यविषै दुर्लभ महारत्न ताहि समुद्रमें डारे, बहुरि कहां पावे? तैसे बनितारूप अमृत मेरे हाथसूं गया। बहुरि कौन उपायकरि पाइये या निर्जन वनविषै कौनको दोष दूं। मैं ताहि तजकर भाईपै गया। सो कदाचित कोपकर आर्या भई होय। या अरण्य वनविषै मनुष्य नाहीं कौनको जाय पूछें, जो हमको स्त्रीकी वार्ता कहे। ऐसा कोई या लोकविषै दयावान श्रेष्ठ पुरुष है जो मोहि सीता दिखावे, वह महासती शीलवंती सर्व पापरहित मेरे हृदयको वल्लभ मेरा मनरूप मंदिर ताके विरहरूप अग्निसे जरे है सो ताकी वार्तारूप जलके दानकर कौन बुझावे? ऐसा कहकर परम उदास, धरतीकी ओर है दृष्टि जिनकी वारंवार कछु इक विचारकर निश्चल होय तिष्ठे। एक चकवीका शब्द निकट ही सुना सो सुनकर ताकी ओर निरखा बहुरि विचारी या गिरिका तट अत्यंत सुगंध होय रहा है सो याही ओर गई होय अथवा यह कमलनिका बन है यहां कौतूहलके अर्थ गई होय आगे याने यह बन देखा हुता सो स्थानक मनोहर है नानाप्रकार पुष्पनिकर पूर्ण है कदाचित तहां क्षणमात्र गई होय सो यह विचार आप वहां गए। वहां हूं सीताको न देखा, चकवी देखी तब विचारी वह पतिव्रता मेरे विना अकेली कहां जाय। बहुरि व्याकुलताको प्राप्त होय जायकर पर्वतसूं पूछते भए—हे गिरिराज! तू अनेक धातुनिसे भरा है। मैं राजा दशरथका पुत्र

रामचन्द्र तोहि पूछूं हूं, कमल सारिखे नेत्र हैं जाके सो सीता मेरे मनकी प्यारी हंसगामिनी सुंदर रत्ननिके भारसे नम्रीभूत है अंग जाका किंदूरा समान अधर सुन्दर नितंब सो तुम कहूं देखी, वह कहां है तब पहाड कहा जबाब देय, इनके शब्दसे गूंजा। तब आप जानी कछु याने शब्द कहा जानिए है याने न देखी, वह महासती काल प्राप्त भई, यह नदी प्रचंड तरंगनिकी धरणहारी अत्यन्त वेगको धरे अविवेकवंती ताने मेरी कांता हरी, जैसे पापकी इच्छा विद्याको हरे अथवा कोई क्रूर सिंह क्षुधातुर भख गया होय, वह धर्मात्मा साधुवर्गनिकी सेवक सिंहादिकके देखते ही नखादिके स्पर्श बिना ही प्राण देय। मेरा भाई भयानक रणविषै संग्राममें है सो जीवनेका संशय है। यह संसार असार है अर सर्व जीवराशि संशय रूप ही है, अहो यह बडा आश्चर्य है जो मैं संसारका स्वरूप जानूं हूं अर दुखते शून्य होय रहा हूं। एक दुख पूरा नहीं परे हैं अर दूजा और आवे है तातैं जानिए है यह संसार दुखका सागर ही है जैसे खोंड पगको खंडित करना अर दाहे मारेको भस्म करना अर डिगेको गर्तमें डारना, रामचन्द्रजीने बनविषै भ्रमणकर मृग सिंहादिक अनेक जन्तु देखे परंतु सीता न देखी तब अपने आश्रम आय अत्यन्त दीन बदन धनुष उतार पृथिवीमें तिष्ठे। बारंबार अनेक विकल्प करते क्षण एक निश्चल होय मुखसे पुकारते भए—हे श्रेणिक! ऐसे महापुरुषनिको भी पूर्वोपार्जित अशुभके उदयसूं दुख होय है ऐसा जानकर अहो भव्यजीव हो! सदा जिनवरके धर्ममें बुद्धि लगावो, संसारते ममता तजो। जे पुरुष संसारके विकारसूं पराङ्मुख होंय अर जिनवचनको नाहीं आराधें वे संसारकेविषै शरणरहित पापरूप वृक्षके कटुक फल भोगवे हैं, कर्मरूप शत्रुके आतापसे खेदखिन्न हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं सीताहरण वर्णन करनेवाला चवालीसवां पर्व पूर्ण भया॥ ४४॥

अथानन्तर लक्ष्मणके समीप युद्धविषै खरदूषणका शत्रु विराधित नामा विद्याधर अपने मंत्री अर शूरवीरनि सहित शस्त्रनि कर पूर्ण आया सो लक्ष्मणको अकेला युद्ध करता देख महानरोत्तम जान अपने स्वार्थकी सिद्धि इनसे जान प्रसन्न भया, महा तेजकर देदीप्यमान शोभता भया वाहनते उतर गोडे धरती लगाय हाथ जोड सीसनिवाय अति नम्रीभूत होय परम विनयसूं कहता भया हे नाथ ! मैं आपका भक्त हूं, कछु इक मेरी बीनती सुनो तुम सारिखानिका संसर्ग हमसारिखानिके दुखका क्षय करन हारा है, वाने आधी कही आप सारी समझगए ताके मस्तकपर हाथ धर कहते भए तू डरे मत, हमारे पीछे खडा रह, तब वह नमस्कारकर अति आश्चर्यको प्राप्त होय कहता भया हे प्रभो ! यह खरदूषण शत्रु महाशक्तिको धरे है याहि आप निवारो अर सेनाके योधानिकरि मैं लडूंगा ऐसा कह खरदूषणके योद्धानिसूं विराधित लडने लगा। दौडकर तिनके कटक पर पडा, अपनी सेना सहित झलझलाटकरे हैं आयुधनिके समूह ताके विराधित तिनकूं प्रगट कहता भया मैं राजा चन्द्रोदयका पुत्र विराधित घने दिननिविषै पिताका बैर लेने आया हूं युद्धका अभिलाषी अब तुम कहां जावो हो, जो युद्धमें प्रवीण हो तो खडे रहो, मैं ऐसा भयंकर फल दूंगा जैसा यम देय ऐसा कहा तब तिन योद्धानिके अर इनके महा संग्राम भया अनेक सुभट दोऊ सेनानिके मारे गए । पियादे प्यादेनिसूं घोडनिके असवार घोडानिके असवारनसूं हाथीनिके असवार हाथीनिके असवारानिसूं रथी रथीनिसूं परस्पर हर्षित होय युद्ध करते भए । वह वाहि बुलावे वह वाहि बुलावे या भांति परस्पर युद्धकर दशों दिशानिको बाणानिकरि आछादित करते भए ॥

अथानन्तर लक्ष्मण अर खरदूषणका महायुद्ध भया जैसा इंद्र और असुरेन्द्रके युद्ध होय, ता समय खरदूषण क्रोधकर मण्डित लक्ष्मणसे लाल नेत्रकर कहता भया। मेरा पुत्र निर्वैर सो तूने हणा अर हे चपल ! तूने मेरी कांताके कुचमर्दन किये सो मेरी दृष्टिसूं कहां जायगा ? आज तीक्ष्ण बाणनिकरि तेरे प्राण

हरूंगा जैसे कर्म किए हैं तिनका फल भोगवेगा, हे क्षुद्र निर्लज्ज परस्त्री संग लोलुपी ! मेरे सन्मुख आयकर परलोक जा। तब ताके कठोर बचनानिकरि प्रज्वलित भया है मन जाका सो लक्ष्मण बचन कर सकल आकाशको पूरता संता कहता भया। अरे क्षुद्र ! वृथा काहे गाजे है जहां तेरा पुत्र गया वहां तोहि पठाऊंगा, ऐसा कहकर आकाशकेविषै तिष्ठता जो खरदूषण ताहि लक्ष्मणने रथरहित किया अर ताका धनुष तोडा अर ध्वजा उडाय दई अर प्रभा रहित किया तब वह क्रोधकर भरा पृथिवीकेविषै पडा जैसे क्षीणपुण्य भए देव स्वर्गतें पडे बहुरि महा सुभट खडग लेय लक्ष्मणपर आया तब लक्ष्मण सूर्यहास खड्ग लेय ताके सन्मुख भया इन दोऊनिमें नानाप्रकार महायुद्ध भया देव पुष्पवृष्टि करते भए, अर धन्य धन्य २ शब्द करते भए बहुरि महा युद्धके विषै सूर्यहास खडगकर लक्ष्मणने खरदूषणका सिर काटा सो निर्जीव होय खरदूषण पृथिवीपर पडा मानों स्वर्गसे देव गिरा सूर्यसमान है तेज जाका, मानों रत्न पर्वत-का शिखर दिग्गजने ढाहा।

अथानन्तर खरदूषणका सेनापति दूषण विराधितको रथ रहित करनेको आरम्भता भया तब लक्ष्मणने बाणकरि मर्मस्थलको घायल किया सो घूमता भूमि में पडा अर लक्ष्मणने खरदूषणका समुदाय अर कटक अर पाताल लंकापुरी विराधितको दीनी अर लक्ष्मण अतिस्नेहका भरा जहां राम तिष्ठे हैं वहां आया आनकर देखे तो आप भूमि में पडे हैं अर स्थानकमें सीता नाहीं तब लक्ष्मणने कहा—हे नाथ ! उठो कहां सोवो हो, जानकी कहां गई, तब राम उठकर लक्ष्मणको घावरहित देख कछु इक हर्षको प्राप्त भए। लक्ष्मणको उरसे लगाया अर कहते भए। हे भाई ! मैं न जानूं जानकी कहा गई, कोई हर लेगया अथवा सिंह भखगया बहुत हेरी सो न पाई अति सुकमार शरीर उदवेगकर विलयगई तब लक्ष्मण विषादरूप होय क्रोधकर कहता भया। हे देव ! सोचके प्रबन्धकर कहा यह निश्चय करो कोई दुष्ट

दैत्य हर लेगया है जहां तिष्ठे है सो लावेंगे आप संदेह न करो, नानाप्रकारके प्रिय बचननिकरि रामको धीर्य बंधाय अर निर्मल जलकरि सुबुद्धिने रामका मुख धुवाया, ताही समय विशेष शब्द सुन रामने पूछा यह शब्द काहेका है तब लक्ष्मणने कहा—हे नाथ ! यह चन्द्रोदय विद्याधरका पुत्र विराधित याने रण में मेरा बहुत उपकार किया सो आपके निकट आया है याकी सेनाका शब्द है या भांति दोऊ बीर वार्त्ता करे हैं अर वह बडी सेनासहित हाथ जोड नमस्कारकर जय जय शब्द कह अपने मंत्रीनि सहित विनती करता भया आप हमारे स्वामी हो हम सेवक हैं जो कार्य होय ताकी आज्ञा देऊ तब लक्ष्मण कहता भया हे मित्र ! काहु दुराचारीने मेरे प्रभुकी स्त्री हरी है या बिना रामचन्द्र जो शोकके बशी होय कदाचित प्राणको तजें तो मैं भी अग्नि में प्रवेश करूंगा, इनके प्राणनिके आधार मेरे प्राण हैं, यह तू निश्चय जान ताते यह कार्य कर्तव्य है भले जानें सो कर, तब यह बात सुन वह अति दुःखित होय नीचा मुख कर रहा अर मन में बिचारता भया एते दिन मोहि स्थानक भ्रष्ट हुए भए नाना प्रकार बन विहार किया अर इन मेरा शत्रु हना स्थानक दिया तिनकी यह दशा है मैं जो २ विकल्प करूं हूं सो योंही वृथा जाय हैं यह समस्त जगत कर्माधीन है तथापि मैं कछू उद्यम कर इनका कार्य सिद्ध करूं ऐसा विचार अपने मंत्रिनिसूं कहा—पुरुषोत्तमकी स्त्री रत्न पृथिवीविषे जहां होय तहां जल स्थल आकाश पुर बन गिरि ग्रामादिक में यत्नकर हेरो यह कार्य भए मन बांछित फल पावोगे ऐसी राजा विराधितकी आज्ञा सुन यशके अर्थी सर्व दिशाको विद्याधर दौडे।

अथानंतर एक रत्नजटी विद्याधर अर्कटीका पुत्र सो आकाश मार्गमें जाता हुता ताने सीताके रुदनकी हाय राम हाय लक्ष्मण, यह ध्वनि समुद्रके ऊपर आकाशमें सुनी तब रत्नजटी वहां आय देखे तो रावणके विमान में सीता बैठी बिलाप करे है तब सीताको विलाप करती देख रत्नजटी क्रोधका भरा

रावण सों कहता भया हे पापी दुष्ट विद्याधर ! ऐसा अपराध कर कहां जायगा, यह भामण्डलकी बहन है। रामदेवकी राणी है। मैं भामण्डलका सेवक हू, हे दुर्बुद्धि ! जिया चाहे तो ताहि छोड, तब रावण अति क्रोध कर युद्धको उद्यमी भया बहुरि विचारी कदाचित युद्धके होते अति विह्वल जो सीता सो मरजावे तो भला नाहीं तातैं यद्यापि यह विद्याधर रंक है तथापि उपाय करि मारना ऐसा विचार रावण महाबली ने रत्न जटीकी विद्या हरलीनी सो रत्नजटी आकाशते पृथिवीविषै पडा मन्त्रके प्रभावकरि धीरा धीरा स्फुलिंगेकी न्याई समुद्रके मध्य कम्पद्वीपमें आय पडा आयुकर्मके योगते जीवता बचा जैसे बणिकका जहाज फटजाय अर जीवता बचे सो रत्नजटी विद्या खोय जीवता बचा सो विद्या तो जाती रही, जाकरि विमानविषै घर बैठ पहुंचे सो अत्यंत स्वास लेता कम्पूपर्वतपर चढ दिशाका अवलोकन करता भया, समुद्रकी शीतल पवनकर खेद मिटा, सो वनफल खाय कम्पूपर्वतपर रहे अर जे विराधितके सेवक विद्याधर सब दिशा नाना भेषकर दौडे हुते ते सीताको न देख पाछे आये । सो उनका मलिन मुख देख रामने जानीसी इनकी दृष्टि न आई, तब राम दीर्घ स्वांस नांख कहते भए।

हे भले विद्याधर हो तुमने हमारे कार्यके अर्थ अपनी शक्ति प्रमाण अति यत्न किया परन्तु हमारे अशुभका उदय, ताते अब तुम सुखसूं अपने स्थानक जावो, हाथते बडवानलमें गया रत्न बहुरि कहां दीखे कर्मका फल है सो अवश्य भोगना। हमारा तिहारा निवारा न निवरे, हम कुटम्बते छूटे, बनेंमें पैठे, तो हूं कर्मशत्रुको दया न उपजी ताते हम जानी हमारे असाताका उदय है, सीता हू गई या समान और दुख कहा होयगा, या भांति कहकर राम रोवने लगे, महाधीर नरनिके अधिपाति तब बिराधित धीर्य बंवायवे विषै पंडित नमस्कारकर हाथजोड कहता भया हे देव ! आप एता विषाद काहे करो थोडे ही दिनमें आप जनक सुताको देखोगे, कैसी है जनकसुता निःपाप है देह जाकी, हे प्रभो ! यह शोक महाशत्रु है शरीर

का नासकरे और वस्तुकी कहा बात, तातैं आप धीर्य अंगीकार करहु यह धीर्य ही महापुरुषनिका सर्वस्व है आप सारिखे पुरुष विवेकके निवास हैं धीर्यवन्त प्राणी अनेक कल्याण देख अर आतुर अत्यन्त कष्ट करैं तो हूं इष्ट वस्तुको न देखे अर यह समय विषादका नाहीं आप मन लगाय सुनहु विद्याधरनिका महाराजा खरदूषण मारा सो अब याका पारिपाक महाविषम है, सुग्रीव किहकंधापुरका धनी अर इंद्रजीत कुम्भकर्ण त्रिशिर अक्षोभ भीम क्रूरकर्मा महोदर इनको आदिदे अनेक विद्याधर महा योधा बलवन्त याके परममित्र हैं सो याके मरणके दुःखते क्रोधको प्राप्त भए होगें ये समस्त नाना प्रकार युद्ध में प्रवीण हैं, हजारां ठौर रणविषै कीर्ति पाय चुके हैं अर वेताड पर्वतके अनेक विद्याधर खरदूषणके मित्र हैं अर पवनञ्जयका पुत्र हनूमान् जाहि लखे सुभट दूरही टरें ताके संमुख देव हूं न आवें सो खरदूषण का जमाई है तातैं वह हू याके मरणका रोष करेगा तातैं यहां बनविषै न रहना, अलंकारोदय नगर जो पाताललंका ताविषै विराजिये अर भामंडलको सीताके समाचार पठाइये वह नगर महादुर्गम है तहां निश्चल होय कार्यका उपाय सर्वथा करेंगे, या भांति विराधित विनती करी तब दोऊ भाई चार घोडनिका रथ तापर चढकर पाताललंकाको चाले सो दोऊ पुरुषोत्तम सीता बिना न शोभते भए जैसे सम्यक् दृष्टि बिना ज्ञान चारित्र न सोहैं, चतुरंग सेनारूप सागर करि मंडित दण्डक बनते चाले, विराधित अगाऊ गया तहां चन्द्रनखाका पुत्र सुन्दर सो लडनेको नगरके बाहर निकसा ताने युद्ध किया सो ताको जीत नगर में प्रवेश किया देवनिके नगर समान वह नगर रत्नमई, तहां खरदूषणके मंदिरविषै विराजे सो महा मनोहर सुरमंदिर समान वह मंदिर तहां सीताबिना रंचमात्र हूं विश्रामको न पावते भए सीतामें है मन रामका सो रामको प्रियाके समीपकर बन हूं मनोग्य भासता हुता अब कांताके वियोगकर दग्ध जो राम तिनको नगर मंदिर विन्ध्याचलके बनसमान भासें।

अथानन्तर खरदूषणके मन्दिरमें जिनमन्दिर देखकर रघुनाथने प्रवेश किया वहां अरिहंतकी प्रतिमा देख रत्नमई पुष्पनिकर अर्चा करी, क्षण एक सीताका संताप भूल गये, जहां जहां भगवान्के चैत्यालय हुते वहां वहां दर्शन किया प्रशान्त भई है दुःखकी लहर जिनके रामचन्द्र खरदूषणके महल विषे तिष्ठे हैं अर सुन्दर, अपनी माता चन्द्रनखा सहित पिता अर भाईके शोक कर महाशोक सहित लंका गया। यह परिग्रह बिनाशीक है अर महादुःखका कारण है, बिघ्न कर युक्त है, ताते हे भव्यजीव हो तिन विषे इच्छा निवारो यद्यपि जीवनिके पूर्व कर्मके सम्बन्धसूं परिग्रहकी अभिलाषा होय है तथापि साधुवर्गके उपदेशकरि यह तृष्णा निवृत्त होय है जैसे सूर्यके उदयते रात्रि निवृत्त होय है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामको सीताका वियोग वर्णन करनेवाला पैतालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४५ ॥

अथानन्तर रावण सीताको लेय ऊंचे शिखरपर तिष्ठा धीरे धीरे चालता भया जैसे आकाशविषे सूर्य चाले, शोककर तप्तायमान जो सीता ताका मुख कमल कुमलाय गया देख रतिके राग कर मूढ भया है मन जाका ऐसा जो रावण सो सीताके चौगिर्द फिरे अर दीन वचन कहे—हे देवी! कामके वाण कर मैं हता जाऊं हूं, सो तोहि मनुष्यकी हत्या होयगी हे सुन्दरी! यह तेरा मुखरूप कमल सर्वथा कोप संयुक्त है तो हू मनोग्यते अधिक मनोग्य भासे है। प्रसन्न हो एक वेर मेरी ओर दृष्टि धर, देख तेरे नेत्रनिकी कांतिरूप जलकर मोहि स्नान कराय अर जो कृपादृष्टि कर नाहीं निहारे, तो अपने चरण कमलकरि मेरा मस्तक तोड, हाय हाय तेरी क्रीडाके बनविषे मैं अशोक वृक्ष ही क्यों न भया जो तेरे चरण कमल की पगथलीकी घात अत्यन्त प्रशंसा योग्य सो मोहि सुलभ होती भावार्थ—अशोक वृक्ष स्त्रीके पगथली

के घातसे फूले । हे कृशोदरी ! विमानके शिखर पर तिष्ठी सर्व दिशा देख, मैं सूर्यके ऊपर आकाशविषै आया हूं । मेरु कुलाचल अर समुद्र सहित पृथिवी देख मानों काहू सिलावटने रची है ऐसे वचन रावणने कहे । तब वह महासती शीलका सुमेरु पटके अंतर अरुचिके अक्षर कहती भई । हे अधम ! दूर रह, मेरे अंगका स्पर्श मत करे अर ऐसे निंद्य वचन कभी मत कहे, रे पापी ! अल्प आयु ! कुगतिगामी ! अपयशी ! तेरे यह दुराचार तोहीको भयकारी हैं, परदाराकी अभिलाषा करता तू महादुःख पावेगा । जैसे कोई भस्मकर दबी अग्निपर पांव धरे तो जरे, तैसे तू इन कर्मनिकरि बहुत पछतावेगा । तू महामोहरूप कीचकरि मलिन चित्त है तोहि धर्मका उपदेश देना वृथा है । जैसे अन्धके निकट नृत्य करे । हे क्षुद्र! जे पर स्त्रीकी अभिलाषा करे हैं वे इच्छामात्र ही पापको बांधकर नरकविषै महाकष्टको भोगे हैं । इत्यादि रुक्ष वचन सीता रावणसूं कहे । तथापि कामकर हता है चित्त जाका सो अविवेकसूं पाछा न भया अर खरदूषणकी जे मदद गए हुते परम हितु शुक हस्त प्रहस्तादिक वे खरदूषणके मुवे पीछे उदास होय लंका आए । सो रावण काहूकी ओर देखे नाहीं, जानकीको नानाप्रकारके वचनकर प्रसन्न करे, सो कहां प्रसन्न होय जैसे अग्निकी ज्वालाको कोई पाय न सके अर नागके माथेकी मणिको न लेय सके, तैसे सीताको कोई न उपजाय सके । बहुरि रावण हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार कर नानाप्रकारके दीनताके वचन कहे, सो सीता याके वचन कछू न सुने अर मंत्री आदि सन्मुख आए सर्व दिशानिते सामन्त आए । राक्षसनिके पति जो रावण सो अनेक लोकनिकर मंडित होता भया, लोक जय जयकार शब्द करते भए, मनोहर गीत नृत्य वादित्र होते भये । रावण इन्द्रकी न्याईं लंकाविषै प्रवेश किया, सीता चित्तमें चितवती भई, ऐसा राजा अमर्यादाकी रीति करे, तब पृथिवी कौनके शरण रहे, जबलग रामचंद्रकी कुशल क्षेमकी वार्ता मैं न सुनू । तबलग खान पानका मेरे त्याग है । रावण देवारण्य नामा उपवन स्वर्ग-

समान परम सुन्दर जहां कल्पवृक्ष समान वृक्ष वहां सीताको मेलकर अपने मन्दिर गया ताही समय खरदूषणके मरणके समाचार आए सो महा शोककर रावणकी अठारा हजार राणी ऊंचे स्वरकर विलाप करती भईं अर चंद्रनखा रावणकी गोदविषे लोटकर अति रुदन करती भई हाय मैं अभागिनी हती गई, मेरा धनी मारा गया मेहके झरने समान रुदन किया अश्रुपातका प्रवाह बहा, पति अर पुत्र दोऊके मरणके शोकरूप अग्निकर दग्धायमान है हृदय जाका, सो याहि विलाप करती देख याका भाई रावण कहता भया हे वत्से ! रोयबेकर कहा या जगत्के प्रसिद्ध चरित्रको कहा न जाने है । विना काल कोऊ वज्र से भी हता न मरे अर जब मृत्युकाल आवे तब सहजही मरजाय । कहां वे भूमिगोचरी राम अर कहां तेरा भरतार विद्याधर दैत्यनिका अधिपति खरदूषण ताहि वे मारें, यह कालहीका कारण है जाने तेरा पति मारा ताको मैं मारूंगा या भांति बहिनको धीर्य बंधाय कहता भया अब तू भगवानका अर्चनकर श्राविकाके व्रत धार, चन्द्रनखाको ऐसा कहकर रावण महलविषे गया सर्पकी न्यांई निश्वास नाखता सेजपर पडा वहां पटराणी मन्दोदरी आयकर भरतारको व्याकुल देख कहती भई हे नाथ ! खरदूषणके मरणकर अति व्याकुल भए हो सो तिहारे सुभट कुलविषे यह बात उचित नाहीं । जे शूरवीर हैं तिनके मोटी आपदाविषे हू विषाद नाहीं तुम बीराधिवीर क्षत्री हो तिहारे कुलमें तिहारे पुरुष अर तिहारे मित्र रण संग्रामविषे अनेक क्षय भये सो कौन कौनका शोक करोगे तुम कबहुं काहूका शोक न किया, अब खरदूषणका एता सोच क्यों करो हो ? पूर्वे इन्द्रके संग्राम विषे तिहारा काका श्रीमाली मरणको प्राप्त भया अर अनेक बांधव रणमें हते गए तुम काहूका कभी शोक न किया आज ऐसा सोच दृष्टि क्यों पडा है जैसा पूर्वे कबहुं हमारी दृष्टि न पडा, तब रावण निश्वास नाख बोला हे सुन्दरी ! सुन, मेरे अन्तःकरणका रहस्य तोहि कहुं हूं, तू मेरे प्राणनिकी स्वामिनी है अर सदा मेरी वांछा पूर्ण करे है । जो तू मेरा जीतव्य चाहे

कुमार समान होवे अथवा इन्द्र समान होवे तो मेरे कौन अर्थ, मैं सर्वथा अन्यपुरुषको न इच्छूं। तुम सब अठारह हजार राणी भेली होयकर आई हो सो तिहारा कहा मैं न करूं, तिहारी इच्छा होय सो करो, ताही समय रावण आया मदनके आतापकरि पीडित जैसे तृषातुर माता हाथी गंगाके तीर आवे तैसे सीताके समीप आय मधुर बाणी कर आदरसूं कहता भया हे देवी ! तू भय मत करे। मैं तेरा भक्त हूं। हे सुन्दरी ! चित लगाय एक विनती सुन मैं तीन लोक में कौन वस्तु कर हीन जो तू मोहि न इच्छे, ऐसा कहकर स्पर्शकी इच्छा करता भया तब सीता क्रोधकर कहती भई पापी ! परे जा, मेरा अंग मत स्पर्शे, तब रावण कहता भया कोप अर अभिमान तज प्रसन्न हो, शची इन्द्राणी समान दिव्य भोगनिकी स्वामिनी होहू तब सीता बोली, कुशीले पुरुषका बिभव मलसमान है अर शीलवंत हैं तिनके दरिद्र ही आभूषण हैं, जे उत्तम वंश विषैं उपजे हैं तिनके शीलकी हानिकरि दोऊ लोक बिगरे हैं तातें मेरे तो मरण ही शरण है। तू परस्त्रीकी अभिलाषा राखे है सो तेरा जीतव्य वृथा है। जो शील पालता जीवे है ताहीका जीतव्य सफल है या भांति जब सीता तिरस्कार किया तब रावण क्रोधकर मायाकी प्रवृत्ति करता भया। राणी अठारह हजार सब जाती रहीं अर रावणकी मायाके भयते सूर्य अस्त होय गया। मद झरती मायामई हाथिनिकी घटा आई, यद्यपि सीता भयभीत भई तथापि रावणके शरण न गई बहुरि अग्निके स्फुलिंगे वरसते भए अर लहलहाट करें हैं जीभ जिनकी ऐसे सर्प आए तथापि सीता रावणके शरण न गई बहुरि महा क्रूर वानर फारे हैं मुख जिन्होंने उछल उछल आए अति भयानक शब्द करते भए तथापि सीता रावणके शरण न गई अर अग्निके ज्वाला समान चपल हैं जिह्वा जिनकी ऐसे मायामई अजगर तिनने भय उपजाया तथापि सीता रावणके शरण न गई बहुरि अंधकार समान श्याम ऊंचे व्यंतर हुंकार शब्द करते आए भय उपजावते भये तथापि सीता रावणके शरण न गई, या भांति

नानाप्रकारकी चेष्टाकर रावणने उपसर्ग किये तथापि सीता न डरी, रात्रि पूर्ण भई, जिनमंदिरनिविषे वादित्रनिके शब्द होते भए द्वारनिके कपाट उघरे, मानों लोकनिके लोचन ही उघरे, प्रात सन्ध्या कर पूर्वदिशा आरक्त भई, मानों कुंकुमके रंगकरि रंगी ही है । निशाका अंधकार सर्व दूर कर चन्द्रमाको प्रभा रहित कर सूर्यका उदय भया । कमल फूले, पक्षी विचरने लगे, प्रभात भया तब प्रात क्रिया कर विभीषणादि रावणके भाई खरदूषणके शोक कर रावण पै आए । सो नीचा मुख किये आंसू डारते भूमि विषै तिष्ठे ता समय पटके अंतर शोककी भरी जो सीता ताके रुदनके शब्द विभीषणने सुने अर सुनकर कहता भया यह कौन स्त्री रुदन करे है ? अपने स्वामीते विछुरी है याका शोक संयुक्त शब्द दुखको प्रकट दिखावे है । ये विभीषणके शब्द सुन सीता अधिक रोवने लगी, सज्जनको देख शोक बढेही है । विभीषण पूछता भया हे बहिन ! तू कौन है ? तब सीता कहती भई, मैं राजा जनककी पुत्री भामण्डलकी बहिन राम की राणी दशरथ मेरा सुसरा लक्ष्मण मेरा देवर सो खरदूषणते लडने गया ताके पीछे मेरा स्वामी भाई की मदद गया, मैं बनमें अकेली रही सो छिद्र देख या दुष्टचित्तने हरी सो मेरा भरतार मो विना प्राण तजेगा ताते हे भाई ! मोहि मेरे भरतार पै शीघ्रही पठावो, ये वचन सीताके सुन विभीषण रावणसे विनय कर कहता भया हे देव ! यह परनारी अग्निकी ज्वाला है, आशी विष सर्पके फण समान भयंकर है, आप काहेको लाए अब शीघ्रही पठाय देहु हे स्वामी ! मैं बालबुद्धि हूं परन्तु मेरी विनती सुनो मोहि आपने आज्ञा करी हुती जो तू उचित वार्ता हमसो कहियो कर ताते आपकी आज्ञाते मैं कहू हूं तिहारी कीर्ति रूप बेलिके समूहकर सर्व दिशा व्याप्त होय रही हैं ऐसा न होय जो अपयशरूप अग्नि कर यह कीर्ति लता भस्म होय । यह परदाराका अभिलाष अयुक्त अति भयंकर महानिंद्य दोऊ लोकका नाश करण हारा जाकरि जगत् विषे लज्जा उपजे उत्तम जननिकरि धिक्कार शब्द पाइये है । जे उत्तम जन हैं तिनके

हृदयको अप्रिय ऐसा अनीतिकार्य कदाचित् न कर्तव्य, आप सकल वार्ता जानोहो, सब मर्यादा आपही ते रहें आप विद्याधरनिके महेश्वर, यह बलता अंगारा काहेको हृदयमें लगावो, जो पापबुद्धि परनारी सेवे हैं सो नरक विषे प्रवेश करे हैं जैसे लोहेका ताता गोला जलमें प्रवेश करे तैसे पापी नरकमें पडे है। ये वचन विभीषणके सुनकर रावण बोला हे भाई ! पृथिवी पर जो सुन्दर वस्तु हैं ताका मैं स्वामी हूं सब मेरी ही वस्तु हैं पर वस्तु कहांसे आई ! ऐसा कहकर और बात करने लगा बहुरि महानीतिका धारी मारीच मंत्री क्षण एक पीछे कहता भया देखो यह मोह कर्मकी चेष्टा, रावण सारिखे विवेकी सर्व रीतिको जान ऐसे कर्म करे सर्वथा जे सुबुद्धि पुरुष हैं तिनको प्रभातही उठकर अपनी कुशल अकुशल चिन्तवनी, विवेक से न चूकना या भांति निरपेक्ष भया महा बुद्धिमान् मारीच कहता भया तब रावणने कछू पाछा जवाब न दिया, उठकर खडा होगया, त्रैलोक्य मण्डन हाथी पर चढि सब सामन्तनिसहित उपवनते नगरको चला, वरछी, खडग, तोमर, चमर, छत्र ध्वजा आदि अनेक वस्तु हैं हाथनिमें जिनके ऐसे पुरुष आगे चले जाय हैं अनेक प्रकार शब्द होय हैं चंचल है ग्रीवा जिनकी ऐसे हजारां तुरंगनि पर चढे सुभट चले जाय हैं अर कारी घटा समान मद झरते गाजते गजराज चले जाय हैं अर नाना प्रकारकी चेष्टा करते उछलते पयादे चले जाय हैं, हजारां वादित्र बाजे, या भांति रावणने लंकामें प्रवेश किया। रावणके चक्रवर्तीकी सम्पदा तथापि सीता तृणसे हू जघन्य जाने, सीताका मन निष्कलंक यह लुभायवेको समर्थ न भया। जैसे जलविषै कमल अलिप्त रहे, तैसे सीता अलिप्त रहे। सर्व ऋतुके पुष्पनिकारि शोभित नाना प्रकारके वृक्ष अर लतानिकरि पूर्ण ऐसा प्रमद नामा वन तहां सीता राखी। वह वन नंदन समान सुंदर जाहि लखे नेत्र प्रसन्न होंय, फुलागिरिके ऊपर यह वन सो देखे पीछे और ठौर दृष्टि लगे, जाहि लखे देवनिका मन उन्मादको प्राप्त होय मनुष्यनिकी कहा बात, वह फुल्लगिरि सप्तवनकरि वेष्टित सोहै जैसे भद्रशालादि वनकर सुमेरु सोहे है।

हे श्रेणिक ! सात ही बन अद्भुत हैं उनके नाम सुन प्रकीर्णक, जनानन्द, सुखसेव्य, समुच्चय, चारणप्रिय, निबोध प्रमद, तिनमें प्रकीर्णक पृथिवी विषे ताके ऊपर जनानन्द जहां चतुर जन क्रीडा करें अर तीजा सुखसेव्य अतिमनोग्य सुन्दर वृक्ष अर वेल कारी घटा समान सघन सरोवर सरिता वापिका अतिमनोहर अर समुच्चय विषें सूर्य का आताप नाहीं वृक्ष ऊंचे कहूं ठौर स्त्री क्रीडा करें कहूं ठौर पुरुष अर चारणप्रिय बनमे चारण मुनि ध्यान करें अर निबोध ज्ञानका निवास सबनिके ऊपर अति सुन्दर प्रमद नामा बन ताके ऊपर जहां तांबूलका बेल केतकीनिके बीडे जहां स्नानक्रीडा करनेको उचित रमणीक वापिका कमलनिकर शोभित हैं अर अनेक स्वर्णके महल अर जहां नारंगी बिजोरा नारियल छुहारे ताड वृक्ष इत्यादि अनेक जातिके वृक्ष सर्व ही वृक्ष पुष्पनिके गुच्छनि कर शोभे हैं जिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर जहां वेलिनके पल्लव मन्द पवन कर हाले हैं। जा वनविषें सघन वृक्ष समस्त ऋतुनिके फल फूलनिकर युक्त कारी घटा समान सघन हैं मोरनके युगलकर शोभित हैं ता बनकी बिभूती मनोहर वापी सहस्रदल कमल हे मुख जिनके सो नील कमल नेत्रनिकर निरखे हैं अर सरोवर विषे मन्द मन्द पवनकर कल्लोल उठे हैं सो मानो सरोवरी नृत्य ही करे हैं अर कोयल बोले हैं सो मानों वचनालाप ही करे हैं अर राज हंसनीनिके समूहकर मानो सरोवर हंसेही हैं बहुत कहिवे कर कहा वह प्रमदनामा उद्यान सर्व उत्सवका मूल भोगीनिका निवास नन्दनवनहूते अधिक ता बनमें एक अशोकमालिनी नामा वापी कमलादि कर शोभित जाके मणि स्वर्णके सिवाण, विचित्र आकारको धरे हैं द्वार जाके जहां मनोहर महल जाके सुन्दर झरोखे तिनकर शोभित जहां नीझरने झरें हैं वहां अशोक वृक्षके तले सीता राखी कैसी है सीता श्रीरामजीके वियोग कर महाशोकको धरे है जैसे इन्द्रते विछुरी इंद्राणी, रावणकी आज्ञाते अनेक स्त्री विद्याधरी खडी ही रहें नाना प्रकारके वस्त्र सुगन्ध आभूषण जिनके हाथमे भांति

भांतिकी चेष्टा कर सीताको प्रसन्न किया चाहैं । दिव्यगीत दिव्यनृत्य दिव्यवादित्र अमृत सारिखे दिव्य-
वचन तिन कर सीताको हर्षित किया चाहैं परन्तु यह कहां हर्षित होय जैसे मोक्ष संपदाको अभव्य जीव
सिद्ध न कर सके तैसे रावणकी दूती सीताको प्रसन्न न कर सकी । ऊपर ऊपर रावण दूती भेजे, कामरूप
दावानलकी प्रज्वलित ज्वाला ताकर व्याकुल महाउन्मत्त भांति भांतिके अनुरागके वचन सीताको कह
पठावे यह कछु जवाब नहीं देय । दूती जाय रावणसों कहैं हे देव ? वह तो आहार पानी तज बैठी है
तुमको कैसे इच्छे वह काहूसों बात न करे निश्चल अंगकर तिष्ठे है हमारी ओर दृष्टिही नाहीं धरे, अ-
मृत हूते अति स्वादु दुग्धादि कर मिश्रित बहुत भांति नाना प्रकारके व्यंजन ताके मुख आगे धरे हैं सो
स्पर्शे नाहीं । यह दूतिनिकी बात सुन रावण खेद खिन्न होय मदनाग्निकी ज्वाला कर व्याप्त है अंग
जाका महा आरतरूप चिन्ताके सागरमें डूबा, कबहूं निश्वास नांखे, कबहूं सोच करे, सूक गया है मुख
जाका कबहूं कछु इक गावे कामरूप अग्नि कर दग्ध भया है हृदय जाका कछु इक विचार २ निश्चल
होय है, अपना अंग भूमिमें डार देय फिर उठे सूनासा होय रहे, विना समझे उठ चले बहुरि पीछा आवे
जैसे हस्ती सूण्ड पटके तैसे भूमिमें हाथ पटके सीताको बरावर चितारता आंखानिते आंसू डारे कबहूं
शब्द कर बुलावे कबहुं हुंकार शब्द करे कबहुं चुप होय रहे कबहुं वृथा बकवाद करे कबहुं सीता २
बार २ बके । कबहुं नीचा मुखकर नखानिकरि धरती कुचरे, कबहुं हाथ अपने हिय लगावे कबहुं बाहु
ऊंचा करे कबहुं सेजपर पडे कबहूं उठ बैठे कबहूं कबहूं कमल हिये लगावे, कबहुं दूर डार देय कबहुं शृंगार
का काव्य पढे, कबहूं आकाशकी ओर देखे—कबहूं हाथसे हाथ मसले, कबहूं पगसे पृथिवी हणे निश्वास
रूप अग्निकर अधर श्याम होय गए कबहूं कह २ शब्द करे कबहूं अपने केश बखेरे कबहूं बांधे कबहूं जंभा
ई लेय, कबहूं मुखपर अञ्चल डारे, कबहूं वस्त्र सब पहिरलेय, सीताके चित्राम बनावे, कबहूं अश्रुपातकर

आर्द्रकरे, दीन भया हाहाकार शब्द करे, मदन ग्रहकर पीडित अनेक चेष्टा करे, आशारूप इंधनकर प्रज्वलित जो कामरूप अग्नि ताकर ताका हृदय जरे अर शरीर जले, कबहूं मनविषे चितवे कि मैं कौन अवस्थाको प्राप्त भया जाकर अपना शरीर हू नाहीं धार सकूं हूं, मैं अनेक गढ अर सागरके मध्य तिष्ठे बडे बडे विद्याधर युद्धविषै हजारां जीते अर लोकविषै प्रसिद्ध जो इंद्र नामा विद्याधर सो बन्दी गृहविषै डारा, अनेक युद्धविषै जीते राजानिके समूह, अब मोहकर उन्मत्त भया मैं प्रमादके वश प्रवर्ता हूं। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं हे राजन्! रावण तो कामके वश भया अर बिभीषण महा बुद्धिमान मंत्रविषै निपुण सब मंत्रिनिको इकट्ठाकर मंत्र विचारा, कैसा है बिभीषण रावणके राज्यका भार जाके सिरपर पडा है, समस्त शास्त्रनिके ज्ञानरूप जलकर धोया है मनरूप मैल जाने, रावणके ता सम न और हितू नाहीं। बिभीषणको सर्वथा रावणके हितहीका चिंतवन है सो मंत्रिनिसूं कहता भया अहो वृद्धाहो! राजाकी तो यह दशा अब अपने तांई कहा कर्तव्य सो कहो? तब बिभीषणके वचन सुन संभिन्नमति मंत्री कहता भया हम कहा कहें, सर्वकार्य बिगडा। रावणकी दाहिनी भुजा खरदूषण हुता सो मूवा अर विराधित कहा पदार्थ सो स्यालते सिंह भया, लक्ष्मणके युद्धविषै सहाई भया अर बानरवंशी जोरते बस रहे हैं इनका आकार तो कछु औरही और, इनके चित्तमें कछु और ही है जैसे सर्प ऊपरतो नरम माहीं विष, अर पवनका पुत्र जो हनूमान् सो खरदूषणकी पुत्री अनंगकुसमाका पति सो सुग्रीवकी पुत्री परणा है सुग्रीवकी पक्ष विशेष है यह वचन संभिन्नमतिके सुन पंचमुख मंत्री मुसकाय बोला—तुम खरदूषणके मरण कर सोच किया सो शूरवीरनिकी यही रीति है जो संग्राम विषै शरीर तजें अर एक खरदूषणके मरणकर रावणका कहा घट गया जैसे पवनके योगते समुद्रतें एक जलकी कणिका गई तो समुद्रका कहा न्यून भया अर तुम औरनिकी प्रशंसा करो हो सो मेरे चित्तमें लज्जा उपजे है, कहां रावण जगत्का स्वामी

अर कहां वे वनवासी भूमिगोचरी, लक्ष्मणके हाथ सूर्यहास खड्ग आया तो कहा अर विराधित आय मिला तो कहा जैसे पहाड विषम है अर सिंहकर संयुक्त है तो हू कहा दावानल न दहे ? सर्वथा दहे, तब सहस्रमति मंत्री माथा हलाय कहता भया।

कहा ये अर्थहीन वातें कहो हो जामे स्वामीका हितहोय सो करना, दूसरा स्वल्प है अर हम वडे हैं यह विचार बुद्धिमानका नाहीं, समय पाय एक अग्निका किणका सकल मंडलको दहे अर अश्वग्रीव के महा सेना हुती अर सर्व पृथिवी विषें प्रसिद्ध हुता सो छोटेसे त्रिपृष्टिने रणमें मार लिया ताते और यत्न तज लंकाकी रक्षाका यत्न करहु। नगरी परम दुर्गम करहु, कोई प्रवेश न करसके, महा भयानक मायामई यंत्र सर्व दिशानिमें विस्तार हु अर नगरमें परचक्रका मनुष्य न आवने पावे अर लोकको धीर्य बंधावहु अर सब उपाय कर रक्षा करहु, जाकर रावण सुखको प्राप्त होय अर मधुर वचनकर नाना वस्तुनिकी भेंटकर सीताको प्रसन्न करहु जैसे दुग्ध पायवेसे नागनी प्रसन्न करिये अर वानरवंशी योधानिकी नगरके बाहिर चौकी राखहु ऐसे किएं कोऊ परचक्रका धनी न आय सके अर यहांकी वात परचक्र में न जाय या भांति गढका यत्न कीये तब कौन जाने सीता कौनने हरी अर कहां है। सीता विना राम निश्चय सेती प्राण तजेगा जाकी स्त्री जाय सो कैसे जीवे, अर राम मूवा तब अकेला लक्ष्मण कहा करेगा अथवा रामके शोककर लक्ष्मण अवश्य मरे न जीवे, जैसे दीपकके गए प्रकाश न रहे अर यह दोऊ भाई मूए तब अपराधरूप समुद्र विषें डूबा जो विराधित सो कहा करेगा अर सुग्रीवका रूप कर विद्याधर ताके घरमें आया है सो रावण टार सुग्रीवका दुःख कौन हरे ? मायामई यंत्रकी रखवारी सुग्रीव को सौंपो, जासे वह प्रसन्न होय रावण याके शत्रुका नाश करे, लंकाकी रक्षाका उपाय मायामई यंत्रकर करना। यह मंत्रकर हर्षित होय सब अपने अपने घर गए, विभीषणने मायामई यंत्रकर लंकाका यत्न

किया अर अधः ऊर्ध तिर्यकसे कोऊ न आय सके नानाप्रकारकी विद्याकर लंका अगम्य करी। गौतमगणधर कहे हैं हे श्रेणिक ! संसारी जीव सर्व ही लौकिक कार्यमें प्रवृत्ते हैं, व्याकुल चित्त हैं अर जे व्याकुलता रहित निर्मलचित्त हैं तिनको जिन वचनका अभ्यास टाल और कर्तव्य नाहीं अर जो जिनेश्वरने भाखा है सो पुरुषार्थ बिना सिद्ध नाहीं अर भले भवितव्यके बिना पुरुषार्थकी सिद्धि नाहीं, तातें जे भव्यजीव हैं ते सर्वथा संसारसे विरक्त होय मोक्षका यत्न करहु नर नारक देव तिर्यंच ये चारो ही गति दुःख रूप हैं, अनादि कालते ये प्राणी कर्मके उदयकर युक्त रागादिमें प्रवृत्ते हैं तातें इनके चित्तविषे कल्यानरूप वचन न आवें। अशुभका उदय मेट शुभकी प्रवृत्ति करें, तब शोकरूप अग्निकर तप्तायमान न होंय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं मायामयी कोट व्याख्यान वर्णन करनेवाला छियालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४६ ॥

अथानन्तर किहकंधापुरका स्वामी जो सुग्रीव सो ताका रूप बनाय विद्याधर याके पुरमें आया अर सुग्रीव कांताके विरहकर दुखी भ्रमता संता वहां आया जहां खरदूषणकी सेनाके सामंत मूए पडे हुते, विखरे रथ मूए हाथी मूए घोडे छिन्न भिन्न होय रहे हैं शरीर जिनके, कैयक राजानिका दाह होय है कैयक ससके हैं कईएकनिकी भुजा कटगई हैं कईनिकी जंघा कटगई हैं। कईनिकी आंत गिरपडी हैं कईनिके मस्तक पडे हैं कईनिको स्याल भखे हैं कईनिको पक्षी चूथे हैं कैयकनिके परवार रोवे हैं कईयकनिको टांगि राखे हैं। यह रणखेतका वृत्तांत देख सुग्रीव काहूसों पूछता भया तब वाने यह कही खरदूषण मारा गया, तब सुग्रीवने खरदूषणका मरण सुन अति दुःख किया मनमें चितवे है।

बडा अनर्थ भया वह महाबलवान् हुता ताते मेरा सर्व दुःख निवृत्त होता सो कालरूप दिग्गजने मेरा आशारूप वृक्ष तोडा, मैं हीनपुण्य अब मेरा दुःख कैसे शांत होय यद्यपि विना उद्यम जीवको सुख नाहीं ताते दुःख दूर करवेका उद्यम अंगीकार करूं, तब हनूमानपै गया, हनूमान दोऊनिका समानरूप देख पाछा गया तब सुग्रीव विचारी कौन उपाय करूं जाते चित्तकी प्रसन्नता होय जैसे नवा चांद निरखें हर्ष होय, जो रावणके शरणे जाऊं तो रावण मेरा अर शत्रुका एकरूप जान शायद मोही मारे अथवा दोऊनिको मार स्त्री हर लेय वह कामांध है कामांधका विश्वास नाहीं। मंत्र दोष अपमान दान पुण्य वित्त शूरवीरता कुशील मनका दाह यह सब मित्रको न कहिए जो कहैं तो खता पावें ताते जाने संग्रामविषे खरदूषणको मारा ताहीके शरणे जाऊं, वह मेरा दुःख हरे अर जापै दुःख पडा होय सो दुखीके दुखको जाने जिनकी तुल्य अवस्था होय तिनही विषै स्नेह होय। सीताके वियोग करि सीतापति हीको दुःख उपजा है ऐसा विचारकर विराधितके निकट अति प्रीतिकर दूत पठाया सो दूत जाय सुग्रीवके आगमनका वृत्तांत विराधितसे कहता भया सो विराधित सुन कर मनमें हर्षित भया विचारी बडा आश्चर्य है, सुग्रीव जैसे महाराज मुहसे प्रीति करनेकी इच्छा करें सो बडेनिके आश्रयते कहा न होय। मैं श्रीरामलक्ष्मणका आश्रय किया तातें सुग्रीवसे पुरुष मोसे ढभ किया चाहे हैं, सुग्रीव आया मेघकी गाज समान वादित्रनिके शब्द होते आए सो पाताल लंकाके लोग सुनकर व्याकुल भए। तब लक्ष्मण विराधितको पूछा वादित्रनिका शब्द कौनका सुनिये है तब अनुराधाका पुत्र विराधित कहता भया हे नाथ! यह वानर वंशिनिका अधिपति प्रेमका भरा तिहारे निकट आया है। किहकंधापुरके राजा सूर्यरजके पुत्र पृथिवी पर प्रसिद्ध बडा बाली छोटा सुग्रीव सो वालीने तो रावणको सिर न नवाया सुग्रीवको राज्य देय वैरागी भया सर्व परिग्रह तजी, सुग्रीव निहकंटक राज्य करे। ताके सुतारा स्त्री जैसे शची संयुक्त इन्द्र रमें तैसे सुग्रीव

सुतारा सहित रमें। जाके अंगद नामा पुत्र गुण रत्ननिकारि शोभायमान जाकी पृथिवीविषे कीर्ति फैल रही है यह बात विराधित कहे हैं अर सुग्रीव आया ही, राम अर सुग्रीव मिले, रामको देख फूल गया है मुख कमल जाका सुवर्णके आंगनविषे बैठे, अमृतसमान वाणी कर योग्य संभाषण करते भए। सुग्रीवके संग जे वृद्ध विद्याधर हैं, वे रामसूं कहते भए हे देव! यह राजा सुग्रीव किहकंधापुरका पति महा बली गुणवान सत्पुरुषनिको प्रिय सो कोई एक दुष्ट विद्याधर माया कर इनका रूप बनाया इनकी स्त्री सुतारा अर राज्य लेयवेका उद्यमी भया है। ये वचन सुन राम मनमें चितवते भए यह कोई मोसे भी अधिक दुखिया है याके बैठे ही दूजा पुरुष याके घरमें आय घुसा है, याके राज्य विभव है परंतु कोऊ शत्रुको निवारिवे समर्थ नाहीं। लक्ष्मण समस्त कारण सुग्रीवके मंत्री जामवंतको पूछा, जामवंत सुग्रीवके मन तुल्य है तब वह मंत्री महा विनय संयुक्त कहता भया—हे नाथ! कामकी फांसी कर बेढा वह पापी सुताराके रूपपर मोहित भया, मायामई सुग्रीवका रूप बनाय राजमंदिर आया। सो सुताराके महिलमें गया, सुतारा महासती अपने सेवकानिते कहती भई, यह कोई दुष्ट विद्याधर विद्याकरि मेरे पतिका रूप बनाय आवे है पापकर पूर्ण सो याका आदर सत्कार कोऊ मत करो, वह पापी शंकारहित जायकर सुग्रीवके सिंहासनपर बैठा अर वाही समय सुग्रीव हू आया अर अपने लोकनिको चिंतावान देखे तब विचारी मेरे घरमें काहेका विषाद है, लोक मलिन वदन ठौर ठौर भेले होय रहे हैं। कदाचित् अंगद मेरुके चैत्यालयनिकी बंदनाके अर्थ सुमेरु गया न आया होय, अथवा राणीने काहूपर रोस किया होय अथवा जन्म जरा मरणकर भयभीत बिभीषण वैराग्यको प्राप्त भया होय ताका सोच होय ऐसा विचारकर द्वारे आया, रत्नमई द्वार गीत गानरहित देखा, लोक सचिंत देखे, मनमें विचारी यह मनुष्य और ही होय गये। मंदिरके भीतर स्त्री जननिके मध्य अपनासा रूप किए दुष्ट विद्याधर बैठा देखा दिव्य हार पहिरे सुन्दर वस्त्र

मुकटकी कांति करि प्रकाश रूप तब सुग्रीव क्रोधकर गाजा जैसे वर्षाकालका मेघ गाजे अर नेत्रनिके आरक्तकरि दशोंदिशा आरक्त होय गईं जैसी सांझ फूले तब वह पापी कृत्रिम सुग्रीव भी गाजा जैसे माता हाथी मदकर बिह्वल होय तैसे कामकर विह्वल सुग्रीवसों लडनेको उठा दोऊ होठ डसते भ्रुकटी चढाय युद्धको उद्यमी भए तब श्रीरामचन्द्रादि मंत्रिनिने मने किए अर सुतारा पटराणी प्रकट कहती भई यह कोऊ दुष्ट विद्याधर मेरे पतिका रूप बनाय आया है। देह अर बल अर बचननिकी कांति करि तुल्य भया है परन्तु मेरे भरतारमें महापुरुषनिके लक्षण हैं सो यामें नाहीं जैसे तुरंग अर खरकी तुल्यता नाहीं तैसे मेरे पतिकी अर याकी तुल्यता नाहीं। या भांति राणी सुताराके बचन सुनकर केएक मंत्रिनि ने न मानी जैसे निर्धनका वचन धनवान न माने, सादृश्यरूप देखकर हरा गया है चित्त जिनका सो सब मन्त्रि नि भेले होय मन्त्र किया पंडितनिको इतनोनिके वचननिका विश्वास न करना—बालक अतिवृद्ध, स्त्री, मद्यपायी वेश्यासक्त इनके वचन प्रमाण नाहीं अर स्त्रीनिके शीलकी शुद्धि राखना, शीलकी शुद्धि बिना गोत्रकी शुद्धि नाहीं, स्त्रीनिको शील ही प्रयोजन है ताते राज लोकमें दोऊ ही न जानें पावें, बाहिर रहें तब इनका पुत्र अंगद तो माताके बचनते इनका पक्ष आया अर जांबूनद कहे है हम भी इन्हींके संग रहें अर इनका पुत्र अंगज सो कृत्रिम सुग्रीवका पक्ष है अर सात अक्षोहणी दल इनमें है अर सात बामें हैं। नगरके दक्षिणके ओर वह राखा उत्तरकी ओर यह राखा अर बालीका पुत्र चंद्ररश्मि ताने यह प्रतिज्ञा करी जो सुताराके महिल आवेगा ताही खडग कर मारूंगा तब यह सांचा सुग्रीव स्त्रीके विरह कर व्याकुल शोकके निवारवे निमित्त खरदूषणपै गया सो खरदूषण तो लक्ष्मणके खडग कर हता गया बहुरि यह हनूमान पै गया, जाय प्रार्थना करी, मैं दुःख कर पीडित हूं मेरा सहाय करो। मेरारूप कर कोइ पापी मेरे घरमें पैठा है, सो मोहि महाबाधा है जायकर ताहि मारो, तब सुग्रीवके वचन सुन हनूमान

बडवानल समान क्रोधकर प्रज्वालित होय अपने मंत्रिनि सहित अप्रतीघात नामा विमानमें बैठ किहकंधापुर आया सो हनूमानको आया सुन वह मायामई सुग्रीव हाथी चढा लडिवेको आया सो हनूमान दोऊनिका सादृश्य रूप देख आश्चर्यको प्राप्त भया, मनमें चितवता भया ये दोऊ समान रूप सुग्रीव ही हैं। इनमेंसे कौनको मारूं कछु विशेष जाना न पडे, विना जाने सुग्रीव ही को मारूं तो बडा अनर्थ होय। एक मुहूर्त अपने मंत्रिनिते विचारकर उदासीन होय हनूमान पीछा निजपुर गया सो हनूमानको गया सुन सुग्रीव बहुत व्याकुल भया। मनमें विचारता भया हजारों विद्या अर माया तिनकरि मण्डित महाबली महाप्रताप रूप वायुपुत्र सो भी सन्देहको प्राप्त भया सो बडा कष्ट, अब कौन सहाय करे अति व्याकुल होये दुःख निवारने अर्थ स्त्रीके वियोगरूप दावानल कर तप्तायमान आपके शरण आया है आप शरणागत प्रतिपालक हैं, यह सुग्रीव अनेक गुणानिकर शोभित है, हे रघुनाथ! प्रसन्न होहु, याहि अपना करहु, तुम सारिखे पुरुषनिका शरीर परदुःखका नाशक है ऐसे जाबूनंदके वचन सुन रामलक्ष्मण अर विराधित कहते भए, धिक्कार होवे परदारा रतपापी जीवनिको राम विचारी मेरा अर याका दुःख समान है सो यह मेरा मित्र होयगा मैं याका उपकार करूंगा अर यह पीछा मेरा उपकार करेगा नहीं तो मैं निर्ग्रंथी मुनि होय मोक्षका साधन करूंगा ऐसा विचारकर राम सुग्रीवसों कहते भए, हे सुग्रीव! मैं सर्वथा तोहि मित्र किया जो तेरा स्वरूप बनाय आया है ताहि जीत तेरा राज्य तोहि निहकंटक कराय दूंगा अर तेरी स्त्री तोहि मिलाय दूंगा अर तेरा काम होय चुके पाछे तू सीताकी सुध हमें आन देना जो कहां है, तब सुग्रीव कहता भया हे प्रभो! मेरा कार्य भए पाछे जो सात दिनमें सीताकी सुध न लाऊं तो अग्निमें प्रवेश करूं यह बात सुन राम प्रसन्न भए जैसे चन्द्रमाकी किरणकरि कुमद प्रफुल्लित होय। रामका मुखरूप कमल फूल गया, सुग्रीवके अमृतरूप वचन सुनिकरि रोमांच खडे होय आए, जिनराजके चैत्या

लयमें दोनों धर्ममित्र भए यह वचन किया परस्पर कोई द्रोह न करे बहुरि रामलक्ष्मण रथपर चढ अनेक सामन्तनि सहित सुग्रीवके साथ किहकन्धापुर आए। नगरके समीप डेराकर सुग्रीवने मायामयी सुग्रीव पै दूत भेजा सो दूतको ताने फेर दिया अर मायामई सुग्रीव रथमें बैठ बडी सेना सहित युद्धके निमित्त निकसा, सो दोऊ सुग्रीव परस्पर लडे। मायामई सुग्रीव अर सांचे सुग्रीवके नानाप्रकारका युद्ध भया, अंधकार होय गया दोऊ ही खेदको प्राप्त भये, घनी बेरमें मायामई सुग्रीवने सांचे सुग्रीवके गदाकी दीनी सो गिर पडा, तब मायामई सुग्रीव याको मूया जान हर्षित होय नगरमें गया अर सांचा सुग्रीव मूर्छित होय पडा सो परिवारके लोक डेरामें लाये तब सचेत होय रामसों कहता भया—हे प्रभो! मेरा चोर हाथमें आया हुता सो नगरमें जाने दिया, तब राम कही तेरा अर वाका रूप देखकर हम भेद न जाना तातें सो तेरा शत्रु न हता कदाचित विना जाने तेरा ही नाश होय तो योग्य नाहीं, तू हमारा परम मित्र है तेरे अर हमारे जिनमंदिरमें वचन हुवा है।

अथानन्तर रामने मायामई सुग्रीवको बहुरि युद्धके निमित्त बुलाया सो वह बलवान क्रोधरूप अग्नि कर जलता आया, राम सन्मुख भए वह समुद्र तुल्य अनेक शस्त्रनिके धारक सुभट वेई भए ग्राह तिनकरि पूर्ण, ता समय लक्ष्मणने सांचा सुग्रीव पकड राखा जो स्त्रीके वैरसे शत्रुके सन्मुख न आए अर श्रीरामको देखकर मायामई सुग्रीवके शरीरमें जो वैताली विद्या हुती सो तातें पूछकर ताके शरीरते निकसी तब सुग्रीवका आकार मिट वह साहसगति विद्याधर इन्द्रनीलके पर्वतसमान भासता भया जैसे सांपकी कांचली दूर होय तैसे सुग्रीवका रूप दूर होगया तब जो आधी सेना बानर बंशिनिकी याके साथ हुती सो यातें जुदी याके सन्मुख होय युद्धको उद्यमी भई सब बानर बंशी एक होय नानाप्रकारके आयुधनिकरि साहसगतिसों युद्ध करते भए सो साहसगति महा तेजस्वी प्रबलशक्तिका स्वामी सब बानर

बंशिनिको दशोंदिशाको भगाता भया जैसे पवन धूलको उडावे बहुरि साहसगति धनुष वाण लेय राम पै आया सो मेघमंडल समान वाणनिकी वर्षा करता भया उद्धत है पराक्रम जाका, साहसगतिके अर श्रीरामके महायुद्ध भया प्रबल है पराक्रम जिनका ऐसे राम रणक्रीडामें प्रवीण क्षुद्रबाणनिकरि साहसगतिका वक्तर तोडते भए अर तीक्ष्ण बाणनिकरि साहसगतिका शरीर चालिनी समान कर डारा सो प्राणरहित होय भूमिमें पडा सबनि निरख निश्चय क्रिया जो यह प्राणरहित है तब सुग्रीव राम लक्ष्मण की महास्तुति कर इनको नगरमें लाया, नगरकी शोभा करी, सुग्रीवको सुताराका संयोग भया सो भोगसागर में मग्न होय गया, रात दिनकी सुध नाहीं, सुतारा बहुत दिननिमें देखी सो मोहित होगया अर नन्दनवनकी शोभाको ऊलंघे है ऐसा आनन्द नामाबन वहां श्रीरामको राखे। ता वनकी रमणीकताका वर्णन कौन कर सके जहां महामनोग्य श्रीचन्द्रप्रभुका चैत्यालय वहां राम लक्ष्मणने पूजा करी अर विराधितको आदिदे सर्व कटकका डेरा वनमें भया खेदरहित तिष्ठे, सुग्रीवकी तेरह पुत्री रामचन्द्रके गुण श्रवणकर अति अनुराग भरीं वरिवेकी बुद्धि करती भई, चन्द्रमा समान है मुख जिनका तिनके नाम सुनों चन्द्राभा, हृदयावली हृदयधर्म्मा, अनुधरी, श्रीकांता, सुन्दरी, सुरवती, देवांगना समान है विभ्रम जाका, मनोवाहिनी मनमें बसन हारी, चारुश्री, मदनोत्सवा, गुणवती अनेक गुणनिकर शोभित, अर पद्मावती फूले कमल समान है मुख जाका, तथा जिनपती सदा जिनपूजामें तत्पर ए त्रयोदश कन्या लेकर सुग्रीव राम पै आया नमस्कारकर कहता भया हे नाथ ! ये इच्छाकर आपको बरें हैं, हे लोकेश ! इन कन्यानिके पति होवो इनका चित्त जन्महीते यह भया जो हम विद्याधरनिको न वरें; आपके गुण श्रवणकर अनुरागरूप भई हैं यह कहकर रामको परणाई ये कन्या अति लज्जाकी भरी नम्रीभूत हैं मुख जिनके रामका आश्रय करती भई, महासुन्दर नवयौवन जिनके गुण वर्णन में न आवें विजुरी समान

लयमें दोनों धर्ममित्र भए यह वचन किया परस्पर कोई द्रोह न करे बहुरि रामलक्ष्मण रथपर चढ अनेक सामन्तनि सहित सुग्रीवके साथ किहकन्धापुर आए। नगरके समीप डेराकर सुग्रीवने मायामयी सुग्रीव पै दूत भेजा सो दूतको ताने फेर दिया अर मायामई सुग्रीव रथमें बैठ बडी सेना सहित युद्धके निमित्त निकसा, सो दोऊ सुग्रीव परस्पर लडे। मायामई सुग्रीव अर सांचे सुग्रीवके नानाप्रकारका युद्ध भया, अंधकार होय गया दोऊ ही खेदको प्राप्त भये, घनी बेरमें मायामई सुग्रीवने सांचे सुग्रीवके गदाकी दीनी सो गिर पडा, तब मायामई सुग्रीव याको मूया जान हर्षित होय नगरमें गया अर सांचा सुग्रीव मूर्छित होय पडा सो परिवारके लोक डेरामें लाये तब सचेत होय रामसों कहता भया—हे प्रभो ! मेरा चोर हाथमें आया हुता सो नगरमें जाने दिया, तब राम कही तेरा अर वाका रूप देखकर हम भेद न जाना तातें सो तेरा शत्रु न हता कदाचित विना जाने तेरा ही नाश होय तो योग्य नाहीं, तू हमारा परम मित्र है तेरे अर हमारे जिनमंदिरमें वचन हुवा है।

अथानन्तर रामने मायामई सुग्रीवको बहुरि युद्धके निमित्त बुलाया सो वह बलवान क्रोधरूप अग्नि कर जलता आया, राम सन्मुख भए वह समुद्र तुल्य अनेक शस्त्रनिके धारक सुभट वेई भए ग्राह तिनकरि पूर्ण, ता समय लक्ष्मणने सांचा सुग्रीव पकड राखा जो स्त्रीके बैरसे शत्रुके सन्मुख न आए अर श्रीरामको देखकर मायामई सुग्रीवके शरीरमें जो बैताली विद्या हुती सो तातें पूछकर ताके शरीरते निकसी तब सुग्रीवका आकार मिट वह साहसगति विद्याधर इन्द्रनीलके पर्वतसमान भासता भया जैसे सांपकी कांचली दूर होय तैसे सुग्रीवका रूप दूर होगया तब जो आधी सेना वानर वंशिनिकी याके साथ हुती सो यातें जुदी याके सन्मुख होय युद्धको उद्यमी भई सब वानर वंशी एक होय नानाप्रकारके आयुधनिकरि साहसगतिसों युद्ध करते भए सो साहसगति महा तेजस्वी प्रबलशक्तिका स्वामी सब वानर

बंशिनिको दशोंदिशाको भगाता भया जैसे पवन धूलको उडावे बहुरि साहसगति धनुष वाण लेय राम पै आया सो मेघमंडल समान वाणानिकी वर्षा करता भया उद्धत है पराक्रम जाका, साहसगतिके अर श्रीरामके महायुद्ध भया प्रबल है पराक्रम जिनका ऐसे राम रणक्रीडामें प्रवीण क्षुद्रबाणनिकरि साहसगतिका वक्तर तोडते भए अर तीक्ष्ण बाणनिकरि साहसगतिका शरीर चालिनी समान कर डारा सो प्राणरहित होय भूमिमें पडा सबनि निरख निश्चय किया जो यह प्राणरहित है तब सुग्रीव राम लक्ष्मण की महास्तुति कर इनको नगरमें लाया, नगरकी शोभा करी, सुग्रीवको सुताराका संयोग भया सो भोगसागर में मग्न होय गया, रात दिनकी सुध नाहीं, सुतारा बहुत दिननिमें देखी सो मोहित होगया अर नन्दनवनकी शोभाको ऊलंघे है ऐसा आनन्द नामावन वहां श्रीरामको राखे। ता वनकी रमणीकताका वर्णन कौन कर सके जहां महामनोग्य श्रीचन्द्रप्रभुका चैत्यालय वहां राम लक्ष्मणने पूजा करी अर विराधितको आदिदे सर्व कटकका डेरा वनमें भया खेदरहित तिष्ठे, सुग्रीवकी तेरह पुत्री रामचन्द्रके गुण श्रवणकर अति अनुराग भरीं वरिवेकी बुद्धि करती भईं, चन्द्रमा समान है मुख जिनका तिनके नाम सुनों चन्द्राभा, हृदयावली हृदयधर्म्मा, अनुधरी, श्रीकांता, सुन्दरी, सुरवती, देवांगना समान है विभ्रम जाका, मनोवाहिनी मनमें बसन हारी, चारुश्री, मदनोत्सवा, गुणवती अनेक गुणनिकर शोभित, अर पद्मावती फूले कमल समान है मुख जाका, तथा जिनपती सदा जिनपूजामें तत्पर ए त्रयोदश कन्या लेकर सुग्रीव राम पै आया नमस्कारकर कहता भया हे नाथ ! ये इच्छाकर आपको बरें हैं, हे लोकेश ! इन कन्यानिके पति होवो इनका चित्त जन्महीते यह भया जो हम विद्याधरनिको न वरें, आपके गुण श्रवणकर अनुरागरूप भई हैं यह कहकर रामको परणाईं ये कन्या अति लज्जाकी भरी नम्रीभूत हैं मुख जिनके रामका आश्रय करती भईं, महासुन्दर नवयौवन जिनके गुण वर्णन में न आवें विजुरी समान

सुवर्णसमान कमलके गर्भ समान शरीरकी कांति जिनकी ताकर आकाशमें उद्योत भया। वे विनय रूप लावण्यता कर मंडित रामके समीप तिष्ठीं सुन्दर है चेष्टा जिनकी यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिक सूं कहे हैं हे मगधाधिपति ! पुरुषनिमें सूर्य्य समान श्रीराम सारिखे पुरुष तिनका चित्त विषय वासनाते विरक्त है परन्तु पूर्व जन्मके सम्बन्धसूं कई एक दिन विरक्त रूप गृह में रह बहुरि त्याग करेंगे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सुग्रीवका

व्याख्यान वर्णन करनेवाला सैंतालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४७ ॥

अथानन्तर ते सुग्रीवकी कन्या रामके मनमोहिवेके अर्थ अनेक प्रकारकी चेष्टा करती भईं मानो देवलोक हीते उतरी हैं वीणादिकका वजावना मनोहर गीतका गावना इत्यादि अनेक सुन्दर लीला करती भईं तथापि रामचन्द्रका मन न मोहा, सव प्रकारके विस्तीर्ण विभव प्राप्त भए परन्तु रामने भोगनि विषे मन न किया। सीताविषे अत्यन्त दत्तचित्त समस्त चेष्टारहित महाआदरकरि सीताको ध्यावते तिष्ठें जैसे मुनिराज मुक्तिको ध्यावें। वे विद्याधरकी पुत्री गान करें, सो उनकी ध्वनि न सुनें अर देवांगना समान तिनका रूप सो न देखें रामको सर्व दिशा जानकी मई भासें अर कछु भासे नाहीं और कथा न करें। ए सुग्रीवकी पुत्री परणी, सो पास बैठी तिनको हे जनकसुते ! ऐसा कह वतलावे, काकसे प्रीति कर पूछे अरे काक ! तू देश २ भ्रमण करे है तैंने जानकी हू देखी अर सरोवरविषैं कमल फूल रहे हैं तिनकी मकरन्द कर जल सुगन्ध होय रहा है तहां चकवा चकवीके युगल कलोल करते देख चितारें, सीता बिन रामको सर्व शोभा फीकी लागे, सीताके शरीरके संयोगकी शंकाकरि पवनसे आलिंगन करें कदाचित् पवन सीताजीके निकटते आई होय जा भूमिमें सीताजी तिष्ठे हैं ता भूमिको धन्य गिने अर सीता बिना

चन्द्रमाकी चादनीको अग्नि समान जाने मनमें चितवें कदाचित् सीता मेरे वियोग रूप अग्निकरि भस्म भई होय अर मन्द मन्द पवन कर लतानिको हालती देख जाने हैं यह जानकी ही है अर वेल पत्र हालते देख जाने जानकीके वस्त्र फरहरे हैं, अर भ्रमर संयुक्त फूल देख जाने ये जानकीके लोचन ही हैं अर कौंपल देख जाने ये जानकीके करपल्लव ही हैं अर श्वेत श्याम आरक्त तीनों जातिके कमल देख जानें सीताके नेत्र तीन रंगको धरे हैं अर पुष्पानिके गुच्छे देख जाने जानकीजीके शोभायमान स्तन ही हैं अर कदलीके स्तंभनिविषे जंघानिकी शोभा जाने अर लाल कमलनिविषै चरणनिकी शोभा जाने संपूर्ण शोभा जानकी रूप ही जाने।

अथानन्तर सुग्रीव सुताराके महिलविषै ही रहा, रामपै आये बहुत दिन भए तब रामने विचारी ताने सीता न देखी मेरे वियोगकर तप्तायमान भई वह शीलवंती मरगई तातैं सुग्रीव मेरे पास नाहीं आवे अथवा वह अपना राज्य पाय निश्चिंत भया हमारा दुःख भूल गया यह चिंतवनकरि रामकी आंखानिते आंसू पडे तब लक्ष्मण रामको सचिंत देख कोपकर लाल भए हैं नेत्र जाके आकुलित है मन जाका, नांगी तलवार हाथमें लेय सुग्रीव ऊपर चाला सो नगर कम्पायमान भया। सम्पूर्ण राज्यके अधिकारी तिन को उलंघ सुग्रीवके महलमें जाय ताको कहा रे पापी! अपने परमेश्वर राम तो स्त्रीके दुखकरि दुखी अर तू दुर्बुद्धि स्त्री सहित सुख सों राज्यकरे, रे विद्याधरबायस विषयलुब्ध दुष्ट! जहां रघुनाथने तेरा शत्रु पठाया है तहां मैं तोहि पठाऊंगा या भांति क्रोधके उग्र वचन लक्ष्मण जब कहे तब वह हाथ जोड नमस्कारकर लक्ष्मणका क्रोध शांत करता भया। सुग्रीव कहे है हे देव! मेरी भूल माफ करो, मैं करार भूल-गया, हम सारिखे क्षुद्र मनुष्यनिके खोटी चेष्टा होय है अर सुग्रीवकी सम्पूर्ण स्त्री कांपती हुई लक्ष्मणको अर्घदेय आरती करती भई। हाथ जोड नमस्कारकर पतिकी भिक्षा मांगती भई। तब आप उत्तम पुरुष

तिनको दीन जान कृपा करते भए। यह महन्त पुरुष प्रणाम मात्र ही करि प्रसन्न होंय अर दुर्जन महा दान लेकर हू प्रसन्न न होंय, लक्ष्मणने सुग्रीवको प्रतिज्ञा चिताय उपकार किया जैसे यक्षदत्तको माताका स्मरण कराय मुनि उपकार करते भए। यह वार्ता सुन राजा श्रेणिक गौतमस्वामी सूं पूछे हैं हे नाथ! यक्षदत्तका वृत्तांत मैं नीका जानना चाहुं हूं तब गौतम स्वामी कहते भए—हे श्रेणिक! एक क्रौंचपुर नगर तहां राजा यक्ष राणी राजिलता ताके पुत्र यक्षदत्त सो एक दिन एक स्त्रीको नगरके बाहिर कुटीमें तिष्ठती देख कामबाण कर पीडित भया ताकी ओर चाला रात्रीविषै, तब ऐन नामा मुनि याको मना करते भए यह यक्षदत्त खड्ग है जाके हाथमें सो विजुरीके उद्योत करि मुनिको देखकर तिनके निकटजाय विनय संयुक्त पूछता भया हे भगवान! काहेको मोहि मने किया? तब मुनि कही जाको देखे तू कामवस भया है सो स्त्री तेरी माता है तातैं यद्यपि सूत्रमें रात्रिको बोलना उचित नाहीं तथापि करुणाकर अशुभ कार्य ते मने किया तब यक्षदत्तने पूछा हे स्वामी! यह मेरी माता कैसे है? तब मुनि कही सुन एक मृत्यकावती नगरी तहां काणिक नामा वणिक, ताके भ्रू नामा स्त्री ताके बन्धुदत्त नामा पुत्र ताकी स्त्री मित्रवती लतादत्तकी पुत्री सो स्त्रीको छाने गर्भ राखि बंधुदत्त जहाज बैठि देशांतर गया ताको गए पीछे याकी स्त्रीके गर्भ जान सासू सुसरने दुराचारणी जान घरसे निकाल दई सो उत्पलका दासीको लार लेय बडे सारथीकी लार पिताके घर चाली सो उत्पलकाको सर्पने डसी बनमें मुई अर यह मित्रवती शीलमात्र ही है सहाय जाके सो क्रौंचपुरविषै आई अर महाशोककी भरी ताके उपवनविषै पुत्रका जन्म भया तब यह तो सरोवरविषै वस्त्र धोयवे गई अर पुत्ररत्न कंबलमें बेढा सो कंवल संयुक्त पुत्रको स्वान लेय गया सो काहूने छुडाया, राजा यक्षदत्तको दिया, ताके राणी राजिलता अपुत्रवती सो राजाने पुत्र राणीको सौंपा, ताका यक्षदत्त नाम धरा सो तू अर वह तेरी माता वस्त्र धोय आई सो तोहि न देखि विलाप करती भई,

एक देवपुजारीने ताहि दयाकर धैर्य बंधाया तू मेरी बाहिन है ऐसा कह राखी सो यह मित्रवती सहायरहित लज्जाकर अकीर्तिके भय थकी बापके घर न गई। अत्यन्त शीलकी भरी जिनधर्मविषै तत्पर दरिद्रीकी कुटीविषै रहे, सो तैं भ्रमण करता देख कुभाव किया अर याका पति बंधुदत्त रत्न कंबल दे गया हुता, ताविषै ताहि लपेट सो सरोवर गई हुती, सो रत्नकम्बल राजाके घरमें है अर वह बालक तू है या भांति मुनि कही तब यह मुनिको नमस्कार कर खड्ग हाथमें लेय राजा यक्षपै गया अर कहता भया । या खड्ग कर तेरा सिर काटूंगा, नातर मेरे जन्मका वृत्तांत कहो, तब राजा यक्ष यथावत वृत्तांत कहा अर वह रत्नकम्बल दिखाया, सो लेयकर यक्षदत्त अपनी 'माता' कुटीमें तिष्ठे थी, तासूं मिला अर अपना बंधुदत्त पिता ताको बुलाया, महाउत्सव अर महा विभवकर मंडित माता पितासूं मिला, यह यक्षदत्तकी कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कही—जैसे यक्षदत्तको मुनिने माताका वृत्तांत जनाया तैसे लक्ष्मणने सुग्रीवको प्रतिज्ञा विस्मरण होयगया हुता सो जनाया, सुग्रीव लक्ष्मणके संग शीघ्र ही रामचंद्रपै आया नमस्कार किया अर अपने सब विद्याधर सेवक महाकुलके उपजे बुलाए । वे या वृत्तांतको जानते हुते अर स्वामी कार्यविषै तत्पर तिनको समझाय कर कहा सो सर्व ही सुनो रामने मेरा बडा उपकार किया। अब सीताकी खबर इनको लाय दो तातैं तुम दिशानिको जाओ अर सीता कहां है यह खबर लावो, समस्त पृथिवीपर जल स्थल आकाश विषै हेरो, जम्बूद्वीप लवण समुद्र घातकी खण्ड कुलाचल वन सुमेरु नानाप्रकारके विद्याधरनिके नगर समस्त अस्थानक सर्वदिशा ढूंढो।

अथानन्तर ये सव विद्याधर सुग्रीवकी आज्ञा सिरपर धारकर हर्षित भए सर्वही दिशानिको शीघ्र ही दौडे, सबही विचारैं हम पहिली सुध लावैं तासों राजा अति प्रसन्न होय अर भामण्डलको हू खबर पठाई जो सीता हरी गई ताकी सुध लेवो, तब भामण्डल बाहिनके दुःखकर अतिही दुखी भया, हेरनेका

उद्यम किया अर सुग्रीव आप भी ढूढनेको निकसा सो जोतिष चक्रके ऊपर होय विमानमें बैठा देखता भया दुष्ट विद्याधरनिके नगर सर्व देखे सो समुद्रके मध्य जम्बूद्वीप देखा वहां महेंद्र पर्वतपर आकाशसे सुग्रीव उतरा तहां रत्नजटी तिष्ठे था सो डरा जैसे गरुडते सर्प डरे बहुरि विमान नजीक आया तब रत्नजटीने जाना कि यह सुग्रीव है लंकापतिने क्रोधकर मोपर भेजा सो मोहि मारेगा, हाय मैं समुद्रमें क्यों न डूब मूया या अन्तर द्वीपविषैं मारा जाऊंगा, विद्या तो रावण मेरी हर लेय गया अब प्राण हरने याहि पठाया, मेरी यह वांछा हुती जैसे तैसे भामण्डल पर पहुंचू तो सर्व कार्य होय सो न पहुंच सका यह चिंतवन करे है इतनेमें ही सुग्रीव आया मानो दूसरा सूर्य ही है, द्वीपका उद्योत करता आया सो याको बनकी रजकर धूसरा देख दया कर पूछता भया हे रत्नजटी ! पहिले तू विद्या कर संयुक्तहुता अब हे भाई ! तेरी कहा अवस्था भई ? या भांति सुग्रीव दयाकर पूछा सो रत्नजटी अत्यन्त कम्पायमान कछु कह न सके तब सुग्रीव कही भय मत कर, अपना वृत्तांत कह, बारम्बार धैर्य बन्धाया, तब रत्नजटी नमस्कार कर कहता भया--रावण दुष्ट सीताको हरण कर लेजाता हुता सो ताके अर मेरे परस्पर विरोध भया, मेरी विद्या छेद डारी, अब मैं विद्यारहित जीवितविषैं सन्देह चिन्तावान् तिष्ठे था सो हे कपिवंशके तिलक ! मेरे भागते तुम आए। ये वचन रत्नजटीके सुन सुग्रीव हर्षित होय ताहि संग लेय अपने नगरमें श्रीराम पै लाया सो रत्नजटी रामलक्ष्मणसों सबके समीप हाथ जोड नमस्कार कर कहता भया हे देव ! सीता महासती है ताको दुष्ट निर्दई लंकापति रावण हर लेय गया सो रुदन करती विलाप करती विमानमें बैठी मृगी समान व्याकुल मैं देखी, वह बलवान् बलात्कार लिए जाता हुता सो मैंने क्रोधकर कहा यह महासती मेरे स्वामी भामण्डलकी बहिन है तू छोड दे, सो वाने कोपकर मेरी विद्या छेदी, वह महाप्रबल जाने युद्धमें इन्द्रको जीता पकड लिया अर कैलाश उठाया, तीन खण्डका स्वामी सागरांत पृथिवी

जाकी दासी जो देवनिहूकरि न जीता जाय सो ताहि में कैसे जीतूं ताने मोहि विद्यारहित किया यह सकल वृत्तांत राम देवने सुनकर ताको उरसे लगाया अर वारम्वार ताहि पूछते भए। बहुरि राम पूछते भए हे विद्याधरो! कहो लंका कितनी दूर है? तब वे विद्याधर निश्चल होय रहे, नीचा मुख किया, मुख की छाया और ही होयगई, कछु जुवाव न दिया, तब रामने उनका अभिप्राय जाना जो यह हृदयविषैं रावणते भय रूप हैं मन्ददृष्टिकर तिनकी ओर निहारे तब वे जानते भए हमको आप कायर जानो हो तब लज्जावान होय हाथ जोड सिर नवाय कहते भए हे देव! जाके नाम सुने हमको भय उपजे है ताकी बात हम कैसे कहैं, कहां हम अल्प शक्तिके धनी अर कहां वह लंकाका ईश्वर ताते तुम यह हठ छोडो अब वस्तु गई जानो अथवा तुम सुनो हो तो हम सब वृत्तांत कहैं सो नीके उरमें धारो, लवणसमुद्रविषैं राक्षस द्वीप प्रसिद्ध है अद्भुत सम्पदाका भरा सो सातसौ योजन चौडा है अर प्रदाक्षिणाकर किंचित अधिक इक्कीससौ योजन बाकी परिधि है। ताके मध्य सुमेरु तुल्य त्रिकूटाचल पर्वत है सो नव योजन ऊंचा पचास योजनके विस्ताररूप, नानाप्रकारके मणि अर सुवर्ण कर मण्डित आगे मेघवाहनको राक्षसनिके इन्द्रनें दिया हुता ता त्रिकूटाचलके शिखर पर लंका नाम नगरी, शोभायमान रत्नमयी जहां विमान समान घर अर अनेक क्रीडा करनेके निवास तीस योजनके विस्तार लंकापुरी महाकोट खाईकर मण्डित मानों दूजी वसुधारा ही है अर लंकाके चौगिरद बडे बडे रमणीक स्थानक हैं अति मनोहर मणि सुवर्ण मई जहां राक्षसनिके स्थानक हैं तिनविषैं रावणके बन्धुजन वसे हैं। सन्ध्याकार सुवेल कांचन ल्हादन पोधन हंस हर सागर घोष अर्धस्वर्ग इत्यादि मनोहर स्थानक बन उपवन आदिकरि शोभित देवलोक समान हैं। जिनविषैं भ्रात, पुत्र, मित्र, स्त्री बांधव सेवक जन सहित लंकापति रमें हैं सो विद्याधरनि सहित क्रीडा करता देख लोकानिको ऐसी शंका उपजे है मानों देवनि सहित इन्द्रही रमें हैं जाका महा

बलो विभीषणसा भाई आरानकार युद्धमें न जीता जाय ता समान बुद्धि देवानमें नाही अर ता समान मनुष्य नाहीं ताहिकरि रावणका राज्य पूर्ण है अर रावणका भाई कुम्भकर्ण त्रिशूलका धारक जाकी युद्धमें टेढी भौंहें देव भी देख सकें नाहीं तो मनुष्यनिकी कहा बात ? अर रावणका पुत्र इन्द्रजीत पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध है अर जाके बडे २ सामन्त सेवक हैं नाना प्रकार विद्याके धारक शत्रुनिके जीतनहारे अर जाका छत्र पूर्ण चन्द्रमा समान जाहि देखकर बैरी गर्वको तजै हैं ताने सदा रण संग्राममें जीत ही जीत सुभट-पनेका विरद प्रकट किया है सो रावणके छत्रको देख तिनका सर्व गर्व जाता रहे अर रावणका चित्रपट देखे अथवा नाम सुने शत्रु भयको प्राप्त होय, जो ऐसा रावण तासों युद्ध कौन कर सके ताते यह कथा ही न करना और बात करो। यह बात विद्याधरनिके मुखते सुनकर लक्ष्मण बोला मानों मेघ गाजा तुम एती प्रशंसा करो हो सो सब मिथ्या है जो वह बलवान हुता तो अपना नाम छिपाय स्त्रीको चुराकर काहे लेगया ? वह पाखण्डी अतिकायर अज्ञानी पापी नीच राक्षस ताके रंच मात्र भी शूरवीरता नाहीं अर राम कहते भए बहुत कहने करि कहा, सीताकी सुध ही कठिन हुती अब सुध आई तब सीता आय चुकी अर तुम कही और बात करो और चिन्तवन करो सो हमारे और कछु बात नाहीं और कछु चिंतवन नाहीं। सीताको लावना यही उपाय है। रामके वचन सुनकर वृद्ध विद्याधर क्षण एक विचारकर बोले, हे देव ! शोक तजो हमारे स्वामी होवो अर अनेक विद्याधरनिकी पुत्री गुणानिकर देवांगना समान तिनके भरतार होवो अर समस्त दुःखकी बुद्धि छोडो तब राम कहते भए हमारे और स्त्रिनिका प्रयोजन नाहीं जो शचीसमान स्त्री होय तो भी हमारे अभिलाष नाहीं जो तिहारी हममें प्रीति है तो सीता हमैं शीघ्र ही दिखावो तब जांबूनद कहता भया, हे प्रभो ! या हठको तज एक क्षुद्र पुरुषने कृत्रिम मयूरका हठ किया ताकी न्याईं स्त्रीका हठकर दुखी मत होवो यह कथा सुन—

एकबेणा तटग्राम तहां सर्वरुचि नामा गृहस्थी ताके विनयदत्त नामा पुत्र ताकी माता गुणपूर्णा अर विनयदत्तका मित्र विशालभूत सो पापी विनयदत्तकी स्त्रीसों आसक्त भया, स्त्रीके वचनकरि विनयदत्त को कपटकरि वनविषे लेगया, सो एक वृक्षके ऊपर बांध वह दुष्ट घर चला आया, कोई विनयदत्तके समाचार पूछे तो ताहि कछु मिथ्या उत्तर देय सांचा होय रहे अर जहां विनयदत्त बांधा हुता तहां एक क्षुद्र नामा पुरुष आया, वृक्षके तले बैठा, वृक्ष महा सघन विनयदत्त कुरलावता हुता सो क्षुद्र देखे तो दृढबंधनकर मनुष्य वृक्षकी शाखाके अग्रभाग बन्धा है, तब क्षुद्र दयाकर ऊपर चढा विनयदत्तको बंधनते निवृत्त किया। विनयदत्त द्रव्यवान सो क्षुद्रको उपकारी जान अपने घर लेगया। भाईते हू अधिक हित राखे, विनयदत्तके घर उत्साह भया अर वह विशालभूत कुमित्र दूर भाग गया, क्षुद्र विनयदत्तका परम मित्र भया सो क्षुद्रका एक रमनेका पत्रमयी मयूर सो पवनकर उडा राज पुत्रके घर जाय पडा सो ताने उठाकर रख लिया, ताके निमित्त क्षूद्र महा शोककर मित्रको कहता भया मोहि जीवता इच्छे है तो मेरा वही मयूर लाव, विनयदत्त कही मैं तोहि रत्नमई मयूर कराय दूं अर सांचे मोर मंगाय दूं वह पत्रमई मयूर पवनते उडगया सो राजपुत्रने राखा मैं कैसे लाऊं, तब क्षुद्र कही मैं वही लेऊं रत्ननिके न लूं, न सांचे लूं, विनयदत्त कहे जो चाहो सो लेहु वह मेरे हाथ नाहीं क्षुद्र बारम्बार वही मांगे सो वह तो मूढ हुता तुम पुरुषोत्तम होय ऐसे क्यों भूले हो। वह पत्रनिका मयूर राजपुत्रके हाथ गया विनयदत्त कैसे लावे तातैं अनेक विद्याधरनिकी पुत्री सुवर्ण समान वर्ण जिनका श्वेत श्याम आरक्त तीन वर्णको धरे हैं नेत्र कमल जिनके, सुन्दर पीवर हैं स्तन जिनके, कदली समान जंघा जिनकी अर मुखकी कांतिकर शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमाको जीते मनोहर गुणनिकी धरणहारी तिनके पति होऊ। हे रघुनाथ ! महाभाग्य, हमपर कृपा करहु यह दुःखका बढावनहारा शोक संताप छोडहु, तब लक्ष्मण बोले। हे जाम्बूनन्द तैं यह दृष्टांत यथार्थ न

दियाः हम कहे हैं सो सुन, एक कुसुमपुर नामा नगर तहां एक प्रभव नामा गृहस्थ जाके यमुना नामा स्त्री ताके धनपाल बन्धुपाल गृहपाल पशुपाल क्षेत्रपाल ये पांच पुत्र सो यह पांचों ही पुत्र यथार्थ गुणनिके धारक, धनके कमाऊ कुटुम्बके पालिवेविषे उद्यमी सदा लौकिक धन्धे करें। क्षणमात्र आलस नाहीं अर इन सबनिते छोटा आत्मश्रेय नामा कुमार सो पुण्यके योगते देवनि कैसे भोग भोगवे, सो या को माता पिता अर बडे भाई कटुक बचन कहें। एक दिन यह मानी नगर बाहिर भ्रमे था सो कोमल शरीर खेदको प्राप्त भया उद्यम करनेको असमर्थ सो आपका मरण बांछता हुता ता समय याके पूर्व पुण्य कर्मके उदयकरि एक राजपुत्र याहि कहता भया, हे मनुष्य! मैं पृथुस्थान नगरके राजाका पुत्र भानुकुमार हूं सो देशांतर भ्रमणको गया हुता, सो अनेक देश देखे, पृथिवीपर भ्रमण करता दैवयोगते कर्मपुर गया, सो एक निमित्तज्ञानी पुरुषकी संगतिविषें रहा, ताने मोहि दुखी जान करुणाकर यह मंत्रमई लोहका कडा दिया अर कही यह सर्व रोगका नाशक है। बुद्धिवर्द्धक है। ग्रह सर्प पिशाचादिकका वश करणहारा है इत्यादि अनेक गुण हैं। सो तू राख, ऐसा कह मोहि दिया अर अब मेरे राज्यका उदय आया। मैं राज्य करनेको अपने नगर जावूं हूं, यह कडा मैं तोहि दू हूं। तू मरे मत, जो वस्तु आपपै आई अपना कार्य कर काहूको दे डारो यह महाफल है सो लोकाविषें ऐसे पुरुषनिको मनुष्य पूजे हैं, आत्मश्रेयको ऐसा कह राजकुमार अपना कडा देय अपने नगर गया अर यह कडा ले अपने घर आया, ताही दिन ता नगरके राजाकी राणीको सर्पने डसी हुती सो चेष्टा रहित होयगई, ताहि मृतक जान जरायवेको लाए हुते, सो आत्मश्रेयने मंत्रमई लोहके कडेके प्रसादकरि विषरहित करी, तब राजा अति दान देय बहुत सत्कार किया, आत्मश्रेयके कडेके प्रसादकरि महाभोग सामग्री भई। सब भाइनिविषें यह मुख्य ठहरा। पुण्यकर्मके प्रभावकरि पृथिवीविषें प्रसिद्ध भया। एक दिन कडेको वस्त्रविषें बांध सरोवर गया,

सो गोह आय कडेको लेय महावृक्षके तले ऊंडा विल है ताविषैं पैठ गई, विल शिलानिकरि आच्छादित सो गोह बिलविषैं बैठी भयानक शब्द करे। आत्मश्रेयने जाना कडेको गोह बिलविषैं लेगई गर्जना करे है तब आत्मश्रेय वृक्ष जडते उखाड शिला दूर कर गोहका बिल चूर कर डाला, बहुत धन लिया सो राम तो आत्मश्रेय हैं अर सीता कडे समान है लंका विल समान है रावण गोह समान है तातैं हो विद्याधरो ! तुम निर्भय होवो, ये लक्ष्मणके वचन जम्बूनन्दके वचननिको खण्डन करनहारे सुनकर विद्याधर आश्चर्यको प्राप्त भए।

अथानन्तर जांबूनन्द आदि सब राम सूं कहते भए हे देव ! अनन्तवीर्य योगीन्द्रको रावणने नमस्कार कर अपने मृत्युका कारण पूछा तब अनन्तवीर्यकी आज्ञा भई जो कोटिशिलाको उठावेगा ताकरि तेरी मृत्यु है तब ये सर्वज्ञके बचन सुन रावणने विचारी ऐसा कौन पुरुष है जो कोटिशिलाको उठावे। यह बचन विद्याधरनिके सुन लक्ष्मण बोले मैं अबही यात्राको वहां चालूंगा, तब सबही प्रमाद तज इनके लार भए। जाम्बूनन्द महाबुद्धि, सुग्रीव, विराधित अर्कमाली नल, नील इत्यादि नामी पुरुष विमानविषै राम लक्ष्मणको चढाय कोटिशिला की ओर चाले। अंधेरी रात्रिविषैं शीघ्र ही जाय पहुंचे, शिलाके समीप उतरे, शिला महा मनोहर सुर नर असुरनिकरि नमस्कार करने योग्य, ये सर्व दिशाविषैं सामान्तानिको रखवारे राख शिलाकी यात्राको गए, हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार किया, सुगन्ध कमलनि करि तथा अन्य पुष्पनिकरि शिलाकी अर्चा करी। चन्दनकर चरची, सो शिला कैसी शोभती भई मानों साक्षात शची ही है। ताविषैं जे सिद्ध भए तिनको नमस्कार कर हाथ जोड भक्तिकर शिलाकी तीन प्रदक्षिणा दई। सब विधिविषैं प्रवीण लक्ष्मण कमर बांध महा विनयको धरता संता नमोकार मंत्रमें तत्पर महा भक्ति करि स्तुति करवेको उद्यमी भया अर सुग्रीवादि बानर बंशी सब ही जयजयकार शब्द

कर महा स्तोत्र पढते भए एकाग्रचित्तकर सिद्धानिकी स्तुति करे हैं जो भगवान सिद्ध त्रैलोक्यके शिखर पर विराजे हैं वह लोकशिखर महादेदीप्यमान है अर वे सिद्धस्वरूप मात्र सत्ताकर अविनश्वर हैं तिनका बहुरि जन्म नाहीं अनंतवीर्यकर संयुक्त अपने स्वभावमें लीन महासमीचीनता युक्त समस्त कर्मरहित संसार समुद्रके पारगामी कल्याण मूर्ति आनन्द पिंड केवलज्ञान केवलदर्शनके आधार पुरुषाकार परम सूक्ष्म अमूर्ति अगुरुलघु असंख्यात प्रदेशी अनंतगुणरूप सर्वको एकसमयमें जाने सब सिद्धसमान कृतकृत्य जिनके कोई कार्य करनो नाहीं। सर्वथा शुद्धभाव सर्वद्रव्य सर्वक्षेत्र सर्वकाल सर्वभावके ज्ञाता, निरंजन आतमज्ञानरूप शुक्लध्यान अग्निकर अष्टकर्म वनके भस्म करणहारे अर महाप्रकाशरूप प्रतापके पुंज, जिनको इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादि पृथिवीके नाथ सब ही सेवें, महास्तुति करैं, ते भगवान संसारके प्रपंचते रहित अपने आनंदस्वभाव तिनमई अनंत सिद्ध भए अर अनंत होहिंगे। अढाईद्वीपकेविषैं मोक्षका मार्ग प्रवृत्ते है, एकसौ साठ महाविदेह अर पांच भरत पांच ऐरावत एकसौ सत्तर क्षेत्र तिनके आर्यखंड विषै जे सिद्ध भए अर होंहिगे तिन सबनिको हमारा नमस्कार होहु। या भरतक्षेत्रविषैं यह कोटिशिला यहांते सिद्ध शिलाको प्राप्त भए ते हमको कल्याणके कर्ता होहु, जीवनिको महामंगलरूप, या भांति चिरकाल स्तुतिकर चित्तविषै सिद्धनिका ध्यानकर सब ही लक्ष्मणको आशीर्वाद देते भए।

या कोटिशिलाते जे सिद्ध भए वे सर्व तिहारा विघ्न हरें अरिहंत सिद्ध साधु जिनशासन ये सर्व तुमको मंगलके करता होहु या भांति शब्द करते भए अर लक्ष्मण सिद्धनिका ध्यान कर शिला को गोडे प्रमाण उठावता भया अनेक आभूषण पहिरे भुज बंधन कर शोभायमान है भुजा जाकी सो भुजानिकरि कोटिशिला उठाई तब आकाशविषे देव जय जय शब्द करते भए। सुग्रीवादिक आश्चर्यको प्राप्त भए। कोटिशिलाकी यात्राकर बहुरि सम्मेद शिखर गए अर कैलाशकी यात्राकर, भरतक्षेत्रके सर्व तीर्थ

वंदे प्रदक्षिणा करी सांझ समय विमान बैठ जय जयकार करते संते रामलक्ष्मणके लार किहकंधापुर आए। आप अपने अपने स्थानक सुखते शयन किया बहुरि प्रभात भया सब एकत्र होय परस्पर वार्ता करते भए देखो अब थोडेही दिनमें इनदोऊ भाईनिका निष्कंटक राज्य होयगा। ये परम शक्तिको धरे हैं। वह निर्वाण शिला इननें उठाई सो यह सामान्य मनुष्य नाहीं, यह लक्ष्मण रावणको निसंदेह मारेगो, तब कैयक कहते भए रावणने कैलास उठाया सो वाहूका पराक्रम घाट नाहीं, तब और कहते भए ताने कैलास विद्याके वलते उठाया सो आश्चर्य नाहीं, तब कैयक कहते भए काहेको विवाद करो जगत्के कल्याण अर्थ इनका उनका हित कराय देवो या समान और नाहीं, रावणते प्रार्थना कर सीता लाय रामको सौंपो, युद्धते कहा प्रयोजन है आगे तारकमेरु महा वलवान् भए सो संग्रामविषैं मारे गये। वे तीनखंडके अधिपति महा भाग्य महापराक्रमी हुते अर और हू अनेक राजा रणविषैं हते गए ताते साम कहिये परस्पर मित्रता श्रेष्ठ है तब ये विद्याकी विधिमें प्रवीण परस्पर मंत्रकर श्रीरामपै आए अतिभक्तिते रामके समीप नमस्कार कर बैठे, कैसे शोभते भए जैसे इन्द्रके समीप देव सोहैं, कैसे हैं राम नेत्रनिको आनन्दके कारण सो कहते भए अब तुम काहे ढील करो हो, मोबिना जानकी लंकाविषैं महादुःखकारि तिष्ठे है ताते दीर्घ सोच छांडि अबारही लंकाकी तरफ गमनका उद्यम करहु। तब जे सुग्रीवके जांबूनंदादि मंत्री राजनीतिमें प्रवीन हैं ते रामसूं बीनती करते भए—हे देव! हमारे ढील नाहीं परन्तु यह निश्चय कहो सीताके ल्यायवे हीका प्रयोजन है अक राक्षसनिते युद्ध करना है, यह सामान्य युद्ध नाहीं, विजय पावना कठिन है। वह भरत क्षेत्रके तीन खंडका निष्कंटक राज करे है। द्वीप समुद्रनिके विषे रावण प्रसिद्ध है जासूं धातुकीखंड द्वीपके शंका माने। जंबूद्वीपविषैं जाकी अधिक महिमा अद्भुत कार्यका करणहारा सबके उरका शल्य है सो युद्ध योग्य नाहीं ताते रणकी बुद्धि छांडि हम जो

कहे हैं सो करहु। हे देव! ताहि युद्ध सन्मुख करिबेमें जगतको महाक्लेश उपजे है। प्राणिनिके समूहका विध्वंस होय है। समस्त उत्तम क्रिया जगतते जाय हैं ताते विभीषण रावणका भाई सो पापकर्म रहित श्रावकव्रतका धारक है, रावण ताके वचनको उलंघे नाहीं तिन दोऊ भाईनिमें अंतराय रहित परम प्रीति है सो विभीषण चातुर्यताते समझावेगा अर रावणहू अपयशते शंकेगा। लज्जाकर सीताको पठाय देगा ताते बिचारकर रावणपै ऐसा पुरुष भेजना जो बात करनेमें प्रवीण होय अर राज नीतिमे कुशल होय अनेक नय जाने अर रावणका कृपापात्र हो ऐसा हेरहु तब महोदधि नामा विद्याधर कहता भया तुम कछु सुनी है लंकाकी चौगिरद मायामई यंत्र रचा है सो आकाशके मार्गते कोऊ जाय सके नाहीं, पृथिवीके मार्गते जाय सकं। लंका अगम्य है महा भयानक देखा न जाय ऐसा मायामई यंत्र बनाया है सो इतने बैठे हैं तिनमें तो ऐसा कोऊ नाहीं जो लंकाविषैं प्रवेश करे ताते पवनंजयका पुत्र श्रीशैल जाहि हनूमान कहे हैं सो महाविद्यावान बलवान पराक्रमी प्रतापरूप है ताहि जांचो, वह रावणका परममित्र है अर पुरुषोत्तम है सो रावणको समझाय विघ्न टारेगा तब यह बात सबने प्रमाण करी। हनूमानके निकट श्रीभूतनामा दूत शीघ्र पठाया। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकते कहे हैं हे राजन! महाबुद्धिमान होय अर महाशक्तिको धरैं होय अर उपाय करे तो भी होनहार होय सोही होय जैसे उदयकालमें सूर्यका उदय होय ही तैसे जो होनहार सो होय ही॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै कोटिशिला उठावनेका व्याख्यान वर्णन करनेवाला अड़तालीसवा पर्व पूर्ण भया॥ ४८॥

अथानन्तर श्रीभूतनामा दूत पवनके वेगते शीघ्रही आकाशके मार्गसों लक्ष्मीका निवास जो श्रीपुरनगर अनेक जिन भवन तिनकरि शोभित तहां गया जहां मन्दिर सुवर्ण रत्नमई सो तिनकी माला करि मण्डित कुन्दके पुष्प समान उज्वल सुन्दर झरोखनिकरि शोभित मनोहर उपवनकर रमणीक सो दूत नगरकी शोभा अर नगरके अपूर्व लोग देख आश्चर्यको प्राप्त भया बहुरि इन्द्रके महल समान राजमंदिर तहांकी अद्भुत रचना देख थकित होय रहा। हनूमान खरदूषणकी वेटी अनंगकुसमा रावणकी भानजी ताके खरदूषणका शोक, कर्मके उदयकरि शुभ अशुभ फल आवे ताहि कोई निवारिवे शक्त नाहीं, मनुष्यनिकी कहा शक्ति देवनिहूकरि अन्यथा न होय। दूतने द्वारे आय अपने आगमनका वृत्तांत कहा सो अनंगकुसमाकी मर्यादा नामा द्वारपाली दूतको भीतर लेयगई। अनंगकुसमाने सकल वृत्तांत पूछा सो श्रीभूतने नमस्कारकर विस्तारसे कहा, दण्डकवनमें श्रीराम लक्ष्मणका आवना, सम्बूकका बध, खरदूषणते युद्ध बहुरि भले भले सुभटनिसहित खरदूषणका मरण, यह वार्ता सुन अनंगकुसमा मूर्छाको प्राप्त भई तब चन्दनके जलकरि सींच सचेतकरी, अनंगकुसमा अश्रुपात डारती विलापकरती भई हाय पिता, हाय भाई ! तुम कहां गए एकबार मोहि दर्शन देवो। वचनालाप कर महा भयानक वनमें भूमिगोचारिनि तुमको कैसे हते ? या भांति पिता अर भाईके दुःखकरि चन्द्रनखाकी पुत्री दुखी भई सो महा कष्टकरि सखिनिने शांतिताको प्राप्तकरी अर जे प्रवीण उत्तम जन हुते तिन बहुत संबोधी तब यह जिनमार्गमें प्रवीण समस्त संसारके स्वरूपको जान लोकाचारकी रीति प्रमाण पिताके मरणकी क्रिया करती भई बहुरि दूतको हनूमान महाशोकके भरे सकल वृत्तांत पूछते भए। तब इनको सकल वृत्तांत कहा सो हनूमान खरदूषणके मरणकरि अति क्रोधको प्राप्त भया। भौंह टेढी होय गई, मुख अर नेत्र आरक्त भए, तब दूतने कोप निवारिवेके निमित्त मधुर स्वरनिकरि वीनती करी—हे देव ! किहकंधापुरके स्वामी सुग्रीव

तिनको दुख उपजा, सोतो आप जानो ही हो। साहसगति विद्याधर सुग्रीवका रूप बनाय आया तातैं पीडित भया सुग्रीव श्रीरामके शरणे गया. सो राम सुग्रीवका दुख दूर करवे निमित्त किहकंधापुर आए प्रथम तो सुग्रीव अर वाके युद्ध भया सो सुग्रीवकरि वह जीता न गया। बहुरि श्रीरामके अर वाके युद्ध भया सो रामको देख बैताली विद्या भाग गई, तब वह साहसगति सुग्रीवके रूपरहित जैसा हुता तैसा होय गया। महायुद्धविषैं रामने ताहि मारा। सुग्रीवका दुःख दूर किया यह बात सुन हनूमानका क्रोध दूर भया। मुखकमल फूला, हर्षित होय कहते भए।

अहो श्रीरामने हमारा वडा उपकार किया। सुग्रीवका कुल अकीर्तिरूप सागरमें डूबे था सो शीघ्र ही उधारा, सुवर्णके कलस समान सुग्रीवका गोत्र सो अपयशरूप ऊंढे कूपमें डूबता हुता, श्रीराम सन्मतिके धारकने गुणरूप हस्तकरि काढा या भांति हनूमान बहुत प्रशंसा करी अर सुखके सागरविषै मग्न भए अर हनूमानकी दूजी स्त्री सुग्रीवकी पुत्री पद्मरागा पिताके शोकका अभाव सुन हर्षित भई। ताके बडा उत्साह भया। दान पूजा आदि अनेक शुभ कार्य किए। हनूमानके घरविषै अनंगकुसमाके घर खरदूषणका शोक भया अर पद्मरागाके सुग्रीवका हर्ष भया या भांति विषमताको प्राप्त भए घरके लोग तिनको समाधानकर हनूमान किहकंधापुरको सन्मुख भए। महा ऋद्धिकर युक्त बडी सेनासूं हनूमान चाला, आकाशविषै अधिक शोभा भई महा रत्नमई हनूमानका विमान ताकी किरणनिकरि सूर्यकी प्रभा मंद होय गई। हनूमानको चालता सुन अनेक राजा लार भए जैसे इन्द्रकी लार बडे बडे देव गमन करें। आगे पीछे दाहिनी बांई ओर अनेक राजा चाले जाय हैं विद्याधरनिके शब्द करि आकाश शब्दमई होय गया। आकाश गामी अश्व अर गज तिनके समूहनिकरि आकाश चित्रामरूप होय गया। महा तुरंगनिकरि संयुक्त ध्वजानि कर शोभित सुन्दर रथ तिनकर आकाश शोभायमान भासता भया अर उज्ज्वल छत्र-

निके समूहकर शोभित आकाश ऐसा भासे मानों कुमदनिका वन ही है अर गम्भीर दुन्दुभीके शब्दनि कर दशोंदिशा ध्वनिरूप होय गईं, मानों मेघ गाजे है अर अनेक वर्णके आभूषण तिनकी ज्योतिके समूहकरि आकाश नाना रंगरूप होय गया मानो काहू चतुर रंगरेजाका रंगा वस्त्र है हनूमानके वादित्रनिका नाद सुन कपिवंशी हर्षित भए जैसे मेघकी ध्वनि सुन मोर हर्षित होंय सुग्रीवने सब नगरकी शोभा कराई हाट बाजार उजाले। मंदिरनिपर ध्वजा चढाई रत्ननिके तोरणनिकरि द्वार शोभित किए हनूमानके सब सन्मुख गए, सबका पूज्य देवनिकी न्याई नगरविषै प्रवेश किया। सुग्रीवके मंदिर आए सुग्रीवने बहुत आदर किया अर श्रीरामका समस्त वृत्तांत कहा तब ही सुग्रीवादिक हनूमान सहित परमहर्षको धरते श्रीरामके निकट आए सो हनूमान रामको देखता भया, महासुन्दर सूक्ष्म स्निग्धश्याम सुगन्ध वक्र लंबे महामनोहर हैं केश जिनके सो लक्ष्मीरूप बल इनकर मंडित महा सुकुमार है अंग जिनका सूर्यसमान प्रतापी चंद्रसमान कांतिधारी अपनी कांतिकरि प्रकाशके करणहारे नेत्रनिको आनन्दके कारण महा मनोहर अतिप्रवीण आश्चर्यकारी कार्यके करणहारे, मानो स्वर्गलोकते देवे ही आए हैं, देदीप्यमान निर्मल स्वर्णके कमलके गर्भ समान है प्रभा जिनकी सुन्दर नेत्र सुन्दर श्रवण सुन्दर नासिका सर्वांग सुन्दर मानों साक्षात् कामदेव ही हैं, कमलनयन, नवयौवन, चढे धनुष समान भौंह जिनकी, पूर्णमासीके चंद्रमा समान बदन, महामनोहर मूंगा समान लाल होंठ कुन्दके समान उज्वल दंत, शंख समान कंठ, मृगेन्द्र समान साहस सुन्दरकटि सुन्दर बक्षस्थल महाबाहु श्रीवत्सलक्षण दक्षिणावर्त गम्भीरनाभि आरक्तकमल समान कर चरण महाकोमल गोल पुष्ट दोऊ जंघा अर कछूवेकी पीठ समान चरणके अग्रभाग महाकांतिको धरे अरुण नख अतुल बल महायोधा महागंभीर महाउदार सम चतुरस्र संस्थान बज्रवृषभ नाराच संहनन मानों सर्व जगत्रयकी सुन्दरता एकत्रकर बनाये हैं महाप्रभाव संयुक्त परंतु सीताके वियोगकरि

व्याकुल चित्त, मानों शचीरहित इंद्र विराजे हैं अथवा रोहिणीरहित चन्द्रमा तिष्ठे है । रूप सौभाग्य कर मंडित सर्व शास्त्रनिके वेत्ता महाशूरवीर जिनकी सर्वत्र कीर्ति फैल रही है महा बुद्धिमान् गुणवान ऐसे श्रीराम तिनको देखकर हनूमान आश्चर्यको प्राप्त भया । तिनके शरीरकी कांति हनूमान पर जा पडी, प्रभाव देखकर वशीभूत भया, पवनका पुत्र मनविषैं विचारता भया । ये श्रीराम दशरथके पुत्र भाई लक्ष्मण लोकश्रेष्ठ याका आज्ञाकारी संग्रामविषैं जाके चन्द्रमा समान उज्ज्वल क्षत्र देख साहसगतिकी विद्या वैताली ताके शरीरतें निकस गई अर इंद्र हू मैंने देखा है परंतु इनको देखकर परम आनंदसंयुक्त हृदय मेरा नम्रीभूत भया या भांति आश्चर्यको प्राप्त भया । अंजनीका पुत्र, श्रीराम कमललोचन ताके दर्शनको आगे आया अर लक्ष्मणने पहिले ही रामते कह राखी हुती सो हनूमानको दूरहीतें देख उठे, उरसे लगाय मिले, परस्पर अतिस्नेह भया, हनूमान अति विनयकर बैठा आप श्रीराम सिंहासन पर विराजे, भुज बंधनकरि शोभित है भुजा जिनकी, महा निर्मल नीलाम्बर मंडित राजनके चूणामणि महा सुन्दर हार पहिरे ऐसे सोहैं मानों नक्षत्रनि सहित चन्द्रमा ही है अर दिव्य पीतांबर धारे हार कुण्डल कर्पूरादि संयुक्त सुमित्राके पुत्र श्रीलक्ष्मण कैसे सोहे हैं मानो विजुरी सहित मेघ ही है अर बानर वंशिनिका मुकट देवनिसमान पराक्रम जाका राजा सुग्रीव कैसा सोहै मानों लोकपाल ही है अर लक्ष्मणके पीछे बैठा विराधित विद्याधर कैसा सोहै मानो लक्ष्मण नरसिंहका चक्ररत्न ही है, रामके समीप हनूमान कैसा शोभता भया जैसे पूर्णचन्द्रके समीप बुध सोहै अर सुग्रीवके दोय पुत्र एक अंगज दूजा अंगद सो सुगंधमाला अर वस्त्र आभूषणादिकर मंडित ऐसे सोहैं मानों यह कुवेर ही हैं अर नल नील अर सैकडों राजा श्रीरामकी सभाविषैं ऐसे सोहैं जैसे इंद्रकी सभाविषैं देव सोहैं, अनेकप्रकारकी सुगंध अर आभूषणनिका उद्योत ताकरि सभा ऐसे सोहे मानों इंद्रकी सभा है तब हनूमान आश्चर्यको पाय अतिप्रीतिको प्राप्त भया, श्रीरामको कहता भया ।

हे देव ! शास्त्रमें ऐसा कहा है प्रशंसा परोक्ष करिये प्रत्यक्ष न करिये परन्तु आपके गुणनिकरि यह मन वशीभूत भया प्रत्यक्ष स्तुति करे है अर यह रीति है कि आप जिनके आश्रय होय, तिनके गुण वर्णन करे सो जैसी महिमा आपकी हमने सुनी हुती तैसी प्रत्यक्ष देखी आप जीवानिके दयालु महा पराक्रमी परम हितू गुणनिके समूह जिनके निर्मल यशकर जगत् शोभायमान है। हे नाथ सीताके स्वयम्बर विधान विषैं हजारां देव जाकी रक्षा करैं ऐसा वज्रावर्त धनुष आपने चढाया सो वह हम सब पराक्रम सुने जिनका पिता दशरथ माता कौशल्या भाई लक्ष्मण भरत शत्रुघन स्त्रीका भाई भामंडल सो राम जगतपति तुम धन्य हो तिहारी शक्ति धन्य तिहारा रूप धन्य सागरावर्त धनुषका धारक लक्ष्मण सो सदा आज्ञाकारी, धन्य यह धीर्य धन्य यह त्याग, जो पिता के वचन पालिवे अर्थ राज्यका त्यागकर महा भयानक दण्डक वन में प्रवेश किया अर आप हमारा जैसा उपकार किया तैसा इन्द्र न करे, सुग्रीव का रूपकर साहसगति आया हुता सो आप कपिवंशका कलंक दूर किया आपके दर्शनकर बैताली विद्या साहसगतिके शरीरतैं निकस गई । आप युद्धविषैं ताहि हता सो आपने तो हमारा बडा उपकार किया अब हम कहा सेवा करें। शास्त्रकी यह आज्ञा है जो आपसौं उपकार करे अर ताकी सेवा न करे ताको भावशुद्धता नाहीं अर जो कृतघ्न उपकार भूले सो न्यायधर्मते वहिर्मुख है पापिनिविषैं महापापी है अर अपराधीनिते निर्दई है सो वातैं सत्पुरुष संभाषण न करैं तातै हम अपना शरीरभी तजकर तिहारे कामको उद्यमी हैं। मैं जाय लंकापतिको समझाय तिहारी स्त्री तिहारे लाऊंगा। हे राघव ! महाबाहू सीताका मुखरूपकमल पूर्णमासीके चन्द्रमा समान कांतिका पुंज, आप निस्संदेह शीघ्र ही सीता देखोगे। तब जांबूनन्द मंत्री हनुमानको परम हितके वचन कहता भया। हे वत्स वायुपुत्र ! हमारे सबन

के एक तू ही आश्रय है सावधान लंका को जाना अर काहुसों कदाचित् विरोध न करना तब हनुमान कही आपकी आज्ञा प्रमाण ही होयगा ॥

अथानन्तर हनूमान लंकाको चलिबेको उद्यमी भया तब राम अति प्रीतिको प्राप्त भए एकांतमें कहते भए हे वायुपुत्र ! सीताको ऐसे कहियो, कि हे महा सती ! तिहारे वियोगकरि रामका मन एक क्षणभी सातारूप नाहीं अर रामने यों कही ज्यों लग तुम पराये वश हो त्यों लग हम अपना पुरुषार्थ नाहीं जाने है अर तुम महानिर्मल शीलकरि पूर्ण हो अर हमारे वियोगकरि प्राण तजो चाहो हो सो प्राण तजो मति, अपना चित्त समाधान रूप राखो, विवेकी जीवनिको आर्त्त रौद्रतें प्राण न तजने । मनुष्यदेह अति दुर्लभ है ताविषैं जिनेन्द्रका धर्म दुर्लभ है ताविषैं समाधि मरण दुर्लभ है जो समाधि मरण न होय तो यह मनुष्य देह तुषवत् असार है अर यह मेरे हाथकी मुद्रिका जाकर ताहि विश्वास उपजै सो ले जावो अर उनका चूडामणि महा प्रभा रूप हम पै ले आइयो तब हनूमान कही जो आप आज्ञा करोगे सो ही होयगा, ऐसा कहकर हाथ जोड नमस्कार कर बहुरि लक्ष्मणतैं नम्रीभूत होय बाहिर निकसा । विभूति कर परिपूर्ण अपने तेजकरि सर्व दिशाको उद्योत करता सुग्रीवके मंदिर आया अर सुग्रीवसों कही–जौलग मेरा आवना न होय तौ लग तुम बहुत सावधान यहां ही रहियो या भांति कहकर सुन्दर हैं शिखर जाके ऐसा जो विमान तापर चढा ऐसा शोभता भया जैसा सुमेरुके ऊपर जिनमंदिर शोभै परमज्योतिकरि मंडित उज्वल छत्रकर शोभित हंस समान उज्ज्वल चमर जापर ढुरें हैं अर पवन समान अश्व चालते पर्वत समान गज अर देवनिकी सेना समान सेना ताकरि संयुक्त या भांति महा विभूतिकरि युक्त आकाशविषैं गमन करता रामादिक सर्वने देखा । गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहे हैं हे राजन् ! यह जगत् नाना प्रकारके जीवनिकरि भरा है तिनमें जो कोई परमार्थके निमित्त उद्यम करे है सो प्रशंसा योग्य है

अर स्वार्थतें जगतही भरा है जे पराया उपकार करें वे कृतज्ञ हैं प्रशंसा योग्य हैं अर जे निःकारण उपकार करें हैं उनके तुल्य इन्द्र चन्द्र कुवेर भी नाहीं अर जे पापी कृतघ्नी पराया उपकार लोपे हैं वे नरक निगोदके पात्र हैं और लोकनिंद्य हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनुमानका लंकाकी दिशा गमन वर्णन करनेवाला उनचासवां पर्व पूर्ण भया ॥ ४९ ॥

अथानन्तर अंजनीका पुत्र आकाशविषैं गमन करता परम उदयको धरे कैसा शोभता भया मानों वहिन समान जानकी ताहि लायवेको भाई जाय है। कैसे हैं हनूमान ? श्रीरामकी आज्ञाविषैं प्रवर्ते हैं महा विनय रूप ज्ञानवंत शुद्ध भाव रामके कामका चित्तमें उत्साह सो दिशा मंडल अवलोकते लंकाके मार्गमें राजा महेंद्रका नगर देखते भए मानों इन्द्रका नगर है पर्वतके शिखर पर नगर बसे हैं जहां चन्द्रमा समान उज्ज्वल मंदिर है सो नगर दूरहीतें नजर आया तब हनूमान देखकरि मनमें चिंतया यह दुर्बुद्धि महेन्द्रका नगर है वह यहां तिष्ठे है, मेरी माताको जाने संताप उपजाया था पिता होयकर पुत्रीका ऐसा अपमान करे जो जाने नगरमें न राखी तब माता बनमें गई जहां अनन्तगति मुनि तिष्ठे हुते तिनने अमृतरूप वचन कहकर समाधान करी सो मेरा उद्यानविषैं जन्म भया जहां कोई बंधु नहीं मेरी माता शरणे आवे अर यह न राखे यह क्षत्रीका धर्म नाहीं ताते याका गर्व हरूं तब क्रोधकर रणके नगारे बजाए अर ढोल बजाते भए शंखनिकी ध्वनि भई योधानिके आयुध झलकने लगे, राजा महेंद्र परचक्र आया सुनकर सर्व सेना सहित बाहिर निकसा दो सेनानिमें महा युद्ध भया महेंद्र रथमें चढा माथे छत्र फिरता धनुष चढाय हनूमान पर आया सो हनूमानने तीन वाणनिकरि ताका धनुष छेदा जैसे योगी-

श्वर तीन गुप्ति कर मानको छेदें वहुरि महेंद्रने दूजा धनुष लेनेका उद्यम किया ताके पाहिलेही त्राणनि-
करि ताके घोडे छुटाय दिए सो रथके समीप भ्रमे जैसे मनके प्रेरे इन्द्रिय विषयानिमें भ्रमै वहुरि महेंद्रका
पुत्र विमानमें वैठ हनूमानपर आया सो हनूमानके अर वाके वाणचक्र कनक इत्यादि अनेक आयुधनि-
करि परस्पर महा युद्ध भया हनूमानने अपनी विद्याकरि वाके शस्त्र निवारे जैसे योगीश्वर आत्मचिंत-
वनकर परीषहके समूहको निवारे ताने अनेक शस्त्र चलाये सो हनूमानके एक भी न लागा जैसे मुनिको
कामका एकभी वाण न लागे जैसे तृणानिके समूह अग्निमें भस्म होंय तैसे महेंद्रके पुत्रके सर्व शस्त्र हनू-
मानपर विफल गए अर हनूमानने ताहि पकडा जैसे सर्पको गरुड पकडे तब राजा महेंद्र महारथी पुत्र
को पकडा देख महा क्रोधायमान भया हनूमानपर आया जैसे साहसगति रामपर आयाहुता हनूमानहू
महा धनुषधारी सूर्यके रथ समान रथपर चढा, मनोहर है उरविषें हार जाके शूरवीरनिमें महाशूरवीर
नानाके सन्मुख भया सो दोउनिमें करोत कुठार खडग वाण आदि अनेक शस्त्रनिकरि पवन अर मेघकी
न्याईं महा युद्ध भया दो सिंह समान महा उद्धत महाकोपके भरे बलवन्त अग्निके कणसमान रक्तनेत्र
दो अजगर समान भयानक शब्द करते परस्पर शस्त्र चलावते गर्वहास संयुक्त प्रकट हैं शब्द जिनके
परस्पर ऐसे शब्द करे हैं धिक्कार तेरे शूरपनेको, तू कहा युद्ध कर जाने इत्यादि वचन परस्पर कहते
भए दोऊ विद्यावलकरि युक्त परम युद्ध करते वारम्वार अपने लोगनिकरि हाकार जय जयकारादि शब्द
करावते भए । राजा महेंद्र महा विक्रियाशक्तिका धारक क्रोधकर प्रज्वलित है शरीर जाका सो हनूमानपर
आयुधनिके समूह डारता भया भुषुंडी फरसा वाण शतघ्नी मुदगर गदा पर्वतानिके शिखर शालिवृक्ष
बटवृक्ष इत्यादि अनेक आयुध हनुमानपर महेंद्र चलाए सो हनूमान व्याकुलताको प्राप्त न भया जैसे गिरि-
राज महा मेघके समूहकरि कंपायमान न होय जेते महेंद्रने वाण चलाए सो हनूमानने उनका विद्याके

प्रभावकरि सब चूर डारे बहुरि अपने रथतें उछल महेंद्रके रथमें जाय पडे दिग्गजकी सूंड समान अपने जे हाथ तिनकरि महेंद्रको पकड लिया अर अपने रथमें आए, शूरबीरनिकरि पाया है जीतका शब्द जाने सर्वही लोक प्रशंसा करते भए राजा महेंद्र हनूमानको महाबलवान परम उदयरूप देख महा सौम्य वाणीकर प्रशंसा करता भया हे पुत्र ! तेरी महिमा जो हमने सुनी हुती सो प्रत्यक्ष देखी। मेरा पुत्र प्रसन्नकीर्ति जो अब काहूने कभी न जीता रथनूपुरका स्वामी राजा इन्द्र ताकरि न जीता गया, विजियार्धगिरिके निवासी विद्याधर तिनमें महाप्रभाव संयुक्त सदा महिमाको धरे मेरा पुत्र सो तैंने जीता अर पकडा धन्य पराक्रम तेरा महाधीर्यको धरे तेरे समान और पुरुष नाहीं अर अनुपमरूप तेरा अर संग्राम विषैं अद्भुत पराक्रम, हे पुत्र हनूमान तूने हमारे सब कुल उद्योत किये तू चरमशरीरी अवश्य योगीश्वर होयगा विनय आदि गुणनिकरि युक्त परम तेजकी राशि कल्याणमूर्ति कल्पवृक्ष प्रकट भया है तू जगत्‌विषैं गुरु कुलका आश्रय अर दुःखरूप सूर्यकर जे तप्तायमान हैं तिनको मेघसमान या भांति नाना महेंद्रने अति प्रशंसा करी अर आंख भर आई अर रोमांच होय आए मस्तक चूमा छातीसे लगाया तब हनूमान नमस्कार कर हाथजोड अति विनयकर क्षमा करावते भए एक क्षणमें और ही होय गए हनूमान कहे हैं—हे नाथ ! मैं बाल-बुद्धिकर जो तिहारा अविनय किया सो क्षमा करहु अर श्रीरामका किहकंधापुर आवनेका सकल वृत्तांत कहा आप लंकाकी ओर जावनेका वृत्तांत कहा अर कही मैं लंका होय कार्यकर आऊंहू तुम किहकन्धापुर जावो रामकी सेवा करो ऐसा कहिकर हनूमान आकाशके मार्ग लंकाको चाले जैसे स्वर्गलोकको देव जाय अर राजा महेंद्र राणी सहित तथा अपने प्रसन्नकीर्ति पुत्र सहित अंजनीपुत्रीके गया, अंजनीको माता पिता अर भाईको मिलाप भया सो अति हर्षित भई बहुरि महेंद्र किहकंधापुर आए सो राजा सुग्रीव विराधित आदि सन्मुख गए श्रीरामके निकट लाए राम बहुत

आदरसे मिले जे राम सारिखे महंत पुरुष महातेज प्रतापरूप निर्मलचित्त हैं अर जिनने पूर्व जन्मविषैं दान व्रत तप आदि पुण्य उपार्जे हैं तिनकी देव विद्याधर भूमि गोचरी सबही सेवा करें। जे महा गर्ववन्त बलवन्त पुरुष हैं ते सब तिनके वश होवें ताते सर्व प्रकार अपने मनको जीत सत्कर्ममें यत्नकर हे भव्यजीव हो ता सत्कर्मके फलकर सूर्य समान दीप्तिको प्राप्त होहु ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं महेंद्रका अर अंजनीका बहुरि श्रीरामके निकट आवनेका व्याख्यान वर्णन करनेवाला पचासवा पर्व पूर्ण भया ॥ ५० ॥

अथानन्तर हनूमान आकाशविषैं विमानमें बैठे जाय हैं अर मार्गमें दधिमुख नामा द्वीप आया तामें दधिमुख नामा नगर जहां दधि समान उज्ज्वल मन्दिर सुन्दर सुवरण के तोरण काली घटासमान सघन उद्यान पुरुषनि करि युक्त स्फटिक मणि समान उज्ज्वल जलकी भरी वापिका सोपाननि कर शोभित कमलादिक कर भरी, गौतमस्वामी राजा श्रेणिक सूं कहे हैं हे राजन्! या नगरते दूर वन तहां तृण बेल वृक्ष कांटनिके समूह सूके वृक्ष दुष्ट सिंहादिक जीवनिके नाद महा भयानक प्रचण्ड पवन जाकरि वृक्ष गिरपडे सूक गये हैं सरोवर जहां अर गृद्ध उल्लू आदि दुष्ट पक्षी विचरें ता वनविषैं दोय चारणमुनि अष्टदिनका कायोत्सर्ग धरे खडे थे अर तहांते चारकोस तीन कन्या महा मनोग्य नेत्र जिनके जटा धरें सफेद वस्त्र पहरे विधिपूर्वक महा तपकर निर्मल है चित्त जिनका मानों वे कन्या तीन लोककी आभूषण ही हैं।

अथानन्तर बन में अग्नि लागी सो दोऊ मुनि धीर वीर वृक्षकी न्याई खडे समस्त बन दावानल करि जरे, ते दोऊ निरग्रन्थ योगयुक्त मोक्षाभिलाषी रागादिकके त्यागी प्रशान्तवदन शान्तचित्त

निष्पाप अवांछक नासादृष्टि, लंबी हैं भुजा जिनकी, कायोत्सर्ग धरे जिनके जीवना मरना तुल्य शत्रु मित्र समान कांचन पाषाण समान सो दोऊ मुनि जरते देख हनूमान कम्पायमान भया वात्सल्य गुण करि मंडित महा भक्तिसंयुक्त वैयाव्रत करिवेको उद्यमी भया, समुद्रका जल लेयकर मूसलाधार मेह वरसाया सो क्षणमात्रविषैं पृथिवी जलरूप होय गई। वह अग्नि ता जलकरि हनूमानने ऐसे बुझाई जैसे मुनि क्षमाभावरूप जल करि क्रोधरूप अग्निको बुझावें। मुनिनिका उपसर्ग दूर कर तिनकी पूजा करता भया अर वे तीनों कन्या विद्या साधती हुतीं सो दावानलके दाह कर व्याकुलताका कारण भया हुता सो हनूमानके मेहकर बन का उपद्रव मिटा सो विद्यासिद्धि भई, सुमेरुकी तीन प्रदक्षिणा करि मुनिनिके निकट आयकर नमस्कार करती भईं अर हनूमानकी स्तुति करती भईं अहो तात धन्य तिहारी जिनेश्वरविषै भक्ति तुम काहु तरफ जाते हुते सो साधुनिकी रक्षा करी हमारे कारण करि बनमें उपद्रव भया सो मुनि ध्यानारूढ ध्यानतें न डिगे तब हनूमानने पूछी तुम कौन अर निर्जन स्थानकमें कौन कारण रहो हो तब सबानिमें बडी बहिन कहती भई यह दधिमुख नामा नगर जहां राजा गन्धर्व ताकी हम तीन पुत्री बडी चन्द्ररेखा दूजी विद्युत्प्रभा तीजी तरंगमाला सर्वगोत्रको वल्लभ सो जेते विजयार्ध विद्याधर राजकुमार हैं वे सब हमारे विवाहके अर्थ हमारे पितासूं याचना करते भए अर एक दुष्ट अंगारक सो अति अभिलाषी निरंतर कामके दाहकर आतापरूप तिष्ठै, एक दिन हमारे पिताने अष्टांग निमित्तके वेत्ता जे मुनि तिनको पूछी—हे भगवान ! मेरी पुत्रिनिका वर कौन होयगा, तब मुनि कही जो रणसंग्रामविषै साहसगतिको मारेगा, सो तेरी पुत्रिनिका वर होयगा, तब मुनिके अमोघ वचन सुनकर हमारे पिताने विचारी, विजियार्धकी उत्तरश्रेणीविषै श्रेष्ठ जो साहसगति ताहि कौन मार सके जो

ताहि मारे सो मनुष्य या लोकविषैं इंद्र समान है अर मुनिके वचन अन्यथा नाहीं सो हमारे माता पिता अर सकल कुटुम्ब मुनिके वचन पर दृढ भए अर अंगारक निरंतर हमारे पितासूं याचना करे, सो पिता हमको न देय, तब वह अति चिंतावान दुःखरूप वैरको प्राप्त भया अर हमारे यही मनोरथ उपजा जो वह दिन कब होय हम साहसगतिके हनिबेवारेको देखैं, सो मनोगामिनी नाम विद्या साधिवेको या भयानक वनविषैं आईं, सो अनुगामिनी नामा विद्या साधते हमको बारवां दिन है अर मुनिनिको आठमा दिन है। आज अंगारकने हमको देख क्रोधकर वनविषैं अग्नि लगाई, जो छह वर्ष कछुइक अधिक दिननिविषैं विद्या सिद्ध होय हमको उपसर्गतें भय न करवे कर बारह ही दिनविषैं विद्या सिद्ध भई। या आपदाविषैं हे महाभाग ! जो तुम सहाय न करते तो हमारा अग्निकर नाश होता अर मुनि भस्म होते, तातें तुम धन्य हो, तब हनूमान कहते भये तिहारा उद्यम सफल भया। जिनके निश्चय होय तिनको सिद्धि होय ही, धन्य निर्मल बुद्धि तिहारी बडे स्थानकविषै मनोरथ, धन्य तिहारा भाग्य ऐसा कहकर श्रीरामके किहकंधापुर आवनेका सकल वृत्तांत कहा अर अपने रामकी आज्ञा प्रमाण लंका जायवेका वृत्तांत कहा ताही समय वनके दाह शांति होयबेका अर मुनि उपसर्ग दूर होनेका वृत्तांत राजा गंधर्व सुन हनूमानपै आया। विद्याधरनिके योगकरि वह वन नंदनवन जैसा शोभता भया अर राजा गंधर्व हनूमानके मुखकरि श्रीरामका किहकंधापुर विराजनेका वृत्तांत सुन अपनी पुत्रिनि सहित श्रीरामके निकट आया पुत्री महाविभूतिकर रामको परणाई, राम महाविवेकी ये विद्याधरनिकी पुत्री अर महाराज विभूतिकर युक्त हैं तोहू सीता बिना दशोंदिशा शून्य देखते भए. समस्त पृथिवी गुणवान जीवनितें शोभित होय है अर गुणवंतनि विना नगर गहन वन तुल्य भासै है कैसे हैं गुणवान जीव? महामनोहर है चेष्टा जिनकी

अर अति सुन्दर हैं भाव जिनके, ये प्राणी पूर्वोपार्जित कर्मके फलकरि सुख दुःख भोगवे हैं तातैं जो सुखके अर्थी हैं वे जिनरूप सूर्यकरि प्रकाशित जो पवित्र जिनमार्ग ताविषैं प्रवृत्ते हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं रामको राजा गंधर्वकी

कन्यानिका लाभ वर्णन करनेवाला इक्यावनवा पर्व पूर्ण भया ॥ ५१ ॥

अथानन्तर महा प्रतापकर पूर्ण महाबली हनूमान जैसे सुमेरुको सौम जाय तैसे त्रिकूटाचलको चला सो आकाशविषै जाती जो हनूमानकी सेना ताका महा धनुषके आकार मायामई यंत्रकर निरोध भया तब हनूमान अपने समीपी लोकनितैं पूछी जो मेरी सेना कौन कारण आगे चल न सके यहां गर्वका पर्वत असुरनिका नाथ चमरेन्द्र है अथवा इन्द्र है तथा या पर्वतके शिखरविषै जिन मंदिर हैं अथवा चरमशरीरी मुनि हैं तब हनूमानके ये बचन सुनकर पृथुमति मन्त्री कहता भया हे देव! यह क्रूरतासंयुक्त मयामई यंत्र है तब आप दृष्टिधर देखा कोटविषै प्रवेश कठिन जाना मानों यह कोट विरक्त स्त्रीके मन समान दुःप्रवेश है, अनेक आकारको धरे वक्रताकरि पूर्ण, महा भयानक सर्वभक्षी पूतली जहां देव भी प्रवेश न कर सकें जाज्वल्यमान तीक्षण हैं अग्र भाग जिनके ऐसे करोतनिके समूहकर मण्डित जिह्वाके अग्रभाग करि रुधिरको उगलते ऐसे हजारा सर्प तिनकरि भयानक फण, ते विकराल शब्द करे हैं अर विषरूप अग्निके कण बरसे हैं, विषरूप धूमकरि अन्धकार होय रहा है। जो कोई मूर्ख सामन्तपणाके मानकरि उद्धत भया प्रवेश करे ताहि मायामई सर्प ऐसे निगलें जैसे सर्प मेंडकको निगलें, लंकाके कोटका मंडल जोतिष चक्रते हूं ऊंचा सर्व दिशनिविषै दुर्लंघ अर देखा न जाय प्रलयकालके मेघ समान भयानक शब्द कर संयुक्त अर हिंसारूप ग्रन्थनिकी न्याईं अत्यन्त पापकर्मनिकरि निरमापा ताहि देख कर

हनूमान विचारता भया यह मायामई कोट राक्षसनिके नाथने रचा है सो अपनी विद्याकी चातुर्यता दिखाई है अर अब मैं विद्याबलकरि याहि उपाडता संता राक्षसनिका मद हरूं जैसे आत्मध्यानी मुनि मोह मदको हरे तब हनूमान युद्धविषै मनकर समुद्र समान जो अपनी सेना सो आकाशविषै राखी अर आप विद्यामई बक्तर पहिर हाथविषै गदा लेकर मायामई पूतलीके मुखविषै प्रवेश किया जैसे राहुके मुखविषैं चन्द्रमा प्रवेश करे अर वा मायामई पूतलीकी कुक्षि सोई भई पर्वतकी गुफा अन्धकारकर भरी सो आप नरसिंहरूप तीक्षण नखनिकर विदारी अर गदाके घातसे कोट चूरण किया जैसे शुक्लध्यानी मुनि निर्मल भावनिकरि घातिया कर्मकी स्थिति चूरण करे।

अथानन्तर यह विद्या महाभयंकर भंगको प्राप्त भई तब मेघकी ध्वनि समान ध्वनि भई विद्या भाग गई कोट विघट गया जैसे जिनेन्द्रके स्तोत्रकरि पापकर्म विघट जाय तब प्रलयकालके मेघ समान भयंकर शब्द भया मायामई कोट विखरा देख कोटका अधिकारी वज्रमुख महा क्रोधायमान होय शीघ्र ही रथपर चढ हनूमान पर विना विचारे मारनेको दौडा जैसे सिंह आग्निकी ओर दौडे जब वाहि आया देख पवनका पुत्र महायोधा युद्ध करिवेको उद्यमी भया तब दोऊ सेनाके योधा प्रचण्ड नाना प्रकारके वाहननिपर चढे अनेक प्रकारके आयुध धरे परस्पर लडने लगे बहुत कहनेकरि कहा? स्वामीके कार्य ऐसा युद्ध भया जैसा मानके अर मार्दवके युद्ध होय अपने २ स्वामीकी दृष्टिविषै योधा गाज २ युद्ध करते भए जीवनविषैं नाहीं है स्नेह जिनके, फिर हनूमानके सुभटनिकर वज्रमुखके योधा क्षणमात्रविषैं दशोंदिशा भाजे अर हनूमानने सूर्यहूते अधिक है ज्योति जाकी ऐसे चक्र शस्त्रकरि वज्रमुखका सिर पृथिवीपर डारा। यह सामान्य चक्र है चक्री अर्धचक्रिनिके सुदर्शनचक्र होय है। युद्धविषै पिताका मरण देख लंकासुन्दरी वज्रमुखकी पुत्री पिताका जो शोक उपजा हुता ताहि कष्टसे निवार क्रोधरूप विषकी भरी तेज

तुरंग जुते हैं जाके ऐसे रथपर चढी कुंडलनिके उद्योतकरि प्रकाशरूप है मुख जाका बक्र हैं भौंह जाकी, उल्कापातका स्वरूप सूर्यमंडल समान तेजधारी क्रोधके वश कर लाल हैं नेत्र जाके क्रूरताकर डसे हैं किंदूरीसमान होंठ जाने मानों क्रोधायमान शची ही है सो हनूमानपर दौडी अर कहती भई—रे दुष्ट ! मैं तोहि देखा जो तोमें शक्ति है तो मोतें युद्धकर, जो क्रोधायमान भया रावण न करे सो मैं करूंगी, हे पापी ! तोहि यममंदिर पठाऊंगी, तू दिशाको भूल अनिष्ट स्थानको प्राप्त भया ऐसे शब्द कहती वह शीघ्र ही आई सो आवतीका हनूमानने छत्र उडाय दिया, तब वाने बाणनिकरि इनका धनुष तोड डारा अर शक्ति लेय चलावे ता पहिले हनूमान बीच ही शक्तिको तोड डारी तब वह विद्याबलकर गंभीर बज्र-दंड समान बाण अर फरसी बरछी चक्र शतघ्नी मूसल शिला इत्यादि वायुपुत्रके रथपर बरसावती भई जैसे मेघमाला पर्वतपर जलकी धारा वरसावे नानाप्रकारके आयुधानिके समूहकरि वाने हनुमानको बेढा जैसे मेघपटल सूर्यको आच्छादे तब हनूमान विद्याकी सर्व विधिविषै प्रवीण महापराक्रमी ताने शस्त्रनिके समूह अपने शस्त्रनिकरि आप तक न आवने दिए तोमरादिक बाणनिकरि तोमरादिक बाण निवारे अर शक्तितें शक्ति निवारी । या भांति परस्पर अतियुद्ध भया याके वाण वाने निवारे वाके वाण याने निवारे बहुत बेरतक युद्ध भया कोई नहीं हारे सो गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं ।

हे राजन् ! हनूमानको लंकासुन्दरी बाण शक्ति इत्यादि अनेक आयुधनिकरि जीतती भई अर कामके बाणनिकर पीडित भई । कैसे हैं कामके वाण ? मर्मके बिदारनहारे कैसी है लंकासुन्दरी साक्षात् लक्ष्मी समान रूपवन्ती, कमल लोचन सौभाग्य गुणनिकरि गर्वित सो हनूमानके हृदयविषैं प्रवेश करती भई जाके कर्णपर्यंत बाणरूप तीक्ष्ण कटाक्ष नेत्ररूप धनुषतें चढे ज्ञान धीर्यके हरणहारे महा सुन्दर दुद्धर मनके भेदनहारे प्रवीण अपनी लावण्यताकरि हरी है सुन्दरताई जिनने तब हनूमान मोहित होय

मनमें चिंतवता भया जो यह मनोहर आकार महाललित वाहिर तो विद्यावाण अर सामान्य वाण तिन कर मोहि भेदे है और आभ्यन्तर मेरे मनको कामके वाणकरि वींधे है यह मोहि वाह्याभ्यंतर हणे है तन मनको पीडै है या युद्धविषैं याके वाणनिकरि मृत्यु होय तो भली परन्तु याके विना स्वर्गविषैं जीवना भला नाहीं या भांति पवनपुत्र मोहित भया अर वह लंकासुन्दरी याके रूपको देख मोहित भई, क्रूरतारहित करुणा विषैं आया है चित्त जाका तव जो हनूमानके मारिवेको शक्ति हाथमें लीनी हुती सो शीघ्रही हाथतैं भूमिमें डारदई, हनूमान पर न चलाई। कैसे हैं हनूमान? प्रफुल्लित हैं तन अर मन जिनका अर कमल दल समान हैं नेत्र जिनके अर पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है मुख जिनका नव यौवन मुकट विषैं वानरका चिन्ह साक्षात् कामदेव है। लंकासुन्दरी मनमें चितवती भई याने मेरा पिता मारा सो बडा अपराध किया यद्यपि द्वेषी है तथापि अनुपम रूपकर मेरे मनको हरे है जो या सहित काम भोग न सेऊं तो मेरा जन्म निष्फल है तव विह्वल होय एक पत्र तामें अपना नाम सो वाणको लगाय चलाया तामें ये समाचार हुते हे नाथ! देवनिके समूहकर न जीती जाऊं ऐसी मैं सो तुमने कामके वाणनिकरि जीती यह पत्र वांच हनुमान प्रसन्न होय रथसे उतरे, जायकर तासे मिले जैसे काम रतिसे मिले वह प्रशांतवैर भई संती आसूं डारती तातके मरणकर शोकरत, तव हनूमान कहते भए—हे चन्द्रवदनी! रुदन मत करे तेरे शोककी निवृत्ति होहु तेरे पिता परम क्षत्री महाशूरवीर तिनकी यही रीति जो स्वामी कार्यके अर्थ युद्धमें प्राण तजें अर तुम शास्त्रविषैं प्रवीण हो सो सव नीकें जानो हो या राज्यविषैं यह प्राणी कर्मनिके उदयकर पिता पुत्र बांधवादिक सवको हणे है तातैं तुम आर्त ध्यान तजो ये सकल प्राणी अपना उपार्जा कर्म भोगवे हैं निश्चय मरणका कारण आयुका अन्त है अर पर जीव निमित्त मात्र हैं, इन वचननिकरि लंकासुन्दरी शोकरहित भई। या भांति या सहित कैसी सोहती भई जैसे पूर्णचन्द्रसे निशा सोहै

प्रेमके समूहकर पूर्ण दोऊ मिलकर संग्रामका खेद विस्मरण होय गए दोऊनिका चित्त परस्पर प्रीतिरूप होय गया तब आकाशविषैं स्तम्भनी विद्याकर कटक थांभा अर सुन्दर मायामई नगर बसाया जैसी सांझ की आरक्तता होय ता समान लाल देवनके नगर समान मनोहर जामें राजमहल अत्यन्त सुन्दर सो हाथी घोडे विमान रथों पर चढ बडे बडे राजा नगरमें प्रवेश करते भए। नगर ध्वजानिकी पंक्ति कर शोभित सो यथायोग्य नगरमें तिष्ठे महा उत्साहसे संयुक्त रात्रिमें शूरवीरनिके युद्धका वर्णन जैसा भया तैसा सामंत करते भए हनूमान लंकासुन्दरीके संग रमता भया।

अथानन्तर प्रभात ही हनूमान चलनेको उद्यमी भए तब लंकासुन्दरी महा प्रेमकी भरी ऐसे कहती भई—हे कंत! तुम्हारे पराक्रम न सहे जांय ऐसे अनेक मनुष्योंके मुख रावणने सुने होवेंगे सो सुनकर अतिखेदखिन्न भया होयगा तातैं तुम लंका काहेको जावो, तब हनूमानने उसे सकल वृत्तान्त कहा जो रामने बानरवंशियोंका उपकार किया सो सबोंका प्रेरा रामके प्रति उपकार निमित्त जाऊं हूं। हे प्रिये! रामका सीतासे मिलाप कराऊं, राक्षसोंका इन्द्र अन्याय मार्गसे हर ले गया है, सो सर्वथा मैं लाऊंगा। तब ताने कहा तुम्हारा और रावणका वह स्नेह नाहीं, स्नेह नष्ट भया सो जैसे स्नेह कहिए तैल ताकू नष्ट होयवे करि दीपककी शिखा नहीं रहे है तैसे स्नेहके नष्ट होयवे करि संबन्धका व्यवहार नहीं रहे है अबतक तुम्हारा यह व्यवहार था तुम जब लंका आवते तब नगर उछावतैं गली गलीमें हर्ष होता मंदिर ध्वजावोंकी पंक्तिसे शोभित होते जैसे स्वर्गमें देव प्रवेश करैं तैसे तुम प्रवेश करते, अब रावण प्रचण्ड दशानन तुमविषैं द्वेषरूप है सो निःसंदेह तुमको पकडेगा तातैं जब तिहारे उनके संधि होय तब मिलना योग्य है तब हनुमान बोले हे विचक्षणे! जाय कर ताका अभिप्राय जाना चाहूं हूं और वह सीता सती जगतमें प्रसिद्ध है और रूपकर अद्वितीय है जाहि देखकर रावणका सुमेरुसमान अचल मन चला है वह

महापतिव्रता हमारे नाथकी स्त्री हमारी माता समान ताका दर्शन किया चाहूं हूं। या भांति हनूमानने कही और सब सेना लंकासुन्दरीके समीप राखी और आप तो विवेकिनीने विदा होयकर लंकाको सन्मुख भए। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतें कहे हैं हे राजन्! या लोकविषैं यह बडा आश्चर्य है जो यह प्राणी क्षणमात्रमें एक रसकों छोडकर दूजे रसमें आ जाय कभी विरसको छोडकर रसमें आ जाय कबहूं रसको छोडकर विरसमें आ जाय। या जगतविषैं इन कर्मनिकी अद्भुत चेष्टा है संसारी सर्व जीव कर्मोंके आधीन हैं। जैसे सूर्य दक्षणायनसे उत्तरायण आवे तैसे प्राणी एक अवस्थासे दूजी अवस्थामें आवे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनुमान लंकासुन्दरीका लाभ वर्णन करनेवाला बावनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५२ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतें कहे हैं हे श्रेणिक! वह पवनका पुत्र महाप्रभावके उदयकर संयुक्त थोडे ही सेवकों सहित निःशंक लंकामें प्रवेश करता भया। बहुरि प्रथमही विभीषणके मंदिरमें गया विभीषणने बहुत सन्मान किया फिर क्षणएक तिष्ठ कर परस्पर वार्ता कर हनूमान कहता भया जो रावण आधे भरतक्षेत्रका पति सर्वका स्वामी ताहि यह कहा उचित जो दरिद्र मनुष्यकी न्याईं चोरीकर परस्त्री लावे जे राजा हैं सो मर्यादाके मूल हैं जैसे नदीका मूल पर्वत, राजाही अनाचारी होय तो सर्व लोकमें अन्यायकी प्रवृत्ति होए ऐसे चरित्र किए राजाकी सर्वलोकमें निंदा होय तातें जगत्‌के कल्याण निमित्त रावणको शीघ्रही कहो न्यायको न उलंघे यह कहो हे नाथ! जगतमें अपयशका कारण यह कर्म है जिससे लोक नष्ट होय सो न करना तुम्हारे कुलका निर्मल चारित्र केवल पृथिवी परही प्रशंसा योग्य

नहीं, स्वर्गमें भी देव हाथ जोड नमस्कार कर तुम्हारे बडोंकी प्रशंसा करे हैं तुम्हारा यश सर्वत्र प्रसिद्ध
है तब विभीषण कहता भया मैं बहुत बार भाईको समझाया परन्तु मानें नहीं अर जिस दिनसे सीता
ले आया उस दिनसे हमसे बात भी न करे तथापि तुम्हारे वचनसे मैं फिर दबायकर कहूंगा परन्तु यह
हठ उससे छूटना कठिन है अर आज ग्यारवां दिन है सीता निराहार है जल भी नाहीं लेय है तो भी
रावणको दया नहीं उपजी इस कामसे विरक्त नहीं होय है। ए बात सुनकर हनूमानको आति दया उपजी
प्रमदनामा उद्यान जहां सीता विराजे है तहां हनूमान गया उस वनकी सुन्दरता देखता भया नवीन जे
बेलोंके समूह तिनसे पूर्ण और तिनके लाल पलुव सोहैं मानों सुन्दर स्त्रीके कर पल्लव ही हैं और पुष्पों
के गुच्छोंपर भ्रमर गुंजार करे हैं और फलोंसे शाखा नम्रीभूत हो रही हैं अर पवनसे हाले हैं, कमलोंकर
जहां सरोवर शोभित हैं और देदीप्यमान बेलोंसे वृक्ष वेष्टित मानों वह वन देववन समान है अथवा
भोगभूमि समान है पुष्पोंकी मकरन्दसे मंडित मानों साक्षात् नंदन वन है अनेक अद्भुतताकर पूर्ण
हनूमान कमललोचन वनकी लीला देखता संता सीताके दर्शन निमित्त आगे गया चारों तरफ वनमें
अवलोकन किया सो दूर ही से सीताको देखा। सम्यक् दर्शन सहित महासती उसे देखकर हनूमान मन
में चिंतवता भया यह रामदेवकी परम सुन्दरी महासती निर्धूम अग्नि समान असुवनसे भर रहे हैं नेत्र
जाके, सोच सहित बैठी मुखसे हाथ लगाय सिरके केश बिखर रहे हैं कृश है शरीर जिसका सो देख-
कर हनूमान विचारता भया। धन्य रूप इस माताका लोकविषैं, जीते हैं सर्वलोक जिसने मानों यह कमल
से निकसी लक्ष्मी ही विराजे है दुखके समुद्रमें डूब रही है तोभी इस समान और कोई नारी नाहीं। मैं जैसे
होय तैसे इसे श्रीरामसे मिलाऊं इसके और रामके काज अपना तनदूं याका और रामका विरह न देखूं
यह चिंतवनकर अपना रूप फेर मन्द २ पांव धरता हनूमान आगे जाय श्रीरामकी मुद्रिका सीताके पास

डारी सो शीघ्रही उसे देख रोमांच होय आए और कछू इक मुख हर्षित भया सो समीप बैठी थीं जो नारी वे इसकी प्रसन्नताके समाचार जायकर रावणको कहती भई सो वह तुष्टायमान होय इनको वस्त्र रत्नादिक देता भया और सीताको प्रसन्नवदन जान कार्यकी सिद्धि चिंतता भया सो मन्दोदरीको सर्व अन्तःपुरसहित सीतापै पठाई सो अपने नाथके वचनसे सर्व अन्तःपुर सहित सीता पै आई सो सीताको मंदोदरी कहती भई।

हे बाले! आज तू प्रसन्न भई सुनी सो तैंने हमपर बडी कृपा करी अब लोकका स्वामी रावण उसे अंगीकार कर जैसे देवलोककी लक्ष्मी इन्द्रको भजे। ये वचन सुन सीता कोपकर मन्दोदरीसे कहती भई हे खेचरी! आज मेरे पतिकी वार्ता आई है मेरे पति आनन्दसे हैं इसलिये मोहि हर्ष उपजा है तब मन्दोदरीने जानी इसे अन्न जल किये ग्यारह दिन भए सो वायसे बके है तब सीता मुद्रिका ल्यावनहारे से कहती भई, हे भाई! मैं इस समुद्रके अंतर्द्वीपविषै भयानक वन में पडी हूं सो कोऊ उत्तम जीव मेरा भाई समान अतिवात्सल्य धारणहारा मेरे पतिकी मुद्रिका लेय आया है सो प्रगट दर्शन देवे तब हनुमान महा भव्य जीव सीताका अभिप्राय जान मनमें विचारता भया जो पहिले पराया उपकार विचारे बहुरि अतिकायर होय छिप रहे सो अधम पुरुष है अर जे पर जीवको आपदाविषैं खेद खिन्न देख पराई सहाय करे तिन दयावन्तोंका जन्म सफल है तब समस्त रावणकी स्त्री मन्दोदरी आदि देखे हैं अर दूरहीसे सीताको देख हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार करता भया, कैसा है हनुमान? महा निशंक कांतिकर चन्द्रमासमान दीप्तिकर सूर्य समान वस्त्र आभरणकर मंडित रूपकर अतुल्य मुकुटमें बानर का चिन्ह चन्दन कर चर्चित है सर्व अंग जाका, महा बलवान बज्रवृषभनाराचसंहनन, सुन्दर केश रक्त होठ कुंडलके उद्योतसे महा प्रकाश रूप मनोहर मुख गुणवान महाप्रतापसंयुक्त सीताके निकट आवता

कैसा सोभता भया मानौं भामंडल भाई लेयवे को आया है प्रथम ही अपना कुल गोत्र माता पिता का नाम सुनाय कर बहुरि अपना नाम कहा बहुरि श्रीरामने जो कहा हुता सो सर्व कहा अर हाथ जोड विनती करी हे साध्वी ! स्वर्गविमानसमान महलोंमें श्रीराम विराजे हैं परंतु तुम्हारे विरहरूप समुद्रमें मग्न काहू ठौर रतिको नाहीं पावे हैं समस्त भोगोपभोग तजें मौन धरे तिहारा ध्यान करे हैं जैसे मुनि शुद्धताको ध्यावें, एकाग्रचित्त तिष्ठे हैं। वे बीणाका नाद अर सुंदर स्त्रियोंके गीत कदापि नाहीं सुनै हैं अर सदा तिहारी ही कथा करे हैं तिहारे देखवेके अर्थ केवल प्राणों को धरें हैं। यह वचन हनुमानके सुन सीता आनन्दको प्राप्त भई बहुरि सजल नेत्र होय कहती भई (सीताके निकट हनुमान महा विनयवान हाथ जोड खडा है) जानकी बोली—

हे भाई ! मैं दुःखके सागरविषै पडी हूं अशुभके उदयकरि पतिके समाचार सुन तुष्टायमान भई तोहि कहा दूं ? तब हनूमान प्रणामकर कहता भया हे जगत् पूज्ये ! तिहारे दर्शन ही से मोहि महा लाभ भया तब सीता मोती समान आंसुनिकी बूंद नाखती हनूमानसे पूंछती भई हे भाई ! यह मगर ग्राह आदि अनेक जलचरोंकर भरा महा भयानक समुद्र ताहि उलंघकर तू कैसे आया अर सांच कहो मेरा प्राणनाथ तैंने कहां देखा अर लक्ष्मण युद्धविषै गया हुता सो कुशल क्षेमसे है अर मेरा नाथ कदाचित् तोहि यह संदेशा कहकर परलोक प्राप्त हुवा होय अथवा जिन मार्गविषै महा प्रवीण सकल परिग्रहका त्यागकर तप करता होय अथवा मेरे वियोगसे शरीर शिथिल होय गया होय अर अंगुरीतें मुद्रका गिर पडी होय यह मेरे विकल्प है, अब तक मेरे प्रभुका तोसों परिचय न हुता सो कौन भांति मित्रता भई सो सब मोसूं विशेषताकर कहो। तब हनूमान हाथ जोड सिर निवाय कहता भया—हे देवि ! सूर्यहास खड्ग लक्ष्मणको सिद्ध भया और चन्द्रनखाने धनीपै जाय धनीको क्रोध उपजाया सो खरदूषण दण्डकवन-

विषै युद्ध करनेको आया अर लक्ष्मण उससे युद्धकरनेको गए सो तो सव वृत्तांत तुम जानो हो बहुरि रावण आया अर आप श्रीरामके पास विराजती हुती सो रावण यद्यपि सर्व शास्त्रका वेत्ता हुता अर धर्म अधर्मका स्वरूप जाने हुता परंतु आपको देखकर अविवेकी होय गया समस्त नीति भूल गया, बुद्धि जाती रही तिहारे हरनेके कारण कपटकर सिंहनाद किया सो सुनकर राम लक्ष्मणपै गए अर यह पापी तुमको हर ले आया बहुरि लक्ष्मण राम सूं कही—तुम क्यों आए, शीघ्र जानकीपै जावो तब आप स्थानक आए तुमको न देखकर महाखेदखिन्न भए। तिहारे ढूंढनेके कारण वनविषै वहुत भ्रमे बहुरि जटायुको मरते देखा तब ताहि नमोकार मंत्र दिया अर चार आराधना सुनाय सन्यास देय पक्षीका परलोक सुधारा वहुरि तिहारे विरहकर महादुखी सोचसे परे अर लक्ष्मण खरदूषणको हन रामपै आया, धीर्य बंधाया अर चन्द्रोदयका पुत्र विराधित लक्ष्मणसे युद्ध ही विषै आय मिला हुता वहुरि सुग्रीव राम पै आया अर साहसगति विद्याधर जो सुग्रीवका रूपकर सुग्रीवकी स्त्रीका अर्थी भया हुता सो रामको देख साहसगतिकी विद्या जाती रही सुग्रीवका रूप मिटगया अर साहसगति रामसे लडा सो साहसगतिको रामने मारा सुग्रीवका उपकार किया तब सवने मोहि बुलाय रामसूं मिलाया। अव मैं श्रीरामका पठाया तिहारे छुडाइबे अर्थ यहां आया हूं, परस्पर युद्ध करना निःप्रयोजन है कार्यकी सिद्धि सर्वथा नयकर करना अर लंकापुरीका नाथ दयावान् है विनयवान् है धर्म अर्थ कामका वेत्ता है कोमल हृदय है सोम्य है वक्रतारहित है सत्यवादी महाधीरवीर है सो मेरा वचन मानेगा तोहि रामपै पठावेगा। याकी कीर्ति महा निर्मल पृथिवीविषै प्रसिद्ध है और यह लोकापवादतें डरै है तब सीता हर्षित होय हनूमानसे कहती भई—हे कपिध्वज! तो सरीखे पराक्रमी धीरवीर विनयवान् मेरे पतिके निकट केतेक हैं?

तब मन्दोदरी कहती भई—हे जानकी! तैं यह कहा समझकर कही। तू याहि न जाने है तातैं ऐसा

पूछे है या सरीखा भरतक्षेत्रमें कौन है या क्षेत्रमें यह एक ही है। यह महासुभट युद्धमें कईबार रावणका सहाई भया है यह पवनका पुत्र अंजनीका सुत रावणका भानजी जमाई है। चन्द्रनखाकी पुत्री अनंगकुसुमा परणी है या एकने अनेक जीते हैं सदा लोक याके दर्शनको बांछे हैं चन्द्रमाकी किरणवत् याकी कीर्ति जगत्में फैल रही है। लंकाका धनी याहि भाईनितैं भी अधिक गिने है यह हनुमान पृथिवी पर प्रसिद्ध गुणनिकर पूर्ण है परन्तु यह बडा आश्चर्य है कि भूमिगोचरियोंका दूत होय आया है। तब हनुमानने कही—तुम राजा मयकी पुत्री अर रावणकी पटराणी दूती होय कर आई हो। जा पतिके प्रसादतैं देवोंकेसे सुख भोगे ताहि अकार्यविषै प्रवर्त्तते मने नहीं करो हो और ऐसे कार्यकी अनुमोदना करो हो। अपना वल्लभ विषका भरा भोजन करे ताहि नाहीं निवारो हो। जो अपना भला बुरा न जाने ताका जीतव्य पशु समान है और तिहारा सौभाग्य रूप सबतैं अधिक और पति परस्त्रीरत भया ताका दूतीपना करो हो। तुम सब बातनिविषैं प्रवीण परम बुद्धिमती हुती सो प्राकृत जीवनि समान अविधि कार्य करो हो। तुम अर्धचक्रीकी महिषी कहिये पटराणी हो सो अब मैं तुमको महिषी कहिये भैंस समान जानूं हूं। यह वचन हनूमानके मुखतैं सुन मन्दोदरी क्रोधरूप होय बोली—अहो तू दोषरूप है, तेरा वाचालपना निरर्थक है जो कदाचित् रावण यह बात जाने कि यह रामका दूत होय सीतापै आया है तो जो काहूसे न करै ऐसी तोसैं करै अर जिसने रावणका बहनेऊ चन्द्रनखाका पति मारा ताके सुग्रीवादिक सेवक भए, रावणकी सेवा छांडी सो वे मन्दबुद्धि हैं रंक कहा करेंगे? इनकी मृत्यु निकट आई है तातैं भूमिगोचरीके सेवक भये हैं। ते अति मूढ निर्लज्ज तुच्छवृत्ति कृतघ्नी वृथा गर्वरूप होय मृत्युके समीप तिष्ठे हैं। ये वचन मन्दोदरीके सुनकर सीता क्रोधरूप होय कहती भई—हे मन्दोदरी! तू मंदबुद्धि है जो वृथा ऐसे कहे है, तैं मेरा पति अद्भुत पराक्रमका धनी कहा नहीं सुना है, शूरवीर अर पंडितोंकी

गोष्ठीविषै मेरा पति मुख्य गाइये है, जाके वज्रावर्त धनुषका शब्द रण संग्रामविषै सुनकर महारणधीर योधा धीर्य नहीं धारे हैं। भयसे कम्पायमान होयकर दूर भागे हैं अर जाका लक्ष्मण छोटाभाई लक्ष्मीका निवास शत्रुपक्षके क्षय करनेको समर्थ जाके देखते ही शत्रु दूर भाग जावें। बहुत कहिवेकरि कहा? मेरा पति राम लक्ष्मण सहित समुद्र तरकर शीघ्र ही आवे है सो युद्धविषैं थोडे ही दिननिविषै तू अपने पतिको मूवा देखेगी। मेरा पति प्रबल पराक्रमका धारी है, तू पापी भरतारकी आज्ञारूप दूती होय आई है सो शिताब ही विधवा होयगी अर बहुत रुदन करेगी। ये वचन सीताके मुखतें सुनकर मन्दोदरी राजा मयकी पुत्री अतिक्रोधको प्राप्त भई। अठारा हजार राणी हाथोंकर सीताके मारवेको उद्यमी भई और अति क्रूर वचन कहती सीता पर आई तब हनूमान बीच आनकर तिनको थांभी जैसे पहाड नदीके प्रवाहको थांभै। ते सब सीताको दुःखका कारण वेदनारूप होय हनिवेको उद्यमी भई थीं सो हनूमानने वैद्यरूप होय निवारी तब ये सब मंदोदरी आदि रावणकी राणी मान भंग होय रावणपै गईं क्रूर हैं चित्त जिनके, तिनको गए पीछे हनूमान सीतासे नमस्कारकरि आहारके निमित्त विनती करता भया हे देवि! यह सागरांत पृथिवी श्रीरामचन्द्रकी है तातैं यहांका अन्न उनहीका है, वैरियोंका न जानो। या भांति हनूमानने सम्बोधी और प्रतिज्ञा भी यही हुती कि जो पतिके समाचार सुनूं तब भोजन करूं सो समाचार आए ही तब सीता सब आचारमें विचक्षण महा साध्वी शीलवंती दयावंती देशकालकी जानने वारी आहार लेना अंगीकार करती भई। तब हनूमानने एक ईरा नामकी स्त्री कुलपालिकाको आज्ञा करी जो शीघ्रही श्रेष्ठ अन्न लावो अर हनूमान बिभीषणके पास गया ताहीके भोजन किया और तासे कही सीताको भोजनकी तयारी कराय आया हूं और ईरा जहां डेरे हुते वहां गई सो चार मुहूर्तमें सर्व सामग्री लेकर आई दर्पण समान पृथिवीको चन्दनसे लीपा और महा सुगन्ध विस्तीर्ण निर्मल सामग्री और सुव-

र्णादिकके भाजनमें भोजन धराय लाई । कैएक पात्र घृतके भरे हैं कैएक चावलोंसे भरे हैं चावल कुंदके पुष्प समान उज्ज्वल और कैएक पात्र दालसों भरे हैं और अनेक रस नाना प्रकारके व्यंजन दूध दही महा स्वादरूप भांति भांतिका आहार सो सीता बहुत किया । संयुक्त रसोई कर ईरा आदि समीप वर्तियोंको यहां ही न्योते । हनूमानसे भाईका भाव कर अति वात्सल्य किया । महा श्रद्धा संयुक्त है अन्तःकरण जाका ऐसी सीता महा पतिव्रता भगवानको नमस्कारकर अपना नियम समाप्तकर त्रिविध पात्रोंके भोजन करावनेका अभिलाषकर महा सुन्दर श्रीराम तिनको हृदयमें धार, पवित्र है अंग जाका दिन विषै शुद्ध आहार करती भई । सूर्यका उद्योत होय तबही पवित्र मनोहर पुण्यका बढावनहारा आहार योग्य है रात्रिको योग्य नाहीं, सीता भोजन कर चुकी और कछु इक विश्रामको प्राप्त भई तब हनूमानने नमस्कारकर विनती करी हे पतिव्रते ! हे पवित्रे ! हे गुणभूषणे ! मेरे कांधे चढो और समुद्र उलंघ क्षण मात्रमें रामके निकट ले जाऊं । तिहारे ध्यानमें तत्पर महाविभवसंयुक्त जे राम तिनको शीघ्रही देखो तिहारे मिलापकर सबहीको आनन्द होइ तब सीता रुदन करती कहती भई हे भाई ! पतिकी आज्ञाविना मेरा गमन योग्य नाहीं जो पूछें कि तू विना बुलाए क्यों आई तो मैं कहा उत्तर दूंगी तातैं रावणने उपद्रव तो सुना होयगा सो अब तुम जावो तोहि यहां विलंब उचित नाहीं । मेरे प्राणनाथके समीप जाय मेरी तरफसे हाथ जोड नमस्कार कर मेरे मुखके वचन या भांति कहियो—हे देव ! एक दिन मो सहित आपने चारण मुनिकी बन्दना करी, महा स्तुति करी अर निर्मलजलकी भरी सरोवरी कमलोंकर शोभित जहां जल क्रीडा करी ता समय महा भयंकर एक बनका हाथी आया सो वह हाथी महाप्रबल आपने क्षण मात्रमें वशकर सुन्दर क्रीडा करी । हाथी गर्वरहित निश्चल किया अर एक दिन नन्दन वन समान वनविषै मैं वृक्षकी शाखाको नवाती क्रीडा करती हुती सो भ्रमर मेरे शरीरको आय लगे सो आपने

अति शीघ्रताकर मुझे भुजासे उठाय लई अर आकुलता रहित करी और एकदिन सूर्य उद्योत समयमें आपके समीप सरोवरके तट तिष्ठती थी तब आप शिक्षा देयवेके काज कछु इक मिसकर कोमल कमल नालकी मेरे मधुरसी दीनी अर एकदिन पर्वतपर अनेक जातिके वृक्ष देख मैं आपको पूछी—हे प्रभो! यह कौन जातिके वृक्ष हैं महामनोहर तब आप प्रसन्न मुखकर कही—हे देव! ये नंदनी वृक्ष है अर एकदिन करणकुण्डल नामा नदीके तीर आप विराजे हुते अर मैं हू हुती ता समय मध्यान्ह समय चारणमुनि आए सो तुम उठकर महाभक्तिकर मुनिको आहार दिया तहां पंचाश्चर्य भए रत्नवर्षा, कल्प वृक्षोंके पुष्पोंकी वर्षा, सुगन्धजलकी वर्षा, शीतल मंद सुगन्ध पवन दुन्दुभी बाजे अर आकाशविषै देवोंने यह ध्वनि करी धन्य ये पात्र, धन्य ये दाता, धन्य दान, ये सब रहस्यकी बात कही अर चूडामणि सिरसे उतार दिया जो याके दिखानेसे उनका विश्वास आवेगा अर यह कहियो मैं जानू हूं आपकी कृपा मोपै अत्यंत है तथापि तुम अपने प्राण यत्नसे राखियो तिहारेसे मेरा वियोग भया अब तिहारे यत्नसे मिलाप होयगा ऐसा कह सीता रुदन करती भई तब हनूमानने धीर्य बंधाया अर कही हे माता! जो तुम आज्ञा करोगी सो ही होयगा और शीघ्रही स्वामीसों मिलाप होयगा यह कह हनूमान सीतासे विदा भया अर सीताने पतिकी मुद्रिका अंगुरीमें पहिर ऐसा सुख माना मानों पतिका समागम भया।

अथानंतर वनकी नारी हनुमानको देखकर आश्चर्यको प्राप्त भई अर परस्पर ऐसी बात करती भई—यह कोई साक्षात् कामदेव है अथवा देव है सो वनकी शोभा देखवे को आया है तिनमें कोई एक काम कर व्याकुल होय बीन बजावती भई, किन्नरी देवीयों कैसे हैं, स्वर जिनके कोई यक चन्द्रवदनी बामे हस्तविषै दर्पण राख अर याका प्रतिबिम्ब दर्पणमें देखती भई, देखकर आसक्त मन भई। या भांति समस्त स्त्रियोंको संभ्रम उपजाय हार माला सुन्दर वस्त्र धरे देदीप्यमान अग्निकुमार देववत् सोहता भया॥

इनके वनविषै आवनेकी वार्ता रावणने सुनी तब क्रोधरूप होय रावणने महानिर्दयी किंकर युद्धविषै जे प्रवीण हुते ते पठाए अर तिनको यह आज्ञा करी कि मेरी क्रीडाका जो पुष्पोद्यान तहां मेरा कोई एक द्रोही आया है सो अवश्य मार डारियो। तब ये जायकर वनके रक्षकोंको कहते भए—हो वनके रक्षक हो! तुम कहा प्रमादरूप होयरहे हो, कोई उद्यानविषै दुष्ट विद्याधर आया है सो शीघ्र ही मारना अथवा पकडना। वह महा अविनयी है, वह कौन है, कहां है? ऐसे किंकरोंके मुखसे ध्वनि निकसी सो हनूमान ने सुनी अर धनुषके धरणहारे शक्तिके धरणहारे गदाके धरणहारे खड्ग बरछीके धरणहारे अनेक लोग आवते हनूमानने देखे तब पवनका पूत सिंहते भी अधिक है पराक्रम जाका मुकुटविषै रत्न जडित बानरका चिह्न ताकर प्रकाश किया है आकाश जाने आप उनको अपनारूप दिखाया उगते सूर्य समान क्रोधरूप होंठ डसता लाल नेत्र। तब थाके भयसे सब किंकर भागे तब और क्रूर सुभट आए शक्ति तोमर खड्ग चक्र गदा धनुष इत्यादि आयुध करविषै धरैं अर अनेक शस्त्र चलावते आए तब अंजनीका पुत्र शस्त्ररहित हुता सो वनके जे वृक्ष ऊंचे ऊंचे थे उनके समूह उपाडे अर पर्वतोंकी शिला उपाडी सो रावणके सुभटोंपर अपनी भुजानिकर वृक्ष अर शिला चलाई मानों काल ही है सो बहुत सामंत मारे। कैसी है हनूमानकी भुजा महाभयंकर जो सर्प ताके फण समान है आकार जिनका, शाल वृक्ष पीपल बड चम्पा नींब अशोक कदम्ब कुन्द नाग अर्जुन धव आम्र लोध कटहल बडे २ वृक्ष उपाड उपाड अनेक योधा मारे कैयक शिलावोंसे मारे कैयक मुक्कों अर लातोंसे पीस डारे, समुद्र समान रावणके सुभटोंकी सेना क्षणमात्रविषै वखेर डारी कैयक मारे कैयक भागे। हे श्रेणिक! मृगानिके जीतवेको मृगराजका कौन सहाई होय अर शरीर बलहीन होय तो घनोंकी सहायकर कहा? ता वनके सब ही भवन अर वापिका अर विमान सारिखे उत्तम मंदिर सब चूर डारे केवल भूमि रहि गई। वनके मन्दिर अर वृक्ष विध्वंस किये

सो मार्ग होय गया जैसे समुद्र सूक जाय अर मार्ग होय जाय। फोरि डारी है हाटोंकी पंक्ति अर मारे हैं अनेक किंकर सो बाजार ऐसा होय गया मानों संग्रामकी भूमि है उतंग जे तोरण सो पडे हैं अर ध्वजावोंकी पंक्ति पडी सो आकाशसे मानों इन्द्रधनुष पडा है अर अपनी जंघातें अनेक वर्ण रत्नोंके महिल ढाहे सो अनेक वर्णके रत्नोंकी रजकर मानों आकाशविषै हजारों इंद्र धनुष चढे हैं अर पायनकी लातनसे पर्वत समान ऊंचे घर फोर डारे तिनका भयानक शब्द होता भया अर कईयक तो हाथोंसे मारे अर कईएक पगोंसे मारे अर छातीसे अर कांधेसे, या भांति रावणके हजारों सुभट मारे सो नगरविषै हाहाकार भया अर रत्नोंके महिल गिर पडे, तिनका शब्द भया अर हाथिनिके थंभ उपार डारे अर घोडे पवनमंडल पानोंकी न्याईं उडे उडे फिरे हैं अर वापी फोर डारी सो कीचड रहगया समस्त लंका व्याकुल भई, मानों चाक चढाई है। लंका रूप सरोवर राक्षसरूप मीनोंसे भरा सो हनूमानरूप हाथीने गाह डारा, तब मेघबाहन वक्तर पहिर बडी फौज लेय आया अर ताके पीछे ही इंद्रजीत आया सो हनूमान उनसे युद्ध करने लगा। लंकाकी बाह्यभूमिविषै महायुद्ध भया जैसा खरदूषणके अर लक्ष्मणके युद्ध भया हुता अर हनूमान चार घोडोंके रथपर चढ धनुषबाण लेय राक्षसोंकी सेना पर दौडे।

तब इन्द्रजीतने बहुत बेरतक युद्धकर हनूमान को नागफांससे पकडा अर नगर में ले आया सो याके आयवेसे पहिलेही रावण के निकट हनूमानकी पुकार हो रही थी, अनेक लोग नाना प्रकार कर पुकार कर रहे हुते कि सुग्रीवका बुलाया यह अपने नगरतैं किहकंधापुर आया रामसों मिला अर तहांते या ओर आया सो महेन्द्रको जीता अर साधवों के उपसर्ग निवारे, दधिमुखकी कन्या रामपै पठाई अर बज्रमई कोट विध्वंसा, बज्रमुखको मारा अर ताकी पुत्री लंकासुन्दरी अभिलाषवन्ती भई सो परनी अर ता संग रमा अर पुष्पनामा वन विध्वंसा अर वनपालक विह्वल करे अर बहुत सुभट मारे अर

घटरूप जे स्तन तिनकर सींच सींच मालियों की स्त्रियोंने पुत्रोंकी नाईं जे वृक्ष बढाए हुते ते उपार डारे
अर वृक्षोंसे बेल दूरकरी सो विधवा स्त्रियोंकी नाईं भूमि विषै पडी तिनके पल्लव सूक गए अर फल
फूलोंसे नम्रीभूत नानाप्रकार के वृक्ष मसानकेसे वृक्ष करडारे सो यह अपराध सुन रावणकों अतिकोप
भया हुता इतनेमें इन्द्रजीत हनुमानको लेकर आया सो रावणने याको लोहकी सांकलनि कर बंधाया
अर कहता भया यह पापी निर्लज्ज दुराचारी है अब याके देखवेकर कहा? यह नाना अपराध का कर-
णहारा ऐसे दुष्टको क्यों न मारिये तब सभाके लोक सब ही माथा धुनकर कहते भए हे हनुमान! जाके
प्रसादतें पृथिवी विषै तू प्रभुताको प्राप्त भया ऐसे स्वामीके प्रतिकूल होय भूमिगोचरीका दूत भया
रावणकी ऐती कृपा पीठ पीछे डार दई ऐसे स्वामीको तज जे भिखारी निर्धन पृथिवीमें भ्रमते फिरें
ते दोनों वीर तिनका तू सेवक भया अर रावणने कहा कि तू पवनका पुत्र नाहीं काहू औरकर उपजा
है, तेरी चेष्टा अकुलीनकी प्रत्यक्ष दीखे है जे जारजात हैं तिनके चिन्ह अंगमें नाहीं दीखे हैं जब अना-
चारको आचरै तब जानिए यह जारजात है। कहा केसरी सिंहका बालक स्यालका आश्रय करे, नीच-
का आश्रयकर कुलवन्त पुरुष न जीवें अब तू राजद्वारका द्रोही है, निग्रह करवे योग्य है तब हनूमान
यह वचन सुन हंसा अर कहता भया—न जानिए कौनका निग्रह होय। या दुर्बुद्धिकर तेरी मृत्यु नजीक
आई है केएक दिनविषै दृष्टि परेगी। लक्ष्मण सहित श्रीराम बडी सेनासे आवे हैं सो किसीसे रोके न
जांय जैसे पर्वतनितैं मेघ न रुकै अर जैसे कोऊ नानाप्रकारके अमृत समान आहार कर तृप्त न भया अर
विषकी एक बूंद भखें नाशको प्राप्त होय तैसे हजारों स्त्रीनकर तू तृप्तायमान न होय अर परस्त्रीकी तृष्णा-
कर नाशको प्राप्त होयगा जो शुभ अर अशुभकर प्रेरी, बुद्धि होनहार माफिक होय है सो इन्द्रादि कर
भी अन्यथा न होय, दुर्बुद्धिविषै सैकडों प्रिय वचन कर उपदेश दीजिए तौहू न लगें, जैसा भवितव्य

होय सोही होय। विनाशकाल आवे तब बुद्धिका नाश होय, जैसे कोऊ प्रमादी विषका भरा सुगंध मधुर जल पीवे तो मरणको पावे तैसे हे रावण! तू परस्त्रीका लोलुपी नाशको प्राप्त होयगा। तू गुरु परिजन वृद्ध मित्र प्रिय बांधव मंत्री सबनिके वचन उलंघकर पापकर्मविषे प्रवृत्ता है सो दुराचाररूप समुद्रविषे कामरूप भ्रमरके मध्य आय नरकके दुःख भोगेगा। हे रावण! तू रत्नश्रवा राजाके कुलक्षय नीच पुत्र भया। तोकर राक्षस वंशिनिका क्षय होयगा आगे तेरे वंशमें बडे बडे मर्यादाके पालनहारे पृथिवीविषे पूज्य स्वर्ग मुक्तिके गमन करणहारे भए अर तू उनके कुलविषे पुलाक कहिए न्यून पुरुष भया दुर्बुद्धि मित्रको मित्रलोक सुबुद्धिकी बात कहें सो न माने तातें दुर्बुद्धिको कहना निरर्थक है। जब हनूमानने यह वचन कहे तब रावण क्रोधकर आरक्त होय दुर्वचन कहता भया—यह पापी मृत्युसे नाहीं डरे है, वाचाल है तातैं शीघ्र ही याके हाथ पांव ग्रीवा सांकलोंसे बांधकर अर कुवचन कहते ग्रामविषे फेरो, क्रूर किंकर लार अर घर घर यह वचन कहो—भूमिगोचरियोंका दूत आया है याहि देखहु अर स्वान बालक लार सो नगरकी लुगाई धिक्कार देवें अर बालक धूल उडावें अर स्वान भौंकें, सर्व नगरीविषे या भांति इसे फेरो दुःख देवो।

तब वे रावणकी आज्ञा प्रमाण कुवचन बोलते ले निकसे सो यह बन्धन तुडाय ऊंचा चल्या जैसे यति मोहफांस तोड मोक्षपुरीको जाय आकाशतें उछल अपने पगोंकी लातोंकर लंकाका बडा द्वार ढाया तथा और एक छोटे दरवाजे ढाहे इन्द्रके माहिल तुल्य रावणके महिल हनूमानके चरणोंके घातसे विखर गए जिनके बडे बडे स्तम्भ हुते अर महलके आस पास रत्न सुवर्णका कोट हुता सो चूरडारा जैसे वज्र-पातके मारे पर्वत चूर्ण होजांय तैसे रावणके घर हनूमानरूप वज्रके मारे चूर्ण होय गए। यह हनूमानके पराक्रम सुन सीताने प्रमोद किया अर हनूमानको बंधा सुन विषाद किया हुता तब वज्रोदरी पास बेठी

हुती ताने कहा—हे देवी! वृथा काहेको रुदन करे यह सांकल तुडाय आकाशमें चला जाय है सो देख। तब सीता अति प्रसन्न भई अर चित्तमें चिंतवती भई यह हनूमान मेरे समाचार पतिपै जाय कहेगा सो असीस देती भई अर पुष्पांजलि नाखती भई कि तू कल्याणसे पहुंचियो समस्त ग्रह तुझे सुखदाई होंय तेरे विघ्न सकल नाशको प्राप्त होंय तू चिरंजीव हो या भान्ति परोक्ष असीस देती भई। जे पुण्याधिकारी हनूमान सारिखे पुरुष हैं वे अद्भुत आश्चर्यको उपजावे हैं। कैसे हैं वे पुरुष? जिन्होंने पूर्व जन्ममें उत्कृष्ट तप व्रत आचरे हैं अर सकल भवमें विस्तरे है ऐसी कीर्तिके धारक हैं अर जो काम किसीसे न बने सो करवे समर्थ हैं अर चिंतवनमें न आवे ऐसा जो आश्चर्य उसे उपजावे हैं इसलिये सर्व तजकर जे पंडित जन हैं वे धर्मको भजो अर जे नीचकर्म हैं वे खोटे फलके दाता हैं इसलिये अशुभकर्म तजो और परम सुखका आस्वाद तामें आसक्त जे प्राणी सुन्दर लीलाके धारक वे सूर्यके तेजको जीतें ऐसे होय हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनुमानका लंकासों
पाछा आवनेका वर्णन करनेवाला त्रेपनवां पर्व पूर्ण भया॥ ५३॥

अथानन्तर हनूमान अपने कटकमें आय किहकन्धापुरको आया लंकापुरीमें विघ्नकर आया ध्वजा छत्रादि नगरीकी मनोग्यता हर आया किहकन्धापुरके लोग हनूमानको आया जान बाहिर निकसे नगरमें उत्साह भया यह धीर उदार है पराक्रम जाका नगरमें प्रवेश करता भया सो नगरके नर नारियोंको याके देखवेको अतिसंभ्रम भया, अपना जहां निवास तहां जाय सेनाके यथा योग्य डेरे कराए, राजा सुग्रीवने सब वृत्तांत पूछा, सो ताहि कहा बहुरि रामके समीप गए। राम यह चिंतवन कर रहे हैं कि हनुमान आया है सो यह कहेगा कि तिहारी प्रिया सुखसे जीवे है, हनूमानने ताही समय आय रामको

देखा, महाक्षीण वियोगरूप अग्निसे तप्तायमान जैसे हाथी दावानल कर व्याकुल होय महाशोकरूप गर्तमें पडे तिनको नमस्कारकर हाथ जोड हर्षित बदन होय सीताकी वार्ता कहता भया, जेते रहस्यके समाचार कहे हुते ते सब वरणन किये और सिरका चूडामणि सौंप निश्चिंत भया। चिन्ता कर बदनकी और ही छाया होय रही है, आसू पडे हैं, सो राम याहि देखकर रुदन करने लग गए अर उठकर मिले। श्रीराम यों पूछें है हे हनुमान! सत्य कहो, मेरी स्त्री जीवे है? तब हनुमान नमस्कार कर कहता भया। हे नाथ! जीवे है आपका ध्यान करे है। हे पृथिवीपते! आप सुखी होवो, आपके विरहकर वह सत्यवती निरंतर रुदन करे है, नेत्रनिके जलकर चतुरमास कर राखा है, गुणके समूहकी नंदी सीता ताके केश विखर रहे हैं, अत्यन्त दुखी है और बारम्बार निश्वास नाखती चिंताके सागरमें डूब रही है। स्वभावहीसे दुर्बल शरीर है अर अब विशेष दुर्बल होय गई है। रावणकी स्त्री आराधै हैं परंतु उनसे संभाषण करे नाहीं। निरंतर तिहारा ही ध्यान करे है। शरीरका संस्कार सब तज बैठी है। हे देव! तिहारी राणी बहुत दुःखसे जीवे है। अब तुमको जो करना होय सो करो। ये हनुमानके वचन सुन श्रीराम चिंतावान भए मुखकमल कुमलाय गया। दीर्घ निश्वास नाखते भए अर अपने जीतव्यको अनेक प्रकार निंदते भए। तब लक्ष्मणने धीर्य बधाया। हे महाबुद्धि! कहा सोच करो हो? कर्तव्यविषै मन धरो अर लक्ष्मण सुग्रीवसे कहता भया—हे किहकंधाधिपते! तू दीर्घसूत्री है। अब सीताके भाई भामंडलको शीघ्र ही बुलावहु रावणकी नगरी हमको अवश्य ही जाना है, कै तो जहाजानिकर समुद्र तिरें अथवा भुजानितैं। ये बात सुन सिंहनाद नामा विद्याधर बोला—आप चतुर महाप्रवीण होयकर ऐसी बात मत कहो अर हम तो आपके संग हैं परंतु ऐसा करना जाविषै सबका हित होय। हनूमानने जाय लंकाके वन विध्वंसे अर लंकाविषै उपद्रव किया सो रावणको क्रोध भया है सो हमारी तो मृत्यु आई है। तब जामवंत बोला तू

नाहर होयकर मृगकी न्याईं कहा कायर होय है अब रावणहू भयरूप है और वह अन्यायमार्गी है वाकी मृत्यु निकट आई है अर अपनी सेनामें भी बडे बडे योधा विद्याधर महारथी हैं। विद्या विभवकर पूर्ण हैं हजारों आश्चर्यके कार्य जिन्होंने किये हैं तिनके नाम धनगति, एकभूत, गजस्वन, क्रूरकोलि, किलभीम, कुंड, गोरवि, अंगद, नल, नील, तडिद्वक्र, मंदर, अर्शनी, अर्णव, चन्द्रज्योति, मृगेंद्र, बज्रदृष्टि दिवाकर और उल्काविद्या लांगूलविद्या दिव्यशस्त्रविषै प्रवीण जिनके पुरुषार्थमें विघ्न नाहीं ऐसे हनूमान महाविद्यावान अर भामण्डल विद्याधरोंका ईश्वर महेंद्रकेतु अति उग्र है पराक्रम जाका प्रसन्नकीर्ति उपवति अर ताके पुत्र महा बलवान तथा राजा सुग्रीवके अनेक सामन्त महा बलवान हैं, परम तेजके धारक वरते हैं, अनेक कार्यके करणहारे, आज्ञाके पालनहारे ये वचन सुनकर विद्याधर लक्ष्मणकी ओर देखते भए अर श्रीरामको देखा सो सौम्यतारहित महा विकरालरूप देखा और भृकुटि चढा महा भयंकर मानों कालके धनुष ही हैं, श्रीराम लक्ष्मण लंकाकी दिशा क्रोधके भरे लाल नेत्रकर चौंके मानों राक्षसोंके क्षय करनेके कारण ही हैं बहुरि वही दृष्टि धनुषकी ओर धरी, अर दोनों भाइयोंका मुख महा क्रोधरूप होय गया, कोपकर मंडित भए शिरके केश ढीले होय गए मानों कमलके स्वरूप ही हैं, जगतको तामसरूप तमकर व्याप्त किया चाहे हैं ऐसा दोऊनिका मुख ज्योतिके मंडल मध्य देख सब विद्याधर गमनको उद्यमी भए संभ्रमरूप है चित्त जिनका। राघवका अभिप्राय जानकर सुग्रीव हनूमानादि सर्व नाना प्रकारके आयुध अर संपदा कर मंडित चलनेको उद्यमी भए। राम लक्ष्मण दोनों भाइयोंके प्रयाण होनेके वादित्रनिके समूहके नादकर पूरित हैं दशोंदिशा, सो मार्गसिरबदी पंचमीके दिन सूर्यके उदय समय महा उत्साह सहित भले २ शकुन भए ता समय प्रयाण करते भए। कहा कहा शकुन भए कहिए हैं— निर्धूम अग्निकी ज्वाला दक्षिणावर्त देखी अर मनोहर शब्द करते मोर अर वस्त्राभूषणकर संयुक्त सौ-

भाग्यवती नारी सुगन्ध पवन निर्ग्रंथ मुनि छत्र तुरंगोंका गम्भीर हींसना घंटाका शब्द दहीका भरा क-
लश काग पांख फैलाए मधुर शब्द करता, भेरी और शंखका शब्द अर तिहारी जय होवे सिद्धि होवे
नन्दो बधो ऐसे वचन इत्यादि शुभ शकुन भए। राजा सुग्रीव श्रीरामके संग चलनेको उद्यमी भए।
सुग्रीवके ठौर २ सुविद्याधरोंके समूह आए। कैसा है सुग्रीव ? शुक्लपक्षके चन्द्रमा समान है प्रकाश जाका,
नानाप्रकारके विमान नानाप्रकारकी ध्वजा नानाप्रकारके वाहन नानाप्रकारके आयुध उन सहित बडे २
विद्याधर आकाशविषै जाते शोभते भए। राजा सुग्रीव हनूमान शल्य दुर्मर्षण नल नील काल सुषेण कुमुद
इत्यादि अनेक राजा श्रीरामके लार भए तिनके ध्वजावों पर देदीप्यमान रत्नमई बानरोंके चिन्ह मानों
आकाशके ग्रसवेको प्रवरते हैं और विराधितकी ध्वजापर नाहरका चिन्ह नीझरने समान देदीप्यमान अर
जांबुकी ध्वजापर वृक्ष और सिंहरवकी ध्वजामें व्याघ्र अर मेघकांतकी ध्वजामें हाथीका चिन्ह इत्यादि
राजावोंकी ध्वजामें नानाप्रकारके चिन्ह। इनमें भूतनाद महा तेजस्वी लोकपाल समान सो फौजका
अग्रसर भया अर लोकपाल समान हनूमान भूतनादके पीछे सामन्तोंके चक्र सहित परम तेजको धरे
लंकापर चढे सो अति हर्षके भरे शोभते भए जैसे पूर्व रावणके बडे सुकेशीके पुत्र माली लंकापर चढे हुते
अर अमल किया हुता तैसे श्रीराम चढे श्रीरामके सन्मुख विराधित बैठा अर पीछे जामवंत बैठा बांई
भुजा सुषेण बैठा दाहिनी भुजा सुग्रीव बैठा सो एक निमिषमें वेलंधरपुर पहुंचे। तहांका समुद्र नामा राजा
सो उसके अर नलके परम युद्ध भया सो समुद्रके बहुत लोक मारे गए अर नलने समुद्रको बांधा बहुरि
श्रीरामसे मिलाया अर तहांही डेरा भए श्रीरामने समुद्रपर कृपा करी ताका राज्य ताको दिया सो
राजाने अति हर्षित होय अपनी कन्या सत्यश्री कमला गुणमाला रत्नचूडा स्त्रियोंके गुणकर मण्डित
देवांगना समान सो लक्ष्मणसे परणाई तहां एक रात्री रहे बहुरि यहांसे प्रयाणकर सुवेल पर्वतपर सुवेल

नगर गए वहां राजा सुबेल नाम विद्याधर ताको संग्राममें जीत रामके अनुचर विद्याधर क्रीडा करते भए जैसे नन्दन बनविषे देव क्रीडा करें तहां अक्षय नाम बनमें आनन्दसे रात्रि पूर्ण करी बहुरि प्रयाणकर लंका जायवेको उद्यमी भए। कैसी है लंका? ऊंचे कोटसे युक्त सुवर्णके मंदिरोंकर पूर्ण कैलाशके शिखर समान है आकार जिनके अर नानाप्रकारके रत्नोंके उद्योतकर प्रकाशरूप अर कमलोंके जे बन तिनसे युक्त वापीकूप सरोवरादिक कर शोभित नाना प्रकार रत्नोंके ऊंचे जे चैत्यालय तिनकर मण्डित महा पवित्र इन्द्रकी नगरी समान। ऐसी लंकाको दूरसे देखकर समस्त विद्याधर रामके अनुचर आश्चर्यको प्राप्त भए अर हंसद्वीप विषै डेरे किये तहां हंसपुर नगर राजा हंसरथ ताहि युद्धविषे जीत हंसपुरमें क्रीडा करते भए। तहांतैं भामण्डल पर बहुरि दूत भेजा अर भामण्डलके आयवेकी बांछा कर तहां निवास किया। जा जा देशमें पुण्याधिकारी गमन करें तहां तहां शत्रुनिको जीत महा भोग उपभोगको भजें इन पुण्याधिकारी उद्यमवन्तोंसे कोई परे नाहीं है। सब आज्ञाकारी हैं जो जो उनके मनमें अभिलाषा होय सो सब इनकी मूठीमें है तातैं सर्व उपायकर त्रैलोक्यमें सार ऐसा जो जिनराजका धर्म सो प्रशंसा योग्य है जो कोई जगजीत भया चाहे वह जिनधर्मको आराधो। ये भोग क्षणभंगुर हैं इनकी कहा बात? यह वीतरागका धर्म निर्वाण देनेहारा है और कोई जन्म लेय तो इन्द्र चक्रवर्त्यादिक पदका देनेहारा है ता धर्मके प्रभावतैं ये भव्य जीव सूर्यसे अधिक प्रकाशको धरे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं राम लक्ष्मणका लंका गमन वर्णन करनेवाला चौवनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५४ ॥

अथानन्तर रामका कटक समीप आया जान प्रलयकाल के तरंग सामान लंका क्षोभ को प्राप्त भई अर रावण कोपरूप भया अर सामन्त लोक रणकथा करते भए जैसा समुद्रका शब्द होय तैसे वादित्रों के नाद भए सर्व दिशा शब्दायमान भई अर रणभेरीके नादते सुभट महा हर्षको प्राप्त भए सब साज-बाज सज स्वामी के हित स्वामीके निकट आए तिनके नाम मारीच अमलचन्द्र भास्कर सिंहप्रभ हस्त प्रहस्त इत्यादि अनेक योधा आयुधों से पूर्ण स्वामीके समीप आए ॥

अथानन्तर लंकापति महायोधा संग्रामके निमित्त उद्यमी भया तब विभीषण रावणपै आए प्रणाम-कर शास्त्र मार्गके अनुसार अति प्रशंसायोग्य सबको सुखदाई आगामी कालमें कल्याणरूप वर्तमान कल्याणरूप ऐसे वचन विभीषण रावण से कहता भया। कैसा है विभीषण? शास्त्र विषै प्रवीण महा चतुर नय प्रमाणका वेत्ता भाईकों शान्त वचन कहता भया—हे प्रभो! तिहारी कीर्ति कुन्दके पुष्प समान उज्वल महाविस्तीर्ण महाश्रेष्ठ इन्द्र समान पृथिवी पर विस्तर रही है सो परस्त्रीके निमित्त यह कीर्ति क्षणमात्र में क्षय होयगी जैसे सांझके बादलकी रेखा। तातैं हे स्वामी! हे परमेश्वर! हम पर प्रसन्न होवो शीघ्र ही सीता को रामके समीप पठावो, यामें दोष नाहीं, केवल गुण ही है। सुखरूप समुद्रमें आप निश्चय तिष्ठो। हे विचक्षण! जे न्यायरूप महा भोग हैं वे सब तुम्हारे स्वाधीन हैं अर श्रीराम यहां आए हैं सो बडे पुरुष हैं, तिहारी तुल्य हैं सो जानकी तिनको पठाय देवो। सर्व प्रकार अपनी वस्तु ही प्रशंसा योग्य है परवस्तु प्रशंसा योग्य नाहीं। यह वचन विभीषणके सुन इन्द्रजीत रावणका पुत्र पिता के चित्त की वृत्ति जान विभीषण को कहता भया अत्यन्त मानका भरा अर जिनशासनसे विमुख है। साधो! तुमको कौनने पूछा अर कौनने अधिकार दिया जाकरि या भांति उन्मत्त की नाई वचन कहो हो तुम अत्यन्त कायर हो अर दीन लोकन की नांई युद्धसे डरो हो तो अपने घरके बिवर में बैठो, कहा

ऐसी वातनिकर, ऐसा दुर्लभ स्त्रीरत्न पायकर मूढोंकी न्याईं कौन तजे? तुम काहेको वृथा वचन कहो, जा स्त्रीके अर्थ सुभट पुरुष संग्रामविषे तीक्ष्ण खड्गकी धारा करि महाशत्रुनिको जीत कर वीर लक्ष्मी भुजानिकरि उपार्जें हैं तिनके कायरता कहा? कैसा है संग्राम? मानों हाथिनिके समूहसे जहां अंधकार होय रहा है अर नानाप्रकारके शस्त्रानिके समूह चलै हैं जहां अति भयानक है। यह वचन इन्द्रजीतके सुनकर इन्द्रजीतको तिरस्कार करता संता विभीषण बोला—रे पापी! अन्यायमार्गी कहा तू पुत्र नामा शत्रु है? तोकूं शीत वायु उपजी है, अपना हित नाहीं जाने है, शीत वायुकी पीडा अर उपाय छांड शीतल जलविषे प्रवेश करै तो अपने प्राण खोवै अर घरविषे आग लागै अर ता अग्निविषे सूके ईंधन डारे तो कुशल कहांसे होय? अहो मोहरूप ग्राहकर तू पीडित है, तेरी चेष्टा विपरीत है, यह स्वर्णमई लंका जहां देवविमानसे घर, लक्ष्मणके तीक्ष्ण बाणोंसे चूर्ण न होहि जाइ, ता पहिले जनकसुता पतिव्रताको रामपै पठाय देहु, सर्व लोकके कल्याणके अर्थ शीघ्र ही सीताको पठाना योग्य है। तेरे बाप कुबुद्धिने यह सीता नाहीं आनी है राक्षसरूप सर्पोंका विल यह जो लंका ताविषै विषनाशक जडी आनी है सुमित्राका पुत्र लक्ष्मण सोई भया क्रोधायमान सिंह, ताहि तुम गज समान निवारवे समर्थ नाहीं, जाके हाथ सागरावर्त धनुष अर आदित्यमुख अमोघवाण अर जिनके भामंडलसा सहाई सो लोकोंसे कैसे जीता जाय अर बडे बडे विद्याधरनिके अधिपति जिनसे जाय मिले, महेंद्रमलय हनूमान सुग्रीव त्रिपुर इत्यादि अनेक राजा और रत्नद्वीपका पति वेलंधरका पति सन्ध्या हरद्वीप हैहयद्वीप आकाशतिलक केलीकिल दधिवक्र अर महाबलवान् विद्याके विभवसे पूर्ण अनेक विद्याधर आय मिले। या भांतिके कठोर वचन कहता जो विभीषण तापर महाक्रोधायमान होय खड्ग काढ रावण मारनेको उद्यमी भया। तब विभीषणने भी महाक्रोधके वश होय रावणसे युद्ध करनेको वज्रमई स्तम्भ उपाडा। ये दोनों भाई

उग्रतेजक धारक युद्धको उद्यमी भए सो मंत्रियोंने समझाय मने किए। विभीषण अपने घर गया, रावण महिल गया।

बहुरि रावणने कुम्भकर्ण इन्द्रजीतको कठोरचित्त होय कहा जो यह विभीषण मेरे अहितमें तत्पर है अर दुरात्मा है वाहि मेरी नगरीसे निकासो या अनर्थीके रहिवेसे क्या ? मेरा अंग ही मोसे प्रतिकूल होय तो मोहि न रुचे जो यह लंकाविषै रहै अर मैं याहि न मारूं तो मेरा जीवना नाहीं, ऐसी वार्ता विभीषण सुनकर कही—मैं हू कहा रत्नश्रवाका पुत्र नाहीं ? ऐसा कह लंकातें निकसा। महा सामन्तनि सहित तीस अक्षौहिणीदल लेयकर रामपै चाल्या (तीस अक्षौहणी केतक भए ताका वर्णन) छहलाख छप्पन-हजार एकसौ हाथी अर एते ही रथ अर उगणीसलाख अडसठहजार तीन सौ तुरंग अर बत्तीसलाख अस्सीहजार पांचसै पयादा विद्युत्घन इन्द्रवज्र इन्द्रप्रचण्ड चपल उडत एक अशनि सन्वातकाल महा-काल ये विभीषण सम्बंधी परम सामन्त अपने कुटुम्ब अर सब समुदाय सहित नानाप्रकार शस्त्रनिकरि मंडित रामकी सेनाकी तरफ चाले नाना प्रकारके वाहनोंकर युक्त आकाशको आच्छादितकर सर्व परि-वारसहित विभीषण हंसद्वीप आया सो उसद्वीपके समीप मनोग्यस्थल देख जलके तीर सेनासहित तिष्ठा जैसे नन्दीश्वरद्वीपकेविषै देव तिष्ठे। विभीषणको आया सुन बानरवंशियोंकी सेना कम्पायमान भई जैसे शीतकालविषै दलिद्री कांपे, लक्ष्मणने सागरावर्त धनुष अर सूर्यहास खड्गकी तरफ दृष्टि धरी अर रामने वज्रावर्त धनुष हाथ लिया अर सब मंत्री भेले होय मंत्र करते भए जैसे सिंहसे गज डरै तैसे विभीष-णसे बानरवंशी डरे, ताही समय विभीषणने श्रीरामके निकट विचक्षण द्वारपाल भेजा सो रामपै आय नमस्कारकर मधुर वचन कहता भया—हे देव ! इन दोनों भाइयोंविषै जबते रावण सीता लाया तबहीसे विरोध पडा अर आज सर्वथा विगड गई तातें आपके पायन आया है आपके चरणारविन्दको नमस्कार

पूर्वक विनती करे है। कैसा है विभीषण ? धर्म कार्यविषै उद्यमी है, यह प्रार्थना करी है कि आप शरणागत प्रतिपाल हो, मैं तिहारा भक्त शरणे आया हूं जो आज्ञा होय सो ही करूं आप कृपा करने योग्य हैं यह द्वारपालके बचन सुन रामने मंत्रियोंसे मंत्र किया तब रामसे सुमतिकांत मंत्री कहता भया कदाचित् रावणने कपटकर भेजा होय तो याका विश्वास कहा ? राजानिकी अनेक चेष्टा हैं अर कदाचित् कोई बातकर आपसमें कलुष होय बहुरि मिलि जांय कुल अर जल इनके मिलनेका अचरज नाहीं तब महाबुद्धिवान मतिसमुद्र बोला इनमें विरोध तो भया यह बात सबसे सुनिए है अर विभीषण महाधर्मात्मा नीतिवान है शास्त्ररूप जलकर धोया है चित्त जाका महादयावान है, दीन लोकनिपर अनुग्रह करे है अर मित्रनिमें दृढ है अर भाईपनेकी बात कहो सो भाईपनेका कारण नाहीं, कर्मका उदय जीवनिके जुदा जुदा होय है। इन कर्मनिके प्रभावकर या जगतविषे जीवनिकी विचित्रता है। या प्रस्तावविषै एक कथा है सो सुनहु—एक गिरि एक गोभूत ये दोऊ भाई ब्राह्मण हुते सो एक राजा सूर्यमेघ हुता ताके राणी मतिक्रिया ताने दोनोंको पुण्यकी वांछाकर भातमें छिपाय सुवर्ण दिया सो गिरिकपटीने भातविषै स्वर्ण जान गोभूतको छलकर मारा। दोनोंका स्वर्ण हर लिया सो लोभसे प्रीतिभंग होय है और भी कथा सुनो—कौशांबी नगरीविषै एक वृहद्धन नामा गृहस्थी ताके पुरविदा नामा स्त्री ताके पुत्र अहिदेव महीदेव सो इनका पिता मूवा तब ये दोऊ भाई धनके उपारजने निमित्त समुद्रमें जहाजमें बैठ गए सो सर्व द्रव्य देय एक रत्न मोल लिया सो वह रत्नको जो भाई हाथमें लेय ताके ये भाव होंय कि मैं दूजे भाईको मारूं सो परस्पर दोऊ भाईनिके खोटे भाव भए तब घर आय वह रत्न माताको सौंपा सो माताके ये भाव भए कि दोऊ पुत्रनिको विष देय मारूं तब माता अर दोनों भाइयोंने वा रत्नसे विरक्त होय कालिंद्री नदीमें डारा सो रत्नको मछली निगल गई सो मछलीको धीवरने पकरी अर अहिदेव महीदेव-

हीके वेची सो अहिदेव महीदेवकी बहिन मछलीको विदारती हुती सो रत्न निकसा। याहूके ये भाव भए कि माताको और दोऊ भाइयोंको मारूं तब याने सकल वृत्तांत कहा कि या रत्नके योगसे मेरे ऐसे भाव होय हैं जो तुमको मारूं तब रत्नको चूर डारा माता बहिन अर दोऊ भाई संसारके भावसे विरक्त होय जिनदीक्षा धरते भए तातैं द्रव्यके लोभकर भाईनिमें भी वैर होय है अर ज्ञानके उदयकर वैर मिटै है अर गिरिने तो लोभके उदयसे गोभूतको मारा अर अहिदेवके महिदेवके वैर मिट गया सो महाबुद्धि विभीषणका द्वारपाल आया है ताको मधुर वचनकर विभीषणको बुलाओ तब द्वारपालसों स्नेह जताया अर विभीषणको अति आदरसे बुलाया। विभीषण रामके समीप आया सो राम विभीषणका अति आदर कर मिले विभीषण विनती करता भया—हे देव! हे प्रभो! निश्चयकर मेरे इस जन्मविषै तुम ही प्रभु हो श्रीजिननाथ तो इस जन्म परभवके स्वामी अर रघुनाथ या लोकके स्वामी। या भांति प्रतिज्ञा करी तब श्रीराम कहते भए तुझे निःसंदेह लंकाका धनी करूंगा, सेनामें विभीषणके आवनेका उत्साह भया।

अर ताही समय भामण्डल भी आया। कैसा है भामण्डल? अनेक विद्या सिद्ध भई हैं जाको। सर्व विजियार्धका अधिपति जब भामडल आया तब राम लक्ष्मण आदि सकल हर्षित भए। भामण्डलका अति सन्मान किया आठ दिन हंसद्वीपमें रहे बहुरि लंकाको सन्मुख भए। नाना प्रकारके अनेक रथ और पवनसे भी अधिक तेजको धरे बहुत तुरंग और मेघमालासे गयंदोंके समूह और अनेक सुभटों सहित श्रीरामने लंकाको पयान किया। समस्त विद्याधर सामंत आकाशको आच्छादते हुए रामके संग चाले सबमें अग्रेसर बानरबंशी भए। जहां रणक्षेत्र थापा है तहां गए, संग्रामभूमि बीस योजन चौडी है अर लंबाईका विस्तार विशेष है। वह युद्धभूमि मानों मृत्युकी भूमि है या सेनाके हाथी गाजे अर अश्व हीसे। अर विद्याधरानिके बाहन सिंह हैं तिनके शब्द हुए अर वादित्र वाजे तब सुनकर रावण अतिह-

र्षको प्राप्त भया। मनमें विचारी बहुत दिनोंमें मेरे रणका उत्साह भया, समस्त सामंतोंको आज्ञा दई जो युद्धके उद्यमी होवो सो समस्त ही सामंत आज्ञा प्रमाण आनदकर युद्धको उद्यमी भए। कैसा है रावण? युद्धविषै है हर्ष जाको, जाने कबहु सामंतनिको अप्रसन्न न किया। सदा प्रसन्नही राखे सो अब युद्धके समय सबही एक चित्त भए भास्कर नामा पुर तथा पयोरपुर, कांचनपुर, व्योम वल्लभपुर, गंधर्वगीतपुर शिवमंदिर कंपतपुर, सूर्योदयपुर, अमृतपुर, शोभासिंहपुर, सत्यगीतपुर, लक्ष्मीगतिपुर, किन्नरपुर, बहुनागपुर, महाशैलपुर, चक्रपुर, स्वर्णपुर, सीमंतपुर मलयानंदपुर श्रीगृहपुर श्रीमनोहरपुर रिपुंजयपुर शशिस्थानपुर मार्तंडप्रभपुर विशालपुर ज्योतिदंडपुर परिष्योधपुर अश्वपुर रत्नपुर इत्यादि अनेक नगरोंके स्वामी बडे २ विद्याधर मंत्रिनि सहित महा प्रीतिके भरे रावणपै आए सो रावण राजावोंका सन्मान करता भया जैसे इंद्र देवोंका करें हैं शस्त्र वाहन बक्तर आदि युद्धकी सामग्री सब राजावोंको देता भया। चारहजार अक्षौहणी रावणके होती भई अर दो हजार अक्षौहणी रामके होती भई सो कौन भांति? हजार अक्षौहणीदल तो भामंडलका अर हजार सुग्रीवादिकका। या भांति सुग्रीव अर भामंडल ये दोऊ मुख्य अपने मंत्रियों सहित तिनसों मंत्रकर राम लक्ष्मण युद्धको उद्यमी भए। अनेक वंशके उपजे अनेक आचरणके धरणहारे नाना जातियोंसे युक्त नानाप्रकार गुण क्रियासे प्रसिद्ध नानाप्रकार भाषाके बोलनहारे विद्याधर श्रीराम रावणपै भेले भए। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन्! पुण्यके प्रभावकरि मोटे पुरुषोंके बैरी भी अपने मित्र होय हैं अर पुण्यहीनोंके चिरकालके सेवक अर अतिविश्वासके भाजन ते भी विनाश कालमें शत्रुरूप होय परणवे हैं। या असार संसारविषैं जीवनिकी विचित्रगति जानकर यह चिंतवन करना कि मेरे भाई सदा सुखदाई नहीं तथा मित्र बांधव सबही सुखदाई

साही कबहु मित्र शत्रु होजाय कबहु शत्रु मित्र होजाय ऐसे विवेकरूप सूर्यके उदयसे उरमें प्रकाशकर बुद्धिवंतोंको सदा धर्महीं चिंतवना ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै बिभीषणका रामसूं मिलाप अर भामंडलका आगमन वर्णन करनेवाला पचपनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५५ ॥

अथानंतर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीको पूछता भया—हे प्रभो ! अक्षौहिणीका परिमाण आप कहो तब गौतमका दूजा नाम इन्द्रभूत है सो इंद्रभूत कहते भए—हे मगधाधिपति ! अक्षौहिणीका प्रमाण तुझे संक्षेप ते कहे हैं सो सुन—आगमविषै आठ भेद कहे हैं ते सुन, प्रथम भेद पत्ति दूजा भेद सेना तीजा भेद सेना-मुख चौथा गुल्म पांचमा वाहिनी छठा पृतना सातवां चमू आठवां अनीकिनी । सो अब इनके यथार्थ भेद सुन । एक रथ एक गज पांच पयादे तीन तुरंग इसका नाम पत्ति है अर तीन रथ तीन गज पन्द्रह पयादे नव तुरंग याको सेना कहिए अर नव रथ नव गज पैंतालीस पयादा सत्ताईस तुरंग याहि सेना-मुख कहिये अर सत्ताईस रथ सत्ताईस गज एकसौ पैंतीस पयादा इक्कासी अश्व इसे गुल्म कहिए अर इक्यासी रथ इक्यासी गज चारसे पांच पयादे दोसो तैंतालीस अश्व इसे वाहिनी कहिये अर दोयसै तितालीस रथ दोयसौ तितालीस गज बारासौ पंद्रह पयादे सातसौ उनतीस घोडे याहि पृतना कहिये अर सातसौ गुणतीस रथ सातसे गुणतीस गज छत्तीससै पैंतालीस पयादे इक्कीससौ सतासी तुरंग इसे चमू कहिए अर इक्कीससै सतासी रथ इक्कीससै सतासी गज दसहजार नौसै पैंतीस पयादे अर पैंसठसौ इकसठ तुरंग इसे अनीकिनी कहिए । सो पत्तिसे लेय अनीकिनी तक आठ भेद भए । सो यहांलों तो तिगुने तिगुने बढे अर दश अनीकिनीकी एक अक्षौहिणी होय है ताका बर्णन रथ इक्कीस हजार आठसे

सत्तर अर गज इक्कीस हजार आठसे सत्तर पियादे एकलाख नौहजार तीनसे पचास अर घोडे पैंसठ-हजार छसौ दस । यह एक अक्षौहिणीका प्रमाण भया ऐसी चारहजार अक्षौहिणी करि युक्त जो रावण ताहि अति बलवान जानकर भी किहकन्धापुरके स्वामी सुग्रीवकी सेना श्रीरामके प्रसादसे निर्भय रावणके सन्मुख होती भई । श्रीरामकी सेनाको अति निकट आए हुए सुन नाना पक्षको धरें जो लोक सो पर-स्पर या भांति वार्ता करते भए देखो रावणरूप चन्द्रमा विमानरूप जे नक्षत्र तिनके समूहका स्वामी अर शास्त्रविषे प्रवीण सो पर स्त्रीकी इच्छारूप जे बादल तिनसे आच्छादित भया है जाके महा कांतिकी धर-णहारी अठारह हजार राणी तिनसे तो तृप्त न भया अर देखो एक सीताके अर्थसे शोकसे व्याप्त भया है । अब देखिये, राक्षसवंशी अर बानरवंशी इनमें कोनका क्षय होय ? रामकी सेना विषे पवनका पुत्र हनूमान महा भयंकर देदीप्यमान जो शूरता सोई भई उष्ण किरण उनसे सूर्य तुल्य है । या भांति कैयक तो रामके पक्षके योधाओंका यश वर्णन करते भए अर कैयक समुद्रहूतैं अति गंभीर जो रावणकी सेना ताका वर्णन करते भए अर कैयक जो दंडक वनमें खरदूषणका अर लक्ष्मणका युद्ध भया हुता ताका वर्णन करते भए अर कहते भए चन्द्रोदयका पुत्र विराधित सो है शरीरतुल्य जिनके ऐसे लक्ष्मण तिन्होंने खरदूषणको हता अति बलके स्वामी लक्ष्मण तिनका बल कहा तुमने न जाना, कैयक ऐसे कहते भए अर कैयक कहते भए कि राम लक्ष्मणकी कहा बात ? वे तो बडे पुरुष हैं एक हनूमानने केते काम किये मन्दोदरीका तिरस्कारकर सीताको धीर्य बंधाया अर रावणकी सेना जीत लंकामें विघ्न किया कोट द-रवाजे ढाहे । या भांति नानाप्रकारके वचन कहते भए तब एक सुवक्रनामा विद्याधर हंसकर कहता भया कि कहां समुद्र समान रावणकी सेना और कहां गायके खोज समान बानरवंशियोंका बल, जो रावण इंद्रको पकड लाया अर सबोंका जीतनहारा सो बानरवंशिनिकर कैसे जीता जाय, सर्व तेजस्वियोंके

सिरपर तिष्ठे है मनुष्यनिमें चक्रवर्तिके नामको सुन कौन धीर्य धरे अर जाके भाई कुम्भकरण महावल-वान त्रिशूलका धारक युद्धविषे प्रलय कालकी अग्निसमान भासै है सो जगतविषे प्रबल पराक्रमका धारक कौन कर जीता जाय, चन्द्रमा समान जाके छत्रको देखकर शत्रुनिकी सेनारूप अंधकार नाशको प्राप्त होय है सो उदार तेजका धनी ताके आगे कौन ठहर सके जो जीतव्यकी बांछा तजे सोही वाके सन्मुख होय, या भांति अनेक प्रकारके राग द्वेषरूप वचन सेनाके लोग परस्पर कहते भए। दोनों सेनानिविषै नाना प्रकारकी वार्ता लोकानिके मुखसूं होती भई, जीवोंके भाव नानाप्रकारके हैं, राग द्वेषके प्रभावसे जीव निजकर्म उपार्जे हैं सो जैसा उदय होय है तैसे ही कार्यमें प्रवृते हैं जैसे सूर्यका उदय उद्यमी जीवोंको नाना कार्यमें प्रवर्तावे है तैसे कर्मका उदय जीवोंके नानाप्रकारके भाव उपजावे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै दोऊ कटकनिकी संख्याका प्रमाण वर्णन करनेवाला छप्पनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५६ ॥

अथानन्तर पर सेनाके समीपको न सह सकें ऐसे मनुष्य वे शूरपनेके प्रगट होनेसे अति प्रसन्न होय लडनेको उद्यमी भए। योधा अपने घरोंसे विदा होय सिंह सारिखे लंकासे निकसे। कोईयक सुभट की नारी रणसंग्रामका वृत्तांत जान अपने भरतारके उरसे लग ऐसे कहती भई—हे नाथ! तिहारे कुल की यही रीति है जो रणसंग्रामसे पीछे न होंय अर जो कदाचित् तुम युद्धसे पीछे होवोगे तो मैं सुनतेही प्राणत्याग करूंगी। योधाओंके किंकरोंकी स्त्रियोंको कायरोंकी स्त्रियें धिकार शब्द कहें या समान और कष्ट कहा? जो तुम छाती घाव खाय भले दिखाए पीछे आवोगे तो घाव ही आभूषण है अर टूट गया है वक्तर अर करे हैं अनेक योधा स्तुति या भान्ति तुमको मैं देखूंगी तो अपना जन्म धन्य गिनूंगी अर

सुवर्णके कमलोंसे जिनेश्वरकी पूजा कराऊंगी। जे महायोधा रणमें सन्मुख होय मरणको प्राप्त होंय तिनका ही मरण धन्य है अर जे युद्धसे पराङ्मुख होय धिक्कार शब्दसे मलिन भए जीवे हैं तिनके जीवन से कहा? अर कोईयक सुभटानी पतिसे लिपट या भान्ति कहती भई जो तुम भले दिखायकर आवोगे तो हमारे पति हो अर भागकर आवोगे तो हमारे तिहारे सम्बन्ध नाहीं अर कोईयक स्त्री अपने पतिसे कहती भई हे प्रभो! तिहारे पुराने घाव अब विघट गए तातैं नवे घाव लगे शरीर अति शोभै वह दिन होय जो तुम वीरलक्ष्मीको वर प्रफुल्लितवदन हमारे आवो अर हम तुमको हर्षसंयुक्त देखें तिहारी हार हम क्रीडामें भी न देख सकें तो युद्धमें हार कैसे देख सकें अर कोई एक कहती भई कि हे देव! जैसे हम प्रेमकर तिहारा वदन कमल स्पर्श करे हैं तैसे वक्षस्थलमें लगे घाव हम देखें तब अति हर्ष पावें अर कै एक रौताणी अति नवोढा है परन्तु संग्राममें पतिको उद्यमी देख प्रौढाके भावको प्राप्त भई और कोई एक मानवती घने दिनोंसे मानकर रही हुती सो पतिको रणमें उद्यमी जान मान तज पतिके गले लगी अर अति स्नेह जनाया, अर रणयोग्य शिक्षा देती भई अर कोई एक कमलनयनी भरतारके वदनको ऊंचाकर स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई अर युद्धमें दृढ करती भई अर कोईयक सामंतनी पतिके वक्षस्थल में अपने नखका चिन्हकर होनहार शस्त्रोंके घावनको मानों स्थानक करती भई। या भांति उपजी है चेष्टा जिनके ऐसी राणी रौताणी अपने प्रीतमोंको नानाप्रकारके स्नेहकर वीर रसमें दृढ करती भई।

तब महा संग्रामके करणहारे योधा तिनसे कहते भए—हे प्राणवल्लभे! नर वेई हैं जे रणमें प्रशंसा पावें तथा युद्धके सन्मुख जीव तजें तिनकी शत्रु कीर्ति करें हाथिनिके दांतनिविषै पग देय शत्रुवोंके घाव कर तिनकी शत्रु कीर्ति करें पुण्यके उदय विना ऐसा सुभटपना नाहीं। हाथियोंके कुंभस्थल विदारणहारे नरसिंह तिनको जो हर्ष होय है सो कहिवेको कौन समर्थ है? हे प्राणप्रिये! क्षत्रीका यही धर्म है जो काय-

रोंको न मारें, शरणागतको न मारें, न मारिवे देय। जो पीठ देंय तापर चोट न करें, जापै आयुध न होय तासों युद्ध न करें सो बाल वृद्ध दीनको तजकर हम योधावोंके मस्तक पर पडेंगे, तुम हर्षित रहियो हम युद्धविषै विजयकर तुमसे आय मिलेंगे। या भांति अनेक वचननिकर अपनी अपनी रौताणियोंको धीर्य बंधाय योधा संग्रामके उद्यमी घरसे रणभूमिको निकसे। कोई एक सुभटानी चलते पतिके कण्ठ विषै दोनों भुजासे लिपट गई अर हींडती भई जैसे गजेन्द्रके कंठविषै कमलनी लटकै अर कोई एक रौताणी स्त्री वक्तर पहिर पतिके अंगसे लग अंगका स्पर्श न पाया सो खेदखिन्न होती भई अर कोई एक अर्द्ध-बाहुलिका कहिए पेटी सो बल्लभके अंगसे लागी देख ईर्षाके रससे स्पर्श करती भई कि हम टार इनके दूजी इनके उरसे कौन लगे यह जान लोचन संकोचे तब पति प्रियाको अप्रसन्न जान कहते भए—हे प्रिये! यह आधा वक्तर है स्त्रीवाची शब्द नाहीं, तब पुरुषका शब्द सुन हर्षको प्राप्त भई, कोई एक अपने पतिको ताम्बूल चबावती भई अर आप तांबूल चावती भई। कोईएक पतिने रुखसत करी तौभी केतीक दूर पतिके पीछे पीछे जाती भई पतिके रणकी अभिलाषा सो इनकी ओर निहारें नाहीं अर रणकी भेरी बाजी सो योधानिका चित्त रणभूमिविषै गमन अर स्त्रीनिसूं विदा होना सो दोनों कारण पाय योधावोंका चित्त मानों हिंडोले हींडता भया। रौतानियोंको तज रावत चले तिन रौतानियोंने आंसू न डारे, आंसू अमंगल हैं अर कैएक योधा युद्धविषै जायबेकी शीघ्रताकर वक्तर भी न पहिरसके, जो हाथियार हाथ आया सोही लेकर गर्वके भरे निकसे, रणभेरी सुन उपजा है हर्ष जिनको शरीर पुष्ट होय गया सो वक्तर अंगविषै न आवै अर कईएक योधावोंके रणभेरीका शब्द सुन हर्ष उपजा सो पुराने घाव फट गए तिन-मेंसे रुधिर निकसता भया अर काहूने नवा वक्तर बनाय पहिरा सो हर्षके होनेसे टूटगया सो मानों नया वक्तर पुराने वक्तरके भावको प्राप्त भया अर काहूके सिरका टोप ढीला होय गया सो प्राणवल्लभा दृढकर

देती भई अर कोईएक सुभट संग्रामका लालसी ताके स्त्री सुगन्ध लगायवेकी अभिलाषा करती भई सो सुगन्धमें चित्त न दिया, युद्धको निकसा अर ते स्त्रियां व्याकुलतारूप अपनी अपनी सेजपर पड रहीं।

अथानन्तर प्रथमही लंकासे हस्त प्रहस्त राजा युद्धको निकसे। कैसे हैं दोनों ? सर्वमें मुख्य जो कीर्ति सोई भया अमृत ताके आस्वादनमें लालसी अर हाथियोंके रथ पर चढे, नाहीं सहसके हैं वैरियों का शब्द अर महा प्रतापके धारक शूरबीर, सो रावणको विना पूछे ही निकसे। यद्यपि स्वामीकी आज्ञा विना कार्य करना दोष है तथापि धनीके कार्य को विना आज्ञा जाय तो दोष नाहीं, गुणके भावको भजे है। मारीच सिंह जघन्य स्वयम्भू शंभू प्रथम विस्तीर्ण बलसे मंडित शुक अर सारस चांद सूर्य सारिखे गज अर बीभत्स तथा वज्राक्ष वज्रभूति गम्भीरनाद नक्र मकर वज्रघोष उग्रनाद सुन्द निकुम्भ कुंभ संध्याक्ष विभ्रम क्रूर माल्यवान खर निश्चर जम्बू माली शिखि वीरउद्दर्तक महाबल यह सामंत नाहरोंके रथ चढे निकसे अर वज्रोदर शक्रप्रभ कृतान्त विकटोदर महामणि अशनिघोष चन्द्र चन्द्रनख मृत्युभीषण वज्रोदर धूम्राक्ष मुदित विद्युज्जिह्व महा मारीच कनक क्रोधनु क्षोभण द्वन्द्व उद्दाम डिंडी डिंडम डिंभव प्रचंड डमर चंड कुंड हालाहल इत्यादि अनेक राजा व्याघ्रोंके रथ चढे निकसे। वह कहै मैं आगे रहूं वह कहे मैं आगे रहूं। शत्रुके विध्वंस करनेको है प्रवृत्त बुद्धि जिनकी, विद्याकौशिक विद्याविख्याक सर्पवाहू महाद्युति शंख प्रशंख राजभिन्न अंजनप्रभ पुष्पक्रूर महारक्त घटाश्रु पुष्पखेचर अनंगकुसम कामावर्त्त स्मरायण कामाग्नि कामराशि कनकप्रभ शशिमुख सौम्यवक्र महाकाम हैमगौर यह पवन सारिखे तेज तुरंगों के रथ चढे निकसे अर कदंब विटप भीमनाद भयनाद भयानक शार्दूल सिंह बलांग विद्युदंग ल्हादन चपल चाल चंचल इत्यादि हाथियोंके रथ चढे निकसे। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे मग-

धाधिपति ! कहां लग सामतोंके नाम कहें सबनिमें अग्रेसर अढाई कोडि निर्मलबंशके उपजे राक्षसोंके कुमार देवकुमार तुल्य पराक्रमी प्रसिद्ध हैं यश जिनके सकल गुणोंके मंडल युद्धको निकसे, अर महा बलवान मेघवाहन कुमार इन्द्र समान रावणका पुत्र अतिप्रिय इन्द्रजीत सो भी निकसा। जयंतसमान धीरबुद्धि कुम्भकरण सूर्यके विमान तुल्य ज्योतिप्रभव नामा विमान ता विषै आरूढ त्रिशूलका आयुध धरे निकसा अर रावण भी सुमेरुके शिखर तुल्य पुष्पकनामा अपने विमान पर चढ इन्द्र तुल्य पराक्रम जिसका सेना कर आकाश भूमिको आच्छादित करता संता देदीप्यमान आयुधोंको धरैं सूर्य समान है ज्योति जाकी सोहू अनेक सामंतानिसहित लंकासे वाहिर निकसा। ते सामंत शीघ्रगामी बहुरूपके धरण- हारे बाहनों पर चढे, कैयकोंके रथ कैयकोंके तुरंग कैयकोंके हाथी कैयकोंके सिंह तथा शूरसांभर बलध भैंसा उष्ट्र मीढा मृग अष्टापद इत्यादि स्थलके जीव अर मगर मच्छ आदि अनेक जलके जीव अर नाना प्रकारके पक्षी तिनका रूप धरे देवरूपी बाहन तिनपर चढे अनेक योधा रावणके साथ निकसे । भामं- डल अर सुग्रीव पर रावणका अतिक्रोध जो राक्षसवंशीनसों युद्धको उद्यमी भए। रावणको पयान करते अनेक अपशकुन भए। तिनका वर्णन सुनो—दाहिनी तरफ शल्यकी कहिए सेह मंडलको बांधे भयानक शब्द करती प्रयाणको निवारण करे है अर गृद्ध पक्षी भयंकर अपशब्द करते आकाशविषै भ्रमते मानों रावणका क्षय ही कहे हैं अन्यहू अनेक अपशकुन भए स्थलके जीव आकाशके जीव व्याकुल भए क्रूर शब्द करते भए रुदन करते भये सो यद्यपि राक्षसोंके समूह सब ही पंडित हैं, शास्त्रका विचार जाने हैं तथापि शूरवीरताके गर्वकर मूढ भए महासेनासहित संग्रामके अर्थी निकसे। कर्मोंके उदयसे जीवनिका जब काल आवे है तब अवश्य ऐसा ही कारण होय है। कालको इन्द्र भी निवारिवे शक्त नहीं औरनिकी कहा

बात ? वे राक्षसवंशी योधा बडे बडे बलवान युद्धविषै दिया है चित्त जिनने, अनेक वाहनोंपर चढे नाना प्रकारके आयुध धरें अनेक अपशकुन भए तो भी न गिने, निर्भय भए रामकी सेनाके सन्मुख आए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै रावणकी सेना लंकासे निकसि युद्धके अर्थ आवनेका वर्णन करनेवाला सत्तावनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५७ ॥

अथानन्तर समुद्रसमान रावणकी सेनाको देख नल नील हनुमान जामवन्त आदि अनेक विद्याधर रामके हित रामके कार्यको तत्पर महा उदार शूरवीर अनेक प्रकार हाथियोंके रथ चढे कटकतें निकसे। जयमित्र चन्द्रप्रभ रतिवर्द्धन कुमुदावर्त महेंद्र भानुमंडल अनुधर दृढरथ प्रीतिकंठ महाबल समुन्नतबल सर्वज्योति सर्वप्रिय बलसर्व सर्व शरभभर आभ्रष्टि निर्विष्ट संत्रास विघ्नसूदन नाट बरबर कलोट पालन मंडल संग्राम चपल इत्यादि विद्याधर नाहरोंके रथ चढे निकसे। विस्तीर्ण है तेज जिनका नानाप्रकारके आयुध धरे अर महासामंतपनेका स्वरूप लिए, प्रस्तार हिमवान गंगप्रिय लव इत्यादि सुभट हाथियोंके रथ चढे निकसे। दुप्रेष्ट पूर्णचन्द्र विधिसागर घोष प्रियविग्रह स्कंध चंदनपादप चंद्रकिरण अर प्रतिघात महाभैरव कीर्तन दुष्टसिंह कटिकुष्ट समाधि बहुल हल इंद्रायुध गतत्रास संकटप्रहार ये नाहरानिके रथ चढे निकसे। विद्युतकर्ण बलशील सुपक्षरचन घन संमेद विचल साल काल क्षत्रवर अंगज विकाल लाल ककाली भंग भंगोर्मिः उराचित उतरंग तिलक कील सुषेण चरल करतबली भीमरव धर्ममनोहर मुख सुख प्रमत्तमर्दक मतसार रत्नजटी शिवभूषण दूषणकौल बिघट विराधित मनूरण खनिक्षेम आक्षेपी महीधर नक्षत्र लुब्ध संग्राम विजय जय नक्षत्रमाल क्षोद अति विनय इत्यादि घोडोंके रथ चढे निकसे। कैसे हैं रथ ? मनोरथ समान शीघ्र वेगको धरे अर विद्युतवाहन मरुद्वाह स्थाणु मेघवाहन

रवियाण प्रचंडालि इत्यादि नानाप्रकारके बाहनोंपर चढे युद्धकी श्रद्धाको धरे हनूमानके संग निकसे अर विभीषण रावणका भाई रत्नप्रभ नामा विमानपर चढा, श्रीरामका पक्षी अति शोभता भया अर युघावर्त बसंत कांत कौमुदि नंदन भूरिकोलाहल हेडभावित साधुवत्सल अर्धचन्द्र जिन प्रेमसागर सागर उरग मनोग्य जिन जिनपति इत्यादि योधा नानावर्णके विमानोंपर चढे महाप्रबल सन्नाह कहिए बखतर पहिर युद्धको निकसे। रामचन्द्र लक्ष्मण सुग्रीव हनूमान ये हंस विमान चढे, जिनसे आकाशविषें शोभते भए । रामके सुभट महामेघमाला सारिखे नानाप्रकारके बाहन चढे लंकाके सुभटोंसे लडनेको उद्यमी भए। प्रलयकालके मेघ समान भयंकर शब्द शंख आदि वादित्रानिके शब्द होते भए, झंझा भेरी मृदंग कंपाल धुधुमंदय आमलातके हंकार ढूंढूकान ऊरदरहेमगुंज काहल वीणा इत्यादि अनेक बाजे बाजते भए अर सिंहोंके तथा हाथियोंके घोडोंके भैंसोंके रथोंके ऊंटों मृगों पक्षियोंके शब्द होते भए। तिनसे दशोंदिशा व्याप्त भई । जब राम रावणकी सेनाका संघट्ट भया तब लोक समस्त जीवनेके संदेहको प्राप्त भए। पृथिवी कंपायमान भई, पहाड कांपे, योधा गर्वके भरे निगर्वसे निकसे । दोनों कटक अतिप्रबल लखिवेमें न आवें। इन दोनों सेनामें युद्ध होने लगा, सामान्य चक्र करोंत कुठार सेल खड्ग गदा शक्तिबाण भिंडिपाल इत्यादि अनेक आयुधोंसे परस्पर युद्ध होता भया। योधा हेलाकर योधावोंको बुलावते भए, कैसे हैं योधा ? शस्त्रोंसे शोभित हैं भुजा जिनकी अर युद्धका है सर्व साज जिनके ऐसे योधावोंपर पडते भए। अति वेगसे दोड, पर सेनामें प्रवेश करते भए, परस्पर अति युद्ध भया लंकाके योधाओंने बानरवंशी योधा दवाये जैसे सिंह गजोंको दबावे। बहुरि बानरवंशियोंके प्रबल योधा अपने योधावोंका भंग देखकर राक्षसोंके योधावोंको हणते भए अर अपने योधावोंको धीर्य बंधाया। बानरवंशियोंके आगे लंकाके लोकोंको चिगते देख बडे २ स्वामीभक्त रावणके अनुरागी महाबलसे मंडित

हाथियोंके चिन्हकी है ध्वजा जिनके, हाथियोंके रथ चढे, महायोधा हस्त प्रहस्त बानरवंशियों पर दौडे अर अपने लोगोंको धीर्य बंधाया—हो सामंत हो ! भय मत करो। हस्त प्रहस्त दोनों महा तेजस्वी बानरवंशियोंके योधाओंको भगावते भए तब बानरवंशियोंके नायक महा प्रतापी हाथियोंके रथ चढे महा शूरवीर परम तेजके धारक सुग्रीवके काकाके पुत्र नल नील महा भयंकर क्रोधायमान होय नानाप्रकारके शस्त्रनिकर युद्ध करनेको उद्यमी भए। अनेक प्रकार शस्त्रोंसे घनीवेर युद्ध भया दोनों तरफके अनेक योधा मुवे नलने उछलकर हस्तको हता अर नीलने प्रहस्तको हता जब यह दोनों पडे तब राक्षसोंकी सेना पराङ्मुख भई। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे मगधाधिपति ! सेनाके लोक सेनापतिको जबलग देखें तबलग ही ठहरें अर सेनापतिके नाश भए सेना विखर जाय जैसे मालके टूटे अरहटकी घडी विखर जाय अर सिर विना शरीर भी न रहे यद्यपि पुण्याधिकारी बडे राजा सब बातमें पूर्ण हैं तथापि विना प्रधान कार्यकी सिद्धि नाहीं, प्रधान पुरुषोंका संबंधकर मनवांछित कार्यकी सिद्धि होय है और प्रधान पुरुषोंके संबंध विना मंदताको भजे हैं जैसे राहुके योगसे सूर्यको आच्छादित भए किरणोंका समूह मन्द होय है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हस्त प्रहस्तका मरण वर्णन करनेवाला अठावनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५८ ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीसे पूछता भया—हे प्रभो ! हस्त प्रहस्त जैसे सामंत महा याधामें प्रवीण हुते वडा आश्चर्य है नल नीलने कैसे मारे ? इनके पूर्वभवका विरोध है के याही भवका ? गणधर देव कहते भए—हे राजन् ! कर्मनिकर बंधे जीव तिनकी नाना गति हैं, पूर्व कर्मके प्रभावकर

जीवोंकी यही रीति है जाने जाको मारा सो वह हू ताको मारनहारा है अर जाने जाको छुडाया सो ताका छुडावनहारा है। या लोकमें यही मर्यादा है। एक कुशस्थल नामा नगर वहां दोय भाई निर्धन, एक माताके पुत्र इंधक अर पल्लव ब्राह्मण खेतीका कर्म करें, पुत्र स्त्री आदि जिनके कुटुम्ब बहुत स्वभावहीसे दयावान साधुनिकी निंदातें पराङ्मुख सो एक जैनी मित्रके प्रसंगतैं दानादि धर्मके धारक भए अर एक दूजा निर्धन युगल सो महा निर्दई मिथ्यामार्गी हुते राजाके दान बटा सो विप्रोंमें परस्पर कलह भया सो इंधक पल्लवको इन दुष्टोंने मारा सो दानके प्रसादतैं मध्यभोग भूमिमें उपजे दोय पल्यकी आयु पाय मूए सो देव भए अर वे क्रूर इनके मारणहारे अधर्म परणामनिकर मूवे सो कालिंजर नामा वनमें सूस्या भए मिथ्यादृष्टि साधुनिके निंदक पापी कपटी तिनकी यही गति है बहुरि तिर्यंचगतिमें चिरकाल भ्रमण कर मनुष्य भए सो तापसी भए, बढी हैं जटा जिनके, फल पत्रादिकके आहारी, तीव्र तप कर शरीर कृश किया कुज्ञानके अधिकारी दोनो मूए सो विजियार्धकी दक्षिण श्रेणिमें अरिंजयपुर, तहांका राजा अग्निकुमार राणी अश्विनी ताके ये दोय पुत्र जगत् प्रसिद्ध रावणके सेनापति भए अर ते दोनों भाई इंधक अर पल्लव देवलोकतें चयकर मनुष्य भए बहुरि श्रावकके व्रतपाल स्वर्गमें उत्तम देव भए अर स्वर्गतें चयकर किहकंधापुरविषैं नल नील दोनों भाई भए पहिले हस्त प्रहस्तके जीवने नल नीलके जीव मारे हुते सो नल नीलने हस्त प्रहस्त मारे जो काहूको मारे है सो ताकर मारा जाय है अर जो काहूको पाले है सो ताकर पालिए है अर जो जासूं उदासीन रहे है सो भी तासूं उदासीन रहे जाहि देख निःकारण क्रोध उपजे सो जानिए परभवका शत्रु है अर जाहि देख चित्त हर्षित होय सो निस्संदेह पर भवका मित्र है, जो जलविषै जहाज फट जाय है अर मगर मच्छादि बाधा करे हैं अर थलविषै म्लेछ बाधा करे हैं सो सब पापका फल है पहाड समान माते हाथी अर नानाप्रकारके आयुध धरे अनेक योधा

अर महा तेजको धरें अनेक तुरंग अर वक्तर पहिरे बडे बडे सामंत इत्यादि जो अपार सेनासे युक्त जो राजा अर निःप्रमाद तौ भी पुण्यके उदयविना युद्धमें शरीरकी रक्षा न होय सके अर जहां तहां तिष्ठता अर जाके कोऊ सहाई नाहीं ताकी तप अर दान रक्षा करे, न देव सहाई न बांधव सहाई अर प्रत्यक्ष देखिए है, धनवान् शूरवीर कुटुम्बका धनी सर्व कुटुम्बके मध्य मरण करे है कोऊ रक्षा करने समर्थ नाहीं पात्रदानसे व्रत अर शील अर सम्यक्त अर जीवोंकी रक्षा होय है। दयादानसे जाने धर्म न उपार्जा अर बहुत काल जीया चाहे सो कैसे बने? इन जीवानिके कर्म तप विना न विनशैं ऐसा जानकर जो पंडित हैं तिनको बैरीयों पर भी क्षमा करनी। क्षमा समान और तप नाहीं, जे विचक्षण पुरुष हैं वे ऐसी बुद्धि न धरें कि यह दुष्ट विगाड करें है। या जीवका उपकार अर विगाड केवल कर्माधीन है कर्म ही सुख दुःख का कारण है। ऐसा जानकर जे विचक्षण पुरुष हैं ते बाह्य सुख दुःखके निमित्त कारण अन्य पुरुषों पर राग द्वेष भाव न धरें। अन्धकारसे आच्छादित जो पंथ तामें नेत्रवान् पृथिवीपर पडे सर्प पर पग धरै अर सूर्यके प्रकाशसे मार्ग प्रकट होय तब नेत्रवान् सुखसे गमन करै तैसे जौलग मिथ्यात्वरूप अन्धकारसे मार्ग नाहीं अवलोके तौलग नरकादि विवरमें पडै अर जब ज्ञान सूर्यका उद्योत होय तब सुखसे अविनाशीपुर जाय पहुंचें॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं हस्त प्रहस्त नल नीलके

पूर्वभवका वर्णन करनेवाला उनसठवा पर्व पूर्ण भया॥ ५९॥

अथानन्तर हस्त प्रहस्त, नल नीलने हते सुन बहुत योधा क्रोधकर युद्धको उद्यमी भए। मारीच सिंह जघन स्वयंभू शंभू ऊर्जित शुक सारण चन्द्र अर्क जगत्वीभत्स निस्वन ज्वर उग्र क्रमकर वज्राक्ष

आत्मनिष्ठुर गंभीरनाद संनद संवृद्ध वाहू अनुसिदन इत्यादि राक्षस पक्षके योधा वानरवंशियोंकी सेनाको क्षोभ उपजावते भए। तिनको प्रबल जान वानरवंशियोंके योधा युद्धको उद्यमी भए । मदन मदनांकुर संताप प्रक्षित आक्रोशनन्दन दुरित अनघ पुष्पास्त्र विघ्न प्रियंकर इत्यादि अनेक वानरवंशी योधा राक्षसोंसे लडते भए। याने वाको ऊंचे स्वरसे बुलाया वाने याको बुलाया इनके परस्पर संग्राम भया, नाना प्रकारके शस्त्रों से आकाश व्याप्त होय गया। संताप तो मारीच से लडता भया अर प्रथित सिंहजघनसे अर विघ्न उद्यानसे अर आक्रोश सारणसे नन्दनसे इन समान योधावोंमें अद्भुत युद्ध भया तब मारीचने संतापका निपात किया अर नन्दनने ज्वरके वक्षस्थलमें बरछी दई अर सिंहकटिने प्रथितके अर उद्दामकीर्तिने विघ्नको हणा। ता समय सूर्य अस्त भया अपने अपने पतिको प्राणरहित भए सुन इनकी स्त्री शोकके सागरमें मग्न भई सो उनकी रात्रि दीर्घ होती भई।

दूजे दिन महा क्रोधके भरे सामन्त युद्धको उद्यमी भए वज्राक्ष अर क्षुभितार मृगेन्द्रदमन अर विधि शंभू अर स्वयम्भु चन्द्रार्क अर वज्रोदर इत्यादि राक्षस पक्षके बडे बडे सामन्त अर वानर वंशियोंके सामन्त परस्पर जन्मान्तरके उपार्जित बेर तिनसे महा क्रोधरूप होय युद्ध करते भए। अपने जीवनमें निस्पृह संक्रोधने महाक्रोधकर खिपितारको महा ऊंचा स्वरकर बुलाया अर वाहुवलीने मृगारिदमनको बुलाया अर वितापीने विधिको बुलाया इत्यादि योधा परस्पर युद्ध करते भए अर योधा अनेक मूए शार्दूलने वज्रोदरको घायल किया अर खिपितार संक्रोधको मारता भया अर शंभूने विशालद्युति मारा अर स्वयम्भूने विजयको लोहयष्टिसे मारा अर विधिने वितापीको गदासे मारा बहुत कष्टसे या भांति योधावोंने युद्ध में अनेक योधा हते सो बहुत बेर तक युद्ध भया।

राजा सुग्रीव अपनी सेनाको राक्षसोंकी सेनासे खेद खिन्न देख आप महा क्रोधका भरा युद्ध कर-

नेको उद्यमी भया तब अंजनीका पुत्र हनूमान हाथियोंके रथपर चढा राक्षसोंसे युद्ध करता भया सो राक्ष-
सोंके सामन्तोंके समूह पवनपुत्रको देखकर जैसे नाहरको देख गाय डरे तैसे डरते भए अर राक्षस पर-
स्पर वात करते भए कि यह हनूमान वानरध्वज आया सो आज घनोंकी स्त्रियोंको विधवा करेगा तब याके
सन्मुख माली आया ताहि आया देख हनूमान धनुषमें वाण तान सन्मुख भए तिनमें महायुद्ध भया। मंत्री
मन्त्रियोंसे लडने लगे, रथी रथियोंसे लडने लगे, घोडोंके असवार घोडोंके असवारोंसे लडते भए, हाथि-
योंके असवार हाथियोंके असवारोंसे लडते भए। सो हनूमानकी शक्तिसे माली पराङ्मुख भया। तब
वज्रोदर महा पराक्रमी हनूमानपर दौडा, युद्ध करता भया, चिरकाल युद्ध भया सो हनूमानने वज्रोदरको
रथरहित किया, तब वह और दूजे रथपर चढ हनूमानपर दौडा तब हनूमानने बहुरि ताको रथरहित
किया तब बहुरि पवनसे हू अधिक है वेग जाका ऐसे रथपर चढ हनूमानपर दौडा तब हनूमानने ताहि
हता सो प्राणरहित भया तब हनूमानके सन्मुख महा बलवान् रावणका पुत्र जम्बूमाली आया सो आवता
ही हनूमानकी ध्वजा छेद करता भया तब हनूमानने क्रोधसे जम्बूमालीका वक्तर भेदा, धनुष तोड डारा
जैसे तृणको तोडें। तब मंदोदरीका पुत्र नवा वक्तर पहिर हनूमानके वक्षस्थलविषै तीक्ष्ण वाणोंसे घाव
करता भया सो हनूमानने ऐसा जाना मानों नवीन कमलकी नालिकाका स्पर्श भया। कैसा है हनूमान?
पर्वत समान निश्चल है बुद्धि जाकी, बहुरि हनूमानने चन्द्रवक्र नामा वाण चलाया सो जम्बूमालीके
रथके अनेक सिंह जुते हुते सो छूट गए, तिनहीके कटकविषै पडे तिनकी विकराल दाढ विकराल वदन
भयंकर नेत्र तिनसे सकल सेना विह्वल भई मानो सेनारूप समुद्रविषै ते सिंह कल्लोलरूप भए उछलते
फिरे हैं अथवा दुष्ट जलचर जीवनि समान विचरे हैं अथवा सेनारूप मेघविषै विजली समान चमके हैं अ-
थवा संग्राम ही भया संसार चक्र, ताविषै सेनाके लोक तेई भए जीव तिनको ये रथके छुटे सिंह कर्मरूप

होय महादुखी करे हैं इनसे सर्व सेना दुखरूप भई तुरंग गज रथ पियादे सब ही विह्वल भए, रणका उद्यम तज दशोंदिशाको भाजे, तब पवनका पुत्र सबोंको पेल रावण तक जाय पहुंचा, दूरसे रावणको देखा, सिंहके रथ चढा हनूमान धनुषबाण लेय रावणपर गया, रावण सिंहोंसे सेनाको भयरूप देख अर हनूमानको काल समान महादुर्द्धर जान आप युद्ध करनेको उद्यमी भया। तब महोदर रावणको प्रणाम कर हनूमानपर महाक्रोधसे लडनेको आया सो याके अर हनूमानके महायुद्ध भया। ता समयविषै वे सिंह योधावोंने वश किए, सो सिंहोंको वशीभूत भए देख महाक्रोधकर समस्त राक्षस हनूमानपर पडे तब अंजनीका पुत्र महाभट पुण्याधिकारी तिन सबको अनेक बाणोंसे थांभता भया अर अनेक राक्षसोंने अनेक बाण हनूमानपर चलाए, परन्तु हनूमानको चलायमान न करते भए। जैसे दुर्जन अनेक कुवचन रूप बाण संयमीके लगावे, परन्तु तिनके एक न लगे, तैसे हनूमानके राक्षसोंका एक बाण भी न लगा, अनेक राक्षसोंसे अकेला हनूमानको बेढा देख बानरवंशी विद्याधर युद्धके निमित्त उद्यमी भए, सुषेण नल नील प्रीतिकर विराधित संत्रासित हरिकट सूर्यज्योति महाबल जांबूनन्द। केई नाहरोंके रथ केई गजोंके रथ केई तुरंगोंके रथ चढे रावणकी सेनापर दौडे, सो बानरवंशियोंने रावणकी सेना सब दिशाविषै विध्वंस करी, जैसे क्षुधादि परीषह तुच्छ व्रतियोंके व्रतोंको भंग करें।

तब रावण अपनी सेनाको व्याकुल देख आप युद्ध करनेको उद्यमी भया तब कुम्भकरण रावणको नमस्कारकर आप युद्धको चला तब याहि महाप्रबल योधा रणमें अग्रगामी जान सुषेण आदि सबही बानरवंशी व्याकुल भए। जब वे चन्द्ररश्मि जयस्कंध चन्द्राहु रतिवर्धन अंग अंगद सम्मेद कुमुद कशमंडल बालचंड तरंगसार रत्नजटी जय वेलक्षिपी वसन्त कोलाहल इत्यादि अनेक योधा रामके पक्षी कुम्भकर्णसे युद्ध करने लगे तो कुम्भकर्णने सबको अपनी निद्रानामा विद्यासे निद्राके वश किए जैसे

दर्शनावरणीय कर्म दर्शनके प्रकाशको रोके तैसे कुम्भकर्णकी विद्या बानरवंशियोंके नेत्रानिके प्रकाशको रोकती भई। सब ही कपिध्वज निद्रासे घूमने लगे अर तिनके हाथोंसे हथियार गिरपडे तब इन सबोंको निद्रावश अचेतन समान देख सुग्रीवने प्रतिबोधिनी विद्या प्रकाशी सो सब बानरवंशी प्रतिबोध भए अर हनूमानादि युद्धको प्रवर्तें। बानरवंशियोंके बलमें उत्साह भया अर युद्धमें उद्यमी भए अर राक्षसोंकी सेना दबी तब रावण आप युद्धको उद्यमी भए, तब बडा बेटा इन्द्रजीत हाथ जोड सिरनिवाय बीनती करता भया—हे तात हे नाथ! यदि मेरे होते आप युद्धको प्रवर्तें तो हमारा जन्म निष्फल है जो तृण नखहीसे उपड आवे उसपर फरसी उठावना कहा? तातैं आप निश्चिंत होवें, मैं आपकी आज्ञा प्रमाण करूंगा। ऐसा कहकर महाहर्षित भया पर्वत समान त्रैलोक्यकंटक नामा गजेंद्रपर चढ युद्धको उद्यमी भया। कैसा है गजेंद्र? इंद्रके गज समान अर इंद्रजीतको अतिप्रिय अपना सब साज लेय मंत्रियोंसहित ऋद्धिसे इन्द्रसमान रावणका पुत्र कपियोंपर क्रूर भया सो महाबलका स्वामी मानी आवत प्रमाण ही बानरवंशियोंका बल अनेक प्रकार आयुधोंसे जो पूर्ण हुता सो सब विह्वल किया। सुग्रीवकी सेनाविषै ऐसा सुभट कोई न रहा जो इन्द्रजीतके बाणनिकरि घायल न भया। लोक जानते भए जो यह इंद्रजीत कुमार नहीं अग्निकुमारोंका इंद्र है अथवा सूर्य है सुग्रीव अर भामंडल ये दोऊ अपनी सेनाको इंद्रजीत कर दबी देख युद्धको उद्यमी भए। इनके योधा इंद्रजीतके योधानिसे अर ये दोनों इंद्रजीतसे युद्ध करने लगे सो परस्पर योधा योधावोंको हंकार हंकार बुलावते भए। शस्त्रोंसे आकाशमें अंधकार होय गया, योधावोंके जीवनकी आशा नहीं, गजसे गज, रथसे रथ, तुरंगसे तुरंग, सामंतोंसे सामंत उत्साहकर युद्ध करते भए। अपने अपने नाथके अनुरागविषै योधा परस्पर अनेक आयुधनिकर प्रहार करते भए। ताही समय इंद्रजीत सुग्रीवको समीप आया देख ऊंचे स्वरकर अपूर्व शस्त्ररूप दुर्वचननिकर छेदता भया—अरे

वानरबंशी पापी स्वामिद्रोही! रावणसे स्वामीको तज स्वामीके शत्रुका किंकर भया। अब मुझसे कहां जायगा तेरे शिरको तीक्ष्ण बाणनिकर तत्काल छेदूंगा। वे दोनों भाई भूमिगोचरी तेरी रक्षा करें। तब सुग्रीव कहता भया ऐसे वृथा गर्वके वचन कर कहा तू मानशिखर पर चढा है सो अबारही तेरा मान भंग करूंगा। जब ऐसा कहा तब इंद्रजीतने कोपकर धनुष चढाय बाण चलाया अर सुग्रीवने इंद्रजीत पर चलाया दोनों महा योधा परस्पर बाणनिकर लडते भए, आकाश बाणोंसे आच्छादित होय गया। मेघवाहनने भामण्डलको हंकारा सो दोनों भिडे अर विराधित अर वज्रनक्र युद्ध करते भए सो विराधितने वज्रनक्रके उरस्थलमें चक्रनामा शस्त्रकी दई अर वज्रनक्रने विराधितके दई, शूरवीर घात पाय शत्रुके घाव न करें तो लज्जा है, चक्रोंसे वक्तर पीसे गए तिनके अग्निकी कणका उछली सो मानों आकाशसे उलकाओंके समूह पडे हैं। लंकानाथके पुत्रने सुग्रीवपै अनेक शस्त्र चलाए। लंकेश्वरके पुत्र संग्राममें अचल हैं जा समान दूजा योधा नाहीं, तब सुग्रीवने वज्रदंडसे इंद्रजीतके शस्त्र निराकरण किए जिनके पुण्यका उदय है तिनका घात न होय फिर क्रोधकर इंद्रजीत हाथीसे उतर सिंहके रथ चढा समाधानरूप है बुद्धि जाकी नानाप्रकारके दिव्य शस्त्र अर सामान्य शस्त्र इनमें प्रवीण सुग्रीव पर मेघबाण चलाया सो संपूर्ण दिशा जलरूप होय गई तब सुग्रीवने पवनवाण चलाया सो मेघबाण बिलाय गया अर इंद्रजीतका छत्र उडाया अर ध्वजा उडाई अर मेघबाहनने भामंडल पर अग्निबाण चलाया सो भामंडलका धनुष भस्म होय गया अर सेनामें अग्नि प्रज्वालित भई तब भामण्डलने मेघवाहनपर मेघबाण चलाया सो अग्निवाण विलाय गया अर अपनी सेनाकी बहुरि रक्षा करी। मेघबाहनने भामण्डलको रथरहित किया तब भामण्डल दूजे रथ चढ युद्ध करने लगा। मेघबाहनने तामसबाण चलाया सो भामण्डलकी सेनामें अन्धकार होय गया अपना पराया कुछ सूझे नाहीं मानों मूर्छाको प्राप्त भए तब मेघवाहनने भा-

मंडलको नागपाशसे पकडा मायामई सर्प सर्व अंगमें लिपट गए जैसे चन्दनके वृक्षके नाग लिपट जावें कैसे हैं नाग ? भयंकर जे फण तिनकर महा विकराल हैं भामण्डल पृथिवीपर पडा अर याही भांति इंद्रजीतने सुग्रीवको नागपाशकर पकडा सो धरती पर पडा ।

तब विभीषण जो विद्याबलमें महाप्रवीण, श्रीरामलक्ष्मणसे दोनों हाथ जोड सीस नवाय कहता भया हे राम महाबाहो ! लक्ष्मण ! महावीर इंद्रजीतके बाणोंसे व्याप्त सब दिशा देखो धरती आकाश बाणोंसे आच्छादित है, उल्कापातके स्वरूप नाग बाण तिनसे सुग्रीव अर भामण्डल दोनों भूमिविषै बंधे पडे हैं मंदोदरीके दोनों पुत्रोंने अपने दोनों महाभट पकडे अपनी सेनाके जे दोनों मूल हुते वे पकडे गए, तब हमारे जीवनेसे कहा इन विना सेना शिथिल होय गई है, देखो दशों दिशाको लोक भागे हैं अर कुंभकर्णने महा युद्धकर हनूमानको पकडा है कुम्भकरणके बाणोंसे हनूमान जरजरे भए, छत्र उड गए, ध्वजा उड गई धनुष टूटा वक्तर टूटा रावणके पुत्र इंद्रजीत अर मेघवाहन युद्धविषै लग रहे हैं अब वे आयकर सुग्रीव भामण्डलको ले जांयगे सो वे न लेजावें तासे पहिले आप उनको ले आवें वे दोनों चेष्टारहित हैं सो मैं उनके लेवनेको जाऊं हूं अर आप भामण्डल सुग्रीवकी सेना निर्नाथ होय गई है सो ताहि थांभो या भांति विभीषण राम लक्ष्मणसे कहे है ताही समय सुग्रीवका पुत्र अंगद छाने छाने कुंभकर्ण पर गया अर ताका उत्तरासनवस्त्र परे किया सो लज्जाके भारकर व्याकुल भया वस्त्रको थांभे तौलग हनूमान इसकी भुजाफांससे निकसि गया जैसे नवा पकडा पक्षी पिंजरेसे निकस जाय हनूमान नवीन जन्मको धरे अर अंगद दोनों एक विमान बैठे ऐसे शोभते भए मानों देव ही हैं अर अंगदका भाई अंग अर चंद्रोदयका पुत्र विराधित इन सहित लक्ष्मण सुग्रीवकी अर भामण्डलकी सेनाको धैर्य बंधाय थांभते भए अर विभीषण इंद्रजीत मेघबाहन पर गया सो विभीषणको आवता देख इंद्रजीत मनमें विचारता

भया जो न्याय विचारिए तो हमारे पितामें अर इनमें कहा भेद है ? तातैं इनके सन्मुख लडना उचित
नाहीं सो याके सन्मुख खडा न रहना यही योग्य है अर ये दोनों भामण्डल सुग्रीव नागपाशमें बंधे सो
निःसंदेह मृत्युको प्राप्त भए अर काकासे भाजिए तो दोष नाहीं ऐसा विचार दोनों भाई महा अभि-
मानी न्यायके वेत्ता विभीषणसे टरि गए अर विभीषण त्रिशूलका है आयुध जिसके रथसे उतर सुग्रीव
भामण्डलके समीप गया सो दोनोंको नागपाशसे मूर्छित देख खेदखिन्न होता भया तब लक्ष्मणने राम
से कहा हे नाथ ! ए दोनों विद्याधरोंके अधिपति महासेनाके स्वामी महा शक्तिके धनी भामंडल सुग्रीव
रावणके पुत्रोंने शक्तिरहित कीए मूर्छित होय पडे हैं सो इन वगैर आप रावणको कैसे जीतेंगे तब राम
को पुण्यके उदयतें गरुडेंद्रने वर दिया हुता सो चितार लक्ष्मणसूं राम कहते भए।

हे भाई ! वंशस्थल गिरिपर देशभूषण कुलभूषण मुनिका उपसर्ग निवारा तासमय गरुडेंद्रने वर
दिया हुता ऐसा कह महालोचन रामने गरुडेंद्रको चितारा सो सुख अवस्थाविषै तिष्ठे था सो सिंहासन
कम्पायमान भया तब अवधिकर राम लक्ष्मणको काम जान चिंतावेग नामा देवको दोय विद्या देय
पठाया सो आयकर बहुत आदरसे राम लक्ष्मणसे मिला अर दोऊ विद्या तिनको दई, श्रीरामको सिंह-
वाहिनी विद्या दई अर लक्ष्मणको गरुडवाहिनी विद्या दई तब यह दोऊ धीर विद्या लेय चिंतावेगका
बहुत सन्मानकर जिनेन्द्रकी पूजा करते भए अर गरुडेंद्रकी बहुत प्रशंसा करी। वह देव इनको जलबाण
अग्नि बाण पवनबाण इत्यादि अनेक दिव्य शस्त्र देता भया अर चांद सूर्य सारिखे दोऊ भाइनिको छत्र
दिए अर चमर दिए नाना प्रकारके रत्न दिए कांतिके समूह अर विद्युद्वक्र नाम गदा लक्ष्मणको दई अर
हल मूसल दुष्टोंको भयके कारण रामको दिए। या भांति वह देव इनको देवोपनीत शस्त्र देय अर सैकडों
आशिष देय अपने स्थानक गया। यह सर्व धर्मका फल जान जो समयविषै योग्य वस्तुकी प्राप्ति होय। विवि-

पूर्वक निर्दोष धर्म आराधा होय ताके ये अनुपम फल हैं जिनको पायकरि दुःखकी निवृत्ति होय महा धीर्यके धनी आप कुशलरूप अर औरोंको कुशल करें मनुष्यलोककी सम्पदाकी कहा बात ? पुण्याधिकारियोंको देवलोककी वस्तु भी सुलभ होय है तातैं निरन्तर पुण्य करहु । अहो प्राणि हो ! जो सुख चाहो तो सर्व प्राणियोंको सुख देवहु जो धर्मके प्रसादकरि सूर्य समान तेजके धारक होहु अर आश्चर्यकारी वस्तुनिका संयोग होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित, महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणको अनेक विद्याका लाभ वर्णन करनेवाला साठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६० ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण दोऊ बीर तेजके मंडलविषै मध्यवर्ती लक्ष्मीके निवास श्रीवत्स लक्षणको धरे महामनोज्ञ कवच पहिरे सिंहवाहन गरुडवाहन पर चढे महासुन्दर सेनासागरके मध्य सिंहकी अर गरुडकी ध्वजा धरे परपक्षके क्षय करनेको उद्यमी महासमर्थ सुभटोंके ईश्वर संग्राम भूमिके मध्य प्रवेश करने भए आगे आगे लक्ष्मण चाल्या जाय है दिव्य छत्रके तेजकर सूर्यके तेजको आच्छादित करता संता हनूमान आदि बडे बडे योधा बानरवंशी तिनकर मंडित वर्णनविषै न आवै ऐसा देवनि कैसारूप धारें सूर्यकीसी ज्योतीलिये लक्ष्मणको विभीषणने देखा सो जगत्को आश्चर्य उपजावै ऐसे तेजकर मण्डित सो गरुडवाहनके प्रतापकर नागपासका बन्धन भामण्डल सुग्रीवका दूर भया । गरुडके पंखनिकी पवन क्षीर सागरके जलको क्षोभरूप करै ताकरि वे सर्प विलाय गये जैसे साधुनिके प्रतापकर कुभाव मिट जाय गरुडके पक्षनिकी कांतिकर लोक ऐसे होय गए मानों सुवर्णके रसकर निरमापे हैं तब भामंडल सुग्रीव नागपाशसें छूट विश्रामको प्राप्त भए मानों सुख निद्रा लेय जागे अधिक शोभते भए तब

इनको देख श्रीवृक्ष प्रथादिक सब विद्याधर विस्मयको प्राप्त भए अर सब ही श्रीराम लक्ष्मणकी पूजा-कर विनती करते भए—हे नाथ! आजकीसी विभूति हम अब तक कभी न देखी वाहन शस्त्र सम्पदा छत्र ध्वजाविषे अद्भुत शोभा दीखे है। तब श्रीरामने जबसे अयोध्यासे चले तबसे लेय सर्व वृत्तांत कहा कुलभूषण देशभूषणका उपसर्ग दूर किया सो सब वृत्तांत कहा। तिन्होंको केवल उपजा अर कहा हमसे गरुडेंद्र तुष्टायमान भया सो अवार उसका चिंतवन किया ताकरि यह विद्याकी प्राप्ति भई। तब वे यह कथा सुन परम हर्षको प्राप्त भए अर कहते भए या ही भवविषे साधु सेवाकर परमयश पाइए है अर अतिउदार चेष्टा होय है अर पुण्यकी विधि प्राप्ति होय है अर जैसा साधु सेवासे कल्याण होय तैसा न माता न पिता न मित्र न भाई कोई जीवनिका न करे। साधु या प्राणीकूं धर्मविषे उत्तम बुद्धि देय कल्याण करे, या भांति साधु सेवाकी प्रशंसाविषे लगाया है चित्त जिन्होंने, जिनेन्द्रके मार्गकी उन्नतिविषे उपजी है श्रद्धा जिनके ते राजा बलभद्र नारायणका आश्रयकर महाविभूतिकर शोभते भए। ये भव्य जीवरूप कमल तिनको प्रफुलित करनहारी यह पवित्र कथा ताहि सुनकर ये सर्व ही हर्षके समुद्रविषे मग्न भए अर श्रीराम लक्ष्मणकी सेवाविषे अति प्रीति करते भए अर भामंडल सुग्रीव हनुमान् मूर्छारूप निद्रासे रहित भए हैं नेत्रकमल जिनके श्रीभगवानकी पूजा करते भए। ते विद्याधर श्रेष्ठ देवों सारिखे सर्वथा धर्मविषे श्रद्धा करते भए। जो पुण्याधिकारी जीव हैं सो या लोकविषे परम उत्सवके योगको प्राप्त होय हैं प्राणी अपने स्वार्थसे संसारविषे महिमा नाहीं पावे है, केवल परमार्थसे महिमा होय है, जैसा सूर्य पर-पदार्थको प्रकाश करे तैसे शोभा पावे है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै सुग्रीव भामंडलका नागपाशतै छूटना अर हनुमानका कुंभकर्णकी भुजापाशतैं छूटना राम लक्ष्मणको सिंहविमान गरुडविमानकी प्राप्ति वर्णन करनेवाला इकसठवा पर्व पूर्ण भया॥ ६१॥

अथानन्तर श्रीरामके पक्षके योधा महापराक्रमी रणरीतिके वेत्ता शूरवीर युद्धको उद्यमी भए बानरबंशिनिकी सेनासे आकाश व्याप्त भया अर शंख आदि वादित्रोंके शब्द अर गजोंकी गर्जना अर तुरंगोंके हींसिवेका शब्द सुनकर कैलाशका उठावनहारा जो रावण अति प्रचंड है बुद्धि जाकी महामानी देवन सारिखी है विभूति जाके महाप्रतापी बलवान सेनारूप समुद्रकर संयुक्त शस्त्रोंके तेजकर पृथिवीविषे प्रकाश करता पुत्र भ्रातादिक सहित लंकासे निकसा, युद्धको उद्यमी भया, दोऊ सेनाके योधा वस्तर पहिर संग्रामके अभिलाषी नानाप्रकार बाहनपर आरूढ अनेक आयुधोंके धरणहारे पूर्वोपार्जित कर्मसे महाक्रोधरूप परस्पर युद्ध करते भए, चक्र करौंत कुठार धनुषबाण खड्ग लोहयष्टि वज्र मुदगर कनक परिघ इत्यादि अनेक आयुधनिकर परस्पर युद्ध भया, घोडानिके असवार घोडेके असवारोंसे लडने लगे हाथियोंके असवार हाथियोंके असवारोंसे, रथोंके रथियोंसे महाधीर लडने लगे, सिंहोंके असवार सिंहोंके असवारोंसे, पयादे पयादोंसे भिडते भए। बहुत वेरमें कपिध्वजोंकी सेना राक्षसोंके योधावोंसे दबी तब नल नील संग्राम करने लगे सो इनके युद्धकर राक्षसनिकी सेना चिगी तब लंकेश्वरके योधा समुद्रकी कल्लोल सारिखे चंचल अपनी सेनाको कंपायमान देख विद्युद्वचन मारीच चन्द्रार्क सुखसारण कृतांत मृत्यु भूतनाद संक्रोधन इत्यादि महा सामंत अपनी सेनाको धीर्य बंधायकर कपिध्वजोंकी सेनाको दबावते भए। तब मर्कटबंशी योधा अपनी सेनाको चिगी जान हजारां युद्धको उठे, सो उठतेही नाना प्रकारके आयुधनिकर राक्षसनिकी सेनाको हणते भए, अति उदार है चेष्टा जिनकी, तब रावण अपनी सेनारूप समुद्रको कपिध्वजरूप प्रलय कालकी अग्निसे सूकता देख आप कोपकर युद्ध करनेको उद्यमी भया सो रावणरूप प्रलय कालकी पवनसे बानरबंशी सूके पात उडने लगे तब विभीषण महायोधा बानरबंशीनिको धीर्य बंधाय तिनकी रक्षा करवेको आप रावणसे युद्धको सन्मुख भया। तब रावण लहुरे

भाईको युद्धमें उद्यमी देख क्रोधकर निरादर वचन कहता भया— रे बालक ! तू लघु भ्राता है सो मारवे योग्य नाहीं मेरे सन्मुखतें दूर हो, मैं तोहि देख प्रसन्न नाहीं । तब विभीषण रावणसूं कही——कालके योगसे तू मेरी दृष्टि पडा तब मोपे कहां जायगा । तब रावण अति क्रोधकर कहता भया रे पुरुषत्वरहित क्लिष्ट धृष्ट पापिष्ठ कुचेष्टि नरकाधिकार तो सारिखे दीनको मारे मोहि हर्ष नाहीं, तू निर्बल रंक अवध्य है अर तो सारिखा मूर्ख अर कौन जो विद्याधरोंकी सन्तानमें होय कर भूमिगोचरियोंका आश्रय करै जैसे कोई दुर्बुद्धि पापकर्मके उदयतें जिन धर्मको तज मिथ्यात्वका सेवन करै तब विभीषण बोला हे रावण ! बहुत कहने कर कहा तेरे कल्याणकी बात तुझे कहहूं सो सुन—ऐती भई तोहू कछु विगडा नाहीं जो तू अपना कल्याण चाहे है तो रामसे प्रीतिकर सीता रामको सौंप अर अभिमान तज रामको प्रसन्नकर स्त्रीके निमित्त अपने कुलको कलंक मत लगावो अथवा तू मेरे वचन नहीं माने है सो जानिए है तेरी मृत्यु नजीक आई है समस्त बलवन्तोंमें मोह महा बलवान है तू मोहकर उन्मत्त भया है ये वचन भाईके सुनकर रावण अति क्रोधरूप भया, तीक्ष्ण बाण लेय विभीषणपर दौडा और भी रथ घोडे हाथियोंके असवार स्वामीभक्तिविषै तत्पर महा युद्ध करते भए । विभीषणने हू रावणको आवता देख अर्धचन्द्र बाणसे रावणकी ध्वजा उडाई अर रावणने क्रोधकर बाण चलाया सो विभीषणका धनुष तोडा अर हाथतैं बाण गिरा तब विभीषणने दूजा धनुष लेय बाण चलाया सो रावणका धनुष तोडा । या भांति दोऊ भाई महायोधा परस्पर जोरसे युद्ध करते भए अर अनेक सामंतानिका क्षय भया तब इंद्रजीत महायोधा पिताभक्त पिताका पक्ष कर विभीषण पर आया तब ताहि लक्ष्मणने रोका जैसे पर्वत सागरको रोके अर श्रीरामने कुंभकर्णको घेरा अर सिंहकटिसे नील अर स्वयंभूसे नल अर शंभूसे दुर्मति अर घटोदरसे दुर्मुख शक्रासनसे दुष्ट, चंद्रनखसे काली, भिन्नांजनसे स्कंध, विघ्नसे विराधित अर मयसे

अंगद अर कुम्भकर्णका पुत्र जो कुम्भ तासे हनूमानका पुत्र अर सुमालीसे सुग्रीव अर केतुसे भामंडल कामसे दृढरथ, क्षोभसे बुध इत्यादि बडे २ राजा परस्पर युद्ध करते भए अर समस्त ही योधा परस्पर रण रचते भए वह वाहि बुलावे। बराबरके सुभट कोई कहे हैं— मेरा शस्त्र आवे है ताहि तू झेल, कोई कहे है तू हमसे युद्ध योग्य नाहीं, बालक है, वृद्ध है, रोगी है निर्बल है तू जा फलाना सुभट युद्धयोग्य है सो आवो। या भांतिके वचनालाप होय रहे हैं कोई कहे याहि छेदो याहि भेदो कोई कहे है—बाण चलावो, कोई कहे है मार लेवो, पकड लेवो, बांध लेवो ग्रहण करो छांडो चूर्ण करो घाव लगे ताहि सहो, घाव देहु, आगे होवो, मूर्छित मत होवो, सावधान होवो, तू कहा डरे है, मैं तोहि न मारूं, कायरोंको न मारना, भागोंको न मारना, पडेको न मारना, आयुधरहित पर चोट न करना तथा रोगसे ग्रसा मूर्छित दीन बाल वृद्ध यती व्रती स्त्री शरणागत तपस्वी पागल पशु पक्षी इत्यादिको सुभट न मारें यह सामंतनिकी वृत्ति है कोई अपने वंशियोंको भागते देख धिकार शब्द कहे हैं अर कहे हैं तू कायर है नष्ट है माति कांपे कहां जाय है धीरा रहो अपने समूहविषे खडा रहु तोसूं कहा होय है? तोसूं कौन डरै, तू काहेका क्षत्री शूर अर कायरोंके परखनेका यह समय है, मीठा मीठा अन्न तो बहुत खाते यथेष्ट भोजन करते अब युद्धमें पीछे काहे होवो। या भांति धीरोंकी गर्जना अर वादित्रोंका बाजना तिनसे दशोंदिशा शब्दरूप भई अर तुरंगोंके खुरकी रजसे अंधकार होय गया चक्र शक्ति गदा लोहयष्टि कनक इत्यादि शस्त्रोंसे युद्ध भया मानों ये शस्त्र कालकी डाढ ही हैं। लोग घायल भए, दोनों सेना ऐसी दीखें मानों लाल अशोकका वन है अथवा टेसूका वन है अर अथवा पारिभद्र जातिके वृक्षोंका वन है। कोऊ योधा अपने वक्तरको टूटा देख दूजा वक्तर पहरता भया जैसे साधु व्रतमें दूषण उपजा देख बहुरि पीछे दोष स्थापना करे अर कोई दांतोंसे तरवार थांभ कमर गाढी कर बहुरि युद्धको प्रवृत्ता कोई एक सामंत माते हाथिनिके दांतोंके

अग्रभागसे विदारा गया है वक्षस्थल जाका सो हाथीके चालते जे कान तेई भए बीजना उससे मानों हवासे सुखरूपकर रहे हैं अर कोईयक सुभट निराकुल बुद्धि हुआ हाथीके दांतोंपर दोनों भुजा पसार सोवे है मानों स्वामीके कार्यरूप समुद्रसे उतरा अर कैयक योधा युद्धसे रुधिरका नाला बहावते भए जैसे पर्वतमें गेरुकी खानसे लाल नीझरने वहैं अर कैयक योधा पृथिवीमें साम्हने मुंहसे पडे होंठ डसते शस्त्र जिनके करमें टेढी भौंह विकराल बदन या रीतिसे प्राण तजे हैं अर कैएक भव्यजीव महासंग्रामसे अत्यंत घायल होय कषायका त्यागकर सन्यास धर अविनाशी पदका ध्यान करते देहको तज उत्तम लोकको पावे हैं कैएक धीरवीर हाथियोंके दांतोंको हाथसे पकडकर ही देहके रुधिरकी छटा शरीरसे पडे है शस्त्र हैं हाथोंमें जिनके अर कैएक काम आय गए तिनके मस्तक गिर पडे अर सैकडां धड नाचे हैं कैएक शस्त्ररहित भए अर घावसे जरजरे भए तृषातुर होय जल पीवनेको बैठे हैं जीवनेकी आशा नाहीं ऐसे भयंकर संग्रामके होते परस्पर अनेक योधावोंका क्षय भया इन्द्रजीत तीक्ष्ण बाणनिसे लक्ष्मणको आ-च्छादने लगा अर लक्ष्मण उसको सो इंद्रजीतने लक्ष्मण पर तामस बाण चलाया सो अंधकार होयगया तब लक्ष्मणने सूर्यबाण चलाया उससे अन्धकार दूर भया बहुरि इन्द्रजीतने आशीविष जातिके नागबाण चलाए सो लक्ष्मण अर लक्ष्मणका रथ नागोंसे वेष्टित होने लगा तब लक्ष्मणने गरुडबाणके योगसे नागबाणका निराकरण किया जैसे योगी महातपसे पूर्वोपार्जित पापोंके समूहको निराकरण करें अर लक्ष्मणने इन्द्रजीतको रथरहित किया । कैसा है इन्द्रजीत ? मंत्रियोंके मध्य तिष्ठे है अर हाथियोंकी घटावोंसे वेष्टित है सो इन्द्रजीत दूजे रथपर अपनी सेनाको वचनसे कृपाकर रक्षा करता संता लक्ष्मण पर तप्तबाण चलावता भया ताहि लक्ष्मणने अपनी विद्यासे निवार इंद्रजीतपर आशीविष जातिका नाग-बाण चलाया सो इन्द्रजीत नागबाणसे अचेत होय भूमिमें पडा जैसे भामंडल पडा हुता अर रामने कुम्भ-

करणको रथरहित किया बहुरि कुम्भकरणने सूर्यबाण रामपर चलाया सो रामने ताका बाण निराकरण कर नागबाणकर ताहि बेढा सो कुम्भकरण भी नागोंका बेढा थका धरती पर पडा।

यह कथा गौतमगणधर राजा श्रेणिकतें कहे हैं—हे श्रेणिक ! बडा आश्चर्य है ते नागबाण धनुषके लगे उल्कापात स्वरूप होय जाय हैं अर शत्रुवोंके शरीरके लग नागरूप होय उसको बेढे हैं यह दिव्य शस्त्र देवोपनीत हैं मन बांछित रूप करे हैं एक क्षणमें बाण एक क्षणमें दण्ड क्षण एकमें पाशरूप होय परणवे हैं जैसे कर्म पाशकर जीव बंधे तैसे नागपाशकर कुम्भकरण बंधा सो रामकी आज्ञा पाय भामण्डलने अपने रथमें राखा, कुम्भकरणको रामने भामण्डलके हवाले किया अर इन्द्रजीतको लक्ष्मणने पकडा सो विराधितके हवाले किया सो विराधितने अपने रथमें राखा खेद खिन्न है शरीर जाका ता समय युद्धमें रावण विभीषणको कहता भया जो यदि तू आपको योधा माने है तो एक मेरा घाव सह, जाकर रणकी खाज बुझे। यह रावणने कही। कैसा है विभीषण ? क्रोधकर रावणके सन्मुख है अर विकराल करी है रणक्रीडा जाने, रावणने कोपकर विभीषणपर त्रिशूल चलाया कैसा है त्रिशूल प्रज्वलित अग्निके स्फुलिंगोंकर प्रकाश किया है आकाशमें जाने, सो त्रिशूल लक्ष्मणने विभीषण तक आवने न दिया, अपने बाणकर बीचही भस्म किया। तब रावण अपने त्रिशूलको भस्मकिया देख अति क्रोधायमान भया अर नागेन्द्रकी दई शक्ति महादारुण सो ग्रही अर आगे देखे तो इन्दीवर कहिये नीलकमल ता समान श्याम सुन्दर महा देदीप्यमान पुरुषोत्तम गरुडध्वज लक्ष्मण खडे हैं तब काली घटा समान गम्भीर उदार है शब्द जाका ऐसा दशमुख सो लक्ष्मणको ऊंचे स्वरकर कहता भया मानो ताडना ही करे है तेरा बल कहां ? जो मृत्युके कारण मेरे शस्त्र तू झेलै, तू औरनिकी तरह मोहि मत जाने हे दुर्बुद्धि लक्ष्मण ! जो तू मूवा चाहे है तो मेरा यह शस्त्र झेल, तब लक्ष्मण यद्यपि चिरकाल संग्राम कर अति खेदाखिन्न भया है

तथापि विभीषणको पीछेकर आप आगे होय रावणकी तरफ दौडे तब रावणने महा क्रोध करि लक्ष्मण पर शक्ति चलाई। कैसी है शक्ति? निकसे हैं तारावोंके आकार स्फुलिंगनिके समूह जाविषै सो लक्ष्मण का वक्षस्थल महा पर्वतके तट समान ता शक्ति कर विदारा गया कैसी है शक्ति? महा दिव्य अति देदीप्यमान अमोघक्षेपा कहिए वृथा नाहीं है लगना जाका, सो शक्ति लक्ष्मणके अंगसों लग कैसी सोहती भई मानो प्रेमकी भरी बधू ही है। सो लक्ष्मण शक्तिके प्रहार कर पराधीन भया है शरीर जाका सो भूमि पर पडा जैसे वज्रका मारा पहाड परै सो ताहि भूमि पर पडा देख श्रीराम कमललोचन शोकको दबाय शत्रुके घात करिवे निमित्त उद्यमी भए, सिंहोंके रथ चढे क्रोधके भरे शत्रुको तत्कालही रथरहित किया तब रावण और रथ चढा तब रामने रावणका धनुष तोडा बहुरि रावण दूजा धनुष लिया तितने रामने रावणका दूजा रथ भी तोडा सो रामके वाणनिकर विह्वल हुआ रावण धनुषवाण लेयवे असमर्थ भया तीव्र वाणनिकर राम रावणका रथ तोड डारें वह बहुरि रथ चढे सो अत्यन्त खेदखिन्न भया छेदा है धनुष वक्तर जाका सो छहबार रामने रथरहित किया तथापि रावण अद्भुतपराक्रमका धारी राम कर हता न गया तब राम आश्चर्य्य पाय रावणसे कहते भए तू अल्पआयु नाहीं, कोईयक दिन आयु बाकी है तातैं मेरे बाणनिकर न मूवा मेरी भुजाकर चलाए बाण महातीक्ष्ण तिनकर पहाड भी भिदजाय मनुष्यकी तो कहा बात? तथापि आयुकर्मने तोकूं बचाया अब मैं तोहि कहूं सो सुन—हे विद्याधरोंके अधिपति! मेरा भाई संग्राममें शक्ति कर तैंने हना सो याकी मृत्यु क्रियाकर मैं तोसे प्रभात ही युद्ध करूंगा, तब रावणने कही ऐसे ही करो, यह कह रावण इंद्रतुल्य पराक्रमी लंकामें गया। कैसा है रावण? प्रार्थना भंग करिवेको असमर्थ है। रावण मनमें विचारे है इन दोनों भाइयोंमें एक यह मेरा शत्रु अति प्रबल था सो तो मैं हत्या यह विचार कछुइक हर्षित होय महिलविषै गया, केयक जो योधा

युद्धसे जीवते आए तिनको देख हर्षित भया। कैसा है रावण ? भाइनिमें है वात्सल्य जाके, बहुरि सुनी इन्द्रजीत मेघनाद पकडे गए अर भाई कुम्भकर्ण पकडा गया सो या वृत्तांत कर रावण अति खेदखिन्न भया। तिनके जीवनेकी आशा नाहीं। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे भव्योत्तम ! अनेक रूप अपने उपार्जे कर्मोंके कारणसे जीवनिके नानाप्रकारकी साता असाता होय है, देख ! या जगत्‌विषै नानाप्रकारके कर्म तिनके उदयकर जीवनिके नानाप्रकारके शुभाशुभ होय हैं अर नानाप्रकारके फल होय हैं, कैयक तो कर्मके उदयकर रणविषै नाशको प्राप्त होय हैं अर कैयक वैरियोंको जीत अपने स्थानकको प्राप्त होय हैं अर काहूकी विस्तीर्ण शक्ति विफल होय जाय है अर बंधनको पावे हैं सो जैसे सूर्य पदार्थोंके प्रकाशनेमें प्रवीण है तैसे कर्म जीवनिको नानाप्रकारके फल देनेमें प्रवीण है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके रावणके हाथकी शक्तिका लगना अर भूमिविषै अचेत होय पडना वर्णन करनेवाला बासठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६२ ॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मणके शोकसे व्याकुल भए जहां लक्ष्मण पडा हुता तहां आय पृथिवी मंडलका मंडन जो भाई ताहि चेष्टारहित शक्तिसे आलिंगित देख मूर्छित होय पडे. बहुरि घनी बेरमें सचेत होयकर महाशोकसे संयुक्त दुःखरूप अग्निसे प्रज्वलित अत्यन्त विलाप करते भए—हा वत्स ! कर्मके योग कर तेरी यह दारुण अवस्था भई आप दुर्लंघ्य समुद्र तर यहां आए, तू मेरी भक्तिमें सदा सावधान मेरे कार्य निमित्त सदा उद्यमी शीघ्र ही मेरेसे वचनालाप कर कहा मौन धरे तिष्ठे है ? तू न जाने मैं तेरे वियोगको एक क्षणमात्र भी सहिवे सक्त नाहीं, उठ, मेरे उरसे लग, तेरा विनय कहां गया तेरे

भुज गजके सूंड समान दीर्घ भुजबन्धनानिकर शोभित सो ये क्रियारहित प्रयोजनरहित होय गए भाव
मात्र ही रहगए अर तू माता पिताने मोहि धरोहर सौंपा हुता सो अब मैं महानिर्लज्ज तिनको कहा उत्तर
दूंगा अत्यन्त प्रेमके भरे अति अभिलाषी राम, हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण ऐसा जगत्में हितु तो समान
नाहीं या भान्तिके वचन कहते भए, लोक समस्त देखे हैं अर महादीन भए भाईसों कहे हैं, तू सुभट-
निमें रत्न है तो विना मैं कैसे जीऊंगा मैं अपना जीतव्य पुरुषार्थ तेरे विना विफल मानूं हूं, पापोंके उदयका
चरित्र मैंने प्रत्यक्ष देखा मोहि तेरे विना सीता कर कहा अर अन्य पदार्थनिकर कहा ? जा सीताके नि-
मित्त तेरे सारिखे भाईको निर्दय शक्तिकर पृथिवीपर पडा देखू हूं सो तो समान भाई कहां ? काम अर्थ
पुरुषोंको सब सुलभ है अर और २ संबंधी पृथिवीपर जहां जाईये वहां सब मिलें परन्तु माता पिता अर
भाई न मिलें। हे सुग्रीव ! तैंने अपना मित्रपणा मुझे अति दिखाया अब तुम अपने स्थानक जावो अर
हे भामण्डल ! तुम भी जावो अब मैं सीताकी भी आशा तजी अर जीवनेकी भी आशा तजी, अब मैं
भाईके साथ निसंदेह अग्निमें प्रवेश करूंगा। हे विभीषण ! मोहि सीताका भी सोच नहीं अर भाईका
सोच नाहीं परन्तु तिहारा उपकार हमसे कछु न बना सो यह मेरे मनमें महाबाधा है। जे उत्तमपुरुष हैं
ते पहिले ही उपकार करें अर जे मध्यम पुरुष हैं ते उपकार पीछे उपकार करें अर जो पीछे भी न करें वे
अधम पुरुष हैं सो तुम उत्तम पुरुष हो हमारा प्रथम उपकार किया ऐसे भाईसे विरोधकर हम पै आए अर
हमसे तिहारा कछु उपकार न बना तातैं मैं अतिआतापरूप हूं। हो भामंडल सुग्रीव चिता रचो मैं भाई
के साथ अग्निमें प्रवेश करूंगा, तुम जो योग्य होय सो करियो यह कहकर लक्ष्मणको राम स्पर्शने लगे
तब जाबूनन्द महा बुद्धिमान मने करता भया—हे देव ! यह दिव्यास्त्रसे मूर्छित भया है तिहारा भाई सो

स्पर्श मत करो। यह अच्छा होजायगा ऐसे होय है तुम धीरताको धरो, कायरता तजो, आपदामें उपाय
ही कार्यकारी है। यह विलाप उपाय नाहीं, तुम सुभट जन हो तुमको विलाप उचित नाहीं, यह विलाप
करना क्षुद्र लोगोंका काम है तातैं अपना चित्त धीर करो कोई एक उपाय अब ही बनै है यह तिहारा
भाई नारायण है सो अवश्य जीवेगा। अबार याकी मृत्यु नाहीं यह कह सब विद्याधर विषादी भए अर
लक्ष्मणके अंगसे शक्ति निकसनेका उपाय अपने मनमें सब ही चिंतवते भए। यह दिव्य शक्ति है याहि
औषधकर कोऊ निवारबे समर्थ नाहीं अर कदापि सूर्य उगा तो लक्ष्मणका जीवना कठिन है यह विद्या-
धर बारम्बार विचारते हुए उपजी है चिन्ता जिनके सो कमरबंध आदिक सब दूर कर आध निमिषमें
धरती शुद्धकर कपडेके डेरे खडे किए अर कटककी सात चौकी मेलीं सो बडे २ योधा बक्तर पहिरे धनुष
बाण धारे बहुत सावधानीसे चौकी बैठे, प्रथम चौकी नील बैठे धनुषबाण हाथमें धरे हैं अर दूजी चौकी
नल बैठे गदा करमें लिए अर तीजी चौकी विभीषण बैठे महा उदारमन त्रिशूल थांभे अर कल्पवृक्षोंकी
माला रत्नोंके आभूषण पहरे ईशानइन्द्र समान अर चौथी चौकी तरकश बांधे कुमुद बैठे महा साहस
धरे, पांचवी चौकी बरछी संभारे सुषेण बैठे महा प्रतापी अर छठी चौकी महा दृढ भुज आप सुग्रीव इंद्र
सारिखा शोभायमान भिंडिपाल लिए बैठे, सातवी चौकी महा शस्त्रका निकन्दक तरवार सम्हाले आप
भामंडल बैठा, पूर्वके द्वार अष्टापदकी ध्वजा जाके ऐसा सोहता भया मनों महाबली अष्टापद ही है अर
पश्चिमके द्वार जाम्बुकुमार विराजता भया अर उत्तरके द्वार मंत्रियोंके समूह सहित बालीका पुत्र महा
बलबान चन्द्रमरीच बैठा या भांति विद्याधर चौकी बैठे सो कैसे सोहते भए जैसे आकाशमें नक्षत्रमण्डल
भासें अर वानरवंशी महाभट वे सब दक्षिण दिशाकी तरफ चौकी बैठे या भांति चौकीका यत्नकर वि-
द्याधर तिष्ठे, लक्ष्मणके जीनेमें संदेह जिनके, प्रबल है शोक जिनका, जीवोंके कर्मरूप सूर्यके उदयकर

फलका प्रकाश होय है ताहि न मनुष्य न देव न नाग न असुर कोईभी निवारवे समर्थ नाहीं यह जीव अपना उपार्जा कर्म आपही भोगवे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लक्ष्मणके शक्ति लगना अर रामका विलाप वर्णन करनेवाला त्रेसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६३ ॥

अथानन्तर रावण लक्ष्मणका निश्चयसे मरण जान अर अपने भाई दोऊ पुत्रानिकों बुद्धिमें मरण रूप ही जान अत्यन्त दुःखी भया। रावण विलाप करै है— हाय भाई कुम्भकरण परम उदार अत्यंत हितु कहा ऐसी बन्धन अवस्थाको प्राप्त भया, हाय इंद्रजीत मेघनाद महा पराक्रमके धारी हो, मेरी भुजा समान दृढ कर्मके योगकर बंधको प्राप्त भए, ऐसी अवस्था अबतक न भई, मैं शत्रुका भाई हना है सो न जानिए शत्रु व्याकुल भया कहा करै तुम सारिखे उत्तम पुरुष मेरे प्राण वल्लभ दुःख अवस्थाको प्राप्त भए या समान मोकों अति कष्ट कहा ऐसे रावण गोप्य भाई अर पुत्रानिका शोक करता भया अर जानकी लक्ष्मणके शक्ति लगी सुन अति रुदन करती भई—हाय लक्ष्मण ! विनयवान गुणभूषण ! तू मो मन्दभागिनीके निमित्त ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया, मैं तोहि ऐसी अवस्थाविषै हू देखा चाहूं हूं सो दैवयोगसे देखने नहीं पाऊं हूं तो सारिखे योधाको पापी शत्रुने हना सो कहा मेरे मरणका संदेह न कियां, तो समान पुरुष या संसारमें और नाहीं जो बडे भाईकी सेवामें आसक्त है चित्त जाका समस्त कुटुम्बको तज भाईके साथ निकसा अर समुद्र तिर यहां आया ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया तोहि मैं कब देखूं। कैसा है तू बालक्रीडामें प्रवीण अर महा विनयवान महा मिष्टवाक्य वा अद्भुतकार्यका करणहारा ऐसा दिन कब होयगा जो तुझे मैं देखूं सर्व देव सर्वथा प्रकार तेरी सहाय करहु हे सर्वलोकके मनके हरणहारे तू

शक्तिकी शल्यसे रहित होय। या भांति महा कष्टतें शोकरूप जानकी विलाप करे । ताहि भावानिकर अति प्रीतिरूप जे विद्याधरी तिनने धीर्य बंधाय शांतचित्त करी—हे देवि ! तेरे देवरका अबतक मरनेका निश्चय नाहीं तातें तू रुदन मत कर अर महा धीर सामन्तोंकी यही गति है अर या पृथिवीविषे उपाय भी नाना प्रकारके हैं ऐसे विद्याधारियोंके वचन सुन सीता किंचित् निराकुल भई। अब गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतें कहे हैं हे राजन् ! अब जो लक्ष्मणका वृत्तान्त भया सो सुन एक योधा सुन्दर है मूर्ति जाकी सो डेरोंके द्वार पर प्रवेश करता भामण्डलने देखा अर पूछा कि तू कौन अर कहां से आया अर कौन अर्थ यहां प्रवेश करे है यहां ही रह आगे मत जावो । तब वह कहता भया मोहि महीने ऊपर कई दिन गए हैं मेरे अभिलाषा रामके दर्शनकी है सो रामका दर्शन करूंगा अर जो तुम लक्ष्मणके जीवनेकी बांछा करो हो तो मैं जीवनेका उपाय कहूंगा जब वाने ऐसा कहा तब भामंडल अति प्रसन्न होय द्वार आप समान अन्य सुभट मेल ताहि लार लेय श्रीरामपै आया सो विद्याधर श्रीरामसे नमस्कारकर कहता भया—हे देव ! तुम खेद मत करो लक्ष्मण कुमार निश्चय सेती जीवेगा देवगतिनामा नगर तहां राजा शशिमण्डल राणी सुप्रभा तिनका पुत्र मैं चंद्रप्रीतम सो एक दिन आकाशविषे विचरता हुता सो राजा वेलाध्यक्षका पुत्र सहस्रविजय सो वासे मेरा यह वैर कि मैं वाकी मांग परणी सो वह मेरा शत्रु ताके अर मेरे महा युद्ध भया सो ताने चण्डरवा नाम शक्ति मेरे लगाई सो मैं आकाशसे अयोध्याके महेन्द्रनामा उद्यानमें पडा सो मोहि पडता देख अयोध्याके धनी राजा भरत आय ठाढे भए, शक्तिसे विदारा मेरा वक्षस्थल देख वे महा दयावान उत्तम पुरुष जीवदाता मुझे चन्दनके जलकर छांटा सो शक्ति निकस गई मेरा जैसा रूप हुता वैसा होय गया अर कुछ अधिक भया वा नरेंद्र भरतने मोहि नवा जन्म दिया जाकर तिहारा दर्शन भया।

यह वचन सुन श्रीरामचन्द्र पूछते भए कि वा गन्धोदककी उत्पत्ति तू जाने है तब ताने कहा हे देव ! जानू हूं, तुम सुनों । मैं राजा भरतको पूछी अर ताने मोहि कही जो यह हमारा समस्त देश रोगानिकर पीडित भया सो काहू इलाजसे अच्छा न होय, पृथिवीविषै कौन कौन रोग उपजे सो सुनो— उरोघात महा दाहज्वर लालपरिश्रम सर्वशूल अर छिरदसोई फोरे इत्यादि अनेक रोग सर्वदेशके प्राणियोंको भए, मानों क्रोधकर रोगनिकी धाड ही देशविषै आई अर राजा द्रोणमेघ प्रजासहित नीरोग तब मैं ताको बुलाया अर कही—हे माम ! तुम जैसे नीरोग हो तैसा शीघ्र मोहि अर मेरी प्रजाको करो । तब राजा द्रोणमेघने जाकी सुगन्धतासे दशोंदिशा सुगन्ध होय ता जलकर मोहि सींचा सो मैं चंगा भया अर ता जलकर मेरा राजलोक भी चंगा अर नगर तथा देश चंगा भया, सर्वरोग निवृत्त भए सो हजारो रोगोंकी करणहारी अत्यन्त दुस्सह वायु मर्मकी भेदनहारी ता जलसे जाती रही तब मैंने द्रोणमेघको पूछा यह जल कहांका है जाकर सर्वरोगका विनाश होय तब द्रोणमेघने कही—हे राजन् ! मेरे विशिल्यानामा पुत्री सर्वविद्याविषै प्रवीण महागुणवती सो जब गर्भविषै आई तब मेरे देशविषै अनेक व्याधि हुतीं सो पुत्रीके गर्भविषै आवते ही सर्व रोग गए, पुत्री जिनशासनविषै प्रवीण है भगवान्की पूजाविषैं तत्पर है सर्व कुटुम्बकी पूजनीक है ताके स्नानका यह जल है ताके शरीरकी सुगन्धतासे जल महासुगंध है, क्षणमात्रविषै सर्व रोगका विनाश करे है । ये वचन द्रोणमेघके सुनकर मैं अचिरजको प्राप्त भया ताके नगरविषै जाय ताकी पुत्रीकी स्तुति करी, अर नगरीसे निकस सत्वहित नामा मुनिको प्रणामकर पूछा हे प्रभो ! द्रोणमेघकी पुत्री विशल्याका चरित्र कहो तब चार ज्ञानके धारक मुनि महावात्सल्यके धरणहारे कहते भए—हे भरत ! महाविदेहक्षेत्रविषै स्वर्ग समान पुंडरीक देश तहां त्रिभुवनानन्द नामा नगर तहां चक्रधर नाम चक्रवर्ती राजा राज्य करै ताके पुत्री अनंगशरा गुण ही हैं आभूषण जाके, स्त्रीनिविषै

ता समान अद्भुत रूप औरका नाहीं सो एक प्रतिष्ठितपुरका धनी राजा पुनर्वसु विद्याधर चक्रवर्तीका
सामन्त सो कन्याको देख कामबाणकर पीडित होय विमानमें बैठाय लेय गया सो चक्रवर्तीने क्रोधाय-
मान होय किंकर भेजे सो तासूं युद्ध करते भए ताका विमान चूर डारा तब ताने व्याकुल होय कन्या
आकाशतें डारी सो शरदके चन्द्रमाकी ज्योति समान पुनर्वसुकी पर्ण लघुविद्याकर अटवीविषै आय
पडी सो अटवी दुष्ट जीवनिकर महा भयानक जाका नाम श्वापद रौरव जहां विद्याधरोंका भी प्रवेश
नाहीं, वृक्षनिके समूहकर महा अंधकाररूप नाना प्राकारकी बेलनिकर बेढे नाना प्रकारके ऊंचे वृक्षनिकी
सघनतासे जहां सूर्यकी किरणका भी प्रवेश नाहीं अर चीता व्याघ्र सिंह अष्टापद गैंडा रीछ इत्यादि
अनेक वनचर विचरैं अर नीची ऊंची विषमभूमि जहां बडे २ गर्त (गढे) सो यह चक्रवर्तीकी कन्या अनंग
सरा बालक अकेली ता बनमें महाभयकर युक्त अति खेदखिन्न होती भई नदीके तीर जाय दिशा अ-
वलोकनकर माता पिताको चितार रुदन करती भई—हाय! मैं चक्रवर्तीकी पुत्री मेरा पिता इन्द्रसमान ताके
मैं अति लाडली दैवयोगकर या अवस्थाको प्राप्त भई अब कहा करूं? या बनका छोर नाहीं यह वन
देखे दुःख उपजे, हाय पिता महापराक्रमी सकल लोक प्रसिद्ध, मैं या बनमें असहाय पडी मेरी दया
कौन करे, हाय माता ऐसे महा दुःखकर मोहि गर्भमें राखी अब काहेसे मेरी दया न करो हाय मेरे परि-
वारके उत्तम मनुष्य हो! एक क्षणमात्र मोहि न छोडते सो अब क्यों तज दीनी अर मैं होती ही क्यों न
मरगई, काहेसे दुःखकी भूमिका भई, चाही मृत्यु भी न मिले, कहा करूं कहां जाऊं मैं पापिनी कैसे तिष्ठूं
यह स्वप्न है कि साक्षात् है। या भांति चिरकाल विलापकर महा विह्वल भई ऐसे विलाप किए जिनको
सुन महा दुष्ट पशुका भी चित्त कोमल होय। यह दीनचित्त क्षुधा तृषासे दग्ध शोकके सागरमें मग्न फल
पत्रादिकसे कीनी है आजीविका जाने, कर्मके योग ता बनमें कई शीतकाल पूर्ण किए। कैसे हैं शीत-

काल ? कमलनिके वनकी शोभाका जो सर्वस्व ताके हरणहारे अर जिनने अनेक ग्रीष्मके आताप सहे, कैसे हैं ग्रीष्म आतप ? सूके हैं जलोंके समूह अर जले हैं दावानलोंसे अनेक वन वृक्ष अर जरे हैं मरे हैं अनेक जन्तु जहां अर जाने ता वनमें वर्षाकाल भी बहुत व्यतीत किए ता समय जलधाराके अन्धकारकर दब गई है सूर्यकी ज्योति अर ताका शरीर वर्षाका धोया चित्रामके समान होय गया, कांतिरहित दुर्बल विखरे केश मलयुक्त शरीर लावण्यरहित ऐसा होय गया जैसे सूर्यके प्रकाशकर चन्द्रमाकी कलाका प्रकाश क्षीण होय जाय, कैथका बन फलनिकर नम्रीभूत वहां बैठी, पिताको चितार या भांतिके वचन कहकर रुदन करे कि मैं जो चक्रवर्तीके तो जन्म पाया अर पूर्व जन्मके पापकर बनमें ऐसी दुःख अवस्थाको प्राप्त भई । या भांति आंसुवोंकी वर्षा कर चातुर्मासिक किया अर जे वृक्षोंसे टूटे फल सूक जांय तिनका भक्षण करे अर बेला तेला आदि अनेक उपवासनिकर क्षीण होय गया है शरीर जाका सो केवल फल अर जलकर पारणा करती भई, अर एक ही वार जल ताही समय फल । यह चक्रवर्तीकी पुत्री पुष्पनिकी सेजपर सोवती अर अपने केश भी जाको चुभते सो विषम भूमिपर खेदसहित शयन करती भई अर पिताके अनेक गुणीजन राग करते तिनके शब्द सुन प्रबोधको पावती सो अब स्याल आदि अनेक बनचरोंके भयानक शब्दसे रात्रि व्यतीत करती भई । या भांति तीन हजार वर्ष तप किया सूके फल तथा सूके पत्र अर पवित्र जल आहार किये अर महावैराग्यको प्राप्त होय खान पानका त्यागकर धीरता धर संलेषणा मरण आरम्भा एक सौ हाथ भूमि पावोंसे पैर न जाऊं यह नियम धार तिष्ठी, आयुमें छह दिन बाकी हुते अर एक अरहदास नामा विद्याधर सुमेरुकी बन्दना करके जावे था सो आय निकसा सो चक्रवर्तीकी पुत्रीको देख पिताके स्थानक लेजाना विचारा संलेषणाके योगकर कन्याने मने किया ।

तब अरहदास शीघ्रही चक्रवर्ती पर जाय चक्रवर्तीको लेय कन्या पै आया सो जा समय चक्रवर्ती आया ता समय एक सर्प कन्याको भखे था सो कन्याने पिताको देख अजगरको अभयदान दिवाया अर आप समाधि धारण कर शरीर तज तीजे स्वर्ग गई पिता पुत्रीकी यह अवस्था देखकर बाईस हजार पुत्रनि सहित वैराग्यको प्राप्त होय मुनि भया कन्याने अजगरसे क्षमाकर अजगरको पीडा न होने दई सो ऐसी दृढता ताहीसूं बनै अर वह पुनर्वसु विद्याधर अनंगसराको देखता भया सो न पाई तब खेदखिन्न होय द्रुमसेन मुनिके निकट मुनि होयँ महातप किया सो स्वर्गमें देव होय महासुन्दर लक्ष्मण भया, अर वह अनंगसरा चक्रवर्तीकी पुत्री स्वर्गलोकतें चयकर द्रोणमेघके विशल्या भई अर पुनर्वसुने ताके निमित्त निदान किया हुता, सो अब लक्ष्मण याहि बरेगा यह विशल्या या नगरविषै या देशविषै तथा भरतक्षेत्रमें महा गुणवन्ती है पूर्व-भवके तपके प्रभावकर महा पवित्र है ताके स्नानका यह जल है सो सकल विकारको हरै है याने उपसर्ग सहा महा तप किया ताका फल है याके स्नानके जलकर जो तेरे देशमें वायु विषम विकार उपजा हुता सो नाश भया । ये मुनिके वचन सुन भरतने मुनिसे पूछी हे प्रभो ! मेरे देशमें सर्वलोकोंको रोगविकार कौन कारणसे उपजा तब मुनिने कहा गजपुर नगरतें एक व्यापारी महा धनवन्त विन्ध्यनामा सो रास-भ (गधा) ऊंट भैंसा लादे अयोध्यामें आया अर ग्यारह महीना अयोध्यामें रहा ताके एक भैंसा सो बहुत बोझके लगनेसे घायल हुआ, तीव्र रोगके भारसे पीडित या नगरमें मूवा सो अकामनिर्जराके योगकर अश्वकेतु नामा वायुकुमार देव भया जाका विद्यावर्त नाम, सो अवधिज्ञानसे पूर्वभवको चितारा कि पूर्व भव विषै मैं भैंसा था पीठ कट रही हुती अर महा रोगों कर पीडित मार्ग विषै कीच में पडा हुता सो लोक मेरे सिरपर पांव देय देय गए । यह लोक महानिर्दई अब मैं देव भया सो मैं इनका निग्रह न करूं तो मैं देव काहेका ? ऐसा विचार अयोध्या नगरविषै अर सुकौशल देशमें वायु रोग विस्तारा सो सम-

स्त रोग विशल्याके चरणोदकके प्रभाव से विलय गया बलवानसे अधिक बलवान है सो यह पूर्णकथा मुनिने भरतसे कही अर भरतने मोसे कही सो मैं समस्त तुमको कही विशल्याका स्नान जल शीघ्र ही मंगावो लक्ष्मणके जीवनेका अन्य यत्न नाहीं। या भांति विद्याधरने श्रीरामसे कहा सो सुनके प्रसन्न भए। गौतमस्वामी कहे हैं कि हे श्रेणिक ! जे पुण्याधिकारी हैं तिनको पुण्यके उदयकरि अनेक उपाय मिलै हैं। अहो महंतजन हो, तिन्हें आपदाविषै अनेक उपाय सिद्ध होय हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै विशल्याका पूर्वभव वर्णन करनेवाला चौसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६४ ॥

अथानन्तर ये विद्याधरके वचन सुनकर रामने समस्त विद्याधरनि सहित ताकी अति प्रशंसा करी अर हनूमान भामंडल तथा अंगद इनको मंत्रकर अयोध्याकी तरफ विदा किए। ये क्षणमात्रमें गए जहां महाप्रतापी भरत विराजे हैं सो भरत शयन करते हुते तिनको रागकर जगावनेका उद्यम किया सो भरत जागते भए तब ये मिले सीताका हरण रावणसे युद्ध अर लक्ष्मणके शक्तिका लगना ये समाचार सुन भरतको शोक अर क्रोध उपजा अर ताही समय युद्धकी भेरी दिवाई सो संपूर्ण अयोध्याके लोग व्याकुल भए अर विचार करते भए यह राजमंदिरमें कहा कलकलाट शब्द है ? आधरातके समय कहा अति-वीर्यका पुत्र आय पडा ? कोईयक सुभट अपनी स्त्रीसहित सोता हुता ताहि तजकर वक्तर पहिरे अर खड्ग हाथमें समारा अर कोइक मृगनैनी भोरे बालकको गोदमें लेय अर कुचोंपर हाथ धर दिशाव-लोकन करती भई अर कोई एक स्त्री निद्रारहित भई सोते कंथको जगावती भई अर कोई एक भरत-जीका सेवक जानकर अपनी स्त्रीको कहता भया—हे प्रिये ! कहां सोवे है ? आज अयोध्यामें कछु भला

नाहीं राजमन्दिरमें प्रकाश होरहा है अर रथ, हाथी, घोडे, प्यादे, राजद्वारकी तरफ जाय हैं जो सयाने
मनुष्य हुते ते सब सावधान होय उठ खडे हुये अर कईएक पुरुष स्त्रीसे कहते भए ये सुवर्ण कलश अर
माणि रत्नोंके पिटारे तहखानोंमें अर सुन्दर वस्त्रोंकी पेटी भूमिग्रह में धरो और भी द्रव्य ठिकाने धरो
अर शत्रुघन भाई निद्रा तज हाथी चढ मंत्रियोंसहित शस्त्रधारक योधावों को लेय राजद्वार आया और
भी अनेक राजा राजद्वार आए सो भरत सबको युद्धका आदेश देय उद्यमी भया तब भामण्डल हनूमान
अंगद भरतको नमस्कार कर कहते भये—हे देव ! लंकापुरी यहांसे दूर है अर बीच समुद्र है तब भरतने कही
कहा करना ? तब उन्होंने विशल्याका वृत्तान्त कहा—हे प्रभो ! राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या ताके
स्नानका उदक देवो शीघ्रही कृपा करो जो हम लेजांय सूर्यका उदय भए लक्ष्मणका जीवना कठिन है
तब भरतने कही ताके स्नानका जल क्या वाही लेजावो । मोहि मुनिने कही हुती यह विशल्या लक्ष्म-
णकी स्त्री होयगी तब द्रोणमेघके निकट एक निज मनुष्य ताही समय पठाया सो द्रोणमेघने लक्ष्मणके
शक्ति लगी सुन अति कोप किया अर युद्धको उद्यमी भया अर ताके पुत्र मंत्रिनि सहित युद्धको उद्यमी
भए तब भरत अर माता केकईने आप द्रोणमेघको जायकर ताको समझाय विशल्याको पठावना ठहराया
तब भामण्डल हनूमान अंगद विशल्याको विमानमें वैठाय एक हजार अधिक राजाकी कन्या सहित लेय
रामकटकमें आए, एक क्षणमात्रमें संग्राम भूमि आय पहुंचे विमानसे कन्या उतरी ऊपर चमर दुरे हैं कन्याके
कमल सारिखे नेत्र सो हाथी, घोडे, बडे बडे योधानिको देखती भई ज्यों ज्यों विशल्या कटकमें प्रवेश
करै त्यों त्यों लक्ष्मणके शरीरमें साता होती भई, वह शक्ति देवरूपिणी लक्ष्मणके अंगसे निकसी ज्यो-
तिके समूहसे युक्त मानो दुष्ट स्त्री घरसे निकसी, देदीप्यमान अग्निके स्फुलिंगोंके समूह आकाशमें उछ-
लते सो वह शक्ति हनूमानने पकडी दिव्य स्त्रीका रूपधर तब हनूमानको हाथ जोड कहती भई—हे नाथ !

प्रसन्न होवो मोहि छांडो मेरा अपराध नाहीं हमारी यही रीति है कि हमको जो साधे हम ताके वशीभूत हैं मैं अमोघविजिया नामा शक्ति विद्या तीन लोकविषै प्रसिद्ध हूं सो कैलाशपर्वतविषै बालमुनि प्रतिमा जोग धरि तिष्ठे हुते अर रावणने भगवान्के चैत्यालयमें गान किया अर अपने हाथानिकी नस बजाई अर जिनेंद्रके चरित्र गाए, तब धरणेंद्रका आसन कंपायमान भया सो धरणेंद्र परम हर्ष धर आए रावणसों अतिप्रसन्न होय मोहि सोंपी रावण याचनाविषै कायर मोहि न इच्छे तब धरणेन्द्रने हठकर दई सो मैं महा विकरालस्वरूप जाके लागूं ताके प्राण हरूं, कोई मोहि निवारवे समर्थ नाहीं एक या विशल्या सुंदरीको टार, मैं देवोंकी जीतनहारी सो मैं याके दर्शनहीतें भाग जाऊं, याके प्रभावकर मैं शक्तिरहित भई, तपका ऐसा प्रभाव है जो चाहे तो सूर्यको शीतल करे अर चन्द्रमाको उष्ण करे याने पूर्व जन्मविषै अति उग्र तप किए मिझनाके फूल समान याका सुकुमार शरीर सो याने तपविषै लगाया ऐसा उग्र तप किया जो मुनिहूतें न बनै, मेरे मनमें संसारविषै यही सार भासै है जो ऐसे तप प्राणी करें वर्षा शीतल आताप अर महा दुस्सह पवन तिनसे यह सुमेरुकी चूलिका समान न कांपी, धन्य रूप याका धन्य याका साहस, धन्य याका धर्मविषै दृढमन, याकासा तप और स्त्रीजन करने समर्थ नाहीं, सर्वथा जिनेंद्रचन्द्रके मतके अनुसार जे तपको धारण करे हैं ते तीनलोकको जीते हैं अथवा या बातका कहा आश्चर्य जो तपकर मोक्ष पाइये ताकर और कहा कठिन ? मैं पराए आधीन जो मोहि चलावै ताके शत्रुका मैं नाश करूं, सो याने मोहि जीती अब मैं अपने स्थानक जाऊं हूं सो तुम तो मेरा अपराध क्षमा करहु।

या भांति शक्तीदेवीने कहा तब तत्त्वका जाननहारा हनूमान ताहि विदाकर अपनी सेनामें आया अर द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या अति लज्जाकी भरी रामके चरणारविन्दको नमस्कारकर हाथ जोड ठाढी भई विद्याधर लोक प्रशंसा करते भए अर नमस्कार करते भए अर आशीर्वाद देते भए जैसे इंद्र

के समीप शची जाय तिष्ठे तैसे वह विशल्या सुलक्षणा महा भाग्यवती सखियोंके वचनसे लक्ष्मणके समीप तिष्ठी वह नव यौवन जाके मृगीकैसे नेत्र, पूर्णमासीके चन्द्रमा समान मुख जाका अर महा अनुरागकी भरी उदारमन पृथिवी विषै सुखसे सूते जो लक्ष्मण तिनको एकांतविषै स्पर्श कर अर अपने सुकुमार करकमल सुन्दर तिनकर पतिके पांव पलोटने लगी अर मलयागिरि चन्दनसे पतिका सर्व अंग लिप्त किया अर याकी लार हजार कन्या आई थीं तिनने याके करसे चन्दन लेय विद्याधरानिके शरीर छांटे सो सब घायल आछे भए अर इंद्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद घायल भए हुते सो उनको हू चन्दनके लेपसे नीके किये सो परम आनन्दको प्राप्त भए जैसे कर्मरोगरहित सिद्धपरमेष्ठी परम आनन्दको पावें अर भी जे योधा घायल भए हुते हाथी घोडे पियादे सो सब नीके भए घावोंकी शल्य जाती रही सब कटक अच्छा भया अर लक्ष्मण जैसे सूता जागे तैसे वीणके नाद सुन अति प्रसन्न भए अर लक्ष्मण मोहशय्या छोडते भए स्वांस लिए आंख उघडी उठकर क्रोधके भरे दशों दिशा निरखि ऐसे वचन कहते भए कहां गया रावण कहां गया वो रावण ? ये वचन सुन राम अति हर्षित भए, फूल गए हैं नेत्र कमल जिनके महा आनन्दके भरे बडे भाई रोमांच होय गया है शरीरमें जिनके अर अपनी भुजानिकर भाईसे मिलते भए अर कहते भए हे भाई ! वह पापी तोहि शक्तिसे अचेत कर आपको कृतार्थ मान घर गया अर या राज-कन्याके प्रसादतें तू नीका भया अर जामवन्तको आदि देय सब विद्याधरानिने शक्तिके लागवे आदि नि-कसवे पर्यन्त सव वृत्तान्त कहा अर लक्ष्मणने विशल्या अनुरागकी दृष्टिकर देखी । कैसी है विशल्या ? श्वेत श्याम आरक्त तीन वर्ण कमल तिन समान हैं नेत्र जाके अर शरदकी पूर्णिमाके चन्द्रमा समान है मुख जाका अर कोमल शरीर क्षीण कटि दिग्गजके कुम्भस्थल समान स्तन हैं जाके नव यौवन मानों साक्षात् मूर्तिवन्ती कामकी क्रीडा ही है मानों तीन लोककी शोभा एकत्रकर नामकर्मने याहि रचा है

ताहि लक्ष्मण देख आश्चर्यको प्राप्त होय मनमें विचारता भया, यह लक्ष्मी है अक इंद्रकी इंद्राणी है अथवा चन्द्रकी कांति है यह विचार करे है अर विशल्याकी लारकी स्त्री कहती भई–हे स्वामी ! तिहारा यासूं विवाहका उत्सव हम देखा चाहे हैं तब लक्ष्मण मुलके अर विशल्याका पाणिग्रहण किया अर विशल्याकी सर्व जगतमें कीर्ति विस्तरी। या भांति जे उत्तम पुरुष हैं अर पूर्वजन्ममें महा शुभ चेष्टा करी है तिनको मनोग्य वस्तुका संबंध होय है अर चांद सूर्यकीसी उनकी कांति होय है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै विशल्याका समागम वर्णन करनेवाला पैंसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६५ ॥

अथानन्तर लक्ष्मणका विशल्यासूं विवाह अर शक्तिका निकासना यह सब समाचार रावणने हलकारानिके मुख सुने अर सुनकर मुलकि कर मंदबुद्धि कर कहता भया– शक्ति निकसी तो कहा? अर विशल्या व्याही तो कहा? तब मारीच आदि मंत्री मंत्रमें प्रवीण कहते भए–हे देव ! तिहारे कल्याणकी बात यथार्थ कहेंगे तुम कोप करो अथवा प्रसन्न होवो सिंहवाहनी गरुडवाहनी विद्या राम लक्ष्मणको यत्न विना सिद्ध भई सो तुम देखी अर तिहारे दोऊ पुत्र अर भाई कुम्भकर्णको तिन्होंने बांध लिए सो तुम देख अर तिहारी दिव्य शक्ति सो निरर्थक भई तिहारे शत्रु महाप्रबल हैं उनकर जो कदाचित् तुम जीते भी तो भ्राता पुत्रोंका निश्चय नाश है तातैं ऐसा जानकर हम पर कृपा करो, हमारी विनती अब तक आपने कदापि भंग न करी तातैं सीताको तजो अर जो तिहारे धर्म बुद्धि सदा रही है सो राखो सर्व लोकको कुशल होय राघवसे संधि करो यह बात करनेमें दोष नाहीं, महागुण है तुम ही कर सर्व लोकविषै मर्यादा चले है धर्मकी उत्पत्ति तुमसे है जैसे समुद्रतें रत्ननिकी उत्पत्ति होय ऐसा कहकर बडे

का पुराण सम्यग्दर्शनकी सिद्धिका कारण महाकल्याणका कर्ता निर्मल ज्ञानका दायक विचक्षण जीवों को निरंतर सुनिवे योग्य है अतुलपराक्रमी अद्भुत आचरणके धारक महासुकृती जे दशरथके नंदन तिनकी महिमा कहां लग कहूं इस ग्रंथमें बलभद्र नारायण प्रतिनारायण तिनका विस्ताररूप चरित्र है। जो यामें बुद्धि लगावे तो अकल्याणरूप पापोंको तजकर शिव कहिये मुक्ति उसे अपनी करै जीव विषयकी बांछाकर अकल्याणको प्राप्त होय हैं। विषयाभिलाष कदाचित् शांतिके अर्थ नहीं, देखो विद्याधरनिका अधिपति रावण परस्त्रीकी अभिलाषाकर कष्टको प्राप्त भया कामके रागकर हता गया ऐसे पुरुषोंकी यह दशा है तो और प्राणी विषय वासनाकर कैसे सुख पावें, रावण हजारां स्त्रियों कर मण्डित निरन्तर सुख सेवे था तृप्त न भया परदाराकी कामनाकर विनाशको प्राप्त भया। इन व्यसनों कर जीव कैसे सुखी होय जो पापी परदाराका सेवन करे सो कष्टके सागरमें पडै, अर श्रीरामचन्द्र महा शीलवान परदारा पराङ्मुख जिनशासनके भक्त धर्मानुरागी वे बहुतकाल राज्य भोग संसारको असार जान वीतराग के मार्गमें प्रवर्ते परम पदको प्राप्त भए अर भी जे वीतरागके मार्गमें प्रवर्तेंगे वे शिवपुर पहुंचेगें इसलिए जे भव्य जीव हैं वे जिनमार्गकी दृढप्रतीति कर अपनी शक्ति प्रमाण व्रतका आचरण करो जो पूर्णशक्ति होय तो मुनि होवो अर न्यून शक्ति होय तो अणुव्रतके धारक श्रावक होवो। यह प्राणी धर्मके फलकर स्वर्ग मोक्षके सुख पावे हैं अर पापके फलसे नरक निगोदके दुख पावे हैं यह निसंदेह जानो अनादि कालकी यही रीति है धर्म सुखदाई अधर्म दुखदाई पाप किसे कहिए अर पुण्य किसे कहिए सो उरविषे धारो जेते धर्मके भेद हैं तिनविषे सम्यक्त्व मुख्य है अर जितने पापके भेद हैं तिनमें मिथ्यात्व मुख्य है सो मिथ्यात्व कहा? अतत्त्वकी श्रद्धा अर कुगुरु कुदेव कुधर्मका आराधन परजीवको पीडा उपजावना अर क्रोध मान माया लोभकी तीव्रता अर पांच इंद्रियोंके विषय सप्त व्यसनका सेवन अर मित्रद्रोह कृतघ्न

विश्वासघात अभक्ष्यका भक्षण अगम्यस्त्रीसे गमन मर्मका छेदक वचन सुरापना इत्यादि पापके अनेक भेद हैं वे सब तजने अर दया पालनी सत्य बोलना चोरी न करनी शील पालना तृष्णा तजनी काम लोभ तजने शास्त्र पढना काहूको कुवचन न कहना गर्व न करना प्रपंच न करना अदेखसका न होना शान्त भाव धारना पर उपकार करना परदारा परधन परद्रोह तजना परपीडाका वचन न कहना बहु आरंभ बहु परिग्रहका त्याग करना दान देना तप करना परदुखहरण इत्यादि जो अनेक भेद पुण्यके हैं वे अंगीकार करने, अहो प्राणी हो सुखदाता शुभ है अर दुःखदाता अशुभ है दारिद्र दुःख रोग पीडा अपमान दुर्गति यह सब अशुभके उदयसे होय हैं अर सुख संपत्ति सुगति यह सब शुभके उदयसे होय हैं। शुभ अशुभ ही सुख दुःखके कारण हैं अर कोई देव दानव मानव सुख दुखका दाता नहीं अपने अपने उपार्जे कर्मका फल सब भोगवे हैं सब जीवोंसे मित्रता करना किसीसे वैर न करना किसीको दुख न देना सब ही सुखी हों यह भावना मनमें धरना, प्रथम अशुभको तज शुभमें आवना बहुरि शुभाशुभसे रहित होय शुद्ध पदको प्राप्त होना, बहुत कहिवे कर क्या ? इस पुराणके श्रवणकर एक शुद्ध सिद्ध पदमें आरूढ होना अनेक भेद कर्मोंका विलय कर आनन्द रूप रहना है। हो पंडित हो! परम पदके उपाय निश्चय थकी जिनशासनमें कहे हैं वे अपनी शक्ति प्रमाण धारण करो जिसकर भवसागरसे पार होवो यह शास्त्र अति मनोहर जीवोंको शुद्धताका देनहारा रवि समान सकल वस्तुका प्रकाशक है सो सुनकर परमानंद स्वरूपमें मग्न होवो, संसार असार है जिन धर्म सार है जिनकर सिद्ध पदको पाईये है सिद्धपद समान और पदार्थ नाहीं जब श्रीभगवान त्रैलोक्यके सूर्य वर्द्धमान देवाधिदेव सिद्ध लोकको सिधारे तब चतुर्थकालके तीन वर्ष साढेआठ महीना शेष थे सो भगवानको मुक्त भए पीछे पंचम कालमें तीन केवली अर पांच श्रुतकेवली भए सो वहां लग तो पुराण पूर्ण था, जैसे भगवान्ने गौतम गणधरसे कहा अर गौ-

तमने श्रेणिकसे कहा वैसा श्रुतकेवलीनिने कहा श्रीमहावीर पीछे बासठ वर्ष लग केवलज्ञान रहा, अर केवली पीछे सौ वर्ष तक श्रुतकेवली रहे। पंचम श्रुतकेवली श्रीभद्रवाहु स्वामी तिनके पीछे कालके दोष से ज्ञान घटता गया तब पुराणका विस्तार न्यून होता भया, श्रीभगवान महावीरको मुक्ति पधारे बारह सौ साढे तीन वर्ष भए तब रविषेणाचार्यने अठारह हजार अनुष्टुपश्लोकोंमें व्याख्यान किया। यह राम का चारित्र सम्यक्त्वका कारण है केवली श्रुतकेवली प्रणीत सदा पृथिवीमें प्रकाश करो जिनशासनके सेवक देव जिनभक्तिविषै परणाय जिनधर्मी जीवोंकी सेवा करें हैं जे जिनमार्गके भक्त हैं तिनके सभी सम्यक् दृष्टि देव आवे हैं नानाविधि सेवा करे हैं महा आदर संयुक्त सर्व उपायकर आपदामें सहाय करे हैं अनादि कालसे सम्यक्दृष्टि देवोंकी ऐसीही रीति है। जैन शास्त्र अनादि है काहूका किया नहीं व्यंजन स्वर यह सब अनादि सिद्ध हैं रविषेणाचार्य कहे हैं मैं कछु नहीं किया शब्द अर्थ अकृत्रिम हैं अलंकार छंद आगम निर्मलचित्त होय नीके जानने या ग्रंथविषै धर्म अर्थ काम मोक्ष सब हैं अठारह हजार तेईस श्लोकका प्रमाण पद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ है इसपर यह भाषा भई सो जयवंत होवे जिनधर्मकी वृद्धि होवे राजा प्रजा सुखी होवें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मोक्षप्राप्तिका वर्णन करनेवाला एकसौ तेईसवा पर्व पूर्ण भया ॥ १२३ ॥

भाषाकारका परिचय।

चौपई—जम्बूद्वीप सदा शुभथान। भरतक्षेत्र ता माहि प्रमाण। उसमें आर्यखंड पुनीत। वसें ताहि में लोक विनीत ॥ १ ॥ तिसके मध्य ढूंढार जु देश। निवसें जैनी लोक विशेष। नगर सवाई जयपुर महा। तिसकी उपमा जाय न कहा ॥ २ ॥ राज्य करे माधवनृप जहां। कामदार जैनी जन तहां। ठौर ठौर जिन मन्दिर बने। पूजें तिनको भविजन घने ॥ ३ ॥ बसें महाजन नाना जाति। सेवें जिनमारग बहुन्याति ॥ रायमल्ल साधर्मी एक। जाके घटमें स्वपर विवेक ॥ ४ ॥ दयावंत गुणवंत सुजान। पर उपकारी परम निधान ॥ दौलतराम सु ताको मित्र। तासों भाष्यो वचन पवित्र ॥ ५ ॥ पद्मपुराण महा-शुभ ग्रन्थ। तामें लोकशिखरको पंथ ॥ भाषारूप होय जो येह। बहुजन बांच करें अतिनेह ॥ ६ ॥ ताके वचन हियेमें धार। भाषा कीनी श्रुतिअनुसार ॥ रविषेणाचारज कृतसार। जाहि पढें बुधिजन गुणधार ॥ ७ ॥ जिनधर्मिनकी आज्ञा लेय। जिनशासनमांही चित देय ॥ आनन्दसुतने भाषा करी। नन्दो विरदो अतिरस भरी ॥ ८ ॥ सुखी होहु राजा अर लोक। मिटो सबनके दुख अरु शोक। वरतो सदा मंगलाचार। उतरो बहुजन भवजल पार ॥ ९ ॥ सम्वत् अष्टादश शत जान। ता ऊपर तेईस बखान (१८२३)। शुक्लपक्ष नवमी शनिवार। माघ मास रोहिणी ऋख सार ॥ १० ॥

दोहा—ता दिन सम्पूरण भयो, यह ग्रन्थ सुखदाय। चतुरसंघ मंगल करो, बढे धर्म्म जिनराय ॥

इति श्रीपद्मपुराणजी भाषा समाप्त।

प्रकाशक—दुलीचंद पन्नालाल जैन परवार, ८३ लोअर चितपुररोड कलकत्ता।

श्रीपद्मपुराणजी भाषा

समाप्त ।

ताहि लक्ष्मण देख आश्चर्यको प्राप्त होय मनमें विचारता भया, यह लक्ष्मी है अक इंद्रकी इंद्राणी है अ-थवा चन्द्रकी कांति है यह विचार करे है अर विशल्याकी लारकी स्त्री कहती भई–हे स्वामी ! तिहारा यासूं विवाहका उत्सव हम देखा चाहे हैं तब लक्ष्मण मुलके अर विशल्याका पाणिग्रहण किया अर वि-शल्याकी सर्व जगतमें कीर्ति विस्तरी। या भांति जे उत्तम पुरुष हैं अर पूर्वजन्ममें महा शुभ चेष्टा करी है तिनको मनोग्य वस्तुका संबंध होय है अर चांद सूर्यकीसी उनकी कांति होय है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै विशल्याका समागम वर्णन करनेवाला पैंसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६५ ॥

अथानन्तर लक्ष्मणका विशल्यासूं विवाह अर शक्तिका निकासना यह सब समाचार रावणने ह-लकारानिके मुख सुने अर सुनकर मुलकि कर मंदबुद्धि कर कहता भया– शक्ति निकसी तो कहा? अर विशल्या व्याही तो कहा ? तब मारीच आदि मंत्री मंत्रमें प्रवीण कहते भए–हे देव ! तिहारे कल्याणकी बात यथार्थ कहेंगे तुम कोप करो अथवा प्रसन्न होवो सिंहबाहनी गरुडबाहनी विद्या राम लक्ष्मणको यत्न विना सिद्ध भई सो तुम देखी अर तिहारे दोऊ पुत्र अर भाई कुम्भकर्णको तिन्होंने बांध लिए सो तुम देखे अर तिहारी दिव्य शक्ति सो निरर्थक भई तिहारे शत्रु महाप्रबल हैं उनकर जो कदाचित् तुम जीते भी तो भ्राता पुत्रोंका निश्चय नाश है तातैं ऐसा जानकर हम पर कृपा करो, हमारी विनती अब तक आपने कदापि भंग न करी तातैं सीताको तजो अर जो तिहारे धर्म बुद्धि सदा रही है सो राखो सर्व लोकको कुशल होय राघवसे संधि करो यह बात करनेमें दोष नाहीं, महागुण है तुम ही कर सर्व लोकविषै मर्यादा चले है धर्मकी उत्पात्ति तुमसे है जैसे समुद्रतें रत्ननिकी उत्पात्ति होय ऐसा कहकर बडे

मंत्री हाथ जोड नमस्कार करते भए अर हाथ जोड विनती करते भए। सबने यह मंत्र किया जो एक सामंत दूतविद्याविषै प्रवीण संधिके अर्थि रामपै पठाइये सो एक बुद्धिसे शुक्रसमान महा तेजस्वी प्रतापवान मिष्टवादी ताहि बुलाया सो मंत्रिनिने महासुन्दर महाअमृत औषधि समान वचन कहे परन्तु रावणने नेत्रकी समस्या कर मंत्रिनिका अर्थ दूषित कर डाला जैसे कोई विषसे महा औषधिको विषरूप कर डारे तैसे रावण संधिकी बात विग्रहरूप जताई सो दूत स्वामीको नमस्कारकर जायवेको उद्यमी भया। कैसा है दूत ? बुद्धिके गर्वकर लोकको गोपद समान निरखे है, आकाशके मार्ग जाता रामके कटकको भयानक देख दूतको भय न उपजा। याके वादित्र सुन बानरवंशियोंकी सेना क्षोभको प्राप्त भई रावणके आगमकी शंका करी जब नजीक आया तब जानी यह रावण नाहीं कोई और पुरुष है तब बानरवंशियोंकी सेनाको विश्वास उपजा दूत द्वारे आय पहुंचा तब द्वारपालने भामण्डलसे कही। भामंडलने रामसे विनतीकर केतेक लोकनि सहित निकट बुलाया अर ताकी सेना कटकमें उतरी।

रामसे नमस्कारकर दूत वचन कहता भया—हे रघुचन्द्र ! मेरे वचननिकर मेरे स्वामीने तुमको कुछ कहा है सो चित्त लगाय सुनहु, युद्धकर कछु प्रयोजन नाहीं आगे युद्धके अभिमानी बहुत नाशको प्राप्त भए तातैं प्रीतिही योग्य है युद्धकर लोकनिका क्षय होय है अर महा दोष उपजे हैं अपवाद होय है आगे संग्रामकी रुचिकर राजा दुर्वर्तक शंख धवलांग असुर सम्बरादिक अनेक राजा नाशको प्राप्त भए तातैं मेरे सहित तुमको प्रीति ही योग्य है अहो जैसे सिंह महा पर्वतकी गुफाको पायकर सुखी होय है तैसे अपने मिलापकर सुख होय है मैं रावण जगतप्रसिद्ध कहा तुमने न सुना जाने इन्द्रसे राजा बन्दीगृहविषै किए जैसे कोई स्त्रीनिको अर सामान्यलोकोंको पकडै तैसे इन्द्र पकडा अर जाकी आज्ञा सुर असुरनिकर न रोकी जाय, न पातालविषै न जलमें न आकाशविषै आज्ञाको कोई न रोक सके नाना प्रकारके

अनेक युद्धोंका जीतनहारा वीर लक्ष्मी जाको बरै ऐसा मैं सो तुमको सागरांत पृथिवी विद्याधरोंसे मंडित दूंहूं अर लंकाके दोयभागकर बांट दूंहूं—भावार्थ समस्त राज्य अर आधीलंका दूंहूं तुम मेरा भाई अर दोनों पुत्र मोपै पठावो अर सीता मोहि देवो जाकर सब कुशल होय अर जो तुम यों न करोगे तो जो मेरे पुत्र भाई बन्धनमें हैं तिनको तो बलात्कार छुटाय ल्हूंगा अर तुमको कुशल नाहीं। तब राम बोले मोहि राज्यसे प्रयोजन नाहीं अर और स्त्रियोंसे प्रयोजन नाहीं सीता हमारे पठावो हम तिहारे दोऊ पुत्र अर भाईको पठावें अर तिहारे लंका तिहारे ही रहो अर समस्त राज्य तुम ही करो मैं सीतासहित दुष्टजीवनिसंयुक्त जो वन ताविषै सुखसूं विचरूंगा। हे दूत! तू लंकाके धनीसे जाय कह याही बातमें तिहारा कल्याण है, और भांति नाहीं। ऐसे श्रीरामके सर्व पूज्य वचन सुख साताकर संयुक्त तिनकों सुनकर दूत कहता भया—हे नृपति! तुम राज काजविषै समझते नाहीं, मैं तुमको वहुरि कल्याणकी बात कहूं हूं निर्भय होय समुद्र उलंघ आए हो सो नीके न करी अर यह जानकीकी आशा तुमको भली नाहीं यदि लंकेश्वर कोप भया तब जानकीकी कहा बात? तिहारा जीवना भी कठिन है अर राजनीतिविषै ऐसा कहा है जे बुद्धिमान् हैं तिनको निरन्तर अपने शरीरकी रक्षा करनी स्त्री अर धन इनपर दृष्टि न धरनी अर जो गरुडेन्द्रने सिंहवाहन गरुडबाहन तुमपै भेजे तो कहा अर तुम छलाछिद्रकर मेरे पुत्र अर सहोदर बांधे तो कहा? जोंलग मैं जीवूं हूं तों लग इनबातोंका गर्व तुमको वृथा है जो तुम युद्ध करोगे तो न जानकीका न तिहारा जीवन, तातैं दोऊ मत खोवो, सीताका हठ छांडहु अर रावणने यह कही है जे बडे बडे राजा विद्याधर इन्द्रतुल्य पराक्रम जिनके सो समस्त शास्त्रविषै प्रवीण अनेक युद्धानिके जीतनहारे ते मैं नाशको प्राप्त किए हैं तिनके कैलाशपर्वतके शिखर हाडनके समूह देखो। जब ऐसा दूतने कहा तब भामण्डल क्रोधायमान भया ज्वाला समान महा विकराल मुख ताकी ज्योतिसे प्रकाश किया है

आकाशविषै जानै । भामण्डलने कही—रे पापी दूत ! स्याल चातुर्यतारहित दुर्बुद्धि वृथा शंकारहित कहा भाषै है सीताकी कहा वार्ता ? सीता तो राम लेहींगे यदि श्रीराम कोपें तब रावण राक्षस कुचेष्टित पशु कहा ? ऐसा कह ताके मारवेको खड्ग सम्हारा । तब लक्ष्मणने हाथ पकडे अर मने किया । कैसे हैं लक्ष्मण ? नीति ही हैं नेत्र जिनके, भामंडलके क्रोधकर रक्त नेत्र होय गए वक्र होय गए जैसी सांझकी लाली होय तैसा लालबदन होय गया । तब मंत्रिनिने योग्य उपदेश कह समताको प्राप्त किया । जैसे विषका भरा सर्प मंत्रसे वश कीजिये है । हे नरेंद्र ! क्रोध तजो यह दीन तिहारे योग्य नाहीं, यह तो पराया किंकर है जो वह कहावै सो कहै याके मारवेकर कहा ? स्त्री, बालक, दूत, पशु, पक्षी, वृद्ध, रोगी, सोता, आयुधरहित, शरणागत, तपस्वी, गाय, ये सर्वथा अबध्य हैं। जैसे सिंह कारी घटा समान गाजते जे गज तिनका मर्दन करनेहारा सो मींडकनिपर कोप न करै तैसे तुमसे नृपति दूतपर कोप न करें, यह तो वाके शब्दानुसार है जैसे छाया पुरुष है (छाया पुरुषकी अनुगामिनी है) अर सूवाको ज्यों पढावें तैसे पढै अर यंत्रको ज्यों बजावें त्यों बजै तैसे यह दीन वह बकावे त्यों बकै । ऐसे शब्द लक्ष्मणने कहे तब सीताका भाई भामण्डल शांतचित्त भया। श्रीराम दूतको प्रकट कहते भए—रे मूढ दूत! तू शीघ्र ही जा अर रावणको ऐसे कहियो तू ऐसे मूढ मंत्रियोंका बहकाया खोटे उपायकर आपा ठगावेगा तू अपनी बुद्धिकर विचार, किसी कुबुद्धिको पूछे मत, सीताका प्रसंग तज, सर्व पृथिवीका इन्द्र हो पुष्पक विमानमें बैठा जैसे भ्रमे था तैसे विभवसहित भ्रम, यह मिथ्या हठ छोड दे, क्षुद्रनिकी बात मत सुनहु करने योग्य कार्यविषै चित्त धर जो सुखकी प्राप्ति होय । ये वचन कह श्रीराम तो चुप होय रहे अर और पुरुषानिने दूतको बहुरि वात न करने दई, निकाल दीया। दूत रामके अनुचरनिने तीक्ष्ण बाणरूप वचनानिकर बींधा अर अति निरादर किया तब रावणके निकट गया, मनविषै पीडा थका, सो जायकर रावणसों कहता भया

हे नाथ ! मैं तिहारे आदेश प्रमाण रामसों कही जो या पृथिवी नाना देशनिकर पूर्ण समुद्रांत महा रत्ननिकी भरी विद्याधरोंके समस्त पट्टन सहित मैं तुमको दूंहूं अर बडे २ हाथी रथ तुरंग दूंहूं अर यह पुष्पक विमान लेवो जो देवोंसे न निवारा जाय याविषै बैठ विचरो अर तीन हजार कन्या मैं अपने परवार की तुमको परणाय दूं अर सिंहासन सूर्य समान अर चन्द्रमा समान छत्र वे लेहु अर निःकंटक राज करो ऐती बात मुझे प्रमाण हैं जो तिहारी आज्ञाकर सीता मोहि इच्छे यह धन अर धरा लेवो अर मैं अल्प विभूति राख वैंतहीके सिंहासन पर बैठा रहूंगा। विचक्षण हो तो एक वचन मेरा मानहु, सीता मोहि देवो। ए वचन मैं वार वार कहे सो रघुनन्दन सीताका हठ न छोडैं, केवल वाके सीताका अनुराग है और वस्तुकी इच्छा नाही। हे देव ! जैसे मुनि महाशांत चित्त अठाईस मूल गुणोंकी क्रिया न तजें वह क्रिया मुनिव्रतका मूल हैं तैसे राम सीताको न तजें, सीता ही रामके सर्वस्व है। कैसी है सीता ? त्रैलोक्यविषै ऐसी सुन्दरी नाहीं अर रामने तुमसूं यह कही है कि हे दशानन ! ऐसे सर्वलोकनिंद्य वचन तुमसे पुरुषनिको कहना योग्य नाहीं ऐसे वचन पापी कहे हैं। उनकी जीभके सौ टूक क्यों न होंय ? मेरे या सीता बिना इन्द्रके भोगनिकर कार्य नाहीं। यह सर्व पृथिवी तू भोग, मैं वनवास ही करूंगा अर तू परदारा हरकर मरवेको उद्यमी भया है तो मैं अपनी स्त्रीके अर्थ क्यों न मरूंगा अर मुझे तीन हजार कन्या देहै सो मेरे अर्थ नाहीं, मैं बनके फल अर पत्रादिक ही भोजन करूंगा अर सीतासहित वनमें विहार करूंगा अर कपिध्वजोंका स्वामी सुग्रीव ताने हंसकर मोह कही—जो कहा तेरा स्वामी आग्रहरूप ग्रहके वश भया है ? कोऊ वायुका विकार उपजा है जो ऐसी विपरीत वार्ता रंक हुवा बकै है अर कहा लंकामें कोऊ वैद्य नाहीं, अक मन्त्रवादी नहीं वायके तैलादिककर यत्न क्यों न करे नातर संग्रामविषै लक्ष्मण सर्वरोग निवारेगा। भावार्थ—मारेगा।

तब यह वचन सुन मैं क्रोधरूप अग्निकर प्रज्वालित भया अर सुग्रीवसूं कही—रे वानरध्वज ! तू ऐसे बके है जैसे गजके लार स्वान बकै, तू रामके गर्वकर मूवा चाहे है जो चक्रवर्त्तिकूं निन्दाके बचन कहै है सो मेरे अर सुग्रीवके बहुत बात भई अर रामसौं कहा—हे राम ! तुम महारणविषै रावणका पराक्रम न देखा, कोऊ तिहारे पुण्यके योग कर वह वीर विकराल क्षमामें आया है। वह कैलाशका उठावनहारा तीन जगतमें प्रसिद्ध प्रतापी तुमसे हित किया चाहे है अर राज्य देय है ता समान और कहा तुम अपनी भुजानिकर दशमुखरूपसमुद्रकूं कैसे तरोगे। कैसा है दशमुखरूपसमुद्र ? प्रचंड सेना सोई भई तरंगनिकी माला तिनकर पूर्ण है अर शस्त्ररूप जलचरानिके समूह कर भरा है। हे राम ! तुम कैसे रावणरूप भयंकर वनविषै प्रवेश करोगे, कैसा है रावणरूप वन ? दुर्गम कहिए जा विषै प्रवेश करना कठिन है अर व्याल कहिए दुष्ट गज तेई भए नाग तिनकर पूर्ण है अर सेनारूप वृक्षानिके समूह कर महा विषम है, हे राम ! जैसे कमल पत्रकी पवनकर सुमेरु न डिगे अर सूर्यकी किरण कर समुद्र न सूकै अर बलदके सींगोंसे धरती न उठाई जाय तैसे तुम सारिखे नरनिकर नरपति दशानन जीता न जाय ऐसे प्रचंड बचन मैं कहे तब भामण्डलने महाक्रोधरूप होय मोहि मारवेको खड्ग काढा तब लक्ष्मणने मने किया जो दूतको मारना न्यायमें नहीं कहा। स्याल पर सिंह कोप न करे जो सिंह गजेन्द्रके कुम्भस्थल अपने नखनिसे विदारै तातैं हे भामण्डल ! प्रसन्न होवो क्रोध तजो जे शूरवीर नृपति हैं महा तेजस्वी ते दीननिपर प्रहार न करें। जो भयकर कंपायमान होय ताहि न हने श्रमण कहिए मुनि अर ब्राह्मण कहिए ब्रतधारी गृहस्थी अर शून्य कहिए सूना अर स्त्री बालक वृद्ध पशु पक्षी दूत ऐ अवध्य हैं इनको शूरवीर सर्वथा न हने इत्यादि वचननिके समूहकर लक्ष्मण महापंडित ताने समझाय भामण्डलको प्रसन्न किया अर कपिध्वजनिके कुमार महाक्रूर तिन वज्र समान वचननिकर मोहि बींधा तब मैं उनके

असार बचन सुन आकाशमें गमनकर आयु कर्मके योगसे आपके निकट आया हूं। हे देव ! जो लक्ष्मण न होय तो आज मेरा मरण ही होता जो शत्रुनिके अर मेरे विवाद भया सो मैं सब आपसूं कहा मैं कछु शंका न राखी अब आपके मनमें जो होय सो करो, हम सारिखे किंकर तो वचन करे हैं जो कहो सो करें। या भांति दूत दशमुखसे कहता भया। यह कथा गौतम गणधर श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! जो अनेक शास्त्रनिके समूह जानें अर अनेक नयविषै प्रवीण होंय अर जाके मंत्री भी निपुण होंय अर सूर्य सारिखा तेजस्वी होय तथापि मोहरूप मेघपटल कर आच्छादित भया प्रकाशरहित होय है। यह मोह महा अज्ञानका मूल विवेकियोंको तजना योग्य है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणके दूतका आगम बहुरि पाछा रावण पास गमन वर्णन करनेवाला छियासठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६६ ॥

अथानन्तर लंकेश्वर अपने दूतके वचन सुन क्षण एक मंत्रके ज्ञाता मंत्रियोंसे मन्त्रकर कपोलपर हाथ धर अधोमुख होय कछुएक चिन्ता रूप तिष्ठा अपने मनमें विचारै है जो शत्रुको युद्धविषै जीतू हूं तो भ्राता पुत्रनिकी अकुशल दीखे है अर जो कदाचित् वैरिनिके कटकमें मैं राति हावकर कुमारानिको ले आऊं तो या शूरतामें न्यूनता है। रतिहाव क्षत्रियोंके योग्य नाहीं कहा करूं कैसे मोहि सुख होय ? यह विचार करते रावणको यह बुद्धि उपजी जो मैं बहुरूपणी विद्या साधूं। कैसी है बहुरूपणी जो कदाचित् देव युद्ध करें तो भी न जीती जाय, ऐसा बिचारकर सब सेवकनिकों आज्ञा करी श्रीशांतिनाथके मंदिर में समीचीन तोरणादिकानिकर अति शोभा करो सो सर्व चैत्यालयोंमें विशेष पूजा करो सर्व भार पूजा प्रभावनाका मंदोदरीके सिरपर धरया। गौतम गणधर कहे हैं—हे श्रेणिक ! वह श्रीमुनिसुव्रतनाथ बी-

समां तीर्थंकरका समय ता समय या भरतक्षेत्रविषै सर्व ठौर जिनमंदिर हुते यह पृथिवी जिनमंदिरनिकर मण्डित हुती चतुरविध संघकी विशेष प्रवृत्ति राजा श्रेष्ठि ग्रामपति अर प्रजाके लोग सकल जैनी हुते सो महा रमणीक जिनमंदिर रचते जिनमंदिर जिनशासनके भक्त जो देव तिनसे शोभायमान वे देव धर्मकी रक्षामें प्रवीण शुभ कार्यके करणहारे, ता समय पृथिवी भव्य जीवनिकर भरी ऐसी सोहती मानों स्वर्ग विमान ही है ठौर २ पूजा ठौर २ प्रभावना ठौर २ दान। हे मगधाधिपति ! पर्वत पर्वतविषै गांव गांव विषै नगर २ विषै बन २ विषै पट्टन २ विषै मंदिर २ विषै जिनमंदिर हुते महा शोभाकर सयुक्त शरदके पूनोंकी चन्द्रमासमान उज्ज्वल गीतोंकी ध्वनिकर मनोहर नानाप्रकारके वादित्रनिके शब्दकर मानों समुद्र गाजे है अर तीनों सन्ध्या बंदनाको लोग आवें सो साधुवोंके संगसे पूर्ण नानाप्रकारके आश्चर्यकर संयुक्त नानाप्रकारके चित्रामको धरें अगर चन्दनका धूप अर पुष्पनिकी सुगन्धता कर महासुगन्धमई महा विभूतिकर युक्त नानाप्रकारके वर्णकर शोभित महा विस्तीर्ण महा उतंग महा ध्वजानिकर विराजित तिनमें रत्नमई तथा स्वर्णमई पंचवर्णकी प्रतिमा विराजें विद्याधरनिके स्थानविषै अति सुन्दर जिनमंदिरनिके शिखर तिनकर अति शोभा होय रही है ता समय नाना प्रकारके रत्नमई उपवनादिसे शोभित जे जिनभवन तिनकर यह जगत व्याप्त अर इंद्रके नगरसमान लंकाका अंतर बाहिर जिनेंद्रके मंदिरनिकर मनोग्य था सो रावणने विशेष शोभा कराई अर आप रावण अठारह हजार राणी वेई भई कमलनिके वन तिनको प्रफुल्लित कर्ता वर्षाके मेघसमान है स्वरूप जाका सो महा नागसमान है भुजा जाकी पूर्णमासीके चन्द्रमासमान वदन सुन्दर केतकीके फूलसमान लाल होंठ विस्तीर्ण नेत्र स्त्रीनिका मन हरणहारा लक्ष्मणसमान श्यामसुन्दर दिव्यरूपका धरणहारा सो अपने मंदिरनिविषै तथा सर्व क्षेत्रविषै जिनमंदिरनिकी शोभा करावता भया। कैसा है रावणका घर ? लग रह

हैं लोगानिके नेत्र जहां अर जिनमंदिरानिकी पंक्ति कर मंडित नानाप्रकारके रत्नमई मंदिरके मध्य उतंग श्रीशांतिनाथका चैत्यालय जहां भगवान शांतिनाथ जिनकी प्रतिमा विराजे। जे भव्य जीव हैं ते सकल लोकचरित्रको असार अशाश्वता जानकर धर्मविषै बुद्धि धर जिनमंदिरानिकी महिमा करो। कैसे हैं जिनमंदिर ? जगतकर वंदनीक हैं अर इंद्रके मुकुटके शिखरविषै लगे जे रत्न तिनकी ज्योतिको अपने चरणनिके नखोंकी ज्योतिकर बढावनहारे हैं, धन पावनेका यही फल जो धर्म करिए सो गृहस्थका धर्म दान पूजारूप अर यतिका धर्म शांतभावरूप। या जगतविषै यह जिनधर्म मनवांछित फलका देनहार है जैसे सूर्यके प्रकाशकर नेत्रनिके धारक पदार्थनिका अवलोकन करे हैं तैसे जिनधर्मके प्रकाशकर भव्यजीव निज भावका अवलोकन करै हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचानिकाविषैं श्रीशांतिनाथके चैत्यालयका वर्णन करनेवाला सरसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६७ ॥

अथानन्तर फाल्गुणसुदी अष्टमीसूं लेय पूर्णमासी पर्यंत सिद्धचक्रका व्रत है जाहि अष्टाह्निका कहे हैं सो इन आठ दिननिमें लंकाके लोग अर लशकरके लोग नियम ग्रहणको उद्यमी भए। सर्व सेनाके उत्तम लोक मनमें यह धारणा करते भए जो यह आठ दिन धर्मके हैं सो इन दिननिमें न युद्ध करें न और आरम्भ करें यथाशक्ति कल्याणके अर्थ भगवानकी पूजा करेंगे अर उपवासादि नियम करेंगे। इन दिननिविषै देव भी पूजा प्रभावनाविषै तत्पर होय हैं। क्षीरसागरके जे सुवर्णके कलश जलकर भरे तिनकर देव भगवानका अभिषेक करे हैं कैसा है जल ? सत्पुरुषानिके यशसमान उज्ज्वल अर और भी जे मनुष्यादि

हैं तिनको भी अपनी शक्तिप्रमाण पूजा अभिषेक करना । इंद्रादिक देव नंदीश्वरद्वीप जायकर जिनेश्वर का अर्चन करे हैं तो कहा ये मनुष्य अपनी शक्ति प्रमाण यहांके चैत्यालयोंका पूजन न करें ? करें ही करें। देव स्वर्ण रत्ननिके कलशानिसे अभिषेक करें हैं अर मनुष्य अपनी संपदा प्रमाण करें महानिर्धन मनुष्य होय तो पलाश पत्रानिके पुटहीसे अभिषेक करे । देव रत्न स्वर्णके कमलानिसे पूजा करें हैं निर्धन मनुष्य चित्तही रूप कमलानिसे पूजा करें हैं। लंकाके लोक यह विचारकर भगवानके चैत्यालयनिको उत्साहसहित ध्वजा पताकादिकर शोभित करते भए वस्त्र स्वर्ण रत्नादिकर अति शोभा करी, रत्नोंकी रज अर कनकरज तिनके मंडल मांडे अर देवालयनिके द्वार अति सिंगारे अर मणि सुवर्णके कलश कमलनिसे ढके दधि दुग्ध घृतादिसे पूर्ण मोतियोंकी माला है कंठमें जिनके, रत्नानिकी कांतिकर शोभित, जिन बिम्बोंके अभिषेकके अर्थ भक्तिवंत लोक लाये, जहां भोगी पुरुषोंके घरमें सैकडों हजारों मणिसुवर्णोंके कलश हैं, नंदनवनके पुष्प अर लंकाके वनोंके नानाप्रकारके पुष्प कर्णिकार अतिमुक्त कदंब सहकार चंपक पारिजात मंदार जिनकी सुगन्धताकर भ्रमरनिके समूह गुंजार करें हैं अर माणि सुवर्णादिकके कमल तिनकर पूजा करते भए अर ढोल मृदंग ताल शंख इत्यादि अनेक वादित्रनिके नाद होते भए लंकापुरके निवासी वैर तज आनन्द रूप होय आठ दिनमें भगवानकी अति महिमाकर पूजा करते भए, जैसे नंदीश्वर द्वीपविषै देव पूजाके उद्यमी होंय तैसे लंकाके लोक लंकाविषै पूजाके उद्यमी भए अर रावण विस्तीर्ण प्रतापका धारक श्रीशांतिनाथके मंदिरविषै जाय पवित्र होय भक्तिकर महामनोहर पूजा करता भया जैसे पहिले प्रतिवासुदेव करे, गौतम गणधर कहे हैं—हे श्रेणिक ! जे महाविभवकर युक्त भगवानके भक्त महाविभूतिवंत अति महिमाकर प्रभुका पूजन करें हैं तिनिके पुण्यके समूहका व्याख्यान

कौन कर सके ? वे उत्तम पुरुष देवगतिके सुख भोग बहुरि चक्रवर्तियोंके भोग पावें बहुरि राज्य तज जैन मतके व्रतधार महातप कर परम मुक्ति पावैं। कैसा है तप ? सूर्यहूतें अधिक है तेज जाका ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै श्रीशांतिनाथके चैत्यालयविषै अष्टान्हिकाका उत्सव वर्णन करनेवाला अडसठवा पर्व पूर्ण भया ॥ ६८ ॥

अथानन्तर महाशांतिका कारण श्रीशांतिनाथका मंदिर कैलाशके शिखर अर शरदके मेघ समान उज्वल महा देदीप्यमान मंदिरोंकी पंक्तिकर मंडित जैसे जम्बूद्वीपके मध्य महा उतंग सुमेरु पर्वत सोहै तैसे रावणके मंदिरके मध्य जिनमंदिर सोहता भया। तहां रावण जाय विद्याके साधनमें आसक्त है चित्त जाका अर स्थिर है निश्चय जाका परम अद्भुत पूजा करता भया। भगवानका अभिषेक कर अनेक बादित्र बजावता अति मनोहर द्रव्यनिकर महासुगन्ध धूपकर नानाप्रकारकी सामग्री कर शांतचित्त भया शांतिनाथकी पूजा करता भया मानों दूजा इंद्र ही है। शुक्ल वस्त्र पहिरे महासुन्दर जे भुजबंध तिनकर शोभित है भुजा जाकी, सिरके केश भली भांति बांध तिनपर मुकुटधर तापर चूडामणि लहलहाट करती महाज्योतिको धरे रावण दोनों हाथजोड गोडोंसे धरतीको स्पर्शता मन वचन कायकर शांतिनाथको प्रणाम करता भया। श्रीशांतिनाथके सन्मुख निर्मल भूमिमें खडा अत्यन्त शोभता भया। कैसी है भूमि ? पद्मराग मणिकी है फर्श जा विषै अर रावण स्फटिकमणिकी माला हाथविषै अर उरविषै धरे कैसा सोहता भया मानों बक पंक्तिकर संयुक्त कारी घटाका समूह ही है। वह राक्षसनिका अधिपति महाधीर विद्याका साधन आरम्भता भया। जब शांतिनाथके चैत्यालय गया ता पहिले मंदोदरीको यह आज्ञा करी जो तुम मंत्रिनिको अर कोटपालको बुलायकर यह घोषणा नगरमें फेरियो जो सर्वलोक दया

विषै तत्पर नियम धर्मके धारक होवें समस्त व्यापार तज जिनेंद्रकी पूजा करो अर अर्थी लोगोंको मन-वांछित धन देवो अहंकार तजो । जौलग मेरा नियम न पूरा होय तौलग समस्त लोग श्रद्धाविषे तत्पर संयमरूप रहो जो कदाचित् कोई बाधा करै तो निश्चयसेती सहियो महाबलवान होय सो बलका गर्व न करियो । इन दिवसनिविषै जो कोऊ क्रोधकर विकार करेगा सो अवश्य सज़ा पावेगा । जो मेरे पिता समान पूज्य होय अर इन दिननिविषै कषाय करे, कलह करे ताहि मैं मारूं, जो पुरुष समाधिमरणकर युक्त न होय सो संसार समुद्रको न तिरे जैसे अंधपुरुष पदार्थनिको न परखे तैसे अविवेकी धर्मको न निरखें तातैं सब विवेकरूप रहियो कोऊ पापक्रिया न करने पावे, यह आज्ञा मंदोदरीको कर रावण जिनमंदिर गए अर मंदोदरी मंत्रियोंको अर यमदंडनामा कोटपालको द्वारे बुलाय पतिकी आज्ञा प्रमाण आज्ञा करती भई । तब सबने कही जो आज्ञा होयगी सोही करेंगे । यह कह आज्ञा सिरपर धर घर गए अर संयमरहित नियम धर्मके उद्यमी होय नृपकी आज्ञा प्रमाण करते भए । समस्त प्रजाके लोग जिन पूजाविषै अनुरागी होते भए अर समस्त कार्य तज सूर्यकी कांतितैं हू अधिक है कांति जिनकी ऐसे जे जिनमंदिर तिनविषै तिष्ठे, निर्मल भावकर युक्त संयम नियमका साधन करते भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लंकाके लोगनिका
अनेकानेक नियम धारण वर्णन करनेवाला उनत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६९ ॥

अथानन्तर श्रीरामके कटक में हलकारोंके मुख यह समाचार आए कि रावण बहुरूपिणी विद्या के साधनेको उद्यमी भया श्रीशांतिनाथके मंदिर में विद्या साधै है, चौबीस दिनमें यह बहुरूपणी विद्या सिद्ध होयगी । यह विद्या ऐसी प्रबल है जो देवनिका मद हरे सो समस्त कपिध्वजनिने यह विचार किया

कि जो वह नियममें बैठा विद्या साधे है सो ताको क्रोध उपजावें जो ताकों यह विद्या सिद्ध न होय तातैं रावणको कोप उपजावनेका यत्न करना, जो वाने विद्या सिद्ध कर पाई तो इन्द्रादिक देवनिकरहू न जीता जाय, हम सारिखे रंकनिकी कहा बात ? तब बिभीषण कही–जो कोप उपजावनेका उपाय करो शीघ्रही करो । तब सबने मंत्र कर रामसे कहा कि लंका लेनेका यह समय है । रावणके कार्यमें विघ्न करिए अर अपनेको जो करना होय सो करिए तब कापिध्वजानिके यह वचन सुन श्रीरामचन्द्र महाधीर महा पुरुषनिकी है चेष्टा जिनकी, सो कहते भए–हो विद्याधर हो ! तुम महामूढताके वचन कहो हो, क्षत्रिनिके कुलका यह धर्म नाहीं जो ऐसे कार्य करें । अपने कुलकी यह रीति है जो भयकर भाजै ताका वध न करना तो जे नियमधारी जिनमन्दिरमें बैठे हैं तिनसे उपद्रव कैसे करिए यह नीचानिके कर्म हैं सो कुलवंतनिको योग्य नाहीं । यह अन्याय प्रवृत्ति क्षत्रियनिकी नाहीं, कैसे हैं क्षत्री ? महामान्यभाव अर शस्त्रकर्मविषे प्रवीण । यह वचन रामके सुन सबने विचारी जो हमारा प्रभु श्रीराम महा धर्मधारी है, उत्तम भावका धारक है सो इनकी कदाचित् हू अधर्मविषे प्रवृत्ति न होयगी तब लक्ष्मणकी जानमें इन विद्याधरनिने अपने कुमार उपद्रको बिदा किए अर सुग्रीवादिक बडे बडे पुरुष आठ दिनका नियम धर तिष्ठे अर पूर्णचन्द्रमा समान बदन जिनके कमल समान नेत्र नाना लक्षणके धरणहारे सिंह व्याघ्र वराह गज अष्टापद इनकर युक्त जे रथ तिनविषे बैठे तथा विमाननिमें बैठे परम आयुधनिको धरे कपियोंके कुमार रावणको कोप उपजायबेका है अभिप्राय जिनके मानों यह असुरकुमार देव ही हैं प्रीतंकर दृढरथ चन्द्राहू रतिवर्धन वातायन गुरुभार सूर्यज्योति महारथ सामंतबल नंदन सर्वदृष्ट सिंह सर्वप्रिय नल नील सागर घोषपुत्र सहित पूर्णचन्द्रमा स्कंध चन्द्र मारीच जांबव संकट समाधि बहुल सिंहकट चन्द्रासन इन्द्रामणि बल तुरंग सब इत्यादि अनेक कुमार तुरंगनिके रथ चढे अर अन्य केयक सिंह

बाराह गज व्याघ्र इत्यादि मनहूतें जे चंचल बाहन तिनपर पयादानिके पटल तिनके मध्य महातेजको धरें नानाप्रकारके चिन्ह तिनकर युक्त हैं छत्र जिनके अर नानाप्रकारकी ध्वजा फहरे हैं जिनके, महा गंभीर शब्द करते दशोंदिशाको आच्छादित करते लंकापुरीमें प्रवेश करते भए। मनविषै विचार करते भए बडा आश्चर्य है जो लंकाके लोक निश्चिंत तिष्ठे हैं। जानिये है कछू संग्रामका भय नाहीं, अहो लंकेश्वरका बडा धीर्य महागंभीरता देखहु जो कुम्भकर्णसे भाई अर इन्द्रजीत मेघनादसे पुत्र पकडे गए हैं तौहू चिंता नाहीं अर अक्षादिक अनेक योधा युद्धविषै हते गए, हस्त प्रहस्त सेनापति मारे गए तथापि लंकापतिको शंका नाहीं, ऐसा चिंतवन करते परस्पर वार्ता करते नगरमें बैठे तथा विभीषणका पुत्र सुभूषण कपिकुमारनिको कहता भया तुम निर्भय लंकामें प्रवेश करो, बाल वृद्ध स्त्रीनिको तो कछु न कहना अर सबको व्याकुल करेंगे। तब याका वचन मान विद्याधर कुमार महा उद्धत कलहप्रिय आशीविष समान प्रचण्ड व्रतरहित चपल चञ्चल लंकाविषै उपद्रव करते भए। सो तिनके महभयानक शब्द सुन लोक अति व्याकुल भए अर रावणके महल हू में व्याकुलता भई जैसे तीव्र पवनकर समुद्र क्षोभको प्राप्त होय तैसे लंका कपिकुमारनिसे उद्वेगको प्राप्त भई। रावणके महिलविषै राजलोकनिको चिंता उपजी। कैसा है रावणका मन्दिर? रत्ननिकी कांतिकर देदीप्यमान है अर जहां मृदंगादिकके मंगल शब्द होवे हैं जहां निरन्तर स्त्रीजन नृत्य करै हैं अर जिनपूजाविषै उद्यमी राजकन्या धर्म मार्गविषै आरूढ सो शत्रुसेनाके क्रूर शब्द सुन आकुलता उपजी स्त्रीनिके आभूषणनिके शब्द होते भए मानों वीण बाजे हैं। सब मनमें विचारती भई—न जानिए कहा होय। या भांति समस्त नगरीके लोग व्याकुलताको प्राप्त होय विह्वल भए तब मन्दोदरीका पिता राजा मय विद्याधरनिविषै दैत्य कहावे सो सब सेनासहित वक्तर पहिर आयुध धार महा पराक्रमी युद्धके अर्थ उद्यमी होय राजद्वार आया जैसे इन्द्रके भवन हिरण्यकेशी देव आवे

तब मन्दोदरी पितासे कहती भई—हे तात ! जा समय लंकेश्वर जिन मन्दिर पधारे तासमय आज्ञा करी जो सबलोक सम्वररूप रहियो कोई कषाय मत करियो तातैं तुम कषाय मत करो । ये दिन धर्मध्यानके हैं सो धर्म सेवो और भांति करोगे तो स्वामीकी आज्ञा भंग होयगी अर तुम भला फल न पावोगे ये वचन पुत्रीके सुन राजा मय उद्धतता तज महा शांत होय शस्त्र डारते भए जैसे अस्त समय सूर्य किरणोंको तजे, मणियोंके कुण्डलनिकर मंडित अर हारकर शोभे है वक्षस्थल जाका, अपने जिन मन्दिरमें प्रवेश करता भया अर ये बानरवंशी विद्याधरनिके कुमारनिने निज मर्यादा तज नगरका कोट भंग किया वज्रके कपाट तोडे, दरवाजा तोडे ।

अथानन्तर इनको देख नगरके वासियोंको अति भय उपजा घरघर में ये बात होय हैं भजकर कहां जाइये ये आए बाहिर खडे मत रहो भीतर धसो, हाय मात यह कहा भया ? हे तात देखो, हे भ्रात हमारी रक्षा करो हे आर्यपुत्र महाभय उपजा है ठिकाने रहो । या भांति नगरीके लोक व्याकुलताके वचन कहते भए । लोक भाग रावणके महिलमें आये अपने वस्त्र हाथनिमें लिये अति विह्वल बालकनिको गोदमें लिये स्त्री जन कांपती भागी जाय हैं, कैएक गिर पडीं सो गोडे फूट गये, कैएक चली जाय हैं हार टूट गए सो बडे बडे मोती बिखरे हैं जैसे मेघमाला शीघ्र जाय तैसे जाय हैं त्रासको पाई जो हिरणी ता समान हैं नेत्र जिनके अर ढीले होयगये हैं केशनिके बन्ध जिनके अर कोई भयकर प्रीतमके उरसे लिपट गई । या भांति लोकनिको उद्वेग रूप महा भयभीत देख जिनशासनके देव श्रीशांतिनाथके मन्दिरके सेवक अपनी पक्षके पालनेको उद्यमी करुणावन्त जिन शासनके प्रभाव करनेको उद्यमी भए । महा भैरव आकार धरे शांतिनाथके मंदिरसे निकसे, नाना भेष धरे विकराल हैं दाढ जिनकी, भयंकर है मुख जिनका, मध्यान्हके सूर्य समान तेज हैं नेत्र जिनके, होंठ डसते दीर्घ है काया जिनकी, नाना वर्ण भयंकर

के पुत्र महा भयकर अत्य-
शब्द महा विषम भेषको धरे, विकराल स्वरूप तिनको देखकर बानरवंशियों के पुत्र महा भयकर अत्य-
न्त विह्वल भए। वे देव क्षणमें सिंह क्षणविषै मेघ क्षणविषै हाथी क्षण विषै सर्प क्षण विषै वायु क्षणमें
वृक्ष क्षण विषै पर्वत, सो इनकर कपिकुमारनिको पीडित देख कटकके देव मदद करते भए। देवनिमें
परस्पर युद्ध भया लंकाके देव कटकके देवनिसे। अर कपिकुमार लंकाके सन्मुख भए तब यक्षनिके स्वामी
पूर्णभद्र माणिभद्र महा क्रोधको प्राप्त भए दोनों यक्षेश्वर परस्पर वार्ता करते भए देखो ये निर्दई कपिनि-
के पुत्र महाविकारको प्राप्त भए हैं। रावण तो निराहार होय देहविषै निस्पृह सर्व जगतका कार्य तज
पोसे बैठा है सो ऐसे शांतचित्तको यह छिद्र पाय पापी पीडा चाहै हैं, सो यह योधावोंकी चेष्टा नाहीं।
यह वचन पूर्णभद्रके सुन माणिभद्र बोला—अहो पूर्णभद्र! रावणका इंद्र भी पराभव करिवे समर्थ नाही,
रावण सुन्दर लक्षणनिकर पूर्ण शांत स्वभाव है। तब पूर्णभद्रने कही—जो लंकाको विघ्न उपजा है सो
आपा दूर करेंगे, यह वचन कहकर दोनों धीर सम्यक्दृष्टि जिनधर्मी यक्षनिके ईश्वर युद्धको उद्यमी भए
सो बानरवंशिनिके कुमार और उनके पक्षी देव सब भागे। ये दोनों यक्षेश्वर महावायु चलाय पाषाण
बरसावते भए अर प्रलय कालके मेघ समान गाजते भए। तिनके जांघोंकी पवनकर कपिदल सूके
पानकी न्याई उडे तत्काल भाग गए। तिनके लार ही ये दोनों यक्षेश्वर रामके निकट उलाहना देनेको
आए। सो पूर्णभद्र सुबुद्धि रामको स्तुति कर कहते भए राजा दशरथ महाधर्मात्मा तिनके तुम पुत्र अर
अयोग्य कार्यके त्यागी सदा योग्य कार्यनिके उद्यमी शास्त्र समुद्रके पारगामी शुभ गुणनिकर सकलविषै
ऊंच, तिहारी सेना लंकाके लोकनिको उपद्रव करै। यह कहांकी बात? जो जाका द्रव्य हरे सो ताका
प्राण हरे है यह धन जीवनिके वाह्य प्राण हैं। अमोलिक हीरे वैडूर्य मणि मूंगा मोती पद्मराग मणि
इत्यादि अनेक रत्ननिकर भरी लंका उद्वेगको प्राप्त करी। तब यह वचन पूर्णभद्रके सुन रामका सेवक गरु-

डकेतु कहिये लक्ष्मण नीलकमल समान, सो तेजसे विविधरूप वचन कहता भया—ये श्रीरघुचन्द्र तिनके राणी सीता प्राणहूतैं प्यारी शीलरूप आभूषणकी धरणहारी वह दुरात्मा रावण छलकर हर लेगया ताका पक्ष तुम कहा करो, हे यक्षेन्द्र ! हमने तिहारा कहा अपराध किया अर ताने कहा उपकार किया जो तुम भृकुटी बांकीकर अर सन्ध्याकी ललाई समान अरुण नेत्रकर उलहना देनेको आए सो योग्य नाहीं एती वार्ता लक्ष्मणने कही अर राजा सुग्रीव अति भयरूप होय पूर्णभद्रको अर्घ देय कहता भया—हे यक्षेन्द्र ! क्रोध तजो अर हम लंकाविषै कछु उपद्रव न करैं परन्तु यह वार्ता है रावण बहुरूपिणी विद्या साधै है सो जो कदाचित् ताको विद्या सिद्ध होय तो वाके सन्मुख कोई ठहर न सकै जैसे जिनधर्मके पाठकके सन्मुख वादी न टिकै तातैं वह क्षमावन्त होय विद्या साधै है सो ताको क्रोध उपजावेंगे जो विद्या साध न सके जैसे मिथ्यादृष्टि मोक्षको साध न सके, तब पूर्णभद्र बोले—ऐसे ही करो परंतु लंकाके एक जीर्ण तृणको भी बाधा न करसकोगे अर तुम रावणके अंगको बाधा मत करो अर अन्य बातनिकर क्रोध उपजावो परन्तु रावण अतिदृढ है ताहि क्रोध उपजना कठिन है। ऐसैं कह वे दोनों यक्षेन्द्र भव्यजीवनि विषै है वात्सल्य जिनका, प्रसन्न हैं नेत्र जिनके मुनिनिके समूहोंके भक्त, वैयाव्रतविषै उद्यमी जिनधर्मी अपने स्थानक गए रामको उलहना देने आए थे सो लक्ष्मणके वचननिकर लज्जवान भए, समभावकर अपने स्थानक गए सो जाय तिष्ठे। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! जौंलग निर्दोषता होय तौंलग परस्पर अतिप्रीति होय अर सदोषता भए प्रीतिभंग होय जैसे सूर्य उत्पातसहित होय तो नीका न लगे॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणका विद्या साधना अर कपिकुमारनिका लंका गमन बहुरि पूर्णभद्र मणिभद्रका कोप, कोपकी शांति वर्णन करनेवाला सत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७० ॥

अंगद ताने लंकाविषै प्रवेश किया

अथानन्तर पूर्णभद्र माणिभद्रको शांतभाव जान सुग्रीवका पुत्र अंगद ताने लंकाविषै प्रवेश किया
सो अंगद किहकंधकांड नामा हाथीपर चढा मोतिनिकी माला कर शोभित उज्ज्वल चमरनिकर युक्त
ऐसा सोहता भया जैसा मेघमालाविषैं पूर्णमासीका चन्द्रमा सोहै, अतिउदार महासामंत तथा स्कंध इन्द्र
नील आदि बडी ऋद्धिकर मंडित तुरंगनिपर चढे कुमार गमनको उद्यमी भए अर अनेक पयादे चन्दन
कर चर्चित हैं अंग ।जिनके तांबूलनिकर लाल अधर कांधे ऊपर खड्ग धरे सुन्दर वस्त्र पहिरे स्वर्णके
आभूषणकर शोभित सुन्दर चेष्टा धरे आगे पीछे अगल बगल पयादे चले जांय हैं वीण वांसुरी मृदंगादि
वादित्र बाजे हैं नृत्य होता जाय हैं कपिवंशियोंके कुमार लंकाविषै ऐसे गए जैसे स्वर्गपुरीविषै असुरकु-
मार प्रवेश करें, अंगदको लंकाविषै प्रवेश करता देख स्त्रीजन परस्पर वार्ता करती भई— देखो ! यह अंग-
दरूप चन्द्रमा दशमुखकी नगरीविषै निर्भय भया चला जाय है। याने कहा आरम्भा ? आगे अब कहा
होयगा ? या भांति लोक बात करें हैं । ये चले चले रावणके मंदिरविषै गए सो मणियोंका चौक देख
इन्होंने जानी ये सरोवर हैं सो त्रासको प्राप्त भए। बहुरि निश्चय देख मणियोंका चौक जाना तब आगे
गए सुमेरुकी गुफा समान महारत्ननिकर निर्मापित मंदिरका द्वार देखा मणियोंके तोरणनिकर देदीप्य-
मान तहां अंजन पर्वत सारिखे इन्द्रनीलमणिनिके गज देखे महास्कंध कुम्भस्थल जिनके स्थूल दंत अ-
त्यन्त मनोग्य अर तिनके मस्तकपर सिंहानिके चिन्ह जिनके सिरपर पूछ हाथियोंके कुम्भस्थलपर सिंह
विकराल वदन तीक्ष्ण दाढ डरावने केश तिनको देख पयादे डरे । जानिए सांचे ही हाथी हैं तब भयकर
भागे अतिविह्वल भए अंगदने नीके समझाए तब आगे चले । रावणके महलविषै कपिवंशी ऐसे जावें
जैसे सिंहकी गुफाविषै मृग जांय, अनेक द्वार उलंघ आगे जायवेको समर्थ भए, घरोंकी रचना गहन सो
ऐसे भटके जैसे जन्मका अन्धा भ्रमै, स्फटिकमणिके महिल तहां आकाशकी आशंकाकर भ्रमको प्राप्त

भए अर इन्द्र नीलमणिकी भीति सो अन्धकारस्वरूप भासै मस्तकविषै शिलाकी लागी सो आकुल होय भूमिमें पडे, वेदनाकर व्याकुल हैं नेत्र जिनके, काहू प्रकार मार्ग पायकर आगे गए जहां स्फटिक मणिकी भीति सो घनों के गोडे फूटे ललाट फूटे दुखी भए तब उलटे फिरे सो मार्ग न पावें आगे एक रत्नमई स्त्री देखी साक्षात् स्त्री जान तासे पूछते भए सो वह कहा कहै ? तब महाशंकाके भरे आगे गए विह्वल होय स्फटिक मणिकी भूमिमें पडे, आगे शांतिनाथके मंदिरका शिखर नजर आया परन्तु जाय सकें नाहीं स्फटिककी भीति आडा तब वह स्त्री दृष्टिपरी थी त्यों एक रत्नमई द्वारपाल दृष्टिपडा हेमरूप बैंतकी छडी जाके हाथमें ताहि कहा– श्रीशान्तिनाथके मन्दिरका मार्ग बताओ सो वह कहा बतावे ! तब वाहि हाथसूं कूटा सो कूटनहारेकी अंगुरी चूर्ण होय गई। बहुरि आगे गए, जाना यह इन्द्रनील-मणिका द्वार है, शान्तिनाथके चैत्यालयमें जानेकी बुद्धि करी, कुटिल हैं भाव जिनके आगे एक वचन बोलता मनुष्य देखा ताके केश पकडे अर कहा तू हमारे आगे आगे चल, शान्तिनाथका मन्दिर दिखाय जब वह अग्रगामी भया तब ये निराकुल भए श्रीशान्तिनाथके मन्दिर जाय पहुंचे । पुष्पांजलि चढाय जय जय शब्द किए स्फटिकके थम्भानिके ऊपर बडा विस्तार देखा सो आश्चर्यको प्राप्त भए मनमें विचा-रते भए जैसे चक्रवर्तीके मन्दिरमें जिनमन्दिर होय तैसे हैं। अंगद पहिलेही वाहनादिक तज भीतर गया ललाटपर दोनो हाथ धर नमस्कारकर तीन प्रदक्षिणा देय स्तोत्र पाठ करता भया, सेना लार थी सो बाहिरले चौकाविषैं छांडी। कैसा है अंगद ? फूल रहे हैं नेत्र जाके रत्नानिके चित्रामकर मंडल लिखा सोलह स्वप्नेका भाव देखकर नमस्कार किया, मंडपकी आदि भीतिविषै वह धीर भगवानको नमस्कार कर शांतिनाथके मंदिरविषै गया अति हर्षका भरा भगवानकी बंदना करता भया । बहुरि देखे तो सन्मुख रावण पद्मासन धरे तिष्ठे है, इंद्र नीलमणिकी किरणानिके समूह समान है प्रभा जाकी, भगवानके सन्मुख

कैसा बैठा है जैसे सूर्यके सन्मुख राहु बैठा होय । विद्याको ध्यावे जैसे भरत जिनदीक्षाको ध्यावे सो रावणको अंगद कहता भया—हे रावण ! कहो अब तेरी कहा बात ? तोसे ऐसी करूं जैसी यम न करै तैने कहा पाखंड रोपा ? भगवानके सन्मुख यह पाखंड कहा ? धिकार तुझे पापकर्मीने वृथा शुभक्रियाका आरंभ किया है ऐसा कहकर ताका उत्तरासन उतारचा अर याकी राणियोंको याके आगे कूटता भया, कठोर वचन कहता भया अर रावणके पास पुष्प पडे हुते सो उठाय लीये अर स्वर्णके कमलनिकर भगवानकी पूजा करी, बहुरि रावणसूं कुवचन कहता भया । अर रावणके हाथमेंसूं स्फटिककी माला छीन लई, सो मणियां विखर गईं बहुरि माणियें चुन माला परोय रावणके हाथविषै दई बहुरि छिनाय लई बहुरि परोय गलेविषै डाली बहुरि मस्तकपर मेली बहुरि रावणका राजलोक सोई भया कमलनिका वन ताविषै ग्रीषम कर तप्तायमान जो वनका हाथी ताकी न्याईं प्रवेश किया अर निःशंक भया राजलोकमें उपद्रव करता भया जैसे चंचल घोडा कूदता फिरै तैसे चपलताकरि परिभ्रमण किया काहूके कंठविषै कपडेका रस्सा बनाय बांधा अर काहूके कंठविषै उत्तरासन डार थंभविषै बांध बहुरि छोड दिया काहूको पकड अपने मनुष्यनिसे कही याहि बेच आवो ताने हंसकर कही पांच दीनारानिको बेच आया । या भांति अनेक चेष्टा करी । काहूके काननिविषै घुंघुरू घाले अर केशनिविषै कटिमेखला पहिराई, काहूके मस्तकका चूडामणि उतार चरणनिविषै पहिराया अर काहूको परस्पर केशनिकर बांधी अर काहूके केशोंविषै शब्द करते मोर बैठाये । या भांति जैसे सांड गायोंके समूहविषै प्रवेश करै अर तिनको व्याकुल करै तैसे रावणके समीप सब राजलोकोंको क्लेश उपजाया अर अंगद क्रोधकर रावणसूं कहता भया—हे अधम राक्षस ! तैंने कपट कर सीता हरी, अब हम तेरे देखते तेरी समस्त स्त्रीनिकूं हरे हैं तोमें शक्ति होय तो यत्न कर ऐसा कहकर याके आगे मंदोदरीको पकड ल्याया जैसे मृगराज मृगीको पकड ल्यावै, कंपाय-

मान हैं नेत्र जाके चोटी पकड रावणके निकट खींचता भया जैसे भरत राजलक्ष्मीको खींचे अर रावणसूं कहता भया—देख ! यह पटरानी तेरे जीवहूतैं प्यारी मंदोदरी गुणवंती ताहि हम हर ले जांय हैं । यह सुग्रीवके चमरग्राहिणी चेरी होयगी, सो मंदोदरी आंखनितैं आंसू डारती भई अर विलाप करने लगी। रावणके पायनविषै प्रवेश करे कभी भुजानिविषै प्रवेश करै अर भरतारसों कहती भई—हे नाथ ! मेरी रक्षा करहु । ऐसी दशा मेरी कहा न देखो हो, तुम क्या और ही होय गए। तुम रावण हो अक और ही हो । अहो जैसी निरग्रंथ मुनिकी वीतरागता होय तैसी तुम वीतरागता पकडी सो ऐसे दुःखमें यह अवस्था क्या ? धिकार तिहारे वलको जो या पापीका सिर खड्गसों न काटो । तुम महाबलवान चांद सूर्य समान पुरुषोंका पराभव न सहो सो ऐसे रंकका कैसे सहो। हे लंकेश्वर ! ध्यानविषै चित्त लगाया न काहूकी सुनो न देखो अर्धपर्यंकासन घर बैठे अहंकार तज दिया जैसा सुमेरुका शिखर अचल होय, तैसे अचल होय तिष्ठे सर्व इंद्रियनिकी क्रिया तजी विद्याके आराधनविषै तत्पर निश्चल शरीर महाधीर ऐसे तिष्ठे हो मानों काष्ठके हो अथवा चित्रामके हो, जैसे राम सीताको चिंतवें तैसे तुम विद्याको चिंतवो हो, स्थिरता कर सुमेरुके तुल्य भए हो। जब या भांति मंदोदरी रावणसे कहती भई ताही समय बहुरूपिणी विद्या दशोंदिशाविषै उद्योत करती जय जयकार शब्द उचारती रावणके समीप आय ठाढी भई, अर कहती भई—हे देव ! आज्ञामें उद्यमी मैं तुमको सिद्ध भई मोहि आदेश देवहु । एक चक्री अर्धचक्रीको टार तिहारी आज्ञासे विमुख होय ताहि वश करूं या लोकविषै तिहारी आज्ञाकारिणी हूं । हम सारिखनिकी यही रीति है जो हम चक्रवर्तियोंसे समर्थ नाहीं जो तू कहे तो सर्व दैत्यनिको जीतूं, देवनिको वश करूं जो तोसे अप्रिय होय ताहि वशीभूत करूं अर विद्याधर तो मेरे तृण समान हैं। यह विद्याके वचन सुन रावण योग पूर्ण कर ज्योतिका धारक उदार चेष्टाका धरणहारा शांतिनाथके चैत्यालयकी

प्रदाक्षिणा करता भया। ताही समय अंगद मंदोदरीको छांड आकाश गमन कर रामके समीप आया। कैसा है अंगद ? सूर्य समान है तेज जाका ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै श्रीशांतिनाथके मंदिरमें रावणको बहुरूपिणी विद्याको सिद्ध होनेका वर्णन करनेवाला इकहत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७१ ॥

अथानन्तर रावणकी अट्ठारह हज़ार स्त्री रावणके पास एक साथ सर्व ही रुदन करती भई सुन्दर है दर्शन जिनका। हे स्वामिन् ! सर्व विद्याधरनिके अधीश तुम हमारे प्रभु सो तुमको होते संते मूर्ख अंगदने आयकर हमारा अपमान किया। तुम परम तेजके धारक सूर्य समान सो ध्यानारूढ हुते अर विद्याधर आगिया समान, सो तिहारे मूंह आगिला छोहरा सुग्रीवका पुत्र पापी हमको उपद्रव करै। सुनकर तिनके वचन रावण सबकी दिलासा करता भया अर कहता भया—हे प्रिये ! वह पापी ऐसी चेष्टा करै है सो मृत्युके पाशकर बंधा है। तुम दुख तजो जैसे सदा आनन्द रूप रहो हो ताही भांति रहो, मैं सुग्रीवको निग्रीव कहिए मस्तकरहित भूमिपर प्रभात ही करूंगा अर वे दोनों भाई राम लक्ष्मण भूमिगोचरी कीट समान हैं तिनपर कहा कोप, ये दुष्ट विद्याधर सब इनपै भेले भए हैं तिनका क्षय करूंगा, हे प्रिये ! मेरी भौंह टेढी करनेही में शत्रु विलाय जांय अर अब तो बहुरूपिणी महाविद्या सिद्ध भई मोसे शत्रु कहीं न जीवें। या भांति सब स्त्रीनिको महा धीर्य बंधाय मनमें जानता भया मैं शत्रु हते। भगवानके मंदिरसे बाहिर निकसा नानाप्रकारके बादित्र बाजते भए, गीत नृत्य होते भए, रावणका अभिषेक भया, कामदेव समान है रूप जाका स्वर्ण रत्ननिके कलशनिकर स्त्री स्नान करावती भईं। कैसी हैं स्त्री ? कांति रूप चांदनीसे मंडित है शरीर जिनका चंद्रमा समान वदन अर सुफेद मणिनिके कलशनिकर स्नान करावें

कांतिको धरें मानों सांझ फूल रही है।
सो अद्भुत ज्योति भासती भई अर कई एक स्त्री कमल समान सांझ ही जल बरसे हैं अर कई
अर उगते सूर्य समान सुवर्णके कलश तिनकर स्नान करावें सो मानों साक्षात् लक्ष्मी ही
एक स्त्री हरित मणिके कलशनिकर स्नान करावती अतिहर्षकी भरी शोभैं हैं मानों महासुगन्ध शरीर जिनपर
हैं। कमल पत्र हैं कलशनिके मुख पर, अर कैयक केलेके गोभ समान कोमल रत्नजडित सिंहासन
भ्रमर गुंजार करे हैं वे नानाप्रकारके सुगन्ध उबटना कर रावणको नानाप्रकारके पूर्ण शांति-
पर स्नान करावती भई। सो रावणने स्नानकर आभूषण पहिरे, महा सावधान भावनिकर नमस्कार करता भया
नाथके मंदिरमें गया। वहां अरहन्तदेवकी पूजा कर स्तुति करता भया, बारम्बार खाद्य स्वाद्य बहुरि भोजन
बहुरि भोजनशालामें आया, चार प्रकारका उत्तम आहार किया अशन पान नानाप्रकारके अद्-
कर विद्याकी परख निमित्त क्रीडा भूमिविषै गया, वहां विद्याकर अनेकरूप बनाय भूकम्प किया, रामके
भुत कर्म विद्याधरनिसे न बनें सो बहुरूपिणी विद्यासे कीए अपने हाथकी घात कर नाथ ! तुम
कटकविषै कपियोंको ऐसा भय उपजा मानों मृत्यु आई अर रावणको मन्त्री कहते भए—हे कहना ? सो ताके
टार राघवको जीतनहारा और नाहीं, राम महा योधा है और क्रोधवान होवे तब कहा
सन्मुख तुम ही आवो अर कोई रणविषै रामके सन्मुख आवनेको सामर्थ नाहीं।

अथानन्तर रावणने बहुरूपिणी विद्यासे मायामई कटक बनाया अर आप उद्यानविषै जहां सीता
तिष्ठे तहां गया मंत्रिनिकर मंडित जैसे देवनिकर संयुक्त इंद्र होय, सो सूर्य समान कांतिकर युक्त आ-
वता भया तब ताको आवता देख विद्याधरी सीतासों कहती भई— हे शुभे ! महा ज्योतिवन्त रावण पु-
ष्पक विमानसे उतरकर आया जैसे ग्रीषम ऋतुमें सूर्यकी किरणसे आतापको पाता गजेंद्र सरोवरीके ओर
आवे तैसे कामरूप अग्निसे तापरूप भया आवै है। यह प्रमद नामा उद्यान पुष्पनिकी शोभाकर शो-

भित जहां भ्रमर गुंजार करे हैं। तब सीता बहुरूपिणी विद्याकर संयुक्त रावणको देखकर भयभीत भई मनमें विचारै है याके बलका पार नाहीं सो राम लक्ष्मण हू याहि न जीतेंगे। मैं मन्दभागिनी रामको अथवा लक्ष्मणको अथवा अपने भाई भामण्डलको मत हना सुनूं। यह विचार कर व्याकुल है चित्त जाका कांपती चिन्तारूप तिष्ठे है वहां रावण आया सो कहता भया— हे देवी मैं पापीने कपट कर तुझे हरी सो यह बात क्षत्री कुलविषै उत्पन्न भए हैं जे धीर अतिवीर तिनको सर्वथा उचित नाहीं, परन्तु कर्म की गति ऐसी है मोहकर्म बलवान है अर मैं पूर्व अनंतवीर्यस्वामीके समीप व्रत लिया हुता जो परनारी मोहि न इच्छे ताहि मैं न ग्रहूं उर्वशी रंभा अथवा और मनोहर होय तो भी मेरे प्रयोजन नाहीं। यह प्रतिज्ञा पालते संते मैं तेरी कृपा ही की अभिलाषा करी परन्तु बलात्कार रमी नहीं। हे जगतविषै उत्तम सुन्दरी! अब मेरी भुजानिकर चलाए जे वाण तिनसे तेरे अवलम्बन राम लक्ष्मण भिदे ही जान अर तू मेरे संग पुष्पक विमानमें बैठ आनंदसे बिहार कर। सुमेरुके शिखर चैत्य वृक्ष अनेक वन उपवन नदी सरोवर अवलोकन करती विहार कर। तब सीता दोनों हाथ कानोंपर धर गद्गद् वाणीसे दीन शब्द कहती भई—हे दशानन! तू बडे कुलविषै उपजा है तो यह करियो जो कदाचित् संग्रामविषै तेरे अर मेरे वल्लभके शस्त्रप्रहार होय तो पहले यह संदेशा कहे बगैर मेरे कंथको मत हतियो यह कहियो—हे पद्म! भामंडलकी बहिनने तुमको यह कहा है जो तिहारे वियोगतें महाशोकके भारकर महा दुःखी हूं मेरे प्राण तिहारे जीव ही तक हैं मेरी दशा यह भई है जैसे पवनकी हती दीपककी शिखा, हे राजा दशरथके पुत्र! जनककी पुत्रीने तुमको बारम्बार स्तुतिकर यह कही है तिहारे दर्शनकी अभिलाषाकर यह प्राण टिक रहे हैं, ऐसा कहकर मूर्छित होय भूमिमें पडी जैसे माते हाथीते भग्न करी कल्पवृक्षकी बेल गिर पडे, यह अवस्था महासतीकी देख रावणका मन कोमल भया परम दुःखी भया यह चिन्ता

करता भया अहो कर्मनिके योगकर इनका निःसंदेह स्नेह है इनके स्नेहका क्षय नाहीं अर धिक्कार मोको मैं अति अयोग्य कार्य किया जो ऐसे स्नेहवान युगलका वियोग किया, पापाचारी महानीच जन समान मैं निःकारण अपयशरूप मलसे लिप्त भया, शुद्धचन्द्रमा समान गोत्र हमारा, मैं मलिन किया। मेरे समान दुरात्मा मेरे बंशमें न भया ऐसा कार्य काहूने न किया सो मैंने किया। जे पुरुषोंमें इन्द्र हैं ते नारीको तुच्छ गिने हैं, यह स्त्री साक्षात् विषफल तुल्य है कलेशकी उत्पात्तिका स्थानक सर्पके मस्तककी मणि समान अर महा मोहका कारण प्रथम तो स्त्री मात्र ही निषिद्ध हैं अर परस्त्रीकी कहा बात ? सर्वथा त्याज्य ही है परस्त्री नदी समान कुटिल महा भयंकर धर्म अर्थका नाश करणहारी सदा सन्तोंको त्याज्य ही हैं। मैं महा पापकी खान अब तक यह सीता मुझे देवांगनासे भी अति प्रिय भासती थी सो अब विषके कुम्भ तुल्य भासै है यह तो केवल रामसूं अनुरागिनी है। अबलग यह न इच्छती थी परन्तु मेरे अभिलाषा थी अब जीर्ण तृणवत् भासै है। यह तो केवल रामसे तन्मय है मोसे कदाचित् न मिले, मेरा भाई महा पण्डित विभीषण सब जानता हुता सो मोहि बहुत समझाया मेरा मन विकारको प्राप्त भया सो न मानी तासे द्वेष किया। जब विभीषणके वचननिकर मैत्रीभाव करता तो नीके था अब महा युद्ध भया अनेक हते गए अब कैसी मित्रता ? यह मित्रता सुभटोंको योग्य नाहीं अर युद्ध करके बहुरि दया पालनी यह बने नाहीं, अहो मैं सामान्य मनुष्यकी नाईं संकटमें पडा हूं जो कदाचित जानकी रामपै पठावों तो लोग मोहि असमर्थ जानें अर युद्ध करिये तो महा हिंसा होय, कोई ऐसे हैं जिनके दया नाहीं केवल क्रूरता रूप हैं, ते भी काल क्षेप करें हैं अर कई एक दयावान हैं संसार कार्यसे रहित हैं ते सुखसे जीवे हैं मैं मानी युद्धाभिलाषी अर कछु करुणाभाव नाहीं सो हम सारिखे महा दुखी हैं अर रामके सिंहबाहन अर लक्ष्मणके गरुडबाहन विद्या सो इनकर महा उद्योत है सो इनको शस्त्ररहित करूं अर जीवते पकडूं

बहुरि बहुत धन दूं अर सीता दूं तो मेरी बडी कीर्ति होय अर मोहि पाप न होय यह न्याय है। तातैं
यहीं करूं ऐसा मन में धार महा विभवसंयुक्त रावण राजलोकविषै गया जैसे माता हाथी कमलनिके
वनविषै जाय। बहुरि विचारी अंगदने बहुत अनीति करी या बाततें अति क्रोध किया अर लाल नेत्र
होय आए रावण होंठ डसता वचन कहता भया—वह पापी सुग्रीव नाहीं दुर्ग्रीव है ताहि निग्रीव कहिये
मस्तकरहित करूंगा ताके पुत्र अंगदसहित चन्द्रहास खड्ग कर दोय टूक करूंगा अर तमोमण्डलको
लोग भामण्डल कहैं सो वह महा दुष्ट है ताहि दृढबंधनसे बांध लोहके मुगदरोंसे कूट मारूंगा अर हनू-
मानको तीक्ष्ण करोंतकी धारसे काठके युगलमें बान्ध विहराऊंगा वह महा अनीति है एक राम न्याय-
मार्गी है ताहि छांडूगा अर समस्त अन्यायमार्गी हैं तिनको शस्त्रनिकर चूर डारूंगा ऐसा विचार कर
रावण तिष्ठा। अर उत्पात सैकडों होने लगे सूर्यका मण्डल आयुध समान तीक्ष्ण दृष्टि पडा अर पूर्ण-
मासीका चन्द्रमा अस्त होय गया, आसन पर भूकम्प भया, दशों दिशा कम्पायमान भई, उल्कापात
भए शृगाली (गीदडी) विरसशब्द बोलती भई, तुरंग नाड हिलाय विरस विरूप हींसते भए, हाथी रूक्ष
शब्द करते भए, सूण्ड से धरती कूटते भए, यक्षानिकी मूर्तिके अश्रुपात पडे, वृक्ष मूलतें गिर पडे सूर्य
के सन्मुख काग कटुक शब्द करते भए, ढीले पक्ष किए महा व्याकुल भए अर सरोवर जलकर भरे हुते
शोषको प्राप्त भए अर गिरियोंके शिखर गिर पडे अर रुधिरकी वर्षा भई थोडेही दिनमें जानिए है लंके-
श्वरकी मृत्यु होय ऐसे अपशकुन और प्रकार नाहीं जब पुण्यक्षीण होय तब इंद्र भी न बचें पुरुषमें पौरष
पुण्यके उदय कर होय है जो कछू प्राप्त होना होय सोई पाईये है, हीन अधिक नाहीं। प्राणियोंके शूर-
वीरता सुकृतके बल कर है।

देखो, रावण नीति शस्त्रकेविषैं प्रवीण समस्त लौकिक नीति रीति जानै व्याकरणका पाठी महा

गुणनिकरमंडित सो कर्मनिकर प्रेरा संता अनीति मार्गको प्राप्त भया मूढबुद्धि भया लोकविषै मरण उपरांत कोई दुःख नाहीं सो याको अत्यन्त गर्वकर विचार नाहीं नक्षत्रानिके वलकर रहित अर ग्रह सब ही क्रूर आए सो यह अविवेकी रण क्षेत्रका अभिलाषी होता भया प्रतापके भंगका है भय जाको अर महा शूर वीरताके रससे युक्त यद्यपि अनेक शास्त्रनिका अभ्यास किया है तथापि युक्त अयुक्तको न देखै। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतें कहे हैं—हे मगधाधिपति ! रावण महामानी अपने मनविषै विचारे है सो सुन—सुग्रीव भामण्डलादिक समस्तको जीत अर कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनादको छुडाय लंकामें लाऊंगा वहुरि वानरवंशिनिका वंश नाश अर भामण्डलका पराभव करूंगा अर भूमिगोचरिनिको भूमिविषै न रहने दूंगा अर शुद्ध विद्याधरनिको धराविषै थापूंगा तब तीन लोकके नाथ तीर्थंकर देव अर चक्रा-युध बलभद्र नारायण हम सारिषे विद्याधरनिके कुलहीविषै उपजेंगे ऐसा वृथा विचार करता भया। हे मगधेश्वर ! जा मनुष्यने जैसे संचित कर्म किए होंय तैसा ही फल भोगवे। ऐसें न होय तो शास्त्रोंके पाठी कैसे भूलें। शास्त्र हैं सो सूर्य समान हैं ताके प्रकाश होते अन्धकार कैसे रहै परन्तु जे घूघू समान मनुष्य हैं तिनको प्रकाश न होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणके युद्धका निश्चय कथन वर्णन करनेवाला बहत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७२ ॥

अथानन्तर दूजे दिन प्रभातही रावण महादेदीप्यमान आस्थान मंडपविषै तिष्ठा। सूर्यके उदय होते हुए सभाविषै कुवेर वरुण ईशान यम सोम समान जे वडे २ राजा तिनकर सेवनीक जैसे देवनिकर मंडित इंद्र विराजे तैसे राजानिकर मंडित सिंहासन पर विराजा। परम कांतिको धरे जैसे ग्रह तारा नक्षत्र-

निकर युक्त चन्द्रमा सोहै अत्यंत तैसे सुगंध मनोग्य वस्त्र पुष्पमाला अर महामनोहर गज मोतीनिके हार तिनसे शोभै है उरस्थल जाका, महा सौभाग्यरूप सौम्यदर्शन सभाको देखकर चिंता करता भया जो भाई कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनाद यहां नाहीं दीखे हैं सो उन विना यह सभा सोहै नाहीं और पुरुष कुमुदरूप बहुत हैं पर वे पुरुष कमलरूप नाहीं, सो यद्यपि रावण महारूपवान सुंदर वदन है अर फूल रहे हैं नेत्र कमल जाके, महा मनोग्य तथापि पुत्र भाईकी चिंतासे कुमलाया वदन नजर आवता भया अर महा क्रोधस्वरूप कुटिल है भृकुटी जाकी मानों क्रोधका भरा आशीविष सर्प ही है महा भयंकर होठ डसे महा विकराल स्वरूप मंत्री देखकर डरे आज ऐसा कौनसे कोप भया यह व्याकुलता भई। तब हाथ जोड सीस भूमिमें लगाय राजा मय उग्र शुक लोकाक्ष सारण इत्यादि धरतीकी ओर निरषते चलायमान हैं कुण्डल जिनके विनती करते भए—हे नाथ! तिहारे निकटवर्ती योधा सबही यह प्रार्थना करै हैं प्रसन्न होहु अर कैलाशके शिखर तुल्य ऊंचे महल जिनके मणियोंकी भीति मणियोंके झरोखा तिनमें तिष्ठती भ्रमररूप हैं नेत्र जिनके ऐसा सब राणियों सहित मंदोदरी सो याहि देखती भई। कैसा देखा? लाल हैं नेत्र जाके प्रतापका भरा ताहि देखकर मोहित भया है मन जाका, रावण उठकर आयुधशालामें गया। कैसी है आयुधशाला? अनेक दिव्य शस्त्र अर सामान्य शस्त्र तिनसे भरी अमोघबाण अर चक्रादिक अमोघ रत्न कर भरी जैसे वज्रशालामें इन्द्र जाय। जा समय रावण आयुधशालामें गया ता समय अपशकुन भए प्रथम ही छींक भई सो शकुनशास्त्रविषै पूर्वदिशाको छींक होय तो मृत्यु अर अग्निकोणविषै शोक दक्षिणमें हानि नैऋतमें शुभ पश्चिमविषै मिष्ट आहार वायुकोणमें सर्व संपदा उत्तरविषै कलह ईशानविषै धनागम आकाशविषै सर्वसंहार पातालविषै सर्व संपदा ये दशों दिशाविषै छींकके फल कहे। सो रावणको मृत्युकी छींक भई बहुरि आगे मार्ग रोके महा नाग निरखा अर हा शब्द ही शब्द धिक्

शब्द कहां जाय है यह वचन होते भए अर पवनकर छत्रके वैडूर्य मणिका दण्ड भग्न भया अर उत्तरासन गिर पडा काग दाहिना बोला इत्यादि और भी अपशकुन भए ते युद्धतें निवारते भए वचनकर कर्मकर निवारते भए। जे नाना प्रकारके शकुन शास्त्रविषै प्रवीण पुरुष हुते वे अत्यन्त आकुल भए अर मंदोदरी शुकसारण इत्यादि बडे २ मंत्रियोंसे कहती भई—तुम स्वामीको कल्याणकी बात क्यों न कहो हो? अब तक कहा अपनी अर उनकी चेष्टा न देखी। कुम्भकर्ण इंद्रजीत मेघनादसे बंधनमें आए, वे लोकपाल समान महा तेजके धारक अद्भुत कार्यके करणहारे। तब नमस्कारकर मंत्री मंदोदरीसे कहते भए हे स्वामिनी! रावण महामानी यमराजसा क्रूर आप ही आप प्रधान है ऐसा या लोकविषै कोई नाहीं जाके वचन रावण मानै जो कुछ होनहार है ता प्रमाण बुद्धि उपजै है बुद्धि कर्मानुसारणी है सो इंद्रादिककर तथा देवोंके समूह कर और भांति न होय संपूर्ण न्यायशास्त्र अर धर्मशास्त्र तिहारा पति सब जानै है परन्तु मोह कर उन्मत्त भया है। हम बहुत प्रकार कहा सो काहू प्रकार मानै नाहीं, जो हठ पकडा है सो छांडे नाहीं, जैसे वर्षाकालके समागमविषै महा प्रवाहकर संयुक्त जो नदी ताका तिरना कठिन है तैसे कर्मनिका प्रेरा जो जीव ताका संबोधना कठिन है यद्यपि स्वामीका स्वभाव दुर्निवार है तथापि तिहारा कहा करे तो करै तातैं तुम हितकी बात कहो यामें दोष नाहीं। यह मंत्रिनिने कही तब पटराणी साक्षात् लक्ष्मी समान निर्मल है चित्त जाका सो कम्पायमान पतिके समीप जायवेको उद्यमी भई। महा निर्मल जल समान वस्त्र पहिरे जैसे रति कामके समीप जाय तैसे चली सिरपर छत्र फिरै हैं अनेक सहेली चमर ढारे हैं जैसे अनेक देवानिकर युक्त इन्द्राणी इन्द्रपै जाय तैसे यह सुन्दरवदनकी धरणहारी पतिपै गई निश्वास नाखती पांय डिगते शिथिल होय गई है कटि मेखला जाकी भरतारके कार्यविषै सावधान अनुरागकी भरी, ताहि स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई, आपका चित्त शस्त्रनिविषै अर वक्तरविषै तिनको आदरसे

स्पर्शे है सो मंदोदरीसे कहते भए—हे मनोहरे हंसनी समान चालकी चलनहारी हे देवी ! ऐसा कहा प्रयोजन है जो तुम शीघ्रतासे आवोहो । हे प्रिये ! मेरा मन काहेको हरो हो, जैसे स्वप्नविषै निधान । तब वह पतिव्रता पूर्ण चन्द्रमासमान है वदन जाका फूले कमलसे नेत्र स्वतः उत्तम चेष्टाकी धरणहारी मनोहर जे कटाक्ष वेई भए बाण सो पतिकी ओर चलावनहारी, महा विचक्षण मदनका निवास है अंग जाका महामधुर शब्दकी बोलनहारी स्वर्णके कुम्भसमान हैं स्तन जाके तिनके भारकर नयगया है उदर जाका दाडिमके बीज समान दांत मूंगासमान लालअधर अत्यन्त सुकुमार अति सुन्दरी भरतारकी कृपाभूमि सो नाथको प्रणामकर कहती भई—हे देव ! मोहि भर्तारकी भीख देवो आप महादयावन्त धर्मात्माओंसे अधिक स्नेहवन्त मैं तिहारे वियोगरूप नदीविषै डूबूहूं सो महाराज मोहि निकासो । कैसी है नदी ? दुःखरूप जलकी भरी संकल्प विकल्परूप लहरकर पूर्ण है, हे महाबुद्धे ! कुटुम्बरूप आकाशविषै सूर्यसमान प्रकाशके कर्ता एक मेरी विनती सुनो तिहारा कुलरूप कमलोंका वन महाविस्तीर्ण प्रलय हुआ जाय है सो क्यों न राखो । हे प्रभो ! तुम मोहि पटराणीका पद दिया हुता सो मेरे कठोर वचनोंको क्षमा करो, जे अपने हितू हैं तिनका वचन औषध समान ग्राह्य है परिणाम सुखदाई विरोधरहित स्वभावरूप आनन्दकारी है मैं यह कहू हूं तुम काहेको संदेहकी तुला चढो हो । यह तुला चढिवेकी नाहीं, काहेको आप संताप करो हो अर हम सबनिको संतापरूप करो हो, अब हू कहा गया ? तिहारा सब राज तुम सकल पृथिवीके स्वामी अर तिहारे भाई पुत्रनिको बुलाय लेहु तुम अपना चित्त कुमार्गतें निवारो अपना मन वश करो तिहारा मनोरथ अत्यन्त अकार्यविषै प्रवरता है सो इंद्रियरूप तरल तुरंगोंको विवेक रूप दृढ लगामकर वश करो इंद्रियनिके अर्थ कुमार्गविषै मनको कौन प्राप्त करे तुम अपवादका देनहारा जो उद्यम ता विषै कहा प्रवर्तो हो जैसे अष्टापद अपनी छाया कूपविषै देख क्रोधकर कूपविषै पडे तैसे तुम

आप ही क्लेश उपजाय आपदामें पडो हो, यह क्लेशका कारण जो अपयशरूप वृक्ष ताहि तज कर सुखसे तिष्ठो केलिके थंभ समान असार यह विषय ताहि कहा चाहो हो, यह तिहारा कुल समुद्रसमान गंभीर प्रशंसा योग्य ताहि शोभित करो यह भूमि गोचरोंकी स्त्री वडे कुलवन्तानिको अग्निकी शिखा समान है ताहि तजो। हे स्वामी ! जे सामंत सामंतसों युद्ध करे हैं वे मनविषै यह निश्चय करे हैं हम मरेंगे। हे नाथ ! तुम कौन अर्थ मरो हो पराई नारी ताके अर्थ कहा मरणा ? या मारिवेविषै यश नाहीं अर उनको मारो तिहारी जीत होय तोहू यश नाहीं क्षत्री मरे हैं यशके अर्थ तातैं सीतासम्बन्धी हठको छांडो अर जे वडे २ व्रत हैं तिनकी महिमा तो कहा कहीं एक यह परदार परित्याग ही पुरुषके होय तो दोऊ जन्म सुधरें शीलवन्त पुरुष भवसागर तिरें जो सर्वथा स्त्रीका त्याग करे सो तो अतिश्रेष्ठ ही है काजल समान कालिमाकी उपजावनहारी यह परनारी तिनविषै जे लोलुपी तिनविषै मेरु समान गुण होय तोहू तृण समान लघु होय जांय। जो चक्रवर्तीका पुत्र होय अर देव जाका पक्ष होय अर परस्त्री के संगरूप कीचविषै डूबे तो महा अपयशको प्राप्त होय जो मूढमति परस्त्रीसे रति करे है सो पापी आशीविष भुजंगनीसे रमै है, तिहारा कुल अत्यन्त निर्मल सो अपयशकर मलिन मत करो, दुर्बुद्धि तजो, जे महाबलवान हुते अर दूसरोंको निर्बल जानते अर्ककीर्ति अशनघोषादिक अनेक नाशको प्राप्त हुए। सो हे सुमुख ! तुम कहा न सुने। ये वचन मंदोदरीके सुन रावण कमलनयन कारी घटा समान है वर्ण जाका मलयागिरचन्दन कर लिप्त मंदोदरीसे कहता भया— हे कांते ! तू काहेको कायर भई मैं अर्ककीर्ति नाहीं जो जयकुमारसे हारा अर मैं अशनघोष नाहीं जो अमिततेजसे हारा अर और हू नाहीं मैं दशमुख हूं तू काहेको कायरताकी वात कहे है मैं शत्रुरूपवृक्षानिके समूहको दावानलरूप हूं। सीता कदाचित् न दूं, हे मंदमानसे तू भय मत करे या कथा कर तोहि कहा ? तोकों सीताकी रक्षा सौंपी है सो रक्षा भली भांति

कर अर जो रक्षा करिवेको समर्थ नाहीं तो शीघ्र मोहि सौंप देवो, तब मंदोदरी कहती भई तुम उससे रतिसुख बांछो हो तातैं यह कहो हो, मोहि सौंप देवो सो यह निर्लज्जताकी बात कुलवन्तोंको उचित नाहीं, बहुरि कहती भई तुमने सीताका कहा माहात्म्य देखा जो ताहि बारंबार बांछो हो वह ऐसी गुणवन्ती नाहीं ज्ञाता नाहीं, रूपवंतियोंका तिलक नाहीं, कलाविषै प्रवीण नाहीं, मनमोहनी नाहीं पतिके छांदे चलनेवारी नाहीं ता सहित रतिविषै बुद्धि करो हो, सो हे कंत ! यह कहा वार्ता, अपनी लघुता होय है सो तुम नाहीं जानो हो, मैं अपने मुख अपनी प्रशंसा कहा करूं अपने मुख अपने गुण कहे गुणोंकी गौणता होय है अर पराए मुख सुने प्रशंसा होय है तातैं मैं कहा कहूं तुम सब नीके जानो हो, विचारी सीता कहा ? लक्ष्मी भी मेरे तुल्य नाहीं तातैं सीताकी अभिलाषा तजो मेरा निरादर कर तुम भूमिगोचरिणीको इच्छो हो, सो मंदमति हो जैसे बालबुद्धि वैडूर्य मणिको तज अर कांचको इच्छे ताका कछू दिव्य रूप नाहीं तिहारे मनविषै कथा रुची यह ग्राम्यजनकी नारी समान अल्पमति ताकी कहा अभिलाषा अर मोहि आज्ञा देवो सोई रूप धरूं, तिहारे चित्तकी हरणहारी मैं लक्ष्मीका रूप धरूं अर आज्ञा करो तो शची इन्द्राणीका रूप धरूं कहो तो रतिका रूप धरूं। हे देव ! तुम इच्छा करो सोई रूप करूं, यह वार्ता मंदोदरीकी सुन रावणने नीचा मुख किया अर लज्जावान भया। बहुरि मंदोदरी कहती भई—तुम परस्त्री आसक्त होय अपनी आतमा लघु किया विषयरूप आमिषकी आसक्ती है जाके सो पापका भाजन है धिकार है ऐसी क्षुद्र चेष्टाको।

यह बचन सुन रावण मंदोदरी से कहता भया हे—चन्द्रबदनी ! कमललोचने ! तुम यह कही जो कहो जैसा रूप बहुरि धरूं सो औरोंके रूपसे तिहारा रूप कहा घटती है तिहारा स्वतः ही रूप मोहि अति वल्लभ है हे उत्तमे मेरे अन्य स्त्रीनि कर कहा ? तब हर्षितचित्त होय कहती भई—हे देव ! सूर्य

को दीपका उद्योत कहा दिखाइये, मैं जो हितके वचन आपको कहे सो औरौंको पूंछ देखो मैं स्त्री हूं मेरेमें ऐसी बुद्धि नाहीं शास्त्रमें यह कही है जो घनी सबही नय जाने हैं परन्तु दैव योग थकी प्रमादरूप भया होय तो जे हितु हैं ते समझावें जैसे विष्णुकुमार स्वामीको विक्रियाऋद्धिका विस्मरण भया तो औरोंके कहे कर जाना, यह पुरुष यह स्त्री ऐसा विकल्प मन्दबुद्धिनिके होय है जे बुद्धिमान हैं हितकारी वचन सबहीका मान लेंय, आपका कृपाभाव मो ऊपर है तो मैं कहूं हूं तुम परस्त्रीका प्रेम तजो, मैं जानकीको लेकर राम पै जाऊं अर रामको तिहारे पास ल्याऊं, अर कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनादको लाऊं अनेक जीवनिकी हिंसा कर कहा? ऐसे वचन मन्दोदरीने कहे तब रावण अतिक्रोधकर कहता भया शीघ्रही जावो जावो जहां तेरा मुख न देखूं तहां जावो अहो तू आपको वृथा पंडित माने है आपकी ऊंचता तज परपक्षकी प्रशंसामें प्रवरती, तू दीनचित्त है योधावोंकी माता तेरे इन्द्रजीत मेघनाद कैसे पुत्र अर मेरी पटराणी राजा मयकी पुत्री तोमें एती कायरता कहांसे आई? ऐसा कहा तब मन्दोदरी बोली—हे पति! सुनो जो ज्ञानियोंके मुख बलभद्र नारायण प्रतिनारायणका जन्म सुनिये है पहिला बलभद्र विजय नारायण त्रिपृष्ठ, प्रतिनारायण अश्वग्रीव, दूजा बलभद्र अचल नारायण द्विपृष्ट प्रतिहरि तारक इसभांति अबतक सात बलभद्र नारायण हो चुके सो इनके शत्रु प्रतिनारायण इन्होंने हते अब तुम्हारे समय यह बलभद्र नारायण भए हैं अर तुम प्रतिवासुदेव हो आगे प्रतिवासुदेव हठ कर हते गए तैसे तुम नाशको इच्छो हो जे बुद्धिमान् हैं तिनको यही कार्य करणा जो या लोक परलोकमें सुख होय अर दुःखके अंकुरकी उत्पत्ति न होय सो करनी यह जीव चिरकाल विषयसे तृप्त न भया तीन लोकविषै ऐसा कौन है जो विषयोंसे तृप्त होय तुम पापकर मोहित भए हो सो वृथा है अर उचित तो यह है तुमने बहुतकाल भोग किए अब मुनिव्रत धरो अथवा श्रावकके व्रतधर दुखोंका नाश करो अणुव्रत रूप खड्गकर दीप्त है अंग जाका नियम

रूप क्षत्रकर शोभित सम्यक् दर्शनरूप बक्तर पहिरे शीलरूप ध्वजा कर शोभित अनित्यादि बारह भावना तेई चन्दन तिनकर चर्चित है अंग जाका अर ज्ञानरूप धनुषको धरे वश किया है इंद्रियनिका बल जाने, शुभध्यान अर प्रतापकर युक्त मर्यादारूप अंकुशकर संयुक्त निश्चलरूप हाथीपर चढा जिन-भक्ति की है महाभक्ति जाके दुर्गतिरूप कुनदी सो महा कुटिल पापरूप है वेग जाका अतिदुःसह सो पंडितनिकर तिरिये है, ताहि तिरकर सुखी होवो अर हिमवान सुमेरु पर्वतविषै जिनालयको पूजते संते मेरे सहित ढाई द्वीपमें विहार कर अष्टादश सहस्र स्त्रीनिके हस्त कमल पल्लव तिनकर लडाया संता सुमेरु पर्वतके बनविषै क्रीडा कर, अर गंगाके तट पर क्रीडा कर अर और भी मनवांछित प्रदेशनिविषै रमणीक क्षेत्रनिविषै हे नरेन्द्र ! सुखसे विहार कर। या युद्ध कर कछू प्रयोजन नाहीं, प्रसन्न होवो, मेरा वचन सर्वथा सुखका कारण है यह लोकापवाद मत करावो । अपयशरूपसमुद्रमें काहेको डूबो हो, यह अपवाद विषतुल्य महानिन्द्य परम अनर्थका कारण भला नाहीं, दुर्जन लोक सहज ही परनिन्दा करें सो ऐसी वात सुनकर तो करे ही करें, या भांतिके शुभ वचन कह यह महासती हाथ जोड पतिका परम हित वांछती पतिके पायन पडी ।

तब रावण मन्दोदरीको उठायकर कहता भया—तू निःकारण क्यों भयको प्राप्त भई । हे सुन्दरवदनी ! मोसे अधिक या संसारविषै कोई नाहीं तू स्त्रीपर्यायके स्वभावकर वृथा काहेको भय करै है । तैने कही जो यह बलदेव नारायण हैं सो नाम नारायण अर नाम बलदेव भया तो कहा ? नाम भए कार्यकी सिद्धि नाहीं. नाम नाहर भया तो कहा ? नाहरके पराक्रम भए नाहर होय, कोई मनुष्य सिद्ध नाम कहाया तो कहा सिद्ध भया ? हे कांते ! तू कहा कायरताकी वार्ता करै, रथनूपुरका राजा इन्द्र कहावता सो कहा इन्द्र भया ? तैसे यह भी नारायण नाहीं, या भांति रावण प्रतिनारायण ऐसे प्रबल वचन स्त्रीको कह महा

प्रतापी क्रीडाभवनविषै मन्दोदरी सहित गया जैसे इन्द्र इन्द्राणीसहित क्रीडागृहविषै जाय सांझके समय सांझ फूली सूर्य अस्त समय किरण संकोचने लगा जैसे संयमी कषायोंको संकोचे सूर्य आसक्त होय अस्तको प्राप्त भया, कमल मुद्रित भए, चकवा चकवी वियोगके भयकर दीन वचन रटते भए, मानों सूर्यको बुलावै हैं, अर सूर्यके अस्त होयवेकर ग्रह नक्षत्रनिकी सेना आकाशविषै विस्तरी मानों चन्द्रमाने पठाई रात्रिके समय रत्नद्वीपोंका उद्योत भया दीपोंकी प्रभाकर लंका नगरी ऐसी शोभती भई मानों सुमेरुकी शिखा ही है कोऊ बल्लभा वल्लभसे मिलकर ऐसे कहती भई एक रात्रि तो तुम सहित व्यतीत करेंगे वहुरि देखिए कहा होय? अर कोई एक प्रिया नानाप्रकारके पुष्पानिकी सुगन्धताके मकरंदकर उन्मत्त भई स्वामीके अंग विषै मानों महा कोमल पुष्पनिकी वृष्टि ही पडी। कोई नारी कमल तुल्य हैं चरण जाके अर कठिन हैं कुच जाके महा सुन्दर शरीरकी धरणहारी सुन्दरपतिके समीप गई अर कोई सुन्दरी आभूषणनिको पहरती ऐसी शोभती भई मानों स्वर्ण रत्नोंको कृतार्थ करै है। भावार्थ— ता समान ज्योति रत्न स्वर्णनिविषै नाहीं रात्रि समय विद्याकर विद्याधर मन वांछित क्रीडा करते भए घर घरविषै भोग भूमिकीसी रचना होती भई, महा सुन्दर गीत अर वीण वांसुरियोंका शब्द तिनकर लंका हर्षित भई मानों वचनालाप ही करै है अर ताम्बूल सुगन्ध माल्यादिक भोग अर स्त्री आदि उपभोग सो भोगोपभोगनिकर लोग देवनिकी न्याई रमते भए अर कैएक उन्मत्त भई स्त्रियोंको नाना प्रकार रमावते भए अर कइयक नारी अपने वदनकी प्रतिविम्ब रत्ननिकी भीतिविषै देखकर जानती भई कि कोई दूजी स्त्री मन्दिरमें आई है सो ईर्षाकर नील कमलसे पतिको ताडना करती भई स्त्रीनिके मुखकी सुगंधताकर सुगंध होय गया अर वर्फके योगकर नारिनिके नेत्र लाल होय गए अर कोईयक नायिका नवोढा हुती अर प्रीतमने अमल खवाय उन्मत्त करी सो मन्मथ कर्मविषै प्रवीण प्रौढाके भावको प्राप्त भई लज्जारूप सखीको दूर-

कर उन्मत्ततारूप सखीने क्रीडाविषै अत्यंत तत्पर करी अर घूमें हैं नेत्र जाके अर स्खलित हैं वचन जाके स्त्री पुरुषनिकी चेष्टा उन्मत्तताकर विकटरूप होती भई। नरनारिनिके अधर मूंगा समान शोभायमान दीखते भए नर नारी मदोन्मत्त भए सो न कहनेकी बात कहते भये अर न करनेकी बात करते भये, लज्जा छुटगई, चंद्रमाके उदयकर मदनकी वृद्धि भई ऐसा ही तो इनका यौवन ऐसेही सुंदर मंदिर अर ऐसा ही अमलका जोर सो सब ही उन्मत्त चेष्टाका कारण आय प्राप्त भया ऐसी निशाविषै प्रभातविषै होनहार है युद्ध जिनके सो संभोगका योग उत्सवरूप होता भया अर राक्षसनिका इंद्र सुंदर है चेष्टा जाकी सो समस्त ही राजलोकको रमावता भया बारम्बार मन्दोदरीसे स्नेह जनावता भया। याका बदन रूप चन्द्र निरखते रावणके लोचन तृप्त न भये, मंदोदरी रावणसे कहती भई—मैं एक क्षणमात्र हू तुमको न तजूंगी। हे मनोहर ! सदा तिहारे संग ही रहूंगी जैसे बेल बाहुबालिके सर्व अंगसे लगी तैसे रहूंगी, आप युद्धविषै विजयकर वेग ही आवो, मैं रत्ननिको चूर्णकर चौक पूरूंगी अर तिहारे अर्घपाद्य करूंगी प्रभुकी महामख पूजा कराऊंगी, प्रेमकर कायर है चित्त जाका अत्यंत प्रेमके वचन कहते निशा व्यतीत भई अर कूकडा बोले नक्षत्रानिकी ज्योति मिटी संध्या लाल भई अर भगवानके चैत्यालयनिविषै महा मनोहर गीत-ध्वनि होती भई अर सूर्य लोकका लोचन उदयको सन्मुख भया अपनी किरणनिकर सर्व दिशाविषै उद्योत करता संता प्रलय कालके अग्नि मण्डल समान है आकार जाका प्रभात समय भया तब सब राणी पतिको छोडती उदास भई, तब रावणने सबको दिलासा करी, गम्भीर वादित्र बाजे, शंखोंके शब्द भए रावणकी आज्ञाकर जे युद्धविषै विचक्षण हैं महाभट महा अहंकारको धरते परम उद्धत अतिहर्षके भरे नगरसे निकसे, तुरंग हस्ती रथोंपर चढे खड्ग धनुष गदा वरछी इत्यादि अनेक आयुधानिको धरे, जिनपर चमर ढुरते छत्र फिरते महा शोभायमान देवनि जैसे स्वरूपवान् महा प्रतापी विद्याधरानिके अधि-

पति योधा शीघ्र कार्यके करणहारे श्रेष्ठ ऋद्धिके धारक युद्धको उद्यमी भए। ता दिन नगरकी स्त्री कमलनयनी करुणाभावकर दुखरूप होती भई सो तिनको निरखे दुर्जनका चित्त भी दयाल होय, कोई यक सुभट घरसे युद्धको निकसा अर स्त्री लार लगी आवै है ताहि कहता भया—हे मुग्धे ! घर जावो हम सुखसे जाय हैं अर कोई एक स्त्री भरतार चले हैं तिनको पीछेसे जाय कहती भई हे कन्त ! तिहारा उत्तरासन लेवो तब पति सन्मुख होय लेते भए। कैसी है मृगनयनी ? पतिके मुख देखवेकी है लालसा जाके अर कोई एक प्राणवल्लभा पतिको दृष्टिसे अगोचर होते संते सखियों सहित मूर्च्छा खाय पडी अर कोई एक पतिसूं पाछी आय मौन गह सेजपर पडी मानों काठकी पुतली ही है अर कोईयक शूरवीर श्रावकके व्रतका धारक पीठ पीछे अपनी स्त्रीको देखता भया अर आगे देवांगनाओंको देखता भया॥ भावार्थ—जे सामन्त अणुव्रतके धारक हैं वे देवलोकके अधिकारी हैं। अर जे सामन्त पहिले पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सौम्यवदन हुते वे युद्धके आगमनविषै कालसमान क्रूर आकार होय गए सिरपर टोप धरे बक्तर पहिरे शस्त्र लीए तेज भासते भए।

अथानन्तर चतुरंग सेनासंयुक्त धनुष छत्रादिक कर पूर्ण मारीच महा तेजको धरे युद्धका अभिलाषी आय प्राप्त भया फिर विमलचन्द्र आया महा धनुषधारी और सुनन्द आनन्द नन्द इत्यादि हजारों राजा आए सो विद्या कर निरमापित दिव्यरथ तिनपर चढे अग्नि कैसी प्रभा को धरे मानों अग्निकुमारदेव ही हैं कैयक तीक्ष्ण शस्त्रों कर सम्पूर्ण हिमवान पर्वत समान जे हाथी उनकर सब दिशावोंको आच्छादते हुए आए जैसे बिजुरीसे संयुक्त मेघमाला आवै और कैयक श्रेष्ठ तुरंगों पर चढे पांचों हथियारों कर संयुक्त शीघ्रही ज्योतिष लोकको उलंघ आवते भए नाना प्रकारके बडे बडे बादित्र और तुरंगोंका हीसना गजोंका गर्जना पयादोंके शब्द योधानिके सिंहनाद वन्दीजनोंके जय जय

कैयक के आंतानिके ढेर हो गये तथापि खेद न मानते भए शत्रुनि पर जाय पडे अर शत्रुसहित आप प्राणान्त भए, डसे हैं होंठ जिन्होंने। जे राजकुमार देव कुमार सारिखे सुकुमार रत्ननिके महिलोंके शिखर विषै क्रीडा करते महा भोगी पुरुष स्त्रीनिके स्तनकर रमाये संते वे खड्ग चक्र कनक इत्यादि आयुधनिकर विदारे संते संग्रामकी भूमिविषै पडे, विरूप आकार तिनको गृध्र पक्षी अर स्याल भषे हैं अर जैसे रंग महिलमें रंगकी भरी रामा नखोंकर चिन्ह करतीं अर निकट आवतीं तैसे स्यालनी नख दंतनिकर चिन्ह करे हैं अर समीप आवै हैं बहुरि श्वासके प्रकाश कर जीवते जान वे डर जांय हैं जैसे डाकनी मंत्रवादीसे दूर जांय अर सामंतानिको जीवते जान यक्षिणी डर कर उड जाती भई जैसे दुष्ट नारी चलायमान हैं नेत्र जिसके पतिके समीपसे जाती रहे जीवोंके शुभाशुभ प्रकृतिका उदय युद्धविषै लखिये है दोनों बराबर अर कोईकी हार होय कोईकी जीत होय अर कबहूं अल्प सेनाका स्वामी महा सेनाके स्वामीको जीते अर कोई एक सुकृतके सामर्थ्यसे बहुतोंको जीते अर कोई बहुत भी पापके उदयसे हार जाय जिन जीवोंने पूर्व भवविषै तप किया वे राज्यके अधिकारी होय विजयको पावें हैं अर जिन्होंने तप न किया अथवा तप भंग किया तिनकी हार होय है, गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक! यह धर्म मर्मकी रक्षा करे है अर दुर्जयको जीते है धर्मही बडा सहाई है बडा पक्ष धर्मका है धर्म सब ठौर रक्षा करे हैं घोडोंकर युक्त रथ पर्वत समान हाथी पवन समान तुरंग असुर कुमारसे पयादे इत्यादि सामग्री पूर्ण हैं परन्तु पूर्वपुण्यके उदय विना कोई राखवे समर्थ नाहीं एक पुण्याधिकारीही शत्रुवोंको जीते हैं, इस भांति राम रावणके युद्धकी प्रवृत्तिविषै योधावोंकर योधा हते गए तिनकर रण खेत भर गया अवकाश नाहीं आयुधोंकर योधा उछले हैं परे हैं सो आकाश ऐसा दृष्टि पडता भया मानों उत्पातके बादलोंकर मंडित है।

शब्द और गुणी जनों के गीत वीर रसके भरे इत्यादि और भी अनेक शब्द भले भए धरती आकाश शब्दायमान भए जैसे प्रलय कालके मेघपटल होवें तैसे निकसे मनुष्य हाथी घोडे रथ पियादे परस्पर अत्यंत विभूति कर देदीप्यमान बडी भुजानिसे बखतर पहिरे उतंग हैं उरस्थल जिनके विजयके अभिलाषी और पयादे खड्ग सम्हालें हैं. महा चंचल आगे २ चले जाय हैं स्वामीके हर्ष उपजावनहारे तिनके समूहकर आकाश पृथ्वी और सर्व दिशा व्याप्त भई, ऐसे उपाय करते भी या जीवके पूर्व कर्मका जैसा उदय है तैसा ही होय है, यह प्राणी अनेक चेष्टा करै है परन्तु अन्यथा न होय जैसा भवितव्य है तैसा ही होय सूर्य्य हू और प्रकार करने समर्थ नाहीं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणका युद्धविषै उद्यमी होनेका वर्णन करनेवाला तिहत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७३ ॥

अथानन्तर लंकेश्वर मंदोदरीसूं कहता भया—हे प्रिये ! न जानिये बहुरि तिहारा दर्शन होय वा न होय तब मंदोदरी कहती भई—हे नाथ ! सदा वृद्धिको प्राप्त होवो, शत्रुवोंको जीत शीघ्र ही आय हमको देखोगे अर संग्रामसे जीते आओगे ऐसा कहा अर हजारा स्त्रियोंकर अवलोका संता राक्षसोंका नाथ मंदिरसे बाहिर गया महा विकटताको धरे विद्याकर निरमापा ऐंद्रीनामा रथ ताहि देखता भया जाके हजार हाथी जुपे मानों कारी घटाका मेघ ही है ते हाथी मदोन्मत्त झरे है मद जिनके, मोतियोंकी माला तिनकर पूर्ण महा घटाके नादकर युक्त ऐरावतसमान नानाप्रकारके रंगोंसे शोभित जिनका जीतना कठिन अर विनयके धाम अत्यन्त गर्जनाकर शोभित ऐसे सोहते भए मानों कारी घटाके समूह ही हैं मनोहर है प्रभा जिनकी ऐसे हाथियोंके रथ चढा रावण सोहता भया भुजबन्ध कर शोभायमान हैं भुजा

अथानन्तर मारीच चन्द्रनिकर बज्राक्ष शुकसारण और भी राक्षसोंके अधीश तिन्होंने रामका कटक दबाया तब हनूमान चन्द्रमारीच नील मुकुंद भूतस्वन इत्यादि रामपक्षके योधा तिन्होंने राक्षसनिकी सेना दबाई तब रावणके योधा कुंद कुम्भ निकुम्भ बिक्रम क्रमाण जंबूमाली काकबली सूर्यार मकरध्वज अशनिरथ इत्यादि राक्षसनिके बडे बडे राजा शीघ्रही युद्धको उठे तब भूधर अचल सम्मेद निकाल कुटिल अंगद सुखेण कालचन्द्र उर्मितरंग इत्यादि बानरवंशी योधा तिनके संमुख भए उनही समान तासमय कोई सुभट प्रतिपक्षी सुभट विना दृष्टि न पडा । भावार्थ—दोनों पक्षके योधा परस्पर महा युद्ध करते भए अर अंजनीका पुत्र हाथिनिके रथ पर चढकर रणमें क्रीडा करता भया जैसे कमलनिकर भरे सरोवरमें महागज क्रीडा करे । गौतमगणधर कहे हैं—हे श्रेणिक ! वा हनूमान शूरबीरने राक्षसनिकी बडी सेना चलायमान करी उसे रुचा जो किया तब राजा मय विद्याधर दैत्यवंशी मन्दोदरीका बाप क्रोधके प्रसंगकर लाल हैं नेत्र जाके सो हनूमानके सन्मुख आया तब वह हनूमान कमल समान हैं नेत्र जाके बाणवृष्टि करता भया सो मयका रथ चकचूर किया तब वह दूजे रथ चढकर युद्धको उद्यमी भया तब हनूमानने बहुरि रथ तोड डाला तब मयको विह्वल देख रावणने बहुरूपिणी विद्या कर प्रज्वलित उत्तमरथ शीघ्रही भेजा सो राजा मयने वा रथपर चढकर हनूमानसे युद्ध किया अर हनूमानका रथ तोडा तब हनूमानको दबा देख भामंडल मदद आया सो मयने बाण वर्षाकर भामंडलका भी रथ तोडा तब राजा सुग्रीव इनके मदद आए सो मयने ताको शस्त्ररहित किया अर भूमिमें डारा तब इनकी मदद बिभीषण आया सो विभीषणके अर मयके अत्यन्त युद्ध भया परस्पर बाण चले सो मयने बिभीषणका बषतर तोडा सो अशोकवृक्षके पुष्प समान लाल होय तैसी लालरूप रुधिर की धारा विभीषणके पडी तब बानरवंशियोंकी सेना चलायमान भई अर राम युद्धको उद्यमी भए, विद्यामई सिंहनिके रथ चढे

शीघ्रही मय पर आए अर बानरवंशिनिको कहते भए तुम भय मत करो। रावणकी सेना विजुरी सहित कारी घटा समान तामें उगते सूर्य समान श्रीराम प्रवेश करते भए अर परसेनाका विध्वंस करनेको उद्यमी भए तब हनूमान भामंडल सुग्रीव विभीषणको धीर्य उपजा अर बानरवंशिनिकी सेना युद्ध करनेको उद्यमी भई। रामका बल पाय रामके सेवकनिका भय मिटा परस्पर दोनों सेनाके योधानिविषै शस्त्रोंका प्रहार भया, सो देख देख देव आश्चर्यकूं प्राप्त भए अर दोनों सेनाविषै अंधकार होय गया प्रकाशरहित लोक दृष्टि न पडें, श्रीराम राजा मयको बाणानिकर अत्यंत आच्छादते भए, थोडे ही खेद कर मयको विह्वल किया, जैसे इंद्र चमरेंद्रको करे तब रामके बाणोंकर मयको विह्वल देख, रावण काल समान क्रोधकर राम पर धाया तब लक्ष्मण रामकी ओर रावणको आवता देख महातेज कर कहता भया—हो विद्याधर! तू किधर जाय है मैं तोहि आज देखा, खडा रहो। हे रंक! पापी चोर परस्त्रीरूप दीपकके पतंग अधमपुरुष दुराचारी आज मैं तोसों ऐसी करूं जैसी काल न करै, हे कुमानुष! श्रीराघवदेव समस्त पृथिवीके पति तिन्होंने मोहि आज्ञा करी है जो या चोरकूं सजा देहु तब दशमुख महाक्रोधकर लक्ष्मणसे कहता भया—रे मूढ! तैंने कहा लोकप्रसिद्ध मेरा प्रताप न सुना? या पृथिवीविषै जे सुखकारी सार वस्तु हैं सो सब मेरी ही है मैं राजा पृथिवीपति जो उत्कृष्ट वस्तु सो मेरी, घंटा गजके कंठविषै सोहै स्वानके न सोहै है तैसे योग्य वस्तु मेरे घर सोहै औरके नाहीं। तू मनुष्यमात्र वृथा विलाप करै तेरी कहा शक्ति? तू दीन मेरे समान नाहीं मैं रंकसे क्या युद्ध करूं तू अशुभके उदयसे मोसे युद्ध किया चाहे है सो जीवनेसे उदास भया है, मूवा चाहे है। तब लक्ष्मण बोले तू जैसा पृथिवीपति है तैसा मैं नीके जानूं हूं। आज तेरा गाजना पूर्ण करूं हूं। जब ऐसा लक्ष्मणने कहा तब रावणने अपने बाण लक्ष्मणपर चलाए, अर लक्ष्मणने रावणपर चलाए, जैसे वर्षाका मेघ जलवृष्टिकर गिरिको आच्छादित करे, तैसे

बाणवृष्टिकर वाने वाको बेध्या अर वाने वाको बेध्या सो रावणके वाण लक्ष्मणने वज्रदंडकर बीचही तोड डारे, आप तक आवने न दिए, वाणोंके समूह छेद भेद तोडे फोडे चूरकर डारे, सो धरती आकाश वाण खंडनिकर भर गए, लक्ष्मणने रावणको सामान्य शस्त्रनिकर विह्वल किया तब रावणने जानी यह सामान्य शस्त्रनिकर जीता न जाय तब लक्ष्मण पर रावणने मेघवाण चलाया सो धरती आकाश जलरूप होय गए तब लक्ष्मणने पवनवाण चलाया क्षणमात्रमें मेघवाण विलय किया, बहुरि दशमुखने अग्निबाण चलाया सो दशों दिशा प्रज्वलित भई तब लक्ष्मणने वरुणशस्त्र चलाया सो एक निमिषमें अग्निबाण नाशको प्राप्त भया बहुरि लक्ष्मणने पापबाण चलाया सो धर्मवाणकर रावणने निवारा बहुरि लक्ष्मणने इंधनवाण चलाया सो रावणने अग्निवाण कर भस्म किया बहुरि लक्ष्मणने तिमिरवाण चलाया सो अंधकार होय गया आकाश वृक्षनिके समूहकर आच्छादित भया। कैसे हैं वृक्ष? आसार फलनिको बरसावें हैं आसार पुष्पनिके पटल छाय गए तब रावणने सूर्यबाण कर तिमिरवाण निवारा अर लक्ष्मण पर नागबाण चलाया अनेक नाग चले बिकराल हैं फण जिनके, तब लक्ष्मणने गरुडबाणकर नागबाण निवारा, गरुडकी पाखोंकर आकाश स्वर्णकी प्रभारूप प्रतिभासता भया, बहुरि रामके भाईने रावण पर सर्पबाण चलाया प्रलयकालके मेघ समान है शब्द जाका अर विषरूप अग्निके कणनिकर महाविषम तब रावणने मयूरबाणकर सर्पबाण निवारा अर लक्ष्मण पर विघ्नबाण चलाया सो विघ्नवाण दुर्निवार ताका उपाय सिद्धबाण सो लक्ष्मणको याद न आया तब वज्रदंड आदि अनेक शस्त्र चलाए। रावण हू सामान्य शस्त्रनिकर युद्ध करता भया, दोनों योधानिमें समान युद्ध भया जैसा त्रिपृष्ठ अर अश्वग्रीवके युद्ध भया हुता, तैसा लक्ष्मण रावणके भया। जैसा पूर्वोपार्जित कर्मका उदय होय तैसा ही फल होय,

तैसी क्रिया कर जे महा क्रोध के वश हैं अर जो कार्य आरंभा ता विषै उद्यमी हैं ते नर तीव्र, शस्त्र को न गिने अर अग्निको न गिने सूर्यको न गिने वायुको न गिनें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै रावण लक्ष्मणका युद्ध वर्णन करनेवाला चौहत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७४ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं– हे भव्योत्तम ! दोनों ही सेनाविषै तृषावंतोंको शीतल मिष्ट जल प्याइये है अर क्षुधावन्तोंको अमृत समान आहार दीजिए है अर खेदवन्तोंको मलयागिर चन्दनसे छिडकिये है, ताडवृक्षके बीजनेसे पवन करिए है, बरफके बारिसे छांटिये है तथा और हू उपचार अनेक कीजिए है, अपना पराया कोई होऊ सबके यत्न कीजिए है यही संग्रामकी रीति है। दश दिन युद्ध करते भए दोऊ ही महावीर अभंगचित्त रावण लक्ष्मण दोनों समान जैसा वह तैसा वह सो यक्ष गंधर्व किन्नर अप्सरा आश्चर्यको प्राप्त भए अर दोऊनिका यश करते भए दोऊनिपर पुष्प वर्षा करी अर एक चन्द्रवर्धन नामा विद्याधर ताकी आठ पुत्री सो आकाशविषै विमानविषै बैठी देख तिनको कौतूहलसे अप्सरा पूछती भई–तुम देवियो सारिखी कौन हो ? तिहारी लक्ष्मणविषै विशेष भक्ति दीखै है अर तुम सुन्दर सुकुमार शरीर हो तब वे लज्जासहित कहती भई तुमको कौतूहल है तो सुनो, जब सीताका स्वयंम्बर हुआ तब हमारा पिता हम सहित तहां आया था तहां लक्ष्मणको देख हमको देनी करी अर हमारा भी मन लक्ष्मणविषै मोहित भया, सो अब यह संग्रामविषै वर्ते है, न जानिए कहा होय ? यह मनुष्यनिविषै चन्द्रमा समान प्राणनाथ है जो याकी दशा सो हमारी ऐसे इनके मनोहर शब्द सुनकर लक्ष्मण ऊपरको चौंके, तब वे आठो ही कन्या इनके देखवेकर परम हर्षको प्राप्त भई अर कहती

भई—हे नाथ ! सर्वथा तिहारा कार्य सिद्ध होहु तब लक्ष्मणको विघ्नबाणका उपाय सिद्धबाण याद आया, अर प्रसन्न बदन भया सिद्धबाण चलाय विघ्नबाण विलय किया अर आप महाप्रतापरूप युद्धको उद्यमी भया जो जो शस्त्र रावण चलावे सो सो रामका वीर महा धीर शस्त्रनिविषै प्रवीण छेद डारे, अर आप बाणनिके समूहकर सब दिशा पूर्ण करी जैसे मेघपटल कर पर्वत आच्छादित होय रावण बहुरूपिणी विद्याके बल कर रणक्रीडा करता भया। लक्ष्मणने रावणका एक सीस छेदा, तब दोय सीस भए दोय छेदे तब चार भए अर दोय भुजा छेदी तब चार भई अर चार छेदी तब आठ भई या भांति ज्यों ज्यों छेदी त्यों त्यों दुगुनी भई अर सीस दुगुणे भए हजारों सिर अर हजारों भुजा भई रावणके कर हाथीके सूंड समान भुज बन्धन कर शोभित अर सिर मुकुटोंकर मंडित तिनकर रणछेत्र पूर्ण किया मानों रावण रूप समुद्र महा भयंकर ताके हजारों सिर वेई भए ग्राह अर हजारों भुजा वेई भई तरंग तिनकर बढता भया अर रावणरूप मेघ जाके बाहुरूप विजुरी अर प्रचण्ड हैं शब्द अर सिर ही भए शिखर तिन कर सोहता भया। रावण अकेला ही महासेना समान भया अनेक मस्तक तिनके समूह जिन पर छत्र फिरें मानों यह विचार लक्ष्मणने याहि बहुरूप किया जो आगे मैं अकेले अनेकनिसूं युद्ध किया अब या अकेलेसे कहा युद्ध करूं तातैं याहि बहुशरीर किया रावण प्रज्वलित वनसमान भासता भया रत्ननिके आभूषण अर शस्त्रनिकी किरणनिके समूहकर प्रदीप्त रावण लक्ष्मणको हजारों भुजानिकर बाण शक्ति खड्ग वरछी सामान्य चक्र इत्यादि शस्त्रनिकी वर्षाकर आच्छादता भया सो सब बाण लक्ष्मणने छेदे अर महाक्रोध रूप होय सूर्य समान तेज रूप बाणनिकर रावणके आच्छादनेको उद्यमी भया एक दोय तीन चार पांच छह दस बीस शत सहस्र मयामई रावणके सिर लक्ष्मणने छेदे हजारों सिर भुजा भूमिविषै पडे सो रणभूमि उनकर आच्छादित भई ऐसी सोहे मानों सर्पनिके फणनि सहित कमलनिके बन हैं, भु-

जोंसहित सिर पडे वे उल्कापातसे भासें जेते रावणके बहुरूपिणी विद्या कर सिर अर भुज भए तेते सब सुमित्राके पुत्र लक्ष्मणने छेदे, जैसे महामुनि कर्मनिके समूहको छेदे, रुधिरकी धारा निरन्तर पडी तिनकर आकाशविषे मानों सांझ फूली, दोय भुजाका धारक लक्ष्मण ताने रावणकी असंख्यात भुजा विफल करीं, कैसे हैं लक्ष्मण ? महा प्रभावकर युक्त है। रावण पसेवके समूह कर भर गया है अंग जाका स्वास कर संयुक्त है मुख जाका यद्यपि महाबलवान हुता तथापि व्याकुलचित्त भया। गोतमस्वामी कहै हैं हे श्रेणिक ! बहुरूपिणी विद्याके बलकर रावणने महा भयंकर युद्ध किया, पर लक्ष्मणके आगे बहुरूपिणी विद्याका बल न चला तब रावण मायाचार तज सहज रूप होय क्रोधका भरा युद्ध करता भया अनेक दिव्यशस्त्रनिकर अर सामान्य शस्त्रनिकर युद्ध किया परन्तु वासुदेवको जीत न सका। तब प्रलय कालके सूर्य समान है प्रभा जाकी परपक्षका क्षय करणहारा जो चक्ररत्न ताहि चितवता भया। कैसा है चक्ररत्न ? अप्रमाण प्रभावके समूहको धरे मोतिनिकी झालरियोंकर मंडित महा देदीप्यमान दिव्य वज्रमई महा अद्भुत नाना प्रकारके रत्ननिकर मंडित है अंग जाका दिव्यमाला अर सुगन्धकर लिप्त अग्निके समूह तुल्य धारानिके समूहकर महा प्रकाशवन्त वैडूर्य मणिके सहस्र आरे तिनकर युक्त जिसका दर्शन सहा न जाय, सदा हजार यक्ष जाकी रक्षा करें महा क्रोधका भरा जैसा कालका मुख होय ता समान वह चक्र चितवते ही करविषै आया, जाकी ज्योति कर जोतिष देवोंकी प्रभा मन्द होय गई अर सूर्यकी कांति ऐसी होय गई मानों चित्रामका सूर्य है अर अप्सरा विश्वासु तुंवरु नारद इत्यादि गंधर्वनिके भेद आकाशविषै रणका कौतुक देखते हुते सो भयकर परे गए, अर लक्ष्मण अत्यन्त धीर शत्रुको चक्र संयुक्त देख कहता भया, हे अधम नर ! याहि कहा लेरहा है जैसे कृपण कौडीको लेरहे तेरी शक्ति है तो प्रहार कर, ऐसा कहा तब वह महा क्रोधायमान होय दांतानिकर डसे हैं होंठ जाने लाल हैं

नेत्र जाके चक्रको फेर लक्ष्मणपर चलाया। कैसा है चक्र? मेघ मंडल समान है शब्द जाका अर महा शीघ्रताको लिए प्रलयकालके सूर्य समान मनुष्यनिको जीतव्यका संशयका कारण ताहि सन्मुख आवता देख लक्ष्मण वज्रमई है मुख जिनका ऐसे बाणनिकर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भया और श्रीराम वज्रावर्त धनुष चढाय अमोघ बाणनिकर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भए अर हल मूशलनको भ्रमावते चक्रके सन्मुख भए अर सुग्रीव गदाको फिराय चक्रके सन्मुख भए अर भामंडल खडगको लेकर निवारिवेको उद्यमी भए अर विभीषण त्रिशूल ले ठाढे भए अर हनूमान मुद्गर लांगूल कनकादि लेकर उद्यमी भए, अर अंगद परम नामा शस्त्र लेकर ठाढे भए अर अंगदका भाई अंग कुठार लेकर महा तेज रूप खडे भए और हू दूसरे श्रेष्ठ विद्याधर अनेक आयुधनिकर युक्त सब एक होय कर जीवनेकी आशा तज चक्रके निवारिवेको उद्यमी भए परन्तु चक्रकों निवार न सके। कैसा है चक्र? देव करे हैं सेवा जाकी ताने आयकर लक्ष्मणको तीन प्रदक्षिणा देय अपना स्वरूप विनयरूप कर लक्ष्मणके करविषै तिष्ठा, सुखदाई शान्त है आकार जाका। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे मगधाधिपति! राम लक्ष्मणका महाऋद्धिको धरे यह माहात्म्य तोहि संक्षेपसे कहा। कैसा है इनका माहात्म्य? जाहि सुने परम आश्चर्य उपजे अर लोकविषै श्रेष्ठ है कैएकके पुण्यके उदयकर परम विभूति होय है अर कैएक पुण्यके क्षयकर नाश होय हैं जैसे सूर्यका अस्त होय है चन्द्रमाका उदय होय है तैसे लक्ष्मणके पुण्यका उदय जानना॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके चक्ररत्नकी उत्पत्ति वर्णन करनेवाला पचहत्तरवां पर्व पूर्ण भया॥ ७५॥

अथानन्तर लक्ष्मणके हाथविषै महासुन्दर चक्ररत्न आया देख सुग्रीव भामण्डलादि विद्याधरानिके अधिपति अति हर्षित भए अर परस्पर कहते भए–आगे भगवान अनन्तवीर्य केवलीने आज्ञा करी जो लक्ष्मण आठवां वासुदेव है अर राम आठवां वलदेव है सो यह महाज्योति चक्रपाणि भया अति उत्तम शरीरका धारक याके वलका कौन वर्णन करसके, अर यह श्रीराम वलदेव जाके रथको महातेजवंत सिंह चलावें जाने राजा मयको पकडा अर हल मूसल महा रत्न देदीप्यमान जाके करविषै सोहैं। ये वलभद्र नारायण दोऊ भाई पुरुषोत्तम प्रगट भये पुण्यके प्रभावकर परमप्रेमके भरे लक्ष्मणके हाथविषै सुदर्शन चक्रको देख राक्षसनिका अधिपति चित्तविषै चितारे है जो भगवान अनन्तवीर्यने आज्ञा करी हुती सोई भई। निश्चय सेती कर्मरूप पवनका प्रेरा यह समय आया, जाका छत्र देख विद्याधर डरते अर महासेना परकी भाग जाती परसेनाकी ध्वजा अर छत्र मेरे प्रतापसे वहे वहे फिरते अर हिमाचल विंध्याचल हैं स्तन जाके, समुद्र है वस्त्र जाके ऐसी यह पृथिवी मेरी दासी समान आज्ञाकारिणी हुती ऐसा मैं रावण सो रणविषै भूमिगोचरिनिने जीत्या यह अद्भुत वात है कष्टकी अवस्था आय प्राप्त भई, धिकार या राज्य लक्ष्मीको कुलटा स्त्री समान है चेष्टा जाकी पूज्य पुरुष या पापनीको तत्काल तजें यह इन्द्रियनिके भोग इन्द्रायणके फल समान इनका परिपाक विरस है अनन्त दुःख सम्बन्धके कारण साधुनिकर निन्द्य हैं, पृथिवीविषै उत्तम पुरुष भरत चक्रवर्त्यादि भये ते धन्य हैं जिन्होंने निःकंटक छहखंड पृथिवीका राज्य किया अर विषके मिले अन्नकी न्याईं राज्यको तज जिनेन्द्र व्रत धार रत्नत्रयको आराधन कर परम पदको प्राप्त भए, मैं रंक विषयाभिलाषी मोह वलवानने मोहि जीत्या यह मोह संसार भ्रमणका कारण धिकार मोहि जो मोहके वश होय ऐसी चेष्टा करी। रावण तो यह चिंतवन करे है अर आया है चक्र जाके ऐसा जो लक्ष्मण महा तेजका धारक सो विभीषणकी ओर निरख रावणसे कहता भया–हे विद्याधर! अब हू कछु

न गया है जानकीको लाय श्रीरामदेवको सोंपदे अर यह वचन कह कि श्रीरामके प्रसादकर जीवूं हूं हमको तेरा कछु चाहिये नाहीं, तेरी राज्य लक्ष्मी तेरे ही रहो तब रावण मंदहास्यकर कहता भया—हे रंक! तेरे वृथा गर्व उपजा है अवार ही अपने पराक्रम तोहि दिखावूं हूं। हे अधमनर! मैं तोहि जो अवस्था दिखाऊं सो भोग, मैं रावण पृथ्वीपति विद्याधर तू भूमिगोचरी रंक, तब लक्ष्मण बोले बहुत कहिवे कर कहा? नारायण सर्वथा तेरा मारणहारा उपजा। तब रावणने कहा इच्छा मात्रही नारायण हूजिये है तो जो तू चाहे सो क्यों न हो, इन्द्र हो, तू कुपुत्र पिताने देशसे बाहिर किया महा दुखी दलिद्री वनचारी भिखारी निर्लज्ज तेरी वासुदेव पदवी हमने जानी तेरे मनविषै मत्सर है सो मैं तेरे मनोरथ भंग करूंगा यह घेघली समान चक्र है ता कर तू गर्वा है सो रंकोंकी यही रीति है खलिका टूक पाय मनविषै उत्सव करैं, बहुत कहिवे कर कहा? ये पापी विद्याधर तोसूं मिले हैं तिन सहित अर या चक्रसहित वाहन सहित तेरा नाशकर तोहि पातालको प्राप्त करूंगा, ये रावणके वचन सुनकर लक्ष्मणने कोपकर चक्रको भ्रमाय रावणपर चलाया वज्रपातके शब्द समान भयंकर है शब्द जाका अर प्रलयकालके सूर्य समान तेजको धरे चक्र रावणपर आया तब रावण बाणनिकर चक्रके निवारवेको उद्यमी भया बहुरि प्रचंड दण्ड कर अर शीघ्रगामी वज्र बाणकर चक्रके निवारवेका यत्न किया तथापि रावणका पुण्य क्षीण भया सो चक्र न रुका नजीक आया तब रावण चन्द्रहास खड्ग लेकर चक्रके समीप आया चक्रके खड्गकी दई सो अग्निके कणनिकर आकाश प्रज्वलित भया खडगका जोर चक्रपर न चला, सन्मुख तिष्ठता जो रावण महाशूरवीर राक्षसनिका इंद्र ताका चक्रने उरस्थल भेदा सो पुण्य क्षयकर अंजनगिरि समान रावण भूमिविषै पडा, मानों स्वर्गसे देव चया, अथवा रतिका पति पृथिवीविषै पडा ऐसा सोहता भया मानों वीररसका स्वरूप ही है, चढ रही है भौंह जाकी डसे हैं होठ जाने स्वामीको पडा देख स-

मुद्र समान था शब्द जाका ऐसी सेना भागिवेको उद्यमी भई ध्वजा छत्र वहे वहे फिरे समस्त लोक रावण के विह्वल भए विलाप करते भागे जाय हैं कोई कहे हैं रथको दूरकर मार्ग देहु पीछेसे हाथी आवे है कोई कहे हैं विमानको एक तरफकर अर पृथिवीका पति पडा अनर्थ भया महा भयकर कम्पायमान वह ता पर पडे वह ता पर पडे तब सबको शरणरहित देख भामण्डल सुग्रीव हनूमान रामकी आज्ञासे कहते भए भय मत करो भय मत करो धीर्य बंधाया अर वस्त्र फेरया काहूको भय नाहीं तब अमृत समान कानोंको प्रिय ऐसे बचन सुन सेनाको विश्वास उपजा। यह कथा गौतम गणधर राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे राजन्! रावण ऐसा महा विभूतिको भोगे समुद्र पर्यन्त पृथिवीका राजकर पुण्य पूर्ण भए अन्त दशाको प्राप्त भया। तातैं ऐसी लक्ष्मीको धिक्कार है यह राज्यलक्ष्मी महा चंचल पापका स्वरूप सुकृतके समागमके आशाकर वर्जित ऐसा मनविषै विचार कर हो बुद्धिजन हो तप ही है धन जिनके ऐसे मुनि होवो। कैसे हैं मुनि? तपोधन सूर्यसे अधिक है तेज जिनका मोह तिमिरको हरे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै रावणका बध वर्णन करनेवाला छिहत्तरवा पर्व पूर्ण भया॥ ७६॥

अथानन्तर विभीषणने बडे भाईको पडा देख महा दुःखका भरा अपने घातके अर्थ छुरीविषै हाथ लगाया सो याकों मरणकी करणहारी मूर्छा आयगई चेष्टाकर रहित शरीर हो गया बहुरि सचेत होय महादाहका भरा मारनेको उद्यमी भया तब श्रीरामने रथसे उतर हाथ पकडकर उरसे लगाया धीर्य बंधाया फिर मूर्छा खाय पडा अचेत होय गया श्रीरामने सचेत किया तव सचेत होय विलाप करता भया जिसका विलाप सुन करुणा उपजे, हाय भाई उदार क्रियावन्त सामंतोंके पति महाशूरवीर रणधीर शर-

णागतपालक महामनोहर ऐसी अवस्थाको क्यों प्राप्त भए मैं हितके वचन कहे सो क्यों न माने यह क्या अवस्था भई जो मैं तुमको चक्रके विदारे पृथिवीविषै परे देखूं हूं देव विद्याधरोंके महेश्वर हे लंकेश्वर! भोगोंके भोक्ता पृथ्वीविषै कहा पौढे? महाभोगोंकर लडाया है शरीर जिनका यह सेज आपके शयन करने योग्य नाहीं, हे नाथ! उठो सुन्दर वचनके वक्ता मैं तुम्हारा बालक मुझे कृपाके वचन कहो, हे गुणाकर कृपाधार मैं शोकके समुद्रविषै डूबूं हूं सो मुझे हस्तालम्बन कर क्यों न निकालो इस भांति विभीषण विलाप करे है डार दिये हैं शस्त्र अर बक्तर भूमिविषै जाने ॥

अथानन्तर रावणके मरणके समाचार रणवासविषै पहुंचे सो राणियां सब अश्रुपातकी धाराकर पृथिवी तलको सींचती भईं अर सर्व ही अन्तःपुर शोककर व्याकुल भया सकल राणि रणभूमिविषै आईं गिरती पडती गिरती पडती डिगे हैं चरण जिनके वे नारी पतिको चेतनारहित देख शीघ्रही पृथिवीविषै पडीं। कैसा है पति पृथिवीका चूडामणि है। मंदोदरी, रंभा, चन्द्राननी, चन्द्रमण्डला, प्रवरा उर्वशी महादेवी, सुंदरी, कमलानना. रूपिणी, रुक्मिणी, शीला, रत्नमाला, तनूदरी, श्रीकांता, श्रीमती, भद्रा, कनकप्रभा, मृगवती, श्रीमाला, मानवी, लक्ष्मी, आनंदा, अनंगसुदरी, बसुंधरा, तडिन्माला, पद्मा, पद्मावती, सुखादेवी, कांति, प्रीति, संध्यावली; सुभा, प्रभावती, मनोवेगा, रतिकांता, मनोवती, इत्यादि अष्टादशसहस्र राणी अपने २ परिवारसहित अर सखिनिसहित महाशोककी भरी रुदन करती भईं कैयक मोहकी भरी मूर्छाको प्राप्त भईं सो चन्दनके जलकर छांटी कुमलाई कमलिनी समान भासती भईं कैयक पतिके अंगसे अत्यन्त लिपटकर परी अंजनगिरिसों लगी संध्याकी द्युतिको धरती भईं, कैयक मूर्च्छासे सचेत होय उरस्थल कूटती भईं पतिके समीप मानों मेघके निकट विजुरी ही चमके है, कैयक पतिका वदन अपने अंगविषै लेयकर विह्वल होय मूर्छाको प्राप्त भईं, कोईयक विलाप करे है हाय नाथ!

में तिहारे विरहसे आतिकायर मोहि तजकर तुम कहां गए तिहारे जन दुःखसागरविषै डूबे हैं सो क्यों न देखो, तुम महा बली महा सुन्दर परम ज्योतिके धारक विभूति कर इंद्र समान मानों भरतक्षेत्रके भूपति पुरुषोत्तम महाराजनिके राजा मनोरम विद्याधरानिके महेश्वर कौन अर्थ पृथिवीमें पौढे। उठो, हे कांत ! करुणानिधे स्वजनवत्सल ! एक अमृत समान वचन हमसे कहो, हे प्राणेश्वर प्राणवल्लभ ! हम अपराध रहित तुमसे अनुरक्त चित्त हमपर तुम क्यों कोप भए हमसे बोलो ही नाहीं जैसे पहिले परिहास कथा करते तैसे क्यों न करो तिहारा मुखरूपी चन्द्र कांतिरूप चांदनी कर मनोहर प्रसन्नतारूप जैसे पूर्व हमें दिखावते हुते तैसे हमें दिखावो अर यह तिहारा वक्षस्थल स्त्रियोंकी क्रीडाका स्थानक महासुन्दर ता विषै चक्रकी धाराने कैसे पग धारा अर विद्रुम समान तिहारे ये लाल अधर अब क्रीडारूप उत्तरके देनेको क्यों न स्फुटायमान होय हैं ? अबतक बहुत देर लगाई क्रोध कबहूं न किया अब प्रसन्न होवो, हम मान करतीं तो आप प्रसन्न करते मनावते इंद्रजीत मेघबाहन स्वर्गलोकसे चयकर तिहारे उपजे सो यहां भी स्वर्गलोक कैसे भोग भोगे अब दोऊ बन्धनविषै हैं अर कुम्भकर्ण बन्धनविषै है सो महापुण्याधिकारी सुभट महागुणवन्त श्रीरामचन्द्र तिनसे प्रीतिकर भाई पुत्रको छुडावहु । हे प्राणवल्लभ प्राणनाथ ! उठो, हमसे हितकी बात करो, हे देव ! बहुत देर सोवना कहा ? राजानिको राजनीतिविषै सावधान रहना सो आप राज्य काजविषै प्रवर्तो। हे सुन्दर हे प्राणप्रिय हमारे अंग विरहरूप अग्निकर अत्यन्त जरे हैं सो स्नेहरूप जलकर बुझावो। हे स्नेहियोंके प्यारे तिहारा यह वदनकमल औरही अवस्थाको प्राप्त भया है सो याहि देख हमारे हृदयके सौ टूक क्यों न हो जावें यह हमारा पापी हृदय वज्रका है दुःखका भाजन जो तिहारी यह अवस्था जानकर विनस न जाय है। यह हृदय महा निर्दई है। हाय विधाता हम तेरा कहा बुरा किया जो तैने निर्दई होयकर हमारे सिरपर ऐसा दुःख डारा। हे प्री-

तम जब हम मान करतीं तब तुम उरसे लगाय हमारा मान दूर करते अर वचन रूप अमृत हमको प्यावते महा प्रेम जनावते हमारा प्रेमरूप कोप ताके दूर करवेके अर्थ हमारे पायन पडते सो हमारा हृदय वशीभूत होय जाता अत्यन्त मनोहर क्रीडा करते, हे राजेश्वर हमसे प्रीति करो परम आनन्दकी करणहारी वे क्रीडा हमको याद आवें हैं सो हमारा हृदय अत्यन्त दाहको प्राप्त होय है तातें अब उठो हम तिहारे पायनि पडे हैं नमस्कार करें हैं जे अपने प्रियजन होंय तिनसे बहुत कोप न करिए प्रीतिविषै कोप न सोहै—हे श्रेणिक ! या भांति रावणकी राणी ये विलाप करती भई जिनका विलाप सुनकर कौनका हृदय द्रवीभूत न होय ?

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मण भामण्डल सुग्रीवादिक सहित अति स्नेहके भरे विभीषणको उरसे लगाय आंसू डारते महाकरुणावन्त धीर्य बन्धावने विषै प्रवीण ऐसे वचन कहते भए—लोक वृत्तान्तसे सहित हे राजन् ! बहुत रोयवे कर कहा ? अब विषाद तजो यह कर्मकी चेष्टा तुम कहा प्रत्यक्ष नाहीं जानो हो ? पूर्वकर्मके प्रभावकर प्रमोदको धरते जे प्राणी तिनके अवश्य कष्टकी प्राप्ति होय है उसका शोक कहा अर तुम्हारा भाई सदा जगतके हितविषै सावधान परम प्रीति का भाजन समाधान रूप बुद्धि जिसकी राजकार्यविषै प्रवीण प्रजाका पालक सर्वशास्त्रनिके अर्थकर धोया है चित्त जाने, सो बलवान मोहकर दारुण अवस्थाको प्राप्त भया अर विनाशको प्राप्त भया जब जीवनिका विनाश काल आवै तब बुद्धि अज्ञानरूप होय जाय है। ऐसे शुभ वचन श्रीरामने कहे बहुरि भामण्डल अति माधुर्यताको धरे वचन कहते भये। हे विभीषण महाराज तिहारा भाई रावण महाउदार चित्त कर रणविषै युद्ध करता संता वीर मरणकर परलोककूं प्राप्त भया। जाका नाम न गया ताका कछुही न गया। ते धन्य हैं जिन सुभटता कर प्राण तजे। ते महापराक्रमके धारक वीर तिनका कहा शोक ? एक राजा अरिंदमकी कथा सुनो ॥

अक्षयकुमार नामा नगर तहां राजा अरिंदम जाके महाविभूति सो एक दिन काहू तरफसे अपने मन्दिर शीघ्रगामी घोडे चढा अकस्मात् आया सो राणीको शृंगाररूप देख अर महलकी अत्यन्त शोभा देख राणीको पूछा—तुम हमारा आगम कैसे जाना। तब राणीने कही कीर्तिधरनामा मुनि अवधिज्ञानी आज आहारको आए थे तिनको मैंने पूछा राजा कब आवेंगे सो तिन्होंने कहा राजा आज अचानक आवेंगे। यह बात सुन राजा मुनिपै गये अर ईर्ष्याकर पूछता भया—हे मुनि तुमको ज्ञान है तो कहो मेरे चित्तमें क्या है तब मुनिने कहा तेरे चित्तमें यह है कि मैं कब मरूंगा सो तू आजसे सातवें दिन वज्रपातसे मरेगा अर विष्टामें कीट होयगा, यह मुनिके वचन सुन राजा अरिंदम घर जाय अपने पुत्र प्रीतिंकरको कहता भया—मैं मरकर विष्टाके घरमें स्थूल कीट होऊंगा ऐसा मेरा रंगरूप होयगा सो तू तत्काल मार डारियो। ये वचन पुत्रको कह आप सातवें दिन मरकर विष्टामें कीडा भया सो प्रीतिंकर कीटके हनिवेको गया सो कीट मरनेके भयकर विष्टामें पैठिगया। तब प्रीतिंकर मुनिपै जाय पूछता भया—हे प्रभो! मेरे पिताने कही थी जो मैं मलमें कीट होऊंगा सो तू हानियो अब वह कीट मरवेसे डरे है अर भागे है तब मुनिने कही तू विषाद मत कर यह जिस गतिमें जाय है वहां ही रम रहे है इसलिये तू आतमकल्याण कर, जाकर पापोंसे छूटै अर यह जीव सबही अपने अपने कर्मका फल भोगवे हैं कोई काहूका नाहीं यह संसारका स्वरूप महादुखका कारण जान प्रीतिंकर मुनि भया, सर्व वांछा तजी, तातैं हे विभीषण! यह नानाप्रकार जगतकी अवस्था तुम कहा न जानो हो, तिहारा भाई महाशूरवीर दैव योगसे नारायणने हता? संग्रामके संमुख महा प्रधान पुरुष ताका सोच क्या तुम अपना चित्त कल्याणमें लगावो यह शोक दुखका कारण ताको तजो यह वचन अर प्रीतिंकरकी कथा भामण्डलके मुखसे विभीषणने सुनी, कैसी है प्रीतिंकर मुनिकी कथा प्रतिबोध देवेमें प्रवीण अर नाना स्वभावकर संयुक्त अर उत्तम पुरुषोंकर

कहिबे योग्य सो सर्व विद्याधरनिने प्रशंसा करी सुनकर विभीषण रूप सूर्य शोकरूप मेघ पटलसे रहित भया लोकोत्तर आचारका जाननेवाला ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै विभीषणका

शोकनिवारण वर्णन करनेवाला सतत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७७ ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्र भामण्डल सुग्रीवादि सबनिसूं कहते भए, जो पंडितोंके बैर बैरीके मरण पर्यन्त ही है। अब लंकेश्वर परलोकको प्राप्त भए सो यह महानर हुते, इनका उत्तम शरीर अग्नि संस्कार करिए तब सबनि प्रणाम करी अर बिभीषणसहित राम लक्ष्मण जहां मन्दोदरी आदि अठारह हजार राणीनि सहित जैसे कुरुचि पुकारै तैसे विलाप करती हुती सो वाहनसे उतर समस्त विद्याधरनि सहित दोऊ वीर तहां गए सो वे राम लक्ष्मणको देख अति विलाप करती भईं तोड डारे हैं सर्व आभूषण जिन्होंने अर धूलकर धूसरा है अंग जिनका तब श्रीराम महादयावन्त नानाप्रकारके शुभ वचननिकर सर्व राणीनिकों दिलासा करी धीर्य बन्धाया अर आप सब विद्याधरनिको लेकर रावणके लोकाचारको गए, कपूर अगर मलियागिरि चन्दन इत्यादि नानाप्रकारके सुगन्ध द्रव्यनिकर पद्मसरोवर पर प्रतिहरि का दाह भया बहुरि सरोवरके तीर श्रीराम तिष्ठे, कैसे हैं राम? महा कृपालु है चित्त जिनका, गृहस्थाश्रमविषै ऐसे परिणाम कोई बिरलेके होय हैं। बहुरि आज्ञा करी कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनादको सब सामंतनिसहित छोडो तब कैयक विद्याधर कहते भए—वे महा क्रूरचित्त हैं अर शत्रु हैं छोडवे योग्य नाहीं बन्धनहीविषै मरैं। तब श्रीराम कहते भए—यह क्षत्रियनिका धर्म नाहीं, जिनशासनविषै क्षत्रीनिकी कथा कहा तुमने नाहीं सुनी है। सूतेको बन्धेको डरतेको शरणागतकूं दन्तविषै तृण लेतेको भागेको बाल

वृद्ध स्त्रीनिकूं न हने यह क्षत्रीका धर्म शास्त्रानिमें प्रसिद्ध है। तब सबनि कही आप जो आज्ञा करो सो प्रमाण। बडे बडे योधा नानाप्रकारके आयुधनिकूं धरें तिनके ल्यायवेको गए, कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनाद मारीच तथा मन्दोदरीका पिता राजा मय इत्यादि पुरुषनिको स्थूल बन्धनसहित सावधान योधा लिए आवे हैं सो माते हाथी समान चले आवे हैं तिनको देख वानरवंशी योधा परस्पर बात करते भए जो कदाचित इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकरण रावणकी चिता जरती देख क्रोध करें तो कपिवंशिनिमें इनके सन्मुख लडने को कोई समर्थ नाहीं, जो कपिवंशी जहां बैठा था तहांसे उठ न सका अर भामंडलने अपने सब योधानिकूं कहा जो इन्द्रजीत मेघनादको यहां तक बंधेही अति यत्नसे लाइयो, अबार विभीषणका भी विश्वास नाहीं है जो कदाचित् भाई भतीजेनिको निर्बंधन देख भाईका बैर चितारे सो याको विकार उपज आवे, भाईके दुखकर बहुत तप्तायमान है यह विचार भामंडलादिक तिनको अति यत्नकर राम लक्ष्मणके निकट लाए सो वे महाविरक्त राग द्वेषरहित जिनके मुनि होयवेके भाव महा सौम्य दृष्टिकर भूमि निरखते आवें, शुभ हैं आनन जिनके, वे महा धीर यह विचारे हैं कि या असार संसार सागरविषै कोई सारताका लवलेश नाहीं, एक धर्मही सब जीवनका बांधव है सोई सार है ये मनमें विचारे हैं जो आज बंधनसे छूटें तो दिगम्बर होय पाणिपात्र आहार करें। यह प्रतिज्ञा धरते रामके समीप आए। इंद्रजीत कुम्भकर्णादिक विभीषणकी ओर आय तिष्ठे यथायोग्य परस्पर संभाषण भया बहुरि कुम्भकर्णादिक श्रीराम लक्ष्मणसूं कहते भए—अहो तिहारा परम धीर्य परम गंभीरता अद्भुत चेष्टा देवनिहू कर न जीता जाय ऐसा राक्षसनिका इंद्र रावण मृत्युकूं प्राप्त किया, पंडितनिके अति श्रेष्ठ गुणनिका धारक शत्रु हू प्रशंसा योग्य है। तब श्रीराम लक्ष्मण इनको बहुत साता उपजाय अति मनोहर बचन कहते भए। तुम पहिले महा भोगरूप जैसे तिष्ठे तैसे तिष्ठो। तब वह महा विरक्त कहते भए अब

इन भोगानिसे हमारे कछु प्रयोजन नाहीं । यह विषसमान महा दारुण महा मोहके कारण महा भयंकर महा नरक निगोदादि दुःखदाई जिनकर कबहूं जीवके साता नाहीं । विचक्षण हैं ते भोगसंबंधको कबहूं न बांछें । राम लक्ष्मणने घना ही कहा तथापि तिनका चित्त भोगासक्त न भया । जैसे रात्रिविषै दृष्टि अंधकार रूप होय अर सूर्यके प्रकाश कर वही दृष्टि प्रकाशरूप होय जाय तैसे ही कुम्भकर्णादिककी दृष्टि पहिले भोगासक्त हुती सो ज्ञानके प्रकाशकर भोगानितैं विरक्त भई । श्रीरामने तिनके बंधन छुडाये अर इन सबनि सहित पद्म सरोवरविषै स्नान किया । कैसा है सरोवर ? सुगंध है जल जाका, ता सरोवरविषै स्नान कर कपि अर राक्षस सब अपने अपने स्थानक गए ।

अथानन्तर कैयक सरोवरके तीर बैठे विस्मयकर व्याप्त हैं चित्त जिनका शूरवीरोंकी कथा करते भए कैयक क्रूर कर्मको उलाहना देते भए कैयक हथियार डारते भए कैयक रावणके गुणोंकर पूर्ण है चित्त जिनका सो पुकारकर रुदन करते भए कैयक कर्मनिकी विचित्र गतिका वर्णन करते भए अर कैयक संसार वनको निन्दते भए । कैसा है संसार वन जाथकी निकसना अतिकठिन है कैयक भोगविषै अरुचिको प्राप्त भए राज्यलक्ष्मीको महा चंचल निरर्थक जानते भए अर कैयक उत्तम बुद्धि अकार्यकी निंदा करते भए कैयक रावणकी गर्वकी भरी कथा करते भए श्रीरामके गुण गावते भए, कैयक लक्ष्मणकी शक्तिका गुण वर्णन करते भए, कैयक सुकृतके फलकी प्रशंसा करते भए, निर्मल है चित्त जिनका, घरघर मृतकोंकी क्रिया होती भई, बाल वृद्ध सबके मुख यही कथा । लंकाविषै सर्वलोक रावणके शोककर अश्रुपात डारते चातुर्मास्य करते भए शोककर द्रवीभूत भया है हृदय जिनका, सकल लोकानिके नेत्रानिसे जलके प्रबाह बहे सो पृथिवी जलरूप होय गई अर तत्त्वोंकी गौणता दृष्टि पडी मानों नेत्रोंके जलके भयकर आताप घुसकर लोकोंके हृदयविषै पैठा सर्वलोकोंके मुखसे यह शब्द निकसे धिक्कार धिक्कार अहो

बडा कष्ट भया हाय हाय यह क्या अद्भुत भया या भांति लोक विलाप करै हैं कैयक भूमिविषै शय्या करते भए मौन धार मुख नीचा करते भए निश्चल है शरीर जिनका मानों काष्ठके हैं कैयक शस्त्रोंको तोड डारते भए कैयकोंने आभूषण डार दिए अर स्त्रीके मुखकमलसे दृष्टि संकोची कैयक अति दीर्घ उष्ण निस्वास नाखे हैं सो कलुष होय गए अधर जिनके मानों दुःखके अंकुरे हैं अर कैयक संसारके भोगनिसे विरक्त होय मनविषैं जिनदीक्षाका उद्यम करते भए।

अथानन्तर पिछले पहिर महासंघ सहित अनन्तवीर्य नामा मुनि लंकाके कुसुमायुध नामा वनविषै छप्पन हजार मुनि सहित आए जैसे तारानिकर मण्डित चंद्रमा सोहै तैसे मुनिकर मंडित सोहते भए, जो ये मुनि रावणके जीवते आवते तो रावण मारा न जाता लक्ष्मणके अर रावणके विशेष प्रीति होती जहां ऋद्धिधारी मुनि तिष्ठें तहां सर्व मंगल होवें अर केवली विराजे वहां चारों ही दशाओंविषैं दोयसौ योजन पृथिवी स्वर्ग तुल्य निरुपद्रव होय अर जीवनके वैरभाव मिट जावे जैसे आकाशविषै अमूर्तत्व अवकाश प्रदानता निर्लेपता अर पवनविषै सवीर्यता, निसंगता, अग्नि विषै उष्णता, जलविषै निर्मलता पृथिवीविषै सहनशीलता तैसे स्वतः स्वभाव महा मुनिके लोकको आनंददायकता होय है अनेक अद्भुत गुणोंके धारक महा मुनि तिनसहित स्वामी विराजे, गौतम स्वामी कहे हैं, हे श्रेणिक! तिनके गुण कौन वर्णन कर सके जैसे स्वर्णका कुम्भ अमृतका भरा अति सोहै तैसे महामुनि अनेक ऋद्धिके भरे सोहते भए निर्जंतु स्थानक वहां एक शिला ता ऊपर शुक्ल ध्यान धर तिष्ठे सो ताही रात्रिविषै केवलज्ञान उपजा जिनके परम अद्भुत गुण वर्णन किए पापनिका नाश होय तब भवनवासी असुरकुमार नागकुमार गरुडकुमार विद्युतकुमार अग्निकुमार पवनकुमार मेघकुमार दिक्कुमार दीपकुमार उदधिकुमार ये दशप्रकार तथा अष्ट प्रकार व्यंतर किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच, तथा पंच

प्रकार ज्योतिषी सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र अर सोलह स्वर्गके सर्व ही स्वर्गवासी ये चतुरनिकायके देव सौ-धर्म इंद्रादिक सहित धातुकीखंडद्वीपकेविषै श्रीतीर्थंकर देवका जन्म भया हुता सो सुमेरु पर्वतविषै क्षीर सागरके जलकर स्नान कराए जन्म कल्यानकका उत्सवकर प्रभुको माता पिताको सौंप तहां उत्सवसहित तांडव नृत्यकर प्रभुकी बारम्बार स्तुति करते भये। कैसे हैं प्रभु ? बाल अवस्थाको धरै हैं परंतु बाल अवस्थाकी अज्ञान चेष्टासे रहित हैं। तहां जन्म कल्याणकका समय साधकर सब देव लंकाविषैं अनंतवीर्य केवलीके दर्शनको आए। कैयक विमान चढे आए, कैयक राजहंसनिपर चढे आए अर कई एक अश्व सिंह व्याघ्रादिक अनेक वाहननिपर चढे आये, ढोल मृदंग नगारे वीण बांसुरी झांझ मंजीरे शंख इत्यादि नाना प्रकारके वादित्र बजावते मनोहर गान करते आकाश मंडलको आच्छादते केवलीके निकट महा भक्तिरूप अर्ध रात्रिके समय आए, तिनके विमाननिकी ज्योति कर प्रकाश होय गया अर वादित्रनिके शब्दकर दशोंदिशा व्याप्त होय गई, राम लक्ष्मण यह वृत्तान्त जान हर्षको प्राप्त भए, समस्त बानरवंशी अर राक्षसवंशी विद्याधर इंद्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद आदि सर्व राम लक्ष्मणके संग केवलीके दर्शनके लिये जायबेको उद्यमी भए। श्रीराम लक्ष्मण हाथी चढे अर कईएक राजा रथपर चढे कई एक तुरंगनिपर चढे छत्र चमर ध्वजाकर शोभायमान महा भक्तिकर संयुक्त देवनि सारिखे महा सुगन्ध हैं शरीर जिनके अति उदार अपने वाहननितैं उतर महाभक्ति कर प्रणाम करते स्तोत्र पाठ पढते केवलीके निकट आये। अष्टांग दण्डवत कर भूमिविषै तिष्ठे, धर्म श्रवणकी है अभिलाषा जिनके, केवलीके मुखतैं धर्म श्रवण करते भए। दिव्यध्वनिमें यह व्याख्यान भया जो ये प्राणी अष्ट कर्मसे बंधे महादुखके कर्म पर चढे चतुर्गतिविषै भ्रमण करे हैं आर्त्त रौद्र ध्यानकर युक्त नाना प्रकारके शुभाशुभ कर्मनिको करे हैं, महा मोहिनी कर्मने ये जीव बुद्धिरहित किये तातैं सदा हिंसा करै हैं असत्य वचन कहे हैं, पराये मर्म भेदका

वचन कहे हैं, परनिन्दा करे हैं, पर द्रव्य हरे हैं, परस्त्रीका सेवन करे हैं, प्रमाणरहित परिग्रहको अंगीकार करे हैं, बढा है महालोभ जिनके। वे कैसे हैं महा निन्द्यकर्म कर शरीर तज अधोलोकविषै जाय हैं तहां महा दुखके कारण सप्त नरक तिनके नाम रत्नप्रभा, शर्करा, बालुका, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम, महातम, सदा महा दुःखके कारण सप्त नरक अन्धकारकर युक्त दुर्गंध सूंघा न जाय देखा न जाय स्पर्शा न जाय महा भयंकर महा विकराल है भूमि जिनकी सदा रुदन दुर्वचन त्रास नानाप्रकारके छेदन भेदन तिनकर सदा पीडित नारकी खोटे कर्मनितैं पापबन्ध कर बहुत काल सागरों पर्यंत महा तीव्र दुःख भोगवे हैं ऐसा जान पंडित विवेकी पाप बंधसे रहित होय धर्मविषै चित्त धरो। कैसे हैं विवेकी ? व्रत नियमके धरणहारे, निःकपटस्वभाव अनेक गुणनिकर मंडित वे नानाप्रकारके तपकर स्वर्ग लोकको प्राप्त होय हैं। बहुरि मनुष्य देह पाय मोक्ष प्राप्त होय हैं अर जे धर्मकी अभिलाषासे रहित हैं ते कल्याणके मार्गतैं रहित बारम्बार जन्म मरण करते महादुखी संसारविषै भ्रमण करे हैं। जे भव्यजीव सर्वज्ञ वीतरागके वचनकर धर्मविषै तिष्ठे हैं ते मोक्षमार्गी शील सत्य शौच सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकर जबलग अष्ट कर्मका नाश न करें तबलग इंद्र अहमिंद्र पदके उत्तम सुखको भोगवे हैं। नानाप्रकारके अद्भुत सुख भोग वहां से चय कर महाराजाधिराज होय बहुरि ज्ञान पाय जिनमुद्राधर महातपकर केवलज्ञान उपाय अष्ट कर्मरहित सिद्ध होय हैं, अनन्त अविनाशी आत्मिकस्वभावमयी परम आनन्द भोगवे हैं। यह व्याख्यान सुन इंद्रजीत मेघनाद अपने पूर्वभव पूछते भए। सो केवली कहे हैं—एक कौशांबी नामा नगरी तहां दो भाई दलिद्री एकका नाम प्रथम, दूजेका नाम पश्चिम। एक दिन विहार करते भवदत्तनामा मुनि वहां आए सो ये दोनों भाई धर्म श्रवण कर ग्यारमी प्रतिमाके धारक क्षुल्लक श्रावक भए सो मुनिके दर्शनको कौशांबी नगरीका राजा इन्द्र नामा राजा आया सो मुनि महाज्ञानी राजाको देख जान्या याके

मुनिके दर्शनको आया ताका
मिथ्यादर्शन दुर्निवार है अर ताही समय नन्दीनामा श्रेष्ठी महाजिनभक्त मुनिके दर्शनको आया ताका
राजाने आदर किया ताको देख प्रथम अर पश्चिम दोऊ भाईनिमें से छोटे भाई पश्चिमने निदान
क्रिया जो मैं या धर्मके प्रसाद कर नंदी सेठके पुत्र होऊं सो बडे भाईने अर गुरुने बहुत सम्बोधा जो जि-
नशासनविषे निदान महानिन्द्य है सो यह न समझा कुबुद्धि निदानकर दुखित भया मरण कर नंदीके
इंदुमुखी नामा स्त्री ताके गर्भविषे आया सो गर्भविषे आवते ही बडे बडे राजानिके स्थानकनिविषे को-
टका निपात दरवाजनिका निपात इत्यादि नानाप्रकारके चिन्ह होते भए, तब बडे बडे राजा याको
नानाप्रकारके निमित्त कर महानर जान जन्महीसे अति आदर संयुक्त दूत भेज भेज कर द्रव्य पठाय
सेवते भए। यह बडा भया याका नाम रतिवर्धन सो सब राजा याको सेवें कौशांबी नगरीका राजा इंदु
भी सेवा करै। नित्य आप प्रणाम करै। या भांति यह रतिवर्धन महाविभूति कर संयुक्त भया अर बडा
भाई प्रथम मर कर स्वर्ग लोक गया, सो छोटे भाईके जीवको संबोधवेके अर्थ क्षुल्लकका स्वरूप धर
आया सो यह मदोन्मत्त राजा मदकर अन्धा होय रहा सो क्षुल्लकको दुष्ट लोकनिकर द्वारविषे पैठने न
दिया तब देवने क्षुल्लकका रूप दूरकर रतिवर्धनका रूप किया तत्काल ताका नगर उजाड उद्यान कर
दीया अर कहता भया अब तेरी कहा वार्ता? तब वह पांयनपर पड स्तुति करता भया तब ताको स-
कल वृत्तांत कहा जो आपां दोऊ भाई थे। मैं बडा, तू छोटा। सो क्षुल्लकके व्रत धारे सो तैंने नंदीसेठ
को देख निदान किया सो मरकर नंदीके घर उपजा, राजविभूति पाई अर मैं स्वर्गविषे देव भया। यह
सब वार्ता सुन रतिवर्धनको सम्यक्त उपजा मुनि भया अर नंदीको आदि दे अनेक राजा रतिवर्धनके
संग मुनि भए। रतिवर्धन तपकर जहां भाईका जीव देव हुता वहां ही देव भया बहुरि दोऊ भाई स्वर्ग
तैं चयकर राजकुमार भए। एकका नाम उर्व दूजेका नाम उर्वस राजा नरेन्द्र राणी विजयाके पुत्र बहुरि

जिनधर्मका आराधनकर स्वर्गविषै देव भए वहांसे चयकर तुम दोऊ भाई रावणके राणी मंदोदरी ताके इंद्रजीत मेघनाद पुत्र भए अर नंदी सेठके इंदुमुखी रतिवर्धनकी माता सो जन्मांतरविषै मंदोदरी भई। पूर्व जन्मविषै स्नेह हुता सो अब हू माताका पुत्रसे अतिस्नेह भया। कैसी है मंदोदरी? जिनधर्मविषै आसक्त है चित्त जाका, यह अपने पूर्व भव सुन दोऊ भाई संसारकी मायासे विरक्त भए। उपजा है महा वैराग्य जिनको, जैनेश्वरी दीक्षा आदरी अर कुम्भकर्ण मारीच राजा मय अर भी बडे बडे राजा संसारतैं महा विरक्त होय मुनि भए, तजे हैं विषय कषाय जिन्होंने, विद्याधरोंके राजकी विभूति तृणवत् तजी महा योगीश्वर हो अनेक ऋद्धिके धारक भए, पृथिवीविषै विहार करते भव्यनिको प्रतिबोधते भए, श्रीमुनिसुव्रतनाथके मुक्ति गए पीछे तिनके तीर्थविषै यह बडे बडे महा पुरुष भए, परम तपके धारक अनेक ऋद्धिसंयुक्त। वह भव्य जीवनिको बारम्बार बंदिवे योग्य हैं अर मंदोदरी पति अर पुत्रनिके विरह कर अतिव्याकुल भई महा शोककर मूर्छाको प्राप्त भई बहुरि सचेत होय कुरचिकी न्याई विलाप करती भई। दुखरूप समुद्रविषै मग्न होय, हाय पुत्र, इंद्रजीत मेघनाद! यह कहा उद्यम किया, मैं तिहारी माता अतिदीन ताहि क्यों तजी? यह तुमको कहा योग्य जो दुखकर तप्तायमान जो माता ताका समाधान किए बगैर उठगए। हाय पुत्र हो! तुम कैसे मुनिव्रत धरोगे। तुम देवनिसारिखे महा भोगी शरीरको लडावनहारे कठोर भूमिपर कैसे शयन करोगे। समस्त विभव तजा समस्त विद्या तजी केवल अध्यात्मविद्याविषै तत्पर भए अर राजा मय मुनि भया ताका शोक करे है—हाय पिता! यह कहा किया? जगत्को तज मुनिरूप धरा तुम मोसे तत्काल ऐसा स्नेह क्यों तजा? मैं तिहारी पुत्री मोसे दया क्यों न करी बालअवस्थाविषै मोपर तिहारी अति कृपा हुती मैं पिता अर पुत्र अर पति सबसे रहित भई, स्त्रीके यही रक्षक हैं। अब मैं कौनके शरण जाऊं मैं पुण्यहीन महा दुखको प्राप्त भई या भांति मंदोदरी रुदन करे

ताका रुदन सुन सबही को दया उपजे अश्रुपातकर चतुर्मासकर दिया ताहि शशिकान्ता आर्यिका उत्तम वचनकर उपदेश देती भई—हे मूर्खणी ! कहा रोवे है या संसारचक्रविषै जीवानिने अनन्त भव धरे तिनमें नारकी अर देवनिके तो सन्तान नाहीं अर मनुष्य अर तिर्यंचानिके है सो तैंने चतुर्गति भ्रमण करते मनुष्य तिर्यंचानिके भी अत्यन्त जन्म धारे तिनविषै तेरे अनंत पिता पुत्र बांधव भए जिनका जन्म जन्ममें रुदन किया अब कहा विलाप करे है । निश्चलता भज यह संसार असार है, एक जिनधर्म ही सार है । तू जिनधर्मका आराधन कर दुखसे निर्वृत्त होहु ऐसे प्रतिबोधके कारण आर्यिकाके मनोहर वचन सुन मंदोदरी महा विरक्त भई । उत्तम है गुण जाविषै समस्त परिग्रह तजकर एक शुक्ल वस्त्र धारकर आर्यिका भई । कैसी है मंदोदरी ? मनवचनकायकर निर्मल जो जिनशासन ताविषै अनुरागिणी है अर चन्द्रनखा रावणकी बहिन हू याही आर्यिकाके निकट दीक्षा धर आर्यिका भई । जा दिन मंदोदरी आर्यका भई ता दिन अडतालीस हजार आर्यिका भई ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं इंद्रजीत मेघनाद कुंभकरणका वैराग्य अर मंदोदरी आदि रानीनिका वैराग्य वर्णन करनेवाला अठत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७८ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे राजन् ! अब श्रीराम लक्ष्मणका विभूतिसहित लंकामें प्रवेश भया सो सुन । महा विमानानिके समूह अर हाथिनिकी घटा अर श्रेष्ठ तुरंगनिके समूह अर मंदिर समान रथ अर विद्याधरनिके समूह अर हजारां देव तिनकर युक्त दोनों भाई महाज्योतिको धरे लंकामें प्रवेश करते भए, तिनको देख लोक अति हर्षित भए, जन्मान्तरके धर्मके फल प्रत्यक्ष देखते भए, राजमार्गके विषै जाते श्रीराम लक्ष्मण तिनको देख नगरके नर अर नारिनिको अपूर्व आनंद भया । फूल

रहे हैं मुख जिनके स्त्री झरोखानि विषै बैठी जालिनिसे होय देखे हैं । कमल समान हैं मुख जिनके, महा कौतुककर युक्त परस्पर वार्ता करे हैं—सखी ! देखो यह राम राजा दशरथका पुत्र गुणरूप रत्ननिका राशि पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है वदन जाका कमल समान हैं नेत्र जाके अद्भुत पुण्यकर यह पद पाया है अतिप्रशंसा योग्य है आकार जाका धन्य हैं वह कन्या जिन्होंने ऐसे बर पाए । जाने यह बर पाए ताने कीर्तिका थंभ लोक विषै थापा, जाने जन्मान्तर विषै धर्म आचरा होय सोही ऐसा नाथ पावे तासमान अन्य नारी कौन ? जाका यश अत्यन्त, राजा जनककी पुत्री महाकल्याण रूपिणी, जन्मांतर विषै महा पुण्य उपार्जे हैं तातें यह ऐसे पति जैसे शची इंद्रके तैसे सीता रामके अर यह लक्ष्मण वासुदेव चक्रपाणि शोभै है जाने असुरेंद्रसमान रावण रणविषै हता, नील कमल समान कांति जाकी अर गौर कांतिकर संयुक्त जो बलदेव श्रीरामचंद्र तिनसहित ऐसे सोहे जैसे प्रयाग विषै गंगा यमुनाके प्रवाहका मिलाप सोहै । अर यह राजा चंद्रोदयका पुत्र विराधित है जाने लक्ष्मणसे प्रथम मिलापकर विस्तीर्ण विभूति पाई अर यह राजा सुग्रीव किहकंधापुरका धनी महा पराक्रमी जाने श्रीराम देवसे परम प्रीति जनाई अर यह सीताका भाई भामंडल राजा जनकका पुत्र चंद्रगति विद्याधरने पाला सो विद्याधरनिका इंद्र है अर यह अंगदकुमार राजा सुग्रीवका पुत्र जो रावणको बहुरूपिणी विद्या साधते विघ्नको उद्यमी भया अर हे सखी ! यह हनूमान महासुंदर उतंग हाथिनिके रथ चढा पवनकर हाले है बानरके चिन्हकी ध्वजा जाके जाहि देख रणभूमि विषै शत्रु पलाय जांय सो राजा पवनका पुत्र अंजनीके उदर विषै उपजा जाने लंकाके कोट दरवाजे ढाहे हैं। ऐसी वार्ता परस्पर स्त्रीजन करे हैं तिनके बचनरूप पुष्पनिकी मालाकर पूजित जो राम सो राजमार्ग होय आगे गए । एक चमर ढारती जो स्त्री ताहि पूछा हमारे विरहके दुःखकर तप्तायमान जो भामंडलकी बाहिन सो कहां तिष्ठे है ? तब वह

रत्ननिके चूडाकी ज्योति कर प्रकाश रूप है भुजा जाकी सो आंगुरी कर समस्याकर स्थानक दिखावती भई । हे देव ! यह पुष्पप्रकीर्ण नामा गिरि निरझरनावोंके जलकर मानो हास्यही करे है तहां नन्दन बन समान महा मनोहर बन ताविषै राजा जनककी पुत्री कीर्तिशील है परिवार जाके सो तिष्ठै है ॥

या भांति रामजीसे चमर ढारती स्त्री कहती भई अर सीताके समीप जो उर्मिका नाम सखी सब सखिनिविषै प्रीतिकी भजनहारी सो आंगुरी पसार सीताको कहती भई—हे देवि ! यह चन्द्रमा समान है छत्र जिनका अर चांद सूर्य समान हैं कुंडल जिनके अर शरदके नीझरने समान है हार जिनके सो पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र तिहारे बल्लभ आए । तिहारे वियोगकर मुखविषै अत्यंत खेदको धरे हैं । हे कमलनेत्र ! जैसे दिग्गज आवे तैसे आवे हैं । यह वार्ता सुन सीताने प्रथम तो स्वप्न समान वृत्तांत जाना वहुरि आप अति आनंदको धरे जैसे मेघपटलसे चंद्र निकसे तैसे हाथीसे उतर आए जैसे रोहिणीके निकट चन्द्रमा आवै तैसे आए तब सीता नाथको निकट आया जान अतिहर्षकी भरी उठकर संमुख आई । कैसी है सीता ? धूरकर घूसर है अंग अर केश बिखर रहे हैं श्याम पड गए हैं होठ जाके स्वभाव कर कृश हुती अर पतिके वियोगकर अत्यंत कृश भई अब पतिके दर्शनकर उपजा है अतिहर्ष जाको, प्राणकी आशा बंधी, मानों स्नेहकी भरी शरीरकी कांतिकर पतिसे मिलाप ही करै है अर मानों नेत्रनिकी ज्योतिरूप जलकर पतिको स्नान ही करावै है अर क्षणमात्रविषै बढ गई है शरीरकी लावण्यता रूप सम्पदा अर हर्षके भरे निश्वासकर मानो अनुरागके भरे बीज बोवै है। कैसी है सीता ? रामके नेत्रनिको विश्रामकी भूमि अर पल्लव समान जे हस्त तिनकर जीते हैं लक्ष्मीके करकमल जाने, सौभाग्य रूप रत्ननिकी खान सम्पूर्ण चंद्रमा समान है वदन जाका चंद्र कलंकी यह निःकलंक विजुरी समान है कांति जाकी, वह चंचल यह निश्चल, प्रफुल्लित कमल समान हैं नेत्र जाके, मुखरूप चंद्रकी चंद्रिकाकर

अतिशोभाको प्राप्त भई है यह अद्भुत् वार्ता है कि कमल तो चन्द्रकी ज्योतिकर मुद्रित होय हैं अर याके नेत्रकमल मुखचंद्रमाकी ज्योतिकर प्रकाशरूप हैं कलुषतारहित उन्मत्त हैं स्तन जाके मानों कामके कलश ही हैं, सरल है चित्त जाका सो कौशल्याका पुत्र राणी विदेहाकी पुत्रीको निकट आवती देख कथनविषै न आवे ऐसे हर्षको प्राप्त भया, अर यह रतिसमान सुन्दरी रमणको आवता देख विनयकर हाथ जोड खडी अश्रुपातकर भरे हैं नेत्र जाके जैसे शची इंद्रके निकट आवे, रति कामके निकट आवे, दया जिनधर्मके निकट आवै, सुभद्रा भरतके निकट आवै, तैसे ही सीता सती रामके समीप आई सो घने दिननिका वियोग ताकर खेदखिन्न रामने मनोरथके सैकडोंकर पाया है नवीन संगम जाने सो महाज्योतिका धरणहारा सजल हैं नेत्र जाके भुज बंधनकर शोभित जे भुजा तिनकर प्राणप्रियासे मिलता भया। ताहि उरसे लगाय सुखके सागरविषै मग्न गया, उरसे जुदी न कर सके मानों विरहसे डरै है अर वह निर्मल चित्तकी धरणहारी प्रीतमके कंठविषै अपनी भुज पांसि डार ऐसी सोहती भई जैसे कल्पवृक्षनिसे लपटी कल्प बेलि सोहै, भया है रोमांच दोनोंके अंगविषैं परस्पर मिलापकर दोऊ ही अति सोहते भये। ते देवनिके युगल समान हैं जैसे देव देवांगना सोहै तैसे सोहते भये सीता अर रामका समागम देख देव प्रसन्न भये सो आकाशसे दोनोंपर पुष्पोंकी वर्षा करते भए सुगन्ध जलकी वर्षा करते भए अर ऐसे वचन मुखतैं उचारते भए अहो अनुपम है शील सीताका शुभ है चित्त सीता धन्य है याकी अचलता गम्भीरता धन्य है व्रत शीलकी मनोग्यता भी धन्य है निर्मलपन जाका धन्य है सतीनिविषै उत्कृष्टता जाके, जाने मनहूकर द्वितीय पुरुष न इच्छा, शुद्ध है नियम व्रत जाका या भांति देवनि प्रशंसा करी ता ही समय अतिभक्तिका भरा लक्ष्मण आय सीताके पायन पडा विनयकर संयुक्त सीता अश्रुपात डारती ताहि उरसों लगाय कहती भई—हे वत्स ! महाज्ञानी मुनि कहते जो यह वासुदेव पदका धारक

है सो तू प्रगट भया अर अर्धचक्री पदका राज तेरे आया निर्ग्रंथके वचन अन्यथा न होंय अर यह तेरे बडे भाई बलदेव पुरुषोत्तम जिहोंने विरहरूप अग्निविषै जरती जो मैं सो निकासी। बहुरि चंद्रमा समान है ज्योति जाकी ऐसा भाई भामण्डल बाहिनके समीप आया ताहि देख अतिमोहकर मिली। कैसा है भाई? महा विनयवान् है अर सुग्रीव वा हनूमान् नल नील अंगद विराधित चंद्र सुषेण जांबव इत्यादि बडे बडे विद्याधर अपना नाम सुनाय वंदना अर स्तुति करते भये, नाना प्रकारके वस्त्र आभूषण कल्पवृक्षोंके पुष्पनिकी माला सीताके चरणके समीप स्वर्णके पात्रविषै मेल भेट करते भए अर स्तुति करते भए—हे देवि! तुम तीन लोकविषै प्रसिद्ध हो महा उदारताको धरो हो गुण संपदाकर सबविषै बडे हो देवोंकर स्तुति करने योग्य हो अर मंगलरूप है दर्शन तिहारा जैसे सूर्यकी प्रभा सूर्य सहित प्रकाश करै तैसे तुम श्रीरामचन्द्र सहित जयवन्त होहु॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम अर सीताका मिलाप वर्णन करनेवाला उन्नासीवां पर्व पूर्ण भया॥ ७९॥

अथानन्तर सीताके मिलापरूप सूर्यके उदय कर फूल गया है मुख कमल जिनका ऐसे जो राम सो अपने हाथ कर सीताका हाथ गह उठे ऐरावत गज समान जो गज ता पर सीतासहित आरोहण किया मेघ समान वह गज ताकी पीठ पर जानकीरूप रोहिणीकर युक्त रामरूप चन्द्रमा सोहते भए समाधान रूप है बुद्धि जिनकी दोऊ अतिप्रीतिके भरे प्राणियोंके समूहको आनन्दके करता बडे बडे अनुरागी विद्याधर लार लक्ष्मण लार स्वर्ग विमान तुल्य रावणका महल वहां श्रीराम पधारे। रावणके महिलके मध्य श्रीशांतिनाथका मंदिर अति सुन्दर तहां स्वर्णके हजारों थंभ नानाप्रकारके रत्नोंकर मंडित

मंदिरकी मनोहर भांति जैसे महाविदेहके मध्य सुमेरु सोहै तैसे रावणके मंदिरविषे शांतिनाथका मंदिर
सोहै जाकों देख नेत्र मोहित होय जांय जहां घंटा बाजे हैं ध्वजा फहरे हैं महा मनोहर वह शांतिनाथ
का मंदिर वर्णनविषे न आवे श्रीराम हाथीसे उतर नागेंद्र समान है पराक्रम जिनका प्रसन्न हैं नेत्र म-
हालक्ष्मीवान जानकीसहित किंचित्काल कायोत्सर्गकी प्रतिज्ञा करी, प्रलंबित हैं भुजा जिनकी महा प्र-
शांत हृदय सामायिकको अंगीकार कर हाथ जोड शांतिनाथस्वामीका स्तोत्र समस्त अशुभ कर्मका ना-
शक पढते भए—हे प्रभो ! तिहारे गर्भावतारविषे सर्वलोकविषे शांति भई महा कांतिकी करणहारी सर्व-
रोग हरणहारी अर सकल जीवनको आनंद उपजे अर तिहारे जन्मकल्याणविषे इंद्रादिक देव महा ह-
र्षित होय आए क्षीर सागरके जलकर सुमेरु पर्वत पर तिहारा जन्माभिषेक भया अर तुमने चक्रवर्ती
पद धर जगत्का राज्य किया बाह्यशत्रु बाह्यचक्रसे जीते अर मुनि होय माहिले मोह रागादिक शत्रु
ध्यानकर जीते केवलबोध लहा जन्म जरा मरणसे रहित जो शिवपुर कहिए मोक्ष ताका तुम अवि-
नाशी राज्य किया कर्म रूप बैरी ज्ञान शस्त्रसे निराकरण किए। कैसे हैं कर्म शत्रु सदा भवभ्रमणके का-
रण अर जन्म जरा मरण भयरूप आयुधनिकर युक्त सदा शिवपुर पंथके निरोधक। कैसा है वह शिवपुर?
उपमारहित नित्य शुद्ध जहां परभावका आश्रय नहीं केवल निज भावका आश्रय है अत्यन्त दुर्लभ सो
तुम आप निर्वाणरूप औरोंको निर्वाणपद सुलभ करो हो, सब जगतको शांतिके कारण हो। हे श्रीशां-
तिनाथ ! मन वचन काय कर नमस्कार तुमको, हे जिनेश हे महेश ! अत्यन्त शांत दिशाको प्राप्त भए
हो स्थावर जंगम सर्वजीवोंके नाथ हो जो तिहारे शरण आवे ताके रक्षक हो समाधि बोधके देनहारे तुम
एक परमेश्वर सबनके गुरु सबके बांधव हो मोक्ष मार्गके प्ररूपणहारे सर्व इंद्रादिक देवनिकर पूज्य धर्म-
तीर्थके कर्ता हो तिहारे प्रसाद कर सर्व दुखसे रहित जो परम स्थानक ताहि मुनिराज पावे हैं। हे देवा-

थिदेव नमस्कार है तुमको सर्व कर्म विलय किया है। हे कृतकृत्य ! नमस्कार तुमको, पाया है परम शांति-पद जिन्होंने, तीनलोकको शांतिके कारण सकल स्थावर जंगम जीवोंके नाथ, शरणागतपालक समाधि बोधके दाता महा कांतिके धारक हो। हे प्रभो ! तुमही गुरु तुमही बांधव तुमही मोक्षमार्गके नियंता परमेश्वर इंद्रादिक देवनिकर पूज्य धर्म तीर्थके कर्ता जिनकर भव्य जीवनिको सुख होय सर्व दुखके हरणहारे कर्मोंके अन्तक नमस्कार तुमको, हे लब्धलभ्य ! नमस्कार तुमको, लब्धलभ्य कहिये पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने महा शांत स्वभावविषै विराजमान सर्वदोषरहित हे भगवान कृपा करो वह अखंड अविनाशी पद हमें देवो इत्यादि महास्तोत्र पढते कमलनयन श्रीराम प्रदक्षिणा देकर बंदना करते भए महा विवेकी पुण्य कर्मविषै सदा प्रवीण अर रामके पीछे नम्रीभूत है अंग जाका दोऊकर जोडें महासमाधानरूप जानकी स्तुति करती भई श्रीरामके शब्द महा दुंदुभी समान अर जानकी महामिष्ट कोमल बीण समान बोलती भई अर विशल्या सहित लक्ष्मण स्तुति करते भए अर भामण्डल सुग्रीव तथा हनूमान मंगल स्तोत्र पढते भए जोडे हैं कर कमल जिन्होंने अर जिनराजविषै पूर्ण है भक्ति जिनकी महा गान करते मृदंगादि बजावते महा ध्वनि करते भए मयूर मेघकी ध्वनि जान नृत्य करते भए बारम्बार स्तुति प्रणाम कर जिनमंदिरविषै यथायोग्य तिष्ठे। ता समय राजा विभीषण अपने दादा सुमाली अर तिनके लघुवीर माल्यवान् अर सुमालीके पुत्र रत्नश्रवा रावणके पिता तिनको आदि दे अपने बडे तिनको समाधान करता भया, कैसा है विभीषण संसारकी अनित्यताके उपदेशविषै अत्यन्त प्रवीण सो बडोंको कहता भया हे तात ! यह सकल जीव अपने उपार्जे कर्मोंको भोगे हैं तातै शोक करना वृथा है अर अपना चित्त समाधान करो आप जिन आगमके वेत्ता महा शांतिचित्त अर विचक्षण हो औरोंको उपदेश देयवे योग्य आपको हम कहा कहें जो प्राणी उपजा है सो अवश्य मरणको प्राप्त होय है अर यौवन पुष्पनिकी सुगं-

धतासमान क्षणमात्रविषै और रूप होय है अर लक्ष्मी पल्लवोंकी शोभासमान शीघ्र ही और रूप होय है अर विजुरीके चमत्कार समान यह जीतव्य है अर पानीके बुदबुदासमान बंधुनिका समागम है अर सांझके बादरके रंग समान यह भोग है जो यह जीव पारमार्थिक नयकर मरण न करे तो हम भवान्तरसे तिहारे वंशविषै कैसे आवते ? हे तात ! अपना ही शरीर विनाशीक है तो हितु जनका अत्यन्त शोक काहेको करिए शोक करना मूढता है सत्पुरुषोंको शोकसे दूर करिवे अर्थ संसारका स्वरूप विचारणा योग्य है देखे सुने अनुभवे जे पदार्थ वे उत्तम पुरुषोंको शोक उपजावे हैं परन्तु विशेष शोक न करना क्षणमात्र भया तो भया या शोककर बांधवका मिलाप नाहीं बुद्धिभ्रष्ट होय है तातैं शोक न करना यह विचारणा या संसार असारविषै कौन कौन न भए ऐसा जान शोक तजना अपनी शक्ति प्रमाण जिनधर्मका सेवन करना। यह वीतरागका मार्ग संसार सागरका पार करणहारा है सो जिनशासनविषै चित्त धर आत्मकल्याण करना इत्यादि मनोहर मधुर वचननिकर विभीषणने अपने वडानिका समाधान किया।

बहुरि अपने निवास गया अपनी विदग्धनामा पटराणी समस्त व्यवहारविषै प्रवीण हजारा राणीनिमें मुख्य ताहि श्रीरामके नोतिवेको भेजा सो आयकर सीतासहित रामको अर लक्ष्मणको नमस्कार कर कहती भई—हे देव ! मेरे पतिका घर आपके चरणारविन्दके प्रसंगकर पवित्र करहु आप अनुग्रह करिवे योग्य हो या भांति राणी विनती करे है तबही विभीषण आया, अतिआदर तैं कहता भया—हे देव ! उठिये मेरा घर पवित्र करिए तब आप याके लार ही याके घर जायवेको उद्यमी भए नानाप्रकार के बाहन कारी घटा समान गज अति उत्तंग अर पवनसमान चंचल तुरंग अर मन्दिरसमान रथ इत्यादि नाना प्रकारके जे बाहन तिनपर आरूढ अनेक राजा तिन सहित विभीषणके घर पधारे, समस्त राजमार्ग सामंतनि कर आच्छादित भया। विभीषणने नगर उछाला, मेघकी ध्वनि समान वादित्र बाजते भए,

शंखनिके शब्द कर गिरिकी गुफा नाद करती भई, झंझा भेरी मृंदग ढोल हजारों बाजते भए, लपाक काहल धुन्धु अनेक बाजे अर दुंदभी बाजे दशों दिशा वादित्रों के नाद कर पूरी गई। ऐसे ही तो वादित्रनिके शब्द अर ऐसेही नानाप्रकार के बाहनानिके शब्द ऐसेही सामंतानिके अट्टहास तिनकर दशों दिशा पूरित भई कैयक सिंह शार्दूल पर चढे हैं, कैयक रथनि पर चढे हैं कैयक हाथिनि पर कैयक तुरंगनि पर चढे हैं नानाप्रकारके विद्यामई तथा सामान्य वाहन तिनपर चढे चले, नृत्यकारिणी नृत्य करै हैं नट भाट अनेक कला अनेक चेष्टा करे हैं अति सुंदर नृत्य होय है बंदीजन विरद बखाने हैं ऊचें स्वरसे स्तुति करे हैं, अर शरदकी पूर्णमासी के चन्द्रमा समान उज्वल छत्रानिके मंडल कर अंबर छाय रहा है नाना प्रकारके आयुधनिकी कांति कर सूर्य की किरण दब गई है, नगरके सकल नर नारीरूप कमलनिके वनको आनन्द उपजावते भानु समान श्रीराम विभीषणके घर आए। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! ता समयकी विभूति कही न जाय, महा शुभ लक्षण जैसी देवनिके शोभा होय तैसी भई। विभीषणने अर्घपाद्य किये, अति शोभा करी। श्रीशांतिनाथ के मंदिर तैं लेय अपने महिलतक महा मनोग्य तांडव किये आप श्रीराम हाथीसे उतर सीता अर लक्षमण सहित विभीषणके घरमें प्रवेश करते भये, विभीषणके महिलके मध्य पद्मप्रभु जिनेंद्रका मंदिर रत्ननिके तोरणनिकर मंडित कनकमई ताके चौगिर्द अनेक मंदिर जैसे पर्वतनिके मध्य सुमेरु सोहै तैसे पद्मप्रभुका मंदिर सोहै सुवर्णके हजारा थम्भ तिनके उपर अतिऊंचे देदीप्यमान अति विस्तारसंयुक्त जिन मंदिर सोहैं, नानाप्रकारके मणिनिके समूह कर मंडित अनेक रचनाको धरे अति सुंदर पद्मराग मणिमई पद्मप्रभु जिनेंद्रकी प्रतिमा अति अनुपम विराजै जाकी कांतिकर मणिनिकी भूमि विषै मानों कमलनिका वन फूल रहे हैं। सो रामलक्ष्मण सीतासहित बंदना कर स्तुतिकर यथायोग्य तिष्ठे॥

अथानन्तर विद्याधरनिकी स्त्री राम लक्ष्मण सीताके स्नानकी तयारी करावती भई, अनेक प्रकारके सुगन्ध तेल तिनके उबटना किये, नासिकाको सुगन्ध अर देहकूं अनुकूल पूर्व दिशाको मुख कर स्नान की चौकी पर विराजे, बडी ऋद्धिकर स्नानको प्रवरते सुवर्णके मरकत मणिके हीरानिके स्फटिक मणिके इंद्रनीलमणिके कलश सुगंध जलके भरे तिनकर स्नान भया, नाना प्रकारके वादित्र बाजे, गीत गान भए, जब स्नान होय चुका तब महापवित्र वस्त्र आभूषण पहिरे बहुरि पद्मप्रभुके चैत्यालय जाय वन्दना करी। विभीषणने रामकी मिजमानी करी ताका विस्तार कहां लग कहिए, दुग्ध दही घी शर्वत की वावडी भरवाई पक्वान अर अन्नके पर्वत किए अर जे अद्भुत वस्तु नन्दनादि वन विषै पाइये ते मंगाई मनको आनन्दकारी नासिकाको सुगंध नेत्रोंको प्रिय अति स्वादको धरे जिह्वाको वल्लभ षट रससहित भोजनकी तैयारी करी, सामग्री तो सर्व सुन्दर ही हुती अर सीताके मिलापकर रामको अति प्रिय लगी रामके चित्तकी प्रसन्नता कथनमें न आवै जब इष्टका संयोग होय तब पांचों इंद्रियनिके सर्व ही भोग प्यारे लगें नातर नाहीं, जब अपने प्रीतमका संयोग होय तब भोजन भली भांति रुचै सुगंध रुचै सुंदर वस्त्रका देखना रुचै रागका सुनना रुचै कोमल स्पर्श रुचै मित्रके संयोगकर सब मनोहर लगै, अर जब मित्रका वियोग होय तब स्वर्ग तुल्य विषय भी नरक तुल्य भासै अर प्रियके समागम विषै महा विषमवन स्वर्गतुल्य भासै महा सुंदर अमृतसारिखे रस अर अनेक वर्णके अद्भुत भक्ष्य तिनकर रामलक्ष्मण सीताको तृप्त किये अद्भुत भोजन क्रिया भई, भूमिगोचरी विद्याधर परिवारसहित अति सन्मानकर जिमाए, चन्दनादि सुगन्धके लेप किये तिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर भद्रसाल नंदनादिक वनके पुष्पनिसे शोभित किए अर महा सुन्दर कोमल महीन वस्त्र पहिराए नानाप्रकारके रत्ननिके आभूषण दिए कैसे हैं आभूषण ? जिनके रत्ननिकी ज्योतिके समूहकर दशोंदिशाविषै प्रकाश हो रहा है। जेते रामकी

सेनाके लोक थे वे सब विभीषणने सनमान कर प्रसन्न किये सबके मनोरथ पूर्ण किये रात्रि अर दिवस सब विभीषण ही का यश करें अहो यह विभीषण राक्षसवंशका आभूषण है, जाने राम लक्ष्मणकी बडी सेवा करी यह महा प्रशंसा योग्य है मोटा पुरुष है यह प्रभावका धारक जगतविषै उतंगताको प्राप्त भया, जाके मंदिर श्रीराम लक्ष्मण पधारे, या भांति विभीषणके गुण ग्रहणविषै तत्पर विद्याधर होते भए। सर्व लोक सुखसे तिष्ठे राम लक्ष्मण सीता अर विभीषणकी कथा पृथिवीविषै प्रवरती।

अथानन्तर विभीषणादिक सकल विद्याधर राम लक्ष्मणका अभिषेक करनेको विनयकर उद्यमी भए तब श्रीराम लक्ष्मणने कहा अयोध्याविषै हमारे पिताने भाई भरतकूं अभिषेक कराया सो भरत ही हमारे प्रभु हैं तब सबने कही आपको यही योग्य है परन्तु अब आप त्रिखंडी भए तो यह मंगल स्नान योग्य ही है यामें कहा दोष है अर ऐसी सुननेविषै आवै है भरत महा धीर है अर मन वचन काय कर आपकी सेवाविषै प्रवरते है विक्रियाको नाहीं प्राप्त होय है ऐसा कह सबने रामलक्ष्मणका अभिषेक किया जगतविषै बलभद्र नारायणकी अति प्रशंसा भई जैसे स्वर्गविषै इंद्र प्रतिइंद्रकी महिमा होइ तैसे लंका विषै राम लक्ष्मणकी महिमा भई, इंद्रके नगर समान वह नगर महा भोगनिकर पूर्ण तहां राम-लक्ष्मणकी आज्ञासे विभीषण राज्य करे है, नदी सरोवरनिके तीर अर देश पुर ग्रामादिविषै विद्याधर राम लक्ष्मणही का यश गावते भए, विद्याकरयुक्त अद्भुत आभूषण पहिरे सुन्दर वस्त्र मनोहर हार सुगंधादिकके विलेपन उनकर युक्त क्रीडा करते भए जैसे स्वर्गविषै देव क्रीडा करें अर श्रीरामचन्द्र सीता का मुख देखते तृप्ति को न प्राप्त भए। कैसा है सीताका मुख? सूर्यके किरणकर प्रफुल्लित भया जो कमल ता समान है प्रभा जाकी, अत्यन्त मनकी हरणहारी जो सीता ता सहित राम निरन्तर रमणीय भूमिविषै रमते भए अर लक्ष्मण विशल्या सहित रतिको प्राप्त भए मन वांछित सकल वस्तुका है समागम जिनके उन दोऊ भाईनिके बहुत दिन भोगोपभोगयुक्त सुखसे एक दिवस समान गए।

एक दिन लक्ष्मण सुन्दर लक्षणोंका धरणहारा विराधितको अपनी जे स्त्री तिनके लेयबे अर्थ पत्र लिख बडी ऋद्धिसे पठावता भया सो जायकर कन्यानिके पितानिको पत्र देता भया, माता पितानिने बहुत हर्षित होय कन्यानिको पठाईं सो बडी विभूतिसों आईं देशांग नगरके स्वामी बज्रकर्णकी पुत्री रूपवती महारूपकी धरणहारी अर कूबर स्थानके नाथ बालखिल्यकी पुत्री कल्याण माला परम सुंदरी अर पृथ्वीपुर नगरके राजा पृथ्वीधरकी पुत्री बनमाला गुणरूपकर प्रसिद्ध अर खेमांजलके राजा जितशत्रुकी पुत्री जितपद्मा अर उज्जैन नगरीके राजा सिंहोदरकी पुत्री यह सब लक्ष्मणके समीप आई विराधित ले लाया जन्मान्तरके पूर्ण पुण्य दया दान मन इंद्रियोंको वशकरना शील संयम गुरुभक्ति महा उत्तम तप इन शुभ कर्मनिकर लक्ष्मणसा पति पाईये इन पतिव्रतानिने पूर्व महा तप किए हुते रात्रि भोजन तथा चतुर्विधि संघकी सेवा करी तातैं बासुदेव पति पाये उनको लक्ष्मण ही वर योग्य अर लक्ष्मणके ऐसे ही स्त्री योग्य तिनकर लक्ष्मणको अर लक्ष्मणकर तिनको अति सुख होता भया। परस्पर सुखी भए गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक! जगतविषै ऐसी संपदा नाहीं ऐसी शोभा नाहीं ऐसी लीला नाहीं ऐसी कला नाहीं जो इनके न भई। राम लक्ष्मण अर इनकी राणी तिनकी कथा कहां लग कहें अर कहां कमल कहां चन्द्र इनके मुखकी उपमा पावै अर कहां लक्ष्मी अर कहां रति इनकी राणियोंकी उपमा पावें राम लक्ष्मणकी ऐसी संपदा देख विद्याधरोंके समूहको परम आश्चर्य होता भया। चंद्रावर्धनकी पुत्री अर और अनेक राजानिकी कन्या तिनसे श्रीराम लक्ष्मणका अति उत्सवसे विवाह होता भया। सब लोकको आनन्दके करणहारे वे दोऊ भाई महा भोगानिके भोगता मनबांछित सुख भोगते भए। इंद्र प्रतींद्र समान आनन्द कर पूर्ण लंका विषै रमते भए, सीता विषै है अत्यन्त राग जिनका ऐसे श्रीराम तिन्होंने छहवर्ष लंकाविषै व्यतीत किये सुखके सागरविषै मग्न सुन्दर चेष्टाके धरणहारे श्रीरामचन्द्र सकल दुःख भूल गए॥

अथानन्तर इंद्रजीत मुनि सर्व पापानिके हरनहारे अनेक ऋद्धि सहित विराजमान पृथिवीविषै विहार करते भए, वैराग्यरूप पवनकर प्रेरी ध्यानरूप अग्निकर कर्मरूपवन भस्म किये। कैसा है ध्यानरूप अग्नि ? क्षायिक सम्यक्त्वरूप अरण्यकी लकडी ताकर करी है अर मेघबाहन मुनि भी विषयरूप ईंधनको अग्नि समान आत्मध्यानकर भस्म करते भए, केवल ज्ञानको प्राप्त भए केवलज्ञान जीवका निजस्वभाव है अर कुम्भकर्ण मुनि सम्यक् दर्शन ज्ञानचारित्रके धारक शुक्ल लेश्या कर निर्मल जो शुक्लध्यान ताके प्रभावकर केवलज्ञानको प्राप्त भए। लोक अर अलोक इनको अवलोकन करते मोहरज रहित इंद्रजीत कुंभकर्ण केवली आयु पूर्णकर अनेक मुनिनि सहित नर्मदाके तीर सिद्धपदको प्राप्त भए सुरअसुर मनुष्यनिके अधिपतिनिकर गाइये है उत्तम कीर्ति जिनकी शुद्ध शीलके धरणहारे महादेदीप्यमान जगत बन्धु समस्त ज्ञेयके ज्ञाता जिनके ज्ञान समुद्रविषैं लोकालोक गायके खुर समान भासैं संसारका क्लेश महा विषम ताके जालसे निकसे जा स्थानक गए बहुरि यत्न नाहीं तहां प्राप्त भये उपमारहित निर्विघ्न अखंडसुखको प्राप्त भए जे कुंभकर्णादिक अनेक सिद्ध भए ते जिनशासनके श्रोतावोंको आरोग्य पद देवें। नाश किये हैं कर्म शत्रु जिन्होंने ते जिनस्थानकोंसे सिद्धभए हैं वे स्थानक अद्यापि देखिये है वे तीर्थ भव्यनिकर बंदवे योग्य हैं विंध्याचलकी बनी विषै इंद्रजीत मेघनाद तिष्ठे सो तीर्थ मेघरव कहावें है अर जम्बूमाली महा बलवान तूणीमंत नामापर्वतविषै अहमिंद्र पदको प्राप्त भए सो पर्वत नानाप्रकारके वृक्ष अर लतानिकर मंडित अनेक पक्षिनिके समूहकर तथा नानाप्रकारके वनचरनिकर भरा। अहो भव्यजीव हो! जीवदया आदि अनेक गुणनिकर पूर्ण ऐसा जो जिनधर्म ताके सेवनेसे कछु दुर्लभ नाहीं, जिनधर्मके प्रसादसे सिद्धपद अहमिंद्रपद इत्यादिके पद सबही सुलभ हैं, जम्बूमालीका जीव अहमिंद्र पदसे ऐरावतक्षेत्र विषे मनुष्य होय केवल उपाय सिद्धपदको प्राप्त होवेंगे अर मंदोदरीका पिता चारण मुनि होय

महा ज्योतिको वरे अढाईद्वीप विषै कैलाश आदि निर्वाण क्षेत्रनिकी अर चैत्यालयोंकी बंदना करते भए देवोंका है आगमन जहां सो मय महामुनि रत्नत्रय रूप आभूषण कर मंडित महाधीर्यधारी पृथिवीविषै विहार करें अर मारीच मंत्री महा मुनि स्वर्गविषै बडी ऋद्धिके धारी देव भए जिनका जैसा तप तैसा फल पाया। सीताके दृढव्रत कर पतिका मिलाप भया जाको रावण डिगाय न सका। सीताका अतुल धीर्य अद्भुतरूप महानिर्मल बुद्धि भरतारविषै अधिकस्नेह जो कहनेविषै न आवै सीता महा गुणनिकर पूर्ण शीलके प्रसादतैं जगतविषै प्रशंसा योग्य भई। कैसी है सीता एक निजपतिविषै है संतोष जाके भवसागरकी तरणहारी परम्पराय मोक्षकी पात्र जाकी साधु प्रशंसा करें। गौतमस्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक! जो स्त्री विवाह ही नहीं करे बालब्रह्मचर्य धरै सो तो महा भाग्य ही है अर पतिव्रताका व्रत आदरै मन वचनकायकर परपुरुषका त्याग करै तो यह व्रत भी परम रत्न है स्त्रीको स्वर्ग अर परम्पराय मोक्ष देयवेको समर्थ है शीलव्रत समान और व्रत नाहीं, शील भवसागरकी नाव है। राजा मय मंदोदरीका पिता राज्य अवस्थाविषै मायाचारी हुता अर कठोरपरणामी हुता, तथापि जिन धर्मके प्रासदकर राग द्वेषरहित हो अनेक ऋद्धिका धारक मुनि भया।

यह कथा सुन राजा श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछते भए—हे नाथ! मैं इंद्रजीतादिकका माहात्म्य सब सुना अब राजा मयका माहात्म्य सुना चाहू हूं अर हे प्रभो! जो या पृथिवीविषै पतिव्रता शीलवंती स्त्री हैं निज भारतविषै अनुरक्त हैं वे निश्चयसे स्वर्ग मोक्षकी अधिकारिणी हैं तिनकी महिमा मोहि विस्तारसूं कहो। तब गणधर कहते भए जे निश्चयकर सीता समान पतिव्रता शीलको धारण करै हैं ते अल्प भवमें मोक्ष होय हैं पतिव्रता स्वर्गही जाय परम्पराय मोक्ष पावें, अनेक गुणनिकर पूर्ण। हे राजन् जे मन वचन काय कर शीलवन्ती हैं चित्तकी वृत्ति जिन्होंने रोकी है ते धन्य हैं, घोडनिमें हाथिनिमें

लोहेनिविषै पाषाणविषै वस्त्रनिविषै जलविषै वृक्षनिविषै वेलनिविषै स्त्रीनिविषै पुरुषनिविषै बडा अंतर है सबही नारियोंमें पतिव्रता न पाईये अर सबही पुरुषनिमें विवेकी नाहीं। जे शील रूप अंकुश कर मनरूप माते हाथिको वश करें ते पतिव्रता हैं। पतिव्रता सबही कुलमें होय हैं अर वृथा पतिव्रता का अभिमान किया तो कहा? जे जिनधर्मसे वहिरमुख हैं ते मनरूप माते हाथीको वश करबे समर्थ नाहीं, वीतरागकी वाणीकर निर्मल भया है चित्त जिनका तेई मनरूप हस्तीको विवेक रूप अंकुश कर वशीभूत कर दया शीलके मार्ग विषै चलायबे समर्थ हैं। हे श्रेणिक! एक अभिनाम स्त्री ताकी संक्षेपसे कथा कहिए है—सो सुन, यह प्राचीन कथा प्रसिद्ध है एक ध्यानग्रामनामा ग्राम तहां नोदन नामा ब्राह्मण ताके अभिमाना नामा स्त्री सो अग्निनामा ब्राह्मणकी पुत्री माननी नाम माताके उदरमें उपजी, सो आति अभिमान की धरणहारी सो नोदन नामा ब्राह्मण क्षुधाकर पीडित होय अभिमानाको तज दई सो गजवनविषै करूरुह नाम राजाको प्राप्त भई, वह राजा पुष्प प्रकीर्ण नगरका स्वामी लंपट सो ब्राह्मणीको रूपवन्ती जान लेगया, स्नेह कर घरविषै राखी। एक समय रातिविषै ताने राजाके मस्तक विषै चरणकी लात दई। प्रातः समय सभाविषै राजाने पंडितानिसे पूछी—जाने मेरा सिर पांव कर हता होय ताका कहा करना। तब मूर्ख पंडित कहते भए—हे देव! ताका पांव छेदना अथवा प्राण हरना ता समय एक हेमांक नामा ब्राह्मण राजाके अभिप्रायका वेत्ता कहता भया ताके पांवकी आभूषणादि कर पूजा करना तब राजाने हेमांकको पूछी—हे पंडित! तुमने रहस्य कैसे जाना तब ताने कही—स्त्रीके दंतनिके तिहारे अधरोंविषै चिन्ह दीखे तातैं यह जानी स्त्रीके पांवकी लागी। तब राजाने हेमांकको अभिप्रायका वेत्ता जान अपना निकट कृपापात्र किया बडी ऋद्धि दई सो हेमांकके घरके पास एक मित्रयशा नामा विधवा ब्राह्मणी महादुःखी अमोघ सर नाम ब्राह्मणकी स्त्री है सो रहे सो अपने पुत्रको शिक्षा देती

हुती भरतारके गुण चितार चितार कहती भई हे पुत्र ! बाल अवस्था विषै जो विद्याका अभ्यास करै सो हेमांककी न्याईं महा विभूतिको प्राप्त होय, या हेमांकने बाल अवस्थाविषै विद्याका अभ्यास किया सो अब याकी कीर्ति देख अर तेरा बाप धनुष बाण विद्याविषै अति प्रवीण हुता ताके तुम सुपुत्र भये आंसू डार माताने यह वचन कहे ताके वचन सुन माताको धीर्य बंधाया महा अभिमानका धारक यह श्रीवार्धित नामा पुत्र विद्या सीखनेके अर्थ व्याघपुर नगर गया सो गुरुके निकट शस्त्र शास्त्र सर्व विद्या सीखी अर या नगरके राजा सुकांतकी शीला नामा पुत्री ताहि ले निकसा । तब कन्याका भाई सिंहचन्द्र या ऊपर चढा सो या अकेलेने शस्त्रविद्याके प्रभावकर सिंहचंद्रको जीता अर स्त्रीसहित माताके निकट आया । माताको हर्ष उपजाया शस्त्र कला कर याकी पृथिवीविषै प्रसिद्ध कीर्ति भई सो शस्त्रके बल कर पोदनापुरके राजा राजा करूरुहको जीत्या अर व्याघ्रपुरका राजा शीलाका पिता मरणको प्राप्त भया ताका पुत्र सिंहचंद्र शत्रूनिने दवाया सो सुरंगके मार्ग होय अपनी रानी को ले निकसा राज्यभ्रष्ट भया पोदनापुर विषै अपनी बाहिनका निवास जान तंबोलीके लार पानोंकी झोली सिर पर धर स्त्रीसहित पोदनापुरके समीप आया रात्रिको पोदनापुरके बनमें रहा ताकी स्त्री सर्प ने डसी तब यह ताहि कांधे धर जहां मय महा मुनि विराजे हुते वे वज्रके थंभ समान महानिश्चल कायोत्सर्ग धरे अनेक ऋद्धिके धारक तिनको भी सर्व औषधि ऋद्धि उपजी हुती सो तिनके चरणारविंदके समीप सिंहचंद्रने अपनी राणी डारी सो तिनके ऋद्धिके प्रभाव कर राणी निर्विष भई स्त्री सहित मुनिके समीप तिष्ठे थी ता मुनिके दर्शनकूं विनयदत्त नाम श्रावक आया ताहि सिंहचन्द्र मिला अर अपना सब वृत्तांत कहा तब ताने जाय कर पोदनापुरके राजा श्रीवार्धितको कहा जो तिहारी स्त्रीका भाई सिंहचन्द्र आया है तब वह शत्रु जान युद्धको उद्यमी भया तब विनयदत्तने यथावत् वृत्तांत कहा जो तिहारे शरण आया है, तब ताहि

बहुत प्रीति उपजी अर महाविभूतिसे सिंहचन्द्रके सन्मुख आया, दोनो मिले, अति हर्ष उपजा। बहुरि श्रीवर्धित मय मुनिको पूछता भया हे भगवान ! मैं मेरे अर अपने स्वजनोंके पूर्व भव सुना चाहूं हूं—तब मुनि कहते भए—एक शोभपुरनामा नगर वहां भद्राचार्य दिगंबरने चौमासेविषै निवास किया सो अमलनामा नगरका राजा निरंतर आचार्यके दर्शनको आवै सो एक दिवस एक कोढिनी स्त्री ताकी दुर्गंध आई सो राजा पांवपयादाही भाग अपने घर गया ताकी दुर्गंध सह न सका अर वह कोढनीने चैत्यालय दर्शनकर भद्राचार्यके समीप श्राविकाके व्रत धारे, समाधि मरण कर देवलोक गई वहांते चयकर तेरी स्त्री शीला भई अर वह राजा अमल अपने पुत्रकों राज्य भार सौंप आप श्रावकके व्रत धारे आठ ग्राम पुत्र पै ले संतोष धरा शरीर तज देव लोक गया वहांसे चयकर तू श्रीवर्धित भया॥

अब तेरी माताके भव सुन—एक विदेशी क्षुधाकर पीडित ग्रामविषै आय भोजन मांगता भया सो जब भोजन न मिला तब महा कोपकर कहता भया कि मैं तिहारा ग्राम बालूंगा ऐसे कटुक शब्द कह निकसा। दैवयोगसे ग्रामविषै आग लगी सो ग्रामके लोगनिने जानी ताने लगाई तब क्रोधायमान होय दौडे अर ताहि ल्याय अग्निविषै जराया सो महा दुःखकर राजाकी रसोवाणि भई। मरकर नरकविषै घोरवेदना पाई तहांसे निकसी तेरी माता मित्रयशा भई अर पोदनापुरविषै एक गोवाणिज गृहस्थ मर कर तेरी स्त्रीका भाई सिंहचन्द्र भया अर वह भुजपत्रा ताकी स्त्री रतिवर्धना भई। पूर्वभवविषै पशुओंपै बोझ लादे थे सो या भवविषै भार वहै, ये सर्वके पूर्व जन्म कहकर मय महा मुनि आकाश मार्ग विहारकर गए अर पोदनापुरका राजा श्रीवर्धित सिंहचन्द्रसाहित नगरविषैं गया। गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! यह संसारकी विचित्र गति है कोईयक तो निर्धनसे राजा हो जाय अर कोईयक राजासे निर्धन होजाय है। श्रीवर्धित ब्राह्मणका पुत्र सो राजा होय गया अर सिंहचन्द्र राजाका पुत्र सो राज्यभ्रष्ट होय श्रीव-

र्धितके समीप आया। एक गुरुके निकट प्राणी धर्मका श्रवण करें तिनविषै कोई समाधि मरणकर सुगति पावै कोई कुमरणकर दुर्गति पावै कोई रत्ननिके भरे जहाज सहित समुद्र उलंघ सुखसे स्थानक पहुंचे, कोऊ समुद्रविषै डूबे, कोईको चोर लूट लेय जावें ऐसा जगत्का स्वरूप विचित्र गति जान जे विवेकी हैं ते दया दान विनय वैराग्य जप तप इन्द्रियोंका निरोध शांतता आत्मध्यान तथा शास्त्राध्ययनकर आत्मकल्याण करें ऐसे मय मुनिके वचन सुन राजा श्रीवर्धित अर पोदनापुरके बहुतलोक शांतचित्त होय जिनधर्मका आराधन करते भए यह मय मुनिका माहात्म्य जे चित्त लगाय पढें सुनें तिनको वैरियोंकी पीडा न होय सिंहव्याघ्रादि न हतें सर्पादि न डसें॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मयमुनिका माहात्म्य वर्णन करनेवाला अस्सीवा पर्व पूर्ण भया॥ ८०॥

अथानन्तर लक्ष्मणके बडे भाई श्रीरामचन्द्र स्वर्गलोक समान लक्ष्मीको मध्यलोकविषै भोगते भए चन्द्र सूर्य समान है कांति जाकी अर इनकी माता कौशल्या भर्तार अर पुत्रके वियोगरूप अग्निकी ज्वालाकर शोकको प्राप्त भया है शरीर जाका महिलके सातवें खण बैठी सखियोंकर मंडित अतिउदास आंसुनिकर पूर्ण हैं नेत्र जाके जैसे गायको बच्छेका वियोग होय अर वह व्याकुल होय ता समान पुत्रके स्नेहविषै तत्पर तीव्र शोकके सागरविषै मग्न दशों दिशाकी ओर देखै महिलके शिखरविषै तिष्ठता जो काग ताहि कहै है हे वायस! मेरा पुत्र राम आवे तो तोहि खीरका भोजन दूं ऐसे वचन कहकर विलाप करे अश्रुपातकर किया है चातुर्मास जिसने हाय वत्स तू कहां गया मैं तुझे निरंतर सुखसे लडाया था तेरे विदेश भ्रमणकी प्रीति कहांसे उपजी कहा पल्लव समान तेरे चरण कोमल कठोर पंथविषै पीडा

न पावें ? महा गहन वनविषै कोन वृक्षके तले विश्राम करता होयगा ? मैं मन्दभागिनी अत्यन्त दुःखी मुझे तजकर तू भाई लक्षमण सहित किस दिशाको गया ? या भांति माता विलाप करै ता समय नारद ऋषि आकाशके मार्गविषै आए पृथिवीमें प्रसिद्ध सदा अढाई द्वीपविषै भ्रमते ही रहैं सिरपर जटा शुक्ल वस्त्र पहिरे उमको समीप आवता जान कौशल्याने उठकर सन्मुख जाय नारदका आदरसहित सिंहासन बिछाय सन्मान किया तब नारद उसे अश्रुपात सहित शोकवन्ती देख पुछते भए हे कल्याणरूपिणी तुम ऐसी दुःखरूप क्यों तुमको दुःखका कारण कया सुकौशल महाराजकी पुत्री, लोकविषै प्रसिद्ध राजा दशरथकी राणी प्रशंसा योग्य श्रीरामचन्द्र मनुष्यानिविषै रत्न तिनकी माता महासुन्दर लक्षणकी धरणहारी तुमको कौनने रुसाई जो तिहारी आज्ञा न माने सो दुरात्मा है अवार ही ताका राजा दशरथ निग्रह करें तब नारदको माता कहती भई—हे देवर्षे ! तुम हमारे घरका वृत्तांत नहीं जानों हो तातैं कहो हो अर तिहारा जैसा वात्सल्य या घरसूं था सो तुम विस्मरण किया कठोर चित्त होय गए अब यहां आवना ही तजा अब तुम बात ही न बूझो। हे भ्रमणाप्रिय ! बहुत दिननिविषै आए। तब नारदने कहा हे—माता ! धातुकी खंड द्वीपविषै पूर्व विदेह क्षेत्र वहां सुरेंद्ररमण नामा नगर वहां भगवान तीर्थंकर देवका जन्मकल्याण भया सो इंद्रादिक देव आए, भगवानको सुमेरुगिरि लेगए अद्भुत विभूतिकर जन्माभिषेक किया सो देवाधिदेव सर्व पापके नाशनहारे तिनका अभिषेक मैं देख्या जाहि देखे धर्मकी बढवारी होय वहां देवानिने आनन्दसे नृत्य किया। श्रीजिनेंद्रके दर्शनविषै अनुरागरूप है बुद्धि मेरी सो महामनोहर धातकी खंडविषै तेईस वर्ष मैंने सुखसे व्यतीत किये, तुम मेरी मातासमान सो तुमको चितार या जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै आया अब कोइयक दिन इस मंडलहीविषै रहूंगा अब मोहि सब वृत्तांत कहो तिहारे दर्शनको आया हूं तब कौशल्याने सर्व वृत्तांत कहा। भामंडलका यहां आवना

अर विद्याधरानिका यहां आवना अर भामण्डलको विद्याधरनिका राज्य अर राजा दशरथका अनेक राजानि सहित वैराग्य अर रामचन्द्रका सीता सहित अर लक्ष्मणके लार विदेशको गमन बहुरि सीता का वियोग सुग्रीवादिकका रामसे मिलाप रावणसे युद्ध लंकेशकी शक्तिका लक्ष्मणके लगना बहुरि द्रोणमेघकी कन्याका तहां गमन एती खबर हमको है बहुरि क्या भया सो खबर नाहीं, ऐसा कह महा दुःखित होय अश्रुपात डारती भई अर विलाप किया—हाय ! हाय ! पुत्र तू कहां गया, शीघ्र अब मोसे वचन कह, मैं शोकके सागरविषै मग्न ताहि निकास मैं पुण्यहीन तेरे मुख देखे विना महा दुःखरूप अग्निसे दाहको प्राप्त भई याहि साता देवो अर सीता वाला पापी रावण तोहि वंदीगृहविषै डारी महा दुःखसे तिष्ठती होयगी निर्दई रावणने लक्ष्मणके शक्ति लगाई सो न जानिए जीवे है कै नाहीं। हाय दोनों दुर्लभ पुत्र हो, हाय सीता ! तू पतिव्रता काहे दुःखको प्राप्त भई। यह वृत्तांत कौशल्याके मुख सुन नारद अति खेदखिन्न भया वीण धरतीविषै डार दई अर अचेत होय गया बहुरि सचेत होय कहता भया हे माता ! तुम शोक तजो मैं शीघ्रही तिहारे पुत्रानिकी वार्ता क्षेम कुशलकी लाऊं हूं मेरे सब बातविषै सामर्थ्य है यह प्रतिज्ञाकर नारद बीणको उठाय कांधे धरी आकाश मार्ग गमन किया पवन समान है वेग जाका अनेक देश देखता लंकाकी ओर चला सो लंकाके समीप जाय विचारी राम लक्ष्मणकी वार्ता कौन भांति जानिवेविषै आवै जो रामलक्ष्मणकी वार्ता पूछिए तो रावणके लोकानिसे विरोध होय तातैं रावणकी वार्ता पूछिए तो योग्य है रावणकी वार्ता कर उनकी वार्ता जानी जायगी। यह विचार नारद पद्म सरोवर गया तहां अन्तःपुर सहित अंगद क्रीडा करता हुता ताके सेवकानिको रावणकी कुशल पूछी वे किंकर सुनकर क्रोधरूप होय कहते भए यह दुष्टतापस रावणका मिलापी है याको अंगदके समीप ले गए जो रावणकी कुशल पूछै है। नारदने कहा मेरा रावणसे कछु प्रयोजन नाहीं तब किंकरानिने कही

तेरा कछु प्रयोजन नाहीं तो रावणकी कुशल क्यों पूछे था। तब अंगदने हंसकर कहा इस तापसको पद्मनाभिके निकट ले जावो सो नारदको खींचकर ले चले नारद विचारे है न जानिए कौन पद्मनाभी है कौशल्याका पुत्र होय तो मोसे ऐसी क्यों होय, ये मोहि कहां लेजाय हैं, मैं संशयविषै पडा हूं जिन शासनके भक्त देव मेरी सहाय करो, अंगदके किंकर याहि विभीषणके मंदिर श्रीराम विराजे हुते तहां ले गए श्रीराम दूरसे देख याहि नारद जान सिंहासनसे उठे अति आदर किया किंकरनिसे कहा इनसे दूर जावो। नारद श्रीराम लक्ष्मणको देख अति हर्षित भया आशीर्वाद देकर इनके समीप बैठा तब राम बोले अहो क्षुल्लक! कहांसे आए बहुत दिननिविषै आए हो नीके हो तब नारदने कहा तिहारी माता कष्टके सागरविषै मग्न है सो वार्ता कहिवेको तिहारे निकट शीघ्र ही आया हूं, कौशल्या माता महासती जिनमती निरन्तर अश्रुपात डारै है अर तुम विना महा दुखी है जैसे सिंही अपने बालक विना व्याकुल होय तैसे अति व्याकुल भई विलाप करै है जाका विलाप सुन पाषाण भी द्रवीभूत होय तुमसे पुत्र माताके आज्ञाकारी अर तुम होते माता ऐसी कष्टरूप रहै यह आश्चर्यकी बात, वह महागुणवती सांझ सकारेविषै प्राणरहित होयगी जो तुम ताहि न देखोगे तो तिहारे वियोगरूप सूर्यकर सूक जायगी तातैं मोपै कृपा करो उठो ताहि शीघ्रही देखो या संसारविषै माता समान पदार्थ नाहीं तिहारी दोनों मातानिके दुख करके कैकई सुप्रभा सबही दुखी है कौशल्या सुमित्रा दोनों मरणतुल्य होय रही हैं आहार नींद सब गई रात दिन आंसू डारें हैं तिनकी स्थिरता तिहारे दर्शनही से होय जैसे कुरुचि बिलाप करै तैसे विलाप करें हैं अर सिर अर उर हाथोंसे कूटे हैं दोनों ही माता तिहारे वियोगरूप अग्निकी ज्वालाकर जरे हैं तिहारे दर्शनरूप अमृतकी धारकर उनका आताप निवारो ऐसे नारदके वचन सुन दोनों भाई मातानिके दुख कर अति दुखी भए शस्त्र डार दीए अर रुदन करने लगे तब सकल विद्याधरनिने

धीर्य बंधाया। राम लक्ष्मण नारदसे कहते भए—अहो नारद! तुमने हमारा बडा उपकार किया हम दुराचारी माताको भूल गए सो तुम स्मरण कराया तुम समान हमारे और वल्लभ नाहीं वही मनुष्य महा पुण्यवान् हैं जो माताके विनयविषै तिष्ठै हैं दास भए माताकी सेवा करें जे माताका उपकार विस्मरण करै हैं वे महा कृतघ्न हैं या भांति माताके स्नेहकर व्याकुल भया है चित्त जिनका दोनों भाई नारदकी अति प्रशंसा करते भए॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मणने ताही समय अतिविभ्रम चित्त होय विभीषणको बुलाया अर भामंडल सुग्रीवादि पास बैठे हैं। दोऊ भाई विभीषणसे कहते भए—हे राजन्! इंद्रके भवन समान तेरा भवन तहां हम दिन जाते न जाने अब हमारे माताके दर्शनकी अति वांछा है हमारे अंग अति तापरूप हैं सो माताके दर्शनरूप अमृतकर शांतताको प्राप्त होवें। अब अयोध्या नगरीके देखवेको हमारा मन प्रवरता है वह अयोध्या भी हमारी दूजी माता है तब विभीषण कहता भया—हे स्वामिन्! जो आज्ञा करोगे सो ही होयगा अबारही अयोध्याको दूत पठावें जो तिहारी शुभवार्ता मातावोंको कहैं अर तिहारे आगमकी वार्ता कहैं जो मातावोंके सुख होय अर तुम कृपाकर षोडश दिन यहां ही विराजो। हे शरणागत प्रतिपालक मोसे कृपाकरो ऐसा कह अपना मस्तक रामके चरण तले धरा तब राम लक्ष्मणने प्रमाण करी॥

अथानन्तर भले भले विद्याधर अयोध्याको पठाये सो दोनों माता माहिलपर चढी दक्षिणदिशाकी ओर देख रही हुतीं सो दूरसे विद्याधरोंको देख कौशल्या सुमित्रासे कहती भई—हे सुमित्रा! देख दोय यह विद्याधर पवनके प्रेरे मेघ तुल्य शीघ्र आवे हैं सो हे श्रावके! अवश्य कल्याणकी वार्ता कहेंगे यह दोनों भाईयोंके भेजे आवे हैं तब सुमित्राने कही तुम जो कहो हो सो ही होय। यह वार्ता दोऊमातानिमें

होय है तब ही विद्याधर पुष्पनिकी वर्षा करते आकाशसे उतरे अतिहर्षके भरे भरतके निकट आए राजा भरत अति प्रमोदका भरा इनका बहुतसन्मान करता भया, अर यह प्रणामकर अपने योग्य आसनपर बैठे, अति सुन्दर है चित्त जिनका यथावत् वृत्तांत कहते भए।

हे प्रभु राम लक्ष्मणने रावणको हता विभीषणको लंकाका राज्य दीया श्रीराम को बलभद्रपद अर लक्ष्मण को नारायणपद प्राप्त भया, चक्ररत्न हाथमें आया तिन दोनों भाइयोंके तीन खंडका परम उत्कृष्ट स्वामित्व भया, रावणके पुत्र इंद्रजीत मेघनाद भाई कुम्भकर्ण जो बंदीगृहमें थे सो श्रीरामने छोडे तिन्होंने जिनदीक्षा धर निर्वाण पद पाया अर गरुडेंद्र श्रीराम लक्ष्मणसे देशभूषण कुलभूषण मुनिके उपसर्ग निवारिवे कर प्रसन्न भए थे सो जब रावणतें युद्ध भया उसही समय सिंहवाण अर गरुडवाण दिये, इस भांति राम लक्ष्मणके प्रतापके समाचार सुन भरत भूप अति प्रसन्न भए तांबूल सुगंधादिक लिन को दिये अर तिनको लेकर दोनों माताओंके समीप भरत गया, राम लक्ष्मणकी माता पुत्रोंकी विभूतिकी वार्ता विद्याधरोंके मुखसे सुन आनदंको प्राप्त भई उसही समय आकाशके मार्ग हजारों बाहन विद्यामई स्वर्ण रत्नादिकके भरे आए अर मेघमालाके समान विद्याधरनिके समूह अयोध्यामें आये जैसे देवनिके समूह आवें ते आकाशविषै तिष्ठे नगरविषै नाना रत्नमई वृष्टि करते भए रत्ननिके उद्योत कर दशों दिशाविषै प्रकाश भया, अयोध्याविषै एक एक गृहस्थके घर पर्वत समान सुवर्ण रत्ननि की राशि करी अयोध्याके निवासी समस्त लोक ऐसे अति लक्ष्मीवान किए मानों स्वर्गके देव ही हैं अर नगर विषै यह घोषणा फेरी कि जाके जिस वस्तु की इच्छा होय सो लेवो तब सब लोक आय कर कहते भए हमारे घरमें अटूट भंडार भरे हैं किसी वस्तुकी बांछा नाहीं अयोध्याविषै दरिद्रताका नाश भया, राम लक्ष्मणके प्रतापरूप सूर्य कर फूल गए हैं मुख कमल जिनके ऐसे अयोध्याके नर नारी प्रशंसा करते

भए अर अनेक सिलावट विद्याधर महा चतुर आय कर रत्न स्वर्णमई मंदिर बनावते भए अर भगवान्‌के चैत्यालय महामनोग्य अनेक बनाये मानों विंध्याचलके शिखर ही हैं हजारनि स्तम्भनि कर मंडित नाना प्रकारके मंडप रचे अर रत्ननि कर जडित तिनके द्वार रचे तिन मंदिरनि पर ध्वजानिकी पंक्ति फरहरे हैं तोरणनिके समूह तिन कर शोभायमान जिन मंदिर रचे गिरिनिके शिखर समान ऊंचे तिनविषै महा उत्सव होते भए अनेक आश्चर्य कर भरी अयोध्या होती भई लंकाकी शोभाको जीतनहारी संगीत की ध्वनी कर दशों दिशा शब्दायमान भई, कारी घटा समान वन उपवन सोहते भए तिन विषै नाना प्रकारके फल फूल तिन पर भ्रमर गुंजार करे हैं समस्त दिशानिविषै वन उपवन ऐसे सोहते भए मानों नन्दन वन ही है अयोध्या नगरी बारह योजन लम्बी नव योजन चौडी अतिशोभायमान भासती भई सोलह दिन में विद्याधर शिलावटनि ने ऐसी बनाई जाका सौ वर्ष तक वर्णन भी न किया जाय तहां वापीनिके रत्न स्वर्णके सिवान अर सरोवरनिके रत्नके तट तिन विषै कमल फूल रहे हैं ग्रीष्म विषै सदा भर पूरही रहैं तिनके तट भगवानके मंदिर अर वृक्षनिकी पंक्ति अति शोभाको धरै स्वर्गपुरी समान नगरी निरमापी सो बलभद्र नारायण लंकासे अयोध्याकी ओर गमनको उद्यमी भए गौतमस्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक तिस दिनसे नारदके मुखसे राम लक्ष्मणने मातानिकी वार्ता सुनी ताही दिनसे सब बात भूल गए दोनों मातानिही का ध्यान करते भए पूर्व जन्मके पुण्य कर ऐसे पुत्र पाइये पुण्यके प्रभाव कर सर्व वस्तुकी सिद्धि होवै है पुण्य कर क्या न होय इसलिये हे प्राणी हो पुण्यविषै तत्पर होवो जाकर शोकरूप सूर्यका आताप न होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अयोध्या नगरीका वर्णन करनेवाला इक्यासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८१ ॥

अथानन्तर सूर्यके उदय होतेही बलभद्र नारायण पुष्पक नामा विमान विषे चढकर अयोध्याको गमन करते भए नानाप्रकारके बाहनानिपर आरूढ विद्याधरानिके अधिपति राम लक्ष्मणकी सेवाविषै तत्पर परिवार सहित संग चाले, छत्र अर ध्वाजानि कर रोकी है सूर्यकी प्रभा जिन्होंने आकाशमें गमन करते दूरसे पृथिवीको देखते जाय हैं पृथिवी गिरि नगर वन उपवनादिक कर शोभित लवण समुद्र को उलंघकर विद्याधर हर्ष के भरे लीलासहित गमन करते आगे आए। कैसा है लवण समुद्र ? नानाप्रकार के जलचरजीवनिके समूहकर भरा है। रामके समीप सीता सती अनेक गुणनिकर पूर्ण मानों साक्षात् लक्ष्मीही है सो सुमेरु पर्वतको देखकर रामको पूछती भई हे नाथ! यह जंबूद्वीपके मध्य अत्यन्त मनोग्य स्वर्ण कमल समान कहा दीखे है ? तब राम कहते भए हे देवी ! यह सुमेरु पर्वत है। जहां देवाधिदेव श्रीमुनिसुब्रतनाथका जन्माभिषेक इंद्रादिक देवनिने किया। कैसे हैं देव ? भगवानके पांचो कल्यानकविषै जिनके अति हर्ष है यह सुमेरु रत्नमई ऊंचे शिखरानिकर शोभित जगतविषै प्रसिद्ध है अर बहुरि आगे आयकर कहते भए यह दंडक बन है जहां लंकापतिने तुमको हरी अर अपना अकाज किया या वनविषै चारण मुनिको हमने पारणा कराया था याके मध्य यह सुन्दर नदी है अर हे सुलोचने ! यह वंशस्थल पर्वत जहां देश भूषण कुलभूषणका दर्शन किया ताही समय मुनिनिको केवल उपजा अर हे सौभाग्यवती कल्याणरूपिणी ! यह बालखिल्यका नगर जहां लक्ष्मणने कल्याणमाला पाई अर यह दशांग नगर जहां रूपवतीका पिता वज्रकर्ण परम श्रावक राज्य करै बहुरि जानकी पृथिवीपतिको पूछती भई—हे कान्ते ! यह नगरी कौन जहां विमान समान घर इंद्रपुरीसे अधिक शोभा ? अबतक यह पुरी मैंने कबहुं न देखी ऐसे जानकीके वचन सुन जानकीनाथ अवलोकन कर कहते भए—हे प्रिये ! यह अयोध्यापुरी विद्याधर सिलवटोंने बनाई है लंकापुरीकी ज्योतिकी जीतनहारी।

बहुरि आगे आए तब रामका विमान सूर्यके विमान समान देख भरत महा हस्ती पर चढ अति आनन्दके भरे इन्द्र समान परम विभूतिकर युक्त सन्मुख आए सर्वदिशा विमाननिकर आच्छादित देखीं भरतको आवता देख राम लक्ष्मणने पुष्पक विमान भूमिविषै उतारा भरत गजसे उतर निकट आया स्नेहका भरा दोऊ भाइनिको प्रणामकर अर्घपाद्य करता भया अर ये दोनों भाई विमानसे उतर भरतसे मिले उरसे लगाय लीया परस्पर कुशल वार्ता पूछी बहुरि भरतको पुष्पक विमानविषै चढाय लीया। अर अयोध्याविषै प्रवेश किया। अयोध्या रामके आगमनकर अति सिंगारी है अर नाना प्रकारकी ध्वजा फरहरे हैं नाना प्रकारके विमान अर नाना प्रकारके रथ अनेक हाथी अनेक घोडे तिनकर मार्गमें अवकाश नाहीं अनेक प्रकार वादित्रनिके समूह वाजते भए, शंख झांझ भेरी ढोल धूकल इत्यादि वादित्रोंका कहां लग वर्णन करिये महा मधुर शब्द होते भए ऐसे ही वादित्रोंके शब्द ऐसी ही तुरंगोंकी हींस ऐसी ही गजोंकी गर्जना सामन्तोंके अट्टहास मयामई सिंह व्याघ्रादिकके शब्द ऐसे ही वीणा वांसुरीनिके शब्द तिनकर दशों दिशा व्याप्त भई, बन्दीजन विरद बखाने हैं, नृत्यकारिणी नृत्य करें हैं भांड नकल करें हैं नट कला करें है, सूर्यके रथ समान रथ तिनके चित्राकार विद्याधर मनुष्य पशुनिके नाना शब्द सो कहां लग वर्णन करिए? विद्याधरनिके अधिपतिनिने परमशोभा करी दोनों भाई महा मनोहर अयोध्याविषै प्रवेश करते भए अयोध्या नगरी स्वर्गपुरी समान राम लक्ष्मण इन्द्र प्रतीन्द्रसमान समस्त विद्याधर देव समान तिनका कहां लग वर्णन करिए श्रीरामचन्द्रको देख प्रजारूप समुद्रविषै आनन्दकी ध्वनि बढती भई भले २ पुरुष अर्घ्यपाद्य करते भए सोई तरंग भई पैंड पैंडाविषै जगतकर पूज्यमान दोनों वीर महाधीर तिनको समस्त जन आशीर्वाद देते भए—हे देव! जयवन्त होवो वृद्धिको प्राप्त होवो चिरंजीव होवो नादो विरदो। या भांति असीस देते भए अर अति ऊंच विमान समान मंदिर तिनके शिखरविषै

तिष्ठती सुन्दरी फूल गए हैं नेत्रकमल जिनके वे मोतिनिके अक्षत डारती भई, सम्पूर्ण पूर्णमासीके चंद्रमा समान राम कमलनेत्र अर वर्षाकी घटा समान लक्ष्मण शुभ लक्षण तिनके देखवेको नर नारी आवते भए अर समस्त कार्य तज झरोखोंविषै बैठी नारी जन निरखे हैं सो मानों कमलोंके वन फूल रहे हैं अर स्त्रीनिके परस्पर संघट्टकर मोतिनिके हार टूटे सो मानो मोतिनिकी वर्षा होय है स्त्रीनिके मुखसे ऐसी ध्वनि निकसे ये श्रीराम जाके समीप राजा जनककी पुत्री सीता बैठी जाकी माता राणी विदेहा है अर श्रीरामने साहसगति विद्याधर मारा वह सुग्रीवका आकार धर आया हुता विद्याधरनिविषै दैत्य कहावे अर यह लक्ष्मण रामका लघुवीर इन्द्र तुल्य पराक्रम जानें लंकेश्वरको चक्रकर हता, अर यह सुग्रीव जाने रामसे मित्रता करी अर भामण्डल सीताका भाई जिसको जन्मसे ही देव हर लेगया बहुरि दयाकर छोडा सो राजा चंद्रगतिके पला आकाशसे वनविषै गिरा राजाने लेकर राणी पुष्पावतीको सौंपा देवोंने काननविषै कुंडल पहराकर आकाशसे डाला सो कुंडलकी ज्योतिकर चंद्रसमान भासा तातैं भामण्डल नाम धरा अर राजा चन्द्रोदयका पुत्र विराधित अर यह पवनका पुत्र हनूमान कपिध्वज या भांति आश्चर्यकर युक्त नगरकी नारी वार्ता करती भई ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण राजमहिलविषै पधारे सो मंदिरके शिखर तिष्ठती दोनो माता पुत्रनिके स्नेहविषै तत्पर जिनके स्तनसे दुग्ध झरे महा गुणनिकी धरणहारी कौशिल्या सुमित्रा अर केकई सुप्रभा चारों माता मंगलविषै उद्यमी पुत्रोंके समीप आईं राम लक्ष्मण पुष्पक विमानसे उतर मातावोंसे मिले माताओंको देख हर्षको प्राप्त भए कमल समान नेत्र दोनो भाई लोकपालसमान हाथ जोड नम्रीभूत होय अपनी स्त्रियों सहित माताको प्रणाम करते भए वे चारों ही माता अनेक प्रकार असीस देती भईं तिनकी असीस कल्याणकी करणहारी है अर चारों ही माता राम लक्ष्मणको उरसे लगाय परम सुखको

प्राप्त भई उनका सुख वे ही जाने कहिवेविषै न आवे बारम्बार उरसे लगाय सिर पर हाथ धरती भई, आनन्दके अश्रुपात कर पूर्ण हैं नेत्र जिनके परस्पर माता पुत्र कुशल क्षेम सुख दुखकी वार्ता पूछ परम संतोषको प्राप्त भए, माता मनोरथ करती थी सो हे श्रेणिक ! बांछासे अधिक मनोरथ पूर्ण भए वे माता योधावोंकी जननहारी साधुवोंकी भक्त जिन धर्मविषै अनुरक्त सुन्दरचित्त बेटावोंकी बहू सैकडों तिन को देख चारों ही अति हर्षित भई अपने योधा पुत्र तिनके प्रभाव कर पूर्व पुण्यके उदय कर अति महिमा संयुक्त जगत्‌विषै पूज्य भई राम लक्ष्मणका सागरां पर्यंत कंटक रहित पृथिवीविषै एक छत्र राज्य भया सबपर यथेष्ट आज्ञा करते भए राम लक्ष्मणका अयोध्याविषै आगमन अर मातावोंसे तथा भाईयों से मिलाप । यह अध्याय जो पढे सुने शुद्ध है बुद्धि जाकी सो पुरुष मनबांछित संपदाको पावै पूर्ण पुण्य उपार्जे शुभमति एक ही नियम दृढ होय भावनकी शुद्धतासे करे तो अतिप्रतापको प्राप्त होय पृथिवीमें सूर्य समान प्रकाशको करै तातैं अव्रत तज नियमादिक धारण करो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै अयोध्याविषै राम लक्ष्मणका आगमन वर्णन करनेवाला बयासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८२ ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक नमस्कार कर गौतम गणधरको पूछता भया, हे देव श्रीराम लक्ष्मण की लक्ष्मीका विस्तार सुननेकी मेरे अभिलाषा है तब गौतमस्वामी कहते भए हे श्रेणिक ! राम लक्ष्मण भरत शत्रुधन इनका वर्णन कौन कर सके तथापि संक्षेपसे कहे हैं राम लक्ष्मणके विभवका वर्णन हाथी घरके वियालीस लाख अर रथ एते ही घोडे नौ कोटि, पयादे व्यालीस कोटि अर तीन खंडके देव विद्याधर सेवक रामके रत्न चार हल मूशल रत्नमाला गदा अर लक्ष्मणके सात संख चक्र गदा खड्ग दंड

नागशय्या कौस्तुभमणि राम लक्ष्मण दोनों ही वीर महाधीर धनुषधारी अर तिनका घर लक्ष्मीका नि-
वास इंद्रके भवन तुल्य ऊंचे दरवाजे अर चतुश्शाल नामा कोट महापर्वतके शिखर समान ऊंचा अर वै-
जयन्ती नामा सभा महामनोज्ञ अर कुटुम्बनामा अत्यन्त उत्तंग दशोंदिशाके अवलोकनका गृह अर
विंध्याचल पर्वत सारिखा वर्धमानक नामा नृत्य देखवेका गृह अर अनेक सामग्री सहित कार्य करनेका
गृह अर कूकडेके अंडे समान महाअद्भुत शीतकालविषै सोवनेका गर्भगृह अर ग्रीष्मविषै दुपहरीके वि-
राजवेका धारा मंडपगृह इकथंभा महामनोहर, अर राणीयोंके घर रत्नमई महासुन्दर दोनों भाईयों
की सोयवेकी शय्या जिनके सिंहोंके आकार पाए पद्मराग मणिके अति सुन्दर अम्भोदकाण्ड नामा वि-
जुरीकासा चमत्कार धरें वर्षा ऋतुविषै पौढवेका महिल अर महाश्रेष्ठ उगते सूर्य समान सिंहासन अर
चन्द्रमा तुल्य उज्ज्वल चमर अर निशाकर समान उज्ज्वल छत्र अर महा सुन्दर विषमोचक नाम पावडी
तिनके प्रभावसे सुखसे आकाशविषै गमन करें अर अमोलिक वस्त्र अर महा दिव्य आभरण अभेद्य ब-
क्तर महा मनोहर मणियोंके कुण्डल अर अमोघगदा खडग कनक बाण अनेक शस्त्र महा सुन्दर महारण
के जीतनहारे अर पचास लाख हल कोटिसे अधिक गाय अक्षय भण्डार अर अयोध्या आदि अनेक
नगर जिनविषै न्यायकी प्रवृत्ति प्रजा सब सुखी संपदाकर पूर्ण अर महा मनोहर वन उपवन नानाप्रकार
फल पुष्पोंकर शोभित अर महा सुन्दर स्वर्ण रत्नमई सिवाणोंकर शोभित क्रीडा करवे योग्य वापिका
अर पुर तथा ग्रामोंविषै लोक अति सुखी जहां महिल अति सुन्दर अर किसाणोंको किसी भांतिका दुख
नाहीं जिनके गाय भैंसोंके समूह सर्व भांतिके सुख अर लोकपालों जैसे सामंत अर इंद्र तुल्य विभवके
धरणहारे महा तेजवन्त अनेक राजा सेवक अर रामके स्त्री आठ हजार अर लक्ष्मणके स्त्री देवांगना
समान सोलह हजार जिनके समस्त सामग्री समस्त उपकरण मनवांछित सुखके देनहारी श्रीरामने भग-

वानके हजारां चैत्यालय कराये जैसे हरिषेण चक्रवर्तीने कराए थे वे भव्यजीव सदा पूजित महा ऋद्धिके निवास देशग्राम नगर वन गृह गली सर्व ठौर २ जिनमंदिर करावते भये सदा सर्वत्र धर्मकी कथा लोक अतिसुखी सुकौशल देशके मध्य इंद्रपुरी तुल्य अयोध्या जहां अति उतंग जिनमंदिर जिनका वर्णन किया न जाय अर क्रीडा करवेके पर्वत मानों देवोंके क्रीडा करवेके पर्वत हैं प्रकाशकर मंडित मानों शरदके बादर ही हैं अयोध्याका कोट अति उतंग समुद्रकी वेदिका तुल्य महाशिखर कर शोभित स्वर्ण रत्नोंका समूह अपनी किरणों कर प्रकाश किया है आकाशविषै जिसने जिसकी शोभा मनसे भी अगोचर निश्चयसेती यह अयोध्या नगरी पवित्र मनुष्योंकर भरी सदा ही मनोग्य हुती अब श्रीरामचन्द्रने अति शोभित करी जैसे कोई स्वर्ग सुनिये है जहां महा संपदा है मानों रामलक्ष्मण स्वर्गसे आए सो मानों सर्व संपदा ले आए आगे अयोध्या हुती तातैं रामके पधारें अति शोभायमान भई पुण्यहीन जीवोंको जहांका निवास दुर्लभ अपने शरीरकर तथा शुभ लोकोंकर तथा स्त्री धनादि कर रामचन्द्रने स्वर्ग तुल्य करी, सर्व ठौर रामका यश परन्तु सीताके पूर्व कर्मके दोषकर मूढ लोग यह अपवाद करें देखो विद्याधरोंका नाथ रावण उसने सीता हरी सो राम बहुरि ल्याये अर गृहविषै राखी यह कहा योग्य? राम महा ज्ञानी बडे कुलीन चक्री महा शूरवीर तिनके घरविषै जो यह रीति तो और लोकोंकी क्या वात इस भांति सब जन वार्ता करें॥

अथानन्तर स्वर्ग लोकको लज्जा उपजावे ऐसी अयोध्यापुरी तहां भरत इंद्रसमान भोगनिकर भी रति न मानते भए, अनेक स्त्रीनिके प्राणवल्लभ सो निरंतर राज्य लक्ष्मीसे उदास सदा भोगोंकी निंदा ही करें। भरतका मंदिर अनेक मन्दिरानिकर मण्डित नाना प्रकारके रत्ननिकर निर्मापित मोतिनिकी मालाकर शोभित फूल रहे हैं वृक्ष जहां अनेक आश्चर्यका भरा सब ऋतुके विलासकर युक्त जहां वीण

मृदंगादिक अनेक वादित्र वाजें देवांगना समान अतिसुन्दर स्त्रीजनोंकर पूर्ण जाके चौगिरद मदोन्मत्त हाथी गाजें श्रेष्ठ तुरंग हींसें गीत नृत्य वादित्रनिकर महामनोहर रत्नोंके उद्योतकर प्रकाशरूप महारमणीक क्रीडाका स्थानक जहां देवोंको रुचि उपजै परंतु भरत संसारसे भय भीत अति उदास उसे तहां रुचि नाहीं जैसे पारधीकर भयभीत जो मृग सो किसी ठौर विश्राम न लहै भरत ऐसा विचार करै कि मैं यह मनुष्य देह महाकष्टसे पाई सो पानीके बुदबुदावत् क्षणभंगुर अर यह यौवन झागोंके पुंज समान अति असार दोषोंका भरा अर ये भोग अति विरस इनविषै सुख नाहीं यह जीतव्य स्वप्न समान अर कुटुम्बका सम्बंध जैसे वृक्षनिपर पक्षियोंका मिलाप रात्रिको होय प्रभात ही दशों दिशाको उड जावें ऐसा जान जो मोक्षका कारण धर्म न करै सो जराकर जर्जरा होय शोकरूप अग्निकर जरै यह नव यौवन मूढोंको वल्लभ याविषै कौन विवेकी राग करे कदाचित न करै यह अपवादके समूहका निवास संध्याके उद्योत समान विनश्वर अर यह शरीररूपी यन्त्र नाना व्याधिके समूहका घर पिताके वीर्य माताके रुधिरसे उपजा याविषै कहा रति, जैसे इंधनकर अग्नि तृप्त न होय अर समुद्र जलसे तृप्त न होय तैसे इंद्रियनिके विषयनिकर तृप्ति न होय यह विषय अनादिसे अनंतकाल सेए परंतु तृप्तिकारी नाहीं यह मूढ जीव कामविषै आसक्त अपना भला बुरा न जाने पतंग समान विषयरूप अग्निविषै पड पापी महा भयंकर दुःखको प्राप्त होय यह स्त्रीनिके कुच मांसके पिण्ड महाबीभत्स गलगंड समान तिनविषै कहा रति, अर स्त्रीनिका मुखरूप विल दंतरूप कीडोंकर भरा तांबूलके रसकर लाल छुरीके घाव समान ताविषै कहा शोभा अर स्त्रीनिकी चेष्टा वायुविकार समान विरूप उन्मादकर उपजी उसविषै कहा प्रीति अर भोगरोग समान हैं महा खेदरूप दुःखके निवास इनविषै कहा विलास अर यह गीत वादित्रोंके नाद रुदन समान तिनविषै कहा प्रीति, रुदनकर भी महल गुंमट गाजें अर गानकर भी गाजें। नारियोंका शरीर मल

मूत्रादिकर पूर्ण चर्मकर वेष्टित याके सेवनविषै कहा सुख होय विष्टाके कुम्भ तिनका संयोग अतिवीभत्स अति लज्जाकारी महा दुःखरूप नारियोंके भोग उनविषै मूढ सुख माने देवानिके भोग इच्छा उत्पन्न होते ही पूर्ण होंय तिनकर भी जीव तृप्त न भया तो मनुष्योंके भोगोंकर कहा तृप्त होय जैसे डाभकी अणीपर जो ओस की बूंद ताकर कहा तृषा बुझे अर जैसे इंधनका वेचनहारा सिरपर भार लाय दुखी होय तैसे राज्यके भारका धरणहारा दुखी होय हमारे बडोंविषै एक राजा सौदास उत्तम भोजनकर तृप्त न भया अर पापी अभक्ष्यका आहारकर राज्यभ्रष्ट भया जैसे गंगाके प्रवाहविषै मांसका लोभी काग मृतक हाथीके शरीरको चूथता तृप्त न भया समुद्रविषै डूब मुवा तैसे यह विषयाभिलाषी भवसमुद्रविषै डूबे है यह लोक मींडक समान मोहरूप कीचविषै मग्न लोभरूप सर्पके ग्रसे नरकविषै पडे हैं ऐसे चिन्तवन करते शांतचित्त भरत को कैयक दिवस अति विरससे वीते जैसे सिंह महा समर्थ पींजरेविषै पडा खेदखिन्न रहे, ताके वनविषै जायवेकी इच्छा तैसे भरत महाराजके महाव्रत धारिवेकी इच्छा, सो घरविषै सदा उदास ही रहे महाव्रत सर्व दुःखका नाशक, एक दिवस वह शांतचित्त घर तजिवेको उद्यमी भया तब केकईके कहेसे राम लक्ष्मणने थांभा, अर महा स्नेहकर कहते भए हे भाई ! पिता वैराग्यको प्राप्त भए तब तोहि पृथिवीका राज्य दिया सिंहासन पर बैठाया सो तू हमारा सर्व रघुवंशियोंका स्वामी है लोकका पालनकर, यह सुदर्शनचक्र यह देव अर विद्याधर तेरी आज्ञाविषै हैं या धराको नारी समान भोग, मैं तेरे सिर पर चन्द्रमा समान उज्जवल छत्र लिये खडा रहूं, अर भाई शत्रुघ्न चमर ढारे अर लक्ष्मण सा सुन्दर तेरे मंत्री अर तू हमारा वचन न मानेगा तो मैं बहुरि विदेश उठ जाऊंगा मृगोंकी न्याईं वन उपवनविषै रहूंगा, मैं तो राक्षसोंका तिलक जो रावण ताहि जीत तेरे दर्शनके अर्थ आया अब तू निःकंटक राज्य कर पीछे तेरे साथ मैं भी मुनिव्रत आदरूंगा इस भांति महा शुभचित्त श्रीराम भाई भरतसे कहते भए।

तब भरत महानिस्पृह विषय रूप विषसे अतिविरक्त कहता भया—हे देव ! मैं राज्य संपदा तुरंत ही तजा चाहूं हूं जिसको तज कर शूरवीर पुरुष मोक्ष प्राप्त भए हे नरेन्द्र ! अर्थ काम महा दुःख के कारण जीवों के शत्रु महापुरुषों कर निन्द्य हैं तिनको मूढ़ जन सेवें हैं, हे हलायुध यह क्षणभंगुर भोग तिन में मेरी तृष्णा नाहीं यद्यपि स्वर्ग लोक समान भोग तुम्हारे प्रसाद कर अपने घरमें हैं तथापि मुझे रुचे नहीं यह संसार सागर महा भयानक है जहां मृत्यु रूप पातालकुण्ड महा विषम है अर जन्मरूप कल्लोल उठे हैं अर राग द्वेषरूप नाना प्रकार के भयंकर जलचर हैं अर रति अरति रूप क्षार जल कर पूर्ण हैं जहां शुभ अशुभ रूप चोर विचरे हैं सो मैं मुनिव्रत रूप जहाजमें बैठकर संसार समुद्रको तिरा चाहूं हूं । हे राजेन्द्र मैं नानाप्रकार योनिविषै अनंत काल जन्म मरण किए नरक निगोदविषै अनंत कष्ट सहे गर्भवासादिविषै खेदखिन्न भया, यह वचन भरतके सुन बड़े बडे राजा आंखोंसू आंसू डारते भए महाआश्चर्यको प्राप्त होय गदगद बाणीसे कहते भए हे महाराज ! पिताका बवन पालो कैयक दिन राज्य करो अर तुम इस राज्यलक्ष्मीको चंचल जान उदास भए हो तो कैयक दिन पीछे मुनि हूजियो अबार तो तुम्हारे बडे भाई आए हैं तिनको साता देवो तब भरतने कही मैं तो पिताके वचन प्रमाण बहुत दिन राज्य संपदा भोगी प्रजाके दुःख हरे पुत्रकी न्याईं प्रजाका पालन किया दान पूजा आदि गृहस्थके धर्म आदरे साधुवोंकी सेवा करी अब जो पिताने किया सो मैं किया चाहूं हूं अब तुम इस वस्तुकी अनुमोदना क्यों न करो प्रशंसायोग्य वस्तुविषै कहा विवाद ? हे श्रीराम ! हे लक्ष्मण ! तुमने महा भयकंर युद्धमें शत्रुवोंको जीत अगले बलभद्र बासुदेवकी न्याईं लक्ष्मी उपार्जी सो तुम्हारे लक्ष्मी और मनुष्योंकैसी नाहीं तथापि राजलक्ष्मी मुझे न रुचे तृप्ति न करे जैसे गंगादि नदियां समुद्रको तृप्त न करें इसलिये मैं तत्त्वज्ञानके मार्गविषै प्रवरतूंगा ऐसा कहकर अत्यन्त विरक्त होय राम लक्ष-

मणको बिना पूछेही वैराग्यको उठा जैसे आगे भरतचक्रवर्ती उठे। यह मनोहर चालका चलनहारा मुनिराजके निकट जायवेको उद्यमी भया तब अतिस्नेह कर लक्ष्मणने थांभा भरतके करपल्लव ग्रहे लक्ष्मण खडा ताही समय माता केकई आंसू डारती आई अर रामकी आज्ञासे दोऊ भाईनिकी राणी सबही आई लक्ष्मी समान है रूप जिनके अर पवनकर चंचल जो कमल ता समान हैं नेत्र जिनके, आय भरत को थांभती भई. तिनके नाम—

सीता, उर्वशी, भानुमती, विशल्या सुन्दरी, रौद्र, रत्नवती, लक्ष्मी, गुणमती बंधुमती, सुभद्रा, कुवेरा, नलकूवरा, कल्याणनाला, चंदना, मदनोत्सवा, मनोरमा, प्रियनंदा, चन्द्रकांता, कलावती, रत्नस्थली सरस्वती, श्रीकांता, गुणसागरी, पद्मावती, इत्यादि सब आई जिनके रूप गुणका वर्णन किया न जाय मनको हरैं आकार जिनके दिव्य वस्त्र अर आभूषण पहिरे बडे कुलविषे उपजी सत्यवादनी शीलवन्ती पुण्यकी भूमिका समस्त कलाविषे निपुण सो भरतके चौगिर्द खडी मानों चारों ओर कमलोंका बन ही फूल रहा है भरतका चित्त राजसंपदाविषे लगायवेको उद्यमी अति आदर कर भरतको मनोहर वचन कहती भई कि हे देवर हमारा कहा मानों कृपा करो आवो सरोवरोंविषे जलक्रीडा करो अर चिंता तजो जा बात कर तिहारे बडे भाईयोंको खेद न होय सो करो अर तिहारी माताके खेद न होय सो करो अर हम तिहारी भावज हैं सो हमारी विनती अवश्य मानिए तुम विवेकी विनयवान हो ऐसा कह भरतको सरोवर पर ले गईं भरतका चित्त जल क्रीडासे विरक्त यह सब सरोवरविषे पैंठी वह विनयकरसंयुक्त सरोवरके तीर ऊभा ऐसा सोहै मानों गिरिराज ही है अर वे स्निध सुगंध सुन्दर वस्तुनि कर याके शरीरका विलेपन करती भई अर नानाप्रकार जल केलि करती भई यह उत्तम चेष्टाका धारक काहूपर जल न डारता भया बहुरि निर्मल जलसे स्नान कर सरोवरके तीर जे जिनमंदिर वहां भगवानकी पूजा

करता भया उस समय त्रैलोक्य मंडन हाथी कारी घटा समान है आकार जाका सो गजबंधन तुडाय भयंकर शब्द करता निज आवासथकी निकसा अपने मद झरबे कर चौमासे कैसा दिन करता संता मेघ गर्जना समान ताका गाज सुनकर अयोध्यापुरीके लोग भयकर कम्पायमान भए अर अन्य हाथियोंके महावत अपने अपने हाथीको ले दूर भागे अर त्रैलोक्यमंडन गिरि समान नगरका दरवाजा भंग कर जहां भरत पूजा करते थे वहां आया तब राम लक्ष्मणकी समस्त राणी भयकर कम्पायमान होय भरतके शरण आई, अर हाथी भरतके नजीक आया तब समस्त लोक हाहाकार करते भए अर इनकी माता अति विह्वल भई विलाप करती भई पुत्रके स्नेहविषै तत्पर महा शंकावान भई अर राम लक्ष्मण गज बंधनविषै प्रवीण गजके पकडनेको उद्यमी भए गजराज महा प्रबल सामान्य जनोंसे देखा न जाय महा भयंकर शब्द करता अति तेजवान नाग फांसि कर भी रोका न जाय अर महा शोभायमान कमल नयन भरत निर्भय स्त्रियोंके आगे तिनके वचायबेको खडे सो हाथी भरतको देखकर पूर्वभव चितार शांतचित्त भया अपनी सूण्ड शिथिल कर महा विनयवान भया भरतके आगे ऊभा भरत याको मधुर बाणी कर कहते भए अहो गज ! तू कौन कारण कर क्रोधको प्राप्त भया ऐसे भरतके वचन सुन अत्यंत शांतचित्त निश्चल भया सौम्य है मुख जाका ऊभा भरतकी ओर देखे है भरत महाशूरवीर शरणागतप्रतिपालक ऐसे सोहैं जैसे स्वर्गविषै देव सोहैं हाथीको जन्मान्तरका ज्ञान भया सो समस्त विकारसे रहित होय गया दीर्घ निश्वास डारे हाथी मनविषै विचारे है यह भरत मेरा परममित्र है छठे स्वर्गविषै हम दोनों एकत्र थे यह तो पुण्यके प्रसाद कर वहांसे चयकर उत्तम पुरुष भया अर मैंने कर्मके योगसे तिर्यंचकी योनि पाई कार्य अकार्यके विवेकसे रहित महानिंद्य पशुका जन्म है मैं कौन योगसे हाथी भया धिकार इस जन्मको अब वृथा क्या शोच ऐसा उपाय करूं जिससे आत्मकल्याण होय अर बहुरि सं-

सार भ्रमण न करूं। शोच कीए कहा ? अब सर्व प्रकार उद्यमी होय भव दुखसे छूटिवेका उपाय करूं चितारे हैं पूर्व भव जाने गजेंद्र अत्यन्त विरक्त पाप चेष्टासे परांगमुख होय पुण्यके उपार्जनविषै एकाग्रचित्त भया। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन् ! पूर्वे जीवने अशुभ कर्म कीए वे संतापको उपजावें तातें हे प्राणी हो अशुभ कर्मको तज दुर्गतिके गमनसे छूटो जैसे सूर्य होते नेत्रवान मार्गविषै न अटके तैसे जिन धर्मके होते विवेकी कुमार्गविषै न पडें प्रथम अधर्मको तज धर्मको आदरें बहुरि शुभ अशुभसे निवृत्त होय आत्म धर्मसे निर्वाणको प्राप्त होवें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै त्रिलोकमंडन हाथीको जातिस्मरण होय उपशान्त होनेका वर्णन करनेवाला तियासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८३ ॥

अथानन्तर वह गजराज महा विनयवान धर्मध्यानका चितवन करता रामलक्ष्मण ने देखा अर धीरे धीरे इसके समीप आए कारी घटा समान है आकार जाका सो मिष्ट वचन बोले पकडा अर निकटवर्ती लोकोंकी आज्ञा कर गजको सर्व आभूषण पहिराए हाथी शांतचित्त भया तब नगरके लोगोंकी आकुलता मिटी हाथी ऐसा प्रबल जाकी प्रचण्ड गति विद्याधरोंके अधिपतिसे न रुके, समस्त नगर विषै लोक हाथीकी वार्ता करैं यह त्रैलोक्यमंडन रावणका पाट हस्ती है याके बल समान और नाहीं राम लक्ष्मणने पकडा विकार चेष्टाको प्राप्त भया था अब शांतचित्त भया सो लोकोंके महा पुण्यका उदय है अर घने जीवोंकी दीर्घ आयु भरत अर सीता विशल्या हाथी पर चढे बडी विभूतिसे नगरविषै आये अर अद्भुत वस्त्राभरणसे शोभित समस्त राणी नानाप्रकारके वाहनों पर चढी भरतको ले नगरविषै आई, अर शत्रुघ्न भाई अश्व पर आरूढ महा विभूति सहित महा तेजस्वी, भरतके हाथी आगे नानाप्र-

कारके वादित्रोंके शब्द होते नंदन बन समान बनसे नगरविषै आए, जैसे देव सुरपुरविषै आवें, भरत हाथीसे उतर भोजनशालाविषै गए साधुवोंको भोजन देय मित्र बांधवादि सहित भोजन किया, अर भावजोंको भोजन कराया फिर लोक अपने अपने स्थानको गए समस्त लोक आश्चर्यको प्राप्त भए, हाथी रूठा फिर भरतके समीप खडा होय रहा सो सबोंको आश्चर्य उपजा गौतमगणधर राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे राजन् ! हाथीके समस्त महावत रामलक्ष्मण पै आय प्रणामकर कहते भए कि हे देव ! आज गजराजको चौथा दिन है कछू खाय न पीवे न निद्रा करै सर्व चेष्टा तज निश्चल ऊभा है जिसदिन क्रोध किया था अर शांत भया उसही दिनसे ध्यानारूढ निश्चल वरते है हम नानाप्रकारके स्तोत्रों कर स्तुति करें है अनेक प्रिय वचन कहे हैं तथापि आहार पानी न लेय है हमारे वचन कान न धरे अपनी सूण्ड को दांतोंविषैं लिये मुद्रित लोचन ऊभा है मानों चित्रामका गज है जिसे देखे लोकोंको ऐसा भ्रम होय है कि यह कृत्रिम गज है अथवा सांचा गज है। हम प्रिय वचन कहकर आहार दिया चाहें हैं सो न लेय नानाप्रकारके गजोंके योग्य सुन्दर आहार उसे न रुचे चिन्तावान सा ऊभा है निश्वास डारे है समस्त शास्त्रवोंके वेत्ता महा पंडित प्रसिद्ध गजवैद्योंके भी हाथ हाथीका रोग न आया गंधर्व नानाप्रकारके गीत गावें है सो न सुनै अर नृत्यकारिणी नृत्य करे हैं सो न देखे पहिले नृत्य देखे था गीत सुने था अनेक चेष्टा करे था सो सब तजा नानाप्रकारके कौतुक होय हैं सो दृष्टि न धरै मंत्रविद्या औषधादिक अनेक उपाय किए सो न लगे आहार विहार निद्रा जलपानादिक सब तज हम अति विनती करें हैं सो न माने जैसे रूठे मित्रको अनेक प्रकार मनाइये सो न माने न जानिए इस हाथीके चित्तविषै कहा है काहू वस्तु से काहू प्रकार रीझे नाहीं काहू वस्तुपर लुभावे नाहीं खिजाया संता क्रोध न करे चित्राम कासा खडा है यह त्रैलोक्यमंडन हाथी समस्त सेनाका शृंगार है जो आपको उपाय करना होय सो करो हम हाथीका

सब वृत्तांत आपसे निवेदन किया, तब राम लक्ष्मण गजराजकी चेष्टा सुन अति चिंतावान भए मनमें विचारे हैं यह गजबन्धन तुडाय निसरा कौन प्रकार क्षमाको प्राप्त भया अर आहार पानी क्यों न लेय? दोनों भाई हाथीका शोच करते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै त्रिलोकमंडन हाथीका कथन वर्णन करनेवाला चौरासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८४ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं, हे नराधिपति! ताही समय अनेक मुनिनि सहित देशभूषण कुलभूषण केवली जिनका वंशस्थल गिरि ऊपर राम लक्ष्मणने उपसर्ग निवारा हुता अर जिन की सेवा करने कर गरुडेन्द्रने राम लक्ष्मणसे प्रसन्न होय उनको अनेक दिव्यशस्त्र दिए, जिनकर युद्धमें विजय पाई। ते भगवान् केवली सुर असुरानिकर पूज्य लोक प्रसिद्ध अयोध्याके नन्दनवन समान महेन्द्रोदय नामा वन विषै महा संघ सहित आय विराजे, तब राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन दर्शनके अर्थ प्रभातही हाथिनि पर चढि जायवेको उद्यमी भए अर उपजा है जाति स्मरण जाको ऐसा जो त्रैलोक्य-मण्डन हाथी सो आगे आगे चला जाय है जहां वे दोनों केवली कल्याणके पर्वत तिष्ठे हैं तहां देवनि समान शुभचित्त नरोत्तम गए अर कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा यह चारों ही माता साधुभक्तिविषै तत्पर जिन शासनकी सेवक स्वर्गनिवासिनी देवीनि समान सैकडां राणीनिसे युक्त चलीं अर सुग्रीवादि समस्त विद्याधर महा विभूति संयुक्त चले, केवलीका स्थानक दूरहीतैं देख रामादिक हाथीतैं उतर आगे गए। दोनों हाथ जोड प्रणामकर पूजा करी, आप योग्यभूमिविषै विनयतैं बैठे तिनके वचन समाधान-चित्त होय सुनते भए, ते वचन वैराग्यके मूल रागादिकके नाशक क्यों कि रागादिक संसारके कारण अर

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्र मोक्षके कारण हैं केवलीकी दिव्य ध्वनिविषै यह व्याख्यान भया। अणुव्रतरूप श्रावकका धर्म अर महाव्रतरूप यतिका धर्म यह दोनोंही कल्याणके कारण हैं यतिका धर्म साक्षात् निर्वाणका कारण अर श्रावकका धर्म परम्पराय मोक्षका कारण है गृहस्थका धर्म अल्पारम्भ अल्प परिग्रहको लीए कछू सुगम है अर यतिका धर्म निरारम्भ निपरिग्रह अति कठिन महा शूर वीरनिही तें सधे है यह लोक अनादिनिधन जाकी आदिअन्त नाहीं ताविषै यह प्राणी लोभकर मोहित नानाप्रकार कुयोनिविषै महादुःखको पावें हैं संसारका तारक धर्म ही है, यह धर्म नामा परम मित्र जीवोंका महा हितु है जिस धर्मका मूल जीवदयाकी महिमा कहिवेविषै न आवे ताके प्रसादसे प्राणी मनबांछित सुख पावे हैं धर्म ही पूज्य है जे धर्मका साधन करें ते ही पंडित हैं यह दयामूल धर्म महाकल्याणका कारण जिनशासन विना अन्यत्र नाहीं जे प्राणी जिनप्रणीत धर्ममें लगें ते त्रैलोक्यके अग्र जो परम धाम है वहां प्राप्त भए यह जिनधर्म परम दुर्लभ है, या धर्मका मुख्यफल तो मोक्षही है अर गौणफल स्वर्गविषै इन्द्रपद अर पाताल विषै नागेन्द्रपद पृथिवी विषै चक्रवर्त्यादि नरेन्द्रपद यह फल हैं इस भांति केवलीने धर्मका निरूपण किया, तब प्रस्ताव पाय लक्ष्मण पूछते भए हे प्रभो! त्रैलोक्यमण्डन हाथी गजबन्धन उपाडि क्रोधको प्राप्त भया बहुरि तत्काल शांत भावको प्राप्त भया सो कौन कारण, तब केवली देशभूषण कहते भए, प्रथम तो यह लोकनिकी भीड देख मदोन्मत्तता थकी क्षोभको प्राप्त भया बहुरि भरतको देख पूर्वभव चितार शांतभावको प्राप्त भया। चतुर्थ कालके आदि या अयोध्याविषै नाभिराजाके मरुदेवीके गर्भ विषै भगवान् ऋषभ उपजे पूर्वभवविषै षोडश कारण भावना भाय त्रैलोक्यकों आनन्दका कारण तीर्थंकर पद उपार्जा। पृथिवीविषै प्रगट भए, इंद्रादिक देवनिने जिनके गर्भ अर जन्मकल्याणक कीए सो भगवान् पुरुषोत्तम तीन लोक कर नमस्कार करवे योग्य पृथिवीरूप पत्नीके पति भए। कैसी है

पृथिवी रूप पत्नी विन्ध्याचल गिरि वेई हैं स्तन जाके अर समुद्र हैं कटिमेखला जाकी सो बहुत दिन पृथिवीका राज्य कीया तिनके गुण केवली विना अर कोई जानवे समर्थ नाहीं जिनका ऐश्वर्य देख इंद्रादिक देव आश्चर्यको प्राप्त भए।

एक समय नीलांजसा नामा अप्सरा नृत्य करती हुती सो विलाय गई ताहि देख प्रतिबुद्ध भए ते भगवान् स्वयं बुद्ध महामहेश्वर तिनकी लौकांतिक देवनिने स्तुति करी ते जगत् गुरु भरत पुत्रको राज्य देय वैरागी भए। इंद्रादिकदेवनिने तप कल्याणक किया, तिलक नामा उद्यानविषै महाव्रत धरे तबसे यह स्थान प्रयाग कहाया भगवान्ने एक हजार वर्ष तपकिया सुमेरु समान अचल सर्वपरिग्रहके त्यागी महातप करते भए तिनके संग चार हजार राजा निकसे ते परीषह न सह सकनेकर व्रत भ्रष्ट भये स्वेच्छा विहारी होय वन फलादिक भखते भए तिनके मध्य मारीच दण्डीका भेष धरता भया ताके प्रसंगसे सूर्योदय चन्द्रोदय राजा सुप्रभके पुत्रके राणी प्रल्हादनाकी कुक्षीविषै उपजे ते भी चारित्र भ्रष्ट भए मारीचके मार्ग लागे कुधर्मके आचरणसे चतुर्गति संसारमें भ्रमे अनेक भवों विषै जन्म मरण किए बहुरि चन्द्रोदयका जीव कर्मके उदयसे नागपुरनामा नगरविषै राजा हरिपतिके राणी मनोलताके गर्भविषै उपजा कुलंकर नाम कहाया बहुरि राज्य पाया अर सूर्य्योदयका जीव अनेक भव भ्रमण कर उसही नगरविषै विश्व नामा ब्राह्मण जिसके अग्निकुंड नामा स्त्री उसके श्रुतिरति नामा पुत्र भया सो पुरोहित पूर्व जनमके स्नेहसे राजा कुलंकरको अतिप्रिय भया, एक दिन राजा कुलंकर तापसियोंके समीप जाय था सो मार्गविषै अभिनन्दन नामा मुनिका दर्शन भया। वे मुनि अवधिज्ञानी सर्व लोकके हितु तिन्होंने राजासे कही तेरा दादा सर्प भया सो तपस्वियोंके काष्ठमध्य तिष्ठे है सो तपसी काष्ठ विदारेंगे सो तू रक्षा करियो तब यह तहां गया जो मुनिने कही थी त्योंही दृष्टि पडी इसने सर्प बचाया अर तापसियोंका मार्ग

हिंसा रूप जाना तिनसे उदास भया मुनिव्रत धारिवेको उद्यम किया तब श्रुतिरति पुरोहित पापकर्मीने कही–हे राजन्! तिहारे कुलविषै वेदोक्त धर्म चला आया है अर तापसही तिहारे गुरु हैं तातैं तू राजा हरिपतिका पुत्र है तो वेदमार्गका ही आचरण कर, जिनमार्ग मत आचरै पुत्रको राज देय वेदोक्त विधिकर तू तापसका व्रत धर, मैं तेरे साथ तप धरूंगा, या भांति पापी पुरोहित मूढमतिने कुलंकरका मन जिनशासनसे फेरा अर कुलंकरकी स्त्री श्रीदामा सो पापिनी परपुरुषासक्त उसने विचारी कि मेरी कुक्रिया राजाने जानी इसलिए तप धारै है सो न जानिए तपधरै कै न धरै कदाचित् मोहि मारै तातैं मैं ही उसे मारूं तब उसने विष देयकर राजा अर पुरोहित दोनों मारे सो मरकर निकुंजिया नामा वनमें पशुघातके पापसे दोनों सुआ भए बहुरि मींडक भए मूसा भए मोर भए सर्पभए कूकरभए कर्मरूप पवनके प्रेरे तिर्यंच योनिविषै भ्रमे बहुरि पुरोहित श्रुतिरतिका जीव हस्ती भया अर राजा कुलंकरका जीव मींडक भया सो हाथीके पगतले दवकर मुवा, बहुरि मींडक भया सो सूके सरोवरविषै कागने भषा सो कूकडा भया हाथी मर मार्जार भया उसने कुक्कुट भषा कुलंकरका जीव तीन जन्म कुकडा भया सो पुरोहितके जीव मार्जारने भषा बहुरि ये दोनों मूसा मार्जार मच्छ भए सो धीवरने जालविषै पकड कुहाडेनिसे काटे सो मुवे दोनों मरकर राजगृही नगरविषै वव्हासनामा ब्राह्मण उसकी उल्का नामा स्त्रीके पुत्र भए पुरोहितके जीवका नाम विनोद राजा कुलंकरके जीवका नाम रमण सो महा दरिद्री अर विद्यारहित तब रमणने विचारी देशान्तर जाय विद्या पढूं तब घरसे निकसा पृथिवीविषै भ्रमता चारों वेद अर वेदोंके अंग पढे बहुरि राजगृही नगरी आय पहुंचा भाईके दर्शनकी अभिलाषा सो नगरके बाहिर सूर्य अस्त होय गया आकाशविषै मेघपटलके योगसे अति अन्धकार भया सो जीर्ण उद्यानके मध्य एक यक्षका मंदिर तहां बैठा अर याके भाई विनोदकी समिधा नामा स्त्री सो महा कुशीला एक अशोकदत्त नामा

पुरुषसे आसक्त सो तासे यक्षके मंदिरका संकेत किया हुता सो अशोकदत्तको तो मार्गविषै कोटपालके किंकरने पकडा अर विनोद खडग हाथविषै लिए अशोकदत्तके शरवेको यक्षके मंदिर आया सो जारके भूलेसे खडगसे भाई रमणको मारा अन्धकारविषै दृष्टि न पडा सो रमण मुवा विनोद घर गया बहुरि विनोद भी मुवा सो दोनों अनेक भव धारते भए ॥

बहुरि विनोदका जीव तो सालवन वनविषै आरण भैंसा भया अर रमणका जीव अंधा रीछ भया सो दोनों दावानलविषै जरे, मरकर गिरिवनविषै भील भए बहुरि मरकर हिरण भए सो भीलने जीवते पकडे दोनों अति सुन्दर सो तीसरा नारायण स्वयंभूति श्रीविमलनाथजीके दर्शन जायकर पीछा आवे था उसने दोनों हिरण लिए अर जिनमंदिरके समीप राखे, सो राजद्वारसे इनको मनवांछित आहार मिलै अर मुनिनिके दर्शन करें जिनवाणीका श्रवण करें तिनविषै रमणका जीव जो मृग हुता सो समाधि मरणकर स्वर्गलोक गया अर विनोदका जीव जो मृग हुता वह आर्तध्यानसे तिर्यंचगतिविषै भ्रमा बहुरि जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै कंपिल्यानगर तहां धनदत्त नामा वणिक बाईस कोटि दीनारका स्वामी भया। चार टांक स्वर्णकी एक दीनार होय है ता वणिकके वाणी नाम स्त्री उसके गर्भ विषै दूजे भाई रमणका जीव मृग पर्यायसे देव भया था सो भूषण नाम पुत्र भया निमित्तज्ञानीने इसके पितासे कहा कि यह सर्वथा जिन दीक्षा धरेगा सुनकर पिता चिंतावान भया पिताका पुत्रसे अधिक प्रेम इसको घरहीविषै राखै बाहिर निकसने न देय सब सामग्री याके घरविषै विद्यमान यह भूषण सुंदर स्त्रीनिकर सेव्यमान वस्त्र आहार सुगन्धादि विलेपन कर घरविषै सुखसे रहे याको सूर्यके उदय अस्तकी गम्य नानाप्रकारके नाहीं याके पिताने सैकडों मनोरथकर यह पुत्र पाया अर एकही पुत्र सो पूर्व जन्मके स्नेहसे पिताके प्राणसे भी प्यारा, पिता तो विनोदका जीव अर पुत्र रमणका जीव आगे दोनों भाई हुते सो या जन्मविषै पिता पुत्र भए ॥

पराया द्रव्य हरूं हूं, धिक्कार मोको ऐसे विचारकर निर्मलचित्त होय सांसारिक विषय भोगोंसे उदासचित्त भया स्वामी चन्द्रमुखके समीप सर्व परिग्रहका त्यागकर जिनदीक्षा आदरी शास्त्रोक्त महादुर्धर तप करता महाक्षमावान् महाप्रासुक आहार लेता भया ॥

अथानन्तर दुर्गनाम गिरिके शिखर एक गुणनिधि नाम मुनि चार महीनेके उपवास धर तिष्ठे थे वे सुर असुर मनुष्यनिकर स्तुति करिवे योग्य महाऋद्धिधारी चारण मुनि थे सो चौमासेका नियम पूर्ण कर आकाशके मार्ग होय किसी तरफ चले गए, अर यह मृदुमति मुनि आहारके निमित्त दुर्गनामागिरि के समीप अलोक नाम नगर वहां आहारको आया, जूडा प्रमाण भूमिको निरखता जाय था सो नगर के लोकोंने जानी यह वे ही मुनि हैं जो चार महीना गिरिके शिखर रहे यह जानकर अतिभक्ति कर पूजा करी अर इसे अति मनोहर आहार दिया नगरके लोकोंने बहुत स्तुति करी इसने जानी गिरिपर चार महिना रहे तिनके भरोसे मेरी अधिक प्रशंसा होय है सो मानका भरा मौन पकड रहा, लोकोंसे यह न कही कि मैं और ही हूं अर वे मुनि अर थे, और गुरुके निकट मायाशल्य दूर न करी, प्रायश्चित न लिया तातैं तिर्यंचगतिका कारण भया तप बहुत किये थे सो पर्याय पूरी कर छठे देव लोक जहां अभिरामका जीव देव भया था वहां ही यह गया, पूर्वजन्मके स्नेहकर उसके याके अति स्नेह भया दोनों ही समान ऋद्धिके धारक अनेक देवांगनावों कर मंडित सुखके सागरविषै मग्न दोनों ही सागरों पर्यंत सुखसे रमें सो अभिरामका जीव तो भरत भया अर यह मृदुमतिका जीव स्वर्गसे चय मायाचारके दोषसे इस जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रविषै उतंग है शिखर जिसके ऐसा जो निकुंज नामा गिरि उसविषै महा गहन शल्लकी नामा बन वहां मेघकी घटा समान श्याम अतिसुन्दर गजराज भया, समुद्रकी गाज समान है गर्जना जिसकी अर पवन समान है शीघ्र गमन जिसका महा भयंकर आकारको धरे, अति मदोन्मत्त

संसारकी विचित्रगति है ये प्राणी नटवत नृत्य करे हैं संसारका चरित्र स्वप्नके राज्य समान असार है एक समय यह धनदत्तका पुत्र भूषण प्रभात समय दुंदुभी शब्द सुन आकाशविषे देवनिका आगमन देख प्रतिबुद्ध भया। यह स्वभाव ही से कोमलचित्त धर्मके आचारविषे तत्पर महाहर्षका भरा दोनों हाथ जोड नमस्कार करता, श्रीधर केवलीकी बन्दनाको शीघ्र ही जाय था सो सिवाणसे उतरते सर्पने डसा, देह तज महेन्द्र नाम जो चौथा स्वर्ग तहां देव भया तहांसे चयकर पहुकर द्वीपविषे चन्द्रादित्य नामा नगर तहां राजा प्रकाशयश ताके राणी माधवी उसके जगद्युति नामा पुत्र भया। यौवनके उदयविषे राज्यलक्ष्मी पाई परंतु संसारसे अति उदास राजविषे चित्त नाहीं सो याके वृद्ध मन्त्रिनिने कही यह राज तिहारे कुलक्रमसे चला आवे है सो पालो तिहारे राज्यसे प्रजा सुखरूप होयगी सो मंत्रिनिके हठसे यह राज्य करें राज्यविषे तिष्ठता। यह साधूनिकी सेवा करें सो मुनि दानके प्रभावसे देवकुरु भोगभूमि गया तहांसे ईशान नाम दूजा स्वर्ग तहां देव भया चार सागर दोय पल्य देवलोकके सुख भोग देवांगनानिकर मंडित नाना प्रकारके भोग भोग तहांसे चया सो जम्बू द्वीपके पश्चिम विदेह मध्य अचल नामा चक्रवर्तीके रत्न नाम राणीके अभिराम नामा पुत्र भया सो महागुणनिका समूह अति सुन्दर जाहि देख सर्व लोकको आनन्द होय सो बाल अवस्था ही से अति विरक्त जिनदीक्षा धारा चाहे अर पिता चाहे यह घरविषे रहे तीन हजार राणी इसे परणाई सो वे नाना प्रकारके चरित्र करें परंतु यह विषय सुखको विष समान गिने केवल मुनि होयवेकी इच्छा, अतिशांतचित्त परंतु पिता घरसे निकसने न देय यह महाभाग्य महा शीलवान महागुणवान महात्यागी स्त्रीयोंका अनुराग नाहीं याको ते स्त्री भांति भांतिके वचनकर अनुराग उपजावें अति यत्नकर सेवा करें परंतु याको संसारकी माया गर्तरूप भासे जैसे गर्तमें पडा जो गज ताके पकडनहारे मनुष्य नाना भांति ललचावें तथापि गजको गर्त न रुचे ऐसे याहि जगत्

चन्द्रमा समान उज्ज्वल है दांत जिसके, गजराजोंके गुणोंकर मंडित विजियादिक महा हस्ती तिनके वंशविषै उपजा महाकांतिका धारक, ऐरावत समान अति स्वछंद सिंह व्याघ्रादिकका हननहारा महा वृक्षोंका उपारनहारा पर्वतोंके शिखरका ढाहनहारा विद्याधरोंकर न ग्रहा जाय तो भूमिगोचरियोंकी क्या बात, जाकी वाससे सिंहादिक निवास तज भाग जावें ऐसा प्रबल गजराज गिरिके बनविषै नानाप्रकार पल्लवका आहार करता मानसरोवर विषै क्रीडा करता अनेक गजों सहित विचरे कभी कैलाशविषै विलास करे कभी गंगाके मनोहर द्रहोंविषै क्रीडा करै अर अनेक बन गिरि नदी सरोवरोंविषै सुंदर क्रीडा करे अर हजारों हथिनीनि सहित रमै, अनेक हाथियोंके समूहका शिरोमणि यथेष्ट विचरता ऐसा सोहै जैसा पक्षियोंके समूह कर गरुड सोहै मेघ समान गर्जता मदके नीझरने तिनके झरनेका पर्वत सो एक दिन लंकेश्वरने देखा, सो विद्याके पराक्रम कर महाउग्र उसने यह नीठि नीठि वश किया इसका त्रैलोक्यमण्डन नाम धरा सुन्दर है लक्षण जिसके जैसे स्वर्गविषै चिरकाल अनेक अप्सराओं सहित क्रीडा करी तैसे हाथियोंकी पर्यायविषै हजारों हथिनियोंसे क्रीडा करता भया यह कथा देशभूषण केवली राम लक्ष्मणसे कहे हैं कि ये जीव सर्व योनिविषै रति मान लेय हैं निश्चय विचारिए तो सर्व ही गति दुःखरूप हैं अभिरामका जीव भरत अर मृदुमतिका जीव गज सूर्योदय चन्द्रोदयके जन्मसे लेकर अनेक भवके मिलापी हैं तातैं भरतको देख पूर्व भव चितार गज उपशांतचित्त भया अर भरत भोगोंसे परांगमुख दूर भया है मोह जिसका अब मुनिपद लिया चाहै है इस ही भवसे निर्वाण प्राप्त होवेंगे बहुरि भव न धरेंगे श्रीऋषभदेवके समय यह दोनों सूर्योदय चन्द्रोदय नामा भाई थे, मारीचके भरमाए मिथ्यात्वका सेवन कर बहुत काल संसारविषै भ्रमण किया, त्रस स्थावर योनिविषै भ्रमे चन्द्रोदयका जीव कैयक भव पीछे राजा कुलंकर बहुरि कैयक भव पीछे रमण ब्राह्मण बहुरि कैयक भव धर, समाधि मरण करणहारा

मृग भया, बहुरि स्वर्गविषै देव, बहुरि भूषण नामा वैश्यका पुत्र बहुरि स्वर्ग बहुरि जगद्युति नाम राजा वहांसे भोगभूमि बहुरि दूजे स्वर्ग देव, वहांसे चयकर महाविदेह क्षेत्रविषै चक्रवर्तीका पुत्र अभिराम भए वहांसे छठे स्वर्ग देव, देवसे भरत नरेन्द्र सो चरमशरीरी हैं बहुरि देह न धारेंगे, अर सूर्योदयका जीव बहुत काल भ्रमण कर राजा कुलंकरका श्रुतिनामा पुरोहित भया बहुरि अनेक जन्म लेय विनोदनामा विप्र भया, बहुरि अनेक जन्म लेय आर्तध्यानसे मरणहारा मृग भया बहुरि अनेक जन्म भ्रमण कर भूषणका पिता धनदत्त नामा वणिक बहुरि अनेक जन्म धर मृदुमति नामा मुनि उसने अपनी प्रशंसा सुन राग किया मायाचार शल्य दूर न करी तपके प्रभावसे छठे स्वर्ग देव भया वहांसे चयकर त्रैलोक्य मण्डन हाथी अब श्रावकके व्रत धर देव होयगा ये भी निकट भव्य है। या भांति जीवोंकी गति आगति जान अर इंद्रियोंके सुख विनाशीक जान या विषम संसार वनको तजकर ज्ञानी जीव धर्मविषै रमो, जे प्राणी मनुष्य देह पाय जिनभाषित धर्म नाहीं करे हैं वे अनन्त काल संसार भ्रमण करेंगे आत्मकल्याणसे दूर हैं तातैं जिनवरके मुखसे निकसा दयामई धर्म मोक्ष प्राप्त करनेको समर्थ याके तुल्य अर नाहीं मोह तिमिरका दूरकरणहारा जीती है सूर्यकी कांति जाने सो मन वचन कायकर अंगीकार करो जातैं निर्मल पद पावो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं भरतके अर हाथीके पूर्वभव वर्णन करनेवाला पचासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८५ ॥

अथानन्तर श्रीदेशभूषण केवलीके वचन महा पवित्र मोह अन्धकारके हरणहारे संसार सागरके तारणहारे नानाप्रकारके दुखके नाशक उनविषै भरत अर हाथीके अनेक भवका वर्णन सुनकर राम लक्षमण आदि सकल भव्यजन आश्चर्यको प्राप्त भए, सकल सभा चेष्टारहित चित्राम कैसी होय गई अर

भरत नरेंद्र देवेंद्र समान है प्रभा जाकी अविनाशी पदके अर्थ मुनि होयवेकी है इच्छा जिसके गुरुवोंके
चरणविषै नम्रीभूत है सीस जिसका महा शांतचित्त परम वैराग्यको प्राप्त हुवा तत्काल उठकर हाथ जोड
केवलीको प्रणामकर महा मनोहर वचन कहता भया—हे नाथ ! मैं संसार वनविषै अनन्त काल भ्रमण
करता नानाप्रकार कुयोनियोंविषै संकट सहता दुखी भया अब मैं संसार भ्रमणसे थका मुझे मुक्तिका
कारण तिहारी दिगम्बरी दीक्षा देवो यह आशारूप चतुर्गति नदी मरणरूप उग्र तरंगको धरे उसविषै मैं
डूबू हूं सो मुझे हस्तालम्बन दे निकासो ऐसा कह केवलीकी आज्ञा प्रमाण तजा है समस्त परिग्रह जिसने
अपने हाथोंसे सिरके केश लोच किये परम सम्यक्ती महाव्रतको अंगीकार जिन दीक्षाधर दिगंबर भया
तब आकाशविषै देव धन्य धन्य शब्द कहते भए अर कल्पवृक्षोंके फूलोंकी वर्षा करते भए ॥

हजारसे अधिक राजा भरतके अनुरागसे राजऋद्धि तज जिनेन्द्री दीक्षा धरते भए अर कैयक
अल्पशक्ति हुते ते अणुव्रतधर श्रावक भये, अर माता केकई पुत्रके वैराग्य सुन आंसुनिकी वर्षा करती
भई व्याकुलचित्त होय दौडी सो भूमिविषै पडी, महामोहको प्राप्त भई पुत्रकी प्रीतिकर मृतक समान
होय गया है शरीर जाका सो चन्दनादिकके जलसे छांटी तो भी सचेत न भई, घनीबेर विषै सचेत भई
जैसे वत्स विना गाय पुकारै तैसे विलाप करती भई, हाय पुत्र ! महा विनयवान गुणनिकी खान मनको
आल्हादका कारण हाय तू कहां गया, हे अंगज ! मेरा अंग शोकके सागर विषै डूबै है सो थांभ, तो
सारिखे पुत्र विना मैं दुःखके सागर विषै मग्न शोककी भरी कैसे जीऊंगी । हाय ! हाय ! यह कहा भया ?
या भांति विलाप करती माता श्रीराम लक्ष्मणने संबोधकर विश्रामको प्राप्त करी, अति सुन्दर वचन-
निकर धीर्य बंधाया—हे मात ! भरत महा विवेकी ज्ञानवान हैं तुम शोक तजो, हम कहा तिहारे पुत्र
नाहीं, आज्ञाकारी किंकर हैं अर कौशल्या सुमित्रा सुप्रभाने बहुत संबोधा तब शोकरहित होय प्रति-

बोधको प्राप्त भई। शुद्ध है मन जाका अपने अज्ञानकी बहुत निंदा करती भई, धिक्कार या स्त्री पर्यायकूं यह पर्याय महा दोषनिकी खान है, अत्यन्त अशुचि वीभत्स नगरकी मोरी समान अब ऐसा उपाय करूं जाकर स्त्री पर्याय न धरूं, संसार समुद्रको तिरूं यह महा ज्ञानवान सदाही जिनशासनकी भक्तिवन्त हुती अब महा वैराग्यको प्राप्त होय पृथिवीमती आर्यिकाके समीप आर्यिका भाई, एक श्वेत वस्त्र धारा अर सर्व परिग्रह तज निर्मलसम्यक्तकूं धरती सर्व आरम्भ टारती भई। याके साथ तीनसै आर्यिका भई। यह विवेकिनी परिग्रह तजकर वैराग्य धार ऐसी सोहती भई जैसी कलंकरहित चन्द्रमाकी कला मेघपटलरहित सोहै। श्रीदेशभूषण केवलीका उपदेश सुन अनेक मुनि भये अनेक आर्यिका भईं तिन कर पृथ्वी ऐसी सोहती भई जैसे कमलनिकर सरोवरी सोहै अर अनेक नर नारी पवित्र हैं चित्त जिनके तिन्होंने नाना प्रकारके नियम धर्म रूप श्रावक श्राविकाके व्रत धारे, यह युक्त ही है जो सूर्यके प्रकाश कर नेत्रवान् वस्तुका अवलोकन करे ही करै॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै भरत अर कैकयीका वैराग्य वर्णन करनेवाला छियासीवा पर्व पूर्ण भया॥ ८६॥

अथानन्तर त्रैलोक्यमण्डन हाथी अतिप्रशान्तचित्त केवलीके निकट श्रावकके व्रत धारता भया सम्यक् दर्शन संयुक्त महाज्ञानी शुभक्रियाविषै उद्यमी हाथी धर्मविषै तत्पर होता भया, पंद्रह पंद्रह दिनके उपवास तथा मासोपवास करता भया, सूके पत्रनिकर पारणा करता भया, हाथी संसारसे भयभीत उत्तम चेष्टाविषै परायण लोकनिकर पूज्य महाविशुद्धताको धरे पृथिवीविषै विहार करता भया कभी पक्षोपवास कभी मासोपवासके पारण ग्रामादिकविषै जाय तो श्रावक ताहि अतिभक्तिकर शुद्ध अन्न शुद्धजलकर

पारणा करावते भए क्षीण होय गया है शरीर जाका वैराग्यरूप खूंटेसे बंधा महाउग्रतप करता भया। यमानियम रूप है अंकुश जाके बहुरि महाउग्रतपका करणहारा गज शनैः शनैः आहारका त्याग कर अन्त संलेषणा घर शरीर तज छठे स्वर्ग देव होता भया, अनेक देवांगनाकर युक्त हारकुण्डलादिक आभूषणनिकर मण्डित पुण्यके प्रभावतैं देवगतिके सुख भोगता भया। छठे स्वर्गहीतैं आया हुता अर छठे ही स्वर्ग गया परम्पराय मोक्ष पावेगा, अर भरत महामुनि महातपके धारक पृथिवीके गुरु निर्ग्रंथ जाके शरीरका भी ममत्व नाहीं वे महा धीर जहां पिछिला दिन रहै तहां ही बैठ रहें जिनको एक स्थान न रहना, पवन सारिखे असंगी पृथिवीसमान क्षमाको धरें, जलसमान निर्मल अग्नि समान कर्म काष्ठके भस्म करनहारे अर आकाश समान अलेप चार आराधनाविषै उद्यमी तेरा प्रकार चारित्र पालते भए निर्ममत्व स्नेहके बंधनतैं रहित मृगेंद्र सारिखे निर्भय समुद्र समान गंभीर सुमेरु समान निश्चल यथाजातरूपके धारक सत्यका वस्त्र पहरे क्षमारूप खडगको धरे वाईस परीषहके जीतनहारे महातपस्वी, समान हैं शत्रु मित्र जिनके अर समान है सुख दुख जिनके अर समान है तृणरत्न जिनके महा उत्कृष्ट मुनि शास्त्रोक्त मार्ग चलते भए, तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजीं। सूई समान तीक्ष्ण तृणकी सली पावोंमें चुभें हैं परन्तु ताकी कछु सुध नाहीं अर शत्रुनिके स्थानकविषै उपसर्ग सहिवे निमित्त विहार करते भए तपके संयमके प्रभावकर शुक्ल ध्यान उपजा शुक्लध्यानके बलकर मोहका नाशकर ज्ञानावरण दर्शनावरण अन्तराय कर्महर लोकालोकको प्रकाश करणहारा केवलज्ञान प्रकट भया बहुरि अघातिया कर्म भी दूरकर सिद्धपदको प्राप्त भए जहांतैं बहुरि संसारविषै भ्रमण नाहीं, यह केकईके पुत्र भरतका चारित्र जो भक्ति कर पढै सुनै सो सब क्लेशसे रहित होय यश कीर्ति बल विभूति आरोग्यताको पावै अर स्वर्ग मोक्ष पावै यह परम चरित्र महा उज्ज्वल श्रेष्ठ गुणनिकर युक्त भव्य जीव सुनों जातैं शीघ्र ही सूर्यसे अधिक तेजके धारक होहु।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै भरतका निर्वाण गमन करनेवाला सतासीवां पर्व पूर्ण भया ॥८७॥

अथानन्तर भरतके साथ जे राजा महाधीर वीर अपने शरीरविषै भी जिनका अनुराग नहीं घर से निकसे जैनेश्वरी दीक्षा धर दुर्लभ वस्तुको प्राप्त भए तिनविषै कैयकनिके नाम कहिए है—हे श्रेणिक! तू सुन—सिद्धार्थ, रतिवर्धन, मेघरथ, जांबू,नंद, शल्य, शशांक, निरसनन्दन, नंद, आनंद, सुमति, सदाश्रय, महाबुद्धि, सूर्य, इंद्रध्वज, जनवल्लभ, श्रुतिधर, सुचंद्र, पृथिवीधर, अलक, सुमति, अक्रोध, कुण्डर, सत्यवाहन, हरि,वासुमित्र, धर्ममित्र, पूर्णचन्द्र, प्रभाकर, नघोष, सुनंद, शांति, प्रियधर्मा इत्यादि एक हजारतैं अधिक राजा वैराग्य धारते भए विशुद्धकुलविषै उपजे सदा आचारविषै तत्पर पृथिवीविषै प्रसिद्ध हैं शुभ चेष्टा जिनकी ये महाभाग्य हाथी घोडे रथ पयादे स्वर्ण रत्न रणवास सर्व तजकर पंच महाव्रत धारते भए, राज्यको जिनने तृणवत् तजा महाशान्त नानाप्रकार योगीश्वर ऋद्धिके धारक भए सो आत्मध्यानके ध्याता कैयक तो मोक्ष गए कैयक अहमिंद्र भए कैयक उत्कृष्ट देव भए ॥

अथानन्तर भरत चक्रवर्ती सारिखे दशरथके पुत्र भरत तिनको घरसे निकसे पीछे लक्षमण तिनके गुण चितार चितार अतिशोकवन्त भया अपना राज्य शून्य गिनता भया शोककर व्याकुल है चित्त जाका अति विषादरूप आंसू डारता भया, दीर्घ निश्वास नाखता भया नील कमल समान है कांति जाकी सो कुमलाय गया, विराधितकी भुजानिपर हाथ धरे ताके सहारे बैठा मंद मंद वचन कहै, वे भरत महाराज गुण ही हैं आभूषण जिनके सो कहां गए? जिन तरुण अवस्थाविषै शरीरसूं प्रीति छांडी, इन्द्र समान राजा अर हम सब उनके सेवक वे रघुवंशके तिलक समस्त विभूति तजकर मोक्षके अर्थी महादुद्धर मुनिका धर्म धारते भए। शरीर तो अति कोमल कैसे परीषह सहेंगे? धन्य वे अर श्रीराम महा ज्ञानवान कहते भए, भरतकी महिमा कही न जाय जिनका चित्त कभी संसारविषै न रचा जो शुद्धबुद्धि है तो उनकी ही है अर जन्म कृतार्थ है तो उनका ही है, जे विषके भरे अन्नकी न्याईं राज्यको तज कर

जिनदीक्षा धरते भए वे पूज्य प्रशंसा योग्य परम योगी उनका वर्णन देवेंद्र भी न कर सके तो औरोंकी कहा शक्ति जो करे वे राजा दशरथके पुत्र केकईके नंदन तिनकी महिमा हमतैं न कही जाय। या भरतके गुण गावते एक मुहूर्त सभाविषै तिष्ठे, समस्त राजा भरत ही के गुण गाया करे। बहुरि श्रीराम लक्ष्मण दोऊ भाई भरतके अनुरागकर अति उद्वेग रूप उठे सब राजा अपने अपने स्थानकूं गए घर घर भरतकी चर्चा सब ही लोक आश्चर्यको प्राप्त भए। यह तो उनकी यौवन अवस्था अर यह राज्य ऐसे भाइ सब सामिग्री पूर्ण ऐसे ही पुरुष तजें सोई परम पदको प्राप्त होवें या भांति सब ही प्रशंसा करते भए।

बहुरि दूजे दिन सब राजा मंत्रकर राम पै आए नमस्कारकर अति प्रीतिसे वचन कहते भए, हे नाथ! जो हम असमझ हैं तो आपके अर बुद्धिवंत हैं तो आपके हम पर कृपाकर एक बीनती सुनो— हे प्रभो! हम सब भूमिगोचरी अर विद्याधर आपका राज्याभिषेक करें, जैसे स्वर्गविषै इंद्रका होय, हमारे नेत्र अर हृदय सफल होवें तिहारे अभिषेकके सुखकर पृथिवी सुखरूप होय तब राम कहते भए तुम लक्ष्मणका राज्याभिषेक करो वह पृथिवीका स्तंभ भूधर है समस्त राजानिका गुरु वासुदेव राजानिका राजा सब गुण ऐश्वर्यका स्वामी सदा मेरे चरणनिको नमै या उपरान्त मेरे राज्य कहां॥

तब वे समस्त श्रीरामकी अतिप्रशंसा कर जय जयकार शब्द कर लक्ष्मणपै गए अर सब वृत्तान्त कहा तब लक्ष्मण सबों को साथ लेय रामपै आया अर हाथ जोड नमस्कार कर कहता भया हे वीर! या राज्य के स्वामी आप ही हो मैं तो आपका आज्ञाकारी अनुचर हूं तब रामने कहा, हे वत्स! तुम चक्र के धारी नारायण हो तातैं राज्याभिषेक तुम्हारा ही योग्य है, सो इत्यादि वार्तालाप से दोनों का राज्याभिषेक ठहरा बहुरि जैसी मेघ की ध्वनि होय तैसी वादित्रनिकी ध्वनि होती भई दुन्दुभी वाजे नगारे ढोल मृदंग वीण तमूरे झालर झांझ मजीरे वांसुरी शंख इत्यादि वादित्र वाजे अर नानाप्रकारके

मंगल गीत नृत्य होते भए याचकोंको मनवांछित दान दीया सबनिको अति हर्ष भया दोऊ भाई एक सिंहासन पर विराजे स्वर्ण रत्नके कलश जिनके मुख कमलसे ढके पवित्र जलसे भरे तिनकर विधिपूर्वक अभिषेक भया, दोऊ भाई मुकट भुजवन्ध हार केयूर कुण्डलादिक कर मण्डित मनोग्य वस्तु पहिरे सुगंधकर चर्चित तिष्ठे विद्याधर भूमिगोचरी तथा तीन खण्डके देव जय जय शब्द कहते भए। यह बलभद्र श्रीराम हलमूसलके धारक अर यह वासुदेव श्रीलक्ष्मण चक्रका धारक जयवंत होहु दोऊ राजेंद्रनिका अभिषेक कर विद्याधर बडे उत्साहसे सीता अर विशिल्याका अभिषेक करावते भए, सीता रामकी राणी अर विशल्या लक्ष्मणकी, तिनका अभिषेक विधिपूर्वक होता भया ॥

अथानन्तर विभीषणको लंका दई सुग्रीवको किहकंधापुर हनूमानको श्रीनगर अर हनूरुह द्वीप दिया विराधितको नागलोक समान अलंकापुर दिया, नल नीलको किकंधूपुर दिया, समुद्रकी लहरोंके समूहकर महाकौतुकरूप अर भामण्डलको वैताड्यकी दक्षिण श्रेणिविषै रथनूपुर दिया समस्त विद्याधरनिका अधिपति किया अर रत्नजटीको देवोपनीत नगर दिया अर भी यथा योग्य सबनिको स्थान दिए अपने पुण्यके उदय योग्य सबही रामलक्ष्मणके प्रतापतें राज्य पावते भए। रामकी आज्ञाकर यथा योग्य स्थानमें तिष्ठे। जे भव्यजीव पुण्यके प्रभावका जगतविषै प्रसिद्ध फल जान धर्मविषै रति करे हैं वे मनुष्य सूर्यसे अधिक ज्योतिको पावे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै राम लक्ष्मणका राज्याभिषेक वर्णन करनेवाला ॥८८॥ वा पर्व पूर्ण

अथानन्तर राम लक्ष्मण महा प्रीतिकर भाई शत्रुघ्नसूं कहते भए, जो तुमको रुचै सो देश लेवो जो तुम आधी अयोध्या चाहो तो आधी अयोध्या लेवो अथवा राजगृह अथवा पोदनापुर अथवा पौंड्रसुन्दर इत्यादि सैकडा राजधानी हैं। तिनविषै जो नीकी सो तिहारी तब शत्रुघ्न कहता भया मोहि मथुराका राज्य देवो तब राम वोले—हे भ्रात ! वहां राजा मधुका राज्य है अर वह रावणका जमाई है

अनेक युद्धनिका जीतनहारा ताको चमरेन्द्रने त्रिशूल रत्न दिया है ज्येष्ठके सूर्य समान दुस्सह है अर देवनिसे दुर्निवार है ताकी चिंता हमारे भी निरंतर रहे है वह राजा मधु हरिवंशियोंके कुलरूप आकाश विषैं सूर्य समान प्रतापी है जाने वंशविषै उद्योत किया है अर जाका लवणार्णव नामा पुत्र विद्याधरनिहू कर असाध्य है पिता पुत्र दोऊ महाशूरवीर हैं तातैं मथुरा टार और राज्य चाहो सोही लेवो तब शत्रुघ्न कहता भया बहुत कहिवेकर कहा ? मोहि मथुरा ही देवो जो मैं मधुके छातेकी न्याईं मधुको रण संग्रामविषै न तोड लूं तो दशरथका पुत्र नाहीं जैसे सिंहनिके समूहको अष्टापद तोड डारे तैसे ताके कटकसहित ताहि न चूर डारूं, ये मैं तिहारा भाई नाहीं, जो मधुको मृत्यु प्राप्त न करूं तो मैं सुप्रभाकी कुक्षिविषै उपजा ही नहीं या भांति प्रचण्ड तेजका धरणहारा शत्रुघ्न कहता भया तब समस्त विद्याधरनिके अधिपति आश्चर्यको प्राप्त भए अर शत्रुघ्नकी बहुत प्रशंसा करते भए शत्रुघ्न मथुरा जायवेको उद्यमी भया तब श्रीराम कहते भए हे भाई ! मैं एक याचना करूं हूं सो मोहि दक्षिणा देहु तब शत्रुघ्न कहता भया सबके दाता आप हो सब आपके याचक हैं आप याचो सो वस्तु कहा ? मेरे प्राणहीके नाथ आप हो तो अर वस्तुकी कहा बात एक मधुसे युद्ध तो मैं न तजूं अर कहो सोही करूं तब श्रीरामने कही—हे वत्स ! तू मधुसे युद्ध करै तो जासमय वाके हाथ त्रिशूलरत्न न होय तासमय करियो तब शत्रुघ्नने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कह भगवानकी पूजाकर नमोकार मन्त्र जप सिद्धनिकों नमस्कारकर भोजनशालाविषै जाय भोजनकर माताके निकट आय आज्ञा मांगी तब वे माता अतिस्नेहतैं याके मस्तकपर हाथधर कहती भई—हे वत्स ! तू तीक्ष्ण बाणानिकर शत्रुनिके समूहको जीत। वह योधाकी माता अपने योधापुत्रसे कहती भई—हे पुत्र अबतक संग्रामविषै शत्रुवनिने तेरी पीठ नाही देखी है अर अब हू न देखेंगे तू रण जीत आवेगा। तब मैं स्वर्णके कमलनिकर श्रीजिनेन्द्रकी पूजा कराऊंगी

वे भगवान त्रैलोक्य मंगलके कर्ता आप महामंगलरूप सुर असुरनिकर नमस्कार करबे योग्य रागादि-ककै जीतनहारे तोहि मंगल करें । वे परमेश्वर पुरुषोत्तम अरहंत भगवन्त जिनेन अत्यंत दुर्जय मोहरिपु जीता वे तोहि कल्याणके दायक होहु सर्वज्ञ त्रिकालदर्शी स्वयंबुद्ध तिनके प्रसादतैं तेरी विजय होहु । जे केवलज्ञानकर लोकालोकको हथलीविषैं आंवलाकी न्याईं देखे हैं ते तोहि मंगलरूप होहु । हे वत्स ! वे सिद्धपरमेष्ठी अष्टकर्मकररहित अष्टगुण आदि अनन्त गुणनिकर विराजमान लोकके शिखर तिष्ठे ते सिद्ध तोहि सिद्धिके कर्ता होवें अर आचार्य भव्यजीवनिके परम आधार तेरे विघ्न हरें जे कमल समान अलिप्त सूर्यसमान तिमिर हर्ता अर चन्द्रमा समान आल्हादके कर्ता भूमिसमान क्षमावान सुमेरु समान अचल समुद्र समान गम्भीर आकाश समान अखंड इत्यादि अनेक गुणनिकर मण्डित हैं अर उपाध्याय जिनशासनके पारगामी तोहि कल्याणके कर्ता होहु अर कर्म शत्रुनिके जीतवेको महा शूरवीर बारह प्रकार तपकर जे निर्वाणको साधै हैं ते साधु तोहि महावीर्यके दाता होवें या भांति विघ्नकी हरणहारी मंगलकी करणहारी माता आशीस देती सो शत्रुघ्न माथे चढाय माताको प्रणामकर वाहिर निकसा । स्वर्णकी सांकलनिकर मण्डित जो गज तापर चढा ऐसा सोहता भया जैसे मेघमाला ऊपर चन्द्रमा सोहै अर नाना प्रकारके बाहननिपर आरूढ अनेक राजा संग चले सो तिनकर ऐसा सोहता भया जैसा देवनिकर मण्डित देवेंद्र सोहै राम लक्ष्मणकी भाईसूं अधिक प्रीति सो तीन मंजिल भाईके संग गये तब भाई कहता भया—हे पूज्य पुरुषोत्तम ! पीछे अयोध्या जावो मेरी चिंता न करो मैं आपके प्रसादतैं शत्रुनिको निस्सन्देह जीतूंगा तब लक्ष्मणने समुद्रावर्त नामा धनुष दिया प्रज्वलित है मुख जिनके पवन सारिखे वेगको धरे ऐसे बाण दिये अर कृतांतवक्रको लार दिया अर लक्ष्मणसहित राम पीछे अयोध्या आये परंतु भाईकी चिंता विशेष ।

अथानन्तर शत्रुघन महाधीर बीर बडी सेना कर संयुक्त मथुराकी तरफ गया अनुक्रमसे यमुना नदीके तीर जाय डेरे दिये जहां मंत्री महासूक्ष्मबुद्धि मंत्र करते भये। देखो, इस बालक शत्रुघनकी बुद्धि जो मधुके जीतवेकी बांछा करी है। यह नयवर्जित केवल अभिमान कर प्रवर्ता है, जा मधुने पूर्व राजा मान्धाता रणविषै जीता सो मधु देवनिकर विद्याधरनिकर न जीता जाय, ताहि यह कैसे जीतेगा राजा मधु सागर समान है उछलते पियादे तेई भये उतंग लहर अर शत्रुनिके समूह तेई भये ग्रह तिनकर पूर्ण ऐसे मधुसमुद्रकूं शत्रुघ्न भुजानिकर तिरा चाहे है सो कैसे तिरेगा, तथा मधुभूपति भयानक वन समान है ताविषै प्रवेशकर कौन जीवता निसरै। कैसा है राजा मधुरूप वन? पयादेके समूह तेई हैं वृक्ष जहां अर माते हाथिनिकर महा भयंकर अर घोडनिके समूह तेई हैं मृग जहां, ये बचन मंत्रिनिके सुन कृतांतवक्र कहता भया। तुम साहस छोड ऐसे कायरताके वचन क्यों कहो हो? यद्यपि वह राजा मधु चमरेंद्र कर दिया जो अमोघ त्रिशूल ताकर अति गर्वित है तथापि ता मधुको शत्रुघन सुन्दर जीतेगा जैसे हाथी महाबलवान है अर सूंडकर वृक्षनिको उपाडे है मद झरे है तथापि ताहि सिंह जीतै है यह शत्रुघन लक्ष्मी अर प्रताप कर मंडित है महाबलवान है शूरवीर है महा पंडित प्रवीण है अर याके सहाई श्रीलक्ष्मण हैं अर आप सबही भले भले मनुष्य याके संग हैं तातैं यह शत्रुघन अवश्य शत्रुको जीतेगा जब ऐसे बचन कृतांतवक्रने कहे तब सबही प्रसन्न भए अर पाहिलेही मंत्रीजनानिने जो मथुरामें हलकारे पठाये हुते ते आयकर सर्व वृत्तांत शत्रुघनसूं कहते भए। हे देव! मथुरा नगरीकी पूर्व दिशाकी ओर अत्यंत मनोग्य उपवन है तहां रणवास सहित राजा मधु रमै है। राजाके जयंती नाम पटराणी है ता सहित वनक्रीडा करै है जेसे स्पर्श इंद्रियके बश भया गजराज बंधन विषै पडै है, तैसे राजा मोहित भया विषयनिके बंधन विषै पडा है, महा कामी आज छठा दिन है कि सर्व राज्य काज तज प्रमादके वश

भया वनविषै तिष्ठै है कामान्ध मूर्ख तिहारे आगमको नाहीं जाने है, अर तुम ताके जीतवेको वांछा करी है ताकी ताहि सुध नाहीं अर मंत्रिनिने बहुत समझाया सो काहूकी बात धारे नाहीं, जैसे मूढ रोगी वैद्यकी औषध न धारै इस समय मथुरा हाथ आवे तो आवे अर कदाचित् मधु पुरीमें धसा तो समुद्रसमान अथाह है यह बचन हलकारोंके मुखसे शत्रुघन सुनकर कार्यमें प्रवीण ताही समय बलवान योधानिके सहित दौडकर मथुरा गया, अर्धरात्रिके समय सब लोक प्रमादी हुते अर नगरी राजारहित हुती सो शत्रुघन नगर विषै जाय पैठा जैसे योगी कर्मनाश कर सिद्धपुरीविषै प्रवेश करै, तैसे शत्रुघन द्वार को चूरकर मथुरा विषै प्रवेश करता भया। मथुरा महामनोग्य है तब बंदीजननिके शब्द होते भये जो राजा दशरथका पुत्र शत्रुघन जयवंत होहु ये शब्द सुनके नगरीके लोक परचक्रका आगम जान अति व्याकुल भए, जैसे लंका अंगदके प्रवेशकर अतिव्याकुल हुती तैसे मथुराविषै व्याकुलता भई। कई एक कायर हृदयकी धरनहारी स्त्री हुतीं तिनके भयकर गर्भपात होयगये, अर कैयक महाशूरवीर कलकलाट शब्द सुन तत्काल सिंहकी न्याई उठे, शत्रुघन राजमंदिर गया आयुधशाला अपने हाथ कर लीनी अर स्त्री बालक आदि जे नगरीके लोक अतित्रासकूं प्राप्त भये तिनको महा मधुर वचन कर धीर्य बंधाया जो यह श्रीरामका राज्य है यहां काहूको दुःख नाहीं तब नगरीके लोक त्रासरहित भये अर शत्रुघनको मथुराविषै आया सुन राजा मधु महाकोप कर उपवनतैं नगरको आया सो मथुराविषै शत्रुघनके सुभटोंकी रक्षाकर प्रवेश न कर सका जैसे मुनिके हृदय में मोह प्रवेश न कर सकै, नाना प्रकारके उपाय कर प्रवेश न पाया अर त्रिशूल हूतैं रहित भया तथापि महा अभिमानी मधुने शत्रुघनसे संधि न करी युद्ध ही को उद्यमी भया तब शत्रुघनके योधा युद्धको निकसे दोनों सेना समुद्र समान तिन विषै परस्पर युद्ध भया, रथानिके तथा हाथीनिके तथा घोडानिके असवार परस्पर युद्ध करते भए अर परस्पर

पयादे भिडे, नाना प्रकारके आयुधनिके धारक महासमर्थ नाना प्रकार आयुधनि कर युद्ध करते भये ता समय परसेनाके गर्वको न सहता संता कृतांतवक्र सेनापति परसेनाविषे प्रवेश करता भया। नाहीं निवारी जाय है गति जाकी तहां रणक्रीडा करै है जैसे स्वयम्भू रमण उद्यानाविषे इंद्र क्रीडा करै, तब मधुका पुत्र लवणार्णवकुमार याहि देख युद्धके अर्थ आया अपने बाणनिरूप मेघकर कृतांतवक्र रूप पर्वतको आच्छादित करता भया, अर कृतांतवक्र भी आशीविष तुल्य बाणनिकर ताके बाण छेदता भया अर धरती आकाशको अपने बाणनिकर व्याप्त करता भया, दोऊ महायोधा सिंह समान बलवान गज-निपर चढे क्रोधसहित युद्ध करते भए, वाने वाको रथरहित किया अर वाने वाको, बहुरि कृतांतवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषे बाण लगाया अर ताका बषतर भेदा तब लवणार्णव कृतांतवक्र ऊपर तोमर जातिका शस्त्र चलावता भया क्रोधकर लाल हैं नेत्र जाके दोनो घायल भए, रुधिर कर रंग रहे हैं वस्त्र जिनके, महा सुभटताके स्वरूप दोनों क्रोध कर उद्धत फूले टेसूके वृक्ष समान सोहते भए, गदा खड्ग चक्र इत्यादि अनेक आयुधनिकर परस्पर दोऊ महा भयंकर युद्ध करते भए। बल उन्माद विषादके भरे बहुत वेर लग युद्ध भया, कृतांतवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषे घाव किया, सो पृथिवीविषे पडा जैसे पुण्यके क्षयतैं स्वर्गवासी देव मध्य लोकविषे आय पडैं. लवणार्णव प्राणान्त भया, तब पुत्रको पडा देख मधु कृतांतवक्र पर दौडा तब शत्रुघ्नने मधुको रोका, जैसे नदीके प्रवाहको पर्वत रोकै, मधु महा दुस्सह शोक अर कोपका भरा युद्ध करता भया सो आशीविषकी दृष्टि समान मधुकी दृष्टि शत्रुघ्नकी सेनाके लोक न सहार सकते भए जैसे उग्र पवनके योगतें पत्रनिके समूह चलायमान होंय तैसे लोक चलायमान भए बहुरि शत्रुघ्नको मधुके सन्मुख जाता देख धीर्यकूं प्राप्त भए। शत्रुके भयकर लोक तब लगही डरें जबलग अपने स्वामीको प्रबल न देखें अर स्वामीको प्रसन्नवदन देख धीर्यको प्राप्त होंय। शत्रुघ्न उत्तम-

रथ पर आरूढ मनोग्य धनुष हाथविषै सुन्दर हारकर शोभे है वक्षस्थल जाका सिर पर मुकट धरे मनोहर कुण्डल पहिरे शरदके सूर्य समान महातेजस्वी अखण्डित है गति जाकी शत्रुके सन्मुख जाता अति सोहता भया जैसे गजराज पर जाता मृगराज सोहै, अर अग्नि सूके पत्रनिको जलावै तैसे मधुके अनेक योधा क्षणमात्रविषै विध्वंस किए, शत्रुघनके सनमुख मधुका कोई योधा न ठहरसका जैसे जिनशासनके पंडित स्यादवादी तिनके सन्मुख एकांतवादी न ठहिर सकें, जो मनुष्य शत्रुघनसे युद्ध किया चाहै सो तत्काल विनाशको पावै जैसे सिंहके आगे मृग। मधुकी समस्त सेनाके लोक अति व्याकुल होय मधुके शरण आये सो मधु महा सुभट शत्रुघनको सन्मुख आवता देख शत्रुघनकी ध्वजा छेदी अर शत्रुघनने बाणनिकर ताके रथके अश्व हते। तब मधु पर्वत समान जो वरुणेंद्र गज तापर चढा क्रोधकर प्रज्वलित है शरीर जाका शत्रुघनको निरन्तर बाणनिकर आच्छादने लगा जैसे महामेघ सूर्यको आच्छादे सो शत्रुघ्न महा शूरवीरने ताके बाण छेद डारे अर मधुका बखतर भेदा जैसे अपने घर कोई पाहुना आवै अर ताकी भले मनुष्य भलीभांति पाहुन गति करैं तैसे शत्रुघ्न मधुकी रणविषै शस्त्रनिकर पाहुणगति करता भया॥

अथानन्तर मधु महा विवेकी शत्रुघनको दुर्जय जान आपको त्रिशूल आयुधसे रहित जान पुत्रकी मृत्यु देख अर अपनी आयु हू अल्प जान मुनिनिका वचन चितारता भया—अहो जगतका समस्त ही आरंभ महा हिंसारूप दुखका देनहारा सर्वथा ताज्य है यह क्षण भंगुर संसारका चरित्र तामें मूढजन राचे या संसार विषै धर्म ही प्रशंसायोग्य है अर अधर्मका कारण अशुभ कर्म प्रशंसा योग्य नाहीं महा निंद्य यह पाप कर्म नरक निगोदका कारण है, जो दुर्लभ मनुष्य देहको पाय धर्म विषै बुद्धि नाहीं धरे है सो प्राणी मोह कर्म कर ठगाया अनन्त भव भ्रमण करै है। मैं पापीने संसार असारको सार जाना, क्षणभं-

गुर शरीरको ध्रुव जाना, आत्महित न किया। प्रमादविषै प्रवरता, रोग समान ये इंद्रयनिके भोग भले जान भोगे, जब मैं स्वाधीन हुता तब मोहि सुबुद्धि न आई, अब अन्तकाल आया अब कहा करूं, घरमें आग लागी ता समय तलाव खुदवाना कौन अर्थ ? अर सर्पने डसा ता समय देशांतरसे मंत्राधीश बुलवाना अर दूरदेशसे माणि औषधि मंगवाना कौन अर्थ ? तातैं अब सर्व चिंता तज निराकुल होय अपना मन समाधानविषै ल्याऊं यह विचार वह धीरवीर घावकर पूर्ण हाथी चढाही भावमुनि होता भया, अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधुनिको मनकर वचनकर कायकर बारंबार नमस्कार कर अर अरहन्त सिद्ध साधु तथा केवली प्रणीत धर्म यही मंगल हैं यही उत्तम हैं इन ही का मेरे शरण है अढाई द्वीप विषै पंद्रहकर्म भूमि तिनविषै भगवान् अरहंत देव होय हैं वे त्रैलोक्यनाथ मेरे हृदयविषै तिष्ठो। मैं बारम्बार नमस्कार करूं हूं अब मैं यावज्जीव सर्व पाप योग तजे चारों आहार तजे, जे पूर्व पाप उपार्जे हुते तिनकी निन्दा करूं हूं अर सकल वस्तुका प्रत्याख्यान करूं हूं अनादि कालतें या संसार वनविषै जो कर्म उपार्जे हुते ते मेरे दुःकृत मिथ्या होहु ॥ भावार्थ—मुझे फल मत देहु, अब मैं तत्वज्ञानविषै तिष्ठा तजवे योग्य जो रागादिक तिनको तजूं हूं अर लेयबे योग्य जो निजभाव तिनको लेऊं हूं, ज्ञान दर्शन मेरे स्वभाव ही हैं सो मोसे अभेद्य हैं अर जे शरीरादिक समस्त परपदार्थ कर्मके संयोग कर उपजे ते मोसे न्यारे हैं, देह त्यागके समय संसारी लोक भूमिका तथा तृणका सांथरा करे हैं सो सांथरा नाहीं। यह जीव ही पाप बुद्धिरहित होय तब अपना आप ही सांथरा है। ऐसा विचारकर राजा मधुने दोनों प्रकारके परिग्रह भावोंसे तजे अर हाथीकी पीठ पर बैठा ही सिरके केश लोंच करता भया, शरीर घावनिकर अतिव्याप्त है तथापि महा दुर्धर धीर्यको धर कर अध्यात्म योगविषै आरूढ होय कायाका ममत्व तजता भया, विशुद्ध है बुद्धि जाकी। तब शत्रुघ्न मधुकी परम शांत दशा देख नमस्कार करता भया अर कहता भया

हे साधो ! मो अपराधीका अपराध क्षमा करो, देवानिकी अप्सरा मधुका संग्राम देखनेको आई हुतीं आकाशसे कल्पवृक्षनिके पुष्पोंकी वर्षा करती भई मधुका वीर रस अर शांत रस देख देव भी आश्चर्यको प्राप्त भए। बहुरि मधु महा धीर एक क्षणमात्रविषै समाधि मरण कर महासुखके सागरविषै तीजे सनत्कुमार स्वर्गविषै उत्कृष्ट देव भया अर शत्रुघ्न मधुकी स्तुति करता महा विवेकी मथुराविषै प्रवेश करता भया जैसे हस्तिनागपुरविषै जयकुमार प्रवेश करता सोहता भया तैसा शत्रुघन मधुपुरीविषै प्रवेश करता सोहता भया। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहै हैं—हे नराधिपति श्रेणिक ! प्राणियोंके या संसारविषै कर्मोंके प्रसंग कर नाना अवस्था होय हैं तातैं उत्तमजन सदा अशुभ कर्म तजकर शुभकर्म करो जाके प्रभाव कर सूर्य समान कांतिको प्राप्त होहु ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै मधुका युद्ध अर वैराग्य होनेका वर्णन करनेवाला नवासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८९ ॥

अथानन्तर सुरकुमारोंके इंद्र जो चमरेंद्र महाप्रचंड तिनका दीया जो त्रिशूलरत्न मधुके हुता ताके अधिष्ठाता देव त्रिशूलको लेकर चमरेंद्रके पास गए अतिखेद खिन्न महा लज्जावान होय मधुके मरणका वृत्तांत असुरेंद्रसे कहते भए तिनकी मधुसे अतिमित्रता सो पातालसे निकसकर महाक्रोधके भरे मथुरा आयवेको उद्यमी भए ता समय गरुडेंद्र असुरेंद्रके निकट आये अर पूछते भए हे दैत्येंद्र ! कौन तरफ गमनको उद्यमी भए हो ? तब चमरेंद्रने कही—जाने मेरा मित्र मधु मारा है ताहि कष्ट देवेको उद्यमी भया हूं तब गरुडेंद्रने कही कहा विशिल्याका माहात्म्य तुमने न सुना है। तब चमरेंद्रने कही वह अद्भुत अवस्था विशिल्याकी कुमार अवस्थाविषै ही हुती अर अब तो निर्विष भुजंगी समान है जौंलग विशिल्याने वासु-

देवका आश्रय न किया हुता तौलग ब्रह्मचर्यके प्रसादतैं असाधारण शक्ति हुती, अब वह शक्ति विशिल्याविषे नाहीं, जे निरतिचार बालब्रह्मचर्य धारें तिनके गुणनिकी महिमा कहिवेविषे न आवै, शीलके प्रसादकर सुर असुर पिशाचादि सब डरें, जौंलग शीलरूप खड्गको धारे तौंलग सवकर जीता न जाय महा दुर्जय है। अब विशिल्या पातिव्रता है ब्रह्मचारिणी नाहीं तातैं वह शक्ति नाहीं मद्य मांस मैथुन यह महा पाप हैं इनके सेवनसे शक्तिका नाश होय है जिनका व्रतशील नियमरूप कोट भग्न न भया तिनको कोई विघ्न करवे समर्थ नाहीं, एक कालाग्नि नाम रुद्र महा भयंकर भया सो हे गरुडेंद्र ! तुम सुना ही होयगा बहुरि वह स्त्रीसे आसक्त होय नाशको प्राप्त भया तातैं विषयका सेवन विषसे भी विषम है परम आश्चर्यका कारण एक अखंड ब्रह्मचर्य है। अब मैं मित्रके शत्रुपर जाऊंगा तुम तिहारे स्थानक जावहु। ऐसा गरुडेंद्रसे कहकर चमरेंद्र मथुरा आए, मित्रके मरणकर कोपरूप मथुराविषे वही उत्सव देखा जो मधुके समय हुता तब असुरेंद्रने विचारी—ये लोक महादुष्ट कृतघ्न हैं देशका धनी पुत्रसहित मरगया है अर अन्य आय बैठा है इनको शोक चाहिये कि हर्ष, जाके भुजाकी छाया पाय बहुत काल सुखसे बसे ता मधुकी मृत्युका दुःख इनको क्यों न भया ? ये महाकृतघ्न हैं सो कृतघ्नका मुख न देखिये लोकानिकर शूरवीर सेवायोग्य शूरवीरनिकर पण्डित सेवा योग्य हैं। सो पण्डित कौन जो पराया गुण जाने सो ये कृतघ्न महामूर्ख हैं ऐसा विचारकर मथुराके लोकनिपर चमरेंद्र कोपा—इन लोकोंका नाश करूं। यह मथुरापुरी या देशसहित क्षय करूं। महाक्रोधके वश होय असुरेंद्र लोकनिको दुस्सह उपसर्ग करता भया, अनेक रोग लोगनिको लगाये, प्रलय कालकी अग्नि समान निर्दयी होय लोकरूप वनको भस्म करवेको उद्यमी भया, जो जहां ऊभा हुता सो वहां ही मरगया अर बैठा हुता सो बैठा ही रहा, सूता था सो सूता ही रहा, मरी पडी, लोकको उपसर्ग देख मित्र देव देवताके भयसे शत्रुघ्न अयोध्या आया सो जीतकर

महावीर भाई आया बलभद्र नारायण अति हर्षित भये अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भगवानकी अद्-भुत पूजा करावती भई, अर दुखी जीवनिको करुणाकर अर धर्मात्मा जीवनिको अति विनयकर अनेक प्रकार दान देती भई, यद्यपि अयोध्या महा सुंदर है स्वर्ण रत्ननिके मन्दिरनिकर मण्डित है कामधेनु समान सर्व कामना पूरणहारी देवपुरी समान पुरी है तथापि शत्रुघ्नका जीव मथुरासे अति आसक्त सो अयोध्याविषैं अनुरागी न होता भया जैसे कैयक दिन सीता विना राम उदास रहे तैसे शत्रुघ्न मथुरा विना अयोध्याविषै उदास रहे जीवोंको सुन्दर वस्तुका संयोग स्वप्न समान क्षणभंगुर है परम दाहको उपजावे है ज्येष्ठके सूर्यसे हू अधिक आतापकारी है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मथुराके लोकनिकूं

असुरेंद्रकृत उपसर्गका वर्णन करनेवाला नव्वेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९० ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतमस्वामीसे पूछता भया—हे भगवन्! कौन कारण कर शत्रुघ्न मथुरा ही को याचता भया। अयोध्याहूतैं ताहि मथुरा का निवास अधिक क्यों रुचा, अनेक राजधानी स्वर्ग लोक समान सो न वांछी अर मथुरा ही वांछी ऐसी मथुरासे कहा प्रीति, तब गौतमस्वामी ज्ञान-के समुद्र सकल सभारूप नक्षत्रनिके चन्द्रमा कहते भये, हे श्रेणिक! इस शत्रुघनके अनेक भव मथुरा में भये तातैं याका मधु-पुरीसे अधिक स्नेह भया। यह जीव कर्म्मोंनिके सम्बन्धतें अनादि काल का संसार सागरमें बसे है सो अनन्त भव धरे। यह शत्रुघन का जीव अनन्त भव भ्रमण कर मथुरा विषै एक यमनदेव नामा मनुष्य भया, महाक्रूर धर्मसे विमुख सो मर करें शूकरे खर काग ये जन्म धर अज पुत्र भया सो अग्निमें जल मूवा, भैंसा जलके लादने का भया सो छैवार भैंसा होय दुखस

मूवा नीचकुलविषै, निर्धन मनुष्य भया, हे श्रेणिक ! महापापी तो नरक को प्राप्त होय हैं, अर पुण्यवान् जीव स्वर्ग विषै देव होय हैं अर शुभाशुभमिश्रित कर मनुष्य होय हैं बहुरि यह कुलन्धरनामा ब्राह्मण भया रूपवान अर शीलरहित सो एक समय नगरका स्वामी दिग्विजय निमित्त देशांतर गया ताकी ललिता नाम राणी महलके झरोखाविषै तिष्ठे थी सो पापिनी इस दुराचारी विप्रको देख काम बाण कर वेधी गई सो याहि महलमें बुलाया। एक आसनपर राणी अर यह बैठे रहे ताही समय राजा दूरका चला अचानक आया अर याहि महलमें देखा सो राणीने मायाचार कर कही—जो यह बन्दीजन है भिक्षुक है तथापि राजाने न मानी राजाके किंकर ताहि पकडकर नृपकी आज्ञातैं आठो अंग दूर करवेके अर्थ नगरके बाहिर लेजाते हुते सो कल्याणनामा साधु ने देख कही जो तू मुनि होय तो तोहि छुडावें तब याने मुनि होना कबूल किया तब किंकरानिसे छुडाया सो मुनिहोय महातप कर स्वर्गमें ऋजु विमानका स्वामी देव भया। हे श्रेणिक ! धर्मसे कहा न होय ?

अथानन्तर मथुराविषै चंद्रभद्र राजा ताके राणी धारा ताके भाई सूर्य देव अग्निदेव यमुनादेव अर आठ पुत्र तिनके नाम श्रीमुख संमुख सुमुख इंद्रमुख प्रमुख उग्रमुख अर्कमुख परमुख अर राजा चंद्रभद्र के दूजी राणी कनकप्रभा ताके वह कुलंधर नामा ब्राह्मणका जीव स्वर्ग विषै देव होय तहांतै चयकर अचल नाम पुत्र भया सो कलावान अर गुणनिकर पूर्ण सर्व लोकके मनका हरणहारा देव कुमार तुल्य क्रीडाविषै उद्यमी होता भया।

अथानन्तर एक अंकनामा मनुष्य धर्मकी अनुमोदनाकर श्रावस्ती नगरीविषै एक कंपनाम पुरुष ताके अंगिका नामा स्त्री उसके अपनामा पुत्र भया सो अविनयी तब कंपने अपको घरसे निकास दिया सो महादुखी भूमिविषै भ्रमण करै अर अचलनामा कुमार पिताको अतिवल्लभ सो अचलकुमारकी बडी

माता धरा उसके तीन भाई अर आठ पुत्र तिन्होंने एकांतमें अचलके मारणेका मंत्र किया सो यह वार्ता अचलकुमारकी माताने जानी तब पुत्रको भगाय दिया सो तिलकवनविषै उसके पांवविषै कांटा लगा सो कंपका पुत्र अप काष्ठका भार लेकर आवे सो अचल कुमारको कांटेके दुखसे करुणावन्त देखा तब अपने काष्ठका भार मेल छुरीसे कुमारका कांटा काढ कुमारको दिखाया सो कुमार अति प्रसन्न भया अर अपको कहा—तू मेरा अचलकुमार नाम याद राखियो अर मोहि भूपति सुने वहां मेरे निकट आइयो। इस भांति कह अपको बिदा किया सो अप गया अर राजपुत्र महादुखी कौशांबी नगरीके विषै आया महापराक्रमी सो बाण विद्याका गुरु जो विशिषाचार्य उसे जीतकर प्रतिष्ठा पाई सो राजाने अचल कुमारको नगरविषै ल्यायकर अपनी इंद्रदत्ता नाम पुत्री परणाई अनुक्रमकर पुण्यके प्रभावसे राज पाया सो अंगदेश आदि अनेक देशनिको जीतकर महा प्रतापी मथुरा आया नगरके वाहिर डेरा दिया बडी सेना साथ सब सामन्तों ने सुना कि यह राजा चन्द्रभद्राका पुत्र अचल कुमार है सो सब आय मिले राजा चन्द्रभद्र अकेला रहगया। तब राणी धराके भाई सूर्यदेव अग्निदेव यमुनादेव इनको संधि करने ताईं भेजे सो ये जायकर कुमारको देख बिलखे होय भागे अर धराके आठ पुत्र हू भाग गए। अचलकुमारकी माता आय पुत्रको लेगई पितासे मिलाया, पिताने याको राज्य दिया। एक दिन राजा अचल कुमार नटोंका नृत्य देखे था ताही समय अप आया जाने इसका वनविषै कांटा काढा था सो ताहि दरवान धक्का देय काढे हुते सो राजाने मने किए अर अप को बुलाया बहुत कृपा करी अर जो वाकी जन्मभूमि श्रावस्ती नगरी हुती सो ताहि दई अर ये दोनों परममित्र भेले ही रहें। एक दिवस महासंपदाके भरे उद्यानविषै क्रीडाको गये सो यशसमुद्र आचार्यको देखकर दोनों मित्र मुनि भये, सम्यक्दृष्टि परम संयमको आराध समाधिमरणकर स्वर्गविषै उत्कृष्ट देव भये तहां से चयकर अचलकुमारका जीव

राजा दशरथके यह शत्रुघन पुत्र भया अनेक भवके संबंधसे याकी मथुरासे अधिक प्रीति भई। गौतमस्वामी कहे हैं —हे श्रेणिक! वृक्षकी छाया जो प्राणी बैठा होय तो ता वृक्षसे प्रीति होय है जहां अनेक भव धरे तहांकी कहा बात? संसारी जीवनिकी ऐसी अवस्था है अर वह अपका जीव स्वर्गतैं च्यकर कृतांतवक्र सेनापति भया। या भांति धर्मके प्रसादतैं ये दोनों मित्र संपदाको प्राप्त भये अर जे धर्मसे रहित हैं तिनके कबहूं सुख नाहीं। अनेक भवके उपार्जे दुखरूप मल तिनके धोयवेकूं धर्मका सेवनही योग्य है अर जलके तीर्थनिविषै मनका मल नाहीं धुवै है धर्मके प्रसादतैं शत्रुघनका जीव सुखी भया ऐसा जान कर विवेकी जीव धर्मविषै उद्यमी होवो धर्मको सुनकर जिनकी आत्मकल्याणविषै प्रीति नाहीं होय है तिनका श्रवण वृथा है जैसे जो नेत्रवान सूर्यके उदयविषै कूपविषै पडै तो ताके नेत्र वृथा हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै शत्रुघ्नके पूर्वभवका वर्णन करनेवाला इक्याणवा पर्व पूर्ण भया॥ ९१॥

अथानन्तर आकाशविषै गमन करणहारे सप्तचारण ऋषि सप्त सूर्य समान है कांति जिनकी सो विहार करते निर्ग्रंथ मुनींद्र मथुरापुरी आये तिनके नाम सुरमन्यु श्रीमन्यु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान बिनयलाल सजयमित्र ये सबही महाचरित्रके पात्र अति सुन्दर राजा श्रीनन्दन राणी धरणी सुन्दरीके पुत्र पृथिवीविषै प्रसिद्ध पिता सहित प्रीतंकर स्वामीका केवलज्ञान देख प्रतिबोधको प्राप्त भये थे पिता अर प्रीतंकर केवलीके निकट मुनि भये अर एक महिने का बालक तुंवरुनामा पुत्र ताको राज्य दिया पिता श्रीनन्दन तो केवली भया अर ये सातों महामुनि चरण ऋद्धि आदि अनेक ऋद्धिके धारक श्रुतकेवली भये सो चातुर्मासिक विषै मथुराके वनविषै बटके वृक्ष तले आय विराजे। तिनके तपके

प्रभावकर चमरेंद्रकी प्रेरी मरी दूर भई जैसे श्वसुरको देखकर व्यभिचारणी नारी दूर भागे मथुराका समस्त मंडल सुखरूप भया बिना वाहे धान्य सहजही उगे, समस्त रोगोंनिसे रहित मथुरापुरी ऐसी शोभती भई जैसे नई बधू पतिको देखकर प्रसन्न होय, वह महामुनि रसपरत्यागादि तप अर बेला तेल पक्षोपवासादि अनेक तपके धारक जिनको चार महीना चौमासे रहना तो मथुराके वनविषै अर चारणऋद्धिके प्रभावतैं चाहे जहां आहार कर आवें सो एक निमिष मात्रविषै आकाशके मार्ग होय पोदनापुर पारणाकर आवें बहुरि विजयपुरकर आवें उत्तम श्रावकके घर पात्र भोजनकर संयमनिमित्त शरीरको राखें, कर्मके खिपायवेको उद्यमी एक दिन वे धीर वीर महाशांतभावके धारक जूडा प्रमाण धरती देख विहारकर ईर्या समितिके पालनहारे आहारके समय अयोध्या आये, शुद्ध भिक्षाके लेनहारे प्रलंबित हैं महा भुजा जिनकी अर्हद्दत्त सेठके घर आय प्राप्त भए तब अर्हद्दत्तने विचारी वर्षा कालविषै मुनिका विहार नाहीं ये चौमासा पहिलि तो यहां आये नाहीं अर मैं यहां जे जे साधु विराजे हैं गुफामें नदीके तीर वृक्ष तल शून्य स्थानकाविषै वनके चैत्यालयनिविषै जहां जहां चौमासा साधु तिष्ठे हैं वे मैं सर्व बंदे यह तो अबतक देखे नाहीं ये आचारांग सूत्रकी आज्ञासे परांगमुख इच्छाविहारी हैं वर्षाकाल विषै भी भ्रमते फिरै हैं जिन आज्ञा परांगमुख ज्ञानरहित निराचारी आचार्यकी आम्नायसे रहित हैं, जिन आज्ञा पालक होंय तो वर्षाविषै विहार क्यों करें, सो यह तो उठगया अर याके पुत्रकी बधूने अति भक्तिकर प्रासुक आहार दिया सो मुनि आहार लेय भगवानके चैत्यालय आय जहां द्युतिभट्टारक विराजते हुते ये सप्तर्षि ऋद्धिके प्रभावकर धरतीसे चार अंगुल अलिप्त चले आये अर चैत्यालयविषै धरतीपर पग धरते आये आचार्य उठ खडे भये अतिआदरसे इनको नमस्कार किया अर जे द्युतिभट्टारकके शिष्य हुते तिन सबने नमस्कार किया बहुरि ये सप्त तो जिन बन्दनाकर आकाशके मार्ग मथुरा गये इनके

गये पीछे अर्हद्दत्त सेठ चैत्यालयविषै आया तब श्रुतिभट्टारकने कही सप्तमहर्षि महायोगीश्वर चारणमुनि यहां आये हुते तुमने हूं वह वंदे हैं वे महा पुरुष महातपके धारक हैं चार महीना मथुरा निवास किया है अर चाहे जहां अहार लेजांय आज अयोध्या विषै अहार लिया चैत्यालय दर्शन कर गये हमसे धर्म-चर्चा करी, वे महा तपोधन गगनगामी शुभ चेष्टाके धरणहारे परम उदार ते मुनि बन्दिवे योग्य हैं। तब वह श्रावकनिविषै अग्रणी आचार्यके मुखसे चारण मुनिनि की महिमा सुनकर खेदखिन्न होय पश्चाताप करता भया। धिकार मोहि, मैं सम्यक्दर्शन रहित वस्तुका स्वरूप न पिछाना, मैं अत्याचारी मिथ्यादृष्टि मो समान अर अधर्मी कौन, वे महा मुनि मेरे मंदिर आहारको आये अर मैं नवधा भक्तिकर आहार न दिया। जो साधुको देख सन्मान न करें अर भक्तिकर अन्न जल न देय सो मिथ्यादृष्टि है, मैं पापी पापात्मा पापका भाजन महा निन्द्य मो समान और अज्ञानी कौन, मैं जिनवाणीसे विमुख, अब मैं जौं लग उनका दर्शन न करूं तौलग मेरे मनका दाह न मिटे, चारण मुनिनि की तो यही रीति है चौमासे निवास तो एक स्थान करें अर आहार अनेक नगरीविषै कर आवें, चारण ऋद्धिके प्रभाव कर उनके अंगसे जीवोंको बाधा न होय ॥

अथानन्तर कार्त्तिक की पूनो नजीग जान सेठ अर्हद्दत्त महासम्यक्दृष्टि नृपतुल्य विभूति जाके, अयोध्यातैं मथुराको सर्वकुटुम्ब सहित सप्त ऋषिके पूजन निमित्त चला, जाना है मुनिनिका माहात्म्य जाने अर अपनी बारम्बार निन्दा करै है रथ हाथी पियादे तुरंगनिके असवार इत्यादि बडी सेनासहित योगीश्वरनिकी पूजाको शीघ्रही चला, बडी विभूति कर युक्त शुभ ध्यानविषै तत्पर कातिक शुदी सप्तमीके दिन मुनिनिके चरणनिविषै जाय पहुंचा। वह उत्तम सम्यक्तका धारक विधिपूर्वक मुनिबन्दनाकर मथुरा विषै अतिशोभा करावता भया, मथुरा स्वर्ग समान सोहती भई, यह वृत्तान्त सुन शत्रुघन

शीघ्रही महा तुरंग चढा सप्त ऋषिनिके निकट आया अर शत्रुघनकी माता सुप्रभा भी मुनिनिकी भक्ति कर पुत्रके पीछे ही आई अर शत्रुघन नमस्कार कर मुनिनिके मुख धर्म श्रवण करता भया, मुनि कहते भए हे नृप ! यह संसार असार है वीतरागका मार्ग सार है, जहां श्रावकके बारह व्रत कहे, मुनिके अठाईस मूल गुण कहे मुनीनिको निर्दोष आहार लेना अकृत अकारित राग रहित प्रासुक आहार विधिपूर्वक लीये योगीश्वरोंके तपकी वधवारी होय तब वह शत्रुघन कहता भया—हे देव आपके आये या नगरतैं मरी गई, रोग गए, दुर्भिक्ष गया, सब विघ्न गए, सुभिक्ष भया सब साता भई प्रजाके दुख गए सर्व समृद्धि भई जैसे सूर्यके उदयतैं कमलनी फूले, कोई दिन आप यहां ही तिष्ठो ।

तब मुनि कहते भए—हे शत्रुघन ! जिन आज्ञा सिवाय अधिक रहना उचित नाहीं, यह चतुर्थकाल धर्मके उद्योतका कारण है याविषैं मुनीन्द्रका धर्म भव्य जीव धारै हैं जिनआज्ञा पाले हैं महामुनिनिके केवलज्ञान प्रगट होय है मुनिसुव्रतनाथ तो मुक्त भए अब नमि, नेमि, पार्श्व, महावीर चार तीर्थंकर और होवेंगे बहुरि पंचमकाल जाहि दुखमा काल कहिये सो धर्मकी न्यूनतारूप प्रवरतेगा, तासमय पाखण्डी जीवनिकर जिनशासन अति ऊंचा है तो हू आच्छादित होयगा जैसे रज कर सूर्यका बिम्ब आच्छादित होय पाखण्डी निर्दई दया धर्मको लोपकर हिंसाका मार्ग प्रवर्तन करेंगे तासमय मसान समान ग्राम अर प्रेत समान लोक कुचेष्टाके करणहारे होवेंगे, महाकुधर्मविषैं प्रवीण क्रूर चोर पाखण्डी दुष्टजीव तिनकर पृथिवी पीडित होयगी, किसाण दुखी होवेंगे, प्रजा निर्धन होयगी, महा हिंसक जीव परजीवनिके घातक होवेंगे निरंतर हिंसाकी वढवारी होयगी पुत्र माता पिताकी आज्ञासे विमुख होवेंगे अर माता पिता हू स्नेहरहित होवेंगे अर कलिकालविषै राजा लुटेरे होवेंगे कोई सुखी नजर न आवेगा कहिवेके सुखी वे पापाचित्त दुर्गतिकी दायक कुकथा कर परस्पर पाप उपजावेंगे । हे शत्रुघन ! कलिकालविषै कषायकी बहु-

लता होवेगी अर अतिशय समस्त विलय जावेंगे चारण मुनि देव विद्याधरनिका आवना न होयगा। अज्ञानी लोक नग्नमुद्राके धारक मुनिनिको देख निन्दा करेंगे, मलिनचित्त मूढजन अयोग्यको योग्य जानेंगे जैसे पतंग दीपककी शिखाविषै पडे तैसे अज्ञानी पापपंथविषै पड दुर्गतिके दुख भोगेंगे अर जे महा शांत स्वभाव तिनकी दुष्ट निंदा करेंगे, विषयी जीवनिको भक्तिकर पूजेंगे, दीन अनाथ जीवनिको दया भावकर कोई न देवेगा अर मायाचारी दुराचारिनिको लोक देवेंगे सो वृथा जायगा जैसे शिलाविषै बीज बोय निरंतर सींचे तो हू कुछ कार्यकारी नाहीं, तैसे कुशील पुरुषनिको विनय भक्तिकर दीया कल्याणकारी नहीं, जो कोई मुनिनिकी अवज्ञा करै है अर मिथ्या मार्गियोंको भक्तिकर पूजे है सो मलयागिरिचंदनको तजकर कंटकवृक्षको अंगीकार करै है ऐसा जानकर हे वत्स ! तू दान पूजा कर जन्म कृतार्थकर, गृहस्थीको दान पूजा ही कल्याणकारी है अर समस्त मथुराके लोक धर्मविषै तत्पर होवो, दया पालो, साधर्मीयोंसे वात्सल्य धारो, जिनशासनकी प्रभावना करो, घर घर जिनबिम्ब थापो पूजा अभिषेककी प्रवृत्ति करो जाकर सब शांति हो, जो जिनधर्मका आराधन न करेगा अर जाके घरमें जिनपूजा न होयगी, दान न होवेगा ताहि आपदा पीडेगी जैसे मृगको व्याघ्री भखै तैसे धर्मरहितको मरी भखेगी अंगुष्ठ प्रमाण हू जिनेंद्रकी प्रतिमा जिसके विराजेगी उसके घरविषैसे मरी यूं भाजेगी जैसे गरुडके भयसे नागिनी भागे ये वचन मुनिनिके सुन शत्रुघनने कही—हे प्रभो ! जो आप आज्ञा करी त्यों ही लोक धर्मविषै प्रवर्तेंगे ॥

अथानन्तर मुनि आकाश मार्ग विहार कर अनेक निर्वाण भूमि वंदकर सीताके घर आहारको आये, कैसे हैं मुनि ? तप ही है धन जिनके सीता महा हर्षको प्राप्त होय श्रद्धा आदि गुणोंकर मण्डित परम अन्नकर विधिपूर्वक पारणा करावती भई, मुनि आहार लेय आकाशके मार्ग विहार कर गये श-

त्रुघनने नगरीके बाहिर अर भीतर अनेक जिनमंदिर कराए घर घर जिनप्रतिमा पधराईं नगरी सब उपद्रवरहित भई. वन उपवन फल पुष्पादिक कर शोभित भए, वापिका सरोवरी कमलों कर मंडित सोहती भई पक्षी शब्द करते भए कैलाशके तटसमान उज्वल मंदिर नेत्रोंको आनन्दकारी विमान तुल्य सोहते भए अर सर्व किसाण लोक संपदाकर भरे सुखसूं निवास करते भए गिरिके शिखर समान ऊंचे अनाजोंके ढेर गावोंविषै सोहते भए स्वर्ण रत्नादिककी पृथिवीविषै विस्तीर्णता होती भई सकल लोक सुखी रामके राज्यविषै देवों समान अतुल विभूतिके धारक धर्म अर्थ काम विषै तत्पर होते भए शत्रुघन मथुराविषै राज्य करे रामके प्रतापसे अनेक राजाओं पर आज्ञा करता सोहे जैसे देवोंविषै वरुण सोहे या भांति मथुरापुरीका ऋद्धिके धारी मुनिनिके प्रतापकर उपद्रव दूर होता भया। जो यह अध्याय बांचे सुने सो पुरुष शुभनाम शुभगोत्र शुभसातावेदनीका बंध करै जो साधुवोंकी भक्ति विषै अनुरागी होय अर साधुवोंका समागम चाहै वह मनवांछित फलको प्राप्त होय या साधुवोंके संगको पायकर धर्मको आराध कर प्राणी सूर्यसे भी अधिक दीप्तिको प्राप्त होवें हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मथुराका उपसर्ग निवारण वर्णन करनेवाला बानवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९२ ॥

अथानन्तर विजियार्धकी दक्षिण श्रेणिविषै रत्नपुरनामा नगर वहां राजा रत्नरथ उसकी राणी पूर्णचन्द्रानना उसके पुत्री मनोरमा महारूपवती उसे यौवनवती देख राजा वर ढूंढवेकी बुद्धिकर व्याकुल भया मंत्रियोंसे मंत्र किया कि यह कुमारी कौनको परणाऊं या भांति राजा चितासंयुक्त कईएक दिन गए एक दिन राजाकी सभाविषै नारद आया राजाने बहुत सन्मान किया नारद सबही लौकिक

रीतियोंविषै प्रवीण, उसे राजाने पुत्रीके विवाहनेका वृत्तांत पूछा तब नारदने कही रामका भाई लक्ष्मण महा सुन्दर है जगतविषै मुख्य है चक्रके प्रभाव कर नवाए हैं समस्त नरेंद्र जिसने ऐसी कन्या उसके हृदयविषै आनन्ददायिनी होवे जैसे कुमुदनीके वनको चांदनी आनंददायनी होय। जब या भांति नारदने कही तब रत्नरथके पुत्र हरिवेग मनोवेग वायुवेगादि महामानी स्वजनोंके घातकर उपजा है वैर जिनके प्रलयकालकी अग्नि समान प्रज्वलित होय कहते भए जो हमारा शत्रु जिसे हम मारा चाहें उसे कन्या कैसे देवें यह नारद दुराचारी है, इसे यहांसे काढो, ऐसे वचन राजपुत्रोंके सुन किंकर नारद पर दौडे तब नारद आकाश मार्ग विहार कर शीघ्र ही अयोध्या लक्ष्मण पै आया अनेक देशांतरकी वार्त्ता कह रत्नरथकी पुत्री मनोरमाका चित्राम दिखाया, सो वह कन्या तीनलोककी सुंदरियोंका रूप एकत्र कर मानों बनाई है। सो लक्ष्मण चित्रपट देख अति मोहित होय कामके वश भया यद्यपि महा धीर वीर है तथापि वशीभूत होय गया, मनविषै विचारता भया जो यह स्त्रीरत्न मुझे न प्राप्त होय तो मेरा राज्य निष्फल अर जीतव्य वृथा। लक्ष्मण नारदसे कहता भया—हे भगवान्! आपने मेरे गुणकीर्त्तन किये अर उन दुष्टोंने आपसे विरोध किया, सो वे पापी प्रचण्डमानी महा क्षुद्र दुरात्मा कार्यके विचारसे रहित हैं उनका मान मैं दूर करूंगा आप समाधानविषै चित्त लावो तिहारे चरण मेरे सिर पर हैं अर उन दुष्टोंको तिहारे पायन पाडूंगा ऐसा कहकर विराधित विद्याधरको बुलाया अर कही रत्नपुर ऊपर हमारी शीघ्र ही तयारी है तातैं पत्र लिख सर्व विद्याधरोंको बुलावो रणका सरंजाम करावो॥

तब विराधितने सबोंको पत्र पठाये वे महासेना सहित शीघ्र ही आए लक्ष्मण राम सहित सब नृपोंको लेकर रत्नपुरकी तरफ चले जैसे लोकपालों सहित इंद्र चले, जीत जिसके सन्मुख है नानाप्रकारके शस्त्रोंके समूह कर आच्छादित करी हैं सूर्यकी किरण जाने, सो रत्नपुर जाय पहुंचे उज्वल छत्रकर शो-

भित तब राजा रत्नरथ परचक्र आया जान अपनी समस्त सेना सहित युद्धको निकसा, महातेज कर। सो चक्र करोत कुठार बाण खडग वरछी पाश गदादि आयुधानिकर तिनके परस्पर महा युद्ध भया, अप्सरोंके समूह युद्ध देख योधावों पर पुष्पवृष्टि करते भए, लक्ष्मण परसेनारूप समुद्रके सोखिवेको वडवानल समान आप युद्ध करनेको उद्यमी भया, परचक्रके योधा रूप जलचरोंके क्षयका कारण, सो लक्ष्मणके भयकर रथोंके तुरंगोंके हाथियोंके असवार सब दशोंदिशाओंको भागे अर इंद्रसमान है शक्ति जिनकी, ऐसे श्रीराम अर सुग्रीव हनूमान इत्यादि सब ही युद्धको प्रवरते इन योधाओंकर विद्याधरोंकी सेना ऐसे भागी जैसे पवन कर मेघ पटल विलाय जावें तब रत्नरथ अर रत्नरथके पुत्रोंको भागते देख नारदने परम हर्षित होय ताली देय हंसकर कहा अरे रत्नरथके पुत्र हो! तुम महाचपल दुराचारी मंदबुद्धि लक्ष्मणके गुणोंकी उच्चता न सह सके सो अब अपमानको पाय क्यों भागो हो तब उन्होंने कुछ जवाव नहीं दिया उसी समय मनोरमा कन्या अनेक सखियों सहित रथपर चढकर महा प्रेमकी भरी लक्ष्मणके समीप आई जैसे इंद्राणी इंद्रके समीप आवे, उसे देखकर लक्ष्मण क्रोधरहित भए, भ्रुकुटी चढ रही थी सो शीतल वदन भए कन्या आनन्दकी उपजावनहारी तब राजा रत्नरथ अपने पुत्रों सहित मान तज नानाप्रकारकी भेट लेकर श्रीराम लक्ष्मणके समीप आया राजा देश कालकी विधिको जाने है अर देखा है अपना अर इनका पुरुषार्थ जिसने तब नारद सबके बीच रत्नरथको कहते भए हे रत्नरथ अब तेरी क्या वार्ता तू रत्नरथ है कै रजरथ है वृथा मान करे हुता सो नारायण बलदेवोंसे कहा मान अर ताली वजाय रत्नरथके पुत्रोंसे हंसकर कहता भया—हो रत्नरथके पुत्र हो! यह वासुदेव जिनको तुम अपने घरमें उद्धत चेष्टा रूप होय मनविषे आया सो ही कही अब पायन क्यों पडो हो? तब वे कहते भए—हे नारद! तिहारा कोप भी गुण करै जो तुम हमसे कोप किया तो बडे पुरुषोंका सम्बन्ध भया, इनका संबंध दुर्लभ

है या भांति क्षणमात्र वार्ता कर सब नगरविषै गए श्रीरामको श्रीदामा परणाई रति समान है रूप जाका उसे पायकर राम आनन्दसे रमते भए अर मनोरमा लक्ष्मणको परणाई सो साक्षात् मनोरमा ही है, या भांति पुण्यके प्रभाव कर अद्भुत वस्तुकी प्राप्ति होय है तातैं भव्य जीव सूर्यसे अधिक प्रकाश रूप जो वीतरागका मार्ग उसे जानकर दया धर्मकी आराधना करो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामकूं रतिदामाका लाभ अर लक्ष्मणकूं मनोरामाका लाभ वर्णन करनेवाला त्राणवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९३ ॥

अथानन्तर और भी विजयार्धके दक्षिण श्रेणिविषै विद्याधर हुते वे सब लक्ष्मणने युद्धकर जीते कैसा है युद्ध ? जहां नानाप्रकारके शस्त्रोंके प्रहारकर अर सेनाके संघट्टकर अंधकार होय रहा है। गौतम स्वामी कहै हैं–हे श्रेणिक ! वे विद्याधर अत्यंत दुस्सह महा विषधर समान हुते सो सब राम लक्ष्मणके प्रतापकर मान रूप विषसे रहित होय गए, इनके सेवक भए तिनकी राजधानी देवोंकी पुरी समान तिनके नाम कैयक तुझे कहूं हूं–रविप्रभ धनप्रभ कांचनप्रभ मेघप्रभ शिवमंदिर गंधर्वगति अमृतपुर लक्ष्मीधरप्रभ किन्नरपुर मेघकूट मर्त्यगति चक्रपुर रथनूपुर बहुरव श्रीमलय श्रीगृह अरिंजय भास्करप्रभ ज्योतिपुर चंद्रपुर गंधार, मलय सिंहपुर श्रीविजयपुर भद्रपुर यक्षपुर तिलक स्थानक इत्यादि बडे बडे नगर सो सब लक्ष्मणने वशमें किए सब पृथिवीको जीत, सप्त रत्न कर सहित लक्ष्मण नारायणके पदका भोक्ता होता भया, सप्तरत्नोंके नाम चक्र शंख धनुष शक्ति गदा खडग कौस्तुभ मणि अर रामके चार हल मुशल रत्नमाला गदा। या भांति दोनों भाई अभेद भाव पृथिवीका राज्य करें, तब श्रेणिक गौतम स्वामीको पूछता भया–हे भगवान ! तिहारे प्रसादसे मैं राम लक्ष्मणका माहात्म्य विधिपूर्वक सुना अब ल-

वण अंकुशकी उत्पत्ति अर लक्ष्मणके पुत्रोंका वर्णन सुना चाहूं हूं सो आप कहो। तब गौतम गणधर कहते भए—हे राजन्! मैं कहूं हूं सुन—राम लक्ष्मण जगतविषै प्रधान पुरुष निःकंटक राज्य भोगते भए तिनके दिन पक्ष मास वर्ष महा सुखसे व्यतीत होंय जिनके बडे कुलकी उपजी देवांगना समान स्त्री लक्ष्मणके सोलहहजार तिनमें आठ पटराणी कीर्ति समान लक्ष्मी समान रति समान गुणवती शीलवती अनेक कलामें निपुण महा सौम्य सुन्दराकार तिनके नाम प्रथम पटराणी राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या दूजी रूपवती जिस समान और रूपवान नाहीं तीजी वनमाला चौथी कल्याणमाला पांचमी रतिमाला छठी जिनपद्मा जिसने अपने मुखकी शोभाकर कमल जीते सातमी भगवती आठमी मनोरमा अर रामके राणी आठहजार देवांगना समान तिनविषै चार पटराणी जगतविषै प्रसिद्ध कीर्ति जिनमें प्रथम जानकी दूजी प्रभावती तीजी रतिप्रभा चौथी श्रीदामा इन सबोंके मध्य सीता सुंदर लक्षण ऐसी सोहै ज्यों तारानिमें चंद्रकला अर लक्ष्मणके पुत्र अढाईसे तिनमें कैयकोंके नाम कहूं हूं सो सुन—

वृषभ धरण चन्द्र शरभ मकरध्वज हरिनाग श्रीधर मदन यह महाप्रसिद्ध सुन्दर चेष्टाके धारक जिनके गुणनि कर सब लोकनिके मन अनुरागी अर विशिल्याका पुत्र श्रीधर अयोध्यामें ऐसा सोहै जैसा आकाशविषै चन्द्रमा अर रूपवती का पुत्र पृथिवीतिलक सो पृथिवीमें प्रसिद्ध अर कल्याणमाला का पुत्र महा कल्याण का भाजन मंगल अर पद्मावती का पुत्र विमलप्रभ अर वनमालाका पुत्र अर्जुनप्रभ अर अतिवीर्य की पुत्री का पुत्र श्रीकेशी अर भगवतीका पुत्र सत्यकेसी अर मनोरमाका पुत्र सुपार्श्वकीर्ति ये सब ही महा बलवान पराक्रमके धारक शस्त्र शास्त्र विद्यामें प्रवीण इन सब भाईनिमें परस्पर अधिक प्रीति जैसे नख मांसमें दृढ कभी भी जुदे न होवें, तैसे भाई जुदे नाहीं, योग्य है चेष्टा जिनकी परस्पर प्रेमके भरे वह उसके हृदयमें तिष्ठे वह वाके हृदयमें तिष्ठे जैसे स्वर्गमें देव रमें तैसे ये

कुमार अयोध्यापुरीमें रमते भये, जे प्राणी पुण्याधिकारी हैं पूर्व पुण्य उपार्जे हैं महाशुभ चित्त हैं तिनके जन्मसे लेकर सकल मनोहर वस्तु ही आय मिले हैं रघुवंशिनिके साढे चारकोटि कुमार महामनोज्ञ चेष्टा के धारक नगरके वन उपवनादि में महा मनोग्य चेष्टासहित देवानि समान रमते भये अर राम लक्ष्मण के सोलह हाजार मुकुटबंध राजा सूर्यहूतैं अधिक तेजके धारक सेवक होते भये।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं राम लक्ष्मणकी ऋद्धि वर्णन करनेवाला चौरानवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९४ ॥

अथानन्तर रामलक्ष्मणके दिन अति आनन्दसे व्यतीत होय हैं धर्म अर्थ काम ये तीनों इनके अविरुद्ध होते भये, एक समय सीता सुखसे विमानसमान जो महिल तामें शरदके मेघ समान उज्ज्वल सेज्ज पर सोवती थी सो पिछले पाहिर वह कमलनयनी दोय स्वप्न देखती भई बहुरि दिव्य वादित्रनिके नाद सुन प्रतिबोधको प्राप्त भई निर्मल प्रभात भए स्नानादि देह क्रियाकर सखिनि सहित स्वामीपै गई जायकर पूछती भई–हे नाथ! मैं आज रात्रिविषै स्वप्ने देखे तिनका फल कहो, दोय उत्कृष्ट अष्टापद शरदके चन्द्रमासमान उज्वल अर क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र ताके शब्द समान जिनके शब्द कैलाशके शिखरसमान सुन्दर सर्व आभरणानिकर मंडित महा मनोहर हैं केश जिनके अर उज्ज्वल हैं दाढ जिनकी सो मेरे मुखमें पैठे अर पुष्पक विमानके शिखरसे प्रबल पवनके झकोरकर मैं पृथ्वीविषै पडी तब श्रीरामचन्द्र कहते भये–हे सुंदरि! दोय अष्टापद मुखमें पैठे देखे ताके फलकर तेरे दोय पुत्र होंयगे अर पुष्पक विमानसे पृथिवीविषै पडना प्रशस्त नाहीं सो कछु चिंता न करो, दानके प्रभावसे क्रूर ग्रह शांत होवेंगे॥

अथानन्तर वसन्तसमयरूपी राजा आया तिलक जाति के वृक्ष फूले सोई उसके बषतर अर नीम जाति के वृक्ष फूले वेई गजराज तिनपर आरूढ अर आंब मौर आये सो मानो बसन्तका धनुष अर कमल फूले सो बसन्तके बाण अर केसरी फूले वेई रतिराजके तरकश अर भ्रमर गुंजार करै हैं सो मानो निर्मल श्लोकोंकर बसंत नृप का यश गावै हैं अर कदम्ब फूले तिनकी सुगंध पवन आवै है सोई मानों वसंत नृपके निश्वास भये अर मालतीके फूल फूले सो मानो वसंत शीतकालादिक अपने शत्रुनिको हंसै है अर कोयल मिष्ट वाणी बोले है सो मानों वसंतराजाके वचन हैं या भांति वसंत समय नृपतिकीसी लीला धरे आया । वसंतकी लीला लोकनिको कामका उद्वेग उपजावनहारी है बहुरि यह वसंत मानों सिंह ही है आकोट जाति वृक्षादिके फूल वेई हैं नख जाके अर कुरवक जातिके वृक्षनिके फूल आए तेई भए दाढ़ जाके अर महारक्त अशोकके पुष्प वेई हैं नेत्र जाके अर चंचलपल्लव वेई हैं जिन्हा जिसकी ऐसा बसंत केसरी आय प्राप्त भया लोकोंके मनकी वृत्ति सोई भई गुफा तिनमें पैठा । महेंद्रनामा उद्यान नंदनवन समान सदा ही सुंदर है सो बसंत समय अतिसुंदर होता भया, नानाप्रकारके पुष्पनिकी पाखुडी अर नानाप्रकारकी कूपल दक्षिणदिशिकी पवनकर हालती भई सो मानों उन्मत्त भई घूमे हैं अर वापिका कमलादिक करि आच्छादित अर पक्षिनिके समूह नाद करे हैं अर लोक सिवाणोंपर तथा तीरपर बैठे हैं अर हंस सारस चकवा क्रौंच मनोहर शब्द करे हैं अर कारंड बोल रहे हैं इत्यादि मनोहर पक्षिनिके मनोहर शब्दकरि रागी पुरुषनिको राग उपजावें हैं, पक्षी जलविषै पडै हैं अर उठै हैं तिनकर निर्मल जल कलोल रूप होय रहा है जल तो कमलादिक कर भरा है अर स्थल जो है सो स्थल पद्मादिक पुष्पनि कर भरे हैं अर आकाश पुष्पनिकी मकरंदकर मंडित होय रहा है, फूलनिके गुच्छे अर लता वृक्ष अनेकप्रकारके फूल रहे हैं बनस्पति की परमशोभा होय रही है ता समय सीता कछु गर्भ

के भारकर दुर्बलशरीर भई तब राम पूछते भये—हे कांते ! तेरे जो अभिलाषा होय सो पूर्ण करूं। तब सीता कहती भई—हे नाथ ! अनेक चैत्यालानिके दर्शन करवेकी मेरे बांछा है, भगवानके प्रतिबिंब पांचो वर्णके लोकविषै मंगलरूप तिनको नमस्कार करवेको मेरा मनोरथ है, स्वर्ण रत्नमई पुष्पनिकर जिनेंद्रको पूजूं यह मेरे महाश्रद्धा है अर कहा बांछूं ? ये सीताके वचन सुनकर राम हर्षित भये, फूल गया है मुखकमल जिनका राजलोकविषै विराजते हुते सो द्वारपालीको बुलाय आज्ञा करी कि हे भद्रे! मंत्रिनिको आज्ञा पहुंचावो जो समस्त चैत्यालयनिविषै प्रभावना करें अर महेंद्रोदयनाम उद्यानविषै जे चैत्यालय हैं तिनकी शोभा करावें अर सर्व लोकको आज्ञा पहुंचावो कि जिन मंदिरविषै पूजा प्रभावना आदि अति उत्सव करें अर तोरणध्वजा घंटा झालरी चंदोवा सायवान महामनोहर वस्त्रनिके बनावें तथा सुन्दर समस्त उपकरण देहुरा चढावें, लोक समस्त पृथिवी विषै जिनपूजा करैं अर कैलाश सम्मेद शिखर पावापुर चंपापुर गिरनार शत्रुंजय मांगीतुंगी आदि निर्वाण क्षेत्रनिविषै विशेष शोभा करावो कल्याण रूप दोहुला सीताको उपजा है सो पृथिवीविषै जिन पूजाकी प्रवृत्ति करो हम सीतासहित धर्म क्षेत्रनिमें विहार करेंगे।

यह रामकी आज्ञा सुन वह द्वारपाली अपनी ठौर अन्यको राखकर जाय मंत्रिनिको आज्ञा पहुंचावती भई अर वे स्वामीकी आज्ञा प्रमाण अपने किंकरनिको आज्ञा करते भए। सर्व चैत्यालयनिविषै शोभा कराई अर महा पर्वतोंकी गुफाओंके द्वार पूर्ण कलश थापे, मोतिनिके हारनिकर शोभित अर विशाल स्वर्णकी भीतिविषै मणिनिके चित्राम रचे, महेंद्रोदय नाम उद्यानकी शोभा नंदन वनकी शोभा समानकर अत्यन्त निर्मल शुद्धमणिनिके दर्पण थंभविषै थापे अर झरोखनिके मुखविषै निर्मल मोतिनिके हार लटकाये सो जलनीझरना समान सोहैं अर पांच प्रकारके रत्ननिकी चूर्णकर भूमि मंडित

करी अर सहस्रदल कमल तथा नानाप्रकारके कमल तिनकर शोभा करी अर पांच वर्णके मणिनिके दंड
तिनविषै महा सुन्दर वस्त्रनिके ध्वजा लगाय मंदिरनिके शिखर पर चढाई, अर नाना प्रकारके पुष्पनिकी
माला जिनपर भ्रमर गुंजार करैं ठौर ठौर लुंबाई हैं अर विशाल वादित्रशाला नाट्यशाला अनेक रची
हैं तिनकर बन अति शोभै है मानों नंदन वन ही है तब श्रीरामचन्द्र इंद्रसमान सब नगरके लोकनिकर
युक्त समस्त राजलोकनिसहित वनविषै पधारे। सीता अर आप गजपर आरूढ कैसे सोहैं ? जैसे शची
सहित इंद्र ऐरावत गजपर चढे सोहैं अर लक्ष्मण भी परम ऋद्धिको धरे वनविषै जाते भए अर और हू
सब लोक आनन्दसे वनविषै गये, अर सबनिके अन्न पान वनही में भया जहां महा मनोग्य लतानिके
मंडप अर केलिके वृक्ष तहां राणी तिष्ठी अर और हू लोक यथायोग्य वनविषै तिष्ठे, राम हाथीतैं उतर-
कर निर्मल जलका भरा जो सरोवर नानाप्रकारके कमलनिकर संयुक्त उसविषै रमते भए जैसे इन्द्र
क्षीर सागरविषै रमै तहां क्रीडाकर जलतैं बाहिर आये, दिव्य सामग्रीकर विधिपूर्वक सीतासहित जिने-
न्द्रकी पूजा करते भए, राम महा सुन्दर अर बनलक्ष्मी समान जे बल्लभा तिनकर मंडित ऐसे सोहते
भये मानो मूर्तिवंत वसंत ही है। आठ हजार राणी देवांगना समान तिन सहित राम ऐसे सोहैं मानों ये
तारानिकर मंडित चन्द्र ही हैं अमृतका आहार अर सुगंध का विलेपन मनोहर सेज मनोहर आसन
नानाप्रकारके सुगंध माल्यादिक स्पर्श रस गंधरूप शब्द पांचों इंद्रियनिके विषय अति मनोहर रामको प्राप्त
भए जिनमंदिरविषै भलीविधिसे नृत्य पूजा करी, पूजा प्रभावनाविषै रामके अति अनुराग होता भया, सूर्य-
हूतैं अधिक तेजके धारक राम देवांगनासमान सुंदर जे दारा तिनसहित कैयक दिन सुखसे बनविषै तिष्ठे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै जिनेंद्रपूजाकी सीताकूं
अभिलाषा गर्भका प्रादुर्भाव वर्णन करनेवाला पिचाणवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९५ ॥

अथानन्तर प्रजा के लोक रामके दर्शन की अभिलाषा कर वनही विषै आये जैसे तिसाये पुरुष सरोवरपै आवें, तब बाहिरले दरवानने लोकोंके आवने का वृत्तान्त द्वारपालीयोंसे कहा। वे द्वारपाली भीतर राजलोकमें रामसे जायकर कहती भई कि—हे प्रभो ! प्रजाके लोक आपके दर्शनको आये हैं अर सीताके दाहिनी आंख फुरकी तब सीता विचारती भई यह आंख मुझे क्या कहे है। कछू दुःखका आगमन वतावै है। आगे अशुभके उदय कर समुद्र के मध्यमें दुख पाये तौ हू दुष्ट कर्म संतुष्ट न भया क्या और भी दुख दीया चाहे है जो इस जीवने रागद्वेष के योग कर कर्म उपार्जे हैं तिन का फल ये प्राणी अवश्य पावे हैं काहू कर निवारा न जाय तब सीता चिंतावती होय और राणीनिसे कहती भई—मेरी दाहिनी आंख फर्कनेका फल कहो। तब एक अनुमतिनामा राणी महाप्रवीण कहती भई—हे देवि ! या जीवने जे कर्म शुभ अथवा अशुभ उपार्जे हैं वे या जीव के भले बुरे फल के दाता हैं कर्मही को काल कहिये अर विधि कहिये अर दैव कहिये ईश्वर भी कहिये, सब संसारी जीव कर्मनिके आधीन हैं, सिद्ध परमेष्ठी कर्मनिसे रहित हैं।

बहुरि गुणदोषकी ज्ञाता राणी गुणमाला सीताको रुदन करती देख धीर्य बंधाय कहती भई—हे देवी ! तुम पतिके सबनिविषै श्रेष्ठ हो, तुमको काहू प्रकारका दुःख नाहीं अर और राणी कहती भई—बहुत विचारकर कहा ? शांतिकर्म करो, जिनेन्द्रका अभिषेक अर पूजा करावो अर किम इच्छक दान देवो जाकी जो इच्छा होय सो ले जावो, दान पूजाकर अशुभका निवारण होय है तातैं शुभ कार्यकर अशुभको निवारो। या भांति इन्होंने कही तब सीता प्रसन्न भई अर कही—योग्य है, दान पूजा अभिषेक अर तप ये अशुभके नाशक हैं दानधर्म विघ्नका नाशक वैरका नाशक है पुण्यका अर जशका मूल कारण है यह विचारकर भद्रकलश नामा भंडारीको बुलायकर कही—मेरे प्रसूति होय तौलग किमिच्छा

दान निरन्तर देवो। तब भद्रकलशने कही जो आप आज्ञा करोंगी सोही होयगा, यह कहकर भंडारी गया अर जिनपूजादि शुभक्रियाविषै प्रवरता जितने भगवानके चैत्यालय हैं तिनाविषैं नाना प्रकारके उपकरण चढाये अर सब चैत्यालयानिमें अनेक प्रकारके वादित्र बजवाये मानों मेघ ही गाजै हैं अर भगवान्के चरित्र पुराण आदिके ग्रंथ जिनमन्दिरनिविषै पधराये अर त्रैलोक्यके पाठ समोसरणके पाठ द्वीप समुद्रांतके पाठ प्रभुके मन्दिरोंमें पधराये अर दूध, दही, घृत, जल, मिष्टान्नके भरे कलश अभिषेककों पठाये अर सब खोजाओंमें प्रधान जो खोजा सो वस्त्राभूषण पहरे हाथी चढा नगरविषै घोषणा फेरे जाको जो इच्छा होय सो ही लेवो। या भांति विधिपूर्वक दान पूजा उत्सव कराये, लोक पूजा दान तप आदिविषै प्रवर्तें पापबुद्धिरहित समाधानको प्राप्त भये। सीता शांतचित्त धर्ममार्गविषै अनुरक्त भई अर श्रीरामचंद्र मण्डपविषै आय तिष्ठे। द्वारपालने जे नगरीके लोक आये हुते ते रामसे मिलाये। स्वर्ण रत्नकर निर्मापित अद्भुत सभाको देख प्रजाके लोक चकित होय गये, हृदयको आनन्दके उपजावनहारे राम तिनको देखकर नेत्र प्रसन्न भये। प्रजाके लोक हाथजोड नमस्कार करते भये, कांपे है तन जिनका अर डरे है मन जिनका। तब राम कहते भए, हे लोको! तिहारे आगमका कारण कहो। तब विजयसुराजी मधुमान सुलोधर काश्यप पिंगल कालोपम इत्यादि नगरके मुखिया मनुष्य निश्चल होय चरणनिकी तरफ चौंके। गल गया है गर्व जिनका राज तेजके प्रतापकर कछु कह न सके। यद्यपि चिरकालमें सोच सोच कहा चाहैं तथापि इनके मुखरूप मंदिरसे बाणीरूप वधू न निकसे। तब रामने बहुत दिलासाकर कही तुम कौन अर्थ आये हो सो कहो। या भांति कही तोभी वे चित्राम कैसे होय रहे कछु न कहैं लज्जारूप फांसकर बंधा है कंठ जिनका अर चलायमान हैं नेत्र जिनके जैसे हिरणके बालक व्याकुलचित्त देखें तैसे देखें। तब तिनविषै मुख्य विजय नाम पुरुष चलायमान है शब्द जिसका सो कहता भया—हे देव! अभयदानका

प्रसाद होय। तब रामने कही तुम काहू बातका भय मत करो तिहारे चित्तविषै जो होय सो कहो तिहारा दुःख दूरकर तुमको साता उपजाऊंगा तिहारे औगन न लूंगा गुण ही लूंगा जैसे मिले हुए दूध जल तिनमें जलको टार हंस दूध ही पीवे हैं। श्रीरामने अभयदान दीया तो भी अतिकष्टसे विचार २ धीरे स्वरकर विजय हाथ जोड सिर निवाय कहता भया कि हे नाथ नरोत्तम ! एक वीनती सुनो अब सकल प्रजा मर्यादा रहित प्रवर्तै है। यह लोक स्वभावहीसे कुटिल हैं अर एक दृष्टांत प्रगट पावें तब इनको अकार्य करनेविषै कहा भय ?

जैसे वानर सहज ही चपल है अर महाचपल जो यंत्रपिंजरा उसपर चढा तब कहा कहना। निर्बलोंकी यौवनवंत स्त्री पापी बलवंत छिद्र पाय बलत्कार हरे हैं अर कोईयक शीलवंती विरहकर पराये घर अत्यंत दुखी होय हैं तिनको कोईयक सहाय पाय अपने घर ले आवे हैं सो धर्मकी मर्यादा जाय है, यह न जाय सो यत्न करो प्रजाके हितकी बांछा करो जिस विधि प्रजाका दुख टरे सो करो या मनुष्य लोकविषै तुम बडे राजा हो तुम समान अर कौन तुम ही जो प्रजाकी रक्षा न करोगे तो कौन करेगा नदियोंके तट तथा वन उपवन कूप वापिका सरोवरके तीर ग्राम ग्रामविषै घर घरविषै सभाविषै एक यही अपवादकी कथा है और नाहीं कि श्रीराम राजा दशरथके पुत्र सर्व शास्त्रविषै प्रवीण सो रावण सीताको हर ले गया ताहि घरविषै ले आये तब औरोंका कहा दोष है जो बडे पुरुष करैं सो सब जगतको प्रमाण जिस रीति राजा प्रवर्ते उसही रीति प्रजा प्रवर्ते "यथा राजा तथा प्रजा" यह वचन है या भांति दुष्टचित्त निरंकुश भए पृथिवीविषै अपवाद करे हैं तिनका निग्रह करो। हे देव ! आप मर्यादाके प्रवर्तक पुरुषोत्तम हो एक यही अपवाद तिहारे राज्यविषै न होता तो तिहारा जो राज्य इंद्रसे भी अधिक है। यह वचन विजयके सुनकर क्षणएक रामचन्द्र विषादरूप मुद्गरके मारे चलायमान चित्त होय गए चित्तविषै चितवते भए

यह कौन कष्ट पडा मेरा यशरूप कमलोंका वन अपयशरूप अग्निकर जलने लगा है जिस सीताके निमित्त मैं विरहका कष्ट सहा सो मेरे कुलरूप चन्द्रमाको मलिन करे है अयोध्यामें मैं सुखके निमित्त आया अर सुग्रीव हनूमानादिकसे मेरे सुभट सो मेरे गोत्ररूप कुमुदनीको यह सीता मलिन करे है जिसके निमित्त मैंने समुद्र तिर रणसंग्राम कर रिपुको जीता सो जानकी मेरे कुलरूप दर्पणको कलुषित करे है अर लोक कहे हैं सो सांच है दुष्ट पुरुषके घरविषै तिष्ठी सीता मैं क्यों लाया अर सीतासे मेरा अतिप्रेम जिसे क्षणमात्र न देखूं तो विरहकर आकुलता लहूं अर वह पतिव्रता मोसे अनुरक्त उसे कैसे तजूं जो सदा मेरे नेत्र अर उरविषै वसै महागुणवती निर्दोष सीता सती उसे कैसे तजूं अथवा स्त्रियोंके चित्तकी चेष्टा कौन जाने जिनविषै सब दोषोंका नायक मन्मथ वसे है धिकार स्त्रीके जन्मको सर्वदोषोंकी खान आतापका कारण निर्मल कुलविषै उपजे पुरुषोंको कर्दम समान मलिनताका कारण है, अर जैसे कीचविषै फंसा मनुष्य तथा पशु निकस न सके तैसे स्त्रीके रागरूप पंकविषै फसा प्राणी निकस न सके, यह स्त्री समस्त बलका नाश करणहारी है अर रागका आश्रय है अर बुद्धिको भ्रष्ट करे है अर आषटवे को खाई समान है निर्वाण सुखकी विघ्न करणहारी ज्ञानकी उत्पत्तिको निवारणहारी भवभ्रमणका कारण है भस्मसे दवी अग्नि समान दाहक है डांभकी सूई समान तीक्ष्ण है देखवे मात्र मनोग्य परन्तु अपवादका कारण ऐसी सीता उसे मैं दुख दूर करवे निमित्त तजूं जैसे सर्प कांचिलीको तजे फिर चितवै है जिसकर मेरा हृदय तीव्रस्नेहके बंधनकर वशीभूत सो कैसे तजी जाय, यद्यपि मैं स्थिर हूं तथापि यह जानकी निकटवर्तिनी अग्निकी ज्वाला समान मेरे मनको आताप उपजावे है अर यह दूर रही भी मेरे मनको मोह उपजावे जैसे चन्द्ररेखा दूरही से कुमुदनीको विकसित करे, एक ओर लोकापवादका भय अर एक ओर सीताके दुर्निवार स्नेहका भय अर राग कर विकल्पके सागरविषै पडा हूं अर सीता सर्व प्रकार देवांगनासे भी

श्रेष्ठ महापतिव्रता सती शीलरूपिणी मोसे सदा एकाचित्त उसे कैसे तजूं अर जो न तजूं तो अपकीर्ति प्रगट होय है इस पृथिवीविषै मोसमान और दीन नाहीं स्नेह अर अपवादका भय उसविषै लगा है मन जिसका दोनोंकी मित्रताका तीव्र विस्तार वेगकर वशीभूत जो राम सो अपवादरूप तीव्र कष्टको प्राप्त भए सिंहकी है ध्वजा जिसके ऐसे राम तिनको दोनों वातोंकी अति आकुलतारूप चिंता असाताका कारण दुस्सह आताप उपजावती भई जैसे जेष्ठके मध्यान्हका सूर्य दुस्सह दाह उपजावे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामकूं लोकापवादकी चिंताका वर्णन करनेवाला छिआनवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९६ ॥

अथानन्तर श्रीराम एकाग्र चित्तकर द्वारपालको लक्ष्मणके बुलावनेकी आज्ञा करते भये सो द्वारपाल लक्ष्मणपै गया आज्ञा प्रमाण तिनको कही, लक्ष्मण द्वारपालके वचन सुनकर तत्काल तेज तुरंग परचढ रामके निकट आया हाथ जोड नमस्कारकर सिंहासनके नीचे पृथिवीपर बैठा रामके चरणोंकी ओर है दृष्टि जाकी राम उठकर आधे सिंहासन पर ले बैठे, शत्रुघन आदि सब ही राजा अर विराधित आदि सब ही विद्याधर यथा योग्य बैठे पुरोहित श्रेष्ठी मन्त्री सेनापति सब ही सभामें तिष्ठे तब क्षण एक विश्रामकर रामचन्द्रने लक्ष्मणसे लोकापवादका वृत्तांत कहा, सुनकर लक्ष्मण क्रोधकर लालनेत्र भये अर योधावोंको आज्ञाकरी अवार मैं उन दुर्जनोंके अंत करवेको जाऊंगा पृथिवीको मृषावादरहित करूंगा जे मिथ्या वचन कहैं हैं तिनकी जिह्वा छेद करूंगा उपमारहित जो शील व्रतकी धारणहारी सीता वाकी जे निन्दा करें हैं तिनका क्षय करूंगा। या भांति लक्ष्मण महाक्रोधरूप भये नेत्र अरुण होय गये तब श्रीराम इन वचनोंसे शांत करते भये कि—हे सौम्य ! यह पृथिवी सागर पर्यंत उसकी श्रीऋषभदेवने

रक्षा करी वहुरि भरतने प्रतिपालना करी अर इक्ष्वाकुवंशके तिलक भये जिनकी पीठ रणमें रिपुओंने न देखी जिनकी कीर्तिरूप चान्दनीमे यह जगत् शोभित है सो अपने वंशविषै अनेक यशके उपजावन हारे भए अब मैं क्षणभंगुर पाप रूप रागके निमित्त यशको कैसे मलिन करूं, अल्प भी अकीर्ति जो न टारिये तो वृद्धिको प्राप्त होय अर उन नीतिवान् पुरुषोंकी कीर्ति इंद्रादिक देवोंसे गाईये है ये भोग विनाशीक तिनसे क्या जिनसे अकीर्ति रूप अग्नि कीर्तिरूप वनको वाले यद्यपि सीता सती शीलवन्ती निर्मल चित्त है तथापि इसको घरविषै राखे मेरा अपवाद न मिटै यह अपवाद शस्त्रादिकसे हता न जाय यद्यपि सूर्यकमलोंके वनका प्रफुल्लित करणहारा है अति तिमिरका हरणहारा है तथापि रात्रिके होते सूर्य अस्त होय है तैसे अपवाद रूप रज महा विस्तारको प्राप्त भई तेजस्वी पुरुषोंकी कांतिकी हानि करे है सो यह रज निवारनी चाहिए। हे भ्रातः! चन्द्रमा समान निर्मल गोत्र हमारा अकीर्तिरूप मेघमालासे आछादा जाय है सो न आछादा जाय येही मेरे यत्न है जैसे सूके इंधनके समूहविषै लगी आग जलसे वुझाये विना वृद्धिको प्राप्त होय है तैसे अकीर्तिरूप अग्नि पृथिवीविषै विस्तरै है सो निवारे विना न मिटै यह तीर्थंकर देवोंका कुल महा उज्ज्वल प्रकाश रूप है याको कलंक न लगे सो उपाय करो यद्यपि सीता महा निर्दोष शीलवंती है तथापि मैं तजूंगा अपनी कीर्ति मलिन न करूंगा। तब लक्ष्मण कहता भया कैसा है लक्ष्मण? रामके स्नेहविषै तत्पर है बुद्धि जिसकी। हे देव! सीताको शोक उपजावना योग्य नाहीं लोक तो मुनियोंका भी अपवाद करे हैं जिन धर्मका अपवाद करे हैं, तो क्या लोकापवादसे धर्म तजिये है तैसे लोकापवाद मात्रसे जानकी कैसे तजिये जो सब सतियोंके सीस विराजे है काहू प्रकार निंदाके योग्य नाहीं अर पापी जीव शीलवन्त प्राणियोंकी निंदा करें हैं क्या तिनके वचनसे शीलवन्तोंको दोष लागे है वे निर्दोष ही हैं, ये लोक अविवेकी हैं इनके वचनविषै परमार्थ नहीं विषकर दूषित हैं नेत्र जिनके

वे चन्द्रमाको श्यामरूप देखे हैं परन्तु चन्द्रमा श्वेत ही हैं श्याम नहीं तैसे लोकोंके कहे निकलंकियोंको कलंक नाहीं लगे है जे शीलसे पूर्ण हैं तिनको अपना आत्मा ही साक्षी है पर जीवनिका प्रयोजन नाहीं नीच जीवनिके अपवादकरि पण्डित विवेकी क्रोधको न प्राप्त होंय जैसे स्वानके भौंकनेतें गजेंद्र नाहीं कोप करे हैं। ये लोक विचित्रगति हैं तरंग समान है चेष्टा जिनकी परदोष कथवेविषै आसक्त सो इन दुष्टोंका स्वयमेव ही निग्रह होयगा जैसे कोई अज्ञानी शिलाको उपाडकर चन्द्रमाकी ओर चगाय (फेंके) बहुरि मारा चाहे सो सहज ही आप निस्सन्देह नाशको प्राप्त होय है जो दुष्ट पराए गुणनिको न सहसकें अर सदा पराई निंदा करें हैं. सो पापकर्मी निश्चयसेती दुर्गतिको प्राप्त होय हैं जब ऐसे वचन लक्ष्मणने कहे। तब श्रीरामचन्द्र कहते भए—हे लक्ष्मण! तू कहे है सो सब सत्य है तेरी बुद्धि रागद्वेषरहित अति मध्यस्थ महाशोभायमान है परन्तु जे शुद्ध न्यायमार्गी मनुष्य हैं वे लोकविरुद्ध कार्जको तजें हैं जाकी दशोंदिशामें अकीर्तिरूप दावानलकी ज्वाला प्रज्वलित है ताको जगतमें कहा सुख अर कहा ताका जीतव्य? अनर्थका करणहारा जो अर्थ ताकर कहा अर विषकर संयुक्त जो औषधि ताकर कहा? अर जो बलवान् होय जीवनिकी रक्षा न करे शरणागतपालक न होय ताके बलकर कहा अर जाकर आत्मकल्याण न होय ता आचरणकर कहा? चारित्र सोई जो आत्महित करे अर जो अध्यात्मगोचर आत्माको न जानै ताके ज्ञानकर कहा? अर जाकी कीर्तिरूपवधू अपवादरूप बलवान् हरे ताका जन्म प्रशस्त नाहीं ऐसे जीवनेतैं मरण भला, लोकापवादकी बात तो दूर ही रहो, मोहि यह महा दोष है जो पर पुरुषने हरी सीता मैं बहुरि घरमें लाया। राक्षसके भवनमें उद्यान तहां यह बहुत दिन रही अर ताने दूती पठाय मनवांछित प्रार्थना करी अर समीप आय दुष्ट दृष्टिकर देखी अर मनमें आये सो वचन कहे ऐसी सीता मैं घरमें ल्याया या समान अर लज्जा कहा? सो मूढोंसे कहा न होय? या संसारकी मायाविषै मैं हू मूढ

भया। या भांति कहकर आज्ञा करी जो शीघ्रही कृतांतवक्र सेनापतिको बुलावो, यद्यपि दो बालकानिके गर्भसहित सीता है तौहू याहि तत्काल मेरे घरतैं निकासो यह आज्ञा करी। तब लक्ष्मण हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया—हे देव! सीताको तजना योग्य नाहीं, यह राजा जनककी पुत्री महा शीलवती जिनधर्मणी कोमल चरणकमल जाके महा सुकुमार भोरी सदा सुखिया अकेली कहां जायगी? गर्भके भारकर संयुक्त परम खेदको धरे यह राजपुत्री तिहारे तजे कौनके शरण जायगी अर आपने देखवेकी कही सो देखवेकर कहा दोष भया? जैसे जिनराजके निकट चढाया द्रव्य निर्माल्य होय है ताहि देखिए है परन्तु दोष नाहीं अर अयोग्य अभक्ष्य वस्तु आंखानिसे देखिए हैं परन्तु देखे दोष नाहीं, अंगीकार कीये दोष है तातैं हे नाथ! मोपर प्रसन्न होवो, मेरी बीनती सुनो महा निर्दोष सीता सती तुमविषै एकाग्र है चित्त जाका ताहि न तजो तब राम अत्यन्त विरक्त होय क्रोधमें आगए अर अप्रसन्न होय कही—लक्षमण अब कछू न कहना, मैं यह अवश्य निश्चय किया शुभ होवे अथवा अशुभ होवे, निर्मानुष वन जहां मनुष्यका नाम नाहीं सुनिये वहां द्वितीय सहायरहित अकेली सीताको तजो अपने कर्मके योगकर जीवो अथवा मरो एक क्षणमात्र हू मेरे देशविषै अथवा नगरमें काहूके मंदिरविषै मत रहो वह मेरी अपकीर्तिकी करणहारी है, कृतांतवक्रको बुलाया सो चार घोडेका रथ चढा बडी सेनासहित जाका बंदीजन विरद बखाने हैं लोक जय जयकार करें हैं सो राजमार्ग होय आया जापर छत्र फिरता अर धनुष चढाय बखतर पहिरे कुण्डल पहिरे ताहि या विधि आवता देख नगरके नर नारी अनेक विकल्पकी वार्ता करते भए। आज यह सेनापति शीघ्र दौडा जाय है सो कौन पर विदा होयगा आप कौन पर कोप भए हैं? आज काहूका कछू विगाड है ज्येष्ठके सूर्य समान ज्योति जाकी काल समान भयंकर शस्त्रनिके समूहके मध्य चला जाय है सो आज न जानिये कौन पर कोप है? या भांति नगरके नर नारी

वार्ता करै हैं अर सेनापति रामदेवके समीप आया स्वामीको सीस निवाय नमस्कार कर कहता भया— हे देव ! जो आज्ञा होय सो ही करूं ॥

तब रामने कही, शीघ्रही सीताको ले जावो अर मार्गविषै जिनमंदिरनिका दर्शन कराय सम्मेद शिखर अर निर्वाण भूमि तथा मार्गके चैत्यालय तहां दर्शन कराय वाकी आशा पूर्णकर अर सिंहनाद नामा अटवी जहां मनुष्यका नाम नाहीं तहां अकेली मेल उठ आवो। तब ताने कही जो आज्ञा होयगी सोही होयगा कछू वितर्क न करो अर जानकीपै जाय कही—हे माता ! उठो, रथविषै चढो, चैत्यालयनिकी बांछा है सो करो। या भांति सेनापतिने मधुरस्वरकर हर्ष उपजाया तब सीता रथ चढी, चढते समय भगवानको नमस्कार किया अर यह शब्द कहा जो चतुर्विध संघ जयवंत होवें। श्री रामचन्द्र महाजिनधर्मी उत्तम आचरणविषै तत्पर सो जयवन्त होहु अर मेरे प्रमादसे असुन्दर चेष्टा भई होय सो जिनधर्मके अधिष्ठाता देव क्षमा करो अर सखी जन लार भई तिनसे कही तुम सुखसे तिष्ठो, मैं शीघ्रही जिन चैत्यालयनिके दर्शनकर आऊं हूं। या भांति तिनसे कही अर सिद्धनिको नमस्कारकर सीता आनन्दसे रथ चढी सो रत्न स्वर्णका रथ तापर चढी ऐसी सोहती भई जैसी विमान चढी देवांगना सोहै, वह रथ कृतांतवक्रने चलाया सो ऐसा शीघ्र चलाया जैसा भरत चक्रवर्तीका चलाया बाण चले सो चलते समय सीताको अपशकुन भये, सूके वृक्षपर काग बैठा विरस शब्द करता भया अर माथा धुनता भया अर सन्मुख स्त्री महाशोककी भरी सिरके बाल बखेरे रुदन करती भई इत्यादि अनेक अपशकुन भए तो पुणि सीता जिनभक्तिविषै अनुरागिणी निश्चलचित्त चली गई, अपशकुन न गिने, पहाडनिके शिखर कंदरा अनेक वन उपवन उलंघ कर शीघ्रही रथ दूर गया गरुडसमान वेग जाका ऐसे अश्वोंकर युक्त सुफेद ध्वजाकर विराजित सूर्य के रथ समान रथ शीघ्र चला। मनोरथ समान वह रथ तापर चढी

रायकी राणी इन्द्राणीसमान सो अति सोहती भई कृतांतवक्र सारथीने मार्गविषै सीताको नानाप्रकारकी भूमि दिखाई ग्राम नगर बन अर कमलसे फूल रहे हैं सरोवर नानाप्रकारके वृक्ष, कहूं सघन वृक्षनिकर वन अन्धकार रूप है। जैसे अन्धेरी रात्रि मेघमालाकर मंडित महा अन्धकार रूप भासै कछू नजर न आवै अर कहूं विरले वृक्ष हैं सघनता नाहीं तहां कैसा भासै है जैसा पंचमकालमें भरत एरावत क्षेत्रनिकी पृथिवी विरले सत्पुरुषनिकर सोहै अर कहूं वनी पतझर होय गई है सो पत्ररहित पुष्प फलादिरहित छायारहित कैसी दीखै जैसे वडे कुलकी स्त्री विधवा। भावार्थ—विधवा हू पुत्र रूपी पुष्प फलादि रहित हैं अर आभरण तथा सुन्दर वस्त्रादि रहित अर कांतिरहित हैं शोभा रहित हैं तैसी वनी दीखै है अर कहूं एक वनविषै सुंदर माधुरी लता आम्रके वृक्षसे लगी ऐसी सोहै हैं जैसी चपल वेश्या, आम्रसूं लगि अशोककी बांछा करे हैं अर कैयक दावानल कर वृक्ष जर गये हैं सो नाहीं सोहै हैं जैसे हृदय क्रोधरूप दावानल कर जरा न सोहै अर कहूं एक सुंदर पल्लवनिके समूह मंद पवनकर हालते सोहै हैं मानों वसंतराजके आयवेकर वनपांक्ति रूप नारी आनंदसे नृत्यही करे हैं अर कहीं एक भीलनिके समूह तिनके जे कलकलाट शब्दकर मृग दूर भाग गए हैं अर पक्षी उड गये हैं अर कहीं एक वनी अल्प है जल जिनमें ऐसी नदी तिनकर कैसी भासें है जैसी संतापकी भरी विरहनी नायिका असुवन कर भरे नेत्र संयुक्त भासै अर कहूं एक वनी नाना पक्षिनिके नादकर मनोहर शब्द करै है अर कहूं एक निर्मल नीझरनावोंके नादकर शब्द करती तीव्रहास्य करे है अर कहूंइक मकरंदमें अति लुब्ध जे भ्रमर तिनके गुंजारकर मानों वनी वसंत नृपकी स्तुति ही करे है अर कहूंइक बनी फलनिकर नम्रीभूत भई शोभाको धरे है जैसे सफल पुरुष दातार नम्रीभूत भये सोहै हैं अर कहूं इक वायुकर हालते जे वृक्ष तिनकी शाखा हाले हैं अर पल्लव हाले हैं अर पुष्प पडे हैं सो मानों पुष्पवृष्टि ही करे हैं । इत्यादि रीतिको

धरे वनी अनेक क्रूर जीवानिकर भरी ताहि देखती सीता चली जाय है राममें है चित्त जाका मधुर शब्द सुनकर विचारती भई मानों रामके दुंदुभी बाजेही बाजे हैं। या भांति चितवती सीता आगे गंगा को देखती भई। कैसी है गंगा? अति सुन्दर हैं शब्द जाके अर जाके मध्य अनेक जलचर जीव मीन मकर ग्राहादिक विचरैं हैं तिनके विचरवेकर उद्धत लहर उठे हैं तातैं कम्पायमान भये हैं कमल जाविषै अर मूलसे उपाडे हैं तीरके उतंगवृक्ष जाने अर उखाडे हैं पर्वतनिके पाषाणोंके समूह जाने समुद्रकी ओर चली जाय है अति गम्भीर है उज्वल फूलोंकर शोभे है झागोंके समूह उठै हैं अर भ्रमते जे भवर तिनकर महा भयानक है अर दोनों ढाहावोंपर बैठे पक्षी शब्द करैं हैं सो परमतेजके धारक रथके तुरंग ता नदी को तिर पार भये, पवन समान है वेग जिनका जैसे साधु संसार समुद्रके पार होय। नदीके पार जाय सेनापति यद्यपि मेरुसमान अचलचित्त हुता तथापि दयाके योगकर अतिविषादको प्राप्त भया महा दुख-का भरा कछू कह न सके आंखानिते आंसू निकल आये रथको थांभ ऊंचे स्वरकर रुदन करने लगा ढीला होय गया है अंग जाका, जाती रही है कांति जाकी, तब सीता सती कहती भई—हे कृतांतवक्र! तू काहेको महादुखीकी न्याई रोवै है, आज जिनबन्दनाके उत्सवका दिन तू हर्षमें विषाद क्यों करै है? या निर्जन वनमें क्यों रोवे है तब वह अति रुदनकर यथावत् वृत्तांत कहता भया। जो वचन विषसमान अग्निसमान शस्त्र समान है। हे मातः! दुर्जनानिके वचनतैं राम अकीर्तिके भयसे जो न तजा जाय तिहारा स्नेह ताहि तजकर चैत्यालयनिके दर्शनकी तिहारे अभिलाषा उपजी हुती सो तुमको चैत्यालयोंके अर निर्वाण क्षेत्रोंके दर्शन कराय भयानक वनविषै तजी है। हे देवी! जैसे यति रागपरणतिको तजै तैसे राम ने तुमको तजी है, अर लक्ष्मणने जो कहिवेकी हद थी सो कही, कछू कमी न राखी तिहारे अर्थ अनेक न्यायके वचन कहे, परन्तु रामने हठ न छोडी। हे स्वामिनि! राम तुमसे नीराग भये अब तुमको धर्म

ही शरण है सो या संसारविषै न माता, न पिता, न भ्राता, न कुटुम्ब एक धर्म ही जीवका सहाई है। अब तुमको यह मृगोंका भरा वन ही आश्रय है। ये वचन सीता सुनकर वज्रपातकी मारीकैसी होय गई। हृदयविषै दुखके भारकर मूर्छाको प्राप्त भई बहुरि सचेत होय गद २ वाणीसे कहती भई—शीघ्रही मोहि प्राणनाथसे मिला। तब वाने कही—हे मातः! नगरी दूर रही अर रामका दर्शन दूर। तब अश्रुपातरूप जलकी धारासे मुखकमल प्रक्षालती हुई कहती भई कि—हे सेनापति! तू मेरे वचन रामसूं कहियो कि मेरे त्यागका विषाद आप न करणा, परम धीर्यको अवलंवनकर सदा प्रजाकी रक्षा करियो, जैसे पिता पुत्रकी रक्षा करै, आप महा न्यायवन्त हो अर समस्त कलाके पारगामी हो, राजाको प्रजा ही आनन्दका कारण है राजा वही जाहि प्रजा शरदकी पूनोंके चन्द्रमाकी न्याईं चाहै। अर यह संसार असार है महाभयंकर दुखरूप है जा सम्यक्दर्शन कर भव्यजीव संसारसे मुक्त होवे हैं सो तिहार आराधिवे योग्य है, तुम राजतैं सम्यक्दर्शनको विशेष भला जानियो। यह राज्य तो अविनाशी सुखका दाता है सो अभव्य जीव निंदा करें तो उनकी निंदाके भयसे हे पुरुषोत्तम! सम्यक्दर्शनको कदाचित् न तजना यह अत्यन्त दुर्लभ है जैसे हाथमें आया रत्न समुद्रविषै डालिये तो बहुरि कौन उपायसे हाथ आवै। अर अमृत फल अंधकूपमें डारा बहुरि कैसे मिले जैसे अमृतफलको डाल बालक पश्चाताप करै तैसे सम्यक्दर्शनसे रहित हुवा जीव विषाद करे है यह जगत दुर्निवार है जगतका मुख बंद करवेको कौन समर्थ जाके मुखमें जो आवे सो ही कहै तातैं जगतकी बात सुनकर जो योग्य होय सो करियो लोक गडालिका प्रवाह हैं सो अपने हृदयमें हे गुणभूषण! लौकिक वार्ता न धरणी अर दानसे प्रीतिके योगकर जनोंको प्रसन्न राखना अर विमल स्वभावकर मित्रोंको वश करना अर साधु तथा आर्यिका आहारको आवें तिनको प्रासुक अन्नसे अति भक्ति कर निरंतर आहार देना

अर चतुर्विध संघकी सेवा करनी, मन वचन कायकर मुनिको प्रणाम पूजन अर्चनादिकर शुभ कर्म उपार्जन करना अर क्रोधको क्षमाकर मानको निगर्वताकर मायाको निष्कपटता कर लोभको संतोष कर जीतना आप सर्व शास्त्रविषै प्रवीण हो सो हम तुमको उपदेश देने को समर्थ नहीं क्योंकि हम स्त्रीजन हैं आपकी कृपाके योगसे कभी कोई परिहास्यकर अविनय भरा वचन कहा हो तो क्षमा करियो ऐसा कहकर रथसे उतरी अर तृण पाषाणकरभरी जो पृथ्वी उसमें अचेत होय मूर्छा खाय पड़ी सो जानकी भूमि में पड़ी ऐसी सोहती भई मानों रत्नोंकी राशिही पडी है कृतांतवक्र सीताको चेष्टारहित मूर्छित देख महादुखी भया अर चित्तमें चितवता भया हाय यह महा भयानक वन अनेक दुष्ट जीवों कर भरा जहां जे महाधीर शूरवीर होंय तिनके भी जीवनेकी आशा नहीं तो यह कैसे जीवेगी ? इसके प्राण वचने कठिन हैं इस महासती माताको मैं अकेली बनमें तजकर जाऊं हूं सो मुझ समान निर्दई कौन, मुझे किसी प्रकार भी किसी ठौर शांति नहीं एक तरफ स्वामीकी आज्ञा अर एकतरफ ऐसी निर्दयता मैं पापी दुखके भवरविषै पडा हूं धिक्कार पराई सेवाको जगतविषै निंद्य पराधीनता तजो स्वामी कहे सो ही करना जैसे यंत्रको यंत्री बजावै त्योंही बाजे सो पराया सेवक यंत्र तुल्य है अर चाकरसे कूकर भला जो स्वाधीन आजीविका पूर्ण करे है जैसे पिशाचके वश पुरुष ज्यों वह वकावे त्यों बके तैसे नरेंद्रके वश नर वह जो आज्ञा करै सो करै चाकर क्या न करै अर क्या न कहै अर जैसे चित्रामका धनुष निष्प्रयोजन गुण कहिये फिणचको धरे है सदा नम्रीभूत है तैसे परकिंकर निःप्रयोजन गुणको धरे है सदा नम्रीभूत है धिक्कार किंकरका जीवना, पराई सेवा करनी तेजरहित होना है जैसे निर्माल्य वस्तु निंद्य है तैसे परकिंकरता निंद्य है धिग् २ पराधीनके प्राण धारणको यह पराधीन पराया किंकर टीकली समान है जैसे टीकली परतंत्र होय कूपका जीव कहिए जल हरै है तैसे यह परतंत्र होय पराए प्राण हरे है कभी भी चा-

करका जन्म मत होवे पराया चाकर काठकी पूतली समान है ज्यों स्वामी नचावै त्यों नाचै उच्चता उज्व-
लता लज्जा अर कांति तिनसे परकिंकर रहित है जैसे विमान पराये आधीन है चलाया चाले थमाया
थमें ऊंचा चलावे तो ऊंचा चढे नीचा उतारे तो नीचा उतरे धिकार पराधीनके जीतव्यको जो निर्मल
अपने मांसको बेचनहारा महालघु अपने अधीन नहीं सदा परतंत्र धिक्कार किंकरके प्राण धारणको मैं प-
राई चाकरी करी अर परवश भया तो ऐसे पाप कर्मको करूं हूं,जो इस निर्दोष महासतीको अकेली भ-
यानक वनमें तजकर जाऊं हूं। हे श्रेणिक! जैसे कोई धर्मकी बुद्धिको तजे तैसे वह सीताको वनविषै तज
कर अयोध्याको सन्मुख भया अतिलज्जावान् होयकर चला सीता याके गए पाछे केतीक वारमें मूर्छासे
सचेत होय महा दुखकी भरी यूथभ्रष्ट मृगीकी न्याई विलाप करती भई सो याके रुदन कर मानों सबही
वनस्पति रुदन करे हैं, वृक्षनिके पुष्प पडे हैं सोई मानों आंसू भए स्वतः स्वभाव महारमणीक याके
स्वर तिनकर विलाप करती भई महा शोककी भरी हाय कमलनयन राम नरोत्तम मेरी रक्षा करो मोहि
वचनालाप करो, अर तुम तो निरन्तर उत्तम चेष्टाके धारक हो महागुणवंत शांतचित्त हो तिहारा लेश-
मात्र हू दोष नाहीं तुम तो पुरुषोत्तम हो मैं पूर्वभवविषै जो अशुभकर्म कीए थे तिनके फल पाये जैसा
करना तैसा भोगना, कहा करै भर्तार अर कहा करे पुत्र तथा माता पिता बांधव कहा करे अपना कर्म
अपने उदय आवै सो अवश्य भोगना, मैं मन्दभागिनी पूर्व जन्मविषै अशुभ कर्म कीये ताके फलतैं या
निर्जन वनविषै दुखको प्राप्त भई, मैं पूर्वभवमें काहूका अपवाद किया परनिंदा करी होगी ताके पापकर
यह कष्ट पाया तथा पूर्वभवविषै गुरुनिके समीप व्रत लेकर भग्न कीया ताका यह फल पाया अथवा वि-
षफल समान जो दुर्वचन तिनकर काहूको अपमान कीया तातैं यह फल पाये अथवा मैं परभवमें कम-
लनिके वनविषै तिष्ठता चकवा चकवीका युगल विछोडा तातैं मोहि स्वामीका वियोग भया अथवा मैं

परभवमें कुचेष्टाकर हंस हंसीनिका युगल विछोडा जे कमलनिकर मण्डित सरोवरमें निवास करणहारे अर बडे बडे पुरुषनिको जिनकी चालकी उपमा दीजै अर जिनके वचन अति सुन्दर जिनके चरण चोंच लोचन कमल समान अरुण सो मैं विछोडे उनके दोषकर ऐसी दुख अवस्थाको प्राप्त भई अथवा मैं पापिनी कबूतर कबूतरीके युगल विछोडे हैं, जिनके लाल नेत्र आधीचिरमें समान अर परस्पर जिनविषै अतिस्नेह अर कृष्णागुरु समान जिनका रंग अथवा श्याम घटा समान अथवा धूम समान धूसरे आरंभी है मुखसे क्रीडा जिन्होंने अर कंठमें तिष्ठै हैं मनोहर शब्द जिनके, सो मैं पापिनी जुदे कीये अथवा भले स्थानसे बुरे स्थानमें भेले अथवा बांधे मारे ताके पापकर असंभाव्य दुःख मोहि प्राप्त भया अथवा वसंतके समय फूले वृक्ष तिनविषै कोलि करते कोकिल कोकिलीके युगल महामिष्ट शब्दके करनहारे परस्पर भिन्न भिन्न कीये, ताका यह फल है अथवा ज्ञानी जीवानिके बंदिवे योग्य महाव्रती जितेन्द्रिय महा मुनि तिनकी निन्दा करी, अथवा पूजा दानमें विघ्न किया, अर परोपकारविषै अन्तराय कीए, हिंसादिक पाप किए, ग्रामदाह, वनदाह स्त्री बालक पशुहत्यादि पाप कीए तिनके यह फल हैं अनछाना पानी पिया रात्रीको भोजन किया, बीधा अन्न भषा, अभक्ष्य वस्तुका भक्षण किया, न करिवे योग्य काम किए, तिनका यह फल है, मैं बलभद्रकी पटराणी स्वर्ग समान महलकी निवासिनी हजारां सहेली मेरी सेवाकी करनहारी सो अब पापके उदयकर निर्जन वनविषै दुखके सागरविषै डूबी कैसे तिष्ठूं ? रत्ननिके मंदिरविषै महा रमणीक वस्त्र तिनकर शोभित सुन्दर सेजपर शयन करणहारी मैं कहां पडी हूं सब सामग्रीकर पूर्ण महा रमणीक महलविषै रहणहारी मैं अब कैसी अकेली वनका निवास करूंगी ? महा मनोहर बीण वांसुरी मृदंगादिकके मधुर स्वर तिनकर सुख निद्राकी लेनहारी मैं कैसे भयंकर शब्द कर भयानक वन

विषै अकेली तिष्ठूंगी, रामदेवकी पटराणी अपयशरूपी दावानल कर जरी महा दुःखिनी एकाकिनी पापिनी कष्टका कारण जो यह वन जहां अनेक जातिके कीट अर करकस डाभकी अणी अर कांकरानि से भरी पृथिवी यामें कैसे शयन करूंगी ऐसी अवस्था भी पायकर मेरे प्राण न जांय तो ये प्राण ही वज्र के हैं अहो ऐसी अवस्था पायकर मेरे हृदयके सौ टूक न होय हैं सो यह वज्रका हृदय है कहा करूं कहां जाऊं कौनसे कहा कहूं कौनके आश्रय तिष्ठूं हाय गुणसमुद्र राम ! मोहि क्यों तजी, हे महाभक्त लक्षमण मेरी क्यों न सहाय करी। हाय पिता जनक हाय माता विदेही यह कहा भया ? अहो विद्याधरनिके स्वामी भामण्डल मैं दुखके भवरमें पडी कैसे तिष्ठूं ? मैं ऐसी पापिनी जो मोसहित पतिने परम संपदाकर जिनेन्द्रका दर्शन अर्चन चिंतया था सो मोहि इस वनीमें डारी।

हे श्रेणिक ! या भांति सीता सती विलाप करै है अर राजा वज्रजंघ पुण्डरीकपुरका स्वामी हाथी पकड़वे निमित्त वनमें आया था सो हाथी पकड़ बड़ी विभूति से पीछे जाय था सो ताकी सेनाके प्यादे शूर वीर कटारी आदि नानाप्रकारके शस्त्र धरे कमर बांधे आय निकसे सो याके रुदनके मनोहर शब्द सुनकर संशयको अर भयको प्राप्त भये एक पैंड भी न जाय सके, अर तुरंगानिके सवार हू ताका रुदन सुन खडे होय रहे उनको यह आशंका उपजी जो या वनविषै अनेक दुष्ट जीव तहां यह सुन्दर स्त्रीके रुदनका नाद कहां होय है मृग सुसा रीछ सांप रीछ ल्याली बघेरा आरणे भैंसे चीता गैंडा शार्दूल अष्टापद वन शूकर गज तिनकर विकराल यह वन ता विषै यह चन्द्रकला समान महामनोग्य कौन रोवै है ? यह कोई देवांगना सौधर्म स्वर्गसे पृथिवीविषै आई है । यह विचारकर सेनाके लोक आश्चर्यको प्राप्त होय खडे रहे अर वह सेना समुद्र समान जिसमें तुरंग ही मगर अर पयादे मीन अर हाथी

ग्राह हैं समुद्र भी गाजे अर सेना भी गाजे है अर समुद्रमें लहर उठे हैं सेनामें सूर्यकी किरणकर शस्त्रों-की जोति उठै है समुद्र भी भयंकर है सेना भी भयंकर है सो सकल सेना निश्चल होय रही ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सीताका वनविषै विलाप अर वज्रजंघका आगमन वर्णन करनेवाला सत्तानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९७ ॥

अथानन्तर जैसी महाविद्याकी थांभी गंगा थंभी रहे तैसे सेनाको थंभी देख राजा वज्रजंघ निकट वर्ती पुरुषोंको पूछता भया कि सेनाके थंभनेका कारण क्या है तब वह निश्चयकर राजपुत्रीके समा-चार कहते भये उससे पहिले राजाने भी रुदनके शब्द सुने, सुनकर कहता भया जिसका यह मनोहर रुदनका शब्द सुनिये है सो कहो कौन है तब कई एक अग्रेसर होय जायकर पूंछते भये—हे देवि ! तू कौन है अर इस निर्जन वनविषै क्यों रुदन करे है तो समान कोऊ और नाहीं तू देवी है अक नागकुमारी है अक कोई उत्तम नारी है तू महा कल्याण रूपिणी उत्तम शरीरकी धरणहारी तोहि यह शोक कहां हमको यह बडा कौतुक है। तब यह शस्त्रधारक पुरुषोंको देख त्रास भई कांपे है शरीर जाका सो भय-कर उनको अपने अपने आभरण उतारकर देने लगी तब वे स्वामीके भयकर यह कहते भये—हे देवी ! तू क्यों डरे है शोकको तज धीरता भज आभूषण हमको काहेको देवे है तेरे ये आभूषण तेरे ही रहो ये तोहि योग्य हैं हे माता ! तू विह्वल क्यों होय है विश्वास गह यह राजा वज्रजंघ पृथिवीविषै प्रसिद्ध महा नरोत्तम राजनीतिकर युक्त है अर सम्यक्दर्शनरूप रत्न भूषणकर शोभित है। कैसा है सम्यदर्शन जिस समान और रत्न नाहीं अविनाशी है अमोलिक है काहूसे हरा न जाय महा सुखका दायक शंकादिक मल रहित सुमेरु सारिखा निश्चल है हे माता ! जाके सम्यग्दर्शन होवे उसके गुण हम कहां लग वर्णन करें

यह राजा जिनमार्गके रहस्यका ज्ञाता शरणागतप्रतिपालक है परोपकारमें प्रवीण महा दयावान महा निर्मल पवित्रात्मा निंद्यकर्मसे निवृत्त लोकोंका पिता समान रक्षक, महा दातार जीवोंकी रक्षाविषै सावधान दीन अनाथ दुर्बल देह धारियोंको माता समान पाले है सिद्धि कार्यका करणहारा शत्रुरूप पर्वतानिको वज्रसमान है शास्त्र विद्याका अभ्यासी परधनका त्यागी परस्त्रीको माता बहिन बेटी समान मानै है अन्याय मार्गको अजगरसहित अन्धकूप समान जाने है, धर्मविषै तत्पर अनुरागी संसारके भ्रमणसे भयभीत सत्यवादी जितेंद्रिय है याके समस्त गुण जो मुखसे कहा चाहे सो भुजानिकर समुद्रको तिरा चाहे है। ये बात वज्रजंघके सेवक कहे हैं, इतनेविषै ही राजा आप आया, हाथीसे उतर बहुत विनयकर सहज ही है शुद्ध दृष्टि जाकी सो सीतातैं कहता भया—हे बहिन! वह वज्रसमान कठोर महा असमझ है जो तोहि ऐसे वनमें तजै अर तोहि तजते जाका हृदय न फट जाय। हे पुण्यरूपिणी ! अपनी अवस्थाका कारण कह, विश्वासको भज, भय मत करै अर गर्भका खेद मत करै। तब यह शोककर पीडितचित्त बहुरि रुदन करती भई। राजाने बहुत धीर्य बंधाया तब यह हंसकी न्याईं आंसू डार गद् गद् बाणीतैं कहती भई—हे राजन् ! मो मंदभागनीकी कथा अत्यंतदीर्घ है यदि तुम सुना चाहो हो तो चित्त लगाय सुनो, मैं राजा जनककी पुत्री भामण्डलकी बहिन राजा दशरथके पुत्रकी वधू सीता मेरा नाम रामकी राणी राजा दशरथने केकईको वरदान दीया हुता सो भरतको राज्य देकर राजा तो वैरागी भये अर राम लक्ष्मण वनको गए सो मैं पतिके संग वनमें रही, रावण कपटसे मोहि हर ले गया, ग्यारवे दिन मैंने पति की वार्ता सुन भोजन किया पति सुग्रीवके घर रहे बहुरि अनेक विद्याधरनिको एकत्रकर आकाशके मार्ग होय समुद्रको उलंघ लंका गये, रावणको युद्धमें जीत मोहि ल्याये बहुरि राजरूप कीचको तज भरत तो वैरागी भये। कैसे हैं भरत ? जैसे ऋषभदेवके भरत चक्रवर्ती तिन समान हैं उपमा जिनकी,

सो भरत तो कर्म कलंकरहित परमधामको प्राप्त भये अर केकई शोकरूप अग्निकर आतापको प्राप्त भई बहुरि वीतरागका मार्ग सार जानकर आर्यिका होय महा तपसे स्त्रीलिंग छेद स्वर्गविषै देव भई मनुष्य होय मोक्ष पावेगी। राम लक्ष्मण अयोध्याविषै इन्द्रसमान राज्य करें सो लोक दुष्टचित्त निरशंक होय अपवाद करते भये कि रावण हरकर सीताको लेगया बहुरि राम ल्याय घरमें राखी सो राम महा विवेकी धर्म शास्त्रके वेत्ता न्यायवन्त ऐसी रीति क्यों आचरें जिस रीति राजा प्रवर्तै उसी रीति प्रजा प्रवरते सो लोक मर्यादारहित होने लगे, कहैं—रामहीके घर यह रीति तो हमको कहा दोष? अर मैं गर्भसहित दुर्बल शरीर यह चिंतवन करती हुती कि जिनेन्द्रके चैत्यालयोंकी अर्चना करूंगी अर भरतार भी मुझ सहित जिनेंद्रके निर्वाण स्थानक अर आतिशय स्थानक तिनको बन्दना करनेको भावसहित उद्यमी भये हुते अर मोहि ऐसे कहते थे कि प्रथम तो हम कैलाश जाय श्री ऋषभदेवका निर्वाण क्षेत्र बन्देंगे बहुरि और निर्वाण क्षेत्रनिको बन्दकर अयोध्याविषैं ऋषभ आदि तीर्थंकर देवनिका जन्म कल्याणक है सो अयोध्याकी यात्रा करेंगे जेते भगवानके चैत्यालय हैं तिनका दर्शन करेंगे, कम्पिल्या नगरीविषै विमलनाथका दर्शन करेंगे अर रत्नपुरमें धर्मनाथका दर्शन करेंगे। कैसे हैं धर्मनाथ? धर्मका स्वरूप जीवनिको यथार्थ उपदेशै हैं बहुरि श्रावस्ती नगरी संभवनाथका दर्शन करेंगे अर चम्पापुरमें बासुपूज्यका अर काकंदीपुरमें पुष्पदन्तका, चंद्रपुरीविषै चंद्रप्रभका, कौशांबीपुरीमें पद्मप्रभका भद्रलपुरमें शीतलनाथका अर मिथिलापुरीमें मल्लिनाथ स्वामीका दर्शन करेंगे अर वाणारसीमें सुपार्श्वनाथ स्वामीका दर्शन करेंगे अर सिंहपुरमें श्रेयांसनाथका अर हस्तनागपुरमें शांति कुंथु अरहनाथका पूजन करेंगें अर हे देवि! कुशाग्रनगरमें श्रीमुनिसुव्रतनाथका दर्शन करेंगे जिनका धर्मचक्र अब प्रवर्तै है अर और हु जे भगवानके अतिशय स्थानक महापवित्र हैं पृथिवीमें प्रसिद्ध हैं तहां पूजा करेंगे, भगवानके चैत्य अर चैत्यालय सुर

असुर अर गन्धर्वनिकर स्तुति करवे योग्य हैं नमस्कार योग्य हैं तिन सवनिकी वन्दना हम करेंगे, अर पुष्पक विमानविषै चढ सुमेरुके शिखरपर जे चैत्यालय हैं तिनका दर्शनकर भद्रशाल वन नन्दन वन सौमनस वन तहां जिनेंद्रकी अर्चाकर अर कृत्रिम अकृत्रिम अढाई द्वीपविषै जैते चैत्यालय हैं तिनकी वन्दनाकर हम अयोध्या आवेंगे ॥

हे प्रिये ! भावसहित एकवार हू नमस्कार श्री अरहंतदेव को करें तो अनेक जन्मके पापनिसे छूटे हैं, हे कांते ! धन्य तेरा भाग्य, जो गर्भके प्रादुर्भावविषैं तेरे जिन वन्दना की वांछा उपजी, मेरे हू मनमें यही है तो सहित महापवित्र जिनमंदिरनिका दर्शन करूं । हे प्रिये ! पहिले भोगभूमिविषै धर्मकी प्रवृत्ति न हुती लोक असमञ्ज थे सो भगवान ऋषभदेवने भव्योंको मोक्ष मार्गका उपदेश दिया जिनको संसारभ्रमणका भय होय तिनको भव्य कहिये, कैसे हैं भगवान् ऋषभ ? प्रजा के पति जगतविषै श्रेष्ठ त्रैलोक्य कर वन्दवे योग्य नानाप्रकार आतिशय कर संयुक्त सुर नर असुरनिको आश्चर्यकारी ते भगवान भव्यों को जीवादिक तत्त्वोंका उपदेश देय अनेकोंको तारि निर्वाण पधारे सम्यक्तादि अष्ट गुणमंडित सिद्ध भए जिनका चैत्यालय सर्व रत्नमई भरत चक्रवर्तीने कैलाश पर कराया अर पांचसै धनुषकी रत्नमई प्रतिमा सूर्य्यहूतें अधिक तेजको धरे मंदिरविषै पधराई सो विराजै है जाकी अबहू देव विद्याधर गंधर्व किन्नर नाग दैत्य पूजा करे हैं जहां अप्सरा नृत्य करै हैं जो प्रभु स्वयंभू सर्वगति निर्मल त्रैलोक्यपूज्य जाका अन्त नाहीं अनन्तरूप अनंत ज्ञान विराजमान परमात्मा सिद्ध शिव आदिनाथ ऋषभ तिनकी कैलाश पर्वत पर हम चलकर पूजा कर स्तुति करेंगे ? वह दिन कव होयगा, या भांति मोसे कृपा कर वार्ता करते थे अर ताही समय नगरके लोक भेले होय आय लोकापवादकी दावानलसे दुस्सह वार्ता रामसे कही सो राम बडे विचारके कर्ता चित्तमें यह चिताई यह लोक स्वभाव ही कर वक्र

हैं सो और भांति अपवाद न मिटे या लोकापवादसे प्रियजनको तजना भला अथवा मरणा भला, लोकापवादतें यशका नाश होय कल्पान्त काल पर्यन्त अपयश जगत्में रहै सो भला नाहीं ऐसा विचार महाप्रवीण मेरा पति ताने लोकापवादके भयतैं मोहि महा अरण्यवनमें तजा मैं दोषरहित सो पति नीके जाने अर लक्ष्मणने बहुत कहा सो न माना, मेरे ऐसा ही कर्मका उदय जे विशुद्ध कुलमें उपजे क्षत्री शुभचित्त सर्व शस्त्रनिके ज्ञाता तिनकी यही रीति है अर काहूसे न डरें एक लोकापवादसे डरें। यह अपने निकासने का वृत्तांत कह बहुरि रुदन करने लगी शोकरूप अग्निकर तप्तायमान है चित्त जाका। सो याको रुदन करती अर रजकर धूसरा है अंग जाका महा दीन दुखी देख राजा वज्रजंघ उत्तम धर्मका धरणहारा अति उद्वेगको प्राप्त भया अर याको जनककी पुत्री जान समीप आय बहुत आदरसे धीर्य बंधाया, अर कहता भया हे शुभमते ! तू जिनशासनमें प्रवीण है शोक कर रुदन मत करै, यह आर्तध्यान दुखका बढावनहारा है, हे जानकी ! या लोककी स्थिति तू जाने है तू महा सुज्ञान अनित्य अशरण एकत्व अन्यत्व इत्यादि द्वादश अनुप्रेक्षा की चिंतवन करणहारी तेरा पति सम्यक् दृष्टि अर तू सम्यक्त्वसहित विवेकवन्ती है मिथ्या दृष्टि जीवनिकी न्याईं कहा बारम्बार शोक करै, तू जिनवाणीकी श्रोता अनेक बार महा मुनिनिके मुख श्रुतिके अर्थ सुने निरन्तर ज्ञान भावनाको धरणहारी तोहि शोक उचित नाहीं, अहो या संसारमें भ्रमता यह मूढ प्राणी वाने मोक्षमार्गको न जाना, यातैं कहा कहा दुख न पाये याको अनिष्टसंयोग इष्टवियोग अनेकबार भये यह अनादिकालसे भवसागरके मध्य क्लेश रूप भवरमें पडा है, या जीवने तिर्यंच योनिविषै जलचर नभचरके शरीर धर वर्षा शीत आताप आदि अनेक दुख पाये अर मनुष्य देह विषै अपवाद विरह रुदन क्लेशादि अनेक दुख भोगे अर नरकविषै शीत उष्ण छेदन भेदन शूलारोहण परस्पर घात-महा दुर्गंध क्षीरकुंडविषै निपात अनेक

रोग अनेक दुख लहे अर कबहू अज्ञान तपकर अल्प ऋद्धिका धारक देव हू भया तहां हू उत्कृष्ट ऋद्धिके धारक देवनिको देख दुखी भया, अर मरणसमान महा दुखी होय विलापकर मूवा अर कबहूं महा तपकर इन्द्रतुल्य उत्कृष्ट देव भया तोहू विषयानुरागकर दुखी ही भया। या भांति चतुर्गतिविषे भ्रमण करते या जीवने भववनविषे आधि व्याधि संयोग वियोग रोग शोक जन्म मृत्यु दुख दाह दरिद्रहीनता नाना-प्रकारकी वांछा विकल्पता कर शोच संताप रूप होय अनंत दुख पाये, अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्व लोक विषे ऐसा स्थानक नाहीं जहां या जीवने जन्म मरण न किये, अपने कर्म रूप पवनके प्रसंगकर भवसा-गर विषे भ्रमण करता जो यह जीव ताने मनुष्य देहविषे स्त्रीका शरीर पाया तहां अनेक दुख भोगे, तेरे शुभ कर्मके उदयकर राम सारिखे सुन्दर पति भये, जिनके सदा शुभका उपार्जन सो पुण्यके उदय कर पति सहित महा सुख भोगे अर अशुभके उदयतैं दुस्सह दुखको प्राप्त भई, लंकाद्वीपविषैं रावण हर कर लेगया तहां पतिकी वार्ता न सुन ग्यारह दिनतक भोजन विना रही अर जबतक पतिका दर्शन न भया तब तक आभूषण सुगंध लेपनादिरहित रही बहुरि शत्रुको हत पति ले आये तब पुण्यके उदय-तैं सुखको प्राप्त भई बहुरि अशुभका उदय आया तब बिना दोष गर्भवतीको पतिने लोकापवादके भय-तैं घरसे निकासी, लोकापवाद रूप सर्पके डसवे कर पति अचेत चित्त भया सो बिना समझे भयंकर वन में तजी। उत्तम प्राणी पुण्यरूप पुष्पनिका घर ताहि जो पापी दुर्वचनरूप अग्नि कर बाले हैं सो आपही दोष रूप दहनकर दाहको प्राप्त होय। हे देवी ! तू परम उत्कृष्ट पतिव्रता महासती है प्रशंसायोग्य है चेष्टा जाकी, जाके गर्भाधानविषे चैत्यालयानिके दर्शनकी बांछा उपजी अबहूं तेरे पुण्यही का उदय है तू महा शीलवती जिनमती है तेरे शीलके प्रसाद कर या निर्जन वनविषे हाथीके निमित्त मेरा आवना भया। मैं वज्रजंघ पुंडरीकपुरका आधिपति राजा द्विरदवाह सोमवंशी महाशुभ आचरणके धारक तिन

के सुबंधु महिषी नामा राणी ताका मैं पुत्र तू मेरे धर्मके विधान कर बडी बहिन है । पुंडरीकपुर चल शोक तज । हे बहिन ! शोकसे कछु कार्य सिद्ध नाहीं वहां पुंडरीकपुरसे राम तोहि ढूंढ कृपाकर बुलावेंगे । राम हू तेरे वियोगसे पश्चाताप कर अति व्याकुल हैं, अपने प्रमाद कर अमोलिक महा गुणवान रत्न नष्ट भया, ताहि विवेकी महा आदरसे ढूंढे ही, तातैं हे पतिव्रते ! निसंदेह राम तुझे आदरसे बुलावेंगे । या भांति वा धर्मात्माने सीताको शांतता उपजाई तब सीता धीर्य को प्राप्त भई मानों भाई भामंडल ही मिला तब वाकी अति प्रशंसा करती भई तू मेरा अति उत्कृष्ट भाई है महा यशवंत शूरवीर बुद्धिमान शांतचित्त साधर्मिनि पर वात्सल्यका करणहारा उत्तम जीव है । गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! राजा वज्रजंघ अधिगम सम्यग्दृष्टि, अधिगम कहिये गुरूपदेशकर पाया है सम्यक्त जाने अर ज्ञानी है परम तत्त्वका स्वरूप जाननहारा पवित्र है आत्मा जाकी साधु समान हैं जाके व्रत गुण शीलकर संयुक्त मोक्षमार्गका उद्यमी सो ऐसे सत्पुरुषनिके चरित्र दोषरहित पर उपकारकर युक्त कौनका शोक न निवारैं । कैसे हैं सत्पुरुष, जिनमतविषै अति निश्चल है चित्त जिनका सीता कहै है । हे वज्रंजघ ! तू मेरे पूर्व भवका सहोदर है सो जो या भवविषै तैने सांचा भाईपना जनाया मेरा शोक संताप रूप तिमिर हरा सूर्यसमान तू पवित्र आत्मा है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै सीताको वज्रजंघका धीर्य बंधावनेका वर्णन करनेवाला अठानेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९८ ॥

अथानन्तर वज्रजंघने सीताके चढवेको क्षणमात्रविषै अद्भुत पालकी मगाई सो सीता तापर आरूढ भई पालकी विमानसमान महा मनोग्य समीचीन प्रमाणकर युक्त सुन्दर हैं थंभ जाके श्रेष्ठ दर्पण

थंभोविषे जडे हैं अर मोतिनिकी झालरी कर पालकी मण्डित है अर चन्द्रमा समान उज्वल चमर तिन-
कर शोभित है, मोतिनिके हार जलके बुदबुदे समान शोभै हैं अर विचित्र जे वस्त्र तिनकर मण्डित है
चित्राम कर शोभित है सुन्दर हैं झरोखा जामें ऐसी सुखपालपर चढ परम ऋद्धि कर युक्त वडी सेना
मध्य सीता चली जाय है, आश्चर्यको प्राप्त भई कर्मोंकी विचित्रताको चिंतवे है तीन दिनविषै भयंकर व-
नको उलंघ पुण्डरीकपुरके देशमें आई, उत्तम है चेष्टा जाकी, सव देशके लोक माताको आय मिले ग्राम
ग्राममें भेट करें। कैसा है वज्रजंघका देश? समस्त जातिके अन्नकर जहां समस्त पृथिवी आच्छादित होय
रही है अर कूकडाउडान नजीक हैं ग्राम जहां, रत्ननिकी खान स्वर्ण रूपादिककी खान सुरपुर जैसे पुर
सो देखती थकी सीता हर्षको प्राप्त भई वन उपवनकी शोभा देखती चली जाय है, ग्रामके महंत भेटकर
नानाप्रकार स्तुति करें हैं। हे भगवती! हे माता! आपके दर्शन कर हम पापरहित भए कृतार्थ भए अर
वारम्बार वन्दना करते भये अर्घ पाद्य किये अर अनेक राजा देवनि समान आय मिले सो नानाप्रकार
भेट करते भए अर वारंवार बन्दना करते भए। या भांति सीता सती पैंड पैंड पर राजा प्रजानिकर
पूजी संती चली जाय है बज्रजंघका देश अति सुखी ठौर ठौर वन उपवनादिकर शोभित ठौर ठौर चै-
त्यालय देख अतिहर्षित भई मनविषै विचारे है जहां राजा धर्मात्मा होय वहां प्रजा सुखी होय ही। अ-
नुक्रम कर पुण्डरीकपुरके समीप आए सो राजाकी आज्ञातें सीताका आगमन सुन नगरके सब लोक स-
न्मुख आए अर भेट करते भए, नगरकी अति शोभा करी, सुगन्ध कर पृथिवी छांटी, गली बाजार सब
सिंगारे अर इंद्र धनुष समान तोरण चढाए अर द्वारनिविषे पूर्ण कलश थापे, जिनके मुख सुन्दरपल्लव-
युक्त हैं अर मंदिरनि पर ध्वजा चढी अर घर घर मंगल गावे हैं मानों वह नगर आनन्द कर नृत्य ही
करे है नगरके दरवाजे पर तथा कोटके कंगूरनिपर लोक खडे देखे हैं हर्षकी वृद्धि होय रही है नगरके

बाहिर अर भीतर राजद्वार तक सीताके दर्शनको लोक खडे हैं, चलायमान जे लोकानिके समूह तिनकर नगर यद्यपि स्थावर है तथापि जानिए जंगम होय रहा है। नानाप्रकारके वादित्र बाजैं हैं तिनके नादकर दशोंदिशा शब्दायमान होय रही हैं शंख बाजे हैं बंदीजन बिरद बखाने हैं समस्त नगरके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए देखे हैं अर सीताने नगरविषै प्रवेश किया जैसे लक्ष्मी देव लोकविषै प्रवेश करै वज्रजंघके मंदिरविषै अति सुन्दर जिनमंदिर हैं, सर्व राज लोककी स्त्री जन सीताके सन्मुख आईं, सीता पालकीसे उतर जिनमंदिरमें गई। कैसा है जिनमंदिर ? महा सुन्दर उपवन कर वेष्टित है अर वापिका सरोवरी तिनकर शोभित है, सुमेरु शिखर समान सुन्दर स्वर्णमई है जैसे भाई भामण्डल सीताका सन्मान करै तैसे वज्रजंघ आदर करता भया, वज्रजंघके समस्त परिवारके लोक अर राजलोककी समस्त राणी सीताकी सेवा करैं अर ऐसे मनोहर शब्द निरन्तर कहे हैं हे देवते ! हे पूज्ये ! हे स्वामिनी ! हे ईशानने ! सदा जयवन्त हो बहुत दिन जीवो आनन्दको प्राप्त होवो, वृद्धिको प्राप्त होवो आज्ञा करो। या भांति स्तुति करें अर जो आज्ञा करे सो सीस चढावें अति हर्षसे दौरकर सेवा करैं अर हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार करैं वहां सीता अति आनन्दतैं जिन धर्मकी कथा करती तिष्ठे अर जो सामंतनिकी भेट आवे अर राजा भेट करे सो जानकी धर्म कार्यमें लगावे यह तो यहां धर्मका आराधना करे है।

अर वह कृतांतवक्र सेनापाति तप्तायमान है चित्त जाका रथके तुरंग खेदको प्राप्त भए हुते तिनको खेदरहित करता हुवा श्रीरामचन्द्रके समीप आया याको आवता सुन अनेक राजा सन्मुख आए सो कृतांतवक्र आयकर श्रीरामचंद्रके चरणानिको नमस्कार कर कहता भया—हे प्रभो ! मैं आज्ञाप्रमाण सीताको भयानक वनविषै मेलकर आया हूं वाके गर्भमात्रही सहाई है। हे देव ! वह वन नानाप्रकारके भयंकर जीवानिके अति घोर शब्दकर महा भयकारी है अर जैसा [illegible] कहिये प्रेतनिका वन ताका आकार

देखा न जाय तैसे सघन वृक्षानिके समूह कर अन्धकार रूप है, जहां स्वतः स्वभाव आरणे भैंसे अर सिंह द्वेषकर सदा युद्ध करैं हैं अर जहां घूघू बसे हैं सो विरूप शब्द करैं हैं अर गुफानिमें सिंह गुंजार करैं हैं सो गुफा गुंजार रही हैं अर महाभयंकर अजगर शब्द करैं हैं अर चीतानिकर हते गये हैं मृग जहां कालको भी विकराल ऐसा वह वन ता विषै हे प्रभो ! सीता अश्रुपात करती महादीनबदन आपको जो शब्द कहती भई सो सुनो, आप आत्मकल्याण चाहो हो तो जैसे मोहि तजी तैसे जिनेंद्रकी भक्ति न तजनी जैसे लोकानिके अपवादकर मोमे अति अनुराग हुता तोहू तजी तैसे काहूके कहवेतैं जिनशासनकी श्रद्धा न तजनी। लोक विना विचारे निर्दोषानिको दोष लगावें है जैसें मोहि लगाया सो आप न्याय करो सो अपनी बुद्धिसे विचार यथार्थ करना काहूके कहेतैं काहूको झूठा दोष न लगावना अर सम्यक्दर्शनतैं विमुख मिथ्यादृष्टि जिनधर्मरूप रत्नका अपवाद करै हैं सो उनके अपवादके भयतैं सम्यक्दर्शनकी शुद्धता न तजनी वीतरागका मार्ग उरविषै दृढ धारणा, मेरे तजनेका या भवविषैं किंचित् मात्र दुख है अर सम्यक दर्शनकी हानितैं जन्म २ विषै दुख है या जीवको लोकविषै निधि रत्न स्त्री वाहन राज्य सब ही सुलभ हैं एक सम्यकदर्शन रत्न ही महादुलभ है। राजविषै पापकर नरकविषैं पडना है, एक ऊर्ध्वगमन सम्यक्दर्शनके प्रतापहीसे होय। जाने अपनी आत्मा सम्यग्दर्शनरूप आभूषणकर मंडित किया सो कृतार्थ भया। ये शब्द जानकीने कहे हैं जिनको सुनकर कौनके धर्मबुद्धि न उपजे—हे देव ! एक तो वह सीता स्वभावहीकर कायर अर महा भयंकर वनके दुष्ट जीवनितैं कैसे जीवगी ? जहां महा भयानक सर्पनिके समूह अर अल्पजल ऐसे सरोवर तिनविषै माते हाथी कर्दमकरैं हैं अर जहां मृगानिके समूह मृगतृष्णाविषै जल जान वृथा दौड व्याकुल होय हैं, जैसे संसारकी मायाविषै रागकर रागी जीव दुखी होय अर जहां कौंछिकी रजके संगकर मर्कट अति चंचल होय रहे हैं अर जहां तृष्णासे सिंह व्याघ्र

ल्यालियोंके समूह तिनकी रसनारूप पल्लव लहलहाट करै हैं अर चिरम समान लालनेत्र जिनके ऐसे क्रोधायमान भुजंग फुंकार करै हैं अर जहां तीव्र पवनके संचारकर क्षणमात्रविषैं वृक्षनिके पत्रोंके ढेर होय हैं अर महा अजगर तिनकी विषरूप अग्निकर अनेक वृक्ष भस्म होय गये हैं अर माते हाथिनिकी महा भयंकर गर्जना ताकर वह वन अति विकराल हैं अर वनके शूकरनिकी सेनाकर सरोवर मलिन जल होय रहे हैं, अर जहां ठौर ठौर भूमिविषै कांटे अर सांठे अर सांपोंकी बमी अर कंकर पत्थर तिन-कर भूमि महा संकटरूप है अर डाभकी अणी सूईतैंहू अति पैनी हैं अर सूके पान फूल पवनकर उडे उडे फिरे हैं ऐसे महाअरण्यविषै, हे देव ! जानकी कैसे जीवेगी, मैं ऐसा जानूं हूं क्षणमात्र हू वह प्राण राखिवेको समर्थ नाहीं ।

हे श्रेणिक ! सेनापतिके यह वचन सुन श्रीराम अतिविषादको प्राप्त भए, कैसे हैं वचन ? जिनकर निर्दईका भी मन द्रवीभूत होय, श्रीरामचन्द्र चितवते भए, देखो मो मूढचित्तने दुष्टनिके वचनकर अत्यन्त निंद्यकार्य कीया कहां वह राजपुत्री अर कहां वह भयकंर बन ? यह विचारकर मूर्छाको प्राप्त भये बहुरि शीतोपचारकर सचेत होय विलाप करते भए सीताविषै है चित्त जिनका, हाय श्वेत श्याम रक्त तीन वर्णके कमल समान नेत्रनिकी धरणहारी, हाय निर्मल गुणनिकी खान मुखकर जीता है चन्द्रमा जाने, कमलकी किरण समान कोमल, हाय जानकी मोसे वचनालाप कर, तू जानेही है कि मेरा चित्त तो विना अतिकायर है। हे उपमारहित शीलव्रतकी धारणहारी मेरे मनकी हरणहारी, हितकारी हैं आलाप जिसके हे पापवर्जिते निरपराध मेरे मनकी निवासनी तू कौन अवस्थाको प्राप्त भई होगी, हे देवी वह महा भयंकर बन क्रूरजीवों कर भरा उसमें सर्वसामग्री रहित कैसे तिष्ठेगी ? हे मोमें आसक्त चकोरनेत्र लावण्य रूप जलकी सरोवरी महालज्जावती विनयवती तू कहां गई, तेरे श्वासकी सुगंधकर

मुख पर गुंजार करते जे भ्रमर तिनको हस्त कमलकर निवारती अति खेदको प्राप्त होयगी, तू यूथसे विछुरी मृगीकी न्याई अकेली भयंकर वनविषै कहां जायगी जो वन चितवन करते भी दुस्सह उसविषै तू अकेली कैसे तिष्ठेगी कमलके गर्भ समान कोमल तेरे चरण महासुंदर लक्षणके धारणहारे कर्कश भूमिका स्पर्श कैसे सहेंगे अर वनके भील महा म्लेच्छ कृत्य अकृत्यके भेदसे रहित है मन जिनका सो तुझे पाकर भयंकर पल्लीमें लेगये होवेंगे सो पाहिले दुखसे भी यह अत्यंत दुख है तू भयानक वनविषै मोविना महादुःखको प्राप्त भई होयगी अथवा तू खेदखिन्न महा अंधेरी रात्रीविषै वनकी रजकर मंडित कहीं पडी होयगी सो कदाचित् तुझे हाथियोंने दाबी होय तो इस समान अर अनर्थ कहा अर गृध्र रीछ सिंह व्याघ्र अष्टापद इत्यादि दुष्ट जीवोंकर भरा जो वन उसविषै कैसे निवास करेगी ? जहां मार्ग नाहीं विकराल दाढके धरणहारे व्याघ्र महा क्षुधातुर तिन ऐसी अवस्थाको प्राप्त करी होयगी जो कहिवेविषै न आवे अथवा अग्निकी ज्वालाके समूहकर जलता जो वन उसविषै अशुभ अस्थानकको प्राप्त भई होयगी, अथवा सूर्य्यकी अत्यंत दुस्सह किरण तिनके आतापकर लाखकी न्याई पिगल गई होयगी, छायाविषै जायवेकी नाहीं है शक्ति जिसकी अथवा शोभायमान शीलकी धरणहारी मो निर्दईविषै मनकर हृदय फटकर मृत्युको प्राप्तभई होयगी। पाहिले जैसे रत्नजटीने मोहि सीताके कुशलकी वार्ता आय कही थी तैसे कोई अब भी कहे, हाय प्रिये पतिव्रते विवेकवती सुखरूपिणी तू कहां गई कहां तिष्ठेगी क्या करेगी अहो कृतांतवक्र कह क्या तैने सचमुच वनहीविषै डारी, जो कहुं शुभ ठौर मेली होय तो तेरे मुखरूप चंद्रसे अमृतरूपवचन खिरें। जब ऐसा कहा तब सेनापतिने लज्जाके भारकर नीचा मुख किया प्रभारहित हो गया कछू कह न सके अति व्याकुल भया मौन गह रहा। तब रामने जानी सत्यही यह सीताको भयंकर वनविषै डार आया तब मूर्छाको प्राप्त होय राम गिरे बहुत बेरमें नीठिनीठि सचेत

भए तब लक्ष्मण आए अंतःकरणविषै सोचको धरे कहते भए—हे देव ! क्यों व्याकुल भये हो धीर्यको अंगीकार करो जो पूर्वकर्म उपार्जा उसका फल आय प्राप्त भया अर सकल लोकको अशुभके उदयकर दुःख प्राप्त भया केवल सीताहीको दुख न भया।

सुख अथवा दुख जो प्राप्त होना होय सो स्वयमेव ही किसी निमित्तसे आय प्राप्त होय है प्रभो जो कोई किसीको आकाशमें ले जाय अथवा क्रूर जीवोंके भरे वनविषै डारे अथवा गिरिके शिखर धरे तो भी पूर्व पुण्य कर प्राणीकी रक्षा होय है सब ही प्रजा दुख कर तप्तायमान है आंसुवोंके प्रवाहकर मानों हृदय गल गया है सोई झरे है यह वचन कह लक्ष्मण भी अत्यन्त व्याकुल होय रुदन करने लगा जैसा दाहका मारा कमल होय तैसा होय गया है मुखकमल जिसका हाय माता तू कहां गई दुष्टजनोंके वचन रूप अग्निकर प्रज्वलित है शरीर जिसका हे गुणरूप धान्यके उपजनेकी भूमि बारह अनुप्रेक्षाके चितवनकी करणहारी हे शीलरूप पर्वतकी पृथिवी हे सीते सौम्य स्वभावकी धारक हे विवेकनी दुष्टोंके वचन सोई भये तुषार तिनकर दाहा गया है हृदय कमल जिसका राजहंस श्रीराम तिनके प्रसन्न करनेको मानसरोवर समान सुभद्रा सारिखी कल्याणरूप सर्व आचारविषै प्रवीण लोकोंको मूर्तिवन्त सुखकी आशिषा हे श्रेष्ठ तू कहां गई जैसे सूर्य बिना आकाशकी शोभा कहां अर चन्द्रमा विना निशाकी शोभा कहां तैसे हे माता तो विना अयोध्याकी शोभा कहां। इस भान्ति लक्ष्मण विलाप कर रामसे कहे हैं हे देव ! समस्त नगर बीण बांसुरी मृदंगादिकी ध्वनि कर रहित भया है अर अहर्निश रुदनकी ध्वनि कर पूर्ण है गलीगलीमें वन उपवनविषै नदियोंके तटविषै चौहटेमें हाट हाटविषै घर घरमें समस्त लोक रुदन करे हैं तिनके अश्रुपातकी धारा कर कीच होय रही है, मानों अयोध्याविषै वर्षा कालही फिर आया है समस्त लोक आंसू डारते गद्गद् बाणी कर कष्टसे वचन उचारते जानकी प्रत्यक्ष नहीं है परोक्ष ही है,

तौभी एकाग्रचित्त भए गुण कीर्तिरूप पुष्पोंके समूह कर पूजे हैं। वह सीता पतिव्रता समस्त सतियोंके सिर पर विराजे है गुणोंकर महा उज्वल उसके यहां आवनेकी अभिलाषा सबोंके है यह सब लोक माता ने ऐसे पाले हैं जैसे जननी पुत्रको पालै सो सबही महा शोककर गुण चितार चितार रुदन करे हैं ऐसा कौन है जिसके जानकीका शोक न होय तातैं हे प्रभो तुम सब बातोंमें प्रवीण हो अब पश्चाताप तजो पश्चात्तापसे कछु कार्यकी सिद्धि नाहीं जो आपका चित्त प्रसन्न है तो सीताको हेरकर बुलाय लेंगे अर उनको पुण्यके प्रभाव कर कोई विघ्न नहीं आप धीर्य अवलम्बन करवे योग्य हो या भांति लक्ष्मणके वचनकर रामचन्द्र प्रसन्न भए कछु एक शोक तज कर्तव्यविषै मन धरा। भद्रकलश भण्डारीको बुलायकर कही तुम सीताकी आज्ञासे जिस विधि किम इच्छा दान करते थे तैसेही दिया करो सीताके नामसे दान बटै तब भंडारीने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा नव महीने अर्थियोंको किम इच्छा दान बटिवो किया, रामके आठहजार स्त्री तिनकर सेवमान तौभी एक क्षणमात्र भी मन कर सीताको न बिसारता भया। सीता सीता यह आलाप सदा होता भया, सीताके गुणोंकर मोहा है मन जिसका सर्वदिशा सीतामई देखता भया स्वप्नविषै सीताको या भांति देखै पर्वतकी गुफामें पडी है पृथिवीकी रज कर मंडित है अर नेत्रोंके अश्रुपात कर चौमासा कर राखा है महा शोक कर व्याप्त है या भांति स्वप्नमें अवलोकन करता भया। सीताकार शब्द करता राम ऐसा चितवन करे है—देखो सीता सुन्दर चेष्टाकी धरणहारी दूर देशान्तरविषै तिष्ठै है तौभी मेरे चित्तसे दूर न होय है वह साधवी शीलवंती मेरे हितविषै सदा उद्यमी। या भांति सदा चितारवो करे अर लक्ष्मणके उपदेशकर अर सूत्रसिद्धांतके श्रवण कर कछू इक रामका शोक क्षीण भया धीर्यको धारि धर्म ध्यानविषै तत्पर भया। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं वे दोनों भाई महा न्यायवन्त अखण्ड प्रीतिके धारक प्रशंसायोग्य गुणोंके समुद्र रामके

हल मूशलका आयुध लक्ष्मणके चक्रायुध समुद्र पर्यंत पृथिवीको भली भांति पालते सन्ते सौधर्म ईशान इंद्र सारिखे शोभते भए वे दोनों धीर स्वर्ग समान जो अयोध्या उसमें देवों समान ऋद्धि भोगते महा कांतिके धारक पुरुषोत्तम पुरुषोंके इंद्र देवेंद्र समान राज्य करते भए सुकृतके उदयसे सकल प्राणियोंको आनंद देयबेमें चतुर सुन्दर चरित्र जिनके, सुखसागरमें मग्न सूर्यसमान तेजस्वी पृथिवीमें प्रकाश करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं रामको सीताका शोक वर्णन करनेवाला निन्यानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९९ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी कहे हैं—हे नराधिप ! रामलक्ष्मण तो अयोध्याविषे तिष्ठै हैं अर अब लवणांकुशका वृत्तांत कहे हैं सो सुन—अयोध्याके सबही लोक सीताके शोकसे पांडुताको प्राप्त भये अर दुर्बल होय गये अर पुण्डरीकपुरमें सीता गर्भके भारकर कछू एक पांडुताको प्राप्त भई अर दुर्बल भई। मानों सकल प्रजा महापवित्र उज्ज्वल इसके गुण वर्णन करे है सो गुणोंकी उज्ज्वलता कर श्वेत होय गई है अर कुचोंकी बीटली श्यामताको प्राप्त भई सो मानों माताके कुच पुत्रोंके पान करिवेके पयके घट हैं सो मुद्रित कर राखे हैं अर दृष्टि क्षीरसागर समान उज्ज्वल अत्यन्त मधुरताको प्राप्त भई अर सर्वमंगलके समूहका आधार जिसका शरीर सर्वमंगलका स्थानक जो निर्मल रत्नमई आंगण उसविषे मन्द मंद विचरे सो चरणोंके प्रतिबिंब ऐसे भासे मानों पृथिवी कमलोंसे सीताकी सेवाही करे है अर रात्रिमें चन्द्रमा याके मंदिर ऊपर आय निकसै सो ऐसा भासे मानों सुफेद छत्र ही है अर सुगंधके महलमें सुंदर सेज ऊपर सूती ऐसा स्वप्न देखती भई कि महागजेंद्र कमलोंके पुट विषे जल भरकर अभिषेक करावे हैं अर बारम्बार सखीजनोंके मुख जय जयकार शब्द सुनकर जाग्रत होय है परिवारके लोक समस्त आ-

ज्ञारूप प्रवर्तें हैं क्रीडा विषै भी यह आज्ञाभंग न सह सकै सब आज्ञाकारी भए शीघ्रही आज्ञा प्रमाण करे हैं तौभी सबों पर तेज करै है काहेसे कि तेजस्वी पुत्र गर्भविषै तिष्ठे हैं अर मणियोंके दर्पण निकट हैं तौ भी खडग काढ खडगमें मुख देखे है अर बीणावांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्रोंके नाद होय हैं सो न रुचें अर धनुषके चढायवेकी ध्वनि रुचे है अर सिंहोंके पिंजरे देख जिसके नेत्र प्रसन्न होंय अर जिसका मस्तक जिनेंद्र टार औरकों न नमै ॥

अथानन्तर नव महीना पूर्ण भये श्रावण सुदी पूर्णमासीके दिन श्रवण नक्षत्रके विषै वह मंगल रूपिणी सर्वलक्षण पूर्ण शरदकी पूनोंके चन्द्रमा समान है वदन जिसका सुखसे पुत्र युगल जनती भई सो पुत्रोंके जन्ममें पुंडरीकपुरकी सकल प्रजा अतिहर्षित भई मानों नगरी नाच उठी ढोल नगारे आदि अनेक प्रकारके वादित्र बाजने लगे शंखोंके शब्द भये । राजा बज्रजंघने अतिउत्साह किया बहुत संपदा याचकों को दई अर एक का नाम अनंगलवण दूजे का नाम मदनांकुश ये यथार्थ नाम धरे फिर ये बालक वृद्धि को प्राप्त भए माताके हृदय को अति आनंद के उपजावन हारे महाधीर शूर-वीरताके अंकुर उपजे, सरसों के दाणे इनके रक्षा के निमित्त इनके मस्तक डारे सो ऐसे सोहते भए मानों प्रतापरूप अग्नि के कणही हैं जिनका शरीर ताये सुवर्ण समान अति देदीप्यमान सहजस्वभाव तेजकर अतिसोहता भया अर जिन के नख दर्पणसमान भासते भए । प्रथम बालअवस्थामें अव्यक्त शब्द बोलें सो सर्वलोकके मनको हरें अर इनकी मंद मुलकनि महामनोग्य पुष्पों के विकसने समान लोकनके हृदय को मोहती भई अर जैसे पुष्पोंकी सुगंधता भ्रमरोंके समूहको अनुरागी करे तैसे इनकी वासना सब के मनको अनुरागरूप करती भई यह दोनों माताका दूध पान कर पुष्ट भए अर जिनका मुख महासुंदर सुफेद दांतों कर अति सोहता भया मानों यह दांत दुग्ध समान उज्ज्वल हास्य-

रस समान शोभायमान दीखे हैं, धायकी आंगरी पकड़े आंगन में पांव धरते कौन का मन न हरते भए जानकी ऐसे सुन्दर क्रीडा के करणहारे कुमारों को देखकर समस्त दुःख भूलगई। बालक बड़े भए अति मनोहर सहज ही सुन्दर हैं नेत्र जिनके विद्या पढने योग्य भए तब इनके पुण्यके योगकर एक सिद्धार्थनामा क्षुल्लक शुद्धात्मा पृथिवीमें प्रसिद्ध वज्रजंघके मंदिर आया सो महाविद्याके प्रभाव कर त्रिकाल सन्ध्या में सुमेरुगिरिके चैत्यालय बंदि आवे प्रशांतवदन साधु समान है भावना जिसके अर खंडितवस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके उत्तम अणुव्रतका धारक नानाप्रकारके गुणों कर शोभायमान, जिनशासनके रहस्य का वेत्ता समस्त कलारूप समुद्रका पारगामी तपकर मंडित अति सोहै सो आहारके निमित्त भ्रमता संता जहां जानकी तिष्ठे थी वहां आया सीता महासती मानों जिनशासन की देवी पद्मावती ही है सो क्षुल्लक को देख अति आदर से उठकर सन्मुख जाय इच्छाकार करती भई अर उत्तम अन्नपान से तृप्त किया सीता जिनधर्मियोंको अपने भाईसमान जाने है सो क्षुल्लक अष्टांग निमित्त ज्ञानका वेत्ता दोनों कुमारों को देखकर अति संतुष्ट होयकर सीता से कहता भया—हे देवि ! तुम सोच न करो जिसके ऐसे देवकुमार समान प्रशस्त पुत्र उसे कहा चिंता।

अथानन्तर यद्यपि क्षुल्लक महाविरक्त चित्त है तथापि दोनों कुमारोंके अनुरागसे कैयकदिन तिन के निकट रहा थोडे दिनोंमें कुमारोंको शस्त्रविद्यामें निपुण किया सो कुमार ज्ञान विज्ञानविषे पूर्ण सर्व कलाके धारक गुणोंके समूह दिव्यास्त्रके चलायवे अर शत्रुओंके दिव्यास्त्र आवें तिनके निराकरण करवेकी विद्याविषे प्रवीण होते भए, महापुण्यके प्रभावसे परमशोभाको धारें महालक्ष्मीवान् दूर भए हैं मति श्रुति आवरण जिनके मानों उघडे निधिके कलश ही हैं। शिष्य बुद्धिमान् होय तब गुरुको पढायवेका कछू खेद नाहीं जैसे मंत्री बुद्धिमान् होय तब राजाको राज्यकार्यका कछु खेद नाहीं अर जैसे नेत्रवान्

पुरुषोंको सूर्यके प्रभावकर घट पटादिक पदार्थ सुखसूं भासै तैसे गुरुके प्रभावकर बुद्धिवन्तको शब्द अर्थ सुखसे भासै जैसे हंसोंको मानसरोवरविषै आवते कछु खेद नहीं तैसे विवेकवान् विनयवान् बुद्धिमान्को गुरुभक्तिके प्रभावसे ज्ञान आवते परिश्रम नाहीं सुखसे अति गुणोंकी वृद्धि होय है अर बुद्धिमान् शिष्यको उपदेश देय गुरु कृतार्थ होय है अर कुबुद्धिको उपदेश देना वृथा है जैसे सूर्यका उद्योत घूघूओंको वृथा है यह दोनों भाई देदीप्यमान है यश जिनका अति सुन्दर महाप्रतापी सूर्यकी न्याई जिनकी ओर कोऊ विलोक न सके, दोऊ भाई चन्द्र सूर्य समान दोनोंमें अग्नि अर पवन समान प्रीति मानो वह दोनो ही हिमाचल विंध्याचलसमान हैं वज्रवृषभनाराचसंहनन जिनके सर्व तेजस्वीनिके जीतवेको समर्थ सब राजावोंका उदय अर अस्त जिनके आधीन होयगा महाधर्मात्मा धर्मके धोरी अत्यंत रमणीक जगत्को सुखके कारण सब जिनकी आज्ञाविषै, राजा ही आज्ञाकारी तो औरोंकी क्या बात काहूको आज्ञारहित न देख सकें अपने पांवानिके नखोंमें अपनाही प्रतिबिम्ब देख न सकें तो और कौनसे नम्रीभूत होंय अर जिनको अपने नख अर केशोंका भंग न रुचे तो अपनी आज्ञाका भंग कैसे रुचे, अर अपने सिरपर चूडामणि धरिये अर सिरपर छत्र फिरै अर सूर्य ऊपर होय आय निकसे सोभी न सहार सकें तो औरोंकी ऊंचता कैसे सहारें, मेघका धनुष चढा देख कोप करें तो शत्रुके धनुषकी प्रबलता कैसे देख सकें चित्रामके नृप न नमैं तो भी सहार न सकें तो साक्षात् नृपोंका गर्व कब देख सकें, अर सूर्य नित्य उदय अस्त होय उसे अल्प तेजस्वी गिनें अर पवन महाबलवान है परन्तु चंचल सो उसे बलवान न गिनें जो चलायमान सो बलवान काहेका ? जो स्थिरभूत अचल सो बलवान् अर हिमवान पर्वत उच्च है स्थिरीभूत है परन्तु जड अर कठोर कंटक सहित है तातैं प्रशंसा योग्य न गिनें अर समुद्र गंभीर है रत्नोंकी खान है परंतु क्षार अर जलचर जीवोंको धरे अर शंखोंकर युक्त तातैं समुद्रको तुच्छ

गिनें ये महागुणानिके निवास अति अनुपम जेते प्रबल राजा हुते तेजरहित होय इनकी सेवा करते भए ये महाराजावोंके राजा सदा प्रसन्न वदन मुखसे अमृत वचन बोलैं सबनिकर सेवने योग्य जे दूरवर्ती दुष्ट भूपाल हुते ते अपने तेजकर मलिनवदन किये सब मुरझाय गये इनका तेज ये जब जन्मे तबसे इनके साथही उपजा है शस्त्रोंके धारणकर जिनके कर अर उदर श्यामताको धरे हैं अर मानों अनेक राजावोंके प्रतापरूप अग्निके बुझावनेसे श्याम हैं समस्त दिशारूप स्त्री वशीभूत कर देने वाली भई महाधीर धनुषके धारक तिनके सब आज्ञाकारी भए जैसा लवण तैसा ही अंकुश दोनों भाइनिविषै कोई कमी नाहीं ऐसा शब्द पृथिवीविषै सबके मुख, ये दोनों नवयौवन महासुन्दर अद्भुत चेष्टाके धरण-हारे पृथिवीमें प्रसिद्ध समस्त लोकोंकर स्तुति करवे योग्य जिनके देखवेकी सबके अभिलाषा पुण्य परमा-णुनिकर रचा है पिंड जिनका, सुखका कारण है दर्शन जिनका स्त्रियोंके मुखरूप कुमुद तिनके प्रफुल्लित करनेको शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सोहते भए माताके हृदयको आनन्दके जंगम मंदिर ये कुमार सूर्यसमान कमल नेत्र देवकुमार सारिखे श्रीवत्सलक्षणकर मंडित है वक्षस्थल जिनका अनंतप-राक्रमके धारक संसार समुद्रके तट आये चरम शरीर परस्पर महाप्रेमके पात्र सदा धर्मके मार्गमें तिष्ठे हैं देवोंका अर मनुष्योंका मन हरे हैं।

भावार्थ—जो धर्मात्मा होय सो काहूका कुछ न हरे ये धर्मात्मा परधन परस्त्री तो न हरें परन्तु पराया मन हरें। इनको देख सबनिका मन प्रसन्न होय ये गुणोंकी हदको प्राप्त भए हैं। गुण नाम डोरे का भी है सो हदपर गांठको प्राप्त होय है अर इनके उरविषै गाठ नाहीं महा निःकपट हैं अपने तेजकर सूर्यको जीते हैं अर कांतिकर चंद्रमाको जीते हैं अर पराक्रमकर इंद्रको अर गम्भीरताकर समुद्रको स्थिरताकर सुमेरुको अर क्षमाकर पृथिवीको अर शूरवीरताकर सिंहको चालकर हंसको जीते हैं अर

कर दोऊ भाई आप युद्धके अर्थ अति शीघ्रही जायवेको उद्यमी भए। कैसे हैं कुमार आज्ञा भंगको नाहीं सह सके हैं तब बज्रजंघके पुत्र इनको मने करते भए अर सर्व राजलोक मने करते भए तौ हू इन न मानी तब सीता पुत्रनिके स्नेहकर द्रवीभूत हुवा है मन जाका सो पुत्रनिको कहती भई तुम बालक हो, तिहारा युद्धका समय नाहीं । तब कुमार कहते भए—हे माता ! तू यह कहा कही बडा भया अर कायर भया तो कहा ? यह पृथिवी योधानिकर भोगवे योग्य है अर अग्निका कण छोटा ही होय है अर महावनको भस्म करे है या भांति कुमारने कही तब माता इनको सुभट जान आंखोंसे हर्ष अर शोकके किंचितमात्र अश्रुपात करती भई ये दोऊ वीर महा धीर स्नान भोजन कर आभूषण पहिरे मन वचन कायकर सिद्धनिका नमस्कारकर बहुरि माताको प्रणामकर समस्त विधिविषै प्रवीण घरते बाहिर आए तब भले भले शकुन भए दोऊ रथचढ सम्पूर्ण शस्त्रानिकर युक्त शीघ्रगामी तुरंग जोड पृथुपर चले महा सेनाकर मंडित धनुषबाण ही है सहाय जिनके महा पराक्रमी परम उदारचित्त संग्रामके अग्रेसर पांच दिवसमें वज्रजंघ पै जाय पहुंचे तब राजा पृथु शत्रुनिकी बडी सेना आई सुन आप भी बडी सेनासहित नगरसे निकसा जाके भाई मित्र पुत्र मामाके पुत्र सबही परम प्रीति पात्र अर अंगदेश बंगदेश मगधदेश आदि अनेक देशनिके बडे बडे राजा तिन सहित रथ तुरंग हाथी पयादे बडे कटकसहित बज्रजंघपर आया तब वज्रजंघके सामन्त परसेनाके शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए दोऊ सेना समीप भई तब दोऊ भाई लवणांकुश महा उत्साहरूप परसेनाविषै प्रवेश करते भए वे दोऊ योधा महा कोपके प्राप्त भए अति शीघ्र है परावर्त जिनका परसेनारूप समुद्रमें क्रीडा करते सब ओर परसेनाका निपात करते भए जैसे बिजलीका चमत्कार जिस ओर चमके उस ओर चमक उठे तैसे सब ओर मार मार करते भए शत्रुनितैं न सहा जाय पराक्रम जिनका धनुष पकडते बाण चलाते दृष्टि न पडें अर बाणनिकर हते अनेक दृष्टि पडें ना-

नाप्रकारके क्रूर बाण तिनकर बाहन सहित परसेनाके अनेक योधा पीडे पृथिवी दुर्गम्य होय गई एक निमिषमें पृथुकी सेना भागी जैसे सिंहके त्राससे मदोन्मत्त गजनिके समूह भागें एक क्षणमात्रमें पृथुकी सेनारूप नदी लवणांकुशरूप सूर्य तिनके बाणरूप किरणानिकर शोकको प्राप्त भई कैयक मारे पडे कैयक भयतैं पीडित होय भागे, जैसे आकके फूल उडे उडे फिरैं। राजा पृथु सहायरहित खिन्न होय भागनेको उद्यमी भया तब दोऊ भाई कहते भए—हे पृथु ! हम अज्ञात कुल शील हमारा कुल कोऊ जाने नाहीं तिन पै भागता तू लज्जावान् न होय है तू खडा रह, हमारा कुल शील तोहि बाणानिकरि बतावैं, तब पृथु भागता हुता सो पीछा फिर हाथ जोड नमस्कारकर स्तुति करता भया तुम महा धीरवीर हो मेरा अज्ञानताजनित दोष क्षमा करहु मैं मूर्ख तिहारा माहात्म्य अब तक न जाना हुता महा धीरवीरनिका कुल, या सामंतताहीतैं जाना जाय है कछु वाणीके कहेसैं न जाना जाय है सो अब मैं निसंदेह भया। वनके दाहकूं समर्थ जो अग्नि सो तेजहीतैं जानी जाय है सो आप परम धीर महाकुलविषै उपजे हमारे स्वामी हो महाभाग्यके योग्य तिहारा दर्शन भया तुम सबको मन बांछित सुखके दाता हो या भांति पृथुने प्रशंसा करी ॥

तब दोऊ भाई नीचे होय गये अर क्रोध मिटगया शांतमन अर शांतमुख होय गये वज्रजंघ कुमारनिके समीप आया अर सब राजा आये कुमारानिके अर पृथुके प्रीति भई जे उत्तम पुरुष हैं वे प्रणाममात्र ही करि प्रसन्नताको प्राप्त होय हैं जैसे नदी का प्रवाह नम्रीभूत जे बेल तिनको न उपाडै अर जे महावृक्ष नम्रीभूत नाहीं तिनको उपाडै फिर राजा वज्रजंघ को अर दोऊकुमारानिको पृथु, नगर में लेगया, दोऊ कुमार आनंदके कारण। मदनांकुश को अपनी कन्या कनकमाला महाविभूतिसहित पृथुने परणाई एक रात्रि यहां रहे फिर यहां दोऊ भाई विचक्षण दिग्विजय करवेको निकसे सुह्यदेश

मगध देश अंगदेश बंगदेश जीत पोदनापुर के राजाको आदि दे अनेक राजा संग लेय लोकाक्ष नगर गए, वातरफ के बहुत देश जीते कुबेरकांत नामा राजा अतिमानी ताहि ऐसा वश कीया जैसे गरुड नागकूं जीते सत्यार्थपनेतें दिन दिन इनकें सेना बढी हजारां राजा वश भए अर सेवा करने लगे फिर लंपाक देश गए वहां करण नामा राजा अतिप्रबल ताहि जीतकर विजयस्थलको गए वहांके राजा सौ भाई तिनकों अवलोकन मात्रतें ही जीत, गंगा उतर कैलाश की उत्तर दिश गए, वहांके राजा नाना प्रकारकी भेट ले आय मिले झष कुंतल नामा देश तथा सालायं, नांदि नंदन स्यघल शलभ अनल चल भीम, भूतरव, इत्यादि अनेक देशाधिपतिनिको वशकर सिंधु नदीके पार गये समुद्रके तटके राजा अनेकनिको नमाये अनेक नगर अनेक खेट अनेक अटंब अनेक देश वश कीये भीरु देश यवन कच्छ चारव त्रजट नट सक्र केरल नेपाल मालव अरल सर्वरात्रिशिर पार शैल गोशाल कुसीनर सूरपारक सनर्त विधि शूरसेन वाह्लीक उलूक कोशल गांधार सौवीर अन्ध्र काल कलिंग इत्यादि अनेक देश वश कीये कैसे हैं देश जिनविषै नाना प्रकारकी भाषा अर वस्त्रानिका भिन्न भिन्न पहराव अर जुदे २ गुण नाना प्रकारके रत्न अनेक जातिके वृक्ष जिनविषै अर नाना प्रकार स्वर्ण आदि धनके भरे।

कैयक देशनिके राजा प्रतापहीतैं आय मिले कैयक युद्धविषै जीति वश कीये, कैयक भाग गए बडे बडे राजा देशपति अति अनुरागी होय लवणांकुशके आज्ञाकारी होते भए इनकी आज्ञा प्रमाण पृथिवीविषै विचरें। वे दोनों भाई पुरुषोत्तम पृथिवीको जीत हजारा राजानिके शिरोमणि होते भए सबानिको वशकर लार लीए नानाप्रकारकी सुन्दर कथा करते सबका मन हरते पुण्डरीकपुरको उद्यमी भए। वज्रजंघ लार ही है अति हर्षके भरे अनेक राजानिकी अनेकप्रकार भेंट आई सो महाविभूतिको लीये अतिसेना कर मंडित पुण्डरीकपुरके समीप आए सीता सतखणे महिल चढी देखे है राजलोककी अनेक राणी

समीप हैं अर उत्तम सिंहासन पर तिष्ठे हैं दूरसे अति सेनाकी रजके पटल उठे देख सखीजनको पूछती भई—यह दिशाविषै रजका उडाव कैसा है तब तिन कही—हे देवी सेनाकी रज है जैसे जलविषै मकर किलोल करैं तैसे सेनाविषै अश्व उछलते आवै हैं हे स्वामिनि! ये दोनों कुमार पृथिवी वशकर आए या भांति सखीजन कहे हैं अर बधाई देनहारे आए नगरकी अति शोभा भई लोकनिके अति आनंद भया निर्मल ध्वजा चढाई समस्त नगर सुगंधकर छांटा अर वस्त्र आभूषणनिकर शोभित कीया दरवाजेपर कलश थापे सो कलश पल्लवनिकरि ढके अर ठौर २ बंदनमाला शोभायमान दिखती भई अर हाट बाजार पांटवरादि वस्त्रकर शोभित भए जैसी श्रीराम लक्ष्मणके आए अयोध्याकी शोभा भई हुती तैसेही पुंडरीकपुरकी शोभा कुमारनिके आएसे भई। जादिन महाविभूतिसूं प्रवेश किया तादिन नगरके लोगनिको जो हर्ष भया सो कहिवेमें न आवै दोऊ पुत्र कृतकृत्य तिनको देखकर सीता आनन्दके सागरविषै मग्न भई दोऊ बीर महा धीर आयकर हाथ जोड माताको नमस्कार करते भये सेनाकी रजकर धूसरा है अंग जिसका, सीताने पुत्रनिको उरसे लगाय माथे हाथ धरा माताको अति आनन्द उपजाय दोऊ कुमार चांद सूर्यकी न्याई लोकविषैं प्रकाश करते भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लवणाकुशका दिग्विजय वर्णन करनेवाला एकसौएकवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०१ ॥

अथानन्तर ये उत्तम मानव परम ऐश्वर्यके धारक प्रबल राजानि पर आज्ञा करते सुखसूं तिष्ठें एक दिन नारदने कृतान्तवक्रको पूछी कि तू सीताको कहां मेल आया, तब ताने कही कि सिंहनाद अटवी विषै मेली सो यह सुनकर अति व्याकुल होय ढूंढता फिरे हुता सो दोऊ कुमार वनक्रीडा करते देख, तब

नारद इनके समीप आया कुमार उठकर सन्मान करते भये नारद इनको विनयवान देख बहुत हर्षित भया अर असीस दई जैसे राम लक्ष्मण नरनाथके लक्ष्मी है तैसी तुम्हारे होओ। तब ये पूछते भये कि हे देव! राम लक्ष्मण कौन हैं, अर कौन कुलविषै उपजे हैं, अर कहा उनविषै गुण हैं अर कैसा तिन-का आचरण है तब नारद क्षण एक मौन पकड कहते भये—हे दोऊ कुमारो कोई मनुष्य भुजानिकर पर्वतको उखाडै अथवा समुद्रको तिरै तौहू राम लक्ष्मणके गुण कह न सकै अनेक वदननिकर दीर्घ काल तक तिनके गुण वर्णन करें तौ भी राम लक्ष्मणके गुण कह न सकें तथापि मैं तिहारे वचनसे किंचित्मात्र वर्णन करूं हूं तिनके गुण पुण्यके वढावनहारे हैं।

अयोध्यापुरीविषै राजा दशरथ होते भये दुराचाररूप इन्धनके भस्म करवेको अग्नि समान, अर इक्ष्वाकु वंश रूप आकाशविषै चन्द्रमा महा तेजोमय सूर्य समान सकल पृथिवीविषै प्रकाश करते अयोध्याविषै तिष्ठें वे पुरुषरूप पर्वत तिनकरि कीर्तिरूप नदी निकसी, सो सकल जगतकों आनन्द उपजावती समुद्र पर्यन्त विस्तारको धरती भई ता दशरथ भूपतिके राज्य भारके धुरंधरही चार पुत्र महा गुणवान भए एक राम दूजा लक्ष्मण तीजा भरत चौथा शत्रुघ्न तिनविषै राम अति मनोहर सर्वशास्त्रके ज्ञाता पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो छोटे भाई लक्ष्मणसहित अर जनककी पुत्री जो सीता ता सहित पिताकी आज्ञा पालवे निमित्त अयोध्याकों तज पृथिवीविषै विहार करते दण्डक वनविषै प्रवेश करते भए। सो स्थानक महाविषम जहां विद्याधरानिके गम्यता नाहीं खरदूषण ते संग्राम भया रावणने सिंहनाद किया ताहि सुनकर लक्ष्मणकी सहाय करनेको राम गया पीछेसूं सीताको रावण हरलेगया तब राम से सुग्रीव हनूमान विराधित आदि अनेक विद्याधर भेले भये रामके गुणनिके अनुरागकरि वशीभूत है हृदय जिनका सो विद्याधरनिको लेयकर राम लंकाको गये रावणको जीत सीताको लेय अयोध्या आये स्वर्गपुरी

समान अयोध्या विद्याधरनिने बनाई तहां राम लक्ष्मण पुरुषोत्तम नागेन्द्र समान सुखसे राज्य करें रामको तुम अब तक कैसे न जाना जाके लक्ष्मणसा भाई ताके हाथ सुदर्शन चक्र सो आयुध जाके एक एक रत्नकी हजार हजार देव सेवा करें सात रत्न लक्ष्मणके अर चार रत्न रामके जाने प्रजाके हित निमित्त जानकी तजी ता रामको सकल लोक जानें ऐसा कोई पृथिवीविषै नाहीं जो रामको न जाने। या पृथिवी की कहा बात? स्वर्गविषै देवानिके समूह रामके गुण वर्णन करें हैं।

तब अंकुशने कही—हे प्रभो! रामने जानकी काहे तजी सो वृत्तांत मैं सुना चाहूं हूं तब सीताके गुणनिकर धर्मानुरागमें है चित्त जाका ऐसा नारद सो आंसू डार कहता भया हे कुमार हो! वह सीता सती महा निर्मल कुलविषै उपजी शीलवंती गुणवंती पतिव्रता श्रावकके आचारविषै प्रवीण रामकी आठ हजार राणी तिनकी शिरोमणि लक्ष्मी कीर्ति धृति लज्जा तिनकों अपनी पवित्रतातैं जीतकर साक्षात् जिनवाणी तुल्य, सो कोई पूर्वोपार्जित पापके प्रभावकर मूढलोक अपवाद करते भये तातैं रामने दुखित होय निर्जन वनविषै तजी खोटे लोक तिनकी वाणी सोई भई जेठके सूर्यकी किरण ताकर तप्तायमान वह सती कष्टको प्राप्त भई महा सुकुमार जाविषै अल्प भी खेद न सहारा पडे मालतीकी माला दीपके आतापकर मुरझाय सो दावानलका दाह कैसे सहार सके, महा भीम बन जाविषै अनेक दुष्ट जीव तहां सीता कैसे प्राणनिको धरे, दुष्ट जीवनिकी जिह्वा भुजंगसमान निरपराध प्राणीनिको क्यूं डसे? शुभ जीवनिकी निन्दा करते दुष्टनिके जीभके सो टूक क्यूं न होवें वह महा सती पतिव्रतानिकी शिरोमणि पटुता आदि अनेक गुणनिकर प्रशंसायोग्य अत्यन्त निर्मल महा सती ताकी जो लोक निंदा करें सो या भव अर परभवविषै दुखको प्राप्त होय ऐसा कहकर शोकके भारकर मौन गह रहा विशेष कछू कह न सका सुनकर अंकुश बोले—हे स्वामी भयंकर बनविषै रामने सीताको तजते भला न किया। यह कुलवंतोंकी रीति

नाहीं है लोकापवाद निवेरवेके और अनेक उपाय हैं ऐसा अविवेकका कार्य ज्ञानवंत क्यों करें। अंकुशने तो यही कही अर अंनगलवण बोला यहांसू अयोध्या केतीक दूर है?

तब नारद कही यहांसे एकसौ साठ योजन है जहां राम विराजे हैं तब दोऊ कुमार बोले हम राम लक्ष्मणपर जावेंगे या पृथ्वीविषै ऐसा कौन जाकी हम आगे प्रवलता, नारदसों यह कही अर वज्रजंघसे कही–हे मामा! सूक्ष देश सिंधु देश कलिंग देश इत्यादि देशनिके राजावोंको आज्ञापत्र पठावहु जो संग्रामका सब सरंजाम लेकर शीघ्रही आवें हमारा अयोध्याकी तरफ कूंच है अर हाथी समारो मदोन्मत्त केते अर निर्मद केते अर घोडे वायु समान है वेग जिनका सो संग लेकर अर जे योधा रणसंग्रामविषै विख्यात कभी पीठ न दिखावें तिनको लार लेवो, सब शस्त्र सम्हारो वक्तरनिकी मरम्मत करावहु अर युद्धके नगारे दिवावहु ढोल बजावहु शंखनिके शब्द करावहु सब सामंतोंको युद्धका विचार प्रगट करहु यह आज्ञाकर दोऊ वीर मनविषै युद्धका निश्चयकर तिष्ठे मानों दोऊ भाई इन्द्र ही हैं देवनि समान जे देशपति राजा तिनको एकत्र करिवेको उद्यमी भए तब राम लक्ष्मणपर कुमारनिकी असवारी सुन सीता रुदन करती भई अर सीताके समीप नारदको सिद्धार्थ कहता भया यह अशोभन कार्य तुम कहा आरंभा रणविषै उद्यम करिवेका है उत्साह जिनके ऐसे तुम सो पिता अर पुत्रनिविषै क्यों विरोधका उद्यम किया अब काहू भांति यह विरोध निवारो, कुटुम्ब भेद करना उचित नाहीं तब नारद कही मैं तो ऐसा कछू जान्या नाहीं इन विनय किया मैं आशीस दई कि तुम राम लक्ष्मणसे होवो इनने सुनकर पूछी राम लक्ष्मण कौन? मैं सब वृत्तांत कहा अब भी तुम भय न करो सब नीके ही होयगा अपना मन निश्चल करहु कुमारनि सुनी कि माता रुदन करे है तब दोऊ पुत्र माताके पास आय कहते भए हे मात! तुम रुदन क्यों करो हो सो कारण कहो तिहारी आज्ञाको कौन लोपे असुन्दर वचन कौन कहे ता दुष्टके

प्राण हरैं ऐसा कौन है जो सर्पकी जीभतें क्रीडा करे ऐसा कौन मनुष्य अर कौन देव जो तुमको असाता उपजावे हे मातः ! तुम कौनपर कोप किया है जापर तुम कोप करो ताका जानिये आयुका अन्त आया है हमपर कृपाकर कोपका कारण कहहु या भांति पुत्रनि विनती करी तब माता आंसू डार कहती भई हे पुत्र ! मैं काहू पर कोप न किया न मुझे काहूने असाता दई तिहारा पितासे युद्धका आरंभ सुन मैं दुखित भई रुदन करूं हूं। गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक ! तब पुत्र मातासे पूछते भये हे माता ! हमारा पिता कौन ? तब सीता आदिसे लेय सब वृत्तांत कहा—रामका बंश अर अपना बंश विवाहका वृत्तांत अर बनका गमन अपना रावणकर हरण अर आगमन जो नारदने वृत्तांत कहा हुता सो सब विस्तारसूं कहा कछु छिपाय न राखा अर कही तुम गर्भविषे आए तब ही तिहारे पिताने लोकापवादका भयकर मुझे सिंहनाद अटवीमें तजी तहां मैं रुदन करती हुती सो राजा वज्रजंघ हाथी पकडने गया हुता सो हाथी पकड बाहुडे था मोहि रुदन करती देखी सो यह महा धर्मात्मा शीलवन्त श्रावक मोहि महा आदरसूं ल्याया बडी बहिनका आदर जनाया अर सत् सन्मानतें यहां राखी। मैं भाई भामंडल समान याका घर जाना तिहारा यहां सन्मान भया तुम श्रीरामके पुत्र हो राम महाराजाधिराज हिमाचल पर्वत सूं लेय समुद्रांत पृथिवीका राज्य करे हैं जिनके लक्ष्मणसा भाई महाबलवान् संग्रामविषै निपुण है न जानिये नाथकी अशुभ वार्ता सुनूं अक तिहारी अथवा देवरकी तातैं आर्तचित्त भई मैं रुदन करूं हूं अर कोऊ कारण नाहीं तब सुनकर पुत्र प्रसन्न वदन भए अर मातासे कहते भए हे माता ! हमारा पिता महा धनुष धारी लोकविषै श्रेष्ठ लक्ष्मीवान् विशाल कीर्तिका धारक है अर अनेक अद्भुत कार्य किए हैं परंतु तुमको वनविषैं तजी सो भला न किया तातैं हम शीघ्रही राम लक्ष्मणका मानभंग करेंगे तुम विषाद मत करहु तब सीता कहती भई हे पुत्र हो ! वे तिहारे गुरुजन हैं उनसूं विरोध योग्य

नाहीं। तुम चित्त सौम्य करहु। महा विनयवन्त होय जाय कर पिताको प्रणाम करहु यह ही नीतिका मार्ग है॥

तब पुत्र कहते भए हे माता! हमारा पिता शत्रुभावको प्राप्त भया हम कैसे जाय प्रणाम करें अर दीनताके वचन कैसे कहें हम तो माता तिहारे पुत्र हैं तातैं रण संग्रामविषै हमारा मरण होय तो होवो परन्तु योधानिसे निन्द्य कायर वचन तो हम न कहें, यह वचन पुत्रनिके सुन सीता मौन पकड रही परन्तु चित्तमें अति चिन्ता है दोऊ कुमार स्नानकर भगवानकी पूजा कर मंगल पाठ पढ सिद्धनिको नमस्कार कर माताको धीर्य वन्धाय प्रणाम कर दोऊ महा मंगलरूप हाथीपर चढे मानों चांद सूर्य गिरिके शिखर तिष्ठे हैं अयोध्या ऊपर युद्धको उद्यमी भए जैसे राम लक्ष्मण लंका ऊपर उद्यमी भए हुते इनका कूच सुन हजारां योधा पुण्डरीकपुरसे निकसे, सब ही योधा अपना अपना हल्ला देते भए वह जाने मेरी सेना अच्छी दीखे वह जाने मेरी, महाकटक संयुक्त नित्य एक योजनका कूच करें सो पृथिवीकी रक्षा करते चले जांय हैं किसीका कछु उजाडें नाहीं। पृथिवी नानाप्रकारके धान्यकरि शोभायमान है कुमारनिका प्रताप आगे आगे बढता जाय है मार्गके राजा भेट दे मिले हैं, दस हजार वेलदार कुदाल लिए आगे आगे चले जाय हैं अर धरती ऊंची नीचीको सम करें हैं अर कुल्हाड़े हैं हाथविषै जिनके वे भी आगे आगे चले जाय हैं अर हाथी ऊंट भैंसा बलद खचर खजानेके लदे जाय हैं, मंत्री आगे आगे चले जाय हैं अर प्यादे हिरणकी न्याईं उछलते जाय हैं अर तुरंगानिके असवार अति तेजीसे चले जाय हैं तुरंगनिकी हींस होय रही है अर गजराज चले जाय हैं जिनके स्वर्णकी सांकल अर महा घंटानिका शब्द होय है अर जिनके कानोंपर चमर शोभे हैं अर शंखनिकी ध्वनि होय रही है अर मोतिनिकी झालरी पानीके बुदबुदा समान अत्यन्त सोहे हैं अर सुन्दर हैं आभूषण जिनके महा उद्धत जिनके उज्वल दांत-

निके स्वर्ण आदिके बन्ध बन्धे हैं अर रत्न स्वर्ण आदिककी माला तिनसे शोभायमान चलते पर्वत समान नानाप्रकारके रंगसूं रंगे अर जिनके मद झरे हैं अर कारी घटा समान श्याम प्रचण्ड वेगको धरें जिन पर पाखर परी हैं नानाप्रकारके शस्त्रनिकरि शोभित हैं अर गर्जना करे हैं अर जिन पर महादीप्ति के धारक सामन्त लोक चढे हैं अर महावतानिने अति सिखाये हैं अपनी सेनाका अर परसेनाका शब्द पिछाने हैं सुन्दर है चेष्टा जिनकी, अर घोडानिके असवार वखतर पहिरे खेट नामा आयुधको धरे वरछी है जिनके हाथमें घोडानिके समूह तिनके खुरनिके घातकरि उठी जो रज ताकरि आकाश व्याप्त होय रहा है ऐसा सोहे है मानों सुफेद बादलनिसे मंडित है अर पियादे शस्त्रनिके समूहकरि शोभित अनेक चेष्टा करते गर्वसे चले जाय हैं वह जाने मैं आगे चलूं वह जाने मैं, अर शयन आसन तांबूल सुगंध माला महामनोहर वस्त्र आहार विलेपन नानाप्रकारकी सामग्री वटती जाय है ताकरि सवही सेनाके लोक सुखरूप हैं काहूको काहु प्रकारका खेद नाहीं अर मजल मजल पै कुमारनिकी आज्ञाकरि भले भले मनुष्यनिको लोक नानाप्रकारकी वस्तु देवे हैं उनको यही कार्य सौंपा है सो बहुत सावधान हैं नानाप्रकारके अन्न जल मिष्टान्न लवण घृत दुग्ध दही अनेक रस भांति भांति खानेकी वस्तु आदरसो देवें हैं, समस्त सेनामें कोई दीन बुभुक्षित तृषातुर कुवस्त्र मलिन चिन्तावान दृष्टि नाहीं पडे है। सेनारूप समुद्रमें नर नारी नानाप्रकारके आभरण पहिरे सुन्दर वस्त्रनिकर शोभायमान महा रूपवान अति हर्षित दीखें। या भांति महा विभूति कर मण्डित सीताके पुत्र चले चले अयोध्याके देशविषै आये, मानों स्वर्गलोकमें इंद्र आए जो देशमें यव गेहूं चावल आदि अनेक धान्य फल रहें हैं अर पौंडे सांठेनिके वाडे ठौर ठौर शोभे हैं। पृथिवी अन्न जल तृणकर पूर्ण है अर जहां नदीनिके तीर हू मुनिके समूह क्रीडा करे हैं अर सरोवर कमलनिके शोभायमान हैं अर पर्वत नानाप्रकारके पुष्पानिकर सुगंधित होय रहे हैं अर गीतनि-

की ध्वनि ठौर ठौर होय रही है अर गाय भैंस बलधानिके समूह विचर रहे हैं अर ग्वालणी बिलोवणा बिलोवे हैं, जहां नगरनि सारिखे नजीक नजीक ग्राम हैं अर नगर ऐसे शोभे हैं मानों सुरपुरही है। महा तेजकर युक्त लवणांकुश देशकी शोभा देखते अति नीतिसे आये काहूको काहुही प्रकारका खेद न भया हाथिनिके मद झरिबे कर पंथमें रज दब गई, कीच होय गयी अर चंचल घोडनिके खुरनिके घातकर पृथिवी जर्जरी होय गई। चले चले अयोध्याके समीप आए दूरसे सन्ध्याके बादलानिके रंग समान अति सुन्दर अयोध्या देख वज्रजंघको पूछी—हे माम! यह महा ज्योतिरूप कौनसी नगरी है तब वज्रजंघने निश्चयकर कही—हे देव! यह अयोध्या नगरी है जाके स्वर्णमई कोट तिनकी यह ज्योति भासै है या नगरीमें तिहारा पिता बलदेवस्वामी विराजे हैं जाके लक्ष्मण अर शत्रुघन भाई या भांति वज्रजंघसे कही अर दोऊ कुमार शूरवीरताकी कथा करते सुखसे आय पहुंचे कटकके अर अयोध्याके बीच सरयू नदी रही दोऊ भाईनिके यह इच्छा कि शीघ्र ही नदी उतर नगरी लेवें जैसे कोई मुनि शीघ्रही मुक्त हूवा चाहै ताहि मोक्षकी आशारूप नदी यथाख्यात चारित्र होने न देय आशारूप नदीको तिरै तब मुनि मुक्त होय तैसे सरयू नदीके योगसे शीघ्रही नदीतैं पार उतर नगरीमें न पहुंच सके तब जैसे नन्दन बनमें देवनिकी सेना उतरे तैसे नदीके उपवनादिमें ही कटकके डेरा कराए॥

अथानन्तर परसेना निकट आई सुन रामलक्ष्मण आश्चर्यको प्राप्त भये अर दोनों भाई परस्पर बतलावें ये कोई युद्धके अर्थ हमारे निकट आए हैं सो मुवा चाहे हैं बासुदेवने विराधितको आज्ञा करी—युद्धके निमित्त शीघ्र ही सेना भेली करो ढील न होय जिन विद्याधरोंके कपियों की ध्वजा अर बैलोंकी ध्वजा अर हाथियों की ध्वजा सिंहोंकी ध्वजा इत्यादि अनेक भांति की ध्वजा तिनको बेग बुलावो सो बिराधितने कही जो आज्ञा होयगी सोई होयगा उसही समय सुग्रीवादिक अनेक राजावों

पर दूत पठाये सो दूत के देखवे मात्रही सब विद्याधर बड़ी सेनासे अयोध्या आये। भामंडल भी आया सो भामण्डलको अत्यन्त आकुलता देख शीघ्र ही सिद्धार्थ अर नारद जाय कर कहते भये—यह सीता के पुत्र हैं सीता पुण्डरीकपुरमें है तब यह बात सुनकर बहुत दुखित भया अर कुमारोंके अयोध्या आयवे पर आश्चर्य को प्राप्त भया अर इनका प्रताप सुन हर्षित भया मनके बेग समान जो विमान उसपर चढकर परिवार सहित पुण्डरीकपुर गया। बहिनसे मिला सीता भामण्डलको देख अति मोहित भई आसूं नाखती संती विलाप करती भई अर अपने ताईं घरसे काढनेका अर पुण्डरीकपुर आयबे का सर्व वृत्तान्त कहा तब भामण्डल बहिनको धीर्य बंधाय कहता भया—हे बहिन! तेरे पुण्यके प्रभावसे सब भला होयगा अर कुमार अयोध्या गये सो भला न कीया, जायकर बलभद्र नारायणको क्रोध उपजाया रामलक्ष्मण दोनों भाई पुरुषोत्तम देवों से भी न जीते जांय महा योधा हैं कुमारों के अर उनके युद्ध न होय सो ऐसा उपाय करें इसलिये तुम हू चलो।

तब सीता पुत्रोंकी बधू संयुक्त भामंडलके विमानविषै बैठ चली। राम लक्ष्मण महा क्रोधकर रथ घोटक गज पियादे देव विद्याधर तिनकर मण्डित समुद्र समान सेना लेय बाहिर निकसे अर घोडनिके रथ चढा शत्रुघ्न महा प्रतापी मोतिनिके हार कर शोभायमान है वक्षस्थल जिसका सो रामके संग भया अर कृतांतवक्र सब सेनाका अग्रेसर भया जैसे इन्द्रकी सेनाका अग्रगामी हृदयकेशी नामा देव होय उसका रथ अत्यंत सोहता भया देवनिके विमान समान जिसका रथ सो सेनापति चतुरंग सेना लिये अतुलबली अतिप्रतापी महाज्योतिको धरे धनुष चढाय वाण लिये चला जाय है, जिसकी श्याम ध्वजा शत्रुवोंसे देखी न जाय उसके पीछे त्रिमूर्ध्न वाह्निशिख सिंहविक्रम दीर्घभुज सिंहोदर सुमेरु बालखिल्य रौद्रभूत जिसके अष्टापदोंके रथ वज्रकर्ण पृथु मारदमन मृगेंद्रहव इत्यादि पांचहजार नृपति कृतांतवक्रके

संग अग्रगामी भए वन्दीजन वखाने हैं विरद जिनके अर अनेक रघुवंशी कुमार देखे हैं अनेक रण जिन्होंने शस्त्रोंपर है दृष्टि जिनकी युद्धका है उत्साह जिनके, स्वामी भक्तिविषै तत्पर महाबलवन्त धरती को कंपाते शीघ्रही निकसे कईएक नानाप्रकारके रथोंपर चढे कईयक पर्वत समान ऊंचे कारी घटा समान हाथीनिपर चढे, कईयक समुद्रकी तरंग समान चंचल तुरंग तिनपर चढे । इत्यादि अनेक वाहनों पर चढे युद्धको निकसे वादित्रोंके शब्दकर करी है व्याप्त दशोंदिशा जिन्होंने व खतर पहिरे टोप धरे क्रोधकर संयुक्त है चित्त जिनका, तब लव अंकुश परसेनाका शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए वज्रजंघको आज्ञा करी, कुमारकी सेनाके लोक युद्धके उद्यमी हुते ही । प्रलयकालकी अग्नि समान महाप्रचंड अंग देश वंगदेश नेपाल वर्वर पौंड्र मागध पारसैल स्यंघल कालिंग इत्यादि अनेक देशानिके राजा रत्नांकको आदि दे महा बलवंत ग्यारह हजार राजा उत्तम तेजके धारक युद्धके उद्यमी भए दोनों सेनानिका संघट्ट भया दोनों सेनानिके संगमविषै देवनिको असुरनिको आश्चर्य उपजे ऐसा महा भयंकर शब्द भया जैसा प्रलयकालका समुद्र गाजै परस्पर यह शब्द होते भए क्या देख रहा है प्रथम प्रहार क्यों न करै मेरा मन तोपर प्रथम प्रहार करिवेपर नाहीं तातैं तू ही प्रथम प्रहारकर अर कोई कहे है एक डिग आगे होवो जो शस्त्र चलाऊं कोई अत्यन्त समीप होय गये तव कहे हैं खञ्जर तथा कटारी हाथ लेवो निपट नजीक भए वाणका अवसर नाहीं । कोई कायरको देख कहे हैं तू क्यों कांपे है मैं कायरको न मारूं तू परे हो आगे महा योधा खडा है उससे युद्ध करने दे कोई वृथा गाजे है उसे सामन्त कहे है हे क्षुद्र ! कहा वृथा गाजे है गाजनेमें सामन्तपना नाहीं जो तोविषै सामर्थ्य है तो आगे आव, तेरी रणकी भूख भगाऊं इस भांति योधानिमें परस्पर वचनालाप होय रहे हैं तरवार वहे हैं भूमिगोचरी विद्याधर सव ही आए हैं भामण्डल पवनवेग वीर मृगांक विद्युद्ध्वज इत्यादि बडे २ राजा विद्याधर बडी सेनाकर युक्त महारण

विषै प्रवीण सो लवण अंकुशके समाचार सुन युद्धसे पराङ्मुख शिथिल होय गये अर सब बातोंविषै प्रवीण हनूमान सो भी सीताके पुत्र जान युद्धसे शिथिल होय रहा अर विमानके शिखरविषै आरूढ जानकीको देख सब ही विद्याधर हाथ जोड सीस निवाय प्रणामकर मध्यस्थ होय रहे सीता दोनों सेना देख रोमांच होय आई, कांपे है अंग जाका। लवण अंकुश लहलहाटकरे हैं ध्वजा जिनकी राम लक्ष्मणसे युद्धके उद्यमी भए। रामके सिंहकी ध्वजा लक्ष्मणके गरुडकी सो दोनों कुमार महायोधा राम लक्ष्मणसे युद्ध करते भये। लवण तो रामसे लडे अर अंकुश लक्ष्मणसे लडे सो लवने आवते ही श्रीरामकी ध्वजा छेदी अर धनुष तोडा तब राम हंसकर और धनुष लेयवेको उद्यमी भया। इतनेविषै लवने रामका रथ तोडा तब राम और रथ चढ प्रचंड है पराक्रम जिसका क्रोधकर भृकुटी चढाय ग्रीष्मके सूर्य समान तेजस्वी जैसे चमरेंद्रपर इंद्र जाय तैसे गया तब जानकीका नन्दन लवण युद्धकी पाहुनगति करनेको रामके सन्मुख आया रामके अर लवके परस्पर महायुद्ध भया। वाने वाके शस्त्र छेदे वाने वाके जैसा युद्ध राम अर लवका भया तैसा ही अंकुश अर लक्ष्मणका भया। या भांति परस्पर दोनों युगल लडे तब योधा भी परस्पर लडे घोडोंके समूह रणरूप समुद्रकी तरंग समान उच्छलते भये कोई एक योधा प्रतिपक्षीको टूटे बखतर देख दयाकर मौन गह रहा अर कईएक योधा मने करते परसेनाविषै पैठे सो स्वामीका नाम उचारते परचक्रसे लडते भये कईएक महाभट माते हाथियोंसे भिडते भये कईएक हाथियोंके दांत रूप सेजपर रणनिद्रा सुखसे लेते भये काहू एक महाभटका तुरंग काम आया सो पियादा ही लडने लगा काहूके शस्त्र टूट गये तो भी पीछे न होता भया हाथोंसे मुष्टि प्रहार करता भया अर कोई एक सामन्त बाण वाहने चुक गया उसे प्रतिपक्षी कहता भया बहुरि चलाय सो लज्जा कर न चलावता भया अर कोई एक निर्भयचित्त प्रतिपक्षीको शस्त्ररहित देख आप भी शस्त्र तज भुजावोंसे युद्ध करता भया

ते योधा बडे दाता रण संग्रामविषै प्राण देते भये परंतु पीठ न देते भये जहां रुधिरकी कीच होय रही है सो रथोंके पहिये डूब गये हैं सारथी शीघ्र ही नहीं चला सकें हैं। परस्पर शस्त्रोंके संपातकर अग्नि पड रही है अर हाथियोंकी सूंडके छांटे उछले हैं। अर सामन्तोंने हाथियोंके कुम्भस्थल विदारे हैं सामन्तोंके उरस्थल विदारे हैं हाथी काम आय गये हैं तिनकर मार्ग रुक रहा है अर हाथियोंके मोती विखर रहे हैं वह युद्ध महा भयंकर होता भया जहां सामन्त अपना सिर देयकर यशरूप रत्न खरीदते भए जहां मूर्छितपर कोई घात नहीं करै अर निर्बल पर घात न करै सामंतोंका है युद्ध जहां महा युद्धके करणहारे योधा जिनके जीवनेकी आशा नहीं क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजै तैसा होय रहा है शब्द जहां सो वह संग्राम समरस कहिये समान रस होता भया ॥

भावार्थ—न वह सेना हटी न वह सेना हटी योधानिमें न्यूनाधिकता परस्पर दृष्टि न पडी। कैसे हैं योधा? स्वामीविषै हैं परम भक्ति जिनकी अर स्वामीने आजीविका दई थी उसके बदले यह जीव दिया चाहे हैं प्रचण्ड रणकी है खाज जिनके सूर्य समान तेजको धरे संग्रामके धुरंधर होते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै लवणांकुशका लक्ष्मणसे युद्ध वर्णन करनेवाला एकसौदोवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०२ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! अब जो वृत्तान्त भया सो सुनो अनंगलवणके तो सारथी राजा वज्रजंघ अर मदनांकुशके राजा पृथु अर लक्ष्मणके विराधित अर रामके कृतांतवक्र तब श्रीराम वज्रावर्त धनुषको चढायकर कृतांतवक्रसे कहते भए अब तुम शीघ्रही शत्रुवों पर रथ चलावो ढील न करो, तब वह कहता भया हे देव! देखो यह घोडे नरवीरके बाणनिकर जरजरे होय रहे हैं इनमें

तेज नाहीं मानों निद्राको प्राप्त भए हैं यह तुरंग लोहूकी धाराकर धरतीको रंगे हैं मानों अपना अनुराग प्रभुको दिखावे हैं अर मेरी भुजा इसके बाणनिकर भेदी गई है वक्तर टूट गया है तब श्रीराम कहते भए मेरा भी धनुष युद्ध कर्मरहित ऐसा होय गया है मानों चित्रामका धनुष है अर यह मूसल भी कार्यरहित होय गया है अर दुर्निवार जे शत्रुरूप गजराज तिनको अंकुश समान यह हल सो भी शिथिलताको भजे है शत्रुके पक्षको भयंकर मेरे अमोघशस्त्र जिनकी सहस्र सहस्र यक्ष रक्षा करें वे शिथिल होय गए हैं शस्त्रोंकी सामर्थ्य नाहीं जो शत्रुपर चलें। गौतमस्वामी कहे हैं–हे श्रेणिक ! जैसे अनंगलवण आगे रामके शस्त्र निरर्थक होय गये तैसे ही मदनांकुशके आगे लक्ष्मणके शस्त्र कार्यरहित होय गए। वे दोनों भाई तो जानें कि ये रामलक्ष्मण तो हमारे पिता अर पितृव्य (चचा) हैं सो वे तो इनका अंग बचाय शस्त्रचलावें अर ये उनको जानें नहीं सो शत्रु जान कर शर चलावें लक्ष्मण दिव्यास्त्रकी सामर्थ्य उनपर चलवे की न जान शर शेल सामान्यचक्र खडग अंकुश चलावता भया सो अंकुशने बज्रदण्डकर लक्ष्मणके आयुध निराकरण किए अर रामके चलाए आयुध लवणने निराकरण किए फिर लवणने रामकी ओर शेल चलाया अर अंकुशने लक्ष्मण पर चलाया सो ऐसी निपुणतासे दोनोंके मर्मकी ठौर न लागे सामान्य चोट लगी सो लक्ष्मणके नेत्र घूमने लगे विराधितने अयोध्याकी ओर रथ फेरा तब लक्ष्मण सचेत होय कोप कर विराधितसे कहता भया–हे विराधित तैंने क्या किया मेरा रथ फेरा अब पीछा बहुरि शत्रुका सन्मुख लेवो रणमें पीठ न दीजिए जे शूरवीर हैं तिनको शत्रुके सन्मुख मरण भला परन्तु यह पीठ देना महा निंद्यकर्म शूरवीरोंको योग्य नाहीं। कैसे हैं शूरवीर ? युद्धमें बाणनिकर पूरित है अंग जिनका जे देव मनुष्यनिकर प्रशंसा योग्य वे कायरता कैसे भजें। मैं दशरथका पुत्र रामका भाई वासुदेव पृथिवी विषे प्रसिद्ध सो संग्राममें पीठ कैसे देऊं यह वचन लक्ष्मणने कहे तब विराधितने रथको युद्धके सन्मुख

किया सो लक्ष्मणके अर मदनांकुशके महायुद्ध भया लक्ष्मणने क्रोधकर महाभयंकर चक्र हाथमें लिया चक्र महाज्वालारूप देखा न जाय ग्रीष्मके सूर्य समान सो अंकुश पर चलाया सो अंकुशके समीप जाय प्रभारहित होय गया अर उलटा लक्ष्मणके हाथमें आया वहुरि लक्ष्मणने चक्र चलाया सो पीछे आया या भांति वारवार पीछा आया वहुरि अंकुशने धनुष हाथविषै गहा तव अंकुशको महा तेजरूप देख लक्ष्मणके पक्षके सव सामन्त आश्चर्यको प्राप्त भए तिनको यह वुद्धि उपजी यह महापराक्रमी अर्धचक्री उपजा लक्ष्मणने कोटि शिला उठाई अर मुनिके वचन जिनशासनका कथन और भांति कैसे होय अर लक्ष्मण भी मनविषै जानता भया कि ये वलभद्र नारायण उपजे आप अति लज्जावान होय युद्धकी क्रियासे शिथिल भया ॥

अथानन्तर लक्ष्मणको शिथिल देख सिद्धार्थ नारदके कहेसे लक्ष्मणके समीप आय कहता भया वासुदेव तुमही हो जिनशासनके वचन सुमेरुसें अति निश्चल हैं यह कुमार जानकीके पुत्र हैं गर्भविषै थे तव जानकीको वनमें तजी यह तिहारे अंग हैं तातैं इनपर चक्रादिक शस्त्र न चलें तव लक्ष्मणने दोनों कुमारोंका वृत्तान्त सुन हर्षित होय हाथसे हथियार डार दिए वपतर दूर किया सीताके दुःखकर अश्रुपात डारने लगा अर नेत्र घूमने लगे राम शस्त्र डार वक्तर उतार मोहकर मूर्छित भए, चन्दनसे छांट सचेत किए तव स्नेहके भरे पुत्रानिके समीप चले पुत्र रथसे उतर हाथ जोड सीस निवाय पिताके पायन पडे श्रीराम स्नेहकर द्रवीभूत भया है मन जिनका पुत्रोंको उरसे लगाय विलाप करत भए आंसुनि कर मेघकासा दिन किया। राम कहे हैं हाय पुत्र हो ! मैं मंदवुद्धि गर्भविषै तिष्ठते तुमको सीता सहित भयंकर वनविषै तजे तिहारी माता निर्दोष, हाय पुत्र हो मैं कोई विस्तीर्ण पुण्य कर तुम सारिखे पुत्र पाए सो उदरविषै तिष्ठते तुम भयंकर वनविषै कष्टको प्राप्त भए हाय वत्स हो जो यह वज्रजंघ वनमें न

आवता तो तिहारा मुखरूप चन्द्रमा मैं कैसे देखता, हाय बालक हो इन अमोघ दिव्यास्त्रोंकर तुम न हते गए सो मेरे पुण्यके उदयकर देवोंने सहाय करी हाय मेरे अंगज हो मेरे बाणानिकर बींधे तुम रण-क्षेत्रविषे पडते तो न जानूं जानकी क्या करती सब दुखोंमें घरसे काढनेका बडा दुख है सो तिहारी माता महा गुणवन्ती व्रतवंती पतिव्रता मैं बनमें तजी अर तुमसे पुत्र गर्भविषे सो मैं यह काम बहुत बिना स-मझे किया अर जो कदाचित् तिहारा युद्धमें अन्यथा भाव भया होता तो मैं निश्चयसे जानूं हूं शोकसे विह्वल जानकी न जीवती। या भांति रामने विलाप किया, बहुरि कुमार विनयकर लक्ष्मणको प्रणाम करते भए लक्ष्मण सीताके शोकसे विह्वल आंसू डारता स्नेहका भरा दोनों कुमारनिको उरसे लगावता भया। शत्रुघन आदि यह वृत्तान्त सुन वहां आए कुमार यथायोग्य विनय करते भए ये उरसों लगाय मिले। परस्पर अति प्रीति उपजी दोनों सेनाके लोक अतिहित कर परस्पर मिले क्योंकि जब स्वामीकूं स्नेह होय तब सेवकोंके भी होय सीता पुत्रोंका माहात्म्य देख अति हर्षित होय विमानके मार्ग होय पीछे पुण्डरीकपुरविषे गई अर भामण्डल विमानसे उतर स्नेहका भरा आंसू डारता भानजोंसे मिला, अ-तिहर्षित भया अर प्रीतिका भरा हनूमान उरसे लगाय मिला अर बारम्बार कहता भया भली भई भली भई, अर विभीषण सुग्रीव विराधित सबही कुमारनिसे मिले, परस्पर हित संभाषण भया भूमिगोचरी विद्याधर सबही मिले अर देवनिका आगम भया सबोंको आनन्द उपजा राम पुत्रनिको पाय कर अति आनन्दको प्राप्त भए, सकल पृथिवीके राज्यसे पुत्रोंका लाभ अधिक मानते भए, जो रामके हर्ष भया सो कहिवेमें न आवे अर विद्याधरी आकाशविषै आनन्दसे नृत्य करती भई अर भूमिगोचरिनिकी स्त्री पृथिवीविषैं नृत्य करती भई अर लक्ष्मण आपको कृतार्थ मानता भया मानों सब लोक जीता हर्षसे फूल गए हैं लोचन जिनके, अर राम मनविषै जानता भया मैं सगर चक्रवर्ती समान हूं अर कुमार

नों भीम अर भगीरथ समान हैं राम वज्रजंघसे अति प्रीति करता भया जो तुम मेरे भामण्डल समान हो अयोध्यापुरी तो पहिले ही स्वर्गपुरी समान थी तो बहुरि कुमारनिके आयवे कर अति शोभायमान स्त्री सहजही शोभायमान होय अर शृंगार कर अति शोभाको पावै, श्रीराम लक्ष्मण-पुत्रों सहित सूर्यकी ज्योतिसमान जो पुष्पक विमान उसविषै विराजे सूर्य समान है की रामलक्ष्मण अर दोऊ कुमार अद्भुत आभूषण पहिरे सो कैसी शोभा वनी है मानों सुखरपर महामेघ विजुरीके चमत्कार सहित तिष्ठा है॥

भावार्थ—विमान तो सुमेरुका शिखर भया अर लक्ष्मण महामेघका स्वरूप भया अर राम तथा (रा)म के पुत्र विद्युत् समान भये सो ये चढ़कर नगरके वाह्य उद्यान विषै जिनमंदिर हैं तिनके दर्शनको चले सो नगरके कोटपर ठौर ठौर ध्वजा चढी हैं तिनको देखते धीरे धीरे जाय हैं लार अनेक राजा, केई हाथियों पर चढे, केई घोड़ों पर केई रथों पर चढे जाय हैं अर पियादोंके समूह जाय हैं, धनुष वाण इत्यादि अनेक आयुध अर ध्वजा छत्रनिकर सूर्यकी किरण नजर नहीं पडे हैं अर स्त्रीनिके समूह खनिविषै बैठी देखे हैं। लव अंकुशके देखवेका सवनिकूं बहुत कौतूहल है नेत्ररूप अंजुलिनिकर के सुन्दरतारूप अमृतका पान करै हैं सो तृप्त नाहीं होय हैं एकाग्रचित्त भई इनको देखे हैं नगर में नर नारिनिकी ऐसी भीड़ भई काहूके हार कुंडलकी गम्य नाहीं अर नारी जन परस्पर वार्ता करै हैं कोई कहे है—हे माता! टुक मुख इधर कर मोहि कुमारनिके देखिबेका कौतुक है। हे अखण्डकौतुके तूने तो घनी बार लग देखे अब हमें देखने देवो अपना सिर नीचा कर ज्यों हमको दीखै कहा ऊंचा सिरकर रही है, कोई कहे है—हे सखि! तेरे सिरके केश बिखर रहे हैं, सो नीके समार अर कोई कहे है—हे क्षिप्तमानसे कहिये एक ठौर नाहीं चित्त जाका सो तू कहा हमारे प्राणोंको पीड़े है तू न

देखैं यह गर्भवती स्त्री खडी है पीड़ित है कोऊ कहे टुक परे होहु कहा अचेतन होय रही है कुमारोंको न देखने देहै यह दोनों रामदेवके कुमार रामदेवके समीप बैठे अष्टमीके चन्द्रमासमान है ललाट जिनका कोई पूछे है इनमें लवण कौन अर अंकुश कौन यह तो दोनों तुल्यरूप भासे हैं तब कोई कहे है यह लाल बस्त्र पहिरे लवण है। अर यह हरे बस्त्र पहिरे अंकुश है। अहो धन्य सीता महापुण्यवती जिनने ऐसे पुत्र जने अर कोई कहे है धन्य है वह स्त्री जिसने ऐसे बर पाए हैं एकाग्रचित्त भई स्त्री इत्यादि वार्ता करतीं भई इनके देखवेमें है चित्त जिनका, अति भीड भई सो भीडमें कर्णाभरणरूप सर्पकी डाढकर डसे गये हैं कपोल जिनके सो न जानती भई तद्गत है चित्त जिनका काहूकी कांचीदाम जाती रही सो वाहि खबर नहीं काहूके मोंतिनिके हार टूटे सो मोती विखर रहे हैं। मानों कुमार आये सो ये पुष्पांजली बरसें हैं अर केई एकोंको नेत्रों की पलक नहीं लगें है असवारी दूर गई है तोभी उसी अर देखें हैं नगरकी उत्तम स्त्री वेई भई वेल सो पुष्पवृष्टि करती भई सो पुष्पोंकी मकरंदकर मार्ग सुगन्ध होय रहा है श्रीराम अति शोभाकूं प्राप्त भए पुत्रोंसहित बनके चैत्यालयोंका दर्शनकर अपने मन्दिर आये। कैसा है? मन्दिर महा मंगलकर पूर्ण है ऐसे अपने प्यारे जनोंके आगमका उत्साह सुखरूप ताका वरणन कहां लग करिये पुण्य रूपी सूर्यका प्रकाशकर फूला है मन कमल जिनका ऐसे मनुष्य वेई अद्भुत सुखकूं पावे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणसूं लवणांकुशका मिलाप वर्णन करनेवाला एकसौ तीनवा पर्व पूर्ण भया॥ १०३॥

अथानन्तर विभीषण सुग्रीव हनूमान् मिलकर रामसे विनती करते भये हे नाथ हमपर कृपा करो हमारी विनती मानों जानकी दुःखमें तिष्ठे हैं इसलिये यहां लायवेकी आज्ञा करो, तब राम दीर्घ उष्ण निश्वास नाख क्षण एक बिचारकर बोले, मैं सीताको शील दोषरहित जानूं हूं, वह उत्तम चित्त है परन्तु लोकापवादकर घरसे काढी है अब कैसे बुलाऊं, इसलिये लोकनिको प्रतीति उपजायकर जानकी आवै तब हमारा उनका सहवास होय, अन्यथा कैसे होय इसलिये सब देशनिके राजानिको बुलावो समस्त विद्याधर अर भूमिगोचरी आवें सबनिके देखते सीता दिव्य लेकर शुद्ध होय मेरे घरविषै प्रवेश करे जैसे शची इंद्रके घरविषै प्रवेश करे तब सबने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा तब सब देशनिके राजा बुलाये सो बाल वृद्ध स्त्री परिवार सहित अयोध्या नगरी आये जे सूर्यको भी न देखें घरहीविषै रहें वे नारी भी आईं अर लोकनिकी कहा बात ? जे वृद्ध बहुत वृतान्तके जानने हारे देशविषै मुखिया सब दिशानिसे आए कैयक तुरंगों पर चढे कैयक रथनिपर चढे तथा पालकी हाथी अर अनेक प्रकार असवारिनिपर चढे बडी विभूतिसे आये विद्याधर आकाशके मार्ग होय विमान बैठे आए अर भूमिगोचरी भूमिके मार्ग आये मानों जगत् जंगम होय गया, रामकी आज्ञासे जे अधिकारी हुते तिन्होंने नगरके बाहिर लोकनिके रहनेके लिये डेरे खडे कराए अर महा विस्तीर्ण अनेक महिल बनाये तिनके दृढ-स्तंभके ऊंचे मंडप उदार झरोखे सुन्दर जाली तिनविषै स्त्रियें भेली अर पुरुष भेले भये, पुरुष यथायोग्य बैठे दिव्यको दिखवेकी है अभिलाषा जिनके जेते मनुष्य आए तिनकी सर्वभांति पाहुनगति राजद्वारके अधिकारियोंने करी, सबनिको शय्या आसन भोजन तांबूल वस्त्र सुगन्ध मालादिक समस्त सामग्री राजद्वारसे पहुंची सबनिकी स्थिरता करी अर रामकी आज्ञासे भामंडल विभीषण हनूमान सुग्रीव विराधित रत्नजटी यह बडे बडे राजा आकाशके मार्ग क्षणमात्रविषै पुण्डरीकपुर गए सो सब सेना नगरके बाहिर

राख अपने समीप लोगनि सहित जहां जानकी थी वहां आए जय जय शब्दकर पुष्पांजलि चढाय पांयनको प्रणामकर अति विनयसंयुक्त आंगणविषै बैठे, तब सीता आंसू डारती अपनी निंदा करती भई—दुर्जनोंके वचनरूप दावानलकरि दग्ध भये हैं अंग मेरे सो क्षीरसागरके जलकर भी सींचे शीतल न होंय। तब वे कहते भये हे देवि भगवति सौम्य उत्तमे अब शोक तजो अर अपना मन समाधानविषै लावो या पृथिवीविषै ऐसा कौन प्राणी है जो तुम्हारा अपवाद करै ऐसा कौन जो पृथिवीको चलायमान करै अर अग्निकी शिखाकों पीवै अर सुमेरुके उठायवेका उद्यम करै अर जीभकर चांद सूर्यको चाटै ऐसा कोई नाहीं। तुम्हारा गुणरूप रत्ननिका पर्वत कोई चलाय न सके, अर जो तुम सारिखी महा सतीयोंका अपवाद करे तिनकी जीभके हजार टूक क्यों न होवें हम सेवकोंके समूहको भेजकर जो कोई भरत क्षेत्रविषै अपवाद करेंगे उन दुष्टोंका निपात करेंगे अर जो विनयवान तुम्हारे गुणगायवेविषै अनुरागी हैं उनके गृहविषै रत्नवृष्टि करेंगे यह पुष्पक विमान श्रीरामचन्द्रने भेजा है उसमें आनंदरूप होय अयोध्याकी तरफ गमन करो सब देश अर नगर अर श्रीरामका घर तुम विना न सोहै जैसे चन्द्रकला विना आकाश न सोहे अर दीपक बिना मंदिर न सोहे अर शाखा बिना वृक्ष न सोहे हे राजा जनककी पुत्री आज रामका मुखचन्द्र देखो, हे पंडिते पतिव्रते तुमको अवश्य पतिका वचन मानना जब ऐसा कहा तब सीता मुख्य सहेलियोंको लेकर पुष्पक विमानविषै आरूढ होय शीघ्रही संध्याके समय अयोध्या आई सूर्य अस्त होय गया सो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै रात्री पूर्ण करी आगें राम सहित यहां आवती हुती सो वन अति मनोहर देखती हुती सो अब राम बिना रमणीक न भाषा॥

अथानन्तर सूर्य उदय भया कमल प्रफुल्लित भये जैसे राजाके किंकर पृथिवीविषै बिचरें तैसें सूर्यकी किरण पृथिवीमें विस्तरी जैसे दिव्यकर अपवाद नस जाय तैसें सूर्यके प्रताप कर अंधकार दूर भया

तब सीता उत्तम नारियों कर युक्त रामके समीप चली हथिनी पर चढी मनकी उदासीनता कर हतीगई है प्रभा जिसकी तौभी भद्र परिणामकी धरणहारी अत्यन्त सोहती भई जैसें चन्द्रमाकी कला ताराओं कर मंडित सोहे तैसे सीता सखियोंकर मंडित सोहै सब सभा विनयसंयुक्त सीताको देख बंदना करते भये यह पापरहित धीरताकी धरणहारी रामकी रमा सभाविषे आई राम समुद्र समान क्षोभको प्राप्त भये लोक सीताके जायवेकर विषादके भरे थे अर कुमारोंका प्रताप देख आश्चर्यके भरे भये अब सीताके आयवे कर हर्षके भरे ऐसे शब्द करते भए हे माता सदा जयवंत होवो नंदो वरधो फूलो फलो धन्य यह रूप धन्य यह धीर्य धन्य यह सत्य धन्य यह ज्योति धन्य यह महानुभावता धन्य यह गंभीरता धन्य निर्मलता ऐसे वचन समस्तही नर नारीनिके मुखसे निकसे आकाशविषे विद्याधर भूमिगोचरी महा कौतुक भरे पलक रहित सीताके दर्शन करते भए । अर परस्पर कहते भए पृथिवीके पुण्यके उदयसे जनकसुता पीछे आई, कैएक तौ वहां श्रीरामकी ओर निरखे हैं जैसे इन्द्रकी ओर देव निरखें कैएक रामके समीप बैठे लव अर अंकुश तिनको देख परस्पर कहे हैं ये कुमार रामके सदृश ही हैं अर कैईएक लक्ष-मणकी ओर देखे हैं कैसे हैं लक्ष्मण शत्रुवोंके पक्षके क्षय करिवेको समर्थ अर कई शत्रुघ्नकी ओर कैईएक भामण्डलकी ओर कईएक हनूमानकी ओर कैईएक विभीषणकी ओर कईएक विराधितकी ओर अर कईएक सुग्रीवकी ओर निरखे हैं अर कईएक आश्चर्यको प्राप्त भए सीताकी ओर देखे हैं।

अथानन्तर जानकी जायकर रामको देख आपको वियोग सागरके अन्तको प्राप्त भई मानती भई, जब सीता सभामें आई तब लक्ष्मण अर्घ देय नमस्कार करता भया, अर सब राजा प्रणाम करते भए सीता शीघ्रता कर निकट आवने लगी तब राघव यद्यपि अक्षोभित हैं तथापि सकोप होय मनमें विचारते भये इसे विषम वनमें मेली थी सो मेरे मनकी हरणहारी फिर आई। देखो यह महा ढीठ

है मैं तजी तौभी मोसे अनुराग नहीं छाडे है यह रामकी चेष्टा जान महा सती उदासचित्त होय विचारती भई मेरे वियोगका अन्त नहीं आया मेरा मनरूप जहाज विरहरूप समुद्रके तीर आय फटा चाहे है। ऐसी चिंतासे व्याकुल चित्त भई पगके अंगूठेसे पृथिवी कुचरती भई बलदेवके समीप भामण्डलकी बहिन कैसी सोहे है जैसी इन्द्रके आगे सम्पदा सोहै तब राम बोले—हे सीते! मेरे आगे कहां तिष्ठे है तू परे जा, मैं तेरे देखवेका अनुरागी नाहीं मेरी आंख मध्याह्नके सूर्य अर आशीविष सर्प तिनको देखसके परंतु तेरे तनुको न देख सके हैं तू बहुत मास दशमुखके मन्दिरमें रही अब तोहि घरमें राखना मोहि कहा उचित तब जानकी बोली तुम महा निर्दई चित्त हो तुमने महा पण्डित होयकर भी मूढ लोकनकी न्याईं मेरा तिरस्कार कीया सो कहा उचित मुझे गर्भवतीको जिनदर्शनका अभिलाष उपजा हुता सो तुम कुटिलतासे यात्राका नाम लेय विषम वनमें डारी यह कहां उचित मेरा कुमरण होता अर कुगति जाती याविषै तुमको कहा सिद्ध होता, जो तिहारे मनविषै तजवेकी हुती तो आर्यिकावोंके समीप मेलती होती। जे अनाथ दीन दालिद्री कुटुम्ब रहित महा दुखी तिनको दुख हरिवेका उपाय जिनशासनका शरण है यासमान अर उत्कृष्ट नाहीं। हे पद्मनाभ! तुम करवेमैं तो कछू कमी न करी अब प्रसन्न होवो आज्ञा करो सो करूं यह कहकर दुखकी भरी रुदन करती भई। तब राम बोले हे देवि! मैं जानू हूं तिहारा निर्दोषशील है अर तुम निष्पाप अणुव्रतकी धरणहारी मेरी आज्ञाकारिणी हो तिहारे भावनकी शुद्धता मैं भली भांति जानू हूं परंतु ये जगतके लोक कुटिल स्वभाव हैं। इन्होंने वृथा तिहारा अपवाद उठाया सो इनको संदेह मिटे अर इनको यथावत् प्रतीति आवे सो करहु। तब सीताने कही आप आज्ञा करो सो ही प्रमाण जगतविषै जेते प्रकारके दिव्य हैं सो सबकरके पृथिवीका संदेह हरूं हे नाथ! विषोंविषै महाविष कालकूट है जिसे सूंघकर आशीविष सर्प भी भस्म होय जाय सो मैं पीऊं अर अग्निकी

विषम ज्वालाविषे प्रवेश करूं अर जो आप आज्ञा करो सो करूं तब क्षण एक बिचारकर राम बोले अ-
ग्नि कुण्डविषे प्रवेश करो, सीता महाहर्षकी भरी कहती भई यही प्रमाण। तब नारद मनविषैं विचारते
भए यह तो महा सती है परंतु अग्निका कहा विश्वास याने मृत्यु आदरी अर भामण्डल हनूमानादिक
महाकोपसे पीडित भये अर लव अंकुश माताका अग्निविषे प्रवेश करवेका निश्चय जान अति व्याकुल
भये अर सिद्धार्थ दोनो भुजा ऊंचीकर कहता भया हे राम ! देवोंसे भी सीताके शीलकी महिमा न कही
जाय तो मनुष्य कहा कहें। कदाचित सुमेरु पातालविषे प्रवेश करै अर समस्त समुद्र सूक जाय तौ भी
सीताका शीलव्रत चलायमान न होय, जो कदाचित् चन्द्राकिरण उष्ण होय, अर सूर्यकिरण शीतल होय
तौ भी सीताको दूषण न लगे मैं विद्याके बलसे पंच सुमेरुविषे तथा जे अर अकृत्रिम चैत्यालय शास्वते
वहां जिनबन्दना करी—हे पद्मनाभ ! सीताके व्रतकी महिमा मैं ठौर २ मुनियोंके मुखसे सुनी है तातैं तुम
महा विचक्षण हो महासतीको अग्नि प्रवेशकी आज्ञा न करो अर आकाशविषे विद्याधर और पृथिवीविषैं
भूमिगोचरी सब यही कहते भये—हे देव ! प्रसन्न होय सौम्यता भजो हे नाथ ! अग्नि समान कठोरचित्त
न करो सीता सती है सीता अन्यथा नहीं अन्यथा जे महा पुरुषोंकी राणी होवें कदे ही विकार रूप न
होवें सब प्रजाके लोक यही वचन कहते भये अर व्याकुल भये मोटी मोटी आंसूओंकी बून्द डारते भये॥

तब रामने कही तुम ऐसे दयावान् हो तो पहिले अपवाद क्यों उठाया रामने किंकरोंको आज्ञा करी
एक तीनसै हाथ चौखटिया वापी खोदहु अर सूके ईंधन चन्दन अर कृष्णागुरु तिनकर भरहु अर अग्नि
कर जाज्वल्यमान करहु साक्षात् मृत्युका स्वरूप करहु तब किंकरानिने आज्ञा प्रमाण कुदालानिसे खोद
अग्निवापिका बनाई अर ताही रात्रीकूं महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषे सकलभूषण मुनिकूं पूर्व वैरके
योग कर महा रौद्र विद्युद्वक्रनामा राक्षसीने अत्यन्त उपसर्ग किया सो मुनि अत्यन्त उपसर्गको जीत

केवलज्ञानको प्राप्त भये। यह कथा सुन गौतमस्वामी से श्रेणिकने पूछी हे प्रभो! राक्षसीके अर मुनिके पूर्व बैर कहा? तब गौतमस्वामी कहते भये हे श्रेणिक! सुन—विजियार्द्ध गिरिकी उत्तर श्रेणीविषै महा शोभायमान गुंजनामा नगर तहां राजा सिंहविक्रम राणी श्री ताके पुत्र सकलभूषण ताके स्त्री आठसै तिनमें मुख्य किरणमण्डला सो एक दिन उसने अपनी सौकिनके कहेसूं अपने मामाके पुत्र हेमशिख का रूप चित्रपटमें लिखा सो सकलभूषणने देख कोप कीया तब सब स्त्रीनिने कही यह हमने लिखाया है इसका कोई दोष नहीं तब सकलभूषण कोप तज प्रसन्न भया। एक दिन यह किरणमण्डला पतिव्रता पतिसहित सूती थी सो प्रमाद थकी बरडकर हेमशिख ऐसा नाम कहा सो यह तो निर्दोष इसके हेमशिखमें भाईकी बुद्धि अर सकलभूषणने कछु और भाव विचारा राणीसे कोपकर वैराग्यको प्राप्त भए अर राणी किरणमण्डला भी आर्यिका भई परन्तु धनीसे द्वेष भाव जो इसने झूठा दोष लगाया सो मर कर विद्युद्वक्र नामा राक्षसी भई सो पूर्व वैर थकी सकलभूषण स्वामी आहारको जांय तब यह अन्तराय करै कभी माते हाथियोंके बन्धन तुड़ाय देय हाथी ग्राममें उपद्रव करें इनको अन्तराय होय कभी यह आहार को जांय तब अग्नि लगाय देय कभी यह रजोवृष्टि करे इत्यादि नाना प्रकारके अन्तराय करै कभी अश्व का कभी वृषभ का रूपकर इनके सन्मुख आवे कभी मार्गमें कांटे बखेरे इसभान्ति यह पापिनी कुचेष्टा करै एक दिन स्वामी कायोत्सर्ग धर तिष्ठे थे अर इसने शोर किया यह चोर है सो इसका शोर सुनकर दुष्टोंने पकडे अपमान किया फिर उत्तमपुरुषोंने छुड़ाय दिए एक दिन यह आहार लेकर जाते थे सो पापिनी राक्षसी ने काहू स्त्री का हार लेकर इनके गलेमें डार दिया अर शोर किया कि यह चोर है हार लिये जाय है तब लोग आय पहुंचे इनको पीडा करी हार लिया

भले पुरुषोंने छुडाय दिये इसभांति यह क्रूरचित्त दयारहित पूर्व वैर विरोधसे मुनि को उपद्रव करै, गई रात्रिको प्रातिमा योग धर महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै विराजे थे सो राक्षसीने रौद्र उपसर्ग किया विंतर दिखाये अर हस्ती सिंह व्याघ्र सर्प दिखाए अर रूप गुण मंडित नाना प्रकार की नारी दिखाई भांति भांतिके उपद्रव किए परन्तु मुनि का मन न डिगा तब केवलज्ञान उपजा सो केवलकी महिमा कर दर्शनको इन्द्रादिक देव कल्पवासी भवनवासी व्यंतर जोतिषी कैयक हाथियोंपर चढे कैयक सिंहोंपर-चढे कैयक ऊंट खच्चर मीढा बघेरा अष्टापद इनपर चढे कैयक पक्षियोंपर चढे कैयक विमान बैठे कैयक रथोंपर चढे कैयक पालकी चढे इत्यादि मनोहर बाहनोंपर चढे आए देवोंकी असवारीके तिर्यंच नाहीं देवों ही की माया है देव ही विक्रियाकर तिर्यंचका रूप धरें हैं आकाशके मार्ग होय महाविभूति सहित सर्व दिशाविषै उद्योत करते आए मुकुट धरे हार कुण्डल पहिरे अनेक आभूषणोंकर शोभित सकलभूषण केवलीके दर्शनको आये पवनसे चंचल है ध्वजा जिनकी अप्सरावोंके समूह सहित अयोध्याकी ओर आए महेंद्रोदय उद्यानविषै केवली विराजे हैं तिनके चरणारविंदविषै है मन जिनका पृथिवीकी शोभा देखते आकाशसे नीचे उतरे अर सीताके दिव्यको अग्निकुंड तयार होय रहा था सो देखकर एक मेघ-केतु नामा देव इन्द्रसे कहता भया–हे देवेंद्र ! हे नाथ ! सीता महासतीको उपसर्ग आय प्राप्त भया है यह महाश्राविका पतिव्रता शीलवंती अति निर्मलचित्त है इसे ऐसा उपद्रव क्यों होय ? तब इंद्रने आज्ञा करी हे मेघकेतु ! मैं सकलभूषण केवलीके दर्शनको जाऊं हूं अर तू महासतीका उपसर्ग दूर करियो । या भांति आज्ञाकर इन्द्र तो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै केवलीके दर्शनको गया अर मेघकेतु सीताके अग्निकुंडके ऊपर आय आकाशविषै विमानविषै तिष्ठा । कैसा है विमान ? सुमेरुके शिखर समान है शोभा जिसकी,

वह देव आकाशविषै सूर्य सारिखा देदीप्यमान श्रीरामकी ओर देखे राम महासुन्दर सब जीवोंके मनको हरे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सकलभूषणकेवलीके दर्शनकूं देवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौ चारवां पर्व पूर्ण भया ॥ १०४ ॥

अथानन्तर श्रीराम उस अग्निवापिकाको निरख कर व्याकुल मन भया विचारै है अब इस कांताको वहां देखूंगा यह गुणनिकी खान महा लावण्यता कर युक्त कांतिकी धरणहारी शील रूप वस्त्रकर मंडित मालतीकी माला समान सुगन्ध सुकुमार शरीर अग्निके स्पर्शही से भस्म होय जायगी जो यह राजा जनकके घर न उपजती तो भला था यह लोकापवाद अग्निविषै मरण तो न होता इस बिना मुझे क्षणमात्र भी सुख नाहीं इस सहित बनविषै बास भला अर या बिना स्वर्गका बास भी भला नाहीं यह महा शीलवंती परम श्राविका है इसे मरणका भय नाहीं इहलोक परलोक मरण वेदना अकस्मात असहायता चोर यह सप्त भय तिनकर रहित सम्यकदर्शन इसके दृढ है यह अग्निविषै प्रवेश करेगी अर मैं रोकूं तो लोगोंविषै लज्जा उपजे अर यह लोक सब मुझे कह रहे यह महा सती है याहि अग्निकुण्डविषै प्रवेश न करावो सो मैं न मानी अर सिद्धार्थ हाथ ऊंचे कर कर पुकारा मैं न मानी सो वह भी चुप होय रहा अब कौन मिसकर इसे अग्निकुण्डविषै प्रवेश न कराऊं अथवा जिसके जिस भांति मरण उदय होय है उसी भांति होय है टारा टरे नाहीं तथापि इसका वियोग मुझसे सहा न जाय या भांति राम चिंता करे हैं अर वापीविषै अग्नि प्रज्वलित भई समस्त नर नारियोंके आंसुवोंके प्रवाह चले धूम कर अन्धकार होय गया मानों मेघमाला आकाशविषै फैल गई आकाश भ्रमर समान श्याम होय गया अथवा कोकिल

स्वरूप होय गया अग्निके धूमकर सूर्य आच्छादित हुवा मानों सीताका उपसर्ग देख न सका सो दया कर छिपगया ऐसी अग्नि प्रज्वली जिसकी दूरतक ज्वाला विस्तरी मानों अनेक सूर्य ऊगे अथवा आकाशविषे प्रलयकालकी सांझ फूली, जानिए दशों दिशा स्वर्णमई होय गई हैं मानों जगत् विजुरीमय होय गया अथवा सुमेरुके जीतवेको दूजा जंगम सुमेरु और प्रकटा तब सीता उठी अत्यन्तनिश्चलचित्त कायोत्सर्ग कर अपने हृदयविषे श्रीऋषभादि तीर्थंकरदेव विराजे हैं तिनकी स्तुतिकर सिद्धोंको साधुवोंको नमस्कार कर श्रीमुनिसुव्रत नाथ हरिवंशके तिलक बीसवां तीर्थंकर जिनके तीर्थविषे ये उपजे हैं तिनका ध्यान कर सर्व प्राणियोंके हितु आचार्य तिनको प्रणाम कर सर्व जीवोंसे क्षमा भाव कर जानकी कहती भई मन कर बचनकर कायकर स्वप्नविषे भी राम बिना और पुरुष मैं न जाना जो मैं झूठ कहती हूं तो यह अग्निकी ज्वाला क्षणमात्रविषे मुझे भस्म करियो जो मेरे पतिव्रता भावविषे अशुद्धता होय राम सिवाय अर नर मनसे भी आभिलाषा होय तो हे वैश्वानर मुझे भस्म करियो जो मैं मिथ्यादर्शनी पापिनी व्यभिचारिणी हूं तो इस आग्निसे मेरा देह दाहको प्राप्त होवे अर जो मैं महा सती पतिव्रता अणुव्रत धारणी श्रावका हूं तो मुझे भस्म न करियो, ऐसा कहकर नमोकार मंत्र जप सीता सती अग्निवापिकामें प्रवेश करती भई सो याके शीलके प्रभावसे अग्नि था सो स्फटिक मणि सारिखा निर्मल शीतल जल हो गया मानों धरतीको भेदकर यह वापिका पातालसे निकसी जलविषे कमल फूल रहे हैं भ्रमर गुंजार करें हैं अग्निकी सामग्री सब बिलाय गई न इंधन न अंगार जलके झाग उठने लगे अर अति गोल गंभीर महा भयंकर भमर उठने लगे जैसी मृदंगकी ध्वनि होय तैसे शब्द जलविषे होते भए जैसा क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजे तैसा शब्द वापीविषे होता भया अर जल उछला पहले गोडों तक आया बहुरि कमर तक आया फिर निमिषमात्रविषे छाती तक आया तब भूमिगोचरी डरे अर आकाशविषे जे वि-

द्याधर हुते तिनको भी बिकल्प उपजा न जानिए क्या होय बहुरि वह जल लोगोंके कंठतक आया तब अति भय उपजा सिर ऊपर पानी चला तब लोग अति भयको प्राप्त भए ऊंची भुजाकर बस्त्र अर बालकोंको उठाय पुकार करते भए—हे देवि ! हे लक्ष्मी ! हे सरस्वती ! हे कल्याणरूपिणी ! हे धर्मधुरंधरे हे मान्ये ! हे प्राणीदयारूपिणी हमारी रक्षा करो हे महासाध्वी ! मुनिसमान निर्मलमनकी धरणहारी दया करो हे माता वचावो वचावो प्रसन्न होवो जब ऐसे वचन विह्वल जो लोक तिनके मुखसे निकसे तब माताकी दयासे जल थंभा लोक बचे जलविषै नानाजातिके ठौर ठौर कमल फूले जल साम्यताको प्राप्त भया जे भंवर उठे थे सो मिटे अर भयंकर शब्द मिटे। वह जल जो उछला था सो मानों वापीरूप बधू अपने तरंगरूप हस्तोंकर माताके चरण युगल स्पर्शती थी। कैसे हैं चरणयुगल? कमलके गर्भसे हू अति कोमल हैं अर नखोंकी ज्योतिकर देदीप्यमान हैं जलविषै कमल फूले तिनकी सुगंधता कर भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानों संगीत करें हैं अर क्रौंच चकवा हंस तिनके समूह शब्द करें हैं अति शोभा होय रही है अर मणि स्वर्णके सिवाण बन गए तिनको जलके तरंगोंके समूह स्पर्शें हैं अर जिसके तट मरकत मणि कर निर्मापे अति सोहै हैं॥

ऐसे सरोवरके मध्य एक सहस्रदलका कमल कोमल विमल विस्तीर्ण प्रफुल्लित महाशुभ उसके मध्य देवनिने सिंहासन रचा रत्ननिकी किरणनिकर मंडित चंद्रमंडल तुल्य निर्मल उसमें देवांगनाओंने सीताको पधराई अर सेवा करती भई सो सीता सिंहासनविषै तिष्ठी अति अद्भुत है उदय जिसका शची तुल्य सोहती भई अनेक देव चरणनिके तल पुष्पांजली चढाय धन्य धन्य शब्द कहते भए आकाशविषै कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी वृष्टि करते भए,अर नानाप्रकारके दुन्दुभी वाजे तिनके शब्दकर सब दिशा शब्दरूप होती भई गुंज जातिके वादित्र महामधुर गुंजार करते भये अर मृदंग वाजते भए ढोल दमा-

मः वाजे नांदी जातिके वादित्र वाजे अर कोलाहल जातिके वादित्र वाजे अर तुरही करनाल अनेक वादित्र वाजे शंखके समूह शब्द करते भए अर वीण वांसुरी वाजा ताल झांझ मंजीर झालरी इत्यादि अनेक वादित्र वाजे विद्याधरानिके समूह नाचते भए अर देवनिके यह शब्द भए श्रीमत् जनक राजाकी पुत्री परम उदयकी धरणहारी श्रीमत् रामकी राणी अत्यन्त जयवन्त होवे अहो निर्मल शील जिसका आश्चर्यकारी ऐसे शब्द सब दिशाविषै देवनिके होते भये तब दोनों पुत्र लवण अंकुश अकृत्रिम है मातासे हित जिनका सो जल तिरकर अतिहर्षके भरे माताके समीप गए दोनों पुत्र दोनों तरफ जाय ठाढे भए, माताको नमस्कार किया सो माताने दोनोके शिर हाथ धरा रामचन्द्र मिथिलापुरीके राजाकी पुत्री मैथिली कहिए सीता उसे कमलवासिनी लक्ष्मी समान देख महा अनुरागके भरे समीप गए कैसी है सीता मानों स्वर्णकी मूर्ति अग्निविषै शुद्ध भई है अति उत्तम ज्योतिके समूहकर मंडित है शरीर जिसका राम कहे हैं हे देवि ! कल्याणरूपिणी उत्तम जीवनिकर पूज्य महा अद्‌भुत चेष्टाकी धरणहारी शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है मुख जिसका ऐसी तुम सो हमपर प्रसन्न होवो अब मैं कभी ऐसा दोष न करूंगा जिसमें तुमको दुःख होय । हे शीलरूपिणी मेरा अपराध क्षमा करो मेरे आठ हजार स्त्री हैं तिनकी सिरताज तुम हो, मोको आज्ञा करो सो करूं । हे महासती मैं लोकापवादके भयसे अज्ञानी होकर तुमको कष्ट उपजाया सो क्षमा करो अर हे प्रिये पृथिवीविषै मो सहित यथेष्ट बिहार करो यह पृथ्वी अनेक बन उपवन गिरियों कर मंडित है देव विद्याधरानिकर संयुक्त है समस्त जगतकर आदरसों पूजी थकी मोसहित लोकविषै स्वर्ग समान भोग भोगो उगते सूर्यसमान यह पुष्पकाविमान उसविषै मेरे सहित आरूढ भई सुमेरु पर्वतके बनविषै जिनमंदिर हैं तिनका दर्शन कर अर जिन २ स्थाननिविषै तेरी इच्छा होय वहां क्रीडा कर । हे कांते ! तू जो कहे सो ही मैं करूं तेरा वचन कदाचित् न उलंघू देवांगनास-

मान वह विद्याधरी तिनकर मंडित हे बुद्धिवंती तू ऐश्वर्यको भज, जो तेरी अभिलाषा होयगी सो तत्काल सिद्ध होयगी। मैं विवेकरहित दोषके सागरविषै मग्न तेरे समीप आया हूं सो साध्वि अब प्रसन्न होवो ॥

अथानन्तर जानकी बोली—हे राम ! तुम्हारा कुछ दोष नाहीं अर लोकोंका दोष नहीं मेरे पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मके उदयसे यह दुःख भया मेरा काहू पर कोप नहीं तुम क्यों विषादको प्राप्त भए ? हे बलदेव तिहारे प्रसादसे स्वर्ग समान भोग भोगे अब यह इच्छा है ऐसा उपाय करूं जिसकर स्त्रीलिंगका अभाव होय यह महाक्षुद्र विनश्वर भयंकर इंद्रियनिके भोग मूढ जनोंकर सेव्य तिनकर कहा प्रयोजन ? मैं अनन्त जन्म चौरासी लक्ष योनिविषै खेद पाया अब समस्त दुःखके निवृत्तिके अर्थ जिनेश्वरी दीक्षा धरूंगी ऐसा कहकर नवीन अशोक वृक्षके पल्लव समान अपने जे कर तिनकर सिरके केश उपाड रामके समीप डारे सो इंद्र नील मणिसमान श्याम सचिक्वण पातरे सुगन्ध वक्र लम्बायमान महामृदु महामनोहर ऐसे केशोंको देखकर राम मोहित होय मूर्छा खाय पृथिवीविषै पडे सो जौंलग इनको सचेत करें तौंलग सीता पृथिवीमती आर्यिकापै जायकर दीक्षा धरती भई एक वस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके अर सब परिग्रह तजकर आर्यिकाके व्रत धर महा पवित्र परम वैराग्यकर युक्त व्रतकर शोभायमान जगतके वंदिवे योग्य होती भई अर राम अचेत भए थे सो मुक्ताफल अर मलयागिरि चन्दनके छांटिबे कर तथा ताडके बीजनोंकी पवन कर सचेत भए तब दशो दिशाकी ओर देखें तो सीताको न देख कर चित्त शून्य हो गया, शोक अर कषायकर युक्त महा गजराज पर चढे सीताकी ओर चले सिर पर छत्र फिरे हैं चमर ढुरे हैं जैसे देवनिकर मंडित इंद्र चलै तैसे नरेन्द्रों कर युक्त राम चले कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके कषायके वचन कहते भए अपने प्यारे जनका मरण भला परन्तु विरह भला नहीं देवनिने

सीताका प्रातिहार्य किया सो भला किया पर उसने हमको तजना बिचारा सो भला न किया अब मेरी राणी जो यह देव ने दें तो मेरे अर देवनिके युद्ध होयगा यह देव न्यायवान् होयकर मेरी स्त्री क्यों हरें ऐसे अविचारके वचन कहे। लक्षमण समझावें सो समाधान न भया अर क्रोधसंयुक्त श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीकी गन्धकुटीको चले सो दूरसे सकलभूषण केवलीकी गन्ध कुटी देखी। केवली महाधीर सिंहासन पर विराजमान अनेक सूर्यकी दीप्ति धरें केवली ऋद्धिकर युक्त पापोंके भस्म करिवेकों साक्षात् अग्निरूप जैसे मेघपटल रहित सूर्यका बिंब सोहै तैसे कर्मपटलरहित केवलज्ञानके तेजकर परम ज्योतिरूप भासे हैं इंद्रादिक समस्त देव सेवा करें हैं दिव्य ध्वनि खिरे है धर्मका उपदेश होय है सो श्रीराम गन्धकुटीकों देख कर शांतचित्त होय हाथीसे उतर प्रभुके समीप गए तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड नमस्कार किया भगवान् केवली मुनियोंके नाथ तिनका दर्शन कर अति हर्षित भए बारम्बार नमस्कार किया केवलीके शरीरकी ज्योतिकी छटा राम पर आय पडी सो अति प्रकाशरूप होय गए भावसहित नमस्कार कर मनुष्यनिकी सभाविषै बैठे अर चतुरनिकायके देवोंकी सभा नानाप्रकारके आभूषण पहिरे ऐसी भासै मानों केवलीरूप जे रवि तिनकी किरण ही हैं अर राजावोंके राजा श्रीरामचन्द्र केवलीके निकट ऐसे सोहै हैं मानों सुमेरुके शिखरके निकट कल्पवृक्ष ही हैं अर लक्षमण नरेंद्र मुकट कुण्डल हारादि कर शोभित कैसे सोहैं मानों विजुरीसहित श्याम घटा ही है अर शत्रुघन शत्रुवोंके जीतनहारे ऐसे सोहैं मानों दूसरे कुवेर ही हैं अर लव अंकुश दोनो वीर महा धीर महा सुन्दरगुण सौभाग्यके स्थानक चांद सूर्यसे सोहैं अर सीता आर्यिका आभूषणादि रहित एक वस्त्र मात्र परिग्रह ऐसी सोहै मानों सूर्यकी मूर्ति शांतताको प्राप्त भई है। मनुष्य अर देव सब ही विनयसंयुक्त भूमिविषै बैठे धर्म श्रवण की है अभिलाषा जिनके। तहां एक अभयघोष नामा मुनि सब मुनिनिविषैं श्रेष्ठ संदेहरूप आताप

की शांतिके अर्थ केवलीसे पूछते भए—हे सर्वोत्कृष्ट सर्वज्ञदेव ज्ञानरूप शुद्ध आतमतत्त्वका स्वरूप नीके जाननेसे मुनिनिको केवल बोध होय उसका निर्णय करो, तब सकलभूषण केवली योगीश्वरोंके ईश्वर कर्म्मोंके क्षयका कारण तत्वका उपदेश दिव्यध्वनिकर कहते भए—हे श्रेणिक ! केवलीने जो उपदेश दिया उसका रहस्य मैं तुमको कहूं हूं जैसे समुद्रमें से एक बून्द कोई लेय तैसे केवलीकी बाणी अति अथाह उसके अनुसार संक्षेप व्याख्यान करूं हूं, सो सुनो ॥

हो भव्य जीव हो ! आतम तत्त्व जो अपना स्वरूप सो सम्यक्दर्शन ज्ञान आनन्द रूप अर अमूर्तीक चिद्रूप लोकप्रमाण असंख्य प्रदेशी अतेंद्री अखंड अव्याबाध निराकार निर्मल निरंजन परवस्तुसे रहित निज गुण पर्याय स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव कर आस्तित्व रूप है जिसका ज्ञान निकट भव्यों को होय शरीरादिक पर वस्तु असार हैं आत्मतत्व सार है सो अध्यातम विद्या कर पाइये है वह सबका देखनहारा जाननहारा अनुभवदृष्टि कर देखिये आतमज्ञान कर जानिये अर जड पदार्थ पुद्गल धर्म अधर्म काल आकाश ज्ञेयरूप हैं ज्ञाता नाहीं अर यह लोक अनन्ते अलोकाकाशके मध्य अनन्तवें भागविषै तिष्ठे है अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्वलोक ये तीनलोक तिनविषै सुमेरु पर्वतकी जड हजार योजन उसके तले पाताल लोक है उसविषै सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र हैं अर बादर स्थावर आधारविषै हैं विकलत्रय अर पंचेन्द्रिय तिर्यंच नाहीं मनुष्य नाहीं खरभाग पंचभागविषै भवनवासी देव तथा व्यंतरदेवनिके निवास हैं तिनके तले सात नरक हैं तिनके नाम रत्नप्रभा १ शर्करा २ बालुका ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमःप्रभा ६ महातमःप्रभा ७ सो सातों ही नरककी धारा महा दुःखकी देनहारी सदा अंधकाररूप हैं चार नरकनिविषै तो उष्णकी बाधा है अर पांचवें नरक ऊपरले तीन भाग उष्ण अर नीचला चौथा भाग शीत अर छठे नरक शीत ही हैं अर सातवें महा शीत ऊपरले नरकनिविषै उष्णता है सो महा

विषम अर नीचले नरकनिविषै शीत है सो अति विषम नरककी भूमि महा दुस्सह परम दुर्गम हैं जहां राधि रुधिरका कीच है महादुर्गंध है श्वान सर्प मार्जार मनुष्य खर तुरंग ऊंट इनका मृतक शरीर सड जाय उसकी दुर्गंधसे असंख्यातगुणी दुर्गंध है नानाप्रकार दुखनिके सर्व कारण हैं अर पवन महा प्रचंड विकराल चले है जाकर भयंकर शब्द होय रहा है जे जीव विषय कषाय संयुक्त हैं कामी हैं क्रोधी हैं पंच-इंद्रियोंके लोलुपी हैं जैसे लोहेका गोला जलविषै डूबे तैसे नरकमें डूबे हैं जे जीवनिकी हिंसा करें मृषावाणी बोलें परधन हरें परस्त्री सेवें महा आरम्भी परिग्रही ते पापके भारकर नरकविषै पडे हैं मनुष्य देह पाय जे निरंतर भोगासक्त भये हैं जिनके जीभ वश नाहीं मन चंचल ते पापी प्रचण्ड कर्मके करणहारे नरक जाय हैं जे पाप करें करावें पापकी अनुमोदना करें ते आर्त रौद्र ध्यानी नरकके पात्र हैं वह वज्राग्निके कुण्डमें डारिये हैं वज्राग्निके दाह कर जलते थके पुकारें हैं अग्नि कुण्डसे छूटे हैं तब वैतरणी नदीकी ओर शीतल जलकी बांछा कर जाय हैं वहां जल महा क्षार दुर्गंध उसके स्पर्शहीसे शरीर गल जाय है। दुख का भाजन वैक्रियिक शरीर ताकर आयु पर्यंत नानाप्रकार दुख भोगवें हैं पहिले नरक आयु उत्कृष्ट सागर १ दूजे ३ तीजे ७ चौथे १३ पांचवें १७ छठे २२ सातमें ३३ सो पूर्णकर मरे हैं मारसे मरे नाहीं वैतरणीके दुखसे डर छायाके अर्थ असिपत्र वनमें जाय हैं तहां खडग बाण वरछी कटारी समी-पत्र असराल पवनकर पडे हैं तिनकर तिनका शरीर विदारा जाय है पछाड खाय भूमिमें पडे हैं अर तिनकों कभी कुम्भी पाकमें पकावें हैं कभी नीचा माथा ऊंचा पगकर लटकावें हैं मुगदरोंसे मारिये हैं कुहाडोंसे काटिये हैं करोतनसे विदारिये हैं घानीमे पेलिये हैं नानाप्रकारके छेदन भेदन है। यह नारकी जीव महा दीन महा तृषा कर तृषित पीनेका पानी मांगे हैं तब तांबादिक गाल प्यावे हैं ते कहे हैं हम-को यहां तृषा नाहीं हमारा पीछा छोड दो तब बलात्कार तिनको पछाड संडासियोंसे मुख फार मार

मार प्यावे हैं कण्ठ हृदय विदीर्ण होय जाय है उदर फट जाय है तीजे नरकतक तो परस्पर भी दुःख है अर असुर कुमारनिकी प्रेरणासे भी दुःख हैं अर चौथेसे लेय सातवें तक असुरकुमारनिका गमन नाहीं परस्पर ही पीडा उपजावे हैं नरकविषै नीचलेसे नीचले बढता दुख है सातवां नरक सबनिमें महादुखरूप है नारकियोंको पहिला भव याद आवै है अर दूसरे नारकी तथा तीजे लग असुर कुमार पूर्वले कर्म याद करावें हैं तुम भले गुरुवोंके वचन उलंघ कुगुरु कुशास्त्रके बलकर मांसको निर्दोष कहते हुते नानाप्रकार के मांसकर अर मधुकर अर मदिरा कर कुदेवोंका आराधन करते हुते सो मांसके दोषसे नरकविषै पडे हो ऐसा कहके इनहीका शरीर काट काट इनके मुखविषै देय हैं अर लोहेकी तथा तांबेके गोला बलते पछाड पछाड संडासियोंसे मुख फाड फाड छातीपर पांव देय देय तिनके मुखविषै घाले हैं अर मुद्गरों से मारे हैं अर मद्यपायीयोंको मार मार ताता तावां शीशा प्यावे हैं अर परदारारत पापियोंको वज्राग्निकर तप्तायमान लोहेकी जे पूतली तिन से लिपटावे हैं अर जे परदारारत फूलनिके सेज सूते हैं तिनको सूलनिके सेजऊपर सुवावे हैं अर स्वप्नकी माया समान असार जो राज्य उसे पायकर जे गर्वे हैं अनीति करें हैं तिनको लोहके कीलों पर बैठाय मुद्गरोंसे मारें हैं सो महा बिलाप करें हैं इत्यादि पापी जीवोंको नरकके दुःख होय हैं सो कहांलग कहें एक निमिषमात्र भी नरकमें विश्राम नाहीं आयु पर्यंत तिलमात्र आहार नाहीं अर बून्दमात्र जलपान नाहीं केवल मारहीका आहार है।

तातैं यह दुस्सह दुःख अधर्मके फल जान अधर्मको तजो ते अधर्म मधु मांसादिक अभक्ष्य भक्षण अन्याय वचन दुराचार रात्रिआहार वेश्यासेवन परदारा गमन स्वामिद्रोह मित्रद्रोह विश्वासघात कृतघ्नता लम्पटता ग्रामदाह वनदाह परधनहरण अमार्गसेवन परनिंदा परद्रोह प्राणघात बहु आरम्भ बहुपरिग्रह निर्दयता खोटी लेश्या रौद्रध्यान मृषावाद कृपणता कठोरता दुर्जनता मायाचार निर्माल्यका

अंगीकार माता पिता गुरुओंकी अवज्ञा बाल वृद्ध स्त्री दीन अनाथोंका पीडन इत्यादि दुष्टकर्म नरकके कारण हैं वे तज शांतभावधर जिनशासनको सेवो जाकर कल्याण होय। जीव छे कायके हैं पृथिवी काय अप (जल) काय, तेजः (अग्नि) काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। तिनकी दया पालो अर जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल यह छे द्रव्य हैं अर सात तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकाय तिनकी श्रद्धा करो अर चतुर्दश गुणस्थान चतुर्दश मार्गणा स्वरूप अर सप्तभंगी वाणीका स्वरूप भलीभांति केवलीकी आज्ञा प्रमाण उरविषे धारो, स्यातअस्ति, स्यान्नास्ति, स्यात् अस्तिनास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यातअस्ति अवक्तव्य, स्यान्नास्ति अवक्तव्य, स्यातअस्तिनास्ति अवक्तव्य, ये सप्तभंग कहे अर प्रमाण कहिये वस्तु का सर्वांग कथन अर नय कहिये वस्तुका एक अंग कथन अर निक्षेप कहिये नाम स्थापना द्रव्य भाव ये चार अर जीवोंविषे एकेंद्रीके दोय भेद सूक्ष्म वादर अर पंचेंद्रीके दो भेद सैनी असैनी अर वे इंद्री ते इंद्री चौइंद्री ये सात भेद जीवोंके हैं सो पर्याप्त अपर्याप्तकर चौदह भेद जीवसमास होय हैं अर जीवके दो भेद एक संसारी एक सिद्ध। जिसमें संसारीके दो भेद—एक भव्य दूसरा अभव्य जो मुक्ति होने योग्य सो भव्य अर मुक्ति न होने योग्य सो अभव्य अर जीवका निजलक्षण उपयोग है उसके दोय भेद एक ज्ञान एक दर्शन। ज्ञान समस्त पदार्थोंको जाने दर्शन समस्त पदार्थोंको देखे। सो ज्ञानके आठ भेद मति श्रुति अवधि मनःपर्यय केवल कुमति कुश्रुत कुअवधि अर दर्शनके भेद चार—चक्षु अचक्षु अवधि केवल अर जिनके एक स्पर्शन इंद्री होय सो स्थावर कहिये तिनके भेद पांच पृथिवी अप् तेज वायु वनस्पति अर त्रस के भेद चार वेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री पंचेंद्री—जिनके स्पर्श अर रसना वे द्वे इंद्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका सो ते इंद्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु वे चौइंद्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु श्रोत्र वे पंचेंद्री। चौइंद्री तक तो सब संमूर्छन अर असेनी हैं अर पंचेंद्रीविषे केई सम्मूर्छन केई गर्भज तिनविषे केई सैनी

केई असैनी जिनके मन वे सैनी अर जिनके मन नहीं वे असैनी अर जे गर्भसे उपजैं वे गर्भज अर जे गर्भविना उपजैं स्वतः स्वभाव उपजैं वे सम्मूर्छन । गर्भजके भेद तीन जरायुज अंडज पोतज । जे जराकर मंडित गर्भसे निकसे मनुष्य घोटकादिक वे जरायुज अर जे बिना जेरके सिंहादिक सो पोतज अर जे अंडावोंसे उपजे पक्षी आदिक वे अंडज अर देव नारकियोंका उपपाद जन्म है माता पिताके संग बिनाही पुण्य पापके उदयसे उपजे हैं । देव तो उत्पादकशय्याविषै उपजैं हैं अर नारकी बिलोंमें उपजे हैं देवयोनि पुण्यके उदयसे है अर नारक योनि पापके उदयसे है अर मनुष्य जन्म पुण्य पापकी मिश्रतासे है अर तिर्यंच गति मायाचारके योगसे है देव नारकी मनुष्य इन बिना सर्व तिर्यंच जानने, जीवोंकी चौरासी लाख योनिये हैं उनके भेद सुनो—पृथिवीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय नित्य निगोद इतरनिगोद ये तो सात २ लाख योनि हैं सो बयालीस लाख योनि भई अर प्रत्येक वनस्पति दस लाख ये बावन लाख भेद स्थावरके भये, अर वे इंद्री ते इंद्री चौइंद्री ये दोय दोय लाख योनि उसके छै लाख योनि भेद विकलत्रयके भए अर पंचेद्री तिर्यंचके भेद चार लाख योनियें सब तिर्यंच योनिके बासठ लाख भेद भए अर देवयोनिके भेद चार लाख नरकयोनिके भेद चार लाख अर मनुष्य योनिके चौदह लाख ये सब चौरासी लाख योनि महा दुखरूप हैं इनसे रहित सिद्धपद ही अविनाशी सुखरूप है, संसारी जीव सब ही देहधारी हैं अर सिद्ध परमेष्ठी देहरहित निराकार हैं, शरीरके भेद पांच औदारिक वैक्रियक आहारक तैजस, कार्म्मण, तिनविषै तैजस कार्म्मण तो अनादिकालसे सब जीवनको लग रहे हैं तिनका अन्तकर महा मुनि सिद्ध पद पावे हैं औदारिकसे असंख्यातगुणी अधिक वर्गणा वैक्रियिकके हैं अर वैक्रियकतैं असंख्यातगुणी आहारकके हैं अर आहारकतैं अनन्तगुणी तैजसकी हैं अर तैजसतैं अनन्तगुणी कार्म्मणकी हैं जा समय संसारी जीव देहकूं तजकर दूसरी गतिकूं जाय है तासमय अनाहार कहिए जि-

तनी देरी एक गतिसे दूसरी गतिविषै जाते हुए जीवको लगे है उस अवस्थामें जीवको अनाहारी क-हिए । अर जितना वक्त एक गतिसे दूसरी गतिमें जानेमें लगे सो वह एक समय तथा दो समय अधिकतैं अधिक तीन समय लगे है सो ता समय जीवके तैजस अर कार्म्मण ये दो ही शरीर पाइये है वगैर शरीरके यह जीव सिता सिद्ध अवस्थाके अर काहू अवस्थामें काहू समय नाहीं होता । या जीवकें हर वक्त अर हर गतिमें जन्मते मरते साथ ही रहते हैं जा समय यह जीव घातिया अघातिया दोऊ प्रकारके कर्म क्षय करके सिद्ध अवस्थाको जाता है ता समय तैजस अर कार्म्मणका क्षय होता है अर जीवनिके शरीरोंके परमाणुओंकी सूक्ष्मता या प्रकार है—औदारिकतैं वैक्रियक सूक्ष्म अर वैक्रियकसे आहारक सूक्ष्म, आहारकतैं तैजस सूक्ष्म अर तैजसतैं कार्म्मण सूक्ष्म है सो मनुष्य अर तिर्यंचानिके तो औदारिक शरीर है अर देवनारकिनिके वैक्रियक है अर आहारक ऋद्धिधारी मुनेनिके संदेह निवारिवेके अर्थ दसमे द्वारसे निकसे है सो केवलीके निकट जाय संदेह निवार पीछा आय दशमे द्वारमें प्रवेश करे हैं, ये पांच प्रकारके शरीर कहे तिनमें एक काल एक जीवके कवहु चार शरीर हू पाइए ताका भेद सुनहु तीन तो सबही जीवनिके पाइए, नर अर तिर्यंचके औदारिक अर देव नारकनिके वैक्रियक अर तैजस कार्म्मण सबोंके हैं तिनमें कार्म्मण तो दृष्टिगोचर नाहीं अर तैजस काहू मुनिके प्रकट होय हैं ताके भेद दोय हैं एक शुभ तैजस एक अशुभ तैजस । सो शुभ तैजस तो लोकनिको दुखी देख दाहिनी भुजातैं नि-कसि लोकनिका दुख निवारे है अर अशुभ तैजस क्रोधके योगकर वाम भुजातैं निकसि प्रजाको भस्म करे हैं अर मुनिकूं हू भस्म करे है अर काहू मुनिके वैक्रिया ऋद्धि प्रकट होय है तव शरीरको सूक्ष्म तथा स्थूल करे हैं सो मुनिके चार शरीर हू काहू समय पाइए एक काल पांचो शरीर काहू जीवके न होंय ॥

अथानन्तर मध्यलोकमें जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप अर लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र

हैं शुभ हैं नाम जिनके सो द्विगुण द्विगुण विस्तारको लिए वलयाकार तिष्ठे हैं, सबके मध्य जम्बूद्वीप है ताके मध्य सुमेरु पर्वत तिष्ठे है सो लाख योजन ऊंचा है अर जे द्वीप समुद्र कहे तिनमें जम्बूद्वीप लाख योजनके विस्तार है अर प्रदक्षिणा तिगुणीसे कछु इक अधिक है अर जम्बूद्वीप विषै देवारण्य अर भूतारण्य दो बन हैं तिनविषै देवनिके निवास हैं अर षट् कुलाचल हैं। पूर्व समुद्रसूं पश्चिमके समुद्र तक लांबे पडे हैं तिनके नाम हिमवान् महाहिमवान् निषध नील रुक्मी शिखरी। समुद्रके जलका है स्पर्श जिनके तिनमें ह्रद अर ह्रदनिमें कमल तिनमें षट्कुमारिका देवी हैं श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी अर जम्बूद्वीपमें सात क्षेत्र हैं—भरत हैमवत हरि विदेह रम्यक हैरण्यवत ऐरावत अर षट्कुलाचलानिसूं गंगादिक चौदह नदी निकसी हैं आदिकेसे तीन अर अंतकेसे तीन अर मध्यके चारोंसे दोय २ यह चौदह हैं अर दूजा द्वीप धातुकी खण्ड सो लवणसमुद्रतैं दूना है ताविषै दोय सुमेरुपर्वत हैं अर बारह कुलाचल अर चौदह क्षेत्र। यहां एक भरत वहां दोय यहां एक हिमवान वहां दोय। याही भांति सर्व दुगुणे जानने अर तीजा द्वीप पुष्कर ताके अर्ध भागविषै मानुषोत्तर पर्वत है सो अढाई द्वीप ही विषै मनुष्य पाईये हैं आगे नाहीं, आधे पुष्करविषै दोय मेरु बारा कुलाचल चौदह क्षेत्र धातुकीखंडद्वीप समान तहां जानने। अढाई द्वीपविषै पांच सुमेरु तीस कुलाचल पांच भरत पांच ऐरावत पांच महाविदेह तिनमें एक सौ साठ विजय समस्त कर्मभूमिके क्षेत्र एक सौ सत्तर एक एक क्षेत्रमें छह छह खण्ड तिनमे पांच पांच म्लेच्छखण्ड एक एक आर्य खण्ड आर्यखण्डमें धर्मकी प्रवृत्ति विदेहक्षेत्र अर भरत ऐरावत इनविषै कर्मभूमि तिनमें विदेह तो शाश्वती कर्मभूमि अर भरत ऐरावतमें अठारा कोडाकोडी सागर भोगभूमि दोय कोडाकोडी सागर कर्म्मभूमि अर देवकुरु उत्तरकुरु यह शाश्वती उत्कृष्ट भोग भूमि तिनमें तीन २ पल्य की आयु अर तीन तीन कोसकी काय अर तीन तीन दिन पीछे अल्प आहार सो पांच मेरु संबंधी पांच

देवकुरु पांच उत्तरकुरु अर हरि अर रम्यक यह मध्य भोगभूमि तिनविषै दोय पल्यकी आयु अर दोय कोसकी काय दोय दिन गए आहार। या भांति पांच मेरु संबंधी पांच हरि पांच रम्यक यह दश मध्य भोगभूमि अर हैमवत हैरण्यवत यह जघन्य भोगभूमि तिनमें एक पल्यकी आयु अर एक कोसकी काय एक दिनके अन्तरे आहार, सो पांच मेरु संबन्धी पांच हैमवत पांच हैरण्यवत जघन्य भोगभूमि दश या भांति तीस भोगभूमि अढाई द्वीपमें जाननी, अर पंच महा विदेह पंच भरत पंच ऐरावत यह पंद्रह कर्म-भूमि हैं तिनमें मोक्षमार्ग प्रवरते है ॥

अढाईद्वीपके आगे मानुषोत्तरके परे मनुष्य नाहीं देव अर तिर्यंच ही हैं तिनविषै जलचर तो तीन ही समुद्रविषै हैं लवणोदधि कालोदधि तथा अंतका स्वयंभूरमण इन तीन बिना और समुद्रनिविषै जल-चर नाहीं अर विकलत्रय जीव अढाईद्वीपविषै हैं अर अंतका स्वयंभूरमण द्वीप ताके अर्ध भागविषै नागे-न्द्र पर्वत है, ताके परे आधे स्वयंभूरमण द्वीपविषै अर सारे स्वयंभूरमण समुद्रविषै विकलत्रय हैं। मानु-षोत्तरसे लेय नागेन्द्र पर्वत पर्यन्त जघन्य भोग भूमिकी रीति है, वहां तिर्यंचनिका एक पल्यका आयु है अर सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र तीन लोकमें हैं अर वादर स्थावर आधारविषै सर्वत्र नाहीं एकराजूविषै समस्त मध्य लोक है। मध्य लोकमें अष्टप्रकार व्यंतर अर दशप्रकार भवनपतियोंके निवास हैं अर ऊपर ज्योतिषी देवानिके विमान हैं तिनके पांच भेद चन्द्रमा सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र सो अढाई द्वीपमें ज्योतिषी चर हू हैं अर स्थिर हू हैं आगे असंख्यात द्वीपानिमें ज्योतिषी देवानिके विमान स्थिर ही हैं बहुरि सुमेरु के ऊपर स्वर्गलोक है तहा सोला स्वर्ग तिनके नाम, सौधर्म ईशान सनत्कुमार महेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लांतव कापिष्ठ शुक्र महाशुक्र शतार सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत यह सोलह स्वर्ग तिनमें कल्पवासी देव देवी हैं अर सोलह स्वर्गनिके ऊपर नवग्रीव तिनके ऊपर नव अनुत्तर तिनके ऊपर पंचोत्तर विजय

वैजयन्त जयंत अपराजित सर्वार्थसिद्धि । यह अहमिन्द्रानिके स्थानक हैं जहां देवांगना नाहीं अर स्वामी सेवक नाहीं और ठौर गमन नाहीं, अर पांचवां स्वर्ग ब्रह्म ताके अन्तमें लौकांतिक देव हैं तिनके देवांगना नाहीं वे देवर्षि हैं । भगवानके तप कल्याणमें ही आवें ऊर्ध्वलोकमें देव ही हैं अथवा पंच स्थावर ही हैं । हे श्रेणिक ! यह तीन लोकका व्याख्यान जो केवलीने कहा ताका संक्षेपरूप जानना विस्तारसूं त्रिलोकसारसूं जानना तीनलोकके शिखर सिद्धलोक है ता समान देदीप्यमान और क्षेत्र नाहीं जहां कर्म बंधनसे रहित अनंत सिद्ध विराजै हैं मानों वह मोक्ष स्थानक तीन भवनका उज्जल छत्र ही है वह मोक्ष स्थानक अष्टमी धरा है ये अष्ट पृथिवीके नाम नारक १ भवनवासी २ मानुष ३ ज्योतिषी ४ स्वर्गवासी ५ ग्रीव ६ अर अनुत्तर विमान ७ मोक्ष ८ ये आठ पृथिवी हैं सो शुद्धोपयोगके प्रसादकर जे सिद्ध भये हैं तिनकी महिमा कही न जाय तिनका मरण नाहीं बहुरि जन्म नाहीं, महा सुखरूप हैं, अनन्त शक्तिके धारक समस्त दुःखरहित महानिश्चल सर्वके ज्ञाता द्रष्टा हैं ॥

यह कथन सुन श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीसूं पूछते भये—हे प्रभो ! अष्टकर्मरहित अष्टगुण आदि अनन्त गुण सहित सिद्ध परमेष्ठी संसारके भावनसे रहित हैं सो दुःख तो उनको काहू प्रकारका नाहीं अर सुख कैसा है ? तब केवली दिव्य ध्वनि कर कहते भये—इस तीन लोकविषै सुख नाहीं दुख ही है अज्ञानसे वृथा सुख मान रहे हैं । संसारका इन्द्रियजनित सुख बाधासंयुक्त क्षणभंगुर है अष्टकर्म कर बंध सदा पराधीन ये जगत्के जीव तिनके तुच्छ मात्रहू सुख नाहीं जैसे स्वर्णका पिंड लोहकर संयुक्त होय तब स्वर्णकी कांति दब जाय है तैसे जीवकी शक्ति कर्मनिकर दब रही है सो सुखरूप नाहीं दुख ही भोगवे हैं यह प्राणी जन्म जरा मरण रोग शोक जे अनन्त उपाधी तिनकर महापीडित हैं तनुका अर मनका दुख मनुष्य तिर्यंच नारकीनिको है अर देवनिको दुःख मन ही का है सो मनका महा दुख है ता

कर पीडित हैं। या संसारविषै सुख काहेका ? ये इंद्रीजनित विषयके सुख इंद्र धरणींद्र चक्रवार्तीनिकूं शहतकी लपेटी खड्गकी धारा समान हैं अर विषमिश्रित अन्न समान हैं अर सिद्धानिके मन इंद्री नाहीं शरीर नाहीं केवल स्वाभाविक अविनाशी उत्कृष्ट निराबाध निरुपम सुख है ताकी उपमा नाहीं जैसे निद्रारहित पुरुषकूं सोयबे कर कहा अर निरोगानिको ओषधिकर कहा ? तैसे सर्वज्ञ वीतराग कृतार्थ सिद्ध भगवान तिनको इन्द्रीनिके विषयनिकर कहा ? दीपको सूर्य चन्द्रादिककर कहा ? जे निर्भय जिनके शत्रु नाहीं तिनके आयुधनिकर कहा ? जे सबके अंतर्यामी सबको देखें जानें जिनके सकल अर्थ सिद्ध भये कछु करना नाहीं बांछा काहू वस्तुकी नाहीं ते सुखके सागर हैं। इच्छा मनसे होय है सो मन नाहीं आत्म सुखविषै तृप्त परम आनन्द स्वरूप क्षुधा तृषादि बाधारहित हैं तीर्थंकर देव जा सुखकी इच्छा करें ताकी महिमा कहांलग कहिए अहमिन्द्र इन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्र चक्रवर्त्यादिक निरंतर ताही पदका ध्यान करै हैं अर लौकांतिक देव ताही सुखके अभिलाषी हैं ताकी उपमा कहांलग करें। यद्यपि सिद्ध पद का सुख उपमारहित केवलीगम्य है तथापि प्रतिबोधके अर्थ तुमको सिद्धनिके सुखका कछु इक वर्णन करे हैं।

अतीत अनागत वर्तमान तीन कालके तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिक सर्व उत्कृष्ट भूमिके मनुष्यनिका सुख अर तीन कालका भोगभूमिका सुख अर इंद्र अहमिंद्र आदि समस्त देवनिका सुख भूत भविष्यत वर्तमान कालका सकल एकत्र करिए अर ताहि अनन्त गुणा फलाइए सो सिद्धनिके एक समयके सुख तुल्य नाहीं, काहेसे ? जो सिद्धानिका सुख निराकुल निर्मल अव्याबाध अखण्ड अतीन्द्रिय अविनाशी है अर देव मनुष्यनिका सुख उपाधिसंयुक्त बाधासहित विकल्परूप व्याकुलताकर भरा विनाशीक है अर एक दृष्टांत और सुनहु—मनुष्यनितैं राजा सुखी राजानितैं चक्रवर्ती सुखी अर चक्रवर्तीनितैं विंतर-

देव सुखी अर विंतरानिसे ज्योतिषी देव सुखी तिनतैं भवनवासी अधिक सुखी अर भवनवासीनितैं कल्पवासी सुखी अर कल्पवासीनितैं नवग्रीवके सुखी नवग्रीवतैं नवअनुत्तरके सुखी अर तिनतैं पंच पंचोत्तरके सुखी पंचोत्तर सर्वार्थसिद्धि समान और सुखी नाहीं सो सर्वार्थसिद्धिके अहमिंद्रानितैं अनन्तानन्त गुणा सुख सिद्धपदमें है, सुखकी हद्द सिद्धपदका सुख है अनन्तदर्शन अनन्तज्ञान अनन्त सुख अनंत वीर्य्य यह आत्माका निज स्वरूप सिद्धनिमें प्रवर्ते है अर संसारी जीवानिके दर्शन ज्ञान सुख वीर्य कर्मनिके क्षयोपशमसे वाह्य वस्तुके निमित्त थकी विचित्रता लिए अल्परूप प्रवरतै है, यह रूपादिक विषय सुख व्याधिरूप विकल्परूप मोहके कारण इनमें सुख नाहीं जैसे फोडा राध रुधिरकर भरा फूलै ताहि सुख कहां ? तैसे विकल्परूप फोडा महाव्याकुलतारूप राधिका भरा जिनके है तिनके सुख कहां ? सिद्ध भगवान गतागतरहित समस्त लोकके शिखर विराजे हैं तिनके सुख समान दूजा सुख नाहीं जिनके दर्शन ज्ञान लोकालोकको देखें जानें तिन समान सूर्य कहां ? सूर्य तो उदय अस्तकूं धरे है सकल प्रकाशक नाहीं, वह भगवान सिद्ध परमेष्ठी हथेलीमें आंवलेकी नाई सकल वस्तुको देखे जानें हैं, छद्मस्थ पुरुषका ज्ञान उन समान नाहीं, यद्यपि अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी मुनि अविभागी परमाणु पर्यंत देखै हैं अर जीवनिके असंख्यात जन्म जानै हैं तथापि अरूपी पदार्थनिको न जानै हैं अर अनन्तकालकी न जानै, केवली ही जानै, केवलज्ञान केवलदर्शनकरयुक्त तिन समान और नाहीं सिद्धानिके ज्ञान अनंत दर्शन अनंत अर संसारी जीवानिके अल्पज्ञान अल्पदर्शन, सिद्धानिके अनंत सुख अनन्त वीर्य अर संसारानिके अल्पसुख अल्पवीर्य यह निश्चय जानो सिद्धानिके सुखकी महिमा केवलज्ञानी ही जाने अर चार ज्ञानके धारकहू पूर्ण न जानें यह सिद्धपद अभव्योंको अप्राप्य है इस पदको निकट भव्य ही पावें, अभव्य अनन्त कालहू काय क्लेश करें अनेक यत्न करें तौहू न पावें, अनादि कालकी लगी जो अविद्यारूप

स्त्री ताका विरह अभव्यानिके न होय, सदा अविद्याको लिए भव वनविषे शयन करें अर मुक्तिरूप स्त्री के मिलापकी बांछाविषे तत्पर जे भव्य जीव ते केयक दिन संसारमें रहे हैं सो संसारमें राजी नाहीं तप विषे तिष्ठते मोक्ष हीके अभिलाषी हैं जिनमें सिद्ध होनेकी शक्ति नाहीं उन्हें अभव्य कहिए अर जे सिद्ध होनहार हैं उन्हें भव्य कहिए। केवली कहे हैं—हे रघुनन्दन ! जिनशासन विना और कोई मोक्षका उपाय नाहीं। विना सम्यक्त कर्मनिका क्षय न होय, अज्ञानी जीव कोटि भवमें जे कर्म न खिपाय सके सो ज्ञानी तीन गुप्तिको धरे एक मुहूर्तमें खिपावे, सिद्ध भगवान परमात्मा प्रसिद्ध हैं सर्व जगतके लोग उनको जाने हैं कि वे भगवान हैं केवली विना उनको कोई प्रत्यक्ष देख जान न सकै, केवलज्ञानी ही सिद्धनिको देखे जाने हैं। मिथ्यात्वका मार्ग संसारका कारण या जीवने अनंत भवमें धारा। तुम निकट भव्य हो परमार्थकी प्राप्तिके अर्थ जिनशासनकी अखण्ड श्रद्धा धारो। हे श्रेणिक ! यह वचन सकलभूषण केवलीके सुन श्रीरामचन्द्र प्रणामकर कहते भए—हे नाथ ! या संसार समुद्रतैं मोहि तारो हे भगवन् ! यह प्राणी कौन उपायकर संसारके वासतैं छूटे है। तब केवली भगवान् कहते भए— हे राम ! सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र मोक्षका मार्ग है जिनशासनविषे यह कहा है तत्त्वका जो श्रद्धान ताहि सम्यग्दर्शन कहिए तत्त्व अनन्तगुणपर्यायरूप है ताके दोय भेद हैं एक चेतन दूसरा अचेतन है। सो जीव चेतन है अर सर्व अचेतन हैं अर दर्शन दोय प्रकारतैं उपजे है एक निसर्ग एक अधिगम। जो स्वतः स्वभाव उपजे सो निसर्ग अर गुरुके उपदेशतैं उपजे सो अधिगम। सम्यक्दृष्टि जीव जिनधर्मविषे रत है। सम्यक्तके अतीचार पांच हैं—शंका कहिये जिनधर्मविषैं संदेह अर कांक्षा कहिये भोगनिकी अभिलाषा अर विचिकित्सा कहिये महामुनिको देख ग्लानि करनी अर अन्यदृष्टि प्रशंसा कहिये मिथ्यादृष्टिको मनमें भला जानना अर संस्तव कहिये वचनकर मिथ्यादृष्टिकी स्तुति करणा इनकर सम्यक्तमें दूषण उपजे हैं अर मैत्री प्रमो-

द करुणा मध्यस्थ ये चार भावना अथवा अनित्यादि बारह भावना अथवा प्रशम संवेग अनुकंपा आस्तिक्य अर शंकादि दोष रहितपना जिनप्रतिमा जिनमन्दिर जिनशास्त्र मुनिराजनिकी भक्ति इनकर सम्यक्दर्शन निर्मल होय है अर सर्वज्ञके वचन प्रमाण वस्तुका जानना सो ज्ञानकी निर्मलताका कारण है अर जो काहूते न सधे ऐसी दुर्धरक्रिया आचरणी ताहि चारित्र कहिये पांचों इंद्रियनिका निरोध मनका निरोध वचनका निरोध सर्व पापक्रियानिका त्याग सो चारित्र कहिये त्रस स्थावर सर्व जीवकी दया सबको आप समान जानै सो चारित्र कहिये, अर सुननेवालेके मन अर काननिको आनन्दकारी स्निग्ध मधुर अर्थसंयुक्त कल्याणकारी वचन बोलना सो चारित्र कहिये, अर मन वचन कायकर परधनका त्याग करना किसीका विना दीया कछु न लेना अर दीया हुआ आहारमात्र लेना सो चारित्र कहिये अर जो देवनिकर पूज्य महादुर्धर ब्रह्मचर्यव्रतका धारण सो चारित्र कहिये अर शिवमार्ग कहिये निर्वाणका मार्ग ताहि विघ्नकरणहारी मूर्छा कहिये मनकी अभिलाषा ताका त्याग सोई परिग्रहका त्याग सो हू चारित्र कहिये है। ये मुनिनिकेधर्म कहे अर जो अणुव्रती श्रावक मुनिनिको श्रद्धा आदि गुणनिकर युक्त नवधाभक्तिकर आहार देना सो एकदेशचारित्र कहिये अर परदारा परधनका परिहार पर पीडाका निवारण दयाधर्मका अंगीकार दान शील पूजा प्रभावना पर्वोपवासादिक सो ए देश चारित्र कहिये अर यम कहिये यावज्जीव पापका परिहार, नियम कहिये मर्यादारूप व्रत तपका अंगीकार वैराग्य विनय विवेक ज्ञान मन इंद्रियोंका निरोध ध्यान इत्यादि धर्मका आचरण सो एक देश चारित्र कहिये यह अनेक गुणकर युक्त जिनभासित चारित्र परम धामका कारण कल्याणकी प्राप्तिके अर्थ सेवने योग्य है जो सम्यक्दृष्टि जीव जिनशासनका श्रद्धानी परनिंदाका त्यागी अपनी अशुभ क्रियाका निंदक जगतके जीवोंसे न सधे ऐसे दुर्द्धरतपका धारक संयमका साधनहारा सो ही दुर्लभ चारित्र धारिवेको समर्थ

होय अर जहां दया आदि समीचीन गुण नाहीं तहां चारित्र नाही अर चारित्र विना संसारसे निवृत्ति नाहीं जहां दया क्षमा ज्ञान वैराग्य तप संयम नहीं तहां धर्म नहीं विषय कषायका त्याग सोई धर्म है शम कहिए समता भाव परम शांत दम कहिये मन इंद्रियोंका निरोध संवर कहिये नवीन कर्मका निरोध जहां ये नहीं तहां चारित्र नहीं जे पापी जीव हिंसा करे हैं झूठ बोले हैं चोरी करे हैं परस्त्री सेवन करे हैं महा आरम्भी हैं परिग्रही हैं तिनके धर्म नहीं, जे धर्मके निमित्त हिंसा करे हैं ते अधर्मी अधमगतिके पात्र हैं जो मूढ जिनदीक्षा लेकर आरंभ करे हैं सो यति नहीं। यतिका धर्म आरंभ परिग्रहसे रहित है परिग्रह धारियोंको मुक्ति नहीं जे हिंसामें धर्म जान षट्कायिक जीवोंकी हिंसा करे हैं ते पापी हैं हिंसामें धर्म नाहीं हिंसकोंको या भव परभवके सुख नहीं शिव कहिए मोक्ष नहीं। जे सुखके अर्थ धर्मके अर्थ जीवघात करे हैं सो वृथा है जे ग्राम क्षेत्रादिकमें आसक्त हैं गाय भैंस राखे हैं मारें हैं बांधे हैं तोडे हैं दाहे हैं उनके वैराग्य कहां ? जे क्रय विक्रय करें हैं रसोई परहैंडा आदि आरम्भ राखे हैं सुवर्णादिक राखे हैं तिनको मुक्ति नाहीं जिनदीक्षा निरारम्भ है अतिदुर्लभ है जे जिनदीक्षा धारि जगतका धंधा करे हैं वे दीर्घ संसारी हैं जे साधु होय तेलादिकका मर्दन करे हैं स्नान करे हैं शरीरका संस्कार करे हैं पुष्पादिकको सूंघे हैं सुगन्ध लगावे हैं दीपकका उद्योत करे हैं धूप खेवे है सो साधु नहीं, मोक्षमार्गसे पराङ्मुख हैं अपनी बुद्धिकर जे कहे हैं हिंसाविषै दोष नाहीं वे मूर्ख हैं तिनको शास्त्रका ज्ञान नाहीं चारित्र नहीं।

जे मिथ्या दृष्टि तप करे हैं ग्रामविषै एक रात्रि बसे हैं नगर विषै पांच रात्रि अर सदा ऊर्ध्ववाहु राखे हैं मास मासोपवास करे हैं अर वनविषै विचरे हैं मौनी हैं निपरिग्रही हैं तथापि दयावान नहीं दुष्ट है हृदय जिनका सम्यक्त बीज विना धर्मरूप वृक्षको न उगाय सकें अनेक कष्ट करें तौ भी शिवालय क-

हिए मुक्ति उसे न लहैं जे धर्मकी बुद्धिकर पर्वतसे पडें अग्निविषै जरें जलमें डूबें धरतीमें गडें वे कुमरण कर कुगतिको जावै हैं जे पापकर्मी कामनापरायण आर्त रौद्र ध्यानी विपरीत उपाय करें वे नरक निगोद लहैं। मिथ्यादृष्टि जो कदाचित् दान दे तप करैं सो पुण्यके उदय कर मनुष्य अर देव गतिके सुख भोगे हैं परन्तु श्रेष्ठ देव श्रेष्ठ मनुष्य न होंय सम्यग्दृष्टियोंके फलके असंख्यातवें भाग भी फल नहीं। सम्यग्दृष्टि चौथे गुणठाणे अव्रती हैं तौ हू नियम विषै है प्रेम जिनका सो सम्यकदर्शनके प्रसादसे देवलोकविषै उत्तम देव होवें अर मिथ्यादृष्टि कुलिंगी महातप भी करें तो देवनिके किंकर हीनदेव होंय बहुरि संसार भ्रमण करें अर सम्यकदृष्टि भव धरै तो उत्तम मनुष्य होय तिनमें देवनके भव सात मनुष्यनिके भव आठ या भांति पंद्रह भवविषै पंचमगति पावें वीतराग सर्वज्ञ देवने मोक्षका मार्ग प्रगट दिखाया है परन्तु यह विषयी जीव अंगीकार न करें हैं आशारूपी फांसीसे बंधे मोहके बश पडे तृष्णाके भरे पापरूप जंजीरसे जकडे कुगतिरूप बन्दीग्रहविषै पडे हैं स्पर्श अर रसना आदि इंद्रियोंके लोलुपी दुःख ही को सुख माने हैं यह जगतके जीव एक जिनधर्मके शरण बिना क्लेश भोगे हैं इंद्रियोंके सुख चाहें हैं सो मिले नाहीं अर मृत्युसे डरें सो मृत्यु छोडे नाहीं विफल कामना अर विफल भयके वश भए जीव केवल तापही को प्राप्त होय हैं तापके हरिबेका उपाय और नाहीं आशा अर शंका तजना यही सुखका उपाय है यह जीव आशाकर भरा भोगोंका भोग किया चाहे है अर धर्मविषै धीर्य नाहीं धरे है क्लेशरूप अग्निकर उष्ण महा आरम्भ विषै उद्यमी कछु भी अर्थ नहीं पावे है उलटा गांठका खोवे है यह प्राणी पापके उदयसे मनवांछित अर्थको नहीं पावे हैं उलटा अनर्थ होय है सो अनर्थ अतिदुर्जय है यह मैं किया यह मैं करूं हूं यह मैं करूंगा ऐसा विचार करते ही मरकर कुगति जाय है ये चारों ही गति कुगति हैं

एक पंचम गति निर्वाण सोई सुगति है जहांसे बहुरि आवना नहीं अर जगतविषै मृत्यु ऐसा नहीं देखे है जो याने यह किया यह न किया बाल अवस्था आदिसे सर्व अवस्थाविषै आय दावे है जैसे सिंह मृगको सब अवस्थामें आय दावे अहो यह अज्ञानी जीव अहितविषै हितकी बांछा धरै है अर दुखविषै सुखकी आशा करै है अनित्यको नित्य जाने है भय विषै शरण माने है इनके विपरीत बुद्धि है यह सब मिथ्यात्वका दोष है यह मनुष्यरूप माता हाथी भार्या रूप गर्तविषै पडा अनेक दुःखरूप बन्धनकर बंधै है विषयरूप मांसका लोभी मत्स्यकी नांई विकल्परूपी जालमें पडे है यह प्राणी दुर्बल बलदकी न्याईं कुटुम्बरूप कीचमें फंसा खेद खिन्न होय है जैसे वैरियोंसे बन्धा अर अन्धकूपमें पडा उसका निकसना अति कठिन है तैसे स्नेहरूप फांसीकर बंधा संसाररूप अन्धकूपविषै पडा अज्ञानी जीव उसका निकसना अति कठिन है कोई निकट भव्य जिनवाणीरूप रस्सेको गहे अर श्रीगुरु निकासनेवाले होंय तो निकसै अर अभव्य जीव जैनेन्द्री आज्ञारूप अति दुर्लभ आनन्दका कारण जो आत्मज्ञान उसे पायवे समर्थ नहीं जिनराजका निश्चय मार्ग निकटभव्य ही पावे अर अभव्य सदा कर्मोंकर कलंकी भए अतिक्लेशरूप संसारचक्रविषै भ्रमे हैं। हे श्रेणिक ! यह वचन श्रीभगवान सकलभूषणकेवलीने कहे तब श्रीरामचन्द्र हाथ जोड सीस निवाय कहते भए—हे भगवान मैं कौन उपायकर भव भ्रमणसे छूटूं मैं सकल राणी अर पृथ्वीका राज्य तजवे समर्थ हूं परन्तु भाई लक्ष्मणका स्नेह तजवे समर्थ नहीं, स्नेह समुद्रकी तरंगोंविषै डूबूं हूं आप धर्मोपदेश रूप हस्तालम्बन कर काढो। हे करुणानिधान मेरी रक्षा करो, तब भगवान कहते भए हे राम ! शोक न कर तू बलदेव है कैयक दिन वासुदेव सहित इंद्रकी न्याईं इस पृथिवीका राज्यकर जिनेश्वरका व्रत धर केवल ज्ञान पावेगा, ए केवलीके वचन सुन श्रीरामचन्द्र हर्षकर रोमांचित भए नयनक-

मल फूलगए बदन कमल विकासित भया परम धीर्य युक्त होते भए अर रामको केवलीके मुखसे चरम शरीरी जान सुर नर असुर सबही प्रशंसाकर अति प्रीति करते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं रामका केवलीके मुख धर्मश्रवण वर्णन करनेवाला एकसौ पांचवां पर्व पूर्ण भया॥ १०५॥

अथानन्तर विद्याधरनिविषै श्रेष्ठ राजा विभीषण रावणका भाई सुन्दर शरीरका धारक रामकी भक्ति ही है आभूषण जिसके सो दोनों कर जोड प्रणाम कर केवलीको पूछता भया, हे देवाधिदेव श्रीरामचन्द्रने पूर्व भवविषै क्या सुकृत किया जिसकर ऐसी महिमा पाई अर इनकी स्त्री सीता दण्डक बन से कौन प्रसंगकर रावण हर लेगया धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पुरुषार्थका वेत्ता अनेक शास्त्रका पाठी कृत्य अकृत्यको जान धर्म अधर्मको पिछाने प्रधान गुण सम्पन्न सो काहेसे मोहके वश होय परस्त्रीकी अभिलाषा रूप अग्निविषैं पतंगके भावको प्राप्त भया अर लक्ष्मणने उसे संग्रामविषै हता रावण ऐसा बलवान विद्याधरनिका महेश्वर अनेक अद्भुत कार्योंका करणहारा सो कैसे ऐसे मरणको प्राप्त भया? तब केवली अनेक जन्मकी कथा विभीषणको कहते भए–हे लंकेश्वर राम लक्ष्मण दोनों अनेक भवके भाई हैं अर रावणके जीवसे लक्ष्मणके जीवका बहुत भवसे बैर है सो सुन। जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रविषै एक नगर वहां नयदत्त नामा वणिक अल्प धनका धनी उसकी सुनंदा स्त्री उसके धनदत्त नामा पुत्र सो रामका जीव अर दूजा पुत्र वसुदत्त सो लक्ष्मणका जीव अर एक यज्ञवलि नामा विप्र वसुदत्तका मित्र सो तेरा जीव अर उसही नगरविषै एक और वणिक सागरदत्त जिसके स्त्री रत्नप्रभा पुत्री गुणवती सो सीताका जीव अर गुणवतीका छोटा भाई जिसका नाम गुणवान सो भामण्डलका जीव अर गुणवती रूप

यौवन कला कांति लावण्यताकर मण्डित सो पिताका अभिप्राय जान धनदत्तसे वहिनकी सगाई गुणवा-
नने करी अर उसही नगरमें एक महा धनवान वणिक श्रीकांत सो रावणका जीव जो निरंतर गुणवती
के परिणवेकी अभिलापा राखे अर गुणवतीके रूपकर हरा गया है चित्त जिसका सो गुणवतीका भाई
लोभी धनदत्तको अल्प धनवंत जान श्रीकांतको महाधनवन्त देख परणायवेको उद्यमी भया ॥

सो यह वृत्तान्त यज्ञवलि ब्राह्मणने वसुदत्तको कहा तेरे वडे भाईकी मांग कन्याका वडा भाई, श्रीकांतको धनवान जान परणाया चाहे है तव वसुदत्त यह समाचार सुन श्रीकांतके मारिवेको उद्यमी भया खड्ग पैनाय अंधेरी रात्रीविषै श्याम वस्त्र पहिर शब्दरहित धीरा धीरा पग धरता जाय श्रीकांत के घरविषै गया सो वह असावधान बैठा हुता सो खड्गसे मारा तव पडते पडते श्रीकान्तने भी वसुदत्त को खड्गसे मारा सो दोनों मरे सो विंध्याचलके वनमें हिरण भए अर नगरके दुर्जन लोक हुते तिन्हों ने गुणवती धनदत्तको न परणायवे दीनी कि इसके भाईने अपराध कीया, दुर्जन लोक विना अपराध कोप करें सो यह तो एक बहाना पाया तव धनदत्त अपने भाईका मरण अर अपना अपमान तथा मांग का अलाभ जान महादुखी होय घरसे निकस विदेश गमन करता भया अर वह कन्या धनदत्तकी अप्रा- प्तिकर अतिदुखी भई और भी किसीको न परणती भई, अर कन्या मुनिनिकी निंदा अर जिनमार्गकी अश्रद्धा मिथ्यात्वके अनुरागकर पाप उपार्जे काल पाय आर्त ध्यानकर मूई सो जिस वनविषै दोनों मृग भए हुते तिस वनविषै यह मृगी भई सो पुर्वले विरोधकर इसीके अर्थ ते दोनों मृग परस्पर लडकर मूए, सो वन सूकर भए बहुरि हाथी भैंसा बैल वानर गैंडा ल्याली मींढा इत्यादि अनेक जन्म धरते भए अर यह वाही जातिकी तिर्यंचिनी होती भई सो याके निमित्त परस्पर लडकर मूए जलके जीव थलके जीव होय होय प्राण तजते भए अर धनदत्त मार्गके खेदकर अति दुखी, एक दिन सूर्य अस्त समय मुनिनिके

आश्रम गया भोला कछु जाने नाहीं साधुनिसे कहता भया मैं तृषाकर पीडित हूं मुझे जल पिलावो तुम धर्मात्मा हो तब मुनि तो न बोले अर कोई जिनधर्मी मधुर वचनकर इसे संतोष उपजायकर कहता भया हे मित्र रात्रीको अमृत भी न पीवना जलकी कहा बात जिस समय आंखनिकर कछू सूझे नहीं सूक्ष्म जीव दृष्टि न पडें ता समय हे वत्स यदि तू अति आतुर भी होय तौ भी खान पान न करना रात्री आहारविषै मांसका दोष लागे है इसलिये तू न कर जाकर भवसागरविषै डूबियें । यह उपदेश सुन धनदत्त शान्तचित्त भया शक्ति अल्प थी इसलिये यति न होयसका दयाकर युक्त है चित्त जाका सो अणुव्रती श्रावक भया, बहुरि काल पाय समाधिमरण कर सौधर्म स्वर्गविषै बडी ऋद्धिका धारक देव भया मुकुट हार भुजबंधादिक कर शोभित पूर्व पुण्यके उदयसे देवांगनादिक सुख भोगे बहुरि स्वर्गसे चय कर महापुर नामा नगरविषै मेरुनामा श्रेष्ठी ताकी धारिणी स्त्रीके पद्मरुचि नामा पुत्र भया अर ताही नगरविषै राजा छत्रछाय राणी श्रीदत्ता गुणनिकी मंजूषा हुता सो एक दिन सेठका पुत्र पद्मरुचि अपने गोकुलविषै अश्व चढा आया सो एक वृद्धगति वलदको कंठगत प्राण देखा तब इस सुगंध वस्त्र माला के धारकने तुरंगसे उतर अतिदया कर बैलके कानविषै नमोकार मंत्र दिया सो बलदने चित्त लगाय सुना अर प्राण तज राणी श्रीदत्ताके गर्भविषै आय उपजा राजा छत्रछायके पुत्र न था सो पुत्रके जन्म विषै अतिहर्षित भया नगरकी आतिशोभा करी बहुत द्रव्य खरचा बडा उत्सव कीया वादित्रोंके शब्द कर दशो दिशा शब्दायमान भई यह बालक पुण्यकर्मके प्रभावकर पूर्वजन्म जानता भया सो बलदके भवका शीत आताप आदि महादुख अर मरण समय नमोकार मंत्र सुना ताके प्रभावकर राजकुमार भया सो पूर्व अवस्था यादकर बालक अवस्थाविषै ही महा विवेकी होता भया जब तरुण अवस्था भई तब एक दिन बिहार करता बलदके मरणके स्थानक गया अपना पूर्व चरित्र चितार यह वृषभध्वज कुमार

हाथीसे उतर पूर्वजन्मकी मरणभूमि देख दुखित भया अपने मरणका सुधारणहारा नमोकार मंत्रका देनहारा उसके जानिबेके अर्थ एक कैलाशके शिखर समान ऊंचा चैत्यालय बनाया अर चैत्यालयके द्वारविषै एक बडे बैलकी मूर्ति जिसके निकट बैठा एक पुरुष नमोकार मंत्र सुनावे है ऐसा एक चित्रपट लिखाय मेला अर उसके समीप समझने मनुष्य मेले। दर्शन करवेको मेरु श्रेष्ठीका पद्मरुचि आया सो देख अति हर्षित भया अर भगवानका दर्शन कर पीछे आय बैलके चित्रपटकी ओर निरखकर मनविषै विचारे है बैलको नमोकार मंत्र मैंने सुनाया था सो खडा खडा देखे ते पुरुष रखवारे थे तिन जाय राजकुमारको कही सो सुनते ही बडी ऋद्धिसे युक्त हाथी चढा शीघ्रही अपने परम मित्रसे मिलने आया हाथीसे उतर जिनमंदिरविषै गया बहुरि बाहिर आया पद्मरुचिको बैलकी ओर निहारता देखा राजकुमारने श्रेष्ठीके पुत्रको पूछी तुम बैलके पटकी ओर कहा निरखो हो ? तब पद्मरुचिने कही एक मरते बैलको मैंने नमोकार मंत्र दिया था सो कहां उपजा है यह जानिवेकी इच्छा है तब वृषभध्वज बोले वह मैं हूं, ऐसा कह पायन पडा अर पद्मरुचिकी स्तुति करी जैसे गुरुकी शिष्य करै अर कहता भया मैं पशु महा अविवेकी मृत्युके कष्टकर दुखी था सो तुम मेरे महा मित्र नमोकार मंत्रके दाता समाधिमरणके कारण होते भए तुम दयालु पर भवके सुधारणहारेने महा मंत्र मुझे दिया उससे मैं राजकुमार भया जैसा उपकार राजा देव माता सहोदर मित्र कुटुम्ब कोई न करै तैसा तुम किया जो तुम नमोकार मंत्र दिया उस समान पदार्थ त्रैलोक्यमें नहीं उसका बदला मैं क्या दूं तुमसे उरण नहीं तथापि तुमविषै मेरी भक्ति अधिक उपजी है जो आज्ञा देवो सो करूं। हे पुरुषोत्तम ! तुम आज्ञा दानकर मुझको भक्त करो यह सकल राज्य लेवो मैं तुम्हारा दास यह मेरा शरीर उसकर इच्छा होय सो सेवा करावो। या भांति वृषभध्वजने कही तब पद्मरुचिके अर याके अति प्रीति बढी दोनों सम्यकदृष्टि राजमें श्रावकके व्रत पालते भए ठौर

ठौर भगवानके बडे २ चैत्यालय कराए तिनमें जिनबिंब पधराए यह पृथिवी तिनकर शोभायमान होती भई बहुरि समाधि मरण कर वृषभध्वज पुण्यकर्मके प्रसादकर दूजे स्वर्गविषै देव भया देवांगनानिके नेत्ररूप कमल तिनके प्रफुल्लित करनेको सूर्य समान होता भया तहां मन वांछित क्रीडा करता भया अर पद्मरुचि सेठ भी समाधि मरणकर दूजे ही स्वर्ग देव भया दोनों वहां परम मित्र भए वहांसे चयकर पद्मरुचि का जीव पश्चिम विदेह विषै विजयार्धगिरि जहां नंद्यावर्त नगर वहां राजा नन्दीश्वर उसकी राणी कनकप्रभा उसके नयनानन्द नामा पुत्र भया सो विद्याधरानिके चक्रपदकी संपदा भोगी बहुरि महा मुनिकी अवस्था धर विषम तप किया समाधि मरण कर चौथे स्वर्ग देव भया वहां पुण्यरूप बेलके सुख रूप फल महा मनोग्य भोगे बहुरि वहांसे चयकर सुमेरु पर्वतके पूर्व दिशाकी ओर विदेह वहां क्षेमपुरी नगरी राजा विपुलबाहन राणी पद्मावती तिनके श्रीचन्द्र नामा पुत्र भया वहां स्वर्ग समान सुख भोगे तिनके पुण्यके प्रभावसे दिन दिन राजकी वृद्धि भई अटूट भंडार भया समुद्रांत पृथिवी एक ग्रामकी न्याई वश करी अर जिसके स्त्री इंद्राणी समान सो इंद्रकेसे सुख भोगे हजारों वर्ष सुखसे राज्य किया एक दिन महा संघ सहित तीन गुप्तिके धारक समाधिगुप्त योगीश्वर नगरके बाहिर आय विराजे तिनको उद्यानविषै आया जान नगरके लोक बन्दनाको चले सो महा स्तुति करते वादित्र वजावते हर्षसे जाय हैं, श्रीचन्द्र समीपके लोकोंसे पूछता भया यह हर्षका नाद जैसा समुद्र गाजे तैसा होय है सो कौन कारण है ? तब मंत्रियनिने किंकर दोडाए निश्चय किया जो मुनि आए हैं तिनके दर्शनको लोक जाय हैं यह समाचार राजा सुनकर फूले कमल समान भए हैं नेत्र जिसके अर शरीरविषै हर्षसे रोमांच होय आये राजा समस्त लोक अर परिवार सहित मुनिके दर्शनको गया प्रसन्न है मुख जिनका ऐसे मुनिराज तिनको राजा देख प्रणामकर महा विनयसंयुक्त पृथिवीविषै बैठा । भव्य जीवरूप कमल तिनके प्रफुल्लित

करवेंको सूर्य समान ऋषिनाथ तिनके दर्शनसे राजाको अति धर्म स्नेह उपजा, वे महा तपोधन धर्म-शास्त्रके वेत्ता परम गंभीर लोकोंको तत्त्वज्ञानका उपदेश देते भए यतिका धर्म अर श्रावकका धर्म संसार समुद्रका तारणहारा अनेक भेद संयुक्त कहा अर प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग का स्वरूप कहा। प्रथमानुयोग कहिए उत्तम पुरुषोंका कथन अर करणानुयोग कहिए तीन लोकका कथन चरणानुयोग कहिए मुनि श्रावकका धर्म अर द्रव्यानुयोग कहिए षट्द्रव्य सप्त तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकायका निर्णय। कैसे हैं मुनिराज वक्तानिविषै श्रेष्ठ हैं अर आक्षेपणी कहिए जिन मार्ग उद्योतनी अर क्षेपणी कहिए मिथ्यात्वखंडनी अर संवेगिनी कहिए धर्मानुरागिणी अर निर्वेदिनी कहिए वैराग्यकारिणी यह चार प्रकार कथा कहते भए, इस संसार असारविषै कर्मके योगसे भ्रमता जो यह प्राणी सो महा कष्टसे मोक्ष मार्गकों प्राप्त होय है संसारका ठाठ विनाशीक है जैसा संध्याका वर्ण अर जलका बुदबुदा तथा जलके झाग अर लहर अर विजुरीका चमत्कार इंद्र धनुष क्षणभंगुर हैं असार हैं ऐसा जगतका चरित्र क्षणभंगुर जानना यामें सार नहीं नरक तिर्यंचगति तो दुःख रूप ही हैं अर देव मनुष्य गतिविषै यह प्राणी सुख जाने है सो सुख नहीं दुःख ही है जिससे तृप्ति नाहीं सोही दुःख जो महेन्द्र स्वर्गके भोगों से तृप्त नहीं भया सो मनुष्य भवके तुच्छ भोगसे कैसे तृप्त होय? यह मनुष्य भव भोग योग्य नहीं वैराग्य योग्य है काहू एक प्रकारसे दुर्लभ मनुष्य देह पाया जैसे दरिद्री निधान पावे सो विषय रसका लोभी होय वृथा खोया मोहको प्राप्त भया जैसे सूके इन्धनसे अग्निको कहां तृप्ति अर नदियानके जलसे समुद्र को कहां तृप्ति? तैसे विषय सुखसे जीवनको तृप्ति न होय, चतुर भी विषय रूप मद कर मोहित भया मन्दताको प्राप्त होय है, अज्ञान रूप तिमिरसे मंद भया है मन जिसका सो जलविषै डूबता खेदखिन्न होय त्यों खेदखिन्न है परन्तु अविवेकी तो विषय हीको भला जाने है सूर्य तो दिनको ताप उपजावे अर काम

रात्रि दिन आताप उपजावै सूर्यके आताप निवारिवेके अनेक उपाय हैं अर कामके निवारवेका उपाय एक विवेक ही है जन्म जरा मरणका दुःख संसारविषै भयंकर है जिसका चितवन किए कष्ट उपजे यह कर्मजनित जगतका ठाठ अरहटके यन्त्रकी घडी समान है रीता भर जाय है भरा रीता होय है नीचला ऊपर ऊपरला नीचे, अर यह शरीर दुर्गंध है यंत्र समान चलाया चले है विनाशीक है मोह कर्मके योगसे जीवका कायासे स्नेह है जलके बुद्बुदा समान मनुष्य भवके उपजे सुख असार जान बडे कुलके उपजे पुरुष विरक्त होय जिनराजका भाषा मार्ग अंगीकार करे हैं उत्साहरूप बषतर पहिरे निश्चय रूप तुरंगके असवार ध्यानरूप खडगके धारक धीर कर्मरूप शत्रुको विनाश निर्वाणरूप नगर लेय हैं, यह शरीर भिन्न अर मैं भिन्न ऐसा चिंतवन कर शरीरका स्नेह तज हे मनुष्यो धर्मको करो धर्म समान और नहीं और धर्मोंसे मुनिका धर्म श्रेष्ठ है जिन महामुनियोंके सुखदुःख दोनों तुल्य अपना अर पराया तुल्य जे राग द्वेष रहित महा पुरुष हैं वे परम उत्कृष्ट शुक्ल ध्यानरूप अग्निसे कर्मरूप वनी दुःख रूप दुष्टोंसे भरी भस्म करें हैं॥

ये मुनिके वचन राजा श्रीचंद्र सुन बोधको प्राप्त भया, विषयानुभव सुखसे वैराग्य होय अपने ध्वजकांति नामा पुत्रको राज्य देय समाधिगुप्त नामा मुनिके समीप मुनि भया। महा विरक्त है मन जिसका, सम्यक्की भावनासे तीनों योग जे मन वचन काय तिनकी शुद्धता धरता संता पांच समिति तीन गुप्तिसे मंडित राग द्वेषसे परांगमुख रत्नत्रयरूप आभूषणोंका धारक उत्तम क्षमा आदि दशलक्षण धर्मकर मंडित जिनशासनका अनुरागी समस्त अंग पूर्वांगका पाठक समाधानरूप पंच महाव्रतका धारक जीवोंका दयालु सप्त भयरहित परमधीर्यका धारक बाईस परीषहका सहनहारा, वेला तेला पक्ष मासादिक अनेक उपवासका करणहारा शुद्ध आहारका लेनहारा ध्यानाध्ययनमें तत्पर निर्ममत्व अतींद्रिय

भोगोंकी बांछाका त्यागी निदान बंधनरहित महाशांत जिनशासनमें है वात्सल्य जिसका, यतिके आचारमें संघके अनुग्रहविषै तत्पर बालके अग्रभागके कोटिवें भाग हू नाहीं है परिग्रह जाके, स्नानका त्यागी, दिगंबर, संसारके प्रबंधतें रहित, ग्रामके वनविषै एक रात्रि अर नगरके वनविषै पांच रात्रि रहनहारा, गिरि गुफा गिरिशिखर नदीके पुलिन उद्यान इत्यादि प्रशस्त स्थानविषै निवास करणहारा कायोत्सर्गका धारक देहतैं हू निर्ममत्व निश्चल मौनी पंडित महातपस्वी इत्यादि गुणनिकर पूर्ण कर्म पिंजरकों जर्जराकर काल पाय श्रीचंद्रमुनि रामचंद्रका जीव पांचवें स्वर्ग इंद्र भया, तहां लक्ष्मी कीर्ति कांति प्रतापका धारक देवनिका चूडामणि तीन लोकविषै प्रसिद्ध परम ऋद्धिकरयुक्त महासुख भोगता भया। नंदनादिक वनविषै सौधर्मादिक इंद्र याकी संपदाको देख रहैं, याके अवलोकनकी सबके बांछा रहै महा सुंदर विमान मणि हेममई मोतिनिकी झालरिनिकर मंडित, वामें बैठा विहार करै दिव्य स्त्रीनिके नेत्रोंको उत्सवरूप महासुखतैं काल व्यतीत करता भया, श्रीचंद्रका जीव ब्रह्मेंद्र ताकी महिमा, हे विभीषण! वचनकर न कही जाय, केवलज्ञानगम्य है। यह जिनशासन अमौलिक परमरत्न उपमारहित त्रैलोक्यविषै प्रकट है तथापि मूढ न जानै। श्रीजिनेंद्र मुनींद्र अर जिनधर्म इनकी महिमा जानकर हू मूर्ख मिथ्या अभिमानकर गर्वित भए धर्मसे परांगमुख रहें। जो अज्ञानी या लोकके सुखविषै अनुरागी भया है सो बालक समान अविवेकी है जैसे बालक विना समझे अभक्ष्यका भक्षण करै है विषपान करै है तैसे मूढ अयोग्यका आचरण करे है जे विषयके अनुरागी हैं सो अपना बुरा करे हैं, जीवोंके कर्म बंधकी विचित्रता है इसलिए सब ही ज्ञानके अधिकारी नहीं, कैयक महाभाग्य ज्ञानको पावे हैं अर कैयक ज्ञानको पाय और वस्तुकी वांछाकर अज्ञान दशाको प्राप्त होय हैं अर कैयक महानिंद्य जो यह संसारी जीवोनेके मार्ग तिनमें रुचि करे हैं, वे मार्ग महादोषके भरे हैं जिनमें विषय कषायकी बहुलता है जिनशासनसे

और कोई दुःखके छुडायवेका मार्ग नहीं इसलिए हे विभीषण ! तुम आनन्द चित्त होयकर जिनेश्वर देवका अर्चन करो, इस भांति धनदत्तका जीव मनुष्यसे देव, देवसे मनुष्य होयकर नवमे भव रामचंद्र भए, उसकी विगत पहिले भव धनदत्त १ दूजे भव पहले स्वर्ग देव २ तीजे भव पद्मरुचि सेठ ३ चौथे भव दूजे स्वर्ग देव ४ पांचवें भव नयनानंदराजा ५ छठे भव चौथे स्वर्ग देव ६ सातमें भव श्रीचंद्र राजा ७ आठवें भव पांचवें स्वर्ग इंद्र—नववें भव रामचंद्र ९ आगे मोक्ष यह तो रामके भव कहे अब हे लंकेश्वर ! बसुदत्तादिकका वृत्तांत सुन—कर्मोंकी विचित्रगतिके योगकर मृणालकुण्ड नामा नगर तहां राजा विजयसेन राणी रत्नचूला उसके वज्रकंबु नामा पुत्र उसके हेमवती राणी उसके शंभु नामा पुत्र पृथ्वीमें प्रसिद्ध सो यह श्रीकांतका जीव रावण होनहार सो पृथ्वीमें प्रसिद्ध अर वसुदत्तका जीव राजा का पुरोहित उस का नाम श्रीभूति सो लक्ष्मण होनहार, महा जिनधर्मी सम्यग्दृष्टि उसके स्त्री सरस्वती उसके वेदवती नामा पुत्री भई, सो गुणवतीका जीव सीता होनहार गुणवतीके भवसे पूर्व सम्यक्त विना अनेक तिर्यंच योनिविषै भ्रमणकर साधुवोंकी निंदाके दोषकर गंगाके तट मरकर हाथिनी भई। एक दिन कीचमें फंसी पराधीन होय गया है शरीर जिसका नेत्र तिरमिराट अर मंद २ सांस लेय सो एक तरंगवेग नामा विद्याधर महादयावान उसने हथिनीके कानमें नमोकार मंत्र दिया सो नमोकार मंत्रके प्रभावकर मंद कषाय भई अर विद्याधरने व्रत भी दिए सो जिनधर्मके प्रसादसे श्रीभूति पुरोहितके वेदवती पुत्री भई एक दिन मुनि आहारको आए सो यह हंसने लगी तब पिताने निवारी सो यह शांतचित्त होय श्राविका भई अर यह कन्या परमरूपवती सो अनेक राजावोंके पुत्र इसके परिणावेको अभिलाषी भए अर यह राजा विजयसेनका पोता शंभु जो रावण होनहार है सो विशेष अनुरागी भया अर पुरोहित श्रीभूति महा जिनधर्मी सो उसने जो मिथ्यादृष्टि कुवेर समान धनवान होय तौ हू मैं पुत्री न दूं यह मेरे प्रतिज्ञा है

तब शंभुकुमारने रात्रिविषै पुरोहितको मारा सो पुरोहित जिनधर्मके प्रसादसे स्वर्ग लोकविषै देव भया अर शंभुकुमार पापी वेदवती साक्षात् देवी समान उसे न इच्छतीको वलात्कार परणवेको उद्यमी भया वेदवतीके सर्वथा अभिलाषा नहीं तब कामकर प्रज्वलित इस पापीने जोरावरी कन्याको अलिंगनकर मुख चुंब मैथुन किया तब कन्या विरक्त हृदय कांपे है शरीर जिसका अग्निकी शिखा समान प्रज्व-लित अपने शील घातकर अर पिताके घातकर परम दुखको धरती लाल नेत्र होय महा कोपकर कहती भई—अरे पापी ! तैंने मेरे पिताको मार मो कुमारीसे वलात्कार विषयसेवन किया सो नीच ! मैं तेरे नाशका कारण होऊंगी मेरा पिता तैंने मारा सो वडा अनर्थ किया मैं पिताका मनोरथ कभी भी न उलंघू मिथ्यादृष्टि सेवनसे मरण भला ऐसा कह वेदवती श्रीभूति पुरोहितकी कन्या हरिकांता आर्याके समीप जाय आर्यिकाके व्रत लेय परम दुर्धर तप करती भई, केश लुंच किए महा तप कर रुधिर मांस सुकाय दिए प्रकट दीखे है अस्थि अर नसा जिसके, तपकर सुकाय दिया है देह जिसने समाधि मरणकर पांचवें स्वर्ग गई पुण्यके उदयकर स्वर्गके सुख भोगे अर शंभु संसारविषै अनीतिके योगकर अति निन्दनीक भया कुटुंब सेवक अर धनसे रहित भया उन्मत्त होय गया जिनधर्म परांगमुख भया साधुवों को देख हंसे निंदा करे मद्य मांस शहतका आहारी पाप क्रियाविषै उद्यमी अशुभके उदयकर नरक तिर्यंचविषै महा दुख भोगता भया ॥

अथानन्तर कछु इक पापकर्मके उपशमसे कुशध्वज नामा ब्राह्मण ताके सावित्री नामा स्त्रीके प्रभा-सकुन्द नामा पुत्र भया सो दुर्लभ जिनधर्मका उपदेश पाय विचित्रमुनिके निकट मुनि भया काम क्रोध मद मत्सर हरे, आरंभरहित भया, निर्विकार तपकर दयावान निस्पृही जितेंद्री पक्षमास उपवास करै जहां सूर्य अस्त हो तहां शून्य वनविषै बैठ रहे मूलगुण उत्तरगुणका धारक बाईस परीषहका सहनहार।

ग्रीषमविषै गिरिके शिखर रहै, वर्षामें वृक्षतले बसै अर शीतकालविषै नदी सरोवरीके तट निवास करै। या भांति उत्तम क्रियाकर युक्त श्री सम्मेदशिखरकी बन्दनाको गया वह निर्वाण क्षेत्र कल्याणका मन्दिर जाका चिंतवन किये पापनिका नाश होय तहां कनकप्रभ नामा विद्याधरकी विभूति आकाशविषै देख मूर्खने निदान किया जो जिनधर्मके तपका माहात्म्य सत्य है तो ऐसी विभूति मैं हू पाऊं। यह कथा भगवान केवलीने विभीषणको कही—देखो जीवोंकी मूढता तीनलोक जाका मोल नहीं ऐसा अमोलिक तपरूप रत्न भोगरूपी मूठी सागके अर्थ बेचा, कर्मके प्रभावकर जीवनकी विपर्यय बुद्धि होय है निदानकर दुःखित विषम तपकर वह तीजे स्वर्ग देव भया तहांसे चयकर भोगनिविषै है चित्त जाका सो राजा रत्नश्रवाके राणी केकसी ताके रावण नामा पुत्र भया, लंकामें महाविभूति पाई, अनेक हैं आश्चर्यकारी बात जाकी, प्रतापी पृथिवीमें प्रसिद्ध अर धनदत्तका जीव रात्रि भोजनके त्यागकर सुर नर गतिके सुख भोग श्रीचन्द्र राजा होय पंचम स्वर्ग दश सागर सुख भोग बलदेव भया, रूपकर बलकर विभूतिकर जा समान जगतविषै और दुर्लभ है महामनोहर चन्द्रमासमान उज्वल यशका धारक अर वसुदत्तका जीव अनुक्रमसे लक्ष्मीरूप लताके लपटानेका वृक्ष वासुदेव भया ताके भव सुन—वसुदत्त १ मृग २ शूकर ३ हस्ती ४ महिष ५ वृषभ ६ बानर ७ चीता ८ ल्याली ९ मीढा १० अर जलचर स्थलचरके अनेक भव ११ श्रीभूति पुरोहित १२ देवराजा १३ पुनर्वसु विद्याधर १४ तीजे स्वर्गदेव १५ बासुदेव १६ मेघा १७ कुटुम्बीका पुत्र १८ देव १९ बणिक् २० भोग भूमि २१ देव २२ चक्रवर्तीका पुत्र २३ बहुरि कइयक उत्तमभव धर पुष्करार्द्धके विदेहविषै तीर्थंकर अर चक्रवर्ती दोय पदका धारी होय मोक्ष पावेगा अर दशाननके भव श्रीकांत १ मृग २ सूकर ३ गज ४ महिष ५ वृषभ ६ बांदर ७ चीता ८ ल्याली ९ मीढा १० अर जलचर थलचरके अनेक भव ११ शंभु १२ प्रभासकुन्द १३ तीजे स्वर्ग १४ दशमुख

१५ वालुका १६ कुटुम्बी पुत्र १७ देव १८ बणिक १९ भोगभूमि २० देव २१ चक्रीपुत्र २२ बहुरि कइएक उत्तम भव धर भरत क्षेत्रविषै जिनराज होय मोक्ष पावेगा बहुरि जगत जालविषे नाहीं अर जानकीके भव गुणवती १ मृगी २ शूकरी ३ हथिनी ४ भहिषी ५ वानरी ७ चीती ८ ल्याली ९ गारढ १० जलचर स्थलचरके अनेक भव ११ चित्तोत्सवा १२ पुरोहितकी पुत्री वेदवती १३ पांचवें-स्वर्ग देवी अमृतवती १४ बलदेवकी पटराणी १५ सोलहवें स्वर्ग प्रतेंद्र १६ चक्रवर्ती १७ अहमिंद्र १८ रावणका जीव तीर्थंकर होयगा ताके प्रथम गणधरदेव होय मोक्ष प्राप्त होयगा । भगवान् सकलभूषण विभीषणसे कहे हैं—श्रीकांतका जीव कैयक भवमें शंभु प्रभासकुन्द होय अनुक्रमसे रावण भया जाने अर्द्ध भरतक्षेत्रमें सकल पृथ्वी वश करी, एक अंगुल आज्ञा सिवाय न रही अर गुणवतीका जीव श्रीभूतिकी पुत्री होय अनुक्रमकर सीता भई, राजा जनककी पुत्री श्रीरामचंद्रकी पटराणी विनयवती शीलवती पतिव्रतानिमें अग्रेसर भई जैसे इंद्रके शची चंद्रके रोहिणी रविके रेणा चक्रवर्तीके सुभद्रा तैसे रामके सीता सुन्दर है चेष्टा जाकी अर जो गुणवतीका भाई गुणवान् सो भामण्डल भया श्रीरामका मित्र जनक राजाकी राणी विदेहाके गर्भविषै युगल बालक भए भामण्डल भाई सीता बहिन दोनों महा मनोहर अर यज्ञबलि ब्राह्मणका जीव विभीषण भया अर बैलका जीव जो नमोकार मंत्रके प्रभावतैं स्वर्ग गति नर गतिके सुख भोगे यह सुग्रीव कपिध्वज भया, भामण्डल सुग्रीव अर तू पूर्व भवकी प्रीतिकर तथा पुण्यके प्रभावकर महा पुण्याधिकारी श्रीराम ताके अनुरागी भए। यह कथा सुन विभीषण बालिके भव पूछता भया अर केवली कहे हैं—हे विभीषण ! तू सुन, राग द्वेषादि दुखनिके समूहकर भरा यह संसार सागर चतुर्गतिमई ताविषे वृन्दावनविषैं एक कालेरा मृग सो साधु स्वाध्याय करते हुते तिनका शब्द अन्त कालमें सुनकर ऐरावत क्षेत्रविषे दित नामा नगर तहां विहित नामा मनुष्य सम्यग्दृष्टि

सुन्दर चेष्टाका धारक ताकी स्त्री शिवमति ताके मेघदत्त नामा पुत्र भया सो जिनपूजाविषै उद्यमी भगवानका भक्त अणुव्रतधारक समाधि मरणकर दूजे स्वर्ग देव भया, वहांसे चयकर जम्बूद्वीपविषै पूर्व विदेह विजियावतीपुरी ताके समीप महा उत्साहका भरा एक मत्तकोकिला नामा ग्राम ताका स्वामी कांतिशोक ताकी स्त्री रत्नांगिनी ताके स्वप्रभ नामा पुत्र भया महासुन्दर जाको शुभ आचार भावै सो जिनधर्मविषै निपुण संयत नामा मुनि होय हजारों वर्ष विधिपूर्वक बहुत भांतिके महातप किए, निर्मल है मन जाका सो तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजी तथापि अति निगर्व संयोग सम्बन्धविषै ममताको तज उपशम श्रेणी धार शुक्ल ध्यानके पहिले पाएके प्रभावतैं सर्वार्थसिद्धि गया सो तेतीस सागर अहमिंद्र पदके सुख भोग राजा सूर्यरज ताके बालि नामा पुत्र भया, विद्याधरानिका अधिपति किहकन्धपुरका धनी जिसका भाई सुग्रीव महा गुणवान सो जब रावण चढ आया तब जीव दयाके अर्थ बालीने युद्ध न किया सुग्रीवको राज्य देय दिगम्बर भया सो जब कैलाशविषै तिष्ठे था अर रावण आय निकसा क्रोधकर कैलाशके उठायवेको उद्यमी भया सो बाली मुनि चैत्यालयोंकी भक्तिसे ढीलासों अंगुष्ठ दबाया सो रावण दबने लगा तब राणीने साधुकी स्तुति कर अभयदान दिवाया। रावण अपने स्थानक गया अर बाली महामुनि गुरुके निकट प्रायश्चित्तनामा तप लेय दोष निराकरण कर क्षपक श्रेणी चढ कर्म दग्ध किए लोकके शिखर सिद्धिक्षेत्र है वहां गए जीवका निज स्वभाव प्राप्त भया अर वसुदत्तके अर श्रीकान्तके गुणवतीके कारण महा बैर उपजा था सो अनेक जन्मोंमें दोनों परस्पर लड लड मरे अर गुणवतीसे तथा वेदवतीसे रावणके जीवके अभिलाषा उपजी थी उस कारण कर रावणने सीता हरी अर वेदवतीका पिता श्रीभूति सम्यक्दृष्टि उत्तम ब्राह्मण सो वेदवतीके अर्थ शत्रुने हता सो स्वर्ग जाय वहांसे चयकर प्रतिष्ठित नाम नगरविषै पुनर्वसु नाम विद्याधर भया सो निदानसहित तपकर

तीजे स्वर्ग जाय रामका लघु भ्राता महा स्नेहवन्त लक्ष्मण भया अर पूर्वले वैरके योगसे रावणको मारा अर वेदवतीसे शंभुने विपर्यय करी तातैं सीता रावणके नाशका कारण भई जो जिसको हते सो उसकर हता जाय। तीन खण्डकी लक्ष्मी सोई भई रात्रि उसका चन्द्रमा रावण उसे हतकर लक्ष्मण सागरान्त पृथिवीका अधिपति भया रावणसा शूर वीर पराक्रमी या भांति मारा जाय यह कर्मोंका दोष है दुर्वलसे सबल होय सबलसे दुर्बल होय घातक है सो हता जाय अर हता होय सो घातक होय जाय। संसारके जीवोंकी यही गति है कर्मकी चेष्टाकर कभी स्वर्गके सुख पावें कभी नरकके दुःख पावें अर जैसे कोई महास्वादरूप परम अन्न उस विषै विष मिलाय दूषित करै तैसे मूढ जीव उग्र तपको भोगाभिलाषकर दूषित करे है जैसे कोई कल्पवृक्षको काटि कोईको वाडि करै अर विषके वृक्षको अमृतरस कर सींचे अर भस्मके निमित्त रत्नोंकी राशिको जलावे अर कोयलोंके निमित्त मलयागिरि चन्दनको दग्ध करै तैसे निदान बंधकर तपको यह अज्ञानी दूषित करें या संसारविषै सर्व दोषकी खान स्त्री है तिसके अर्थ क्या कुकर्म अज्ञानी न करें। जो या जीवने कर्म उपार्जे हैं सो अवश्य फल देय हैं कोऊ अन्यथा करवे समर्थ नहीं, जे धर्मविषै प्रीति करें बहुरि अधर्म उपार्जैं वे कुगतिको प्राप्त होय हैं तिनकी भूल कहा कहिए? जे साधु होयकर मदमत्सर धरे हैं तिनको उग्रतप कर मुक्ति नहीं अर जिसके शांति भाव नहीं संयम नहीं तप नहीं उस दुर्जन मिथ्यादृष्टिके संसार सागरके तिरवेका उपाय कहां अर जैसे असराल पवनकर मदोन्मत्त गजेन्द्र उडै तो सुसाके उडवेका कहा आश्चर्य तैसे संसारकी झूठी मायाविषै चक्रवर्त्यादिक वडे पुरुष भूले तो छोटे मनुष्यनिकी क्या बात इस जगतविषै परम दुखका कारण वैर भाव है सो विवेकी न करें आत्मकल्याणकी है भावना जिनके पापकी करणहारी वाणी कदापि न बोलें। गुणवतीके भवविषै मुनिका अपवाद किया था अर वेदवतीके भवमें एक मंडलका नामा ग्राम वहां सुदर्शननामा मुनि वनमें

आए लोक बन्दना कर पीछे गये अर मुनिकी बहिन सुदर्शना नामा आर्यिका सो मुनिके निकट बैठी धर्म श्रवण करे थी सो वेदवतीने देखकर ग्रामके लोकोंके निकट मुनिकी निंदा करी कि मैं मुनिको अकेली स्त्रीके समीप बैठा देखा तब कैयकोंने बात मानी अर कैयक बुद्धिवन्तोंने न मानी परन्तु ग्राममें मुनिका अपवाद भया, तब मुनिने नियम किया कि यह झूठा अपवाद दूर होय तो आहारको उतरना तब नगरके देवताने वेदवतीके मुखकर समस्त ग्रामके लोकोंको कहाई कि मैं झूठा अपवाद किया। यह बहिन भाई हैं अर मुनिके निकट जाय वेदवतीने क्षमा कराई कि हे प्रभो! मैं पापनीने मिथ्या वचन कहे सो क्षमा करी या भांति मुनिकी निंदाकर सीताका झूठा अपवाद भया, अर मुनिसे क्षमा कराई उसकर अपवाद दूर भया तातैं जे जिनमार्गी हैं वे कभी भी परनिंदा न करें किसीमें सांचा भी दोष है तौहू ज्ञानी न कहें अर कोऊ कहता होय इसे मने करें सर्वथा प्रकार पराया दोष ढाकें जे कोई पर निंदा करें हैं सो अनन्त काल संसार बनविषै दुख भोगवे हैं सम्यकदर्शनरूप जो रत्न उसका बडा गुण यही है जो पराया अवगुण सर्वथा ढांके जो सांचा भी दोष पराया कहे सो अपराधी है अर जो अज्ञानसे मत्सर भावसे पराया झूठा दोष प्रकाशै उस समान और पापी नहीं अपने दोष गुरुके निकट प्रकाशने अर पराए दोष सर्वथा ढाकने जो पराई निंदा करे सो जिन मार्गसे पराङ्मुख है।

यह केवलीके परम अद्भुत वचन सुनकर सुर असुर नर सब ही आनन्दको प्राप्त भए वैरभावके दोष सुन सब सभाके लोग महादुखके भयकर कम्पायमान भए मुनि तो सर्व जीवानिसे निर्वैर हैं अधिक शुद्ध भाव धारते भए अर चतुर्निकायके सब ही देव क्षमाकूं प्राप्त होय वैरभाव तजते भए अर अनेक राजा प्रतिबुद्ध होय शांति भाव धार गर्वका भार तज मुनि अर श्रावक भए अर जे मिथ्यावादी थे वह हू सम्यक्तकूं प्राप्त भए सब ही कर्मनिकी विचित्रता जान निश्वास नाषते भए। धिकार या जगतकी

मायाको याभांति सब ही कहते भए अर हाथ जोड सीस निवाय केवलीको प्रणामकर सुर असुर मनुष्य विभीषणकी प्रशंसा करते भए जो तिहारे आश्रयसे हमने केवलीके मुख उत्तम पुरुषानिके चारित्र सुने तुम धन्य हो वहुरि देवेंद्र नरेंद्र नागेंद्र सवही आनन्दके भरे अपने परिवार वर्ग सहित सर्वज्ञ देवकी स्तुति करते भए। हे भगवान पुरुषोत्तम ! यह त्रैलोक्य सकल तुमकर शोभै है तातैं तिहारा सकलभूषण नाम सत्यार्थ है तिहारी केवल दर्शन केवल ज्ञानमई निजविभूति सर्व जगतकी विभूतिको जीतकर शोभै हैं यह अनन्त चतुष्टय लक्ष्मी सर्व लोकका तिलक है, यह जगतके जीव अनादि कालके कर्म वश होय रहे हैं महादुखके सागरमें पडे हैं तुम दीननिके नाथ दीनवन्धु करुणानिधान जीवानिको जिनराज पद देहु। हे केवलिन् ! हम भव वनके मृग जन्म जरा मरण रोग शोक वियोग व्याधि अनेक प्रकारके दुख भोक्ता अशुभ कर्मरूप जालविषै पडे हैं तातैं छूटना कठिन है सो तुम ही छुडाइवे समर्थ हो हमको निज बोध देवो जाकर कर्मका क्षय होय। हे नाथ ! यह विषय वासनारूप गहन वन तामें हम निजपुरीका मार्ग भूल रहे हैं सो तुम जगतके दीपक हमको शिवपुरीका पंथ दरसावो अर जे आत्मबोधरूप शांत रसके तिसाये तिनको तुम तृषाके हरणहारे महासरोवर हो अर कर्म भर्मरूप वनके भस्म करिवेको साक्षात दावानलरूप हो अर जे विकल्प जाल नाना प्रकारके तेई भए वरफ ताकर कंपायमान जगतके जीव तिनकी शीत व्यथा हरिवेको तुम साक्षात् सूर्य हो। हे सर्वेश्वर ! सर्व भूतेश्वर जिनेश्वर तिहारी स्तुति करिवेको चारज्ञानके धारक गणधरदेव हू समर्थ नाहीं तो अर कौन ? हे प्रभो ! तुमको हम वारम्वार नमस्कार करे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मण विभीषण सुग्रीव सीता भामण्डलके भव वर्णन करनेवाला एकसौ छवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०६ ॥

अथानन्तर केवलीके वचन सुन संसार भ्रमणका जो महादुःख ताकर खेदखिन्न होय जिन दीक्षा की है अभिलाषा जाके ऐसा रामका सेनापति कृतांतवक्र रामसूं कहता भया—हे देव ! मैं या संसार असारविषै अनादि कालका मिथ्या मार्गकर भ्रमता हुवा दुःखित भया अब मेरे मुनिव्रत धरिवेकी इच्छा है, तब श्रीराम कहते भए जिनदीक्षा अति दुर्धर है तू जगतका स्नेह तज कैसे धारैगा महातीव्र शीत उष्ण आदि बाईस परीषह कैसे सहेगा अर दुर्जन जनोंके दुष्टवचन कंटक तुल्य कैसे सहेगा अर अब तक तैंने कभी भी दुःख सहे नहीं कमलकी कर्णिका समान शरीर तेरा सो कैसे विषमभूमिके दुःख सहेगा गहन वनविषैं कैसे रात्रि पूरी करेगा अर प्रकट दृष्टि पडे हैं शरीरके हाड अर नसा जाल जहां ऐसे उग्र तप कैसे करेगा अर पक्ष मास उपवासकर दोष टाल पर घर नीरस भोजन कैसे करेगा ? तू महातेजस्वी शत्रुओंकी सेनाके शब्द न सहि सकै सो कैसे नीच लोकोंके किये उपसर्ग सहेगा ? तब कृतांतवक्र बोला हे देव ! जब मैं तिहारे स्नेहरूप अमृतको ही तजवेकों समर्थ भया तो मुझे कहा विषम है जब तक मृत्यु रूप वज्रकर यह देहरूप स्तंभ न चिगे ता पहिले मैं महादुःखरूप यह भव वन अंधकारमई वासे निकसा चाहूं हूं जो बलते घरमेंसे निकसे उसे दयावान न रोकै यह संसार असार महानिंद्य है इसे तजकर आतमहित करूं। अवश्य इष्टका वियोग होयगा या शरीरके योगकर सर्व दुःख हैं सो हमारे शरीर बहुरि उदय न आवे या उपायविषैं बुद्धि उद्यमी भई है। ये वचन कृतांतवक्रके सुन श्रीरामके आंसू आए अर नीठे नीठे मोहको दाब कहते भए—मेरीसी विभूतिको तज तू तपको सन्मुख भया है सो धन्य है जो कदाचित् या जन्मविषै मोक्ष न होय अर देव होय तो संकटविषै आय मोहि संबोधियो। हे मित्र ! जो तू मेरा उपकार जाने है तो देवगतिमें विस्मरण मत करियो।

तब कृतांतवक्रने नमस्कारकर कही हे देव ! जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कह सर्व आभूषण उतारे अर सकलभूषण केवलीको प्रणामकर अन्तर बाहिरके परिग्रह तजे कृतांतवक्र था सो सौम्यवक्र होय गया। सुंदर है चेष्टा जिसकी, इसको आदि दे अनेक महाराजा वैरागी भए उपजी है जिनधर्मकी रुचि जिनके निर्ग्रंथव्रत धारते भए अर कैयक श्रावक व्रतको प्राप्त भए अर कैयक सम्यक्त को धारते भए वह सभा हर्षित होय रत्नत्रय आभूषणकर शोभित भई। समस्त सुर असुर नर सकलभूषण स्वामीको नमस्कारकर अपने अपने स्थानक गए अर कमल समान हैं नेत्र जिनके, ऐसे श्रीराम सकलभूषण स्वामीको अर समस्त साधुवोंको प्रणामकर महा विनयरूपी सीताके समीप आए। कैसी है सीता ? महा निर्मल तपकर तेज धरे जैसी घृतकी आहुतिकर अग्निकी शिखा प्रज्वालित होय तैसी पापोंके भस्म करिवेको साक्षात् अग्निरूप तिष्ठी है आर्यिकावोंके मध्य तिष्ठती देखी देदीप्यमान है किरणोंका समूह जिसके, मानों अपूर्व चंद्रकांति तारावोंके मध्य तिष्ठती है, आर्यिकावोंके व्रत धरे अत्यन्त निश्चल है। तजे हैं आभूषण जिसने तथापि श्री ही धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी लज्जा इनकी शिरोमणि सोहै है श्वेत वस्त्रको धरे कैसी सोहै है मानों मंद पवनकर चलायमान हैं फेन कहिए झाग जिसके ऐसी पवित्र नदी ही है अर मानों निर्मल शरद पूनोंकी चांदनी समान शोभाको धरे समस्त आर्यिकारूप कुमुदनियोंको प्रफुल्लित करणहारी भासै है महा वैराग्यको धरे मूर्तिवंती जिनशासनकी देवता ही है सो ऐसी सीताको देख आश्चर्यको प्राप्त भया है मन जिनका ऐसे श्रीराम कल्पवृक्ष समान क्षण एक निश्चल होय रहे स्थिर हैं नेत्र भ्रकुटी जिनकी जैसे शरदकी मेघमालाके समीप कंचनागिरि सोहै तैसे श्रीराम आर्यिकावोंके समीप भासते भए, श्रीराम चित्तविषै चितवते हैं यह साक्षात् चंद्रकिरण भव्य जन कुमुदनीको प्रफुल्लित करण-

तपस्विनी भयंकर हारी सोहै है बडा आश्चर्य है यह कायर स्वभाव मेघके शब्दसे डरती सो अब महा
महाकोमलशरीर वनविषै कैसे भयको न प्राप्त होयगी ? नितंबहीके भारसे आलस्यरूप गमन करणहारी
अति कठिन है तपसे विलाय जायगी । कहां यह कोमल शरीर अर कहां यह दुर्धर जिनराजका तप सो?
मनोहर आहारकी जो दाह बडे २ वृक्षोंको दाहे उसकर कमलनीकी कहा वात ? यह सदा मनवांछित
स्वर्गके विमान करणहारी अब कैसे यथालाभ भिक्षा कर कालक्षेप करेगी ? यह पुण्याधिकारणी रात्रिविषै
लेती सो अब समान सुंदर महिलमें मनोहर सेजपर पोढती अर बीण बांसुरी मृदंगादि शब्दकर निद्रा
सिंह व्याघ्रादिके भयकर वनविषै कैसे रात्रि पूर्ण करेगी वन तो डाभकी तीक्ष्ण अणियोंकर विषम अर
महासती पतिव्रता शीलवंती सुंदरी शब्दकर डरावना, देखो मेरी भूल जो मूढ लोकोंके अपवादसे मैं
कंपायमान कमल मधुरभाषिणी घरसे निकासी । इस भांति चिंताके भारकर पीडित श्रीराम पवनकर
शोकरहित होय महा समान कंपायमान होते भए फिर केवलीके वचन चितार धीर्य धर आंसू पोंछ
नमस्कारकर राम विनयकर सीताको नमस्कार किया, लक्ष्मण भी सौम्य है चित्त जिसका हाथ जोड
जैसे धरा सुमेरु सहित स्तुति करता भया–हे भगवती धन्य तू सती वंदनीक है सुंदर है चेष्टा जिसकी
भव रोग निवारेगी को धारे तैसे तू जिनराजका धर्म धारे है तैंने जिनवचनरूप अमृत पीया उसकर
धरणहारी हैं तिनकी सम्यक्त ज्ञानरूप जहाजकर संसार समुद्रको तिरेगी । जे पतिव्रता निर्मल चित्तकी
पवित्र चित्तकर ऐसी क्रिया यही गति है अपना आत्मा सुधारें अर दोनों लोक अर दोनों कुल सुधारें
संसारी जीवों आदरी । हे उत्तम नियमकी धरणहारी हम जो कोई अपराध किया होय सो क्षमा करियो
आनित्य जानी अर परम आनंद के भाव अविवेकरूप होय हैं सो तू जिनमार्गविषै प्रवरती संसारकी माया

रूप यह दशा जीवोंको दुर्लभ है इस भांति दोनों भाई जानकीकी स्तुतिकर लव अंकुशको आगे घरे अनेक विद्याधर महीपाल तिन सहित अयोध्यामें प्रवेश करते भए जैसे देवों सहित इंद्र अमरावतीमें प्रवेश करे अर समस्त राणी नाना प्रकारके वाहनोंपर चढी परिवारसहित नगरमें प्रवेश करती भई सो रामको नगरमें प्रवेश करता देख मंदिर ऊपर बैठी स्त्री परस्पर वार्ता करे हैं यह श्रीरामचंद्र महा शूरवीर शुद्ध है अन्तःकरण जिनका महा विवेकी मूढ लोकोंके अपवादसे ऐसी पतिव्रता नारी खोई तब कैयक कहती भई जे निर्मल कुलके जन्मे शूरवीर क्षत्री हैं तिनकी यही रीति है किसी प्रकार कुलको कलंक न लगावें लोकोंके संदेह दूर करिवे निमित्त रामने उसको दिव्य दई वह निर्मल आत्मा दिव्यमें सांची होय लोकोंके संदेह मेट जिन दीक्षा धारती भई अर कोई कहै—हे सखी ! जानकी विना राम कैसे दीखे हैं जैसे विना चांदनी चांद अर दीप्ति विना सूर्य तब कोई कहती भई यह आप ही महाकांतिधारी हैं इनकी कांति पराधीन नहीं अर कोई कहती भई सीताका वज्रचित्त है जो ऐसे पुरुषोत्तम पतिको छोड जिन दीक्षा धारी तब कोई कहती भई धन्य है सीता जो अनर्थरूप गृहवासको तज आत्मकल्याण किया अर कोई कहती भई ऐसे सुकुमार दोनों कुमार महा धीर लव अंकुश कैसे तजे गए स्त्रीका प्रेम पतिसे छूटे परन्तु अपने जाए पुत्रोंसे न छूटे तब कोई कहती भई ये दोनों पुत्र परम प्रतापी हैं इनका माता कहा करेगी इनका सहाई पुण्य ही है अर सब ही जीव अपने अपने कर्मके आधीन हैं इस भांति नगरकी नारी वचनालाप करे हैं जानकीकी कथा कौनको आनन्दकारिणी न होय अर यह सब ही रामके दर्शनकी अभिलाषिनी रामको देखती देखती तृप्त न भई जैसे भ्रमर कमलके मकरन्दसे तृप्त न होय अर कैयक लक्ष्मणकी ओर देख कहती भई ये नरोत्तम नारायण लक्ष्मीवान अपने प्रतापकर वश करी है पृथ्वी जिन्होंने चक्रके धारक उत्तम राज्य-लक्ष्मीके स्वामी वैरियोंकी स्त्रियोंको विधवा करणहारे

रामके आज्ञाकारी हैं इस भांति दोनों भाई लोककर प्रशंसा योग्य अपने मंदिरमें प्रवेश करते भए जैसे देवेंद्र देवलोकमें प्रवेश करें। यह श्रीरामका चारित्र जो निरंतर धारण करे सो अविनाशी लक्ष्मीको पावै ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै कृतांतवक्रके वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ सातवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०७ ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीके मुख श्रीरामका चारित्र सुन मनविषै विचरता भया कि सीताने लव अंकुश पुत्रोंसे मोह तजा सो वह सुकुमार मृगनेत्र निरन्तर सुखके भोक्ता कैसे माताका वियोग सह सके ? ऐसे पराक्रमके धारक उदारचित्त तिनको भी इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग होय है तो औरोंकी कहा बात ? यह विचार कर गणधर देवसे पूछा, हे प्रभो ! मैं तिहारे प्रसादकर राम लक्ष्मणका चरित्र सुना अब बाकी लव अंकुशका सुना चाहूं हूं तब इन्द्रभूति कहिए गौतम स्वामी कहते भए—हे राजन् ! काकन्दी नाम नगरी उसमें राजा रतिवर्द्धन राणी सुदर्शना ताके पुत्र दोय एक प्रियंकर दूजा हितंकर अर मन्त्री सर्वगुप्त राज्यलक्ष्मीका धुरंधर सो स्वामीद्रोही राजाके मारवेका उपाय चिंतवे अर सर्वगुप्तकी स्त्री विजयावती सो पापिनी राजासे भोग किया चाहे अर राजा शीलवान परदारापराङ्मुख याकी मायाविषै न आया, तब याने राजासे कही— मन्त्री तुमको मारा चाहे है सो राजाने याकी बात न मानी तब यह पतिको भरमावती भई जो राजा तोहि मार मोहि लिया चाहै है तब मन्त्री दुष्टने सब सामन्त राजासे फोरे अर राजाका जो सोवनेका महिल तहां रात्रिको अग्नि लगाई सो राजा सदा सावधान हुता अर महिलविषै गोप सुरंग रखाई थी सो सुरंगके मार्ग होय दोनों पुत्र अर स्त्रीको लेय राजा निकसा सो काशीका धनी राजा कश्यप महान्यायवान उग्रवंशी राजा रतिवर्धनका सेवक था उसके नगरको राजा

गोप्य चला अर सर्वगुप्त रतिवर्धनके सिंहासनपर बैठा सबको आज्ञाकारी किए अर राजा कश्यपको भी पत्र लिख दूत पठाया कि तुम भी आय मोहि प्रणामकर सेवाकरो, तब कश्यपने कही हे दूत! सर्वगुप्त स्वामीद्रोही है सो दुर्गतिके दुःख भोगेगा, स्वामीद्रोहीका नाम न लीजे मुख न देखिये सो सेवा कैसे कीजे? उसने राजाको दोनो पुत्र अर स्त्री सहित जलाया सो स्वामीघात स्त्रीघात अर बालघात यह महादोष उसने उपार्जे तातैं ऐसे पापीका सेवन कैसे करिये? जाका मुख न देखना सो सर्व लोकोंके देखते उसका सिरकाट धनीका वैर लूंगा, तब यह वचन कह दूत फेर दिया दूतने जाय सर्वगुप्तको सर्व वृत्तांत कहा, सो अनेक राजावोंकर युक्त महासेनासहित कश्यप ऊपर आया सो आयकर कश्यपका देश घेरा काशीके चौगिर्द सेना पडी तथापि कश्यपके सुलहकी इच्छा नहीं, युद्धहीका निश्चय, अर राजा रतिवर्धन रात्रिकेविषै काशीके वनविषै आया अर एक द्वारपाल तरुण कश्यपपर भेजा सो जाय कश्यपसे राजाके आवनेका वृत्तांत कहता भया सो कश्यप अतिप्रसन्न भया अर कहां महाराज कहां महाराज ऐसे वचन बारम्बार कहता भया तब द्वारपालने कहा, महाराज वनविषै तिष्ठे हैं तब यह धर्मी स्वामीभक्त अतिहर्षित होय परिवार सहित राजापै गया अर उसकी आरती करी अर पांव पडकर जय जयकार करता नगरमें लाया नगर उछाला अर यह ध्वनि नगरविषै विस्तरी कि जो काहूसे न जीता जाय ऐसा रतिवर्धन राजेंद्र जयवन्त होवो। राजा कश्यपने धनीके आवनेका अति उत्सव किया अर सब सेनाके सामन्तानिको कहाय भेजा जो स्वामी तो विद्यामान तिष्ठे है अर तुम स्वामीद्रोहीके साथ होय स्वामीसे लडोगे, कहा यह तुमको उचित है?

तब वह सकल सामंत सर्वगुप्तको छोड स्वामीपै आए अर युद्धविषै सर्वगुप्तको जीवता पकर काकंदी नगरीका राज्य रतिवर्धनके हाथविषै आया राजा जीवता बचा सो बहुरि जन्मोत्सव किया महा

दान किए सामंतोंके सन्मान किए भगवान्की विशेष पूजा करी कश्यपका बहुत सन्मान किया अति बधाया अर घरको विदा किया सो कश्यप काशीकेविषै लोकपालनिकी नाई रमैं अर सर्वगुप्त सर्वलोक- निन्द्य मृतकके तुल्य भया कोई भेंटे नाहीं मुख देखे नाहीं, तब सर्वगुप्तने अपनी स्त्री विजयावतीका दोष सर्वत्र प्रकाशा जो याने राजा बीच अर मोबीच अन्तर डाला यह वृतान्त सुन विजयावती अति द्वेषको प्राप्त भई जो मैं न राजाकी भई न धनीकी भई सो मिथ्या तपकर राक्षसी भई, अर राजा रति- वर्धनने भोगानितैं उदास होय सुभानुस्वामीके निकट मुनिव्रत धरे सो राक्षसीने रतिवर्धन मुनिको अति उपसर्ग किए। मुनि शुद्धोपयोगके प्रसादतैं केवली भए अर प्रियंकर हितंकर दोनों कुमार पहिले याही नगरविषै दामदेव नामा विप्रके श्यामली स्त्रीके सुदेव वसुदेव नामा पुत्र हुते । सो वसुदेवकी स्त्री विश्वा अर सुदेवकी स्त्री प्रियंगु इनका गृहस्थ पद प्रशंसा योग्य हुता इन श्रीतिलक नाम मुनिको आहारदान दिया सो दानके प्रभावकर दोनों भाई स्त्रीसहित उत्तरकुरु भोगभूमिविषै उपजे तीनपल्यका आयु भया, साधुका जो दान सोई भया वृक्ष उसके महाफल भोगभूमिविषै भोग दूजे स्वर्ग देव भए वहां सुख भोग चये सो सम्यग्ज्ञान- रूप लक्ष्मीकर मंडित पाप कर्मके क्षय करणहारे प्रियंकर हितंकर भये, मुनि होय ग्रैवेयक गये तहांसे चयकर लवणांकुश भये महाभव्य तद्भव मोक्षगामी अर राजा रतिवर्धनकी राणी सुदर्शना प्रियंकर हितंकरकी माता पुत्रानिमें जाका अत्यन्त अनुराग था सो भरतार अर पुत्रानिके वियोगसे अत्यन्त आर्तिरूप होय नानायोनिनिमें भ्रमणकर किसी एक जन्मविषै पुण्य उपार्ज यह सिद्धार्थ भया धर्मविषै अनुरागी सर्व विद्याविषै निपुण सो पूर्व भवके स्नेहसे लवअंकुशको पढाए ऐसे निपुण किए जो देवनि कर भी न जीते जांय यह कथा गौतमस्वामीने राजा श्रेणिकसे कही अर आज्ञाकारी हे नृप ! यह संसार असार है अर इस जीवके कौन कौन माता पिता न भए जगत्के सबही संबंध झूठे हैं एक धर्म ही का सम्बन्ध सत्य

है इसलिए विवेकियोंको धर्महीका यत्न करना जिसकर संसारके दुःखोंसे छूटे समस्त कर्म महानिंद्य दुःखकी वृद्धिके कारण तिनको तजकर जैनका भाषा तपकर अनेक सूर्यकी कांतिको जीत साधु शिवपुर कहिये मुक्ति तहां जाय हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लवणांकुशके पूर्वभवका वर्णन करनेवाला एकसौ आठवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०८ ॥

अथानन्तर सीता पति अर पुत्रोंको तजकर कहां कहां तप करती भई सो सुनों—कैसी है सीता ? लोकविषै प्रसिद्ध है यश जिसका । जिससमय सीता भई वह श्रीमुनि सुव्रतनाथजीका समय था । ते वीसवें भगवान् महाशोभायमान भवभ्रमके निवारणहारे जैसा अरहनाथ अर मल्लिनाथका समय तैसा मुनिसुव्रतनाथका समय उसमें श्रीसकलभूषण केवली केवल ज्ञानकर लोकालोकके ज्ञाता बिहार करें हैं अनेक जीव महाव्रती अणुव्रती कीए सकल अयोध्याके लोक जिन धर्मविषै निपुण विधिपूर्वक गृहस्थ का धर्म आराधें सकल प्रजा भगवान् सकलभूषणके वचनविषै श्रद्धावान जैसे चक्रवर्तीकी आज्ञाको पालें तैसे भगवान् धर्मचक्री तिनकी आज्ञा भव्य जीव पालें, रामका राज्य महाधर्मका उद्योतरूप जिस समय घने लोक विवेकी साधुसेवाविषै तत्पर । देखो जो सीता अपनी मनोग्यता कर देवांगनानिकी शोभाको जीतती हुती सो तपकर ऐसी होय गई मानो दग्ध भई माधुरी लता ही है महावैराग्य कर मंडित अशुभ भावकररहित स्त्री पर्यायको अतिनिंदती महातप करती भई धूरकर धूसर होयरहे हैं केश जिसके अर स्नानरहित शरीरके संस्काररहित पसेव कर युक्त गात्र जिसमें रज आय पडे सो शरीर मलिन होय रहा है बेला तेला पक्ष उपवास अनेक उपवास कर तनु क्षीण किया दोष टारि शास्त्रोक्त पारणा करे शील

व्रत गुणनिविषै अनुरागिणी अध्यात्मके विचार कर अत्यन्त शान्त होय गया है चित्त जाका वश किये हैं इंद्रिय जाने औरनितैं न बने ऐसा उग्रतप करती भई मांस अर रुधिर कर वर्जित भया है सर्व अंग जाका प्रकट नजर आवे है अस्थि अर नसा जाल जाके मानों काठकी पुतली ही है सूकी नदी समान भासती भई बैठ गये हैं कपोल जाके जूडा प्रमाण धरती देखती चले महा दयावंती सौम्य है दृष्टि जाकी तपका कारण देह उसके समाधानके अर्थ विधिपूर्वक भिक्षा वृत्ति कर आहार करे। ऐसा तप कीया कि शरीर और ही होय गया अपना पराया कोई न जाने जो यह सीता है इसे ऐसा तप करती देख सकल आर्या इसहीकी कथा करें इसहीकी रीति देख और हू आदरें सबनिविषै मुख्य भई इस भांति बासठ वर्ष महा तप कीये अर तेतीस दिन आयुके बाकी रहे तब अनशन व्रत धार परम आराधना आराध जैसे पुष्पादिक उच्छिष्ट साथरेको तजिए तैसे शरीरको तजकर अच्युतस्वर्गविषै प्रतीन्द्र भई।

गौतम स्वामी कहै हैं, हे श्रेणिक! जिनधर्मका माहात्म्य देखो जो यह प्राणी स्त्री पर्यायविषै उपजी हुती सो तपके प्रभावकर देवोंका प्रभु होय। सीता अच्युत स्वर्गविषै प्रतींद्र भई वहां मणिनिकी कांतिकर उद्योत किया है आकाशविषै जाने ऐसे विमानविषै उपजी विमान मणि कांचनादि महाद्रव्यनिकर मंडित विचित्रता धरे परम अद्भुत सुमेरुके शिखर समान ऊंचा है वहां परम ईश्वरताकर सम्पन्न प्रतेंद्र भया। हजारों देवांगना तिनके नेत्रोंका आश्रय जैसा तारावोंकर मंडित चंद्रमा सोहै तैसा सोहता भया अर भगवानकी पूजा करता भया, मध्यलोकमें आय तीर्थोंकी यात्रा साधुवोंकी सेवा करता भया अर तीर्थंकरोंके समोसरणमें गणधरोंके मुखसे धर्म श्रवण करता भया, यह कथा सुन गौतमस्वामीसे राजा श्रेणिक ने पूछी—हे प्रभो! सीताका जीव सोलवें स्वर्ग प्रतेंद्र भया उस समय वहां इंद्र कौन था? तब गौतमस्वामी ने कही उस समय वहां राजा मधुका जीव इंद्र था। उसके निकट यह प्रतेन्द्र भया सो वह मधुका जीव

नेमिनाथ स्वामीके समय अच्युतेन्द्रपदसे चयकर वासुदेवकी रुक्मणी राणी ताके प्रद्युम्न पुत्र भया अर उसका भाई कैटभ जांबुवतीके शंभु नाम पुत्र भया, तब श्रेणिकने गौतम स्वामीसे विनती करी हे प्रभो! मैं तुम्हारे वचनरूप अमृत पीवता पीवता तृप्त नाहीं जैसे लोभी जीव धनसे तृप्त नाहीं इसलिए मुझे मधुका अर उसके भाई कैटभका चारित्र कहो। तब गणधर कहते भए—एक मगध नामा देश सर्व धान्यकर पूर्ण जहां चारों वर्ण हर्षसे वसैं धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक अनेक पुरुष पाइए अर भगवानके सुंदर चैत्यालय अर अनेक नगर ग्राम तिनकर वह देश शोभित जहां नदियोंके तट गिरियोंके शिखर वनमें ठौर ठौर साधुवोंके संघ विराजे हैं राजा नित्योदित राज्य करै उस देशमें एक शालि नाम ग्राम नगर सारिखा शोभित वहां एक ब्राह्मण सोमदेव उसके स्त्री अग्निला पुत्र अग्निभूत वायुभूत सो वे दोनों भाई लौकिक शास्त्रमें प्रवीण अर पठन पाठन दान प्रतिग्रहमें निपुण अर कुलके तथा विद्याके गर्वकर गर्वित मनविषै ऐसा जानें, हमसे अधिक कोई नहीं जिनधर्मतें परांमुख रोग समान इंद्रीनिके भोग तिनहीको भले जानैं। एक दिन स्वामी नंदीवर्धन अनेक मुनिनिसहित वनविषै आय विराजे, बडे आचार्य अवधिज्ञान कर समस्त मूर्तिक पदार्थनिको जानैं सो मुनिनिका आगमन सुन ग्रामके लोक सब दर्शनको आए हुते अर अग्निभूत वायुभूतने काहूसे पूछी जो यह लोक कहां जाय हैं? तब वाने कही नंदीवर्धन मुनि आए हैं तिनके दर्शनकूं जाय हैं। तब सुनकर दोऊ भाई क्रोधायमान भए जो हम वादकर साधुनिको जीतेंगे तब इनकूं माता पिताने मने किया जो तुम साधुनितैं वाद न करो तथापि इन्होंने न मानी वादको गए तब इनको आचार्यके निकट जाते देख एक सात्विक नामा मुनि अवधिज्ञानी इनको पूछते भए—तुम कहां जावो हो? तब इन्होंने कही तुमविषै श्रेष्ठ तुम्हारा गुरु है, उसको वादकर जीतवे जाय हैं, तब सात्विक मुनिने कही हमसे चर्चा करो। तब यह क्रोधकर मुनिके समीप बैठे अर कही तू कहांते आया

है। तब मुनिने कहा तुम कहांतैं आए ? तब वह क्रोधकर कहते भए यह तैं कहा पूछी ? हम ग्रामतैं आए हैं। कोई शास्त्रकी चर्चा करहु। तब मुनिने कही यह तो हम जाने हैं तुम शालिग्रामसे आए हो अर तिहारे बापका नाम सोमदेव माताका नाम अग्निला अर तिहारे नाम अग्निभूत वायुभूत तुम विप्रकुल हो सो यह तो प्रकट है परन्तु हम तुमसे यह पूछे हैं अनादिकालके भव वनविषै भ्रमण करो हो सो या जन्मविषै कौन जन्मसे आए हो ? तब इनने कही यह जन्मांतरकी वात हमको पूछी सो और कोई जानै है ? तब मुनिने कही हम जाने हैं, तुम सुनो—पूर्वभवविषै तुम दोऊ भाई या ग्रामके वनविषै परस्पर स्नेह के धारक स्याल हुते विरूपमुख अर याही ग्रामविषै एक बहुत दिनका बासी पामर नामा पितहड ब्राह्मण सो वह खेतविषै सूर्य अस्त समय क्षुधाकर पीडित नाडी आदि उपकरण तजकर आया अर अंजनगिरि तुल्य मेघ माला उठी, सात अहो रात्रका झड भया सो पामर तो घरसे आय न सका अर वे दोऊ स्याल अति क्षुधातुर अंधेरी रात्रिविषै आहारको निकसे सो पामरके खेतविषै भीजी नाडी कर्दमकर लिप्त पडी हुती सो उन भक्षण करी उसकर विकराल उदर वेदना उपजी, स्याल मूवे, अकाम निर्जराकर तुम सोमदेवके पुत्र भए अर वह पामर सात दिन पीछे खेतमें आया सो दोऊ स्याल मूए देख अर नाडी कटी देख स्यालनिका चर्म ले भाथडी करी सो अब तक पामरके घरविषै टंगी है अर पामर मरकर पुत्रके घर पुत्र भया सो जातिस्मरण होय मौन पकडा जो मैं कहा कहों, पिता तो मेरा पूर्व भवका पुत्र अर माता पूर्व भवके पुत्रकी बधू तातैं न बोलना ही भला सो यह पामरका जीव मौनी यहां ही बैठा है ऐसा कह मुनि पामरके जीवसूं बोले—अहो तू पुत्रके पुत्र भया सो यह आश्चर्य नहीं, संसारका ऐसा ही चरित्र है जैसे नृत्यके अखाडेमें बहुरूपिया अनेक रूप बनाय नाचै तैसे यह जीव नाना पर्यायरूप भेष धर नाचै है, राजातैं रंक होय रंकसे राजा होय, स्वामीसे सेवक, सेवकसे स्वामी, पितासे पुत्र, पुत्रसे पिता, माता

से भार्या, भार्यासे माता, यह संसार अरहटकी घडी है। ऊपरली नीचे नीचली ऊपर, ऐसा संसारका स्वरूप जान, हे वत्स! अब तू गूंगापना तज, वचनालाप कर। या जन्मका पिता है तासे पिता कह, मातासे माता कह, पूर्व भवका कहा व्यवहार रहा? यह वचन सुन वह विप्र हर्षकर रोमांच होय फूल गए हैं नेत्र जाके मुनिको तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर जैसे वृक्षकी जड उखड जाय अर गिर पडे तैसे पायन पडा अर मुनिको कहता भया—हे प्रभो, तुम सर्वज्ञ हो, सकल लोककी व्यवस्था जानो हो, या भयानक संसार सागरविषै मैं डूबूं था सो तुम दयाकर निकासा, आत्मबोध दिया। मेरे मनकी सब जानी अब मोहि दीक्षा देवहु ऐसा कहकर समस्त कुटुम्बका त्यागकर मुनि भया।

यह पामरका चरित्र सुन अनेक लोक मुनि भए अनेक श्रावक भए अर इन दोनों भाईनिकी पूर्व भवकी खाल लोक ले आए सो इनिने देखी, लोकोंने हास्य करी जो यह मांसके भक्षक स्याल थे सो यह दोऊ भाई द्विज बडे मूर्ख जो मुनिनिसे वाद करने आए। ये महामुनि तपोधन शुद्धभाव सबके गुरु अहिंसा महाव्रतके धारक इन समान और नाहीं यह महामुनि महाव्रतरूप शिक्षाके धारक क्षमारूप यज्ञोपवीत धरें ध्यानरूप अग्निहोत्रके कर्ता महाशांत मुक्तिके साधनविषे तत्पर अर जे सर्व आरम्भविषे प्रवर्तें ब्रह्मचर्यरहित वे मुखसे कहे हैं कि हम द्विज हैं परंतु क्रिया करें नहीं जैसे कोई मनुष्य या लोकमें सिंह कहावे देव कहावे परंतु वह सिंह नाहीं, तैसे यह नाममात्र ब्राह्मण कहावें परंतु इनमें ब्रह्मत्व नाहीं अर मुनिराज धन्य हैं परम संयमी महा क्षमावान् तपस्वी जितेंद्री निश्चय थकी ये ही ब्राह्मण हैं ये साधु महाभद्रपरणामी भगवतके भक्त महा तपस्वी यति धीर वीर मूल गुण उत्तरगुणके पालक इन समान अर कोऊ नाहीं यह अलौकिक गुण लिये हैं। अर इनहीकूं परिव्राजक कहिये काहेतें जो वह संसारकूं तज मुक्तिको प्राप्त होंय ये निर्ग्रंथ अज्ञान तिमिरके हर्ता तपकर कर्मकी निर्जरा करे हैं, क्षीण किये हैं

रागादिक जिहोंने महाक्षमावान पापानिके नाशक तातैं इनको क्षपणक हू कहिये यह संयमी कषायर-हित शरीरतैं निर्मोह दिगम्बर योगीश्वर ध्यानी ज्ञानी पंडित निस्पृह सो ही सदा वंदिवे योग्य हैं ये निर्वाणको साधैं तातैं ये साधु कहिये अर पंच आचारको आप आचरैं औरनिको आचरावें तातैं आचार्य कहिये अर आगार कहिये घर ताके त्यागी तातैं अनगार कहिये शुद्ध भिक्षाके ग्राहक तातैं भिक्षुक कहिये, अति कायक्लेश करैं अशुभकर्मके त्यागी उज्ज्वल क्रियाके कर्ता तप करते खेद न मानैं तातैं श्रमण कहिये आत्मस्वरूपकूं प्रत्यक्ष अनुभवैं तातैं मुनि कहिये रागादिक रोगोंके हरिवेका यत्न करें तातैं यति कहिये या भांति लोकनिने साधुकी स्तुति करी अर इन दोनों भाईनिकी निन्दा करी तब यह मानरहित प्रभारहित विलखे होय घर गये रात्रिकेविषै पापी मुनिके मारिवेको आए अर वे सात्विक मुनि अपरिग्रही संघको तज अकेले मसान भूमिविषै अस्थ्यादिकसे दूर एकांत पवित्र भूमिमें विराजे थे कैसी है वह भूमि जहां रीछ व्याघ्र आदि दुष्ट जीवोंका नाद होय रहा है अर राक्षस भूत पिशाचोंकर भरा है नागोंका निवास है अर अंधकाररूप भयंकर तहां शुद्ध शिला जीव जंतुरहित उसपर कायोत्सर्ग धर खडे थे सो उन पापियोंने देखे दोनों भाई खड्ग काढ क्रोधायमान होय कहते भए जब तो तोहि लोकोंने बचाया अब कौन बचावेगा हम पंडित पृथिवीविषै श्रेष्ठ प्रत्यक्ष देवता तू निर्लज्ज हमको स्याल कहे यह शब्द कह दोनो अत्यंत प्रचंड होठ डसते लाल नेत्र दयारहित मुनिके मारिवेको उद्यमी भए तब वनका रक्षक यक्ष उसने देखे मनविषै चितवता भया—देखो ऐसे निर्दोष साधु ध्यानी कायासे निर्ममत्व तिनके मारिवेको उद्यमी भए तब यक्षने यह दोनों भाई कीले सो हलचल सके नाहीं, दोनो पसवारे खडे प्रभात भया सकल लोक आए देखें तो यह दोनों मुनिके पसवारे कीले खडे हैं अर इनके हाथविषै नांगी तल-वार है तब इनको सब लोक धिक्कार धिक्कार कहते भये यह दुराचारी पापी अन्याई ऐसा कर्म कर-

नेको उद्यमी भए इन समान अर पापी नाही और यह दोनों चित्तविषै चितवते भए जो यह धर्मका प्रभाव हैं हम पापी थे सो बलात्कार कीले स्थावर समकर डारे अब या अवस्थासे जीवते बचें तो श्रावकके व्रत आदरें अर उस ही समय इनके माता पिता आए बारम्बार मुनिको प्रणामकर बिनती करते भए—हे देव ! यह कुपूत पुत्र हैं इन्होंने बहुत बुरी करी आप दयालु हो जीवदान देवो साधु बोले हमारे काहूसे कोप नहीं हमारे सब मित्र बांधव हैं तब यक्ष लाल नेत्रकर अति गुंजारसे बोला अर सबोंके समीप सर्व वृत्तांत कहा कि जो प्राणी साधुवोंकी निन्दा करें सो अनर्थको प्राप्त होवें जैसे निर्मल कांचविषै बांका मुखकर निरखे तो बांका ही दीखै तैसे जो साधुवोंको जैसा भावकर देखे तैसा ही फल पावे जो मुनियों की हास्य करै सो बहुत दिन रुदन करै अर कठोर वचन कहे सो क्लेश भोगवे अर मुनिका बध करै तो अनेक कुमरण पावै द्वेष करै सो पाप उपार्जै भव २ दुख भोगवे अर जैसा करै तैसा फल पावै यक्ष कहे है हे विप्र ! तेरे पुत्रोंके दोषकर मैं कीले हैं विद्याके मानकर गर्वित मायाचारी दुराचारी संयमियोंके घातक हैं ऐसे वचन यक्षने कहे तब सोमदेव विप्र हाथ जोड साधुकी स्तुति करता भया अर रुदन करता भया आपको निंदता छाती कूटता ऊर्ध्व भुजाकर स्त्रीसहित विलाप करता भया तब मुनि परम दयालु यक्षको कहते भए—हे सुन्दर ! हे कमलनेत्र ! यह बालबुद्धि हैं इनका अपराध तुम क्षमाकरो तुम जिनशासनके सेवक हो सदा जिनशासनकी प्रभावना करो हो तातैं मेरे कहेसे इनसे क्षमा करो तब यक्षने कही आप कहा सो ही प्रमाण वे दोनो भाई छोडे तब यह दोनों भाई मुनिको प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर साधुका व्रत धरिवेको असमर्थ तातैं सम्यक् सहित श्रावकके बृत आदरते भए जिनधर्मकी श्रद्धाके धारक भए अर इनके माता पिता बृत ले छोडते भए सो वे तो अबृतके योगसे पाहिले नरक गये अर यह दोनों विप्रपुत्र निसंदेह जिनशासन रूप अमृतका पानकर हिंसाका मार्ग विषवत् तजते भए समाधिमरणकर

पहिले स्वर्ग उत्कृष्ट देव भए वहांसे चयकर अयोध्याविषै समुद्र सेठ उसके धारणी स्त्री उसकी कुक्षिविषै उपजे नेत्रोंको आनन्दकारी एकका नाम पूर्णभद्र दूजेका नाम कांचनभद्र सो श्रावकके व्रत धार पहिले स्वर्ग गए अर ब्राह्मणके भवके इनके माता पिता पापके योगसे नरक गए हुते वे नरकसे निकस चांडाल अर कूकरी भए वे पूर्णभद्र अर कांचनभद्रके उपदेशसे जिनधर्मका आराधन करते भए समाधिमरणकर सोमदेव द्विजका जीव चाण्डालसे नंदीश्वर द्वीपका अधिपति देव भया अर अग्निला ब्राह्मणीका जीव कूकरीसे अयोध्याके राजाकी पुत्री होय उस देवके उपदेशसे विवाहका त्यागकर आर्यिका होय उत्तम गति गई वे दोनों परम्पराय मोक्ष पावेंगे।

अर पूर्णभद्र कांचनभद्रका जीव प्रथम स्वर्गसे चयकर अयोध्याका राजा हेम राणी अमरावती उसके मधु कैटभ नामा पुत्र जगत्प्रसिद्ध भए जिनको कोई जीत न सके महाप्रबल महारूपवान् जिन्होंने यह समस्त पृथिवी बश करी सब राजा तिनके आधीन भए। भीम नाम राजा गढके बलकर इनकी आज्ञा न माने जैसे चमरेंद्र असुर कुमारानिका इंद्र नन्दनवनको पाय प्रफुल्लित होय है, तैसे वह अपने स्थानकके बलसे प्रफुल्लित रहे अर एक वीरसेन नाम राजा बटपुरका धनी मधु कैटभका सेवक उसने मधुकैटभको विनती पत्र लिखा—हे प्रभो! भीमरूप अग्निने मेरा देश रूप बन भस्म किया। तब मधु क्रोधकर बडी सेनासे भीम ऊपर चढा सो मार्गविषै बटपुर जाय डेरा किए बीरसेनने सन्मुख जाय अतिभक्ति कर मिहमानी करी उसके स्त्री चन्द्राभा चन्द्रमा समान है वदन जिसका सो बीरसेन मूर्खने उसके हाथ मधुका आरता कराया अर उसहीके हाथ जिमाया चन्द्राभाने पतिसे धनी ही कही जो अपने घरविषै सुंदर वस्तु होय सो राजाको न दिखाइये पतिने न मानी। राजा मधु चन्द्राभाको देख मोहित भया मनविषै विचारी इस सहित बिन्ध्याचलके बनका बास भला अर या बिना सब भूमिका राज्य भी भला नाहीं सो राजा

अन्याय ऊपर आया तब मंत्रीने समझाया अवार यह बात करोगे तो कार्य सिद्ध न होयगा अर राज्य-
भ्रष्ट होयगा तब राजा मंत्रियोंके कहेसे राजा बीरसेनको लार लेय भीम पर गया उसे युद्धविषै जीत व-
शीभूत किया अर और सब राजा वश किए बहुरि अयोध्या आय चन्द्राभाके लेयवेका उपाय चिन्तया
सर्व राजा बसंतकी क्रीडाके अर्थ स्त्रीसहित बुलाए अर वीरसेनको चन्द्राभा सहित बुलाया, तब हूं चं-
द्राभाने कही कि मुझे मत ले चलो सो न मानी लेही आया, राजाने मास पर्यंत बनविषै क्रीडा करी अर
राजा आए थे तिनको दान सन्मान कर स्त्रियों सहित विदा किए अर बीरसेनको कैयक दिन राखा
अर बीरसेनको भी अति दान सनमान कर विदा किया अर चन्द्राभाके निमित्त कही इनके निमित्त अ-
द्भुत आभूषण बनवाए हैं सो अभी बन नहीं चुके हैं तातैं इनको तिहारे पीछे विदा करेंगे सो वह भोला
कछू समझे नहीं घर गया वाके गए पीछे मधुने चन्द्राभाको महिलविषै बुलाया अभिषेककर पटराणी पद
दिया सब राणियोंके ऊपर करी । भोग कर अंध भया है मन जिसका इसे राख आपको इंद्र समान मा-
नता भया अर वीरसेनने सुनी कि चन्द्राभा मधुने राखी तब पागल होय कैयक दिनविषै मंडव नामा
तापसका शिष्य होय पंचाग्नि तप करता भया अर एक दिन राजा मधु न्यायके आसन बैठा सो एक
परदाराररतका न्याय आया सो राजा न्यायविषै बहुत बेर लग बैठे रहे बहुरि मन्दिरविषै गए तब च-
न्द्राभाने कही महाराज आज घनी बेर क्यों लगी ? हम क्षुधा कर खेदाखिन्न भई आप भोजन करो तो
पीछे भोजन करों, तब राजा मधुने कही आज एक परनारीरतका न्याय आय पडा तातैं देर लगी तब
चन्द्राभाने हंसकर कही जो परस्त्रीरत होय उसकी बहुत मानता करनी तब राजाने क्रोधकर कही तुम यह
क्या कही जे दुष्ट व्यभिचारी हैं तिनका निग्रह करना जे परस्त्रीका स्पर्श करें संभाषण करें वे पापी हैं
सेवन करें तिनकी कहा बात ? जे ऐसे कर्म करें तिनको महादण्ड दे नगरसे काढने जे अन्यायमार्गी हैं वे

महा पापी नरकविषै पडे हैं अर राजावोंके दण्ड योग्य हैं तिनका मान कहा ? तब राणी चन्द्राभा राजा को कहती भई—हे नृप ! यह परदारा सेवन महा दोष है तो तुम आपको दण्ड क्यों न देवो तुमही परदारारत हो तो औरोंको कहा दोष ? जैसा राजा तैसी प्रजा जहां राजा हिंसक होय अर व्यभिचारी होय तहां न्याय कैसा ? तातैं चुप होय रहो जिस जलकर बीज उगे अर जगत् जीवै सो जलही जो जलाय मारे तो और शीतल करणहारा कौन ? ऐसे उलाहनाके वचन चन्द्राभाके सुन राजा कहता भया—हे देवी ! तुम कहो हो सो ही सत्य है बारम्बार इसकी प्रशंसा करी अर कहा मैं पापी लक्ष्मीरूप पाश कर वेढा विषय रूप कीचविषै फंसा अब इस दोषसे कैसे छूटूं राजा ऐसा विचार करै है अर अयोध्याके सहस्रीनामा वनविषै महासंघ सहित सिंहपाद नामा मुनि आए राजा सुनकर रणवाससहित अर लोकों सहित मुनिके दर्शनको गया, विधिपूर्वक तीन प्रदक्षिणा देय प्रणाम कर भूमिविषै बैठा जिनेन्द्रका धर्म श्रवणकर भोगोंसे विरक्त होय मुनि भया अर राणी चन्द्राभा बडे राजाकी बेटी रूपकर अतुल्य सो राज विभूति तज आर्यिका भई दुर्गतिकी वेदनाका है अधिक भय जिसको अर मधुका भाई कैटभ राजको विनाशीक जान महा व्रतधर मुनि भया । दोऊ भाई महा तपस्वी पृथिवीविषै विहार करते भए अर सकल स्वजन परजनके नेत्रनिको आनन्दका कारण मधुका पुत्र कुलवर्धन अयोध्याका राज्य करता भया अर मधु सैकडों बरस व्रत पाल दर्शन ज्ञान चारित्र तप ए ही चार आराधना आराध समाधि मरण कर सोलवां अच्युत नामा स्वर्ग वहां अच्युतेंद्र भया अर कैटभ पंद्रहमा आरण नामा स्वर्ग वहां आरणेन्द्र भया गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! यह जिनशासनका प्रभाव जानों जो ऐसे अनाचारी भी अनाचारका त्यागकर अच्युतेंद्र पद पावैं अथवा इन्द्र पदका कहा आश्चर्य ? जिनधर्मके प्रसादसे मोक्ष पावै मधुका जीव अच्युतेंद्र था उसके समीप सीताका जीव प्रतेंद्र भया अर मधुका जीव स्वर्गसे चयकर श्रीकृष्णकी

रुक्मिणी राणीके प्रद्युम्न नामा पुत्र कामदेव होय मोक्ष लही अर कैटभका जीव कृष्णकी जामवन्ती राणीके शंभुकुमार नामा पुत्र होय परम धामको प्राप्त भया । यह मधुका व्याख्यान तुझे कहा अब हे श्रेणिक बुद्धिवन्तोंके मनको प्रिय ऐसे लक्ष्मणके अष्ट पुत्र महा धीर वीर तिनका चरित्र पापोंका नाश करणहारा चित्त लगाय सुनो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं राजा मधुका वर्णन करनेवाला एकसौ नौवां पर्व पूर्ण भया ॥ १०९ ॥

अथानन्तर कांचनस्थान नामा नगर वहां राजा कांचनरथ उसकी राणी शतहृदा उसके पुत्री दोय अति रूपवन्ती रूपके गर्व कर महा गर्वित तिनके स्वयंबरके अर्थ अनेक राजा भूचर खेचर तिनके पुत्र कन्याके पिताने पत्र लिख दूत भेज शीघ्र बुलाए। सो दूत प्रथम ही अयोध्या पठाया अर पत्रविषै लिखा मेरी पुत्रियोंका स्वयंवर है सो आप कृपाकर कुमारोंको शीघ्र पठावो । तब राम लक्ष्मणने प्रसन्न होय परम ऋद्धियुक्त सर्व सुत पठाए दोनों भाईयोंके सकल कुमार लव अंकुशको अग्रेसर कर परस्पर महा प्रेमके भरे कांचनस्थानपुरको चले सैकडों विमानविषै बैठे अनेक विद्याधर लार, रूपकर लक्ष्मीकर देवनि सारिखे आकाशके मार्ग गमन करते भये सो बडी सेना सहित आकाशसे पृथिवीको देखते जावें कांचनस्थानपुर पहुंचे वहां दोनों श्रेणियोंके विद्याधर राजकुमार आये थे सो यथायोग्य तिष्ठे जैसे इंद्रकी सभाविषै नानाप्रकारके आभूषण पहिरे देव तिष्ठैं अर नन्दनवनविषै देव नानाप्रकारकी चेष्टा करैं तैसे चेष्टा करते थे अर वे दोनों कन्या मन्दाकनी अर चन्द्रवक्रा मंगल स्नानकर सर्व आभूषण पहिरे निज वाससे रथ चढी निकसीं मानों साक्षात् लक्ष्मी अर लज्जा ही हैं महा गुणोंकर पूर्ण तिनके खोजा

लार था सो राजकुमारोंके देश कुल संपत्ति गुण नाम चेष्टा सब कहता भया। अर कही ये आए हैं तिन विषै कई बानरध्वज कई सिंहध्वज कई वृषभध्वज कई गजध्वज इत्यादि अनेक भांतिकी ध्वजाको धरे महा पराक्रमी हैं इनविषै इच्छा होय सो वरो तब वह सबनिको देखती भई अर यह सब राजकुमार उनको देख संदेहकी तुलामें आरूढ भये कि यह रूप गर्वित हैं न जानिये कौनको बरें ऐसी रूपवन्ती हम देखी नहीं मानों ये दोनों समस्त देवियोंका रूप एकत्र कर बनाई हैं यह कामकी पताका लोकोंको उन्मादका कारण इस भांति सब राजकुमार अपने अपने मनमें अभिलाषा रूप भए दोनों उन्मत्तकन्या लव अंकुशको देख कामबाण कर बेधी गई उनमें मन्दाकिनी नामा जो कन्या उसने लवके कंठमें बरमाला डारी, अर दूजी कन्या चंद्रवक्राने अंकुशके कंठमें वरमाला डारी तब समस्त राजकुमारोंके मनरूप पक्षी तनुरूप पींजरसे उडगये अर जे उत्तम जन थे तिन्होंने प्रशंसा करी कि इन दोनों कन्यावोंने रामके दोनों पुत्र बरे सो नीके करी ये कन्या इनही योग्य हैं इस भांति सज्जनोंके मुखसे बाणी निकसी जे भले पुरुष हैं तिनका चित्त योग्य सम्बंधसे आनंदको प्राप्त होय ॥

अथानतर लक्ष्मणकी विशल्यादि आठ पटराणी तिनके पुत्र आठ महा सुंदर उदार चित्त शूरवीर पृथिवीविषै प्रसिद्ध इंद्रसमान सो अपने अढाईसे भाईयों सहित महा प्रीति युक्त तिष्ठते थे जैसे तारावों में ग्रह तिष्ठे सो आठ कुमारानि बिना और सब ही भाई रामके पुत्रानिपर क्रोधित भए। जो हम नारायणके पुत्र कांतिधारी कलाधारी नवयौवन लक्ष्मीवान बलवान् सेनावान् कौन गुणकर हीन जो इन कन्यानिने हमको न बरे अर सीताके पुत्र बरे ऐसा विचाकर कोपित भये तब बडे भाई आठने इनको शांतचित किये जैसे मंत्रकर सर्पको वश करिए तिनके समझावेतैं सब ही भाई लव अंकुशसे शांताचित्त भये अर मनमें विचारते भए जो इन कन्यानिने हमारे बावाके बेटे बडे भाई बरे तब ये हमारे भावज सो माता

स्त्रीनिकी अभिलाषा अविवेकी करैं, स्त्रियें स्वभाव ही तैं कुटिल
समान हैं अर स्त्री पार्याय महा निन्द्य है स्त्रीनिकी अभिलाषा अविवेकी करैं, स्त्रियें स्वभाव ही तैं कुटिल
है इनके अर्थ विवेकी विकारको न भजें, जिनको आत्मकल्याण करना होय सो स्त्रीनितैं अपना मन
फेरें, या भांति विचार सब ही भाई शांतचित्त भए, पहिले सब ही युद्धके उद्यमी भए हुते रणके वादित्र-
निका कोलाहल शंख झंझा भेरी झंझार इत्यादि अनेक जातिके वादित्र बाजने लगे अर जैसे इंद्रकी
विभूति देख छोटे देव अभिलाषी होंय तैसे ये सब स्वयम्बरविषै कन्यानिके अभिलाषी भए हुते सो
बडे भाईनिके उपदेशतैं विवेकी भए, अर उन आठों बडे भाईनिको वैराग्य उपजा सो विचारे हैं यह
स्थावर जंगमरूप जगतके जीव कर्मनिकी विचित्रताके योगकर नाना रूप हैं विनश्वर हैं जैसा जीवनि
के होनहार है तैसा ही होय है जाके जो प्राप्ति होनी है सो अवश्य होय है, और भांति नहीं अर लक्ष्मण
की रूपवती राणीका पुत्र हंसकर कहता भया—भो भ्रातः हो ! स्त्री कहा पदार्थ है ? स्त्रीनितैं प्रेम करना
महामूढता है, विवेकीनिको हांसी आवै है जो यह कामी कहा जान अनुराग करै हैं ? इन दोऊ भाईनिने
ये दोनो राणी पाई तौ कहा बडी वस्तु पाई, जे जिनेश्वरी दीक्षा धरैं वे धन्य हैं केलाके स्तंभ समान
असार काम भोग आत्माके शत्रु तिनके वश होय रति अरति मानना महा मूढता है, विवेकीनिको
शोक हू न करना अर हास्य हू न करना। ये सब ही संसारी जीव कर्मके वश भ्रम जालमें पडे हैं ऐसा
नाहीं करैं हैं जाकर कर्मोंका नाश होय, कोई विवेकी करै सोई सिद्धपदको प्राप्त होय, या गहन संसार
वनविषै ये प्राणी निज पुरका मार्ग भूल रहे हैं ऐसा करहु जाकर भव दुख निवृत्ति होय। हे भाई हो, यह
कर्मभूमि आर्यक्षेत्र मनुष्य देह उत्तम कुल हमने पाया सो एते दिन योंही खोये अब वीतरागका धर्म
आराध मनुष्य देह सफल करो, एक दिनमें बालक अवस्थाविषै पिताकी गोदमें बैठा हुता सो वे पुरुषो-
त्तम समस्त राजानिको उपदेश देते थे वे वस्तुका स्वरूप सुन्दर स्वरसूं कहते भए सो मैं रुचिसों सुन्या।

चारों गतिमें मनुष्यगति दुर्लभ है। जो मनुष्यभव पाय आत्महित न करें हैं सो ठगाए गए जान। दान कर तो मिथ्यादृष्टि भोगभूमि जावें अर सम्यग्दृष्टि दानकर तपकर स्वर्ग जांय, परम्पराय मोक्ष जावें अर शुद्धोपयोग रूप आत्मज्ञान कर यह जीव याही भव मोक्ष पावें अर हिंसादिक पापनिकर दुर्गति लहे जो तप न करें सो भव वनविषै भटकै बारम्बार दुर्गतिके दुख संकट पावै, या भांति विचार वे अष्टकुमार शूरवीर प्रतिबोधको प्राप्त भए संसार सागरके दुखरूप भवानिसे डरे, शीघ्र ही पितापै गए, प्रणाम कर विनयसे खडे रहे अर महा मधुर वचन हाथ जोड कहते भए–हे तात! हमारी विनती सुनो, हम जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार किया चाहें है, तुम आज्ञा देवो। यह संसार विजुरीके चमत्कार समान अस्थिर है, केलाके स्तंभ समान असार है हमको अविनासी पुरके पंथ चलते विघ्न न करो तुम दयालु हो कोई महा भाग्यके उदयतैं हमको जिनमार्गका ज्ञान भया, अब ऐसा करें जाकर भवसागरके पार पहुंचें ए काम भोग आशीविष सर्पके फण समान भयंकर हैं परम दुखके कारण हम दूर हीतैं छोडा चाहें हैं या जीवके कोऊ माता पिता पुत्र बांधव नाहीं, कोऊ याका सहाई नाहीं, यह सदा कर्मके आधीन भव वनमें भ्रमण करे हैं याके कौन २ जीव कौन कौन सम्बन्धी न भए। हे तात! हमसूं तिहारा अत्यन्त वात्सल्य है अर मातावोंका है सो एही बंधन है। हमने तिहारे प्रसादतैं बहुत दिन नाना प्रकार संसारके सुख भोगे निदान एक दिन हमारा तिहारा वियोग होयगा, यामें संदेह नाहीं, या जीवने अनेक भोग किए परन्तु तृप्त न भया। ये भोग रोग समान हैं इनविषै अज्ञानी राचें अर यह देह कुमित्र समान है जैसे कुमित्रको नाना प्रकार कर पोषिये परन्तु वह अपना नाहीं तैसे यह देह अपना नाहीं याके अर्थ आत्माका कार्य न करना यह विवेकिनिका काम नाहीं, यह देह तो हमको तजेगी हम इससे प्रीति क्यों न तजें। ये वचन पुत्रनिके सुन लक्ष्मण परम स्नेह कर विह्वल होय गए इनको उरसे लगाय मस्तक चूंब वा-

म्बार इनकी ओर देखते भए अर गदगद वाणी कर कहते भए हे पुत्र हो ये कैलाशके शिखर समान हेम रत्नके ऊंचे महिल जिनके हजारां कनकके स्तम्भ तिनविषै निवास करो नानाप्रकार रत्नोंसे निरमाए हैं आंगन जिनके महा सुन्दर सर्व उपकरणोंकर मण्डित मलयागिरि चन्दनकी आवे है सुगन्ध जहां उसकर भ्रमर गुंजार करे हैं अर स्नानादिककी विधि जहां ऐसी मंजनशाला अर सब संपत्तिसे भरे निर्मल है भूमि जिनकी इन महिलोंमें देवों समान क्रीडा करो अर तिहारे सुन्दर स्त्री देवांगना समान दिव्यरूपको धरें शरदके पूनोंके चन्द्रमा समान प्रभा जिनकी अनेक गुणनिकर मण्डित वीण वांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्र वजायवेविषै निपुण महा सुकंठ सुन्दर गीत गायवेविषै निपुण नृत्यकी करणहारी जिनेंद्रकी कथाविषै अनुरागिणी महापातिव्रता पवित्र तिन सहित वन उपवन तथा गिरि नादियोंके तट निज भवनके उपवन तहां नाना विधि क्रीडा करते देवोंकी न्याई रमो । हे वत्स हो ! ऐसे मनोहर सुखोंको तज कर जिनदीक्षा धर कैसे विषमवन अर गिरिके शिखर कैसे रहोगे । मैं स्नेहका भरा अर तिहारी माता तिहारे शोक कर तप्तायमान तिनको तजकर जाना तुमको योग्य नाहीं कैयक दिन पृथिवीका राज्य करो तब वे कुमार स्नेहकी वासनासे रहित भया है चित्त जिनका संसारसे भयभीत इंद्रियोंके सुखसे पराङ्मुख महा उदार महा शूरवीर कुमार श्रेष्ठ आत्मतत्त्वविषै लगा है चित्त जिनका क्षण एक विचार कर कहते भए—हे पिता इस संसारविषै हमारे माता पिता अनंत भए यह स्नेहका वंधन नरकका कारण है यह घर रूप पिंजरा पापारंभका अर दुःखका वढावनहारा है उसमें मूर्ख रति माने है ज्ञानी न माने अब कबहूं देह संबधी तथा मन संबंधी दुख हमको न होय निश्चयसे ऐसा ही उपाय करेंगे जो आत्मकल्याण न करे सो आत्मघाती है कदाचित् घर न तजे अर मनविषै ऐसा जाने मैं निर्दोष हूं मुझे पाप नहीं तो वह मलिन है पापी है जैसे सुफेद वस्त्र अंगके संयोगसे मलिन होय तैसे घरके संयोगसे गृहस्थी मलिन होय है, जे

गृहस्थाश्रमविषै निवास करैं हैं तिनके निरन्तर हिंसा आरम्भकर पाप उपजै तातैं सत्पुरुषोंने गृहस्थाश्रम तजे अर तुम हमसों कही कैयक दिन राज्य भोगो सो तुम ज्ञानवान् होयकर हमको अंधकूपविषै डारो हो जैसे तृषाकर आतुर मृग जल पीवै अर उसे पारधी मारै तैसे भोगनिकर अतृप्त जो पुरुष उसे मृत्यु मारे है, जगत्के जीव विषयकी अभिलाषा कर सदा आर्त्तध्यानरूप पराधीन हैं। जे काम सेवे हैं वे अज्ञानी विषहरणहारी जडी बिना आशीविष सर्पसे क्रीडा करे हैं सो कैसे जीवैं ? यह प्राणी मीन समान गृहरूप तालावविषै वसते विषयरूप मांसके अभिलाषी रोगरूप लोहके आंकडेके योगकर कालरूप धीवरके जालविषै पडें हैं भगवान् श्रीतीर्थंकर देव तीन लोकके ईश्वर सुर नर विद्याधरनिकर वंदित यह ही उपदेश देते भए कि यह जगत्के जीव अपने अपने उपार्जे कर्मोंके वश हैं अर या जगत्को तजै सो कर्मोंको हतै तातैं हे तात ! हमारे इष्ट संयोगके लोभकर पूर्णता न होवे यह संयोगसंबंध विजुरीके चमत्कारवत् चंचल है जे विचक्षण जन हैं वे इनसे अनुराग न करें अर निश्चय सेती इस तनुसे अर तनुके सम्बान्धियोंसे वियोग होयगा इनमें कहा प्रीति अर महाक्लेशरूप यह संसार वन उसविषै कहा निवास अर यह मेरा प्यारा ऐसी बुद्धि जीवोंके अज्ञानसे है यह जीव सदा अकेला भवविषै भटके है गतिगतिमें गमन करता महा दुखी है॥

हे पिता ! हम संसार सागरमें झकोला खाते आति खेदखिन्न भए। कैसा है संसार सागर ? मिथ्या शास्त्ररूप है दुखदाई द्वीप जिसमें अर मोहरूप हैं मगर जिसमें अर शोक संतापरूप सिवानकर संयुक्त सो अर दुर्जयरूप नदियोंकर पूरित है अर भ्रमणरूप भंवरके समूहकर भयंकर है अर अनेक आधिव्याधि उपाधिरूप कलोलोंकर युक्त है अर कुभावरूप पाताल कुण्डोंकर अगम है अर क्रोधादिकर भावरूप जलचरोंके समूहसे भरा है अर वृथा बकवादरूप होय है शब्द जहां अर ममत्वरूप पवनकर उठे हैं

विकल्परूपतरंग जहां अर दुर्गतिरूपक्षार जलकर भरा है अर महादुस्सह इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगरूप आताप सोई है बडवानल जहां, ऐसे भवसागरमें हम अनादिकालके खेदाखिन्न पडे हैं नाना योनिविषै भ्रमण करते अतिकष्टसे मनुष्य देह उत्तम कुल पाया है सो अब ऐसा करेंगे बहुरि भवभ्रमण न होय । सो सबसे मोह छुडाय आठों कुमार महाशूरवीर घररूप वन्दीखानेसे निकसे उन महा भाग्योंके ऐसी वैराग्य बुद्धि उपजी जो तीनखंडका ईश्वरपणा जीर्ण तृणवत् तजा ते विवेकी महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषै जायकर महाबल नामा मुनिके निकट दिगम्बर भए सर्व आरम्भरहित अन्तर्बाह्य परिग्रहके त्यागी विधिपूर्वक ईर्य्या समिति पालते विहार करते भए महा क्षमावान् इन्द्रियोंके वश करणहारे विकल्परहित निस्पृही परम योगी महाध्यानी बारह प्रकारके तप कर कर्म्मोंको भस्म कर अध्यात्मयोगसे शुभाशुभ भावोंका निराकरण कर क्षीणकषाय होय केवल ज्ञान लह अनन्त सुख रूप सिद्ध पदको प्राप्त भए जगत्के प्रपंचसे छूटे । गौतम गणधर राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे नृप यह अष्ट कुमारोंका मंगलरूप चरित्र जो बिनयवान भक्तिकर पढै सुने उसके समस्त पाप क्षय जावें जैसे सूर्यकी प्रभाकर तिमिर विलाय जाय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके आठ कुमारोंका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ दशवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११० ॥

अथानन्तर महावीर जिनेन्द्रके प्रथम गणधर मुनियोंमें मुख्य गौतम ऋषि श्रेणिकसे भामण्डलका चरित्र कहते भए हे श्रेणिक विद्याधरनिकी जो ईश्वरता सोई भई कुटिला स्त्री उसका विषय वासनारूप मिथ्या सुख सोई भया पुष्प उसके अनुराग रूप मकरन्दविषै भामण्डलरूप भ्रमर आसक्त होता भया चित्तमें यह चिंतवै जो मैं जिनेन्द्री दीक्षा धरूंगा तो मेरी स्त्रियोंका सौभग्यरूप कमलनिका वन सूक जा-

यगा ये मेरेसे आसक्त चित्त हैं अर इनके विरह कर मेरे प्राणानिका वियोग होयगा मैं यह प्राण सुखसूं पाले हैं इसलिये कैयक दिन राज्यके सुख भोग कल्याणका कारण जो तप सो करूंगा यह काम भोग दुर्निवार हैं अर इनकर पाप उपजेगा सो ध्यानरूप अग्निकर क्षणमात्रमें भस्म करूंगा कोईयक दिन राज्य करूं बडी सेना राख जे मेरे शत्रु हैं तिनको राज्य रहित करूंगा वे खड्गके धारी बडे सामंत मुझ से पराङ्मुख ते भये खड्गी कहिए मैंडा तिनके मानरूप खड्गकूं भंग करूंगा अर दक्षिण श्रेणी उत्तर श्रेणी विषै अपनी आज्ञा मनाऊं अर सुमेरु पर्वत आदि पर्वतोंविषै मरकत माणि आदि नाना जातिके रत्ननिकी निर्मल शिला तिनेंम स्त्रियों सहित क्रीडा करूं इत्यादि मनके मनोरथ करता हुवा भामण्डल सैकडों वर्ष एक मुहूर्तकी न्याईं व्यतीत करता भया यह किया यह करूं यह करूंगा ऐसा चितवन करता आयुका अत न जानता भया एक सतखणे महिलके ऊपर सुंदर सेजपर पौढा था सो विजुरी पडी अर तत्काल कालको प्राप्त भया।

दीर्घसूत्री मनुष्य अनेक विकल्प करें परन्तु आत्माके उद्धारका उपाय न करें तृष्णाकर हता क्षण-मात्रमें भी साता न पावै मृत्यु सिरपर फिरै ताकी सुध नहीं, क्षणभंगुर सुखके निमित्त दुर्बुद्धि आत्महित न करे विषयबासनाकर लुब्ध भया अनेक भांति विकल्प करता रहै सो विकल्प कर्म बंधके कारण हैं धन यौवन जीतव्य सब अस्थिर हैं जो इनको अस्थिर जान सर्व परिग्रहका त्याग करें आत्मकल्याण करें सो भवसागर न डूबें अर विषयाभिलाषी जीव भव भवविषै कष्ट सहें हजारों शास्त्र पढे अर शांतता न उपजी तो क्या अर एक ही पदकर शांतदशा होय तो प्रशंसा योग्य है धर्म करिवेकी इच्छा तो सदा करबो करे अर करे नहीं सो कल्याणको न प्राप्त होय जैसे कटी पक्षका काग उडकर आकाशविषै पहुंचा चाहै पर जाय न सके जो निर्वाणके उद्यमकर रहित है सो निर्वाण न पावे जो निरुद्यमी सिद्धपद

पावै तौ कौन काहेको मुनिव्रत आदरै जो गुरुके उत्तम वचन उरमें धार धर्मको उद्यमी होय सो कभी खेद-खिन्न न होय जो गृहस्थ द्वारे आया साधु उसकी भक्ति न करै आहारादिक न दे सो अविवेकी है अर गुरुके वचन सुन धर्मको न आदरै सो भव भ्रमणसे न छूटे जो घने प्रमादी हैं अर नाना प्रकारके अशुभ उद्यमकर व्याकुल हैं उनकी आयु वृथा जाय है जैसे हथेलीमें आया रत्न जाता रहे ऐसा जान समस्त लौकिक कार्यको निरर्थक मान दुःखरूप इन्द्रियोंके सुख तिनको तजकर परलोक सुधारिवेके अर्थ जिन शासनमें श्रद्धा करो, भामंडल मरकर पात्रदानके प्रभावसे उत्तम भोग भूमिगया ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै भामंडलका मरण वर्णन करनेवाला एकसौ ग्यारवां पर्व पूर्ण भया ॥ १११ ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण परस्पर महास्नेहके भरे प्रजाके पिता समान परम हितकारी तिनका राज्यविषै सुखसे समय व्यातीत होता भया परम ईश्वरतारूप अति सुन्दर राज्य सोई भया कमलोंका वन उसमें क्रीडा करते वे पुरुषोत्तम पृथिवीकों प्रमोद उपजावते भए इनके सुखका वर्णन कहां तक करें ऋतुराज कहिए वसंतऋतु उसमें सुगंध वायु वहै कोयल बोलें भ्रमर गुंजार करें समस्त वनस्पति फूले मदोन्मत्त होय समस्तलोक हर्षके भरे शृंगार क्रीडा करें मुनिराज विषम वनाविषै विराजें आत्मस्वरूपका ध्यान करें उस ऋतुविषै राम लक्ष्मण रणवाससहित अर समस्त लोकों सहित रमणीक वनविषै तथा उप-वनविषै नाना प्रकारके रंग क्रीडा रागक्रीडा जलक्रीडा वनक्रीडा करते भए अर ग्रीष्मऋतुविषै नदी सूकै दावानल समान ज्वाला वरसै महामुनि गिरिके शिखर सूर्यके सन्मुख कायोत्सर्ग धर तिष्ठें उसऋतुविषै राम लक्ष्मण धारामंडप महिलमें अथवा महारमणीक वनविषे जहां अनेक जलयंत्र चन्दन कर्पूर आदि

शीतल सुगंध सामिग्री वहां सुखसे विराजैं हैं चमर ढुरे हैं ताडके बीजना फिरे हैं निर्मल स्फटिककी शिलापर तिष्ठे हैं अगुरु चन्दनकर चर्चे जलकर तर ऐसे कमल दल तथा पुष्पोंके सांथरेपर तिष्ठे मनोहर निर्मल शीतल जल जिसविषै लवंग इलायची कपूर अनेक सुगंध द्रव्य उनकर महासुगंध उसका पान करते लतावोंके मंडपोंविषै विराजते नानाप्रकारकी सुन्दर कथा करते सारंग आदि अनेक राग सुनते सुन्दर स्त्रीनि सहित उष्ण ऋतुको बलात्कार शीतकाल सम करते सुखसे पूर्ण करते भए, अर वर्षाऋतु विषै योगीश्वर तरु तले तिष्ठते महातपकर अशुभ कर्मका क्षयकरैं हैं विजुरी चमकैं हैं मेघकर अंधकार होयरहा है मयूर बोलै हैं ढाहा उपाडती महाशब्द करती नदी बहै हैं उसऋतुविषैं दोनों भाई सुमेरुके शिखर समान ऊंच नाना मणिमई जे महिल तिनविषै महाश्रेष्ठ रंगीले वस्त्र पहिरें केसरके रंगकर लिप्त है अंग जिनका अर कृष्णागरुका धूप खेए रहे हैं महासुन्दर स्त्रियोंके नेत्ररूप भ्रमरोंके कमल सारिखे इन्द्र समान क्रीडा करते सुखसों तिष्ठे अर शरद ऋतुविषै जल निर्मल होय चन्द्रमाकी किरण उज्ज्वल होय कमल फूलें हंस मनोहर शब्द करें मुनिराज वन पर्वत सरोवर नदीके तीरे बैठे चिद्रूपका ध्यानकरें उसऋतुविषै राम लक्ष्मण राजलोकों सहित चांदनीके वस्त्र आभरण पहिरे सरिता सरोवरके तीर नाना विधि क्रीडा करते भए अर शीतऋतुविषै योगीश्वर धर्म ध्यानको ध्यावते रात्रिविषै नदी तालावोंके तट पै जहां अति शीत पडे वर्फ वरसे महाठण्डी पवन बाजे तहां निश्चल तिष्ठे हैं महाप्रचण्ड शीतल पवन कर वृक्ष दाहे मारे हैं अर सूर्यका तेज मन्द होय गया है ऐसी ऋतुविषै राम लक्ष्मण महिलोंके भीतरले चौबारोंविषैं तिष्ठते मनवांछित विलास करते सुन्दर स्त्रीनिके समूह सहित वीण मृदंग वांसुरी आदि अनेक वादित्रोंके शब्द कानोंको अमृत समान श्रवणकर मनको आल्हाद उपजावते दोनों वीर महाधीर देवांसमान अर जिनके स्त्री देवांगना समान वाणिकर जीती है वीणाकी ध्वनि जिन्होंने महापतिव्रता तिन

कर आदरते संते पुण्यके प्रभावसे सुखसे शीतकाल व्यतीत करते भए अद्भुत भोगोंकी सम्पदाकर मंडित वे पुरुषोत्तम प्रजाको आनन्दकारी दोनों भाई सुखसे तिष्ठे हैं ।

अथानंतर गौतमस्वामी कहे है–हे श्रेणिक ! अब तू हनूमानका वृतांत सुन हनूमान पवनका पुत्र कर्णकुण्डल नगरविषै पूर्व पुण्यके प्रभावसे देवानिके से सुख भोगवै जिसकी हजारां विद्याधर सेवा करें अर उत्तम क्रियाका धारक स्त्रियों साहित परिवार साहित अपनी इच्छाकर पृथिवीमें विहार करे श्रेष्ठ विमानविषै आरूढ परम ऋद्धिकर मंडित महा शोभायमान सुंदर वनोंमें देवनि समान क्रीडा करे सो वसंतका समय आया कामी जीवनको उन्मादका कारण अर समस्त वृक्षोंको प्रफुल्लित करणहारा प्रिया अर प्रीतमके प्रेमका वढावनहारा सुगंध चले है पवन जिसमें ऐसे समयमें अंजनीका पुत्र जिनेंद्रकी भक्तिमें आरूढचित्त, अति हर्ष कर पूर्ण हजारां स्त्रीनि साहित सुमेरु पर्वतकी ओर चला हजारां विद्याधर हैं संग जिसके श्रेष्ठ विमानविषै चढे परम ऋद्धिकर संयुक्त मार्गविषै वनविषै क्रीडा करते भए । कैसे हैं वन ? शीतल मंद सुगंध चले हैं पवन जहां नाना प्रकारके पुष्प अर फलों कर शोभित वृक्ष हैं जहां देवांगना रमें हैं अर कुलाचलोंकेविषै सुंदर सरोवरों कर युक्त अनेक मनोहर वन जिनविषै भ्रमर गुंजार करें हैं अर कोयल वोल रही हैं अर नाना प्रकारके पशु पाक्षियोंके युगल विचरें हैं जहां सर्व जातिके पत्र पुष्प फल शोभे हैं अर रत्नानिकी ज्योतिकर उद्योतरूप हैं पर्वत जहां अर नदी निर्मल जलकी भरी सुंदर हैं तट जिनके अर सरोवर अति रमणीक नाना प्रकारके कमलोंके मकरंदकर रंग रूप होय रहा है सुगंध जल जिनका अर वापिका अति मनोहर जिनके रत्नोंके सिवान अर तटोंके निकट वडे वडे वृक्ष हैं अर नदीमें तरंग उठे हैं झागोंके समूह साहित महा शब्द करती वहे हैं जिनमें मगरमच्छ आदि जलचर क्रीडा करें हैं अर दोनों तटविषै लहलहाट करते अनेक वन उपवन महा मनोहर विचित्रगाति लिये शोभे

हैं जिनमें क्रीडा करबेके सुन्दर महिल अर नाना प्रकार रत्नकर निर्मापे जिनेश्वरके मंदिर पापोंके हरणहारे अनेक हैं। पवनपुत्र सुंदर स्त्रियोंकर सेवित परम उदय कर युक्त अनेक गिरियों विषै अकृत्रिम चैत्यालयोंका दर्शन कर विमानविषै चढा स्त्रियोंको पृथिवीकी शोभा दिखावता अति प्रसन्नतासे स्त्रियोंसे कहे है–हे प्रिये! सुमेरुविषैं अति रमणीक जिन मंदिर स्वर्ण रत्नमयी भासे हैं अर इनकी शिखर सूर्यसमान देदीप्यमान महामनोहर भासे हैं अर गिरिकी गुफा तिनके मनोहर द्वार रत्नजडित शोभा नाना रंगकी ज्योति परस्पर मिल रही हैं वहां अराति उपजे ही नाहीं सुमेरुकी भूमितलविषै अतिरमणीक भद्रशालवन है अर सुमेरुकी कटि मेखलाविषै विस्तीर्ण नंदन वन अर सुमेरुके वक्षस्थलविषै सौमनस वन है जहां कल्प वृक्ष कल्पलताओंसे बेढे सोहे हैं अर नानाप्रकार रत्नोंकी शिला शोभित हैं अर सुमेरुके शिखरमें पांडुक बन है जहां जिनेश्वर देवका जन्मोत्सव होय है इन चारों ही बनविषै चार चार चैत्यालय हैं जहां निरंतर देव देवियोंका आगम है यक्ष किन्नर गंधर्वोंके संगीतकर नाद होय रहा है अप्सरा नृत्य करे हैं कल्प वृक्षोंके पुष्प मनोहर हैं नानाप्रकारके मंगल द्रव्यकर पूर्ण यह भगवान्‌के अकृत्रिम चैत्यालय अनादि निधन हैं। हे प्रिये पांडुक वनविषै परम अद्‌भुत जिन मंदिर सोहे हैं जिनके देखे मन हरा जाय, महाप्रज्वलित निर्धूम अग्नि समान संध्याके वादरोंके रंग समान उगते सूर्य समान स्वर्णमई शोभे हैं समस्त उत्तम रत्नकर शोभित सुन्दराकार हजारों मोतियोंकी माला तिनकर मंडित मनोहर हैं। मालावोंके मोती कैसे सोहे हैं मानों जलके बुद्‌बुदाही हैं अर घंटा झांझ मंजीरा मृदंग चमर तिनकर शोभित हैं चौगिरद कोट ऊंचे दरवाजे इत्यादि परम विभूति कर विराजमान हैं नाना रंगकी फरहरती ध्वजा स्वर्णके स्तंभ कर देदीप्यमान इन अकृत्रिम चैत्यालयोंकी शोभा कहां लग कहें जिनका संपूर्ण वर्णन इंद्रादिक देव भी न कर सकें, हे कांते यह पांडुक बनके चैत्यालय मानों सुमेरुका मुकुट ही हैं अतिरमणीक हैं

या भांति महाराणी पटराणियोंसे हनूमान बात करते जिनमंदिरोंकी प्रशंसा करते मंदिरके स-
मीप आए विमानसे उतर महा हर्षित होय प्रदक्षिणा दई वहां श्रीभगवानके अकृत्रिम प्रतिबिंब सर्व अ-
तिशय विराजमान महा ऐश्वर्यकर मंडित महा तेज पुंज देदीप्यमान शरद्के उज्ज्वल वादर तिनमें जैसे
चन्द्रमा सोहे तैसे सर्व लक्षणमंडित, हनूमान हाथ जोड रणवास सहित नमस्कार करता भया। कैसा है
हनूमान ? जैसे ग्रहतारावोंके मध्य चन्द्रमा सोहे तैसा राजा लोकके मध्य सोहे है जिनेंद्रके दर्शनकर उपजा
है अतिहर्ष जिसको सो संपूर्ण स्त्रीजन अति आनन्दको प्राप्त भईं रोमांच होय आए नेत्र प्रफुल्लित भए
विद्याधरी परम भक्तिकर युक्त सर्व उपकरणों सहित परम चेष्टाकी धरणहारी महापवित्र कुलविषै उपजी
देवांगनाओंकी न्याईं अति अनुरागसे देवाधिदेवकी विधिपूर्वक पूजा करती भईं महा पवित्र पद्महद
आदिकका जल अर महा सुगन्ध चन्दन मुक्ताफलानिके अक्षत स्वर्णमई कमल तथा पद्मराग मणिमई
तथा चन्द्रकांति मणिमई तिनकर पूजा करती भईं अर कल्पवृक्षनिके पुष्प अर अमृतरूप नैवेद्य अर
महा ज्योतिरूप रत्नोंके दीप चढाए अर मलयागिरि चन्दन आदि महासुगन्ध जिनकर दशोंदिशा सु-
गंधमई होय रही हैं अर परम उज्ज्वल महा शीतल जल अर अगुरु आदि महापवित्र द्रव्योंकर उपजा
जो धूप सो खेवती भईं अर महा पवित्र अमृत फल चढावती भईं अर रत्नोंके चूर्णकर मण्डला मांडती
भईं महा मनोहर अष्ट द्रव्योंसे पतिसहित पूजा करती भईं। हनूमान राणीनिसहित भगवानकी पूजा क-
रता कैसे सोहे है जैसा सौधर्म इंद्र पूजा करता सोहे। कैसा है हनूमान जनेऊ पहिरे सर्व आभूषण पहिरे
महीन वस्त्र पहिरे महा पवित्र पापरहित बानरके चिन्हका है देदीप्यमान रत्नमई मुकुट जिसके महाप्र-
मोदका भरा फूल रहे हैं नेत्र कमल जिसके सुन्दर है बदन जिसका पूजाकर पापानिके नाश करणहारे
स्तोत्र तिनकर सुर असुरोंके गुरु जिनेश्वर तिनके प्रतिबिंबकी स्तुति करता भया, सो पूजा करता अर

स्तुति करता इंद्रकी अप्सरावोंने देखा सो अति प्रशंसा करती भई अर यह प्रवीण बीण लेयकर जिनें-
द्रचन्द्रके यश गावता भया जे शुद्ध चित्त जिनेन्द्रकी पूजाविषे अनुरागी हैं सब कल्याण तिनके समीप
हैं तिनको कुछ ही दुर्लभ नहीं तिनका दर्शन मंगलरूप है उन जीवोंने अपना जन्म सुफल किया, जि-
न्होंने उत्तम मनुष्य देह पाय श्रावकके व्रत धर जिनवरविषे दृढ भक्ति धारी अपने करविषे कल्याणको
धरा जन्मका फल तिन ही पाया हनूमानने पूजा स्तुति बन्दनाकर बीण बजाय अनेक राग गाय अ-
द्भुत स्तुति करी यद्यपि भगवानके दर्शनसे विछुरनेका नहीं है मन जिसका तथापि चैत्यालयविषे अ-
धिक न रह्या, मत कोई आच्छादन लागे तातैं जिनराजके चरण उरविषे धर मंदिरसे बाहिर निकसा, वि-
मानोंमें चढ हजारों स्त्रियोंकर संयुक्त सुमेरुकी प्रदक्षिणा दी, जैसे सूर्य देय तैसे श्रीशैल कहिए हनूमान
सुन्दर हैं क्रिया जिसकी सो शैलराज कहिए सुमेरु उसकी प्रदक्षिणा देय समस्त चैत्यालयोंविषे दर्शन
कर भरतक्षेत्रकी ओर सन्मुख भया सो मार्गविषें सूर्य अस्त होय गया अर संध्या भी सूर्यके पीछे विलय
गई कृष्णपक्षकी रात्रि सो तारा रूप बंधुवोंकर मंडित चन्द्रमारूप पति बिना न सोहती भई। हनूमानने
तले उतर एक सुरदुन्दुभी नामा पर्वत वहां सेना सहित रात्रि व्यतीत करी, कमल आदि अनेक सुगंध
पुष्पोंसे स्पर्श पवन आई उस कर सेनाके लोक सुखसे रहे जिनेश्वर देवकी कथा करवो किए रात्रिको
आकाशसे देदीप्यमान एक तारा टूटा सो हनूमानने देखकर मनविषे विचारी हाय हाय इस संसार अ-
सार वनविषे देव भी कालवश हैं ऐसा कोई नहीं जो कालसे बचे विजुरीका चमत्कार अर जलकी तरंग
जैसे क्षण भंगुर हैं तैसे शरीर विनश्वर है इस संसारविषे इस जीवने अनंत भवविषे दुख ही भोगे, यह
जीव विषयके सुखको सुख माने है सो सुख नहीं दुःख ही है पराधीन है विषम क्षणभंगुर संसारविषे
दुःख ही है सुख नहीं होय है, मोहका माहात्म्य है जो अनन्त काल जीव दुख भोगता भ्रमण करे है अ-

नन्तावसर्पणी काल भ्रमणकर मनुष्य देह कभी कोई पावे है सो पायकर धर्मके साधन वृथा खोवे है यह विनाशीक सुखविषै आसक्त होय महा संकट पावे है यह जीव रागादिकके वश भया वीतराग भावको नहीं जाने है यह इंद्रिय जैन मार्गके आश्रय विना न जीते जांय यह इंद्री चंचल कुमार्गके विषै लगाय कर जीवोंको इस भव परभवविषै दुःख देह हैं जैसे मृग मीन अर पक्षी लोभके वशसे बाधिकके जालमें पडें हैं तैसे यह कामी क्रोधी लोभी जीव जिनमार्गको पाए विना अज्ञानके वशसे प्रपंचरूप पारधीके बिछाए विषय रूप जालविषै पडें हैं जो जीव आशीविष सर्प समान यह मन इंद्री तिनके विषयोंमें रमें हैं सो मूढ अग्निविषै जरे हैं जैसे कोई एक दिन राज्यकर वर्ष दिन त्रास भोगवे तैसे यह मूढ जीव अल्प-दिन विषयोंके सुख भोग अनन्त काल पर्यंत निगोदके दुख भोगवे हैं जो विषयके सुखका अभिलाषी है सो दुःखोंका अधिकारी है, नरक निगोदके मूल यह विषय तिनकों ज्ञानी न चाहें मोहरूप ठगका ठगा जो आत्मकल्याण न करे सो महा कष्टको पावै जो पूर्व भवविषै धर्म उपार्जे मनुष्य देह पाय धर्मका आदर न करे सो जैसे धन ठगाय कोई दुखी होय तैसे दुखी होय है अर देवोंके भी भोग भोगि यह जीव मरकर देवसे एकेंद्री होय है इस जीवके पाप शत्रु हैं अर कोई शत्रु मित्र नहीं अर यह भोग ही पापके मूल हैं इनसे तृप्ति न होय, यह महा भयंकर हैं अर इनका वियोग निश्चय होयगा यह रहनेके नाहीं जो मैं इस राज्यको अर यह जो प्रियजन हैं तिनको तजकर तप न करूं तो अतृप्त भया सुभूमि चक्रवर्ती की नाईं मरकर दुर्गतिको जाऊंगा अर यह मेरे स्त्री शोभायमान मृगनयनी सर्व मनोरथकी पूर्णहारी पतिव्रता स्त्रियोंके गुणनिकर मंडित नव यौवन हैं सो अबतक मैं अज्ञानसे इनको तज न सका सो मैं अपनी भूलको कहां तक उराहना दूं। देखो! मैं सागर पर्यंत स्वर्गविषै अनेक देवांगना सहित रमा अर देवसे मनुष्य होय इस क्षेत्रविषै भया सुन्दर स्त्रियों सहित रमा परन्तु तृप्त न भया जैसे ईंधनसे अग्नि तृप्त न

होय अर नदियोंसे समुद्र तृप्त न होय तैसे यह प्राणी नानाप्रकारके विषय सुख तिनकर तृप्त न होय मैं नानाप्रकारके जन्म तिनविषै भ्रमणकर खेद खिन्न भया । रे मन अब तू शांतताको प्राप्त होहु कहा व्याकुल होय रहा है क्या तैने भयंकर नरकोंके दुःख न सुने जहां रौद्रध्यान हिंसक जीव जाय हैं जिन नरकोंविषै महा तीव्र वेदना असिपत्र बन वैतरणी नदी संकटरूप है सकल भूमि जहां । रे मन तू नरकसे न डरे है रागद्वेष कर उपजे जे कर्म कलंक तिनको तपकर नाहि खिपावे है तेरे एते दिन योंही वृथा गए विषय सुखरूप कूपविषै पडा अपने आत्माको भव पिंजरसे निकास । पाया है जिनमार्गविषै बुद्धिका प्रकाश तैने तू अनादि कालका संसार भ्रमणसे खेदखिन्न भया अब अनादिके बंधे आत्माको छुडाय । हनूमान ऐसा निश्चयकर संसार शरीर भोगोंसे उदास भया जाना है यथार्थ जिनशासनका रहस्य जिसने जैसे सूर्य मेघरूप पटलसे रहित महा तेजरूप भासे तैसे मोह पटलसे रहित भासता भया जिस मार्ग होय जिनवर सिद्धि पदको सिधारे उस मार्गविषै चालिवेको उद्यमी भया ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनूमानका
वैराग्य चिंतवन वर्णन करनेवाला एकसौ बारहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११२ ॥

अथानन्तर रात्रि व्यतीत भई सोला वानीके स्वर्ण समान सूर्य अपनी दीप्तिकर जगतविषैं उद्योत करता भया जैसे साधु मोक्षमार्गका उद्योत करे नक्षत्रोंके गण अस्त भए अर सूर्यके उदयकर कमल फूले जैसे जिनराजके उद्योतकर भव्य जीवरूप कमल फूले । हनूमान महा वैराग्यका भरा जगतके भोगोंसे विरक्त मंत्रियोंसे कहता भया जैसें भरत चक्रवर्ती पूर्व तपोवनको गए तैसे हम जावेंगे तब मंत्री प्रेमके भरे परम उद्वेगको प्राप्त होय नाथसे विनती करते भए हे देव ! हमको अनाथ न करो प्रसन्न होवो हम

तिहारे भक्त हैं हमारा प्रतिपालन करो तब हनूमानने कही तुम यद्यपि निश्चयकर मेरे आज्ञाकारी हो तथापि अनर्थके कारण हो, हितके कारण नहीं जो संसार समुद्रसे उतरें अर उसे पीछे सागरमें डारें ते हितू कैसे ? निश्चय थकी उनको शत्रु ही कहिए जब या जीवने नरकके निवासविषे महादुःख भोगे तब माता पिता मित्र भाई कोई ही सहाई न भया। यह दुर्लभ मनुष्य देह अर जिनशासनका ज्ञान पाय बुद्धि-वानोंको प्रमाद करना उचित नहीं अर जैसे राज्यके भोगसे मेरे अप्रीति भई तैसे तुमसे भी भई यह कर्म जनित ठाठ सर्व विनाशीक है निसंदेह हमारा तिहारा वियोग होयगा जहां संयोग है तहां वियोग है सुर नर अर इनके अधिपति इन्द्र नरेंद्र यह सब ही अपने अपने कर्मोंके आधीन हैं कालरूप दावानल कर कौन २ भस्म न भए। मैं सागरा पर्यंत अनेक भव देवोंके सुख भोगे परन्तु तृप्त न भया जैसे सूके इन्धनकर अग्नि तृप्त न होय। गति जाति शरीर इनका कारण नाम कर्म है जाकर ये जीव गति गति-विषै भ्रमण करे हैं सो मोहका बल महाबलवान है जाके उदयकर यह शरीर उपजा है सो न रहेगा यह संसार वन महाविषम है जाविषै ये प्राणी मोहको प्राप्त भए भवसंकट भोगे हैं उसे उलंघकर मैं जन्मजरा मृत्यु रहित जो पद तहां गया चाहूं हूं यह बात हनूमान मंत्रियोंसे कही सो रणवासकी स्त्रियोंने सुनी उसकर खेदखिन्न होय महारुदन करती भई। जे समझानेविषैं समर्थ ते उनको शांतचित करी कैसे हैं समझावन हारे नाना प्रकारके वृत्तांतविषै प्रवीण अर हनूमान् निश्चल है चित्त जाका सो अपने वडे पुत्रको राज्य देय अर सबोंको यथा योग्य विभूति देय रत्नोंके समूहकर युक्त देवोंके विमान समान जो अपना मन्दिर उसे तजकर निकसा। स्वर्ण रत्नमई देदीप्यमान जो पालकी तापर चढ चैत्यवान् नामा वन तहां गया सो नगरके लोक हनुमानकी पालिकी देख सजल नेत्र भये पालिकीपर ध्वजा फर हरे हैं चमरोंकर शोभित हैं मोतियोंकी झालरियोंकर मनोहर है हनूमान वनविषै आया। सो वन नानाप्रकार

के वृक्षोंकर मंडित अर जहां सूवा मैना मयूर हंस कोयल भ्रमर सुंदर शब्द करे हैं अर नानाप्रकारके पुष्पोंकर सुगंध है वहां स्वामी धर्मरत्न संयमी धर्मरूप रत्नकी राशि उत्तम योगीश्वर जिनके दर्शनसे पाप विलाय जावें ऐसे सन्त चारण मुनि अनेक चारण मुनियोंकर मंडित तिष्ठते थे। आकाशविषे है गमन जिनका सो दूरसे उनको देख हनूमान पालकीसे उतरा महा भक्तिकरयुक्त नमस्कारकर हाथ जोड कहता भया—हे नाथ ! मैं शरीरादिक परद्रव्योंसे निर्ममत्व भया यह परमेश्वरी दीक्षा आप मुझे कृपाकर देवो। तब मुनि कहते भए—अहो भव्य ! तैंने भली विचारी तू उत्तम जन है जिनदीक्षा लेहु। यह जगत असार है शरीर विनश्वर है शीघ्र आत्मकल्याण करो अविनश्वर पद लेवेकी परमकल्याणकारणी बुद्धि तुम्हारे उपजी है यह बुद्धि विवेकी जीवके ही उपजे है ऐसी मुनिकी आज्ञा पाय मुनिको प्रणामकर पद्मासन धर तिष्ठा मुकट कुण्डल हार आदि सर्व आभूषण डारे अर वस्त्र डारे जगतसे मनका राग निवारा, स्त्रीरूप बंधन तुडाय ममता मोह मिटाय आपको स्नेहरूप पाशसे छुडाय विष समान विषय सुख तजकर वैराग्यरूप दीपककी शिखाकर रागरूप अंधकार निवारकर शरीर अर संसारको असार जान कमलोंको जीतैं ऐसे सुकमार जे कर तिनकर सिरके केश लोंच करता भया समस्त परिग्रहसे रहित होय मोक्षलक्ष्मीको उद्यमी भया महाव्रत धरें असंयम पर हरे हनूमान्की लार साडा सातसौ बडे राजा विद्याधर शुद्ध चित्त विद्युद्गतिको आदि दे हनूमानके परम मित्र अपने पुत्रोंको राज्य देय अठाईसमूल गुण धार योगीन्द्र भए अर हनूमानकी रानी अर इन राजावोंकी राणी प्रथम तो वियोगरूप अग्निकर तप्तायमान् विलाप करती भईं फिर वैराग्यको प्राप्त होय बंधुमति नामा आर्यिकाके समीप जाय महा भक्ति कर संयुक्त नमस्कारकर आर्यिकाके व्रत धारती भईं। वे महाबुद्धिवंती शीलवंती भव भ्रमणके भयसे आभूषण डार एक सुफेद वस्त्र राखती भईं शील ही है आभूषण जिनके तिनको राज्यविभूति जीर्ण

तृण समान भासती भई अर हनूमान महाबुद्धिमान महातपोधन महापुरुष संसारसे अत्यंत विरक्त पंच महाव्रत पंचसमिति तीन गुप्ति धार शैल कहिए पर्वत उससे भी अधिक, श्रीशैल कहिए हनूमान राजा पवनके पुत्र चारित्रविषे अचल होते भए तिनका यश निर्मल इंद्रादिक देव गावें बारम्बार बंदना करें अर बडे २ राजा कीर्ति करें निर्मल है आचरण जिनका, ऐसा सर्वज्ञ वीतराग देवका भाषा निर्मल धर्म आचरया सो भवसागरके पार भया वे हनूमान महामुनि पुरुषोंविषे सूर्य समान तजस्वी जिनेंद्रदेवका धर्म आराध ध्यान अग्निकर अष्ट कर्मकी समस्त प्रकृति ईंधनरूप तिनको भस्मकर तुङ्गिगिरिके शिखरसे सिद्ध भए। केवलज्ञान केवल दर्शन आदि अनन्त गुणमई सदा सिद्ध लोकविषे रहैंगे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं हनूमानका निर्वाण गमन वर्णन करनेवाला एकसौ तेरहवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११३ ॥

अथानन्तर राम सिंहासनपर विराजे थे लक्ष्मणके आठों पुत्रोंका अर हनूमानका मुनि होना मनुष्योंके मुखसे सुनकर हंसे अर कहते भए इन्होंने मनुष्य भवके क्या सुख भोगे। यह छोटी अवस्थामें ऐसे भोग तजकर योग धारण करें है सो बडा आश्चर्य है यह हठरूप ग्राहकर ग्रहे हैं देखो ! ऐसे मनोहर काम भोग तज विरक्त होय बैठे हैं या भांति कही यद्यपि श्रीराम सम्यक्दृष्टि ज्ञानी हैं तथापि चारित्र मोहके बश कइएक दिन लोकोंकी न्याईं जगतविषे रहते भये संसारके अल्पसुख तिनविषे राम लक्ष्मण न्याय सहित राज्य करते भए। एक दिन महाज्योतिका धारक सौधर्म इंद्र परम ऋद्धिकर युक्त महाधीर्य अर गम्भीरताकर मंडित नाना अलंकार धरे सामान्य जातिके देव जे गुरुजन तुल्य अर लोकपाल जातिके देव देशपाल तुल्य अर त्रयस्त्रिंशत् जातिके देव मंत्री समान तिनकर मंडित तथा अन्य सकल

देव सहित इन्द्रासनविषे बैठे कैसे सोहे जैसे सुमेरु पर्वत ... जैसे सुमेरुके ऊपर जिनराज भासैं। चन्द्रमा अर रत्नोंका सिंहासन उसपर सुखसे विराजता ऐसा भासै जैसे सुमेरुके ऊपर जिनराज भासैं। सूर्यकी ज्योतिको जीतें ऐसे रत्नोंके आभूषण पहिरे सुन्दर शरीर मनोहर रूप नेत्रोंको आनन्दकारी जैसी जलकी तरंग निर्मल तैसी प्रभाकर युक्त हार पहिरे ऐसा सोहै मानों शीतोदा नदीके प्रवाहकर युक्त निषधाचल पर्वत ही है मुकट कंठाभरण कुण्डल केयूर आदि उत्तम आभूषण पहिरैं देवोंकर मंडित जैसा नक्षत्रोंकर चन्द्रमा सोहै तैसा सोहै है। अपने मनुष्य लोकविषे चन्द्रमा नक्षत्र ही भासैं तातैं चन्द्रमा नक्षत्रों का दृष्टांत दिया है चन्द्रमा नक्षत्र जोतिषी देव हैं तिनसे स्वर्गवासी देवोंकी आति अधिक ज्योति है अर सब देवोंसे इंद्रकी ही अधिक है अपने तेजकर दशोंदिशाविषे उद्योत करता सिंहासनविषे तिष्ठता जैसा जिनेश्वर भासे तैसा भासे इंद्रके इंद्रासनका अर सभाका जो समस्त मनुष्य जिह्वा कर सैकडों वर्ष लग वर्णन करें तौभी न कर सकें सभाविषे इंद्रके निकट लोकपाल सब देवनिविषे मुख्य हैं सुन्दर हैं चित्त जिनके स्वर्गसे चयकर मनुष्य होय मुक्ति जावें हैं सोलह स्वर्गके बारह इंद्र हैं एकएक इंद्रके चार चार लोकपाल एक भवधारी हैं अर इंद्रनिविषे सौधर्म सनत्कुमार महेंद्र लांतवेंद्र शतारेंद्र आरणेंद्र यह षट् एक भवधारी हैं अर शची इंद्राणी लोकांतिक देव पंचम स्वर्गके तथा सर्वार्थसिद्धिके अहमिंद्र मनुष्य होय मोक्ष जावें हैं सो सौधर्म इंद्र अपनी सभाविषे अपने समस्त देवनिकर युक्त बैठा लोकपालादिक अपने अपने स्थानक बैठे सो इंद्र शास्त्रका व्याख्यान करते भए वहां प्रसंग पाय यह कथन किया अहो देवो! तुम अपने भावरूप पुष्प निरन्तर महा भक्तिकर अर्हंत देवको चढावो अर्हंतदेव जगत्का नाथ है समस्त दोष रूप वनके भस्म करिवेकों दावानल समान है जिसने संसारका कारण मोक्षरूप महा असुर अत्यंत दुर्जय ज्ञान कर मारा, वह असुर जीवोंका बडा बैरी निर्विकल्प सुखका नाशक है अर भगवान् वीतराग

भव्य जीवोंको संसार समुद्रसे तारिवे समर्थ है संसार समुद्र कषायरूप उग्र तरंग कर व्याकुल है काम-रूप ग्राह कर चंचलतारूप, मोहरूप मगर कर मृत्युरूप है ऐसे भवसागरसे भगवान् बिना कोई तारिवे समर्थ नहीं। कैसे हैं भगवान् ? जिनको जन्म कल्याणकविषे इंद्रादिक देव सुमेरुगिरि ऊपर क्षीरसागरके जल कर अभिषेक करावे हैं अर महा भक्ति कर एकाग्रचित्त होय परिवार सहित पूजा करे हैं धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चारों पुरुषार्थ हैं तिन विषे लगा है चित्त जिनका जिनेंद्रदेव पृथिवीरूप स्त्रीको तजकर सिद्ध रूप वनिताको वरते भए। कैसी है पृथिवी रूप स्त्री ? विंध्याचल अर कैलाश हैं कुच जिसके अर स-मुद्रकी तरंग हैं कटिमेखला जिसके ये जीव अनाथ महा मोहरूप अन्धकार कर आच्छादित तिनको वे प्रभु स्वर्ग लोकसे मनुष्य लोकविषैं जन्म धर भवसागरसे पार करते भए अपने अद्भुतानन्तवीर्य कर आठों कर्मरूप बैरी क्षणमात्रविषे खिपाए जैसे सिंह मदोन्मत्त हस्तियोंको नसावै भगवान सर्वज्ञदेवको अनेक नामकर भव्य जीव गावे हैं जिनेंद्र भगवान अर्हंत स्वयंभू शंभू स्वयंप्रभ सुगत शिवस्थान महा-देव कालंजर हिरण्यगर्भ देवाधिदेव ईश्वर महेश्वर ब्रह्मा विष्णु बुद्ध वीतराग विमल विपुल प्रबल धर्म-चक्री प्रभु विभु परमेश्वर परम ज्योति परमात्मा तीर्थंकर कृतकृत्य कृपालु संसारसूदन सुर ज्ञानचक्षु भवांतक इत्यादि अपार नाम योगीश्वर गावें हैं अर इंद्र धरणींद्र चक्रवर्ती भक्तिकर स्तुति करें हैं जो गोप्य हैं अर प्रकट हैं जिनके नाम सकल अर्थ संयुक्त हैं जिसके प्रसाद कर यह जीव कर्मसे छूटकर परम धामको प्राप्त होय है जैसा जीवका स्वभाव है तैसा वहां रहे है जो स्मरण करे उसके पाप विलाय जांय वह भगवान पुराण पुरुषोत्तम परम उत्कृष्ट आनन्दकी उत्पत्तिका कारण महा कल्याणका मूल देवनिके देव उसके तुम भक्त होवो अपना कल्याण चाहो हो तो अपने हृदय कमलविषे जिनराजको पधरावो, यह जीव अनादि निधन है कर्मोंका प्रेरा भव वनविषे भटके है सर्व जन्मविषे मनुष्य भव दुर्लभ है सो म-

नुष्य जन्म पायकर जे भूले हैं तिनको धिकार है चतुर्गति रूप है भ्रमण जिसविषै ऐसा संसाररूप स... उसमें बहुरि कब बोध पावेगे। जे अर्हंतका ध्यान नहीं करे हैं अहो धिक्कार उनको, जे मनुष्य देह पाय कर जिनेंद्रको न जपे हैं जिनेंद्र कर्मरूप वैरीका नाश करणहारा उसे भूल पापी नाना योनिविषै भ्रमण करें हैं कभी मिथ्या तपकर क्षुद्र देव होय हैं बहुरि मरकर स्थावर योनिविषै जाय महा कष्ट भोगे हैं यह जीव कुमार्गके आश्रयकर महा मोहके वश भए इंद्रोंका इंद्र जो जिनेंद्र उसे नहीं ध्यावें हैं देखो मनुष्य होयकर मूर्ख विषयरूप मांसके लोभी मोहिनी कर्मके योगकर अहंकार ममकारको प्राप्त होय हैं जिन दीक्षा नहीं धरें हैं मंद भागियोंके जिन दीक्षा दुर्लभ है कभी कुतपकर मिथ्यादृष्टि स्वर्गसे आन उपजे हैं सो हीन देव होय पश्चात्ताप करे हैं कि हम मध्य लोक रत्नद्वीप विषै मनुष्य भए थे सो अर्हंतका मार्ग न जाना अपना कल्याण न किया मिथ्या तपकर कुदेव भए हाय हाय धिकार उन पापियोंको जो कुशास्त्रकी प्ररूपणाकर मिथ्या उपदेश देय महा मानके भरे जीवोंको कुमार्गविषै डारे हैं मूढोंको जिनधर्म दुर्लभ है तातैं भव भवविषै दुखी होय हैं अर नारकी तिर्यंच तो दुखी ही हैं अर हीन देव भी दुखी ही हैं अर बडी ऋद्धिके धारी देव भी स्वर्गसे चये हैं सो मरणका बडा दुख है अर इष्ट वियोगका बडा दुख है बडे देवोंकी भी यह दशा तो और क्षुद्रोंकी क्या बात जो मनुष्य देहविषै ज्ञान पाय आत्मकल्याण करे हैं सो धन्य हैं। इंद्र या भांति कहकर बहुरि कहता भया ऐसा दिन कब होय जो मेरी स्वर्ग लोकविषै स्थिति पूर्ण होय अर मैं मनुष्य देह पाय विषय रूप बैरियोंको जीत कर्मोंका नाशकर तपके प्रभावसे मुक्ति पाऊं तब एक देव कहता भया यहां स्वर्गविषै तो अपनी यही बुद्धि होय है परन्तु मनुष्य देह पाय भूल जाय हैं जो कदाचित् मेरे कहेकी प्रतीति न करो तो पंचम स्वर्गका ब्रह्मेंद्रनामा इंद्र अब रामचन्द्र भया है सो यहां तो योंही कहते थे अर अब वैराग्यका विचार ही नहीं तब शचीका पति सौधर्म इंद्र क-

हता भया सब बंधनमें स्नेहका बडा बंधन है जो हाथ पग कंठ आदि अंग २ बंधा होय सो तो छूटे परंतु स्नेहरूप बंधन कर बंधा कैसे छूटे स्नेहका बंधा एक अंगुल न जाय सके रामचन्द्रके लक्ष्मणसे अति अनुराग है लक्ष्मणके देखे बिना तृप्ति नाहीं अपने जीवसे भी उसे अधिक जाने है एक निमिष मात्र भी लक्ष्मणको न देखे तो रामका मन विकल होय जाय सो लक्ष्मणको तजकर कैसें वैराग्यको प्राप्त होय कर्मोंकी ऐसी ही चेष्टा है जो बुद्धिमान भी मूर्ख होय जाय है, देखो सुने हैं अपने सर्व भव जिसने ऐसा विवेकी राम भी आत्महित न करे । अहो देव हो ! जीवोंके स्नेहका बडा बंधन है या समान और नाहीं तातैं सुबुद्धियोंको स्नेह तज संसार सागर तरिवेका यत्न करना चाहिए, या भांति इंद्रके मुखका उपदेश तत्वज्ञानरूप अर जिनवरके गुणोंके अनुरागसे अत्यंत पवित्र उसे सुनकर देव चित्तकी विशुद्धताको पाय जन्म जरा मरणके भयसे कंपायमान भए मनुष्य होय मुक्ति पायवेकी अभिलाषा करते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै इन्द्रका देवनिकूं उपदेश वर्णन करनेवाला एकसौ चौदहवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११४ ॥

अथानन्तर इन्द्र सभासे उठे तब सुर कहिए कल्पवासी देव अर असुर कहिए भवनबासी विंतर ज्योतिषी देव इन्द्र नमस्कारकर उत्तम भावधर अपने अपने स्थानक गए, पहिले दूजे स्वर्ग लग भवनवासी विंतर ज्योतिषीदेव कल्पवासी देवोंकर ले गए जाय हैं सो सभामेंके दो स्वर्गवासी देव रत्नचूल अर मृगचूल बलभद्रनारायणके स्नेह परखिवेको उद्यमी भए, मनविषै यह धारणा करी ते दोनों भाई परस्पर प्रेमके भरे कहिए है । देखें उन दोनोंकी प्रीति । रामके लक्ष्मणसे ऐता स्नेह हैं जाके देखे विना न रहै सो रामका मरण सुने लक्ष्मणकी क्या चेष्टा होय ? लक्ष्मण शोककर विह्वल भया क्या चेष्टा करै सो क्षण

एक देखकर आवेंगे शोककर लक्ष्मणका कैसा मुख हो जाय कौनसे कोप करे क्या कहे ऐसी धारणा-कर दोनों दुराचारी देव अयोध्या आए सो रामके महिलविषै विक्रियाकर समस्त अन्तःपुरकी स्त्रीनिका रुदन शब्द कराया अर ऐसी विक्रिया करी द्वारपाल उमराव मंत्री पुरोहित आदि नीचा मुखकर लक्ष-मणपै आए अर रामका मरण कहते भए, कि हे नाथ ! राम परलोक पधारे ऐसे वचन सुनकर लक्ष्मणने मन्दपवनकर चपल जो नील कमल ता समान सुन्दर हैं नेत्र जाके सो हाय यह शब्द हू आधासा कह तत्काल ही प्राण तजे, सिंहासन ऊपर बैठा हुता सो वचनरूप वज्रपातका मारा जीवरहित होय गया आंखकी पलक ज्यों थी त्यों ही रह गई जीव जाता रहा शरीर अचेतन रह गया लक्ष्मणको भ्राता की मिथ्या मृत्युके वचनरूप अग्निकर जरा देख दोनों देव व्याकुल भए लक्ष्मणके जिवायबेको असमर्थ तब विचारी याकी मृत्यु इस ही विधि कही हुती मनविषैं अति पछताए विषाद अर आश्चर्यके भरे अपने स्थानक गए शोकरूप अग्निकर तप्तायमान है चित्त जिनका लक्ष्मणकी वह मनोहर मूर्ति मृतक भई देव देख न सके तहां खडे न रहे निन्द्य है उद्यम जिनका । गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन् ! विना विचारे जे पापी कार्य करें तिनको पश्चात्ताप ही होय । देवता गए अर लक्ष्मणकी स्त्री पतिको अचेतनरूप देख प्रसन्न करनेको उद्यमी भईं कहे हैं—हे नाथ ! किस अविवेकिनी सौभाग्यके गर्व-कर गर्वितने आपका मान न किया सो उचित न करी हे देव ! आप प्रसन्न होवो तिहारी अप्रसन्नता हमको दुखका कारण है ऐसा कहकर वे परम प्रेमकी भरी लक्ष्मणके अंगसे आलिंगनकर पायन पडीं वे राणी चतुराईके वचन कहिवेविषै तत्पर कोई यक तो वीण लेय बजावती भई कोई मृदंग बजावती भई पतिके गुण अत्यन्त मधुर स्वरसे गावती भई पतिके प्रसन्न करिवेविषै उद्यमी है चित्त जिनका कोई एक पतिका मुख देखे हैं अर पतिके वचन सुनिबेकी है अभिलाषा जिनके, कोई एक निर्मल स्नेहकी

धरणहारी पतिके तनुसे लिपटकर कुण्डलकर मंडित महासुन्दर कांतके कपोलोंको स्पर्शती भई अर कोई एक मधुरभाषिणी पतिके चरण कमल अपने सिरपर मेलती भई अर कोई मृगनयनी उन्मादकी भरी विभ्रमकर कटाक्षरूप जे कमल पुष्प तिनका सेहरा रचती भई जम्भाई लेती पतिका बदन निरखती अनेक चेष्टा करती भई ।

या भांति यह उत्तम स्त्री पतिके प्रसन्न करिवेको अनेक यत्नकरे हैं परन्तु उनके यत्न अचेतन शरीर विषै निरर्थक भए वे समस्त राणी लक्ष्मण की स्त्री ऐसे कांपायमान हैं जैसे कमलोंका बन पवन कर कंपायमान होय । नाथकी यह अवस्था होते संते स्त्रियोंका मन अतिव्याकुल भया संशयको प्राप्त भई किक्षणमात्रमें यह क्या भया चितवनमें न आवे अर कथनमें न आवे ऐसा खेदका कारण शोक उसे मनमें धर कर वे मुग्धा मोह की मारी पसर गईं इंद्रकी इंद्राणी समान है चेष्टा जिनकी ऐसी वे राणी ताप कर तप्ता-यमान शूक गईं न जानिए तिनकी सुन्दरता कहां जाती रही । यह वृत्तान्त भीतर के लोकों के मुखसे सुन श्रीरामचन्द्र मंत्रियों कर मंडित महा संभ्रमके भरे भाई पै आए भीतर राजलोकमें गए लक्ष्मणका मुख प्रभातके चन्द्रमा समान मन्दकांति देखा जैसा तत्कालका वृक्ष मूलसे उखड पड़ा होय तैसा भाई-का देखा मनमें चितवते भए यह क्या भया विना कारण भाई आज मोसे रूसा है यह सदा आनन्द रूप आज क्यों विषाद रूप होय रहा है स्नेहके भरे शीघ्र ही भाईके निकट जाय उसको उठाय उरसे लगाय मस्तक चूमते भए । दाहेका मारा जो वृक्ष उस समान हरिको निरख हलधर अंगसे लपट गया यद्यपि जीतव्यता के चिन्हरहित लक्ष्मण को देखा तथापि स्नेहके भरे राम उसे मूवा न जानते भए वक्र होय गई है ग्रीवा जिसकी शीतल होय गया है अंग जिसका जगतकी आगल ऐसी भुजा सो शि-थिल होय गेइ सांसास्वास नहीं नेत्रोंकी पलक लगे न विघटे । लक्ष्मणकी यह अवस्था देख राम खेद-

खिन्न होय कर पसेव से भर गए। यह दीनों के नाथ राम दीन होय गये बारम्बार मूर्छा खाय पडे आसुवों कर भरगए हैं नेत्र जिनके भाई के अंग निरखे इसके एक नख की भी रेखा न आई कि ऐसा यह महाबली कौन कारणकर ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया यह विचार करते संते भया है कंपायमान शरीर जिनका यद्यपि आप सर्व विद्याके निधान तथापि भाईके मोहकर विद्या बिसर गई, मूर्छाका यत्न जानें ऐसे वैद्य बुलाए मन्त्र औषधिविषै प्रवीण कलाके पारगामी ऐसे वैद्य आये सो जीवता होय तो कछु यत्न करें वे माथा धुन नीचे होय रहे तब राम निराश होय मूर्छा खाय पडे जैसे वृक्षकी जड उखड जाय अर वृक्ष गिर पडे तैसे आप पडे। मोतियोंके हार चन्दन कर मिश्रित जल ताडके बीजनावोंकी पवनकर रामको सचेत किया तब महा विह्वल होय बिलाप करते भए शोक अर विषादकर महा पीडित राम आसुवोंके प्रबाह कर अपना मुख आच्छादित करते भये आसुओं कर आच्छादित रामका मुख ऐसा भासै जैसा जल धारा कर आच्छादित चन्द्रमा भासे अत्यन्त विह्वल रामको देख सर्वराजलोकरूप समुद्रसे रुदन रूप ध्वनि प्रकट होती भई दुख रूप सागरविषै मग्न सकल स्त्री जन अत्यर्थपणे रुदन करती भई तिनके शब्द कर दशों दिशा पूर्ण भई कैसे विलाप करें है हाय नाथ पृथ्वीको आनन्दके कारण सर्व सुन्दर हमको बचन रूप दान देवो तुमने विना अर्थ क्यों मौन पकडी हमारा अपराध क्या बिना अपराध हमको क्यों तजो हो तुम तो ऐसे दयाल हो जो अनेक चूक पडे तो क्षमा करो ॥

अथानन्तर इस प्रस्ताव विषै लव अर अंकुश परमाविषादको प्राप्त होय विचारते भए कि धिक्कार इस संसार असारको अर इस शरीर समान और क्षणभंगुर कौन जो एक निमिष मात्रमें मरणको प्राप्त होय। जो वासुदेव विद्याधरोंकर न जीता जाय सो भी कालके जालमें आय पडा इसलिये यह विनश्वर शरीर यह विनश्वर राज्य संपदा उसकर हमारे क्या सिद्धि? यह विचार सीताके पुत्र फिर गर्भमें आयबेका

है भय जिनको, पिताके चरणारविन्दको नमस्कार कर महन्द्रोदय नामा उद्यान विषै जाय अमृतेश्वर मुनिकी शरण लेय दोनों भाई महाभाग्य मुनि भए जब इन दोनो भाइयोंने दीक्षा धरी तब लोक अतिव्याकुल भए कि हमारा रक्षक कौन ? रामको भाई के मरणका बडा दुख सो शोकरूप भंवरमें पडे, जिनको पुत्र निकसनेकी कुछ सुध नहीं रामको राज्यसे पुत्रोंसे प्रियायोंसे अपने प्राणसे लक्ष्मण अतिप्यारा यह कर्मोंकी विचित्रता जिसकर ऐसे जीवोंकी ऐसी अशुभ अवस्था होय ऐसा संसार का चरित्र देख ज्ञानी जीव वैराग्यको प्राप्त होय हैं जे उत्तम जन हैं तिनके कछु इक निमित्त मात्र बाह्य कारण देख अंतरंग के विकारभाव दूर होय ज्ञान रूप सूर्यका उदय होय है पूर्वोपार्जित कर्मोंका क्षयोपशम होय तब वैराग्य उपजे है ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लवणांकुशका
वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ पद्रहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११५ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम ! लक्ष्मणके काल प्राप्त भए समस्त लोक व्याकुल भए अर युगप्रधान जे राम सो अति व्याकुल होय सब बातोंसे रहित भए कछु सुध नहीं लक्ष्मणका शरीर स्वभाव ही कर महासुरूप कोमल सुगन्ध मृतक भया तो जैसेका तैसा सो श्रीराम लक्ष्मणको एक क्षण न तजें कबहूं उरसे लगाय लेंय कभी पपोलें कभी चूंबें कबहूं इसे लेकर आप बैठ जावें कभी लेकर उठ चलें एक क्षण काहूका विश्वास न करें एक क्षण न तजें जैसे बालकके हाथ अमृत आवे अर वह गाढा गाढा गहै तैसे राम महाप्रिय जो लक्ष्मण उसको गाढा २ गहैं । अर दीनोंकी नांई विलाप करें हाय भाई ! यह तोहि कहा योग्य जो मुझे तजकर तैंने अकेले भाजिबेकी बुद्धि करी । मैं तेरा

विरह एक क्षण सहारबे समर्थ नाहीं यह बात तू कहा न जाने है तू तो सब बातोंविषै प्रवीण है अब मोहि दुःखके सागरविषै डारकर ऐसी चेष्टा करै है हाय भ्रात! यह क्या क्रूर उद्यम किया जो मेरे बिना जाने मेरे विना पूछे कूचका नगारा बजाय दिया। हे वत्स! हे बालक! एक बार मुझे वचनरूप अमृत प्याय, तूतो अति विनयवान् हुता विना अपराध मोसे क्यों कोप किया, हे मनोहर! अब तक कभी मोसे ऐसा मान न किया अब कछु और ही होय गया। कह मैं क्या किया, जो तू रूसा, तू सदा ऐसा विनय करता मुझे दूरसे देख उठ खडा होय सन्मुख आवता मोहि सिंहासन ऊपर बैठावता आप भूमिमें बैठता अब कहा दशा भई, मैं अपना सिर तेरे पायनमें दूं तौभी नहीं बोले है तेरे चरण कमल चन्द्र कांति मणिसे अधिक ज्योतिको धरे जे नखोंकर शोभित देव विद्याधर सेवे हैं। हे देव! अब शीघ्र ही उठो मेरे पुत्रवन-को गये सो दूर न गए हैं तिनको हम तुरत ही उलट लावें अर तुम विना यह तिहारी राणी आर्तध्या-नकी भरी कुरचीकी नाई कल कलाट करे हैं तुम्हारे गुणरूप पाशसों बंधी पृथ्वीमें लोटी लोटी फिरे हैं तिनके हार विखर गए हैं अर सीस फूल चूडामणि कटिमेखला कर्णाभरण विखरे फिरे हैं यह महा वि-लापकर रुदन करे हैं अति आकुल हैं इनको रुदनसे क्यों न निवारो अब मैं तुम विना कहा करूं कहां जाऊं? ऐसा स्थानक नाहीं जहां मोहि विश्राम उपजै अर यह तिहारा चक्र तुमसे अनुरक्त इसे तजना तुमको कहा उचित अर तिहारे वियोगमें मोहि अकेला जान यह शोकरूप शत्रु दबावे है अब मैं हीन-पुण्य कहा करूं? मोहि अग्नि ऐसे न दहै अर ऐसा विष कंठको न सोखै जैसा तिहारा विरह सोखे है। अहो लक्ष्मीधर, क्रोध तज घनी बेर भई अर तुम ऐसे धर्मात्मा त्रिकालसामायिकके करणहारे जिनराज की पूजामें निपुण सो सामायिकका समय टल पूजाका समय टला अब मुनिनिके आहार देयवेकी वेला है सो उठो। तुम सदा साधुनिके सेवक ऐसा प्रमाद क्यों करो हो, अब यह सूर्य भी पश्चिम दिशाको आया-

कमल सरोवरमें मुद्रित होय गए तैसे तिहारे दर्शन विना लोकोंके मन मुद्रित होय गये या प्रकार विलाप करते २ दिन व्यतीत भया निशा भई तब राम सुंदर सेज बिछाय भाईको भुजावोंमें लेय सूते, किसी का विश्वास नाहीं रामने सब उद्यम तजे एक लक्ष्मणमें जीव, रात्रिको कानोंविषे कहे हैं—हे देव! अब तो मैं अकेला हूं तिहारे जीवकी वात मोहि कहो तुम कौन कारण ऐसी अवस्थाको प्राप्त भये हो तिहारे वदन चंद्रमातैं अतिमनोहर अब कांतिरहित क्यों भासे है अर तिहारे नेत्र मंद पवनकर चंचल जो नील कमल उस समान अब और रूप क्यों भासे है अहो तुमको कहा चाहिए सो ल्याऊं, हे लक्ष्मण ! ऐसी चेष्टा करनी तुमको सोहै नाहीं, जो मनविषे होय सो मुखकर आज्ञा करो, अथवा सीता तुमको याद आई होय वह पातिव्रता अपने दुखविषैं सहाय थी सो तो अब परलोक गई तुमको खेद करना नाहीं, हे धीर ! विषाद तजो विद्याधर अपने शत्रु हैं सो छिद्र देख आए अब अयोध्या लुटेगी तातैं यत्न करना होय सो करो अर हे मनोहर ! तुम काहूसे क्रोध ही करते तब भी ऐसे अप्रसन्न देखे नहीं अब ऐसे अप्रसन्न क्यों भासो हो । हे वत्स, अब ये चेष्टा तजो प्रसन्न होवो मैं तिहारे पायन परूं हूं नमस्कार करूं हूं तुम तो महा विनयवंत हो सकल पृथ्वीविषै यह वात प्रसिद्ध है कि लक्ष्मण रामका आज्ञाकारी है सदा सन्मुख है, कभी परांगमुख नाहीं, तुम अतुल प्रकाश जगतके दीपक हो, मत कभी ऐसा होय जो कालरूप वायुकर बुझ जावो । हे राजानिके राजन् ! तुमने या लोकको अति आनन्दरूप किया तिहारे राज्यमे अचैन किसीने न पाया । या भरतक्षेत्रके तुम नाथ हो अब लोकको अनाथकर गमन करना उचित नहीं, तुमने चक्रकर शत्रुनिके सकल चक्र जीते अब कालचक्रका पराभव कैसे सहो हो तिहारा यह सुंदर शरीर राज्यलक्ष्मीकर जैसा सोहता था, वैसा ही मूर्छित भया सोहै है । हे राजेन्द्र ! अब रात्रि भी पूर्ण भई सन्ध्या फूली सूर्य उदय होय गया, अब तुम निद्रा तजो, तुम जैसे ज्ञाता श्रीमुनिसुव्रतनाथके भक्त

प्रभातका समय क्यों चूको हो, जो भगवान वीतरागदेव मोहरूप रात्रिको हर लोकालोकका प्रकट करणहारा केवलज्ञानरूप प्रताप प्रकट करते भए, वे त्रैलोक्यके सूर्य भव्यजीवरूप कमलोंको प्रकट करणहारे तिनका शरण क्यों न लेवो अर यद्यपि प्रभात समय भया परंतु मुझे अंधकार ही भासे है क्योंकि मैं तिहारा मुख प्रसन्न नाहीं देखूं, तातें हे विचक्षण ! अब निद्रा तजो, जिनपूजाकर सभाविषै तिष्ठो, सब सामंत तिहारे दर्शनको खडे हैं, बडा आश्चर्य है सरोवरविषै कमल फूले तिहारा वदन कमल मैं फूला नहीं देखूं हूं, ऐसी विपरीत चेष्टा तुमने अब तक कभी भी नहीं करी, उठो राज्यकार्यविषै चित्त लगावो हे भ्रातः ! तिहारी दीर्घ निद्रासे जिनमंदिरोंकी सेवाविषै कमी पडे हैं, संपूर्ण नगरविषै मंगल शब्द मिट गए गीत नृत्यवादित्रादि बंद हो गये हैं औरोंकी कहा वात ? जे महाविरक्त मुनिराज हैं तिनको भी तिहारी यह दशा सुन उद्वेग उपजै है तुम जिनधर्मके धारी हो सब ही साधर्मीक जन तिहारी शुभदशा चाहे हैं वीण बांसुरी मृदंगादिकके शब्दरहित यह नगरी तिहारे वियोगकर व्याकुल भई नहीं सोहै है कोई अगिले भवमें महाअशुभ कर्म उपार्जे तिनके उदयकर तुम सारिखे भाईकी अप्रसन्नतासे महाकष्ट को प्राप्त भया हूं। हे मनुष्योंके सूर्य जैसे युद्धविषै शक्तिके घावकर अचेत होय गए थे अर आनंदसे उठे मेरा दुख दूर किया तैसे ही उठकर मेरा खेद निवारो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामदेवका
विलाप वर्णन करनेवाला एकसौ सोलहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११६ ॥

अथानन्तर यह वृतान्त सुन विभीषण अपने पुत्रनि सहित अर विराधित सकल परिवार सहित अर सुग्रीव आदि विद्याधरनिके अधिपति अपनी स्त्रियों सहित शीघ्र अयोध्यापुरी आए आंसुनिकर

भरे हैं नेत्र जिनके हाथ जोड सीस निवाय रामके समीप आए महा शोकरूप हैं चित्त जिनके अति वि-
षादके भरे रामको प्रणामकर भूमिविषै बैठे, क्षण एक तिष्ठकर मंद २ वाणी कर बिनती करते भए—हे देव !
यद्यपि यह भाईका शोक दुर्निवार है तथापि आप जिनबाणीके ज्ञाता हो सकल संसारका स्वरूप जानो
हो तातैं आप शोक तजिवे योग्य हो, ऐसा कह सबही चुप होय रहे बहुरि विभीषण सब बातविषै महा
विचक्षण सो कहता भया—हे महाराज ! यह अनादि कालकी रीति है कि जो जन्मा सो मूवा, सब संसार
विषै यही रीति है इनहीको नाहीं भई जन्मका साथी मरण है मृत्यु अवश्य है काहूसे न टरी अर न काहूसे
टरे या संसार पिंजरेविषै पडे यह जीवरूप पक्षी सबही दुखी हैं कालके बश हैं मृत्युका उपाय नाहीं अर सबके
उपाय हैं यह देह निसंदेह विनाशीक है तातैं शोक करना वृथा है, जे प्रवीण पुरुष हैं वे आत्मकल्याणका उपाय
करें हैं रुदन किएसे मरा न जीवे अर न वचनालाप करे, तातैं हे नाथ ! शोक न करो यह मनुष्यनिके
शरीर तो स्त्री पुरुषनिके संयोगसे उपजे हैं सो पानीके बुद्बुदावत् विलाय जांय इसका आश्चर्य कहा अ-
हमिंद्र इंद्र लोकपाल आदि देव आयुके क्षय भए स्वर्गसे चय हैं जिनकी सागरोंकी आयु अर किसीके
मारे न मरें वे भी काल पाय मरैं मनुष्यनिकी कहा बात यह तो गर्भके खेदकर पीडित अर रोगनिकर
पूर्ण डाभकी अणीके ऊपर जो ओसकी बूंद आय पडे उस समान पडनेको सन्मुख है महा मलिन हाडों
के पिंजरे ऐसे शरीरके रहिवेकी कहा आशा ? आप यह प्राणी अपने सुजनोंका सोच करे सो आप क्या
अजर अमर हैं आप ही कालकी दाढमें बैठा उसका सोच क्यों न करे ? जो इन हीकी मृत्यु आई होय
अर और अमर हैं तो रुदन करना जब सबकी यही दशा है तो रुदन काहेका, जेते देहधारी हैं तेते सब
कालके आधीन हैं सिद्ध भगवान्‌के देह नाहीं तातैं मरण नाहीं यह देह जिस दिन उपजा उसही दिनसे
काल इसके लयवेके उद्यममें हैं यह सब संसारी जीवोंकी रीति है तातैं संतोष अंगीकार करो इष्टके वि-

योगसे शोक करै सो वृथा है शोक कर मरै तौभी वह वस्तु पीछे न आवै तातैं शोक क्यों करिये देखो काल तो वज्रदण्ड लिए सिर पर खडा है अर संसारी जीव निर्भय भए तिष्ठे हैं जैसे सिंह तो सिर पर खडा है अर हिरण हरा तृण चरे है त्रैलोक्यनाथ परमेष्ठी अर सिद्ध परमेश्वर तिन सिवाय कोई तीन लोकविषै मृत्युसे बचा सुना नाहीं वेही अमर हैं अर सब जन्म मरण करैं हैं यह संसार विंध्याचलके बन समान कालरूप दावानल समान बले है सो तुम क्या न देखो हो ? यह जीव संसार बनमें भ्रमण कर अति कष्टसे मनुष्य देह पावे है सो वृथा खोवै है काम भोगके अभिलाषी होय माते हाथीकी न्याई बंधनविषै पडे हैं नरक निगोदके दुःख भोगवे हैं कभीयक व्यवहार धर्मकर स्वर्गविषै देव भी होय हैं आयुके अंतमें वहांसे पडे हैं जैसे नदीके ढाहेका वृक्ष कभी उखडे ही तैसे चारो गतिके शरीर मृत्युरूप नदीके ढाहेके वृक्ष हैं इनके उखडवेका क्या आश्चर्य है, इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्ती आदि अनन्त नाशको प्राप्त भए जैसे मेघकर दावानल बुझे तैसे शांतिरसरूप मेघकर कालरूप दावानल बुझे और उपाय नाहीं पातालविषै भूतलविषै अर स्वर्गविषै ऐसा कोई स्थानक नहीं जहां कालसे बचे, अर छठे कालके अन्त इस भरत क्षेत्रमें प्रलय होयगी पहाड विलय होय जावेंगे तो मनुष्यकी कहा बात ? जे भगवान तीर्थंकर देव वज्रवृषभ नाराच संहननके धारक जिनके सम चतुरस्र संस्थानक सुर असुर नरोंकर पूज्य जो किसी कर जीते न जांय तिनका भी शरीर अनित्य वेभी देह तज सिद्धलोकविषै निज भावरूप रहैं तो औरोंका देह कैसे नित्य होय ? सुर नर नारक तिर्यंचोंका शरीर केलेके गर्भ समान असार है। जीव तो देहका यत्न करे है। अर काल प्राण हरे है जैसे बिलके भीतरसे गरुड सर्पको लेजाय तैसे यह देहके भीतरसे जीवको काल लेजाय है, यह प्राणी अनेक मूवोंको रोवे है हाय भाई, हाय पुत्र, हाय मित्र, या भांति शोक करे है अर कालरूप सर्प सबोंको निगले है जैसे सर्प मींडकको निगले, यह मूढ बुद्धि झूठे विकल्प करे हैं यह मैं किया यह मैं

करूं हूं यह करूंगा सो ऐसे विकल्प करता कालके मुखविषै जाय है जैसे टूटा जहाज़ समुद्रके तले जाय परलोकको गया जो सज्जन उसके लार कोई जाय सके तो इष्टका वियोग कभी न होय जो शरीरादिक पर वस्तुसे स्नेह करे हैं सो क्लेशरूप अग्निविषै प्रवेश करे हैं। अर इन जीवोंके इस संसारविषै एते स्वजनोंके समूह भए जिनकी संख्या नाहीं जे समुद्रकी रेणुकाके कण तिनसे भी अपार हैं अर निश्चय कर देखिए तो इस जीवके न कोई शत्रु है न कोई मित्र है, शत्रु तो रागादिक हैं, अर मित्र ज्ञानादिक हैं। जिसको अनेक प्रकारकर लडाईये अर निज जानिए सो भी बैरको प्राप्त भया महा रोसकर हणे जिसके स्तनोंका दुग्ध पाया जिसकर शरीर वृद्ध भया ऐसी माताको भी हने हैं धिकार है इस संसारकी चेष्टाको जो पहिले स्वामी था अर बार २ नमस्कार करता सो भी दास होय जाय है तब पायोंकी लातोंसे मारिये है, हे प्रभो ! मोहकी शक्ति देखो इसके वश भया यह जीव आपको नहीं जानें है परको आप माने है, जैसे कोई हाथ कर कारे नागको गहे तैसे कनक कामिनीको गहे है इस लोकाकाशविषै ऐसा तिल मात्र क्षेत्र नाहीं जहां जीवने जन्म मरण न किए अर नरकविषै इसको प्रज्वलित ताम्बा प्याया अर एती वार यह नरकको गया जो उसका प्रज्वलित ताम्रपान जोडिये तो समुद्रके जलसे अधिक होय अर सूकर कूकर गर्दभ होय इस जीवने एता मलका आहार कीया जो अनन्त जन्मका जोडिए तो हजारा विंध्याचलकी राशिसे अधिक होय अर या अज्ञानी जीवने क्रोधके वशसे एते पराए सिर छेदे अर उन्होंने इसके छेदे जो एकत्र करिए तो ज्योतिष चक्रको उलंघ कर यह सिर अधिक होवें जीव नरक प्राप्त भया वहां अधिक दुख पाय निगोद गया वहां अनन्तकाल जन्म मरण किए यह कथा सुनकर कौन मित्रसे मोह माने एक निमिष मात्र विषयका सुख उसके अर्थ कौन अपार दुख सहे, यह जीव मोहरूप पिशाच के वश पडा उन्मत्त भया संसार बनविषै भटके है। हे श्रेणिक ! विभीषण रामसे कहे है हे प्रभो ! यह

लक्षमणका मृतक शरीर तजवे योग्य है। अर शोक करना योग्य नाहीं यह कलेवर उरसे लगाय रहना योग्य नाहीं, या भांति विद्याधरनिका सूर्य जो विभीषण उसने श्रीरामसे विनती करी अर राम महा विवेकी जिनसे और प्रति बुद्ध होय तथापि मोहके योगसे लक्षमणकी मूर्तिको न तजी जैसे विनयवान् गुरु की आज्ञा न तजै ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लक्ष्मणका वियोग रामका विलाप अर विभीषणका संसारस्वरूप वर्णन करनेवाला एकसौ सत्रहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११७ ॥

अथानन्तर सुग्रीवादिक सब राजा श्रीरामचन्द्रसे वीनती करते भए अब वासुदेव की दग्ध क्रिया करो तब श्रीराम को यह वचन अतिअनिष्ट लगा अर क्रोध कर कहते भए तुम अपने माता पिता पुत्र पौत्र सबों की दग्धाक्रिया करो, मेरे भाई की दग्धाक्रिया क्यों होय जो तुम्हारा पापीयोंका मित्र बन्धु कुटुम्ब सो सब नाशको प्राप्त होय मेरा भाइ क्यों मरे उठो उठो लक्षमण इन दुष्टनिके संयोगतें और ठौर चलें जहां इन पापीनिके कटुकबचन न सुनियें ऐसा कह भाईको उरसे लगाय कांधे धर उठचले बिभीषण सुग्रीवादिक अनेक राजा इनकी लार पीछे २ चले आवें राम काहूका विश्वास न करें। भाईको कांधे धरे फिरें जैसे बालकके हाथ विषफल आया अर हितू छुडाया चाहै वह न छोडै तैसे राम लक्षमणके शरीर को न छोडे आंसूनिकरि भीज रहे हैं नेत्र जिनके भाईसे कहते भए हे भ्रात अब उठो बहुत बेर भई ऐसे कहा सोवो हो अब स्नानकी बेला भई स्नानके सिंहासन बिराजो ऐसा कह मृतक शरीरको सिंहासन पर बैठाया अर मोहका भरा राम मणि स्वर्णके कलशोंसे भाईको स्नान करावता भया अर मुकुट आदि सर्व आभूषण पहिराये अर भोजनकी तैयारी कराई सेवकोंको कही नानाप्रकार रत्न स्वर्णके भाजन

में नानाप्रकारका भोजन ल्यावो उसकर भाईका शरीर पुष्ट होय सुन्दर भात दाल फुलका नानाप्रकारके व्यंजन नानाप्रकारके रस शीघ्रही ल्यावो यह आज्ञा पाय सेवक सब सामग्रीकर ल्याये नाथके आज्ञाकारी तब आप रघुनाथ लक्ष्मणके मुखमें ग्रास देय सो न ग्रसै जैसे अभव्य जिनराजका उपदेश न ग्रहै तब आप कहते भए जो तैंने मोसे कोप किया तो आहारसे कहा कोप ? आहार तो करो मोसे मत बोलो जैसे जिनबाणी अमृतरूप है परन्तु दीर्घ संसारीको न रुचै तैसे वह अमृतमई आहार लक्ष्मणके मृतक शरीरको न रुचा फिर रामचन्द्र कहै हैं—हे लक्ष्मीधर यह नानाप्रकारकी दुग्धादि पीवने योग्य वस्तु सो पीवो ऐसा कहकर भाईको दुग्धादि प्याया चाहैं सो कहा पीवै। यह कथा गौतमस्वामी श्रेणिकसे कहे हैं वह विवेकी राम स्नेहकर जैसी जीवतेकी सेवा करिये तैसे मृतक भाईकी करता भया अर नानाप्रकारके मनोहर गीत बीण बांसुरी आदि नानाप्रकारके नाद करता भया सो मृतकको कहा रुचै ? मानों मरा हुवा लक्ष्मण रामका संग न तजता भया। भाईको चन्दनसे चर्चा भुजावोंसे उठाय लेय उरसे लगाय सिर चूम्बे मुख चूम्बे हाथ चूम्बे अर कहे है—हे लक्ष्मण यह क्या भया तू तो ऐसा कभी न सोवता अब तो विशेष सोवने लगा अब निद्रा तजो या भांति स्नेहरूप ग्रहका ग्रहा बलदेव नानाप्रकारकी चेष्टा करै। यह वृत्तांत सब पृथिवीमें प्रकट भया कि लक्ष्मण मूवा लव अंकुश मुनि भये अर राम मोहका मारा मूढ होय रहा है तब बैरी क्षोभ को प्राप्त भये जैसे वर्षा ऋतुका समय पाय मेघ गाजै शंबूकका भाई सुन्दर इसका नन्दन विरोधरूप है चित्त जिसका सो इन्द्रजीतके पुत्र बज्रमाली पै आया अर कही मेरा बाबा अर दादा दोनों लक्ष्मणने मारे सो मेरा रघुवंशिनिसे बैर है अर हमारा पाताल लंकाका राज्य खोस लिया अर विराधितको दिया अर बानरबंशियोंका शिरोमणि सुग्रीव स्वामीद्रोही होय रामसे मिला सो राम समुद्र उलंघ लंका आये राक्षसद्वीप उजाडा रामको सीताका अति दुख सो लंका लेयवेका अभिलाषी भया अर सिंहवाहिनी अर

गरुडवाहिनी दोय महा विद्या राम लक्ष्मणको प्राप्त भई तिनकर इन्द्रजीत कुम्भकर्ण बन्दीमें किये अर लक्ष्मणके चक्र हाथ आया उसकर रावणको हता अब कालचक्र कर लक्ष्मण मूवा सो बानरवंशियों की पक्ष टूटी बानरबंशी लक्ष्मणकी भुजावोंके आश्रयसे उन्मत्त होय रहे थे अब क्या करेंगे वे निरपक्ष भये अर रामको ग्यारह पक्ष होय चुके बारहमां पक्ष लगा है सो गहला होय रहा है भाई के मृतक शरीरको लिये फिरे है ऐसा मोह कौनको होय ? यद्यपि राम समान योधा पृथ्वीमें और नहीं वह हल मूशलका धरणहारा अद्वितीय मल्ल है तथापि भाईके शोकरूप कीचमें फंसा निकसबे समर्थ नहीं सो अब रामसे बैर भाव लेनेका दाव है जिसके भाईने हमारे बंशके बहुत मारे शंबूकके भाईके पुत्रने इंद्रजीतके बेटेको यह कहा सो क्रोधकर प्रज्वलित भया मंत्रियोंको आज्ञा देय रण भेरी दिवाय सेना भेलीकर शंबूकके भाईके पुत्र सहित अयोध्याकी ओर चला सेनारूप समुद्रको लिए प्रथम तो सुग्रीव पर कोप किया कि सुग्रीवको मार अथवा पकड उसका देश खोसलें बहुरि रामसे लडें यह विचार इंद्रजीत के पुत्र बज्रमालीने किया सुन्दरके पुत्र सहित चढा तब ये समाचार सुनकर सर्व विद्याधर जे रामके सेवक थे वे रामचन्द्रके निकट अयोध्यामें आय भेले भए जैसी भीड अयोध्यामें लव अंकुशके आयवेके दिन भई थी तैसी भई । वैरियोंकी सेना अयोध्याके समीप आई सुनकर रामचन्द्र लक्ष्मणको कांधे लिए ही धनुष बाण हाथविषै समारे विद्याधरनिको संग लेय आप बाहिर निकसे उस समय कृतांतवक्रका जीव अर जटायु पक्षीका जीव चौथे स्वर्ग देव भए थे तिनके आसन कम्पायमान भए, कृतांतवक्रका जीव स्वामी अर जटायु पक्षीका जीव सेवक सो कृतांतवक्रका जीव जटायुके जीवसे कहता भया हे मित्र आज तुम क्रोधरूप क्यों भए हो तब वह कहता भया जब मैं गृहपक्षी था तो रामने मुझे प्यारे पुत्रकी न्याई पाला अर जिन धर्मका उपदेश दीया मरण समय नमोकार मंत्र दिया उसकर मैं देव भया अब

वह तो भाईके शोककर तप्तायमान है अर शत्रुकी सेना उसपर आई है तब कृतांतवक्रका जीव जो देव था उसने अवधि जोडकर कही—हे मित्र मेरा वह स्वामी था मैं उसका सेनापति था मुझे बहुत लडाया भ्रात पुत्रोंसे भी अधिक गिना अर मेरे उनके वचन है जब तुमको खेद उपजेगा तब तिहारे पास मैं आऊंगा, सो ऐसा परस्पर कहकर वे दोनों देव चौथे स्वर्गके वासी सुन्दर आभूषण पहिरे मनोहर हैं केश जिनके सो अयोध्याकी ओर आए दोनों विचक्षण परस्पर दोनो बतलाए कृतांतवक्रके जीवने जटायुके जीवसे कहा तुम तो शत्रुओंकी सेनाकी ओर जावो उनकी बुद्धि हरो अर मैं रघुनाथके समीप जाऊं हूं तब जटायुका जीव शत्रुओंकी ओर गया कामदेवका रूपकर उनको मोहित किया अर उनके ऐसी माया दिखाई जो अयोध्याके आगे अर पाछे दुरगम पहाड पडे हैं अर अयोध्या अपार है यह अयोध्या काहूसे जीती न जाय यह कौशलीपुरी सुभटोंकर भरी है कोट आकाश लग रहे हैं अर नगरके बाहिर भीतर देव विद्याधर भरे हैं हमने न जानी जो यह नगरी महा विषम है धरतीविषै देखिए तो आकाशमें देखिए तो देव विद्याधर भर रहे हैं अब कौन प्रकार हमारे प्राण बचें कैसे जीवते घर जावें जहां श्रीराम देव विराजें सो नगरी हमसे कैसे लई जाय, ऐसी विक्रियाशक्ति विद्याधरनिविषै कहां ? हम बिना विचारे ये काम किया जो पटबीजना सूर्यसे बैर विचारै तो क्या कर सकै अब जो भागो तो कौन राह होयकर भागो मार्ग नहीं या भांति परस्पर वार्ता कर कांपने लगे समस्त शत्रुओंकी सेना विह्वल भई तब जटायुके जीवने देव विक्रियाकी क्रीडा कर उनको दक्षिणकी ओर भागनेका मार्ग दिया वे सब प्राणरहित होय कांपते भागे जैसे सिचान आगे परे वे भागें। आगे जायकर इंद्रजीतके पुत्रने विचारी जो हम विभीषणको कहां उत्तर देगें अर लोकोंको क्या मुख दिखावेंगे ऐसा विचार लज्जावान् होय सुन्दरके पुत्र चारों रत्न सहित अर विद्याधरनि सहित इंद्रजीतके पुत्र वज्रमाली रतिवेग नामा मुनिके निकट मुनि भए,

तब यह जटायुका जीव देव उन साधुओंका दर्शन कर अपना सकल वृत्तान्त कह क्षमा कराया अयोध्या आया जहां राम भाईके शोककर बालककीसी चेष्टा कर रहे हैं तिनके संबोधवेके अर्थ वे दोनों देव चेष्टा करते भए, कृतांतवक्रका जीव तो सूके वृक्षको सींचने लगा अर जटायुका जीव मृतक बैल युगल तिन कर हल वाहवेका उद्यमी भया अर शिला ऊपर बीज बोने लगा सो ये भी दृष्टान्त रामके मनमें न आया बहुरि कृतान्तवक्रका जीव रामके आगे जलको घृतके अर्थ विलोवता भया अर जटायुका जीव बालू रेतको घानीमें तेलके निमित्त पेलता भया सो इन दृष्टान्तनिकर रामको प्रतिबोध न भया अर भी अनेक कार्य इसी भांति देवोंने किए तब रामने पूछी तुम बडे मूढ हो, सूका वृक्ष सींचा सो कहा अर मूवे बैलोंसे हल वाहना करो सो कहा अर शिला ऊपर बीज बोवना सो कहा अर जलका विलोवना अर बालूका पेलना इत्यादि कार्य तुम किए सो कौन अर्थ? तब वे दोनों कहते भए तुम भाईके मृतक शरीरको वृथा लिए फिरोहो उसविषै क्या? यह वचन सुनकर लक्ष्मणको गाढा उरसे लगाय पृथिवीका पति जो राम सो क्रोधकर उनसे कहता भया हे कुबुद्धि हो मेरा भाई पुरुषोत्तम उसे अमंगलके शब्द क्यों कहो हो ऐसे शब्द बोलते तुमको दोष उपजेगा या भांति कृतान्तवक्रके जीवके और रामके विवाद होय है उसही समय जटायुका जीव मूवे मनुष्यका कलेवर लेय रामके आगे आया उसे देख राम बोले मरेका कलेवर काहेको कांधे लिए फिरोहो तब उसने कही तुम प्रवीण होय प्राणरहित लक्ष्मणके शरीरको क्यों लिए फिरोहो पराया अणुमात्र भी दोष देखो हो अर अपना मेरु प्रमाण दोष नहीं देखोहो, सारिखेकी सारिखेसे प्रीति होय है सो तुमको मूढ देख हमारे अधिक प्रीति उपजी है हम वृथा कार्यके करणहारे तिनविषै तुम मुख्य हो हम उन्मत्तताकी ध्वजा लिए फिरें हैं, सो तुमको अति उन्मत्त देख तुम्हारे निकट आए हैं ॥

या भांति उन दोनों मित्रोंके वचन सुन राम मोहरहित भया शास्त्रनिके वचन चितार सचेत भए जैसे सूर्य मेघ पटलसे निकस अपनी किरण कर देदीप्यमान भासै तैसे भरतक्षेत्रका पति राम सोई भया भानु सो मोहरूप मेघपटलसे निकस ज्ञानरूप किरणनिकर भासता भया, जैसे शरदऋतुमें कारी घटासे रहित आकाश निर्मल सोहै तैसे रामका मन शोकरूप कर्दमसे रहित निर्मल भासता भया, राम समस्त शास्त्रनिमें प्रवीण अमृत समान जिनवचन चितार खेदरहित भए, धीरताके अवलंबनकर ऐसे सोहैं जैसा भगवान्‌का जन्माभिषेकविषै सुमेरु सोहै जैसे महा दाहेकी शीतल पवनके स्पर्शसे रहित कमलोंका बन सोहै अर फूलै तैसे शोकरूप कलुषतारहित रामका चित्त विकसता भया जैसे कोई रात्रीके अन्धकारमें मार्ग भूल गया था अर सूर्यके उदय भए मार्ग पाय प्रसन्न होय अर महाक्षुधाकर पीडित मन वांछित भोजन खाय अत्यन्त आनन्दको प्राप्त होय अर जैसे कोई समुद्रके तिरिवेका अभिलाषी जहाजको पाय हर्षरूप होय अर बनमें मार्ग भूला नगरका मार्ग पाय खुशी होय अर तृषाकर पीडित महा सरोवरको पाय सुखी होय, रोग कर पीडित रोग हरण औषध को पाय अत्यन्त आनन्दको पावै, अर अपने देश गया चाहे अर साथी देख प्रसन्न होय अर बंदीगृहसे छूटा चाहे अर बेडी कटै जैसे हर्षित होय तैसे रामचन्द्र प्रतिबोधको पाय प्रसन्न भए। प्रफुल्लित भया है हृदय कमल जिनका परम कांतिको धारते आपको संसार अंधकूपसे निकसा मानते भए, मनमें जानी मैं नवा जन्म पाया श्रीराम विचारै हैं अहो डाभकी अणीपर पडी ओसकी बूंद ता समान चंचल मनुष्य का जीतव्य एक क्षणमात्रमें नाशको प्राप्त होय है चतुर्गति संसारमें भ्रमण करते मैंने अत्यन्त कष्टसे मनुष्य शरीरको पाया सो वृथा खोया कौनके भाई कौनके पुत्र कौनका परिवार कौनका धन कौनकी स्त्री? या संसारमें या जीवने अनंत संबंधी पाये एक ज्ञान दुर्लभ है या भांति श्रीराम प्रतिबुद्ध भए तब वे दोनों देव अपनी माया दूरकर

लोकोंको आश्चर्यकी करणहारी स्वर्गकी विभूति प्रकट दिखावते भए शीतल मंद सुगन्ध पवन वाजी अर आकाशमें देवोंके विमान ही विमान होय गए अर देवांगना गावती भई बीण वासुरी मृदंगादि वाजते भए वे दोनों देव रामसे पूछते भए आप इतने दिवस राज्य कीया सो सुख पाया ? तब राम कहते भये, राज्यविषै काहेका सुख ? जहां अनेक व्याधि हैं जो याहि तज मुनि भये वे सुखी अर मैं तुमको पूछूं हूं तुम महा सौम्यवदन कौन हो अर कौन कारण कर मोसूं इतना हित जनाया तब जटायुका जीव कहता भया—हे प्रभो ! मैं वह गृध्र पक्षी हूं आप मुनिनिकूं आहार दिया वहां मैं प्रतिबुद्ध भया अर आप मोहि निकट राखा, पुत्रकी न्याईं पाला अर लक्ष्मण सीता मोसूं अधिक कृपा करते सीता हरी गई ता दिन मैं रावणसे युद्धकर कंठगत प्राण भया, आपने आय मोहि पंचनमोकार मन्त्र दिया सो मैं तुम्हारे प्रसाद कर चौथे स्वर्ग देव भया स्वर्गके सुखकर मोहित भया अबतक आपके निकट न आया अब अवधिज्ञान कर तुमको लक्ष्मणके शोक कर व्याकुल जान तुहारे निकट आया हूं अर कृतांतवक्रके जीवने कही-हे नाथ ! मैं कृतांतवक्र आपका सेनापति हुता आप मोहि भ्रात पुत्रनितैं हू अधिक जाना अर वैराग्य होते मोहि आप आज्ञा करी हुती जो देव होवो तो हमको कबहू चिंता उपजै तब चितारियो सो आपके लक्ष्मणके मरणकी चिंता जान हम तुमपै आये तब राम दोनों देवनिसूं कहते भये तुम मेरे परममित्र हो महा प्रभावके धारक चौथे स्वर्गके महाऋद्धि धारी देव मेरे संबोधिवेको आये तुमको यही योग्य ऐसा कहकर रामने लक्ष्मणके शोकसे रहित होय लक्ष्मणके शरीर को सरयू नदीके ढाहे दग्ध कीया श्रीराम आतमभावके ज्ञाता धर्मकी मर्यादा पालनेके अर्थ शत्रुघ्न भाईको कहते भए हे शत्रुघ्न ! मैं मुनिके व्रतधार सिद्ध पदको प्राप्त हुआ चाहूं हूं तू पृथिवीका राज्य कर तब शत्रुघ्न कहते भये हे देव मैं भोगनिका लोभी नहीं जाके राग होय सो राज्य करै मैं तिहारे संग जिनराजके व्रत धरूंगा अन्य

अभिलाषा नहीं है मनुष्यनिके शत्रु ये काम भोग मित्र बांधव जीतव्य इनसे कौन तृप्त भया कोई ही तृप्त न भया तातें इन सबनिका त्याग ही जीवको कल्याणकारी है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणकी दग्धक्रिया अर मित्रदेवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौ अठारहवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११८ ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्रने शत्रुघ्नके वैराग्यरूप वचन सुन ताहि निश्चयसे राज्यसे पराङ्मुख जान क्षणएक विचार अनंग लवणके पुत्रको राज्य दिया सो पिता तुल्य गुणनिकी खान कुलकी धुराका धरणहारा नमस्कार करे हैं समस्त सामंत जाको, सो राज्यविषै तिष्ठा प्रजाका अति अनुराग है जासे महा प्रतापी पृथिवीविषै आज्ञा प्रवर्तावता भया अर विभीषण लंकाका राज्य अपने पुत्र सुभूषणको देय वैराग्यको उद्यमी भया अर सुग्रीव हू अपना राज्य अंगदको देयकर संसार शरीर भोगसे उदास भया ये सब रामके मित्र रामकी लार भवसागर तरवेको उद्यमी भए राजा दशरथका पुत्र राम भरतचक्रवर्तीकी न्याईं राज्यका भार तजता भया। कैसा है राम ? विषसहित अन्नसमान जाने हैं विषय सुख जाने अर कुलटा स्त्रीसमान जानी है समस्त विभूति जाने एक कल्याणका कारण मुनिनिके सेववे योग्य सुर असुरोंकर पूज्य श्री मुनिसुव्रतनाथका भाषा मार्ग ताहि उरविषै धारता भया जन्ममरणके भयसे कम्पायमान भया है हृदय जाका ढीले किये हैं कर्मबंध जाने धोय डाले हैं रागादिक कलंक जाने महावैराग्यरूप है चित्त जाका क्लेशभावसे निवृत्त जैसा मेघपटलसे रहित भानु भासै तैसा भासता भया मुनिव्रतधारिवेका है अभिप्राय जाके ता समय अरहदास सेठ आया तब ताहि श्रीराम चतुर्विध संघकी कुशल पूछते भए तब वह कहता भया हे देव ! तिहारे कष्टकर मुनिनिका हू मन अनिष्ट संयोगको प्राप्त भया ये

बात करे है अर खबर आई है कि मुनिसुव्रतनाथके वंशमें उपजे चार ऋद्धिके धारक स्वामी सुव्रत महा व्रतके धारक कामक्रोधके नाशक आए हैं। यह वार्ता सुनकर महाआनन्दके भरे राम रोमांच होय गया है शरीर जिनका फूल गए हैं नेत्र कमल जिनके अनेक भूचर खेचर नृपनिसहित जैसे प्रथम बलभद्र विजय स्वर्णकुम्भ स्वामीके समीप जाय मुनि भये हुते तैसे मुनि होनेको सुव्रतमुनिके निकट गये ते महा श्रेष्ठ गुणोंके धारक हजारां मुनि माने हैं आज्ञा जिनकी तिनपै जाय प्रदक्षिणा देय हाथ जोड सिर निवाय नमस्कार किया साक्षात् मुक्तिके कारण महा मुनि तिनका दर्शनकर अमृतके सागरविषै मग्न भए परम श्रद्धाकर मुनिराजतैं रामचन्द्रने जिनचन्द्रकी दीक्षा धारबेकी विनती करी—हे योगीश्वरनिके इन्द्र! मैं भव प्रपंचसे विरक्त भया तिहारा शरण ग्रहा चाहूं हूं तिहारे प्रसादसे योगीश्वरनिके मार्गविषै विहार करूं या भांति रामने प्रार्थना करी। कैसे हैं राम? धोये हैं समस्त रागद्वेषादिक कलंक जिन्होंने तब मुनींद्र कहते भए—हे नरेंद्र! तुम या बातके योग्य ही हो, यह संसार कहा पदार्थ है यह तज कर तुम जिनधर्मरूप समुद्रका अवगाह करो, यह मार्ग अनादिसिद्ध बाधारहित अविनाशी सुखका देनहारा तुमसे बुद्धिमान ही आदरें। ऐसा मुनिने कहा तब राम संसारसे विरक्त महा प्रवीण जैसे सूर्य सुमेरुकी प्रदक्षिणा करै तैसे मुनींद्रकी प्रदक्षिणा करते भए। उपजा है महाज्ञान जिनको वैराग्यरूप वस्त्र पहिरे बांधी है कर्मोंके नाशको कमर जिन्होंने आशारूप पाश तोड स्नेहका पींजरा दग्धकर स्त्रीरूप बंधनसे छूट-मोहका मान मार हार कुंडल मुकट केयूर कटिमेखलादि सर्व आभूषण डार तत्काल वस्त्र तजे, परम तत्त्वविषै लगा है मन जिनका वस्त्राभरण यूं तजे ज्यों शरीर तजिए महासुकुमार अपने कर तिनकर केश लोंच किए पद्मासन धर विराजे शीलके मन्दिर अष्टम बलभद्र समस्त परिग्रहको तजकर ऐसे सोहते भए जैसा राहुसे रहित सूर्य सोहै पंच महाव्रत आदरे पंच समिति अंगीकारकर तीन गुप्तिरूप गढविषै

विराजे मनोदण्ड वचनदण्ड कायदण्डके दूर करणहारे षट कायके मित्र, सप्त भयरहित आठ कर्मोंके रिपु नवधा ब्रह्मचर्यके धारक, दश लक्षण धर्म धारक श्रीवत्स लक्षणकर शोभित है उरस्थल जिनका गुणभूषण सकलदूषणरहित तत्त्वज्ञानविषै दृढ रामचन्द्र महामुनि भए देवनिने पंचाश्चर्य किए सुन्दर दुन्दभी बाजे अर दोनों देव कृतांतवक्रका जीव एक जटायुका जीव तिहोंने परम उत्साह किए जब जीव पृथिवीका प्रति राम पृथिवीको तज निकसा तव भूमिगोचरी विद्याधर सब ही राजा आश्चर्यको प्राप्त भये अर विचारते भए जो ऐसी विभूति ऐसे रत्न यह प्रताप तजकर रामदेव मुनि भए तो और हमारे कहा परिग्रह ? जाके लोभतैं घरमें तिष्ठें वृत विना हम एते दिन योंही खोये ऐसा विचारकर अनेक राजा गृह बन्धनसे निकसे अर रागमई पाशी काट द्वेषरूप वैरीको विनास सर्व परिग्रहका त्यागकर भाई शत्रुघ्न मुनि भये अर विभीषण सुग्रीव नील नल चन्द्रनख विराधित इत्यादि अनेक राजा मुनि भए विद्याधर सर्व विद्याका त्यागकर ब्रह्मविद्याको प्राप्त भए कैयकोंको चारणऋद्धि उपजी या भांति रामके वैराग्यभए सोलह हजार कछु अधिक महीपति मुनि भये। अर सत्ताईस हजार राणी श्रीमती आर्यिकाके समीप आर्यिका भई ॥

अथानन्तर श्रीराम गुरुकी आज्ञा लेय एकविहारी भए तजे हैं समस्त विकल्प जिन्होंने गिरिनिकी गुफा अर गिरिनिके शिखर अर विषम वन जिनविषै दुष्ट जीव विचरें वहां श्रीराम जिनकल्पी होय ध्यान धरते भए अवधिज्ञान उपजा जाकर परमाणुपर्यन्त देखते भए अर जगतके मूर्तिक पदार्थ सकल भासे लक्ष्मणके अनेक भव जाने, मोहका संबंध नाहीं, तातैं मन ममत्वको न प्राप्त होता भया। अब रामकी आयुका व्याख्यान सुनो कौमार काल वर्ष सौ १०० मंडलीक पद वर्ष तीन सौ ३०० दिग्विजय वर्ष चालीस ४० अर ग्यारह हजार पांचसै साठ वर्ष ११५६० तीन खण्डका राज्य वहुरि मुनि भए।

लक्ष्मणका मरण याही भांति था देवनिका दोष नाहीं अर भाईके मरणके निमित्ततैं रामके वैराग्यका उदय था अवधिज्ञानके प्रतापकर रामने अपने अनेक भव जाने, महा धीर्यको धरैं व्रत शीलके पहाड, शुक्ल लेश्या कर युक्त महा गंभीर गुणानिके सागर समाधान चित्त मोक्ष लक्ष्मीविषै तत्पर शुद्धोपयोगके मार्गविषै प्रवरते। सो गौतमस्वामी राजा श्रेणिक आदि सकल श्रोताओंसे कहे हैं जैसे रामचन्द्र जिनेंद्र के मार्गविषै प्रवर्त्ते तैसे तुमहू प्रवरतो, अपनी शक्ति प्रमाण महा भक्ति कर जिनशासनविषै तत्पर होवो जिन नामके अक्षर महारत्नोंको पाय कर हो प्राणी हो खोटा आचरण तजो, दुराचार महा दुखका दाता है खोटे ग्रंथनिकर मोहित है आत्मा जिनका अर पाखण्ड क्रियाकर मलिन है चित्त जिनका वे कल्याणके मार्गको तज जन्मके आंधेकी न्याई खोटे पंथमें प्रवरते हैं, कैयक मूर्ख साधुका धर्म नाहीं जाने हैं, अर नानाप्रकारके उपकरण साधुके बतावे हैं अर निर्दोष जान ग्रहे हैं वे वाचाल हैं जे कुलिंग कहिये खोटे भेष मूढनिने आचरें हैं वे वृथा हैं तिनसे मोक्ष नाहीं जैसे कोई मूर्ख मृतकके भारको वहै है सो वृथा खेद करैं हैं, जिनके परिग्रह नहीं अर काहूसे याचना नहीं, वे ऋषि हैं वेई निर्ग्रंथ उत्तम गुणानिकर मंडित पंडितों कर सेयवे योग्य हैं यह महाबली बलदेवके वैराग्यका वर्णन सुन संसारसे विरक्त होवो जाकर भवतापरूप सूर्यका आताप न पावो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं श्रीरामका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ उन्नीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११९ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम ! श्रीरामचन्द्रके अनेक गुण धरणींद्र हू अनेक जीभ कर गायवे समर्थ नाहीं, वे महामुनीश्वर जगतके त्यागी महाधीर पंचोपवासकी है प्रतिज्ञा

जिनके सो ईर्यासमिति पालते नन्दस्थली नामा नगरी तहां पारणाके अर्थ गए उगते सूर्य समान है दीप्ति जिनकी मानों चालते पहाड ही हैं महा स्फटिकमणि समान शुद्ध हृदय जिनका वे पुरुषोत्तम मानों मूर्तिवन्त धर्मही, मानों तीन लोकका आनन्द एकत्र होय रामकी मूर्ति निपजी हैं महा कांतिके प्रवाहकर पृथिवीको पवित्र करते मानों आकाशविषै अनेक रंगकर कमलोंका बन लगावते नगरविषै प्रवेश करते भए तिनके रूपको देख नगरके सब लोक क्षोभको प्राप्त भए लोक परस्पर बतलावें हैं—अहो देखो! यह अद्भुतरूप ऐसा आकार जगतविषै दुर्लभ कबहू देखिवेविषै न आवे यह कोई महापुरुष महासुन्दर शोभायमान अपूर्व नर दोनों बाहु लम्बाये आवे है। धन्य यह धीर्य धन्य यह पराक्रम धन्य यह रूप धन्य यह कांति धन्य यह दीप्ति धन्य यह शांति धन्य यह निर्ममत्वता यह कोई मनोहर पुराण पुरुष है ऐसा और नाहीं जूडे प्रमाण धरती देखता जीव दया पालता शांतदृष्टि समाधानचित्त जैनका यति चला आवे है ऐसा कौनका भाग्य जाके घर यह पुण्याधिकारी आहार कर कौनको पवित्र करै? ताके बडे भाग्य जाके घर यह आहार लेय, यह इन्द्रसमान रघुकुलका तिलक अक्षोभ पराक्रमी शीलका पहाड रामचंद्र पुरुषोत्तम है, याके दर्शनकर नेत्र सफल होंय मन निर्मल होय जन्म सफल होय, देही पायेका यह फल जो चारित्र पालिए। या भांति नगरके लोक रामके दर्शन कर आश्चर्यको प्राप्त भए, नगरमें रमणीक ध्वनि भई श्रीराम नगरविषै पैठे अर समस्त गली अर मार्ग स्त्री पुरुषानिके समूह कर भर गया, नर नारी नानाप्रकारके भोजन हैं घरविषै जिनके प्रासुक जलकी झारी भरे द्वारे पेखन करे हैं निर्मल जल दिखावते पवित्र धोवती पहिरें नमस्कार करे हैं। हे स्वामी! अत्र तिष्ठें अन्न जल शुद्ध है या भांतिके शब्द करे हैं नाहीं समावे है हृदयविषै हर्ष जिनके हे मुनींद्र! जयवन्त होवो, हे पुन्यके पहाड! नादो विरदो इन बचनोंकर दशोंदिशा पूरित भई, घरघरविषै लोग परस्पर बात करें हैं स्वर्णके भोजनमें दुग्ध दधि

घृत ईखरस दाल भात क्षीर शीघ्र हीं तयारकर राखो, मिश्री मोदक कपूरकर युक्त शीतल जल सुन्दर पूरी शिखिरणी भली भांति विधिसे राखो। या भांति नर नारिनिके वचनालाप तिनकर समस्त नगर शब्दरूप होय गया महासंभ्रमके भरे जन अपने बालकोंको न विलोकते भए मार्गमें लोक दौडे सो का- हूके धकेसे कोई गिर पडै या भांति लोकनके कोलाहलकर हाथी खूंटा उपाडते भए अर गामविषै दौडते भए तिनके कपोलोंसे मद झरिवे कर मार्गविषै जलका प्रवाह होय गया, हाथिनिके भयसे घोडे घास तज तज बन्धन तुडाय तुडाय भाजे अर हींसते भए सो हाथी घोडनिकी घमसाणकर लोक व्याकुल भए, तब दानविषैं तत्पर राजा कोलाहल शब्द सुन मंदिरके ऊपर आय खडा रहा दूरसें मुनिका रूप देख मोहित भया राजाके मुनिसे राग विशेष परन्तु विवेक नहीं सो अनेक सामन्त दौडाए अर आज्ञाकारी स्वामी पधारे हैं सो तुम जाय प्रणामकर बहुत भक्ति विनती कर यहां आहारको ल्यावो सो सामन्त भी मूर्ख जाय पायन पर पड कहते भए हे प्रभो ! राजाके घर भोजन करहु वहां महा पवित्र सुन्दर भोजन हैं अर सामान्य लोकनिके घर आहार विरस आपके लेयवे योग्य नाहीं अर लोकोंको मने किए कि तुम कहा दे जानों हो ? यह वचन सुनकर महा मुनि आपको अन्तराय जान नगरसे पीछे चले तब सबलोग अति व्याकुल भए। वे महापुरुष जिन आज्ञाके प्रतिपालक आचारांग सूत्र प्रमाण है आचरण जिनका आहारके निमित्त नगरविषै विहार कर अन्तराय जान नगरसे पीछे बनविषै गए। चिद्रूपध्यानविषै मग्न कायोत्सर्ग धर तिष्ठे वे अद्भुत अद्वितीय सूर्य मन अर नेत्रको प्यारा लागे रूप जिनका नगरसे बिना आहार गए तब सबही खेदखिन्न भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै राममुनिका आहारके अर्थि नगरमें आगमन बहुरि लोकनिके कोलाहलतैं अंतराय पाय वनमें आना वर्णन करनेवाला एकसौ बीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ १२० ॥

अथानन्तर राम मुनियोंमें श्रेष्ठ बहुरि पंचोपवासका प्रत्याख्यान कर यह अवग्रह धारते भये कि बन विषै कोई श्रावक शुद्ध आहार देय तो लेना नगरमें न जाना या भांति कांतारचर्याकी प्रतिज्ञा करी सो एक राजा प्रतिनन्द वाको दुष्ट तुरंग लेय भागा सो लोकनिकी दृष्टिसे दूर गया तब राजाकी पट-रानी प्रभवा अतिचिन्तातुर शीघ्रगामी तुरंग पर आरूढ राजाके पीछेही सुभटानिके समूह कर चली अर राजाको तुरंग हर ले गया था सो वनके सरोवरनिविषै कीचमें फस गया उतनेहीमें पटराणी जाय पहुंची राजा राणी पै आया तब राणी राजासे हास्यके वचन कहती भई—हे महाराज ! जो यह अश्व आपको न हरता तो यह नन्दन वनसा बन अर मानसरोवरसा सर कैसे देखते ! तब राजाने कही हे राणी बनयात्रा अब सुफल भई जो तिहारा दर्शन भया, या भांति दम्पती परस्पर प्रीतिकी बात कर सखीजन सहित सरोवरके तीर बैठे नाना प्रकार जल क्रीडा कर दोनो भोजनके अर्थ उद्यमी भए ता समय श्रीराम मुनि कांतारचर्याके करणहारे या तरफ आहारको आए यह साधुकी क्रियामें प्रवीण तिनको देख राजा हर्ष कर रोमांच भया, राणीसहित सन्मुख जाय नमस्कार कर ऐसे शब्द कहता भया हे भगवान् ! यहां तिष्ठो अन्न जल पवित्र है, प्रासुक जलकर राजाने मुनिके पग धोए, नवधा भक्ति कर सप्तगुण सहित मुनिको महापवित्र क्षीर आहार दिया, स्वर्णके पात्रमें लेय कर महा पात्र जे मुनि तिनके करपात्रमें पवित्र अन्न देता भया निरंतराय आहार भया तब देव हर्षित होय पंचाश्चर्य करते भए अर आप अक्षीण महा ऋद्धिके धारक सो वा दिन रसोईका अन्न अटूट होय गया, पंचाश्चर्यके नाम,-पंच वर्ण रत्नोंकी वर्षा अर महा सुगंध कल्पवृक्षोंके पुष्पकी वर्षा शीतल मंद सुगंध पवन दुंदुभी नाद, जय जय शब्द, धन्य यह दान धन्य यह पात्र धन्य यह विधि धन्य यह दाता नीके करी नीके करी नादो विरधो फूलो फलो या भांतिके शब्द आकाशमें देव करते भए अथवा नवधा भक्तिके नाम, मुनिको पडगाहनो

ऊंचे स्थानक राखना चरणारविन्द धोवने चरणोदक माथे चढावना पूजा करनी मन शुद्ध वचन शुद्ध काय शुद्ध आहार शुद्ध यह नवधा भक्ति अर श्रद्धा शक्ति निर्लोभता दया क्षमा अदेयसापणो नहीं हर्षसंयुक्त यह दाताके सात गुण वह राजा प्रतिनन्दी मुनिदानसे देवों कर पूज्य भया अर श्रावकके व्रत धारे निर्मल है सम्यक्त जाके पृथिवीमें प्रसिद्ध होता भया बहुत महिमा पाई अर पञ्चाश्चर्यमें नाना प्रकारके रत्न स्वर्णकी वर्षा भई सो दशों दिशामें उद्योत भया अर पृथिवीका दरिद्र गया, राजा राणीसहित महाविनयवान् भक्ति कर नम्रीभूत महा मुनिको विधिपूर्वक निरंतराय आहार देय परम प्रबोधको प्राप्त भया, अपना मनुष्य जन्म सफल जानता भया अर राम महामुनि तपके अर्थ एकांत रहैं बारह प्रकार तपके करणहारे तप ऋद्धि कर अद्वितीय पृथिवीमें अद्वितीय सूर्य विहार करतेभए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम मुनिको निरंतराय आहार वर्णन करनेवाला एकसौ इकीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ १२१ ॥

अथानंतर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! वह आत्माराम महा मुनि बलदेव स्वामी शांत किए हैं रागद्वेष जाने जो और मनुष्योंसे न बन आवै ऐसा तप करते भए, महा बन विषै विहार करते पंचमहाव्रत पंच समिति तीन गुप्ति पालते शास्त्रके वेत्ता जितेंद्री जिन धर्ममें है अनुराग जिनका स्वाध्याय ध्यानमें सावधान अनेक ऋद्धि उपजी परंतु ऋद्धिनिकी खबर नहीं महा विरक्त निर्विकार बाईस परीषहके जीतनहारे तिनके तपके प्रभावतैं बनके सिंह व्याघ्र मृगादिकके समूह निकट आय बैठे, जीवोंका जाति विरोध मिट गया, रामका शांतरूप निरख शांतरूप भए श्रीराम महाव्रती चिदानन्दनविषै है चित्त जिनका, पर वस्तुकी बांछारहित, विरक्त कर्मकलंक हरिवेको हैं यत्न जिनके,

निर्मल शिला पर तिष्ठते, पद्मासन धरे आत्मध्यानविषै प्रवेश करते भए, जैसे रवि मेघमालाविषै प्रवेश करैं वे प्रभु सुमेरु सारिखे अचल है चित्त जिनका पवित्र स्थानविषै कायोत्सर्ग धरे निज स्वरूपका ध्यान करते भए, कबहुंक विहार करैं सो ईर्य्या समिति पालते जूडा प्रमाण पृथिवी निरखते महा शांत जीव दया प्रतिपाल देव देवांगनादिक कर पूजित भए। वे आत्मज्ञानी जिन आज्ञाके पालक जैनके योगी ऐसा तप करते भए जो पंचम कालविषै काहूके चितवनविषै न आवै एक दिन विहार करते कोटिशिला आए जो लक्ष्मणने नमोकार मंत्र जप कर उठाई हुती सो आप कोटि शिला पर ध्यान घर तिष्ठे कर्मोंके खिपायवे विषै उद्यमी क्षपकश्रेणि चढवेका है मन जिनका॥

अथानन्तर अच्युतस्वर्गका प्रतीन्द्र सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा अवधिकर विचारता भया, रामका अर आपका परम स्नेह अपने अनेक भव अर जिनशासनका माहात्म्य अर रामका मुनि होना अर कोटिशिलापर ध्यान धर तिष्ठना बहुरि मनविषै विचारी वे मनुष्यनिके इंद्र पृथिवीके आभूषण मनुष्यलोकविषै मेरे पति हुते मैं उनकी स्त्री सीता हुती देखो कर्मकी विचित्रता, मैं तो व्रतके प्रभावतैं स्वर्गलोक पाया अर लक्ष्मण रामका भाई प्राणहू तैं प्रिय सो परलोक गया, राम अकेले रह गए, जगत्के आश्चर्यके करणहारे दोनों भाई बलभद्र नारायण कर्मके उदयतैं विछुरे श्रीराम कमल सारिखेनेत्र जिनके शोभायमान हल मूसलके धारक बलदेव महाबली सो बासुदेवके वियोगकर जिनदेवकी दीक्षा अंगीकार करते भये राज अवस्थाविषैं तो शस्त्रोंकर सर्व शत्रु जीते बहुरि मुनि होय मन इन्द्रिय जीते अब शुक्लध्यान धार कर कर्म शत्रुको जीता चाहै हैं ऐसा होय जो मेरी देव मायाकर कछुइक इनका मन मोहमें आवै वह शुद्धोपयोगसे च्युत होय शुभोपयोगविषै आय यहां अच्युतस्वर्गविषै आवें, मेरे इनके महाप्रीति है, मैं अर वे मेरु नन्दीश्वरादिकका यात्रा करें अर बाईस सागरपर्यंत भेले रहें। मित्रता बढावें

अर दोनों मिल लक्ष्मणको देखें यह विचारकर सीताका जीव प्रतींद्र जहां राम ध्यानारूढ थे तहां आया इनको ध्यानसे च्युत करने अर्थ देवमाया रची, वसन्त ऋतु वनविषें प्रकट करी, नाना प्रकारके फूल फूले अर सुगन्ध बायु बाजने लगी, पक्षी मनोहर शब्द करने लगे अर भ्रमर गुंजार करें हैं कोयल बोलें है, मैंना, सूवा, नाना प्रकारकी ध्वनि कर रहें हैं आंव मोर आये भ्रमरोंकर मण्डित सोहे हैं कामके बाण जे पुष्प तिनकी सुगन्धता फैल रही है अर कर्णकार जातिके वृक्ष फूले हैं तिनकर वन पीत हो रहा है सो मानों बसंतरूप राजा पीतम्बर कर क्रीडाकर रहा है अर मौलश्रीकी वर्षा होय रही है ऐसी बसन्तकी लीलाकर आप वह प्रतीन्द्र जानकीका रूप धर रामके समीप आया, वह मनोहर वन जहां अर कोई जन नहीं अर नाना प्रकारके वृक्ष सबऋतुके फूल रहे हैं, तासमय रामके समीप सीता सुन्दरी कहती भई—हे नाथ ! पृथिवीविषे भ्रमण करते कोई पुण्यके योगतैं तुमको देखे वियोगरूप लहरका भरा जो स्नेहरूप समुद्र ताविषै मै डूबू हूं सो मोहि थांभो अनेक प्रकार रागके वचन कहे परन्तु मुनि अकम्प सो वह सीताका जीव मोहके उदयकर कभी दाहिने कभी बांये भ्रमै कामरूप ज्वरके योगकर कम्पित है शरीर अर महा सुन्दर अरुण हैं अधर जाके या भांति कहती भई—हे देव ! मैं बिना विचारें तिहारी आज्ञा विना दीक्षा लीनी मोहि विद्याधरिनिने बहकाया अब मेरा मन तुमविषै है, या दीक्षा कर पूर्णता होवै । यह दीक्षा अत्यन्त वृद्धनिको योग्य है कहां यह यौवन अवस्था अर कहां यह दुर्द्धर व्रत ? महाकोमल फूल दावानलकी ज्वाला कैसे सहार सके ? अर हजारां विद्याधरनिकी कन्या और हू तुमको बरा चाहे हैं मोंहि आगे धार ल्याई हैं कहे हैं, तिहारे आश्रय हम बलदेवको वरें, यह कहे हैं अर हजारां दिव्य कन्या नाना प्रकारके आभूषण पहरे राजहंसनी समान है चाल जिनकी सो प्रतीन्द्रकी विक्रिया कर मुनीन्द्रके समीप आई कोयलतैं हू अधिक मधुर बोलैं ऐसी सोहैं मानों सक्षात् लक्ष्मी ही हैं मनको

आल्हाद उपजावें कानोंको अमृत समान ऐसे दिव्य गीत गावती भईं अर बीण बांसुरी मृदंग बजावती भईं भ्रमर सारिखे श्याम केश विजुरी समान चमत्कार महासुकुमार पातरी कटि कठोर अति उन्नत हैं कुच जिनके सुन्दर शृंगार करे नाना वर्णके वस्त्र पहिरे, हाव भाव विलास विभ्रमको धरती मुलकती अपनी कांतिकर व्याप्त किया है आकाश जिन्होंने मुनिके चौगिर्द बैठी प्रार्थना करती भईं—हे देव ! हमारी रक्षा करो अर कोई एक पूछती भई हे देव ! यह कौन वनस्पति है अर कोई एक माधवी लताके पुष्प के ग्रहणके मिस बाहू ऊंची करती अपना अंग दिखावती भई, अर कोईएक भेली होयकर ताली देती रासमण्डल रचती भई, पल्वसमान हैं कर जिनके अर कोई परस्पर जलकेलि करती भईं या प्रकार नाना भांतिकी क्रीडाकर मुनिके मन डिगायवेका उद्यम करती भई, सो हे श्रेणिक ! जैसे पवनकर सुमेरु न डिगै तैसे श्रीरामचन्द्र मुनिका मन न डिगा आत्मस्वरूपके अनुभवी रामदेव सरल हैं दृष्टि जिनकी, विशुद्ध है आत्मा जिनका, परीषहरूप वज्रपातसे न डिगे, क्षपकश्रेणी चढे, शुक्लध्यानके प्रथम पाएविषै प्रवेश किया, रामचन्द्रका भाव आत्माविषै लग अत्यन्त निर्मल भया सो उनका जोर न पहुंचा मूढजन अनेक उपाय करैं परन्तु ज्ञानी पुरुषनिका चित्त न चलै, वे आत्मस्वरूपविषै ऐसे दृढ भए जो काहू प्रकार न चिगे, प्रतीन्द्रदेवने मायाकर रामका ध्यान डिगायवेको अनेक यत्न किए परन्तु कछु ही उपाय न चला, वे भगवान् पुरुषोत्तम अनादि कालके कर्मोंकी वर्गणाके दग्ध करिवेको उद्यमी भए पहिले पाएके प्रसादसे मोहका नाश कर बारहवें गुणस्थान चढे तहां शुक्लध्यानके दूजे पाएके प्रशादतें ज्ञानावरण अन्तरायका अन्त किया माघ शुक्लद्वादशीकी पिछली रात्रि केवलज्ञानको प्राप्त भए केवलज्ञानविषै सर्व द्रव्य समस्त पर्याय प्रतिभासे ज्ञानरूप दर्पणमें लोकालोक सब भासे तब इन्द्रादिक देवनिके आसन कम्पायमान भए अवधिज्ञानकर भगवान् रामको केवल उपजा जानकर केवलकल्याणककी पूजाको आए, महा

विभूति संयुक्त देवनिके समूह सहित बडे श्रद्धावान् सब ही इंद्र आए घातिया कर्मके नाशक अर्हंत परमेष्ठी तिनको चारणमुनि अर चतुरनिकायके देव सब ही प्रणाम करते भए। वे भगवान् छत्र चमर सिंहासन आदिकर शोभित त्रैलोक्यकर बन्दिवे योग्य सयोगकेवली तिनकी गंधकुटी देव रचते भए दिव्यध्वनि-खिरती भई सब ही श्रवण करते भए अर बारम्बार स्तुति करते भए सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा प्रतींद्र केवलीकी पूजाकर तीन प्रदक्षिणा देय बारम्बार क्षमा करावता भया, हे भगवान्! मैं दुर्बुद्धिने जो दोष किए सो क्षमा करो, गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! वे भगवान् बलदेव अनंत लक्ष्मी कांतिकर संयुक्त आनंद मूर्त्ति केवली तिनकी इंद्रादिक देव महाहर्षके भरे अनादि रीति प्रमाण पूजा स्तुतिकर विनती करते भए, केवली विहार कीया, तब देवहु विहार करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामकूं केवल ज्ञानकी उत्पत्ति वर्णन करनेवाला एकसौ बाईसवा पर्व पूर्ण भया ॥ १२२ ॥

अथानन्तर सीताका जीव प्रतींद्र लक्ष्मणके गुण चितार लक्ष्मणका जीव जहां हुता अर खरदूषण का पुत्र शम्बूक असुरकुमार जातिका देव जहां था तहां जायकर ताकूं सम्यग्ज्ञानका ग्रहण कराया सो तीजे नरक नारकिनिकूं बाधा करावे हिंसानंद रौद्रध्यानविषै तत्पर पापी नारकीको लडावै। पापके उदय कर जीव अधोगति जाय। सो तीजे तक तो असुरकुमारहू लडावैं आगे असुरकुमार न जांय, नारकी ही परस्पर लडै। जहां कैयकानिकूं अग्निकुण्डविषै डारै हैं सो पुकारै हैं। कैयकनिकूं कांटेनिकर युक्त शाल्मली वृक्ष, तिनपर चढाय घसीटै हैं। कैयकनिकूं लोहमई मुद्गरानिकरि कूटै हैं। अर जे मांस आ-हारी पापी तिनकूं उनहीका मांस काटि खवावै है अर प्रज्वलित लोहेके गोला तिनकौं मुखमें मारि २

देहैं । अर कैयक मारे मारके भूमिविषै लोटे हैं अर मायामई श्वान मार्जार सिंह व्याघ्र दुष्ट पक्षी भखे हैं
तहां तिर्यंच नाहीं, नर्ककी विक्रिया है । कैयकनिको सूली चढावै हैं अर वज्रके मुद्गरनितैं मारै हैं, कई
एकानिकूं कुम्भीपाकविषै डारै हैं, कैयकनिको ताता तांवा गालि २ प्यावै हैं अर कहे हैं ये मदिरा पानके फल
हैं । कैयकोंको काठमें बांधकर करौंतोंसे चीरे हैं अर कैयकोंको कुठारोंसे काटे हैं, कैयकोंको घानीमें
पेले हैं कैयकोंकी आंख काढे हैं कैयकोंकी जीभ काढे हैं वह क्रूर कैयकोंके दांत तोडे हैं इत्यादि नारकी-
निको अनेक दुख हैं सो अवधिज्ञानकर प्रतीन्द्र नारकीनिकी पीडा देख शंबूकके समझायवेको तीजी
भूमि गया सो असुरकुमार जातिके देव क्रीडा करते थे वे तो इनके तेजसे डर गए अर शम्बूकको प्रतींद्र
कहते भए—अरे पापी निर्दई तैंने यह क्या आरम्भा जो जीवोंको दुख देवे है । हे नीच देव ! क्रूरकर्म तज
क्षमा पकड, यह अनर्थके कारण कर्म तिनकर कहा अर यह नरकके दुख सुनकर भय उपजे है तू प्रत्यक्ष
नारकियोंको पीडा करे है करावे है सो तुझे त्रास नहीं यह वचन प्रतीन्द्रके सुन शंबूक प्रशांत भया,
दूसरे नारकी तेज न सह सके रोवते भए अर भागते भए तब प्रतीन्द्रने कही हो नारकी हो मुझसे मत
डरो जिन पापोंकर नरकमें आए हो तिनसे डरो, जब या भांति प्रतीन्द्रने कही तब उनमें कैयक मनमें
विचारते भए जो हम हिंसा मृषावाद परधन हरण परनारिरमण बहु आरम्भ बहु परिग्रहमें प्रवर्ते रौद्र-
ध्यानी भए उसका यह फल है भोगोंविषै आसक्त भए क्रोधादिककी तीव्रता भई खोटे कर्म कीये उससे
ऐसा दुख पाया देखो यह स्वर्गलोकके देव पुण्यके उदयसे नानाप्रकारके विलास करे हैं रमणीक विमान
चढे जहां इच्छा होय वहां ही जांय या भांति नारकी विचारते भए अर शम्बूकका जीव जो असुरकुमार
उसको ज्ञान उपजा फिर रावणके जीवने प्रतींद्रसे पूछा—तुम कौन हो? तब उसने सकल वृत्तान्त कहा मैं
सीताका जीव तपके प्रभावकर सोलवें स्वर्गमें प्रतीन्द्र भया, अर श्रीरामचन्द्र महामुनींद्र होय ज्ञानावरण

दर्शनावरण मोहिनी अंतरायनिका नाशकर केवली भए सो धर्मोपदेश देते जगतको तारते भरतक्षेत्रविषै तिष्ठै हैं नाम गोत्र वेदनी आयुका अंतकर परमधाम पधारेंगे अर तू विषय वासनाकर विषम भूमिविषै पडा अब भी चेत, ज्यूं कृतार्थ होय, तब रावणका जीव प्रतिबोधको प्राप्त भया अपने स्वरूपका ज्ञान उपजा अशुभ कर्म बुरे जाने, मनमें विचारता भया मैं मनुष्य भव पाय अणुव्रत महाव्रत न आराधे तिस से इस अवस्थाको प्राप्त भया हाय, हाय, मैं कहा किया जो आपको दुख समुद्रमें डारा । यह मोहका माहात्म्य है जो जीव आत्महित न कर सकें, रावण प्रतीन्द्रको कहे है–हे देव तुम धन्य हो विषयकी वासना तजी जिनवचनरूप अमृतको पीकर देवोंके नाथ भए । तब प्रतीन्द्रने दयालु होयकर कही तुम भय मत करो चलो हमारे स्थानको चलो ऐसा कह याके उठायवेकों उद्यमी भया तब रावणके जीवके शरीर की परमाणु विखर गईं जैसे अग्निकर माखन पिगल जाय काहू उपायकर याहि लेजायवे समर्थ न भया जैसे दर्पणमें तिष्ठती छाया न ग्रही जाय, तब रावणका जीव कहता भया, हे प्रभो ! तुम दयालु हो सो तुमको दया उपजे ही परन्तु इन जीवनिने पूर्वे जे कर्म उपार्जे हैं तिनका फल अवश्य भोगे हैं विषयरूप मांसका लोभी दुर्गतिकी आयु बांधे है सो आयु पर्यंत दुख भोगवे है यह जीव कर्मोंके आधीन इसका देव क्या करें हमने अज्ञानके योगसे अशुभ कर्म उपार्जे हैं इनका फल अवश्य भोगवेंगे आप छुडायवे समर्थ नहीं तिससे कृपाकर वह उपदेश कहो जिसकर फिर दुर्गतिके दुख न पावें, हे दयानिधे तुम परम उपकारी हो, तब देवने कही परमकल्याणका मूल सम्यक्ज्ञान है सो जिनशासनका रहस्य है अविवेकियोंको अगम्य है तीन लोकमें प्रसिद्ध है आत्मा अमूर्तिक सिद्ध समान उसे समस्त परद्रव्योंसे जुदा जाने जिनधर्मका निश्चय करे यह सम्यग्दर्शन कर्मोंका नाशक शुद्ध पवित्र परमार्थका मूल जीवोंने न पाया तातैं अनंत भव ग्रहे यह सम्यग्दर्शन अभव्योंको अप्राप्य है अर कल्याणरूप है जगतमें दुर्लभ है सकल

में श्रेष्ठ है सो जो तू आत्मकल्याण चाहे है तो उसे अंगीकार कर जिसकर मोक्ष पावै उससे श्रेष्ठ और नहीं न हुआ न होयगा इसीकर सिद्ध भए हैं अर होयेंगे जे अरहंत भगवानने जीवादिक नव पदार्थ भाखे हैं तिनकी दृढश्रद्धा करनी उसे सम्यग्दर्शन कहिए इत्यादि वचनोंकर रावणके जीवकों सुरेन्द्रने सम्यक्त्व ग्रहण कराया अर याकी दशा देख विचारता भया जो देखो रावणके भवमें याकी कहा कांति थी महासुन्दर लावण्यरूप शरीर था सो अब ऐसा होय गया जैसा नवीन वन अग्निकर दग्ध हो जाय जिसे देख सकल लोक आश्चर्यको प्राप्त होते सो ज्योति कहां गई ? बहुरि ताहि कहता भया कर्मभूमि में तुम मनुष्य भए थे सो इंद्रियोंके क्षुद्र सुखके कारण दुराचारकर ऐसे दुखरूप समुद्रमें डूबे।

इत्यादि प्रतींद्रने उपदेशके वचन कहे, तिनको सुन कर उसके सम्यक् दर्शन दृढ भया अर मनमें विचारता भया कर्मोंके उदय कर दुर्गतिके दुःख प्राप्त भए तिनको भोग यहांसे छूट मनुष्य देह पाय जिन-राजका शरण गहूंगा। प्रतींद्रसे कही-अहो देव तुम मेरा वड़ा हित किया जो सम्यक्दर्शनमें मोहि लगाया, हे प्रतींद्र महाभाग्य अब तुम जावो, वहां अच्युतस्वर्ग में धर्म्मके फलसे सुख भोग मनुष्य होय शिवपुरकूं प्राप्त होवो, जब ऐसा कहा तब प्रतींद्र उसे समाधान रूप कर कर्मोंके उदयको सोचते संते सम्यक्दृष्टि वहांसे ऊपर आया संसार की मायासे शंकित है आत्मा जाका अर्हंत सिद्ध साधु जिन धर्म्मके शरणविषै तत्पर है मन जाका तीन बेर पंच मेरुकी प्रदक्षिणा कर चैत्यालयोंका दर्शन कर नारकीनिके दुःखसे कंपाय-मान है चित्त जाका स्वर्ग लोकमें हू भोगाभिलाषी न भया मानों नारकीनिकी ध्वनि सुनै है, सोलमें स्व-र्गके देवको छठे नरक लग अवधिज्ञान कर दीखे है तीजे नरककेविषै रावणके जीवको अर शंबूकका जीव जो असुरकुमार देव था ताहि संबोधि सम्यक्त्व प्राप्त किया। हे श्रेणिक! उत्तम जीवोंसे पर उपकार ही बनै बहुरि स्वर्ग लोकसे भरतक्षेत्रमें श्रीरामके दर्शनको आए पवनसे हू शीघ्रगामी जो विमान तामें

आरूढ अनेक देवोंको संग लिये नाना प्रकारके वस्त्र पहिरे हार माला मुकटादिक कर मंडित शक्ति गदा खडग धनुष बरछी शतघ्नी इत्यादि अनेक आयुधोंको धरे गज तुरंग सिंह इत्यादि अनेक बाहनों पर चढे मृदंग बांसुरी बीण इत्यादि अनेक वादित्रनिके शब्द तिन कर दशों दिशा पूर्ण करते केवलीके निकट आए। देवोंके बाहन गज तुरंग सिंहादिक तिर्यंच नहीं देवोंकी विक्रिया है। श्रीरामको हाथ जोड सीस निवाय बारंबार प्रणाम कर सीताका जीव प्रतींद्र स्तुति करता भया—हे संसारसागरके तारक तुमने ध्यानरूप पवन कर ज्ञानरूप अग्नि दीप्त करी, संसार रूप बन भस्म किया अर शुद्ध लेश्या रूप त्रिशूल कर मोहरिपु हता, वैराग्यरूप वज्र कर दृढ स्नेहरूप पिंजरा चूर्ण किया। हे नाथ हे मुनीन्द्र हे भवसूदन संसाररूप बनसे जे डरे हैं तिनको तुम शरण हो। हे सर्वज्ञ कृतकृत्य जगतगुरु पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने हे प्रभो मेरी रक्षा करो संसारके भ्रमणसे अतिव्याकुल है मन मेरा तुम अनादि निधन जिनशासनका रहस्य जान प्रबल तप कर संसार सागरसे पार भए, हे देवाधिदेव यह तुमको कहा युक्त? जो मुझे भववनमें तज आप अकेले विमल पदको पधारे, तब भगवान् कहते भए हे प्रतींद्र तू राग तज जे वैराग्यमें तत्पर हैं तिन ही को मुक्ति है। रागी जीव संसारमें डूबे हैं जैसे कोई शिलाको कंठमें बांध भुजावों कर नदी को नहीं तिर सके तैसे रागादिक भार कर चतुर्गतिरूप नदी न तिरी जाय, जे ज्ञान वैराग्य शील संतोषके धारक हैं वेई संसारको तिरे हैं जे श्रीगुरुके वचन कर आत्मानुभवके मार्ग लगे वेई भव भ्रमणसे छूटें और उपाय नहीं काहूका भी लेजाया कोई लोकशिखर न जाय एक वीतराग भावों ही से जाय। इसभांति श्रीराम भगवान् सीताके जीवको कहते भए, सो यह वार्ता गौतमस्वामीने श्रेणिकसे कही बहुरि कहते भए हे नृप सीताके जीव प्रतीन्द्रने जो केवलीसे पूछी अर उनने कहा सो तू सुन, प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ दशरथादिक कहां गए अर लव अंकुश कहां जावेंगे तब भगवान्ने कही दशरथ

कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा अर जनक अर जनकका भाई कनक यह सब तपके प्रभाव कर तेरहमें देवलोक गए हैं यह सब ही समान ऋद्धिके धारी देव हैं अर लवअंकुश महाभाग्य कर्म रूप रजसे रहित होय विमल पद को इसही जन्मसे पावेंगे, इस भांति केवली की ध्वनि सुन भामंडलकी गति पूछी, हे प्रभो भामंडल कहां गया, तब आप कहते भए हे प्रतीन्द्र तेरा भाई राणी सुन्दरमालिनी सहित मुनि-दानके प्रभाव कर देवकुरु भोगभूमिमें तीन पल्य की आयुके भोक्ता भोगभूमिया भए तिनके दानकी वार्ता सुन--अयोध्यामें एक बहु कोटि धनका धनी सेठ कुलपति उसके मकरा नामा स्त्री जिसके पुत्र राजावोंके तुल्य पराक्रमी सो कुलपतिने सुनी सीताको बनमें निकासी तब उसने विचारी वह महागुणवती शीलवती सुकुमार अंग निर्जन वनमें कैसे अकेली रहेगी। धिकार है संसारकी चेष्टाको, यह विचार दयालुचित्त होय द्युति भट्टारकके समीप मुनि भया अर उसके दोय पुत्र एक अशोक दूजा तिलक यह दोनों मुनि भए सो द्युतिभट्टारक तो समाधि मरणकर नवमग्रैवेयकमें आहमिन्द्र भए अर यह पिता पुत्र तीनों मुनि ताम्रचूडनामा नगर वहां केवली की बंदनाको गए सो मार्ग में पचास योजनकी एक अटवी वहां चतुर्मासिक आय पडा तब एक वृक्षके तले तीनों साधु बिराजे मानों साक्षात् रत्नत्रय ही हैं वहां भामण्डल आय निकसा अयोध्या आवे था सो विषम बनमें मुनिनिको देख विचार किया, यह महापुरुष जिन सूत्रकी आज्ञा प्रमाण निर्जन बन में विराजे चौमासे मुनियोंका गमन नहीं अब यह आहार कैसे करें तब विद्या की प्रबल शक्ति कर निकट एक नगर बसाया जहां सब सामग्री पूर्ण बाहिर नानाप्रकार के उपवन सरोवर अर धानके क्षेत्र अर नगरके भीतर बडी वस्ती महासंपत्ति, चार महीना आपभी परिवार सहित उसनगरमें रहा अर मुनियोंके वैयाव्रत किये, वह बन ऐसा था जिसमें जल नहीं सो अद्भुत नगर बसाया, जहां अन्नजलकी बाहुल्यता सो नगरमें मुनिनिका आहार भया अर और भी दुखित भुखित

जीवोंको भान्ति भान्तिके दान दीए, अर सुन्दरमालिनी राणी सहित आप मुनोंको अनेकवार निरंतराय आहार दीया, चतुर्मास पूर्ण भए मुनि विहार करते भए अर भामंडल अयोध्या आय फिर अपने स्थानक गया एक दिन सुन्दरमालिणी राणी सहित सुखसे शयन करै था सो महल पर विजुरी पडी राजा राणी दोनों मरकर मुनिदानके प्रभावसे सुमेरु पर्वतकी दाहिनी ओर देवकुरु भोग भूमि वहां तीन पल्यके आयुके भोक्ता युगल उपजे, सो दानके प्रभावसे सुख भोगवे हैं जे सम्यक्त रहित हैं अर दान करे हैं सो सुपात्र दानके प्रभावसे उत्तमगतिके सुख पावे हैं सो यह पात्रदान महासुखका दाता है यह बात सुन फिर प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ रावण तीजी भूमिसे निकस कहां उपजेगा अर मैं स्वर्गसे चयकर कहां उपजूंगा मेरे अर लक्ष्मणके अर रावणके केते भव बाकी हैं सो कहो ॥

तब सर्वज्ञदेवने कही—हे प्रतीन्द्र सुन, वे दोनों विजयावती नगरीमें सुनंद नामा कुटुम्बी सम्यक्दृष्टि उसके रोहिणी नामा भार्या उसके गर्भविषै अरहदास ऋषिदास नामा पुत्र होवेंगे महा गुणवान निर्मलचित्त दोनों भाई उत्तम क्रियाके पालक. श्रावकके व्रत आराध समाधि मरणकर जिनराजका ध्यान धर स्वर्गविषै देव होंयगे तहां सागरांत पर्यंत सुख भोगि स्वर्गसे चयकर बहुरि वाही नगरीविषैं बडे कुलविषै उपजेंगे सो मुनिनिको दान देकर हरिक्षेत्र जो मध्यम भोग भूमि वहां युगलिया होय दोय पल्यका आयु भोग स्वर्ग जावेंगे बहुरि उसही नगरीविषै राजा कुमारकीर्ति राणी लक्ष्मी तिनके महायोधा जयकान्त जयप्रभ नामा पुत्र होवेंगे बहुरि तपकर सातवें स्वर्ग उत्कृष्ट देव होवेंगे देवलोकके महासुख भोगेंगे अर तू सोलवां अच्युत स्वर्ग वहांसे चयकर या भरतक्षेत्रविषै रत्नस्थलपुर नामा नगर वहां चौदह रत्नका स्वामी षट् खंड पृथिवीका धनी चक्रनामा चक्रवर्ती होयगा तब वे सातवें स्वर्गसे चयकर तेरे पुत्र होवेंगे रावणके जीवका नाम तो इन्द्ररथ अर वसुदेवके जीवका नाम मेघरथ दोनो महाधर्मात्मा होवेंगे परस्पर

उनमें अतिस्नेह होयगा अर तेरा उनसे अतिस्नेह होयगा जिस रावणने नीतिसे तीन खंड पृथिवीका अखंड राज्य कीया अर ये प्रतिज्ञा जन्मपर्यंत निवाही जो परस्त्री मोहि न इच्छे ताहि मैं न सेऊं सो रावणका जीव इन्द्ररथ धर्मात्मा कैयक श्रेष्ठ भव धार तीर्थंकर देव होयगा तीनलोक उसको पूजेंगे अर तू चक्रवर्ती राज्यपद तज मुनिव्रतधारी होय पंचोत्तरोंविषै वैजयंत नामा विमान तहां तपके प्रभावसे अहमिन्द्र होवेगा तहांसे चयकर रावणका जीव तीर्थंकर उसके प्रथम गणधर होय निर्वाण पद पावेगा। यह कथा श्रीभगवान् राम केवली तिनके मुख प्रतीन्द्र सुनकर अतिहर्षित भया बहुरि सर्वज्ञदेवने कही हे प्रतींद्र! तेरा चक्रवर्ती पदका दूजा पुत्र मेघरथ सो कैयक महाउत्तम भवधर धर्मात्मा पुष्पकरद्वीपके महाविदेह क्षेत्रविषै शतपत्र नामा नगर तहां पंचकल्याणकका धारक तीर्थंकर देव चक्रवर्ती पदको धरे होयगा संसारका त्यागकर केवल उपाय अनेकोंको तारेगा अर आप परमधाम पधारेगा, ये वासुदेवके भव तोहि कहे अर मैं अब सात वर्षविषै आयु पूर्णकर लोक शिखर जाऊंगा जहांसे बहुरि आना नहीं, अर जहां अनंत तीर्थंकर गए अर जावेंगे अनंत केवली तहां पहुंचे जहां ऋषभादि भरतादि विराजे हैं अविनाशी पुर त्रैलोक्येक शिखर हैं, जहां अनन्तासिद्ध है, वहां मैं तिष्ठूंगा ये वचन सुन प्रतींद्र पद्म नाम जे श्रीरामचन्द्र सर्वज्ञ वीतराग तिनको बार बार नमस्कार करता भया अर मध्यलोकके सर्व तीर्थ वंदे भगवानके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय अर निर्वाणक्षेत्र वहां सर्वत्र पूजाकर अर नन्दीश्वरद्वीपविषैं अंजनिगिरि दधिमुख रतिकर तहां बडे विधानसे अष्टाह्निकाकी पुजा करी देवाधिदेव जे अरहंत सिद्ध तिनका ध्यान करता भया, अर केवलीके वचन सुन ऐसा निश्चय भया जो मैं केवली होय चुका अल्प भव हैं अर भाईके स्नेहसे भोग भूमिविषै जहां भामण्डलका जीव है तहां उसे देखा अर उसको कल्याणका उपदेश दीया अर बहुरि अपना स्थान सोलवां स्वर्ग वहां गया जाके हजारो देवांगना तिनसहित मानासिक भोग

भोगता भया। श्रीरामचन्द्रका सतरह हजार वर्षका आयु सोलह धनुषकी ऊंची काया केयक जन्मके पापोंसे रहित होय सिद्ध भये वे प्रभु भव्यजीवोंको कल्याण करो जन्म जरा मरण महारिपु जीते परमात्मा भये जिनशासनविषै प्रकट है महिमा जिनकी जन्मजरा मरणका विच्छेदकर अखंड अविनाशी परम अतींद्रिय सुख पाया सुर असुर मुनिवर तिनके जे अधिपति तिनकर सेयवे योग्य नमस्कार करवे योग्य दोषोंके विनाशक पच्चीसवर्ष तपकर मुनिव्रतपाल केवली भये सो आयु पर्यंत केवली दशाविषै भव्योंको धर्मोपदेश देय तीन भवनका शिखर जो सिद्धपद वहां सिधारे।

सिद्धपद सकल जीवोंका तिलक है राम सिद्ध भए तुम रामको सीस निवाय नमस्कार करो राम सुरनर मुनियोंकर आराधिवे योग्य हैं शुद्ध हैं भाव जिनके संसारके कारण जे रागद्वेष मोहादिक तिनसे रहित हैं परम समाधिके कारण हैं अर महामनोहर हैं, प्रतापकर जीता है तरुण सूर्यका तेज जिनने अर उन जैसी शरदकी पूर्णमासीके चंद्रमामें कांति नहीं सर्व उपमारहित अनुपम वस्तु हैं अर स्वरूप जो आत्मरूप उसमें आरूढ हैं, श्रेष्ठ है चारित्र जिनके, श्रीराम यतीश्वरोंके ईश्वर देवोंके अधिपति प्रतीन्द्रकी मायासे मोहित न भए जीवोंके हितू परम ऋद्धिकर युक्त अष्टम बलदेव पवित्र शरीर शोभायमान अनंत वीर्यके धारी अतुल महिमाकर मंडित निर्विकार अठारह दोषकर रहित अष्टादशसहस्र शीलके भेद तिनकर पूर्ण अति उदार अति गंभीर ज्ञानके दीपक तीन लोकमें प्रकट है प्रकाश जिनका अष्टकर्मके दग्ध करणहारे गुणोंके सागर क्षोभरहित सुमेरुसे अचल धर्मके मूल कषायरूप रिपुके नाशक समस्त विकल्परहित महानिर्द्वंद्व जिनेन्द्रके शासनका रहस्य पाय अंतरात्मासे परमात्मा भए उनने त्रैलोक्यपूज्य परमेश्वरपद पाया तिनको तुम पूजो धोय डारे हैं कर्मरूप मल जिनने, केवलज्ञान केवल दर्शनमई योगीश्वरोंके नाथ सर्व दुखके दूर करणहारे मन्मथके मथनहारे तिनको प्रणाम करो, यह श्रीबलदेवका चरित्र

भरा रामकी कथाका शंकारहित होय महाहर्षका
महामनोज्ञ जो भावधर निरंतर बांचे सुनें पढें पढावें
मारिवेको आया होय सो शान्त
अभ्यास करै तिसके पुण्यकी वृद्धि होय अर वैरी खड्ग हाथमें लिए
यशका अर्थी यशको पावे राज्य भ्रष्ट हुआ
होय जाय, या ग्रंथके श्रवणसे धर्मके अर्थी इष्टधर्मको लहैं
अर्थी इष्टसंयोग लहै धनका
अर राज्य कामना होय तो राज्य पावे यामें संदेह नाही, इष्ट संयोगका
लाभका अर्थी लाभ पावे,
अर्थी धन पावे, जीतका अर्थी जीत पावे स्त्रीका अर्थी सुन्दर स्त्री पावे
आयवेकी आकुलता
सुखका अर्थी सुख पावे अर काहूका कोई वल्लभ विदेश गया होय अर उसके
सर्व व्याधि शांत होय ग्राम
होय सो वह सुखसे घर आवे जो मनविषे आभिलाषा होय सोही सिद्ध होय
क्रूर ग्रह सौम्य होय जांय
के नगरके वनके देव जलके देव प्रसन्न होंय अर नवग्रहोंकी बाधा न होय,
अर जे पाप चिंतवनमें न आवें वे विलाय जांय अर सकल अकल्याण राम कथाकर क्षय होय जांय,
अर जितने मनोरथ हैं वे सब राम कथाके प्रसादसे पावें अर वीतराग भाव दृढ होय उसकर हजारांभव
के उपार्जे पापोंको प्राणी दूर करे कष्टरूप समुद्रको तिर सिद्धपद शीघ्र ही पावे। यह ग्रंथ महापवित्र है,
जीवको समाधि उपजावनेका कारण है नाना जन्ममें जीवने पाप उपार्जे महा क्लेशके कारण तिनका
नाशक है अर नाना प्रकारके व्याख्यान तिनकर संयुक्त है जिसमें बडे २ पुरुषोंकी कथा भव्यजीवरूप
कमलोंको प्रफुल्लित करणहारा है सकल लोककर नमस्कार करिवे योग्य श्रीवर्धमान भगवान उनने
गौतमसे कहा अर गौतमने श्रेणिकसे कहा। याही भांति केवली श्रुतकेवली कहते भए। रामचन्द्रका
चरित्र साधुवोंकी समाधिकी वृद्धिका कारण सर्वोत्तम महामंगलरूप सो मुनिनिकी परिपाटीकर प्रकट होता
भया। सुन्दर हैं वचन जिसमें समीचीन अर्थको धरे अति अद्भुत इंद्रगुरु नामा मुनि तिनके शिष्य
दिवाकरसेन तिनके शिष्य लक्ष्मणसेन तिनके शिष्य रविषेण तिन जिनआज्ञा अनुसार कहा। यह राम

चाहूं हूं तब गौतम स्वामी कहते भए हे राजन् ! चक्रपुर नामा एक नगर है तहां चक्रध्वज नामा राजा ताके राणी मनस्विनी तिनके पुत्री चित्तोत्सवा सो कुंवारी चटशालामें पढे अर राजाका पुरोहित धूम्रकेश ताके स्वाहा नामा स्त्री ताका पुत्र पिंगल सो भी चटशालामें पढै । सो चित्तोत्सवाका अर पिंगलका चित्त मिल गया सो इनको विद्याकी सिद्धि न भई, जिनका मन कामबाणोंसे वेधा जाय तिनको विद्या अर धर्मकी प्राप्ति न होय है । प्रथम स्त्री पुरुषका संसर्ग होय बहुरि प्रीति उपजै, प्रीतिसे परस्पर अनुराग बढै, बहुरि विश्वास उपजै ताकरि विकार उपजै, जैसे हिंसादिक पंच पापोंसे अशुभ कर्म बन्धै तैसे स्त्री संगतैं काम उपजै है ॥

अथानन्तर वह पापी पिंगल चित्तोत्सवाको हर ले गया जैसे कीर्तिको अपयश हर ले जाय, जब वह दूर देशनिविषै हर लेगया तब सब कुटुम्बके लोकोंने जानी, अपने प्रमादके दोषकरि ताने वह हरी है जैसे अज्ञान सुगतिको हरे तैसे वह पिंगल कन्याको चुरा ले गया परन्तु धनरहित शोभै नाहीं जैसे लोभी धर्मवर्जित तृष्णासे न सोहै सो यह विदग्ध नगरमें गया तहां अन्य राजावोंकी गम्यता नहीं सो निर्धन नगरके बाहिर कुटि बनायकर रहा ता कुटिके किवाड नाहीं अर यह ज्ञान विज्ञानरहित तृण काष्ठादिकका विक्रयकर उदर भरे दारिद्रके सागरमें मग्न सो स्त्रीका अर आपका उदर महा कठिनतासे भरे । तहां राजा प्रकाशसिंह अर राणी प्रवरावलीका पुत्र जो राजा कुण्डलमण्डित सो या स्त्रीको देख शोषण संतापन उच्चाटन वशीकरण मोहन ये कामके पंच बाण इनकरि वेध्या गया ताने रात्रिको दूती पठाई सो चित्तोत्सवाको राजमंदिरमें ले गई जैसे राजा सुमुखके मंदिरविषै दूती वनमालाको लेगई हुती सो कुण्डलमण्डित सुखसे रमैं ॥

अथानन्तर वह पिंगल काष्ठका भार लेकर घर आया सो सुन्दरीको न देखकर अतिकष्टके

समुद्रमें डूबा, विरहकरि महा दुखित भया, काहू जगह सुखको न पावै चक्रविषै आरूढ समान याका चित्त व्याकुल भया, हरी गई है भार्या जाकी ऐसा जो यह दीन ब्राह्मण सो राजापै गया और कहता भया–हे राजा! मेरी स्त्री तेरे राजमें चोरी गई, जे दरिद्री आर्तिवंत भयभीत स्त्री वा पुरुष उनको राजा ही शरण हैं, तब राजा धूर्त अर ताके मंत्री भी धूर्त सो राजाने मंत्रीको बुलाय झूठमूठ कहा याकी स्त्री चोरी गई है ताहि पैदा करो, ढील मत करो तब एक सेवकने नेत्रोंकी सैन मार कर झूठ कहा। हे देव! मैं या ब्राह्मणकी स्त्री पोदनापुरके मार्गमें पथिकानिके साथ जाती देखी सो आर्यिकाओंके मध्य तप करणेको उद्यमी है तातैं हे ब्राह्मण! तू ताहि लाया चाहे तो शीघ्र ही जा, ढील काहेको करै ताका अवार दीक्षा धरनेका समय कहां, तरुण है शरीर जाका अर महाश्रेष्ठ स्त्रीके गुणोंसे पूर्ण है ऐसा जब झूठ कहा तब ब्राह्मण गाढी कमर बांध शीघ्र वाकी ओर दौडा, जैसे तेज घोडा शीघ्र दौडै सो पोदनापुरमें चैत्यालय तथा उपवनादि वनमें सर्वत्र ढूंढी, काहूं ठौर न देखी तब पाछा विदग्धनगरमें आया सो राजाकी आज्ञातैं क्रूर मनुष्योंने गलहटा देय लष्टमुष्टि प्रहार कर दूर किया, ब्राह्मण स्थानभ्रष्ट भया क्लेश भोगा, अपमान लहा, मार खाई। एते दुःख भोग कर दूर देशांतर उठ गया, सो प्रिया विना याको किसी ठौर सुख नहीं जैसे अग्निमें पडा सर्प सूंसै तैसे यह रात दिन सूंसता भया, विस्तीर्ण कमलोंका वन याहि दावानल समान दीखै अर सरोवर अवगाह करता विरहरूप अग्निसे बलै या भांति यह महा दुखी पृथिवीविषै भ्रमण करै एक दिन नगरसे दूर वनमें मुनि देखे। मुनिका नाम आर्यगुप्ति बडे आचार्य तिनके निकट जाय हाथ जोड नमस्कार कर धर्म श्रवण करता भया, धर्म श्रवण कर याको वैराग्य उपजा महा शांतिचित्त होय जिनेंद्रके मार्गकी प्रशंसा करता भया। मनमें विचारै है अहो यह जिनराजका मार्ग परम उत्कृष्ट है। मैं अंधकारमें पडा हुता सो यह जिनधर्मका उपदेश मेरे घटमें सूर्य समान प्रकाश करता भया

के जीव पूर्व जन्ममें या जीवके बान्धव भए हैं तातैं जो पापी मांसका भक्षण करे हैं ताने तो सर्व बांधव भषे जो दुष्ट निर्दई मच्छ मृग पक्षियोंको हनै हैं अर मिथ्यामार्गमें प्रवरतैं हैं सो मधु मांसके भक्षणतैं महाकुगतिमें जावे हैं। यह मांस वृक्षानितैं नाहीं उपजे है, भूमितैं नाहीं उपजे है, अर कमलकी न्याईं जलसे नाहीं निपजै है अथवा अनेक वस्तुवोंके योगतैं जैसे औषधि बनै है तैसे मांसकी उत्पत्ति नाहीं होय है, दुष्ट जीव निर्दयी वा गरीब बडा वल्लभ है जीतव्य जिनको ऐसे पक्षी मृग मत्स्यादिक तिनको हन कर मांस उपजावे हैं सो उत्तम जीव दयावान नहीं भषे हैं अर जिनके दुग्धकरि शरीर वृद्धिको प्राप्त होय ऐसी गाय भैंस छेली तिनके मृतक शरीरको भषे हैं अथवा मार मारकर भषे हैं तथा तिनके पुत्र पौत्रादिकको भषे हैं ते अधर्मी महानीच नरक निगोदके अधिकारी हैं जो दुराचारी मांस भषे हैं ते माता पिता पुत्र मित्र सहोदर सब ही भषे। या पृथ्वीके तले भवनवासी अर व्यन्तर देवोंके निवास हैं अर मध्य लोकमें भी हैं ते दुष्ट कर्मके करनहारे नीच देव हैं जो जीव कषाय सहित तापस होय हैं ते नीच देवोंमें निपजे हैं पातालमें प्रथम ही रत्नप्रभा पृथ्वी ताके छै भाग अर पंच भागमें तो भवनवासी अर व्यन्तर देवनिके निवास हैं अर बहल भागमें पहिला नरक ताके नीचे छह नरक और हैं। ये सातों नरक छह राजूमें हैं अर सातवें नरकके नीचे एक राजूमें निगोदादि स्थावर ही हैं, त्रस जीव नहीं हैं अर निगोदसे तीन लोक भरे हैं॥

अथानन्तर नरकका व्याख्यान सुनो—कैसे हैं नारकी जीव ? महाक्रूर, महाकुशब्द बोलनहारे, अति कठोर है स्पर्श जाका, महा दुर्गंध अन्धकाररूप नरकमें पडे हैं उपमारहित जे दुख तिनका भोगनहारा है शरीर जिनका, महाभयंकर नरक ताहि कुम्भीपाक कहिए जहां वैतरणी नदी है अर तीक्ष्ण कंटकयुक्त शाल्मलीवृक्ष जहां असिपत्रवन तीक्ष्ण खड्गकी धारा समान है पत्र जिनके अर जहां देदी-

प्यमान अग्निसे तप्तायमान तीखे लोहेके कीले निरन्तर हैं उन नरकानिमें मधु मांसके भक्षणहारे अर जीवोंके मारणहारे निरन्तर दुख भोगे हैं। जहां एक आध अंगुलमात्र भी क्षेत्र सुखका कारण नहीं अर एक पलको भी नारकियोंका विश्राम नाहीं जो चाहैं कि कहूं भाजकर छिप रहैं तो जहां जांय तहां ही नारकी मारैं अर असुरकुमार पापी देव बताय देंय। महाप्रज्वलित अंगारतुल्य जो नरककी भूमि तामें पडे ऐसे विलाप करैं जैसे अग्निमें मत्स्य व्याकुल हुआ विलाप करै अर भयसे व्याप्त काहू प्रकार निकस कर अन्य ठौर गया चाहैं तो तिनको शीतलता निमित्त और नारकी वेतरणी नदीके जलसे छांटे देय सो वेतरणी महा दुर्गंध क्षीरजलकी भरी ताकरि अधिक दाहको प्राप्त होंय बहुरि विश्रामके अर्थ असिपत्र-वनमें जांय सो असिपत्र सिरपर पडे मानो चक्र खड्ग गदादिक हैं तिनकरि विदारे जावें छिद गए हैं नासिका कर्ण कंधा जंघा आदि शरीरके अंग जिनके, नरकमें महाविकराल महादुखदाई पवन है अर रुधिरके कण वरसे हैं जहां घानीमें पेलिए हैं अर क्रूर शब्द होय हैं तीक्ष्ण शूलोंसे भेदिए हैं महा विलाप के शब्द करै हैं अर शाल्मली वृक्षोंसे घसीटिये हैं अर महामुद्‌गरोंके घातसे कूटिये हैं अर जब तिसाए होय हैं तब जलकी प्रार्थना करै हैं तब उन्हें तांबा गलाकर प्यावे हैं तातैं देह महा दग्धमान होय हैं ता-कर महादुखी होय हैं अर कहै हैं कि हमें तृष्णा नाहीं तो पुनि बलात्कार इनको पृथिवीपर पछाडकर ऊपर पग देय संडासियोंसे मुख फाड ताता तांबा प्यावे हैं तातै कंठ भी दग्ध होय है अर हृदय भी दग्ध होय है, नारकियोंको नारकियोंका अनेक प्रकारका परस्पर दुख तथा भवनवासी देव जे असुरकुमार तिनकरि करवाया दुख सो कौन वरणन कर सकै। नरकमें मद्य मांसके भक्षणसे उपजा जो दुख ताहि जान

घमांसका भक्षण सर्वथा तजना ऐसे मुनिके वचन सुन नरकके दुखसे डरा है मन जाका, ऐसा जो सो बोला—हे नाथ! पापी जीव तो नरक हीके पात्र हैं अर जे विवेकी सम्यग्दृष्टि श्रावक

ज्योतिकर प्रकाशमान आकाशसे पडता देखा तब विचारी कि यह नक्षत्रपात भया तथा विद्युत्पात भया यह विचारकर निकट आय देखे तो बालक है तब हर्षकर बालकको उठाय लिया अर अपनी राणी पुष्पवती जो सेजमें सूती हुती ताकी जांघोंके मध्य धर दिया अर राजा कहता भया—हे राणी ! उठो उठो तिहारे बालक भया है बालक महाशोभायमान है। तब रानी सुन्दर है मुख जाका, ऐसे बालकको देख प्रसन्न भई, जाकी ज्योतिके समूहकर निद्रा जाती रही, महाविस्मयको प्राप्त होय राजाको पूछती भई—हे नाथ ! यह अद्भुत बालक कौन पुण्यवती स्त्रीने जाया। तब राजाने कही—हे प्यारी ! तैंने जना, तो समान और पुण्यवती कौन है, धन्य है भाग्य तेरा, जाके ऐसा पुत्र भया तब वह रानी कहती भई—हे देव ! मैं तो बांझ हूं मेरे पुत्र कहा एक तो मुझे पूर्वोपार्जित कर्मने ठगी बहुरि तुम कहा हास्य करो हो ? तब राजाने कही हे देवी ! तुम शंका मत करो स्त्रियोंके प्रच्छन्न (गुप्त) भी गर्भ होय है तब रानीने कही ऐसे ही हो हु परन्तु याके यह मनोहर कुंडल कहांते आए ऐसे भूमंडलमें नहीं तब राजाने कही हे रानी ! ऐसे विचारकर कहा ? यह बालक आकाशसे पडा अर मैं झेला तुझे दिया यह बडे कुलका पुत्र है याके लक्षणनिकर जानिए है यह मोटा पुरुष है अन्य स्त्री तो गर्भके भारकर खेदखिन्न भई है परन्तु हे प्रिये ! तैंने याहि सुखसे पाया अर अपनी कुक्षिमें उपजा भी बालक जो माता पिताका भक्त न होय अर विवेकी न होय शुभ काम न करे तो ताकर कहा ? कई एक पुत्र शत्रु समान होय परणवे हैं तातैं उदरके पुत्रका कहा विचार ? तेरे यह पुत्र सुपुत्र होयगा शोभनीक वस्तुमें सन्देह कहा ? अब तुम या पुत्रको लेवो अर प्रसूतिके घरमें प्रवेश कर अर लोकनिको यही जनावना जो राणीके गुप्त गर्भ हुता सो पुत्र भया तब राणी पतिकी आज्ञा प्रमाण प्रसन्न होय प्रसूतिगृहविषै गई, प्रभातविषै राजाने पुत्रके जन्मका उत्सव किया। रथनूपुरमें पुत्रके जन्मका ऐसा उत्सव भया जो सर्व कुटुम्ब अर नगरके लोग

आश्चर्यको प्राप्त भए रत्नोंके कुंडलकी किरणोंकर मंडित जो यह पुत्र सो माता पिताने याका नाम प्रभामण्डल धरा अर पोषनेके निमित्त धायको सौंपा सर्व अंतःपुरकी राणी आदि सकल स्त्री तिनके हाथ रूप कमलोंका भ्रमर होता भया भावार्थ—यह बालक सर्व लोकोंको वल्लभ, बालक सुखसों तिष्ठै है, यह तो कथा यहां ही रही।

अथानन्तर मिथिलापुरीमें राजा जनककी रानी विदेहा, पुत्रको हरा जान विलाप करती भई अति ऊंचे स्वरकर रुदन किया सर्व कुटुंबके लोक शोकसागरमें पडे रानी ऐसे पुकारे मानो शस्त्रकर मारी है हाय ! हाय पुत्र ! तुझे कौन लेगया मोको महादुखका करणहारा वह निर्दई कठोर चित्तके हाथ तेरे लेने पर कैसे पडे ? जैसे पश्चिम दिशाकी तरफ सूर्य आय अस्त हो जाय तैसे तू मेरे मंदभागिनीके आयकर अस्त होय गया। मैं भी परभवमें किसीका बालक विछोहा था सो मैं फल पाया तातैं कभी भी अशुभ कर्म न करना जो अशुभकर्म है सो दुखका बीज है जैसे बीज विना वृक्ष नहीं तैसे अशुभकर्म विना दुख नहीं। जा पापीने मेरा पुत्र हरा सो मोकूं ही क्यों न मार गया, अधमुईकर दुःखके सागरमें काहेको डुबो गया या भांति रानी अति विलाप किया तब राजा जनक आय धीर्य बंधावता भया हे प्रिये ! तू शोक को मत प्राप्त होवे तेरा पुत्र जीवे है काहूने हरा है सो तू निश्चय सेती देखेगी वृथा काहेको रुदन करै है पूर्व कर्मके प्रभावकर गई वस्तु कोई तो देखिए कोई न देखिए तू स्थिरताको प्राप्त हो। राजा दशरथ मेरा परम मित्र है सो वाको यह वार्ता लिखूं हूं वह अर मैं तेरे पुत्रको तलाशकर लावेंगे भले २ प्रवीण मनुष्य तेरे पुत्रके ढूंढिवेको पठावेंगे या भांति कहकर राजा जनकने अपनी स्त्रीको संतोष उपजाय दशरथके पास लेख भेजा सो दशरथ लेख बांच महाशोकवंत भया, राजा दशरथ अर जनक दोनोंने पृथ्वीमें बालकको तलाश किया परन्तु कहीं भी देखा नाहीं तब महाकष्टकर शोकको दाब बैठ रहे ऐसा कोई पुरुष अथवा स्त्री नहीं जो इस बालकके गए आंसुओंकर भरे नेत्र न भया होय सब ही शोकके वश होय रुदन करते भए।

अथानन्तर प्रभामण्डलके गएका शोक भुलावनेका महामनोहर जानकी बाल लीलकर सर्व बंधु-लोकको आनन्द उपजावती भई। महाहर्षको प्राप्त भई जो स्त्रीजन तिनकी गोदमें तिष्ठती अपने शरीर की कांतिकर दशों दिशाको प्रकाशरूप करती वृद्धिको प्राप्त भई। कैसी है जानकी कमल सारिखे हैं नेत्र जाके अर महासुकंठ प्रसन्न वदन मानो पद्मद्रहके कमलके निवाससे साक्षात् श्रीदेवी ही आई है, याके शरीररूप क्षेत्रमें गुण रूप धान्य निपजते भए ज्यों २ शरीर बढा त्यों त्यों गुण बढे समस्त लोकोंको सुखदाता अत्यन्त मनोज्ञ सुन्दर लक्षणोंकर संयुक्त है अंग जाका, सीता कहिए भूमि ता समान क्षमाकी धरणहारी तातैं जगतमें सीता कहाई, बदनकर जीता है चंद्रमा जाने, पल्लव समान है कोमल आरक्त हस्त जाके, महाश्याम महासुन्दर इंद्रनील माणि समान है केशोंके समूह जाके, अर जीती है मदकी भरी हंसनीकी चाल जाने अर सुंदर है भौं जाकी अर मौलश्रीके पुष्प समान, मुखकी सुगंध, गुंजार करे हैं भ्रमर जापर, अति कोमल है पुष्पमाला समान भुजा जाकी अर केहरी समान है कटि जाकी अर महा श्रेष्ठ रसका भरा जो केलेका थंभ ता समान है जंघा जाकी, स्थल कमल समान महामनोहर हैं चरण जाके, अर अतिसुन्दर है कुचयुग्म जाका, अति शोभायमान है रूप जाका, महाश्रेष्ठ मंदिरके आंगन में महारमणीक सातसै कन्याओंके समूहमें शास्त्रोक्त क्रीडा करै, जो कदाचित् इंद्रकी पटराणी शची अथवा चक्रवर्तीकी पटराणी सुभद्रा याके अंगकी शोभाको किंचित्मात्र भी धरें तो वे अतिमनोज्ञरूप भासे ऐसी यह सीता सबानितैं सुन्दर है, याको रूप गुणयुक्त देख राजा जनकने विचारा, जैसे रति कामदेव हीको योग्य है तैसे यह कन्या सर्व विज्ञानयुक्त दशरथके बडे पुत्र जो राम तिन हीके योग्य है, सूर्यकी किरणके योगसे कमलकी शोभा प्रकट होय है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सीता प्रभामण्डलका जन्म कथा नाम वर्णन करनेवाला छब्बीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २६ ॥

अथानंतर राजा श्रेणिक यह कथा सुनकर गौतमस्वामीको पूछता भया हे प्रभो ! जनकने रामका कहा महात्म्य देखा जो अपनी पुत्री देनी विचारी तब गणधर चित्तको आनंदकारी वचन कहते भए। हे राजन् ! महा पुण्याधिकारी जो श्रीरामचन्द्र तिनका सुयश सुन, जा कारणतें जनक महा बुद्धिमानने रामको अपनी कन्या देनी विचारी । वैताड्यपर्वतके दक्षिण भागमें अर कैलाश पर्वतके उत्तर भागमें अनेक अंतर देश बसै हैं तिनमें एक अर्धबवर देश असंयमी जीवोंका है जहां महा मूढ जन निर्दई म्लेच्छ लोकों कर भरा ता विषै एक मयूरमाला नामा नगर कालके नगर समान महा भयानक, तहां अंतरगत नामा म्लेच्छ राज्य करे सो महा पापी दुष्टोंका नायक महा निर्दई बडी सेनासे नानाप्रकारके आयुधोंकर मण्डित सकल म्लेच्छ संग लेय आर्य देश उजाडनेको आया सो अनेक देश उजाडे । कैसे हैं म्लेच्छ ? करुणाभाव रहित प्रचंड हैं चित्त जिनके अर अत्यंत है दौड जिनकी सो जनक राजाका देश उजाडनेको उद्यमी भए जैसे टिड्डीदल आवै तैसे म्लेच्छोंके दल आए सबको उपद्रव करण लगे तब राजा जनकने अयोध्याको शीघ्र ही मनुष्य पठाए, म्लेच्छके आवनेके सब समाचार राजा दशरथको लिखे सो जनकके जन शीघ्र ही जाय सकल वृत्तांत दशरथसों कहते भए—हे देव ! जनक वीनती करी है परचक्र भीलोंका आया सो सब पृथिवी उजाडै है अनेक आर्य देश विध्वंस किये ते पापी प्रजाको एक वर्ण किया चाहे हैं सो प्रजा नष्ट भई तब हमारे जीनेकर कहा, अब हमको कहा कर्तव्य है ? उनसे लडाई करना अथवा कोई गढ पकड तिष्ठें लोगोंको गढमें राखें कालिंद्रीभागा नदीकी तरफ विषम म्लेच्छ हैं कहां जावें अथवा विपुलाचलकी तरफ जावें अथवा सर्व सेनासहित कुंजागिरिकी ओर जावें पर सेना महा भयानक आवै है साधु श्रावक सर्वलोक अति विह्वल हैं ते पापी गौ आदि सब जीवोंके भक्षक हैं सो जो आप आज्ञा देहु सो करें यह राज्य भी तिहारा और पृथिवी भी तिहारी, यहांकी प्रतिपालना सब तुमको कर्तव्य है,

प्रजाकी रक्षा किये धर्मकी रक्षा होय है, श्रावक लोक भावरहित भगवानकी पूजा करै हैं, नानाप्रकारके व्रत धरै हैं, दान करै हैं, शील पालै हैं, सामायिक करै हैं पोशा परिक्रमणा करे हैं, भगवानके बडे बडे चैत्यालयोंमें महाउत्सव होय है, विधिपूर्वक अनेक प्रकार महापूजा होय है अभिषेक होय है, विवेकी लोक प्रभावान करे हैं अर साधु दश लक्षण धर्मकर युक्त आत्मध्यानमें आरूढ मोक्षका साधन तप करे हैं सो प्रजाके नष्ट भए साधु अर श्रावकका धर्म लुपै है अर प्रजाके होते धर्म अर्थ काम मोक्ष सब सधें हैं जो राजा परचक्रतें पृथिवीकी प्रतिपालना करै सो प्रशंसाके योग्य है, राजाके प्रजाकी रक्षातें या लोक परलोकविषै कल्याणकी सिद्धि होय है प्रजा विना राजा नहीं अर राजा विना प्रजा नहीं, जीवदयामय धर्मका जो पालन करे सो यह लोक परलोकमें सुखी होय है। धर्म अर्थ काम मोक्षकी प्रवृत्ति लोगोंके राजाकी रक्षासे होय है, अन्यथा कैसे होय ? राजाके भुजबलकी छाया पायकर प्रजा सुखसे रहै है जाके देशमें धर्मात्मा धर्म सेवन करै हैं दान तप शील पूजादिक करे हैं सो प्रजाकी रक्षाके योगसे छठा अंश राजाको प्राप्त होय है यह सर्व वृत्तांत राजा दशरथ सुनकर आप चलनेको उद्यमी भए अर श्रीरामको बुलाय राज्य देना विचारा वादित्रोंके शब्द होते भए तब मंत्री आए अर सब सेवक आए हाथी घोडे रथ पयादे सब आय ठाढे भए जलके भरे स्वर्णमयी कलश स्नानके निमित्त सेवक लोग भरलाए अर शस्त्र बांध कर बडे बडे सामंत लोक आए अर नृत्यकारिणी नृत्य करती भई अर राजलोककी स्त्री जन नानाप्रकारके वस्त्र आभूषण पटनमें ले ले आईं। यह राजाभिषेकका आडंबर देखकर राम दशरथसे पूछते भये कि हे प्रभो! यह कहा है तब दशरथने कही—हे पुत्र ! तुम या पृथिवीकी प्रतिपालना करो मैं प्रजाके हित निमित्त शत्रुवोंके समूहसे लडने जाऊं हूं वे शत्रु देवोंकर भी दुर्जय हैं तब कमलसारिखे नेत्र हैं जिनके ऐसे श्रीराम कहते भए—हे तात ! ऐसे रंकन पर एता परिश्रम कहा ! ते आपके जायवे लायक नहीं वे

पशुसमान दुरात्मा जिनसे संभाषण करना भी उचित नाहीं तिनके सन्मुख युद्धकी अभिलाषाकर आप कहां पधारें। उन्दरु (चूहा) के उपद्रव कर हस्ती क्रोध न करे अर रुईके भस्म करनेके अर्थ अग्नि कहा परिश्रम करै तिनपर जानेकी हमको आज्ञा करो यही उचित है। ये रामके वचन सुन दशरथ अति हर्षित भये तब रामको उरसे लगाय कर कहते भए। हे पद्म! कमलसमान हैं नेत्र जाके ऐसे तुम बालक सुकुमार अंग कैसे उन दुष्टोंको जीतोगे यह बात मेरे मनमें न आवै। तब राम कहते भये हे तात! कहा तत्कालका उपजा अग्निका कणका मात्र भी विस्तीर्ण वनको भस्म न करे, करे ही करे, छोटी बडी अवस्थापर कहा प्रयोजन अर जैसे अकेला उगता ही बाल सूर्य घोर अंधकारके समूहको हरे ही हरै तैसे हम बालक ही तिन दुष्टोंको जीतैं ही जीतैं। ये वचन रामके सुनकर राजा दशरथ अति प्रसन्न भए, रोमांच होय आए अर बालक पुत्रके भेजनेका कछु इक विषाद भी उपजा नेत्र सजल होय गए। राजा मनमें विचारै है जो महा पराक्रमी त्यागादि व्रतके धारणहारे क्षत्री तिनकी यही रीति है जो प्रजाकी रक्षाके निमित्त अपने प्राण भी तजनेका उद्यम करें अथवा आयुके क्षय विना मरण नाहीं। यद्यपि गहन रणमें जाय तो भी न मरै ऐसा चिंतवन करता जो राजा दशरथ ताके चरणकमलयुगको नमस्कारकर राम लक्ष्मण बाहिर निसरे। सर्व शास्त्र अर शस्त्र विद्यामें प्रवीण सर्व लक्षणोंकर पूर्ण सबको प्रिय है दर्शन जिनका, चतुरंग सेनाकर मण्डित, विभूतिकर पूर्ण अपने तेजकर देदीप्यमान, दोनों भाई राम लक्ष्मण रथमें आरूढ होय जनककी मदत चले सो इनके जायबे पहिले जनक अर कनक दोनों भाई, पर सेनाका दो योजन अंतर जान युद्ध करणेको चढे हुते सो जनक कनकके महारथी योधा शत्रुवोंके शब्द न सहते संते म्लेच्छोंके समूहमें जैसे मेघकी घटामें सूर्यादि ग्रह प्रवेश करें तैसे यह थे सो म्लेच्छोंके अर सामंतोंके महायुद्ध भया जाके देखे अर सुने रोमांच होय आवें। कैसा संग्राम भया बडे शस्त्रनका है प्रहार जहां, दोनों सेनाके लोक

व्याकुल भए, कनकको म्लेच्छका दवाव भया तब जनक भाईकी मदतके निमित्त अतिक्रोधायमान होय दुर्निवार हाथियोंकी घटा प्रेरता भया सो वे बरबर देशके म्लेच्छ महा भयानक जनकको भी दबावते भये ताही समय राम लक्ष्मण जाय पहुंचे, अति अपार महागहन म्लेच्छकी सेना रामचन्द्रने देखी, सो श्रीरामचन्द्रका उज्ज्वल छत्र देख कर शत्रुवोंकी सेना कंपायमान भई, जैसे पूर्णमासीके चन्द्रमाका उदय देखकर अंधकारका समूह चलायमान होय, म्लेच्छोंके वाणोंकर जनकका वषतर टूट गया हुता और जनक खेदखिन्न भया हुता सो रामने धीर्य बंधाया जैसे संसारी जीव कर्मोंके उदय कर दुःखी होय सो धर्मके प्रभाव कर दुखोंसे छूट सुखी होंय। तैसे जनक रामके प्रभावकर सुखी भया, चंचल तुरंगनि कर युक्त जो रथ तामें आरूढ जो राघव महाउद्योत रूप है शरीर जिनका वषतर पहिरे हार अर कुंडल कर मंडित धनुष चढाए और वाण हाथमें सिंहके चिह्नकी है ध्वजा जिनके अर जिन पर चमर ढुरे हैं और महामनोहर उज्ज्वल छत्र सिर पर फिरे हैं पृथिवीके रक्षक धीर वीर है मन जिनका ऐसे श्रीराम लोकके वल्लभ प्रजाके पालक शत्रुवोंकी विस्तीर्ण सेनामें प्रवेश करते भए। सुभटनिके समूह कर संयुक्त जैसे सूर्य किरणोंके समूह कर सोहै तैसे शोभते भए जैसे माता हाथी कदलीवनमें बैठा केलोंके समूहका विध्वंस करे तैसे शत्रुवोंकी सेनाका भंग किया। जनक अर कनक दोनों भाई बचाए अर लक्ष्मण जैसे मेघ बरसें तैसे वाणोंकी वर्षा करता भया, तीक्ष्ण सामान्य चक्र अर शक्ति कनक त्रिशूल कुठार करौत इत्यादि शस्त्रोंके समूह लक्ष्मणके भुजावों कर चले, तिनकर अनेक म्लेच्छ मुवे जैसे फरसीनकर वृक्ष कटें, ते भील पारधी महाम्लेच्छ लक्ष्मणके वाणोंकर विदारे गये हैं उरस्थल जिनके, कटगई हैं भुजा अर ग्रीवा जिनकी, हजारां पृथिवीमें पडे, तब वे पृथिवीके कंटक तिनकी सेना लक्ष्मण आगे भागी, लक्ष्मण सिंहसमान दुर्निवार ताहि देखकर जे म्लेच्छोंमें शार्दूल समान हुते ते हू अतिक्षोभको प्राप्त भए, महावादित्रोंके शब्द करते

अर मुखसे भयानक शब्द बोलते अर धनुषबाण खड्ग चक्रादि अनेक शस्त्रोंको धरे अर रक्त वस्त्र पहिरे, खंजर जिनके हाथमें, नाना वर्णका है अंग जिनका, कैयक काजल समान श्याम, कैयक कर्दम समान, कैयक ताम्रवर्ण, वृक्षोंके बक्कल पहिरे अर नानाप्रकारके गेरुवादि रंग तिनकर लिप्त हैं अंग जिनके अर नानाप्रकारके वृक्षोंकी मंजरी तिनके हैं छोगा सिरपर जिनके, अर कौडी सारिखे हैं दांत जिनके अर विस्तीर्ण हैं उदर जिनके ऐसे भासैं मानों कुटक जातिके वृक्ष ही फूले हैं अर कैयक भील भयानक आयुधोंको धरे कठोर हैं जंघा जिनकी, भारी भुजावोंके धरणहारे असुरकुमार देवों सारिखे उनमत्त, महानिर्दई पशुमांसके भक्षक, महादृढ जीव हिंसाविषै उद्यमी, जन्महीसे लेकर पापोंके करणहारे, तत्काल खोटे आरम्भनके करणहारे अर सूकर भैंस व्याघ्र ल्याली इत्यादि जीवोंके चिह्न हैं जिनकी, ध्वजावोंमें नाना प्रकारके जे बाहन तिन पर चढे, पत्रोंके हैं छत्र जिनके नानाप्रकारके युद्धके करणहारे अति दौडके करण हारे महा प्रचंड तुरंग समान चंचल ते भील मेघमाला समान लक्ष्मणरूप पर्वतपर अपने स्वामीरूप पवनके प्रेरे बाण वृष्टि करते भए । तब लक्ष्मण तिनके निपात करनेको उद्यमी तिनपर दौडे, महाशीघ्र है वेग जिनका जैसे महा गजेंद्र वृक्षोंके समूह पर दौडे सो लक्ष्मणके तेज प्रतापकर वे पापी भागे सो परस्पर पगों कर मसले गए तब तिनका अधिपति अन्तरगत अपनी सेनाको धीर्य बंधाय सकल सेना सहित आप लक्ष्मणके सन्मुख आया महाभयंकर युद्ध किया, लक्ष्मणको रथराहित किया, तब श्रीरामचन्द्रने अपना रथ चलाया, पवन समान है वेग जाका, लक्ष्मणके समीप आए, लक्ष्मणको दूजे रथ पर चढाया अर आप जैसे अग्नि वनको भस्म करै तैसे तिनकी अपार सेनाको बाण रूप अग्नि कर भस्म करते भए कैयक तो बाणनिकरि मारे अर कैयक कनकनामा शस्त्रसे विध्वंसे कैयक तोमरनामा आयुधसे हते, कैयक सामान्य चक्रनामा शस्त्रसे निपात किए, वह म्लेच्छोंकी सेना महाभयंकर प्रत्येक दिशाको जाती रही, छत्र

चमर ध्वजा धनुष आदि शस्त्र डार डार भाजे महा पुण्याधिकारी जो राम ताने एक निमिषमें म्लेच्छोंका निराकरण किया जैसे महामुनि क्षणमात्रमें सर्व कषायोंका निपात करें तैसे उसने किया वह पापी अंतरगत अपार सेना रूप समुद्रकर आया हुता सो भयखाय दस घोडोंके असवारोंसे भागा तब श्रीरामने आज्ञा करी ये नपुंसक युद्धसे पराङ्गमुख होय भागे अब इनके मारने कर कहा ? तब लक्ष्मण भाईसहित पाछे बाहुडे । वे म्लेच्छ भयसे व्याकुल होय सह्याचल विन्ध्याचलके वनोंमें छिप गए । श्रीराचन्द्रके भयसे पशु हिंसादिक दुष्ट कर्मको तज वन फलोंका आहार करें जैसे गरुडतैं सर्प डरै तैसे श्रीरामसे डरते भए । लक्ष्मणसहित श्रीरामने शांत है स्वरूप जिनका, राजा जनकको बहुत प्रसन्न कर विदा किया अर आप पिताके समीप अयोध्याको चले सर्व पृथिवीके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए । यह सबको परम आनंद उपजा परमहर्षवान रोमांच होय आए । रामके प्रभावसे सब पृथ्वी विभूतिसे शोभायमान भई जैसे चतुर्थकालके आदि ऋषभदेवके समय सम्पदासे शोभायमान भई हुती धर्म अर्थ कामकर युक्त जे पुरुष तिनसे जगत ऐसा भासता भया जैसे बर्फके अवरोधकर वर्जित जे नक्षत्र तिनसे आकाश शोभै । गौतमस्वामी कहे हैं हे राजा श्रेणिक ! ऐसा रामका महात्म्य देखकर जनकने अपनी पुत्री सीताको रामको देनी विचारी बहुत कहनेकरि कहा ? जीवोंके संयोग अथवा वियोगका कारण भाव एक कर्मका उदय ही है सो वह श्रीराम श्रेष्ठ पुरुष महासौभाग्यवंत अतिप्रतापी औरनमें न पाइये ऐसे गुणोंकर पृथिवीमें प्रसिद्ध होता भया जैसे किरणोंके समूहकर सूर्य महिमाको प्राप्त होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषै म्लेच्छनिकी हार, रामकी जीतका कथन वर्णन करनेवाला सताइसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २७॥

अथानन्तर ऐसे पराक्रमकर पूर्ण जो राम तिनकी कथा विना नारद एकक्षण भी न रहे सदा राम कथा करवो ही करे। कैसा है नारद रामके यश सुनकर उपजा है परम आश्चर्य जाको बहुरि नारदने सुनी जो जनकने रामको जानकी देनी विचारी कैसी है जानकी सर्व पृथिवीविषे प्रकट है महिमा जाकी नारद मनमें चिंतवता भया। एकबार सीताको देखूं जो कैसी है, कैसे लक्षणोंकर शोभायमान है जो जनकने रामको देनी करी है सो नारद शीलसंयुक्त है हृदय जाका, सीताके देखनेको सीताके घर आया सो सीता दर्पणमें मुख देखती हुती सो नारदकी जटा दर्पणमें भासी सो कन्या भयकर व्याकुल भई मन में चितवती भई हाय माता यह कौन है भयकर कम्पायमान होय महलके भीतर गई। नारद भी लारही महलमें जाने लगे तब द्वारपालीने रोका सो नारदके अर द्वारपालीके कलह हुआ कलहके शब्द सुन खड्गके अर धनुषके धारक सामंत दौडे ही गए कहते भए, पकड लो पकड लो यह कौन है। ऐसे तिन शस्त्र धारियोंके शब्द सुनकर नारद डरा, आकाशविषे गमनकर कैलाश पर्वत गया तहां, तिष्ठकर चितवता भया।

जो मैं महाकष्टको प्राप्त भया सो मुशकिलसे बचा नवां जन्म पाया जैसे पक्षी दावानलसे बाहिर निकसे तैसे मैं वहांसे निकसा। सो धीरे २ नारदकी कांपनी मिटी अर ललाटके पसेव पूंछ केश विखर गए हुते ते समारकर बांधे, कांपे हैं हाथ जिसके, ज्यों ज्यों वह वात याद आवै त्यों त्यों निश्वास नाषे महाक्रोधायमान होय मस्तक हलाएं ऐसे विचारता भया कि देखो कन्याकी दुष्टता मैं अदुष्टचित्त सरल स्वभाव रामके अनुरागते ताके देखनेको गया हुता सो मृत्यु समान अवस्थाको प्राप्त भया यम समान दुष्ट मनुष्य मोहि पकडनेको आए सो भली भई जो बचा पकडा न गया। अब वह पापिनी मो आगे कहां बचे जहां जहां जाय तहां ही उसे कष्टमें नाखूं मैं विना बजाये वादित्र नाचूं सो जब वादित्र बाजे

तब कैसे टरूं ऐसा विचारकर शीघ्र ही वैताढ्यकी दक्षिणश्रेणीविषै जो रथनूपुर नगर वहां गया महा
सुन्दर जो सीताका रूप सो चित्रपटविषै लिख लेगया, कैसा है सीताका रूप ? महासुंदर है ऐसा लिखा
मानो प्रत्यक्ष ही है सो उपवनविषै भामंडल चंद्रगतिका पुत्र अनेक कुमारोंसहित क्रीडा करनेको आया
हुता सो चित्रपट उसके समीप डार आप छिप रहा सो भामण्डलने यह तो न जान्या कि यह मेरी
बहिनका चित्रपट है चित्रपट देख मोहित चित्त भया लज्जा अर शास्त्रज्ञान अर विचार सब भूल गया
लम्बे २ निश्वास नाषे होठ सूक गए गात शिथिल हो गया रात्रि अर दिवस निद्रा न आवे अनेक मनो-
हर उपचार कराए तो भी इसे सुख नाहीं, सुगंध पुष्प अर सुंदर आहार याहि विष समान लगें। शीतल
जलसे छांटिये तौ भी संताप न जाय कबहूं मौन पकड रहे कबहूं हंसे कबहूं विकथा बके कबहूं उठ खडा रहे
वृथा उठ चले बहुरि पाछा आवे ऐसी चेष्टा करे मानो याहि भूत लगा है तब बडे बडे बुद्धिमान याहि
कामातुर जान परस्पर वात करते भए जो यह कन्याका रूप किसीने चित्रपटविषै लिखकर इसके ढिग
आय डारा सो यह विक्षिप्त होय गया कदाचित् यह चेष्टा नारदने ही करी होय तब नारदने अपने उपाय
कर कुमारको व्याकुल जान लोगनकी वात सुन कुमारके बंधूनिको दर्शन दिया तब तिनने बहुत आदर
कर पूछा हे देव ! कहो यह कौनकी कन्याका रूप है। तुमने कहां देखी यह कोऊ स्वर्गविषै देवांगनाका
रूप है अथवा नागकुमारीका रूप है या पृथ्वीविषै आई होवेगी सो तुमने देखी तब नारद माथा हलाय
कर बोला कि एक मिथिला नामा नगरी है वहां महासुंदर राजा इंद्रकेतुका पुत्र जनक राज्य करे है
ताके विदेहा राणी है सो राजाको अति प्रिय है। तिनकी पुत्री सीताका यह रूप है ऐसा कहकर फिर
नारद भामण्डलसे कहते भए हे कुमार ! तू विषाद मत कर तू विद्याधर राजाका पुत्र है तोहि यह कन्या
दुर्लभ नाहीं सुलभ ही है। अर तू रूपमात्रहीसे क्या अनुरागी भया। यामें बहुत गुण हैं याके हाव भाव

विलासादिक कौन वर्णन कर सके अर यही देख तेरा चित्त वशीभूत हुआ सो क्या आश्चर्य है । जिसे देखे बडे पुरुषोंका भी चित्त मोहित हो जाय । मैं तो यह आकारमात्र पटमें लिखा है ताकी लावण्यता वाहीविषै है लिखवेमें कहां आवै नवयौवन रूप जलकर भरा जो कांतिरूप समुद्र ताकी लहरोंविषै वह स्तनरूप कुंभोंकर तिरे है अर ऐसी स्त्री तोय टार और कौनको योग्य, तेरा अर वाका संगम योग्य है या भांति कहकर भामंडलको अति स्नेह उपजाया अर आप नारद आकाशविषै विहार किया भामंडल कामके बाणकर वेध्या अपने चित्तमें विचारता भया कि यदि यह स्त्री रत्न शीघ्र ही मुझे न मिले तो मेरा जीवना नाहीं देखो यह आश्चर्य है वह सुंदरी परमकांतिकी धरणहारी मेरे हृदयमें तिष्ठती हुई अग्निकी ज्वाला समान हृदयको आताप करे है सूर्य है सो तो वाह्य शरीरको आताप करे है अर काम है सो अन्तर वाह्य दाह उपजावे है । सूर्यके आताप निवारवेको तो अनेक उपाय हैं परंतु कामके दाह निवारवेका उपाय नाहीं अब मुझे दो अवस्था आय बनी हैं कै तो वाका संयोग होय अथवा कामके बाणोंकर मेरा मरण होयगा निरन्तर ऐसा विचारकरि भामंडल विह्वल हो गया सो भोजन तथा शयन सब भूल गया, ना महलविषै ना उपवनविषै याह्वि काहू ठौर साता नहीं, यह सब वृत्तान्त कुमारके व्याकुलताका कारण नारदकृत कुमारकी माता जानकर कुमारके पितासे कहती भई—हे नाथ ! अनर्थका मूल जो नारद ताने एक अत्यन्त रूपवती स्त्रीका चित्रपट लायकर कुमारको दिखाया सो कुमार चित्रपटको देखकर अति विभ्रम चित्त हो गया सो धीर्य नहीं धरे है लज्जारहित होय गया है बारंबार चित्रपटको निरखे है अर सीता ऐसे शब्द उच्चारण करै है अर नानाप्रकारकी अज्ञान चेष्टा करे है मानो याहि वाय लगी है तातैं तुम शीघ्र ही साता उपजावनेका उपाय विचारो वह भोजनादिकते पराङ्मुख होय गया है सो वाके प्राण न छूटे ता पहिले ही यत्न करो । तब यह वार्ता चंद्रगति सुनकर अति व्याकुल

भया अपनी स्त्रीसहित आयकर पुत्रको ऐसे कहता भया हे पुत्र ! तू स्थिरचित्त हो अर भोजनादि सर्व क्रिया जैसे पूर्वे करे था तैसे कर जो कन्या तेरे मनमें बसी है सो तुझे शीघ्र ही परणाऊंगा, इस भांति कहकर पुत्रको शांतता उपजाय राजा चंद्रगति एकांतविषै हर्ष विषाद अर आश्चर्यको धरता संता अपनी स्त्रीसे कहता भया हे प्रिये ! विद्याधरोंकी कन्या अतिरूपवंती अनुपम उनको तजकर भूमिगोचरियोंका संबंध हमको कहां उचित, अर भूमिगोचरियोंके घर हम कैसे जावेंगे अर जो कदाचित् हम जाय प्रार्थना करें अर वह न दें तो हमारे मुखकी प्रभा कहां रहेगी, तातैं कोई उपायकर कन्याके पिताको यहां शीघ्र ही ल्यावें ऐसा उपाय नाहीं, तब भामंडलकी माता कहती भई हे नाथ ! युक्त अथवा अयुक्त तुम ही जानो तथापि ये तुम्हारे वचन मुझे प्रिय लागे तब एक चपलवेग नामा विद्याधर अपना सेवक आदर सहित बुलायकर राजा सकल वृत्तांत वाके कानमें कहा अर नीके समझाया सो चपलवेग राजा की आज्ञा पाय बहुत हर्षित होय शीघ्र ही मिथिला नगरीको चला, जैसे प्रसन्न भया तरुण हंस सुगंधकी भरी जो कमलनी ताकी ओर जाय, यह शीघ्र ही मिथिला नगरी जाय पहुंचा आकाशतें उतरकर अश्व का भेष धर गौ महिषादि पशुनिको त्रास उपजावता भया, राजाके मंडलमें उपद्रव किया तब लोगोंकी पुकार आई सो राजा सुनकर नगरके बाहिर निकसा प्रमोद उद्वेग अर कौतुकका भरा राजा अश्वको देखता भया। कैसा है अश्व ? नवयौवन है अर उछलता संता अति तेजको धरे मन समान है वेग जाका, सुंदर हैं लक्षण जाके, अर प्रदाक्षिणारूप महा आवर्तको धरे है मनोहर है मुख जाका, अर महाबलवान खुरोंके अग्रभागकर मानों मृदंग ही बजावै है जापर कोई चढ न सके अर नासिकाका शब्द करता संता अति शोभायमान है ऐसे अश्वको देखकर राजा हर्षित होय बारंबार लोगनिसूं कहता भया यह काहू का अश्व बंधन तुडाय आया है तब पंडितोंके समूह राजासे प्रिय वचन कहते भए—हे राजन् ! या तुरंग

के समान कोई तुरंग नाहीं, औरोंकी तो क्या वात ऐसा अश्व राजाके भी दुर्लभ, आपके भी देखनेमें ऐसा अश्व न आया होयगा। सूर्यके रथके तुरंगनिकी अधिक उपमा सुनिये है सो या समान तो ते भी न होयेंगे कोई दैवके योगते आपके निकट ऐसा अश्व आया है सो आप याहि अंगीकार करो। आप महापुण्याधिकारी हो, तब राजाने अश्वको अंगीकार किया। अश्वशालामें ल्याय सुंदर डोरीते बांधा अर भांति भांतिकी योग सामग्रीकर याके यत्न किये एक मास याको यहां हुआ एक दिन सेवकने आय राजासूं नमस्कारकर विनती कीनी। हे नाथ एक वनका मतंग गज आया है सो उपद्रव करे है तब राजा बडे गजपर असवार होय वा हाथीकी ओर गए वह सेवक जिसने हाथीका वृत्तांत आय कहा था ताके कहे मार्ग कर राजाने महावनमें प्रवेश किया सो सरोवरके तट हाथी खडा देखा अर चाकरोंसे कहा जो एक तेज तुरंग ल्यावो तब मायामई अश्वको तत्काल ले गए। सुंदर है शरीर जाका राजा उसपर चढे सो वह आकाशमें राजाको ले उडा तब सब परिजन पुरजन हाहाकार कर शोकवंत भए आश्चर्यकर व्याप्त हुवा है मन जिनका तत्काल पाछे नगरमें गए॥

अथानन्तर वह अश्वके रूपका धारक विद्याधर मन समान है वेग जाका अनेक नदी पहाड वन उपवन नगर ग्राम देश उलंघ कर राजाको रथनूपुर लेगया। जब नगर निकट रहा तब एक वृक्षके नीचे आय निकसा सो राजा जनक वृक्षकी डाली पकड लूंब रहा। वह तुरंग नगरमें आया राजा वृक्षते उतर विश्रामकर आश्चर्य सहित आगे गया तहां एक स्वर्णमई ऊंचा कोट देखा अर दरवाजा रत्नमई तोरणों कर शोभायमान अर महासुंदर उपवन देखा ताविषैं नाना जातिके वृक्ष अर बेल फल फूलनिकर संपूर्ण देखे जिनपर नानाप्रकारके पक्षी शब्द करे हैं अर जैसे सांझके बादले होवें तैसे नानारंगके अनेक महिल देखे मानों ये महिल जिनमंदिरकी सेवा ही करे हैं तब राजा खड्गको दाहिने हाथमें मेल सिंह समान अति निशंक क्षत्री

व्रतमें प्रवीण दरवाजेमें गया दरवाजेके भीतर नानाजातिके फूलनिकी बाडी अर रत्न स्वर्णके सिवाण जाके ऐसी वापिका स्फटिकमणि समान उज्ज्वल है जल जिसका अर महा सुगन्ध मनोग्य विस्तीर्ण कुंद जातिके फूलोंके मंडप देखे। चलायमान हैं पल्लवोंके समूह जिनके अर संगीत करे हैं भ्रमरोंके समूह जिन-पर अर माधवी लतानिके समूह फूले देखे महा सुन्दर अर आगे प्रसन्न नेत्रोंकर भगवानका मंदिर देखा कैसा है मन्दिर मोतिनिकी झालरिनिकर शोभित रत्ननिके झरोखनि कर संयुक्त स्वर्ण मई हजारां महा-स्तम्भ तिनकर मनोहर अर जहां नानाप्रकारके चित्राम सुमेरुके शिखर समान ऊंचे शिखर अर बज्रमणि जे हीरा तिनकर बेध्या है पीठ (फरश) जाका ऐसे जिनमंदिरको देखकर जनक विचारता भया कि यह इन्द्रका मन्दिर है अथवा अहिमिन्द्रका मन्दिर है ऊर्धलोकते आया है अथवा नागेंद्रका भवन पातालते आया है अथवा काहू कारणतें सूर्यकी किरणनिका समूह पृथिवीविषै एकत्र भया है अहो उस मित्र विद्याधरने मेरा बडा उपकार किया जो मोहि यहां लेआया ऐसा स्थानक अबतक देखा नाहीं। भला मन्दिर देखा ऐसा चिंतवनकर महामनोहर जो जिनमंदिर तामें बैठि फूल गया है मुखकमल जाका श्रीजिनराजका दर्शन किया कैसे हैं श्रीजिनराज? स्वर्ण समान है वर्ण जिनका अर पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है सुंदर मुख जिनका अर पद्मासन विराजमान अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त कनकमई कमलोंकर पूजित अर नानाप्रकारके रत्ननिकर जडित जे छत्र ते हैं सिरपर जिनके अर ऊंचे सिंहासनपर तिष्ठे हैं तब जनक हाथ जोड सीस निवाय प्रणाम करता भया हर्षकर रोमांच होय आए भक्तिके अनुरागकर मूर्छाको प्राप्त भया क्षणएकमें सचेत होय भगवानकी स्तुति करने लगा अति विश्रामको पाय परम आश्चर्यको धरता संता जनक चैत्यालयविषै तिष्ठे है। वह चपलवेग विद्याधर जो अश्वका रूपकर इनको ले आया हुता सो अश्वका रूप दूर कर राजा चंद्रगतिके पास गया अर नमस्कार कर कहता भया। मैं जनकको ले आया मनोग्य वनमें भगवानके चैत्यालयविषै

तिष्ठे है, तब राजा सुनकर बहुत हर्षको प्राप्त भया थोडेसे समीपी लोक लार लेय राजा चन्द्रगति उज्ज्वल है मन जिसका पूजाकी सामग्री लेय मनोरथ समान रथ पर आरूढ होय चैत्यालयमें आया सो राजा जनक चन्द्रगतिकी सेनाको देख अर अनेक बादित्रोंका नाद सुनकर कछु इक शंकायमान भया। केयक विद्याधर मायामई सिंहोंपर चढे हैं कैएक मायामई हाथीयों पर चढे हैं कैएक घोडावों पर चढे कैएक हंसो पर चढे तिनके वीच राजा चन्द्रगति है सो देख कर जनक विचारता भया जो विजयार्घ पर्वत पर विद्याधर वसे हैं ऐसी मैं सुनता सो ये विद्याधर हैं विद्याधरोंकी सेनाके मध्य यह विद्याधरोंका अधिपति कोई परम दीप्ति कर शोभे है ऐसा चिंतवन जनक करे है ताही समय वह चन्द्रगति राजा दैत्यजातिके विद्याधरोंका स्वामी चैत्यालयविषै आय प्राप्त भया। महाहर्षवंत नम्रीभूत है शरीर जाका तब जनक ताको देख कर कछुइक भयवान होय भगवानके सिंहासनके नीचे बैठ रहा, अर वह राजा चन्द्रगति भक्ति कर भगवानके चैत्यालयविषै जाय प्रणाम कर विधिपूर्वक महा उत्तम पूजा करी अर परम स्तुति करता भया बहुरि सुन्दर हैं स्वर जिसके ऐसी बीणा हाथमें लेकर महाभावना सहित भगवानके गुण गावता भया सो कैसे गावे है सो सुनो, अहो भव्य जीव हो जिनेंद्रको आराधहु कैसे हैं जिनेंद्रदेव तीनलोकके जीवोंको वर दाता अर अविनाशी है सुख जिनके अर देवनिमें श्रेष्ठ जे इन्द्रादिक तिनकर नमस्कार करने योग्य हैं। कैसे हैं वे इन्द्रादिक महा उत्कृष्ट जो पूजाका विधान ताविषै लगाया है चित्त जिन्होंने अहो उत्तम जन हो श्रीऋषभदेवको मन वचन काय कर निरंतर भजो कैसे हैं ऋषभदेव महाउत्कृष्ट हैं अर शिवदायक हैं जिनके भजेते जन्म जन्मके किए पाप समस्त विलय होय हैं अहो प्राणी हो जिनवरको नमस्कार करहु कैसे हैं जिनवर महा अतिशय धारक हैं कर्मनिके नाशक हैं अर परमगति जो निर्वाण ताको प्राप्त भए हैं अर सर्व सुरासुर नर विद्याधर उन कर पूजित हैं चरण कमल जिनके अर

क्रोधरूप महावैरीका भंग करनहारे हैं मैं भक्तिरूप भया जिनेंद्रको नमस्कार करूं हूं उत्तम लक्षणकर संयुक्त है देह जिनका अर विनय कर नमस्कार करे हैं सर्व मुनियोंके समूह जिनको ते भगवान नमस्कार मात्र ही से भक्तोंके भय हरे हैं अहो भव्य जीव हो जिनवरको बारंबार प्रणाम करहु वे जिनवर अनुपम गुण को धरे हैं अर अनुपम है काया जिनकी अर हते हैं संसारमई सकल कुकर्म जिनने अर रागादिक रूप जे मल तिनकर रहित महानिर्मल हैं अर ज्ञानावरणादिक रूप जो पट तिनके दूर करनहारे पारकरबेको अति प्रवीण हैं अर अत्यंत पवित्र हैं इसभांति राजा चन्द्रगातिने बीण बजाय भगवानकी स्तुति करी तब भगवानके सिंहासनके नीचेते राजा जनक भय तज कर जिनराजकी स्तुति कर निकसा महाशोभाय- मान तब चन्द्रगति जनकको देख हर्षित भया है मन जिसका सो पूछता भया तुम कौन हो या निर्जन स्थानकविषै भगवानके चैत्यालयविषै कहां ते आए हो तुम नागोंके पति नगेन्द्र हो अथवा विद्याधरोंके अधिपति हो हे मित्र ! तुम्हारा नाम क्या है सो कहो। तब जनक कहता भया हे विद्याधरोंके पति ! मैं मिथिला नगरीसें आया हूं अर मेरा नाम जनक है। मायामई तुरंग मोहि ले आया है जब ये समाचार जनकने कहे तब दोऊ अति प्रीतिकर मिले परस्पर कुशल पूछी एक आसन पर बैठ फिर क्षणएक तिष्ठ कर दोऊ आपसमें विश्वासकों प्राप्त भए तब चन्द्रगति और कथाकर जनकको कहते भए हे महाराज मैं बडा पुण्यवान जो मोहि मिथिला नगरीके पतिका दर्शन भया तुम्हारी पुत्री महा शुभ लक्षणनिकर मण्डित है मैं बहुत लोगनिके मुखसे सुनी है सो मेरे पुत्र भामंडलको देवो तुमसे सम्बन्ध पाय मैं अपना परम उदय मानूंगा तब जनक कहते भए हे विद्याधराधिपति तुम जो कही सो सब योग्य है परंतु मैं मेरी पुत्री राजा दशरथके बडे पुत्र जो श्रीरामचन्द्र तिनको देनी करी है। तब चन्द्रगति बोले काहेते उनको देनी करी है तब जनकने कही जो तुमको सुनिबेको कौतुक है तो सुनो। मेरी मिथिलापुरी रत्नादिक

धनकर अर गौ आदि पशुअन कर पूर्ण सो अर्धबर्वर देशके म्लेच्छ महाभयंकर उन्होंने आय मेरे देशको पीडा करी, धनके समूह लूटने लगे अर देशमें श्रावक अर यतिका धर्म मिटने लगा सो मेरे अर म्लेच्छों के महा युद्ध भया ता समय राम आय मेरी अर मेरे भाईकी सहायता करी वे म्लेच्छ जो देवोंसे भी दुर्जय सो जीते अर रामका छोटा भाई लक्ष्मण इन्द्र समान पराक्रमका धरणहारा है अर बडे भाईका सदा आज्ञाकारी है। महा विनयकर संयुक्त है। वे दोनों भाई आय कर जो म्लेच्छोंकी सेनाको न जीतते तो समस्त पृथिवी म्लेच्छमई हो जाती। वे म्लेच्छ महा अविवेकी शुभक्रियारहित लोकको पीडाकारी महा भयंकर विष समान दारुण उत्पातका स्वरूप ही हैं। सो रामके प्रसाद कर सब भाज गए। पृथिवीका अमंगल मिट गया वे दोनों राजा दशरथके पुत्र महादयालु लोकनिके हितकारी तिनको पायकर राजा दशरथ सुखसे सुरपति समान राज्य करै है। ता दशरथके राजविषै महासंपदावान लोक वसे हैं अर दशरथ महा शूरवीर है। जाके राज्यमें पवनहू काहूका कछु नहीं हर सके तो और कौन हरे। राम लक्ष्मणने मेरा ऐसा उपकार किया तब मोहि ऐसी चिंता उपजी जो मैं इनका कहा प्रति उपकार करूं। रात्रि दिवस मोहि निद्रा न आवती भई। जाने मेरे प्राण राखे, प्रजा राखी, ता राम समान मेरे कौन ? मोते कबहु कछु उनकी सेवा न बनी अर उनने बडा उपकार किया तब मैं विचारता भया।

जो अपना उपकार करे अर उसकी सेवा कछु न बने तो कहा जीतव्य, कृतघ्नका जीतव्य तृण समान है तब मैंने मेरी पुत्री सीता नवयौवन पूर्ण राम योग्य जान रामको देनी विचारी। तब मेरा सोच कछु इक मिटा। मैं चिंतारूप समुद्रमें डूबा हुता सो पुत्री नावरूप भई तातैं मैं सोच समुद्रते निकसा। राम महा तेजस्वी हैं। यह वचन जनकके सुन चंद्रगतिके निकटवर्ती और विद्याधर मलिन मुख होय कहते भए। अहो तुम्हारी बुद्धि शोभायमान नाहीं। तुम भूमिगोचरी अपंडित हो। कहां वे रंक म्लेच्छ अर

कहां उनके जीतवेकी बडाई यामें कहा रामका पराक्रम ? जाकी एती प्रशंसा तुमने म्लेच्छोंके जीतवेकर करी। रामका जो ऐता स्तोत्र किया सो इसमें उलटी निंदा है। अहो तुम्हारी वात सुने हांसी आवै है, जैसे बालकको विषफल ही अमृत भासे है अर दरिद्रीको बपरी (बेर) फल ही नीके लागें अर काक सूके वृक्षविषे प्रीति करे यह स्वभाव ही दुर्निवार है। अब तुम भूमिगोचरियोंका खोटा संबंध तजकर यह विद्याधरोंका इंद्र राजा चंद्रगति तासूं संबंध करो। कहां देवों समान सम्पदाके धरणहारे विद्याधर अर कहां वे रंक भूमिगोचरी सर्वथा अति दुखी, तब जनक बोले क्षीर सागर अत्यन्त विस्तीर्ण है परन्तु तृषा हरता नाहीं अर वापिका थोडे ही मिष्ट जलसे भरी है सो जीवोंकी तृषा हरे है अर अंधकार अत्यंत विस्तीर्ण है ताकर कहा अर दीपक अल्प भी है परन्तु पृथिवीमें प्रकाश करे है। पदार्थनिको प्रकट करे है अर अनेक माते हाथी जो पराक्रम न कर सके सो अकेला केसरी सिंहका बालक करे है ऐसे जब राजा जनकने कहा तब वे सर्व विद्याधर कोपवंत होय अति शब्दकर भूमिगोचरियोंकी निंदा करते भए। हो जनक ! वे भूमिगोचरी विद्याके प्रभावते रहित सदा खेदखिन्न शूरवीरतारहित आपदावान तुम कहा उनकी स्तुति करो हो। पशुनिमें अर उनमें भेद कहा ? तुममें विवेक नाहीं तातैं उनकी कीर्ति करो हो। तब जनक कहते भए हाय ! हाय ! बडा कष्ट है जो मैंने पाप कर्मके उदयकर बडे पुरुषोंकी निंदा सुनी। तीन भवनमें विख्यात जे भगवान ऋषभदेव इंद्रादिक देवोंमें पूजनीक तिनका इक्ष्वाकुवंश लोकमें पवित्र सो कहा तुम्हारे श्रवणमें न आया, तीन लोकके पूज्य श्रीतीर्थंकरदेव अर चक्रवर्ती बलभद्र नारायण सो भूमिगोचरियोंमें उपजे तिनको तुम कौन भांति निंदो हो। अहो विद्याधरो ! पंच कल्याणककी प्राप्ति भूमिगोचरियोंके ही होय है विद्याधरोंमें कदाचित् किसीके तुमने देखी। इक्ष्वाकुवंशमें उपजे बडे २ राजा जो षट् खंड पृथिवीके जीतनहारे तिनके चक्रादि महा रत्न अर बडी ऋद्धिके स्वामी चक्रके धारी इंद्रा-

दिककर गाई है उदार कीर्ति जिनकी, ऐसे गुणोंके सागर कृतकृत्य पुरुष ऋषभदेवके वंशके बडे २ पृथिवीपति या भूमिमें अनेक भए। ताही वंशमें राजा अरण्य बडे राजा भए तिनके राणी सुमंगला ताके दशरथ पुत्र भए जे क्षत्री धर्ममें तत्पर लोकानिकी रक्षा निमित्त अपना प्राण त्याग करते न शंके, जिनकी आज्ञा समस्त लोक सिरपर धरें, जिनकी चार पटराणी मानों चार दिशा ही हैं। सर्व शोभाको धरें, गुणनिकर उज्ज्वल पांच सौ और राणी, मुखकर जीता है चंद्रमा जिनने, जे नाना प्रकारके शुभ चरित्रोंकर पतिका मन हरें हैं अर राजा दशरथके राम बडे पुत्र जिनको पद्म कहिए, लक्ष्मीकर मंडित है शरीर जिनका, दीप्तिकर जीता है सूर्य अर कीर्तिकर जीता है चंद्रमा, स्थिरताकर जीता है सुमेरु, शोभाकर जीता है इंद्र, शूरवीरताकर जीते हैं सर्व सुभट जिनने, सुन्दर है चारित्र जिनके, जिनका छोटा भाई लक्ष्मण जाके शरीरमें लक्ष्मीका निवास, जाके धनुषको देख शत्रु भयकर भाज जावें अर तुम विद्याधरोंको उनसे भी अधिक बतावो हो सो काक भी तो आकाशमें गमन करे हैं तिनमें कहा गुण हैं ? अर भूमिगोचरानिमें भगवान तीर्थंकर उपजे हैं तिनको इंद्रादिक देव भूमिमें मस्तक लगाय नमस्कार करे हैं विद्याधरोंकी कहा बात ? ऐसे बचन जब जनकने कहे तब वे विद्याधर एकांतमें तिष्ठकर आपसमें मंत्र कर जनकको कहते भए, हे भूमिगोचारिनिके नाथ ! तुम राम लक्ष्मणका एता प्रभाव ही कहो हो अर वृथा गरज गरज वात करो हो सो हमारे उनके बल पराक्रमकी प्रतीति नाहीं तातैं हम कहैं हैं सो सुनो एक वज्रावर्त दूजा सागरावर्त ये दो धनुष तिनकी देव सेवा करै हैं सो ये दोनों धनुष वे दोनों भाई चढावें तो हम उनकी शक्ति जाने। बहुत कहनेकर कहा जो वज्रावर्त धनुष राम चढावें तो तुम्हारी कन्या परणे नातर हम बलात्कार कन्याको यहां ले आवेंगे, तुम देखते ही रहोगे। तब जनकने कही यह बात प्रमाण है तब उनने दोऊ धनुष दिखाए सो जनक उन धनुषनिको आति विषम देखकर कछु इक आकुलताको

प्राप्त भया। बहुरि वे विद्याधर भाव थकी भगवानकी पूजा स्तुति कर गदा अर हलादि रत्नोंकर संयुक्त धनुषनिको ले और जनकको ले मिथिलापुरी आए अर चंद्रगति उपवनसे रथनूपुर गया। जब राजा जनक मिथिलापुरी आए तब नगरकी महाशोभा भई मंगलाचार भए अर सब जन सम्मुख आए अर वे विद्याधर नगरके वाहिर एक आयुधशाला बनाय तहां धनुष धरे अर महागर्भको धरते संते तिष्ठे। जनक खेदसहित किंचित् भोजन खाय चिंताकर व्याकुल उत्साहरहित सेजपर पडे। तहां महा नम्रीभूत उत्तम स्त्री बहुत आदर सहित चंद्रमाकी किरण समान उज्ज्वल चमर ढारती भई। राजा अति दीर्घ निश्वास महा उष्ण अग्नि समान नाषे। तब राणी विदेहाने कहा हे नाथ! तुमने कौन स्वर्गलोककी देवांगना देखी जिसके अनुरागकर ऐसी अवस्थाको प्राप्त भए हो सो हमारे जाननेमें वह कामिनी गुणरहित निर्दई है जो तुम्हारे आतापविषै करुणा नाहीं करै है। हे नाथ! वह स्थानक हमें बतावो जहांते वाहि ले आवें। तुम्हारे दुखकर मुझे दुख अर सकल लोकानिको दुख होय है तुम ऐसे महासौभाग्यवंत ताहि कहा न रुचे। वह कोई पाषाण चित्त है। उठो राजावोंको जे उचित कार्य होंय सो करो यह तिहारा शरीर है तो सब ही मनवांछित कार्य होंगे या भांति राणी विदेहा जो प्राणहूते प्रिया हुती सो कहती भई, तब राजा बोले। हे प्रिये! हे शोभने! हे वल्लभे! मुझे खेद और ही है तू वृथा ऐसी बात कही, काहेको अधिक खेद उपजावे है तोहि या वृत्तांतकी गम्य नाहीं तातैं ऐसे कहै है। वह मायामई तुरंग मोहि विजयार्ध गिरिमें ले गया। तहां रथनूपुरके राजा चंद्रगतिसे मेरा मिलाप भया। सो वाने कही तुम्हारी पुत्री मेरे पुत्रको देवो। तब मैंने कही मेरी पुत्री दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रको देनी करी है। तब वाने कही जो रामचन्द्र वज्रावर्त धनुषको चढावें तो तिहारी पुत्री परणें नातर मेरा पुत्र परणेगा सो मैं तो पराए वश जाय पडा तब उनके भय थकी अर अशुभकर्मके उदय थकी यह वात प्रमाण करी सो वज्रावर्त अर

सागरावर्त दोऊ धनुष ले विद्याधर यहां आए हैं ते नगरके बाहिर तिष्ठै हैं, सो मैं ऐसे जानूं हूं ये धनुष इंद्रहूते चढाए न जावें जिनकी ज्वाला दशों दिशामें फैल रही है अर मायामई नाग फुंकारे हैं सो नेत्रों से तो देखा न जावें। धनुष विना चढाए ही स्वतः स्वभाव महाभयानक शब्द करै हैं इनको चढायवेकी कहा वात, जो कदाचित् श्रीरामचन्द्र धनुषको न चढावें तो यह विद्याधर मेरी पुत्रीको जोरावरी ले जावेंगे जैसे स्यालके समीपसे मांसकी डली खग कहिये पक्षी ले जाय सो धनुषके चढायवेका बीस दिनका करार है जो न बना तो वह कन्याको ले जावेंगे, फिर इसका देखना दुर्लभ है, हे श्रेणिक ! जब राजा जनकने इस भांति कही तब राणी विदेहाके नेत्र अश्रुपातसे भर आए अर पुत्रके हरनेका दुख भूल गई हुती सो याद आया एक तो प्राचीन दुख अर दूसरा आगामी दुःख सो महाशोककर पीडित भई महा शब्दकर पुकारने लगी ऐसा रुदन किया जो सकल परिवारके मनुष्य विह्वल हो गए राजासों राणी कहे है हे देव ! मैं ऐसा कौन पाप किया जो पहिले तो पुत्र हरा गया अर अब पुत्री हरी जाय है मेरे तो स्नेह का अवलंबन एक यह शुभ चेष्टित पुत्री ही है। मेरे तिहारे सर्व कुटुंब लोगोनिके यह पुत्री ही आनन्दका कारण है सो पापिनीके एक दुःख नाहीं मिटै है अर दूजा दुख आय प्राप्त होय है। या भांति शोकके सागरमें पडी रुदन करती हुई राणीको राजा धीर्य बंधाय कहते भए हे राणी ! रुदनकर कहा जो पूर्व इस जीवने कर्म उपार्जे हैं तिनके उदय अनुसार फलै हैं, संसाररूप नाटकका आचार्य जो कर्म सो समस्त प्राणियोंको नचावै है तेरा पुत्र गया सो अपने अशुभके उदयसे गया, अब शुभ कर्म उदय है तो सकल मंगल ही होवेंगे, ऐसे नाना प्रकारके सार वचनोंकर राजा जनकने राणी विदेहाको धीर्य बंधाया तब राणी शांतिको प्राप्त भई ॥

बहुरि राजा जनक नगरके बाहिर धनुषशालाके समीप जाय स्वयंबर मंडप रचा अर सकल राज-

पुत्रोंके बुलायबेको पत्र पठाए सो पत्र बांच बांच सर्व राजपुत्र आए अर अयोध्या नगरीको हू दूत भेजे सो माता पिता संयुक्त रामादिक चारो भाई आए राजा जनक बहुत आदरकर पूजे । सीता परम सुंदरी सात सौ कन्यावोंके मध्य महिलके ऊपर तिष्ठे । बडे २ सामंत रक्षा करैं अर एक महा पंडित खोजा जाने बहुत देखी बहुत सुनी है । स्वर्णरूप बेंतकी छडी जाके हाथमें, सो ऊंचे शब्दकर कहै है प्रत्येक राजकुमारको दिखावे है । हे राजपुत्री ! यह श्रीरामचन्द्र कमल लोचन राजा दशरथके पुत्र हैं तू नीके देख अर यह इनका छोटा भाई लक्ष्मीवान लक्ष्मण है, महा ज्योतिको धरै अर यह इनका भाई महाबाहु भरत है अर यह याते छोटा शत्रुघन है । यह चारों ही भाई गुणनिके सागर हैं । इन पुत्रोंकर राजा दशरथ पृथ्वीकी भली भांति रक्षा करै है जाके राज्यमें भयका अंकुर नाहीं अर यह हरिवाहन महा बुद्धिमान् काली घटा समान है प्रभा जाकी अर यह चित्ररथ महागुणवान, तेजस्वी, महासुंदर है अर यह दुर्मुख नामा कुमार अतिमनोहर महातेजस्वी है । यह श्रीसंजय, यह जय, यह भानु, यह सुप्रभ, यह मंदिर, यह बुध, यह विशाल, यह श्रीधर, यह वीर, यह बंधु, यह भद्रवल, यह मयूरकुमार इत्यादि अनेक राजकुमार महापराक्रमी महासौभाग्यवान निर्मल वंशके उपजे चंद्रमा समान निर्मल है कांति जिनकी, महागुणवान भूषणोंके धरणहारे परम उत्साहरूप महाविनयवंत महाज्ञानी महाचतुर आय इकट्ठे भए हैं अर यह संकाशपुरका नाथ याके हस्ती पर्वत समान अर तुरंग महाश्रेष्ठ अर रथ महामनोज्ञ अर योधा अद्भुत पराक्रमके धारी अर यह सुरपुरका राजा, यह रंध्रपुरका राजा, यह नंदनीकपुरका राजा, यह कुंदपुरका अधिपति, यह मगध देशका राजेन्द्र यह कंपिल्य नगरका नरपति, इनमें कैयक इक्ष्वाकुवंशी अर कैयक नागवंशी अर कैयक सोमवंशी अर कैयक उग्रवंशी अर कैयक हरिवंशी अर कैयक कूरवंशी इत्यादि महागुणवन्त जे राजा सुनिए हैं ते सर्व तेरे अर्थ आए हैं । इनके मध्य जो पुरुष वज्रावर्त

धनुषको चढावे ताहि तू वर जो पुरुषोंमें श्रेष्ठ होयगा उसीसे यह कार्य होयगा या भांति खोजा कही अर राजा जनक सबनिको अनुक्रमसे धनुषकी ओर पठाए सो गए। सुंदर है रूप जिनका सो सर्व ही धनुषको देख कंपायमान होते भए। धनुषमेंसे सर्व ओर आग्निकी ज्वाला विजुली समान निकसे अर मायामई भयानक सर्प फुंकार करें तब कैयक तो कानोंपर हाथ धर भागे अर कैयक धनुषको देखकर दूर ही कीलेसे ठाढे रहे, कांपे हैं समस्त अंग जिनके, अर मुंद गए हैं नेत्र जिनके अर कैयक ज्वरसे व्याकुल भए अर कई एक धरतीपर गिर पडे अर कैयक ऐसे भए जो बोल न सके अर कैयक मूर्छाको प्राप्त भए अर कैयक धनुषके नागोंके स्वासकरि जैसे वृक्षका सूका पत्र पवनसे उडा २ फिरे तैसे उडते फिरें अर कैयक कहते भए जो अब जीवते घर जावें तो महादान करें। सकल जीवोंको अभयदान देवें अर कैयक ऐसे कहते भए, यह रूपवती कन्या है तो कहा याके निमित्त प्राण तो न देने। अर कैयक कहते भए यह कोई मायामई विद्याधर आया है सो राजावोंके पुत्रोंको बाधा उपजाई है अर कैयक महाभाग ऐसे कहते भए अब हमारे स्त्रीते प्रयोजन नाहीं, यह काम महादुखदाई है। जैसे अनेक साधु अथवा उत्कृष्ट श्रावक शीलव्रत धारे हैं तैसे हम भी शील व्रत धारेंगे। धर्म ध्यानकर काल व्यतीत करेंगे। या भांति सर्व पराङ्मुख भए अर श्रीरामचन्द्र धनुष चढावनेको उद्यमी उठकर महा माते हाथीकी नाई मनोहर गातिसे चलते जगतको मोहते धनुषके निकट गए सो धनुष रामके प्रभावते ज्वालारहित होय गया जैसा सुंदर देवोपुनीत रत्न है तैसा सौम्य हो गया। जैसा गुरुके निकट शिष्य होय जाय, तब श्रीरामचन्द्र धनुषको हाथमें लेकरि चढायकर खैंचते भए सो महाप्रचण्ड शब्द भया, पृथिवी कंपायमान भई। कैसा है धनुष? विस्तीर्ण है प्रभा जाकी, जैसा मेघ गाजै तैसा धनुषका शब्द भया, मयूरनिके समूह मेघका आगमन जान नाचने लगे। जिसके तेजके आगे सूर्य ऐसा भासने लगा जैसा अग्निका कण भासै अर

स्वर्णमई रजसे आकाशके प्रदेश व्याप्त हो गए। यह धनुष देवाधिष्ठित है; सो आकाशमें देव धन्य २ शब्द करते भए अर पुष्पोंकी वर्षा होती भई। देव नृत्य करते भए तव श्रीराम महादयावन्त धनुषके शब्दसे लोकनिको कम्पायमान देख धनुषको उतारते भए। लोक ऐसे डरे मानों समुद्रके भ्रमरमें आ गए हैं तव सीता अपने नेत्रनिकरि श्रीरामको निरखती भई, कैसे हैं नेत्र ? पवनते चंचल जैसा कमलोंका दल होय तातें अधिक है कांति जिनकी, अर जैसा कामका वाण तीक्ष्ण होय तैसे तीक्ष्ण हैं। सीता रोमांचकर संयुक्त मनकी वृत्ति रूपमाला जो प्रथम देखते ही इनकी ओर प्रेरी हुती वहुरि लोकाचार निमित्त हाथ में रत्नमाला लेकर श्रीरामके गलेमें डारी, लज्जासे नम्रीभूत है मुख जाका, जैसे जिनधर्मके निकट जीवदया तिष्ठे, तैसे रामके निकट सीता आय तिष्ठी। श्रीराम अतिसुंदर हुते सो याके समीपते अत्यंत सुंदर भासते भए, इन दोनोंके रूपका दृष्टांत देनेमें न आवै अर लक्ष्मण दूजा धनुष सागरावर्त क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र उस समान है शब्द जिसका, उसे चढाय खैंचते भए सो पृथिवी कम्पायमान भई। आकाशमें देव जयजयकार शब्द करते भए अर पुष्पवर्षा होती भई। लक्ष्मण धनुषको चढाय खैंचकर जब वाणपर दृष्टि धरी तब सब डरे लोकानिको भयरूप देख आप धनुषकी पिणच उतार महाविनय संयुक्त रामके निकट आए जैसे ज्ञानके निकट वैराग्य आवै। लक्ष्मणका ऐसा पराक्रम देख चन्द्रगतिका पठाया जो चंद्रवर्द्धन विद्याधर आया हुता सो अतिप्रसन्न होय अष्टादश कन्या विद्याधरोंकी पुत्री लक्ष्मण को दीनी। श्रीराम लक्ष्मण दोऊ धनुष लेय महाविनयवन्त पिताके पास आए अर सीताहू आई, अर जेते विद्याधर आए हुते सो राम लक्ष्मणका प्रताप देख चन्द्रवर्द्धनकी लार रथनूपुर गए। जाय राजा चन्द्रगतिको सर्व वृत्तांत कहा सो सुनकर चिंतावान होय तिष्ठा। अर स्वयम्बर मंडपमें रामके भाई भरत हू आए हुते सो मनमें ऐसा विचारते भए कि मेरा अर राम लक्ष्मणका कुल एक अर पिता एक परन्तु

इनकासा अद्भुत पराक्रम मेरा नाहीं, यह पुण्याधिकारी हैं इनकेसे पुण्य मैंने न उपार्जे यह सीता साक्षात् लक्ष्मी कमलके भीतरे दल समान है वर्ण जिसका, राम सारिखे पुण्याधिकारी हीकी स्त्री होय, तब केकई इनकी माता सर्व कलाविषै प्रवीण भरतके चित्तका अभिप्राय जान पतिके कानविषै कहती भई हे नाथ! भरतका मन कछु इक विलषा दीखै है, ऐसा करो जो यह विरक्त न होय, इस जनकके भाई कनकके राणी सुप्रभा उसकी पुत्री लोकसुंदरी है, सो स्वयंबर मंडपकी विधि बहुरि करावो अर वह कन्या भरत के कण्ठमें वरमाला डारे तो यह प्रसन्न होय, तब दशरथ इसकी वात प्रमाणकर कनकके कान पहुंचाई तब कनक दशरथकी आज्ञा प्रमाणकर जे राजा गए हुते सो पीछे बुलाए। यथायोग्य स्थानपर तिष्ठे सब जे भूपति तेई भए नक्षत्रोंके समूह उनमें तिष्ठता जो भरतरूप चंद्रमा ताहि कनककी पुत्री लोकसुन्दरी रूप शुक्लपक्षकी रात्रि सो महाअनुरागसे वरती भई। मनकी अनुरागतारूप माला तो पाहले अवलोकन करते ही डारी हुती बहुरि लोकाचारमात्र सुमन कहिये पुष्प तिनकी वरमाला भी कण्ठमें डारी। कैसी है कनककी पुत्री? कनक समान है प्रभा जाकी, जैसे सुभद्रा भरत चक्रवर्तीको वरा था तैसे दशरथके पुत्र भरतको वरती भई। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं। हे श्रेणिक! कर्मोंकी विचित्रता देख, भरत जैसे विरक्त चित्त राजकन्यापर मोहित भए अर सब राजा विलखे होय अपने २ स्थानक गए जाने जैसा कर्म उपार्जा होय तैसा ही फल पावै है किसीके द्रव्यको दूसरा चाहनेवाला न पावै॥

अथानन्तर मिथिलापुरीमें सीता अर लोकसुन्दरीके विवाहका परम उत्साह भया कैसी है मिथिलापुरी ध्वजा अर तोरणोंके समूहसे मण्डित है अर महा सुगंध करि भरी है शंख आदि वादित्रोंके समूहसे पूरित है श्रीरामका अर भरतका विवाह महा उत्सव सहित भया। द्रव्यकरि भिक्षुक लोक पूर्ण भए जे राजा विवाहका उत्सव देखनेको रहे हुते ते दशरथ अर जनक कनक दोनों भाईसे अति सन्मान पाय

अपने अपने स्थानक गये। राजा दशरथके चारों पुत्र रामकी स्त्री सीता भरतकी स्त्री लोकसुन्दरी महा उत्सवसों अयोध्याके निकट आये। कैसे हैं दशरथके पुत्र सकल पृथिवीविषे प्रसिद्ध है कीर्ति जिनकी अर परमरूप परमगुण सोई भया समुद्र ताविषै मग्न हैं अर परम रतननिके आभूषण तिनकर शोभित हैं शरीर जिनके, माता पिताको उपजाया है महाहर्ष जिनने, नानाप्रकारके बाहन तिनकर पूर्ण जो सेना सोई भया सागर जहां अनेक प्रकारके वादित्र बाजे हैं जैसे जलनिधि गाजे ऐसी सेना सहित राजा मार्ग मार्ग होय महिल पधारे। मार्गमें जनक अर कनककी पुत्रीको सब ही देखे हैं सो देख देख अति हर्षित होय है अर कहे हैं इनकी तुल्य और कोई नाहीं। यह उत्तम शरीरको धरे हैं इनके देखनेको नगरके नर नारी मार्गमें आय इकट्ठे भये तिनकरि मार्ग अति संकीर्ण भया। नगरके दरवाजेसों ले राज महिल पर्यन्त मनुष्योंका पार नाहीं, किया हैं समस्त जनोंने आदर जिनका ऐसे दशरथके पुत्र इनके श्रेष्ठ गुणनिकी ज्यों ज्यों लोक स्तुति करें त्यों त्यों ये नीचे नीचे हो रहें। महासुखके भोगनहारे ये चारों ही भाई सुबुद्धि अपने अपने महिलमें आनन्दसों विराजे। यह सब शुभ कर्मका फल विवेकी जन जानकर ऐसे सुकृत करो जिससे सूर्यसे अधिक प्रभाव होय। जेते शोभायमान उत्कृष्ट फल हैं ते सर्व धर्मके प्रभावते हैं अर जे महानिंद्य कटुक फल हैं वे सब पाप कर्मके उदयते हैं तातैं सुखके अर्थ पाप क्रियाको तजो अर शुभ-क्रिया करो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणका धनुष चढावने आदि प्रताप वर्णन अर रामका सीतासों तथा भरतका लोकसुन्दरीसों विवाह वर्णन करनेवाला अठाईसवां पर्व पूर्ण भया॥ २८॥

अथानन्तर आषाढ शुक्ल अष्टमीते अष्टाह्निकाका महा उत्सव भया। राजा दशरथ जिनेंद्रकी महा उत्कृष्ट पूजा करनेको उद्यमी भया, राजा धर्मविषै आति सावधान है। राजाकी सर्व राणी पुत्र बांधव तथा सकल कुटुम्ब जिनराजके प्रतिबिम्बोंकी महा पूजा करनेको उद्यमी भए। कई बहुत आदरसे पंच वर्णके जे रत्न तिनके चूर्णका माडला मांडे हैं। अर कई नानाप्रकारके रत्ननिकी माला बनावे हैं। भक्तिविषै पाया है अधिकार जिनने अर कई एला (इलायची) कपूरादि सुगन्ध द्रव्यनिकरि जलको सुगन्ध करे हैं अर कई सुगन्ध जलसे पृथ्वीको छांटे हैं अर कई नानाप्रकारके परम सुगंध पीसे हैं अर कई जिनमंदिरोंके द्वारोंकी शोभा आति देदीप्यमान वस्त्रोंसे करावे हैं अर कई नानाप्रकारकी धातुओंके रंगोंकर चैत्यालयोंकी भीतियोंको मंडवावें हैं या भांति अयोध्यापुरीके सब ही लोक वीतराग देवकी परम भक्तिको धरते संते अत्यन्त हर्षकरि पूर्ण जिन पूजाके उत्साहसे उत्तम पुण्यको उपार्जते भए। राजा दशरथ भगवानका आति विभूतिकरि आभिषेक करावता भया। नानाप्रकारके वादित्र बाजते भए। राजा अष्ट दिनोंके उपवास किए अर जिनेंद्रकी अष्ट प्रकारके द्रव्यनिते महा पूजा करी अर नानाप्रकारके सहज पुष्प अर कृत्रिम कहिए स्वर्ण रत्नादिके रचे पुष्प तिनकरि अर्चा करी जैसे नन्दीश्वर द्वीपविषै देवनिकरि संयुक्त इंद्र जिनेंद्रकी पूजा करें तैसे राजा दशरथने अयोध्यामें करी अर राजा चारों ही पटरानियोंको गन्धोदक पठाया सो तीनके निकट तो तरुण स्त्री ले गई। सो शीघ्र ही पहुंचा। वे उठकर समस्त पापोंका दूर करनहारा जो गन्धोदक उसे मस्तक अर नेत्रनिते लगावती भई अर राणी सुप्रभाके निकट वृद्ध खोजा ले गया हुता सो शीघ्र नहीं पहुंचा तातैं राणी सुप्रभा परमकोप अर शोकको प्राप्त भई मनमें चिंतवती भई जो राजा उन तीन राणिनिको गन्धोदक भेजा अर मोहि न भेजा सो राजाका कहा दोष है मैं पूर्व जन्ममें पुण्य न उपजाया वे पुण्यवती महासौभाग्यवंती प्रशंसा योग्य हैं जिनको भगवानका गन्धो-

दक महा पवित्र राजाने पठाया अपमानकर दग्ध जो म सो मेरे हृदयका ताप और भांति न मिटे अब मुझे मरण ही शरण है। ऐसा विचार एक बिशाखनामा भण्डारीको बुलाय कहती भई। हे भाई! यह बात तू काहूसे मत कहियो मोहि विषते प्रयोजन है सो तू शीघ्र लेआ तब प्रथम तो वाने शंकावान होय लानेमें ढील करी बहुरि विचारी कि औषधि निमित्त मंगाया होगा सो लानेको गया अर राणी शिथिल गात्र मलिन चित्त वस्त्र ओढ सेजपर पडी। राजा दशरथने अन्तःपुरमें आयकर तीन राणी देखी सुप्रभा न देखी। सुप्रभाते राजाका बहुत स्नेह सो इसके महिलमें राजा आय खडे रहे ता समय जो विष लेनेको पठाया हुता सो ले आया अर कहता भया। हे देवी! यह विष लेहु यह शब्द राजाने सुना तब उसके हाथसे उठाय लिया अर आप राणीकी सेज ऊपर बैठ गए तब राणी सेजसे उतर बैठी। राजाने आग्रह कर सेज ऊपर बैठाई अर कहते भए हे बल्लभे! ऐसा क्रोध काहेते किया जाकर प्राण तजा चाहे है। सब वस्तुनिते जीतव्य प्रिय है अर सर्व दुःखोंसे मरणका बडा दुःख है ऐसा तोहि कहा दुःख है जो विष मंगाया। तू मेरे हृदयका सर्वस्व है जाने तुझे क्लेश उपजाया हो ताको मैं तत्काल तीव्र दंड दूं। हे सुंदरमुखी! तू जिनेन्द्रका सिद्धांत जाने है। शुभ अशुभ गतिके कारण जाने है जो विष तथा शस्त्र आदिसे अपघात कर मरे है वे दुर्गतिमें पडे हैं ऐसी बुद्धि तोहि क्रोधसे उपजी सो क्रोधको धिक्कार, यह क्रोध महा अंधकार है अब तू प्रसन्न हो जे पतिव्रता हैं तिनने जौलग प्रीतमके अनुरागके वचन न सुने तौलग ही क्रोधका आवेश है तब सुप्रभा कहती भई हे नाथ तुम पर कोप कहा परंतु मुझे ऐसा दुख भया जो मरण विना शांत न होय तब राजा कही। हे राणी! तोहि ऐसा कहा दुख भया तब राणीने कही भगवानका गंधोदक और राणिनिको पठाया अर मोहि न पठाया सो मेरेमें कौन कार्यकर हीनता जानी? अबलों तुम मेरा कभी भी अनादर न किया अब काहेतें अनादर किया यह बात राजासों राणी कहे है ता समय वृद्ध खोजा गंधो-

दक ले आया अर कहता भया हे देवी यह भगवानका गंधोदक नरनाथ तुमको पठाया सो लेहु अर ता समय तीनों राणी आईं अर कहती भईं हे मुग्धे पतिकी तोपर अति कृपा है तू कोपको काहे प्राप्त भई देख हमको तो गंधोदक दासी ले आई अर तेरे वृद्धखोजा ले आया पतिके तोमे प्रेममें न्यूनता नहीं जो पतिमें अपराध भी होय अर वह आप स्नेहकी बात करै तो उत्तम स्त्री प्रसन्न ही होय हैं। हे शोभने! पतिसूं क्रोध करना सुखके विघ्नका कारण है सो कोप उचित नाहीं सो तिनने जब या भांति संतोष उपजाया तब सुप्रभाने प्रसन्न होय गंधोदक सीसपर चढाया अर नेत्रोंको लगाया। राजा खोजासे कोप कर कहते भए। हे निकृष्ट! तैं एती ढील कहा लगाई तब वह भयकर कंपायमान होय हाथ जोड सीस निवाय कहता भया हे भक्तवत्सल हे देव हे विज्ञानभुषण! अत्यंत वृद्ध अवस्था कर हीनशक्ति जो मैं सो मेरा कहा अपराध मोपर आप क्रोध करो सो मैं क्रोधका पात्र नाहीं। प्रथम अवस्थाविषै मेरे भुज हाथीके सूंड समान हुते उरस्थल प्रवल था अर जांघ गजबंधन तुल्य हुती अर शरीर दृढ हुता अब कर्मनिके उदयकरि शरीर अत्यंत शिथिल होय गया। पूर्वे ऊंची नीची धरती राजहंसकी न्याई उलंघ जाता मन वांछित स्थान जाय पहुंचता अब अस्थानकसे उठा भी नहीं जाय है। तुम्हारे पिताके प्रसाद कर मैं यह शरीर नानाप्रकार लढाया था सो अब कुमित्रकी न्याई दुःखका कारण होय गया पूर्वे मुझे वैरीनिके विदारनेकी शक्ति हुती सो अब तो लाठीके अवलंबनकर महाकष्टसे फिरूं हूं। बलवान् पुरुषनिकरि खैंचा जो धनुष वा समान वक्र मेरी पीठ हो गई है अर मस्तकके केश अस्थिसमान श्वेत होय गए हैं अर मेरे दांतहू गिर गए मानों शरीरका आताप देख न सके, हे राजन्! मेरा समस्त उत्साह विलय गया ऐसे शरीरकर कोई दिन जीवूं हूं सो बडा आश्चर्य है। जरासे अत्यन्त जर्जर मेरा शरीर सांझ सकारे विनश जायगा, मोहि मेरी कायाकी सुध नाहीं तो और सुध कहांसे होय, पूर्वे मेरे नेत्रादिक इंद्रिय विचक्षणताको धरें हुते अब

नाममात्र रह गए हैं, पांय धरूं किसी ठौर अर परे काहू ठौर, समस्त पृथ्वी तल दृष्टिसे श्याम भासै है ऐसी अवस्था होय गई तो बहुत दिनोंसे राजद्वारकी सेवा है सो नाहीं तज सकूं हूं। पके फल समान जो मेरा तन ताहि काल शीघ्र ही भक्षण करेगा, मोहि मृत्युका ऐसा भय नाहीं जैसा चाकरी चूकनेका भय है अर मेरे आपकी आज्ञा हीका अवलंबन है, और अवलंबन नाहीं, शरीरकी अशक्तिताकर विलंब होय ताकूं मैं कहा करूं। हे नाथ ! मेरा शरीर जराके आधीन जान कोप मत करो कृपा ही करो, ऐसे वचन खोजे के राजा दशरथ सुनकर वामा हाथ कपोलके लगाय चिंतावान होय विचारता भया, अहो यह जलकी बुदबुदा समान असार शरीर क्षणभंगुर है अर यह यौवन बहुत विभ्रमको धरे सन्ध्याके प्रकाश समान अनित्य है अर अज्ञानका कारण है विजलीके चमत्कार समान शरीर अर संपदा तिनके अर्थ अत्यन्त दुःखके साधन कर्म यह प्राणी करै हैं, उन्मत्त स्त्रीके कटाक्ष समान चंचल सर्पके फण समान विषके भरे, महातापके समूहके कारण ये भोग ही जीवनको ठगै हैं, तातैं महाठग हैं, ये विषय विनाशीक इनसे प्राप्त हुआ जो दुख सो मूढोंको सुखरूप भासे है ये मूढ जीव विषयोंकी अभिलाषा करै हैं अर इनको मनवांछित विषय दुष्प्राप्य हैं विषयोंके सुख देखनेमात्र मनोज्ञ हैं अर इनके फल अति कटुक हैं ये विषय इंद्रायणके फल समान हैं, संसारी जीव इनको चाहे हैं सो वडा आश्चर्य है, जे उत्तम जन विषयोंको विषतुल्य जानकर तजे हैं अर तप करै हैं ते धन्य हैं, अनेक विवेकी जीव पुण्याधिकारी महाउत्साहके धरणहारे जिनशासनके प्रसादसे प्रबोधको प्राप्त भए हैं मैं कब इन विषयोंका त्यागकर स्नेहरूप कीचसे निकस निर्वृतिका कारण जिनेंद्रका तप आचरूंगा। मैं पृथ्वीकी बहुत सुखसे प्रतिपालना करी अर भोग भी मनवांछित भोगे अर पुत्र भी मेरे महापराक्रमी उपजे। अब भी मैं वैराग्यमें विलंब करूं तो यह बडी विपरीत है, हमारे वंशकी यही रीति है कि पुत्रको राज्यलक्ष्मी देकर वैराग्यको धारणकर महाधीर तप करनेको

वनमें प्रवेश करे असा चिंतवनकर राजा भोगानितैं उदासचित्त कई एक दिन घरमें रहे। हे श्रेणिक! जो वस्तु जा समय जा क्षेत्रमें जाकी जाको जेती प्राप्त होनी होय सो ता समय ता क्षेत्रमें तासे ताको तितनी निश्चय सेती होय ही होय ॥

गौतम स्वामी कहे हैं, हे मगध देशके भूपति! कैयक दिनोंमें सर्व प्राणियोंके हितू सर्वभूपति नामा मुनि बडे आचार्य मनःपर्य्यय ज्ञानके धारक पृथ्वीविषै विहार करते संघसहित सरयू नदीके तीर आए। कैसे हैं मुनि? पिता समान छह कायके जीवोंके पालक दयाविषै लगाई है मन, वचन, कायकी क्रिया जिनने, आचार्योंकी आज्ञा पाय कैयक मुनि तो गहन वनमें विराजे, कैयक पर्वतोंकी गुफावोंमें, कैयक वनके चैत्यालयोंमें, कैयक वृक्षोंके कोटरोंमें इत्यादि ध्यानके योग्य स्थानोंमें साधु तिष्ठे अर आप आचार्य महेन्द्रोदय नामा वनमें एक शिलापर जहां विकलत्रय जीवोंका संचार नाहीं अर स्त्री नपुंसक बालक ग्राम्यजन पशुनिका संसर्ग नाहीं असा जो निर्दोष स्थानक वहां नागवृक्षके नीचे निवास किया। महागंभीर महाक्षमावान जिनका दर्शन दुर्लभ कर्म खिपावनेके उद्यमी महाउदार है मन जिनका, महामुनि तिनके स्वामी वर्षाकाल पूर्ण करनेको समाधि योग धर तिष्ठे, कैसा है वर्षाकाल? विदेश गमन किया तिनको भयानक है। वर्षती जो मेघमाला अर चमकती जो विजुरी अर गरजती जो कारी घटा तिनकी भयंकर जो ध्वनि ताकरि मानों सूर्यको खिझावता संता पृथ्वीपर प्रकट भया है सूर्य ग्रीष्म ऋतुमें लोकनिको आतापकारी हुता सो अब स्थूल मेघकी धाराके अन्धकारते भय थकी आज मेघमालामें छिपा चाहे है अर पृथ्वीतल हरे नाजकी अंकूरोंरूप कचुकिनकर मंडित है अर महानादियोंके प्रवाह वृद्धिको प्राप्त भए हैं ढाहा पहाडते बहे हैं इस ऋतुमें जे गमन करे हैं ते अतिकम्पायमान होय हैं अर तिनके चित्तमें अनेक प्रकारकी भ्रांति उपजै है, ऐसी वर्षा ऋतुमें जैनी जन खड्गकी धारा समान कठिन व्रत निरन्तर

धारे हैं। चारण मुनि अर भूमिगोचरी मुनि चातुर्मासिकमें नाना प्रकारके नियम धरते भए, हे श्रेणिक! ते मुनि तेरी रक्षाकर रागादिक परणतिसे तुझे निवृत्त करें।

अथानन्तर प्रभात समय राजा दशरथ वादित्रोंके नादसे जाग्रत भया जैसे सूर्य उदयको प्राप्त होय अर प्रात समय कूकडे बोलने लगे सारिस चकवा सरोवर तथा नदियोंके तटविषै शब्द करते भए। स्त्री पुरुष सेजसे उठे भगवानके जे चैत्यालय तिनमें भेरी मृदंग वीणा वादित्रोंके नाद होते भए। लोक निद्रा को तज जिन पूजनादिकमें प्रवरते। दीपक मंद ज्योति भए। चंद्रमाकी प्रभा मंद भई। कमल फूले कुमुद मुद्रित भए, अर जैसे जिन सिद्धान्तके ज्ञातानिके वचनोंसे मिथ्यावादी विलय जांय तैसे सूर्यकी किरणोंसे ग्रह तारा नक्षत्र छिप गए। या भांति प्रभात समय अत्यन्त निर्मल प्रकट भया तब राजा देह कृत्य क्रियाकर भगवानकी पूजाकर बारम्बार नमस्कार करता भया अर भद्र जातिकी हथिनीपर चढ देवों सारिखे जे राजा तिनके समूहोंसे सेव्यमान ठौर २ मुनियोंको अर जिनमंदिरोंको नमस्कार करता महेंद्रोदय वनमें पृथ्वीपति गया, जाकी विभूति पृथ्वीको आनन्दकी उपजावनहारी वर्षों पर्यंत व्याख्यान करिए तो भी न कह सकिए। जो मुनि गुणरूप रत्नोंका सागर जिस समय याकी नगरीके समीप आवे ताही समय याको खबर होय जो मुनि आए हैं, तब ही यह दर्शनको जाय सो सर्व भूतहित मुनिको आए सुन तिनके निकट केते समीपी लोगोंसहित गया, हथिनीसे उतर अति हर्षका भरा नमस्कारकर महाभक्ति संयुक्त सिद्धांत संबंधी कथा सुनता भया। चारों अनुयोगोंकी चर्चा धारी अर अतीत अनागत वर्तमान कालके जे महापुरुष तिनके चरित्र सुने। लोकालोकका निरूपण अर छह द्रव्यनिका स्वरूप, छह कायके जीवोंका वर्णन, छह लेश्याका व्याख्यान, अर छहों कालका कथन अर कुलकरोंकी उत्पत्ति अर अनेक प्रकार क्षात्रियादिकोंके वंश अर सप्त तत्त्व, नव पदार्थ पंचास्ति कायका वर्णन

आचार्यके मुखते श्रवणकर सर्व मुनियोंको बारम्बार नमस्कारकर राजा धर्मके अनुरागकरि पूर्ण नगर में आए। जिन धर्मके गुणोंकी कथा निकटवर्ती राजावों अर मंत्रियोंसे कर अर सबको विदाकर महल में प्रवेश करता भया। विस्तीर्ण है विभव जाके अर राणी लक्ष्मीतुल्य परमकांतिकर संपूर्ण चंद्रमा समान सम्पूर्ण सुंदर बदनकी धरणहारी नेत्र अर मनकी हरणहारी हाव भाव विलास विभ्रमकर मंडित महा निपुण परम विनयकी करणहारी, प्यारी तेई भई कमलोंकी पंक्ति तिनको राजा सूर्य समान प्रफुल्लित करता भया॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अष्टान्हिका आगम अर राजा दशरथका धर्म श्रवण कथा नाम वर्णन करनेवाला उनतीसवां पर्व पूर्ण भया॥ २९ ॥

अथानन्तर मेघके आडम्बरकर युक्त जो वर्षाकाल सो गया अर आकाश संभारे खड्गके समान निर्मल भया। पद्म महोत्पल पुंडरीक इंदीवरादि अनेक जातिके कमल प्रफुलित भए। कैसे हैं कमलादि पुष्प विषयी जीवनिको उन्मादके कारण हैं अर नदी सरोवरादिविषै जल निर्मल भया जैसा मुनिका चित्त निर्मल होय तैसा अर इंद्रधनुष जाते रहे। पृथ्वी कर्दम रहित होय गई। शरदऋतु मानों कुमुदोंके प्रफुल्लित होनेसे हंसती हुई प्रकट भई विजुरियोंके चमत्कारकी संभावना ही गई। सूर्य तुलाराशिपर आया शरदके श्वेत बादरे कहूं कहूं दृष्टि आवें सो क्षणमात्रमें विलय जांय। निशारूप नवोढा स्त्री संध्याके प्रकाशरूप महा सुंदर लाल अधरोंको धरे चांदनीरूप निर्मल वस्त्रनिको पहिरे चंद्रमारूप है चूणामणि जिसका सो अत्यंत शोभती भई अर वापिका निर्मल जलकी भरी मनुष्यनिके मनको प्रमोद उपजावती भई। चकवा चकवीके युगल करें हैं केलि जहां अर मदोन्मत जे सारिस वे करें हैं नाद जहां, कमलनिके वनमें

धारे हैं। चारण मुनि अर भूमिगोचरी मुनि चातुर्मासिकमें नाना प्रकारके नियम धरते भए, हे श्रेणिक! ते मुनि तेरी रक्षाकर रागादिक परणतिसे तुझे निवृत्त करें।

अथानन्तर प्रभात समय राजा दशरथ वादित्रोंके नादसे जाग्रत भया जैसे सूर्य उदयको प्राप्त होय अर प्रात समय कूकडे बोलने लगे सारिस चकवा सरोवर तथा नादियोंके तटविषै शब्द करते भए। स्त्री पुरुष सेजसे उठे भगवानके जे चैत्यालय तिनमें भेरी मृदंग वीणा वादित्रोंके नाद होते भए। लोक निद्राको तज जिन पूजनादिकमें प्रवरते। दीपक मंद ज्योति भए। चंद्रमाकी प्रभा मंद भई। कमल फूले कुमुद मुद्रित भए, अर जैसे जिन सिद्धान्तके ज्ञातानिके वचनोंसे मिथ्यावादी विलय जांय तैसे सूर्यकी किरणोंसे ग्रह तारा नक्षत्र छिप गए। या भांति प्रभात समय अत्यन्त निर्मल प्रकट भया तब राजा देह कृत्य क्रियाकर भगवानकी पूजाकर वारम्वार नमस्कार करता भया अर भद्र जातिकी हथिनीपर चढ देवों सारिखे जे राजा तिनके समूहोंसे सेव्यमान ठौर २ मुनियोंको अर जिनमंदिरोंको नमस्कार करता महेंद्रोदय वनमें पृथ्वीपति गया, जाकी विभूति पृथ्वीको आनन्दकी उपजावनहारी वर्षों पर्यंत व्याख्यान करिए तो भी न कह सकिए। जो मुनि गुणरूप रत्नोंका सागर जिस समय याकी नगरीके समीप आवे ताही समय याको खबर होय जो मुनि आए हैं, तब ही यह दर्शनको जाय सो सर्व भूतहित मुनिको आए सुन तिनके निकट केते समीपी लोगोंसहित गया, हथिनीसे उतर अति हर्षका भरा नमस्कारकर महाभक्ति संयुक्त सिद्धांत संबंधी कथा सुनता भया। चारों अनुयोगोंकी चर्चा धारी अर अतीत अनागत वर्तमान कालके जे महापुरुष तिनके चरित्र सुने। लोकालोकका निरूपण अर छह द्रव्यनिका स्वरूप, छह कायके जीवोंका वर्णन, छह लेश्याका व्याख्यान, अर छहों कालका कथन अर कुलकरोंकी उत्पत्ति अर अनेक प्रकार क्षत्रियादिकोंके वंश अर सप्त तत्त्व, नव पदार्थ पंचास्ति कायका वर्णन

आचार्यके मुखते श्रवणकर सर्व मुनियोंको वारम्बार नमस्कारकर राजा धर्मके अनुरागकरि पूर्ण नगर में आए। जिन धर्मके गुणोंकी कथा निकटवर्ती राजावों अर मंत्रियोंसे कर अर सबको विदाकर महल में प्रवेश करता भया। विस्तीर्ण है विभव जाके अर राणी लक्ष्मीतुल्य परमकांतिकर संपूर्ण चंद्रमा समान सम्पूर्ण सुंदर बदनकी धरणहारी नेत्र अर मनकी हरणहारी हाव भाव विलास विभ्रमकर मंडित महा निपुण परम विनयकी करणहारी, प्यारी तेई भई कमलोंकी पंक्ति तिनको राजा सूर्य समान प्रफुल्लित करता भया॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अष्टान्हिका आगम अर राजा दशरथका धर्म श्रवण कथा नाम वर्णन करनेवाला उनतीसवां पर्व पूर्ण भया॥ २९॥

अथानन्तर मेघके आडम्बरकर युक्त जो वर्षाकाल सो गया अर आकाश संभारे खड्गके समान निर्मल भया। पद्म महोत्पल पुंडरीक इंदीवरादि अनेक जातिके कमल प्रफुलित भए। कैसे हैं कमलादि पुष्प विषयी जीवनिको उन्मादके कारण हैं अर नदी सरोवरादिविषै जल निर्मल भया जैसा मुनिका चित्त निर्मल होय तैसा अर इंद्रधनुष जाते रहे। पृथ्वी कर्दम रहित होय गई। शरदऋतु मानों कुमुदोंके प्रफुल्लित होनेसे हंसती हुई प्रकट भई विजुरियोंके चमत्कारकी संभावना ही गई। सूर्य तुलाराशिपर आया शरदके श्वेत बादरे कहूं कहूं दृष्टि आवें सो क्षणमात्रमें विलय जांय। निशारूप नवोढा स्त्री संध्याके प्रकाशरूप महा सुंदर लाल अधरोंको धरे चांदनीरूप निर्मल वस्त्रनिको पहिरे चंद्रमारूप है चूणामणि जिसका सो अत्यंत शोभती भई अर वापिका निर्मल जलकी भरी मनुष्यनिके मनको प्रमोद उपजावती भई। चकवा चकवीके युगल करें हैं केलि जहां अर मदोन्मत जे सारिस वे करें हैं नाद जहां, कमलानिके वनमें

भ्रमते जो राजहंस अत्यन्त शोभाको धरे हैं सो सीताकी है चिंता जाके ऐसा जो भामंडल ताहि यह ऋतु सुहावनी न लगी, अग्नि समान भासे है जगत जाको एक दिन यह भामंडल लज्जाको तजकर पिताके आगे वसंतध्वज नामा जो परममित्र उसे कहता भया कैसा है भामंडल अरतिसे पीडित है अंग जाका, मित्रसूं कहे है हे मित्र ! तू दीर्घशोची है अर परकार्यविषे उद्यमी है एता दिन होगए तोहि मेरी चिंता नाहीं व्याकुलतारूप भ्रमणको धरे जो आशारूप समुद्र तामें में डूबा हूं मोहि आलंबन कहा न देवो ऐसे आर्तिध्यानकर युक्त भामंडलके वचन सुन राजसभाके सर्वलोक प्रभारहित विषाद संयुक्त होगए तब तिनको महा शोककर तप्तायमान देख भामंडल लज्जासे अधोमुख हो गया तब एक वृहत्केतुनामा विद्याधर कहता भया अब कहा छिपाव राखो कुमारसों सर्व वृत्तांत यथार्थ कहो जाकरि भ्रांति न रहे तब वे सर्व वृत्तांत भामंडलसे कहते भए। हे कुमार ! हम कन्याके पिताको यहां ले आए हुते कन्याकी वासे याचना करी सो वाने कही मैं कन्या रामको देनी करी है हमारे अर वाके वार्ता बहुत भई वह न माने तब वज्रावर्त धनुषका करार भया जो धनुष राम चढावें तो कन्याको परणे नातर हम यहां ले आवेंगे अर भामंडल विवाहेगा सो धनुष लेकर यहांसे विद्याधर मिथिलापुरी गए सो राम महा पुण्याधिकारी धनुष चढाया ही तब स्वयंवर मंडपमें जनककी पुत्री अति गुणवती महा विवेकवती पतिके हृदयकी हरणहारी व्रत नियमकी धरनहारी नव यौवन मंडित दोषोंसे अखंडित सर्व कला पूर्ण शरद ऋतुकी पूर्णमासीके चंद्रमा समान मुखकी कांतिको धरे लक्ष्मी सारषी शुभलक्षण लावण्यताकर युक्त सीता महासती श्रीरामके कंठमें बरमाला डार बल्लभा होती भई। हे कुमार वे धनुष वर्तमान कालके नाहीं गदा अर हल आदि देवों पुनीत रत्नोंसे युक्त अनेक देव जिनकी सेवा करें कोई जिनको देख न सके सो वज्रावर्त सागरावर्त दोऊ धनुष राम लक्ष्मण दोनों भाई चढावते भए। वह त्रिलोकसुन्दरी रामने परणी, अयोध्या ले गए

सो अब वह बलात्कार देवोंसे भी न हरी जाय हमारी कहा बात अर कदाचित कहोगे रामको परणाये पहले ही क्यों न हरी सो जनकका मित्र रावणका जमाई मधु है सो हम कैसे हर सकें। तातें हे कुमार! अब संतोष धरो निर्मलता भजो होनहार होय सो होय इन्द्रादिक भी और भांति न कर सकें। तब धनुष चढावनेका वृत्तांत अर राममे सीताका विवाह हो गया सुन भामंडल अति लज्जावान होय विषाद करि पूर्ण भया मनमें विचारे है जो मेरा यह विद्याधरका जन्म निरर्थक है। जो मैं हीन पुरुषकी न्याई ताहि न परण सका। ईर्षा अर क्रोधकर मंडित होय सभाके लोगनिको कहता भया कहा तुम्हारा विद्याधरपना, तुम भूमिगोचरिनितेहू डरो हो। मैं आप जायकर भूमिगोचरिनिको जीत ताको ले आऊंगा अर जे धनुष अधिष्ठाता उनको धनुष दे आये हैं तिनका निग्रह करूंगा ऐसा कहकर शस्त्र साज विमानविषैं चढ आकाशके मार्ग गया। अनेक ग्राम नदी नगर वन उपवन सरोवर पर्वतादि पूर्ण पृथिवी मंडल देखा तब याकी दृष्टि जो अपने पूर्व भवका स्थानक विग्दधपुर पहाडानिके वीच हुता, वहां पडी चित्तमें चितई कि यह नगर मैंने देखा है जाति स्मरण होय मूर्छा आय गई। तब मंत्री व्याकुल होय पिताके निकट ले आए। चन्दनादि शीतलद्रव्योंसे छांटा तब प्रबोधको प्राप्त भया। राजलोककी स्त्री याहि कहती भई हे कुमार तुमको यह उचित नाहीं जो माता पिताके निकट ऐसी लज्जारहित चेष्टा करो। तुम तो बिचक्षण हो, विद्याधरोंकी कन्या देवांगनाहुते अतिसुन्दर हैं वे परणो लोकहास कहा करावो हो। तब भामंडलने लज्जा अर शोक करि मुख नीचा किया अर कहता भया धिक्कार है मोको मैं महामोहकरि विरुद्धकार्य चिंता जो चांडा-लादि अत्यंत नीचकुल हैं तिनके यह कर्म न होंय। मैं अशुभ कर्मके उदयकरि अत्यन्त मलिन परणाम किये। मैं अर सीता एक ही माताके उदरसे उपजे हैं। अब मेरे अशुभकर्म गया तो जथार्थ जानी, सो याके ऐसे वचन सुनकर अर शोककर पीडित देख याका पिता राजा चन्द्रगति गोदमें लेय मुख चूम पूछता

भया हे पुत्र यह तू कौन भांति कही तब कुमार कहता भया । हे तात मेरा चरित्र सुनो पूर्वभवविषे मैं इस ही भरतक्षेत्रमें विदग्धपुर नगर तहां कुंडलमंडित राजा हुता परमंडलका लूटनेहारा सदा विग्रहका करणहारा पृथ्वीपर प्रसिद्ध निजप्रजाका पालक महाविभवकर संयुक्त सो मैं पापीने मायाचारकर एक विप्रकी स्त्री हरी । सो वह विप्र तो अतिदुखी होय कहीं चला गया अर मैं राजा अरण्यके देशमें बाधा करी सो अरण्यका सेनापति बालचन्द्र मोहि पकडकर लेगया अर मेरी सर्व सम्पदा हर लीनी । मैं शरीरमात्र रह गया, केएक दिनमें बंदीग्रहतें छूटा सो महादुःखित पृथ्वीपर भ्रमण करता मुनियोंके दर्शनको गया महाव्रत अणुव्रतका व्याख्यान सुना तीन लोक पूज्य जो सर्वज्ञ वीतराग देव तिनका पवित्र जो मार्ग ताकी श्रद्धा करी । जगतके बांधव जे श्रीगुरु तिनकी आज्ञाकर मैंने मद्य मांसका त्यागरूप व्रत आदरया, मेरी शक्तिहीन हुती तातें ये विशेष व्रत न आदर सकया, जिनशासनका अद्भुत महात्म्य जो मैं महा पापी हुता सो एते ही व्रतसे मैं दुर्गतिमें न गया । जिन धर्मके शरणकरि जनककी राणी विदेहाके गर्भमें उपजा अर सीता भी उपजी सो कन्या सहित मेरा जन्म भया अर वह पूर्वभवका विरोधी विप्र जाकी मैं स्त्री हरी हुती सो देव भया अर मोहि जन्मते ही जैसे गृद्ध पक्षी मांसकी डलीको लेजाय तैसे नक्षत्रोंसे ऊपर आकाशमें ले गया सो पहिले तो उसने विचार किया कि याको मारूं बहुरि करुणाकरि कुंडल पहराय लघुपरण विद्याकर मोहि रत्नमों डारा सो रात्रिमें आकाशविषे पडता तुमने झेला अर दयावान होय अपनी राणीको सौंपा, सो मैं तिहारे प्रसादतें वृद्धिको प्राप्त भया अनेक विद्याका धारक भया । तुमने बहुत लढाया अर माताने मेरी बहुत प्रतिपालना करी । भामंडल ऐसे कहके चुप हो रहा । राजा चन्द्रगति यह वृत्तांत सुनकर परम प्रबोधको प्राप्त भया अर इंद्रियोंके विषयनिकी वासना तज महा वैराग्य अंगीकार करनेको उद्यमी भया । ग्राम धर्म कहिए स्त्रीसेवन सोई भया वृक्ष उसे सुफलोंसे रहित

जान अर संसारका बंधन जानकर अपना राज्य भामंडलको देय आप सर्व भूतहित स्वामीके समीप शीघ्र आया। वे सर्व भूतहित स्वामी पृथ्वी पर सूर्यसमान प्रसिद्ध गुणरूप किरणोंके समूहकर भव्य जीवनिको आनन्दके करनहारे सो राजा चन्द्रगति विद्याधर महेंद्रोदय उद्यानमें आय मुनिकी अर्चना करी। फिर नमस्कार स्तुतिकर सीस निवाय हाथ जोड या भांति कहता भया हे भगवन ! तुम्हारे प्रसादकर मैं जिनदीक्षा लेय तप किया चाहूं हूं मैं गृहवासते उदास भया तब मुनि कहते भए भवसागरसे पार करण हारी यह भगवती दीक्षा है सो लेओ। राजा तो वैराग्यकों उद्यमी भया अर भामंडलके राज्यका उत्सव होता भया, ऊंचे स्वर नगारे बाजे' नारी गीत गावती भई, बांसुरी आदि अनेक वादित्रानिके समूह बाजते भए । ताल मंजीरा आदि कांसरीके वादित्र बाजे 'शोभायमान जनक राजाका पुत्र जयवंत होवे' ऐसा बन्दीजननिका शब्द होता भया सो महेंद्रोदय उद्यानमें ऐसा मनोहर शब्द रात्रिमें भया जाते अयोध्याके समस्त जन निद्रारहित होय गए। बहुरि प्रातः समय मुनिराजके मुखते महाश्रेष्ठ शब्द सुनकर जैनी जन अति हर्षको प्राप्त भए। अर सीता जनक राजाका पुत्र जयवन्त होऊ, ऐसी ध्वनि सुनकर मानों अमृतसे सींची गई, रोमांचकर संयुक्त भया है सर्व अंग जाका, अर फरकै है बांई आंख जाकी, मनमें चितवती भई।

जो यह बारम्बार ऊंचा शब्द सुनिए कि जनक राजाका पुत्र जयवंत होऊ सो मेरा हू पिता जनक है कनकका बडा भाई, अर मेरा भाई जन्मता ही हरा गया था सो वही न होय ऐसा विचारकर भाई के स्नेहरूप जलकर भीज गया है मन जाका, सो ऊंचे स्वरकर रुदन करती भई । तब राम अभिराम कहिये सुंदर है अंग जाका, महामधुर वचनकर कहते भए—हे प्रिये ! तू काहेको रुदन करै है, जो यह तेरा भाई है तो अब खबर आवै है अर जो और है तो हे पंडिते ! तू कहा सोच करै है जे विचक्षण हैं ते मुएका हरेका गएका नष्ट हुएका शोक न करें। हे वल्लभे ! जे कायर हैं अर मूर्ख हैं उनके विषाद होय

है अर जे पंडित हैं पराक्रमी हैं तिनके विषाद नाहीं होय है, या भांति रामके अर सीताके वचनालाप होवे हैं ताही समय वधाईवारे मंगल शब्द करते आए । तब राजा दशरथने महाहर्षसे बहुत आदरसे नानाप्रकारके दान करे अर पुत्र कलत्रादि सर्व कुटुम्बसहित वनमें गया सो नगरके वाहिर चारो तरफ विद्याधरोंकी सेना सैकडों सामंतोंसे पूर्ण देख आश्चर्यको प्राप्त भया, विद्याधरनिने इंद्रके नगर तुल्य सेनाका स्थानक क्षणमात्रमें बनाय राखा है, जाके ऊंचा कोट बडा दरवाजा जे पताका तोरण तिनते शोभायमान रत्ननिकरि मंडित ऐसा निवास देख राजा दशरथ जहां वनमें साधु विराजे हुते वहां गया, नमस्कारकर स्तुतिकर राजा चंद्रगतिका वैराग्य देखा । विद्याधरनिसहित श्रीगुरुकी पूजा करी । राजा दशरथ सर्व बांधव सहित एक तरफ बैठा अर भामंडल सर्व विद्याधरनि सहित एक तरफ बैठा । विद्याधर अर भूमिगोचरी मुनिके पास यति अर श्रावकका धर्म श्रवण करते भए । भामंडल पिताके वैराग्य होयवेकर कछु इक शोकवान बैठा तब मुनि कहते भए, जो यतिका धर्म है सो शूरवीरोंका है । जिनके गृहवास नाहीं महा शान्त दशा है । आनन्दका कारण है, महादुर्लभ है, त्रैलोक्यमें सार है, कायर जीवनिको भयानक भासे है । भव्यजीव मुनिपदको पायकर अविनाशी धामको पावे हैं । अथवा इंद्र अहमिंद्र पद लहें हैं, लोकके शिखर जो सिद्धस्थानक है सो मुनिपद विना नाहीं पाइए है । कैसे हैं मुनि ? सम्यग्दर्शनकर मंडित हैं, जिनमार्गसे निर्वाणके सुखको प्राप्त होय अर चतुर्गतिके दुखते छूटे सो ही मार्ग श्रेष्ठ है सो सर्व भूतहित मुनिने मेघकी गर्जना समान है ध्वनि जिनकी सर्व जीवनिके चित्तको आनन्दकारी ऐसे वचन कहे, कैसे हैं मुनि ? समस्त तत्त्वोंके ज्ञाता. सो मुनिके वचनरूपजल संदेहरूप तापको हरता प्राणी जीवनिने कर्णरूप अंजुलियोंसे पीए । कैयक मुनि भए, कैयक श्रावक भए महा धर्मानुराग कर युक्त है चित्त जिनका, धर्मका व्याख्यान हो चुका तब दशरथ पूछता भया हे नाथ ! चंद्रगति विद्या-

धरको कौन कारण वैराग्य उपजा अर सीता अपने भाई भामण्डलका चारित्र सुननेकी इच्छा करती भई। कैसी है सीता? महाविनयवंती है। तब मुनि कहते भए—हे दशरथ! तुम सुनो इन जीवनिकी अपने २ उपार्जे कर्मनिकरि विचित्र गति है। यह भामण्डल पूर्वे संसारमें अनन्त भ्रमणकर अति दुखित भया, कर्म रूपी पवनका प्रेरा या भवमें आकाशसे पडता राजा चंद्रगतिको प्राप्त भया, सो चंद्रगति अपनी स्त्री पुष्पवतीको सौंपा, सो नवयौवनमें सीताका चित्रपट देख मोहित भया, तब जनकको एक विद्याधर कृत्रिम अश्व होय लेगया, करार ठहरा जो धनुष चढावे सो कन्या परणे, बहुरि जनकको मिथिलापुरी लेय आए अर धनुष लाए, सो धनुष श्रीरामने चढाया अर सीता परणी। तब भामंडल विद्याधरनिके मुखसे यह वार्ता सुन क्रोधकर विमानमें बैठ आवे था सो मार्गमें पूर्व भवका नगर देखा तब जातिस्मरण हुआ जो मैं कुंडलमंडित नामा या विदग्धपुरका राजा अधर्मी हुता। पिंगल ब्राह्मणकी स्त्री हरी बहुरि मोहि अरण्यके सेनापतिने पकडा, देशते काढ दिया, सर्वस्व लूट लिया। सो महापुरुषके आश्रय आय मधु मांसका त्याग किया, शुभ परिणामनिते मरणकर जनककी राणी विदेहाके गर्भते उपजा अर वह पिंगल ब्राह्मण जाकी स्त्री याने हरी सो वनसे काष्ठ लाय स्त्रीरहित शून्यकुटी देख अति विलाप करता भया कि हे कमल नयनी! तेरी राणी प्रभावती सारिषी माता अर चक्रध्वज सारिखे पिता तिनको अर बडी विभूति अर बडा परिवार ताहि तज मोमे प्रीतिकर विदेश आई। रूखे आहार अर फाटे वस्त्र तैंने मेरे अर्थसे आदरे। सुंदर हैं सर्व अंग जाके, अब तू मोहि तज कहां गई। या भांति वियोगरूप अग्निसे दग्धायमान वह पिंगल विप्र पृथ्वीविषे महा दुखसहित भ्रमणकर मुनिराजके उपदेशते मुनि होय तप अंगीकार करता भया, तपके प्रभावते देव भया सो मनमें चिंतवता भया कि वह मेरी कांता सम्यक्तरहित हुती सो तिर्यंचगतिको गई अथवा मायाचाररहित सरल परिणाम हुती सो मनुष्यणी भई अथवा समाधि

मरणकर जिनराजको उरमें धर देवगतिको प्राप्त भई । पिंगल नामा विप्र या भांति विलापकरि खेदखिन्न भया ढूंढता फिरे । कोऊ कारण न जानके अवधि जोड निश्चय किया कि ताको तो कुंडलमंडित हर लेगया हुता सो कुंडलमंडितको राजा अरण्यका सेनापति बालचंद्र बांधकर अरण्यके पास लेगया अर सर्वस्व लूट लिया बहुरि राजा अरण्यने याको राज्यसे विमुखकर सर्व देशमें अपना अमल कर याको छोड दिया सो भ्रमण करता महा दुखी मुनिका दर्शनकर मधु मांसका त्याग करता भया सो प्राण त्यागकर राजा जनककी स्त्रीके गर्भमें आया अर वह मेरी स्त्री चित्तोत्सवा सो हू राणीके गर्भमें आई है सो वह तो स्त्रीकी जाति पराधीन वाका तो कुछ अपराध नाहीं अर वह पापी कुंडलमंडितका जीव या राणीके गर्भमें है सो गर्भमें दुःख दूं तो राणी दुख पावै, सो उमसे तो मेरा बैर नाहीं, ऐसी वह देव विचारकर राणी विदेहाके गर्भमें कुंडलमंडितका जीव है, उसपर हाथ मसलता निरन्तर गर्भकी चौकसी देवे सो जब बालकका जन्म भया तब बालकको हरा । अर मनमें विचारी कि याको शिलापर पटक मारूं अथवा मसल डारूं । बहुरि विचारी कि धिकार है, मोहि जो पाप चिंता, बालहत्या समान पाप नाहीं, तब देवने बालकको कुंडल पहराय लघुपरण नामा विद्या लगाय आकाशसे डारा सो चंद्रगति झेल्या अर राणी पुष्पवतीको सौंपा सो भामंडल जातिस्मरण होय सर्व वृत्तांत चंद्रगतिको कहा जो सीता मेरी बहिन है अर राणी विदेहा मेरी माता है अर पुष्पवती मेरी प्रतिपालक माता है । यह वार्ता सुन विद्याधरनिकी सर्व सभा आश्चर्यको प्राप्त भई । अर चंद्रगति भामण्डलको राज्य देय संसार शरीर अर भोगोंसे उदास होय वैराग्य अंगीकार करना विचारा अर भामंडलको कहता भया—हे पुत्र ! तेरे जन्म दाता माता पिता तेरे शोकसे महादुखी तिष्ठे हैं सो अपना दर्शन देय तिनके नेत्रोंको आनन्द उपजाय सो स्वामी सर्व भूतहित मुनिराज राजा दशरथसे कहे हैं यह राजा चन्द्रगति संसारका स्वरूप असार

जान हमारे निकट आय जिन दीक्षा धरता भया, जो जन्मा है सो निश्चयते ही मरेगा अर जो मूवा है सो अवश्य नया जन्म धरेगा यह संसारकी अवस्था जान चंद्रगति भव भ्रमणते डरा। ये मुनिके वचन सुनकर भामंडल पूछता भया—हे प्रभो! चंद्रगतिका अर पुष्पवतीका मोपर अधिक स्नेह काहे भया, तब मुनि बोले, ये पूर्व भवके तेरे माता पिता हैं सो सुन। एक दारूनामा ग्राम वहां ब्राह्मण विमुचि ताके अनुकोशा स्त्री अर अतिभूत पुत्र ताकी स्त्री सरसा, अर एक कयान नामा परदेशी ब्राह्मण सो अपनी माता ऊर्या सहित दारूग्राममें आया सो पापी अतिभूतकी स्त्री सरसाको अर इनके घरके सारभूत धन को ले भागा सो अतिभूत महादुखी होय ताके ढूंढवेको पृथ्वीपर भटका अर याका पिता केयक दिन पहिले दक्षिणाके अर्थ देशांतर गया हुता सो घर पुरुषनि विना सूना हो गया जो घरमें थोडा बहुत धन रहा था सो भी जाता रहा अर अतिभूतकी माता अनुकोशा सो दरिद्रकरि महादुखी यह सब वृत्तांत विमुचिने सुना कि घरका धन हू गया अर पुत्रकी बहू हू गई अर पुत्र ढूंढनेको निकसा है सो न जानिये कौन तरफ गया। तब विमुचि घर आया अर अनुकोशाको अति विह्वल देख धैर्य बंधाया अर कयानकी माता ऊर्या सो हू महादुःखिनी पुत्र अन्याय कार्य किया ताकरि अति लज्जायमान सो कहके दिलासा करी जो तेरा अपराध नाहीं अर आप विमुचि पुत्रके ढूंढनेको गया सो एक सर्वारि नाम नगर ताके वनमें एक अवधिज्ञानी मुनि सो लोकनके मुखते उनकी प्रशंसा सुनी।

जो अवधिज्ञानरूप किरणों कर जगतमें प्रकाश करें हैं तब यह मुनि पै गया धन अर पुत्र वधूके जानेसे महादुखी हुता ही सो मुनिराजकी तपोऋद्धि देखकर अर संसारकी झूठी माया जान तीव्र वैराग्य पाय विमुचि ब्राह्मण मुनि भया अर विमुचिकी स्त्री अनुकोशा अर कयानकी माता ऊर्या ये दोनों ब्राह्मणी कमलकांता आर्यिकाके निकट आर्यिकाके व्रत धरती भई सो विमुचि मुनि अर वे दोनों आर्यिका तीनों

कहते भए हे देव! या जानकीके तिहारो ही शरण है धन्य हैं भाग्य जाके जो तुम सारिख पति पाए ऐसे कह बहिनको छातीसे लगाया अर माता विदेहा सीताको उरसे लगायकर कहती भई हे पुत्री! तू सासू ससुरकी अधिक सेवा करियो अर ऐसा करियो जो सर्व कुटुम्बमें तेरी प्रशंसा होय सो भामंडलने सबको बुलाया जनकका छोटा भाई जो कनक उसे मिथिलापुरीका राज्य सौंपकर जनक अर विदेहाको अपने स्थानक लेगया यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे मगधदेशके अधिपति! तू धर्मका महात्म्य देख जो धर्मके प्रसादसे श्रीरामदेवके सीता सारिखी स्त्री भई गुणरूपकर पूर्ण जाका भामंडल सा भाई विद्याधरोंका इन्द्र अर देवाधिष्ठित वे धनुष सो रामने चढाये अर जिनके लक्ष्मणसा भाई सेवक, यह श्रीरामका चरित्र भामंडलके मिलापका वर्णन जो निर्मल चित्त होय सुनें उसे मनवांछित फलकी सिद्ध होय अर निरोग शरीर होय सूर्य समान प्रभाकूं पावें।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं भामण्डलका मिलाप कथन वर्णन करनेवाला तीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ३० ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतमस्वामीसों पूछते भए हे प्रभो! वे राजा दशरथ जगतके हितकारी राजा अरण्यके पुत्र बहुरि कहा करते भए अर श्रीराम लक्ष्मणका सकल वृतांत मैं सुना चाहूं हूं सो कृपा करके कहो तुम्हारा यश तीनलोकमें बिस्तर रहा है। तब मुनियोंके स्वामी महातप तेजके धारनहारे गौतम गणधर कहते भए जैसा यथार्थ कथन श्री सर्वज्ञदेव बीतरागने भाष्या है तैसा हे भव्योत्तम! तू सुन—

जब राजा दशरथ बहुरि मुनियोंके दर्शनोंको गए तो सर्वभूतहित स्वामीको नमस्कारकर पूछते भए हे स्वामी मैं संसारमें अनंत जन्म धरे सो कई भवकी वार्ता तिहारे प्रसादसे सुनकर संसारको तजा चाहूं हूं

तब साधु दशरथको भव सुननेका अभिलाषी जानकर कहते भए हे राजन् ! सब संसारके जीव अनादि कालसे कर्मोंके सम्बन्धसे अनन्त जन्म मरण करते दुःख ही भोगते आए हैं। इस जगत में जीवनिके कर्मों की स्थिति उत्कृष्ट मध्यम जघन्य तीन प्रकारकी है अर मोक्ष सर्वमें उत्तम है जाहि पंचमगति कहे हैं सो अनंत जीवनिमें कोई एककै होय है सबनिको नाहीं। यह पंचमगति कल्याणरूपिणी है जहां ते बहुरि आवागमन नाहीं। वह अनंत सुखका स्थानक शुद्ध सिद्धपद इंद्रिय विषयरूप रोगनिकरि पीडित मोहकर अन्ध प्राणी ना पावें । जे तत्त्वार्थ श्रद्धानकर रहित वैराग्यसे वहिर्मुख हैं अर हिंसादिकमें है प्रवृत्ति जिनकी तिनको निरन्तर चतुर्गतिका भ्रमण ही है । अभव्योंको तो सर्वथा मुक्ति नाहीं निरन्तर भव भ्रमण ही है अर भव्यनिमें कोई एकको निवृत्ति है जहां तक जीव पुद्गल धर्म अधर्म काल है सो लोकाकाश है। अर जहां अकेला आकाश ही है सो अलोकाकाश है। लोकके शिखर सिद्ध विराजे हैं। या लोकाकाशमें चेतना लक्षण जीव अनंत हैं जिनका विनाश नाहीं, संसारी जीव निरन्तर पृथ्वी काय जलकाय अग्निकाय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय ये छै काय तिनमें देह धार भ्रमण करे हैं। यह त्रैलोक्य अनादि अनन्त है यामें स्थावर जंगम जीव अपने अपने कर्मोंके समूहकर बंधे नाना योनियोंमें भ्रमण करे हैं अर जिनराजके धर्मकर अनन्त सिद्ध भए अर अनंत सिद्ध होयगे अर होय हैं। जिनमार्ग टारकर और मार्ग मोक्ष नाहीं। अर अनन्तकाल व्यतीत भया अर अनंत काल व्यतीत होयगा। काल का अन्त नाहीं जो जीव सन्देहरूप कलंककर कलंकी हैं अर पापकर पूर्ण हैं अर धर्मनिको नाहीं जाने हैं। तिनके जैनका श्रद्धान कहांते होय अर जिनके श्रद्धान नाहीं सम्यक्तरहित हैं तिनके धर्म कहांते होय अर धर्मरूप वृक्ष विना मोक्षफल कैसे पावे, अज्ञान अनन्त दुखका कारण है जे मिथ्यादृष्टि अधर्म विषे अनुरागी हैं अर अति उग्रपाप कर्मरूप कंचुकी (चोला) कर मंडित हैं । रागादि विषके भरे हैं

तिनका कल्याण कैसे होय, दुख ही भोगवे हैं। एक हस्तिनापुरविषै उपास्तनामा पुरुष, ताकी दीपनी नामा स्त्री सो मिथ्याभिमानकर पूर्ण जाके कछु नियम व्रत नाहीं श्रद्धानरहित महाक्रोधवंती अदेखसकी कषायरूप विषकी धारणहारी महादुर्भाव निरन्तर साधुनिकी निंदा करणहारी कुशब्द बोलनहारी महा कृपण कुटिल आप काहूको अन्न न देय अर जो कोई दान करे ताको मने करे धनकी धिरानी अर धर्म न जाने इत्यादिक महादोषकी भरी मिथ्यामार्गकी सेवक सो पापकर्मके प्रभावकर भवसागरविषै अनंत काल भ्रमण करती भई अर उपास्ति दानके अनुरागकर जन्द्रधुर नगरविषै भद्रनामा मनुष्य ताके धारिणी स्त्री ताके धारणनामा पुत्र भया। भाग्यवान बहुत कुटुंबी ताके नयनसुन्दरी नामा स्त्री सो धारण शुद्ध भावते मुनिनिको आहारदान देय अन्त काल शरीर तजकर धातुकी खंड द्वीपविषै उत्तरकुरु भोगभूमिमें तीन पल्य सुख भोग देव पर्याय पाय तहांते चयकर पृथुलावती नगरीविषै राजा नंदीघोष राणी बसुधा ताके नंदिवर्धन नामा पुत्र भया। एक दिन राजा नंदिघोष यशोधर नामा मुनिके निकट धर्म श्रवणकर नंदिवर्धनको राज्य देय आप मुनि भया। महातपकर स्वर्गलोक गया अर नंदिवर्धन श्रावकके व्रत धारे, पंच नमोकारके स्मरणविषै तत्पर कोटि पूर्व पर्यंत महाराज पदके सुख भोगकर अन्त काल समाधि मरणकर पंचमे देवलोक गया। तहांते चयकर पश्चिम विदेहविषै विजयार्ध पर्वत तहां शशिपुर नाम नगर तहां राजा रत्नमाली ताके राणी विद्युल्लता ताके सूर्यजय नामा पुत्र भया। एक दिन रत्नमाली महाबलवान सिंहपुरका राजा वज्रलोचन तासूं युद्ध करनेको गया। अनेक दिव्य रथ हाथी घोडे पियादे महापराक्रमी सामंत लार नानाप्रकार शस्त्रनिके धारक, राजा होठ डसता धनुष चढाय वस्त्र पहिरे रथविषै आरूढ भयानक आकृतिको धरे आग्नेय विद्याधर शत्रुके स्थानकको दग्ध करवेकी है इच्छा जाके, ता समय एक देव तत्काल आयकर कहता भया—हे रत्नमाली! तैं यह कहा आरम्भा। अब तू

क्रोध तज, मैं तेरा पूर्व भवका वृत्तांत कहूं हूं सो सुन—भरतक्षेत्रविषे गांधारी नगरी तहां राजा भूति, ताके पुरोहित उपमन्यु सो राजा अर पुरोहित दोनों पापी मांसभक्षी, एक दिन राजा केवलगर्भ स्वामी के मुखते व्याख्यान सुन यह व्रत लिया, जो मैं पापका आचरण न करूं। सो व्रत उपमन्यु पुरोहितने छुडाय दिया, एक समय राजापर परशत्रुओंकी धाड आई। सो राजा अर पुरोहित दोनों मारे गए। पुरोहितका जीव हाथी भया सो हाथी युद्धमें घायल होय अन्त काल नमोकार मंत्रका श्रवणकर तहां गांधारी नगरीमें राजा भूतिकी राणी योजनगन्धा ताके अरिसूदन नामा पुत्र भया सो ताने केवलगर्भ मुनिका दर्शनकर पूर्व जन्म स्मरण किया तब महा वैराग्य उपजा सो मुनिपद आदरा, समाधि मरण कर ग्यारवें स्वर्गमें देव भया। सो मैं उपमन्यु पुरोहितका जीव अर तू राजा भूति मरकर मन्दारण्यमें मृग भया। दावानलमें जर मूवा, मरकर कलिंजनामा नीच पुरुष भया सो महापापकर दूजे नरक गया सो मैं स्नेहके योगकर नरकमें तुझे संबोधा। आयु पूर्णकर नरकसे निकस रत्नमाली विद्याधर भया सो तू वे अब नरकके दुख भूल गया। यह वार्ता सुन रत्नमाली सूर्यजय पुत्रसहित परम वैराग्यको प्राप्त भया। दुर्गतिके दुखसे डरा, तिलकसुन्दर स्वामीका शरण लेय पिता पुत्र दोनों मुनि भए। सूर्यजय तपकर दसमें देवलोक देव भया तहांतें चयकर राजा अरण्यका पुत्र दशरथ भया सो सर्व भूतहित मुनि कहे हैं अल्पमात्र भी सुकृतकर उपास्तिका जीव कैयक भवमें बडके बीजकी नाईं वृद्धिको प्राप्त भया। तू राजा दशरथ उपास्तिका जीव है अर नंदिवर्धनके भवविषे तेरा पिता राजा नंदिघोष मुनि होय ग्रैवयक गया सो तहांते चयकर मैं सर्वभूतहित भया अर जो राजा भूतिका जीव रत्नमाली भया हुता सो स्वर्गसे आय कर यह जनक भया। अर उपमन्यु पुरोहितका जीव जाने रत्नमालीको संबोधा हुता सो जनकका भाई कनक भया। या संसारविषे न कोई अपना है न कोई पर है, शुभाशुभ कर्मोंकर यह जीव जन्म मरण

करे हैं यह पूर्व भवका वर्णन सुन राजा दशरथ निसंदेह होय संयमको सम्मुख भया। गुरुके चरणनिको नमस्कारकर नगरमें प्रवेश किया, निर्मल है अन्तःकरण जिनका, मनमें विचारता भया कि यह महा मंडलेश्वर पदका राज्य महा सुबुद्धि जे राम तिनको देकर मैं मुनिव्रत अंगीकार करूं। राम धर्मात्मा हैं अर महा धीर हैं धीर्यको धरे हैं, यह समुद्रांत पृथ्वीका राज्य पालवे समर्थ हैं। अर भाई भी इनके आज्ञाकारि हैं। ऐसा राजा दशरथने चिंतवन किया, कैसे हैं राजा? मोहते पराङ्मुख अर मुक्तिके उद्यमी, ता समय शरद ऋतु पूर्ण भई अर हिमऋतुका आगमन भया, कैसी है शरदऋतु? कमल ही हैं नेत्र जाके, अर चंद्रमाकी चांदनी सोही हैं उज्ज्वल वस्त्र जाके, सो मानों हिमऋतुके भयकर भाग गई॥

अथानन्तर हिमऋतु प्रकट भई, शीत पडने लगा, वृक्ष दहे अर ठंढी पवनकर लोक व्याकुल भए। जा ऋतुविषै धनरहित प्राणी जीर्ण कुटिमें दुखसे काल व्यतीत करे हैं, कैसे हैं दरिद्री? फट गए हैं अधर अर चरण जिनके, अर बाजें हैं दांत जिनके अर रूखे हैं केश जिनके अर निरन्तर अग्निका है सेवन जिनके अर कभी भी उदर भर भोजन न मिले, कठोर है चर्म जिनका। अर घरमें कुभार्याके वचनरूप शस्त्रनिकर विदारा गया है चित्त जिनका। अर काष्ठादिकके भार लायवेको कांधे कुठारादिकको धरे वन २ भटके हैं अर शाक बोरघालि आदि ऐसे आहारकर पेट भरे हैं अर जे पुण्यके उदयकर राजादिक धनाढ्य पुरुष भए हैं ते बडे महलोंमें तिष्ठै हैं अर शीतके निवारणहारे अगरके धूपकी सुगंधिताकरयुक्त सुंदर वस्त्र पहरे हैं अर सुवर्ण अर रूपादिकके पात्रोंमें षट्‌रस संयुक्त सुगंधित स्निग्ध भोजन करे हैं, केसर अर सुगंधादिकर लिप्त हैं अंग जाके, अर जिनके निकट धूपदानमें धूप खेइए हैं। अर परिपूर्ण धनकर चिंतारहित हैं, झरोंखोंमें बैठे लोकनको देखे हैं अर जिनके समीप गीत नृत्यादिक विनोद होयवो करे हैं, रत्नोंके आभूषण अर सुगन्धमालादिककर मंडित सुंदर कथामें उद्यमी हैं अर जिनके विनय-

वान अनेक कलाकी जाननहारी महारूपवंती पतिव्रता स्त्री हैं। पुण्यके उदयकर ये संसारी जीव देवगति मनुष्यगतिके सुख भोगे हैं अर पापके उदयकर नरक तिर्यंच तथा कुमानुष होय दुख दरिद्र भोगे हैं, ये सर्व लोक अपने अपने उपार्जित जे कर्म तिनके फल भोगे हैं। ऐसे मनमें विचारकर राजा दशरथ संसारके वाससे अत्यन्त भयको प्राप्त भया। निर्वृत्तिके पायवेकी है अभिलाषा जाके, समस्त भोग वस्तुंनसे विरक्त भया, द्वारपालको कहता भया। कैसा है द्वारपाल? भूमिमें थापा है मस्तक अर जोडे हैं हाथ जाने, नृपति ताकों आज्ञा करी।

हे भद्र! सामंत मंत्री पुरोहित सेनापति आदि सबको ल्यावो, तब वह द्वारपाल द्वारेपर आय दूजे मनुष्यको द्वारपर मेल तिनकी आज्ञा प्रमाण बुलावनेको गया, तब वे आयकर राजाको प्रणामकर यथायोग्य स्थानमें तिष्ठे, विनतीकर कहते भए। हे नाथ! आज्ञा करो क्या कार्य है? तब राजा कही—मैं संसारका त्याग कर निश्चयसेती संयम धरूंगा, तब मंत्री कहते भए। हे प्रभो! तुमको कौन कारण वैराग्य उपजा, तब नृपति कही जो प्रत्यक्ष यह समस्त जगत् सूके तृणकी न्याई मृत्युरूप अग्निकर जरे है अर जो अभव्यनको अलभ्य अर भव्यनिको लेने योग्य ऐसा सम्यक्त सहित संयम सो भवतापका हरणहारा अर शिवसुखका देनहारा है सुर असुर नर विद्याधरों कर पूज्य प्रशंसा योग्य है, मैं आज मुनिके मुखसे जिनशासनका व्याख्यान सुना, कैसा है जिनशासन सकलपापोंका वर्जनहारा है। तीन लोकविषै प्रकट, महा सूक्ष्म है चर्चा जाविषै अतिनिर्मल उपमारहित है। सर्व वस्तुनिमें सम्यक्त परम वस्तु है ता सम्यक्तका मूल जिनशासन है श्रीगुरुओंके चरणारविंदके प्रसादकर मैं निर्वृत्तिमार्गमें प्रवृत्ता, मेरी भव भ्रांति रूप नदीकी कथा आज मैं मुनिके मुखसे सुनी अर मोहि जातिस्मरण भया। सो मेरे अंग देखो त्रास कर कांपे हैं कैसी है मेरी भवभ्रांति नदी? नानाप्रकारके जे जन्म वेही हैं भ्रमर जामें अर मोहरूप कीच कर

मलिन कुतर्करूप ग्राहनिकर पूर्ण महादुःख रूप लहर उठे हैं निरंतर जामें, मिथ्यारूप जलकर भरी, मृत्यु रूप मगरमच्छोंका है भय जामें रुदनके महाशब्दको धरे, अधर्म प्रवाह कर बहती अज्ञानरूप पर्वतते निकसी संसाररूप समुद्रमें है प्रवेश जाका सो अब मैं इस भवनदीको उलंघकर शिवपुरी जायवेका उद्यमी भया हूं। तुम मोहके प्रेरे कछु वृथा मत कहो, संसार समुद्र तर निर्वाण द्वीप जाते अन्तराय मत करो। जैसे सूर्यके उदय होते अंधकार न रहे तैसे सम्यक्ज्ञानके होते संशय तिमिर कहां रहे ताते मेरे पुत्रको राज्य देहु, अब ही पुत्रका अभिषेक करावहु मैं तपोवनमें प्रवेश करूं हूं। ये वचन सुन मंत्री सामंत राजा वैराग्यका निश्चय जान परमशोकको प्राप्त भए। नीचे होय गए हैं मस्तक जिनके अर अश्रुपात कर भर गए हैं नेत्र जिनके अंगुरी कर भूमिको कुचरते क्षणमात्रमें प्रभारहित होय गए, मौनसे तिष्ठे अर सकल ही रणवास प्राणनाथका निर्ग्रंथ व्रतका निश्चय सुन शोकको प्राप्त भया, अनेक विनोद करते हुते सो तज कर आंसुओंसे लोचन भर लिए, अर महारुदन किया। भरत पिताका वैराग्य सुन आप भी प्रतिबोधको प्राप्त भए, चित्तमें चिंतवते भए अहो यह स्नेहका बंध छेदना कठिन है। हमारा पिता ज्ञानको प्राप्त भया। जिनदीक्षा लेनेको इच्छे है, अब इनके राज्यकी चिंता कहां, मोहि तो न किसीको कुछ पूछना न कुछ करना तपोवनमें प्रवेश करूंगा संयम धरूंगा। कैसा है संयम संसारके दुःखोंका क्षय करणहारा है अर मेरे इस देह करहू कहा? कैसा है यह देह व्याधिका घर है अर विनश्वर है सो यदि देहहीसे मेरा सम्बन्ध नाहीं तो बांधवनिसों कहा सम्बन्ध? यह सब अपने अपने कर्म फलके भोगता हैं, यह प्राणी मोह कर अंधा है दुःख रूप वनमें अकेला ही भटके है कैसा है दुःख रूप वन अनेक भव भय रूप वृक्षनिते भरा है॥

अथानन्तर केकई सकल कलाकी जाननहारी भरतकी यह चेष्टा जान अतिशोकक्ं धरती भई,

मनमें चितवे है—भरतार और पुत्र दोनों ही वैराग्य धार्‍या चाहे हैं कौन उपाय कर इनका निवारण करूं या भांति चिंता कर व्याकुल भया है मन जाका तब राजाने जो वर दीया हुता सो याद आया अर शीघ्र ही पतिपै जाय आधे सिंहासनपर बैठी अर वीनती करती भई हे नाथ! सर्व ही स्त्रीनिके निकट तुम मोहि कृपाकर कही हुती जो तू मांग सो मैं देउं सो अब देवो। तुम सत्यवादी हो अर दानकरि निर्मलकीर्ति तिहारी जगतविषै विस्तर रही है। तब दशरथ कहते भये हे प्रिये! जो तेरी वांछा होय सो ही लेहु। तब राणी केकई आंसू डारती संती कहती भई—हे नाथ! हमपै ऐसी कहा चूक भई। जो तुम कठोर चित्त किया? हमकूं तजा चाहो हो हमारा जीव तो तिहारे आधीन है अर यह जिन दीक्षा अत्यंत दुर्धर सो लेयबेको तुम्हारी बुद्धि काहेकूं प्रवृत्ति है? यह इंद्र समान जे भोग तिनकर लडाया जो तिहारा शरीर सो कैसे मुनिपद धारोगे? कैसा है मुनिपद अत्यंत विषम है। या भांति जब राणी केकई ने कहा तब आप कहते भए—हे कांते! समर्थनिकूं कहा विषम? मैं तो निसन्देह मुनिव्रत धरूंगा, तेरी अभिलाषा होय सो मांग लेहु। राणी चिंतावान होय नीचा मुखकर कहती भई हे नाथ! मेरे पुत्रको राज्य देहु। तब दशरथ बोले यामें कहा संदेह? तैं धरोहरि मेली हुती सो अब लेहु, तैं जो कहा सो हम प्रमाण किया, अब शोक तज, तैं मोहि ऋण रहित किया। तब राम लक्ष्मणको बुलाय दशरथ कहते भये—कैसे हैं दोऊ भाई महा विनयवान हैं, पिताके आज्ञाकारी हैं, राजा कहे है हे वत्स! यह केकई अनेक कलाकी पारगामिनी, याने पूर्वे महा घोर संग्रामविषै मेरा सारथिपना किया, यह अतिचतुर है, मेरी जीत भई तब मैं तुष्टायमान होय याहि वर दीया जो तेरी वांछा होय सो मांग, तब याने वचन मेरे धरोहरि मेला, अब यह कहे है मेरे पुत्रको राज्य देवो सो जो याके पुत्रको राज्य न देउं तो याका पुत्र भरत संसारका त्याग करै अर यह पुत्रके शोककरि प्राण तजै अर मेरी वचन चूकनेकी अकीर्ति जगतमें विस्तरै, अर यह काम

मर्यादातैं विपरीत है जो बडे पुत्रकूं छोडकर छोटे पुत्रकूं राज्य देना अर भरतकूं सकल पृथिवीका राज्य दीए तुम लक्ष्मण सहित कहां जावो, तुम दोऊ भाई परमक्षत्री, तेजके धरनहारे हो, तातैं हे वत्स! मैं कहा करूं दोऊ ही कठिन बात आय बनी हैं। मैं अत्यन्त दुःखरूप चिंताके सागरमें पडा हूं। तब श्रीरामचन्द्र महा विनयको धरते संते कहते भए पिताके चरणारविंदकी ओर हैं नेत्र जिनके अर महा सज्जन भावको धरे हैं, हे तात! तुम अपना वचन पालो हमारी चिंता तजो जो तिहारे वचन चूकनेकी अपकीर्ति होय अर हमारे इन्द्रकी सम्पदा आवै तो कौन अर्थ ? जो सुपुत्र हैं सो ऐसा ही कार्य करै जाकर माता पिताकूं रंचमात्र भी शोक न उपजै। पुत्रका यही पुत्रपना पंडित कहै हैं—जो पिताकूं पवित्र करै अर कष्टतैं रक्षा करै। पवित्र करणा यह कहावै जो उनकूं जिनधर्मके सन्मुख करै। दशरथके अर राम लक्ष्मणके यह बात होय है ताही समय भरत महिलतैं उतरा मनमें विचारी मैं कर्मनिकूं हनूं मुनिव्रत धरूं सो लोकनिके मुखतैं हाहाकार शब्द भया तब पिताने विह्वल चित्त होय भरतकूं वन जायवेतैं राखा, गोदमें ले बैठे छातीसूं लगाय लिया मुख चूमा अर कहते भए—हे पुत्र! तू प्रजाका पालन कर मैं तपके अर्थ वनमें जाऊं हूं। भरत बोले—मैं राज्य न करूं जिन दीक्षा धरूंगा। तब राजा कहते भए—हे वत्स! कई एक दिन राज्य करहु। तिहारी नवीन वय है, वृद्ध अवस्थामें तप करियो। भरत कही—हे तात! जो मृत्यु है सो बाल वृद्ध तरुणकूं नाहीं देखे है, सर्वभक्षी है, तुम मोहि वृथा काहेको मोह उपजावो हो तब राजा कही—हे पुत्र! गृहस्थाश्रमविषै भी धर्मका संग्रह होय है। कुमानुषनितैं नहीं बनै है। तब भरत कही हे नाथ! इंद्रियानिके वशतैं काम क्रोधादिक भरे गृहस्थनिकूं मुक्ति कहां? तब भूपतिने कही—हे भरत! मुनिनिहूमें सब ही तद्भव मुक्ति नाहीं होय हैं, कईएक होय हैं तातैं तू कई दिन गृहस्थ धर्म आराधि, तब भरत कही—हे देव आप जो कही सो सत्य है परंतु जो गृहस्थनिका तो यह नियम ही है जो मुक्ति न होय अर मुनिनिमें

कोई होय कोई न होय गृहस्थ धर्म तें परम्पराय मुक्ति है साक्षात नाहीं तातैं पर हीन शक्तिवारेनिका काम है मोहि यह बात न रुचै, मैं महा व्रत धरणेकाही आभिलाषी हूं। गरुड कहा पतंगानिकी रीति आचरै? कुमानुष कामरूप अग्निकी ज्वालाकरि परम दाह कूं प्राप्त भए संते स्पर्शनइंद्रिय अर जिह्वा इन्द्रियकरि अधर्मकार्यकूं करै हैं, तिनकूं निवृत्ति कहां? पापी जीव धर्मते विमुख विषय भोगानिकूं सेय करि निश्चय सेती महा दुःख दाता जो दुर्गति ताहि प्राप्त होय हैं, ये भोग दुर्गतिके उपजावनहारे अर राखे न रहें, क्षणभंगुर हैं तातैं त्याज्यही हैं ज्यों ज्यों कामरूप अग्नि में भोगरूप ईंधन डारिये त्यों त्यों अत्यंत तापकी करणहारी कामाग्नि प्रज्वलित होय है तातैं हे तात! तुम मोहि आज्ञा देवो जो वनमें जाय विधिपूर्वक तप करूं, जिन भाषित तप परम निर्जराका कारण है, संसारतैं मैं अतिभयकूं प्राप्त भया हूं अर हे प्रभो! जो घरही विषैं कल्याण होय तो तुम काहेको घर तजि मुनि हुआ चाहो हो? तुम मेरे तात हो सो तातका यही धर्म है संसार समुद्रतें तारै, तपकी अनुमोदना करै, यह बात विचक्षण पुरुष कहें हैं शरीर स्त्री धन माता पिता भाई सकलकूं तजि यह जीव अकेला ही परलोककूं जाय है, चिरकाल देवलोक के सुख भोगे है, तो हू यह तृप्त न भया सो कैसे मनुष्योंके भोगनिकरि तृप्त होय? पिता भरतके ये वचन सुनकर बहुत प्रसन्न भया, हर्ष थकी रोमांच होय आए, अर कहता भया हे पुत्र! तू धन्य है, भव्यनिविषै मुख्य है, जिनशासनका रहस्य जानि प्रतिबोधको प्राप्त भया है तू जो कहे है सो प्रमाण है तथापि हे धीर! तैं अबतक कबहु मेरी आज्ञा भंग न करी, तू विनयवान पुरुषोंमें प्रधान है, मेरी वार्ता सुनि तेरी माता केकईने युद्धविषै मेरा सारथीपना किया, वह युद्ध अति विषम हुता जामें जीवनेकी आशा नाहीं सो याके सारथीपनेकरि युद्धमें विजय पाई, तब मैं तुष्टायमान होय याको कहा जो तेरी वांछा होय सो मांग तब याने कही यह वचन भण्डार रहे, जादिन मोहि इच्छा होयगी तादिन

मांगलूंगी सो आज याने यह मांगी कि मेरे पुत्रको राज्य देहु सो मैं प्रमाण किया। अब हे गुणानिधे! तू इन्द्रके राज्य समान यह राज्य निकंटक करि। मेरी प्रतिज्ञा भंगकी अकीर्ति जगतविषै न होय अर यह तेरी माता तेरे शोककरि तप्तायमान होय मरणको न पावै कैसी है यह निरंतर सुखकर लढाया है शरीर जाने अपत्य कहिए पुत्र ताका यही पुत्रपना है कि माता पिताको शोक समुद्रमें न डारे यह बात बुद्धि-मान कहे हैं या भांति राजा कही।

अथानन्तर श्रीराम भरतका हाथ पकड़ महामधुरबचनसे प्रेमकी भरी दृष्टिकर देखते संते कहते भए, हे भ्रात! तातने जैसे बचन तोहि कहे ऐसे और कौन कहने समर्थ जो समुद्रसे रत्नोंकी उत्पाति होय सो सरोवरसे कहां? अवार तेरी वय तपके योग्य नाहीं कैयक दिन राज्य कर जासे पिताकी कीर्ति बचनके पालिवेकी चन्द्रमा समान निर्मल होय अर तो सारिखे पुत्रके होते संते माता शोककर तप्ताय मान मरणको प्राप्त होय यह योग्य नाहीं अर मैं पर्वत अथवा वनविषे ऐसी जगह निवास करूंगा जो कोई न जाने तू निश्चिंत राज्यकरि। मैं सकल राजऋद्धि तज देशसे दूर रहूंगा अर पृथ्वीको पीडा काहू प्रकार न होयगी तातैं अब तू दीर्घ सांस मत डारे, कैयक दिन पिताकी आज्ञा मान राज्य करि, न्याय सहित पृथ्वीकी रक्षाकरि, हे निर्मल स्वभाव! यह इक्ष्वाकु वंशनिका कुल ताहि तू अत्यंत शोभायमान करि जैसे चंद्रमा ग्रह नक्षत्रादिकको शोभायमान करे है। भाईका यही भाईपना पंडितानिने कहा है कि भाइनिकी रक्षा करे संताप हरे। श्रीरामचन्द्र ऐसे वचन कहिकर पिताके चरणानिको भावसहित प्रणाम कर चल पडे। तब पिताको मूर्छा आय गई, काष्ठके स्तम्भ समान शरीर होय गया, राम तर्कश बांध धनुष हाथमें लेय माताको नमस्कारकर कहते भए—हे माता! हम अन्य देशकूं जांय हैं, तुम चिन्ता न करनी, तब माताको भी मूर्छा आय गई, बहुरि सचेत होय आंसू डारती संती कहती भई, हाय पुत्र!

तुम मोहि शोकके समुद्रमें डार कहां जावो हो, तुम उत्तम चेष्टाके धरणहारे हो, माताका पुत्र ही अवलम्बन है जैसे शाखाके मूल आधार है। माता रुदनकरि विलाप करती भई, तब श्रीराम माताकी भक्तिमें तत्पर ताहि प्रणामकर कहते भए–हे माता ! तुम विषाद मत करहु । मैं दक्षिण दिशामें कोई स्थानक कर तुमको निसंदेह बुलाऊंगा । हमारे पिताने माता केकईको वर दिया हुता सो भरतको राज्य दिया। अब मैं यहां न रहूं, विंध्याचलके वनविषै अथवा मलयाचलके वनविषै तथा समुद्रके समीप स्थानक करूंगा । मैं सूर्य समान यहां रहूं तो भरत चंद्रमाकी आज्ञा ऐश्वर्यरूप कांति न विस्तरे । तब माता नम्रीभूत जो पुत्र ताहि उरसे लगाय रुदन करती संती कहती भई । हे पुत्र ! मोकूं तिहारे साथ चलना उचित है, तोकूं देखे विना मैं प्राणोंके राखिवे समर्थ नाहीं, जे कुलवंती स्त्री हैं तिनके पिता अथवा पति तथा पुत्र ये ही आश्रय हैं । सो पिता तो कालवश भया अर पति जिनदीक्षा लेयबेको उद्यमी भया है । अब तो पुत्र हीका अवलंबन है, सो तुमहू छाड चाले तो मेरी कहा गति भई । तब राम बोले हे माता ! मार्गमें पाषाण अर कंटक बहुत हैं, तुम कैसे पावोंसे चलोगी तातैं कोऊ सुखका स्थानकर असवारी भेज तुमको बुला लूंगा । मोहि तिहारे चरणनिकी सौगंध है तिहारे लेनेको मैं आऊंगा, तुम चिंता मत करहु। ऐसे कह माताको शांतता उपजाय सीध करी । बहुरि पिताके पास गए । पिता मूर्छित होय गए हुते सो सचेत भए । पिताको प्रणामकर दूसरी मातावोंपे गए सुमित्रा केकई सुप्रभा सबानिको प्रणामकर विदा हुए । कैसे हैं राम ? न्यायविषै प्रवीण निराकुल है चित्त जिनका, तथा भाई बंधु मंत्री अनेक राजा उमराव परिवारके लोक सबानिकूं शुभवचन कह विदा भए । सबानिको बहुत दिलासाकर छातीसों लगाय उनके आंसू पूंछे । उनने घनी ही विनती करी जो यहां ही रहो सो न मानी । सामंत तथा हाथी घोडे रथ सबकी ओर कृपादृष्टिकर देखा बहुरि बडे २ सामंत हाथी घोडे भेट लाए सो रामने न राखे । सीता

अपने पतिको विदेश गमनको उद्यमी देख ससुर अर सासुनको प्रणामकर नाथके संग चली जैसे शची इंद्रके साथ चाले। अर लक्ष्मण स्नेहकर पूर्ण रामको विदेश गमनको उद्यमी देख चित्तमें क्रोधकर चितवता भया। जो हमारे पिताने स्त्रीके कहेते यह कहा अन्याय कार्य विचारा जो रामको टार औरको राज्य दिया। धिक्कार है स्त्रीनिकूं जो अनुचित काम करती शंका न करें, स्वार्थविषै आसक्त है चित्त जिनका, अर यह बडा भाई महानुभाव पुरुषोत्तम है सो ऐसे परिणाम मुनिनिके होय हैं। अर मैं ऐसा समर्थ हूं जो समस्त दुराचारिनिका पराभवकर भरतको राज्यलक्ष्मीते रहित करूं अर राज्यलक्ष्मी श्री रामके चरणनिमें लाऊं परन्तु यह वात उचित नाहीं, क्रोध महादुखदाई है जीवनिकूं अन्ध करे है। पिता तो जिनदीक्षाको उद्यमी भया अर मैं क्रोध उपजाऊं, सो योग्य नाहीं अर मोहि ऐसे विचारकर कहा? योग्य अर अयोग्य पिता जाने अथवा बडा भाई जाने जो पिताकी कीर्ति उज्ज्वल होय सो कर्तव्य है। मोहि काहूको कछु न कहना मैं मौन पकड बडे भाईके संग जाऊंगा। कैसा है यह भाई ? साधु समान हैं भाव जाके, ऐसा विचारकर कोप तज धनुष बाण लेय समस्त गुरुजनोंको प्रणामकर महाविनय संपन्न राम के संग चला, दोऊ भाई जैसे देवालयते देव निकसें तैसे मंदिरते निकसे अर माता पिता सकल परिवार अर भरत शत्रुघ्नसहित इनके वियोगते अश्रुपातकरि मानों वर्षाऋतु करते संते राखवेको चले सो राम लक्ष्मण अति पिताभक्त संबोधनेको महापंडित विदेश जायवे हीका है निश्चय जिनके, सो माता पिता की बहुत स्तुतिकर बारंबार नमस्कारकर बहुत धीर्य बंधाय पीठ पीछे फेरे सो नगरमें हाहाकार भया। लोक वार्ता करे हैं। हे मात! यह कहा भया यह कौनने मत उठाया। या नगरी हीका अभाग्य है अथवा सकल पृथ्वीका अभाग्य है। हे मात, हम तो अब यहां न रहेंगे, इनके लार चालेंगे। ये महा समर्थ हैं अर देखो यह सीता नाथके संग चली है अर रामकी सेवा करणहारा लक्ष्मण भाई है, धन्य है यह जानकी

विनयरूप वस्त्र पहिरे भरतारके संग जाय है। नगरकी नारी कहे हैं हम सबको शिक्षा देनहारी यह सीता महापतिव्रता है। या समान और नारी नाही, जे महापतिव्रता होंय सो याकी उपमा पावें, पतिव्रतावोंके भरतार ही देव हैं अर देखो यह लक्ष्मण माताको रोवती छोड बडे भाईके संग जाय है। धन्य याकी भक्ति, धन्य याकी प्रीति, धन्य याकी शक्ति, धन्य याकी क्षमा, धन्य याकी विनयकी अधिकता, या समान और नाहीं अर दशरथ भरतको यह कहा आज्ञा करी जो तू राज्य लेहु अर राम लक्ष्मणको यह कहा बुद्धि उपजी जो अयोध्याको छांड चले, जा कालमें जो होनी होय सो होय है, जाके जैसा कर्म उदय होय तैसी ही होय जो भगवानके ज्ञानमें भासा है सो होय, दैवगति दुर्निवार है, यह वात बहुत अनुचित होय है यहांके देवता कहां गए। ऐसे लोगानिके मुखते ध्वनि होती भई। सब लोक इनके लार चालवेको उद्यमी भए। घरनिते निकसे नगरीका उत्साह जाता रहा, शोककर पूर्ण जो लोक तिनके अश्रुपातोंकर पृथ्वी सजल होय गई जैसे समुद्रकी लहर उठे है तैसे लोक उठे। रामके संग चाले, मने किए हू न रहें, रामको भक्तिकर लोक पूजें संभाषण करें सो राम पैंड पैंडमें विघ्न मानें इनका भाव चलने का लोक ऐसा चाहें कि लार चलें, रामका विदेश गमन मानों सूर्य देख न सका, सो अस्त होने लगा। अस्त समय सूर्यके प्रकाशने सर्व दिशा तजी जैसे भरत चक्रवर्तीने मुक्तिके निमित्त राज्य संपदा तजी हुती। सूर्यके अस्त होते परम रागको धरती संती सन्ध्या सूर्यके पीछे ही चली, जैसे सीता रामके पीछे चली अर समस्त विज्ञानका विध्वंस करणहारा अंधकार जगतमें व्याप्त भया, मानों रामके गमनसे तिमिर विस्तरा, लोग लार लागे सो रहें नाहीं, तब रामने लोकानिके टारिवेको श्रीअरनाथ तीर्थंकरके चैत्यालयमें निवास करना विचारा, संसारके तारणहारे भगवान तिनका भवन सदा शोभायमान महा सुगंध अष्ट मंगल द्रव्यनिकर मंडित, जाके तीन दरवाजे, ऊंचा तोरण सो राम लक्ष्मण सीता प्रदक्षिणा

देय चैत्यालय मांहि पैठ समस्त विधिके वेत्ता दोय दरबाजे तक तो लोक चले गए । तीसरे दरवाजेपर द्वारपालने लोकनिको रोका जैसे मोहिनीकर्म मिथ्यादृष्टियोंको शिवपुर जानेसे रोके है, राम लक्ष्मण धनुष बाण अर बखतर बाहिर मेल भीतर दर्शनको गए। कमल समान हैं नेत्र जिनके, श्रीअरनाथका प्रतिबिंब रत्नोंके सिंहासनपर विराजमान महाशोभायमान महासौम्य कायोत्सर्ग श्रीवत्सलक्षणकर देदीप्यमान है उरस्थल जिनका, प्रकट हैं समस्त लक्षण जिनके, संपूर्ण चंद्रमा समान वदन, फूले कमलसे नेत्र, कथनविषै अर चिंतवनविषै न आवै ऐसा है रूप जिनका, तिनका दर्शनकर भावसहित नमस्कारकर ये दोऊ भाई परम हर्षको प्राप्त भए, कैसे हैं दोऊ? बुद्धि पराक्रमरूप लज्जाके भरे जिनेन्द्रकी भक्तिविषै तत्पर रात्रिको चैत्यालयके समीप ही रहे, तहां इनको वसे जानकर माता कौशल्यादिक पुत्रनिविषै है वात्सल्य जिनका, आयकर आंसू डारतीं बारंबार उरसों लगावती भई। पुत्रनिके दर्शनविषै अतृप्त विकलपरूप हिंडोलविषै झूले हैं चित्त जिनका, गौतम स्वामी कहै हैं।

हे श्रेणिक ! सर्वशुद्धतामें मनकी शुद्धता महा प्रशंसा योग्य है । स्त्री पुत्रको भी उरसे लगावे अर पतिको भी उरसे लगावे परंतु परिणामोंका अभिप्राय जुदा जुदा है । दशरथकी चारों ही राणी गुणरूप लावण्यताकर पूर्ण महामिष्टवादिनी पुत्रोंसे मिल पतिपै गईं जायकर कहती भईं कैसा है पति ? सुमेरुसमान निश्चल है भाव जाका राणी कहैं हैं हे देव ! कुलरूप जहाज शोकरूप समुद्रमें डूबे है सो थांभो । राम लक्ष्मणको पीछे लावो तब राजा कहते भए यह जगत विकाररूप मेरे आधीन नाहीं । मेरी इच्छा तो यह ही है कि सर्व जीवनिको सुख होय कोऊको भी दुःख न होय जन्म जरा मरणरूप पाराधियोंकर कोई जीव पीडा न जाय परंतु ये जीव नानाप्रकारके कर्मोंकी स्थितिको धरे हैं तातैं कौन विवेकी वृथा शोक करे । बांधवादिक इष्टपदार्थनिके दर्शनविषै प्राणिनिको तृप्ति नाहीं तथा धन अर जीतव्य इनकरि तृप्ति नाहीं ।

इंद्रियोंके सुख पूर्ण न होय सके अर आंयु पूर्ण होय तब जीव देहको तज और जन्म धरे जैसे पक्षी वृक्षको तज चला जाय है तुम पुत्रनिकी माता हो पुत्रनिको ले आवो पुत्रनिके राज्यका उदय देख विश्रामको भजो। मैंने तो राज्यका अधिकार तजा पाप क्रियासे निवृत्त भया। भवभ्रमणसे भयको प्राप्त भया। अब मैं मुनिव्रत धरूंगा हे श्रेणिक ! या भांति राजा राणियोंको कहकर निर्मोहताके निश्चयको प्राप्त भया सकल विषियाभिलाषरूप दोषोंसे रहित सूर्य समान है तेज जाका सो पृथ्वीमें तप संयमका उद्योत करता भया।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं दशरथका वैराग्य वर्णन करनेवाला इकतीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ३१ ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण क्षण एक निद्राकर अर्धरात्रिके समय जब मनुष्य सोय रहे लोकनिका शब्द मिट गया अर अंधकार फैल गया ता समय भगवानको नमस्कारकर बखतर पहिर धनुधबाण लेय सीताको बीचमें लेकर चले, घर घर दीपकनिका उद्योत होय रहा है, कामीजन अनेक चेष्टा करे हैं। ये दोऊ भाई महाप्रवीण नगरके द्वारकी खिडकीकी ओरसे निकसे, दक्षिण दिशाका पंथ लिया, रात्रिके अंतमें दौडकर सामंत लोक आय मिले राघवके संग चलनेकी है अभिलाषा जिनके, दूरते राम लक्ष्मणको देख महा विनयके भरे असवारी छोड प्यादे आए चरणारविंदको नमस्कारकरि निकट आय वचनालाप करते भए। बहुत सेना आई अर जानकीकी बहुत प्रशंसा करते भए जो याके प्रसादते हम राम लक्ष्मणको आय मिले यह न होती तो ये धीरे धीरे न चलते तो हम कैसे पहुंचते, ये दोऊ भाई पवन समान शीघ्रगामी हैं अर यह सीता महासती हमारी माता है। या समान प्रशंसा योग्य पृथ्वीविषै और नाहीं। ये दोऊ

भाई नरोत्तम सीताकी चाल प्रमाण मंद मंद दो कोस चले। खेतनिविषै नानाप्रकारके अन्न हरे होय रहे हैं अर सरोवरनिमें कमल फूल रहे हैं अर वृक्ष महारमणीक दीखे हैं। अनेक ग्राम नगरादिमें ठौर २ लोक पूजे हैं भोजनादि सामग्री करि, अर वडे वडे राजा वडी फौजसे आय मिले जैसे वर्षाकालमें गंगा जमुनाके प्रवाहविषै अनेक नदियनिके प्रवाह आय मिलें। कैइक सामंत मार्गके खेदकर इनका निश्चय जान आज्ञा पाय पीछे गए अर कैएक लज्जाकर कैएक भयकर कैएक भक्तिकर लार प्यादे चले जाय हैं सो राम लक्ष्मण क्रीडा करते परियात्रा नामा अटवीविषै पहुंचे। कैसी है अटवी नाहर अर हाथिनिके समूहनिकर भरी, महा भयानक वृक्षनिकर रात्रिसमान अंधकारकी भरी, जाके मध्य नदी है ताके तट आए जहां भीलनिका निवास है नानाप्रकारके मिष्ट फल हैं। आप तहां तिष्ठकर कैएक राजानिको विदा किया अर कैएक पीछे न फिरे रामने वहुत कहा तो भी संग ही चाले सो सकल नदीको महा भयानक देखते भए। कैसी है नदी पर्वतनिसों निकसती महानील है जल जाका प्रचंड हैं लहर जामें महाशब्दायमान अनेक जे ग्राह मगर तिनकर भरी दोऊ ढांहा विदारती कल्लोलनिके भयकर उडे हैं तीरके पक्षी जहां ऐसी नदीको देख कर सकल सामंत त्रासकर कंपायमान होय राम लक्ष्मणको कहते भए हे नाथ ! कृपाकर हमें भी पार उतारहु, हम सेवक भक्तिवंत हमसे प्रसन्न होवो, हे माता जानकी लक्ष्मणसे कहो जो हमकूं पार उतारे, या भांति आंसू डारते अनेक नरपति नाना चेष्टाके करणहारे नदीविषै पडने लगे, तव राम वोले अहो अव तुम पाछे फिरो। यह वन महा भयानक है। हमारा तुम्हारा यहांलग ही संग हुना पिताने भरतको सवका स्वामी कियाहै सो तुम भक्तिकर तिनकूं सेवो। तव वे कहते भए हे नाथ! हमारे स्वामी तुमही हो, महादयावान हो, हमपर प्रसन्न होवो, हमको मत छोडहु तुम विना यह प्रजा निराश्रय भई आकुलतारूप कहो कौनकी शरण जाय, तुम समान और कौन है व्याघ्र सिंह अर गजेन्द्र सर्पादिकका भरा भयानक, जो

यह बन तामें तुम्हारे संग रहेंगे। तुम बिना हमें स्वर्गहु सुखकारी नाहीं। तुम कहो पीछे जावो सो चित्त फिरे नाहीं कैसे जाहिं? यह चित्त सब इंद्रियनिका अधिपति याहीते कहिए है जो अद्भुत वस्तुमें अनुराग करे। हमारे भोगनिकर घरकर तथा स्त्री कुटम्बादिकर कहा। तुम नररत्न हो, तुमको छांड कहां जाहिं हे प्रभो! तुमने बालक्रीडाविषै भी हमसे घृणा न करी अब अत्यन्त निठुरताको धारो हो। हमारा अपराध कहा? तिहारे चरण रजकर परमवृद्धिको प्राप्त भए, तुम तो भृत्यवत्सल हो। अहो माता जानकी! अहो लक्ष्मण धीर! हम सीस निवाय हाथ जोड वीनती करे हैं, नाथको हमपर प्रसन्न करहु। ये वचन सबन कहे तब सीता अर लक्ष्मण रामके चरणनिकी ओर निरख रहे। राम बोले अब तुम पाछे जाहु। यही उत्तर है। सुखसों रहियो ऐसा कहकर दोनों धीर नदीके विषे प्रवेश करते भए। श्रीराम सीताका कर गह सुखसे नदीमें लेगए जैसे कमलनीको दिग्गज ले जाय। वह असराल नदी राम लक्ष्मणके प्रभावकर नाभि प्रमाण बहने लगी दोऊ भाई जल विहारविषै प्रवीण क्रीडा करत चले गए। सीता रामके हाथ गहे ऐसी शोभै मानों साक्षात् लक्ष्मी ही कमलदलमें तिष्ठी है। राम लक्ष्मण क्षणमात्रविषै नदीपार भए वृक्षनिके आश्रय आय गए। तब लोकनिकी दृष्टिते अगोचर भए, तब कई एक तो विलाप करते आंसू डारते घरनिको गए अर कईएक राम लक्ष्मणकी ओर धरी है दृष्टि जिनने सो काष्ठकेसे होय रहे अर कईएक मूर्छा खाय धरतीपर पडे अर कईएक ज्ञानको प्राप्त होय जिन दीक्षाको उद्यमी भए परस्पर कहते भए जो धिकार है या असार संसारको अर धिकार है इन क्षणभंगुर भोगनिको ये काले नागके फण समान भयानक है। ऐसे शूरवीरनिकी यह अवस्था तो हमारी कहा बात या शरीरको धिक्कार, जो पानीके बुदबुदा समान निस्सार जरा मरण इष्टवियोग अनिष्टसंयोग इत्यादि कष्टका भाजन, धन्य हैं वे महापुरुष भाग्यवंत उत्तम चेष्टाके धारक जे मरकट (वंदर) की भौंह समान लक्ष्मीको चंचल जान तजिकर दीक्षा

धरते भये या भांति अनेक राजा विरक्त दीक्षाको सन्मुख भए, तिनने एक पहाडकी तलहटीमें सुन्दर वन देखा अनेक वृक्षनिकरमंडित महासघन नानाप्रकारके पुष्पनिकर शोभित जहां सुगंधके लोलुपी भ्रमर गुंजार करे हैं तहां महापवित्र स्थानकमें तिष्ठते ध्यानाध्ययनविषै लीन महातपके धारक साधु देखे तिनको नमस्कारकर वे राजा जिननाथका जो चैत्यालय तहां गए। ता समय पहाडनिकी तलहटी तथा पहाडनिके शिखरविषै अथवा रमणीक वननिविषै नदीनिके तटविषै नगर ग्रामादिकविषै जिनमंदिर हुते तहां नमस्कारकरि एक समुद्र समान गम्भीर मुनिनिके गुरु सत्यकेतु आचार्य तिनके निकट गये, नमस्कार कर महाशांतरसके भरे आचार्यसे वीनती करते भये हे नाथ! हमको संसार समुद्रते पार उतारहु, तब मुनि कही तुमको भव पार उतारनहारी भगवती दीक्षा है सो अंगीकार करहु। यह मुनिकी आज्ञा पाय ये परम हर्षको प्राप्त भये। राजा विदग्धविजय मेरुक्रूर संग्रामलोलुप श्रीनागदमन धीर शत्रुदमन धर विनोद कंटक सत्यकठोर प्रियवर्धन इत्यादि निर्ग्रंथ होते भये तिनका गज तुरंग रथादि सकल साज सेवक लोकनिने जायकरि उनके पुत्रादिकनिको सौंपा तव वे बहुत चिंतावान भए। बहुरि समझकर नानाप्रकारके नियम धारते भए। कैयक सम्यकदर्शनको अंगीकारकर संतोषको प्राप्त भए, कैयक निर्मल जिनेश्वरदेवका धर्म श्रवण कर पापते परांगमुख भए। बहुत सामंत राम लक्ष्मणकी वार्ता सुन साधु भए कैयक श्रावकके अणुव्रत धारते भए। बहुत राणी आर्यिका भई बहुत श्राविका भई कैयक सुभट रामका सर्व वृत्तांत भरत दशरथ पर जाकर कहते भए सो सुनकर दशरथ अर भरत कछुयक खेदको प्राप्त भए।

अथानंतर राजा दशरथ भरतको राज्याभिषेक कर कछुयक जो रामके वियोग कर व्याकुल भया हुता हृदय सो समतामें लाय विलाप करता जो अंतःपुर ताहि प्रतिबोधि नगरते वनको गए। सर्वभूतिहित स्वामीको प्रणामकर बहुत नृपनिसहित जिनदीक्षा आदरी। एकाकी विहारी जिनकलपी भए।

परम शुक्लध्यानकी है अभिलाषा जिनके तथापि पुत्रके शोककर कबहुक कछुइक कलुषता उपज आवे सो एक दिन ये विचक्षण विचारते भए कि संसारके दुखका मूल यह जगतका स्नेह है इसे धिक्कार हो या करि कर्म बंधे हैं। मैं अनंत जन्म धरे तिनविषै गर्भ जन्म बहुत धरे सो मेरे गर्भ जन्मके अनेक माता पिता भाई पुत्र कहां गए। अनेक बार मैं देव लोकके भोग भोगे अर अनेक वार नरकके दुख भोगे, तिर्यंचगतिविषै मेरा शरीर अनेक बार इन जीवनिने भखा इनका मैं भखा, नानारूप जे योनियें तिनविषै मैं बहुत दुख भोगे अर बहुत वार रुदन किया अर रुदनके शब्द सुने अर बहुतवार वीणवांसुरी आदि वादित्रोंके नाद सुने, गीत सुने, नृत्य देखे देवलोकविषै मनोहर अप्सरानिके भोग भोगे, अनेक वार मेरा शरीर नरकविषै कुल्हाडानि कर काटा गया, अर अनेकवार मनुष्यगतिविषै महा सुगंध महावीर्यका करणहारा षट्रस संयुक्त अन्न आहार किया अर अनेकवार नरकविषै गला सीसा अर तांवा नारकीयोंने मार मार मुझे प्याया अर अनेकवार सुर नर गतिविषै मनके हरणहारे सुन्दररूप देखे अर सुंदररूप धारे अर अनेकवार नरकविषै महाकुरूप धारे अर नानाप्रकारके त्रास देखे, कैयक वार राजपद देवपदविषै नानाप्रकारके सुगंध सूंघे तिन पर भ्रमर गुंजार करें अर कैयक वार नरककी महादुर्गंध सूंघी अर अनेक वार मनुष्य तथा देवगतिविषै महालीलाकी धरणहारी वस्त्राभरण मंडित मनकी चोरणहारी जे नारी तिन सों आलिंगन कीया अर बहुत वार नरकानिविषै कूटशाल्मलि वृक्ष तिनके तीक्षण कंटक अर प्रज्वालिती लोहकी पुतलीनिसे स्पर्श किया, या संसारविषै कर्मनिके संयोगते मैं कहा कहा न देखा, कहा कहा न सूंघा, कहा कहा न सुना, कहा कहा न भखा अर पृथिवीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकायविषै ऐसा देह नाहीं जो मैं न धारा, तीनलोकविषै ऐसा जीव नाहीं जासूं मेरे अनेक नाते न भए, ये पुत्र मेरे कईवार पिता भए माता भए, शत्रु भए, मित्र भए, ऐसा स्थानक नाहीं जहां मैं न

उपजा न मुआ, ये देह भोगादिक अनित्य या जगतविषै कोई शरण नाहीं, यह चतुर्गति रूप संसार दुःखका निवास है, मैं सदा अकेला हूं ये षट्द्रव्य परस्पर सब ही भिन्न हैं, यह काय अशुचि, मैं पवित्र, ये मिथ्यात्वादि अव्रतादिकर्म आश्रवके कारण हैं, सम्यक्त व्रत संयमादि संवरके कारण हैं। तपकर निर्जरा होय है। यह लोक नानारूप मेरे स्वरूपते भिन्न या जगतविषै आत्मज्ञान दुर्लभ है, अर वस्तुका जो स्वभाव सोई धर्म तथा जीवदया धर्म सो मैं महाभाग्यते पाया, धन्य ये मुनि जिनके उपदेशते मोक्षमार्ग पाया सो अब पुत्रनिकी कहा चिंता, ऐसा विचारकर दशरथ मुनि निर्मोहदशाको प्राप्त भए, जिन देशों में पहिले हाथी चढे चमर ढुरते छत्र फिरते हुते अर महारण संग्रामविषै उद्धत वैरिनिको जीते तिन देश-निविषैं निर्ग्रंथ दशा धरे बाईस परीषह जीतते शांतिभाव संयुक्त विहार करते भए। अर कौशल्या तथा सुमित्रा पतिके वैरागी भए अर पुत्रनिके विदेश गए महाशोकवंती भई, निरंतर अश्रुपात डारें तिनके दुःखको देख, भरत राज्य विभूतिको विषसमान मानता भया अर केकई तिनको दुखी देख उपजी है करुणा जाके पुत्रको कहती भई हे पुत्र ! तू राज्य पाया, वडे वडे राजा सेवा करे हैं परंतु राम लक्ष्मण विना यह राज्य शोभे नाहीं सो वे दोऊ भाई महाविनयवान उन विना कहा राज्य अर कहा सुख अर कहा देशकी शोभा अर कहा तेरी धर्मज्ञता ? वे दोऊ कुमार अर वह सीता राजपुत्री सदा सुखके भोगनहारे पाषाणादिककर पूरित जे मार्ग ताविषै वाहन विना कैसे जावेंगे अर तिन गुणसमुद्रनिकी ये दोनों माता निरंतर रुदन करे हैं सो मरणको प्राप्त होंयगी तातैं तुम शीघ्रगामी तुरंगपर चढ शिताबी जावो उनको ले आवो, तिनसहित महासुखसों चिरकाल राज करियो अर मैं भी तेरे पीछे ही उनके पास आऊं हूं, यह माताकी आज्ञा सुन बहुत प्रसन्न होय ताकी प्रशंसा कर अति आतुर भरत हजार अश्व सहित रामके निकट चला अर जे रामके समीप ते वापिस आए हुते तिनको संग ले चला, आप तेज तुरंग पर

चढा उतावली चाल वनविषै आया। वह नदी असराल वहती हुती सो तामें वृक्षनिके लठे गेर बेडे बांध क्षणमात्रमें सेना सहित पार उतरे, मार्गविषै नर नारिनिसों पूछते जाय जो तुम राम लक्ष्मण कहीं देखे। वे कहे हैं यहांते निकट ही हैं सो भरत एकाग्रचित्त चले गए। सघन वनमें एक सरोवरके तटपर दोऊ भाई सीता सहित बैठे देखे। समीप धरे हैं धनुष वाण जिनके, सीताके साथ ते दोऊ भाई घने दिवसविषै आए अर भरत छह दिनमें आया, रामको दूरते देख भरत तुरंगते उतर पायपियादा जाय रामके पायन परा मूर्छित होय गया तब राम सचेत किया। भरत हाथ जोड सिर निवाय रामसूं वीनती करता भया।

जो हे नाथ! राज्यके देयवेकर मेरी कहा विडम्बना करी। तुम सर्व न्याय मार्गके जाननहारे महा प्रवीण मेरे या राज्यते कहा प्रयोजन? तुम विना जीवनेकर कहा प्रयोजन? तुम महाउत्तम चेष्टाके धरणहारे मेरे प्राणोंके आधार हो। उठो अपने नगर चलैं। हे प्रभो! मोपर कृपा करहु, राज्य तुम करहु, राज्य योग तुम ही हो, मोहि सुखकी अवस्था देहु। मैं तिहारे सिरपर छत्र फेरता खडा रहूंगा अर शत्रुघन चमर ढारेगा अर लक्ष्मण मंत्री पद धारेगा, मेरी माता पश्चातापरूप अग्निकर जरे है अर तिहारी माता अर लक्ष्मणकी माता महाशोक करै हैं, यह वात भरत करे ही हैं अर ताही समय शीघ्र रथपर चढी अनेक सामंतनिसहित महाशोककी भरी केकई आई अर राम लक्ष्मणकूं उरसों लगाय बहुत रुदन करती भई। रामने धीर्य बंधाया, तब केकई कहती भई—हे पुत्र! उठो अयोध्या चलो, राज्य करहु, तुम विन मेरे सकलपुर वन समान है अर तुम महाबुद्धिवान हो, भरतसों सेवा लेवो हम स्त्री जन निकृष्ट बुद्धि हैं मेरा अपराध क्षमा करहु, तब राम कहते भए—हे मात! तुम तो सब वातनिविषै प्रवीण हो। तुम कहा न जानो हो, क्षत्रियनिका यही विरुद है जो वचन न चूकें, जो कार्य विचारा ताहि और भांति न करें। हमारे तातने जो वचन कहा सो हमको अर तुमको निवाहना, या वातविषै भरतकी अकीर्ति

न होयगी। बहुरि भरतते कहा कि हे भाई! तुम चिंता मत करहु, तू अनाचारते शंके है सो पिताकी आज्ञा अर हमारी आज्ञा पालवेते अनाचार नाहीं, ऐसा कहकर वनविषै सब राजानिके समीप भरतका श्रीरामने राज्याभिषेक किया अर केकईकूं प्रणामकर बहुत स्तुतिकर बारम्बार संभाषणकर भरतको उरसे लगाय बहुत दिलासाकर मुशकिलते विदा किया। केकई अर भरत राम लक्ष्मण सीताके समीप ते पाछे नगरको चले, भरत रामकी आज्ञा प्रमाण प्रजाका पिता समान हुआ राज्य करे। जाके राज्य विषै सर्व प्रजाको सुख, कोई अनाचार नाहीं, यद्यपि ऐसा निःकंटक राज्य है तौ भी भरतको क्षणमात्र राग नाहीं, तीनों काल श्रीअरनाथकी बंदना करे अर मुनिनिके मुखते धर्म श्रवण करे, द्युति भट्टारक नामा जे मुनि, अनेक मुनि करे हैं सेवा जिनकी, तिनके निकट भरतने यह नियम लिया कि रामके दर्शनमात्रते ही मुनिव्रत धारूंगा॥

अथानन्तर मुनि कहते भए कि—हे भरत! कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके, ऐसे राम जब लग न आवें तब लग तुम गृहस्थके व्रत धारहु। जे महात्मा निर्ग्रंथ हैं तिनका आचरण अति विषम है सो पहिले श्रावकके व्रत पालने तासे यतिका धर्म सुखसों सधे है। जब वृद्ध अवस्था आवेगी तब तप करेंगे, यह वार्ता कहते भए अनेक जडबुद्धि मरणको प्राप्त भए। महाअमोलक रत्न समान यतिका धर्म जाकी महिमा कहनेविषै न आवे ताहि जे धारे हैं तिनकी उपमा कौनकी देहि। यतिके धर्मते उतरता श्रावकका धर्म है सो जे प्रमादरहित करे हैं ते धन्य हैं। यह अणुव्रत हू प्रबोधका दाता है जैसे रत्नद्वीपविषै कोऊ मनुष्य गया अर वह जो रत्न लेय सोई देशान्तरविषै दुर्लभ है तैसे जिनधर्म नियमरूप रत्ननिका द्वीप है। ताविषै जो नियम लेय सोई महाफलका दाता है जो अहिंसारूप रत्नको अंगीकारकर जिनवरको भक्तिकर अरचे सो सुरनरके सुख भोग मोक्षको प्राप्त होय अर जो सत्यव्रतका धारक मिथ्यात्वका परि-

हारकर भावरूप पुष्पनिकी मालाकर जिनेश्वरको पूजे है ताकी कीर्ति पृथिवीविषै विस्तरै है अर आज्ञा कोई लोप न सके अर जो परधनका त्यागी जिनेन्द्रको उरविषै धारे, बारंबार जिनेंद्रको नमस्कार करे सो नव निधि चौदह रत्नका स्वामी होय अक्षयनिधि पावे अर जो जिनराजका मार्ग अंगीकारकर पर नारीका त्याग करे सो सबके नेत्रनिको आनन्दकारी मोक्ष लक्ष्मीका वर होय अर जो परिग्रहका प्रमाण कर संतोष धर जिनपतिका ध्यान करे सो लोक पूजित अनन्त महिमाको पावे अर आहारदानके पुण्य कर महा सुखी होय ताकी सब सेवा करे अर अभयदानकर निर्भय पद पावे। सर्व उपद्रवते रहित होय अर ज्ञान दानकर केवलज्ञानी होय सर्वज्ञपद पावे अर औषधि दानके प्रभावकर रोगरहित निर्भयपद पावे अर जो रात्रीको आहारका त्याग करे सो एक वर्षविषै छह महीना उपवासका फल पावे यद्यपि गृहस्थ परके आरम्भविषै प्रवृत्ते है तो हू शुभगतिके सुख पावे जो त्रिकाल जिनदेवकी वंदना करे ताके भाव निर्मल होंय, सर्व पापका नाश करे अर जो निर्मल भावरूप पुष्पनिकर जिननाथको पूजे सो लोकविषै पूजनीक होय अर जो भोगी पुरुष कमलादि जलके पुष्प तथा केतकी मालती आदि पृथ्वीके सुगन्ध पुष्पनिकर भगवानको अरचे सो पुष्पविमानको पाय यथेष्ट क्रीडा करे अर जो जिनराजपर अगर चंदनादि धूप खेवे सो सुगंध शरीरका धारक होंय अर जो गृहस्थी जिनमंदिरविषै विवेकसहित दीपोद्योत करे सो देवलोकविषै प्रभाव संयुक्त शरीर पावे अर जो जिनभवनविषै छत्र चमर झालरी पताका दर्पणादि मंगल द्रव्य चढावे अर जिनमंदिरको शोभित करे सो आश्चर्यकारी विभूति पावे अर जो जल चंदनादि ते जिन पूजा करे सो देवनिका स्वामी होय महा निर्मल सुगंध शरीर जे देवांगना तिनका वल्लभ होय अर जो नीरकर जिनेंद्रका अभिषेक करे सो देवनिकर मनुष्यनिते सेवनीक चक्रवर्ती होय, जाका राज्याभिषेक देव विद्याधर करैं अर जो दुग्धकरि अरहन्तका अभिषेक करे सो क्षीरसागरके जलसमान उज्ज्वल

विमानमें परम कांति धारक देव होय बहुरि मनुष्य होय मोक्ष पावै अर जो दधिकर सर्वज्ञ वीतरागका अभिषेक करैं सो दधि समान उज्ज्वल यशको पायकर भवोदधिको तरे अर जो घृतकर जिननाथका अभिषेक करे सो स्वर्ग विमानमें महाबलवान देव होय परंपराय अनंतवीर्यको धरे अर जो ईखरसकर जिननाथका अभिषेक करे सो अमृतका आहारी सुरेश्वर होय नरेश्वर पद पाय मुनीश्वर होय अविनश्वर पद पावे। अभिषेकके प्रभावकर अनेक भव्यजीव देव अर इंद्रनिकरि अभिषेक पावते भए, तिनकी कथा पुराणनिमें प्रसिद्ध है जो भक्तिकर जिनमंदिरमें मयूर पिच्छादिककर बुहारी देय सो पापरूप रज से रहित होय परम विभूति आरोग्यता पावे अर जो गीत नृत्य वादित्रादिकर जिनमंदिरविषै उत्सव करे सो स्वर्गमें परम उत्साहको पावे अर जिनेश्वरके चैत्यालय करावे सो ताके पुण्यकी महिमा कौन कह सके, सुरमंदिरके सुख भोग परंपराय अविनाशी धाम पावे अर जो जिनेंद्रकी प्रतिमा विधिपूर्वक करावे सो सुरनरके सुख भोग परम पद पावे। व्रत विधान तप दान इत्यादि शुभ चेष्टानिकरि प्राणी जे पुण्य उपारजे हैं सो समस्त कार्य जिन बिंब करावनेके तुल्य नाहीं, जो जिनबिम्ब करावे सो परंपराय सिद्धपद पावे अर जो भव्य जिनमंदिरके शिखर चढावे सो इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादिक सुख भोग लोकके शिखर पहुंचे अर जो जीर्ण जिनमंदिरनिकी मरम्मत करावे सो कर्मरूप अजीर्णको हर निर्भय निरोग पदको पावे अर जो नवीन चैत्यालय कराय जिनबिंब पधराय प्रतिष्ठा करै सो तीन लोकविषै प्रतिष्ठा पावै अर जो सिद्धक्षेत्रादि तीर्थोंकी यात्रा करे सो मनुष्य जन्म सफल करे अर जो जिनप्रतिमाके दर्शनका चिंतवन करे ताहि उपवासका फल होय अर दर्शनके उद्यमका अभिलाषी होय सो बेलाका फल पावै अर जो चैत्यालय जायवेका आरम्भ करे ताहि तेलाका फल होय अर गमन किए चौलाका फल होय अर कछु एक आगे गए पंच उपवासका फल होय, आधी दूर गए पक्षोपवासका फल होय अर चैत्यालयके

दर्शनते मासोपवासका फल होय अर भाव भक्तिकर महास्तुति किए अनंत फल प्राप्ति होय, जिनेंद्रकी भक्ति समान और उत्तम नाहीं अर जो जिनसूत्र लिखवाय ताका व्याख्यान करें करावें पढें पढावें सुनें सुनावें शास्त्रनिकी तथा पंडितानिकी भक्ति करें वे सर्वांगके पाठी होय केवल पद पावें। जो चतुर्विध संघ की सेवा करे सो चतुर्गतिके दुख हर पंचम गति पावें। मुनि कहे हैं—हे भरत! जिनेंद्रकी भक्तिकर कर्म क्षय होय अर कर्म क्षय भए अक्षयपद पावे ये वचन मुनिके सुन राजा भरत प्रणामकर श्रावकका व्रत अंगीकार किया। भरत बहुश्रुत अतिधर्मज्ञ महाविनयवान श्रद्धावान चतुर्विध संघको भक्तिकर अर दुखित जीवोंको दयाभावकर दान देता भया, सम्यग्दर्शन रतनको उरमें धारता भया, अर महासुन्दर श्रावकके व्रतविषै तत्पर न्याय सहित राज्य करता भया।

भरत गुणनिका समुद्र ताका प्रताप अर अनुराग समस्त पृथिवीविषै विस्तरता भया, ताके देवांगना समान ड्योढ सौ राणी तिनविषै आसक्त न भया, जलमें कमलकी न्याई अलिप्त रहा, जाके चित्तमें निरंतर यह चिंता वरते कि कब यतिके व्रत धरूं तप करूं निर्ग्रंथ हुवा पृथिवीमें विचरूं। धन्य है वे पुरुष जे धीर सर्व परिग्रहका त्याग कर तपके बल कर समस्त कर्मको भस्मकर सारभूत जो निर्वाणका सुख सो पावे हैं, मैं पापी संसारमें मग्न प्रत्यक्ष देखूं हूं जो यह समस्त संसारका चरित्र क्षणभंगुर है। जो प्रभात देखिये सो मध्याह्नविषै नाहीं, मैं मूढ होय रहा हूं जे रंक विषयाभिलाषी संसारमें राचे हैं ते खोटी मृत्यु मरें हैं, सर्प व्याघ्र गज जल अग्नि शस्त्र विद्युत्पात शूलारोपण असाध्य रोग इत्यादि कुरीति से शरीर तजेंगे यह प्राणी अनेक सहस्रों दुख का भोगनहारा संसार विषै भ्रमण करे है बडा आश्चर्य है अल्प आयुमें प्रमादी होय रहा है जैसे कोइ मदोन्मत्त क्षीर समुद्र के तट सूता तरंगों के समूह से न डरै तैसे मैं मोहकर उन्मत्त भव भ्रमणसे नाहीं डरू हूं निर्भय होय रहा हूं, हाय हाय हिंसा आरम्भादि अनेक

जे पाप तिन कर लिप्त मैं राज्य कर कौन से घोर नरक में जाऊंगा कैसा है नरक बाण षडग चक्रके आकार तीक्ष्ण पत्र हैं जिनके ऐसे शालमलीवृक्ष जहां हैं अथवा अनेक प्रकार तिर्यञ्चगति ताविषे जावूंगा देखो जिन शास्त्र सारिखा महाज्ञानरूप शास्त्र ताहूको पाय कारे मेरा मन पाप युक्त हो रहा है। निस्पृह होयकर यतिका धर्म नाहीं धारे है सो न जानिए कौन गति जाना है ऐसी कर्मनिकी नासन- हारी जो धर्मरूप चिंता ताको निरन्तर प्राप्त हूआ जो राजा भरत सो जैन पुराणादि ग्रंथनिके श्रवण विषे आसक्त है सदैव साधुनकी कथाविषै अनुरागी रात्रि दिन धर्ममें उद्यमी होता भया॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं दशरथका वैराग्य रामका.

विदेश गमन भरतका राज्य वर्णन करनेवाला बत्तीसवां पर्व पूर्ण भया॥ ३२॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण सीता जहां एक तापसी का आश्रम है तहां गए। अनेक तापस जटिल नानाप्रकारके वृक्षनिके वक्कल पहिरे अनेक प्रकारका स्वादुफल तिनकर पूर्ण हैं मठ जिनके, बन विषे वृक्षसमान वहुत मठ देखे विस्तीर्ण पत्रों कर छाए हैं मठ जिनके अथवा घासके फूलानिकर आच्छादित हैं निवास जिनके, बिना वाहे सहजही उगे जे धान्य ते उनके आंगनमें सूके हैं अर मृग भयरहित आंगन में वेठे जुगाले हैं अर तिनके निवास विषे सूवा मैंना पढे हैं अर तिनके मठनिके समीप अनेक गुलक्यारी लगाय राखी हैं सो तापसनिकी कन्या मिष्ट जल कर पूर्ण जे कलश ते थांवलानिमें डारें हैं। श्रीरामचन्द्रको आए जान तापस नाना प्रकारके मिष्ट फल सुगन्ध पुष्प मिष्ट जल इत्यादिक सामग्रि लिकर बहुत आदरते पाहुन गति करते भए। मिष्ट बचनका संभाषणकर रहनेको कुटी मृदुपल्लवनकी

शय्या इत्यादि उपचार करते भए। ते तापस सहज ही सबानिका आदर करे हैं इनको महा रूपवान अद्भुत पुरुष जान बहुत आदर किया, रात्रिको बस कर ये प्रभात उठ चले। तब तापस इनकी लार चले, इनके रूपको देखकर पाषाण भी पिघले तो मनुष्यकी कहा बात ? ते तापस सूके पत्रोंके आहारी इनके रूपको देख अनुरागी होते भए जे वृद्धतापस हैं वे इनको कहते भए तुम यहां रहो ; तो यह सुखका स्थान है अर कदाचित न रहो तो या अटवीविषै सावधान रहियो यद्यपि यह वनी जल फल पुष्पादि कर भरी है तथापि विश्वास न करना, नदी वनी नारी ये विश्वास योग्य नाहीं, सो तुम तो सब बातोंमें सावधान ही हो फिर राम लक्ष्मण सीता यहांते आगे चले अनेक तापासिनी इनके देखनेकी अभिलाषाकरि बहुत विह्वल भई संती दूर लग पत्र पुष्प फल ईंधनादिक मिसकर साथ चली आई, कई एक तापासिनी मधुर वचनकर इनको कहती भई जो तुम हमारे आश्रमविषै क्यों न रहो, हम तिहारी सब सेवा करेंगी यहांते तीन कोसपर ऐसी बनी है जहां महासघन वृक्ष हैं, मनुष्यानिका नाम नाहीं। अनेक सिंह व्याघ्र दुष्ट जीवनिकर भरी, जहां ईंधन अर फल फूलके अर्थ तापस हू न आवें। डाभकी तीक्ष्ण अणीनिकर जहां संचार नाहीं। वन महाभयानक है अर चित्रकूट पर्वत अति ऊंचा दुर्लंघ्य विस्तीर्ण पडा है तुम कहा नहीं सुना है जो चले जावो हो ? तब राम कहते भए—अहो तापासिनी हो ! हम अवश्य आगे जावेंगे तुम अपने स्थानक जावो। कठिनताते तिनको पाछे फेरी, ते परस्पर इनके गुण रूपका वर्णन करतीं अपने स्थानक आईं, ये महागहन वनमें प्रवेश करते भए। कैसा है वह वन ? पर्वतके पाषाणनिके समूहकरि महाकर्कस अर बडे २ जे वृक्ष तिनपर आरूढ हैं बेलनिके समूह जहां, अर क्षुधाकर अति क्रोधायमान जे शार्दूल तिनके नखनिकर विदारे गए हैं वृक्ष जहां, अर सिंहनिकर हते गए जे गजराज तिनके रुधिरकर रक्त भए जो मोती सो ठोर २ विखर रहे हैं अर माते जे गजराज तिन

कर भग्न भए हैं तरुवर जहां, अर सिंहनिकी ध्वनि सुनकर भाग रहे हैं कुरंग जहां अर सूते जे अजगर तिनके श्वासानिकी पवनकरि पूर रही हैं गुफा जहां, शूरानिके समूहकर कर्दमरूप होय रहे हैं सरोवर जहां अर महा अरण्य भैंसे तिनके सींगनकर भग्न भए हैं ववइयानिके स्थान जहां अर फणको ऊंचे किये फिरे हैं भयानक सर्प जहां अर कांटनिकर वींधा है पूंछका अग्रभाग जिनका, ऐसी जे सुरहगाय सो खेदखिन्न भई हैं अर फैल रहे हैं कटेरी आदि अनेक प्रकारके कंटक जहां अर विष पुष्पनिकी रजकी वासनाकर घूमें हैं अनेक प्राणी जहां अर गैंडानिके नखनिकर विदारे गए हैं वृक्षनिके पींड अर भ्रमते रोझनके समूह तिनकर भग्न भए हैं पल्लवनिके समूह जहां अर नानाप्रकारके जे पक्षिनिके समूह तिनके जो क्रूर शब्द उनकर वन गुंज रहा है अर वंदरनिके समूह तिनके कूदनेकर कम्पायमान हैं वृक्षनिकी शाखा जहां अर तीव्र वेगको धरें पर्वतसे उतरती जे नदी तिनकर पृथ्वीमें पड गया है दहाना जहां अर वृक्षनिके पल्लवनिकर नाहीं दीखे है सूर्यकी किरण जहां अर नानाप्रकारके फलफूल तिनकर भरा अनेक प्रकारकी फैल रही है सुगंध जहां, नानाप्रकारकी जे औषधि तिनकरि पूर्ण अर वनके जे धान्य तिनकरि पूरित कहूं एक नील कहूं एक पीत कहूं एक रक्त कहूं एक हरित, नानाप्रकार वर्णको धरे जो वन तामें दोऊ वीर प्रवेश करते भए। चित्रकूट पर्वतके महामनोहर जे नीझरने तिनविषै क्रीडा करते वनकी अनेक सुन्दर वस्तु देखते परस्पर दोऊ भाई वात करते वनके मिष्टफल आस्वादन करते किन्नर देवनिके हू मनको हरें ऐसा मनोहर गान करते पुष्पनिके परस्पर आभूषण वनावते सुगंध द्रव्य अंगविषै लगावते, फूल रहे हैं सुन्दर नेत्र जिनके, महा स्वच्छन्द अत्यन्त शोभाके धारणहारे सुरनर नागनिके मनके हरणहारे नेत्रनिको प्यारे उपवनकी नाईं भीम वनमें रमते भए। अनेक प्रकारके सुन्दर जे लतामण्डप तिनमें विश्राम करते नानाप्रकारकी कथा करते विनोद करते रहस्यकी वातें करते जैसे नंदनवनमें देव भ्रमण करें तैसे अतिरमणीक लीलासूं वन विहार करते भए।

अथानन्तर साढे चार मासमें मालव देशविषै आए सो देश अत्यन्त सुन्दर नानाप्रकारके धान्यों-कर शोभित जहां ग्राम पट्टन घने सो केतीक दूर आयकर देखें तो वस्ती नाहीं, तब एक बटकी छायामें दोऊ भाई परस्पर बतलावते भए जो काहेते यह देश ऊजाड दीखे है ? नानाप्रकारके क्षेत्र फल रहे हैं अर मनुष्य नाहीं, नानाप्रकारके वृक्ष फल फूलनकर शोभित हैं अर पौंडे सांठेके बाड बहुत हैं अर सरोवर-निमें कमल फूल रहे हैं। नानाप्रकारके पक्षी केलि करे हैं। यह देश अति विस्तीर्ण मनुष्यानिके संचार विना शोभे नाहीं जैसे जिनदीक्षाको धरे मुनि वीतराग भावरूप परम संयम विना शोभे नाहीं। ऐसी सुन्दर वार्ता राम लक्ष्मणसूं करे हैं तहां अत्यंत कोमल स्थानक देख रत्न कम्बल बिछाय श्रीराम बैठे निकट धरा है धनुष जिनके, अर सीता प्रेमरूप जलकी सरोवरी श्रीरामकेविषै आसक्त है मन जाका, सो समीप बैठी। श्रीरामने लक्ष्मणको आज्ञा करी तू बट ऊपर चढकर देख कहीं वस्ती हू है सो आज्ञा प्रमाण देखता भया अर कहता भया कि हे देव ! विजयार्ध पर्वत समान ऊंचे जिनमंदिर दीखे है। जिनके शरदके बादले समान शिखर शोभे है, ध्वजा फरहरे हैं अर ग्राम हू बहुत दीखे हैं। कूप वापी सरोवरानिकरि मंडित अर विद्या-धरानिके नगर समान दीखे हैं, खेत फल रहे हैं परन्तु मनुष्य कोई नाहीं दीखे है न जानिये लोक परिवार सहित भाज गए हैं अथवा क्रूरकर्मके करणहारे म्लेच्छ बांधकर लेगए हैं। एक दरिद्री मनुष्य आवता दीखे है। मृग समान शीघ्र आवै है, रूक्ष हैं केश जाके, अर मलकर मंडित है शरीर जाका, लंबी दाढी कर आच्छादित है उरस्थल अर फाटे वस्त्र पहिरे, फाटे है चरण जाके, ढरे है पसेव जाके मानों पूर्व जन्म के पापको प्रत्यक्ष दिखावै है। तब राम आज्ञा करी जो शीघ्र जाय याको ले आव, तब लक्ष्मण बटसे उतर दलिद्रीके पास गए सो लक्ष्मणको देख आश्चर्यको प्राप्त भया जो यह इंद्र है तथा वरुण है तथा नागेन्द्र है तथा नर है किन्नर है चंद्रमा है अक सूर्य है अग्निकुमार है अक कुवेर है। यह कोऊ महा तेजका धारक है,

ऐसा विचारता संता डरकर मूर्छा खाय भूमिविषे गिर पडा तब लक्ष्मण कहते भए—हे भद्र ! भय मत करहु। उठ उठ, ऐसा कहिकरि उठाया अर बहुत दिलासाकरि श्रीरामके निकट ले आया। सो दलिद्री पुरुष क्षुधा आदि अनेक दुखनिकर पीडित हुता सो रामको देख सब दुख भूल गया। राम महासुन्दर सौम्य है मुख जिनका, कांतिके समूहते विराजमान नेत्रनिको उत्साहके करणहारे महाविनयवान, सीता समीप बैठी है, सो मनुष्य हाथ जोड सिर पृथ्वीते लगाय नमस्कार करता भया। तब आप दयाकर कहते भए तू छायाविषे जाय बैठ भय न करि, तब वह आज्ञा पाय दूर बैठा, रघुपति अमृतरूप वचनकर पूछते भए, तेरा नाम कहा अर कहांते आया अर कौन है ? तब वह हाथ जोड विनती करता भया। हे नाथ! मैं कुटुंबी हूं मेरा नाम सिरगुप्त है दूरते आऊं हूं, तब आप बोले यह देश ऊजाड काहेते है ? तब वह कहता भया—हे देव ! उज्जयिनी नाम नगरी ताका पति राजा सिंहोदर प्रसिद्ध प्रतापकर नवाए हैं बडे २ सामंत जाने, देवनि समान है विभव जाका, अर एक दशांगपुरका पति वज्रकर्ण सो सिंहोदरका सेवक अत्यंत प्यारा सुभट जाने स्वामीके बडे २ कार्य किए सो निर्ग्रंथ मुनिको नमस्कारकर धर्म श्रवणकर ताने यह प्रतिज्ञा करी जो मैं देव गुरु शास्त्र टार औरको नमस्कार न करूं। साधुके प्रसादकर ताको सम्यग्दर्शन की प्राप्ति भई सो पृथ्वीमें प्रसिद्ध है। आपने कहा अब तक ताकी वार्ता न सुनी, तब लक्ष्मण रामके अभिप्रायते पूछते भए जो वज्रकर्णपर कौन भांति संतनकी कृपा भई। तब पंथी कहता भया—हे देवराज! एक दिन वज्रकर्ण दसारण्य वनमें मृगयाको गया हुता, जन्म हीते पापी क्रूरकर्मका करणहारा, इंद्रियनिका लोलुपी महामूढ शुभक्रियाते पराङ्मुख महासूक्ष्म जिनधर्मकी चर्चा सो न जाने, कामी क्रोधी लोभी ये अन्ध भोग सेवनकर उपजा जो गर्व सोई भया पिशाच ताकर पीडित, सो वनमें भ्रमण करे सो ताने ग्रीष्म समयविषे एक शिलापर तिष्ठता संता सत्पुरुषनिकर पूज्य ऐसा महामुनि देखा, चार महीना

सूर्यकी किरणका आताप सहनहारा महातपस्वी पक्षी समान निराश्रय सिंह समान निर्भय सो तप्तायमान जो शिला ता कर तप्त शरीर ऐसे दुर्जय तीव्रतापका सहनहारा सज्जन सो ऐसे तपोनिधि साधुको देख वज्रकर्ण तुरंगपर चढा बरछी हाथमें लिये, काल समान महाक्रूर पूछता भया। कैसे हैं साधु ? गुण रूप रत्ननिके सागर, परमार्थके वेत्ता, पापोंके घातक, सब जीवनिके दयालु, तपोविभूतिकर मंडित तिनको वज्रकर्ण कहता भया।

हे स्वामी ! तुम इस निर्जन वनमें कहा करो हो ? ऋषि बोले आत्म कल्याण करे हैं जो पूर्वे अनन्त भवविषै न आचरा, तब वज्रकर्ण हंसकर कहता भया। या अवस्थाकरि तुमको कहा सुख है। तुमने तप कर रूपलावण्यरहित शरीर किया। तिहारे अर्थ काम नाहीं, वस्त्राभरण नाहीं कोई सहाई नाहीं। स्नान सुगंध लेपनादि रहित हो, पराए घरनिके आहार कर जीविका पूरी करो हो, तुम सारिखे मनुष्य कहा आत्महित करें, तब याको काम भोगकर अत्यंत आर्तिवंत देख महादयावान संयमी बोले कहा तूने महा घोर नरककी भूमि न सुनी है जो तू उद्यमी होय पापनिविषै प्रीति करे है। नरककी महाभयानक सात भूमि हैं ते महा दुर्गंधमई देखी न जांय स्पर्शी न जांय सुनी न जांय, महातीक्ष्ण लोहके कांटोनिकर भरी जहां नारकियोंको घानियोंमें पेले हैं अनेक वेदना त्रास होय हैं छुरियों कर तिल तिल काटिए हैं अर ताते लोह समान ऊपरले नरकनिका पृथिवीतल अर महाशीतल नीचले नरकनिका पृथिवी तल ताकर महा पीडा उपजे है, जहां महाअंधकार महाभयानक रौरवादि गर्त आसिपत्र महादुर्गंध वैतरणी नदी जे पापी माते हाथिनिकी न्याई निरंकुश हैं ते नरकमें हजारां भांतिके दुख देखे हैं। हम तोहि पूछे हैं तो सारीखे पापारम्भी विषयातुर कहा आत्महित करे हैं। ये इंद्रायणके फल समान इंद्रियनिके सुख तू निरंतर सेय कर सुख माने है सो इनमें हित नाहीं ये दुर्गतिके कारण हैं, आत्माका हित वह करे है जो जीवनिकी

दया पाले, मुनिके व्रत धारे अथवा श्रावकके व्रत आदरे, निर्मल है चित्त जाका, जे महाव्रत तथा अणुव्रत नाहीं आचरे हैं ते मिथ्यात्व अव्रतके योगते समस्त दुखके भाजन होय है, तैंने पूर्व जन्ममें कोई सुकृत किया हुता ताकर मनुष्य देह पाया अब पाप करेगा तो दुर्गति जायगा, ये विचारे निर्बल निरपराध मृगादि पशु अनाथ भूमि ही है शय्या जिनके चंचल नेत्र सदा भयरूप वनके तृण अर जल कर जीवन हारे पूर्व पापकर अनेक दुखनिकर दुखी रात्रि भी निद्रा न करें, भयकर महाकायर सो भले मनुष्य ऐसे दीननिको कहा हनें, तातैं जो तू अपना हित चाहे है तो मन वचन काय कर हिंसा तज, जीव दया अंगीकार करि, ऐसे मुनिके श्रेष्ठ वचन सुनिकरि वज्रकर्ण प्रतिबोधको प्राप्त भया जैसे फला वृक्ष नवजाय तैसे साधुके चरणारविंदको नया, अश्वसे उतर निकट गया, हाथ जोड प्रणामकर अत्यंत विनयकी दृष्टि कर चित्तमें साधुकी प्रशंसा करता भया। धन्य है ये मुनि परिग्रहके त्यागी, जिनको मुक्तिकी प्राप्ति होय है अर इन वनके पक्षी अर मृगादि पशु प्रशंसा योग्य हैं जे इस समाधिरूप साधुका दर्शन करे हैं अर अति धन्य हूं मैं जो मोहि आज साधुका दर्शन भया। ये तीन जगतकर वन्दनीक हैं, अब मैं पापकर्मते निवृत्त भया। ये प्रभू ज्ञानस्वरूप नखनिकर बंधु स्नेहमई संसाररूप जो पिंजरा ताहि छेदकर सिंहकी न्याई निकसे ते साधु देखो मनरूप वैरीको वशकरि नग्न मुद्राधार शील पाले हैं। मैं अतृप्त आत्मा पूर्ण वैराग्यको प्राप्त नाहीं भया तातैं श्रावकके अणुव्रत आदरूं ऐसा विचारकर साधुके समीप श्रावकके व्रत आदरे अर अपना मन शांत रस रूप जलसे धोया अर यह नियम लिया जो देवाधिदेव परमेश्वर परमात्मा जिनेंद्रदेव अर तिनके दास महा भाग्य निर्ग्रंथमुनि अर जिनवाणी इन विना औरको नमस्कार न करूं, प्रीतिवर्धन नामा वे मुनि तिनके निकट वज्रकर्ण अणुव्रत आदरे अर उपवास धारे, मुनिने याको विस्तारकर धर्मका व्याख्यान कहा जाकी श्रद्धाकर भव्यजीव संसार पाशते छूटे। एक श्रावकका धर्म

एक यतिका धर्म इसमें श्रावकका धर्म गृहालंवन संयुक्त अर यतिका धर्म निरालम्ब निरपेक्ष, दोऊ धर्मनिका मूल सम्यक्त्वकी निर्मलता तप अर ज्ञानकर युक्त अत्यन्त श्रेष्ठ सो प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग रूपविषै जिनशासन प्रसिद्ध है। यतिका धर्म अतिकाठिन जान अणुव्रतविषै बुद्धि ठहराई अर महाव्रतकी महिमा हृदयमें धारी जैसे दरिद्रीके हाथमें निधि आवे अर वह हर्षको प्राप्त होय तैसे धर्मध्यानको धरता संता आनन्दको प्राप्त भया। यह अत्यन्त क्रूर कर्मका करणहारा एक साथ ही शांत दशाको प्राप्त भया, या बातकर मुनि भी प्रसन्न भए। राजा तादिन तो उपवास किया, दूसरे दिन पारणा कर दिगम्बरके चरणारविंदको प्रणाम कर अपने स्थान गया गुरुके चरणारविंद हृदयमें धारता संता संदेह रहित भया। अणुव्रत आराधे। चित्तमें यह चिंता उपजी जो उज्जैनीका राजा जो सिंहोदर ताका मैं सेवक हूं ताकी विनय किए विना मैं राज्य कैसे करूं तब विचारकर एक मुद्रिका बनाई जामें श्रीमुनिसुव्रतनाथजीकी प्रतिमा पधराय दक्षिणांगुष्टमें पहिरी, जब सिंहोदरके निकट जाय तब मुद्रिकामें प्रतिमा ताहि बारंबार नमस्कार करे सो याका कोऊ वैरी हुता जाने यह छिद्र हेर सिंहोदरते कही जो यह तुमको नमस्कार नाहीं करे है। जिनप्रतिमाको करे है, तब सिंहोदर पापी कोपको प्राप्त भया अर कपटकर बज्रकर्णको दशांग नगरते बुलावता भया, सम्पदाकर उन्मत्त मानी याके मारवेको उद्यमी भया। सो बज्रकर्ण सरलचित्त सो तुरंगपर चढ उज्जयिनी जावेको उद्यमी भया, ता समय एक पुरुष ज्वान पुष्ट अर उदार है शरीर जाका, दंड जाके हाथमें सो आयकर कहता भया। हे राजा! जो तू शरीरते और राज्यते रहित भया चाहे तो उज्जयनी जाहु नातर मत जाहु सिंहोदर आति क्रोधको प्राप्त भया है, तुम नमस्कार न करो हो तातैं तोहि मारा चाहे है तू भले जाने सो कर, यह वार्ता सुनकर वज्रकर्ण विचारी कि कोऊ शत्रु मोविषै अर नृपविषै भेद किया चाहे है ताने मंत्र कर यह पठाया होय फिर विचारी जो

याका रहस्य तो लेना तब एकांतविषै ताहि पूछता भया तू कौन हैं अर तेरा नाम कहा अर कहांते आया है अर यह गोप्य मंत्र तूने कैसे जाना ? तब वह कहता भया कुंदननगरमें महा धनवंत एक समुद्र संगम सेठ है जाके यमुना स्त्री ताके वर्षाकालमें विजुरीके चमत्कार समय मेरा जन्म भया, तातैं मेरा विद्युदंग नाम धरा सो मैं अनुक्रमसे नव यौवनको प्राप्त भया। व्यापारके अर्थ उज्जैनी गया तहां कामलता वेश्याको देख अनुराग कर व्याकुल भया । एक रात्रि तासूं संगम किया, सो वाने प्रीतिके बन्धन कर बांध लिया जैसे पारधी मृगको पांसिसे बांधे, मेरे बापने बहुत वर्षोंमें जो धन उपार्जा हुता सो मैं ऐसा कुपूत वेश्याके संग कर षटमासमें सब खोया जैसे कमलमें भ्रमर आसक्त होय तैसे तामें आसक्त भया, एक दिन वह नगरनायिका अपनी सखीके समीप अपने कुंडलनिकी निंदा करती हुती सो मैं सुनी तब तासे पूछी, ताने कही धन्य है राणी श्रीधरा महासौभाग्यवती ताके काननिमें ऐसे कुंडल हैं जैसे काहूके नाहीं, तब मैंने मनमें चितई कि यदि मैं राणीके कुंडल हर कर याकी आशा पूर्ण न करूं तो मेरे जीने कर कहा, तब कुंडल हरनेको मैं अंधेरी रात्रीमें राजमंदिरमें गया सो राजा सिंहोदर कोप हो रहा था अर राणी श्रीधरा निकट बैठी हुती सो राणी पूछा हे देव ! आज निद्रा काहेते न आवे है ? तब राजा कही हे राणी मैं बज्रकर्णको छोटेसे मोटा किया, अर मोहि सिर न नवावे सो वाहि जबतक न मारूं तब तक आकुलताके योगसे निद्रा कहां आवे एते मनुष्यनिते निद्रा दूर ही भागे अपमानसे दग्ध अर कुटुंबी निर्धन, शत्रुने आय दवाया अरु जीतने समर्थ नाहीं अर जाके चित्तमें शल्य तथा कायर अर संसारते विरक्त, इनते निद्रा दूर ही रहे है यह वार्ता राजा अर रानी करी। मैं सुनकर ऐसा होयगया मानों काहूने मेरे हृदयमें बज्रकी दीनी। सो कुंडल लेयवेकी बुद्धि तज यह रहस्य लेय तेरे निकट आया, अब तू वहां मत जाइयो कैसा है तू जिनधर्ममें उद्यमी है अर निरंतर साधुनिका सेवक है। अंजनीगिरि पर्वतसे हाथी मद

झरे तिन पर चढे योधा बक्तर पहिरे अर महातेजस्वी तुरंगानिके असवार चिलते पहिरे महाक्रूर सामन्त तेरे मारवेके अर्थ राजाकी आज्ञाते मार्ग रोके खडे हैं तातैं तू कृपाकर अब वहां मतजा। मैं तेरे पायन परूं हूं। मेरा वचन मान, अर तेरे मनमें प्रतीति नाहीं अब तो देख वह फौज आई धूरके पटल उठे हैं महा शब्द होतें आवे हैं यह विद्युदंगके वचन सुन वज्रकर्ण परचक्रको आवतो देख याको परममित्र जान लार लेय अपने गढविषै तिष्ठा। सिंहोदरके सुभट दरवाजेमें आवने न दिये तब सिंहोदर सर्वसेना लार ले चढ आया सो गाढा जान अपने कटकके लोक इनके मारनेके डरसे तत्काल गढ लेनेकी बुद्धि न करी गढके समीप डेरे कर वज्रकर्णके समीप दूत भेजा सो अत्यन्त कठोर वचन कहता भया। तू जिन-शासनके गर्वकरि मेरे ऐश्वर्यका कंटक भया, जे घरखोवा यति तिनने तोहि बहकाया, तू न्याय रहित भया, देश मेरा दिया खाय, माथा अरहंतको नवावे, तू मायाचारी है तातैं शीघ्र ही मेरे समीप आयकर मोहि प्रणाम कर, नातर मारा जायगा यह वार्ता दूतने वज्रकर्णसे कही तब वज्रकर्ण जो जबाब दिया सो दूत जाय सिंहोदरसूं कहे है हे नाथ ! वज्रकर्णकी यह वीनती है जो देश नगर भण्डार हाथी घोडे सब तिहारे हैं सो लेहु मोहि स्त्री सहित धर्म द्वार देय काढ देवो, मेरा तुमते उजर नाहीं परंतु मैं यह प्रतिज्ञा करी है कि जिनेंद्र मुनि अर जिनवाणी इन विना औरको नमस्कार न करूं, सो मेरा प्राण जाय तो भी प्रतिज्ञा भंग न करूं तुम मेरे द्रव्यके स्वामी हो आत्माके स्वामी नाहीं, यह वार्ता सुन सिंहोदर अति क्रोधको प्राप्त भया, नगरको चारों तरफसे घेरा अर देश उजाड दिया, सो दलिद्री मनुष्य श्रीरामसे कहे हैं हे देव ! देश उजाडनेका कारण मैं तुमसे कहा। अब मैं जाऊं हूं जहांते नजदीक मेरा ग्राम है। ग्राम सिंहोदरके सेवकोंने जलाया, लोगनिके विमानतुल्य घर हुते सो भस्म भए। मेरी तृण काष्ठकर रची कुटी सो भी भस्म भई, मेरे घरमें एक छाज एक माटीका घट एक हांडी यह परिग्रह हुता सो लाऊं हूं। मेरे

खोटी स्त्री ताने क्रूर वचन कह मोहि भेजा है अर वह वारंवार ऐसे कहे है कि सूने गांवमें घरोंके उपक-रण बहुत मिलेंगे सो जाकर ले आवहु सो मैं जाऊं हूं मेरे बडे भाग्य जो आपका दर्शन भया, स्त्रीने मेरा उपकार किया जो मोहि पठाया यह वचन सुन श्रीराम महादयावान पंथीको दुखी देख अमोलक रत्नोंका हार दिया सो पंथी प्रसन्न होय चरणारविंदको नमस्कार कर हार ले अपने घर गया द्रव्यकर राजानिके तुल्य भया।

अथानंतर श्रीराम लक्ष्मणसे कहते भए कि हे भाई! यह जेठका सूर्य अत्यंत दुस्सह जब अधिक न चढे ताते पहिले ही चलो या नगरीके समीप निवास करें। सीता तृषाकर पीडित है सो याहि जल पिलावें अर आहारकी विधि भी शीघ्र ही करें, ऐसा कहकर वहांते आगे गमन किया, सो दशांगनगर के समीप जहां श्रीचन्द्रप्रभुका चैत्यालय महा उत्तम है तहां आए अर श्रीभगवानको प्रणाम कर सुखसों तिष्ठे अर आहारकी सामग्री निमित्त लक्ष्मण गए, सिंहोदरके कटकमें प्रवेश करते भये। कटकके रक्षक मनुष्य उनने मने किये तब लक्ष्मणने विचारी कि ये दरिद्री अर नीच कुल इनते मैं कहा विवाद करूं, यह विचार नगरकी ओर आए सो नगरके दरवाजे अनेक योधा बैठे हुते अर दरवाजेके ऊपर वज्रकर्ण तिष्ठा हुता महासावधान सो लक्ष्मणको देख लोग कहते भए, तुम कौन हो अर कहांते कौन अर्थ आए हो? तब लक्ष्मण कही दूरते आए हैं अर आहार निमित्त नगरमें आए हैं तब वज्रकर्ण इनको अतिसुंदर देख आश्चर्यको प्राप्त भया अर कहता भया हे नरोत्तम! माहि प्रवेश करो, तब यह हर्षित होय गढमें गया, वज्रकर्ण बहुत आदरसूं मिला अर कहता भया जो भोजन तय्यार है सो आप कृपाकर यहां ही भोजन करो तब लक्ष्मणने कही मेरे गुरुजन बडे भाई और भावज श्रीचन्द्रप्रभुके चैत्यालयमें बैठे हैं तिनको पहिले भोजन कराय मैं भोजन करूंगा तब वज्रकर्णने कही बहुत भलीवात, तहां ले जाइये, उन

योग्य सब सामग्री है सो ले जावो, अपने सेवकनि हाथ ताने भांति भांतिकी सामग्री पठाई सो लक्ष्मण लिवाय लाए। श्रीराम लक्ष्मण अर सीता भोजन कर बहुत प्रसन्न भए। श्रीराम कहते भए हे लक्ष्मण! देखो वज्रकर्णकी बडाई जो ऐसा भोजन कोई अपने जमाईको हू न जिमावे सो विना परखे अपने ताईं जिमाए, पीनेकी वस्तु महामनोहर अर व्यंजन महामिष्ट यह अमृत तुल्य भोजन जाकर मार्गका खेद मिटा अर जेठके आतापकी तप्त मिटी, चांदनी समान उज्ज्वल दुग्ध महा सुगंध जापर भ्रमर गुंजार करें अर सुंदर घृत सुंदर दधि मानों कामधेनुके स्तनानिते उपजाया दुग्ध तासे निरमाया है ऐसे भोजन ऐसे रस और ठौर दुर्लभ हैं, ता पंथीने पहिले अपने ताईं कहा हुता जो यह अणुव्रतका धारी श्रावक है अर जिनेंद्र मुनिंद्र जिनसूत्र टार औरको नमस्कार नाहीं करे है सो ऐसा धरमात्मा व्रत शीलका धारक अपने आगे शत्रुकरि पीडित रहे तो अपने पुरुषार्थ कर कहा, अपना यही धर्म है जो दुखीका दुख निवारें, साधर्मीका तो अवश्य निवारे। यह अपराध रहित साधु सेवामें सावधान महाजिनधर्मी जाके लोक जिनधर्मी ऐसे जीवको पीडा काहे उपजे। यह सिंहोदर ऐसा बलवान है जो याके उपद्रवते वज्रकर्णको भरत भी न बचाय सके ताते हे लक्ष्मण! तुम इसकी शीघ्र ही सहायता करो, सिंहोदर पै जावो अर वज्रकर्णका उपद्रव मिटे सो करो, हम तुमको कहा सिखावें जो यूं कहियो यूं कहियो तुम महा बुद्धिवान् हो, जैसे महामणि प्रभा सहित प्रकट होय है तैसे तुम महा बुद्धि पराक्रमको धरे प्रकट भए हो। या भांति श्रीरामने भाईके गुण गाए तब भाई लज्जाकर नीचे मुख होय गए। नमस्कारकर कहते भए हे प्रभो! जो आप आज्ञा करोगे सोई होयगा, महाविनयवान लक्ष्मण रामकी आज्ञा प्रमाण धनुष बाण लेय धरतीको कंपायमान करते संते शीघ्र ही सिंहोदर पै गए सिंहोदरके कटकके रखवारे पूछते भए तुम कौन हो लक्ष्मण कही मैं राजा भरतका दूत हूं, तब कटकमें पैठने दीया, अनेक डेरे उलंघ राजद्वार गया।

द्वारपाल राजासों मिलाया सो महा बलवान सिंहोदरको तृणसमान गिनता संता कहता भया । हे सिंहो-दर ! अयोध्याका अधिपति भरत ताने यह आज्ञा करी है जो वृथा विरोधकर कहा वज्रकर्णसे मित्रभाव करो, तब सिंहोदर कहता भया हे दूत ! तू राजा भरतको या भांति कहियो जो अपना सेवक होय अर विनयमार्गसे रहित होय ताहि स्वामी समझाय सेवामें लावे, यामें विरोध कहा ? यह वज्रकर्ण दुरात्मा मानी मायाचारी कृतघ्न मित्रनिका निंदक चाकरीचूक आलसी मूढ विनयचार रहित खोटी अभिलाषाका धारक महाक्षुद्र सज्जनतारहित है सो याके दोष जब मिटें जब यह मरणको प्राप्त होय अथवा राज्य रहित करूं ताते तुम कछूमत कहो, मेरा सेवक है जो चाहुंगा सो करूंगा तब लक्ष्मण बोले—बहुत उत्तरों कर कहा यह परमहितु है या सेवकका अपराध क्षमा करो, ऐसा जब कहा तब सिंहोदर क्रोध कर अपने बहुत सामन्तोंको देख गर्वको धरता संता उच्च स्वरसूं कहता भया

जो यह वज्रकर्ण तो महामानी है ही परन्तु याके कार्यको आया जो तू सो भी महामानी है, तेरा तन अर मन मानों पाषाणते निरमाया है रंचमात्र हू नम्रता तोमें नाहीं, तू भरतका मूढ सेवक है जानिये है जो भरतके देशमें तो सारिखे मनुष्य होवेंगे जैसे सीजती भरी हांडीमेंसे एक चावल काढकर नम्र कठोरकी परीक्षा करिए है तैसे एक तेरे देखवेकरि सबनकी बानिगी जानी जाय है, तब लक्ष्मण क्रोधकर कहते भए, मैं तेरी वांकी सूधि करावेको आया हूं तोहि नमस्कार करवेको न आया, बहुत कहनेसूं कहा ? थोडे हीमें समझ जावो । वज्रकर्णसूं संधि कर ले नातर मारा जायगा, ये वचन सुन सब ही सभाके लोक क्रोधको प्राप्त भए । नानाप्रकारके दुर्वचन कहते भए अर नानाप्रकार क्रोधकी चेष्टाको प्राप्त भए । कैयक छूरी लेय कैयक कटार भाला तलवार गहकर याके मारनेको उद्यमी भए । हुंकार शब्द करते अनेक सामंत लक्ष्मणको बेढते भये, जैसे पर्वतको मछर रोंके तैसे रोकते भए, सो यह धीर वीर युद्ध क्रिया

विषै पंडित शीघ्र क्रियाके वेत्ता चरणके घातकर तिनको दूर उडा दिए। कैयक गोडोंसे मारे कैयक कूहनियोंसे पछाडे कैयक मुष्टि प्रहारकर चूर्ण कर डारे कैयकोंके केश पकड पृथ्वीपर पाडि मारे कैयकोंको परस्पर सिर भिडाय मारे, या भांति अकेले महाबली लक्ष्मणने अनेक योधा विध्वंस किये तब और बहुत सामंत हाथी घोडोंपर चढे बखतर पहिरे लक्ष्मणकी चौगिरद फिरें नानाप्रकारके शस्त्रनिके धारक, तब लक्ष्मण जैसे सिंह स्यालनिको भगावै तैसे तिनको भगावता भया। तब सिंहोदर कारी घटा समान हाथीपर चढकर अनेक सुभटनिसहित लक्ष्मणते लडनेको उद्यमी भया, अनेक योधा मेघ समान लक्ष्मण रूप चंद्रमाको ढूंढते भए सो सब योधा ऐसे भगाए जैसे पवन आकके डोडोंके जे फफूंदे तिनको उडावै। ता समय महायोधानिकी कामिनी परस्पर वार्ता करै हैं, देखो यह एक महासुभट अनेक योधानिकरि बेढा है परन्तु यह सबको जीते है कोई याको जीतिवे शक्त नाहीं, धन्य याके माता पिता इत्यादि अनेक वार्ता सुभटनिकी स्त्री करे हैं अर लक्ष्मण सिंहोदरको कटकसहित चढा देख गजका थंभ उपाडा अर कटकके सम्मुख गए जैसे अग्नि वनको भस्म करै तैसे कटकके बहुत सुभट विध्वंस किए अर जो दशांगनगरके योधा नगरके दरवाजे ऊपर बज्रकर्णके समीप बैठ हुते सो फूल गए हैं नेत्र जिनके, स्वामीसे कहते भए—हे नाथ! देखो यह एक पुरुष सिंहोदरके कटकतें लडे है, ध्वजा रथ छत्र भग्न कर डारे परम ज्योतिका धारी है, खड्ग समान है कांति जाकी, समस्त कटकको व्याकुलतारूप भ्रमणमें डारा है, सब तरफ सेना भागी जाय हैं जैसे सिंहते मृगानिके समूह भागें अर भागते हुए सुभट परस्पर बतलावें हैं कि बक्तर उतार धरो, हाथी घोडे छोडो, गदा खाडेमें डार देवो, ऊंचे शब्द न करो, ऊंचा शब्द सुनकर शस्त्रके धारक देख यह भयानक पुरुष आय मारेगा। अरे भाई! यहांते हाथी लेजावो कहां थांभ राखा है, गैल देऊ। अरे दुष्ट सारथी! काहे रथको थांभ राखा है। अरे घोडे आगे करो यह आया यह आया

या भांतिके वचनालाप करते महाकष्टको प्राप्त भए सुभट संग्राम तज आगे भागे जाय रहे हैं। नपुंसक समान हो गए। यह युद्धमें क्रीडाका करणहारा कोई देव है तथा विद्याधर है काल है अक वायु है यह महाप्रचण्ड सब सेनाको जीतकर सिंहोदरको हाथीसे उतार गलेमें वस्त्र डार वांध लिए जाय है जैसे बलदको बांध धनी अपने घर ले जाय यह वचन वज्रकर्णके योधा बज्रकर्णसे कहते भए तब वह कहता भया—हे सुभट हो ! बहुत चिंताकर कहा ? धर्मके प्रसादते सब शांत होयगा अर दशांग नगरकी स्त्री महलनिके ऊपर बैठी परस्पर वार्ता करे हैं, रे सखी ! देखो या सुभटकी अद्भुत चेष्टा, जो एक पुरुष अकेला नरेंद्रको बांधे लिये जाय है। अहो धन्य याका रूप ! धन्य याकी कांति, धन्य याकी शक्ति, यह कोई अतिशयका धारी पुरुषोत्तम है। धन्य हैं वे स्त्री, जिनका यह जगदीश्वर पति हुआ है तथा होयगा अर सिंहोदरकी पटराणी बाल तथा वृद्धानिसहित रोवती संती लक्ष्मणके पांवनि पडी अर कहती भई—हे देव ! याहि छोड देवो हमें भरतारकी भीख देवो। अब जो तिहारी आज्ञा होयगी सो यह करेगा, तब कहते भए यह आगे बडा वृक्ष है तासे वांध याहि लटकाऊंगा तब वाकी राणी हाथ जोड बहुत विनती करती भई—हे प्रभो ! आप रोस भए हो तो हमें मारो, याहि छांडो कृपा करो प्रीतमका दुख हमें मत दिखावो, जे तुम सारिखे पुरुषोत्तम हैं ते स्त्री अर बालक वृद्धानिपर करुणा ही करे हैं। तब आप दयाकर कहते भए—तुम चिंता न करो, आगे भगवानका चैत्यालय है तहां याहि छोडेंगे। ऐसा कह आप चैत्यालयमें गए जायकर श्रीरामते कहते भए—हे देव ! यह सिंहोदर आया है, आप कहो सो करें। तब सिंहोदर हाथ जोड कांपता श्रीरामके पायन पडा अर कहता भया—हे देव ! तुम महाकांतिके धारी परम तेजस्वी हो सुमेरु सारिखे अचल पुरुषोत्तम हो मैं आपका आज्ञाकारी; यह राज्य तिहारा, तुम चाहो जिसे देवो। मैं तिहारे चरणारविंदकी निरंतर सेवा करूंगा अर रानी नमस्कारकर पतिकी भीख मांगती भई अर

सीता सतीके पायन परी कहती भई—हे देवी ! हे शोभने ! तुम स्त्रिनिकी शिरोमणि हो हमारी करुणा करो तब श्रीराम सिंहोदरकूं कहते भए मानों मेघ गाजे।

अहो सिंहोदर! तोहि जो बज्रकर्ण कहे सो कर या बातकरि तेरा जीतव्य है और बातकर नाहीं, या भांति सिंहोदरको रामकी आज्ञा भई। ताही समय जे बज्रकर्णके हितकारी हुते तिनको भेज बज्रकर्ण को बुलाया सो परिवारसहित चैत्यालय आया, तीन प्रदक्षिणा देय, भगवानको नमस्कारकरि चंद्रप्रभु स्वामीकी अत्यन्त स्तुतिकर रोमांच होय आए। बहुरि वह विनयवान दोनों भाइनिके पास आया स्तुति कर शरीरकी आरोग्यता पूछता भया अर सीताकी कुशल पूछी। तब श्रीराम अत्यन्त मधुर ध्वनि कर बज्रकर्णकूं कहते भए—हे भव्य ! तेरी कुशलकरि हमारे कुशल है। या भांति बज्रकर्णकी अर श्रीराम की वार्ता होय है तब ही सुन्दर भेष धरे विद्युदंग आया, श्रीराम लक्ष्मणकी स्तुतिकर बज्रकर्णके समीप बैठा। सर्वसभाविषे विद्युदंगकी प्रशंसा भई जो यह बज्रकर्णका परम मित्र है। बहुरि श्रीरामचंद्र प्रसन्न होय बज्रकर्णसूं कहते भए तेरी श्रद्धा महा प्रशंसा योग्य है। कुबुद्धिनिके उत्पातकरि तेरी बुद्धि रंच मात्र भी न डिगी जैसे पवनके समूहकरि सुमेरुकी चूलिका न डिगे। मोहूकूं देख कर तेरा मस्तक न नया सो धन्य है तेरी सम्यक्तकी दृढता, जे शुद्ध तत्त्वके अनुभवी पुरुष हैं तिनकी यही रीति है जो जगतकर पूज्य जे जिनेंद्र तिनको प्रणाम करें बहुरि मस्तक कौनको नवावें ? मकरंद रसका आस्वाद करणहारा जो भ्रमर सो गर्धब (गधा) की पूंछपै कैसे गुंजार करे ? तू बुद्धिमान है धन्य है निकटभव्य है चन्द्रमा हूंतें उज्ज्वल वलकीर्ति तेरी पृथिवीमें विस्तरी है या भांति बज्रकर्णके सांचे गुण श्री रामचन्द्र ने वर्णन कीए तब वह लज्जावान् होय नीचा मुख कर रहा, श्रीरघुनाथसूं कहता भया—हे नाथ ! मोपर यह आपदा तो बहुत पडी हुती परन्तु तुम सारिखे सज्जन जगतके हितु मेरे सहाई भए। मेरे भाग्य

कारे तुम पुरुषोत्तम पधारे या भांति वज्रकर्ण ने कही तब लक्ष्मण बोले तेरी बांछा जो होय सो करें, तब वज्रकर्ण ने कही तुम सारिखे उपकारी पुरुष पायकर मोहि या जगत विषे कछु दुर्लभ नहीं मेरी यही विनती है मैं जिनधर्मी हूं, मेरे तृणमात्रको भी पीडाकी अभिलाषा नाहीं अर यह सिंहोदर तो मेरा स्वामी है तातें याहि छोडो, ये वचन जब वज्रकर्ण कहे तब सबके मुखते धन्य धन्य यह ध्वनि होती भई जो देखो यह ऐसा उत्तम पुरुष है द्वेष प्राप्ति भए भी पराया भला ही चाहै है। जे सज्जन पुरुष हैं ते दुर्जन हू का उपकार करें अर जे आपका उपकार करें तिनका तो करें ही करें। लक्ष्मणने वज्रकर्णको कही जो तुम कहोगे सो ही होयगा। सिंहोदरको छोडा अर वज्रकर्णका अर सिंहोदरका परस्पर हाथ पकडाया परम मित्र किए वज्रकर्णको आधा राज्य दिलवाया अर जो माल लूटा हुता सो हू दिवाया अर देश धन सेना आधा आधा विभाग कर दिया वज्रकर्णके प्रसादकरि विद्युदंग सेनापति भया अर वज्रकर्ण राम लक्ष्मणकी बहुत स्तुति करि अपनी आठ पुत्रीनिकी लक्ष्मण से सगाई करी। कैसी हैं वे कन्या? महाविनयवन्ती सुन्दर भेष सुन्दर आभूषणको धरें अर राजा सिंहोदरको आदि देय राजाओं की परम कन्या तीन सौ लक्ष्मणको दई सिंहोदर अर वज्रकर्ण लक्ष्मणते कहते भए—ये कन्या आप अंगीकार करें, तब लक्ष्मण बोले—विवाह तो तब करूंगा जब अपने भुज कर राज्य स्थान जमाऊंगा अर श्रीराम तिनसूं कहते भये—जो हमारे अबतक देश नाहीं है तातने राज भरतको दिया है तातें चन्दनगिरीके समीप तथा दक्षिणके समुद्रके समीप स्थानक करेंगे तब अपनी दोनों माताओंको लेने को मैं आऊंगा अथवा लक्ष्मण आवेगा। ता समय तुम्हारी पुत्रीनिको हू परणकर ले आवेगा, अब तक हमारे स्थानक नाहीं। कैसे पाणिग्रहण करें जब या भांति कही, तब वे सब राजकन्या ऐसी होय गई जैसा जाडे का मारा कमलोंका वन होय जाय, मनमें बिचारती भई—वह दिन कब होयगा जब हमको प्रीतम के

संगम रूप रसायन की प्राप्ति होयगी अर जो कदाचित प्राण नाथका विरह भया तो हम प्राण त्याग करेंगी इन सबका मन विरहरूप अग्निकर जलता भया। यह विचारतीं भईं एक ओर महा औंडागर्त अर एक ओर महाभयंकर सिंह, कहा करें? कहां जावें? विरहरूप व्याघ्रको पतिके संगमकी आशाते बशीभूत कर प्राणनिको राखेंगी, यह चिंतवन करती संती अपने पिताकी लार अपने स्थानक गईं। सिंहोदर बज्रकर्ण आदि सब ही नरपति, रघुपतिकी आज्ञा लेय घर गए, ते राजकन्या उत्तम चेष्टाकी धरणहारी माता पितादि कुटुंबसे अत्यंत है सन्मान जिनका, अर पतिमें है चित्त जिनका, सो नाना विनोद करतीं पिताके घरमें तिष्ठती भईं अर विद्युदंगने अपने माता पिताको कुटुंबसहित बहुत विभूतिते बुलाया तिनके मिलापका परम उत्सव किया अर बज्रकर्णके अर सिंहोदरके परस्पर अतिप्रीति बढी अर श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण अर्ध रात्रिको चैत्यालयते निकलकर चल दिए। सो धीरे २ अपनी इच्छा प्रमाण गमन करे हैं अर प्रभात समय जे लोक चैत्यालयमें आए तो श्रीरामको न देख शून्यहृदय होय अति पश्चाताप करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं राम लक्ष्मण कृत बज्रकर्णका उपकार वर्णन करनेवाला तेतीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३३ ॥

राम लक्ष्मण जानकीको धीरे २ चलावते अर रमणीक वनमें विश्राम लेते अर महामिष्ट स्वादुफलोंका रसपान करते क्रीडा करते रसभरी वातें करते सुंदर चेष्टाके धरणहारे, चले २ नलकूवर नामा नगर आए। कैसा है नगर? नानाप्रकारके रतनानिके जे मंदिर तिनके उतंग शिखरोंकर मनोहर अर सुन्दर उपवनोंकर मंडित जिनमंदिरनिकरि शोभित स्वर्ग समान निरंतर उत्सवका भरा लक्ष्मीका निवास है।

सो श्रीराम लक्ष्मण अर सीता नलकूवर नामा नगरके परम सुंदर वनमें आय तिष्ठे, कैसा है वह बन ? फल पुष्पनिकरि शोभित जहां भ्रमर गुंजार करै हैं अर कोयल बोलै हैं। सो निकट सरोवरी तहां लक्ष्मण जलके निमित्त गए, सो ताही सरोवरीपर क्रीडाके निमित्त कल्याणमाला नाम राजपुत्री राजकुमारका भेष किए आई हुती, कैसा है राजकुमार ? महारूपवान नेत्रनिको हरणहारा सर्वको प्रिय महाविनयवान कांतिरूप निर्झरनिका पर्वत श्रेष्ठ हाथीपर चढा सुंदर प्यादे लार जो नगरका राज्य करे सो सरोवरीके तीर लक्ष्मणको देख मोहित भया। कैसा है लक्ष्मण ? नील कमल समान श्याम सुंदर लक्षणका धरणहारा सो राजकुमारने एक मनुष्यको आज्ञा करी जो इनको ले आवो, सो वह मनुष्य जायकर हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया—हे धीर ! यह राजपुत्र आपते मिला चाहै है सो पधारिए, तब लक्ष्मण राजकुमार के समीप गए। सो हाथीते उतरकर कमल तुल्य जे अपने कर तिनकर लक्ष्मणका हाथ पकड वस्त्रनिके डेरेमें ले गया, एक आसनपर दोऊ बैठे। राजकुमार पूछता भया आप कौन हो, कहांते आए हो ? तब लक्ष्मण कही मेरे बडे भाई मेरे विना एक क्षण न रहैं सो उनके निमित्त अन्न पान सामग्रीकर उनकी आज्ञा लेय तुमपर आऊंगा तब सब वात कहूंगा। यह वात सुन राजकुमार कही जो रसोई यहां ही तैयार भई है सो यहां ही तुम अर वे भोजन करो। तब लक्ष्मणकी आज्ञा पाय सुन्दर भात दाल नानाविधि व्यंजन नवीन घृत कपूरादि सुगंध द्रव्यनिसहित दधि दुग्ध अर नानाप्रकार पीनेकी वस्तु मिश्रीके स्वाद जामें, ऐसे लाडू अर पूरी सांकली इत्यादि नानाप्रकार भोजनकी सामग्री अर वस्त्र आभूषण माला इत्यादि अनेक सुगंध नाना प्रकार तैयार किए अर अपने निकटवर्ती जो द्वारपाल ताहि भेजा सो जायकर सीता सहित रामको प्रणामकर कहता भया—हे देव ! या वस्त्र भवनकेविषै तिहारा भाई तिष्ठै है अर या नगर के नाथने बहुत आदरते बीनती करी है। वहां छाया शीतल है अर स्थान मनोहर सो आप कृपाकर

पधारें तो मार्गका खेद निवृत्त होवे तब आप सीतासहित पधारे जैसे चांदनीसहित चांद उद्योत करै, कैसे हैं आप ? माते हाथी समान है चाल जिनकी, लक्ष्मणसहित नगरका राजा दूर हीते देख उठकर सामने आया। सीतासहित राम सिंहासनपर विराजे, राजाने आरती उतारकर अर्घ दिए, अतिसन्मान किया, आप प्रसन्न होय स्नानकर भोजन किया सुगंध लगाई। बहुरि राजा सबको विदा किए। ए चार ही रहे एक राजा तीन ए। राजा सबको कहा जो मेरे पिताके पासते इनके हाथ समाचार आए हैं सो एकांतकी वार्ता है कोई आवने न पावै जो आवेगा ताही मैं मारूंगा। बडे २ सामंत द्वारे राख एकांतमें इनके आगे लज्जा तज कन्या जो राजाका भेष धारे हुती सो तज अपना स्त्रीपदका रूप प्रकट दिखाया। कैसी है कन्या ? लज्जाकर नम्रीभूत है मुख जाका अर रूपकर मानों स्वर्गकी देवांगना है अथवा नागकुमारी है, ताकी कांतिते समस्त मंदिर प्रकाशरूप होय गया, मानों चंद्रमाका उदय भया, चंद्रमा किरणोंते मंडित है याका मुख लज्जा अर मुलकनकर मंडित है मानों यह राजकन्या साक्षात् लक्ष्मी ही है, कमलनिके बनते आय तिष्ठी है अपनी लावण्यतारूप सागरविषै मानों मंदिरको गर्क किया है। जाकी द्युति आगे रत्न अर कंचन, द्युतिरहित भासै हैं। जाके स्तन युगलसे कांतिरूप जलकी तरंगनि समान त्रिबली शोभै है अर जैसे मेघपटलको भेद निशाकर निकसे तैसे वस्त्रको भेद अंगकी ज्योति फैल रही है अर अत्यंत चिकने सुगंध कारे वांके पतले लम्बे केश तिनकरि विराजित है प्रभारूप बदन जाका मानों कारी घटामें विजलीके समान चमके है अर महासूक्ष्म स्निग्ध जो रोमोंकी पंक्ति ताकर विराजित मानें नीलमणिकरि मंडित सुवर्णकी मूर्ति ही है। तत्काल नररूप तज नारीका रूपकर मनोहर नेत्रनिकी धरनहारी सीताके पायन लाग समीप जाय बैठी जैसे लक्ष्मी रतिके निकट जाय बैठे सो याका रूप देख लक्ष्मण कामकर बींधा गया, और ही अवस्था होय गई, नेत्र चलायमान भए। तब श्रीरामचंद्र कन्याते पूछते भए, तू कौनकी पुत्री है अर

पुरुषका भेष कौन कारण किया। तब वह महामिष्टवादिनी अपना अंग वस्त्रते ढांक कहती भई—हे देव! मेरा वृत्तांत सुनहु, या नगरका राजा बालखिल्य महासुबुद्धि सदा आचारवान श्रावकके व्रत धारक महा दयालु जिनधर्मियोंपर वात्सल्य अंगका धारणहारा, राजाके पृथ्वी रानी ताहि गर्भ रहा सो मैं गर्भविषै आई अर म्लेच्छनिका जो अधिपति तासे संग्राम भया। मेरा पिता पकडा गया सो मेरा पिता सिंहोदर का सेवक सो सिंहोदरने यह आज्ञा करी जो बालखिल्यके पुत्र होय सो राज्यका कर्त्ता होय, सो मैं पापिनी पुत्री भई। तब हमारे मंत्री सुबुद्धि ताने मनसूवाकर राज्यके अर्थ मुझे पुत्र ठहराया। सिंहोदर को वीनती लिखी कल्याणमाला मेरा नाम धरा अर बडा उत्सव किया सो मेरी माता अर मंत्री ये तो जाने हैं जो यह कन्या है और सब कुमार ही जाने हैं सो एते दिन मैं व्यतीत किए अब पुण्यके प्रभावते आपका दर्शन भया। मेरा पिता बहुत दुःखसे तिष्ठे है म्लेच्छनिकी बंदमें है। सिंहोदर हू ताहि छुडायवे समर्थ नाहीं अर जो द्रव्य देशमें उपजे है सो सब म्लेच्छके जाय है। मेरी माता वियोगरूप अग्निकरि तप्तायमान जैसे दूजके चंद्रमाकी मूर्ति क्षीण होय तैसी होय गई है ऐसा कहकर दुखके भारकर पीडित है समस्त गात जाका, सो मूर्छा खाय गई अर रुदन करती भई। तब श्रीरामचंद्रने अत्यंत मधुर वचन कहकर धीर्य बंधाया, सीता गोदमें लेय बैठी। मुख धोया अर लक्ष्मण कहते भए—हे सुंदरी! सोच तज अर पुरुषका भेषकर राज्य कर, कैयक दिननि म्लेच्छनिकूं पकड अर अपने पिताको छूटा जान, ऐसा कहकर परम हर्ष उपजाया सो इनके वचन सुनकर कन्या पिताको छूटा ही जानती भई। श्रीराम लक्ष्मण देवनिकी नाईं तीन दिन यहां बहुत आदरते रहे बहुरि रात्रिमें सीतासहित उपवनते निकसकर गोप चले गए। प्रभात समय कन्या जागी तिनको न देख व्याकुल भई अर कहती भई, वे महापुरुष मेरा मन हर ले गए, मो पापिनीको नींद आगई सो गोप चले गए। या भांति विलापकर मनको थांभ हाथीपर

चढ पुरुषके भेष नगरमें गई अर राम लक्ष्मण कल्याणमालाके विनयकर हरा गया है चित्त जिनका, अनुक्रमते मेकला नामा नदी पहुंचे। नदी उतर क्रीडा करते अनेक देशनिको उलंघ विन्ध्याटवीको प्राप्त भए, पंथमें जाते संते गुवालानिने मने किए कि यह अटवी भयानक है तिहारे जाने योग्य नाहीं, तब आप तिनकी वात न मानी चले ही गए। कैसी है वनी ? कहीं एक लताकर मंडित जे शालवृक्षादिक तिनकरि शोभित है अर नानाप्रकारके सुगंध वृक्षनिकर भरी महासुगंधरूप है अर कहीं एक दवानलकर जले वृक्ष तिनकर शोभारहित है जैसे कुपुत्रकर कलंकित गोत्र न शोभै।

अथानंतर सीता कहती भई कंटकवृक्षके ऊपर बाईं ओर काग बैठा है सो यह तो कलहकी सूचना करे है अर दूसरा एक काग क्षीरवृक्षपर बैठा है सो जीत दिखावे है ताते एक मुहूर्त स्थिरता करहु या मुहूर्तविषे चले आगे कलहके अंत जीत है मेरे चित्तमें ऐसा भासे है तब क्षण एक दोऊ भाई थंभे बहुरि चले, आगे म्लेच्छनिकी सेना दृष्टि पडी ते दोऊ भाई निर्भय धनुषवाण धारे म्लेच्छनिकी सेना पर पडे सो सेना नाना दिशनिको भाग गई तब अपनी सेनाका भंग जान अर बहुत म्लेछ वक्तर पहिर आए सो वे भी लीलामात्रमें जीते तब वे सब म्लेछ धनुष वाण डार पुकार करते पतिपे जाय सारा वृत्तांत कहते भए। तब वे सब म्लेच्छ परम क्रोधकर धनुषवाण लीए महा निर्दई वडी सेनासूं आए। शस्त्रनिके समूहकरि संयुक्त वे काकोदन जातिके म्लेछ पृथिवी पर प्रसिद्ध सर्व मांसके भक्षी राजानहूकरि दुर्जय ते कारी घटा समान उमंडि आये तब लक्ष्मणने कोपकर धनुष चढाया तब वन कम्पायमान भया, वनके जीव कांपने लग गए तब लक्ष्मणने धनुषके शर बांधा तब सब म्लेच्छ डरे वनमें दशों दिश आंधेकी न्याई भटकते भए। तब महा भयकर पूर्ण म्लेछनिका आधिपति रथसे उतर हाथ जोड प्रणामकर पायन पडा अपना सब वृत्तांत दोऊ भाइनिसूं कहता भया। हे प्रभो! कौशांवी नगरी है तहां एक विश्वानल नामा ब्राह्मण अग्नि-

होत्री ताके प्रतिसंध्यानामा स्त्री तिनके रौद्रभूतनामा पुत्र सो दूतकलामें प्रवीण बाल अवस्थाहीसे क्रूर कर्मका करणहारा सो एक दिन चोरीते पकडा गया अर सूली देनेको उद्यमी भए तब एक दयावान् पुरुषने छुडाया सो मैं कांपता देश तज यहां आया कर्मानुयोग कर काकोदन जातिके म्लेछोंका पति भया महाभ्रष्ट पशु समान व्रत क्रिया रहित तिष्ठूं हूं। अब तक महासेनाके अधिपति बडे बडे राजा मेरे सन्मुख युद्ध करनेको समर्थ न भए, मेरी दृष्टिगोचर न आए सो मैं आपके दर्शन मात्रहीसे वशीभूत भया। धन्यभाग्य मेरे जो मैंने तुम पुरुषोत्तम देखे, अब मोहि जो आज्ञा देवो सो करूं। आपका किंकर आपके चरणारविंदकी चाकरी सिर पर धरूं अर यह विन्ध्याचल पर्वत अर स्थान निधिकर पूर्ण है, आप यहां राज्य करहु मैं तिहारा दास, ऐसा कहकर म्लेच्छ मूर्छा खायकर पायन पडा जैसे वृक्ष निर्मूल होय गिर पडे ताहि विह्वल देख श्रीरामचंद्र दयारूप वेलकर वेढे कल्पवृक्ष समान कहते भए, उठ उठ डरे मत वालखिल्यको छोड तत्काल यहां मंगाय अर ताका आज्ञाकारी मंत्री होयकर रह म्लेछनिकी क्रिया तज, पापकर्मते निवृत हो, देशकी रक्षा कर। या भांति कियेते तेरी कुशल है, तब याने कही हे प्रभो! ऐसा ही करूंगा यह वीनती कर आप गया अर महारथका पुत्र जो वालखिल्य ताहि छोडा, बहुत विनय संयुक्त ताके तैलादि मर्दनकर स्नान भोजन कराय आभूषण पहिराय रथपर चढाय श्रीरामचंद्रके समीप लेजानेको उद्यमी किया, तब बालखिल्य परम आश्चर्यको प्राप्त होय विचारता भया, कहां यह म्लेछ महाशत्रु कुकर्मी अत्यन्त निर्दयी अर मेरा ऐता विनय करे है सो जानिये है जो आज मोहि काहूकी भेंट देगा। अब मेरा जीवन नाहीं, यह विचार सो बालखिल्य सचिंत चला आगे राम लक्ष्मणको देख परम हर्षित भया। रथते उतर आय नमस्कार किया अर कहता भया हे नाथ! मेरे पुण्यके योगते आप पधारे, मोहि बंधनते छुडाया। आप महासुन्दर इंद्र तुल्य पुरुष हो, तब रामने आज्ञा करी तू अपने स्थानक

जाहु, कुटुंबते मिलहु तब बालखिल्य रामको प्रणाम कर रौद्रभूत सहित अपने नगर गया। श्रीराम बालखिल्यको छुडाय रौद्रभूतकूं दास करि वहांते चाले सो बालखिल्यको आया सुनकर कल्याणमाला महाविभूति सहित सन्मुख आई अर नगरमें महा उत्साह भया, राजा राजकुमारको उरसे लगाय अपनी असवारीमें चढाय नगरविषै प्रवेश किया, राणी पृथिवीके हर्षसे रोमांच होय आये, जैसा आगे शरीर सुन्दर हुता तैसा पतिके आए भया। सिंहोदरको आदि देय बालखिल्यके हितकारी सब ही प्रसन्न भए अर कल्याणमाला पुत्रीने एते दिवस पुरुषका भेष कर राज थाम्भा हुता सो या बातका सबको आश्चर्य भया, यह कथा राजा श्रेणिकसूं गौतमस्वामी कहे हैं हे नराधिप ! वह रौद्रभूत परद्रव्यका हरणहारा अनेक देशनिका कंटक सो श्रीरामके प्रतापते बालखिल्यका आज्ञाकारी सेवक भया। जब रौद्रभूत वशीभूत भया अर म्लेच्छनिकी विगम भूमिमें बालखिल्यकी आज्ञा प्रवर्ती तब सिंहोदर भी शंका मानता भया। अर स्नेह सहित सन्मान करता भया, बालखिल्य रघुपतिके प्रसादते परम विभूति पाय जैसा शरद ऋतुमें सूर्य प्रकाश करे तैसा पृथिवीविषै प्रकाश करता भया। अपनी राणी सहित देवोंकी न्याई रमता भया॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै म्लेच्छानिके राजा रौद्रभूतिका वर्णन करनेवाला चौतीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ३४ ॥

अथानंतर राम लक्ष्मण देवनि सारिखे मनोहर नंदन वन सारिखा वन ताविषै सुखसे विहार करते एक मनोग्य देशविषै आय निकसे जाके मध्य तापती नदी बहे, नानाप्रकारके पक्षिनिके शब्द करि सुंदर, तहां एक निर्जन वनमें सीता तृषाकर अत्यन्त खेदखिन्न भई तब पतिको कहती भई। हे नाथ ! तृषासे मेरा

कंठ शोष है जैसे अनन्त भवके भ्रमणकर खेदखिन्न हुआ भव्यजीव सम्यक्‌दर्शनको वांछे तैसे मैं तृषासे व्याकुल शीतल जलको वांछू हूं ऐसा कहिकर एक वृक्षके नीचे बैठ गई, तब रामने कही हे देवी! हे शुभे! तू विषादको मत प्राप्त होय, नजीक ही यह आगे ग्राम है जहां सुन्दर मंदिर है, उठ आगे चल या ग्राममें तोहि शीतल जलकी प्राप्ति होयगी, ऐसा जब कहा तब उठकर सीता चली मंद मंद गमन करती गजगामिनी ता सहित दोऊ भाई अरुणनामा ग्राममें आए जहां महाधनवान किसान रहैं, जहां एक ब्राह्मण अग्निहोत्री कपिलनामा प्रसिद्ध ताके घरमें आय उतरे ताकी अग्निहोत्रीकी शालामें क्षण एक बैठ खेद निवारा। कपिलकी ब्राह्मणी जल लाई सो सीता पिया, तहां विराजे अर वनते ब्राह्मण बील तथा छीला वा खेजडा इत्यादि काष्ठका भार बांधे आया, दावानल समान प्रज्वलित जाका मन महा क्रोधी कालकूट विष समान वचन बोलता भया। उल्लू समान है मुख जाका अर करमें कमण्डलु चोटीमें गांठ दिए लांबी डाढी यज्ञोपवीत पहिरे उंछवृत्ति कहिये अन्नको काटकर ले गए पीछे खेतनते अन्न कण बीन लावे, या भांति है आजीविका जाकी, सो इनको बैठा देख वक्र मुखकर ब्राह्मणीको दुर्वचन कहता भया हे पापिनी! इनको घरमें काहे प्रवेश दिया, मैं आज तोहि गायनिके मठनमें बांधूगा। देख इन निर्लज्ज ढीठ पुरुष धूरकर धूसरोंने मेरा अग्निहोत्रका स्थान मलिन किया, यह वचन सुन सीता रामते कहती भई, हे प्रभो! या क्रोधीके घरमें न रहना वनमें चलिये जहां नानाप्रकारके पुष्प फल तिनकर मंडित वृक्ष शोभे हैं। निर्मल जलके भरे सरोवर हैं तिनमें कमल फूल रहे हैं अर मृग अपनी इच्छासे क्रीडा करते हैं यहां ऐसे दुष्ट पुरुषनिके कठोर वचन सुनिये है, यद्यपि यह देश धनसे पूर्ण है अर स्वर्ग सारिखा सुन्दर है परंतु लोग महाकठोर हैं अर ग्रामीजन विशेष कठोर ही होय हैं सो विप्रके रूखे वचन सुन ग्रामके सकल लोक आए, इन दोऊ भाइनिका देवानि समान रूप देख मोहित भए। ब्राह्मणको एकान्त

में लेजाय लोक समझावते भए । ये एक रात्रि यहां रहे हैं तेरा कहा उजाड है। ये गुणवान विनयवान रूपवान पुरुषोत्तम हैं तब द्विज सबसे लडा अर सबसे कहा, तुम मेरे घर काहे आए, परे जाहु अर मूर्ख इनपर क्रोधकर आया जैसे श्वान गजपर आवे, इनको कहता भया रे अपवित्र हो मेरे घरते निकसो इत्यादि कुवचन सुन लक्ष्मण कोप भए, ता दुर्जनकैं पांव ऊंचेकर नाडि नीचेकर भ्रमाया भूमिपर पछाडने लगा तब श्रीराम परमदयालु ताहि मने किया, हे भाई ! यह कहा ? ऐसे दीनके मारनेकरि कहा ? याहि छोड देहु याके मारनेते बडा अपयश है। जिनशासनमें शूरवीरको एते न मारने यति ब्राह्मण गाय पशु स्त्री बालक वृद्ध ये दोष संयुक्त होंय तो भी हनने योग्य नाहीं, या भांति भाईको समझाया, विप्र छुडाया अर आप लक्ष्मणको आगे कर सीतासहित कुटीते निकसे, आप जानकीसे कहे हैं हे प्रिये ! धिकार है नीच की संगतिको जिसकर क्रूर वचन सुनिये मनमें विकारका कारण महापुरुषानिकर त्याज्य महाविषम वनमें वृक्षानिके नीचे वास भला न नीचनिके साथ अर आहारादिक विना प्राण जावें तो भले परंतु दुर्जनके घर क्षणएक रहना योग्य नाहीं। नदीनिके तटविषै पर्वतानिकी कंदरानिविषै रहेंगे। बहुरि ऐसे दुष्टके घर न आवेंगे। या भांति दुष्टके संगको निंदते ग्रामसे निकसे राम वनको गए, वहां वर्षा समय आय प्राप्त भया। समस्त आकाशको श्याम करता हुवा अर अपनी गर्जना कर शब्द रूप करी है पर्वतकी गुफा जाने, ग्रह नक्षत्र तारानिके समूहको ढांककर शब्दसहित बिजुरीके उद्योतकर मानों अंबर हंसे है, मेघ पटल ग्रीष्म के तापको निवारकर पंथिनिको बिजुरीरूप अंगुरिनिकरि डरावता संता गाजे है। श्याम मेघ आकाशमें अंधकार करता संता जलकी धाराकर मानों सीताको स्नान करावे है जैसे गज लक्ष्मीको स्नान करावे। ते दोऊ वीर वनमें एक वडा वटका वृक्ष ताके डाहला घरके समान तहां विराजे, सो एक दंभकर्ण नामा यक्ष उस बटमें रहता हुता सो इनको महा तेजस्वी जानकर अपने स्वामीको नमस्कार कर कहता भया

हे नाथ ! कोई स्वर्गते आए हैं, मेरे स्थानकविषै तिष्ठे हैं। जिनने अपने तेजकर मोहि स्थानते दूर किया है, वहां मैं जाय न सकूं हूं। तब यक्षके वचन सुनकर यक्षाधिपति अपने देवनिसहित वटका वृक्ष जहां राम लक्ष्मण हुते तहां आया, महाविभव संयुक्त वनक्रीडाविषै आसक्त नूतन है नाम जाका, सो दूरहीते दोऊ भाइनिको महारूपवान देख अवध कर जानता भया। जो ये बलभद्र नारायण हैं तब वह इनके प्रभाव कर अत्यन्त वात्सल्यरूप भया। क्षणमात्रमें महामनोग्य नगरी निरमापी, तहां सुखसे सोते हुए प्रभात सुन्दर गीतोंके शब्दनिकर जागे। रत्नजडित सेजपर आपको देखा अर मंदिर महामनोहर बहुत खणका अति उज्जल अर सम्पूर्ण सामग्रीकर पूर्ण अर सेवक सुन्दर बहुत आदरके करनहारे नगरमें रमणीक शब्द कोट दरवाजेनिकर शोभायमान ते पुरुषोत्तम महानुभाव तिनका चित्त ऐसे नगरको तत्काल देख आश्चर्यको न प्राप्त भया। यह क्षुद्र पुरुषनिकी चेष्टा है जो अपूर्व वस्तु देख आश्चर्यको प्राप्त होंय। समस्त वस्तु कर मंडित वह नगर तहां वे सुन्दर चेष्टाके धारक निवास करते भए, मानों ये देव ही हैं। यक्षाधिपतिने रामके अर्थ नगरी रची। तातैं पृथिवी पर रामपुरी कहाई। ता नगरीविषै सुभट मंत्री द्वारपाल नगरके लोग अयोध्या समान होते भए। राजा श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछे हैं हे प्रभो ! ये तो देवकृत नगरविषै विराजे अर ब्राह्मणकी कहा बात सो कहो तब गणधर बोले—वह ब्राह्मण अन्य दिन दांतला हाथमें लेय वनमें गया, लकडी ढूंढते अंकस्मात ऊंचे नेत्र किये। निकट ही सुन्दर नगर देखकर आश्चर्यको प्राप्त भया। नानाप्रकारके रंगकी ध्वजा उन कर शोभित शरदके मेघ समान सुन्दर महिल देखे अर एक राजमहिल महाउज्ज्वल मानों कैलाशका बालक है सो ऐसा देखकर मनमें विचारता भया। जो यह अटवी मृगनिते भरी जहां मैं लकडी लेने निरंतर आवता हुता सो यहां रत्नाचल समान सुंदर मंदिरनिते संयुक्त नगरी कहांसू बसी ? सरोवर जलके भरे कमलनिकरि शोभित दीखे है जो मैं अब तक

कभी न देखे, उद्यान महामनोहर जहां चतुर जन क्रीडा करते दीखे हैं अर देवालय महाध्वजनिकर संयुक्त शोभे हैं अर हाथी घोडे गाय भैंस तिनके समूह दृष्टि आवे हैं। घंटादिकके शब्द होय रहे हैं। यह नगरी स्वर्गते आई है अथवा पातालते निसरी है, कोऊ महाभाग्यके निमित्त, यह स्वप्न है अक प्रत्यक्ष है अक देवमाया है अक गन्धर्वोंका नगर है। अक मैं पित्तकर व्याकुल भया हूं याके निकटवर्ती जो मैं सो मेरे मृत्युका चिह्न दीखे है, ऐसा विचार विषादको प्राप्त भया। सो एक स्त्री नानाप्रकारके आभरण पहरे देखी ताके निकट जाय पूछता भया। हे भद्रे ! यह कौनकी पुरी है तब वह कहती भई यह रामकी पुरी है तूने कहा न सुनी ? जहां राम राजा जाके लक्ष्मण भाई, सीता स्त्री अर नगरके मध्य यह बडा मन्दिर है शरदके मेघ समान उज्ज्वल, जहां वह पुरुषोत्तम विराजे हैं, कैसा है पुरुषोत्तम लोकविषै दुर्लभ है दर्शन जाका सो ताने मनवांछित द्रव्यके दानकरि सब दरिद्री लोक राजानिके समान किये, तब ब्राह्मण बोला हे सुन्दरी ! कौन उपाय कर याहि देखूं सो तू कह ऐसे काष्ठका भार डारकर हाथ जोड ताके पायन पडा। तब वह सुमाया नामा यक्षिनी कृपाकर कहती भई, हे विप्र ! या नगरीके तीन द्वार हैं। जहां देव भी प्रवेश न करसकें, बडे बडे योधा रक्षक बैठे हैं। रात्रिमें जागे हैं जिनके मुख सिंह गज व्याघ्र तुल्य हैं तिनकरि भयको मनुष्य प्राप्त होय हैं, यह पूर्व द्वार है जाके निकट बडे बडे भगवानके मंदिर हैं। मणिके तोरणकरि मनोग्य तिनमें इंद्र कर वंदनीक अरिहंतके बिंब विराजे हैं अर जहां भव्यजीव सामायिक आदि स्तवन करे हैं अर जो नमोकारमंत्र भाव सहित पढे हैं सो भीतर प्रवेश कर सके हैं। जो पुरुष अणुव्रतका धारी गुणशीलसे शोभित है ताको राम परम प्रीतिकर वांछे हैं। यह वचन यक्षिनीके अमृत समान सुनकर ब्राह्मण परम हर्षको प्राप्त भया। धन आगमका उपाय पाया, यक्षनीकी बहुत स्तुति करी, रोमांच कर मंडित भया है सर्व अंग जाका सो चारित्रशूर नामा मुनिके निकट जाय हाथ जोड नमस्कार

कर श्रावककी क्रियाका भेद पूछता भया। तब मुनिने श्रावकका भेद इसे सुनाया, चारों अनुयोगका रहस्य बताया सो ब्राह्मण धर्मका रहस्य जान मुनिकी स्तुति करता भया। हे नाथ! तिहारे उपदेशते मेरे ज्ञान दृष्टि भई जैसे तृषावानको शीतल जल अर ग्रीष्मके तापकर तप्तायमान पंथीको छाया अर क्षुधावानको मिष्टान्ह अर रोगीको औषधि मिले, तैसे कुमार्गमें प्रतिपन्न जो मैं सो मोहि तिहारा उपदेश रसायन मिला जैसे समुद्रके मध्य डूबतेको जहाज मिले। मैं यह जैनका मार्ग सर्व दुःखनिका दूर करणहारा तिहारे प्रसादकरि पाया जो अविवेकिनिको दुर्लभ है, तीनलोकमें मेरे तुम समान कोऊ हित नाहीं जिनकर ऐसा जिनधर्म पाया। ऐसा कहकर मुनिके चरणारविंदको नमस्कार कर ब्राह्मण अपने घर गया। अति हर्षित, फूल रहे हैं नेत्र जाके स्त्रीसूं कहता भया, हे प्रिये! मैंने आज गुरुके निकट अद्भुत जिनधर्म सुना है जो तेरे बापने अथवा मेरे बापने अथवा पिताके पिताने भी न सुना अर हे ब्राह्मणी! मैंने एक अद्भुत वन देखा तामें एक महामनोग्य नगरी देखी जाहि देखे आश्चर्य उपजे परंतु मेरे गुरुके उपदेशते आश्चर्य नहीं उपजे है तब ब्राह्मणीने कही, हे विप्र! तैं कहा देखा और कहा सुना सो कहो तब ब्राह्मण कही, हे प्रिये! मैं हर्ष थकी कहने समर्थ नाहीं, तब बहुत आदर कर ब्राह्मणीने बारम्बार पूछा तब ब्राह्मण कही हे प्रिये! मैं काष्ठके अर्थ वनविषै गया। सो वन एक महा रमणीक रामपुरी देखी ता नगरीके समीप उद्यानविषै एक नारी सुन्दरी देखी, सो वह कोई देवता होयगी महा मिष्टवादिनी, मैंने पूछा या नगरी कोनकी है तब वाने कही यह रामपुरी है, जहां राजा राम श्रावकनिको मनवांछित धन देवे हैं। तब मैं मुनि पै जाय जैन वचन सुने सो मेरा आत्मा बहुत तृप्त भया, मिथ्यादृष्टि कर मेरा आत्मा आताप युक्त हुता सो आताप गया। जा धर्मको पायकर मुनिराज मुक्तिके अभिलाषी सर्व परिग्रह तज महा तप करे सो वह अरिहंतका धर्म त्रैलोक्यविषै एक महानिधि मैं पाया। ये वहिर्मुख जीव

वृथा क्लेश करे हैं मुनि थकी जैसा जिनधर्मका स्वरूप सुना तैसा ब्राह्मणीको कहा, कैसा है ब्राह्मण निर्मल है चित्त जाका तब ब्राह्मणी सुनकर कहती भई मैं भी तिहारे प्रसादकरि जिनधर्मकी रुचि पाई अर जैसे कोई विष फलका अर्थी महानिधि पावे, तैसे ही तुम काष्ठादिकके अर्थी धर्म इच्छाते रहित श्रीअरिहंतका धर्म रसायन पाया अबतक तुमने धर्म न जाना। अपने आंगनविषै आए सत्पुरुष तिनका निरादार किया, उपवासादिकरि खेदखिन्न दिगम्बर तिनको कबहु आहार न दिया, इन्द्रादिक कर वन्दनीक जे अरिहंतदेव तिनको तजकर ज्योतषी व्यन्तरादिकको प्रणाम किया। जीव दयारूप जिनधर्म अमृत तज अज्ञानके योगते पापरूप विषका सेवन किया। मनुष्य देहरूप रत्नदीप पाय साधुनिको परखा, धर्मरूप रत्न तज विषयरूप कांचका खंड अंगीकार किया। जे सर्व भक्षी दिवस रात्रि आहारी, अव्रती, कुशील तिनकी सेवा करी। भोजनके समय आतिथि आवै अर जो निर्बुद्धि अपने विभव प्रमाण अन्न पानादि न दे ताके धर्म नाहीं, आतिथि पदका अर्थ तिथि कहिए उत्सवके दिन तिनविषै उत्सव तज जाके तिथि कहिए विचार नाहीं अर सर्वथा निस्पृह घररहित साधु सो आतिथि कहिये जिनके भाजन नाहीं, कर ही पात्र हैं वे निर्ग्रंथ आप तिरैं औरनिको तारैं अपने शरीरमें हू निस्पृह काहू वस्तुविषै जिनका लोभ नाहीं। ते निरपरिग्रही मुक्तिके कारण जे दश लक्षण तिनकर शोभित हैं या भांति ब्राह्मणी धर्मका स्वरूप कहा अर सुशर्मा नामा ब्राह्मणी मिथ्यात्वरहित होती भई जैसे चंद्रमाके रोहिणी शोभे अर बुधके भरणी सोहे तैसे कपिलके सुशर्मा शोभती भई। ब्राह्मण ब्राह्मणीको वाही गुरुके निकट ले आया, जाके निकट आप व्रत लिये हुते सो स्त्रीको हू श्रावकके व्रत दिवाये। कपिलको जिनधर्मके विषय अनुरागी जान और हु अनेक व्राह्मण समभाव धारते भए। मुनि सुव्रतनाथका मत पायकर अनेक सुबुद्धि श्रावक श्राविका भए अर जे कर्मनिके भारकर संयुक्त मानकर ऊंचा है मस्तक जिनका, वे प्रमादी जीव थोडे

ही आयुविषे पापकर घोर नरकविषे जाय हैं। कैयक उत्तम ब्राह्मण सर्व संगका परित्यागकर मुनि भए, वैराग्यकर पुर्ण मनविषे ऐसा विचार किया—

यह जिनेंद्रका मार्ग अबतक अन्य जन्ममें न पाया महा निर्मल अब पाया, ध्यानरूप अग्निविषे कर्मरूप सामग्री भाव घृतसहित होम करेंगे सो जिनके परम वैराग्य उदय भया। ते मुनि ही भए अर कपिल ब्राह्मण महा क्रियावान श्रावक भया, एक दिवस ब्राह्मणीको धर्मकी अभिलाषिनी जान कहता भया—हे प्रिये ! श्रीरामके देखनेको रामपुरी काहे न चालें, कैसे हैं राम महापराक्रमी निर्मल है चेष्टा जिनकी, अर कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके, सर्व जीवनिके दयालु भव्य जीवनिपर है वात्सल्य जिनका, जे प्राणी आशामें तत्पर नित्य उपायविषे है मन जिनका, दलिद्रीरूप समुद्रमें मग्न, उदर पूर्णविषे असमर्थ, तिनको दरिद्ररूप समुद्रते पार उतार परमसम्पदाको प्राप्त करे हैं, या भांति कीर्ति तिनकी पृथ्वीमें फैल रही है महाआनन्दकी करणहारी, तातें हे प्रिये ! उठ, भेट लेकर चलें अर मैं सुकुमार बालकको कांधे लूगा। ऐसे ब्राह्मणीको कह तैसे ही कर दोऊ हर्षके भरे उज्ज्वल भेषकर शोभित रामपुरीको चाले। सो उनको मार्गमें भयानक नागकुमार दृष्टि आए, बहुरि विंतर विकराल वदन हडहडांस करते दृष्टि आए। इत्यादि भयानक रूप देख ये दोऊ निकंप हृदय होयकर या भांति भगवानकी स्तुति करते भए, श्रीजिनेश्वरदेवके तांई निरंतर मन वचन कायकर नमस्कार होहु। कैसे हैं जिनेश्वर ? त्रैलोक्यकर वंदनीक हैं। संसारकीचसे पार उतारे हैं, परम कल्याणके देनहारे हैं, यह स्तुति पढते ये दोऊ चले जावें हैं। इनको जिनभक्त जान यक्ष शांत हो गए, ये दोऊ जिनालयमें गए, नमस्कार होहु जिनमंदिरको. ऐसा कह दोऊ हाथ जोड अर चैत्यालयकी प्रदक्षिणा दई अर अंदर जाय स्तोत्र पढते भए—हे नाथ ! महाकुगतिका दाता मिथ्यामार्ग ताहि तजकर बहुत दिनोंमें तिहारा शरण गहा। चौबीस तीर्थंकर अतीत कालके

अर चौबीस वर्तमान कालके अर चौबीस अनागत कालके, तिनको मैं बंदूं हूं अर पंचभरत पंच ऐरावत पंच विदेह ये पंद्रह कर्मभूमि तिनसे जे तीर्थंकर भए अर वर्ते हैं अर अब होवेंगे तिन सबको हमारा नमस्कार होहु, जो संसार समुद्रसूं तिरें अर तारें ऐसे श्रीमुनि सुव्रतनाथके ताईं नमस्कार होहु, तीन लोक में जिनका यश प्रकाश करे है, या भांति स्तुतिकर अष्टांग दण्डवतकरि ब्राह्मण स्त्रीसहित श्रीरामके अवलोकनको गए, मार्गमें बडे २ मंदिर महाउद्योतरूप ब्राह्मणीको दिखाए अर कहता भया—ये कुन्दके पुष्प समान उज्ज्वल सर्व कामना पूर्ण नगरीके मध्य रामके मंदिर हैं, जिनकी यह नगरी स्वर्ग समान शोभे है। या भांति वार्ता करता ब्राह्मण राजमंदिरमें गया। सो दूर हीते लक्ष्मणको देख व्याकुलताको प्राप्त भया, चित्तमें चितारे है—वह श्याम सुंदर नीलकमल समान प्रभा जाकी, मैं अज्ञानी दुष्ट वचननिकरि दुखाया सो मोहि त्रास दीनी। पापिनी जिह्वा महादुष्टिनी काननको कटुक वचन भाषे, अब कहा करूं? कहां जाऊं? पृथ्वीके छिद्रमें बैठूं अब मोहि शरण कौनका? जो मैं यह जानता अक ये यहां ही नगरी बसाए रहे हैं तो मैं देश त्यागकर उत्तर दिशाको चला जाता, या भांति विकलपरूप होय ब्राह्मणी को तज ब्राह्मण भागा सो लक्ष्मणने देखा तब हंसकर रामको कहा वह ब्राह्मण आया है अर मृगकी नाईं व्याकुल होय मोहि देख भागे है तब राम बोले, याको विश्वास उपजाय शीघ्र लावो। तब सेवकजन दौडे, दिलासा देय लाए डिगता अर कांपता आया, निकट आय भय तज दोऊ भाइनके आगे भेट मेल स्वस्ति ऐसा शब्द कहता भया अर अतिस्तवन पढता भया तब राम बोले—हे द्विज! तैं हमको अपमानकर अपने घरते काढे हुते अब काहे पूजे है। तब विप्र बोला—हे देव, तुम प्रच्छन्न महेश्वर हो, मैं अज्ञानते न जाने तातैं अनादर किया जैसे भस्मते दबी आग्नि जानी न जाय, हे जगन्नाथ! या लोक की यही रीति है, धनवानको पूजिए है। सूर्य शीतऋतुमें तापरहित होय है सो तासे कोई नाहीं शंके है,

अब मैं जाना तुम पुरुषोत्तम हो। हे पद्मलोचन! ये लोक द्रव्यको पूजे हैं, पुरुषको नाहीं पूजे हैं। जो अर्थकर युक्त होय ताहि लौकिकजन माने हैं अर परम सज्जन है अर धनरहित है तो ताहि निप्रयोजन जन जान न माने हैं। तब राम बोले, हे विप्र! जाके अर्थ ताके मित्र जाके अर्थ ताके भाई जाके अर्थ सोई पंडित, अर्थ विना न मित्र न सहोदर जो अर्थकर संयुक्त है, ताके परजन हू निज होय जाय हैं अर धन वही जो धर्मकरयुक्त अर धर्म वही जो दयाकरयुक्त अर दया वही जहां मांस भोजनका त्याग जब सब जीवनिका मांस तजा, तब अभक्ष्यका त्याग कहिए ताके और त्याग सहज ही होय, मांसके त्याग विना और त्याग शोभे नाहीं। ये वचन रामके सुन विप्र प्रसन्न भया अर कहता भया—हे देव! जो तुम सारिखे पुरुषनिको महापुरुष पूजिए हैं तिनका भी मूढ लोक अनादर करे हैं। आगे सनत्कुमार चक्रवर्ती भए। बडी ऋद्धिके धारी महारूपवान जिनका रूप देव देखने आए, सो मुनि होयकर आहारको ग्रामादिकविषै गए। महाआचार प्रवीण सो निरंतराय भिक्षाको न प्राप्त होते भए, एक दिवस विजयपुर नाम नगरविषै एक निर्धन मनुष्यके आहार लिया, याके पंच आश्चर्य भए। हे प्रभो! मैं मंदभाग्य तुम सारिखे पुरुषनिका आदर न किया सो अब मेरा मन पश्चातापरूप अग्निकरि तपे है, तुम महारूपवान तुमको देखे महाक्रोधीका क्रोध जाता रहे अर आश्चर्यको प्राप्त होय ऐसा कहकर सोचकर गृहस्थ कपिल रुदन करता भया। तब श्रीरामने शुभवचनते संतोषा अर सुशर्मा ब्राह्मणीको जानकी संतोषती भई बहुरि राघवकी आज्ञा पाय स्वर्णके कलशानिकरि सेवकानिने द्विजको स्त्रीसहित स्नान कराया अर आदरसों भोजन कराया। नानाप्रकारके वस्त्र अर रत्ननिके आभूषण दिए, बहुत धन दिया। सो लेकर कपिल अपने घर आया। मनुष्यनिको विसमयका करणहारा धन याके भया। यद्यपि याके घरविषै सब उपकार सामग्री अपूर्व है तथापि या प्रवीणका परिणाम विरक्त घरविषै आसक्त नाहीं, मनविषै विचारता भया आगेमें

काष्ठके भारका वहनहारा दरिद्री हुता, सो श्रीरामदेवने तृप्त किया। याही ग्रामविषै मैं सोषित शरीर अभूषित हुता सो रामने कुवेर समान किया। चिंता दुखरहित किया मेरा घर जीर्ण तृणका जाके अनेक छिद्रकादि अशुचि पक्षिनिकी बीटकर लिप्त अब रामके प्रसादकरि अनेक स्वर्णके महिल भए, बहुत गोधन बहुत धन काहू वस्तुकी कमी नाहीं। हाय २ मैं दुर्बुद्धि कहा किया? वे दोऊ भाई चंद्रमा समान बदन जिनके, कमल नेत्र मेरे घर आए हुते, ग्रीष्मके आतापकरि तप्तायमान सीतासहित, सो मैंने घरते निकासे। या वातकी मेरे हृदयविषै महाशल्य है, जब लग घरविषै बसूं हूं तब लग खेद मिटै नाहीं, तातैं गृहारम्भका परित्यागकर जिनदीक्षा आदरूं। जब यह विचारी, तब याको वैराग्यरूप जान समस्त कुटुंबके लोक अर सुशर्मा ब्राह्मणी रुदन करते भए तब कपिल सबको शोकसागरविषै मग्न देख निर्ममत्वबुद्धिकरि कहता भया। कैसा है कपिल? शिव सुखविषै है अभिलाषा जाकी, हो प्राणी हो! परिवारके स्नेहकरि अर नानाप्रकारके मनोरथनिकरि यह मूढ जीव भव तापकर जरे हैं, तुम कहा नाहीं जानो हो? ऐसा कह महा विरक्त होय दुखकर मूर्छित जो स्त्री ताहि तज अर सब कुटुम्बको तज, अठारह हजार गाय अर रत्ननिकर पूर्ण घर अर घरके बालक स्त्रीको सौंप आप सर्वारम्भ तज दिगम्बर भया। स्वामी अनंतमतिका शिष्य भया। कैसे हैं अनंतमति? जगतविषै प्रसिद्ध तपोनिधि गुण शीलके सागर यह कपिल मुनि गुरुकी आज्ञा प्रमाण महातप करता भया। सुन्दर चारित्रका भार धर परमार्थविषै लीन है मन जाका, वैराग्य विभूतिकर अर साधुपदकी शोभाकर मंडित है शरीर जाका। सो जो विवेकी यह कपिलकी कथा पढे सुने ताहि अनेक उपवासनिका फल होय सूर्य समान ताकी प्रभा होय॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं देवनिकर नगरका बसावन अर कपिल ब्राह्मणका वैराग्य वर्णन करनेवाला पैंतीसवां पर्व पूर्ण भया॥ ३५॥

अथानन्तर वर्षा ऋतु पूर्ण भई। कैसी है वर्षा ऋतु? श्याम घटाकरि महा अंधकाररूप जहां मेघ जल असराल बरसे अर बिजुरीनिके चमत्कारकर भयानक वर्षाऋतु व्यतीति भई, शरदऋतु प्रगट भई दशों दिशा उज्ज्वल भई तब वह यक्षाधिपति श्रीरामसूं कहता भया कैसे हैं श्रीराम ? चलनेका है मन जिनका, यक्ष कहे है हे देव हमारी सेवामें चूक होय सो क्षमा करो। तुम सारिखे पुरुषानिकी सेवा करनेको कौन समर्थ है तब राम कहते भए हे यक्षाधिपते ! तुम सब बातों के योग्य हो अर तुम पराधीन होय हमारी सेवा करी सो क्षमा करियो। तब उनके उत्तम भाव विलोकि अति हर्षित भया नमस्कारकर स्वयंप्रभ नामा हार श्रीरामको भेंट किया। महा अद्भुत अर लक्ष्मणको मणिकुण्डल चांद सूर्य सारिखे भेंट किये। अर सीताको कल्याण नामा चूडामणि महा देदीप्यमान दिया अर महामनोहर मनवांछित नादकी करनहारी देवोपुनीत वीणा दई वे अपनी इच्छाते चाले। तब यक्षराजने पुरी संकोचलई अर इनके जायवे का बहुत शोच किया अर श्री रामचन्द्र यक्षकी सेवा करि अति प्रसन्न होय आगे चले, देवों की न्याई रमते नाना प्रकारकी कथा विषे आसक्त नाना प्रकारके फलनिके रसके भोक्ता पृथिवी पर अपनी इच्छा सूं भ्रमते, मृगराज तथा गजराजनि करि भरा जो महा भयानक वन ताहि उलंघ विजय पुर नामा नगर आए ता समय सूर्य अस्त भया। अन्धकार फैला आकाश विषे नक्षत्रनिके समूह प्रकट भए, नगरते उत्तर दिशा की तरफ न अति निकट न अति दूर कायर लोगनि को भयानक जो उद्यान वहां विराजे ॥

अथानन्तर नगर का राजा पृथिवीधर जाके इन्द्राणी नामा राणी स्त्रीके गुणनि करि मंडित ताके वनमाला नामा पुत्री महा सुन्दर सो बाल अवस्था ही ते लक्ष्मण के गुण सुन अति आसक्त भई। बहुरि सुनी दशरथ ने दीक्षा धरी अर केकईके वचन ते भरत को राज्य दिया, राम लक्ष्मण परदेश निकसे

है ऐसा विचार याके पिताने कन्याका इन्द्रनगरका राजा ताका पुत्र जो वालमित्र महा सुन्दर ताहि देनी विचारी सो यह वृत्तांत बनमाला सुना, हृदय विषे बिराजे हैं लक्ष्मण जाके, तब मन विषे बिचारी कंठफांसी लेय मरणा भला परन्तु अन्य पुरुषका सम्बन्ध शुभ नाहीं, यह विचार सूर्यसूं संभाषण करती भई हे भानो ! अब तुम अस्त होय जावो शीघ्र ही रात्रिको पठावहु अब दिनका एक क्षण मोहि वर्ष समान बीते है सो मानों याके चिंतवन कर सूर्य अस्त भया, कन्याका उपवास है, सन्ध्या समय माता पिता की आज्ञा लेय श्रेष्ठरथ विषे चढ बन यात्रा का बहाना कर रात्रि विषे तहां आई जहां राम लक्ष्मण तिष्ठ हुते सो याने आन कर ताही बन विषे जागरण किया। जब सकल लोक सो गए तब यह मन्द मन्द पैर धरती बनकी मृगी समान डेराते निकस बन विषे चली सो यह महासती पद्मिनी ताके शरीरकी सुगन्धता कर बन सुगन्धित होय गया तब लक्ष्मण बिचारता भया यह कोई राजकुमारी महा श्रेष्ठ मानों ज्योतिकी मूर्ति ही है सो महा शोकके भार कर पीडित है मन जाका यह अपघात कर मरण वांछे है सो मैं याकी चेष्टा छिपकर देखूं ऐसा विचारकर छिपकर बटके वृक्ष तले बैठा मानों कौतुक युक्त देव कल्पवृक्षके नीचे बैठे। ताही बट के तले हंसनी की सी है चाल जाकी अर चन्द्रमा समान है बदन जाका कोमल है अंग जाका ऐसी बनमाला आई जल सूं आला वस्त्रकर फांसी बनाई अर मनोहर बाणीकर कहती भई—हो या वृक्षके निवासी देवता कृपाकर मेरी बात सुनहु कदाचित बनविषे विचरता लक्ष्मण आवे तो तुम ताहि ऐसे कहियो जो तुम्हारे विरह करि महा दुःखित बनमाला तुमविषे चित्त लगाय बट के वृक्ष विषे बस्त्रकी फांसी लगाय मरण को प्राप्त भई हमने देखी अर तुमको यह सन्देशा कहा है जो या भवविषे तो तुम्हारा संयोग तोहि न मिला अब परभव विषे तुमही पति हूजियो यह बचन कह वृक्ष की शाखा सो फांसी लगाय आप फांसी लेने लगी, ताही समय लक्ष्मण कहता भया—हे मुग्धे ! मेरी

भुजाकर आलिंगन योग्य तेरा कंठ ताविषै फांसी काहेको डारे है ? हे सुंदरवदनी, परमसुंदरी ! मैं लक्ष्मण हूं जैसा तेरे श्रवणविषै आया है तैसा देख अर प्रतीत न आवै तो निश्चय कर लेहु । ऐसा कह ताके कर से फांसी हर लीनी जैसे कमलथकी झागोंके समूहको दूर करे, तब वह लज्जाकरयुक्त प्रेमकी दृष्टिकर लक्ष्मण को देख मोहित भई । कैसा है लक्ष्मण ? जगतके नेत्रानिका हरणहारा है रूप जाका, परम आश्चर्यको प्राप्त भई । चित्तविषै चिंतवै है यह कोई मोपर देवानि उपकार किया, मेरी अवस्था देख दयाको प्राप्त भए जैसा मैं सुना हुता तैसा दैव योगते यह नाथ पाया जाने मेरे प्राण बचाए ऐसा चिंतवन करती बनमाला लक्ष्मणके मिलापते अत्यंत अनुरागको प्राप्त भई ॥

अथानन्तर महासुगन्ध कोमल सांथरेपर श्रीरामचंद्र पौढे हुते सो जागकर लक्ष्मणको न देख जानकीको पूछते भए—हे देवी ! यहां लक्ष्मण नाहीं दीखे है, रात्रिके समय मेरे सोवनेको पुष्प पल्लवनि का कोमल सांथरा बिछाय आप यहां ही तिष्ठता हुता सो अब नाहीं दीखे है । तब जानकीने कही—हे नाथ ! ऊंचा स्वरकर बुलाय लेवो, तब आप शब्द किया । हे भाई ! हे लक्ष्मण ! हे बालक ! कहां गया ? शीघ्र आवहु । तब भाई बोला—हे देव ! आया, बनमालासहित बडे भाईके निकट आया । आधी रात्रि का समय चंद्रमाका उदय भया, कुमुद फूले, शीतल मंद सुगंध पवन बाजने लगी । ता समय बनमाला कोपल समान कोमल कर जोड वस्त्रकर बेढा है सर्व अंग जाने, लज्जाकर नम्रीभूत है मुख जाका, जाना है समस्त कर्तव्य जाने, महाविनयको धरती श्रीराम अर सीताके चरणारविन्दको वन्दती भई । सीता लक्ष्मणको कहती भई—हे कुमार ! तैंने चंद्रमाकी तुल्यता करी । तब लक्ष्मण लज्जाकर नीचा होय गया, श्रीराम जानकीते कहते भए, तुम कैसे जानी ? तब कही—हे देव ! जा समय चंद्रमाका उद्योत भया ताही समय कन्यासहित लक्ष्मण आया तब श्रीराम सीताके वचन सुन प्रसन्न भए ॥

अथानन्तर बनमाला महाशुभ शील इनको देख आश्चर्यकी भरी प्रसन्न है मुख चंद्रमा जाका, फूल रहे हैं नेत्रकमल जाके, सीताके समीप बैठी अर ये दोऊ भाई देवनि समान महासुंदर निद्रारहित सुखते कथा वार्ता करते तिष्ठे हैं अर बनमालाकी सखी जागकर देखे तो सेज सूनी, कन्या नाहीं । तब भयकर खेदित भई अर महाव्याकुल होय रुदन करती भई ताके शब्दकर योधा जागे, आयुध लगाय तुरंग चढ दशों दिशाको दौडे अर पयादे दौडे । बरछी अर धनुष है हाथमें जिनके, दशों दिशा ढूंढी । राजाका भय अर प्रीतिकर संयुक्त है मन जाका, ऐसे दौडे मानों पवनके बालक हैं तब कैयक या तरफ दौडे आए बनमालाको बनविषै राम लक्ष्मणके समीप बैठी देख बहुत हर्षित होय जायकर राजा पृथ्वीधरकी बधाई दई अर कहते भए—हे देव ! जिनके पावनेका बहुत यत्न करिये तो भी न मिलें वे सहज ही आए हैं, प्रभो, तेरे नगरमें महानिधि आई, विना बादल आकाशते वृष्टि भई, क्षेत्रविषै विना बाहे धान ऊगा । तिहारा जमाई लक्ष्मण नगरके निकट तिष्ठे है जाने बनमाला प्राण त्याग करती बचाई अर राम तिहारे परमहितु सीतासहित विराजे हैं जैसे शचीसहित इंद्र विराजे । ये वचन राजा सेवकनिके सुनकर महा हर्षित होय क्षण एक मूर्छित होय गया । बहुरि परम आनन्दको प्राप्त होय सेवकनिको बहुत धन दिया अर मनविषै विचारता भया—मेरी पुत्रीका मनोरथ सिद्ध भया । जीवनिके धनकी प्राप्ति अर इष्टका समागम और हू सुखके कारण पुण्यके योगकरि होय हैं । जो वस्तु सैकडों योजन दूर अर श्रवणमें न आवे सो हू पुण्याधिकारीके क्षणमात्रविषै प्राप्त होय है अर जे प्राणी दुखके भोक्ता पुण्यहीन हैं तिनके हाथसे इष्टवस्तु विलाय जाय है । पर्वतके मस्तकपर तथा वनविषै सागरविषै पंथविषै पुण्याधिकारनिके इष्टवस्तु का समागम होय है । ऐसा मनविषै चिंतवनकर स्त्रीते समस्त वृत्तांत कहा, स्त्री बारंबार पूछे है यह जाने मानों स्वप्न ही है, बहुरि रामके अधर समान आरक्त सूर्यका उदय भया । तब राजा प्रेमका भरा

सर्वं परिवारसहित हाथीपर चढकर परम कांतियुक्त रामसूं मिलने चला अर बनमालाकी माता आप पुत्रिनिसहित पालकीपर चढकर चली सो राजा दूर हीते श्रीरामका स्थानक देखकर फूल गए हैं नेत्र कमल जाके, हाथीते उतर समीप आया। श्रीराम अर लक्ष्मणसूं मिला अर वाकी रानी सीताके पायन लागी अर कुशल पूछती भई, वीण बांसुरी मृदंगादिकके शब्द होते भए, बंदीजन विरद बखानते भए, बडा उत्सव भया, राजाने लोकनिको बहुत दान दिया। नृत्य होता भया, दशों दिशा नादकर शब्दाय मान होतीं भईं, श्रीराम लक्ष्मणको स्नान भोजन कराया। बहुरि घोडे हाथी रथ तिनपर चढे अनेक सामन्त अर हिरण समान कूदते प्यादे तिनसहित राम लक्ष्मणने हाथीपर चढे संते पुरविषै प्रवेश किया, राजाने नगर उछाला महाचतुर मागध विरद बखाने हैं, मंगल शब्द करै हैं, राम लक्ष्मणने अमोलिक वस्त्र पहरे हारकर विराजे हैं वक्षस्थल जिनका, मलियागिरिके चंदनते लिप्त है अंग जिनका, नानाप्रकारके रत्ननिकी किरणनिकरि इंद्रधनुष होय रहा है। दोऊ भाई चांद सूर्य सारिखे नाहीं वरणे जावें हैं गुण जिनके, सौधर्म ईशान सारिखे जानकीसहित लोकनिको आश्चर्य उपजावते राजमंदिर पधारे, श्रेष्ठ माला धरे सुगंधकर गुंजार करै हैं भ्रमर जापर, महाविनयवान चंद्रवदन इनको देख लोक मोहित भए। कुवेर कासा किया जो वह सुंदर नगर वहां अपनी इच्छाकरि परम भोग भोगते भए। या भांति सुकृतमें है चित्त जिनका, महागहन वनविषै प्राप्त भए हू परम विलासको अनुभवै हैं। सूर्य समान है कांति जिनकी, वे पापरूप तिमिरको हरै हैं निज पदार्थके लोभते आनन्दरूप हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै वनमाला का लाभ वर्णन करनेवाला छवीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ २६ ॥

अथानंतर एक दिन श्रीराम सुखसे विराजे हुते, अर पृथिवीधर भी समीप बैठा हुता, ता समय एक पुरुष दूरका चला महा खेदखिन्न आय कर नम्रीभूत होय पत्र देता भया। सो राजा पृथिवीधरने पत्र लेय कर लेखकको सौंपा लेखकने खोलकर राजाके निकट बांचा तामें या भांति लिखा हुता कि इंद्र समान है उत्कृष्ट प्रभाव जाका महालक्ष्मीवान् नमे हैं अनेक राजा जाको श्रीनन्द्यावर्त नगरका स्वामी महाप्रबल पराक्रमका धारी सुमेरुपर्वतसा अचल प्रसिद्ध शस्त्रशास्त्रविषै प्रवीण सब राजानिका राजा महाराजाधिराज प्रताप कर वश किये है शत्रु अर मोहित करी है सकल पृथिवी जाने, सूर्य समान महाबलवान् समस्त कर्तव्यविषै कुशल महानीतिवान् गुणनिकरि विराजमान श्रीमान् पृथिवीका नाथ महाराजेंद्र अति वीर्य सो विजय नगरविषै पृथिवीधरको कुशल क्षेम प्रश्न पूर्वक आज्ञा करे है कि जे पृथिवीपर सामंत हैं वे भण्डार सहित अर सर्व सेना सहित मेरे निकट प्रवरते हैं, आर्य खण्डके अर मलेच्छ खंडके चतुरंग सेना सहित नानाप्रकारके शस्त्रनिके धरणहारे मेरी आज्ञाको शिरपर धारे हैं अञ्जनिगिरि सारिखे आठसै हाथी अर पवनके पुत्रसम तीनहजार तुरंग अनेक रथ अनेक पयादे तिन सहित महापराक्रमका धारी महातेजस्वी मेरे गुणनिसे खींचा है मन जाका ऐसा राजा विजयशार्दूल आया है अर अंग देशके राजा मृगध्वज रणोर्मि कलभ केशरी यह प्रत्येक पांच पांच हजार तुरंग अर छैसो हाथी अर रथ पयादे तिन सहित आये हैं, महाउत्साहके धारी महा न्यायविषै प्रवीण है बुद्धि जिनकी अर पंचालदेशका राजा पौढ परम प्रतापको धरता न्याय शास्त्रविषै प्रवीण अनेक प्रचंड बलको उत्साह रूप करता हजार हाथी अर सातहजार तुरंगनिते अर रथ पयादनिकरि युक्त हमारे पास आया है अर मगधदेशका राजा सुकेश बडी सेनासूं आया है अनेक राजानि सहित जैसे सैकडों नदीनिके प्रवाहनिको लिये रेवाका प्रवाह समुद्रविषै आवे, तैसे ताके संग काली घटा समान आठ हजार हाथी अनेक रथ अर तुरंगनिके समूह हैं,

अर वज्रका आयुध धारे है अर म्लेच्छोंके अधिपति सुभद्र मुनिभद्र साधुभद्र नंदन इत्यादि राजा मेरे समीप आये हैं, वज्रधर समान अर नाहीं निवाराजाय पराक्रम जाका ऐसा राजा सिंहवीर्य आया है अर राजा वांम अर सिंहरथ ये दोऊ हमारे मामा महाबलवान बडी सेनासूं आए हैं अर वत्सदेशका स्वामी मारुदत्त अनेक पयादे अनेक रथ अनेक हाथी अनेक घोडनिकरि युक्त आया है अर राजा प्रौष्टल सौवीर सुमेरु सारिखे अचल प्रबल सेनाते आए हैं । ये राजा महापराक्रमी पृथिवीपर प्रसिद्ध देवनि सारिखे दस अक्षोहिणी दल सहित आए ते राजानि सहित मैं बडे कटकते अयोध्याके राजा भरत पर चढा हूं। सो तेरे आयवेकी बाट देखूं हूं तातैं आज्ञा पत्र पहुंचते प्रमाण पयानकर शीघ्र आइयो किसी कार्यकर विलम्ब न करियो जैसे किसान वर्षाकूं चाहे तैसे मैं तेरे आगमनको चाहूं हूं । या भांति पत्रके समाचार लेखकने बांचे तब पृथिवीधरने कछू कहनेका उद्यम किया । तासूं पाहिले लक्ष्मण बोले अरे दूत ! भरतके अर अतिवीर्यके विरोध कौन कारणते भया । तब वह वायुगत नाम दूत कहता भया । मैं सब बातोंका मरमी हूं सब चारित्र जानूं हूं तब लक्ष्मण बोले हमारे सुननेकी इच्छा है ताने कही आपको सुननेकी इच्छा है तो सुनो एक श्रुतिवृद्ध नामा दूत हमारे राजा अतिवीर्यने भरतपर भेजा सो जायकर कहता भया। इंद्र तुल्य राजा अतिवीर्यका मैं दूत हूं प्रणाम करे हैं समस्त नरेंद्र जाको, न्यायके थापनेविषे महा बुद्धिवान सो पुरुषनिविषे सिंह समान जाके भयते अरि रूप मृग निद्रा नाहीं करे हैं। ताके यह पृथिवी वनिता समान है कैसी है पृथिवी चार तरफके समुद्र सोई है कटिमेखला जाके जैसे परणी स्त्री आज्ञाविषे होय तैसे समस्त पृथिवी आज्ञाके वश है सो पृथिवी पति महा प्रबल मेरे मुख होय तुमको आज्ञा करे है कि हे भरत ! शीघ्र आयकर मेरी सेवा करो, अथवा अयोध्या तज समुद्रके पार जावो ये वचन सुन शत्रुघन महा क्रोधरूप दावानल समान प्रज्वालित होय कहता भया। अरे दूत ? तोहि ऐसे वचन कहने

उचित नाहीं। वह भरतकी सेवा करे अक भरत ताकी सेवा करे अर भरत अयोध्याका भार मंत्रीनिको सौंप पृथिवीके वश करनेके निमित्त समुद्रके पार जाय अक और भांति जाय अर तेरा स्वामी ऐसे गर्वके वचन कहे है सो गर्दभ, मातें हाथीकी न्याई गाजे है अथवा ताकी मृत्यु निकट है तातैं ऐसे वचन कहे है अथवा वायुके वश है राजा दशरथको वैराग्यके योगते तपोवनको गए जान वह दुष्ट ऐसी बात कहे है। सो यद्यपि तातकी क्रोधरूप अग्नि मुक्तिकी अभिलाषाकर शांत भई, तथापि पिताकी अग्निसे हम स्फुलिंग समान निकसे हैं सो अति वीर्यरूप काष्ठको भस्म करने समर्थ हैं। हाथीनिके रुधिररूप कीच कर लाल भए हैं केश जाके ऐसा जो सिंह सो शांत भया, तो ताका बालक हाथिनिके निपात करने समर्थ है। ये वचन कह शत्रुघन वलता जो वांसोंका वन ता समान तडतडात कर महाक्रोधायमान भया। अर सेवकोंको आज्ञा करी जो या दूतका अपमान कर काढ देवो, तब आज्ञा प्रमाण सेवकोंने अपराधीको स्वानकी न्याईं तिरस्कारकर काढ दिया, सो पुकारता नगरीके बाहिर गया। धूलिकरि धूसरा है अंग जाका दुरवचनकरि दग्ध अपने धनी पै जाय पुकारा, अर राजा भरत समुद्र समान गम्भीर परमार्थका जाननहारा अपूर्व दुर्वचन सुन कछू एक कोपको प्राप्त भया। भरत शत्रुघन दोऊ भाई नगरते सेनासहित शत्रुपर निकसे अर मिथला नगरीका धनी राजा जनक अपने भाई कनक सहित बडी सेनासूं आय भेला भया अर सिंहोदरको आदि दैं अनेक राजा भरतसे आय मिले, भरत बडी सेना सहित नन्द्यावर्त पुरके धनी अतिवीर्यपर चढा, पिता समान प्रजाकी रक्षा करता संता, कैसा है भरत न्यायविषे प्रवीण है अर राजा अतिवीर्य भी दूतके वचन सुन परम क्रोधको प्राप्त भया, क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र ता समान भयानक सर्व सामंतनिकरि मंडित भरतके ऊपर जाइबेको उद्यमी भया है। यह समाचार सुन श्रीरामचन्द्र अपनी ललाट दूजके चन्द्रमा समान वक्रकर पृथिवीधरसूं कहते भए। जो अतिवीर्यको भर-

तसे ऐसा करना उचित है क्योंकि जाने पिता समान वडे भाईका अनादर किया । तब पृथिवीधरने रामसे कही वह दुष्ट है हम प्रबल जान सेवा करे हैं । तब मंत्रकर अतिवीर्यको जुवाब लिखा, कि मैं कागदके पीछे ही आऊं हूं अर दूतको विदा किया । बहुरि श्रीरामसूं कहता भया अतिवीर्य महाप्रचंड है तातैं मैं जाऊं हूं । तब श्रीरामने कही तुम तो यहां ही रहो अर मैं तिहारे पुत्रको अर तिहारे जवांई लक्ष्मणको ले अतिवीर्यके समीप जावूंगा । ऐसा कहकर रथपर चढ वडी सेना सहित पृथिवीधरके पुत्र को लार लेय सीता अर लक्ष्मण सहित नन्द्यावर्त नगरीको चले, सो शीघ्र गमनकर नगरके निकट जाय पहुंचे । वहां पृथिवीधरके पुत्रसहित स्नान भोजनकर राम लक्ष्मण अर सीता ये तीनो मंत्र करते भए । जानकी श्रीरामसूं कहती भई । हे नाथ ! यद्यपि मेरे कहिवेका अधिकार नाहीं, जैसे सूर्यके प्रकाश होते नक्षत्रका उद्योत नाहीं, तथापि हे देव ! हितकी वांछाकर मैं कछू इक कहूं हूं जैसे बांसनितैं मोती लेना तैसे हम सारिखनिते हितकी बात लेनी काहू एक वांसके वीडेविषै मोती निपजे हैं । हे नाथ ! यह अतिवीर्य महासेनाका स्वामी क्रूरकर्मी भरतकर कैसे जीता जाय । तातैं याके जीतनेका उपाय शीघ्र चिंतवना, तुमसे अर लक्ष्मणते कोई कार्य असाध्य नाहीं तब लक्ष्मण बोले । हे देवी ! यह कहा कहो हो आज अथवा प्रभात इस अणुवीर्यको मेरे कर हता ही जानो । श्रीरामके चरणारविंदकी जो रजकर पवित्र है सिर मेरा मेरे आगे देव भी टिक नाहीं सके, मनुष्य क्षुद्रवीर्यकी तो कहा बात, जबतक सूर्य अस्त न होय तातें पहिले ही या क्षुद्रवीर्यको मूवा ही देखियो, यह लक्ष्मणके वचन सुन पृथिवीधरका पुत्र गर्जन कर ऐसे ही कहता भया । तब श्रीराम भौंह फेर ताहि मनेकर लक्ष्मणसे कहते भए । महाधीरवीर है मन जाका हे भाई ! जानकीने कही सो युक्त है यह अतिवीर्य बलकर उद्धत है रणसंग्रामविषै भरतके वश करनेका पात्र नाहीं, भरत याके दसवें भाग भी नाहीं । यह दवानल समान याका वह मतंग गज कहा करें, यह

हाथीनिकरि पूर्ण घोडनिकर पूर्ण रथ पयादोनिकर पूर्ण याको जीतने समर्थ भरत नाहीं, जैसे केसरीसिंह महाप्रबल है परंतु विंध्याचल पर्वतके ढाहिवे समर्थ नाहीं, तैसे भरत याको जीते नाहीं, सेनाका प्रलय होवेगा। जहां निःकारण संग्राम होय वहां दोनों पक्षनिके मनुष्यनिका क्षय होय अर यदि इस दुरात्मा अतिवीर्यने भरतको वश किया, तब रघुवंशीनिके कष्टका कहा कहना अर इनविषे संधि भी सूझे नाहीं, शत्रुघन अतिमानी बालक सो उद्धत वैरीसे दोष किया, यह न्यायविषे उचित नाहीं। अन्धेरी रात्रिविषे रौद्रभूत सहित शत्रुघनने दूरके दौरा जाय अतिवीर्यके कटकविषे धाडा दिया, अनेक योधा मारे बहुत हाथी घोडे काम आए अर पवन सारिखे तेजस्वी हजारों तुरंग अर सातसे अंजनागिरि समान हाथी लेगया। सो तूने कहा लोगनिके मुखते न सुनी, यह समाचार अतिवीर्य सुन महाक्रोधको प्राप्त भया अर अब महा सावधान है रणका अभिलाषी है अर भरत महामानी है सो यासों युद्ध छोड संधि न करे तातैं तू अतिवीर्यको वशकर तेरी शक्ति सूर्यको भी तिरस्कार करने समर्थ है अर यहांते भरत हु निकट है सो हमको आपा न प्रकाशना जे मित्रको न जनावें अर उपकार करे ते अद्भुत पुरुष प्रशंसा करने योग्य हैं। जैसे रात्रिका मेघ, या भांति मंत्रकर रामको आतिवीर्यके पकडनेकी बुद्धि उपजी, रात्रि तो प्रमाद रहित होय समीचीन लोगनिते कथाकर पूर्ण करी, सुखसों निशा व्यतीत भई, प्रात समय दोऊ वीर उठकर प्रात क्रिया कर एक जिनमंदिर देखा, सो ताविषै प्रवेशकर जिनेंद्रका दर्शन किया, वहां आर्यिकानिका समूह विराजता हुता तिनकी वंदना करी, अर आर्यिकानिकी जो गुरानी वरधर्मा महा शास्त्रकी वेत्ता सीताको याके समीप राखी, आप भगवानकी पूजाकर लक्ष्मण सहित नृत्यकारणी स्त्रीका भेष कर लीला सहित राजमंदिरकी तरफ चाले, इंद्रकी अप्सरा तुल्य नृत्यकारणीको देख नगरके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए। लार लागे ये महा आभूषण पहिरे सर्व लोकके मन अर नेत्र हरते राज द्वार गए,

चोवीसौ तीर्थंकरनिके गुण गाए, पुराणोंके रहस्य बताए, प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके, इनकी ध्वनि राजा सुन इनके गुणनिका खैंचा समीप आया, जैसे रस्सीका खैंचा जलकेविषै काष्ठका भार आवे, नृत्यकारणीने नृपके समीप नृत्य किया, रेचक कहिये भ्रमण अंग मोडना, मुलकना, अवलोकना, भौंहोंका फेरना, मंद मंद हंसना, जंघा बहुरि कर पल्लव तिनका हलावना, पृथिवीको स्पर्शि शीघ्र ही पगनिका उठावना, रागका दृढ करना, केशरूप फांसका प्रवर्तना, इत्यादि चेष्टारूप काम बाणनिकारि सकल लोकनिको वींधे । स्वरनिके ग्राम यथा स्थान जोडनेकरि अर वीणके बजायवेकर सबनिको मोहित किए, जहां नृत्यकी खडी रहे वहां सकल भावके नेत्र चले जांय, रूपकर सबनिके नेत्र, स्वरकर सबनिके श्रवण, गुणकर सबनिके मन, बांध लिए, गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक! जहां श्रीराम लक्ष्मण नृत्य करें, अर गावें बजावें तहां देवनिके मन हरे जांय तो मनुष्यनिकी कहा बात, श्रीऋषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरनिके यश गाय सकल सभा वश करी, राजाको संगीतकर मोहित देख शृंगार रसमे वीर रसमें आए, आंख फेर भौंहे फेर महा प्रवल तेजरूप होय अतिवीर्यको कहते भए—हे अतिवीर्य ! तैं यह कहा दुष्टता आरंभी तोहि यह मंत्र कौनने दिया, तें अपने नाशके निमित्त भरतमों विरोध उपजाया, जिया चाहे तो महाविनयकर तिनको प्रसन्नकर, दास होय तिनके निकट जावो, तेरी राणी बडे वंशकी उपजी कामक्रीडाकी भूमि विधवा न होय, तोहि मृत्युको प्राप्त भए सब आभूषण डार शोभारहित होयगी जैसे चन्द्रमा विना रात्रि शोभा रहित होय, तेरा चित्त अशुभविषैं आया है सो चित्तको फेर भरतको नमस्कारकर, हे नीच ! या भांति न करेगा, तो अबार ही मारा जायगा, राजा अरण्यके पोता अर दशरथके पुत्र तिनके जीवते तू कैसे अयोध्याका राज्य चाहे है जैसे सूर्यके प्रकाश होते चन्द्रमाका प्रकाश कैसे होय ? जैसे पतंग दीपविषे पड मूवा चाहे है तैसे तू मरण चाहे है राजा भरत गरुड समान महाबली तिनते तू सर्पसमान निर्बल

बराबरी करे है यह वचन भरतकी प्रशंसाके अर अपनी निंदाके नृत्यकारणीके मुखसे सुन सकल सभा सहित अतिवीर्य क्रोधको प्राप्त भया । लाल नेत्र किए जैसे समुद्रकी लहर उठे है तैसे सामंत उठे अर राजाने खड्ग हाथमें लिया, ता समय नृत्यकारणीने उछल हाथसों खड्ग खोंस लिया अर सिरके केश पकड बांध लिया अर नृत्यकारणी अतिवीर्यके पक्षी राजा तिनसों कहती भई, जीवनेकी बांछा राखो तो अतिवीर्यका पक्ष छोड भरतपै जाहु भरतकी ही सेवा करहु, तब लोकनिके मुखतें ऐसी ध्वनि निकसी महा शोभायमान गुणवान भरत भूप जयवंत होऊ । सूर्य समान है तेज जाका न्यायरूप किरणनिके मंडलकर शोभित दशरथके वंशरूप आकाशविषै चन्द्रमासमान लोकको आनन्दकारी जाका उदय थकी लक्ष्मीरूप कुमुदनी विकासको प्राप्त होय, शत्रुनिके आतापते रहित परम आश्चर्यको करता संता अहो यह बडा आश्चर्य जाकी नृत्यकारणीकी यह चेष्टा जो ऐसे नृपतिको पकड लेय, तो भरतकी शक्तिका कहा कहना ? इंद्र हूको जीते, हम इस अतिवीर्यसों आय मिले, सो भरत महाराज कोप भए होंयगे न जानिये कहा करें । अथवा वे दयावंत पुरुष हैं जाय मिलें पायन परें, कृपा ही करेंगे, ऐसा विचारि अतिवीर्यके मित्र राजा कहते भए अर श्रीराम अतिवीर्यको पकड हाथीपर चढि जिनमंदिर गए । हाथीसूं उतर जिनमंदिरविषै जाय भगवानकी पूजा करी, अर बरधर्मा आर्यिकाकी बंदना करी, बहुत स्तुति करी, रामने अतिवीर्य लक्ष्मणको सौंपा सो लक्ष्मणने केस गह दृढ बांधा तब सीता कही ।

याहि ढीला करो पीडा मत देवो शांतता भजो । कर्मके उदयते मनुष्य मति हीन होय जाय हैं आपदा मनुष्यानि में ही होय बडे पुरुषानि को सर्वथा पर की रक्षा ही करना, संतपुरुषनिको सामान्य पुरुषका हू अनादर न करना, यह तो सहस्रराजानिका शिरोमणि है ताते याहि छोड देवो तुम यह बश किया अब कृपा ही करना योग्य है । राजानिका यही धर्म है जो प्रबल शत्रुनिको पकड छोड दें यह

अनादि कालकी मर्यादा है जब या भांति सीता कही तब लक्ष्मण हाथ जोड प्रणामकर कहता भया—हे देवी! तिहारी आज्ञासे छोडबेकी कहा बात? ऐसा करूं जो देव याकी सेवा करें, लक्ष्मणका क्रोध शांत भया तब अतिवीर्य प्रतिबोधको पाय श्रीरामसों कहता भया—हे देव! तुम बहुत भला किया ऐसी निर्मल बुद्धि मेरी अबतक कबहू न भई हुती अब तिहारे प्रतापतें भई है। तब श्रीराम ताहि हार मुकटादिरहित देख विश्रामके बचन कहते भए कैसे हैं रघुवीर सौम्य है आकार जिनका, हे मित्र! दीनता तज जैसा प्राचीन अवस्थामें धैर्य हुता, तैसा ही धर बडे पुरुषानिके ही संपदा अर आपदा दोऊ होय है। अब तोहि कुछ आपदा नहीं नंद्यावर्तपुरका राज्य भरतका आज्ञाकारी होयकर कर, तब अतिवीर्य कही मेरे अब राज्यकी वांछा नाहीं, मैं राज्यका फल पाया अब मैं और ही अवस्था धरूंगा। समुद्र पर्यन्त पृथिवीका वश करणहारा महामानका धारी जो मैं सो कैसा पराया सेवक हो राज्य करूं याविषै पुरुषार्थ कहा अर यह राज्य कहा पदार्थ जिन पुरुषनि षट् खंडका राज्य किया. वे भी तृप्त न भए। तो मैं पांचग्रामोंका स्वामी कहा अल्प विभूतिकर तृप्त होऊंगा? जन्मांतरविषै किया जो कर्म ताका प्रभाव देखो, जो मोहि कांतिरहित किया जैसे राहु चन्द्रमाको कांतिरहित करे, यह मनुष्य देह सारभूत देवन हूते अधिक मैं वृथा खोई नवां जन्म धरनेको कायर सो तुमने प्रतिबोध्या, अब मैं ऐसी चेष्टा करूं जाकर मुक्ति प्राप्त होय याभांति कहकर श्रीराम लक्ष्मणको क्षमा कराय वह राजा अतिवीर्य केसरी सिंह जैसा है पराक्रम जाका, श्रुतधरनामा मुनीश्वरके समीप हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया—हे नाथ! मैं दिगंबरी दीक्षा वांछू हूं। तब आचार्य कही यही बात योग्य। या दीक्षाकर अनन्त सिद्ध भए अर होवेंगे तब अतिवीर्य वस्त्र तज केशनिको लुंच कर महाव्रतका धारी भया। आत्माके अर्थविषै मग्न, रागादि परिग्रहका त्यागी विधिपूर्वक तप करता पृथिवी पर विहार करता भया। जहां मनुष्यनिका संचार नाहीं वहां रहे। सिंहादि क्रूरजीवनिकर युक्त जो

महागहन वन अथवा गिरि शिखर गुफादि तिनविषै निर्भय निवास करे ऐसे अतिवीर्य स्वामीको नमस्कार होवे तजी है समस्त परिग्रहकी आशा जिनने अर अंगीकार किया है चारित्रका भार जिनने, महा शीलके धारक नानाप्रकार तपकर शरीरको शोषणहारे प्रशंसा योग्य महामुनि सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चारित्र रूप सुन्दर हैं आभूषण अर दशों दिशा ही वस्त्र जिनके, साधुनिके जे मूलगुण उत्तरगुण वे ही संपदा, कर्म हरिबेको उद्यमी संजमी मुक्तिके वरयोगीन्द्र तिनको नमस्कार होवे यह अतिवीर्य मुनिका चारित्र जो सुबुद्धि पढें सुने सो गुणों की वृद्धिको प्राप्त होंय भानु समान तेजस्वी होंय और संसार के कष्टसे निवृत्त होंय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अतिवीर्यका वैराग्य वर्णन करनेवाला सैंतीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३७ ॥

अथानन्तर श्रीरामचंद्र महा न्यायके वेत्ताने अतिवीर्यका पुत्र जो विजयरथ ताहि अभिषेक कराय पिताके पदपर थापा, ताने अपना समस्त वित्त दिखाया सो ताका ताको दिया अर ताने अपनी बहिन रत्नमाला लक्ष्मणको देनी करी सो तिनने प्रमाण करी ताके रूपको देख लक्ष्मण हर्षित भए मानों साक्षात् लक्ष्मी ही है। बहुरि श्रीराम लक्ष्मण जिनेंद्रकी पूजाकर पृथ्वीधरके विजयपुर नगरविषै वापिस गए अर भरतने सुनी जो अतिवीर्यको नृत्यकारिणीने पकडा सो विरक्त होय दीक्षा धरी, तब शत्रुघ्न हास्य करने लगा। तब ताहि मनेकर भरत कहते भए—अहो भाई ! राजा अतिवीर्य धन्य है जे महादुखरूप विषयों को तज शांतिभावको प्राप्त भए वे महा स्तुति योग्य हैं तिनकी हांसी कहा ? तपका प्रभाव देखो जो रिपु हू प्रणाम योग्य गुरु होय हैं, यह तप देवनिको दुर्लभ है या भांति भरतने अतिवीर्यकी स्तुति करी।

ताही समय अतिवीर्यका पुत्र विजयरथ आया अनेक सामंतनिसहित सो भरतको नमस्कारकर तिष्ठा, क्षणिक ओर कथाकर जो रत्नमाल लक्ष्मणको दई ताकी बडी बहिन विजयसुंदरी नानाप्रकार आभूषण की धरणहारी भरतको परणाई अर बहुत द्रव्य दिया सो भरत ताकी बहिन परण बहुत प्रसन्न भए। विजयरथते बहुत स्नेह किया, यही बडोनिकी रीति है अर भरत महा हर्ष थकी पूर्ण है मन जाका, तेज तुरंगपर चढकर अतिवीर्य मुनिके दर्शनको चला सो जा गिरिपर मुनि विराजे हुते वहां पहिले मनुष्य देख गए हुते सो लार हैं तिनको पूछते जाय हैं, कहां महामुनि ? कहां महामुनि ? वे कहे हैं आगे विराजे हैं। सो जा गिरिपर मुनि हुते वहां जाय पहुंचे, कैसा है गिरि ? विषम पाषाणनिके समूहकरि महा अगम्य अर नानाप्रकारके वृक्षनिकरि पूर्ण पुष्पनिकी सुगंधकर महासुगंधित अर सिंहादिक क्रूर जीव-निकरि भरा, सो राजा भरत अश्वते उतर महाविनयवान मुनिके निकट गए। कैसे हैं मुनि ? रागद्वेष रहित हैं। शांत भई हैं इंद्रियां जिनकी, शिलापर विराजमान निर्भय अकेले जिन कलपी अतिवीर्य मुनींद्र महातपस्वी ध्यानी मुनिपदकी शोभाकरि संयुक्त तिनको देख भरत आश्चर्यको प्राप्त भया। फूल गए हैं नेत्र कमल जाके, रोमांच होय आए। हाथ जोड नमस्कारकर साधुके चरणारविंदकी पूजाकर महा नम्रीभूत होय मुनिभक्तिविषै है प्रेम जाका, सो स्तुति करता भया—हे नाथ ! परमतत्त्वके वेत्ता तुम ही या जगतविषै शूरवीर हो, जिनने यह जैनेंद्री दीक्षा महादुर्द्धर धारी जे महंत पुरुष विशुद्ध कुलमें उत्पन्न भए हैं तिनकी यही चेष्टा है। या मनुष्य लोकको पाय जो फल बडे पुरुष वांछे हैं सो आपने पाया अर हम या जगतकी मायाकरि अत्यंत दुखी हैं। हे प्रभो ! हमारा अपराध क्षमा करहु, तुम कृतार्थ हो पूज्य पदको प्राप्त भए। तुमको बारम्बार नमस्कार होहु ऐसा कहकर तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड नमस्कार कर मुनि संबंधी कथा करता २ गिरिते उतर तुरंगपर चढ हजारों सुभटानिकर संयुक्त अयोध्या आया।

समस्त राजानिके निकट सभामें कहा कि वे नृत्यकारणी समस्त लोकानिके मनको मोहित करनी अपने जीवितविषै हु निर्लोभ प्रबल नृपनिको जीतनहारी कहां गई ? देखो आश्चर्यकी वात, अतिवीर्यके निकट मेरी स्तुति करें अर ताहि पकडें, स्त्रीवर्गविषै ऐसी शक्ति कहांते होय ? जानिए है जिनशासनकी देविनिने यह चेष्टा करी। ऐसा चिंतवन करता संता प्रसन्न चित्त भया अर शत्रुघन नानाप्रकारके धान्यकर मंडित जो धरा ताके देखनेको गया, जगतविषै व्याप्त है कीर्ति जाकी, बहुरि अयोध्या आया, परम प्रतापको धरे अर राजा भरत अतिवीर्यकी पुत्री विजयसुंदरीसहित सुख भोगता सुखसों तिष्ठे जैसे सुलोचनासहित मेघेश्वर तिष्ठा यह तो कथा यहां ही रही आगे श्रीराम लक्ष्मणका वर्णन करे हैं।

अथानन्तर राम लक्ष्मण सर्व लोकको आनन्दके कारण केयक दिन पृथ्वीधरके पुरविषै रहे। जानकीसहित मंत्रकर आगे चलवेको उद्यमी भए, तब सुंदर लक्षणकी धरणहारी बनमाला लक्ष्मणते कहती भई, नेत्र सजल होय आए। हे नाथ ! मैं मंदभागिनी मोहि आप तज जावो हो तो पहिले मरण ते कहा बचाई, तब लक्ष्मण बोले—हे प्रिये ! तू विषाद मत करै, थोडे दिनमें तेरे लेनेको आवे हैं, हे सुन्दर-बदनी ! जो तेरे लेयवेको शीघ्र न आवें तो हमको वह गति हो जो सम्यग्दर्शनरहित मिथ्यादृष्टिकी होय है। हे वल्लभे ! जो शीघ्र ही तेरे निकट न आवें तो हमको वह पाप होय जो महामानकर दग्ध साधुनिके निंदकानिके होय। हे गजगामिनी ! हम पिताके वचन पालिवे निमित्त दक्षिणके समुद्रके तीर निसंदेह जाय हैं। मलयाचलके निकट कोई परम स्थानककर तोहि लेने आवेंगे। हे शुभमते, तू धीर्य रख, या भांति कहकर अनेक सौगंधकर अति दिलासा देय आप सुमित्राके नन्दन लक्ष्मण श्रीरामके संग चलनेको उद्यमी भए। लोकनिको सूते जान रात्रिको सीतासहित गोप्य निकसे। प्रभातविषै इनको न देखकर नगरके लोक परम शोकको प्राप्त भए। राजाको अति शोक उपजा, बनमाला लक्ष्मण विना

घर सूना जानती भई, अपना चित्त जिनशासनविषै लगाय धर्मानुरागरूप तिष्ठी। राम लक्ष्मण पृथिवी विषै विहार करते नर नारिनिको मोहते पराक्रमी पृथिवीको आश्चर्यके कारण धीरे २ लीलाते विचरै हैं। जगतके मन अर नेत्रनिको अनुराग उपजावते रमै हैं। इनको देख लोक विचारै हैं जो यह पुरुषोत्तम कौन पवित्र गोत्रविषै उपजे हैं। धन्य है वह माता जाकी कुक्षिविषै ये उपजे अर धन्य हैं वे नारी जिनको ये परणे, ऐसा रूप देवनिको दुर्लभ, यह सुन्दर कहांते आए अर कहां जाय हैं? इनके कहा वांछा है। परस्पर स्त्रीजन ऐसी वार्ता करै हैं। हे सखी! देखो दोऊ कमल नेत्र चंद्रमा सारिखे अद्भुत वदन जिनके अर एक नारी नागकुमारी समान अद्भुत देखी। न जानिये वे सुर हुते वा नर हुते। हे मुग्धे! महा पुण्य विना उनका दर्शन नाहीं। अब तो वे दूर गए पाछे फिरो, वे नेत्र अर मनके चोर जगतका मन हरते फिरै हैं इत्यादि नर नारिनिके आलाप सुनते सबको मोहित करते वे स्वेच्छा विहारी शुद्ध हैं चित्त जिनके, नाना देशनिविषै विहार करते क्षेमांजलि नामा नगरविषै आए ताके निकट कारी घटा समान सघन वनविषै सुखसे तिष्ठे जैसे सौमनस वनमें देव तिष्ठै, तहां लक्ष्मण महासुंदर अन्न अर अनेक व्यंजन तैयार किये अर दाखोंका रस सो श्रीराम सीताने लक्ष्मणसहित भोजन किया॥

अथानन्तर लक्ष्मण श्रीरामकी आज्ञा लेय क्षेमांजलि नाम पुरके देखनेको चले, महासुन्दर माला पहिरे अर पीताम्बर धारे सुंदर है रूप जिनका, नानाप्रकारकी बेल वृक्ष तिनकरि युक्त वन अर निर्मल जलकी भरी नदी अर नानाप्रकारके क्रीडागिरि अनेक धातुके भरे अर ऊंचे २ जिनमंदिर अर मनोहर जलके निवांण अर नानाप्रकारके लोक तिनको देख नगरविषै प्रवेश किया। कैसा है नगर? नानाप्रकार के व्यापारकर पूर्ण सो नगरके लोक इनका अद्भुत रूप देख परस्पर वार्ता करते भए, तिनके शब्द इन ने सुने जो या नगरके राजाके जितपद्मानामा पुत्री है ताहि वह परणे जो राजाके हाथकी शक्तिकी चोट

को खाय जीवता बचे, सो कन्याकी कहा वात स्वर्गका राज्य देय तो भी यह वात कोई न करे । शक्ति की चोटते प्राण ही जाय तब कन्या कौन अर्थ ? जगतविषै जीतव्य सर्व वस्तुते प्रिय है तातैं कन्याके अर्थ प्राण कौन देय, यह वचन सुनकर महाकौतुकी लक्ष्मण काहूको पूछते भए—हे भद्र ! यह जितपद्मा कौन है ? तब वह कहता भया—यह कालकन्या पंडित माननीय सर्व लोक प्रसिद्ध तुमने कहा न सुनी। या नगरका राजा शत्रुदमन जाके राणी कनकप्रभा ताके जितपद्मा पुत्री रूपवंती गुणवंती जाके बदन की कांतिकरि कमल जीता है अर गातकी शोभाकर कमलनी जीती सो तातैं जितपद्मा कहावै है। नवयौवन मंडित सर्व कला पूर्ण अद्भुत आभूषणकी धरणहारी ताहि पुरुषका नाम रुचै नाहीं, देवानिका दर्शन हू अप्रिय मनुष्यानिकी तो कहा वात ? जाके निकट कोई पुल्लिंग शब्दका उच्चारण हू न कर सके, यह कैलाशके शिखर समान जो उज्ज्वल मंदिर ताविषै कन्या तिष्ठै है। सैकडों सहेली जाकी सेवा करै हैं जो कोई कन्याके पिताके हाथकी शक्तिकी चोटतें बचे ताहि कन्या वरे, लक्ष्मण यह वार्ता सुन आश्चर्यको प्राप्त भया अर कोप हू उपजा, मनमें विचारी महागर्वित दुष्ट चेष्टासंयुक्त यह कन्या ताहि देखूं, यह चिंतवन कर राजमार्ग होय विमान समान सुन्दर घर देखता अर मदोन्मत्त हाथी कारी घटा समान अर तुरंग चंचल अवलोकता अर नृत्यशाला निरखता राजमंदिरविषै गया। कैसा है राजमंदिर ? अनेक प्रकारके झरोखानिकर शोभित नानाप्रकार ध्वजानिकरमंडित शरदके बादर समान उज्ज्वल महामनोहर रचनाकर संयुक्त ऊंचे कोटकर वेष्टित सो लक्ष्मण जाय द्वारपर ठाढा भया, इंद्रके धनुष समान अनेक वर्णका है तोरण जहां, सुभटानिके समूह अनेक देशानिके नानाप्रकार भेट लेयकर आए हैं, कोई निकसे हैं कोई जाय हैं, सामंतानिकी भीड होय रही है। लक्ष्मणको द्वारमें प्रवेश करता देख द्वारपाल सौम्य वाणीसूं कहता भया—तुम कौन हो अर कौनकी आज्ञाते आए हो ? कौन प्रयोजन राजमंदिरमें प्रवेश

करो हो ? तब कुमारने कही राजाको देखा चाहै हैं तू जाय राजासों पूछ, तब वह द्वारपाल अपनी ठौर दूजेको राख आप राजासे जाय विनती करता भया—हे महाराज ! आपके दर्शनको एक महारूपवान पुरुष आया है, द्वारे तिष्ठै है, नील कमल समान है वर्ण जाका, अर कमल लोचन महाशोभायमान सौम्य शुभ मूर्ति है। तब राजाने प्रधानकी ओर निरख आज्ञा करी आवै, तब द्वारपाल लक्ष्मणको राजाके समीप लेय गया, सो समस्त सभा याको अति सुन्दर देख हर्षकी वृद्धिको प्राप्त भई, जैसे चन्द्रमाको देख समुद्रकी शोभा वृद्धिको प्राप्त होय, राजा याको प्रणामरहित देदीप्यमान विकट स्वरूप देख कछु इक विकार को प्राप्त हो पूछता भया। तुम कौन हो, कौन अर्थ कहांते यहां आए हो ? तब लक्ष्मण वर्षाकालके मेघसमान शब्द करते भए। मैं राजा भरतका सेवक हूं पृथिवीके देखनेकी अभिलाषाकरि विचरूं हूं। तेरी पुत्रीका वृत्तांत सुन यहां आया हूं। यह तेरी पुत्री महादुष्ट मारणेवाली गाय है। नहीं भग्न भए हैं मानरूपी सींग जाके यह सर्व लोकनिको दुःखदायिनी वर्तै है तब राजा शत्रुदमनने कही मेरी शक्तिको जो सहार सके, सो जितपद्माको बरे, तब लक्ष्मण कहता भया। तेरी एक शक्तिकरि मेरे कहा होय। तू अपनी समस्त शक्तिकरि मेरे पंच शक्ति लगाय, या भांति राजाके अर लक्ष्मणके विवाद भया। ता समय झरोखाते जितपद्मा लक्ष्मणको देख मोहित भई अर हाथ जोड इशारा कर मने करती भई, जो शक्तिकी चोट मत खावो। तब आप सैन करते भए तू डरे मत या भांति समस्याविषै ही धीर्य बंधाया अर राजासूं कही काहे कायर होय रहा है, शक्ति चलाय अपनी शक्ति हमको दिखा, तब राजा कही मूवा चाहे है, तो झेल, महाकोंपकर प्रज्वलित अग्नि समान एक शक्ति चलाई, सो लक्ष्मणने दाहिने करमें ग्रही जैसे गरुड सर्पको ग्रहे अर दूसरी शक्ति दूसरे हाथते गही अर तीजी चौथी दोनों कांखविषै गही सो चारों शक्तिनिको गहे लक्ष्मण ऐसा शोभे है मानो चोदंता हस्ती है तब राजाने पांचवीं शक्ति चलाई सो दांत-

निते गही जैसे मृगराज मृगीको गहे। तब देवानिके समूह हर्षित होय पुष्पवृष्टि करते भए अर दुन्दुभी बाजे बाजते भए । लक्ष्मण राजासूं कहते भए और है तो और भी चला, तब सकल लोक भयकर कंपायमान भए। राजा लक्ष्मणका अखंडबल देख आश्चर्यको प्राप्त भया। लज्जाकर नीचा होय गया अर जितपद्मा लक्ष्मणके रूप अर चरित्र कर खैंची थकी आय ठाढी भई, वह कन्या सुन्दरवदनी मृगनयनी लक्ष्मणके समीप ऐसी शोभती भई, जैसे इंद्रके समीप शची होय । जितपद्माको देख लक्ष्मणका हृदय प्रसन्न भया । महा संग्रामविषै भी जाका चित्त स्थिर न होय, सो याके स्नेहसे वशीभूत भया, लक्ष्मण तत्काल विनयकर नम्रीभूत होय राजाको कहता भया—हे माम ! हम तुम्हारे बालक हैं। हमारा अपराध क्षमा करहु, जे तुम सारिखे गम्भीर नर हैं ते बालकानिकी अज्ञान चेष्टा कर अर कुवचन कर विकारको नाहीं प्राप्त होय हैं। तब शत्रुदमन आति हर्षित होय हाथी सूंड समान अपनी भुजानिकर कुमारसे मिला अर कहता भया—हे धीर ! मैं महायुद्धविषै माते हाथिनिको क्षणमात्रविषै जीतनहारा सो तूने जीता अर बनके हस्ती पर्वत समान तिनको मद रहित करनहारा जो मैं सो तुम मोहि गर्वराहित किया । धन्य तिहारा पराक्रम, धन्य तिहारा रूप, धन्य तिहारे गुण, धन्य तिहारी निगर्वता, महा विनयवान अद्भुत चरित्रके धरणहारे तुमसे तुमही हो, या भांति राजाने लक्ष्मणके गुण सभाविषै वर्णन किये। तब लक्ष्मण लज्जाकर नीचा होयगया। अर राजाकी आज्ञाकर मेघकी ध्वनि समान बादित्रानिके शब्द सेवक करते भए अर याचकानिको अतिदान देय उनकी इच्छा पूर्ण करते भए । नगरकेविषै आनन्द वर्ता, राजाने लक्ष्मणसूं कही—हे पुरुषोत्तम ! मेरी पुत्रीका तुम पाणिग्रहण किया चाहो हो तो करो, लक्ष्मणने कही मेरे बडे भाई अर भावज नगरके निकट तिष्ठै हैं तिनको पूछो तिनकी आज्ञा होय सो तुमको हमको करनी उचित है। वे सर्व नीके जाने हैं । तब राजा पुत्रीको अर लक्ष्मणको रथमें चढाय सर्व कुटुम्ब सहित

रघुवीर पै चला, सो क्षोभको प्राप्त हुआ जो समुद्र ताकी गर्जना समान याकी सेनाका शब्द सुन कर अर धूलके पटल उठते देखकर सीता भयभीत होय कहती भई—हे नाथ ! लक्ष्मणने कुछ उद्धत चेष्टा करी या दिशाविषै उपद्रव दृष्टि आवे है तातैं सावधान हो, जो कुछ करना होय सो करो। तब आप जानकीको उरसे लगाय कहते भए—हे देवी ! भय मत करहु ऐसा कहकर उठे धनुष उपर दृष्टि धरी, तब ही मनुष्यनिके समूहके आगे स्त्रीजन सुंदर गान करती देखीं बहुरि निकट ही आईं, सुंदर हैं अंग जिनके, स्त्रिनिको गावती अर नृत्य करती देख श्रीरामको विश्वास उपजा, सीतासहित सुखसे विराजे। स्त्रीजन सर्व आभूषण मंडित अति मनोहर मंगल द्रव्य हाथमें लिये हर्षके भरे हैं नेत्र जिनके, रथसूं उतर कर आईं, अर राजा शत्रुदमन भी बहुत कुटुंब सहित श्रीरामके चरणारविंदको नमस्कार कर बहुत विनयसूं बैठा लक्ष्मण अर जितपद्मा एक साथ रथविषै बैठे आए हुते, सो उतर कर लक्ष्मण श्रीरामचन्द्रको अर जानकीको सीस निवाय प्रणामकर महा विनयवान दूर बैठा, सो श्रीराम राजा शत्रुदमनसे कुशल प्रश्न वार्ता करि सुखसूं विराजे। रामके आगमनकरि राजाने हर्षित होय नृत्य किया, महा भक्तिकरि नगरमें चलनेकी विनती करी, श्रीराम अर सीता अर लक्ष्मण एक रथविषै विराजे। परम उत्साहसूं राजाके महल पधारे। मानों वह राजमंदिर सरोवर ही है स्त्री रूप कमलनिते भरा लावण्यरूप जल है जाविषै शब्द करते जे आभूषण तेई हैं सुंदर पक्षी जहां, यह दोऊ वीर नवयौवन महाशोभासे पूर्ण कैयक दिन सुखसे विराजे, राजा शत्रुदमन करे है सेवा जिनकी।

अथानंतर सर्वलोकके चित्तको आनंदके करणहारे राम लक्ष्मण महाधीर वीर सीतासहित अर्धरात्रिको उठ चले, लक्ष्मणने प्रियवचनकर जैसे बनमालाको धीर्य बंधाया हुता तैसे जितपद्माको धीर्य बंधाया, बहुत दिलासाकर आप श्रीरामके लार भए, नगरके सर्व लोक अर नृपको इनके चले जानेते

आति चिंता भई, धीर्य न रहा यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं हे मगधाधिपति ! ते दोऊ भाई जन्मांतरके उपार्जे जे पुण्य तिनकरि सर्व जीवानिके बल्लभ जहां जहां गमन करें तहां तहां राजा प्रजा सर्वलोक सेवा करें अर यह चाहें कि यह न जावें तो भला । सर्व इंद्रियनिके सुख अर महा मिष्ट अन्नपानादि विना ही यत्न इनको सर्वत्र सुलभ, जे पृथिवीविषै दुर्लभ वस्तु हैं ते सब इनको प्राप्त होंय, महाभाग्य भव्य जीव सदा भोगनिते उदास हैं। ज्ञानके अर विषयानिके वैर है ज्ञानी ऐसा चिंतवन करें हैं इन भोगनिकर प्रयोजन नाहीं। ये दुष्ट नाशको प्राप्त होंय या भांति यद्यपि भोगनिकी सदा निन्दा ही करे हैं भोगनिते विरक्त ही हैं दीप्तिकरि जीता है सूर्य जिनने तथापि पूर्वोपार्जित पुण्यके प्रभावते पहाड के शिखरविषै निवास करे हैं तहां हू नानाप्रकार सामग्रीका संयोग होय है जबलग मुनिपदका उदय नाहीं तवलग देवों समान सुख भोगवे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा बचनिकाविषै जितपद्माका व्याख्यान

वर्णन करनेवाला अडतीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ३८ ॥

अथानन्तर ये दोऊ वीर महाधीर सीता सहित वनविषै आए। कैसा है वन नानाप्रकारके वृक्षनिकर शोभित अनेक भांतिके पुष्पनिकी सुगंधिताकर महासुगंध लतानिके मंडपनिकरि युक्त तहां राम लक्ष्मण रमते रमते आए। कैसे हैं दोनों समस्त देवोपुनीत सामग्रीकर शरीरका है आधार जिनके कहूं इक मूगोंके रंग समान महा सुन्दर वृक्षनिकी कूपल लेय श्रीराम जानकीके कर्णाभरण करे हैं कहूं यक छोटा वृक्षविषै लग रही जो बेल ताकर हिंडोला बनाय दोऊ भाई झोटा देय देय जानकीको झुलावे हैं अर आनन्दकी कथा कर सीताको विनोद उपजावे हैं कभी सीता रामसों कहे है—हे देव ! यह वेलि यह

वृक्ष महामनोग्य दीखे हैं अर सीताके शरीरकी सुगंधताकर भ्रमर आय लगे हैं, सो दोनो उडावे हैं या भांति नानाप्रकारके वननिविषै धीरे धीरे विहार करते दोऊ धीर मनोग्य हैं चारित्र जिनके जैसे स्वर्गके वनविषै देव रमें तैसे रमते भए, अनेक देशनिको देखते अनुक्रमकर वंशस्थल नगर आए। ते दोनों पुण्याधिकारी तिनको सीताके कारण थोडी दूर ही आवनेविषै बहुत दिन लगे सो दीर्घकाल दुःख क्लेश का देनहारा न भया सदा सुखरूप ही रहे। नगरके निकट एक बंशधर नामा पर्वत देखा, मानो पृथिवी को भेद कर निकसा है जहां बांसनिके अति समूह तिनकरि मार्ग विषम है ऊंचे शिखरनिकी छायाकरि मानों सदा संध्याको धारे है अर निर्झरनोंकर मानों हंसे है सो नगरते राजा प्रजाको निकसते देख श्रीरामचन्द्र पूछते भए। अहो कहा भयकर नगर तजो हो ? तब कोई यह कहता भया आज तीसरा दिन है। रात्रिके समय या पहाडके शिखरविषै ऐसी ध्वनि होय है जो अबतक कबहु नाहीं सुनी, पृथिवी कंपायमान होय है अर दशों दिशा शब्दायमान होय हैं। वृक्षनिकी जड उपड जाय हैं। सरोवरनिका जल चलायमान होय है। ता भयानक शब्दकर सर्व लोकनिके कान पीडित होय हैं मानों लोहेके मुदगरों कर मारे। कोई एक दुष्ट देव जगत्का कंटक हमारे मारनेके अर्थ उद्यमी होय है या गिरिपर क्रीडा करे है ताके भयकर संध्या समय लोक भागे हैं प्रभातविषै बहुरि आवे हैं, पांच कोस परे जाय रहें हैं जहां वाकी ध्वनि न सुनिये यह वार्ता सुन सीता राम लक्ष्मणसों कहती भई, जहां यह सब लोक जाय हैं वहां अपनहु चालें, जे नीतिशास्त्रके वेत्ता हैं वे देश कालको जानकर पुरुषार्थ करे हैं ते कदाचित् आपदाको नाहीं प्राप्त होय हैं तब दोऊ धीर हंसकर कहते भए। तू भयकर बहुत कायर है सो यह लोक जहां जाय हैं तहां तू भी जाहु, प्रभात सब आवें तब तू आइयो। हम तो आज या गिरिपर रहेंगे। यह अत्यन्त भयानक कौनकी ध्वनि होय है सो देखेंगे, यही निश्चय है यह लोक रंक हैं भयकर पशु बालकनिको लेय

भागे हैं । हमको काहुका भय नाहीं, तब सीता कहती भई, तिहारे हठको कौन हरिबे समर्थ, तिहारा आग्रह दुर्निवार है । ऐसा कहकर वह पतिव्रता पतिके पीछे चली खिन्न भए हैं चरण जाके पहाडके शिखर पर ऐसी शोभे मानों निर्मल चन्द्रकांति ही है श्रीरामके पीछे अर लक्ष्मणके आगे सीता कैसी सोहै मानों चन्द्रकांति अर इंद्रनीलमणिके मध्य पुष्पराग मणि ही है ता पर्वतका आभूषण होती भई । राम लक्ष्मणको यह डर है जो कहीं यह गिरिसे गिर न पडे । तातैं याका हाथ पकड लिए जाय हैं, वे निर्भय पुरुषोत्तम विषम हैं पाषाण जाके ऐसे पर्वतको उलंघकर सीतासहित शिखरपर जाय पहुंचे । तहां देशभूषण अर कुलभूषण नामा दोय मुनि महाध्यानारूढ दोऊ भुज लुबांए कायोत्सर्ग आसन धरे खडे, परम तेजकर युक्त समुद्र सारिखे गंभीर गिरिसारिखे स्थिर शरीर अर आत्माको भिन्न भिन्न जाननहारे, मोह रहित नग्न स्वरूप यथा जातरूपके धरनहारे, कांतिके सागर नवयौवन परम सुन्दर महा संयमी श्रेष्ठ हैं आकार जिनके, जिनभाषित धर्मके आराधनहारे तिनको श्रीराम लक्ष्मण देखकर हाथ जोड नमस्कार करते भए । अर बहुत आश्चर्यको प्राप्त भए, चित्तविषै चितवते भए जो संसारके सर्व कार्य असार हैं । दुःखके कारण हैं । मित्र द्रव्य स्त्री सर्व कुटुम्ब अर इंद्रिय जनित सुख यह सब दुःख ही हैं एक धर्म ही सुखका कारण है । महा भक्तिके भरे दोऊ भाई परम हर्षको धरते विनयकरि नम्रीभूत हैं शरीर जिनके, मुनिनिके समीप बैठे । ताहीसमय असुरके आगमते महाभयानक शब्द भया । मायामई सर्प अर बिच्छु तिनकर दोनों मुनिनिका शरीर वेष्टित होय गया सर्प अति भयानक महा शब्दके करणहारे काजल समान कारे चलायमान हैं जिह्वा जिनकी अर अनेक वर्णके अतिस्थूल बिच्छु तिनकरि मुनिनिके अंग बेढे देख, राम लक्ष्मण असुरपर कोपको प्राप्त भए । सीता भयकी भरी भरतारके अंगसूं लिपट गई, तब आप कहते भए तू भय मत करे, याको धीर्य बंधाय दोऊ सुभट निकट जाय सांप बिच्छु मुनिनिके अंगते

दूर किये चरणारविंदकी पूजा करी अर योगीश्वरनिकी भक्ति वंदना करते भए । श्रीराम वीण लेय वजावते भए अर मधुर स्वरसे गावते भए अर लक्ष्मण गान करता भया, गानविषै ये शब्द गाये महा योगीश्वर धीर वीर मन वचन कायकर वंदनीक हैं मनोग्य है चेष्टा जिनकी देवनिहूविषै पूज्य महाभाग्यवंत जिनने अरिहंतका धर्म पाया, जो उपमा रहित अखंड महाउत्तम तीन भवनविषै प्रसिद्ध जे महामुनि जिनधर्मके धुरंधर ध्यानरूप वज्र दंडकरि महामोहरूप शिलाको चूर्ण कर डारैं अर जे धर्म रहित प्राणिनिको अविवेकी जान दयाकर विवेकके मार्ग लावें । परम दयालु आप तिरैं औरनिको तारैं । या भांति स्तुति कर दोऊ भाई ऐसे गावें, जो वनके तिर्यंचानिके हू मन मोहित भए अर भक्तिकी प्रेरी सीता ऐसा नृत्य करती भई, जैसा सुमेरुकेविषै शची नृत्य करे । जाना है समस्त संगीत शास्त्र जाने सुंदर लक्षणको धरे अमोलकहार मालादि पहिरे परम लीलाकर युक्त दिखाई है प्रगटपणे अद्भुत नृत्यकी कला जाने सुन्दर है वाहुलता जाकी हाव भावादिविषै प्रवीण मंद मंद चरणनिको धरती महा लयको लिये गावती गीत अनुसार भावको वतावती अद्भुत नृत्य करती महा शोभायमान भासती भई अर असुर कृत उपद्रवको मानो सूर्य देख न सका, सो अस्त भया अर संध्याहू प्रकट होय जाती रही, आकाशविषै नक्षत्रनिका प्रकाश भया । दशों दिशाविषै अंधकार फैल गया । ता समय असुरकी मायाकरि महा रौद्र भूतनिके गण हड हड हंसते भये, महा भयंकर हैं मुख जिनके अर राक्षस खोटे शब्द करते भए अर माया मई स्यालनी मुखते भयानक अग्निकी ज्वाला काढती शब्द वोलती भईं अर सैकडों कलेवर भयकारी नृत्य करते भये, मस्तक भुजा जंघादि अंगनिकी वृष्टि होती भई । अर दुर्गंध सहित स्थूल बूंद लोहूकी बरसती भईं अर डाकिनी नग्न स्वरूप लावें हाडोंके आभरण पहिरे, क्रूर हैं शरीर जिनके, हाले हैं स्तन जिनके खड्ग है हाथमें जिनके, वे दृष्टिविषै आवती भईं, अर सिंह व्याघ्रादिककेसे मुख तप्त लोह

समान लोचन हस्तविषै त्रिशूल धारे, होंठ डसते कुटिल हैं भौंह जिनकी, कठोर हैं शब्द जिनके, ऐसे अनेक पिशाच नृत्य करते भए। पर्वतकी शिला कम्पायमान भई अर भूकम्प भया इत्यादि चेष्टा असुरने करी, सो मुनि शुक्लध्यानविषै मग्न किछु न जानते भए। ये चेष्टा देख जानकी भयको प्राप्त भई, पतिके अंगसे लग गई, तब श्रीराम कहते भए—हे देवी! भय मत करहु सर्व विघ्नके हरणहारे जे मुनिके चरण तिनकी शरण गहहु, ऐसा कहकर सीताको मुनिके पांयन मेल आप लक्ष्मणसहित धनुष हाथविषै लिये महाबली मेघसमान गरजे, धनुषके चढायबेका ऐसा शब्द भया। जैसा वज्रपातका शब्द होय, तब वह अग्निप्रभ नामा असुर इन दोऊ वीरानिको बलभद्र नारायण जान भाग गया, वाकी सर्व चेष्टा विलाय गई। श्रीराम लक्ष्मणने मुनिका उपसर्ग दूर किया, तत्काल देशभूषण कुलभूषण मुनिनिको केवल उपजा चतुरनिकायके देव दर्शनको आए। विधिपूर्वक नमस्कारकर यथायोग्य बैठे। केवलज्ञानके प्रतापते केवलीके निकट रात दिनका भेद न रहे। भूमिगोचरी अर विद्याधर केवलीकी पूजा कर यथा योग्य बैठे, सुर नर विद्याधर सब ही धर्मोपदेश श्रवण करते भये। राम लक्ष्मण हर्षित चित्त, सीता सहित केवलीकी पूजाकर हाथ जोड नमस्कारकर पूछते भये।

हे भगवन्! असुरने आपकूं कौन कारण उपसर्ग किया अर तुम दोऊविषै परस्पर अति स्नेह काहेते भया। तब केवलीकी दिव्यध्वनि होती भई—पद्मनी नामा नगरीविषै राजा विजयपर्वत गुणरूप धान्यके उपजिवेका उत्तमक्षेत्र जाके धारणीनामा स्त्री अर अमृतसुर नामा दूत, सर्व शास्त्रनिविषै प्रवीण राज काजविषै निपुण लोकरीतिको जाने अर जाको गुणही प्रिय जाके उपभोग नामा स्त्री ताकी कुक्षिविषै उपजे उदित मुदित नामा दोय पुत्र व्यवहारमें प्रवीण सो अमृतसुर नामा दूतको राजाने कार्य निमित्त बाहिर भेजा सो वह स्वामी भक्त वसुभूतिमित्र सहित चला वसुभूति पापी याकी स्त्रीसूं आस-

क्त दुष्टचित्त सो रात्रिविषै अमृतसुर को खड्ग से मार नगरी में वापिस आया लोगनिते कही मोहि वापिस भेज दिया है अर ताकी स्त्री उपभोगसे यथार्थ वृत्तांत कहा तव वह कहती भई। मेरे दोऊ पुत्रनिको भी मारि जो हम दोऊ निश्चिन्त तिष्ठें। सो यह वार्ता उदितकी वहूने सुनी अर सर्व वृत्तान्त उदितसे कहा यह वहू सास के चरित्रको पहिले भी जानती हुती याको वसुभूति की वहूने समाचार कहे हुते जो परदाराके सेवन ते पतिसे विरक्त हूती सो उदित ने सव वातोंते सावधान होय मुदितको भी सावधान किया अर वसुभूतिका षड्ग देख पिताके मरणका निश्चयकर उदितने वसुभूति को मारा सो पापी मरकर म्लेछकी योनि को प्राप्त भया। ब्राह्मण हुता सो कुशीलके अर हिंसाके दोषते चांडालका जन्म पाया। एक समय मतिवर्धननामा आचार्य मुनिनिविषै महातेजस्वी पद्मनी नगरी आए सो वसंततिलकनामा उद्यानमें संघसहित विराजे अर आर्यिकानिकी गुरानी अनुधरा धर्म ध्यान विषै तत्पर सोहू आर्यिकादिनिके संघसहित आई सो नगरके समीप उपवनविषै तिष्ठी अर जा वनमें मुनि विराजे हुते तावनके अधिकारी आय राजासूं हाथ जोड विनती करते भए—हे देव! आगेको या पीछे को कहो संघ कौन तरफ जावे तव राजा कही जो कहा वात है ते कहते भए उद्यानविषै मुनि आए हैं जो मने करें तो डरें जो नहीं मनेकरें तो तुम कोपकरो यह हमको वडा संकट है स्वर्गके उद्यान समान यह वन है अव तक काहूको याविषै आने न दिया परंतु मुनीनिका कहा करें ते दिगम्बर देवनिकर न निवारे जावें हम सारखे कैसे निवारें, तव राजा कही तुम मत मने करो जहां साधु विराजें सो स्थानक पवित्र होय है सो राजा वडी विभूतिसूं मुनिनिके दर्शन को गया ते महाभाग्य उद्यानमें विराजे हुते वनकी रजकरि घूसरे हैं अंग जिनके, मुक्ति योग्य जो क्रिया ताकरि युक्त, प्रशांत हैं हृदय जिनके, कैयक कायोत्सर्ग धरे दोनों भुजा लुवांय खडे हैं कैयक पद्मासन धर विराजे हैं वेला तेला चौला पंच उपवास दस उपवास पक्षमा-

सादि अनेक उपबासनि करि शोषा है अंग जिनने, पठन पाठनविषै सावधान भ्रमर समान मधुर हैं शब्द जिनके शुद्ध स्वरूप विषै लगाया है चित्त जिनने सो राजा ऐसे मुनिनिको दूरसे देख गर्व रहित होय गजते उतर सावधान होय सर्व मुनिनि को नमस्कार कर आचार्यके निकट जाय तीन प्रदक्षिणा देय प्रणामकर पूछता भया हे नाथ जैसी तिहारे शरीर में दीप्ति है तैसे भोग नाहीं। तब आचार्य कहते भए यह कहां बुद्धि तेरी तू शूरबीर को स्थिर जाने है, यह बुद्धि संसारकी बढावन हारी है। जैसे हाथीके कान चपल तैसा जीतव्य चपल है यह देह कदलीके थंभसमान असार है अर ऐश्वर्य स्वप्न तुल्य है घर कुटम्ब पुत्र कलत्र बांधव सब असार है ऐसा जानकर या संसारकी माया विषै कहा प्रीति यह संसार दुःखदायक है। यह प्राणी अनेक बार गर्भवासके संकट भोगवे हैं। गर्भवास नरक तुल्य महा भयानक दुर्गन्ध कृमिजाल कर पूर्ण रक्त श्लेषमादिक का सरोवर महा अशुचि कर्दमका भरा है यह प्राणी मोह-रूपअंधकार करि अन्धा भया गर्भवाससूं नाहीं डरे है। धिक्कार है या अत्यन्त अपवित्र देह को सर्व अशुभका स्थानक क्षणभंगुर, जाका कोई रक्षक नाहीं। जीव देहको पोषे वह याहि दुःख देय सो महा-कृतघ्न नसा जालकर बेढा चर्मकरि ढका अनेक रोगानिका पुंज जाके आगमनकरि ग्लानिरूप ऐसे देह में जे प्राणी स्नेह करै हैं, ते ज्ञानरहित अविवेकी हैं। तिनके कल्याण कहांते होय है अर या शरीरविषै इंद्रिय चोर बसे हैं। ते बलात्कार धर्मरूप धनको हरे हैं। यह जीवरूप राजा कुबुद्धिरूप स्त्रीसूं रमे है, अर मृत्यु याको अचानक ग्रसा चाहै है। मनरूप माता हाथी विषयरूप वनविषै क्रीडा करै है। ज्ञानरूप अंकुशते याहि बशकर वैराग्यरूप थंभसू विवेकी बांधे हैं। यह इंद्रियरूप तुरंग मोहरूप पताकाको धरे, पर स्त्रीरूप हरित तृणानिविषै महा लोभको धरते शरीररूप रथको कुमार्गमें पाडे हैं। चित्तके प्रेरे चंचलता धरे हैं तातैं चित्तको वश करना योग्य है। तुम संसार शरीर भोगानितै विरक्त होय भक्तिकर जिनराजको

नमस्कार करहु । निरंतर सुमरहु । जाकरि निश्चयने संसार समुद्रको तिरहु । तप संयमरूप बाणनिकरि मोहरूप शत्रुको हण लोकके शिखर अविनाशीपुरका अखंड राज्य करहु निर्भय निजपुरविषै निवास करहु । यह मुनिके मुखते वचन सुन कर राजा विजयपर्वत सुबुद्धि राज्य तज मुनि भया अर वे दूतके पुत्र दोऊ भाई उदित मुदित जिनवाणी सुन मुनि होय महीविषै विहार करते भए । सम्मेद शिखरकी यात्राको जाते हुते सो काहू प्रकार मार्ग भूल वनविषै जाय पडे । वह वसूभूति विप्रका जीव महारौद्र भील भया हुता ताने देखे । अति क्रोधायमान होय कुठार समान कुवचन बोल इनको खडे राखे अर मारनेको उद्यमी भया तब बडा भाई उदित मुदितसे कहता भया—

हे भ्रात ! भय मत करहु । क्षमा ढालको अंगीकार करहु । यह मारवेको उद्यमी भया है सो हमने बहुत दिन तपसूं क्षमाका अभ्यास किया है सो अब दृढता राखनी । यह वचन सुन मुदित बोला, हम जिनमार्गके सरधानी हमको कहां भय, देह तो विनश्वर ही है अर यह वसुभूतिका जीव है जो पिताके वैरते मारा हुता । परस्पर दोऊ मुनि ए वार्ता कर शरीरका ममत्व तज कायोत्सर्ग धार तिष्ठे । वह मारवेको आया सो म्लेच्छ कहिए भील ताके पतिने मने किया, दोऊ मुनि बचाए । यह कथा सुन रामने केवलीसूं प्रश्न किया—हे देव वाने बचाए सो वासूं प्रीतिका कारण कहा ? तब केवलीकी दिव्य ध्वनिविषै आज्ञा भई । एक यक्षस्थान नाम ग्राम तहां सुरप अर कर्षक दोऊ भाई हुते । एक पक्षीको पारधी जीवता पकड ग्राममें लाया सो इन दोऊ भाइनने द्रव्य देय छुडाया सो पक्षी मरकर म्लेच्छपति भया अर वे सुरप कर्षक दोऊ वीर उदित मुदित भए । ता परोपकारकर वाने इनको बचाए जो कोई जाते नेकी करै है सो वह भी तासे नेकी करे है अर जो काहूसूं बुरी करे है वाहूसे वह हू बुरी करे है । यह संसारी जीवानिकी रीति है तातैं सबनिका उपकार ही करहु । काहू प्राणिसूं बैर न करना । एक जीव दया ही मोक्षका मार्ग

है, दया विना ग्रंथनिके पढनेसूं कहा ? एक सुकृत ही सुखका कारण सो करना, वे उदित मुदित मुनि उपसर्गते छूट सम्मेदशिखरकी यात्राको गए अर अन्य हू अनेक तीर्थनिकी यात्रा करी । रत्नत्रयका आराधनकरि समाधिते प्राण तज स्वर्ग लोक गए अर वह वसुभूतिका जीव जो म्लेच्छ भया हुता सो अनेक कुयोनिविषै भ्रमणकर मनुष्य देह पाय तापसव्रत धर अज्ञान तपकर मर ज्योतिषी देवनिकेविषै अग्निकेतु नामा क्रूर देव भया अर भरतक्षेत्रके विषम अरिष्टपुर नगर जहां राजा प्रियव्रत महा भोगी ताके दो राणी महागुणवती एक कनकप्रभा दूजी पद्मावती सो वे उदित मुदितके जीव स्वर्गसूं चयकर पद्मावती राणीके रत्नरथ विचित्ररथ नामा पुत्र भए अर कनकप्रभाके वह ज्योतिषीदेव चयकर अनुधर नामा पुत्र भया । राजा प्रियव्रत पुत्रको राज्य देय भगवानके चैत्यालयविषै छह दिनका अनशन धार देह त्याग स्वर्ग लोक गया ।

अथानन्तर एक राजाकी पुत्री श्रीप्रभा लक्ष्मी समान सो रत्नरथने परणी ताकी अभिलाषा अनुधरके हुती सो रत्नरथते अनुधरका पूर्व जन्म तो वैर ही हुता बहुरि नया वैर उपजा सो अनुधर रत्नरथ की पृथ्वी उजाडने लगा । तब रत्नरथ अर विचित्ररथ दोऊ भाइनि अनुधरको युद्धमें जीत देशते निकास दिया । सो देशते निकासनेते अर पूर्व वैरते महाक्रोधको प्राप्त होय जटा अर बकलका धारी तापसी भया विषवृक्ष समान कषाय विषका भरा, अर रत्नरथ विचित्ररथ महातेजस्वी चिरकाल राज्यकर मुनि होय तपकर स्वर्गविषै देव भए । महासुख भोग तहांते चयकर सिद्धार्थ नगरके विषै राजा क्षेमंकर राणी विमला तिनके महासुंदर देशभूषण कुलभूषण नामा पुत्र होते भए । सो विद्या पढनेके अर्थ घरमें उचित क्रीडा करते तिष्ठे, ता समय एक सागरघोष नामा पंडित अनेक देशनिमें भ्रमण करता आया सो राजा पंडितको बहुत आदरसूं राखा अर ये दोऊ पुत्र पढनेको सौंपे, सो महाविनयकरसंयुक्त सर्वकला सीखीं,

केवल एक विद्या गुरुको जाने या विद्याको जाने और कुटुंबमें काहूको न जाने । तिनके एक विद्याभ्यास हीका कार्य विद्यागुरुते अनेक विद्या पढीं । सर्व कलाके पारगामी होय पितापै आए सो पिता इनको महाविद्वान सर्व कला निपुण देखकर प्रसन्न भया । पंडितको मनवांछित दान दिया । यह कथा केवली रामसूं कहे हैं, वे देशभूषण कुलभूषण हम हैं सो कुमार अवस्थामें हमने सुनी जो पिताने तिहारे विवाह के अर्थ राजकन्या मंगाई हैं । यह वार्ता सुनकर परमविभूति घरे तिनकी शोभा देखनेको नगर बाहिर जायवेके उद्यमी भए सो हमारी बहिन कमलोत्सवा कन्या झरोखेमें बैठी नगरीकी शोभा देखती हुती सो हम तो विद्याके अभ्यासी कबहूं काहूको न देखा न जाना हम न जाने यह हमारी बहिन है । अपनी मांग जान विकाररूप चित्त किया दोऊ भाइनिके चित्त चले, दोऊ परस्पर मनविषै विचारते भए याहि मैं परणूं दूजा भाई परणा चाहे तो ताहि मारूं सो दोऊके चितविषै विकार भाव अर निर्दई भाव भया । ताही समय बन्दी जनके मुख ऐसा शब्द निकसा कि राजा क्षेमंकर बिमला राणी सहित जयवन्त होवे जाके दोनों पुत्र देवन समान अर यह झरोके विषै बैठी कमलोत्सवा इनकी बाहिन सरस्वती समान दोऊ वीर महागुणवान अर बाहिन महागुणवंती ऐसी सन्तान पुण्याधिकारिनेके ही होय है । जब यह वार्ता हमने सुनी तब मनविषै बिचारी अहो देखो मोह कर्म की दुष्टता, जो हमारे बाहिनकी आभिलाषा उपजी यह संसार असार महा दुःखका भरा, हाय जहां ऐसा भाव उपजे, पापके योग करि प्राणी नरक जांय वहां महादुःख भोगें, यह बिचारकर हमारे ज्ञान उपजा सो बैराग्यको उद्यमी भए । तब माता पिता स्नेहसूं व्याकुल भए । हमने सबसूं ममत्व तज दिगम्बरी दीक्षा आदरी, आकाश गामिनी रिद्धि सिद्धभई । नाना प्रकारके जिन तीर्थादिविषै बिहार किया तपही है धन जिनके अर माता पिता राजा क्षेमंकर अगलेभी भवका पिता सो हमारे शोकरूप अग्निकर तप्तायमानहुवा सर्व आहार तज मरणको

प्राप्त भया सो गरुडेन्द्र भया। भवन वासी देवानिविषे गरुड कुमार जातिके देव तिनका आधिपाति महा सुंदर महा पराक्रमी महालोचन नाम सो आयकर यह देवनिकी सभाविषे बैठा है अर वह अनुधर तापसी विहार करता कौमुदी नगरी गया अपने शिष्यनिके समूह करि बैठा तहां राजा सुमुख ताके राणी रतिवती परम सुन्दरी सैंकडा राणिनिविषे प्रधान अर ताके एक नृत्यकारणी मानो मदनकी पताका ही है, अतिसुन्दर रूप अद्भुत चेष्टा की धरणहारी, ताने साधुदत्त मुनि के समीप सम्यक् दर्शन श्रद्धा, तबते कुगुरु कुदेव कुधर्म को तृणवत् जाने। ताके निकट एक दिन राजा कहा यह अनुधर तापसी महातपका निवास है। तब मदनाने कही हे नाथ ! अज्ञानीका कहा तप, लोकविषे पाखण्ड रूप है यह सुनकर राजाने क्रोध किया। तू तपस्वी की निन्दा करे है, तब वाने कही आप कोप मत करहु, थोडे ही दिन विषे या की चेष्टा दृष्टि पडेगी ऐसा कहकर घर जाय अपनी नागदत्ता नामा पुत्रीको सिखाय तापसीके आश्रम पठाई, सो वह देवांगना समान परम चेष्टाकी धरणहारी महा विभ्रमरूप तापसीको अपना शरीर दिखावती भई, सो याके अंग उपंग महा सुन्दर निरखकर अज्ञानी तापसीका मन मोहित भया अर लोचन चलायमन भए जो अंगपर नेत्र गए वहां ही मन बन्ध गया, काम बांणनिकार तापसी पीडित भया व्याकुल होय देवांगना समान जो यह कन्या ताके समीप आय पूछता भया, तू कौन है अर यहां कहा आई है, संध्याकालविषे सब ही लघु वृद्ध अपने स्थानकविषें तिष्ठे है। तू महासुकुमार अकेली वनमें क्यों विचरे है, तब वह कन्या मधुर शब्दकर याका मन हरती सन्ती दीनताको लिये बोली, चंचल नील कमल समान हैं लोचन जाके, हे नाथ ! दयावान् शरणागत प्रतिपाल आज मेरी माताने मोहि घरते निकास दई, सो अब मैं तिहारे भेषकर तिहारे स्थानक रहना चाहूं हूं, तुम मो सों कृपा करहु, रात दिन तिहारी सेवाकर मेरा यह लोक परलोक सुधरेगा। धर्म, अर्थ काम इनविषे कौनसा पदार्थ है जो तुमविषे

न पाइये। परम निधान हो। मैं पुण्यके योगते तुम पाये, या भांति कन्याने कही तब याका मन अनुरागी जान विकल तापसी कामकर प्रज्वलित बोला—हे भद्रे ! मैं कहा कृपा करूं, तू कृपाकर प्रसन्न होहु, मैं जन्मपर्यंत तेरी सेवा करूंगा। ऐसा कहकर हाथ चलावनेका उद्यम किया, तब कन्या अपने हाथसूं मने कर आदर सहित कहती भई—हे नाथ ! मैं कुमारी कन्या तुमको ऐसा करना उचित नाहीं, मेरी माताके घर जायकर पूछो घर भी निकट ही है जैसी मोपर तिहारी करुणा भई है, तैसे मेरी माको प्रसन्न करहु वह तुमको देवेगी, तब जो इच्छा होय सो करियो, यह कन्याके वचन सुन मूढतापसी व्याकुल होय तत्काल कन्याकी लार रात्रिको ताकी माताके पास आया, कामकर व्याकुल हैं सर्व इंद्रिय जाकी जैसे माता हाथी जलके सरोवरविषै पैठे तैसे नृत्यकारिणीके घरविषै प्रवेश किया। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसू कहे हैं।

हे राजन् ! कामकर ग्रसाहुवा प्राणी न स्पर्शे न स्वादे न सूंघे न देखे न सुने न जाने न डरे अर न लज्जा करे। महा मोहसे निरन्तर कष्टको प्राप्त होय है जैसे अन्धा प्राणी सर्पनिके भरे कूप में पडे तैसे कामान्ध जीव स्त्रीके विषयरूप विषमकूपमें पडे सो वह तापसी नृत्यकारिणीके चरणमें लोट अति अधीन होय कन्याको याचता भया। ताने तापसीको बांध राखा राजाको समस्या हुती सो राजाने आय कर रात्रिको तापसी वन्धा देखा। प्रभात तिरस्कारकरि निकास दिया सो अपमान कर लज्जायमान महा दुःखको धरता संता पृथिवी विषै भ्रमणकर मूवा अनेक कुयोनि विषै जन्म मरण किए वहुरि कर्मा नुयोगकर दरिद्रीके घर उपजा जब यह गर्भमें आया तब ही याकी माताने याके पिताको क्रूर बचन कहकर कलह किया सो उदास होय विदेश गया अर याका जन्म भया। बालक अवस्था हुती तब भील नि देशके मनुष्य बन्द किये सो याकी माताभी बन्दीमें गई सर्व कुटूम्ब रहित यह परम दुखी भया कई

एक दिन पीछे तापसी होय अज्ञान तप कर ज्योतिषी देवनि विषैं अग्निप्रभ नामा देव भया अर एक समय अनन्तवीर्य केवलीको धर्म में निपुण जो शिष्य तिनने पूछा कैसे हैं केवली चतुरनिकाय के देव अर विद्याधर तथा भूमिगोचरी तिनकरि सेवित, हे नाथ ! मुनिसुव्रत नाथके मुक्ति गये पीछे तुम केवली भए अब तुम समान संसारका तारक कौन होयगा तब तिनने कही देश भूषण कुलभूषण होवेंगे। केवल ज्ञान अर केवल दर्शनके धरण हारे जगतमें सार जिनका उपदेश पायकर लोक संसार समुद्रको तिरेंगे। ये वचन अग्निप्रभने सुने सो सुनकर अपने स्थानक गया। इन दिनानिमें कुअवधि कर हमको इस पर्वतमें तिष्ठे जान 'अनन्तवीर्य केवलीका वचन मिथ्या करूं' ऐसा गर्वधर पूर्व वैरकर उपद्रव करनेको आया सो तुमको बलभद्र नारायण जान भयकर भाज गया। हे राम तुम चरम शरीरी तद्भव मोक्षगामी बलभद्र हो अर लक्ष्मण नारायण है उस सहित तुमने सेवा करी अर हमारे घातिया कर्मके क्षयसे केवल ज्ञान उपजा, याप्रकार प्राणीनिके वैरका कारण सर्व बैरानुबन्ध है ऐसा जानकर जीवानिके पूर्वभव श्रवणकर हे प्राणीहो रागद्वेष तज निश्चल होवो ऐसे महापवित्र केवलीके बचन सुन सुर नर असुर बारम्बार नमस्कार करतेभये अर भव दुःखतें डरे अर गरुडेन्द्र परम हर्षित होय केवलीके चरणारविन्दको नमस्कार कर महा स्नेहकी दृष्टि विस्तारता लहलहाट करे हैं मणि कुण्डल जाके, रघुवंशमें उद्योत करणहारे जे राम तिनसों कहता भया—हे भव्योत्तम ! तुम मुनिनिकी भक्ति करी सो मैं अति प्रसन्न भया। ये मेरे पूर्व भवके पुत्र हैं जो तुम मांगो सो मैं देहुं तब श्रीरघुनाथ क्षण एक विचार कर बोले तुम देवनिके स्वामी हो कभी हमपै आपदा परै तो चितारियो साधुनिकी सेवाके प्रसादसे यह फल भया जो तुम सारिखोंसे मिलाप भया तब गरुडेन्द्रने कहा तुम्हारा वचन मैं प्रमाण किया जब तुमको कार्य पडेगा तब मैं तिहारे निकट ही हूं ऐसा कहा तब अनेक देव मेघकी ध्वनि समान वादित्रनिके नाद करते भये। साधुनिके पूर्वभव

सुन कईएक उत्तम मनुष्य मुनि भये कईएक श्रावकके व्रत धारते भए । वे देशभूषण कुलभूषण केवली जगत् पूज्य सर्व संसारके दुःखसे रहित नगर ग्राम पर्वतादि सर्व स्थानविषे विहारकर धर्मका उपदेश देते भये यह दोऊ केवलिनिके पूर्वभवका चारित्र जे निर्मल स्वभावके धारक भव्यजीव श्रवण करें, वे सूर्य समान तेजस्वी पापरूप तिमिरको शीघ्र ही हरें ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषै देशभूषण कुलभूषण,

केवलीका व्याख्यान वर्णन करनेवाला उनतालीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ३९ ॥

अथानन्तर केवलीके मुखते रामचन्द्रको चरम शरीरी कहिये तद्भव मोक्षगामी सुनकर सकल राजा जय जय शब्द कहकर प्रणाम करते भये अर वंशस्थलपुरका राजा सुरप्रभ महा निर्मल चित्त राम लक्ष्मण सीताकी भक्ति करता भया । महिलनिके शिखरकी कांतिसे उज्ज्वल भया है आकाश जहां, ऐसा जो नगर वहां चलनेकी राजाने प्रार्थना करी परन्तु रामने न मानी वंशगिरिके शिखर हिमाचल के शिखर समान सुन्दर जहां नालिनी बनमें महारमणीक विस्तीर्ण शिला वहां आप हंस समान विराजे ! कैसा है वन ? नानाप्रकारके वृक्ष अर लतानि करि पूर्ण अर नानाप्रकारके पक्षी करे हैं नाद जहां, सुगन्ध पवन चले है । भांति भांतिके फल पुष्प तिनकरि शोभित अर सरोवरानिमें कमल फूल रहे हैं, स्थानक अति सुन्दर सर्व ऋतुकी शोभा जहां बन रही है, शुद्ध आरसीके तल समान मनोग्य भूमि पांच वर्णके रत्ननि करि शोभित जहां कुंद मौलसिरी मालती स्थलकमल जहां अशोक वृक्ष नाग वृक्ष इत्यादि अनेक प्रकारके सुगन्ध वृक्ष फल रहे हैं । तिनके मनोहर पल्लव लहलहाट करे हैं । तहां राजाकी आज्ञा कर महा भक्तिवन्त जे पुरुष तिनने श्रीरामको विराजनेके निमित्त वस्त्रानिके महा मनोहर

मण्डप बनाये सेवक जन महा चतुर सदा सावधान अति आदरके करणहारे मंगल रूप बाणीके बोलनहारे स्वामीकी भक्ति विषे तत्पर तिनने बहुत तरहके चौडे ऊंचे वस्त्रनिके मण्डप बनाये, नाना प्रकारके चित्राम हैं जिनमें अर जिन पर ध्वजा फर हरे हैं मोतिनिकी माला जिनके लटके हैं, क्षुद्र घंटिकानिके समूह कर युक्त अर जहां मणिनिकी झालर लूंब रही हैं महा देदीप्यमान सूर्यकी सी किरण धरें अर पृथिवी पर पूर्ण कलश थापे हैं अर छत्र चमर सिंहासनादि राज चिन्ह तथा सर्व सामग्री धरें हैं अनेक मंगल द्रव्य हैं ऐसे सुन्दर स्थल विषें सुख सों तिष्ठे हैं, जहां जहां रघुनाथ पांव धरें वहां वहां पृथिवी पर राजा अनेक सेवा करें। शय्या आसन मणि सुवर्णके नाना प्रकारके उपकरण अर इलायची लवंग ताम्बूल मेवा मिष्टान्न तथा श्रेष्ठ वस्त्र अद्भुत आभूषण अर महा सुगन्ध नाना प्रकारके भोजन दधि दुग्ध घृत भांति २ के अन्न इत्यादि अनुपम वस्तु लावें या भांति सर्व ठौर सब जन श्रीरामको पूजें वंशगिरि पर श्रीराम लक्ष्मण सीताके रहिवेको मण्डप रचे तिनमें किसी ठौर गीत कहीं नृत्य कहीं वाजित्र वाजे हैं। कहा सुकृतकी कथा होय है अर नृत्यकारिणी ऐसा नृत्य करें मानो देवांगनाही हैं। कहीं दान बटे हैं ऐसे मन्दिर बनाए जिनका कौन वर्णन करसके जहां सब सामग्री पूर्ण, जो याचक आवे सो विमुख न जांय दोनों भाई सर्व आभरणनि करि युक्त, सुन्दर वस्त्र धरें मनवांछित दानके करण हारे महा यशस माण्डत अर सीता परम सौभाग्यकी धरणहारी पापके प्रसंगसूं रहित शास्त्रोक्त रीतिकर रहे, ताकी महिमा कहांतक कहिए। अर वंश गिरि पर श्रीरामचन्द्रने जिनेश्वर देवके हजारों अद्भुत चैत्यालय महादृढ हैं स्तम्भ जिनके योग्य है लम्बाई चौडाई ऊंचाई जिनकी अर सुन्दर झरोखानि करि शोभित तोरण सहित हैं द्वार जिनके कोट अर खाई कर मण्डित सुन्दर ध्वजानिकरि शोभित, बन्दना के करण हारे भव्यजीव तिनके मनोहर शब्द संयुक्त मृदंग वीण वांसुरी झालरी झांझ मंजीरा शंख भेरी

इत्यादि वादित्रनिके शब्दकर शोभायमान निरन्तर आरम्भए हैं महा उत्सव जहां ऐसे रामके रचे रमणीक जिन मन्दिर तिनकी पंक्ति शोभती भई। वहां पंच वर्णके प्रतिबिंब जिनेन्द्र सर्व लक्षणनि कर संयुक्त सर्व लोकनि करि पूज्य विराजते भये। एक दिन श्री राम कमललोचन लक्ष्मणसूं कहते भये—हे भाई! यहां अपने ताईं दिन बहुत बीते अर सुखसूं या गिरि पर रहे श्रीजिनेश्वरके चैत्यालय बनायवे कर पृथिवीमें निर्मल कीर्ति भई अर या वंशस्थलपुरके राजाने अपनी बहुत सेवा करी अपने मन बहुत प्रसन्न किए अब यहांहीं रहें तो कार्यकी सिद्धि नाहीं अर इन भोगनि कर मेरा मन प्रसन्न नाहीं, ये भोग रोगके समान हैं ऐसाही जानता हूं तथापि ये भोगनिके समूह मोहि क्षणमात्र नाहीं छोडे हैं सो जबतक संयमका उदय नाहीं तबतक ये विना यत्न आय प्राप्त होय हैं। या भवमें जो कर्म यह प्राणी करे है ताका फल पर भवमें भोगवे है अर पूर्व उपार्जे जे कर्म तिनका फल वर्तमान काल विषै भोगे है या स्थलमें निवास करते अपने सुख संपदा है परन्तु जे दिन जाय हैं वे फेर न आवे। नदीका वेग अर आयुके दिन अर यौवन गए वे फेर न आवें ता करनारव नाम नदीके समीप दंडक वन सुनिये है वहां भूमिगोचरानिकी गम्यता नाहीं अर वहां भरतकी आज्ञाकाहू प्रवेश नाहीं वहां समुद्रके तट एक स्थान बनाय निवास करेंगे यह रामकी आज्ञा सुन लक्ष्मणने विनती करी—हे नाथ आप जो आज्ञा करोगे सोई होयगा ऐसा विचार दोऊ वीर महाधीर इन्द्रसारिखे भोग भोगि वंशगिरिते सीता सहित चाले राजा सुरप्रभ वंशस्थलपुरका पति लार चाला सो दूरतक गया। आप विदा किया सो मुश्किलसे पीछे बाहुडा महा शोकवन्त अपने नगरमें आया श्री रामका विरह कौन कौनको शोकवन्त न करै। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं हे राजन्! वह वंशगिरि बडा पर्वत जहां अनेक धातु सो रामचन्द्रने जिन मंदिरनिकी पंक्ति कर महा शोभायमान किया कैसे हैं जिन मन्दिर, दिशानिके समूहको अपनी कांति

करि प्रकाशरूप करे हैं ता गिरिपर श्रीरामने परम सुन्दर जिनमंदिर बनाए, सो वंशगिरि रामगिरि कहाया। या भांति पृथिवीपर प्रसिद्ध भया। रवि समान है प्रभा जाकी।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामगिरका वर्णन करनेवाला चालीसवा पर्व पूर्ण भया॥ ४०॥

अथानन्तर राजा अरण्यके पोता दशरथके पुत्र राम लक्ष्मण सीतासहित दक्षिण दिशाके समुद्रको चाले कैसे हैं दोऊ भाई? महा सुखके भोक्ता नगर ग्राम तिनकर भरे जे अनेक देश तिनको उलंघ कर महा वनविषै प्रवेश करते भए। जहां अनेक मृगनिके समूह हैं अर मार्ग सूझे नाहीं अर उत्तम पुरुषनिकी वस्ती नाहीं। जहां विषम स्थानक सो भील भी विचर न सकें, नानाप्रकारके वृक्ष अर बेल तिनकर भरा महा विषम अति अंधकार रूप जहां पर्वतनिकी गुफा गम्भीर निर्झरने झरें हैं। ता वनविषै जानकी प्रसंगते धीरे धीरे एक एक कोस रोज चाले दोऊ भाई निर्भय अनेक क्रीडाके करणहारे नरमदानदी पहुंचे। जाके तट महारमणीक प्रचुर तृणनिके समूह अर समानता धरे महाछायाकारी अनेक वृक्ष फल पुष्पादि करि शोभित अर जाके समीप पर्वत, ऐसे स्थानको देख दोऊ भाई वार्ता करते भए। यह वन अति सुंदर अर नदी सुन्दर ऐसा कह कर रमणीक वृक्षकी छायाविषै सीता सहित तिष्ठे, क्षण एक तिष्ठ कर तहांके रमणीक स्थानक निरख कर जल क्रीडा करते भए। बहुरि महामिष्ट आरोग्य पक्व फल फूलनिके आहार बनाए, सुखकी है कथा जिनके, तहां रसोईके उपकरण अर वासण माटीके अर बांसनिके नानाप्रकार तत्काल बनाए, महास्वादिष्ट सुंदर सुगंध आहार वनके धान सीताने तैय्यार किये, भोजनके समय दोऊ वीर मुनिके आयबेके अभिलाषी द्वारापेषणको खडे, ता समय दो चारण मुनि आए। सुगुप्ति अर गुप्ति

हैं नाम जिनके ज्योति पटल कर संयुक्त है शरीर जिनका अर सुन्दर है दर्शन जिनका, मति श्रुति अवधि तीन ज्ञान विराजमान महाव्रतके धारक परम तपस्वी सकल वस्तुकी अभिलाषा रहित निर्मल हैं चित्त जिनके, मासोपवासी महाधीर वीर शुभ चेष्टाके धरणहारे, नेत्रोंको आनन्दके करता, शास्त्रोक्त आचार कर संयुक्त है शरीर जिनका, सो आहारको आए। सो दूरते सीताने देखे, तब महा हर्षके भरे हैं नेत्र जाके अर रोमांचकर संयुक्त है शरीर जाका पतिसों कहती भई, हे नाथ हे नर श्रेष्ठ! देखो! देखो! तपकर दुर्बल शरीर दिगंबर कल्याणरूप चारण युगल आए। तब राम कही हे प्रिये! हे पंडिते! सुंदर मूर्ति! वे साधु कहां हैं हे रूप आभरणकी धरणहारी धन्य है भाग्य तेरे तूने निर्ग्रंथ युगल देखे, जिनके दर्शनते जन्म जन्मके पाप जाहिं; भक्तिवंत प्राणीके परम कल्याण होय, जब या भांति रामने कही तब सीता कहती भई। ये आए ये आए तब ही दोनों मुनि रामके दृष्टि परे, जीव दयाके पालक ईर्या समति सहित समाधान रूप हैं मन जिनके तब श्रीरामने सीता सहित सन्मुख जाय नमस्कारकर महाभक्ति युक्त श्रद्धा सहित मुनिनिको आहार दिया, आरणी भैंसोंका अर वनकी गायोंका दुग्ध अर छुहारे गिरी दाख नानाप्रकारके वनके धान्य सुन्दर घी मिष्टान्न इत्यादि मनोहर वस्तु विधिपूर्वक तिनते मुनिनिको पारणा करावते भए। वे मुनि भोजनके स्वादके लोलुपतासूं निरंतराय आहार करते भए। जब रामने अपनी स्त्री सहित भक्तिकर आहार दिया, तब पंचाश्चर्य भए रत्ननिकी वर्षा पुष्पवृष्टि शीतल मंद सुगंध पवन अर दुन्दुभी बाजे, जय जयकार शब्द सो जा समय रामके मुनिनिका आहार भया ता समय वनविषे एक गृध पक्षी अपनी इच्छाकर वृक्षपर तिष्ठ था सो अतिशय कर संयुक्त मुनिनिको देख अपने पूर्वभव जानता भया कि कोई एकभव पहिले मैं मनुष्य हुता प्रमादी अविवेक कर जन्म निष्फल खोया, तप संयम न किया, धिक्कार मो मूढबुद्धिको अब मैं पापके उदयकरि खोटी योनिविषे आय पडा, कहा उपाय

करूं, मोहि मनुष्य भवविषै पापी जीवनि भरमाया, वे काहिवेके मित्र अर महाशत्रु सो उनके संग मैं धर्म रत्न तजा अर गुरुनिके वचन उलंघ महापाप आचरा। मैं मोहकर अंध अज्ञान तिमिरकर धर्म न पहिचाना। अब अपने कर्म चितार उरविषै जलूं हूं। बहुत चिंतवनकर कहा दुखके निवारनेके अर्थ इन साधुनिका शरण गहूं ये सर्व सुखके दाता इनसूं मेरे परम अर्थकी प्राप्ति निश्चय सेती होयगी। या भांति पूर्वभवके चितारनेते प्रथम तो परम शोकको प्राप्त भया हुता। बहुरि साधुनिके दर्शनते तत्काल परम हर्षित होय अपनी दोऊ पांख हलाय आंसुनिकर भरे हैं नेत्र जाके महा विनयकर मण्डित पक्षी वृक्षके अग्रभागते भूमिविषै पडा सो महा मोटा पक्षी ताके पडनेके शब्दकरि हाथी अर सिंहादि बनके जीव भयकर भाग-गए अर सीता भी आकुलचित्त भई, ता देखो यह डीठ पक्षी मुनिनिके चरणविषै कहांसूं आय पडा, कठोर शब्दकर घनाही निवारा परंतु वह पक्षी मुनिनिके चरणनिके धोवनविषै आय पडा, चरणोदकके प्रभाव कर क्षणमात्र विषै ताका शरीर रत्नोंकी राशिसमान नाना प्रकारके तेजकर मण्डित होय गया पांख तो स्वर्णकी प्रभाको धरते भए, दोऊ पांव वैडूर्य्यमणिसमान होय गये अर देह नाना प्रकारके रत्ननिकी छवि को धरता भया अर चूंच मूगा समान आरक्त भई तब यह पक्षी आपको अर रूपको देख परम हर्षको प्राप्त भया मधुरनादकर नृत्य करनेको उद्यमी भया। देवनिके दुन्दुभी समान है नाद जाका नेत्रनिते आनं-दके अश्रुपात डारता शोभता भया जैसा मोर मेहके आगमनविषै नृत्यकरे तैसा मुनिके आगे नृत्य करता भया, महामुनि विधि पूर्वक पारणाकर वैडूर्यमणि समान शिलापर विराजे। पद्मराग माणिसमान हैं नेत्र जाके ऐसा पक्षी पांख संकोच मुनिनिके पांओंको प्रणामकर आगे तिष्ठा तब श्रीराम फूले कमल समान हैं नेत्र जिनके पक्षीको प्रकाश रूप देख आप परम आश्चर्यको प्राप्त भए साधुनिके चरणारविन्दको नमस्कारकर पूछते भए कैसे हैं साधु अठाईस मूल गुण चौरासीलाख उत्तर गुण, वेही हैं आभूषण जिनके,

बारम्बार पक्षीकी ओर निरख राम मुनिसे कहते भए हे भगवन ! यह पक्षी प्रथम अवस्थाविषै महाविरूप अंगहुता सो क्षणमात्रविषे सुवर्ण अर रत्ननिके समूहकी छवि धरता भया यह अशुचि सर्व मांसका आहारी दुष्ट गृध्रपक्षी आपके चरणनिके निकट तिष्ठकर महाशांत भया सो कौन कारण ? तब सुगुप्तिनामा मुनि कहते भए, हे राजन ! पूर्वे इस स्थलविषे दंडक नामा देश हुता जहां अनेक ग्राम नगर पट्टण संवाहण मटंब घोष खेट करबट द्रोणमुख हुते वाडिकरयुक्त, सो ग्राम कोट खाई दरवाजेनिकर मंडित सो नगर अर जहां रत्ननिकी खान सो पट्टण पर्वतके ऊपर सो संवाहन अर जाहि पांचसो ग्राम लागे सो मटंब अर गायनिके निवास गुवालनिके आवास सो घोष अर जाके आगे नदी सो खेट अर जाके पीछे पर्वत सो कर्वट अर समुद्रके समीप सो द्रोणमुख इत्यादि अनेक रचनाकर शोभित तहां कर्णकुंडल नामा नगर महामनोहर ताविषे या पक्षीका जीव दंडक नामा राजा हुता महाप्रतापी उदय धरे प्रचंड पराक्रम संयुक्त भग्न किये हैं शत्रुरूप कंटक जाने, महामानी बडी सेनाका स्वामी सो या मूढने अधर्मकी श्रद्धाकर पाप रूप मिथ्या शास्त्र सेया जैसे कोई घृतका अर्थी जलको मथे, याकी स्त्री दंडिनिकी सेवक हुती तिनसे अतिअनुरागिणी सो वाके संगकर यह भी ताके मार्गको धरता भया। स्त्रिनिके वश हुवा पुरुष कहा २ न करे, एक दिवस यह नगरके बाहिर निकसा सो वनविषै कायोत्सर्ग धरे ध्यानारूढ मुनि देखे। तब या निर्दईने मुनिके कंठविषे मूवा सर्प डारा, कैसा हुता यह पाषाण समान कठोर हुता चित्त जाका सो मुनि ध्यान धरे मौनसो तिष्ठे अर यह प्रतिज्ञा करी, जो लग मेरे कंठते कोई सर्प दूर न करे तोलग मैं हलन चलन नाहीं करूं योगरूप ही रहूं। सो काहूने सर्प दूर न किया मुनि खडे ही रहे । बहुरि कैयक दिननिविषै राजा ताही मार्ग गया । ताही समय काहू भले मनुष्यने सांप काढा अर मुनिके पास वह बैठा हुता सो राजा वा मनुष्यसूं पूछा जो मुनिके कंठते सांप कौनने काढा अर कब काढा, तब वाने कही—हे

नरेंद्र ! काहू नरकगामीने ध्यानारूढ मुनिके कंठविषै मूवा सर्प डारा हुता, सो सर्पके संयोगते साधुका शरीर अतिखेदखिन्न भया । इनके तो कोई उपाय नाहीं, आज सर्प मैंने काढा है तब राजा मुनिको शांत स्वरूप कषायरहित जान प्रणामकर अपने स्थानक गया । ता दिनतें मुनिनिकी भक्तिविषै अनुरागी भया अर काहूको उपद्रव न करे, तब यह वृत्तांत राणीने दंडिनके मुख सुना, जो राजा जिनधर्मका अनुरागी भया । तब पापिनीने क्रोधकर मुनीनिके मारवेका उपाय किया जे दुष्ट जीव हैं ते अपने जीनेकाहू यत्न तज पराया अहित करें । सो पापिनीने अपने गुरुसों कही तुम मुनिका रूपकर मेरे महलविषै आवहु अर विकार चेष्टा करहु तब वाने या भांति करी । सो राजा यह वृत्तांत जानकर मुनिनिसूं कोप भया अर मंत्री आदि दुष्ट मिथ्यादृष्टि सदा मुनिनिकी निंदा करते, अर अन्य हू जे क्रूर कर्मी मुनिनिके अहितु हुते तिनने राजाको भरमाया सो पापी राजा मुनिनिको घानीविषै पेलिवेकी आज्ञा करता भया। आचार्य सहित सर्व मुनि घानीविषै पेले, एक साधु बहिर्भूमि गया, पीछे आवता हुता सो काहू दयावानने कही—अनेक मुनि पापी राजाने यंत्रविषै पेले हैं तुम भाग जावहु तुम्हारा शरीर धर्मका साधन है सो अपने शरीरकी रक्षा करहु । तब यह समाचार सुन संघके मरणके शोककर चुभी है दुःखरूप शिला जाके, क्षण एक वज्रके स्तंभ समान निश्चल होय रहा, फिर न सहा जाय ऐसा क्लेशरूप भया सो मुनिरूप जो पर्वत ताकी समभावरूप गुफासूं क्रोधरूप केसरीसिंह निकसा जैसा आरक्त अशोक वृक्ष होय तैसे मुनिके आरक्त नेत्र भए, तेजकर आकाश संध्याके रंगसमान होय गया । कोपकर तप्तायमान जो मुनि ताके सर्व शरीरविषै पसेवकी बूंद प्रकट भई, फिर कालाग्नि समान प्रज्वलित अग्निपूतला निकसा सो धरती आकाश अग्निरूप होय गया, लोक हाहाकार करते मरणको प्राप्त भए । जैसे बांसनिका वन बले, तैसे देश भस्म होय गया, न राजा न अंतःपुर न पुर न ग्राम न पर्वत न नदी न वन न कोई

प्राणी कछु हू देशविषै न बचा । महाज्ञान वैराग्यके योगकर बहुत दिनानिविषै मुनिने समभावरूप जो धन उपार्जा हुता सो तत्काल क्रोधरूप रिपुने हरा, दंडक देशका दंडक राजा पापके प्रभावकर प्रलय भया अर देश प्रलय भया सो अब यह दंडकबन कहावे है। कैयक दिन तो यहां तृण भी न उपजा फिर घनेकालविषै मुनिनिका विहार भया तिनके प्रभावकर वृक्षादिक भए यह वन देवनिको हू भयंकर है, विद्याधरनिकी कहा बात ? सिंह व्याघ्र अष्टापदादि अनेक जीवानिसूं भरा अर नानाप्रकारके पक्षिनिकर शब्दरूप है अर अनेक प्रकारके धान्यसे पूर्ण है वह राजा दंडक महाप्रबल शक्तिका धारक हुता सो अपराधकर नरक तिर्यंचगतिविषै बहुत काल भ्रमणकर यह गृध पक्षी भया। अब याके पापकर्मकी निर्वृत्ति भई, हमको देख पूर्वभव स्मरण भया ऐसा जान जिन आज्ञा मान शरीर भोगसूं विरक्त होय धर्मविषै सावधान होना परजीवानिका जो दृष्टांत है सो अपनी शांतभावकी उत्पत्तिका कारण है । या पक्षीको अपनी विपरीत चेष्टा पूर्वभवकी याद आई है सो कंपायमान है, पक्षीपर दयालु होय मुनि कहते भए—

हे भव्य ! अब तू भय मत करहु जा समयविषै जैसी होनी होय सो होय, रुदन काहेको करे है, होनहारके मेटवे समर्थ कोऊ नाहीं। अब तू विश्रामको पाय सुखी होय पश्चाताप तज, देख कहां यह वन अर कहां सीतासहित श्रीरामका आवना अर कहां हमारा बनचर्याका अवग्रह जो वनविषै श्रावकके आहार मिलेगा तो लेवेंगे अर कहां तेरा हमको देख प्रतिबोध होना, कर्मनिकी गति विचित्र है । कर्मनिकी विचित्रताते जगतकी विचित्रता है। हमने जो अनुभया अर सुना देखा है सो कहे हैं। पक्षीके प्रतिबोधवेके अर्थ रामका अभिप्राय जान सुगुप्तिमुनि अपना अर गुप्तिमुनि दूजा दोनोंका वैराग्यका कारण कहते भए। एक वाराणसी नगरी तहां अचलनामा राजा विख्यात ताके राणी गिरदेवी गुणरूप रत्नानिकर शोभित ताके एक दिन त्रिगुप्तिनामा मुनि शुभ चेष्टाके धरनहारे आहारके अर्थ आए। सो राणीने

परम श्रद्धाकर तिनको विधिपूर्वक आहार दिया। जब निरंतराय आहार हो चुका तब राणीने मुनिको पूछा–हे नाथ! यह मेरा गृहवास सफल होयगा या नाहीं। भावार्थ–मेरे पुत्र होयगा या नाहीं, तब मुनि वचनगुप्तभेद याके संदेह निवारणेके अर्थ आज्ञा करी तेरे दोय पुत्र विवेकी होयगें सो हम दोय पुत्र त्रिगुप्ति मुनिकी आज्ञा भए पीछे भए तातैं सुगुप्ति अर गुप्ति हमारे नाम माता पिताने राखे सो हम दोनों राजकुमार लक्ष्मीकर मंडित सर्व कलाके पारगामी लोकनिके प्यारे नानाप्रकारकी क्रीडा कर रमते घरविषै तिष्ठे।

अथानन्तर एक और वृतांत भया गन्धवती नामा नगरी वहांके राजाका पुरोहित सोम ताके दोय पुत्र एक सुकेतु दूजा अग्निकेतु तिनविषै अति प्रीति सो सुकेतुका विवाह भया विवाहकर यह चिन्ता भई कि कबहूं या स्त्रीके योगकर हम दोनों भाईनिमें जुदायगी न होय बहुरि शुभकर्मके योगसे सुकेतु प्रति बोध होय अनन्तवीर्य स्वामीके समीप मुनि भया अर लहुरा भाई अग्निकेतु भाईके वियोगकर अत्यंत दुखी होय बाराणसीविषै उग्र तापस भया तब बडा भाई सुकेतु जो मुनि भया हुता सो छोटे भाई को तापस भया जान सम्बोधिबेके अर्थ आयवेका उद्यमी भया गुरुपै आज्ञा मांगी तब गुरुने कहा तू भाईको संबोधा चाहे है तो यह वृत्तान्त सुन तब याने कही हे नाथ! वृत्तान्त कहो? तब गुरु कही वह तुमसों मत पक्षका वाद करेगा अर तुम्हारे वादके समय एक कन्या गंगाके तीर तीन स्त्रिनि सहित आवेगी। गौर है वर्ण जाका नानाप्रकारके वस्त्र पहिरे दिनके पिछले पहिर आवेगी तो इन चिन्होंकर जान, तू भाई ते कहियो या कन्याके कहा शुभ अशुभ होनहार है सो कहो। तब वह विलषाहोय तोसे कहेगा मैंतो न जानूं तुम जानते हो तो कहो तब तू कहियो या पुर विषै एक प्रवर नामा श्रेष्ठी धनवन्त ताकी यह रुचिरा नामा पुत्री है सो आजसे तीसरे दिन मरणकर कम्बर ग्राममें विलास नामा कन्याके

पिताका मामा ताके छोरी होयगी ताहि ल्याला मारेगा सो मरकर गाडर होयगी वहुरि भैंस, भैंससे ताही विलासके वघरा नामा पुत्री होयगी यह वार्ता गुरुने कही तब सुकेतु सुनकर गुरुको प्रणामकर तापसिनके आश्रम आया जा भांति गुरु कही हुती ताही भांति तापससों कही अर ताही भांति भई वह विधुरा नामा विलासकी पुत्रीको प्रवरनामा श्रेष्ठी परणे लगा तव अग्निकेतु कही यह तेरी रुचिरा नामा पुत्री सो मरकर अजा गाडर भैंस होय तेरे मामाके पुत्री भई अब तू याहि परने सो उचित नाहीं अर विलासको भी सर्व वृतान्त कहा कन्याके पूर्व भव कहे सो सुनकर कन्याको जाति स्मरण भया कटुम्बसे मोह तज सर्व सभाको कहती भई यह प्रवर मेरा पूर्वभवका पिता है मो ऐसा कह आर्यिका भई अर अग्नि केतु तापस मुनि भया यह वृत्तान्त सुनकर हम दोनों भाईनिने महा वैराग्यरूप होय अनन्तवीर्य स्वामी के निकट जैनेन्द्रव्रत अंगीकार किये मोहके उदयकर प्राणिनिके भववनके भटकावने हारे अनेक अनाचर होय हैं सद्गुरुके प्रभावकर अनाचारका परिहार होय है संसार असार है, माता पिता बांधव मित्र स्त्री संतानादिक तथा सुख दुःखही विनश्वर हैं। ऐसा सुनकर पक्षी भव दुखसे भयभीत भया धर्म ग्रहणकी वांछाकर वारम्बार शब्द करता भया तब गुरु कही हे भद्र! भय मत करहु श्रावकके व्रत लेवो जाकर वहुरि दुखकी परम्परा न पावे अब तू शांतभाव धर किसी प्राणीको पीडा मत कर। अहिंसा व्रत धर मृषा वाणी तज सत्य व्रत आदर पर वस्तुका ग्रहण तज परदारा तज तथा सर्वथा ब्रह्मचर्य भज तृष्णा तज सन्तोष भज रात्री भोजनका परिहारकर अभक्ष आहारका परित्यागकर उत्तम चेष्टाका धारक हो अर त्रिकाल संध्याविषे जिनेन्द्रका ध्यान धर हे सुबुद्धि! उपवासादि तपकर नाना प्रकारके नियम अंगीकारकर प्रमाद रहित होय इंद्रियां जीत, साधुनिकी भक्तिकर देव अरहंत गुरु निर्ग्रंथ दया धर्मविषे निश्चय कर। या भांति मुनिने आज्ञाकरी तब पक्षी वारम्वार, नमस्कार कर मुनिके निकट श्रावकके व्रत धारता

भया सीताने जानी यह उत्तम श्रावक भया तब हर्षित होय अपने हाथसे बहुत लडाया । ताहि विश्वास उपजाय दोऊ मुनि कहते भये यह पक्षी तपस्वी शांत चित्त भया कहां जायगा गहन बनविषै अनेक क्रूर जीव हैं या सम्यग्दृष्टि पक्षीकी तुमने सदा रक्षाकरनी । यह गुरुके वचन सुन सीता पक्षीके पालिवेरूप है चित्त जाका अनुग्रहकर राखा । राजा जनककी पुत्री करकमलकर विश्वासती संती कैसी शोभती भई जैसे गरुडकी माता गरुडको पालती शोभे अर श्रीराम लक्ष्मण पक्षीको जिनधर्मी जान अतिधर्मानुराग करते भये अर मुनिनिकी स्तुतिकर नमस्कार करते भये । दोनों चारण मुनि आकाशके मार्ग गए सो जाते कैसे शोभते भये मानो धर्मरूप समुद्रकी कल्लोल ही हैं अर एक बनका हाथी मदोन्मत्त बनमें उपद्रव करता भया । ताको लक्ष्मण वशकर तापर चढ रामपै आए सो गजराज गिरिराज सारिखा ताहि देख राम प्रसन्न भए अर वह ज्ञानी पक्षी मुनिकी आज्ञा प्रमाण यथाविधि अणुव्रत पालता भया महा भाग्यके योगते राम लक्ष्मण सीताका ताने समीप पाया । इनके लार पृथिवीमें बिहारकरे यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं । हे राजन् ! धर्मका माहात्म्य देखो याही जन्मविषै वह विरूप पक्षी अद्भुत रूप होय गया प्रथम अवस्थाविषै अनेक मांसका आहारी दुर्गंध निंद्यपक्षी सुगन्धके भरे कंचन कलस समान महासुगन्ध सुन्दर शरीर होय गया, कहूं इक आग्निकी शिखासमान प्रकाशमान अर कहूं इक वैडूर्यमणि समान कहूं इक स्वर्ण समान कहूंइक हरितमणिकी प्रभाको धरे शोभता भया, राम लक्ष्मणके समीप वह सुन्दर पक्षी श्रावकके व्रत धार महास्वाद संयुक्त भोजन करता भया । महाभाग्य पक्षीके जो श्रीरामकी संगति पाई । रामके अनुग्रहते अनेक चर्चाधार दृढव्रती महाश्रद्धानी भया श्रीराम ताहि अति लडावें चन्दनकर चर्चित है अंग जाका स्वर्णकी किंकिणी कर मण्डित रत्नकी किरणानिकर शोभित है शरीर जाका, ताके शरीरमें रत्न हेमकर उपजी किरणनिकी जटा ताते याका नाम श्रीरामने जटायू धरा । राम

लक्ष्मण सीताको यह अति प्रिय, जीती है हंसकी चाल जाने महा सुन्दर मनोहर चेष्टाको धरे रामका मन मोहता भया, ताबनके और जे पक्षी वे देखकर आश्चर्यको प्राप्त भए। यह व्रती तीनों संध्याविषे सीता केसाथ भक्तिकर नम्रीभूत हुआ अरहन्त सिद्ध साधुनिकी बन्दना करे। महा दयावान् जानकी जटायू पक्षी पर अतिकृपाकर सावधान भई सदा याकी रक्षाकरे। कैसी है जानकी जिनधर्मते है अनुराग जाका वह पक्षी महा शुद्ध अमृत समान फल अर महा पवित्र सोधा अन्न निर्मल छाना जल इत्यादि शुभ वस्तु का आहार करता भया। जब जनककी पुत्री सीता ताल बजावे अर राम लक्ष्मण दोऊ भाई तालके अनुसार तान लावें तब यह जटायू पक्षी रविसमान है कांति जाकी परम हर्षित भया ताल अर तानके अनुसार नृत्यकरे॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषे जटायूका व्याख्यान वर्णन करनेवाला इकतालीसवां पर्व पूर्ण भया॥ ४१॥

अथानंतर पात्र दानके प्रभावकर राम लक्ष्मण सीता या लोकमें रत्नहेमादि सम्पदाकर युक्त भए। एक सुवर्णमई रत्नजडित अनेक रचना कर सुन्दर ताके मनोहर स्तंभ रमणीक वाड बीच विराजवेका सुन्दर स्थानक अर जाके मोतिनिकी माला लम्बे सुन्दर झालरी सुगन्ध चन्दन कपूरादि कर मंडित जामें सेज आसन वादित्र वस्त्र सर्व सुगंध कर पूरित ऐसा एक बिमान समान अद्भुत रथ बनाया जाके चार हाथी जुडें ताविषे बैठे राम लक्ष्मण सीता जटायू सहित रमणीक वनविषे विचरें, जिनको काहूका भय नाहीं, काहूकी घात नाही, काहू ठौर एक दिन काहू ठौर पंद्रह दिन काहू ठौर एक मास मनवांछित क्रीडा करें। यहां निवास करें अक यहां निवास करें, ऐसी है अभिलाषा जिनके, नवीन शिष्यकी इच्छा

की न्याईं इनकी इच्छा अनेक ठौर विचरती भई। महानिर्मल जे नीझरने तिनको निरखते ऊंची नीची जायगा टार समभूमि निरखते ऊंचे वृक्षनिको उलंघकर धीरे धीरे आगे गए, अपनी स्वेच्छा कर भ्रमण करते ये धीर वीर सिंह समान निर्भय दंडकवनके मध्य जाय प्राप्त भए। कैसा है वह स्थानक कायरनिकूं भयंकर जहां पर्वत विचित्र शिखिरके धारक जहां रमणीक नीझरने झरें। जहांते नदी निकसें जिनका मोतिनिके हार समान उज्ज्वल जल जहां अनेक वृक्ष बड पीपल, बहेडा पीलू सरसी बडे बडे सरल वृक्ष धवल वृक्ष कदंब तिलक जातिके वृक्ष लोंद वृक्ष अशोक जम्बूवृक्ष पाटल आम्र आंवला आमिली चम्पा कण्डीरशालि वृक्ष ताड वृक्ष प्रियंगू सप्तच्छद, तमाल नागवृक्ष नन्दीवृक्ष अर्जुन जातिके वृक्ष पलाश वृक्ष मलियागिरि चन्दन केसरि भोजवृक्ष हिंगोट वृक्ष काला अगर अर सुफेद अगर कुन्द वृक्ष पद्माक वृक्ष कुरंज वृक्ष पारिजात वृक्ष मिजन्यां केतकी केवडा महुवा कदली खैर मदनवृक्ष नींबू खजूर छुहारे चारोली नारंगी विजोरा दाडिम नारयल हरडें कैथ किरमाला विदारीकंद अगथिया करंज कटालीकूट अजमोद कौंच कंकोल मिर्च लवंग इलायची जायफल जावित्री चव्य चित्रक सुपारी तांबूलोंकी बेलि रक्तचन्दन बेत श्यामलता मीठासींगी हरिद्रा अरलू सहिजडा कुडा वृक्ष पद्माख पिस्ता मौलश्री बील-वृक्ष द्राक्षा बिदाम शाल्मलि इत्यादि अनेक जातिके वृक्ष तिनकर शोभित है अर स्वयमेव उपजे नाना प्रकारके धान्य अर महारसके भरे फल अर पौंडे सांठे इत्यादि अनेक वस्तुनिकर वह वन पूर्ण नाना प्रकारके वृक्ष नानाप्रकारकी बेल नाना प्रकारके फल फूल तिनकर वन अति सुन्दर मानो दूजा नन्दन वन ही है सो शीतल मन्द सुगन्ध पवन कर कोमल कपोल हालें, सो ऐसा सोहे मानों वह वन रामके आइबे कर हर्ष कर नृत्य करै है अर सुगन्ध पवन कर उठी जो पुष्पकी रज सो इनके अंगसे आय लगे सो मानों अटवी आलिंगन ही करे है अर भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानो श्रीरामके पधारने

कर प्रसन्न भया वन गान ही करे है, अर महा मनोज्ञ गिरीनिके नीझरानिके छांटेनिके उछरिवेके शब्द कर मानों हंसे ही है अर भेरुण्ड जातिके पक्षी तथा हंस सारिस कोयल मयूर सिचांड कुरुचि सूवा मैना कपोत भारद्वाज इत्यादि अनेक पक्षिनिके ऊंचे शब्द होय रहे हैं सो मानों श्रीराम लक्ष्मण सीताके आइवेका आदर ही करे हैं अर मानों वे पक्षी कोमल वाणीकर ऐसा वचन कहे हैं कि महाराज भले ही यहां आवो अर सरोवरनिविषै सफेद श्याम अरुण कमल फूल रहे हैं सो मानों श्रीरामके देखवेको कौतूहलते कमलरूप नेत्रनिकर देखनेको प्रवर्ते हैं अर फलनिके भारकर नम्रीभूत जो वृक्ष सो मानों रामको नमे हैं अर सुगन्ध पवन चाले है सो मानों वह वन रामके आयवेसे आनन्दके स्वांस लेय है, सो श्रीराम सुमेरुके सौमनस वन समान वनको देख कर जानकीसूं कहते भए—कैसी है जानकी फूले कमल समान हैं नेत्र जाके पति कहे है—हे प्रिये ! देखो यह वृक्ष बेलनिसूं लिपटे पुष्पनिके गुच्छानिकर मण्डित मानों गृहस्थ समान ही भासे हैं अर प्रियंगुकी वेल बौलसरीके वृक्षसूं लगी कैसी शोभे है जैसी जीव दया जिनधर्मसूं एकताको धरे सोहै, अर यह माधवीलता पवनकर चलायमान जे पल्लव तिन कर समीपके वृक्षनिकों स्पर्शें हैं जैसे विद्या विनयवानको स्पर्शे है अर हे पतिव्रते ! यह वनका हाथी मदकर आलसरूप हैं नेत्र जाके सो हथिनीके अनुरागका प्रेरा कमलनिके वनमें प्रवेश करे है जैसे अविद्या कहिये मिथ्यापरणति ताका प्रेरा अज्ञानी जीव विषयबासना विषै प्रवेश करे, कैसा है कमलनिका वन, विकसि रहे जे कमलदल तिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर हे दृढव्रते। यह इंद्रनीलमणि समान श्यामवर्ण सर्प विलतें निकसकर मयूरको देख भाग कर पीछे विलमें धुसे है जैसे विवेकसे काम भाग भववनमें छिपे अर देखो सिंह केसरी महा सिंह साहसरूप चरित्र इस पर्वतकी गुफामें तिष्ठा हुता सो अपने रथका नाद सुन निद्रा तज गुफाके द्वार आय निर्भय तिष्ठे है अर यह वघेरा क्रूर है मुख जाका गर्वका भरा

मांजरे नेत्रानिका धारक मस्तक पर धरी है पूंछ जाने नखनिकर वृक्षकी जडको कुचरे है अर मृगानिके समूह दूबके अंकुर तिनके चरिबेको चतुर अपने बालकनिको बीचकर मृगीनि सहित गमन करे हैं सो नेत्रनिकर दूरहीसे अवलोकन करते अपने तांई दयावन्त जान निर्भय भए बिचरे हैं। यह मृग मरण सू कायर सो पापी जीवनिके भयते अति सावधान हैं तुमको देख अति प्रीतिको प्राप्त भए विस्तीर्ण नेत्र कर बारम्बार देखे हैं। तुम्हारेसे नेत्र इनके नाहीं ताते आश्चर्यको प्राप्त भए हैं अर यह बनका शूकर अपनी दांतली कर भूमिको बिदारता गर्वका भरा चला जाय है लग रहा है कर्दम जाके अर हे गज गामिनी। या बन विषै अनेक जातिके गजानिकी घटा विचरे हैं सो तुम्हारीसी चाल तिनकी नाहीं ताते तिहारी चाल देख अनुरागी भए हैं अर ये चीते विचित्र अंग अनेक वर्ण कर शोभे हैं जैसे इन्द्र धनुष अनेक वर्ण कर सोहे है। हे कलानिधे ! यह बन अनेक अष्टापदादि क्रूर जीवनि कर भरा है अर अति सघन वृक्षानि कर भरा है अर नाना प्रकारके तृणानिकर पूर्ण है कहीं एक महा सुन्दर है जहां भय रहित मृगानिके समूह विचरे हैं। कहूं यक महा भयंकर अति गहन है जैसे महाराजनिका राज्य अति सुन्दर है तथापि दुष्टानिको भयंकर है अर कहीं इक महामदोन्मत्त गजराज वृक्षनिको उखाडे है जैसे मानी पुरुष धर्मरूप वृक्षको उखाडे है। कहूं इक नवीन वृक्षानिके महासुगंध समूह पर भ्रमर गुंजार करे हैं जैसे दातानिके निकट याचक आवें काहू ठौर बन लाल होय रहा है काहू ठौर श्वेत काहू ठौर पीत काहू ठौर हरित काहू ठौर श्याम काहू ठौर चंचल काहू ठौर निश्चल काहू ठौर शब्द सहित काहू ठौर शब्दरहित काहू ठौर गहन काहू ठौर विरले वृक्ष, काहू ठौर सुभग काहू ठौर दुर्भग काहू ठौर विरस काहू ठौर सुरस काहू ठौर सम काहू ठौर विषम काहू ठौर तरुण काहू ठौर वृक्षवृद्धि या भांति नाना विधि भासे है। यह दण्डक नामा बन विचित्र गति लिये है जैसे कामनिका प्रपंच विचित्र गति लिये है, हे जनक

सुता। जो जिन धर्मको प्राप्त भए हैं तेही या कर्म प्रपंच ते निवृत्त होय निर्वाणको प्राप्त होय हैं। जीव दया समान कोऊ धर्म नाहीं जो आप समान पर जीवनिको जान सर्व जीवनिकी दया करैं, तेई भव सागर सू तिरें। यह दण्डक नामा पर्वत जाके शिखर आकाशसों लगरहे हैं ताका नाम यह दण्डक वन कहिये है। या गिरिके ऊंचे शिखर हैं अर अनक धातुकर भरा है जहां अनेक रंगनि करि आकाश नाना रंग होय रहा है। पर्वतमें नाना प्रकारकी औषधी हैं केयक ऐसी जडी हैं जे दीपक समान प्रकाश रूप अंधकारको हरें तिनको पवनका भय नाही पवनमें प्रज्वलित, और या गिरि ते नीझरने झरे हैं जिनका सुन्दर शब्द होय है जिनके छांटोंकी बून्द मोतिनिकी प्रभाको धरे हैं या गिरिके स्थानक केयक उज्ज्वल केयक नील कई एक आरक्त दीखे हैं अर अत्यन्त सुन्दर हैं। सूर्यकी किरण गिरिके शिखर के वृक्षनिके अग्रभाग विषे आय पडे हैं अर पत्र पवनकरि चंचल हैं सो अत्यन्त सोहे हैं हे सुबुद्धि रूपिणि! या वन विषें कहूं इक वृक्ष फलनिके भार कर नम्रीभुत होय रहे हैं अर कहूं इक नाना रंगके जे पुष्प तेई भए पट तिनकर शोभित हैं अर कहूं इक मधुर शब्द बोलनहारे पक्षी तिनकरि शोभित हैं हे प्रिये! या पर्वत ते यह क्रौंचवा नदी जगत् प्रसिद्ध निकसी हैं जैसे जिनराजके मुखते जिनवाणी निकसे, या नदीका जल ऐसा मिष्ट है जैसी तेरी चेष्टा मिष्ट है, हे सुकेशी! या नदीमें पवन करि उठे हैं लहर अर किनारेके वृक्षनिके पुष्प जलमें पडे हैं सो अति शोभित हैं कैसी है नदी हंसानिके समूह अर झागनिके पटलनि करि अति उज्ज्वल है अर ऊंचे शब्दकर युक्त है जल जाका, कहूं इक महा विकट पाषाणनिके समूह तिनकर विषम है अर हजारा ग्राह मगर तिनकरि अति भयंकर है अर कहूं इक अति वेग कर चला आवे है जलका जो प्रवाह ताकर दुर्निवार है जैसे महा मुनिनिके तपकी चेष्टा दुर्निवार है, कहूं इक शीतल बहे है कहूं इक वेगरूप बहे है, कहूं इक काली शिला, कहूं इक श्वेत

शिला तिनकी कांतिकर जल नील श्वेत दुरंग होय रहा है, मानो हलधर हरिका स्वरूप ही है, कहूं इक रक्तशिलानिके किरणकी समूहकर नदी आरक्त होय रही है जैसे सूर्यके उदयकरि पूर्व दिशा आरक्त होय, अर कहूं इक हरितपाषाणके समूह कर जलविषै हरितता भासे है, सो सिवालकी शंका कर पक्षी पीछे होय जाय रहे हैं। हे कांते ! यहां कमलनिके समूहविषै मकरंदके लोभी भ्रमर निरन्तर भ्रमण करे हैं, अर मकरंदकी सुगंधताकर जल सुगंधमय होय रहा है, अर मकरंदके रंगानिकर जल सुरंग होय रहा है, परंतु तिहारे शरीरकी सुगंधता समान मकरंदकी सुगंधि नाहीं, अर तिहारे रंग समान मकरंदका रंग नाहीं, मानो तुम कमलबदनी कहावो हो। सो तिहारे मुखकी सुगंधताहीसे कमल सुगंधित है अर ये भ्रमर कमलनिको तज तिहारे मुखकमल पर गुंजार कर रहे हैं अर या नदीका जल काहू ठौर पाताल समान गम्भीर है मानों तिहारे मनकीसी गम्भीरताको धरे है अर कहूं इक नीलकमलनिकर तिहारे नेत्रनिकी छायाको धरे है अर यहां अनेक प्रकारके पक्षिनिके समूह नानाप्रकार क्रीडा करे हैं, जैसे राजपुत्र अनेक प्रकारकी क्रीडा करें। हे प्राणप्रिये ! या नदीके पुलनिकी बालू रेत अति सुन्दर शोभित है जहां स्त्री सहित खग कहिये विद्याधर अथवा खग कहिये पक्षी आनंदकरि विचरे हैं। हे अखंडव्रते ! यह नदी अनेक विलासनिको धरे समुद्रकी ओर चली जाय है जैसे उत्तम शीलकी धरणहारी राजानिकी कन्या भरतारके परणवेको जांय कैसे हैं भरतार ? महामनोहर प्रसिद्ध गुणके समूहको धरे शुभ चेष्टा कर युक्त जगतविषै विख्यात हैं। हे दयारूपिनी ! इस नदीके किनारेके वृक्ष फल फूलानिकर युक्त नानाप्रकार पक्षिनिकर मंडित जलकी भरी कारीघटा समान सघन शोभाको धरे हैं, या भांति श्रीरामचन्द्रजी अति स्नेहके भरे वचन जनकसुतासूं कहते भए, परम विचित्र अर्थको धरे तब वह पतिव्रता अति हर्षके समूह करि भरी पतिसूं प्रसन्न भई, परम आदरसूं कहती भई।

हे करुणानिधे ! यह नदी निर्मल है जल जाका रमणीक हैं तरंग जाविषे हंसादिक पक्षिनिके समूह कर सुन्दर है परन्तु जैसा तिहारा चित्त निर्मल है तैसा नदीका जल निर्मल नाहीं अर जैसे तुम सघन अर सुगंध हो तैसा वन नाहीं अर जैसे तुम उच्च अर स्थिर हो तैसा गिरि नाहीं अर जिनका मन तुममें अनुरागी भया है तिनका मन और ठौर जाय नाहीं, या भांति राजसुताके अनेक शुभ वचन श्रीराम भाई सहित सुनकर अतिप्रसन्न होय याकी प्रशंसा करते भए। कैसे हैं राम ? रघुवंश रूप आकाशविषे चंद्रमा समान उद्योतकारी हैं नदीके तटपर मनोहर स्थल देख हाथिनिके रथसे उतरे, लक्ष्मण प्रथम ही नानास्वादको धरे सुन्दर मिष्टफल लाया अर सुगंध पुष्प लाया बहुरि राम सहित जल क्रीडाका अनुरागी भया, कैसा है लक्ष्मण गुणनिकी खान है मन जाका, जैसी जलक्रीडा इंद्र नागेंद्र चक्रवर्ती करें, तैसी राम लक्ष्मणने करी, मानों वह नदी श्रीरामरूप कामदेवको देख रतिसमान मनोहररूप धारती भई। कैसी है नदी लहलहाट करती जे लहर तिनकी माला कहिए पंक्ति ताकरि मर्दित किये हैं श्वेत श्याम कमलनिके पत्र जाने अर उठे हैं झाग जामें भ्रमररूप हैं चूडा जाके पक्षिनिके जे शब्द तिनकर मानों मिष्ट शब्द करे है वचनालाप करे है। राम जलक्रीडाकर कमलनिके वनविषे छिप रहे बहुरि शीघ्र ही आए। जनकसुतासे जलकेलि करते भए। इनकी चेष्टा देख वनके तिर्यंच हू और तरफसे मन रोक एकाग्र चित्त होय इनकी ओर निरखते भए ! कैसे हैं दोऊ वीर कठोरतासे रहित है मन जिनका अर मनोहर है चेष्टा जिनकी सीता गान करती भई। सो गानके अनुसार रामचन्द्र ताल देते भए। मृदंगनिकरि अति सुंदर राम जलक्रीडाविषे आसक्त अर लक्ष्मण चौगिरदा फिरे कैसा है लक्ष्मण भाईके गुणनिविषे आसक्त है बुद्धि जाकी, राम अपनी इच्छा प्रमाण जलक्रीडाकर समीपके मृगनिको आनंद उपजाय जलक्रीडाते निवृत्त भए महा प्रसन्न जे वनके मिष्टफल तिनकर क्षुधा निवारण कर लतामंडपविषे तिष्ठे। जहां सूर्यका

आताप नाहीं, ये देवनि सारिखे सुन्दर नानाप्रकारकी सुन्दर कथा करते भए । सीता सहित अति आनन्दसे तिष्ठे । कैसी है सीता जटायुके मस्तकपर हाथ है जाका तहां राम; लक्ष्मणसूं कहे हैं—हे भ्रात ! यह नानाप्रकारके वृक्ष स्वादु फलकर संयुक्त अर नदी निर्मल जलकी भरी अर जहां लतानिके मण्डप अर यह दंडकनामा गिरि अनेक रत्ननिसे पूर्ण यहां अनेक स्थानक क्रीडा करनेके हैं तातैं या गिरिके निकट एक सुन्दर नगर बसावैं अर यह वन अत्यन्त मनोहर औरनिते अगोचर, यहां निवास हर्षका कारण है । यहां स्थानककर हे भाई ! तू दोऊ मातानिके लायबेको जाहु वे अत्यन्त शोकवंती हैं सो शीघ्र ही लावहु अथवा तू यहां रह अर सीता तथा जटायु भी यहां रहैं, मैं मातानिके ल्यायबेको जाऊंगा । तब लक्ष्मण हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया । जो आपकी आज्ञा होयगी सो होयगा, तब राम कहते भए । अब तो वर्षा ऋतु आई अर ग्रीषम ऋतु गई, यह वर्षाऋतु अति भयंकर है जाविषे समुद्र समान गाजते मेघघटानिके समूह विचरे हैं चालते अंजनगिरि समान, दशों दिशाविषे श्यामता होय रही है । बिजुरी चमके है, बगुलानिकी पंक्ति विचरे है अर निरंतर वादलनिके जल वरसे हैं जैसे भगवानके जन्म कल्याणकविषे देव रत्नधारा वरसावैं अर देख हे भ्राता ! यह श्याम घटा तेरे रंग समान सुन्दर जलकी बूंद बरसावे हैं जैसे तू दानकी धारा बरसावे । ये वादर आकाशविषे विचरते बिजुरीके चमत्कारकर युक्त बडे बडे गिरिनिको अपनी धाराकर आछादते संते ध्वनि करते संते कैसे सोहे हैं जैसे तुम पीतवस्त्र पहिरे अनेक राजानिको आज्ञा करते पृथिवीको कृपादृष्टिरूप अमृतकी वृष्टिकरि सींचते सोहो । हे वीर ! ये केयक बादर पवनके वेगसे आकाशविषे भ्रमें हैं जैसे यौवन अवस्थाविषे असंयमियोंका मन विषय बासनाविषे भ्रमे, अर यह मेघ नाजके खेत छोड वृथा पर्वतकेविषे बरसे हैं जैसे कोई द्रव्यवान पात्रदान अर करुणादान तज वेश्यादिक कुमार्गविषे धन खोवे, हे लक्ष्मण ! या वर्षाऋतुविषे अतिवेगसूं नदी बहे

है अर धरती कीचसूं भर रही है अर प्रचंड पवन बाजे है भूमिविषै हरितकाय फैल रही है अर त्रसजीव विशेषतासे हैं या समयविषै विवेकिनिका विहार नाहीं । ऐसे वचन श्रीरामचन्द्रके सुनकर सुमित्राका नन्दन लक्ष्मण बोला—हे नाथ ! जो आप आज्ञा करोगे सो ही मैं करूंगा । ऐसी सुन्दर कथा करते दोऊ वीर महाधीर सुन्दर स्थानकविषै सुखसे वर्षाकाल पूर्ण करते भए । कैसा है वर्षाकाल ? जासमय सूर्य नाहीं दीखे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं दंडकवनविषै निवास वर्णन करनेवाला बियालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४२ ॥

अथानन्तर वर्षाऋतु व्यतीत भई शरदऋतुका आगमन भया मानों यह शरदऋतु चंद्रमाकी किरण रूप बांणनिकरि वर्षारूप बैरीको जीत पृथिवीविषै अपना प्रताप विस्तारती भई दिशारूप जे स्त्री सो फूल रहे हैं फूल जिनके ऐसे वृक्षनिकी सुगन्धताकर सुगन्धित भई है अर वर्षा समयविषै कारी घटानिकर जो आकाश श्याम हुता सो अब चंद्रकांतिकर उज्वल शोभता भया मानों क्षीरसागरके जल करि धोया है अर बिजलीरूप स्वर्ण सांकलकर युक्त वर्षाकालरूपी गज पृथिवीरूप लक्ष्मीको स्नान कराय कहां जाता रहा अर शरदके योगते कमल फूले तिनपर भ्रमर गुंजार करते भए, हंस क्रीडा करते भए अर नदीनिके जल निर्मल होय गए दोऊ किनारे महा सुंदर भासते भए मानों शरदकाल रूप नायिकको पाय सरितारूप कामिनी कांतिको प्राप्त भई है अर बन वर्षा अर पवनकर छूटे कैसे शोभते भए मानो निद्राकरि रहित जाग्रत दशाको प्राप्त भए हैं । सरोवरनिविषै सरोजनिनिपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर बनविषै वृक्षनिविषै पक्षी नादकरे हैं सो मानो परस्पर वार्ता ही करे हैं अर रजनीरूप नायिका नाना

प्रकारके पुष्पानिकी सुगन्धताकर सुगन्धित निर्मल आकाशरूप वस्त्र पहरे चंद्रमारूप तिलक धरें मानों शरदकालरूप नायकपै जाय है। अर कामीजनानिको काम उपजावती केतकीके पुष्पनिकी रजकर सुगन्ध पवन चले हैं या भांति शरदऋतु प्रवरती सो लक्ष्मण बडे भाईकी आज्ञा मांग सिंहसमान महा पराक्रमी वन देखनेको अकेला निकला सो आगे गए एक सुगन्धपवन आई तब लक्ष्मण बिचारते भए यह सुगन्ध काहेकी है ऐसी अद्भुत सुगन्ध वृक्षनिकी न होय अथवा मेरे शरीरकी हू ऐसी सुगन्ध नाहीं यह सीताजीके अंगकी सुगन्ध होय तथा रामजीके अंगकी सुगंध होय तथा कोऊ देव आया होय ऐसा सन्देह लक्ष्मणको उपजा सो यह कथा राजा श्रेणिक सुन गौतम स्वामी सूं पूछता भया हे प्रभो ! जो सुगन्धकर बासुदेवको आश्चर्य उपजा सो वह सुगन्ध काहेकी ? तब गौतम गणधर कहते भए कैसे हैं गौतम। संदेहरूप तिमिर दूर करनेको सूर्य हैं। सर्वलोककी चेष्टाको जाने हैं पापरूप रजके उडावनेको पवन हैं गौतम कहे हैं—हे श्रेणिक द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ तिनके समोशरणमें मेघवाहन विद्याधर रावण का बडा, शरणे आया ताहि राक्षसनिके इंद्र महाभीमने त्रिकूटाचल पर्वतके समीप राक्षसद्वीप तहां लंका नामा नगरी सो कृपाकर दई अर यह रहस्यकी बात कही हे विद्याधर ! सुनहु भरत क्षेत्रके दक्षिणदिशाकी तरफ लवण समुद्रके उत्तरकी ओर पृथिवीके उदर विषै एक अलंकारोदय नामा नगर है सो अद्भुत स्थानक है अर नानाप्रकार रत्ननिकी किरणनिकरि मंडित है। देवनिको भी अश्चर्य उपजावे तो मनुष्यनिकी कहा बात, भूमिगोचरिनिको तो अगम्य ही है अर विद्याधरको भी अतिविषम है चितवनविषै न आवे सर्व गुणनिकरि पूर्ण है। जहां मणिनिके मंदिर हैं, परचक्रते आगोचर है सो कदाचित तुमको अथवा तेरे सन्तानके राजानिको लंकाविषै परचक्रका भय उपजे तो अलंकारोदयपुरीविषे निर्भय भए तिष्ठियो याहि पाताललंका कहे हैं ऐसा कहकर महाभीम बुद्धिमान राक्षसनिके इंद्रने अनुग्रहकर रावणके बडेनिको

लंका अर पाताललंका दई अर राक्षस द्वीप दिया सो यहां इनके बंशमें अनेक राजा भए। बडे २ विवेकी व्रतधारी भए सो रावणके बडे विद्याधर कुल विषै उपजे हैं देव नाही, विद्याधर अर देवनिविषै भेद है जैसे तिलक अर पर्वत कर्दम अर चन्दन पाषाण अर रत्ननिविषै बडा भेद, देवानिकी शक्ति बडी कांति बडी अर विद्याधर तो मनुष्य हैं क्षत्री वैश्य शूद्र यह तीन कुल हैं। गर्भवासके खेद भुगते हैं विद्या साधनकर आकाशविषै विचरे हैं सो अढाई द्वीप पर्यंत गमन करे हैं अर देव गर्भवाससे उपजे नाहीं, महासुन्दर स्वरूप पवित्र धातु उपधातुकर रहित आंखानिकी पलक लगे नहीं, सदा जाग्रत जरारोग रहित नवयौवन तेजस्वी उदार सौभाग्यवंत महासुखी स्वभावहीते विद्यावंत अवधिनेत्र, चाहें जैसा रूप करें, स्वेछाचारी देव विद्याधरनिका कहा सम्बंध । हे श्रेणिक ! ये लंकाके विद्याधर राक्षस द्वीपविषै बसे, तातैं राक्षस कहाए। ये मनुष्य क्षत्रीवंश विद्याधर हैं देव हू नाहीं, राक्षस हू नाहीं, इनके बंशविषै लंकाविषै अजितनाथके समयते लेकर मुनिसुव्रतनाथके समय पर्यंत अनेक सहस्र राजा प्रशंसा करने योग्य भए। कई सिद्ध भए, कई सर्वार्थसिद्ध गए, कई स्वर्गविषै देव भए, कई एक पापी नरक गए, अब ता बंशविषै तीन खंडका अधिपति जो रावण सो राज्य करे है ताकी बहिन चन्द्रनखा रूपकरि अनूपम सो महा पराक्रमवंत खरदूषणने परणी, वह चौदह हजार राजानिका शिरोमणि रावणकी सेनामें मुख्य सो दिग्पाल समान अलंकारपुर जो पातालालंका वहां थाने रहे है, ताके संबूक अर सुन्दर ये दो पुत्र रावणके भानजे पृथिवीविषै अतिमान्य भए। सो गौतमस्वामी कहे हैं। हे श्रेणिक ! माता पिताने संबूकको बहुत मने किया। तथापि कालका प्रेरा सूर्यहास खड्ग साधिवेके अर्थ महाभयानक वनविषै प्रवेश करता भया, शास्त्रोक्त आचारको आचरता संता सूर्यहास खड्गके साधिवेको उद्यमी भया। एक ही अन्नका आहारी, ब्रह्मचारी जितेंद्रिय विद्या साधिवेको बांसके बीडेमें यह कहकर बैठा, कि जब मेरा पूर्ण साधन होयगा, तब ही मैं

बाहिर आऊंगा, ता पहिली कोई बीडेमें आवेगा अर मेरी दृष्टि पडेगा तो ताहि मैं मारूंगा। ऐसा कह कर एकांत बैठा, सो कहां बैठा दंडक वनमें क्रोचवा नदीके उत्तर तीर बांसके बीडेमें बैठा, बारहवर्ष साधन किया, खड्ग प्रकट भया। सो सातदिनविषै यह न लेय तो खड्ग परके हाथ जाय अर यह मारा जाय, सो चन्द्रनखा निरंतर पुत्रके निकट भोजन लेय आवती सो खड्ग देख प्रसन्न भई अर पतिसूं जाय कही कि संबुकको सूर्यहास सिद्ध भया अब मेरा पुत्र मेरुकी तीन प्रदक्षणाकर आवेगा, सो यह तो ऐसे मनोरथ करे अर ता वनविषै भ्रमता लक्ष्मण आया। हजारो देवनिकरि रक्षायोग्य खड्ग स्वभाव सुगन्ध अद्भुत रत्न सो गौतम कहे हैं। हे श्रेणिक! वह देवोपुनीत खड्ग महासुगंध दिव्य गंधादिककर लिप्त कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी माला तिनकरि युक्त सो सूर्यहास खड्गकी सुगंध लक्ष्मणको आई, लक्ष्मण आश्चर्यको प्राप्त भया और कार्य तज सीधा शीघ्र ही बांसकी ओर आया, सिंहसमान निर्भय देखता भया। वृक्षनिकरि आच्छादित महाविषम स्थल जहां बेलानिके समूह अनेक जाल ऊंचे पाषाण तहां मध्यमें समभूमि सुन्दर क्षेत्र श्रीविचित्ररथमुनिका निर्वाण क्षेत्र सुवर्णके कमलनिकरि पूरित ताके मध्य एक बांसनिका बीडा ताके ऊपर खडग आय रहा है सो ताकी किरणके समूहकरि बांसनिका बीडा प्रकाशरूप होय रहा है। सो लक्ष्मणने आश्चर्यको पाय निसंक होय खड्ग लिया अर ताकी तीक्ष्णता जाननेके अर्थ बांसके बीडापर वाहिया सो संबूक सहित बांसका बीडा कट गया अर खड्गके रक्षक सहस्रों देव लक्ष्मणके हाथविषै खड्ग आया जान कहते भए तुम हमारे स्वामी हो ऐसा कह नमस्कार कर पूजते भए।

अथानन्तर लक्ष्मणको बहुत बेर लगी जान रामचन्द्र—सीतासूं कहते भए; लक्ष्मण कहां गया हे भद्र! जटायू तू उडकर देख लक्ष्मण आवे है। तब सीता बोली हे नाथ। वह लक्ष्मण आया केसरकर चरचा

है अंग जाका नाना प्रकारकी माला अर सुन्दर वस्त्र पहिरे अर एक खडग अद्भुत लिये ओवे है सो खडग सूं ऐसा सोहे है जैसा केसरी सिंहसूं पर्वत शोभे तब रामने आश्चर्यको प्राप्त भया है मन जिनका अति हर्षित होय लक्ष्मणको उठकर उर से लगाय लिया, सकल वृतान्त पूछा । तब लक्ष्मण सर्व बात कही आप भाई सहित सुखसे विराजे नाना प्रकारकी कथा करें अर संबूककी माता चन्द्रनखा प्रतिदिन एकही अन्न भोजन लावती हुती सो आगे आय कर देखे तो बांसका बीडा कटा पडा है, तब बिचारती भई जो मेरे पुत्रने भला न किया, जहां इतने दिन रहा अर विद्यासिद्धि भई ताही बीडे को काटा सो योग्य नाहीं अब अटवी छोड कहां गया इत उत देखे तो अस्त होता जो सूर्य ताके मंडल समान कुण्डल सहित सिर पडा है, देखकर ताहि मूर्छा आय गई सो मूर्छा याका परम उपकार किया नातर पुत्रके मरण करि यह कहां जावे ,बहुरि केतीक बेरमें याहि चेत भया तब हाहाकार कर उठी । पुत्रका कटा मस्तक देख शोक कर अतिविलाप किया, नेत्र आसुनि सूं भर गए, अकेली वनमें कुरचीकीन्याई पुकारती भई—हा पुत्र । बारह वर्ष अर चार दिन यहां व्यतीत भए तैसे तीन दिन और हू क्यों न निकस गए । तोहि मरण कहां ते आया हाय पापी काल तेरा मैं कहा बिगाडा जो नेत्रानेका निधि पुत्र मेरा तत्काल विनाशा, मैं पापिनी परभवमें काहुको बालक हता सों मेरा बालक हतागया, हे पुत्र ! आर्तिका मेटनहारा एक बचन तो मुखसूं कह, हे बत्स ! आ अपना मनोहर रूप मोहि दिखा ऐसा माया रूप अमंगल क्रीडा करना तोहि उचित नाहीं । अबतक तैं माताकी आज्ञा कबहू न लोपी अब निःकारण यह बिनयलोप कार्य करना तोहि योग्य नाहीं इत्यादिक विकल्पकर विचारती भई निःसंदेह मेरा पुत्र परलोकको प्राप्त भया विचारा कुछ और ही हुता अर भया कुछ और ही, यह बात विचारमें नहुती सो भई । हे पुत्र ! जो तू जीवता अर सूर्यहास खड्ग सिद्ध होता तो जैसे चन्द्रहासके धारक

रावणके सन्मुख कोऊ नाहीं आय सके हैं तैसे तेरे सन्मुख कोऊ न आय सकता. मानों चन्द्रहास मेरे भाईके हाथमें स्थानक किया सो अपना विरोधी सूर्यहास ताहि तेरे हाथमें न देख सका, भयानक वनमें अकेला निर्दोष नियमका धारी ताहि मारनेको जाके हाथ चले, सो ऐसा पापी खोटा बैरी कौन है? जा दुष्टने तोहि हत्या अब वह कहां जीवता जायगा । या भांति विलाप करती पुत्रका मस्तक गोदमें लेय चूमती भई, मूंगासमान आरक्त हैं नेत्र जाके, बहुरि शोक तज क्रोधरूप होय शत्रुके मारनेको दौडी, सो चली चली तहां आई, जहां दोऊ भाई विराजे हुते, दोऊ महारूपवान मनमोहिवेके कारण तिनको देख याका प्रबल क्रोध जाता रहा, तत्काल राग उपजा मनविषै चितवती भई, इन दोऊनिमें जो मोहि इच्छे ताहि मैं सेवूं, यह विचार तत्काल कामातुर भई, जैसे कमलनिके वनविषै हंसनी मोहित होय अर महा ह्रदविषै भैंस अनुरागिनी होय अर हरे धानके खेतविषै हरिणी अभिलाषिणी होय तैसे इनविषै यह आसक्त भई, सो एक पुन्नागवृक्षके नीचे बैठी रुदन करे अतिदीन शब्द उचारे वनकी रजकर धूसरा होय रहा है अंग जाका ताहि देखकर रामकी रमणी सीता अति दयालुचित्त ऊठकर ताके समीप आय कहती भई । तू शोक मतकर हाथ पकड ताहि शुभ वचन कह धीर्य बंधाय रामके निकट लाई, तब राम ताहि कहते भए । तू कौन है? यह दुष्ट जीवनिका भरा वन ताविषै अकेली क्यों विचरे है? तब वह कमल सरिखे हैं नेत्र जाके अर भ्रमरकी गुंजार समान हैं वचन जाके सो कहती भई—हे पुरुषोत्तम ! मेरी माता तो मरणको प्राप्त भई, सो मोको गम्य नाहीं मैं बालक हुती, बहुरि ताके शोककर पिता भी परलोक गया । सो मैं पूर्वले पापते कुटुंब रहित दंडक वनविषै आई, मेरे मरणकी अभिलाषा सो या भयानक वनमें काहू दुष्ट जीवने न भषी, बहुत दिननिते या वनविषै भटक रही हूं, आज मेरे कोऊ पापकर्मका नाश भया सो आपका दर्शन भया । अब मेरे प्राण न छूटें, ता पहिले मोहि कृपाकर इच्छहु, जो कन्या कुलवंती शील-

वंती होय ताहि कौन न इच्छे सब ही इच्छें, यह याके लज्जारहित वचन सुनकर दोऊ भाई नरोत्तम परस्पर अवलोकन कर मौनसे तिष्ठे । कैसे हैं दोऊ भाई, सर्व शास्त्रनिके अर्थका जो ज्ञान सोई भया जल ताकरि धोया है मन जिनका कृत्य अकृत्यके विवेकविषै प्रवीण, तब वह इनका चित्त निष्काम जान निश्वास नाख कहती भई, मैं जावूं तब राम लक्ष्मण बोले जो तेरी इच्छा होय सो कर, तब वह चली गई ताके गए पीछे राम लक्ष्मण सीता आश्चर्यको प्राप्त भए अर यह क्रोधायमान होय शीघ्र पतिके समीप गई अर लक्ष्मण मनमें विचारता भया जो यह कौनकी पुत्री कौन देशविषै उपजी समूहसे विछुरी मृगी समान यहां कहांसूं आई । हे श्रेणिक ! यह कार्य कर्तव्य यह न कर्तव्य याका पारिपाक शुभ वा अशुभ ऐसा विचार अविवेकी न जानें । अज्ञानरूप तिमिरकरि आछादित है बुद्धि जिनकी अर प्रवीण बुद्धि महाविवेकी अविवेकते रहित हैं सो या लोकविषै ज्ञानरूप सूर्यके प्रकाशकर योग्य अयोग्यको जान अयोग्यके त्यागी होय योग्य क्रियाविषैं प्रवृत्ते हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै शंबुका बध वर्णन करनेवाला तेतालीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ४३ ॥

अथानन्तर जैसे ह्रदका तट फूट जाय अर जलका प्रवाह विस्तारको प्राप्त होय तैसे खरदूषणकी स्त्रीका राम लक्ष्मणसे राग उपजा हुता सो उनकी अबांछाते विध्वंस भया । तब शोकका प्रवाह प्रकट भया, अतिव्याकुल होय नानाप्रकार विलाप करती भई, अरतिरूप अग्निकर तप्तायमान है अंग जाका, जैसे बछडे विना गाय विलाप करे, तैसे शोक करती भई झरे हैं नेत्रानिके आंसू जाके सो विलाप करती पति देखी, नष्ट भया है धीर्य जाका अर धूरकर धूसरा है अंग जाका विखर रहे हैं केशानिके समूह जाके

अर शिथिल होय रही है कटी मेखला जाकी अर नखनिकरि विदारे गये हैं वक्षस्थल कुच अर जंघा जाकी सो रुधिरसे आरक्त हैं अर आवरण रहित लावण्यता रहित अर फट गई है चोली जाकी जैसे माते हाथीने कमलनीको दलमली होय तैसी याहि देख पति धीर्य बन्धाय पूछता भया हे कांते! कौन दुष्टने तोहि ऐसी अवस्थाको प्राप्तकरी सो कहो वह कौन है जाहि आज आठवां चंद्रमा है अथवा मरण ताके निकट आया है। वह मूढ पहाडके शिखरपर चढ सोवे है, सूर्यसे क्रीडाकर अंधकूपमें पडे है। दैव तासूं रूसा है, मेरी क्रोधरूप अग्निमें पतंगकी नांई पडेगा। धिक्कार ता पापी अविवेकीको वह पशुसमान अपवित्र अनीती यह लोक परलोक भ्रष्टे जाने तोहि दुखाई, तू बडवानलकी शिखा समान है। रुदन मत कर और स्त्रिनि सारखी तू नाहीं। बडे बंशकी पुत्री बडे घर परणी आई है। अबही ता दुराचारीको हस्त तलते हण परलोकको प्राप्त करूंगा जैसे सिंह उनमत्तहाथीको हणें या भांति जब पतिने कही तब चंद्रनखा महा कष्ट थकी रुदन तज गद गद वाणी सूं कहती भई अलखनिकर आछादित हैं कपोल जाके, हे नाथ! मैं पुत्रके देखनेको बनविषे नित्य जाती हुती सो आज पुत्रका मस्तक कटा भूमिमें पडा देखा अर रुधिरकी धाराकर बांसोंका बीडा आरक्त देखा काहू पापीने मेरे पुत्रको मार खडग रत्न लिया कैसा है खडग देवनिकर सेवने योग्य, सो मैं अनेक दुखनिका भाजन भाग्य रहित पुत्रका मस्तक गोदमें लेय विलाप करती भई सो जा पापीने संबूकको मारा हुता ताने मोसे अनीति विचारी, भुजानिकरि पकडी, मैं कही मोहि छांड सो पापी नीचकुली छाडे नाही नखनिकरि दांतानिकरि विदारी निर्जन बनविषे मैं अकेली वह बलवान पुरुष; मैं अबला तथापि पूर्व पुण्यसे शील बचाय महाकष्टते मैं यहां आई सर्व विद्याधरनिका स्वामी तीनखण्डका अधिपति तीनलोकविषे प्रासिद्ध रावण काहूसे न जीता जाय सो मेरा भाई अर तुम खरदूषण नामा महाराज दैत्यजातिके जे विद्याधर तिनके अधिपति मेरे भरतार तथापि

में दैवयोगते या अवस्थाको प्राप्त भई। ऐसे चन्द्रनखाके बचन सुन महा क्रोधकर तत्काल जहां पुत्रका शरीर मृतक पडा हुता तहां गया सो मूवा देखकर अति खेद खिन्न भया पूर्व अवस्थाविषे पुत्र पूर्णमासी के चन्द्रमा समान हुता सो महा भयानक भासता भया। खरदूषणने अपने घर आय अपने कुटम्बसे मन्त्र किया तब कैएक मंत्री कर्कशचित्त हुते वे कहते भये हे देव! जाने खडग रत्न लिया अर पुत्र हता ताहि जो ढीला छोडोगे तो न जानिये कहा करै, सो ताका शीघ्र यत्न करहु अर कैएक विवेकी कहते भए हे नाथ! यह लघुकार्य नाही सर्व सामन्त एकत्र करहु अर रावणपै हू पत्र पठावहु जिनके हाथ सूर्यहास खडग आया ते समान पुरुष नाहीं ताते सर्व सामंत एकत्रकर जो विचार करना होय सो करहु, शीघ्रता न करो, तब रावणके निकट तो तत्काल दूत पठाया, दूत शीघ्रगामी अर तरुण सो तत्काल रावणपै गया रावणका उत्तर पीछा आवे ताके पाहिले खरदूषण अपने पुत्रके मरणकर महा द्वेषका भरा सामन्तानिसूं कहता भया, वे रंक विद्यावल रहित भूमिगोचरी हमारी विद्याधरानिकी सेनारूप समुद्रके तिरनेको समर्थ नाहीं। धिक्कार हमारे सूरापनको जो और का सहारा चाहें हैं हमारी भुजा हैं वही सहाई हैं अर दूजा कौन ऐसा कहकर महा अभिमानको धरे शीघ्रही मन्दिर सूं निकसा आकाश मार्ग गमन किया तेजरूप है मुख जाका सो ताहि सर्वथा युद्धको सन्मुख जान चोदह हजार राजा संग चाले, सो दण्डक वनमें आए तिनकी सेनाके वादित्रनिके शब्द समुद्रके शब्द समान सीता सुनकर भयको प्राप्त भई। हे नाथ! कहा है, कहा है, ऐसे शब्द कह पतिके अंग सूं लगी जैसे कल्प बेल कल्पवृक्ष सूं लगे तब आप कहते भए हे प्रिये! भय मतकर याहि धीर्य बंधाय विचारते भए यह दुर्धर शब्द सिंहका है अक मेघका अक समुद्र का है अक दुष्ट पक्षिनिका है अक आकाश पूरगया है? तब सीतासूं कहते भये हे प्रिये! ये दुष्टपक्षी हैं जे मनुष्य अर पशुनिको लेजाए हैं धनुषके टंकारते इनै भगाऊं हूं इतनेहीमें शत्रूकी सेना निकट आई

नाना प्रकारके आयुधनिकर युक्त सुभट दृष्टिपरे, जैसे पवनके प्रेरे मेघघटानिके समूह विचरें तैसे विद्याधर विचरते भए । तब श्रीराम विचारी ये नन्दीश्वर द्वीपको भगवानकी पूजाके अर्थ देव जाय हैं। अथवा बांसनिके बीडेमें काहू मनुष्यको हतकर लक्ष्मण खड्ग रत्न लाया अर वह कन्या बन आई हुती सो कुशील स्त्री हुती ताने ये अपने कुटंबके सामंत प्रेरे हैं । तातैं अब परसेना समीप आए निश्चिंत रहना उचित नाहीं, धनुषकी ओर दृष्टि धरी अर बक्तर पहिरनेकी तैयारी करी तब लक्ष्मण हाथ जोड सिर निवाय विनती करता भया । हे देव ! मोहि तिष्ठते आपको एता परिश्रम करना उचित नाहीं। आप राजपुत्रीकी रक्षा करहु मैं शत्रुनिके सन्मुख जाऊं हूं । सो जो कदाचित भीड पडेगी तो मैं सिंहनाद करूंगा, तब आप मेरी सहाय करियो । ऐसा काहिकर बक्तर पहर शस्त्रधार लक्ष्मण शत्रुनिके संमुख युद्धको चला सो वे विद्याधर लक्ष्मणको उत्तम आकारका धारनहारा वीराधिवीर श्रेष्ठ पुरुष देख जैसे मेघ पर्वतको बेढे तैसे बेढते भए । शक्ति मुदगर सामान्य चक्र बरछी वाण इत्यादि शस्त्रनिकी वर्षा करते भए सो अकेला लक्ष्मण सर्व विद्याधरानिके चलाए बाण अपने शस्त्रनिकरि निवारता भया अर आप विद्याधरानिकी ओर आकाशमें वज्रदंड वाण चलावता भया । यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं। हे राजन् ! अकेला लक्ष्मण विद्याधरानिकी सेनाको बाणनिकरि ऐसा रोकता भया जैसे संयमी साधु आत्मज्ञानकर विषयवासनाको रोकें, लक्ष्मणके शस्त्रनिकरि विद्याधरानिके सिर रत्ननिके आभरणकर मंडित कुंडलनिकरि शोभित आकाशसे धरतीपर परें, मानों अम्बररूप सरोवरके कमल ही हैं, योधानि सहित पर्वत समान हाथी पडे अर अश्वनि सहित सामंत पडे भयानक शब्द करते होंठ डसते ऊर्धगामी बाणनिकर वासुदेव वाहन सहित योधानिको पीडता भया ॥

अथानन्तर पुष्पकविमान विषें बैठा रावण आया सम्बूकके मारण हारे पुरुषनि पर उपजा है

महाक्रोध जाको सो मार्गमें रामके समीप सीता महा सतीको तिष्ठती देखता भया सो देखकर महा मोहको प्राप्त भया कैसी है सीता जाहि लखि रतिका रूप भी या समान न भासे मानो साक्षात् लक्ष्मीही है, चन्द्रमा समान सुन्दर वदन, निझन्थांके फूल समान अधर, केसरीकी कटि समान कटि, लहलहात करते चंचल कमलपत्र समान लोचन अर महा गजराजके कुम्भस्थलके शिखर समान कुच नवयौवन सर्व गुणनि कर पूर्ण कांतिके समूह से संयुक्त है शरीर जाका मानों कामके धनुषकी पिणच ही है अर नेत्र जाके कामके वाणही हैं मानो नाम कर्मरूप चतेरेने अपनी चपलता निबारनेके निमित्त स्थिरता कर सुख सूं जैसी चाहिये तैसी वनाई है। जाहि लखे रावणकी बुद्धि हरगई। महारूपके अतिशयको धरे जो सीता ताके अवलोकनसे संम्बूकके मारवे बारेपर जो क्रोध हुता सो जाता रहा अर सीता पर राग भाव उपजा। चित्तकी विचित्रगति है मनमें चितवता भया या बिना मेरा जीतव्य कहां अर जो विभूति मेरे घरमें है ताकरि कहा ? यह अद्भुतरूप अनुपम महासुन्दर नवयौवन, मोहि खरदूषणकी सेनामें आया कोई न जाने ता पहिले याहि हरकर घर लेजाऊं, मेरी कीर्ति चन्द्रमा समान निर्मल सकल लोकमें विस्तर रही है सो छिपकर लेजाने में मालिन न होय। हे श्रेणिक अर्थीदोषको न गिने ताते गोप्य लेजाइवेका यत्न किया। या लोकमें लोभ समान और अनर्थ नाहीं अर लोभ में परस्त्रीके लोभ समान महा अनर्थ नाहीं। रावणने अवलोकनी विद्यासे वृतान्त पूछा सो वाके कहे से इनका नाम कुल सब जाने, लक्ष्मण अनेकनिसूं लडनहारा एक युद्धमें गया अर यह राम है। यह याकी स्त्री सीता है अर जब लक्ष्मण गया तब रामसूं ऐसा कह गया। जो मोपै भीड पडेगी तब मैं सिंहनाद करूंगा तब तुम मेरी सहाय करियो सो वह सिंहनाद मैं करूं तब यह राम धनुषवाण लेय भाई पै जावेगे अर मैं सीता लेजाऊंगा जैसे पक्षी मांसकी डलीको लेजाय अर खरदूषणका पुत्र तो इनने माराही हुता अर ताकी स्त्रीका

अपमान किया सो वह शक्ति आदि शस्त्रनिकर दोऊ भाईनिको मारेहीगा जैसे महा प्रबल नदीका प्रवाह दोऊ ढाहे पाडे, नदीके प्रवाहकी शक्ति छिपी नाहीं है तैसे खरदूषणकी शक्ति काहुते छिपी नाहीं, सब कोऊ जाने है ऐसा विचार कर मूढमति कामकर पीडित रावण मरणके अर्थ सीताके हरणका उपाय करता भया। जैसे दुरबुद्धि बालक विषके लेनेका उपाय करै॥

अथानन्तर लक्ष्मण अर कटकसहित खरदूषण दोऊमें महायुद्ध होय रहा है शस्त्रनिका प्रहार होय रहा है, अर इधर रावणने कपटकर सिंहनाद किया, तामें बारंबार राम राम यह शब्द किया, तब रामने जाना कि यह सिंहनाद लक्ष्मण किया सुनकर व्याकुल चित्त भए। जानी भाई पै भीड पडी, तब रामने जानकीको कहा—हे प्रिये! भय मत करे क्षणएक तिष्ठ, ऐसे कह निर्मल पुष्पनिविषै छिपाई अर जटायूको कहा—हे मित्र! यह स्त्री अबलाजाति है याकी रक्षा करियो, तुम हमारे मित्र हो, धर्मी हो, ऐसा कहकर आप धनुषबाण लेय चाले, सो अपशकुन भए। सो न गिने, महासतीको अकेली बनविषै छोड शीघ्र ही भाई पै गए। महारणमें भाईके आगे जाय ठाढे रहे, ता समय रावण सीताके उठायबेको आया। जैसा माता हाथी कमलिनीको लेने आवे, कामरूप दाहकर प्रज्वलित है मन जाका, भूल गई है समस्त धर्मकी बुद्धि जाकी, सीताको उठाय पुष्पक विमानमें धरने लगा, तब जटायु पक्षी स्वामीकी स्त्रीको हरती देख क्रोधरूप अग्निकर प्रज्वलित भया। उठकर अतिवेगते रावणपर पडा, तीक्षण नखनिकी अणी अर चूंचसे रावणका उरस्थल रुधिर संयुक्त किया अर अपनी कठोर पाखनिकरि रावणके वस्त्र फाडे, रावणका सर्व शरीर खेदाखिन्न किया, तब रावणने जानी यह सीताको छुडावेगा। झंझट करेगा इतनेसे याका धनी आन पहुंचेगा, सो याहि मनोहर वस्तुका अवरोधक जान महाक्रोधकर हाथकी चपेटसे मारा सो अति कठोर हाथकी घातसे पक्षी विह्वलहोय पुकारता संता पृथिवी में पडा मूर्छाको प्राप्त

भया तब रावण जनकसुताको पुष्पक विमान में धर अपने स्थान ले चला । हे श्रेणिक । यद्यपि रावण जाने है यह कार्य योग्य नाहीं । तथापि कामके वशीभूत हुआ सर्व विचार भूल गया । सीता महासती आपको परपुरुष कर हरी जान रामके अनुराग से भीज रहा है चित्त जाका महा शोकवन्ती होय अरति रूप विलाप करती भई, तब रावण याहि निज भरतार विषैं अनुरक्त जान रुदन करती देख कछू एक उदास होय विचारता भया जो यह निरन्तर रोवे है अर बिरहकर व्याकुल है। अपने भरतारके गुण गावे है, अन्य पुरुषके संयोगका अभिलाष नाहीं, सो स्त्री अबध्य है ताते मैं मार न सकूं अर कोऊ मेरी आज्ञा उलंघे तो ताहि मारूं अर मैं साधुनिके निकट व्रत लिया हुता जो परस्त्री मोहि न इच्छे ताहि मैं न सेऊं सो मोहि व्रत दृढ राखना, याहि कोऊ उपायकर प्रसन्न करूं । उपायाकिये प्रसन्न होयगी जैसे क्रोधवन्त राजा शीघ्रही प्रसन्न न किया जाय तैसे हठवन्ती स्त्री भी वश न करी जाय जो कछु वस्तु है सो यत्नसे सिद्ध होय है मनवांछित विद्या परलोककी क्रिया अर मनभावना स्त्री ये यत्नसे सिद्ध होंय, यह विचारकर रावण सीताके प्रसन्न होनेका समय हेरै, कैसा है रावण मरण आया है निकट जाके।

अथानन्तर श्रीरामने वाणरूप जलकी धाराकर पूर्ण जो रणमंडल तामें प्रवेश किया । सो लक्ष्मण देख कर कहता भया । हाय ! हाय ! एते दूर आप क्यों आए—हे देव ! जानकीको अकेली वनविषै मेल आए । यह वन अनेक विग्रहका भरा है तब रामने कही मैं तेरा सिंहनाद सुन शीघ्र आया । तब लक्ष्मण कही आप भली न करी, अब शीघ्र जहां जानकी है वहां जावो, तब रामने जानी वीर तो महाधीर है याहि शत्रुका भय नाहीं, तब याको कही तू परम उत्साह रूप है बलवान् वैरीको जीत, ऐसा कहकर आप सीताकी उपजी हैं शंका जिनको सो चंचलचित्त होय जानकीकी तरफ चाले, क्षणमात्रमें आय देखें तो जानकी नाहीं, तब प्रथम तो विचारी कदाचित् सुरति भंग भया हूं बहुरि निर्धारण देखें तो सीता

नाहीं, तब आप हाय सीता ! ऐसा कह मूर्छा खाय धरती पर पडे । सो धरती रामके विलापसे कैसी सोहती भई, जैसे भरतारके मिलापसे भार्य्या सोहै । बहुरि सचेत होय वृक्षनिकी ओर दृष्टि घर प्रेमके भरे अत्यंत आकुल होय कहते भए—हे देवी ! तू कहां गई, क्यो न बोलो हो, बहुत हास्यकरि कहा वृक्षनिके आश्रय बैठी होय तो शीघ्र ही आवो, कोपकर कहा मैं तो शीघ्र ही तिहारे निकट आया । हे प्राणवल्लभे ! यह तिहारा कोप हमें दुखका कारण है या भांति विलाप करते फिरे हैं । सो एक नीची भूमिमें जटायुको कंठगतप्राण देखा तब आप पक्षीको देख अत्यंत खेदखिन्न होय याके समीप बैठे, नमोकार मंत्र दिया अर दर्शन ज्ञान चारित्र तप ये चार आराधना सुनाई, अरिहंत सिद्ध साधु केवली प्रणीत घर्मका शरण लिवाया । पक्षी श्रावकके व्रतका घरणहारा श्रीरामके अनुग्रहकरि समाधि मरण कर स्वर्गविषै देव भया, परंपराय मोक्ष जायगा, पक्षीके मरणके पीछे आप यद्यपि ज्ञानरूप हैं, तथापि चारित्र मोहके वश होय महाशोक-वन्त अकेले वनमें प्रियाके वियोगके दाहकर मूर्छा खाय पडे, बहुरि सचेत होय महाव्याकुल महासती सीताको ढूंढते फिरें, निराश भए दीन वचन कहैं जैसे भूतके आवेश कर युक्त पुरुष वृथा आलाप करे । छिद्र पाय महाभीम वनमें काहू पापीने जानकी हरी, सो बहुत विपरीत करी, मोहि मारा, अब जो कोई मोहि प्रिया मिलावे अर मेरा शोक हरे, ता समान मेरा परम बांधव नाहीं । हो बनके वृक्ष हो ! तुम जनकसुता देखी ? चंपाके पुष्प समान रंग कमलदल लोचन सुकुमार चरण निर्मल स्वभाव उत्तम चाल, चित्तकी उत्सव करणहारी कमलके मकरंद समान सुगंध मुखका स्वांस स्त्रिनिके मध्य श्रेष्ठ तुमने पूर्व देखी होय तो कहो ! या भांति बनके वृक्षनिसूं पूछे हैं सो वे एकेन्द्री वृक्ष कहा उत्तर देवें । तब राम सीताके गुणनिकरि हरा है मन जिनका बहुरि मूर्छा खाय धरतीपर पडे बहुरि सचेत होय महाक्रोधायमान वज्रावर्त धनुष हाथमें लिया, फिणच चढाई टंकोर किया, सो दशों दिशा शब्दायमान भई, सिंहनिको भयका

उपजावनहारा नरसिंहने धनुषका नाद किया । सो सिंह भाग गए अर गजानिके मद उतर गए । तब धनुष उतार अत्यंत विषादको प्राप्त होय बैठकर अपनी भूलका सोच करते भए, हाय हाय मैं मिथ्या, सिंहनादके श्रवणकर विश्वास मान वृथा जाय प्रिया खोई, जैसे मूढजीव कुश्रुतका श्रवण सुन विश्वास मान अविवेकी होय शुभगतिको खोवे, सो मूढके खोयबेका आश्चर्य नाहीं परंतु मैं धर्मबुद्धि वीतरागके मार्गका श्रद्धानी असमझ होय असुरकी मायामें मोहित हुवा, यह आश्चर्यकी वात है जैसे या भव वनविषै अत्यंत दुर्लभ मनुष्यकी देह महापुण्य कर्मकर पाई, ताहि वृथा खोवे सो वहुरि कव पावे अर त्रैलोक्यविषै दुर्लभ महारत्न ताहि समुद्रमें डारे, वहुरि कहां पावे ? तैसे बनितारूप अमृत मेरे हाथसूं गया । वहुरि कौन उपायकरि पाइये या निर्जन वनविषै कौनको दोष दूं । मैं ताहि तजकर भाईपै गया । सो कदाचित कोपकर आर्या भई होय । या अरण्य वनविषै मनुष्य नाहीं कौनको जाय पूछें, जो हमको स्त्रीकी वार्ता कहे । ऐसा कोई या लोकविषै दयावान श्रेष्ठ पुरुष है जो मोहि सीता दिखावे, वह महासती शीलवंती सर्व पापरहित मेरे हृदयको वल्लभ मेरा मनरूप मंदिर ताके विरहरूप अग्निसे जरे है सो ताकी वार्तारूप जलके दानकर कौन बुझावे ? ऐसा कहकर परम उदास, धरतीकी ओर है दृष्टि जिनकी वारंवार कछु इक विचारकर निश्चल होय तिष्ठे । एक चकवीका शब्द निकट ही सुना सो सुनकर ताकी ओर निरखा वहुरि विचारी या गिरिका तट अत्यंत सुगंध होय रहा है सो याही ओर गई होय अथवा यह कमलनिका वन है यहां कौतूहलके अर्थ गई होय आगे याने यह वन देखा हुता सो स्थानक मनोहर है नानाप्रकार पुष्पनिकर पूर्ण है कदाचित तहां क्षणमात्र गई होय सो यह विचार आप वहां गए । वहां हू सीताको न देखा, चकवी देखी तब विचारी वह पतिव्रता मेरे विना अकेली कहां जाय । वहुरि व्याकुलताको प्राप्त होय जायकर पर्वतसूं पूछते भए—हे गिरिराज ! तू अनेक धातुनिसे भरा है । मैं राजा दशरथका पुत्र

रामचन्द्र तोहि पूछूं हूं, कमल सारिखे नेत्र हैं जाके सो सीता मेरे मनकी प्यारी हंसगामिनी सुंदर रत्ननिके भारसे नम्रीभूत है अंग जाका किंदूरा समान अधर सुन्दर नितंब सो तुम कहूं देखी, वह कहां है तब पहाड कहा जबाब देय, इनके शब्दसे गूंजा। तब आप जानी कछु याने शब्द कहा जानिए है याने न देखी, वह महासती काल प्राप्त भई, यह नदी प्रचंड तरंगनिकी धरणहारी अत्यन्त वेगको धरे अविवेकवंती ताने मेरी कांता हरी, जैसे पापकी इच्छा विद्याको हरे अथवा कोई क्रूर सिंह क्षुधातुर भख गया होय, वह धर्मात्मा साधुवर्गनिकी सेवक सिंहादिकके देखते ही नखादिके स्पर्श विना ही प्राण देय। मेरा भाई भयानक रणविषै संग्राममें है सो जीवनेका संशय है। यह संसार असार है अर सर्व जीवराशि संशय रूप ही है, अहो यह बडा आश्चर्य है जो मैं संसारका स्वरूप जानूं हूं अर दुखते शून्य होय रहा हूं। एक दुख पूरा नहीं परे हैं अर दूजा और आवे है तातैं जानिए है यह संसार दुखका सागर ही है जैसे खोंड पगको खंडित करना अर दाहे मारेको भस्म करना अर डिगेको गर्तमें डारना, रामचन्द्रजीने बनविषै भ्रमणकर मृग सिंहादिक अनेक जन्तु देखे परंतु सीता न देखी तब अपने आश्रम आय अत्यन्त दीन बदन धनुष उतार पृथिवीमें तिष्ठे। बारंबार अनेक विकल्प करते क्षण एक निश्चल होय मुखसे पुकारते भए–हे श्रेणिक! ऐसे महापुरुषनिको भी पूर्वोपार्जित अशुभके उदयसूं दुख होय है ऐसा जानकर अहो भव्यजीव हो! सदा जिनवरके धर्ममें बुद्धि लगावो, संसारते ममता तजो। जे पुरुष संसारके विकारसूं पराङ्मुख होंय अर जिनवचनको नाहीं आराधैं वे संसारकेविषै शरणरहित पापरूप वृक्षके कटुक फल भोगवे हैं, कर्मरूप शत्रुके आतापसे खेदखिन्न हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषा वचनिकाविषैं सीताहरण वर्णन करनेवाला चवालीसवां पर्व पूर्ण भया॥ ४४॥

अथानन्तर लक्ष्मणके समीप युद्धविषै खरदूषणका शत्रु विराधित नामा विद्याधर अपने मंत्री अर शूरवीरनि सहित शस्त्रनि कर पूर्ण आया सो लक्ष्मणको अकेला युद्ध करता देख महानरोत्तम जान अपने स्वार्थकी सिद्धि इनसे जान प्रसन्न भया, महा तेजकर देदीप्यमान शोभता भया वाहनते उतर गोडे धरती लगाय हाथ जोड सीसनिवाय अति नम्रीभूत होय परम विनयसूं कहता भया हे नाथ! मैं आपका भक्त हूं, कछु इक मेरी वीनती सुनो तुम सारिखानिका संसर्ग हमसारिखानिके दुखका क्षय करन हारा है, वाने आधी कही आप सारी समझगए ताके मस्तकपर हाथ धर कहते भए तू डरे मत, हमारे पीछे खडा रह, तब वह नमस्कारकर अति आश्चर्यको प्राप्त होय कहता भया हे प्रभो! यह खरदूषण शत्रु महाशक्तिको धरे है याहि आप निवारो अर सेनाके योधानिकरि मैं लडूंगा ऐसा कह खरदूषणके योद्धानि सूं विराधित लडने लगा। दौडकर तिनके कटक पर पडा, अपनी सेना सहित झलझलाटकरे हैं आयुधनि के समूह ताके विराधित तिनकूं प्रगट कहता भया मैं राजा चन्द्रोदयका पुत्र विराधित घने दिननिविषै पिताका बैर लेने आया हूं युद्धका अभिलाषी अब तुम कहां जावो हो, जो युद्धमें प्रवीण हो तो खडे रहो, मैं ऐसा भयंकर फल दूंगा जैसा यम देय ऐसा कहा तब तिन योद्धानिके अर इनके महा संग्राम भया अनेक सुभट दोऊ सेनानिके मारे गए। पियादे प्यादेनिसूं घोडनिके असवार घोडानिके असवारनसूं हाथीनिके असवार हाथीनिके असवारानिसूं रथी रथीनिसूं परस्पर हर्षित होय युद्ध करते भए। वह वाहि बुलावे वह वाहि बुलावे या भांति परस्पर युद्धकर दशों दिशानिको बाणनिकरि आछादित करते भए॥

अथानन्तर लक्ष्मण अर खरदूषणका महायुद्ध भया जैसा इंद्र और असुरेन्द्रके युद्ध होय, ता समय खरदूषण क्रोधकर मण्डित लक्ष्मणसे लाल नेत्रकर कहता भया। मेरा पुत्र निर्वैर सो तूने हणा अर हे चपल! तूने मेरी कांताके कुचमर्दन किये सो मेरी दृष्टिसूं कहां जायगा? आज तीक्ष्ण बाणनिकरि तेरे प्राण

हरूंगा जैसे कर्म किए हैं तिनका फल भोगवेगा, हे क्षुद्र निर्लज्ज परस्त्री संग लोलुपी ! मेरे सन्मुख आयकर परलोक जा। तब ताके कठोर बचनानिकरि प्रज्वलित भया है मन जाका सो लक्ष्मण बचन कर सकल आकाशको पूरता संता कहता भया। अरे क्षुद्र ! वृथा काहे गाजे है जहां तेरा पुत्र गया वहां तोहि पठाऊंगा, ऐसा कहकर आकाशकेविषै तिष्ठता जो खरदूषण ताहि लक्ष्मणने रथरहित किया अर ताका धनुष तोडा अर ध्वजा उडाय दई अर प्रभा रहित किया तब वह क्रोधकर भरा पृथिवीकेविषै पडा जैसे क्षीणपुण्य भए देव स्वर्गतें पडे बहुरि महा सुभट खडग लेय लक्ष्मणपर आया तब लक्ष्मण सूर्यहास खड्ग लेय ताके सन्मुख भया इन दोऊनिमें नानाप्रकार महायुद्ध भया देव पुष्पवृष्टि करते भए, अर धन्य धन्य २ शब्द करते भए बहुरि महा युद्धके विषै सूर्यहास खडगकर लक्ष्मणने खरदूषणका सिर काटा सो निर्जीव होय खरदूषण पृथिवीपर पडा मानों स्वर्गसे देव गिरा सूर्यसमान है तेज जाका, मानों रत्न पर्वत-का शिखर दिग्गजने ढाहा।

अथानन्तर खरदूषणका सेनापति दूषण विराधितको रथ रहित करनेको आरम्भता भया तब लक्ष-मणने बाणकरि मर्मस्थलको घायल किया सो घूमता भूमि में पडा अर लक्ष्मणने खरदूषणका समुदाय अर कटक अर पाताल लंकापुरी विराधितको दीनी अर लक्ष्मण अतिस्नेहका भरा जहां राम तिष्ठे हैं वहां आया आनकर देखे तो आप भूमि में पडे हैं अर स्थानकमें सीता नाहीं तब लक्ष्मणने कहा—हे नाथ ! उठो कहां सोवो हो, जानकी कहां गई, तब राम उठकर लक्ष्मणको घावरहित देख कछु इक हर्षको प्राप्त भए। लक्ष्मणको उरसे लगाया अर कहते भए। हे भाई ! मैं न जानूं जानकी कहा गई, कोई हर लेय-गया अथवा सिंह भखगया बहुत हेरी सो न पाई अति सुकमार शरीर उदवेगकर विलयगई तब लक्ष-मण विषादरूप होय क्रोधकर कहता भया। हे देव ! सोचके प्रबन्धकर कहा यह निश्चय करो कोई दुष्ट

दैत्य हर लेगया है जहां तिष्ठे है सो लावेंगे आप संदेह न करो, नानाप्रकारके प्रिय बचननिकरि रामको धीर्य बंधाय अर निर्मल जलकरि सुबुद्धिने रामका मुख धुवाया, ताही समय विशेष शब्द सुन रामने पूछा यह शब्द काहेका है तब लक्ष्मणने कहा—हे नाथ ! यह चन्द्रोदय विद्याधरका पुत्र विराधित याने रण में मेरा बहुत उपकार किया सो आपके निकट आया है याकी सेनाका शब्द है या भांति दोऊ बीर वार्त्ता करे हैं अर वह बडी सेनासहित हाथ जोड नमस्कारकर जय जय शब्द कह अपने मंत्रीनि सहित विनती करता भया आप हमारे स्वामी हो हम सेवक हैं जो कार्य होय ताकी आज्ञा देऊ तब लक्ष्मण कहता भया हे मित्र ! काहु दुराचारीने मेरे प्रभुकी स्त्री हरी है या बिना रामचन्द्र जो शोकके बशी होय कदाचित प्राणको तजें तो मैं भी अग्नि में प्रवेश करूंगा, इनके प्राणनिके आधार मेरे प्राण हैं, यह तू निश्चय जान ताते यह कार्य कर्तव्य है भले जाने सो कर, तब यह बात सुन वह अति दुःखित होय नीचा मुख कर रहा अर मन में बिचारता भया एते दिन मोहि स्थानक भ्रष्ट हुए भए नाना प्रकार बन विहार किया अर इन मेरा शत्रु हना स्थानक दिया तिनकी यह दशा है मैं जो २ विकल्प करूं हूं सो योंही वृथा जाय हैं यह समस्त जगत कर्माधीन है तथापि मैं कछू उद्यम कर इनका कार्य सिद्ध करूं ऐसा विचार अपने मंत्रिनिसूं कहा—पुरुषोत्तमकी स्त्री रत्न पृथिवीविषे जहां होय तहां जल स्थल आकाश पुर बन गिरि ग्रामादिक में यत्नकर हेरो यह कार्य भए मन बांछित फल पावोगे ऐसी राजा विराधितकी आज्ञा सुन यशके अर्थी सर्व दिशाको विद्याधर दौडे।

अथानंतर एक रत्नजटी विद्याधर अर्कटीका पुत्र सो आकाश मार्गमें जाता हुता ताने सीताके रुदनकी हाय राम हाय लक्ष्मण, यह ध्वनि समुद्रके ऊपर आकाशमें सुनी तब रत्नजटी वहां आय देखे तो रावणके विमान में सीता बैठी बिलाप करे है तब सीताको विलाप करती देख रत्नजटी क्रोधका भरा

रावण सों कहता भया हे पापी दुष्ट विद्याधर ! ऐसा अपराध कर कहां जायगा, यह भामण्डलकी बहन है। रामदेवकी राणी है। मैं भामण्डलका सेवक हू, हे दुर्बुद्धि ! जिया चाहे तो ताहि छोड, तब रावण अति क्रोध कर युद्धको उद्यमी भया बहुरि विचारी कदाचित् युद्धके होते अति विह्वल जो सीता सो मरजावे तो भला नाहीं तातैं यद्यपि यह विद्याधर रंक है तथापि उपाय करि मारना ऐसा विचार रावण महाबली ने रत्न जटीकी विद्या हरलीनी सो रत्नजटी आकाशते पृथिवीविषै पडा मन्त्रके प्रभावकरि धीरा धीरा स्फुलिंगेकी न्याई समुद्रके मध्य कम्पद्वीपमें आय पडा आयुकर्मके योगते जीवता बचा जैसे वणिकका जहाज फटजाय अर जीवता बचे सो रत्नजटी विद्या खोय जीवता बचा सो विद्या तो जाती रही, जाकरि विमानविषै घर बैठ पहुंचे सो अत्यंत स्वास लेता कम्पूपर्वतपर चढ दिशाका अवलोकन करता भया, समुद्रकी शीतल पवनकर खेद मिटा, सो वनफल खाय कम्पूपर्वतपर रहे अर जे विराधितके सेवक विद्याधर सब दिशा नाना भेषकर दौडे हुते ते सीताको न देख पाछे आये ! सो उनका मलिन मुख देख रामने जानीसी इनकी दृष्टि न आई, तब राम दीर्घ स्वांस नांख कहते भए।

हे भले विद्याधर हो तुमने हमारे कार्यके अर्थ अपनी शक्ति प्रमाण अति यत्न किया परन्तु हमारे अशुभका उदय, ताते अब तुम सुखसूं अपने स्थानक जावो, हाथते बडवानलमें गया रत्न बहुरि कहां दीखे कर्मका फल है सो अवश्य भोगना। हमारा तिहारा निवारा न निवरे, हम कुटम्बते छूटे, बनमें पैठे, तो हू कर्मशत्रुको दया न उपजी ताते हम जानी हमारे असाताका उदय है, सीता हू गई या समान और दुख कहा होयगा, या भांति कहकर राम रोवने लगे, महाधीर नरनिके अधिपति तब बिराधित धीर्य बंधायवे विषै पंडित नमस्कारकर हाथजोड कहता भया हे देव ! आप एता विषाद काहे करो थोडे ही दिनमें आप जनक सुताको देखोगे, कैसी है जनकसुता निःपाप है देह जाकी, हे प्रभो ! यह शोक महाशत्रु है शरीर

का नासकरे और वस्तुकी कहा बात, तातैं आप धीर्य अंगीकार करहु यह धीर्य ही महापुरुषनिका सर्वस्व है आप सारिखे पुरुष विवेकके निवास हैं धीर्यवन्त प्राणी अनेक कल्याण देख अर आतुर अत्यन्त कष्ट करैं तो हूं इष्ट वस्तुको न देखे अर यह समय विषादका नाहीं आप मन लगाय सुनहु विद्याधरनिका महाराजा खरदूषण मारा सो अब याका पारिपाक महाविषम है, सुग्रीव किहकंधापुरका धनी अर इंद्रजीत कुम्भकर्ण त्रिशिर अक्षोभ भीम क्रूरकर्मा महोदर इनको आदिदे अनेक विद्याधर महा योधा बलवन्त याके परममित्र हैं सो याके मरणके दुःखते क्रोधको प्राप्त भए होगें ये समस्त नाना प्रकार युद्ध में प्रवीण हैं, हजारां ठौर रणविषै कीर्ति पाय चुके हैं अर वेताड पर्वतके अनेक विद्याधर खरदूषणके मित्र हैं अर पवनञ्जयका पुत्र हनूमान् जाहि लखे सुभट दूरही टरैं ताके संमुख देव हूं न आवें सो खरदूषण का जमाई है तातैं वह हू याके मरणका रोष करेगा तातैं यहां बनविषै न रहना, अलंकारोदय नगर जो पाताललंका ताविषै विराजिये अर भामंडलको सीताके समाचार पठाइये वह नगर महादुर्गम है तहां निश्चल होय कार्यका उपाय सर्वथा करेंगे, या भांति विराधित विनती करी तब दोऊ भाई चार घोडनिका रथ तापर चढकर पाताललंकाको चाले सो दोऊ पुरुषोत्तम सीता बिना न शोभते भए जैसे सम्यक् दृष्ट बिना ज्ञान चारित्र न सोहैं, चतुरंग सेनारूप सागर करि मंडित दण्डक बनते चाले, विराधित अगाऊ गया तहां चन्द्रनखाका पुत्र सुन्दर सो लडनेको नगरके बाहर निकसा ताने युद्ध किया सो ताको जीत नगर में प्रवेश किया देवनिके नगर समान वह नगर रत्नमई, तहां खरदूषणके मंदिरविषै बिराजे सो महा मनोहर सुरमंदिर समान वह मंदिर तहां सीताबिना रंचमात्र हूं विश्रामको न पावते भए सीतामें है मन रामका सो रामको प्रियाके समीपकर बन हूं मनोग्य भासता हुता अब कांताके वियोगकर दग्ध जो राम तिनको नगर मंदिर विन्ध्याचलके बनसमान भासें।

अथानन्तर खरदूषणके मन्दिरमें जिनमन्दिर देखकर रघुनाथने प्रवेश किया वहां अरिहंतकी प्रतिमा देख रत्नमई पुष्पनिकर अर्चा करी, क्षण एक सीताका संताप भूल गये, जहां जहां भगवान्के चैत्यालय हुते वहां वहां दर्शन किया प्रशान्त भई है दुःखकी लहर जिनके रामचन्द्र खरदूषणके महल विषे तिष्ठे हैं अर सुन्दर, अपनी माता चन्द्रनखा सहित पिता अर भाईके शोक कर महाशोक सहित लंका गया। यह परिग्रह बिनाशीक है अर महादुःखका कारण है, बिघ्न कर युक्त है, ताते हे भव्यजीव हो तिन विषे इच्छा निवारो यद्यपि जीवानिके पूर्व कर्मके सम्बन्धसूं परिग्रहकी अभिलाषा होय है तथापि साधुवर्गके उपदेशकरि यह तृष्णा निवृत्त होय है जैसे सूर्यके उदयते रात्रि निवृत्त होय है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामको सीताका वियोग वर्णन करनेवाला पैतालीसवा पर्व पूर्ण भया॥ ४५॥

अथानन्तर रावण सीताको लेय ऊंचे शिखरपर तिष्ठा धीरे धीरे चालता भया जैसे आकाशविषे सूर्य चाले, शोककर तप्तायमान जो सीता ताका मुख कमल कुमलाय गया देख रतिके राग कर मूढ भया है मन जाका ऐसा जो रावण सो सीताके चौगिर्द फिरे अर दीन वचन कहे—हे देवी! कामके वाण कर मैं हता जाऊं हूं, सो तोहि मनुष्यकी हत्या होयगी हे सुन्दरी! यह तेरा मुखरूप कमल सर्वथा कोप संयुक्त है तो हू मनोग्यते अधिक मनोग्य भासे है। प्रसन्न हो एक वेर मेरी ओर दृष्टि घर, देख तेरे नेत्रनिकी कांतिरूप जलकर मोहि स्नान कराय अर जो कृपादृष्टि कर नाहीं निहारे, तो अपने चरण कमलकरि मेरा मस्तक तोड, हाय हाय तेरी क्रीडाके बनविषे मैं अशोक वृक्ष ही क्यों न भया जो तेरे चरण कमल की पगथलीकी घात अत्यन्त प्रशंसा योग्य सो मोहि सुलभ होती भावार्थ—अशोक वृक्ष स्त्रीके पगथली

के घातसे फूले। हे कृशोदरी ! विमानके शिखर पर निष्ठी सर्व दिशा देख, मैं सूर्यके ऊपर आकाशविषै आया हूं। मेरु कुलाचल अर समुद्र सहित पृथिवी देख मानों काहू सिलावटने रची है ऐसे वचन रावणने कहे। तब वह महासती शीलका सुमेरु पटके अंतर अरुचिके अक्षर कहती भई। हे अधम ! दूर रह, मेरे अंगका स्पर्श मत करे अर ऐसे निंद्य वचन कभी मत कहे, रे पापी ! अल्प आयु ! कुगतिगामी ! अपयशी ! तेरे यह दुराचार तोहीको भयकारी हैं, परदाराकी अभिलाषा करता तू महादुःख पावेगा। जैसे कोई भस्मकर दबी अग्निपर पांव धरे तो जरे, तैसे तू इन कर्मनिकरि बहुत पछतावेगा। तू महामोहरूप कीचकरि मलिन चित्त है तोहि धर्मका उपदेश देना बृथा है। जैसे अन्धके निकट नृत्य करे। हे क्षुद्र! जे पर स्त्रीकी अभिलाषा करे हैं वे इच्छामात्र ही पापको बांधकर नरकविषै महाकष्टको भोगे हैं। इत्यादि रुक्ष वचन सीता रावणसूं कहे। तथापि कामकर हता है चित्त जाका सो अविवेकसूं पाछा न भया अर खरदूषणकी जे मदद गए हुते परम हितु शुक हस्त प्रहस्तादिक वे खरदूषणके मुवे पीछे उदास होय लंका आए। सो रावण काहूकी ओर देखे नाहीं, जानकीको नानाप्रकारके वचनकर प्रसन्न करे, सो कहां प्रसन्न होय जैसे अग्निकी ज्वालाको कोई पाय न सके अर नागके माथेकी मणिको न लेय सके, तैसे सीताको कोई न उपजाय सके। बहुरि रावण हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार कर नानाप्रकारके दीनताके वचन कहे, सो सीता याके वचन कछू न सुने अर मंत्री आदि सन्मुख आए सर्व दिशानिते सामन्त आए। राक्षसनिके पति जो रावण सो अनेक लोकनिकर मंडित होता भया, लोक जय जयकार शब्द करते भए, मनोहर गीत नृत्य वादित्र होते भये। रावण इन्द्रकी न्याईं लंकाविषै प्रवेश किया, सीता चित्तमें चितवती भई, ऐसा राजा अमर्यादाकी रीति करे, तब पृथिवी कौनके शरण रहे, जबलग रामचंद्रकी कुशल क्षेमकी वार्ता मैं न सुनूं। तबलग खान पानका मेरे त्याग है। रावण देवारण्य नामा उपवन स्वर्ग-

समान परम सुन्दर जहां कल्पवृक्ष समान वृक्ष वहां सीताको मेलकर अपने मन्दिर गया ताही समय खरदूषणके मरणके समाचार आए सो महा शोककर रावणकी अठारा हजार राणी ऊंचे स्वरकर विलाप करती भई अर चंद्रनखा रावणकी गोदविषै लोटकर अति रुदन करती भई हाय मैं अभागिनी हती गई, मेरा धनी मारा गया मेहके झरने समान रुदन किया अश्रुपातका प्रवाह बहा, पति अर पुत्र दोऊके मरणके शोकरूप अग्निकर दग्धायमान है हृदय जाका, सो याहि विलाप करती देख याका भाई रावण कहता भया हे वत्से ! रोयबेकर कहा या जगतके प्रसिद्ध चरित्रको कहा न जाने है । विना काल कोऊ वज्र से भी हता न मरे अर जब मृत्युकाल आवे तब सहजही मरजाय । कहां वे भूमिगोचरी राम अर कहां तेरा भरतार विद्याधर दैत्यनिका अधिपति खरदूषण ताहि वे मारें, यह कालहीका कारण है जाने तेरा पति मारा ताको मैं मारूंगा या भांति बहिनको धीर्य बंधाय कहता भया अब तू भगवानका अर्चनकर श्राविकाके व्रत धार, चन्द्रनखाको ऐसा कहकर रावण महलविषै गया सर्पकी न्यांई निश्वास नाखता सेजपर पडा वहां पटराणी मन्दोदरी आयकर भरतारको व्याकुल देख कहती भई हे नाथ ! खरदूषणके मरणकर अति व्याकुल भए हो सो तिहारे सुभट कुलविषै यह बात उचित नाहीं । जे शूरवीर हैं तिनके मोटी आपदाविषै हू विषाद नाहीं तुम वीराधिवीर क्षत्री हो तिहारे कुलमें तिहारे पुरुष अर तिहारे मित्र रण संग्रामविषै अनेक क्षय भये सो कौन कौनका शोक करोगे तुम कबहुं काहूका शोक न किया, अब खरदूषणका एता सोच क्यों करो हो ? पूर्वे इन्द्रके संग्राम विषै तिहारा काका श्रीमाली मरणको प्राप्त भया अर अनेक बांधव रणमें हते गए तुम काहूका कभी शोक न किया आज ऐसा सोच दृष्टि क्यों पडा है जैसा पूर्वे कबहुं हमारी दृष्टि न पडा, तब रावण निश्वास नाख बोला हे सुन्दरी ! सुन, मेरे अन्तःकरणका रहस्य तोहि कहुं हूं, तू मेरे प्राणनिकी स्वामिनी है अर सदा मेरी वांछा पूर्ण करे है । जो तू मेरा जीतव्य चाहे

रकुमार समान होवे अथवा इन्द्र समान होवे तो मेरे कौन अर्थ, मैं सर्वथा अन्यपुरुषको न इच्छूं। तुम सब अठारह हजार राणी भेली होयकर आई हो सो तिहारा कहा मैं न करूं, तिहारी इच्छा होय सो करो, ताही समय रावण आया मदनके आतापकरि पीडित जैसे तृषातुर माता हाथी गंगाके तीर आवे तैसे सीताके समीप आय मधुर बाणी कर आदरसूं कहता भया हे देवी! तू भय मत करे। मैं तेरा भक्त हूं। हे सुन्दरी! चित लगाय एक विनती सुन मैं तीन लोक में कौन बस्तु कर हीन जो तू मोहि न इच्छे, ऐसा कहकर स्पर्शकी इच्छा करता भया तब सीता क्रोधकर कहती भई पापी! परे जा, मेरा अंग मत स्पर्शे, तब रावण कहता भया कोप अर अभिमान तज प्रसन्न हो, शची इन्द्राणी समान दिव्य भोगनि की स्वामिनी होहू तब सीता बोली, कुशीले पुरुषका बिभव मलसमान है अर शीलवंत हैं तिनके दरिद्र ही आभूषण हैं, जे उत्तम वंश विषैं उपजे हैं तिनके शीलकी हानिकरि दोऊ लोक बिगरे हैं तातें मेरे तो मरण ही शरण है। तू परस्त्रीकी अभिलाषा राखे है सो तेरा जीतव्य वृथा है। जो शील पालता जीवे है ताहीका जीतव्य सफल है या भांति जब सीता तिरस्कार किया तब रावण क्रोधकर मायाकी प्रवृत्ति करता भया। राणी अठारह हजार सब जाती रहीं अर रावणकी मायाके भयते सूर्य अस्त होय गया। मद झरती मायामई हाथिनिकी घटा आई, यद्यपि सीता भयभीत भई तथापि रावणके शरण न गई बहुरि अग्निके स्फुलिंगे वरसते भए अर लहलहाट करें हैं जीभ जिनकी ऐसे सर्प आए तथापि सीता रावणके शरण न गई बहुरि महा क्रूर वानर फारे हैं मुख जिन्होंने उछल उछल आए अति भयानक शब्द करते भए तथापि सीता रावणके शरण न गई अर अग्निके ज्वाला समान चपल हैं जिह्वा जिनकी ऐसे मायामई अजगर तिनने भय उपजाया तथापि सीता रावणके शरण न गई बहुरि अंधकार समान श्याम ऊंचे व्यंतर हुंकार शब्द करते आए भय उपजावते भये तथापि सीता रावणके शरण न गई, या भांति

नानाप्रकारकी चेष्टाकर रावणने उपसर्ग किये तथापि सीता न डरी, रात्रि पूर्ण भई, जिनमंदिरानिविषे वादित्रनिके शब्द होते भए द्वारानिके कपाट उघरे, मानों लोकनिके लोचन ही उघरे, प्रात सन्ध्या कर पूर्वदिशा आरक्त भई, मानों कुंकुमके रंगकरि रंगी ही है । निशाका अंधकार सर्व दूर कर चन्द्रमाको प्रभा रहित कर सूर्यका उदय भया । कमल फूले, पक्षी विचरने लगे, प्रभात भया तब प्रात क्रिया कर विभीषणादि रावणके भाई खरदूषणके शोक कर रावण पै आए । सो नीचा मुख किये आंसू डारते भूमि विषै तिष्ठे ता समय पटके अंतर शोककी भरी जो सीता ताके रुदनके शब्द विभीषणने सुने अर सुनकर कहता भया यह कौन स्त्री रुदन करे है ? अपने स्वामीतै विछुरी है याका शोक संयुक्त शब्द दुखको प्रकट दिखावे है । ये विभीषणके शब्द सुन सीता अधिक रोवने लगी, सज्जनको देख शोक बढेही है । विभीषण पूछता भया हे बहिन ! तू कौन है ? तब सीता कहती भई, मैं राजा जनककी पुत्री भामण्डलकी बहिन रामकी राणी दशरथ मेरा सुसरा लक्ष्मण मेरा देवर सो खरदूषणते लडने गया ताके पीछे मेरा स्वामी भाई की मदद गया, मैं बनमें अकेली रही सो छिद्र देख या दुष्टचित्तने हरी सो मेरा भरतार मो विना प्राण तजेगा ताते हे भाई ! मोहि मेरे भरतार पै शीघ्रही पठावो, ये वचन सीताके सुन विभीषण रावणसे विनय कर कहता भया हे देव ! यह परनारी अग्निकी ज्वाला है, आशी विष सर्पके फण समान भयंकर है, आप काहेको लाए अब शीघ्रही पठाय देहु हे स्वामी ! मैं बालबुद्धि हूं परन्तु मेरी विनती सुनो मोहि आपने आज्ञा करी हुती जो तू उचित वार्ता हमसो कहियो कर ताते आपकी आज्ञाते मैं कहू हूं तिहारी कीर्ति रूप बेलिके समूहकर सर्व दिशा व्याप्त होय रही हैं ऐसा न होय जो अपयशरूप अग्नि कर यह कीर्ति लता भस्म होय । यह परदाराका अभिलाष अयुक्त अति भयंकर महानिंद्य दोऊ लोकका नाश करण हारा जाकरि जगत् विषे लज्जा उपजे उत्तम जननिकरि धिक्कार शब्द पाइये है । जे उत्तम जन हैं तिनके

हृदयको अप्रिय ऐसा अनीतिकार्य कदाचित् न कर्तव्य, आप सकल वार्ता जानोहो, सब मर्यादा आपही ते रहें आप विद्याधरनिके महेश्वर, यह बलता अंगारा काहेको हृदयमें लगावो, जो पापबुद्धि परनारी सेवे हैं सो नरक विषे प्रवेश करे हैं जैसे लोहेका ताता गोला जलमें प्रवेश करे तैसे पापी नरकमें पडे है। ये वचन विभीषणके सुनकर रावण बोला हे भाई ! पृथिवी पर जो सुन्दर वस्तु हैं ताका मैं स्वामी हूं सब मेरी ही वस्तु हैं पर वस्तु कहांसे आई ! ऐसा कहकर और बात करने लगा बहुरि महानीतिका धारी मारीच मंत्री क्षण एक पीछे कहता भया देखो यह मोह कर्मकी चेष्टा, रावण सारिखे विवेकी सर्व रीतिको जान ऐसे कर्म करे सर्वथा जे सुबुद्धि पुरुष हैं तिनको प्रभातही उठकर अपनी कुशल अकुशल चिन्तवनी, विवेक से न चूकना या भांति निरपेक्ष भया महा बुद्धिमान् मारीच कहता भया तब रावणने कछू पाछा जवाब न दिया, उठकर खडा होगया, त्रैलोक्य मण्डन हाथी पर चढि सब सामन्तनिसहित उपवनते नगरको चला, बरछी, खडग, तोमर, चमर, छत्र ध्वजा आदि अनेक वस्तु हैं हाथनिमें जिनके ऐसे पुरुष आगे चले जाय हैं अनेक प्रकार शब्द होय हैं चंचल है ग्रीवा जिनकी ऐसे हजारां तुरंगनि पर चढे सुभट चले जाय हैं अर कारी घटा समान मद झरते गाजते गजराज चले जाय हैं अर नाना प्रकारकी चेष्टा करते उछलते पयादे चले जाय हैं, हजारां वादित्र बाजे, या भांति रावणने लंकामें प्रवेश किया। रावणके चक्रवर्तीकी सम्पदा तथापि सीता तृणसे हू जघन्य जाने, सीताका मन निष्कलंक यह लुभायवेको समर्थ न भया। जैसे जलविषै कमल अलिप्त रहे, तैसे सीता अलिप्त रहे। सर्व ऋतुके पुष्पनिकरि शोभित नाना प्रकारके वृक्ष अर लतानिकरि पूर्ण ऐसा प्रमद नामा बन तहां सीता राखी। वह बन नंदन समान सुंदर जाहि लखे नेत्र प्रसन्न होंय, फुलागिरिके ऊपर यह बन सो देखे पीछे और ठौर दृष्टि लगे, जाहि लखे देवनिका मन उन्मादको प्राप्त होय मनुष्यनिकी कहा बात, वह फुल्लगिरि सप्तबनकरि वेष्टित सोहै जैसे भद्रशालादि बनकर सुमेरु सोहे है।

हे श्रेणिक ! सात ही बन अद्भुत हैं उनके नाम सुन प्रकीर्णक, जनानन्द, सुखसेव्य, समुच्चय, चारणप्रिय, निबोध प्रमद, तिनमें प्रकीर्णक पृथिवी विषे ताके ऊपर जनानन्द जहां चतुर जन क्रीडा करें अर तीजा सुखसेव्य अतिमनोग्य सुन्दर वृक्ष अर वेल कारी घटा समान सघन सरोवर सरिता वापिका अतिमनोहर अर समुच्चय विषें सूर्य का आताप नाहीं वृक्ष ऊंचे कहूं ठौर स्त्री क्रीडा करें कहूं ठौर पुरुष अर चारणप्रिय बनमे चारण मुनि ध्यान करें अर निबोध ज्ञानका निवास सबनिके ऊपर अति सुन्दर प्रमद नामा बन ताके ऊपर जहां तांबूलका बेल केतकीनिके बीडे जहां स्नानक्रीडा करनेको उचित रमणीक वापिका कमलनिकर शोभित हैं अर अनेक स्वर्णके महल अर जहां नारंगी बिजोरा नारियल छुहारे ताड वृक्ष इत्यादि अनेक जातिके वृक्ष सर्व ही वृक्ष पुष्पनिके गुच्छनि कर शोभे हैं जिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर जहां वेलिनके पल्लव मन्द पवन कर हाले हैं। जा वनविषें सघन वृक्ष समस्त ऋतुनिके फल फूलनिकर युक्त कारी घटा समान सघन हैं मोरनके युगलकर शोभित हैं ता बनकी बिभूती मनोहर वापी सहस्रदल कमल हे मुख जिनके सो नील कमल नेत्रनिकर निरखे हैं अर सरोवर विषे मन्द मन्द पवनकर कल्लोल उठे हैं सो मानो सरोवरी नृत्य ही करे हैं अर कोयल बोले हैं सो मानों वचनालाप ही करे हैं अर राज हंसनीनिके समूहकर मानो सरोवर हंसेही हैं बहुत कहिवे कर कहा वह प्रमदनामा उद्यान सर्व उत्सवका मूल भोगीनिका निवास नन्दनबनहूते अधिक ता बनमें एक अशोकमालिनी नामा वापी कमलादि कर शोभित जाके मणि स्वर्णके सिवाण, विचित्र आकारको धरे हैं द्वार जाके जहां मनोहर महल जाके सुन्दर झरोखे तिनकर शोभित जहां नीझरने झरें हैं वहां अशोक वृक्षके तले सीता राखी कैसी है सीता श्रीरामजीके वियोग कर महाशोकको धरे है जैसे इन्द्रते विछुरी इंद्राणी, रावणकी आज्ञाते अनेक स्त्री विद्याधरी खडी ही रहें नाना प्रकारके वस्त्र सुगन्ध आभूषण जिनके हाथमे भांति

भांतिकी चेष्टा कर सीताको प्रसन्न किया चाहैं। दिव्यगीत दिव्यनृत्य दिव्यवादित्र अमृत सारिखे दिव्य-वचन तिन कर सीताको हर्षित किया चाहै परन्तु यह कहां हर्षित होय जैसे मोक्ष संपदाको अभव्य जीव सिद्ध न कर सके तैसे रावणकी दूती सीताको प्रसन्न न कर सकी। ऊपर ऊपर रावण दूती भेजे, कामरूप दावानलकी प्रज्वलित ज्वाला ताकर व्याकुल महाउन्मत्त भांति भांतिके अनुरागके वचन सीताको कह पठावे यह कछु जवाब नहीं देय। दूती जाय रावणसों कहैं हे देव? वह तो आहार पानी तज बैठी है तुमको कैसे इच्छे वह काहूसों बात न करे निश्चल अंगकर तिष्ठे है हमारी ओर दृष्टिही नाहीं धरे, अमृत हूते अति स्वादु दुग्धादि कर मिश्रित बहुत भांति नाना प्रकारके व्यंजन ताके मुख आगे धरे हैं सो स्पर्शे नाहीं। यह दूतिनिकी बात सुन रावण खेद खिन्न होय मदनाग्निकी ज्वाला कर व्याप्त है अंग जाका महा आरतरूप चिन्ताके सागरमें डूवा, कबहूं निश्वास नांखे, कबहूं सोच करे, सूक गया है मुख जाका कबहूं कछु इक गावे कामरूप अग्नि कर दग्ध भया है हृदय जाका कछु इक विचार २ निश्चल होय है, अपना अंग भूमिमें डार देय फिर उठे सूनासा होय रहे, विना समझे उठ चले बहुरि पीछा आवे जैसे हस्ती सूण्ड पटके तैसे भूमिमें हाथ पटके सीताको वरावर चितारता आंखानिते आंसू डारे कबहूं शब्द कर बुलावे कबहुं हुंकार शब्द करे कबहुं चुप होय रहे कबहुं वृथा बकवाद करे कबहुं सीता २ बार २ बके। कबहुं नीचा मुखकर नखानिकरि धरती कुचरे, कबहुं हाथ अपने हिये लगावे कबहुं बाहू ऊंचा करे कबहुं सेजपर पडे कबहूं उठ बैठे कबहूं कबहूं कमल हिये लगावे, कबहुं दूर डार देय कबहुं शृंगार का काव्य पढे, कबहूं आकाशकी ओर देखे—कबहूं हाथसे हाथ मसले, कबहूं पगसे पृथिवी हणे निश्वास रूप अग्निकर अधर श्याम होय गए कबहूं कह २ शब्द करे कबहूं अपने केश बखेरे कबहूं बांधे कबहूं जंभाई लेय, कबहूं मुखपर अञ्चल डारे, कबहूं वस्त्र सब पहिरलेय, सीताके चित्राम बनावे, कबहूं अश्रुपातकर

आर्द्रकरे, दीन भया हाहाकार शब्द करे, मदन ग्रहकर पीडित अनेक चेष्टा करे, आशारूप इंधनकर प्रज्वलित जो कामरूप अग्नि ताकर ताका हृदय जरे अर शरीर जले, कबहूं मनविषै चितवे कि मैं कौन अवस्थाको प्राप्त भया जाकर अपना शरीर हू नाहीं धार सकूं हूं, मैं अनेक गढ अर सागरके मध्य तिष्ठे बडे बडे बिद्याधर युद्धविषै हजारां जीते अर लोकविषै प्रसिद्ध जो इंद्र नामा विद्याधर सो बन्दी गृहविषै डारा, अनेक युद्धविषै जीते राजानिके समूह, अब मोहकर उन्मत्त भया मैं प्रमादके बश प्रवर्ता हूं। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं हे राजन्! रावण तो कामके बश भया अर बिभीषण महा बुद्धिमान मंत्रविषै निपुण सब मंत्रिनिको इकट्ठाकर मंत्र विचारा, कैसा है विभीषण रावणके राज्यका भार जाके सिरपर पडा है, समस्त शास्त्रनिके ज्ञानरूप जलकर धोया है मनरूप मैल जाने, रावणके ता सम न और हितू नाहीं। विभीषणको सर्वथा रावणके हितहीका चिंतवन है सो मंत्रिनिसूं कहता भया अहो वृद्धाहो! राजाकी तो यह दशा अब अपने ताईं कहा कर्तव्य सो कहो? तब विभीषणके बचन सुन संभिन्नमति मंत्री कहता भया हम कहा कहें, सर्वकार्य बिगडा। रावणकी दाहिनी भुजा खरदूषण हुता सो मूवा अर विराधित कहा पदार्थ सो स्यालते सिंह भया, लक्ष्मणके युद्धविषै सहाई भया अर बानरवंशी जोरते बस रहे हैं इनका आकार तो कछु औरही और, इनके चित्तमें कछु और ही है जैसे सर्प ऊपरतो नरम माही विष, अर पवनका पुत्र जो हनूमान् सो खरदूषणकी पुत्री अनंगकुसमाका पति सो सुग्रीवकी पुत्री परणा है सुग्रीवकी पक्ष बिशेष है यह बचन संभिन्नमतिके सुन पंचमुख मंत्री मुसकाय बोला—तुम खरदूषणके मरण कर सोच किया सो शूरवीरनिकी यही रीति है जो संग्राम विषै शरीर तजें अर एक खरदूषणके मरणकर रावणका कहा घट गया जैसे पवनके योगते समुद्रते एक जलकी कणिका गई तो समुद्रका कहा न्यून भया अर तुम औरनिकी प्रशंसा करो हो सो मेरे चित्तमें लज्जा उपजे है, कहां रावण जगत्का स्वामी

अर कहां वे वनवासी भूमिगोचरी, लक्ष्मणके हाथ सूर्यहास खड्ग आया तो कहा अर विराधित आय मिला तो कहा जैसे पहाड विषम है अर सिंहकर संयुक्त है तो हू कहा दावानल न दहे ? सर्वथा दहे, तब सहस्रमति मंत्री माथा हलाय कहता भया।

कहा ये अर्थहीन वातें कहो हो जामे स्वामीका हितहोय सो करना, दूसरा स्वल्प है अर हम वडे हैं यह विचार बुद्धिमानका नाहीं, समय पाय एक अग्निका किणका सकल मंडलको दहे अर अश्वग्रीव के महा सेना हुती अर सर्व पृथिवी विषें प्रसिद्ध हुता सो छोटेसे त्रिपृष्टिने रणमें मार लिया ताते और यत्न तज लंकाकी रक्षाका यत्न करहु। नगरी परम दुर्गम करहु, कोई प्रवेश न करसके, महा भयानक मायामई यंत्र सर्व दिशानिमें विस्तार हु अर नगरमें परचक्रका मनुष्य न आवने पावे अर लोकको धीर्य बंधावहु अर सब उपाय कर रक्षा करहु, जाकर रावण सुखको प्राप्त होय अर मधुर वचनकर नाना वस्तुनिकी भेंटकर सीताको प्रसन्न करहु जैसे दुग्ध पायवेसे नागनी प्रसन्न करिये अर वानरवंशी योधानिकी नगरके बाहिर चौकी राखहु ऐसे किएं कोऊ परचक्रका धनी न आय सके अर यहांकी वात परचक्र में न जाय या भांति गढका यत्न कीये तब कौन जाने सीता कौनने हरी अर कहां है। सीता विना राम निश्चय सेती प्राण तजेगा जाकी स्त्री जाय सो कैसे जीवे, अर राम मूवा तब अकेला लक्ष्मण कहा करेगा अथवा रामके शोककर लक्ष्मण अवश्य मरे न जीवे, जैसे दीपकके गए प्रकाश न रहे अर यह दोऊ भाई मूए तब अपराधरूप समुद्र विषें डूबा जो विराधित सो कहा करेगा अर सुग्रीवका रूप कर विद्याधर ताके घरमें आया है सो रावण टार सुग्रीवका दुःख कौन हरे ? मायामई यंत्रकी रखवारी सुग्रीव को सौंपो, जासे वह प्रसन्न होय रावण याके शत्रुका नाश करे, लंकाकी रक्षाका उपाय मायामई यंत्रकर करना। यह मंत्रकर हर्षित होय सब अपने अपने घर गए, विभीषणने मायामई यंत्रकर लंकाका यत्न

किया अर अधः ऊर्ध तिर्यकसे कोऊ न आय सके नानाप्रकारकी विद्याकर लंका अगम्य करी। गौतमगणधर कहे हैं हे श्रेणिक ! संसारी जीव सर्व ही लौकिक कार्यमें प्रवृत्ते हैं, व्याकुल चित्त हैं अर जे व्याकुलता रहित निर्मलचित्त हैं तिनको जिन वचनका अभ्यास टाल और कर्तव्य नाहीं अर जो जिनेश्वरने भाखा है सो पुरुषार्थ बिना सिद्ध नाहीं अर भले भवितव्यके बिना पुरुषार्थकी सिद्धि नाहीं, तातें जे भव्यजीव हैं ते सर्वथा संसारसे विरक्त होय मोक्षका यत्न करहु नर नारक देव तिर्यंच ये चारो ही गति दुःख रूप हैं, अनादि कालते ये प्राणी कर्मके उदयकर युक्त रागादिमें प्रवृत्ते हैं तातें इनके चित्तविषे कल्यानरूप वचन न आवें। अशुभका उदय मेट शुभकी प्रवृत्ति करें, तब शोकरूप अग्निकर तप्तायमान न होंय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै मायामयी कोट व्याख्यान वर्णन करनेवाला छियालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४६ ॥

अथानन्तर किहकंधापुरका स्वामी जो सुग्रीव सो ताका रूप बनाय विद्याधर याके पुरमें आया अर सुग्रीव कांताके विरहकर दुखी भ्रमता संता वहां आया जहां खरदूषणकी सेनाके सामंत मूए पडे हुते, विखरे रथ मूए हाथी मूए घोडे छिन्न भिन्न होय रहे हैं शरीर जिनके, कैयक राजानिका दाह होय है कैयक ससके हैं कईएकनिकी भुजा कटगई हैं कईनिकी जंघा कटगई हैं। कईनिकी आंत गिरपडी हैं कईनिके मस्तक पडे हैं कईनिको स्याल भखे हैं कईनिको पक्षी चूथे हैं कैयकनिके परवार रोवे हैं कईयकनिको टांगि राखे हैं। यह रणखेतका वृत्तांत देख सुग्रीव काहूसों पूछता भया तब वाने यह कही खरदूषण मारा गया, तब सुग्रीवने खरदूषणका मरण सुन अति दुःख किया मनमें चितवे है।

बडा अनर्थ भया वह महाबलवान् हुता ताते मेरा सर्व दुःख निवृत्त होता सो कालरूप दिग्गजने मेरा आशारूप वृक्ष तोडा, मैं हीनपुण्य अब मेरा दुःख कैसे शांत होय यद्यपि विना उद्यम जीवको सुख नाहीं ताते दुःख दूर करवेका उद्यम अंगीकार करूं, तब हनूमानपै गया, हनूमान दोऊनिका समानरूप देख पाछा गया तब सुग्रीव विचारी कौन उपाय करूं जाते चित्तकी प्रसन्नता होय जैसे नवा चांद निरखें हर्ष होय, जो रावणके शरणे जाऊं तो रावण मेरा अर शत्रुका एकरूप जान शायद मोही मारे अथवा दोऊनिको मार स्त्री हर लेय वह कामांध है कामांधका विश्वास नाहीं। मंत्र दोष अपमान दान पुण्य वित्त शूरवीरता कुशील मनका दाह यह सब मित्रको न कहिए जो कहै तो खता पावें ताते जाने संग्रामविषे खरदूषणको मारा ताहीके शरणे जाऊं, वह मेरा दुःख हरे अर जापै दुःख पडा होय सो दुखीके दुखको जाने जिनकी तुल्य अवस्था होय तिनही विषे स्नेह होय। सीताके वियोग करि सीतापति हीको दुःख उपजा है ऐसा विचारकर विराधितके निकट अति प्रीतिकर दूत पठाया सो दूत जाय सुग्रीवके आगमनका वृत्तांत विराधितसे कहता भया सो विराधित सुन कर मनमें हर्षित भया विचारी वडा आश्चर्य है, सुग्रीव जैसे महाराज मुहसे प्रीति करनेकी इच्छा करें सो बडेनिके आश्रयते कहा न होय। मैं श्रीरामलक्ष्मणका आश्रय किया तातें सुग्रीवसे पुरुष मोसे ढभ किया चाहे हैं, सुग्रीव आया मेघकी गाज समान वादित्रनिके शब्द होते आए सो पाताल लंकाके लोग सुनकर व्याकुल भए। तब लक्ष्मण विराधितको पूछा वादित्रनिका शब्द कौनका सुनिये है तब अनुराधाका पुत्र विराधित कहता भया हे नाथ! यह वानर वंशिनिका अधिपति प्रेमका भरा तिहारे निकट आया है। किहकंधापुरके राजा सूर्यरजके पुत्र पृथिवी पर प्रसिद्ध बडा वाली छोटा सुग्रीव सो वालीने तो रावणको सिर न नवाया सुग्रीवको राज्य देय वैरागी भया सर्व परिग्रह तजी, सुग्रीव निहकंटक राज्य करे। ताके सुतारा स्त्री जैसे शची संयुक्त इन्द्र रमें तैसे सुग्रीव

सुतारा सहित रमैं। जाके अंगद नामा पुत्र गुण रत्ननिकारि शोभायमान जाकी पृथिवीविषै कीर्ति फैल रही है यह बात विराधित कहै हैं अर सुग्रीव आया ही, राम अर सुग्रीव मिले, रामको देख फूल गया है मुख कमल जाका सुवर्णके आंगनविषै बैठे, अमृतसमान वाणी कर योग्य संभाषण करते भए। सुग्रीवके संग जे वृद्ध विद्याधर हैं, वे रामसूं कहते भए हे देव! यह राजा सुग्रीव किहकंधापुरका पति महा बली गुणवान सत्पुरुषनिको प्रिय सो कोई एक दुष्ट विद्याधर माया कर इनका रूप बनाया इनकी स्त्री सुतारा अर राज्य लेयवेका उद्यमी भया है। ये वचन सुन राम मनमें चितवते भए यह कोई मोसे भी अधिक दुखिया है याके बैठे ही दूजा पुरुष याके घरमें आय घुसा है, याके राज्य विभव है परंतु कोऊ शत्रुको निवारिवे समर्थ नाहीं। लक्ष्मण समस्त कारण सुग्रीवके मंत्री जामवंतको पूछा, जामवंत सुग्रीवके मन तुल्य है तब वह मंत्री महा विनय संयुक्त कहता भया—हे नाथ! कामकी फांसी कर बेढा वह पापी सुताराके रूपपर मोहित भया, मायामई सुग्रीवका रूप बनाय राजमंदिर आया। सो सुताराके महिलमैं गया, सुतारा महासती अपने सेवकानिते कहती भई, यह कोई दुष्ट विद्याधर विद्याकरि मेरे पतिका रूप बनाय आवे है पापकर पूर्ण सो याका आदर सत्कार कोऊ मत करो, वह पापी शंकारहित जायकर सुग्रीवके सिंहासनपर बैठा अर वाही समय सुग्रीव हू आया अर अपने लोकनिको चिंतावान देखे तब विचारी मेरे घरमें काहेका विषाद है, लोक मलिन वदन ठौर ठौर भेले होय रहे हैं। कदाचित् अंगद मेरुके चैत्याल-यनिकी बंदनाके अर्थ सुमेरु गया न आया होय, अथवा राणीने काहूपर रोस किया होय अथवा जन्म जरा मरणकर भयभीत बिभीषण वैराग्यको प्राप्त भया होय ताका सोच होय ऐसा विचारकर द्वारे आया, रत्नमई द्वार गीत गानरहित देखा, लोक सचिंत देखे, मनमें विचारी यह मनुष्य और ही होय गये। मंदि-रके भीतर स्त्री जननिके मध्य अपनासा रूप किए दुष्ट विद्याधर बैठा देखा दिव्य हार पहिरे सुन्दर वस्त्र

मुकटकी कांति करि अकाश रूप तब सुग्रीव क्रोधकर गाजा जैसे वर्षाकालका मेघ गाजे अर नेत्रनिके आरक्तकरि दशोंदिशा आरक्त होय गई जैसी सांझ फूले तब वह पापी कृत्रिम सुग्रीव भी गाजा जैसे माता हाथी मदकर बिह्वल होय तैसे कामकर विह्वल सुग्रीवसों लडनेको उठा दोऊ होठ डसते भ्रुकटी चढाय युद्धको उद्यमी भए तब श्रीरामचन्द्रादि मंत्रिनिने मने किए अर सुतारा पटराणी प्रकट कहती भई यह कोऊ दुष्ट विद्याधर मेरे पतिका रूप बनाय आया है। देह अर बल अर बचननिकी कांति करि तुल्य भया है परन्तु मेरे भरतारमें महापुरुषनिके लक्षण हैं सो यामें नाहीं जैसे तुरंग अर खरकी तुल्यता नाहीं तैसे मेरे पतिकी अर याकी तुल्यता नाहीं। या भांति राणी सुताराके बचन सुनकर केएक मंत्रिनि ने न मानी जैसे निर्धनका वचन धनवान न माने, सादृश्यरूप देखकर हरा गया है चित्त जिनका सो सब मन्त्रि नि भेले होय मन्त्र किया पंडितनिको इतनोंनिके वचननिका विश्वास न करना—बालक अतिवृद्ध, स्त्री, मद्यपायी वेश्यासक्त इनके वचन प्रमाण नाहीं अर स्त्रीनिके शीलकी शुद्धि राखना, शीलकी शुद्धि बिना गोत्रकी शुद्धि नाहीं, स्त्रीनिको शील ही प्रयोजन है तातें राज लोकमें दोऊ ही न जानें पावें, बाहिर रहें तब इनका पुत्र अंगद तो माताके बचनतें इनका पक्ष आया अर जांबूनद कहे है हम भी इन्हींके संग रहें अर इनका पुत्र अंगज सो कृत्रिम सुग्रीवका पक्ष है अर सात अक्षोहणी दल इनमें है अर सात वामें हैं। नगरके दक्षिणके ओर वह राखा उत्तरकी ओर यह राखा अर बालीका पुत्र चंद्ररश्मि तानें यह प्रतिज्ञा करी जो सुताराके महिल आवेगा ताही खडग कर मारूंगा तब यह सांचा सुग्रीव स्त्रीके विरह कर व्याकुल शोकके निवारवे निमित्त खरदूषणपै गया सो खरदूषण तो लक्ष्मणके खडग कर हता गया बहुरि यह हनूमान पै गया, जाय प्रार्थना करी, मैं दुःख कर पीडित हूं मेरा सहाय करो। मेरारूप कर कोइ पापी मेरे घरमें पैठा है, सो मोहि महाबाधा है जायकर ताहि मारो, तब सुग्रीवके वचन सुन हनूमान

बडवानल समान क्रोधकर प्रज्वलित होय अपने मंत्रिनि सहित अप्रतीघात नामा विमानमें बैठ किहकंधापुर आया सो हनूमानको आया सुन वह मायामई सुग्रीव हाथी चढा लडिवेको आया सो हनूमान दोऊनिका सादृश्य रूप देख आश्चर्य्यको प्राप्त भया, मनमें चितवता भया ये दोऊ समान रूप सुग्रीव ही हैं। इनमेंसे कौनको मारूं कछु विशेष जाना न पडे, विना जाने सुग्रीव ही को मारूं तो बडा अनर्थ होय। एक मुहूर्त अपने मंत्रिनिते विचारकर उदासीन होय हनूमान पीछा निजपुर गया सो हनूमानको गया सुन सुग्रीव बहुत व्याकुल भया। मनमें विचारता भया हजारों विद्या अर माया तिनकरि मण्डित महावली महाप्रताप रूप वायुपुत्र सो भी सन्देहको प्राप्त भया सो बडा कष्ट, अब कौन सहाय करे अति व्याकुल होये दुःख निवारने अर्थ स्त्रीके वियोगरूप दावानल कर तप्तायमान आपके शरण आया है आप शरणागत प्रतिपालक हैं, यह सुग्रीव अनेक गुणानिकर शोभित है, हे रघुनाथ! प्रसन्न होहु, याहि अपना करहु, तुम सारिखे पुरुषनिका शरीर परदुःखका नाशक है ऐसे जाबूनंदके वचन सुन रामलक्ष्मण अर विराधित कहते भए, धिक्कार होवे परदारा रतपापी जीवनिको राम विचारी मेरा अर याका दुःख समान है सो यह मेरा मित्र होयगा मैं याका उपकार करूंगा अर यह पीछा मेरा उपकार करेगा नहीं तो मैं निर्ग्रंथी मुनि होय मोक्षका साधन करूंगा ऐसा विचारकर राम सुग्रीवसों कहते भए, हे सुग्रीव! मैं सर्वथा तोहि मित्र किया जो तेरा स्वरूप बनाय आया है ताहि जीत तेरा राज्य तोहि निहकंटक कराय दूंगा अर तेरी स्त्री तोहि मिलाय दूंगा अर तेरा काम होय चुके पाछे तू सीताकी सुध हमें आन देना जो कहां है, तब सुग्रीव कहता भया हे प्रभो! मेरा कार्य भए पाछे जो सात दिनमें सीताकी सुध न लाऊं तो अग्निमें प्रवेश करूं यह बात सुन राम प्रसन्न भए जैसे चन्द्रमाकी किरणकरि कुमद प्रफुल्लित होय। रामका मुखरूप कमल फूल गया, सुग्रीवके अमृतरूप वचन सुनिकारि रोमांच खडे होय आए, जिनराजके चैत्या

लयमें दोनों धर्ममित्र भए यह वचन किया परस्पर कोई द्रोह न करे बहुरि रामलक्ष्मण रथपर चढ अनेक सामन्तनि सहित सुग्रीवके साथ किहकन्धापुर आए। नगरके समीप डेराकर सुग्रीवने मायामयी सुग्रीव पै दूत भेजा सो दूतको ताने फेर दिया अर मायामई सुग्रीव रथमें बैठ बडी सेना सहित युद्धके निमित्त निकसा, सो दोऊ सुग्रीव परस्पर लडे। मायामई सुग्रीव अर सांचे सुग्रीवके नानाप्रकारका युद्ध भया, अंधकार होय गया दोऊ ही खेदको प्राप्त भये, घनी बेरमें मायामई सुग्रीवने सांचे सुग्रीवके गदाकी दीनी सो गिर पडा, तब मायामई सुग्रीव याको मूया जान हर्षित होय नगरमें गया अर सांचा सुग्रीव मूर्छित होय पडा सो परिवारके लोक डेरामें लाये तब सचेत होय रामसों कहता भया—हे प्रभो! मेरा चोर हाथमें आया हुता सो नगरमें जाने दिया, तब राम कही तेरा अर वाका रूप देखकर हम भेद न जाना तातें सो तेरा शत्रु न हता कदाचित विना जाने तेरा ही नाश होय तो योग्य नाहीं, तू हमारा परम मित्र है तेरे अर हमारे जिनमंदिरमें वचन हुवा है।

अथानन्तर रामने मायामई सुग्रीवको बहुरि युद्धके निमित्त बुलाया सो वह बलवान क्रोधरूप अग्नि कर जलता आया, राम सन्मुख भए वह समुद्र तुल्य अनेक शस्त्रनिके धारक सुभट वेई भए ग्राह तिनकरि पूर्ण, ता समय लक्ष्मणने सांचा सुग्रीव पकड राखा जो स्त्रीके बैरसे शत्रुके सन्मुख न आए अर श्रीरामको देखकर मायामई सुग्रीवके शरीरमें जो वैताली विद्या हुती सो तातें पूछकर ताके शरीरते निकसी तब सुग्रीवका आकार मिट वह साहसगति विद्याधर इन्द्रनीलके पर्वतसमान भासता भया जैसे सांपकी कांचली दूर होय तैसे सुग्रीवका रूप दूर होगया तब जो आधी सेना बानर वंशिनिकी याके साथ हुती सो यातें जुदी याके सन्मुख होय युद्धको उद्यमी भई सब बानर वंशी एक होय नानाप्रकारके आयुधनिकरि साहसगतिसों युद्ध करते भए सो साहसगति महा तेजस्वी प्रबलशक्तिका स्वामी सब बानर

बंशिनिको दशोंदिशाको भगाता भया जैसे पवन धूलको उडावे बहुरि साहसगति धनुष वाण लेय राम पै आया सो मेघमंडल समान वाणनिकी वर्षा करता भया उद्धत है पराक्रम जाका, साहसगतिके अर श्रीरामके महायुद्ध भया प्रबल है पराक्रम जिनका ऐसे राम रणक्रीडामें प्रवीण क्षुद्रबाणनिकरि साहसगतिका वक्तर तोडते भए अर तीक्ष्ण बाणनिकरि साहसगतिका शरीर चालिनी समान कर डारा सो प्राणरहित होय भूमिमें पडा सबनि निरख निश्चय क्रिया जो यह प्राणरहित है तब सुग्रीव राम लक्ष्मण की महास्तुति कर इनको नगरमें लाया, नगरकी शोभा करी, सुग्रीवको सुताराका संयोग भया सो भोगसागर में मग्न होय गया, रात दिनकी सुध नाहीं, सुतारा बहुत दिननिमें देखी सो मोहित होगया अर नन्दनवनकी शोभाको ऊलंघे है ऐसा आनन्द नामाबन वहां श्रीरामको राखे। ता वनकी रमणीकताका वर्णन कौन कर सके जहां महामनोग्य श्रीचन्द्रप्रभुका चैत्यालय वहां राम लक्ष्मणने पूजा करी अर विराधितको आदिदे सर्ब कटकका डेरा वनमें भया खेदरहित तिष्ठे, सुग्रीवकी तेरह पुत्री रामचन्द्रके गुण श्रवणकर अति अनुराग भरीं वरिवेकी बुद्धि करती भई, चन्द्रमा समान है मुख जिनका तिनके नाम सुनों चन्द्राभा, हृदयावली हृदयधर्म्मा, अनुधरी, श्रीकांता, सुन्दरी, सुरवती, देवांगना समान है विभ्रम जाका, मनोवाहिनी मनमें बसन हारी, चारुश्री, मदनोत्सवा, गुणवती अनेक गुणनिकर शोभित, अर पद्मावती फूले कमल समान है मुख जाका, तथा जिनपती सदा जिनपूजामें तत्पर ए त्रयोदश कन्या लेकर सुग्रीव राम पै आया नमस्कारकर कहता भया हे नाथ ! ये इच्छाकर आपको बरें हैं, हे लोकेश ! इन कन्यानिके पति होवो इनका चित्त जन्महीते यह भया जो हम विद्याधरनिको न वरें, आपके गुण श्रवणकर अनुरागरूप भई हैं यह कहकर रामको परणाई ये कन्या अति लज्जाकी भरी नम्रीभूत हैं मुख जिनके रामका आश्रय करती भई, महासुन्दर नवयौवन जिनके गुण वर्णन में न आवें विजुरी समान

लयमें दोनों धर्ममित्र भए यह वचन किया परस्पर कोई द्रोह न करे बहुरि रामलक्ष्मण रथपर चढ अनेक सामन्तनि सहित सुग्रीवके साथ किहकन्धापुर आए। नगरके समीप डेराकर सुग्रीवने मायामयी सुग्रीव पै दूत भेजा सो दूतको ताने फेर दिया अर मायामई सुग्रीव रथमें बैठ बडी सेना सहित युद्धके निमित्त निकसा, सो दोऊ सुग्रीव परस्पर लडे। मायामई सुग्रीव अर सांचे सुग्रीवके नानाप्रकारका युद्ध भया, अंधकार होय गया दोऊ ही खेदको प्राप्त भये, घनी बेरमें मायामई सुग्रीवने सांचे सुग्रीवके गदाकी दीनी सो गिर पडा, तब मायामई सुग्रीव याको मूया जान हर्षित होय नगरमें गया अर सांचा सुग्रीव मूर्छित होय पडा सो परिवारके लोक डेरामें लाये तब सचेत होय रामसों कहता भया—हे प्रभो! मेरा चोर हाथमें आया हुता सो नगरमें जाने दिया, तब राम कही तेरा अर वाका रूप देखकर हम भेद न जाना तातें सो तेरा शत्रु न हता कदाचित बिना जाने तेरा ही नाश होय तो योग्य नाहीं, तू हमारा परम मित्र है तेरे अर हमारे जिनमंदिरमें वचन हुवा है।

अथानन्तर रामने मायामई सुग्रीवको बहुरि युद्धके निमित्त बुलाया सो वह बलवान क्रोधरूप अग्नि कर जलता आया, राम सन्मुख भए वह समुद्र तुल्य अनेक शस्त्रनिके धारक सुभट वेई भए ग्राह तिनकरि पूर्ण, ता समय लक्ष्मणने सांचा सुग्रीव पकड राखा जो स्त्रीके बैरसे शत्रुके सन्मुख न आए अर श्रीरामको देखकर मायामई सुग्रीवके शरीरमें जो वैतालौ विद्या हुती सो तातें पूछकर ताके शरीरते निकसी तब सुग्रीवका आकार मिट वह साहसगति विद्याधर इन्द्रनीलके पर्वतसमान भासता भया जैसे सांपकी कांचली दूर होय तैसे सुग्रीवका रूप दूर होगया तब जो आधी सेना बानर वंशिनिकी याके साथ हुती सो यातें जुदी याके सन्मुख होय युद्धको उद्यमी भई सब बानर वंशी एक होय नानाप्रकारके आयुधनिकरि साहसगतिसों युद्ध करते भए सो साहसगति महा तेजस्वी प्रबलशक्तिका स्वामी सब बानर

बंशिनिको दशोंदिशाको भगाता भया जैसे पवन धूलको उडावे बहुरि साहसगति धनुष वाण लेय राम पै आया सो मेघमंडल समान वाणनिकी वर्षा करता भया उद्धत है पराक्रम जाका, साहसगतिके अर श्रीरामके महायुद्ध भया प्रवल है पराक्रम जिनका ऐसे राम रणक्रीडामें प्रवीण क्षुद्रवाणनिकरि साहस-गतिका वक्तर तोडते भए अर तीक्ष्ण बाणनिकरि साहसगतिका शरीर चालिनी समान कर डारा सो प्राणरहित होय भूमिमें पडा सबनि निरख निश्चय किया जो यह प्राणरहित है तब सुग्रीव राम लक्ष्मण की महास्तुति कर इनको नगरमें लाया, नगरकी शोभा करी, सुग्रीवको सुताराका संयोग भया सो भो-गसागर में मग्न होय गया, रात दिनकी सुध नाहीं, सुतारा बहुत दिननिमें देखी सो मोहित होगया अर नन्दनवनकी शोभाको ऊलंघे है ऐसा आनन्द नामावन वहां श्रीरामको राखे। ता वनकी रमणीकताका वर्णन कौन कर सके जहां महामनोग्य श्रीचन्द्रप्रभुका चैत्यालय वहां राम लक्ष्मणने पूजा करी अर विराधितको आदिदे सर्व कटकका डेरा वनमें भया खेदरहित तिष्ठे, सुग्रीवकी तेरह पुत्री रामचन्द्रके गुण श्रवणकर अति अनुराग भरीं वरिवेकी बुद्धि करती भई, चन्द्रमा समान है मुख जिनका तिनके नाम सुनों चन्द्राभा, हृदयावली हृदयधर्म्मा, अनुधरी, श्रीकांता, सुन्दरी, सुरवती, देवांगना समान है विभ्रम जाका, मनोवाहिनी मनमें बसन हारी, चारुश्री, मदनोत्सवा, गुणवती अनेक गुणनिकर शोभित, अर पद्मावती फूले कमल समान है मुख जाका, तथा जिनपती सदा जिनपूजामें तत्पर ए त्रयोदश कन्या लेकर सुग्रीव राम पै आया नमस्कारकर कहता भया हे नाथ! ये इच्छाकर आपको बरें हैं, हे लोकेश! इन कन्यानिके पति होवो इनका चित्त जन्महीते यह भया जो हम विद्याधरनिको न वरें, आपके गुण श्रवणकर अनुरागरूप भई हैं यह कहकर रामको परणाई ये कन्या अति लज्जाकी भरी नम्रीभूत हैं मूख जिनके रामका आश्रय करती भई, महासुन्दर नवयौवन जिनके गुण वर्णन में न आवें विजुरी समान

सुवर्णसमान कमलके गर्भ समान शरीरकी कांति जिनकी ताकर आकाशमें उद्योत भया। वे विनय रूप लावण्यता कर मंडित रामके समीप तिष्ठीं सुन्दर है चेष्टा जिनकी यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिक सूं कहे हैं हे मगधाधिपति! पुरुषनिमें सूर्य्य समान श्रीराम सारिखे पुरुष तिनका चित्त विषय वासनाते विरक्त है परन्तु पूर्व जन्मके सम्बन्धसूं कई एक दिन विरक्त रूप गृह में रह बहुरि त्याग करेंगे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सुग्रीवका व्याख्यान वर्णन करनेवाला सैंतालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४७ ॥

अथानन्तर ते सुग्रीवकी कन्या रामके मनमोहिवेके अर्थ अनेक प्रकारकी चेष्टा करती भईं मानो देवलोक हीते उतरी हैं वीणादिकका बजावना मनोहर गीतका गावना इत्यादि अनेक सुन्दर लीला करती भई तथापि रामचन्द्रका मन न मोहा, सब प्रकारके विस्तीर्ण विभव प्राप्त भए परन्तु रामने भोगनि विषे मन न किया। सीताविषे अत्यन्त दत्तचित्त समस्त चेष्टारहित महाआदरकरि सीताको ध्यावते तिष्ठें जैसे मुनिराज मुक्तिको ध्यावें। वे विद्याधरकी पुत्री गान करें, सो उनकी ध्वनि न सुनें अर देवांगना समान तिनका रूप सो न देखें रामको सर्व दिशा जानकी मई भासें अर कछु भासे नाहीं और कथा न करें। ए सुग्रीवकी पुत्री परणी, सो पास बैठी तिनको हे जनकसुते! ऐसा कह बतलावे, काकसे प्रीति कर पूछे अरे काक! तू देश २ भ्रमण करे है तैने जानकी हू देखी अर सरोवरविषैं कमल फूल रहे हैं तिनकी मकरन्द कर जल सुगन्ध होय रहा है तहां चकवा चकवीके युगल कलोल करते देख चितारें, सीता बिन रामको सर्व शोभा फीकी लागे, सीताके शरीरके संयोगकी शंकाकरि पवनसे आलिंगन करें कदाचित् पवन सीताजीके निकटते आई होय जा भूमिमें सीताजी तिष्ठे हैं ता भूमिको धन्य गिने अर सीता बिना

चन्द्रमाकी चादनीको अग्नि समान जाने मनमें चितवें कदाचित् सीता मेरे वियोग रूप अग्निकरि भस्म भई होय अर मन्द मन्द पवन कर लतानिको हालती देख जाने हैं यह जानकी ही है अर वेल पत्र हालते देख जाने जानकीके वस्त्र फरहरे हैं, अर भ्रमर संयुक्त फूल देख जाने ये जानकीके लोचन ही हैं अर कौंपल देख जाने ये जानकीके करपल्लव ही हैं अर श्वेत श्याम आरक्त तीनों जातिके कमल देख जानें सीताके नेत्र तीन रंगको धरे हैं अर पुष्पानिके गुच्छे देख जाने जानकीजीके शोभायमान स्तन ही हैं अर कदलीके स्तंभनिविषे जंघानिकी शोभा जाने अर लाल कमलनिविषै चरणनिकी शोभा जाने संपूर्ण शोभा जानकी रूप ही जाने।

अथानन्तर सुग्रीव सुताराके महिलविषै ही रहा, रामपै आये बहुत दिन भए तब रामने विचारी ताने सीता न देखी मेरे वियोगकर तप्तायमान भई वह शीलवंती मरगई तातैं सुग्रीव मेरे पास नाहीं आवे अथवा वह अपना राज्य पाय निश्चिंत भया हमारा दुःख भूल गया यह चिंतवनकरि रामकी आंखानिते आंसू पडे तब लक्ष्मण रामको सचिंत देख कोपकर लाल भए हैं नेत्र जाके आकुलित है मन जाका, नांगी तलवार हाथमें लेय सुग्रीव ऊपर चाला सो नगर कम्पायमान भया। सम्पूर्ण राज्यके अधिकारी तिन को उलंघ सुग्रीवके महलमें जाय ताको कहा रे पापी! अपने परमेश्वर राम तो स्त्रीके दुखकरि दुखी अर तू दुर्बुद्धि स्त्री सहित सुख सों राज्यकरे, रे विद्याधरबायस विषयलुब्ध दुष्ट! जहां रघुनाथने तेरा शत्रु पठाया है तहां मैं तोहि पठाऊंगा या भांति क्रोधके उग्र वचन लक्ष्मण जब कहे तब वह हाथ जोड नमस्कारकर लक्ष्मणका क्रोध शांत करता भया। सुग्रीव कहे है हे देव! मेरी भूल माफ करो, मैं करार भूल गया, हम सारिखे क्षुद्र मनुष्यनिके खोटी चेष्टा होय है अर सुग्रीवकी सम्पूर्ण स्त्री कांपती हुई लक्ष्मणको अर्घदेय आरती करती भईं। हाथ जोड नमस्कारकर पतिकी भिक्षा मांगती भईं। तब आप उत्तम पुरुष

तिनको दीन जान कृपा करते भए। यह महन्त पुरुष प्रणाम मात्र ही करि प्रसन्न होंय अर दुर्जन महा दान लेकर हू प्रसन्न न होंय, लक्ष्मणने सुग्रीवको प्रतिज्ञा चिताय उपकार किया जैसे यक्षदत्तको माताका स्मरण कराय मुनि उपकार करते भए। यह वार्ता सुन राजा श्रेणिक गौतमस्वामी सूं पूछे हैं हे नाथ! यक्षदत्तका वृत्तांत मैं नीका जानना चाहूं हूं तब गौतम स्वामी कहते भए—हे श्रेणिक! एक क्रौंचपुर नगर तहां राजा यक्ष राणी राजिलता ताके पुत्र यक्षदत्त सो एक दिन एक स्त्रीको नगरके बाहेर कुटीमें तिष्ठती देख कामबाण कर पीडित भया ताकी ओर चाला रात्रीविषै, तब ऐन नामा मुनि याको मना करते भए यह यक्षदत्त खड्ग है जाके हाथमें सो विजुरीके उद्योत करि मुनिको देखकर तिनके निकटजाय विनय संयुक्त पूछता भया हे भगवान! काहेको मोहि मने किया? तब मुनि कही जाको देखे तू कामवस भया है सो स्त्री तेरी माता है तातैं यद्यपि सूत्रमें रात्रिको बोलना उचित नाहीं तथापि करुणाकर अशुभ कार्य ते मने किया तब यक्षदत्तने पूछा हे स्वामी! यह मेरी माता कैसे है? तब मुनि कही सुन एक मृत्यकावती नगरी तहां काणिक नामा वणिक, ताके भ्रू नामा स्त्री ताके बन्धुदत्त नामा पुत्र ताकी स्त्री मित्रवती लतादत्तकी पुत्री सो स्त्रीको छाने गर्भ राखि बंधुदत्त जहाज बैठि देशांतर गया ताको गए पीछे याकी स्त्रीके गर्भ जान सासू सुसरने दुराचारणी जान घरसे निकाल दई सो उत्पलका दासीको लार लेय बडे सारथीकी लार पिताके घर चाली सो उत्पलकाको सर्पने डसी बनमें मुई अर यह मित्रवती शीलमात्र ही है सहाय जाके सो क्रौंचपुरविषै आई अर महाशोककी भरी ताके उपवनविषै पुत्रका जन्म भया तब यह तो सरोवरविषै वस्त्र धोयवे गई अर पुत्ररत्न कंबलमें वेढा सो कंवल संयुक्त पुत्रको स्वान लेय गया सो काहूने छुडाया, राजा यक्षदत्तको दिया, ताके राणी राजिलता अपुत्रवती सो राजाने पुत्र राणीको सौंपा, ताका यक्षदत्त नाम धरा सो तू अर वह तेरी माता वस्त्र धोय आई सो तोहि न देखि विलाप करती भई,

एक देवपुजारीने ताहि दयाकर धैर्य बंधाया तू मेरी बाहिन है ऐसा कह राखी सो यह मित्रवती सहायरहित लज्जाकर अकीर्तिके भय थकी बापके घर न गई। अत्यन्त शीलकी भरी जिनधर्मविषै तत्पर दरिद्रीकी कुटीविषै रहे, सो तैं भ्रमण करता देख कुभाव किया अर याका पति बंधुदत्त रत्न कंबल दे गया हुता, ताविषै ताहि लपेट सो सरोवर गई हुती, सो रत्नकम्बल राजाके घरमें है अर वह बालक तू है या भांति मुनि कही तब यह मुनिको नमस्कार कर खड्ग हाथमें लेय राजा यक्षपै गया अर कहता भया । या खड्ग कर तेरा सिर काटूंगा, नातर मेरे जन्मका वृत्तांत कहो, तब राजा यक्ष यथावत वृत्तांत कहा अर वह रत्नकम्बल दिखाया, सो लेयकर यक्षदत्त अपनी 'माता' कुटीमें तिष्ठै थी, तासूं मिला अर अपना बंधुदत्त पिता ताको बुलाया, महाउत्सव अर महा विभवकर मंडित माता पितासूं मिला, यह यक्षदत्तकी कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कही—जैसे यक्षदत्तको मुनिने माताका वृत्तांत जनाया तैसे लक्ष्मणने सुग्रीवको प्रतिज्ञा विस्मरण होयगया हुता सो जनाया, सुग्रीव लक्ष्मणके संग शीघ्र ही रामचंद्रपै आया नमस्कार किया अर अपने सब विद्याधर सेवक महाकुलके उपजे बुलाए । वे या वृत्तांतको जानते हुते अर स्वामी कार्यविषै तत्पर तिनको समझाय कर कहा सो सर्व ही सुनो रामने मेरा बडा उपकार किया। अब सीताकी खबर इनको लाय दो तातैं तुम दिशानिको जाओ अर सीता कहां है यह खबर लावो, समस्त पृथिवीपर जल स्थल आकाश विषै हेरो, जम्बूद्वीप लवण समुद्र घातकी खण्ड कुलाचल वन सुमेरु नानाप्रकारके विद्याधरनिके नगर समस्त अस्थानक सर्वदिशा ढूंढो।

अथानन्तर ये सब विद्याधर सुग्रीवकी आज्ञा सिरपर धारकर हर्षित भए सर्वही दिशानिको शीघ्र ही दौडे, सबही विचारें हम पहिली सुध लावें तासों राजा अति प्रसन्न होय अर भामण्डलको हू खवर पठाई जो सीता हरी गई ताकी सुध लेवो, तब भामण्डल बाहिनके दुःखकर अतिही दुखी भया, हेरनेका

उद्यम किया अर सुग्रीव आप भी दूढनेको निकसा सो जोतिष चक्रके ऊपर होय विमानमें बैठा देखता भया दुष्ट विद्याधरनिके नगर सर्व देखे सो समुद्रके मध्य जम्बूद्वीप देखा वहां महेंद्र पर्वतपर आकाशसे सुग्रीव उतरा तहां रत्नजटी तिष्ठे था सो डरा जैसे गरुडते सर्प डरे वहुरि विमान नजीक आया तब रत्नजटीने जाना कि यह सुग्रीव है लंकापतिने क्रोधकर मोपर भेजा सो मोहि मारेगा, हाय मैं समुद्रमें क्यों न डूब मूया या अन्तर द्वीपविषैं मारा जाऊंगा, विद्या तो रावण मेरी हर लेय गया अब प्राण हरने याहि पठाया, मेरी यह वांछा हुती जैसे तैसे भामण्डल पर पहुंचू तो सर्व कार्य होय सो न पहुंच सका यह चिंतवन करे है इतनेमें ही सुग्रीव आया मानो दूसरा सूर्य ही है, द्वीपका उद्योत करता आया सो याको बनकी रजकर धूसरा देख दया कर पूछता भया हे रत्नजटी ! पहिले तू विद्या कर संयुक्तहुता अब हे भाई ! तेरी कहा अवस्था भई ? या भांति सुग्रीव दयाकर पूछा सो रत्नजटी अत्यन्त कम्पायमान कछु कह न सके तब सुग्रीव कही भय मत कर, अपना वृत्तांत कह, बारम्बार धैर्य्य वन्धाया, तब रत्नजटी नमस्कार कर कहता भया—रावण दुष्ट सीताको हरण कर लेजाता हुता सो ताके अर मेरे परस्पर विरोध भया, मेरी विद्या छेद डारी, अब मैं विद्यारहित जीवितविषैं सन्देह चिन्तावान् तिष्ठे था सो हे कपिवंशके तिलक ! मेरे भागते तुम आए। ये वचन रत्नजटीके सुन सुग्रीव हर्षित होय ताहि संग लेय अपने नगरमें श्रीराम पै लाया सो रत्नजटी रामलक्ष्मणसों सबके समीप हाथ जोड नमस्कार कर कहता भया हे देव ! सीता महासती है ताको दुष्ट निर्दई लंकापति रावण हर लेय गया सो रुदन करती विलाप करती विमानमें बैठी मृगी समान व्याकुल मैं देखी, वह बलवान् बलात्कार लिए जाता हुता सो मैंने क्रोधकर कहा यह महासती मेरे स्वामी भामण्डलकी बहिन है तू छोड दे, सो वाने कोपकर मेरी विद्या छेदी, वह महाप्रबल जाने युद्धमें इन्द्रको जीता पकड लिया अर कैलाश उठाया, तीन खण्डका स्वामी सागरांत पृथिवी

जाकी दासी जो देवनिहूकरि न जीता जाय सो ताहि में कैसे जीतूं ताने मोहि विद्यारहित किया यह सकल वृत्तांत राम देवने सुनकर ताको उरसे लगाया अर वारम्बार ताहि पूछते भए। बहुरि राम पूछते भए हे विद्याधरो ! कहो लंका कितनी दूर है ? तब वे विद्याधर निश्चल होय रहे, नीचा मुख किया, मुख की छाया और ही होयगई, कछु जुवाब न दिया, तब रामने उनका अभिप्राय जाना जो यह हृदयविषैं रावणते भय रूप हैं मन्ददृष्टिकर तिनकी ओर निहारे तब वे जानते भए हमको आप कायर जानो हो तब लज्जावान होय हाथ जोड सिर नवाय कहते भए हे देव ! जाके नाम सुने हमको भय उपजे है ताकी बात हम कैसे कहें, कहां हम अल्प शक्तिके धनी अर कहां वह लंकाका ईश्वर ताते तुम यह हठ छोडो अब वस्तु गई जानो अथवा तुम सुनो हो तो हम सब वृत्तांत कहें सो नीके उरमें धारो, लवणसमुद्रविषैं राक्षस द्वीप प्रसिद्ध है अद्भुत सम्पदाका भरा सो सातसौ योजन चौडा है अर प्रदक्षिणाकर किंचित अधिक इकीससौ योजन वाकी परिधि है। ताके मध्य सुमेरु तुल्य त्रिकूटाचल पर्वत है सो नव योजन ऊंचा पचास योजनके विस्ताररूप, नानाप्रकारके मणि अर सुवर्ण कर मण्डित आगे मेघवाहनको राक्षसनिके इन्द्रनें दिया हुता ता त्रिकूटाचलके शिखर पर लंका नाम नगरी, शोभायमान रत्नमयी जहां विमान समान घर अर अनेक क्रीडा करनेके निवास तीस योजनके विस्तार लंकापुरी महाकोट खाईकर मण्डित मानों दूजी वसुधारा ही है अर लंकाके चौगिरद बडे वडे रमणीक स्थानक हैं अति मनोहर मणि सुवर्ण मई जहां राक्षसनिके स्थानक हैं तिनविषैं रावणके बन्धुजन वसे हैं। सन्ध्याकार सुवेल कांचन ल्हादन पोधन हंस हर सागर धोष अर्धस्वर्ग इत्यादि मनोहर स्थानक बन उपवन आदिकरि शोभित देवलोक समान हैं। जिनविषैं भ्रात, पुत्र, मित्र, स्त्री बांधव सेवक जन सहित लंकापति रमें हैं सो विद्याधरनि सहित क्रीडा करता देख लोकानिको ऐसी शंका उपजे है मानों देवनि सहित इन्द्रही रमें हैं जाका महा

बली विभीषणसा भाई आदिनकार युद्धमें न जीता जाय ता समान बुद्धि देवनिमें नाहीं अर ता समान मनुष्य नाहीं ताहिकरि रावणका राज्य पूर्ण है अर रावणका भाई कुम्भकर्ण त्रिशूलका धारक जाकी युद्धमें टेढी भौहें देव भी देख सकें नाहीं तो मनुष्यनिकी कहा बात ? अर रावणका पुत्र इन्द्रजीत पृथ्वीविषैं प्रसिद्ध है अर जाके बडे २ सामन्त सेवक हैं नाना प्रकार विद्याके धारक शत्रुनिके जीतनहारे अर जाका छत्र पूर्ण चन्द्रमा समान जाहि देखकर बैरी गर्वको तजे हैं ताने सदा रण संग्राममें जीत ही जीत सुभटपनेका विरद प्रकट किया है सो रावणके छत्रको देख तिनका सर्व गर्व जाता रहे अर रावणका चित्रपट देखे अथवा नाम सुने शत्रु भयको प्राप्त होय, जो ऐसा रावण तासों युद्ध कौन कर सके ताते यह कथा ही न करना और बात करो। यह बात विद्याधरनिके मुखते सुनकर लक्ष्मण बोला मानों मेघ गाजा तुम एती प्रशंसा करो हो सो सब मिथ्या है जो वह बलवान हुता तो अपना नाम छिपाय स्त्रीको चुराकर काहे लेगया ? वह पाखण्डी अतिकायर अज्ञानी पापी नीच राक्षस ताके रंच मात्र भी शूरवीरता नाहीं अर राम कहते भए बहुत कहने करि कहा, सीताकी सुध ही कठिन हुती अब सुध आई तब सीता आय चुकी अर तुम कही और बात करो और चिन्तवन करो सो हमारे और कछु बात नाहीं और कछु चिंतवन नाहीं। सीताको लावना यही उपाय है। रामके वचन सुनकर वृद्ध विद्याधर क्षण एक विचारकर बोले, हे देव ! शोक तजो हमारे स्वामी होवो अर अनेक विद्याधरनिकी पुत्री गुणनिकर देवांगना समान तिनके भरतार होवो अर समस्त दुःखकी बुद्धि छोडो तब राम कहते भए हमारे और स्त्रिनिका प्रयोजन नाहीं जो शचीसमान स्त्री होय तो भी हमारे अभिलाष नाहीं जो तिहारी हममें प्रीति है तो सीता हमें शीघ्र ही दिखावो तब जांबूनद कहता भया, हे प्रभो ! या हठको तज एक क्षुद्र पुरुषने कृत्रिम मयूरका हठ किया ताकी न्याईं स्त्रीका हठकर दुखी मत होवो यह कथा सुन—

एकवेणा तटग्राम तहां सर्वरुचि नामा गृहस्थी ताके विनयदत्त नामा पुत्र ताकी माता गुणपूर्णा अर विनयदत्तका मित्र विशालभूत सो पापी विनयदत्तकी स्त्रीसों आसक्त भया; स्त्रीके वचनकरि विनयदत्त को कपटकरि वनविषे लेगया, सो एक वृक्षके ऊपर बांध वह दुष्ट घर चला आया, कोई विनयदत्तके समाचार पूछे तो ताहि कछु मिथ्या उत्तर देय सांचा होय रहे अर जहां विनयदत्त बांधा हुता तहां एक क्षुद्र नामा पुरुष आया, वृक्षके तले बैठा, वृक्ष महा सघन विनयदत्त कुरलावता हुता सो क्षुद्र देखे तो दृढबंधनकर मनुष्य वृक्षकी शाखाके अग्रभाग बन्धा है, तब क्षुद्र दयाकर ऊपर चढा विनयदत्तको बंधनते निवृत्त किया। विनयदत्त द्रव्यवान सो क्षुद्रको उपकारी जान अपने घर लेगया। भाईते हू अधिक हित राखे, विनयदत्तके घर उत्साह भया अर वह विशालभूत कुमित्र दूर भाग गया, क्षुद्र विनयदत्तका परम मित्र भया सो क्षुद्रका एक रमनेका पत्रमयी मयूर सो पवनकर उडा राज पुत्रके घर जाय पडा सो ताने उठाकर रख लिया, ताके निमित्त क्षूद्र महा शोककर मित्रको कहता भया मोहि जीवता इच्छे है तो मेरा वही मयूर लाव, विनयदत्त कही मैं तोहि रत्नमई मयूर कराय दूं अर सांचे मोर मंगाय दूं वह पत्रमई मयूर पवनते उडगया सो राजपुत्रने राखा मैं कैसे लाऊं, तब क्षुद्र कही मैं वही लेऊं रत्नानिके न लूं, न सांचे लूं, विनयदत्त कहे जो चाहो सो लेहु वह मेरे हाथ नाहीं क्षुद्र बारम्बार वही मांगे सो वह तो मूढ हुता तुम पुरुषोत्तम होय ऐसे क्यों भूले हो। वह पत्रनिका मयूर राजपुत्रके हाथ गया विनयदत्त कैसे लावे तातैं अनेक विद्याधरनिकी पुत्री सुवर्ण समान वर्ण जिनका श्वेत श्याम आरक्त तीन वर्णको धरे हैं नेत्र कमल जिनके, सुन्दर पीवर हैं स्तन जिनके, कदली समान जंघा जिनकी अर मुखकी कांतिकर शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमाको जीते मनोहर गुणानिकी धरणहारी तिनके पति होऊ। हे रघुनाथ ! महाभाग्य, हमपर कृपा करहु यह दुःखका बढावनहारा शोक संताप छोडहु, तब लक्ष्मण बोले। हे जाम्बूनन्द तैं यह दृष्टांत यथार्थ न

दिया हम कहे हैं सो सुन; एक कुसुमपुर नामा नगर तहां एक प्रभव नामा गृहस्थ जाके यमुना नामा स्त्री ताके धनपाल बन्धुपाल गृहपाल पशुपाल क्षेत्रपाल ये पांच पुत्र सो यह पांचों ही पुत्र यथार्थ गुणनिके धारक, धनके कमाऊ कुटुम्बके पालिवेविषै उद्यमी सदा लौकिक धन्धे करें। क्षणमात्र आलस नाहीं अर इन सबनिते छोटा आत्मश्रेय नामा कुमार सो पुण्यके योगते देवनि कैसे भोग भोगवे, सो या को माता पिता अर बडे भाई कटुक बचन कहें। एक दिन यह मानी नगर बाहिर भ्रमे था सो कोमल शरीर खेदको प्राप्त भया उद्यम करनेको असमर्थ सो आपका मरण बांछता हुता ता समय याके पूर्व पुण्य कर्मके उदयकरि एक राजपुत्र याहि कहता भया, हे मनुष्य! मैं पृथुस्थान नगरके राजाका पुत्र भानुकुमार हूं सो देशांतर भ्रमणको गया हुता, सो अनेक देश देखे, पृथिवीपर भ्रमण करता दैवयोगते कर्मपुर गया, सो एक निमित्तज्ञानी पुरुषकी संगतिविषें रहा, ताने मोहि दुखी जान करुणाकर यह मंत्रमई लोहका कडा दिया अर कही यह सर्व रोगका नाशक है। बुद्धिवर्द्धक है। ग्रह सर्प पिशाचादिकका वश करणहारा है इत्यादि अनेक गुण हैं। सो तू राख, ऐसा कह मोहि दिया अर अब मेरे राज्यका उदय आया। मैं राज्य करनेको अपने नगर जावूं हूं, यह कडा मैं तोहि दू हूं। तू मरे मत, जो वस्तु आपपै आई अपना कार्य कर काहूको दे डारो यह महाफल है सो लोकाविषें ऐसे पुरुषनिको मनुष्य पूजे हैं, आत्मश्रेयको ऐसा कह राजकुमार अपना कडा देय अपने नगर गया अर यह कडा ले अपने घर आया, ताही दिन ता नगरके राजाकी राणीको सर्पने डसी हुती सो चेष्टा रहित होयगई, ताहि मृतक जान जरायवेको लाए हुते, सो आत्मश्रेयने मंत्रमई लोहके कडेके प्रसादकरि विषरहित करी, तब राजा अति दान देय बहुत सत्कार किया, आत्मश्रेयके कडेके प्रसादकरि महाभोग सामग्री भई। सब भाइनिविषैं यह मुख्य ठहरा। पुण्यकर्मके प्रभावकरि पृथिवीविषैं प्रसिद्ध भया। एक दिन कडेको वस्त्रविषैं बांध सरोवर गया,

सो गोह आय कडेको लेय महावृक्षके तले ऊंडा विल है ताविषैं पैठ गई, विल शिलानिकरि आच्छादित सो गोह बिलविषैं बैठी भयानक शब्द करे। आत्मश्रेयने जाना कडेको गोह बिलविषैं लेगई गर्जना करे है तब आत्मश्रेय वृक्ष जडते उखाड शिला दूर कर गोहका बिल चूर कर डाला, बहुत धन लिया सो राम तो आत्मश्रेय हैं अर सीता कडे समान है लंका विल समान है रावण गोह समान है तातैं हो विद्याधरो ! तुम निर्भय होवो, ये लक्ष्मणके वचन जम्बूनन्दके वचननिको खण्डन करनहारे सुनकर विद्याधर आश्चर्यको प्राप्त भए।

अथानन्तर जांबूनन्द आदि सब राम सूं कहते भए हे देव ! अनन्तवीर्य योगीन्द्रको रावणने नमस्कार कर अपने मृत्युका कारण पूछा तब अनन्तवीर्यकी आज्ञा भई जो कोटिशिलाको उठावेगा ताकरि तेरी मृत्यु है तब ये सर्वज्ञके बचन सुन रावणने विचारी ऐसा कौन पुरुष है जो कोटिशिलाको उठावे। यह बचन विद्याधरनिके सुन लक्ष्मण बोले मैं अबही यात्राको वहां चालूंगा, तब सबही प्रमाद तज इनके लार भए। जाम्बूनन्द महाबुद्धि, सुग्रीव, विराधित अर्कमाली नल, नील इत्यादि नामी पुरुष विमानविषै राम लक्ष्मणको चढाय कोटिशिला की ओर चाले। अंधेरी रात्रिविषैं शीघ्र ही जाय पहुंचे, शिलाके समीप उतरे, शिला महा मनोहर सुर नर असुरनिकरि नमस्कार करने योग्य, ये सर्व दिशाविषैं सामान्तानिको रखवारे राख शिलाकी यात्राको गए, हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार किया, सुगन्ध कमलनिकरि तथा अन्य पुष्पनिकरि शिलाकी अर्चा करी। चन्दनकर चरची, सो शिला कैसी शोभती भई मानों साक्षात शची ही है। ताविषैं जे सिद्ध भए तिनको नमस्कार कर हाथ जोड भक्तिकर शिलाकी तीन प्रदक्षिणा दई। सब विधिविषैं प्रवीण लक्ष्मण कमर बांध महा विनयको धरता संता नमोकार मंत्रमें तत्पर महा भक्ति करि स्तुति करवेको उद्यमी भया अर सुग्रीवादि बानर बंशी सब ही जयजयकार शब्द

कर महा स्तोत्र पढते भए एकाग्रचित्तकर सिद्धानिकी स्तुति करे हैं जो भगवान सिद्ध त्रैलोक्यके शिखर पर विराजे हैं वह लोकशिखर महादेदीप्यमान है अर वे सिद्धस्वरूप मात्र सत्ताकर अविनश्वर हैं तिनका बहुरि जन्म नाहीं अनंतवीर्यकर संयुक्त अपने स्वभावमें लीन महासमीचीनता युक्त समस्त कर्मरहित संसार समुद्रके पारगामी कल्याण मूर्ति आनन्द पिंड केवलज्ञान केवलदर्शनके आधार पुरुषाकार परम सूक्ष्म अमूर्ति अगुरुलघु असंख्यात प्रदेशी अनंतगुणरूप सर्वको एकसमयमें जाने सब सिद्धसमान कृतकृत्य जिनके कोई कार्य करना नाहीं। सर्वथा शुद्धभाव सर्वद्रव्य सर्वक्षेत्र सर्वकाल सबभावके ज्ञाता, निरंजन आतमज्ञानरूप शुक्लध्यान अग्निकर अष्टकर्म वनके भस्म करणहारे अर महाप्रकाशरूप प्रतापके पुंज, जिनको इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादि पृथिवीके नाथ सव ही सेवें, महास्तुति करें, ते भगवान संसारके प्रपंचते रहित अपने आनंदस्वभाव तिनमई अनंत सिद्ध भए अर अनंत होहिंगे। अढाईद्वीपकेविषैं मोक्षका मार्ग प्रवृत्ते है, एकसौ साठ महाविदेह अर पांच भरत पांच ऐरावत एकसौ सत्तर क्षेत्र तिनके आर्यखंड विषै जे सिद्ध भए अर होंहिगे तिन सबनिको हमारा नमस्कार होहु। या भरतक्षेत्रविषैं यह कोटिशिला यहांते सिद्ध शिलाको प्राप्त भए ते हमको कल्याणके कर्ता होहु, जीवनिको महामंगलरूप, या भांति चिरकाल स्तुतिकर चित्तविषै सिद्धनिका ध्यानकर सब ही लक्ष्मणको आशीर्वाद देते भए।

या कोटिशिलाते जे सिद्ध भए वे सर्व तिहारा विघ्न हरें अरिहंत सिद्ध साधु जिनशासन ये सर्व तुमको मंगलके करता होहु या भांति शब्द करते भए अर लक्ष्मण सिद्धनिका ध्यान कर शिला को गोडे प्रमाण उठावता भया अनेक आभूषण पहिरे भुज बंधन कर शोभायमान है भुजा जाकी सो भुजानिकरि कोटिशिला उठाई तब आकाशविषे देव जय जय शब्द करते भए। सुग्रीवादिक आश्चर्यको प्राप्त भए। कोटिशिलाकी यात्राकर बहुरि सम्मेद शिखर गए अर कैलाशकी यात्राकर, भरतक्षेत्रके सर्व तीर्थ

वंदे प्रदक्षिणा करी सांझ समय विमान बैठ जय जयकार करते संते रामलक्ष्मणके लार किहकंधापुर आए। आप अपने अपने स्थानक सुखते शयन किया बहुरि प्रभात भया सब एकत्र होय परस्पर वार्ता करते भए देखो अब थोडेही दिनमें इनदोऊ भाईनिका निष्कंटक राज्य होयगा। ये परम शक्तिको धरे हैं। वह निर्वाण शिला इननें उठाई सो यह सामान्य मनुष्य नाहीं, यह लक्ष्मण रावणको निसंदेह मारेगा, तब कैयक कहते भए रावणने कैलास उठाया सो वाहूका पराक्रम घाट नाहीं, तब और कहते भए ताने कैलास विद्याके वलते उठाया सो आश्चर्य नाहीं, तब कैयक कहते भए काहेको विवाद करो जगत्के कल्याण अर्थ इनका उनका हित कराय देवो या समान और नाहीं, रावणते प्रार्थना कर सीता लाय रामको सौंपो, युद्धते कहा प्रयोजन है आगे तारकमेरु महा वलवान् भए सो संग्रामविषैं मारे गये। वे तीनखंडके अधिपति महा भाग्य महापराक्रमी हुते अर और हू अनेक राजा रणविषैं हते गए ताते साम कहिये परस्पर मित्रता श्रेष्ठ है तब ये विद्याकी विधिमें प्रवीण परस्पर मंत्रकर श्रीरामपै आए अतिभक्तिते रामके समीप नमस्कार कर बैठे, कैसे शोभते भए जैसे इन्द्रके समीप देव सोहैं, कैसे हैं राम नेत्रनिको आनन्दके कारण सो कहते भए अब तुम काहे ढील करो हो, मोबिना जानकी लंकाविषैं महादुःखकारि तिष्ठे है ताते दीर्घ सोच छांडि अबारही लंकाकी तरफ गमनका उद्यम करहु। तब जे सुग्रीवके जांबूनंदादि मंत्री राजनीतिमें प्रवीन हैं ते रामसूं बीनती करते भए—हे देव! हमारे ढील नाहीं परन्तु यह निश्चय कहो सीताके ल्यायवे हीका प्रयोजन है अक राक्षसनिते युद्ध करना है, यह सामान्य युद्ध नाहीं, विजय पावना कठिन है। वह भरत क्षेत्रके तीन खंडका निष्कंटक राज करे है। द्वीप समुद्रनिके विषे रावण प्रसिद्ध है जासूं धातुकीखंड द्वीपके शंका माने। जंबूद्वीपविषैं जाकी अधिक महिमा अद्भुत कार्यका करणहारा सबके उरका शल्य है सो युद्ध योग्य नाहीं ताते रणकी बुद्धि छांडि हम जो

कहे हैं सो करहु । हे देव ! ताहि युद्ध सन्मुख करिबेमें जगतको महाक्लेश उपजे है । प्राणिनिके समूहका विध्वंस होय है । समस्त उत्तम क्रिया जगतते जाय हैं ताते विभीषण रावणका भाई सो पापकर्म रहित श्रावकव्रतका धारक है, रावण ताके वचनको उलंघे नाहीं तिन दोऊ भाईनिमें अंतराय रहित परम प्रीति है सो विभीषण चातुर्यताते समझावेगा अर रावणहू अपयशते शंकेगा । लज्जाकर सीताको पठाय देगा ताते बिचारकर रावणपै ऐसा पुरुष भेजना जो बात करनेमें प्रवीण होय अर राज नीतिमें कुशल होय अनेक नय जाने अर रावणका कृपापात्र हो ऐसा हेरहु तब महोदधि नामा विद्याधर कहता भया तुम कछु सुनी है लंकाकी चौगिरद मायामई यंत्र रचा है सो आकाशके मार्गते कोऊ जाय सके नाहीं, पृथिवीके मार्गते जाय सके । लंका अगम्य है महा भयानक देखा न जाय ऐसा मायामई यंत्र बनाया है सो इतने बैठे हैं तिनमें तो ऐसा कोऊ नाहीं जो लंकाविषैं प्रवेश करे ताते पवनंजयका पुत्र श्रीशैल जाहि हनूमान कहे हैं सो महाविद्यावान बलवान पराक्रमी प्रतापरूप है ताहि जांचो, वह रावणका परममित्र है अर पुरुषोत्तम है सो रावणको समझाय विघ्न टारेगा तब यह बात सबने प्रमाण करी । हनूमानके निकट श्रीभूतनामा दूत शीघ्र पठाया । गौतमस्वामी राजा श्रेणिकते कहे हैं हे राजन ! महाबुद्धिमान होय अर महाशक्तिको धरैं होय अर उपाय करे तो भी होनहार होय सोही होय जैसे उदयकालमें सूर्यका उदय होय ही तैसे जो होनहार सो होय ही ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै कोटिशिला उठावनेका व्याख्यान वर्णन करनेवाला अडतालीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ४८ ॥

अथानन्तर श्रीभूतनामा दूत पवनके वेगते शीघ्रही आकाशके मार्गसों लक्ष्मीका निवास जो श्रीपुरनगर अनेक जिन भवन तिनकरि शोभित तहां गया जहां मन्दिर सुवर्ण रत्नमई सो तिनकी माला करि मण्डित कुन्दके पुष्प समान उज्वल सुन्दर झरोखनिकरि शोभित मनोहर उपवनकर रमणीक सो दूत नगरकी शोभा अर नगरके अपूर्व लोग देख आश्चर्यको प्राप्त भया बहुरि इन्द्रके महल समान राजमंदिर तहांकी अद्भुत रचना देख थकित होय रहा। हनूमान खरदूषणकी वेटी अनंगकुसमा रावणकी भानजी ताके खरदूषणका शोक, कर्मके उदयकरि शुभ अशुभ फल आवे ताहि कोई निवारिवे शक्त नाहीं, मनुष्यनिकी कहा शक्ति देवनिहूकरि अन्यथा न होय। दूतने द्वारे आय अपने आगमनका वृत्तांत कहा सो अनंगकुसमाकी मर्यादा नामा द्वारपाली दूतको भीतर लेयगई। अनंगकुसमाने सकल वृत्तांत पूछा सो श्रीभूतने नमस्कारकर विस्तारसे कहा, दण्डकवनमें श्रीराम लक्ष्मणका आवना, सम्बूकका बध, खरदूषणते युद्ध बहुरि भले भले सुभटनिसहित खरदूषणका मरण, यह वार्ता सुन अनंगकुसमा मूर्छाको प्राप्त भई तब चन्दनके जलकरि सींच सचेतकरी, अनंगकुसमा अश्रुपात डारती विलापकरती भई हाय पिता, हाय भाई! तुम कहां गए एकबार मोहि दर्शन देवो। वचनालाप कर महा भयानक वनमें भूमिगोचारिनि तुमको कैसे हते? या भांति पिता अर भाईके दुःखकरि चन्द्रनखाकी पुत्री दुखी भई सो महा कष्टकरि सखिनिने शांतिताको प्राप्तकरी अर जे प्रवीण उत्तम जन हुते तिन बहुत संबोधी तब यह जिनमार्गमें प्रवीण समस्त संसारके स्वरूपको जान लोकाचारकी रीति प्रमाण पिताके मरणकी क्रिया करती भई बहुरि दूतको हनूमान महाशोकके भरे सकल वृत्तांत पूछते भए। तब इनको सकल वृत्तांत कहा सो हनूमान खरदूषणके मरणकरि अति क्रोधको प्राप्त भया। भौंह टेढी होय गई, मुख अर नेत्र आरक्त भए, तब दूतने कोप निवारिवेके निमित्त मधुर स्वरनिकरि वीनती करी–हे देव! किहकंधापुरके स्वामी सुग्रीव

तिनको दुख उपजा, सोतो आप जानो ही हो। साहसगति विद्याधर सुग्रीवका रूप बनाय आया तातें पीडित भया सुग्रीव श्रीरामके शरणे गया, सो राम सुग्रीवका दुख दूर करवे निमित्त किहकंधापुर आए प्रथम तो सुग्रीव अर वाके युद्ध भया सो सुग्रीवकरि वह जीता न गया। बहुरि श्रीरामके अर वाके युद्ध भया सो रामको देख बैताली विद्या भाग गई, तब वह साहसगति सुग्रीवके रूपरहित जैसा हुता तैसा होय गया। महायुद्धविषैं रामने ताहि मारा। सुग्रीवका दुःख दूर किया यह बात सुन हनूमानका क्रोध दूर भया। मुखकमल फूला, हर्षित होय कहते भए।

अहो श्रीरामने हमारा वडा उपकार किया। सुग्रीवका कुल अकीर्तिरूप सागरमें डूबे था सो शीघ्र ही उधारा, सुबर्णके कलस समान सुग्रीवका गोत्र सो अपयशरूप ऊंढे कूपमें डूबता हुता, श्रीराम सन्मतिके धारकने गुणरूप हस्तकरि काढा या भांति हनूमान बहुत प्रशंसा करी अर सुखके सागरविषे मग्न भए अर हनूमानकी दूजी स्त्री सुग्रीवकी पुत्री पद्मरागा पिताके शोकका अभाव सुन हर्षित भई। ताके बडा उत्साह भया। दान पूजा आदि अनेक शुभ कार्य किए। हनूमानके घरविषे अनंगकुसमाके घर खरदूषणका शोक भया अर पद्मरागाके सुग्रीवका हर्ष भया या भांति विषमताको प्राप्त भए घरके लोग तिनको समाधानकर हनूमान किहकंधापुरको सन्मुख भए। महा ऋद्धिकर युक्त बडी सेनासूं हनूमान चाला, आकाशविषै अधिक शोभा भई महा रत्नमई हनूमानका विमान ताकी किरणनिकरि सूर्यकी प्रभा मंद होय गई। हनूमानको चालता सुन अनेक राजा लार भए जैसे इन्द्रकी लार बडे बडे देव गमन करें। आगे पीछे दाहिनी बांई ओर अनेक राजा चाले जाय हैं विद्याधरनिके शब्द करि आकाश शब्दमई होय गया। आकाश गामी अश्व अर गज तिनके समूहनिकरि आकाश चित्रामरूप होय गया। महा तुरंगानिकरि संयुक्त ध्वजानि कर शोभित सुन्दर रथ तिनकर आकाश शोभायमान भासता भया अर उज्ज्वल छत्र-

निके समूहकर शोभित आकाश ऐसा भासे मानों कुमदनिका वन ही है अर गम्भीर दुन्दुभीके शब्दनिकर दशोंदिशा ध्वनिरूप होय गईं, मानों मेघ गाजे है अर अनेक वर्णके आभूषण तिनकी ज्योतिके समूहकरि आकाश नाना रंगरूप होय गया मानो काहू चतुर रंगरेजाका रंगा वस्त्र है हनूमानके वादित्रनिका नाद सुन कपिवंशी हर्षित भए जैसे मेघकी ध्वनि सुन मोर हर्षित होंय सुग्रीवने सब नगरकी शोभा कराई हाट वाजार उजाले। मंदिरनिपर ध्वजा चढाई रत्ननिके तोरणनिकरि द्वार शोभित किए हनूमानके सब सन्मुख गए, सबका पूज्य देवनिकी न्याई नगरविषै प्रवेश किया। सुग्रीवके मंदिर आए सुग्रीवने बहुत आदर किया अर श्रीरामका समस्त वृत्तांत कहा तब ही सुग्रीवादिक हनूमान सहित परमहर्षको धरते श्रीरामके निकट आए सो हनूमान रामको देखता भया, महासुन्दर सूक्ष्म स्निग्धश्याम सुगन्ध वक्र लंबे महामनोहर हैं केश जिनके सो लक्ष्मीरूप बल इनकर मंडित महा सुकुमार है अंग जिनका सूर्यसमान प्रतापी चंद्रसमान कांतिधारी अपनी कांतिकरि प्रकाशके करणहारे नेत्रनिको आनन्दके कारण महा मनोहर अतिप्रवीण आश्चर्यकारी कार्यके करणहारे, मानो स्वर्गलोकते देवे ही आए हैं, दैदीप्यमान निर्मल स्वर्णके कमलके गर्भ समान है प्रभा जिनकी सुन्दर नेत्र सुन्दर श्रवण सुन्दर नासिका सर्वांग सुन्दर मानों साक्षात् कामदेव ही हैं, कमलनयन, नवयौवन, चढे धनुष समान भौंह जिनकी, पूर्णमासीके चंद्रमा समान बदन, महामनोहर मूंगा समान लाल होंठ कुन्दके समान उज्वल दंत, शंख समान कंठ, मृगेन्द्र समान साहस सुन्दरकटि सुन्दर वक्षस्थल महाबाहु श्रीवत्सलक्षण दक्षिणावर्त गम्भीरनाभि आरक्तकमल समान कर चरण महाकोमल गोल पुष्ट दोऊ जंघा अर कछुवेकी पीठ समान चरणके अग्रभाग महाकांतिको धरे अरुण नख अतुल बल महायोधा महागंभीर महाउदार सम चतुरस्र संस्थान बज्रवृषभ नाराच संहनन मानों सर्व जगत्रयकी सुन्दरता एकत्रकर बनाये हैं महाप्रभाव संयुक्त परंतु सीताके वियोगकरि

व्याकुल चित्त, मानों शचीरहित इंद्र विराजे हैं अथवा रोहिणीरहित चन्द्रमा तिष्ठे हे । रूप सौभाग्य कर मंडित सर्व शास्त्रनिके वेत्ता महाशूरवीर जिनकी सर्वत्र कीर्ति फैल रही है महा बुद्धिमान् गुणवान ऐसे श्रीराम तिनको देखकर हनूमान आश्चर्यको प्राप्त भया। तिनके शरीरकी कांति हनूमान पर जा पडी, प्रभाव देखकर वशीभूत भया, पवनका पुत्र मनविषैं विचारता भया । ये श्रीराम दशरथके पुत्र भाई लक्ष्मण लोकश्रेष्ठ याका आज्ञाकारी संग्रामविषैं जाके चन्द्रमा समान उज्ज्वल क्षत्र देख साहसगतिकी विद्या वैताली ताके शरीरतें निकस गई अर इंद्र हू मैने देखा है परंतु इनको देखकर परम आनंदसंयुक्त हृदय मेरा नम्रीभूत भया या भांति आश्चर्यको प्राप्त भया। अंजनीका पुत्र, श्रीराम कमललोचन ताके दर्शनको आगे आया अर लक्ष्मणने पहिले ही रामते कह राखी हुती सो हनूमानको दूरहीतें देख उठे, उरसे लगाय मिले, परस्पर अतिस्नेह भया, हनूमान अति विनयकर बैठा आप श्रीराम सिंहासन पर विराजे, भुज बंधनकरि शोभित है भुजा जिनकी, महा निर्मल नीलाम्बर मंडित राजनके चूणामणि महा सुन्दर हार पहिरे ऐसे सोहैं मानों नक्षत्रनि सहित चन्द्रमा ही है अर दिव्य पीतांबर धारे हार कुण्डल कर्पूरादि संयुक्त सुमित्राके पुत्र श्रीलक्ष्मण कैसे सोहे हैं मानो विजुरी सहित मेघ ही है अर बानर वंशिनिका मुकट देवनिसमान पराक्रम जाका राजा सुग्रीव कैसा सोहै मानों लोकपाल ही है अर लक्ष्मणके पीछे बैठा विराधित विद्याधर कैसा सोहै मानो लक्ष्मण नरसिंहका चक्ररत्न ही है, रामके समीप हनूमान कैसा शोभता भया जैसे पूर्णचन्द्रके समीप बुध सोहै अर सुग्रीवके दोय पुत्र एक अंगज दूजा अंगद सो सुगंधमाला अर वस्त्र आभूषणादिकर मंडित ऐसे सोहैं मानों यह कुवेर ही हैं अर नल नील अर सैकडों राजा श्रीरामकी सभाविषैं ऐसे सोहैं जैसे इंद्रकी सभाविषैं देव सोहैं, अनेकप्रकारकी सुगंध अर आभूषणनिका उद्योत ताकरि सभा ऐसे सोहे मानों इंद्रकी सभा है तब हनूमान आश्चर्यको पाय अतिप्रीतिको प्राप्त भया, श्रीरामको कहता भया ।

हे देव ! शास्त्रमें ऐसा कहा है प्रशंसा परोक्ष करिये प्रत्यक्ष न करिये परन्तु आपके गुणनिकरि यह मन वशीभूत भया प्रत्यक्ष स्तुति करे है अर यह रीति है कि आप जिनके आश्रय होय, तिनके गुण वर्णन करे सो जैसी महिमा आपकी हमने सुनी हुती तैसी प्रत्यक्ष देखी आप जीवानिके दयालु महा पराक्रमी परम हितू गुणनिके समूह जिनके निर्मल यशकर जगत् शोभायमान है। हे नाथ सीताके स्वयम्बर विधान विषैं हजारां देव जाकी रक्षा करैं ऐसा वज्रावर्त धनुष आपने चढाया सो वह हम सब पराक्रम सुने जिनका पिता दशरथ माता कौशल्या भाई लक्ष्मण भरत शत्रुघन स्त्रीका भाई भामंडल सो राम जगत्पति तुम धन्य हो तिहारी शक्ति धन्य तिहारा रूप धन्य सागरावर्त धनुषका धारक लक्ष्मण सो सदा आज्ञाकारी, धन्य यह धीर्य धन्य यह त्याग, जो पिता के वचन पालिवे अर्थ राज्यका त्यागकर महा भयानक दण्डक वन में प्रवेश किया अर आप हमारा जैसा उपकार किया तैसा इन्द्र न करे, सुग्रीव का रूपकर साहसगति आया हुता सो आप कपिवंशका कलंक दूर किया आपके दर्शनकर बैताली विद्या साहसगतिके शरीरतैं निकस गई। आप युद्धविषैं ताहि हता सो आपने तो हमारा बडा उपकार किया अब हम कहा सेवा करें। शास्त्रकी यह आज्ञा है जो आपसों उपकार करे अर ताकी सेवा न करे ताको भावशुद्धता नाहीं अर जो कृतघ्न उपकार भूले सो न्यायधर्मते वहिर्मुख है पापिनिविषैं महापापी है अर अपराधीनिते निर्दई है सो वातैं सत्पुरुष संभाषण न करैं तातै हम अपना शरीरभी तज कर तिहारे कामको उद्यमी हैं। मैं जाय लंकापतिको समझाय तिहारी स्त्री तिहारे लाऊंगा। हे राघव ! महाबाहू सीताका मुखरूपकमल पूर्णमासीके चन्द्रमा समान कांतिका पुंज, आप निस्संदेह शीघ्र ही सीता देखोगे। तब जांबूनन्द मंत्री हनुमानको परम हितके वचन कहता भया। हे वत्स वायुपुत्र ! हमारे सबन

के एक तू ही आश्रय है सावधान लंका को जाना अर काहुसों कदाचित् विरोध न करना तब हनुमान कही आपकी आज्ञा प्रमाण ही होयगा ॥

अथानन्तर हनूमान लंकाको चलिबेको उद्यमी भया तब राम अति प्रीतिको प्राप्त भए एकांतमें कहते भए हे वायुपुत्र ! सीताको ऐसे कहियो, कि हे महा सती ! तिहारे वियोगकरि रामका मन एक क्षणभी सातारूप नाहीं अर रामने यों कही ज्यों लग तुम पराये वश हो त्यों लग हम अपना पुरुषार्थ नाहीं जाने हैं अर तुम महानिर्मल शीलकरि पूर्ण हो अर हमारे वियोगकरि प्राण तजो चाहो हो सो प्राण तजो मति, अपना चित्त समाधान रूप राखो, विवेकी जीवनिको आर्त्त रौद्रतें प्राण न तजने । मनुष्यदेह अति दुर्लभ है ताविषैं जिनेन्द्रका धर्म दुर्लभ है ताविषैं समाधि मरण दुर्लभ है जो समाधि मरण न होय तो यह मनुष्य देह तुषवत् असार है अर यह मेरे हाथकी मुद्रिका जाकर ताहि विश्वास उपजै सो ले जावो अर उनका चूडामणि महा प्रभा रूप हम पै ले आइयो तब हनूमान कही जो आप आज्ञा करोगे सो ही होयगा, ऐसा कहकर हाथ जोड नमस्कार कर वहुरि लक्ष्मणतैं नम्रीभूत होय बाहिर निकसा । विभूति कर परिपूर्ण अपने तेजकरि सर्व दिशाको उद्योत करता सुग्रीवके मंदिर आया अर सुग्रीवसों कही—जौलग मेरा आवना न होय तौ लग तुम बहुत सावधान यहां ही रहियो या भांति कहकर सुन्दर हैं शिखर जाके ऐसा जो विमान तापर चढा ऐसा शोभता भया जैसा सुमेरुके ऊपर जिनमंदिर शोभै परमज्योतिं करि मंडित उज्वल छत्रकर शोभित हंस समान उज्ज्वल चमर जापर ढुरें हैं अर पवन समान अश्व चालते पर्वत समान गज अर देवनिकी सेना समान सेना ताकरि संयुक्त या भांति महा विभूतिकरि युक्त आकाशविषैं गमन करता रामादिक सर्वने देखा । गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतैं कहे हैं हे राजन् ! यह जगत् नाना प्रकारके जीवनिकरि भरा है तिनमें जो कोई परमार्थके निमित्त उद्यम करे है सो प्रशंसा योग्य है

अर स्वार्थतें जगतही भरा है जे पराया उपकार करें वे कृतज्ञ हैं प्रशंसा योग्य हैं अर जे निःकारण उपकार करें हैं उनके तुल्य इन्द्र चन्द्र कुवेर भी नाहीं अर जे पापी कृतघ्नी पराया उपकार लोपे हैं वे नरक निगोदके पात्र हैं और लोकनिंद्य हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनुमानका लंकाकी दिशा गमन वर्णन करनेवाला उनचासवां पर्व पूर्ण भया ॥ ४९ ॥

अथानन्तर अंजनीका पुत्र आकाशविषैं गमन करता परम उदयको धरे कैसा शोभता भया मानों वहिन समान जानकी ताहि लायवेको भाई जाय है। कैसे हैं हनूमान ? श्रीरामकी आज्ञाविषैं प्रवर्ते हैं महा विनय रूप ज्ञानवंत शुद्ध भाव रामके कामका चित्तमें उत्साह सो दिशा मंडल अवलोकते लंकाके मार्गमें राजा महेंद्रका नगर देखते भए मानों इन्द्रका नगर है पर्वतके शिखर पर नगर बसे हैं जहां चन्द्रमा समान उज्ज्वल मंदिर है सो नगर दूरहीतें नजर आया तब हनूमान देखकरि मनमें चिंतया यह दुर्बुद्धि महेन्द्रका नगर है वह यहां तिष्ठे है, मेरी माताको जाने संताप उपजाया था पिता होयकर पुत्री का ऐसा अपमान करे जो जाने नगरमें न राखी तब माता बनमें गई जहां अनन्तगति मुनि तिष्ठे हुते तिनने अमृतरूप वचन कहकर समाधान करी सो मेरा उद्यानविषैं जन्म भया जहां कोई बंधु नहीं मेरी माता शरणे आवे अर यह न राखे यह क्षत्रीका धर्म नाहीं ताते याका गर्व हरूं तब क्रोधकर रणके नगारे बजाए अर ढोल बजाते भए शंखनिकी ध्वनि भई योधानिके आयुध झलकने लगे, राजा महेंद्र परचक्र आया सुनकर सर्व सेना सहित बाहिर निकसा दो सेनानिमें महा युद्ध भया महेंद्र रथमें चढा माथे छत्र फिरता धनुष चढाय हनूमान पर आया सो हनूमानने तीन बाणनिकरि ताका धनुष छेदा जैसे योगी-

श्वर तीन गुप्ति कर मानको छेदें बहुरि महेंद्रने दूजा धनुष लेनेका उद्यम किया ताके पाहिलेही बाणनि-
करि ताके घोडे छुटाय दिए सो रथके समीप भ्रमे जैसे मनके प्रेरे इन्द्रिय विषयानिमें भ्रमै बहुरि महेंद्रका
पुत्र विमानमें बेठ हनूमानपर आया सो हनूमानके अर वाके बाणचक्र कनक इत्यादि अनेक आयुधनि-
करि परस्पर महा युद्ध भया हनूमानने अपनी विद्याकरि वाके शस्त्र निवारे जैसे योगीश्वर आत्मचिंत-
वनकर परीषहके समूहको निवारे ताने अनेक शस्त्र चलाये सो हनूमानके एक भी न लागा जैसे मुनिको
कामका एकभी बाण न लागे जैसे तृणानिके समूह अग्निमें भस्म होंय तैसे महेंद्रके पुत्रके सर्व शस्त्र हनू-
मानपर विफल गए अर हनूमानने ताहि पकडा जैसे सर्पको गरुड पकडे तब राजा महेंद्र महारथी पुत्र
को पकडा देख महा क्रोधायमान भया हनूमानपर आया जैसे साहसगति रामपर आयाहुता हनूमानहू
महा धनुषधारी सूर्यके रथ समान रथपर चढा, मनोहर है उरविषैं हार जाके शूरवीरनिमें महाशूरवीर
नानाके सन्मुख भया सो दोउनिमें करोत कुठार खडग बाण आदि अनेक शस्त्रनिकरि पवन अर मेघकी
न्याईं महा युद्ध भया दो सिंह समान महा उद्धत महाकोपके भरे बलवन्त अग्निके कणसमान रक्तनेत्र
दो अजगर समान भयानक शब्द करते परस्पर शस्त्र चलावते गर्वहास संयुक्त प्रकट हैं शब्द जिनके
परस्पर ऐसे शब्द करे हैं धिक्कार तेरे शूरपनेको, तू कहा युद्ध कर जाने इत्यादि वचन परस्पर कहते
भए दोऊ विद्याबलकरि युक्त परम युद्ध करते बारम्बार अपने लोगानिकरि हाकार जय जयकारादि शब्द
करावते भए। राजा महेंद्र महा विक्रियाशक्तिका धारक क्रोधकर प्रज्वलित है शरीर जाका सो हनूमानपर
आयुधनिके समूह डारता भया भुषुंडी फरसा बाण शतघ्नी मुदगर गदा पर्वतानिके शिखर शालिवृक्ष
बटवृक्ष इत्यादि अनेक आयुध हनुमानपर महेंद्र चलाए सो हनूमान व्याकुलताको प्राप्त न भया जैसे गिरि-
राज महा मेघके समूहकरि कंपायमान न होय जेते महेंद्रने बाण चलाए सो हनूमानने उनका विद्याके

प्रभावकरि सब चूर डारे बहुरि अपने रथतें उछल महेंद्रके रथमें जाय पडे दिग्गजकी सूंड समान अपने जे हाथ तिनकरि महेंद्रको पकड लिया अर अपने रथमें आए, शूरवीरनिकरि पाया है जीतका शब्द जाने सर्वही लोक प्रशंसा करते भए राजा महेंद्र हनूमानको महाबलवान परम उदयरूप देख महा सौम्य वाणीकर प्रशंसा करता भया हे पुत्र ! तेरी महिमा जो हमने सुनी हुती सो प्रत्यक्ष देखी। मेरा पुत्र प्रसन्नकीर्ति जो अब काहूने कभी न जीता रथनूपुरका स्वामी राजा इन्द्र ताकरि न जीता गया, विजियार्धगिरिके निवासी विद्याधर तिनमें महाप्रभाव संयुक्त सदा महिमाको धरे मेरा पुत्र सो तैंने जीता अर पकडा धन्य पराक्रम तेरा महाधीर्यको धरे तेरे समान और पुरुष नाहीं अर अनुपमरूप तेरा अर संग्राम विषैं अद्‌भुत पराक्रम, हे पुत्र हनूमान तूने हमारे सब कुल उद्योत किये तू चरमशरीरी अवश्य योगीश्वर होयगा विनय आदि गुणनिकरि युक्त परम तेजकी राशि कल्याणमूर्ति कल्पवृक्ष प्रकट भया है तू जगतविषैं गुरु कुलका आश्रय अर दुःखरूप सूर्यकर जे तप्तायमान हैं तिनको मेघसमान या भांति नाना महेंद्रने अति प्रशंसा करी अर आंख भर आई अर रोमांच होय आए मस्तक चूमा छातीसे लगाया तब हनूमान नमस्कार कर हाथजोड अति विनयकर क्षमा करावते भए एक क्षणमें और ही होय गए हनूमान कहे हैं—हे नाथ ! मैं बाल-बुद्धिकर जो तिहारा अविनय किया सो क्षमा करहु अर श्रीरामका किहकंधापुर आवनेका सकल वृत्तांत कहा आप लंकाकी ओर जावनेका वृत्तांत कहा अर कही मैं लंका होय कार्यकर आऊंहू तुम किहकन्धापुर जावो रामकी सेवा करो ऐसा कहिकर हनूमान आकाशके मार्ग लंकाको चाले जैसे स्वर्गलोकको देव जाय अर राजा महेंद्र राणी सहित तथा अपने प्रसन्नकीर्ति पुत्र सहित अंजनीपुत्रीके गया, अंजनीको माता पिता अर भाईको मिलाप भया सो अति हर्षित भई बहुरि महेंद्र किहकंधापुर आए सो राजा सुग्रीव विराधित आदि सन्मुख गए श्रीरामके निकट लाए राम बहुत

आदरसे मिले जे राम सारिखे महंत पुरुष महातेज प्रतापरूप निर्मलचित्त हैं अर जिनने पूर्व जन्मविषैं दान व्रत तप आदि पुण्य उपार्जे हैं तिनकी देव विद्याधर भूमि गोचरी सवही सेवा करें। जे महा गर्व-वन्त बलवन्त पुरुष हैं ते सब तिनके वश होवें ताते सर्व प्रकार अपने मनको जीत सत्कर्ममें यत्नकर हे भव्यजीव हो ता सत्कर्मके फलकर सूर्य समान दीप्तिको प्राप्त होहु ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं महेंद्रका अर अंजनीका बहुरि श्रीरामके निकट आवनेका व्याख्यान वर्णन करनेवाला पचासवा पर्व पूर्ण भया ॥ ५० ॥

अथानन्तर हनूमान आकाशविषैं विमानमें बैठ जाय हैं अर मार्गमें दधिमुख नामा द्वीप आया तामें दधिमुख नामा नगर जहां दधि समान उज्ज्वल मन्दिर सुन्दर सुवरण के तोरण काली घटासमान सघन उद्यान पुरुषनि करि युक्त स्फटिक मणि समान उज्ज्वल जलकी भरी वापिका सोपाननि कर शोभित कमलादिक कर भरी, गौतमस्वामी राजा श्रेणिक सूं कहे हैं हे राजन्! या नगरते दूर वन तहां तृण बेल वृक्ष कांटनिके समूह सूके वृक्ष दुष्ट सिंहादिक जीवानिके नाद महा भयानक प्रचण्ड पवन जाकरि वृक्ष गिरपडे सूक गये हैं सरोवर जहां अर गृद्ध उल्लू आदि दुष्ट पक्षी विचरें ता वनविषैं दोय चारण-मुनि अष्टदिनका कायोत्सर्ग धरे खडे थे अर तहांते चारकोस तीन कन्या महा मनोग्य नेत्र जिनके जटा धरें सफेद वस्त्र पहरे विधिपूर्वक महा तपकर निर्मल है चित्त जिनका मानों वे कन्या तीन लोककी आभूषण ही हैं।

अथानन्तर बन में अग्नि लागी सो दोऊ मुनि धीर वीर वृक्षकी न्याई खडे समस्त बन दावानल कारि जरे, ते दोऊ निरग्रन्थ योगयुक्त मोक्षाभिलाषी रागादिकके त्यागी प्रशान्तवदन शान्तचित्त

निष्पाप अवांछक नासादृष्टि, लंबी हैं भुजा जिनकी, कायोत्सर्ग धरे जिनके जीवना मरना तुल्य शत्रु मित्र समान कांचन पाषाण समान सो दोऊ मुनि जरते देख हनूमान कम्पायमान भया वात्सल्य गुण करि मंडित महा भक्तिसंयुक्त वैयाव्रत करिवेको उद्यमी भया, समुद्रका जल लेयकर मूसलाधार मेह वरसाया सो क्षणमात्रविषैं पृथिवी जलरूप होय गई। वह अग्नि ता जलकरि हनूमानने ऐसे बुझाई जैसे मुनि क्षमाभावरूप जल करि क्रोधरूप अग्निको बुझावें। मुनिनिका उपसर्ग दूर कर तिनकी पूजा करता भया अर वे तीनों कन्या विद्या साधती हुतीं सो दावानलके दाह कर व्याकुलताका कारण भया हुता सो हनूमानके मेहकर बन का उपद्रव मिटा सो विद्यासिद्धि भई, सुमेरुकी तीन प्रदक्षिणा करि मुनिनिके निकट आयकर नमस्कार करती भई अर हनूमानकी स्तुति करती भई अहो तात धन्य तिहारी जिनेश्वरविषै भक्ति तुम काहु तरफ जाते हुते सो साधुनिकी रक्षा करी हमारे कारण करि बनमें उपद्रव भया सो मुनि ध्यानारूढ ध्यानतें न डिगे तब हनूमानने पूछी तुम कौन अर निर्जन स्थानकमें कौन कारण रहो हो तब सबानिमें बडी बहिन कहती भई यह दधिमुख नामा नगर जहां राजा गन्धर्व ताकी हम तीन पुत्री बडी चन्द्ररेखा दूजी विद्युत्प्रभा तीजी तरंगमाला सर्वगोत्रको वल्लभ सो जेते विजयार्ध विद्याधर राजकुमार हैं वे सब हमारे विवाहके अर्थ हमारे पितासूं याचना करते भए अर एक दुष्ट अंगारक सो अति अभिलाषी निरंतर कामके दाहकर आतापरूप तिष्ठै, एक दिन हमारे पिताने अष्टांग निमित्तके वेत्ता जे मुनि तिनको पूछी—हे भगवान ! मेरी पुत्रिनिका वर कौन होयगा, तब मुनि कही जो रणसंग्रामविषै साहसगतिको मारेगा, सो तेरी पुत्रिनिका वर होयगा, तब मुनिके अमोघ वचन सुनकर हमारे पिताने विचारी, विजियार्धकी उत्तरश्रेणीविषै श्रेष्ठ जो साहसगति ताहि कौन मार सके जो

ताहि मारे सो मनुष्य या लोकविषैं इंद्र समान है अर मुनिके वचन अन्यथा नाहीं सो हमारे माता पिता अर सकल कुटुम्ब मुनिके वचन पर दृढ भए अर अंगारक निरंतर हमारे पितासूं याचना करे, सो पिता हमको न देय, तब वह अति चिंतावान दुःखरूप वैरको प्राप्त भया अर हमारे यही मनोरथ उपजा जो वह दिन कब होय हम साहसगातिके हनिबेवारेको देखें, सो मनोगामिनी नाम विद्या साधिवेको या भयानक वनविषैं आईं, सो अनुगामिनी नामा विद्या साधते हमको बारवां दिन है अर मुनिनिको आठमा दिन है। आज अंगारकने हमको देख क्रोधकर वनविषैं अग्नि लगाई, जो छह वर्ष कछुइक अधिक दिननिविषैं विद्या सिद्ध होय हमको उपसर्गतें भय न करवे कर बारह ही दिनविषैं विद्या सिद्ध भई। या आपदाविषैं हे महाभाग ! जो तुम सहाय न करते तो हमारा अग्निकर नाश होता अर मुनि भस्म होते, तातें तुम धन्य हो, तब हनूमान कहते भये तिहारा उद्यम सफल भया। जिनके निश्चय होय तिनको सिद्धि होय ही, धन्य निर्मल बुद्धि तिहारी बडे स्थानकविषैं मनोरथ, धन्य तिहारा भाग्य ऐसा कहकर श्रीराम के किहकंधापुर आवनेका सकल वृत्तांत कहा अर अपने रामकी आज्ञा प्रमाण लंका जायवेका वृत्तांत कहा ताही समय वनके दाह शांति होयबेका अर मुनि उपसर्ग दूर होनेका वृत्तांत राजा गंधर्व सुन हनूमानपै आया। विद्याधरनिके योगकरि वह वन नंदनवन जैसा शोभता भया अर राजा गंधर्व हनूमानके मुखकरि श्रीरामका किहकंधापुर विराजनेका वृत्तांत सुन अपनी पुत्रिनि सहित श्रीरामके निकट आया पुत्री महाविभूतिकर रामको परणाई, राम महाविवेकी ये विद्याधरनिकी पुत्री अर महाराज विभूतिकर युक्त हैं तोहू सीता बिना दशोंदिशा शून्य देखते भए, समस्त पृथिवी गुणवान जीवनितें शोभित होय है अर गुणवंतनि विना नगर गहन वन तुल्य भासै है कैसे हैं गुणवान जीव? महामनोहर है चेष्टा जिनकी

अर अति सुन्दर हैं भाव जिनके, ये प्राणी पूर्वोपार्जित कर्मके फलकरि सुख दुःख भोगवे हैं तातैं जो सुखके अर्थी हैं वे जिनरूप सूर्यकरि प्रकाशित जो पवित्र जिनमार्ग ताविषैं प्रवृत्ते हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं रामको राजा गंधर्वकी
कन्यानिका लाभ वर्णन करनेवाला इक्यावनवा पर्व पूर्ण भया ॥ ५१ ॥

अथानन्तर महा प्रतापकर पूर्ण महाबली हनूमान जैसे सुमेरुको सौम जाय तैसे त्रिकूटाचलको चला सो आकाशविषै जाती जो हनूमानकी सेना ताका महा धनुषके आकार मायामई यंत्रकर निरोध भया तब हनूमान अपने समीपी लोकनितैं पूछी जो मेरी सेना कौन कारण आगे चल न सके यहां गर्वका पर्वत असुरनिका नाथ चमरेन्द्र है अथवा इन्द्र है तथा या पर्वतके शिखरविषै जिन मंदिर हैं अथवा चरमशरीरी मुनि हैं तब हनूमानके ये बचन सुनकर पृथुमति मन्त्री कहता भया हे देव! यह क्रूरतासंयुक्त मयामई यंत्र है तब आप दृष्टिधर देखा कोटविषै प्रवेश कठिन जाना मानों यह कोट विरक्त स्त्रीके मन समान दुःप्रवेश है, अनेक आकारको धरे वक्रताकरि पूर्ण, महा भयानक सर्वभक्षी पूतली जहां देव भी प्रवेश न कर सकें जाज्वल्यमान तीक्षण हैं अग्र भाग जिनके ऐसे करोतनिके समूहकर मण्डित जिह्वाके अग्रभाग करि रुधिरको उगलते ऐसे हजारा सर्प तिनकरि भयानक फण, ते विकराल शब्द करे हैं अर विषरूप अग्निके कण बरसे हैं, विषरूप धूमकरि अन्धकार होय रहा है। जो कोई मूर्ख सामन्तपणाके मानकरि उद्धत भया प्रवेश करे ताहि मायामई सर्प ऐसे निगलें जैसे सर्प मेंडकको निगलें, लंकाके कोट का मंडल जोतिष चक्रते हूं ऊंचा सर्व दिशनिविषै दुर्लंघ अर देखा न जाय प्रलयकालके मेघ समान भयानक शब्द कर संयुक्त अर हिंसारूप ग्रन्थनिकी न्याई अत्यन्त पापकर्मनिकरि निरमापा ताहि देख कर

हनूमान विचारता भया यह मायामई कोट राक्षसनिके नाथने रचा है सो अपनी विद्याकी चातुर्यता दिखाई है अर अब मैं विद्याबलकरि याहि उपाडता संता राक्षसनिका मद हरूं जैसे आत्मध्यानी मुनि मोह मदको हरे तब हनूमान युद्धविषै मनकर समुद्र समान जो अपनी सेना सो आकाशविषै राखी अर आप विद्यामई बक्तर पहिर हाथविषै गदा लेकर मायामई पूतलीके मुखविषै प्रवेश किया जैसे राहुके मुखविषैं चन्द्रमा प्रवेश करे अर वा मायामई पूतलीकी कुक्षि सोई भई पर्वतकी गुफा अन्धकारकर भरी सो आप नरसिंहरूप तीक्षण नखनिकर विदारी अर गदाके घातसे कोट चूरण किया जैसे शुक्लध्यानी मुनि निर्मल भावनिकरि घातिया कर्मकी स्थिति चूरण करे।

अथानन्तर यह विद्या महाभयंकर भंगको प्राप्त भई तब मेघकी ध्वनि समान ध्वनि भई विद्या भाग गई कोट विघट गया जैसे जिनेन्द्रके स्तोत्रकरि पापकर्म विघट जाय तब प्रलयकालके मेघ समान भयंकर शब्द भया मायामई कोट विखरा देख कोटका अधिकारी वज्रमुख महा क्रोधायमान होय शीघ्र ही रथपर चढ हनूमान पर विना विचारे मारनेको दौडा जैसे सिंह आग्निकी ओर दौडे जब वाहि आया देख पवनका पुत्र महायोधा युद्ध करिवेको उद्यमी भया तब दोऊ सेनाके योधा प्रचण्ड नाना प्रकारके वाहनानिपर चढे अनेक प्रकारके आयुध धरे परस्पर लडने लगे बहुत कहनेकरि कहा? स्वामीके कार्य ऐसा युद्ध भया जैसा मानके अर मार्दवके युद्ध होय अपने २ स्वामीकी दृष्टिविषै योधा गाज २ युद्ध करते भए जीवनविषैं नाहीं है स्नेह जिनके, फिर हनूमानके सुभटनिकर वज्रमुखके योधा क्षणमात्रविषैं दशोंदिशा भाजे अर हनूमानने सूर्यहूते अधिक है ज्योति जाकी ऐसे चक्र शस्त्रकरि वज्रमुखका सिर पृथिवीपर डारा। यह सामान्य चक्र है चक्री अर्धचक्रिनिके सुदर्शनचक्र होय है। युद्धविषै पिताका मरण देख लंका-सुन्दरी वज्रमुखकी पुत्री पिताका जो शोक उपजा हुता ताहि कष्टसे निवार क्रोधरूप विषकी भरी तेज

तुरंग जुते हैं जाके ऐसे रथपर चढी कुंडलनिके उद्योतकरि प्रकाशरूप है मुख जाका बक्र हैं भौंह जाकी,
उल्कापातका स्वरूप सूर्यमंडल समान तेजधारी क्रोधके वश कर लाल हैं नेत्र जाके क्रूरताकर डसे हैं
किंदूरीसमान होंठ जाने मानों क्रोधायमान शची ही है सो हनूमानपर दौडी अर कहती भई—रे दुष्ट !
मैं तोहि देखा जो तोमें शक्ति है तो मोतें युद्धकर, जो क्रोधायमान भया रावण न करे सो मैं करूंगी,
हे पापी ! तोहि यममंदिर पठाऊंगी, तू दिशाको भूल अनिष्ट स्थानको प्राप्त भया ऐसे शब्द कहती वह
शीघ्र ही आई सो आवतीका हनूमानने छत्र उडाय दिया, तब वाने बाणनिकरि इनका धनुष तोड डारा
अर शक्ति लेय चलावे ता पहिले हनूमान बीच ही शक्तिको तोड डारी तब वह विद्याबलकर गंभीर बज्र-
दंड समान बाण अर फरसी बरछी चक्र शतघ्नी मूसल शिला इत्यादि वायुपुत्रके रथपर बरसावती भई
जैसे मेघमाला पर्वतपर जलकी धारा बरसावे नानाप्रकारके आयुधानिके समूहकरि वाने हनुमानको बेढा
जैसे मेघपटल सूर्यको आच्छादे तब हनूमान विद्याकी सर्व विधिविषै प्रवीण महापराक्रमी ताने शस्त्रनिके
समूह अपने शस्त्रनिकरि आप तक न आवने दिए तोमरादिक बाणनिकरि तोमरादिक बाण निवारे
अर शक्तितें शक्ति निवारी। या भांति परस्पर अतियुद्ध भया याके बाण वाने निवारे वाके बाण याने
निवारे बहुत बेरतक युद्ध भया कोई नहीं हारे सो गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं।

हे राजन् ! हनूमानको लंकासुन्दरी बाण शक्ति इत्यादि अनेक आयुधानिकरि जीतती भई अर काम
के बाणनिकर पीडित भई। कैसे हैं कामके बाण ? मर्मके बिदारनहारे कैसी है लंकासुन्दरी साक्षात् लक्ष्मी
समान रूपवन्ती, कमल लोचन सौभाग्य गुणनिकरि गर्वित सो हनूमानके हृदयविषै प्रवेश करती भई
जाके कर्णपर्यंत बाणरूप तीक्ष्ण कटाक्ष नेत्ररूप धनुषतें चढे ज्ञान धीर्यके हरणहारे महा सुन्दर दुद्धर
मनके भेदनहारे प्रवीण अपनी लावण्यताकरि हरी है सुन्दरताई जिनने तब हनूमान मोहित होय

मनमें चिंतवता भया जो यह मनोहर आकार महाललित वाहिर तो विद्यावाण अर सामान्य वाण तिन कर मोहि भेदे है और आभ्यन्तर मेरे मनको कामके वाणकरि वींधे है यह मोहि वाह्याभ्यंतर हणे है तन मनको पीडै है या युद्धविषैं याके वाणनिकरि मृत्यु होय तो भली परन्तु याके विना स्वर्गविषैं जीवना भला नाहीं या भांति पवनपुत्र मोहित भया अर वह लंकासुन्दरी याके रूपको देख मोहित भई, क्रूरतारहित करुणा विषैं आया है चित्त जाका तव जो हनूमानके मारिवेको शक्ति हाथमें लीनी हुती सो शीघ्रही हाथतैं भूमिमें डारदई, हनूमान पर न चलाई। कैसे हैं हनूमान? प्रफुल्लित हैं तन अर मन जिनका अर कमल दल समान है नेत्र जिनके अर पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है मुख जिनका नव यौवन मुकट विषैं वानरका चिन्ह साक्षात् कामदेव है। लंकासुन्दरी मनमें चितवती भई याने मेरा पिता मारा सो बडा अपराध किया यद्यपि द्वेषी है तथापि अनुपम रूपकर मेरे मनको हरे है जो या सहित काम भोग न सेऊं तो मेरा जन्म निष्फल है तब विह्वल होय एक पत्र तामें अपना नाम सो वाणको लगाय चलाया तामें ये समाचार हुते हे नाथ! देवनिके समूहकर न जीती जाऊं ऐसी मैं सो तुमने कामके वाणनिकरि जीती यह पत्र वांच हनुमान प्रसन्न होय रथसे उतरे, जायकर तासे मिले जैसे काम रतिसे मिले वह प्रशांतवैर भई संती आसूं डारती तातके मरणकर शोकरत, तव हनूमान कहते भए—हे चन्द्रवदनी! रुदन मत करे तेरे शोककी निवृति होहु तेरे पिता परम क्षत्री महाशूरवीर तिनकी यही रीति जो स्वामी कार्यके अर्थ युद्धमें प्राण तजें अर तुम शास्त्रविषैं प्रवीण हो सो सव नीके जानो हो या राज्यविषैं यह प्राणी कर्मनिके उदयकर पिता पुत्र बांधवादिक सवको हणे है तातैं तुम आर्त ध्यान तजो ये सकल प्राणी अपना उपार्जा कर्म भोगवे हैं निश्चय मरणका कारण आयुका अन्त है अर पर जीव निमित्त मात्र हैं, इन वचननिकरि लंकासुन्दरी शोकरहित भई। या भांति या सहित कैसी सोहती भई जैसे पूर्णचन्द्रसे निशा सोहै

प्रेमके समूहकर पूर्ण दोऊ मिलकर संग्रामका खेद विस्मरण होय गए दोऊनिका चित्त परस्पर प्रीतिरूप होय गया तब आकाशविषैं स्तम्भनी विद्याकर कटक थांभा अर सुन्दर मायामई नगर बसाया जैसी सांझ की आरक्तता होय ता समान लाल देवनके नगर समान मनोहर जामें राजमहल अत्यन्त सुन्दर सो हाथी घोडे विमान रथों पर चढ बडे बडे राजा नगरमें प्रवेश करते भए। नगर ध्वजानिकी पंक्ति कर शोभित सो यथायोग्य नगरमें तिष्ठे महा उत्साहसे संयुक्त रात्रिमें शूरवीरनिके युद्धका वर्णन जैसा भया तैंसा सामंत करते भए हनूमान लंकासुन्दरीके संग रमता भया।

अथानन्तर प्रभात ही हनूमान चलनेको उद्यमी भए तब लंकासुन्दरी महा प्रेमकी भरी ऐसे कहती भई—हे कंत! तुम्हारे पराक्रम न सहे जांय ऐसे अनेक मनुष्योंके मुख रावणने सुने होवेंगे सो सुनकर अतिखेदखिन्न भया होयगा तातैं तुम लंका काहेको जावो, तब हनूमानने उसे सकल वृत्तान्त कहा जो रामने बानरवंशियोंका उपकार किया सो सबोंका प्रेरा रामके प्रति उपकार निमित्त जाऊं हूं। हे प्रिये! रामका सीतासे मिलाप कराऊं, राक्षसोंका इन्द्र अन्याय मार्गसे हर ले गया है, सो सर्वथा मैं लाऊंगा। तब ताने कहा तुम्हारा और रावणका वह स्नेह नाहीं, स्नेह नष्ट भया सो जैसे स्नेह कहिए तैल ताकू नष्ट होयवे करि दीपककी शिखा नहीं रहे है तैसे स्नेहके नष्ट होयवे करि संबन्धका व्यवहार नहीं रहे है अबतक तुम्हारा यह व्यवहार था तुम जब लंका आवते तब नगर उछावतें गली गलीमें हर्ष होता मंदिर ध्वजावोंकी पंक्तिसे शोभित होते जैसे स्वर्गमें देव प्रवेश करैं तैसे तुम प्रवेश करते, अब रावण प्रचण्ड दशानन तुमविषैं द्वेषरूप है सो निःसंदेह तुमको पकडेगा तातैं जब तिहारे उनके संधि होय तब मिलना योग्य है तब हनुमान बोले हे विचक्षणे! जाय कर ताका अभिप्राय जाना चाहूं हूं और वह सीता सती जगतमें प्रसिद्ध है और रूपकर अद्वितीय है जाहि देखकर रावणका सुमेरुसमान अचल मन चला है वह

महापतिव्रता हमारे नाथकी स्त्री हमारी माता समान ताका दर्शन किया चाहूं हूं। या भांति हनूमानने कही और सब सेना लंकासुन्दरीके समीप राखी और आप तो विवेकिनीने विदा होयकर लंकाको सन्मुख भए। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतें कहे हैं हे राजन्। या लोकविषै यह बडा आश्चर्य है जो यह प्राणी क्षणमात्रमें एक रसकों छोडकर दूजे रसमें आ जाय कभी विरसको छोडकर रसमें आ जाय कबहू रसको छोडकर विरसमें आ जाय। या जगतविषै इन कर्मनिकी अद्भुत चेष्टा है संसारी सर्व जीव कर्मोंके आधीन हैं। जैसे सूर्य दक्षणायनसे उत्तरायण आवे तैसे प्राणी एक अवस्थासे दूजी अवस्थामें आवे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनुमान लंकासुन्दरीका लाभ वर्णन करनेवाला बावनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५२ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकतें कहे हैं हे श्रेणिक! वह पवनका पुत्र महाप्रभावके उदयकर संयुक्त थोडे ही सेवकों सहित निःशंक लंकामें प्रवेश करता भया। बहुरि प्रथमही विभीषणके मंदिर में गया विभीषणने बहुत सन्मान किया फिर क्षणएक तिष्ठ कर परस्पर वार्ता कर हनूमान कहता भया जो रावण आधे भरतक्षेत्रका पति सर्वका स्वामी ताहि यह कहा उचित जो दरिद्र मनुष्यकी न्याईं चोरी कर परस्त्री लावे जे राजा हैं सो मर्यादाके मूल हैं जैसे नदीका मूल पर्वत, राजाही अनाचारी होय तो सर्व लोकमें अन्यायकी प्रवृत्ति होए ऐसे चरित्र किए राजाकी सर्वलोकमें निंदा होय तातें जगत्के कल्याण निमित्त रावणको शीघ्रही कहो न्यायको न उलंघे यह कहो हे नाथ! जगतमें अपयशका कारण यह कर्म है जिससे लोक नष्ट होय सो न करना तुम्हारे कुलका निर्मल चारित्र केवल पृथिवी परही प्रशंसा योग्य

नहीं, स्वर्गमें भी देव हाथ जोड नमस्कार कर तुम्हारे बडोंकी प्रशंसा करे हैं तुम्हारा यश सर्वत्र प्रसिद्ध
है तब विभीषण कहता भया मैं बहुत बार भाईको समझाया परन्तु मानें नहीं अर जिस दिनसे सीता
ले आया उस दिनसे हमसे बात भी न करे तथापि तुम्हारे वचनसे मैं फिर दबायकर कहूंगा परन्तु यह
हठ उससे छूटना कठिन है अर आज ग्यारवां दिन है सीता निराहार है जल भी नाहीं लेय है तो भी
रावणको दया नहीं उपजी इस कामसे विरक्त नहीं होय है । ए बात सुनकर हनूमानको अति दया उपजी
प्रमदनामा उद्यान जहां सीता विराजे है तहां हनूमान गया उस वनकी सुन्दरता देखता भया नवीन जे
बेलोंके समूह तिनसे पूर्ण और तिनके लाल पल्लव सोहें मानों सुन्दर स्त्रीके कर पल्लव ही हैं और पुष्पों
के गुच्छोंपर भ्रमर गुंजार करे हैं और फलोंसे शाखा नम्रीभूत हो रही हैं अर पवनसे हाले हैं, कमलोंकर
जहां सरोवर शोभित हैं और देदीप्यमान बेलोंसे वृक्ष वेष्टित मानों वह वन देववन समान है अथवा
भोगभूमि समान है पुष्पोंकी मकरन्दसे मंडित मानों साक्षात् नंदन वन है अनेक अद्‌भुतताकर पूर्ण
हनूमान कमललोचन वनकी लीला देखता संता सीताके दर्शन निमित्त आगे गया चारों तरफ वनमें
अवलोकन किया सो दूर ही से सीताको देखा । सम्यक् दर्शन सहित महासती उसे देखकर हनूमान मन
में चिंतवता भया यह रामदेवकी परम सुन्दरी महासती निर्धूम अग्नि समान असुवनसे भर रहे हैं नेत्र
जाके, सोच सहित बैठी मुखसे हाथ लगाय सिरके केश बिखर रहे हैं कृश है शरीर जिसका सो देख-
कर हनूमान विचारता भया । धन्य रूप इस माताका लोकविषैं, जीते हैं सर्वलोक जिसने मानों यह कमल
से निकसी लक्ष्मी ही विराजे है दुखके समुद्रमें डूब रही है तोभी इस समान और कोई नारी नाहीं । मैं जैसे
होय तैसे इसे श्रीरामसे मिलाऊं इसके और रामके काज अपना तनदूं याका और रामका विरह न देखूं
यह चिंतवनकर अपना रूप फेर मन्द २ पांव धरता हनूमान आगे जाय श्रीरामकी मुद्रिका सीताके पास

डारी सो शीघ्रही उसे देख रोमांच होय आए और कछू इक मुख हर्षित भया सो समीप बैठी थीं जो नारी वे इसकी प्रसन्नताके समाचार जायकर रावणको कहती भई सो वह तुष्टायमान होय इनको वस्त्र रत्नादिक देता भया और सीताको प्रसन्नवदन जान कार्यकी सिद्धि चिंतता भया सो मन्दोदरीको सर्व अन्तःपुरसहित सीतापै पठाई सो अपने नाथके वचनसे सर्व अन्तःपुर सहित सीता पै आई सो सीताको मंदोदरी कहती भई।

हे बाले! आज तू प्रसन्न भई सुनी सो तैने हमपर बडी कृपा करी अब लोकका स्वामी रावण उसे अंगीकार कर जैसे देवलोककी लक्ष्मी इन्द्रको भजे। ये वचन सुन सीता कोपकर मन्दोदरीसे कहती भई हे खेचरी! आज मेरे पतिकी वार्ता आई है मेरे पति आनन्दसे हैं इसलिये मोहि हर्ष उपजा है तब मन्दोदरीने जानी इसे अन्न जल किये ग्यारह दिन भए सो वायसे बके है तब सीता मुद्रिका ल्यावनहारे से कहती भई, हे भाई! मैं इस समुद्रके अंतर्द्वीपविषै भयानक वन में पडी हूं सो कोऊ उत्तम जीव मेरा भाई समान अतिवात्सल्य धारणहारा मेरे पतिकी मुद्रिका लेय आया है सो प्रगट दर्शन देवे तब हनुमान महा भव्य जीव सीताका अभिप्राय जान मनमें विचारता भया जो पहिले पराया उपकार विचारे बहुरि अतिकायर होय छिप रहे सो अधम पुरुष है अर जे पर जीवको आपदाविषै खेद खिन्न देख पराई सहाय करे तिन दयावन्तोंका जन्म सफल है तब समस्त रावणकी स्त्री मन्दोदरी आदि देखे हैं अर दूरहीसे सीताको देख हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार करता भया, कैसा है हनुमान? महा निशंक कांतिकर चन्द्रमासमान दीप्तिकर सूर्य समान वस्त्र आभरणकर मंडित रूपकर अतुल्य मुकुटमें बानर का चिन्ह चन्दन कर चर्चित है सर्व अंग जाका, महा बलवान बज्रवृषभनाराचसंहनन, सुन्दर केश रक्त होठ कुंडलके उद्योतसे महा प्रकाश रूप मनोहर मुख गुणवान महाप्रतापसंयुक्त सीताके निकट आवता

कैसा सोभता भया मानों भामंडल भाई लेयवे को आया है प्रथम ही अपना कुल गोत्र माता पिता का नाम सुनाय कर बहुरि अपना नाम कहा बहुरि श्रीरामने जो कहा हुता सो सर्व कहा अर हाथ जोड विनती करी हे साध्वी ! स्वर्गविमानसमान महलोंमें श्रीराम विराजे हैं परंतु तुम्हारे विरहरूप समुद्रमें मग्न काहू ठौर रतिको नाहीं पावे हैं समस्त भोगोपभोग तजें मौन धरे तिहारा ध्यान करे हैं जैसे मुनि शुद्धताको ध्यावें, एकाग्रचित्त तिष्ठे हैं। वे बीणाका नाद अर सुंदर स्त्रियोंके गीत कदापि नाहीं सुनै हैं अर सदा तिहारी ही कथा करे हैं तिहारे देखवेके अर्थ केवल प्राणों को धरें हैं। यह वचन हनुमानके सुन सीता आनन्दको प्राप्त भई बहुरि सजल नेत्र होय कहती भई (सीताके निकट हनुमान महा विनयवान हाथ जोड खडा है) जानकी बोली—

हे भाई ! मैं दुःखके सागरविषै पडी हूं अशुभके उदयकरि पतिके समाचार सुन तुष्टायमान भई तोहि कहा दूं ? तब हनूमान प्रणामकर कहता भया हे जगत् पूज्ये ! तिहारे दर्शन ही से मोहि महा लाभ भया तब सीता मोती समान आंसुनिकी बूंद नाखती हनूमानसे पूंछती भई हे भाई ! यह मगर ग्राह आदि अनेक जलचरोंकर भरा महा भयानक समुद्र ताहि उलंघकर तू कैसे आया अर सांच कहो मेरा प्राणनाथ तैंने कहां देखा अर लक्ष्मण युद्धविषै गया हुता सो कुशल क्षेमसे है अर मेरा नाथ कदाचित् तोहि यह संदेशा कहकर परलोक प्राप्त हुवा होय अथवा जिन मार्गविषै महा प्रवीण सकल परिग्रहका त्यागकर तप करता होय अथवा मेरे वियोगसे शरीर शिथिल होय गया होय अर अंगुरीतें मुद्रका गिर पडी होय यह मेरे विकल्प है, अब तक मेरे प्रभुका तोसों परिचय न हुता सो कौन भांति मित्रता भई सो सब मोसूं विशेषताकर कहो। तब हनूमान हाथ जोड सिर निवाय कहता भया—हे देवि ! सूर्यहास खड्ग लक्ष्मणको सिद्ध भया और चन्द्रनखाने धनीपै जाय धनीको क्रोध उपजाया सो खरदूषण दण्डकवन-

विषै युद्ध करनेको आया अर लक्ष्मण उससे युद्धकरनेको गए सो तो सब वृत्तांत तुम जानो हो बहुरि रावण आया अर आप श्रीरामके पास विराजती हुती सो रावण यद्यपि सर्व शास्त्रका वेत्ता हुता अर धर्म अधर्मका स्वरूप जाने हुता परंतु आपको देखकर अविवेकी होय गया समस्त नीति भूल गया, बुद्धि जाती रही तिहारे हरनेके कारण कपटकर सिंहनाद किया सो सुनकर राम लक्ष्मणपै गए अर यह पापी तुमको हर ले आया बहुरि लक्ष्मण राम सूं कही—तुम क्यों आए, शीघ्र जानकीपै जावो तब आप स्थानक आए तुमको न देखकर महाखेदखिन्न भए। तिहारे ढूंढनेके कारण वनविषै बहुत भ्रमे बहुरि जटायुको मरते देखा तब ताहि नमोकार मंत्र दिया अर चार आराधना सुनाय सन्यास देय पक्षीका परलोक सुधारा बहुरि तिहारे विरहकर महादुखी सोचसे परे अर लक्ष्मण खरदूषणको हन रामपै आया, धीर्य बंधाया अर चन्द्रोदयका पुत्र विराधित लक्ष्मणसे युद्ध ही विषै आय मिला हुता बहुरि सुग्रीव रामपै आया अर साहसगति विद्याधर जो सुग्रीवका रूपकर सुग्रीवकी स्त्रीका अर्थी भया हुता सो रामको देख साहसगतिकी विद्या जाती रही सुग्रीवका रूप मिटगया अर साहसगति रामसे लडा सो साहसगतिको रामने मारा सुग्रीवका उपकार किया तब सबने मोहि बुलाय रामसूं मिलाया। अब मैं श्रीरामका पठाया तिहारे छुडाइबे अर्थ यहां आया हूं, परस्पर युद्ध करना निःप्रयोजन है कार्यकी सिद्धि सर्वथा नयकर करना अर लंकापुरीका नाथ दयावान् है विनयवान् है धर्म अर्थ कामका वेत्ता है कोमल हृदय है सोम्य है वक्रतारहित है सत्यवादी महाधीरवीर है सो मेरा वचन मानेगा तोहि रामपै पठावेगा। याकी कीर्ति महा निर्मल पृथिवीविषै प्रसिद्ध है और यह लोकापवादतें डरे है तब सीता हर्षित होय हनूमानसे कहती भई—हे कपिध्वज ! तो सरीखे पराक्रमी धीरवीर विनयवान् मेरे पतिके निकट केतेक हैं ?

तब मन्दोदरी कहती भई—हे जानकी ! तैं यह कहा समझकर कही। तू याहि न जाने है तातें ऐसा

पूछे है या सरीखा भरतक्षेत्रमें कौन है या क्षेत्रमें यह एक ही है। यह महासुभट युद्धमें कईबार रावणका सहाई भया है यह पवनका पुत्र अंजनीका सुत रावणका भानजी जमाई है। चन्द्रनखाकी पुत्री अनंग-कुसुमा परणी है या एकने अनेक जीते हैं सदा लोक याके दर्शनको वांछे हैं चन्द्रमाकी किरणवत् याकी कीर्ति जगत्में फैल रही है। लंकाका धनी याहि भाईनितैं भी अधिक गिने है यह हनुमान पृथिवी पर प्रसिद्ध गुणनिकर पूर्ण है परन्तु यह बडा आश्चर्य है कि भूमिगोचरियोंका दूत होय आया है। तब हनुमानने कही—तुम राजा मयकी पुत्री अर रावणकी पटराणी दूती होय कर आई हो। जा पतिके प्रसादतें देवोंकेसे सुख भोगे ताहि अकार्यविषै प्रवर्त्तते मने नहीं करो हो और ऐसे कार्यकी अनुमोदना करो हो। अपना वल्लभ विषका भरा भोजन करे ताहि नाहीं निवारो हो। जो अपना भला बुरा न जाने ताका जीतव्य पशु समान है और तिहारा सौभाग्य रूप सबतें अधिक और पति परस्त्रीरत भया ताका दूतीपना करो हो। तुम सब बातनिविषैं प्रवीण परम बुद्धिमती हुती सो प्राकृत जीवनि समान अविधि कार्य करो हो। तुम अर्धचक्रीकी महिषी कहिये पटराणी हो सो अब मैं तुमको महिषी कहिये भैंस समान जानूं हूं। यह वचन हनूमानके मुखतें सुन मन्दोदरी क्रोधरूप होय बोली—अहो तू दोषरूप है, तेरा वाचालपना निरर्थक है जो कदाचित् रावण यह बात जाने कि यह रामका दूत होय सीतापै आया है तो जो काहूसे न करे ऐसी तोसैं करे अर जिसने रावणका बहनेऊ चन्द्रनखाका पति मारा ताके सुग्रीवादिक सेवक भए, रावणकी सेवा छांडी सो वे मन्दबुद्धि हैं रंक कहा करेंगे? इनकी मृत्यु निकट आई है तातैं भूमिगोचरीके सेवक भये हैं। ते अति मूढ निर्लज्ज तुच्छवृत्ति कृतघ्नी वृथा गर्वरूप होय मृत्युके समीप तिष्ठे हैं। ये वचन मन्दोदरीके सुनकर सीता क्रोधरूप होय कहती भई—हे मन्दोदरी! तू मंदबुद्धि है जो वृथा ऐसे कहे है, तैं मेरा पति अद्भुत पराक्रमका धनी कहा नहीं सुना है, शूरवीर अर पंडितोंकी

गोष्ठीविषै मेरा पति मुख्य गाइये है, जाके वज्रावर्त धनुषका शब्द रण संग्रामविषै सुनकर महारणधीर योधा धीर्य नहीं धारे हैं। भयसे कम्पायमान होयकर दूर भागे हैं अर जाका लक्ष्मण छोटाभाई लक्ष्मीका निवास शत्रुपक्षके क्षय करनेको समर्थ जाके देखते ही शत्रु दूर भाग जावें। बहुत कहिवेकरि कहा? मेरा पति राम लक्ष्मण सहित समुद्र तरकर शीघ्र ही आवे है सो युद्धविषै थोडे ही दिननिविषै तू अपने पतिको मूवा देखेगी। मेरा पति प्रबल पराक्रमका धारी है, तू पापी भरतारकी आज्ञारूप दूती होय आई है सो शिताब ही विधवा होयगी अर बहुत रुदन करेगी। ये वचन सीताके मुखतैं सुनकर मन्दोदरी राजा मयकी पुत्री अतिक्रोधको प्राप्त भई। अठारा हजार राणी हाथोंकर सीताके मारवेको उद्यमी भई और अति क्रूर वचन कहती सीता पर आईं तब हनूमान बीच आनकर तिनको थांभी जैसे पहाड नदीके प्रवाहको थांभै। ते सब सीताको दुःखका कारण वेदनारूप होय हनिवेको उद्यमी भई थीं सो हनूमानने वैद्यरूप होय निवारी तब ये सब मंदोदरी आदि रावणकी राणी मान भंग होय रावणपै गईं क्रूर हैं चित्त जिनके, तिनको गए पीछे हनूमान सीतासे नमस्कारकरि आहारके निमित्त विनती करता भया हे देवि! यह सागरांत पृथिवी श्रीरामचन्द्रकी है तातैं यहांका अन्न उनहीका है, वैरियोंका न जानो। या भांति हनूमानने सम्बोधी और प्रतिज्ञा भी यही हुती कि जो पतिके समाचार सुनूं तब भोजन करूं सो समाचार आए ही तब सीता सब आचारमें विचक्षण महा साध्वी शीलवंती दयावंती देशकालकी जाननेवारी आहार लेना अंगीकार करती भई। तब हनूमानने एक ईरा नामकी स्त्री कुलपालिकाको आज्ञा करी जो शीघ्रही श्रेष्ठ अन्न लावो अर हनूमान बिभीषणके पास गया ताहीके भोजन किया और तासे कही सीताको भोजनकी तयारी कराय आया हूं और ईरा जहां डेरे हुते वहां गई सो चार मुहूर्तमें सर्व सामग्री लेकर आई दर्पण समान पृथिवीको चन्दनसे लीपा और महा सुगन्ध विस्तीर्ण निर्मल सामग्री और सुव-

र्णादिकके भाजनमें भोजन धराय लाई। कैएक पात्र घृतके भरे हैं कैएक चावलोंसे भरे हैं चावल कुंदके पुष्प समान उज्ज्वल और कैएक पात्र दालसों भरे हैं और अनेक रस नाना प्रकारके व्यंजन दूध दही महा स्वादरूप भांति भांतिका आहार सो सीता बहुत किया। संयुक्त रसोई कर ईरा आदि समीप वर्तियोंको यहां ही न्योते। हनूमानसे भाईका भाव कर अति वात्सल्य किया। महा श्रद्धा संयुक्त है अन्तःकरण जाका ऐसी सीता महा पतिव्रता भगवानको नमस्कारकर अपना नियम समाप्तकर त्रिविध पात्रोंके भोजन करावनेका अभिलाषकर महा सुन्दर श्रीराम तिनको हृदयमें धार, पवित्र है अंग जाका दिन विषे शुद्ध आहार करती भई। सूर्यका उद्योत होय तबही पवित्र मनोहर पुण्यका बढावनहारा आहार योग्य है रात्रिको योग्य नाहीं, सीता भोजन कर चुकी और कछु इक विश्रामको प्राप्त भई तब हनूमानने नमस्कारकर विनती करी हे पतिव्रते! हे पवित्रे! हे गुणभूषणे! मेरे कांधे चढो और समुद्र उलंघ क्षण मात्रमें रामके निकट ले जाऊं। तिहारे ध्यानमें तत्पर महाविभवसंयुक्त जे राम तिनको शीघ्रही देखो तिहारे मिलापकर सबहीको आनन्द होइ तब सीता रुदन करती कहती भई हे भाई! पतिकी आज्ञाविना मेरा गमन योग्य नाहीं जो पूछें कि तू विना बुलाए क्यों आई तो मैं कहा उत्तर दूंगी तातें रावणने उपद्रव तो सुना होयगा सो अब तुम जावो तोहि यहां विलंब उचित नाहीं। मेरे प्राणनाथके समीप जाय मेरी तरफसे हाथ जोड नमस्कार कर मेरे मुखके वचन या भांति कहियो—हे देव! एक दिन मो सहित आपने चारण मुनिकी बन्दना करी, महा स्तुति करी अर निर्मलजलकी भरी सरोवरी कमलोंकर शोभित जहां जल क्रीडा करी ता समय महा भयंकर एक बनका हाथी आया सो वह हाथी महाप्रबल आपने क्षण मात्रमें वशकर सुन्दर क्रीडा करी। हाथी गर्वरहित निश्चल किया अर एक दिन नन्दन वन समान वनविषै मैं वृक्षकी शाखाको नवाती क्रीडा करती हुती सो भ्रमर मेरे शरीरको आय लगे सो आपने

अति शीघ्रताकर मुझे भुजासे उठाय लई अर आकुलता रहित करी और एकदिन सूर्य उद्योत समयमें आपके समीप सरोवरके तट तिष्ठती थी तब आप शिक्षा देयवेके काज कछु इक मिमकर कोमल कमल नालकी मेरे मधुरसी दीनी अर एकदिन पर्वतपर अनेक जातिके वृक्ष देख मैं आपको पूछी—हे प्रभो ! यह कौन जातिके वृक्ष हैं महामनोहर तब आप प्रसन्न मुखकर कही—हे देव ! ये नंदनी वृक्ष हैं अर एकदिन करणकुण्डल नामा नदीके तीर आप विराजे हुते अर मैंहू हुती ता समय मध्यान्ह समय चारणमुनि आए सो तुम उठकर महाभक्तिकर मुनिको आहार दिया तहां पंचाश्चर्य भए रत्नवर्षा, कल्प वृक्षोंके पुष्पोंकी वर्षा, सुगन्धजलकी वर्षा, शीतल मंद सुगन्ध पवन दुन्दुभी बाजे अर आकाशविषै देवोंने यह ध्वनि करी धन्य ये पात्र, धन्य ये दाता, धन्य दान, ये सब रहस्यकी बात कही अर चूडामणि सिरसे उतार दिया जो याके दिखानेसे उनका विश्वास आवेगा अर यह कहियो मैं जानूं हूं आपकी कृपा मोपै अत्यंत है तथापि तुम अपने प्राण यत्नसे राखियो तिहारेसे मेरा वियोग भया अब तिहारे यत्नसे मिलाप होयगा ऐसा कह सीता रुदन करती भई तब हनूमानने धीर्य बंधाया अर कही हे माता ! जो तुम आज्ञा करोगी सो ही होयगा और शीघ्रही स्वामीसों मिलाप होयगा यह कह हनूमान सीतासे विदा भया अर सीताने पतिकी मुद्रिका अंगुरीमें पहिर ऐसा सुख माना मानों पतिका समागम भया।

अथानंतर वनकी नारी हनुमानको देखकर आश्चर्यको प्राप्त भई अर परस्पर ऐसी बात करती भई—यह कोई साक्षात् कामदेव है अथवा देव है सो वनकी शोभा देखवे को आया है तिनमें कोई एक काम कर व्याकुल होय बीन वजावती भई, किन्नरी देवीयों कैसे हैं, स्वर जिनके कोई यक चन्द्रवदनी बामे हस्तविषै दर्पण राख अर याका प्रतिविम्ब दर्पणमें देखती भई, देखकर आसक्त मन भई। या भांति समस्त स्त्रियोंको संभ्रम उपजाय हार माला सुन्दर वस्त्र धरे देदीप्यमान अग्निकुमार देववत् सोहता भया॥

इनके वनविषे आवनेकी वार्ता रावणने सुनी तब क्रोधरूप होय रावणने महानिर्दयी किंकर युद्धविषे जे प्रवीण हुते ते पठाए अर तिनको यह आज्ञा करी कि मेरी क्रीडाका जो पुष्पोद्यान तहां मेरा कोई एक द्रोही आया है सो अवश्य मार डारियो। तब ये जायकर वनके रक्षकोंको कहते भए—हो वनके रक्षक हो! तुम कहा प्रमादरूप होयरहे हो, कोई उद्यानविषें दुष्ट विद्याधर आया है सो शीघ्र ही मारना अथवा पकडना। वह महा अविनयी है, वह कौन है, कहां है? ऐसे किंकरोंके मुखसे ध्वनि निकसी सो हनूमान ने सुनी अर धनुषके धरणहारे शक्तिके धरणहारे गदाके धरणहारे खड्ग बरछीके धरणहारे अनेक लोग आवते हनूमानने देखे तब पवनका पूत सिंहते भी अधिक है पराक्रम जाका मुकुटविषे रत्न जडित बानरका चिह्न ताकर प्रकाश किया है आकाश जाने आप उनको अपनारूप दिखाया उगते सूर्य समान क्रोधरूप होंठ डसता लाल नेत्र। तब थाके भयसे सब किंकर भागे तब और क्रूर सुभट आए शक्ति तोमर खड्ग चक्र गदा धनुष इत्यादि आयुध करविषे धरें अर अनेक शस्त्र चलावते आए तब अंजनीका पुत्र शस्त्ररहित हुता सो वनके जे वृक्ष ऊंचे ऊंचे थे उनके समूह उपाडे अर पर्वतोंकी शिला उपाडी सो रावण के सुभटोंपर अपनी भुजानिकर वृक्ष अर शिला चलाईं मानों काल ही है सो बहुत सामंत मारे। कैसी है हनूमानकी भुजा महाभयंकर जो सर्प ताके फण समान है आकार जिनका, शाल वृक्ष पीपल बड चम्पा नींब अशोक कदम्ब कुन्द नाग अर्जुन धव आम्र लोध कटहल बडे २ वृक्ष उपाड उपाड अनेक योधा मारे कैयक शिलावोंसे मारे कैयक मुक्कों अर लातोंसे पीस डारे, समुद्र समान रावणके सुभटोंकी सेना क्षणमात्रविषे वखेर डारी कैयक मारे कैयक भागे। हे श्रेणिक! मृगानिके जीतवेको मृगराजका कौन सहाई होय अर शरीर बलहीन होय तो धनोंकी सहायकर कहा? ता वनके सब ही भवन अर वापिका अर विमान सारिखे उत्तम मंदिर सब चूर डारे केवल भूमि रहि गई। वनके मन्दिर अर वृक्ष विध्वंस किये

सो मार्ग होय गया जैसे समुद्र सूक जाय अर मार्ग होय जाय । फोरि डारी है हाटोंकी पंक्ति अर मारे हैं अनेक किंकर सो बाजार ऐसा होय गया मानों संग्रामकी भूमि है उतंग जे तोरण सो पडे हैं अर ध्वजावोंकी पंक्ति पडी सो आकाशसे मानों इन्द्रधनुष पडा है अर अपनी जंघातें अनेक वर्ण रत्नोंके महिल ढाहे सो अनेक वर्णके रत्नोंकी रजकर मानों आकाशविषै हजारों इंद्र धनुष चढे हैं अर पायनकी लातनसे पर्वत समान ऊंचे घर फोर डारे तिनका भयानक शब्द होता भया अर कईयक तो हाथोंसे मारे अर कईएक पगोंसे मारे अर छातीसे अर कांधेसे, या भांति रावणके हजारों सुभट मारे सो नगरविषै हाहाकार भया अर रत्नोंके महिल गिर पडे, तिनका शब्द भया अर हाथिनिके थंभ उपार डारे अर घोडे पवनमंडल पानोंकी न्याईं उडे उडे फिरे हैं अर वापी फोर डारी सो कीचड रहगया समस्त लंका व्याकुल भई, मानों चाक चढाई है । लंका रूप सरोवर राक्षसरूप मीनोंसे भरा सो हनूमानरूप हाथीने गाह डारा, तब मेघबाहन वक्तर पहिर बडी फौज लेय आया अर ताके पीछे ही इंद्रजीत आया सो हनूमान उनसे युद्ध करने लगा । लंकाकी वाह्यभूमिविषै महायुद्ध भया जैसा खरदूषणके अर लक्ष्मणके युद्ध भया हुता अर हनूमान चार घोडोंके रथपर चढ धनुषवाण लेय राक्षसोंकी सेना पर दौडे ।

तब इन्द्रजीतने बहुत बेरतक युद्धकर हनूमान को नागफांससे पकडा अर नगर में ले आया सो याके आयवेसे पहिलेही रावण के निकट हनूमानकी पुकार हो रही थी, अनेक लोग नाना प्रकार कर पुकार कर रहे हुते कि सुग्रीवका बुलाया यह अपने नगरतैं किहकंधापुर आया रामसों मिला अर तहांते या ओर आया सो महेन्द्रको जीता अर साधवों के उपसर्ग निवारे, दधिमुखकी कन्या रामपै पठाई अर बज्रमई कोट विध्वंसा, बज्रमुखको मारा अर ताकी पुत्री लंकासुन्दरी अभिलाषवन्ती भई सो परनी अर ता संग रमा अर पुष्पनामा वन विध्वंसा अर वनपालक विह्वल करे अर बहुत सुभट मारे अर

घटरूप जे स्तन तिनकर सींच सींच मालियों की स्त्रियोंने पुत्रोंकी नाईं जे वृक्ष बढाए हुते ते उपार डारे
अर वृक्षोंसे बेल दूरकरी सो विधवा स्त्रियोंकी नाईं भूमि विषै पडी तिनके पल्लव सूक गए अर फल
फूलोंसे नम्रीभूत नानाप्रकार के वृक्ष मसानकेसे वृक्ष करडारे सो यह अपराध सुन रावणकों अतिकोप
भया हुता इतनेमें इन्द्रजीत हनुमानको लेकर आया सो रावणने याको लोहकी सांकलनि कर बंधाया
अर कहता भया यह पापी निर्लज्ज दुराचारी है अब याके देखवेकर कहा ? यह नाना अपराध का कर-
णहारा ऐसे दुष्टको क्यों न मारिये तब सभाके लोक सब ही माथा धुनकर कहते भए हे हनुमान ! जाके
प्रसादतें पृथिवी विषै तू प्रभुताको प्राप्त भया ऐसे स्वामीके प्रतिकूल होय भूमिगोचरीका दूत भया
रावणकी ऐती कृपा पीठ पीछे डार दई ऐसे स्वामीको तज जे भिखारी निर्धन पृथिवीमें भ्रमते फिरें
ते दोनों वीर तिनका तू सेवक भया अर रावणने कहा कि तू पवनका पुत्र नाहीं काहू औरकर उपजा
है, तेरी चेष्टा अकुलीनकी प्रत्यक्ष दीखे है जे जारजात हैं तिनके चिन्ह अंगमें नाहीं दीखे हैं जब अना-
चारको आचरै तब जानिए यह जारजात है। कहा केसरी सिंहका बालक स्यालका आश्रय करे, नीच-
का आश्रयकर कुलवन्त पुरुष न जीवें अब तू राजद्वारका द्रोही है, निग्रह करवे योग्य है तब हनूमान
यह वचन सुन हंसा अर कहता भया—न जानिए कौनका निग्रह होय। या दुर्बुद्धिकर तेरी मृत्यु नजीक
आई है कैएक दिनविषै दृष्टि परेगी । लक्ष्मण सहित श्रीराम बडी सेनासे आवे हैं सो किसीसे रोके न
जांय जैसे पर्वतनितैं मेघ न रुकै अर जैसे कोऊ नानाप्रकारके अमृत समान आहार कर तृप्त न भया अर
विषकी एक बूंद भखें नाशको प्राप्त होय तैसे हजारों स्त्रीनकर तू तृप्तायमान न होय अर परस्त्रीकी तृष्णा-
कर नाशको प्राप्त होयगा जो शुभ अर अशुभकर प्रेरी, बुद्धि होनहार माफिक होय है सो इन्द्रादि कर
भी अन्यथा न होय, दुर्बुद्धिविषै सैकडों प्रिय वचन कर उपदेश दीजिए तौहू न लगें, जैसा भवितव्य

होय सोही होय। विनाशकाल आवे तब बुद्धिका नाश होय, जैसे कोऊ प्रमादी विषका भरा सुगंध मधुर जल पीवे तो मरणको पावे तैसें हे रावण! तू परस्त्रीका लोलुपी नाशको प्राप्त होयगा। तू गुरु परिजन वृद्ध मित्र प्रिय बांधव मंत्री सबनिके वचन उलंघकर पापकर्मविषे प्रवृत्ता है सो दुराचाररूप समुद्रविषै कामरूप भ्रमरके मध्य आय नरकके दुःख भोगेगा। हे रावण! तू रत्नश्रवा राजाके कुलक्षय नीच पुत्र भया। तोकर राक्षस वंशिनिका क्षय होयगा आगे तेरे वंशमें बडे बडे मर्यादाके पालनहारे पृथिवीविषै पूज्य स्वर्ग मुक्तिके गमन करणहारे भए अर तू उनके कुलविषै पुलाक कहिए न्यून पुरुष भया दुर्बुद्धि मित्रको मित्रलोक सुबुद्धिकी बात कहैं सो न माने तातैं दुर्बुद्धिको कहना निरर्थक है। जब हनूमानने यह वचन कहे तब रावण क्रोधकर आरक्त होय दुर्वचन कहता भया—यह पापी मृत्युसे नाहीं डरै है, वाचाल है तातैं शीघ्र ही याके हाथ पांव ग्रीवा सांकलोंसे बांधकर अर कुवचन कहते ग्रामविषै फेरो, क्रूर किंकर लार अर घर घर यह वचन कहो—भूमिगोचरियोंका दूत आया है याहि देखहु अर स्वान बालक लार सो नगरकी लुगाई धिक्कार देवें अर बालक धूल उडावें अर स्वान भौंकें, सर्व नगरीविषै या भांति इसे फेरो दुःख देवो।

तब वे रावणकी आज्ञा प्रमाण कुवचन बोलते ले निकसे सो यह बन्धन तुडाय ऊंचा चल्या जैसे यति मोहफांस तोड मोक्षपुरीको जाय आकाशतें उछल अपने पगोंकी लातोंकर लंकाका बडा द्वार ढाया तथा और एक छोटे दरवाजे ढाहे इन्द्रके माहिल तुल्य रावणके महिल हनूमानके चरणोंके घातसे विखर गए, जिनके बडे बडे स्तम्भ हुते अर महलके आस पास रत्न सुवर्णका कोट हुता सो चूरडारा जैसे वज्रपातके मारे पर्वत चूर्ण होजांय तैसे रावणके घर हनूमानरूप वज्रके मारे चूर्ण होय गए। यह हनूमानके पराक्रम सुन सीताने प्रमोद किया अर हनूमानको बंधा सुन विषाद किया हुता तब वज्रोदरी पास बैठी

हुती ताने कहा—हे देवी! वृथा काहेको रुदन करे यह सांकल तुडाय आकाशमें चला जाय है सो देख। तब सीता अति प्रसन्न भई अर चित्तमें चिंतवती भई यह हनूमान मेरे समाचार पतिपै जाय कहेगा सो असीस देती भई अर पुष्पांजलि नाखती भई कि तू कल्याणसे पहुंचियो समस्त ग्रह तुझे सुखदाई होंय तेरे विघ्न सकल नाशको प्राप्त होंय तू चिरंजीव हो या भान्ति परोक्ष असीस देती भई। जे पुण्याधिकारी हनूमान सारिखे पुरुष हैं वे अद्भुत आश्चर्यको उपजावे हैं। कैसे हैं वे पुरुष? जिन्होंने पूर्व जन्ममें उत्कृष्ट तप व्रत आचरे हैं अर सकल भवमें विस्तरे है ऐसी कीर्तिके धारक हैं अर जो काम किसीसे न बने सो करवे समर्थ हैं अर चिंतवनमें न आवे ऐसा जो आश्चर्य उसे उपजावे हैं इसलिये सर्व तजकर जे पंडित जन हैं वे धर्मको भजो अर जे नीचकर्म हैं वे खोटे फलके दाता हैं इसलिये अशुभकर्म तजो और परम सुखका आस्वाद तामें आसक्त जे प्राणी सुन्दर लीलाके धारक वे सूर्यके तेजको जीतें ऐसे होय हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनुमानका लंकासों पाछा आवनेका वर्णन करनेवाला त्रेपनवां पर्व पूर्ण भया॥ ५३॥

अथानन्तर हनूमान अपने कटकमें आय किहकन्धापुरको आया लंकापुरीमें विघ्नकर आया ध्वजा छत्रादि नगरीकी मनोग्यता हर आया किहकन्धापुरके लोग हनूमानको आया जान बाहिर निकसे नगरमें उत्साह भया यह धीर उदार है पराक्रम जाका नगरमें प्रवेश करता भया सो नगरके नर नारियोंको याके देखवेको अतिसंभ्रम भया, अपना जहां निवास तहां जाय सेनाके यथा योग्य डेरे कराए, राजा सुग्रीवने सब वृत्तांत पूछा, सो ताहि कहा बहुरि रामके समीप गए। राम यह चिंतवन कर रहे हैं कि हनुमान आया है सो यह कहेगा कि तिहारी प्रिया सुखसे जीवे है, हनूमानने ताही समय आय रामको

देखा, महाक्षीण वियोगरूप अग्निसे तप्तायमान जैसे हाथी दावानल कर व्याकुल होय महाशोकरूप गर्तमें पडे तिनको नमस्कारकर हाथ जोड हर्षित बदन होय सीताकी वार्ता कहता भया, जेते रहस्यके समाचार कहे हुते ते सब वरणन किये और सिरका चूडामणि सौंप निश्चिंत भया। चिन्ता कर बदनकी और ही छाया होय रही है, आसू पडे हैं, सो राम याहि देखकर रुदन करने लग गए अर उठकर मिले। श्रीराम यों पूछें है हे हनुमान! सत्य कहो, मेरी स्त्री जीवे है? तब हनुमान नमस्कार कर कहता भया। हे नाथ! जीवे है आपका ध्यान करे है। हे पृथिवीपते! आप सुखी होवो, आपके विरहकर वह सत्यवती निरंतर रुदन करे है, नेत्रनिके जलकर चतुरमास कर राखा है, गुणके समूहकी नंदी सीता ताके केश विखर रहे हैं, अत्यन्त दुखी है और बारम्बार निश्वास नाखती चिंताके सागरमें डूब रही है। स्वभावहीसे दुर्बल शरीर है अर अब विशेष दुर्बल होय गई है। रावणकी स्त्री आराधे हैं परंतु उनसे संभाषण करे नाहीं। निरंतर तिहारा ही ध्यान करे है। शरीरका संस्कार सब तज बैठी है। हे देव! तिहारी राणी बहुत दुःखसे जीवे है। अब तुमको जो करना होय सो करो। ये हनुमानके वचन सुन श्रीराम चिंतावान भए मुखकमल कुमलाय गया। दीर्घ निश्वास नाखते भए अर अपने जीतव्यको अनेक प्रकार निंदते भए। तब लक्ष्मणने धीर्य बधाया। हे महाबुद्धि! कहा सोच करो हो? कर्तव्यविषे मन धरो अर लक्ष्मण सुग्रीवसे कहता भया—हे किहकंधाधिपते! तू दीर्घसूत्री है। अब सीताके भाई भामंडलको शीघ्र ही बुलावहु रावणकी नगरी हमको अवश्य ही जाना है, कै तो जहाजानिकर समुद्र तिरें अथवा भुजानितें। ये बात सुन सिंहनाद नामा विद्याधर बोला—आप चतुर महाप्रवीण होयकर ऐसी बात मत कहो अर हम तो आपके संग हैं परंतु ऐसा करना जाविषे सबका हित होय। हनूमानने जाय लंकाके वन विध्वंसे अर लंकाविषे उपद्रव किया सो रावणको क्रोध भया है सो हमारी तो मृत्यु आई है। तब जामवंत बोला तू

नाहर होयकर मृगकी न्याईं कहा कायर होय है अब रावणहू भयरूप है और वह अन्यायमार्गी है वाकी मृत्यु निकट आई है अर अपनी सेनामें भी बडे बडे योधा विद्याधर महारथी हैं। विद्या विभवकर पूर्ण हैं हजारों आश्चर्यके कार्य जिन्होंने किये हैं तिनके नाम धनगति, एकभूत, गजस्वन, क्रूरकोलि, किलभीम, कुंड, गोरवि, अंगद, नल, नील, तडिद्वक्र, मंदर, अर्शनी, अर्णव, चन्द्रज्योति, मृगेंद्र, बज्रदृष्टि दिवाकर और उल्काविद्या लांगूलविद्या दिव्यशस्त्रविषै प्रवीण जिनके पुरुषार्थमें विघ्न नाहीं ऐसे हनूमान महाविद्यावान अर भामण्डल विद्याधरोंका ईश्वर महेंद्रकेतु अति उग्र है पराक्रम जाका प्रसन्नकीर्ति उपवति अर ताके पुत्र महा बलवान तथा राजा सुग्रीवके अनेक सामन्त महा बलवान हैं, परम तेजके धारक वरते हैं, अनेक कार्यके करणहारे, आज्ञाके पालनहारे ये वचन सुनकर विद्याधर लक्ष्मणकी ओर देखते भए अर श्रीरामको देखा सो सौम्यतारहित महा विकरालरूप देखा और भृकुटि चढा महा भयंकर मानों कालके धनुष ही हैं, श्रीराम लक्ष्मण लंकाकी दिशा क्रोधके भरे लाल नेत्रकर चौंके मानों राक्षसोंके क्षय करनेके कारण ही हैं बहुरि वही दृष्टि धनुषकी ओर धरी, अर दोनों भाइयोंका मुख महा क्रोधरूप होय गया, कोपकर मंडित भए शिरके केश ढीले होय गए मानों कमलके स्वरूप ही हैं, जगत को तामसरूप तमकर व्याप्त किया चाहे हैं ऐसा दोऊनिका मुख ज्योतिके मंडल मध्य देख सब विद्याधर गमनको उद्यमी भए संभ्रमरूप है चित्त जिनका। राघवका अभिप्राय जानकर सुग्रीव हनूमानादि सर्व नाना प्रकारके आयुध अर संपदा कर मंडित चलनेको उद्यमी भए। राम लक्ष्मण दोनों भाइयोंके प्रयाण होनेके वादित्रनिके समूहके नादकर पूरित हैं दशोंदिशा, सो मार्गसिरबदी पंचमीके दिन सूर्यके उदय समय महा उत्साह सहित भले २ शकुन भए ता समय प्रयाण करते भए। कहा कहा शकुन भए कहिए हैं— निर्धूम अग्निकी ज्वाला दक्षिणावर्त देखी अर मनोहर शब्द करते मोर अर वस्त्राभूषणकर संयुक्त सौ-

भाग्यवती नारी सुगन्ध पवन निर्ग्रंथ मुनि छत्र तुरंगोंका गम्भीर हींसना घंटाका शब्द दहीका भरा क-
लश काग पांख फैलाए मधुर शब्द करता, भेरी और शंखका शब्द अर तिहारी जय होवे सिद्धि होवे
नन्दो बधो ऐसे वचन इत्यादि शुभ शकुन भए। राजा सुग्रीव श्रीरामके संग चलनेको उद्यमी भए।
सुग्रीवके ठौर २ सुविद्याधरोंके समूह आए। कैसा है सुग्रीव ? शुक्लपक्षके चन्द्रमा समान है प्रकाश जाका,
नानाप्रकारके विमान नानाप्रकारकी ध्वजा नानाप्रकारके वाहन नानाप्रकारके आयुध उन सहित बडे २
विद्याधर आकाशविषै जाते शोभते भए। राजा सुग्रीव हनूमान शल्य दुर्षण नल नील काल सुषेण कुमुद
इत्यादि अनेक राजा श्रीरामके लार भए तिनके ध्वजावों पर देदीप्यमान रत्नमई बानरोंके चिन्ह मानों
आकाशके ग्रसवेको प्रवरते हैं और विराधितकी ध्वजापर नाहरका चिन्ह नीझरने समान देदीप्यमान अर
जांबुकी ध्वजापर वृक्ष और सिंहरवकी ध्वजामें व्याघ्र अर मेघकांतकी ध्वजामें हाथीका चिन्ह इत्यादि
राजावोंकी ध्वजामें नानाप्रकारके चिन्ह। इनमें भूतनाद महा तेजस्वी लोकपाल समान सो फौजका
अग्रसर भया अर लोकपाल समान हनूमान भूतनादके पीछे सामन्तोंके चक्र सहित परम तेजको धरे
लंकापर चढे सो अति हर्षके भरे शोभते भए जैसे पूर्व रावणके बडे सुकेशीके पुत्र माली लंकापर चढे हुते
अर अमल किया हुता तैसे श्रीराम चढे श्रीरामके सन्मुख विराधित बैठा अर पीछे जामवंत बैठा बांई
भुजा सुषेण बैठा दाहिनी भुजा सुग्रीव बैठा सो एक निमिषमें वेलंधरपुर पहुंचे। तहांका समुद्र नामा राजा
सो उसके अर नलके परम युद्ध भया सो समुद्रके बहुत लोक मारे गए अर नलने समुद्रको बांधा बहुरि
श्रीरामसे मिलाया अर तहांही डेरा भए श्रीरामने समुद्रपर कृपा करी ताका राज्य ताको दिया सो
राजाने अति हर्षित होय अपनी कन्या सत्यश्री कमला गुणमाला रत्नचूडा स्त्रियोंके गुणकर मण्डित
देवांगना समान सो लक्ष्मणसे परणाई तहां एक रात्री रहे बहुरि यहांसे प्रयाणकर सुवेल पर्वतपर सुवेल

नगर गए वहां राजा सुवेल नाम विद्याधर ताको संग्राममें जीत रामके अनुचर विद्याधर क्रीडा करते भए जैसे नन्दन बनविषे देव क्रीडा करें तहां अक्षय नाम बनमें आनन्दसे रात्रि पूर्ण करी बहुरि प्रयाणकर लंका जायवेको उद्यमी भए। कैसी है लंका? ऊंचे कोटसे युक्त सुवर्णके मंदिरोंकर पूर्ण कैलाशके शिखर समान है आकार जिनके अर नानाप्रकारके रत्नोंके उद्योतकर प्रकाशरूप अर कमलोंके जे बन तिनसे युक्त वापीकूप सरोवरादिक कर शोभित नाना प्रकार रत्नोंके ऊंचे जे चैत्यालय तिनकर मण्डित महा पवित्र इन्द्रकी नगरी समान। ऐसी लंकाको दूरसे देखकर समस्त विद्याधर रामके अनुचर आश्चर्यको प्राप्त भए अर हंसद्वीप विषे डेरे किये तहां हंसपुर नगर राजा हंसरथ ताहि युद्धविषे जीत हंसपुरमें क्रीडा करते भए। तहांतैं भामण्डल पर बहुरि दूत भेजा अर भामण्डलके आयवेकी बांछा कर तहां निवास किया। जा जा देशमें पुण्याधिकारी गमन करें तहां तहां शत्रुनिको जीत महा भोग उपभोगको भजें इन पुण्याधिकारी उद्यमवन्तोंसे कोई परे नाहीं है। सब आज्ञाकारी हैं जो जो उनके मनमें अभिलाषा होय सो सब इनकी मूठीमें है तातैं सर्व उपायकर त्रैलोक्यमें सार ऐसा जो जिनराजका धर्म सो प्रशंसा योग्य है जो कोई जगजीत भया चाहे वह जिनधर्मको आराधो। ये भोग क्षणभंगुर हैं इनकी कहा बात? यह वीतरागका धर्म निर्वाण देनेहारा है और कोई जन्म लेय तो इन्द्र चक्रवर्त्यादिक पदका देनेहारा है ता धर्मके प्रभावतैं ये भव्य जीव सूर्यसे अधिक प्रकाशको धरे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं राम लक्ष्मणका लंका गमन वर्णन करनेवाला चौवनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५४ ॥

अथानन्तर रामका कटक समीप आया जान प्रलयकाल के तरंग सामान लंका क्षोभ को प्राप्त भई अर रावण कोपरूप भया अर सामन्त लोक रणकथा करते भए जैसा समुद्रका शब्द होय तैसे वादित्रों के नाद भए सर्व दिशा शब्दायमान भई अर रणभेरीके नादते सुभट महा हर्षको प्राप्त भए सब साज-बाज सज स्वामी के हित स्वामीके निकट आए तिनके नाम मारीच अमलचन्द्र भास्कर सिंहप्रभ हस्त प्रहस्त इत्यादि अनेक योधा आयुधों से पूर्ण स्वामीके समीप आए ॥

अथानन्तर लंकापति महायोधा संग्रामके निमित्त उद्यमी भया तब विभीषण रावणपै आए प्रणाम-कर शास्त्र मार्गके अनुसार अति प्रशंसायोग्य सबको सुखदाई आगामी कालमें कल्याणरूप वर्तमान कल्याणरूप ऐसे वचन विभीषण रावण से कहता भया। कैसा है विभीषण ? शास्त्र विषै प्रवीण महा चतुर नय प्रमाणका वेत्ता भाईकों शान्त वचन कहता भया—हे प्रभो ! तिहारी कीर्ति कुन्दके पुष्प समान उज्वल महाविस्तीर्ण महाश्रेष्ठ इन्द्र समान पृथिवी पर विस्तर रही है सो परस्त्रीके निमित्त यह कीर्ति क्षणमात्र में क्षय होयगी जैसे सांझके बादलकी रेखा। तातैं हे स्वामी ! हे परमेश्वर ! हम पर प्रसन्न होवो शीघ्र ही सीता को रामके समीप पठावो, यामें दोष नाहीं, केवल गुण ही है। सुखरूप समुद्रमें आप निश्चय तिष्ठो। हे विचक्षण ! जे न्यायरूप महा भोग हैं वे सब तुम्हारे स्वाधीन हैं अर श्रीराम यहां आए हैं सो बडे पुरुष हैं, तिहारी तुल्य हैं सो जानकी तिनको पठाय देवो। सर्व प्रकार अपनी वस्तु ही प्रशंसा योग्य है परवस्तु प्रशंसा योग्य नाहीं। यह वचन विभीषणके सुन इन्द्रजीत रावणका पुत्र पिता के चित्त की वृत्ति जान विभीषण को कहता भया अत्यन्त मानका भरा अर जिनशासनसे विमुख है। साधो ! तुमको कौनने पूछा अर कौनने अधिकार दिया जाकरि या भांति उन्मत्त की नाई वचन कहो हो तुम अत्यन्त कायर हो अर दीन लोकन की नांई युद्धसे डरो हो तो अपने घरके बिवर में बैठो, कहा

ऐसी वातनिकर, ऐसा दुर्लभ स्त्रीरत्न पायकर मूढोंकी न्याई कौन तजे ? तुम काहेको वृथा वचन कहो, जा स्त्रीके अर्थ सुभट पुरुष संग्रामविषै तीक्ष्ण खड्गकी धारा करि महाशत्रुनिको जीत कर वीर लक्ष्मी भुजानिकरि उपार्जे हैं तिनके कायरता कहा ? कैसा है संग्राम ? मानों हाथिनिके समूहसे जहां अंधकार होय रहा है अर नानाप्रकारके शस्त्रनिके समूह चलै हैं जहां अति भयानक है । यह वचन इन्द्रजीतके सुनकर इन्द्रजीतको तिरस्कार करता संता विभीषण बोला—रे पापी ! अन्यायमार्गी कहा तू पुत्र नामा शत्रु है ? तोकूं शीत वायु उपजी है, अपना हित नाहीं जाने है, शीत वायुकी पीडा अर उपाय छांड शीतल जलविषै प्रवेश करै तो अपने प्राण खोवै अर घरविषै आग लागै अर ता अग्निविषै सूके ईंधन डारे तो कुशल कहांसे होय ? अहो मोहरूप ग्राहकर तू पीडित है, तेरी चेष्टा विपरीत है, यह स्वर्णमई लंका जहां देवविमानसे घर, लक्ष्मणके तीक्षण बाणोंसे चूर्ण न होहि जाइ, ता पहिले जनकसुता पतिव्रताको रामपै पठाय देहु, सर्व लोकके कल्याणके अर्थ शीघ्र ही सीताको पठाना योग्य है । तेरे बाप कुबुद्धिने यह सीता नाहीं आनी है राक्षसरूप सर्पोंका विल यह जो लंका ताविषै विषनाशक जडी आनी है सुमित्राका पुत्र लक्ष्मण सोई भया क्रोधायमान सिंह, ताहि तुम गज ससान निवारवे समर्थ नाहीं, जाके हाथ सागरावर्त धनुष अर आदित्यमुख अमोघवाण अर जिनके भामंडलसा सहाई सो लोकोंसे कैसे जीता जाय अर बडे बडे विद्याधरनिके अधिपति जिनसे जाय मिले, महेंद्रमलय हनूमान सुग्रीव त्रिपुर इत्यादि अनेक राजा और रत्नद्वीपका पति वेलंधरका पति सन्ध्या हरद्वीप हैहयद्वीप आकाशतिलक केलीकिल दधिवक्र अर महाबलवान् विद्याके विभवसे पूर्ण अनेक विद्याधर आय मिले । या भांतिके कठोर वचन कहता जो विभीषण तापर महाक्रोधायमान होय खड्ग काढ रावण मारनेको उद्यमी भया । तब विभीषणने भी महाक्रोधके वश होय रावणसे युद्ध करनेको वज्रमई स्तम्भ उपाडा । ये दोनों भाई

उग्रतेजक धारक युद्धको उद्यमी भए सो मंत्रियोंने समझाय मने किए। विभीषण अपने घर गया, रावण महिल गया।

बहुरि रावणने कुम्भकर्ण इन्द्रजीतको कठोरचित्त होय कहा जो यह विभीषण मेरे अहितमें तत्पर है अर दुरात्मा है वाहि मेरी नगरीसे निकासो या अनर्थीके रहिवेसे क्या ? मेरा अंग ही मोसे प्रतिकूल होय तो मोहि न रुचे जो यह लंकाविषे रहै अर मैं याहि न मारूं तो मेरा जीवना नाहीं, ऐसी वार्ता विभीषण सुनकर कही—मैं हू कहा रत्नश्रवाका पुत्र नाहीं ? ऐसा कह लंकातें निकसा। महा सामन्तनि सहित तीस अक्षौहिणीदल लेयकर रामपै चाल्या (तीस अक्षौहणी केतक भए ताका वर्णन) छहलाख छप्पनहजार एकसौ हाथी अर एते ही रथ अर उगणीसलाख अडसठहजार तीन सौ तुरंग अर बत्तीसलाख अस्सीहजार पांचसै पयादा विद्युत्घन इन्द्रवज्र इन्द्रप्रचण्ड चपल उडत एक अशनि सन्वातकाल महाकाल ये विभीषण सम्बंधी परम सामन्त अपने कुटुम्ब अर सब समुदाय सहित नानाप्रकार शस्त्रनिकरि मंडित रामकी सेनाकी तरफ चाले नाना प्रकारके वाहनोंकर युक्त आकाशको आच्छादितकर सर्व परिवारसहित विभीषण हंसद्वीप आया सो उसद्वीपके समीप मनोग्यस्थल देख जलके तीर सेनासहित तिष्ठा जैसे नन्दीश्वरद्वीपकेविषे देव तिष्ठे। विभीषणको आया सुन बानरवंशियोंकी सेना कम्पायमान भई जैसे शीतकालविषै दलिद्री कांपे, लक्ष्मणने सागरावर्त धनुष अर सूर्यहास खड्गकी तरफ दृष्टि धरी अर रामने वज्रावर्त धनुष हाथ लिया अर सब मंत्री भेले होय मंत्र करते भए जैसे सिंहसे गज डरे तैसे विभीषणसे बानरवंशी डरे, ताही समय विभीषणने श्रीरामके निकट विचक्षण द्वारपाल भेजा सो रामपै आय नमस्कारकर मधुर वचन कहता भया—हे देव ! इन दोनों भाइयोंविषे जबते रावण सीता लाया तबहीसे विरोध पडा अर आज सर्वथा विगड गई तातें आपके पायन आया है आपके चरणारविन्दको नमस्कार

पूर्वक विनती करे है। कैसा है विभीषण ? धर्म कार्यविषै उद्यमी है, यह प्रार्थना करी है कि आप शरणागत प्रतिपाल हो, मैं तिहारा भक्त शरणे आया हूं जो आज्ञा होय सो ही करूं आप कृपा करने योग्य हैं यह द्वारपालके बचन सुन रामने मंत्रियोंसे मंत्र किया तब रामसे सुमतिकांत मंत्री कहता भया कदाचित् रावणने कपटकर भेजा होय तो याका विश्वास कहा ? राजानिकी अनेक चेष्टा हैं अर कदाचित् कोई बातकर आपसमें कलुष होय बहुरि मिलि जांय कुल अर जल इनके मिलनेका अचरज नाहीं तब महाबुद्धिवान मतिसमुद्र बोला इनमें विरोध तो भया यह बात सबसे सुनिए है अर विभीषण महाधर्मात्मा नीतिवान है शास्त्ररूप जलकर धोया है चित्त जाका महादयावान है, दीन लोकनिपर अनुग्रह करे है अर मित्रनिमें दृढ है अर भाईपनेकी बात कहो सो भाईपनेका कारण नाहीं, कर्मका उदय जीवनिके जुदा जुदा होय है। इन कर्मनिके प्रभावकर या जगतविषै जीवनिकी विचित्रता है। या प्रस्तावविषै एक कथा है सो सुनहु—एक गिरि एक गोभूत ये दोऊ भाई ब्राह्मण हुते सो एक राजा सूर्यमेघ हुता ताके राणी मतिक्रिया ताने दोनोंको पुण्यकी वांछाकर भातमें छिपाय सुवर्ण दिया सो गिरिकपटीने भातविषै स्वर्ण जान गोभूतको छलकर मारा। दोनोंका स्वर्ण हर लिया सो लोभसे प्रीतिभंग होय है और भी कथा सुनो—कौशांबी नगरीविषै एक वृहद्धन नामा गृहस्थी ताके पुरविदा नामा स्त्री ताके पुत्र अहिदेव महीदेव सो इनका पिता मूवा तब ये दोऊ भाई धनके उपारजने निमित्त समुद्रमें जहाजमें बैठ गए सो सर्व द्रव्य देय एक रत्न मोल लिया सो वह रत्नको जो भाई हाथमें लेय ताके ये भाव होंय कि मैं दूजे भाईको मारूं सो परस्पर दोऊ भाईनिके खोटे भाव भए तब घर आय वह रत्न माताको सौंपा सो माताके ये भाव भए कि दोऊ पुत्रनिको विष देय मारूं तब माता अर दोनों भाइयोंने वा रत्नसे विरक्त होय कालिंद्री नदीमें डारा सो रत्नको मछली निगल गई सो मछलीको धीवरने पकरी अर अहिदेव महीदेव-

हीके वेची सो अहिदेव महीदेवकी बहिन मछलीको विदारती हुती सो रत्न निकसा। याहूके ये भाव भए कि माताको और दोऊ भाइयोंको मारूं तब याने सकल वृत्तांत कहा कि या रत्नके योगसे मेरे ऐसे भाव होय हैं जो तुमको मारूं तब रत्नको चूर डारा माता बहिन अर दोऊ भाई संसारके भावसे विरक्त होय जिनदीक्षा धरते भए तातैं द्रव्यके लोभकर भाईनिमें भी वैर होय है अर ज्ञानके उदयकर वैर मिटै है अर गिरिने तो लोभके उदयसे गोभूतको मारा अर अहिदेवके महिदेवके वैर मिट गया सो महाबुद्धि विभीषणका द्वारपाल आया है ताको मधुर वचनकर विभीषणको बुलाओ तब द्वारपालसों स्नेह जताया अर विभीषणको अति आदरसे बुलाया। विभीषण रामके समीप आया सो राम विभीषणका अति आदर कर मिले विभीषण विनती करता भया—हे देव ! हे प्रभो ! निश्चयकर मेरे इस जन्मविषै तुम ही प्रभु हो श्रीजिननाथ तो इस जन्म परभवके स्वामी अर रघुनाथ या लोकके स्वामी। या भांति प्रतिज्ञा करी तब श्रीराम कहते भए तुझे निःसंदेह लंकाका धनी करूंगा, सेनामें विभीषणके आवनेका उत्साह भया।

अर ताही समय भामण्डल भी आया। कैसा है भामण्डल ? अनेक विद्या सिद्ध भई हैं जाको। सर्व विजियार्धका अधिपति जब भामडल आया तब राम लक्ष्मण आदि सकल हर्षित भए। भामण्डलका अति सन्मान किया आठ दिन हंसद्वीपमें रहे बहुरि लंकाको सन्मुख भए। नाना प्रकारके अनेक रथ और पवनसे भी अधिक तेजको धरे बहुत तुरंग और मेघमालासे गयंदोंके समूह और अनेक सुभटों सहित श्रीरामने लंकाको पयान किया। समस्त विद्याधर सामंत आकाशको आच्छादते हुए रामके संग चाले सबमें अग्रेसर बानरबंशी भए। जहां रणक्षेत्र थापा है तहां गए, संग्रामभूमि बीस योजन चौडी है अर लंबाईका विस्तार विशेष है। वह युद्धभूमि मानों मृत्युकी भूमि है या सेनाके हाथी गाजे अर अश्व हीसे। अर विद्याधरानिके बाहन सिंह हैं तिनके शब्द हुए अर वादित्र वाजे तब सुनकर रावण अतिह-

र्यको प्राप्त भया। मनमें विचारी बहुत दिनोंमें मेरे रणका उत्साह भया, समस्त सामंतोंको आज्ञा दई जो युद्धके उद्यमी होवो सो समस्त ही सामंत आज्ञा प्रमाण आनदकर युद्धको उद्यमी भए। कैसा है रावण? युद्धविषै है हर्ष जाको, जाने कबहु सामंतनिको अप्रसन्न न किया। सदा प्रसन्नही राखे सो अब युद्धके समय सबही एक चित्त भए भास्कर नामा पुर तथा पयोरपुर, कांचनपुर, व्योम वल्लभपुर, गंधर्वगीतपुर शिवमंदिर कंपतपुर, सूर्योदयपुर, अमृतपुर, शोभासिंहपुर, सत्यगीतपुर, लक्ष्मीगतिपुर, किन्नरपुर, बहुनागपुर, महाशैलपुर, चक्रपुर, स्वर्णपुर, सीमंतपुर मलयानंदपुर श्रीगृहपुर श्रीमनोहरपुर रिपुंजयपुर शशिस्थानपुर मार्तंडप्रभपुर विशालपुर ज्योतिदंडपुर परिष्योधपुर अश्वपुर रत्नपुर इत्यादि अनेक नगरोंके स्वामी बडे २ विद्याधर मंत्रिनि सहित महा प्रीतिके भरे रावणपै आए सो रावण राजावोंका सम्मान करता भया जैसे इंद्र देवोंका करें हैं शस्त्र वाहन वक्तर आदि युद्धकी सामग्री सब राजावोंको देता भया। चारहजार अक्षौहणी रावणके होती भई अर दो हजार अक्षौहणी रामके होती भई सो कौन भांति? हजार अक्षौहणीदल तो भामंडलका अर हजार सुग्रीवादिकका। या भांति सुग्रीव अर भामंडल ये दोऊ मुख्य अपने मंत्रियों सहित तिनसों मंत्रकर राम लक्ष्मण युद्धको उद्यमी भए। अनेक वंशके उपजे अनेक आचरणके धरणहारे नाना जातियोंसे युक्त नानाप्रकार गुण क्रियासे प्रसिद्ध नानाप्रकार भाषाके बोलनहारे विद्याधर श्रीराम रावणपै भेले भए। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन्! पुण्यके प्रभावकरि मोटे पुरुषोंके बैरी भी अपने मित्र होय हैं अर पुण्यहीनोंके चिरकालके सेवक अर अतिविश्वासके भाजन ते भी विनाश कालमें शत्रुरूप होय परणवे हैं। या असार संसारविषैं जीवनिकी विचित्रगति जानकर यह चिंतवन करना कि मेरे भाई सदा सुखदाई नहीं तथा मित्र बांधव सबही सुखदाई

साहीं कबहु मित्र शत्रु होजाय कबहु शत्रु मित्र होजाय ऐसे विवेकरूप सूर्यके उदयसे उरमें प्रकाशकर बुद्धिवंतोंको सदा धर्महीकी चिंतवना।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै बिभीषणका रामसूं मिलाप अर भामंडलका आगमन वर्णन करनेवाला पचपनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५५ ॥

अथानंतर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीको पूछता भया—हे प्रभो ! अक्षौहिणीका परिमाण आप कहो तब गौतमका दूजा नाम इन्द्रभूत है सो इंद्रभूत कहते भए—हे मगधाधिपति ! अक्षौहिणीका प्रमाण तुझे संक्षेप ते कहे हैं सो सुन—आगमविषै आठ भेद कहे हैं ते सुन, प्रथम भेद पत्ति दूजा भेद सेना तीजा भेद सेनामुख चौथा गुल्म पांचमा वाहिनी छठा पृतना सातवां चमू आठवां अनीकिनी। सो अब इनके यथार्थ भेद सुन। एक रथ एक गज पांच पयादे तीन तुरंग इसका नाम पत्ति है अर तीन रथ तीन गज पन्द्रह पयादे नव तुरंग याको सेना कहिए अर नव रथ नव गज पैंतालीस पयादा सत्ताईस तुरंग याहि सेनामुख कहिये अर सत्ताईस रथ सत्ताईस गज एकसौ पैंतीस पयादा इक्कासी अश्व इसे गुल्म कहिए अर इक्यासी रथ इक्यासी गज चारसे पांच पयादे दोसो तैंतालीस अश्व इसे वाहिनी कहिये अर दोयसैं तितालीस रथ दोयसौ तितालीस गज बारासौ पंद्रह पयादे सातसौ उनतीस घोडे याहि पृतिना कहिये अर सातसौ गुणतीस रथ सातसे गुणतीस गज छत्तीससै पैंतालीस पयादे इक्कीससौ सतासी तुरंग इसे चमू कहिए अर इक्कीससै सतासी रथ इक्कीससै सतासी गज दसहजार नौसै पैंतीस पयादे अर पैंसठसौ इकसठ तुरंग इसे अनीकिनी कहिए। सो पत्तिसे लेय अनीकिनी तक आठ भेद भए। सो यहांलों तो तिगुने तिगुने बढे अर दश अनीकिनीकी एक अक्षौहिणी होय है ताका वर्णन रथ इक्कीस हजार आठसे

सत्तर अर गज इक्कीस हजार आठसै सत्तर पियादे एकलाख नौहजार तीनसै पचास अर घोडे पैंसठ-हजार छसौ दस । यह एक अक्षौहिणीका प्रमाण भया ऐसी चारहजार अक्षौहिणी करि युक्त जो रावण ताहि अति बलवान जानकर भी ।किहकन्धापुरके स्वामी सुग्रीवकी सेना श्रीरामके प्रसादसे निर्भय रावणके सन्मुख होती भई । श्रीरामकी सेनाको अति निकट आए हुए सुन नाना पक्षको घरें जो लोक सो पर-स्पर या भांति वार्ता करते भए देखो रावणरूप चन्द्रमा विमानरूप जे नक्षत्र तिनके समूहका स्वामी अर शास्त्रविषे प्रवीण सो पर स्त्रीकी इच्छारूप जे बादल तिनसे आच्छादित भया है जाके महा कांतिकी धर-णहारी अठारह हजार राणी ।तिनसे तो तृप्त न भया अर देखो एक सीताके अर्थसे शोकसे व्याप्त भया है । अब देखिये, राक्षसवंशी अर बानरवंशी इनमें कौनका क्षय होय ? रामकी सेना विषे पवनका पुत्र हनूमान महा भयंकर देदीप्यमान जो शूरता सोई भई उष्ण किरण उनसे सूर्य तुल्य है । या भांति कैयक तो रामके पक्षके योधाओंका यश वर्णन करते भए अर कैयक समुद्रहूतैं अति गंभीर जो रावणकी सेना ताका वर्णन करते भए अर कैयक जो दंडक वनमें खरदूषणका अर लक्ष्मणका युद्ध भया हुता ताका वर्णन करते भए अर कहते भए चन्द्रोदयका पुत्र विराधित सो है शरीरतुल्य जिनके ऐसे लक्ष्मण तिन्होंने खरदूषणको हता अति बलके स्वामी लक्ष्मण तिनका बल कहा तुमने न जाना, कैयक ऐसे कहते भए अर कैयक कहते भए कि राम लक्ष्मणकी कहा बात ? वे तो बडे पुरुष हैं एक हनूमानने केते काम किये मन्दोदरीका तिरस्कारकर सीताको धीर्य बंधाया अर रावणकी सेना जीत लंकामें विघ्न किया कोट द-रवाजे ढाहे । या भांति नानाप्रकारके वचन कहते भए तब एक सुवक्रनामा विद्याधर हंसकर कहता भया कि कहां समुद्र समान रावणकी सेना और कहां गायके खोज समान बानरवंशियोंका बल, जो रावण इंद्रको पकड लाया अर सबोंका जीतनहारा सो बानरवंशिनिकर कैसे जीता जाय, सर्व तेजस्वियोंके

सिरपर तिष्ठे है मनुष्यनिमें चक्रवर्तिके नामको सुन कौन धीर्य धरे अर जाके भाई कुम्भकरण महाबलवान त्रिशूलका धारक युद्धविषै प्रलय कालकी अग्निसमान भासै है सो जगतविषै प्रबल पराक्रमका धारक कौन कर जीता जाय, चन्द्रमा समान जाके छत्रको देखकर शत्रुनिकी सेनारूप अंधकार नाशको प्राप्त होय है सो उदार तेजका धनी ताके आगे कौन ठहर सके जो जीतव्यकी बांछा तजे सोही वाके सन्मुख होय, या भांति अनेक प्रकारके राग द्वेषरूप वचन सेनाके लोग परस्पर कहते भए। दोनों सेनानिविषै नाना प्रकारकी वार्ता लोकनिके मुखसूं होती भई, जीवोंके भाव नानाप्रकारके हैं, राग द्वेषके प्रभावसे जीव निजकर्म उपार्जे हैं सो जैसा उदय होय है तैसे ही कार्यमें प्रवृते हैं जैसे सूर्यका उदय उद्यमी जीवोंको नाना कार्यमें प्रवर्तावे है तैसे कर्मका उदय जीवोंके नानाप्रकारके भाव उपजावे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै दोऊ कटकनिकी संख्याका प्रमाण वर्णन करनेवाला छप्पनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५६ ॥

अथानन्तर पर सेनाके समीपको न सह सकें ऐसे मनुष्य वे शूरपनेके प्रगट होनेसे अति प्रसन्न होय लडनेको उद्यमी भए। योधा अपने घरोंसे विदा होय सिंह सारिखे लंकासे निकसे। कोईयक सुभट की नारी रणसंग्रामका वृत्तांत जान अपने भरतारके उरसे लग ऐसे कहती भई—हे नाथ ! तिहारे कुल की यही रीति है जो रणसंग्रामसे पीछे न होंय अर जो कदाचित् तुम युद्धसे पीछे होवोगे तो मैं सुनतेही प्राणत्याग करूंगी। योधाओंके किंकरोंकी स्त्रियोंको कायरोंकी स्त्रियें धिकार शब्द कहें या समान और कष्ट कहा ? जो तुम छाती घाव खाय भले दिखाए पीछे आवोगे तो घाव ही आभूषण है अर टूट गया है वक्तर अर करे हैं अनेक योधा स्तुति या भान्ति तुमको मैं देखूंगी तो अपना जन्म धन्य गिनूंगी अर

सुवर्णके कमलोंसे जिनेश्वरकी पूजा कराऊंगी। जे महायोधा रणमें सन्मुख होय मरणको प्राप्त होंय तिनका ही मरण धन्य है अर जे युद्धसे पराङ्मुख होय धिक्कार शब्दसे मलिन भए जीवे हैं तिनके जीवन से कहा? अर कोईयक सुभटानी पतिसे लिपट या भान्ति कहती भई जो तुम भले दिखायकर आवोगे तो हमारे पति हो अर भागकर आवोगे तो हमारे तिहारे सम्बन्ध नाहीं अर कोईयक स्त्री अपने पतिसे कहती भई हे प्रभो! तिहारे पुराने घाव अब विघट गए तातें नवे घाव लगे शरीर अति शोभै वह दिन होय जो तुम वीरलक्ष्मीको वर प्रफुल्लितवदन हमारे आवो अर हम तुमको हर्षसंयुक्त देखें तिहारी हार हम क्रीडामें भी न देख सकें तो युद्धमें हार कैसे देख सकें अर कोई एक कहती भई कि हे देव! जैसे हम प्रेमकर तिहारा वदन कमल स्पर्श करे हैं तैसे वक्षस्थलमें लगे घाव हम देखें तब अति हर्ष पावें अर कै एक रौताणी अति नवोढा है परन्तु संग्राममें पतिको उद्यमी देख प्रौढाके भावको प्राप्त भई और कोई एक मानवती घने दिनोंसे मानकर रही हुती सो पतिको रणमें उद्यमी जान मान तज पतिके गले लगी अर अति स्नेह जनाया, अर रणयोग्य शिक्षा देती भई अर कोई एक कमलनयनी भरतारके वदनको ऊंचाकर स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई अर युद्धमें दृढ करती भई अर कोईयक सामंतनी पतिके वक्षस्थल में अपने नखका चिन्हकर होनहार शस्त्रोंके घावनको मानों स्थानक करती भई। या भांति उपजी है चेष्टा जिनके ऐसी राणी रौताणी अपने प्रीतमोंको नानाप्रकारके स्नेहकर वीर रसमें दृढ करती भई।

तब महा संग्रामके करणहारे योधा तिनसे कहते भए—हे प्राणवल्लभे! नर वेई हैं जे रणमें प्रशंसा पावें तथा युद्धके सन्मुख जीव तजें तिनकी शत्रु कीर्ति करें हाथिनिके दांतनिविषे पग देय शत्रुवोंके घाव कर तिनकी शत्रु कीर्ति करें पुण्यके उदय विना ऐसा सुभटपना नाहीं। हाथियोंके कुंभस्थल विदारणहारे नरसिंह तिनको जो हर्ष होय है सो कहिवेको कौन समर्थ है? हे प्राणप्रिये! क्षत्रीका यही धर्म है जो काय-

रोंको न मारें, शरणागतको न मारें, न मारिवे देय। जो पीठ दें तापर चोट न करें, जापै आयुध न होय तासों युद्ध न करें, सो बाल वृद्ध दीनको तजकर हम योधावोंके मस्तक पर पड़ेंगे, तुम हर्षित रहियो हम युद्धविषै विजयकर तुमसे आय मिलेंगे। या भांति अनेक वचननिकर अपनी अपनी रौताणियोंको धीर्य बंधाय योधा संग्रामके उद्यमी घरसे रणभूमिको निकसे। कोई एक सुभटानी चलते पतिके कण्ठ विषै दोनों भुजासे लिपट गई अर हींडती भई जैसे गजेन्द्रके कंठविषै कमलनी लटकै अर कोई एक रौताणी स्त्री वक्तर पहिर पतिके अंगसे लग अंगका स्पर्श न पाया सो खेदखिन्न होती भई अर कोई एक अर्द्ध-बाहुलिका कहिए पेटी सो बल्लभके अंगसे लागी देख ईर्षाके रससे स्पर्श करती भई कि हम टार इनके दूजी इनके उरसे कौन लगे यह जान लोचन संकोचे तब पति प्रियाको अप्रसन्न जान कहते भए—हे प्रिये! यह आधा वक्तर है स्त्रीवाची शब्द नाहीं, तब पुरुषका शब्द सुन हर्षको प्राप्त भई, कोई एक अपने पतिको ताम्बूल चबावती भई अर आप तांबूल चावती भई। कोईएक पतिने रुखसत करी तौभी केतीक दूर पतिके पीछे पीछे जाती भई पतिके रणकी अभिलाषा सो इनकी ओर निहारें नाहीं अर रणकी भेरी बाजी सो योधानिका चित्त रणभूमिविषै गमन अर स्त्रीनिसूं विदा होना सो दोनों कारण पाय योधावोंका चित्त मानों हिंडोले हींडता भया। रौतानियोंको तज रावत चले तिन रौतानियोंने आंसू न डारे, आंसू अमंगल हैं अर कैएक योधा युद्धविषै जायबेकी शीघ्रताकर वक्तर भी न पहिरसके, जो हाथियार हाथ आया सोही लेकर गर्वके भरे निकसे, रणभेरी सुन उपजा है हर्ष जिनको शरीर पुष्ट होय गया सो वक्तर अंगविषै न आवै अर कईएक योधावोंके रणभेरीका शब्द सुन हर्ष उपजा सो पुराने घाव फट गए तिन-मेंसे रुधिर निकसता भया अर काहूने नवा वक्तर बनाय पहिरा सो हर्षके होनेसे टूटगया सो मानों नया वक्तर पुराने वक्तरके भावको प्राप्त भया अर काहूके सिरका टोप ढीला होय गया सो प्राणवल्लभा दृढकर

देती भई अर कोईएक सुभट संग्रामका लालसी ताके स्त्री सुगन्ध लगायवेकी अभिलाषा करती भई सो सुगन्धमें चित्त न दिया, युद्धको निकसा अर ते स्त्रियां व्याकुलतारूप अपनी अपनी सेजपर पड रहीं।

अथानन्तर प्रथमही लंकासे हस्त प्रहस्त राजा युद्धको निकसे। कैसे हैं दोनों ? सर्वमें मुख्य जो कीर्ति सोई भया अमृत ताके आस्वादनमें लालसी अर हाथियोंके रथ पर चढे, नाहीं सहसके हैं वैरियों का शब्द अर महा प्रतापके धारक शूरवीर, सो रावणको विना पूछे ही निकसे। यद्यपि स्वामीकी आज्ञा विना कार्य करना दोष है तथापि धनीके कार्य को विना आज्ञा जाय तो दोष नाहीं, गुणके भावको भजे है। मारीच सिंह जघन्य स्वयम्भू शंभू प्रथम विस्तीर्ण बलसे मंडित शुक अर सारस चांद सूर्य सारिखे गज अर बीभत्स तथा वज्राक्ष वज्रभूति गम्भीरनाद नक्र मकर वज्रघोष उग्रनाद सुन्द निकुम्भ कुंभ संध्याक्ष विभ्रम क्रूर माल्यवान खर निश्चर जम्बू माली शिखि वीरउद्दर्तक महाबल यह सामंत नाहरोंके रथ चढे निकसे अर वज्रोदर शक्रप्रभ कृतान्त विकटोदर महामणि अशनिघोष चन्द्र चन्द्रनख मृत्युभीषण वज्रोदर धूम्राक्ष मुदित विद्युज्जिह्व महा मारीच कनक क्रोधनु क्षोभण द्वन्द्व उद्दाम डिंडी डिंडम डिंभव प्रचंड डमर चंड कुंड हालाहल इत्यादि अनेक राजा व्याघ्रोंके रथ चढे निकसे। वह कहै मैं आगे रहूं वह कहै मैं आगे रहूं। शत्रुके विध्वंस करनेको है प्रवृत्त बुद्धि जिनकी, विद्याकौशिक विद्याविख्याक सर्पवाहू महाद्युति शंख प्रशंख राजभिन्न अंजनप्रभ पुष्पक्रूर महारक्त घटाश्रु पुष्पखेचर अनंगकुसम कामावर्त्त स्मरायण कामाग्नि कामराशि कनकप्रभ शशिमुख सौम्यवक्र महाकाम हैमगौर यह पवन सारिखे तेज तुरंगों के रथ चढे निकसे अर कदंब विटप भीमनाद भयनाद भयानक शार्दूल सिंह बलांग विद्युदंग ल्हादन चपल चाल चंचल इत्यादि हाथियोंके रथ चढे निकसे। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं–हे मग-

धाधिपति ! कहां लग सामंतोंके नाम कहें सबनिमें अग्रेसर अढाई कोडि निर्मलबंशके उपजे राक्षसोंके कुमार देवकुमार तुल्य पराक्रमी प्रसिद्ध हैं यश जिनके सकल गुणोंके मंडल युद्धको निकसे, अर महा बलवान मेघवाहन कुमार इन्द्र समान रावणका पुत्र अतिप्रिय इन्द्रजीत सो भी निकसा। जयंतसमान धीरबुद्धि कुम्भकरण सूर्यके विमान तुल्य ज्योतिप्रभव नामा विमान ता विषै आरूढ त्रिशूलका आयुध धरे निकसा अर रावण भी सुमेरुके शिखर तुल्य पुष्पकनामा अपने विमान पर चढ इन्द्र तुल्य पराक्रम जिसका सेना कर आकाश भूमिको आच्छादित करता संता देदीप्यमान आयुधोंको धरैं सूर्य समान है ज्योति जाकी सोहू अनेक सामंतनिसहित लंकासे वाहिर निकसा। ते सामंत शीघ्रगामी बहुरूपके धरणहारे बाहनों पर चढे, कैयकोंके रथ कैयकोंके तुरंग कैयकोंके हाथी कैयकोंके सिंह तथा शूरसांभर बलध भैंसा उष्ट्र मीढा मृग अष्टापद इत्यादि स्थलके जीव अर मगर मच्छ आदि अनेक जलके जीव अर नाना प्रकारके पक्षी तिनका रूप धरे देवरूपी बाहन तिनपर चढे अनेक योधा रावणके साथ निकसे । भामंडल अर सुग्रीव पर रावणका अतिक्रोध जो राक्षसवंशीनसों युद्धको उद्यमी भए। रावणको पयान करते अनेक अपशकुन भए। तिनका वर्णन सुनो—दाहिनी तरफ शल्यकी कहिए सेह मंडलको बांधे भयानक शब्द करती प्रयाणको निवारण करे है अर गृद्ध पक्षी भयंकर अपशब्द करते आकाशविषै भ्रमते मानों रावणका क्षय ही कहे हैं अन्यहू अनेक अपशकुन भए स्थलके जीव आकाशके जीव व्याकुल भए क्रूर शब्द करते भए रुदन करते भये सो यद्यपि राक्षसोंके समूह सब ही पंडित हैं, शास्त्रका विचार जाने हैं तथापि शूरवीरताके गर्वकर मूढ भए महासेनासहित संग्रामके अर्थी निकसे। कर्मोंके उदयसे जीवनिका जब काल आवे है तब अवश्य ऐसा ही कारण होय है। कालको इन्द्र भी निवारिवे शक्त नहीं औरनिकी कहा

बात ? वे राक्षसवंशी योधा बडे बडे बलवान युद्धविषै दिया है चित्त जिनने, अनेक बाहनोंपर चढे नाना प्रकारके आयुध धरें अनेक अपशकुन भए तो भी न गिने, निर्भय भए रामकी सेनाके सन्मुख आए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै रावणकी सेना लंकासे निकासि युद्धके अर्थ आवनेका वर्णन करनेवाला सत्तावनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५७ ॥

अथानन्तर समुद्रसमान रावणकी सेनाको देख नल नील हनुमान जामवन्त आदि अनेक विद्याधर रामके हित रामके कार्यको तत्पर महा उदार शूरवीर अनेक प्रकार हाथियोंके रथ चढे कटकतें निकसे। जयमित्र चन्द्रप्रभ रतिवर्द्धन कुमुदावर्त महेंद्र भानुमंडल अनुधर दृढरथ प्रीतिकंठ महाबल समुन्नतबल सर्वज्योति सर्वप्रिय बलसर्व सर्व शरभभर आभ्रष्टि निर्विष्ट संत्रास विघ्नसूदन नाट बरबर कलोट पालन मंडल संग्राम चपल इत्यादि विद्याधर नाहरोंके रथ चढे निकसे। विस्तीर्ण है तेज जिनका नानाप्रकारके आयुध धरे अर महासामंतपनेका स्वरूप लिए, प्रस्तार हिमवान गंगप्रिय लव इत्यादि सुभट हाथियोंके रथ चढे निकसे। दुप्रेष्ट पूर्णचन्द्र विधिसागर घोष प्रियविग्रह स्कंध चंदनपादप चंद्रकिरण अर प्रतिघात महाभैरव कीर्तन दुष्टसिंह कटिकुष्ट समाधि बहुल हल इंद्रायुध गतत्रास संकटप्रहार ये नाहरानिके रथ चढे निकसे। विद्युतकर्ण बलशील सुपक्षरचन घन संमेद विचल साल काल क्षत्रवर अंगज विकाल लाल ककाली भंग भंगोर्मिः उराचित उतरंग तिलक कील सुषेण चरल करतबली भीमरव धर्ममोहर मुख सुख प्रमत्तमर्दक मतसार रत्नजटी शिवभूषण दूषणकौल बिघट विराधित मनूरण खनिक्षेम आक्षेपी महीधर नक्षत्र लुब्ध संग्राम विजय जय नक्षत्रमाल क्षोद अति विनय इत्यादि घोडोंके रथ चढे निकसे। कैसे हैं रथ ? मनोरथ समान शीघ्र वेगको धरे अर विद्युतवाहन मरुद्वाह स्थाणु मेघवाहन

रवियाण प्रचंडालि इत्यादि नानाप्रकारके बाहनोंपर चढे युद्धकी श्रद्धाको धरे हनूमानके संग निकसे अर विभीषण रावणका भाई रत्नप्रभ नामा विमानपर चढा, श्रीरामका पक्षी अति शोभता भया अर युधावर्त बसंत कांत कौमुदि नंदन भूरिकोलाहल हेडभावित साधुवत्सल अर्धचन्द्र जिन प्रेमसागर सागर उरग मनोग्य जिन जिनपति इत्यादि योधा नानावर्णके विमानोंपर चढे महाप्रबल सन्नाह कहिए बखतर पहिर युद्धको निकसे। रामचन्द्र लक्ष्मण सुग्रीव हनूमान ये हंस विमान चढे, जिनसे आकाशविषै शोभते भए। रामके सुभट महामेघमाला सारिखे नानाप्रकारके बाहन चढे लंकाके सुभटोंसे लडनेको उद्यमी भए। प्रलयकालके मेघ समान भयंकर शब्द शंख आदि वादित्रनिके शब्द होते भए, झंझा भेरी मृदंग कंपाल धुधुमंदय आमलातके हंकार ढूंढूकान ऊरदरहेमगुंज काहल वीणा इत्यादि अनेक बाजे बाजते भए अर सिंहोंके तथा हाथियोंके घोडोंके भैंसोंके रथोंके ऊंटों मृगों पक्षियोंके शब्द होते भए। तिनसे दशोंदिशा व्याप्त भई। जब राम रावणकी सेनाका संघट्ट भया तब लोक समस्त जीवनेके संदेहको प्राप्त भए। पृथिवी कंपायमान भई, पहाड कांपे, योधा गर्वके भरे निगर्वसे निकसे। दोनों कटक अतिप्रबल लखिवेमें न आवें। इन दोनों सेनामें युद्ध होने लगा, सामान्य चक्र करोंत कुठार सेल खड्ग गदा शक्तिबाण भिंडिपाल इत्यादि अनेक आयुधोंसे परस्पर युद्ध होता भया। योधा हेलाकर योधावोंको बुलावते भए, कैसे हैं योधा? शस्त्रोंसे शोभित हैं भुजा जिनकी अर युद्धका है सर्व साज जिनके ऐसे योधावोंपर पडते भए। अति वेगसे दोड, पर सेनामें प्रवेश करते भए, परस्पर अति युद्ध भया लंकाके योधाओंने बानरवंशी योधा दवाये जैसे सिंह गजोंको दबावे। बहुरि बानरवंशियोंके प्रबल योधा अपने योधावोंका भंग देखकर राक्षसोंके योधावोंको हणते भए अर अपने योधावोंको धीर्य बंधाया। बानरवंशियोंके आगे लंकाके लोकोंको चिगते देख बडे २ स्वामीभक्त रावणके अनुरागी महाबलसे मंडित

हाथियोंके चिन्हकी है ध्वजा जिनके, हाथियोंके रथ चढे, महायोधा हस्त प्रहस्त बानरवंशियों पर दौडे अर अपने लोगोंको धीर्य बंधाया–हो सामंत हो ! भय मत करो। हस्त प्रहस्त दोनों महा तेजस्वी बानरवंशियोंके योधाओंको भगावते भए तब बानरवंशियोंके नायक महा प्रतापी हाथियोंके रथ चढे महा शूरवीर परम तेजके धारक सुग्रीवके काकाके पुत्र नल नील महा भयंकर क्रोधायमान होय नानाप्रकारके शस्त्र-निकर युद्ध करनेको उद्यमी भए। अनेक प्रकार शस्त्रोंसे घनीवेर युद्ध भया दोनों तरफके अनेक योधा मुवे नलने उछलकर हस्तको हता अर नीलने प्रहस्तको हता जब यह दोनों पडे तब राक्षसोंकी सेना पराङ्मुख भई। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं–हे मगधाधिपति ! सेनाके लोक सेनापतिको जबलग देखें तबलग ही ठहरें अर सेनापतिके नाश भए सेना विखर जाय जैसे मालके टूटे अरहटकी घडी विखर जाय अर सिर विना शरीर भी न रहे यद्यपि पुण्याधिकारी बडे राजा सब बातमें पूर्ण हैं तथापि विना प्रधान कार्यकी सिद्धि नाहीं, प्रधान पुरुषोंका संबंधकर मनवांछित कार्यकी सिद्धि होय है और प्रधान पुरुषोंके संबंध विना मंदताको भजे हैं जैसे राहुके योगसे सूर्यको आच्छादित भए किरणोंका समूह मन्द होय है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै हस्त प्रहस्तका मरण वर्णन करनेवाला अठावनवां पर्व पूर्ण भया ॥ ५८ ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीसे पूछता भया–हे प्रभो ! हस्त प्रहस्त जैसे सामंत महा योधामें प्रवीण हुते बडा आश्चर्य है नल नीलने कैसे मारे ? इनके पूर्वभवका विरोध है के याही भवका ? गणधर देव कहते भए–हे राजन् ! कर्मनिकर बंधे जीव तिनकी नाना गति हैं, पूर्व कर्मके प्रभावकर

जीवोंकी यही रीति है जाने जाको मारा सो वह हू ताको मारनहारा है अर जाने जाको छुडाया सो ताका छुडावनहारा है। या लोकमें यही मर्यादा है। एक कुशस्थल नामा नगर वहां दोय भाई निर्धन, एक माताके पुत्र इंधक अर पल्लव ब्राह्मण खेतीका कर्म करें, पुत्र स्त्री आदि जिनके कुटुम्ब बहुत स्वभावहीसे दयावान साधुनिकी निंदातैं पराङ्मुख सो एक जैनी मित्रके प्रसंगतैं दानादि धर्मके धारक भए अर एक दूजा निर्धन युगल सो महा निर्दई मिथ्यामार्गी हुते राजाके दान बटा सो विप्रोंमें परस्पर कलह भया सो इंधक पल्लवको इन दुष्टोंने मारा सो दानके प्रसादतैं मध्यभोग भूमिमें उपजे दोय पल्यकी आयु पाय मूए सो देव भए अर वे क्रूर इनके मारणहारे अधर्म परणामनिकर मूवे सो कालिंजर नामा वनमें सूस्या भए मिथ्यादृष्टि साधुनिके निंदक पापी कपटी तिनकी यही गति है बहुरि तिर्यंचगतिमें चिरकाल भ्रमण कर मनुष्य भए सो तापसी भए, बढी हैं जटा जिनके, फल पत्रादिकके आहारी, तीव्र तप कर शरीर कृश किया कुज्ञानके अधिकारी दोनो मूए सो विजियार्धकी दक्षिण श्रेणिमें अरिंजयपुर, तहांका राजा अग्निकुमार राणी अश्विनी ताके ये दोय पुत्र जगत् प्रसिद्ध रावणके सेनापति भए अर ते दोनों भाई इंधक अर पल्लव देवलोकतैं चयकर मनुष्य भए बहुरि श्रावकके व्रतपाल स्वर्गमें उत्तम देव भए अर स्वर्गतैं चयकर किहकंधापुरविषैं नल नील दोनों भाई भए पहिले हस्त प्रहस्तके जीवने नल नीलके जीव मारे हुते सो नल नीलने हस्त प्रहस्त मारे जो काहूको मारे है सो ताकर मारा जाय है अर जो काहूको पाले है सो ताकर पालिए है अर जो जासूं उदासीन रहे है सो भी तासूं उदासीन रहे जाहि देख निःकारण क्रोध उपजे सो जानिए परभवका शत्रु है अर जाहि देख चित्त हर्षित होय सो निस्संदेह पर भवका मित्र है, जो जलविषै जहाज फट जाय है अर मगर मच्छादि बाधा करे हैं अर थलविषै म्लेछ बाधा करे हैं सो सब पापका फल है पहाड समान माते हाथी अर नानाप्रकारके आयुध धरे अनेक योधा

अर महा तेजको धरें अनेक तुरंग अर वक्तर पहिरे बडे बडे सामंत इत्यादि जो अपार सेनासे युक्त जो राजा अर निःप्रमाद तौ भी पुण्यके उदयविना युद्धमें शरीरकी रक्षा न होय सके अर जहां तहां तिष्ठता अर जाके कोऊ सहाई नाहीं ताकी तप अर दान रक्षा करे, न देव सहाई न बांधव सहाई अर प्रत्यक्ष देखिए है, धनवान् शूरवीर कुटुम्बका धनी सर्व कुटुम्बके मध्य मरण करे है कोऊ रक्षा करने समर्थ नाहीं पात्रदानसे व्रत अर शील अर सम्यक्त अर जीवोंकी रक्षा होय है। दयादानसे जाने धर्म न उपार्जा अर बहुत काल जीया चाहे सो कैसे बने ? इन जविनिके कर्म तप विना न विनशें ऐसा जानकर जो पंडित हैं तिनको बैरीयों पर भी क्षमा करनी। क्षमा समान और तप नाहीं, जे विचक्षण पुरुष हैं वे ऐसी बुद्धि न धरें कि यह दुष्ट विगाड करें है। या जीवका उपकार अर विगाड केवल कर्माधीन है कर्म ही सुख दुःख का कारण है। ऐसा जानकर जे विचक्षण पुरुष हैं ते बाह्य सुख दुःखके निमित्त कारण अन्य पुरुषों पर राग द्वेष भाव न धरें। अन्धकारसे आच्छादित जो पंथ तामें नेत्रवान् पृथिवीपर पडे सर्प पर पग धरै अर सूर्यके प्रकाशसे मार्ग प्रकट होय तब नेत्रवान् सुखसे गमन करै तैसे जौलग मिथ्यात्वरूप अन्धकारसे मार्ग नाहीं अवलोके तौलग नरकादि विवरमें पडै अर जब ज्ञान सूर्यका उद्योत होय तब सुखसे अविनाशीपुर जाय पहुंचें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं हस्त प्रहस्त नल नीलके

पूर्वभवका वर्णन करनेवाला उनसठवा पर्व पूर्ण भया ॥ ५९ ॥

अथानन्तर हस्त प्रहस्त, नल नीलने हते सुन बहुत योधा क्रोधकर युद्धको उद्यमी भए। मारीच सिंह जघन स्वयंभू शंभू ऊर्जित शुक सारण चन्द्र अर्क जगत्वीभत्स निस्वन ज्वर उग्र क्रमकर वज्राक्ष

आत्मनिष्ठुर गंभीरनाद संनद संवृद्ध वाहू अनुसिदन इत्यादि राक्षस पक्षके योधा वानरवंशियोंकी सेनाको क्षोभ उपजावते भए। तिनको प्रबल जान वानरवंशियोंके योधा युद्धको उद्यमी भए। मदन मदनांकुर संताप प्रक्षित आक्रोशनन्दन दुरित अनघ पुष्पास्त्र विघ्न प्रियंकर इत्यादि अनेक वानरवंशी योधा राक्षसोंसे लडते भए। याने वाको ऊंचे स्वरसे बुलाया वाने याको बुलाया इनके परस्पर संग्राम भया, नाना प्रकारके शस्त्रों से आकाश व्याप्त होय गया। संताप तो मारीच से लडता भया अर प्रथित सिंहजघनसे अर विघ्न उद्यानसे अर आक्रोश सारणसे नन्दनसे इन समान योधावोंमें अद्भुत युद्ध भया तब मारीचने संतापका निपात किया अर नन्दनने ज्वरके वक्षस्थलमें वरछी दई अर सिंहकटिने प्रथितके अर उद्दामकीर्तिने विघ्नको हणा। ता समय सूर्य अस्त भया अपने अपने पतिको प्राणरहित भए सुन इनकी स्त्री शोकके सागरमें मग्न भई सो उनकी रात्रि दीर्घ होती भई।

दूजे दिन महा क्रोधके भरे सामन्त युद्धको उद्यमी भए वज्राक्ष अर क्षुभितार मृगेन्द्रदमन अर विधि शंभू अर स्वयम्भु चन्द्रार्क अर वज्रोदर इत्यादि राक्षस पक्षके बडे बडे सामन्त अर वानर वंशियोंके सामन्त परस्पर जन्मान्तरके उपार्जित वेर तिनसे महा क्रोधरूप होय युद्ध करते भए। अपने जीवनमें निस्पृह संक्रोधने महाक्रोधकर क्षिपितारको महा ऊंचा स्वरकर बुलाया अर वाहुवलीने मृगारिदमनको बुलाया अर वितापीने विधिको बुलाया इत्यादि योधा परस्पर युद्ध करते भए अर योधा अनेक मूए शार्दूलने वज्रोदरको घायल किया अर क्षिपितार संक्रोधको मारता भया अर शंभूने विशालद्युति मारा अर स्वयम्भूने विजयको लोहयष्टिसे मारा अर विधिने वितापीको गदासे मारा बहुत कष्टसे या भांति योधावोंने युद्ध में अनेक योधा हते सो बहुत बेर तक युद्ध भया।

राजा सुग्रीव अपनी सेनाको राक्षसोंकी सेनासे खेद खिन्न देख आप महा क्रोधका भरा युद्ध कर-

नेको उद्यमी भया तब अंजनीका पुत्र हनूमान हाथियोंके रथपर चढा राक्षसोंसे युद्ध करता भया सो राक्ष-
सोंके सामन्तोंके समूह पवनपुत्रको देखकर जैसे नाहरको देख गाय डरे तैसे डरते भए अर राक्षस पर-
स्पर वात करते भए कि यह हनूमान वानरध्वज आया सो आज घनोंकी स्त्रियोंको विधवा करेगा तब याके
सन्मुख माली आया ताहि आया देख हनूमान धनुषमें वाण तान सन्मुख भए तिनमें महायुद्ध भया। मंत्री
मन्त्रियोंसे लडने लगे, रथी रथियोंसे लडने लगे, घोडोंके असवार घोडोंके असवारोंसे लडते भए, हाथि-
योंके असवार हाथियोंके असवारोंसे लडते भए। सो हनूमानकी शक्तिसे माली पराङ्मुख भया। तब
वज्रोदर महा पराक्रमी हनूमानपर दौडा, युद्ध करता भया, चिरकाल युद्ध भया सो हनूमानने वज्रोदरको
रथरहित किया, तब वह और दूजे रथपर चढ हनूमानपर दौडा तब हनूमानने बहुरि ताको रथरहित
किया तब बहुरि पवनसे हू अधिक है वेग जाका ऐसे रथपर चढ हनूमानपर दौडा तब हनूमानने ताहि
हता सो प्राणरहित भया तब हनूमानके सन्मुख महा बलवान् रावणका पुत्र जम्बूमाली आया सो आवता
ही हनूमानकी ध्वजा छेद करता भया तब हनूमानने क्रोधसे जम्बूमालीका बक्तर भेदा, धनुष तोड डारा
जैसे तृणको तोडैं। तब मंदोदरीका पुत्र नवा बक्तर पहिर हनूमानके वक्षस्थलविषै तीक्ष्ण वाणोंसे घाव
करता भया सो हनूमानने ऐसा जाना मानों नवीन कमलकी नालिकाका स्पर्श भया। कैसा है हनूमान ?
पर्वत समान निश्चल है बुद्धि जाकी, बहुरि हनूमानने चन्द्रवक्र नामा बाण चलाया सो जम्बूमालीके
रथके अनेक सिंह जुते हुते सो छूट गए, तिनहीके कटकविषै पडे तिनकी विकराल दाढ विकराल वदन
भयंकर नेत्र तिनसे सकल सेना विह्वल भई मानो सेनारूप समुद्रविषै ते सिंह कल्लोलरूप भए उछलते
फिरे हैं अथवा दुष्ट जलचर जीवनि समान विचरे हैं अथवा सेनारूप मेघविषै विजली समान चमके हैं अ-
थवा संग्राम ही भया संसार चक्र, ताविषै सेनाके लोक तेई भए जीव तिनको ये रथके छुटे सिंह कर्मरूप

होय महादुखी करे हैं इनसे सर्व सेना दुखरूप भई तुरंग गज रथ पियादे सब ही विह्वल भए, रणका उद्यम तज दशोंदिशाको भाजे, तब पवनका पुत्र सबोंको पेल रावण तक जाय पहुंचा, दूरसे रावणको देखा, सिंहके रथ चढा हनूमान धनुषबाण लेय रावणपर गया, रावण सिंहोंसे सेनाको भयरूप देख अर हनूमानको काल समान महादुर्द्धर जान आप युद्ध करनेको उद्यमी भया। तब महोदर रावणको प्रणाम कर हनूमानपर महाक्रोधसे लडनेको आया सो याके अर हनूमानके महायुद्ध भया । ता समयविषै वे सिंह योधावोंने वश किए, सो सिंहोंको वशीभूत भए देख महाक्रोधकर समस्त राक्षस हनूमानपर पडे तब अंजनीका पुत्र महाभट पुण्याधिकारी तिन सबको अनेक बाणोंसे थांभता भया अर अनेक राक्षसोंने अनेक बाण हनूमानपर चलाए, परन्तु हनूमानको चलायमान न करते भए । जैसे दुर्जन अनेक कुवचन रूप बाण संयमीके लगावे, परन्तु तिनके एक न लगे, तैसे हनूमानके राक्षसोंका एक बाण भी न लगा, अनेक राक्षसोंसे अकेला हनूमानको बेढा देख बानरवंशी विद्याधर युद्धके निमित्त उद्यमी भए, सुषेण नल नील प्रीतिकर विराधित संत्रासित हरिकट सूर्यज्योति महाबल जांबूनन्द । केई नाहरोंके रथ केई गजोंके रथ केई तुरंगोंके रथ चढे रावणकी सेनापर दौडे, सो बानरवंशियोंने रावणकी सेना सब दिशाविषै विध्वंस करी, जैसे क्षुधादि परीषह तुच्छ व्रतियोंके व्रतोंको भंग करें ।

तब रावण अपनी सेनाको व्याकुल देख आप युद्ध करनेको उद्यमी भया तब कुम्भकरण रावणको नमस्कारकर आप युद्धको चला तब याहि महाप्रबल योधा रणमें अग्रगामी जान सुषेण आदि सबही बानरवंशी व्याकुल भए । जब वे चन्द्ररश्मि जयस्कंध चन्द्राहु रतिवर्धन अंग अंगद सम्मेद कुमुद कशमंडल बालचंड तरंगसार रत्नजटी जय वेलक्षिपी वसन्त कोलाहल इत्यादि अनेक योधा रामके पक्षी कुम्भकर्णसे युद्ध करने लगे तो कुम्भकर्णने सबको अपनी निद्रानामा विद्यासे निद्राके वश किए जैसे

दर्शनावरणीय कर्म दर्शनके प्रकाशको रोके तैसे कुम्भकर्णकी विद्या बानरवंशियोंके नेत्रानिके प्रकाशको रोकती भई। सब ही कपिध्वज निद्रासे घूमने लगे अर तिनके हाथोंसे हथियार गिरपडे तब इन सबोंको निद्रावश अचेतन समान देख सुग्रीवने प्रतिबोधिनी विद्या प्रकाशी सो सब बानरवंशी प्रतिबोध भए अर हनूमानादि युद्धको प्रवर्तें। बानरवंशियोंके बलमें उत्साह भया अर युद्धमें उद्यमी भए अर राक्षसोंकी सेना दबी तब रावण आप युद्धको उद्यमी भए, तब बडा बेटा इन्द्रजीत हाथ जोड सिरनिवाय बीनती करता भया—हे तात हे नाथ ! यदि मेरे होते आप युद्धको प्रवर्तें तो हमारा जन्म निष्फल है जो तृण नखहीसे उपड आवे उसपर फरसी उठावना कहा ? तातें आप निश्चिंत होवें, मैं आपकी आज्ञा प्रमाण करूंगा। ऐसा कहकर महाहर्षित भया पर्वत समान त्रैलोक्यकंटक नामा गजेंद्रपर चढ युद्धको उद्यमी भया। कैसा है गजेंद्र ? इंद्रके गज समान अर इंद्रजीतको अतिप्रिय अपना सब साज लेय मंत्रियोंसहित ऋद्धिसे इन्द्रसमान रावणका पुत्र कपियोंपर क्रूर भया सो महाबलका स्वामी मानी आवत प्रमाण ही बानरवंशियोंका बल अनेक प्रकार आयुधोंसे जो पूर्ण हुता सो सब विह्वल किया। सुग्रीवकी सेनाविषै ऐसा सुभट कोई न रहा जो इन्द्रजीतके बाणनिकरि घायल न भया। लोक जानते भए जो यह इंद्रजीत कुमार नहीं अग्निकुमारोंका इंद्र है अथवा सूर्य है सुग्रीव अर भामंडल ये दोऊ अपनी सेनाको इंद्रजीत कर दबी देख युद्धको उद्यमी भए। इनके योधा इंद्रजीतके योधानिसे अर ये दोनों इंद्रजीतसे युद्ध करने लगे सो परस्पर योधा योधावोंको हंकार हंकार बुलावते भए। शस्त्रोंसे आकाशमें अंधकार होय गया, योधावोंके जीवनकी आशा नहीं, गजसे गज, रथसे रथ, तुरंगसे तुरंग, सामंतोंसे सामंत उत्साहकर युद्ध करते भए। अपने अपने नाथके अनुरागविषै योधा परस्पर अनेक आयुधनिकर प्रहार करते भए। ताही समय इंद्रजीत सुग्रीवको समीप आया देख ऊंचे स्वरकर अपूर्व शस्त्ररूप दुर्वचननिकर छेदता भया—अरे

वानरबंशी पापी स्वामिद्रोही ! रावणसे स्वामीको तज स्वामीके शत्रुका किंकर भया। अब मुझसे कहां जायगा तेरे शिरको तीक्ष्ण बाणनिकर तत्काल छेदूंगा। वे दोनों भाई भूमिगोचरी तेरी रक्षा करें। तब सुग्रीव कहता भया ऐसे वृथा गर्वके वचन कर कहा तू मानशिखर पर चढा है सो अबारही तेरा मान भंग करूंगा। जब ऐसा कहा तब इंद्रजीतने कोपकर धनुष चढाय बाण चलाया अर सुग्रीवने इंद्रजीत पर चलाया दोनों महा योधा परस्पर बाणनिकर लडते भए, आकाश बाणोंसे आच्छादित होय गया। मेघवाहनने भामण्डलको हंकारा सो दोनों भिडे अर विराधित अर वज्रनक्र युद्ध करते भए सो विराधितने वज्रनक्रके उरस्थलमें चक्रनामा शस्त्रकी दई अर वज्रनक्रने विराधितके दई, शूरवीर घात पाय शत्रुके घाव न करें तो लज्जा है, चक्रोंसे वक्तर पीसे गए तिनके अग्निकी कणका उछली सो मानों आकाशसे उलकाओंके समूह पडे हैं। लंकानाथके पुत्रने सुग्रीवपै अनेक शस्त्र चलाए। लंकेश्वरके पुत्र संग्राममें अचल हैं जा समान दूजा योधा नाहीं, तब सुग्रीवने वज्रदंडसे इंद्रजीतके शस्त्र निराकरण किए जिनके पुण्यका उदय है तिनका घात न होय फिर क्रोधकर इंद्रजीत हाथीसे उतर सिंहके रथ चढा समाधानरूप है बुद्धि जाकी नानाप्रकारके दिव्य शस्त्र अर सामान्य शस्त्र इनमें प्रवीण सुग्रीव पर मेघबाण चलाया सो संपूर्ण दिशा जलरूप होय गई तब सुग्रीवने पवनवाण चलाया सो मेघबाण बिलाय गया अर इंद्रजीतका छत्र उडाया अर ध्वजा उडाई अर मेघबाहनने भामंडल पर अग्निबाण चलाया सो भामंडलका धनुष भस्म होय गया अर सेनामें अग्नि प्रज्वालित भई तब भामण्डलने मेघवाहनपर मेघबाण चलाया सो अग्निबाण विलाय गया अर अपनी सेनाकी बहुरि रक्षा करी। मेघबाहनने भामण्डलको रथरहित किया तब भामण्डल दूजे रथ चढ युद्ध करने लगा। मेघबाहनने तामसबाण चलाया सो भामण्डलकी सेनामें अन्धकार होय गया अपना पराया कुछ सूझे नाहीं मानों मूर्छाको प्राप्त भए तब मेघवाहनने भा-

मंडलको नागपाशसे पकडा मायामई सर्प सर्व अंगमें लिपट गए जैसे चन्दनके वृक्षके नाग लिपट जावें कैसे हैं नाग ? भयंकर जे फण तिनकर महा विकराल हैं भामण्डल पृथिवीपर पडा अर याही भांति इंद्रजीतने सुग्रीवको नागपाशकर पकडा सो धरती पर पडा ।

तब विभीषण जो विद्याबलमें महाप्रवीण, श्रीरामलक्ष्मणसे दोनों हाथ जोड सीस नवाय कहता भया हे राम महाबाहो ! लक्ष्मण ! महावीर इंद्रजीतके बाणोंसे व्याप्त सब दिशा देखो धरती आकाश बाणोंसे आच्छादित है, उल्कापातके स्वरूप नाग बाण तिनसे सुग्रीव अर भामण्डल दोनों भूमिविषै बंधे पडे हैं मंदोदरीके दोनों पुत्रोंने अपने दोनों महाभट पकडे अपनी सेनाके जे दोनों मूल हुते वे पकडे गए, तब हमारे जीवनेसे कहा इन विना सेना शिथिल होय गई है, देखो दशों दिशाको लोक भागे हैं अर कुंभकर्णने महा युद्धकर हनूमानको पकडा है कुम्भकरणके बाणोंसे हनूमान जरजरे भए, छत्र उड गए, ध्वजा उड गई धनुष टूटा वक्तर टूटा रावणके पुत्र इंद्रजीत अर मेघवाहन युद्धविषै लग रहे हैं अब वे आयकर सुग्रीव भामण्डलको ले जांयगे सो वे न लेजावें तासे पहिले आप उनको ले आवें वे दोनों चेष्टारहित हैं सो मैं उनके लेवनेको जाऊं हूं अर आप भामण्डल सुग्रीवकी सेना निर्नाथ होय गई है सो ताहि थांभो या भांति विभीषण राम लक्ष्मणसे कहे है ताही समय सुग्रीवका पुत्र अंगद छाने छाने कुंभकर्ण पर गया अर ताका उत्तरासनवस्त्र परे किया सो लज्जाके भारकर व्याकुल भया वस्त्रको थांभे तौलग हनूमान इसकी भुजाफांससे निकसि गया जैसे नवा पकडा पक्षी पिंजरेसे निकस जाय हनूमान नवीन जन्मको घरे अर अंगद दोनों एक विमान बैठे ऐसे शोभते भए मानों देव ही हैं अर अंगदका भाई अंग अर चंद्रोदयका पुत्र विराधित इन सहित लक्ष्मण सुग्रीवकी अर भामण्डलकी सेनाको धैर्य बंधाय थांभते भए अर विभीषण इंद्रजीत मेघवाहन पर गया सो विभीषणको आवता देख इंद्रजीत मनमें विचारता

भया जो न्याय विचारिए तो हमारे पितामें अर इनमें कहा भेद है? तातैं इनके सन्मुख लडना उचित
नाहीं सो याके सन्मुख खडा न रहना यही योग्य है अर ये दोनों भामण्डल सुग्रीव नागपाशमें बंधे सो
निःसंदेह मृत्युको प्राप्त भए अर काकासे भाजिए तो दोष नाहीं ऐसा विचार दोनों भाई महा अभि-
मानी न्यायके वेत्ता विभीषणसे टरि गए अर विभीषण त्रिशूलका है आयुध जिसके रथसे उतर सुग्रीव
भामण्डलके समीप गया सो दोनोंको नागपाशसे मूर्छित देख खेदखिन्न होता भया तब लक्ष्मणने राम
से कहा हे नाथ ! ए दोनों विद्याधरोंके अधिपति महासेनाके स्वामी महा शक्तिके धनी भामंडल सुग्रीव
रावणके पुत्रोंने शक्तिरहित कीए मूर्छित होय पडे हैं सो इन वगैर आप रावणको कैसे जीतेंगे तब राम
को पुण्यके उदयतैं गरुडेंद्रने वर दिया हुता सो चितार लक्ष्मणसूं राम कहते भए।

हे भाई ! वंशस्थल गिरिपर देशभूषण कुलभूषण मुनिका उपसर्ग निवारा तासमय गरुडेंद्रने वर
दिया हुता ऐसा कह महालोचन रामने गरुडेंद्रको चितारा सो सुख अवस्थाविषे तिष्ठै था सो सिंहासन
कम्पायमान भया तब अवधिकर राम लक्ष्मणको काम जान चिंतावेग नामा देवको दोय विद्या देय
पठाया सो आयकर बहुत आदरसे राम लक्ष्मणसे मिला अर दोऊ विद्या तिनको दई, श्रीरामको सिंह-
वाहिनी विद्या दई अर लक्ष्मणको गरुडवाहिनी विद्या दई तब यह दोऊ धीर विद्या लेय चिंतावेगका
बहुत सन्मानकर जिनेन्द्रकी पूजा करते भए अर गरुडेंद्रकी बहुत प्रशंसा करी। वह देव इनको जलबाण
अग्नि बाण पवनबाण इत्यादि अनेक दिव्य शस्त्र देता भया अर चांद सूर्य सारिखे दोऊ भाइनिको छत्र
दिए अर चमर दिए नाना प्रकारके रत्न दिए कांतिके समूह अर विद्युद्वक्र नाम गदा लक्ष्मणको दई अर
हल मूसल दुष्टोंको भयके कारण रामको दिए। या भांति वह देव इनको देवोपनीत शस्त्र देय अर सैकडों
आशिष देय अपने स्थानक गया। यह सर्व धर्मका फल जान जो समयविषे योग्य वस्तुकी प्राप्ति होय। विवि-

पूर्वक निर्दोष धर्म आराधा होय ताके ये अनुपम फल हैं जिनको पायकरि दुःखकी निवृत्ति होय महा धीर्यके धनी आप कुशलरूप अर औरोंको कुशल करें मनुष्यलोककी सम्पदाकी कहा बात ? पुण्याधिकारियोंको देवलोककी वस्तु भी सुलभ होय है तातैं निरन्तर पुण्य करहु । अहो प्राणि हो ! जो सुख चाहो तो सर्व प्राणियोंको सुख देवहु जो धर्मके प्रसादकरि सूर्य समान तेजके धारक होहु अर आश्चर्यकारी वस्तुनिका संयोग होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित, महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै राम लक्ष्मणको अनेक विद्याका लाभ वर्णन करनेवाला साठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६० ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण दोऊ बीर तेजके मंडलविषै मध्यवर्ती लक्ष्मीके निवास श्रीवत्स लक्षणको धरे महामनोज्ञ कवच पहिरे सिंहवाहन गरुडवाहन पर चढे महासुन्दर सेनासागरके मध्य सिंहकी अर गरुडकी ध्वजा धरे परपक्षके क्षय करनेको उद्यमी महासमर्थ सुभटोंके ईश्वर संग्राम भूमिके मध्य प्रवेश करते भए आगे आगे लक्ष्मण चाल्या जाय है दिव्य छत्रके तेजकर सूर्यके तेजको आच्छादित करता संता हनूमान आदि बडे बडे योधा बानरवंशी तिनकर मंडित वर्णनविषै न आवै ऐसा देवनि कैसारूप धारें सूर्यकीसी ज्योतीालिये लक्ष्मणको विभीषणने देखा सो जगतको आश्चर्य उपजावै ऐसे तेजकर मण्डित सो गरुडवाहनके प्रतापकर नागपासका बन्धन भामण्डल सुग्रीवका दूर भया । गरुडके पंखनिकी पवन क्षीर सागरके जलको क्षोभरूप करै ताकरि वे सर्प विलाय गये जैसे साधुनिके प्रतापकर कुभाव मिट जाय गरुडके पक्षनिकी कांतिकर लोक ऐसे होय गए मानों सुवर्णके रसकर निरमापे हैं तब भामंडल सुग्रीव नागपाशसें छूट विश्रामको प्राप्त भए मानों सुख निद्रा लेय जागे अधिक शोभते भए तब

इनको देख श्रीवृक्ष प्रथादिक सब विद्याधर विस्मयको प्राप्त भए अर सब ही श्रीराम लक्ष्मणकी पूजा-कर विनती करते भए—हे नाथ ! आजकीसी विभूति हम अब तक कभी न देखी वाहन शस्त्र सम्पदा छत्र ध्वजाविषे अद्भुत शोभा दीखे है। तब श्रीरामने जबसे अयोध्यासे चले तबसे लेय सर्व वृत्तांत कहा कुलभूषण देशभूषणका उपसर्ग दूर किया सो सब वृत्तांत कहा। तिन्होंको केवल उपजा अर कहा हमसे गरुडेंद्र तुष्टायमान भया सो अवार उसका चिंतवन किया ताकरि यह विद्याकी प्राप्ति भई। तब वे यह कथा सुन परम हर्षको प्राप्त भए अर कहते भए या ही भवविषे साधु सेवाकर परमयश पाइए है अर अतिउदार चेष्टा होय है अर पुण्यकी विधि प्राप्ति होय है अर जैसा साधु सेवासे कल्याण होय तैसा न माता न पिता न मित्र न भाई कोई जीवनिका न करे। साधु या प्राणीकूं धर्मविषे उत्तम बुद्धि देय कल्याण करे, या भांति साधु सेवाकी प्रशंसाविषे लगाया है चित्त जिन्होंने, जिनेन्द्रके मार्गकी उन्नतिविषे उपजी है श्रद्धा जिनके ते राजा बलभद्र नारायणका आश्रयकर महाविभूतिकर शोभते भए। ये भव्य जीवरूप कमल तिनको प्रफुल्लित करनहारी यह पवित्र कथा ताहि सुनकर ये सर्व ही हर्षके समुद्रविषे मग्न भए अर श्रीराम लक्ष्मणकी सेवाविषे अति प्रीति करते भए अर भामंडल सुग्रीव हनुमान् मूर्छारूप निद्रासे रहित भए हैं नेत्रकमल जिनके श्रीभगवानकी पूजा करते भए। ते विद्याधर श्रेष्ठ देवों सारिखे सर्वथा धर्मविषे श्रद्धा करते भए। जो पुण्याधिकारी जीव हैं सो या लोकविषे परम उत्सवके योगको प्राप्त होय हैं प्राणी अपने स्वार्थसे संसारविषे महिमा नाहीं पावे है, केवल परमार्थसे महिमा होय है, जैसा सूर्य पर-पदार्थको प्रकाश करे तैसे शोभा पावे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं सुग्रीव भामंडलका नागपाशतै छूटना अर हनुमानका कुंभकर्णकी भुजापाशतें छूटना राम लक्ष्मणको सिंहविमान गरुडविमानकी प्राप्ति वर्णन करनेवाला इकसठवा पर्व पूर्ण भया ॥ ६१ ॥

अथानन्तर श्रीरामके पक्षके योधा महापराक्रमी रणरीतिके वेत्ता शूरवीर युद्धको उद्यमी भए बानरबंशिनिकी सेनासे आकाश व्याप्त भया अर शंख आदि वादित्रोंके शब्द अर गजोंकी गर्जना अर तुरंगोंके हींसिवेका शब्द सुनकर कैलाशका उठावनहारा जो रावण अति प्रचंड है बुद्धि जाकी महामानी देवन सारिखी है विभूति जाके महाप्रतापी बलवान सेनारूप समुद्रकर संयुक्त शस्त्रोंके तेजकर पृथिवीविषे प्रकाश करता पुत्र भ्रातादिक सहित लंकासे निकसा, युद्धको उद्यमी भया, दोऊ सेनाके योधा वस्तर पहिर संग्रामके अभिलाषी नानाप्रकार बाहनपर आरूढ अनेक आयुधोंके धरणहारे पूर्वोपार्जित कर्मसे महाक्रोधरूप परस्पर युद्ध करते भए, चक्र करौंत कुठार धनुषबाण खड्ग लोहयष्टि वज्र मुदगर कनक परिघ इत्यादि अनेक आयुधनिकर परस्पर युद्ध भया, घोडानिके असवार घोडेके असवारोंसे लडने लगे हाथियोंके असवार हाथियोंके असवारोंसे, रथोंके रथियोंसे महाधीर लडने लगे, सिंहोंके असवार सिंहोंके असवारोंसे, पयादे पयादोंसे भिडते भए। बहुत वेरमें कपिध्वजोंकी सेना राक्षसोंके योधावोंसे दबी तब नल नील संग्राम करने लगे सो इनके युद्धकर राक्षसनिकी सेना चिगी तब लंकेश्वरके योधा समुद्रकी कल्लोल सारिखे चंचल अपनी सेनाको कंपायमान देख विद्युद्वचन मारीच चन्द्रार्क सुखसारण कृतांत मृत्यु भूतनाद संक्रोधन इत्यादि महा सामंत अपनी सेनाको धीर्य बंधायकर कपिध्वजोंकी सेनाको दबावते भए। तब मर्कटबंशी योधा अपनी सेनाको चिगी जान हजारां युद्धको उठे, सो उठतेही नाना प्रकारके आयुधनिकर राक्षसनिकी सेनाको हणते भए, अति उदार है चेष्टा जिनकी, तब रावण अपनी सेनारूप समुद्रको कपिध्वजरूप प्रलय कालकी अग्निसे सूकता देख आप कोपकर युद्ध करनेको उद्यमी भया सो रावणरूप प्रलय कालकी पवनसे बानरबंशी सूके पात उडने लगे तब विभीषण महायोधा बानरबंशीनिको धीर्य बंधाय तिनकी रक्षा करवेको आप रावणसे युद्धको सन्मुख भया। तब रावण लहुरे

माईको युद्धमें उद्यमी देख क्रोधकर निरादर वचन कहता भया— रे बालक ! तू लघु भ्राता है सो मारवे योग्य नाहीं मेरे सन्मुखतें दूर हो, मैं तोहि देख प्रसन्न नाहीं । तब विभीषण रावणसूं कही——कालके योगसे तू मेरी दृष्टि पडा तब मोपे कहां जायगा । तब रावण अति क्रोधकर कहता भया रे पुरुषत्वर-हित क्लिष्ट धृष्ट पापिष्ठ कुचेष्टि नरकाधिकार तो सारिखे दीनको मारे मोहि हर्ष नाहीं, तू निर्बल रंक अवध्य है अर तो सारिखा मूर्ख अर कौन जो विद्याधरोंकी सन्तानमें होय कर भूमिगोचरियोंका आश्रय करे जैसे कोई दुर्बुद्धि पापकर्मके उदयतें जिन धर्मको तज मिथ्यात्वका सेवन करे तब विभीषण बोला हे रावण ! बहुत कहने कर कहा तेरे कल्याणकी बात तुझे कहहूं सो सुन—एती भई तोहू कछु विगडा नाहीं जो तू अपना कल्याण चाहे है तो रामसे प्रीतिकर सीता रामको सौंप अर अभिमान तज रामको प्रसन्नकर स्त्रीके निमित्त अपने कुलको कलंक मत लगावो अथवा तू मेरे वचन नहीं माने है सो जानिए है तेरी मृत्यु नजीक आई है समस्त बलवन्तोंमें मोह महा बलवान है तू मोहकर उन्मत्त भया है ये वचन भाईके सुनकर रावण अति क्रोधरूप भया, तीक्ष्ण बाण लेय विभीषणपर दौडा और भी रथ घोडे हाथियोंके असवार स्वामीभक्तिविषै तत्पर महा युद्ध करते भए । विभीषणने हू रावणको आवता देख अर्धचन्द्र बाणसे रावणकी ध्वजा उडाई अर रावणने क्रोधकर बाण चलाया सो विभीषणका धनुष तोडा अर हाथतें बाण गिरा तब विभीषणने दूजा धनुष लेय बाण चलाया सो रावणका धनुष तोडा । या भांति दोऊ भाई महायोधा परस्पर जोरसे युद्ध करते भए अर अनेक सामंतनिका क्षय भया तब इंद्रजीत महायोधा पिताभक्त पिताका पक्ष कर विभीषण पर आया तब ताहि लक्ष्मणने रोका जैसे पर्वत सागरको रोके अर श्रीरामने कुंभकर्णको घेरा अर सिंहकटिसे नील अर स्वयंभूसे नल अर शंभूसे दुर्मति अर घटोदरसे दुर्मुख शक्रासनसे दुष्ट, चंद्रनखसे काली, भिन्नांजनसे स्कंध, विघ्नसे विराधित अर मयसे

अंगद अर कुम्भकर्णका पुत्र जो कुम्भ तासे हनूमानका पुत्र अर सुमालीसे सुग्रीव अर केतुसे भामंडल कामसे दृढरथ, क्षोभसे बुध इत्यादि बडे २ राजा परस्पर युद्ध करते भए अर समस्त ही योधा परस्पर रण रचते भए वह वाहि बुलावे। बराबरके सुभट कोई कहे हैं– मेरा शस्त्र आवे है ताहि तू झेल, कोई कहे है तू हमसे युद्ध योग्य नाहीं, बालक है, वृद्ध है, रोगी है निर्बल है तू जा फलाना सुभट युद्धयोग्य है सो आवो। या भांतिके वचनालाप होय रहे हैं, कोई कहे याहि छेदो याहि भेदो कोई कहे है–बाण चलावो, कोई कहे है मार लेवो, पकड लेवो, बांध लेवो ग्रहण करो छांडो चूर्ण करो घाव लगे ताहि सहो, घाव देहु, आगे होवो, मूर्छित मत होवो, सावधान होवो, तू कहा डरे है, मैं तोहि न मारूं, कायरोंको न मारना, भागोंको न मारना, पडेको न मारना, आयुधरहित पर चोट न करना तथा रोगसे ग्रसा मूर्छित दीन बाल वृद्ध यती व्रती स्त्री शरणागत तपस्वी पागल पशु पक्षी इत्यादिको सुभट न मारें यह सामंतनिकी वृत्ति है कोई अपने वंशियोंको भागते देख धिकार शब्द कहे हैं अर कहे हैं तू कायर है नष्ट है माते कांपे कहां जाय है धीरा रहो अपने समूहविषै खडा रहु तोसूं कहा होय है? तोसूं कौन डरै, तू काहेका क्षत्री शूर अर कायरोंके परखनेका यह समय है, मीठा मीठा अन्न तो बहुत खाते यथेष्ट भोजन करते अब युद्धमें पीछे काहे होवो। या भांति धीरोंकी गर्जना अर वादित्रोंका बाजना तिनसे दशोंदिशा शब्दरूप भई अर तुरंगोंके खुरकी रजसे अंधकार होय गया चक्र शक्ति गदा लोहयष्टि कनक इत्यादि शस्त्रोंसे युद्ध भया मानों ये शस्त्र कालकी डाढ ही हैं। लोग घायल भए, दोनों सेना ऐसी दीखें मानों लाल अशोकका वन है अथवा टेसूका वन है अर अथवा पारिभद्र जातिके वृक्षोंका वन है। कोऊ योधा अपने वक्तरको टूटा देख दूजा वक्तर पहरता भया जैसे साधु व्रतमें दूषण उपजा देख बहुरि पीछे दोष स्थापना करे अर कोई दांतोंसे तरवार थांभ कमर गाढी कर बहुरि युद्धको प्रवृत्ता कोई एक सामंत माते हाथीनिके दांतोंके

अग्रभागसे विदारा गया है वक्षस्थल जाका सो हाथीके चालते जे कान तेई भए बीजना उससे मानों हवासे सुखरूपकर रहे हैं अर कोईयक सुभट निराकुल बुद्धि हुआ हाथीके दांतोंपर दोनों भुजा पसार सोवे है मानों स्वामीके कार्यरूप समुद्रसे उतरा अर कैयक योधा युद्धसे रुधिरका नाला बहावते भए जैसे पर्वतमें गेरुकी खानसे लाल नीझरने वहैं अर कैयक योधा पृथिवीमें साम्हने मुंहसे पडे होठ डसते शस्त्र जिनके करमें टेढी भौंह विकराल बदन या रीतिसे प्राण तजे हैं अर कैएक भव्यजीव महासंग्रामसे अत्यंत घायल होय कषायका त्यागकर सन्यास धर अविनाशी पदका ध्यान करते देहको तज उत्तम लोकको पावे हैं कैएक धीरवीर हाथियोंके दांतोंको हाथसे पकडकर ही देहके रुधिरकी छटा शरीरसे पडे है शस्त्र हैं हाथोंमें जिनके अर कैएक काम आय गए तिनके मस्तक गिर पडे अर सैकडां धड नाचे हैं कैएक शस्त्ररहित भए अर घावसे जरजरे भए तृषातुर होय जल पीवनेको बैठे हैं जीवनेकी आशा नाहीं ऐसे भयंकर संग्रामके होते परस्पर अनेक योधावोंका क्षय भया इन्द्रजीत तीक्ष्ण वाणनिसे लक्ष्मणको आ-च्छादने लगा अर लक्ष्मण उसको सो इंद्रजीतने लक्ष्मण पर तामस बाण चलाया सो अंधकार होयगया तब लक्ष्मणने सूर्यबाण चलाया उससे अन्धकार दूर भया बहुरि इन्द्रजीतने आशीविष जातिके नागबाण चलाए सो लक्ष्मण अर लक्ष्मणका रथ नागोंसे वेष्टित होने लगा तब लक्ष्मणने गरुडबाणके योगसे नागबाणका निराकरण किया जैसे योगी महातपसे पूर्वोपार्जित पापोंके समूहको निराकरण करें अर लक्ष्मणने इन्द्रजीतको रथरहित किया । कैसा है इन्द्रजीत ? मंत्रियोंके मध्य तिष्ठे है अर हाथियोंकी घटावोंसे वेष्टित है सो इन्द्रजीत दूजे रथपर अपनी सेनाको वचनसे कृपाकर रक्षा करता संता लक्ष्मण पर तप्तबाण चलावता भया ताहि लक्ष्मणने अपनी विद्यासे निवार इंद्रजीतपर आशीविष जातिका नाग-बाण चलाया सो इन्द्रजीत नागवाणसे अचेत होय भूमिमें पडा जैसे भामंडल पडा हुता अर रामने कुम्भ-

करणको रथरहित किया बहुरि कुम्भकरणने सूर्यबाण रामपर चलाया सो रामने ताका बाण निराकरण कर नागबाणकर ताहि बेढा सो कुम्भकरण भी नागोंका बेढा थका धरती पर पडा।

यह कथा गौतमगणधर राजा श्रेणिकतें कहे हैं—हे श्रेणिक ! बडा आश्चर्य है ते नागवाण धनुषके लगे उल्कापात स्वरूप होय जाय हैं अर शत्रुवोंके शरीरके लग नागरूप होय उसको बेढे हैं यह दिव्य शस्त्र देवोपनीत हैं मन बांछित रूप करे हैं एक क्षणमें वाण एक क्षणमें दण्ड क्षण एकमें पाशरूप होय परणवे हैं जैसे कर्म पाशकर जीव बंधे तैसे नागपाशकर कुम्भकरण बंधा सो रामकी आज्ञा पाय भामण्डलने अपने रथमें राखा, कुम्भकरणको रामने भामण्डलके हवाले किया अर इन्द्रजीतको लक्ष्मणने पकडा सो विराधितके हवाले किया सो विराधितने अपने रथमें राखा खेद खिन्न है शरीर जाका ता समय युद्धमें रावण विभीषणको कहता भया जो यदि तू आपको योधा माने है तो एक मेरा घाव सह, जाकर रणकी खाज बुझे। यह रावणने कही। कैसा है विभीषण ? क्रोधकर रावणके सन्मुख है अर विकराल करी है रणक्रीडा जाने, रावणने कोपकर विभीषणपर त्रिशूल चलाया कैसा है त्रिशूल प्रज्वलित अग्निके स्फुलिंगोंकर प्रकाश किया है आकाशमें जाने, सो त्रिशूल लक्ष्मणने विभीषण तक आवने न दिया, अपने वाणकर बीचही भस्म किया। तब रावण अपने त्रिशूलको भस्मकिया देख अति क्रोधायमान भया अर नागेन्द्रकी दई शक्ति महादारुण सो ग्रही अर आगे देखे तो इन्दीवर कहिये नीलकमल ता समान श्याम सुन्दर महा देदीप्यमान पुरुषोत्तम गरुडध्वज लक्ष्मण खडे हैं तब काली घटा समान गम्भीर उदार है शब्द जाका ऐसा दशमुख सो लक्ष्मणको ऊंचे स्वरकर कहता भया मानो ताडना ही करे है तेरा बल कहां ? जो मृत्युके कारण मेरे शस्त्र तू झेले, तू औरनिकी तरह मोहि मत जाने हे दुर्बुद्धि लक्ष्मण ! जो तू मूवा चाहे है तो मेरा यह शस्त्र झेल, तब लक्ष्मण यद्यपि चिरकाल संग्राम कर अति खेदाखिन्न भया है

तथापि विभीषणको पीछेकर आप आगे होय रावणकी तरफ दौडे तब रावणने महा क्रोध करि लक्ष्मण पर शक्ति चलाई। कैसी है शक्ति? निकसे हैं तारावोंके आकार स्फुलिंगनिके समूह जाविषै सो लक्ष्मण का वक्षस्थल महा पर्वतके तट समान ता शक्ति कर विदारा गया कैसी है शक्ति? महा दिव्य अति देदीप्यमान अमोघक्षेपा कहिए वृथा नाहीं है लगना जाका, सो शक्ति लक्ष्मणके अंगसों लग कैसी सोहती भई मानो प्रेमकी भरी बधू ही है। सो लक्ष्मण शक्तिके प्रहार कर पराधीन भया है शरीर जाका सो भूमि पर पडा जैसे वज्रका मारा पहाड परै सो ताहि भूमि पर पडा देख श्रीराम कमललोचन शोकको दबाय शत्रुके घात करिवे निमित्त उद्यमी भए, सिंहोंके रथ चढे क्रोधके भरे शत्रुको तत्कालही रथरहित किया तब रावण और रथ चढा तब रामने रावणका धनुष तोडा बहुरि रावण दूजा धनुष लिया तितेन रामने रावणका दूजा रथ भी तोडा सो रामके बाणनिकर विह्वल हुआ रावण धनुषबाण लेयवे असमर्थ भया तीव्र बाणनिकर राम रावणका रथ तोड डारें वह बहुरि रथ चढे सो अत्यन्त खेदखिन्न भया छेदा है धनुष वक्तर जाका सो छहबार रामने रथरहित किया तथापि रावण अद्‌भुतपराक्रमका धारी राम कर हता न गया तब राम आश्चर्य्य पाय रावणसे कहते भए तू अल्पआयु नाहीं, कोईयक दिन आयु बाकी है तातैं मेरे बाणनिकर न मूवा मेरी भुजाकर चलाए बाण महातीक्ष्ण तिनकर पहाड भी भिदजाय मनुष्यकी तो कहा बात? तथापि आयुकर्मने तोकूं बचाया अब मैं तोहि कहूं सो सुन—हे विद्याधरोंके अधिपति! मेरा भाई संग्राममें शक्ति कर तैंने हना सो याकी मृत्यु क्रियाकर मैं तोसे प्रभात ही युद्ध करूंगा, तब रावणने कही ऐसे ही करो, यह कह रावण इंद्रतुल्य पराक्रमी लंकामें गया। कैसा है रावण? प्रार्थना भंग करिवेको असमर्थ है। रावण मनमें विचारे है इन दोनों भाइयोंमें एक यह मेरा शत्रु अति प्रबल था सो तो मैं हत्या यह विचार कछुइक हर्षित होय महिलविषै गया, कैयक जो योधा

युद्धसे जीवते आए तिनको देख हर्षित भया। कैसा है रावण ? भाइनिमें है वात्सल्य जाके, बहुरि सुनी इन्द्रजीत मेघनाद पकडे गए अर भाई कुम्भकर्ण पकडा गया सो या वृत्तांत कर रावण अति खेदखिन्न भया। तिनके जीवनेकी आशा नाहीं। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे भव्योत्तम ! अनेक रूप अपने उपार्जे कर्मोंके कारणसे जीवनिके नानाप्रकारकी साता असाता होय है, देख ! या जगतविषै नानाप्रकारके कर्म तिनके उदयकर जीवनिके नानाप्रकारके शुभाशुभ होय हैं अर नानाप्रकारके फल होय हैं, केयक तो कर्मके उदयकर रणविषै नाशको प्राप्त होय हैं अर केयक वैरियोंको जीत अपने स्थानकको प्राप्त होय हैं अर काहूकी विस्तीर्ण शक्ति विफल होय जाय है अर बंधनको पावे हैं सो जैसे सूर्य पदार्थोंके प्रकाशनेमें प्रवीण है तैसे कर्म जीवनिको नानाप्रकारके फल देनेमें प्रवीण है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै लक्ष्मणके रावणके हाथकी शक्तिका लगना अर भूमिविषै अचेत होय पडना वर्णन करनेवाला बासठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६२ ॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मणके शोकसे व्याकुल भए जहां लक्ष्मण पडा हुता तहां आय पृथिवी मंडलका मंडन जो भाई ताहि चेष्टारहित शक्तिसे आलिंगित देख मूर्छित होय पडे. बहुरि घनी बेरमें सचेत होयकर महाशोकसे संयुक्त दुःखरूप अग्निसे प्रज्वलित अत्यन्त विलाप करते भए—हा वत्स ! कर्मके योग कर तेरी यह दारुण अवस्था भई आप दुर्लंघ्य समुद्र तर यहां आए, तू मेरी भक्तिमें सदा सावधान मेरे कार्य निमित्त सदा उद्यमी शीघ्र ही मेरेसे वचनालाप कर कहा मौन धरे तिष्ठे है ? तू न जाने मैं तेरे वियोगको एक क्षणमात्र भी सहिवे सक्त नाहीं, उठ, मेरे उरसे लग, तेरा विनय कहां गया तेरे

भुज गजके सूंड समान दीर्घ भुजबन्धनानिकर शोभित सो ये क्रियारहित प्रयोजनरहित होय गए भाव मात्र ही रहगए अर तू माता पिताने मोहि धरोहर सौंपा हुता सो अब मैं महानिर्लज्ज तिनको कहा उत्तर दूंगा अत्यन्त प्रेमके भरे अति अभिलाषी राम, हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण ऐसा जगत्में हितु तो समान नाहीं या भान्तिके वचन कहते भए, लोक समस्त देखे हैं अर महादीन भए भाईसों कहे हैं, तू सुभट-निमें रत्न है तो विना मैं कैसे जीऊंगा मैं अपना जीतव्य पुरुषार्थ तेरे विना विफल मानूं हूं, पापोंके उदयका चरित्र मैंने प्रत्यक्ष देखा मोहि तेरे विना सीता कर कहा अर अन्य पदार्थनिकर कहा ? जा सीताके नि-मित्त तेरे सारिखे भाईको निर्दय शक्तिकर पृथिवीपर पडा देखूं हूं सो तो समान भाई कहां ? काम अर्थ पुरुषोंको सब सुलभ है अर और २ संबंधी पृथिवीपर जहां जाईये वहां सब मिलें परन्तु माता पिता अर भाई न मिलें। हे सुग्रीव ! तैंने अपना मित्रपणा मुझे अति दिखाया अब तुम अपने स्थानक जावो अर हे भामण्डल ! तुम भी जावो अब मैं सीताकी भी आशा तजी अर जीवनेकी भी आशा तजी, अब मैं भाईके साथ निसंदेह अग्निमें प्रवेश करूंगा। हे विभीषण ! मोहि सीताका भी सोच नहीं अर भाईका सोच नाहीं परन्तु तिहारा उपकार हमसे कछु न बना सो यह मेरे मनमें महाबाधा है। जे उत्तमपुरुष हैं ते पहिले ही उपकार करें अर जे मध्यम पुरुष हैं ते उपकार पीछे उपकार करें अर जो पीछे भी न करें वे अधम पुरुष हैं सो तुम उत्तम पुरुष हो हमारा प्रथम उपकार किया ऐसे भाईसे विरोधकर हम पै आए अर हमसे तिहारा कछु उपकार न बना तातैं मैं अतिआतापरूप हूं। हो भामंडल सुग्रीव चिता रचो मैं भाई के साथ अग्निमें प्रवेश करूंगा, तुम जो योग्य होय सो करियो यह कहकर लक्ष्मणको राम स्पर्शने लगे तब जाम्बूनन्द महा बुद्धिमान मने करता भया—हे देव ! यह दिव्यास्त्रसे मूर्छित भया है तिहारा भाई सो

करो, आपदामें उपाय स्पर्श मत करो। यह अच्छा होजायगा ऐसे होय है तुम धीरताको धरो, कायरता तजो, आपदामें उपाय
स्पर्श मत करो। यह अच्छा होजायगा ऐसे होय है तुम सुभट जन हो तुमको विलाप उचित नाहीं, यह विलाप
ही कार्यकारी है। यह विलाप उपाय नाहीं, तुम सुभट जन हो तुमको विलाप उचित नाहीं, यह तिहारा
करना क्षुद्र लोगोंका काम है तातें अपना चित्त धीर करो कोई एक उपाय अब ही बने है यह तिहारा
भाई नारायण है सो अवश्य जीवेगा। अबार याकी मृत्यु नाहीं यह कह सब विद्याधर विषादी भए अर
लक्ष्मणके अंगसे शक्ति निकसनेका उपाय अपने मनमें सब ही चिंतवते भए। यह दिव्य शक्ति है याहि
औषधकर कोऊ निवारबे समर्थ नाहीं अर कदापि सूर्य उगा तो लक्ष्मणका जीवना कठिन है यह विद्या-
घर बारम्बार विचारते हुए उपजी है चिन्ता जिनके सो कमरबंध आदिक सब दूर कर आध निमिषमें
धरती शुद्धकर कपडेके डेरे खडे किए अर कटककी सात चौकी मेलीं सो बडे २ योधा बक्तर पहिरे धनुष
बाण धारे बहुत सावधानीसे चौकी बैठे, प्रथम चौकी नील बैठे धनुषबाण हाथमें धरे हैं अर दूजी चौकी
नल बैठे गदा करमें लिए अर तीजी चौकी विभीषण बैठे महा उदारमन त्रिशूल थांभे अर कल्पवृक्षोंकी
माला रत्नोंके आभूषण पहरे ईशानइन्द्र समान अर चौथी चौकी तरकश बांधे कुमुद बैठे महा साहस
धरे, पांचवी चौकी बरछी संभारे सुषेण बैठे महा प्रतापी अर छठी चौकी महा दृढ भुज आप सुग्रीव इंद्र
सारिखा शोभायमान भिंडिपाल लिए बैठे, सातवी चौकी महा शस्त्रका निकन्दक तरवार सम्हाले आप
भामंडल बैठा, पूर्वके द्वार अष्टापदकी ध्वजा जाके ऐसा सोहता भया मनों महाबली अष्टापद ही है अर
पश्चिमके द्वार जाम्बुकुमार विराजता भया अर उत्तरके द्वार मंत्रियोंके समूह सहित बालीका पुत्र महा
बलबान चन्द्रमरीच बैठा या भांति विद्याधर चौकी बैठे सो कैसे सोहते भए जैसे आकाशमें नक्षत्रमण्डल
भासें अर वानरवंशी महाभट वे सब दक्षिण दिशाकी तरफ चौकी बैठे या भांति चौकीका यत्नकर वि-
द्याधर तिष्ठे, लक्ष्मणके जीनेमें संदेह जिनके, प्रबल है शोक जिनका, जीवोंके कर्मरूप सूर्यके उदयकर

फलका प्रकाश होय है ताहि न मनुष्य न देव न नाग न असुर कोईभी निवारवे समर्थ नाहीं यह जीव अपना उपार्जा कर्म आपही भोगवे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लक्ष्मणके शक्ति लगना अर रामका विलाप वर्णन करनेवाला त्रेसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६३ ॥

अथानन्तर रावण लक्ष्मणका निश्चयसे मरण जान अर अपने भाई दोऊ पुत्रानिकों बुद्धिमें मरण रूप ही जान अत्यन्त दुःखी भया। रावण विलाप करै है– हाय भाई कुम्भकरण परम उदार अत्यंत हितु कहा ऐसी बन्धन अवस्थाको प्राप्त भया, हाय इंद्रजीत मेघनाद महा पराक्रमके धारी हो, मेरी भुजा समान दृढ कर्मके योगकर बंधको प्राप्त भए, ऐसी अवस्था अबतक न भई, मैं शत्रुका भाई हना है सो न जानिए शत्रु व्याकुल भया कहा करै तुम सारिखे उत्तम पुरुष मेरे प्राण वल्लभ दुःख अवस्थाको प्राप्त भए या समान मोकों अति कष्ट कहा ऐसे रावण गोप्य भाई अर पुत्रानिका शोक करता भया अर जानकी लक्ष्मणके शक्ति लगी सुन अति रुदन करती भई–हाय लक्ष्मण! विनयवान गुणभूषण! तू मो मन्दभागिनीके निमित्त ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया, मैं तोहि ऐसी अवस्थाविषै हू देखा चाहूं हूं सो दैवयोगसे देखने नहीं पाऊं हूं तो सारिखे योधाको पापी शत्रुने हना सो कहा मेरे मरणका संदेह न कियां, तो समान पुरुष या संसारमें और नाहीं जो बडे भाईकी सेवामें आसक्त है चित्त जाका समस्त कुटुम्बको तज भाईके साथ निकसा अर समुद्र तिर यहां आया ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया तोहि मैं कब देखूं। कैसा है तू बालक्रीडामें प्रवीण अर महा विनयवान महा मिष्टवाक्य वा अद्भुतकार्यका करणहारा ऐसा दिन कब होयगा जो तुझे मैं देखूं सर्व देव सर्वथा प्रकार तेरी सहाय करहु हे सर्वलोकके मनके हरणहारे तू

शक्तिकी शल्यसे रहित होय। या भांति महा कष्टतें शोकरूप जानकी विलाप करे । ताहि भावानिकर अति प्रीतिरूप जे विद्याधरी तिनने धीर्य बंधाय शांतचित्त करी—हे देवि ! तेरे देवरका अबतक मरनेका निश्चय नाहीं तातें तू रुदन मत कर अर महा धीर सामन्तोंकी यही गति है अर या पृथिवीविषे उपाय भी नाना प्रकारके हैं ऐसे विद्याधारियोंके वचन सुन सीता किंचित् निराकुल भई। अब गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतें कहे हैं हे राजन् ! अब जो लक्ष्मणका वृत्तान्त भया सो सुन एक योधा सुन्दर है मूर्ति जाकी सो डेरोंके द्वार पर प्रवेश करता भामण्डलने देखा अर पूछा कि तू कौन अर कहां से आया अर कौन अर्थ यहां प्रवेश करे है यहां ही रह आगे मत जावो । तब वह कहता भया मोहि महीने ऊपर कई दिन गए हैं मेरे अभिलाषा रामके दर्शनकी है सो रामका दर्शन करूंगा अर जो तुम लक्ष्मणके जीवनेकी बांछा करो हो तो मैं जीवनेका उपाय कहूंगा जब वाने ऐसा कहा तब भामंडल अति प्रसन्न होय द्वार आप समान अन्य सुभट मेल ताहि लार लेय श्रीरामपै आया सो विद्याधर श्रीरामसे नमस्कारकर कहता भया—हे देव ! तुम खेद मत करो लक्ष्मण कुमार निश्चय सेती जीवेगा देवगतिनामा नगर तहां राजा शशिमण्डल राणी सुप्रभा तिनका पुत्र मैं चंद्रप्रीतम सो एक दिन आकाशविषे विचरता हुता सो राजा वेलाध्यक्षका पुत्र सहस्रविजय सो वासे मेरा यह वैर कि मैं वाकी मांग परणी सो वह मेरा शत्रु ताके अर मेरे महा युद्ध भया सो ताने चण्डरवा नाम शक्ति मेरे लगाई सो मैं आकाशसे अयोध्याके महेन्द्रनामा उद्यानमें पडा सो मोहि पडता देख अयोध्याके धनी राजा भरत आय ठाढे भए, शक्तिसे विदारा मेरा वक्षस्थल देख वे महा दयावान उत्तम पुरुष जीवदाता मुझे चन्दनके जलकर छांटा सो शक्ति निकस गई मेरा जैसा रूप हुता वैसा होय गया अर कुछ अधिक भया वा नरेंद्र भरतने मोहि नवा जन्म दिया जाकर तिहारा दर्शन भया।

यह वचन सुन श्रीरामचन्द्र पूछते भए कि वा गन्धोदककी उत्पत्ति तू जाने है तब ताने कहा हे देव ! जानू हूं, तुम सुनों । मैं राजा भरतको पूछी अर ताने मोहि कही जो यह हमारा समस्त देश रोगानिकर पीडित भया सो काहू इलाजसे अच्छा न होय, पृथिवीविषै कौन कौन रोग उपजे सो सुनो– उरोघात महा दाहज्वर लालपरिश्रम सर्वशूल अर छिरदसोई फोरे इत्यादि अनेक रोग सर्वदेशके प्राणियोंको भए, मानों क्रोधकर रोगनिकी धाड ही देशविषै आई अर राजा द्रोणमेघ प्रजासहित नीरोग तब मैं ताको बुलाया अर कही–हे माम ! तुम जैसे नीरोग हो तैसा शीघ्र मोहि अर मेरी प्रजाको करो । तब राजा द्रोणमेघने जाकी सुगन्धतासे दशोंदिशा सुगन्ध होय ता जलकर मोहि सींचा सो मैं चंगा भया अर ता जलकर मेरा राजलोक भी चंगा अर नगर तथा देश चंगा भया, सर्वरोग निवृत्त भए सो हजारो रोगोंकी करणहारी अत्यन्त दुस्सह वायु मर्मकी भेदनहारी ता जलसे जाती रही तब मैंने द्रोणमेघको पूछा यह जल कहांका है जाकर सर्वरोगका विनाश होय तब द्रोणमेघने कही–हे राजन् ! मेरे विशिल्यानामा पुत्री सर्वविद्याविषै प्रवीण महागुणवती सो जब गर्भविषै आई तब मेरे देशविषै अनेक व्याधि हुतीं सो पुत्रीके गर्भविषै आवते ही सर्व रोग गए, पुत्री जिनशासनविषै प्रवीण है भगवान्की पूजाविषैं तत्पर है सर्व कुटुम्बकी पूजनीक है ताके स्नानका यह जल है ताके शरीरकी सुगन्धतासे जल महासुगंध है, क्षणमात्रविषै सर्व रोगका विनाश करे है । ये वचन द्रोणमेघके सुनकर मैं अचिरजको प्राप्त भया ताके नगरविषै जाय ताकी पुत्रीकी स्तुति करी, अर नगरीसे निकस सत्वहित नामा मुनिको प्रणामकर पूछा हे प्रभो ! द्रोणमेघकी पुत्री विशल्याका चरित्र कहो तब चार ज्ञानके धारक मुनि महावात्सल्यके धरणहारे कहते भए–हे भरत ! महाविदेहक्षेत्रविषै स्वर्ग समान पुंडरीक देश तहां त्रिभुवनानन्द नामा नगर तहां चक्रधर नाम चक्रवर्ती राजा राज्य करे ताके पुत्री अनंगशरा गुण ही हैं आभूषण जाके, स्त्रीनिविषै

ता समान अद्भुत रूप औरका नाहीं सो एक प्रतिष्ठितपुरका धनी राजा पुनर्वसु विद्याधर चक्रवर्तीका
सामन्त सो कन्याको देख कामबाणकर पीडित होय विमानमें बैठाय लेय गया सो चक्रवर्तीने क्रोधाय-
मान होय किंकर भेजे सो तासूं युद्ध करते भए ताका विमान चूर डारा तब ताने व्याकुल होय कन्या
आकाशतें डारी सो शरदके चन्द्रमाकी ज्योति समान पुनर्वसुकी पर्ण लघुविद्याकर अटवीविषै आय
पडी सो अटवी दुष्ट जीवनिकर महा भयानक जाका नाम श्वापद रौरव जहां विद्याधरोंका भी प्रवेश
नाहीं, वृक्षनिके समूहकर महा अंधकाररूप नाना प्राकारकी बेलनिकर बेढे नाना प्रकारके ऊंचे वृक्षनिकी
सघनतासे जहां सूर्यकी किरणका भी प्रवेश नाहीं अर चीता व्याघ्र सिंह अष्टापद गैंडा रीछ इत्यादि
अनेक वनचर विचरें अर नीची ऊंची विषमभूमि जहां बडे २ गर्त (गढे) सो यह चक्रवर्तीकी कन्या अनंग
सरा बालक अकेली ता बनमें महाभयकर युक्त अति खेदखिन्न होती भई नदीके तीर जाय दिशा अ-
वलोकनकर माता पिताको चितार रुदन करती भई—हाय! मैं चक्रवर्तीकी पुत्री मेरा पिता इन्द्रसमान ताके
मैं अति लाडली दैवयोगकर या अवस्थाको प्राप्त भई अब कहा करूं? या बनका छोर नाहीं यह वन
देखे दुःख उपजे, हाय पिता महापराक्रमी सकल लोक प्रसिद्ध, मैं या बनमें असहाय पडी मेरी दया
कौन करे, हाय माता ऐसे महा दुःखकर मोहि गर्वमें राखी अब काहेसे मेरी दया न करो हाय मेरे परि-
वारके उत्तम मनुष्य हो! एक क्षणमात्र मोहि न छोडते सो अब क्यों तज दीनी अर मैं होती ही क्यों न
मरगई, काहेसे दुःखकी भूमिका भई, चाही मृत्यु भी न मिले, कहा करूं कहां जाऊं मैं पापिनी कैसे तिष्ठूं
यह स्वप्न है कि साक्षात् है। या भांति चिरकाल विलापकर महा विह्वल भई ऐसे विलाप किए जिनको
सुन महा दुष्ट पशुका भी चित्त कोमल होय। यह दीनचित्त क्षुधा तृषासे दग्ध शोकके सागरमें मग्न फल
पत्रादिकसे कीनी है आजीविका जाने, कर्मके योग ता बनमें कई शीतकाल पूर्ण किए। कैसे हैं शीत-

काल ? कमलनिके वनकी शोभाका जो सर्वस्व ताके हरणहारे अर जिनने अनेक ग्रीष्मके आताप सहे, कैसे हैं ग्रीष्म आतप ? सूके हैं जलोंके समूह अर जले हैं दावानलोंसे अनेक वन वृक्ष अर जरे हैं मरे हैं अनेक जन्तु जहां अर जाने ता वनमें वर्षाकाल भी बहुत व्यतीत किए ता समय जलधाराके अन्धकारकर दब गई है सूर्यकी ज्योति अर ताका शरीर वर्षाका धोया चित्रामके समान होय गया, कांतिरहित दुर्बल विखरे केश मलयुक्त शरीर लावण्यरहित ऐसा होय गया जैसे सूर्यके प्रकाशकर चन्द्रमाकी कलाका प्रकाश क्षीण होय जाय, कैथका बन फलनिकर नम्रीभूत वहां बैठी, पिताको चितार या भांतिके वचन कहकर रुदन करे कि मैं जो चक्रवर्तीके तो जन्म पाया अर पूर्व जन्मके पापकर बनमें ऐसी दुःख अवस्थाको प्राप्त भई । या भांति आंसुवोंकी वर्षा कर चातुर्मासिक किया अर जे वृक्षोंसे टूटे फल सूक जांय तिनका भक्षण करे अर बेला तेला आदि अनेक उपवासनिकर क्षीण होय गया है शरीर जाका सो केवल फल अर जलकर पारणा करती भई, अर एक ही वार जल ताही समय फल । यह चक्रवर्तीकी पुत्री पुष्पनिकी सेजपर सोवती अर अपने केश भी जाको चुभते सो विषम भूमिपर खेदसहित शयन करती भई अर पिताके अनेक गुणीजन राग करते तिनके शब्द सुन प्रबोधको पावती सो अब स्याल आदि अनेक बनचरोंके भयानक शब्दसे रात्रि व्यतीत करती भई । या भांति तीन हजार वर्ष तप किया सूके फल तथा सूके पत्र अर पवित्र जल आहार किये अर महावैराग्यको प्राप्त होय खान पानका त्यागकर धीरता धर संलेषणा मरण आरम्भा एक सौ हाथ भूमि पावोंसे पैर न जाऊं यह नियम धार तिष्ठी, आयुमें छह दिन वाकी हुते अर एक अरहदास नामा विद्याधर सुमेरुकी बन्दना करके जावे था सो आय निकसा सो चक्रवर्तीकी पुत्रीको देख पिताके स्थानक लेजाना विचारा संलेषणाके योगकर कन्याने मने किया ।

तब अरहदास शीघ्रही चक्रवर्ती पर जाय चक्रवर्तीको लेय कन्या पै आया सो जा समय चक्रवर्ती आया ता समय एक सर्प कन्याको भखे था सो कन्याने पिताको देख अजगरको अभयदान दिवाया अर आप समाधि धारण कर शरीर तज तीजे स्वर्ग गई पिता पुत्रीकी यह अवस्था देखकर बाईस हजार पुत्रनि सहित वैराग्यको प्राप्त होय मुनि भया कन्याने अजगरसे क्षमाकर अजगरको पीडा न होने दई सो ऐसी दृढता ताहीसूं बनै अर वह पुनर्वसु विद्याधर अनंगसराको देखता भया सो न पाई तब खेदखिन्न होय द्रुमसेन मुनिके निकट मुनि होयैं महातप किया सो स्वर्गमें देव होय महासुन्दर लक्ष्मण भया, अर वह अनंगसरा चक्रवर्तीकी पुत्री स्वर्गलोकतें चयकर द्रोणमेघके विशल्या भई अर पुनर्वसुने ताके निमित्त निदान किया हुता, सो अब लक्ष्मण याहि वरेगा यह विशल्या या नगरविषै या देशविषै तथा भरतक्षेत्रमें महा गुणवन्ती है पूर्वभवके तपके प्रभावकर महा पवित्र है ताके स्नानका यह जल है सो सकल विकारको हरै है याने उपसर्ग सहा महा तप किया ताका फल है याके स्नानके जलकर जो तेरे देशमें वायु विषम विकार उपजा हुता सो नाश भया। ये मुनिके वचन सुन भरतने मुनिसे पूछी हे प्रभो! मेरे देशमें सर्वलोकोंको रोगविकार कौन कारणसे उपजा तब मुनिने कहा गजपुर नगरतें एक व्यापारी महा धनवन्त विन्ध्यनामा सो रासभ (गधा) ऊंट भैंसा लादे अयोध्यामें आया अर ग्यारह महीना अयोध्यामें रहा ताके एक भैंसा सो बहुत बोझके लगनेसे घायल हुआ, तीव्र रोगके भारसे पीडित या नगरमें मूवा सो अकामनिर्जराके योगकर अश्वकेतु नामा वायुकुमार देव भया जाका विद्यावर्त नाम, सो अवधिज्ञानसे पूर्वभवको चितारा कि पूर्व भव विषै मैं भैंसा था पीठ कट रही हुती अर महा रोगों कर पीडित मार्ग विषै कीच में पडा हुता सो लोक मेरे सिरपर पांव देय देय गए। यह लोक महानिर्दई अब मैं देव भया सो मैं इनका निग्रह न करूं तो मैं देव काहेका? ऐसा विचार अयोध्या नगरविषै अर सुकौशल देशमें वायु रोग विस्तारा सो सम-

स्त रोग विशल्याके चरणोदकके प्रभाव से विलय गया बलवानसे अधिक बलवान है सो यह पूर्णकथा मुनिने भरतसे कही अर भरतने मोसे कही सो मैं समस्त तुमको कही विशल्याका स्नान जल शीघ्र ही मंगावो लक्ष्मणके जीवनेका अन्य यत्न नाहीं। या भांति विद्याधरने श्रीरामसे कहा सो सुनके प्रसन्न भए। गौतमस्वामी कहे हैं कि हे श्रेणिक ! जे पुण्याधिकारी हैं तिनको पुण्यके उदयकरि अनेक उपाय मिलै हैं। अहो महंतजन हो, तिन्हें आपदाविषै अनेक उपाय सिद्ध होय हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै विशल्याका पूर्वभव वर्णन करनेवाला चौसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६४ ॥

अथानन्तर ये विद्याधरके वचन सुनकर रामने समस्त विद्याधरनि सहित ताकी अति प्रशंसा करी अर हनूमान भामंडल तथा अंगद इनको मंत्रकर अयोध्याकी तरफ विदा किए। ये क्षणमात्रमें गए जहां महाप्रतापी भरत विराजे हैं सो भरत शयन करते हुते तिनको रागकर जगावनेका उद्यम किया सो भरत जागते भए तब ये मिले सीताका हरण रावणसे युद्ध अर लक्ष्मणके शक्तिका लगना ये समाचार सुन भरतको शोक अर क्रोध उपजा अर ताही समय युद्धकी भेरी दिवाई सो संपूर्ण अयोध्याके लोग व्याकुल भए अर विचार करते भए यह राजमंदिरमें कहा कलकलाट शब्द है ? आधरातके समय कहा अतिवीर्यका पुत्र आय पडा ? कोईयक सुभट अपनी स्त्रीसहित सोता हुता ताहि तजकर बक्तर पहिरे अर खड्ग हाथमें समारा अर कोइक मृगनैनी भोरे बालकको गोदमें लेय अर कुचोंपर हाथ धर दिशावलोकन करती भई अर कोई एक स्त्री निद्रारहित भई सोते कंथको जगावती भई अर कोई एक भरतजीका सेवक जानकर अपनी स्त्रीको कहता भया—हे प्रिये ! कहां सोवे है ? आज अयोध्यामें कछु भला

नाहीं राजमन्दिरमें प्रकाश होरहा है अर रथ, हाथी, घोडे, प्यादे, राजद्वारकी तरफ जाय हैं जो सयानें
मनुष्य हुते ते सब सावधान होय उठ खडे हुये अर कईएक पुरुष स्त्रीसे कहते भए ये सुवर्ण कलश अर
माणि रत्नोंके पिटारे तहखानोंमें अर सुन्दर वस्त्रोंकी पेटी भूमिग्रह में धरो और भी द्रव्य ठिकाने धरो
अर शत्रुघन भाई निद्रा तज हाथी चढ मंत्रियोंसहित शस्त्रधारक योधावों को लेय राजद्वार आया और
भी अनेक राजा राजद्वार आए सो भरत सबको युद्धका आदेश देय उद्यमी भया तब भामण्डल हनूमान
अंगद भरतको नमस्कार कर कहते भये—हे देव ! लंकापुरी यहांसे दूर है अर बीच समुद्र है तब भरतने कही
कहा करना ? तब उन्होंने विशल्याका वृत्तान्त कहा—हे प्रभो ! राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या ताके
स्नानका उदक देवो शीघ्रही कृपा करो जो हम लेजांय सूर्यका उदय भए लक्ष्मणका जीवना कठिन है
तब भरतने कही ताके स्नानका जल क्या वाही लेजावो। मोहि मुनिने कही हुती यह विशल्या लक्ष्म-
णकी स्त्री होयगी तब द्रोणमेघके निकट एक निज मनुष्य ताही समय पठाया सो द्रोणमेघने लक्ष्मणके
शक्ति लगी सुन अति कोप किया अर युद्धको उद्यमी भया अर ताके पुत्र मंत्रिनि सहित युद्धको उद्यमी
भए तब भरत अर माता केकईने आप द्रोणमेघको जायकर ताको समझाय विशल्याको पठावना ठहराया
तब भामण्डल हनूमान अंगद विशल्याको विमानमें बैठाय एक हजार अधिक राजाकी कन्या सहित लेय
रामकटकमें आए, एक क्षणमात्रमें संग्राम भूमि आय पहुंचे विमानसे कन्या उतरी ऊपर चमर ढुरे हैं कन्याके
कमल सारिखे नेत्र सो हाथी, घोडे, बडे बडे योधानिको देखती भई ज्यों ज्यों विशल्या कटकमें प्रवेश
करै त्यों त्यों लक्ष्मणके शरीरमें साता होती भई, वह शक्ति देवरूपिणी लक्ष्मणके अंगसे निकसी ज्यो-
तिके समूहसे युक्त मानो दुष्ट स्त्री घरसे निकसी, देदीप्यमान अग्निके स्फुलिंगोंके समूह आकाशमें उछ-
लते सो वह शक्ति हनूमानने पकडी दिव्य स्त्रीका रूपधर तब हनूमानको हाथ जोड कहती भई—हे नाथ !

प्रसन्न होवो मोहि छांडो मेरा अपराध नाहीं हमारी यही रीति है कि हमको जो साधे हम ताके वशीभूत हैं मैं अमोघविजिया नामा शक्ति विद्या तीन लोकविषै प्रसिद्ध हूं सो कैलाशपर्वतविषै बालमुनि प्रतिमा जोग धरि तिष्ठे हुते अर रावणने भगवान्‌के चैत्यालयमें गान किया अर अपने हाथनिकी नस बजाई अर जिनेंद्रके चरित्र गाए, तब धरणेंद्रका आसन कंपायमान भया सो धरणेंद्र परम हर्ष धर आए रावणसों अतिप्रसन्न होय मोहि सोंपी रावण याचनाविषै कायर मोहि न इच्छै तब धरणेन्द्रने हठकर दई सो मैं महा विकरालस्वरूप जाके लागूं ताके प्राण हरूं, कोई मोहि निवारवे समर्थ नाहीं एक या विशल्या सुंदरीको टार, मैं देवोंकी जीतनहारी सो मैं याके दर्शनहीतें भाग जाऊं, याके प्रभावकर मैं शक्तिरहित भई, तपका ऐसा प्रभाव है जो चाहे तो सूर्यको शीतल करे अर चन्द्रमाको उष्ण करै याने पूर्व जन्मविषै अति उग्र तप किए मिझनाके फूल समान याका सुकुमार शरीर सो याने तपविषै लगाया ऐसा उग्र तप किया जो मुनिहूतें न बनै, मेरे मनमें संसारविषै यही सार भासै है जो ऐसे तप प्राणी करें वर्षा शीतल आताप अर महा दुस्सह पवन तिनसे यह सुमेरुकी चूलिका समान न कांपी, धन्य रूप याका धन्य याका साहस, धन्य याका धर्मविषै दृढमन, याकासा तप और स्त्रीजन करने समर्थ नाहीं, सर्वथा जिनेंद्रचन्द्रके मतके अनुसार जे तपको धारण करै हैं ते तीनलोकको जीते हैं अथवा या बातका कहा आश्चर्य जो तपकर मोक्ष पाइये ताकर और कहा कठिन ? मैं पराए आधीन जो मोहि चलावै ताके शत्रुका मैं नाश करूं, सो याने मोहि जीती अब मैं अपने स्थानक जाऊं हूं सो तुम तो मेरा अपराध क्षमा करहु ।

या भांति शक्तीदेवीने कहा तब तत्त्वका जाननहारा हनूमान ताहि विदाकर अपनी सेनामें आया अर द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या अति लज्जाकी भरी रामके चरणारविन्दको नमस्कारकर हाथ जोड ठाढी भई विद्याधर लोक प्रशंसा करते भए अर नमस्कार करते भए अर आशीर्वाद देते भए जैसे इंद्र

के समीप शची जाय तिष्ठे तैसे वह विशल्या सुलक्षणा महा भाग्यवती सखियोंके वचनसे लक्ष्मणके समीप तिष्ठी वह नव यौवन जाके मृगीकैसे नेत्र, पूर्णमासीके चन्द्रमा समान मुख जाका अर महा अनुरागकी भरी उदारमन पृथिवी विषै सुखसे सूते जो लक्ष्मण तिनको एकांतविषै स्पर्श कर अर अपने सुकुमार करकमल सुन्दर तिनकर पतिके पांव पलोटने लगी अर मलयागिरि चन्दनसे पतिका सर्व अंग लिप्त किया अर याकी लार हजार कन्या आई थीं तिनने याके करसे चन्दन लेय विद्याधरानिके शरीर छांटे सो सब घायल आछे भए अर इंद्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद घायल भए हुते सो उनको हू चन्दनके लेपसे नीके किये सो परम आनन्दको प्राप्त भए जैसे कर्मरोगरहित सिद्धपरमेष्ठी परम आनन्दको पावें अर भी जे योधा घायल भए हुते हाथी घोडे पियादे सो सब नीके भए घावोंकी शल्य जाती रही सब कटक अच्छा भया अर लक्ष्मण जैसे सूता जागे तैसे वीणके नाद सुन अति प्रसन्न भए अर लक्ष्मण मोहशय्या छोडते भए स्वांस लिए आंख उघडी उठकर क्रोधके भरे दशों दिशा निरखि ऐसे वचन कहते भए कहां गया रावण कहां गया वो रावण ? ये वचन सुन राम अति हर्षित भए, फूल गए हैं नेत्र कमल जिनके महा आनन्दके भरे बडे भाई रोमांच होय गया है शरीरमें जिनके अर अपनी भुजानिकर भाईसे मिलते भए अर कहते भए हे भाई ! वह पापी तोहि शक्तिसे अचेत कर आपको कृतार्थ मान घर गया अर या राजकन्याके प्रसादतें तू नीका भया अर जामवन्तको आदि देय सब विद्याधरानिने शक्तिके लागवे आदि निकसवे पर्यन्त सब वृत्तान्त कहा अर लक्ष्मणने विशल्या अनुरागकी दृष्टिकर देखी । कैसी है विशल्या ? श्वेत श्याम आरक्त तीन वर्ण कमल तिन समान हैं नेत्र जाके अर शरदकी पूर्णिमाके चन्द्रमा समान है मुख जाका अर कोमल शरीर क्षीण कटि दिग्गजके कुम्भस्थल समान स्तन हैं जाके नव यौवन मानों साक्षात् मूर्तिवन्ती कामकी क्रीडा ही है मानों तीन लोककी शोभा एकत्रकर नामकर्मने याहि रचा है

ताहि लक्ष्मण देख आश्चर्यको प्राप्त होय मनमें विचारता भया, यह लक्ष्मी है अक इंद्रकी इंद्राणी है अथवा चन्द्रकी कांति है यह विचार करे है अर विशल्याकी लारकी स्त्री कहती भई—हे स्वामी ! तिहारा यासूं विवाहका उत्सव हम देखा चाहे हैं तब लक्ष्मण मुलके अर विशल्याका पाणिग्रहण किया अर विशल्याकी सर्व जगतमें कीर्ति विस्तरी। या भांति जे उत्तम पुरुष हैं अर पूर्वजन्ममें महा शुभ चेष्टा करी है तिनको मनोग्य वस्तुका संबंध होय है अर चांद सूर्यकीसी उनकी कांति होय है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै विशल्याका
समागम वर्णन करनेवाला पैंसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६५ ॥

अथानन्तर लक्ष्मणका विशल्यासूं विवाह अर शक्तिका निकासना यह सब समाचार रावणने हलकारानिके मुख सुने अर सुनकर मुलकि कर मंदबुद्धि कर कहता भया— शक्ति निकसी तो कहा ? अर विशल्या व्याही तो कहा ? तब मारीच आदि मंत्री मंत्रमें प्रवीण कहते भए—हे देव ! तिहारे कल्याणकी बात यथार्थ कहेंगे तुम कोप करो अथवा प्रसन्न होवो सिंहवाहनी गरुडवाहनी विद्या राम लक्ष्मणको यत्न विना सिद्ध भई सो तुम देखी अर तिहारे दोऊ पुत्र अर भाई कुम्भकर्णको तिन्होंने बांध लिए सो तुम देखे अर तिहारी दिव्य शक्ति सो निरर्थक भई तिहारे शत्रु महाप्रबल हैं उनकर जो कदाचित् तुम जीते भी तो भ्राता पुत्रोंका निश्चय नाश है तातैं ऐसा जानकर हम पर कृपा करो, हमारी विनती अब तक आपने कदापि भंग न करी तातैं सीताको तजो अर जो तिहारे धर्म बुद्धि सदा रही है सो राखो सर्व लोकको कुशल होय राघवसे संधि करो यह बात करनेमें दोष नाहीं, महागुण है तुम ही कर सर्व लोकविषै मर्यादा चले है धर्मकी उत्पत्ति तुमसे है जैसे समुद्रतें रत्ननिकी उत्पत्ति होय ऐसा कहकर बडे

का पुराण सम्यग्दर्शनकी सिद्धिका कारण महाकल्याणका कर्ता निर्मल ज्ञानका दायक विचक्षण जीवोंको निरंतर सुनिवे योग्य है अतुलपराक्रमी अद्भुत आचरणके धारक महासुकृती जे दशरथके नंदन तिनकी महिमा कहां लग कहूं इस ग्रंथमें बलभद्र नारायण प्रतिनारायण तिनका विस्ताररूप चरित्र है। जो यामें बुद्धि लगावे तो अकल्याणरूप पापोंको तजकर शिव कहिये मुक्ति उसे अपनी करै जीव विषयकी बांछाकर अकल्याणको प्राप्त होय हैं। विषयाभिलाष कदाचित् शांतिके अर्थ नहीं, देखो विद्याधरनिका अधिपति रावण परस्त्रीकी अभिलाषाकर कष्टको प्राप्त भया कामके रागकर हता गया ऐसे पुरुषोंकी यह दशा है तो और प्राणी विषय वासनाकर कैसे सुख पावें, रावण हजारां स्त्रियों कर मण्डित निरन्तर सुख सेवे था तृप्त न भया परदाराकी कामनाकर विनाशको प्राप्त भया। इन व्यसनों कर जीव कैसे सुखी होय जो पापी परदाराका सेवन करे सो कष्टके सागरमें पडै, अर श्रीरामचन्द्र महा शीलवान परदारा पराङ्मुख जिनशासनके भक्त धर्मानुरागी वे बहुतकाल राज्य भोग संसारको असार जान वीतरागके मार्गमें प्रवर्ते परम पदको प्राप्त भए अर भी जे वीतरागके मार्गमें प्रवर्तेंगे वे शिवपुर पहुंचेगें इसलिए जे भव्य जीव हैं वे जिनमार्गकी दृढप्रतीति कर अपनी शक्ति प्रमाण व्रतका आचरण करो जो पूर्णशक्ति होय तो मुनि होवो अर न्यून शक्ति होय तो अणुव्रतके धारक श्रावक होवो। यह प्राणी धर्मके फलकर स्वर्ग मोक्षके सुख पावे हैं अर पापके फलसे नरक निगोदके दुख पावे हैं यह निसंदेह जानो अनादि कालकी यही रीति है धर्म सुखदाई अधर्म दुखदाई पाप किसे कहिए अर पुण्य किसे कहिए सो उरविषे धारो जेते धर्मके भेद हैं तिनविषे सम्यक्त्व मुख्य है अर जितने पापके भेद हैं तिनमें मिथ्यात्व मुख्य है सो मिथ्यात्व कहा ? अतत्त्वकी श्रद्धा अर कुगुरु कुदेव कुधर्मका आराधन परजीवको पीडा उपजावना अर क्रोध मान माया लोभकी तीव्रता अर पांच इंद्रियोंके विषय सप्त व्यसनका सेवन अर मित्रद्रोह कृतघ्न

विश्वासघात अभक्ष्यका भक्षण अगम्यस्त्रीसे गमन मर्मका छेदक वचन सुरापना इत्यादि पापके अनेक भेद हैं वे सब तजने अर दया पालनी सत्य बोलना चोरी न करनी शील पालना तृष्णा तजनी काम लोभ तजने शास्त्र पढना काहूको कुवचन न कहना गर्व न करना प्रपंच न करना अदेखसका न होना शान्त भाव धारना पर उपकार करना परदारा परधन परद्रोह तजना परपीडाका वचन न कहना बहु आरंभ बहु परिग्रहका त्याग करना दान देना तप करना परदुखहरण इत्यादि जो अनेक भेद पुण्यके हैं वे अंगीकार करने, अहो प्राणी हो सुखदाता शुभ है अर दुःखदाता अशुभ है दारिद्र दुःख रोग पीडा अपमान दुर्गति यह सब अशुभके उदयसे होय हैं अर सुख संपत्ति सुगति यह सब शुभके उदयसे होय हैं। शुभ अशुभ ही सुख दुःखके कारण हैं अर कोई देव दानव मानव सुख दुखका दाता नहीं अपने अपने उपार्जे कर्मका फल सब भोगवे हैं सब जीवोंसे मित्रता करना किसीसे वैर न करना किसीको दुख न देना सब ही सुखी हों यह भावना मनमें धरना, प्रथम अशुभको तज शुभमें आवना बहुरि शुभाशुभसे रहित होय शुद्ध पदको प्राप्त होना, बहुत कहिवे कर क्या ? इस पुराणके श्रवणकर एक शुद्ध सिद्ध पदमें आरूढ होना अनेक भेद कर्मोंका विलय कर आनन्द रूप रहना है। हो पंडित हो! परम पदके उपाय निश्चय थकी जिनशासनमें कहे हैं वे अपनी शक्ति प्रमाण धारण करो जिसकर भवसागरसे पार होवो यह शास्त्र अति मनोहर जीवोंको शुद्धताका देनहारा रवि समान सकल वस्तुका प्रकाशक है सो सुनकर परमानंद स्वरूपमें मग्न होवो, संसार असार है जिन धर्म सार है जिनकर सिद्ध पदको पाईये है सिद्धपद समान और पदार्थ नाहीं जब श्रीभगवान त्रैलोक्यके सूर्य वर्द्धमान देवाधिदेव सिद्ध लोकको सिधारे तब चतुर्थकालके तीन वर्ष साढेआठ महीना शेष थे सो भगवानको मुक्त भए पीछे पंचम कालमें तीन केवली अर पांच श्रुतकेवली भए सो वहां लग तो पुराण पूर्ण था, जैसे भगवान्ने गौतम गणधरसे कहा अर गौ-

तमने श्रेणिकसे कहा वैसा श्रुतकेवलीनिने कहा श्रीमहावीर पीछे बासठ वर्ष लग केवलज्ञान रहा, अर केवली पीछे सौ वर्ष तक श्रुतकेवली रहे। पंचम श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामी तिनके पीछे कालके दोष से ज्ञान घटता गया तब पुराणका विस्तार न्यून होता भया, श्रीभगवान महावीरको मुक्ति पधारे बारह सौ साढे तीन वर्ष भए तब रविषेणाचार्यने अठारह हजार अनुष्टुपश्लोकोंमें व्याख्यान किया। यह रामका चारित्र सम्यक्त्वका कारण है केवली श्रुतकेवली प्रणीत सदा पृथिवीमें प्रकाश करो जिनशासनके सेवक देव जिनभक्तिविषै परणाय जिनधर्मी जीवोंकी सेवा करें हैं जे जिनमार्गके भक्त हैं तिनके सभी सम्यक् दृष्टि देव आवे हैं नानाविधि सेवा करे हैं महा आदर संयुक्त सर्व उपायकर आपदामें सहाय करे हैं अनादि कालसे सम्यक्दृष्टि देवोंकी ऐसीही रीति है। जैन शास्त्र अनादि है काहूका किया नहीं व्यंजन स्वर यह सब अनादि सिद्ध हैं रविषेणाचार्य कहे हैं मैं कछु नहीं किया शब्द अर्थ अकृत्रिम हैं अलंकार छंद आगम निर्मलचित्त होय नीके जानने या ग्रंथविषै धर्म अर्थ काम मोक्ष सब हैं अठारह हजार तेईस श्लोकका प्रमाण पद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ है इसपर यह भाषा भई सो जयवंत होवे जिनधर्मकी वृद्धि होवै राजा प्रजा सुखी होवें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मोक्षप्राप्तिका वर्णन करनेवाला एकसौ तेईसवा पर्व पूर्ण भया ॥ १२३ ॥

भाषाकारका परिचय।

चौपई—जम्बूद्वीप सदा शुभथान। भरतक्षेत्र ता माहि प्रमाण। उसमें आर्यखंड पुनीत। वसें ताहि में लोक विनीत॥ १॥ तिसके मध्य ढूंढार जु देश। निवसें जैनी लोक विशेष। नगर सवाई जयपुर महा। तिसकी उपमा जाय न कहा॥ २॥ राज्य करे माधवनृप जहां। कामदार जैनी जन तहां। ठौर ठौर जिन मन्दिर बने। पूजें तिनको भविजन घने॥ ३॥ बसें महाजन नाना जाति। सेवें जिनमारग बहुन्याति॥ रायमल्ल साधर्मी एक। जाके घटमें स्वपर विवेक॥ ४॥ दयावंत गुणवंत सुजान। पर उपकारी परम निधान॥ दौलतराम सु ताको मित्र। तासों भाष्यो वचन पवित्र॥ ५॥ पद्मपुराण महा-शुभ ग्रन्थ। तामें लोकशिखरको पंथ॥ भाषारूप होय जो येह। बहुजन बांच करें अतिनेह॥ ६॥ ताके वचन हियेमें धार। भाषा कीनी श्रुतिअनुसार॥ रविषेणाचारज कृतसार। जाहि पढें बुधिजन गुणधार॥ ७॥ जिनधर्मिनकी आज्ञा लेय। जिनशासनमांही चित देय॥ आनन्दसुतने भाषा करी। नन्दो विरदो अतिरस भरी॥ ८॥ सुखी होहु राजा अर लोक। मिटो सबनके दुख अरु शोक। वरतो सदा मंगलाचार। उतरो बहुजन भवजल पार॥ ९॥ सम्वत् अष्टादश शत जान। ता ऊपर तेईस बखान (१८२३)। शुक्लपक्ष नवमी शनिवार। माघमास रोहिणी ऋख सार॥ १०॥

दोहा—ता दिन सम्पूरण भयो, यह ग्रन्थ सुखदाय। चतुरसंघ मंगल करो, बढे धर्म्म जिनराय॥

इति श्रीपद्मपुराणजी भाषा समाप्त।

प्रकाशक—दुलीचंद पन्नालाल जैन परवार, ८३ लोअर चितपुररोड कलकत्ता।

श्रीपद्मपुराणजी भाषा

समाप्त ।

ताहि लक्ष्मण देख आश्चर्यको प्राप्त होय मनमें विचारता भया, यह लक्ष्मी है अक इंद्रकी इंद्राणी है अथवा चन्द्रकी कांति है यह विचार करे है अर विशल्याकी लारकी स्त्री कहती भई—हे स्वामी ! तिहारा यासूं विवाहका उत्सव हम देखा चाहे हैं तब लक्ष्मण मुलके अर विशल्याका पाणिग्रहण किया अर विशल्याकी सर्व जगतमें कीर्ति विस्तरी। या भांति जे उत्तम पुरुष हैं अर पूर्वजन्ममें महा शुभ चेष्टा करी है तिनको मनोग्य वस्तुका संबंध होय है अर चांद सूर्यकीसी उनकी कांति होय है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै विशल्याका समागम वर्णन करनेवाला पैंसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६५ ॥

अथानन्तर लक्ष्मणका विशल्यासूं विवाह अर शक्तिका निकासना यह सब समाचार रावणने हलकारानिके मुख सुने अर सुनकर मुलकि कर मंदबुद्धि कर कहता भया— शक्ति निकसी तो कहा? अर विशल्या व्याही तो कहा ? तब मारीच आदि मंत्री मंत्रमें प्रवीण कहते भए—हे देव ! तिहारे कल्याणकी बात यथार्थ कहेंगे तुम कोप करो अथवा प्रसन्न होवो सिंहबाहनी गरुडबाहनी विद्या राम लक्ष्मणको यत्न विना सिद्ध भई सो तुम देखी अर तिहारे दोऊ पुत्र अर भाई कुम्भकर्णको तिन्होंने बांध लिए सो तुम देखे अर तिहारी दिव्य शक्ति सो निरर्थक भई तिहारे शत्रु महाप्रबल हैं उनकर जो कदाचित् तुम जीते भी तो भ्राता पुत्रोंका निश्चय नाश है तातैं ऐसा जानकर हम पर कृपा करो, हमारी विनती अब तक आपने कदापि भंग न करी तातैं सीताको तजो अर जो तिहारे धर्म बुद्धि सदा रही है सो राखो सर्व लोकको कुशल होय राघवसे संधि करो यह बात करनेमें दोष नाहीं, महागुण है तुम ही कर सर्व लोकविषै मर्यादा चले है धर्मकी उत्पत्ति तुमसे है जैसे समुद्रतें रत्ननिकी उत्पत्ति होय ऐसा कहकर बडे

मंत्री हाथ जोड नमस्कार करते भए अर हाथ जोड विनती करते भए। सबने यह मंत्र किया जो एक सामंत दूतविद्याविषै प्रवीण संधिके अर्थि रामपै पठाइये सो एक बुद्धिसे शुक्रसमान महा तेजस्वी प्रतापवान मिष्टवादी ताहि बुलाया सो मंत्रिनिने महासुन्दर महाअमृत औषधि समान वचन कहे परन्तु रावणने नेत्रकी समस्या कर मंत्रिनिका अर्थ दूषित कर डाला जैसे कोई विषसे महा औषधिको विषरूप कर डारे तैसे रावण संधिकी बात विग्रहरूप जताई सो दूत स्वामीको नमस्कारकर जायवेको उद्यमी भया। कैसा है दूत? बुद्धिके गर्वकर लोकको गोपद समान निरखे है, आकाशके मार्ग जाता रामके कटकको भयानक देख दूतको भय न उपजा। याके वादित्र सुन बानरवंशियोंकी सेना क्षोभको प्राप्त भई रावणके आगमकी शंका करी जब नजीक आया तब जानी यह रावण नाहीं कोई और पुरुष है तब बानरवंशियोंकी सेनाको विश्वास उपजा दूत द्वारे आय पहुंचा तब द्वारपालने भामण्डलसे कही। भामंडलने रामसे विनतीकर केतेक लोकनि सहित निकट बुलाया अर ताकी सेना कटकमें उतरी।

रामसे नमस्कारकर दूत वचन कहता भया—हे रघुचन्द्र! मेरे वचननिकर मेरे स्वामीने तुमको कुछ कहा है सो चित्त लगाय सुनहु, युद्धकर कछु प्रयोजन नाहीं आगे युद्धके अभिमानी बहुत नाशको प्राप्त भए तातैं प्रीतिही योग्य है युद्धकर लोकनिका क्षय होय है अर महा दोष उपजे हैं अपवाद होय है आगे संग्रामकी रुचिकर राजा दुर्वर्तक शंख धवलांग असुर सम्बरादिक अनेक राजा नाशको प्राप्त भए तातैं मेरे सहित तुमको प्रीति ही योग्य है अहो जैसे सिंह महा पर्वतकी गुफाको पायकर सुखी होय है तैसे अपने मिलापकर सुख होय है मैं रावण जगतप्रसिद्ध कहा तुमने न सुना जाने इन्द्रसे राजा बन्दीगृहविषै किए जैसे कोई स्त्रीनिको अर सामान्यलोकोंको पकडै तैसे इन्द्र पकडा अर जाकी आज्ञा सुर असुरनिकर न रोकी जाय, न पातालविषै न जलमें न आकाशविषै आज्ञाको कोई न रोक सके नाना प्रकारके

अनेक युद्धोंका जीतनहारा वीर लक्ष्मी जाको वरै ऐसा मैं सो तुमको सागरांत पृथिवी विद्याधरोंसे मंडित दूंहू अर लंकाके दोयभागकर बांट दूंहूं—भावार्थ समस्त राज्य अर आधीलंका दूंहू तुम मेरा भाई अर दोनों पुत्र मोपै पठावो अर सीता मोहि देवो जाकर सब कुशल होय अर जो तुम यों न करोगे तो जो मेरे पुत्र भाई बन्धनमें हैं तिनको तो बलात्कार छुटाय लूंगा अर तुमको कुशल नाहीं। तब राम बोले मोहि राज्यसे प्रयोजन नाहीं अर और स्त्रियोंसे प्रयोजन नाहीं सीता हमारे पठावो हम तिहारे दोऊ पुत्र अर भाईको पठावें अर तिहारे लंका तिहारे ही रहो अर समस्त राज्य तुम ही करो मैं सीतासहित दुष्टजीवनिसंयुक्त जो वन ताविषै सुखसूं विचरूंगा। हे दूत! तू लंकाके धनीसे जाय कह याही बातमें तिहारा कल्याण है, और भांति नाहीं। ऐसे श्रीरामके सर्व पूज्य वचन सुख साताकर संयुक्त तिनकों सुनकर दूत कहता भया—हे नृपति! तुम राज काजविषै समझते नाहीं, मैं तुमको वहुरि कल्याणकी बात कहूं हूं निर्भय होय समुद्र उलंघ आए हो सो नीके न करी अर यह जानकीकी आशा तुमको भली नाहीं यदि लंकेश्वर कोप भया तब जानकीकी कहा बात? तिहारा जीवना भी कठिन है अर राजनीतिविषै ऐसा कहा है जे बुद्धिमान् हैं तिनको निरन्तर अपने शरीरकी रक्षा करनी स्त्री अर धन इनपर दृष्टि न धरनी अर जो गरुडेन्द्रने सिंहवाहन गरुडवाहन तुमपै भेजे तो कहा अर तुम छलछिद्रकर मेरे पुत्र अर सहोदर बांधे तो कहा? जोंलग मैं जीवूं हूं तों लग इनवातोंका गर्व तुमको वृथा है जो तुम युद्ध करोगे तो न जानकीका न तिहारा जीवन, तातैं दोऊ मत खोवो, सीताका हठ छांडहु अर रावणने यह कही है जे बडे बडे राजा विद्याधर इन्द्रतुल्य पराक्रम जिनके सो समस्त शास्त्रविषै प्रवीण अनेक युद्धानिके जीतनहारे ते मैं नाशको प्राप्त किए हैं तिनके कैलाशपर्वतके शिखर हाडनके समूह देखो। जब ऐसा दूतने कहा तब भामण्डल क्रोधायमान भया ज्वाला समान महा विकराल मुख ताकी ज्योतिसे प्रकाश किया है

आकाशविषै जावै । भामण्डलने कही—रे पापी दूत ! स्याल चातुर्यताराहित दुर्बुद्धि वृथा शंकारहित कहा भाषै है सीताकी कहा वार्ता ? सीता तो राम लेहींगे यदि श्रीराम कोपें तब रावण राक्षस कुचेष्टित पशु कहा ? ऐसा कह ताके मारवेको खड्ग सम्हारा । तब लक्ष्मणने हाथ पकडे अर मने किया । कैसे हैं लक्ष्मण ? नीति ही हैं नेत्र जिनके, भामंडलके क्रोधकर रक्त नेत्र होय गए वक्र होय गए जैसी सांझकी लाली होय तैसा लालबदन होय गया । तब मंत्रिनिने योग्य उपदेश कह समताको प्राप्त किया । जैसे विषका भरा सर्प मंत्रसे वश कीजिये है । हे नरेंद्र ! क्रोध तजो यह दीन तिहारे योग्य नाहीं, यह तो पराया किंकर है जो वह कहावै सो कहै याके मारवेकर कहा ? स्त्री, बालक, दूत, पशु, पक्षी, वृद्ध, रोगी, सोता, आयुधरहित, शरणागत, तपस्वी, गाय, ये सर्वथा अबध्य हैं। जैसे सिंह कारी घटा समान गाजते जे गज तिनका मर्दन करनेहारा सो मींडकनिपर कोप न करै तैसे तुमसे नृपति दूतपर कोप न करें, यह तो वाके शब्दानुसार है जैसे छाया पुरुष है (छाया पुरुषकी अनुगामिनी है) अर सूवाको ज्यों पढावें तैसे पढै अर यंत्रको ज्यों बजावें त्यों बजै तैसे यह दीन वह बकावे त्यों बकै । ऐसे शब्द लक्ष्मणने कहे तब सीताका भाई भामण्डल शांतचित्त भया। श्रीराम दूतको प्रकट कहते भए—रे मूढ दूत! तू शीघ्र ही जा अर रावणको ऐसे कहियो तू ऐसे मूढ मंत्रियोंका बहकाया खोटे उपायकर आपा ठगावेगा तू अपनी बुद्धिकर विचार, किसी कुबुद्धिको पूछे मत, सीताका प्रसंग तज, सर्व पृथिवीका इन्द्र हो पुष्पक विमानमें बैठा जैसे भ्रमे था तैसे विभवसहित भ्रम, यह मिथ्या हठ छोड दे, क्षुद्रनिकी बात मत सुनहु करने योग्य कार्यविषै चित्त धर जो सुखकी प्राप्ति होय । ये वचन कह श्रीराम तो चुप होय रहे अर और पुरुषानिने दूतको बहुरि वात न करने दई, निकाल दीया। दूत रामके अनुचरनिनें तीक्ष्ण बाणरूप वचनानिकर बींधा अर अति निरादर किया तब रावणके निकट गया, मनविषै पीडा थका, सो जायकर रावणसों कहता भया

हे नाथ ! मैं तिहारे आदेश प्रमाण रामसों कही जो था पृथिवी नाना देशनिकर पूर्ण समुद्रांत महा रत्ननिकी भरी विद्याधरोंके समस्त पट्टन सहित मैं तुमको दूंहूं अर बडे २ हाथी रथ तुरंग दूंहूं अर यह पुष्पक विमान लेवो जो देवोंसे न निवारा जाय याविषै बैठ विचरो अर तीन हजार कन्या मैं अपने परवार की तुमको परणाय दूं अर सिंहासन सूर्य समान अर चन्द्रमा समान छत्र वे लेहु अर निःकंटक राज करो ऐती बात मुझे प्रमाण हैं जो तिहारी आज्ञाकर सीता मोहि इच्छे यह धन अर धरा लेवो अर मैं अल्प विभूति राख वैंतहीके सिंहासन पर बैठा रहूंगा । विचक्षण हो तो एक वचन मेरा मानहु, सीता मोहि देवो । ए वचन मैं वार बार कहे सो रघुनन्दन सीताका हठ न छोडें, केवल वाके सीताका अनुराग है और वस्तुकी इच्छा नाही । हे देव ! जैसे मुनि महाशांत चित्त अठाईस मूल गुणोंकी क्रिया न तजें वह क्रिया मुनिव्रतका मूल हैं तैसे राम सीताको न तजें, सीता ही रामके सर्वस्व है । कैसी है सीता ? त्रैलोक्यविषै ऐसी सुन्दरी नाहीं अर रामने तुमसूं यह कही है कि हे दशानन ! ऐसे सर्वलोकनिंद्य वचन तुमसे पुरुषनिको कहना योग्य नाहीं ऐसे वचन पापी कहे हैं । उनकी जीभके सौ टूक क्यों न होंय ? मेरे या सीता बिना इन्द्रके भोगनिकर कार्य नाहीं । यह सर्व पृथिवी तू भोग, मैं वनवास ही करूंगा अर तू परदारा हरकर मरवेको उद्यमी भया है तो मैं अपनी स्त्रीके अर्थ क्यों न मरूंगा अर मुझे तीन हजार कन्या देहै सो मेरे अर्थ नाहीं, मैं बनके फल अर पत्रादिक ही भोजन करूंगा अर सीतासहित वनमें विहार करूंगा अर कपिध्वजोंका स्वामी सुग्रीव ताने हंसकर मोह कही—जो कहा तेरा स्वामी आग्रहरूप ग्रहके वश भया है ? कोऊ वायुका विकार उपजा है जो ऐसी विपरीत वार्ता रंक हुवा बकै है अर कहा लंकामें कोऊ वैद्य नाहीं, अक मन्त्रवादी नहीं वायके तैलादिककर यत्न क्यों न करे नातर संग्राममविषै लक्ष्मण सर्वरोग निवारेगा । भावार्थ—मारेगा ।

तब यह वचन सुन मैं क्रोधरूप अग्निकर प्रज्वालित भया अर सुग्रीवसूं कही—रे वानरध्वज ! तू ऐसे बकै है जैसे गजके लार स्वान बकै, तू रामके गर्वकर मूवा चाहै है जो चक्रवर्त्तिकूं निन्दाके वचन कहै है सो मेरे अर सुग्रीवके बहुत बात भई अर रामसों कहा—हे राम ! तुम महारणविषै रावणका पराक्रम न देखा, कोऊ तिहारे पुण्यके योग कर वह वीर विकराल क्षमामें आया है। वह कैलाशका उठावनहारा तीन जगतमें प्रसिद्ध प्रतापी तुमसे हित किया चाहै है अर राज्य देय है ता समान और कहा तुम अपनी भुजानिकर दशमुखरूपसमुद्रकूं कैसे तरोगे। कैसा है दशमुखरूपसमुद्र ? प्रचंड सेना सोई भई तरंगनिकी माला तिनकर पूर्ण है अर शस्त्ररूप जलचरानिके समूह कर भरा है। हे राम ! तुम कैसे रावणरूप भयंकर वनविषै प्रवेश करोगे, कैसा है रावणरूप वन ? दुर्गम कहिए जा विषै प्रवेश करना कठिन है अर व्याल कहिए दुष्ट गज तेई भए नाग तिनकर पूर्ण है अर सेनारूप वृक्षानिके समूह कर महा विषम है, हे राम ! जैसे कमल पत्रकी पवनकर सुमेरु न डिगे अर सूर्यकी किरण कर समुद्र न सूकै अर बलदके सींगोंसे धरती न उठाई जाय तैसे तुम सारिखे नरनिकर नरपति दशानन जीता न जाय ऐसे प्रचंड बचन मैं कहे तब भामण्डलने महाक्रोधरूप होय मोहि मारवेको खड्ग काढा तब लक्ष्मणने मने किया जो दूतको मारना न्यायमें नहीं कहा। स्याल पर सिंह कोप न करे जो सिंह गजेन्द्रके कुम्भस्थल अपने नखनिसे विदारै तातैं हे भामण्डल ! प्रसन्न होवो क्रोध तजो जे शूरवीर नृपति हैं महा तेजस्वी ते दीननिपर प्रहार न करें। जो भयकर कंपायमान होय ताहि न हने श्रमण कहिए मुनि अर ब्राह्मण कहिए व्रतधारी गृहस्थी अर शून्य कहिए सूना अर स्त्री बालक वृद्ध पशु पक्षी दूत ऐ अवध्य हैं इनको शूरवीर सर्वथा न हने इत्यादि वचननिके समूहकर लक्ष्मण महापंडित ताने समझाय भामण्डलको प्रसन्न किया अर कपिध्वजनिके कुमार महाक्रूर तिन वज्र समान वचननिकर मोहि बींधा तब मैं उनके

असार बचन सुन आकाशमें गमनकर आयु कर्मके योगसे आपके निकट आया हूं। हे देव ! जो लक्ष्मण न होय तो आज मेरा मरण ही होता जो शत्रुनिके अर मेरे विवाद भया सो मैं सब आपसूं कहा मैं कछु शंका न राखी अब आपके मनमें जो होय सो करो, हम सारिखे किंकर तो वचन करे हैं जो कहो सो करें। या भांति दूत दशमुखसे कहता भया। यह कथा गौतम गणधर श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! जो अनेक शास्त्रनिके समूह जानें अर अनेक नयविषै प्रवीण होंय अर जाके मंत्री भी निपुण होंय अर सूर्य सारिखा तेजस्वी होय तथापि मोहरूप मेघपटल कर आच्छादित भया प्रकाशरहित होय है। यह मोह महा अज्ञानका मूल विवेकियोंको तजना योग्य है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणके दूतका आगम बहुरि पाछा रावण पास गमन वर्णन करनेवाला छियासठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६६ ॥

अथानन्तर लंकेश्वर अपने दूतके वचन सुन क्षण एक मंत्रके ज्ञाता मंत्रियोंसे मन्त्रकर कपोलपर हाथ धर अधोमुख होय कछुएक चिन्ता रूप तिष्ठा अपने मनमें विचारै है जो शत्रुको युद्धविषै जीतूं हूं तो भ्राता पुत्रानिकी अकुशल दीखे है अर जो कदाचित् वैरिनिके कटकमें मैं राति हावकर कुमारानिको ले आऊं तो या शूरतामें न्यूनता है। रतिहाव क्षत्रियोंके योग्य नाहीं कहा करूं कैसे मोहि सुख होय ? यह विचार करते रावणको यह बुद्धि उपजी जो मैं बहुरूपणी विद्या साधूं। कैसी है बहुरूपणी जो कदाचित् देव युद्ध करें तो भी न जीती जाय, ऐसा बिचारकर सव सेवकनिकों आज्ञा करी श्रीशांतिनाथके मंदिर में समीचीन तोरणादिकानिकर अति शोभा करो सो सर्व चैत्यालयोंमें विशेष पूजा करो सर्व भार पूजा प्रभावनाका मंदोदरीके सिरपर धरया। गौतम गणधर कहे हैं—हे श्रेणिक ! वह श्रीमुनिसुव्रतनाथ बी-

समां तीर्थंकरका समय ता समय या भरतक्षेत्रविषै सर्व ठौर जिनमंदिर हुते यह पृथिवी जिनमंदिरनिकर मण्डित हुती चतुरविध संघकी विशेष प्रवृत्ति राजा श्रेष्ठि ग्रामपति अर प्रजाके लोग सकल जैनी हुते सो महा रमणीक जिनमंदिर रचते जिनमंदिर जिनशासनके भक्त जो देव तिनसे शोभायमान वे देव धर्मकी रक्षामें प्रवीण शुभ कार्यके करणहारे, ता समय पृथिवी भव्य जीवनिकर भरी ऐसी सोहती मानों स्वर्ग विमान ही है ठौर २ पूजा ठौर २ प्रभावना ठौर २ दान। हे मगधाधिपति! पर्वत पर्वतविषै गांव गांव विषै नगर २ विषै बन २ विषै पट्टन २ विषै मंदिर २ विषै जिनमंदिर हुते महा शोभाकर सयुक्त शरदके पूनोंकी चन्द्रमासमान उज्ज्वल गीतोंकी ध्वनिकर मनोहर नानाप्रकारके वादित्रनिके शब्दकर मानों समुद्र गाजे है अर तीनों सन्ध्या बंदनाको लोग आवें सो साधुवोंके संगसे पूर्ण नानाप्रकारके आश्चर्यकर संयुक्त नानाप्रकारके चित्रामको धरें अगर चन्दनका धूप अर पुष्पनिकी सुगन्धता कर महासुगन्धमई महा विभूतिकर युक्त नानाप्रकारके वर्णकर शोभित महा विस्तीर्ण महा उतंग महा ध्वजानिकर विराजित तिनमें रत्नमई तथा स्वर्णमई पंचवर्णकी प्रतिमा विराजें विद्याधरनिके स्थानविषै अति सुन्दर जिनमंदिरनिके शिखर तिनकर अति शोभा होय रही है ता समय नाना प्रकारके रत्नमई उपवनादिसे शोभित जे जिनभवन तिनकर यह जगत व्याप्त अर इंद्रके नगरसमान लंकाका अंतर बाहिर जिनेंद्रके मंदिरनिकर मनोग्य था सो रावणने विशेष शोभा कराई अर आप रावण अठारह हजार राणी वेई भई कमलनिके वन तिनको प्रफुल्लित कर्ता वर्षाके मेघसमान है स्वरूप जाका सो महा नागसमान हैं भुजा जाकी पूर्णमासीके चन्द्रमासमान वदन सुन्दर केतकीके फूलसमान लाल होंठ विस्तीर्ण नेत्र स्त्रीनिका मन हरणहारा लक्ष्मणसमान श्यामसुन्दर दिव्यरूपका धरणहारा सो अपने मंदिरनिविषै तथा सर्व क्षेत्रविषै जिनमंदिरानिकी शोभा करावता भया। कैसा है रावणका घर? लग रहे

हैं लोगनिके नेत्र जहां अर जिनमंदिरानिकी पंक्ति कर मंडित नानाप्रकारके रत्नमई मंदिरके मध्य उतंग श्रीशांतिनाथका चैत्यालय जहां भगवान शांतिनाथ जिनकी प्रतिमा विराजे । जे भव्य जीव हैं ते सकल लोकचरित्रको असार अशाश्वता जानकर धर्मविषै बुद्धि धर जिनमंदिरानिकी महिमा करो । कैसे हैं जिनमंदिर ? जगतकर बंदनीक हैं अर इंद्रके मुकुटके शिखरविषै लगे जे रत्न तिनकी ज्योतिको अपने चरणनिके नखोंकी ज्योतिकर बढावनहारे हैं, धन पावनेका यही फल जो धर्म करिए सो गृहस्थका धर्म दान पूजारूप अर यतिका धर्म शांतभावरूप । या जगतविषै यह जिनधर्म मनबांछित फलका देनहार है जैसे सूर्यके प्रकाशकर नेत्रनिके धारक पदार्थनिका अवलोकन करे हैं तैसे जिनधर्मके प्रकाशकर भव्यजीव निज भावका अवलोकन करै हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचानिकाविषैं श्रीशांतिनाथके चैत्यालयका वर्णन करनेवाला सरसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६७ ॥

अथानन्तर फाल्गुणसुदी अष्टमीसूं लेय पूर्णमासी पर्यंत सिद्धचक्रका व्रत है जाहि अष्टाह्निका कहे हैं सो इन आठ दिननिमें लंकाके लोग अर लशकरके लोग नियम ग्रहणको उद्यमी भए । सर्व सेनाके उत्तम लोक मनमें यह धारणा करते भए जो यह आठ दिन धर्मके हैं सो इन दिननिमें न युद्ध करें न और आरम्भ करें यथाशक्ति कल्याणके अर्थ भगवानकी पूजा करेंगे अर उपवासादि नियम करेंगे । इन दिननिविषै देव भी पूजा प्रभावनाविषै तत्पर होय हैं । क्षीरसागरके जे सुवर्णके कलश जलकर भरे तिनकर देव भगवानका अभिषेक करे हैं कैसा है जल ? सत्पुरुषानिके यशसमान उज्ज्वल अर और भी जे मनुष्यादि

हैं तिनको भी अपनी शक्तिप्रमाण पूजा अभिषेक करना। इंद्रादिक देव नंदीश्वरद्वीप जायकर जिनेश्वर का अर्चन करे हैं तो कहा ये मनुष्य अपनी शक्ति प्रमाण यहांके चैत्यालयोंका पूजन न करें ? करें ही करें। देव स्वर्ण रत्ननिके कलशानिसे अभिषेक करें हैं अर मनुष्य अपनी संपदा प्रमाण करें महानिर्धन मनुष्य होय तो पलाश पत्रनिके पुटहीसे अभिषेक करे। देव रत्न स्वर्णके कमलानिसे पूजा करें हैं निर्धन मनुष्य चित्तही रूप कमलानिसे पूजा करें हैं। लंकाके लोक यह विचारकर भगवानके चैत्यालयनिको उत्साहसहित ध्वजा पताकादिकर शोभित करते भए वस्त्र स्वर्ण रत्नादिकर अति शोभा करी, रत्नोंकी रज अर कनकरज तिनके मंडल मांडे अर देवालयनिके द्वार अति सिंगारे अर माणि सुवर्णके कलश कमलनिसे ढके दधि दुग्ध घृतादिसे पूर्ण मोतियोंकी माला है कंठमें जिनके, रत्ननिकी कांतिकर शोभित, जिन बिम्बोंके अभिषेकके अर्थ भक्तिवंत लोक लाये, जहां भोगी पुरुषोंके घरमें सैकडों हजारों मणिसुवर्णोंके कलश हैं, नंदनवनके पुष्प अर लंकाके वनोंके नानाप्रकारके पुष्प कर्णिकार अतिमुक्त कदंब सहकार चंपक पारिजात मंदार जिनकी सुगन्धताकर भ्रमरनिके समूह गुंजार करें हैं अर माणि सुवर्णादिकके कमल तिनकर पूजा करते भए अर ढोल मृदंग ताल शंख इत्यादि अनेक वादित्रनिके नाद होते भए लंकापुरके निवासी वैर तज आनन्द रूप होय आठ दिनमें भगवानकी अति महिमाकर पूजा करते भए, जैसे नंदीश्वर द्वीपविषै देव पूजाके उद्यमी होंय तैसे लंकाके लोक लंकाविषै पूजाके उद्यमी भए अर रावण विस्तीर्ण प्रतापका धारक श्रीशांतिनाथके मंदिरविषै जाय पवित्र होय भक्तिकर महामनोहर पूजा करता भया जैसे पहिले प्रतिवासुदेव करे, गौतम गणधर कहे हैं–हे श्रेणिक! जे महाविभवकर युक्त भगवानके भक्त महाविभूतिवंत अति महिमाकर प्रभुका पूजन करे हैं तिनिके पुण्यके समूहका व्याख्यान

कौन कर सके ? वे उत्तम पुरुष देवगतिके सुख भोग बहुरि चक्रवर्तियोंके भोग पावें बहुरि राज्य तज जैन मतके व्रतधार महातप कर परम मुक्ति पावैं । कैसा है तप ? सूर्यहूतें अधिक है तेज जाका ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै श्रीशांतिनाथके चैत्यालयविषै अष्टान्हिकाका उत्सव वर्णन करनेवाला अडसठवा पर्व पूर्ण भया ॥ ६८ ॥

अथानन्तर महाशांतिका कारण श्रीशांतिनाथका मंदिर कैलाशके शिखर अर शरदके मेघ समान उज्वल महा देदीप्यमान मंदिरोंकी पंक्तिकर मंडित जैसे जम्बूद्वीपके मध्य महा उतंग सुमेरु पर्वत सोहै तैसे रावणके मंदिरके मध्य जिनमंदिर सोहता भया । तहां रावण जाय विद्याके साधनमें आसक्त है चित्त जाका अर स्थिर है निश्चय जाका परम अद्भुत पूजा करता भया । भगवानका अभिषेक कर अनेक बादित्र बजावता अति मनोहर द्रव्यनिकर महासुगन्ध धूपकर नानाप्रकारकी सामग्री कर शांतचित्त भया शांतिनाथकी पूजा करता भया मानों दूजा इंद्र ही है । शुक्ल वस्त्र पहिरे महासुन्दर जे भुजबंध तिनकर शोभित है भुजा जाकी, सिरके केश भली भांति बांध तिनपर मुकुटधर तापर चूडामणि लहलहाट करती महाज्योतिको धरे रावण दोनों हाथजोड गोडोंसे धरतीको स्पर्शता मन वचन कायकर शांतिनाथको प्रणाम करता भया । श्रीशांतिनाथके सन्मुख निर्मल भूमिमें खडा अत्यन्त शोभता भया । कैसी है भूमि ? पद्मराग मणिकी है फर्श जा विषै अर रावण स्फटिकमणिकी माला हाथविषै अर उरविषै धरे कैसा सोहता भया मानों बक पंक्तिकर संयुक्त कारी घटाका समूह ही है । वह राक्षसनिका अधिपति महाधीर विद्याका साधन आरम्भता भया । जब शांतिनाथके चैत्यालय गया ता पहिले मंदोदरीको यह आज्ञा करी जो तुम मंत्रिनिको अर कोटपालको बुलायकर यह घोषणा नगरमें फेरियो जो सर्वलोक दया

विषै तत्पर नियम धर्मके धारक होवें समस्त व्यापार तज जिनेंद्रकी पूजा करो अर अर्थी लोगोंको मनवांछित धन देवो अहंकार तजो। जौलग मेरा नियम न पूरा होय तौलग समस्त लोग श्रद्धाविषै तत्पर संयमरूप रहो जो कदाचित् कोई बाधा करै तो निश्चयसेती सहियो महाबलवान होय सो बलका गर्व न करियो। इन दिवसनिविषै जो कोऊ क्रोधकर विकार करेगा सो अवश्य सज़ा पावेगा। जो मेरे पिता समान पूज्य होय अर इन दिननिविषै कषाय करे, कलह करे ताहि मैं मारूं, जो पुरुष समाधिमरणकर युक्त न होय सो संसार समुद्रको न तिरे जैसे अंधपुरुष पदार्थनिको न परखे तैसे अविवेकी धर्मको न निरखें तातैं सब विवेकरूप रहियो कोऊ पापक्रिया न करने पावे, यह आज्ञा मंदोदरीको कर रावण जिनमंदिर गए अर मंदोदरी मंत्रियोंको अर यमदंडनामा कोटपालको द्वारे बुलाय पतिकी आज्ञा प्रमाण आज्ञा करती भई। तब सबने कही जो आज्ञा होयगी सोही करेंगे। यह कह आज्ञा सिरपर धर घर गए अर संयमरहित नियम धर्मके उद्यमी होय नृपकी आज्ञा प्रमाण करते भए। समस्त प्रजाके लोग जिन पूजाविषै अनुरागी होते भए अर समस्त कार्य तज सूर्यकी कांतितैं हू अधिक है कांति जिनकी ऐसे जे जिनमंदिर तिनविषै तिष्ठे, निर्मल भावकर युक्त संयम नियमका साधन करते भये॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लंकाके लोगनिका
अनेकानेक नियम धारण वर्णन करनेवाला उनत्तरवां पर्व पूर्ण भया॥ ६९॥

अथानन्तर श्रीरामके कटक में हलकारोंके मुख यह समाचार आए कि रावण बहुरूपिणी विद्या के साधनेको उद्यमी भया श्रीशांतिनाथके मंदिर में विद्या साधै है, चौबीस दिनमें यह बहुरूपणी विद्या सिद्ध होयगी। यह विद्या ऐसी प्रबल है जो देवनिका मद हरे सो समस्त कपिध्वजनिने यह विचार किया

कि जो वह नियममें बैठा विद्या साधे है सो ताको क्रोध उपजावें जो ताकों यह विद्या सिद्ध न होय तातैं रावणको कोप उपजावनेका यत्न करना, जो वाने विद्या सिद्ध कर पाई तो इन्द्रादिक देवनिकरहू न जीता जाय, हम सारिखे रंकनिकी कहा बात? तब बिभीषण कही—जो कोप उपजावनेका उपाय करो शीघ्रही करो। तब सबने मंत्र कर रामसे कहा कि लंका लेनेका यह समय है। रावणके कार्यमें विघ्न करिए अर अपनेको जो करना होय सो करिए तब कापिध्वजानिके यह वचन सुन श्रीरामचन्द्र महाधीर महा पुरुषनिकी है चेष्टा जिनकी, सो कहते भए—हो विद्याधर हो! तुम महामूढताके वचन कहो हो, क्षत्रिनिके कुलका यह धर्म नाहीं जो ऐसे कार्य करें। अपने कुलकी यह रीति है जो भयकर भाजे ताका वध न करना तो जे नियमधारी जिनमन्दिरमें बैठे हैं तिनसे उपद्रव कैसे करिए यह नीचानिके कर्म हैं सो कुलवंतनिको योग्य नाहीं। यह अन्याय प्रवृत्ति क्षत्रियनिकी नाहीं, कैसे हैं क्षत्री? महामान्यभाव अर शस्त्रकर्मविषै प्रवीण। यह वचन रामके सुन सबने विचारी जो हमारा प्रभु श्रीराम महा धर्मधारी है, उत्तम भावका धारक है सो इनकी कदाचित् हू अधर्मविषै प्रवृत्ति न होयगी तब लक्ष्मणकी जानमें इन विद्याधरनिने अपने कुमार उपद्रको बिदा किए अर सुग्रीवादिक बडे बडे पुरुष आठ दिनका नियम धर तिष्ठे अर पूर्णचन्द्रमा समान बदन जिनके कमल समान नेत्र नाना लक्षणके धरणहारे सिंह व्याघ्र वराह गज अष्टापद इनकर युक्त जे रथ तिनविषै बैठे तथा विमानानिमें बैठे परम आयुधनिको धरे कापिर्थो के कुमार रावणको कोप उपजायबेका है अभिप्राय जिनके मानों यह असुरकुमार देव ही हैं प्रीतंकर दृढरथ चन्द्राहू रतिवर्धन व्रातायन गुरुभार सूर्यज्योति महारथ सामंतबल नंदन सर्वदृष्ट सिंह सर्वप्रिय नल नील सागर घोषपुत्र सहित पूर्णचन्द्रमा स्कंध चन्द्र मारीच जांबव संकट समाधि बहुल सिंहकट चन्द्रासन इन्द्रामणि बल तुरंग सब इत्यादि अनेक कुमार तुरंगानिके रथ चढे अर अन्य केयक सिंह

बाराह गज व्याघ्र इत्यादि मनहूतैं जे चंचल बाहन तिनपर पयादानिके पटल तिनके मध्य महातेजको धरें नानाप्रकारके चिन्ह तिनकर युक्त हैं छत्र जिनके अर नानाप्रकारकी ध्वजा फहरे हैं जिनके, महा गंभीर शब्द करते दशोंदिशाको आच्छादित करते लंकापुरीमें प्रवेश करते भए। मनविषै विचार करते भए बडा आश्चर्य है जो लंकाके लोक निश्चिंत तिष्ठे हैं । जानिये है कछू संग्रामका भय नाहीं, अहो लंकेश्वरका बडा धीर्य महागंभीरता देखहु जो कुम्भकर्णसे भाई अर इन्द्रजीत मेघनादसे पुत्र पकडे गए हैं तौहू चिंता नाहीं अर अक्षादिक अनेक योधा युद्धविषै हते गए, हस्त प्रहस्त सेनापति मारे गए तथापि लंकापतिको शंका नाहीं, ऐसा चिंतवन करते परस्पर वार्ता करते नगरमें बैठे तथा विभीषणका पुत्र सुभूषण कपिकुमारनिको कहता भया तुम निर्भय लंकामें प्रवेश करो, बाल वृद्ध स्त्रीनिको तो कछु न कहना अर सबको व्याकुल करेंगे। तब याका वचन मान विद्याधर कुमार महा उद्धत कलहप्रिय आशीविष समान प्रचण्ड व्रतरहित चपल चञ्चल लंकाविषै उपद्रव करते भए। सो तिनके महभयानक शब्द सुन लोक अति व्याकुल भए अर रावणके महल हू में व्याकुलता भई जैसे तीव्र पवनकर समुद्र क्षोभको प्राप्त होय तैसे लंका कपिकुमारनिसे उद्वेगको प्राप्त भई। रावणके महिलविषै राजलोकनिको चिंता उपजी। कैसा है रावणका मन्दिर ? रत्ननिकी कांतिकर देदीप्यमान है अर जहां मृदंगादिकके मंगल शब्द होवे हैं जहां निरन्तर स्त्रीजन नृत्य करै हैं अर जिनपूजाविषै उद्यमी राजकन्या धर्म मार्गविषै आरूढ सो शत्रुसेनाके क्रूर शब्द सुन आकुलता उपजी स्त्रीनिके आभूषणनिके शब्द होते भए मानों वीण बाजे हैं। सब मनमें विचारती भई—न जानिए कहा होय। या भांति समस्त नगरीके लोग व्याकुलताको प्राप्त होय विह्वल भए तब मन्दोदरीका पिता राजा मय विद्याधरनिविषै दैत्य कहावे सो सब सेनासहित बक्तर पहिर आयुध धार महा पराक्रमी युद्धके अर्थ उद्यमी होय राजद्वार आया जैसे इन्द्रके भवन हिरण्यकेशी देव आवे

तब मन्दोदरी पितासे कहती भई—हे तात ! जा समय लंकेश्वर जिन मन्दिर पधारे तासमय आज्ञा करी जो सबलोक सम्वररूप रहियो कोई कषाय मत करियो तातैं तुम कषाय मत करो । ये दिन धर्मध्यानके हैं सो धर्म सेवो और भांति करोगे तो स्वामीकी आज्ञा भंग होयगी अर तुम भला फल न पावोगे ये वचन पुत्रीके सुन राजा मय उद्धतता तज महा शांत होय शस्त्र डारते भए जैसे अस्त समय सूर्य किरणोंको तजे, मणियोंके कुण्डलानिकर मंडित अर हारकर शोभे है वक्षस्थल जाका, अपने जिन मन्दिरमें प्रवेश करता भया अर ये बानरवंशी विद्याधरनिके कुमारनिने निज मर्यादा तज नगरका कोट भंग किया वज्रके कपाट तोडे, दरवाजा तोडे ।

अथानन्तर इनको देख नगरके वासियोंको अति भय उपजा घरघर में ये बात होय हैं भजकर कहां जाइये ये आए बाहिर खडे मत रहो भीतर धसो, हाय मात यह कहा भया ? हे तात देखो, हे भ्रात हमारी रक्षा करो हे आर्यपुत्र महाभय उपजा है ठिकाने रहो । या भांति नगरीके लोक व्याकुलताके वचन कहते भए । लोक भाग रावणके महिलमें आये अपने वस्त्र हाथनिमें लिये अति विह्वल बालकनिको गोदमें लिये स्त्री जन कांपती भागी जाय हैं, कैएक गिर पडीं सो गोडे फूट गये, कैएक चली जाय हैं हार टूट गए सो बडे बडे मोती बिखरे हैं जैसे मेघमाला शीघ्र जाय तैसे जाय हैं त्रासको पाई जो हिरणी ता समान हैं नेत्र जिनके अर ढीले होयगये हैं केशनिके बन्ध जिनके अर कोई भयकर प्रीतमके उरसे लिपट गई । या भांति लोकनिको उद्वेग रूप महा भयभीत देख जिनशासनके देव श्रीशांतिनाथके मन्दिरके सेवक अपनी पक्षके पालनेको उद्यमी करुणावन्त जिन शासनके प्रभाव करनेको उद्यमी भए । महा भैरव आकार धरे शांतिनाथके मंदिरसे निकसे, नाना भेष धरे विकराल हैं दाढ जिनकी, भयंकर है मुख जिनका, मध्यान्हके सूर्य समान तेज हैं नेत्र जिनके, होंठ डसते दीर्घ है काया जिनकी, नाना वर्ण भयंकर

के पुत्र महा भयकर अत्य-
शब्द महा विषम भेषको धरे, विकराल स्वरूप तिनको देखकर बानरवंशियों के पुत्र महा भयकर अत्य-
न्त विह्वल भए। वे देव क्षणमें सिंह क्षणविषै मेघ क्षणविषै हाथी क्षण विषै सर्प क्षण विषै वायु क्षणमें
वृक्ष क्षण विषै पर्वत, सो इनकर कपिकुमारनिको पीडित देख कटकके देव मदद करते भए। देवनिमें
परस्पर युद्ध भया लंकाके देव कटकके देवनिसे। अर कपिकुमार लंकाके सन्मुख भए तब यक्षनिके स्वामी
पूर्णभद्र माणिभद्र महा क्रोधको प्राप्त भए दोनों यक्षेश्वर परस्पर वार्ता करते भए देखो ये निर्दई कपिनि-
के पुत्र महाविकारको प्राप्त भए हैं। रावण तो निराहार होय देहविषै निस्पृह सर्व जगतका कार्य तज
पोसे बैठा है सो ऐसे शांतचित्तको यह छिद्र पाय पापी पीडा चाहे हैं, सो यह योधावोंकी चेष्टा नाहीं।
यह वचन पूर्णभद्रके सुन माणिभद्र बोला—अहो पूर्णभद्र! रावणका इंद्र भी पराभव करिवे समर्थ नाही,
रावण सुन्दर लक्षणनिकर पूर्ण शांत स्वभाव है। तब पूर्णभद्रने कही—जो लंकाको विघ्न उपजा है सो
आपा दूर करेंगे, यह वचन कहकर दोनों धीर सम्यक्दृष्टि जिनधर्मी यक्षानिके ईश्वर युद्धको उद्यमी भए
सो बानरवंशिनिके कुमार और उनके पक्षी देव सब भागे। ये दोनों यक्षेश्वर महावायु चलाय पाषाण
बरसावते भए अर प्रलय कालके मेघ समान गाजते भए। तिनके जांघोंकी पवनकर कपिदल सूके
पानकी न्याई उडे तत्काल भाग गए। तिनके लार ही ये दोनों यक्षेश्वर रामके निकट उलाहना देनेको
आए। सो पूर्णभद्र सुबुद्धि रामको स्तुति कर कहते भए राजा दशरथ महाधर्मात्मा तिनके तुम पुत्र अर
अयोग्य कार्यके त्यागी सदा योग्य कार्यनिके उद्यमी शास्त्र समुद्रके पारगामी शुभ गुणनिकर सकलविषै
ऊंच, तिहारी सेना लंकाके लोकनिको उपद्रव करै। यह कहांकी बात? जो जाका द्रव्य हरे सो ताका
प्राण हरे है यह धन जीवनिके वाह्य प्राण हैं। अमोलिक हीरे वैडूर्य मणि मूंगा मोती पद्मराग मणि
इत्यादि अनेक रत्ननिकर भरी लंका उद्वेगको प्राप्त करी। तब यह वचन पूर्णभद्रके सुन रामका सेवक गरु-

डकेतु कहिये लक्ष्मण नीलकमल समान, सो तेजसे विविधरूप वचन कहता भया—ये श्रीरघुचन्द्र तिनके राणी सीता प्राणहूतैं प्यारी शीलरूप आभूषणकी धरणहारी वह दुरात्मा रावण छलकर हर लेगया ताका पक्ष तुम कहा करो, हे यक्षेन्द्र ! हमने तिहारा कहा अपराध किया अर ताने कहा उपकार किया जो तुम भृकुटी बांकीकर अर सन्ध्याकी ललाई समान अरुण नेत्रकर उलहना देनेको आए सो योग्य नाहीं एती वार्ता लक्ष्मणने कही अर राजा सुग्रीव अति भयरूप होय पूर्णभद्रको अर्घ देय कहता भया—हे यक्षेन्द्र ! क्रोध तजो अर हम लंकाविषै कछु उपद्रव न करें परन्तु यह वार्ता है रावण बहुरूपिणी विद्या साधै है सो जो कदाचित् ताको विद्या सिद्ध होय तो वाके सन्मुख कोई ठहर न सकै जैसे जिनधर्मके पाठकके सन्मुख वादी न टिकै तातैं वह क्षमावन्त होय विद्या साधै है सो ताको क्रोध उपजावेंगे जो विद्या साध न सके जैसे मिथ्यादृष्टि मोक्षको साध न सके, तब पूर्णभद्र बोले—ऐसे ही करो परंतु लंकाके एक जीर्ण तृणको भी बाधा न करसकोगे अर तुम रावणके अंगको बाधा मत करो अर अन्य बातनिकर क्रोध उपजावो परन्तु रावण अतिदृढ है ताहि क्रोध उपजना कठिन है। ऐसैं कह वे दोनों यक्षेन्द्र भव्यजीवनि विषै है वात्सल्य जिनका, प्रसन्न हैं नेत्र जिनके मुनिनिके समूहोंके भक्त, वैयाव्रतविषै उद्यमी जिनधर्मी अपने स्थानक गए रामको उलहना देने आए थे सो लक्ष्मणके वचननिकर लज्जवान भए, समभावकर अपने स्थानक गए सो जाय तिष्ठे। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! जौंलग निर्दोषता होय तौंलग परस्पर अतिप्रीति होय अर सदोषता भए प्रीतिभंग होय जैसे सूर्य उत्पातसहित होय तो नीका न लगे॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणका विद्या साधना अर कपिकुमारनिका लंका गमन बहुरि पूर्णभद्र मणिभद्रका कोप, कोपकी शांति वर्णन करनेवाला सत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७० ॥

अथानन्तर पूर्णभद्र माणिभद्रको शांतभाव जान सुग्रीवका पुत्र अंगद ताने लंकाविषे प्रवेश किया
सो अंगद किहकंधकांड नामा हाथीपर चढा मोतिनिकी माला कर शोभित उज्ज्वल चमरनिकर युक्त
ऐसा सोहता भया जैसा मेघमालाविषैं पूर्णमासीका चन्द्रमा सोहै, अतिउदार महासामंत तथा स्कंध इन्द्र
नील आदि बडा ऋद्धिकर मंडित तुरंगनिपर चढे कुमार गमनको उद्यमी भए अर अनेक पयादे चन्दन
कर चर्चित हैं अंग ।जिनके तांबूलनिकर लाल अधर कांधे ऊपर खड्ग धरे सुन्दर वस्त्र पहिरे स्वर्णके
आभूषणकर शोभित सुन्दर चेष्टा धरे आगे पीछे अगल बगल पयादे चले जांय है वीण वांसुरी मृदंगादि
वादित्र बाजे हैं नृत्य होता जाय हैं कपिवंशियोंके कुमार लंकाविषे ऐसे गए जैसे स्वर्गपुरीविषे असुरकु-
मार प्रवेश करें, अंगदको लंकाविषे प्रवेश करता देख स्त्रीजन परस्पर वार्ता करती भई– देखो ! यह अंग-
दरूप चन्द्रमा दशमुखकी नगरीविषे निर्भय भया चला जाय है। याने कहा आरम्भा ? आगे अब कहा
होयगा ? या भांति लोक बात करें हैं । ये चले चले रावणके मंदिरविषे गए सो मणियोंका चौक देख
इन्होंने जानी ये सरोवर हैं सो त्रासको प्राप्त भए। बहुरि निश्चय देख मणियोंका चौक जाना तब आगे
गए सुमेरुकी गुफा समान महारत्ननिकर निर्मापित मंदिरका द्वार देखा मणियोंके तोरणनिकर देदीप्य-
मान तहां अंजन पर्वत सारिखे इन्द्रनीलमणिनिके गज देखे महास्कंध कुम्भस्थल जिनके स्थूल दंत अ-
त्यन्त मनोग्य अर तिनके मस्तकपर सिंहानिके चिन्ह जिनके सिरपर पूछ हाथियोंके कुम्भस्थलपर सिंह
विकराल वदन तीक्ष्ण दाढ डरावने केश तिनको देख पयादे डरे। जानिए सांचे ही हाथी हैं तब भयकर
भागे अतिविह्वल भए अंगदने नीके समझाए तब आगे चले । रावणके महलविषै कपिवंशी ऐसे जावें
जैसे सिंहकी गुफाविषे मृग जांय, अनेक द्वार उलंघ आगे जायवेको समर्थ भए, घरोंकी रचना गहन सो
ऐसे भटके जैसे जन्मका अन्धा भ्रमै, स्फटिकमणिके महिल तहां आकाशकी आशंकाकर भ्रमको प्राप्त

भए अर इन्द्र नीलमणिकी भीति सो अन्धकारस्वरूप भासै मस्तकविषै शिलाकी लागी सो आकुल होय भूमिमें पडे, वेदनाकर व्याकुल हैं नेत्र जिनके, काहू प्रकार मार्ग पायकर आगे गए जहां स्फटिक मणिकी भीति सो घनों के गोडे फूटे ललाट फूटे दुखी भए तब उलटे फिरे सो मार्ग न पावें आगे एक रत्नमई स्त्री देखी साक्षात् स्त्री जान तासे पूछते भए सो वह कहा कहै ? तब महाशंकाके भरे आगे गए विह्वल होय स्फटिक मणिकी भूमिमें पडे, आगे शांतिनाथके मंदिरका शिखर नजर आया परन्तु जाय सकें नाहीं स्फटिककी भीति आडा तब वह स्त्री दृष्टिपरी थी त्यों एक रत्नमई द्वारपाल दृष्टिपडा हेमरूप बैंतकी छडी जाके हाथमें ताहि कहा– श्रीशान्तिनाथके मन्दिरका मार्ग बताओ सो वह कहा बतावे ! तब वाहि हाथसूं कूटा सो कूटनहारेकी अंगुरी चूर्ण होय गई। बहुरि आगे गए, जाना यह इन्द्रनील-मणिका द्वार है, शान्तिनाथके चैत्यालयमें जानेकी बुद्धि करी, कुटिल हैं भाव जिनके आगे एक वचन बोलता मनुष्य देखा ताके केश पकडे अर कहा तू हमारे आगे आगे चल, शान्तिनाथका मन्दिर दिखाय जब वह अग्रगामी भया तब ये निराकुल भए श्रीशान्तिनाथके मन्दिर जाय पहुंचे । पुष्पांजलि चढाय जय जय शब्द किए स्फटिकके थम्भानिके ऊपर बडा विस्तार देखा सो आश्चर्यको प्राप्त भए मनमें विचा-रते भए जैसे चक्रवर्तीके मन्दिरमें जिनमन्दिर होय तैसे हैं। अंगद पहिलेही वाहनादिक तज भीतर गया ललाटपर दोनो हाथ धर नमस्कारकर तीन प्रदक्षिणा देय स्तोत्र पाठ करता भया, सेना लार थी सो बाहिरले चौकाविषैं छांडी। कैसा है अंगद ? फूल रहे हैं नेत्र जाके रत्नानिके चित्रामकर मंडल लिखा सोलह स्वप्नेका भाव देखकर नमस्कार किया, मंडपकी आदि भीतिविषै वह धीर भगवानको नमस्कार कर शांतिनाथके मंदिरविषै गया अति हर्षका भरा भगवानकी बंदना करता भया । बहुरि देखे तो सन्मुख रावण पद्मासन धरे तिष्ठे है, इंद्र नीलमणिकी किरणानिके समूह समान है प्रभा जाकी, भगवानके सन्मुख

कैसा बैठा है जैसे सूर्यके सन्मुख राहु बैठा होय । विद्याको ध्यावे जैसे भरत जिनदीक्षाको ध्यावे सो रावणको अंगद कहता भया—हे रावण ! कहो अब तेरी कहा बात ? तोसे ऐसी करूं जैसी यम न करै तैने कहा पाखंड रोपा ? भगवानके सन्मुख यह पाखंड कहा ? धिकार तुझे पापकर्मीने वृथा शुभक्रियाका आरंभ किया है ऐसा कहकर ताका उत्तरासन उतारचा अर याकी राणियोंको याके आगे कूटता भया, कठोर वचन कहता भया अर रावणके पास पुष्प पडे हुते सो उठाय लीये अर स्वर्णके कमलनिकर भगवानकी पूजा करी, बहुरि रावणसूं कुवचन कहता भया । अर रावणके हाथमेंसूं स्फटिककी माला छीन लई, सो मणियां बिखर गईं बहुरि माणियें चुन माला परोय रावणके हाथविषै दई बहुरि छिनाय लई बहुरि परोय गलेविषै डाली बहुरि मस्तकपर मेली बहुरि रावणका राजलोक सोई भया कमलनिका वन ताविषै ग्रीषम कर तप्तायमान जो वनका हाथी ताकी न्याईं प्रवेश किया अर निःशंक भया राजलोकमें उपद्रव करता भया जैसे चंचल घोडा कूदता फिरै तैसे चपलताकरि परिभ्रमण किया काहूके कंठविषै कपडेका रस्सा बनाय बांधा अर काहूके कंठविषै उत्तरासन डार थंभविषै बांध बहुरि छोड दिया काहूको पकड अपने मनुष्यनिसे कही याहि बेच आवो ताने हंसकर कही पांच दीनारानिको बेच आया । या भांति अनेक चेष्टा करी । काहूके काननिविषै घुंघुरू घाले अर केशनिविषै कटिमेखला पहिराई, काहूके मस्तकका चूडामणि उतार चरणनिविषै पहिराया अर काहूको परस्पर केशनिकर बांधी अर काहूके केशोंविषै शब्द करते मोर बैठाये । या भांति जैसे सांड गायोंके समूहविषै प्रवेश करै अर तिनको व्याकुल करै तैसे रावणके समीप सब राजलोकोंको क्लेश उपजाया अर अंगद क्रोधकर रावणसूं कहता भया—हे अधम राक्षस ! तैने कपट कर सीता हरी, अब हम तेरे देखते तेरी समस्त स्त्रीनिकूं हरे हैं तोमें शक्ति होय तो यत्न कर ऐसा कहकर याके आगे मंदोदरीको पकड ल्याया जैसे मृगराज मृगीको पकड ल्यावै, कंपाय-

मान हैं नेत्र जाके चोटी पकड रावणके निकट खींचता भया जैसे भरत राजलक्ष्मीको खींचे अर रावणसूं कहता भया-देख ! यह पटरानी तेरे जीवहूतैं प्यारी मंदोदरी गुणवंती ताहि हम हर ले जांय हैं । यह सुग्रीवके चमरग्राहिणी चेरी होयगी, सो मंदोदरी आंखनितैं आंसू डारती भई अर विलाप करने लगी। रावणके पायनविषै प्रवेश करे कभी भुजानिविषै प्रवेश करै अर भरतारसों कहती भई-हे नाथ ! मेरी रक्षा करहु । ऐसी दशा मेरी कहा न देखो हो, तुम क्या और ही होय गए। तुम रावण हो अक और ही हो । अहो जैसी निरग्रंथ मुनिकी वीतरागता होय तैसी तुम वीतरागता पकडी सो ऐसे दुःखमें यह अवस्था क्या ? धिकार तिहारे वलको जो या पापीका सिर खड्गसों न काटो । तुम महाबलवान चांद सूर्य समान पुरुषोंका पराभव न सहो सो ऐसे रंकका कैसे सहो। हे लंकेश्वर ! ध्यानविषै चित्त लगाया न काहूकी सुनो न देखो अर्धपर्यंकासन धर बैठे अहंकार तज दिया जैसा सुमेरुका शिखर अचल होय, तैसे अचल होय तिष्ठे सर्व इंद्रियनिकी क्रिया तजी विद्याके आराधनविषै तत्पर निश्चल शरीर महाधीर ऐसे तिष्ठे हो मानों काष्ठके हो अथवा चित्रामके हो, जैसे राम सीताको चिंतवें तैसे तुम विद्याको चिंतवो हो, स्थिरता कर सुमेरुके तुल्य भए हो । जब या भांति मंदोदरी रावणसे कहती भई ताही समय बहुरूपिणी विद्या दशोंदिशाविषै उद्योत करती जय जयकार शब्द उचारती रावणके समीप आय ठाढी भई अर कहती भई-हे देव ! आज्ञामें उद्यमी मैं तुमको सिद्ध भई मोहि आदेश देवहु । एक चक्री अर्धचक्रीको टार तिहारी आज्ञासे विमुख होय ताहि वश करूं या लोकविषै तिहारी आज्ञाकारिणी हूं । हम सारिखनिकी यही रीति है जो हम चक्रवर्तियोंसे समर्थ नाहीं जो तू कहे तो सर्व दैत्यनिको जीतूं, देवनिको वश करूं जो तोसे अप्रिय होय ताहि वशीभूत करूं अर विद्याधर तो मेरे तृण समान हैं। यह विद्याके वचन सुन रावण योग पूर्ण कर ज्योतिका धारक उदार चेष्टाका धरणहारा शांतिनाथके चैत्यालयकी

प्रदाक्षिणा करता भया। ताही समय अंगद मंदोदरीको छांड आकाश गमन कर रामके समीप आया। कैसा है अंगद? सूर्य समान है तेज जाका॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै श्रीशांतिनाथके मंदिरमें रावणको बहुरूपिणी विद्याको सिद्ध होनेका वर्णन करनेवाला इकहत्तरवां पर्व पूर्ण भया॥ ७१॥

अथानन्तर रावणकी अट्ठारह हजार स्त्री रावणके पास एक साथ सर्व ही रुदन करती भईं सुन्दर है दर्शन जिनका। हे स्वामिन्! सर्व विद्याधरनिके अधीश तुम हमारे प्रभु सो तुमको होते संते मूर्ख अंगदने आयकर हमारा अपमान किया। तुम परम तेजके धारक सूर्य समान सो ध्यानारूढ हुते अर विद्याधर आगिया समान, सो तिहारे मूंह आगिला छोहरा सुग्रीवका पुत्र पापी हमको उपद्रव करै। सुनकर तिनके वचन रावण सबकी दिलासा करता भया अर कहता भया—हे प्रिये! वह पापी ऐसी चेष्टा करै है सो मृत्युके पाशकर बंधा है। तुम दुख तजो जैसे सदा आनन्द रूप रहो हो ताही भांति रहो, मैं सुग्रीवको निग्रीव कहिए मस्तकरहित भूमिपर प्रभात ही करूंगा अर वे दोनों भाई राम लक्ष्मण भूमिगोचरी कीट समान हैं तिनपर कहा कोप, ये दुष्ट विद्याधर सब इनपै भेले भए हैं तिनका क्षय करूंगा, हे प्रिये! मेरी भौंह टेढी करनेही में शत्रु विलाय जांय अर अब तो बहुरूपिणी महाविद्या सिद्ध भई मोसे शत्रु कहीं न जीवें। या भांति सब स्त्रीनिको महा धीर्य बंधाय मनमें जानता भया मैं शत्रु हते। भगवानके मंदिरसे बाहिर निकसा नानाप्रकारके बादित्र बाजते भए, गीत नृत्य होते भए, रावणका अभिषेक भया, कामदेव समान है रूप जाका स्वर्ण रत्ननिके कलशनिकर स्त्री स्नान करावती भईं। कैसी हैं स्त्री? कांति रूप चांदनीसे मंडित है शरीर जिनका चंद्रमा समान वदन अर सुफेद मणिनिके कलशनिकर स्नान करावें

मानों सांझ फूल रही है।
सो अद्भुत ज्योति भासती भई अर कई एक स्त्री कमल समान कांतिको धरें मानों सांझ ही जल बरसे हैं अर कई
अर उगते सूर्य समान सुवर्णके कलश तिनकर स्नान करावें सो मानों साक्षात् लक्ष्मी ही
एक स्त्री हरित मणिके कलशनिकर स्नान करावती अतिहर्षकी भरी शोभें हैं मानों साक्षात् महासुगन्ध शरीर जिनपर
हैं। कमल पत्र हैं कलशनिके मुख पर, अर कैयक केलेके गोभ समान कोमल महासुगन्ध शरीर जिनपर रत्नजडित सिंहासन
भ्रमर गुंजार करे हैं वे नानाप्रकारके सुगन्ध उबटना कर रावणको नानाप्रकारके पूर्ण शांति-
पर स्नान करावती भईं। सो रावणने स्नानकर आभूषण पहिरे, महा सावधान भावनिकर करता भया
नाथके मंदिरमें गया। वहां अरहन्तदेवकी पूजा कर स्तुति करता भया, बारम्बार नमस्कार बहुरि भोजन
बहुरि भोजनशालामें आया, चार प्रकारका उत्तम आहार किया अशन पान खाद्य स्वाद्य नानाप्रकारके अद्-
कर विद्याकी परख निमित्त क्रीडा भूमिविषै गया, वहां विद्याकर अनेकरूप बनाय भूकम्प किया, रामके
भुत कर्म विद्याधरनिसे न बनें सो बहुरूपिणी विद्यासे कीए अपने हाथकी घात कर भूकम्प किया, रामके
कटकविषै कपियोंको ऐसा भय उपजा मानों मृत्यु आई अर रावणको मन्त्री कहते भए—हे नाथ ! तुम
टार राघवको जीतनहारा और नाहीं, राम महा योधा है और क्रोधवान होवे तब कहा कहना ? सो ताके
सन्मुख तुम ही आवो अर कोई रणविषै रामके सन्मुख आवनेको सामर्थ नाहीं।

अथानन्तर रावणने बहुरूपिणी विद्यासे मायामई कटक बनाया अर आप उद्यानविषै जहां सीता
तिष्ठे तहां गया मंत्रिनिकर मंडित जैसे देवनिकर संयुक्त इंद्र होय, सो सूर्य समान कांतिकर युक्त आ-
वता भया तब ताको आवता देख विद्याधरी सीतासों कहती भई— हे शुभे ! महा ज्योतिवन्त रावण पु-
ष्पक विमानसे उतरकर आया जैसे ग्रीषम ऋतुमें सूर्यकी किरणसे आतापको पाता गजेंद्र सरोवरीके ओर
आवे तैसे कामरूप अग्निसे तापरूप भया आवे है। यह प्रमद नामा उद्यान पुष्पनिकी शोभाकर शो-

भित जहां भ्रमर गुंजार करे हैं। तब सीता बहुरूपिणी विद्याकर संयुक्त रावणको देखकर भयभीत भई मनमें विचारै है याके बलका पार नाहीं सो राम लक्ष्मण हू याहि न जीतेंगे। मैं मन्दभागिनी रामको अथवा लक्ष्मणको अथवा अपने भाई भामण्डलको मत हना सुनूं। यह विचार कर व्याकुल है चित्त जाका कांपती चिन्तारूप तिष्ठै है वहां रावण आया सो कहता भया— हे देवी मैं पापीने कपट कर तुझे हरी सो यह बात क्षत्री कुलविषै उत्पन्न भए हैं जे धीर अतिवीर तिनको सर्वथा उचित नाहीं, परन्तु कर्म की गति ऐसी है मोहकर्म बलवान है अर मैं पूर्व अनंतवीर्यस्वामीके समीप व्रत लिया हुता जो परनारी मोहि न इच्छै ताहि मैं न ग्रहूं उर्वशी रंभा अथवा और मनोहर होय तो भी मेरे प्रयोजन नाहीं। यह प्रतिज्ञा पालते संते मैं तेरी कृपा ही की अभिलाषा करी परन्तु बलात्कार रमी नहीं। हे जगतविषै उत्तम सुन्दरी! अब मेरी भुजानिकर चलाए जे वाण तिनसे तेरे अवलम्बन राम लक्ष्मण भिदे ही जान अर तू मेरे संग पुष्पक विमानमें बैठ आनंदसे बिहार कर। सुमेरुके शिखर चैत्य वृक्ष अनेक वन उपवन नदी सरोवर अवलोकन करती विहार कर। तब सीता दोनों हाथ कानोंपर धर गद्गद वाणीसे दीन शब्द कहती भई—हे दशानन! तू बडे कुलविषै उपजा है तो यह करियो जो कदाचित् संग्रामविषै तेरे अर मेरे बल्लभके शस्त्रप्रहार होय तो पहले यह संदेशा कहे बगैर मेरे कंथको मत हतियो यह कहियो—हे पद्म! भामंडलकी बहिनने तुमको यह कहा है जो तिहारे वियोगतें महाशोकके भारकर महा दुःखी हूं मेरे प्राण तिहारे जीव ही तक हैं मेरी दशा यह भई है जैसे पवनकी हती दीपककी शिखा, हे राजा दशरथके पुत्र! जनककी पुत्रीने तुमको बारम्बार स्तुतिकर यह कही है तिहारे दर्शनकी अभिलाषाकर यह प्राण टिक रहे हैं, ऐसा कहकर मूर्छित होय भूमिमें पडी जैसे माते हाथीते भग्न करी कल्पवृक्षकी बेल गिर पडे, यह अवस्था महासतीकी देख रावणका मन कोमल भया परम दुःखी भया यह चिन्ता

करता भया अहो कर्मनिके योगकर इनका निःसंदेह स्नेह है इनके स्नेहका क्षय नाहीं अर धिक्कार मोको मैं अति अयोग्य कार्य किया जो ऐसे स्नेहवान युगलका वियोग किया, पापाचारी महानीच जन समान मैं निःकारण अपयशरूप मलसे लिप्त भया, शुद्धचन्द्रमा समान गोत्र हमारा, मैं मलिन किया। मेरे समान दुरात्मा मेरे बंशमें न भया ऐसा कार्य काहूने न किया सो मैंने किया। जे पुरुषोंमें इन्द्र हैं ते नारीको तुच्छ गिने हैं, यह स्त्री साक्षात् विषफल तुल्य है कलेशकी उत्पात्तिका स्थानक सर्पके मस्तककी मणि समान अर महा मोहका कारण प्रथम तो स्त्री मात्र ही निषिद्ध हैं अर परस्त्रीकी कहा बात ? सर्वथा त्याज्य ही है परस्त्री नदी समान कुटिल महा भयंकर धर्म अर्थका नाश करणहारी सदा सन्तोंको त्याज्य ही हैं। मैं महा पापकी खान अब तक यह सीता मुझे देवांगनासे भी अति प्रिय भासती थी सो अब विषके कुम्भ तुल्य भासै है यह तो केवल रामसूं अनुरागिनी है। अबलग यह न इच्छती थी परन्तु मेरे अभिलाषा थी अब जीर्ण तृणवत् भासै है। यह तो केवल रामसे तन्मय है मोसे कदाचित् न मिले, मेरा भाई महा पण्डित विभीषण सब जानता हुता सो मोहि बहुत समझाया मेरा मन विकारको प्राप्त भया सो न मानी तासे द्वेष किया। जब विभीषणके वचननिकर मैत्रीभाव करता तो नीके था अब महा युद्ध भया अनेक हते गए अब कैसी मित्रता ? यह मित्रता सुभटोंको योग्य नाहीं अर युद्ध करके बहुरि दया पालनी यह बने नाहीं, अहो मैं सामान्य मनुष्यकी नाई संकटमें पडा हूं जो कदाचित जानकी रामपै पठावों तो लोग मोहि असमर्थ जानें अर युद्ध करिये तो महा हिंसा होय, कोई ऐसे हैं जिनके दया नाहीं केवल क्रूरता रूप हैं, ते भी काल क्षेप करें हैं अर कई एक दयावान हैं संसार कार्यसे रहित हैं ते सुखसे जीवे हैं मैं मानी युद्धाभिलाषी अर कछु करुणाभाव नाहीं सो हम सारिखे महा दुखी हैं अर रामके सिंहबाहन अर लक्ष्मणके गरुडबाहन विद्या सो इनकर महा उद्योत है सो इनको शस्त्ररहित करूं अर जीवते पकडूं

बहुरि बहुत धन दूं अर सीता दूं तो मेरी बडी कीर्ति होय अर मोहि पाप न होय यह न्याय है। तातैं यहीं करूं ऐसा मन में धार महा विभवसंयुक्त रावण राजलोकविषै गया जैसे माता हाथी कमलनिके वनविषै जाय। बहुरि विचारी अंगदने बहुत अनीति करी या बाततें अति क्रोध किया अर लाल नेत्र होय आए रावण होंठ डसता वचन कहता भया—वह पापी सुग्रीव नाहीं दुर्ग्रीव है ताहि निग्रीव कहिये मस्तकरहित करूंगा ताके पुत्र अंगदसहित चन्द्रहास खड्ग कर दोय टूक करूंगा अर तमोमण्डलको लोग भामण्डल कहैं सो वह महा दुष्ट है ताहि दृढबंधनसे बांध लोहके मुगदरोंसे कूट मारूंगा अर हनू-मानको तीक्ष्ण करोंतकी धारसे काठके युगलमें बान्ध विहराऊंगा वह महा अनीति है एक राम न्याय-मार्गी है ताहि छांडूगा अर समस्त अन्यायमार्गी हैं तिनको शस्त्रनिकर चूर डारूंगा ऐसा विचार कर रावण तिष्ठा। अर उत्पात सैकडों होने लगे सूर्यका मण्डल आयुध समान तीक्ष्ण दृष्टि पडा अर पूर्ण-मासीका चन्द्रमा अस्त होय गया, आसन पर भूकम्प भया, दशों दिशा कम्पायमान भई, उल्कापात भए शृगाली (गीदडी) विरसशब्द बोलती भई, तुरंग नाड हिलाय विरस विरूप हींसते भए, हाथी रूक्ष शब्द करते भए, सूण्ड से धरती कूटते भए, यक्षनिकी मूर्तिके अश्रुपात पडे, वृक्ष मूलतें गिर पडे सूर्य के सन्मुख काग कटुक शब्द करते भए, ढीले पक्ष किए महा व्याकुल भए अर सरोवर जलकर भरे हुते शोषको प्राप्त भए अर गिरियोंके शिखर गिर पडे अर रुधिरकी वर्षा भई थोडेही दिनमें जानिए है लंके-श्वरकी मृत्यु होय ऐसे अपशकुन और प्रकार नाहीं जब पुण्यक्षीण होय तब इंद्र भी न बचें पुरुषमें पौरष पुण्यके उदय कर होय है जो कछू प्राप्त होना होय सोई पाईये है, हीन अधिक नाहीं। प्राणियोंके शूर-वीरता सुकृतके बल कर है।

देखो, रावण नीति शस्त्रकेविषैं प्रवीण समस्त लौकिक नीति रीति जानै व्याकरणका पाठी महा

गुणानिकरमंडित सो कर्मनिकर प्रेरा संता अनीति मार्गको प्राप्त भया मूढबुद्धि भया लोकविषै मरण उपरांत कोई दुःख नाहीं सो याको अत्यन्त गर्वकर विचार नाहीं नक्षत्रानिके बलकर रहित अर ग्रह सब ही क्रूर आए सो यह अविवेकी रण क्षेत्रका अभिलाषी होता भया प्रतापके भंगका है भय जाको अर महा शूर वीरताके रससे युक्त यद्यपि अनेक शास्त्रनिका अभ्यास किया है तथापि युक्त अयुक्तको न देखै। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकतैं कहे हैं—हे मगधाधिपति! रावण महामानी अपने मनविषै विचारे है सो सुन—सुग्रीव भामण्डलादिक समस्तको जीत अर कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनादको छुडाय लंकामें लाऊंगा बहुरि वानरवंशिनिका वंश नाश अर भामण्डलका पराभव करूंगा अर भूमिगोचरिनिको भूमिविषै न रहने दूंगा अर शुद्ध विद्याधरनिको धराविषै थापूंगा तब तीन लोकके नाथ तीर्थंकर देव अर चक्रा-युध बलभद्र नारायण हम सारिषे विद्याधरनिके कुलहीविषै उपजेंगे ऐसा वृथा विचार करता भया। हे मगधेश्वर! जा मनुष्यने जैसे संचित कर्म किए होंय तैसा ही फल भोगवे। ऐसें न होय तो शास्त्रोंके पाठी कैसे भूलें। शास्त्र हैं सो सूर्य समान हैं ताके प्रकाश होते अन्धकार कैसे रहै परन्तु जे घूघू समान मनुष्य हैं तिनको प्रकाश न होय॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणके युद्धका निश्चय कथन वर्णन करनेवाला बहत्तरवा पर्व पूर्ण भया॥ ७२॥

अथानन्तर दूजे दिन प्रभातही रावण महादेदीप्यमान आस्थान मंडपविषै तिष्ठा। सूर्यके उदय होते हुए सभाविषै कुवेर वरुण ईशान यम सोम समान जे बडे २ राजा तिनकर सेवनीक जैसे देवनिकर मंडित इंद्र विराजे तैसे राजानिकर मंडित सिंहासन पर विराजा। परम कांतिको धरे जैसे ग्रह तारा नक्षत्र-

निकर युक्त चन्द्रमा सोहै अत्यंत तैसे सुगंध मनोग्य वस्त्र पुष्पमाला अर महामनोहर गज मोतीनिके हार तिनसे शोभै है उरस्थल जाका, महा सौभाग्यरूप सौम्यदर्शन सभाको देखकर चिंता करता भया जो भाई कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनाद यहां नाहीं दीखे हैं सो उन विना यह सभा सोहै नाहीं और पुरुष कुमुदरूप बहुत हैं पर वे पुरुष कमलरूप नाहीं, सो यद्यपि रावण महारूपवान सुंदर वदन है अर फूल रहे हैं नेत्र कमल जाके, महा मनोग्य तथापि पुत्र भाईकी चिंतासे कुमलाया वदन नजर आवता भया अर महा क्रोधस्वरूप कुटिल है भृकुटी जाकी मानों क्रोधका भरा आशीविष सर्प ही है महा भयंकर होठ डसे महा विकराल स्वरूप मंत्री देखकर डरे आज ऐसा कौनसे कोप भया यह व्याकुलता भई। तब हाथ जोड सीस भूमिमें लगाय राजा मय उग्र शुक लोकाक्ष सारण इत्यादि धरतीकी ओर निरषते चलायमान हैं कुण्डल जिनके विनती करते भए—हे नाथ! तिहारे निकटवर्ती योधा सबही यह प्रार्थना करै हैं प्रसन्न होहु अर कैलाशके शिखर तुल्य ऊंचे महल जिनके मणियोंकी भीति मणियोंके झरोखा तिनमें तिष्ठती भ्रमररूप हैं नेत्र जिनके ऐसा सब राणियों सहित मंदोदरी सो याहि देखती भई। कैसा देखा? लाल हैं नेत्र जाके प्रतापका भरा ताहि देखकर मोहित भया है मन जाका, रावण उठकर आयुधशालामें गया। कैसी है आयुधशाला? अनेक दिव्य शस्त्र अर सामान्य शस्त्र तिनसे भरी अमोघबाण अर चक्रादिक अमोघ रत्न कर भरी जैसे वज्रशालामें इन्द्र जाय। जा समय रावण आयुधशालामें गया ता समय अपश-कुन भए प्रथम ही छींक भई सो शकुनशास्त्रविषै पूर्वदिशाको छींक होय तो मृत्यु अर अग्निकोणविषै शोक दक्षिणमें हानि नैऋतमें शुभ पश्चिमाविषै मिष्ट आहार वायुकोणमें सर्व संपदा उत्तरविषै कलह ई-शानविषै धनागम आकाशविषै सर्वसंहार पातालविषै सर्व संपदा ये दशों दिशाविषै छींकके फल कहे। सो रावणको मृत्युकी छींक भई बहुरि आगे मार्ग रोके महा नाग निरखा अर हा शब्द ही शब्द धिक्

शब्द कहां जाय है यह वचन होते भए अर पवनकर छत्रके वैडूर्य मणिका दण्ड भग्न भया अर उत्तरासन गिर पडा काग दाहिना बोला इत्यादि और भी अपशकुन भए ते युद्धतैं निवारते भए वचनकर कर्मकर निवारते भए। जे नाना प्रकारके शकुन शास्त्रविषै प्रवीण पुरुष हुते वे अत्यन्त आकुल भए अर मंदोदरी शुकसारण इत्यादि बडे २ मंत्रियोंसे कहती भई—तुम स्वामीको कल्याणकी बात क्यों न कहो हो? अब तक कहा अपनी अर उनकी चेष्टा न देखी। कुम्भकर्ण इंद्रजीत मेघनादसे बंधनमें आए, वे लोकपाल समान महा तेजके धारक अद्भुत कार्यके करणहारे। तब नमस्कारकर मंत्री मंदोदरीसे कहते भए हे स्वामिनी! रावण महामानी यमराजसा क्रूर आप ही आप प्रधान है ऐसा या लोकविषै कोई नाहीं जाके वचन रावण मानै जो कुछ होनहार है ता प्रमाण बुद्धि उपजै है बुद्धि कर्मानुसारणी है सो इंद्रादिककर तथा देवोंके समूह कर और भांति न होय संपूर्ण न्यायशास्त्र अर धर्मशास्त्र तिहारा पति सब जानै है परन्तु मोह कर उन्मत्त भया है। हम बहुत प्रकार कहा सो काहू प्रकार मानै नाहीं, जो हठ पकडा है सो छांडे नाहीं, जैसे वर्षाकालके समागमविषै महा प्रवाहकर संयुक्त जो नदी ताका तिरना कठिन है तैसे कर्मनिका प्रेरा जो जीव ताका संबोधना कठिन है यद्यपि स्वामीका स्वभाव दुर्निवार है तथापि तिहारा कहा करे तो करै तातैं तुम हितकी बात कहो यामें दोष नाहीं। यह मंत्रिनिने कही तब पटराणी साक्षात् लक्ष्मी समान निर्मल है चित्त जाका सो कम्पायमान पतिके समीप जायवेको उद्यमी भई। महा निर्मल जल समान वस्त्र पहिरे जैसे रति कामके समीप जाय तैसे चली सिरपर छत्र फिरै हैं अनेक सहेली चमर ढोरे हैं जैसे अनेक देवानिकर युक्त इन्द्राणी इन्द्रपै जाय तैसे यह सुन्दरवदनकी धरणहारी पतिपै गई निश्वास नाखती पांय डिगते शिथिल होय गई है कटि मेखला जाकी भरतारके कार्यविषै सावधान अनुरागकी भरी, ताहि स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई, आपका चित्त शस्त्रनिविषै अर वक्तरविषै तिनको आदरसे

स्पर्शे है सो मंदोदरीसे कहते भए— हे मनोहरे हंसनी समान चालकी चलनहारी हे देवी ! ऐसा कहा प्रयोजन है जो तुम शीघ्रतासे आवोहो। हे प्रिये ! मेरा मन काहेको हरो हो, जैसे स्वप्नविषै निधान। तब वह पतिव्रता पूर्ण चन्द्रमासमान है वदन जाका फूले कमलसे नेत्र स्वतः उत्तम चेष्टाकी धरणहारी मनोहर जे कटाक्ष वेई भए बाण सो पतिकी ओर चलावनहारी, महा विचक्षण मदनका निवास है अंग जाका महामधुर शब्दकी बोलनहारी स्वर्णके कुम्भसमान हैं स्तन जाके तिनके भारकर नयगया है उदर जाका दाडिमके बीज समान दांत मूंगासमान लालअधर अत्यन्त सुकुमार अति सुन्दरी भरतारकी कृपाभूमि सो नाथको प्रणामकर कहती भई—हे देव ! मोहि भर्तारकी भीख देवो आप महादयावन्त धर्मात्माओंसे अधिक स्नेहवन्त मैं तिहारे वियोगरूप नदीविषै डूबूहूं सो महाराज मोहि निकासो। कैसी है नदी ? दुःखरूप जलकी भरी संकल्प विकलपरूप लहरकर पूर्ण है, हे महाबुद्धे ! कुटुम्बरूप आकाशविषै सूर्यसमान प्रकाशके कर्ता एक मेरी विनती सुनो तिहारा कुलरूप कमलोंका वन महाविस्तीर्ण प्रलय हुआ जाय है सो क्यों न राखो। हे प्रभो ! तुम मोहि पटराणीका पद दिया हुता सो मेरे कठोर वचनोंको क्षमा करो, जे अपने हितू हैं तिनका वचन औषध समान ग्राह्य है परिणाम सुखदाई विरोधरहित स्वभावरूप आनन्दकारी है मैं यह कहू हूं तुम काहेको संदेहकी तुला चढो हो। यह तुला चढिवेकी नाहीं, काहेको आप संताप करो हो अर हम सबनिको संतापरूप करो हो, अब हू कहा गया ? तिहारा सब राज तुम सकल पृथिवीके स्वामी अर तिहारे भाई पुत्रनिको बुलाय लेहु तुम अपना चित्त कुमार्गतें निवारो अपना मन वश करो तिहारा मनोरथ अत्यन्त अकार्यविषै प्रवरता है सो इंद्रियरूप चरल तुरंगोंको विवेक रूप दृढ लगामकर वश करो इंद्रियनिके अर्थ कुमार्गविषै मनको कौन प्राप्त करे तुम अपवादका देनहारा जो उद्यम ता विषै कहा प्रवर्तो हो जैसे अष्टापद अपनी छाया कूपविषै देख क्रोधकर कूपविषै पडे तैसे तुम

आप ही क्लेश उपजाय आपदामें पडो हो, यह क्लेशका कारण जो अपयशरूप वृक्ष ताहि तज कर सुखसे तिष्ठो केलिके थंभ समान असार यह विषय ताहि कहा चाहो हो, यह तिहारा कुल समुद्रसमान गंभीर प्रशंसा योग्य ताहि शोभित करो यह भूमि गोचरोंकी स्त्री बडे कुलवन्तानिको अग्निकी शिखा समान है ताहि तजो। हे स्वामी ! जे सामंत सामंतसों युद्ध करे हैं वे मनविषै यह निश्चय करे हैं हम मरेंगे। हे नाथ ! तुम कौन अर्थ मरो हो पराई नारी ताके अर्थ कहा मरणा ? या मारिवेविषै यश नाहीं अर उनको मारो तिहारी जीत होय तोहू यश नाहीं क्षत्री मरे हैं यशके अर्थ तातैं सीतासम्बन्धी हठको छांडो अर जे बडे २ व्रत हैं तिनकी महिमा तो कहा कहीं एक यह परदार परित्याग ही पुरुषके होय तो दोऊ जन्म सुधरें शीलवन्त पुरुष भवसागर तिरें जो सर्वथा स्त्रीका त्याग करे सो तो अतिश्रेष्ठ ही है काजल समान कालिमाकी उपजावनहारी यह परनारी तिनविषै जे लोलुपी तिनविषै मेरु समान गुण होय तोहू तृण समान लघु होय जांय। जो चक्रवर्तीका पुत्र होय अर देव जाका पक्ष होय अर परस्त्री के संगरूप कीचविषै डूबे तो महा अपयशको प्राप्त होय जो मूढमति परस्त्रीसे रति करे है सो पापी आशीविष भुजंगनीसे रमै है, तिहारा कुल अत्यन्त निर्मल सो अपयशकर मलिन मत करो, दुर्बुद्धि तजो, जे महाबलवान हुते अर दूसरोंको निर्बल जानते अर्ककीर्ति अशनघोषादिक अनेक नाशको प्राप्त हुए। सो हे सुमुख ! तुम कहा न सुने। ये वचन मंदोदरीके सुन रावण कमलनयन कारी घटा समान है वर्ण जाका मलयागिरचन्दन कर लिप्त मंदोदरीसे कहता भया— हे कांते ! तू काहेको कायर भई मैं अर्ककीर्ति नाहीं जो जयकुमारसे हारा अर मैं अशनघोष नाहीं जो अमिततेजसे हारा अर और हू नाहीं मैं दशमुख हूं तू काहेको कायरताकी बात कहे है मैं शत्रुरूपवृक्षानिके समूहको दावानलरूप हूं। सीता कदाचित् न दूं, हे मंदमानसे तू भय मत करे या कथा कर तोहि कहा ? तोकों सीताकी रक्षा सौंपी है सो रक्षा भली भांति

कर अर जो रक्षा करिवेको समर्थ नाहीं तो शीघ्र मोहि सौंप देवो, तब मंदोदरी कहती भई तुम उससे रतिसुख बांछो हो तातैं यह कहो हो, मोहि सौंप देवो सो यह निर्लज्जताकी बात कुलवन्तोंको उचित नाहीं, बहुरि कहती भई तुमने सीताका कहा माहात्म्य देखा जो ताहि बारंबार बांछो हो वह ऐसी गुणवन्ती नाहीं ज्ञाता नाहीं, रूपवंतियोंका तिलक नाहीं, कलाविषै प्रवीण नाहीं, मनमोहनी नाहीं पतिके छांदे चलनेवारी नाहीं ता सहित रतिविषै बुद्धि करो हो, सो हे कंत ! यह कहा वार्ता, अपनी लघुता होय है सो तुम नाहीं जानो हो, मैं अपने मुख अपनी प्रशंसा कहा करूं अपने मुख अपने गुण कहे गुणोंकी गौणता होय है अर पराए मुख सुने प्रशंसा होय है तातैं मैं कहा कहूं तुम सब नीके जानो हो, विचारी सीता कहा ? लक्ष्मी भी मेरे तुल्य नाहीं तातैं सीताकी अभिलाषा तजो मेरा निरादर कर तुम भूमिगोचरिणीको इच्छो हो, सो मंदमति हो जैसे बालबुद्धि वैडूर्य मणिको तज अर कांचको इच्छे ताका कछू दिव्य रूप नाहीं तिहारे मनविषै कथा रुची यह ग्राम्यजनकी नारी समान अल्पमति ताकी कहा अभिलाषा अर मोहि आज्ञा देवो सोई रूप धरूं, तिहारे चित्तकी हरणहारी मैं लक्ष्मीका रूप धरूं अर आज्ञा करो तो शची इन्द्राणीका रूप धरूं कहो तो रतिका रूप धरूं । हे देव ! तुम इच्छा करो सोई रूप करूं, यह वार्ता मंदोदरीकी सुन रावणने नीचा मुख किया अर लज्जावान भया । बहुरि मंदोदरी कहती भई—तुम परस्त्री आसक्त होय अपनी आत्मा लघु किया विषयरूप आमिषकी आसक्ती है जाके सो पापका भाजन है धिकार है ऐसी क्षुद्र चेष्टाको ।

यह बचन सुन रावण मंदोदरी से कहता भया हे—चन्द्रबदनी ! कमललोचने ! तुम यह कही जो कहो जैसा रूप बहुरि धरूं सो औरोंके रूपसे तिहारा रूप कहा घटती है तिहारा स्वतः ही रूप मोहि अति वल्लभ है हे उत्तमे मेरे अन्य स्त्रीनि कर कहा ? तब हर्षितचित्त होय कहती भई—हे देव ! सूर्य

को दीपका उद्योत कहा दिखाइये, मैं जो हितके वचन आपको कहे सो औरौको पूंछ देखो मैं स्त्री हूं मेरेमें ऐसी बुद्धि नाहीं शास्त्रमें यह कही है जो घनी सबही नय जाने हैं परन्तु दैव योग थकी प्रमादरूप भया होय तो जे हितु हैं ते समझावें जैसे विष्णुकुमार स्वामीको विक्रियाऋद्धिका विस्मरण भया तो औरों के कहे कर जाना, यह पुरुष यह स्त्री ऐसा विकल्प मन्दबुद्धिनिके होय है जे बुद्धिमान हैं हितकारी वचन सबहीका मान लेंय, आपका कृपाभाव मो ऊपर है तो मैं कहूं हूं तुम परस्त्रीका प्रेम तजो, मैं जानकीको लेकर राम पै जाऊं अर रामको तिहारे पास ल्याऊं, अर कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनादको लाऊं अनेक जीवनिकी हिंसा कर कहा? ऐसे वचन मन्दोदरीने कहे तब रावण अतिक्रोधकर कहता भया शीघ्रही जावो जावो जहां तेरा मुख न देखूं तहां जावो अहो तू आपको वृथा पंडित माने है आपकी ऊंचता तज परपक्षकी प्रशंसामें प्रवरती, तू दीनचित्त है योधावोंकी माता तेरे इन्द्रजीत मेघनाद कैसे पुत्र अर मेरी पटराणी राजा मयकी पुत्री तोमें एती कायरता कहांसे आई? ऐसा कहा तब मन्दोदरी बोली—हे पति! सुनो जो ज्ञानियोंके मुख बलभद्र नारायण प्रतिनारायणका जन्म सुनिये है पहिला बलभद्र विजय नारायण त्रिपृष्ठ, प्रतिनारायण अश्वग्रीव, दूजा बलभद्र अचल नारायण द्विपृष्ठ प्रतिहरि तारक इसभांति अबतक सात बलभद्र नारायण हो चुके सो इनके शत्रु प्रतिनारायण इन्होंने हते अब तुम्हारे समय यह बलभद्र नारायण भए हैं अर तुम प्रतिवासुदेव हो आगे प्रतिवासुदेव हठ कर हते गए तैसे तुम नाशको इच्छो हो जे बुद्धिमान् हैं तिनको यही कार्य करणा जो या लोक परलोकमें सुख होय अर दुःखके अंकुरकी उत्पत्ति न होय सो करनी यह जीव चिरकाल विषयसे तृप्त न भया तीन लोकविषै ऐसा कौन है जो विषयोंसे तृप्त होय तुम पापकर मोहित भए हो सो वृथा है अर उचित तो यह है तुमने बहुतकाल भोग किए अब मुनिव्रत धरो अथवा श्रावकके व्रतधर दुखोंका नाश करो अणुव्रत रूप खड्गकर दीप्त है अंग जाका नियम

रूप क्षत्रकर शोभित सम्यक् दर्शनरूप बक्तर पहिरे शीलरूप ध्वजा कर शोभित अनित्यादि बारह भावना तेई चन्दन तिनकर चर्चित है अंग जाका अर ज्ञानरूप धनुषको धरे वश किया है इंद्रियनिका बल जाने, शुभध्यान अर प्रतापकर युक्त मर्यादारूप अंकुशकर संयुक्त निश्चलरूप हाथीपर चढा जिन-भक्ति की है महाभक्ति जाके दुर्गतिरूप कुनदी सो महा कुटिल पापरूप है वेग जाका अतिदुःसह सो पंडितनिकर तिरिये है, ताहि तिरकर सुखी होवो अर हिमवान सुमेरु पर्वतविषै जिनालयको पूजते संते मेरे सहित ढाई द्वीपमें विहार कर अष्टादश सहस्र स्त्रीनिके हस्त कमल पल्लव तिनकर लडाया संता सुमेरु पर्वतके बनविषै क्रीडा कर, अर गंगाके तट पर क्रीडा कर अर और भी मनवांछित प्रदेशनिविषै रमणीक क्षेत्रनिविषै हे नरेन्द्र ! सुखसे विहार कर। या युद्ध कर कछू प्रयोजन नाहीं, प्रसन्न होवो, मेरा वचन सर्वथा सुखका कारण है यह लोकापवाद मत करावो । अपयशरूपसमुद्रमें काहेको डूबो हो, यह अपवाद विषतुल्य महानिन्द्य परम अनर्थका कारण भला नाहीं, दुर्जन लोक सहज ही परनिन्दा करैं सो ऐसी बात सुनकर तो करे ही करैं, या भांतिके शुभ वचन कह यह महासती हाथ जोड पतिका परम हित वांछती पतिके पायन पडी ।

तब रावण मन्दोदरीको उठायकर कहता भया—तू निःकारण क्यों भयको प्राप्त भई । हे सुन्दरवदनी ! मोसे अधिक या संसारविषै कोई नाहीं तू स्त्रीपर्यायके स्वभावकर वृथा काहेको भय करै है । तैने कही जो यह बलदेव नारायण हैं सो नाम नारायण अर नाम बलदेव भया तो कहा ? नाम भए कार्यकी सिद्धि नाहीं. नाम नाहर भया तो कहा ? नाहरके पराक्रम भए नाहर होय, कोई मनुष्य सिद्ध नाम कहाया तो कहा सिद्ध भया ? हे कांते ! तू कहा कायरताकी वार्ता करै, रथनूपुरका राजा इन्द्र कहावता सो कहा इन्द्र भया ? तैसे यह भी नारायण नाहीं, या भांति रावण प्रतिनारायण ऐसे प्रबल वचन स्त्रीको कह महा

प्रतापी क्रीडाभवनविषै मन्दोदरी सहित गया जैसे इन्द्र इन्द्राणीसहित क्रीडागृहविषै जाय सांझके समय सांझ फूली सूर्य अस्त समय किरण संकोचने लगा जैसे संयमी कषायोंको संकोचे सूर्य आसक्त होय अस्तको प्राप्त भया, कमल मुद्रित भए, चकवा चकवी वियोगके भयकर दीन वचन रटते भए, मानों सूर्यको बुलावै हैं, अर सूर्यके अस्त होयवेकर ग्रह नक्षत्रनिकी सेना आकाशविषै विस्तरी मानों चन्द्रमाने पठाई रात्रिके समय रत्नद्वीपोंका उद्योत भया दीपोंकी प्रभाकर लंका नगरी ऐसी शोभती भई मानों सुमेरुकी शिखा ही है कोऊ बल्लभा वल्लभसे मिलकर ऐसे कहती भई एक रात्रि तो तुम सहित व्यतीत करेंगे वहुरि देखिए कहा होय ? अर कोई एक प्रिया नानाप्रकारके पुष्पानिकी सुगन्धताके मकरंदकर उन्मत्त भई स्वामीके अंग विषै मानों महा कोमल पुष्पनिकी वृष्टि ही पडी। कोई नारी कमल तुल्य हैं चरण जाके अर कठिन हैं कुच जाके महा सुन्दर शरीरकी धरणहारी सुन्दरपतिके समीप गई अर कोई सुन्दरी आभूषणनिको पहरती ऐसी शोभती भई मानों स्वर्ण रत्नोंको कृतार्थ करै है। भावार्थ— ता समान ज्योति रत्न स्वर्णनिविषै नाहीं रात्रि समय विद्याकर विद्याधर मन वांछित क्रीडा करते भए घर घरविषै भोग भूमिकासी रचना होती भई, महा सुन्दर गीत अर वीण बांसुरियोंका शब्द तिनकर लंका हर्षित भई मानों वचनालाप ही करै है अर ताम्बूल सुगन्ध माल्यादिक भोग अर स्त्री आदि उपभोग सो भोगोपभोगनिकर लोग देवनिकी न्याई रमते भए अर कैएक उन्मत्त भई स्त्रियोंको नाना प्रकार रमावते भए अर कइयक नारी अपने वदनकी प्रतिविम्ब रत्ननिकी भीतिविषै देखकर जानती भई कि कोई दूजी स्त्री मन्दिरमें आई है सो ईर्षाकर नील कमलसे पतिको ताडना करती भई स्त्रीनिके मुखकी सुगंधताकर सुगंध होय गया अर वर्फके योगकर नारिनिके नेत्र लाल होय गए अर कोईयक नायिका नवोढा हुती अर प्रीतमने अमल खवाय उन्मत्त करी सो मन्मथ कर्मविषै प्रवीण प्रौढाके भावको प्राप्त भई लज्जारूप सखीको दूर-

कर उन्मत्ततारूप सखीने क्रीडाविषै अत्यंत तत्पर करी अर घूमें हैं नेत्र जाके अर स्खलित हैं वचन जाके स्त्री पुरुषनिकी चेष्टा उन्मत्तताकर विकटरूप होती भई। नरनारिनिके अधर मूंगा समान शोभायमान दीखते भए नर नारी मदोन्मत्त भए सो न कहनेकी बात कहते भये अर न करनेकी बात करते भये, लज्जा छुटगई, चंद्रमाके उदयकर मदनकी वृद्धि भई ऐसा ही तो इनका यौवन ऐसेही सुंदर मंदिर अर ऐसा ही अमलका जोर सो सब ही उन्मत्त चेष्टाका कारण आय प्राप्त भया ऐसी निशाविषै प्रभातविषै होनहार है युद्ध जिनके सो संभोगका योग उत्सवरूप होता भया अर राक्षसनिका इंद्र सुंदर है चेष्टा जाकी सो समस्त ही राजलोकको रमावता भया बारम्बार मन्दोदरीसे स्नेह जनावता भया। याका बदन रूप चन्द्र निरखते रावणके लोचन तृप्त न भये, मंदोदरी रावणसे कहती भई—मैं एक क्षणमात्र हू तुमको न तजूंगी। हे मनोहर ! सदा तिहारे संग ही रहूंगी जैसे बेल बाहुबालिके सर्व अंगसे लगी तैसे रहूंगी, आप युद्धविषै विजयकर वेग ही आवो, मैं रत्ननिको चूर्णकर चौक पूरूंगी अर तिहारे अर्घपाद्य करूंगी प्रभुकी महामख पूजा कराऊंगी, प्रेमकर कायर है चित्त जाका अत्यंत प्रेमके वचन कहते निशा व्यतीत भई अर कूकडा बोले नक्षत्रानिकी ज्योति मिटी संध्या लाल भई अर भगवानके चैत्यालयानिविषै महा मनोहर गीतध्वनि होती भई अर सूर्य लोकका लोचन उदयको सन्मुख भया अपनी किरणनिकर सर्व दिशाविषै उद्योत करता संता प्रलय कालके अग्नि मण्डल समान है आकार जाका प्रभात समय भया तब सब राणी पतिको छोडती उदास भई, तब रावणने सबको दिलासा करी, गम्भीर वादित्र बाजे, शंखोंके शब्द भए रावणकी आज्ञाकर जे युद्धविषै विचक्षण हैं महाभट महा अहंकारको धरते परम उद्धत अतिहर्षके भरे नगरसे निकसे, तुरंग हस्ती रथोंपर चढे खड्ग धनुष गदा वरछी इत्यादि अनेक आयुधनिको धरे, जिनपर चमर ढुरते छत्र फिरते महा शोभायमान देवनि जैसे स्वरूपवान् महा प्रतापी विद्याधरनिके अधि-

पति योधा शीघ्र कार्यके करणहारे श्रेष्ठ ऋद्धिके धारक युद्धको उद्यमी भए। ता दिन नगरकी स्त्री कमल-नयनी करुणाभावकर दुखरूप होती भई सो तिनको निरखे दुर्जनका चित्त भी दयाल होय, कोई यक सुभट घरसे युद्धको निकसा अर स्त्री लार लगी आवै है ताहि कहता भया—हे मुग्धे ! घर जावो हम सुखसे जाय हैं अर कोई एक स्त्री भरतार चले हैं तिनको पीछेसे जाय कहती भई हे कन्त ! तिहारा उत्तरासन लेवो तब पति सन्मुख होय लेते भए। कैसी है मृगनयनी ? पतिके मुख देखवेकी है लालसा जाके अर कोई एक प्राणवल्लभा पतिको दृष्टिसे अगोचर होते संते सखियों सहित मूर्च्छा खाय पडी अर कोई एक पतिसूं पाछी आय मौन गह सेजपर पडी मानों काठकी पुतली ही है अर कोईयक शूरवीर श्रावकके व्रतका धारक पीठ पीछे अपनी स्त्रीको देखता भया अर आगे देवांगनाओंको देखता भया॥ भावार्थ—जे सामन्त अणुव्रतके धारक हैं वे देवलोकके अधिकारी हैं। अर जे सामन्त पहिले पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सौम्यवदन हुते वे युद्धके आगमनविषै कालसमान क्रूर आकार होय गए सिरपर टोप धरे वक्तर पहिरें शस्त्र लीए तेज भासते भए।

अथानन्तर चतुरंग सेनासंयुक्त धनुष छत्रादिक कर पूर्ण मारीच महा तेजको धरे युद्धका अभिलाषी आय प्राप्त भया फिर विमलचन्द्र आया महा धनुषधारी और सुनन्द आनन्द नन्द इत्यादि हजारों राजा आए सो विद्या कर निरमापित दिव्यरथ तिनपर चढे अग्नि कैसी प्रभा को धरे मानों अग्निकुमारदेव ही हैं कैयक तीक्ष्ण शस्त्रों कर सम्पूर्ण हिमवान पर्वत समान जे हाथी उनकर सब दिशावोंको आच्छादते हुए आए जैसे बिजुरीसे संयुक्त मेघमाला आवै और कैयक श्रेष्ठ तुरंगों पर चढे पांचों हथियारों कर संयुक्त शीघ्रही ज्योतिष लोकको उलंघ आवते भए नाना प्रकारके बडे बडे बादित्र और तुरंगोंका हीसना गजोंका गर्जना पयादोंके शब्द योधानिके सिंहनाद वन्दीजनोंके जय जय

कैयक के आंतानिके ढेर हो गये तथापि खेद न मानते भए शत्रुनि पर जाय पडे अर शत्रुसहित आप प्राणान्त भए, डसे हैं होंठ जिन्होंने । जे राजकुमार देव कुमार सारिखे सुकुमार रत्ननिके महिलोंके शिखर विषै क्रीडा करते महा भोगी पुरुष स्त्रीनिके स्तनकर रमाये संते वे खड्ग चक्र कनक इत्यादि आयुधनिकर विदारे संते संग्रामकी भूमिविषै पडे, विरूप आकार तिनको गृध्र पक्षी अर स्याल भषे हैं अर जैसे रंग महिलमें रंगकी भरी रामा नखोंकर चिन्ह करतीं अर निकट आवतीं तैसे स्यालनी नख दंतनिकर चिन्ह करे हैं अर समीप आवै हैं बहुरि श्वासके प्रकाश कर जीवते जान वे डर जांय हैं जैसे डाकनी मंत्रवादीसे दूर जांय अर सामंतानिको जीवते जान यक्षिणी डर कर उड जाती भई जैसे दुष्ट नारी चलायमान हैं नेत्र जिसके पतिके समीपसे जाती रहे जीवोंके शुभाशुभ प्रकृतिका उदय युद्धविषै लखिये है दोनों बराबर अर कोईकी हार होय कोईकी जीत होय अर कबहूं अल्प सेनाका स्वामी महा सेनाके स्वामी को जीते अर कोई एक सुकृतके सामर्थ्यसे बहुतोंको जीते अर कोई बहुत भी पापके उदयसे हार जाय जिन जीवोंने पूर्व भवविषै तप किया वे राज्यके अधिकारी होय विजयको पावें हैं अर जिन्होंने तप न किया अथवा तप भंग किया तिनकी हार होय है, गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! यह धर्म मर्मकी रक्षा करे है अर दुर्जयको जीते है धर्मही बडा सहाई है बडा पक्ष धर्मका है धर्म सब ठौर रक्षा करै हैं घोडोंकर युक्त रथ पर्वत समान हाथी पवन समान तुरंग असुर कुमारसे पयादे इत्यादि सामग्री पूर्ण हैं परन्तु पूर्वपुण्यके उदय विना कोई राखवे समर्थ नाहीं एक पुण्याधिकारीही शत्रुवोंको जीते हैं, इस भांति राम रावणके युद्धकी प्रवृत्तिविषै योधावोंकर योधा हते गए तिनकर रण खेत भर गया अवकाश नाहीं आयुधोंकर योधा उछले हैं परै हैं सो आकाश ऐसा दृष्टि पडता भया मानों उत्पातके बादलोंकर मंडित है ।

शब्द और गुणी जनों के गीत वीर रसके भरे इत्यादि और भी अनेक शब्द भले भए धरती आकाश शब्दायमान भए जैसे प्रलय कालके मेघपटल होवें तैसे निकसे मनुष्य हाथी घोडे रथ पियादे परस्पर अत्यंत विभूति कर देदीप्यमान बडी भुजानिसे बखतर पहिरे उतंग हैं उरस्थल जिनके विजयके अभिलाषी और पयादे खड्ग सम्हालें हैं. महा चंचल आगे २ चले जाय हैं स्वामीके हर्ष उपजावनहारे तिनके समूहकर आकाश पृथ्वी और सर्व दिशा व्याप्त भई, ऐसे उपाय करते भी या जीवके पूर्व कर्मका जैसा उदय है तैसा ही होय है, यह प्राणी अनेक चेष्टा करे है परन्तु अन्यथा न होय जैसा भवितव्य है तैसा ही होय सूर्य्य हू और प्रकार करने समर्थ नाहीं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रावणका युद्धविषै उद्यमी होनेका वर्णन करनेवाला तिहत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७३ ॥

अथानन्तर लंकेश्वर मंदोदरीसूं कहता भया—हे प्रिये ! न जानिये बहुरि तिहारा दर्शन होय वा न होय तब मंदोदरी कहती भई—हे नाथ ! सदा वृद्धिको प्राप्त होवो, शत्रुवोंको जीत शीघ्र ही आय हमको देखोगे अर संग्रामसे जीते आओगे ऐसा कहा अर हजारा स्त्रियोंकर अवलोका संता राक्षसोंका नाथ मंदिरसे बाहिर गया महा विकटताको धरे विद्याकर निरमापा ऐंद्रीनामा रथ ताहि देखता भया जाके हजार हाथी जुपे मानों कारी घटाका मेघ ही है ते हाथी मदोन्मत्त झरे है मद जिनके, मोतियोंकी माला तिनकर पूर्ण महा घटाके नादकर युक्त ऐरावतसमान नानाप्रकारके रंगोंसे शोभित जिनका जीतना कठिन अर विनयके धाम अत्यन्त गर्जनाकर शोभित ऐसे सोहते भए मानों कारी घटाके समूह ही हैं मनोहर है प्रभा जिनकी ऐसे हाथियोंके रथ चढा रावण सोहता भया भुजबन्ध कर शोभायमान हैं भुजा

अथानन्तर मारीच चन्द्रनिकर बज्राक्ष शुकसारण और भी राक्षसोंके अधीश तिन्होंने रामका कटक दवाया तब हनूमान चन्द्रमारीच नील मुकुंद भूतस्वन इत्यादि रामपक्षके योधा तिन्होंने राक्षसनिकी सेना दबाई तब रावणके योधा कुंद कुम्भ निकुम्भ बिक्रम क्रमाण जंबूमाली काकबली सूर्यार मकरध्वज अशनिरथ इत्यादि राक्षसनिके बडे बडे राजा शीघ्रही युद्धको उठे तब भूधर अचल सम्मेद निकाल कुटिल अंगद सुखेण कालचन्द्र उर्मितरंग इत्यादि बानरवंशी योधा तिनके संमुख भए उनही समान तासमय कोई सुभट प्रतिपक्षी सुभट विना दृष्टि न पडा। भावार्थ—दोनों पक्षके योधा परस्पर महा युद्ध करते भए अर अंजनीका पुत्र हाथिनिके रथ पर चढकर रणमें क्रीडा करता भया जैसे कमलनिकर भरे सरोवरमें महागज क्रीडा करे। गौतमगणधर कहे हैं—हे श्रेणिक! वा हनूमान शूरबीरने राक्षसनिकी बडी सेना चलायमान करी उसे रुचा जो किया तब राजा मय विद्याधर दैत्यवंशी मन्दोदरीका बाप क्रोधके प्रसंगकर लाल हैं नेत्र जाके सो हनूमानके सन्मुख आया तब वह हनूमान कमल समान हैं नेत्र जाके बाणवृष्टि करता भया सो मयका रथ चकचूर किया तब वह दूजे रथ चढकर युद्धको उद्यमी भया तब हनूमानने बहुरि रथ तोड डाला तब मयको विह्वल देख रावणने बहुरूपिणी विद्या कर प्रज्वलित उत्तमरथ शीघ्रही भेजा सो राजा मयने वा रथपर चढकर हनूमानसे युद्ध किया अर हनूमानका रथ तोडा तब हनूमानको दबा देख भामंडल मदद आया सो मयने बाण वर्षाकर भामंडलका भी रथ तोडा तब राजा सुग्रीव इनके मदद आए सो मयने ताको शस्त्ररहित किया अर भूमिमें डारा तब इनकी मदद बिभीषण आया सो विभीषणके अर मयके अत्यन्त युद्ध भया परस्पर बाण चले सो मयने बिभीषणका बषतर तोडा सो अशोकवृक्षके पुष्प समान लाल होय तैसी लालरूप रुधिर की धारा विभीषणके पडी तब बानरवंशियोंकी सेना चलायमान भई अर राम युद्धको उद्यमी भए, विद्यामई सिंहनिके रथ चढे

शीघ्रही मय पर आए अर बानरबंशिनिको कहते भए तुम भय मत करो। रावणकी सेना विजुरी सहित कारी घटा समान तामें उगते सूर्य समान श्रीराम प्रवेश करते भए अर परसेनाका विध्वंस करनेको उद्यमी भए तब हनूमान भामंडल सुग्रीव विभीषणको धीर्य उपजा अर बानरवंशिनिकी सेना युद्ध करनेको उद्यमी भई। रामका बल पाय रामके सेवकनिका भय मिटा परस्पर दोनों सेनाके योधानिविषै शस्त्रोंका प्रहार भया, सो देख देख देव आश्चर्यकूं प्राप्त भए अर दोनों सेनाविषै अंधकार होय गया प्रकाशरहित लोक दृष्टि न पडें, श्रीराम राजा मयको बाणनिकर अत्यंत आच्छादते भए, थोडे ही खेद कर मयको विह्वल किया, जैसे इंद्र चमरेंद्रको करे तब रामके बाणोंकर मयको विह्वल देख, रावण काल समान क्रोधकर राम पर धाया तब लक्ष्मण रामकी ओर रावणको आवता देख महातेज कर कहता भया—हो विद्याधर! तू किधर जाय है मैं तोहि आज देखा, खडा रहो। हे रंक! पापी चोर परस्त्रीरूप दीपकके पतंग अधमपुरुष दुराचारी आज मैं तोसों ऐसी करूं जैसी काल न करै, हे कुमानुष! श्रीराघवदेव समस्त पृथिवीके पति तिन्होंने मोहि आज्ञा करी है जो या चोरकूं सजा देहु तब दशमुख महाक्रोधकर लक्ष्मणसे कहता भया—रे मूढ! तैंने कहा लोकप्रसिद्ध मेरा प्रताप न सुना? या पृथिवीविषै जे सुखकारी सार वस्तु हैं सो सब मेरी ही हैं मैं राजा पृथिवीपति जो उत्कृष्ट वस्तु सो मेरी, घंटा गजके कंठविषै सोहै स्वानके न सोहै है तैसे योग्य वस्तु मेरे घर सोहै औरके नाहीं। तू मनुष्यमात्र वृथा विलाप करै तेरी कहा शक्ति? तू दीन मेरे समान नाहीं मैं रंकसे क्या युद्ध करूं तू अशुभके उदयसे मोसे युद्ध किया चाहे है सो जीवनेसे उदास भया है, मूवा चाहे है। तब लक्ष्मण बोले तू जैसा पृथिवीपति है तैसा मैं नीके जानूं हूं। आज तेरा गाजना पूर्ण करूं हूं। जब ऐसा लक्ष्मणने कहा तब रावणने अपने बाण लक्ष्मणपर चलाए, अर लक्ष्मणने रावणपर चलाए, जैसे वर्षाका मेघ जलवृष्टिकर गिरिको आच्छादित करे, तैसे

बाणवृष्टिकर वाने वाको बेध्या अर वाने वाको बेध्या सो रावणके वाण लक्ष्मणने वज्रदंडकर बीचही तोड डारे, आप तक आवने न दिए, वाणोंके समूह छेद भेद तोडे फोडे चूरकर डारे, सो धरती आकाश वाण खंडनिकर भर गए, लक्ष्मणने रावणको सामान्य शस्त्रनिकर विह्वल किया तब रावणने जानी यह सामान्य शस्त्रनिकर जीता न जाय तब लक्ष्मण पर रावणने मेघवाण चलाया सो धरती आकाश जलरूप होय गए तब लक्ष्मणने पवनवाण चलाया क्षणमात्रमें मेघवाण विलय किया, बहुरि दशमुखने अग्निबाण चलाया सो दशों दिशा प्रज्वलित भई तब लक्ष्मणने वरुणशस्त्र चलाया सो एक निमिषमें अग्निबाण नाशको प्राप्त भया बहुरि लक्ष्मणने पापबाण चलाया सो धर्मवाणकर रावणने निवारा बहुरि लक्ष्मणने इंधनवाण चलाया सो रावणने अग्निवाण कर भस्म किया बहुरि लक्ष्मणने तिमिरवाण चलाया सो अंधकार होय गया आकाश वृक्षनिके समूहकर आच्छादित भया। कैसे हैं वृक्ष? आसार फलनिको बरसावें हैं आसार पुष्पनिके पटल छाय गए तब रावणने सूर्यबाण कर तिमिरवाण निवारा अर लक्ष्मण पर नागबाण चलाया अनेक नाग चले बिकराल हैं फण जिनके, तब लक्ष्मणने गरुडबाणकर नागबाण निवारा, गरुडकी पाखोंकर आकाश स्वर्णकी प्रभारूप प्रतिभासता भया, बहुरि रामके भाईने रावण पर सर्पबाण चलाया प्रलयकालके मेघ समान है शब्द जाका अर विषरूप अग्निके कणनिकर महाविषम तब रावणने मयूरबाणकर सर्पबाण निवारा अर लक्ष्मण पर विघ्नबाण चलाया सो विघ्नवाण दुर्निवार ताका उपाय सिद्धबाण सो लक्ष्मणको याद न आया तब वज्रदंड आदि अनेक शस्त्र चलाए। रावण हू सामान्य शस्त्रनिकर युद्ध करता भया, दोनों योधानिमें समान युद्ध भया जैसा त्रिपृष्ठ अर अश्वग्रीवके युद्ध भया हुता, तैसा लक्ष्मण रावणके भया। जैसा पूर्वोपार्जित कर्मका उदय होय तैसा ही फल होय,

तैसी क्रिया कर जे महा क्रोध के वश हैं अर जो कार्य आरंभा ता विषै उद्यमी हैं ते नर तीव्र, शस्त्र को न गिने अर अग्निको न गिने सूर्यको न गिने वायुको न गिनें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै रावण लक्ष्मणका युद्ध वर्णन करनेवाला चौहत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७४ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं— हे भव्योत्तम ! दोनों ही सेनाविषै तृषावंतोंको शीतल मिष्ट जल प्याइये है अर क्षुधावन्तोंको अमृत समान आहार दीजिए है अर खेदवन्तोंको मलयागिरि चन्दनसे छिडकिये है, ताडवृक्षके बीजनेसे पवन करिए है, बरफके बारिसे छांटिये है तथा और हू उपचार अनेक कीजिए है, अपना पराया कोई होऊ सबके यत्न कीजिए है यही संग्रामकी रीति है। दश दिन युद्ध करते भए दोऊ ही महावीर अभंगचित्त रावण लक्ष्मण दोनों समान जैसा वह तैसा वह सो यक्ष गंधर्व किन्नर अप्सरा आश्चर्यको प्राप्त भए अर दोऊनिका यश करते भए दोऊनिपर पुष्प वर्षा करी अर एक चन्द्रवर्धन नामा विद्याधर ताकी आठ पुत्री सो आकाशविषै विमानविषै बैठी देख तिनको कौतूहलसे अप्सरा पूछती भई—तुम देवियो सारिखी कौन हो ? तिहारी लक्ष्मणविषै विशेष भक्ति दीखै है अर तुम सुन्दर सुकुमार शरीर हो तब वे लज्जासहित कहती भई तुमको कौतूहल है तो सुनो, जब सीताका स्वयंम्बर हुआ तब हमारा पिता हम सहित तहां आया था तहां लक्ष्मणको देख हमको देनी करी अर हमारा भी मन लक्ष्मणविषै मोहित भया, सो अब यह संग्रामविषै वर्ते है, न जानिए कहा होय ? यह मनुष्यनिविषै चन्द्रमा समान प्राणनाथ है जो याकी दशा सो हमारी ऐसे इनके मनोहर शब्द सुनकर लक्ष्मण ऊपरको चौंके, तब वे आठो ही कन्या इनके देखवेकर परम हर्षको प्राप्त भई अर कहती

भई—हे नाथ! सर्वथा तिहारा कार्य सिद्ध होहु तब लक्ष्मणको विघ्नबाणका उपाय सिद्धबाण याद आया, अर प्रसन्न बदन भया सिद्धबाण चलाय विघ्नबाण विलय किया अर आप महाप्रतापरूप युद्धको उद्यमी भया जो जो शस्त्र रावण चलावे सो सो रामका वीर महा धीर शस्त्रनिविषै प्रवीण छेद डारे, अर आप बाणनिके समूहकर सब दिशा पूर्ण करी जैसे मेघपटल कर पर्वत आच्छादित होय रावण बहुरूपिणी विद्याके बल कर रणक्रीडा करता भया। लक्ष्मणने रावणका एक सीस छेदा, तब दोय सीस भए दोय छेदे तब चार भए अर दोय भुजा छेदी तब चार भई अर चार छेदी तब आठ भई या भांति ज्यों ज्यों छेदी त्यों त्यों दुगुनी भई अर सीस दुगुणे भए हजारों सिर अर हजारों भुजा भई रावणके कर हाथीके सूंड समान भुज बन्धन कर शोभित अर सिर मुकुटोंकर मंडित तिनकर रणछेत्र पूर्ण किया मानों रावण रूप समुद्र महा भयंकर ताके हजारों सिर वेई भए ग्राह अर हजारों भुजा वेई भई तरंग तिनकर बढता भया अर रावणरूप मेघ जाके बाहुरूप विजुरी अर प्रचण्ड हैं शब्द अर सिर ही भए शिखर तिन कर सोहता भया। रावण अकेला ही महासेना समान भया अनेक मस्तक तिनके समूह जिन पर छत्र फिरें मानों यह विचार लक्ष्मणने याहि बहुरूप किया जो आगे मैं अकेले अनेकनिसूं युद्ध किया अब या अकेलेसे कहा युद्ध करूं तातैं याहि बहुशरीर किया रावण प्रज्वलित वनसमान भासता भया रत्ननिके आभूषण अर शस्त्रनिकी किरणनिके समूहकर प्रदीप्त रावण लक्ष्मणको हजारों भुजानिकर बाण शक्ति खड्ग बरछी सामान्य चक्र इत्यादि शस्त्रनिकी वर्षाकर आच्छादता भया सो सब बाण लक्ष्मणने छेदे अर महाक्रोध रूप होय सूर्य समान तेज रूप बाणनिकर रावणके आच्छादनेकों उद्यमी भया एक दोय तीन चार पांच छह दस बीस शत सहस्र मयामई रावणके सिर लक्ष्मणने छेदे हजारों सिर भुजा भूमिविषै पड़े सो रणभूमि उनकर आच्छादित भई ऐसी सोहे मानों सर्पनिके फणनि सहित कमलनिके बन हैं, भु-

जोंसहित सिर पडे वे उल्कापातसे भासें जेते रावणके बहुरूपिणी विद्या कर सिर अर भुज भए तेते सब सुमित्राके पुत्र लक्ष्मणने छेदे, जैसे महामुनि कर्मनिके समूहको छेदे, रुधिरकी धारा निरन्तर पडी तिनकर आकाशविषे मानों सांझ फूली, दोय भुजाका धारक लक्ष्मण ताने रावणकी असंख्यात भुजा विफल करीं, कैसे हैं लक्ष्मण ? महा प्रभावकर युक्त है। रावण पसेवके समूह कर भर गया है अंग जाका स्वास कर संयुक्त है मुख जाका यद्यपि महाबलवान हुता तथापि व्याकुलचित्त भया। गौतमस्वामी कहे हैं हे श्रेणिक ! बहुरूपिणी विद्याके बलकर रावणने महा भयंकर युद्ध किया, पर लक्ष्मणके आगे बहुरूपिणी विद्याका बल न चला तब रावण मायाचार तज सहज रूप होय क्रोधका भरा युद्ध करता भया अनेक दिव्यशस्त्रनिकर अर सामान्य शस्त्रनिकर युद्ध किया परन्तु वासुदेवको जीत न सका। तब प्रलय कालके सूर्य समान है प्रभा जाकी परपक्षका क्षय करणहारा जो चक्ररत्न ताहि चितवता भया। कैसा है चक्ररत्न ? अप्रमाण प्रभावके समूहको धरे मोतिनिकी झालरियोंकर मंडित महा देदीप्यमान दिव्य वज्रमई महा अद्भुत नाना प्रकारके रत्ननिकर मंडित है अंग जाका दिव्यमाला अर सुगन्धकर लिप्त अग्निके समूह तुल्य धारानिके समूहकर महा प्रकाशवन्त वैडूर्य मणिके सहस्र आरे तिनकर युक्त जिसका दर्शन सहा न जाय, सदा हजार यक्ष जाकी रक्षा करें महा क्रोधका भरा जैसा कालका मुख होय ता समान वह चक्र चितवते ही कराविषे आया, जाकी ज्योति कर जोतिष देवोंकी प्रभा मन्द होय गई अर सूर्यकी कांति ऐसी होय गई मानों चित्रामका सूर्य है अर अप्सरा विश्वासु तुंवरु नारद इत्यादि गंधर्वनिके भेद आकाशविषे रणका कौतुक देखते हुते सो भयकर परे गए, अर लक्ष्मण अत्यन्त धीर शत्रुको चक्र संयुक्त देख कहता भया, हे अधम नर ! याहि कहा लेरहा है जैसे कृपण कौडीको लेरहे तेरी शक्ति है तो प्रहार कर, ऐसा कहा तब वह महा क्रोधायमान होय दांतानिकर डसे हैं होंठ जाने लाल हैं

नेत्र जाके चक्रको फेर लक्ष्मणपर चलाया। कैसा है चक्र ? मेघ मंडल समान है शब्द जाका अर महा शीघ्रताको लिए प्रलयकालके सूर्य समान मनुष्यनिको जीतव्यका संशयका कारण ताहि सन्मुख आवता देख लक्ष्मण वज्रमई है मुख जिनका ऐसे बाणनिकर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भया और श्रीराम वज्रावर्त धनुष चढाय अमोघ बाणनिकर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भए अर हल मूशलनको भ्रमावते चक्रके सन्मुख भए अर सुग्रीव गदाको फिराय चक्रके सन्मुख भए अर भामंडल खडगको लेकर निवारिवेको उद्यमी भए अर विभीषण त्रिशूल ले ठाढे भए अर हनूमान मुद्गर लांगूल कनकादि लेकर उद्यमी भए, अर अंगद परम नामा शस्त्र लेकर ठाढे भए अर अंगदका भाई अंग कुठार लेकर महा तेज रूप खडे भए और हू दूसरे श्रेष्ठ विद्याधर अनेक आयुधनिकर युक्त सब एक होय कर जीवनेकी आशा तज चक्रके निवारिवेको उद्यमी भए परन्तु चक्रकों निवार न सके। कैसा है चक्र ? देव करे हैं सेवा जाकी ताने आयकर लक्ष्मणको तीन प्रदक्षिणा देय अपना स्वरूप विनयरूप कर लक्ष्मणके करविषै तिष्ठा, सुखदाई शान्त है आकार जाका। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे मगधाधिपति ! राम लक्ष्मणका महाऋद्धिको धरे यह माहात्म्य तोहि संक्षेपसे कहा। कैसा है इनका माहात्म्य ? जाहि सुने परम आश्चर्य उपजे अर लोकविषै श्रेष्ठ है कैएकके पुण्यके उदयकर परम विभूति होय है अर कैएक पुण्यके क्षयकर नाश होय हैं जैसे सूर्यका अस्त होय है चन्द्रमाका उदय होय है तैसे लक्ष्मणके पुण्यका उदय जानना ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके चक्ररत्नकी उत्पत्ति वर्णन करनेवाला पचहत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७५ ॥

अथानन्तर लक्ष्मणके हाथविषै महासुन्दर चक्ररत्न आया देख सुग्रीव भामण्डलादि विद्याधरानिके अधिपति अति हर्षित भए अर परस्पर कहते भए—आगे भगवान अनन्तवीर्य केवलीने आज्ञा करी जो लक्ष्मण आठवां वासुदेव है अर राम आठवां वलदेव है सो यह महाज्योति चक्रपाणि भया अति उत्तम शरीरका धारक याके वलका कौन वर्णन करसके, अर यह श्रीराम वलदेव जाके रथको महातेजवंत सिंह चलावें जाने राजा मयको पकडा अर हल मूसल महा रत्न देदीप्यमान जाके करविषै सोहैं । ये वलभद्र नारायण दोऊ भाई पुरुषोत्तम प्रगट भये पुण्यके प्रभावकर परमप्रेमके भरे लक्ष्मणके हाथविषै सुदर्शन चक्रको देख राक्षसनिका अधिपति चित्तविषै चितारे है जो भगवान अनन्तवीर्यने आज्ञा करी हुती सोई भई । निश्चय सेती कर्मरूप पवनका प्रेरा यह समय आया, जाका छत्र देख विद्याधर डरते अर महासेना परकी भाग जाती परसेनाकी ध्वजा अर छत्र मेरे प्रतापसे वहे वहे फिरते अर हिमाचल विंध्याचल हैं स्तन जाके, समुद्र है वस्त्र जाके ऐसी यह पृथिवी मेरी दासी समान आज्ञाकारिणी हुती ऐसा मैं रावण सो रणविषै भूमिगोचरीनिने जीत्या यह अद्भुत वात है कष्टकी अवस्था आय प्राप्त भई, धिकार या राज्य लक्ष्मीको कुलटा स्त्री समान है चेष्टा जाकी पूज्य पुरुष या पापनीको तत्काल तजें यह इन्द्रियनिके भोग इन्द्रायणके फल समान इनका परिपाक विरस है अनन्त दुःख सम्वन्धके कारण साधुनिकर निन्द्य हैं, पृथिवीविषै उत्तम पुरुष भरत चक्रवर्त्यादि भये ते धन्य हैं जिन्होंने निःकंटक छहखंड पृथिवीका राज्य किया अर विषके मिले अन्नकी न्याईं राज्यको तज जिनेन्द्र व्रत धार रत्नत्रयको आराधन कर परम पदको प्राप्त भए, मैं रंक विषयाभिलाषी मोह वलवानने मोहि जीत्या यह मोह संसार भ्रमणका कारण धिकार मोहि जो मोहके वश होय ऐसी चेष्टा करी । रावण तो यह चिंतवन करे है अर आया है चक्र जाके ऐसा जो लक्ष्मण महा तेजका धारक सो विभीषणकी ओर निरख रावणसे कहता भया—हे विद्याधर ! अब हू कछु

न गया है जानकीको लाय श्रीरामदेवको सोंपदे अर यह वचन कह कि श्रीरामके प्रसादकर जीवूं हूं हमको तेरा कछु चाहिये नाहीं, तेरी राज्य लक्ष्मी तेरे ही रहो तब रावण मंदहास्यकर कहता भया—हे रंक! तेरे वृथा गर्व उपजा है अवार ही अपने पराक्रम तोहि दिखावूं हूं। हे अधमनर! मैं तोहि जो अवस्था दिखाऊं सो भोग, मैं रावण पृथ्वीपति विद्याधर तू भूमिगोचरी रंक, तब लक्ष्मण बोले बहुत कहिवे कर कहा? नारायण सर्वथा तेरा मारणहारा उपजा। तब रावणने कहा इच्छा मात्रही नारायण हूजिये है तो जो तू चाहे सो क्यों न हो, इन्द्र हो, तू कुपुत्र पिताने देशसे बाहिर किया महा दुखी दलिद्री बनचारी भिखारी निर्लज्ज तेरी वासुदेव पदवी हमने जानी तेरे मनविषै मत्सर है सो मैं तेरे मनोरथ भंग करूंगा यह घेघली समान चक्र है ता कर तू गर्वा है सो रंकोंकी यही रीति है खालिका टूक पाय मनविषै उत्सव करैं, बहुत कहिवे कर कहा? ये पापी विद्याधर तोसूं मिले हैं तिन सहित अर या चक्रसहित वाहन सहित तेरा नाशकर तोहि पातालको प्राप्त करूंगा, ये रावणके वचन सुनकर लक्ष्मणने कोपकर चक्रको भ्रमाय रावणपर चलाया वज्रपातके शब्द समान भयंकर है शब्द जाका अर प्रलयकालके सूर्य समान तेजको धरे चक्र रावणपर आया तब रावण बाणनिकर चक्रके निवारवेको उद्यमी भया बहुरि प्रचंड दण्ड कर अर शीघ्रगामी वज्र बाणकर चक्रके निवारवेका यत्न किया तथापि रावणका पुण्य क्षीण भया सो चक्र न रुका नजीक आया तब रावण चन्द्रहास खड्ग लेकर चक्रके समीप आया चक्रके खड्गकी दई सो अग्निके कणनिकर आकाश प्रज्वलित भया खडगका जोर चक्रपर न चला, सन्मुख तिष्ठता जो रावण महाशूरवीर राक्षसनिका इंद्र ताका चक्रने उरस्थल भेदा सो पुण्य क्षयकर अंजनगिरि समान रावण भूमिविषै पडा, मानों स्वर्गसे देव चया, अथवा रतिका पति पृथिवीविषै पडा ऐसा सोहता भया मानों वीररसका स्वरूप ही है, चढ रही है भौंह जाकी डसे हैं होठ जाने स्वामीको पडा देख स-

मुद्र समान था शब्द जाका ऐसी सेना भागिवेको उद्यमी भई ध्वजा छत्र वहे वहे फिरे समस्त लोक रावण के विह्वल भए विलाप करते भागे जाय हैं कोई कहे हैं रथको दूरकर मार्ग देहु पीछेसे हाथी आवे है कोई कहे हैं विमानको एक तरफकर अर पृथिवीका पति पडा अनर्थ भया महा भयकर कम्पायमान वह ता पर पडे वह ता पर पडे तब सबको शरणरहित देख भामण्डल सुग्रीव हनूमान रामकी आज्ञासे कहते भए भय मत करो भय मत करो धीर्य बंधाया अर वस्त्र फेर्‍या काहूको भय नाहीं तब अमृत समान कानोंको प्रिय ऐसे बचन सुन सेनाको विश्वास उपजा। यह कथा गौतम गणधर राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे राजन्! रावण ऐसा महा विभूतिको भोगे समुद्र पर्यन्त पृथिवीका राजकर पुण्य पूर्ण भए अन्त दशाको प्राप्त भया। तातैं ऐसी लक्ष्मीको धिक्कार है यह राज्यलक्ष्मी महा चंचल पापका स्वरूप सुकृतके समागमके आशाकर वर्जित ऐसा मनविषै विचार कर हो बुद्धिजन हो तप ही है धन जिनके ऐसे मुनि होवो। कैसे हैं मुनि? तपोधन सूर्यसे अधिक है तेज जिनका मोह तिमिरको हरे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै रावणका बध वर्णन करनेवाला छिहत्तरवा पर्व पूर्ण भया॥ ७६॥

अथानन्तर विभीषणने बडे भाईको पडा देख महा दुःखका भरा अपने घातके अर्थ छुरीविषै हाथ लगाया सो याकों मरणकी करणहारी मूर्छा आयगई चेष्टाकर रहित शरीर हो गया बहुरि सचेत होय महादाहका भरा मारनेको उद्यमी भया तब श्रीरामने रथसे उतर हाथ पकडकर उरसे लगाया धीर्य बंधाया फिर मूर्छा खाय पडा अचेत होय गया श्रीरामने सचेत किया तब सचेत होय विलाप करता भया जिसका विलाप सुन करुणा उपजे, हाय भाई उदार क्रियावन्त सामंतोंके पति महाशूरवीर रणधीर शर-

णागतपालक महामनोहर ऐसी अवस्थाको क्यों प्राप्त भए मैं हितके वचन कहे सो क्यों न माने यह क्या अवस्था भई जो मैं तुमको चक्रके विदारे पृथिवीविषै परे देखूं हूं देव विद्याधरोंके महेश्वर हे लंकेश्वर! भोगोंके भोक्ता पृथ्वीविषै कहा पौढे ? महाभोगोंकर लडाया है शरीर जिनका यह सेज आपके शयन करने योग्य नाहीं, हे नाथ ! उठो सुन्दर वचनके वक्ता मैं तुम्हारा बालक मुझे कृपाके वचन कहो, हे गुणाकर कृपाधार मैं शोकके समुद्रविषै डूबूं हूं सो मुझे हस्तालम्बन कर क्यों न निकालो इस भांति विभीषण विलाप करे है डार दिये हैं शस्त्र अर बक्तर भूमिविषै जाने ॥

अथानन्तर रावणके मरणके समाचार रणवासविषै पहुंचे सो राणियां सब अश्रुपातकी धाराकर पृथिवी तलको सींचती भईं अर सर्व ही अन्तःपुर शोककर व्याकुल भया सकल राणि रणभूमिविषै आईं गिरती पडती गिरती पडती डिगे हैं चरण जिनके वे नारी पतिको चेतनारहित देख शीघ्रही पृथिवी विषै पडीं । कैसा है पति पृथिवीकी चूडामणि है । मंदोदरी, रंभा, चन्द्रानना, चन्द्रमण्डला, प्रवरा उर्वशी महादेवी, सुंदरी, कमलानना. रूपिणी, रुक्मिणी, शीला, रत्नमाला, तनूदरी, श्रीकांता, श्रीमती, भद्रा, कनकप्रभा, मृगवती, श्रीमाला, मानवी, लक्ष्मी, आनंदा, अनंगसुदरी, वसुंधरा, तडिन्माला, पद्मा, पद्मावती, सुखादेवी, कांति, प्रीति, संध्यावली, सुभा, प्रभावती, मनोवेगा, रतिकांता, मनोवती, इत्यादि अष्टादशसहस्र राणी अपने २ परिवारसहित अर सखिनिसहित महाशोककी भरी रुदन करती भईं कैयक मोहकी भरी मूर्छाको प्राप्त भईं सो चन्दनके जलकर छांटी कुमलाई कमलिनी समान भासती भईं कैयक पतिके अंगसे अत्यन्त लिपटकर परी अंजनगिरिसों लगी संध्याकी द्युतिको धरती भईं, कैयक मूर्च्छासे सचेत होय उरस्थल कूटती भईं पतिके समीप मानों मेघके निकट विजुरी ही चमके है, कैयक पतिका वदन अपने अंगविषै लेयकर विह्वल होय मूर्छाको प्राप्त भईं, कोईयक विलाप करे है हाय नाथ !

में तिहारे विरहसे आतिकायर मोहि तजकर तुम कहां गए तिहारे जन दुःखसागरविषै डूबे हैं सो क्यों न देखो, तुम महा बली महा सुन्दर परम ज्योतिके धारक विभूति कर इंद्र समान मानों भरतक्षेत्रके भूपति पुरुषोत्तम महाराजनिके राजा मनोरम विद्याधरानिके महेश्वर कौन अर्थ पृथिवीमें पौढे। उठो, हे कांत! करुणानिधे स्वजनवत्सल! एक अमृत समान वचन हमसे कहो, हे प्राणेश्वर प्राणवल्लभ! हम अपराध रहित तुमसे अनुरक्त चित्त हमपर तुम क्यों कोप भए हमसे बोलो ही नाहीं जैसे पहिले परिहास कथा करते तैसे क्यों न करो तिहारा मुखरूपी चन्द्र कांतिरूप चांदनी कर मनोहर प्रसन्नतारूप जैसे पूर्व हमें दिखावते हुते तैसे हमें दिखावो अर यह तिहारा वक्षस्थल स्त्रियोंकी क्रीडाका स्थानक महासुन्दर ता विषै चक्रकी धाराने कैसे पग धारा अर विद्रुम समान तिहारे ये लाल अधर अब क्रीडारूप उत्तरके देनेको क्यों न स्फुटायमान होय हैं? अबतक बहुत देर लगाई क्रोध कबहूं न किया अब प्रसन्न होवो, हम मान करतीं तो आप प्रसन्न करते मनावते इंद्रजीत मेघबाहन स्वर्गलोकसे चयकर तिहारे उपजे सो यहां भी स्वर्गलोक कैसे भोग भोगे अब दोऊ बन्धनविषै हैं अर कुम्भकर्ण बन्धनविषै है सो महापुण्याधिकारी सुभट महागुणवन्त श्रीरामचन्द्र तिनसे प्रीतिकर भाई पुत्रको छुडावहु। हे प्राणवल्लभ प्राणनाथ! उठो, हमसे हितकी बात करो, हे देव! बहुत देर सोवना कहा? राजानिको राजनीतिविषै सावधान रहना सो आप राज्य काजविषै प्रवर्तो। हे सुन्दर हे प्राणप्रिय हमारे अंग विरहरूप अग्निकर अत्यन्त जरे हैं सो स्नेहरूप जलकर बुझावो। हे स्नेहियोंके प्यारे तिहारा यह वदनकमल औरही अवस्थाको प्राप्त भया है सो याहि देख हमारे हृदयके सौ टूक क्यों न हो जावें यह हमारा पापी हृदय वज्रका है दुःखका भाजन जो तिहारी यह अवस्था जानकर विनस न जाय है। यह हृदय महा निर्दई है। हाय विधाता हम तेरा कहा बुरा किया जो तैने निर्दई होयकर हमारे सिरपर ऐसा दुःख डारा। हे प्री-

तम जब हम मान करतीं तब तुम उरसे लगाय हमारा मान दूर करते अर वचन रूप अमृत हमको प्यावते महा प्रेम जनावते हमारा प्रेमरूप कोप ताके दूर करवेके अर्थ हमारे पायन पडते सो हमारा हृदय वशीभूत होय जाता अत्यन्त मनोहर क्रीडा करते, हे राजेश्वर हमसे प्रीति करो परम आनन्दकी करणहारी वे क्रीडा हमको याद आवें हैं सो हमारा हृदय अत्यन्त दाहको प्राप्त होय है तातें अब उठो हम तिहारे पायनि पडे हैं नमस्कार करें हैं जे अपने प्रियजन होंय तिनसे बहुत कोप न करिए प्रीतिविषै कोप न सोहै—हे श्रेणिक ! या भांति रावणकी राणी ये विलाप करती भई जिनका विलाप सुनकर कौनका हृदय द्रवीभूत न होय ?

अथानन्तर श्रीराम लक्षमण भामण्डल सुग्रीवादिक सहित अति स्नेहके भरे विभीषणको उरसे लगाय आंसू डारते महाकरुणावन्त धीर्य बन्धावने विषै प्रवीण ऐसे वचन कहते भए—लोक वृत्तान्तसे सहित हे राजन् ! बहुत रोयवे कर कहा ? अब विषाद तजो यह कर्मकी चेष्टा तुम कहा प्रत्यक्ष नाहीं जानो हो ? पूर्वकर्मके प्रभावकर प्रमोदको धरते जे प्राणी तिनके अवश्य कष्टकी प्राप्ति होय है उसका शोक कहा अर तुम्हारा भाई सदा जगतके हितविषै सावधान परम प्रीति का भाजन समाधान रूप बुद्धि जिसकी राजकार्यविषै प्रवीण प्रजाका पालक सर्वशास्त्रनिके अर्थकर धोया है चित्त जाने, सो बलवान मोहकर दारुण अवस्थाको प्राप्त भया अर विनाशको प्राप्त भया जब जीवनिका विनाश काल आवै तब बुद्धि अज्ञानरूप होय जाय है। ऐसे शुभ वचन श्रीरामने कहे बहुरि भामण्डल अति माधुर्यताको धरे वचन कहते भये। हे विभीषण महाराज तिहारा भाई रावण महाउदार चित्त कर रणविषै युद्ध करता संता वीर मरणकर परलोककूं प्राप्त भया। जाका नाम न गया ताका कछुही न गया। ते धन्य हैं जिन सुभटता कर प्राण तजे। ते महापराक्रमके धारक वीर तिनका कहा शोक ? एक राजा अरिंदमकी कथा सुनो॥

अक्षयकुमार नामा नगर तहां राजा अरिंदम जाके महाविभूति सो एक दिन काहू तरफसे अपने मन्दिर शीघ्रगामी घोडे चढा अकस्मात् आया सो राणीको शृंगाररूप देख अर महलकी अत्यन्त शोभा देख राणीको पूछा—तुम हमारा आगम कैसे जाना। तब राणीने कही कीर्तिधरनामा मुनि अवधिज्ञानी आज आहारको आए थे तिनको मैंने पूछा राजा कब आवेंगे सो तिन्होंने कहा राजा आज अचानक आवेंगे। यह बात सुन राजा मुनिपै गये अर ईर्ष्याकर पूछता भया—हे मुनि तुमको ज्ञान है तो कहो मेरे चित्तमें क्या है तब मुनिने कहा तेरे चित्तमें यह है कि मैं कब मरूंगा सो तू आजसे सातवें दिन वज्रपातसे मरेगा अर विष्टामें कीट होयगा, यह मुनिके वचन सुन राजा अरिंदम घर जाय अपने पुत्र प्रीतिंकरको कहता भया—मैं मरकर विष्टाके घरमें स्थूल कीट होऊंगा ऐसा मेरा रंगरूप होयगा सो तू तत्काल मार डारियो। ये वचन पुत्रको कह आप सातवें दिन मरकर विष्टामें कीडा भया सो प्रीतिंकर कीटके हनिवेको गया सो कीट मरनेके भयकर विष्टामें पैठिगया। तब प्रीतिंकर मुनिपै जाय पूछता भया—हे प्रभो! मेरे पिताने कही थी जो मैं मलमें कीट होऊंगा सो तू हानियो अब वह कीट मरवेसे डरे है अर भागे है तब मुनिने कही तू विषाद मत कर यह जिस गतिमें जाय है वहां ही रम रहे है इसलिये तू आत्मकल्याण कर, जाकर पापोंसे छूटे अर यह जीव सबही अपने अपने कर्मका फल भोगवे हैं कोई काहूका नाहीं यह संसारका स्वरूप महादुखका कारण जान प्रीतिंकर मुनि भया, सर्व वांछा तजी, तातें हे विभीषण! यह नानाप्रकार जगतकी अवस्था तुम कहा न जानो हो, तिहारा भाई महाशूरवीर दैव योगसे नारायणने हता? संग्रामके संमुख महा प्रधान पुरुष ताका सोच क्या तुम अपना चित्त कल्याणमें लगावो यह शोक दुखका कारण ताको तजो यह वचन अर प्रीतिंकरकी कथा भामण्डलके मुखसे विभीषणने सुनी, कैसी है प्रीतिंकर मुनिकी कथा प्रतिबोध देवेमें प्रवीण अर नाना स्वभावकर संयुक्त अर उत्तम पुरुषोंकर

कहिवे योग्य सो सर्व विद्याधरनिने प्रशंसा करी सुनकर विभीषण रूप सूर्य शोकरूप मेघ पटलसे रहित भया लोकोत्तर आचारका जाननेवाला ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै विभीषणका शोकनिवारण वर्णन करनेवाला सततरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७७ ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्र भामण्डल सुग्रीवादि सबनिसूं कहते भए, जो पंडितोंके बैर बैरीके मरण पर्यन्त ही है । अब लंकेश्वर परलोकको प्राप्त भए सो यह महानर हुते, इनका उत्तम शरीर अग्नि संस्कार करिए तब सबनि प्रणाम करी अर बिभीषणसहित राम लक्ष्मण जहां मन्दोदरी आदि अठारह हजार राणीनि सहित जैसे कुरुचि पुकारै तैसे विलाप करती हुती सो वाहनसे उतर समस्त विद्याधरनि सहित दोऊ वीर तहां गए सो वे राम लक्ष्मणको देख अति विलाप करती भई तोड डारे हैं सर्व आभूषण जिन्होंने अर धूलकर धूसरा है अंग जिनका तब श्रीराम महादयावन्त नानाप्रकारके शुभ वचननिकर सर्व राणीनिकों दिलासा करी धीर्य बन्धाया अर आप सब विद्याधरनिको लेकर रावणके लोकाचारको गए, कपूर अगर मलियागिरि चन्दन इत्यादि नानाप्रकारके सुगन्ध द्रव्यनिकर पद्मसरोवर पर प्रतिहरि का दाह भया बहुरि सरोवरके तीर श्रीराम तिष्ठे, कैसे हैं राम ? महा कृपालु है चित्त जिनका, गृहस्था-श्रमविषै ऐसे परिणाम कोई बिरलेके होय हैं । बहुरि आज्ञा करी कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनादको सब सामंतनिसहित छोडो तब कैयक विद्याधर कहते भए—वे महा क्रूराचित्त हैं अर शत्रु हैं छोडवे योग्य नाहीं बन्धनहीविषै मरें । तब श्रीराम कहते भए—यह क्षत्रियनिका धर्म नाहीं, जिनशासनविषै क्षत्रीनिकी कथा कहा तुमने नाहीं सुनी है । सूतेको बन्धेको डरतेको शरणागतकूं दन्तविषै तृण लेतेको भागेको बाल

वृद्ध स्त्रीनिकूं न हने यह क्षत्रीका धर्म शास्त्रनिमें प्रसिद्ध है। तब सबनि कही आप जो आज्ञा करो सो प्रमाण। बडे बडे योधा नानाप्रकारके आयुधनिकूं धरें तिनके ल्यायवेको गए, कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनाद मारीच तथा मन्दोदरीका पिता राजा मय इत्यादि पुरुषनिको स्थूल बन्धनसहित सावधान योधा लिए आवे हैं सो माते हाथी समान चले आवे हैं तिनको देख वानरवंशी योधा परस्पर बात करते भए जो कदाचित इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकरण रावणकी चिता जरती देख क्रोध करें तो कपिवंशिनिमें इनके सन्मुख लडने को कोई समर्थ नाहीं, जो कपिवंशी जहां बैठा था तहांसे उठ न सका अर भामंडलने अपने सब योधानिकूं कहा जो इन्द्रजीत मेघनादको यहां तक बंधेही अति यत्नसे लाइयो, अबार विभीषणका भी विश्वास नाहीं है जो कदाचित् भाई भतीजेनिको निर्बंधन देख भाईका बैर चितारे सो याको विकार उपज आवे, भाईके दुखकर बहुत तप्तायमान है यह विचार भामंडलादिक तिनको अति यत्नकर राम लक्ष्मणके निकट लाए सो वे महाविरक्त राग द्वेषरहित जिनके मुनि होयवेके भाव महा सौम्य दृष्टिकर भूमि निरखते आवें, शुभ हैं आनन जिनके, वे महा धीर यह विचारे हैं कि या असार संसार सागरविषै कोई सारताका लवलेश नाहीं, एक धर्मही सब जीवनका बांधव है सोई सार है ये मनमें विचारे हैं जो आज बंधनसे छूटें तो दिगम्बर होय पाणिपात्र आहार करें। यह प्रतिज्ञा धरते रामके समीप आए। इंद्रजीत कुम्भकर्णादिक विभीषणकी ओर आय तिष्ठे यथायोग्य परस्पर संभाषण भया बहुरि कुम्भकर्णादिक श्रीराम लक्ष्मणसूं कहते भए—अहो तिहारा परम धीर्य परम गंभीरता अद्भुत चेष्टा देवनिहू कर न जीता जाय ऐसा राक्षसनिका इंद्र रावण मृत्युकूं प्राप्त किया, पंडितनिके अति श्रेष्ठ गुणनिका धारक शत्रु हू प्रशंसा योग्य है। तब श्रीराम लक्ष्मण इनको बहुत साता उपजाय अति मनोहर वचन कहते भए। तुम पहिले महा भोगरूप जैसे तिष्ठे तैसे तिष्ठो। तब वह महा विरक्त कहते भए अब

इन भोगानिसे हमारे कछु प्रयोजन नाहीं । यह विषसमान महा दारुण महा मोहके कारण महा भयंकर महा नरक निगोदादि दुःखदाई जिनकर कबहूं जीवके साता नाहीं । विचक्षण हैं ते भोगसंबंधको कबहूं न वांछें । राम लक्ष्मणने घना ही कहा तथापि तिनका चित्त भोगासक्त न भया । जैसे रात्रिविषै दृष्टि अंधकार रूप होय अर सूर्यके प्रकाश कर वही दृष्टि प्रकाशरूप होय जाय तैसे ही कुम्भकर्णादिककी दृष्टि पहिले भोगासक्त हुती सो ज्ञानके प्रकाशकर भोगानितैं विरक्त भई । श्रीरामने तिनके बंधन छुडाये अर इन सबानि सहित पद्म सरोवरविषै स्नान किया । कैसा है सरोवर ? सुगंध है जल जाका, ता सरोवरविषै स्नान कर कपि अर राक्षस सब अपने अपने स्थानक गए ।

अथानन्तर कैयक सरोवरके तीर बैठे विस्मयकर व्याप्त हैं चित्त जिनका शूरवीरोंकी कथा करते भए कैयक क्रूर कर्मको उलाहना देते भए कैयक हथियार डारते भए कैयक रावणके गुणोंकर पूर्ण है चित्त जिनका सो पुकारकर रुदन करते भए कैयक कर्मनिकी विचित्र गतिका वर्णन करते भए अर कैयक संसार वनको निन्दते भए । कैसा है संसार वन जाथकी निकसना अतिकठिन है कैयक भोगविषै अरुचिको प्राप्त भए राज्यलक्ष्मीको महा चंचल निरर्थक जानते भए अर कैयक उत्तम बुद्धि अकार्यकी निंदा करते भए कैयक रावणकी गर्वकी भरी कथा करते भए श्रीरामके गुण गावते भए, कैयक लक्ष्मणकी शक्तिका गुण वर्णन करते भए, कैयक सुकृतके फलकी प्रशंसा करते भए, निर्मल है चित्त जिनका, घरघर मृतकोंकी क्रिया होती भई, बाल वृद्ध सबके मुख यही कथा । लंकाविषै सर्वलोक रावणके शोककर अश्रुपात डारते चातुर्मास्य करते भए शोककर द्रवीभूत भया है हृदय जिनका, सकल लोकानिके नेत्रानिसे जलके प्रवाह बहे सो पृथिवी जलरूप होय गई अर तत्त्वोंकी गौणता दृष्टि पडी मानों नेत्रोंके जलके भयकर आताप घुसकर लोकोंके हृदयविषै पैठा सर्वलोकोंके मुखसे यह शब्द निकसे धिक्कार धिक्कार अहो

बडा कष्ट भया हाय हाय यह क्या अद्भुत भया या भांति लोक विलाप करै हैं कैयक भूमिविषै शय्या करते भए मौन धार मुख नीचा करते भए निश्चल है शरीर जिनका मानों काष्ठके हैं कैयक शस्त्रोंको तोड डारते भए कैयकोंने आभूषण डार दिए अर स्त्रीके मुखकमलसे दृष्टि संकोची कैयक अति दीर्घ उष्ण निस्वास नाखे हैं सो कलुष होय गए अधर जिनके मानों दुःखके अंकुरे हैं अर कैयक संसारके भोगनिसे विरक्त होय मनविषैं जिनदीक्षाका उद्यम करते भए।

अथानन्तर पिछले पहिर महासंघ सहित अनन्तवीर्य नामा मुनि लंकाके कुसुमायुध नामा वनविषे छप्पन हजार मुनि सहित आए जैसे तारनिकर मण्डित चंद्रमा सोहै तैसे मुनिकर मंडित सोहते भए, जो ये मुनि रावणके जीवते आवते तो रावण मारा न जाता लक्ष्मणके अर रावणके विशेष प्रीति होती जहां ऋद्धिधारी मुनि तिष्ठें तहां सर्व मंगल होवें अर केवली विराजे वहां चारों ही दशाओंविषैं दोयसौ योजन पृथिवी स्वर्ग तुल्य निरुपद्रव होय अर जीवनके वैरभाव मिट जावे जैसे आकाशविषै अमूर्तत्व अवकाश प्रदानता निर्लेपता अर पवनविषै सवीर्यता, निसंगता, अग्नि विषै उष्णता, जलविषै निर्मलता पृथिवीविषै सहनशीलता तैसे स्वतः स्वभाव महा मुनिके लोकको आनंददायकता होय है अनेक अद्भुत गुणोंके धारक महा मुनि तिनसहित स्वामी विराजे, गौतम स्वामी कहै हैं, हे श्रेणिक! तिनके गुण कौन वर्णन कर सके जैसे स्वर्णका कुम्भ अमृतका भरा अति सोहै तैसे महामुनि अनेकऋद्धिके भरे सोहते भए निर्जंतु स्थानक वहां एक शिला ता ऊपर शुक्ल ध्यान धर तिष्ठे सो ताही रात्रिविषै केवलज्ञान उपजा जिनके परम अद्भुत गुण वर्णन किए पापनिका नाश होय तब भवनवासी असुरकुमार नागकुमार गरुडकुमार विद्युतकुमार अग्निकुमार पवनकुमार मेघकुमार दिक्कुमार दीपकुमार उदधिकुमार ये दशप्रकार तथा अष्ट प्रकार व्यंतर किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच, तथा पंच

प्रकार ज्योतिषी सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र अर सोलह स्वर्गके सर्व ही स्वर्गवासी ये चतुरनिकायके देव सौ-धर्म इंद्रादिक सहित धातुकीखंडद्वीपकेविषै श्रीतीर्थंकर देवका जन्म भया हुता सो सुमेरु पर्वतविषै क्षीर सागरके जलकर स्नान कराए जन्म कल्यानकका उत्सवकर प्रभुको माता पिताको सौंप तहां उत्सवसहित तांडव नृत्यकर प्रभुकी बारम्बार स्तुति करते भये। कैसे हैं प्रभु? बाल अवस्थाको धरै हैं परंतु बाल अवस्थाकी अज्ञान चेष्टासे रहित हैं। तहां जन्म कल्याणकका समय साधकर सब देव लंकाविषैं अनंतवीर्य केवलीके दर्शनको आए। कैयक विमान चढे आए, कैयक राजहंसनिपर चढे आए अर कई एक अश्व सिंह व्याघ्रादिक अनेक वाहननिपर चढे आये, ढोल मृदंग नगारे वीण बांसुरी झांझ मंजीरे शंख इत्यादि नाना प्रकारके वादित्र बजावते मनोहर गान करते आकाश मंडलको आच्छादते केवलीके निकट महा भक्तिरूप अर्ध रात्रिके समय आए, तिनके विमाननिकी ज्योति कर प्रकाश होय गया अर वादित्रनिके शब्दकर दशोंदिशा व्याप्त होय गई, राम लक्ष्मण यह वृत्तान्त जान हर्षको प्राप्त भए, समस्त बानरवंशी अर राक्षसवंशी विद्याधर इंद्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद आदि सर्व राम लक्ष्मणके संग केवलीके दर्शनके लिये जायवेको उद्यमी भए। श्रीराम लक्ष्मण हाथी चढे अर कईएक राजा रथपर चढे कई एक तुरंगनिपर चढे छत्र चमर ध्वजाकर शोभायमान महा भक्तिकर संयुक्त देवनि सारिखे महा सुगन्ध हैं शरीर जिनके अति उदार अपने वाहननितैं उतर महाभक्ति कर प्रणाम करते स्तोत्र पाठ पढते केवलीके निकट आये। अष्टांग दण्डवत कर भूमिविषै तिष्ठे, धर्म श्रवणकी है अभिलाषा जिनके, केवलीके मुखतैं धर्म श्रवण करते भए। दिव्यध्वनिमें यह व्याख्यान भया जो ये प्राणी अष्ट कर्मसे बंधे महादुखके कर्म पर चढे चतुर्गतिविषै भ्रमण करे हैं आर्त्त रौद्र ध्यानकर युक्त नाना प्रकारके शुभाशुभ कर्मनिको करे हैं, महा मोहिनी कर्मने ये जीव बुद्धिरहित किये तातैं सदा हिंसा करै हैं असत्य वचन कहे हैं, पराये मर्म भेदका

वचन कहे हैं, परनिन्दा करे हैं, पर द्रव्य हरे हैं, परस्त्रीका सेवन करे हैं, प्रमाणरहित परिग्रहको अंगीकार करे हैं, बढा है महालोभ जिनके। वे कैसे हैं महा निन्द्यकर्म कर शरीर तज अधोलोकविषै जाय हैं तहां महा दुखके कारण सप्त नरक तिनके नाम रत्नप्रभा, शर्करा, बालुका, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम, महातम, सदा महा दुःखके कारण सप्त नरक अन्धकारकर युक्त दुर्गंध सूंघा न जाय देखा न जाय स्पर्शा न जाय महा भयंकर महा विकराल है भूमि जिनकी सदा रुदन दुर्वचन त्रास नानाप्रकारके छेदन भेदन तिनकर सदा पीडित नारकी खोटे कर्मनितैं पापबन्ध कर बहुत काल सागरों पर्यंत महा तीव्र दुःख भोगवे हैं ऐसा जान पंडित विवेकी पाप बंधसे रहित होय धर्मविषै चित्त धरो। कैसे हैं विवेकी? व्रत नियमके धरणहारे, निःकपटस्वभाव अनेक गुणनिकर मंडित वे नानाप्रकारके तपकर स्वर्ग लोकको प्राप्त होय हैं। बहुरि मनुष्य देह पाय मोक्ष प्राप्त होय हैं अर जे धर्मकी अभिलाषासे रहित हैं ते कल्याणके मार्गतैं रहित बारम्बार जन्म मरण करते महादुखी संसारविषै भ्रमण करे हैं। जे भव्यजीव सर्वज्ञ वीतरागके वचनकर धर्मविषै तिष्ठे हैं ते मोक्षमार्गी शील सत्य शौच सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकर जबलग अष्ट कर्मका नाश न करें तबलग इंद्र अहमिंद्र पदके उत्तम सुखको भोगवे हैं। नानाप्रकारके अद्भुत सुख भोग वहां से चय कर महाराजाधिराज होय बहुरि ज्ञान पाय जिनमुद्राधर महातपकर केवलज्ञान उपाय अष्ट कर्मरहित सिद्ध होय हैं, अनन्त अविनाशी आत्मिकस्वभावमयी परम आनन्द भोगवे हैं। यह व्याख्यान सुन इंद्रजीत मेघनाद अपने पूर्वभव पूछते भए। सो केवली कहे हैं—एक कौशांबी नामा नगरी तहां दो भाई दलिद्री एकका नाम प्रथम, दूजेका नाम पश्चिम। एक दिन विहार करते भवदत्तनामा मुनि वहां आए सो ये दोनों भाई धर्म श्रवण कर ग्यारमी प्रतिमाके धारक क्षुल्लक श्रावक भए सो मुनिके दर्शनको कौशांबी नगरीका राजा इन्द्र नामा राजा आया सो मुनि महाज्ञानी राजाको देख जान्या याके

मिथ्यादर्शन दुर्निवार है अर ताही समय नन्दीनामा श्रेष्ठी महाजिनभक्त मुनिके दर्शनको आया ताका
राजाने आदर किया ताको देख प्रथम अर पश्चिम दोऊ भाईनिमें से छोटे भाई पश्चिमने निदान
क्रिया जो मैं या धर्मके प्रसाद कर नंदी सेठके पुत्र होऊं सो बडे भाईने अर गुरुने बहुत सम्बोधा जो जि-
नशासनविषे निदान महानिन्द्य है सो यह न समझा कुबुद्धि निदानकर दुखित भया मरण कर नंदीके
इंदुमुखी नामा स्त्री ताके गर्भविषे आया सो गर्भविषे आवते ही बडे बडे राजानिके स्थानकनिविषे को-
टका निपात दरवाजनिका निपात इत्यादि नानाप्रकारके चिन्ह होते भए, तब बडे बडे राजा याको
नानाप्रकारके निमित्त कर महानर जान जन्महीसे अति आदर संयुक्त दूत भेज भेज कर द्रव्य पठाय
सेवते भए। यह बडा भया याका नाम रतिवर्धन सो सब राजा याको सेवें कौशांबी नगरीका राजा इंदु
भी सेवा करै। नित्य आप प्रणाम करै। या भांति यह रतिवर्धन महाविभूति कर संयुक्त भया अर बडा
भाई प्रथम मर कर स्वर्ग लोक गया, सो छोटे भाईके जीवको संबोधवेके अर्थ क्षुल्लकका स्वरूप धर
आया सो यह मदोन्मत्त राजा मदकर अन्धा होय रहा सो क्षुलकको दुष्ट लोकनिकर द्वारविषे पैठने न
दिया तब देवने क्षुल्लकका रूप दूरकर रतिवर्धनका रूप किया तत्काल ताका नगर उजाड उद्यान कर
दीया अर कहता भया अब तेरी कहा वार्ता? तब वह पांयनपर पड स्तुति करता भया तब ताको स-
कल वृत्तांत कहा जो आपां दोऊ भाई थे। मैं बडा, तू छोटा। सो क्षुल्लकके व्रत धारे सो तैंने नंदीसेठ
को देख निदान किया सो मरकर नंदीके घर उपजा, राजविभूति पाई अर मैं स्वर्गविषे देव भया। यह
सब वार्ता सुन रतिवर्धनको सम्यक्त उपजा मुनि भया अर नंदीको आदि दे अनेक राजा रतिवर्धनके
संग मुनि भए। रतिवर्धन तपकर जहां भाईका जीव देव हुता वहां ही देव भया बहुरि दोऊ भाई स्वर्ग
तैं चयकर राजकुमार भए। एकका नाम उर्व दूजेका नाम उर्वस राजा नरेन्द्र राणी विजयाके पुत्र बहुरि

जिनधर्मका आराधनकर स्वर्गविषै देव भए वहांसे चयकर तुम दोऊ भाई रावणके राणी मंदोदरी ताके इंद्रजीत मेघनाद पुत्र भए अर नंदी सेठके इंदुमुखी रतिवर्धनकी माता सो जन्मांतरविषै मंदोदरी भई। पूर्व जन्मविषै स्नेह हुता सो अब हू माताका पुत्रसे अतिस्नेह भया। कैसी है मंदोदरी? जिनधर्मविषै आसक्त है चित्त जाका, यह अपने पूर्व भव सुन दोऊ भाई संसारकी मायासे विरक्त भए। उपजा है महा वैराग्य जिनको, जैनेश्वरी दीक्षा आदरी अर कुम्भकर्ण मारीच राजा मय अर भी बडे बडे राजा संसारतैं महा विरक्त होय मुनि भए, तजे हैं विषय कषाय जिन्होंने, विद्याधरोंके राजकी विभूति तृणवत् तजी महा योगीश्वर हो अनेक ऋद्धिके धारक भए, पृथिवीविषै विहार करते भव्यनिको प्रतिबोधते भए, श्रीमुनिसुव्रतनाथके मुक्ति गए पीछे तिनके तीर्थविषै यह बडे बडे महा पुरुष भए, परम तपके धारक अनेक ऋद्धिसंयुक्त। वह भव्य जीवनिको बारम्बार बंदिवे योग्य हैं अर मंदोदरी पति अर पुत्रनिके विरह कर अतिव्याकुल भई महा शोककर मूर्छाको प्राप्त भई बहुरि सचेत होय कुरचिकी न्याईं विलाप करती भई। दुखरूप समुद्रविषै मग्न होय, हाय पुत्र, इंद्रजीत मेघनाद! यह कहा उद्यम किया, मैं तिहारी माता अतिदीन ताहि क्यों तजी? यह तुमको कहा योग्य जो दुखकर तप्तायमान जो माता ताका समाधान किए बगैर उठगए। हाय पुत्र हो! तुम कैसे मुनिव्रत धरोगे। तुम देवनिसारिखे महा भोगी शरीरको लडावनहारे कठोर भूमिपर कैसे शयन करोगे। समस्त विभव तजा समस्त विद्या तजी केवल अध्यात्मविद्याविषै तत्पर भए अर राजा मय मुनि भया ताका शोक करे है—हाय पिता! यह कहा किया? जगत्को तज मुनिरूप धरा तुम मोसे तत्काल ऐसा स्नेह क्यों तजा? मैं तिहारी पुत्री मोसे दया क्यों न करी बालअवस्थाविषै मोपर तिहारी अति कृपा हुती मैं पिता अर पुत्र अर पति सबसे रहित भई, स्त्रीके यही रक्षक हैं। अब मैं कौनके शरण जाऊं मैं पुण्यहीन महा दुखको प्राप्त भई या भांति मंदोदरी रुदन करे

ताका रुदन सुन सबही को दया उपजे अश्रुपातकर चतुर्मासकर दिया ताहि शशिकान्ता आर्यिका उत्तम वचनकर उपदेश देती भई–हे मूर्खणी ! कहा रोवे है या संसारचक्रविषै जीवानिने अनन्त भव धरे तिनमें नारकी अर देवनिके तो सन्तान नाहीं अर मनुष्य अर तिर्यंचानिके हैं सो तैंने चतुर्गति भ्रमण करते मनुष्य तिर्यंचानिके भी अत्यन्त जन्म धारे तिनविषै तेरे अनंत पिता पुत्र बांधव भए जिनका जन्म जन्ममें रुदन किया अब कहा विलाप करे है। निश्चलता भज यह संसार असार है, एक जिनधर्म ही सार है। तू जिनधर्मका आराधन कर दुखसे निर्वृत्त होहु ऐसे प्रतिबोधके कारण आर्यिकाके मनोहर वचन सुन मंदोदरी महा विरक्त भई। उत्तम है गुण जाविषै समस्त परिग्रह तजकर एक शुक्ल वस्त्र धारकर आर्यिका भई। कैसी है मंदोदरी ? मनवचनकायकर निर्मल जो जिनशासन ताविषै अनुरागिणी है अर चन्द्रनखा रावणकी बहिन हू याही आर्यिकाके निकट दीक्षा धर आर्यिका भई। जा दिन मंदोदरी आर्यका भई ता दिन अडतालीस हजार आर्यिका भई ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै इंद्रजीत मेघनाद कुंभकरणका वैराग्य अर मंदोदरी आदि रानीनिका वैराग्य वर्णन करनेवाला अठत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७८ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं–हे राजन् ! अब श्रीराम लक्ष्मणका विभूतिसहित लंकामें प्रवेश भया सो सुन। महा विमानानिके समूह अर हाथिनिकी घटा अर श्रेष्ठ तुरंगानिके समूह अर मंदिर समान रथ अर विद्याधरनिके समूह अर हजारां देव तिनकर युक्त दोनों भाई महाज्योतिको धरे लंकामें प्रवेश करते भए, तिनको देख लोक अति हर्षित भए, जन्मान्तरके धर्मके फल प्रत्यक्ष देखते भए, राजमार्गके विषै जाते श्रीराम लक्ष्मण तिनको देख नगरके नर अर नारिनिको अपूर्व आनंद भया। फूल

रहे हैं मुख जिनके स्त्री झरोखानि विषै बैठी जालिनिसे होय देखे हैं । कमल समान हैं मुख जिनके, महा कौतुककर युक्त परस्पर वार्ता करे हैं-सखी ! देखो यह राम राजा दशरथका पुत्र गुणरूप रतननिका राशि पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है वदन जाका कमल समान हैं नेत्र जाके अद्भुत पुण्यकर यह पद पाया है अतिप्रशंसा योग्य है आकार जाका धन्य हैं वह कन्या जिन्होंने ऐसे बर पाए । जाने यह बर पाए ताने कीर्तिका थंभ लोक विषै थापा, जाने जन्मान्तर विषै धर्म आचरा होय सोही ऐसा नाथ पावे तासमान अन्य नारी कौन ? जाका यश अत्यन्त, राजा जनककी पुत्री महाकल्याण रूपिणी, जन्मांतर विषै महा पुण्य उपार्जे हैं तातें यह ऐसे पति जैसे शची इंद्रके तैसे सीता रामके अर यह लक्षमण वासुदेव चक्रपाणि शोभै है जाने असुरेंद्रसमान रावण रणविषै हता, नील कमल समान कांति जाकी अर गौर कांतिकर संयुक्त जो बलदेव श्रीरामचंद्र तिनसहित ऐसे सोहे जैसे प्रयाग विषै गंगा यमुनाके प्रवाहका मिलाप सोहै । अर यह राजा चंद्रोदयका पुत्र विराधित है जाने लक्षमणसे प्रथम मिलापकर विस्तीर्ण विभूति पाई अर यह राजा सुग्रीव किहकंधापुरका धनी महा पराक्रमी जाने श्रीराम देवसे परम प्रीति जनाई अर यह सीताका भाई भामंडल राजा जनकका पुत्र चंद्रगति विद्याधरने पाला सो विद्याधरनिका इंद्र है अर यह अंगदकुमार राजा सुग्रीवका पुत्र जो रावणको बहुरूपिणी विद्या साधते विघ्नको उद्यमी भया अर हे सखी ! यह हनूमान महासुंदर उतंग हाथिनिके रथ चढा पवनकर हाले है बानरके चिन्हकी ध्वजा जाके जाहि देख रणभूमि विषै शत्रु पलाय जांय सो राजा पवनका पुत्र अंजनीके उदर विषै उपजा जाने लंकाके कोट दरवाजे ढाहे हैं । ऐसी वार्ता परस्पर स्त्रीजन करे हैं तिनके बचनरूप पुष्पनिकी मालाकर पूजित जो राम सो राजमार्ग होय आगे गए । एक चमर ढारती जो स्त्री ताहि पूछा हमारे विरहके दुःखकर तप्तायमान जो भामंडलकी बाहिन सो कहां तिष्ठे है ? तब वह

रत्ननिके चूडाकी ज्योति कर प्रकाश रूप है भुजा जाकी सो आंगुरी कर समस्याकर स्थानक दिखावती भई। हे देव! यह पुष्पप्रकीर्ण नामा गिरि निरझरनावोंके जलकर मानो हास्यही करे है तहां नन्दन बन समान महा मनोहर बन ताविषै राजा जनककी पुत्री कीर्तिशील है परिवार जाके सो तिष्ठै है॥

या भांति रामजीसे चमर ढारती स्त्री कहती भई अर सीताके समीप जो उर्मिका नाम सखी सब सखिनिविषै प्रीतिकी भजनहारी सो आंगुरी पसार सीताको कहती भई—हे देवि! यह चन्द्रमा समान है छत्र जिनका अर चांद सूर्य समान हैं कुंडल जिनके अर शरदके नीझरने समान है हार जिनके सो पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र तिहारे बल्लभ आए। तिहारे वियोगकर मुखविषै अत्यंत खेदको धरे हैं। हे कमलनेत्र! जैसे दिग्गज आवे तैसे आवे हैं। यह वार्ता सुन सीताने प्रथम तो स्वप्न समान वृत्तांत जाना बहुरि आप अति आनंदको धरे जैसे मेघपटलसे चंद्र निकसे तैसे हाथीसे उतर आए जैसे रोहिणीके निकट चन्द्रमा आवै तैसे आए तब सीता नाथको निकट आया जान अतिहर्षकी भरी उठकर संमुख आई। कैसी है सीता? धूरकर धूसर है अंग अर केश बिखर रहे हैं श्याम पड गए हैं होठ जाके स्वभाव कर कृश हुती अर पतिके वियोगकर अत्यंत कृश भई अब पतिके दर्शनकर उपजा है अतिहर्ष जाको, प्राणकी आशा बंधी, मानों स्नेहकी भरी शरीरकी कांतिकर पतिसे मिलाप ही करै है अर मानों नेत्रनिकी ज्योतिरूप जलकर पतिको स्नान ही करावै है अर क्षणमात्रविषै बढ गई है शरीरकी लावण्यता रूप सम्पदा अर हर्षके भरे निश्वासकर मानो अनुरागके भरे बीज बोवै है। कैसी है सीता? रामके नेत्रनिको विश्रामकी भूमि अर पल्लव समान जे हस्त तिनकर जीते हैं लक्ष्मीके करकमल जाने, सौभाग्य रूप रत्ननिकी खान सम्पूर्ण चंद्रमा समान है वदन जाका चंद्र कलंकी यह निःकलंक विजुरी समान है कांति जाकी, वह चंचल यह निश्चल, प्रफुल्लित कमल समान हैं नेत्र जाके, मुखरूप चंद्रकी चंद्रिकाकर

अतिशोभाको प्राप्त भई है यह अद्भुत् वार्ता है कि कमल तो चन्द्रकी ज्योतिकर मुद्रित होय हैं अर याके नेत्रकमल मुखचंद्रमाकी ज्योतिकर प्रकाशरूप हैं कलुषतारहित उन्मत्त हैं स्तन जाके मानों कामके कलश ही हैं, सरल है चित्त जाका सो कौशल्याका पुत्र राणी विदेहाकी पुत्रीको निकट आवती देख कथनविषै न आवे ऐसे हर्षको प्राप्त भया, अर यह रतिसमान सुन्दरी रमणको आवता देख विनयकर हाथ जोड खडी अश्रुपातकर भरे हैं नेत्र जाके जैसे शची इंद्रके निकट आवै, रति कामके निकट आवै, दया जिनधर्मके निकट आवै, सुभद्रा भरतके निकट आवै, तैसे ही सीता सती रामके समीप आई सो घने दिननिका वियोग ताकर खेदखिन्न रामने मनोरथके सैकडोंकर पाया है नवीन संगम जाने सो महाज्योतिका धरणहारा सजल हैं नेत्र जाके भुज बंधनकर शोभित जे भुजा तिनकर प्राणप्रियासे मिलता भया। ताहि उरसे लगाय सुखके सागरविषै मग्न गया, उरसे जुदी न कर सके मानों विरहसे डरै है अर वह निर्मल चित्तकी धरणहारी प्रीतमके कंठविषै अपनी भुज पांसि डार ऐसी सोहती भई जैसे कल्पवृक्षनिसे लपटी कल्प बेलि सोहै, भया है रोमांच दोनोंके अंगविषैं परस्पर मिलापकर दोऊ ही अति सोहते भये। ते देवनिके युगल समान हैं जैसे देव देवांगना सोहै तैसे सोहते भये सीता अर रामका समागम देख देव प्रसन्न भये सो आकाशसे दोनोंपर पुष्पोंकी वर्षा करते भए सुगन्ध जलकी वर्षा करते भए अर ऐसे वचन मुखतैं उचारते भए अहो अनुपम है शील सीताका शुभ है चित्त सीता धन्य है याकी अचलता गम्भीरता धन्य है व्रत शीलकी मनोग्यता भी धन्य है निर्मलपन जाका धन्य है सतीनिविषै उत्कृष्टता जाके, जाने मनहूकर द्वितीय पुरुष न इच्छा, शुद्ध है नियम व्रत जाका या भांति देवनि प्रशंसा करी ता ही समय अतिभक्तिका भरा लक्ष्मण आय सीताके पायन पडा विनयकर संयुक्त सीता अश्रुपात डारती ताहि उरसों लगाय कहती भई—हे वत्स ! महाज्ञानी मुनि कहते जो यह वासुदेव पदका धारक

है सो तू प्रगट भया अर अर्धचक्री पदका राज तेरे आया निर्ग्रंथके वचन अन्यथा न होंय अर यह तेरे बडे भाई बलदेव पुरुषोत्तम जिहोंने विरहरूप अग्निविषै जरती जो मैं सो निकासी। बहुरि चंद्रमा समान है ज्योति जाकी ऐसा भाई भामण्डल बाहिनके समीप आया ताहि देख अतिमोहकर मिली। कैसा है भाई ? महा विनयवान् है अर सुग्रीव वा हनूमान् नल नील अंगद विराधित चंद्र सुषेण जांबव इत्यादि बडे बडे विद्याधर अपना नाम सुनाय बंदना अर स्तुति करते भये, नाना प्रकारके वस्त्र आभूषण कल्पवृक्षोंके पुष्पनिकी माला सीताके चरणके समीप स्वर्णके पात्रविषै मेल भेट करते भए अर स्तुति करते भए—हे देवि ! तुम तीन लोकविषै प्रसिद्ध हो महा उदारताको धरो हो गुण संपदाकर सवविषै बडे हो देवोंकर स्तुति करने योग्य हो अर मंगलरूप है दर्शन तिहारा जैसे सूर्यकी प्रभा सूर्य सहित प्रकाश करै तैसे तुम श्रीरामचन्द्र सहित जयवन्त होहु ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम अर सीताका मिलाप वर्णन करनेवाला उन्नासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७९ ॥

अथानन्तर सीताके मिलापरूप सूर्यके उदय कर फूल गया है मुख कमल जिनका ऐसे जो राम सो अपने हाथ कर सीताका हाथ गह उठे ऐरावत गज समान जो गज ता पर सीतासहित आरोहण किया मेघ समान वह गज ताकी पीठ पर जानकीरूप रोहिणीकर युक्त रामरूप चन्द्रमा सोहते भए समाधान रूप है बुद्धि जिनकी दोऊ अतिप्रीतिके भरे प्राणियोंके समूहको आनन्दके करता बडे बडे अनुरागी विद्याधर लार लक्ष्मण लार स्वर्ग विमान तुल्य रावणका महल वहां श्रीराम पधारे। रावणके महिलके मध्य श्रीशांतिनाथका मंदिर अति सुन्दर तहां स्वर्णके हजारों थंभ नानाप्रकारके रत्नोंकर मंडित

मंदिरकी मनोहर भांति जैसे महाविदेहके मध्य सुमेरु सोहै तैसे रावणके मंदिरविषे शांतिनाथका मंदिर
सोहै जाको देख नेत्र मोहित होय जांय जहां घंटा बाजे हैं ध्वजा फहरे हैं महा मनोहर वह शांतिनाथ
का मंदिर वर्णनविषे न आवै श्रीराम हाथीसे उतर नागेंद्र समान है पराक्रम जिनका प्रसन्न हैं नेत्र म-
हालक्ष्मीवान जानकीसहित किंचित्काल कायोत्सर्गकी प्रतिज्ञा करी, प्रलंबित हैं भुजा जिनकी महा प्र-
शांत हृदय सामायिकको अंगीकार कर हाथ जोड शांतिनाथस्वामीका स्तोत्र समस्त अशुभ कर्मका ना-
शक पढते भए—हे प्रभो ! तिहारे गर्भावतारविषे सर्वलोकविषे शांति भई महा कांतिकी करणहारी सर्व-
रोग हरणहारी अर सकल जीवनको आनंद उपजे अर तिहारे जन्मकल्याणविषे इंद्रादिक देव महा ह-
र्षित होय आए क्षीर सागरके जलकर सुमेरु पर्वत पर तिहारा जन्माभिषेक भया अर तुमने चक्रवर्ती
पद धर जगत्का राज्य किया बाह्यशत्रु बाह्यचक्रसे जीते अर मुनि होय माहिल मोह रागादिक शत्रु
ध्यानकर जीते केवलबोध लहा जन्म जरा मरणसे रहित जो शिवपुर कहिए मोक्ष ताका तुम अवि-
नाशी राज्य किया कर्म रूप बैरी ज्ञान शस्त्रसे निराकरण किए। कैसे हैं कर्म शत्रु सदा भवभ्रमणके का-
रण अर जन्म जरा मरण भयरूप आयुधानिकर युक्त सदा शिवपुर पंथके निरोधक। कैसा है वह शिवपुर?
उपमारहित नित्य शुद्ध जहां परभावका आश्रय नहीं केवल निज भावका आश्रय है अत्यन्त दुर्लभ सो
तुम आप निर्वाणरूप औरोंको निर्वाणपद सुलभ करो हो, सत्र जगतको शांतिके कारण हो। हे श्रीशां-
तिनाथ ! मन वचन काय कर नमस्कार तुमको, हे जिनेश हे महेश ! अत्यन्त शांत दिशाको प्राप्त भए
हो स्थावर जंगम सर्वजीवोंके नाथ हो जो तिहारे शरण आवै ताके रक्षक हो समाधि बोधके देनहारे तुम
एक परमेश्वर सबनके गुरु सबके बांधव हो मोक्ष मार्गके प्ररूपणहारे सर्व इंद्रादिक देवनिकर पूज्य धर्म-
तीर्थके कर्ता हो तिहारे प्रसाद कर सर्व दुखसे रहित जो परम स्थानक ताहि मुनिराज पावे हैं। हे देवा-

थिदेव नमस्कार है तुमको सर्व कर्म विलय किया है। हे कृतकृत्य ! नमस्कार तुमको, पाया है परम शांति-पद जिन्होंने, तीनलोकको शांतिके कारण सकल स्थावर जंगम जीवोंके नाथ, शरणागतपालक समाधि बोधके दाता महा कांतिके धारक हो। हे प्रभो ! तुमही गुरु तुमही बांधव तुमही मोक्षमार्गके नियंता परमेश्वर इंद्रादिक देवनिकर पूज्य धर्म तीर्थके कर्ता जिनकर भव्य जीवनिको सुख होय सर्व दुखके हरणहारे कर्मोंके अन्तक नमस्कार तुमको, हे लब्धलभ्य ! नमस्कार तुमको, लब्धलभ्य कहिये पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने महा शांत स्वभावविषै विराजमान सर्वदोषरहित हे भगवान कृपा करो वह अखंड अविनाशी पद हमें देवो इत्यादि महास्तोत्र पढते कमलनयन श्रीराम प्रदक्षिणा देकर बंदना करते भए महा विवेकी पुण्य कर्मविषै सदा प्रवीण अर रामके पीछे नम्रीभूत है अंग जाका दोऊकर जोडें महासमाधानरूप जानकी स्तुति करती भई श्रीरामके शब्द महा दुंदुभी समान अर जानकी महामिष्ट कोमल बीण समान बोलती भई अर विशल्या सहित लक्ष्मण स्तुति करते भए अर भामण्डल सुग्रीव तथा हनूमान मंगल स्तोत्र पढते भए जोडे हैं कर कमल जिन्होंने अर जिनराजविषै पूर्ण है भक्ति जिनकी महा गान करते मृदंगादि बजावते महा ध्वनि करते भए मयूर मेघकी ध्वनि जान नृत्य करते भए बारम्बार स्तुति प्रणाम कर जिनमंदिरविषै यथायोग्य तिष्ठे। ता समय राजा विभीषण अपने दादा सुमाली अर तिनके लघुवीर माल्यवान् अर सुमालीके पुत्र रत्नश्रवा रावणके पिता तिनको आदि दे अपने बडे तिनको समाधान करता भया, कैसा है विभीषण संसारकी अनित्यताके उपदेशविषै अत्यन्त प्रवीण सो बडोंको कहता भया हे तात ! यह सकल जीव अपने उपार्जे कर्मोंको भोगे हैं तातै शोक करना वृथा है अर अपना चित्त समाधान करो आप जिन आगमके वेत्ता महा शांतिचित्त अर विचक्षण हो औरोंको उपदेश देयवे योग्य आपको हम कहा कहें जो प्राणी उपजा है सो अवश्य मरणको प्राप्त होय है अर यौवन पुष्पनिकी सुगं-

घतासमान क्षणमात्रविषै और रूप होय है अर लक्ष्मी पल्लवोंकी शोभासमान शीघ्र ही और रूप होय है अर विजुरीके चमत्कार समान यह जीतव्य है अर पानीके बुदबुदासमान बंधुनिका समागम है अर सांझके बादरके रंग समान यह भोग है जो यह जीव पारमार्थिक नयकर मरण न करे तो हम भवान्तरसे तिहारे वंशविषै कैसे आवते ? हे तात ! अपना ही शरीर विनाशीक है तो हितु जनका अत्यन्त शोक काहेको करिए शोक करना मूढता है सत्पुरुषोंको शोकसे दूर करिवे अर्थ संसारका स्वरूप विचारणा योग्य है देखे सुने अनुभवे जे पदार्थ वे उत्तम पुरुषोंको शोक उपजावे हैं परन्तु विशेष शोक न करना क्षणमात्र भया तो भया या शोककर बांधवका मिलाप नाहीं बुद्धिभ्रष्ट होय है तातैं शोक न करना यह विचारणा या संसार असारविषै कौन कौन न भए ऐसा जान शोक तजना अपनी शक्ति प्रमाण जिनधर्मका सेवन करना । यह वीतरागका मार्ग संसार सागरका पार करणहारा है सो जिनशासनविषै चित्त धर आत्मकल्याण करना इत्यादि मनोहर मधुर वचननिकर विभीषणने अपने वडानिका समाधान किया।

बहुरि अपने निवास गया अपनी विदग्धनामा पटराणी समस्त व्यवहारविषै प्रवीण हजारा राणीनिमें मुख्य ताहि श्रीरामके नोतिवेको भेजा सो आयकर सीतासहित रामको अर लक्ष्मणको नमस्कार कर कहती भई—हे देव ! मेरे पतिका घर आपके चरणारविन्दके प्रसंगकर पवित्र करहु आप अनुग्रह करिवे योग्य हो या भांति राणी विनती करे है तबही विभीषण आया, अतिआदर तैं कहता भया—हे देव ! उठिये मेरा घर पवित्र करिए तब आप याके लार ही याके घर जायवेको उद्यमी भए नानाप्रकार के वाहन कारी घटा समान गज अति उत्तंग अर पवनसमान चंचल तुरंग अर मन्दिरसमान रथ इत्यादि नाना प्रकारके जे वाहन तिनपर आरूढ अनेक राजा तिन सहित विभीषणके घर पधारे, समस्त राजमार्ग सामंतनि कर आच्छादित भया । विभीषणने नगर उछाला, मेघकी ध्वनि समान वादित्र वाजते भए,

शंखनिके शब्द कर गिरिकी गुफा नाद करती भई, झंझा भेरी मृदंग ढोल हजारों बाजते भए, लपाक काहल धुन्धु अनेक बाजे अर दुंदभी बाजे दशों दिशा वादित्रों के नाद कर पूरी गई। ऐसे ही तो वादित्रनिके शब्द अर ऐसेही नानाप्रकार के बाहनानिके शब्द ऐसेही सामंतानिके अट्टहास तिनकर दशों दिशा पूरित भई कैयक सिंह शार्दूल पर चढे हैं, कैयक रथनि पर चढे हैं कैयक हाथिनि पर कैयक तुरंगनि पर चढे हैं नानाप्रकारके विद्यामई तथा सामान्य बाहन तिनपर चढे चले, नृत्यकारिणी नृत्य करें हैं नट भाट अनेक कला अनेक चेष्टा करे हैं अति सुंदर नृत्य होय है बंदीजन विरद बखाने हैं ऊचें स्वरसे स्तुति करे हैं, अर शरदकी पूर्णमासी के चन्द्रमा समान उज्वल छत्रानिके मंडल कर अंबर छाय रहा है नाना प्रकारके आयुधनिकी कांति कर सूर्य की किरण दब गई है, नगरके सकल नर नारीरूप कमलनिके वनको आनन्द उपजावते भानु समान श्रीराम विभीषणके घर आए। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! ता समयकी विभूति कही न जाय, महा शुभ लक्षण जैसी देवनिके शोभा होय तैसी भई। विभीषणने अर्घपाद्य किये, अति शोभा करी। श्रीशांतिनाथ के मंदिर तैं लेय अपने महिलतक महा मनोग्य तांडव किये आप श्रीराम हाथीसे उतर सीता अर लक्षमण सहित विभीषणके घरमें प्रवेश करते भये, विभीषणके महिलके मध्य पद्मप्रभु जिनेंद्रका मंदिर रत्ननिके तोरणनिकर मंडित कनकमई ताके चौगिर्द अनेक मंदिर जैसे पर्वतनिके मध्य सुमेरु सोहै तैसे पद्मप्रभुका मंदिर सोहै सुवर्णके हजारा थम्भ तिनके उपर अतिऊंचे देदीप्यमान अति विस्तारसंयुक्त जिन मंदिर सोहैं, नानाप्रकारके मणिनिके समूह कर मंडित अनेक रचनाको धरे अति सुंदर पद्मराग मणिमई पद्मप्रभु जिनेंद्रकी प्रतिमा अति अनुपम विराजै जाकी कांतिकर मणिनिकी भूमि विषै मानों कमलनिका वन फूल रहे हैं। सो रामलक्ष्मण सीतासहित बंदना कर स्तुतिकर यथायोग्य तिष्ठे॥

अथानन्तर विद्याधरनिकी स्त्री राम लक्ष्मण सीताके स्नानकी तयारी करावती भई, अनेक प्रकारके सुगन्ध तेल तिनके उबटना किये, नासिकाको सुगन्ध अर देहकूं अनुकूल पूर्व दिशाको मुख कर स्नान की चौकी पर विराजे, बडी ऋद्धिकर स्नानको प्रवरते सुवर्णके मरकत मणिके हीरानिके स्फटिक मणिके इंद्रनीलमणिके कलश सुगंध जलके भरे तिनकर स्नान भया, नाना प्रकारके वादित्र बाजे, गीत गान भए, जब स्नान होय चुका तब महापवित्र वस्त्र आभूषण पहिरे बहुरि पद्मप्रभुके चैत्यालय जाय वन्दना करी। विभीषणने रामकी मिजमानी करी ताका विस्तार कहां लग कहिए, दुग्ध दही घी शर्बत की वावडी भरवाई पक्वान अर अन्नके पर्वत किए अर जे अद्भुत वस्तु नन्दनादि वन विषै पाइये ते मंगाई मनको आनन्दकारी नासिकाको सुगंध नेत्रोंको प्रिय अति स्वादको धरे जिह्वाको वल्लभ षट रससहित भोजनकी तैयारी करी, सामग्री तो सर्व सुन्दर ही हुती अर सीताके मिलापकर रामको अति प्रिय लगी रामके चित्तकी प्रसन्नता कथनमें न आवै जब इष्टका संयोग होय तब पांचों इंद्रियनिके सर्व ही भोग प्यारे लगें नातर नाहीं, जब अपने प्रीतमका संयोग होय तब भोजन भली भांति रुचै सुगंध रुचै सुंदर वस्त्रका देखना रुचै रागका सुनना रुचै कोमल स्पर्श रुचै मित्रके संयोगकर सब मनोहर लगै, अर जब मित्रका वियोग होय तब स्वर्ग तुल्य विषय भी नरक तुल्य भासै अर प्रियके समागम विषै महा विषमवन स्वर्गतुल्य भासै महा सुंदर अमृतसारिखे रस अर अनेक वर्णके अद्भुत भक्ष्य तिनकर रामलक्ष्मण सीताको तृप्त किये अद्भुत भोजन क्रिया भई, भूमिगोचरी विद्याधर परिवारसहित अति सन्मानकर जिमाए, चन्दनादि सुगन्धके लेप किये तिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं अर भद्रसाल नंदनादिक वनके पुष्पनिसे शोभित किए अर महा सुन्दर कोमल महीन वस्त्र पहिराए नानाप्रकारके रत्ननिके आभूषण दिए कैसे हैं आभूषण? जिनके रत्ननिकी ज्योतिके समूहकर दशोंदिशाविषै प्रकाश हो रहा है। जेते रामकी

सेनाके लोक थे वे सब विभीषणने सनमान कर प्रसन्न किये सबके मनोरथ पूर्ण किये रात्रि अर दिवस सब विभीषण ही का यश करें अहो यह विभीषण राक्षसवंशका आभूषण है, जाने राम लक्षमणकी बडी सेवा करी यह महा प्रशंसा योग्य है मोटा पुरुष है यह प्रभावका धारक जगतविषे उतंगताको प्राप्त भया, जाके मंदिर श्रीराम लक्षमण पधारे, या भांति विभीषणके गुण ग्रहणविषे तत्पर विद्याधर होते भए। सर्व लोक सुखसे तिष्ठे राम लक्षमण सीता अर विभीषणकी कथा पृथिवीविषे प्रवरती।

अथानन्तर विभीषणादिक सकल विद्याधर राम लक्षमणका अभिषेक करनेको विनयकर उद्यमी भए तब श्रीराम लक्षमणने कहा अयोध्याविषे हमारे पिताने भाई भरतकूं अभिषेक कराया सो भरत ही हमारे प्रभु हैं तब सबने कही आपको यही योग्य है परन्तु अब आप त्रिखंडी भए तो यह मंगल स्नान योग्य ही है यामें कहा दोष है अर ऐसी सुननेविषे आवै है भरत महा धीर है अर मन वचन काय कर आपकी सेवाविषे प्रवरते है विक्रियाको नाहीं प्राप्त होय है ऐसा कह सबने रामलक्षमणका अभिषेक किया जगतविषे बलभद्र नारायणकी अति प्रशंसा भई जैसे स्वर्गविषे इंद्र प्रतिइंद्रकी महिमा होइ तैसे लंका विषे राम लक्षमणकी महिमा भई, इंद्रके नगर समान वह नगर महा भोगनिकर पूर्ण तहां राम-लक्षमणकी आज्ञासे विभीषण राज्य करे है, नदी सरोवरनिके तीर अर देश पुर ग्रामादिविषे विद्याधर राम लक्षमणही का यश गावते भए, विद्याकरयुक्त अद्भुत आभूषण पहिरे सुन्दर वस्त्र मनोहर हार सु-गंधादिकके विलेपन उनकर युक्त क्रीडा करते भए जैसे स्वर्गविषे देव क्रीडा करें अर श्रीरामचन्द्र सीता का मुख देखते तृप्ति को न प्राप्त भए। कैसा है सीताका मुख? सूर्यके किरणकर प्रफुल्लित भया जो क-मल ता समान है प्रभा जाकी, अत्यन्त मनकी हरणहारी जो सीता ता सहित राम निरन्तर रमणीय भूमिविषे रमते भए अर लक्षमण विशल्या सहित रतिको प्राप्त भए मन बांछित सकल वस्तुका है समा-गम जिनके उन दोऊ भाईनिके बहुत दिन भोगोपभोगयुक्त सुखसे एक दिवस समान गए।

एक दिन लक्ष्मण सुन्दर लक्षणोंका धरणहारा विराधितको अपनी जे स्त्री तिनके लेयबे अर्थ पत्र लिख बडी ऋद्धिसे पठावता भया सो जायकर कन्यानिके पितानिको पत्र देता भया, माता पितानिने बहुत हर्षित होय कन्यानिको पठाई सो बडी विभूतिसों आई देशांग नगरके स्वामी बज्रकर्णकी पुत्री रूपवती महारूपकी धरणहारी अर कूबर स्थानके नाथ बालखिल्यकी पुत्री कल्याण माला परम सुंदरी अर पृथ्वीपुर नगरके राजा पृथ्वीधरकी पुत्री बनमाला गुणरूपकर प्रसिद्ध अर खेमांजलके राजा जितशत्रुकी पुत्री जितपद्मा अर उज्जैन नगरीके राजा सिंहोदरकी पुत्री यह सब लक्ष्मणके समीप आई विराधित ले लाया जन्मान्तरके पूर्ण पुण्य दया दान मन इंद्रियोंको वशकरना शील संयम गुरुभक्ति महा उत्तम तप इन शुभ कर्मनिकर लक्ष्मणसा पति पाईये इन पतिव्रतानिने पूर्व महा तप किए हुते रात्रि भोजन तथा चतुर्विधि संघकी सेवा करी तातैं बासुदेव पति पाये उनको लक्ष्मण ही वर योग्य अर लक्ष्मणके ऐसे ही स्त्री योग्य तिनकर लक्ष्मणको अर लक्ष्मणकर तिनको अति सुख होता भया। परस्पर सुखी भए गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक! जगतविषै ऐसी संपदा नाहीं ऐसी शोभा नाहीं ऐसी लीला नाहीं ऐसी कला नाहीं जो इनके न भई। राम लक्ष्मण अर इनकी राणी तिनकी कथा कहां लग कहें अर कहां कमल कहां चन्द्र इनके मुखकी उपमा पावै अर कहां लक्ष्मी अर कहां रति इनकी राणियोंकी उपमा पावें राम लक्ष्मणकी ऐसी संपदा देख विद्याधरोंके समूहको परम आश्चर्य होता भया। चंद्रावर्धनकी पुत्री अर और अनेक राजानिकी कन्या तिनसे श्रीराम लक्ष्मणका अति उत्सवसे विवाह होता भया। सब लोकको आनन्दके करणहारे वे दोऊ भाई महा भोगानिके भोगता मनवांछित सुख भोगते भए। इंद्र प्रतींद्र समान आनन्द कर पूर्ण लंका विषै रमते भए, सीता विषै है अत्यन्त राग जिनका ऐसे श्रीराम तिन्होंने छहवर्ष लंकाविषै व्यतीत किये सुखके सागरविषै मग्न सुन्दर चेष्टाके धरणहारे श्रीरामचन्द्र सकल दुःख भूल गए॥

अथानन्तर इंद्रजीत मुनि सर्व पापानिके हरनहारे अनेक ऋद्धि सहित विराजमान पृथिवीविषै विहार करते भए, वैराग्यरूप पवनकर प्रेरी ध्यानरूप अग्निकर कर्मरूपवन भस्म किये। कैसा है ध्यानरूप अग्नि? क्षायिक सम्यक्त्वरूप अरण्यकी लकडी ताकर करी है अर मेघवाहन मुनि भी विषयरूप ईंधनको अग्नि समान आत्मध्यानकर भस्म करते भए, केवल ज्ञानको प्राप्त भए केवलज्ञान जीवका निजस्वभाव है अर कुम्भकर्ण मुनि सम्यक् दर्शन ज्ञानचारित्रके धारक शुक्ल लेश्या कर निर्मल जो शुक्लध्यान ताके प्रभावकर केवलज्ञानको प्राप्त भए। लोक अर अलोक इनको अवलोकन करते मोहरज रहित इंद्रजीत कुंभकर्ण केवली आयु पूर्णकर अनेक मुनिनि सहित नर्मदाके तीर सिद्धपदको प्राप्त भए सुरअसुर मनुष्यनिके अधिपतिनिकर गाइये है उत्तम कीर्ति जिनकी शुद्ध शीलके धरणहारे महादेदीप्यमान जगत बन्धु समस्त ज्ञेयके ज्ञाता जिनके ज्ञान समुद्रविषैं लोकालोक गायके खुर समान भासैं संसारका क्लेश महा विषम ताके जालसे निकसे जा स्थानक गए बहुरि यत्न नाहीं तहां प्राप्त भये उपमारहित निर्विघ्न अखंडसुखको प्राप्त भए जे कुंभकर्णादिक अनेक सिद्ध भए ते जिनशासनके श्रोतावोंको आरोग्य पद देवें। नाश किये हैं कर्म शत्रु जिन्होंने ते जिनस्थानकोंसे सिद्धभए हैं वे स्थानक अद्यापि देखिये है वे तीर्थ भव्यनिकर वंदवे योग्य हैं विंध्याचलकी बनी विषै इंद्रजीत मेघनाद तिष्ठे सो तीर्थ मेघरव कहावें है अर जम्बूमाली महा बलवान तूणीमंत नामापर्वतविषै अहमिंद्र पदको प्राप्त भए सो पर्वत नानाप्रकारके वृक्ष अर लतानिकर मंडित अनेक पक्षिनिके समूहकर तथा नानाप्रकारके वनचरनिकर भरा। अहो भव्यजीव हो! जीवदया आदि अनेक गुणनिकर पूर्ण ऐसा जो जिनधर्म ताके सेवनेसे कछु दुर्लभ नाहीं, जिनधर्मके प्रसादसे सिद्धपद अहमिंद्रपद इत्यादिके पद सबही सुलभ हैं, जम्बूमालीका जीव अहमिंद्र पदसे ऐरावतक्षेत्र विषै मनुष्य होय केवल उपाय सिद्धपदको प्राप्त होवेंगे अर मंदोदरीका पिता चारण मुनि होय

महा ज्योतिको धरे अढाईद्वीप विषै कैलाश आदि निर्वाण क्षेत्रनिकी अर चैत्यालयोंकी वंदना करते भए देवोंका है आगमन जहां सो मय महामुनि रत्नत्रय रूप आभूषण कर मंडित महाधीर्यधारी पृथिवीविषै विहार करें अर मारीच मंत्री महा मुनि स्वर्गविषै बडी ऋद्धिके धारी देव भए जिनका जैसा तप तैसा फल पाया। सीताके दृढव्रत कर पतिका मिलाप भया जाको रावण डिगाय न सका। सीताका अतुल धीर्य अद्भुतरूप महानिर्मल बुद्धि भरतारविषै अधिकस्नेह जो कहनेविषै न आवै सीता महा गुणनिकर पूर्ण शीलके प्रसादतैं जगतविषै प्रशंसा योग्य भई। कैसी है सीता एक निजपतिविषै है संतोष जाके भवसागरकी तरणहारी परम्पराय मोक्षकी पात्र जाकी साधु प्रशंसा करें। गौतमस्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक! जो स्त्री विवाह ही नहीं करे बालब्रह्मचर्य धरै सो तो महा भाग्य ही है अर पतिव्रताका व्रत आदरै मन वचनकायकर परपुरुषका त्याग करै तो यह व्रत भी परम रत्न है स्त्रीको स्वर्ग अर परम्पराय मोक्ष देयवेको समर्थ है शीलव्रत समान और व्रत नाहीं, शील भवसागरकी नाव है। राजा मय मंदोदरीका पिता राज्य अवस्थाविषै मायाचारी हुता अर कठोरपरणामी हुता, तथापि जिन धर्मके प्रासदकर राग द्वेषरहित हो अनेक ऋद्धिका धारक मुनि भया।

यह कथा सुन राजा श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछते भए—हे नाथ! मैं इंद्रजीतादिकका माहात्म्य सब सुना अब राजा मयका माहात्म्य सुना चाहू हूं अर हे प्रभो! जो या पृथिवीविषै पतिव्रता शीलवंती स्त्री हैं निज भारतविषै अनुरक्त हैं वे निश्चयसे स्वर्ग मोक्षकी अधिकारिणी हैं तिनकी महिमा मोहि विस्तारसू कहो। तब गणधर कहते भए जे निश्चयकर सीता समान पतिव्रता शीलको धारण करै हैं ते अल्प भवमें मोक्ष होय हैं पतिव्रता स्वर्गही जाय परम्पराय मोक्ष पावैं, अनेक गुणनिकर पूर्ण। हे राजन् जे मन वचन काय कर शीलवन्ती हैं चित्तकी वृत्ति जिन्होंने रोकी है ते धन्य हैं, घोडनिमें हाथिनिमें

लोहेनिविषै पाषाणविषै वस्त्रनिविषै जलविषै वृक्षनिविषै वेलनिविषै स्त्रीनिविषै पुरुषनिविषै बडा अंतर है सबही नारियोंमें पतिव्रता न पाईये अर सबही पुरुषनिमें विवेकी नाहीं। जे शील रूप अंकुश कर मनरूप माते हाथिको वश करें ते पतिव्रता हैं। पतिव्रता सबही कुलमें होय हैं अर वृथा पतिव्रता का अभिमान किया तो कहा ? जे जिनधर्मसे वहिरमुख हैं ते मनरूप माते हाथीको वश करबे समर्थ नाहीं, वीतरागकी वाणीकर निर्मल भया है चित्त जिनका तेई मनरूप हस्तीको विवेक रूप अंकुश कर वशीभूत कर दया शीलके मार्ग विषै चलायबे समर्थ हैं। हे श्रेणिक ! एक अभिनाम स्त्री ताकी संक्षेपसे कथा कहिए है—सो सुन, यह प्राचीन कथा प्रसिद्ध है एक ध्यानग्रामनामा ग्राम तहां नोदन नामा ब्राह्मण ताके अभिमाना नामा स्त्री सो आग्निनामा ब्राह्मणकी पुत्री माननी नाम मातोके उदरमें उपजी, सो आति अभिमान की धरणहारी सो नोदन नामा ब्राह्मण क्षुधाकर पीडित होय अभिमानाको तज दई सो गजवनविषै करूरुह नाम राजाको प्राप्त भई, वह राजा पुष्प प्रकीर्ण नगरका स्वामी लंपट सो ब्राह्मणीको रूपवन्ती जान लेगया, स्नेह कर घरविषै राखी। एक समय रातिविषै ताने राजाके मस्तक विषै चरणकी लात दई। प्रातः समय सभाविषै राजाने पंडितानिसे पूछी—जाने मेरा सिर पांव कर हता होय ताका कहा करना। तब मूर्ख पंडित कहते भए—हे देव ! ताका पांव छेदना अथवा प्राण हरना ता समय एक हेमांक नामा ब्राह्मण राजाके अभिप्रायका वेत्ता कहता भया ताके पांवकी आभूषणादि कर पूजा करना तब राजाने हेमांकको पूछी—हे पंडित ! तुमने रहस्य कैसे जाना तब ताने कही—स्त्रीके दंतनिके तिहारे अधरोंविषै चिन्ह दीखे तातैं यह जानी स्त्रीके पांवकी लागी। तब राजाने हेमांकको अभिप्रायका वेत्ता जान अपना निकट कृपापात्र किया बडी ऋद्धि दई सो हेमांकके घरके पास एक मित्रयशा नामा विधवा ब्राह्मणी महादुःखी अमोघ सर नाम ब्राह्मणकी स्त्री है सो रहे सो अपने पुत्रको शिक्षा देती

हुती भरतारके गुण चितार चितार कहती भई हे पुत्र ! बाल अवस्था विषे जो विद्याका अभ्यास करै सो हेमांककी न्याई महा विभूतिको प्राप्त होय, या हेमांकने बाल अवस्थाविषे विद्याका अभ्यास किया सो अब याकी कीर्ति देख अर तेरा बाप धनुष बाण विद्याविषे अति प्रवीण हुता ताके तुम सुपुत्र भये आंसू डार माताने यह वचन कहे ताके वचन सुन माताको धीर्य बंधाया महा अभिमानका धारक यह श्रीवार्धित नामा पुत्र विद्या सीखनेके अर्थ व्याघपुर नगर गया सो गुरुके निकट शस्त्र शास्त्र सर्व विद्या सीखी अर या नगरके राजा सुकांतकी शीला नामा पुत्री ताहि ले निकसा । तब कन्याका भाई सिंहचन्द्र या ऊपर चढा सो या अकेलेने शस्त्रविद्याके प्रभावकर सिंहचंद्रको जीता अर स्त्रीसहित माताके निकट आया । माताको हर्ष उपजाया शस्त्र कला कर याकी पृथिवीविषे प्रसिद्ध कीर्ति भई सो शस्त्रके बल कर पोदनापुरके राजा राजा करूरुहको जीत्या अर व्याघ्रपुरका राजा शीलाका पिता मरणको प्राप्त भया ताका पुत्र सिंहचंद्र शत्रूनिने दवाया सो सुरंगके मार्ग होय अपनी रानी को ले निकसा राज्यभ्रष्ट भया पोदनापुर विषे अपनी बाहिनका निवास जान तंबोलीके लार पानोंकी झोली सिर पर धर स्त्रीसहित पोदनापुरके समीप आया रात्रिको पोदनापुरके बनमें रहा ताकी स्त्री सर्प ने डसी तब यह ताहि कांधे धर जहां मय महा मुनि विराजे हुते वे वज्रके थंभ समान महानिश्चल कायोत्सर्ग धरे अनेक ऋद्धिके धारक तिनको भी सर्व औषधि ऋद्धि उपजी हुती सो तिनके चरणारविंदके समीप सिंहचंद्रने अपनी राणी डारी सो तिनके ऋद्धिके प्रभाव कर राणी निर्विष भई स्त्री सहित मुनिके समीप तिष्ठे थी ता मुनिके दर्शनकूं विनयदत्त नाम श्रावक आया ताहि सिंहचन्द्र मिला अर अपना सब वृत्तांत कहा तब तानें जाय कर पोदनापुरके राजा श्रीवार्धितको कहा जो तिहारी स्त्रीका भाई सिंहचन्द्र आया है तब वह शत्रु जान युद्धको उद्यमी भया तब विनयदत्तने यथावत् वृत्तांत कहा जो तिहारे शरण आया है, तब ताहि

बहुत प्रीति उपजी अर महाविभूतिसे सिंहचन्द्रके सन्मुख आया, दोनो मिले, अति हर्ष उपजा। बहुरि श्रीवर्धित मय मुनिको पूछता भया हे भगवान ! मैं मेरे अर अपने स्वजनोंके पूर्व भव सुना चाहूं हूं-तब मुनि कहते भए-एक शोभपुरनामा नगर वहां भद्राचार्य दिगंबरने चौमासेविषै निवास किया सो अमलनामा नगरका राजा निरंतर आचार्यके दर्शनको आवै सो एक दिवस एक कोढिनी स्त्री ताकी दुर्गंध आई सो राजा पांवपयादाही भाग अपने घर गया ताकी दुर्गंध सह न सका अर वह कोढनीने चैत्यालय दर्शनकर भद्राचार्यके समीप श्राविकाके व्रत धारे, समाधि मरण कर देवलोक गई वहांते चयकर तेरी स्त्री शीला भई अर वह राजा अमल अपने पुत्रकों राज्य भार सोंप आप श्रावकके व्रत धारे आठ ग्राम पुत्र पै ले संतोष धरा शरीर तज देव लोक गया वहांसे चयकर तू श्रीवर्धित भया॥

अब तेरी माताके भव सुन-एक विदेशी क्षुधाकर पीडित ग्रामविषै आय भोजन मांगता भया सो जब भोजन न मिला तब महा कोपकर कहता भया कि मैं तिहारा ग्राम बालूंगा ऐसे कटुक शब्द कह निकसा। दैवयोगसे ग्रामविषै आग लगी सो ग्रामके लोगनिने जानी ताने लगाई तब क्रोधायमान होय दौडे अर ताहि ल्याय अग्निविषै जराया सो महा दुःखकर राजाकी रसोवणि भई। मरकर नरकविषै घोरवेदना पाई तहांसे निकसी तेरी माता मित्रयशा भई अर पोदनापुरविषै एक गोवाणिज गृहस्थ मर कर तेरी स्त्रीका भाई सिंहचन्द्र भया अर वह भुजपत्रा ताकी स्त्री रतिवर्धना भई। पूर्वभवविषै पशुओंपै बोझ लादे थे सो या भवविषै भार वहै, ये सर्वके पूर्व जन्म कहकर मय महा मुनि आकाश मार्ग विहारकर गए अर पोदनापुरका राजा श्रीवर्धित सिंहचन्द्रसहित नगरविषै गया। गौतम स्वामी कहे हैं-हे श्रेणिक ! यह संसारकी विचित्र गति है कोईयक तो निर्धनसे राजा हो जाय अर कोईयक राजासे निर्धन होजाय है। श्रीवर्धित ब्राह्मणका पुत्र सो राजा होय गया अर सिंहचन्द्र राजाका पुत्र सो राज्यभ्रष्ट होय श्रीव-

र्धितके समीप आया। एक गुरुके निकट प्राणी धर्मका श्रवण करै तिनविषै कोई समाधि मरणकर सुगति पावै कोई कुमरणकर दुर्गति पावै कोई रत्ननिके भरे जहाज सहित समुद्र उलंघ सुखसे स्थानक पहुंचे, कोऊ समुद्रविषै डूबे, कोईको चोर लूट लेय जावै ऐसा जगत्का स्वरूप विचित्र गति जान जे विवेकी हैं ते दया दान विनय वैराग्य जप तप इन्द्रियोंका निरोध शांतता आत्मध्यान तथा शास्त्राध्ययनकर आत्मकल्याण करैं ऐसे मय मुनिके वचन सुन राजा श्रीवर्धित अर पोदनापुरके बहुतलोक शांतचित्त होय जिनधर्मका आराधन करते भए यह मय मुनिका माहात्म्य जे चित्त लगाय पढैं सुनैं तिनको वैरियोंकी पीडा न होय सिंहव्याघ्रादि न हतें सर्पादि न डसें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै मयमुनिका माहात्म्य वर्णन करनेवाला अस्सीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८० ॥

अथानन्तर लक्ष्मणके बडे भाई श्रीरामचन्द्र स्वर्गलोक समान लक्ष्मीको मध्यलोकविषै भोगते भए चन्द्र सूर्य समान है कांति जाकी अर इनकी माता कौशल्या भर्तार अर पुत्रके वियोगरूप अग्निकी ज्वालाकर शोकको प्राप्त भया है शरीर जाका महिलके सातवें खण बैठी सखियोंकर मंडित अतिउदास आंसुनिकर पूर्ण है नेत्र जाके जैसे गायको बच्छेका वियोग होय अर वह व्याकुल होय ता समान पुत्रके स्नेहविषै तत्पर तीव्र शोकके सागरविषै मग्न दशों दिशाकी ओर देखै महिलके शिखरविषै तिष्ठता जो काग ताहि कहै है हे वायस! मेरा पुत्र राम आवे तो तोहि खीरका भोजन दूं ऐसे वचन कहकर विलाप करे अश्रुपातकर किया है चातुर्मास जिसने हाय वत्स तू कहां गया मैं तुझे निरंतर सुखसे लडाया था तेरे विदेश भ्रमणकी प्रीति कहांसे उपजी कहा पल्लव समान तेरे चरण कोमल कठोर पंथविषै पीडा

न पावें ? महा गहन वनविषै कोन वृक्षके तले विश्राम करता होयगा ? मैं मन्दभागिनी अत्यन्त दुःखी मुझे तजकर तू भाई लक्ष्मण सहित किस दिशाको गया ? या भांति माता विलाप करै ता समय नारद ऋषि आकाशके मार्गविषै आए पृथिवीमें प्रसिद्ध सदा अढाई द्वीपविषै भ्रमते ही रहैं सिरपर जटा शुक्ल वस्त्र पहिरे उसको समीप आवता जान कौशल्याने उठकर सन्मुख जाय नारदका आदरसहित सिंहासन बिछाय सन्मान किया तब नारद उसे अश्रुपात सहित शोकवन्ती देख पूछते भए हे कल्याणरूपिणी तुम ऐसी दुःखरूप क्यों तुमको दुःखका कारण क्या सुकौशल महाराजकी पुत्री, लोकविषै प्रसिद्ध राजा दशरथकी राणी प्रशंसा योग्य श्रीरामचन्द्र मनुष्यनिविषै रत्न तिनकी माता महासुन्दर लक्षणकी धरणहारी तुमको कौनने रुसाई जो तिहारी आज्ञा न माने सो दुरात्मा है अबार ही ताका राजा दशरथ निग्रह करें तब नारदको माता कहती भई—हे देवर्षे ! तुम हमारे घरका वृत्तांत नहीं जानों हो तातैं कहो हो अर तिहारा जैसा वात्सल्य या घरसूं था सो तुम विस्मरण किया कठोर चित्त होय गए अब यहां आवना ही तजा अब तुम बात ही न बूझो। हे भ्रमणप्रिय ! बहुत दिननिविषै आए। तब नारदने कहा हे—माता ! धातुकी खंड द्वीपविषै पूर्व विदेह क्षेत्र वहां सुरेंद्ररमण नामा नगर वहां भगवान तीर्थंकर देवका जन्मकल्याण भया सो इंद्रादिक देव आए, भगवानको सुमेरुगिरि लेगए अद्भुत विभूतिकर जन्माभिषेक किया सो देवाधिदेव सर्व पापके नाशनहारे तिनका अभिषेक मैं देख्या जाहि देखे धर्मकी बढवारी होय वहां देवानिने आनन्दसे नृत्य किया। श्रीजिनेंद्रके दर्शनविषै अनुरागरूप है बुद्धि मेरी सो महामनोहर धातकी खंडविषै तेईस वर्ष मैंने सुखसे व्यतीत किये, तुम मेरी मातासमान सो तुमको चितार या जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै आया अब कोइयक दिन इस मंडलहीविषै रहूंगा अब मोहि सब वृत्तांत कहो तिहारे दर्शनको आया हूं तब कौशल्याने सर्व वृत्तांत कहा। भामंडलका यहां आवना

अर विद्याधरानिका यहां आवना अर भामण्डलको विद्याधरनिका राज्य अर राजा दशरथका अनेक राजानि सहित वैराग्य अर रामचन्द्रका सीता सहित अर लक्षमणके लार विदेशको गमन बहुरि सीता का वियोग सुग्रीवादिकका रामसे मिलाप रावणसे युद्ध लंकेशकी शक्तिका लक्षमणके लगना बहुरि द्रोणमेघकी कन्याका तहां गमन एती खबर हमको है बहुरि क्या भया सो खबर नाहीं, ऐसा कह महा दुःखित होय अश्रुपात डारती भई अर विलाप किया—हाय ! हाय ! पुत्र तू कहां गया, शीघ्र अब मोसे वचन कह, मैं शोकके सागरविषे मग्न ताहि निकास मैं पुण्यहीन तेरे मुख देखे विना महा दुःखरूप अग्निसे दाहको प्राप्त भई याहि साता देवो अर सीता वाला पापी रावण तोहि बंदीगृहविषे डारी महा दुःखसे तिष्ठती होयगी निर्दई रावणने लक्षमणके शक्ति लगाई सो न जानिए जीवे है के नाहीं। हाय दोनों दुर्लभ पुत्र हो, हाय सीता ! तू पतिव्रता काहे दुःखको प्राप्त भई। यह वृत्तांत कौशल्याके मुख सुन नारद अति खेदखिन्न भया बीण धरतीविषे डार दई अर अचेत होय गया बहुरि सचेत होय कहता भया हे माता ! तुम शोक तजो मैं शीघ्रही तिहारे पुत्रानिकी वार्ता क्षेम कुशलकी लाऊं हूं मेरे सब बातविषे सामर्थ्य है यह प्रतिज्ञाकर नारद बीणको उठाय कांधे धरी आकाश मार्ग गमन किया पवन समान है वेग जाका अनेक देश देखता लंकाकी ओर चला सो लंकाके समीप जाय विचारी राम लक्षमणकी वार्ता कौन भांति जानिवेविषे आवै जो रामलक्षमणकी वार्ता पूछिए तो रावणके लोकानिसे विरोध होय तातैं रावणकी वार्ता पूछिए तो योग्य है रावणकी वार्ता कर उनकी वार्ता जानी जायगी। यह विचार नारद पद्म सरोवर गया तहां अन्तःपुर सहित अंगद क्रीडा करता हुता ताके सेवकानिको रावणकी कुशल पूछी वे किंकर सुनकर क्रोधरूप होय कहते भए यह दुष्टतापस रावणका मिलापी है याको अंगदके समीप ले गए जो रावणकी कुशल पूछै है। नारदने कहा मेरा रावणसे कछु प्रयोजन नाहीं तब किंकरानिने कही

तेरा कछु प्रयोजन नाहीं तो रावणकी कुशल क्यों पूछे था। तब अंगदने हंसकर कहा इस तापसको पद्मनाभिके निकट ले जावो सो नारदको खींचकर ले चले नारद विचारै है न जानिए कौन पद्मनाभी है कौशल्याका पुत्र होय तो मोसे ऐसी क्यों होय, ये मोहि कहां लेजाय हैं, मैं संशयविषै पडा हूं जिन शासनके भक्त देव मेरी सहाय करो, अंगदके किंकर याहि विभीषणके मंदिर श्रीराम विराजे हुते तहां ले गए श्रीराम दूरसे देख याहि नारद जान सिंहासनसे उठे अति आदर किया किंकरनिसे कहा इनसे दूर जावो। नारद श्रीराम लक्ष्मणको देख अति हर्षित भया आशीर्वाद देकर इनके समीप बैठा तब राम बोले अहो क्षुल्लक! कहांसे आए बहुत दिननिविषै आए हो नीके हो तब नारदने कहा तिहारी माता कष्टके सागरविषै मग्न है सो वार्ता कहिवेको तिहारे निकट शीघ्र ही आया हूं, कौशल्या माता महासती जिनमती निरन्तर अश्रुपात डारै है अर तुम विना महा दुखी है जैसे सिंही अपने बालक विना व्याकुल होय तैसे अति व्याकुल भई विलाप करै है जाका विलाप सुन पाषाण भी द्रवीभूत होय तुमसे पुत्र माताके आज्ञाकारी अर तुम होते माता ऐसी कष्टरूप रहै यह आश्चर्यकी बात, वह महागुणवती सांझ सकारेविषै प्राणरहित होयगी जो तुम ताहि न देखोगे तो तिहारे वियोगरूप सूर्यकर सूक जायगी तातैं मोपै कृपा करो उठो ताहि शीघ्रही देखो या संसारविषै माता समान पदार्थ नाहीं तिहारी दोनों मातानिके दुख करके कैकई सुप्रभा सबही दुखी है कौशल्या सुमित्रा दोनों मरणतुल्य होय रही हैं आहार नींद सब गई रात दिन आंसू डारैं हैं तिनकी स्थिरता तिहारे दर्शनही से होय जैसे कुरुचि बिलाप करै तैसे विलाप करैं हैं अर सिर अर उर हाथोंसे कूटे हैं दोनों ही माता तिहारे वियोगरूप अग्निकी ज्वाला कर जरे हैं तिहारे दर्शनरूप अमृतकी धारकर उनका आताप निवारो ऐसे नारदके वचन सुन दोनों भाई मातानिके दुख कर अति दुखी भए शस्त्र डार दीए अर रुदन करने लगे तब सकल विद्याधरनिने

धीर्य बंधाया । राम लक्ष्मण नारदसे कहते भए—अहो नारद ! तुमने हमारा वडा उपकार किया हम दुराचारी माताको भूल गए सो तुम स्मरण कराया तुम समान हमारे और वल्लभ नाहीं वही मनुष्य महा पुण्यवान् हैं जो माताके विनयविषै तिष्ठै हैं दास भए माताकी सेवा करें जे माताका उपकार विस्मरण करे हैं वे महा कृतघ्न हैं या भांति माताके स्नेहकर व्याकुल भया है चित्त जिनका दोनों भाई नारदकी अति प्रशंसा करते भए ॥

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मणने ताही समय अतिविभ्रम चित्त होय विभीषणको बुलाया अर भामंडल सुग्रीवादि पास बैठे हैं । दोऊ भाई विभीषणसे कहते भए—हे राजन् ! इंद्रके भवन समान तेरा भवन तहां हम दिन जाते न जाने अब हमारे माताके दर्शनकी अति वांछा है हमारे अंग अति तापरूप हैं सो माताके दर्शनरूप अमृतकर शांतताको प्राप्त होवें । अब अयोध्या नगरीके देखवेको हमारा मन प्रवरता है वह अयोध्या भी हमारी दूजी माता है तब विभीषण कहता भया—हे स्वामिन् ! जो आज्ञा करोगे सो ही होयगा अवारही अयोध्याको दूत पठावें जो तिहारी शुभवार्ता मातावोंको कहें अर तिहारे आगमकी वार्ता कहें जो मातावोंके सुख होय अर तुम कृपाकर षोडश दिन यहां ही विराजो । हे शरणागत प्रतिपालक मोसे कृपाकरो ऐसा कह अपना मस्तक रामके चरण तले धरा तब राम लक्ष्मणने प्रमाण करी ॥

अथानन्तर भले भले विद्याधर अयोध्याको पठाये सो दोनों माता माहिलपर चढी दक्षिणदिशाकी ओर देख रही हुतीं सो दूरसे विद्याधरोंको देख कौशल्या सुमित्रासे कहती भई—हे सुमित्रा ! देख दोय यह विद्याधर पवनके प्रेरे मेघ तुल्य शीघ्र आवे हैं सो हे श्रावके ! अवश्य कल्याणकी वार्ता कहेंगे यह दोनों भाईयोंके भेजे आवे हैं तब सुमित्राने कही तुम जो कहो हो सो ही होय । यह वार्ता दोऊमातानिमें

होय है तब ही विद्याधर पुष्पनिकी वर्षा करते आकाशसे उतरे अतिहर्षके भरे भरतके निकट आए राजा भरत अति प्रमोदका भरा इनका बहुतसन्मान करता भया, अर यह प्रणामकर अपने योग्य आसनपर बैठे, अति सुन्दर है चित्त जिनका यथावत् वृत्तांत कहते भए।

हे प्रभु राम लक्ष्मणने रावणको हता विभीषणको लंकाका राज्य दीया श्रीराम को बलभद्रपद अर लक्ष्मण को नारायणपद प्राप्त भया, चक्ररत्न हाथमें आया तिन दोनों भाइयोंके तीन खंडका परम उत्कृष्ट स्वामित्व भया, रावणके पुत्र इंद्रजीत मेघनाद भाई कुम्भकर्ण जो बंदीगृहमें थे सो श्रीरामने छोडे तिन्होंने जिनदीक्षा धर निर्वाण पद पाया अर गरुडेंद्र श्रीराम लक्ष्मणसे देशभूषण कुलभूषण मुनिके उपसर्ग निवारिवे कर प्रसन्न भए थे सो जब रावणतें युद्ध भया उसही समय सिंहवाण अर गरुडवाण दिये, इस भांति राम लक्ष्मणके प्रतापके समाचार सुन भरत भूप अति प्रसन्न भए तांबूल सुगंधादिक तिन को दिये अर तिनको लेकर दोनों माताओंके समीप भरत गया, राम लक्ष्मणकी माता पुत्रोंकी विभूतिकी वार्ता विद्याधरोंके मुखसे सुन आनदंको प्राप्त भई उसही समय आकाशके मार्ग हजारों वाह-न विद्यामई स्वर्ण रत्नादिकके भरे आए अर मेघमालाके समान विद्याधरनिके समूह अयोध्यामें आये जैसे देवनिके समूह आवें ते आकाशविषै तिष्ठे नगरविषै नाना रत्नमई वृष्टि करते भए रत्ननिके उद्योत कर दशों दिशाविषै प्रकाश भया, अयोध्याविषै एक एक गृहस्थके घर पर्वत समान सुवर्ण रत्ननि की राशि करी अयोध्याके निवासी समस्त लोक ऐसे अति लक्ष्मीवान किए मानों स्वर्गके देव ही हैं अर नगर विषै यह घोषणा फेरी कि जाके जिस वस्तु की इच्छा होय सो लेवो तब सब लोक आय कर कहते भए हमारे घरमें अटूट भंडार भरे हैं किसी वस्तुकी बांछा नाहीं अयोध्याविषै दरिद्रताका नाश भया, राम लक्ष्मणके प्रतापरूप सूर्य कर फूल गए हैं मुख कमल जिनके ऐसे अयोध्याके नर नारी प्रशंसा करते

भए अर अनेक सिलावट विद्याधर महा चतुर आय कर रत्न स्वर्णमई मंदिर बनावते भए अर भगवान्‌के चैत्यालय महामनोग्य अनेक बनाये मानों विंध्याचलके शिखर ही हैं हजारनि स्तम्भनि कर मंडित नाना प्रकारके मंडप रचे अर रत्ननि कर जडित तिनके द्वार रचे तिन मंदिरनि पर ध्वजानिकी पंक्ति फरहरे हैं तोरणनिके समूह तिन कर शोभायमान जिन मंदिर रचे गिरिनिके शिखर समान ऊंचे तिनविषै महा उत्सव होते भए अनेक आश्चर्य कर भरी अयोध्या होती भई लंकाकी शोभाको जीतनहारी संगीत की ध्वनी कर दशों दिशा शब्दायमान भईं, कारी घटा समान वन उपवन सोहते भए तिन विषै नाना प्रकारके फल फूल तिन पर भ्रमर गुंजार करे हैं समस्त दिशानिविषै वन उपवन ऐसे सोहते भए मानों नन्दन वन ही हैं अयोध्या नगरी बारह योजन लम्बी नव योजन चौडी अतिशोभायमान भासती भई सोलह दिन में विद्याधर शिलावटनि ने ऐसी बनाई जाका सौ वर्ष तक वर्णन भी न किया जाय तहां वापीनिके रत्न स्वर्णके सिवान अर सरोवरनिके रत्नके तट तिन विषै कमल फूल रहे हैं ग्रीष्म विषै सदा भर पूरही रहैं तिनके तट भगवानके मंदिर अर वृक्षनिकी पंक्ति अति शोभाको धरै स्वर्गपुरी समान नगरी निरमापी सो बलभद्र नारायण लंकासे अयोध्याकी ओर गमनको उद्यमी भए गौतमस्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक तिस दिनसे नारदके मुखसे राम लक्ष्मणने मातानिकी वार्ता सुनी ताही दिनसे सब बात भूल गए दोनों मातानिही का ध्यान करते भए पूर्व जन्मके पुण्य कर ऐसे पुत्र पाइये पुण्यके प्रभाव कर सर्व वस्तुकी सिद्धि होवै है पुण्य कर क्या न होय इसलिये हे प्राणी हो पुण्यविषै तत्पर होवो जाकर शोकरूप सूर्यका आताप न होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै अयोध्या नगरीका वर्णन करनेवाला इक्यासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८१ ॥

अथानन्तर सूर्यके उदय होतेही बलभद्र नारायण पुष्पक नामा विमान विषै चढकर अयोध्याको गमन करते भए नानाप्रकारके बाहननिपर आरूढ विद्याधरानिके अधिपति राम लक्ष्मणकी सेवाविषै तत्पर परिवार सहित संग चाले, छत्र अर ध्वाजानि कर रोकी है सूर्यकी प्रभा जिन्होंने आकाशमें गमन करते दूरसे पृथिवीको देखते जाय हैं पृथिवी गिरि नगर वन उपवनादिक कर शोभित लवण समुद्र को उलंघकर विद्याधर हर्ष के भरे लीलासहित गमन करते आगे आए। कैसा है लवण समुद्र ? नानाप्रकार के जलचरजीवनिके समूहकर भरा है। रामके समीप सीता सती अनेक गुणनिकर पूर्ण मानों साक्षात् लक्ष्मीही है सो सुमेरु पर्वतको देखकर रामको पूछती भई हे नाथ! यह जंबूद्वीपके मध्य अत्यन्त मनोग्य स्वर्ण कमल समान कहा दीखे है ? तब राम कहते भए हे देवी ! यह सुमेरु पर्वत है। जहां देवाधिदेव श्रीमुनिसुब्रतनाथका जन्माभिषेक इंद्रादिक देवनिने किया। कैसे हैं देव ? भगवानके पांचो कल्यानकविषै जिनके अति हर्ष है यह सुमेरु रत्नमई ऊंचे शिखरानिकर शोभित जगतविषै प्रसिद्ध है अर बहुरि आगे आयकर कहते भए यह दंडक बन है जहां लंकापतिने तुमको हरी अर अपना अकाज किया या वनविषै चारण मुनिको हमने पारणा कराया था याके मध्य यह सुन्दर नदी है अर हे सुलोचने! यह वंशस्थल पर्वत जहां देश भूषण कुलभूषणका दर्शन किया ताही समय मुनिनिको केवल उपजा अर हे सौभाग्यवती कल्याणरूपिणी! यह बालखिल्यका नगर जहां लक्ष्मणने कल्याणमाला पाई अर यह दशांग नगर जहां रूपवतीका पिता वज्रकर्ण परम श्रावक राज्य करै बहुरि जानकी पृथिवीपतिको पूछती भई—हे कान्ते! यह नगरी कौन जहां विमान समान घर इंद्रपुरीसे अधिक शोभा ? अबतक यह पुरी मैंने कबहुं न देखी ऐसे जानकीके वचन सुन जानकीनाथ अवलोकन कर कहते भए—हे प्रिये! यह अयोध्यापुरी विद्याधर सिलवटोंने बनाई है लंकापुरीकी ज्योतिकी जीतनहारी।

बहुरि आगे आए तब रामका विमान सूर्यके विमान समान देख भरत महा हस्ती पर चढ अति आनन्दके भरे इन्द्र समान परम विभूतिकर युक्त सन्मुख आए सर्वदिशा विमाननिकर आच्छादित देखीं भरतको आवता देख राम लक्ष्मणने पुष्पक विमान भूमिविषै उतारा भरत गजसे उतर निकट आया स्नेहका भरा दोऊ भाइनिको प्रणामकर अर्घपाद्य करता भया अर ये दोनों भाई विमानसे उतर भरतसे मिले उरसे लगाय लीया परस्पर कुशल वार्ता पूछी बहुरि भरतको पुष्पक विमानविषै चढाय लीया। अर अयोध्याविषै प्रवेश किया। अयोध्या रामके आगमनकर अति सिंगारी है अर नाना प्रकारकी ध्वजा फरहरे हैं नाना प्रकारके विमान अर नाना प्रकारके रथ अनेक हाथी अनेक घोडे तिनकर मार्गमें अवकाश नाहीं अनेक प्रकार वादित्रनिके समूह वाजते भए, शंख झांझ भेरी ढोल धूकल इत्यादि वादित्रोंका कहां लग वर्णन करिये महा मधुर शब्द होते भए ऐसे ही वादित्रोंके शब्द ऐसी ही तुरंगोंकी हींस ऐसी ही गजोंकी गर्जना सामन्तोंके अट्टहास मयामई सिंह व्याघ्रादिकके शब्द ऐसे ही वीणा वांसुरीनिके शब्द तिनकर दशों दिशा व्याप्त भई, बन्दीजन विरद बखाने हैं, नृत्यकारिणी नृत्य करें हैं भांड नकल करें हैं नट कला करें है, सूर्यके रथ समान रथ तिनके चित्राकार विद्याधर मनुष्य पशुनिके नाना शब्द सो कहां लग वर्णन करिए? विद्याधरनिके अधिपतिनिने परमशोभा करी दोनों भाई महा मनोहर अयोध्याविषै प्रवेश करते भए अयोध्या नगरी स्वर्गपुरी समान राम लक्ष्मण इन्द्र प्रतीन्द्रसमान समस्त विद्याधर देव समान तिनका कहां लग वर्णन करिए श्रीरामचन्द्रको देख प्रजारूप समुद्रविषै आनन्दकी ध्वनि बढती भई भले २ पुरुष अर्घ्यपाद्य करते भए सोई तरंग भई पैंड पैंडाविषै जगतकर पूज्यमान दोनों वीर महाधीर तिनको समस्त जन आशीर्वाद देते भए—हे देव! जयवन्त होवो वृद्धिको प्राप्त होवो चिरंजीव होवो नादो विरदो। या भांति असीस देते भए अर अति ऊंचे विमान समान मंदिर तिनके शिखरविषै

तिष्ठती सुन्दरी फूल गए हैं नेत्रकमल जिनके वे मोतिनिके अक्षत डारती भई, सम्पूर्ण पूर्णमासीके चंद्रमा
समान राम कमलनेत्र अर वर्षाकी घटा समान लक्ष्मण शुभ लक्षण तिनके देखवेको नर नारी आवते
भए अर समस्त कार्य तज झरोखोंविषै बैठी नारी जन निरखे हैं सो मानों कमलोंके वन फूल रहे हैं अर
स्त्रीनिके परस्पर संघट्टकर मोतिनिके हार टूटे सो मानो मोतिनिकी वर्षा होय है स्त्रीनिके मुखसे ऐसी
ध्वनि निकसे ये श्रीराम जाके समीप राजा जनककी पुत्री सीता बैठी जाकी माता राणी विदेहा है अर
श्रीरामने साहसगति विद्याधर मारा वह सुग्रीवका आकार धर आया हुता विद्याधरनिविषै दैत्य कहावे
अर यह लक्ष्मण रामका लघुवीर इन्द्र तुल्य पराक्रम जानें लंकेश्वरको चक्रकर हता, अर यह सुग्रीव
जाने रामसे मित्रता करी अर भामण्डल सीताका भाई जिसको जन्मसे ही देव हर लेगया बहुरि दयाकर
छोडा सो राजा चंद्रगातिके पला आकाशसे वनविषै गिरा राजाने लेकर राणी पुष्पावतीको सौंपा देवोंने
काननविषै कुंडल पहराकर आकाशसे डाला सो कुंडलकी ज्योतिकर चंद्रसमान भासा तातैं भामण्डल
नाम धरा अर राजा चन्द्रोदयका पुत्र विराधित अर यह पवनका पुत्र हनूमान कपिध्वज या भांति आश्च-
र्यंकर युक्त नगरकी नारी बार्ता करती भई ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण राजमहिलविषै पधारे सो मंदिरके शिखर तिष्ठती दोनो माता पुत्रनिके
स्नेहविषै तत्पर जिनके स्तनसे दुग्ध झरे महा गुणनिकी धरणहारी कौशिल्या सुमित्रा अर केकई सुप्रभा
चारों माता मंगलविषै उद्यमी पुत्रोंके समीप आईं राम लक्ष्मण पुष्पक विमानसे उतर मातावोंसे मिले
माताओंको देख हर्षको प्राप्त भए कमल समान नेत्र दोनो भाई लोकपालसमान हाथ जोड नम्रीभूत होय
अपनी स्त्रियों सहित माताको प्रणाम करते भए वे चारों ही माता अनेक प्रकार असीस देती भई ति-
नकी असीस कल्याणकी करणहारी है अर चारों ही माता राम लक्ष्मणको उरसे लगाय परम सुखको

प्राप्त भई उनका सुख वे ही जाने कहिवेविषै न आवे बारम्बार उरसे लगाय सिर पर हाथ धरती भई, आनन्दके अश्रुपात कर पूर्ण हैं नेत्र जिनके परस्पर माता पुत्र कुशल क्षेम सुख दुखकी वार्ता पूछ परम संतोषको प्राप्त भए, माता मनोरथ करती थी सो हे श्रेणिक ! बांछासे अधिक मनोरथ पूर्ण भए वे माता योधावोंकी जननहारी साधुवोंकी भक्त जिन धर्मविषै अनुरक्त सुन्दरचित्त बेटावोंकी बहू सैकडों तिन को देख चारों ही अति हर्षित भई अपने योधा पुत्र तिनके प्रभाव कर पूर्व पुण्यके उदय कर अति महिमा संयुक्त जगतविषै पूज्य भई राम लक्ष्मणका सागरां पर्यंत कंटक रहित पृथिवीविषै एक छत्र राज्य भया सबपर यथेष्ट आज्ञा करते भए राम लक्ष्मणका अयोध्याविषै आगमन अर मातावोंसे तथा भाईयों से मिलाप । यह अध्याय जो पढे सुने शुद्ध है बुद्धि जाकी सो पुरुष मनबांछित संपदाको पावै पूर्ण पुण्य उपार्जे शुभमति एक ही नियम दृढ होय भावनकी शुद्धतासे करे तो अतिप्रतापको प्राप्त होय पृथिवीमें सूर्य समान प्रकाशको करै तातैं अव्रत तज नियमादिक धारण करो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै अयोध्याविषै राम लक्ष्मणका आगमन वर्णन करनेवाला बयासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८२ ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक नमस्कार कर गौतम गणधरको पूछता भया, हे देव श्रीराम लक्ष्मण की लक्ष्मीका विस्तार सुननेकी मेरे अभिलाषा है तब गौतमस्वामी कहते भए हे श्रेणिक ! राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन इनका वर्णन कौन कर सके तथापि संक्षेपसे कहे हैं राम लक्ष्मणके विभवका वर्णन हाथी घरके बियालीस लाख अर रथ एते ही घोडे नौ कोटि, पयादे ब्यालीस कोटि अर तीन खंडके देव विद्याधर सेवक रामके रत्न चार हल मूशल रत्नमाला गदा अर लक्ष्मणके सात संख चक्र गदा खड्ग दंड

नागशय्या कौस्तुभमणि राम लक्ष्मण दोनों ही वीर महाधीर धनुषधारी अर तिनका घर लक्ष्मीका निवास इंद्रके भवन तुल्य ऊंचे दरवाजे अर चतुश्शाल नामा कोट महापर्वतके शिखर समान ऊंचा अर वैजयन्ती नामा सभा महामनोज्ञ अर कुटुम्बनामा अत्यन्त उत्तंग दशोंदिशाके अवलोकनका गृह अर विंध्याचल पर्वत सारिखा वर्धमानक नामा नृत्य देखवेका गृह अर अनेक सामग्री सहित कार्य करनेका गृह अर कूकडेके अंडे समान महाअद्भुत शीतकालविषै सोवनेका गर्भगृह अर ग्रीष्मविषै दुपहरीके विराजवेका धारा मंडपगृह इकथंभा महामनोहर, अर राणीयोंके घर रत्नमई महासुन्दर दोनों भाईयों की सोयवेकी शय्या जिनके सिंहोंके आकार पाए पद्मराग मणिके अति सुन्दर अम्भोदकाण्ड नामा विजुरीकासा चमत्कार धरें वर्षा ऋतुविषै पौढवेका महिल अर महाश्रेष्ठ उगते सूर्य समान सिंहासन अर चन्द्रमा तुल्य उज्ज्वल चमर अर निशाकर समान उज्ज्वल छत्र अर महा सुन्दर विषमोचक नाम पावडी तिनके प्रभावसे सुखसे आकाशविषै गमन करें अर अमोलिक वस्त्र अर महा दिव्य आभरण अभेद्य वक्तर महा मनोहर मणियोंके कुण्डल अर अमोघगदा खडग कनक बाण अनेक शस्त्र महा सुन्दर महारण के जीतनहारे अर पचास लाख हल कोटिसे अधिक गाय अक्षय भण्डार अर अयोध्या आदि अनेक नगर जिनविषै न्यायकी प्रवृत्ति प्रजा सब सुखी संपदाकर पूर्ण अर महा मनोहर वन उपवन नानाप्रकार फल पुष्पोंकर शोभित अर महा सुन्दर स्वर्ण रत्नमई सिवाणोंकर शोभित क्रीडा करवे योग्य वापिका अर पुर तथा ग्रामोंविषै लोक अति सुखी जहां महिल अति सुन्दर अर किसाणोंको किसी भांतिका दुख नाहीं जिनके गाय भैंसोंके समूह सर्व भांतिके सुख अर लोकपालों जैसे सामंत अर इंद्र तुल्य विभवके धरणहारे महा तेजवन्त अनेक राजा सेवक अर रामके स्त्री आठ हजार अर लक्ष्मणके स्त्री देवांगना समान सोलह हजार जिनके समस्त सामग्री समस्त उपकरण मनवांछित सुखके देनहारी श्रीरामने भग-

वानके हजारां चैत्यालय कराये जैसे हरिषेण चक्रवर्तीने कराए थे वे भव्यजीव सदा पूजित महा ऋद्धिके निवास देशग्राम नगर वन गृह गली सर्व ठौर २ जिनमंदिर करावते भये सदा सर्वत्र धर्मकी कथा लोक अतिसुखी सुकौशल देशके मध्य इंद्रपुरी तुल्य अयोध्या जहां अति उतंग जिनमंदिर जिनका वर्णन किया न जाय अर क्रीडा करवेके पर्वत मानों देवोंके क्रीडा करवेके पर्वत हैं प्रकाशकर मंडित मानों शरदके बादर ही हैं अयोध्याका कोट अति उतंग समुद्रकी वेदिका तुल्य महाशिखर कर शोभित स्वर्ण रत्नोंका समूह अपनी किरणों कर प्रकाश किया है आकाशविषै जिसने जिसकी शोभा मनसे भी अगोचर निश्चयसेती यह अयोध्या नगरी पवित्र मनुष्योंकर भरी सदा ही मनोग्य हुती अब श्रीरामचन्द्रने अति शोभित करी जैसे कोई स्वर्ग सुनिये है जहां महा संपदा है मानों रामलक्ष्मण स्वर्गसे आए सो मानों सर्व संपदा ले आए आगे अयोध्या हुती तातैं रामके पधारें अति शोभायमान भई पुण्यहीन जीवोंको जहांका निवास दुर्लभ अपने शरीरकर तथा शुभ लोकोंकर तथा स्त्री धनादि कर रामचन्द्रने स्वर्ग तुल्य करी, सर्व ठौर रामका यश परन्तु सीताके पूर्व कर्मके दोषकर मूढ लोग यह अपवाद करें देखो विद्याधरोंका नाथ रावण उसने सीता हरी सो राम बहुरि ल्याये अर गृहविषै राखी यह कहा योग्य? राम महा ज्ञानी बडे कुलीन चक्री महा शूरवीर तिनके घरविषै जो यह रीति तो और लोकोंकी क्या बात इस भांति सब जन वार्ता करें ॥

अथानन्तर स्वर्ग लोकको लज्जा उपजावे ऐसी अयोध्यापुरी तहां भरत इंद्रसमान भोगनिकर भी रति न मानते भए, अनेक स्त्रीनिके प्राणवल्लभ सो निरंतर राज्य लक्ष्मीसे उदास सदा भोगोंकी निंदा ही करें ।भरतका मंदिर अनेक मन्दिरानिकर मण्डित नाना प्रकारके रत्ननिकर निर्मापित मोतिनिकी मालाकर शोभित फूल रहे हैं वृक्ष जहां अनेक आश्चर्यका भरा सब ऋतुके विलासकर युक्त जहां वीण

मृदंगादिक अनेक वादित्र वाजें देवांगना समान अतिसुन्दर स्त्रीजनोंकर पूर्ण जाके चौगिरद मदोन्मत्त हाथी गाजें श्रेष्ठ तुरंग हींसें गीत नृत्य वादित्रनिकर महामनोहर रत्नोंके उद्योतकर प्रकाशरूप महारमणीक क्रीडाका स्थानक जहां देवोंको रुचि उपजै परंतु भरत संसारसे भय भीत अति उदास उसे तहां रुचि नाहीं जैसे पारधीकर भयभीत जो मृग सो किसी ठौर विश्राम न लहै भरत ऐसा विचार करे कि मैं यह मनुष्य देह महाकष्टसे पाई सो पानीके बुदबुदावत् क्षणभंगुर अर यह यौवन झागोंके पुंज समान अति असार दोषोंका भरा अर ये भोग अति विरस इनविषै सुख नाहीं यह जीतव्य स्वप्न समान अर कुटुम्बका सम्बंध जैसे वृक्षनिपर पक्षियोंका मिलाप रात्रिको होय प्रभात ही दशों दिशाको उड जावें ऐसा जान जो मोक्षका कारण धर्म न करै सो जराकर जर्जरा होय शोकरूप अग्निकर जरै यह नव यौवन मूढोंको वल्लभ याविषै कौन विवेकी राग करे कदाचित न करै यह अपवादके समूहका निवास संध्याके उद्योत समान विनश्वर अर यह शरीररूपी यन्त्र नाना व्याधिके समूहका घर पिताके वीर्य माताके रुधिरसे उपजा याविषै कहा रति, जैसे इंधनकर अग्नि तृप्त न होय अर समुद्र जलसे तृप्त न होय तैसे इंद्रियनिके विषयानिकर तृप्ति न होय यह विषय अनादिसे अनंतकाल सेए परंतु तृप्तिकारी नाहीं यह मूढ जीव कामविषै आसक्त अपना भला बुरा न जाने पतंग समान विषयरूप अग्निविषै पड पापी महा भयंकर दुःखको प्राप्त होय यह स्त्रीनिके कुच मांसके पिण्ड महाबीभत्स गलगंड समान तिनविषै कहा रति, अर स्त्रीनिका मुखरूप बिल दंतरूप कीडोंकर भरा तांबूलके रसकर लाल छुरीके घाव समान ताविषै कहा शोभा अर स्त्रीनिकी चेष्टा वायुविकार समान विरूप उन्मादकर उपजी उसविषै कहा प्रीति अर भोगरोग समान हैं महा खेदरूप दुःखके निवास इनविषै कहा विलास अर यह गीत वादित्रोंके नाद रुदन समान तिनविषै कहा प्रीति, रुदनकर भी महल गुंमट गाजें अर गानकर भी गाजें। नारियोंका शरीर मल

मूत्रादिकर पूर्ण चर्मकर वेष्टित याके सेवनविषै कहा सुख होय विष्टाके कुम्भ तिनका संयोग अतिबीभत्स अति लज्जाकारी महा दुःखरूप नारियोंके भोग उनविषै मूढ सुख माने देवानिके भोग इच्छा उत्पन्न होते ही पूर्ण होंय तिनकर भी जीव तृप्त न भया तो मनुष्योंके भोगोंकर कहा तृप्त होय जैसे डाभकी अणीपर जो ओस की बूंद ताकर कहा तृषा बुझे अर जैसे इंधनका वेचनहारा सिरपर भार लाय दुखी होय तैसे राज्यके भारका धरणहारा दुखी होय हमारे बडोंविषै एक राजा सौदास उत्तम भोजनकर तृप्त न भया अर पापी अभक्ष्यका आहारकर राज्यभ्रष्ट भया जैसे गंगाके प्रवाहविषै मांसका लोभी काग मृतक हाथीके शरीरको चूथता तृप्त न भया समुद्रविषै डूब मुवा तैसे यह विषयाभिलाषी भवसमुद्रविषै डूबे हैं यह लोक मींडक समान मोहरूप कीचविषै मग्न लोभरूप सर्पके ग्रसे नरकविषै पडे हैं ऐसे चिन्तवन करते शांतचित्त भरत को कैयक दिवस अति विरससे वीते जैसे सिंह महा समर्थ पींजरेविषै पडा खेदखिन्न रहे, ताके वनविषै जायवेकी इच्छा तैसे भरत महाराजके महाव्रत धारिवेकी इच्छा, सो घरविषै सदा उदास ही रहे महाव्रत सर्व दुःखका नाशक, एक दिवस वह शांतचित्त घर तजिवेको उद्यमी भया तब केकईके कहेसे राम लक्ष्मणने थांभा, अर महा स्नेहकर कहते भए हे भाई ! पिता वैराग्यको प्राप्त भए तब तोहि पृथिवीका राज्य दिया सिंहासन पर बैठाया सो तू हमारा सर्व रघुवंशियोंका स्वामी है लोकका पालनकर, यह सुदर्शनचक्र यह देव अर विद्याधर तेरी आज्ञाविषै हैं या धराको नारी समान भोग, मैं तेरे सिर पर चन्द्रमा समान उज्जवल छत्र लिये खडा रहूं, अर भाई शत्रुघ्न चमर ढारे अर लक्ष्मण सा सुन्दर तेरे मंत्री अर तू हमारा वचन न मानेगा तो मैं बहुरि विदेश उठ जाऊंगा मृगोंकी न्याईं वन उपवनविषै रहूंगा, मैं तो राक्षसोंका तिलक जो रावण ताहि जीत तेरे दर्शनके अर्थ आया अब तू निःकंटक राज्य कर पीछे तेरे साथ मैं भी मुनिव्रत आदरूंगा इस भांति महा शुभचित्त श्रीराम भाई भरतसे कहते भए।

तब भरत महानिस्पृह विषय रूप विषसे अतिविरक्त कहता भया—हे देव ! मैं राज्य संपदा तुरंत ही तजा चाहूं हूं जिसको तज कर शूरवीर पुरुष मोक्ष प्राप्त भए हे नरेन्द्र ! अर्थ काम महा दुःख के कारण जीवों के शत्रु महापुरुषों कर निन्द्य हैं तिनको मूढ़ जन सेवें हैं, हे हलायुध यह क्षणभंगुर भोग तिन में मेरी तृष्णा नाहीं यद्यपि स्वर्ग लोक समान भोग तुम्हारे प्रसाद कर अपने घरमें हैं तथापि मुझे रुचि नहीं यह संसार सागर महा भयानक है जहां मृत्यु रूप पातालकुण्ड महा विषम है अर जन्मरूप कल्लोल उठे हैं अर राग द्वेषरूप नाना प्रकार के भयंकर जलचर हैं अर रति अरति रूप क्षार जल कर पूर्ण हैं जहां शुभ अशुभ रूप चोर विचरे हैं सो मैं मुनिव्रत रूप जहाजमें बैठकर संसार समुद्रको तिरा चाहूं हूं। हे राजेन्द्र मैं नानाप्रकार योनिविषै अनंत काल जन्म मरण किए नरक निगोदविषै अनंत कष्ट सहे गर्भवासादिविषै खेदखिन्न भया, यह वचन भरतके सुन बड़े बडे राजा आंखोंसू आंसू डारते भए महाआश्चर्यको प्राप्त होय गदगद बाणीसे कहते भए हे महाराज ! पिताका बचन पालो कैयक दिन राज्य करो अर तुम इस राज्यलक्ष्मीको चंचल जान उदास भए हो तो कैयक दिन पीछे मुनि हूजियो अबार तो तुम्हारे बडे भाई आए हैं तिनको साता देवो तब भरतने कही मैं तो पिताके वचन प्रमाण बहुत दिन राज्य संपदा भोगी प्रजाके दुःख हरे पुत्रकी न्याईं प्रजाका पालन किया दान पूजा आदि गृहस्थके धर्म आदरे साधुवोंकी सेवा करी अब जो पिताने किया सो मैं किया चाहूं हूं अब तुम इस वस्तुकी अनुमोदना क्यों न करो प्रशंसायोग्य वस्तुविषै कहा विवाद ? हे श्रीराम ! हे लक्ष्मण ! तुमने महा भयकंर युद्धमें शत्रुवोंको जीत अगले बलभद्र बासुदेवकी न्याईं लक्ष्मी उपार्जी सो तुम्हारे लक्ष्मी और मनुष्योंकैसी नाहीं तथापि राजलक्ष्मी मुझे न रुचे तृप्ति न करे जेसे गंगादि नदियां समुद्रको तृप्त न करें इसलिये मैं तत्त्वज्ञानके मार्गविषै प्रवरतूंगा ऐसा कहकर अत्यन्त विरक्त होय राम लक्ष-

मणको बिना पूछेही वैराग्यको उठा जैसे आगे भरतचक्रवर्ती उठे। यह मनोहर चालका चलनहारा मुनिराजके निकट जायवेको उद्यमी भया तब अतिस्नेह कर लक्ष्मणने थांभा भरतके करपल्लव ग्रहे लक्ष्मण खडा ताही समय माता केकई आंसू डारती आई अर रामकी आज्ञासे दोऊ भाईनिकी राणी सबही आई लक्ष्मी समान है रूप जिनके अर पवनकर चंचल जो कमल ता समान हैं नेत्र जिनके, आय भरत को थांभती भई, तिनके नाम—

सीता, उर्वशी, भानुमती, विशल्या सुन्दरी, रौद्र, रत्नवती, लक्ष्मी, गुणमती बंधुमती, सुभद्रा, कुवेरा, नलकूवरा, कल्याणमाला, चंदना, मदनोत्सवा, मनोरमा, प्रियनंदा, चन्द्रकांता, कलावती, रत्नस्थली सरस्वती, श्रीकांता, गुणसागरी, पद्मावती, इत्यादि सब आई जिनके रूप गुणका वर्णन किया न जाय मनको हरैं आकार जिनके दिव्य वस्त्र अर आभूषण पहिरे बडे कुलविषै उपजी सत्यवादनी शीलवन्ती पुण्यकी भूमिका समस्त कलाविषै निपुण सो भरतके चौगिर्द खडी मानों चारों ओर कमलोंका बन ही फूल रहा है भरतका चित्त राजसंपदाविषै लगायवेको उद्यमी अति आदर कर भरतको मनोहर वचन कहती भई कि हे देवर हमारा कहा मानों कृपा करो आवो सरोवरोंविषै जलक्रीडा करो अर चिंता तजो जा बात कर तिहारे बडे भाईयोंको खेद न होय सो करो अर तिहारी माताके खेद न होय सो करो अर हम तिहारी भावज हैं सो हमारी विनती अवश्य मानिए तुम विवेकी विनयवान हो ऐसा कह भरतको सरोवर पर ले गईं भरतका चित्त जल क्रीडासे विरक्त यह सब सरोवरविषै पैंठी वह विनयकरसंयुक्त सरोवरके तीर ऊभा ऐसा सोहै मानों गिरिराज ही है अर वे स्निध सुगंध सुन्दर वस्तुनि कर याके शरीरका विलेपन करती भई अर नानाप्रकार जल केलि करती भई यह उत्तम चेष्टाका धारक काहूपर जल न डारता भया बहुरि निर्मल जलसे स्नान कर सरोवरके तीर जे जिनमंदिर वहां भगवानकी पूजा

करता भया उस समय त्रैलोक्य मंडन हाथी कारी घटा समान है आकार जाका सो गजबंधन तुडाय भयंकर शब्द करता निज आवासथकी निकसा अपने मद झरबे कर चौमासे कैसा दिन करता संता मेघ गर्जना समान ताका गाज सुनकर अयोध्यापुरीके लोग भयकर कम्पायमान भए अर अन्य हाथियोंके महावत अपने अपने हाथीको ले दूर भागे अर त्रैलोक्यमंडन गिरि समान नगरका दरवाजा भंग कर जहां भरत पूजा करते थे वहां आया तब राम लक्ष्मणकी समस्त राणी भयकर कम्पायमान होय भरतके शरण आई, अर हाथी भरतके नजीक आया तब समस्त लोक हाहाकार करते भए अर इनकी माता अति विह्वल भई विलाप करती भई पुत्रके स्नेहविषै तत्पर महा शंकावान भई अर राम लक्षमण गज बंधनविषै प्रवीण गजके पकडनेको उद्यमी भए गजराज महा प्रबल सामान्य जनोंसे देखा न जाय महा भयंकर शब्द करता अति तेजवान नाग फांसि कर भी रोका न जाय अर महा शोभायमान कमल नयन भरत निर्भय स्त्रियोंके आगे तिनके बचायबेको खडे सो हाथी भरतको देखकर पूर्वभव चितार शांतचित्त भया अपनी सूण्ड शिथिल कर महा विनयवान भया भरतके आगे ऊभा भरत याको मधुर बाणी कर कहते भए अहो गज ! तू कौन कारण कर क्रोधको प्राप्त भया ऐसे भरतके वचन सुन अत्यंत शांतचित्त निश्चल भया सौम्य है मुख जाका ऊभा भरतकी ओर देखे है भरत महाशूरवीर शरणागतप्रतिपालक ऐसे सोहैं जैसे स्वर्गविषै देव सोहैं हाथीको जन्मान्तरका ज्ञान भया सो समस्त विकारसे रहित होय गया दीर्घ निश्वास डारे हाथी मनविषै विचारे है यह भरत मेरा परममित्र है छठे स्वर्गविषै हम दोनों एकत्र थे यह तो पुण्यके प्रसाद कर वहांसे चयकर उत्तम पुरुष भया अर मैंने कर्मके योगसे तिर्यंचकी योनि पाई कार्य अकार्यके विवेकसे रहित महानिंद्य पशुका जन्म है मैं कौन योगसे हाथी भया धिकार इस जन्मको अब वृथा क्या शोच ऐसा उपाय करूं जिससे आत्मकल्याण होय अर बहुरि सं-

सार भ्रमण न करूं। शोच कीए कहा ? अब सर्व प्रकार उद्यमी होय भव दुखसे छूटिवेका उपाय करूं चितारे हैं पूर्व भव जाने गजेंद्र अत्यन्त विरक्त पाप चेष्टासे परांगमुख होय पुण्यके उपार्जनविषै एकाग्रचित्त भया। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन्! पूर्वें जीवने अशुभ कर्म कीए वे संतापको उपजावें तातैं हे प्राणी हो अशुभ कर्मको तज दुर्गतिके गमनसे छूटो जैसे सूर्य होते नेत्रवान मार्गविषै न अटके तैसे जिन धर्मके होते विवेकी कुमार्गविषै न पडैं प्रथम अधर्मको तज धर्मको आदरें बहुरि शुभ अशुभसे निवृत्त होय आत्म धर्मसे निर्वाणको प्राप्त होवें॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै त्रिलोकमंडन हाथीकौ जातिस्मरण होय उपशान्त होनेका वर्णन करनेवाला तियासीवा पर्व पूर्ण भया॥ ८३॥

अथानन्तर वह गजराज महा विनयवान धर्मध्यानका चितवन करता रामलक्ष्मण ने देखा अर धीरे धीरे इसके समीप आए कारी घटा समान है आकार जाका सो मिष्ट वचन बोले पकडा अर निकटवर्ती लोकोंकी आज्ञा कर गजको सर्व आभूषण पहिराए हाथी शांतचित्त भया तब नगरके लोगोंकी आकुलता मिटी हाथी ऐसा प्रबल जाकी प्रचण्ड गति विद्याधरोंके अधिपतिसे न रुके, समस्त नगर विषै लोक हाथीकी वार्ता करें यह त्रैलोक्यमंडन रावणका पाट हस्ती है याके बल समान और नाहीं राम लक्ष्मणने पकडा विकार चेष्टाको प्राप्त भया था अब शांतचित्त भया सो लोकोंके महा पुण्यका उदय है अर घने जीवोंकी दीर्घ आयु भरत अर सीता विशल्या हाथी पर चढे बडी विभूतिसे नगरविषै आये अर अद्भुत वस्त्राभरणसे शोभित समस्त राणी नानाप्रकारके वाहनों पर चढी भरतको ले नगरविषै आई, अर शत्रुघ्न भाई अश्व पर आरूढ महा विभूति सहित महा तेजस्वी, भरतके हाथी आगे नानाप्र-

कारके वादित्रोंके शब्द होते नंदन बन समान बनसे नगरविषै आए, जैसे देव सुरपुरविषै आवें, भरत हाथीसे उतर भोजनशालाविषै गए साधुवोंको भोजन देय मित्र बांधवादि सहित भोजन किया, अर भावजोंको भोजन कराया फिर लोक अपने अपने स्थानको गए समस्त लोक आश्चर्यको प्राप्त भए, हाथी रूठा फिर भरतके समीप खडा होय रहा सो सबोंको आश्चर्य उपजा गौतमगणधर राजा श्रेणिकसे कहें हैं कि हे राजन्! हाथीके समस्त महावत रामलक्ष्मण पै आय प्रणामकर कहते भए कि हे देव ! आज गजराजको चौथा दिन है कछू खाय न पीवे न निद्रा करै सर्व चेष्टा तज निश्चल ऊभा है जिसदिन क्रोध किया था अर शांत भया उसही दिनसे ध्यानारूढ निश्चल वरते है हम नानाप्रकारके स्तोत्रों कर स्तुति करें है अनेक प्रिय वचन कहे हैं तथापि आहार पानी न लेय है हमारे वचन कान न धरे अपनी सूण्ड को दांतोंविषै लिये मुद्रित लोचन ऊभा है मानों चित्रामका गज है जिसे देखे लोकोंको ऐसा भ्रम होय है कि यह कृत्रिम गज है अथवा सांचा गज है। हम प्रिय वचन कहकर आहार दिया चाहें हैं सो न लेय नानाप्रकारके गजोंके योग्य सुन्दर आहार उसे न रुचे चिन्तावान सा ऊभा है निश्वास डारे है समस्त शास्त्रोंके वेत्ता महा पंडित प्रसिद्ध गजवैद्योंके भी हाथ हाथीका रोग न आया गंधर्व नानाप्रकारके गीत गावें है सो न सुनै अर नृत्यकारिणी नृत्य करे हैं सो न देखे पहिले नृत्य देखे था गीत सुने था अनेक चेष्टा करे था सो सब तजा नानाप्रकारके कौतुक होय हैं सो दृष्टि न धरै मंत्रविद्या औषधादिक अनेक उपाय किए सो न लगे आहार विहार निद्रा जलपानादिक सब तज हम अति विनती करें हैं सो न माने जैसे रूठे मित्रको अनेक प्रकार मनाइये सो न माने न जानिए इस हाथीके चित्तविषै कहा है काहू वस्तु से काहू प्रकार रीझे नाहीं काहू वस्तुपर लुभावे नाहीं खिजाया संता क्रोध न करे चित्राम कासा खडा है यह त्रैलोक्यमंडन हाथी समस्त सेनाका श्रृंगार है जो आपको उपाय करना होय सो करो हम हाथीका

सब वृत्तांत आपसे निवेदन किया, तब राम लक्ष्मण गजराजकी चेष्टा सुन अति चिंतावान भए मनमें विचारे हैं यह गजबन्धन तुडाय निसरा कौन प्रकार क्षमाको प्राप्त भया अर आहार पानी क्यों न लेय? दोनों भाई हाथीका शोच करते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै त्रिलोकमंडन हाथीका कथन वर्णन करनेवाला चौरासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८४ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं, हे नराधिपति! ताही समय अनेक मुनिनि सहित देशभूषण कुलभूषण केवली जिनका वंशस्थल गिरि ऊपर राम लक्ष्मणने उपसर्ग निवारा हुता अर जिनकी सेवा करने कर गरुडेन्द्रने राम लक्ष्मणसे प्रसन्न होय उनको अनेक दिव्यशस्त्र दिए, जिनकर युद्धमें विजय पाई। ते भगवान् केवली सुर असुरनिकर पूज्य लोक प्रसिद्ध अयोध्याके नन्दनवन समान महेन्द्रोदय नामा वन विषै महा संघ सहित आय विराजे, तब राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन दर्शनके अर्थ प्रभातही हाथिनि पर चढि जायवेको उद्यमी भए अर उपजा है जाति स्मरण जाको ऐसा जो त्रैलोक्यमण्डन हाथी सो आगे आगे चला जाय है जहां वे दोनों केवली कल्याणके पर्वत तिष्ठे हैं तहां देवनि समान शुभचित्त नरोत्तम गए अर कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा यह चारों ही माता साधुभक्तिविषै तत्पर जिन शासनकी सेवक स्वर्गनिवासिनी देवीनि समान सैकडां राणीनिसे युक्त चलीं अर सुग्रीवादि समस्त विद्याधर महा विभूति संयुक्त चले, केवलीका स्थानक दूरहीतैं देख रामादिक हाथीतैं उतर आगे गए। दोनों हाथ जोड प्रणामकर पूजा करी, आप योग्यभूमिविषै विनयतैं बैठे तिनके वचन समाधानचित्त होय सुनते भए, ते वचन वैराग्यके मूल रागादिकके नाशक क्यों कि रागादिक संसारके कारण अर

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्र मोक्षके कारण हैं केवलीकी दिव्य ध्वनिविषै यह व्याख्यान भया । अणुव्रतरूप श्रावकका धर्म अर महाव्रतरूप यतिका धर्म यह दोनोंही कल्याणके कारण हैं यतिका धर्म साक्षात् निर्वाणका कारण अर श्रावकका धर्म परम्पराय मोक्षका कारण है गृहस्थका धर्म अल्पारम्भ अल्प परिग्रहको लीए कछू सुगम है अर यतिका धर्म निरारम्भ निपरिग्रह अति कठिन महा शूर वीरनिही तें सधे है यह लोक अनादिनिधन जाकी आदिअन्त नाहीं ताविषै यह प्राणी लोभकर मोहित नानाप्रकार कुयोनिविषै महादुःखको पावें हैं संसारका तारक धर्म ही है, यह धर्म नामा परम मित्र जीवोंका महा हितु है जिस धर्मका मूल जीवदयाकी महिमा कहिवेविषै न आवे ताके प्रसादसे प्राणी मनबांछित सुख पावे हैं धर्म ही पूज्य है जे धर्मका साधन करें ते ही पंडित हैं यह दयामूल धर्म महाकल्याणका कारण जिनशासन विना अन्यत्र नाहीं जे प्राणी जिनप्रणीत धर्ममें लगें ते त्रैलोक्यके अग्र जो परम धाम है वहां प्राप्त भए यह जिनधर्म परम दुर्लभ है, या धर्मका मुख्यफल तो मोक्षही है अर गौणफल स्वर्गविषै इन्द्रपद अर पाताल विषै नागेन्द्रपद पृथिवी विषै चक्रवर्त्यादि नरेन्द्रपद यह फल हैं इस भांति केवलीने धर्मका निरूपण किया, तब प्रस्ताव पाय लक्ष्मण पूछते भए हे प्रभो! त्रैलोक्यमण्डन हाथी गजबन्धन उपाडि क्रोधको प्राप्त भया बहुरि तत्काल शांत भावको प्राप्त भया सो कौन कारण, तब केवली देशभूषण कहते भए, प्रथम तो यह लोकनिकी भीड देख मदोन्मत्तता थकी क्षोभको प्राप्त भया बहुरि भरतको देख पूर्वभव चितार शांतभावको प्राप्त भया । चतुर्थ कालके आदि या अयोध्याविषै नाभिराजाके मरु देवीके गर्भ विषै भगवान् ऋषभ उपजे पूर्वभवविषै षोडश कारण भावना भाय त्रैलोक्यकों आनन्दका कारण तीर्थंकर पद उपार्जा । पृथिवीविषै प्रगट भए, इंद्रादिक देवनिने जिनके गर्भ अर जन्मकल्याणक कीए सो भगवान् पुरुषोत्तम तीन लोक कर नमस्कार करवे योग्य पृथिवीरूप पत्नीके पति भए । कैसी है

पृथिवी रूप पत्नी विन्ध्याचल गिरि वेई हैं स्तन जाके अर समुद्र हैं कटिमेखला जाकी सो बहुत दिन पृथिवीका राज्य कीया तिनके गुण केवली विना अर कोई जानवे समर्थ नाहीं जिनका ऐश्वर्य देख इंद्रादिक देव आश्चर्यको प्राप्त भए।

एक समय नीलांजसा नामा अप्सरा नृत्य करती हुती सो विलाय गई ताहि देख प्रतिबुद्ध भए ते भगवान् स्वयं बुद्ध महामहेश्वर तिनकी लौकांतिक देवनिने स्तुति करी ते जगत् गुरु भरत पुत्रको राज्य देय वैरागी भए। इंद्रादिकदेवनिने तप कल्याणक किया, तिलक नामा उद्यानविषै महाव्रत धरे तबसे यह स्थान प्रयाग कहाया भगवान्ने एक हजार वर्ष तपकिया सुमेरु समान अचल सर्वपरिग्रहके त्यागी महातप करते भए तिनके संग चार हजार राजा निकसे ते परीषह न सह सकनेकर व्रत भ्रष्ट भये स्वेच्छा विहारी होय वन फलादिक भखते भए तिनके मध्य मारीच दण्डीका भेष धरता भया ताके प्रसंगसे सूर्योदय चन्द्रोदय राजा सुप्रभके पुत्रके राणी प्रल्हादनाकी कुक्षीविषै उपजे ते भी चारित्र भ्रष्ट भए मारीचके मार्ग लागे कुधर्मके आचरणसे चतुर्गति संसारमें भ्रमे अनेक भवों विषै जन्म मरण किए बहुरि चन्द्रोदयका जीव कर्मके उदयसे नागपुरनामा नगरविषै राजा हरिपतिके राणी मनोलताके गर्भविषै उपजा कुलंकर नाम कहाया बहुरि राज्य पाया अर सूर्योदयका जीव अनेक भव भ्रमण कर उसही नगरविषै विश्व नामा ब्राह्मण जिसके अग्निकुंड नामा स्त्री उसके श्रुतिरति नामा पुत्र भया सो पुरोहित पूर्व जनमके स्नेहसे राजा कुलंकरको अतिप्रिय भया, एक दिन राजा कुलंकर तापसियोंके समीप जाय था सो मार्गविषै अभिनन्दन नामा मुनिका दर्शन भया। वे मुनि अवधिज्ञानी सर्व लोकके हितु तिन्होंने राजासे कही तेरा दादा सर्प भया सो तपस्वियोंके काष्ठमध्य तिष्ठे है सो तपसी काष्ठ विदारेंगे सो तू रक्षा करियो तब यह तहां गया जो मुनिने कही थी त्योंही दृष्टि पडी इसने सर्प वचाया अर तापसियोंका मार्ग

हिंसा रूप जाना तिनसे उदास भया मुनिव्रत धारिवेको उद्यम किया तब श्रुतिरति पुरोहित पापकर्मीने कही–हे राजन् ! तिहारे कुलविषै वेदोक्त धर्म चला आया है अर तापसही तिहारे गुरु हैं तातैं तू राजा हरिपतिका पुत्र है तो वेदमार्गका ही आचरण कर, जिनमार्ग मत आचरै पुत्रको राज देय वेदोक्त विधिकर तू तापसका व्रत धर, मैं तेरे साथ तप धरूंगा, या भांति पापी पुरोहित मूढमतिने कुलंकरका मन जिनशासनसे फेरा अर कुलंकरकी स्त्री श्रीदामा सो पापिनी परपुरुषासक्त उसने विचारी कि मेरी कुक्रिया राजाने जानी इसलिए तप धारै है सो न जानिए तपधरै कै न धरै कदाचित् मोहि मारै तातैं मैं ही उसे मारूं तब उसने विष देयकर राजा अर पुरोहित दोनों मारे सो मरकर निकुंजिया नामा वनमें पशुघातके पापसे दोनों सुआ भए बहुरि मींडक भए मूसा भए मोर भए सर्पभए कूकरभए कर्मरूप पवनके प्रेरे तिर्यंच योनिविषै भ्रमे बहुरि पुरोहित श्रुतिरतिका जीव हस्ती भया अर राजा कुलंकरका जीव मींडक भया सो हाथीके पगतले दवकर मुवा, बहुरि मींडक भया सो सूके सरोवरविषै कागने भषा सो कूकडा भया हाथी मर मार्जार भया उसने कुक्कुट भषा कुलंकरका जीव तीन जन्म कुकडा भया सो पुरोहितके जीव मार्जारने भषा बहुरि ये दोनों मूसा मार्जार मच्छ भए सो धीवरने जालविषै पकड कुहाडेनिसे काटे सो मुवे दोनों मरकर राजगृही नगरविषै वव्हासनामा ब्राह्मण उसकी उल्का नामा स्त्रीके पुत्र भए पुरोहितके जीवका नाम विनोद राजा कुलंकरके जीवका नाम रमण सो महा दरिद्री अर विद्यारहित तब रमणने विचारी देशान्तर जाय विद्या पढूं तब घरसे निकसा पृथिवीविषै भ्रमता चारों वेद अर वेदोंके अंग पढे बहुरि राजगृही नगरी आय पहुंचा भाईके दर्शनकी अभिलाषा सो नगरके बाहिर सूर्य अस्त होय गया आकाशविषै मेघपटलके योगसे अति अन्धकार भया सो जीर्ण उद्यानके मध्य एक यक्षका मंदिर तहां बैठा अर याके भाई विनोदकी समिधा नामा स्त्री सो महा कुशीला एक अशोकदत्त नामा

पुरुषसे आसक्त सो तासे यक्षके मंदिरका संकेत किया हुता सो अशोकदत्तको तो मार्गविषै कोटपालके किंकरने पकडा अर विनोद खडग हाथविषै लिए अशोकदत्तके भारवेको यक्षके मंदिर आया सो जारके भूलेसे खडगसे भाई रमणको मारा अन्धकारविषै दृष्टि न पडा सो रमण मुवा विनोद घर गया बहुरि विनोद भी मुवा सो दोनों अनेक भव धारते भए ॥

बहुरि विनोदका जीव तो सालवन वनविषै आरण भैंसा भया अर रमणका जीव अंधा रीछ भया सो दोनों दावानलविषै जरे, मरकर गिरिवनविषै भील भए बहुरि मरकर हिरण भए सो भीलने जीवते पकडे दोनों अति सुन्दर सो तीसरा नारायण स्वयंभूति श्रीविमलनाथजीके दर्शन जायकर पीछा आवे था उसने दोनों हिरण लिए अर जिनमंदिरके समीप राखे, सो राजद्वारसे इनको मनवांछित आहार मिलै अर मुनिनिके दर्शन करें जिनवाणीका श्रवण करें तिनविषै रमणका जीव जो मृग हुता सो समाधि मरणकर स्वर्गलोक गया अर विनोदका जीव जो मृग हुता वह आर्तध्यानसे तिर्यंचगतिविषै भ्रमा बहुरि जंबूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै कंपिल्यानगर तहां धनदत्त नामा वणिक बाईस कोटि दीनारका स्वामी भया। चार टांक स्वर्णकी एक दीनार होय है ता बणिकके वाणी नाम स्त्री उसके गर्भ विषै दूजे भाई रमणका जीव मृग पर्यायसे देव भया था सो भूषण नाम पुत्र भया निमित्तज्ञानीने इसके पिताले कहा कि यह सर्वथा जिन दीक्षा धरेगा सुनकर पिता चिंतावान भया पिताका पुत्रसे अधिक प्रेम इसको घरहीविषै राखै बाहिर निकसने न देय सब सामग्री याके घरविषै विद्यमान यह भूषण सुंदर स्त्रीनिकर सेव्यमान वस्त्र आहार सुगन्धादि विलेपन कर घरविषै सुखसे रहे याको सूर्यके उदय अस्तकी गम्य नानाप्रकारके नाहीं याके पिताने सैकडों मनोरथकर यह पुत्र पाया अर एकही पुत्र सो पूर्व जन्मके स्नेहसे पिताके प्राणसे भी प्यारा, पिता तो विनोदका जीव अर पुत्र रमणका जीव आगे दोनों भाई हुते सो या जन्मविषै पिता पुत्र भए ॥

पराया द्रव्य हरूं हूं, धिक्कार मोको ऐसे विचारकर निर्मलचित्त होय सांसारिक विषय भोगोंसे उदासचित्त भया स्वामी चन्द्रमुखके समीप सर्व परिग्रहका त्यागकर जिनदीक्षा आदरी शास्त्रोक्त महादुर्धर तप करता महाक्षमावान् महाप्रासुक आहार लेता भया ॥

अथानन्तर दुर्गनाम गिरिके शिखर एक गुणनिधि नाम मुनि चार महीनेके उपवास धर तिष्ठे थे वे सुर असुर मनुष्यनिकर स्तुति करिवे योग्य महाऋद्धिधारी चारण मुनि थे सो चौमासेका नियम पूर्ण कर आकाशके मार्ग होय किसी तरफ चले गए, अर यह मृदुमति मुनि आहारके निमित्त दुर्गनामागिरि के समीप अलोक नाम नगर वहां आहारको आया, जूडा प्रमाण भूमिको निरखता जाय था सो नगर के लोकोंने जानी यह वे ही मुनि हैं जो चार महीना गिरिके शिखर रहे यह जानकर अतिभक्ति कर पूजा करी अर इसे अति मनोहर आहार दिया नगरके लोकोंने बहुत स्तुति करी इसने जानी गिरिपर चार महिना रहे तिनके भरोसे मेरी अधिक प्रशंसा होय है सो मानका भरा मौन पकड रहा, लोकोंसे यह न कही कि मैं और ही हूं अर वे मुनि अर थे, और गुरुके निकट मायाशल्य दूर न करी, प्रायश्चित न लिया तातैं तिर्यंचगतिका कारण भया तप बहुत किये थे सो पर्याय पूरी कर छठे देव लोक जहां अभिरामका जीव देव भया था वहां ही यह गया, पूर्वजन्मके स्नेहकर उसके याके अति स्नेह भया दोनों ही समान ऋद्धिके धारक अनेक देवांगनावों कर मंडित सुखके सागरविषै मग्न दोनों ही सागरों पर्यंत सुखसे रमें सो अभिरामका जीव तो भरत भया अर यह मृदुमतिका जीव स्वर्गसे चय मायाचारके दोषसे इस जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रविषै उतंग है शिखर जिसके ऐसा जो निकुंज नामा गिरि उसविषै महा गहन शल्लकी नामा बन वहां मेघकी घटा समान श्याम अतिसुन्दर गजराज भया, समुद्रकी गाज समान है गर्जना जिसकी अर पवन समान है शीघ्र गमन जिसका महा भयंकर आकारको धरे, अति मदोन्मत्त

संसारकी विचित्रगति है ये प्राणी नटवत नृत्य करे हैं संसारका चरित्र स्वप्नके राज्य समान असार है एक समय यह घनदत्तका पुत्र भूषण प्रभात समय दुंदुभी शब्द सुन आकाशविषै देवनिका आगमन देख प्रतिबुद्ध भया। यह स्वभाव ही से कोमलचित्त धर्मके आचारविषै तत्पर महाहर्षका भरा दोनों हाथ जोड नमस्कार करता, श्रीधर केवलीकी बन्दनाको शीघ्र ही जाय था सो सिवाणसे उतरते सर्पने डसा, देह तज महेन्द्र नाम जो चौथा स्वर्ग तहां देव भया तहांसे चयकर पहुकर द्वीपविषै चन्द्रादित्य नामा नगर तहां राजा प्रकाशयश ताके राणी माधवी उसके जगद्युति नामा पुत्र भया। यौवनके उदयविषै राज्यलक्ष्मी पाई परंतु संसारसे अति उदास राजविषै चित्त नाहीं सो याके वृद्ध मन्त्रिनिने कही यह राज तिहारे कुलक्रमसे चला आवे है सो पालो तिहारे राज्यसे प्रजा सुखरूप होयगी सो मंत्रिनिके हठसे यह राज्य करै राज्यविषै तिष्ठता। यह साधूनिकी सेवा करै सो मुनि दानके प्रभावसे देवकुरु भोगभूमि गया तहांसे ईशान नाम दूजा स्वर्ग तहां देव भया चार सागर दोय पल्य देवलोकके सुख भोग देवांगनानिकर मंडित नाना प्रकारके भोग भोग तहांसे चया सो जम्बूद्वीपके पश्चिम विदेह मध्य अचल नामा चक्रवर्तीके रत्न नाम राणीके अभिराम नामा पुत्र भया सो महागुणनिका समूह अति सुन्दर जाहि देख सर्व लोकको आनन्द होय सो बाल अवस्था ही से अति विरक्त जिनदीक्षा धारा चाहे अर पिता चाहे यह घरविषै रहे तीन हजार राणी इसे परणाई सो वे नाना प्रकारके चरित्र करैं परंतु यह विषय सुखको विष समान गिने केवल मुनि होयवेकी इच्छा, अतिशांतचित्त परंतु पिता घरसे निकसने न देय यह महाभाग्य महा शीलवान महागुणवान महात्यागी। स्त्रीयोंका अनुराग नाहीं याको ते स्त्री भांति भांतिके वचनकर अनुराग उपजावें अति यत्नकर सेवा करें परंतु याको संसारकी माया गर्तरूप भासै जैसे गर्तमें पडा जो गज ताके पकडनहारे मनुष्य नाना भांति ललचावें तथापि गजको गर्त न रुचै ऐसे याहि जगत्

चन्द्रमा समान उज्ज्वल है दांत जिसके, गजराजोंके गुणोंकर मंडित विजियादिक महा हस्ती. तिनके वंशविषे उपजा महाकांतिका धारक. ऐरावत समान अति स्वछंद सिंह व्याघ्रादिकका हननहारा महा वृक्षोंका उपारनहारा पर्वतोंके शिखरका ढाहनहारा विद्याधरोंकर न ग्रहा जाय तो भूमिगोचरियोंकी क्या बात, जाकी वाससे सिंहादिक निवास तज भाग जावें ऐसा प्रबल गजराज गिरिके बनविषे नानाप्रकार पल्लवका आहार करता मानसरोवर विषे क्रीडा करता अनेक गजों सहित विचरे कभी कैलाशविषे विलास करे कभी गंगाके मनोहर द्रहोंविषे क्रीडा करै अर अनेक बन गिरि नदी सरोवरोविषे सुंदर क्रीडा करे अर हजारों हथिनीनि सहित रमै, अनेक हाथियोंके समूहका शिरोमणि यथेष्ट विचरता ऐसा सोहै जैसा पक्षियोंके समूह कर गरुड सोहै मेघ समान गर्जता मदके नीझरने तिनके झरनेका पर्वत सो एक दिन लंकेश्वरने देखा, सो विद्याके पराक्रम कर महाउग्र उसने यह नीठि नीठि वश किया इसका त्रैलोक्यमण्डन नाम धरा सुन्दर है लक्षण जिसके जैसे स्वर्गविषे चिरकाल अनेक अप्सराओं सहित क्रीडा करी तैसे हाथियोंकी पर्यायविषे हजारों हथिनियोंसे क्रीडा करता भया यह कथा देशभूषण केवली राम लक्ष्मणसे कहे हैं कि ये जीव सर्व योनिविषे रति मान लेय है निश्चय विचारिए तो सर्व ही गति दुःख रूप हैं अभिरामका जीव भरत अर मृदुमतिका जीव गज सूर्योदय चन्द्रोदयके जन्मसे लेकर अनेक भव के मिलापी हैं तातैं भरतको देख पूर्व भव चितार गज उपशांतचित्त भया अर भरत भोगोंसे परांगमुख दूर भया है मोह जिसका अब मुनिपद लिया चाहै है इस ही भवसे निर्वाण प्राप्त होवेंगे बहुरि भव न धरेंगे श्रीऋषभदेवके समय यह दोनों सूर्योदय चन्द्रोदय नामा भाई थे, मारीचके भरमाए मिथ्यात्वका सेवन कर बहुत काल संसारविषे भ्रमण किया, त्रस स्थावर योनिविषे भ्रमे चन्द्रोदयका जीव कैयक भव पीछे राजा कुलंकर बहुरि कैयक भव पीछे रमण ब्राह्मण बहुरि कैयक भव धर, समाधि मरण करणहारा

मृग भया, बहुरि स्वर्गविषै देव, बहुरि भूषण नामा वैश्यका पुत्र बहुरि स्वर्ग बहुरि जगद्युति नाम राजा वहांसे भोगभूमि बहुरि दूजे स्वर्ग देव, वहांसे चयकर महाविदेह क्षेत्रविषै चक्रवर्तीका पुत्र अभिराम भए वहांसे छठे स्वर्ग देव, देवसे भरत नरेन्द्र सो चरमशरीरी हैं बहुरि देह न धारेंगे, अर सूर्योदयका जीव बहुत काल भ्रमण कर राजा कुलंकरका श्रुतिनामा पुरोहित भया बहुरि अनेक जन्म लेय विनोदनामा विप्र भया, बहुरि अनेक जन्म लेय आर्तध्यानसे मरणहारा मृग भया बहुरि अनेक जन्म भ्रमण कर भूषणका पिता धनदत्त नामा वणिक बहुरि अनेक जन्म धर मृदुमति नामा मुनि उसने अपनी प्रशंसा सुन राग किया मायाचार शल्य दूर न करी तपके प्रभावसे छठे स्वर्ग देव भया वहांसे चयकर त्रैलोक्य मण्डन हाथी अब श्रावकके व्रत धर देव होयगा ये भी निकट भव्य है। या भांति जीवोंकी गति आगति ज्ञान अर इंद्रियोंके सुख विनाशीक जान या विषम संसार वनको तजकर ज्ञानी जीव धर्मविषै रमो, जे प्राणी मनुष्य देह पाय जिनभाषित धर्म नाहीं करे हैं वे अनन्त काल संसार भ्रमण करेंगे आत्मकल्याणसे दूर हैं तातैं जिनवरके मुखसे निकसा दयामई धर्म मोक्ष प्राप्त करनेको समर्थ याके तुल्य अर नाहीं मोह तिमिरका दूरकरणहारा जीती है सूर्यकी कांति जाने सो मन वचन कायकर अंगीकार करो जातैं निर्मल पद पावो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं भरतके अर हाथीके पूर्वभव वर्णन करनेवाला पचासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८५ ॥

अथानन्तर श्रीदेशभूषण केवलीके वचन महा पवित्र मोह अन्धकारके हरणहारे संसार सागरके तारणहारे नानाप्रकारके दुखके नाशक उनविषै भरत अर हाथीके अनेक भवका वर्णन सुनकर राम लक्षमण आदि सकल भव्यजन आश्चर्यको प्राप्त भए, सकल सभा चेष्टारहित चित्राम कैसी होय गई अर

भरत नरेंद्र देवेंद्र समान है प्रभा जाकी अविनाशी पदके अर्थ मुनि होयवेकी है इच्छा जिसके गुरुवोंके
चरणविषे नम्रीभूत है सीस जिसका महा शांतचित्त परम वैराग्यको प्राप्त हुवा तत्काल उठकर हाथ जोड
केवलीको प्रणामकर महा मनोहर वचन कहता भया–हे नाथ ! मैं संसार वनविषे अनन्त काल भ्रमण
करता नानाप्रकार कुयोनियोंविषे संकट सहता दुखी भया अब मैं संसार भ्रमणसे थका मुझे मुक्तिका
कारण तिहारी दिगम्बरी दीक्षा देवो यह आशारूप चतुर्गति नदी मरणरूप उग्र तरंगको धरे उसविषे मैं
डूबू हूं सो मुझे हस्तालम्बन दे निकासो ऐसा कह केवलीकी आज्ञा प्रमाण तजा है समस्त परिग्रह जिसने
अपने हाथोंसे सिरके केश लोच किये परम सम्यक्ती महाव्रतको अंगीकार जिन दीक्षाधर दिगंबर भया
तब आकाशविषे देव धन्य धन्य शब्द कहते भए अर कल्पवृक्षोंके फूलोंकी वर्षा करते भए ॥

हजारसे अधिक राजा भरतके अनुरागसे राजऋद्धि तज जिनेन्द्री दीक्षा धरते भए अर केयक
अल्पशक्ति हुते ते अणुव्रतधर श्रावक भये, अर माता केकई पुत्रके वैराग्य सुन आंसुनिकी वर्षा करती
भई व्याकुलचित्त होय दोडी सो भूमिविषे पडी, महामोहको प्राप्त भई पुत्रकी प्रीतिकर मृतक समान
होय गया है शरीर जाका सो चन्दनादिकके जलसे छांटी तो भी सचेत न भई, घनीवेर विषे सचेत भई
जैसे वत्स विना गाय पुकारै तैसे विलाप करती भई, हाय पुत्र ! महा विनयवान गुणनिकी खान मनको
आल्हादका कारण हाय तू कहां गया, हे अंगज ! मेरा अंग शोकके सागर विषे डूबै है सो थांभ, तो
सारिखे पुत्र विना मैं दुःखके सागर विषे मग्न शोककी भरी कैसे जीऊंगी। हाय ! हाय ! यह कहा भया ?
या भांति विलाप करती माता श्रीराम लक्ष्मणने संबोधकर विश्रामको प्राप्त करी, अति सुन्दर वचन-
निकर धीर्य बंधाया –हे मात ! भरत महा विवेकी ज्ञानवान हैं तुम शोक तजो, हम कहा तिहारे पुत्र
नाहीं, आज्ञाकारी किंकर हैं अर कौशल्या सुमित्रा सुप्रभाने बहुत संबोधा तब शोकरहित होय प्रति-

बोधको प्राप्त भई। शुद्ध है मन जाका अपने अज्ञानकी बहुत निंदा करती भई, धिकार या स्त्री पर्यायकूं यह पर्याय महा दोषनिकी खान है, अत्यन्त अशुचि वीभत्स नगरकी मोरी समान अब ऐसा उपाय करूं जाकर स्त्री पर्याय न धरूं, संसार समुद्रको तिरूं यह महा ज्ञानवान सदाही जिनशासनकी भक्तिवन्त हुती अब महा वैराग्यको प्राप्त होय पृथिवीमती आर्यिकाके समीप आर्यका भाई, एक श्वेत वस्त्र धारा अर सर्व परिग्रह तज निर्मलसम्यक्तकूं धरती सर्व आरम्भ टारती भई। याके साथ तीनसै आर्यका भईं। यह विवेकिनी परिग्रह तजकर वैराग्य धार ऐसी सोहती भई जैसी कलंकरहित चन्द्रमाकी कला मेघपटलरहित सोहै। श्रीदेशभूषण केवलीका उपदेश सुन अनेक मुनि भये अनेक आर्यिका भईं तिन कर पृथ्वी ऐसी सोहती भई जैसे कमलनिकर सरोवरी सोहै अर अनेक नर नारी पवित्र हैं चित्त जिनके तिन्होंने नाना प्रकारके नियम धर्म रूप श्रावक श्राविकाके व्रत धारे, यह युक्त ही है जो सूर्यके प्रकाश कर नेत्रवान् वस्तुका अवलोकन करे ही करै॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै भरत अर कैकयीका वैराग्य वर्णन करनेवाला छियासीवा पर्व पूर्ण भया॥ ८६॥

अथानन्तर त्रैलोक्यमण्डन हाथी अतिप्रशान्तचित्त केवलीके निकट श्रावकके व्रत धारता भया सम्यक् दर्शन संयुक्त महाज्ञानी शुभक्रियाविषे उद्यमी हाथी धर्मविषे तत्पर होता भया, पंद्रह पंद्रह दिनके उपवास तथा मासोपवास करता भया, सूके पत्रनिकर पारणा करता भया, हाथी संसारसे भयभीत उत्तम चेष्टाविषे परायण लोकानिकर पूज्य महाविशुद्धताको धरे पृथिवीविषे विहार करता भया कभी पक्षोपवास कभी मासोपवासके पारण ग्रामादिकविषे जाय तो श्रावक ताहि अतिभक्तिकर शुद्ध अन्न शुद्धजलकर

पारणा करावते भए क्षीण होय गया है शरीर जाका वैराग्यरूप खूंटेसे बंधा महाउग्रतप करता भया। यमानियम रूप है अंकुश जाके बहुरि महाउग्रतपका करणहारा गज शनैः शनैः आहारका त्याग कर अन्त संलेषणा धर शरीर तज छठे स्वर्ग देव होता भया, अनेक देवांगनाकर युक्त हारकुण्डलादिक आभूषणनिकर मण्डित पुण्यके प्रभावतैं देवगतिके सुख भोगता भया। छठे स्वर्गहीतैं आया हुता अर छठे ही स्वर्ग गया परम्पराय मोक्ष पावेगा, अर भरत महामुनि महातपके धारक पृथिवीके गुरु निर्ग्रंथ जाके शरीरका भी ममत्व नाहीं वे महा धीर जहां पिछिला दिन रहै तहां ही बैठ रहैं जिनको एक स्थान न रहना, पवन सारिखे असंगी पृथिवीसमान क्षमाको धरैं, जलसमान निर्मल अग्नि समान कर्म काष्ठके भस्म करनहारे अर आकाश समान अलेप चार आराधनाविषै उद्यमी तेरा प्रकार चारित्र पालते भए निर्ममत्व स्नेहके बंधनतैं रहित मृगेंद्र सारिखे निर्भय समुद्र समान गंभीर सुमेरुसमान निश्चल यथाजातरूपके धारक सत्यका वस्त्र पहरे क्षमारूप खडगको धरे वाईस परीषहके जीतनहारे महातपस्वी, समान हैं शत्रु मित्र जिनके अर समान है सुख दुख जिनके अर समान है तृणरत्न जिनके महा उत्कृष्ट मुनि शास्त्रोक्त मार्ग चलते भए, तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजीं। सूई समान तीक्ष्ण तृणकी सली पावोंमें चुभैं हैं परन्तु ताकी कछु सुध नाहीं अर शत्रुनिके स्थानकविषै उपसर्ग सहिवे निमित्त विहार करते भए तपके संयमके प्रभावकर शुक्ल ध्यान उपजा शुक्लध्यानके बलकर मोहका नाशकर ज्ञानावरण दर्शनावरण अन्तराय कर्महर लोकालोकको प्रकाश करणहारा केवलज्ञान प्रकट भया बहुरि अघातिया कर्म भी दूरकर सिद्धपदको प्राप्त भए जहांतैं बहुरि संसारविषै भ्रमण नाहीं, यह केकईके पुत्र भरतका चारित्र जो भक्ति कर पढै सुनै सो सब क्लेशसे रहित होय यश कीर्ति बल विभूति आरोग्यताको पावै अर स्वर्ग मोक्ष पावै यह परम चरित्र महा उज्ज्वल श्रेष्ठ गुणनिकर युक्त भव्य जीव सुनों जातैं शीघ्र ही सूर्यसे अधिक तेजके धारक होहु।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै भरतका निर्वाण गमन करनेवाला सतासीवां पर्व पूर्ण भया ॥८७॥

अथानन्तर भरतके साथ जे राजा महाधीर वीर अपने शरीरविषै भी जिनका अनुराग नहीं घर से निकसे जैनेश्वरी दीक्षा धर दुर्लभ वस्तुको प्राप्त भए तिनविषै कैयकनिके नाम कहिए है—हे श्रेणिक ! तू सुन—सिद्धार्थ, रतिवर्धन, मेघरथ, जांबू, नंद, शल्य, शशांक, निरसनन्दन, नंद, आनंद, सुमति, सदाश्रय, महाबुद्धि, सूर्य, इंद्रध्वज, जनवल्लभ, श्रुतिधर, सुचंद्र, पृथिवीधर, अलक, सुमति, अक्रोध, कुण्डर, सत्यवाहन, हरि, वासुमित्र, धर्ममित्र, पूर्णचन्द्र, प्रभाकर, नघोष, सुनंद, शांति, प्रियधर्मा इत्यादि एक हजारतैं अधिक राजा वैराग्य धारते भए विशुद्धकुलविषै उपजे सदा आचारविषै तत्पर पृथिवीविषै प्रसिद्ध हैं शुभ चेष्टा जिनकी ये महाभाग्य हाथी घोडे रथ पयादे स्वर्ण रत्न रणवास सर्व तजकर पंच महाव्रत धारते भए, राज्यको जिनने तृणवत् तजा महाशान्त नानाप्रकार योगीश्वर ऋद्धिके धारक भए सो आत्मध्यानके ध्याता कैयक तो मोक्ष गए कैयक अहमिंद्र भए कैयक उत्कृष्ट देव भए ॥

अथानन्तर भरत चक्रवर्ती सारिखे दशरथके पुत्र भरत तिनको घरसे निकसे पीछे लक्ष्मण तिनके गुण चितार चितार अतिशोकवन्त भया अपना राज्य शून्य गिनता भया शोककर व्याकुल है चित्त जाका अति विषादरूप आंसू डारता भया, दीर्घ निश्वास नाखता भया नील कमल समान है कांति जाकी सो कुमलाय गया, विराधितकी भुजानिपर हाथ धरै ताके सहारे बैठा मंद मंद वचन कहै, वे भरत महाराज गुण ही हैं आभूषण जिनके सो कहां गए ? जिन तरुण अवस्थाविषै शरीरसूं प्रीति छांडी, इन्द्र समान राजा अर हम सब उनके सेवक वे रघुवंशके तिलक समस्त विभूति तजकर मोक्षके अर्थी महादुद्धर मुनिका धर्म धारते भए । शरीर तो अति कोमल कैसे परीषह सहेंगे ? धन्य वे अर श्रीराम महा ज्ञानवान कहते भए, भरतकी महिमा कही न जाय जिनका चित्त कभी संसारविषै न रचा जो शुद्धबुद्धि है तो उनकी ही है अर जन्म कृतार्थ है तो उनका ही है, जे विषके भरे अन्नकी न्याईं राज्यको तज कर

जिनदीक्षा धरते भए वे पूज्य प्रशंसा योग्य परम योगी उनका वर्णन देवेंद्र भी न कर सके तो औरोंकी कहा शक्ति जो करे वे राजा दशरथके पुत्र केकईके नंदन तिनकी महिमा हमतें न कही जाय। या भरतके गुण गावते एक मुहूर्त सभाविषै तिष्ठे, समस्त राजा भरत ही के गुण गाया करे। बहुरि श्रीराम लक्षमण दोऊ भाई भरतके अनुरागकर अति उद्वेग रूप उठे सब राजा अपने अपने स्थानकूं गए घर घर भरतकी चर्चा सब ही लोक आश्चर्यको प्राप्त भए। यह तो उनकी यौवन अवस्था अर यह राज्य ऐसे भाइ सब सामिग्री पूर्ण ऐसे ही पुरुष तजें सोई परम पदको प्राप्त होवें या भांति सब ही प्रशंसा करते भए।

बहुरि दूजे दिन सब राजा मंत्रकर राम पै आए नमस्कारकर अति प्रीतिसे वचन कहते भए, हे नाथ! जो हम असमझ हैं तो आपके अर बुद्धिवंत हैं तो आपके हम पर कृपाकर एक बीनती सुनो—हे प्रभो! हम सब भूमिगोचरी अर विद्याधर आपका राज्याभिषेक करें, जैसे स्वर्गविषै इंद्रका होय, हमारे नेत्र अर हृदय सफल होवें तिहारे अभिषेकके सुखकर पृथिवी सुखरूप होय तब राम कहते भए तुम लक्षमणका राज्याभिषेक करो वह पृथिवीका स्तंभ भूधर है समस्त राजानिका गुरु वासुदेव राजानिका राजा सव गुण ऐश्वर्यका स्वामी सदा मेरे चरणनिको नमै या उपरान्त मेरे राज्य कहां॥

तब वे समस्त श्रीरामकी अतिप्रशंसा कर जय जयकार शब्द कर लक्ष्मणपै गए अर सब वृत्तान्त कहा तब लक्ष्मण सबों को साथ लेय रामपै आया अर हाथ जोड नमस्कार कर कहता भया हे वीर! या राज्य के स्वामी आप ही हो मैं तो आपका आज्ञाकारी अनुचर हूं तब रामने कहा, हे वत्स! तुम चक्र के धारी नारायण हो तातैं राज्याभिषेक तुम्हारा ही योग्य है, सो इत्यादि वार्तालाप से दोनों का राज्याभिषेक ठहरा बहुरि जैसी मेघ की ध्वनि होय तैसी वादित्रनिकी ध्वनि होती भई दुन्दुभी वाजे नगारे ढोल मृदंग वीण तमूरे झालर झांझ मजीरे वांसुरी शंख इत्यादि वादित्र वाजे अर नानाप्रकारके

मंगल गीत नृत्य होते भए याचकोंको मनवांछित दान दीया सवनिको अति हर्ष भया दोऊ भाई एक सिंहासन पर विराजे स्वर्ण रत्नके कलश जिनके मुख कमलसे ढके पवित्र जलसे भरे तिनकर विधिपूर्वक अभिषेक भया, दोऊ भाई मुकट भुजवन्ध हार केयूर कुण्डलादिक कर मण्डित मनोग्य वस्तु पहिरे सुगंधकर चर्चित तिष्ठे विद्याधर भूमिगोचरी तथा तीन खण्डके देव जय जय शब्द कहते भए। यह बलभद्र श्रीराम हलमूसलके धारक अर यह वासुदेव श्रीलक्ष्मण चक्रका धारक जयवंत होहु दोऊ राजेंद्रनिका अभिषेक कर विद्याधर बडे उत्साहसे सीता अर विशिल्याका अभिषेक करावते भए, सीता रामकी राणी अर विशल्या लक्ष्मणकी, तिनका अभिषेक विधिपूर्वक होता भया ॥

अथानन्तर विभीषणको लंका दई सुग्रीवको किहकंधापुर हनूमानको श्रीनगर अर हनूरुह द्वीप दिया विराधितको नागलोक समान अलंकापुर दिया, नल नीलको किकंधूपुर दिया, समुद्रकी लहरोंके समूहकर महाकौतुकरूप अर भामण्डलको वैताढ्यकी दक्षिण श्रेणिविषै रथनूपुर दिया समस्त विद्याधरनिका अधिपति किया अर रत्नजटीको देवोपनीत नगर दिया अर भी यथा योग्य सवनिको स्थान दिए अपने पुण्यके उदय योग्य सबही रामलक्ष्मणके प्रतापतैं राज्य पावते भए। रामकी आज्ञाकर यथा योग्य स्थानमें तिष्ठे। जे भव्यजीव पुण्यके प्रभावका जगतविषै प्रसिद्ध फल जान धर्मविषै रति करे हैं वे मनुष्य सूर्यसे अधिक ज्योतिको पावे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै राम लक्ष्मणका राज्याभिषेक वर्णन करनेवाला ॥८८॥ वा पर्व पूर्ण

अथानन्तर राम लक्ष्मण महा प्रीतिकर भाई शत्रुघ्नसूं कहते भए, जो तुमको रुचै सो देश लेवो जो तुम आधी अयोध्या चाहो तो आधी अयोध्या लेवो अथवा राजगृह अथवा पोदनापुर अथवा पौंड्रसुन्दर इत्यादि सैकडा राजधानी हैं। तिनविषै जो नीकी सो तिहारी तब शत्रुघ्न कहता भया मोहि मथुराका राज्य देवो तब राम बोले—हे भ्रात ! वहां राजा मधुका राज्य है अर वह रावणका जमाई है

अनेक युद्धनिका जीतनहारा ताको चमरेन्द्रने त्रिशूल रत्न दिया है ज्येष्ठके सूर्य समान दुस्सह है अर देवनिसे दुर्निवार है ताकी चिंता हमारे भी निरंतर रहे है वह राजा मधु हरिवंशियोंके कुलरूप आकाश विषैं सूर्य समान प्रतापी है जाने वंशविषै उद्योत किया है अर जाका लवणार्णव नामा पुत्र विद्याधरनिहू कर असाध्य है पिता पुत्र दोऊ महाशूरवीर हैं तातैं मथुरा टार और राज्य चाहो सोही लेवो तब शत्रुघ्न कहता भया बहुत कहिवेकर कहा ? मोहि मथुरा ही देवो जो मैं मधुके छातेकी न्याईं मधुको रण संग्रामविषै न तोड लूं तो दशरथका पुत्र नाहीं जैसे सिंहनिके समूहको अष्टापद तोड डारे तैसे ताके कटकसहित ताहि न चूर डारूं, ये मैं तिहारा भाई नाहीं, जो मधुको मृत्यु प्राप्त न करूं तो मैं सुप्रभाकी कुक्षिविषै उपजा ही नहीं या भांति प्रचण्ड तेजका धरणहारा शत्रुघ्न कहता भया तब समस्त विद्याधरनिके अधिपति आश्चर्यको प्राप्त भए अर शत्रुघ्नकी बहुत प्रशंसा करते भए शत्रुघ्न मथुरा जायवेको उद्यमी भया तब श्रीराम कहते भए हे भाई ! मैं एक याचना करूं हूं सो मोहि दक्षिणा देहु तब शत्रुघ्न कहता भया सबके दाता आप हो सब आपके याचक हैं आप याचो सो वस्तु कहा ? मेरे प्राणहीके नाथ आप हो तो अर वस्तुकी कहा बात एक मधुसे युद्ध तो मैं न तजूं अर कहो सोही करूं तब श्रीरामने कही—हे वत्स ! तू मधुसे युद्ध करै तो जासमय वाके हाथ त्रिशूलरत्न न होय तासमय करियो तब शत्रुघ्नने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कह भगवानकी पूजाकर नमोकार मन्त्र जप सिद्धनिकों नमस्कारकर भोजनशालाविषै जाय भोजनकर माताके निकट आय आज्ञा मांगी तब वे माता अतिस्नेहतें याके मस्तकपर हाथधर कहती भई—हे वत्स ! तू तीक्ष्ण बाणानिकर शत्रुनिके समूहको जीत । वह योधाकी माता अपने योधापुत्रसे कहती भई—हे पुत्र अबतक संग्रामविषै शत्रुवानिने तेरी पीठ नाही देखी है अर अब हू न देखेंगे तू रण जीत आवेगा। तब मैं स्वर्णके कमलनिकर श्रीजिनेन्द्रकी पूजा कराऊंगी

वे भगवान त्रैलोक्य मंगलके कर्ता आप महामंगलरूप सुर असुरनिकर नमस्कार करबे योग्य रागादि-कके जीतनहारे तोहि मंगल करें। वे परमेश्वर पुरुषोत्तम अरहंत भगवन्त जिनेन अत्यंत दुर्जय मोहरिपु जीता वे तोहि कल्याणके दायक होहु सर्वज्ञ त्रिकालदर्शी स्वयंबुद्ध तिनके प्रसादतैं तेरी विजय होहु। जे केवलज्ञानकर लोकालोकको हथलीविषैं आंवलाकी न्याईं देखे हैं ते तोहि मंगलरूप होहु। हे वत्स! वे सिद्धपरमेष्ठी अष्टकर्मकररहित अष्टगुण आदि अनन्त गुणनिकर विराजमान लोकके शिखर तिष्ठे ते सिद्ध तोहि सिद्धिके कर्ता होवें अर आचार्य भव्यजीवनिके परम आधार तेरे विघ्न हरें जे कमल समान अलिप्त सूर्यसमान तिमिर हर्ता अर चन्द्रमा समान आल्हादके कर्ता भूमिसमान क्षमावान सुमेरु समान अचल समुद्र समान गम्भीर आकाश समान अखंड इत्यादि अनेक गुणनिकर मण्डित हैं अर उपाध्याय जिनशासनके पारगामी तोहि कल्याणके कर्ता होहु अर कर्म शत्रुनिके जीतवेको महा शूरवीर बारह प्रकार तपकर जे निर्वाणको साधै हैं ते साधु तोहि महावीर्यके दाता होवें या भांति विघ्नकी हरणहारी मंगलकी करणहारी माता आशीस देती सो शत्रुघ्न माथे चढाय माताको प्रणामकर वाहिर निकसा। स्वर्णकी सांकलनिकर मण्डित जो गज तापर चढा ऐसा सोहता भया जैसे मेघमाला ऊपर चन्द्रमा सोहै अर नाना प्रकारके बाहननिपर आरूढ अनेक राजा संग चले सो तिनकर ऐसा सोहता भया जैसा देवनिकर मण्डित देवेंद्र सोहै राम लक्ष्मणकी भाईसूं अधिक प्रीति सो तीन मंजिल भाईके संग गये तब भाई कहता भया—हे पूज्य पुरुषोत्तम! पीछे अयोध्या जावो मेरी चिंता न करो मैं आपके प्रसादतैं शत्रुनिको निस्सन्देह जीतूंगा तब लक्ष्मणने समुद्रावर्त नामा धनुष दिया प्रज्वलित है मुख जिनके पवन सारिखे वेगको धरे ऐसे बाण दिये अर कृतांतवक्रको लार दिया अर लक्ष्मणसहित राम पीछे अयोध्या आये परंतु भाईकी चिंता विशेष।

अथानन्तर शत्रुघन महाधीर बीर बडी सेना कर संयुक्त मथुराकी तरफ गया अनुक्रमसे यमुना नदीके तीर जाय डेरे दिये जहां मंत्री महासूक्ष्मबुद्धि मंत्र करते भये। देखो, इस बालक शत्रुघनकी बुद्धि जो मधुके जीतवेकी बांछा करी है। यह नयवर्जित केवल अभिमान कर प्रवर्ता है, जा मधुने पूर्व राजा मान्धाता रणविषै जीता सो मधु देवनिकर विद्याधरनिकर न जीता जाय, ताहि यह कैसे जीतेगा राजा मधु सागर समान है उछलते पियादे तेई भये उतंग लहर अर शत्रुनिके समूह तेई भये ग्रह तिनकर पूर्ण ऐसे मधुसमुद्रकूं शत्रुघ्न भुजानिकर तिरा चाहे है सो कैसे तिरेगा, तथा मधुभूपति भयानक वन समान है ताविषै प्रवेशकर कौन जीवता निसरै। कैसा है राजा मधुरूप वन? पयादेके समूह तेई हैं वृक्ष जहां अर माते हाथिनिकर महा भयंकर अर घोडनिके समूह तेई हैं मृग जहां, ये बचन मंत्रिनिके सुन कृतांतवक्र कहता भया। तुम साहस छोड ऐसे कायरताके वचन क्यों कहो हो? यद्यापि वह राजा मधु चमरेंद्र कर दिया जो अमोघ त्रिशूल ताकर अति गर्वित है तथापि ता मधुको शत्रुघन सुन्दर जीतेगा जैसे हाथी महाबलवान है अर सूंडकर वृक्षनिको उपाडे है मद झरे है तथापि ताहि सिंह जीतै है यह शत्रुघन लक्ष्मी अर प्रताप कर मंडित है महाबलवान है शूरवीर है महा पंडित प्रवीण है अर याके सहाई श्रीलक्ष्मण हैं अर आप सबही भले भले मनुष्य याके संग हैं तातैं यह शत्रुघन अवश्य शत्रुको जीतेगा जब ऐसे बचन कृतांतवक्रने कहे तब सबही प्रसन्न भए अर पाहिलेही मंत्रीजनानिने जो मथुरामें हलकारे पठाये हुते ते आयकर सर्व वृत्तांत शत्रुघनसूं कहते भए। हे देव! मथुरा नगरीकी पूर्व दिशाकी ओर अत्यंत मनोग्य उपवन है तहां रणवास सहित राजा मधु रमै है। राजाके जयंती नाम पटराणी है ता सहित वनक्रीडा करै है जेसे स्पर्श इंद्रियके बश भया गजराज बंधन विषै पडे है, तैसे राजा मोहित भया विषयनिके बंधन विषै पडा है, महा कामी आज छठा दिन है कि सर्व राज्य काज तज प्रमादके वश

भया। वनविषै तिष्ठै है कामान्ध मूर्ख तिहारे आगमको नाहीं जाने है, अर तुम ताके जीतवेको वांछा करी है ताकी ताहि सुध नाहीं अर मंत्रिनिने बहुत समझाया सो काहूकी बात धारे नाहीं, जैसे मूढ रोगी वैद्यकी औषध न धारै इस समय मथुरा हाथ आवे तो आवे अर कदाचित् मधु पुरीमें धसा तो समुद्रसमान अथाह है यह बचन हलकारोंके मुखसे शत्रुघन सुनकर कार्यमें प्रवीण ताही समय बलवान योधानिके सहित दौडकर मथुरा गया, अर्धरात्रिके समय सब लोक प्रमादी हुते अर नगरी राजारहित हुती सो शत्रुघन नगर विषै जाय पैठा जैसे योगी कर्मनाश कर सिद्धपुरीविषै प्रवेश करै, तैसे शत्रुघन द्वारको चूरकर मथुरा विषै प्रवेश करता भया। मथुरा महामनोग्य है तब बंदीजननिके शब्द होते भये जो राजा दशरथका पुत्र शत्रुघन जयवंत होहु ये शब्द सुनके नगरीके लोक परचक्रका आगम जान अति व्याकुल भए, जैसे लंका अंगदके प्रवेशकर अतिव्याकुल हुती तैसे मथुराविषै व्याकुलता भई। कई एक कायर हृदयकी धरनहारी स्त्री हुतीं तिनके भयकर गर्भपात होयगये, अर कैयक महाशूरवीर कलकलाट शब्द सुन तत्काल सिंहकी न्याईं उठे, शत्रुघन राजमंदिर गया आयुधशाला अपने हाथ कर लीनी अर स्त्री बालक आदि जे नगरीके लोक अतित्रासकूं प्राप्त भये तिनको महा मधुर वचन कर धीर्य बंधाया जो यह श्रीरामका राज्य है यहां काहूको दुःख नाहीं तब नगरीके लोक त्रासरहित भये अर शत्रुघनको मथुराविषै आया सुन राजा मधु महाकोप कर उपवनतैं नगरको आया सो मथुराविषै शत्रुघनके सुभटोंकी रक्षाकर प्रवेश न कर सका जैसे मुनिके हृदय में मोह प्रवेश न कर सकै, नाना प्रकारके उपाय कर प्रवेश न पाया अर त्रिशूल हूतैं रहित भया तथापि महा अभिमानी मधुने शत्रुघनसे संधि न करी युद्ध ही को उद्यमी भया तब शत्रुघनके योधा युद्धको निकसे दोनों सेना समुद्र समान तिन विषै परस्पर युद्ध भया, रथानिके तथा हाथीनिके तथा घोडानिके असवार परस्पर युद्ध करते भए अर परस्पर

पयादे भिडे, नाना प्रकारके आयुधनिके धारक महासमर्थ नाना प्रकार आयुधनि कर युद्ध करते भये ता समय परसेनाके गर्वको न सहता संता कृतांतवक्र सेनापति परसेनाविषै प्रवेश करता भया। नाहीं निवारी जाय है गति जाकी तहां रणक्रीडा करै है जैसे स्वयम्भू रमण उद्यानविषै इंद्र क्रीडा करै, तब मधुका पुत्र लवणार्णवकुमार याहि देख युद्धके अर्थ आया अपने बाणनिरूप मेघकर कृतांतवक्र रूप पर्वतको आच्छादित करता भया, अर कृतांतवक्र भी आशीविष तुल्य बाणनिकर ताके बाण छेदता भया अर धरती आकाशको अपने बाणनिकर व्याप्त करता भया, दोऊ महायोधा सिंह समान बलवान गजनिपर चढे क्रोधसहित युद्ध करते भए, वाने वाको रथरहित किया अर वाने वाको, बहुरि कृतांतवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषै बाण लगाया अर ताका बषतर भेदा तब लवणार्णव कृतांतवक्र ऊपर तोमर जातिका शस्त्र चलावता भया क्रोधकर लाल हैं नेत्र जाके दोनो घायल भए, रुधिर कर रंग रहे हैं वस्त्र जिनके, महा सुभटताके स्वरूप दोनों क्रोध कर उद्धत फूले टेसूके वृक्ष समान सोहते भए, गदा खड्ग चक्र इत्यादि अनेक आयुधनिकर परस्पर दोऊ महा भयंकर युद्ध करते भए। बल उन्माद विषादके भरे बहुत वेर लग युद्ध भया, कृतांतवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषै घाव किया, सो पृथिवीविषै पडा जैसे पुण्यके क्षयतैं स्वर्गवासी देव मध्य लोकविषै आय पडैं. लवणार्णव प्राणान्त भया, तब पुत्रको पडा देख मधु कृतांतवक्र पर दौडा तब शत्रुघ्नने मधुको रोका, जैसे नदीके प्रवाहको पर्वत रोकै, मधु महा दुस्सह शोक अर कोपका भरा युद्ध करता भया सो आशीविषकी दृष्टि समान मधुकी दृष्टि शत्रुघ्नकी सेनाके लोक न सहार सकते भए जैसे उग्र पवनके योगतैं पत्रनिके समूह चलायमान होंय तैसे लोक चलायमान भए बहुरि शत्रुघ्नको मधुके सन्मुख जाता देख धीर्यकूं प्राप्त भए। शत्रुके भयकर लोक तब लगही डरें जबलग अपने स्वामीको प्रबल न देखैं अर स्वामीको प्रसन्नवदन देख धीर्यको प्राप्त होंय। शत्रुघ्न उत्तम

रथ पर आरूढ मनोग्य धनुष हाथविषै सुन्दर हारकर शोभे है वक्षस्थल जाका सिर पर मुकट धरे मनोहर कुण्डल पहिरे शरदके सूर्य समान महातेजस्वी अखण्डित है गति जाकी शत्रुके सन्मुख जाता अति सोहता भया जैसे गजराज पर जाता मृगराज सोहै, अर अग्नि सूके पत्रनिको जलावै तैसे मधुके अनेक योधा क्षणमात्रविषै विध्वंस किए, शत्रुघनके सनमुख मधुका कोई योधा न ठहरसका जैसे जिनशासनके पंडित स्यादवादी तिनके सन्मुख एकांतवादी न ठहिर सकें, जो मनुष्य शत्रुघनसे युद्ध किया चाहै सो तत्काल विनाशको पावै जैसे सिंहके आगे मृग। मधुकी समस्त सेनाके लोक अति व्याकुल होय मधुके शरण आये सो मधु महा सुभट शत्रुघनको सन्मुख आवता देख शत्रुघनकी ध्वजा छेदी अर शत्रुघनने बाणनिकर ताके रथके अश्व हते। तब मधु पर्वत समान जो बरुणेंद्र गज तापर चढा क्रोधकर प्रज्वलित है शरीर जाका शत्रुघनको निरन्तर बाणनिकर आच्छादने लगा जैसे महामेघ सूर्यको आच्छादे सो शत्रुघ्न महा शूरवीरने ताके बाण छेद डारे अर मधुका बखतर भेदा जैसे अपने घर कोई पाहुना आवै अर ताकी भले मनुष्य भलीभांति पाहुन गति करैं तैसे शत्रुघ्न मधुकी रणविषै शस्त्रनिकर पाहुणगति करता भया॥

अथानन्तर मधु महा विवेकी शत्रुघनको दुर्जय जान आपको त्रिशूल आयुधसे रहित जान पुत्र की मृत्यु देख अर अपनी आयु हू अल्प जान मुनिनिका वचन चितारता भया—अहो जगतका समस्त ही आरंभ महा हिंसारूप दुखका देनहारा सर्वथा ताज्य है यह क्षण भंगुर संसारका चरित्र तामें मूढजन राचे या संसार विषै धर्म ही प्रशंसायोग्य है अर अधर्मका कारण अशुभ कर्म प्रशंसा योग्य नाहीं महा निंद्य यह पाप कर्म नरक निगोदका कारण है, जो दुर्लभ मनुष्य देहको पाय धर्म विषै बुद्धि नाहीं धरे है सो प्राणी मोह कर्म कर ठगाया अनन्त भव भ्रमण करै है। मैं पापीने संसार असारको सार जाना, क्षणभं-

गुर शरीरको ध्रुव जाना, आत्महित न किया। प्रमादविषै प्रवरता, रोग समान ये इंद्रयनिके भोग भले जान भोगे, जब मैं स्वाधीन हुता तब मोहि सुबुद्धि न आई, अब अन्तकाल आया अब कहा करूं, घरमें आग लागी ता समय तलाव खुदवाना कौन अर्थ? अर सर्पने डसा ता समय देशांतरसे मंत्राधीश बुलवाना अर दूरदेशसे माणि औषधि मंगवाना कौन अर्थ? तातैं अब सर्व चिंता तज निराकुल होय अपना मन समाधानविषै ल्याऊं यह विचार वह धीरवीर घावकर पूर्ण हाथी चढाही भावमुनि होता भया, अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधुनिको मनकर वचनकर कायकर बारंबार नमस्कार कर अर अरहन्त सिद्ध साधु तथा केवली प्रणीत धर्म यही मंगल हैं यही उत्तम हैं इन ही का मेरे शरण है अढाई द्वीप विषै पंद्रहकर्म भूमि तिनविषै भगवान् अरहंत देव होय हैं वे त्रैलोक्यनाथ मेरे हृदयविषै तिष्ठो। मैं बारम्बार नमस्कार करूं हूं अब मैं यावज्जीव सर्व पाप योग तजे चारों आहार तजे, जे पूर्व पाप उपार्जे हुते तिनकी निन्दा करूं हूं अर सकल वस्तुका प्रत्याख्यान करूं हूं अनादि कालतैं या संसार वनविषै जो कर्म उपार्जे हुते ते मेरे दुःकृत मिथ्या होहु॥ भावार्थ—मुझे फल मत देहु, अब मैं तत्वज्ञानविषै तिष्ठा तजबे योग्य जो रागादिक तिनको तजूं हूं अर लेयबे योग्य जो निजभाव तिनको लेऊं हूं, ज्ञान दर्शन मेरे स्वभाव ही हैं सो मोसे अभेद्य हैं अर जे शरीरादिक समस्त परपदार्थ कर्मके संयोग कर उपजे ते मोसे न्यारे हैं, देह त्यागके समय संसारी लोक भूमिका तथा तृणका सांथरा करे हैं सो सांथरा नाहीं। यह जीव ही पाप बुद्धिरहित होय तब अपना आप ही सांथरा है। ऐसा विचारकर राजा मधुने दोनों प्रकारके परिग्रह भावोंसे तजे अर हाथीकी पीठ पर बैठा ही सिरके केश लोंच करता भया, शरीर घावनिकर अतिव्याप्त है तथापि महा दुर्धर धीर्यको धर कर अध्यात्म योगविषै आरूढ होय कायाका ममत्व तजता भया, विशुद्ध है बुद्धि जाकी। तब शत्रुघ्न मधुकी परम शांत दशा देख नमस्कार करता भया अर कहता भया

हे साधो ! मो अपराधीका अपराध क्षमा करो, देवानिकी अप्सरा मधुका संग्राम देखनेको आईं हुतीं आ-
काशसे कल्पवृक्षनिके पुष्पोंकी वर्षा करती भई मधुका वीर रस अर शांत रस देख देव भी आश्चर्यको
प्राप्त भए। बहुरि मधु महा धीर एक क्षणमात्रविषै समाधि मरण कर महासुखके सागरविषै तीजे सनत्
कुमार स्वर्गविषै उत्कृष्ट देव भया अर शत्रुघ्न मधुकी स्तुति करता महा विवेकी मथुराविषै प्रवेश करता
भया जैसे हस्तिनागपुरविषै जयकुमार प्रवेश करता सोहता भया तैसा शत्रुघन मधुपुरीविषै प्रवेश करता
सोहता भया। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे नराधिपति श्रेणिक ! प्राणियोंके या संसारविषै
कर्मोंके प्रसंग कर नाना अवस्था होय हैं तातैं उत्तमजन सदा अशुभ कर्म तजकर शुभकर्म करो जाके प्र-
भाव कर सूर्य समान कांतिको प्राप्त होहु ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा बचनिकाविषै मधुका युद्ध अर
वैराग्य होनेका वर्णन करनेवाला नवासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८९ ॥

अथानन्तर सुरकुमारोंके इंद्र जो चमरेंद्र महाप्रचंड तिनका दीया जो त्रिशूलरत्न मधुके हुता ताके
अधिष्ठाता देव त्रिशूलको लेकर चमरेंद्रके पास गए अतिखेद खिन्न महा लज्जावान होय मधुके मरणका
वृत्तांत असुरेंद्रसे कहते भए तिनकी मधुसे अतिमित्रता सो पातालसे निकसकर महाक्रोधके भरे मथुरा
आयवेको उद्यमी भए ता समय गरुडेंद्र असुरेंद्रके निकट आये अर पूछते भए हे दैत्येंद्र ! कौन तरफ गम-
नको उद्यमी भए हो ? तब चमरेंद्रने कही—जाने मेरा मित्र मधु मारा है ताहि कष्ट देवेको उद्यमी भया हूं
तब गरुडेंद्रने कही कहा विशिल्याका माहात्म्य तुमने न सुना है। तब चमरेंद्रने कही वह अद्भुत अवस्था
विशिल्याकी कुमार अवस्थाविषै ही हुती अर अब तो निर्विष भुजंगी समान है जौंलग विशिल्याने वासु-

देवका आश्रय न किया हुता तौलग ब्रह्मचर्यके प्रसादतैं असाधारण शक्ति हुती, अब वह शक्ति विशिल्याविषै नाहीं, जे निरतिचार बालब्रह्मचर्य धारें तिनके गुणनिकी महिमा कहिवेविषै न आवै, शीलके प्रसादकर सुर असुर पिशाचादि सब डरें, जौलग शीलरूप खड्गको धारे तौलग सबकर जीता न जाय महा दुर्जय है। अब विशिल्या पातिव्रता है ब्रह्मचारिणी नाहीं तातैं वह शक्ति नाहीं मद्य मांस मैथुन यह महा पाप हैं इनके सेवनसे शक्तिका नाश होय है जिनका व्रतशील नियमरूप कोट भग्न न भया तिनको कोई विघ्न करवे समर्थ नाहीं, एक कालाग्नि नाम रुद्र महा भयंकर भया सो हे गरुडेंद्र ! तुम सुना ही होयगा बहुरि वह स्त्रीसे आसक्त होय नाशको प्राप्त भया तातैं विषयका सेवन विषसे भी विषम है परम आश्चर्यका कारण एक अखंड ब्रह्मचर्य है। अब मैं मित्रके शत्रुपर जाऊंगा तुम तिहारे स्थानक जावहु। ऐसा गरुडेंद्रसे कहकर चमरेंद्र मथुरा आए, मित्रके मरणकर कोपरूप मथुराविषै वही उत्सव देखा जो मधुके समय हुता तब असुरेंद्रने विचारी—ये लोक महादुष्ट कृतघ्न हैं देशका धनी पुत्रसहित मरगया है अर अन्य आय बैठा है इनको शोक चाहिये कि हर्ष, जाके भुजाकी छाया पाय बहुत काल सुखसे बसे ता मधुकी मृत्युका दुःख इनको क्यों न भया ? ये महाकृतघ्न हैं सो कृतघ्नका मुख न देखिये लोकनिकर शूरवीर सेवायोग्य शूरवीरनिकर पण्डित सेवा योग्य हैं। सो पण्डित कौन जो पराया गुण जाने सो ये कृतघ्न महामूर्ख हैं ऐसा विचारकर मथुराके लोकनिपर चमरेंद्र कोपा—इन लोकोंका नाश करूं। यह मथुरापुरी या देशसहित क्षय करूं। महाक्रोधके वश होय असुरेंद्र लोकनिको दुस्सह उपसर्ग करता भया, अनेक रोग लोगनिको लगाये, प्रलय कालकी अग्नि समान निर्दयी होय लोकरूप वनको भस्म करवेको उद्यमी भया, जो जहां ऊभा हुता सो वहां ही मरगया अर बैठा हुता सो बैठा ही रहा, सूता था सो सूता ही रहा, मरी पडी, लोकको उपसर्ग देख मित्र देव देवताके भयसे शत्रुघ्न अयोध्या आया सो जीतकर

महावीर भाई आया बलभद्र नारायण अति हर्षित भये अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भगवानकी अद्भुत पूजा करावती भई, अर दुखी जीवनिको करुणाकर अर धर्मात्मा जीवनिको अति विनयकर अनेक प्रकार दान देती भई, यद्यपि अयोध्या महा सुंदर है स्वर्ण रत्ननिके मन्दिरनिकर माण्डित है कामधेनु समान सर्व कामना पूरणहारी देवपुरी समान पुरी है तथापि शत्रुघ्नका जीव मथुरासे अति आसक्त सो अयोध्याविषैं अनुरागी न होता भया जैसे कैयक दिन सीता विना राम उदास रहे तैसे शत्रुघ्न मथुरा विना अयोध्याविषै उदास रहे जीवोंको सुन्दर वस्तुका संयोग स्वप्न समान क्षणभंगुर है परम दाहको उपजावै है ज्येष्ठके सूर्यसे हू अधिक आतापकारी है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मथुराके लोकनिकूं असुरेंद्रकृत उपसर्गका वर्णन करनेवाला नव्वेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९० ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतमस्वामीसे पूछता भया—हे भगवन् ! कौन कारण कर शत्रुघ्न मथुरा ही को याचता भया । अयोध्याहूतैं ताहि मथुरा का निवास अधिक क्यों रुचा, अनेक राजधानी स्वर्ग लोक समान सो न वांछी अर मथुरा ही वांछी ऐसी मथुरासे कहा प्रीति, तब गौतमस्वामी ज्ञानके समुद्र सकल सभारूप नक्षत्रनिके चन्द्रमा कहते भये, हे श्रेणिक ! इस शत्रुघनके अनेक भव मथुरा में भये तातैं याका मधु-पुरीसे अधिक स्नेह भया । यह जीव कर्म्मोनिके सम्बन्धतें अनादि काल का संसार सागरमें बसे है सो अनन्त भव धरे। यह शत्रुघन का जीव अनन्त भव भ्रमण कर मथुरा विषै एक यमनदेव नामा मनुष्य भया, महाक्रूर धर्मसे विमुख सो मर करे शूकरे खर काग ये जन्म धर अज पुत्र भया सो अग्निमें जल मूवा, भैंसा जलके लादने का भया सो छैवार भैंसा होय दुखसे

मूवा नीचकुलविषै, निर्धन मनुष्य भया, हे श्रेणिक ! महापापी तो नरक को प्राप्त होय हैं, अर पुण्यवान् जीव स्वर्ग विषै देव होय हैं अर शुभाशुभमिश्रित कर मनुष्य होय हैं बहुरि यह कुलन्धरनामा ब्राह्मण भया रूपवान अर शीलरहित सो एक समय नगरका स्वामी दिग्विजय निमित्त देशांतर गया ताकी ललिता नाम राणी महलके झरोखाविषै तिष्ठे थी सो पापिनी इस दुराचारी विप्रको देख काम बाण कर वेधी गई सो याहि महलमें बुलाया। एक आसनपर राणी अर यह बैठे रहे ताही समय राजा दूरका चला अचानक आया अर याहि महलमें देखा सो राणीने मायाचार कर कही—जो यह बन्दीजन है भिक्षुक है तथापि राजाने न मानी राजाके किंकर ताहि पकडकर नृपकी आज्ञातैं आठो अंग दूर करवेके अर्थ नगरके बाहिर लेजाते हुते सो कल्याणनामा साधु ने देख कही जो तू मुनि होय तो तोहि छुडावें तब याने मुनि होना कबूल किया तब किंकरानिसे छुडाया सो मुनिहोय महातप कर स्वर्गमें ऋजु विमानका स्वामी देव भया। हे श्रेणिक ! धर्मसे कहा न होय ?

अथानन्तर मथुराविषै चंद्रभद्र राजा ताके राणी धारा ताके भाई सूर्य देव अग्निदेव यमुनादेव अर आठ पुत्र तिनके नाम श्रीमुख संमुख सुमुख इंद्रमुख प्रमुख उग्रमुख अर्कमुख परमुख अर राजा चंद्रभद्र के दूजी राणी कनकप्रभा ताके वह कुलंधर नामा ब्राह्मणका जीव स्वर्ग विषै देव होय तहांतै चयकर अचल नाम पुत्र भया सो कलावान अर गुणनिकर पूर्ण सर्व लोकके मनका हरणहारा देव कुमार तुल्य क्रीडाविषै उद्यमी होता भया।

अथानन्तर एक अंकनामा मनुष्य धर्मकी अनुमोदनाकर श्रावस्ती नगरीविषै एक कंपनाम पुरुष ताके अंगिका नामा स्त्री उसके अपनामा पुत्र भया सो अविनयी तब कंपने अपको घरसे निकास दिया सो महादुखी भूमिविषै भ्रमण करै अर अचलनामा कुमार पिताको अतिवल्लभ सो अचलकुमारकी बडी

माता धरा उसके तीन भाई अर आठ पुत्र तिन्होंने एकांतमें अचलके मारणेका मंत्र किया सो यह वार्ता अचलकुमारकी माताने जानी तब पुत्रको भगाय दिया सो तिलकवनविषै उसके पांवविषै कांटा लगा सो कंपका पुत्र अप काष्ठका भार लेकर आवे सो अचल कुमारको कांटेके दुखसे करुणावन्त देखा तब अपने काष्ठका भार मेल छुरीसे कुमारका कांटा काढ कुमारको दिखाया सो कुमार अति प्रसन्न भया अर अपको कहा—तू मेरा अचलकुमार नाम याद रखियो अर मोहि भूपति सुने वहां मेरे निकट आइयो। इस भांति कह अपको बिदा किया सो अप गया अर राजपुत्र महादुखी कौशांबी नगरीके विषै आया महापराक्रमी सो बाण विद्याका गुरु जो विशिषाचार्य उसे जीतकर प्रतिष्ठा पाई सो राजाने अचल कुमारको नगरविषै ल्यायकर अपनी इंद्रदत्ता नाम पुत्री परणाई अनुक्रमकर पुण्यके प्रभावसे राज पाया सो अंगदेश आदि अनेक देशनिको जीतकर महा प्रतापी मथुरा आया नगरके बाहिर डेरा दिया बडी सेना साथ सब सामन्तों ने सुना कि यह राजा चन्द्रभद्राका पुत्र अचल कुमार है सो सब आय मिले राजा चन्द्रभद्र अकेला रहगया। तब राणी धराके भाई सूर्यदेव अग्निदेव यमुनादेव इनको संधि करने ताईं भेजे सो ये जायकर कुमारको देख बिलखे होय भागे अर धराके आठ पुत्र हू भाग गए। अचलकुमारकी माता आय पुत्रको लेगई पितासे मिलाया, पिताने याको राज्य दिया। एक दिन राजा अचल कुमार नटोंका नृत्य देखे था ताही समय अप आया जाने इसका वनविषै कांटा काढा था सो ताहि दरवान धक्का देय काढे हुते सो राजाने मने किए अर अप को बुलाया बहुत कृपा करी अर जो वाकी जन्मभूमि श्रावस्ती नगरी हुती सो ताहि दई अर ये दोनों परममित्र भेले ही रहें। एक दिवस महासंपदाके भरे उद्यानविषै क्रीडाको गये सो यशसमुद्र आचार्यको देखकर दोनों मित्र मुनि भये, सम्यक्दृष्टि परम संयमको आराध समाधिमरणकर स्वर्गविषै उत्कृष्ट देव भये तहां से चयकर अचलकुमारका जीव

राजा दशरथके यह शत्रुघन पुत्र भया अनेक भवके संबंधसे याकी मथुरासे अधिक प्रीति भई। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! वृक्षकी छाया जो प्राणी बैठा होय तो ता वृक्षसे प्रीति होय है जहां अनेक भव धरे तहांकी कहा बात ? संसारी जीवनिकी ऐसी अवस्था है अर वह अपका जीव स्वर्गतें चयकर कृतांतवक्र सेनापति भया। या भांति धर्मके प्रसादतें ये दोनों मित्र संपदाको प्राप्त भये अर जे धर्मसे रहित हैं तिनके कबहू सुख नाहीं। अनेक भवके उपार्जे दुखरूप मल तिनके धोयवेकूं धर्मका सेवनही योग्य है अर जलके तीर्थनिविषै मनका मल नाहीं धुवै है धर्मके प्रसादतें शत्रुघनका जीव सुखी भया ऐसा जान कर विवेकी जीव धर्मविषै उद्यमी होवो धर्मको सुनकर जिनकी आत्मकल्याणविषै प्रीति नाहीं होय है तिनका श्रवण वृथा है जैसे जो नेत्रवान सूर्यके उदयविषै कूपविषै पडै तो ताके नेत्र वृथा हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै शत्रुघ्नके पूर्वभवका वर्णन करनेवाला इक्याणवा पर्व पूर्ण भया॥ ९१॥

अथानन्तर आकाशविषै गमन करणहारे सप्तचारण ऋषि सप्त सूर्य समान है कांति जिनकी सो विहार करते निर्ग्रंथ मुनींद्र मथुरापुरी आये तिनके नाम सुरमन्यु श्रीमन्यु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान बिनयलाल सजयमित्र ये सवही महाचरित्रके पात्र अति सुन्दर राजा श्रीनन्दन राणी धरणी सुन्दरीके पुत्र पृथिवीविषै प्रसिद्ध पिता सहित प्रीतंकर स्वामीका केवलज्ञान देख प्रतिबोधको प्राप्त भये थे पिता अर प्रीतंकर केवलीके निकट मुनि भये अर एक महिने का बालक तुंवरुनामा पुत्र ताको राज्य दिया पिता श्रीनन्दन तो केवली भया अर ये सातों महामुनि चरण ऋद्धि आदि अनेक ऋद्धिके धारक श्रुतकेवली भये सो चातुर्मासिक विषै मथुराके वनविषै बटके वृक्ष तले आय विराजे। तिनके तपके

प्रभावकर चमरेंद्रकी प्रेरी मरी दूर भई जैसे श्वसुरको देखकर व्यभिचारणी नारी दूर भागे मथुराका समस्त मंडल सुखरूप भया बिना वाहे धान्य सहजही उगे, समस्त रोगोंनिसे रहित मथुरापुरी ऐसी शोभती भई जैसे नई बधू पतिको देखकर प्रसन्न होय, वह महामुनि रसपरत्यागादि तप अर बेला तेल पक्षोपवासादि अनेक तपके धारक जिनको चार महीना चौमासे रहना तो मथुराके वनविषै अर चारणऋद्धिके प्रभावतैं चाहे जहां आहार कर आवें सो एक निमिष मात्रविषै आकाशके मार्ग होय पोदनापुर पारणाकर आवें बहुरि विजयपुरकर आवें उत्तम श्रावकके घर पात्र भोजनकर संयमनिमित्त शरीरको राखें, कर्मके खिपायवेको उद्यमी एक दिन वे धीर वीर महाशांतभावके धारक जूडा प्रमाण धरती देख विहारकर ईर्या समितिके पालनहारे आहारके समय अयोध्या आये, शुद्ध भिक्षाके लेनहारे प्रलंबित हैं महा भुजा जिनकी अर्हद्दत्त सेठके घर आय प्राप्त भए तब अर्हद्दत्तने विचारी वर्षा कालविषै मुनिका विहार नाहीं ये चौमासा पहिलि तो यहां आये नाहीं अर मैं यहां जे जे साधु विराजे हैं गुफामें नदीके तीर वृक्ष तल शून्य स्थानकाविषै वनके चैत्यालयनिविषै जहां जहां चौमासा साधु तिष्ठे हैं वे मैं सर्व बंदे यह तो अबतक देखे नाहीं ये आचारांग सूत्रकी आज्ञासे परांगमुख इच्छाविहारी हैं वर्षाकाल विषै भी भ्रमते फिरै हैं जिन आज्ञा परांगमुख ज्ञानरहित निराचारी आचार्यकी आम्नायसे रहित हैं, जिन आज्ञा पालक होंय तो वर्षाविषै विहार क्यों करें, सो यह तो उठगया अर याके पुत्रकी बधूने अति भक्तिकर प्रासुक आहार दिया सो मुनि आहार लेय भगवानके चैत्यालय आय जहां द्युतिभट्टारक विराजते हुते ये सप्तर्षि ऋद्धिके प्रभावकर धरतीसे चार अंगुल अलिप्त चले आये अर चैत्यालयविषै धरतीपर पग धरते आये आचार्य उठ खडे भये अतिआदरसे इनको नमस्कार किया अर जे द्युतिभट्टारकके शिष्य हुते तिन सबने नमस्कार किया बहुरि ये सप्त तो जिन बन्दनाकर आकाशके मार्ग मथुरा गये इनके

गये पीछे अर्हद्दत्त सेठ चैत्यालयविषै आया तब श्रुतिभट्टारकने कही सप्तमहर्षि महायोगीश्वर चारणमुनि यहां आये हुते तुमने हूं वह वंदे हैं वे महा पुरुष महातपके धारक हैं चार महीना मथुरा निवास किया है अर चाहे जहां अहार लेजांय आज अयोध्या विषै अहार लिया चैत्यालय दर्शन कर गये हमसे धर्म-चर्चा करी, वे महा तपोधन गगनगामी शुभ चेष्टाके धरणहारे परम उदार ते मुनि बन्दिवे योग्य हैं। तब वह श्रावकनिविषै अग्रणी आचार्यके मुखसे चारण मुनिनि की महिमा सुनकर खेदखिन्न होय पश्चाताप करता भया। धिक्कार मोहि, मैं सम्यक्दर्शन रहित वस्तुका स्वरूप न पिछाना, मैं अत्याचारी मिथ्या-दृष्टि मो समान अर अधर्मी कौन, वे महा मुनि मेरे मंदिर आहारको आये अर मैं नवधा भक्तिकर आहार न दिया। जो साधुको देख सन्मान न करें अर भक्तिकर अन्न जल न देय सो मिथ्यादृष्टि है, मैं पापी पापात्मा पापका भाजन महा निन्द्य मो समान और अज्ञानी कौन, मैं जिनवाणीसे विमुख, अब मैं जौं लग उनका दर्शन न करूं तौलग मेरे मनका दाह न मिटे, चारण मुनिनि की तो यही रीति है चौमासे निवास तो एक स्थान करें अर आहार अनेक नगरीविषै कर आवें, चारण ऋद्धिके प्रभाव कर उनके अंगसे जीवोंको बाधा न होय॥

अथानन्तर कार्त्तिक की पूनो नजीग जान सेठ अर्हद्दत्त महासम्यक्दृष्टि नृपतुल्य विभूति जाके, अयोध्यातैं मथुराको सर्वकुटुम्ब सहित सप्त ऋषिके पूजन निमित्त चला, जाना है मुनिनिका माहात्म्य जाने अर अपनी बारम्बार निन्दा करै है रथ हाथी पियादे तुरंगनिके असवार इत्यादि बडी सेनासहित योगीश्वरनिकी पूजाको शीघ्रही चला, बडी विभूति कर युक्त शुभ ध्यानविषै तत्पर कातिक शुदी सप्तमीके दिन मुनिनिके चरणनिविषै जाय पहुंचा। वह उत्तम सम्यक्तका धारक विधिपूर्वक मुनिवन्द-नाकर मथुरा विषै अतिशोभा करावता भया, मथुरा स्वर्ग समान सोहती भई, यह वृत्तान्त सुन शत्रुघन

शीघ्रही महा तुरंग चढा सप्त ऋषीनिके निकट आया अर शत्रुघनकी माता सुप्रभा भी मुनिनिकी भक्ति कर पुत्रके पीछे ही आई अर शत्रुघन नमस्कार कर मुनिनिके मुख धर्म श्रवण करता भया, मुनि कहते भए हे नृप ! यह संसार असार है वीतरागका मार्ग सार है, जहां श्रावकके बारह व्रत कहे, मुनिके अठाईस मूल गुण कहे मुनीनिको निर्दोष आहार लेना अकृत अकारित राग रहित प्रासुक आहार विधिपूर्वक लीये योगीश्वरोंके तपकी वधवारी होय तव वह शत्रुघन कहता भया—हे देव आपके आये या नगरतैं मरी गई, रोग गए, दुर्भिक्ष गया, सव विघ्न गए, सुभिक्ष भया सव साता भई प्रजाके दुख गए सर्व समृद्धि भई जैसे सूर्यके उदयतैं कमलनी फूलै, कोई दिन आप यहां ही तिष्ठो ।

तब मुनि कहते भए—हे शत्रुघन ! जिन आज्ञा सिवाय अधिक रहना उचित नाहीं, यह चतुर्थकाल धर्मके उद्योतका कारण है याविषैं मुनीन्द्रका धर्म भव्य जीव धारै हैं जिनआज्ञा पालै हैं महामुनिनिके केवलज्ञान प्रगट होय है मुनिसुव्रतनाथ तो मुक्त भए अव नमि, नेमि, पार्श्व, महावीर चार तीर्थंकर और होवेंगे बहुरि पंचमकाल जाहि दुखमा काल कहिये सो धर्मकी न्यूनतारूप प्रवरतेगा, तासमय पाखण्डी जीवनिकर जिनशासन अति ऊंचा है तो हू आच्छादित होयगा जैसे रज कर सूर्यका बिम्ब आच्छादित होय पाखण्डी निर्दई दया धर्मको लोपकर हिंसाका मार्ग प्रवर्तन करेंगे तासमय मसान समान ग्राम अर प्रेत समान लोक कुचेष्टाके करणहारे होवेंगे, महाकुधर्मविषैं प्रवीण क्रूर चोर पाखण्डी दुष्टजीव तिनकर पृथिवी पीडित होयगी, किसाण दुखी होवेंगे, प्रजा निर्धन होयगी, महा हिंसक जीव परजीवनिके घातक होवेंगे निरंतर हिंसाकी वढवारी होयगी पुत्र माता पिताकी आज्ञासे विमुख होवेंगे अर माता पिता हू स्नेहरहित होवेंगे अर कलिकालविषै राजा लुटेरे होवेंगे कोई सुखी नजर न आवेगा कहिवेके सुखी वे पापाचित्त दुर्गतिकी दायक कुकथा कर परस्पर पाप उपजावेंगे । हे शत्रुघन ! कलिकालविषै कषायकी बहु-

लता होवेगी अर अतिशय समस्त विलय जावेंगे चारण मुनि देव विद्याधरनिका आवना न होयगा। अज्ञानी लोक नग्नमुद्राके धारक मुनिनिको देख निन्दा करेंगे, मलिनचित्त मूढजन अयोग्यको योग्य जानेंगे जैसे पतंग दीपककी शिखाविषै पडै तैसे अज्ञानी पापपंथविषै पड दुर्गतिके दुख भोगेंगे अर जे महा शांत स्वभाव तिनकी दुष्ट निंदा करेंगे, विषयी जीवनिको भक्तिकर पूजेंगे, दीन अनाथ जीवनिको दया भावकर कोई न देवेगा अर मायाचारी दुराचारिनिको लोक देवेंगे सो वृथा जायगा जैसे शिलाविषै बीज बोय निरंतर सींचे तो हू कुछु कार्यकारी नाहीं, तैसे कुशील पुरुषनिको विनय भक्तिकर दीया कल्याणकारी नहीं, जो कोई मुनिनिकी अवज्ञा करै है अर मिथ्या मार्गियोंको भक्तिकर पूजे है सो मलयागिरिचंदनको तजकर कंटकवृक्षको अंगीकार करै है ऐसा जानकर हे वत्स ! तू दान पूजा कर जन्म कृतार्थकर, गृहस्थीको दान पूजा ही कल्याणकारी है अर समस्त मथुराके लोक धर्मविषै तत्पर होवो, दया पालो, साधर्मीयोंसे वात्सल्य धारो, जिनशासनकी प्रभावना करो, घर घर जिनबिम्ब थापो पूजा अभिषेककी प्रवृत्ति करो जाकर सब शांति हो, जो जिनधर्मका आराधन न करेगा अर जाके घरमें जिनपूजा न होयगी, दान न होवेगा ताहि आपदा पीडेगी जैसे मृगको व्याघ्री भखै तैसे धर्मरहितको मरी भखेगी अंगुष्ठ प्रमाण हू जिनेंद्रकी प्रतिमा जिसके विराजेगी उसके घरविषैसे मरी यूं भाजेगी जैसे गरुडके भयसे नागिनी भागै ये वचन मुनिनिके सुन शत्रुघनने कही—हे प्रभो ! जो आप आज्ञा करी त्यों ही लोक धर्मविषै प्रवर्तेंगे ॥

अथानन्तर मुनि आकाश मार्ग विहार कर अनेक निर्वाण भूमि वंदकर सीताके घर आहारको आये, कैसे हैं मुनि ? तप ही है धन जिनके सीता महा हर्षको प्राप्त होय श्रद्धा आदि गुणोंकर मण्डित परम अन्नकर विधिपूर्वक पारणा करावती भई, मुनि आहार लेय आकाशके मार्ग विहार कर गये श-

त्रुघनने नगरीके बाहिर अर भीतर अनेक जिनमंदिर कराए घर घर जिनप्रतिमा पधराई नगरी सब उपद्रवरहित भई. वन उपवन फल पुष्पादिक कर शोभित भए, वापिका सरोवरी कमलों कर मंडित सोहती भई पक्षी शब्द करते भए कैलाशके तटसमान उज्वल मंदिर नेत्रोंको आनन्दकारी विमान तुल्य सोहते भए अर सर्व किसाण लोक संपदाकर भरे सुखसूं निवास करते भए गिरिके शिखर समान ऊंचे अनाजोंके ढेर गावोंविषै सोहते भए स्वर्ण रत्नादिककी पृथिवीविषै विस्तीर्णता होती भई सकल लोक सुखी रामके राज्यविषै देवों समान अतुल विभूतिके धारक धर्म अर्थ काम विषै तत्पर होते भए शत्रुघन मथुराविषै राज्य करे रामके प्रतापसे अनेक राजाओं पर आज्ञा करता सोहे जैसे देवोंविषै वरुण सोहे या भांति मथुरापुरीका ऋद्धिके धारी मुनिनिके प्रतापकर उपद्रव दूर होता भया। जो यह अध्याय बांचे सुने सो पुरुष शुभनाम शुभगोत्र शुभसातावेदनीका बंध करै जो साधुवोंकी भक्ति विषै अनुरागी होय अर साधुवोंका समागम चाहै वह मनवांछित फलको प्राप्त होय या साधुवोंके संगको पायकर धर्मको आराध कर प्राणी सूर्यसे भी अधिक दीप्तिको प्राप्त होवें हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै मथुराका उपसर्ग निवारण वर्णन करनेवाला बानबेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९२ ॥

अथानन्तर विजियार्धकी दक्षिण श्रेणिविषै रत्नपुरनामा नगर वहां राजा रत्नरथ उसकी राणी पूर्णचन्द्रानना उसके पुत्री मनोरमा महारूपवती उसे यौवनवती देख राजा वर ढूंढवेकी बुद्धिकर व्याकुल भया मंत्रियोंसे मंत्र किया कि यह कुमारी कौनको परणाऊं या भांति राजा चिंतासंयुक्त कईएक दिन गए एक दिन राजाकी सभाविषै नारद आया राजाने बहुत सन्मान किया नारद सबही लौकिक

रीतियोंविषै प्रवीण, उसे राजाने पुत्रीके विवाहनेका वृत्तांत पूछा तब नारदने कही रामका भाई लक्ष्मण महा सुन्दर है जगतविषै मुख्य है चक्रके प्रभाव कर नवाए हैं समस्त नरेंद्र जिसने ऐसी कन्या उसके हृदयविषै आनन्ददायिनी होवे जैसे कुमुदनीके वनको चांदनी आनंददायनी होय। जब या भांति नारदने कही तब रत्नरथके पुत्र हरिवेग मनोवेग वायुवेगादि महामानी स्वजनोंके घातकर उपजा है वैर जिनके प्रलयकालकी अग्नि समान प्रज्वलित होय कहते भए जो हमारा शत्रु जिसे हम मारा चाहैं उसे कन्या कैसे देवें यह नारद दुराचारी है, इसे यहांसे काढो, ऐसे वचन राजपुत्रोंके सुन किंकर नारद पर दौडे तब नारद आकाश मार्ग विहार कर शीघ्र ही अयोध्या लक्ष्मण पै आया अनेक देशांतरकी वार्त्ता कह रत्नरथकी पुत्री मनोरमाका चित्राम दिखाया, सो वह कन्या तीनलोककी सुंदरियोंका रूप एकत्र कर मानों बनाई है। सो लक्ष्मण चित्रपट देख अति मोहित होय कामके वश भया यद्यपि महा धीर वीर है तथापि वशीभूत होय गया, मनविषै विचारता भया जो यह स्त्रीरत्न मुझे न प्राप्त होय तो मेरा राज्य निष्फल अर जीतव्य वृथा। लक्ष्मण नारदसे कहता भया—हे भगवान्! आपने मेरे गुणकीर्त्तन किये अर उन दुष्टोंने आपसे विरोध किया, सो वे पापी प्रचण्डमानी महा क्षुद्र दुरात्मा कार्यके विचारसे रहित हैं उनका मान मैं दूर करूंगा आप समाधानविषै चित्त लावो तिहारे चरण मेरे सिर पर हैं अर उन दुष्टोंको तिहारे पायन पाडूंगा ऐसा कहकर विराधित विद्याधरको बुलाया अर कही रत्नपुर ऊपर हमारी शीघ्र ही तयारी है तातैं पत्र लिख सर्व विद्याधरोंको बुलावो रणका सरंजाम करावो ॥

तब विराधितने सबोंको पत्र पठाये वे महासेना सहित शीघ्र ही आए लक्ष्मण राम सहित सब नृपों को लेकर रत्नपुरकी तरफ चले जैसे लोकपालों सहित इंद्र चले, जीत जिसके सन्मुख है नानाप्रकारके शस्त्रोंके समूह कर आच्छादित करी हैं सूर्यकी किरण जाने, सो रत्नपुर जाय पहुंचे उज्वल छत्रकर शो-

भित तव राजा रत्नरथ परचक्र आया जान अपनी समस्त सेना सहित युद्धको निकसा, महातेज कर। सो चक्र करोत कुठार बाण खडग बरछी पाश गदादि आयुधनिकर तिनके परस्पर महा युद्ध भया, अप्सरोंके समूह युद्ध देख योधावों पर पुष्पवृष्टि करते भए, लक्षमण परसेनारूप समुद्रके सोखिवेको वडवानल समान आप युद्ध करनेको उद्यमी भया, परचक्रके योधा रूप जलचरोंके क्षयका कारण, सो लक्षमणके भयकर रथोंके तुरंगोंके हाथियोंके असवार सब दशोंदिशाओंको भागे अर इंद्रसमान है शक्ति जिनकी, ऐसे श्रीराम अर सुग्रीव हनूमान इत्यादि सब ही युद्धको प्रवरते इन योधाओंकर विद्याधरोंकी सेना ऐसे भागी जैसे पवन कर मेघ पटल विलाय जावें तव रत्नरथ अर रत्नरथके पुत्रोंको भागते देख नारदने परम हर्षित होय ताली देय हंसकर कहा अरे रत्नरथके पुत्र हो! तुम महाचपल दुराचारी मंदबुद्धि लक्षमणके गुणोंकी उच्चता न सह सके सो अब अपमानको पाय क्यों भागो हो तब उन्होंने कुछ जवाव नहीं दिया उसी समय मनोरमा कन्या अनेक सखियों सहित रथपर चढकर महा प्रेमकी भरी लक्षमणके समीप आई जैसे इंद्राणी इंद्रके समीप आवे, उसे देखकर लक्षमण क्रोधरहित भए, भ्रुकुटी चढ रही थी सो शीतल वदन भए कन्या आनन्दकी उपजावनहारी तब राजा रत्नरथ अपने पुत्रों सहित मान तज नानाप्रकारकी भेट लेकर श्रीराम लक्षमणके समीप आया राजा देश कालकी विधिको जाने है अर देखा है अपना अर इनका पुरुषार्थ जिसने तब नारद सबके बीच रत्नरथको कहते भए हे रत्नरथ अब तेरी क्या वार्ता तू रत्नरथ है कै रजरथ है वृथा मान करे हुता सो नारायण बलदेवोंसे कहा मान अर ताली वजाय रत्नरथके पुत्रोंसे हंसकर कहता भया—हो रत्नरथके पुत्र हो! यह वासुदेव जिनको तुम अपने घरमें उद्धत चेष्टा रूप होय मनविषै आया सो ही कही अब पायन क्यों पडो हो? तब वे कहते भए—हे नारद! तिहारा कोप भी गुण करै जो तुम हमसे कोप किया तो बडे पुरुषोंका सम्बन्ध भया, इनका संबंध दुर्लभ

है या भांति क्षणमात्र वार्ता कर सब नगरविषै गए श्रीरामको श्रीदामा परणाई रति समान है रूप जाका उसे पायकर राम आनन्दसे रमते भए अर मनोरमा लक्ष्मणको परणाई सो साक्षात् मनोरमा ही है, या भांति पुण्यके प्रभाव कर अद्भुत वस्तुकी प्राप्ति होय है तातैं भव्य जीव सूर्यसे अधिक प्रकाश रूप जो वीतरागका मार्ग उसे जानकर दया धर्मकी आराधना करो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामकूं रतिदामाका लाभ अर लक्ष्मणकूं मनोरामाका लाभ वर्णन करनेवाला त्राणवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९३ ॥

अथानन्तर और भी विजयार्धके दक्षिण श्रेणिविषै विद्याधर हुते वे सब लक्ष्मणने युद्धकर जीते कैसा है युद्ध ? जहां नानाप्रकारके शस्त्रोंके प्रहारकर अर सेनाके संघट्टकर अंधकार होय रहा है। गौतम स्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक ! ते विद्याधर अत्यंत दुस्सह महा विषधर समान हुते सो सब राम लक्ष्मणके प्रतापकर मान रूप विषसे रहित होय गए, इनके सेवक भए तिनकी राजधानी देवोंकी पुरी समान तिनके नाम केयक तुझे कहूं हूं—रविप्रभ धनप्रभ कांचनप्रभ मेघप्रभ शिवमंदिर गंधर्वगति अमृतपुर लक्ष्मीधरप्रभ किन्नरपुर मेघकूट मर्त्यगति चक्रपुर रथनूपुर बहुरव श्रीमलय श्रीगृह अरिंजय भास्करप्रभ ज्योतिपुर चंद्रपुर गंधार, मलय सिंहपुर श्रीविजयपुर भद्रपुर यक्षपुर तिलक स्थानक इत्यादि बडे बडे नगर सो सब लक्ष्मणने वशमें किए सब पृथिवीको जीत, सप्त रत्न कर सहित लक्ष्मण नारायणके पदका भोक्ता होता भया, सप्तरत्नोंके नाम चक्र शंख धनुष शक्ति गदा खडग कौस्तुभ माणि अर रामके चार हल मुशल रत्नमाला गदा। या भांति दोनों भाई अभेद भाव पृथिवीका राज्य करें, तब श्रेणिक गौतम स्वामीको पूछता भया—हे भगवान ! तिहारे प्रसादसे मैं राम लक्ष्मणका माहात्म्य विधिपूर्वक सुना अब ल-

वण अंकुशकी उत्पत्ति अर लक्ष्मणके पुत्रोंका वर्णन सुना चाहूं हूं सो आप कहो। तब गौतम गणधर कहते भए—हे राजन्! मैं कहूं हूं सुन—राम लक्ष्मण जगतविषै प्रधान पुरुष निःकंकट राज्य भोगते भए तिनके दिन पक्ष मास वर्ष महा सुखसे व्यतीत होंय जिनके बडे कुलकी उपजी देवांगना समान स्त्री लक्ष्मणके सोलहहजार तिनमें आठ पटराणी कीर्ति समान लक्ष्मी समान राति समान गुणवती शीलवती अनेक कलामें निपुण महा सौम्य सुन्दराकार तिनके नाम प्रथम पटराणी राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या दूजी रूपवती जिस समान और रूपवान नाहीं तीजी वनमाला चौथी कल्याणमाला पांचमी रतिमाला छठी जिनपद्मा जिसने अपने मुखकी शोभाकर कमल जीते सातमी भगवती आठमी मनोरमा अर रामके राणी आठहजार देवांगना समान तिनविषै चार पटराणी जगतविषै प्रसिद्ध कीर्ति जिनमें प्रथम जानकी दूजी प्रभावती तीजी रतिप्रभा चौथी श्रीदामा इन सबोंके मध्य सीता सुंदर लक्षण ऐसी सोहै ज्यों तारानिमें चंद्रकला अर लक्ष्मणके पुत्र अढाईसे तिनमें कैयकोंके नाम कहूं हूं सो सुन—

वृषभ धरण चन्द्र शरभ मकरध्वज हरिनाग श्रीधर मदन यह महाप्रसिद्ध सुन्दर चेष्टाके धारक जिनके गुणनि कर सब लोकनिके मन अनुरागी अर विशिल्याका पुत्र श्रीधर अयोध्यामें ऐसा सोहै जैसा आकाशविषै चन्द्रमा अर रूपवती का पुत्र पृथिवीतिलक सो पृथिवीमें प्रसिद्ध अर कल्याणमाला का पुत्र महा कल्याण का भाजन मंगल अर पद्मावती का पुत्र विमलप्रभ अर बनमालाका पुत्र अर्जुनप्रभ अर अतिवीर्य की पुत्री का पुत्र श्रीकेशी अर भगवतीका पुत्र सत्यकेसी अर मनोरमाका पुत्र सुपार्श्वकीर्ति ये सब ही महा बलवान पराक्रमके धारक शस्त्र शास्त्र विद्यामें प्रवीण इन सब भाईनिमें परस्पर अधिक प्रीति जैसे नख मांसमें दृढ कभी भी जुदे न होवें, तैसे भाई जुदे नाहीं, योग्य है चेष्टा जिनकी परस्पर प्रेमके भरे वह उसके हृदयमें तिष्ठे वह वाके हृदयमें तिष्ठे जैसे स्वर्गमें देव रमें तैसे ये

कुमार अयोध्यापुरीमें रमते भये, जे प्राणी पुण्याधिकारी हैं पूर्व पुण्य उपार्जें हैं महाशुभ चित्त हैं तिनके जन्मसे लेकर सकल मनोहर वस्तु ही आय मिले हैं रघुवंशिनिके साढे चारकोटि कुमार महामनोज्ञ चेष्टा के धारक नगरके वन उपवनादि में महा मनोग्य चेष्टासहित देवानि समान रमते भये अर राम लक्ष्मण के सोलह हाजार मुकुटबंध राजा सूर्यहूतैं अधिक तेजके धारक सेवक होते भये।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं राम लक्ष्मणकी ऋद्धि वर्णन करनेवाला चौरानवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९४ ॥

अथानन्तर रामलक्ष्मणके दिन अति आनन्दसे व्यतीत होय हैं धर्म अर्थ काम ये तीनों इनके अविरुद्ध होते भये, एक समय सीता सुखसे विमानसमान जो महिल तामें शरदके मेघ समान उज्ज्वल सेज्ञ पर सोवती थी सो पिछले पाहिर वह कमलनयनी दोय स्वप्न देखती भई बहुरि दिव्य वादित्रनिके नाद सुन प्रतिबोधको प्राप्त भई निर्मल प्रभात भए स्नानादि देह क्रियाकर सखिनि सहित स्वामीपै गई जायकर पूछती भई–हे नाथ! मैं आज रात्रिविषै स्वप्ने देखे तिनका फल कहो, दोय उत्कृष्ट अष्टापद शरदके चन्द्रमासमान उज्वल अर क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र ताके शब्द समान जिनके शब्द कैलाशके शिखरसमान सुन्दर सर्व आभरणानिकर मंडित महा मनोहर हैं केश जिनके अर उज्ज्वल हैं दाढ जिनकी सो मेरे मुखमें पैठे अर पुष्पक विमानके शिखरसे प्रबल पवनके झकोरकर मैं पृथ्वीविषै पडी तब श्रीरामचन्द्र कहते भये–हे सुंदरि! दोय अष्टापद मुखमें पैठे देखे ताके फलकर तेरे दोय पुत्र होंयगे अर पुष्पक विमानसे पृथिवीविषै पडना प्रशस्त नाहीं सो कछु चिंता न करो, दानके प्रभावसे क्रूर ग्रह शांत होवेंगे ॥

अथानन्तर वसन्तसमयरूपी राजा आया तिलक जाति के वृक्ष फूले सोई उसके वषतर अर नीम जाति के वृक्ष फूले वेई गजराज तिनपर आरूढ अर आंब मौर आये सो मानो बसन्तका धनुष अर कमल फूले सो बसन्तके बाण अर केसरी फूले वेई रतिराजके तरकश अर भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानो निर्मल श्लोकोंकर बसंत नृप का यश गावे हैं अर कदम्ब फूले तिनकी सुगंध पवन आवे है सोई मानों वसंत नृपके निश्वास भये अर मालतीके फूल फूले सो मानो वसंत शीतकालादिक अपने शत्रुनि को हंसे है अर कोयल मिष्ट वाणी बोले है सो मानों वसंतराजाके वचन हैं या भांति वसंत समय नृपति-कीसी लीला धरे आया । वसंतकी लीला लोकनिको कामका उद्वेग उपजावनहारी है बहुरि यह वसंत मानों सिंह ही है आकोट जाति वृक्षादिके फूल वेई हैं नख जाके अर कुरवक जातिके वृक्षनिके फूल आए तेई भए दाढ़ जाके अर महारक्त अशोकके पुष्प वेई हैं नेत्र जाके अर चंचलपल्लव वेई हैं जिन्हा जिसकी ऐसा बसंत केसरी आय प्राप्त भया लोकोंके मनकी वृत्ति सोई भई गुफा तिनमें पैठा । महेंद्रनामा उद्यान नंदनवन समान सदा ही सुंदर है सो बसंत समय अतिसुंदर होता भया, नानाप्रकारके पुष्पानि-की पाखुडी अर नानाप्रकारकी कूपल दक्षिणदिशिकी पवनकर हालती भई सो मानों उन्मत्त भई घूमे हैं अर वापिका कमलादिक करि आच्छादित अर पक्षिनिके समूह नाद करे हैं अर लोक सिवाणोंपर तथा तीरपर बैठे हैं अर हंस सारस चकवा क्रौंच मनोहर शब्द करे हैं अर कारंड बोल रहे हैं इत्यादि मनो-हर पक्षिनिके मनोहर शब्दकरि रागी पुरुषनिको राग उपजावें हैं, पक्षी जलविषै पडै हैं अर उठे हैं तिन-कर निर्मल जल कलोल रूप होय रहा है जल तो कमलादिक कर भरा है अर स्थल जो है सो स्थल पद्मादिक पुष्पनि कर भरे हैं अर आकाश पुष्पनिकी मकरंदकर मंडित होय रहा है, फूलनिके गुच्छे अर लता वृक्ष अनेकप्रकारके फूल रहे हैं बनस्पति की परमशोभा होय रही है ता समय सीता कछु गर्भ

के भारकर दुर्बलशरीर भई तब राम पूछते भये—हे कांते ! तेरे जो अभिलाषा होय सो पूर्ण करूं। तब सीता कहती भई—हे नाथ ! अनेक चैत्यालानिके दर्शन करवेकी मेरे बांछा है, भगवानके प्रतिबिंब पांचो वर्णके लोकविषे मंगलरूप तिनको नमस्कार करवेको मेरा मनोरथ है, स्वर्ण रत्नमई पुष्पानिकर जिनेंद्रको पूजूं यह मेरे महाश्रद्धा है अर कहा बांछूं ? ये सीताके वचन सुनकर राम हर्षित भये, फूल गया है मुखकमल जिनका राजलोकविषे विराजते हुते सो द्वारपालीको बुलाय आज्ञा करी कि हे भद्रे! मंत्रिनिको आज्ञा पहुंचावो जो समस्त चैत्यालयनिविषे प्रभावना करें अर महेंद्रोदयनाम उद्यानविषे जे चैत्यालय हैं तिनकी शोभा करावें अर सर्व लोकको आज्ञा पहुंचावो कि जिन मंदिरविषे पूजा प्रभावना आदि अति उत्सव करें अर तोरणध्वजा घंटा झालरी चंदोवा सायवान महामनोहर वस्त्रनिके बनावें तथा सुन्दर समस्त उपकरण देहुरा चढावें, लोक समस्त पृथिवी विषै जिनपूजा करैं अर कैलाश सम्मेद शिखर पावापुर चंपापुर गिरनार शत्रुंजय मांगीतुंगी आदि निर्वाण क्षेत्रनिविषै विशेष शोभा करावो कल्याण रूप दोहुला सीताको उपजा है सो पृथिवीविषै जिन पूजाकी प्रवृत्ति करो हम सीतासहित धर्म क्षेत्रनिमें विहार करेंगे।

यह रामकी आज्ञा सुन वह द्वारपाली अपनी ठौर अन्यको राखकर जाय मंत्रिनिको आज्ञा पहुं-चावती भई अर वे स्वामीकी आज्ञा प्रमाण अपने किंकरनिको आज्ञा करते भए। सर्व चैत्यालयनिविषै शोभा कराई अर महा पर्वतोंकी गुफाओंक द्वार पूर्ण कलश थापे, मोतिनिके हारनिकर शोभित अर विशाल स्वर्णकी भीतिविषै मणिनिके चित्राम रचे, महेंद्रोदय नाम उद्यानकी शोभा नंदन वनकी शोभा समानकर अत्यन्त निर्मल शुद्धमणिनिके दर्पण थंभविषै थापे अर झरोखनिके मुखविषै निर्मल मोति-निके हार लटकाये सो जलनीझरना समान सोहैं अर पांच प्रकारके रत्ननिकी चूर्णकर भूमि मंडित

करी अर सहस्रदल कमल तथा नानाप्रकारके कमल तिनकर शोभा करी अर पांच वर्णके मणिनिके दंड तिनविषै महा सुन्दर वस्त्रनिके ध्वजा लगाय मंदिरनिके शिखर पर चढाई, अर नाना प्रकारके पुष्पनिकी माला जिनपर भ्रमर गुंजार करैं ठौर ठौर लुंबाई हैं अर विशाल वादित्रशाला नाट्यशाला अनेक रची हैं तिनकर बन अति शोभै है मानों नंदन वन ही है तब श्रीरामचन्द्र इंद्रसमान सब नगरके लोकनिकर युक्त समस्त राजलोकनिसहित वनविषै पधारे। सीता अर आप गजपर आरूढ कैसे सोहैं? जैसे शची सहित इंद्र ऐरावत गजपर चढे सोहैं अर लक्ष्मण भी परम ऋद्धिको धरे वनविषै जाते भए अर और हू सब लोक आनन्दसे वनविषै गये, अर सबनिके अन्न पान वनही में भया जहां महा मनोग्य लतानिके मंडप अर केलिके वृक्ष तहां राणी तिष्ठी अर और हू लोक यथायोग्य वनविषै तिष्ठे, राम हाथीतैं उतरकर निर्मल जलका भरा जो सरोवर नानाप्रकारके कमलनिकर संयुक्त उसविषै रमते भए जैसे इन्द्र क्षीर सागरविषै रमै तहां क्रीडाकर जलतैं बाहिर आये, दिव्य सामग्रीकर विधिपूर्वक सीतासहित जिनेन्द्रकी पूजा करते भए, राम महा सुन्दर अर बनलक्ष्मी समान जे बल्लभा तिनकर मंडित ऐसे सोहते भये मानो मूर्तिवंत वसंत ही है। आठ हजार राणी देवांगना समान तिन सहित राम ऐसे सोहैं मानों ये तारानिकर मंडित चन्द्र ही हैं अमृतका आहार अर सुगंध का विलेपन मनोहर सेज मनोहर आसन नानाप्रकारके सुगंध माल्यादिक स्पर्श रस गंधरूप शब्द पांचों इंद्रियनिके विषय अति मनोहर रामको प्राप्त भए जिनमंदिरविषै भलीविधिसे नृत्य पूजा करी, पूजा प्रभावनाविषै रामके अति अनुराग होता भया, सूर्यहूतैं अधिक तेजके धारक राम देवांगनासमान सुंदर जे दारा तिनसहित कैयक दिन सुखसे बनविषै तिष्ठे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै जिनेंद्रपूजाकी सीताकूं अभिलाषा गर्भका प्रादुर्भाव वर्णन करनेवाला पिचाणवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९५ ॥

अथानन्तर प्रजा के लोक रामके दर्शन की अभिलाषा कर वनही विषै आये जैसे तिसाये पुरुष सरोवरपै आवें, तब बाहिरले दरवानने लोकोंके आवने का वृत्तान्त द्वारपालीयोंसे कहा। वे द्वारपाली भीतर राजलोकमें रामसे जायकर कहती भई कि—हे प्रभो! प्रजाके लोक आपके दर्शनको आये हैं अर सीताके दाहिनी आंख फुरकी तब सीता विचारती भई यह आंख मुझे क्या कहे है। कछू दुःखका आगमन बतावै है। आगे अशुभके उदय कर समुद्र के मध्यमें दुख पाये तौ हू दुष्ट कर्म संतुष्ट न भया क्या और भी दुख दीया चाहे है जो इस जीवने रागद्वेष के योग कर कर्म उपार्जे हैं तिन का फल ये प्राणी अवश्य पावे हैं काहू कर निवारा न जाय तब सीता चिंतावती होय और राणीनिसे कहती भई—मेरी दाहिनी आंख फर्कनेका फल कहो। तब एक अनुमतिनामा राणी महाप्रवीण कहती भई—हे देवि! या जीवने जे कर्म शुभ अथवा अशुभ उपार्जे हैं वे या जीव के भले बुरे फल के दाता हैं कर्मही को काल कहिये अर विधि कहिये अर दैव कहिये ईश्वर भी कहिये, सब संसारी जीव कर्मनिके आधीन हैं, सिद्ध परमेष्ठी कर्मनिसे रहित हैं।

बहुरि गुणदोषकी ज्ञाता राणी गुणमाला सीताको रुदन करती देख धीर्य बंधाय कहती भई—हे देवी! तुम पतिके सबनिविषै श्रेष्ठ हो, तुमको काहू प्रकारका दुःख नाहीं अर और राणी कहती भई—बहुत विचारकर कहा ? शांतिकर्म करो, जिनेन्द्रका अभिषेक अर पूजा करावो अर किम इच्छक दान देवो जाकी जो इच्छा होय सो ले जावो, दान पूजाकर अशुभका निवारण होय है तातैं शुभ कार्यकर अशुभको निवारो। या भांति इन्होंने कही तब सीता प्रसन्न भई अर कही—योग्य है, दान पूजा अभिषेक अर तप ये अशुभके नाशक हैं दानधर्म विघ्नका नाशक वैरका नाशक है पुण्यका अर जशका मूल कारण है यह विचारकर भद्रकलश नामा भंडारीको बुलायकर कही—मेरे प्रसूति होय तौलग किमिच्छा

दान निरन्तर देवो। तब भद्रकलशने कही जो आप आज्ञा करोगी सोही होयगा, यह कहकर भंडारी गया अर जिनपूजादि शुभक्रियाविषै प्रवरता जितने भगवानके चैत्यालय हैं तिनविषैं नाना प्रकारके उपकरण चढाये अर सब चैत्यालयनिमें अनेक प्रकारके वादित्र बजवाये मानों मेघ ही गाजै हैं अर भगवान्के चरित्र पुराण आदिके ग्रंथ जिनमन्दिरनिविषै पधराये अर त्रैलोक्यके पाठ समोसरणके पाठ द्वीप समुद्रांतके पाठ प्रभुके मन्दिरोंमें पधराये अर दूध, दही, घृत, जल, मिष्टान्नके भरे कलश अभिषेककों पठाये अर सब खोजाओंमें प्रधान जो खोजा सो वस्त्राभूषण पहरे हाथी चढा नगरविषै घोषणा फेरे जाको जो इच्छा होय सो ही लेवो। या भांति विधिपूर्वक दान पूजा उत्सव कराये, लोक पूजा दान तप आदिविषै प्रवर्ते पापबुद्धिरहित समाधानको प्राप्त भये। सीता शांतचित्त धर्ममार्गविषै अनुरक्त भई अर श्रीरामचंद्र मण्डपविषै आय तिष्ठे। द्वारपालने जे नगरीके लोक आये हुते ते रामसे मिलाये। स्वर्ण रत्नकर निर्मापित अद्भुत सभाको देख प्रजाके लोक चकित होय गये, हृदयको आनन्दके उपजावनहारे राम तिनको देखकर नेत्र प्रसन्न भये। प्रजाके लोक हाथजोड नमस्कार करते भये, कांपे है तन जिनका अर डरे है मन जिनका। तब राम कहते भए, हे लोको! तिहारे आगमका कारण कहो। तब विजयसुराजी मधुमान सुलोधर काश्यप पिंगल कालोपम इत्यादि नगरके मुखिया मनुष्य निश्चल होय चरणनिकी तरफ चौंके। गल गया है गर्व जिनका राज तेजके प्रतापकर कछु कह न सके। यद्यपि चिरकालमें सोच सोच कहा चाहैं तथापि इनके मुखरूप मंदिरसे बाणीरूप वधू न निकसे। तब रामने बहुत दिलासाकर कही तुम कौन अर्थ आये हो सो कहो। या भांति कही तोभी वे चित्राम कैसे होय रहे कछु न कहैं लज्जारूप फांसकर बंधा है कंठ जिनका अर चलायमान हैं नेत्र जिनके जैसे हिरणके बालक व्याकुलचित्त देखैं तैसे देखैं। तब तिनविषै मुख्य विजय नाम पुरुष चलायमान है शब्द जिसका सो कहता भया—हे देव! अभयदानका

प्रसाद होय। तब रामने कही तुम काहू बातका भय मत करो तिहारे चित्तविषै जो होय सो कहो तिहारा दुःख दूरकर तुमको साता उपजाऊंगा तिहारे औगन न लूंगा गुण ही लूंगा जैसे मिले हुए दूध जल तिनमें जलको टार हंस दूध ही पीवे हैं। श्रीरामने अभयदान दीया तो भी अतिकष्टसे विचार २ धीरे स्वरकर विजय हाथ जोड सिर निवाय कहता भया कि हे नाथ नरोत्तम ! एक वीनती सुनो अब सकल प्रजा मर्यादा रहित प्रवर्तै है। यह लोक स्वभावहीसे कुटिल हैं अर एक दृष्टांत प्रगट पावें तब इनको अकार्य करनेविषै कहा भय ?

जैसे बानर सहज ही चपल है अर महाचपल जो यंत्रपिंजरा उसपर चढा तब कहा कहना। निर्बलोंकी यौवनवंत स्त्री पापी बलवंत छिद्र पाय बलत्कार हरे हैं अर कोईयक शीलवंती विरहकर पराये घर अत्यंत दुखी होय हैं तिनको कोईयक सहाय पाय अपने घर ले आवे हैं सो धर्मकी मर्यादा जाय है, यह न जाय सो यत्न करो प्रजाके हितकी बांछा करो जिस विधि प्रजाका दुख टरे सो करो या मनुष्य लोकविषै तुम बडे राजा हो तुम समान अर कौन तुम ही जो प्रजाकी रक्षा न करोगे तो कौन करेगा नदियोंके तट तथा वन उपवन कूप वापिका सरोवरके तीर ग्राम ग्रामविषै घर घरविषै सभाविषै एक यही अपवादकी कथा है और नाहीं कि श्रीराम राजा दशरथके पुत्र सर्व शास्त्रविषै प्रवीण सो रावण सीताको हर ले गया ताहि घरविषै ले आये तब औरोंको कहा दोष है जो बडे पुरुष करें सो सब जगतको प्रमाण जिस रीति राजा प्रवर्ते उसही रीति प्रजा प्रवर्ते "यथा राजा तथा प्रजा" यह वचन है या भांति दुष्टचित्त निरंकुश भए पृथिवीविषै अपवाद करे हैं तिनका निग्रह करो। हे देव ! आप मर्यादाके प्रवर्तक पुरुषोत्तम हो एक यही अपवाद तिहारे राज्यविषै न होता तो तिहारा जो राज्य इंद्रसे भी अधिक है। यह वचन विजयके सुनकर क्षणएक रामचन्द्र विषादरूप मुद्गरके मारे चलायमान चित्त होय गए चित्तविषै चितवते भए

यह कौन कष्ट पडा मेरा यशरूप कमलोंका वन अपयशरूप अग्निकर जलने लगा है जिस सीताके निमित्त मैं विरहका कष्ट सहा सो मेरे कुलरूप चन्द्रमाको मालिन करे है अयोध्यामें मैं सुखके निमित्त आया अर सुग्रीव हनूमानादिकसे मेरे सुभट सो मेरे गोत्ररूप कुमुदनीको यह सीता मलिन करे है जिसके निमित्त मैंने समुद्र तिर रणसंग्राम कर रिपुको जीता सो जानकी मेरे कुलरूप दर्पणको कलुषित करे है अर लोक कहे हैं सो सांच है दुष्ट पुरुषके घरविषै तिष्ठी सीता मैं क्यों लाया अर सीतासे मेरा अतिप्रेम जिसे क्षणमात्र न देखूं तो विरहकर आकुलता लहूं अर वह पतिव्रता मोसे अनुरक्त उसे कैसे तजूं जो सदा मेरे नेत्र अर उरविषै वसै महागुणवती निर्दोष सीता सती उसे कैसे तजूं अथवा स्त्रियोंके चित्तकी चेष्टा कौन जाने जिनविषै सब दोषोंका नायक मन्मथ वसे है धिकार स्त्रीके जन्मको सर्वदोषोंकी खान आतापका कारण निर्मल कुलविषै उपजे पुरुषोंको कर्दम समान मालिनताका कारण है, अर जैसे कीचविषै फंसा मनुष्य तथा पशु निकस न सके तैसे स्त्रीके रागरूप पंकविषै फसा प्राणी निकस न सके, यह स्त्री समस्त बलका नाश करणहारी है अर रागका आश्रय है अर बुद्धिको भ्रष्ट करे है अर आपटवे को खाई समान है निर्वाण सुखकी विघ्न करणहारी ज्ञानकी उत्पत्तिको निवारणहारी भवभ्रमणका कारण है भस्मसे दवी अग्नि समान दाहक है डांभकी सूई समान तीक्ष्ण है देखवे मात्र मनोग्य परन्तु अपवादका कारण ऐसी सीता उसे मैं दुख दूर करवे निमित्त तजूं जैसे सर्प कांचिलीको तजे फिर चितवै है जिसकर मेरा हृदय तीव्रस्नेहके बंधनकर वशीभूत सो कैसे तजी जाय, यद्यपि मैं स्थिर हूं तथापि यह जानकी निकटवर्तिनी अग्निकी ज्वाला समान मेरे मनको आताप उपजावे है अर यह दूर रही भी मेरे मनको मोह उपजावे जैसे चन्द्ररेखा दूरही से कुमुदनीको विकसित करे, एक ओर लोकापवादका भय अर एक ओर सीताके दुर्निवार स्नेहका भय अर राग कर विकल्पके सागरविषै पडा हूं अर सीता सर्व प्रकार देवांगनासे भी

श्रेष्ठ महापतिव्रता सती शीलरूपिणी मोसे सदा एकाचित्त उसे कैसे तजूं अर जो न तजूं तो अपकीर्ति प्रगट होय है इस पृथिवीविषै मोसमान और दीन नाहीं स्नेह अर अपवादका भय उसविषै लगा है मन जिसका दोनोंकी मित्रताका तीव्र विस्तार वेगकर वशीभूत जो राम सो अपवादरूप तीव्र कष्टको प्राप्त भए सिंहकी है ध्वजा जिसके ऐसे राम तिनको दोनों वातोंकी अति आकुलतारूप चिंता असाताका कारण दुस्सह आताप उपजावती भई जैसे जेष्ठके मध्यान्हका सूर्य दुस्सह दाह उपजावे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामकूं लोकापवादकी चिंताका वर्णन करनेवाला छिआनवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९६ ॥

अथानन्तर श्रीराम एकाग्र चित्तकर द्वारपालको लक्ष्मणके बुलावनेकी आज्ञा करते भये सो द्वारपाल लक्ष्मणपै गया आज्ञा प्रमाण तिनको कही, लक्ष्मण द्वारपालके वचन सुनकर तत्काल तेज तुरंग परचढ रामके निकट आया हाथ जोड नमस्कारकर सिंहासनके नीचे पृथिवीपर बैठा रामके चरणोंकी ओर है दृष्टि जाकी राम उठकर आधे सिंहासन पर ले बैठे, शत्रुघन आदि सब ही राजा अर विराधित आदि सब ही विद्याधर यथा योग्य बैठे पुरोहित श्रेष्ठी मन्त्री सेनापति सब ही सभामें तिष्ठे तब क्षण एक विश्रामकर रामचन्द्रने लक्ष्मणसे लोकापवादका वृत्तांत कहा, सुनकर लक्ष्मण क्रोधकर लालनेत्र भये अर योधावोंको आज्ञाकरी अवार मैं उन दुर्जनोंके अंत करवेको जाऊंगा पृथिवीको मृषावादरहित करूंगा जे मिथ्या वचन कहैं हैं तिनकी जिह्वा छेद करूंगा उपमारहित जो शील व्रतकी धारणहारी सीता वाकी जे निन्दा करें हैं तिनका क्षय करूंगा। या भांति लक्ष्मण महाक्रोधरूप भये नेत्र अरुण होय गये तब श्रीराम इन वचनोंसे शांत करते भये कि—हे सौम्य ! यह पृथिवी सागर पर्यंत उसकी श्रीऋषभदेवने

रक्षा करी वहुरि भरतने प्रतिपालना करी अर इक्ष्वाकुवंशके तिलक भये जिनकी पीठ रणमें रिपुओंने न देखी जिनकी कीर्तिरूप चान्दनीमे यह जगत् शोभित है सो अपने वंशविषै अनेक यशके उपजावन हारे भए अब मैं क्षणभंगुर पाप रूप रागके निमित्त यशको कैसे मलिन करूं, अल्प भी अकीर्ति जो न टारिये तो वृद्धिको प्राप्त होय अर उन नीतिवान् पुरुषोंकी कीर्ति इंद्रादिक देवोंसे गाईये है ये भोग विनाशीक तिनसे क्या जिनसे अकीर्ति रूप अग्नि कीर्तिरूप वनको वाले यद्यपि सीता सती शीलवन्ती निर्मल चित्त है तथापि इसको घरविषै राखे मेरा अपवाद न मिटै यह अपवाद शस्त्रादिकसे हता न जाय यद्यपि सूर्यकमलोंके वनका प्रफुल्लित करणहारा है अति तिमिरका हरणहारा है तथापि रात्रिके होते सूर्य अस्त होय है तैसे अपवाद रूप रज महा विस्तारको प्राप्त भई तेजस्वी पुरुषोंकी कांतिकी हानि करे है सो यह रज निवारनी चाहिए। हे भ्रातः ! चन्द्रमा समान निर्मल गोत्र हमारा अकीर्तिरूप मेघमालासे आछादा जाय है सो न आछादा जाय येही मेरे यत्न है जैसे सूके इंधनके समूहविषै लगी आग जलसे वुझाये विना वृद्धिको प्राप्त होय है तैसे अकीर्तिरूप अग्नि पृथिवीविषै विस्तरै है सो निवारे विना न मिटै यह तीर्थंकर देवोंका कुल महा उज्ज्वल प्रकाश रूप है याको कलंक न लगे सो उपाय करो यद्यपि सीता महा निर्दोष शीलवंती है तथापि मैं तजूंगा अपनी कीर्ति मलिन न करूंगा। तव लक्षमण कहता भया कैसा है लक्षमण ? रामके स्नेहविषै तत्पर है बुद्धि जिसकी। हे देव ! सीताको शोक उपजावना योग्य नाहीं लोक तो मुनियोंका भी अपवाद करे हैं जिन धर्मका अपवाद करे हैं, तो क्या लोकापवादसे धर्म तजिये है तैसे लोकापवाद मात्रसे जानकी कैसे तजिये जो सब सतियोंके सीस विराजै है काहू प्रकार निंदाके योग्य नाहीं अर पापी जीव शीलवन्त प्राणियोंकी निंदा करें हैं क्या तिनके वचनसे शीलवन्तोंको दोष लागे है वे निर्दोष ही हैं, ये लोक अविवेकी हैं इनके वचनविषै परमार्थ नहीं विषकर दूषित हैं नेत्र जिनके

वे चन्द्रमाको श्यामरूप देखे हैं परन्तु चन्द्रमा श्वेत ही हैं श्याम नहीं तैसे लोकोंके कहे निकलंकियोंको कलंक नाहीं लगे है जे शीलसे पूर्ण हैं तिनको अपना आत्मा ही साक्षी है पर जीवनिका प्रयोजन नाहीं नीच जीवनिके अपवादकरि पण्डित विवेकी क्रोधको न प्राप्त होंय जैसे स्वानके भौंकनेतैं गजेंद्र नाहीं कोप करे हैं। ये लोक विचित्रगति हैं तरंग समान है चेष्टा जिनकी परदोष कथवेविषै आसक्त सो इन दुष्टोंका स्वयंमेव ही निग्रह होयगा जैसे कोई अज्ञानी शिलाको उपाडकर चन्द्रमाकी ओर वगाय (फेंके) बहुरि मारा चाहे सो सहज ही आप निस्सन्देह नाशको प्राप्त होय है जो दुष्ट पराए गुणनिको न सहसकें अर सदा पराई निंदा करें हैं. सो पापकर्मी निश्चयसेती दुर्गतिको प्राप्त होय हैं जब ऐसे वचन लक्ष्मणने कहे। तब श्रीरामचन्द्र कहते भए—हे लक्ष्मण ! तू कहे है सो सब सत्य है तेरी बुद्धि रागद्वेषरहित अति मध्यस्थ महाशोभायमान है परन्तु जे शुद्ध न्यायमार्गी मनुष्य हैं वे लोकविरुद्ध कार्जको तजें हैं जाकी दशोंदिशामें अकीर्तिरूप दावानलकी ज्वाला प्रज्वालित है ताको जगतमें कहा सुख अर कहा ताका जीतव्य ? अनर्थका करणहारा जो अर्थ ताकर कहा अर विषकर संयुक्त जो औषधि ताकर कहा ? अर जो बलवान् होय जीवनिकी रक्षा न करे शरणागतपालक न होय ताके बलकर कहा अर जाकर आत्मकल्याण न होय ता आचरणकर कहा ? चारित्र सोई जो आत्महित करे अर जो अध्यात्मगोचर आत्माको न जानै ताके ज्ञानकर कहा ? अर जाकी कीर्तिरूपवधू अपवादरूप बलवान् हरे ताका जन्म प्रशस्त नाहीं ऐसे जीवनेतैं मरण भला, लोकापवादकी बात तो दूर ही रहो, मोहि यह महा दोष है जो पर पुरुषने हरी सीता मैं बहुरि घरमें लाया। राक्षसके भवनमें उद्यान तहां यह बहुत दिन रही अर ताने दूती पठाय मनवांछित प्रार्थना करी अर समीप आय दुष्ट दृष्टिकर देखी अर मनमें आये सो वचन कहे ऐसी सीता मैं घरमें ल्याया या समान अर लज्जा कहा ? सो मूढोंसे कहा न होय ? या संसारकी मायाविषै मैं हू मूढ

भया। या भांति कहकर आज्ञा करी जो शीघ्रही कृतांतवक्र सेनापतिको बुलावो, यद्यपि दो बालकानिके गर्भसहित सीता है तौहू याहि तत्काल मेरे घरतैं निकासो यह आज्ञा करी। तब लक्ष्मण हाथ जोड नमस्कारकर कहता भया—हे देव! सीताको तजना योग्य नाहीं, यह राजा जनककी पुत्री महा शीलवती जिनधर्मणी कोमल चरणकमल जाके महा सुकुमार भोरी सदा सुखिया अकेली कहां जायगी? गर्भके भारकर संयुक्त परम खेदको धरे यह राजपुत्री तिहारे तजे कौनके शरण जायगी अर आपने देखवेकी कही सो देखवेकर कहा दोष भया? जैसे जिनराजके निकट चढाया द्रव्य निर्माल्य होय है ताहि देखिए है परन्तु दोष नाहीं अर अयोग्य अभक्ष्य वस्तु आंखानिसे देखिए हैं परन्तु देखे दोष नाहीं, अंगीकार कीये दोष है तातैं हे नाथ! मोपर प्रसन्न होवो, मेरी बीनती सुनो महा निर्दोष सीता सती तुमविषे एकाग्र है चित्त जाका ताहि न तजो तब राम अत्यन्त विरक्त होय क्रोधमें आगए अर अप्रसन्न होय कही—लक्षमण अब कछू न कहना, मैं यह अवश्य निश्चय किया शुभ होवे अथवा अशुभ होवे, निमानुष वन जहां मनुष्यका नाम नाहीं सुनिये वहां द्वितीय सहायरहित अकेली सीताको तजो अपने कर्मके योगकर जीवो अथवा मरो एक क्षणमात्र हू मेरे देशविषै अथवा नगरमें काहूके मंदिरविषै मत रहो वह मेरी अपकीर्तिकी करणहारी है, कृतांतवक्रको बुलाया सो चार घोडेका रथ चढा बडी सेनासहित जाका बंदीजन विरद बखाने हैं लोक जय जयकार करें हैं सो राजमार्ग होय आया जापर छत्र फिरता अर धनुष चढाय बखतर पहिरे कुण्डल पहिरे ताहि या विधि आवता देख नगरके नर नारी अनेक विकल्पकी वार्ता करते भए। आज यह सेनापति शीघ्र दौडा जाय है सो कौन पर विदा होयगा आप कौन पर कोप भए हैं? आज काहूका कछू विगाड है ज्येष्ठके सूर्य समान ज्योति जाकी काल समान भयंकर शस्त्रनिके समूहके मध्य चला जाय है सो आज न जानिये कौन पर कोप है? या भांति नगरके नर नारी

वार्ता करै हैं अर सेनापति रामदेवके समीप आया स्वामीको सीस निवाय नमस्कार कर कहता भया— हे देव ! जो आज्ञा होय सो ही करूं ॥

तब रामने कही, शीघ्रही सीताको ले जावो अर मार्गविषै जिनमंदिरनिका दर्शन कराय सम्मेद शिखर अर निर्वाण भूमि तथा मार्गके चैत्यालय तहां दर्शन कराय वाकी आशा पूर्णकर अर सिंहनाद नामा अटवी जहां मनुष्यका नाम नाहीं तहां अकेली मेल उठ आवो। तब ताने कही जो आज्ञा होयगी सोही होयगा कछू वितर्क न करो अर जानकीपै जाय कही—हे माता ! उठो, रथविषै चढो, चैत्यालयनिकी वांछा है सो करो। या भांति सेनापतिने मधुरस्वरकर हर्ष उपजाया तब सीता रथ चढी, चढते समय भगवानको नमस्कार किया अर यह शब्द कहा जो चतुर्विध संघ जयवंत होवें। श्री रामचन्द्र महाजिनधर्मी उत्तम आचरणविषै तत्पर सो जयवन्त होहु अर मेरे प्रमादसे असुन्दर चेष्टा भई होय सो जिनधर्मके अधिष्ठाता देव क्षमा करो अर सखी जन लार भईं तिनसे कही तुम सुखसे तिष्ठो, मैं शीघ्रही जिन चैत्यालयनिके दर्शनकर आऊं हूं। या भांति तिनसे कही अर सिद्धनिको नमस्कारकर सीता आनन्दसे रथ चढी सो रत्न स्वर्णका रथ तापर चढी ऐसी सोहती भई जैसी विमान चढी देवांगना सोहै, वह रथ कृतांतवक्रने चलाया सो ऐसा शीघ्र चलाया जैसा भरत चक्रवर्तीका चलाया बाण चले सो चलते समय सीताको अपशकुन भये, सूके वृक्षपर काग बैठा विरस शब्द करता भया अर माथा धुनता भया अर सन्मुख स्त्री महाशोककी भरी सिरके बाल बखेरे रुदन करती भई इत्यादि अनेक अपशकुन भए तो पुणि सीता जिनभक्तिविषै अनुरागिणी निश्चलचित्त चली गई, अपशकुन न गिने, पहाडनिके शिखर कंदरा अनेक वन उपवन उलंघ कर शीघ्रही रथ दूर गया गरुडसमान वेग जाका ऐसे अश्वोंकर युक्त सुफेद ध्वजाकर विराजित सूर्य के रथ समान रथ शीघ्र चला। मनोरथ समान वह रथ तापर चढी

रायकी राणी इन्द्राणीसमान सो अति सोहती भई कृतांतवक्र सारथीने मार्गविषे सीताको नानाप्रकारकी भूमि दिखाई ग्राम नगर बन अर कमलसे फूल रहे हैं सरोवर नानाप्रकारके वृक्ष, कहूं सघन वृक्षनिकर वन अन्धकार रूप है। जैसे अन्धेरी रात्रि मेघमालाकर मंडित महा अन्धकार रूप भासै कछू नजर न आवै अर कहूं विरले वृक्ष हैं सघनता नाहीं तहां कैसा भासै है जैसा पंचमकालमें भरत एरावत क्षेत्रनि की पृथिवी विरले सत्पुरुषनिकर सोहै अर कहूं वनी पतझर होय गई है सो पत्ररहित पुष्प फलादि-रहित छायारहित कैसी दीखै जैसे वडे कुलकी स्त्री विधवा। भावार्थ—विधवा हू पुत्र रूपी पुष्प फलादि रहित हैं अर आभरण तथा सुन्दर वस्त्रादि रहित अर कांतिरहित हैं शोभा रहित हैं तैसी वनी दीखै है अर कहूं एक वनविषे सुंदर माधुरी लता आम्रके वृक्षसे लगी ऐसी सोहै हैं जैसी चपल वेश्या, आम्रसूं लगि अशोककी बांछा करे हैं अर कैयक दावानल कर वृक्ष जर गये हैं सो नाहीं सोहै हैं जैसे हृदय क्रोधरूप दावानल कर जरा न सोहै अर कहूं एक सुंदर पल्लवनिके समूह मंद पवनकर हालते सोहै हैं मानों वसंतराजके आयवेकर वनपांक्ति रूप नारी आनंदसे नृत्यही करे हैं अर कहीं एक भीलनिके समूह तिनके जे कलकलाट शब्दकर मृग दूर भाग गए हैं अर पक्षी उड गये हैं अर कहीं एक वनी अल्प है जल जिनमें ऐसी नदी तिनकर कैसी भासैं है जैसी संतापकी भरी विरहनी नायिका असुवन कर भरे नेत्र संयुक्त भासै अर कहूं एक वनी नाना पक्षिनिके नादकर मनोहर शब्द करै है अर कहूं एक निर्मल नीझरनावोंके नादकर शब्द करती तीव्रहास्य करे है अर कहूंइक मकरंदमें अति लुब्ध जे भ्रमर तिनके गुंजारकर मानों वनी वसंत नृपकी स्तुति ही करे है अर कहूंइक बनी फलनिकर नम्रीभूत भई शोभाको धरे है जैसे सफल पुरुष दातार नम्रीभूत भये सोहे हैं अर कहूं इक वायुकर हालते जे वृक्ष तिन की शाखा हाले हैं अर पल्लव हाले हैं अर पुष्प पडे हैं सो मानों पुष्पवृष्टि ही करे हैं। इत्यादि रीतिको

धरे वनी अनेक क्रूर जीवानिकर भरी ताहि देखती सीता चली जाय है राममें है चित्त जाका मधुर शब्द सुनकर विचारती भई मानों रामके दुंदुभी बाजेही बाजे हैं । या भांति चितवती सीता आगे गंगा को देखती भई। कैसी है गंगा ? अति सुन्दर हैं शब्द जाके अर जाके मध्य अनेक जलचर जीव मीन मकर ग्राहादिक विचरैं हैं तिनके विचरवेकर उद्धत लहर उठे हैं तातैं कम्पायमान भये हैं कमल जाविषै अर मूलसे उपाडे हैं तीरके उतंगवृक्ष जाने अर उखाडे हैं पर्वतनिके पाषाणोंके समूह जाने समुद्रकी ओर चली जाय है अति गम्भीर है उज्वल फूलोंकर शोभे है झागोंके समूह उठै हैं अर भ्रमते जे भवर तिनकर महा भयानक है अर दोनों ढाहावोंपर बैठे पक्षी शब्द करैं हैं सो परमतेजके धारक रथके तुरंग ता नदी को तिर पार भये, पवन समान है वेग जिनका जैसे साधु संसार समुद्रके पार होय । नदीके पार जाय सेनापति यद्यपि मेरुसमान अचलचित्त हुता तथापि दयाके योगकर अतिविषादको प्राप्त भया महा दुख-का भरा कछू कह न सके आंखानिते आंसू निकल आये रथको थांभ ऊंचे स्वरकर रुदन करने लगा ढीला होय गया है अंग जाका, जाती रही है कांति जाकी, तब सीता सती कहती भई—हे कृतांतवक्र ! तू काहेको महादुखीकी न्याईं रोवै है, आज जिनबन्दनाके उत्सवका दिन तू हर्षमें विषाद क्यों करै है ? या निर्जन वनमें क्यों रोवे है तब वह अति रुदनकर यथावत् वृत्तांत कहता भया । जो वचन विषसमान अग्निसमान शस्त्र समान है। हे मातः ! दुर्जनानिके वचनतैं राम अकीर्तिके भयसे जो न तजा जाय तिहारा स्नेह ताहि तजकर चैत्यालयनिके दर्शनकी तिहारे अभिलाषा उपजी हुती सो तुमको चैत्यालयोंके अर निर्वाण क्षेत्रोंके दर्शन कराय भयानक वनविषै तजी है। हे देवी ! जैसे यति रागपरणतिको तजै तैसे राम ने तुमको तजी है, अर लक्ष्मणने जो कहिवेकी हद थी सो कही, कछू कमी न राखी तिहारे अर्थ अनेक न्यायके वचन कहे, परन्तु रामने हठ न छोडी । हे स्वामिनि ! राम तुमसे नीराग भये अब तुमको धर्म

ही शरण है सो या संसारविषै न माता, न पिता, न भ्राता, न कुटुम्ब एक धर्म ही जीवका सहाई है। अब तुमको यह मृगोंका भरा वन ही आश्रय है। ये वचन सीता सुनकर वज्रपातकी मारीकैसी होय गई। हृदयविषै दुखके भारकर मूर्छाको प्राप्त भई वहुरि सचेत होय गद २ वाणीसे कहती भई—शीघ्रही मोहि प्राणनाथसे मिला। तब वाने कही—हे मातः! नगरी दूर रही अर रामका दर्शन दूर। तब अश्रुपातरूप जलकी धारासे मुखकमल प्रक्षालती हुई कहती भई कि—हे सेनापति! तू मेरे वचन रामसूं कहियो कि मेरे त्यागका विषाद आप न करणा, परम धीर्यको अवलंवनकर सदा प्रजाकी रक्षा करियो, जैसे पिता पुत्रकी रक्षा करै, आप महा न्यायवन्त हो अर समस्त कलाके पारगामी हो, राजाको प्रजा ही आनन्दका कारण है राजा वही जाहि प्रजा शरदकी पूनोंके चन्द्रमाकी न्याईं चाहै। अर यह संसार असार है महाभयंकर दुखरूप है जा सम्यक्दर्शन कर भव्यजीव संसारसे मुक्त होवे हैं सो तिहोर आराधिवे योग्य है, तुम राजतैं सम्यक्दर्शनको विशेष भला जानियो। यह राज्य तो अविनाशी सुखका दाता है सो अभव्य जीव निंदा करें तो उनकी निंदाके भयसे हे पुरुषोत्तम! सम्यक्दर्शनको कदाचित् न तजना यह अत्यन्त दुर्लभ है जैसे हाथमें आया रत्न समुद्रविषै डालिये तौ बहुरि कौन उपायसे हाथ आवे। अर अमृत फल अंधकूपमें डारा वहुरि कैसे मिले जैसे अमृतफलको डाल बालक पश्चाताप करै तैसे सम्यक्दर्शनसे रहित हुवा जीव विषाद करे है यह जगत दुर्निवार है जगतका मुख बंद करवेको कौन समर्थ जाके मुखमें जो आवे सो ही कहै तातैं जगतकी बात सुनकर जो योग्य होय सो करियो लोक गडालिका प्रवाह हैं सो अपने हृदयमें हे गुणभूषण! लौकिक वार्ता न धरणी अर दानसे प्रीतिके योगकर जनोंको प्रसन्न राखना अर विमल स्वभावकर मित्रोंको वश करना अर साधु तथा आर्यिका आहारको आवें तिनको प्रासुक अन्नसे अतिभक्ति कर निरंतर आहार देना

अर चतुर्विध संघकी सेवा करनी, मन वचन कायकर मुनिको प्रणाम पूजन अर्चनादिकर शुभ कर्म उपार्जन करना अर क्रोधको क्षमाकर मानको निगर्वताकर मायाको निष्कपटता कर लोभको संतोष कर जीतना आप सर्व शास्त्रविषै प्रवीण हो सो हम तुमको उपदेश देने को समर्थ नहीं क्योंकि हम स्त्रीजन हैं आपकी कृपाके योगसे कभी कोई परिहास्यकर अविनय भरा वचन कहा हो तो क्षमा करियो ऐसा कहकर रथसे उतरी अर तृण पाषाणकरभरी जो पृथ्वी उसमें अचेत होय मूर्छा खाय पड़ी सो जानकी भूमि में पड़ी ऐसी सोहती भई मानों रत्नोंकी राशिही पडी है कृतांतवक्र सीताको चेष्टारहित मूर्छित देख महादुखी भया अर चित्तमें चितवता भया हाय यह महा भयानक वन अनेक दुष्ट जीवों कर भरा जहां जे महाधीर शूरवीर होंय तिनके भी जीवनेकी आशा नहीं तो यह कैसे जीवेगी ? इसके प्राण वचने कठिन हैं इस महासती माताको मैं अकेली बनमें तजकर जाऊं हूं सो मुझ समान निर्दई कौन, मुझे किसी प्रकार भी किसी ठौर शांति नहीं एक तरफ स्वामीकी आज्ञा अर एकतरफ ऐसी निर्दयता मैं पापी दुखके भवरविषै पडा हूं धिक्कार पराई सेवाको जगतविषै निंद्य पराधीनता तजो स्वामी कहे सो ही करना जैसे यंत्रको यंत्री बजावै त्योंही बाजे सो पराया सेवक यंत्र तुल्य है अर चाकरसे कूकर भला जो स्वाधीन आजीविका पूर्ण करे है जैसे पिशाचके वश पुरुष ज्यों वह वकावे त्यों बकै तैसे नरेंद्रके वश नर वह जो आज्ञा करै सो करै चाकर क्या न करै अर क्या न कहै अर जैसे चित्रामका धनुष निष्प्रयोजन गुण कहिये फिणचको धरे है सदा नम्रीभूत है तैसे परकिंकर निःप्रयोजन गुणको धरे है सदा नम्रीभूत है धिक्कार किंकरका जीवना, पराई सेवा करनी तेजरहित होना है जैसे निर्माल्य वस्तु निंद्य है तैसे परकिंकरता निंद्य है धिग् २ पराधीनके प्राण धारणको यह पराधीन पराया किंकर टीकली समान है जैसे टीकली परतंत्र होय कूपका जीव कहिए जल हरै है तैसे यह परतंत्र होय पराए प्राण हरे है कभी भी चा-

करका जन्म मत होवे पराया चाकर काठकी पूतली समान है ज्यों स्वामी नचावै त्यों नाचै उच्चता उज्वलता लज्जा अर कांति तिनसे परकिंकर रहित है जैसे विमान पराये आधीन है चलाया चाले थमाया थमें ऊंचा चलावे तो ऊंचा चढे नीचा उतारे तो नीचा उतरे धिकार पराधीनके जीतव्यको जो निर्मल अपने मांसको बेचनहारा महालघु अपने अधीन नहीं सदा परतंत्र धिकार किंकरके प्राण धारणको मैं पराई चाकरी करी अर परवश भया तो ऐसे पाप कर्मको करूं हूं,जो इस निर्दोष महासतीको अकेली भयानक वनमें तजकर जाऊं हूं। हे श्रेणिक! जैसे कोई धर्मकी बुद्धिको तजे तैसे वह सीताको वनविषै तजकर अयोध्याको सन्मुख भया अतिलज्जावान् होयकर चला सीता याके गए पाछे केतीक वारमें मूर्छासे सचेत होय महा दुखकी भरी यूथभ्रष्ट मृगीकी न्याई विलाप करती भई सो याके रुदन कर मानों सबही वनस्पति रुदन करे हैं, वृक्षनिके पुष्प पडे हैं सोई मानों आंसू भए स्वतः स्वभाव महारमणीक याके स्वर तिनकर विलाप करती भई महा शोककी भरी हाय कमलनयन राम नरोत्तम मेरी रक्षा करो मोहि वचनालाप करो, अर तुम तो निरन्तर उत्तम चेष्टाके धारक हो महागुणवंत शांतचित्त हो तिहारा लेशमात्र हू दोष नाहीं तुम तो पुरुषोत्तम हो मैं पूर्वभवविषै जो अशुभकर्म कीए थे तिनके फल पाये जैसा करना तैसा भोगना, कहा करै भर्तार अर कहा करे पुत्र तथा माता पिता बांधव कहा करे अपना कर्म अपने उदय आवै सो अवश्य भोगना, मैं मन्दभागिनी पूर्व जन्मविषै अशुभ कर्म कीये ताके फलतैं या निर्जन वनविषै दुखको प्राप्त भई, मैं पूर्वभवमें काहूका अपवाद किया परनिंदा करी होगी ताके पापकर यह कष्ट पाया तथा पूर्वभवविषै गुरुनिके समीप व्रत लेकर भग्न कीया ताका यह फल पाया अथवा विषफल समान जो दुर्वचन तिनकर काहूको अपमान कीया तातैं यह फल पाये अथवा मैं परभवमें कमलनिके वनविषै तिष्ठता चकवा चकवीका युगल विछोडा तातैं मोहि स्वामीका वियोग भया अथवा मैं

परभवमें कुचेष्टाकर हंस हंसीनिका युगल विछोडा जे कमलनिकर मण्डित सरोवरमें निवास करणहारे अर बडे बडे पुरुषनिको जिनकी चालकी उपमा दीजै अर जिनके वचन अति सुन्दर जिनके चरण चोंच लोचन कमल समान अरुण सो मैं विछोडे उनके दोषकर ऐसी दुख अवस्थाको प्राप्त भई अथवा मैं पापिनी कबूतर कबूतरीके युगल विछोडे हैं, जिनके लाल नेत्र आधीचिरमें समान अर परस्पर जिनविषै अतिस्नेह अर कृष्णागुरु समान जिनका रंग अथवा श्याम घटा समान अथवा धूम समान धूसरे आरंभी है मुखसे क्रीडा जिन्होंने अर कंठमें तिष्ठे हैं मनोहर शब्द जिनके, सो मैं पापिनी जुदे कीये अथवा भले स्थानसे बुरे स्थानमें भेले अथवा बांधे मारे ताके पापकर असंभाव्य दुःख मोहि प्राप्त भया अथवा वसंतके समय फूले वृक्ष तिनविषै केलि करते कोकिल कोकिलीके युगल महामिष्ट शब्दके करनहारे परस्पर भिन्न भिन्न कीये, ताका यह फल है अथवा ज्ञानी जीवानिके बंदिवे योग्य महाव्रती जितेन्द्रिय महा मुनि तिनकी निन्दा करी, अथवा पूजा दानमें विघ्न किया, अर परोपकारविषै अन्तराय कीए, हिंसादिक पाप किए, ग्रामदाह, वनदाह स्त्री बालक पशुहत्यादि पाप कीए तिनके यह फल हैं अनछाना पानी पिया रात्रीको भोजन किया, बीधा अन्न भषा, अभक्ष्य वस्तुका भक्षण किया, न करिवे योग्य काम किए, तिनका यह फल है, मैं बलभद्रकी पटराणी स्वर्ग समान महलकी निवासिनी हजारां सहेली मेरी सेवाकी करनहारी सो अब पापके उदयकर निर्जन वनविषै दुखके सागरविषै डूबी कैसे तिष्ठूं ? रत्ननिके मंदिर विषै महा रमणीक वस्त्र तिनकर शोभित सुन्दर सेजपर शयन करणहारी मैं कहां पडी हूं सब सामग्रीकर पूर्ण महा रमणीक महलविषै रहणहारी मैं अब कैसी अकेली वनका निवास करूंगी ? महा मनोहर बीण वांसुरी मृदंगादिकके मधुर स्वर तिनकर सुख निद्राकी लेनहारी मैं कैसे भयंकर शब्द कर भयानक वन

विषे अकेली तिष्ठूंगी, रामदेवकी पटराणी अपयशरूपी दावानल कर जरी महा दुःखिनी एकाकिनी पापिनी कष्टका कारण जो यह वन जहां अनेक जातिके कीट अर करकस डाभकी अणी अर कांकरानि से भरी पृथिवी यामें कैसे शयन करूंगी ऐसी अवस्था भी पायकर मेरे प्राण न जांय तो ये प्राण ही वज्र के हैं अहो ऐसी अवस्था पायकर मेरे हृदयके सौ टूक न होय हैं सो यह वज्रका हृदय है कहा करूं कहां जाऊं कौनसे कहा कहूं कौनके आश्रय तिष्ठूं हाय गुणसमुद्र राम ! मोहि क्यों तजी, हे महाभक्त लक्ष-मण मेरी क्यों न सहाय करी। हाय पिता जनक हाय माता विदेही यह कहा भया ? अहो विद्याधरनिके स्वामी भामण्डल मैं दुखके भवरमें पडी कैसे तिष्ठूं ? मैं ऐसी पापिनी जो मोसहित पतिने परम संपदाकर जिनेन्द्रका दर्शन अर्चन चिंतया था सो मोहि इस वनीमें डारी।

हे श्रेणिक ! या भांति सीता सती विलाप करै है अर राजा वज्रजंघ पुण्डरीकपुरका स्वामी हाथी पकड़वे निमित्त वनमें आया था सो हाथी पकड़ बड़ी विभूति से पीछे जाय था सो ताकी सेनाके प्यादे शूर वीर कटारी आदि नानाप्रकारके शस्त्र धरे कमर वांधे आय निकसे सो याके रुदनके मनोहर शब्द सुनकर संशयको अर भयको प्राप्त भये एक पैंड भी न जाय सके, अर तुरंगानिके सवार हू ताका रुदन सुन खडे होय रहे उनको यह आशंका उपजी जो या वनविषै अनेक दुष्ट जीव तहां यह सुन्दर स्त्रीके रुदनका नाद कहां होय है मृग सुसा रीछ सांप रीछ ल्याली बघेरा आरणे भैंसे चीता गैंडा शार्दूल अष्टापद वन शूकर गज तिनकर विकराल यह वन ता विषै यह चन्द्रकला समान महामनोग्य कौन रोवै है ? यह कोई देवांगना सौधर्म स्वर्गसे पृथिवीविषै आई है । यह विचारकर सेनाके लोक आश्चर्य-को प्राप्त होय खडे रहे अर वह सेना समुद्र समान जिसमें तुरंग ही मगर अर पयादे मीन अर हाथी

ग्राह हैं समुद्र भी गाजे अर सेना भी गाजे है अर समुद्रमें लहर उठे हैं सेनामें सूर्यकी किरणकर शस्त्रोंकी जोति उठै है समुद्र भी भयंकर है सेना भी भयंकर है सो सकल सेना निश्चल होय रही ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सीताका वनविषै विलाप अर वज्रजंघका आगमन वर्णन करनेवाला सत्तानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९७ ॥

अथानन्तर जैसी महाविद्याकी थांभी गंगा थंभी रहे तैसे सेनाको थंभी देख राजा वज्रजंघ निकटवर्ती पुरुषोंको पूछता भया कि सेनाके थंभनेका कारण क्या है तब वह निश्चयकर राजपुत्रीके समाचार कहते भये उससे पहिले राजाने भी रुदनके शब्द सुने, सुनकर कहता भया जिसका यह मनोहर रुदनका शब्द सुनिये है सो कहो कौन है तब कई एक अग्रेसर होय जायकर पूंछते भये—हे देवि ! तू कौन है अर इस निर्जन वनविषै क्यों रुदन करे है तो समान कोऊ और नाहीं तू देवी है अक नागकुमारी है अक कोई उत्तम नारी है तू महा कल्याण रूपिणी उत्तम शरीरकी धरणहारी तोहि यह शोक कहां हमको यह बडा कौतुक है। तब यह शस्त्रधारक पुरुषोंको देख त्रास भई कांपे है शरीर जाका सो भयकर उनको अपने अपने आभरण उतारकर देने लगी तब वे स्वामीके भयकर यह कहते भये—हे देवी ! तू क्यों डरे है शोकको तज धीरता भज आभूषण हमको काहेको देवे है तेरे ये आभूषण तेरे ही रहो ये तोहि योग्य हैं हे माता ! तू विह्वल क्यों होय है विश्वास गह यह राजा वज्रजंघ पृथिवीविषै प्रसिद्ध महा नरोत्तम राजनीतिकर युक्त है अर सम्यक्दर्शनरूप रत्न भूषणकर शोभित है। कैसा है सम्यदर्शन जिस समान और रत्न नाहीं अविनाशी है अमोलिक है काहूसे हरा न जाय महा सुखका दायक शंकादिक मल रहित सुमेरु सारिखा निश्चल है हे माता ! जाके सम्यग्दर्शन होवे उसके गुण हम कहां लग वर्णन करें

यह राजा जिनमार्गके रहस्यका ज्ञाता शरणागतप्रतिपालक है परोपकारमें प्रवीण महा दयावान महा निर्मल पवित्रात्मा निंद्यकर्मसे निवृत्त लोकोंका पिता समान रक्षक, महा दातार जीवोंकी रक्षाविषै सावधान दीन अनाथ दुर्बल देह धारियोंको माता समान पाले है सिद्धि कार्यका करणहारा शत्रुरूप पर्वतानिको वज्रसमान है शास्त्र विद्याका अभ्यासी परधनका त्यागी परस्त्रीको माता वहिन बेटी समान मानै है अन्याय मार्गको अजगरसहित अन्धकूप समान जाने है, धर्मविषै तत्पर अनुरागी संसारके भ्रमणसे भयभीत सत्यवादी जितेंद्रिय है याके समस्त गुण जो मुखसे कहा चाहे सो भुजानिकर समुद्रको तिरा चाहे है। ये बात वज्रजंघके सेवक कहे हैं, इतनेविषै ही राजा आप आया, हाथीसे उतर बहुत विनयकर सहज ही है शुद्ध दृष्टि जाकी सो सीतातैं कहता भया—हे बहिन! वह वज्रसमान कठोर महा असमज्ञ है जो तोहि ऐसे वनमें तजै अर तोहि तजते जाका हृदय न फट जाय। हे पुण्यरूपिणी! अपनी अवस्थाका कारण कह, विश्वासको भज, भय मत करै अर गर्भका खेद मत करै। तब यह शोककर पीडितचित्त बहुरि रुदन करती भई। राजाने बहुत धीर्य बंधाया तब यह हंसकी न्याईं आंसू डार गद् गद् वाणीतैं कहती भई—हे राजन्! मो मंदभागनीकी कथा अत्यंतदीर्घ है यदि तुम सुना चाहो हो तो चित्त लगाय सुनो, मैं राजा जनककी पुत्री भामण्डलकी वहिन राजा दशरथके पुत्रकी वधू सीता मेरा नाम रामकी राणी राजा दशरथने केकईको वरदान दीया हुता सो भरतको राज्य देकर राजा तो वैरागी भये अर राम लक्ष्मण वनको गए सो मैं पतिके संग वनमें रही, रावण कपटसे मोहि हर ले गया, ग्यारवे दिन मैंने पति की वार्ता सुन भोजन किया पति सुग्रीवके घर रहे बहुरि अनेक विद्याधरनिको एकत्रकर आकाशके मार्ग होय समुद्रको उलंघ लंका गये, रावणको युद्धमें जीत मोहि ल्याये बहुरि राजरूप कीचको तज भरत तो वैरागी भये। कैसे हैं भरत? जैसे ऋषभदेवके भरत चक्रवर्ती तिन समान हैं उपमा जिनकी,

सो भरत तो कर्म कलंकरहित परमधामको प्राप्त भये अर केकई शोकरूप अग्निकर आतापको प्राप्त भई बहुरि वीतरागका मार्ग सार जानकर आर्यिका होय महा तपसे स्त्रीलिंग छेद स्वर्गविषै देव भई मनुष्य होय मोक्ष पावेगी। राम लक्ष्मण अयोध्याविषै इन्द्रसमान राज्य करें सो लोक दुष्टचित्त निश्शंक होय अपवाद करते भये कि रावण हरकर सीताको लेगया बहुरि राम ल्याय घरमें राखी सो राम महा विवेकी धर्म शास्त्रके वेत्ता न्यायवन्त ऐसी रीति क्यों आचरें जिस रीति राजा प्रवर्तें उसी रीति प्रजा प्रवरते सो लोक मर्यादारहित होने लगे, कहैं—रामहीके घर यह रीति तो हमको कहा दोष? अर मैं गर्भसहित दुर्बल शरीर यह चिंतवन करती हुती कि जिनेन्द्रके चैत्यालयोंकी अर्चना करूंगी अर भरतार भी मुझ सहित जिनेंद्रके निर्वाण स्थानक अर अतिशय स्थानक तिनको बन्दना करनेको भावसहित उद्यमी भये हुते अर मोहि ऐसे कहते थे कि प्रथम तो हम कैलाश जाय श्री ऋषभदेवका निर्वाण क्षेत्र बन्देंगे बहुरि और निर्वाण क्षेत्रनिको बन्दकर अयोध्याविषैं ऋषभ आदि तीर्थकर देवनिका जन्म कल्याणक है सो अयोध्याकी यात्रा करेंगे जेते भगवानके चैत्यालय हैं तिनका दर्शन करेंगे, कम्पिल्या नगरीविषै विमलनाथका दर्शन करेंगे अर रत्नपुरमें धर्मनाथका दर्शन करेंगे। कैसे हैं धर्मनाथ? धर्मका स्वरूप जीवनिको यथार्थ उपदेशै हैं बहुरि श्रावस्ती नगरी संभवनाथका दर्शन करेंगे अर चम्पापुरमें बासुपूज्यका अर काकंदीपुरमें पुष्पदन्तका, चंद्रपुरीविषै चंद्रप्रभका, कौशांबीपुरीमें पद्मप्रभका भद्रलपुरमें शीतलनाथका अर मिथिलापुरीमें मल्लिनाथ स्वामीका दर्शन करेंगे अर वाणारसीमें सुपार्श्वनाथ स्वामीका दर्शन करेंगे अर सिंहपुरमें श्रेयांसनाथका अर हस्तनागपुरमें शांति कुंथु अरहनाथका पूजन करेंगें अर हे देवि! कुशाग्रनगरमें श्रीमुनिसुव्रतनाथका दर्शन करेंगे जिनका धर्मचक्र अब प्रवर्तै है अर और हू जे भगवानके अतिशय स्थानक महापवित्र हैं पृथिवीमें प्रसिद्ध हैं तहां पूजा करेंगे, भगवानके चैत्य अर चैत्यालय सुर

असुर अर गन्धर्वनिकर स्तुति करवे योग्य हैं नमस्कार योग्य हैं तिन सबनिकी वन्दना हम करेंगे, अर पुष्पक विमानविषै चढ सुमेरुके शिखरपर जे चैत्यालय हैं तिनका दर्शनकर भद्रशाल वन नन्दन वन सौमनस वन तहां जिनेंद्रकी अर्चाकर अर कृत्रिम अकृत्रिम अढाई द्वीपविषै जेते चैत्यालय हैं तिनकी वन्दनाकर हम अयोध्या आवेंगे ॥

हे प्रिये ! भावसहित एकवार हू नमस्कार श्री अरहंतदेव को करें तो अनेक जन्मके पापनिसे छूटे हैं, हे कांते ! धन्य तेरा भाग्य, जो गर्भके प्रादुर्भावविषैं तेरे जिन वन्दना की वांछा उपजी, मेरे हू मनमें यही है तो सहित महापवित्र जिनमंदिरनिका दर्शन करूं । हे प्रिये ! पहिले भोगभूमिविषै धर्मकी प्रवृत्ति न हुती लोक असमञ्ज थे सो भगवान ऋषभदेवने भव्योंको मोक्ष मार्गका उपदेश दिया जिनको संसारभ्रमणका भय होय तिनको भव्य कहिये, कैसे हैं भगवान् ऋषभ ? प्रजा के पति जगतविषै श्रेष्ठ त्रैलोक्य कर वन्दवे योग्य नानाप्रकार अतिशय कर संयुक्त सुर नर असुरनिको आश्चर्यकारी ते भगवान भव्यों को जीवादिक तत्त्वोंका उपदेश देय अनेकोंको तारि निर्वाण पधारे सम्यक्त्वादि अष्ट गुणमंडित सिद्ध भए जिनका चैत्यालय सर्व रत्नमई भरत चक्रवर्तीने कैलाश पर कराया अर पांचसै धनुषकी रत्नमई प्रतिमा सूर्य्यहूतें अधिक तेजको धरे मंदिरविषै पधराई सो विराजै है जाकी अबहू देव विद्याधर गंधर्व किन्नर नाग दैत्य पूजा करे हैं जहां अप्सरा नृत्य करै हैं जो प्रभु स्वयंभू सर्वगति निर्मल त्रैलोक्यपूज्य जाका अन्त नाहीं अनन्तरूप अनंत ज्ञान विराजमान परमात्मा सिद्ध शिव आदिनाथ ऋषभ तिनकी कैलाश पर्वत पर हम चलकर पूजा कर स्तुति करेंगे ? वह दिन कब होयगा, या भांति मोसे कृपा कर वार्ता करते थे अर ताही समय नगरके लोक भेले होय आय लोकापवादकी दावानलसे दुस्सह वार्ता रामसे कही सो राम बडे विचारके कर्ता चित्तमें यह चिताई यह लोक स्वभाव ही कर वक्र

हैं सो और भांति अपवाद न मिटे या लोकापवादसे प्रियजनको तजना भला अथवा मरणा भला, लोकापवादतैं यशका नाश होय कल्पान्त काल पर्यन्त अपयश जगत्में रहै सो भला नाहीं ऐसा विचार महाप्रवीण मेरा पति ताने लोकापवादके भयतैं मोहि महा अरण्यवनमें तजा मैं दोषरहित सो पति नीके जाने अर लक्ष्मणने बहुत कहा सो न माना, मेरे ऐसा ही कर्मका उदय जे विशुद्ध कुलमें उपजे क्षत्री शुभचित्त सर्व शस्त्रनिके ज्ञाता तिनकी यही रीति है अर काहूसे न डरें एक लोकापवादसे डरें। यह अपने निकासने का वृत्तांत कह बहुरि रुदन करने लगी शोकरूप अग्निकर तप्तायमान है चित्त जाका। सो याको रुदन करती अर रजकर धूसरा है अंग जाका महा दीन दुखी देख राजा वज्रजंघ उत्तम धर्मका धरणहारा अति उद्वेगको प्राप्त भया अर याको जनककी पुत्री जान समीप आय बहुत आदरसे धीर्य बंधाया, अर कहता भया हे शुभमते ! तू जिनशासनमें प्रवीण है शोक कर रुदन मत करै, यह आर्तध्यान दुखका बढावनहारा है, हे जानकी ! या लोककी स्थिति तू जाने है तू महा सुज्ञान अनित्य अशरण एकत्व अन्यत्व इत्यादि द्वादश अनुप्रेक्षा की चिंतवन करणहारी तेरा पति सम्यक् दृष्टि अर तू सम्यक्त्वसहित विवेकवन्ती है मिथ्या दृष्टि जीवनिकी न्याईं कहा बारम्बार शोक करै, तू जिनवाणीकी श्रोता अनेक बार महा मुनिनिके मुख श्रुतिके अर्थ सुने निरन्तर ज्ञान भावनाको धरणहारी तोहि शोक उचित नाहीं, अहो या संसारमें भ्रमता यह मूढ प्राणी वाने मोक्षमार्गको न जाना, यातैं कहा कहा दुख न पाये याको अनिष्टसंयोग इष्टवियोग अनेकबार भये यह अनादिकालसे भवसागरके मध्य क्लेश रूप भवरमें पडा है, या जीवने तिर्यंच योनिविषै जलचर नभचरके शरीर धर वर्षा शीत आताप आदि अनेक दुख पाये अर मनुष्य देह विषै अपवाद विरह रुदन क्लेशादि अनेक दुख भोगे अर नरकविषै शीत उष्ण छेदन भेदन शूलारोहण परस्पर घात-महा दुर्गंध क्षीरकुंडविषै निपात अनेक

रोग अनेक दुख लहे अर कबहू अज्ञान तपकर अल्प ऋद्धिका धारक देव हू भया तहां हू उत्कृष्ट ऋद्धिके धारक देवनिको देख दुखी भया, अर मरणसमान महा दुखी होय विलापकर मूवा अर कबहूं महा तपकर इन्द्रतुल्य उत्कृष्ट देव भया तोहू विषयानुरागकर दुखी ही भया। या भांति चतुर्गतिविषे भ्रमण करते या जीवने भववनविषे आधि व्याधि संयोग वियोग रोग शोक जन्म मृत्यु दुख दाह दरिद्रहीनता नाना-प्रकारकी वांछा विकल्पता कर शोच संताप रूप होय अनंत दुख पाये, अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्व लोक विषे ऐसा स्थानक नाहीं जहां या जीवने जन्म मरण न किये, अपने कर्म रूप पवनके प्रसंगकर भवसागर विषै भ्रमण करता जो यह जीव ताने मनुष्य देहविषे स्त्रीका शरीर पाया तहां अनेक दुख भोगे, तेरे शुभ कर्मके उदयकर राम सारिखे सुन्दर पति भये, जिनके सदा शुभका उपार्जन सो पुण्यके उदय कर पति सहित महा सुख भोगे अर अशुभके उदयतैं दुस्सह दुखको प्राप्त भई, लंकाद्वीपविषैं रावण हर कर लेगया तहां पतिकी वार्ता न सुन ग्यारह दिनतक भोजन विना रही अर जबतक पतिका दर्शन न भया तब तक आभूषण सुगंध लेपनादिरहित रही बहुरि शत्रुको हत पति ले आये तब पुण्यके उदयतैं सुखको प्राप्त भई बहुरि अशुभका उदय आया तब बिना दोष गर्भवतीको पतिने लोकापवादके भयतैं घरसे निकासी, लोकापवाद रूप सर्पके डसवे कर पति अचेत चित्त भया सो बिना समझे भयंकर वन में तजी। उत्तम प्राणी पुण्यरूप पुष्पनिका घर ताहि जो पापी दुर्वचनरूप अग्नि कर बाले हैं सो आपही दोष रूप दहनकर दाहको प्राप्त होय। हे देवी ! तू परम उत्कृष्ट पतिव्रता महासती है प्रशंसायोग्य है चेष्टा जाकी, जाके गर्भाधानविषे चैत्यालयानिके दर्शनकी बांछा उपजी अबहूं तेरे पुण्यही का उदय है तू महा शीलवती जिनमती है तेरे शीलके प्रसाद कर या निर्जन वनविषे हाथीके निमित्त मेरा आवनां भया। मैं वज्रजंघ पुंडरीकपुरका अधिपति राजा दुरिदवाह सोमवंशी महाशुभ आचरणके धारक तिन

के सुबंधु महिषी नामा राणी ताका मैं पुत्र तू मेरे धर्मके विधान कर बडी बाहिन है । पुंडरीकपुर चल शोक तज । हे बहिन ! शोकसे कछु कार्य सिद्ध नाहीं वहां पुंडरीकपुरसे राम तोहि ढूंढ कृपाकर बुलावेंगे । राम हू तेरे वियोगसे पश्चाताप कर अति व्याकुल हैं, अपने प्रमाद कर अमोलिक महा गुणवान रत्न नष्ट भया, ताहि विवेकी महा आदरसे ढूंढे ही, तातैं हे पतिव्रते ! निसंदेह राम तुझे आदरसे बुलावेंगे । या भांति वा धर्मात्माने सीताको शांतता उपजाई तब सीता धीर्य को प्राप्त भई मानों भाई भामंडल ही मिला तब वाकी अति प्रशंसा करती भई तू मेरा अति उत्कृष्ट भाई है महा यशवंत शूरवीर बुद्धिमान शांतचित्त साधर्मिनि पर वात्सल्यका करणहारा उत्तम जीव है । गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! राजा वज्रजंघ अधिगम सम्यग्दृष्टि, अधिगम कहिये गुरूपदेशकर पाया है सम्यक्त जाने अर ज्ञानी है परम तत्त्वका स्वरूप जाननहारा पवित्र है आत्मा जाकी साधु समान हैं जाके व्रत गुण शीलकर संयुक्त मोक्षमार्गका उद्यमी सो ऐसे सत्पुरुषनिके चरित्र दोषरहित पर उपकारकर युक्त कौनका शोक न निवारें । कैसे हैं सत्पुरुष, जिनमतविषै अति निश्चल है चित्त जिनका सीता कहै है । हे वज्रजंघ ! तू मेरे पूर्व भवका सहोदर है सो जो या भवविषै तैंने सांचा भाईपना जनाया मेरा शोक संताप रूप तिमिर हरा सूर्यसमान तू पवित्र आत्मा है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै सीताको वज्रजंघका धीर्य बंधावनेका वर्णन करनेवाला अठानवचा पर्व पूर्ण भया ॥ ९८ ॥

अथानन्तर वज्रजंघने सीताके चढवेको क्षणमात्रविषै अद्भुत पालकी मगाई सो सीता तापर आरूढ भई पालकी विमानसमान महा मनोग्य समीचीन प्रमाणकर युक्त सुन्दर हैं थंभ जाके श्रेष्ठ दर्पण

थंभोविषे जडे हैं अर मोतिनिकी झालरी कर पालकी मण्डित है अर चन्द्रमा समान उज्वल चमर तिन-कर शोभित है, मोतिनिके हार जलके बुदबुदे समान शोभे हैं अर विचित्र जे वस्त्र तिनकर मण्डित है चित्राम कर शोभित है सुन्दर हैं झरोखा जामें ऐसी सुखपालपर चढ परम ऋद्धि कर युक्त बडी सेना मध्य सीता चली जाय है, आश्चर्यको प्राप्त भई कर्मोंकी विचित्रताको चिंतवे है तीन दिनविषै भयंकर व-नको उलंघ पुण्डरीकपुरके देशमें आई, उत्तम है चेष्टा जाकी, सव देशके लोक माताको आय मिले ग्राम ग्राममें भेंट करें। कैसा है वज्रजंघका देश? समस्त जातिके अन्नकर जहां समस्त पृथिवी आच्छादित होय रही है अर कूकडाउडान नजीक हैं ग्राम जहां, रत्ननिकी खान स्वर्ण रूपादिककी खान सुरपुर जैसे पुर सो देखती थकी सीता हर्षको प्राप्त भई वन उपवनकी शोभा देखती चली जाय है, ग्रामके महंत भेटकर नानाप्रकार स्तुति करें हैं। हे भगवती! हे माता! आपके दर्शन कर हम पापरहित भए कृतार्थ भए अर वारम्बार वन्दना करते भये अर्घ पाद्य किये अर अनेक राजा देवनि समान आय मिले सो नानाप्रकार भेट करते भए अर वारंवार बन्दना करते भए। या भांति सीता सती पैंड पैंड पर राजा प्रजानिकर पूजी संती चली जाय है बज्रजंघका देश अति सुखी ठौर ठौर वन उपवनादिकर शोभित ठौर ठौर चै-त्यालय देख अतिहर्षित भई मनविषैं विचारे है जहां राजा धर्मात्मा होय वहां प्रजा सुखी होय ही। अ-नुक्रम कर पुण्डरीकपुरके समीप आए सो राजाकी आज्ञातैं सीताका आगमन सुन नगरके सब लोक स-न्मुख आए अर भेट करते भए, नगरकी अति शोभा करी, सुगन्ध कर पृथिवी छांटी, गली बाजार सब सिंगारे अर इंद्र धनुष समान तोरण चढाए अर द्वारानिविषे पूर्ण कलश थापे, जिनके मुख सुन्दरपल्लव-युक्त हैं अर मंदिरनि पर ध्वजा चढी अर घर घर मंगल गावे हैं मानों वह नगर आनन्द कर नृत्य ही करे है नगरके दरवाजे पर तथा कोटके कंगूरनिपर लोक खडे देखे हैं हर्षकी वृद्धि होय रही है नगरके

बाहिर अर भीतर राजद्वार तक सीताके दर्शनको लोक खडे हैं, चलायमान जे लोकानिके समूह तिन-कर नगर यद्यपि स्थावर है तथापि जानिए जंगम होय रहा है। नानाप्रकारके वादित्र बाजैं हैं तिनके नादकर दशोंदिशा शब्दायमान होय रही हैं शंख बाजे हैं बंदीजन बिरद बखाने हैं समस्त नगरके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए देखे हैं अर सीताने नगरविषै प्रवेश किया जैसे लक्ष्मी देव लोकविषै प्रवेश करै व-ज्रजंघके मंदिरविषै अति सुन्दर जिनमंदिर हैं, सर्व राज लोककी स्त्री जन सीताके सन्मुख आईं, सीता पालकीसे उतर जिनमंदिरमें गई। कैसा है जिनमंदिर ? महा सुन्दर उपवन कर वेष्टित है अर वापिका सरोवरी तिनकर शोभित है, सुमेरु शिखर समान सुन्दर स्वर्णमई है जैसे भाई भामण्डल सीताका स-न्मान करै तैसे वज्रजंघ आदर करता भया, वज्रजंघके समस्त परिवारके लोक अर राजलोककी समस्त राणी सीताकी सेवा करैं अर ऐसे मनोहर शब्द निरन्तर कहे हैं हे देवते ! हे पूज्ये ! हे स्वामिनी ! हे ईशानने ! सदा जयवन्त हो बहुत दिन जीवो आनन्दको प्राप्त होवो, वृद्धिको प्राप्त होवो आज्ञा करो। या भांति स्तुति करें अर जो आज्ञा करे सो सीस चढावें अति हर्षसे दौरकर सेवा करैं अर हाथ जोड सीस निवाय नमस्कार करैं वहां सीता अति आनन्दतैं जिन धर्मकी कथा करती तिष्ठै अर जो सामंतनिकी भेट आवे अर राजा भेट करे सो जानकी धर्म कार्यमें लगावे यह तो यहां धर्मका आराधना करे है।

अर वह कृतांतवक्र सेनापति तप्तायमान है चित्त जाका रथके तुरंग खेदको प्राप्त भए हुते तिनको खेदरहित करता हुवा श्रीरामचन्द्रके समीप आया याको आवता सुन अनेक राजा सन्मुख आए सो कृतांतवक्र आयकर श्रीरामचंद्रके चरणनिको नमस्कार कर कहता भया—हे प्रभो ! मैं आज्ञाप्रमाण सीता को भयानक वनविषै मेलकर आया हूं वाके गर्भमात्रही सहाई है। हे देव ! वह वन नानाप्रकारके भयंकर जीवनिके अति घोर शब्दकर महा भयकारी है अर जैसा [illegible] कहिये प्रेतनिका वन ताका आकार

देखा न जाय तैसे सघन वृक्षानिके समूह कर अन्धकार रूप है, जहां स्वतः स्वभाव आरणे भैंसे अर सिंह द्वेषकर सदा युद्ध करैं हैं अर जहां घूघू बसै हैं सो विरूप शब्द करैं हैं अर गुफानिमें सिंह गुंजार करें हैं सो गुफा गुंजार रही हैं अर महाभयंकर अजगर शब्द करें हैं अर चीतानिकर हते गये हैं मृग जहां कालको भी विकराल ऐसा वह वन ता विषै हे प्रभो ! सीता अश्रुपात करती महादीनबदन आपको जो शब्द कहती भई सो सुनो, आप आत्मकल्याण चाहो हो तो जैसे मोहि तजी तैसे जिनेंद्रकी भक्ति न तजनी जैसे लोकानिके अपवादकर मोमे अति अनुराग हुता तोहू तजी तैसे काहूके कहवेतैं जिनशासनकी श्रद्धा न तजनी। लोक विना विचारे निर्दोषानिको दोष लगावें है जैसे मोहि लगाया सो आप न्याय करो सो अपनी बुद्धिसे विचार यथार्थ करना काहूके कहेतैं काहूको झूठा दोष न लगावना अर सम्यक्दर्शनतैं विमुख मिथ्यादृष्टि जिनधर्मरूप रत्नका अपवाद करै हैं सो उनके अपवादके भयतैं सम्यक्दर्शनकी शुद्धता न तजनी वीतरागका मार्ग उरविषै दृढ धारणा, मेरे तजनेका या भवविषैं किंचित् मात्र दुख है अर सम्यक दर्शनकी हानितैं जन्म २ विषै दुख है या जीवको लोकविषै निधि रत्न स्त्री वाहन राज्य सब ही सुलभ हैं एक सम्यकदर्शन रत्न ही महादुलभ है। राजविषै पापकर नरकविषैं पडना हैं, एक ऊर्ध्वगमन सम्यक्दर्शनके प्रतापहीसे होय। जाने अपनी आत्मा सम्यग्दर्शनरूप आभूषणकर मंडित किया सो कृतार्थ भया। ये शब्द जानकीने कहे हैं जिनको सुनकर कौनके धर्मबुद्धि न उपजे—हे देव! एक तो वह सीता स्वभावहीकर कायर अर महा भयंकर वनके दुष्ट जीवनितैं कैसे जीवगी? जहां महा भयानक सर्पनिके समूह अर अल्पजल ऐसे सरोवर तिनविषै माते हाथी कर्दमकरे हैं अर जहां मृगानिके समूह मृगतृष्णाविषै जल जान वृथा दौड व्याकुल होय हैं, जैसे संसारकी मायाविषै रागकर रागी जीव दुखी होय अर जहां कौंछिकी रजके संगकर मर्कट अति चंचल होय रहे हैं अर जहां तृष्णासे सिंह व्याघ्र

त्यालियोंके समूह तिनकी रसनारूप पल्लव लहलहाट करै हैं अर चिरम समान लालनेत्र जिनके ऐसे क्रोधायमान भुजंग फुंकार करै हैं अर जहां तीव्र पवनके संचारकर क्षणमात्रविषैं वृक्षनिके पत्रोंके ढेर होय हैं अर महा अजगर तिनकी विषरूप अग्निकर अनेक वृक्ष भस्म होय गये हैं अर माते हाथिनिकी महा भयंकर गर्जना ताकर वह वन अति विकराल है अर वनके शूकरनिकी सेनाकर सरोवर मालिन जल होय रहे हैं, अर जहां ठौर ठौर भूमिविषे कांटे अर सांठे अर सांपोंकी बमी अर कंकर पत्थर तिनकर भूमि महा संकटरूप है अर डाभकी अणी सूईतैंहू अति पैनी हैं अर सूके पान फूल पवनकर उडे उडे फिरे हैं ऐसे महाअरण्यविषै, हे देव ! जानकी कैसे जीवेगी, मैं ऐसा जानूं हूं क्षणमात्र हू वह प्राण राखिवेको समर्थ नाहीं।

हे श्रेणिक ! सेनापतिके यह वचन सुन श्रीराम अतिविषादको प्राप्त भए, कैसे हैं वचन ? जिनकर निर्दईका भी मन द्रवीभूत होय, श्रीरामचन्द्र चिंतवते भए, देखो मो मूढचित्तने दुष्टनिके वचनकर अत्यन्त निंद्यकार्य कीया कहां वह राजपुत्री अर कहां वह भयकंर बन ? यह विचारकर मूर्छाको प्राप्त भये बहुरि शीतोपचारकर सचेत होय विलाप करते भए सीताविषै है चित्त जिनका, हाय श्वेत श्याम रक्त तीन वर्णके कमल समान नेत्रनिकी धरणहारी, हाय निर्मल गुणनिकी खान मुखकर जीता है चन्द्रमा जाने, कमलकी किरण समान कोमल, हाय जानकी मोसे वचनालाप कर, तू जानेही है कि मेरा चित्त तो विना अतिकायर है। हे उपमारहित शीलव्रतकी धारणहारी मेरे मनकी हरणहारी, हितकारी हैं आलाप जिसके हे पापवर्जिते निरपराध मेरे मनकी निवासनी तू कौन अवस्थाको प्राप्त भई होगी, हे देवी वह महा भयंकर बन क्रूरजीवों कर भरा उसमें सर्वसामग्री रहित कैसे तिष्ठेगी ? हे मोमें आसक्त चकोरनेत्र लावण्य रूप जलकी सरोवरी महालज्जावती विनयवती तू कहां गई, तेरे श्वासकी सुगंधकर

मुख पर गुंजार करते जे भ्रमर तिनको हस्त कमलकर निवारती अति खेदको प्राप्त होयगी, तू यूथसे विछुरी मृगीकी न्याईं अकेली भयंकर वनविषै कहां जायगी जो वन चितवन करते भी दुस्सह उसविषै तू अकेली कैसे तिष्ठेगी कमलके गर्भ समान कोमल तेरे चरण महासुंदर लक्षणके धारणहारे कर्कश भूमिका स्पर्श कैसे सहेंगे अर वनके भील महा म्लेच्छ कृत्य अकृत्यके भेदसे रहित है मन जिनका सो तुझे पाकर भयंकर पल्लीमें लेगये होवेंगे सो पाहिले दुखसे भी यह अत्यंत दुख है तू भयानक वनविषै मोविना महादुःखको प्राप्त भई होयगी अथवा तू खेदखिन्न महा अंधेरी रात्रीविषै वनकी रजकर मंडित कहीं पडी होयगी सो कदाचित् तुझे हाथियोंने दावी होय तो इस समान अर अनर्थ कहा अर गृध्र रीछ सिंह व्याघ्र अष्टापद इत्यादि दुष्ट जीवोंकर भरा जो वन उसविषै कैसे निवास करेगी ? जहां मार्ग नाहीं विकराल दाढके धरणहारे व्याघ्र महा क्षुधातुर तिन ऐसी अवस्थाको प्राप्त करी होयगी जो कहिवेविषै न आवे अथवा अग्निकी ज्वालाके समूहकर जलता जो वन उसविषै अशुभ अस्थानकको प्राप्त भई होयगी, अथवा सूर्यकी अत्यंत दुस्सह किरण तिनके आतापकर लाखकी न्यांई पिगल गई होयगी, छायाविषै जायवेकी नाहीं है शक्ति जिसकी अथवा शोभायमान शीलकी धरणहारी मो निर्दईविषै मनकर हृदय फटकर मृत्युको प्राप्तभई होयगी। पाहिले जैसे रत्नजटीने मोहि सीताके कुशलकी वार्ता आय कही थी तैसे कोई अब भी कहे, हाय प्रिये पतिव्रते विवेकवती सुखरूपिणी तू कहां गई कहां तिष्ठेगी क्या करेगी अहो कृतांतवक्र कह क्या तैने सचमुच वनहीविषै डारी, जो कहुं शुभ ठौर मेली होय तो तेरे मुखरूप चंद्रसे अमृतरूपवचन खिरें। जब ऐसा कहा तब सेनापतिने लज्जाके भारकर नीचा मुख-किया प्रभारहित हो गया कछू कह न सकै अति व्याकुल भया मौन गह रहा। तब रामने जानी सत्यही यह सीताको भयंकर वनविषै डार आया तब मूर्छाको प्राप्त होय राम गिरे बहुत वेरमें नीठिनीठि सचेत

भए तब लक्ष्मण आए अंतःकरणविषै सोचको धरे कहते भए—हे देव ! क्यों व्याकुल भये हो धीर्यको अंगीकार करो जो पूर्वकर्म उपार्जा उसका फल आय प्राप्त भया अर सकल लोकको अशुभके उदयकर दुःख प्राप्त भया केवल सीताहीको दुख न भया।

सुख अथवा दुख जो प्राप्त होना होय सो स्वयमेव ही किसी निमित्तसे आय प्राप्त होय है प्रभो जो कोई किसीको आकाशमें ले जाय अथवा क्रूर जीवोंके भरे वनविषै डारे अथवा गिरिके शिखर धरे तौ भी पूर्व पुण्य कर प्राणीकी रक्षा होय है सब ही प्रजा दुख कर तप्तायमान है आंसुवोंके प्रवाहकर मानों हृदय गल गया है सोई झरे है यह वचन कह लक्ष्मण भी अत्यन्त व्याकुल होय रुदन करने लगा जैसा दाहका मारा कमल होय तैसा होय गया है मुखकमल जिसका हाय माता तू कहां गई दुष्टजनोंके वचन रूप अग्निकर प्रज्वलित है शरीर जिसका हे गुणरूप धान्यके उपजनेकी भूमि बारह अनुप्रेक्षाके चितवनकी करणहारी हे शीलरूप पर्वतकी पृथिवी हे सीते सौम्य स्वभावकी धारक हे विवेकनी दुष्टोंके वचन सोई भये तुषार तिनकर दाहा गया है हृदय कमल जिसका राजहंस श्रीराम तिनके प्रसन्न करनेको मानसरोवर समान सुभद्रा सारिखी कल्याणरूप सर्व आचारविषै प्रवीण लोकोंको मूर्तिवन्त सुखकी आशिषा हे श्रेष्ठ तू कहां गई जैसे सूर्य बिना आकाशकी शोभा कहां अर चन्द्रमा विना निशाकी शोभा कहां तैसे हे माता तो विना अयोध्याकी शोभा कहां। इस भान्ति लक्ष्मण विलाप कर रामसे कहे हैं हे देव ! समस्त नगर बीण बासुरी मृदंगादिकी ध्वनि कर रहित भया है अर अहर्निश रुदनकी ध्वनि कर पूर्ण है गलीगलीमें वन उपवनविषै नदियोंके तटविषै चौहटेमें हाट हाटविषै घर घरमें समस्त लोक रुदन करे हैं तिनके अश्रुपातकी धारा कर कीच होय रही है, मानों अयोध्याविषै वर्षा कालही फिर आया है समस्त लोक आंसू डारते गद्गद् बाणी कर कष्टसे वचन उचारते जानकी प्रत्यक्ष नहीं है परोक्ष ही है,

तौभी एकाग्रचित्त भए गुण कीर्तिरूप पुष्पोंके समूह कर पूजे हैं। वह सीता पतिव्रता समस्त सतियोंके सिर पर विराजै है गुणोंकर महा उज्वल उसके यहां आवनेकी अभिलाषा सबोंके है यह सब लोक माता ने ऐसे पाले हैं जैसे जननी पुत्रको पालै सो सबही महा शोककर गुण चितार चितार रुदन करे हैं ऐसा कौन है जिसके जानकीका शोक न होय तातैं हे प्रभो तुम सब बातोंमें प्रवीण हो अब पश्चाताप तजो पश्चात्तापसे कछु कार्यकी सिद्धि नाहीं जो आपका चित्त प्रसन्न है तो सीताको हेरकर बुलाय लेंगे अर उनको पुण्यके प्रभाव कर कोई विघ्न नहीं आप धीर्य अवलम्बन करवे योग्य हो या भांति लक्ष्मणके वचनकर रामचन्द्र प्रसन्न भए कछु एक शोक तज कर्तव्यविषै मन धरा। भद्रकलश भण्डारीको बुलायकर कही तुम सीताकी आज्ञासे जिस विधि किम इच्छा दान करते थे तैसेही दिया करो सीताके नामसे दान बटै तब भंडारीने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा नव महीने अर्थियोंको किम इच्छा दान बटिवो किया, रामके आठहजार स्त्री तिनकर सेवमान तौभी एक क्षणमात्र भी मन कर सीताको न बिसारता भया। सीता सीता यह आलाप सदा होता भया, सीताके गुणोंकर मोहा है मन जिसका सर्वदिशा सीतामई देखता भया स्वप्नविषै सीताको या भांति देखे पर्वतकी गुफामें पडी है पृथिवीकी रज कर मंडित है अर नेत्रोंके अश्रुपात कर चौमासा कर राखा है महा शोक कर व्याप्त है या भांति स्वप्नमें अवलोकन करता भया। सीताकार शब्द करता राम ऐसा चितवन करे है—देखो सीता सुन्दर चेष्टाकी धरणहारी दूर देशान्तरविषै तिष्ठै है तौभी मेरे चित्तसे दूर न होय है वह साधवी शीलवंती मेरे हितविषै सदा उद्यमी। या भांति सदा चितारवो करे अर लक्ष्मणके उपदेशकर अर सूत्रसिद्धांतके श्रवण कर कछू इक रामका शोक क्षीण भया धीर्यको धारि धर्म ध्यानविषै तत्पर भया। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं वे दोनों भाई महा न्यायवन्त अखण्ड प्रीतिके धारक प्रशंसायोग्य गुणोंके समुद्र रामके

हल मूशलका आयुध लक्ष्मणके चक्रायुध समुद्र पर्यंत पृथिवीको भली भांति पालते सन्ते सौधर्म ईशान इंद्र सारिखे शोभते भए वे दोनों धीर स्वर्ग समान जो अयोध्या उसमें देवों समान ऋद्धि भोगते महा कांतिके धारक पुरुषोत्तम पुरुषोंके इंद्र देवेंद्र समान राज्य करते भए सुकृतके उदयसे सकल प्राणियोंको आनंद देयबेमें चतुर सुन्दर चरित्र जिनके, सुखसागरमें मग्न सूर्यसमान तेजस्वी पृथिवीमें प्रकाश करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं रामको सीताका शोक वर्णन करनेवाला निन्यानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९९ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी कहे हैं—हे नराधिप ! रामलक्ष्मण तो अयोध्याविषे तिष्ठे हैं अर अब लवणांकुशका वृत्तांत कहे हैं सो सुन—अयोध्याके सबही लोक सीताके शोकसे पांडुताको प्राप्त भये अर दुर्बल होय गये अर पुण्डरीकपुरमें सीता गर्भके भारकर कछू एक पांडुताको प्राप्त भई अर दुर्बल भई। मानों सकल प्रजा महापवित्र उज्ज्वल इसके गुण वर्णन करे है सो गुणोंकी उज्ज्वलता कर श्वेत होय गई है अर कुचोंकी बीटली श्यामताको प्राप्त भई सो मानों माताके कुच पुत्रोंके पान करिवेके पयके घट हैं सो मुद्रित कर राखे हैं अर दृष्टि क्षीरसागर समान उज्ज्वल अत्यन्त मधुरताको प्राप्त भई अर सर्वमंगलके समूहका आधार जिसका शरीर सर्वमंगलका स्थानक जो निर्मल रत्नमई आंगण उसविषे मन्द मंद विचरे सो चरणोंके प्रतिबिंब ऐसे भासें मानों पृथिवी कमलोंसे सीताकी सेवाही करे है अर रात्रिमें चन्द्रमा याके मंदिर ऊपर आय निकसे सो ऐसा भासे मानों सुफेद छत्रही है अर सुगंधके महलमें सुंदर सेज ऊपर सूती ऐसा स्वप्न देखती भई कि महागजेंद्र कमलोंके पुट विषे जल भरकर अभिषेक करावे हैं अर बारम्बार सखीजनोंके मुख जय जयकार शब्द सुनकर जाग्रत होय है परिवारके लोक समस्त आ-

ज्ञारूप प्रवर्तें हैं क्रीडा विषै भी यह आज्ञाभंग न सह सकै सब आज्ञाकारी भए शीघ्रही आज्ञा प्रमाण करे हैं तौभी सबों पर तेज करै है काहेसे कि तेजस्वी पुत्र गर्भविषै तिष्ठे हैं अर मणियोंके दर्पण निकट हैं तौ भी खडग काढ खडगमें मुख देखे है अर बीणावांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्रोंके नाद होय हैं सो न रुचें अर धनुषके चढायवेकी ध्वनि रुचे है अर सिंहोंके पिंजरे देख जिसके नेत्र प्रसन्न होंय अर जिसका मस्तक जिनेंद्र टार औरकों न नमै ॥

अथानन्तर नव महीना पूर्ण भये श्रावण सुदी पूर्णमासीके दिन श्रवण नक्षत्रके विषै वह मंगल रूपिणी सर्वलक्षण पूर्ण शरदकी पूनोंके चन्द्रमा समान है वदन जिसका सुखसे पुत्र युगल जनती भई सो पुत्रोंके जन्ममें पुंडरीकपुरकी सकल प्रजा अतिहर्षित भई मानों नगरी नाच उठी ढोल नगारे आदि अनेक प्रकारके वादित्र बाजने लगे शंखोंके शब्द भये । राजा बज्रजंघने अतिउत्साह किया बहुत संपदा याचकों को दई अर एक का नाम अनंगलवण दूजे का नाम मदनांकुश ये यथार्थ नाम धरे फिर ये बालक वृद्धि को प्राप्त भए माताके हृदय को अति आनंद के उपजावन हारे महाधीर शूरवीरताके अंकुर उपजे, सरसों के दाणे इनके रक्षा के निमित्त इनके मस्तक डारे सो ऐसे सोहते भए मानों प्रतापरूप अग्नि के कणही हैं जिनका शरीर ताये सुवर्ण समान अति देदीप्यमान सहजस्वभाव तेजकर अतिसोहता भया अर जिन के नख दर्पणसमान भासते भए । प्रथम बालअवस्थामें अव्यक्त शब्द बोलैं सो सर्वलोकके मनको हरैं अर इनकी मंद मुलकनि महामनोग्य पुष्पों के विकसने समान लोकनके हृदय को मोहती भई अर जैसे पुष्पोंकी सुगंधता भ्रमरोंके समूहको अनुरागी करे तैसै इनकी वासना सब के मनको अनुरागरूप करती भई यह दोनों माताका दूध पान कर पुष्ट भए अर जिनका मुख महासुंदर सुफेद दांतों कर अति सोहता भया मानों यह दांत दुग्ध समान उज्ज्वल हास्य-

रस समान शोभायमान दीखे हैं, धायकी आंगरी पकड़े आंगन में पांव धरते कौन का मन न हरते भए जानकी ऐसे सुन्दर क्रीडा के करणहारे कुमारों को देखकर समस्त दुःख भूलगई। बालक बड़े भए अति मनोहर सहज ही सुन्दर हैं नेत्र जिनके विद्या पढने योग्य भए तब इनके पुण्यके योगकर एक सिद्धार्थनामा क्षुल्लक शुद्धात्मा पृथिवीमें प्रसिद्ध वज्रजंघके मंदिर आया सो महाविद्याके प्रभाव कर त्रिकाल सन्ध्या में सुमेरुगिरिके चैत्यालय बंदि आवे प्रशांतवदन साधु समान है भावना जिसके अर खंडितवस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके उत्तम अणुव्रतका धारक नानाप्रकारके गुणों कर शोभायमान, जिनशासनके रहस्य का वेत्ता समस्त कलारूप समुद्रका पारगामी तपकर मंडित अति सोहै सो आहारके निमित्त भ्रमता संता जहां जानकी तिष्ठै थी वहां आया सीता महासती मानों जिनशासन की देवी पद्मावती ही है सो क्षुल्लक को देख अति आदर से उठकर सन्मुख जाय इच्छाकार करती भई अर उत्तम अन्नपान से तृप्त किया सीता जिनधर्मियोंको अपने भाईसमान जाने है सो क्षुल्लक अष्टांग निमित्त ज्ञानका वेत्ता दोनों कुमारों को देखकर अति संतुष्ट होयकर सीता से कहता भया—हे देवि ! तुम सोच न करो जिसके ऐसे देवकुमार समान प्रशस्त पुत्र उसे कहा चिंता।

अथानन्तर यद्यपि क्षुल्लक महाविरक्त चित्त है तथापि दोनों कुमारोंके अनुरागसे कैयकादिन तिन के निकट रहा थोडे दिनोंमें कुमारोंको शस्त्रविद्यामें निपुण किया सो कुमार ज्ञान विज्ञानविषै पूर्ण सर्व कलाके धारक गुणोंके समूह दिव्यास्त्रके चलायबे अर शत्रुओंके दिव्यास्त्र आवें तिनके निराकरण करवेकी विद्याविषै प्रवीण होते भए, महापुण्यके प्रभावसे परमशोभाको धारैं महालक्ष्मीवान् दूर भए हैं मति श्रुति आवरण जिनके मानों उघडे निधिके कलश ही हैं। शिष्य बुद्धिमान् होय तब गुरुको पढायवेका कछू खेद नाहीं जैसे मंत्री बुद्धिमान् होय तब राजाको राज्यकार्यका कछु खेद नाहीं अर जैसे नेत्रवान्

पुरुषोंको सूर्यके प्रभावकर घट पटादिक पदार्थ सुखसूं भासै तैसे गुरुके प्रभावकर बुद्धिवन्तको शब्द अर्थ सुखसे भासै जैसे हंसोंको मानसरोवरविषै आवते कछु खेद नहीं तैसे विवेकवान् विनयवान् बुद्धिमान्को गुरुभक्तिके प्रभावसे ज्ञान आवते परिश्रम नाहीं सुखसे अति गुणोंकी वृद्धि होय है अर बुद्धिमान् शिष्यको उपदेश देय गुरु कृतार्थ होय है अर कुबुद्धिको उपदेश देना वृथा है जैसे सूर्यका उद्योत घूघूओंको वृथा है यह दोनों भाई देदीप्यमान है यश जिनका अति सुन्दर महाप्रतापी सूर्यकी न्याई जिनकी ओर कोऊ विलोक न सके, दोऊ भाई चन्द्र सूर्य समान दोनोंमें अग्नि अर पवन समान प्रीति मानो वह दोनो ही हिमाचल विंध्याचलसमान हैं वज्रवृषभनाराचसंहनन जिनके सर्व तेजस्वीनिके जीतवेको समर्थ सब राजावोंका उदय अर अस्त जिनके आधीन होयगा महाधर्मात्मा धर्मके धोरी अत्यंत रमणीक जगत्को सुखके कारण सब जिनकी आज्ञाविषै, राजा ही आज्ञाकारी तो औरोंकी क्या बात काहूकी आज्ञारहित न देख सकें अपने पांवानिके नखोंमें अपनाही प्रतिबिम्ब देख न सकें तो और कौनसे नम्रीभूत होंय अर जिनको अपने नख अर केशोंका भंग न रुचे तो अपनी आज्ञाका भंग कैसे रुचे, अर अपने सिरपर चूडामणि धरिये अर सिरपर छत्र फिरे अर सूर्य ऊपर होय आय निकसे सोभी न सहार सकें तो औरोंकी ऊंचता कैसे सहारें, मेघका धनुष चढा देख कोप करें तो शत्रुके धनुषकी प्रबलता कैसे देख सकें चित्रामके नृप न नमैं तो भी सहार न सकें तो साक्षात् नृपोंका गर्व कब देख सकें, अर सूर्य नित्य उदय अस्त होय उसे अल्प तेजस्वी गिनें अर पवन महाबलवान है परन्तु चंचल सो उसे बलवान न गिनें जो चलायमान सो बलवान काहेका ? जो स्थिरभूत अचल सो बलवान् अर हिमवान पर्वत उच्च है स्थिरीभूत है परन्तु जड अर कठोर कंटक सहित है तातैं प्रशंसा योग्य न गिनें अर समुद्र गंभीर है रत्नोंकी खान है परंतु क्षार अर जलचर जीवोंको धरे अर शंखोंकर युक्त तातैं समुद्रको तुच्छ

गिनें ये महागुणानिके निवास अति अनुपम जेते प्रबल राजा हुते तेजरहित होय इनकी सेवा करते भए ये महाराजावोंके राजा सदा प्रसन्न वदन मुखसे अमृत वचन बोलैं सबनिकर सेवने योग्य जे दूरवर्ती दुष्ट भूपाल हुते ते अपने तेजकर मलिनवदन किये सब मुरझाय गये इनका तेज ये जब जन्मे तबसे इनके साथही उपजा है शस्त्रोंके धारणकर जिनके कर अर उदर श्यामताको धरै हैं अर मानों अनेक राजावोंके प्रतापरूप अग्निके बुझावनेसे श्याम हैं समस्त दिशारूप स्त्री वशीभूत कर देने वाली भई महाधीर धनुषके धारक तिनके सब आज्ञाकारी भए जैसा लवण तैसा ही अंकुश दोनों भाइनिविषे कोई कमी नाहीं ऐसा शब्द पृथिवीविषै सबके मुख, ये दोनों नवयौवन महासुन्दर अद्भुत चेष्टाके धरण-हारे पृथिवीमें प्रसिद्ध समस्त लोकोंकर स्तुति करवे योग्य जिनके देखवेकी सबके अभिलाषा पुण्य परमा-णुनिकर रचा है पिंड जिनका, सुखका कारण है दर्शन जिनका स्त्रियोंके मुखरूप कुमुद तिनके प्रफुल्लित करनेको शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सोहते भए माताके हृदयको आनन्दके जंगम मंदिर ये कुमार सूर्यसमान कमल नेत्र देवकुमार सारिखे श्रीवत्सलक्षणकर मंडित है वक्षस्थल जिनका अनंतप-राक्रमके धारक संसार समुद्रके तट आये चरम शरीर परस्पर महाप्रेमके पात्र सदा धर्मके मार्गमें तिष्ठे हैं देवोंका अर मनुष्योंका मन हरे हैं।

भावार्थ—जो धर्मात्मा होय सो काहूका कुछ न हरे ये धर्मात्मा परधन परस्त्री तो न हरें परन्तु पराया मन हरें। इनको देख सबनिका मन प्रसन्न होय ये गुणोंकी हदको प्राप्त भए हैं। गुण नाम डोरे का भी है सो हदपर गांठको प्राप्त होय है अर इनके उरविषै गाठ नाहीं महा निःकपट हैं अपने तेजकर सूर्यको जीते हैं अर कांतिकर चंद्रमाको जीते हैं अर पराक्रमकर इंद्रको अर गम्भीरताकर समुद्रको स्थिरताकर सुमेरुको अर क्षमाकर पृथिवीको अर शूरवीरताकर सिंहको चालकर हंसको जीते हैं अर

कर दोऊ भाई आप युद्धके अर्थ अति शीघ्रही जायवेको उद्यमी भए। कैसे हैं कुमार आज्ञा भंगको नाहीं सह सके हैं तब बज्रजंघके पुत्र इनको मने करते भए अर सर्व राजलोक मने करते भए तौ हू इन न मानी तब सीता पुत्रनिके स्नेहकर द्रवीभूत हुवा है मन जाका सो पुत्रनिको कहती भई तुम बालक हो, तिहारा युद्धका समय नाहीं । तब कुमार कहते भए—हे माता ! तू यह कहा कही बडा भया अर कायर भया तो कहा ? यह पृथिवी योधानिकर भोगवे योग्य है अर अग्निका कण छोटा ही होय है अर महावनको भस्म करे है या भांति कुमारने कही तब माता इनको सुभट जान आंखोंसे हर्ष अर शोकके किंचितमात्र अश्रुपात करती भई ये दोऊ वीर महा धीर स्नान भोजन कर आभूषण पहिरे मन वचन कायकर सिद्ध निका नमस्कारकर बहुरि माताको प्रणामकर समस्त विधिविषै प्रवीण घरते बाहिर आए तब भले भले शकुन भए दोऊ रथचढ सम्पूर्ण शस्त्रानिकर युक्त शीघ्रगामी तुरंग जोड पृथुपर चले महा सेनाकर मंडित धनुषबाण ही है सहाय जिनके महा पराक्रमी परम उदारचित्त संग्रामके अग्रेसर पांच दिवसमें वज्रजंघ पै जाय पहुंचे तब राजा पृथु शत्रुनिकी बडी सेना आई सुन आप भी बडी सेनासहित नगरसे निकसा जाके भाई मित्र पुत्र मामाके पुत्र सबही परम प्रीति पात्र अर अंगदेश बंगदेश मगधदेश आदि अनेक देशनिके बडे बडे राजा तिन सहित रथ तुरंग हाथी पयादे बडे कटकसहित बज्रजंघपर आया तब ब-ज्रजंघके सामन्त परसेनाके शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए दोऊ सेना समीप भई तब दोऊ भाई लवणां-कुश महा उत्साहरूप परसेनाविषै प्रवेश करते भए वे दोऊ योधा महा कोपके प्राप्त भए अति शीघ्र है परावर्त जिनका परसेनारूप समुद्रमें क्रीडा करते सब ओर परसेनाका निपात करते भए जैसे बिजली का चमत्कार जिस ओर चमके उस ओर चमक उठे तैसे सब ओर मार मार करते भए शत्रुनितैं न सहा जाय पराक्रम जिनका धनुष पकडते बाण चलाते दृष्टि न पडें अर बाणनिकर हते अनेक दृष्टि पडें ना-

नाप्रकारके क्रूर बाण तिनकर बाहन सहित परसेनाके अनेक योधा पीडे पृथिवी दुर्गम्य होय गई एक निमिषमें पृथुकी सेना भागी जैसे सिंहके त्राससे मदोन्मत्त गजनिके समूह भागें एक क्षणमात्रमें पृथुकी सेनारूप नदी लवणांकुशरूप सूर्य तिनके बाणरूप किरणानिकर शोकको प्राप्त भई केयक मारे पडे केयक भयतैं पीडित होय भागे, जैसे आकके फूल उडे उडे फिरैं । राजा पृथु सहायरहित खिन्न होय भागनेको उद्यमी भया तब दोऊ भाई कहते भए—हे पृथु ! हम अज्ञात कुल शील हमारा कुल कोऊ जाने नाहीं तिन पै भागता तू लज्जावान् न होय है तू खडा रह, हमारा कुल शील तोहि बाणनिकरि बतावैं, तब पृथु भागता हुता सो पीछा फिर हाथ जोड नमस्कारकर स्तुति करता भया तुम महा धीरवीर हो मेरा अज्ञानताजनित दोष क्षमा करहु मैं मूर्ख तिहारा माहात्म्य अब तक न जाना हुता महा धीरवीरनिका कुल, या सामंतताहीतैं जाना जाय है कछु वाणीके कहेसैं न जाना जाय है सो अब मैं निसंदेह भया । वनके दाहकूं समर्थ जो अग्नि सो तेजहीतैं जानी जाय है सो आप परम धीर महाकुलविषै उपजे हमारे स्वामी हो महाभाग्यके योग्य तिहारा दर्शन भया तुम सबको मन वांछित सुखके दाता हो या भांति पृथुने प्रशंसा करी ॥

तब दोऊ भाई नीचे होय गये अर क्रोध मिटगया शांतमन अर शांतमुख होय गये वज्रजंघ कुमारनिके समीप आया अर सब राजा आये कुमारानिके अर पृथुके प्रीति भई जे उत्तम पुरुष हैं वे प्रणाममात्र ही करि प्रसन्नताको प्राप्त होय हैं जैसे नदी का प्रवाह नम्रीभूत जे बेल तिनको न उपाडै अर जे महावृक्ष नम्रीभूत नाहीं तिनको उपाडै फिर राजा वज्रजंघ को अर दोऊकुमारानिको पृथु, नगर में लेगया, दोऊ कुमार आनंदके कारण । मदनांकुश को अपनी कन्या कनकमाला महाविभूतिसहित पृथुने परणाई एक रात्रि यहां रहे फिर यहां दोऊ भाई विचक्षण दिग्विजय करवेको निकसे सुह्यदेश

मगध देश अंगदेश बंगदेश जीत पोदनापुर के राजाको आदि दे अनेक राजा संग लेय लोकाक्ष नगर गए, वातरफ के बहुत देश जीते कुबेरकांत नामा राजा अतिमानी ताहि ऐसा वश कीया जैसे गरुड नागकूं जीते सत्यार्थपनेतें दिन दिन इनकें सेना बढी हजारां राजा वश भए अर सेवा करने लगे फिर लंपाक देश गए वहां करण नामा राजा अतिप्रवल ताहि जीतकर विजयस्थलको गए वहांके राजा सौ भाई तिनकों अवलोकन मात्रतैं ही जीत, गंगा उतर कैलाश की उत्तर दिश गए, वहांके राजा नाना प्रकारकी भेट ले आय मिले झष कुंतल नामा देश तथा सालायं, नांदि नंदन स्यघल शलभ अनल चल भीम, भूतरव, इत्यादि अनेक देशाधिपतिनिको वशकर सिंधु नदीके पार गये समुद्रके तटके राजा अनेकनिको नमाये अनेक नगर अनेक खेट अनेक अटंव अनेक देश वश कीये भीरु देश यवन कच्छ चारव त्रजट नट सक्र केरल नेपाल मालव अरल सर्वरत्रिशिर पार शैल गोशाल कुसीनर सूरपारक सनर्त विधि शूरसेन वाह्लीक उलूक कोशल गांधार सौवीर अन्ध्र काल कलिंग इत्यादि अनेक देश वश कीये कैसे हैं देश जिनविषै नाना प्रकारकी भाषा अर वस्त्रानिका भिन्न भिन्न पहराव अर जुदे २ गुण नाना प्रकारके रत्न अनेक जातिके वृक्ष जिनविषै अर नाना प्रकार स्वर्ण आदि धनके भरे।

कैयक देशनिके राजा प्रतापहीतैं आय मिले कैयक युद्धविषै जीति वश कीये, कैयक भाग गए बडे बडे राजा देशपति अति अनुरागी होय लवणांकुशके आज्ञाकारी होते भए इनकी आज्ञा प्रमाण पृथिवीविषै विचरें। वे दोनों भाई पुरुषोत्तम पृथिवीको जीत हजारा राजानिके शिरोमणि होते भए सबनिको वशकर लार लीए नानाप्रकारकी सुन्दर कथा करते सबका मन हरते पुण्डरीकपुरको उद्यमी भए। वज्रजंघ लार ही है अति हर्षके भरे अनेक राजानिकी अनेकप्रकार भेंट आई सो महाविभूतिको लीये अतिसेना कर मंडित पुण्डरीकपुरके समीप आए सीता सतखणे महिल चढी देखे है राजलोककी अनेक राणी

समीप हैं अर उत्तम सिंहासन पर तिष्ठे हैं दूरसे अति सेनाकी रजके पटल उठे देख सखीजनको पूछती भई—यह दिशाविषै रजका उडाव कैसा है तब तिन कही—हे देवी सेनाकी रज है जैसे जलविषै मकर किलोल करें तैसे सेनाविषै अश्व उछलते आवै हैं हे स्वामिनि! ये दोनों कुमार पृथिवी वशकर आए या भांति सखीजन कहे हैं अर बधाई देनहारे आए नगरकी अति शोभा भई लोकनिके अति आनंद भया निर्मल ध्वजा चढाई समस्त नगर सुगंधकर छांटा अर वस्त्र आभूषणनिकर शोभित कीया दरवाजेपर कलश थापे सो कलश पल्लवनिकरि ढके अर ठौर २ बंदनमाला शोभायमान दिखती भई अर हाट बाजार पांटवरादि वस्त्रकर शोभित भए जैसी श्रीराम लक्ष्मणके आए अयोध्याकी शोभा भई हुती तैसेही पुंडरीकपुरकी शोभा कुमारनिके आएसे भई। जादिन महाविभूतिसूं प्रवेश किया तादिन नगरके लोगनिको जो हर्ष भया सो कहिवेमें न आवै दोऊ पुत्र कृतकृत्य तिनको देखकर सीता आनन्दके सागरविषै मग्न भई दोऊ वीर महा धीर आयकर हाथ जोड माताको नमस्कार करते भये सेनाकी रजकर धूसरा है अंग जिसका, सीताने पुत्रनिको उरसे लगाय माथे हाथ धरा माताको अति आनन्द उपजाय दोऊ कुमार चांद सूर्यकी न्याई लोकविषैं प्रकाश करते भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लवणांकुशका दिग्विजय वर्णन करनेवाला एकसौएकवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०१ ॥

अथानन्तर ये उत्तम मानव परम ऐश्वर्यके धारक प्रबल राजानि पर आज्ञा करते सुखसूं तिष्ठें एक दिन नारदने कृतान्तवक्रको पूछी कि तू सीताको कहां मेल आया, तब ताने कही कि सिंहनाद अटवी विषै मेली सो यह सुनकर अति व्याकुल होय ढूंढता फिरे हुता सो दोऊ कुमार वनक्रीडा करते देख, तब

नारद इनके समीप आया कुमार उठकर सन्मान करते भये नारद इनको विनयवान देख बहुत हर्षित भया अर असीस दई जैसे राम लक्ष्मण नरनाथके लक्ष्मी है तैसी तुम्हारे होओ। तब ये पूछते भये कि हे देव! राम लक्ष्मण कौन हैं, अर कौन कुलविषै उपजे हैं, अर कहा उनविषै गुण हैं अर कैसा तिनका आचरण है तब नारद क्षण एक मौन पकड कहते भये—हे दोऊ कुमारो कोई मनुष्य भुजानिकर पर्वतको उखाडै अथवा समुद्रको तिरै तौहू राम लक्ष्मणके गुण कह न सकै अनेक वदननिकर दीर्घ काल तक तिनके गुण वर्णन करै तौ भी राम लक्ष्मणके गुण कह न सकें तथापि मैं तिहारे वचनसे किंचित्मात्र वर्णन करूं हूं तिनके गुण पुण्यके वढावनहारे हैं।

अयोध्यापुरीविषै राजा दशरथ होते भये दुराचाररूप इन्धनके भस्म करवेको अग्नि समान, अर इक्ष्वाकु वंश रूप आकाशविषै चन्द्रमा महा तेजोमय सूर्य समान सकल पृथिवीविषै प्रकाश करते अयोध्याविषै तिष्ठै वे पुरुषरूप पर्वत तिनकरि कीर्तिरूप नदी निकसी, सो सकल जगतकों आनन्द उपजावती समुद्र पर्यन्त विस्तारको धरती भई ता दशरथ भूपातिके राज्य भारके धुरंधरही चार पुत्र महा गुणवान भए एक राम दूजा लक्ष्मण तीजा भरत चौथा शत्रुघ्न तिनविषै राम अति मनोहर सर्वशास्त्रके ज्ञाता पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो छोटे भाई लक्ष्मणसहित अर जनककी पुत्री जो सीता ता सहित पिताकी आज्ञा पालवे निमित्त अयोध्याकों तज पृथिवीविषै विहार करते दण्डक वनविषै प्रवेश करते भए। सो स्थानक महाविषम जहां विद्याधरनिके गम्यता नाहीं खरदूषण ते संग्राम भया रावणने सिंहनाद किया ताहि सुनकर लक्ष्मणकी सहाय करनेको राम गया पीछेसूं सीताको रावण हरलेगया तब राम से सुग्रीव हनूमान विराधित आदि अनेक विद्याधर भेले भये रामके गुणनिके अनुरागकरि वशीभूत है हृदय जिनका सो विद्याधरनिको लेयकर राम लंकाको गये रावणको जीत सीताको लेय अयोध्या आये स्वर्गपुरी

समान अयोध्या विद्याधरनिने बनाई तहां राम लक्ष्मण पुरुषोत्तम नागेन्द्र समान सुखसे राज्य करें रामको तुम अब तक कैसे न जाना जाके लक्ष्मणसा भाई ताके हाथ सुदर्शन चक्र सो आयुध जाके एक एक रत्नकी हजार हजार देव सेवा करें सात रत्न लक्ष्मणके अर चार रत्न रामके जाने प्रजाके हित निमित्त जानकी तजी ता रामको सकल लोक जानें ऐसा कोई पृथिवीविषै नाहीं जो रामको न जाने। या पृथिवी की कहा बात ? स्वर्गविषै देवानिके समूह रामके गुण वर्णन करें हैं।

तब अंकुशने कही—हे प्रभो ! रामने जानकी काहे तजी सो वृत्तांत मैं सुना चाहूं हूं तब सीताके गुणनिकर धर्मानुरागमें है चित्त जाका ऐसा नारद सो आंसू डार कहता भया हे कुमार हो ! वह सीता सती महा निर्मल कुलविषै उपजी शीलवंती गुणवंती पतिव्रता श्रावकके आचारविषै प्रवीण रामकी आठ हजार राणी तिनकी शिरोमणि लक्ष्मी कीर्ति धृति लज्जा तिनकों अपनी पवित्रतातैं जीतकर साक्षात् जिनवाणी तुल्य, सो कोई पूर्वोपार्जित पापके प्रभावकर मूढलोक अपवाद करते भये तातैं रामने दुखित होय निर्जन वनविषै तजी खोटे लोक तिनकी वाणी सोई भई जेठके सूर्यकी किरण ताकर तप्तायमान वह सती कष्टको प्राप्त भई महा सुकुमार जाविषै अल्प भी खेद न सहारा पडे मालतीकी माला दीपके आतापकर मुरझाय सो दावानलका दाह कैसे सहार सके, महा भीम वन जाविषै अनेक दुष्ट जीव तहां सीता कैसे प्राणनिको धरे, दुष्ट जीवनिकी जिह्वा भुजंग समान निरपराध प्राणीनिको क्यूं डसे ? शुभ जीवनिकी निन्दा करते दुष्टनिके जीभके सो टूक क्यूं न होवें वह महा सती पतिव्रतानिकी शिरोमणि पटुता आदि अनेक गुणनिकर प्रशंसायोग्य अत्यन्त निर्मल महा सती ताकी जो लोक निंदा करें सो या भव अर परभवविषै दुखको प्राप्त होय ऐसा कहकर शोकके भारकर मौन गह रहा विशेष कछू कह न सका सुनकर अंकुश बोले—हे स्वामी भयंकर वनविषै रामने सीताको तजते भला न किया। यह कुलवंतोंकी रीति

नाहीं है लोकापवाद निवेरवेके और अनेक उपाय हैं ऐसा अविवेकका कार्य ज्ञानवंत क्यों करें। अंकुशने तो यही कही अर अनंगलवण बोला यहांसूं अयोध्या केतीक दूर है?

तब नारद कही यहांसे एकसौ साठ योजन है जहां राम विराजै हैं तब दोऊ कुमार बोले हम राम लक्ष्मणपर जावेंगे या पृथ्वीविषैं ऐसा कौन जाकी हम आगे प्रबलता, नारदसों यह कही अर वज्रजंघसे कही—हे मामा ! सूझ देश सिंधु देश कलिंग देश इत्यादि देशनिके राजावोंको आज्ञापत्र पठावहु जो संग्रामका सब सरंजाम लेकर शीघ्रही आवें हमारा अयोध्याकी तरफ कूंच है अर हाथी समारो मदोन्मत्त केते अर निर्मद केते अर घोडे वायु समान है वेग जिनका सो संग लेकर अर जे योधा रणसंग्रामविषै विख्यात कभी पीठ न दिखावें तिनको लार लेवो, सब शस्त्र सम्हारो वक्तरनिकी मरम्मत करावहु अर युद्धके नगारे दिवावहु ढोल बजावहु शंखनिके शब्द करावहु सब सामंतोंको युद्धका विचार प्रगट करहु यह आज्ञाकर दोऊ वीर मनविषै युद्धका निश्चयकर तिष्ठे मानों दोऊ भाई इन्द्र ही हैं देवनि समान जे देशपति राजा तिनको एकत्र करिवेको उद्यमी भए तब राम लक्ष्मणपर कुमारनिकी असवारी सुन सीता रुदन करती भई अर सीताके समीप नारदको सिद्धार्थ कहता भया यह अशोभन कार्य तुम कहा आरंभा रणविषैं उद्यम करिवेका है उत्साह जिनके ऐसे तुम सो पिता अर पुत्रनिविषै क्यों विरोधका उद्यम किया अब काहू भांति यह विरोध निवारो, कुटुम्ब भेद करना उचित नाहीं तब नारद कही मैं तो ऐसा कछू जान्या नाहीं इन विनय किया मैं आशीस दई कि तुम राम लक्ष्मणसे होवो इनने सुनकर पूछी राम लक्ष्मण कौन? मैं सब वृत्तांत कहा अब भी तुम भय न करो सब नीके ही होयगा अपना मन निश्चल करहु कुमारनि सुनी कि माता रुदन करे है तब दोऊ पुत्र माताके पास आय कहते भए हे मात! तुम रुदन क्यों करो हो सो कारण कहो तिहारी आज्ञाको कौन लोपे असुन्दर वचन कौन कहे ता दुष्टके

प्राण हरें ऐसा कौन है जो सर्पकी जीभतें क्रीडा करे ऐसा कौन मनुष्य अर कौन देव जो तुमको असाता उपजावे हे मातः! तुम कौनपर कोप किया है जापर तुम कोप करो ताका जानिये आयुका अन्त आया है हमपर कृपाकर कोपका कारण कहहु या भांति पुत्रनि विनती करी तब माता आंसू डार कहती भई हे पुत्र! मैं काहू पर कोप न किया न मुझे काहूने असाता दई तिहारा पितासे युद्धका आरंभ सुन मैं दुखित भई रुदन करूं हूं। गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक! तब पुत्र मातासे पूछते भये हे माता! हमारा पिता कौन? तब सीता आदिसे लेय सब वृत्तांत कहा—रामका बंश अर अपना बंश विवाहका वृत्तांत अर बनका गमन अपना रावणकर हरण अर आगमन जो नारदने वृत्तांत कहा हुता सो सब विस्तारसूं कहा कछु छिपाय न राखा अर कही तुम गर्भविषे आए तब ही तिहारे पिताने लोकापवादका भयकर मुझे सिंहनाद अटवीमें तजी तहां मैं रुदन करती हुती सो राजा वज्रजंघ हाथी पकडने गया हुता सो हाथी पकड बाहुडे था मोहि रुदन करती देखी सो यह महा धर्मात्मा शीलवन्त श्रावक मोहि महा आदरसूं ल्याया बडी बहिनका आदर जनाया अर सत् सन्मानतें यहां राखी। मैं भाई भामंडल समान याका घर जाना तिहारा यहां सन्मान भया तुम श्रीरामके पुत्र हो राम महाराजाधिराज हिमाचल पर्वत सूं लेय समुद्रांत पृथिवीका राज्य करे हैं जिनके लक्ष्मणसा भाई महाबलवान् संग्रामविषे निपुण है न जानिये नाथकी अशुभ वार्ता सुनूं अक तिहारी अथवा देवरकी तातैं आर्तचित्त भई मैं रुदन करूं हूं अर कोऊ कारण नाहीं तब सुनकर पुत्र प्रसन्न वदन भए अर मातासे कहते भए हे माता! हमारा पिता महा धनुष धारी लोकविषै श्रेष्ठ लक्ष्मीवान् विशाल कीर्तिका धारक है अर अनेक अद्भुत कार्य किए हैं परंतु तुमको वनविषैं तजी सो भला न किया तातैं हम शीघ्रही राम लक्ष्मणका मानभंग करेंगे तुम विषाद मत करहु तब सीता कहती भई हे पुत्र हो! वे तिहारे गुरुजन हैं उनसूं विरोध योग्य

नाहीं। तुम चित्त सौम्य करहु। महा विनयवन्त होय जाय कर पिताको प्रणाम करहु यह ही नीतिका मार्ग है॥

तब पुत्र कहते भए हे माता! हमारा पिता शत्रुभावको प्राप्त भया हम कैसे जाय प्रणाम करें अर दीनताके वचन कैसे कहें हम तो माता तिहारे पुत्र हैं तातैं रण संग्रामविषै हमारा मरण होय तो होवो परन्तु योधानिसे निन्द्य कायर वचन तो हम न कहें, यह वचन पुत्रनिके सुन सीता मौन पकड रही परन्तु चित्तमें अति चिन्ता है दोऊ कुमार स्नानकर भगवानकी पूजा कर मंगल पाठ पढ सिद्धनिको नमस्कार कर माताको धीर्य वन्धाय प्रणाम कर दोऊ महा मंगलरूप हाथीपर चढे मानों चांद सूर्य गिरिके शिखर तिष्ठे हैं अयोध्या ऊपर युद्धको उद्यमी भए जैसे राम लक्षमण लंका ऊपर उद्यमी भए हुते इनका कूच सुन हजारां योधा पुण्डरीकपुरसे निकसे, सब ही योधा अपना अपना हल्ला देते भए वह जाने मेरी सेना अच्छी दीखे वह जाने मेरी, महाकटक संयुक्त नित्य एक योजनका कूच करें सो पृथिवीकी रक्षा करते चले जांय हैं किसीका कछु उजाडें नाहीं। पृथिवी नानाप्रकारके धान्यकरि शोभायमान है कुमारनिका प्रताप आगे आगे बढता जाय है मार्गके राजा भेट दे मिले हैं, दस हजार वेलदार कुदाल लिए आगे आगे चले जाय हैं अर धरती ऊंची नीचीको सम करें हैं अर कुल्हाडे हैं हाथविषै जिनके वे भी आगे आगे चले जाय हैं अर हाथी ऊंट भैंसा बलद खचर खजानेके लदे जाय हैं, मंत्री आगे आगे चले जाय हैं अर प्यादे हिरणकी न्याईं उछलते जाय हैं अर तुरंगानिके असवार अति तेजीसे चले जाय हैं तुरंगनिकी हींस होय रही है अर गजराज चले जाय हैं जिनके स्वर्णकी सांकल अर महा घंटानिका शब्द होय है अर जिनके कानोंपर चमर शोभे हैं अर शंखनिकी ध्वनि होय रही है अर मोतिनिकी झालरी पानीके बुदबुदा समान अत्यन्त सोहे हैं अर सुन्दर हैं आभूषण जिनके महा उद्धत जिनके उज्वल दांत-

निके स्वर्ण आदिके बन्ध बन्धे हैं अर रत्न स्वर्ण आदिककी माला तिनसे शोभायमान चलते पर्वत समान नानाप्रकारके रंगसूं रंगे अर जिनके मद झरे हैं अर कारी घटा समान श्याम प्रचण्ड वेगको धरें जिन पर पाखर परी हैं नानाप्रकारके शस्त्रनिकरि शोभित हैं अर गर्जना करे हैं अर जिन पर महादीप्ति के धारक सामन्त लोक चढे हैं अर महावतनिने अति सिखाये हैं अपनी सेनाका अर परसेनाका शब्द पिछाने हैं सुन्दर है चेष्टा जिनकी, अर घोडानिके असवार वखतर पहिरे खेट नामा आयुधको धरे वरछी है जिनके हाथमें घोडानिके समूह तिनके खुरनिके घातकरि उठी जो रज ताकरि आकाश व्याप्त होय रहा है ऐसा सोहे है मानों सुफेद बादलनिसे मंडित है अर पियादे शस्त्रनिके समूहकरि शोभित अनेक चेष्टा करते गर्वसे चले जाय हैं वह जाने मैं आगे चलूं वह जाने मैं, अर शयन आसन तांबूल सुगंध माला महामनोहर वस्त्र आहार विलेपन नानाप्रकारकी सामग्री वटती जाय है ताकरि सवही सेनाके लोक सुखरूप हैं काहूको काहु प्रकारका खेद नाहीं अर मजल मजल पै कुमारनिकी आज्ञाकरि भले भले मनुष्यनिको लोक नानाप्रकारकी वस्तु देवे हैं उनको यही कार्य सौंपा है सो बहुत सावधान हैं नानाप्रकारके अन्न जल मिष्टान्न लवण घृत दुग्ध दही अनेक रस भांति भांति खानेकी वस्तु आदरसो देवें हैं, समस्त सेनामें कोई दीन बुभुक्षित तृषातुर कुवस्त्र मलिन चिन्तावान दृष्टि नाहीं पडे है । सेनारूप समुद्रमें नए नारी नानाप्रकारके आभरण पहिरे सुन्दर वस्त्रनिकर शोभायमान महा रूपवान अति हर्षित दीखें। या भांति महा विभूति कर मण्डित सीताके पुत्र चले चले अयोध्याके देशविषै आये, मानों स्वर्गलोकमें इंद्र आए जो देशमें यव गेहूं चावल आदि अनेक धान्य फल रहे हैं अर पौंडे सांठेनिके वाडे ठौर ठौर शोभे हैं । पृथिवी अन्न जल तृणकर पूर्ण है अर जहां नदीनिके तीर हू मुनिके समूह क्रीडा करे हैं अर सरोवर कमलनिके शोभायमान हैं अर पर्वत नानाप्रकारके पुष्पनिकर सुगंधित होय रहे हैं अर गीतनि-

की ध्वनि ठौर ठौर होय रही है अर गाय भैंस बलधानिके समूह विचर रहे हैं अर ग्वालणी बिलोवणा बिलोवे हैं, जहां नगरनि सारिखे नजीक नजीक ग्राम हैं अर नगर ऐसे शोभे हैं मानों सुरपुरही है। महा तेजकर युक्त लवणांकुश देशकी शोभा देखते अति नीतिसे आये काहूको काहुही प्रकारका खेद न भया हाथिनिके मद झरिबे कर पंथमें रज दब गई, कीच होय गयी अर चंचल घोडनिके खुरानिके घातकर पृथिवी जर्जरी होय गई। चले चले अयोध्याके समीप आए दूरसे सन्ध्याके बादलानिके रंग समान अति सुन्दर अयोध्या देख वज्रजंघको पूछी—हे माम! यह महा ज्योतिरूप कौनसी नगरी है तब वज्रजंघने निश्चयकर कही—हे देव! यह अयोध्या नगरी है जाके स्वर्णमई कोट तिनकी यह ज्योति भासै है या नगरीमें तिहारा पिता बलदेवस्वामी विराजे हैं जाके लक्षमण अर शत्रुघन भाई या भांति वज्रजंघसे कही अर दोऊ कुमार शूरवीरताकी कथा करते सुखसे आय पहुंचे कटकके अर अयोध्याके बीच सरयू नदी रही दोऊ भाईनिके यह इच्छा कि शीघ्र ही नदी उतर नगरी लेवें जैसे कोई मुनि शीघ्रही मुक्त हूवा चाहै ताहि मोक्षकी आशारूप नदी यथाख्यात चारित्र होने न देय आशारूप नदीको तिरै तब मुनि मुक्त होय तैसे सरयू नदीके योगसे शीघ्रही नदीतें पार उतर नगरीमें न पहुंच सके तब जैसे नन्दन बनमें देवनिकी सेना उतरे तैसे नदीके उपवनादिमें ही कटकके डेरा कराए॥

अथानन्तर परसेना निकट आई सुन रामलक्षमण आश्चर्यको प्राप्त भये अर दोनों भाई परस्पर बतलावें ये कोई युद्धके अर्थ हमारे निकट आए हैं सो मुवा चाहे हैं वासुदेवने विराधितको आज्ञा करी—युद्धके निमित्त शीघ्र ही सेना भेली करो ढील न होय जिन विद्याधरोंके कपियों की ध्वजा अर बैलोंकी ध्वजा अर हाथियों की ध्वजा सिंहोंकी ध्वजा इत्यादि अनेक भांति की ध्वजा तिनको बेग बुलावो सो बिराधितने कही जो आज्ञा होयगी सोई होयगा उसही समय सुग्रीवादिक अनेक राजावों

पर दूत पठाये सो दूत के देखवे मात्रही सब विद्याधर बड़ी सेनासे अयोध्या आये । भामंडल भी आया सो भामण्डलको अत्यन्त आकुलता देख शीघ्र ही सिद्धार्थ अर नारद जाय कर कहते भये–यह सीता के पुत्र हैं सीता पुण्डरीकपुरमें है तब यह बात सुनकर बहुत दुखित भया अर कुमारोंके अयोध्या आयवे पर आश्चर्य को प्राप्त भया अर इनका प्रताप सुन हर्षित भया मनके वेग समान जो विमान उसपर चढकर परिवार सहित पुण्डरीकपुर गया । बहिनसे मिला सीता भामण्डलको देख अति मोहित भई आसूं नाखती संती विलाप करती भई अर अपने ताईं घरसे काढनेका अर पुण्डरीकपुर आयवे का सर्व वृत्तान्त कहा तब भामण्डल बहिनको धीर्य बंधाय कहता भया–हे बहिन ! तेरे पुण्यके प्रभावसे सब भला होयगा अर कुमार अयोध्या गये सो भला न कीया, जायकर बलभद्र नारायणको क्रोध उपजाया रामलक्षमण दोनों भाई पुरुषोत्तम देवों से भी न जीते जांय महा योधा हैं कुमारों के अर उनके युद्ध न होय सो ऐसा उपाय करें इसलिये तुम हू चलो ।

तब सीता पुत्रोंकी बधू संयुक्त भामंडलके विमान विषै बैठ चली । राम लक्षमण महा क्रोधकर रथ घोटक गज पियादे देव विद्याधर तिनकर मण्डित समुद्र समान सेना लेय बाहिर निकसे अर घोडानिके रथ चढा शत्रुघ्न महा प्रतापी मोतिनिके हार कर शोभायमान है वक्षस्थल जिसका सो रामके संग भया अर कृतांतवक्र सब सेनाका अग्रेसर भया जैसे इन्द्रकी सेनाका अग्रगामी हृदयकेशी नामा देव होय उसका रथ अत्यंत सोहता भया देवनिके विमान समान जिसका रथ सो सेनापति चतुरंग सेना लिये अतुलबली अतिप्रतापी महाज्योतिको धरे धनुष चढाय वाण लिये चला जाय है, जिसकी श्याम ध्वजा शत्रुवोंसे देखी न जाय उसके पीछे त्रिमूर्ध्न वह्निशिख सिंहविक्रम दीर्घभुज सिंहोदर सुमेरु बालखिल्य रौद्रभूत जिसके अष्टापदोंके रथ वज्रकर्ण पृथु मारदमन मृगेंद्रदव इत्यादि पांचहजार नृपति कृतांतवक्रके

संग अग्रगामी भए वन्दीजन बखाने हैं विरद जिनके अर अनेक रघुवंशी कुमार देखे हैं अनेक रण जिन्होंने शस्त्रोंपर है दृष्टि जिनकी युद्धका है उत्साह जिनके, स्वामी भक्तिविषै तत्पर महाबलवन्त धरती को कंपाते शीघ्रही निकसे कईएक नानाप्रकारके रथोंपर चढे कईयक पर्वत समान ऊंचे कारी घटा समान हाथीनिपर चढे, कईयक समुद्रकी तरंग समान चंचल तुरंग तिनपर चढे । इत्यादि अनेक वाहनों पर चढे युद्धको निकसे वादित्रोंके शब्दकर करी है व्याप्त दशोंदिशा जिन्होंने बखतर पहिरे टोप धरे क्रोधकर संयुक्त है चित्त जिनका, तब लव अंकुश परसेनाका शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए वज्रजंघको आज्ञा करी, कुमारकी सेनाके लोक युद्धके उद्यमी हुते ही । प्रलयकालकी अग्नि समान महाप्रचंड अंग देश वंगदेश नेपाल बर्बर पौंड्र मागध पारसैल स्यंघल कालिंग इत्यादि अनेक देशनिके राजा रत्नांकको आदि दे महा बलवंत ग्यारह हजार राजा उत्तम तेजके धारक युद्धके उद्यमी भए दोनों सेनानिका संघट्ट भया दोनों सेनानिके संगमविषै देवनिको असुरनिको आश्चर्य उपजे ऐसा महा भयंकर शब्द भया जैसा प्रलयकालका समुद्र गाजै परस्पर यह शब्द होते भए क्या देख रहा है प्रथम प्रहार क्यों न करै मेरा मन तोपर प्रथम प्रहार करिवेपर नाहीं तातैं तू ही प्रथम प्रहारकर अर कोई कहे है एक डिग आगे होवो जो शस्त्र चलाऊं कोई अत्यन्त समीप होय गये तब कहे हैं खञ्जर तथा कटारी हाथ लेवो निपट नजीक भए बाणका अवसर नाहीं । कोई कायरको देख कहे हैं तू क्यों कांपे है मैं कायरको न मारूं तू परे हो आगे महा योधा खडा है उससे युद्ध करने दे कोई वृथा गाजे है उसे सामन्त कहे है हे क्षुद्र ! कहा वृथा गाजे है गाजनेमें सामन्तपना नाहीं जो तोविषै सामर्थ्य है तो आगे आव, तेरी रणकी भूख भगाऊं इस भांति योधानिमें परस्पर वचनालाप होय रहे हैं तरवार वहे हैं भूमिगोचरी विद्याधर सब ही आए हैं भामण्डल पवनवेग वीर मृगांक विद्युद्ध्वज इत्यादि बडे २ राजा विद्याधर बडी सेनाकर युक्त महारण

विषै प्रवीण सो लवण अंकुशके समाचार सुन युद्धसे पराङ्मुख शिथिल होय गये अर सब बातोंविषै प्रवीण हनूमान सो भी सीताके पुत्र जान युद्धसे शिथिल होय रहा अर विमानके शिखरविषै आरूढ जानकीको देख सब ही विद्याधर हाथ जोड सीस निवाय प्रणामकर मध्यस्थ होय रहे सीता दोनों सेना देख रोमांच होय आई, कांपे है अंग जाका। लवण अंकुश लहलहाटकरे हैं ध्वजा जिनकी राम लक्ष्मणसे युद्धके उद्यमी भए। रामके सिंहकी ध्वजा लक्ष्मणके गरुडकी सो दोनों कुमार महायोधा राम लक्ष्मणसे युद्ध करते भये। लवण तो रामसे लडे अर अंकुश लक्ष्मणसे लडे सो लवने आवते ही श्रीरामकी ध्वजा छेदी अर धनुष तोडा तब राम हंसकर और धनुष लेयवेको उद्यमी भया। इतनेविषै लवने रामका रथ तोडा तब राम और रथ चढ प्रचंड है पराक्रम जिसका क्रोधकर भृकुटी चढाय ग्रीष्मके सूर्य समान तेजस्वी जैसे चमरेंद्रपर इंद्र जाय तैसे गया तब जानकीका नन्दन लवण युद्धकी पाहुनगति करनेको रामके सन्मुख आया रामके अर लवके परस्पर महायुद्ध भया। वाने वाके शस्त्र छेदे वाने वाके जैसा युद्ध राम अर लवका भया तैसा ही अंकुश अर लक्ष्मणका भया। या भांति परस्पर दोनों युगल लडे तब योधा भी परस्पर लडे घोडोंके समूह रणरूप समुद्रकी तरंग समान उच्छलते भये कोई एक योधा प्रतिपक्षीको टूटे बखतर देख दयाकर मौन गह रहा अर कईएक योधा मने करते परसेनाविषै पैठे सो स्वामीका नाम उचारते परचक्रसे लडते भये कईएक महाभट माते हाथियोंसे भिडते भये कईएक हाथियोंके दांत रूप सेजपर रणनिद्रा सुखसे लेते भये काहू एक महाभटका तुरंग काम आया सो पियादा ही लडने लगा काहूके शस्त्र टूट गये तो भी पीछे न होता भया हाथोंसे मुष्टि प्रहार करता भया अर कोई एक सामन्त बाण वाहने चुक गया उसे प्रतिपक्षी कहता भया बहुरि चलाय सो लज्जा कर न चलावता भया अर कोई एक निर्भयचित्त प्रतिपक्षीको शस्त्ररहित देख आप भी शस्त्र तज भुजावोंसे युद्ध करता भया

ते योधा बडे दाता रण संग्रामविषै प्राण देते भये परंतु पीठ न देते भये जहां रुधिरकी कीच होय रही है सो रथोंके पहिये डूब गये हैं सारथी शीघ्र ही नही चला सकै हैं। परस्पर शस्त्रोंके संपातकर अग्नि पड रही है अर हाथियोंकी सूंडके छांटे उछले हैं। अर सामन्तोंने हाथियोंके कुम्भस्थल विदारे हैं सामन्तोंके उरस्थल विदारे हैं हाथी काम आय गये हैं तिनकर मार्ग रुक रहा है अर हाथियोंके मोती विखर रहे हैं वह युद्ध महा भयंकर होता भया जहां सामन्त अपना सिर देयकर यशरूप रत्न खरीदते भए जहां मूर्छितपर कोई घात नहीं करै अर निर्बल पर घात न करै सामंतोंका है युद्ध जहां महा युद्धके करणहारे योधा जिनके जीवनेकी आशा नहीं क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजै तैसा होय रहा है शब्द जहां सो वह संग्राम समरस कहिये समान रस होता भया ॥

भावार्थ—न वह सेना हटी न वह सेना हटी योधानिमें न्यूनाधिकता परस्पर दृष्टि न पडी। कैसे हैं योधा ? स्वामीविषै हैं परम भक्ति जिनकी अर स्वामीने आजीवका दई थी उसके बदले यह जीव दिया चाहे हैं प्रचण्ड रणकी है खाज जिनके सूर्य समान तेजको धरे संग्रामके धुरंधर होते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लवणांकुशका
लक्ष्मणसे युद्ध वर्णन करनेवाला एकसौदोवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०२ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! अब जो वृत्तान्त भया सो सुनो अनंगलवणके तो सारथी राजा वज्रजंघ अर मदनांकुशके राजा पृथु अर लक्ष्मणके विराधित अर रामके कृतांतवक्र तब श्रीराम वज्रावर्त धनुषको चढायकर कृतांतवक्रसे कहते भए अब तुम शीघ्रही शत्रुवों पर रथ चलावो ढील न करो, तब वह कहता भया हे देव ! देखो यह घोडे नरवीरके बाणनिकर जरजरे होय रहे हैं इनमें

तेज नाहीं मानों निद्राको प्राप्त भए हैं यह तुरंग लोहूकी धाराकर धरतीको रंगे हैं मानों अपना अनुराग प्रभुको दिखावे हैं अर मेरी भुजा इसके बाणनिकर भेदी गई है वक्तर टूट गया है तब श्रीराम कहते भए मेरा भी धनुष युद्ध कर्मरहित ऐसा होय गया है मानों चित्रामका धनुष है अर यह मूसल भी कार्यरहित होय गया है अर दुर्निवार जे शत्रुरूप गजराज तिनको अंकुश समान यह हल सो भी शिथिलताको भजे है शत्रुके पक्षको भयंकर मेरे अमोघशस्त्र जिनकी सहस्र सहस्र यक्ष रक्षा करें वे शिथिल होय गए हैं शस्त्रोंकी सामर्थ्य नाहीं जो शत्रुपर चलें। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! जैसे अनंगलवण आगे रामके शस्त्र निरर्थक होय गये तैसे ही मदनांकुशके आगे लक्ष्मणके शस्त्र कार्यरहित होय गए। वे दोनों भाई तो जानें कि ये रामलक्ष्मण तो हमारे पिता अर पितृव्य (चचा) हैं सो वे तो इनका अंग बचाय शस्त्रच-लावें अर ये उनको जानें नहीं सो शत्रु जान कर शर चलावें लक्ष्मण दिव्यास्त्रकी सामर्थ्य उनपर चलवे की न जान शर शेल सामान्यचक्र खडग अंकुश चलावता भया सो अंकुशने बज्रदण्डकर लक्ष्मणके आयुध निराकरण किए अर रामके चलाए आयुध लवणने निराकरण किए फिर लवणने रामकी ओर शेल चलाया अर अंकुशने लक्ष्मण पर चलाया सो ऐसी निपुणतासे दोनोंके मर्मकी ठौर न लागे सामा-न्य चोट लगी सो लक्ष्मणके नेत्र घूमने लगे विराधितने अयोध्याकी ओर रथ फेरा तब लक्ष्मण सचेत होय कोप कर विराधितसे कहता भया—हे विराधित तैंने क्या किया मेरा रथ फेरा अब पीछा बहुरि श-त्रुका सन्मुख लेवो रणमें पीठ न दीजिए जे शूरवीर हैं तिनको शत्रुके सन्मुख मरण भला परन्तु यह पीठ देना महा निंद्यकर्म शूरवीरोंको योग्य नाहीं। कैसे हैं शूरवीर ? युद्धमें बाणनिकर पूरित है अंग जिनका जे देव मनुष्यनिकर प्रशंसा योग्य वे कायरता कैसे भजें। मैं दशरथका पुत्र रामका भाई वासुदेव पृथिवी विषे प्रसिद्ध सो संग्राममें पीठ कैसे देऊं यह वचन लक्ष्मणने कहे तब विराधितने रथको युद्धके सन्मुख

किया सो लक्ष्मणके अर मदनांकुशके महायुद्ध भया लक्ष्मणने क्रोधकर महाभयंकर चक्र हाथमें लिया चक्र महाज्वालारूप देखा न जाय ग्रीष्मके सूर्य समान सो अंकुश पर चलाया सो अंकुशके समीप जाय प्रभारहित होय गया अर उलटा लक्ष्मणके हाथमें आया वहुरि लक्ष्मणने चक्र चलाया सो पीछे आया या भांति वारवार पीछा आया वहुरि अंकुशने धनुष हाथविषै गहा तव अंकुशको महा तेजरूप देख लक्ष्मणके पक्षके सव सामन्त आश्चर्यको प्राप्त भए तिनको यह वुद्धि उपजी यह महापराक्रमी अर्धचक्री उपजा लक्ष्मणने कोटि शिला उठाई अर मुनिके वचन जिनशासनका कथन और भांति कैसे होय अर लक्ष्मण भी मनविषै जानता भया कि ये वलभद्र नारायण उपजे आप अति लज्जावान होय युद्धकी क्रियासे शिथिल भया ॥

अथानन्तर लक्ष्मणको शिथिल देख सिद्धार्थ नारदके कहेसे लक्ष्मणके समीप आय कहता भया वासुदेव तुमही हो जिनशासनके वचन सुमेरुसें अति निश्चल हैं यह कुमार जानकीके पुत्र हैं गर्भविषै थे तव जानकीको वनमें तजी यह तिहारे अंग हैं तातैं इनपर चक्रादिक शस्त्र न चलें तव लक्ष्मणने दोनों कुमारोंका वृत्तान्त सुन हर्षित होय हाथसे हथियार डार दिए वपतर दूर किया सीताके दुःखकर अश्रुपात डारने लगा अर नेत्र घूमने लगे राम शस्त्र डार वक्तर उतार मोहकर मूर्छित भए, चन्दनसे छांट सचेत किए तव स्नेहके भरे पुत्रानिके समीप चले पुत्र रथसे उतर हाथ जोड सीस निवाय पिताके पायन पडे श्रीराम स्नेहकर द्रवीभूत भया है मन जिनका पुत्रोंको उरसे लगाय विलाप करंत भए आंसुनि कर मेघकासा दिन किया। राम कहे हैं हाय पुत्र हो! मैं मंदवुद्धि गर्भविषै तिष्ठते तुमको सीता सहित भयंकर वनविषै तजे तिहारी माता निर्दोष, हाय पुत्र हो मैं कोई विस्तीर्ण पुण्य कर तुम सारिखे पुत्र पाए सो उदरविषै तिष्ठते तुम भयंकर वनविषै कष्टको प्राप्त भए हाय वत्स हो जो यह वज्रजंघ वनमें न

आवता तो तिहारा मुखरूप चन्द्रमा मैं कैसे देखता, हाय बालक हो इन अमोघ दिव्यास्त्रोंकर तुम न हते गए सो मेरे पुण्यके उदयकर देवोंने सहाय करी हाय मेरे अंगज हो मेरे बाणनिकर बींधे तुम रण-क्षेत्रविषै पडते तो न जानूं जानकी क्या करती सब दुखोंमें घरसे काढनेका बडा दुख है सो तिहारी माता महा गुणवन्ती व्रतवंती पतिव्रता मैं बनमें तजी अर तुमसे पुत्र गर्भविषै सो मैं यह काम बहुत बिना समझे किया अर जो कदाचित् तिहारा युद्धमें अन्यथा भाव भया होता तो मैं निश्चयसे जानूं हूं शोकसे विह्वल जानकी न जीवती। या भांति रामने विलाप किया, बहुरि कुमार विनयकर लक्ष्मणको प्रणाम करते भए लक्ष्मण सीताके शोकसे विह्वल आंसू डारता स्नेहका भरा दोनों कुमारनिको उरसे लगावता भया। शत्रुघन आदि यह वृत्तान्त सुन वहां आए कुमार यथायोग्य विनय करते भए ये उरसों लगाय मिले। परस्पर अति प्रीति उपजी दोनों सेनाके लोक अतिहित कर परस्पर मिले क्योंकि जब स्वामीकूं स्नेह होय तब सेवकोंके भी होय सीता पुत्रोंका माहात्म्य देख अति हर्षित होय विमानके मार्ग होय पीछे पुण्डरीकपुरविषै गई अर भामण्डल विमानसे उतर स्नेहका भरा आंसू डारता भानजोंसे मिला, अतिहर्षित भया अर प्रीतिका भरा हनूमान उरसे लगाय मिला अर बारम्बार कहता भया भली भई भली भई, अर विभीषण सुग्रीव विराधित सबही कुमारनिसे मिले, परस्पर हित संभाषण भया भूमिगोचरी विद्याधर सबही मिले अर देवनिका आगम भया सबोंको आनन्द उपजा राम पुत्रनिको पाय कर अति आनन्दको प्राप्त भए, सकल पृथिवीके राज्यसे पुत्रोंका लाभ अधिक मानते भए, जो रामके हर्ष भया सो कहिवेमें न आवे अर विद्याधरी आकाशविषै आनन्दसे नृत्य करती भईं अर भूमिगोचरिनिकी स्त्री पृथिवीविषैं नृत्य करती भईं अर लक्ष्मण आपको कृतार्थ मानता भया मानों सब लोक जीता हर्षसे फूल गए हैं लोचन जिनके, अर राम मनविषै जानता भया मैं सगर चक्रवर्ती समान हूं अर कुमार

नों भीम अर भगीरथ समान हैं राम वज्रजंघसे अति प्रीति करता भया जो तुम मेरे भामण्डल समान हो अयोध्यापुरी तो पहिले ही स्वर्गपुरी समान थी तो बहुरि कुमारनिके आयवे कर अति शोभायमान स्त्री सहजही शोभायमान होय अर शृंगार कर अति शोभाको पावै, श्रीराम लक्ष्मण-पुत्रों सहित सूर्यकी ज्योतिसमान जो पुष्पक विमान उसविषै विराजे सूर्य समान है की रामलक्ष्मण अर दोऊ कुमार अद्भुत आभूषण पहिरे सो कैसी शोभा बनी है मानों सुखरपर महामेघ विजुरीके चमत्कार सहित तिष्ठा है॥

भावार्थ—विमान तो सुमेरुका शिखर भया अर लक्ष्मण महामेघका स्वरूप भया अर राम तथा ाम के पुत्र विद्युत् समान भये सो ये चढ़कर नगरके बाह्य उद्यान विषै जिनमंदिर हैं तिनके दर्शनको चले सो नगरके कोटपर ठौर ठौर ध्वजा चढी हैं तिनको देखते धीरे धीरे जाय हैं लार अनेक राजा, केई हाथियों पर चढे, केई घोड़ों पर केई रथों पर चढे जाय हैं अर पियादोंके समूह जाय हैं, धनुष वाण इत्यादि अनेक आयुध अर ध्वजा छत्रनिकर सूर्यकी किरण नजर नहीं पडे हैं अर स्त्रीनिके समूह खानिविषै बैठी देखे हैं। लव अंकुशके देखवेका सबनिकूं बहुत कौतूहल है नेत्ररूप अंजुलिनिकर के सुन्दरतारूप अमृतका पान करै हैं सो तृप्त नाहीं होय हैं एकाग्रचित्त भई इनको देखे हैं नगर में नर नारिनिकी ऐसी भीड़ भई काहूके हार कुंडलकी गम्य नाहीं अर नारी जन परस्पर वार्ता करै हैं कोई कहे है—हे माता! टुक मुख इधर कर मोहि कुमारनिके देखिवेका कौतुक है। हे अखण्डकौतुके तूने तो घनी बार लग देखे अब हमें देखने देवो अपना सिर नीचा कर ज्यों हमको दीखे कहा ऊंचा सिरकर रही है, कोई कहे है—हे सखि! तेरे सिरके केश बिखर रहे हैं, सो नीके समार अर कोई कहे है—हे क्षिप्तमानसे कहिये एक ठौर नाहीं चित्त जाका सो तू कहा हमारे प्राणोंको पीड़े है तू न

देखैं यह गर्भवती स्त्री खडी है पीड़ित है कोऊ कहे टुक परे होहु कहा अचेतन होय रही है कुमारोंको न देखने देहै यह दोनों रामदेवके कुमार रामदेवके समीप बैठे अष्टमीके चन्द्रमासमान है ललाट जिनका कोई पूछे है इनमें लवण कौन अर अंकुश कौन यह तो दोनों तुल्यरूप भासे हैं तब कोई कहे है यह लाल बस्त्र पहिरे लवण है। अर यह हरे बस्त्र पहिरे अंकुश है। अहो धन्य सीता महापुण्यवती जिनने ऐसे पुत्र जने अर कोई कहे है धन्य है वह स्त्री जिसने ऐसे बर पाए हैं एकाग्रचित्त भई स्त्री इत्यादि वार्ता करतीं भई इनके देखवेमें है चित्त जिनका, अति भीड भई सो भीडमें कर्णाभरणरूप सर्पकी डाढकर डसे गये हैं कपोल जिनके सो न जानती भई तद्गत है चित्त जिनका काहूकी कांचीदाम जाती रही सो वाहि खबर नहीं काहूके मोंतिनिके हार टूटे सो मोती विखर रहे हैं। मानों कुमार आये सो ये पुष्पांजली बरसें हैं अर केई एकोंको नेत्रों की पलक नहीं लगें है असवारी दूर गई है तोभी उसी अर देखें हैं नगरकी उत्तम स्त्री वेई भई वेल सो पुष्पवृष्टि करती भई सो पुष्पोंकी मकरंदकर मार्ग सुगन्ध होय रहा है श्रीराम अति शोभाकूं प्राप्त भए पुत्रोंसहित बनके चैत्यालयोंका दर्शनकर अपने मन्दिर आये। कैसा है ? मान्दिर महा मंगलकर पूर्ण है ऐसे अपने प्यारे जनोंके आगमका उत्साह सुखरूप ताका वरणन कहां लग करिये पुण्य रूपी सूर्यका प्रकाशकर फूला है मन कमल जिनका ऐसे मनुष्य वेई अद्भुत सुखकूं पावें हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणसूं लवणाकुशका मिलाप वर्णन करनेवाला एकसौ तीनवा पर्व पूर्ण भया॥ १०३ ॥

अथानन्तर विभीषण सुग्रीव हनूमान् मिलकर रामसे विनती करते भये हे नाथ हमपर कृपा करो हमारी विनती मानों जानकी दुःखमें तिष्ठे हैं इसलिये यहां लायवेकी आज्ञा करो, तब राम दीर्घ उष्ण निश्वास नाख क्षण एक बिचारकर बोले, मैं सीताको शील दोषरहित जानूं हूं, वह उत्तम चित्त है परन्तु लोकापवादकर घरसे काढी है अब कैसे बुलाऊं, इसलिये लोकनिको प्रतीति उपजायकर जानकी आवै तब हमारा उनका सहवास होय, अन्यथा कैसे होय इसलिये सब देशनिके राजानिको बुलावो समस्त विद्याधर अर भूमिगोचरी आवें सबनिके देखते सीता दिव्य लेकर शुद्ध होय मेरे घरविषै प्रवेश करे जैसे शची इंद्रके घरविषै प्रवेश करे तब सबने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा तब सब देशनिके राजा बुलाये सो बाल वृद्ध स्त्री परिवार सहित अयोध्या नगरी आये जे सूर्यको भी न देखें घरहीविषै रहैं वे नारी भी आई अर लोकनिकी कहा बात ? जे वृद्ध बहुत वृतान्तके जानने हारे देशविषै मुखिया सब दिशानिसे आए कैयक तुरंगों पर चढे कैयक रथनिपर चढे तथा पालकी हाथी अर अनेक प्रकार असवारिनिपर चढे बडी विभूतिसे आये विद्याधर आकाशके मार्ग होय विमान बैठे आए अर भूमिगोचरी भूमिके मार्ग आये मानों जगत् जंगम होय गया, रामकी आज्ञासे जे अधिकारी हुते तिन्होंने नगरके बाहिर लोकनिके रहनेके लिये डेरे खडे कराए अर महा विस्तीर्ण अनेक महिल बनाये तिनके दृढस्तंभके ऊंचे मंडप उदार झरोखे सुन्दर जाली तिनविषै स्त्रियें भेली अर पुरुष भेले भये, पुरुष यथायोग्य बैठे दिव्यको दिखवेकी है अभिलाषा जिनके जेते मनुष्य आए तिनकी सर्वभांति पाहुनगति राजद्वारके अधिकारियोंने करी, सबनिको शय्या आसन भोजन तांबूल वस्त्र सुगन्ध मालादिक समस्त सामग्री राजद्वारसे पहुंची सबनिकी स्थिरता करी अर रामकी आज्ञासे भामंडल विभीषण हनूमान सुग्रीव बिराधित रत्नजटी यह बडे बडे राजा आकाशके मार्ग क्षणमात्रविषै पुण्डरीकपुर गए सो सब सेना नगरके बाहिर

राख अपने समीप लोगनि सहित जहां जानकी थी वहां आए जय जय शब्दकर पुष्पांजलि चढाय पांयनको प्रणामकर अति विनयसंयुक्त आंगणविषै बैठे, तब सीता आंसू डारती अपनी निंदा करती भई—दुर्जनोंके वचनरूप दावानलकरि दग्ध भये हैं अंग मेरे सो क्षीरसागरके जलकर भी सींचे शीतल न होंय । तब वे कहते भये हे देवि भगवति सौम्य उत्तमे अब शोक तजो अर अपना मन समाधानविषै लावो या पृथिवीविषै ऐसा कौन प्राणी है जो तुम्हारा अपवाद करै ऐसा कौन जो पृथिवीको चलायमान करै अर अग्निकी शिखाकों पीवै अर सुमेरुके उठायवेका उद्यम करै अर जीभकर चांद सूर्यको चाटै ऐसा कोई नाहीं । तुम्हारा गुणरूप रत्नानिका पर्वत कोई चलाय न सके, अर जो तुम सारिखी महा सतीयोंका अपवाद करे तिनकी जीभके हजार टूक क्यों न होवें हम सेवकोंके समूहको भेजकर जो कोई भरत क्षेत्रविषै अपवाद करेंगे उन दुष्टोंका निपात करेंगे अर जो विनयवान तुम्हारे गुणगायवेविषै अनुरागी हैं उनके गृहविषै रत्नवृष्टि करेंगे यह पुष्पक विमान श्रीरामचन्द्रने भेजा है उसमें आनंदरूप होय अयोध्याकी तरफ गमन करो सब देश अर नगर अर श्रीरामका घर तुम विना न सोहै जैसे चन्द्रकला विना आकाश न सोहे अर दीपक बिना मंदिर न सोहे अर शाखा बिना वृक्ष न सोहे हे राजा जनक की पुत्री आज रामका मुखचन्द्र देखो, हे पंडिते पतिव्रते तुमको अवश्य पतिका वचन मानना जब ऐसा कहा तब सीता मुख्य सहेलियोंको लेकर पुष्पक विमानविषै आरूढ होय शीघ्रही संध्याके समय अयोध्या आई सूर्य अस्त होय गया सो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै रात्री पूर्ण करी आगें राम सहित यहां आवती हुती सो बन अति मनोहर देखती हुती सो अब राम बिना रमणीक न भाषा ॥

अथानन्तर सूर्य उदय भया कमल प्रफुल्लित भये जैसे राजाके किंकर पृथिवीविषै बिचरें तैसें सूर्य की किरण पृथिवीमें विस्तरी जैसे दिव्यकर अपवाद नस जाय तैसें सूर्यके प्रताप कर अंधकार दूर भया,

तब सीता उत्तम नारियों कर युक्त रामके समीप चली हथिनी पर चढी मनकी उदासीनता कर हतीगई है प्रभा जिसकी तौभी भद्र परिणामकी धरणहारी अत्यन्त सोहती भई जैसें चन्द्रमाकी कला ताराओं कर मंडित सोहे तैसे सीता सखियोंकर मंडित सोहै सब सभा विनंयसंयुक्त सीताको देख बंदना करते भये यह पापरहित धीरताकी धरणहारी रामकी रमा सभाविषे आई राम समुद्र समान क्षोभको प्राप्त भये लोक सीताके जायवेकर विषादके भरे थे अर कुमारोंका प्रताप देख आश्चर्यके भरे भये अब सीताके आयवे कर हर्षके भरे ऐसे शब्द करते भए हे माता सदा जयवंत होवो नंदो वरधो फूलो फलो धन्य यह रूप धन्य यह धीर्य धन्य यह सत्य धन्य यह ज्योति धन्य यह महानुभावता धन्य यह गंभीरता धन्य निर्मलता ऐसे वचन समस्तही नर नारीनिके मुखसे निकसे आकाशविषे विद्याधर भूमिगोचरी महा कौतुक भरे पलक रहित सीताके दर्शन करते भए । अर परस्पर कहते भए पृथिवीके पुण्यके उदयसे जनकसुता पीछे आई, कैएक तो वहां श्रीरामकी ओर निरखे हैं जैसे इन्द्रकी ओर देव निरखें कैएक रामके समीप बैठे लव अर अंकुश तिनको देख परस्पर कहे हैं ये कुमार रामके सदृश ही हैं अर कैईएक लक्ष-मणकी ओर देखे हैं कैसे हैं लक्ष्मण शत्रुवोंके पक्षके क्षय करिवेको समर्थ अर कई शत्रुघ्नकी ओर कैईएक भामण्डलकी ओर कईएक हनूमानकी ओर कैईएक विभीषणकी ओर कईएक विराधितकी ओर अर कईएक सुग्रीवकी ओर निरखे हैं अर कईएक आश्चर्यको प्राप्त भए सीताकी ओर देखे हैं।

अथानन्तर जानकी जायकर रामको देख आपको वियोग सागरके अन्तको प्राप्त भई मानती भई, जब सीता सभामें आई तब लक्ष्मण अर्घ देय नमस्कार करता भया, अर सब राजा प्रणाम करते भए सीता शीघ्रता कर निकट आवने लगी तब राघव यद्यपि अक्षोभित हैं तथापि सकोप होय मनमें विचारते भये इसे विषम वनमें मेली थी सो मेरे मनकी हरणहारी फिर आई। देखो यह महा ढीठ

है मैं तजी तौभी मोसे अनुराग नहीं छाडे है यह रामकी चेष्टा जान महा सती उदासचित्त होय विचारती भई मेरे वियोगका अन्त नहीं आया मेरा मनरूप जहाज विरहरूप समुद्रके तीर आय फटा चाहे है। ऐसी चिंतासे व्याकुल चित्त भई पगके अंगूठेसे पृथिवी कुचरती भई बलदेवके समीप भामण्डलकी बहिन कैसी सोहे है जैसी इन्द्रके आगे सम्पदा सोहै तब राम बोले–हे सीते! मेरे आगे कहां तिष्ठे है तू परे जा, मैं तेरे देखवेका अनुरागी नाहीं मेरी आंख मध्याह्नके सूर्य अर आशीविष सर्प तिनको देखसके परंतु तेरे तनुको न देख सके हैं तू बहुत मास दशमुखके मन्दिरमें रही अब तोहि घरमें राखना मोहि कहा उचित तब जानकी बोली तुम महा निर्दई चित्त हो तुमने महा पण्डित होयकर भी मूढ लोकनकी न्याईं मेरा तिरस्कार कीया सो कहा उचित मुझे गर्भवतीको जिनदर्शनका अभिलाष उपजा हुता सो तुम कुटिलतासे यात्राका नाम लेय विषम वनमें डारी यह कहां उचित मेरा कुमरण होता अर कुगति जाती याविषै तुमको कहा सिद्ध होता, जो तिहारे मनविषै तजवेकी हुती तो आर्यिकावोंके समीप मेलती होती। जे अनाथ दीन दालिद्री कुटुम्ब रहित महा दुखी तिनको दुख हरिवेका उपाय जिनशासनका शरण है यासमान अर उत्कृष्ट नाहीं। हे पद्मनाभ! तुम करवेमें तो कछू कमी न करी अब प्रसन्न होवो आज्ञा करो सो करूं यह कहकर दुखकी भरी रुदन करती भई। तब राम बोले हे देवि! मैं जानू हूं तिहारा निर्दोषशील है अर तुम निष्पाप अणुव्रतकी धरणहारी मेरी आज्ञाकारिणी हो तिहारे भावनकी शुद्धता मैं भली भांति जानू हूं परंतु ये जगतके लोक कुटिल स्वभाव हैं। इन्होंने वृथा तिहारा अपवाद उठाया सो इनको संदेह मिटे अर इनको यथावत् प्रतीति आवे सो करहु। तब सीताने कही आप आज्ञा करो सो ही प्रमाण जगतविषै जेते प्रकारके दिव्य हैं सो सबकरके पृथिवीका संदेह हरूं हे नाथ! विषोंविषै महाविष कालकूट है जिसे सूंघकर आशीविष सर्प भी भस्म होय जाय सो मैं पीऊं अर अग्निकी

विषम ज्वालाविषे प्रवेश करूं अर जो आप आज्ञा करो सो करूं तब क्षण एक बिचारकर राम बोले अग्नि कुण्डविषे प्रवेश करो, सीता महाहर्षकी भरी कहती भई यही प्रमाण। तब नारद मनविषैं विचारते भए यह तो महा सती है परंतु अग्निका कहा विश्वास याने मृत्यु आदरी अर भामण्डल हनूमानादिक महाकोपसे पीडित भये अर लव अंकुश माताका अग्निविषै प्रवेश करवेका निश्चय जान अति व्याकुल भये अर सिद्धार्थ दोनो भुजा ऊंचीकर कहता भया हे राम! देवोंसे भी सीताके शीलकी महिमा न कही जाय तो मनुष्य कहा कहें। कदाचित सुमेरु पातालविषे प्रवेश करै अर समस्त समुद्र सूक जाय तौ भी सीताका शीलव्रत चलायमान न होय, जो कदाचित् चन्द्राकिरण उष्ण होय, अर सूर्यकिरण शीतल होय तौ भी सीताको दूषण न लगे मैं विद्याके बलसे पंच सुमेरुविषे तथा जे अर अकृत्रिम चैत्यालय शास्वते वहां जिनबन्दना करी—हे पद्मनाभ! सीताके व्रतकी महिमा मैं ठौर २ मुनियोंके मुखसे सुनी है तातैं तुम महा विचक्षण हो महासतीको अग्नि प्रवेशकी आज्ञा न करो अर आकाशविषे विद्याधर और पृथिवीविषैं भूमिगोचरी सब यही कहते भये—हे देव! प्रसन्न होथ सौम्यता भजो हे नाथ! अग्नि समान कठोरचित्त न करो सीता सती है सीता अन्यथा नहीं अन्यथा जे महा पुरुषोंकी राणी होवें कदे ही विकार रूप न होवें सब प्रजाके लोक यही वचन कहते भये अर व्याकुल भये मोटी मोटी आंसूओंकी बून्द डारते भये॥

तब रामने कही तुम ऐसे दयावान् हो तो पाहिले अपवाद क्यों उठाया रामने किंकरोंको आज्ञा करी एक तीनसै हाथ चौखटिया वापी खोदहु अर सूके इंधन चन्दन अर कृष्णागुरु तिनकर भरहु अर अग्नि कर जाज्वल्यमान करहु साक्षात् मृत्युका स्वरूप करहु तब किंकरानिने आज्ञा प्रमाण कुदालानिसे खोद अग्निवापिका बनाई अर ताही रात्रीकूं महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषे सकलभूषण मुनिकूं पूर्व वैरके योग कर महा रौद्र विद्युद्वक्रनामा राक्षसीने अत्यन्त उपसर्ग किया सो मुनि अत्यन्त उपसर्गको जीत

केवलज्ञानको प्राप्त भये। यह कथा सुन गौतमस्वामी से श्रेणिकने पूछी हे प्रभो! राक्षसीके अर मुनिके पूर्व बैर कहा? तब गौतमस्वामी कहते भये हे श्रेणिक! सुन—विजियार्द्ध गिरिकी उत्तर श्रेणीविषै महा शोभायमान गुंजनामा नगर तहां राजा सिंहविक्रम राणी श्री ताके पुत्र सकलभूषण ताके स्त्री आठसै तिनमें मुख्य किरणमण्डला सो एक दिन उसने अपनी सौकिनके कहेसूं अपने मामाके पुत्र हेमशिख का रूप चित्रपटमें लिखा सो सकलभूषणने देख कोप कीया तब सब स्त्रीनिने कही यह हमने लिखाया है इसका कोई दोष नहीं तब सकलभूषण कोप तज प्रसन्न भया। एक दिन यह किरणमण्डला पति-व्रता पतिसहित सूती थी सो प्रमाद थकी बरडकर हेमशिख ऐसा नाम कहा सो यह तो निर्दोष इस-के हेमशिखमें भाईकी बुद्धि अर सकलभूषणने कछु और भाव विचारा राणीसे कोपकर वैराग्यको प्राप्त भए अर राणी किरणमण्डला भी आर्यिका भई परन्तु धनीसे द्वेष भाव जो इसने झूठा दोष लगाया सो मर कर विद्युद्वक्र नामा राक्षसी भई सो पूर्व वैर थकी सकलभूषण स्वामी आहारको जांय तब यह अन्तराय करै कभी माते हाथियोंके बन्धन तुड़ाय देय हाथी ग्राममें उपद्रव करें इनको अन्तराय होय कभी यह आहार को जांय तब अग्नि लगाय देय कभी यह रजोवृष्टि करे इत्यादि नाना प्रकारके अन्तराय करै कभी अश्व का कभी वृषभ का रूपकर इनके सन्मुख आवै कभी मार्गमें कांटे बखेरे इसभान्ति यह पापिनी कुचेष्टा करै एक दिन स्वामी कायोत्सर्ग धर तिष्ठे थे अर इसने शोर किया यह चोर है सो इसका शोर सुनकर दुष्टोंने पकडे अपमान किया फिर उत्तमपुरुषोंने छुड़ाय दिए एक दिन यह आहार लेकर जाते थे सो पापिनी राक्षसी ने काहू स्त्री का हार लेकर इनके गलेमें डार दिया अर शोर किया कि यह चोर है हार लिये जाय है तब लोग आय पहुंचे इनको पीडा करी हार लिया

भले पुरुषोंने छुडाय दिये इसभांति यह क्रूरचित्त दयारहित पूर्व वैर विरोधसे मुनि को उपद्रव करै, गई रात्रिको प्रातिमा योग धर महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै विराजे थे सो राक्षसीने रौद्र उपसर्ग किया विंतर दिखाये अर हस्ती सिंह व्याघ्र सर्प दिखाए अर रूप गुण मंडित नाना प्रकार की नारी दिखाई भांति भांतिके उपद्रव किए परन्तु मुनि का मन न डिगा तब केवलज्ञान उपजा सो केवलकी महिमा कर दर्शनको इन्द्रादिक देव कल्पवासी भवनवासी व्यंतर जोतिषी कैयक हाथियोंपर चढे कैयक सिंहोंपर-चढे कैयक ऊंट खच्चर मीढा बघेरा अष्टापद इनपर चढे कैयक पक्षियोंपर चढे कैयक विमान बैठे कैयक रथोंपर चढे कैयक पालकी चढे इत्यादि मनोहर बाहनोंपर चढे आए देवोंकी असवारीके तिर्यंच नाहीं देवों ही की माया है देव ही विक्रियाकर तिर्यंचका रूप धरें हैं आकाशके मार्ग होय महाविभूति सहित सर्व दिशाविषै उद्योत करते आए मुकुट धरे हार कुण्डल पहिरे अनेक आभूषणोंकर शोभित सकलभूषण केवलीके दर्शनको आये पवनसे चंचल है ध्वजा जिनकी अप्सरावोंके समूह सहित अयोध्याकी ओर आए महेंद्रोदय उद्यानविषै केवली विराजे हैं तिनके चरणारविंदविषै है मन जिनका पृथिवीकी शोभा देखते आकाशसे नीचे उतरे अर सीताके दिव्यको अग्निकुंड तयार होय रहा था सो देखकर एक मेघ-केतु नामा देव इन्द्रसे कहता भया—हे देवेंद्र ! हे नाथ ! सीता महासतीको उपसर्ग आय प्राप्त भया है यह महाश्राविका पतिव्रता शीलवंती अति निर्मलचित्त है इसे ऐसा उपद्रव क्यों होय ? तब इंद्रने आज्ञा करी हे मेघकेतु ! मैं सकलभूषण केवलीके दर्शनको जाऊं हूं अर तू महासतीका उपसर्ग दूर करियो । या भांति आज्ञाकर इन्द्र तो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै केवलीके दर्शनको गया अर मेघकेतु सीताके अग्निकुंडके ऊपर आय आकाशविषै विमानविषै तिष्ठा । कैसा है विमान ? सुमेरुके शिखर समान है शोभा जिसकी,

वह देव आकाशविषै सूर्य सारिखा देदीप्यमान श्रीरामकी ओर देखे राम महासुन्दर सब जीवोंके मनको हरे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविराचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै सकलभूषणकेवलीके दर्शनकूं देवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौ चारवां पर्व पूर्ण भया ॥ १०४ ॥

अथानन्तर श्रीराम उस अग्निवापिकाको निरख कर व्याकुल मन भया विचारै है अब इस कांताको वहां देखूंगा यह गुणानिकी खान महा लावण्यता कर युक्त कांतिकी धरणहारी शील रूप वस्त्रकर मंडित मालतीकी माला समान सुगन्ध सुकुमार शरीर अग्निके स्पर्शही से भस्म होय जायगी जो यह राजा जनकके घर न उपजती तो भला था यह लोकापवाद अग्निविषै मरण तो न होता इस बिना मुझे क्षणमात्र भी सुख नाहीं इस सहित बनविषै बास भला अर या बिना स्वर्गका बास भी भला नाहीं यह महा शीलवंती परम श्राविका है इसे मरणका भय नाहीं इहलोक परलोक मरण वेदना अकस्मात असहायता चोर यह सप्त भय तिनकर रहित सम्यकदर्शन इसके दृढ है यह अग्निविषै प्रवेश करेगी अर मैं रोकूं तो लोगोंविषै लज्जा उपजे अर यह लोक सब मुझे कह रहे यह महा सती है याहि अग्निकुण्डविषै प्रवेश न करावो सो मैं न मानी अर सिद्धार्थ हाथ ऊंचे कर कर पुकारा मैं न मानी सो वह भी चुप होय रहा अब कौन मिसकर इसे अग्निकुण्डविषै प्रवेश न कराऊं अथवा जिसके जिस भांति मरण उदय होय है उसी भांति होय है टारा टरे नाहीं तथापि इसका वियोग मुझसे सहा न जाय या भांति राम चिंता करे हैं अर वापीविषै अग्नि प्रज्वलित भई समस्त नर नारियोंके आंसुवोंके प्रवाह चले धूम कर अन्धकार होय गया मानों मेघमाला आकाशविषै फैल गई आकाश भ्रमर समान श्याम होय गया अथवा कोकिल

स्वरूप होय गया अग्निके धूमकर सूर्य आच्छादित हुवा मानों सीताका उपसर्ग देख न सका सो दया कर छिपगया ऐसी अग्नि प्रज्वली जिसकी दूरतक ज्वाला विस्तरी मानों अनेक सूर्य ऊगे अथवा आकाशविषे प्रलयकालकी सांझ फूली, जानिए दशों दिशा स्वर्णमई होय गई हैं मानों जगत् विजुरीमय होय गया अथवा सुमेरुके जीतवेको दूजा जंगम सुमेरु और प्रकटा तब सीता उठी अत्यन्तनिश्चलचित्त कायोत्सर्ग कर अपने हृदयविषे श्रीऋषभादि तीर्थंकरदेव विराजे हैं तिनकी स्तुतिकर सिद्धोंको साधुवोंको नमस्कार कर श्रीमुनिसुव्रत नाथ हरिवंशके तिलक बीसवां तीर्थंकर जिनके तीर्थविषे ये उपजे हैं तिनका ध्यान कर सर्व प्राणियोंके हितु आचार्य तिनको प्रणाम कर सर्व जीवोंसे क्षमा भाव कर जानकी कहती भई मन कर बचनकर कायकर स्वप्नविषे भी राम बिना और पुरुष मैं न जाना जो मैं झूठ कहती हूं तो यह अग्निकी ज्वाला क्षणमात्रविषे मुझे भस्म करियो जो मेरे पतिव्रता भावविषे अशुद्धता होय राम सिवाय अर नर मनसे भी अभिलाषा होय तो हे वैश्वानर मुझे भस्म करियो जो मैं मिथ्यादर्शनी पापिनी व्यभिचारिणी हूं तो इस अग्निसे मेरा देह दाहको प्राप्त होवे अर जो मैं महा सती पतिव्रता अणुव्रत धारणी श्रावका हूं तो मुझे भस्म न करियो, ऐसा कहकर नमोकार मंत्र जप सीता सती अग्निवापिकामें प्रवेश करती भई सो याके शीलके प्रभावसे अग्नि था सो स्फटिक मणि सारिखा निर्मल शीतल जल हो गया मानों धरतीको भेदकर यह वापिका पातालसे निकसी जलविषे कमल फूल रहे हैं भ्रमर गुंजार करें हैं अग्निकी सामग्री सब बिलाय गई न इंधन न अंगार जलके झाग उठने लगे अर अति गोल गंभीर महा भयंकर भमर उठने लगे जैसी मृदंगकी ध्वनि होय तैसे शब्द जलविषे होते भए जैसा क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजे तैसा शब्द वापीविषे होता भया अर जल उछला पहले गोडों तक आया बहुरि कमर तक आया फिर निमिषमात्रविषे छाती तक आया तब भूमिगोचरी डरे अर आकाशविषे जे वि-

द्याधर हुते तिनको भी विकल्प उपजा न जानिए क्या होय बहुरि वह जल लोगोंके कंठतक आया तब अति भय उपजा सिर ऊपर पानी चला तब लोग अति भयको प्राप्त भए ऊंची भुजाकर वस्त्र अर बालकोंको उठाय पुकार करते भए—हे देवि ! हे लक्ष्मी ! हे सरस्वती ! हे कल्याणरूपिणी ! हे धर्मधुरंधरे हे मान्ये ! हे प्राणीदयारूपिणी हमारी रक्षा करो हे महासाध्वी ! मुनिसमान निर्मलमनकी धरणहारी दया करो हे माता वचावो वचावो प्रसन्न होवो जब ऐसे वचन विह्वल जो लोक तिनके मुखसे निकसे तब माताकी दयासे जल थंभा लोक बचे जलविषै नानाजातिके ठौर ठौर कमल फूले जल साम्यताको प्राप्त भया जे भंवर उठे थे सो मिटे अर भयंकर शब्द मिटे । वह जल जो उछला था सो मानों वापीरूप बधू अपने तरंगरूप हस्तोंकर माताके चरण युगल स्पर्शती थी । कैसे हैं चरणयुगल? कमलके गर्भसे हू अति कोमल हैं अर नखोंकी ज्योतिकर देदीप्यमान हैं जलविषै कमल फूले तिनकी सुगंधता कर भ्रमर गुंजार करे हैं सो मानों संगीत करें हैं अर क्रौंच चकवा हंस तिनके समूह शब्द करें हैं अति शोभा होय रही है अर माणि स्वर्णके सिवाण बन गए तिनको जलके तरंगोंके समूह स्पर्शे हैं अर जिसके तट मरकत माणि कर निर्मापे अति सोहै हैं ॥

ऐसे सरोवरके मध्य एक सहस्रदलका कमल कोमल विमल विस्तीर्ण प्रफुल्लित महाशुभ उसके मध्य देवनिने सिंहासन रचा रत्ननिकी किरणनिकर मंडित चंद्रमंडल तुल्य निर्मल उसमें देवांगनाओंने सीताको पधराई अर सेवा करती भई सो सीता सिंहासनविषै तिष्ठी अति अद्भुत है उदय जिसका शची तुल्य सोहती भई अनेक देव चरणनिके तल पुष्पांजली चढाय धन्य धन्य शब्द कहते भए आकाशविषै कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी वृष्टि करते भए,अर नानाप्रकारके दुन्दुभी बाजे तिनके शब्दकर सब दिशा शब्दरूप होती भई गुंज जातिके वादित्र महामधुर गुंजार करते भये अर मृदंग वाजते भए ढोल दमा-

मः वाजे नांदी जातिके वादित्र वाजे अर कोलाहल जातिके वादित्र वाजे अर तुरही करनाल अनेक वादित्र वाजे शंखके समूह शब्द करते भए अर वीण वांसुरी वाजा ताल झांझ मंजीर झालरी इत्यादि अनेक वादित्र वाजे विद्याधरानिके समूह नाचते भए अर देवनिके यह शब्द भए श्रीमत् जनक राजाकी पुत्री परम उदयकी धरणहारी श्रीमत् रामकी राणी अत्यन्त जयवन्त होवे अहो निर्मल शील जिसका आश्चर्यकारी ऐसे शब्द सब दिशाविषै देवनिके होते भये तब दोनों पुत्र लवण अंकुश अकृत्रिम है मातासे हित जिनका सो जल तिरकर अतिहर्षके भरे माताके समीप गए दोनों पुत्र दोनों तरफ जाय ठाढे भए, माताको नमस्कार किया सो माताने दोनोंके शिर हाथ धरा रामचन्द्र मिथिलापुरीके राजाकी पुत्री मैथिली कहिए सीता उसे कमलवासिनी लक्ष्मी समान देख महा अनुरागके भरे समीप गए कैसी है सीता मानों स्वर्णकी मूर्ति अग्निविषै शुद्ध भई है अति उत्तम ज्योतिके समूहकर मंडित है शरीर जिसका राम कहे हैं हे देवि ! कल्याणरूपिणी उत्तम जीवनिकर पूज्य महा अद्भुत चेष्टाकी धरणहारी शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है मुख जिसका ऐसी तुम सो हमपर प्रसन्न होवो अब मैं कभी ऐसा दोष न करूंगा जिसमें तुमको दुःख होय । हे शीलरूपिणी मेरा अपराध क्षमा करो मेरे आठ हजार स्त्री हैं तिनकी सिरताज तुम हो, मोको आज्ञा करो सो करूं । हे महासती मैं लोकापवादके भयसे अज्ञानी होकर तुमको कष्ट उपजाया सो क्षमा करो अर हे प्रिये पृथिवीविषै मो सहित यथेष्ट विहार करो यह पृथ्वी अनेक बन उपवन गिरियों कर मंडित है देव विद्याधरानिकर संयुक्त है समस्त जगतकर आदरसों पूजी थकी मोसहित लोकविषै स्वर्ग समान भोग भोगो उगते सूर्यसमान यह पुष्पकाविमान उसविषै मेरे सहित आरूढ भई सुमेरु पर्वतके बनविषै जिनमंदिर हैं तिनका दर्शन कर अर जिन २ स्थाननिविषै तेरी इच्छा होय वहां क्रीडा कर । हे कांते ! तू जो कहे सो ही मैं करूं तेरा वचन कदाचित् न उलंघू देवांगनास-

मान वह विद्याधरी तिनकर मंडित है बुद्धिवंती तू ऐश्वर्यको भज, जो तेरी अभिलाषा होयगी सो तत्काल सिद्ध होयगी। मैं विवेकरहित दोषके सागरविषै मग्न तेरे समीप आया हूं सो साध्वि अब प्रसन्न होवो ॥

अथानन्तर जानकी बोली–हे राम ! तुम्हारा कुछ दोष नाहीं अर लोकोंका दोष नहीं मेरे पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मके उदयसे यह दुःख भया मेरा काहू पर कोप नहीं तुम क्यों विषादको प्राप्त भए ? हे बलदेव तिहारे प्रसादसे स्वर्ग समान भोग भोगे अब यह इच्छा है ऐसा उपाय करूं जिसकर स्त्रीलिंगका अभाव होय यह महाक्षुद्र विनश्वर भयंकर इंद्रियनिके भोग मूढ जनोंकर सेव्य तिनकर कहा प्रयोजन ? मैं अनन्त जन्म चौरासी लक्ष योनिविषै खेद पाया अब समस्त दुःखके निवृत्तिके अर्थ जिनेश्वरी दीक्षा धरूंगी। ऐसा कहकर नवीन अशोक वृक्षके पल्लव समान अपने जे कर तिनकर सिरके केश उपाड रामके समीप डारे सो इंद्र नील मणिसमान श्याम सचिक्वण पातरे सुगन्ध वक्र लम्बायमान महामृदु महामनोहर ऐसे केशोंको देखकर राम मोहित होय मूर्छा खाय पृथिवीविषै पडे सो जौलग इनको सचेत करें तौंलग सीता पृथिवीमती आर्यिकापै जायकर दीक्षा धरती भई एक वस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके अर सब परिग्रह तजकर आर्यिकाके व्रत धर महा पवित्र परम वैराग्यकर युक्त व्रतकर शोभायमान जगतके वंदिवे योग्य होती भई अर राम अचेत भए थे सो मुक्ताफल अर मलयागिरि चन्दनके छांटिबेकर तथा ताडके बीजनोंकी पवन कर सचेत भए तब दशो दिशाकी ओर देखैं तो सीताको न देख कर चित्त शून्य हो गया, शोक अर कषायकर युक्त महा गजराज पर चढे सीताकी ओर चले सिर पर छत्र फिरे हैं चमर ढुरे हैं जैसे देवनिकर मंडित इंद्र चलै तैसे नरेन्द्रों कर युक्त राम चले कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके कषायके वचन कहते भए अपने प्यारे जनका मरण भला परन्तु विरह भला नहीं देवनिने

सीताका प्रातिहार्य किया सो भला किया पर उसने हमको तजना बिचारा सो भला न किया अब मेरी राणी जो यह देव ने दें तो मेरे अर देवनिके युद्ध होयगा यह देव न्यायवान् होयकर मेरी स्त्री क्यों हरें ऐसे अविचारके वचन कहे। लक्ष्मण समझावे सो समाधान न भया अर क्रोधसंयुक्त श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीकी गन्धकुटीको चले सो दूरसे सकलभूषण केवलीकी गन्ध कुटी देखी। केवली महाधीर सिंहासन पर विराजमान अनेक सूर्यकी दीप्ति धरें केवली ऋद्धिकर युक्त पापोंके भस्म करिवेकों साक्षात् अग्निरूप जैसे मेघपटल रहित सूर्यका बिंब सोहै तैसे कर्मपटलरहित केवलज्ञानके तेजकर परम ज्योतिरूप भासे हैं इंद्रादिक समस्त देव सेवा करें हैं दिव्य ध्वनि खिरे है धर्मका उपदेश होय है सो श्रीराम गन्धकुटीकों देख कर शांतचित्त होय हाथीसे उतर प्रभुके समीप गए तीन प्रदक्षिणा देय हाथ जोड नमस्कार किया भगवान् केवली मुनियोंके नाथ तिनका दर्शन कर अति हर्षित भए बारम्बार नमस्कार किया केवलीके शरीरकी ज्योतिकी छटा राम पर आय पडी सो अति प्रकाशरूप होय गए भावसहित नमस्कार कर मनुष्यनिकी सभाविषै बैठे अर चतुरनिकायके देवोंकी सभा नानाप्रकारके आभूषण पहिरे ऐसी भासै मानों केवलीरूप जे रवि तिनकी किरण ही हैं अर राजावोंके राजा श्रीरामचन्द्र केवलीके निकट ऐसे सोहे हैं मानों सुमेरुके शिखरके निकट कल्पवृक्ष ही हैं अर लक्ष्मण नरेंद्र मुकट कुण्डल हारादि कर शोभित कैसे सोहैं मानों विजुरीसहित श्याम घटा ही है अर शत्रुघन शत्रुवोंके जीतनहारे ऐसे सोहैं मानों दूसरे कुवेर ही हैं अर लव अंकुश दोनो वीर महा धीर महा सुन्दरगुण सौभाग्यके स्थानक चांद सूर्यसे सोहैं अर सीता आर्यिका आभूषणादि रहित एक वस्त्र मात्र परिग्रह ऐसी सोहै मानों सूर्यकी मूर्ति शांतताको प्राप्त भई है। मनुष्य अर देव सब ही विनयसंयुक्त भूमिविषै बैठे धर्म श्रवण की है अभिलाषा जिनके। तहां एक अभयघोष नामा मुनि सब मुनिनिविषैं श्रेष्ठ संदेहरूप आताप

की शांतिके अर्थ केवलीसे पूछते भए—हे सर्वोत्कृष्ट सर्वज्ञदेव ज्ञानरूप शुद्ध आत्मतत्त्वका स्वरूप नीके जाननेसे मुनिनिको केवल बोध होय उसका निर्णय करो, तब सकलभूषण केवली योगीश्वरोंके ईश्वर कर्म्मोंके क्षयका कारण तत्वका उपदेश दिव्यध्वनिकर कहते भए—हे श्रेणिक ! केवलीने जो उपदेश दिया उसका रहस्य मैं तुमको कहूं हूं जैसे समुद्रमें से एक बून्द कोई लेय तैसे केवलीकी बाणी अति अथाह उसके अनुसार संक्षेप व्याख्यान करूं हूं, सो सुनो ॥

हो भव्य जीव हो ! आत्म तत्त्व जो अपना स्वरूप सो सम्यक्दर्शन ज्ञान आनन्द रूप अर अमूर्तीक चिद्रूप लोकप्रमाण असंख्य प्रदेशी अतेंद्री अखंड अव्याबाध निराकार निर्मल निरंजन परवस्तुसे रहित निज गुण पर्याय स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव कर अस्तित्व रूप है जिसका ज्ञान निकट भव्यों को होय शरीरादिक पर वस्तु असार हैं आत्मतत्व सार है सो अध्यात्म विद्या कर पाइये है वह सबका देखनहारा जाननहारा अनुभवदृष्टि कर देखिये आत्मज्ञान कर जानिये अर जड पदार्थ पुद्‌गल धर्म अधर्म काल आकाश ज्ञेयरूप हैं ज्ञाता नाहीं अर यह लोक अनन्ते अलोकाकाशके मध्य अनन्तवें भागविषै तिष्ठे है अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्वलोक ये तीनलोक तिनविषै सुमेरु पर्वतकी जड हजार योजन उसके तले पाताल लोक है उसविषै सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र हैं अर बादर स्थावर आधारविषै हैं विकलत्रय अर पंचेन्द्रिय तिर्यंच नाहीं मनुष्य नाहीं खरभाग पंचभागविषै भवनवासी देव तथा व्यंतरदेवनिके निवास हैं तिनके तले सात नरक हैं तिनके नाम रत्नप्रभा १ शर्करा २ बालुका ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमःप्रभा ६ महातमःप्रभा ७ सो सातों ही नरककी धारा महा दुःखकी देनहारी सदा अंधकाररूप हैं चार नरकनिविषै तो उष्णकी बाधा है अर पांचवें नरक ऊपरले तीन भाग उष्ण अर नीचला चौथा भाग शीत अर छठे नरक शीत ही हैं अर सातवें महा शीत ऊपरले नरकनिविषै उष्णता है सो महा

विषम अर नीचले नरकनिविषै शीत है सो अति विषम नरककी भूमि महा दुस्सह परम दुर्गम हैं जहां राधि रुधिरका कीच है महादुर्गंध है श्वान सर्प मार्जार मनुष्य खर तुरंग ऊंट इनका मृतक शरीर सड जाय उसकी दुर्गंधसे असंख्यातगुणी दुर्गंध है नानाप्रकार दुखनिके सर्व कारण हैं अर पवन महा प्रचंड विकराल चले है जाकर भयंकर शब्द होय रहा है जे जीव विषय कषाय संयुक्त हैं कामी हैं क्रोधी हैं पंच-इंद्रियोंके लोलुपी हैं जैसे लोहेका गोला जलविषै डूबे तैसे नरकमें डूबे हैं जे जीवनिकी हिंसा करें मृषावाणी बोलें परधन हरें परस्त्री सेवें महा आरम्भी परिग्रही ते पापके भारकर नरकविषै पडे हैं मनुष्य देह पाय जे निरंतर भोगासक्त भये हैं जिनके जीभ वश नाहीं मन चंचल ते पापी प्रचण्ड कर्मके करणहारे नरक जाय हैं जे पाप करें करावें पापकी अनुमोदना करें ते आर्त रौद्र ध्यानी नरकके पात्र हैं वह वज्राग्निके कुण्डमें डारिये हैं वज्राग्निके दाह कर जलते थके पुकारें हैं अग्नि कुण्डसे छूटे हैं तब वैतरणी नदीकी ओर शीतल जलकी वांछा कर जाय हैं वहां जल महा क्षार दुर्गंध उसके स्पर्शहीसे शरीर गल जाय हैं। दुख का भाजन वैक्रियिक शरीर ताकर आयु पर्यंत नानाप्रकार दुख भोगवें हैं पहिले नरक आयु उत्कृष्ट सागर १ दूजे ३ तीजे ७ चौथे १३ पांचवें १७ छठे २२ सातमें ३३ सो पूर्णकर मरे हैं मारसे मरे नाहीं वैतरणीके दुखसे डर छायाके अर्थ आसिपत्र वनमें जाय हैं तहां खडग बाण वरछी कटारी समी-पत्र असराल पवनकर पडे हैं तिनकर तिनका शरीर विदारा जाय है पछाड खाय भूमिमें पडे हैं अर तिनकों कभी कुम्भी पाकमें पकावें हैं कभी नीचा माथा ऊंचा पगकर लटकावें हैं मुगदरोंसे मारिये हैं कुहाडोंसे काटिये हैं करोतनसे विदारिये हैं घानीमे पेलिये हैं नानाप्रकारके छेदन भेदन है। यह नारकी जीव महा दीन महा तृषा कर तृषित पीनेका पानी मांगे हैं तब तांबादिक गाल प्यावे हैं ते कहे हैं हम-को यहां तृषा नाहीं हमारा पीछा छोड दो तब बलात्कार तिनको पछाड संडासियोंसे मुख फार मार

मार प्यावे हैं कण्ठ हृदय विदीर्ण होय जाय है उदर फट जाय है तीजे नरकतक तो परस्पर भी दुःख है अर असुर कुमारनिकी प्रेरणासे भी दुःख हैं अर चौथेसे लेय सातवें तक असुरकुमारनिका गमन नाहीं परस्पर ही पीडा उपजावे हैं नरकविषै नीचलेसे नीचले बढता दुख है सातवां नरक सबनिमें महादुखरूप है नारकियोंको पहिला भव याद आवै है अर दूसरे नारकी तथा तीजे लग असुर कुमार पूर्वले कर्म याद करावें हैं तुम भले गुरुवोंके वचन उलंघ कुगुरु कुशास्त्रके बलकर मांसको निर्दोष कहते हुते नानाप्रकार के मांसकर अर मधुकर अर मदिरा कर कुदेवोंका आराधन करते हुते सो मांसके दोषसे नरकविषै पडे हो ऐसा कहके इनहीका शरीर काट काट इनके मुखविषै देय हैं अर लोहेकी तथा तांबेके गोला बलते पछाड पछाड संडासियोंसे मुख फाड फाड छातीपर पांव देय देय तिनके मुखविषै घाले हैं अर मुद्गरों से मारे हैं अर मद्यपायीयोंको मार मार ताता ताबां शीशा प्यावे हैं अर परदारारत पापियोंको वज्राग्निकर तप्तायमान लोहेकी जे पूतली तिन से लिपटावे हैं अर जे परदारारत फूलनिके सेज सूते हैं तिनको सूलनिके सेजऊपर सुवावे हैं अर स्वप्नकी माया समान असार जो राज्य उसे पायकर जे गर्वे हैं अनीति करें हैं तिनको लोहके कीलों पर बैठाय मुद्गरोंसे मारें हैं सो महा बिलाप करें हैं इत्यादि पापी जीवोंको नरकके दुःख होय हैं सो कहांलग कहें एक निमिषमात्र भी नरकमें विश्राम नाहीं आयु पर्यंत तिलमात्र आहार नाहीं अर बून्दमात्र जलपान नाहीं केवल मारहीका आहार है।

तातैं यह दुस्सह दुःख अधर्मके फल जान अधर्मको तजो ते अधर्म मधु मांसादिक अभक्ष्य भक्षण अन्याय वचन दुराचार रात्रिआहार वेश्यासेवन परदारा गमन स्वामिद्रोह मित्रद्रोह विश्वासघात कृतघ्नता लम्पटता ग्रामदाह वनदाह परधनहरण अमार्गसेवन परनिंदा परद्रोह प्राणघात बहु आरम्भ बहुपरिग्रह निर्दयता खोटी लेश्या रौद्रध्यान मृषावाद कृपणता कठोरता दुर्जनता मायाचार निर्माल्यका

अंगीकार माता पिता गुरुओंकी अवज्ञा बाल वृद्ध स्त्री दीन अनाथोंका पीडन इत्यादि दुष्टकर्म नरकके कारण हैं वे तज शांतभावधर जिनशासनको सेवो जाकर कल्याण होय। जीव छे कायके हैं पृथिवी काय अप (जल) काय, तेजः (अग्नि) काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। तिनकी दया पालो अर जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल यह छे द्रव्य हैं अर सात तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकाय तिनकी श्रद्धा करो अर चतुर्दश गुणस्थान चतुर्दश मार्गणा स्वरूप अर सप्तभंगी वाणीका स्वरूप भलीभांति केवलीकी आज्ञा प्रमाण उरविषे धारो, स्यात्अस्ति, स्यात्नास्ति, स्यात् अस्तिनास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यात्अस्ति अवक्तव्य, स्यान्नास्ति अवक्तव्य, स्यात्अस्तिनास्ति अवक्तव्य, ये सप्तभंग कहे अर प्रमाण कहिये वस्तु का सर्वांग कथन अर नय कहिये वस्तुका एक अंग कथन अर निक्षेप कहिये नाम स्थापना द्रव्य भाव ये चार अर जीवोंविषे एकेंद्रीके दोय भेद सूक्ष्म वादर अर पंचेंद्रीके दो भेद सैनी असैनी अर वे इंद्री ते इंद्री चौइंद्री ये सात भेद जीवोंके हैं सो पर्याप्त अपर्याप्तकर चौदह भेद जीवसमास होय हैं अर जीवके दो भेद एक संसारी एक सिद्ध। जिसमें संसारीके दो भेद—एक भव्य दूसरा अभव्य जो मुक्ति होने योग्य सो भव्य अर मुक्ति न होने योग्य सो अभव्य अर जीवका निजलक्षण उपयोग है उसके दोय भेद एक ज्ञान एक दर्शन। ज्ञान समस्त पदार्थोंको जाने दर्शन समस्त पदार्थोंको देखे। सो ज्ञानके आठ भेद मति श्रुति अवधि मनःपर्यय केवल कुमति कुश्रुत कुअवधि अर दर्शनके भेद चार—चक्षु अचक्षु अवधि केवल अर जिनके एक स्पर्शन इंद्री होय सो स्थावर कहिये तिनके भेद पांच पृथिवी अप् तेज वायु वनस्पति अर त्रस के भेद चार वेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री पंचेंद्री—जिनके स्पर्श अर रसना वे द्वे इंद्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका सो ते इंद्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु वे चौइंद्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु श्रोत्र वे पंचेंद्री। चौइंद्री तक तो सब संमूर्छन अर असेनी हैं अर पंचेंद्रीविषे केई सम्मूर्छन केई गर्भज तिनविषे केई सैनी

केई असैनी जिनके मन वे सैनी अर जिनके मन नहीं वे असैनी अर जे गर्भसे उपजैं वे गर्भज अर जे गर्भविना उपजैं स्वतः स्वभाव उपजैं वे सम्मूर्छन । गर्भजके भेद तीन जरायुज अंडज पोतज । जे जराकर मंडित गर्भसे निकसे मनुष्य घोटकादिक वे जरायुज अर जे बिना जेरके सिंहादिक सो पोतज अर जे अंडावोंसे उपजे पक्षी आदिक वे अंडज अर देव नाराकियोंका उपपाद जन्म है माता पिताके संग बिनाही पुण्य पापके उदयसे उपजे हैं । देव तो उत्पादकशय्याविषै उपजैं हैं अर नारकी बिलोंमें उपजे हैं देवयोनि पुण्यके उदयसे है अर नारक योनि पापके उदयसे है अर मनुष्य जन्म पुण्य पापकी मिश्रतासे है अर तिर्यंच गति मायाचारके योगसे है देव नारकी मनुष्य इन बिना सर्व तिर्यंच जानने, जीवोंकी चौरासी लाख योनिये हैं उनके भेद सुनो—पृथिवीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय नित्य निगोद इतरनिगोद ये तो सात २ लाख योनि हैं सो बयालीस लाख योनि भई अर प्रत्येक वनस्पति दस लाख ये बावन लाख भेद स्थावरके भये, अर वे इंद्री ते इंद्री चौइंद्री ये दोय दोय लाख योनि उसके छै लाख योनि भेद विकलत्रयके भए अर पंचेंद्री तिर्यंचके भेद चार लाख योनियें सब तिर्यंच योनिके बासठ लाख भेद भए अर देवयोनिके भेद चार लाख नरकयोनिके भेद चार लाख अर मनुष्य योनिके चौदह लाख ये सब चौरासी लाख योनि महा दुखरूप हैं इनसे रहित सिद्धपद ही अविनाशी सुखरूप है, संसारी जीव सब ही देहधारी हैं अर सिद्ध परमेष्ठी देहरहित निराकार हैं, शरीरके भेद पांच औदारिक वैक्रियक आहारक तैजस, कार्म्मण, तिनविषै तैजस कार्म्मण तो अनादिकालसे सब जीवनको लग रहे हैं तिनका अन्तकर महा मुनि सिद्ध पद पावे हैं औदारिकसे असंख्यातगुणी अधिक वर्गणा वैक्रियिकके हैं अर वैक्रियकतैं असंख्यातगुणी आहारकके हैं अर आहारकतैं अनन्तगुणी तैजसकी हैं अर तैजसतैं अनन्तगुणी कार्म्मणकी हैं जा समय संसारी जीव देहकूं तजकर दूसरी गतिकूं जाय है तासमय अनाहार कहिए जि-

तनी देरी एक गतिसे दूसरी गतिविषै जाते हुए जीवको लगे है उस अवस्थामें जीवको अनाहारी कहिए। अर जितना वक्त एक गतिसे दूसरी गतिमें जानेमें लगे सो वह एक समय तथा दो समय अधिकतैं अधिक तीन समय लगे है सो ता समय जीवके तैजस अर कार्म्मण ये दो ही शरीर पाइये है वगैर शरीरके यह जीव सिवा सिद्ध अवस्थाके अर काहू अवस्थामें काहू समय नाहीं होता। या जीवके हर वक्त अर हर गतिमें जन्मते मरते साथ ही रहते हैं जा समय यह जीव घातिया अघातिया दोऊ प्रकारके कर्म क्षय करके सिद्ध अवस्थाको जाता है ता समय तैजस अर कार्म्मणका क्षय होता है अर जीवनिके शरीरोंके परमाणुओंकी सूक्ष्मता या प्रकार है—औदारिकतैं वैक्रियक सूक्ष्म अर वैक्रियकसे आहारक सूक्ष्म, आहारकतैं तैजस सूक्ष्म अर तैजसतैं कार्म्मण सूक्ष्म है सो मनुष्य अर तिर्यंचानिके तो औदारिक शरीर है अर देवनारकिनिके वैक्रियक है अर आहारक ऋद्धिधारी मुनिनिके संदेह निवारिवेके अर्थ दसमे द्वारसे निकसे है सो केवलीके निकट जाय संदेह निवार पीछा आय दशमे द्वारमें प्रवेश करे हैं, ये पांच प्रकारके शरीर कहे तिनमें एक काल एक जीवके कबहु चार शरीर हू पाइए ताका भेद सुनहु तीन तो सबही जीवनिके पाइए, नर अर तिर्यंचके औदारिक अर देव नारकनिके वैक्रियक अर तैजस कार्म्मण सबोंके हैं तिनमें कार्म्मण तो दृष्टिगोचर नाहीं अर तैजस काहू मुनिके प्रकट होय हैं ताके भेद दोय हैं एक शुभ तैजस एक अशुभ तैजस। सो शुभ तैजस तो लोकनिको दुखी देख दाहिनी भुजातैं निकस लोकनिका दुख निवारे है अर अशुभ तैजस क्रोधके योगकर वाम भुजातैं निकासि प्रजाको भस्म करे हैं अर मुनिकूं हू भस्म करे है अर काहू मुनिके वैक्रिया ऋद्धि प्रकट होय है तब शरीरको सूक्ष्म तथा स्थूल करे हैं सो मुनिके चार शरीर हू काहू समय पाइए एक काल पांचो शरीर काहू जीवके न होंय॥

अथानन्तर मध्यलोकमें जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप अर लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र

हैं शुभ हैं नाम जिनके सो द्विगुण द्विगुण विस्तारको लिए वलयाकार तिष्ठे हैं, सबके मध्य जम्बूद्वीप है ताके मध्य सुमेरु पर्वत तिष्ठे है सो लाख योजन ऊंचा है अर जे द्वीप समुद्र कहे तिनमें जम्बूद्वीप लाख योजनके विस्तार है अर प्रदक्षिणा तिगुणीसे कछु इक अधिक है अर जम्बूद्वीप विषै देवारण्य अर भूतारण्य दो बन हैं तिनविषै देवनिके निवास हैं अर षट् कुलाचल हैं। पूर्व समुद्रसूं पश्चिमके समुद्र तक लांबे पडे हैं तिनके नाम हिमवान् महाहिमवान् निषध नील रुकमी शिखरी। समुद्रके जलका है स्पर्श जिनके तिनमें हृद अर हृदनिमें कमल तिनमें षट्कुमारिका देवी हैं श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी अर जम्बूद्वीपमें सात क्षेत्र हैं—भरत हैमवत हरि विदेह रम्यक हैरण्यवत ऐरावत अर षट्कुलाचलानिसूं गंगादिक चौदह नदी निकसी हैं आदिकेसे तीन अर अंतकेसे तीन अर मध्यके चारोंसे दोय २ यह चौदह हैं अर दूजा द्वीप धातुकी खण्ड सो लवणसमुद्रतैं दूना है ताविषै दोय सुमेरुपर्वत हैं अर बारह कुलाचल अर चौदह क्षेत्र। यहां एक भरत वहां दोय यहां एक हिमवान वहां दोय। याही भांति सर्व दुगुणे जानने अर तीजा द्वीप पुष्कर ताके अर्ध भागविषै मानुषोत्तर पर्वत है सो अढाई द्वीप ही विषै मनुष्य पाईये हैं आगे नाहीं, आधे पुष्करविषै दोय मेरु बारां कुलाचल चौदह क्षेत्र धातुकीखंडद्वीप समान तहां जानने। अढाई द्वीपविषै पांच सुमेरु तीस कुलाचल पांच भरत पांच ऐरावत पांच महाविदेह तिनमें एक सौ साठ विजय समस्त कर्मभूमिके क्षेत्र एक सौ सत्तर एक एक क्षेत्रमें छह छह खण्ड तिनमे पांच पांच म्लेच्छखण्ड एक एक आर्य खण्ड आर्यखण्डमें धर्मकी प्रवृत्ति विदेहक्षेत्र अर भरत ऐरावत इनविषै कर्मभूमि तिनमें विदेह तो शाश्वती कर्मभूमि अर भरत ऐरावतमें अठारा कोडाकोडी सागर भोगभूमि दोय कोडाकोडी सागर कर्म्मभूमि अर देवकुरु उत्तरकुरु यह शाश्वती उत्कृष्ट भोग भूमि तिनमें तीन २ पल्य की आयु अर तीन तीन कोसकी काय अर तीन तीन दिन पीछे अल्प आहार सो पांच मेरु संबंधी पांच

देवकुरु पांच उत्तरकुरु अर हरि अर रम्यक यह मध्य भोगभूमि तिनविषै दोय पल्यकी आयु अर दोय कोसकी काय दोय दिन गए आहार। या भांति पांच मेरु संबंधी पांच हरि पांच रम्यक यह दश मध्य भोगभूमि अर हैमवत हैरण्यवत यह जघन्य भोगभूमि तिनमें एक पल्यकी आयु अर एक कोसकी काय एक दिनके अन्तरे आहार, सो पांच मेरु संबन्धी पांच हैमवत पांच हैरण्यवत जघन्य भोगभूमि दश या भांति तीस भोगभूमि अढाई द्वीपमें जाननी, अर पंच महा विदेह पंच भरत पंच ऐरावत यह पंद्रह कर्मभूमि हैं तिनमें मोक्षमार्ग प्रवरतै है॥

अढाईद्वीपके आगे मानुषोत्तरके परे मनुष्य नाहीं देव अर तिर्यंच ही हैं तिनविषै जलचर तो तीन ही समुद्रविषै हैं लवणोदधि कालोदधि तथा अंतका स्वयंभूरमण इन तीन बिना और समुद्रनिविषै जलचर नाहीं अर विकलत्रय जीव अढाईद्वीपविषै हैं अर अंतका स्वयंभूरमण द्वीप ताके अर्ध भागविषै नागेन्द्र पर्वत है, ताके परे आधे स्वयंभूरमण द्वीपविषै अर सारे स्वयंभूरमण समुद्रविषै विकलत्रय हैं। मानुषोत्तरसे लेय नागेन्द्र पर्वत पर्यन्त जघन्य भोग भूमिकी रीति है, वहां तिर्यंचनिका एक पल्यका आयु है अर सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र तीन लोकमें हैं अर वादर स्थावर आधारविषै सर्वत्र नाहीं एकराजूविषै समस्त मध्य लोक है। मध्य लोकमें अष्टप्रकार व्यंतर अर दशप्रकार भवनपतियोंके निवास हैं अर ऊपर ज्योतिषी देवानिके विमान हैं तिनके पांच भेद चन्द्रमा सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र सो अढाई द्वीपमें ज्योतिषी चर हू हैं अर स्थिर हू हैं आगे असंख्यात द्वीपानिमें ज्योतिषी देवानिके विमान स्थिर ही हैं बहुरि सुमेरु के ऊपर स्वर्गलोक है तहा सोला स्वर्ग तिनके नाम, सौधर्म ईशान सनत्कुमार महेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लांतव कापिष्ठ शुक्र महाशुक्र शतार सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत यह सोलह स्वर्ग तिनमें कल्पवासी देव देवी हैं अर सोलह स्वर्गनिके ऊपर नवग्रीव तिनके ऊपर नव अनुत्तर तिनके ऊपर पंचोत्तर विजय

वैजयन्त जयंत अपराजित सर्वार्थसिद्धि। यह अहमिन्द्रानिके स्थानक हैं जहां देवांगना नाहीं अर स्वामी सेवक नाहीं और ठौर गमन नाहीं, अर पांचवां स्वर्ग ब्रह्म ताके अन्तमें लौकांतिक देव हैं तिनके देवांगना नाहीं वे देवर्षि हैं। भगवानके तप कल्याणमें ही आवें ऊर्ध्वलोकमें देव ही हैं अथवा पंच स्थावर ही हैं। हे श्रेणिक! यह तीन लोकका व्याख्यान जो केवलीने कहा ताका संक्षेपरूप जानना विस्तारसूं त्रिलोकसारसूं जानना तीनलोकके शिखर सिद्धलोक है ता समान देदीप्यमान और क्षेत्र नाहीं जहां कर्म बंधनसे रहित अनंत सिद्ध विराजै हैं मानों वह मोक्ष स्थानक तीन भवनका उज्जल छत्र ही है वह मोक्ष स्थानक अष्टमी धरा है ये अष्ट पृथिवीके नाम नारक १ भवनवासी २ मानुष ३ ज्योतिषी ४ स्वर्गवासी ५ ग्रीव ६ अर अनुत्तर विमान ७ मोक्ष ८ ये आठ पृथिवी हैं सो शुद्धोपयोगके प्रसादकर जे सिद्ध भये हैं तिनकी महिमा कही न जाय तिनका मरण नाहीं बहुरि जन्म नाहीं, महा सुखरूप हैं, अनन्त शक्तिके धारक समस्त दुःखरहित महानिश्चल सर्वके ज्ञाता द्रष्टा हैं॥

यह कथन सुन श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीसूं पूछते भये—हे प्रभो! अष्टकर्मरहित अष्टगुण आदि अनन्त गुण सहित सिद्ध परमेष्ठी संसारके भावनसे रहित हैं सो दुःख तो उनको काहू प्रकारका नाहीं अर सुख कैसा है? तब केवली दिव्य ध्वनि कर कहते भये—इस तीन लोकविषै सुख नाहीं दुख ही है अज्ञानसे वृथा सुख मान रहे हैं। संसारका इन्द्रियजनित सुख बाधासंयुक्त क्षणभंगुर है अष्टकर्म कर बंध सदा पराधीन ये जगतके जीव तिनके तुच्छ मात्रहू सुख नाहीं जैसे स्वर्णका पिंड लोहकर संयुक्त होय तब स्वर्णकी कांति दब जाय है तैसे जीवकी शक्ति कर्मनिकर दब रही है सो सुखरूप नाहीं दुख ही भोगवे हैं यह प्राणी जन्म जरा मरण रोग शोक जे अनन्त उपाधी तिनकर महापीडित हैं तनुका अर मनका दुख मनुष्य तिर्यंच नारकीनिको है अर देवनिको दुःख मन ही का है सो मनका महा दुख है ता

कर पीडित हैं। या संसारविषै सुख काहेका ? ये इंद्रीजनित विषयके सुख इंद्र धरणींद्र चक्रवार्तीनिकूं शहतकी लपेटी खड्गकी धारा समान हैं अर विषमिश्रित अन्न समान हैं अर सिद्धानिके मन इंद्री नाहीं शरीर नाहीं केवल स्वाभाविक अविनाशी उत्कृष्ट निराबाध निरुपम सुख है ताकी उपमा नाहीं जैसे निद्रारहित पुरुषकूं सोयबे कर कहा अर निरोगानिको ओषधिकर कहा ? तैसे सर्वज्ञ वीतराग कृतार्थ सिद्ध भगवान तिनको इन्द्रीनिके विषयनिकर कहा ? दीपको सूर्य चन्द्रादिककर कहा ? जे निर्भय जिनके शत्रु नाहीं तिनके आयुधनिकर कहा ? जे सबके अंतर्यामी सबको देखें जानें जिनके सकल अर्थ सिद्ध भये कछु करना नाहीं बांछा काहू वस्तुकी नाहीं ते सुखके सागर हैं। इच्छा मनसे होय है सो मन नाहीं आत्म सुखविषै तृप्त परम आनन्द स्वरूप क्षुधा तृषादि बाधारहित हैं तीर्थंकर देव जा सुखकी इच्छा करें ताकी महिमा कहांलग कहिए अहमिन्द्र इन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्र चक्रवर्त्यादिक निरंतर ताही पदका ध्यान करै हैं अर लौकांतिक देव ताही सुखके अभिलाषी हैं ताकी उपमा कहांलग करें। यद्यपि सिद्ध पदका सुख उपमारहित केवलीगम्य है तथापि प्रतिबोधके अर्थ तुमको सिद्धनिके सुखका कछु इक वर्णन करे हैं।

अतीत अनागत वर्तमान तीन कालके तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिक सर्व उत्कृष्ट भूमिके मनुष्यानिका सुख अर तीन कालका भोगभूमिका सुख अर इंद्र अहमिंद्र आदि समस्त देवनिका सुख भूत भविष्यत वर्तमान कालका सकल एकत्र करिए अर ताहि अनन्त गुणा फलाइए सो सिद्धानिके एक समयके सुख तुल्य नाहीं, काहेसे ? जो सिद्धानिका सुख निराकुल निर्मल अव्याबाध अखण्ड अतीन्द्रिय अविनाशी है अर देव मनुष्यनिका सुख उपाधिसंयुक्त बाधासहित विकल्परूप व्याकुलताकर भरा विनाशीक है अर एक दृष्टांत और सुनहु—मनुष्यनितैं राजा सुखी राजानितैं चक्रवर्ती सुखी अर चक्रवर्तीनितैं वितर-

देव सुखी अर विंतरानिसे ज्योतिषी देव सुखी तिनतैं भवनवासी अधिक सुखी अर भवनवासीनितैं कल्पवासी सुखी अर कल्पवासीनितैं नवग्रीवके सुखी नवग्रीवतैं नवअनुत्तरके सुखी अर तिनतैं पंच पंचोत्तरके सुखी पंचोत्तर सर्वार्थसिद्धि समान और सुखी नाहीं सो सर्वार्थसिद्धिके अहामिंद्रानितैं अनन्तानन्त गुणा सुख सिद्धपदमें है, सुखकी हद्द सिद्धपदका सुख है अनन्तदर्शन अनन्तज्ञान अनन्त सुख अनंत वीर्य्य यह आत्माका निज स्वरूप सिद्धनिमें प्रवर्ते है अर संसारी जीवानिके दर्शन ज्ञान सुख वीर्य कर्मनिके क्षयोपशमसे वाह्य वस्तुके निमित्त थकी विचित्रता लिए अल्परूप प्रवरतै है, यह रूपादिक विषय सुख व्याधिरूप विकल्परूप मोहके कारण इनमें सुख नाहीं जैसे फोडा राध रुधिरकर भरा फूलै ताहि सुख कहां? तैसे विकल्परूप फोडा महाव्याकुलतारूप राधिका भरा जिनके है तिनके सुख कहां? सिद्ध भगवान गतागतरहित समस्त लोकके शिखर विराजे हैं तिनके सुख समान दूजा सुख नाहीं जिनके दर्शन ज्ञान लोकालोकको देखें जानें तिन समान सूर्य कहां? सूर्य तो उदय अस्तकूं धरे है सकल प्रकाशक नाहीं, वह भगवान सिद्ध परमेष्ठी हथेलीमें आंवलेकी नाईं सकल वस्तुको देखे जानें हैं, छद्मस्थ पुरुषका ज्ञान उन समान नाहीं, यद्यपि अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी मुनि अविभागी परमाणु पर्यंत देखै हैं अर जीवनिके असंख्यात जन्म जानै हैं तथापि अरूपी पदार्थनिको न जानै हैं अर अनन्तकालकी न जानै, केवली ही जानै, केवलज्ञान केवलदर्शनकरयुक्त तिन समान और नाहीं सिद्धानिके ज्ञान अनंत दर्शन अनंत अर संसारी जीवानिके अल्पज्ञान अल्पदर्शन, सिद्धानिके अनंत सुख अनन्त वीर्य अर संसारानिके अल्पसुख अल्पवीर्य यह निश्चय जानो सिद्धानिके सुखकी महिमा केवलज्ञानी ही जाने अर चार ज्ञानके धारकहू पूर्ण न जानें यह सिद्धपद अभव्योंको अप्राप्य है इस पदको निकट भव्य ही पावें, अभव्य अनन्त कालहू काय क्लेश करें अनेक यत्न करें तौहू न पावें, अनादि कालकी लगी जो अविद्यारूप

स्त्री ताका विरह अभव्यानिके न होय, सदा अविद्याको लिए भव वनविषे शयन करें अर मुक्तिरूप स्त्री के मिलापकी बांछाविषे तत्पर जे भव्य जीव ते केयक दिन संसारमें रहे हैं सो संसारमें राजी नाहीं तप विषे तिष्ठते मोक्ष हीके अभिलाषी हैं जिनमें सिद्ध होनेकी शक्ति नाहीं उन्हें अभव्य कहिए अर जे सिद्ध होनहार हैं उन्हें भव्य कहिए। केवली कहे हैं—हे रघुनन्दन ! जिनशासन विना और कोई मोक्षका उपाय नाहीं। विना सम्यक्त कर्मनिका क्षय न होय, अज्ञानी जीव कोटि भवमें जे कर्म न खिपाय सके सो ज्ञानी तीन गुप्तिको धरे एक मुहूर्तमें खिपावे, सिद्ध भगवान परमात्मा प्रसिद्ध हैं सर्व जगतके लोग उनको जाने हैं कि वे भगवान हैं केवली विना उनको कोई प्रत्यक्ष देख जान न सके, केवलज्ञानी ही सिद्धनिको देखे जाने हैं। मिथ्यात्वका मार्ग संसारका कारण या जीवने अनंत भवमें धारा। तुम निकट भव्य हो परमार्थकी प्राप्तिके अर्थ जिनशासनकी अखण्ड श्रद्धा धारो। हे श्रेणिक ! यह वचन सकलभूषण केवलीके सुन श्रीरामचन्द्र प्रणामकर कहते भए—हे नाथ ! या संसार समुद्रतैं मोहि तारो हे भगवन् ! यह प्राणी कौन उपायकर संसारके वासतैं छूटे है। तब केवली भगवान् कहते भए—हे राम ! सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र मोक्षका मार्ग है जिनशासनविषे यह कहा है तत्त्वका जो श्रद्धान ताहि सम्यग्दर्शन कहिए तत्त्व अनन्तगुणपर्यायरूप है ताके दोय भेद हैं एक चेतन दूसरा अचेतन है। सो जीव चेतन है अर सर्व अचेतन हैं अर दर्शन दोय प्रकारतैं उपजे है एक निसर्ग एक अधिगम। जो स्वतः स्वभाव उपजे सो निसर्ग अर गुरुके उपदेशतैं उपजे सो अधिगम। सम्यक्दृष्टि जीव जिनधर्मविषे रत है। सम्यक्तके अतीचार पांच हैं—शंका कहिये जिनधर्मविषैं संदेह अर कांक्षा कहिये भोगनिकी अभिलाषा अर विचिकित्सा कहिये महामुनिको देख ग्लानि करनी अर अन्यदृष्टि प्रशंसा कहिये मिथ्यादृष्टिको मनमें भला जानना अर संस्तव कहिये वचनकर मिथ्यादृष्टिकी स्तुति करणा इनकर सम्यक्तमें दूषण उपजे हैं अर मैत्री प्रमो-

द करुणा मध्यस्थ ये चार भावना अथवा अनित्यादि बारह भावना अथवा प्रशम संवेग अनुकंपा आस्तिक्य अर शंकादि दोष रहितपना जिनप्रतिमा जिनमन्दिर जिनशास्त्र मुनिराजनिकी भक्ति इनकर सम्यक्दर्शन निर्मल होय है अर सर्वज्ञके वचन प्रमाण वस्तुका जानना सो ज्ञानकी निर्मलताका कारण है अर जो काहूते न सधै ऐसी दुर्धरक्रिया आचरणी ताहि चारित्र कहिये पांचों इंद्रियनिका निरोध मनका निरोध वचनका निरोध सर्व पापक्रियानिका त्याग सो चारित्र कहिये त्रस स्थावर सर्व जीवकी दया सबको आप समान जानै सो चारित्र कहिये, अर सुननेवालेके मन अर काननिको आनन्दकारी स्निग्ध मधुर अर्थसंयुक्त कल्याणकारी वचन बोलना सो चारित्र कहिये, अर मन वचन कायकर परधनका त्याग करना किसीका विना दीया कछु न लेना अर दीया हुआ आहारमात्र लेना सो चारित्र कहिये अर जो देवनिकर पूज्य महादुर्धर ब्रह्मचर्यव्रतका धारण सो चारित्र कहिये अर शिवमार्ग कहिये निर्वाणका मार्ग ताहि विघ्नकरणहारी मूर्छा कहिये मनकी अभिलाषा ताका त्याग सोई परिग्रहका त्याग सो हू चारित्र कहिये है। ये मुनिनिकेधर्म कहे अर जो अणुव्रती श्रावक मुनिनिको श्रद्धा आदि गुणनिकर युक्त नवधाभक्तिकर आहार देना सो एकदेशचारित्र कहिये अर परदारा परधनका परिहार पर पीडाका निवारण दयाधर्मका अंगीकार दान शील पूजा प्रभावना पर्वोपवासादिक सो ए देश चारित्र कहिये अर यम कहिये यावज्जीव पापका परिहार, नियम कहिये मर्यादारूप व्रत तपका अंगीकार वैराग्य विनय विवेक ज्ञान मन इंद्रियोंका निरोध ध्यान इत्यादि धर्मका आचरण सो एक देश चारित्र कहिये यह अनेक गुणकर युक्त जिनभासित चारित्र परम धामका कारण कल्याणकी प्राप्तिके अर्थ सेवने योग्य है जो सम्यकदृष्टि जीव जिनशासनका श्रद्धानी परनिंदाका त्यागी अपनी अशुभ क्रियाका निंदक जगतके जीवोंसे न सधै ऐसे दुर्द्धरतपका धारक संयमका साधनहारा सो ही दुर्लभ चारित्र धारिवेको समर्थ

होय अर जहां दया आदि समीचीन गुण नाहीं तहां चारित्र नाही अर चारित्र विना संसारसे निवृत्ति नाहीं जहां दया क्षमा ज्ञान वैराग्य तप संयम नहीं तहां धर्म नहीं विषय कषायका त्याग सोई धर्म है शम कहिए समता भाव परम शांत दम कहिये मन इंद्रियोंका निरोध संवर कहिये नवीन कर्मका निरोध जहां ये नहीं तहां चारित्र नहीं जे पापी जीव हिंसा करे हैं झूठ बोले हैं चोरी करे हैं परस्त्री सेवन करे हैं महा आरम्भी हैं परिग्रही हैं तिनके धर्म नहीं, जे धर्मके निमित्त हिंसा करे हैं ते अधर्मी अधमगतिके पात्र हैं जो मूढ जिनदीक्षा लेकर आरंभ करे हैं सो यति नहीं। यतिका धर्म आरंभ परिग्रहसे रहित है परिग्रह धारियोंको मुक्ति नहीं जे हिंसामें धर्म जान षट्कायिक जीवोंकी हिंसा करे हैं ते पापी हैं हिंसामें धर्म नाहीं हिंसकोंको या भव परभवके सुख नहीं शिव कहिए मोक्ष नहीं। जे सुखके अर्थ धर्मके अर्थ जीवघात करे हैं सो वृथा है जे ग्राम क्षेत्रादिकमें आसक्त हैं गाय भैंस राखे हैं मारें हैं बांधे हैं तोडे हैं दाहे हैं उनके वैराग्य कहां ? जे क्रय विक्रय करें हैं रसोई परेंहडा आदि आरम्भ राखे हैं सुवर्णादिक राखे हैं तिनको मुक्ति नाहीं जिनदीक्षा निरारम्भ है अतिदुर्लभ है जे जिनदीक्षा धारि जगतका धंधा करे हैं वे दीर्घ संसारी हैं जे साधु होय तेलादिकका मर्दन करे हैं स्नान करे हैं शरीरका संस्कार करे हैं पुष्पादिकको सूंघे हैं सुगन्ध लगावे हैं दीपकका उद्योत करे हैं धूप खेवे है सो साधु नहीं, मोक्षमार्गसे पराङ्मुख हैं अपनी बुद्धिकर जे कहे हैं हिंसाविषे दोष नाहीं वे मूर्ख हैं तिनको शास्त्रका ज्ञान नाहीं चारित्र नहीं।

जे मिथ्या दृष्टि तप करे हैं ग्रामविषे एक रात्रि बसे हैं नगर विषे पांच रात्रि अर सदा ऊर्ध्ववाहु राखे हैं मास मासोपवास करे हैं अर वनविषे विचरे हैं मौनी हैं निपरिग्रही हैं तथापि दयावान नहीं दुष्ट है हृदय जिनका सम्यक्त बीज विना धर्मरूप वृक्षको न उगाय सकें अनेक कष्ट करें तो भी शिवालय क-

हिए मुक्ति उसे न लहैं जे धर्मकी बुद्धिकर पर्वतसे पडें अग्निविषै जरें जलमें डूबें धरतीमें गडें वे कुमरण कर कुगतिको जावै हैं जे पापकर्मी कामनापरायण आर्त रौद्र ध्यानी विपरीत उपाय करें वे नरक निगोद लहैं। मिथ्यादृष्टि जो कदाचित् दान दे तप करैं सो पुण्यके उदय कर मनुष्य अर देव गतिके सुख भोगे हैं परन्तु श्रेष्ठ देव श्रेष्ठ मनुष्य न होंय सम्यग्दृष्टियोंके फलके असंख्यातवें भाग भी फल नहीं। सम्यग्दृष्टि चौथे गुणठाणे अव्रती हैं तौ हू नियम विषै है प्रेम जिनका सो सम्यकदर्शनके प्रसादसे देवलोकविषै उत्तम देव होवें अर मिथ्यादृष्टि कुलिंगी महातप भी करें तो देवनिके किंकर हीनदेव होंय बहुरि संसार भ्रमण करें अर सम्यकदृष्टि भव धरै तो उत्तम मनुष्य होय तिनमें देवनके भव सात मनुष्यनिके भव आठ या भांति पंद्रह भवविषै पंचमगति पावें वीतराग सर्वज्ञ देवने मोक्षका मार्ग प्रगट दिखाया है परन्तु यह विषयी जीव अंगीकार न करें हैं आशारूपी फांसीसे बंधे मोहके बश पडे तृष्णाके भरे पापरूप जंजीरसे जकडे कुगतिरूप बन्दीग्रहविषै पडे हैं स्पर्श अर रसना आदि इंद्रियोंके लोलुपी दुःख ही को सुख माने हैं यह जगतके जीव एक जिनधर्मके शरण बिना क्लेश भोगे हैं इंद्रियोंके सुख चाहें हैं सो मिले नाहीं अर मृत्युसे डरें सो मृत्यु छोडे नाहीं विफल कामना अर विफल भयके वश भए जीव केवल तापही को प्राप्त होय हैं तापके हरिबेका उपाय और नाहीं आशा अर शंका तजना यही सुखका उपाय है यह जीव आशाकर भरा भोगोंका भोग किया चाहे है अर धर्मविषै धीर्य नाहीं धरे है क्लेशरूप अग्निकर उष्ण महा आरम्भ विषै उद्यमी कछु भी अर्थ नहीं पावे है उलटा गांठका खोवे है यह प्राणी पापके उदयसे मनवांछित अर्थको नहीं पावे हैं उलटा अनर्थ होय है सो अनर्थ अतिदुर्जय है यह मैं किया यह मैं करूं हूं यह मैं करूंगा ऐसा विचार करते ही मरकर कुगति जाय है ये चारों ही गति कुगति हैं

एक पंचम गति निर्वाण सोई सुगति है जहांसे बहुरि आवना नहीं अर जगतविषै मृत्यु ऐसा नहीं देखे है जो याने यह किया यह न किया बाल अवस्था आदिसे सर्व अवस्थाविषै आय दाबे है जैसे सिंह मृगको सब अवस्थामें आय दाबे अहो यह अज्ञानी जीव अहितविषै हितकी बांछा धरै है अर दुखविषै सुखकी आशा करै है अनित्यको नित्य जाने है भय विषै शरण माने है इनके विपरीत बुद्धि है यह सब मिथ्यात्वका दोष है यह मनुष्यरूप माता हाथी भार्या रूप गर्तविषै पडा अनेक दुःखरूप बन्धनकर बंधै है विषयरूप मांसका लोभी मत्स्यकी नांई विकल्परूपी जालमें पडे है यह प्राणी दुर्बल बलदकी न्याई कुटुम्बरूप कीचमें फंसा खेद खिन्न होय है जैसे वैरियोंसे बन्धा अर अन्धकूपमें पडा उसका निकसना अति कठिन है तैसे स्नेहरूप फांसीकर बंधा संसाररूप अन्धकूपविषै पडा अज्ञानी जीव उसका निकसना अति कठिन है कोई निकट भव्य जिनवाणीरूप रस्सेको गहै अर श्रीगुरु निकासनेवाले होंय तो निकसै अर अभव्य जीव जैनेन्द्री आज्ञारूप अति दुर्लभ आनन्दका कारण जो आतमज्ञान उसे पायवे समर्थ नहीं जिनराजका निश्चय मार्ग निकटभव्य ही पावे अर अभव्य सदा कर्मोंकर कलंकी भए अतिक्लेशरूप संसारचक्रविषै भ्रमे हैं। हे श्रेणिक ! यह वचन श्रीभगवान सकल भूषणकेवलीने कहे तब श्रीरामचन्द्र हाथ जोड सीस निवाय कहते भए—हे भगवान मैं कौन उपायकर भव भ्रमणसे छूटूं मैं सकल राणी अर पृथ्वीका राज्य तजवे समर्थ हूं परन्तु भाई लक्ष्मणका स्नेह तजवे समर्थ नहीं, स्नेह समुद्रकी तरंगोंविषै डूबूं हूं आप धर्मोपदेश रूप हस्तालम्बन कर काढो। हे करुणानिधान मेरी रक्षा करो, तब भगवान कहते भए हे राम ! शोक न कर तू बलदेव है कैयक दिन वासुदेव सहित इंद्रकी न्याई इस पृथिवीका राज्यकर जिनेश्वरका व्रत धर केवल ज्ञान पावेगा, ए केवलीके वचन सुन श्रीरामचन्द्र हर्षकर रोमांचित भए नयनक-

मल फूलगए बदन कमल विकासित भया परम धीर्य युक्त होते भए अर रामको केवलीके मुखसे चरम शरीरी जान सुर नर असुर सबही प्रशंसाकर अति प्रीति करते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं रामका केवलीके मुख धर्मश्रवण वर्णन करनेवाला एकसौ पांचवां पर्व पूर्ण भया ॥ १०५ ॥

अथानन्तर विद्याधरनिविषै श्रेष्ठ राजा विभीषण रावणका भाई सुन्दर शरीरका धारक रामकी भक्ति ही है आभूषण जिसके सो दोनों कर जोड प्रणाम कर केवलीको पूछता भया, हे देवाधिदेव श्रीरामचन्द्रने पूर्व भवविषै क्या सुकृत किया जिसकर ऐसी महिमा पाई अर इनकी स्त्री सीता दण्डक बनसे कौन प्रसंगकर रावण हर लेगया धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पुरुषार्थका वेत्ता अनेक शास्त्रका पाठी कृत्य अकृत्यको जान धर्म अधर्मको पिछाने प्रधान गुण सम्पन्न सो काहेसे मोहके वश होय परस्त्रीकी अभिलाषा रूप अग्निविषैं पतंगके भावको प्राप्त भया अर लक्ष्मणने उसे संग्रामविषै हता रावण ऐसा बलवान विद्याधरनिका महेश्वर अनेक अद्भुत कार्योंका करणहारा सो कैसे ऐसे मरणको प्राप्त भया? तब केवली अनेक जन्मकी कथा विभीषणको कहते भए—हे लंकेश्वर राम लक्ष्मण दोनों अनेक भवके भाई हैं अर रावणके जीवसे लक्ष्मणके जीवका बहुत भवसे बैर है सो सुन। जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रविषै एक नगर वहां नयदत्त नामा वणिक अल्प धनका धनी उसकी सुनंदा स्त्री उसके धनदत्त नामा पुत्र सो रामका जीव अर दूजा पुत्र वसुदत्त सो लक्ष्मणका जीव अर एक यज्ञवलि नामा विप्र वसुदत्तका मित्र सो तेरा जीव अर उसही नगरविषै एक और वणिक सागरदत्त जिसके स्त्री रत्नप्रभा पुत्री गुणवती सो सीताका जीव अर गुणवतीका छोटा भाई जिसका नाम गुणवान सो भामण्डलका जीव अर गुणवती रूप

यौवन कला कांति लावण्यताकर मण्डित सो पिताका अभिप्राय जान धनदत्तसे बहिनकी सगाई गुणवा-
नने करी अर उसही नगरमें एक महा धनवान वणिक श्रीकांत सो रावणका जीव जो निरंतर गुणवती
के परिणवेकी अभिलाषा राखे अर गुणवतीके रूपकर हरा गया है चित्त जिसका सो गुणवतीका भाई
लोभी धनदत्तको अल्प धनवंत जान श्रीकांतको महाधनवन्त देख परणायवेको उद्यमी भया ॥

सो यह वृत्तान्त यज्ञवलि ब्राह्मणने वसुदत्तको कहा तेरे वडे भाईकी मांग कन्याका वडा भाई, श्रीकांतको धनवान जान परणाया चाहे है तव वसुदत्त यह समाचार सुन श्रीकांतके मारिवेको उद्यमी भया खड्ग पैनाय अंधेरी रात्रीविषै श्याम वस्त्र पहिर शब्दरहित धीरा धीरा पग धरता जाय श्रीकांत के घरविषै गया सो वह असावधान बैठा हुता सो खड्गसे मारा तव पडते पडते श्रीकान्तने भी वसुदत्त को खड्गसे मारा सो दोनों मरे सो विंध्याचलके वनमें हिरण भए अर नगरके दुर्जन लोक हुते तिन्हों ने गुणवती धनदत्तको न परणायवे दीनी कि इसके भाईने अपराध कीया, दुर्जन लोक विना अपराध कोप करें सो यह तो एक बहाना पाया तव धनदत्त अपने भाईका मरण अर अपना अपमान तथा मांग का अलाभ जान महादुखी होय घरसे निकस विदेश गमन करता भया अर वह कन्या धनदत्तकी अप्रा-प्तिकर अतिदुखी भई और भी किसीको न परणती भई, अर कन्या मुनिनिकी निंदा अर जिनमार्गकी अश्रद्धा मिथ्यात्वके अनुरागकर पाप उपार्जे काल पाय आर्त ध्यानकर मूई सो जिस वनविषै दोनों मृग भए हुते तिस वनविषै यह मृगी भई सो पुर्वले विरोधकर इसीके अर्थ ते दोनों मृग परस्पर लडकर मूए, सो वन सूकर भए बहुरि हाथी भैंसा बैल वानर गैंडा ल्याली मींढा इत्यादि अनेक जन्म धरते भए अर यह वाही जातिकी तिर्यंचिनी होती भई सो याके निमित्त परस्पर लडकर मूए जलके जीव थलके जीव होय होय प्राण तजते भए अर धनदत्त मार्गके खेदकर अति दुखी, एक दिन सूर्य अस्त समय मुनिनिके

आश्रम गया भोला कछु जाने नाहीं साधुनिसे कहता भया मैं तृषाकर पीडित हूं मुझे जल पिलावो तुम धर्मात्मा हो तब मुनि तो न बोले अर कोई जिनधर्मी मधुर वचनकर इसे संतोष उपजायकर कहता भया हे मित्र रात्रीको अमृत भी न पीवना जलकी कहा बात जिस समय आंखनिकर कछू सूझे नहीं सूक्ष्म जीव दृष्टि न पडें ता समय हे वत्स यदि तू अति आतुर भी होय तौ भी खान पान न करना रात्री आहारविषै मांसका दोष लागे है इसलिये तू न कर जाकर भवसागरविषै डूबियें । यह उपदेश सुन धनदत्त शान्तचित्त भया शक्ति अल्प थी इसलिये यति न होयसका दयाकर युक्त है चित्त जाका सो अणुव्रती श्रावक भया, बहुरि काल पाय समाधिमरण कर सौधर्म स्वर्गविषै बडी ऋद्धिका धारक देव भया मुकुट हार भुजबंधादिक कर शोभित पूर्व पुण्यके उदयसे देवांगनादिक सुख भोगे बहुरि स्वर्गसे चय कर महापुर नामा नगरविषै मेरुनामा श्रेष्ठी ताकी धारिणी स्त्रीके पद्मरुचि नामा पुत्र भया अर ताही नगरविषै राजा छत्रछाय राणी श्रीदत्ता गुणनिकी मंजूषा हुता सो एक दिन सेठका पुत्र पद्मरुचि अपने गोकुलविषै अश्व चढा आया सो एक वृद्धगति वलदको कंठगत प्राण देखा तब इस सुगंध वस्त्र माला के धारकने तुरंगसे उतर अतिदया कर बैलके कानविषै नमोकार मंत्र दिया सो बलदने चित्त लगाय सुना अर प्राण तज राणी श्रीदत्ताके गर्भविषै आय उपजा राजा छत्रछायके पुत्र न था सो पुत्रके जन्म विषै अतिहर्षित भया नगरकी अतिशोभा करी बहुत द्रव्य खरचा बडा उत्सव कीया वादित्रोंके शब्द कर दशो दिशा शब्दायमान भई यह बालक पुण्यकर्मके प्रभावकर पूर्वजन्म जानता भया सो बलदके भवका शीत आताप आदि महादुख अर मरण समय नमोकार मंत्र सुना ताके प्रभावकर राजकुमार भया सो पूर्व अवस्था यादकर बालक अवस्थाविषै ही महा विवेकी होता भया जब तरुण अवस्था भई तब एक दिन बिहार करता बलदके मरणके स्थानक गया अपना पूर्व चारित्र चितार यह वृषभध्वज कुमार

हाथीसे उतर पूर्वजन्मकी मरणभूमि देख दुखित भया अपने मरणका सुधारणहारा नमोकार मंत्रका देनहारा उसके जानिबेके अर्थ एक कैलाशके शिखर समान ऊंचा चैत्यालय बनाया अर चैत्यालयके द्वारविषै एक बडे बैलकी मूर्ति जिसके निकट बैठा एक पुरुष नमोकार मंत्र सुनावे है ऐसा एक चित्रपट लिखाय मेला अर उसके समीप समझने मनुष्य मेले। दर्शन करवेको मेरु श्रेष्ठीका पद्मरुचि आया सो देख अति हर्षित भया अर भगवानका दर्शन कर पीछे आय बैलके चित्रपटकी ओर निरखकर मनविषै विचारे है बैलको नमोकार मंत्र मैंने सुनाया था सो खडा खडा देखे ते पुरुष रखवारे थे तिन जाय राजकुमारको कही सो सुनते ही बडी ऋद्धिसे युक्त हाथी चढा शीघ्रही अपने परम मित्रसे मिलने आया हाथीसे उतर जिनमंदिरविषै गया बहुरि बाहिर आया पद्मरुचिको बैलकी ओर निहारता देखा राजकुमारने श्रेष्ठीके पुत्रको पूछी तुम बैलके पटकी ओर कहा निरखा हो ? तब पद्मरुचिने कही एक मरते बैलको मैंने नमोकार मंत्र दिया था सो कहां उपजा है यह जानिवेकी इच्छा है तब वृषभध्वज बोले वह मैं हूं, ऐसा कह पायन पडा अर पद्मरुचिकी स्तुति करी जैसे गुरुकी शिष्य करै अर कहता भया मैं पशु महा अविवेकी मृत्युके कष्टकर दुखी था सो तुम मेरे महा मित्र नमोकार मंत्रके दाता समाधिमरणके कारण होते भए तुम दयालु पर भवके सुधारणहारेने महा मंत्र मुझे दिया उससे मैं राजकुमार भया जैसा उपकार राजा देव माता सहोदर मित्र कुटुम्ब कोई न करै तैसा तुम किया जो तुम नमोकार मंत्र दिया उस समान पदार्थ त्रैलोक्यमें नहीं उसका बदला मैं क्या दूं तुमसे उरण नहीं तथापि तुमविषै मेरी भक्ति अधिक उपजी है जो आज्ञा देवो सो करूं। हे पुरुषोत्तम ! तुम आज्ञा दानकर मुझको भक्त करो यह सकल राज्य लेवो मैं तुम्हारा दास यह मेरा शरीर उसकर इच्छा होय सो सेवा करावो। या भांति वृषभध्वजने कही तब पद्मरुचिके अर याके अति प्रीति बढी दोनों सम्यकदृष्टि राजमें श्रावकके व्रत पालते भए ठौर

ठौर भगवानके बडे २ चैत्यालय कराए तिनमें जिनबिंब पधराए यह पृथिवी तिनकर शोभायमान होती भई बहुरि समाधि मरण कर वृषभध्वज पुण्यकर्मके प्रसादकर दूजे स्वर्गविषै देव भया देवांगनानिके नेत्ररूप कमल तिनके प्रफुल्लित करनेको सूर्य समान होता भया तहां मन वांछित क्रीडा करता भया अर पद्मरुचि सेठ भी समाधि मरणकर दूजे ही स्वर्ग देव भया दोनों वहां परम मित्र भए वहांसे चयकर पद्मरुचिका जीव पश्चिम विदेह विषै विजयार्धगिरि जहां नंद्यावर्त नगर वहां राजा नन्दीश्वर उसकी राणी कनकप्रभा उसके नयनानन्द नामा पुत्र भया सो विद्याधरानिके चक्रपदकी संपदा भोगी बहुरि महा मुनिकी अवस्था धर विषम तप किया समाधि मरण कर चौथे स्वर्ग देव भया वहां पुण्यरूप बेलके सुखरूप फल महा मनोग्य भोगे बहुरि वहांसे चयकर सुमेरु पर्वतके पूर्व दिशाकी ओर विदेह वहां क्षेमपुरी नगरी राजा विपुलबाहन राणी पद्मावती तिनके श्रीचन्द्र नामा पुत्र भया वहां स्वर्ग समान सुख भोगे तिनके पुण्यके प्रभावसे दिन दिन राजकी वृद्धि भई अटूट भंडार भया समुद्रांत पृथिवी एक ग्रामकी न्याईं वश करी अर जिसके स्त्री इंद्राणी समान सो इंद्रकैसे सुख भोगे हजारों वर्ष सुखसे राज्य किया एक दिन महा संघ सहित तीन गुप्तिके धारक समाधिगुप्त योगीश्वर नगरके बाहिर आय विराजे तिनको उद्यानविषै आया जान नगरके लोक बन्दनाको चले सो महा स्तुति करते वादित्र वजावते हर्षसे जाय हैं, श्रीचन्द्र समीपके लोकोंसे पूछता भया यह हर्षका नाद जैसा समुद्र गाजे तैसा होय है सो कौन कारण है ? तब मंत्रियनिने किंकर दोडाए निश्चय किया जो मुनि आए हैं तिनके दर्शनको लोक जाय हैं यह समाचार राजा सुनकर फूले कमल समान भए हैं नेत्र जिसके अर शरीरविषै हर्षसे रोमांच होय आये राजा समस्त लोक अर परिवार सहित मुनिके दर्शनको गया प्रसन्न है मुख जिनका ऐसे मुनिराज तिनको राजा देख प्रणामकर महा विनयसंयुक्त पृथिवीविषै बैठा। भव्य जीवरूप कमल तिनके प्रफुल्लित

करवेंको सूर्य समान ऋषिनाथ तिनके दर्शनसे राजाको अति धर्म स्नेह उपजा, वे महा तपोधन धर्म-शास्त्रके वेत्ता परम गंभीर लोकोंको तत्त्वज्ञानका उपदेश देते भए यतिका धर्म अर श्रावकका धर्म संसार समुद्रका तारणहारा अनेक भेद संयुक्त कहा अर प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोग का स्वरूप कहा। प्रथमानुयोग कहिए उत्तम पुरुषोंका कथन अर करणानुयोग कहिए तीन लोकका कथन चरणानुयोग कहिए मुनि श्रावकका धर्म अर द्रव्यानुयोग कहिए षट्द्रव्य सप्त तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकायका निर्णय। कैसे हैं मुनिराज वक्तानिविषै श्रेष्ठ हैं अर आक्षेपणी कहिए जिन मार्ग उद्योतनी अर क्षेपणी कहिए मिथ्यात्वखंडनी अर संवेगिनी कहिए धर्मानुरागिणी अर निर्वेदिनी कहिए वैराग्यकारिणी यह चार प्रकार कथा कहते भए, इस संसार असारविषै कर्मके योगसे भ्रमता जो यह प्राणी सो महा कष्टसे मोक्ष मार्गको प्राप्त होय है संसारका ठाठ विनाशीक है जैसा संध्याका वर्ण अर जलका बुदबुदा तथा जलके झाग अर लहर अर विजुरीका चमत्कार इंद्र धनुष क्षण भंगुर हैं असार हैं ऐसा जगतका चरित्र क्षणभंगुर जानना यामें सार नहीं नरक तिर्यंचगति तो दुःख रूप ही हैं अर देव मनुष्य गतिविषै यह प्राणी सुख जाने है सो सुख नहीं दुःख ही है जिससे तृप्ति नाहीं सोही दुःख जो महेन्द्र स्वर्गके भोगों से तृप्त नहीं भया सो मनुष्य भवके तुच्छ भोगसे कैसे तृप्त होय ? यह मनुष्य भव भोग योग्य नहीं वैराग्य योग्य है काहू एक प्रकारसे दुर्लभ मनुष्य देह पाया जैसे दरिद्री निधान पावे सो विषय रसका लोभी होय वृथा खोया मोहको प्राप्त भया जैसे सूके इन्धनसे अग्निको कहां तृप्ति अर नदियानके जलसे समुद्र को कहां तृप्ति ? तैसे विषय सुखसे जीवनको तृप्ति न होय, चतुर भी विषय रूप मद कर मोहित भया मन्दताको प्राप्त होय है, अज्ञान रूप तिमिरसे मंद भया है मन जिसका सो जलविषै डूबता खेदखिन्न होय त्यों खेदखिन्न है परन्तु अविवेकी तो विषय हीको भला जाने है सूर्य तो दिनको ताप उपजावे अर काम

रात्रि दिन आताप उपजावै सूर्यके आताप निवारिवेके अनेक उपाय हैं अर कामके निवारवेका उपाय एक विवेक ही है जन्म जरा मरणका दुःख संसारविषै भयंकर है जिसका चितवन किए कष्ट उपजे यह कर्मजनित जगतका ठाठ अरहटके यन्त्रकी घडी समान है रीता भर जाय है भरा रीता होय है नीचला ऊपर ऊपरला नीचे, अर यह शरीर दुर्गंध है यंत्र समान चलाया चले है विनाशीक है मोह कर्मके योगसे जीवका कायासे स्नेह है जलके बुद्बुदा समान मनुष्य भवके उपजे सुख असार जान बडे कुलके उपजे पुरुष विरक्त होय जिनराजका भाषा मार्ग अंगीकार करे हैं उत्साहरूप बषतर पहिरे निश्चय रूप तुरंगके असवार ध्यानरूप खडगके धारक धीर कर्मरूप शत्रुको विनाश निर्वाणरूप नगर लेय हैं, यह शरीर भिन्न अर मैं भिन्न ऐसा चिंतवन कर शरीरका स्नेह तज हे मनुष्यो धर्मको करो धर्म समान और नहीं और धर्मोंसे मुनिका धर्म श्रेष्ठ है जिन महामुनियोंके सुख दुःख दोनों तुल्य अपना अर पराया तुल्य जे राग द्वेष रहित महा पुरुष हैं वे परम उत्कृष्ट शुक्ल ध्यानरूप अग्निसे कर्मरूप वनी दुःख रूप दुष्टोंसे भरी भस्म करें हैं॥

ये मुनिके वचन राजा श्रीचंद्र सुन बोधको प्राप्त भया, विषयानुभव सुखसे वैराग्य होय अपने ध्वजकांति नामा पुत्रको राज्य देय समाधिगुप्त नामा मुनिके समीप मुनि भया। महा विरक्त है मन जिसका, सम्यक्त्वकी भावनासे तीनों योग जे मन वचन काय तिनकी शुद्धता धरता संता पांच समिति तीन गुप्तिसे मंडित राग द्वेषसे परांगमुख रत्नत्रयरूप आभूषणोंका धारक उत्तम क्षमा आदि दशलक्षण धर्मकर मंडित जिनशासनका अनुरागी समस्त अंग पूर्वांगका पाठक समाधानरूप पंच महाव्रतका धारक जीवोंका दयालु सप्त भयरहित परमधीर्यका धारक बाईस परीषहका सहनहारा, वेला तेला पक्ष मासादिक अनेक उपवासका करणहारा शुद्ध आहारका लेनहारा ध्यानाध्ययनमें तत्पर निर्ममत्व अतींद्रिय

भोगोंकी बांछाका त्यागी निदान बंधनरहित महाशांत जिनशासनमें है वात्सल्य जिसका, यतिके आचारमें संघके अनुग्रहविषै तत्पर बालके अग्रभागके कोटिवें भाग हू नाहीं है परिग्रह जाके, स्नानका त्यागी, दिगंबर, संसारके प्रबंधतैं रहित, ग्रामके वनविषै एक रात्रि अर नगरके वनविषै पांच रात्रि रहनहारा, गिरि गुफा गिरिशिखर नदीके पुलिन उद्यान इत्यादि प्रशस्त स्थानविषै निवास करणहारा कायोत्सर्गका धारक देहतैं हू निर्ममत्व निश्चल मौनी पंडित महातपस्वी इत्यादि गुणनिकर पूर्ण कर्म पिंजर कों जर्जराकर काल पाय श्रीचंद्रमुनि रामचंद्रका जीव पांचवें स्वर्ग इंद्र भया, तहां लक्ष्मी कीर्ति कांति प्रतापका धारक देवनिका चूडामणि तीन लोकविषै प्रसिद्ध परम ऋद्धिकरयुक्त महासुख भोगता भया। नंदनादिक वनविषै सौधर्मादिक इंद्र याकी संपदाको देख रहैं, याके अवलोकनकी सबके बांछा रहै महा सुंदर विमान मणि हेममई मोतिनिकी झालरिनिकर मंडित, वामें बैठा विहार करै दिव्य स्त्रीनिके नेत्रोंको उत्सवरूप महासुखतैं काल व्यतीत करता भया, श्रीचंद्रका जीव ब्रह्मेंद्र ताकी महिमा, हे विभीषण! वचन कर न कही जाय, केवलज्ञानगम्य है। यह जिनशासन अमोलिक परमरत्न उपमारहित त्रैलोक्यविषै प्रकट है तथापि मूढ न जानै। श्रीजिनेंद्र मुनींद्र अर जिनधर्म इनकी महिमा जानकर हू मूर्ख मिथ्या अभिमानकर गर्वित भए धर्मसे परांगमुख रहें। जो अज्ञानी या लोकके सुखविषै अनुरागी भया है सो बालक समान अविवेकी है जैसे बालक विना समझे अभक्ष्यका भक्षण करै है विषपान करै है तैसे मूढ अयोग्यका आचरण करे है जे विषयके अनुरागी हैं सो अपना बुरा करे हैं, जीवोंके कर्म बंधकी विचित्रता है इसलिए सब ही ज्ञानके अधिकारी नहीं, कैयक महाभाग्य ज्ञानको पावे हैं अर कैयक ज्ञानको पाय और वस्तुकी बांछाकर अज्ञान दशाको प्राप्त होय हैं अर कैयक महानिंद्य जो यह संसारी जीवोंनेके मार्ग तिनमें रुचि करे हैं, वे मार्ग महादोषके भरे हैं जिनमें विषय कषायकी बहुलता है जिनशासनसे

और कोई दुःखके छुडायवेका मार्ग नहीं इसलिए हे विभीषण ! तुम आनन्द चित्त होयकर जिनेश्वर देवका अर्चन करो, इस भांति धनदत्तका जीव मनुष्यसे देव, देवसे मनुष्य होयकर नवमे भव रामचंद्र भए, उसकी विगत पहिले भव धनदत्त १ दूजे भव पहले स्वर्ग देव २ तीजे भव पद्मरुचि सेठ ३ चौथे भव दूजे स्वर्ग देव ४ पांचवें भव नयनानंदराजा ५ छठे भव चौथे स्वर्ग देव ६ सातमें भव श्रीचंद्र राजा ७ आठवें भव पांचवें स्वर्ग इंद्र—नववें भव रामचंद्र ९ आगे मोक्ष यह तो रामके भव कहे अब हे लंकेश्वर ! बसुदत्तादिकका वृत्तांत सुन—कर्मोंकी विचित्रगतिके योगकर मृणालकुण्ड नामा नगर तहां राजा विजयसेन राणी रत्नचूला उसके वज्रकंबु नामा पुत्र उसके हेमवती राणी उसके शंभु नामा पुत्र पृथ्वीमें प्रसिद्ध सो यह श्रीकांतका जीव रावण होनहार सो पृथ्वीमें प्रसिद्ध अर वसुदत्तका जीव राजा का पुरोहित उस का नाम श्रीभूति सो लक्ष्मण होनहार, महा जिनधर्मी सम्यग्दृष्टि उसके स्त्री सरस्वती उसके वेदवती नामा पुत्री भई, सो गुणवतीका जीव सीता होनहार गुणवतीके भवसे पूर्व सम्यक्त विना अनेक तिर्यंच योनिविषै भ्रमणकर साधुवोंकी निंदाके दोषकर गंगाके तट मरकर हाथिनी भई। एक दिन कीचमें फंसी पराधीन होय गया है शरीर जिसका नेत्र तिरमिराट अर मंद २ सांस लेय सो एक तरंगवेग नामा विद्याधर महादयावान उसने हथिनीके कानमें नमोकार मंत्र दिया सो नमोकार मंत्रके प्रभावकर मंद कषाय भई अर विद्याधरने व्रत भी दिए सो जिनधर्मके प्रसादसे श्रीभूति पुरोहितके वेदवती पुत्री भई एक दिन मुनि आहारको आए सो यह हंसने लगी तब पिताने निवारी सो यह शांतचित्त होय श्राविका भई अर यह कन्या परमरूपवती सो अनेक राजावोंके पुत्र इसके परिणावेको अभिलाषी भए अर यह राजा विजयसेनका पोता शंभु जो रावण होनहार है सो विशेष अनुरागी भया अर पुरोहित श्रीभूति महा जिनधर्मी सो उसने जो मिथ्यादृष्टि कुवेर समान धनवान होय तौ हू मैं पुत्री न दूं यह मेरे प्रतिज्ञा है

तव शंभुकुमारने रात्रिविषै पुरोहितको मारा सो पुरोहित जिनधर्मके प्रसादसे स्वर्ग लोकविषै देव भया अर शंभुकुमार पापी वेदवती साक्षात् देवी समान उसे न इच्छतीको वलात्कार परणवेको उद्यमी भया वेदवतीके सर्वथा अभिलाषा नहीं तव कामकर प्रज्वलित इस पापीने जोरावरी कन्याको अलिंगनकर मुख चुंव मैथुन किया तव कन्या विरक्त हृदय कांपे है शरीर जिसका अग्निकी शिखा समान प्रज्वलित अपने शील घातकर अर पिताके घातकर परम दुखको धरती लाल नेत्र होय महा कोपकर कहती भई–अरे पापी ! तैंने मेरे पिताको मार मो कुमारीसे वलात्कार विषयसेवन किया सो नीच ! मैं तेरे नाशका कारण होऊंगी मेरा पिता तैंने मारा सो वडा अनर्थ किया मैं पिताका मनोरथ कभी भी न उलंघू मिथ्यादृष्टि सेवनसे मरण भला ऐसा कह वेदवती श्रीभूति पुरोहितकी कन्या हरिकांता आर्याके समीप जाय आर्यिकाके व्रत लेय परम दुर्धर तप करती भई, केश लुंच किए महा तप कर रुधिर मांस सुकाय दिए प्रकट दीखे है अस्थि अर नसा जिसके, तपकर सुकाय दिया है देह जिसने समाधि मरणकर पांचवें स्वर्ग गई पुण्यके उदयकर स्वर्गके सुख भोगे अर शंभु संसारविषै अनीतिके योगकर अति निन्दनीक भया कुटुंब सेवक अर धनसे रहित भया उन्मत्त होय गया जिनधर्म परांगमुख भया साधुवों को देख हंसे निंदा करै मद्य मांस शहतका आहारी पाप क्रियाविषै उद्यमी अशुभके उदयकर नरक तिर्यंचविषै महा दुख भोगता भया ॥

अथानन्तर कछु इक पापकर्मके उपशमसे कुशध्वज नामा ब्राह्मण ताके सावित्री नामा स्त्रीके प्रभासकुन्द नामा पुत्र भया सो दुर्लभ जिनधर्मका उपदेश पाय विचित्रमुनिके निकट मुनि भया काम क्रोध मद मत्सर हरे, आरंभरहित भया, निर्विकार तपकर दयावान निस्पृही जितेंद्री पक्षमास उपवास करै जहां सूर्य अस्त हो तहां शून्य वनविषै बैठ रहै मूलगुण उत्तरगुणका धारक बाईस परीषहका सहनहार।

ग्रीषमविषै गिरिके शिखर रहै, वर्षामें वृक्षतले बसै अर शीतकालविषै नदी सरोवरीके तट निवास करै। या भांति उत्तम क्रियाकर युक्त श्री सम्मेदशिखरकी बन्दनाको गया वह निर्वाण क्षेत्र कल्याणका मन्दिर जाका चिंतवन किये पापनिका नाश होय तहां कनकप्रभ नामा विद्याधरकी विभूति आकाशविषै देख मूर्खने निदान किया जो जिनधर्मके तपका माहात्म्य सत्य है तो ऐसी विभूति मैं हू पाऊं। यह कथा भगवान केवलीने विभीषणको कही—देखो जीवोंकी मूढता तीनलोक जाका मोल नहीं ऐसा अमोलिक तपरूप रत्न भोगरूपी मूठी सागके अर्थ बेचा, कर्मके प्रभावकर जीवनकी विपर्यय बुद्धि होय है निदानकर दुःखित विषम तपकर वह तीजे स्वर्ग देव भया तहांसे चयकर भोगनिविषै है चित्त जाका सो राजा रत्नश्रवाके राणी केकसी ताके रावण नामा पुत्र भया, लंकोंमे महाविभूति पाई, अनेक हैं आश्चर्यकारी बात जाकी, प्रतापी पृथिवीमें प्रसिद्ध अर धनदत्तका जीव रात्रि भोजनके त्यागकर सुर नर गतिके सुख भोग श्रीचन्द्र राजा होय पंचम स्वर्ग दश सागर सुख भोग बलदेव भया, रूपकर बलकर विभूतिकर जा समान जगतविषै और दुर्लभ है महामनोहर चन्द्रमासमान उज्वल यशका धारक अर वसुदत्तका जीव अनुक्रमसे लक्ष्मीरूप लताके लपटानेका वृक्ष वासुदेव भया ताके भव सुन—वसुदत्त १ मृग २ शूकर ३ हस्ती ४ महिष ५ वृषभ ६ बानर ७ चीता ८ ल्याली ९ मीढा १० अर जलचर स्थलचरके अनेक भव ११ श्रीभूति पुरोहित १२ देवराजा १३ पुनर्वसु विद्याधर १४ तीजे स्वर्गदेव १५ बासुदेव १६ मेघा १७ कुटुम्बीका पुत्र १८ देव १९ बणिक् २० भोग भूमि २१ देव २२ चक्रवर्तीका पुत्र २३ बहुरि कइयक उत्तमभव धर पुष्करार्द्धके विदेहविषै तीर्थंकर अर चक्रवर्ती दोय पदका धारी होय मोक्ष पावेगा अर दशाननके भव श्रीकांत १ मृग २ सूकर ३ गज ४ महिष ५ वृषभ ६ बांदर ७ चीता ८ ल्याली ९ मीढा १० अर जलचर थलचरके अनेक भव ११ शंभु १२ प्रभासकुन्द १३ तीजे स्वर्ग १४ दशमुख

१५ बालुका १६ कुटुम्बी पुत्र १७ देव १८ बणिक १९ भोगभूमि २० देव २१ चक्रीपुत्र २२ बहुरि कइएक उत्तम भव धर भरत क्षेत्रविषैं जिनराज होय मोक्ष पावेगा बहुरि जगत जालविषे नाहीं अर जानकीके भव गुणवती १ मृगी २ शूकरी ३ हथिनी ४ महिषी ५ वानरी ७ चीती ८ ल्याली ९ गारढ १० जलचर स्थलचरके अनेक भव ११ चित्तोत्सवा १२ पुरोहितकी पुत्री वेदवती १३ पांचवें-स्वर्ग देवी अमृतवती १४ बलदेवकी पटराणी १५ सोलहवें स्वर्ग प्रतेंद्र १६ चक्रवर्ती १७ अहमिंद्र १८ रावणका जीव तीर्थंकर होयगा ताके प्रथम गणधरदेव होय मोक्ष प्राप्त होयगा । भगवान् सकलभूषण विभीषणसे कहे हैं–श्रीकांतका जीव कैयक भवमें शंभु प्रभासकुन्द होय अनुक्रमसे रावण भया जाने अर्द्ध भरतक्षेत्रमें सकल पृथ्वी वश करी, एक अंगुल आज्ञा सिवाय न रही अर गुणवतीका जीव श्रीभूतिकी पुत्री होय अनुक्रमकर सीता भई, राजा जनककी पुत्री श्रीरामचंद्रकी पटराणी विनयवती शीलवती पतिव्रतानिमें अग्रेसर भई जैसे इंद्रके शची चंद्रके रोहिणी रविके रेणा चक्रवर्तीके सुभद्रा तैसे रामके सीता सुन्दर है चेष्टा जाकी अर जो गुणवतीका भाई गुणवान् सो भामण्डल भया श्रीरामका मित्र जनक राजाकी राणी विदेहाके गर्भविषे युगल बालक भए भामण्डल भाई सीता बहिन दोनों महा मनोहर अर यज्ञबलि ब्राह्मणका जीव विभीषण भया अर बैलका जीव जो नमोकार मंत्रके प्रभावतैं स्वर्ग गति नर गतिके सुख भोगे यह सुग्रीव कपिध्वज भया, भामण्डल सुग्रीव अर तू पूर्व भवकी प्रीतिकर तथा पुण्यके प्रभावकर महा पुण्याधिकारी श्रीराम ताके अनुरागी भए। यह कथा सुन विभीषण बालिके भव पूछता भया अर केवली कहे हैं–हे विभीषण ! तू सुन, राग द्वेषादि दुखनिके समूहकर भरा यह संसार सागर चतुर्गतिमई ताविषे वृन्दावनविषैं एक कालेरा मृग सो साधु स्वाध्याय करते हुते तिनका शब्द अन्त कालमें सुनकर ऐरावत क्षेत्रविषे दित नामा नगर तहां विहित नामा मनुष्य सम्यग्दृष्टि

सुन्दर चेष्टाका धारक ताकी स्त्री शिवमति ताके मेघदत्त नामा पुत्र भया सो जिनपूजाविषै उद्यमी भगवानका भक्त अणुव्रतधारक समाधि मरणकर दूजे स्वर्ग देव भया, वहांसे चयकर जम्बूद्वीपविषै पूर्व विदेह विजियावतीपुरी ताके समीप महा उत्साहका भरा एक मत्तकोकिला नामा ग्राम ताका स्वामी कांतिशोक ताकी स्त्री रत्नांगिनी ताके स्वप्रभ नामा पुत्र भया महासुन्दर जाको शुभ आचार भावै सो जिनधर्मविषै निपुण संयत नामा मुनि होय हजारों वर्ष विधिपूर्वक बहुत भांतिके महातप किए, निर्मल है मन जाका सो तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजी तथापि अति निगर्व संयोग सम्बन्धविषै ममताको तज उपशम श्रेणी धार शुक्ल ध्यानके पहिले पाएके प्रभावतैं सर्वार्थसिद्धि गया सो तेतीस सागर अहमिंद्र पदके सुख भोग राजा सूर्यरज ताके बालि नामा पुत्र भया, विद्याधरानिका अधिपति किहकन्धपुरका धनी जिसका भाई सुग्रीव महा गुणवान सो जब रावण चढ आया तब जीव दयाके अर्थ बालीने युद्ध न किया सुग्रीवको राज्य देय दिगम्बर भया सो जब कैलाशविषै तिष्ठे था अर रावण आय निकसा क्रोधकर कैलाशके उठायवेको उद्यमी भया सो बाली मुनि चैत्यालयोंकी भक्तिसे ढीलासों अंगुष्ठ दबाया सो रावण दबने लगा तब राणीने साधुकी स्तुति कर अभयदान दिवाया। रावण अपने स्थानक गया अर बाली महामुनि गुरुके निकट प्रायश्चित्तनामा तप लेय दोष निराकरण कर क्षपक श्रेणी चढ कर्म दग्ध किए लोकके शिखर सिद्धिक्षेत्र है वहां गए जीवका निज स्वभाव प्राप्त भया अर वसुदत्तके अर श्रीकान्तके गुणवतीके कारण महा वैर उपजा था सो अनेक जन्मोंमें दोनों परस्पर लड लड मरे अर गुणवतीसे तथा वेदवतीसे रावणके जीवके अभिलाषा उपजी थी उस कारण कर रावणने सीता हरी अर वेदवतीका पिता श्रीभूति सम्यक्दृष्टि उत्तम ब्राह्मण सो वेदवतीके अर्थ शत्रुने हता सो स्वर्ग जाय वहांसे चयकर प्रतिष्ठित नाम नगरविषै पुनर्वसु नाम विद्याधर भया सो निदानसहित तपकर

तीजे स्वर्ग जाय रामका लघु भ्राता महा स्नेहवन्त लक्ष्मण भया अर पूर्वले वैरके योगसे रावणको मारा अर वेदवतीसे शंभुने विपर्यय करी तातैं सीता रावणके नाशका कारण भई जो जिसको हते सो उसकर हता जाय। तीन खण्डकी लक्ष्मी सोई भई रात्रि उसका चन्द्रमा रावण उसे हतकर लक्ष्मण सागरान्त पृथिवीका अधिपति भया रावणसा शूर वीर पराक्रमी या भांति मारा जाय यह कर्मोंका दोष है दुर्बलसे सबल होय सबलसे दुर्बल होय घातक है सो हता जाय अर हता होय सो घातक होय जाय। संसारके जीवोंकी यही गति है कर्मकी चेष्टाकर कभी स्वर्गके सुख पावें कभी नरकके दुःख पावें अर जैसे कोई महास्वादरूप परम अन्न उस विषै विष मिलाय दूषित करै तैसे मूढ जीव उग्र तपको भोगाभिलाषकर दूषित करे है जैसे कोई कल्पवृक्षको काटि कोईको वाडि करै अर विषके वृक्षको अमृतरस कर सींचे अर भस्मके निमित्त रत्नोंकी राशिको जलावे अर कोयलोंके निमित्त मलयागिरि चन्दनको दग्ध करै तैसे निदान बंधकर तपको यह अज्ञानी दूषित करें या संसारविषै सर्व दोषकी खान स्त्री है तिसके अर्थ क्या कुकर्म अज्ञानी न करें। जो या जीवने कर्म उपार्जे हैं सो अवश्य फल देय हैं कोऊ अन्यथा करवे समर्थ नहीं, जे धर्मविषे प्रीति करें वहुरि अधर्म उपार्जें वे कुगतिको प्राप्त होय हैं तिनकी भूल कहा कहिए? जे साधु होयकर मदमत्सर धरे हैं तिनको उग्रतप कर मुक्ति नहीं अर जिसके शांति भाव नहीं संयम नहीं तप नहीं उस दुर्जन मिथ्यादृष्टिके संसार सागरके तिरवेका उपाय कहां अर जैसे असराल पवनकर मदोन्मत्त गजेन्द्र उडै तो सुसाके उडवेका कहा आश्चर्य तैसे संसारकी झूठी मायाविषे चक्रवर्त्यादिक वडे पुरुष भूले तो छोटे मनुष्यनिकी क्या बात इस जगतविषै परम दुखका कारण वैर भाव है सो विवेकी न करें आत्मकल्याणकी है भावना जिनके पापकी करणहारी वाणी कदापि न बोलें। गुणवतीके भवविषे मुनिका अपवाद किया था अर वेदवतीके भवमें एक मंडलका नामा ग्राम वहां सुदर्शननामा मुनि वनमें

आए लोक बन्दना कर पीछे गये अर मुनिकी बहिन सुदर्शना नामा आर्यिका सो मुनिके निकट बैठी धर्म श्रवण करे थी सो वेदवतीने देखकर ग्रामके लोकोंके निकट मुनिकी निंदा करी कि मैं मुनिको अकेली स्त्रीके समीप बैठा देखा तब कैयकोंने बात मानी अर कैयक बुद्धिवन्तोंने न मानी परन्तु ग्राममें मुनिका अपवाद भया, तब मुनिने नियम किया कि यह झूठा अपवाद दूर होय तो आहारको उतरना तब नगरके देवताने वेदवतीके मुखकर समस्त ग्रामके लोकोंको कहाई कि मैं झूठा अपवाद किया। यह बहिन भाई हैं अर मुनिके निकट जाय वेदवतीने क्षमा कराई कि हे प्रभो ! मैं पापनीने मिथ्या वचन कहे सो क्षमा करी या भांति मुनिकी निंदाकर सीताका झूठा अपवाद भया, अर मुनिसे क्षमा कराई उसकर अपवाद दूर भया तातैं जे जिनमार्गी हैं वे कभी भी परनिंदा न करें किसीमें सांचा भी दोष है तौहू ज्ञानी न कहें अर कोऊ कहता होय इसे मने करें सर्वथा प्रकार पराया दोष ढाकें जे कोई पर निंदा करें हैं सो अनन्त काल संसार बनविषै दुख भोगवे हैं सम्यकदर्शनरूप जो रत्न उसका बडा गुण यही है जो पराया अवगुण सर्वथा ढांके जो सांचा भी दोष पराया कहे सो अपराधी है अर जो अज्ञानसे मत्सर भावसे पराया झूठा दोष प्रकाशै उस समान और पापी नहीं अपने दोष गुरुके निकट प्रकाशने अर पराए दोष सर्वथा ढाकने जो पराई निंदा करे सो जिन मार्गसे पराङ्मुख है।

यह केवलीके परम अद्भुत वचन सुनकर सुर असुर नर सब ही आनन्दको प्राप्त भए वैरभावके दोष सुन सब सभाके लोग महादुखके भयकर कम्पायमान भए मुनि तो सर्व जीवानिसे निर्वैर हैं अधिक शुद्ध भाव धारते भए अर चतुर्निकायके सब ही देव क्षमाकूं प्राप्त होय वैरभाव तजते भए अर अनेक राजा प्रतिबुद्ध होय शांति भाव धार गर्वका भार तज मुनि अर श्रावक भए अर जे मिथ्यावादी थे वह हू सम्यक्तकूं प्राप्त भए सब ही कर्मनिकी विचित्रता जान निश्वास नाषते भए । धिक्कार या जगतकी

मायाको याभांति सब ही कहते भए अर हाथ जोड सीस निवाय केवलीको प्रणामकर सुर असुर मनुष्य विभीषणकी प्रशंसा करते भए जो तिहारे आश्रयसे हमने केवलीके मुख उत्तम पुरुषानिके चारित्र सुने तुम धन्य हो वहुरि देवेंद्र नरेंद्र नागेंद्र सवही आनन्दके भरे अपने परिवार वर्ग सहित सर्वज्ञ देवकी स्तुति करते भए। हे भगवान पुरुषोत्तम ! यह त्रैलोक्य सकल तुमकर शोभै है तातैं तिहारा सकलभूषण नाम सत्यार्थ है तिहारी केवल दर्शन केवल ज्ञानमई निजविभूति सर्व जगतकी विभूतिको जीतकर शोभै हैं यह अनन्त चतुष्टय लक्ष्मी सर्व लोकका तिलक है, यह जगतके जीव अनादि कालके कर्म वश होय रहे हैं महादुखके सागरमें पडे हैं तुम दीनानिके नाथ दीनवन्धु करुणानिधान जीवानिको जिनराज पद देहु। हे केवलिन् ! हम भव वनके मृग जन्म जरा मरण रोग शोक वियोग व्याधि अनेक प्रकारके दुख भोक्ता अशुभ कर्मरूप जालविषे पडे हैं तातैं छूटना कठिन है सो तुम ही छुडाइवे समर्थ हो हमको निज बोध देवो जाकर कर्मका क्षय होय। हे नाथ ! यह विषय वासनारूप गहन वन तामें हम निजपुरीका मार्ग भूल रहे हैं सो तुम जगतके दीपक हमको शिवपुरीका पंथ दरसावो अर जे आत्मबोधरूप शांत रसके तिसाये तिनको तुम तृषाके हरणहारे महासरोवर हो अर कर्म भर्मरूप वनके भस्म करिवेको साक्षात दावानलरूप हो अर जे विकल्प जाल नाना प्रकारके तेई भए वरफ ताकर कंपायमान जगतके जीव तिनकी शीत व्यथा हरिवेको तुम साक्षात् सूर्य हो। हे सर्वेश्वर ! सर्व भूतेश्वर जिनेश्वर तिहारी स्तुति करिवेको चारज्ञानके धारक गणधरदेव हू समर्थ नाहीं तो अर कौन ? हे प्रभो ! तुमको हम वारम्वार नमस्कार करे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मण विभीषण सुग्रीव सीता भामण्डलके भव वर्णन करनेवाला एकसौ छवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०६ ॥

अथानन्तर केवलीके वचन सुन संसार भ्रमणका जो महादुःख ताकर खेदखिन्न होय जिन दीक्षा की है अभिलाषा जाके ऐसा रामका सेनापति कृतांतवक्र रामसूं कहता भया—हे देव ! मैं या संसार असारविषै अनादि कालका मिथ्या मार्गकर भ्रमता हुवा दुःखित भया अब मेरे मुनिव्रत धरिवेकी इच्छा है, तब श्रीराम कहते भए जिनदीक्षा अति दुर्धर है तू जगतका स्नेह तज कैसे धारैगा महातीव्र शीत उष्ण आदि बाईस परीषह कैसे सहेगा अर दुर्जन जनोंके दुष्टवचन कंटक तुल्य कैसे सहेगा अर अब तक तैंने कभी भी दुःख सहे नहीं कमलकी कर्णिका समान शरीर तेरा सो कैसे विषमभूमिके दुःख सहेगा गहन वनविषैं कैसे रात्रि पूरी करेगा अर प्रकट दृष्टि पडे हैं शरीरके हाड अर नसा जाल जहां ऐसे उग्र तप कैसे करेगा अर पक्ष मास उपवासकर दोष टाल पर घर नीरस भोजन कैसे करेगा ? तू महातेजस्वी शत्रुओंकी सेनाके शब्द न सहि सकै सो कैसे नीच लोकोंके किये उपसर्ग सहेगा ? तब कृतांतवक्र बोला हे देव ! जब मैं तिहारे स्नेहरूप अमृतको ही तजवेकों समर्थ भया तो मुझे कहा विषम है जब तक मृत्यु रूप वज्रकर यह देहरूप स्तंभ न चिगे ता पहिले मैं महादुःखरूप यह भव वन अंधकारमई वासे निकसा चाहूं हूं जो बलते घरमेंसे निकसे उसे दयावान न रोकै यह संसार असार महानिंद्य है इसे तजकर आतमहित करूं। अवश्य इष्टका वियोग होयगा या शरीरके योगकर सर्व दुःख हैं सो हमारे शरीर बहुरि उदय न आवे या उपायविषैं बुद्धि उद्यमी भई है । ये वचन कृतांतवक्रके सुन श्रीरामके आंसू आए अर नीठे नीठे मोहको दाब कहते भए—मेरीसी विभूतिको तज तू तपको सन्मुख भया है सो धन्य है जो कदाचित् या जन्मविषै मोक्ष न होय अर देव होय तो संकटविषै आय मोहि संबोधियो। हे मित्र ! जो तू मेरा उपकार जाने है तो देवगतिमें विस्मरण मत करियो।

तब कृतांतवक्रने नमस्कारकर कही हे देव ! जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कहि सर्व आभूषण उतारे अर सकलभूषण केवलीको प्रणामकर अन्तर बाहिरके परिग्रह तजे कृतांतवक्र था सो सौम्यवक्र होय गया। सुंदर है चेष्टा जिसकी, इसको आदि दे अनेक महाराजा वैरागी भए उपजी है जिनधर्मकी रुचि जिनके निर्ग्रंथव्रत धारते भए अर कैयक श्रावक व्रतको प्राप्त भए अर कैयक सम्यक्त को धारते भए वह सभा हर्षित होय रत्नत्रय आभूषणकर शोभित भई। समस्त सुर असुर नर सकलभूषण स्वामीको नमस्कारकर अपने अपने स्थानक गए अर कमल समान हैं नेत्र जिनके, ऐसे श्रीराम सकलभूषण स्वामीको अर समस्त साधुवोंको प्रणामकर महा विनयरूपी सीताके समीप आए। कैसी है सीता ? महा निर्मल तपकर तेज धरे जैसी घृतकी आहुतिकर अग्निकी शिखा प्रज्वालित होय तैसी पापोंके भस्म करिवेको साक्षात् अग्निरूप तिष्ठी है आर्यिकावोंके मध्य तिष्ठती देखी देदीप्यमान है किरणोंका समूह जिसके, मानों अपूर्व चंद्रकांति तारावोंके मध्य तिष्ठती है, आर्यिकावोंके व्रत धरे अत्यन्त निश्चल है। तजे हैं आभूषण जिसने तथापि श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी लज्जा इनकी शिरोमणि सोहै है श्वेत वस्त्रको धरे कैसी सोहै है मानों मंद पवनकर चलायमान हैं फेन कहिए झाग जिसके ऐसी पवित्र नदी ही है अर मानों निर्मल शरद पूनोंकी चांदनी समान शोभाको धरे समस्त आर्यिकारूप कुमुदनियोंको प्रफुल्लित करणहारी भासै है महा वैराग्यको धरे मूर्तिवंती जिनशासनकी देवता ही है सो ऐसी सीताको देख आश्चर्यको प्राप्त भया है मन जिनका ऐसे श्रीराम कल्पवृक्ष समान क्षण एक निश्चल होय रहे स्थिर हैं नेत्र भ्रकुटी जिनकी जैसे शरदकी मेघमालाके समीप कंचनागिरि सोहै तैसे श्रीराम आर्यिकावोंके समीप भासते भए, श्रीराम चित्तविषै चितवते हैं यह साक्षात् चंद्राकिरण भव्य जन कुमुदनीको प्रफुल्लित करण-

हारी सोहै है बडा आश्चर्य है यह कायर स्वभाव मेघके शब्दसे डरती सो अब महा तपस्विनी भयंकर वनविषै कैसे भयको न प्राप्त होयगी ? नितंबहीके भारसे आलस्यरूप गमन करणहारी महाकोमलशरीर तपसे विलाय जायगी । कहां यह कोमल शरीर अर कहां यह दुर्धर जिनराजका तप सो? अति कठिन है जो दाह बडे २ वृक्षोंको दाहे उसकर कमलनीकी कहा वात ? यह सदा मनवांछित मनोहर आहारकी करणहारी अब कैसे यथालाभ भिक्षा कर कालक्षेप करेगी ? यह पुण्याधिकारणी रात्रिविषै स्वर्गके विमान समान सुंदर महिलमें मनोहर सेजपर पोढती अर बीण बांसुरी मृदंगादि शब्दकर निद्रा लेती सो अब भयकर वनविषै कैसे रात्रि पूर्ण करेगी वन तो डाभकी तीक्ष्ण अणियोंकर विषम अर सिंह व्याघ्रादिके शब्दकर डरावना, देखो मेरी भूल जो मूढ लोकोंके अपवादसे मैं महासती पतिव्रता शीलवंती सुंदरी मधुरभाषिणी घरसे निकासी । इस भांति चिंताके भारकर पीडित श्रीराम पवनकर कंपायमान कमल समान कंपायमान होते भए फिर केवलीके वचन चितार धीर्य धर आंसू पोंछ शोकरहित होय महा विनयकर सीताको नमस्कार किया, लक्ष्मण भी सौम्य है चित्त जिसका हाथ जोड नमस्कारकर राम सहित स्तुति करता भया—हे भगवती धन्य तू सती बंदनीक है सुंदर है चेष्टा जिसकी जैसे धरा सुमेरु को धारे तैसे तू जिनराजका धर्म धारे है तैंने जिनवचनरूप अमृत पीया उसकर भव रोग निवारेगी सम्यक्त ज्ञानरूप जहाजकर संसार समुद्रको तिरेगी । जे पतिव्रता निर्मल चित्तकी धरणहारी हैं तिनकी यही गति है अपना आत्मा सुधारें अर दोनों लोक अर दोनों कुल सुधारें पवित्र चित्तकर ऐसी क्रिया आदरी । हे उत्तम नियमकी धरणहारी हम जो कोई अपराध किया होय सो क्षमा करियो संसारी जीवों के भाव अविवेकरूप होय हैं सो तू जिनमार्गविषै प्रवरती संसारकी माया अनित्य जानी अर परम आनंद

रूप यह दशा जीवोंको दुर्लभ है इस भांति दोनों भाई जानकीकी स्तुतिकर लव अंकुशको आगे धरे अनेक विद्याधर महीपाल तिन सहित अयोध्यामें प्रवेश करते भए जैसे देवों सहित इंद्र अमरावतीमें प्रवेश करे अर समस्त राणी नाना प्रकारके वाहनोंपर चढी परिवारसहित नगरमें प्रवेश करती भईं सो रामको नगरमें प्रवेश करता देख मंदिर ऊपर बैठी स्त्री परस्पर वार्ता करै हैं यह श्रीरामचंद्र महा शूरवीर शुद्ध है अन्तःकरण जिनका महा विवेकी मूढ लोकोंके अपवादसे ऐसी पतिव्रता नारी खोई तब कैयक कहती भईं जे निर्मल कुलके जन्मे शूरवीर क्षत्री हैं तिनकी यही रीति है किसी प्रकार कुलको कलंक न लगावें लोकोंके संदेह दूर करिवे निमित्त रामने उसको दिव्य दई वह निर्मल आत्मा दिव्यमें सांची होय लोकोंके संदेह मेट जिन दीक्षा धारती भई अर कोई कहै—हे सखी ! जानकी विना राम कैसे दीखे हैं जैसे विना चांदनी चांद अर दीप्ति विना सूर्य तब कोई कहती भई यह आप ही महाकांतिधारी हैं इनकी कांति पराधीन नहीं अर कोई कहती भई सीताका वज्रचित्त है जो ऐसे पुरुषोत्तम पतिको छोड जिन दीक्षा धारी तब कोई कहती भई धन्य है सीता जो अनर्थरूप गृहवासको तज आत्मकल्याण किया अर कोई कहती भई ऐसे सुकुमार दोनों कुमार महा धीर लव अंकुश कैसे तजे गए स्त्रीका प्रेम पतिसे छूटे परन्तु अपने जाए पुत्रोंसे न छूटे तब कोई कहती भई ये दोनों पुत्र परम प्रतापी हैं इनका माता कहा करेगी इनका सहाई पुण्य ही है अर सब ही जीव अपने अपने कर्मके आधीन हैं इस भांति नगरकी नारी वचनालाप करे हैं जानकीकी कथा कौनको आनन्दकारिणी न होय अर यह सब ही रामके दर्शनकी अभिलाषिनी रामको देखती देखती तृप्त न भईं जैसे भ्रमर कमलके मकरन्दसे तृप्त न होय अर कैयक लक्ष्मणकी ओर देख कहती भईं ये नरोत्तम नारायण लक्ष्मीवान अपने प्रतापकर वश करी है पृथ्वी जिन्होंने चक्रके धारक उत्तम राज्य-लक्ष्मीके स्वामी वैरियोंकी स्त्रियोंको विधवा करणहारे

रामके आज्ञाकारी हैं इस भांति दोनों भाई लोककर प्रशंसा योग्य अपने मंदिरमें प्रवेश करते भए जैसे देवेंद्र देवलोकमें प्रवेश करें। यह श्रीरामका चारित्र जो निरंतर धारण करे सो अविनाशी लक्ष्मीको पावै॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं कृतांतवक्रके वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ सातवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०७ ॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतम स्वामीके मुख श्रीरामका चारित्र सुन मनविषै विचरता भया कि सीताने लव अंकुश पुत्रोंसे मोह तजा सो वह सुकुमार मृगनेत्र निरन्तर सुखके भोक्ता कैसे माताका वियोग सह सके ? ऐसे पराक्रमके धारक उदारचित्त तिनको भी इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग होय है तो औरों की कहा बात ? यह विचार कर गणधर देवसे पूछा, हे प्रभो ! मैं तिहारे प्रसादकर राम लक्ष्मणका चरित्र सुना अब बाकी लव अंकुशका सुना चाहूं हूं तब इन्द्रभूति कहिए गौतम स्वामी कहते भए—हे राजन् ! काकन्दी नाम नगरी उसमें राजा रतिवर्द्धन राणी सुदर्शना ताके पुत्र दोय एक प्रियंकर दूजा हितंकर अर मन्त्री सर्वगुप्त राज्यलक्ष्मीका धुरंधर सो स्वामीद्रोही राजाके मारवेका उपाय चिंतवे अर सर्वगुप्तकी स्त्री विजयावती सो पापिनी राजासे भोग किया चाहे अर राजा शीलवान परदारापराङ्मुख याकी मायाविषै न आया, तब याने राजासे कही— मन्त्री तुमको मारा चाहे है सो राजाने याकी बात न मानी तब वह पतिको भरमावती भई जो राजा तोहि मार मोहि लिया चाहै है तब मन्त्री दुष्टने सब सामन्त राजासे फोरे अर राजाका जो सोवनेका महिल तहां रात्रिको अग्नि लगाई सो राजा सदा सावधान हुता अर महिलविषै गोप सुरंग रखाई थी सो सुरंगके मार्ग होय दोनों पुत्र अर स्त्रीको लेय राजा निकसा सो काशीका धनी राजा कश्यप महान्यायवान उग्रवंशी राजा रतिवर्धनका सेवक था उसके नगरको राजा

गोप्य चला अर सर्वगुप्त रतिवर्धनके सिंहासनपर बैठा सबको आज्ञाकारी किए अर राजा कश्यपको भी पत्र लिख दूत पठाया कि तुम भी आय मोहि प्रणामकर सेवाकरो, तब कश्यपने कही हे दूत! सर्वगुप्त स्वामीद्रोही है सो दुर्गतिके दुःख भोगेगा, स्वामीद्रोहीका नाम न लीजे मुख न देखिये सो सेवा कैसे कीजे? उसने राजाको दोनो पुत्र अर स्त्री सहित जलाया सो स्वामीघात स्त्रीघात अर बालघात यह महादोष उसने उपार्जे तातैं ऐसे पापीका सेवन कैसे करिये? जाका मुख न देखना सो सर्व लोकोंके देखते उसका सिरकाट धनीका वैर लूंगा, तब यह वचन कह दूत फेर दिया दूतने जाय सर्वगुप्तको सर्व वृत्तांत कहा, सो अनेक राजावोंकर युक्त महासेनासहित कश्यप ऊपर आया सो आयकर कश्यपका देश घेरा काशीके चौगिर्द सेना पडी तथापि कश्यपके सुलहकी इच्छा नहीं, युद्धहीका निश्चय, अर राजा रतिवर्धन रात्रिकेविषै काशीके वनविषै आया अर एक द्वारपाल तरुण कश्यपपर भेजा सो जाय कश्यपसे राजाके आवनेका वृत्तांत कहता भया सो कश्यप अतिप्रसन्न भया अर कहां महाराज कहां महाराज ऐसे वचन बारम्बार कहता भया तब द्वारपालने कहा, महाराज वनविषै तिष्ठे हैं तब यह धर्मी स्वामीभक्त अतिहर्षित होय परिवार सहित राजापै गया अर उसकी आरती करी अर पांव पडकर जय जयकार करता नगरमें लाया नगर उछाला अर यह ध्वनि नगरविषै विस्तरी कि जो काहूसे न जीता जाय ऐसा रतिवर्धन राजेंद्र जयवन्त होवो। राजा कश्यपने धनीके आवनेका अति उत्सव किया अर सब सेनाके सामन्तानिको कहाय भेजा जो स्वामी तो विद्यामान तिष्ठे है अर तुम स्वामीद्रोहीके साथ होय स्वामीसे लडोगे, कहा यह तुमको उचित है?

तब वह सकल सामंत सर्वगुप्तको छोड स्वामीपै आए अर युद्धविषै सर्वगुप्तको जीवता पकर काकंदी नगरीका राज्य रतिवर्धनके हाथविषै आया राजा जीवता बचा सो बहुरि जन्मोत्सव किया महा

दान किए सामंतोंके सन्मान किए भगवान्‌की विशेष पूजा करी कश्यपका बहुत सन्मान किया अति बधाया अर घरको बिदा किया सो कश्यप काशीकेविषै लोकपालनिकी नाई रमें अर सर्वगुप्त सर्वलोक-निन्द्य मृतकके तुल्य भया कोई भेंटे नाहीं मुख देखे नाहीं, तब सर्वगुप्तने अपनी स्त्री विजयावतीका दोष सर्वत्र प्रकाशा जो याने राजा बीच अर मोबीच अन्तर डाला यह वृतान्त सुन विजयावती अति द्वेषको प्राप्त भई जो मैं न राजाकी भई न धनीकी भई सो मिथ्या तपकर राक्षसी भई, अर राजा रतिवर्धनने भोगानितैं उदास होय सुभानुस्वामीके निकट मुनिव्रत धरे सो राक्षसीने रतिवर्धन मुनिको अति उपसर्ग किए। मुनि शुद्धोपयोगके प्रसादतैं केवली भए अर प्रियंकर हितंकर दोनों कुमार पहिले याही नगरविषै दामदेव नामा विप्रके श्यामली स्त्रीके सुदेव वसुदेव नामा पुत्र हुते। सो वसुदेवकी स्त्री विश्वा अर सुदेवकी स्त्री प्रियंगु इनका गृहस्थ पद प्रशंसा योग्य हुता इन श्रीतिलक नाम मुनिको आहारदान दिया सो दानके प्रभावकर दोनों भाई स्त्रीसहित उत्तरकुरु भोगभूमिविषै उपजे तीनपल्यका आयु भया, साधुका जो दान सोई भया वृक्ष उसके महाफल भोगभूमिविषै भोग दूजे स्वर्ग देव भए वहां सुख भोग चये सो सम्यग्ज्ञान-रूप लक्ष्मीकर मंडित पाप कर्मके क्षय करणहारे प्रियंकर हितंकर भये, मुनि होय ग्रैवेयक गये तहांसे चयकर लवणांकुश भये महाभव्य तद्भव मोक्षगामी अर राजा रतिवर्धनकी राणी सुदर्शना प्रियंकर हितंकरकी माता पुत्रनिमें जाका अत्यन्त अनुराग था सो भरतार अर पुत्रनिके वियोगसे अत्यन्त आर्तिरूप होय नानायोनिनिमें भ्रमणकर किसी एक जन्मविषै पुण्य उपार्जे यह सिद्धार्थ भया धर्मविषै अनुरागी सर्व विद्याविषै निपुण सो पूर्व भवके स्नेहसे लवअंकुशको पढाए ऐसे निपुण किए जो देवनि कर भी न जीते जांय यह कथा गौतमस्वामीने राजा श्रेणिकसे कही अर आज्ञाकारी हे नृप! यह संसार असार है अर इस जीवके कौन कौन माता पिता न भए जगत्‌के सबही संबंध झूठे हैं एक धर्म ही का सम्बन्ध सत्य

है इसलिए विवेकियोंको धर्महीका यत्न करना जिसकर संसारके दुःखोंसे छूटे समस्त कर्म महानिंद्य दुःखकी वृद्धिके कारण तिनको तजकर जैनका भाषा तपकर अनेक सूर्यकी कांतिको जीत साधु शिव-पुर कहिये मुक्ति तहां जाय हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लवणांकुशके

पूर्वभवका वर्णन करनेवाला एकसौ आठवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०८ ॥

अथानन्तर सीता पति अर पुत्रोंको तजकर कहां कहां तप करती भई सो सुनों—कैसी है सीता ? लोकविषै प्रसिद्ध है यश जिसका । जिससमय सीता भई वह श्रीमुनि सुव्रतनाथजीका समय था । ते वीसवें भगवान् महाशोभायमान भवभ्रमके निवारणहारे जैसा अरहनाथ अर मल्लिनाथका समय तैसा मुनि-सुव्रतनाथका समय उसमें श्रीसकलभूषण केवली केवल ज्ञानकर लोकालोकके ज्ञाता बिहार करें हैं अनेक जीव महाव्रती अणुव्रती कीए सकल अयोध्याके लोक जिन धर्मविषै निपुण विधिपूर्वक गृहस्थ का धर्म आराधें सकल प्रजा भगवान् सकलभूषणके वचनविषै श्रद्धावान जैसे चक्रवर्तीकी आज्ञाको पालें तैसे भगवान् धर्मचक्री तिनकी आज्ञा भव्य जीव पालें, रामका राज्य महाधर्मका उद्योतरूप जिस समय घने लोक विवेकी साधुसेवाविषै तत्पर । देखो जो सीता अपनी मनोग्यता कर देवांगनानिकी शोभाको जीतती हुती सो तपकर ऐसी होय गई मानो दग्ध भई माधुरी लता ही है महावैराग्य कर मंडित अशुभ भावकररहित स्त्री पर्यायको अतिनिंदती महातप करती भई धूरकर धूसर होयरहे हैं केश जिसके अर स्नानरहित शरीरके संस्काररहित पसेव कर युक्त गात्र जिसमें रज आय पडे सो शरीर मलिन होय रहा है बेला तेला पक्ष उपवास अनेक उपवास कर तनु क्षीण किया दोष टारि शास्त्रोक्त पारणा करे शील

व्रत गुणनिविषै अनुरागिणी अध्यात्मके विचार कर अत्यन्त शान्त होय गया है चित्त जाका वश किये हैं इंद्रिय जाने औरनितैं न बने ऐसा उग्रतप करती भई मांस अर रुधिर कर वर्जित भया है सर्व अंग जाका प्रकट नजर आवे है अस्थि अर नसा जाल जाके मानों काठकी पुतली ही है सूकी नदी समान भासती भई बैठ गये हैं कपोल जाके जूडा प्रमाण धरती देखती चले महा दयावंती सौम्य है दृष्टि जाकी तपका कारण देह उसके समाधानके अर्थ विधिपूर्वक भिक्षा वृत्ति कर आहार करे । ऐसा तप कीया कि शरीर और ही होय गया अपना पराया कोई न जाने जो यह सीता है इसे ऐसा तप करती देख सकल आर्या इसहीकी कथा करें इसहीकी रीति देख और हू आदरें सबनिविषै मुख्य भई इस भांति बासठ वर्ष महा तप कीये अर तेतीस दिन आयुके बाकी रहे तब अनशन व्रत धार परम आराधना आराध जैसे पुष्पादिक उच्छिष्ट साथरेको तजिए तैसे शरीरको तजकर अच्युतस्वर्गविषै प्रतीन्द्र भई ।

गौतम स्वामी कहै हैं, हे श्रेणिक ! जिनधर्मका माहात्म्य देखो जो यह प्राणी स्त्री पर्यायविषै उपजी हुती सो तपके प्रभावकर देवोंका प्रभु होय । सीता अच्युत स्वर्गविषै प्रतींद्र भई वहां मणिनिकी कांतिकर उद्योत किया है आकाशविषै जाने ऐसे विमानविषै उपजी विमान मणि कांचनादि महाद्रव्यनिकर मंडित विचित्रता धरे परम अद्भुत सुमेरुके शिखर समान ऊंचा है वहां परम ईश्वरताकर सम्पन्न प्रतेंद्र भया । हजारों देवांगना तिनके नेत्रोंका आश्रय जैसा तारावोंकर मंडित चंद्रमा सोहै तैसा सोहता भया अर भगवानकी पूजा करता भया, मध्यलोकमें आय तीर्थोंकी यात्रा साधुवोंकी सेवा करता भया अर तीर्थ-करोंके समोसरणमें गणधरोंके मुखसे धर्म श्रवण करता भया, यह कथा सुन गौतमस्वामीसे राजा श्रेणिक ने पूछी—हे प्रभो ! सीताका जीव सोलवें स्वर्ग प्रतेंद्र भया उस समय वहां इंद्र कौन था ? तब गौतमस्वामी ने कही उस समय वहां राजा मधुका जीव इंद्र था । उसके निकट यह प्रतेन्द्र भया सो वह मधुका जीव

नेमिनाथ स्वामीके समय अच्युतेन्द्रपदसे चयकर वासुदेवकी रुक्मणी राणी ताके प्रद्युम्न पुत्र भया अर उसका भाई कैटभ जांबुवतीके शंभु नाम पुत्र भया, तब श्रेणिकने गौतम स्वामीसे विनती करी हे प्रभो! मैं तुम्हारे वचनरूप अमृत पीवता पीवता तृप्त नाहीं जैसे लोभी जीव धनसे तृप्त नाहीं इसलिए मुझे मधुका अर उसके भाई कैटभका चारित्र कहो। तब गणधर कहते भए—एक मगध नामा देश सर्व धान्यकर पूर्ण जहां चारों वर्ण हर्षसे वसैं धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक अनेक पुरुष पाइए अर भगवानके सुंदर चैत्यालय अर अनेक नगर ग्राम तिनकर वह देश शोभित जहां नदियोंके तट गिरियोंके शिखर वनमें ठौर ठौर साधुवोंके संघ विराजे हैं राजा नित्योदित राज्य करै उस देशमें एक शालि नाम ग्राम नगर सारिखा शोभित वहां एक ब्राह्मण सोमदेव उसके स्त्री अग्निला पुत्र अग्निभूत वायुभूत सो वे दोनों भाई लौकिक शास्त्रमें प्रवीण अर पठन पाठन दान प्रतिग्रहमें निपुण अर कुलके तथा विद्याके गर्वकर गर्वित मनविषै ऐसा जानें, हमसे अधिक कोई नहीं जिनधर्मतें परांमुख रोग समान इंद्रीनिके भोग तिनहीको भले जानैं। एक दिन स्वामी नंदीवर्धन अनेक मुनिनिसहित वनविषै आय विराजे, बडे आचार्य अवधिज्ञान कर समस्त मूर्तिक पदार्थनिको जानैं सो मुनिनिका आगमन सुन ग्रामके लोक सब दर्शनको आए हुते अर अग्निभूत वायुभूतने काहूसे पूछी जो यह लोक कहां जाय हैं? तब वाने कही नंदीवर्धन मुनि आए हैं तिनके दर्शनकूं जाय हैं। तब सुनकर दोऊ भाई क्रोधायमान भए जो हम बादकर साधुनिको जीतेंगे तब इनकूं माता पिताने मने किया जो तुम साधुनितें वाद न करो तथापि इन्होंने न मानी बादको गए तब इनको आचार्यके निकट जाते देख एक सात्विक नामा मुनि अवधिज्ञानी इनको पूछते भए—तुम कहां जावो हो? तब इन्होंने कही तुमविषै श्रेष्ठ तुम्हारा गुरु है, उसको बादकर जीतवे जाय हैं, तब सात्विक मुनिने कही हमसे चर्चा करो। तब यह क्रोधकर मुनिके समीप बैठे अर कही तू कहांते आया

है। तब मुनिने कहा तुम कहांतैं आए ? तब वह क्रोधकर कहते भए यह तैं कहा पूछी ? हम ग्रामतैं आए हैं। कोई शास्त्रकी चर्चा करहु। तब मुनिने कही यह तो हम जाने हैं तुम शालिग्रामसे आए हो अर तिहारे बापका नाम सोमदेव माताका नाम अग्निला अर तिहारे नाम अग्निभूत वायुभूत तुम विप्रकुल हो सो यह तो प्रकट है परन्तु हम तुमसे यह पूछे हैं अनादिकालके भव वनविषै भ्रमण करो हो सो या जन्मविषै कौन जन्मसे आए हो ? तब इनने कही यह जन्मांतरकी वात हमको पूछी सो और कोई जानै है ? तब मुनिने कही हम जाने हैं, तुम सुनो—पूर्वभवविषै तुम दोऊ भाई या ग्रामके वनविषै परस्पर स्नेह के धारक स्याल हुते विरूपमुख अर याही ग्रामविषै एक बहुत दिनका बासी पामर नामा पितहड ब्राह्मण सो वह खेतविषै सूर्य अस्त समय क्षुधाकर पीडित नाडी आदि उपकरण तजकर आया अर अंजनागिरि तुल्य मेघ माला उठी, सात अहो रात्रका झड भया सो पामर तो घरसे आय न सका अर वे दोऊ स्याल अति क्षुधातुर अंधेरी रात्रिविषै आहारको निकसे सो पामरके खेतविषै भीजी नाडी कर्दमकर लिप्त पडी हुती सो उन भक्षण करी उसकर विकराल उदर वेदना उपजी, स्याल मूवे, अकाम निर्जराकर तुम सोमदेवके पुत्र भए अर वह पामर सात दिन पीछे खेतमें आया सो दोऊ स्याल मूए देख अर नाडी कटी देख स्यालनिका चर्म ले भाथडी करी सो अब तक पामरके घरविषै टंगी है अर पामर मरकर पुत्रके घर पुत्र भया सो जातिस्मरण होय मौन पकडा जो मैं कहा कहों, पिता तो मेरा पूर्व भवका पुत्र अर माता पूर्व भवके पुत्रकी बधू तातैं न बोलना ही भला सो यह पामरका जीव मौनी यहां ही बैठा है ऐसा कह मुनि पामरके जीवसूं बोले—अहो तू पुत्रके पुत्र भया सो यह आश्चर्य नहीं, संसारका ऐसा ही चरित्र है जैसे नृत्यके अखाडेमें बहुरूपिया अनेक रूप बनाय नाचै तैसे यह जीव नाना पर्यायरूप भेष धर नाचै है, राजातैं रंक होय रंकसे राजा होय, स्वामीसे सेवक, सेवकसे स्वामी, पितासे पुत्र, पुत्रसे पिता, माता

से भार्या, भार्यासे माता, यह संसार अरहटकी घडी है। ऊपरली नीचे नीचली ऊपर, ऐसा संसारका स्वरूप जान, हे वत्स! अब तू गूंगापना तज, वचनालाप कर। या जन्मका पिता है तासे पिता कह, मातासे माता कह, पूर्व भवका कहा व्यवहार रहा? यह वचन सुन वह विप्र हर्षकर रोमांच होय फूल गए हैं नेत्र जाके मुनिको तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर जैसे वृक्षकी जड उखड जाय अर गिर पडे तैसे पायन पडा अर मुनिको कहता भया—हे प्रभो, तुम सर्वज्ञ हो, सकल लोककी व्यवस्था जानो हो, या भयानक संसार सागरविषै मैं डूबूं था सो तुम दयाकर निकासा, आत्मबोध दिया। मेरे मनकी सब जानी अब मोहि दीक्षा देवहु ऐसा कहकर समस्त कुटुम्बका त्यागकर मुनि भया।

यह पामरका चरित्र सुन अनेक लोक मुनि भए अनेक श्रावक भए अर इन दोनों भाईनिकी पूर्व भवकी खाल लोक ले आए सो इनिने देखी, लोकोंने हास्य करी जो यह मांसके भक्षक स्याल थे सो यह दोऊ भाई द्विज बडे मूर्ख जो मुनिनिसे वाद करने आए। ये महामुनि तपोधन शुद्धभाव सबके गुरु अहिंसा महाव्रतके धारक इन समान और नाहीं यह महामुनि महाव्रतरूप शिक्षाके धारक क्षमारूप यज्ञोपवीत धरें ध्यानरूप अग्निहोत्रके कर्ता महाशांत मुक्तिके साधनविषै तत्पर अर जे सर्व आरम्भविषै प्रवरतें ब्रह्मचर्यरहित वे मुखसे कहे हैं कि हम द्विज हैं परंतु क्रिया करें नहीं जैसे कोई मनुष्य या लोकमें सिंह कहावे देव कहावे परंतु वह सिंह नाहीं, तैसे यह नाममात्र ब्राह्मण कहावें परंतु इनमें ब्रह्मत्व नाहीं अर मुनिराज धन्य हैं परम संयमी महा क्षमावान् तपस्वी जितेंद्री निश्चय थकी ये ही ब्राह्मण हैं ये साधु महाभद्रपरणामी भगवतके भक्त महा तपस्वी यति धीर वीर मूल गुण उत्तरगुणके पालक इन समान अर कोऊ नाहीं यह अलौकिक गुण लिये हैं। अर इनहीकूं परिव्राजक कहिये काहेतें जो वह संसारकूं तज मुक्तिको प्राप्त होंय ये निर्ग्रंथ अज्ञान तिमिरके हर्ता तपकर कर्मकी निर्जरा करे हैं, क्षीण किये हैं

रागादिक जिहोंने महाक्षमावान-पापानिके नाशक तातैं इनको क्षपणक हू कहिये यह संयमी कषायरहित शरीरतैं निर्मोह दिगम्बर योगीश्वर ध्यानी ज्ञानी पंडित निस्पृह सो ही सदा वंदिवे योग्य हैं ये निर्वाणको साधैं तातैं ये साधु कहिये अर पंच आचारको आप आचरें औरनिको आचरावें तातैं आचार्य कहिये अर आगार कहिये घर ताके त्यागी तातैं अनगार कहिये शुद्ध भिक्षाके ग्राहक तातैं भिक्षुक कहिये, अति कायक्लेश करें अशुभकर्मके त्यागी उज्ज्वल क्रियाके कर्ता तप करते खेद न मानैं तातैं श्रमण कहिये आत्मस्वरूपकूं प्रत्यक्ष अनुभवैं तातैं मुनि कहिये रागादिक रोगोंके हरिवेका यत्न करें तातैं यति कहिये या भांति लोकनिने साधुकी स्तुति करी अर इन दोनों भाईनिकी निन्दा करी तब यह मानरहित प्रभारहित विलखे होय घर गये रात्रिकेविषै पापी मुनिके मारिवेको आए अर वे सात्विक मुनि अपरिग्रही संघको तज अकेले मसान भूमिविषै अस्थ्यादिकसे दूर एकांत पवित्र भूमिमें विराजे थे केसी है वह भूमि जहां रीछ व्याघ्र आदि दुष्ट जीवोंका नाद होय रहा है अर राक्षस भूत पिशाचोंकर भरा है नागोंका निवास है अर अंधकाररूप भयंकर तहां शुद्ध शिला जीव जंतुरहित उसपर कायोत्सर्ग धर खडे थे सो उन पापियोंने देखे दोनों भाई खड्ग काढ क्रोधायमान होय कहते भए जब तो तोहि लोकोंने बचाया अब कौन बचावेगा हम पंडित पृथिवीविषै श्रेष्ठ प्रत्यक्ष देवता तू निर्लज्ज हमको स्याल कहे यह शब्द कह दोनो अत्यंत प्रचंड होठ डसते लाल नेत्र दयारहित मुनिके मारिवेको उद्यमी भए तब वनका रक्षक यक्ष उसने देखे मनविषै चितवता भया—देखो ऐसे निर्दोष साधु ध्यानी कायासे निर्ममत्व तिनके मारिवेको उद्यमी भए तब यक्षने यह दोनों भाई कीले सो हलचल सके नाहीं, दोनो पसवारे खडे प्रभात भया सकल लोक आए देखें तो यह दोनों मुनिके पसवारे कीले खडे हैं अर इनके हाथविषै नांगी तलवार है तब इनको सब लोक धिक्कार धिक्कार कहते भये यह दुराचारी पापी अन्याई ऐसा कर्म कर-

नेको उद्यमी भए इन समान अर पापी नाही और यह दोनों चित्तविषे चितवते भए जो यह धर्मका प्रभाव है हम पापी थे सो बलात्कार कीले स्थावर समकर डारे अब या अवस्थासे जीवते बचें तो श्रावकके व्रत आदरें अर उस ही समय इनके माता पिता आए बारम्बार मुनिको प्रणामकर बिनती करते भए—हे देव ! यह कुपूत पुत्र हैं इन्होंने बहुत बुरी करी आप दयालु हो जीवदान देवो साधु बोले हमारे काहूसे कोप नहीं हमारे सब मित्र बांधव हैं तब यक्ष लाल नेत्रकर अति गुंजारसे बोला अर सबोंके समीप सर्व वृत्तांत कहा कि जो प्राणी साधुवोंकी निन्दा करें सो अनर्थको प्राप्त होवें जैसे निर्मल कांचविषे बांका मुखकर निरखे तो बांका ही दीखे तैसे जो साधुवोंको जैसा भावकर देखे तैसा ही फल पावे जो मुनियों की हास्य करे सो बहुत दिन रुदन करे अर कठोर वचन कहे सो क्लेश भोगवे अर मुनिका वध करे तो अनेक कुमरण पावे द्वेष करे सो पाप उपार्जे भव २ दुख भोगवे अर जैसा करे तैसा फल पावे यक्ष कहे है हे विप्र ! तेरे पुत्रोंके दोषकर मैं कीले हैं विद्याके मानकर गर्वित मायाचारी दुराचारी संयमियोंके घातक हैं ऐसे वचन यक्षने कहे तब सोमदेव विप्र हाथ जोड साधुकी स्तुति करता भया अर रुदन करता भया आपको निंदता छाती कूटता ऊर्ध्व भुजाकर स्त्रीसहित विलाप करता भया तब मुनि परम दयालु यक्षको कहते भए—हे सुन्दर ! हे कमलनेत्र ! यह बालबुद्धि हैं इनका अपराध तुम क्षमाकरो तुम जिनशासनके सेवक हो सदा जिनशासनकी प्रभावना करो हो तातैं मेरे कहेसे इनसे क्षमा करो तब यक्षने कही आप कहा सो ही प्रमाण वे दोनो भाई छोडे तब यह दोनों भाई मुनिको प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर साधुका व्रत धरिवेको असमर्थ तातैं सम्यक् सहित श्रावकके व्रत आदरते भए जिनधर्मकी श्रद्धाके धारक भए अर इनके माता पिता व्रत ले छोडते भए सो वे तो अव्रतके योगसे पहिले नरक गये अर यह दोनों विप्रपुत्र निसंदेह जिनशासन रूप अमृतका पानकर हिंसाका मार्ग विषवत् तजते भए समाधिमरणकर

पहिले स्वर्ग उत्कृष्ट देव भए वहांसे चयकर अयोध्याविषै समुद्र सेठ उसके धारणी स्त्री उसकी कुक्षिविषै उपजे नेत्रोंको आनन्दकारी एकका नाम पूर्णभद्र दूजेका नाम कांचनभद्र सो श्रावकके व्रत धार पहिले स्वर्ग गए अर ब्राह्मणके भवके इनके माता पिता पापके योगसे नरक गए हुते वे नरकसे निकस चांडाल अर कूकरी भए वे पूर्णभद्र अर कांचनभद्रके उपदेशसे जिनधर्मका आराधन करते भए समाधिमरणकर सोमदेव द्विजका जीव चाण्डालसे नंदीश्वर द्वीपका अधिपति देव भया अर अग्निला ब्राह्मणीका जीव कूकरीसे अयोध्याके राजाकी पुत्री होय उस देवके उपदेशसे विवाहका त्यागकर आर्यिका होय उत्तम गति गई वे दोनों परम्पराय मोक्ष पावेंगे।

अर पूर्णभद्र कांचनभद्रका जीव प्रथम स्वर्गसे चयकर अयोध्याका राजा हेम राणी अमरावती उसके मधु कैटभ नामा पुत्र जगत्प्रसिद्ध भए जिनको कोई जीत न सके महाप्रबल महारूपवान् जिन्होंने यह समस्त पृथिवी बश करी सब राजा तिनके आधीन भए। भीम नाम राजा गढके वलकर इनकी आज्ञा न माने जैसे चमरेंद्र असुर कुमारानिका इंद्र नन्दनवनको पाय प्रफुल्लित होय है, तैसे वह अपने स्थानकके बल से प्रफुल्लित रहे अर एक वीरसेन नाम राजा बटपुरका धनी मधु कैटभका सेवक उसने मधुकैटभको विनती पत्र लिखा—हे प्रभो! भीमरूप अग्निने मेरा देश रूप बन भस्म किया। तब मधु क्रोधकर बडी सेनासे भीम ऊपर चढा सो मार्गविषै बटपुर जाय डेरा किए वीरसेनने सन्मुख जाय अतिभक्ति कर मिहमानी करी उसके स्त्री चन्द्राभा चन्द्रमा समान है वदन जिसका सो वीरसेन मूर्खने उसके हाथ मधुका आरता कराया अर उसहीके हाथ जिमाया चन्द्राभाने पतिसे घनी ही कही जो अपने घरविषै सुंदर वस्तु होय सो राजाको न दिखाइये पतिने न मानी। राजा मधु चन्द्राभाको देख मोहित भया मनविषै विचारी इस सहित बिन्ध्याचलके बनका वास भला अर या बिना सब भूमिका राज्य भी भला नाहीं सो राजा

अन्याय ऊपर आया तब मंत्रीने समझाया अबार यह बात करोगे तो कार्य सिद्ध न होयगा अर राज्य-भ्रष्ट होयगा तब राजा मंत्रियोंके कहेसे राजा बीरसेनको लार लेय भीम पर गया उसे युद्धविषै जीत वशीभूत किया अर और सब राजा वश किए बहुरि अयोध्या आय चन्द्राभाके लेयवेका उपाय चिन्तया सर्व राजा बसंतकी क्रीडाके अर्थ स्त्रीसहित बुलाए अर वीरसेनको चन्द्राभा सहित बुलाया, तब हू चंद्राभाने कही कि मुझे मत ले चलो सो न मानी लेही आया, राजाने मास पर्यंत बनविषै क्रीडा करी अर राजा आए थे तिनको दान सन्मान कर स्त्रियों सहित विदा किए अर बीरसेनको कैयक दिन राखा अर बीरसेनको भी अति दान सनमान कर विदा किया अर चन्द्राभाके निमित्त कही इनके निमित्त अद्भुत आभूषण बनवाए हैं सो अभी बन नहीं चुके हैं तातैं इनको तिहारे पीछे विदा करेंगे सो वह भोला कछू समझे नहीं घर गया वाके गए पीछे मधुने चन्द्राभाको महिलविषै बुलाया अभिषेककर पटराणी पद दिया सब राणियोंके ऊपर करी। भोग कर अंध भया है मन जिसका इसे राख आपको इंद्र समान मानता भया अर वीरसेनने सुनी कि चन्द्राभा मधुने राखी तब पागल होय कैयक दिनविषै मंडव नामा तापसका शिष्य होय पंचाग्नि तप करता भया अर एक दिन राजा मधु न्यायके आसन बैठा सो एक परदारारतका न्याय आया सो राजा न्यायविषै बहुत बेर लग बैठे रहे बहुरि मान्दिरविषै गए तब चन्द्राभाने कही महाराज आज घनी बेर क्यों लगी ? हम क्षुधा कर खेदाखिन्न भई आप भोजन करो तो पीछे भोजन करों, तब राजा मधुने कही आज एक परनारीरतका न्याय आय पडा तातैं देर लगी तब चन्द्राभाने हंसकर कही जो परस्त्रीरत होय उसकी बहुत मानता करनी तब राजाने क्रोधकर कही तुम यह क्या कही जे दुष्ट व्यभिचारी हैं तिनका निग्रह करना जे परस्त्रीका स्पर्श करें संभाषण करें वे पापी हैं सेवन करें तिनकी कहा बात ? जे ऐसे कर्म करें तिनको महादण्ड दे नगरसे काढने जे अन्यायमार्गी हैं वे

महा पापी नरकविषै पडे हैं अर राजावोंके दण्ड योग्य हैं तिनका मान कहा ? तब राणी चन्द्राभा राजा को कहती भई—हे नृप ! यह परदारा सेवन महा दोष है तो तुम आपको दण्ड क्यों न देवो तुमही परदारारत हो तो औरोंको कहा दोष ? जैसा राजा तैसी प्रजा जहां राजा हिंसक होय अर व्यभिचारी होय तहां न्याय कैसा ? तातैं चुप होय रहो जिस जलकर बीज उगे अर जगत् जीवै सो जलही जो जलाय मारे तो और शीतल करणहारा कौन ? ऐसे उलाहनाके वचन चन्द्राभाके सुन राजा कहता भया—हे देवी ! तुम कहो हो सो ही सत्य है बारम्बार इसकी प्रशंसा करी अर कहा मैं पापी लक्ष्मीरूप पाश कर वेढा विषय रूप कीचविषै फंसा अब इस दोषसे कैसे छूटूं राजा ऐसा विचार करै है अर अयोध्याके सहस्रीनामा बनविषै महासंघ सहित सिंहपाद नामा मुनि आए राजा सुनकर रणवाससहित अर लोकों सहित मुनिके दर्शनको गया, विधिपूर्वक तीन प्रदक्षिणा देय प्रणाम कर भूमिविषै बैठा जिनेन्द्रका धर्म श्रवणकर भोगोंसे विरक्त होय मुनि भया अर राणी चन्द्राभा बडे राजाकी बेटी रूपकर अतुल्य सो राज विभूति तज आर्यिका भई दुर्गतिकी वेदनाका है अधिक भय जिसको अर मधुका भाई कैटभ राजको विनाशीक जान महा ब्रतधर मुनि भया। दोऊ भाई महा तपस्वी पृथिवीविषै विहार करते भए अर सकल स्वजन परजनके नेत्रनिको आनन्दका कारण मधुका पुत्र कुलवर्धन अयोध्याका राज्य करता भया अर मधु सैकडों वरस ब्रत पाल दर्शन ज्ञान चारित्र तप ए ही चार आराधना आराध समाधि मरण कर सोलवां अच्युत नामा स्वर्ग वहां अच्युतेंद्र भया अर कैटभ पंद्रहमा आरण नामा स्वर्ग वहां आरणेन्द्र भया गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! यह जिनशासनका प्रभाव जानों जो ऐसे अनाचारी भी अनाचारका त्यागकर अच्युतेंद्र पद पावैं अथवा इन्द्र पदका कहा आश्चर्य ? जिनधर्मके प्रसादसे मोक्ष पावै मधुका जीव अच्युतेंद्र था उसके समीप सीताका जीव प्रतेंद्र भया अर मधुका जीव स्वर्गसे चयकर श्रीकृष्णकी

रुक्मिणी राणीके प्रद्युम्न नामा पुत्र कामदेव होय मोक्ष लही अर कैटभका जीव कृष्णकी जामवन्ती राणीके शंभुकुमार नामा पुत्र होय परम धामको प्राप्त भया। यह मधुका व्याख्यान तुझे कहा अब हे श्रेणिक बुद्धिवन्तोंके मनको प्रिय ऐसे लक्ष्मणके अष्ट पुत्र महा धीर वीर तिनका चरित्र पापोंका नाश करणहारा चित्त लगाय सुनो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचानिकाविषैं राजा मधुका वर्णन करनेवाला एकसौ नौवां पर्व पूर्ण भया ॥ १०९ ॥

अथानन्तर कांचनस्थान नामा नगर वहां राजा कांचनरथ उसकी राणी शतहृदा उसके पुत्री दोय अति रूपवन्ती रूपके गर्व कर महा गर्वित तिनके स्वयंबरके अर्थ अनेक राजा भूचर खेचर तिनके पुत्र कन्याके पिताने पत्र लिख दूत भेज शीघ्र बुलाए। सो दूत प्रथम ही अयोध्या पठाया अर पत्रविषै लिखा मेरी पुत्रियोंका स्वयंबर है सो आप कृपाकर कुमारोंको शीघ्र पठावो। तब राम लक्ष्मणने प्रसन्न होय परम ऋद्धियुक्त सर्व सुत पठाए दोनों भाईयोंके सकल कुमार लव अंकुशको अग्रेसर कर परस्पर महा प्रेमके भरे कांचनस्थानपुरको चले सैकडों विमानविषै बैठे अनेक विद्याधर लार, रूपकर लक्ष्मीकर देवनि सारिखे आकाशके मार्ग गमन करते भये सो बडी सेना सहित आकाशसे पृथिवीको देखते जावें कांचनस्थानपुर पहुंचे वहां दोनों श्रेणियोंके विद्याधर राजकुमार आये थे सो यथायोग्य तिष्ठे जैसे इंद्रकी सभाविषै नानाप्रकारके आभूषण पहिरे देव तिष्ठैं अर नन्दनवनविषै देव नानाप्रकारकी चेष्टा करें तैसे चेष्टा करते थे अर वे दोनों कन्या मन्दाकनी अर चन्द्रवक्रा मंगल स्नानकर सर्व आभूषण पहिरे निज वाससे रथ चढी निकसीं मानों साक्षात् लक्ष्मी अर लज्जा ही हैं महा गुणोंकर पूर्ण तिनके खोजा

लार था सो राजकुमारोंके देश कुल संपत्ति गुण नाम चेष्टा सब कहता भया। अर कही ये आए हैं तिन विषै कई बानरध्वज कई सिंहध्वज कई वृषभध्वज कई गजध्वज इत्यादि अनेक भांतिकी ध्वजाको धरे महा पराक्रमी हैं इनविषै इच्छा होय सो वरो तब वह सबनिको देखती भई अर यह सब राजकुमार उनको देख संदेहकी तुलामें आरूढ भये कि यह रूप गर्वित हैं न जानिये कौनको बरें ऐसी रूपवन्ती हम देखी नहीं मानों ये दोनों समस्त देवियोंका रूप एकत्र कर बनाई हैं यह कामकी पताका लोकोंको उन्मादका कारण इस भांति सब राजकुमार अपने अपने मनमें अभिलाषा रूप भए दोनों उन्मत्तकन्या लव अंकुशको देख कामबाण कर बेधी गई उनमें मन्दाकिनी नामा जो कन्या उसने लवके कंठमें बरमाला डारी, अर दूजी कन्या चंद्रवक्राने अंकुशके कंठमें वरमाला डारी तब समस्त राजकुमारोंके मनरूप पक्षी तनुरूप पींजरसे उडगये अर जे उत्तम जन थे तिन्होंने प्रशंसा करी कि इन दोनों कन्यावोंने रामके दोनों पुत्र बरे सो नीके करी ये कन्या इनही योग्य हैं इस भांति सज्जनोंके मुखसे बाणी निकसी जे भले पुरुष हैं तिनका चित्त योग्य सम्बंधसे आनंदको प्राप्त होय ॥

अथानतर लक्ष्मणकी विशल्यादि आठ पटराणी तिनके पुत्र आठ महा सुंदर उदार चित्त शूरवीर पृथिवीविषै प्रसिद्ध इंद्रसमान सो अपने अढाईसे भाईयों सहित महा प्रीति युक्त तिष्ठते थे जैसे तारावों में ग्रह तिष्ठै सो आठ कुमारानि बिना और सब ही भाई रामके पुत्रानिपर क्रोधित भए। जो हम नारायणके पुत्र कांतिधारी कलाधारी नवयौवन लक्ष्मीवान बलवान् सेनावान् कौन गुणकर हीन जो इन कन्यानिने हमको न बरे अर सीताके पुत्र बरे ऐसा विचाकर कोपित भये तब बडे भाई आठने इनको शांतचित किये जैसे मंत्रकर सर्पको वश करिए तिनके समझावेतैं सब ही भाई लव अंकुशसे शांताचित्त भये अर मनमें विचारते भए जो इन कन्यानिने हमारे बाबाके बेटे बडे भाई बरे तब ये हमारे भावज सो माता

समान हैं अर स्त्री पार्याय महा निन्द्य है स्त्रीनिकी अभिलाषा आविवेकी करें, स्त्रियें स्वभाव ही तें कुटिल है इनके अर्थ विवेकी विकारको न भजें, जिनको आत्मकल्याण करना होय सो स्त्रीनितें अपना मन फेरें, या भांति विचार सब ही भाई शांतचित्त भए, पहिले सब ही युद्धके उद्यमी भए हुते रणके वादित्र- निका कोलाहल शंख झंझा भेरी झंझार इत्यादि अनेक जातिके वादित्र बाजने लगे अर जैसे इंद्रकी विभूति देख छोटे देव अभिलाषी होंय तैसे ये सब स्वयम्वरविषै कन्यानिके अभिलाषी भए हुते सो बडे भाईनिके उपदेशतें विवेकी भए, अर उन आठों बडे भाईनिको वैराग्य उपजा सो विचारे हैं यह स्थावर जंगमरूप जगतके जीव कर्मनिकी विचित्रताके योगकर नाना रूप हैं विनश्वर हैं जैसा जीवानि के होनहार है तैसा ही होय है जाके जो प्राप्ति होनी है सो अवश्य होय है, और भांति नहीं अर लक्ष्मण की रूपवती राणीका पुत्र हंसकर कहता भया—भो भ्रातः हो ! स्त्री कहा पदार्थ है ? स्त्रीनितें प्रेम करना महामूढता है, विवेकीनिको हांसी आवे है जो यह कामी कहा जान अनुराग करे हैं ? इन दोऊ भाईनिने ये दोनो राणी पाई तौ कहा बडी वस्तु पाई, जे जिनेश्वरी दीक्षा धरें वे धन्य हैं केलाके स्तंभ समान असार काम भोग आत्माके शत्रु तिनके वश होय रति अरति मानना महा मूढता है, विवेकीनिको शोक हू न करना अर हास्य हू न करना। ये सब ही संसारी जीव कर्मके वश भ्रम जालमें पडे हैं ऐसा नाहीं करें हैं जाकर कर्मोंका नाश होय, कोई विवेकी करै सोई सिद्धपदको प्राप्त होय, या गहन संसार वनविषै ये प्राणी निज पुरका मार्ग भूल रहे हैं ऐसा करहु जाकर भव दुख निवृत्ति होय। हे भाई हो, यह कर्मभूमि आर्यक्षेत्र मनुष्य देह उत्तम कुल हमने पाया सो एते दिन योंही खोये अब वीतरागका धर्म आराध मनुष्य देह सफल करो, एक दिनमैं बालक अवस्थाविषै पिताकी गोदमें बैठा हुता सो वे पुरुषो- त्तम समस्त राजानिको उपदेश देते थे वे वस्तुका स्वरूप सुन्दर स्वरसूं कहते भए सो मैं रुचिसों सुन्या।

चारों गतिमें मनुष्यगति दुर्लभ है। जो मनुष्यभव पाय आत्महित न करे हैं सो ठगाए गए जान। दान कर तो मिथ्यादृष्टि भोगभूमि जावें अर सम्यग्दृष्टि दानकर तपकर स्वर्ग जांय, परम्पराय मोक्ष जावें अर शुद्धोपयोग रूप आत्मज्ञान कर यह जीव याही भव मोक्ष पावें अर हिंसादिक पापनिकर दुर्गति लहे जो तप न करे सो भव वनविषै भटकै बारम्बार दुर्गतिके दुख संकट पावै, या भांति विचार वे अष्टकुमार शूरवीर प्रतिबोधको प्राप्त भए संसार सागरके दुखरूप भवनिसे डरे, शीघ्र ही पितापै गए, प्रणाम कर विनयसे खडे रहे अर महा मधुर वचन हाथ जोड कहते भए—हे तात! हमारी विनती सुनो, हम जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार किया चाहें है, तुम आज्ञा देवो। यह संसार विजुरीके चमत्कार समान अस्थिर है, केलाके स्तंभ समान असार है हमको अविनासी पुरके पंथ चलते विघ्न न करो तुम दयालु हो कोई महा भाग्यके उदयतैं हमको जिनमार्गका ज्ञान भया, अब ऐसा करें जाकर भवसागरके पार पहुंचें ए काम भोग आशीविष सर्पके फण समान भयंकर हैं परम दुखके कारण हम दूर हीतैं छोडा चाहें हैं या जीवके कोऊ माता पिता पुत्र बांधव नाहीं, कोऊ याका सहाई नाहीं, यह सदा कर्मके आधीन भव वनमें भ्रमण करे है याके कौन २ जीव कौन कौन सम्बन्धी न भए। हे तात! हमसूं तिहारा अत्यन्त वात्सल्य है अर मातावोंका है सो एही बंधन है। हमने तिहारे प्रसादतैं बहुत दिन नाना प्रकार संसारके सुख भोगे निदान एक दिन हमारा तिहारा वियोग होयगा, यामें संदेह नाहीं, या जीवने अनेक भोग किए परन्तु तृप्त न भया। ये भोग रोग समान हैं इनविषै अज्ञानी राचें अर यह देह कुमित्र समान है जैसे कुमित्रको नाना प्रकार कर पोषिये परन्तु वह अपना नाहीं तैसे यह देह अपना नाहीं याके अर्थ आत्माका कार्य न करना यह विवेकिनिका काम नाहीं, यह देह तो हमको तजेगी हम इससे प्रीति क्यों न तजें। ये वचन पुत्रनिके सुन लक्ष्मण परम स्नेह कर विह्वल होय गए इनको उरसे लगाय मस्तक चूंब बा-

रम्बार इनकी ओर देखते भए अर गदगद बाणी कर कहते भए हे पुत्र हो ये कैलाशके शिखर समान हेम रत्नके ऊंचे महिल जिनके हजारां कनकके स्तम्भ तिनविषै निवास करो नानाप्रकार रत्नोंसे निरमाए हैं आंगन जिनके महा सुन्दर सर्व उपकरणोंकर मण्डित मलयागिरि चन्दनकी आवे है सुगन्ध जहां उसकर भ्रमर गुंजार करे हैं अर स्नानादिककी विधि जहां ऐसी मंजनशाला अर सब संपत्तिसे भरे निर्मल है भूमि जिनकी इन महिलोंमें देवों समान क्रीडा करो अर तिहारे सुन्दर स्त्री देवांगना समान दिव्यरूपको धरें शरदके पूनोंके चन्द्रमा समान प्रभा जिनकी अनेक गुणनिकर मण्डित वीण वांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्र वजायवेविषै निपुण महा सुकंठ सुन्दर गीत गायवेविषै निपुण नृत्यकी करणहारी जिनेंद्रकी कथाविषै अनुरागिणी महापातिव्रता पवित्र तिन सहित वन उपवन तथा गिरि नादियोंके तट निज भवनके उपवन तहां नाना विधि क्रीडा करते देवोंकी न्याई रमो। हे वत्स हो ! ऐसे मनोहर सुखोंको तजकर जिनदीक्षा धर कैसे विषमवन अर गिरिके शिखर कैसे रहोगे। मैं स्नेहका भरा अर तिहारी माता तिहारे शोक कर तप्तायमान तिनको तजकर जाना तुमको योग्य नाहीं कैयक दिन पृथिवीका राज्य करो तब वे कुमार स्नेहकी वासनासे रहित भया है चित्त जिनका संसारसे भयभीत इंद्रियोंके सुखसे पराङ्मुख महा उदार महा शूरवीर कुमार श्रेष्ठ आत्मतत्त्वविषै लगा है चित्त जिनका क्षण एक विचार कर कहते भए—हे पिता इस संसारविषै हमारे माता पिता अनंत भए यह स्नेहका वंधन नरकका कारण है यह घर रूप पिंजरा पापारंभका अर दुःखका वढावनहारा है उसमें मूर्ख रति माने है ज्ञानी न माने अब कबहूं देह संबधी तथा मन संबंधी दुख हमको न होय निश्चयसे ऐसा ही उपाय करेंगे जो आत्मकल्याण न करे सो आत्मघाती है कदाचित् घर न तजे अर मनविषै ऐसा जाने मैं निर्दोष हूं मुझे पाप नहीं तो वह मलिन है पापी है जैसे सुफेद वस्त्र अंगके संयोगसे मलिन होय तैसे घरके संयोगसे गृहस्थी मलिन होय है, जे

गृहस्थाश्रमविषै निवास करें हैं तिनके निरन्तर हिंसा आरम्भकर पाप उपजे तातैं सत्पुरुषोंने गृहस्थाश्रम तजे अर तुम हमसों कही कैयक दिन राज्य भोगो सो तुम ज्ञानवान् होयकर हमको अंधकूपविषै डारो हो जैसे तृषाकर आतुर मृग जल पीवै अर उसे पारधी मारै तैसे भोगनिकर अतृप्त जो पुरुष उसे मृत्यु मारे है, जगत्के जीव विषयकी अभिलाषा कर सदा आर्त्तध्यानरूप पराधीन हैं। जे काम सेवे हैं वे अज्ञानी विषहरणहारी जडी बिना आशीविष सर्पसे क्रीडा करे हैं सो कैसे जीवैं? यह प्राणी मीन समान गृहरूप तालावविषै वसते विषयरूप मांसके अभिलाषी रोगरूप लोहके आंकडेके योगकर कालरूप धीवरके जालविषै पडें हैं भगवान् श्रीतीर्थंकर देव तीन लोकके ईश्वर सुर नर विद्याधरनिकर वंदित यह ही उपदेश देते भए कि यह जगत्के जीव अपने अपने उपार्जे कर्मोंके वश हैं अर या जगत्को तजे सो कर्मोंको हतै तातैं हे तात! हमारे इष्ट संयोगके लोभकर पूर्णता न होवे यह संयोगसंबंध विजुरीके चमत्कारवत् चंचल है जे विचक्षण जन हैं वे इनसे अनुराग न करें अर निश्चय सेती इस तनुसे अर तनुके सम्बान्धियोंसे वियोग होयगा इनमें कहा प्रीति अर महाक्लेशरूप यह संसार वन उसविषै कहा निवास अर यह मेरा प्यारा ऐसी बुद्धि जीवोंके अज्ञानसे है यह जीव सदा अकेला भवविषै भटके है गतिगतिमें गमन करता महा दुखी है॥

हे पिता! हम संसार सागरमें झकोला खाते अति खेदखिन्न भए। कैसा है संसार सागर? मिथ्या शास्त्ररूप है दुखदाई द्वीप जिसमें अर मोहरूप हैं मगर जिसमें अर शोक संतापरूप सिवानकर संयुक्त सो अर दुर्जयरूप नदियोंकर पूरित है अर भ्रमणरूप भंवरके समूहकर भयंकर है अर अनेक आधिव्याधि उपाधिरूप कलोलोंकर युक्त है अर कुभावरूप पाताल कुण्डोंकर अगम है अर क्रोधादिकर भावरूप जलचरोंके समूहसे भरा है अर वृथा बकवादरूप होय है शब्द जहां अर ममत्वरूप पवनकर उठे हैं

विकल्परूपतरंग जहां अर दुर्गतिरूपक्षार जलकर भरा है अर महादुस्सह इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगरूप आताप सोई है वडवानल जहां, ऐसे भवसागरमें हम अनादिकालके खेदखिन्न पडे हैं नाना योनिविषै भ्रमण करते अतिकष्टसे मनुष्य देह उत्तम कुल पाया है सो अब ऐसा करेंगे वहुरि भवभ्रमण न होय। सो सबसे मोह छुडाय आठों कुमार महाशूरवीर घररूप वन्दीखानेसे निकसे उन महा भाग्योंके ऐसी वैराग्य बुद्धि उपजी जो तीनखंडका ईश्वरपणा जीर्ण तृणवत् तजा ते विवेकी महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषै जायकर महाबल नामा मुनिके निकट दिगम्बर भए सर्व आरम्भरहित अन्तर्वाह्य परिग्रहके त्यागी विधिपूर्वक ईर्या समिति पालते विहार करते भए महा क्षमावान् इन्द्रियोंके वश करणहारे विकल्परहित निस्पृही परम योगी महाध्यानी वारह प्रकारके तप कर कर्म्मोंको भस्म कर अध्यात्मयोगसे शुभाशुभ भावोंका निराकरण कर क्षीणकषाय होय केवल ज्ञान लह अनन्त सुख रूप सिद्ध पदको प्राप्त भए जगत्के प्रपंचसे छूटे। गौतम गणधर राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे नृप यह अष्ट कुमारोंका मंगलरूप चरित्र जो बिनयवान भक्तिकर पढे सुने उसके समस्त पाप क्षय जावें जैसे सूर्यकी प्रभाकर तिमिर विलाय जाय॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके आठ कुमारोंका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ दशवा पर्व पूर्ण भया॥ ११०॥

अथानन्तर महावीर जिनेन्द्रके प्रथम गणधर मुनियोंमें मुख्य गौतम ऋषि श्रेणिकसे भामण्डलका चरित्र कहते भए हे श्रेणिक विद्याधरनिकी जो ईश्वरता सोई भई कुटिला स्त्री उसका विषय वासनारूप मिथ्या सुख सोई भया पुष्प उसके अनुराग रूप मकरन्दविषै भामण्डलरूप भ्रमर आसक्त होता भया चित्तमें यह चिंतवै जो मैं जिनेन्द्री दीक्षा धरूंगा तो मेरी स्त्रियोंका सौभग्यरूप कमलनिका वन सूक जा-

यगा ये मेरेसे आसक्त चित्त हैं अर इनके बिरह कर मेरे प्राणानिका वियोग होयगा मैं यह प्राण सुखसूं पाले हैं इसलिये कैयक दिन राज्यके सुख भोग कल्याणका कारण जो तप सो करूंगा यह काम भोग दुर्निवार हैं अर इनकर पाप उपजेगा सो ध्यानरूप अग्निकर क्षणमात्रमें भस्म करूंगा कोइयक दिन राज्य करूं बडी सेना राख जे मेरे शत्रु हैं तिनको राज्य रहित करूंगा वे खड्गके धारी बडे सामंत मुझ से पराङ्मुख ते भये खड्गी कहिए मैंडा तिनके मानरूप खड्गकूं भंग करूंगा अर दक्षिण श्रेणी उत्तर श्रेणी विषै अपनी आज्ञा मनाऊं अर सुमेरु पर्वत आदि पर्वतोंविषै मरकत मणि आदि नाना जातिके रत्ननिकी निर्मल शिला तिनेंमें स्त्रियों सहित क्रीडा करूं इत्यादि मनके मनोरथ करता हुवा भामण्डल सैकडों वर्ष एक मुहूर्तकी न्याई व्यतीत करता भया यह किया यह करूं यह करूंगा ऐसा चितवन करता आयुका अंत न जानता भया एक सतखणे महिलके ऊपर सुंदर सेजपर पौढा था सो विजुरी पडी अर तत्काल कालको प्राप्त भया।

दीर्घसूत्री मनुष्य अनेक विकल्प करैं परन्तु आत्माके उद्धारका उपाय न करैं तृष्णाकर हता क्षण-मात्रमें भी साता न पावै मृत्यु सिरपर फिरै ताकी सुध नहीं, क्षणभंगुर सुखके निमित्त दुर्बुद्धि आत्महित न करे विषयबासनाकर लुब्ध भया अनेक भांति विकल्प करता रहै सो विकल्प कर्म बंधके कारण हैं धन यौवन जीतव्य सब अस्थिर हैं जो इनको अस्थिर जान सर्व परिग्रहका त्याग करैं आत्मकल्याण करैं सो भवसागर न डूबैं अर विषयाभिलाषी जीव भव भवविषै कष्ट सहैं हजारो शास्त्र पढे अर शांतता न उपजी तो क्या अर एक ही पदकर शांतदशा होय तो प्रशंसा योग्य है धर्म करिवेकी इच्छा तो सदा करबो करे अर करे नहीं सो कल्याणको न प्राप्त होय जैसे कटी पक्षका काग उडकर आकाशविषै पहुंचा चाहै पर जाय न सके जो निर्वाणके उद्यमकर रहित है सो निर्वाण न पावे जो निरुद्यमी सिद्धपद

पावै तौ कौन काहेको मुनिव्रत आदरै जो गुरुके उत्तम वचन उरमें धार धर्मको उद्यमी होय सो कभी खेद-खिन्न न होय जो गृहस्थ द्वारे आया साधु उसकी भक्ति न करै आहारादिक न दे सो अविवेकी है अर गुरुके वचन सुन धर्मको न आदरै सो भव भ्रमणसे न छूटे जो घने प्रमादी हैं अर नाना प्रकारके अशुभ उद्यमकर व्याकुल हैं उनकी आयु वृथा जाय है जैसे हथेलीमें आया रत्न जाता रहे ऐसा जान समस्त लौकिक कार्यको निरर्थक मान दुःखरूप इन्द्रियोंके सुख तिनको तजकर परलोक सुधारिवेके अर्थ जिन शासनमें श्रद्धा करो, भामंडल मरकर पात्रदानके प्रभावसे उत्तम भोग भूमिगया ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषै भामंडलका मरण वर्णन करनेवाला एकसौ ग्यारवां पर्व पूर्ण भया ॥ १११ ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण परस्पर महास्नेहके भरे प्रजाके पिता समान परम हितकारी तिनका राज्यविषै सुखसे समय व्यातीत होता भया परम ईश्वरतारूप अति सुन्दर राज्य सोई भया कमलोंका वन उसमें क्रीडा करते वे पुरुषोत्तम पृथिवीको प्रमोद उपजावते भए इनके सुखका वर्णन कहां तक करें ऋतुराज कहिए वसंतऋतु उसमें सुगंध वायु वहे कोयल बोलें भ्रमर गुंजार करें समस्त वनस्पति फूले मदोन्मत्त होय समस्तलोक हर्षके भरे शृंगार क्रीडा करें मुनिराज विषम वनाविषै विराजें आत्मस्वरूपका ध्यान करें उस ऋतुविषै राम लक्ष्मण रणवाससहित अर समस्त लोकों सहित रमणीक वनविषै तथा उप-वनविषै नाना प्रकारके रंग क्रीडा रागक्रीडा जलक्रीडा वनक्रीडा करते भए अर ग्रीष्मऋतुविषै नदी सूकै दावानल समान ज्वाला वरसै महामुनि गिरिके शिखर सूर्यके सन्मुख कायोत्सर्ग धर तिष्ठें उसऋतुविषै राम लक्ष्मण धारामंडप महिलमें अथवा महारमणीक वनविषै जहां अनेक जलयंत्र चन्दन कर्पूर आदि

शीतल सुगंध सामिग्री वहां सुखसे विराजैं हैं चमर ढुरे हैं ताडके बीजना फिरे हैं निर्मल स्फटिककी शिलापर तिष्ठे हैं अगुरु चन्दनकर चर्चे जलकर तर ऐसे कमल दल तथा पुष्पोंके सांथरेपर तिष्ठे मनोहर निर्मल शीतल जल जिसविषै लवंग इलायची कपूर अनेक सुगंध द्रव्य उनकर महासुगंध उसका पान करते लतावोंके मंडपोंविषै विराजते नानाप्रकारकी सुन्दर कथा करते सारंग आदि अनेक राग सुनते सुन्दर स्त्रीनि सहित उष्ण ऋतुको बलात्कार शीतकाल सम करते सुखसे पूर्ण करते भए, अर वर्षाऋतु विषै योगीश्वर तरु तले तिष्ठते महातपकर अशुभ कर्मका क्षयकरैं हैं विजुरी चमकैं हैं मेघकर अंधकार होयरहा है मयूर बोले हैं ढाहा उपाडती महाशब्द करती नदी बहे हैं उसऋतुविषै दोनों भाई सुमेरुके शिखर समान ऊंच नाना मणिमई जे महिल तिनविषै महाश्रेष्ठ रंगीले वस्त्र पहिरें केसरके रंगकर लिप्त है अंग जिनका अर कृष्णागरुका धूप खेए रहे हैं महासुन्दर स्त्रियोंके नेत्ररूप भ्रमरोंके कमल सारिखे इन्द्र समान क्रीडा करते सुखसों तिष्ठे अर शरद ऋतुविषै जल निर्मल होय चन्द्रमाकी किरण उज्ज्वल होय कमल फूलैं हंस मनोहर शब्द करैं मुनिराज वन पर्वत सरोवर नदीके तीरे बैठे चिद्रूपका ध्यानकरैं उसऋतुविषै राम लक्ष्मण राजलोकों सहित चांदनीके वस्त्र आभरण पहिरे सरिता सरोवरके तीर नाना विधि क्रीडा करते भए अर शीतऋतुविषै योगीश्वर धर्म ध्यानको ध्यावते रात्रिविषै नदी तालावोंके तट पै जहां अति शीत पडे वर्फ वरसे महाठण्डी पवन बाजे तहां निश्चल तिष्ठे हैं महाप्रचण्ड शीतल पवन कर वृक्ष दाहे मारे हैं अर सूर्यका तेज मन्द होय गया है ऐसी ऋतुविषै राम लक्ष्मण महिलोंके भीतरले चौबारोंविषैं तिष्ठते मनवांछित विलास करते सुन्दर स्त्रीनिके समूह सहित वीण मृदंग वांसुरी आदि अनेक वादित्रोंके शब्द कानोंको अमृत समान श्रवणकर मनको आल्हाद उपजावते दोनों वीर महाधीर देवांसमान अर जिनके स्त्री देवांगना समान वाणीकर जीती है वीणाकी ध्वनि जिन्होंने महापतिव्रता तिन

कर आदरते संते पुण्यके प्रभावसे सुखसे शीतकाल व्यतीत करते भए अद्भुत भोगोंकी सम्पदाकर मंडित वे पुरुषोत्तम प्रजाको आनन्दकारी दोनों भाई सुखसे तिष्ठे हैं ।

अथानंतर गौतमस्वामी कहे है—हे श्रेणिक ! अब तू हनूमानका वृतांत सुन हनूमान पवनका पुत्र कर्णकुण्डल नगरविषै पूर्व पुण्यके प्रभावसे देवानिके से सुख भोगवै जिसकी हजारां विद्याधर सेवा करें अर उत्तम क्रियाका धारक स्त्रियों सहित परिवार सहित अपनी इच्छाकर पृथिवीमें विहार करै श्रेष्ठ विमानविषै आरूढ परम ऋद्धिकर मंडित महा शोभायमान सुंदर वनोंमें देवनि समान क्रीडा करै सो वसंतका समय आया कामी जीवनको उन्मादका कारण अर समस्त वृक्षोंको प्रफुल्लित करणहारा प्रिया अर प्रीतमके प्रेमका वढावनहारा सुगंध चले है पवन जिसमें ऐसे समयमें अंजनीका पुत्र जिनेंद्रकी भक्तिमें आरूढचित्त, अति हर्ष कर पूर्ण हजारां स्त्रीनि सहित सुमेरु पर्वतकी ओर चला हजारां विद्याधर हैं संग जिसके श्रेष्ठ विमानविषै चढे परम ऋद्धिकर संयुक्त मार्गविषै वनविषै क्रीडा करते भए । कैसे हैं वन ? शीतल मंद सुगंध चले हैं पवन जहां नाना प्रकारके पुष्प अर फलों कर शोभित वृक्ष हैं जहां देवांगना रमैं हैं अर कुलाचलोंकेविषै सुंदर सरोवरों कर युक्त अनेक मनोहर वन जिनविषै भ्रमर गुंजार करैं हैं अर कोयल बोल रही हैं अर नाना प्रकारके पशु पक्षियोंके युगल विचरैं हैं जहां सर्व जातिके पत्र पुष्प फल शोभे हैं अर रत्ननिकी ज्योतिकर उद्योतरूप हैं पर्वत जहां अर नदी निर्मल जलकी भरी सुंदर हैं तट जिनके अर सरोवर अति रमणीक नाना प्रकारके कमलोंके मकरंदकर रंग रूप होय रहा है सुगंध जल जिनका अर वापिका अति मनोहर जिनके रत्नोंके सिवान अर तटोंके निकट बडे बडे वृक्ष हैं अर नदीमें तरंग उठे हैं झागोंके समूह सहित महा शब्द करती वहे हैं जिनमें मगरमच्छ आदि जलचर क्रीडा करैं हैं अर दोनों तटविषै लहलहाट करते अनेक वन उपवन महा मनोहर विचित्रगति लिये शोभे

हैं जिनमें क्रीडा करवेके सुन्दर महिल अर नाना प्रकार रत्नकर निर्मापे जिनेश्वरके मंदिर पापोंके हरणहारे अनेक हैं। पवनपुत्र सुंदर स्त्रियोंकर सेवित परम उदय कर युक्त अनेक गिरियों विषै अकृत्रिम चैत्यालयोंका दर्शन कर विमानविषै चढा स्त्रियोंको पृथिवीकी शोभा दिखावता अति प्रसन्नतासे स्त्रियोंसे कहे है–हे प्रिये ! सुमेरुविषैं अति रमणीक जिन मंदिर स्वर्ण रत्नमयी भासे हैं अर इनकी शिखर सूर्यसमान देदीप्यमान महामनोहर भासे हैं अर गिरिकी गुफा तिनके मनोहर द्वार रत्नजडित शोभा नाना रंगकी ज्योति परस्पर मिल रही हैं वहां अराति उपजे ही नाहीं सुमेरुकी भूमितलविषै अतिरमणीक भद्रशालवन है अर सुमेरुकी कटि मेखलाविषै विस्तीर्ण नंदन वन अर सुमेरुके वक्षस्थलविषै सौमनस वन है जहां कल्प वृक्ष कल्पलताओंसे बेढे सोहे हैं अर नानाप्रकार रत्नोंकी शिला शोभित हैं अर सुमेरुके शिखरमें पांडुक बन है जहां जिनेश्वर देवका जन्मोत्सव होय है इन चारों ही बनविषै चार चार चैत्यालय हैं जहां निरंतर देव देवियोंका आगम है यक्ष किन्नर गंधर्वोंके संगीतकर नाद होय रहा है अप्सरा नृत्य करे हैं कल्प वृक्षोंके पुष्प मनोहर हैं नानाप्रकारके मंगल द्रव्यकर पूर्ण यह भगवान्‌के अकृत्रिम चैत्यालय अनादि निधन हैं। हे प्रिये पांडुक वनविषै परम अद्भुत जिन मंदिर सोहे हैं जिनके देखे मन हरा जाय, महाप्रज्वलित निर्धूम अग्नि समान संध्याके वादरोंके रंग समान उगते सूर्य समान स्वर्णमई शोभे हैं समस्त उत्तम रत्नकर शोभित सुन्दराकार हजारों मोतियोंकी माला तिनकर मंडित मनोहर हैं। मालावोंके मोती कैसे सोहे हैं मानों जलके बुद्बुदाही हैं अर घंटा झांझ मंजीरा मृदंग चमर तिनकर शोभित हैं चौगिरद कोट ऊंचे दरवाजे इत्यादि परम विभूति कर विराजमान हैं नाना रंगकी फरहरती ध्वजा स्वर्णके स्तंभ कर देदीप्यमान इन अकृत्रिम चैत्यालयोंकी शोभा कहां लग कहें जिनका संपूर्ण वर्णन इंद्रादिक देव भी न कर सकें, हे कांते यह पांडुक बनके चैत्यालय मानों सुमेरुका मुकुट ही हैं अतिरमणीक हैं

या भांति महाराणी पटराणियोंसे हनूमान बात करते जिनमंदिरोंकी प्रशंसा करते मंदिरके स-
मीप आए विमानसे उतर महा हर्षित होय प्रदक्षिणा दई वहां श्रीभगवानके अकृत्रिम प्रतिबिंब सर्व अ-
तिशय विराजमान महा ऐश्वर्यकर मंडित महा तेज पुंज देदीप्यमान शरद्के उज्ज्वल वादर तिनमें जैसे
चन्द्रमा सोहे तैसे सर्व लक्षणमंडित, हनूमान हाथ जोड रणवास सहित नमस्कार करता भया। कैसा है
हनूमान ? जैसे ग्रहतारावोंके मध्य चन्द्रमा सोहे तैसा राजा लोकके मध्य सोहे है जिनेंद्रके दर्शनकर उपजा
है अतिहर्ष जिसको सो संपूर्ण स्त्रीजन अति आनन्दको प्राप्त भई रोमांच होय आए नेत्र प्रफुल्लित भए
विद्याधरी परम भक्तिकर युक्त सर्व उपकरणों सहित परम चेष्टाकी धरणहारी महापवित्र कुलविषै उपजी
देवांगनाओंकी न्याई अति अनुरागसे देवाधिदेवकी विधिपूर्वक पूजा करती भई महा पवित्र पद्महद
आदिकका जल अर महा सुगन्ध चन्दन मुक्ताफलानिके अक्षत स्वर्णमई कमल तथा पद्मराग मणिमई
तथा चन्द्रकांति मणिमई तिनकर पूजा करती भई अर कल्पवृक्षनिके पुष्प अर अमृतरूप नैवेद्य अर
महा ज्योतिरूप रत्नोंके दीप चढाए अर मलयागिरि चन्दन आदि महासुगन्ध जिनकर दशोंदिशा सु-
गंधमई होय रही हैं अर परम उज्ज्वल महा शीतल जल अर अगुरु आदि महापवित्र द्रव्योंकर उपजा
जो धूप सो खेवती भई अर महा पवित्र अमृत फल चढावती भई अर रत्नोंके चूर्णकर मण्डला मांडती
भई महा मनोहर अष्ट द्रव्योंसे पतिसहित पूजा करती भई। हनूमान राणीनिसहित भगवानकी पूजा क-
रता कैसे सोहे है जैसा सौधर्म इंद्र पूजा करता सोहे। कैसा है हनूमान जनेऊ पहिरे सर्व आभूषण पहिरे
महीन वस्त्र पहिरे महा पवित्र पापरहित बानरके चिन्हका है देदीप्यमान रत्नमई मुकुट जिसके महाप्र-
मोदका भरा फूल रहे हैं नेत्र कमल जिसके सुन्दर है बदन जिसका पूजाकर पापानिके नाश करणहारे
स्तोत्र तिनकर सुर असुरोंके गुरु जिनेश्वर तिनके प्रतिबिंबकी स्तुति करता भया, सो पूजा करता अर

स्तुति करता इंद्रकी अप्सरावोंने देखा सो अति प्रशंसा करती भई अर यह प्रवीण बीण लेयकर जिनेंद्रचन्द्रके यश गावता भया जे शुद्ध चित्त जिनेन्द्रकी पूजाविषै अनुरागी हैं सब कल्याण तिनके समीप हैं तिनको कुछ ही दुर्लभ नहीं तिनका दर्शन मंगलरूप है उन जीवोंने अपना जन्म सुफल किया, जिन्होंने उत्तम मनुष्य देह पाय श्रावकके व्रत धर जिनवरविषै दृढ भक्ति धारी अपने करविषै कल्याणको धरा जन्मका फल तिन ही पाया हनूमानने पूजा स्तुति बन्दनाकर बीण बजाय अनेक राग गाय अद्भुत स्तुति करी यद्यपि भगवानके दर्शनसे विछुरनेका नहीं है मन जिसका तथापि चैत्यालयविषै अधिक न रह्या, मत कोई आच्छादन लागे तातैं जिनराजके चरण उरविषै धर मंदिरसे बाहिर निकसा, विमानोंमें चढ हजारों स्त्रियोंकर संयुक्त सुमेरुकी प्रदाक्षिणा दी, जैसे सूर्य देय तैसे श्रीशैल कहिए हनूमान सुन्दर हैं क्रिया जिसकी सो शैलराज कहिए सुमेरु उसकी प्रदाक्षिणा देय समस्त चैत्यालयोंविषै दर्शन कर भरतक्षेत्रकी ओर सन्मुख भया सो मार्गविषैं सूर्य अस्त होय गया अर संध्या भी सूर्यके पीछे विलय गई कृष्णपक्षकी रात्रि सो तारा रूप बंधुवोंकर मंडित चन्द्रमारूप पति बिना न सोहती भई। हनूमानने तले उतर एक सुरदुन्दुभी नामा पर्वत वहां सेना सहित रात्रि व्यतीत करी, कमल आदि अनेक सुगंध पुष्पोंसे स्पर्श पवन आई उस कर सेनाके लोक सुखसे रहे जिनेश्वर देवकी कथा करवो किए रात्रिको आकाशसे देदीप्यमान एक तारा टूटा सो हनूमानने देखकर मनविषै विचारी हाय हाय इस संसार असार वनविषै देव भी कालवश हैं ऐसा कोई नहीं जो कालसे बचे विजुरीका चमत्कार अर जलकी तरंग जैसे क्षण भंगुर हैं तैसे शरीर विनश्वर है इस संसारविषै इस जीवने अनंत भवविषै दुख ही भोगे, यह जीव विषयके सुखको सुख माने है सो सुख नहीं दुःख ही है पराधीन है विषम क्षणभंगुर संसारविषै दुःख ही है सुख नहीं होय है, मोहका माहात्म्य है जो अनन्त काल जीव दुख भोगता भ्रमण करे है अ-

नन्तावसर्पणी काल भ्रमणकर मनुष्य देह कभी कोई पावे है सो पायकर धर्मके साधन वृथा खोवे है यह विनाशीक सुखविषे आसक्त होय महा संकट पावे है यह जीव रागादिकके वश भया वीतराग भावको नहीं जाने है यह इंद्रिय जैन मार्गके आश्रय विना न जीते जांय यह इंद्री चंचल कुमार्गके विषै लगाय कर जीवोंको इस भव परभवविषै दुःख देह हैं जैसे मृग मीन अर पक्षी लोभके वशसे बाधिकके जालमें पडें हैं तैसे यह कामी क्रोधी लोभी जीव जिनमार्गको पाए विना अज्ञानके वशसे प्रपंचरूप पारधीके बिछाए विषय रूप जालविषै पडें हैं जो जीव आशीविष सर्प समान यह मन इंद्री तिनके विषयोंमें रमें हैं सो मूढ अग्निविषै जरे हैं जैसे कोई एक दिन राज्यकर वर्ष दिन त्रास भोगवे तैसे यह मूढ जीव अल्प-दिन विषयोंके सुख भोग अनन्त काल पर्यंत निगोदके दुख भोगवे हैं जो विषयके सुखका अभिलाषी है सो दुःखोंका अधिकारी है, नरक निगोदके मूल यह विषय तिनकों ज्ञानी न चाहें मोहरूप ठगका ठगा जो आत्मकल्याण न करे सो महा कष्टको पावै जो पूर्व भवविषै धर्म उपार्जे मनुष्य देह पाय धर्मका आदर न करे सो जैसे धन ठगाय कोई दुखी होय तैसे दुखी होय है अर देवोंके भी भोग भोगि यह जीव मरकर देवसे एकेंद्री होय है इस जीवके पाप शत्रु हैं अर कोई शत्रु मित्र नहीं अर यह भोग ही पापके मूल हैं इनसे तृप्ति न होय, यह महा भयंकर हैं अर इनका वियोग निश्चय होयगा यह रहनेके नाहीं जो मैं इस राज्यको अर यह जो प्रियजन हैं तिनको तजकर तप न करूं तो अतृप्त भया सुभूमि चक्रवर्ती की नाईं मरकर दुर्गतिको जाऊंगा अर यह मेरे स्त्री शोभायमान मृगनयनी सर्व मनोरथकी पूर्णहारी पतिव्रता स्त्रियोंके गुणनिकर मंडित नव यौवन हैं सो अबतक मैं अज्ञानसे इनको तज न सका सो मैं अपनी भूलको कहां तक उराहना दूं। देखो! मैं सागर पर्यंत स्वर्गविषै अनेक देवांगना सहित रमा अर देवसे मनुष्य होय इस क्षेत्रविषै भया सुन्दर स्त्रियों सहित रमा परन्तु तृप्त न भया जैसे ईंधनसे अग्नि तृप्त न

होय अर नदियोंसे समुद्र तृप्त न होय तैसे यह प्राणी नानाप्रकारके विषय सुख तिनकर तृप्त न होय भैं नानाप्रकारके जन्म तिनविषै भ्रमणकर खेद खिन्न भया। रे मन अब तू शांतताको प्राप्त होहु कहा व्याकुल होय रहा है क्या तैंने भयंकर नरकोंके दुःख न सुने जहां रौद्रध्यान हिंसक जीव जाय हैं जिन नरकोंविषै महा तीव्र वेदना असिपत्र बन वैतरणी नदी संकटरूप है सकल भूमि जहां। रे मन तू नरकसे न डरे है रागद्वेष कर उपजे जे कर्म कलंक तिनको तपकर नाहि खिपावे है तेरे एते दिन योंही वृथा गए विषय सुखरूप कूपविषै पडा अपने आत्माको भव पिंजरसे निकास। पाया है जिनमार्गविषै बुद्धिका प्रकाश तैंने तू अनादि कालका संसार भ्रमणसे खेदखिन्न भया अब अनादिके बंधे आत्माको छुडाय। हनूमान ऐसा निश्चयकर संसार शरीर भोगोंसे उदास भया जाना है यथार्थ जिनशासनका रहस्य जिसने जैसे सूर्य मेघरूप पटलसे रहित महा तेजरूप भासे तैसे मोह पटलसे रहित भासता भया जिस मार्ग होय जिनवर सिद्धि पदको सिधारे उस मार्गविषै चालिवेको उद्यमी भया ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै हनूमानका वैराग्य चिंतवन वर्णन करनेवाला एकसौ वारहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११२ ॥

अथानन्तर रात्रि व्यतीत भई सोला वानीके स्वर्ण समान सूर्य अपनी दीप्तिकर जगतविषैं उद्योत करता भया जैसे साधु मोक्षमार्गका उद्योत करे नक्षत्रोंके गण अस्त भए अर सूर्यके उदयकर कमल फूले जैसे जिनराजके उद्योतकर भव्य जीवरूप कमल फूले। हनूमान महा वैराग्यका भरा जगतके भोगोंसे विरक्त मंत्रियोंसे कहता भया जैसे भरत चक्रवर्ती पूर्व तपोवनको गए तैसे हम जावेंगे तब मंत्री प्रेमके भरे परम उद्वेगको प्राप्त होय नाथसे विनती करते भए हे देव! हमको अनाथ न करो प्रसन्न होवो हम

तिहारे भक्त हैं हमारा प्रतिपालन करो तब हनूमानने कही तुम यद्यपि निश्चयकर मेरे आज्ञाकारी हो तथापि अनर्थके कारण हो, हितके कारण नहीं जो संसार समुद्रसे उतरें अर उसे पीछे सागरमें डारें ते हितू कैसे ? निश्चय थकी उनको शत्रु ही कहिए जब या जीवने नरकके निवासविषै महादुःख भोगे तब माता पिता मित्र भाई कोई ही सहाई न भया। यह दुर्लभ मनुष्य देह अर जिनशासनका ज्ञान पाय बुद्धिवानोंको प्रमाद करना उचित नहीं अर जैसे राज्यके भोगसे मेरे अप्रीति भई तैसे तुमसे भी भई यह कर्म जनित ठाठ सर्व विनाशीक है निसंदेह हमारा तिहारा वियोग होयगा जहां संयोग है तहां वियोग है सुर नर अर इनके अधिपति इन्द्र नरेंद्र यह सब ही अपने अपने कर्मोंके आधीन हैं कालरूप दावानल कर कौन २ भस्म न भए। मैं सागरा पर्यंत अनेक भव देवोंके सुख भोगे परन्तु तृप्त न भया जैसे सूके इन्धनकर अग्नि तृप्त न होय। गति जाति शरीर इनका कारण नाम कर्म है जाकर ये जीव गति गतिविषै भ्रमण करे हैं सो मोहका बल महाबलवान् है जाके उदयकर यह शरीर उपजा है सो न रहेगा यह संसार वन महाविषम है जाविषै ये प्राणी मोहको प्राप्त भए भवसंकट भोगे हैं उसे उलंघकर मैं जन्मजरा मृत्यु रहित जो पद तहां गया चाहूं हूं यह बात हनूमान मांत्रियोंसे कही सो रणवासकी स्त्रियोंने सुनी उसकर खेदखिन्न होय महारुदन करती भई। जे समझानेविषैं समर्थ ते उनको शांतचित करी कैसे हैं समझावन हारे नाना प्रकारके वृत्तांतविषै प्रवीण अर हनूमान् निश्चल है चित्त जाका सो अपने बडे पुत्रको राज्य देय अर सबोंको यथा योग्य विभूति देय रत्नोंके समूहकर युक्त देवोंके विमान समान जो अपना मन्दिर उसे तजकर निकसा। स्वर्ण रत्नमई देदीप्यमान जो पालकी तापर चढ चैत्यवान् नामा वन तहां गया सो नगरके लोक हनुमानकी पालिकी देख सजल नेत्र भये पालिकीपर ध्वजा फर हरे हैं चमरोंकर शोभित हैं मोतियोंकी झालरियोंकर मनोहर है हनूमान वनविषै आया। सो वन नानाप्रकार

के वृक्षोंकर मंडित अर जहां सूवा मैना मयूर हंस कोयल भ्रमर सुंदर शब्द करे हैं अर नानाप्रकारके पुष्पोंकर सुगंध है वहां स्वामी धर्मरत्न संयमी धर्मरूप रत्नकी राशि उत्तम योगीश्वर जिनके दर्शनसे पाप विलाय जावें ऐसे सन्त चारण मुनि अनेक चारण मुनियोंकर मंडित तिष्ठते थे। आकाशविषे है गमन जिनका सो दूरसे उनको देख हनूमान पालकीसे उतरा महा भक्तिकरयुक्त नमस्कारकर हाथ जोड कहता भया—हे नाथ ! मैं शरीरादिक परद्रव्योंसे निर्ममत्व भया यह परमेश्वरी दीक्षा आप मुझे कृपाकर देवो। तब मुनि कहते भए—अहो भव्य ! तैंने भली विचारी तू उत्तम जन है जिनदीक्षा लेहु। यह जगत असार है शरीर विनश्वर है शीघ्र आत्मकल्याण करो अविनश्वर पद लेवेकी परमकल्याणकारणी बुद्धि तुम्हारे उपजी है यह बुद्धि विवेकी जीवके ही उपजे है ऐसी मुनिकी आज्ञा पाय मुनिको प्रणामकर पद्मासन धर तिष्ठा मुकट कुण्डल हार आदि सर्व आभूषण डारे अर वस्त्र डारे जगतसे मनका राग निवारा, स्त्रीरूप बंधन तुडाय ममता मोह मिटाय आपको स्नेहरूप पाशसे छुडाय विष समान विषय सुख तजकर वैराग्यरूप दीपककी शिखाकर रागरूप अंधकार निवारकर शरीर अर संसारको असार जान कमलोंको जीतैं ऐसे सुकमार जे कर तिनकर सिरके केश लौंच करता भया समस्त परिग्रहसे रहित होय मोक्षलक्ष्मीको उद्यमी भया महाव्रत धरें असंयम पर हरे हनूमान्की लार साडा सातसौ बडे राजा विद्याधर शुद्ध चित्त विद्युद्गतिको आदि दे हनूमानके परम मित्र अपने पुत्रोंको राज्य देय अठाईसमूल गुण धार योगीन्द्र भए अर हनूमानकी रानी अर इन राजावोंकी राणी प्रथम तो वियोगरूप अग्निकर तप्तायमान् विलाप करती भईं फिर वैराग्यको प्राप्त होय बंधुमति नामा आर्यिकाके समीप जाय महा भक्तिकर संयुक्त नमस्कारकर आर्यिकाके व्रत धारती भईं। वे महाबुद्धिवंती शीलवंती भव भ्रमणके भयसे आभूषण डार एक सुफेद वस्त्र राखती भईं शील ही है आभूषण जिनके तिनको राज्यविभूति जीर्ण

तृण समान भासती भई अर हनूमान महाबुद्धिमान महातपोधन महापुरुष संसारसे अत्यंत विरक्त पंच महाव्रत पंचसमिति तीन गुप्ति धार शैल कहिए पर्वत उससे भी अधिक, श्रीशैल कहिए हनूमान राजा पवनके पुत्र चारित्रविषै अचल होते भए तिनका यश निर्मल इंद्रादिक देव गावें बारम्बार बंदना करें अर बडे २ राजा कीर्ति करें निर्मल है आचरण जिनका, ऐसा सर्वज्ञ वीतराग देवका भाषा निर्मल धर्म आचरचा सो भवसागरके पार भया वे हनूमान महामुनि पुरुषोंविषै सूर्य समान तजस्वी जिनेंद्रदेवका धर्म आराध ध्यान अग्निकर अष्ट कर्मकी समस्त प्रकृति ईंधनरूप तिनको भस्मकर तुङ्गिगिरिके शिखरसे सिद्ध भए। केवलज्ञान केवल दर्शन आदि अनन्त गुणमई सदा सिद्ध लोकविषै रहैंगे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं हनूमानका निर्वाण गमन वर्णन करनेवाला एकसौ तेरहवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११३ ॥

अथानन्तर राम सिंहासनपर विराजे थे लक्ष्मणके आठों पुत्रोंका अर हनूमानका मुनि होना मनुष्योंके मुखसे सुनकर हंसे अर कहते भए इन्होंने मनुष्य भवके क्या सुख भोगे। यह छोटी अवस्थामें ऐसे भोग तजकर योग धारण करें हैं सो बडा आश्चर्य है यह हठरूप ग्राहकर ग्रहे हैं देखो! ऐसे मनोहर काम भोग तज विरक्त होय बैठे हैं या भांति कही यद्यपि श्रीराम सम्यक्दृष्टि ज्ञानी हैं तथापि चारित्र मोहके बश कइएक दिन लोकोंकी न्याईं जगतविषै रहते भये संसारके अल्पसुख तिनविषै राम लक्ष्मण न्याय सहित राज्य करते भए। एक दिन महाज्योतिका धारक सौधर्म इंद्र परम ऋद्धिकर युक्त महाधीर्य अर गम्भीरताकर मंडित नाना अलंकार धरे सामान्य जातिके देव जे गुरुजन तुल्य अर लोकपाल जातिके देव देशपाल तुल्य अर त्रयस्त्रिंशत् जातिके देव मंत्री समान तिनकर मंडित तथा अन्य सकल

देव सहित इन्द्रासनविषे बैठे कैसे सोहे जैसे सुमेरु [illegible] भासैं। चन्द्रमा अर रत्नोंका सिंहासन उसपर सुखसे विराजता ऐसा भासै जैसे सुमेरुके ऊपर जिनराज भासैं। चन्द्रमा अर सूर्यकी ज्योतिको जीतें ऐसे रत्नोंके आभूषण पहिरे सुन्दर शरीर मनोहर रूप नेत्रोंको आनन्दकारी जैसी जलकी तरंग निर्मल तैसी प्रभाकर युक्त हार पहिरे ऐसा सोहै मानों शीतोदा नदीके प्रवाहकर युक्त निषधाचल पर्वत ही है मुकट कंठाभरण कुण्डल केयूर आदि उत्तम आभूषण पहिरै देवोंकर मंडित जैसा नक्षत्रोंकर चन्द्रमा सोहै तैसा सोहै है। अपने मनुष्य लोकविषे चन्द्रमा नक्षत्र ही भासैं तातैं चन्द्रमा नक्षत्रोंका दृष्टांत दिया है चन्द्रमा नक्षत्र जोतिषी देव हैं तिनसे स्वर्गवासी देवोंकी अति अधिक ज्योति है अर सब देवोंसे इंद्रकी ही अधिक है अपने तेजकर दशोंदिशाविषे उद्योत करता सिंहासनविषे तिष्ठता जैसा जिनेश्वर भासे तैसा भासे इंद्रके इंद्रासनका अर सभाका जो समस्त मनुष्य जिह्वा कर सैकडों वर्ष लग वर्णन करें तौभी न कर सकें सभाविषे इंद्रके निकट लोकपाल सब देवनिविषे मुख्य हैं सुन्दर हैं चित्त जिनके स्वर्गसे चयकर मनुष्य होय मुक्ति जावें हैं सोलह स्वर्गके बारह इंद्र हैं एकएक इंद्रके चार चार लोकपाल एक भवधारी हैं अर इंद्रनिविषे सौधर्म सनत्कुमार महेंद्र लांतवेंद्र शतारेंद्र आरणेंद्र यह षट् एक भवधारी हैं अर शची इंद्राणी लोकांतिक देव पंचम स्वर्गके तथा सर्वार्थसिद्धिके अहमिंद्र मनुष्य होय मोक्ष जावें हैं सो सौधर्म इंद्र अपनी सभाविषे अपने समस्त देवनिकर युक्त बैठा लोकपालादिक अपने अपने स्थानक बैठे सो इंद्र शास्त्रका व्याख्यान करते भए वहां प्रसंग पाय यह कथन किया अहो देवो! तुम अपने भावरूप पुष्प निरन्तर महा भक्तिकर अर्हंत देवको चढावो अर्हंतदेव जगत्का नाथ है समस्त दोष रूप वनके भस्म करिवेकों दावानल समान है जिसने संसारका कारण मोक्षरूप महा असुर अत्यंत दुर्जय ज्ञान कर मारा, वह असुर जीवोंका बडा बैरी निर्विकल्प सुखका नाशक है अर भगवान् वीतराग

भव्य जीवोंको संसार समुद्रसे तारिवे समर्थ हैं संसार समुद्र कषायरूप उग्र तरंग कर व्याकुल है काम-रूप ग्राह कर चंचलतारूप, मोहरूप मगर कर मृत्युरूप है ऐसे भवसागरसे भगवान् बिना कोई तारिवे समर्थ नहीं। कैसे हैं भगवान्? जिनको जन्म कल्याणकविषै इंद्रादिक देव सुमेरुगिरि ऊपर क्षीरसागरके जल कर अभिषेक करावे हैं अर महा भक्ति कर एकाग्रचित्त होय परिवार सहित पूजा करे हैं धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चारों पुरुषार्थ हैं तिन विषै लगा है चित्त जिनका जिनेंद्रदेव पृथिवीरूप स्त्रीको तजकर सिद्ध रूप वनिताको वरते भए। कैसी है पृथिवी रूप स्त्री? विंध्याचल अर कैलाश हैं कुच जिसके अर समुद्रकी तरंग हैं कटिमेखला जिसके ये जीव अनाथ महा मोहरूप अन्धकार कर आच्छादित तिनको वे प्रभु स्वर्ग लोकसे मनुष्य लोकविषैं जन्म धर भवसागरसे पार करते भए अपने अद्‌भुतानन्तवीर्य कर आठों कर्मरूप वैरी क्षणमात्रविषै खिपाए जैसे सिंह मदोन्मत्त हस्तियोंको नसावै भगवान सर्वज्ञदेवको अनेक नामकर भव्य जीव गावे हैं जिनेंद्र भगवान अर्हंत स्वयंभू शंभू स्वयंप्रभ सुगत शिवस्थान महादेव कालंजर हिरण्यगर्भ देवाधिदेव ईश्वर महेश्वर ब्रह्मा विष्णु बुद्ध वीतराग विमल विपुल प्रबल धर्मचक्री प्रभु विभु परमेश्वर परम ज्योति परमात्मा तीर्थंकर कृतकृत्य कृपालु संसारसूदन सुर ज्ञानचक्षु भवांतक इत्यादि अपार नाम योगीश्वर गावें हैं अर इंद्र धरणींद्र चक्रवर्ती भक्तिकर स्तुति करें हैं जो गोप्य हैं अर प्रकट हैं जिनके नाम सकल अर्थ संयुक्त हैं जिसके प्रसाद कर यह जीव कर्मसे छूटकर परम धामको प्राप्त होय है जैसा जीवका स्वभाव है तैसा वहां रहे है जो स्मरण करै उसके पाप विलाय जांय वह भगवान पुराण पुरुषोत्तम परम उत्कृष्ट आनन्दकी उत्पत्तिका कारण महा कल्याणका मूल देवनिके देव उसके तुम भक्त होवो अपना कल्याण चाहो हो तो अपने हृदय कमलविषै जिनराजको पधरावो, यह जीव अनादि निधन है कर्मोंका प्रेरा भव वनविषै भटके है सर्व जन्मविषै मनुष्य भव दुर्लभ है सो म-

नुष्य जन्म पायकर जे भूले हैं तिनको धिकार है चतुर्गति रूप है भ्रमण जिसविषै ऐसा संसाररूप स. उसमें बहुरि कब बोध पावेगे। जे अर्हंतका ध्यान नहीं करें हैं अहो धिक्कार उनको, जे मनुष्य देह पाय कर जिनेंद्रको न जपे हैं जिनेंद्र कर्मरूप वैरीका नाश करणहारा उसे भूल पापी नाना योनिविषै भ्रमण करें हैं कभी मिथ्या तपकर क्षुद्र देव होय हैं बहुरि मरकर स्थावर योनिविषै जाय महा कष्ट भोगे हैं यह जीव कुमार्गके आश्रयकर महा मोहके वश भए इंद्रोंका इंद्र जो जिनेंद्र उसे नहीं ध्यावें हैं देखो मनुष्य होयकर मूर्ख विषयरूप मांसके लोभी मोहिनी कर्मके योगकर अहंकार ममकारको प्राप्त होय हैं जिन दीक्षा नहीं धरें हैं मंद भागियोंके जिन दीक्षा दुर्लभ है कभी कुतपकर मिथ्यादृष्टि स्वर्गसे आन उपजे हैं सो हीन देव होय पश्चात्ताप करे हैं कि हम मध्य लोक रत्नद्वीप विषै मनुष्य भए थे सो अर्हंतका मार्ग न जाना अपना कल्याण न किया मिथ्या तपकर कुदेव भए हाय हाय धिकार उन पापियोंको जो कुशास्त्रकी प्ररूपणाकर मिथ्या उपदेश देय महा मानके भरे जीवोंको कुमार्गविषै डारे हैं मूढोंको जिनधर्म दुर्लभ है तातैं भव भवविषै दुखी होय हैं अर नारकी तिर्यंच तो दुखी ही हैं अर हीन देव भी दुखी ही हैं अर बडी ऋद्धिके धारी देव भी स्वर्गसे चये हैं सो मरणका बडा दुख है अर इष्ट वियोगका बडा दुख है बडे देवोंकी भी यह दशा तो और क्षुद्रोंकी क्या बात जो मनुष्य देहविषै ज्ञान पाय आत्मकल्याण करे हैं सो धन्य हैं। इंद्र या भांति कहकर बहुरि कहता भया ऐसा दिन कब होय जो मेरी स्वर्ग लोकविषै स्थिति पूर्ण होय अर मैं मनुष्य देह पाय विषय रूप बैरियोंको जीत कर्मोंका नाशकर तपके प्रभावसे मुक्ति पाऊं तब एक देव कहता भया यहां स्वर्गविषै तो अपनी यही बुद्धि होय है परन्तु मनुष्य देह पाय भूल जाय हैं जो कदाचित् मेरे कहेकी प्रतीति न करो तो पंचम स्वर्गका ब्रह्मेंद्रनामा इंद्र अब रामचन्द्र भया है सो यहां तो यौंही कहते थे अर अब वैराग्यका विचार ही नहीं तब शचीका पति सौधर्म इंद्र क-

हता भया सब बंधनमें स्नेहका बडा बंधन है जो हाथ पग कंठ आदि अंग २ बंधा होय सो तो छूटे परंतु स्नेहरूप बंधन कर बंधा कैसे छूटे स्नेहका बंधा एक अंगुल न जाय सके रामचन्द्रके लक्ष्मणसे अति अनुराग है लक्ष्मणके देखे बिना तृप्ति नाहीं अपने जीवसे भी उसे अधिक जाने है एक निमिष मात्र भी लक्ष्मणको न देखे तो रामका मन विकल होय जाय सो लक्ष्मणको तजकर कैसें वैराग्यको प्राप्त होय कर्मोंकी ऐसी ही चेष्टा है जो बुद्धिमान भी मूर्ख होय जाय है, देखो सुने हैं अपने सर्व भव जिसने ऐसा विवेकी राम भी अत्महित न करे। अहो देव हो ! जीवोंके स्नेहका बडा बंधन है या समान और नाहीं तातैं सुबुद्धियोंको स्नेह तज संसार सागर तरिवेका यत्न करना चाहिए, या भांति इंद्रके मुखका उपदेश तत्वज्ञानरूप अर जिनवरके गुणोंके अनुरागसे अत्यंत पवित्र उसे सुनकर देव चित्तकी विशुद्धताको पाय जन्म जरा मरणके भयसे कंपायमान भए मनुष्य होय मुक्ति पायवेकी अभिलाषा करते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै इन्द्रका देवनिकूं उपदेश वर्णन करनेवाला एकसौ चौदहवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११४ ॥

अथानन्तर इन्द्र सभासे उठे तब सुर कहिए कल्पवासी देव अर असुर कहिए भवनबासी विंतर ज्योतिषी देव इन्द्र नमस्कारकर उत्तम भावधर अपने अपने स्थानक गए, पहिले दूजे स्वर्ग लग भवनबासी विंतर ज्योतिषीदेव कल्पवासी देवोंकर ले गए जाय हैं सो सभामेंके दो स्वर्गवासी देव रत्नचूल अर मृगचूल बलभद्रनारायणके स्नेह परखिवेको उद्यमी भए, मनविषै यह धारणा करी ते दोनों भाई परस्पर प्रेमके भरे कहिए है। देखें उन दोनोंकी प्रीति। रामके लक्ष्मणसे ऐता स्नेह है जाके देखे विना न रहे सो रामका मरण सुने लक्ष्मणकी क्या चेष्टा होय ? लक्ष्मण शोककर विह्वल भया क्या चेष्टा करै सो क्षण

एक देखकर आवेंगे शोककर लक्ष्मणका कैसा मुख हो जाय कौनसे कोप करे क्या कहे ऐसी धारणा कर दोनों दुराचारी देव अयोध्या आए सो रामके महिलविषै विक्रियाकर समस्त अन्तःपुरकी स्त्रीनिका रुदन शब्द कराया अर ऐसी विक्रिया करी द्वारपाल उमराव मंत्री पुरोहित आदि नीचा मुखकर लक्ष्मणपै आए अर रामका मरण कहते भए, कि हे नाथ ! राम परलोक पधारे ऐसे वचन सुनकर लक्ष्मणने मन्दपवनकर चपल जो नील कमल ता समान सुन्दर हैं नेत्र जाके सो हाय यह शब्द हू आधासा कह तत्काल ही प्राण तजे, सिंहासन ऊपर बैठा हुता सो वचनरूप वज्रपातका मारा जीवरहित होय गया आंखकी पलक ज्यों थी त्यों ही रह गई जीव जाता रहा शरीर अचेतन रह गया लक्ष्मणको भ्राता की मिथ्या मृत्युके वचनरूप अग्निकर जरा देख दोनों देव व्याकुल भए लक्ष्मणके जिवायवेको असमर्थ तब विचारी याकी मृत्यु इस ही विधि कही हुती मनविषैं अति पछताए विषाद अर आश्चर्यके भरे अपने स्थानक गए शोकरूप अग्निकर तप्तायमान है चित्त जिनका लक्ष्मणकी वह मनोहर मूर्ति मृतक भई देव देख न सके तहां खडे न रहे निन्द्य है उद्यम जिनका । गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन् ! विना विचारे जे पापी कार्य करें तिनको पश्चात्ताप ही होय । देवता गए अर लक्ष्मणकी स्त्री पतिको अचेतनरूप देख प्रसन्न करनेको उद्यमी भई कहे हैं—हे नाथ ! किस अविवेकिनी सौभाग्यके गर्वकर गर्वितने आपका मान न किया सो उचित न करी हे देव ! आप प्रसन्न होवो तिहारी अप्रसन्नता हमको दुखका कारण है ऐसा कहकर वे परम प्रेमकी भरी लक्ष्मणके अंगसे आलिंगनकर पायन पडीं वे राणी चतुराईके वचन कहिवेविषै तत्पर कोई यक तो वीण लय बजावती भई कोई मृदंग बजावती भई पतिके गुण अत्यन्त मधुर स्वरसे गावती भई पतिके प्रसन्न करिवेविषै उद्यमी है चित्त जिनका कोई एक पतिका मुख देखे हैं अर पतिके वचन सुनिवेकी है अभिलाषा जिनके, कोई एक निर्मल स्नेहकी

धरणहारी पतिके तनुसे लिपटकर कुण्डलकर मंडित महासुन्दर कांतके कपोलोंको स्पर्शती भई अर कोई एक मधुरभाषिणी पतिके चरण कमल अपने सिरपर मेलती भई अर कोई मृगनयनी उन्मादकी भरी विभ्रमकर कटाक्षरूप जे कमल पुष्प तिनका सेहरा रचती भई जम्भाई लेती पतिका बदन निरखती अनेक चेष्टा करती भई ।

या भांति यह उत्तम स्त्री पतिके प्रसन्न करिवेको अनेक यत्नकरे हैं परन्तु उनके यत्न अचेतन शरीर विषै निरर्थक भए वे समस्त राणी लक्ष्मण की स्त्री ऐसे कांपायमान हैं जैसे कमलोंका वन पवन कर कंपायमान होय । नाथकी यह अवस्था होते संते स्त्रियोंका मन अतिव्याकुल भया संशयको प्राप्त भई किक्षणमात्रमें यह क्या भया चितवनमें न आवे अर कथनमें न आवे ऐसा खेदका कारण शोक उसे मनमें धर कर वे मुग्धा मोह की मारी पसर गई इंद्रकी इंद्राणी समान है चेष्टा जिनकी ऐसी वे राणी ताप कर तप्तायमान शूक गई न जानिए तिनकी सुन्दरता कहां जाती रही । यह वृत्तान्त भीतर के लोकों के मुखसे सुन श्रीरामचन्द्र मंत्रियों कर मंडित महा संभ्रमके भरे भाई पै आए भीतर राजलोकमें गए लक्ष्मणका मुख प्रभातके चन्द्रमा समान मन्दकांति देखा जैसा तत्कालका वृक्ष मूलसे उखड पडा होय तैसा भाई-का देखा मनमें चितवते भए यह क्या भया विना कारण भाई आज मोसे रूसा है यह सदा आनन्द रूप आज क्यों विषाद रूप होय रहा है स्नेहके भरे शीघ्र ही भाईके निकट जाय उसको उठाय उरसे लगाय मस्तक चूमते भए । दाहेका मारा जो वृक्ष उस समान हरिको निरख हलधर अंगसे लपट गया यद्यपि जीतव्यता के चिन्हरहित लक्ष्मण को देखा तथापि स्नेहके भरे राम उसे मूवा न जानते भए वक्र होय गई है ग्रीवा जिसकी शीतिल होय गया है अंग जिसका जगत्की आगल ऐसी भुजा सो शिथिल होय गेइ सांसोस्वास नहीं नेत्रोंकी पलक लगे न विघटे । लक्ष्मणकी यह अवस्था देख राम खेद-

खिन्न होय कर पसेव से भर गए। यह दीनों के नाथ राम दीन होय गये बारम्बार मूर्छा खाय पडे आसुवों कर भरगए हैं नेत्र जिनके भाई के अंग निरखे इसके एक नख की भी रेखा न आई कि ऐसा यह महाबली कौन कारणकर ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया यह विचार करते संते भया है कंपायमान शरीर जिनका यद्यपि आप सर्व विद्याके निधान तथापि भाईके मोहकर विद्या बिसर गई, मूर्छाका यत्न जानें ऐसे वैद्य बुलाए मन्त्र औषधिविषै प्रवीण कलाके पारगामी ऐसे वैद्य आये सो जीवता होय तो कछु यत्न करें वे माथा धुन नीचे होय रहे तब राम निराश होय मूर्छा खाय पडे जैसे वृक्षकी जड उखड जाय अर वृक्ष गिर पडे तैसे आप पडे। मोतियोंके हार चन्दन कर मिश्रित जल ताडके बीजनावोंकी पवनकर रामको सचेत किया तब महा विह्वल होय बिलाप करते भए शोक अर विषादकर महा पीडित राम आसुवोंके प्रवाह कर अपना मुख आच्छादित करते भये आसुओं कर आच्छादित रामका मुख ऐसा भासै जैसा जल धारा कर आच्छादित चन्द्रमा भासे अत्यन्त विह्वल रामको देख सर्वराजलोकरूप समुद्रसे रुदन रूप ध्वनि प्रकट होती भई दुख रूप सागरविषै मग्न सकल स्त्री जन अत्यर्थपणे रुदन करती भई तिनके शब्द कर दशों दिशा पूर्ण भई कैसे विलाप करें है हाय नाथ पृथ्वीको आनन्दके कारण सर्व सुन्दर हमको बचन रूप दान देवो तुमने विना अर्थ क्यों मौन पकडी हमारा अपराध क्या बिना अपराध हमको क्यों तजो हो तुम तो ऐसे दयाल हो जो अनेक चूक पडे तो क्षमा करो ॥

अथानन्तर इस प्रस्ताव विषै लव अर अंकुश परमाविषादको प्राप्त होय विचारते भए कि धिक्कार इस संसार असारको अर इस शरीर समान और क्षणभंगुर कौन जो एक निमिष मात्रमें मरणको प्राप्त होय। जो वासुदेव विद्याधरोंकर न जीता जाय सो भी कालके जालमें आय पडा इसालिये यह विनश्वर शरीर यह विनश्वर राज्य संपदा उसकर हमारे क्या सिद्धि? यह विचार सीताके पुत्र फिर गर्भमें आयवेका

है भय जिनको, पिताके चरणारविन्दको नमस्कार कर महेन्द्रोदय नामा उद्यान विषै जाय अमृतेश्वर मुनिकी शरण लेय दोनों भाई महाभाग्य मुनि भए जब इन दोनो भाइयोंने दीक्षा धरी तब लोक अतिव्याकुल भए कि हमारा रक्षक कौन ? रामको भाई के मरणका बडा दुख सो शोकरूप भंवरमें पडे, जिनको पुत्र निकसनेकी कुछ सुध नहीं रामको राज्यसे पुत्रोंसे प्रियायोंसे अपने प्राणसे लक्ष्मण अतिप्यारा यह कर्मोंकी विचित्रता जिसकर ऐसे जीवोंकी ऐसी अशुभ अवस्था होय ऐसा संसार का चरित्र देख ज्ञानी जीव वैराग्यको प्राप्त होय हैं जे उत्तम जन हैं तिनके कछु इक निमित्त मात्र बाह्य कारण देख अंतरंग के विकारभाव दूर होय ज्ञान रूप सूर्यका उदय होय है पूर्वोपार्जित कर्मोंका क्षयोपशम होय तब वैराग्य उपजे है ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लवणांकुशका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ पन्द्रहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११५ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम ! लक्ष्मणके काल प्राप्त भए समस्त लोक व्याकुल भए अर युगप्रधान जे राम सो अति व्याकुल होय सब बातोंसे रहित भए कछु सुध नहीं लक्ष्मणका शरीर स्वभाव ही कर महासुरूप कोमल सुगन्ध मृतक भया तो जैसेका तैसा सो श्रीराम लक्ष्मणको एक क्षण न तजें कबहूं उरसे लगाय लेंय कभी पपोलें कभी चूंबें कबहूं इसे लेकर आप बैठ जावें कभी लेकर उठ चलें एक क्षण काहूका विश्वास न करैं एक क्षण न तजें जैसे बालकके हाथ अमृत आवै अर वह गाढा गाढा गहै तैसे राम महाप्रिय जो लक्ष्मण उसको गाढा २ गहैं । अर दीनोंकी नांई विलाप करैं हाय भाई ! यह तोहि कहा योग्य जो मुझे तजकर तैंने अकेले भाजिबेकी बुद्धि करी । मैं तेरा

विरह एक क्षण सहारवे समर्थ नाहीं यह बात तू कहा न जाने है तू तो सब बातोंविषै प्रवीण है अब मोहि दुःखके सागरविषै डारकर ऐसी चेष्टा करै है हाय भ्रात! यह क्या क्रूर उद्यम किया जो मेरे बिना जाने मेरे विना पूछे कूचका नगारा बजाय दिया। हे वत्स! हे बालक! एक बार मुझे वचनरूप अमृत प्याय, तूतो अति विनयवान् हुता विना अपराध मोसे क्यों कोप किया, हे मनोहर! अब तक कभी मोसे ऐसा मान न किया अब कछु और ही होय गया। कह मैं क्या किया, जो तू रूसा, तू सदा ऐसा विनय करता मुझे दूरसे देख उठ खडा होय सन्मुख आवता मोहि सिंहासन ऊपर बैठावता आप भूमिमें बैठता अब कहा दशा भई, मैं अपना सिर तेरे पायनमें दूं तोभी नहीं बोले है तेरे चरण कमल चन्द्र कांति मणिसे अधिक ज्योतिको धरे जे नखोंकर शोभित देव विद्याधर सेवे हैं। हे देव! अब शीघ्र ही उठो मेरे पुत्रवन-को गये सो दूर न गए हैं तिनको हम तुरत ही उलट लावें अर तुम विना यह तिहारी राणी आर्त्तध्या-नकी भरी कुरचीकी नाई कल कलाट करे हैं तुम्हारे गुणरूप पाशसों बंधी पृथ्वीमें लोटी लोटी फिरे हैं तिनके हार विखर गए हैं अर सीस फूल चूडामणि कटिमेखला कर्णाभरण विखरे फिरे हैं यह महा वि-लापकर रुदन करे हैं अति आकुल हैं इनको रुदनसे क्यों न निवारो अब मैं तुम विना कहा करूं कहां जाऊं? ऐसा स्थानक नाहीं जहां मोहि विश्राम उपजै अर यह तिहारा चक्र तुमसे अनुरक्त इसे तजना तुमको कहा उचित अर तिहारे वियोगमें मोहि अकेला जान यह शोकरूप शत्रु दबावें है अब मैं हीन-पुण्य कहा करूं? मोहि अग्नि ऐसे न दहै अर ऐसा विष कंठको न सोखै जैसा तिहारा विरह सोखे है। अहो लक्ष्मीधर, क्रोध तज घनी बेर भई अर तुम ऐसे धर्मात्मा त्रिकालसामायिकके करणहारे जिनराज की पूजामें निपुण सो सामायिकका समय टल पूजाका समय टला अब मुनिनिके आहार देयवेकी वेला है सो उठो। तुम सदा साधुनिके सेवक ऐसा प्रमाद क्यों करो हो, अब यह सूर्य भी पश्चिम दिशाको आया

कमल सरोवरमें मुद्रित होय गए तैसे तिहारे दर्शन विना लोकोंके मन मुद्रित होय गये या प्रकार विलाप करते २ दिन व्यतीत भया निशा भई तब राम सुंदर सेज बिछाय भाईको भुजावोंमें लेय सूते, किसी का विश्वास नाहीं रामने सब उद्यम तजे एक लक्ष्मणमें जीव, रात्रिको कानोंविषे कहे हैं—हे देव ! अब तो मैं अकेला हूं तिहारे जीवकी वात मोहि कहो तुम कौन कारण ऐसी अवस्थाको प्राप्त भये हो तिहारे वदन चंद्रमातैं अतिमनोहर अब कांतिरहित क्यों भासे है अर तिहारे नेत्र मंद पवनकर चंचल जो नील कमल उस समान अब और रूप क्यों भासे है अहो तुमको कहा चाहिए सो ल्याऊं, हे लक्ष्मण ! ऐसी चेष्टा करनी तुमको सोहै नाहीं, जो मनविषे होय सो मुखकर आज्ञा करो, अथवा सीता तुमको याद आई होय वह पातिव्रता अपने दुखविषैं सहाय थी सो तो अब परलोक गई तुमको खेद करना नाहीं, हे धीर ! विषाद तजो विद्याधर अपने शत्रु हैं सो छिद्र देख आए अब अयोध्या लुटेगी तातैं यत्न करना होय सो करो अर हे मनोहर ! तुम काहूसे क्रोध ही करते तब भी ऐसे अप्रसन्न देखे नहीं अब ऐसे अ-प्रसन्न क्यों भासो हो । हे वत्स, अब ये चेष्टा तजो प्रसन्न होवो मैं तिहारे पायन परूं हूं नमस्कार करूं हूं तुम तो महा विनयवंत हो सकल पृथ्वीविषे यह वात प्रसिद्ध है कि लक्ष्मण रामका आज्ञाकारी है सदा सन्मुख है, कभी परांगमुख नाहीं, तुम अतुल प्रकाश जगतके दीपक हो, मत कभी ऐसा होय जो कालरूप वायुकर बुझ जावो । हे राजानिके राजन् ! तुमने या लोकको अति आनन्दरूप किया तिहारे राज्यमे अचैन किसीने न पाया । या भरतक्षेत्रके तुम नाथ हो अब लोकको अनाथकर गमन करना उचित नहीं, तुमने चक्रकर शत्रुनिके सकल चक्र जीते अब कालचक्रका पराभव कैसे सहो हो तिहारा यह सुंदर शरीर राज्यलक्ष्मीकर जैसा सोहता था, वैसा ही मूर्छित भया सोहै है । हे राजेन्द्र ! अब रात्रि भी पूर्ण भई सन्ध्या फूली सूर्य उदय होय गया, अब तुम निद्रा तजो, तुम जैसे ज्ञाता श्रीमुनिसुव्रतनाथके भक्त

प्रभातका समय क्यों चूको हो, जो भगवान वीतरागदेव मोहरूप रात्रिको हर लोकालोकका प्रकट करणहारा केवलज्ञानरूप प्रताप प्रकट करते भए, वे त्रैलोक्यके सूर्य भव्यजीवरूप कमलोंको प्रकट करणहारे तिनका शरण क्यों न लेवो अर यद्यपि प्रभात समय भया परंतु मुझे अंधकार ही भासे है क्योंकि मैं तिहारा मुख प्रसन्न नाहीं देखूं, तातैं हे विचक्षण ! अब निद्रा तजो, जिनपूजाकर सभाविषै तिष्ठो, सब सामंत तिहारे दर्शनको खडे हैं, बडा आश्चर्य है सरोवरविषै कमल फूले तिहारा वदन कमल मैं फूला नहीं देखूं हूं, ऐसी विपरीत चेष्टा तुमने अब तक कभी भी नहीं करी, उठो राज्यकार्यविषै चित्त लगावो हे भ्रातः ! तिहारी दीर्घ निद्रासे जिनमंदिरोंकी सेवाविषै कमी पडे हैं, संपूर्ण नगरविषै मंगल शब्द मिट गए गीत नृत्यवादित्रादि बंद हो गये हैं औरोंकी कहा वात ? जे महाविरक्त मुनिराज हैं तिनको भी तिहारी यह दशा सुन उद्वेग उपजे है तुम जिनधर्मके धारी हो सब ही साधर्मीक जन तिहारी शुभदशा चाहे हैं वीण बांसुरी मृदंगादिकके शब्दरहित यह नगरी तिहारे वियोगकर व्याकुल भई नहीं सोहै है कोई आगिले भवमें महाअशुभ कर्म उपार्जे तिनके उदयकर तुम सारिखे भाईकी अप्रसन्नतासे महाकष्ट को प्राप्त भया हूं। हे मनुष्योंके सूर्य जैसे युद्धविषै शक्तिके घावकर अचेत होय गए थे अर आनंदसे उठे मेरा दुख दूर किया तैसे ही उठकर मेरा खेद निवारो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामदेवका

विलाप वर्णन करनेवाला एकसौ सोलहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११६ ॥

अथानन्तर यह वृतान्त सुन विभीषण अपने पुत्रानि सहित अर विराधित सकल परिवार सहित अर सुग्रीव आदि विद्याधरनिके अधिपति अपनी स्त्रियों सहित शीघ्र अयोध्यापुरी आए आंसुनिकर

भरे हैं नेत्र जिनके हाथ जोड सीस निवाय रामके समीप आए महा शोकरूप हैं चित्त जिनके अति विषादके भरे रामको प्रणामकर भूमिविषै बैठे, क्षण एक तिष्ठकर मंद २ वाणी कर बिनती करते भए–हे देव! यद्यपि यह भाईका शोक दुर्निवार है तथापि आप जिनबाणीके ज्ञाता हो सकल संसारका स्वरूप जानो हो तातैं आप शोक तजिवे योग्य हो, ऐसा कह सबही चुप होय रहे बहुरि विभीषण सब बातविषै महा विचक्षण सो कहता भया–हे महाराज ! यह अनादि कालकी रीति है कि जो जन्मा सो मूवा, सब संसार विषै यही रीति है इनहीको नाहीं भई जन्मका साथी मरण है मृत्यु अवश्य है काहूसे न टरी अर न काहूसे टरे या संसार पिंजरेविषै पडे यह जीवरूप पक्षी सबही दुखी हैं कालके बश हैं मृत्युका उपाय नाहीं अर सबके उपाय हैं यह देह निसंदेह विनाशीक है तातैं शोक करना वृथा है, जे प्रवीण पुरुष हैं वे आत्मकल्याणका उपाय करें हैं रुदन किएसे मरा न जीवे अर न वचनालाप करे, तातैं हे नाथ ! शोक न करो यह मनुष्यनिके शरीर तो स्त्री पुरुषनिके संयोगसे उपजे हैं सो पानीके बुद्‌बुदावत् विलाय जांय इसका आश्चर्य कहा अहमिंद्र इंद्र लोकपाल आदि देव आयुके क्षय भए स्वर्गसे चय हैं जिनकी सागरोंकी आयु अर किसीके मारे न मरें वे भी काल पाय मरैं मनुष्यनिकी कहा बात यह तो गर्भके खेदकर पीडित अर रोगनिकर पूर्ण डाभकी अणीके ऊपर जो ओसकी बूंद आय पडे उस समान पडनेको सन्मुख है महा मलिन हाडोंके पिंजरे ऐसे शरीरके रहिवेकी कहा आशा ? आप यह प्राणी अपने सुजनोंका सोच करे सो आप क्या अजर अमर है आप ही कालकी दाढमें बैठा उसका सोच क्यों न करे ? जो इन हीकी मृत्यु आई होय अर और अमर हैं तो रुदन करना जब सबकी यही दशा है तो रुदन काहेका, जेते देहधारी हैं तेते सब कालके आधीन हैं सिद्ध भगवान्‌के देह नाहीं तातैं मरण नाहीं यह देह जिस दिन उपजा उसही दिनसे काल इसके लयवेके उद्यममें हैं यह सब संसारी जीवोंकी रीति है तातैं संतोष अंगीकार करो इष्टके वि-

योगसे शोक करै सो वृथा है शोक कर मरै तौभी वह वस्तु पीछे न आवे तातैं शोक क्यों करिये देखो काल तो वज्रदण्ड लिए सिर पर खडा है अर संसारी जीव निर्भय भए तिष्ठै हैं जैसे सिंह तो सिर पर खडा है अर हिरण हरा तृण चरे है त्रैलोक्यनाथ परमेष्ठी अर सिद्ध परमेश्वर तिन सिवाय कोई तीन लोकविषै मृत्युसे बचा सुना नाहीं वेही अमर हैं अर सब जन्म मरण करैं हैं यह संसार विंध्याचलके बन समान कालरूप दावानल समान बले है सो तुम क्या न देखो हो ? यह जीव संसार बनमें भ्रमण कर अति कष्टसे मनुष्य देह पावे है सो वृथा खोवै है काम भोगके अभिलाषी होय माते हाथीकी न्याई बंधनविषै पडे हैं नरक निगोदके दुःख भोगवे हैं कभीयक व्यवहार धर्मकर स्वर्गविषै देव भी होय हैं आयुके अंतमें वहांसे पडे हैं जैसे नदीके ढाहेका वृक्ष कभी उखडे ही तैसे चारो गतिके शरीर मृत्युरूप नदीके ढाहेके वृक्ष हैं इनके उखडवेका क्या आश्चर्य है, इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्ती आदि अनन्त नाशको प्राप्त भए जैसे मेघकर दावानल बुझै तैसे शांतिरसरूप मेघकर कालरूप दावानल बुझै और उपाय नाहीं पातालविषै भूतलविषै अर स्वर्गविषै ऐसा कोई स्थानक नहीं जहां कालसे बचे, अर छठे कालके अन्त इस भरत क्षेत्रमें प्रलय होयगी पहाड विलय होय जावेंगे तो मनुष्यकी कहा बात ? जे भगवान तीर्थंकर देव वज्रवृषभ नाराच संहननके धारक जिनके सम चतुरस्र संस्थानक सुर असुर नरोंकर पूज्य जो किसी कर जीते न जांय तिनका भी शरीर अनित्य वेभी देह तज सिद्धलोकविषै निज भावरूप रहैं तो औरोंका देह कैसे नित्य होय ? सुर नर नारक तिर्यंचोंका शरीर केलेके गर्भ समान असार है। जीव तो देहका यत्न करे हैं। अर काल प्राण हरे है जैसे बिलके भीतरसे गरुड सर्पको लेजाय तैसे यह देहके भीतरसे जीवको काल लेजाय है, यह प्राणी अनेक मूवोंको रोवे है हाय भाई, हाय पुत्र, हाय मित्र, या भांति शोक करे है अर कालरूप सर्प सबोंको निगले है जैसे सर्प मींडकको निगले, यह मूढ बुद्धि झूठे विकल्प करे हैं यह मैं किया यह मैं

करूं हूं यह करूंगा सो ऐसे विकल्प करता कालके मुखविषै जाय है जैसे टूटा जहाज़ समुद्रके तले जाय परलोकको गया जो सज्जन उसके लार कोई जाय सके तो इष्टका वियोग कभी न होय जो शरीरादिक पर वस्तुसे स्नेह करे हैं सो क्लेशरूप अग्निविषै प्रवेश करे हैं। अर इन जीवोंके इस संसारविषै एते स्वजनोंके समूह भए जिनकी संख्या नाहीं जे समुद्रकी रेणुकाके कण तिनसे भी अपार हैं अर निश्चय कर देखिए तो इस जीवके न कोई शत्रु है न कोई मित्र है, शत्रु तो रागादिक हैं, अर मित्र ज्ञानादिक हैं। जिसको अनेक प्रकारकर लडाईये अर निज जानिए सो भी बैरको प्राप्त भया महा रोसकर हणे जिसके स्तनोंका दुग्ध पाया जिसकर शरीर वृद्ध भया ऐसी माताको भी हने हैं धिक्कार है इस संसारकी चेष्टाको जो पहिले स्वामी था अर बार २ नमस्कार करता सो भी दास होय जाय है तब पायोंकी लातोंसे मारिये है, हे प्रभो ! मोहकी शक्ति देखो इसके वश भया यह जीव आपको नहीं जानें है परको आप माने है, जैसे कोई हाथ कर कारे नागको गहे तैसे कनक कामिनीको गहे है इस लोकाकाशविषै ऐसा तिल मात्र क्षेत्र नाहीं जहां जीवने जन्म मरण न किए अर नरकविषै इसको प्रज्वलित ताम्बा प्याया अर एती वार यह नरकको गया जो उसका प्रज्वालित ताम्रपान जोडिये तो समुद्रके जलसे अधिक होय अर सूकर कूकर गर्दभ होय इस जीवने एता मलका आहार कीया जो अनन्त जन्मका जोडिए तो हजारा विंध्याचलकी राशिसे अधिक होय अर या अज्ञानी जीवने क्रोधके वशसे एते पराए सिर छेदे अर उन्होंने इसके छेदे जो एकत्र करिए तो ज्योतिष चक्रको उलंघ कर यह सिर अधिक होवें जीव नरक प्राप्त भया वहां अधिक दुख पाय निगोद गया वहां अनन्तकाल जन्म मरण किए यह कथा सुनकर कौन मित्रसे मोह माने एक निमिष मात्र विषयका सुख उसके अर्थ कौन अपार दुख सहे, यह जीव मोहरूप पिशाच के वश पडा उन्मत्त भया संसार बनविषै भटके है। हे श्रेणिक ! विभीषण रामसे कहे है हे प्रभो ! यह

लक्षमणका मृतक शरीर तजवे योग्य है। अर शोक करना योग्य नाहीं यह कलेवर उरसे लगाय रहना योग्य नाहीं, या भांति विद्याधरानिका सूर्य जो विभीषण उसने श्रीरामसे विनती करी अर राम महा विवेकी जिनसे और प्रति बुद्ध होय तथापि मोहके योगसे लक्षमणकी मूर्तिको न तजी जैसे विनयवान् गुरु की आज्ञा न तजै ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं लक्ष्मणका वियोग रामका विलाप अर विभीषणका संसारस्वरूप वर्णन करनेवाला एकसौ सत्रहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११७ ॥

अथानन्तर सुग्रीवादिक सब राजा श्रीरामचन्द्रसे वीनती करते भए अब वासुदेव की दग्ध क्रिया करो तब श्रीराम को यह वचन अतिअनिष्ट लगा अर क्रोध कर कहते भए तुम अपने माता पिता पुत्र पौत्र सबों की दग्धाक्रिया करो, मेरे भाई की दग्धाक्रिया क्यों होय जो तुम्हारा पापीयोंका मित्र बन्धु कुटुम्ब सो सब नाशको प्राप्त होय मेरा भाइ क्यों मरे उठो उठो लक्षमण इन दुष्टनिके संयोगतैं और ठौर चलें जहां इन पापीनिके कटुकबचन न सुनिये ऐसा कह भाईको उरसे लगाय कांधे धर उठचले बिभीषण सुग्रीवादिक अनेक राजा इनकी लार पीछे २ चले आवें राम काहूका विश्वास न करें। भाईको कांधे धरे फिरें जैसे बालकके हाथ विषफल आया अर हितू छुडाया चाहै वह न छोडै तैसे राम लक्षमणके शरीर को न छोडे आंसूनिकरि भीज रहे हैं नेत्र जिनके भाईसे कहते भए हे भ्रात अब उठो बहुत बेर भई ऐसे कहा सोवो हो अब स्नानकी बेला भई स्नानके सिंहासन बिराजो ऐसा कह मृतक शरीरको सिंहासन पर बैठाया अर मोहका भरा राम मणि स्वर्णके कलशोंसे भाईको स्नान करावता भया अर मुकुट आदि सर्व आभूषण पहिराये अर भोजनकी तैयारी कराई सेवकोंको कही नानाप्रकार रत्न स्वर्णके भाजन

में नानाप्रकारका भोजन ल्यावो उसकर भाईका शरीर पुष्ट होय सुन्दर भात दाल फुलका नानाप्रकारके व्यंजन नानाप्रकारके रस शीघ्रही ल्यावो यह आज्ञा पाय सेवक सब सामग्रीकर ल्याये नाथके आज्ञाकारी तब आप रघुनाथ लक्ष्मणके मुखमें ग्रास देंय सो न ग्रसै जैसे अभव्य जिनराजका उपदेश न ग्रहै तब आप कहते भए जो तैंने मोसे कोप किया तो आहारसे कहा कोप ? आहार तो करो मोसे मत बोलो जैसे जिनबाणी अमृतरूप है परन्तु दीर्घ संसारीको न रुचै तैसे वह अमृतमई आहार लक्ष्मणके मृतक शरीरको न रुचा फिर रामचन्द्र कहै हैं—हे लक्ष्मीधर यह नानाप्रकारकी दुग्धादि पीवने योग्य वस्तु सो पीवो ऐसा कहकर भाईको दुग्धादि प्याया चाहैं सो कहा पीवै । यह कथा गौतमस्वामी श्रेणिकसे कहे हैं वह विवेकी राम स्नेहकर जैसी जीवतेकी सेवा करिये तैसे मृतक भाईकी करता भया अर नानाप्रकारके मनोहर गीत बीण बांसुरी आदि नानाप्रकारके नाद करता भया सो मृतकको कहा रुचै ? मानों मरा हुवा लक्ष्मण रामका संग न तजता भया । भाईको चन्दनसे चर्चा भुजावोंसे उठाय लेय उरसे लगाय सिर चूम्बे मुख चूम्बे हाथ चूम्बे अर कहे है—हे लक्ष्मण यह क्या भया तू तो ऐसा कभी न सोवता अब तो विशेष सोवने लगा अब निद्रा तजो या भांति स्नेहरूप ग्रहका ग्रहा बलदेव नानाप्रकारकी चेष्टा करै । यह वृत्तांत सब पृथिवीमें प्रकट भया कि लक्ष्मण मूवा लव अंकुश मुनि भये अर राम मोहका मारा मूढ होय रहा है तब बैरी क्षोभ को प्राप्त भये जैसे वर्षा ऋतुका समय पाय मेघ गाजै शंबूकका भाई सुन्दर इसका नन्दन विरोधरूप है चित्त जिसका सो इन्द्रजीतके पुत्र बज्रमाली पै आया अर कही मेरा बाबा अर दादा दोनों लक्ष्मणने मारे सो मेरा रघुवंशिनिसे बैर है अर हमारा पाताल लंकाका राज्य खोस लिया अर विराधितको दिया अर बानरबंशियोंका शिरोमणि सुग्रीव स्वामीद्रोही होय रामसे मिला सो राम समुद्र उलंघ लंका आये राक्षसद्वीप उजाडा रामको सीताका अति दुख सो लंका लेयवेका अभिलाषी भया अर सिंहवाहिनी अर

गरुडवाहिनी दोय महा विद्या राम लक्ष्मणको प्राप्त भई तिनकर इन्द्रजीत कुम्भकर्ण बन्दीमें किये अर लक्ष्मणके चक्र हाथ आया उसकर रावणको हता अब कालचक्र कर लक्ष्मण मूवा सो बानरवंशियों की पक्ष टूटी बानरबंशी लक्ष्मणकी भुजावोंके आश्रयसे उन्मत्त होय रहे थे अब क्या करेंगे वे निरपक्ष भये अर रामको ग्यारह पक्ष होय चुके बारहमां पक्ष लगा है सो गहला होय रहा है भाई के मृतक शरीरको लिये फिरे है ऐसा मोह कौनको होय ? यद्यपि राम समान योधा पृथ्वीमें और नहीं वह हल मूशलका धरणहारा अद्वितीय मल्ल है तथापि भाईके शोकरूप कीचमें फंसा निकसबे समर्थ नहीं सो अब रामसे बैर भाव लेनेका दाव है जिसके भाईने हमारे बंशके बहुत मारे शंबूकके भाईके पुत्रने इंद्रजीतके बेटेको यह कहा सो क्रोधकर प्रज्वलित भया मंत्रियोंको आज्ञा देय रण भेरी दिवाय सेना भेलीकर शंबूकके भाईके पुत्र सहित अयोध्याकी ओर चला सेनारूप समुद्रको लिए प्रथम तो सुग्रीव पर कोप किया कि सुग्रीवको मार अथवा पकड उसका देश खोसलें बहुरि रामसे लडें यह विचार इंद्रजीत के पुत्र बज्रमालीने किया सुन्दरके पुत्र सहित चढा तब ये समाचार सुनकर सर्व विद्याधर जे रामके सेवक थे वे रामचन्द्रके निकट अयोध्यामें आय भेले भए जैसी भीड अयोध्यामें लव अंकुशके आयवेके दिन भई थी तैसी भई। वैरियोंकी सेना अयोध्याके समीप आई सुनकर रामचन्द्र लक्ष्मणको कांधे लिए ही धनुष बाण हाथविषै समारे विद्याधरनिको संग लेय आप बाहिर निकसे उस समय कृतांतवक्रका जीव अर जटायु पक्षीका जीव चौथे स्वर्ग देव भए थे तिनके आसन कम्पायमान भए, कृतांतवक्रका जीव स्वामी अर जटायु पक्षीका जीव सेवक सो कृतांतवक्रका जीव जटायुके जीवसे कहता भया हे मित्र आज तुम क्रोधरूप क्यों भए हो तब वह कहता भया जब मैं गृहपक्षी था तो रामने मुझे प्यारे पुत्रकी न्याई पाला अर जिन धर्मका उपदेश दीया मरण समय नमोकार मंत्र दिया उसकर मैं देव भया अब

वह तो भाईके शोककर तप्तायमान है अर शत्रुकी सेना उसपर आई है तब कृतांतवक्रका जीव जो देव था उसने अवधि जोडकर कही—हे मित्र मेरा वह स्वामी था मैं उसका सेनापति था मुझे बहुत लडाया भ्रात पुत्रोंसे भी अधिक गिना अर मेरे उनके वचन है जब तुमको खेद उपजेगा तब तिहारे पास मैं आऊंगा, सो ऐसा परस्पर कहकर वे दोनों देव चौथे स्वर्गके वासी सुन्दर आभूषण पहिरे मनोहर हैं केश जिनके सो अयोध्याकी ओर आए दोनों विचक्षण परस्पर दोनो वतलाए कृतांतवक्रके जीवने जटायुके जीवसे कहा तुम तो शत्रुओंकी सेनाकी ओर जावो उनकी बुद्धि हरो अर मैं रघुनाथके समीप जाऊं हूं तब जटायुका जीव शत्रुओंकी ओर गया कामदेवका रूपकर उनको मोहित किया अर उनके ऐसी माया दिखाई जो अयोध्याके आगे अर पाछे दुरगम पहाड पडे हैं अर अयोध्या अपार है यह अयोध्या काहूसे जीती न जाय यह कौशलीपुरी सुभटोंकर भरी है कोट आकाश लग रहे हैं अर नगरके वाहिर भीतर देव विद्याधर भरे हैं हमने न जानी जो यह नगरी महा विषम है धरतीविषै देखिए तो आकाशमें देखिए तो देव विद्याधर भर रहे हैं अब कौन प्रकार हमारे प्राण बचें कैसे जीवते घर जावें जहां श्रीराम देव विराजें सो नगरी हमसे कैसे लई जाय, ऐसी विक्रियाशक्ति विद्याधरनिविषै कहां ? हम बिना विचारे ये काम किया जो पटबीजना सूर्यसे बैर विचारै तो क्या कर सकै अब जो भागो तो कौन राह होयकर भागो मार्ग नहीं या भांति परस्पर वार्ता कर कांपने लगे समस्त शत्रुओंकी सेना विह्वल भई तब जटायुके जीवने देव विक्रियाकी क्रीडा कर उनको दक्षिणकी ओर भागनेका मार्ग दिया वे सब प्राणरहित होय कांपते भागे जैसे सिचान आगे परे वे भागें। आगे जायकर इंद्रजीतके पुत्रने विचारी जो हम विभीषणको कहां उत्तर देगें अर लोकोंको क्या मुख दिखावेंगे ऐसा विचार लज्जावान् होय सुन्दरके पुत्र चारों रत्न सहित अर विद्याधरनि सहित इंद्रजीतके पुत्र वज्रमाली रतिवेग नामा मुनिके निकट मुनि भए,

तब यह जटायुका जीव देव उन साधुओंका दर्शन कर अपना सकल वृत्तान्त कह क्षमा कराया अयोध्या आया जहां राम भाईके शोककर बालककीसी चेष्टा कर रहे हैं तिनके संबोधवेके अर्थ वे दोनों देव चेष्टा करते भए, कृतांतवक्रका जीव तो सूके वृक्षको सींचने लगा अर जटायुका जीव मृतक बैल युगल तिन कर हल वाहवेका उद्यमी भया अर शिला ऊपर बीज बोने लगा सो ये भी दृष्टान्त रामके मनमें न आया बहुरि कृतान्तवक्रका जीव रामके आगे जलको घृतके अर्थ विलोवता भया अर जटायुका जीव बालू रेतको घानीमें तेलके निमित्त पेलता भया सो इन दृष्टान्तनिकर रामको प्रतिबोध न भया अर भी अनेक कार्य इसी भांति देवोंने किए तब रामने पूछी तुम बडे मूढ हो, सूका वृक्ष सींचा सो कहा अर मूवे बैलोंसे हल वाहना करो सो कहा अर शिला ऊपर बीज बोवना सो कहा अर जलका विलोवना अर बालूका पेलना इत्यादि कार्य तुम किए सो कौन अर्थ ? तब वे दोनों कहते भए तुम भाईके मृतक शरीरको वृथा लिए फिरोहो उसविषै क्या ? यह वचन सुनकर लक्ष्मणको गाढा उरसे लगाय पृथिवीका पति जो राम सो क्रोधकर उनसे कहता भया हे कुबुद्धि हो मेरा भाई पुरुषोत्तम उसे अमंगलके शब्द क्यों कहो हो ऐसे शब्द बोलते तुमको दोष उपजेगा या भांति कृतान्तवक्रके जीवके और रामके विवाद होय है उसही समय जटायुका जीव मूवे मनुष्यका कलेवर लेय रामके आगे आया उसे देख राम बोले मरेका कलेवर काहेको कांधे लिए फिरोहो तब उसने कही तुम प्रवीण होय प्राणरहित लक्ष्मणके शरीरको क्यों लिए फिरोहो पराया अणुमात्र भी दोष देखो हो अर अपना मेरु प्रमाण दोष नहीं देखोहो, सारिखेकी सारिखेसे प्रीति होय है सो तुमको मूढ देख हमारे अधिक प्रीति उपजी है हम वृथा कार्यके करणहारे तिनविषै तुम मुख्य हो हम उन्मत्तताकी ध्वजा लिए फिरें हैं, सो तुमको अति उन्मत्त देख तुम्हारे निकट आए हैं ॥

या भांति उन दोनों मित्रोंके वचन सुन राम मोहरहित भया शास्त्रनिके वचन चितार सचेत भए जैसे सूर्य मेघ पटलसे निकस अपनी किरण कर देदीप्यमान भासै तैसे भरतक्षेत्रका पति राम सोई भया भानु सो मोहरूप मेघपटलसे निकस ज्ञानरूप किरणनिकर भासता भया, जैसे शरदृऋतुमें कारी घटासे रहित आकाश निर्मल सोहै तैसे रामका मन शोकरूप कर्दमसे रहित निर्मल भासता भया, राम समस्त शास्त्रनिमें प्रवीण अमृत समान जिनवचन चितार खेदरहित भए, धीरताके अवलंबनकर ऐसे सोहैं जैसा भगवान्‌का जन्माभिषेकविषै सुमेरु सोहै जैसे महा दाहेकी शीतल पवनके स्पर्शसे रहित कमलोंका बन सोहै अर फूलै तैसे शोकरूप कलुषतारहित रामका चित्त विकसता भया जैसे कोई रात्रीके अन्धकारमें मार्ग भूल गया था अर सूर्यके उदय भए मार्ग पाय प्रसन्न होय अर महाक्षुधाकर पीडित मन वांछित भोजन खाय अत्यन्त आनन्दको प्राप्त होय अर जैसे कोई समुद्रके तिरिवेका अभिलाषी जहाजको पाय हर्षरूप होय अर बनमें मार्ग भूला नगरका मार्ग पाय खुशी होय अर तृषाकर पीडित महा सरोवरको पाय सुखी होय, रोग कर पीडित रोग हरण औषध को पाय अत्यन्त आनन्दको पावै, अर अपने देश गया चाहे अर साथी देख प्रसन्न होय अर बंदीगृहसे छूटा चाहे अर बेडी कटै जैसे हर्षित होय तैसे रामचन्द्र प्रतिबोधको पाय प्रसन्न भए। प्रफुल्लित भया है हृदय कमल जिनका परम कांतिको धारते आपको संसार अंधकूपसे निकसा मानते भए, मनमें जानी मैं नवा जन्म पाया श्रीराम विचारे हैं अहो डाभकी अणीपर पडी ओसकी बूंद ता समान चंचल मनुष्य का जीतव्य एक क्षणमात्रमें नाशको प्राप्त होय है चतुर्गति संसारमें भ्रमण करते मैंने अत्यन्त कष्टसे मनुष्य शरीरको पाया सो वृथा खोया कौनके भाई कौनके पुत्र कौनका परिवार कौनका धन कौनकी स्त्री? या संसारमें या जीवने अनंत संबंधी पाये एक ज्ञान दुर्लभ है या भांति श्रीराम प्रतिबुद्ध भए तब वे दोनों देव अपनी माया दूरकर

लोकोंको आश्चर्यकी करणहारी स्वर्गकी विभूति प्रकट दिखावते भए शीतल मंद सुगन्ध पवन वाजी अर आकाशमें देवोंके विमान ही विमान होय गए अर देवांगना गावती भई बीण वासुरी मृदंगादि बाजते भए वे दोनों देव रामसे पूछते भए आप इतने दिवस राज्य कीया सो सुख पाया ? तब राम कहते भये, राज्यविषै काहेका सुख ? जहां अनेक व्याधि हैं जो याहि तज मुनि भये वे सुखी अर मैं तुमको पूछूं हूं तुम महा सौम्यवदन कौन हो अर कौन कारण कर मोसूं इतना हित जनाया तब जटायु का जीव कहता भया—हे प्रभो ! मैं वह गृध्र पक्षी हूं आप मुनिनिकूं आहार दिया वहां मैं प्रतिबुद्ध भया अर आप मोहि निकट राखा, पुत्रकी न्याईं पाला अर लक्ष्मण सीता मोसूं अधिक कृपा करते सीता हरी गई ता दिन मैं रावणसे युद्धकर कंठगत प्राण भया, आपने आय मोहि पंचनमोकार मन्त्र दिया सो मैं तुम्हारे प्रसाद कर चौथे स्वर्ग देव भया स्वर्गके सुखकर मोहित भया अबतक आपके निकट न आया अब अवधिज्ञान कर तुमको लक्ष्मणके शोक कर व्याकुल जान तुहारे निकट आया हूं अर कृतांतवक्रके जीवने कही-हे नाथ ! मैं कृतांतवक्र आपका सेनापति हुता आप मोहि भ्रात पुत्रनितैं हू अधिक जाना अर वैराग्य होते मोहि आप आज्ञा करी हुती जो देव होवो तो हमको कबहू चिंता उपजै तब चितारियो सो आपके लक्षमणके मरणकी चिंता जान हम तुमपै आये तब राम दोनों देवनिसूं कहते भये तुम मेरे परममित्र हो महा प्रभावके धारक चौथे स्वर्गके महाऋद्धि धारी देव मेरे संबोधिवेको आये तुमको यही योग्य ऐसा कहकर रामने लक्षमणके शोकसे रहित होय लक्षमणके शरीर को सरयू नदीके ढाहे दग्ध कीया श्रीराम आत्मभावके ज्ञाता धर्मकी मर्यादा पालनेके अर्थ शत्रुघ्न भाईको कहते भए हे शत्रुघ्न ! मैं मुनिके व्रतधार सिद्ध पदको प्राप्त हुआ चाहूं हूं तू पृथिवीका राज्य कर तब शत्रुघ्न कहते भये हे देव मैं भोगनिका लोभी नहीं जाके राग होय सो राज्य करै मैं तिहारे संग जिनराजके व्रत धरूंगा अन्य

अभिलाषा नहीं है मनुष्यनिके शत्रु ये काम भोग मित्र बांधव जीतव्य इनसे कौन तृप्त भया कोई ही तृप्त न भया तातैं इन सबनिका त्याग ही जीवको कल्याणकारी है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणकी दग्धक्रिया अर मित्रदेवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौ अठारहवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११८ ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्रने शत्रुघ्नके वैराग्यरूप वचन सुन ताहि निश्चयसे राज्यसे पराङ्मुख जान क्षणएक विचार अनंग लवणके पुत्रको राज्य दिया सो पिता तुल्य गुणनिकी खान कुलकी धुराका धरणहारा नमस्कार करे हैं समस्त सामंत जाको, सो राज्यविषे तिष्ठा प्रजाका अति अनुराग है जासे महा प्रतापी पृथिवीविषे आज्ञा प्रवर्तावता भया अर विभीषण लंकाका राज्य अपने पुत्र सुभूषणको देय वैराग्यको उद्यमी भया अर सुग्रीव हू अपना राज्य अंगदको देयकर संसार शरीर भोगसे उदास भया ये सब रामके मित्र रामकी लार भवसागर तरवेको उद्यमी भए राजा दशरथका पुत्र राम भरतचक्रवर्तीकी न्याई राज्यका भार तजता भया। कैसा है राम? विषसहित अन्नसमान जाने हैं विषय सुख जाने अर कुलटा स्त्रीसमान जानी है समस्त विभूति जाने एक कल्याणका कारण मुनिनिके सेववे योग्य सुर असुरोंकर पूज्य श्री मुनिसुव्रतनाथका भाषा मार्ग ताहि उरविषे धारता भया जन्ममरणके भयसे कम्पायमान भया है हृदय जाका ढीले किये हैं कर्मबंध जाने धोय डाले हैं रागादिक कलंक जाने महावैराग्यरूप है चित्त जाका क्लेशभावसे निवृत्त जैसा मेघपटलसे रहित भानु भासै तैसा भासता भया मुनिव्रतधारिवेका है अभिप्राय जाके ता समय अरहदास सेठ आया तब ताहि श्रीराम चतुर्विध संघकी कुशल पूछते भए तब वह कहता भया हे देव! तिहारे कष्टकर मुनिनिका हू मन अनिष्ट संयोगको प्राप्त भया ये

बात करे है अर खबर आई है कि मुनिसुव्रतनाथके वंशमें उपजे चार ऋद्धिके धारक स्वामी सुव्रत महाव्रतके धारक कामक्रोधके नाशक आए हैं। यह वार्ता सुनकर महाआनन्दके भरे राम रोमांच होय गया है शरीर जिनका फूल गए हैं नेत्र कमल जिनके अनेक भूचर खेचर नृपनिसहित जैसे प्रथम बलभद्र विजय स्वर्णकुम्भ स्वामीके समीप जाय मुनि भये हुते तैसे मुनि होनेको सुव्रतमुनिके निकट गये ते महा श्रेष्ठ गुणोंके धारक हजारां मुनि माने हैं आज्ञा जिनकी तिनपै जाय प्रदक्षिणा देय हाथ जोड सिर निवाय नमस्कार किया साक्षात् मुक्तिके कारण महा मुनि तिनका दर्शनकर अमृतके सागरविषै मग्न भए परम श्रद्धाकर मुनिराजतैं रामचन्द्रने जिनचन्द्रकी दीक्षा धारबेकी विनती करी—हे योगीश्वरनिके इन्द्र! मैं भव प्रपंचसे विरक्त भया तिहारा शरण ग्रहा चाहूं हूं तिहारे प्रसादसे योगीश्वरनिके मार्गविषै विहार करूं या भांति रामने प्रार्थना करी। कैसे हैं राम? धोये हैं समस्त रागद्वेषादिक कलंक जिहोंने तब मुनींद्र कहते भए—हे नरेंद्र! तुम या बातके योग्य ही हो, यह संसार कहा पदार्थ है यह तज कर तुम जिनधर्मरूप समुद्रका अवगाह करो, यह मार्ग अनादिसिद्ध बाधारहित अविनाशी सुखका देनहारा तुमसे बुद्धिमान ही आदरें। ऐसा मुनिने कहा तब राम संसारसे विरक्त महा प्रवीण जैसे सूर्य सुमेरुकी प्रदक्षिणा करे तैसे मुनींद्रकी प्रदक्षिणा करते भए। उपजा है महाज्ञान जिनको वैराग्यरूप वस्त्र पहिरे बांधी है कर्मोंके नाशको कमर जिन्होंने आशारूप पाश तोड स्नेहका पींजरा दग्धकर स्त्रीरूप बंधनसे छूट-मोहका मान मार हार कुंडल मुकट केयूर कटिमेखलादि सर्व आभूषण डार तत्काल वस्त्र तजे, परम तत्त्वविषै लगा है मन जिनका वस्त्राभरण यूं तजे ज्यों शरीर तजिए महासुकुमार अपने कर तिनकर केश लोंच किए पद्मासन धर विराजे शीलके मन्दिर अष्टम बलभद्र समस्त परिग्रहको तजकर ऐसे सोहते भए जैसा राहुसे रहित सूर्य सोहै पंच महाव्रत आदरे पंच समिति अंगीकारकर तीन गुप्तिरूप गढविषै

विराजे मनोदण्ड वचनदण्ड कायदण्डके दूर करणहारे षट कायके मित्र, सप्त भयरहित आठ कर्मोंके रिपु नवधा ब्रह्मचर्यके धारक, दश लक्षण धर्म धारक श्रीवत्स लक्षणकर शोभित है उरस्थल जिनका गुणभूषण सकलदूषणरहित तत्त्वज्ञानविषै दृढ रामचन्द्र महामुनि भए देवनिने पंचाश्चर्य किए सुन्दर दुन्दभी बाजे अर दोनों देव कृत्तांतवक्रका जीव एक जटायुका जीव तिहोंने परम उत्साह किए जब जीव पृथिवीका पति राम पृथिवीको तज निकसा तब भूमिगोचरी विद्याधर सब ही राजा आश्चर्यको प्राप्त भये अर विचारते भए जो ऐसी विभूति ऐसे रत्न यह प्रताप तजकर रामदेव मुनि भए तो और हमारे कहा परिग्रह ? जाके लोभतैं घरमें तिष्ठें वृत विना हम एते दिन योंही खोये ऐसा विचारकर अनेक राजा गृह बन्धनसे निकसे अर रागमई पाशी काट द्वेषरूप वैरीको विनास सर्व परिग्रहका त्यागकर भाई शत्रुघ्न मुनि भये अर विभीषण सुग्रीव नील नल चन्द्रनख विराधित इत्यादि अनेक राजा मुनि भए विद्याधर सर्व विद्याका त्यागकर ब्रह्मविद्याको प्राप्त भए कैयकोंको चारणऋद्धि उपजी या भांति रामके वैराग्यभए सोलह हजार कछु अधिक महीपति मुनि भये। अर सत्ताईस हजार राणी श्रीमती आर्यिकाके समीप आर्यिका भई ॥

अथानन्तर श्रीराम गुरुकी आज्ञा लेय एकविहारी भए तजे हैं समस्त विकल्प जिन्होंने गिरिनिकी गुफा अर गिरिनिके शिखर अर विषम वन जिनविषै दुष्ट जीव विचरें वहां श्रीराम जिनकल्पी होय ध्यान धरते भए अवधिज्ञान उपजा जाकर परमाणुपर्यन्त देखते भए अर जगतके मूर्तिक पदार्थ सकल भासे लक्ष्मणके अनेक भव जाने, मोहका संबंध नाहीं, तातैं मन ममत्वको न प्राप्त होता भया। अब रामकी आयुका व्याख्यान सुनो कौमार काल वर्ष सौ १०० मंडलीक पद वर्ष तीन सौ ३०० दिग्विजय वर्ष चालीस ४० अर ग्यारह हजार पांचसैं साठ वर्ष ११५६० तीन खण्डका राज्य बहुरि मुनि भए।

लक्ष्मणका मरण याही भांति था देवनिका दोष नाहीं अर भाईके मरणके निमित्ततैं रामके वैराग्यका उदय था अवधिज्ञानके प्रतापकर रामने अपने अनेक भव जाने, महा धीर्यको धरैं व्रत शीलके पहाड, शुक्ल लेश्या कर युक्त महा गंभीर गुणानिके सागर समाधान चित्त मोक्ष लक्ष्मीविषै तत्पर शुद्धोपयोगके मार्गविषै प्रवरते । सो गौतमस्वामी राजा श्रेणिक आदि सकल श्रोताओंसे कहे हैं जैसे रामचन्द्र जिनेंद्र के मार्गविषै प्रवर्त्ते तैसे तुमहू प्रवरतो, अपनी शक्ति प्रमाण महा भक्ति कर जिनशासनविषै तत्पर होवो जिन नामके अक्षर महारत्नोंको पाय कर हो प्राणी हो खोटा आचरण तजो, दुराचार महा दुखका दाता है खोटे ग्रंथनिकर मोहित है आत्मा जिनका अर पाखण्ड क्रियाकर मलिन है चित्त जिनका वे कल्याणके मार्गको तज जन्मके आंधेकी न्याई खोटे पंथमें प्रवरते हैं, केयक मूर्ख साधुका धर्म नाहीं जाने हैं, अर नानाप्रकारके उपकरण साधुके बतावे हैं अर निर्दोष जान ग्रहे हैं वे वाचाल हैं जे कुलिंग कहिये खोटे भेष मूढनिने आचरें हैं वे वृथा हैं तिनसे मोक्ष नाहीं जैसे कोई मूर्ख मृतकके भारको वहै है सो वृथा खेद करैं हैं, जिनके परिग्रह नहीं अर काहूसे याचना नहीं, वे ऋषि हैं वेई निर्ग्रंथ उत्तम गुणनिकर मंडित पंडितों कर सेयवे योग्य हैं यह महाबली बलदेवके वैराग्यका वर्णन सुन संसारसे विरक्त होवो जाकर भवतापरूप सूर्यका आताप न पावो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ ताकी भाषावचनिकाविषैं श्रीरामका
वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ उन्नीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११९ ॥

अथानन्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम ! श्रीरामचन्द्रके अनेक गुण धरणींद्र हू अनेक जीभ कर गायवे समर्थ नाहीं, वे महामुनीश्वर जगतके त्यागी महाधीर पंचोपवासकी है प्रतिज्ञा

जिनके सो ईर्यासमिति पालते नन्दस्थली नामा नगरी तहां पारणाके अर्थ गए उगते सूर्य समान है दीप्ति जिनकी मानों चालते पहाड ही हैं महा स्फटिकमणि समान शुद्ध हृदय जिनका वे पुरुषोत्तम मानों मूर्तिवन्त धर्मही, मानों तीन लोकका आनन्द एकत्र होय रामकी मूर्ति निपजी हैं महा कांतिके प्रवाहकर पृथिवीको पवित्र करते मानों आकाशविषै अनेक रंगकर कमलोंका बन लगावते नगरविषै प्रवेश करते भए तिनके रूपको देख नगरके सब लोक क्षोभको प्राप्त भए लोक परस्पर बतलावें हैं—अहो देखो! यह अद्भुतरूप ऐसा आकार जगतविषै दुर्लभ कबहू देखिवेविषै न आवै यह कोई महापुरुष महासुन्दर शोभायमान अपूर्व नर दोनों बाहु लम्बाये आवै है। धन्य यह धीर्य धन्य यह पराक्रम धन्य यह रूप धन्य यह कांति धन्य यह दीप्ति धन्य यह शांति धन्य यह निर्ममत्वता यह कोई मनोहर पुराण पुरुष है ऐसा और नाहीं जूडे प्रमाण धरती देखता जीव दया पालता शांतदृष्टि समाधानचित्त जैनका यति चला आवै है ऐसा कौनका भाग्य जाके घर यह पुण्याधिकारी आहार कर कौनको पवित्र करै? ताके बडे भाग्य जाके घर यह आहार लेय, यह इन्द्रसमान रघुकुलका तिलक अक्षोभ पराक्रमी शीलका पहाड रामचंद्र पुरुषोत्तम है, याके दर्शनकर नेत्र सफल होंय मन निर्मल होय जन्म सफल होय, देही पायेका यह फल जो चारित्र पालिए। या भांति नगरके लोक रामके दर्शन कर आश्चर्यको प्राप्त भए, नगरमें रमणीक ध्वनि भई श्रीराम नगरविषै पैठे अर समस्त गली अर मार्ग स्त्री पुरुषनिके समूह कर भर गया, नर नारी नानाप्रकारके भोजन हैं घरविषै जिनके प्रासुक जलकी झारी भरे द्वारे पेखन करे हैं निर्मल जल दिखावते पवित्र धोवती पहिरें नमस्कार करे हैं। हे स्वामी! अत्र तिष्ठें अन्न जल शुद्ध है या भांतिके शब्द करे हैं नाहीं समावे है हृदयविषै हर्ष जिनके हे मुनींद्र! जयवन्त होवो, हे पुन्यके पहाड! नादो विरदो इन बचनोंकर दशोंदिशा पूरित भई, घरघरविषै लोग परस्पर बात करें हैं स्वर्णके भोजनमें दुग्ध दधि

घृत ईखरस दाल भात क्षीर शीघ्र हीं तयारकर राखो, मिश्री मोदक कपूरकर युक्त शीतल जल सुन्दर पूरी शिखिरणी भली भांति विधिसे राखो। या भांति नर नारिनिके वचनालाप तिनकर समस्त नगर शब्दरूप होय गया महासंभ्रमके भरे जन अपने बालकोंको न विलोकते भए मार्गमें लोक दौडे सो काहूके धकेसे कोई गिर पडै या भांति लोकनके कोलाहलकर हाथी खूंटा उपाडते भए अर गामविषै दौडते भए तिनके कपोलोंसे मद झरिवे कर मार्गविषै जलका प्रवाह होय गया, हाथिनिके भयसे घोडे घास तज तज बन्धन तुडाय तुडाय भाजे अर हींसते भए सो हाथी घोडनिकी घमसाणकर लोक व्याकुल भए, तब दानविषैं तत्पर राजा कोलाहल शब्द सुन मंदिरके ऊपर आय खडा रहा दूरसें मुनिका रूप देख मोहित भया राजाके मुनिसे राग विशेष परन्तु विवेक नहीं सो अनेक सामन्त दौडाए अर आज्ञाकारी स्वामी पधारे हैं सो तुम जाय प्रणामकर बहुत भक्ति विनती कर यहां आहारको ल्यावो सो सामन्त भी मूर्ख जाय पायन पर पड कहते भए हे प्रभो! राजाके घर भोजन करहु वहां महा पवित्र सुन्दर भोजन हैं अर सामान्य लोकनिके घर आहार विरस आपके लेयवे योग्य नाहीं अर लोकोंको मने किए कि तुम कहा दे जानों हो? यह वचन सुनकर महा मुनि आपको अन्तराय जान नगरसे पीछे चले तब सबलोग अति व्याकुल भए। वे महापुरुष जिन आज्ञाके प्रतिपालक आचारांग सूत्र प्रमाण है आचरण जिनका आहारके निमित्त नगरविषै विहार कर अन्तराय जान नगरसे पीछे बनविषै गए। चिद्रूपध्यानविषै मग्न कायोत्सर्ग धर तिष्ठे वे अद्भुत अद्वितीय सूर्य मन अर नेत्रको प्यारा लागे रूप जिनका नगरसे बिना आहार गए तब सबही खेदखिन्न भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राममुनिका आहारके अर्थि नगरमें आगमन बहुरि लोकनिके कोलाहलतैं अंतराय पाय वनमें आना वर्णन करनेवाला एकसौ बीसवा पर्व पूर्ण भया ॥ १२० ॥

अथानन्तर राम मुनियोंमें श्रेष्ठ बहुरि पंचोपवासका प्रत्याख्यान कर यह अवग्रह धारते भये कि बन विषै कोई श्रावक शुद्ध आहार देय तो लेना नगरमें न जाना या भांति कांतारचर्याकी प्रतिज्ञा करी सो एक राजा प्रतिनन्द वाको दुष्ट तुरंग लेय भागा सो लोकनिकी दृष्टिसे दूर गया तब राजाकी पटरानी प्रभवा अतिचिन्तातुर शीघ्रगामी तुरंग पर आरूढ राजाके पीछेही सुभटानिके समूह कर चली अर राजाको तुरंग हर ले गया था सो वनके सरोवरनिविषै कीचमें फस गया उतनेहीमें पटराणी जाय पहुंची राजा राणी पै आया तब राणी राजासे हास्यके वचन कहती भई—हे महाराज ! जो यह अश्व आपको न हरता तो यह नन्दन वनसा बन अर मानसरोवरसा सर कैसे देखते ! तब राजाने कही हे राणी बनयात्रा अब सुफल भई जो तिहारा दर्शन भया, या भांति दम्पती परस्पर प्रीतिकी बात कर सखीजन सहित सरोवरके तीर बैठे नाना प्रकार जल क्रीडा कर दोनो भोजनके अर्थ उद्यमी भए ता समय श्रीराम मुनि कांतारचर्याके करणहारे या तरफ आहारको आए यह साधुकी क्रियामें प्रवीण तिनको देख राजा हर्ष कर रोमांच भया, राणीसहित सन्मुख जाय नमस्कार कर ऐसे शब्द कहता भया हे भगवान् ! यहां तिष्ठो अन्न जल पवित्र है, प्रासुक जलकर राजाने मुनिके पग धोए, नवधा भक्ति कर सप्तगुण सहित मुनिको महापवित्र क्षीर आहार दिया, स्वर्णके पात्रमें लेय कर महा पात्र जे मुनि तिनके करपात्रमें पवित्र अन्न देता भया निरंतराय आहार भया तब देव हर्षित होय पंचाश्चर्य करते भए अर आप अक्षीण महा ऋद्धिके धारक सो वा दिन रसोईका अन्न अटूट होय गया, पंचाश्चर्यके नाम,-पंच वर्ण रत्नोंकी वर्षा अर महा सुगंध कल्पवृक्षोंके पुष्पकी वर्षा शीतल मंद सुगंध पवन दुंदुभी नाद, जय जय शब्द, धन्य यह दान धन्य यह पात्र धन्य यह विधि धन्य यह दाता नीके करी नीके करी नादो विरधो फूलो फलो या भांतिके शब्द आकाशमें देव करते भए अथवा नवधा भक्तिके नाम, मुनिको पडगाहनो

ऊंचे स्थानक राखना चरणारविन्द धोवने चरणोदक माथे चढावना पूजा करनी मन शुद्ध वचन शुद्ध काय शुद्ध आहार शुद्ध यह नवधा भक्ति अर श्रद्धा शक्ति निर्लोभता दया क्षमा अदेयसापणो नहीं हर्षसंयुक्त यह दाताके सात गुण वह राजा प्रतिनन्दी मुनिदानसे देवों कर पूज्य भया अर श्रावकके व्रत धारे निर्मल है सम्यक्त जाके पृथिवीमें प्रसिद्ध होता भया बहुत महिमा पाई अर पञ्चाश्चर्यमें नाना प्रकारके रत्न स्वर्णकी वर्षा भई सो दशों दिशामें उद्योत भया अर पृथिवीका दरिद्र गया, राजा राणी सहित महा-विनयवान् भक्ति कर नम्रीभूत महा मुनिको विधिपूर्वक निरंतराय आहार देय परम प्रबोधको प्राप्त भया, अपना मनुष्य जन्म सफल जानता भया अर राम महामुनि तपके अर्थ एकांत रहैं बारह प्रकार तपके करणहारे तप ऋद्धि कर अद्वितीय पृथिवीमें अद्वितीय सूर्य विहार करतेभए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै राम मुनिको निरंतराय आहार वर्णन करनेवाला एकसौ इकीसवां पर्व पूर्ण भया ॥ १२१ ॥

अथानंतर गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक! वह आत्माराम महा मुनि बलदेव स्वामी शांत किए हैं रागद्वेष जानें जो और मनुष्योंसे न बन आवै ऐसा तप करते भए, महा बन विषै विहार करते पंचमहाव्रत पंच समिति तीन गुप्ति पालते शास्त्रके वेत्ता जितेंद्री जिन धर्ममें है अनुराग जिनका स्वाध्याय ध्यानमें सावधान अनेक ऋद्धि उपजी परंतु ऋद्धिनिकी खबर नहीं महा विरक्त निर्विकार बाईस परीषहके जीतनहारे तिनके तपके प्रभावतें बनके सिंह व्याघ्र मृगादिकके समूह निकट आय बैठे, जीवोंका जाति विरोध मिट गया, रामका शांतरूप निरख शांतरूप भए श्रीराम महाव्रती चिदानन्दनविषै है चित्त जिनका, पर वस्तुकी वांछारहित, विरक्त कर्मकलंक हरिवेको है यत्न जिनके,

निर्मल शिला पर तिष्ठते, पद्मासन धरे आत्मध्यानविषै प्रवेश करते भए, जैसे रवि मेघमालाविषै प्रवेश करैं वे प्रभु सुमेरु सारिखे अचल है चित्त जिनका पवित्र स्थानविषै कायोत्सर्ग धरे निज स्वरूपका ध्यान करते भए, कबहुंक विहार करैं सो ईर्य्या समिति पालते जूडा प्रमाण पृथिवी निरखते महा शांत जीव दया प्रतिपाल देव देवांगनादिक कर पूजित भए। वे आत्मज्ञानी जिन आज्ञाके पालक जैनके योगी ऐसा तप करते भए जो पंचम कालविषै काहूके चितवनविषै न आवै एक दिन विहार करते कोटिशिला आए जो लक्ष्मणने नमोकार मंत्र जप कर उठाई हुती सो आप कोटि शिला पर ध्यान धर तिष्ठे कर्मोंके खिपायवे विषै उद्यमी क्षपकश्रेणि चढवेका है मन जिनका ॥

अथानन्तर अच्युतस्वर्गका प्रतीन्द्र सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा अवधिकर विचारता भया, रामका अर आपका परम स्नेह अपने अनेक भव अर जिनशासनका माहात्म्य अर रामका मुनि होना अर कोटिशिलापर ध्यान धर तिष्ठना बहुरि मनविषै विचारी वे मनुष्यनिके इंद्र पृथिवीके आभूषण मनुष्यलोकविषै मेरे पति हुते मैं उनकी स्त्री सीता हुती देखो कर्मकी विचित्रता, मैं तो व्रतके प्रभावतैं स्वर्गलोक पाया अर लक्ष्मण रामका भाई प्राणहू तैं प्रिय सो परलोक गया, राम अकेले रह गए, जगत्के आश्चर्यके करणहारे दोनों भाई बलभद्र नारायण कर्मके उदयतैं विछुरे श्रीराम कमल सारिखे नेत्र जिनके शोभायमान हल मूसलके धारक बलदेव महाबली सो वासुदेवके वियोगकर जिनदेवकी दीक्षा अंगीकार करते भये राज अवस्थाविषैं तो शस्त्रोंकर सर्व शत्रु जीते बहुरि मुनि होय मन इन्द्रिय जीते अब शुक्लध्यान धार कर कर्म शत्रुको जीता चाहै हैं ऐसा होय जो मेरी देव मायाकर कछुइक इनका मन मोहमें आवै वह शुद्धोपयोगसे च्युत होय शुभोपयोगविषै आय यहां अच्युतस्वर्गविषै आवें, मेरे इनके महाप्रीति है, मैं अर वे मेरु नन्दीश्वरादिकका यात्रा करें अर बाईस सागरपर्यंत भेले रहें। मित्रता बढावें

अर दोनों मिल लक्ष्मणको देखें यह विचारकर सीताका जीव प्रतींद्र जहां राम ध्यानारूढ थे तहां आया इनको ध्यानसे च्युत करने अर्थ देवमाया रची, वसन्त ऋतु वनविषै प्रकट करी, नाना प्रकारके फूल फूले अर सुगन्ध बायु बाजने लगी, पक्षी मनोहर शब्द करने लगे अर भ्रमर गुंजार करै हैं कोयल बोलै है, मैंना, सूवा, नाना प्रकारकी ध्वनि कर रहें हैं आंव मोर आये भ्रमरोंकर मण्डित सोहे हैं कामके बाण जे पुष्प तिनकी सुगन्धता फैल रही है अर कर्णकार जातिके वृक्ष फूले हैं तिनकर वन पीत हो रहा है सो मानों बसंतरूप राजा पीतम्बर कर क्रीडाकर रहा है अर मौलश्रीकी वर्षा होय रही है ऐसी बसन्तकी लीलाकर आप वह प्रतीन्द्र जानकीका रूप धर रामके समीप आया, वह मनोहर वन जहां अर कोई जन नहीं अर नाना प्रकारके वृक्ष सबऋतुके फूल रहे हैं, तासमय रामके समीप सीता सुन्दरी कहती भई–हे नाथ! पृथिवीविषै भ्रमण करते कोई पुण्यके योगतैं तुमको देखे वियोगरूप लहरका भरा जो स्नेहरूप समुद्र ताविषै मैं डूबूं हूं सो मोहि थांभो अनेक प्रकार रागके वचन कहे परन्तु मुनि अकम्प सो वह सीताका जीव मोहके उदयकर कभी दाहिने कभी बांये भ्रमै कामरूप ज्वरके योगकर कम्पित है शरीर अर महा सुन्दर अरुण हैं अधर जाके या भांति कहती भई–हे देव! मैं बिना विचारें तिहारी आज्ञा विना दीक्षा लीनी मोहि विद्याधरिनिने बहकाया अब मेरा मन तुमविषै है, या दीक्षा कर पूर्णता होवै। यह दीक्षा अत्यन्त वृद्धनिको योग्य है कहां यह यौवन अवस्था अर कहां यह दुर्द्धर व्रत? महाकोमल फूल दावानलकी ज्वाला कैसे सहार सके? अर हजारां विद्याधरनिकी कन्या और हू तुमको बरा चाहे हैं मोंहि आगे धार ल्याई हैं कहे हैं, तिहारे आश्रय हम बलदेवको वरें, यह कहे हैं अर हजारां दिव्य कन्या नाना प्रकारके आभूषण पहरे राजहंसनी समान है चाल जिनकी सो प्रतीन्द्रकी विक्रिया कर मुनीन्द्रके समीप आईं कोयलतैं हू अधिक मधुर बोलैं ऐसी सोहैं मानों सक्षात् लक्ष्मी ही हैं मनको

आल्हाद उपजावें कानोंको अमृत समान ऐसे दिव्य गीत गावती भई अर बीण बांसुरी मृदंग बजावती भई भ्रमर सारिखे श्याम केश विजुरी समान चमत्कार महासुकुमार पातरी कटि कठोर अति उन्नत हैं कुच जिनके सुन्दर शृंगार करे नाना वर्णके वस्त्र पहिरे, हाव भाव विलास विभ्रमको धरती मुलकती अपनी कांतिकर व्याप्त किया है आकाश जिन्होंने मुनिके चौगिर्द बैठी प्रार्थना करती भई—हे देव ! हमारी रक्षा करो अर कोई एक पूछती भई हे देव ! यह कौन वनस्पति है अर कोई एक माधवी लताके पुष्प के ग्रहणके मिस बाहू ऊंची करती अपना अंग दिखावती भई, अर कोईएक भेली होयकर ताली देती रासमण्डल रचती भई, पल्वसमान हैं कर जिनके अर कोई परस्पर जलकेलि करती भई या प्रकार नाना भांतिकी क्रीडाकर मुनिके मन डिगायवेका उद्यम करती भई, सो हे श्रेणिक ! जैसे पवनकर सुमेरु न डिगै तैसे श्रीरामचन्द्र मुनिका मन न डिगा आत्मस्वरूपके अनुभवी रामदेव सरल हैं दृष्टि जिनकी, विशुद्ध है आत्मा जिनका, परीषहरूप वज्रपातसे न डिगे, क्षपकश्रेणी चढे, शुक्लध्यानके प्रथम पाएविषै प्रवेश किया, रामचन्द्रका भाव आत्माविषै लग अत्यन्त निर्मल भया सो उनका जोर न पहुंचा मूढजन अनेक उपाय करें परन्तु ज्ञानी पुरुषनिका चित्त न चलै, वे आत्मस्वरूपविषै ऐसे दृढ भए जो काहू प्रकार न चिगे, प्रतीन्द्रदेवने मायाकर रामका ध्यान डिगायवेको अनेक यत्न किए परन्तु कछु ही उपाय न चला, वे भगवान् पुरुषोत्तम अनादि कालके कर्मोंकी वर्गणाके दग्ध करिवेको उद्यमी भए पहिले पाएके प्रसादसे मोहका नाश कर बारहवें गुणस्थान चढे तहां शुक्लध्यानके दूजे पाएके प्रशादतें ज्ञानावरण अन्तरायका अन्त किया माघ शुक्लद्वादशीकी पिछली रात्रि केवलज्ञानको प्राप्त भए केवलज्ञानविषै सर्व द्रव्य समस्त पर्याय प्रतिभासे ज्ञानरूप दर्पणमें लोकालोक सब भासे तब इन्द्रादिक देवनिके आसन कम्पायमान भए अवधिज्ञानकर भगवान् रामको केवल उपजा जानकर केवलकल्याणककी पूजाको आए, महा

विभूति संयुक्त देवनिके समूह सहित बडे श्रद्धावान् सब ही इंद्र आए घातिया कर्मके नाशक अर्हंत परमेष्ठी तिनको चारणमुनि अर चतुरनिकायके देव सब ही प्रणाम करते भए। वे भगवान् छत्र चमर सिंहासन आदिकर शोभित त्रैलोक्यकर बन्दिवे योग्य सयोगकेवली तिनकी गंधकुटी देव रचते भए दिव्यध्वनि-खिरती भई सब ही श्रवण करते भए अर बारम्बार स्तुति करते भए सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा प्रतींद्र केवलीकी पूजाकर तीन प्रदक्षिणा देय बारम्बार क्षमा करावता भया, हे भगवान्! मैं दुर्बुद्धिने जो दोष किए सो क्षमा करो, गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! वे भगवान् बलदेव अनंत लक्ष्मी कांतिकर संयुक्त आनंद मूर्त्ति केवली तिनकी इंद्रादिक देव महाहर्षके भरे अनादि रीति प्रमाण पूजा स्तुतिकर विनती करते भए, केवली विहार कीया, तब देवहु विहार करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण संस्कृत ग्रंथ, ताकी भाषा वचनिकाविषै रामकूं केवल ज्ञानकी उत्पत्ति वर्णन करनेवाला एकसौ बाईसवा पर्व पूर्ण भया ॥ १२२ ॥

अथानन्तर सीताका जीव प्रतींद्र लक्ष्मणके गुण चितार लक्ष्मणका जीव जहां हुता अर खरदूषण का पुत्र शम्बूक असुरकुमार जातिका देव जहां था तहां जायकर ताकूं सम्यग्ज्ञानका ग्रहण कराया सो तीजे नरक नारकिनिकूं बाधा करावे हिंसानंद रौद्रध्यानविषै तत्पर पापी नारकीकों लडावै। पापके उदय कर जीव अधोगति जाय। सो तीजे तक तो असुरकुमारहू लडावैं आगे असुरकुमार न जांय, नारकी ही परस्पर लडै। जहां कैयकानिकूं अग्निकुण्डविषै डारै हैं सो पुकारै हैं। कैयकनिकूं कांटेनिकर युक्त शाल्मली वृक्ष, तिनपर चढाय घसीटै हैं। कैयकनिकूं लोहमई मुद्गरानिकरि कूटै हैं। अर जे मांस आहारी पापी तिनकूं उनहीका मांस काटि खवावै है अर प्रज्वलित लोहेके गोला तिनकों मुखमें मारि २

भखे हैं
देहैं। अर कैयक मारे मारके भूमिविषै लोटे हैं अर मायामई श्वान मार्जार सिंह व्याघ्र दुष्ट पक्षी
तहां तिर्यंच नाहीं, नर्ककी विक्रिया है। कैयकनिको सूली चढावे हैं अर वज्रके मुद्गरनितैं मारे हैं, कई
एकानिकूं कुम्भीपाकविषै डारे हैं, कैयकनिको ताता तांबा गालि २ प्यावे हैं अर कहे हैं ये मदिरा पानके फल
हैं। कैयकोंको काठमें बांधकर करौतोंसे चीरे हैं अर कैयकोंको कुठारोंसे काटे हैं, कैयकोंको घानीमें
पेले हैं कैयकोंकी आंख काढे हैं कैयकोंकी जीभ काढे हैं वह क्रूर कैयकोंके दांत तोडे हैं इत्यादि नारकी-
निको अनेक दुख हैं सो अवधिज्ञानकर प्रतीन्द्र नारकीनिकी पीडा देख शंबूकके समझायवेको तीजी
भूमि गया सो असुरकुमार जातिके देव क्रीडा करते थे वे तो इनके तेजसे डर गए अर शम्बूकको प्रतींद्र
कहते भए—अरे पापी निर्दई तैंने यह क्या आरम्भा जो जीवोंको दुख देवे है। हे नीच देव! क्रूरकर्म तज
क्षमा पकड, यह अनर्थके कारण कर्म तिनकर कहा अर यह नरकके दुख सुनकर भय उपजे है तू प्रत्यक्ष
नारकियोंको पीडा करे है करावे है सो तुझे त्रास नहीं यह वचन प्रतीन्द्रके सुन शंबूक प्रशांत भया,
दूसरे नारकी तेज न सह सके रोवते भए अर भागते भए तब प्रतीन्द्रने कही हो नारकी हो मुझसे मत
डरो जिन पापोंकर नरकमें आए हो तिनसे डरो, जब या भांति प्रतीन्द्रने कही तब उनमें कैयक मनमें
विचारते भए जो हम हिंसा मृषावाद परधन हरण परनारिरमण बहु आरम्भ बहु परिग्रहमें प्रवर्ते रौद्र-
ध्यानी भए उसका यह फल है भोगोंविषै आसक्त भए क्रोधादिककी तीव्रता भई खोटे कर्म कीये उससे
ऐसा दुख पाया देखो यह स्वर्गलोकके देव पुण्यके उदयसे नानाप्रकारके विलास करे हैं रमणीक विमान
चढे जहां इच्छा होय वहां ही जांय या भांति नारकी विचारते भए अर शम्बूकका जीव जो असुरकुमार
उसको ज्ञान उपजा फिर रावणके जीवने प्रतींद्रसे पूछा—तुम कौन हो? तब उसने सकल वृत्तान्त कहा मैं
सीताका जीव तपके प्रभावकर सोलवें स्वर्गमें प्रतीन्द्र भया, अर श्रीरामचन्द्र महामुनींद्र होय ज्ञानावरण

दर्शनावरण मोहिनी अंतरायनिका नाशकर केवली भए सो धर्मोपदेश देते जगतको तारते भरतक्षेत्रविषै तिष्ठे हैं नाम गोत्र वेदनी आयुका अंतकर परमधाम पधारेंगे अर तू विषय वासनाकर विषम भूमिविषै पडा अब भी चेत, ज्यूं कृतार्थ होय, तब रावणका जीव प्रतिबोधको प्राप्त भया अपने स्वरूपका ज्ञान उपजा अशुभ कर्म बुरे जाने, मनमें विचारता भया मैं मनुष्य भव पाय अणुव्रत महाव्रत न आराधे तिस से इस अवस्थाको प्राप्त भया हाय, हाय, मैं कहा किया जो आपको दुख समुद्रमें डारा । यह मोहका माहात्म्य है जो जीव आत्महित न कर सकें, रावण प्रतीन्द्रको कहे है–हे देव तुम धन्य हो विषयकी वासना तजी जिनवचनरूप अमृतको पीकर देवोंके नाथ भए । तब प्रतीन्द्रने दयालु होयकर कही तुम भय मत करो चलो हमारे स्थानको चलो ऐसा कह याके उठायवेकों उद्यमी भया तब रावणके जीवके शरीर की परमाणु विखर गईं जैसे अग्निकर माखन पिगल जाय काहू उपायकर याहि लेजायवे समर्थ न भया जैसे दर्पणमें तिष्ठती छाया न ग्रही जाय, तब रावणका जीव कहता भया, हे प्रभो ! तुम दयालु हो सो तुमको दया उपजे ही परन्तु इन जीवनिने पूर्वे जे कर्म उपार्जे हैं तिनका फल अवश्य भोगे हैं विषयरूप मांसका लोभी दुर्गतिकी आयु बांधे है सो आयु पर्यंत दुख भोगवे है यह जीव कर्मोंके आधीन इसका देव क्या करें हमने अज्ञानके योगसे अशुभ कर्म उपार्जे हैं इनका फल अवश्य भोगवेंगे आप छुडायवे समर्थ नहीं तिससे कृपाकर वह उपदेश कहो जिसकर फिर दुर्गतिके दुख न पावें, हे दयानिधे तुम परम उपकारी हो, तब देवने कही परमकल्याणका मूल सम्यक्ज्ञान है सो जिनशासनका रहस्य है अविवेकियोंको अगम्य है तीन लोकमें प्रसिद्ध है आत्मा अमूर्तिक सिद्ध समान उसे समस्त परद्रव्योंसे जुदा जाने जिनधर्मका निश्चय करे यह सम्यग्दर्शन कर्मोंका नाशक शुद्ध पवित्र परमार्थका मूल जीवोंने न पाया तातैं अनंत भव ग्रहे यह सम्यग्दर्शन अभव्योंको अप्राप्य है अर कल्याणरूप है जगतमें दुर्लभ है सकल

में श्रेष्ठ है सो जो तू आत्मकल्याण चाहे है तो उसे अंगीकार कर जिसकर मोक्ष पावे उससे श्रेष्ठ और नहीं न हुआ न होयगा इसीकर सिद्ध भए हैं अर होयेंगे जे अरहंत भगवानने जीवादिक नव पदार्थ भाखे हैं तिनकी दृढश्रद्धा करनी उसे सम्यग्दर्शन कहिए इत्यादि वचनोंकर रावणके जीवकों सुरेन्द्रने सम्यक्त्व ग्रहण कराया अर याकी दशा देख विचारता भया जो देखो रावणके भवमें याकी कहा कांति थी महासुन्दर लावण्यरूप शरीर था सो अब ऐसा होय गया जैसा नवीन वन अग्निकर दग्ध हो जाय जिसे देख सकल लोक आश्चर्यको प्राप्त होते सो ज्योति कहां गई ? बहुरि ताहि कहता भया कर्मभूमि में तुम मनुष्य भए थे सो इंद्रियोंके क्षुद्र सुखके कारण दुराचारकर ऐसे दुखरूप समुद्रमें डूबे।

इत्यादि प्रतींद्रने उपदेशके वचन कहे, तिनको सुन कर उसके सम्यक् दर्शन दृढ भया अर मनमें विचारता भया कर्मोंके उदय कर दुर्गतिके दुःख प्राप्त भए तिनको भोग यहांसे छूट मनुष्य देह पाय जिनराजका शरण गहूंगा। प्रतींद्रसे कही-अहो देव तुम मेरा वड़ा हित किया जो सम्यक्दर्शनमें मोहि लगाया, हे प्रतींद्र महाभाग्य अब तुम जावो, वहां अच्युतस्वर्ग में धर्मके फलसे सुख भोग मनुष्य होय शिवपुरकूं प्राप्त होवो, जब ऐसा कहा तब प्रतींद्र उसे समाधान रूप कर कर्मोंके उदयको सोचते संते सम्यक्दृष्टि वहांसे ऊपर आया संसार की मायासे शंकित है आत्मा जाका अर्हंत सिद्ध साधु जिन धर्मके शरणविषै तत्पर है मन जाका तीन बेर पंच मेरुकी प्रदक्षिणा कर चैत्यालयोंका दर्शन कर नारकीनिके दुःखसे कंपायमान है चित्त जाका स्वर्ग लोकमें हू भोगाभिलाषी न भया मानों नारकीनिकी ध्वनि सुनै है, सोलमें स्वर्गके देवको छठे नरक लग अवधिज्ञान कर दीखे है तीजे नरककेविषै रावणके जीवको अर शंबूकका जीव जो असुरकुमार देव था ताहि संबोधि सम्यक्त्व प्राप्त किया। हे श्रेणिक! उत्तम जीवोंसे पर उपकार ही बनै बहुरि स्वर्ग लोकसे भरतक्षेत्रमें श्रीरामके दर्शनको आए पवनसे हू शीघ्रगामी जो विमान तामें

आरूढ अनेक देवोंको संग लिये नाना प्रकारके वस्त्र पहिरे हार माला मुकटादिक कर मंडित शक्ति गदा खडग धनुष बरछी शतघ्नी इत्यादि अनेक आयुधोंको धरे गज तुरंग सिंह इत्यादि अनेक बाहनों पर चढे मृदंग बांसुरी बीण इत्यादि अनेक वादित्रनिके शब्द तिन कर दशों दिशा पूर्ण करते केवलीके निकट आए। देवोंके बाहन गज तुरंग सिंहादिक तिर्यंच नहीं देवोंकी विक्रिया है। श्रीरामको हाथ जोड सीस निवाय बारंबार प्रणाम कर सीताका जीव प्रतींद्र स्तुति करता भया—हे संसारसागरके तारक तुमने ध्यानरूप पवन कर ज्ञानरूप अग्नि दीप्त करी, संसार रूप बन भस्म किया अर शुद्ध लेश्या रूप त्रिशूल कर मोहरिपु हता, वैराग्यरूप वज्र कर दृढ स्नेहरूप पिंजरा चूर्ण किया। हे नाथ हे मुनीन्द्र हे भवसूदन संसाररूप बनसे जे डरे हैं तिनको तुम शरण हो। हे सर्वज्ञ कृतकृत्य जगतगुरु पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने हे प्रभो मेरी रक्षा करो संसारके भ्रमणसे अतिव्याकुल है मन मेरा तुम अनादि निधन जिनशासनका रहस्य जान प्रबल तप कर संसार सागरसे पार भए, हे देवाधिदेव यह तुमको कहा युक्त? जो मुझे भववनमें तज आप अकेले विमल पदको पधारे, तब भगवान् कहते भए हे प्रतींद्र तू राग तज जे वैराग्यमें तत्पर हैं तिन ही को मुक्ति है। रागी जीव संसारमें डूबे है जैसे कोई शिलाको कंठमें बांध भुजावों कर नदी को नहीं तिर सके तैसे रागादिक भार कर चतुर्गतिरूप नदी न तिरी जाय, जे ज्ञान वैराग्य शील संतोषके धारक हैं वेई संसारको तिरे हैं जे श्रीगुरुके वचन कर आत्मानुभवके मार्ग लगे वेई भव भ्रमणसे छूटें और उपाय नहीं काहूका भी लेजाया कोई लोकशिखर न जाय एक वीतराग भावों ही से जाय। इसभांति श्रीराम भगवान् सीताके जीवको कहते भए, सो यह वार्ता गौतमस्वामीने श्रेणिकसे कही बहुरि कहते भए हे नृप सीताके जीव प्रतीन्द्रने जो केवलीसे पूछी अर उनने कहा सो तू सुन, प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ दशरथादिक कहां गए अर लव अंकुश कहां जावेंगे तब भगवान्ने कही दशरथ

कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा अर जनक अर जनकका भाई कनक यह सब तपके प्रभाव कर तेरहमें देवलोक गए हैं यह सब ही समान ऋद्धिके धारी देव हैं अर लवअंकुश महाभाग्य कर्म रूप रजसे रहित होय विमल पद को इसही जन्मसे पावेंगे, इस भांति केवली की ध्वनि सुन भामंडलकी गति पूछी, हे प्रभो भामंडल कहां गया, तब आप कहते भए हे प्रतीन्द्र तेरा भाई राणी सुन्दरमालिनी सहित मुनि-दानके प्रभाव कर देवकुरु भोगभूमिमें तीन पल्य की आयुके भोक्ता भोगभूमिया भए तिनके दानकी वार्ता सुन--अयोध्यामें एक बहु कोटि धनका धनी सेठ कुलपति उसके मकरा नामा स्त्री जिसके पुत्र राजावोंके तुल्य पराक्रमी सो कुलपतिने सुनी सीताको वनमें निकासी तब उसने विचारी वह महागुणवती शीलवती सुकुमार अंग निर्जन वनमें कैसे अकेली रहेगी। धिकार है संसारकी चेष्टाको, यह विचार दयालुचित्त होय द्युति भट्टारकके समीप मुनि भया अर उसके दोय पुत्र एक अशोक दूजा तिलक यह दोनों मुनि भए सो द्युतिभट्टारक तो समाधि मरणकर नवमग्रैवेयकमें आहमिन्द्र भए अर यह पिता पुत्र तीनों मुनि ताम्रचूडनामा नगर वहां केवली की बंदनाको गए सो मार्ग में पचास योजनकी एक अटवी वहां चतुर्मासिक आय पडा तब एक वृक्षके तले तीनों साधु बिराजे मानों साक्षात् रत्नत्रय ही हैं वहां भामण्डल आय निकसा अयोध्या आवे था सो विषम बनमें मुनिनिको देख विचार किया, यह महापुरुष जिन सूत्रकी आज्ञा प्रमाण निर्जन बन में विराजे चौमासे मुनियोंका गमन नहीं अब यह आहार कैसे करें तब विद्या की प्रबल शक्ति कर निकट एक नगर बसाया जहां सब सामग्री पूर्ण बाहिर नानाप्रकार के उपवन सरोवर अर धानके क्षेत्र अर नगरके भीतर बडी वस्ती महासंपत्ति, चार महीना आपभी परिवार सहित उसनगरमें रहा अर मुनियोंके वैयाव्रत किये, वह बन ऐसा था जिसमें जल नहीं सो अद्भुत नगर बसाया, जहां अन्नजलकी बाहुल्यता सो नगरमें मुनिनिका आहार भया अर और भी दुखित भुखित

जीवोंको भान्ति भान्तिके दान दीए, अर सुन्दरमालिनी राणी सहित आप मुनोंको अनेकवार निरंत-
राय आहार दीया, चतुर्मास पूर्ण भए मुनि विहार करते भए अर भामंडल अयोध्या आय फिर अपने
स्थानक गया एक दिन सुन्दरमालिणी राणी सहित सुखसे शयन करै था सो महल पर विजुरी पडी राजा
राणी दोनों मरकर मुनिदानके प्रभावसे सुमेरु पर्वतकी दाहिनी ओर देवकुरु भोग भूमि वहां तीन
पल्यके आयुके भोक्ता युगल उपजे, सो दानके प्रभावसे सुख भोगवे हैं जे सम्यक्त रहित हैं अर दान करे
हैं सो सुपात्र दानके प्रभावसे उत्तमगतिके सुख पावे हैं सो यह पात्रदान महासुखका दाता है यह बात
सुन फिर प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ रावण तीजी भूमिसे निकस कहां उपजेगा अर मैं स्वर्गसे चयकर कहां
उपजूंगा मेरे अर लक्ष्मणके अर रावणके केते भव बाकी हैं सो कहो ॥

तब सर्वज्ञदेवने कही–हे प्रतीन्द्र सुन, वे दोनों विजयावती नगरीमें सुनंद नामा कुटुम्बी सम्यक्दृष्टि
उसके रोहिणी नामा भार्या उसके गर्भविषै अरहदास ऋषिदास नामा पुत्र होवेंगे महा गुणवान निर्मल-
चित्त दोनों भाई उत्तम क्रियाके पालक. श्रावकके व्रत आराध समाधि मरणकर जिनराजका ध्यान धर
स्वर्गविषै देव होंयगे तहां सागरांत पर्यंत सुख भोगि स्वर्गसे चयकर बहुरि वाही नगरीविषैं बडे कुलविषै
उपजेंगे सो मुनिनिको दान देकर हरिक्षेत्र जो मध्यम भोग भूमि वहां युगलिया होय दोय पल्यका आयु
भोग स्वर्ग जावेंगे बहुरि उसही नगरीविषै राजा कुमारकीर्ति राणी लक्ष्मी तिनके महायोधा जयकान्त
जयप्रभ नामा पुत्र होवेंगे बहुरि तपकर सातवें स्वर्ग उत्कृष्ट देव होवेंगे देवलोकके महासुख भोगेंगे
अर तू सोलवां अच्युत स्वर्ग वहांसे चयकर या भरतक्षेत्रविषै रत्नस्थलपुर नामा नगर वहां चौदह रत्नका
स्वामी षट् खंड पृथिवीका धनी चक्रनामा चक्रवर्ती होयगा तब वे सातवें स्वर्गसे चयकर तेरे पुत्र होवेंगे
रावणके जीवका नाम तो इन्द्ररथ अर वसुदेवके जीवका नाम मेघरथ दोनो महाधर्मात्मा होवेंगे परस्पर

उनमें अतिस्नेह होयगा अर तेरा उनसे अतिस्नेह होयगा जिस रावणने नीतिसे तीन खंड पृथिवीका अखंड राज्य कीया अर ये प्रतिज्ञा जन्मपर्यंत निवाही जो परस्त्री मोहि न इच्छे ताहि मैं न सेऊं सो रावणका जीव इन्द्ररथ धर्मात्मा कैयक श्रेष्ठ भव धार तीर्थंकर देव होयगा तीनलोक उसको पूजेंगे अर तू चक्रवर्ती राज्यपद तज मुनिव्रतधारी होय पंचोत्तरोंविषै वैजयंत नामा विमान तहां तपके प्रभावसे अहमिन्द्र होवेगा तहांसे चयकर रावणका जीव तीर्थंकर उसके प्रथम गणधर होय निर्वाण पद पावेगा। यह कथा श्रीभगवान् राम केवली तिनके मुख प्रतीन्द्र सुनकर अतिहर्षित भया बहुरि सर्वज्ञदेवने कही हे प्रतींद्र! तेरा चक्रवर्ती पदका दूजा पुत्र मेघरथ सो कैयक महाउत्तम भवधर धर्मात्मा पुष्पकरद्वीपके महाविदेह क्षेत्रविषै शतपत्र नामा नगर तहां पंचकल्याणकका धारक तीर्थंकर देव चक्रवर्ती पदको धरे होयगा संसारका त्यागकर केवल उपाय अनेकोंको तारेगा अर आप परमधाम पधारेगा, ये वासुदेवके भव तोहि कहे अर मैं अब सात वर्षविषै आयु पूर्णकर लोक शिखर जाऊंगा जहांसे बहुरि आना नहीं, अर जहां अनंत तीर्थंकर गए अर जावेंगे अनंत केवली तहां पहुंचे जहां ऋषभादि भरतादि विराजे हैं अविनाशी पुर त्रैलोक्येक शिखर हैं, जहां अनन्तासिद्ध है, वहां मैं तिष्ठूंगा ये वचन सुन प्रतींद्र पद्म नाम जे श्रीरामचन्द्र सर्वज्ञ वीतराग तिनको बार बार नमस्कार करता भया अर मध्यलोकके सर्व तीर्थ वंदे भगवानके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय अर निर्वाणक्षेत्र वहां सर्वत्र पूजाकर अर नन्दीश्वरद्वीपविषैं अंजनिगिरि दधिमुख रतिकर तहां बडे विधानसे अष्टाह्निकाकी पूजा करी देवाधिदेव जे अरहंत सिद्ध तिनका ध्यान करता भया, अर केवलीके वचन सुन ऐसा निश्चय भया जो मैं केवली होय चुका अल्प भव हैं अर भाईके स्नेहसे भोग भूमिविषै जहां भामण्डलका जीव है तहां उसे देखा अर उसको कल्याणका उपदेश दीया अर बहुरि अपना स्थान सोलवां स्वर्ग वहां गया जाके हजारों देवांगना तिनसहित मानासिक भोग

भोगता भया। श्रीरामचन्द्रका सतरह हजार वर्षका आयु सोलह धनुषकी ऊंची काया कैयक जन्मके
पापोंसे रहित होय सिद्ध भये वे प्रभु भव्यजीवोंको कल्याण करो जन्म जरा मरण महारिपु जीते परमा-
त्मा भये जिनशासनविषै प्रकट है महिमा जिनकी जन्मजरा मरणका विच्छेदकर अखंड अविनाशी परम
अतींद्रिय सुख पाया सुर असुर मुनिवर तिनके जे अधिपति तिनकर सेयवे योग्य नमस्कार करवे योग्य
दोषोंके विनाशक पच्चीसवर्ष तपकर मुनिव्रतपाल केवली भये सो आयु पर्यंत केवली दशाविषै भव्योंको
धर्मोपदेश देय तीन भवनका शिखर जो सिद्धपद वहां सिधारे।

सिद्धपद सकल जीवोंका तिलक है राम सिद्ध भए तुम रामको सीस निवाय नमस्कार करो राम
सुरनर मुनियोंकर आराधिवे योग्य हैं शुद्ध हैं भाव जिनके संसारके कारण जे रागद्वेष मोहादिक तिन
से रहित हैं परम समाधिके कारण हैं अर महामनोहर हैं, प्रतापकर जीता है तरुण सूर्यका तेज जिनने
अर उन जैसी शरदकी पूर्णमासीके चंद्रमामें कांति नहीं सर्व उपमारहित अनुपम वस्तु हैं अर स्वरूप जो
आत्मरूप उसमें आरूढ हैं, श्रेष्ठ है चारित्र जिनके, श्रीराम यतीश्वरोंके ईश्वर देवोंके अधिपति प्रतीन्द्र
की मायासे मोहित न भए जीवोंके हितू परम ऋद्धिकर युक्त अष्टम बलदेव पवित्र शरीर शोभायमान
अनंत वीर्यके धारी अतुल महिमाकर मंडित निर्विकार अठारह दोषकर रहित अष्टादशसहस्र शीलके
भेद तिनकर पूर्ण अति उदार अति गंभीर ज्ञानके दीपक तीन लोकमें प्रकट है प्रकाश जिनका अष्टकर्म
के दग्ध करणहारे गुणोंके सागर क्षोभरहित सुमेरुसे अचल धर्मके मूल कषायरूप रिपुके नाशक समस्त
विकल्परहित महानिर्द्वंद्व जिनेन्द्रके शासनका रहस्य पाय अंतरात्मासे परमात्मा भए उनने त्रैलोक्यपूज्य
परमेश्वरपद पाया तिनको तुम पूजो धोय डारे हैं कर्मरूप मल जिनने, केवलज्ञान केवल दर्शनमई योगी-
श्वरोंके नाथ सर्व दुखके दूर करणहारे मन्मथके मथनहारे तिनको प्रणाम करो, यह श्रीबलदेवका चरित्र

महामनोज्ञ जो भावधर निरंतर बांचे सुनें पढें पढावें शंकारहित होय महाहर्षका भरा रामकी कथाका अभ्यास करे तिसके पुण्यकी वृद्धि होय अर वैरी खड्ग हाथमें लिए मारिवेको आया होय सो शान्त होय जाय, या ग्रंथके श्रवणसे धर्मके अर्थी इष्टधर्मको लहैं यशका अर्थी यशको पावे राज्य भ्रष्ट हुआ अर राज्य कामना होय तो राज्य पावे यामें संदेह नाही, इष्ट संयोगका अर्थी इष्टसंयोग लहै धनका अर्थी धन पावे, जीतका अर्थी जीत पावे स्त्रीका अर्थी सुन्दर स्त्री पावे लाभका अर्थी लाभ पावे, सुखका अर्थी सुख पावे अर काहूका कोई वल्लभ विदेश गया होय अर उसके आयवेकी आकुलता होय सो वह सुखसे घर आवे जो मनविषे अभिलाषा होय सोही सिद्ध होय सर्व व्याधि शांत होय ग्राम के नगरके वनके देव जलके देव प्रसन्न होंय अर नवग्रहोंकी बाधा न होय, क्रूर ग्रह सौम्य होय जांय अर जे पाप चिंतवनमें न आवें वे विलाय जांय अर सकल अकल्याण राम कथाकर क्षय होय जांय, अर जितने मनोरथ हैं वे सब राम कथाके प्रसादसे पावें अर वीतराग भाव दृढ होय उसकर हजारांभव के उपार्जे पापोंको प्राणी दूर करे कष्टरूप समुद्रको तिर सिद्धपद शीघ्र ही पावे। यह ग्रंथ महापवित्र है, जीवको समाधि उपजावनेका कारण है नाना जन्ममें जीवने पाप उपार्जे महा क्लेशके कारण तिनका नाशक है अर नाना प्रकारके व्याख्यान तिनकर संयुक्त है जिसमें बडे २ पुरुषोंकी कथा भव्यजीवरूप कमलोंको प्रफुल्लित करणहारा है सकल लोककर नमस्कार करिवे योग्य श्रीवर्धमान भगवान उनने गौतमसे कहा अर गौतमने श्रेणिकसे कहा। याही भांति केवली श्रुतकेवली कहते भए। रामचन्द्रका चरित्र साधुवोंकी समाधिकी वृद्धिका कारण सर्वोत्तम महामंगलरूप सो मुनिनिकी परिपाटीकर प्रकट होता भया। सुन्दर हैं वचन जिसमें समीचीन अर्थको धरे अति अद्भुत इंद्रगुरु नामा मुनि तिनके शिष्य दिवाकरसेन तिनके शिष्य लक्ष्मणसेन तिनके शिष्य रविषेण तिन जिनआज्ञा अनुसार कहा। यह राम